शब्द संख्या—२५३९६

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

पाँचवाँ खंड

(व से ह तक; तथा दो परिशिष्टों सहित)

प्रधान सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

सहायक सम्पादक

बदरीनाथ कपूर, एम. ए., पी-एच.डी.

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
सचिव, प्रथम शासन निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रथम संस्करण
शकाब्द १८८७ सन् १९६६
मूल्य : २५ रुपए

मुद्रक
रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

मानक हिन्दी कोश का यह पाँचवाँ और अन्तिम खण्ड हिन्दी जगत् के सम्मुख रखते हुए हमे अतीव प्रसन्नता हो रही है। लगभग आज से दस-ग्यारह वर्ष पहले सम्मेलन के भूतपूर्व आदाता श्री जगदीश स्वरूप एडवोकेट ने इस कार्य का श्रीगणेश किया था और इसके सम्पादन का भार श्री रामचन्द्र जी वर्म्मा को सौंपा था।

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी शब्द सागर आज से ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और उसके बाद हिन्दी का यह दूसरा बृहत् तथा महत्वपूर्ण कोश ग्रन्थ आज हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित हो रहा है।

कोश की विशेषताओं के सम्बन्ध मे कोश के प्रधान सम्पादक ने पहले खण्ड मे विस्तार से चर्चा की है। उन विशेषताओ को दोहराना यहाँ समीचीन नही है। फिर भी हम यहाँ इतना अवश्य कह देना चाहते है कि हिन्दी शब्दो का आर्थी विवेचन प्रस्तुत करने मे इस कोश में श्लाघनीय कार्य हुआ है।

निश्चय ही कोश-कार्य ऐसा कार्य नहीं है जिसकी १० वर्षों मे ही इतिश्री समझ ली जाय। यह कार्य ऐसा है जिसमे अनेकों पीढ़ियों को दिन-रात लगे रहने की आवश्यकता है। शब्द-चयन के लिए तथा अर्थ निश्चय के लिए सैकड़ो विद्वानो के इसमें बराबर लगे रहने की आवश्यकता है। मानक हिन्दी कोश के प्रथम चार खण्डो के प्रति मनीषी विद्वानो तथा हिन्दी प्रेमियो ने जो सद्भाव प्रकट किये है उसके लिए हम कृतज्ञ हैं।

इस कोश के शब्द-चयन, सम्पादन, मुद्रणकार्य मे जिनका हमे अनन्य सहयोग प्राप्त हुआ है उनके हम विशेषरूप से आभारी हैं। आशा है हिन्दी जगत् हिन्दी कोश साहित्य मे इस अभिनव प्रयास का स्वागत करेगा।

मोहनलाल भट्ट
सचिव, प्रथम शासन निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अं०—अंगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक में) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रंश
अर्द्ध० मा०—अर्द्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अव्य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की बोली
इब०—इबरानी भाषा
उग्र—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'।
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कबीर—कबीरदास
कश०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोंक०—कोंकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थ-शास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि० प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द्र०—चन्द्रवरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावा-द्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डिं०—डिंगल भाषा
ढो० मा०—ढोला मारू रा दूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिब्बती
तु०—तुरकी भाषा
तुलसी—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलगु भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारी सिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखें
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीरप्रसाद द्विवेदी
नपुं०—नपुंसक लिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
पं०—पंजाबी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पुं०—पुंलिंग
पु० हिं०—पुरानी हिन्दी
पुर्त्त०—पुर्त्तगाली भाषा
पू० हिं०—पूर्वी हिन्दी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशंकर प्रसाद
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रां०—फ्रान्सीसी भाषा
बंग०—बंगाली भाषा
बर०—बरमी भाषा
बहु०—बहुवचन
बिहारी—कवि बिहारीलाल
बुं० खं०—बुंदेलखण्डी बोली
भारतेन्दु—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक संज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावें
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवां-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानां
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात् हिंदुस्तानी जहाजियों की बोली
लै०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर
व्या०—व्याकरण
शृं०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत भाषा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सिं०—सिन्धी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर०—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
हिं०—हिन्दी भाषा

*यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य मे प्रयुक्त होता है।

†यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य० स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास।
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास।
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास।
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास।
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु० स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० ब०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
पं० त०—पञ्चमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० ब० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष० त०—षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनों पाणिनीय व्याकरण के संकेत हैं। इनके अर्थ हैं, 'पृषोदर' आदि शब्दों की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दों की सिद्धि। जिन शब्दो की सिद्धि पाणिनीय सूत्रों से संभव नही होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियो का प्रयोग किया जाता है। इन विधियों से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णों के आगम, व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।
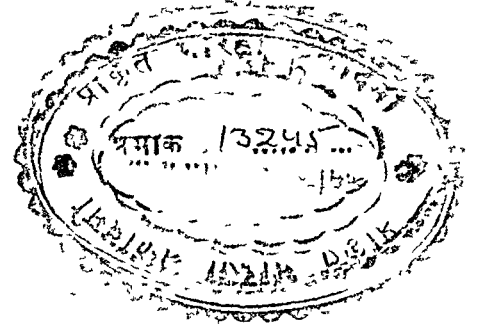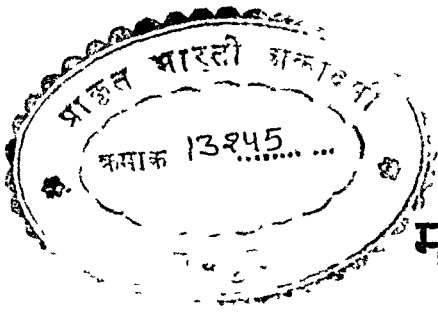
मानक हिन्दी कोश

पाँचवाँ खण्ड

व

व—नागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यजन जो व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अतस्थ, घोष, अल्पप्राण, ईषत्स्पृष्ट तथा दंत्यौष्ठ्य है।

वंक—वि०[स० √वक् (टेढा होना)+अच् (कर्तरि)]१ टेढा। वक्र। २. कुटिल।
पु०[√वक्+घञ्] नदी का मोड। वकर।

वंकट—वि०[स० वक]१. टेढा। वाँका। २ कुटिल। ३ दुर्गम। विकट।

वक-नाल—पु० =वकनाली।

वंक-नाली—स्त्री०[स० कर्म० स० ?] सुपुम्ना (नाडी)।

वंकर—पु०[स० वक√रा (लेना)+क] नदी का घुमाव या मोड।

वंका—स्त्री० [स० वक+टाप्] चारजामे (जीन) के अगले हिस्से का ऊँचा उठा हुआ किनारा।

वंकाला—स्त्री०[सं०] प्राचीन वग देश की राजधानी का नाम। ('वगाली' इसी का अपभ्रश रूप है।)

वंकिम—वि०[स० वङ्क+इमनिच्] आकार, रचना, आदि के विचार से कुछ झुका हुआ या टेढा।
पु० आवारा आदमी।

वकिल—पु०[स०√ वक्+इनच्] कटक। काँटा।

वंक्रा—स्त्री०=वक्रि।

वंक्रि—स्त्री०[सं० √वक्+क्रिन्]१ पशु विशेषत मादा पशु की पसली की हड्डी। २ कोडा। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का वाजा।

वंक्षण—पु० [स० वक्ष् (इकट्ठा होना)+ल्यु—अन] पेड़ू और जाँघ के बीच का अग।

वंक्षु—स्त्री०[स०√वह् +कुन्, नुम्] आधुनिक आक्सस नदी का पुराना नाम।

वंग—पु०[स०√ वग् (गति)+अच्]१ बगाल (राज्य)। २. राँगा नामक धातु। ३ वैद्यक मे उक्त धातु की भस्म। ४ कपास। ५ वैंगन। भटा। ६ एक चद्रवशी राजा।
पु०[?] पहाडो की घाटी। (राज०)

वंगज—वि० [स० वग√जन् (उत्पत्ति)+ड] वग अर्थात् वगाल मे उत्पन्न। वगाल मे जन्मा या वना हुआ।
पु०१ वगाल का निवासी। वगाली। २ सिंदूर। ३ पीतल।

वग-मल—पु०[स० प० त०] सीसा (धातु)।

वगसेन—पु०[स०]१. अगस्त का वह पेड जिसमे लाल फूल लगते हो। २ उक्त में लगनेवाला लाल फूल।

वंगारि—पु०[स० वग-अरि, प० त०] हरताल नामक खनिज।

वंगाष्टक—पु०[स० वंग-अष्टक, प० त०] राँगा आदि आठ धातुओ को फूँककर तैयार की जानेवाली ओपधि। (वैद्यक)

वंगीय—वि०[स० वग+छ—ईय] १. वग अर्थात् वगाल मे होने अथवा उससे सवध रखनेवाला। २. राँगे का बना हुआ।

वगेश्वर—पु०[स० वग-ईश्वर, प० त०] वैद्यक मे एक रसौषध।

वंचक—वि० [स०√ वच् (ठगना)+णिच्+ण्वुल्—अक] [भाव० वचकता] छल-कपट से जो दूसरे को ठग लेता हो।
पु० १ ठग। २ गीदड। ३ पालतू नेवला।

वंचकता—स्त्री०[स० वचक+तल्—टाप्]१. वचक होने की अवस्था या भाव। २ वचक का कोई कृत्य।

वंचन—पु०[स०√वच्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वचित] १. धोखा देना या ठगना। २ धूर्तता। ठगी।

वंचन-योग—पु० [स० प० त०] ठगी का अभ्यास।

वंचना—स्त्री०[स०√ वच्+णिच्+युच्—अन, टाप्] छलपूर्वक किसी को ठगने या धोखा देने की क्रिया या भाव।
स० १. छलपूर्वक व्यवहार करना। २ ठगना। ३ वास्तविक रूप या वात छिपाकर कुछ और ही वात बनाना या मिथ्या रूप उपस्थित करना। (चीटिंग)
स०=वाँचना (पढना)।

वंचनीय—वि० [स०√ वच्+अनीयर] १ जो ठगे जाने के योग्य हो। जिसे ठग सके। २ जो छोडे या त्यागे जाने के योग्य हो।

वचयिता (तृ)—वि०[स०√वच्+णिच्+तृच्]=वचक।

वंचित—भू० कृ०[स०√ वच्+णिच्+क्त] १ धोखे मे आया हुआ। जो ठगा गया हो। २ जो किसी काम, चीज या वात से अलग या दूर किया गया हो। जो रहित हुआ हो। ३ जो वाछित पदार्थ न प्राप्त कर सका हो अथवा जिसे प्राप्त करने से रोका गया हो। (डिप्राइव्ड, उक्त दोनो अर्थो मे)

वचितक—पु०[स० वचित+कन्]=व्यग्य।

वंचिता—स्त्री०[स० वचित+टाप्] एक प्रकार की पहेली।

वंचुक—वि०[स० √वच्+उकन्]=वचक।

वच्य—वि०[स०√वच्+ण्यत्]=वचनीय।

वंछना—स०[स० वाछा] वाछा करना। चाहना।

वंजुल—पु० [सं०√वज् (गति) +उलच्, नुम्] १ बेंत। २. तिनिश का पेड़। ३ अशोक। ४. स्थल पर का एक प्रकार का पक्षी।
वंजुला—स्त्री० [सं० वंजुल+टाप्] १. दुधारी गाय। २. पुराणानुसार सह्याद्रि पर्वत से निकलनेवाली एक नदी।
वंट—वि० [सं०√वट्+घञ्, करणे] १. कटी दुमवाला। २ कुँआरा।
पु०१ अंश। भाग। २. हँसुए की मुठिया। ३. अविवाहित पुरुष।
वंटक—वि०[√वट् (बाँटना)+णिच्+ण्वुल्—अक] बाँटनेवाला।
पु० [वंट+कन्] १. बाँट। २. बाँट में मिलनेवाला हिस्सा। ३ बाँटनेवाला व्यक्ति।
वंटन—पु० [सं०√वट्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वंटित] १. कोई चीज कुछ व्यक्तियों आदि में बाँटना। २ किसी चीज के अनेक हिस्से करना।
वंटनीय—वि०[सं०√वट्+अनीयर्]जो बाँटा जाय या बाँटा जा सके। बाँटने के योग्य।
वंटाल—पु० [सं०√वट्+आलच्] १ शूरों का युद्ध। २. नौका। ३ कुदाल जिससे जमीन खोदते हैं।
वंठ—वि० [सं०]√वट् (अकेले जाना)+अच्] १. कुँआरा। २ बौना। ३ अपाहिज। पंगु। ४. किसी अंग से विहीन। हीनांग।
पु०१ अविवाहित पुरुष। २ दास। ३. बौना व्यक्ति। ४. सेवक। ५ भाला।
वंठर—पु०[सं०√वट्+अरन्] १ ताड़ के वृक्ष का कल्ला। २ बाँस के कल्ले का वह कड़ा और मोटा पत्ता जो उसे छिपाये रहता है। यह पत्ता हर गाँठ पर होता है। ३ कुत्ता। ४. कुत्ते की दुम। ५ पशुओं के गले में बाँधने की रस्सी। ६ छाती। स्तन। ७. बादल। मेघ।
वंड—वि०[सं०√वन्(आघात करना)+ड] १. वह जिसकी लिंगेंद्रिय के अग्रभाग पर वह चमड़ा न हो, जो सुपारी को ढँके रहता है। २ जिसका खतना हुआ हो। ३ जिसका कोई अंग कट या निकल गया हो। हीनांग।
पु० ध्वज-भंग नामक रोग।
वंडर—पु० [सं० √वट्+अरन्] १. कंजूस। सूम। २ अन्तःपुर का रक्षक नपुंसक। खोजा।
स्त्री० पुंश्चली स्त्री।
वंद—प्रत्य०[सं० वत् से फा०]एक फारसी प्रत्यय जो संज्ञाओं के अन्त में लगकर 'वाला', 'स्वामी' आदि का अर्थ देता है। जैसे—खुदावन्द।
वंदक—वि०[सं०√ वद् (स्तुति या प्रणाम करना)+ण्वुल्—अक] वंदना करनेवाला।
पु०१ चारण। २. भिक्षु। ३. बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।
वंदन—पु०[सं०√वद्+ल्युट्—अन] १ नम्रतापूर्वक की जानेवाली वंदना या स्तुति। २ शरीर पर बनाए जानेवाले तिलक आदि चिह्न। ३. एक प्रकार का विष। ४ वंदाक या बाँदा नामक वनस्पति। सिंदूर।
वंदनक—पु०[सं० वंदन+कन्]=वंदन या वंदना।
वंदन-धूरि—स्त्री० [सं० वंदन=सिंदूर +हिं० धूरि=धूल]अबीर, गुलाल आदि। उदा०—रसिकलाल पर मेलति कामिनि वंदनधूरि।—हितहरिवंश।
वंदनमाला—स्त्री०=वंदनवार।
वंदना—स्त्री०[सं०√वंद्+युच्—अन, टाप्] [भू०कृ०वंदित, वि०वंदनीय] १. आदर और नम्रतापूर्वक की जानेवाली स्तुति। वंदन। २. बौद्धों की एक पूजा। ३ होम हो चुकने पर उसकी भस्म से लगाया जानेवाला तिलक।
वंदनी—स्त्री०[सं० वंदन+ङीप्] १ स्तुति। वंदना। २ जीवातु नामक ओषधि। ३ गोरोचन। ४ शरीर पर लगाए जानेवाले तिलक आदि चिह्न। ५ माँगने की क्रिया। याचना। ६. वटी।
वंदनीय—वि०[सं०√वद्+अनीयर्] [भाव० वंदनीयता] जिसकी वंदना की जानी चाहिए अथवा की जाने को हो।
वंदा—पु०[सं०√वद्+अच्—टाप्]बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।
वंदाक, वंदार, वंदारु—पु० [सं०] वंदा या बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।
वंदि—पु०[√वद्+इन्]=बंदी (कैदी)।
वंदिग्रह—पु०[सं० वंदि√ग्रह् (ग्रहण,+अण्] डाकू।
वंदित—भू० कृ०[सं०√वद्+क्त] [स्त्री० वंदिता] जिसकी वंदना हुई हो या की गई हो।
वंदितव्य—वि०[सं०√वद्+तव्य] वंदनीय।
वंदिता (तृ)—वि०[सं०√वद्+तृच्] वंदना करनेवाला।
वि० सं०'वंदित' का स्त्री०।
वंदी (दिन्)—पु० [सं०√वंद्+णिनि] १. वह जिसे बंधन में रखा गया हो। २ वह अपराधी जिसे दंड-स्वरूप कारागार में रखा गया हो।
वंदीगृह—पु०[सं०,ष० त०] कैदखाना। कारागार।
वंदीजन—पु०[सं० कर्म० स०] १. राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति या चारण।
वंद्य—वि०[सं०√वद्=ण्यत्]=वंदनीय।
वंद्या—स्त्री०[सं० वंद्य+टाप्] १. बाँदा नामक वनस्पति। २ गोरोचन।
वंधुर—पु० [सं० वंधुर] १ रथ या गाड़ी का आश्रय जिसमें दोनों हरसे और धुरा प्रधान होते है। २ गाड़ी में का वह स्थान जहाँ सारथी या गाड़ीवान बैठकर उसे चलाता है।
वंध्य—वि० [सं० वंध्य] १ जिसमें कोई परिणाम या फल उत्पन्न करने की शक्ति न हो। अनुत्पादक। २. जिसमें बीज या संतान उत्पन्न करने की शक्ति न हो। बाँझ। (स्टराइल) ३. जिसका कोई परिणाम या फल न हो। निष्फल।
वंध्यकरण—पु० [सं०] अनुर्वरीकरण। (स्टर्लाइजेशन)
वंध्या—स्त्री० [सं० वंध्या] वह स्त्री या मादा पशु जो गर्भ धारण करने में फलतः प्रसव करने में असमर्थ हो। बाँझ।
वंध्या-कर्कटिका—स्त्री०[सं० वंध्याकर्कटिका] बाँझ ककोड़ा।
वंध्या-पुत्र—पु०[सं० वंध्यापुत्र] बाँझ स्त्री के पुत्र की तरह होनेवाला असंभव पदार्थ।
वंश—पु० [सं०√वम् (उगलना)वा√वन् (शब्द)+श] १. बाँस। २ बाँस की बनी हुई बाँसुरी। ३. छाजन की बँडेर जो बाँस की होती है। ४ एक प्रकार की ईख। ५. पीठ के बीच में हड्डियों की गुरियों की लंबी माला या शृंखला जो गरदन से कमर तक होती है। रीढ़। ६. नाक के बीच की लंबी हड्डी। बाँसा। ७ खड्ग के बीच का पीछे की ओर उठा हुआ या ऊँचा भाग। ८ बारह हाथ की एक पुरानी नाप। ९ हाथ या पैर की लंबी हड्डी। नली। १०. युद्ध की सामग्री। ११.

पुष्प। फूल। १२. विष्णु का एक नाम। १३ जीव या प्राणी की सतान-परम्परा। एक ही जीव, प्राणी या व्यक्ति से उत्पन्न होनेवाले जीवो, प्राणियो या व्यक्तियों की परम्परा या शृखला। कुल। खानदान। १४ दे० 'वशलोचन'।

वंशक—पु० [स० वश+कन्] १. छोटी जाति का बाँस। छोटा बाँस। २ अगर नामक गध-द्रव्य। अगर। ३ एक प्रकार की ईख। ४ एक प्रकार की मछली।

वंशकपूर—पु० [स० वंशकर्पूर] वशलोचन।

वंशकर—पु० [स० वश√कृ (करना)+अच्] वह पुरुष जिससे किसी वश का आरभ हुआ हो। मूलपुरुष।

वंशकरा—स्त्री० [स० वशकर+टाप्] वशधारा नदी।

वंशकार—पु० [स० वश√कृ+अण्] गधक।

वंशज—पु० [स० वश √जन् (उत्पत्ति)+ड] १ वह जो किसी वश मे उत्पन्न हुआ हो। २ किसी विशिष्ट व्यक्ति के विचार से, उसकी सतान। जैसे—ये लोग टोडरमल के वशज हैं। (डिसेन्डेन्ट उक्त दोनो अर्थो मे)

वंशजा—स्त्री० [स० वशज+टाप्] वशलोचन।

वंश-तिलक—पु० [स०] पिंगल मे एक प्रकार का छद।

वंश-धर—पु० [स० ष० त०] १. बाँस धारण करनेवाला। २ वह जो किसी के वश मे उत्पन्न हुआ हो। वशज। ३ वह जिसने अपने वश या कुल की मर्यादा की रक्षा की हो।

वंश-धरा—स्त्री० [स० वशधर+टाप्] मध्य प्रदेश की एक नदी, जो पुराणानुसार महेन्द्र पर्वत से निकली है। आज-कल इसे 'वशधारा' कहते है।

वंश-धान्य—पु० [स० ष० त०] बाँस का चावल। (वि० दे० 'बाँस')

वंशनर्ती (र्तिन्)—पु० [स० वश√नृत् (नाचना)+णिनि] भाँड।

वंश-नाश—पु० [स० ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जो शनि, राहु, और सूर्य के एक साथ किसी लग्न मे, विशेषत. पचम लग्न मे पडने पर होता है, और जिसके फल-स्वरूप सारे वश या परिवार का नष्ट होना माना जाता है।

वंश-नेत्र—पु० [सं० ब० स०] ऊख की जड या पोर जिसमे से अँखुआ निकलता है।

वंश-पत्र—पु० [सं० ब० स०] हरताल (खनिज)।

वंश-पत्रक—पु० [सं० वंशपत्र+कन्] १. एक प्रकार की ईख जो सफेद होती है। २. एक तरह की मछली। ३. हरताल।

वंश-पत्र-पतित—पु० [स० ष० त०] एक प्रकार का छन्द।

वंशपत्री—स्त्री० [स० वशपत्र+ङीप्] १. एक प्रकार की हीग। २ बाँसा नाम की घास।

वंश-रोचना—स्त्री० [स० ष० त०] वसलोचन।

वंशलोचन—पु० [स० वशरोचना] बसलोचन। (देखे)

वंश-वज्रा—स्त्री० [स०] एक प्रकार का अर्द्ध-सम वर्णिक वृत्त जो इधर हाल मे इंद्रवज्रा और इन्द्रवशा के योग से बनाया गया है। इसके पहले और तीसरे चरणो मे तगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण होते है।

वंश-वृक्ष—पु० [स० ष० त०] वृक्ष की आकृति का वह रेखा-चित्र जिसमे किसी वंश के मूल पुरुष से लेकर उसके परवर्ती वशजो (पुरुषो) का क्रमात् नाम एक विशिष्ट क्रम से लिखा होता है।

वंश-शर्करा—स्त्री० [स० ष० त०] वसलोचन।

वंश-शलाका—स्त्री० [स० ष० त०] बीन, सितार, आदि बाजो का डडा।

वंशस्थ—पु० [स० वश√स्था (ठहरना)+क] बारह वर्णो का एक वर्ण-वृत्त जिसका व्यवहार सस्कृत काव्यो मे अधिक मिलता है। इसमे जगण, तगण, जगण, और रगण आते है। इसे 'वशस्थविल' भी कहते हैं।

वंश-हीन—वि० [स० तृ० त०] १ जिसके वश मे कोई न हो। निर्वंश। २ जिसके पुत्र न हो।

वंशागत—वि० [स० वश-आगत, प० त०] १ वश-परम्परा से प्राप्त। २ उत्तराधिकार मे प्राप्त।

वंशानुक्रम—पु० [स० वश-अनुक्रम, ष० त०] [वि० वशानुक्रमिक] किसी वश मे बराबर चलता रहनेवाला क्रम या परम्परा।

वंशानुकीर्तन—पु० [स० वश-अनुक्रमण, ष० त०] वश-परपरा।

वंशानुक्रमिक—वि० [स० वशानुक्रम+ठन्—इक] वश मे परम्परा के रूप मे चलनेवाला। आनुवशिक। (हेरीडेटरी)

वंशावली—स्त्री० [स० वश-आवली, ष० त०] किसी वंश मे उत्पन्न पुरुषो की पूर्वोत्तर क्रम-सूची। (जीनिएलॉजी)

वंशिक—पु० [स० वश+ठन् —इक] १ अगर की लकडी। २ काला गन्ना।

वशिका—स्त्री० [स० वशिक+टाप्] १. अगर की लकडी। २ वसी। मुरली। ३ पिप्पली।

वंशी—स्त्री० [स० वश+अच्—ङीप्] १ मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो बाँस मे सुर निकालने के लिए छेद करके बनाया जाता है। बाँसुरी। मुरली। २ वशलोचन। वसलोचन। ३ चार कर्ष या आठ तोले की एक पुरानी तौल।

वि० [स० वशिन्] किसी विशिष्ट वश मे उत्पन्न होने या उससे सबध रखनेवाला। जैसे—चद्रवशी, सूर्यवशी।

वंशीधर—पु० [सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

वंशीय—वि० [स० वश+छ—ईय] किसी वश या कुल से सबध रखने या उसमे होनेवाला।

वंशी-वट—पु० [स० मध्य० स०] वृन्दावन वन मे स्थित वरगद का एक पेड जिसके नीचे श्रीकृष्ण वशी बजाते थे।

वंशोद्भव—वि० [स० वश-उद्भव, ब०स०] किसी विशिष्ट वश या कुल मे उत्पन्न।

वंशोद्भवा—स्त्री० [स० वशोद्भव+टाप्] वसलोचन।

वंश्य—वि० [स० वश+यत्] १ वश-संबधी। वंश का। २ किसी वश या कुल मे उत्पन्न। वशज।

पु० १. छत की छाजन मे की बँडेर। २ पीठ की रीढ।

व—पु० [स०√ वा (गमनादि)+क] १ वायु। २ बाण। ३ वरुण। ४. बाहु। ५. मत्रणा। ६ कल्याण। ७. सात्वना। ८ वस्ती। ९ समुद्र। १० शार्दूल। ११ वस्त्र। १२ कोई का कद। सेरकी। १३ जल मे पैदा होनेवाले कद। शालूक। १४ वदन। १५ अस्त्र। १६ खड्गधारी पुरुष। १७. मूर्वालता। १८ वृक्ष। १९ कलश से उत्पन्न ध्वनि। २० मद्य। २१ प्रचेता।

अव्य० [फा०] और। जैसे—अमीर व गरीब।

सर्व० 'वह' का सक्षिप्त रूप।

वक—पु०[स०√वक् (टेढा होना)+अच्, पृषो० नलोप]१ बगला नाम का पक्षी। २ अगस्त का पेड या फूल। ३ एक प्रकार का यज्ञ। ४ कुवेर। ५ एक प्राचीन जाति। ६ एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था। ८ एक असुर या दैत्य जिसे श्रीकृष्ण जी ने मारा था।

वकअत—स्त्री०[अ०] १ शक्ति। वल। ताकत। २ महत्त्व। ५ मान-मर्यादा।

वककच्छ—पु०[स० मध्य० स०] एक प्राचीन जनपद जो नर्मदा नदी के किनारे था।

वकजित्—पु०[स० वक√ जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] १. श्रीकृष्ण। २ भीमसेन।

वक-पचक—पु०[स० प० त०] कार्तिक शुक्ल एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक की पाँचो तिथियाँ।

वक-यत्र—पु०[स० मध्य० स०]अरक, आसव आदि खीचने का एक तरह का भवका।

वकर—पु०=वकर (नदी का घुमाव या मोड)।

वक-वृत्ति—स्त्री०[स० प० त०] धोखा देकर काम निकालने की घात मे उसी प्रकार लगे रहने की वृत्ति जिस प्रकार बगला शान्त भाव से खडा रहकर मछली पकडने की घात मे रहता है।

वक-व्रत—पु०[स० प० त०] [वि० वकव्रती] १ बगले की तरह चुपचाप और सीधे वनकर किसी का अनिष्ट करने की ताक मे रहना। २ [व० स०] उक्त प्रकार से घात मे लगा रहनेवाला व्यक्ति।

वकार—पु०[अ०]१. प्रतिष्ठा। मान-मर्यादा। २ वडप्पन। महत्त्व।

वकालत—स्त्री० [हिं० वकील] १. वकील होने की अवस्था या भाव। २. वकील का काम या पेशा। ३ अन्य व्यक्ति द्वारा किसी के पक्ष का किया जानेवाला मडन। (व्यग्य)

वकील—पु० [अ० वाकिल] १. वह व्यक्ति जो किसी की ओर से उसका कोई काम करने का भार अपने ऊपर ले। प्रतिनिधि। २. किसी का सदेश कही पहुँचानेवाला व्यक्ति। सदेशवाहक। दूत। ३ राजदूत। एलची। ४. वह जो किसी की ओर से उसके पक्ष का युक्तिपूर्वक मडन या समर्थन करता हो। ५. आज-कल विधिक क्षेत्र मे, एक विशिष्ट परीक्षा पारित और विधिक दृष्टि से अधिकार-प्राप्त वह व्यक्ति जो न्यायालय मे किसी पक्ष की ओर से खडन, मडन आदि का काम करने के लिए नियुक्त होता है।

वकुल—पु०[स०√वक् (टेढा)+कुलच्]१ अगस्त का पेड या फूल।

वकुला—स्त्री०[स० वकुल+टाप्] कुटकी नामक ओषधि।

वकुली—स्त्री०[सं० वकुल+ङीप्]१ काकोली नाम की ओषधि। २. मौलसिरी का फूल।

वकुश—पु०[स०] जैनियों मे वह महापुरुष जिसे भक्तो की चिंता रहती है।

वकूअ—पु०[अ० वकूआ] प्रकटीकरण।

क्रि० प्र०—मे आना।—होना।

वकूफ—पुं० [अ० वकूफ]१. जानकारी। ज्ञान। २ वुद्धि। समझ। ३. काम करने का अच्छा ढग। शऊर। सलीका।

मुहा०—वकूफ पकड़ना=अक्ल सीखना।

वकूफदार—वि०[अ०+फा०] [भाव० वकूफदारी]१. समझदार। २. अनुभवी।

वक्त—पु०[अ० वक्त] १. समय। काल।

क्रि० प्र०—काटना।—गँवाना।—विताना।

मुहा०—किसी पर वक्त पड़ना=कष्ट या विपत्ति के दिन आना।

२. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त समय। अवसर। मौका। जैसे—आप भी ठीक वक्त पर आये। ३. वह निश्चित समय जो किसी विशिष्ट काम के लिए नियत हो। जैसे—उन्हे मैंने यही वक्त दिया था, शायद चले गये हो। ४ पचाग, घडी आदि के अनुसार विवक्षित, पल घडी, दिन आदि। जैसे—खाने का वक्त, सोने का वक्त, स्कूल का वक्त आदि। ५ उतना समय जितना किसी कार्य के सम्पादन मे लगा हो। जैसे—इस काम मे २ घटे का वक्त लगेगा। ६ अवकाश। फुरसत। जैसे—अगर वक्त मिले तो आप भी आ जायँ। ७ मृत्यु का समय। जैसे—जव जिसका वक्त आ जायगा तव उसे जाना ही पडेगा।

वक्तव्य—वि० [स०√वच् (बोलना)+तव्य] [भाव० वक्तव्यता] १. जो कहा जाने को हो। २. जो कहे जाने के योग्य हो। ३. जिसके सवध मे कुछ कहा जा सकता हो।

पु०१ वक्ता का कथन। २ वह कथित या प्रकाशित विवरण जिसमें किसी ने लोगो की जानकारी के लिए वस्तु-स्थिति स्पष्ट की हो अथवा अपना विचार या मशा प्रकट की हो। (स्टेटमेन्ट)

वक्तव्यता—स्त्री०[स० वक्तव्य+तल्—टाप्]किसी बात के सवध मे वक्तव्य या उत्तर देने का भार।

वक्ता (क्तृ)—वि०[स०√वच्+तृच्] १. कहने या वोलनेवाला। २. जो अच्छी तरह कोई बात कह या वोलकर वतला सकता हो। अच्छा वोलनेवाला।

पु० वह जो जन-समाज के सामने कोई बात अच्छी तरह और समझा-कर कहता हो। जैसे—कथा कहनेवाला, भाषण या व्याख्यान देने-वाला।

वक्तृक—पु०[स० वक्त्र+कन]=वक्ता।

वक्तृता—स्त्री०[स० वक्तृ+तल्—टाप्]१ वक्ता होने की अवस्था, गुण या भाव। २ भाषण। व्याख्यान।

वक्तृत्व—पु० [स० वक्तृ+त्व] १. वक्तृता। वाग्मिता। २. अच्छे वक्ता होने की अवस्था, गुण या भाव। वाग्मिता। ३. वक्तृता। ४ कथन। वक्तव्य।

वक्तृत्व-कला—स्त्री०[स० प० त०]१ वक्तृता अर्थात् प्रभावशाली ढग से भाषण देने की कला या विद्या। (इलोक्यूशन)

वक्तृत्व-शास्त्र—पु०[स० प० त०]वह शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि दूसरो पर प्रभाव डालने के लिए किस प्रकार की बाते कहनी या वक्तृता होनी चाहिए। (रिहटोरिक)

वक्त्र—पु०[स०√वच् (बोलना)+त्र] १. मुँह। मुख। २. जानवरो का थूथन। ३. पक्षियो की चोच। चचु। ४ तीर, भाले आदि की नोक। ५ अगला भाग। ६. कार्य का आरम्भ। ७ एक तरह का पुराना पहनावा। ८ एक प्रकार का छद।

वक्त्रज—पु०[स० वक्त्र√जन् (उत्पत्ति)+ड] ब्राह्मण।

वक्त्र-ताल—पु०[स० प० त०] सगीत मे वह ताल जो मुँह से कुछ कह या वजाकर दिया जाय। (किसी पर आघात करके दिये जानेवाले ताल से भिन्न)

वक्त्र-तुंड—पु०[स० व० स०] गणेश।

वक्त्र-भेदी (दिन्)—वि० [स० वक्त्र√भिद् (भेदन करना)+णिनि, दीर्घ नलोप] बहुत कडुआ, चटपटा या तीक्ष्ण (खाद्य पदार्थ)।

वक्त्र-शोधी (धिन्)—वि० [स० वक्त्र√शुध् (शुद्ध करना)+णिच् +णिनि] मुँह साफ करनेवाला (पदार्थ)।
पु० जँबीरी नीबू।

वक्त्रासव—पु०[स० वक्त्र-आसव, प० त०] लाला। थूक।

वक्फ—पु०[अ० वक्फ]१. किसी देवता की पूजा आदि धार्मिक कार्यो अथवा लोकोपकारी सस्था को कोई चीज (धन या सपत्ति) अर्पित करने का कार्य। २ उक्त रूप मे अर्पित किया हुआ धन या सपत्ति। ३ दान।

वक्फनामा—पु०[अ० वक्फ+फा० नाम] १. वह पत्र जिसके अनुसार किसी के नाम कोई चीज वक्फ की जाय। दानपत्र। २ वह लेख जो वक्फ की हुई सपत्ति या धन का प्रमाण हो।

वक्फा—पु०[अ० वक्फा] १. दो घटनाओ के बीच मे पडनेवाला थोडा समय। अवकाश। २. काम से मिलनेवाली छुट्टी या फुरसत।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

वक्र—वि०[स० √वक् (टेढा होना)+रन् पृषो० नलोप] [भाव० वक्रता] १. जो आडे या वेडे वल मे हो। टेढा या तिरछा। 'ऋजु' का विपर्याय। २. झुका हुआ। नत। ३ कुटिल और धूर्त। ४ त्रिपुर नामक असुर। ५. दे० 'वक्र-गति'।
पु०१. नदी का मोड। वकर। २ मगल ग्रह। ३ शनैश्चर ग्रह। ४. रुद्र।

वक्र-गति—वि०[स० व० स०]१. टेढी-मेढी चालवाला। २ कुटिल। ३ उलटी गतिवाला (ग्रह)।
पु०१. ग्रह लाघव के अनुसार वे ग्रह जो सूर्य से पाँचवे, छठे, सातवे और आठवे हों। इस प्रकार मगल ३६ दिन, बुध २१ दिन, बृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ दिन वक्री होता है। २ मगल ग्रह।

वक्रगल—पु०[स० व० स०] फूँककर वजाया जानेवाला पुरानी चाल का एक वाजा।

वक्रगामी (मिन्)—वि० [स० वक्र√गम् (जाना)+णिनि] १ जिसकी गति वक्र हो। टेढी चालवाला। २ कुटिल और धूर्त।

वक्र-ग्रीव—पु०[स० व० स०] ऊँट।

वक्र-चंचु—पु०[स० व० स०] तोता।

वक्रता—स्त्री०[स० वक्र+तल्—टाप्] १ वक्र होने की अवस्था, गुण या भाव। टेढापन। २ साहित्य मे किसी रचना, वस्तु या विषय के निर्वचन और उसकी वर्णन-शैली मे रहनेवाला वह अनोखा बाँकापन या उच्च कोटि का सौन्दर्य जो परम उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचायक होता है। जैसे—वस्तु-वक्रता, वाक्य-वक्रता।

वक्र-ताल—पु०[स० व० स०] वक्रनाल (वाजा)।

वक्र-तुंड—पु०[स० व० स०] १ गणेश। २ तोता।

वक्र-दंष्ट्र—पु०[स० व० स०] सूअर।

वक्र-दृष्टि—स्त्री०[स० व०स०] १ टेढी दृष्टि। २ क्रोध आदि से युक्त दृष्टि। ३. मन्द दृष्टि।
वि० १. (व्यक्ति) जिसकी दृष्टि पडने से कुछ अमगल होता या हो सकता हो। २. क्रोधपूर्ण दृष्टि।

वक्र-धर—पु०[स० प० त०] द्वितीया का वक्र चन्द्रमा धारण करनेवाले शिव।

वक्र-नक्र—पु० [स० उपमति स०] १. चुगलखोर। २. तोता।

वक्र-नाल—पु०[स० व० स०] एक प्रकार का पुराना वाजा जो मुँह से फूँककर वजाया जाता था।

वक्र-नासिक—वि० [स० व० स०] टेढी नाकवाला।
पु०=उल्लू।

वक्र-पुच्छ—पु०[स० व० स०] कुत्ता।

वक्र-पुष्प—पु०[स० व० स०]१ अगस्त का पेड। २ पलास।

वक्रांग—वि०[स० वक्र-अग, व० स०] जिसका कोई अग टेढ़ा हो।
पु०१. हस नाम का पक्षी। २ सर्प। साँप।

वक्रित—भू० कृ०[स० वक्र+इतच्] टेढा किया हुआ।

वक्रिम—वि०[स० वच् (गमनादि)+क्रिमच्] १ टेढा। २ कुटिल।

वक्रिमा (मन्)—स्त्री०[स० वक्र+इमनिच्]=वक्रता।

वक्री (त्रिन्)—वि०[स० वक्र+इनि, दीर्घ नलोप] जो अपना सीधा मार्ग छोडकर इधर-उधर हट गया हो या पीछे की ओर मुडने लगा हो। जैसे—अब मगल ग्रह वक्री होगा।

वक्रोक्ति—स्त्री०[स० वक्र-उक्ति, कर्म० स०]१ किसी प्रकार की वक्रता से युक्त कोई चमत्कारपूर्ण उक्ति। २. काकु अलकार से युक्त उक्ति। ३. साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे एक अभिप्राय से कही हुई बात का काकु या श्लेष के आधार पर कुछ और ही अभिप्राय निकलता या निकाला जाता है। यह अर्थ परिवर्तन शब्दो के आधार पर ही होता है, इसलिए कुछ आचार्य इसे शब्दालकार मानते है।

वक्रोक्ति-गर्विता—स्त्री० [स०]=गर्विता (नायिका)।

वक्रोष्ठिका—स्त्री० [स० वक्र-ओष्ठ, व० स० +कन्+टाप्, इत्व] मद हँसी। मुसकान।

वक्ष स्थल—पु० [स० प० त०] छाती।

वक्ष (स्)—पु०[स०√वक्ष् (वलिष्ठ होना)+असुन्] १. पेट और गले के बीच मे पडनेवाला वह भाग जिसमे स्त्रियो के स्तन और पुरुषो के स्तन के से चिह्न होते है। उरस्थल। २ वैल।

वक्षश्छद—पु०[स० वक्षस्√छद् (ढकना)+घ] कवच।

वक्षु—पु०=वक्षु (नद)।

वक्षोज—पु०[स० वक्षस्√ जन् (उत्पन्न करना)+ड]स्त्री का स्तन।

वक्षोरुह—पु०[स० वक्षस्√ रुह (उगना)+] स्त्री का स्तन।

वक्ष्यमाण—वि०[स०√वच् (कहना)+लृट्—शानच्, मुक् आगम] १. जो कहा जा सके। वाच्य। वक्तव्य। २. जो कहा जा रहा हो।

वगला—स्त्री०[स०] वगलामुखी।

वगलामुखी—स्त्री०[स० व० स०] दस महाविद्याओ मे से एक।

वगाहना—स०=अवगाहना। उदा०—पूतना को पय पान करै मनु पूतनाते विसवास वगाहत।—देव।

वगैरह—अव्य०[अ० वगैरह] और इसी प्रकार शेप या सवधित भी। आदि। इत्यादि।

वग्गा—पुं०=वर्ग।

वज्र-वारक—पु०[स० प० त०]१ जैमिनि, सुमंत, वैशपायन, पुलस्त्य और पुलह इन पाँचो ऋषियो का स्मरण जो वज्रपात के निवारण के लिए किया जाता है। २ दे० 'वजवारक'।

वज्र-वाराही—स्त्री०[स०]१ वुद्ध की माता माया देवी का एक नाम। २. बौद्धो की एक देवी।

वज्र-व्यूह—पु०[स० उपमित स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना जो दुधारी खड्ग के आकार की होती है।

वज्र-शल्य—पु०[स० ब० स०] साही (जतु)।

वज्र-शाखा—स्त्री०[स० मध्य० स०] जैन मत के अन्तर्गत एक सम्प्रदाय जिसका प्रवर्तन वज्रस्वामी ने किया था।

वज्र-शृखला—स्त्री०[स०ब०स०] सोलह महाविद्याओ मे से एक।(जैन)

वज्र-सघात—पु०[स० प० त०]१ भीमसेन। २ वास्तु-रचना मे, पत्थर जोडने का एक मसाला जिसमे आठ भाग सीसा, दो भाग कासा और एक भाग पीतल होता था।

वज्र-समाधि—स्त्री०[स० उपमित स०] बौद्ध धर्म के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

वज्र-सार—वि०[स० प० त०] अत्यन्त कठोर।
पु० हीरा।

वज्र-हस्त—पु०[स० प० त०] इद्र।
वि० जिसके हाथ मे वज्र या बहुत ही भीपण अस्त्र हो।

वज्र-हृदय—वि०[स० ब० स०]१ (व्यक्ति) जिसका हृदय अत्यन्त कठोर हो। २ बेरहम।

वज्राग—पु०[स० वज्र-अग, ब० स०]१ हनुमान्। २ साँप।

वज्रागी—स्त्री०[स० वज्राग+ङीप्]१. कौडिल्ला (पक्षी)। २ हड-जोडी नामक लता जिसकी पत्तियाँ बाँधने पर दरद दूर हो जाता है। (वैद्यक)

वज्रा—स्त्री०[स० √वज्र(गति)+रक्—टाप्]१ दुर्गा। २. स्नुही। थूहर। ३ गुडुच।

वज्राख्य—पु०[स०वज्र-आख्या, ब०स०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

वज्राघात—पु०[स० वज्र-आघात, प० त०]१. आकाश से गिरनेवाली बिजली का आघात। २ बहुत ही कठोर और बडा आघात। ३ बिजली के तार आदि का स्पर्श होने पर लगनेवाला आघात।

वज्राचार्य—पु०[स० वज्र-आचार्य, प० त०] नैपाली बौद्धो के अनुसार तान्त्रिक बौद्ध आचार्य जिसे तिब्बत मे लामा कहते है। यह गृहस्थ होता है और अपनी स्त्री आदि के साथ विहार मे रह सकता है।

वज्राभ—पु० स० वज्र-आभा, ब० स०] एक कीमती पत्थर।

वज्राभ्र—पु०[स०] काला अभ्रक।

वज्रायुध—पु०[स० वज्र-आयुध, ब० स०] इंद्र।

वज्रासन—पु० [स० वज्र-आसन, मध्य० स०] १ हठयोग के चौरासी आसनो मे से एक जिसमे गुदा और लिग के मध्य के स्थान को बाएँ पैर की एडी से दबाकर उसके ऊपर दाहिना पैर रखकर पलथी लगाकर बैठते है। २. गया मे बोधिद्रुम के नीचेवाली वह शिला जिसपर बैठ-कर बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया था।

वज्रजित्—पु०[स० वज्रिन् √जि (जीतना)+क्विप्, तुक् आगम] गरुड।

वज्री (ज्रिन)—पु० [स० वज्र+इनि] १. इद्र। २ उल्लू। ३. बौद्ध सन्यासी।

वज्रेश्वरी—स्त्री०[स० वज्र-ईश्वरी, प० त०]१. एक देवी। (बौद्ध) २. एक प्रकार का तान्त्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहनिका भी कहते है। इसमे वज्र बनाकर मन्त्रो द्वारा अभिषेक, पूजन और हवन करते है। कहते है कि इससे शत्रुओ पर विजय प्राप्त होती है।

वज्रोली—स्त्री०[स०] उँगलियो की एक विशिष्ट मुद्रा। (हठयोग)

वट—पु०[स० √वट् (लपेटना)+अच्]१ बरगद का पेड। २.कौडी। ३ गोली। ४. वटिका। ५. छोटा गेंद। ६. शून्य। ७. एक प्रकार की रोटी। ८ रस्सी। ९. एकरूपता। १०. एक पक्षी।

वटक—पु० [स० वट+कन्] १ बडी टिकिया या गोला। बट्टा। २ पकोडी आदि पकवान। आठ माशे की एक पुरानी तौल।

वट-गमनी—स्त्री० [हि० बाट=मार्ग+गमन चलना] एक प्रकार का मैथिली लोक गीत जो उत्सवो, मेलो आदि मे तथा वर्षा-ऋतु मे स्त्रियाँ गाती है। इसके प्रत्येक चरण के अत मे 'सजनी' शब्द आता है, इसी लिए इसे 'सजनी' भी कहते है।

वट-पत्रा—स्त्री०[स० ब० स०] एक तरह की चमेली।

वट-पत्री—स्त्री०[स० ब०स०] पत्थरफोड नामक वनस्पति।

वटर—पु०[स० वट+अरन्] १ चोर। २ बटेर पक्षी। ३ विस्तर। बिछौना। ४. उष्णीप। पगडी। ५. मथानी।

वट-सावित्री व्रत—पु०[स० मध्य० स०] सौभाग्यवती स्त्रियो का एक त्योहार जो जेठ बदी अमावस को होता है। इसमें सौभाग्य स्थिर रखने की कामना से वट और सावित्री का पूजन किया जाता है।

वटिक—पु०[स०√वट्+इन्+कन्] शतरज का मोहरा।

वटिका—स्त्री० [स०√वटिक+टाप्] गोली, टिकिया या बटी।

वटु—पु०[स०√वट+उ] १. बालक। २. ब्रह्मचारी।

वटुक—पु०[स०वटु+कन्]१ बालक। २ ब्रह्मचारी का एक विशिष्ट रूप।

वटोदका—स्त्री०[स० वट-उदक, ब०स०+टाप्] एक पवित्र नदी। (भागवत)

वठर—पुं०[स०√वठ् (दृढ होना) अरन्]१. अवष्ट नामक जाति। २. शब्द गढने या बनानेवाला पडित। ३. चिकित्सक।
वि०१ मूर्ख। २ शरारती। शठ। ३. धीमा। मन्द।

वड़वा—स्त्री०[सं० बडवा=बल √ वा (गति)+क+टाप्, लस्य ड] १. घोडी। २ दासी। ३ वेश्या। ४. अश्विनी नक्षत्र। ५. ब्राह्मण जाति की स्त्री।

वडिश—पु०[स० बडिश=बलिन्√शो (नष्ट करना)+क, लस्य ड]१ बसी, जिसमे मछली फँसाई जाती है। कटिया। २ वैद्यक मे एक प्रकार का नश्तर।

वण—पु०=वन (जगल)।

वणिक्(ज्)—पु०[स०√पण् (व्यवहार करना)+इजि, पस्य व.]१ वाणिज्य या व्यवसाय से जीविका उपार्जित करनेवाला। २ वैश्य।

वणिकवाद—पु० दे० 'वाणिज्यवाद'।

वणिक्-सार्थ—पुं०[स० प० त०] व्यापारियो का जत्था जो व्यापार के उद्देश्य से कही जा रहा हो।

वणिज्य—पु०[स० वणिज्+यत्] वाणिज्य।

वत्—अव्य०[स० व्याकरण का एक प्रत्यय] एक प्रत्यय जो शब्दो के अत

मे लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) तुल्य, समान। जैसे—चद्रवत्। (ख) के अनुसार, जैसे—विधिवत्।

वतंस—पु०[स० अव√ तस् (अलकृत करना) घञ्, अव के अकार का लोप]=अवतस।

वत—अव्य०[सं०√वन् (सम्यक् भक्ति करना]+क्त, नलोप] १. खेद। २. अनुकम्पा। ३ सतोष। ४ विस्मय आदि का बोधक शब्द।

वतन—पु०[अ०]१. जन्मभूमि। मूल वासस्थान। ३. स्वदेश।

वतनी—वि०[अ०]१. वतन सबधी। २. एक ही वतन मे होनेवाला। ३. स्वदेशी।

पु० किसी की दृष्टि से उसी के देश का दूसरा निवासी।

वतीतना†—अ०[स० व्यतीत+हि० ना (प्रत्य०)] बीतना। गुजरना। उदा०—अवधि वतीती अजूँ न आये।—मीराँ।

स० विताना। गुजारना।

वतीरा—पु०[अ० वतीर]१. ढग। रीति। प्रथा। २. चाल-ढाल। ३. टेव। लत।

वतोका—स्त्री०[स० अव-तोक, व० स०, अव के अकार का लोप, टाप्] जिसका गर्भ नष्ट हो गया हो।

स्त्री० बाँझ स्त्री।

वत्स—पु०[स० √ वद् (बोलना)+स] १. गाय का बच्चा। बछडा। २. छोटा बच्चा। शिशु। ३ कस का एक अनुचर। ४. इन्द्र जौ। ५. छाती। उर। ६ एक प्राचीन देश।

वत्सक—पु०[स० वत्स+कन्][स्त्री० अल्पा० वत्सिका]१. पुष्प कसीस। २. इन्द्र जौ। ३ कुटज। निर्गुडी।

वत्सतर—पु०[स० वत्स+तरप्] [स्त्री० वत्सतरी] ऐसा जवान बछडा जो जोता न गया हो। दोहान।

वत्सतरी—स्त्री० [स० वत्सतर+ङीष्] ऐसी बछिया जो तीन वर्ष या उससे कम की हो।

वत्सनाभ—पु० [स० वत्स√नभ् (हिंसा)+अण्] एक प्रकार का जहरीला पौधा। बछनाग।

वत्सर—पु० [स०√वस् (निवास करना)+सरन्, सस्य त] बारह महीनो का समय। वर्ष। साल।

वत्सल—वि०[स० वत्स+लच्] बच्चो, विशेषत अपने बच्चे से अनुराग रखनेवाला। बच्चो से स्नेह करनेवाला।

पु० वात्सल्य रस।

वत्सासुर—पु० [स० वत्स-असुर, मध्य० स०] एक असुर जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था।

वत्सिमा (मन्)—स्त्री०[स० वत्स+इमनिच्] बचपन। बाल्यावस्था।

वत्सी (त्सिन्)—वि०[स० वत्स+इनि] जिसके बहुत से बच्चे हो।

पु० विष्णु।

वत्सीय—वि०[स० वत्स+छ—ईय] वत्स-सबधी।

पु० अहीर। ग्वाला।

वथ्या†—स्त्री०=वस्तु (चीज)।

वदती—स्त्री०[स०√वद् (कहना)+झि—अन्त+ङीप्] कही हुई बात। कथन।

वद—वि०[स० पूर्वपद के साथ आने पर] बोलनेवाला। (समासांत) जैसे—प्रियवद।

वदतोव्याघात—पु० [स० अलुक्] तर्क मे कथन-सबधी एक दोष, जो वहाँ माना जाता है जहाँ पहले कोई बात कह कर फिर ऐसी बात कही जाती है जो उस पहली बात के विरुद्ध होती है।

वदन—पु०[स०√ वद्(कहना)+ल्युट्—अन] १. कोई बात कहने की क्रिया या भाव। कहना। बोलना। २. मुँह। मुख। ३. किसी चीज के आगे या सामने का भाग।

वदर—पु०=वदर (बेर)।

वदान्य—वि०[स०]१. वाग्मी। २ बात से सतुष्ट करनेवाला।

वदाल—पु० [स० √वद्+क घञर्थे=वद√ अल् (पूर्ण होना)+अच्] १. पाठीन मत्स्य। पहिना मछली। २ आवर्त। भँवर।

वदि—अव्य०[स० √वद्+इन्] चाद्र मास के कृष्ण पक्ष मे। वदी मे। पु० कृष्ण पक्ष।

वदितव्य—वि०[स०√ वद् (कहना)+तव्य] कहे जाने के योग्य। जो कहा जा सके।

वदी—पु० दे० 'वदि' (कृष्ण पक्ष)।

वदीतना†—अ०, स०=वतीतना।

वदूसना—स०[स० विदूषण]१. दोष मढना। २ आरोप करना। ३ भला-बुरा कहना। खरी-खोटी सुनाना।

वद्य—वि०[स०√वद्+यत्]१ कहने योग्य। २. अनिंद्य।

पु०१. कथन। बात। २ कृष्णपक्ष। वदी।

वध—पु०[स० √ हन् (हिंसा)+अप्, वधादेश]१. अस्त्र-शस्त्र से की जानेवाली हत्या। २ पशुओ की हत्या करना। ३ जान-बूझकर तथा किसी उद्देश्य से की जानेवाली किसी की हत्या।

वधक—पु०[स०√ हन्+क्वुन्—अक, वधादेश]१. घातक। हिंसक। २. व्याध। ३ मृत्यु। ४ दे० 'वधक'।

वि० वध करनेवाला।

वधजीवी (विन्)—पु०[स० वध√जीव् (जीना)+ णिनि] वह जो औरो का वध करके जीविका निर्वाह करता हो।

वधत्र—पु०[स० हन्+अत्रन्, वधादेश] वध करने का उपकरण। अस्त्र-शस्त्र।

वधना—अ०[सं० वर्द्धन] बढना। उन्नति करना।

स०[सं० वध] अस्त्र आदि की सहायता मे किसी को जान से मार डालना।

वध-भूमि—स्त्री०[सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ मनुष्यो, पशुओ आदि का वध किया जाता हो।

वधामण*—पु०=वधावा।

वधालय—पु०[स० वध-आलय, ष० त०] वह स्थान जहाँ पर माम प्राप्त करने के उद्देश्य से पशुओ का वध किया जाता है। बूचडखाना। (स्लाटर हाउस)

वधिक†—वि०=वधिक।

वधित्र—पु०[स० √हन्+इत्र, वधादेश]१ कामदेव। २. कामामवित।

वधिर—वि०[सं० वधिर] वहरा।

वधु—स्त्री०=वधू।

वधुका—स्त्री०[स० वधू+कन्+टाप्, ह्रस्व] वधू।

वधू—स्त्री०[सं०√वह् (पहुँचाना)+ऊ, ह्रस्व व.] १. ऐसी कन्या जिसका विवाह हो रहा हो अथवा हाल मे हुआ हो । दुल्हन। २ पत्नी।

वधूटी—स्त्री०[सं० वधू+टि+ङीप्]१. पुत्रवधू। २ नवयुवती।

वधूत—पु०=अवधूत (सन्यासी)।

वध्य—वि०[सं० वध्+यत्] जिसका वध होने को हो अथवा किया जाना उचित या शास्त्र-सम्मत हो।

पु०वह जिसका वध किया जाना चाहिए।

वन—पु०[सं० √वन् (सेवा)+घ]१ ऐसा स्थान जहाँ बहुत दूर तक हर जगह पेड ही पेड हो। जगल । वन। २ बगीचा। वाटिका। ३. फूलो का गुच्छा। ४ जल। पानी। ५ घर। मकान। ६ किरण। रश्मि। ७ चमसा नामक यज्ञपात्र। ८. दशनामी संन्यासियो का एक वर्ग।

वन-कुडल—पु०[सं० प० त०] अच्छी जाति का सूरन या जिमीकद।

वन-कटाई—स्त्री० [सं०+हिं०] किसी क्षेत्र को जगल से रहित कर देना। (डिफारेस्टेशन)

वन-काम—वि०[सं०वन√ कम् (चाहना)+णिङ+अण्] जगल मे रहनेवाला।

वनग—पु०[वन√ गम् (जाना)+ड] वनवासी।

वि० वन की ओर जानेवाला।

वन-गमन—पु०[सं० स० त०]१. वन की ओर जाना। २. संन्यास ग्रहण करना।

वन-गोचर—वि०[ब० स०]१ प्राय: वन मे जानेवाला। २. जल मे रहनेवाला।

पुं० १ व्याध। २. वनवासी। ३ जगल।

वन-चदन—पु०[सं० मध्य० स०]१. अगरु। अगर। २ देवदार।

वन-चद्रिका—स्त्री०[सं० स० त०] मल्लिका।

वनचर—पु० [सं० वन√चर् (चलना)+ट]१. वन मे भ्रमण करनेवाला या रहनेवाला। २. जगली जीव या प्राणी। ३ शरभ नामक जतु।

वनज—वि०[सं० वन√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो वन (जंगल या पानी) मे उत्पन्न हो।

पु०१ कमल। २ मोथा। ३ तुबुरु का फल। ४. वनकुलथी। ५ जगली बिजौरा नीबू।

वनजा—स्त्री०[सं० वनज+टाप्]१. मुद्गपर्णी। २. निर्गुंडी। ३ सफेद कंटियारी। ४ वन-तुलसी। ५ असगंध। ६. वन-कपास।

वनजीवी (विन्)—पु०[सं० वन√जीव् (जीना)+णिनि] १. लकडहारा। २ बहेलिया।

वन-ज्योत्स्ना—स्त्री० [सं० प० त०] एक प्रकार की चमेली।

वनद—पु०[सं० वन√दा (देना)+क]मेघ। बादल।

वन-देव—पु० [प० त०] वन का अधिष्ठाता देवता।

वन-देवी—स्त्री०[प० त०] वन की अधिष्ठात्री देवी।

वन-नाश—पु०[प० त०] वनाच्छादित प्रदेशो के वृक्ष काटकर उसे साफ करना।

वन-नाशन—पु०[प० त०] दे० 'वनकटाई'।

वन-पाल—पु० [सं० वन √पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] वह अधिकारी जो वनो की रक्षा और वृद्धि के लिए नियुक्त रहता है। राजिक। (फॉरेस्ट रेजर)

वन-पिप्पली—स्त्री०[सं० मध्य० स०] छोटी पीपल।

वन-प्रिय—पु०[ब० स०] १ कोकिल। २ साँभर हिरन। ३. कपूर कचरी। ४. बहेडे का पेड।

वन-मल्लिका—स्त्री० [प० त०] सेवती का पौधा या फूल।

वन-महोत्सव—पु० [प० त०] स्वतन्त्र भारत मे वर्षा ऋतु मे वनो का विस्तार करने के उद्देश्य से होनेवाला कार्यक्रम जिसमें वृक्ष लगाये जाते हैं।

वन-माला—स्त्री०[मध्य० स०]१. जगली फूलो की माला। २. विशेषत. कुंद, कमल, मदार और तुलसी की बनी हुई तथा पैरो तक लटकनेवाली लबी माला।

वनमाली (लिन्)—वि०[सं० वनमाला+इनि] वनमाला धारण करनेवाला।

पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।

वन-रक्षक—पु०[प० त०] वन की देख-भाल करनेवाला अधिकारी।

वनराज—पु० [प० त०, समासान्त टच् प्रत्यय] १. सिंह। २ अश्मतक नामक वृक्ष।

वन-राजि, वन-राजी—स्त्री० [प० त०] १. वन की श्रेणी। वनसमूह। वृक्षसमूह। २ जंगल मे की पगडंडी।

वन-रोपण—पु०[सं० प० त०] खुले मैदान मे, अर्थात् जहाँ पहले से पेड़-पौधे न हो, वहाँ नये सिरे से पेड़-पौधे लगाकर वन या उपवन तैयार करने की क्रिया। वनाच्छादन। (एफारेस्टेशन)

वन-लक्ष्मी—स्त्री०[सं० प० त०]१. वन की शोभा। २. केला।

वनवास—पु०[सं० स० त०] वन का निवास। जगल मे रहना।

मुहा०—(किसी को) वनवास देना=बस्ती छोड़कर जगल मे जाकर रहने की आज्ञा देना।

वनवासक—पु० [सं० प० त०] १. शाल्मली कद। २. एक प्राचीन नगर।

वनवासी (सिन्)—वि०[सं०वन√वस् (बसना)+णिनि] [स्त्री० वनवासिनी] १. वन मे रहनेवाला। २ बस्ती छोडकर जगल मे जाकर वास करनेवाला।

पु०१. ऋषभ नामक ओषधि। २. वराही कद। ३. नील महिष नामक कंद। ४. डोम कौआ। ५. दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जहाँ कादम्ब राजाओ की राजधानी थी।

वन-वृत्ति—स्त्री०[सं०]१. जगल मे जाकर जीविका उपार्जित करना। २. वन्य फल खाकर अथवा वन्य वस्तुएं बेचकर जीविका चलाना।

वन-शूकर—पु०[सं० प०त०] जगली सूअर जो बहुत ही बलवान, भीषण तथा हिंसक होता है।

वन-संस्कृति—स्त्री०[सं०] आदि काल की वह सस्कृति जिसका विकास उस समय हुआ था जब लोग वनो मे ही रहते थे, फल-मूल खाकर अथवा पशुओ का शिकार करके और खालें, छालें आदि ओढ-पहनकर रहते थे। (फारेस्ट कल्चर)

वनस्थ—वि० [सं० वन√स्था (ठहरना)+क] १. वन मे रहनेवाला। २. वह जिसने वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर लिया हो। ३. जगली जानवर।

वनस्थली—स्त्री०[स० ष० त०] वनो से घिरा हुआ प्रदेश।

वनस्या—स्त्री०[स० वनस्थ+टाप्] अश्वत्थ। पीपल।

वनस्पति—स्त्री०[स० वन-पति, ष० त०, सुट आगम] जमीन से उगनेवाले पेड, पौधे, लताएँ आदि।

वनस्पति घी—पु० [स०+हिं०] आज-कल घी की तरह का वह चिकना पदार्थ जो नारियल, मूँगफली आदि के तेल साफ करके बनाया जाता है और प्राय. तरकारियाँ, पकवान आदि बनाने के लिए घी के स्थान पर काम मे लाया है।

वनस्पति विज्ञान—पु० [स० ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे वनस्पतियो के उद्भव, रचना, आकार-प्रकार, विकार आदि का विवेचन होता है। (बोटैनी)

वनहास—पु०[स० ष० त०]१. काश। काँस। २ कुद का पौधा और फूल।

वनाच्छादन—पु०[स० वन-आच्छादन, ष० त०] वनरोपण।

वनात—पु० [स० वन-अत, ष० त०] जगली भूमि या मैदान।

वनाग्नि—स्त्री० [स० वन-अग्नि, ष० त०] वन मे लगनेवाली आग। दावानल।

वनायु—पु० [स०√वन्+आयुच्]१. अच्छे घोडो के लिए प्रसिद्ध एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी। ३ पुरुरवा का एक पुत्र।

वनायुज—पु०[स० वनायु√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] वनायु देश का घोड़ा।

वनाश—वि०[स० वन√अश् (खाना)+अण्]१ जल पीनेवाला। २ केवल जल पीकर रहनेवाला।

पु० एक तरह का छोटा जौ।

वनि—पु०[स०√ वन्+इ]१. अग्नि। २ ढेर। ३ याचना।४ इच्छा।

वनिका—स्त्री०[स०√वनी+कन्+टाप्, ह्रस्व] छोटा वन। उपवन।

वनित—भू० कृ० [स० वन् (माँगना)+क्त] १ याचित। २ अभिलषित। ३. पूजित।

वनिता—स्त्री०[स० वनित+टाप्] १. अनुरक्त स्त्री। प्रिया। प्रियतमा। २ औरत। स्त्री। ३ छ वर्णो की एक वृत्ति जिसे 'तिलका' और 'डिल्ला' भी कहते है। इसमे दो सगण होते है।

वनिता-मुख—पु०[स० ब० स०] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार मनुष्यो की एक जाति।

वनी—स्त्री० [स० वन+ङीप्] छोटा वन। वनस्थली।

वनीकृत—भू० कृ० [स० वन+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] (स्थान) जिसमे बहुत से पेड लगाये गए हो। जो जगल के रूप मे लाया गया हो।

वने किंशुक—पु० [स० स० त०] ऐसी चीज जो वैसे ही बिना माँगे मिले, जैसे वन मे किंशुक बिना माँगे या बिना प्रयास किए मिलता है।

वनेचर—वि०[स० वने√चर (गति)+ट, अलुक् स०]=वनचर।

पु० १. जगली आदमी। २ संन्यासी। ३ वन्य पशु।

वनेज्य—पुं०[स० वन-इज्य, स० त०] १ आम। २ पर्पट। पापडा।

वनोत्सर्ग—पु०[स० वन-उत्सर्ग, प० त०]१ देवमदिर, वापी, कूप, उपवन आदि का शास्त्रविधि से किया जानेवाला उत्सर्ग। मंदिर, कूआँ आदि बनवाकर सर्वसाधारण के लिए दान करना। २ उक्त प्रकार के उत्सर्ग की शास्त्रीय विधि।

वनौकस्—वि०[स० वन-ओकस्, ब० स०] जिसका घर वन मे हो। वनवासी।

पु०१. तपस्वी। २. जगली जानवर।

वनौषधि—स्त्री०[स० वन-ओषधि, मध्य० स०] जगल मे पैदा होनेवाली जडी-बूटी।

वन्नरवाल—स्त्री० [सं० वदन+माला] वदनवार। उदा०—वन्नरवाल बधार्णा वल्ली।—प्रिथिराज।

वन्य—वि०[स० वन+यत्] १ वन मे उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २ जगल मे रहनेवाला। जगली। जैसे—वन्य जातियाँ। ३ जो सभ्य या शिष्ट न हो, बल्कि जिसकी प्रवृत्तियाँ बर्बर हों।

पु० १ जगली सूरन। २ क्षीरविदारी। ३ वाराही कन्द। ४ राख।

वन्या—स्त्री०[स० वन+य, टाप्] १. मुद्गपर्णी। २ गोपाल ककडी। ३ गुजा। घुंघची। ४. असगध।

वपन—पु० [स०√ वप् (बोना, काटना)+ल्युट्—अन][वि० वपनीय, भू० कृ० वपित] १. बीज बोना। २ सिर मूँडना। ३ नाई की दूकान। ४ कपड़ा बुनना। ५ करघा। ६ शुक्र।

वपनी—स्त्री० [स० वपन+ङीप्]१ वह स्थान जहाँ नाई क्षौर-कार्य करते हैं। २. हजामत बनाने या बनवाने का स्थान ३ जुलाहो के कपडा बुनने का स्थान।

वपनीय—वि०[स० √वप्+अनीयर्] [भू० कृ०-वपित] १. जो वपने के योग्य हो। २. बोये जाने के योग्य।

वपा—स्त्री०[स० √वप्+अङ्+टाप्]१ चरबी। मेद। २ वल्मीक। बाँबी।

वपु (स्)—पु० [स० √वप्+उस्]१ शरीर। देह। २ रूप।

वपुमान—वि० [स० वपुष्मान्]१ सुन्दर और पुष्ट देहवाला। २. सुन्दर। ३ मूर्त। साकार।

वपुष्टमा—स्त्री० [स० वपुष्+तमप्+टाप्] १.पद्मचारिणी लता। २ पुराणानुसार काशीराज की एक कन्या जो परीक्षित के पुत्र जनमेजय को ब्याही थी।

वपोदर—वि०[स० वपा—उदर, ब० स०] बडी तोंदवाला।

वप्ता (प्तृ)—पु० [स०√वप् +तृच्] १. पिता। जनक। २. नाई। नापित। ३. बीज बोनेवाला। ४. रवि।

वप्र—पु०[स०√वप्+रन्]१.मिट्टी का वह ऊँचा धुस्सा जो गढ या नगर की खाईं से निकली हुई मिट्टी के ढेर से चारो ओर उठाया जाता है और जिसके ऊपर प्राकार या दीवार होती है। २. वह ढालुई वास्तु-रचना जो मकान की कुरसी की रक्षा के लिए छोटी दीवार के रूप मे बनाई जाती है। ३ नदी का किनारा। ४ खेत। ५ धूल। रेणु। ६ पहाड की चोटी या पहाड के ऊपर की समतल भूमि। ७ टीला। भीटा। ८ प्रजापति। ९ द्वापर युग के एक व्यास।

वप्रक—पु०[स० वप्र+कन्]१ वृत्त की परिधि। गोलाई का घेरा। २. चक्कर।

वप्र क्रिया—स्त्री०[स० ष० त०] वप्र-क्रीडा।

वप्र-क्रीडा—स्त्री०[स० ष० त०] पशुओं का अपने दाँतों, नाखूनों, सींगो आदि से जमीन या टीले की मिट्टी कुरेदना।

वधू—स्त्री०[स० √वह् (पहुँचाना)+ऊ, ह्रस्य धः] १. ऐसी कन्या जिसका विवाह हो रहा हो अथवा हाल मे हुआ हो । दुलहन। २. पत्नी।
वधूटी—स्त्री०[स० वधू+टि+ङीप्]१. पुत्रवधू। २. नवयुवती।
वधूत—पु०=अवधूत (सन्यासी)।
वध्य—वि०[स० वध्+यत्] जिसका वध होने को हो अथवा किया जाना उचित या शास्त्र-सम्मत हो।
पु०वह जिसका वध किया जाना चाहिए।
वन—पु०[स० √वन्(सेवा)+घ]१ ऐसा स्थान जहाँ बहुत दूर तक हर जगह पेड ही पेड हो। जगल । वन। २ बगीचा। वाटिका। ३ फूलो का गुच्छा। ४ जल।पानी। ५ घर। मकान। ६ किरण। रश्मि। ७ चमसा नामक यज्ञपात्र। ८ दशनामी सन्यासियो का एक वर्ग।
वन-कुडल—पु०[स० प० त०] अच्छी जाति का सूरन या जिमीकद।
वन-कटाई—स्त्री० [स०+हि०] किसी क्षेत्र को जगल से रहित कर देना। (डिफारेस्टेशन)
वन-काम—वि०[स०वन√ कम् (चाहना)+णिङ+अण्] जगल मे रहनेवाला।
वनग—पु०[वन√ गम् (जाना)+ड] वनवासी।
वि० वन की ओर जानेवाला।
वन-गमन—पु०[स० स० त०] १ वन की ओर जाना। २. संन्यास ग्रहण करना।
वन-गोचर—वि०[ब० स०]१ प्राय: वन मे जानेवाला। २. जल मे रहनेवाला।
पु० १. व्याध। २. वनवासी। ३ जगल।
वन-चदन—पु०[स० मध्य० स०]१ अगरु। अगर। २. देवदार।
वन-चंद्रिका—स्त्री०[सं० स० त०] मल्लिका।
वनचर—पु० [स० वन√चर् (चलना)+ट]१. वन मे भ्रमण करनेवाला या रहनेवाला। २ जगली जीव या प्राणी। ३. शरभ नामक जतु।
वनज—वि०[स० वन√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो वन (जगल या पानी) मे उत्पन्न हो।
पु०१. कमल। २ मोथा। ३. तुबुरु का फल। ४. वनकुलथी। ५ जगली बिजौरा नीबू।
वनजा—स्त्री०[स० वनज+टाप्]१ मुद्गपर्णी। २. निर्गुडी। ३. सफेद कँटियारी। ४ वन-तुलसी। ५ असगध। ६ वन-कपास।
वनजीवी (विन्)—पु०[स० वन√जीव् (जीना)+णिनि] १. लकडहारा। २ बहेलिया।
वन-ज्योत्स्ना—स्त्री० [स० प० त०] एक प्रकार की चमेली।
वनद—पु०[स० वन√दा (देना)+क]मेघ।.बादल।
वन-देव—पु० [प० त०] वन का अधिष्ठाता देवता।
वन-देवी—स्त्री०[प० त०] वन की अधिष्ठात्री देवी।
वन-नाश—पु०[प० त०] वनाच्छादित प्रदेशो के वृक्ष काटकर उसे साफ करना।
वन-नाशन—पु०[प० त०] दे० 'वनकटाई'।
वन-पाल—पु० [स० वन √पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] वह अधिकारी जो वनो की रक्षा और वृद्धि के लिए नियुक्त रहता है। राजिक। (फरिस्ट रेंजर)
वन-पिप्पली—स्त्री०[स० मध्य० स०] छोटी पीपल।
वन-प्रिय—पु०[ब० स०] १ कोकिल। २. सांभर हिरन। ३. कपूर कचरी। ४ बहेडे का पेड।
वन-मल्लिका—स्त्री० [प० त०] सेवती का पौधा या फूल।
वन-महोत्सव—पु० [प० त०] स्वतन्त्र भारत मे वर्षा ऋतु मे वनो का विस्तार करने के उद्देश्य से होनेवाला कार्यक्रम जिसमें वृक्ष लगाये जाते हैं।
वन-माला—स्त्री०[मध्य० स०]१ जगली फूलो की माला। २. विशेपत कुद, कमल, मदार और तुलसी की बनी हुई तथा पैरो तक लटकनेवाली लबी माला।
वनमाली (लिन्)—वि०[स० वनमाला+इनि] वनमाला धारण करनेवाला।
पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।
वन-रक्षक—पु०[प० त०] वन की देख-भाल करनेवाला अधिकारी।
वनराज—पु० [प० त०, समासान्त टच् प्रत्यय] १. सिंह। २ अश्मतक नामक वृक्ष।
वन-राजि, वन-राजी—स्त्री० [प० त०] १. वन की श्रेणी। वनसमूह। वृक्षसमूह। २. जंगल मे की पगडडी।
वन-रोपण—पु०[स० प० त०] खुले मैदान मे, अर्थात् जहाँ पहले से पेड-पौधे न हो, वहाँ नये सिरे से पेड-पौधे लगाकर वन या उपवन तैयार करने की क्रिया। वनाच्छादन। (एफारेस्टेशन)
वन-लक्ष्मी—स्त्री०[स० प० त०]१ वन की शोभा। २ केला।
वनवास—पु०[स० स० त०] वन का निवास। जगल मे रहना।
मुहा०—(किसी को) वनवास देना=बस्ती छोड़कर जगल मे जाकर रहने की आज्ञा देना।
वनवासक—पु० [स०प०त०] १. शाल्मली कद। २ एक प्राचीन नगर।
वनवासी (सिन्)—वि०[स०वन√वस् (बसना)+णिनि] [स्त्री० वनवासिनी] १. वन मे रहनेवाला। २ बस्ती छोडकर जगल मे जाकर वास करनेवाला।
पु०१. ऋपभ नामक ओपधि। २ वराही कद। ३. नील महिप नामक कद। ४. डोम कौआ। ५. दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जहाँ कादम्ब राजाओं की राजधानी थी।
वन-वृत्ति—स्त्री०[स०]१ जगल मे जाकर जीविका उपार्जित करना। २. वन्य फल खाकर अथवा वन्य वस्तुएँ बेचकर जीविका चलाना।
वन-शूकर—पु०[सं० प०त०] जगली सूअर जो बहुत ही बलवान, भीषण तथा हिंसक होता है।
वन-संस्कृति—स्त्री०[स०] आदि काल की वह संस्कृति जिसका विकास उस समय हुआ था जब लोग वनो मे ही रहते थे, फल-मूल खाकर अथवा पशुओ का शिकार करके और खालें, छाले आदि ओढ-पहनकर रहते थे। (फारेस्ट कल्चर)
वनस्थ—वि० [स० वन√स्था (ठहरना)+क] १. वन मे रहनेवाला। २ वह जिसने वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर लिया हो। ३ जगली जानवर।

वनस्थली—स्त्री०[स० ष० त०] वनों से घिरा हुआ प्रदेश।
वनस्था—स्त्री०[स० वनस्थ+टाप्] अश्वत्थ। पीपल।
वनस्पति—स्त्री०[स० वन-पति, ष० त०, सुट् आगम] जमीन से उगनेवाले पेड़, पौधे, लताएँ आदि।
वनस्पति घी—पु० [स०+हिं०] आज-कल घी की तरह का वह चिकना पदार्थ जो नारियल, मूँगफली आदि के तेल साफ करके बनाया जाता है और प्राय तरकारियाँ, पकवान आदि बनाने के लिए घी के स्थान पर काम मे लाया है।
वनस्पति विज्ञान—पु० [स० ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे वनस्पतियो के उद्भव, रचना, आकार-प्रकार, विकार आदि का विवेचन होता है। (बोटैनी)
वनहास—पु०[स० ष० त०]१. काश। काँस। २ कुद का पौधा और फूल।
वनाच्छादन—पु०[स० वन-आच्छादन, ष० त०] वनरोपण।
वनांत—पु० [स० वन-अत, ष० त०] जगली भूमि या मैदान।
वनाग्नि—स्त्री० [स० वन-अग्नि, ष० त०] वन मे लगनेवाली आग। दावानल।
वनायु—पु० [स०√वन्+आयुच्]१. अच्छे घोडो के लिए प्रसिद्ध एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी। ३ पुरुरवा का एक पुत्र।
वनायुज—पु०[स० वनायु√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] वनायु देश का घोडा।
वनाश—वि०[स० वन√अश् (खाना)+अण्]१ जल पीनेवाला। २ केवल जल पीकर रहनेवाला।
पु० एक तरह का छोटा जौ।
वनि—पु०[स०√ वन्+इ]१. अग्नि। २ ढेर। ३. याचना।४ इच्छा।
वनिका—स्त्री०[स०√वनी+कन्+टाप्, ह्रस्व] छोटा वन। उपवन।
वनित—भू० कृ० [स० वन् (माँगना)+क्त] १ याचित। २ अभिलषित। ३. पूजित।
वनिता—स्त्री०[स० वनित+टाप्] १ अनुरक्त स्त्री। प्रिया। प्रियतमा। २ औरत। स्त्री। ३ छ वर्णों की एक वृत्ति जिसे 'तिलका' और 'डिल्ला' भी कहते है। इसमे दो सगण होते है।
वनिता-मुख—पुं०[स० ब० स०] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार मनुष्यो की एक जाति।
वनी—स्त्री० [स० वन+ङीष्] छोटा वन। वनस्थली।
वनीकृत—भू०कृ० [स० वन+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] (स्थान) जिसमे बहुत से पेड लगाये गए हो। जो जगल के रूप मे लाया गया हो।
वने किंशुक—पु० [स० स० त०] ऐसी चीज जो वैसे ही बिना माँगे मिलें, जैसे वन मे किंशुक बिना माँगे या बिना प्रयास किए मिलता है।
वनेचर—वि०[स० वने√चर् (गति)+ट, अलुक् स०]=वनचर।
पु० १. जगली आदमी। २ सन्यासी। ३ वन्य पशु।
वनेज्य—पु०[स० वन-इज्य, स० त०] १ आम। २ पर्पट। पापडा।
वनोत्सर्ग—पु०[स० वन-उत्सर्ग, ष० त०]१. देवमदिर, वापी, कूप, उपवन आदि का शास्त्रविधि से किया जानेवाला उत्सर्ग। मदिर, कूआँ आदि बनवाकर सर्वसाधारण के लिए दान करना। २ उक्त प्रकार के उत्सर्ग की शास्त्रीय विधि।
वनौकस्—वि०[स० वन-ओकस्, ब० स०] जिसका घर वन मे हो। वनवासी।
पु०१ तपस्वी। २ जगली जानवर।
वनौषधि—स्त्री०[स० वन-ओषधि, मध्य० स०] जगल मे पैदा होनेवाली जडी-बूटी।
वन्नरवाल—स्त्री० [स० वंदन+माला] वदनवार। उदा०—वन्नरवाल बवार्णि वल्ली।—प्रिथिराज।
वन्य—वि०[स० वन+यत्] १ वन मे उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २ जगल मे रहनेवाला। जगली। जैसे—वन्य जातियाँ। ३ जो सभ्य या शिष्ट न हो, बल्कि जिसकी प्रवृत्तियाँ बर्बर हों।
पु० १ जगली सूरन। २. क्षीरविदारी। ३ वाराही कन्द। ४ राख।
वन्या—स्त्री०[स० वन+य, टाप्] १ मुद्गपर्णी। २ गोपाल ककडी। ३ गुजा। घुंघची। ४. असगध।
वपन—पु० [स०√ वप् (बोना, काटना)+ल्युट्—अन][वि० वपनीय, भू० कृ० वपित] १. बीज बोना। २ सिर मूँडना। ३ नाई की दूकान। ४ कपडा बुनना। ५ करघा। ६ शुक्र।
वपनी—स्त्री० [स० वपन+ङीप्]१ वह स्थान जहाँ नाई क्षौर-कार्य करते हैं। २ हजामत बनाने या बनवाने का स्थान ३ जुलाहो के कपडा बुनने का स्थान।
वपनीय—वि०[स० √वप्+अनीयर्] [भू० कृ०-वपित] १. जो वपने के योग्य हो। २ बोये जाने के योग्य।
वपा—स्त्री०[स० √वप्+अङ्+टाप्]१ चरबी। मेद। २. वल्मीक। बाँबी।
वपु (स्)—पु० [स० √वप्+उस्]१. शरीर। देह। २. रूप।
वपुमान—वि० [स० वपुष्मान्]१ सुन्दर और पुष्ट देहवाला। २. सुन्दर। ३ मूर्त। साकार।
वपुष्टमा—स्त्री० [स० वपुष्+तमप्+टाप्] १.पद्मचारिणी लता। २ पुराणानुसार काशीराज की एक कन्या जो परीक्षित के पुत्र जनमेजय को ब्याही थी।
वपोदर—वि०[स० वपा—उदर, ब० स०] बडी तोंदवाला।
वप्ता (प्तृ)—पु० [स०√वप् +तृच्] १. पिता। जनक। २ नाई। नापित। ३ बीज बोनेवाला। ४. रवि।
वप्र—पु०[स०√वप्+रन्]१.मिट्टी का वह ऊँचा धुस्सा जो गढ या नगर की खाई से निकली हुई मिट्टी के ढेर से चारो ओर उठाया जाता है और जिसके ऊपर प्राकार या दीवार होती है। २ वह ढालुई वास्तु-रचना जो मकान की कुरसी की रक्षा के लिए छोटी दीवार के रूप मे बनाई जाती है। ३ नदी का किनारा। ४ खेत। ५ धूल। रेणु। ६ पहाड़ की चोटी या पहाड के ऊपर की समतल भूमि। ७ टीला। भीटा। ८ प्रजापति। ९ द्वापर युग के एक व्यास।
वप्रक—पु०[स० वप्र+कन्]१. वृत्त की परिधि। गोलाई का घेरा। २. चक्कर।
वप्र क्रिया—स्त्री०[स० ष० त०] वप्र-क्रीडा।
वप्र-क्रीड़ा—स्त्री०[स० ष० त०] पशुओं का अपने दाँतों, नाखूनों, सींगों आदि से जमीन या टीले की मिट्टी कुरेदना।

वप्रा—स्त्री०[सं० वप्र+टाप्] १ जैनों के इक्कीसवें जिन नेमिनाथ की माता का नाम। २ मजीठ।
वप्रि—पु०[सं० वप्+क्रिन्]१ क्षेत्र। २. समुद्र। ३. स्थान की दुर्गमता।
वफा—स्त्री०[अ०]१. कही हुई बात या दिये हुए वचन को पालना। निर्वाह। २ मेल-जोल, संग-साथ, सद्व्यवहार आदि का किया जानेवाला निर्वाह। ३ निष्ठा।
वफात—स्त्री०[अ०] मृत्यु। मौत।
क्रि० प्र०—पाना।
वफादार—वि०[अ०+फा०] कर्तव्य, वचन, सम्बन्ध आदि का सज्जनता और सत्यतापूर्वक पालन करनेवाला। निष्ठ।
वबा—स्त्री०[अ०] १ महामारी। मरी। २ छुतवाला या संक्रामक रोग।
वबाल—पु० [अ०] १ बोझ। भार। २ बहुत बड़ी विपत्ति या संकट। ३. झगड़े-बखेड़े की बात। झंझट। ४ दैवी प्रकोप। ५ पाप का फल।
मुहा०—(किसी का) वबाल पड़ना=दुखिया की आह पड़ना।
वभ्रु—पु०[सं०√वभ्र(गति)+उ] १ एक प्रकार का सर्प। (सुश्रुत) २. दे०'बभ्रु'।
वमन—पु०[सं०√ वम् (उलटी करना)+ल्युट्—अन्]१ कै करना। उलटी करना। छर्दन। ३ कै किया हुआ पदार्थ। ३ पीड़ा। कष्ट। ४. आहुति।
वमि—स्त्री०[सं०√ वम्+इन्]१. एक रोग जिसमे मनुष्य का जी मिचलाता है और जो कुछ खाया-पीया होता है, वह मुँह के रास्ते निकलकर बाहर आ जाता है। २ अग्नि।
वमित—भू०कृ०[सं०√ वम्+क्त] वमन किया हुआ।
वमी (मिन्)—वि०[सं० वम्+इनि] वमि रोग से ग्रस्त।
स्त्री० [वमि+ङीष्]=वमि।
वम्य—वि०[सं० वम्+यत्] (ओषधि) जिससे वमन कराया जा सके।
वम्री—स्त्री०[सं०√ वम्+र+ङीप्] दीमक।
वम्री-कूट—पु०[सं० ष० त०] वल्मीक। बाँबी।
वय—सर्व०[सं० अस्मद् शब्द का प्रथमा बहु०] हम।
वयःक्रम—पु०[सं० ष० त०] अवस्था। उम्र।
वयः प्रमाण—पु०[सं० ष० त०] जीवन-काल।
वयः सन्धि—स्त्री०[सं० ष० त०] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति। लड़कपन और जवानी के बीच का समय।
वय—स्त्री०[सं० वयस्]१. बीता हुआ जीवन-काल। अवस्था। उम्र। २ बल। शक्ति। ३. चिड़िया। पक्षी। ४ बया पक्षी। ५. जुलाहा।
†स्त्री०=वै (जुलाहों की)।
वयण—पु०=वचन। (राज०)
पु०=वचन।
वयस्—पु०[सं०√अज् (गति)+असुन्, वी आदेश]१ आयु का बीता हुआ भाग। उम्र। वय। २ चिड़िया। पक्षी।
वयस्क—वि०[सं० समस्त पद के अन्त मे] शारीरिक दृष्टि से जिसका विकास पूर्णता पर पहुँच चुका हो अथवा यथेष्टहो चुका हो।
पु० १ विवाह के योग्य युवक या युवती।
विशेष—आज-कल विधिक दृष्टि से युवक १८ वर्षों का और युवती १६ वर्षों की होने पर वयस्क मानी जाती है।
२ २० या २० से अधिक वर्ष की अवस्थावाला व्यक्ति जिसे विधित. निर्वाचन आदि मे मत देने और अपनी सम्पत्ति की व्यवस्था आदि करने का अधिकार प्राप्त होता है।
वयस्क-मताधिकार—पु०[सं०] प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को राजकीय चुनाव आदि मे मत देने का विधि द्वारा प्राप्त अधिकार।
वयस्कृत्—वि०[सं० वयस्√कृ (करना)+क्विप्, तुक् आगम] जीवन अथवा आयु बढ़ानेवाला।
वयस्था—स्त्री० [सं० वयस्√स्था (ठहरना)+क+टाप् विसर्गलोप] १ युवती स्त्री। २ आमलकी। आँवला। ३ हर्रे। ४ गुरूच। ५ छोटी इलायची। ६ काकोली। ७ शाल्मली। सेमल।
वय-स्थान—पु०[सं० ष० त०, विसर्गलोप] यौवन। जवानी।
वयस्य—वि०[सं० वयस्+यत्] जिनका वय या अवस्था समान हो। सम वय वाले। बराबर की उमर के।
पु० मित्र।
वयस्यक—पु० [सं०+वयस्य+कन्] [स्त्री० वयस्यिका] १ सम सामयिक व्यक्ति। २ सखा। मित्र।
वयस्या—स्त्री०[सं० वयस्य+टाप्] १. सखी। २ ईंट।
वयोगत— वि० [सं० वय्-गत, च० त०]=वयस्क।
वयोवृद्ध—वि० [सं० वयस्-वृद्ध,तृ० त०] वह जो वय के विचार से बहुत बड़ा हो। अधिक उमरवाला। वृद्ध।
वरंच—अव्य०[सं० परच] १. उपस्थित, उक्त, वर्णित आदि से भिन्न या विपरीत स्थिति मे। ऐसा नहीं बल्कि ऐसा। २ परन्तु। लेकिन।
वरंड—पु० [सं० √वृ (आच्छादान)+अण्डन्] १. बंसी की डोर। २ समूह। ३ मुहाँसा। ४. घास का गट्ठर। ४. फीलखाने की वह दीवार जो दो लड़ाके हाथियो को लड़ने से रोकने के लिए उनके बीच मे खड़ी की जाती है।
वरंडक—पु०[सं० वरंड+कन्] १ मिट्टी का भीटा। ढूह। २ हाथी का हौदा।
वरंडा—स्त्री०[सं० वरंड+टाप्] १ कटारी। कत्ती। २ वत्ती।
†पु० दे० 'बरामदा'।
वर—वि०[सं०वृ (चुनना आदि)+अप् कर्मणि] १ (समस्त शब्दो के अन्त मे) सबसे बढ़कर उत्तम। श्रेष्ठ। जैसे—पूज्यवर, मान्यवर। २ किसी की तुलना मे अच्छा या बढ़कर। ३ चुने जाने या पसन्द किये जाने के योग्य।
पु० १. बहुत-सी चीजों मे से अच्छी या काम की चीज पसंद करके चुनना। चयन। वरण। २. कोई ऐसी अच्छी चीज या बात जो देवता से प्रसाद के रूप मे माँगी जाय। ३ देवता की कृपा से उक्त प्रकार की इच्छा या याचना की होनेवाली पूर्ति।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना। मिलना।
४ वह जो किसी कन्या के विवाह के लिए उपयुक्त पात्र माना या समझा गया हो। ५ नव-विवाहिता स्त्री का पति। ६ कन्या के विवाह के समय दिया जानेवाला दहेज। ७. जामाता। दामाद।

८. बालक। लडका। ९ दारचीनी। १० अदरक। ११ सुगन्ध तृण। १२ सेंधा नमक। १३. मौलसिरी। १४ हल्दी। १५ गोरा पक्षी।
प्रत्य०[फा०] एक प्रत्यय जो सज्ञाओ के अत मे लगकर 'वाला' या 'से युक्त' का अर्थ देता है। जैसे—किस्मतवर, नामवर।

वरक—पु० [स० वर√कन्] १ कपडा। वस्त्र। २. नाव के ऊपर की छाजन। ३. वन-मूँग। ४ जगली बेर। झडबेरी। ५. प्रियगु। कँगनी।
पु० [अ०] १. पृष्ठ। पन्ना। २ धातु विशेषत. सोने या चाँदी का पतला पत्तर जो मिठाइयो, मुरब्बो आदि पर लगाकर खाया जाता है।

वरक-साज—पु०[अ०+फा०] सोने-चाँदी के पत्तर अर्थात् वरक बनाने वाला।

वरका—पु०[अ० वरक] पुस्तक आदि का पृष्ठ। पन्ना।

वरकी—वि०[अ०] जिसमे कई या वहुत से वरक हो। परतदार।

वर-क्रतु—पु०[स० व० स०] इन्द्र।

वर-चंदन—पु०[स० कर्म० स०] १. काला चंदन। २ देवदार।

वरज—वि०[स० वर√जन् (उत्पत्ति)+ड] उमर या कद मे बडा। ज्येष्ठ।

वरजिश—स्त्री०[फा०] १. कसरत। व्यायाम। २ ऐसा काम जिसमे शारीरिक श्रम अधिक करना पडता हो।

वरजिशी—वि०[फा०] (शरीर) जो व्यायाम से हृष्ट-पुष्ट हुआ हो।

वरट—पु०[स०√वृ+अटन्] [स्त्री० वरटा] १. हस। २ कुन्द का फूल।

वरटा—स्त्री०[स० वरट+टाप्] १ मादा हस। हसी। २ बर्रे नाम का फतिगा। ३. गंधिया कीडी।

वरण—पु०[स०√वृ+ल्युट्-अन] १. अपनी इच्छा या रुचि से किया जाने-वाला चयन। चुनाव। जैसे—उन्होने न जाने क्यो कटकित पथ का वरण किया।—महादेवी वर्मा। २ प्राचीन भारत मे यज्ञ आदि के लिए उपयुक्त ब्राह्मण चुनना और कार्य सौपने से पहले उसका पूजन तथा सत्कार करना। ३ उक्त अवसर पर पुरोहित, ब्राह्मण आदि को दिया जाने-वाला दान। ४. कन्या के विवाह के समय का चुनाव करके विवाह सवध निश्चित करने की क्रिया या कृत्य। ५ अर्चन। पूजन। ६ सत्कार। ७ ढकने-लपेटने आदि की क्रिया। ८ घेरा। ९ पुल। सेतु। १०. वरुण वृक्ष। ११. ऊँट। १२ प्राकार।

वरण-माला—स्त्री०[स० च० त०] जयमाल।

वरणा—स्त्री० [स०] १. वरुणा नदी। २. सिन्धु नद मे मिलनेवाली एक छोटी नदी।

वरणीय—वि०[स०√वृ+अनीयर्] [भाव०वरणीयता, स्त्री० वरणीया] १ वरण किये जाने के योग्य (वर, पात्र आदि)। २ चुनने या सग्रह करने के योग्य। उत्तम। वढिया। ३. पूजनीय। पूज्य।

वर-तिक्त—पु०[स० व० स०] १. कुटज। कोरैया। २ नीम। ३ रोहितक। रोहेडा। ४. पापडा।

वरत्रा—स्त्री० [स०√वृ+अत्रन्+टाप्] १ वरेत। वरेता। २ चमडे का तसमा। ३. हाथी को बाँधकर खीचने का रस्सा।

वर-त्वच—पु०[स० व० स०] नीम का पेड।

वरद—वि० [स० वर√दा(देना) +क] [स्त्री० वरदा] १. वर देनेवाला। २ अभीष्ट सिद्ध करनेवाला।

वर-दक्षिणा—स्त्री०[स० ष० त० या मध्य० स०] वह धन जो वर को विवाह के समय कन्या के पिता से मिलता है। दहेज। दायज।

वरद-मुद्रा—स्त्री०[स० कर्म० स०] दूसरो को यह जतानेवाली शारीरिक मुद्रा कि हम तुम्हे मनचाहा वर देने या तुम्हारी सब कामनाएँ पूरी करने को प्रस्तुत है। (इसमे देने का भाव सूचित करने के लिए हथेली ऊपर या सामने रखकर कुछ नीचे झुकाई जाती है।)

वर-दल—पु०[स० ष० त०] वर के साथ विवाह के लिए जानेवाले लोगो का समूह। वरात।

वरदा—स्त्री० [स० वरद+टाप्] १. कन्या। लडकी। २. असगध। ३. अडहुल।

वरदा चतुर्थी—स्त्री०[स० व्यस्त पद अथवा मध्य० स०] माघ शुक्ल चतुर्थी। वरदा चौथ।

वर-दाता (तृ)—वि० [स० ष० त०] [स्त्री० वरदात्री] वर देनेवाला। वरद।

वर-दान—पु० [स० ष० त०] १ देवता, महापुरुष आदि के द्वारा दिया हुआ वर जिससे अनेक प्रकार के सुख-सुभीते प्राप्त होते हैं और कष्टो, सकटो आदि का निवारण होता है। २ किसी की कृपा या प्रसन्नता से होनेवाली फल-सिद्धि। ३. वह वस्तु जो शुभ फलदायिनी हो। जैसे—उनका शाप मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ।

वरदानी (निन्)—वि० [स० वरदान+इनि] १ वरदान करनेवाला। २ मनोरथ पूर्ण करनेवाला।

वरदी—स्त्री० [अ० वर्दी] किसी विशिष्ट कार्यकर्ता, वर्ग का पहनावा। जैसे—खेलाडियो, चपरासियो, फौजियों या सिपाहियो की वरदी।

वर-द्रुम—पु०[स० कर्म० स०] एक प्रकार का अगर जिसका वृक्ष वहुत वडा होता है।

वरन्—अव्य० [स० परम्] १. ऐसा नहीं। २ इसके विपरीत। वल्कि।

वरना—स० [स० वरण] १. वरण करना। चुनना। २. अविवाहिता स्त्री का किसी को अपने पति के रूप मे चुनना। वरण करना।
पु० ऊँट।
अव्य० [फा० वर्ना] यदि ऐसा न हुआ तो। नही तो।

वर-प्रद—वि० [स० ष० त०] [स्त्री० वरप्रदा] वर देने वाला। वरद।

वर-प्रदान—पु०[स० ष० त०] मनोरथ पूर्ण करना। कोई फल या सिद्धि देना। वर देना। किसी पर प्रसन्न होकर उसका मनोरथ पूरा करने के लिये उसे वर देना। वर-दान।

वर-फल—पु०[स० व० स०] नारिकेल। नारियल।

वरम†—पु०=वर्म।

वर-मेल्हा—पु०[पुर्त०] एक प्रकार का लाल चदन।

वर-यात्रा—स्त्री०[स० ष० त०] १ वर का विवाह के लिए वधू के यहाँ जाना। २ वर के साथ वर-पक्ष के लोगो का कन्या पक्ष के यहाँ विवाह के अवसर पर धूम-धाम से जाना।। वरात।

वरयिता (तृ)—वि० [स०√वर् (चुनना)+णिच्+तृच्] वरण करने-वाला।
पु० स्त्री का पति। स्वामी।

वररुचि—पु०[स०] एक प्रसिद्ध प्राचीन वैयाकरण और कवि।

वरला—स्त्री०[स०√वृ (विभक्त करना)+अलच्+टाप्] हसिनी।

वि० परला (उस पार का)।
वरवराह—पु०[स० कर्म० स०, व्यग्य प्रयोग]=वर्वर।
वरवर्णिनी—स्त्री० [स० वर-वर्ण, कर्म० स०+इनि, शुद्ध रूप वरवर्णी] १ लक्ष्मी। २. सरस्वती। ३ उत्तम स्त्री। ४. लाक्षा। लाख। ५ हलदी। ६. गोरोचन। ७ कगनी नामक गहना।
वरही—पु० [हिं० वर] सोने की एक लबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है। टीका।
†पु०=वर्ही (मोर)।
†स्त्री०=वरही।
वराग—पु०[स० वर-अग, कर्म० स०] १. शरीर का श्रेष्ठ अग अर्थात् सिर। २ [व० स०] विष्णु जिनके सभी अग श्रेष्ठ है। ३ एक प्रकार का नक्षत्र वत्सर जो ३२४ दिनो का होता है। ४. [कर्म० स०] गुदा। ५. भग। योनि। ६ वृक्ष की शाखा। टहनी। ७. [व० स०] दारचीनी। ८. हाथी।
† वि० सुदर अगोवाला।
वरागना—स्त्री०[सं० वरा-अगना, कर्म०स०] सुडौल अगोवाली सुन्दरी। सुन्दर स्त्री।
स्त्री०=वारागना।
वरागी (गिन्)—वि० [स० वराग+इनि शुद्धरूप वराग] [स्त्री० वरागिनी] सुन्दर अगो और शरीरवाला।
पु० १ हाथी। २ अमलवेत।
स्त्री०[स० वराग+ङीप्] १. हल्दी। २ नागदती। ३ मजीठ।
वरा—स्त्री० [स०√वृ (चुनना आदि)+अच्-टाप्] १. चित्रकला। २ हलदी। ३ रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ४ गुडच। ५ मेदा। ६. ब्राह्मी बूटी। ७ व्रिडग। ८ सोमराजी। ९ पाठा। १०. अडहुल। जापा। ११ वैगन। भटा। १२ सफेद अपराजिता। १३. शतमूली। १४ मदिरा। शराव।
वराक—पु० [स० वृ (अलग करना)+पाकन्] १ शिव। २. युद्ध।
वि० १. शोचनीय। २ नीच। ३ अभाग्य। दीन-हीन। वेचारा।
वराट—पु० [स० वर√अट्(जाना)+अण्] १ कौडी। २. रस्सी। ३. कमलगट्टे का वीज।
वराटक—पु० [स० वराट+कन्] १. कौडी। २ रस्सी। ३. पद्मवीज।
वराटिका—स्त्री०[स० वराट+कन्, टाप्, इत्व] १. कौडी। २. तुच्छ वस्तु। ३. नागकेसर।
वरानन—वि० [स० वर-आनन, व० स०] [स्त्री वरानना] सुन्दर मुखवाला।
पु० मुन्दर मुख।
वरान्न—पु०[स० वर-अन्न, कर्म० स०] दला हुआ उत्तम अन्न।
वरायन—पु० [स० वर+आयन] १. विवाह से पहले होनेवाली एक रीति। २ वह गीत जो विवाह के समय वर-पक्ष की स्त्रियाँ गाती है।
वरारोह—पु० [स० वर-आरोह, व० स०] १ विष्णु। २ एक पक्षी।
वि० श्रेष्ठ सवारीवाला।
वरार्ह—वि०[स० वर√अर्ह् (योग्य होना)+अच्] १. जिसके सवध मे वर मिल सके। २. जो वर पाने के लिए उपयुक्त हो। ३ बहुमूल्य।
वराल (क)—पु० [स० वर√अल् (भूषण)+अण्, वराल +कन्=वरालक] लवग। लौग।
वरालिका—स्त्री०[स० वरा-आलिका, व० स०] दुर्गा।
वरासत—स्त्री०[अ० विरासत] १. वारिस होने की अवस्था या भाव। २ वारिस को उत्तराधिकार के रूप मे मिलनेवाली सम्पत्ति।
वरासन—पु०[स० वर-आसन, कर्म० स०] १. श्रेष्ठ आसन। २. विशेषत वह आसन जिस पर विवाह के समय वर वैठता है। ३ अड्हुल। ४ नपसक। ५. दरवान।
वराह—पु०[स० वर(=अभीष्ट)आ√हन् (खोदना)+ड] १ शूकर। सूअर। २. विष्णु के दस अवतारो मे से एक जो शूकर के रूप मे हुआ था। ३ एक प्राचीन पर्वत। ४ शिशुमार या सूस नामक जल-जन्तु ५ वाराही कन्द।
वराहक—पु०[स० वराह+कन्] १ हीरा। २ सूँस।
वराह-कर्णी—स्त्री०[स० ष० त० ङीष्] अश्वगधा लता।
वराह-कल्प—पु० [मध्य० स०] वह काल या कल्प जिसमे विष्णु ने वराह का अवतार लिया था। वाराहकल्प।
वराह-क्राता—स्त्री० [सं० तृ० त०] १. वाराहकल्प। २ लजालू।
वराह-पत्री—स्त्री० [स० व० स०, ङीष्] अश्वगधा।
वराह मिहिर—पु०[स०] ज्योतिष के एक प्रसिद्ध आचार्य जो वृहत्सहिता, पचसिद्धातिका और वृहज्जातक नामक ग्रन्थो के रचयिता थे।
वराह-मुक्ता—स्त्री० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जिसके सवध मे यह माना जाता है कि यह वराह या सूअर के सिर मे रहता है।
वराह-व्यूह—पु०[स० मध्य० स० या उपमि० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना, जिसमे अगला भाग पतला और वीच का भाग चौडा रखा जाता था।
वराह-शिला—स्त्री०[स० मध्य० स०] एक विचित्र और पवित्र शिला जो हिमालय की एक चोटी पर है।
वराह-संहिता—स्त्री० [स० मध्य० स०] वराहमिहिर रचित ज्योतिष का वृहत्सहिता नाम का ग्रन्थ।
वराहिका—स्त्री०[स० वराह+कन्—टाप्, इत्व] कपिकच्छु। केवाँच। कौच।
वराही—स्त्री०[स० वराह+ङीप्] १ वराह की मादा। शूकरी। सूअरी। २. [वराह+अच्+ङीष्] वाराही कद। ३. नागर मोथा। ४ असगध। ५ गौरैया की तरह का काले रग का एक पक्षी। ६ दे० 'वाराही'।
वरि—स्त्री०[स० वर=पति] पत्नी। (राज०) उदा०—वर मदा सइ वद वरि।—प्रिथिराज।
अव्य०[स० उपरि] १. ऊपर। (राज०) उदा०—वले वाढ दे सिली वरि।—प्रिथिराज। २ भाँति। तरह। उदा०—वेस सधि सुहिणा सुवरि।—प्रिथिराज।
वरियाम—वि०[स० वरीयस्] उत्तम। श्रेष्ठ। उदा०—पतो माल गढ़ पुरुपरा, वणिया भुज वरियाम।—वाँकीदास।
वरिशी—स्त्री० [स० वडिश] मछली फँसानेवाली कँटिया। वसी।

वरिष्ठ—वि० [सं० वर+इष्ठन्] १ श्रेष्ठ तथा पूज्य। २ सबसे बड़ा तथा बढ़कर। 'कनिष्ठ' का विपर्याय। (सुपीरियर)
पुं० [सं०] १. धर्म सावर्णि मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक। २. उरुतमस् ऋषि का एक नाम। ३. ताँबा। ४ मिर्च। ५ तीतर पक्षी।

वरिष्ठा—स्त्री० [सं० वरिष्ठ+टाप्] १. हलदी। २. अड़हुल। जवा।

वरी—स्त्री० [सं०√वृ (वरण करना)+अच्-ङीप्] १ शतावरी। सतावर। २ सूर्य की पत्नी।
†स्त्री० [सं० वर] विवाह हो चुकने पर वर पक्ष से कन्या को देने के लिए भेजे जानेवाले कपड़े, गहने आदि। (पश्चिम)

वरीय—वि० [सं० वरीयस्] [भाव० वरीयता] १. सब से अच्छा या बढ़िया। २ बहुतों में अच्छा होने के कारण चुने या ग्रहण किया जाने के योग्य। अधिमान्य। (प्रिफरेबुल)
वि० [सं० वर+ईय (प्रत्य०)] वर-सबंधी। वर का।

वरीयता—स्त्री० [सं० वरीयस्ता] १. चयन, चुनाव आदि के समय किसी को औरों की अपेक्षा दिया जानेवाला महत्त्व। २ वह गुण जिसके फलस्वरूप किसी को चयन आदि के समय औरों से अधिक प्रमुखता मिलती है।

वरीयान् (यस्)—वि० [सं० वर+ईयसुन्] १ बड़ा। २ श्रेष्ठ। ३ पूरा जवान। पूर्ण युवा।
पुं० १ फलित ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से अठारहवाँ योग, जिसमें जन्म लेनेवाला मनुष्य दयालु, दाता सत्कर्म करनेवाला और मधुर स्वभाव का समझा जाता है। २ पुलह ऋषि का एक पुत्र।

वरु—अव्य०=बरु(बल्कि)।

वरुट—पुं० [सं०] एक प्राचीन म्लेच्छ जाति।

वरुण—पुं० [सं०√वृ+उनन्] १. एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओं का नाशक और देवताओं का रक्षक कहा गया है। पुराणों में वरुण की गिनती दिक्पालों में की गई है और वह पश्चिम दिशा का अधिपति माना गया है। वरुण का अस्त्र पाश है। २ जल। पानी। ३ सूर्य। ४. हमारे यहाँ सौर जगत् का सबसे दूरस्थ ग्रह। (नेपचून) ५ वरुन का वृक्ष।

वरुणक—पुं० [सं० वरुण+कन्] वरुण या वरुन का वृक्ष।

वरुण-ग्रह—पुं० [सं० ब० स०] घोड़ों का घातक रोग जो अचानक हो जाता है। इस रोग में घोड़े का तालू, जीभ, आँखें और लिंगेन्द्रिय आदि अंग काले हो जाते हैं।

वरुण-दैवत—पुं० [सं० ब० स०] शतभिषा नक्षत्र।

वरुण-पाश—पुं० [सं० ष० त०] वरुण का अस्त्र, पाश या फंदा। २. नक्र या नाक नामक जल-जंतु। ३. ऐसा जाल या फंदा जिससे बचना बहुत कठिन हो।

वरुण-प्रस्थ—पुं० [सं०] कुरुक्षेत्र के पश्चिम का एक प्राचीन नगर।

वरुण-मंडल—पुं० [सं० ष० त०] नक्षत्रों का एक मंडल जिसमें रेवती, पूर्वाषाढ़ा, आर्द्रा, आश्लेषा, मूल उत्तरभाद्रपद और शतभिषा हैं।

वरुणात्मजा—स्त्री० [सं० वरुण-आत्मजा, ष० त०] वारुणी। मदिरा। शराब।

वरुणादिगण—पुं० [सं० वरुण-आदि ब० स०, वरुणादि-गण ष० त०] पेड़ों और पौधों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत वरुन, नील झिंटी, सहिजन, जयंति, मेढ़ासिंगी, पूतिका, नाटकरंज, अग्निमथ (अरणी), चीता, शतमूली, बेल, अजश्रृंगी, डाभ, बृहती और कटसरैया हैं। (सुश्रुत)

वरुणालय—पुं० [सं० वरुण-आलय, ष० त०] समुद्र।

वरूथ—पुं० [सं०√वृ (वरण करना)+ऊथन्] १. तनुत्राण। बकतर। २ ढाल। ३ लोहे का वह जाल जो युद्ध के समय रथ की रक्षा के लिए उस पर डाला जाता था। ४ फौज। सेना।

वरूथिनी—स्त्री० [सं० वरुथ+इनि-ङीप्] सेना।

वरूथी(थिन्)—पुं० [सं० वरुथ+इनि] हाथी की पीठ पर रखी जानेवाली काठी।

वरेंद्र—पुं० [सं० वर+इंद्र, कर्म० स०] १ राजा। २ इंद्र। ३ बंगाल का एक प्रदेश या विभाग।

वरे—अव्य० [?] १ परे। दूर। २ उस ओर। उधर। ३. उस पार।

वरेण्य—वि० [सं०√वृ०+एण्य] १. जो वरण किये जाने के योग्य हो। २ चाहा हुआ। इच्छित। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४ प्रधान। मुख्य।
पुं० केसर।

वरेश्वर—पुं० [सं० वर-ईश्वर, कर्म० स०] शिव।

वर्क—पुं०=वरक(पृष्ठ)।

वर्कर—पुं० [सं० √वृक्(स्वीकार)+अर] १. जवान पशु। २ बकरा।
पुं० [अं०] १ काम करनेवाला व्यक्ति। २. विशेषत किसी सभा, समिति आदि का कार्यकर्ता।

वर्कराट—पुं० [सं० वर्कर√अट् (जाना)+अच्] १. कटाक्ष। २ दोपहर के सूर्य की प्रभा। ३ स्त्री के कुच पर का नख-क्षत।

वर्किंग कमिटी—स्त्री० [अं०] किसी संस्था, सभा आदि की वह समिति जो उसकी व्यवस्था करती है।

वर्ग—पुं० [सं०√वृज्(त्याग देना आदि)+घञ्] १. एक ही प्रकार की अथवा बहुत कुछ मिलती-जुलती या सामान्य धर्मवाली वस्तुओं का समूह। श्रेणी। जैसे—ओषधि वर्ग, साहित्यिक वर्ग, विद्यार्थी वर्ग आदि। २ कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए बना हुआ कुछ लोगों का समूह। ३. देवनागरी वर्णमाला में एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन वर्णों का समूह। जैसे—कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग आदि। ४ ग्रन्थ का अध्याय, परिच्छेद या प्रकरण। ५ कक्षा। जमात। ६ ज्यामिति में वह समकोण चतुर्भुज जिसकी लम्बाई-चौड़ाई बराबर हो। ७ गणित में समान अंकों का घात।

वर्गण—पुं० [सं० वर्ग+णिच्+युच्-अन,] गुणन। घात। (गणित)

वर्ग-पद—पुं०=वर्गमूल।

वर्ग-पहेली—स्त्री० [सं०+हिं०] पहेलियाँ बुझाने के लिए ऐसी वर्गाकार रेखाकृति जिसमें छोटे-छोटे घर बने होते हैं तथा जिनमें कुछ संकेतों के आधार पर वर्ण भरे जाते हैं। (क्रासवर्ड)

वर्ग-फल—पुं० [सं० ष० त०] गणित में दो समान राशियों के घात से प्राप्त होनेवाला गुणनफल।

वर्ग-मूल—पुं० [सं० ष० त०] वह राशि जिससे वर्गफल को भाग देकर वर्गांक निकाला जाता है।

वर्ग-युद्ध—पुं० [सं० ष० त०] दे० 'गृह-युद्ध'।

वर्गलाना—स० [फा० वर्गलानीदन] छल-फरेब से किसी को किसी ओर प्रवृत्त करना। बहकाना।

वर्ग-संघर्ष—पु०[स० ष० त०] किसी समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों मे होनेवाला ऐसा पारस्परिक सघर्ष जिसमे एक दूसरे को दवाने या नष्ट करने का प्रयत्न होता है। (क्लास स्ट्रगल)

वर्गित—भू० कृ०[स० वर्ग+णिच्+क्त] अनेक वर्गों मे वँटा या वाँटा हुआ। वर्गीकृत (क्लैसिफायड)

वर्गी(र्गिन्)—वि० [स० वर्ग+इनि, दीर्घ, नलोप] वर्ग-सवधी। वर्ग का।

वर्गीकरण—पु०[स० वर्ग+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० वर्गीकृत] गुण-धर्म, रग-रूप, आकार-प्रकार आदि के आधार पर वस्तुओ आदि के भिन्न-भिन्न वर्ग वनाना। (क्लैसिफिकेशन)

वर्गीकृत—भू० कृ० [स० वर्ग+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] वर्गित। अनेक या विभिन्न वर्गों मे वँटा या वाँटा हुआ। (क्लैसिफायड)

वर्गीय—वि०[स० वर्ग+छ-ईय] १. किसी विशिष्ट वर्ग से सवध रखनेवाला या उसमे होनेवाला। वर्ग का। २. जो किसी विशिष्ट वर्ग के अतर्गत हो। जैसे—क वर्गीय अक्षर। ३ एक ही वर्ग या कक्षा का। जैसे—वर्गीय मित्र।

पु० सहपाठी।

वर्गोत्तम—पु०[स० वर्ग-उत्तम, स० त०] फलित ज्योतिष में राशियो के वे श्रेष्ठ अश जिनमे स्थित ग्रह शुभ होते हैं।

वर्ग्य—वि०[स० वर्ग+यत्] १ जिसके वर्ग वनाए जा सकें या वनाये जाने को हो। २. वर्गीय।

वर्चस्—पु०[स०√वर्च् (तेज)+असुन्] [वि० वर्चस्वान्, वर्चस्वी] १. रूप। २ तेज। प्रताप। ३. काति। दीप्ति। ४. श्रेष्ठता। ५. अन्न। अनाज। ६ मल। विष्ठा।

वर्चस्क—पु०[स० वर्चस्+कन्] १. दीप्ति। तेज। २. विष्ठा।

वर्चस्य—वि०[स० वर्चस्+यत्] तेजवर्द्धक।

वर्चस्वान् (स्वत्)—वि०[स० वर्चस्+मतुप्] [स्त्री० वर्चस्वती] १. तेजवान्। २ दीप्तियुक्त।

वर्चस्वी (स्विन्)—वि०[स० वर्चस्+विनि] [स्त्री० वर्चस्विनी] तेजस्वी। दीप्तियुक्त।

पु० चद्रमा।

वर्जक—वि०[स०√वृज् (निषेध करना)+णिच्+ण्वुल्-अक] वर्जन करनेवाला।

वर्जन—पु०[स०√वृज्+णिच्+ल्युट्-अन] [वर्जनीय वर्ज्य] १. त्याग। छोडना। २. किसी प्रकार के आचरण, व्यवहार आदि के संवध मे होनेवाला निषेध। मनाही। ३ हिंसा ४. दे० 'अपवर्जन'।

वर्जना—स्त्री० [स०√वृज+णिच्+युच्-अन, टाप्] १. वर्जन करने की क्रिया या भाव। मनाही। वर्जन। २ वहुत ही उग्र, कठोर या विकट रूप से अथवा वहुत भयभीत करते हुए कोई वात निषिद्ध ठहराने या वर्जित करने की क्रिया या भाव। (टैबू)

विशेष—अनेक असभ्य और आदिम जन-जातियो मे इस प्रकार की अनेक परम्परा-गत वर्जनाएँ चली आती हैं कि अमुक काम आदि नही करने चाहिएँ, अमुक पदार्थ कभी नही छूने चाहिएँ अथवा अमुक प्रकार के साथ किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखना चाहिए, नही तो वहुत घातक या भीषण परिणाम भोगना पडेगा। सभ्य जातियो मे नैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रो मे भी इसी प्रकार की अनेक वर्जनाएँ प्रचलित है। मनोवैज्ञानिको का मत है कि जहाँ मन मे वहुत सी स्वाभाविक, अदमनीय और प्रवल प्रवृत्तियाँ तथा वासनाएँ होती हैं, वहाँ प्राकृतिक रूप से उनके दमन या नियन्त्रण की भी प्रवृत्तियाँ होती हैं जो वर्जनाओ का रूप धारण कर लेती हैं।

स० वर्जन या निषेध करना। मना करना।

वर्जनीय—वि० [स०√वृज्+णिच्+अनीयर्] १. जिसका वर्जन होना उचित हो। वर्जन किये जाने के योग्य। २ त्यागे जाने के योग्य। ३. खराव।

वर्जयिता (तृ)—वि० [स०√वृज्+णिच्+तृच्] वर्जक।

वर्जित—भू० कृ० [स०√वृज्+णिच्+क्त] १. जिसके सवध मे वर्जन या निषेध हुआ हो। मना किया हुआ। २. (पदार्थ) जिसका आयात-निर्यात या व्यापार राज्य के द्वारा विधिक रूप से वद किया या रोका गया हो। (कान्ट्रावैंड) ३ त्यागा हुआ। परित्यक्त। ४. दे० 'निषिद्ध'।

वर्जित—स्त्री०[फा०]=वरजिश (व्यायाम)।

वर्ज्य—वि०[स०√वृज्+णिच्+यत्]=वर्जनीय।

वर्ज्य-सूची—स्त्री० [स०] अर्थशास्त्र मे, ऐसी वस्तुओ की सूची जिनके संवध मे किसी प्रकार का वर्जन या निषेध किया गया हो। (ब्लैक लिस्ट)

वर्ण—पु०[स०√वर्ण् (रँगना आदि) ण्यत्] +घञ्] १. पदार्थों के लाल, पीले, हरे आदि भेदो का वाचक शब्द। रग। (देखें) २ वह पदार्थ जिसमे चीजें रँगी जाती हो। रग। ३ शरीर के रग के आधार पर किया जानेवाला जातियो, मनुष्यो आदि का विभाग। जैसे—मनुष्यो की कृष्णवर्ण, गौरवर्ण, पीतवर्ण आदि कई जातियाँ है। ४. भारतीय हिंदुओं मे स्मृतियो मे कही हुई दो प्रकार की सामाजिक व्यवस्थाओ मे वह जिसके अनुसार गुण, कर्म और स्वभाव के विचार से सारा समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार वर्गो मे विभक्त है। दूसरी व्यवस्था 'आश्रम व्यवस्था' कहलाती है। ५. पदार्थो के निश्चित किए हुए भेद, वर्ण या विभाग। जैसे—स-वर्ण अक्षरो की योजना। ६ भाषाविज्ञान तथा व्याकरण मे लघुतम ध्वनि इकाई। ६ उक्त का सूचक चिह्न। अक्षर। ७ सगीत मे मृदग का एक प्रकार का ताल जिसके ये चार भेद कहे गये हैं—पाट, विधिपाट, कूटपाट और खड पाट ९ आकृति या रूप। १०. चित्र। तसवीर। ११. प्रकार। भेद। १२ गुण। १३. कीर्ति। यश। १४. वडाई। स्तुति। १५ सोना। स्वर्ण। १६ अगराग। १७ केसर।

वर्णक—पु०[सं० √वर्ण+णिच्+ण्वुल्—अक] १. वह तत्त्व या पदार्थ जिससे रँगाई के काम के लिए रग वनते हो। रग। (पिगमेन्ट) २. अग-राग। ३. देवताओ को चढाने के लिए पिसी हुई हल्दी आदि। ऐपन। ४. अभिनय करनेवालो के पहनने के कपडे या परिवान। ५ दाढी-मूँछ या सिर के वाल रँगने की दवा या मसाला। ६ चित्रकार। ७. चन्दन। ८ चरण। पैर। ९ मडल। १०. हरताल।

वर्ण-क्रम—पु०[स०] १ वर्णमाला के अक्षरो का क्रम। जैसे—वर्णक्रम से सूची वनाना। २ किसी वस्तु की वह आकृति जो उसे देखने के बाद आँखे वन्द कर लेने पर भी कुछ देर तक दिखाई देती है। ३. प्रकाश मे के रग जो विशिष्ट प्रक्रिया से विश्लेपित किये जाते है। (स्पेक्ट्रम)

वर्ण-खंड-मेरु—पु०[प० त०] छद शास्त्र मे वह क्रिया जिससे विना मेरु वनाए ही वृत्त का काम निकल जाता है, यह पता चल जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते है और प्रत्येक वृत्त मे कितने गुरु और कितने लघु होते है।

वर्ण-चारक—पुं०[स० प० त०]१. चित्रकार। २. रगसाज।

वर्णच्छटा—स्त्री०[स० प० त०] दे० 'वर्णक्रम'।

वर्ण-ज्येष्ठ—पु०[स० स० त०]हिन्दुओ के सव वर्णो मे वडा अर्थात् व्राह्मण।

वर्ण-तूलिका—स्त्री०[स० प० त०] वह कूँची जिससे चित्रकार चित्र वनाते हैं। कलम।

वर्णद—पु०[स० वर्ण√दा (देना)+क]एक प्रकार की सुगन्धित लकडी। रतन-जोत। दती।

वि० वर्ण या रग देनेवाला।

वर्ण-दूत—पु०[स० व० स०] लिपि।

वर्ण-दूषक—पु०[स० प० त०]१. अपने ससर्ग से दूसरो को भी जाति-भ्रष्ट करनेवाला। २ जाति से निकाला हुआ पतित मनुष्य।

वर्णन—पु०[स०√वर्ण्(वर्णन करना, रँगना आदि)+णिच्+ल्युट्—अन] १. वर्णो अर्थात् रगो का प्रयोग करना। रँगना। २ किसी विशिष्ट अनुभूति, घटना, दृश्य,वस्तु, व्यक्ति आदि के सवध मे होनेवाला विस्तार-पूर्ण कथन जो उसका ठीक-ठीक वोध दूसरो को कराने के लिए किया जाता है। ३. गुण-कथन। प्रशसा। स्तुति।

वर्ण-नष्ट—पु०[सं० व० स०] छन्दशास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णो के वृत्तो के अमुक सख्यक भेद का लघु-गुरु के विचार से क्या रूप होगा।

वर्णना—स्त्री०[स०√वर्ण्+णिच्+युच्—अन, टाप्]१ वर्णन। २. गुण-कीर्तन।

वर्णनातीत—वि०।[स० वर्णन+अतीत, द्वि० त०] जिसका वर्णन करना असभव हो।

वर्णनात्मक—वि० [स०वर्णन-आत्मन्, व० स०, कप्] (कथन, लेख आदि) जिसमे किसी अनुभव, अनुभूति,दृश्य आदि का वर्णन हो या किया जाय।

वर्ण-नाश—पु०[स० प० त०] व्याकरण मे, उच्चारण की कठिनता या किसी और कारण से किसी शब्द मे का कोई अक्षर या वर्ण लुप्त हो जाना। जैसे—'पृष्ठतोपर' मे के 'त' का वर्ण-नाश होने पर पृष्ठोपर शब्द वनता है।

वर्ण-पताका—स्त्री०[स० प० त०] छन्द शास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तो के भेदो मे से कौन सा (पहला, दूसरा, तीसरा आदि) ऐसा है जिसमे इतने लघु और इतने गुरु होगे।

वर्ण-पात—पु०[स० प० त०] किसी अक्षर का शब्द मे से लुप्त हो जाना। वर्ण-नाश।

वर्ण-पाताल—पु०[प०त०]छन्द शास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णो के कुल कितने वृत्त हो सकते है और उन वृत्तो मे से कितने लघ्वादि और कितने लघ्वत, कितने गुर्वादि और कितने गुर्वंत तथा कितने सर्वलघु होगे।

वर्ण-पात्र—पु०[प० त०]१ रग या रगो का डिव्वा। २. वह डिव्वा जिसमे वने हुए छोटे छोटे-घरो मे रगो के जमे हुए टुकडे रखे होते है। (चित्रकला)

वर्ण-पुष्प(क)—पु०[व० स०, कप्] पारिजात।

वर्ण-प्रत्यय—पु०[प०त०]छद शास्त्र मे वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने वर्णों के योग से कितने प्रकार के वर्णवृत्त वनते हे।

वर्ण-प्रस्तार—पु०[प० त०]छद.शास्त्र मे वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि अमुक सख्यक वर्णों के इतने वृत्त-भेद हो सकते है और उन भेदो के स्वरूप इस प्रकार होगे।

वर्ण-भेद—पु०[प० त०] १. व्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र इन चार प्रकार के वर्णो के लोगो मे माना जानेवाला भेद। २ काले, गोरे, पीले, लाल आदि रंगो के आधार पर विभिन्न जातियो मे किया जानेवाला पक्षपातमूलक भेद। (रेशियल डिस्क्रिमिनेशन)

वर्ण-मर्कटी—स्त्री० [प० त०] छन्द.शास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि इतने वर्णो के इतने वृत्त हो सकते है जिनमे इतने गुर्वादि, गुर्वंत, और इतने लघ्वादि, लघ्वत होगे तथा इन सव वृत्तो मे कुल मिलाकर इतने वर्ण, इतने गुरु-लघु, इतनी कलाएँ और इतने पिण्ड (=दो कल) होगे।

वर्ण-माता(तृ)—स्त्री०[प० त०] लेखनी।

वर्ण-मातृका—स्त्री०[प० त०] सरस्वती।

वर्ण-माला—स्त्री०[प० त०]१ किसी लिपि के वर्णों (लघुतम ध्वनि इकाइयो) की सूची। २ उक्त ध्वनियो के सूचक चिह्नो की सूची।

वर्ण-राशि—स्त्री० =वर्णमाला।

वर्ण-वर्तिका—स्त्री०[प० त०]१ चित्रकला मे अलग-अलग तरह के रगो से वनी हुई वत्ती या पैंसिल की तरह का एक प्राचीन उपकरण। २ पेंसिल। ३ तूलिका।

वर्ण-विकार—पु०[प० त०]भापाविज्ञान मे, वह स्थिति जव किसी शब्द मे का वर्णविशेप निकल जाता है और उसके स्थान पर कोई और वर्ण आ जाता हे।

वर्ण-विचार—पु०[प० त०] आधुनिक व्याकरण का वह अश जिसमे वर्णो के आकार, उच्चारण और सन्धियो आदि के नियमो का वर्णन हो। प्राचीन वेदाग मे यह विषय शिक्षा कहलाता था।

वर्ण-विपर्यय—पु० [प० त०] भापाविज्ञान मे वह अवस्था जव किसी शब्द के वर्ण आगे-पीछे हो जाते हैं और एक दूसरे का स्थान ग्रहण कर लेते हैं।

वर्ण-वृत्त—पु०[मध्य० स०] वह पद्य जिसके चरणो मे वर्णो की सख्या और लघु गुरु का क्रम निर्धारित हो।

वर्ण-व्यवस्था—स्त्री०[प० त०] हिंदुओ की वह सामाजिक व्यवस्था जिसके अनुसार वे व्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार विभागो या मुख्य जातियो मे वँटे हुए हैं।

वर्ण-श्रेष्ठ—पु० [स० त०] व्राह्मण।

वर्ण-संकर—पु०[व० स०][भाव० वर्ण-सकरता]१ व्यक्ति जिसका जन्म विभिन्न वर्णो के माता-पिता से हुआ हो। दोगला। २ व्यभिचार से उत्पन्न व्यक्ति।

वर्ण-सहार—पु०[व०स०] नाटको मे प्रतिमुख सधि का एक अग।

वर्ण-सूची—स्त्री० [प० त०] छद शास्त्र मे एक क्रिया जिससे वर्णवृत्तो

को सख्या की शुद्धता, उनके भेदो मे आदि, अन्त, लघु और आदि अन्त गुरु की सख्या जानी जाती है।

वर्ण-हीन—वि०[तृ० त०]१ जो चारो वर्णो (क्षत्रिय, ब्राह्मण आदि) मे से किसी मे न हो। २ जातिच्युत।

वर्णांध—वि०[स० वर्ण-अध, सुप्सुपा स०] [भाव० वर्णान्धिता] जिसकी आँखो मे ऐसा दोष हो कि वह रगो की पहचान न कर सके। वर्णान्धिता रोग का रोगी। (कलर ब्लाइड)

वर्णांधता—स्त्री० [स० वर्णान्ध+तल्—टाप्] नेत्रो का एक प्रकार का रोग या विकार जिसमे मनुष्य को लाल, काले, पीले आदि रगो की पहचान नही रह जाती। (कलर ब्लाइन्डनेस)

वर्णागम—पु० [स० वर्ण-आगम, ष० त०]भाषाविज्ञान मे वह स्थिति जब किसी शब्द के वर्ण मे एक वर्ण और आकर मिलता है।

वर्णाट—पु० [स० वर्ण√अट् (गति)+अच्]१ चित्रकार। २ गायक। ३. प्रेमिका। ४ पत्नी द्वारा अर्जित धन से निर्वाह करनेवाला।

वर्णाधिप—पु० [स० वर्ण-अधिप ष० त०] फलित ज्योतिष मे ब्राह्मणादि वर्णो के अधिपति ग्रह। (ब्राह्मण के अधिपति वृहस्पति और शुक्र, क्षत्रिय के भौम और रवि, वैश्य के चद्र, शूद्र के बुध और अन्त्यज के शनि कहे गये हैं।)

वर्णानुक्रम—पु०[स० वर्ण-अनुक्रम, ष० त०] वर्णो का नियत क्रम।

वर्णानुक्रमणिका—स्त्री०[स० वर्ण-अनुक्रमणिका, ष०त०] वर्णो के अर्थात् वर्णमाला के अक्षरो के क्रम से तैयार की हुई अनुक्रमणिका या सूची।

वर्णानुप्रास—पु०[स० वर्ण-अनुप्रास,ष० त०] एक प्रकार का अलकार।

वर्णाश्रम—पु०[स० वर्ण-आश्रम, ष०त०]सनातनी हिंदुओ मे माने जानेवाले (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र)चारो वर्ण और चारो आश्रम (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास)।

वर्णाश्रमी (मिन्)—वि०[स० वर्णाश्रम+इनि]१ वर्णाश्रम-सम्वन्धी। २ जो वर्णाश्रम के नियम, सिद्धान्त आदि मानता और उनके अनुसार चलता हो।

वर्णिक—पु०[स० वर्ण+ठन्—इक] लेखक।

वि० १ वर्ण-सम्वन्धी। २ (छन्द) जिसमे वर्णों की गणना या विचार मुख्य हो।

वर्णिक-गण—पु० [कर्म० स०] छन्द शास्त्र मे के ये आठो गण—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण।

वर्णिक-छंद (स्)—पु०[कर्म० स०] सस्कृत छन्द शास्त्र मे वे छन्द जिनके चरणो की रचना वर्णो की सख्या के विचार से होती है।

वर्णिक-वृत्त—पु०[कर्म० स०] वर्णिक छद।

वर्णिका—स्त्री०[स० वर्णिक+टाप्] १ स्याही। रोशनाई। २ सुनहला या सोने का पानी। ३ चन्द्रमा। ४ लेप लगाना। लेपन।

वर्णित—भू० कृ० [स० √वर्ण् (व्याख्यान या स्तुति)+णिच्+क्त]१ जिसका वर्णन हो चुका हो। २ वर्णन के रूप मे आया या लाया हुआ।

वर्णिनी—स्त्री०[स० वर्ण+इनि—ङीप्] १ किसी वर्ण की स्त्री। २ हल्दी।

वर्णी (र्णिन्)—वि०[स० वर्ण्+इनि] वर्णयुक्त। रगदार।

पु०१. चित्रकार। २ लेखक। ३ ब्रह्मचारी। ४ चारो वर्णो मे से किसी एक वर्ण का व्यक्ति।

वर्णु—पु० [स०√ वृ (अलग) करना)+णु] १ आधुनिक वन्नू नदी। २ वन्नू नामक नगर और इसके आस-पास का प्रदेश।

वर्णोद्दिष्ट—पु० [स० वर्ण-उद्दिष्ट, व० म०] छद शास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह माना जाता है कि अमुक सख्यक वर्णवृत्त का कोई रूप कौन सा भेद है।

वर्ण्य—वि० [स० वर्ण्+यत्] १ वर्ण या रग-संवधी। २ [√वर्ण्+ण्यत्] वर्णन किये जाने के योग्य।

पु०१. केसर। २ वन-तुलसी। ३ प्रस्तुत विषय। ४. गधक।

वर्तक—पु० [स०√वृत् (वर्तमान रहना)+ण्वुल्—अक]१ वटुआ। २ नर वटेर। ३ घोडे का खुर।

वि० वर्तन करने या वनानेवाला।

वर्तन—पु० [स०√ वृत्+ल्युट्—अन] १ इधर-उधर या चारो ओर घूमना। २ चलना-फिरना। गति। ३. जीवित या वर्तमान रहना। स्थिति। ४ कोई चीज उपयोग या व्यवहार मे लाना। वरतना। ५ लोगो के साथ आचरण या व्यवहार करना। वरतना। वरताव। ७ जीविका। रोजी। ८ उलट-फेर। परिवर्तन। ९ कोई चीज कही रखना या लगाना। स्थापन। १० पीसना। पेषण। ११ पात्र। वरतन। १२ घाव मे सलाई डालकर हिलाना-डुलाना, जिससे घाव या नासूर की गहराई और फैलाव आदि का पता लगता है। शल्य-कार्य। १३ चरखे की वह लकडी जिसमे तकला लगा रहता है। १४ विष्णु का एक नाम।

वर्तना—स्त्री० [स०√ वृत्त+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ वर्तन। २ चित्रकला मे, चित्रो मे छाया या अधकार दिखाने के लिए काला या इसी प्रकार का और कोई रग भरना।

†अ०, स०=वरतना।

वर्तनी—स्त्री० [स०√वृत्त+अनि—ङीप्] १ वटने की क्रिया। पेषण। पिसाई। २ रास्ता। वाट। ३ किसी शब्द के वर्ण, उनका क्रम तथा उच्चारण विधि। (स्पेलिंग)

वर्तमान—वि०[स०√वृत्+शानच्, मुक् आगम] १ (जीव या प्राणी) जो इस समय अस्तित्व या सत्ता मे हो। २ नियम या विधान जो लागू हो या चल रहा हो। ३ जो उपस्थित, प्रस्तुत या समक्ष हो। विद्यमान।

पु० वर्तमान काल।

वर्तमान-काल—पु०[स० कर्म० स०] १ व्याकरण मे क्रिया के तीन कालो मे से एक जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है। २ वृत्तान्त। समाचार। हाल।

वर्ति—स्त्री०[स०√ वृत्+इन्]१ वत्ती। २ अजन। ३. घाव मे भरी जानेवाली कपडे आदि की वत्ती। ४ औषध वनाने का काम या क्रिया। ५ उवटन। ६ गोली। वटी।

वर्तिक—वि०[स०√वृत्+तिकन्] १ वत्ती से सम्वन्ध रखनेवाला। वत्ती का। वत्ती से युक्त। जिसमे वत्तियाँ हो। उदा०—वन सहस्र वर्तिक नीराजन।—दिनकर।

अ० वटेर नामक पक्षी।

वर्तिका—स्त्री० [स० वर्तिक+टाप्] १ वत्ती। २. वटेर पक्षी। ३

मेढासिंगी। ३ सलाई। ५. पेन्सिल की तरह का एक उपकरण जो रेखाचित्र बनाने के काम आता था।

वर्तिक—पु० [स०√वृत्+इतव्] बटेर।

वर्तित—भू० कृ० [स० √वृत+णिच्+क्त] १ घुमाया या चलाया हुआ। २. सपादित किया हुआ। ३ बिताया हुआ। ४. ठीक या दुरुस्त किया हुआ।

वर्तिलेख—पु० [स०] बहुत लबे और मुट्ठे की तरह लपेटे जानेवाले कागज पर लिखा हुआ लेख। खर्रा। (स्क्रोल)

वर्ती (र्तिन्)—वि० [स० पूर्वपद के रहने पर] [स्त्री० वर्तिनी] १ वर्तन करनेवाला। २. स्थित रहने या होनेवाला। जैसे—तीरवर्ती, दूर-वर्ती।

स्त्री० १. बत्ती। २ सलाई।

वर्तुल—वि० [स०√वृत्+उलच्] गोल। वृत्ताकार।

पु०१. गाजर। २ मटर। ३ गुड तृण। ४ सुहागा।

वर्त्म (न्)—पु० [स०√वृत् +मनिन्, नलोप] १ मार्ग। पथ। रास्ता। २. छकड़ो आदि के चलने से जमीन पर बननेवाली रेखा या लकीर। ३ किनारा। ४ आँख की पलक। ५ आधार। आश्रय। ६ पलको मे होनेवाला एक प्रकार का रोग या विकार।

वर्त्म-कर्दम—पु० [स० ब० स०] आँख का एक रोग जिसमे पित्त और रक्त के प्रकोप से आँखो मे कीचड भरा रहता है।

वर्त्म-बध—पु० [स० ब० स०] आँख का एक रोग जिसमे पलक मे सूजन हो जाती है, खुजली तथा पीडा होती है और आँख नही खुलती।

वर्त्मार्बुद—पु० [स० वर्त्मन्-अर्बुद, ब० स०] आँखो का एक रोग जिसमे पलक के अन्दर एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है।

वर्दी—स्त्री०=वरदी।

वर्द्ध—पु० [स० √वर्ध् (काटना, पूरा करना आदि)+णिच्+अच्] १. काटने, चीरने या तराशने की क्रिया। २ पूरा करना। पूर्ति। ३. भारगी। ४ सीसा नामक धातु।

वर्द्धक—वि० [स०√वृध् (बढना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. वृद्धि करनेवाला। २ [√वर्ध्+ण्वुल्]—अक] काटने, छीलने या तराश करनेवाला।

पु० [स०√वर्ध् (काटना)+अच, वर्ध√कप् (हिंसा)+डि] दे० 'वर्द्धकी'।

वर्द्धकी (किन्)—पु०[स०√ वर्ध्+अच्+कन्+इनि] बढई।

वर्द्धन—वि०[स० √वृध्+णिच्+ल्यु—अन] वृद्धि करनेवाला। जैसे—आनदवर्धन।

पुं०[√वृध्+णिच्+ल्युट्—अन]१. वृद्धि करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वृद्धि। बढती।

वर्द्धनी—स्त्री० [स० वर्द्धन+ङीप्]१. झाडू। २ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वर्द्धमान्—वि०[स०√वृध्+शानच्, मुक आगम]१. जो बढ रहा हो या बढता जा रहा हो। बढता हुआ। २ जिसकी या जिसमे बढने की प्रवृत्ति हो। वर्द्धनशील।

पु० १. महावीर स्वामी। जैनियो के २४वे तीर्थंकर। २ बगाल का आधुनिक बर्दवान नगर। ३. मिट्टी का प्याला या कसोरा। ४ एक वृत्त जिसके पहले चरण में १४, दूसरे मे १३, तीसरे मे १८ और चौथे मे १५ वर्ण होते है।

वर्द्धयिता—वि०[स०√वृध् (बढना)+णिच्+तृच] [स्त्री० वर्द्धयित्री] बढानेवाला। वर्द्धक।

वर्द्धापन—पु० [स० √वर्ध् (काटना)+णिच्, आपुक्+ल्युट्—अन] १ जनमे हुए शिशु की नाल काटना। २ उन्नति। ३ वृद्धि आदि की कामना से किया जानेवाला धार्मिक कृत्य। ४. महाराष्ट्र मे प्रचलित अभ्यग आदि कृत्य जो किसी की जन्मतिथि पर उसकी उन्नति, दीर्घायु आदि के उद्देश्य से किये जाते है।

वर्द्धित—भू० कृ० [स०√वृध्+णिच्+क्त]१ जिसका वर्द्धन या वृद्धि हुई हो। २. कटा या काटा हुआ।

वर्द्धिष्णु—वि०[स०√ वृध्+इष्णुच्] बढता रहनेवाला। वृद्धिशील।

वर्द्ध—पु०[स०√वृध+रन्] चमडा। चमडे का तसमा।

वर्द्धिका—स्त्री०[स० वर्द्धी+कन्—टाप् ह्रस्व] दे० 'वर्द्धी'।

वर्द्धीका—स्त्री० [स०वर्द्ध+ङीप्]१. चमडे की पेटी। बद्धी २ गले मे और छाती पर पहनने का बद्धी नाम का गहना।

वर्धरोध—पु०[स०] जीवो, वनस्पतियो आदि की वह स्थिति जिसमे उनका वर्धन या विकास रुक जाता या वैज्ञानिक क्रियाओ से रोक दिया जाता है। (एबोर्शन)

वर्ध्म—पु० [स०√वृध्(बढना)+मनिन् वर्ध्मन्] १ प्राय आतशक या गरमी से रोगी को होनेवाला वह फोडा जो जाँघ के मूल मे सधिस्थान मे निकल आता है। बद। २ आँत उतरने का रोग।

वर्म (न्)—पु०[स० √वृ (बढना)+मनिन्] १ कवच। बक्तर। २ घर। मकान। ३ पित्तपापडा।

पु०[फा०] शरीर के किसी अग मे होनेवाली सूजन। शोथ। जैसे—जिगर का वर्म।

वर्मक—पु०[स० वर्मन्+कन्] आधुनिक बरमा या ब्रह्मा देश का पुराना नाम।

वर्म-धर—वि०[स० ष० त०] कवचधारी।

वर्मा (र्मन्)—पु०[स०] एक उपाधि जो कायस्थ, खत्री आदि जातियों के लोग अपने नाम के अत मे लगाते हैं।

वर्मिक—वि०[स० वर्मन्+ठन्—इक] वर्म अर्थात् कवच से युक्त।

वर्मित—भू० कृ० [स० वर्मन+णिच् (नामधातु)+क्त] वर्म मे युक्त किया हुआ। कवचधारी।

वर्मी—वि०=वर्मिक।

वर्य—वि०[स०√ वर् (इच्छा करना)+यत्]१ श्रेष्ठ। २ प्रधान।

पु० कामदेव।

वर्या—वि० स्त्री० [√ वृ (वरण)+यत्+टाप्] (कन्या) जिसका वरण होने को हो अथवा जो वरण किये जाने को हो।

वर्वर—पु०[स०√ वृ+ष्वरच्]=बर्बर।

वर्ष—पु०[स०√वृष् (सींचना)+अच्]१ वर्षा। वृष्टि। २ बादल। मेघ। ३ काल का एक प्रसिद्ध मान जिसमे दो अयन और बारह महीने होते हैं। उतना समय जितने मे सब ऋतुओ की एक आवृत्ति हो जाती है। सवत्सर। साल। बरस। ४ काल गणना मे उतना समय जितने मे कोई विशिष्ट चक्र पूरा होता हो। जैसे—चान्द्र वर्ष, नाक्षत्र वर्ष,

वित्त वर्ष। ५. पुराणानुसार पृथ्वी का ऐसा विभाग जिसमे सात द्वीप हो। ६. किसी द्वीप का कोई प्रधान भाग या विभाग। जैसे—इलावर्ष, भारतवर्ष। ७ किसी मास की निश्चित तिथि से लेकर पुनः उसी मास की आनेवाली तिथि के बीच का समय। जैसे—एक वर्ष उन्हे यहाँ आये आज हुआ है।

वर्षक—वि०[स०√ वृष्+ण्वुल्—अक]१ वर्षा करनेवाला। २ ऊपर से फेंकने या गिरानेवाला। जैसे—वम-वर्षक।

वर्षकर—पु०[स० वर्ष√कृ (करना)+ट] मेघ। बादल।

वर्षकरी—स्त्री०[स० वर्षकर+ङीप्]झिल्ली। झींगुर।

वर्षकाम—वि०[स० वर्ष√कम् (चाहना)+णिङ+अच्] जिसे वर्षा की कामना हो।

वर्षकामेष्टि—पु० [स० ष० त०] एक यज्ञ जो वर्षा कराने के उद्देश्य से किया जाता था।

वर्ष कोष—स्त्री०[स० ष० त०] १ दैवज्ञ। ज्योतिषी। २ उडद। माष।

वर्षगाँठ—स्त्री०=वरस-गाँठ।

वर्षघ्न—पु० [स० वर्ष√हन्(मारना)+टक्, कुत्व] १ पवन। वायु। २ अन्त पुर का नपुसक रक्षक। खोजा।

वर्षण—पु० [स० √ वृष् (वरसना)+ल्युट्—अन] १. वरसना। २. वर्षा। ३ वर्षोपल।

वर्ष-धर—पु०[स० प० त०] १. वादल। २. पहाड। ३ वर्ष का शासक। ४. अन्त पुर का रक्षक। खोजा। ५. पृथ्वी को वर्षो से विभक्त करने-वाले पर्वत।

वर्षप, वर्ष-पति—पु० [स० वर्ष√ पा (रक्षा)+क; वर्ष-पति, प० त०] वर्ष अर्थात् साल का अधिपति ग्रह।

वर्ष-पुस्तिका—स्त्री०[स०]दे० 'वर्ष-वोध'।

वर्ष-फल—पु०[स० प० त०] १. फलित ज्योतिष मे जातक के अनुसार वह कुडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहो के शुभाशुभ फलो का विवरण जाना जाता है।

क्रि० प्र०—निकालना।

२. उक्त के आधार पर साल भर के शुभाशुभ फलो का लिखित विचार।

क्रि० प्र०—वनाना।

वर्ष-वोध—पु०[स० प० त०] प्रति वर्ष पुस्तक के रूप मे प्रकाशित होने-वाला कोई ऐसा विवरण जिसमे किसी देश, वर्ष, समाज आदि से सवध रखनेवाले कार्यो, घटनाओ आदि की सभी मुख्य और जानने योग्य वातो का सग्रह रहता है। अब्द-कोश। (ईयर-वुक)

वर्षांक—पु०[स० वर्ष-अक, प० त०] सख्या क्रम से किसी सवत् या सन् के निश्चित किये हुए नाम जो अको के रूप मे होते है। दिनाक की तरह। जैसे—वर्षांक १९६१, १९६२।

वर्षांवु—पु०[स० वर्षा-अवु, प० त०] वर्षा का जल।

वर्षांश—पुं०[सं० वर्ष-अश, प० त०] महीना।

वर्षा—स्त्री० [स०√ वृष्+अ+टाप्] १. आकाश के मेघो से पानी वरसना। वृष्टि। २ किसी चीज का वहुत अधिक मात्रा मे ऊपर से आना या गिरना। जैसे—गोलियो या फूलो की वर्षा। ३ किसी वात का लगातार चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—गोलियो की वर्षा। ४ [वर्ष+अच्+टाप्] वह ऋतु जिसमे प्राय पानी वरसता रहता है। वरसात।

वर्षागम—पु०[स० वर्षा-आगम, प० त०]१ वर्षा ऋतु का आगमन। २ नये वर्ष का आगमन।

वर्षाधिप—पु० [स० वर्ष-अधिप, प० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जो सवत्सर या वर्ष का अधिपति हो। वर्षपति।

वर्षानुवर्षी (र्षिन्)—वि० [सं० वर्ष-अनुवर्ष, प० त० +इनि] १. प्रति वर्ष होनेवाला। २ जो वरावर कई वर्षो तक निरतर चलता रहे या वना रहे। ३ (वनस्पति या वृक्ष) जो एक वार उग आने पर अनेक वर्षो तक वरावर वना रहे। वहुवर्षी। (पेरीनियल)

वर्षा-प्रभजन—पु० [स० मध्य० स०] ऐसी आँधी जिसके साथ पानी भी वरसे।

वर्षा-वीज—पु०[स० प० त०]१. मेघ। वादल। २ ओला।

वर्षाभू—पु०[स० वर्षा√भू (होना)+क्विप्] १. भेक। दादुर। मेढक। २ इन्द्रगोप या ग्वालिन नाम का कीडा। ३ रक्त पुनर्नवा। ४ कीडे-मकोडे।

वि० वर्षा मे या वर्षा से उत्पन्न होनेवाला।

वर्षा-मगल—पु०[स० मध्य० स०]१ वर्षा का अभाव होने या सूखा पडने पर मेघो का वरुण से वर्षा के लिए प्रार्थना करना। २ इस प्रार्थना से सवध रखनेवाला उत्सव।

वर्षा-मापक—पु०[स०ष०त०] वह वोतल अथवा नल जिसमे वर्षा का पानी आप से आप भरता रहता है, और जिसपर लगे चिह्नो से जाना जाता है कि कितना पानी वरसा। (रेन-गेज)

वर्षाशन—पु०[स० वर्ष-अशन, मध्य० स०] वर्ष भर के लिए दिया जाने-वाला अन्न।

वर्षाहिक—पु०[स० वर्षा-अहिक, मध्य० स०] एक प्रकार का वरसाती साँप जिसमे विष नही होता।

वर्षित—भू० कृ० [स०√वृष्+णिच्+क्त] १ वरसाया हुआ। २ ऊपर से गिराया या फेका हुआ।

पु० वर्षा। वृष्टि।

वर्षी (र्षिन्)—वि०[स० (पूर्वपद के रहने पर)√वृष+णिनि] [स्त्री० वर्षिणी] वर्षा करनेवाला। (यौ० के अत मे) जैसे—अमृत-वर्षी।

†स्त्री०=वरसी।

वर्षीय—वि०[स० वर्ष+छ—ईय] [स्त्री० वर्षीया] १ वर्ष या साल से सवध रखनेवाला। २ गिनती के विचार से, वर्षो का। जैसे—पच-वर्षीय, दसवर्षीय वालक।

वर्षुक—वि०[स०√वृष्+उकञ्] वर्षा करनेवाला।

वर्षेश—पु०[स० वर्ष-ईश, ष० त०] वर्षाधिप। (दे०)

वर्षोपल—पु०[स० वर्ष-उपल, प० त०] ओला।

वर्ष्म (र्ष्मन्)—पु०[स०√वृष्+मनिन्] १ शरीर। २ प्रमाण। ३ चरम सीमा। इयत्ता। ४ नदियो आदि का वाँध।

वर्ह—पु०[स० √वर्ह् (दीप्त करना)+अच्] १ मोर का पख। ग्रथि-पर्णी। गठिवन। ३. वृक्ष का पत्ता।

वर्हण—पु० [स०√वृह् (वढना) अथवा√वर्ह्+ल्युट्-अन] पत्र। पत्ता।

र्बाह (स्)—पुं०[स०√वृह्+इसुन्,नि० न-लोप] १. अग्नि। २ चमक। दीप्ति। ३. यज्ञ। ४ कुश। ४ चीते का पेड।
र्बाह-ध्वज—पु०[सं० व० स०] स्कद। कार्तिकेय।
र्बाहमुख—पु०[म० वं० स०] १. अग्नि। २. एक देवता।
र्बाहषद्—पु०[सं० र्बाहस्√अद् (खाना)+क्विप्] पितरो का एक गण।
र्बाही (हिन्)—पु०[स० वर्ह+इनि] १ मयूर। मोर। २ कश्यप के एक पुत्र। ३. तगर।
वलना—स०[स० वलय] १. घेरना। २ लपेटना। ३ पहनना। (राज०) उदा०—वले वलै निधि विधि वलित।—प्रिथीराज।
वलंवा—पुं०=अवलव।
वल—पु०[स०√वल्(घूमना-फिरना)+अच्] १. मेघ। बादल। २. २ एक असुर जो देवताओ की गौएँ चुराकर एक गुहा मे जा छिपा था। इन्द्र ने जव इससे गौएँ छुडा ली, तव यह वैल वनकर वृहस्पति के हाथो मारा गया था।
वलन—पु०[सं०√वल्+ल्युट्—अन] १ किसी ओर घूमना या मुडना। २. चारो ओर घूमना। चक्कर लगाना। ३. ज्योतिष मे, किसी ग्रह का अयनाश से हटकर कुछ इधर या उधर होना।
वलना—अ०[स० वलन] १. किसी ओर घूमना या मुडना। २. वापस आना। लौटना।
स० १ घुमाना। फिराना। २. लपेटना।
वलनिक—वि० [सं० वलन] १. जिसका वलन किया जा सके। २ जो तह करके या मोडकर छोटा किया जा सके। (फोल्डिंग)
वलनी—स्त्री०[स० वलन] १ वह स्थान जहाँ से कोई चीज किसी ओर घूमती या मुडती हो। २ कोई ऐसी चीज जो घूमे या मुडे हुए रूप मे हो। (वेंड)
वलभी—स्त्री०[स०√वल् (आच्छादित होना)+अभि+ङीप्] १ वह छोटा मडप जो घर के ऊपर शिखर पर वना हो। गुमटी। निगोल। २. घर का ऊपरी भाग। ३. छप्पर। ४ छत। ५ काठियावाड की एक प्राचीन नगरी।
वलय—पु०[स०√वल्+कयन्] १ गोलाकार घेरा। मंडल। २ घेरने, लपेटने आदि वाली चीज। वेष्टन। ३ हाथ मे पहनने का कंगन। ४. वृत्त की परिधि। ४. एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमे सैनिक मडल वनाकर खडे होते हैं। ५ एक प्रकार का गल-गड रोग। ६. शाखा।
वलयित—भू० कृ०[स० वलय+णिच्+क्त] घेरा या लपेटा हुआ। परिवृत्त। वेष्टित।
वलवला—पु०[अ० वल्वल.] १ शोर-गुल। २ मन की उमग। आवेश। क्रि० प्र०—उठना।
वलसूदन—पु०[स० वल√सूद् (मारना)+ल्यु—अन] इद्र।
वलाक—पु०[स्त्री० वलाका]=वलाक (वगला)।
वलायत—स्त्री०=विलायत।
वलाहक—पु०[स० वारि-वाहक, प० त०, पृषो० सिद्धि] १. मेघ। वादल। २. मुस्तक। ३ पर्वत। पहाड। ४ कुश द्वीप का एक पर्वत। श्रीकृष्ण के रथ का एक घोडा। ६. एक प्राचीन नद। ७. साँपो की एक जाति जो दर्व्वीकर के अन्तर्गत मानी गई है।
वलि—पु०[स०√वल्+इन] १. रेखा। लकीर। २ चदन आदि से वनाये जानेवाले चिह्न या रेखाएँ। ३. देवताओं आदि को चटाई जानेवाली वस्तु। ४ देवताओ के उद्देश्य से मारे जानेवाले पशु। ५ झुर्री। वल। सिकुडन। ६. पक्ति। श्रेणी। कतार। ७ एक दैत्य जो प्रह्लाद का पौत्र था और जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था। ८. पेट के दोनो ओर पेटी के सिकुडने के कारण पडी हुई रेखा। वल। जैसे—त्रिवली। ९ राजकर। १०. ववासीर का मसा। ११ छाजन की ओलती। १२ गवक। १३. पुरानी चाल का एक प्रकार का वाजा।
वलिक—पु०[स० वलि+कन्] ओलती।
वलित—भू० कृ० [स०√वल्+क्त] १ घूमा, मुडा या वल खाया हुआ। २. झुका या झुकाया हुआ। ३. घिरा या घेरा हुआ। परिवृत्त। ४ जिसमे झुर्रियाँ या सिकुडनें पड़ी हो। ५ किसी के चारो ओर लिपटा हुआ। आच्छादित। ६. मिला हुआ। युक्त। सहित।
पु० १ काली मिर्च। २. हाथ की एक मुद्रा।
वलि-मुख—पु०[स० व० स०] १ वानर। वदर। २. गरम दूध मे मठा मिलाने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का विकार।
वली—स्त्री०[स० वलि+ङीप्] १ झुर्री। शिकन। २. अवली। पंक्ति। श्रेणी। ३ रेखा। लकीर। ४ चदन आदि के वनाए हुए चिह्न या रेखाएँ। ५. पेट-पर पडनेवाली रेखा। जैसे—त्रिवली।
पु०[अ०] १. वह धर्मात्मा और महात्मा जो ईश्वर की दृष्टि मे प्रिय और मान्य हो। २ वह व्यक्ति जो किसी नावालिग या स्त्री की सपत्ति का कर्ता-धर्ता तथा रक्षक हो। अभिभावक। ३. स्वामी।
वली अल्लाह—पु०[अ०] एक प्रकार के सिद्ध मुसलमान फकीर।
वली अहद—पु०[अ०] युवराज।
वलीक—पु०[स०√वल्+कीकन्] १ ओलती। २ सरकडा।
वलीमुख—पु०=वलिमुख (वदर)।
वलूक—पु०[स०√वल्+अक] १. कमल की जड। २ एक प्रकार का पक्षी।
वले—अव्य० [फा०] १. लेकिन। मगर। २. पुन।
वलेकिन—अव्य०=लेकिन।
वलै*—पु०=वलय।
वल्क—पु०[स०√वल्+क, नि०] १. पेड की छाल। वल्कल। २ मछली के ऊपर का चमकीला छिल्का। मछली की चोंई।
वल्क-द्रुम—पु०[स० मध्य० स०] भोज पत्र का वृक्ष।
वल्कल—पु०[स०√वल्+कलन्] १ पेडो के धड और काण्ड पर का आवरण। छाल। २ प्राचीन काल मे वह छाल जो जगली लोग, तपस्वी आदि कपड़े की तरह ओढते-पहनते थे। ३ एक दैत्य। ४ ऋग्वेद की धाष्कल नामक शाखा।
वल्कला—स्त्री०[स० वल्कल+टाप्] १ एक प्रकार का सफेद पत्थर जिसका गुण शीतल और शान्तिकारक माना जाता है। शिला वल्का। २ तेजवल नामक वनस्पति।
वल्कली (लिन्)—वि० [स० वल्कल+इनि] (पेड) जिसकी छाल ओढने पहनने के काम आती है।
वल्गन—पु० [स०√वल्ग् (उछलना)+ल्युट्-अन] १. उछलने, कूदने

या फाँदने की क्रिया या भाव। २ दुलकी। ३. व्यर्थ की उछल-कूद और बकवाद।

वल्गा—स्त्री०[स०√वल्ग्+अच्+टाप्] बाग। रास। लगाम।

वल्गु—वि०[स०√वल्+उ, गुक्-आगम] १. रूपवान्। सुदर। २ प्रिय। मधुर। ३ बहुमूल्य।

पु० [स०] १ बौद्धों के बोधि द्रुम के चार अधिकृत देवताओ मे से एक। २ बकरा।

वल्गुक—पु०[स० वल्गु+कन्] १ चदन। २ जगल। वन। ३ पण। बाजी। ४ क्रय-विक्रय। सौदा। ५. मूल्य। दाम।

वि० वल्गु।

वल्गुल—पु०[स०√वल्ग्+उल] १. एक प्रकार का चमगादड। २. गीदड। शृगाल।

वल्गुला—स्त्री०[स० वल्गु√ला (लेना)+क+टाप्] १. बकुची। २ चमगादड।

वल्गुलिका—स्त्री०[स० वल्गुल+कन्+टाप्, इत्व] १. कत्थई रग का पतग जाति का कीडा जिसे 'तेलपायी' भी कहते है। चपडा। २ पिटारी। मजूषा।

वल्गुली—स्त्री० [स० वल्गुल+ङीप्] १ चमगादड। गेदुर। २ पिटारी। मजूषा।

वल्द—पु०[अ०] पुत्र। बेटा।

वल्दियत—स्त्री०[अ०] पुत्र होने की अवस्था या भाव।

पद—वल्दियत लिखाना=यह लिखाना कि हम किसके पुत्र है। पिता का नाम बतलाना।

वल्मीक—पु०[स०√वल्+ईकन्, नुम्-आगम] १ दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमौट। २ ऐसा मेघ जिसपर सूर्य की किरणें पड रही हों। ३ एक प्रकार का रोग जिसमे सधि-स्थलो मे सूजन आ जाती है। ४ वाल्मीकि ऋषि।

वल्ल—पु०[स०√वल्ल् (ढकना)+अच्] १. घुँघची। २ एक पुरानी तौल जो किसी के मत से तीन और किसी के मत से छ रत्ती की होती थी। ३ आवरण। ४ निषेध। ५ अनाज ओसाना या बरसाना। ६ शलकी। सलई।

वल्लकी—स्त्री०[स०√वल्ल्+क्वुन्+ङीप्] १ वीणा। २ नारद की वीणा का नाम। ३. सलई का पेड।

वल्लभ—वि० [स०√वल्ल्+अभच्] [स्त्री० वल्लभा] अत्यन्त प्रिय। प्रियतम। प्यारा।

पु० १ अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। २ स्त्री का पति। ३ मालिक। स्वामी। ४ अच्छे लक्षणोवाला घोडा। ५ एक प्रकार का सेम। ६ दे० 'वल्लभाचार्य'।

वल्लभ-मत—पु०=वल्लभ-सप्रदाय।

वल्लभ-संप्रदाय—पु० [स० ष० त०] महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टिमार्ग सप्रदाय का दूसरा नाम। दे० 'पुष्टि-मार्ग'।

वल्लभा—वि० स्त्री० [स० वल्लभ+टाप्] स० 'वल्लभ' का स्त्री०।

वल्लभी†—पु०=वलभी।

वल्लर—पु०[स०√वल्ल्+अरन्] १ निकुज। २ वन। ३ लता। ४. मजरी। ५. अगर।

वल्लरी—स्त्री०[स० वल्लर+ङीप्] १ वल्ली। लता। २ मजरी। ३ मेथी। ४ बना। वन। ५ पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

वल्लव—पु० [स० वल्ल्√वा (गति)+क] [स्त्री० वल्लवी] १ १. गोप। ग्वाला। २. रसोइया।

वल्लाह—अव्य०[अ०] १ ईश्वर की शपथ लेते हुए। २ सचमुच।

वल्लि—स्त्री०[स०√वल्ल्+इन्] १. लता। २ पृथिवी।

वल्लिका—स्त्री० [स० वल्लि+कन्+टाप्] १ लता। वल्ली। २ बेला। ३. पोई नामक साग।

वल्लिज—पु०[स० वल्लि√जन् (उत्पत्ति)+ड] मिर्च।

वल्लि-दूर्वा—स्त्री०[स० मध्य० स०] सफेद दूब।

वल्ली—स्त्री०[सं० वल्लि+ङीष्] १. लता। २ काली अपराजिता। ३ केवटी मोथा। ४ अग्नि दमयन्ती। ५ शाल का वृक्ष।

वल्लुर—पु०[स०√वल्ल्+उरच्] १ कुज। २ मजरी। ३ क्षेत्र। ४. निर्जल स्थान।

वल्लूर—पु०[स०+वल्ल्+ऊरच्] १ धूप मे सुखाया हुआ मास, विशेषत मछली का मास। २ सूअर का मास। ३ ऊसर जमीन। ४. जगल। वन। ५. उजाड जगह। वीरान।

वल्वल—पु०[स०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था। इल्वल।

वव—पु०[स०] एक करण। (ज्यो०)

वशकर—वि०[स० वशकर] वशीभूत करनेवाला।

वशंवद—वि०[स० वश√वद् (बोलना)+खच्, मुम्] १. जो किसी के वश या प्रभाव मे हो। २ कही हुई बात या आज्ञा माननेवाला। आज्ञाकारी।

वश—पु०[स०√वश् (चाहना आदि)+अप्] १ अधिकार, नियन्त्रण या प्रभाव क्षेत्र मे लाने या रखने की शक्ति या समर्थता। काबू।

वि० १. काबू मे आया हुआ। अधीन। २ आज्ञानुवर्ती। ३ नीचा दिखलाया हुआ। ४ जादू-टोने से मुग्ध किया हुआ।

पद—वश का=जिस पर वश चलता हो। जो सभव हो। जैसे—यह काम हमारे वश का नही है।

मुहा०—वश चलना=ऐसी स्थिति होना कि अधिकार या शक्ति अपना पूरा काम कर सके। जैसे—तुम्हारा वश चले तो तुम उसे घर से निकाल दो। वश मे होना=पूर्ण नियन्त्रण मे होना।

५. इच्छा। ६ जन्म। ७. कसबियो के रहने का स्थान। चकला।

वशक—वि०[स० वशकर] [स्त्री० वशका] १. वश मे करनेवाला। २ वश मे किया हुआ।

वशका—स्त्री० [स० वश√कै (शोभा)+क+टाप्] आज्ञा और वश मे रहनेवाली पत्नी।

वशग—वि० [स० वश√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० वशगा] आज्ञाकारी।

वशा—स्त्री०[स०√वश्+अच्+टाप्] १ वध्या स्त्री। बाँझ। २ जोरू। पत्नी। ३. गौ। ४. हथनी। ५ स्त्री के पति की बहन। ननद।

वशानुग—वि० [स० वश-अनुग, ष० त०] १ वश मे रहनेवाला। २ वश मे किया हुआ। ३ दे० 'वशग'।

वशित—स्त्री०=वशित्व।

वशित्व—पुं०[सं० वशिन्+त्व] १ वश मे होने की अवस्था या भाव। वश चलना। २ योग मे अणिमा आदि आठ सिद्धियो मे से एक सिद्धि जिससे साधक सब को वश मे कर सकता है। ३. सम्मोहन।

वशिमा—स्त्री०[सं० वश+इमनिच्] योग की वशित्व नामक सिद्धि।

वशिर—पुं०[सं०√वश्+किरच्] १ समुद्री लवण। समुद्री नमक। २ एक प्रकार की लाल मिर्च।

वशिष्ठ—पुं०=वसिष्ठ।

वशी (शिन्)—वि०[सं० वश+इनि] १ जो किसी के वश मे हो। २ जिसने अपनी इच्छाशक्ति और इन्द्रियो को वश मे कर रखा हो।

वशीकर—वि० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ+ट] १ वश मे करनेवाला। जैसे—वशीकर मत्र। २. सम्मोहक।

पुं० वशीकरण।

वशीकरण—पुं० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] [वि० वशीकृत] १. दूसरो को अपने वश मे करने, रखने अथवा लाने की क्रिया या भाव। वश मे करना। २ तत्र मे एक प्रकार का प्रयोग जिसमे मत्र-बल से किसी को अपने वश मे किया या लगाया जाता है। ३ ऐसा साधन जिससे किसी को वशीभूत किया जा सके या किया जाता हो।

वशीकृत—भू० कृ० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] १. वश मे किया हुआ। २ मोहित। मुग्ध।

वशीभूत—भू० कृ०[सं० वश+च्वि, ईत्व√भू (होना)+क्त] वश मे आया या किया हुआ। अधीन। तावे।

वश्य—वि०[सं० वश+यत्] [भाव० वश्यता] १ जो वश मे किया गया हो। २ जो वश मे किया जा सकता हो। ३. अधीनस्थ।

पुं०१. दास। नौकर। सेवक। २ अधीनस्थ कर्मचारी या व्यक्ति।

वश्यता—स्त्री०[सं० वश्य+तल्+टाप्] वश मे होने की अवस्था या भाव। अधीनता।

वश्या—स्त्री०[सं० वश्य+टाप्] १ लगाम। २ गोरोचन। ३ नीली अपराजिता।

वषट्—अव्य० [सं०√वह (पहुँचाना)+डषटि] एक शब्द जिसका उच्चारण यज्ञ के समय अग्नि मे आहुति देते समय किया जाता है।

वषट्-कार—पुं०[सं० ष० त०] १ देवताओ के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ। होम। होत्र। २ तैंतीस वैदिक देवताओ मे से एक देवता। ३ वषट् (शब्द) का उच्चारण करनेवाला व्यक्ति।

वषट्-कृत—भू० कृ०[सं० सुप्सुपा स०] देवताओ के निमित्त अग्नि मे डाला हुआ। होम किया हुआ। हुत।

वषट्-कृत्य—पुं०[सं० मध्य० स०] होम।

वष्कयणी—स्त्री० [सं०√वष्क् (गति)+अयन्=वष्कय (एक साल का बछडा)√नी (ले जाना)+क्विप्+ङीप्, णत्व] बकेना गाय।

वसंत—पुं०[सं०√वस्+झच्] १. वर्ष की छ ऋतुओ मे से एक ऋतु। हेमत और ग्रीष्म के बीच की ऋतु। २ माघ सुदी पचमी को मनाया जानेवाला एक पर्व जो उक्त ऋतु के आगमन का सूचक होता है। ३ सगीत मे छ मुख्य रागो मे से एक जो विशेष रूप से वसत ऋतु मे गाया जाता है। ४ एक ताल। ५ चेचक। ६ अतिसार। ७ फूलो का गुच्छा।

वसतक—पुं०[सं० वसत+कन्] श्योनाक। सोनापाढा।

वसतगोर्वाणी—स्त्री०[सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वसत घोषी (षिन्)—पुं०[सं०] कोकिल।

वसंतजा—स्त्री०[सं० वसत√जन् (उत्पन्न करना)+ड+टाप्] १ वासती लता। २ सफेद जूही। ३ वसतोत्सव।

वसततिलक—पुं०[सं० ष० त०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, भगण, जगण, जगण, और दो गुरु—इस प्रकार कुल चौदह वर्ण होते है। २ एक प्रकार का पौधा और उसके फूल।

वसत तिलका—स्त्री०[सं० वसततिलक+टाप्] =वसंततिलक (वर्ण-वृत्त)।

वसंतदूत—पुं०[सं० ष० त०] १ आम (वृक्ष)। २ कोयल। ३ पच-राग। ४ चैत्रमास।

वसत-दूती—स्त्री०[सं० वसतदूत+ङीप्] १. कोयल। २ पाडर वृक्ष। ३ माधवी लता।

वसत-नारायणी—स्त्री०[सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वसंत पंचमी—स्त्री०[सं० ष० त०] माघ महीने की शुक्ल पचमी। पहले इस दिन वसत और रति सहित कामदेव की पूजा होती थी, पर आज-कल यह सरस्वती पूजन का दिन माना जाता है। इसे श्री-पचमी भी कहते है।

वसत-पूजा—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का धार्मिक समारोह जिसमे वेदो के कुछ विशिष्ट मत्रो का सस्वर पाठ होता है।

वसत बंधु—पुं० [सं० ष० त०] कामदेव।

वसत-भूपाल—पुं०[सं० मध्य० स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

वसंत भैरवी—स्त्री०[सं० मध्यम० स०] ऐसी भैरवी जो वसत राग मे गाई जाती हो।

वसंत महोत्सव—पुं०[सं० ष० त०] १ एक उत्सव जो प्राचीन काल मे वसत पचमी के दूसरे दिन कामदेव और वसत की पूजा के उपलक्ष मे मनाया जाता था। २ होली का उत्सव।

वसत मारु—पुं०[सं० मध्यम० स०] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

वसत यात्रा—स्त्री०[सं०] वसतोत्सव।

वसंत-व्रत—पुं०[सं० ब० स०] कोकिल।

वसंत सखा—पुं०[सं०] कामदेव।

वसती—वि०[सं० वसत] १ वसत ऋतु-सबधी। वसत का। जैसे—वसती मौसम। २ वसत ऋतु मे फूलने वाली सरसों के फूलों की तरह हलके पीले रग का। वसती। जैसे—वसती चोली, वसती साडी।

पुं० उक्त प्रकार का रग।

वसतोत्सव—पुं०[सं०] १ वसत पचमी के दिन मनाया जानेवाला उत्सव। (पश्चिम) २ प्राचीन काल मे माघ सुदी छठ (वसत पचमी के दूसरे दिन) को मनाया जानेवाला उत्सव जिसमे कामदेव की पूजा की जाती थी। ३. होली का उत्सव।

वसअत—पुं०[अ०] १. विस्तार। फैलाव। २ चौडाई। ३. अंटने या समाने की जगह। गुजाइश। समाई। ४ शक्ति। सामर्थ्य।

वसता—स्त्री० १ वस्ती। २. वराकत।
†पु० -वस्त्र (कपड़ा)।
वसति—स्त्री०[सं०√वस्(निवास करना)+अति] १. वास। रहना। २ घर। ३ आवादी। वस्ती। ४ जैन साधुओं का मठ। ५. रात।
वसती—स्त्री०[सं० वसति-ङीप्] १ वास। रहना। २. रात। ३ घर। ४ वसती।
वसन—पु० [सं० √वस् (आच्छादान करना)+ल्युट्—यु—अन] १. वस्त्र। कपड़ा। २ ढकने का कपडा। आच्छादन। आवरण। ३. किसी स्थान पर वसना। निवास। ४ कमर मे पहनने का गहना। ५ तेज-पत्ता।
वसना—स्त्री०[सं०] स्त्रियो की कमर का एक गहना।
अ०=वसना।
†अ०[सं० वश] वश मे होना।
वसनार्णवा—स्त्री०[स० व० स०] भूमि। पृथ्वी।
वसमा—पु०[अ०] १ नील का पत्ता। २. खिजाव। ३ उबटन। ४. पुरानी चाल का एक प्रकार का छापे का कपड़ा जो चांदी के वरक लगाकर छापा जाता था।
वसल—पु०=वस्ल (संयोग)।
वसली—स्त्री० [अ० वस्ली] चित्रकला मे कई कागजों को चिपकाकर बनाया हुआ गत्ता या दफ्ती।
वसलीगर—पु० [अ०+फा०] १ वसली या गत्ता बनानेवाला। २ हाथ के अंकित चित्रों को वसली या गत्ते पर चिपका कर उसमे गोट आदि लगानेवाला।
वसवास—पु०[अ० वस्वास मि० स० विश्वास] १ अविश्वास। २ सदेह। संशय। ३ आगा-पीछा। दुविधा।
पु०[हिं० वसना+वास] निवास। वास।
वसवासी—वि० [अ० वसवास] १ विश्वास न करनेवाला। सशयात्मा। शक्की। २ धोखा देनेवाला। धूर्त।
†वि०=निवासी।
वसह—पु०[स० वृषभ, प्रा० वसह] बैल।
वसा—स्त्री०[सं०] [वि० वसीय] १ पीले अथवा सफेद रंग का एक प्रसिद्ध चिकना या तेलावत पदार्थ जो पशुओं, मछलियों और मनुष्यो के शरीर मे पाया जाता है और जिसकी अधिकता होने पर उनमे मोटाई आती है। चरबी। (फैट) २ उक्त प्रकार का कोई सेंद्रिय तत्त्व या पदार्थ (जैसे—पौधों या फलों मे का)। ३. मज्जा।
वसाकेतु—पु०[सं०] एक प्रकार या तरह का धूमकेतु या तारक पुंज।
वसातत—स्त्री०[अ० वस्त(मध्य)का भाव०] १ मध्यस्थता २ जरिया। द्वार।
वासति—पु० [सं० व० स०] १ उत्तर भारत का एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी। ३ इक्ष्वाकु का एक पुत्र।
वसाप्रमेह—पु०[सं० प० त०] एक प्रकार का मेहरोग जिसमे पेशाव के साथ चरवी निकलती है।
वसामेह—पु०[सं० प० त०]=वसाप्रमेह
वसार—पु०[सं० वसा+रक्] १. इच्छा। २. वश। ३. अभिप्राय।
वसाल—पु०[?] भेंट। (राज०) उदा०—ठौड़ा तरह निजामियत, देवै मीर वसाल—डिं० मा० दू०।
वसित—वि०[सं०] १. बसा हुआ। २. पहना हुआ। ३ प्राप्त या संगृहीत किया हुआ।
पुं० १ निवास स्थान। २ बस्ती। ३ वस्त्र।
वसितव्य—वि० [सं०√वस् (आच्छादन करना)+तव्य, इट्] धारण करने या पहने जाने के योग्य।
वसिर—पु० [सं०√वस्+किरच्] १. समुद्री नमक। २ गज पिप्पली। ३ लाल चिचड़ा। ४ [illegible]।
वसिष्ठ—पु०[सं० वस+इष्ठन्] १ वैदिककालीन सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र माने जाते तथा ऋग्वेद के सातवें मण्डल के रचयिता कहे गये हैं। २ सप्तर्षि मडल का एक तारा जिसके पास का छोटा तारा अरुन्धती कहलाता है।
वसिष्ठ पुराण—पु० [सं० मध्य० स०] एक उप-पुराण जो कुछ लोगों के मत से 'लिंग पुराण' ही है।
वसिष्ठ प्राची—पु० [सं० ष० स०] एक प्राचीन जनपद।
वसी (सिन्)—पु० [सं० वस+इनि] ऊदबिलाव।
पु० [अ०] वसीयत लिखकर जिसे वारिस बनाया गया हो। वह जिसके नाम वसीयत की गई हो।
वसीअ—वि०[अ०] १ चौड़ा। २ फैला हुआ। विस्तृत।
वसीका—पु०[अ० वसीका] १. प्रमाण-पत्र। २ दस्तावेज। ३ इकरार-नामा। ४ वह धन जो सरकारी खजाने में इसलिए जमा किया गया हो कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करेगा अथवा किसी धर्म-कार्य आदि मे लगाया जायगा। ५ उक्त प्रकार की मद मे से अथवा सहायता के रूप में भरण-पोषण आदि के लिए नियमित रूप से मिलनेवाला धन। वृत्ति।
वसीय—वि०[सं०] १ वसा संबंधी। २ जिसमे वसा या चरबी का भाग अधिक हो। (फैटी)
†पु०=वसी (जिसके नाम वसीयत हो)।
†वि०=वसीअ (विस्तृत)।
वसीयत—स्त्री०[अ०] १. वह लिखित आदेश कि मेरी अनुपस्थिति मे या मृत्यु के उपरान्त मेरी सम्पत्ति का वारिस अमुक व्यक्ति या अमुक संस्था होगी। २ उक्त आशय का लिखा हुआ आदेश पत्र। वसीयतनामा।
वसीयतनामा—पु०[अ०+फा०] वह पत्र जिसपर कोई वसीयत लिखी हो। इच्छापत्र।
वसीला—पु०[अ० वसील] १ लगाव। संबंध। २. कोई काम करने का द्वार या साधन। जरिया।
वसुंधरा—स्त्री० [सं० वसु√धा (धारण करना)+खच्-मुम्] पृथ्वी।
वसु—वि०[सं०] १. जो सबमे निवास करता हो। २ जिसमे सबका निवास हो।
पु० १. सूर्य। २ विष्णु। ३ शिव। ४ कुबेर। ५ धन-सम्पत्ति। जैसे—सोना-चांदी, रत्न आदि। ६ किरण। रश्मि। ७ साधु पुरुष। सज्जन। ८. जल। पानी। ९. तालाव। सरोवर। १० अग्नि। ११ पेड। वृक्ष। १२ पीली मूंग। १३. मौलसिरी। १४ अगस्त का पेड। १५. जोते जानेवाले घोड़े, बैल आदि की जोत। १६ देवताओं का

एक गण जिसके अन्तर्गत आठ देवता है। १७ उक्त के आधार पर आठ की संख्या का वाचक शब्द। १८ छप्पय के हो सकनेवाले भेदो में से ६९वाँ भेद।

स्त्री०[सं०] १ दीप्ति। चमक। २ वृद्धि नामक ओषधि। ३ दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी, और जिसमे द्रोण आदि आठ वसुओ का जन्म हुआ था। ४. अमरावती।

वसुक—पु० [सं०√वसु+क या वसु+कन्] १. साँभर नमक। २ पांशु लवण। ३ बथुआ नाम का साग। ४. काला अगर। ५ आक। मदार। ६. मौलसिरी।

वसुकरी—स्त्री० [सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वसुकर्ण—पु०[सं० ब० स०] एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि।

वसुकला—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसे 'तारक' भी कहते हैं। दे० 'तारक'।

वसुद—पु०[सं० वसु√दा (देना)+क] १ कुबेर। २ विष्णु।

वसुदा—स्त्री०[सं० वसुद+टाप्] स्कंद की एक मातृका।

वसुदेव—पु०[सं०] मथुरा के राजा कंस के बहनोई जो श्रीकृष्ण के पिता थे।

वसुदेवत—पु०[सं० ब० स०] धनिष्ठा नक्षत्र।

वसुदेव्या—स्त्री०[सं० वसुदेव+यत्+टाप्] धनिष्ठा नक्षत्र।

वसुद्रुम—पु०[सं० मध्यम० स०] गूलर।

वसुधर्मिका—स्त्री०[सं० ब० स०] १ स्फटिक। बिल्लौर। २ संगमरमर।

वसुधा—स्त्री०[सं० वसु√धा (धारण करना)+क+टाप्] पृथ्वी।
वि० धन देनेवाला।

वसुधाधर—पु०[सं०] १. पर्वत। २ विष्णु।

वसुधान—पु० [सं० वसु√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] पृथ्वी।

वसुधारा—स्त्री०[सं० वसुधार+टाप्] १ एक शक्ति। (जैन) २ बौद्धो की एक देवी। ३ अलका पुरी। ४ एक प्राचीन तीर्थ। ५ एक प्राचीन नदी। ६. नांदीमुख श्राद्ध के अन्तर्गत एक कृत्य जिसमे घी की सात धारे दी जाती है।

वसुन—पु०[सं० वसु√नी (ढोना)+ड] यज्ञ।

वसुनीत—पु०[सं० तृ० त०] ब्रह्मा।

वसुनीथ—पु०[सं० ब० स०] अग्नि।

वसुनेत्र—पु०[सं० ब० स०] बौद्धों के अनुसार ब्रह्मा का एक नाम।

वसुपति—पु०[सं०] श्रीकृष्ण।

वसुपाल—पु०[सं० वसु√पाल् (पालन करना)+अच्] राजा।

वसुप्रद—पु०[सं०] १ शिव। २ कुबेर। ३ स्कंद का एक अनुचर।
वि० धन देनेवाला।

वसुप्रभा—स्त्री०[सं० ब० स०] १. अग्नि की एक जिह्वा। २ कुबेर का राजनगर।

वसुबंधु—पु०[सं०] महायानी शाखा के एक बौद्ध जिनकी रचनाओं के चीनी अनुवाद अब भी प्राप्य है।

वसुभ—पु०[सं०] धनिष्ठा नक्षत्र।

वसुमती—स्त्री०[सं०] १. पृथ्वी। २. एक प्रकार का वर्ण, वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण और सगण होते है।

वसुमना—पु०[सं० ब० स०] १ अग्नि। २. शिव। ३ पुराणानुसार एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि।

वसुमान—पु०[सं०] पुराणानुसार उत्तर दिशा का एक पर्वत।

वसुमित्र—पु०[सं० ब० स०] महायानी शाखा के एक बौद्ध आचार्य जो काश्मीर के पश्चिम अश्मापरान्त देश के निवासी कहे गये हैं।

वसुरुचि—पु०[सं० वसु√रुच् (प्रकाश करना)+क्विप्] एक प्रकार के देवता।

वसुरूप—पु०[सं० ब० स०] शिव।

वसुल—पु०[सं० वसु√ला (लेना)+क] देवता।

वसुवन—पु०[सं० ष० त०] ईशान कोण मे स्थित एक प्राचीन देश। (बृहत्संहिता)

वसुविद्—पु०[सं० वसु√विद् (प्राप्त होना)+क्विप्] अग्नि।

वसुश्री—स्त्री०[सं० ब० स०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

वसुश्रेष्ठ—पु०[सं०] श्रीकृष्ण।

वसुषेण—पु०[सं० ब० स०] १ कर्ण। २ विष्णु।

वसुसारा—स्त्री०[सं० ष० त०] अलका (नगरी)।

वसुस्थली—स्त्री०[सं० ब० स०] अलका (नगरी)।

वसुहा—स्त्री०[सं० वसुधा] १. पृथ्वी। २. जगह। स्थान।

वसूल—वि०[अ०] १. जो मिला या प्राप्त हुआ हो। २ (प्राप्य धन या पदार्थ) जो दूसरे से ले लिया गया हो। उगाहा हुआ। ३. जितना व्यय या परिश्रम हुआ हो उसका मिला हुआ प्रतिफल।
पु० उगाही या प्राप्त की हुई रकम। प्राप्ति।

वसूली—स्त्री०[अ० वसूल] १. वसूल करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। प्राप्य धन की प्राप्ति। उगाही। २ लोगों से धन आदि लेकर इकट्ठा करने की क्रिया या भाव।
वि० जो वसूल किये जाने को हो।

वस्त—पु०[सं०] बकरा।
पु०[अ०] बीच का भाग। मध्य।
†स्त्री०=वस्तु।

वस्तक—पु०[सं० वस्त+कन्] बनाया हुआ नमक। (प्राकृतिक नमक से भिन्न)

वस्तव्य—वि०[सं०√वस् (निवास करना)+तव्य] (स्थान) जिसमे निवास किया जा सके। रहने या बसने के योग्य।

वस्ताद†—पु०=उस्ताद।

वस्ति—स्त्री०[सं०] १ नाभि के नीचे का भाग। पेडू। २ मूत्राशय। (यूरिनरी ब्लैडर) ३ पिचकारी। ४ दे० 'वस्ति कर्म'।

वस्तिकर्म—पु०[सं०] १ लिंगेंद्रिय, गुदेन्द्रिय आदि मार्गों मे पिचकारी देने की क्रिया। (वैद्यक) २ आज-कल आँतें साफ करने के लिए या रेचन के उद्देश्य से गुदा-मार्ग से जल आदि चढाने की क्रिया। (एनिमा)

वस्तिकुंडलिका—स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे मूत्राशय मे गाँठ-सी पड जाती है जिससे पीडा तथा जलन होती है और पेशाब कठिनता से उतरता है।

वस्तिवात—पु०[सं०] एक प्रकार का मूत्र रोग जिसमे वायु बिगडकर वस्ति (पेडू) मे मूत्र को रोक देती है।

वस्तिशोधन—पु० [सं०] १. मदन वृक्ष। मैनफल का पेड। २ मैनफल।

वस्ती—वि०[सं०] वस्त अर्थात् मध्य भाग मे होनेवाला। बीच का।
†स्त्री०१ =वस्ती। २ =वस्ति।

वस्तु—स्त्री० [सं०√वस्+तुन्] १. वह जो कुछ अस्तित्व मे हो। वह जिसकी वास्तविकता हो। गोचर पदार्थ। २ श्रम द्वारा निर्मित चीज। ३ वह जो किसी वाद-विवाद, आलोचना या विचार का विषय हो। विषय। ४ कथावस्तु।

वस्तुक—पु०[सं० वस्तु+कन्]१. सार भाग। २ बथुआ का साग।

वस्तु-जगत्—पु०[सं० कर्म० स०] यह दृश्यमान जगत्। ससार।

वस्तु-ज्ञान—पु०[सं०]१. किसी वस्तु की पहचान। २ मूल तथ्य या वास्तविकता का ज्ञान। तत्त्वज्ञान।

वस्तुतः—अव्य०[सं० वस्तु+तसिल्] वास्तविक रूप या स्थिति मे। वास्तव मे। (डी फैक्टो)

वस्तु-निर्देश—पु०[सं० ब० स०] मगलाचरण का एक भेद जिसमे कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है। (नाटक)

वस्तु-निष्ठा—वि०[सं०]१ अध्यात्म और दर्शन मे, जो वाह्य तत्वों या भौतिक पदार्थों से सबध रखता हो, स्वय कर्ता के आत्म या चेतना से जिसका कोई सबध न हो। 'आत्म-निष्ठ' का विपर्याय। २ कला और साहित्य मे जो वाह्य तत्वो या भौतिक पदार्थों पर ही आश्रित हो, स्वय कर्ता या कृती के आत्म या चेतना से जिसका कोई सबध न हो। 'आत्म-निष्ठ' का विपर्याय। (आब्जेक्टिव, उक्त दोनो अर्थों के लिए)

वस्तु-बल—पु०[सं० ष० त०] वस्तु का गुण।

वस्तु-रूपक—पु० दे० 'आलेख रूपक'।

वस्तु-वक्रता—स्त्री०[सं०] साहित्यिक रचनाओ मे होनेवाला एक प्रकार का सौन्दर्य-सूचक तत्त्व जो कवि की शब्दावली से भिन्न उन वस्तुओ या विषयो पर आश्रित होता है जिन्हे वह अपने वर्णन के लिए चुनता है। वाक्य-वक्रता (देखे) की तरह यह भी कवि की श्रेष्ठतम प्रतिभा से उद्भूत होता और काव्य के समस्त सौंदर्य का उद्गम होता है। वर्ण्य वस्तु या विषय की रमणीयता, सुकुमारता और कौशलपूर्ण प्रदर्शन ही इसके प्रमुख लक्षण है।

वस्तुवाद—पु०[सं०] [वि० वस्तुवादी] यह दार्शनिक सिद्धान्त कि जगत् जिस रूप मे हमे दिखाई देता है, उसी रूप मे वह वास्तविक और सत्य है। विशेष—न्याय और वैशेषिक का यही सिद्धात है जो अद्वैतवाद के सिद्धान्त के बिलकुल विपरीत है।

वस्तु-स्थिति—स्त्री०[सं० ष० त०] किसी चीज या वस्तु की वास्तविक स्थिति।

वस्तूत्प्रेक्षा—स्त्री०[सं०] साहित्य मे उत्प्रेक्षा अलकार का एक भेद जिसमे किसी उपमेय मे उपमान के कार्य, गुण आदि की कल्पना की जाती है।

वस्तूपमा—स्त्री०[सं० ब० स०] उपमा अलकार का एक भेद।

वस्त्य—पु०[सं० वस्तु+यत्] बसने की जगह। बसती।

वस्त्र—पु०[सं०√वस् (आच्छादन करना)+ष्ट्रन्] ऊन, रूई, रेशम आदि के तागो से बुना या जमाकर तैयार किया हुआ वह प्रसिद्ध पदार्थ जो पहनने, ओढने आदि के काम आता है। कपडा।

वस्त्रग्रंथि—स्त्री० [सं० ष० त०] नीवी। नाडा। इजारबद।

वस्त्रप—पु०[सं०] आधुनिक गिरनार पर्वत और तीर्थ का पुराना नाम।

वस्त्र-पट—पु० [सं०] कपडो पर हाथ से अकित किया हुआ चित्र। (प्राचीन)

वस्त्र-पुत्रिका—स्त्री०[सं० मध्य० स०] गुडिया।

वस्त्र-पूत—वि०[सं०] कपडे से छाना हुआ।

वस्त्र-बंध—पु०[सं०] नीवी। इजारबद।

वस्त्र-भवन—पु०[सं० ष० त०] खेमा। तबू।

वस्त्र-रजन—पु०[सं०] कुसुभ का पेड।

वस्त्र-रंजनी—स्त्री० [सं०] मजीठ।

वस्त्रागार—पु० [सं० वस्त्र+आगार]१. वह स्थान जहाँ सब प्रकार के या बहुत से कपडे हो। २ घर मे वह कमरा जिसमे पहनने के कपडे रखे जाते हो तथा उतारे और पहने जाते हो। (ड्रेसिंग रूम)

वस्न—पु०[सं०√वस् (आच्छादन करना)+न]१ वेतन। २ दाम। मूल्य। ३ कपडा। ४ द्रव्य। वस्तु। ५ धौ का पेड। ६ छाल। त्वक्।

वस्नक—पु०[सं० वस्न+कन्] करधनी।

वस्फ—पु०[अ०]१ प्रशसा। स्तुति। २ विशेषता-सूचक गुण। सिफत।

वस्ल—पु०[अ०]१. एक दूसरे का आपस मे मिलना। मिलन। २. स्त्री और पुरुष या प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप। संयोग। ३. मनुष्य की आत्मा का परमात्मा मे लीन होना। मृत्यु। ४ प्रेमी और प्रेमिका का सभोग।

वस्ली—स्त्री०=दे० 'वसली'।

वस्वौकसारा—स्त्री० [सं० स० त०] १. इद्रपुरी। २. कुबेर की अलकापुरी। ३ गगा।

वहत—पु०[सं०√वह् (ढोना)+झ—अन्त] १. वायु। २. वालक।

वह—सर्व०[सं०√वह् (ढोना)+अच्] १ एक सर्वनाम जो किसी स्थिति या सदर्भ से अनुमानित किया जाता अथवा ज्ञात या सूचित होता हो। २ पति के लिए प्रयुक्त सर्वनाम। जैसे—वह मुझसे कुछ भी नहीं कह गये थे।
पु०[सं०]१. बैल का कधा। २ घोड़ा। ३. वायु। हवा। ४ मार्ग। रास्ता। ५ नद।
वि० वहन करने अर्थात् उठा या ढोकर ले जानेवाला (यौ० के अन्त मे)। जैसे—भारवह।

वहत—पु०[सं०]१ बैल। २ पथिक। यात्री।

वहति—पु० [सं०]१. बैल। २ वायु। ३. परामर्शदाता।

वहती—स्त्री०[सं०] नदी।

वहदत—स्त्री०[अ०]१ 'वहिद' अर्थात् एक होने की अवस्था, गुण या भाव। २ अद्वैतवाद। ३. एकान्तता।

वहदानी—वि० [अ०] [भाव० वहदानियत] १. 'वहिद' अर्थात् एक से सबध रखनेवाला। २. अद्वैतवाद-सम्बन्धी।

वहन—पु०[सं०√ वह् (ढोना)+ल्युट्—अन]१ कही से ले जाने के लिए कोई चीज उठाना या लादना। भार ढोना। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कर्तव्य आदि के रूप मे लिए हुए भार का निर्वाह करना। ३ एक स्थान से दूसरे स्थान पर चीजें ले जाने का साधन। जैसे—गाडी, नाव आदि। ४ वास्तुकला मे खभे के नौ भागो मे से सबसे नीचेवाला भाग।

वहनक—पु०[सं०] गाड़ी, ठेला, नाव आदि जिसपर भार आदि लादकर कहीं ले जाया जाता है। संवाहक।

वहन-पत्र—पु०[सं० कर्म०स०] वह पत्र जिसमें वहन की जानेवाली अर्थात् ढोकर कहीं ले जाई जानेवाली चीजों का विवरण या सूची रहती है। (बिल आफ लैंडिंग)

वहना—स०[सं० वहन] १ वहन करना। ढोना। २ कर्तव्य आदि ऊपर लेना अथवा उसका निर्वाह करना।

वहनीय—वि० [सं०√वह् (ढोना)+अनीयर्] १ वहन करने के योग्य। २ जो वहन किया जाने को हो।

वहम—पु०[अ०]मन में प्रायः बनी रहनेवाली कोई ऐसी असंगत या निराधार धारणा जिसके फल-स्वरूप अपने किसी अनिष्ट या हानि की संभावना जान पड़ती हो। झूठा शक। मिथ्या संदेह।

वहमी—वि०[अ०]१. जिसके मन में प्रायः कोई वहम बना रहता हो। २ शक्की।

वहला—स्त्री०[सं० वहल+टाप्]१ शतपुष्पा। २ बड़ी इलायची। ३ दीपक राग की एक रागिनी।

वहशत—स्त्री०[अ०]१ वहशी अर्थात् जंगली होने की अवस्था या भाव। जंगलीपन। बर्बरता। २ उजड्डपन। ३ पागलपन। बावलापन। ४ अधीरता और विकलता के कारण होनेवाला मानसिक विक्षेप। पागलों का-सा आचार-व्यवहार।

मुहा०—**वहशत सवार होना**=किसी प्रबल मनोवेग के कारण सहसा पागलपन का सा काम करने को उतारू होना।

५ किसी स्थान के उजाड़ या सुनसान होने के कारण छाई रहनेवाली उदासी। खिन्न करनेवाला सन्नाटा। ६ आकार-प्रकार, रूप-रंग आदि का डरावनापन।

क्रि० प्र०—छाना।—बरसना।

वहशियाना—वि०[अ०] वहशियों की तरह का।

वहशी—वि०[अ०]१ जंगल में रहनेवाला। जंगली। वन्य। २ (पशु) जो जंगल में घूमता-फिरता और रहता हो। 'पालतू' का विपर्याय। ३. (व्यक्ति) जो परम असभ्य तथा असंस्कृत हो। बर्बर।

वहाँ—अव्य० [हिं० वह] १ उस स्थान में। उस जगह। २ उस अवसर, बिंदु या स्थिति पर। जैसे—उसे इतना बढ़कर रुक जाना चाहिए था, पर वह वहाँ रुका नहीं, बल्कि आगे बढ़ता चला गया।

वहा—स्त्री०[सं० वह+टाप्]१ नदी। २ पानी की धारा या बहाव।

वहाबी—पु०[अ०]१ मौलवी अब्दुलवहाब का चलाया हुआ एक मुस्लिम सम्प्रदाय जो कुरान को मानता है पर हदीसों को नहीं मानता। २ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

वहा-मापक—पु०[सं०] दे० 'धारावेगमापी'।

वहि—अव्य० [सं०√वह्+इमुन्] जो अंदर न हो। बाहर। (इसके यौ० के लिए दे० 'बहि' के यौ०)

वहित—भू० कृ०[सं० अव√हा (त्याग करना)+क्त, अलोप]१ वहन किया हुआ या ढोया हुआ। ३ ज्ञात। ४ विख्यात। ५ प्राप्त।

वहित्र—पु०[सं०] वहन करने का उपकरण। जैसे—गाड़ी, जहाज, नाव, रथ आदि।

वहिनी—स्त्री० [सं० वह+इनि+ङीप्] नौका। नाव।

वहिरंग—वि०, पु०=बहिरंग।

वहिर्गत—वि०=बहिर्गत।

वहिर्द्वार—पु०=बहिर्द्वार।

वहिर्भूत—वि०=बहिर्भूत (बहिर्गत)।

वहिष्करण—पु०=बहिष्करण।

वहिष्कार—पु०=बहिष्कार।

वहिष्ठ—वि० [सं० वह+इष्ठन्] अधिक भार वहन करनेवाला।

वहीं—अव्य०[हिं० वहाँ+ही]१ उसी स्थान पर। उसी जगह। २ उसी बिंदु, समय या स्थिति पर।

वही—सर्व० [हिं० वह+ही] उस वस्तु या तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो। निश्चित रूप में पूर्वोक्त। जैसे—यह वही किताब है जो तुम ले गये थे।

स्त्री०[अ०] ईश्वर की कही हुई बात। देव-वाणी।

वहीव—पु०[सं०]१ रक्तवाहिनी नाड़ियों का एक वर्ग। शिरा। २. स्नायु। ३ मांसपेशी। पट्ठा।

वहूदक—पु०[सं० ब० स०] चार प्रकार के संन्यासियों में से एक।

वह्नि—पु०[सं०√वह (धारण करना)+नि]१ अग्नि। २ तीन प्रकार की अग्नियों के आधार पर तीन की संख्या का सूचक शब्द। ३ चित्रक। चीता। ४ भिलावाँ। ५ मित्रविंदा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

वह्निकर—पु०[सं० वह्नि√ कृ+अच्]१ विद्युत्। बिजली। २ जठराग्नि। ३ चकमक पत्थर।

वह्नि कुमार—पु० [सं० ष० त०] एक प्रकार के देवगण।

वह्नि दैवत—वि० [सं० ब० स०] अग्निपूजक।

वह्निनी—स्त्री० [सं०] जटामासी।

वह्निबीज—पु० [सं०]१ स्वर्ण। सोना। २ बिजौरा नींबू।

वह्निभूतिक—पु० [सं० ब० स०] चाँदी।

वह्निभोग—पु० [सं० ष० त०] घी।

वह्निमंथ—पु० [सं०]=अग्निमंथ वृक्ष।

वह्निमित्र—पु० [सं०] वायु। हवा।

वह्निमुख—पु०[सं०] देवता।

वह्निरेता (तस्)—पु०[सं०] शिव।

वह्निलोह—पु० [सं०] ताम्र। ताँबा।

वह्निलोहक—पु०[सं०] काँसा।

वह्निशिखा—स्त्री०[सं० ब० स०] १ कलिहारी या कलियारी नाम का विष। २ घी। ३ प्रियंवद। ४ गजपीपल।

वह्निश्वरी—स्त्री०[सं० ष० त०] लक्ष्मी।

वह्य—पु० [सं०√वह् (ढोना)+यक्]१ वाहन। यान। २. गाड़ी। शकट।

वि० वहनीय।

वह्यक—वि०[सं० वह्य+कन्]=वाहक।

वाँ—प्रत्य०[स्त्री० वीं]एक प्रत्यय जो १,२, ३, ४, और ६ को छोड़कर शेष संख्या वाचक शब्दों के अन्त में लगकर उनके क्रमिक स्थान का सूचक होता है। जैसे—पाँचवाँ, सातवाँ, आठवाँ आदि।

अव्य०=वहाँ।
वांक—पु०[सं० वक+अण्] समूह।
वाँकड़ा—वि०=बाँका।
वांछक—वि०[सं०√ वाञ्छ् (इच्छा करना)+ण्वुल्-अक] इच्छुक।
वांछन—पु०[सं०√ वाञ्छ्+ल्युट्—अन][भू० कृ० वांछित] वांछा या इच्छा करना।
वांछनीय—वि०[सं० √ वाञ्छ्+अनीयर्] जिसकी वांछा या कामना की गई हो या की जाने को हो।
वांछा—स्त्री० [सं०√ वाञ्छ्+अप्+टाप्] [भू० कृ० वांछित, वि० वांछनीय] इच्छा। अभिलाषा। चाह।
वांछित—भू० कृ० [सं० √ वाञ्छ्+क्त] जिसकी वांछा की गई हो। चाहा हुआ। इच्छित।
वांछितव्य—वि०[सं०] वांछनीय।
वांछिनी—स्त्री०[सं० वाञ्छा+इनि+ङीप्] पुंश्चली स्त्री।
वांछी (छिन्)—वि० [सं० वाञ्छा+इनि] वांछा करने या चाहनेवाला।
वांत—पु०[सं०√ वम् (वमन करना)+क्त] उलटी। कै। वमन।
वांताशी—वि० [सं० वांत √ अश् (खाना)+णिनि,] वमन की हुई चीज खानेवाला।
पु०१. कुत्ता। २. वह ब्राह्मण जो केवल पेट के लिए अपने कुल की मर्यादा नष्ट करे।
वांति—स्त्री०[सं०√ वम्+क्तिन्] कै। वमन।
वांश—वि० [सं० वंश+अण्] १ वंश-संबंधी। वंश का। २ बाँस संबंधी।
वांशिक—पु० [सं० वंश+ठक्—इक]१ बाँस काटनेवाला। २ वंशी अर्थात् बाँसुरी बनानेवाला।
वांशी—स्त्री०[सं० वांश+ङीप्] वंसलोचन।
वा—अव्य०[सं०√वा+क्विप्] विकल्प या संदेहवाचक शब्द। अथवा। या। जैसे—मनुष्य वा पशु।
सर्व० [हिं० वह]१ वह। २ उस। (ब्रज)
वाई—सर्व०=वही।
वाइज़—पु०[अ०]१. वाज अर्थात् नसीहत करनेवाला। २ धर्म या नीति का उपदेश करनेवाला।
वाइदा—पु०=वादा।
वाई—स्त्री०=वायु।
वाइसराय—पु०[अं०] अंगरेजी शासन में भारत का वह सर्वप्रधान शासक अधिकारी जो सम्राट् के प्रतिनिधि स्वरूप यहाँ रहता था। बड़ा लाट।
वाउचर—पु०[सं०] आधार पत्र। (देखें)
वाउला—वि०=बावला।
वाउव—वि०=वातुल।
वाक्—पु० [सं०√वच्(बोलना)+घञ्]१ वाणी। वाक्य। २ शब्द। ३ कथन। ४. वाद। ५. बोलने की इन्द्रिय। ६ सरस्वती।
वाक—पु०[सं० वक+अण्]१ वकों अर्थात् बगलों का समूह। २ वेदों का एक विशिष्ट अंश या भाग। ३. खेत की वह कूत जो बिना खेत नापे की जाती है। ४. वाक्य।
वि० वक या बगले से सम्बन्ध रखनेवाला।
वाकई—अव्य०[अ०] यथार्थ में। वास्तव में। वस्तुतः। जैसे—क्या आप वाकई वहाँ गये थे।
वाकफीयत—स्त्री०[अ०] जान-पहचान। परिचय।
वाकया—पु०[अ० वाकिअ]१ घटना, विशेषतः दुर्घटना। २ वृत्तांत। हाल।
वाकयाती—वि०[अ०] विशिष्ट घटना से संबंध रखनेवाला। जो घटित हुआ हो।
वाका—वि०[अ० वाकअ]१ जो घटना के रूप में घटित हुआ हो। २ किसी स्थान पर स्थित।
पु० वाकया (घटना)।
वाकारना—स०[?] ललकारना। (राज०)। उदा०—बिल्कुटिरी वदन जेम वाकारयौ।—प्रिथीराज।
वाकिनी—स्त्री० [सं० वाक+इनि+ङीप्] तांत्रिकों की एक देवी।
वाकिफ—वि०[अ०]१. परिचित। २ जानकार।
वाकिफकार—वि०[अ० वाकिफ+फ़ा० कार] [भाव० वाकिफकारी] किसी काम या बात की अच्छी सीख या पूरी जानकारी रखनेवाला।
वाकुची—स्त्री० [सं० वा√कुच् (संकुचित करना) +क +ङीष्]=वकुची।
वाकुल—वि०[सं० वकुल+अण्] वकुल-संबंधी। वकुल का।
पु० वकुल। मौलसिरी।
वाकोपवाक—पुं० [सं० द्व० स०] कथोपकथन। बात-चीत।
वाकोवाक—पु०[सं० द्व० स०] कथोपकथन। बात-चीत।
वाकोवाक्य—पु० [सं०] १ कथोपकथन। बात-चीत। २ तर्क-वितर्क।
वाक्कलह—पु० [सं० तृ० त०] कहा-सुनी।
वाक् चपल—वि०[सं० तृ० त०]१ जो बातें करने में चतुर हो। २ बकवादी।
वाक् छल—पु०[सं० तृ० त०]१ न्याय शास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक। ऐसी बात कहना जिसका और भी अर्थ निकल सके तथा इसी लिए दूसरा धोखे में रहे। २. टाल-मटोल की बात। बहाना। (विवल्लिग)
वाक्पटु—वि०[सं०] बात-चीत करने में चतुर।
वाक्पति—पु०[सं० ष० त०]१ बृहस्पति। २ विष्णु।
वाक्पारुष्य—पु० [सं० तृ० त० या मध्य० स०] १. बात-चीत में होनेवाली कठोरता या परुषता। कड़वी बात कहना। २ धर्मशास्त्रानुसार किसी की जाति, कुल इत्यादि के दोषों को इस प्रकार ऊँचे स्वर से कहना कि उससे उद्वेग या क्रोध उत्पन्न हो।
वाक्य—पु०[सं०√वच् (बोलना)+ण्यत्]शब्द या शब्दों का ऐसा समूह जो एक विचार पूरी तरह से व्यक्त करे। जुमला। (सेन्टेन्स)
वाक्यकर—वि० [सं०] झूठी या तरह-तरह की बातें बनानेवाला।
पुं० सन्देशवाहक।
वाक्य-ग्रह—पु०[सं० ष० त०] मुँह का पक्षाघात से ग्रस्त होना।
वाक्य-भेद—पु०[सं० ष० त०] मीमांसा में एक ही वाक्य का एक ही काल में परस्पर विरुद्ध अर्थ करना।
वाक्य-वक्रता—स्त्री०[सं०]साहित्यिक रचनाओं का एक प्रकार का सौन्दर्य सूचक तत्त्व जो वाक्य रचना के अनोखे और उत्कृष्ट बाँकपन के रूप में

रहता है। यह तत्त्व कवि की बहुत ही उच्च कोटि की प्रतिभा से उद्भूत होता है और सारे प्रसाद गुणो, सभी रसो की निष्पत्ति तथा अलकारो का उद्गम या मूल स्रोत होता है। उदा०—(क) कहाँ लौ बरनौ सुन्दरताई खेलत कुँवर कनक आँगन मे, नैन निरखि छवि छाई। कुलहि लसत सिर स्याम सुभग अति, बहुविधि सुरँग बनाई। मानो नव घन ऊपर राजत मघवा धनुप चढाई। अति सुदेस मृदु चिकुर हरत मनमोहन मुख बगराई। मानो प्रकट कज पर मजुल अलि अवली घिरि आई।—सूर। (ख) रुधिर के है जगती के प्रात, चितनल के ये सायकाल। शून्य निश्वासो के आकाश, आँसुओ के ये सिंधु विशाल। यहाँ सुख सरसो शोक सुमेरु, अरे जग है जग का ककाल।—पत।

वाक्य-विन्यास—पु०[स० प० त०]वाक्यो, शब्दो या पदो को यथा-स्थान रखना। वाक्य बनाना।

वाक्य-विश्लेषण—पुं०[स०] व्याकरण का वह अग या क्रिया जिसमे किसी वाक्य मे आये हुए शब्दो के प्रकार, भेद, रूप पारस्परिक सबध आदि का विचार होता है।

वाक्याडबर—पु० [स० प० त०] केवल वाक्यो या वातो मे दिखाया जानेवाला आडम्बर।

वाक् संयम—पु०[स० प० त०] वाणी का सयम। व्यर्थ बातें न करना।

वाक्-सिद्धि—स्त्री० [स० प० त०] तत्र-मत्र योग आदि के द्वारा अथवा स्वाभाविक रूप से प्राप्त होनेवाली ऐसी सिद्धि जिससे कही हुई बात पूरी होकर रहती है। जो बात मुँह से निकल जाय, वह ठीक सिद्ध होना।

वागना—अ०[?] आचरण या व्यवहार करना। (पश्चिमी हिन्दी और मराठी) उदा०— कलपत कोटि जनम जुग वागै दर्शन कतहुँ न पाये।—कबीर।

वागर—पु०[स० वाक्√ऋ (प्राप्त होना आदि)+अच्] १. वारक। २ शाण। सान। ३ निर्णय। ४ भेडिया। ५ पडित। ६ मुमुक्षु। ७ निडर। निर्भय।

† पु०=बाँगडा (प्रदेश)

वागा—स्त्री०[स० वल्गा] लगाम।

वागारु—वि०[स० स० त०] विश्वासघाती। झूठी आशा देने या दिलाने-वाला।

वागीश—पु० [स० प० त०] १ बृहस्पति। २ ब्रह्मा। ३ वाग्मी। ४. कवि।

वि० अच्छा बोलनेवाला। वक्ता।

वागीशा—स्त्री०[स० वागीश+टाप्] सरस्वती।

वागीश्वर—पु०[स० प० त०] १ बृहस्पति। २ ब्रह्मा। ३ कवि। ४ मजुघोष। ५. बोधि सत्त्व।

वि० बहुत अच्छा वक्ता।

वागीश्वरी—स्त्री० [स० वागीश्वर+ङीष्] १. सरस्वती। २ नव-दुर्गाओ मे से एक।

वागुजाश्त—स्त्री०[फा०] १ छोड देना। २. दे देना। ३ मुक्त करना।

वागुजी—स्त्री० [स० वा√गुज् (सकोच करना)+क+ङीप्] बकुची।

वागुण—पु०[स० प० त०] १ कमरख। २ बैंगन। भटा।

वागुरा—स्त्री०[स० वा√गृ+उरच्+टाप्] वह जाल जिसमे हिरन आदि फँसाये जाते है।

वागुरि—स्त्री०[स० वागुरा] जाल। पाश। उदा०—वागुरि जणे विस-तरण।—प्रिथिराज।

वागुरिक—पु० [स० जा वगुरा+ठक्—इक] हिरन फँसानेवाला शिकारी। मृग व्याध।

वागुलि—पु० [स० वा √गुड् (सुरक्षित रखना)+इनि, ड—ल] १ डिब्बा। २ पानदान।

वागुलिक—पु०[स० वागुलि+कन्] राजाओ का वह सेवक जिसका काम उनको पान खिलाना होता था। प्राचीनकाल मे वह भृत्य जो राजाओ को पान लगाकर खिलाता था।

वागेसरी—स्त्री०[स० वागीश्वरी]=वागीश्वरी।

वाग्गुलि—पु०[स०] वागुलिक।

वाग्जाल—पु०[स० वाक्+जाल] ऐसी घुमाव-फिराव की बाते जिनका मूल उद्देश्य दूसरो को धोखा देना या फँसाना होता है।

वाग्दड—पु०[स० कर्म०स०] दड के रूप मे कही जानेवाली कठोर बातें। झिडकी। भर्त्सना।

वाग्दत्त—भू० कृ० [तृ० त०] [स्त्री० वाग्दत्ता] (पदार्थ) जिसे किसी को देने का वचन दिया गया हो।

वाग्दत्ता—स्त्री०[स०] ऐसी कन्या जिसके विवाह की बात पक्की हो चुकी हो।

वाग्दल—पु० [स० प० त०] ओष्ठाधर। ओठ।

वाग्दान—पु०[स० प० त०] १ किसी को कोई वचन देना। किसी से वादा करना। २ कन्या के विवाह की बात किसी से पक्की करना और उसे कन्यादान का वचन देना।

वाग्दुष्ट—वि०[स० तृ० त०] १ कटुभाषी। २ जिसे किसी ने कोसा या शाप दिया हो।

वाग्देवता—पु० [स० प० त०] (स० मे स्त्री०) वाणी। सरस्वती।

वाग्देवी—स्त्री०[स० प० त०] सरस्वती।

वाग्दोष—पु०[स० प० त०] १ बोलने की त्रुटि। जैसे—वर्णो का ठीक उच्चारण न करना। २ व्याकरण सबधी दोष या भूल। ३ निन्दा। ४ गाली।

वाग्बद्ध—वि०[स० तृ० त०] १. मौन। २. वचन-बद्ध।

वाग्भट—पु०[स०] १ अष्टाग हृदय सहिता नामक वैद्यक ग्रन्थ के रच-यिता जिनके पिता का नाम सिंहगुप्त था। २. पदार्थ चद्रिका, भाव प्रकाश, रसरत्न, समुच्चय शास्त्र-दर्पण आदि के रचयिता। ३ एक जैन पडित जिनके पिता का नाम नेमिकुमार था। इनके रचे हुए अलकार तिलक, वाग्भटालकार और छदानुशासन प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

वाग्मिता—स्त्री०[स०] वाग्मी होने की अवस्था, गुण या भाव।

वाग्मित्व—पु०=वाग्मिता।

वाग्मी—पु०[स० वाच्+ग्मिनि] १. वह जो बहुत अच्छी तरह बोलना जानता हो। अच्छा वक्ता। २ पडित। विद्वान्। ३ बृहस्पति का एक नाम।

वाग्य—वि० [स० वाक्√या (प्राप्त होना)+क] १ बहुत कम बोलने-वाला। २ तौल या सोच-समझकर बोलनेवाला। ३ सत्य बोलनेवाला।

पु० १. नम्रता। २ निर्वेद।

वाग्यमन—पु०[स०] वाणी का सयम। बोलने मे सयम।

वाग्युद्ध—पु०[सं० ष० त०] बात-चीत के रूप मे होनेवाला झगड़ा या लड़ाई। बहुत अधिक कहा-सुनी।

वाग्रोध—पु०[सं०] एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक रोग जिसमे स्मृति नष्ट हो जाने के कारण आदमी कुछ पढ या सुनकर भी उसका अर्थ नही समझ सकता। (एफ़ेशिया)

वाग्लोप—पु० [सं०] दे० 'वाग्रोध'।

वाग्वज्र—पु०[सं० कर्म० स०] १. बहुत अधिक कठोर वचन। २ शाप।

वाग्वादिनी—स्त्री० [सं० वाक्√वद् (बोलना)+णिनि+ङीप्] सरस्वती।

वाग्विदग्ध—वि०[सं० तृ० त०] वाक्चतुर।

वाग्विलास—पु०[सं० ष० त०] १. प्रसन्नतापूर्वक होनेवाला पारस्परिक सम्भाषण। आनन्दपूर्वक बातचीत करना। २ प्रेम और सुख मे की जानेवाली बाते।

वाग्वीर—वि०[सं० तृ० त०] १ बहुत अधिक तथा बड़ी-बड़ी बाते करनेवाला। २. खाली बातें बनानेवाला।

वाग्वैदग्ध—पु० [सं० ष० त०] १. वाग्विदग्ध होने की अवस्था या भाव। २ कथन, लेख, वक्तव्य आदि मे होनेवाला चमत्कारपूर्ण तत्त्व।

वाङ्निष्ठा—स्त्री०[सं० ष० त०] अपनी कही हुई बात पर दृढ रहना।

वाङ्मती—स्त्री० [सं० वाक्+मतुप्+ङीप्] नेपाल की एक नदी जो आजकल 'वागमती' कहलाती है।

वाङ्मय—वि०[सं० वाक्+मयट्] १ वाक्यात्मक। २. वचन-सबधी। ३ जो वाक् या वचन के रूप मे हो। ४. वचन द्वारा किया हुआ। जैसे—वाङ्मय पाप। ५ जिसका पठन-पाठन हो सके।
पु० गद्य-पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन-पाठन का विषय हो। लिपि-बद्ध विचारो का समस्त सग्रह या समूह। साहित्य।
विशेष—वाङ्मय और साहित्य का मुख्य अतर जानने के लिए दे० 'साहित्य' का विशेष।

वाङ्मुख—पु०[सं० ष० त०] ग्रथ की भूमिका या प्रस्तावना।

वाङ्मूर्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] सरस्वती।

वाच्—स्त्री० [सं०√वच् (बोलना)+क्विप्] वाचा। वाणी। वाक्य।

वाच—स्त्री०[सं०√वच् (बोलना)+णिच्+अच्] एक प्रकार की मछली।
स्त्री०[अं० वॉच] कलाई पर पहनने या जेब मे रखने की छोटी घडी।

वाचक—वि० [सं०√वच्+ण्वुल्—अक] १ कहने या बोलनेवाला। २ बताने या बोध करानेवाला। जैसे—सम्बन्ध-वाचक ३. वाचन करने अर्थात् पढकर सुनानेवाला। जैसे—कथा-वाचक।
पु०१. वह जिससे किसी वस्तु का अर्थ बोध हो। नाम। सज्ञा। सकेत। २ व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान मे तीन प्रकार के शब्दो मे एक जो प्रसिद्ध *या साक्षात्-अर्थ का बोधक होता है, अर्थात् अर्थ के साथ जिसका* वाच्य-वाचकवाला सम्बन्ध होता है।

वाचक धर्म लुप्ता—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] साहित्य मे लुप्तोपमा अलंकार का एक प्रकार या भेद जिसमे वाचक और धर्म दोनो का कथन नही होता। उदा०—दोनो भैया मुख शशि हमे लौट आकर दिखाओ—प्रिय-प्रवास।

वाचक्नवी—स्त्री०[सं० वचक्नु+इञ्+ङीप्] गार्गी। वाचक्टी।
पु० वचक्नु ऋषि की अपत्य या गोत्रज।

वाचन—पुं० [सं०√वच्+णिच्+ल्युट्-अन] १ लिखी हुई चीज पढना या उच्चारण करना। पठन। बाँचना। जैसे—कथा-वाचन। २ कहना या कहकर बताना। ३. किसी मत, विचार, या विषय का प्रतिपादन। ४ विधायिका सभा मे किसी विधेयक का पढा जाना। (रीडिंग) जैसे—यह विधेयक का प्रथम वाचन था।

वाचनक—पु०[सं० वाचन√कै+क] पहेली।

वाचना—स्त्री०=वाचन।
स०=बाँचना (पढना)।

वाचनालय—पु०[सं०] वह सार्वजनिक (या निजी) स्थान जहाँ बैठकर पठन या अध्ययन किया जाता हो। (रीडिंग रूम)

वाचनिक—वि० [सं० वचन+ठक्—इक] वचन के द्वारा अथवा कथन के रूप मे होनेवाला।

वाचयिता (तृ)—वि०[सं०√वच्+णिच्+तृच्]=वाचक।

वाचस्पति—पु०[सं० ष० त०] १ बृहस्पति। २ प्रजापति। ३ ब्रह्मा। ४ सोम। ५ बहुत बड़ा विद्वान्।

वाचा—स्त्री० [सं० वाच्+टाप्] १ वाणी। २ वचन, शब्द या वाक्य। ३. शपथ ४ सरस्वती।
अव्य० [सं०] वचन द्वारा। वचन से।

वाचापत्र—पु०[सं०] प्रतिज्ञा-पत्र।

वाचाबंध—वि०=वाचाबद्ध।
पु०=वाचा-बधन।

वाचा-बंधन—पु०[सं०] प्रतिज्ञा करके उसमे बँधना।

वाचा-बद्ध—वि०[सं०] किसी को वचन देने के कारण बँधा हुआ। प्रतिज्ञा-बद्ध।

वाचाल—वि०[सं० वाच्+आलच्] [भाव० वाचालता] १. बोलने मे तेज। वाक्पटु। २ बकवादी। व्यर्थ बोलनेवाला। ३. उद्दडतापूर्वक या बहुत बढ-बढकर बाते करनेवाला।

वाचालता—स्त्री०[सं० वाचाल+तल्+टाप्] वाचाल होने की अवस्था या भाव।

वाचिक—वि०[सं०√वच्+ठक्-इक] १. वाचा या वाणी-सबधी। २ वाचा या वाणी मे निकला हुआ। मुँह से कहा हुआ। ३ सकेत के रूप मे कहा या बतलाया हुआ।
पु० १ सन्देश आदि के रूप मे कहलाई जानेवाली बात या भेजा जाने-वाला पत्र। २ अभिनय का एक प्रकार या भेद जिसमे केवल वाक्य-विन्यास द्वारा अभिनय का कार्य सम्पन्न होता है।

वाची—वि० [सं० वाच्+इनि, वाचिन्] १. वाचक। वाचा-सम्बन्धी। २ वाचा के रूप मे होनेवाला। ३ परिचय या बोध करानेवाला। जैसे—पक्षी-वाची शब्द। ४ वाचन करनेवाला।

वाच्य—वि० [सं०√वच्+ण्यत्] १. जो वाचा के रूप मे आता हो या आ सकता हो। जो कहा जा सके या कहे जाने के योग्य हो। २ शब्द की अभिधा शक्ति के द्वारा जिसका बोध होता हो या हो सकता हो। अभिधेय। ३ जिसे लोग बुरा कहते हो। कुत्सित। निन्दनीय। बुरा।
पुं० वाचक शब्द का अर्थ। वाच्यार्थ।

वाच्यता—स्त्री० [सं० वाच्य+तल्+टाप्] १ 'वाच्य' होने की अवस्था या भाव। २. निंदा। ३ बदनामी।

वाच्यत्व—पु०[सं० वाच्य+त्व]=वाच्यता।

शरीर, स्वास्थ्य आदि के विचार से वायु का उतना अश जो किसी प्रदेश, स्थान आदि मे होता है। जैसे—विहार का वातावरण, कमरे का वातावरण। ३ किसी वस्तु या व्यक्ति के आस-पास की वह परिस्थिति या वात जिसका उस वस्तु या व्यक्ति के अस्तित्व, जीवन-निर्वाह, विकास आदि पर प्रभाव पडता है। ४. किसी कलात्मक या साहित्यिक कृति के वे गुण या विशेषताएँ जो दर्शक या पाठक के मन मे उस कृति के रचनाकाल, रचना-स्थान आदि की कल्पना या मनोभाव उत्पन्न करती है। जैसे—इस मूर्ति का वातावरण वतलाता है कि यह शुग काल की है, अथवा गाधार की वनी है। (एटमॉस्फियर)

वातावरणिक—वि॰[स॰] १. वातावरण-सवधी। २. वातावरण का या वातावरण मे होनेवाला।

वाताष्ठीला—स्त्री॰[स॰ तृ॰ त॰] एक रोग जिसमे वात के प्रकोप के कारण पेट मे गाँठ-सी पड जाती है। (वैद्यक)

वातास—स्त्री॰[स॰ वात] वायु। हवा। उदा॰—जो उठती हो विना प्रयास। ज्वाला सी पाकर वातास।]—पत।

वाति—पु॰[स॰√वा (जाना)+अति] १ वायु। हवा। २ सूर्य। ३. चन्द्रमा।

वातिक—वि॰[स॰ वात+ठञ्—इक] १ वात सम्वन्धी। वात का। २ जिसे वात का कोई रोग हो। वात-ग्रस्त। ३. तूफान या ववंडर से सम्वन्ध रखनेवाला। ४ वकवादी।

पु॰ १ पागल। विक्षिप्त। २ एक प्रकार का ज्वर। ३ चातक। पपोहा।

वातुल—वि॰[स॰ वात+उलच्] [भाव॰ वातुलता] १ वात-सवधी। २ वात के प्रकोप के कारण होनेवाला। जैसे—गठिया (रोग)।

पु॰ पागल। वावला।

वातोदर—पु॰[स॰ तृ॰ त॰] एक रोग जिसमे हाथ, पाँव, नाभि, काँख, पसली, पेट, कमर और पीठ मे पीडा होती है, इसके साथ कब्ज और खाँसी भी होती है। (वैद्यक)

वातोन्माद—पु॰[स॰ वात+उन्माद, व॰ स॰] अपतन्त्रक नामक रोग। (हिस्टीरिया) देखे 'अपतन्त्रक'।

वातोर्नी—पु॰[स॰ व॰ स॰] ग्यारह अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे मगण भगण, तगण और अन्त मे दो गुरु होते है।

वात्य—वि॰[स॰ वात+यत्] वात या वायु-सम्वन्धी। जैसे—वात्य भार।

वात्या—स्त्री॰[स॰ वात+य+टाप्] १ वहुत तेज चलनेवाली हवा। २ विशेपत ४० से ७५ मील प्रति घटे चलनेवाली तेज आँधी। (गेल)

वात्स—पु॰[स॰ वत्स+अण्] [स्त्री॰ वात्सी] १ एक गोत्रकार ऋषि का नाम। २. ब्राह्मण द्वारा शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न व्यक्ति।

वात्सरिक—पु॰[स॰ वत्सर+ठक्—इक] ज्योतिषी।

वि॰ १ वत्सर या वर्ष-सम्वन्धी। जैसे—वात्सरिक श्राद्ध। २. प्रति-वर्ष होनेवाला। वार्पिक।

वात्सल्य—पु॰[स॰] १ प्रेम। २ विशेपत माता-पिता के हृदय मे होनेवाला अपने वच्चो के प्रति नैसर्गिक प्रेम।

वात्सल्य-भाजन—पु॰ [स॰] वह जिसके प्रति वत्स का-सा प्रेम हो। वत्स के समान प्रिय।

वात्स्य—पु॰[स॰ वत्स+यञ्] १. एक प्राचीन ऋषि। २. एक गोत्र जिसमे और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवान नामक पाँच प्रवर होते है।

वात्स्यायन—पु॰[स॰ वात्स्य+फक्—आयन] १. कामसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि। २ न्याय शास्त्र के भाष्यकार एक प्रसिद्ध पडित।

वाद—पु॰[स॰√वद्+घञ्] १.कुछ कहना या वोलना। २ वह जो कुछ कहा जाय। उक्ति। कथन। ३ किसी कथन के समर्थन के लिए उपस्थित किया जानेवाला तर्क। दलील। ४. किसी वात विशेपत सैद्धातिक वात के सवध मे दोनो ओर से कही जानेवाली वाते। तर्क-वितर्क। विवाद। वहस। ५ अफवाह। किंवदती। ६ विचार के लिए न्यायालय मे उपस्थित किया जानेवाला अभियोग। मुकदमा। (सूट) ७. कला, विज्ञान या कल्पनामूलक किसी विषय के सवध मे नियमो, सिद्धातो आदि के आधार पर स्थिर किया हुआ वह व्यवस्थित मत जो कुछ क्षेत्रो मे प्रामाणिक और मान्य समझा जाता हो। (थियरी) जैसे—विकासवाद, सापेक्षवाद। ८ कोई ऐसा तत्त्व या सिद्धान्त जो तत्त्वज्ञो या विशेषज्ञो द्वारा नियत या निश्चित हुआ हो। (इज्म)

विशेष—इस अतिम अर्थ मे इसका प्रयोग कुछ सज्ञाओ के अत मे प्रत्यय के रूप मे होता है। जैसे—छायावाद, रहस्यवाद, साम्यवाद आदि।

वादऋणी—पु॰[म॰ व॰ स॰] न्यायालय ने जिसे अपने फैसले मे ऋणी ठहराया है। (जजमेट क्रिडेटर)

वादक—वि॰[स॰√वद् (कहना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. कहने या वोलनेवाला। २ वाद-विवाद करनेवाला। ३ वाजा वजानेवाला।

वाद-ग्रस्त—वि॰=विवादग्रस्त।

वाद-चंचु—पु॰[स॰ त॰] शास्त्रार्थ करने मे पटु। वाद-विवाद करने मे दक्ष।

वाददड—पु॰[प॰ त॰] सारगी आदि वाजे वजाने की कमानी।

वादन—पु॰ [स॰√वद् (कहना) +णिच्+ल्युट्—अन] १ कहने या वोलने की क्रिया। २ वाजा वजाना। ३ वाजा। वाद्य। ४ वादक।

वादनक—पु॰[स॰ वादन+कन्] वाजा।

वाद-पद—पु॰[स॰] विधिक क्षेत्र मे, किसी वाद या दीवानी मुकदमे से सवध रखनेवाली वे विवादास्पद और विचारणीय वाते जो पहले पक्ष की ओर से दावे के रूप मे कही जाती हो, परतु दूसरा पक्ष जिनसे इन्कार करता हो। तनकीह। (इश्यू)

विशेष—न्यायालय ऐसी ही वातो के सत्यासत्य का विचार करके उनके आधार पर मुकदमे का निर्णय करता है। यह दो प्रकार का होता है—विधि वाद-पद जिसमे केवल कानूनी दृष्टि से विचारणीय वाते आती है और तथ्य वाद पद जिसमे तथ्य अर्थात् वास्तविक घटनाओ से सवंध रखनेवाली वाते आती है। इन्हे क्रमात् इश्यू ऑफ लॉ और इश्यू ऑफ फैक्ट्स कहते हैं।

वाद-प्रतिवाद—पु॰[स॰ द्व॰ स॰] दो पक्षो या व्यक्तियो मे किसी विषय पर होनेवाला खडन-मडन और तर्क-वितर्क।

वाद-मूल—पु॰[म॰ प॰ त॰] वह मूल कारण जिसके आधार पर कोई मुकदमा या व्यवहार न्यायालय मे विचारार्थ उपस्थित किया जाता है। (कॉज आफ ऐक्शन)

मात्राओं के छदों या चौपाइयों का एक भेद, जिसमे नवीं और बारहवी मात्राएँ लघु होती है।

वानस्पतिक—वि०[स०] १ वनस्पति-सम्बन्धी। वनस्पति का। २. वनस्पति के द्वारा बनने या होनेवाला। जैसे—वानस्पतिक खाद या तेल।

वानस्पतिक खाद—स्त्री०[स०+हि०] गोबर, मल, पौधो आदि के मिश्रण से बनाई हुई खाद। कूडे आदि से बनी खाद। (कम्पोस्ट)

वानस्पत्य—पु०[स० वनस्पति+ण्य] १ वह वृक्ष जिसमे पहले फूल लगकर पीछे फल लगते हैं। जैसे—आम, जामुन आदि। २ वनस्पतियों का वर्ग या समूह। ३ वनस्पतियों के तत्वों और उनकी वृद्धि, पोषण आदि से सम्बन्ध रखनेवाला शास्त्र। (आरबोरिकल्चर)

वि०=वानस्पतिक।

वानिक—वि०[स० वन+ठक्—इक]१ जगली। वन्य। २ जगल मे रहनेवाला। वनवासी।

वानीर—पु०[स० वन+ईरन+अण्] १ बेंत। २ पाकर वृक्ष।

वानेय—पु०[स० वन+ढञ्—एय]केवडी मोथा।

वि० १. वन मे रहने या होनेवाला। २ जल-सबधी।

वान्य—वि०[स० वन+ण्य]वन-सबधी। वन का। जगली।

वाप—पु०[स०√ वप् (बोना)+घञ्]१ बीज आदि बोना। वपन। २. खेत। ३. मुडन।

वापक—वि०[स० √ वप् (बोना)+णिच्+ण्वुल्—अक] वपन करने अर्थात् बीज बोनेवाला।

वापन—पु०[स० √ वप् (बोना)+णिच्-ल्युट—अन] बीज बोना।

वापस—वि०[फा०]१. (जीव या यान) जो कहीं न जाकर लौट आया हो। २ (वस्तु) जिसे किसी ने मँगनी माँगकर अथवा खरीदकर फेर दिया हो।

वापसी—वि०[फा० वापस]१. जो वापस होकर आया हो। जैसे—वापसी जवाब। २ वापस जाने से सबध रखनेवाला। जैसे—वापसी टिकट।

स्त्री०१. वापस होने या लौटने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वापस की या लौटाई हुई चीज देने या लेने की क्रिया या भाव।

वापसी टिकट—पु०[हि०] वह टिकट जिसने कहीं जाया और वहाँ से वापस आया जा सकता हो। जैसे—रेल या हवाई जहाज का वापसी टिकट। (रिटर्न टिकट)

वापिका—स्त्री० [स० वप+इञ्+कन्+टाप्]=वापी।

वापित—वि०[स०√वप् (बोना)+णिच्+क्त] १ बोया हुआ। २ मूँडा हुआ।

वापी—स्त्री०[स०वापि+ङीप्] एक प्रकार का चौडा और बडा कूआँ या छोटा तालाब जिसमे जल तक पहुँचने के लिए प्राय सीढियाँ बनी रहती हैं। बावली।

वाप्य—पु०[स० वापी+यत् वा√वप्+ण्यत्] वपन किए या बोए जाने के योग्य (बीज या भूमि)।

पु० १. वापी या बावली का पानी। २ बोया हुआ धान्य (रोपे हुए से भिन्न)। ३ कुट नामक ओषधि।

वाम—वि० [स० वा+मन्] १ शरीर के उस पक्ष मे या उसकी ओर होनेवाला जो दूसरे पक्ष की अपेक्षा साधारण प्राणियो मे कमजोर या दुर्बल होता है। बायाँ। २ 'दक्षिण' या 'दाहिना' का विपर्याय। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध। ३. कुटिल। टेढा। ४ दुष्ट। बुरा।

पु० १ कामदेव। २. वरुण। ३ धन-सम्पत्ति। ४ कुच। स्तन। ५ चन्द्रमा के रथ का एक घोडा। ६ सवैया छद का आठवाँ भेद, जिसके प्रत्येक चरण मे सात जगण और एक यगण होते है। इसे मजरी, मकरद और माधवी भी कहते हैं। ७ वामदेव।

वामक—पु०[स० वाम+कन्] १ एक प्रकार की अग-भगी। २ बौद्धो के अनुसार एक चक्रवर्ती।

वाम-कक्ष—पु०[स० ब० स०] एक गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्र के लोग वामकक्षायन कहलाते हैं।

वामता—स्त्री०[स०] १ वाम होने की अवस्था या भाव। २ प्रतिकूलता। विरुद्धता।

वामदेव—पुं०[स०] १ शिव। महादेव। २. एक वैदिक ऋषि।

वामदेवी—स्त्री०[स०] १. दुर्गा। २ सावित्री।

वामन—वि०[स०] [स्त्री० वामनी] १ छोटे कद या डील का। ठिगना। २ नाटा। बौना। खर्व। ३ ह्रस्व।

पु० १ विष्णु। २. विष्णु का पाँचवाँ अवतार जो अदिति के गर्भ से हुआ था, और जिसमे उन्होने बौने का रूप धारण करके राजा बलि को छलकर उससे सारी पृथ्वी दान रूप मे ले ली थी। ३ अठारह पुराणो मे से एक। ४ शिव। ५ एक दिग्गज का नाम। ६. छोटे डील का या बौना घोडा।

वामन द्वादशी—स्त्री० [स० प० त०] भाद्रपद शुक्ला द्वादशी जिस दिन व्रत करके वामन अवतार की पूजा करने का विधान है।

वामनिका—स्त्री०[स० वामन+कन्+टाप्+इत्व] १ स्कद की अनुचरी एक मातृका। २ बौनी या ठिगनी स्त्री।

वामनी—स्त्री०[स० वामन+ङीप्] एक प्रकार का योनि रोग।

वाम मार्ग—पु०[स०] तान्त्रिक साधना मे एक पद्धति जिसमे मृत प्राणियो के दाँतो की माला पहनते, कपाल या खोपडी का पात्र रखते, छोटी कच्ची मछलियाँ और माँस खाते तथा सजातीय पर-स्त्रियो से समान रूप से मैथुन करते हैं।

वाम-मार्गी—वि०[स०] वाम-मार्ग सम्बन्धी। वाम मार्ग का।

पु० वह जो वाम-मार्ग का अनुयायी हो।

वमरथ—पु०[स०] एक गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्रवाले वाम-रथ्य कहलाते थे।

वामलूर—पु०[स० वाम√लू (काटना)+रक्]दीमक का भीटा। वल्मीक। बाँबी।

वामलोचना—स्त्री०[स०] सुन्दरी स्त्री।

वाम-शील—वि०[स०] [स० वामशीला] प्राय या सदा वाम अर्थात् प्रतिकूल या विरुद्ध रहनेवाला।

वामांगिनी—स्त्री०[स०] विवाहिता पत्नी।

वामांगी—स्त्री०[स०]=वामांगिनी।

वामाँदा—वि०[फा०] [भाव० वामाँदगी] १ पीछे छूटा हुआ। २ थक जाने के कारण रास्ते मे पीछे छूटा हुआ। ३ बाकी बचा हुआ। ४ लाचार। विवश।

वामा—स्त्री०[स०√वम् निकालना)+अण्+टाप्, अथवा वाम+अ+च्

टाप्] १ स्त्री। २ दुर्गा। ३ पार्श्वनाथ की माता। ४. दस अक्षरो के एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, यगण और भगण तथा अत मे एक गुरु होता है।

वामाक्षी—स्त्री० [स० ब० स०] १ सुदरी स्त्री। २ दीर्घ 'ई' स्वर या उसकी मात्रा।

वामाचार—पु०[स०] दे० 'वाम-मार्ग'।

वामाचारी (रिन्)—पु०[स० वामाचार+इनि]=वाम-मार्गी।

वामावर्त—वि०[स० वाम-आ√वृत्+अच्] १. (पदार्थ) जिसका मुँह बाई ओर घूमा हुआ हो। जैसे—वामावर्त शख। २ (क्रिया) जिसका आरम्भ बाई ओर से हो। जैसे—वामावर्त प्रदक्षिणा। 'दक्षिणा-वर्त' का विपर्याय।

वामिका—स्त्री०[स० वाम+कन्+टाप्+इत्व] चडिका देवी।

वामी—स्त्री० [स० वाम+ङीप्] १ शृगाली। गीदडी। २ घोडी। ३ हथनी। ४ गधी।

वामेक्षणा—स्त्री०[स० ब० स०] सुदर नेत्रोवाली स्त्री।

वामोरु—स्त्री०[स० ब० स०] सुदरी स्त्री।

वाम्नी—स्त्री०[स०] एक गोत्रकार विदुषी जिसके गोत्रवाले वाम्नेय कहलाते थे।

वाय—पु०[स०√वे (बुनना)+घञ्] १ बुनना। वपन। २ साधन। अव्य० [फा०] दु ख, शोक आदि का सूचक अव्यय। जैसे—वाय किस्मत।

वायक—वि०[स०] बुननेवाला।
पुं० जुलाहा। तन्तुवाय।

वायदड—पु०[स० ष० त०] १ करघे का हत्था। २ करघे की ढरकी।

वायदा—पु० [फा० वाइद] १ वादा। वचन। २ सट्टेवालो की परिभाषा मे, भविष्यकाल के सम्बन्ध मे किया जानेवाला सौदा। जैसे—दालो के वायदे के बाजारो मे इस सप्ताह भी अच्छी तेजी-मदी आई।

वायन—पु०[स०√वे (बुनना)+ल्युट्—अन] १ मगल अवसरो, उत्सवो आदि के समय बनाई जानेवाली मिठाई। २ उक्त का वह अश जो रिश्ते-नाते मे भेजा जाय। ३ सौगात।

वायव—वि०[स०] १ वायु-सबधी। वायु का। २ वायु के द्वारा या उसकी सहायता से होनेवाला। (एरियल) ३ जिसका कुछ भी आधार न हो। हवाई। जैसे—वायव स्वप्न।

वायव-भट्ठी—स्त्री० दे० 'पवन भट्ठी'।

वायवी—वि०[वायु+अण्+ङीप्] वायु के समान हृदय के भीतर ही भीतर रहनेवाला। प्रकाश मे न आनेवाला।
स्त्री० उत्तर पश्चिमी कोण।

वायवीय—वि०[स०] १. वायु-संबंधी। २. वायु के बल से चलनेवाला। (एरियल)
स्त्री० वह तार जिसका एक सिरा तो रेडियो यत्र से सबद्ध होता है और दूसरा सिरा या तो खुले आकाश मे विस्तृत होता है या ऊँचाई पर खड़े हुए बाँस के साथ लगा रहता है। (एरियल)

वायव्य—वि०[सं० वायु+यत्] १ वायु-सबधी। २ वायु के द्वारा बनने या होनेवाला। ३ जिसका देवता वायु हो।
पु० १ पश्चिम और उत्तर दिशाओं के बीच का कोण जिसका अधिपति वायु देवता माना गया है। २. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३. दे० 'वायु-पुराण'।

वायव्या—स्त्री०[स० वायव्य+टाप्]=वायव्य (कोण)।

वायस—पु०[स०] १ अगर का पेड। २ कौआ।

वायसतंतु—पु०[स० मध्य० स०] १ हनु के दोनो जोड़। २ काक तुडी।

वायसी—स्त्री० [स० वायस+अण्+ङीप्] १ छोटी मकोय। काकमाची। २ महा ज्योतिष्मती। ३ सफेद घुँघची। ४ काकजघा। ५ महाकरज। ६. काकतुडी। कौआ ठोढा।

वायसेसु—पु०[स० ष० त०] काँस (तृण)।

वायु—स्त्री०[स०] १ वायु। हवा।
विशेष—हमारे यहाँ (क) इसकी गिनती पाँच महाभूतो मे की गई है, और इसका गुण स्पर्श कहा गया है। (ख) इसकी एक दूसरे के ऊपर सात तहे या परते मानी गई है जिनके नाम हैं—आवह, प्रवह, सवह, उद्वह, विवह, परिवह और परावह।
२ धार्मिक क्षेत्र मे एक देवता जो उक्त का अधिष्ठाता माना गया है और जिसका निवास उत्तर-पश्चिम कोण मे माना गया है। ३ दर्शनशास्त्र मे, जीवनी-शक्ति या प्राणो का वह मुख्य आधार जो शरीर के अन्दर रहता है और जिसके पाँच भेद कहे गये हे—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। ४ वैद्यक मे, उक्त का वह अश या रूप जो शरीर के अन्दर रहता हे और जिसके प्रकोप या विकार से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते है। वात।

वायु-अपनयन—पु० [स०] वायु का धूल, बालू, आदि उडाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।
विशेष—प्राय समुद्र तट से और शुष्क प्रदेशो से होकर बहनेवाली वायु वहाँ से अपने साथ बहुत सी धूल, बालू, आदि भी उडा ले जाती हे जिससे कही तो ऊपर की मिट्टी साफ होने से नीचे का चट्टान निकल आती है और कही रेत के टीले बन जाते हैं। विज्ञान मे वायु की यही क्रिया वायु-अपनयन कहलाती है।

वायु-कोण—पु०[स०] वायव्य (कोण)।

वायुगंड—पुं०[तृ० त०] १. अजीर्ण नामक रोग। २. पेट अफरने का रोग। अफरा।

वायु-गुल्म—पु०[स०] १. वायु-विकारो के कारण पेट मे बनने या घूमता रहनेवाला वायु का गोला। २ बवडर।

वायु-छिद्र—पु०[स०] भू-गर्भ शास्त्र मे, समुद्रतट की चट्टानो मे कही-कही पाये जानेवाले वे छिद्र जिनमे हवा भरी रहती है, और ज्वार या भाटा होने पर जिनमे से भीतरी वायु के दबाव के कारण पानी के फुहारे से छूटने लगते हैं। (ब्लो-होल)

वायु-तनय—पु०[स० ष० त०]=वायु-नदन (हनुमान्)।

वायु-दारु—पु०[स०] मेघ। बादल।

वायु-नंदन—पु०[वायु√नद(हर्षित करना)+ल्यु—अन] १ हनुमान्। २ भीम।

वायु-देव—पु०[ब० स०] स्वाति नक्षत्र।

वायु-पचक—पु०[ष० त०] शरीर मे रहनेवाला प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पाँच वायुओ का समाहार।

वायु-पथ—पु०=वायु-मार्ग

वायु-पुत्र—पु०[स०] १ हनुमान्। २ भीम।

वायु-पुराण—पु०[मध्य० स०] अठारह मुख्य पुराणो मे से एक पुराण।

वायु-फल—पु०[सं०] इन्द्रधनुष।
वायु-भक्ष्य—पु० [सं०] सर्प। साँप।
वायु-भार—पु०[सं०] वायु-मडल मे वायु की ऊपरी तहो का नीचेवाली तहो पर पड़नेवाला वह भार जिसके कारण नीचे की वायु घनी और भारी होती है। (एटमास्फेरिक प्रेशर)
विशेष—हमारे धरातल पर प्रति वर्ग इच प्राय १४॥ पौंड भार रहता है।
वायु-भार-मापक—पु०[सं०] वह यत्र जिससे किसी स्थान या वातावरण के घटने या बढनेवाले ताप-क्रम का पता चलता है। (बैरोमीटर)
वायु-मंडल—पु०[सं०] १ वह गोलाकार वाष्पीय आवरण जो हमारी पृथ्वी को चारो ओर से घेरे हुए है। (एटमॉस्फियर) २ दे० 'वातावरण'।
वायुमंडल विज्ञान—पु०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि इस पृथ्वी के वायु-मडल की क्या-क्या विशेषताएँ हैं, उसमे कैसे-कैसे वाष्प है, और ऊपर की ओर उसका विस्तार कहाँ तक और कैसा है। (एयरॉलोजी)
वायु-मरुत्—स्त्री०[सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक प्राचीन लिपि।
वायुमापी—पु०[सं०] वह यत्र जो वायु मिति के द्वारा वायु की शुद्धि और उसमे होनेवाले आक्सिजन का मान या माप बतलाता है। (यूडिओमीटर)
वायु-मार्ग—पु०[सं०] आकाश या वायु मे के वे निश्चित मार्ग जिनसे होकर हवाई जहाज आदि एक देश से या स्थान से दूसरे देश या स्थान को जाते हैं। (एयर रूट)
वायु-मिति—स्त्री०[सं०] वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वायु मे कितनी शुद्धता है। (यूडिओमेट्री)
वायु-यान—पु०[मध्य सं०] हवा मे उडनेवाला मनुष्य निर्मित यान। हवाई जहाज।
वायु-लोक—पु०[सं०] १. पुराणानुसार एक लोक। २ आकाश।
वायु-वलन—पु० दे० 'वातानुकूलन'।
वायु-वाहन—पु०[ष० त०] १ विष्णु। २ शिव। ३ धूआँ।
वायु-सवलन—पु०[सं० ब० स०] [वि० वायु-सवलित] दे० 'वातानुकूलन'।
वायु-सवलित—भू० कृ० [सं०] दे० 'वातानुकूलित'।
वायु-सख—पु०[सं०] अग्नि। आग।
वायु-सेना—स्त्री०[सं०] सेना का वह विभाग जो वायुयानो से शत्रु-पक्ष पर गोले आदि फेकता है।
वायु-सेवन—पु०[सं०] स्वास्थ्य रक्षा के लिए खुली हवा मे घूमना-फिरना, उठना-बैठना या रहना।
वायु-सेवा—स्त्री०[फा०] वायुयानो के द्वारा की जानेवाली कोई सार्वजनिक सेवा। जैसे—वायुयान द्वारा यात्री या डाक लाने ले जाने का काम।
वायु-स्नान—पु०[सं०] स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए नगे बदन होकर खुली हवा मे कुछ देर तक इस प्रकार रहना कि शरीर के सब अगो मे अच्छी तरह हवा लगे। (एयर-बाथ)
वारक—पु०[सं०√वृ+अकन्] पक्षी।
वारंग—पु०[सं०√वृ+अगच्] १ तलवार की मूठ। २ प्राचीन वैद्यक मे एक प्रकार का अस्त्र।
वारट—पु०[अं०] १ आज्ञा-पत्र। २ विधिक क्षेत्र मे न्यायालय का ऐसा आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी राजकीय कर्मचारी को कोई ऐसा काम करने का आदेश होता है जो साधारण स्थिति मे वह न कर सकता हो। जैसे—गिरिफ्तारी या तलाशी का वारट। ३. लोक-व्यवहार मे किसी की गिरफ्तारी के लिए निकलनेवाला आज्ञा-पत्र।
वार—पु०[सं०√वृ+घञ्] १ द्वार। दरवाजा। २ अवरोध। रुकावट। ३. आवरण। ढक्कन। ४ नियत काल या समय। ५ किसी काम या बात की पुनरावृत्ति का आनेवाला अवसर। दफा। बार। बारी। (दे० 'बार') ६ सप्ताह के दिनो के नामो के अत मे लगनेवाला कालावधिक सूचक शब्द। जैसे—रविवार, सोमवार आदि। ७ क्षण। ८ कुज नामक वृक्ष। ९ शराब पीने का प्याला। १० तीर। बाण। ११ जलाशय का किनारा। कूल। तट। १२. विशेष रूप से जलाशय का वह किनारा जो वक्ता की ओर हो। उदा०—पार कहे उत वार है और कहे उतपार। इसी किनारे बैठ रह, वार यहि पार।
पद—वार-पार, वारापार। (देखें स्वतत्र शब्द)
†अव्य० ओर। तरफ।
पु०[सं० वार=दाँव, बारी] आक्रमण आदि के समय किया जानेवाला आघात। प्रहार। जैसे—तलवार या लाठी से वार करना।
मुहा०—वार खाली जाना=(क) प्रहार, निशाने आदि मे चूक होना। (ख) युक्ति निष्फल होना।
प्रत्य० [फा०] क्रम से। क्रमात्। जैसे—तफसीलवार, नामवार, ब्योरेवार।
†प्रत्य०=वाला। जैसे—करनवार।
वारक—वि०[सं०√वृ (रोकना) + णिच्+ण्वुल्—अक] १ वारण अर्थात् निषेध करनेवाला। मना करनेवाला। २ रुकावट डालनेवाला। प्रतिबंधक।
पु० १ घोडा। २ घोडे का कदम। ३ ऐसा समय या स्थान जहाँ कोई कष्ट या पीडा हो। ४ बाधा का अवसर या स्थान। ५ एक प्रकार का सुगधित तृण।
वार-कन्या—स्त्री०[सं०] वेश्या। रडी।
वारकी—पु०[सं० वारक+इनि] १. प्रतिवादी। २ शत्रु। ३ समुद्र। ४. ऐसा तपस्वी जो केवल पत्ते खाकर रहता हो। पर्णाशी। यती।
वारकीर—पु०[सं० स० त०] १ किसी की पत्नी का भाई। साला। २ द्वारपाल। ३ वाडवाग्नि। बडवानल। ४ जूँ नाम का कीडा। ५ कघी। ६ लडाई मे सवार के काम आनेवाला घोडा।
वारगह†—पु०[सं० वारि+गृह, मि० फा० बारगाह] १ तबू। खेमा। २ दे० 'बारगाह'।
*पु०[सं० वारण+गृह] हाथियो के बाँधने का स्थान। उदा०—बंधण दधि कि वारगह।—प्रिथीराज।
वारज—पु०[सं०] [भू० कृ० वारित] १. अनिष्ट या अनुचित कार्य आदि के सम्बन्ध मे होनेवाली निषेधात्मक आज्ञा, आदेश या सूचना। निषेध। मनाही। २ अनिष्ट आदि को दूर रखने या उनसे बचने के

लिए किया जानेवाला उपाय या कार्य। ३ आपत्तिजनक या दूषित प्रकाशनों आदि का प्रचार रोकने के लिए राज्य या शासन की ओर से होनेवाली निषेधात्मक आज्ञा या व्यवस्था। (स्क्रैप्शन) ४ बाधा। रुकावट। ५ शरीर को अस्त्रों आदि के आघात से बचानेवाला कवच। बकतर। ६ हाथी को वश मे रखनेवाला अकुश। ७. सम्भवत इसी आधार पर हाथी की सज्ञा। ८. छप्पय छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे कुछ आचार्यों के मत से ४१ गुरु और ७० लघु तथा कुछ आचार्यों के मत से ४१ गुरु और ६६ लघु मात्रा होती हैं। ९ हरताल। १०. काला शीशम। ११. सफेद कोरैया।

वारणावत—पु०[स०] एक प्राचीन नगर जिसमे दुर्योधन ने पाडवो के लिए लाक्षागृह बनवाया था।

वारणिक—वि०[स०] १ वारण-सबधी। २. (उपाय या कार्य) जो अनिष्ट, क्षति, हानि आदि से बचने अथवा अपने हित-साधन के विचार से पहले किया जाय। (प्रिकाशनरी)

वारणीय—वि०[स०√वृ (रोकना)+णिच+अनीयर्] वारण करने योग्य। मनाही के लायक।

वार-तिय—स्त्री० [स० वार+स्त्री] वेश्या।

वारद†—पु०=वारिद (बादल)।

वारदात—स्त्री०[अ० 'वारिद' का बहु० शुद्ध रूप वारिदात] १ घटना। २ बुरी घटना। दुर्घटना। ३ चोरी, डकैती, मार-पीट, दगा-फसाद आदि की आपराधिक घटना। ४ किसी प्रकार की घटना का विवरण। (मूलत बहुवचन, पर उर्दू और हिन्दी मे एक-वचन रूप मे प्रयुक्त)

वारन†—पु०[स० वदनमाल] वदनवार।
पु०[स० वारण] हाथी।
स्त्री०[हि० वारना] वारने की क्रिया या भाव। निछावर। बलि।
†पु०[स० वारण] परदा। उदा०—निरवीर वारन विसारै पुनि द्वार हू कौ।—सेनापति।

वारना—स०[स० वारण=दूर करना] टोने-टोटके के रूप मे कोई चीज किसी के सिर के चारो ओर से घुमाकर निछावर करना।
मुहा०—वारी जाऊँ=निछावर हो जाऊँ। (स्त्रियाँ)
पु० निछावर।
मुहा०—(किसी पर) वारने जाना=निछावर होना।

वारनिश—स्त्री० [अ०]१ स्पिरिट, चपडे, रूमी मस्तगी आदि के योग से बननेवाला एक प्रकार का घोल जो लकडी के सामान पर चमक लाने के लिए लगाया जाता है।

वार-पार—पु०[स० अवर-पार] १ इस पार के और उस पार के दोनो किनारे या सिरे। जैसे—बाढ का पानी चारो ओर इतनी दूर तक फैल गया था, कि कही उसका वार-पार नहीं दिखाई देता था। २ पूरा या समूचा विस्तार।
अव्य० इस किनारे, छोर या सिरे से उस किनारे छोर, या सिरे तक। आर-पार। जैसे—तीर हिरन के वार-पार कर गया।

वार-फेर†—पु०=वारा-फेरा।

वार-बाण —पु०[स०] कचुक की तरह का, पर उससे कुछ छोटा एक पुराना पहनावा जो युद्ध के समय पहना जाता था।

वारयितव्य—वि०[स०√वृ (रोकना)+णिच्+तव्यत्]=वारणीय।

वारयिता (तृ)—पु० [स०√वृ (रोकना)+णिच्+तृच्] १. रक्षक। २. पति।
वि० वरण करनेवाला।

वार-वधू—स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वारवाणि—पु०[स०] १ वशी बजानेवाला। २ अच्छा गवैया। ३. न्यायाधीश। ४ ज्योतिषी।

वारवाणी—स्त्री०[स०] वेश्या।

वारवासि, वारवास्य—पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद जो भारत की पश्चिमी सीमा के उस पार था।

वारस्त्री—स्त्री०[स० कर्म० स०] वेश्या। रडी।

वारागणा—स्त्री०[स० कर्म० स०] वेश्या। रडी।

वारानिधि—पु०[स० ष० त०] समुद्र।

वारा—वि०[सं० वारण] १. (पदार्थ) जिसके खरीदने या बेचने मे कुछ आर्थिक बचत भी हो। २ (दर या भाव) जिस पर बेचने से लागत व्यय निकल आने के सिवा कुछ आर्थिक बचत भी हो।
पु० १. वह स्थिति जिसमे किसी निश्चित दर पर कोई चीज खरीदने या बेचने से लागत, व्यय आदि निकालने के साथ साथ कुछ बचत भी होती हो। २. फायदा। लाभ। उदा०—उनके वारे की कछू मोपै कही न जाइ।—रसनिधि।
पु०[हि० वारना] चीज वारने या निछावर करने की क्रिया या भाव।
पद—वारा-फेरा।
मुहा०—वारा जाना या वारा होना=किसी पर निछावर जाना या बलि होना। (बहुत अधिक प्रेम का सूचक) वारी जाना=वारा जाना। (स्त्रियाँ)

वाराणसी—स्त्री०[स०] वरुणा और अस्सी नदियों के बीच मे बसी हुई तथा गगा तट पर स्थित काशी नगरी। बनारस।

वाराणसेय—वि०[स० वाराणसी+ढक्—एय] १. वाराणसी-संबधी। २. वाराणसी मे उत्पन्न या बना हुआ। बनारसी।

वारा-न्यारा—पु०[हि० वार+न्यारा]१ झझट या झगडे-बखेडे आदि का निपटारा। २ ऐसी स्थिति जिसमे किसी एक ओर का पूरा निर्णय या निश्चय हो जाय, या तो इधर हो जाय या उधर हो जाय। जैसे—सट्टे मे रोज लाखो रुपयो का वारा-न्यारा होता रहता है।

वारा-पार—पु०[स० वार+पार] १ यह पार और वह पार। २ अन्तिम या चरम सीमा। जैसे—ईश्वर की महिमा का कोई वारा-पार नहीं है।

वारा-फेरा†—पु०[हि० वारना+फेरना] १ किसी के ऊपर से कोई चीज या कुछ द्रव्य निछावर करने की क्रिया या भाव। २ विवाह, मुडन आदि शुभ अवसरो पर होनेवाली उक्त रस्म। ३ वह धन या पदार्थ जो उक्त प्रकार से निछावर किया जाय।

वाराह—पु०[स०] [स्त्री० वाराही] १ सूअर। वराह। २ विष्णु का तीसरा अवतार जो शूकर या सूअर के रूप मे हुआ था। काली मैनी का वृक्ष। ३ जलाशय के किनारे होनेवाला बेत।

वाराहपत्री—स्त्री०[स० ब० स०] अश्वगधा। असगध।

वाराही—स्त्री० [सं० वराह+ङीप्] १ ब्रह्माणी आदि आठ मातृकाओ

मे से एक मातृका। २ एक योगिनी। ३ श्यामा पक्षी। ४ कँगनी नामक कदन्न। ५ वाराही कद।

वाराही कद—पु० [स० मध्य०स०] एक प्रकार का महाकद जो औषध मे काम आता है। गृष्टि।

वारि—पु०[स०√वृ (रोकना)+णिच्-इञ्, अथवा वृ+इण्] १ जल। पानी। २ कोई तरल या द्रव पदार्थ। ३ वाणी। सरस्वती। ४ हाथी बाँधने का सिक्कड। ५ छोटा गगरा या घडा। ६ सुगन्ध वाला।

वारिकफ—पु०[प० त०] समुद्र।

वारि-केय—पु०[वारिका+ढक्—एय] दे० 'जल-लेखी'।

वारि-कोल—पु०[स०] कच्छप। कछुआ।

वारि-गर्भ—पु० [व० स०] बादल। मेघ।

वारि-चर—वि०[स०] पानी मे रहने और चलने फिरनेवाला। जलचर। पु० १ मछली आदि जीव-जन्तु जो पानी मे रहते हैं। २ शख।

वारिज—वि०[स०] जल मे या जल से उत्पन्न होनेवाला। पु० १ कमल। २ मछली। ३ शख। ४ घोघा। ५ कौडी। ६ खरा और बढिया सोना। ७ द्रोणी लवण।

वारिजात—वि०, पु० [स०]=वारिज।

वारित—भू० कृ०[स०] जिसका वारण किया गया या हुआ हो। मना किया हुआ।

वारित्र—पु०[स० वारि√त्रा (रक्षा करना)+ड] अविहित या निन्दनीय आचरण।

वारिद—पु०[स०] १ बादल। मेघ। २ नागर मोथा।
वि०[अ०] जो आकर उपस्थित या घटित हुआ हो। सामने आया हुआ। आगत।
विशेष—वारिदात इसी का बहुवचन है जो हिन्दी मे 'वारदात' (देखे) के रूप मे प्रचलित है।

वारिदात—स्त्री०[अ०]=वारदात।

वारिधर—पु० [स०] १ बादल। मेघ। २ नागर मोथा। ३ एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, नगण, और दो भगण होते है।

वारिधि—पु०[स०] समुद्र।

वारिनाथ—पु०[सं० प० त०] १ वरुण। २ समुद्र। ३ बादल। मेघ।

वारिनिधि—पु०[स०] समुद्र।

वारिपर्णी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] १ जल-कुभी। २ पानी मे होनेवाली काई।

वारियत्र—पु०[स०] फुहारा।

वारियाँ—अव्य० [हिं० वारना] मैं तुम पर निछावर हूँ। (स्त्रियाँ)
मुहा०—**वारियाँ जाऊँ**=दे० 'वारा' के अन्तर्गत मुहा०—'वारी जाऊँ'। **वारियाँ लेना**=बार-बार निछावर होना। (विशेष दे० 'वारना' और 'वारा' के अन्तर्गत)

वारि-रथ—पु०[स० प० त०] जहाज या यान।

वारि-रुह—पु०[वारि√रुह् (उत्पन्न होना)+क] कमल।

वारि-वर्त—पु० [सं० वारि+आवर्त] मेघ। बादल।

वारि-वास—पु०[स०] मद्य के निर्माता या व्यापारी।

वारि-वाह—पु०[स०] १ मेघ। बादल। २ नागर मोथा।

वारि-वाहन—पु०[प० त०] मेघ। बादल।

वारि-शास्त्र—पु०[स०] १ फलित ज्योतिष का वह अग जिससे यह जाना जाता है कि कब, कहाँ और कितनी वर्षा होगी। २ दे० 'वारिकेय'।

वारिस—पु०[अ०]१ वह जिसे किसी की विरासत मिले। २ उत्तराधिकारी। ३. व्यापक क्षेत्र मे, जिसने अपने आपको किसी दूसरे के कार्यों आदि का सचालन करने के योग्य बना लिया हो।

वारींद्र—पु०[स० प० त०] समुद्र।

वारी—स्त्री० [स० वारि+ङीप्] १ हाथी के बाँधने की जजीर या अँडुआ। गजबंधन। २ छोटा घडा। कलसा।
वि० स्त्री० दे० 'वारा' के अन्तर्गत 'वारी जाना' आदि मुहा०।

वारी-फेरी—स्त्री०=वारा-फेरा।

वारीश—पु०[सं० प० त०] समुद्र।

वारुड—पु०[स० √ वृ+उण्ड]१ साँपो का राजा। २. नाव मे भरा हुआ पानी बाहर फेकने का तसला। ३ कान की मैल। खूँट। ४ आँख मे से निकलनेवाला कीचड या मल।

वारु—पु०[स०√ वृ (मना करना)+णिच्+उण्] वह हाथी जिस पर विजय पताका चलती है। विजय-हस्ति।

वारुठ—पु० [सं० वारु+ठन्]१. मृत्यु-शय्या। २ शव ले जाने की अरथी। टिकठी।

वारुण—पु०[स० वरुण+अण्] १ जल। पानी। २ शतभिषा नक्षत्र। ३ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ४ हरताल। ५ एक उप-पुराण। ६ वरुण या बरुना नामक वृक्ष।
वि०१ वरुण-सबंधी। २ जलीय। ३ पश्चिमी।

वारुणक—पु०[स० वारुण+कन्] एक प्राचीन जनपद।

वारुण-कर्म—पु०[स० कर्म० स०] कूआँ, तालाब, नहर आदि बनाने का काम।

वारुणि—पु०[स० वरुण+इञ्] १ अगस्त्य मुनि। २ वसिष्ठ। ३. भृगु ऋषि। ४ दाँतवाला हाथी। ५ वारुण या बरुना नामक पेड। ६ वारुणक जनपद।

वारुणी—स्त्री०[स० वरुण+अण्+ङीप्]१ वरुण की पत्नी, वरुणानी। २ वृन्दावन के एक कदब का रस जो वरुण की कृपा से बलराम जी के लिए निकला था। ३ कदब के फलो मे बनाई जानेवाली मदिरा। ४ मदिरा। शराब। ५ उपनिषद् विद्या जिसका उपदेश वरुण ने किया था। ६ पश्चिम दिशा। ७ शतभिषा नक्षत्र। ८ एक प्राचीन नदी (कदाचित् आधुनिक वरुणा)। ९ इन्द्रवारुणी लता। १०. घोडे की एक प्रकार की चाल। ११ मादा हाथी। हथनी। १२ भुईं आँवला। १३ गाँडर दूब। १४ गगास्नान का एक पुण्य पर्व या योग जो चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र पडने पर होता है।

वारुणी वल्लभा—पु०[प० त०] समुद्र।

वारुणीश—पु०[स० प० त०] विष्णु।

वारुण्य—वि० [स० वरुण+ण्य, अथवा वारुणी+यत्] वरुण-सम्बन्धी। वारुण।

वारुद—पु०[स० वारु√ दा (देना)+क] अग्नि। आग।

वार्कजंभ—पु०[सं० वृकजंभ+अण्] १ वृकजंभ ऋषि के गोत्रज। २ एक साग का नाम।

वार्क्ष—वि०[सं० वृक्ष+अण्] वृक्ष-संबंधी। वृक्ष का।
पु० वृक्षों की छाल से बना हुआ कपड़ा।

वार्क्षी—स्त्री० [सं० वार्क्ष+ङीप्] प्रचेतागण की स्त्री मारिषा का दूसरा नाम।

वार्ड—पु०[अं०]१ रक्षा। हिफ़ाजत। २ वह व्यक्ति जो किसी की रक्षा या हिफाजत में रहता हो। ३. किसी विशिष्ट कार्य के लिए स्थानों का निश्चित किया हुआ विभाग। मंडल। जैसे—(क) इस नगर पालिका में १२ वार्ड हैं। (ख) इस अस्पताल में यक्ष्मा के रोगियों के लिए अलग वार्ड बनेगा।

वार्डन—पु०[अं०] किसी विभाग विशेषतः छात्रावास के किसी विभाग का व्यवस्थापक अधिकारी।

वार्डर—पु०[अं०]१. वह जो किसी वार्ड (मंडल) में रक्षा का काम करता हो। २. जेलों में कैदियों का पहरेदार।

वार्णक—पु०[सं० वर्णक+अण्] लेखक।

वार्णव—पु०[सं० [वर्णु नद से वर्णु+अण्]आधुनिक बन्नू नगर और उसके आसपास के प्रदेश का पुराना नाम।

वार्णिक—पु० [सं० वर्ण+ठञ्—इक] लेखक।

वार्त—वि०, पु०=वार्त्त।

वार्तक—पु०[सं० वार्त+कन्] बटेर पक्षी।

वार्तमानिक—वि०[सं० वर्तमान+ठक्—इक]१ वर्तमान (काल) से सम्बन्ध रखनेवाला। आज-कल का। २ जो वर्तमान (उपस्थित या विद्यमान) से सम्बन्ध रखता हो।

वार्त्त—वि० [वृत्ति+अण्] १ वृत्ति-सम्बन्धी। वृत्ति का। २ नीरोग। स्वस्थ। ३ हलका। ४ निस्सार। ५ साधारण। ६ ठीक।
पु० वह जो किसी वृत्ति (काम, धन्धे या पेशे) में लगा हो। वह जो रोजी-रोजगार में लगा हुआ हो।

वार्त्ता—स्त्री०[सं०]१. बात-चीत। २ ऐसा कथन या बात जो केवल औपचारिक रूप से कही गई हो, पर जिसका व्यावहारिक रूप में सदा उपयोग न होता हो। (फारमल टाक)। ३ ऐसा कथन जो किसी को किसी विषय का ज्ञान कराने के लिए हो। (टाक) ४. किंवदन्ती। जनश्रुति। अफवाह। ५. खबर। समाचार। ६ वृत्तान्त। हाल। ७ बात-चीत का प्रसंग या विषय। ८ वैश्यों की वृत्ति। जैसे—कृषि गो-रक्षा, वाणिज्य-व्यापार आदि। ९ चीजें खरीदना और बेचना। क्रय-विक्रय। १० दुर्गा का एक नाम।

वार्त्ताक—पु०[सं०]१ बैंगन। भंटा। २. बटेर पक्षी।

वार्त्ताकी—स्त्री०[सं० वार्ताकि+ङीप्] बैंगन। भंटा।

वार्त्तानुकर्षक—पु०[सं० ष० त०] गुप्त बातें ढूँढ कर जानने या निकालने वाला, अर्थात् गुप्तचर। जासूस।

वार्त्तानुजीवी (विन्)—वि०[सं० ष० त०] कृषि या व्यापार से जीविका चलानेवाला।

वार्त्तायन—पु०[सं० ब० स०] दे० 'राजपत्र'।

वार्त्तालाप—पु०[सं० ष० त०] लोगों में आपस में होनेवाली बात-चीत। कथोपकथन।

वार्त्तावह—पु०[सं० वार्त्ता√वह् (ढोना)+अच्]१. पनसारी। २. दूत। ३ राजकीय शासन का आय-व्यय आदि से सम्बन्ध रखनेवाला अंग या विभाग।

वार्त्तिक—वि०[वृत्ति+ठक्—इक]१ वार्त्ता संबंधी। २ वार्त्ता या समाचार लानेवाला। ३ विशद् व्याख्या के रूप में होनेवाला। व्याख्यात्मक।
पु०१ किसान। २ व्यवसायी। ३ दूत। चर। ४ वैद्य। ५. ऐसी विश्लेषणात्मक व्याख्या जिसमें किसी सूत्र, भाष्य आदि का अर्थ समझाया जाता है, उसमें होनेवाली छूट, त्रुटि आदि का निर्देश किया जाता है तथा उसकी व्याप्ति मर्यादित या वर्द्धित की जाती है। ६. कात्यायन का वह प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें पाणिनि के सूत्रों पर विश्लेषणात्मक व्याख्याएँ लिखी हुई हैं।

वार्दर—पु० [वार √दृ (फाड़ना)+अप्] १ दक्षिणावर्त्त शंख। २ जल। ३ आम की गुठली। ४ रेशम। ५. घोड़े के गले पर दाहिनी ओर की एक भौंरी।

वार्द्धक्य—पु०[सं० वृद्ध+ष्यञ्, कुक्]१ वृद्ध होने की अवस्था या भाव। वृद्धावस्था। २ वृद्धावस्था के फलस्वरूप होनेवाली कमजोरी। ३. वृद्धि।

वार्ध्रीणस—पु० [सं० वार्ध्री नासिका+अच्, नस-आदेश, णत्व, ब०स०] १ लंबे कानोंवाला बकरा। २ गैंडा। ३ एक प्रकार का पक्षी जिसका बलिदान प्राचीन काल में विष्णु के उद्देश्य से किया जाता था।

वार्मुच—पु०[सं० वार्√मुच् (त्याग)+क्विप्] १ बादल। २. मोथा।

वार्य—वि०[सं०] १ वरण करने योग्य। २ वर के रूप में प्राप्त या स्वीकार करने योग्य। ३ बहुमूल्य।
वि०=निवार्य।
पु०१. वर। २ चहारदीवारी।

वार्ष—वि०[सं०]=वार्षिक।

वार्षक—पु०[सं० वर्ष+अण्+कन्] पुराणानुसार पृथ्वी के दस भागों में से एक।

वार्षगण—पु०[सं० ष० त०] एक प्रकार का वैदिक आचार्य।

वार्षिक—वि०[सं० वर्षा+ठक्—इक]१ जल की वर्षा या वर्षा ऋतु से संबंध रखनेवाला। २ प्रति वर्ष होनेवाला। एक वर्ष के बाद होनेवाला। ३ एक वर्ष तक चलता रहनेवाला।
अव्य० प्रति वर्ष के हिसाब से।

वार्षिकी—स्त्री०[सं०वार्षिक]१ प्रति वर्ष दी जानेवाली वृत्ति या अनुदान। (एनुइटी)२ प्रतिवर्ष होनेवाला कोई प्रकाशन। (एनुअल) ३. किसी मृत व्यक्ति के उद्देश्य से, उसकी मरणतिथि के विचार से प्रतिवर्ष होने-वाला कोई स्मारक कृत्य। बरसी।

वार्षिक्य—वि०[सं० वार्षिक+यत्]=वार्षिक।
पुं० वर्षा ऋतु।

वार्ष्ण—पु०[सं० वृष्णि+अण्] कृष्णचन्द्र।

वार्षी—स्त्री०[सं० वर्षा+अण्+ङीप्] वर्षा ऋतु।

वार्षुक—वि०[सं० वर्षुक+अण्]१ बरसनेवाला। २ बरसानेवाला।

वार्ष्णेय—वि०[सं० वृष्णि+ढक्—एय] १ वार्ष्ण-सम्बन्धी। २ वार्ष्ण का अनुयायी या भक्त।

पु०१ वृष्णि का वशज। २. श्रीकृष्ण।

वार्हस्पत्य—वि०[स० बृहस्पति+यञ्]=बार्हस्पत्य।

वालंटियर—पु०[अ०] स्वय सेवक।

वाल—पु०[√वल् (चलना)+घञ्] (घोड़ो आदि की) पूंछ के वाल।
प्रत्य० [हिं० वाला] एक प्रत्यय जो कुछ सज्ञाओ के अन्त मे लगकर यह अर्थ देता है—(क) वाला या मालिक जैसे; कोठीवाल। (ख) रहने वाला, जैसे—गयावाल। (ग) क्रिया करनेवाला, जैसे—देवाल =देनेवाला, लेवाल=लेनेवाला।

वालक—पु०[स० वाल+कन्]१ वालछड। २ हाथ मे पहनने का कगन।

वालदैन—पु०[अ० वालिदैन]माता-पिता।

वालना†—स० [?] गिराना। डालना। (राज०) उदा०—काजल गल वालियौ किरि।—प्रिथीराज।

वालव—पु०[स० वाल√वा (गमनादि)+क] फलित ज्योतिष मे एक करण।

वाला—स्त्री०[स० वाल+टाप्] इद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से वने हुए उपजाति नामक सोलह प्रकार के वृत्तों मे से एक, जिसके पहले तीन चरणो मे दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते है, तथा चौथे चरण मे और सब वही रहता है, केवल प्रथम वर्ण लघु होता है।
प्रत्य०[स० वान्] [स्त्री० वाली] १ पूर्ववर्ती पद (सज्ञा) के स्वामी या धारक का वोधक। जैसे—घरवाला, चश्मेवाला। २ पूर्व-वर्ती पद (क्रिया) के सपादक का वोधक। जैसे—नाचनेवाला, मारने-वाला। ३ पूर्ववर्ती पद (स्थान वाचक सज्ञा) से सबध रखनेवाला। जैसे—शहरवाला, देहातवाली जमीन। †४ पूर्ववर्ती पद (उपभोग्य वस्तु) के उपभोग से सम्वन्ध रखनेवाला। (पश्चिम) जैसे—खानेवाली मिठाई=खाने की मिठाई।
वि० [फा०] उच्च। ऊँचा।

वालिका—स्त्री०[स० वाल+कन्+टाप्, इत्व]१ =वालिका। २ = वालुका।

वालिद—पु०[अ०] [स्त्री० वालिदा, भाव० वल्दियत]पिता। वाप।

वालिदा—स्त्री०[अ० वालिद] माता। माँ।

वालिदैन—पु०[अ०] माँ-बाप। माता-पिता।

वाली (लिन्)—पु०[स० वालिहता (तृ), वालि√हन् (मारना)+तृच्, प० त०] सुग्रीव का वडा भाई एक वानर।
प्रत्य० हिं० 'वाला' का स्त्री०।
पु० [अ०] १. मालिक। स्वामी। २ वादशाह। ३. सहायक। मददगार। ४ सरक्षक।

वालुक—स्त्री० [स० वालु+कन्] १ एक प्रकार का गध द्रव्य। २. पनियालू।

वालुका—स्त्री०[स०] १. वृक्ष की शाखा। डाल। २ ककड़ी। ३ वालुका। वालू।

वालेय—पु०[स० वालि+ढक्—एय]१ पुत्र। वेटा। २ एक प्रकार का करज। ३. गधा।

वाल्क—वि०[स० वल्क+अण्] वल्कल या छाल-सबधी।
पु० वृक्षो की छाल या उसके रेशो से वना हुआ कपडा।

वाल्कल—वि० [स० वल्कल+अण्] वल्कल-सम्वन्धी। छाल का।

वाल्मीकि—पु०[स० वल्मीक+इञ्] सस्कृत भाषा के आदि कवि तथा रामायण के रचयिता।

वाल्मीकीय—वि० [स० वाल्मीकि+छ—ईय] १ वाल्मीकि-सम्वन्धी। वाल्मीकि का। २. वाल्मीकि-कृत।

वाल्हा†—पु०=वल्लभ। (राज०)

वाय*—स्त्री०[स० वायु]१ हवा। २ गध। महक। (राज०) जैसे—वघवाव (वाघ के शरीर से निकलनेवाली गध)।

वावदूक—पु०[सं० √वद् (वोलना)+यङ, दीर्घ, ऊक्] १ अच्छा वोलने-वाला। वक्ता। वाग्मी। २ वकवादी।

वावना†—अ०[स० वाद्य] वजना। उदा०—विधि सहित वधावे वाजित्र वावे।—प्रिथीराज।
स०=वजाना।

वावू†—स्त्री०=वायु। (राज०)

वावैला—पु०[अ०] १ रोना-पीटना। विलाप। २ शोर-गुल। हो-हल्ला।
क्रि० प्र०—मचाना।

वाशक—वि०[स० वा√शा (पतला करना)+ण्वुल्—अक]१ चिल्लाने-वाला। २ रोनेवाला।
पु०=वासक (अडूसा)।

वाशन—पु० [स० वा√शा (छीलना)+ल्युट्—अन]१ पक्षियो का वोलना। २ मक्खियो का भिनभिनाना। ३ चिल्लाना।

वाशित—पु०[स० √वाश् (शब्द करना)+क्त, इत्व] पशु, पक्षी आदि का शब्द।

वाशिता—स्त्री०[स० वाशित+टाप्]१ स्त्री। २ हथनी।

वाशिष्ठ—पु०[वशिष्ठ+अण्] १ एक उपपुराण का नाम। २ एक प्राचीन तीर्थ।
वि० वशिष्ठ-सम्वन्धी।

वाशिष्ठी—स्त्री०[स० वाशिष्ठ+ङीप्] गोमती नदी।

वाष्कल—वि०[स० वष्कल+अण्] वडा।
पु० योद्धा।

वाष्प—पुं०[स०]१ भाप। २ आँसू। ३ लोहा। ४ भटकटैया।

वाष्पन—पु०[स०] ताप की सहायता से तरल पदार्थ को वाष्प के रूप मे परिणत करना। वाष्प वनाना। (वेपोराइजेशन)

वाष्पशील—वि०[स०][भाव० वाष्पशीलता] (पदार्थ) जो कुछ विशिष्ट अवस्थाओं मे वाष्प वनकर उडता हुआ समाप्त हो सकता हो। (वोलेटाइल)

वाष्प-स्नान—पु०[स०] कुछ विशिष्ट प्रकार के रोगो की चिकित्सा के लिए ऐसी स्थिति मे रहना कि सारे शरीर या पीडित अग पर खौलते हुए पानी की भाप लगे। (एयर वाथ)

वासंत—पु०[स० वसन्त+अण्]१ कोयल। २ मलयानिल। ३ मूँगा। ४ मैनफल। ५ ऊँट।

वासंतक—वि०[स० वासत+कन् अथवा वसत+वुञ्—अक]१. वसत-सम्वन्धी। २ वसंत ऋतु मे होनेवाला।

वासंतिक—पु० [स० वसन्त+ठक्—इक] १. भाँड। २. नर्तक।
वि० वसत-सम्वन्धी।

वासंती—स्त्री० [वासन्त+ङीप्] १ माधवीलता। २. जूही। ३. दुर्गा। ४. गनियारी। ५ मदनोत्सव। ६ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १४-१४ वर्ण होते है।

वासदर†—स्त्री० [स० वैश्वानर] आग। अग्नि।

वास—पु० [स० वस्+घञ्] १. किसी स्थान पर टिक कर रहना। अवस्थान। निवास। जैसे—कल्पवास, कारावास, स्वर्गवास आदि। २. घर। मकान। ३ अडूसा। वासक। ४. गध। बू।
पु० [स० वस्त्र] कपडा। वस्त्र। उदा०—धरी निधि नील वास उत्तर सुधारत हौ।—सेनापति।

वासक—पु० [स० वास+ण्वुल्—अक] १ अडूसा। २. दिन। दिवस। ३. मालक राग का एक भेद।

वासक-सज्जा—स्त्री० [स० वासक√सज्ज् (तैयार होना)+णिच्+अण्+टाप्] साहित्य मे वह नायिका जो स्वय सज-संवरकर तथा घर-बार सजा-सँवारकर प्रिय की प्रतीक्षा मे बैठी हुई हो।

वासग†—वि० [स० वासक] बसानेवाला।
†पु०=वासुकि।

वासगृह—पु० [स०] वासभवन।

वासत—पु० [स०√ वास् (शब्द करना)+अतच्] गधा।

वासतेय—वि० [स० वसति+ढञ्—एय] वस्ती के योग्य। रहने लायक (स्थान)।

वासन—पु० [स० वसि+ल्युट्—अन] [वि० वासित] १ निवास करना। बसना। २ सुगधित करना। वासना। ३ वसन। कपडा। ४ जाल।

वासना—स्त्री० [स०√वस् (मिलना)+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १ कोई ऐसी आकाक्षा, इच्छा या कामना जो मन मे दबी हुई, बनी या बसी रहती हो।
विशेष—शास्त्रो मे कहा है कि यह किसी पूर्व संस्कार के फलस्वरूप मन मे बनी रहती है, और जब तक इसका अन्त नही होता, तब तक मनुष्य को मुक्ति नही प्राप्त हो सकती। न्याय-शास्त्र मे कहा गया है कि यह एक प्रकार का मिथ्या सस्कार है जो शरीर को आत्मा से भिन्न समझने की दशा मे मन मे बना रहता है।
२. किसी चीज या बात की ऐसी इच्छा या वासना जिसकी पूर्ति सहज मे न हो सकती हो। ३. ज्ञान। ४. दुर्गा का एक नाम। ५. अर्क की पत्नी का नाम।
स०=वासना। (गन्ध से युक्त करना)।

वासभवन—पु० [स०] १. रहने का घर। २. प्राचीन भारत मे धवल गृह का वह ऊपरी भाग (सौध से भिन्न) जिसमे स्वय राजा और रानियाँ रहा करती थी। २ अन्तपुर। ३ शयनागार।

वासर—पु० [स०√ वस् (निवास करना)+णिच्+अर] १ दिन। दिवस। २ वह कमरा या घर जिसमे वर-वधू की सोहागरात होती है।

वासर-कन्यका—स्त्री० [प० त०] रात्रि। रात।

वासरमणि—पु० [स० प० त०] सूर्य।

वासरिक—वि० [स०] १. वासर-सबधी। वासर का। २ प्रतिदिन होनेवाला। दैनिक।

वासरेश—पु० [स०] सूर्य।

वासव—वि० [स०] १. वसु-सबधी। २ इन्द्र-सबधी। इन्द्र का।
पु० १. इन्द्र। २ धनिष्ठा नक्षत्र।

वासवि—पु० [स०] १ इन्द्र के पुत्र जयन्त। २. अर्जुन।

वासवी—स्त्री० [स० वासव+ङीप्] १ व्यास की माता सत्यवती। मत्स्यगधा। २ इन्द्राणी। शची।

वासवेय—पु० [स० वासवी+ढक्—एय] वासवी के पुत्र, वेदव्यास।

वास-स्थान—पु० [स०] रहने की जगह। निवास-स्थान। आवास। (एबोड)

वासा—स्त्री० [स० √ वस्+णिच्+अच्,+टाप्] १. वासक। अडूसा। २. माधवी लता।
†पु०=वासा।

वासामात्य—पु० [स० वास+अमात्य] वह राजकीय अधिकारी जो किसी पराये राज्य मे वहाँ के शासन आदि पर दृष्टि रखने के लिए अमात्य के रूप मे रखा जाता है। (रेजिडेन्ट)

वासि—पु० [स० वस+इञ्] एक प्रकार का छोटा कुल्हाडा या बसूला।

वासित—भू० कृ० [स० वास+क्त, इत्व] १ वास अर्थात् सुगध से युक्त। सुगधित किया या महकाया हुआ। २ कपडे से ढका हुआ। ३. देर का बना हुआ। बासी।

वासिता—स्त्री० [स० वासित+टाप्] १ स्त्री। २. हथनी। ३ आर्या छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ९ गुरु और ३९ लघु वर्ण होते है।

वासिल—वि० [अ०] १ जिसका वसल अर्थात् सयोग हुआ हो। २. जो वसूल अर्थात् प्राप्त हुआ हो।
पद—वासिल-बाकी।

वासिल-बाकी—पु० [अ०+फा०] ऐसी सभी धनराशियाँ या रकमे जो या तो प्राप्य होने पर प्राप्त या वसूल हो चुकी हो अथवा अभी प्राप्त या वसूल होने को बाकी हो।

वासिलात—पु० [अ० वासिल का बहु०] वे धनराशियाँ या रकमे जो वसूल हो चुकी हो।

वासिष्ठ—वि० [स० वसिष्ठ+अण्] वसिष्ठ-सम्बन्धी।
पु० १ वसिष्ठ का वंशज। २ खून। लहू।

वासिष्ठी—स्त्री० [स० वसिष्ठ+ङीप्] गोमती नदी।

वासी (सिन्)—वि० [स० वास+इनि] रहनेवाला। बसनेवाला। जैसे—काशीवासी, मथुरावासी।
स्त्री० [स० वस+इञ्+ङीप्] बढई का बसूला।

वासुधरेयी—स्त्री० [स० वासुन्धरेय+ङीप्] सीता।

वासु—पु० [स०] १ विष्णु। २ आत्मा। ३ परमात्मा। ४ पुनर्वसु नक्षत्र।

वासुकि—पु० [स० वासु√ कै+क+इञ्] १ आठ नाग राजाओ मे से एक जो कश्यप के पुत्र माने जाते है तथा जिनका उपयोग समुद्र-मन्थन के समय रस्सी के रूप मे किया गया था। २ एक प्राचीन देवता।

वासुकेय—वि० [स०] वासुकि-सम्बन्धी।
पु०=वासुकि।

वासुदेव—पु० [स०] १ वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र। २. पीपल का पेड।

वासुदेवक—पु० [सं० वासुदेव+कन्] वासुदेव या श्रीकृष्ण के उपासक।

वासुदेव-धर्म—पु० [सं०] वि० पू० चौथी, पाँचवीं शती का एक धार्मिक सम्प्रदाय जो वासुदेव या श्रीकृष्ण का उपासक था। यह 'एकांतिक धर्म' का विकसित रूप था।

वासुभद्र—पु० [सं०] वासुदेव। श्रीकृष्णचन्द्र।

वासुर—पु०=वासर।

वासुरा—स्त्री० [सं० वास+उरण्+टाप्] १ स्त्री। २ हथनी। ३ जमीन। भूमि। ४ रात। रात्रि।

वासू—स्त्री० [सं० वास+ऊ (बाहु०)] नाटक में सेविका बननेवाली स्त्री के लिए संबोधन रूप में प्रयुक्त शब्द।

वासोख्त—पु० [फा०] १. दिल के बहुत ही जले हुए या दुःखी रहने की अवस्था या भाव। मानसिक सन्ताप। २ उर्दू फारसी में मुसद्दस (षट्-पदी) के रूप में लिखा हुआ वह काव्य जिसमें प्रेमिका के उपेक्षापूर्ण दुर्व्यवहारों के कारण परम दुःखी होकर प्रेमी उसे जली-कटी बातें सुनाता और अपने दिल के फफोले फोड़ता है।

वासोख्ता—वि० [फा०] १ जला हुआ। २ दिल-जला।

वास्कट—स्त्री० [अ० वेस्टकोट] पाश्चात्य ढंग की बिना आस्तीन की कुरती या फतुही।

वास्तव—वि० [सं० वस्तु+अण्] जो वस्तु या तथ्य के रूप में हो। यथार्थ। सत्य।

पु० परमार्थ अथवा मूलतत्त्व या भूत।

पद—वास्तव में=वास्तविकता यह है कि। हकीकत में।

वास्तविक—वि० [सं० वस्तु+ठक्—इक] [भाव० वास्तविकता] १. जो वास्तव में हो। जो अस्तित्व में हो।

विशेष—यथार्थ और वास्तविक में मुख्य अंतर यह है कि यथार्थ में उचित और न्यायसंगत होने का भाव प्रधान है और उसका अर्थ है—जैसा होना चाहिए, वैसा। परन्तु 'वास्तविक' मुख्यतः इस भाव का सूचक है कि किसी चीज या बात का प्रस्तुत या वर्तमान रूप क्या अथवा कैसा है। काल्पनिक या मिथ्या से भिन्न। (रियल)

२. (वस्तु) जो खरी तथा प्रामाणिक हो।

वास्तविकता—स्त्री० [सं०] १. वास्तविक होने की अवस्था या भाव। (रियलिटी) २. ऐसी स्थिति जो सत्य हो। ३ ऐसी बात जो घटित हुई हो।

वास्तव्य—वि० [सं० √वस्+तव्यत्] १ निवास करने अर्थात् बसने या रहने के योग्य (स्थान)। २ निवास करने या बसनेवाला (व्यक्ति)।

पु० बसी हुई जगह। बस्ती।

वास्ता—पु० [अ० वास्त] १ संबंध। लगाव। सरोकार।

मुहा०—(किसी का) वास्ता देना=किसी की शपथ देना। (पश्चिम) **(किसी से) वास्ता पड़ना**=किसी से लेन-देन या व्यवहार स्थापित होना।

२. मित्रता। ३ अवैध संबंध विशेषतः पर-स्त्री और पर-पुरुष का। ४ जरिया। द्वारा।

वास्तु—पु० [सं०] १ बसने या रहने के लिए अच्छा और उपयुक्त स्थान। २. वह स्थान जिस पर रहने के लिए मकान बनाया जाय। ३. बनाकर तैयार किया हुआ घर या मकान। ४. ईंट, चूने, पत्थर, लकड़ी आदि से बनाकर तैयार की जानेवाली कोई रचना। इमारत। जैसे—कूआँ, तालाब, पुल आदि।

वास्तुक—पु० [सं० वास्तु+कन्] १. बथुआ नाम का साग। २ पुनर्नवा। गदहपूरना।

वास्तु-कर्म (न्)—पु० [ष० त०] इमारत बनाने का काम।

वास्तु-कला—स्त्री० [सं०] वास्तु या मकान, महल आदि बनाने की कला जिसके अन्तर्गत चित्रण और तक्षण दोनों आते हैं और जो किसी प्रारंभिक तथा सब कलाओं की जननी मानी गई है। (आर्किटेक्चर)

वास्तु-काष्ठ—पु० [सं०] इमारत के काम में आनेवाली लकड़ी, अर्थात् किवाड़, चौखट, धरने, आदि बनाने के योग्य लकड़ी।

वास्तुप, वास्तुपति—पु०=वास्तु-पुरुष।

वास्तु-पुरुष—पु० [सं०] वास्तु अर्थात् इमारत या बसने योग्य स्थान का अधिष्ठाता देवता।

वास्तु-पूजा—स्त्री०=वास्तु शांति।

वास्तु-बंधन—पु० [ष० त०] इमारत बनाने का काम।

वास्तु-याग—पु० [सं०] वह याग जो नये घर में प्रवेश करने से पहले किया जाता है।

वास्तु-विद्या—स्त्री०=वास्तु-कला।

वास्तु-वृक्ष—पु० [सं०] वह वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती हो।

वास्तु-शांति—स्त्री० [सं०] कर्मकांड-संबंधी वे कृत्य जो गृह-प्रवेश से पहले वास्तु या मकान के दोष शांत करने के लिए किए जाते हैं और जिसमें वास्तु-पुरुष का पूजन प्रधान होता है।

वास्तु-शास्त्र—पु० [सं०]=वास्तु-कला।

वास्तूक—पु० [सं० वास्तु+कन्, पृषो० दीर्घ] बथुआ। (साग)

वास्तूपशम, वास्तूपशमन—पु०=वास्तु-शांति।

वास्ते—अव्य० [अ०] १ निमित्त। लिए। जैसे—मेरे वास्ते किताब लाना। २ सबब। हेतु। जैसे—मैं भी इसी वास्ते वहाँ गया था।

वास्तेय—वि० [सं० वस्ति+ढञ्—एय] १ वास्तु-संबंधी। २ बसने या रहने के योग्य (स्थान)।

वास्तोष्पति—पु० [सं० ष० त०] १ इन्द्र। २ देवता। ३ वास्तुपति।

वास्त्र—वि० [सं० वस्त्र+अण्] १ वस्त्र-संबंधी। २. वस्त्र से बना हुआ। ३. ढका हुआ।

पु० प्राचीन भारत में वह रथ जो कपड़े से ढका होता था।

वास्य—वि० [सं० वास+यत्] १ (स्थान) जो बसने के योग्य हो। २ (स्थान) जो छाये जाने के योग्य हो।

वाह—वि० [सं० √वह् (ढोना)+घञ्] १. वहन करनेवाला। २ बहनेवाला। (यौ० के अन्त में)

पु० १ वाहन। सवारी। जैसे—गाड़ी, रथ आदि। २ बोझ खींचने या ढोनेवाला पशु। जैसे—घोड़ा, बैल आदि। ३. वायु। हवा। ४ चार गोणी के बराबर एक पुरानी तौल। ५ बाँह। बाहु।

अव्य० [फा०] १ प्रशंसा-सूचक शब्द। धन्य। जैसे—वाह! यह तुम्हारा ही काम था। २ आश्चर्य, घृणा आदि का सूचक शब्द। जैसे—वाह! यह तुम कैसी बात कहते हो।

पु० [?] एक प्रकार का रात्रिचर जन्तु जिसकी बोली प्रायः बिल्ली की

बोली की तरह की होती है। यह पेड़ो पर भी चढ सकता है और पाला भी जाता है।

वाहक—वि० [स०√वह् (ढोना)+ण्वुल्—अक] ढो या लादकर ले जानेवाला।

पु०१ कुली। २ सारथी। ३ एक विषैला कीडा।

वाहणी†—पु०=वाहन। (डिं०)

वाहन—पु०[स०√वह् (ढोना)+ल्युट्—अन, वृद्धि निपा०] १ वहन करने अर्थात् ढोने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा पशु या चीज जिस पर लोग सवार होते हों। सवारी। जैसे—घोडा, गाडी, रथ आदि। ३. उद्योग। प्रयत्न।

वाहनप—पु०[स०] वह जो किसी प्रकार के वाहन की देख-रेख करता हो। जैसे—महावत, साईस आदि।

वाहना—स्त्री०[स० वाहन+टाप्] सेना।

†स०१ =वाहना। २.=बाँधना।

वाहनिक—पु०[स० वाहन+ठक्-इक] वह जो भारवाहक पशुओ के पालन-पोषण, वर्द्धन आदि का काम करता हो।

वाहनीक—पु०=वाहनिक।

वाहनीय—वि०[स०√वह् (ढोना)+णिच्+अनीयर्] जो वहन किया जा सके।

पुं० भारवाही पशु।

वाहरु†—पु०=पाहरु (पहरेदार)।

वाहला—स्त्री०[स० वाह+लच्+टाप्] १. धारा। स्रोत। २ प्रवाह बहाव। ३ वाहन।

†पु०१.=बादल। २.=नाला (पानी का)। (राजा०)

वाहवना†—स०=वाहना (वाहना)।

वाह-वाही—स्त्री०[फा०] १ कोई अच्छा काम करने पर लोगो का वाह-वाह कहना। साधुवाद। २ समाज मे होनेवाली प्रशसा।

क्रि० प्र०—मिलना।—लूटना।—होना।

वाहि—सर्व० [हिं० वा] उसको। उसे।

वाहिक—पु०[स० वाह+ठक्—इक] १. गाडी, रथ आदि यान। २ ढक्का नाम का बाजा।

वाहिकता—स्त्री०[वाहिक+तल्-टाप्]वाहिक होने की अवस्था या भाव।

वाहिकत्व—पु०=वाहिकता।

वाहिका—स्त्री०[स०] रक्तवहन करनेवाली शिरा। वाहिनी। (वेसल)

वाहित—भू० कृ० [स०√वह् (ढोना)+णिच्+क्त] १ जिसका वहन हुआ हो। ढोया हुआ। २. वहता हुआ। प्रवाहित। ३. चलाया हुआ। चालित। ४. वचित।

वाहिद—वि०[अ०] १. एक। २. अकेला। ३ अनुपम।

पु० ईश्वर।

वाहिनी—स्त्री०[स०] १ सेना। फौज। २. प्राचीन भारतीय सेना की एक इकाई जो तीन गुल्मो के योग से बनती थी। ३ आज-कल सेना का वह विशिष्ट विभाग जो किसी एक उच्च सैनिक अधिकारी के अधीन हो। (डिवीज़न) ४ शरीर-विज्ञान मे नली के आकार के वे सूक्ष्म आधार जो रक्त के कण एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते है। (वेसल) ५. नदी।

वाहिनीय—वि०[स०] शरीर के अन्दर की वाहिनियों से सबध रखनेवाला। (वैसक्युलर)

वाहिनीपति—पु०[स० ष० त०] १ वाहिनी नामक सैनिक विभाग का अधिपति। २ सेनापति।

वाहियात—वि०[अ० वाही का फा० बहु०] [भाव० वाहियातपन] १ (वस्तु) जो निरर्थक या व्यर्थ हो। २ (बात) जो बे-सिर-पैर का, अश्लील या बेहूदी हो। ३. (व्यक्ति) जो तुच्छ, दुष्टप्रवृत्ति, निकम्मा या मूर्ख हो।

विशेष—यह शब्द मूलत बहुवचन सज्ञा होने पर उर्दू और हिंदी मे विशेषण रूप मे दोनो वचनो मे समान रूप से प्रयुक्त होता है। जैसे—वाहियात लडका, वाहियात बात।

वाहियाती—स्त्री०[फा० वाहियात] १ वाहियातपन। २ कोई वाहियात बात।

वाही—वि०[अ०] १ सुस्त। ढीला। २ निकम्मा। निरर्थक। उदा०—अजी बस जाओ भी, कुछ तुम तो बडे वाही हो।—रगी०। वाहियात इसी का बहु० रूप है। ३ अश्लील, गदा और भद्दा।

मुहा०—वाही तबाही बकना=(क) अश्लील, गदी या भद्दी बातें कहना। (ख) बे-सिर-पैर की या व्यर्थ की बाते करना।

४ मूर्ख। बेवकूफ। ५ आवारा। ६ बेहूदा।

वाही-तबाही—वि०[अ० वाही+तबाही] १ आवारा। २ बेहूदा। ३. बे-सिर-पैर का। अड-बड।

स्त्री० गन्दी और भद्दी बातें।

क्रि० प्र०—बकना।

वाहु—स्त्री०[स०√बाध् (नाश करना)+कु, हादेश]=बाहु।

वाह्य—वि०[स०√वह्+ण्यत्] वहन किये जाने के योग्य। जिसका वहन हो सके।

पु० १. यान। सवारी। २. घोड़े, बैल, हाथी आदि पशु जो वहन के काम आते हैं।

वि०, क्रि० वि०=बाह्य।

विशेष—उक्त अर्थ मे 'बाह्य' के यौ० के लिए दे० 'बाह्य' के यौ०।

वाह्लिक—वि०[स०] वाह्लीक देश का।

वाह्लीक—पु०[स०√वह्+लिण्+कन्] १. एक प्राचीन जनपद जो भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर था। गाधार के पास का प्रदेश। आधुनिक बल्ख राज्य। २ उक्त देश का निवासी। ३. उक्त देश का घोडा। ४ केसर। ५ हीग।

विंगेश—पु०[स० ष० त०] अग्नि।

विंजामर—पु०[स०] आँख का सफेद भाग।

विंदक—पु० [स० विद+कन्] १ प्राप्त करनेवाला। पानेवाला। २. जाननेवाला। ज्ञाता।

विंदु—पु०[स० विन्द+उण्] १ पानी या किसी तरल पदार्थ का कण। बूँद। २ छोटा गोलाकार चिह्न। बिंदी। ३ हाथी के मस्तक पर रगो से किये जानेवाले चिह्न। ४ लिखने मे अनुस्वार का चिह्न। ५. शून्य का चिह्न। सिफर। ६ रेखा-गणित मे वह स्थान जिसकी स्थिति तो हो, पर जिसके विभाग न हो सकते हो। ७. दाँत से लगनेवाला घाव।

दन्त-क्षत। ८ किसी चीज का बहुत छोटा टुकडा। कण। कनी। ९ वेदान्त मे, नाद के फल-स्वरूप होनेवाली क्रिया। देखें 'नाद'। १०. रत्नो का एक दोप या धब्बा जो चार प्रकार का कहा गया है—आवर्त्त (गोल) वर्त्ति (लम्बा) आरक्त (लाल) यव (जौ के आकार का)।
वि० १ ज्ञाता (वेत्ता)। जानकार। २ दाता। दानी। ३. जिसका ज्ञान प्राप्त करना उचित हो। जानने योग्य।

विंदुक—पु०[सं०] माथे पर लगाया जानेवाला टीका या बिन्दी।

विंदु-चित्रक—पु० [स० ब० स०] हिरन जिसके शरीर पर सफेद चित्तियाँ हो।

विंदु-जाल—पु०[स०] सुदरता के लिए गोद या छापकर किसी स्थान पर बनाई हुई बिंदियाँ। जैसे—हाथी के मस्तक या सूँड पर का विंदु-जाल, बाँह या हाथ पर गोदने का विंदु-जाल।

विंदु-तंत्र—पु०[स० प० त०] चौपड़ आदि की बिसात। सारि-फलक।

विंदु-तीर्थ—पु०[स० मध्यम० स०] काशी का प्रसिद्ध पचनद तीर्थ जहाँ विन्दु माधव का मदिर है। पचगगा।

विंदु-त्रिवेणी—स्त्री०[स० ब० स०] सगीत मे स्वर साधन की एक प्रणाली जिसमे तीन बार एक स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके बाद के स्वर का उच्चारण करते हैं, फिर तीन बार उस दूसरे स्वर का उच्चारण करके एक बार तीसरे-स्वर का उच्चारण करते है, और अत मे तीन बार सातवे स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके अगले सप्तक के पहले स्वर का उच्चारण करते हैं।

विंदु-पत्र—पु०[सं० मध्यम० स०] भोजपत्र।

विंदु-माधव—पु० [स० मध्यम० स०] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णु मूर्ति।

विंदु-मालिनी—स्त्री०[स०]सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विंदुर—पुं०[स० विंदु+रक्] छोटी बिंदी। बुंदकी।

विंदुराजि—पु०[स० ब० स०] एक तरह का साँप जिसके शरीर पर बुँदकियाँ होती हैं।

विंदु-रेख—पु०[स०] १ विंदु-रेखा। २ अंकन की एक विशेष प्रक्रिया जिसमे विभिन्न विंदुओ को रेखाओ से सबद्ध किया जाता है। ३. उक्त प्रकार से विंदुओ को रेखाओ से सबद्ध करने पर बना हुआ चित्र। (ग्राफ, अतिम दोनो अर्थों के लिए)

विंदु-रेखा—स्त्री० [स०] विंदुओ को मिलाने से बननेवाली रेखा। विंदु-रेखा।

विंदुसर—पु०[स० मध्यम० स०] १ पुराणानुसार कैलाश पर्वत के दक्षिण का एक सरोवर। २ भुवनेश्वर क्षेत्र मे स्थित एक प्राचीन सरोवर।

विंध†—पु०=विन्ध्य (विन्ध्याचल)।

विंध्य—पु०[स० विध+यत्] एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य मे पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है, यह आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा पर है, और दक्षिण भारत को उत्तर भारत से विभक्त करता है।

विंध्य-कूट(क)—पु०[कर्म० स०, ब० स०] १ विंध्य पर्वत। २ अगस्त्य मुनि का एक नाम।

विंध्य-गिरि—पु०[मध्यम० स०] विंध्य पर्वत।

विंध्य-चूलिक—पु०[ब० स०] विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश।

विंध्यवासिनी—स्त्री० [स०] मिरजापुर जिले के अतर्गत स्थित दुर्गा की एक मूर्ति।

विंध्या—स्त्री०[स० विंध्य+टाप्] एक प्राचीन नदी।
पु०=विंध्य।

विंध्याचल—पु०[स० मध्यम० स०] १ विंध्य पर्वत। २ उक्त पर्वत का वह विशिष्ट अग जो मिरजापुर के पास है और जहाँ विन्ध्यवासिनी देवी का मदिर है। ३ वह नगरी जिसमे उक्त मदिर स्थित है।

विंध्याद्रि—पु०[स० मध्यम० स०] विंध्य पर्वत।

विंश—वि०[स० विंशति+डट्, अति-लोप] बीसवाँ।
पु० किसी चीज का बीसवाँ भाग।

विंशक—वि०[स०] बीस।

विंशत—वि०[स०] बीस। (समस्त शब्दो मे)

विंशति—स्त्री०[स० विंश+ति] १. बीस की सख्या। २ उक्त सख्या के सूचक अक।
वि० जो गिनती मे बीस अर्थात् दस का दूना हो।

विंशति बाहु—पु०[स० ब० स०] रावण।

विंशोत्तरी—स्त्री० [स० ब० स०] फलित ज्योतिष मे, मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति जिसमे मनुष्य की आयु १२० वर्ष मान कर उसके विभाग करके नक्षत्रो और ग्रहो के अनुसार फल कहे जाते हैं।

वि—उप०[स०]एक उपसर्ग जो क्रियाओ तथा सज्ञाओ मे लगकर निम्न-लिखित अर्थ देता है—(क) अलगाव या पार्थक्य, वियोग। (ख) विपरीतता, जैसे—विस्मरण, विक्रय। (ग) अगीकरण, जैसे—विभाग। (घ) अन्तर, जैसे—विशेष, विलक्षण। (ङ) क्रम या विन्यास, जैसे—विद्या। (च) अधिकता, जैसे—विकरालता। (छ) अनेक-रूपता या विचित्रता, जैसे—विविध। (ज) निषेध या राहित्य; जैसे—विकच। (झ) परिवर्तन, जैसे—विकार।
पु० १ अन्न। २. आकाश। ३ आँख।
स्त्री० पक्षी। चिड़िया।

वि०—स० विक्रम सवत् का सक्षिप्त रूप।

विकंकट—पु०[स० वि√कक् (गमनादि)+अटन्] गोखरू।

विकंकत—पु०[स० वि√कक् (गमनादि)+अतच्] १ एक प्रकार का जगली वृक्ष जिसके कुछ अग औषध के काम आते हैं, और प्राचीन काल मे जिसकी लकडी यज्ञ मे जलाई जाती थी। कटाई। किंकिणी।

विकंटक—पुं०[स० ब० स०] १ जवासा। २ विककट।

विकंप—वि०[स० कर्म० स०] १ काँपता हुआ। २ चचल। ३ अस्थिर।

विकंपन—पु०[स०] १ हिलना-डुलना। काँपना। २ गति। चाल।

विक—पु०[स० ब० स०] नई ब्याई हुई गौ का दूध।
वि० १ जल-रहित। जल-विहीन। २ अप्रसन्न।

विकच—पु०[स० ब० स०] १ एक प्रकार के धूमकेतु जिनकी सख्या ६५ कही गई है, और यह माना गया है कि इनका उदय अशुभ होता है। २ ध्वज। ३. क्षपणक।
वि० १ जिसके बाल न हो। २. खिला हुआ। विकसित। ३ व्यक्त। स्पष्ट। ४. चमकता हुआ।

विकचित—भू० कृ० [स०] खिला हुआ (फूल)।

विकच्छ—पु०[स० ब० स०]ऐसी नदी जिसके दोनों ओर तराई या कछार न हों।

विकट—वि०[स० वि√कट् (गमनादि)+अच्] १ बहुत बडा। विशाल। २ भद्दा। भोंडा। ३ उग्र, तीव्र, भयकर या भीषण। ४ टेढा। वक्र। ५ कठिन। मुश्किल। ६ दुर्गम। ७ दुरसाध्य।
पु० १ विस्फोटक। २ सोमलता। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

विकटक—वि० [स० विकट+कन्] जिसकी आकृति खराब हो गई हो।

विकटा—स्त्री०[स० विकट+टाप्] १ बुद्ध की माता, मायादेवी। २ टेढे पैरोवाली लडकी जो विवाह के योग्य न हो।

विकथा—स्त्री०[स०] निरर्थक या बेहूदी बात।

विकर—पु०[स० वि√कृ (करना)+अच्] १ रोग। व्याधि। २ तलवार चलाने के ३२ प्रकारो मे से एक।

विकरण—पु०[स०] व्याकरण मे, प्रकृति या धातु और प्रत्यय के बीच मे होनेवाला वर्णागम। जैसे—'घोडो पर' मे का 'ो' विकरण है।
वि० करण अर्थात् इन्द्रियो से रहित।

विकरार*—वि० १ =विकराल। २.=बे-करार (विकल)।

विकराल—वि०[स० तृ० त०] [भाव० विकरालता] भीषण आकृति-वाला। डरावना।

विकर्ण—वि०[स० ब० स०]१ कर्णरहित। २ जिसके कान न हो। बिना कानोवाला। २ जिसे सुनाई न पडता हो। जो सुन न सके। बहरा। ३ जिसके कान बडे और लम्बे हो। ४ रेखा-गणित मे चार या अधिक कोणोवाले क्षेत्र मे किसी कोण से उसकी ठीक विपरीत दिशावाले कोण तक पहुँचने या होनेवाला। टेढे या तिरछे बल मे ऊपर से नीचे आने अथवा नीचे से ऊपर जानेवाला। (डायगनल)
पु० १ कर्ण का एक पुत्र। २ दुर्योधन का एक भाई। ३ एक प्रकार का साँप। ४ एक प्रकार का तीर या बाण। ५ रेखा गणित मे वह रेखा जो किसी चतुर्भुज को तिरछे बल से पडनेवाले आमने-सामने के बिन्दुओ को मिलाती हुई चतुर्भुज को दो भागो मे विभक्त करती है। (डाय-गनल)

विकर्णक—पु०[स० विकर्ण+कन्] १ एक प्रकार की गँठिवन। २ शिव का व्याडि नामक गण।

विकर्णत—अव्य०[स०]विकर्ण के रूप मे। तिरछे बल मे। (डायगनली)

विकर्णिक—पु०[स० विकर्ण+ठक्—इक] सरस्वती नदी के आस-पास का देश। सारस्वत प्रदेश।

विकर्णी—स्त्री०[स० विकर्ण+इनि, दीर्घ, न—लोप] एक प्रकार की ईंट जिसका व्यवहार यज्ञ की वेदी बनाने मे होता था।

विकर्तन—पु०[स० ब० स०] १ सूर्य। २ आक। मदार। ३ ऐसा राजकुमार जिसने पिता के राज्य पर अनुचित रूप से अधिकार जमा लिया हो।

विकर्म—पु०[स०] १ दूषित या निषिद्ध कर्म। २ कर्म विशेषत वृत्ति से निवृत्त होना। ३ विविध कर्म।

विकर्मस्थ—पु०[विकर्म√स्था (ठहरना)+क] वह जो वेद-विरुद्ध आच-रण करता हो। (धर्म-शास्त्र)

विकर्मिक—वि०[स०] १ दूषित या निषिद्ध कर्म करनेवाला। २ व्यव-साय या विविध कामो मे लगा रहनेवाला।
पु० प्राचीन काल मे वह अधिकारी जो बाजारो, हाटो, मेलो आदि की व्यवस्था तथा निरीक्षण करता था।

विकर्ष—पु०[स० वि√कृष् (खीचना)+घञ्] १ बाण। तीर। २ धनुष की प्रत्यचा खीचने की क्रिया। ३ अन्तर। दूरी। फासला।

विकर्षण—पु० [स०] १ छीना-झपटी करना। २ आकर्षण। खीचना। ३ दूसरी ओर या विपरीत दिशा मे खीचना। ४ खीचकर अपनी ओर लाना। लौटाना। ५ न रहने देना। नष्ट करना। ६ विभाग। हिस्सा। ७. कुश्ती का एक पेच। ८ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक। ९ एक प्राचीन शास्त्र जिसमे लोगो को आकर्षित करने की कला का वर्णन था।

विकल—वि०[स० ब० स०] १ जिसमे कल न हो। कल से रहित। २ जिसका आराम या चैन नष्ट हो चुका हो। बेचैन। व्याकुल। ३ जिसकी कला न रह गई हो। कला से रहित या हीन। ४ जिसका कोई अग टूट या निकल गया हो। खंडित। जैसे—विकलाग। ५ जिसमे कोई कमी हो। घटा हुआ। ६ असमर्थ। ७ क्षोभ, भय आदि से युक्त। ८ प्रभाव शक्ति आदि से रहित। ९ कुम्हलाया या मुर-झाया हुआ। १०. प्राकृतिक। स्वाभाविक।
पु०=विकला।

विकलन—पु० [वि √कल् (गिनती करना)+ल्यु—अन] हिसाब-किताब मे किसी मद मे कोई रकम किसी के नाम लिखना। (डेबिट)

विकलांग—वि०[स० ब० स०] १ किसी अग मे हीन। २ जिसका कोई अग बेकाम हो।

विकला—स्त्री० [स० विकल+टाप्] १ कला का साठवाँ अश। २ बुध ग्रह की गति। ३ वह स्त्री जिसका रजोदर्शन बन्द हो गया हो।

विकलाना—अ० [स० विकल+आना (प्रत्य०)] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।
†स० किसी को विकल या बेचैन करना।

विकलास—पु०[स० विकलास्य]एक प्रकार का प्राचीन बाजा, जिस पर चमडा मढा होता था।

विकलित—भू० कृ०[स० वि√कल्+क्त, इत्व अथवा विकल+इतच्] १ विकल किया हुआ। २ विकल। बेचैन। ३ दुखी। पीडित।

विकलेंद्रिय—वि०[स० ब० स०] १ जिसकी इन्द्रियाँ वश मे न हो। २. दे० 'विकलाग'।

विकल्प—वि०[स०] [वि० वैकल्पिक] १ ऐसी स्थिति जिसमे यह सम-झना या सोचना पडता है कि यह है या वह। २ मन मे एक कल्पना उत्पन्न होने के बाद उससे मिलती-जुलती की जानेवाली दूसरी कल्पना। पहले कुछ सोचने के बाद फिर कुछ और सोचना। ३ वह अवस्था जिसमे सामने आई हुई कई बातो या विषयो मे से कोई बात या विषय अपने लिए चुनने की आवश्यकता होती है। (आप्शन)। ४ सामने आये हुए दो या अधिक ऐसे कामो या बातो मे से हर एक जो आवश्यक, सुभीते आदि के अनुसार काम मे लाया या लिया जा सकता हो। (आल्टरनेटिव)। ५ व्याकरण मे किसी बात या विषय से सम्बन्ध रखनेवाले दो या अधिक नियमो, विधियो आदि मे से अपनी इच्छा के अनुसार कोई नियम या विधि

मानना, लगाना या लेना। ६ धोखा। भ्रम। भ्रान्ति। ७ विचित्रता। विलक्षणता। ८ योग शास्त्र मे, पाँच प्रकार की चित्त-वृत्तियो मे से एक जिसमे कोई चीज या बात बिना तथ्य या वास्तविकता का विचार किए ही मान ली जाती है। जैसे—चाहे पारस पत्थर होता हो या न होता हो, फिर भी यह मान लेना कि उसका स्पर्श लोहे को सोना बना देता है। ९ योगसाधन मे एक प्रकार की समाधि। १० साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे दो परस्पर विरोधी बातो का उल्लेख करके कहा जाता है कि या तो यह हो या वह, अथवा या तो यह होना चाहिए या वह। (आल्टरनेटिव) जैसे—पार्वती की यह प्रतिज्ञा या तो मैं शकर से विवाह करूँगी या जन्म-भर कुँआरी रहूँगी। उदा०—वैर तो बढायो, कह्यौ काहू कोन मान्यौ, अब दाँतनि तिनूका कै कृपान गहौ कर मे।—मतिराम। ११ मन मे विशेष रूप से की जानेवाली कोई कल्पना या विचार। निर्धारण। जैसे—दड देने का विकल्प। १२ मन मे उत्पन्न होनेवाली तरह-तरह की कल्पनाएँ। १३ कल्प का कोई छोटा अग या विभाग। अवान्तर कल्प। १४ विचित्रता। विलक्षणता।

विकल्पन—पु०[स०] [भू० कृ० विकल्पित] १ विकल्प करने की क्रिया या भाव। २ किसी बात मे सन्देह करना।

विकल्पना—स्त्री० [स०] १ तर्क-वितर्क करना। २ सन्देह करना।

विकल्पसम—पु०[स० ब० स०] न्याय-दर्शन मे २४ जातियो मे से एक जिसमे वादी के दिये हुए दृष्टान्त मे अन्य धर्म की योजना करते हुए साध्य मे भी उसी धर्म का आरोप करके अथवा दृष्टान्त को असिद्ध ठहराकर वादी की युक्ति का निरर्थक खडन किया जाता है। जैसे—यदि वादी कहे-'शब्द अनित्य है, क्योकि वह घर की तरह उत्पत्ति धर्मवाला है।' और इस पर प्रतिवादी कहे 'घर जिस प्रकार उत्पत्ति धर्म से युक्त होने के कारण अनित्य और मूर्त है, उसी प्रकार शब्द भी उत्पत्ति धर्म से युक्त होने के कारण अनित्य और मूर्त है।' तो ऐसा तर्क 'विकल्पसम' कहा जायगा।

विकल्पित—भू० कृ०[स०] १ जिसके सम्बन्ध मे विकल्पन (तर्क-वितर्क या सन्देह) किया गया हो। अनिश्चित और सदिग्ध। २ जो विकल्प (देखे) के रूप मे ग्रहण किया गया हो ३. जिसके सम्बन्ध मे कोई निश्चय न हो। ४ जिसके सम्बन्ध मे कोई नियम न हो। अनियमित।

विकल्मष—वि०[स० ब० स०] कल्मष या पाप से रहित। निष्पाप।

विकस—पु०[स० वि√कस् (विकसित होना)+अच्] चद्रमा।

विकसन—पु०[स० वि√कस् (विकसित होना)+ल्युट्—अन] [वि० विकसित] १ विकास करना या होना। २ फूलो आदि का खिलना।

विकसना—अ० [स० विकसन] १ विकास के रूप मे आना या होना। २ फूलो आदि का खिलना।

विकसाना—स०[स० विकसन] १ विकास के रूप मे लाना। २ खिलने मे प्रवृत्त करना। खिलाना।

विकसित—भू० कृ० [स० वि√कस्+क्त, इत्व] १. जिसका विकास हुआ हो या किया गया हो। २ खिला हुआ।

विकस्वर—वि० [स० वि√कस्+वरच्] विकासशील। खिलनेवाला। पु० साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालकार जो उस समय माना जाता है। जब विशेष का सामान्य द्वारा समर्थन करने के उपरान्त सामान्य का विशेष द्वारा भी समर्थन किया जाता है।

विकांक्ष—वि०[ब० स०] आकाक्षा से रहित।

विकांक्षा—स्त्री०[स० विकाक्ष+टाप्] १ कोई आकाक्षा न होना। आकाक्षा का अभाव। २ अनिश्चय। दुविधा।

विकाम—वि०[स० ब० स०] कामना से रहित। निष्काम।

विकार—पु०[स० वि√कृ (करना)+घञ्] १. प्रकृति, रूप, स्थिति आदि मे होनेवाला परिवर्तन। २ किसी चीज के आकार, गुण, रग-रूप, स्वभाव आदि मे होनेवाला परिवर्तन जिसमे वह खराब हो जाय और ठीक तरह से काम देने के योग्य न रह जाय। खराबी। बिगाड। ३ वह तत्त्व या बात जिसके कारण चीज मे उक्त प्रकार की खराबी या दोष आता हो। जैसे—उद्देश्य, भावना आदि मे होनेवाला विकार। ४ मुख पर क्रोध, घृणा आदि के फल-स्वरूप होनेवाली ऐंठन या विकृति। ५ शारीरिक कष्ट या घाव। ६ वेदान्त और साख्य दर्शन के अनुसार किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम। जैसे—ककण सोने का विकार है, क्योकि वह सोने से ही रूपान्तरित होकर बना है। ७ निरुक्त के प्रधान चार नियमो मे से एक जिसके अनुसार एक वर्ण के स्थान मे दूसरा वर्ण हो जाता है।

विकारित—भू० कृ०[स० वि√कृ+णिच्+क्त] जो किसी प्रकार के विकार से युक्त किया गया हो अथवा आपसे आप हो गया हो।

विकारी(रिन्)—वि० [स० वि√कृ+णिनि, दीर्घ, न लोप] १ जिसमे कोई विकार उत्पन्न हुआ हो। विकार से युक्त। २ जिसमे कोई परिवर्तन हुआ हो अथवा किया गया हो। ३ जिसमे कोई विकार या परिवर्तन होता रहता हो या होने को हो।

पु० साठ सवत्सरो मे से एक सवत्सर का नाम।

विकाल—पु०[कर्म० स०] १ ऐसा समय जब देव-कार्य, पितृ-कार्य आदि का समय बीत गया हो। २ सन्ध्या का समय। ३ विलम्ब। देर।

विकालत—स्त्री०=वकालत।

विकालिका—स्त्री०[स० विकाल+कन्+टाप्, इत्व] जल-घडी।

विकाश—पु०[स० वि√काश् (दीप्त होना)+घञ्] १ प्रकाश। रोशनी। २ फैलाव। विस्तार। ३ बढती। वृद्धि। ४ आकाश।

वि० एकात। निर्जन।

विकाशक—वि०[स० वि√काश्+ण्वुल्—अक] विकासक।

विकास—पु०[स०] १ अपने आपको प्रकट या व्यक्त करना। २ फैलना या बढना। ३ फूलो आदि का खिलना। ४ आँख, मुँह आदि का खुलना। ५ किसी चीज या बात का अस्तित्व मे आकर या आरम्भ होकर फैलते या बढते हुए और उन्नति की अनेक क्रमिक अवस्थाएँ पार करते हुए अपनी पूरी बाढ तक पहुँचना। बढते-बढते अपना पूरा रूप धारण करना। ६ उक्त क्रिया के परिणाम-स्वरूप प्रकट होनेवाला रूप या स्थिति। ६ यह सिद्धान्त कि कोई वस्तु अपनी आरभिक सामान्य अवस्था से अपनी प्रकृति के अनुसार बढती तथा फूलती-फलती हुई पूर्ण अवस्था प्राप्त करती है। (इवोल्यूशन)

स्त्री०[?] दूब की तरह की एक घास जो चौपाये बहुत चाव से खाते है।

विकासक—वि०[स० वि√कस्+ण्वुल्—अक] विकास करने अर्थात् खोलने या बढानेवाला।

विकासन—पु० [स० वि√कस्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विकसित] १. विकास करने की क्रिया या भाव। २ खिलना। ३ खुलना। ४ फैलना।

विकासना—स० [स० विकास] १ विकास करना। २ खोलकर प्रकट या व्यक्त करना। ३ खिलने में प्रवृत्त करना।

†अ०=विकसना।

विकासवाद—पु० [ष० त०] यह सिद्धान्त कि ईश्वर ने यह सृष्टि (अथवा उसका कोई अंग) इसी या प्रस्तुत रूप में नहीं उत्पन्न कर दी थी, वरन् उसका रूप प्रतिक्षण बदलता और बढ़ता आ रहा है। (थियरी ऑफ इवोल्यूशन)

विशेष—इस सिद्धान्त के अनुसार यह माना जाता है कि इस पृथ्वी पर प्राणियों, वनस्पतियों आदि का आरम्भ बहुत ही सूक्ष्म रूप में हुआ था; और धीरे-धीरे उनका विकास होने पर वे सब फैलते, बढ़ने और अनेक प्रकार के रूप-रंग धारण करने गये, उनकी जातियाँ आदि बढ़ती गईं और उनके बहुत-से भेद-विभेद होते गये।

विकासवादी—वि० [स०] विकासवाद-सम्बन्धी।

पु० वह जो विकासवाद का अनुयायी या ज्ञाता हो।

विकासित—भू० कृ० [स० वि√कस्+णिच्+क्त] १ जिसका विकास किया गया हो। २ सामने लाया हुआ। ३. फैलाया या बढ़ाया हुआ।

विकिर—पु० [स० वि√कृ (करना)+क] १ पक्षी। चिड़िया। २ कूआँ। ३ विकिरण। बिखेरना। ४ बिखेरी जानेवाली वस्तु। ५ वे चावल आदि जो पूजा के समय विघ्न दूर करने के लिए चारों ओर फेंके जाते हैं। अक्षत।

विकिरक—वि० [स०] जो अपनी किरणें चारों ओर फैलाता या फैलाता हो। किरणें विकीर्ण करनेवाला। (रेडिएटर)

पु० कोई ऐसा पदार्थ या यंत्र जो किसी प्रकार की किरणें, ताप, भाप, शीत आदि अंदर से निकालकर बाहर फैलाता या बिखेरता हो। (रेडिएटर)

विकिरण—पु० [स०] १ इधर-उधर फेंकना या फैलाना। छितराना। बिखेरना। २ किसी केन्द्र से शाखाओं आदि के रूप में निकलकर इधर-उधर फैलाना या बढ़ाना। ३ आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्र में किसी केन्द्र से ताप, प्रकाश की किरणों अथवा किसी प्रकार की ऊर्जा को निकलकर इधर-उधर या चारों ओर फैलना। (रेडिएशन) ४. चीरना-फाड़ना। ५ हत्या करना। मार डालना। ६ ज्ञान। ७ मदार का पौधा। आक।

विकिरणता—स्त्री० [स०] १ वह स्थिति जिसमें किसी चीज की किरणें निकलकर किसी ओर फैलती हैं। २ आधुनिक विज्ञान में वह स्थिति जिसमें अणु-बमों आदि के विस्फोट के कारण विषाक्त किरणें निकलकर चारों ओर फैलती और वातावरण दूषित करके जीव, जन्तुओं, वनस्पतियों आदि को बहुत हानि पहुँचाती हैं। (रेडियो-एक्टिविटी)

विकिरण-मापी—पु० [स०] वह यंत्र जिसकी सहायता से तपे हुए पदार्थों में से निकलनेवाली ताप-रश्मियों का परिमाण या शक्ति जानी या नापी जाती है। (रेडियोमीटर)

विकिरण-विज्ञान—पु० [स०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विचार और विवेचन होता है कि अनेक पदार्थों में से किरणें कैसे निकलती हैं और उनके क्या-क्या उपयोग, प्रकार या स्वरूप होते हैं। (रेडियोलॉजी)

विकीरना†—स० [स० विकीर्ण] १. [illegible] २ [illegible] छितराना या बिखेरना।

विकीर्ण—भू० कृ० [स० वि√कृ (फैलाना)+क्त] १. चारों ओर फैलाया या छितराया हुआ। २ [illegible] (बाल)। ३ प्रसिद्ध। मशहूर।

पु० [illegible]।

विकुंचन—पु० [स०] [भू० कृ० विकुंचित] १ सिकुड़ना। २ [illegible]।

विकुंठ—पु० [स० ब० स०] [illegible]।

विकुंठ—वि० [स०] १. [illegible]। २. [illegible]।

†पु० [illegible]।

विकुंठा—स्त्री० [स० विकुंठ+टाप्] १. [illegible]। २ विष्णु की माता।

विकुक्षि—पु० [स० विकुक्ष+इनि] [illegible] नाम।

वि० जिसका पेट फूला हुआ और बढ़ा हो। तोंदवाला।

विकृत—भू० कृ० [स० वि√कृ (करना)+क्त] [भाव० विकृति] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। २ जिसका आकार या रूप बिगड़ गया हो। बेडौल। ३ [illegible]। ४ [illegible]। ५ [illegible]। विरोधी। ६ [illegible]। रोगी। ७ उद्विग्न। ८ [illegible]।

पु० १ [illegible] का नाम। २ साठ संवत्सरों में से चौबीसवाँ संवत्सर। ३ बीमारी। रोग। ४ [illegible]। ५ गर्भपात।

विकृत-दृष्टि—पु० [स० ब० स०] ऐंचा-ताना।

विकृत-स्वर—पु० [स०] संगीत में वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हट कर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरता है। इसी १२ प्रकार या भेद कहे गये हैं।

विकृता—स्त्री० [स० विकृत+टाप्] एक योगिनी का नाम।

विकृति—स्त्री० [स० वि√कृ (करना)+क्तिन्] १. विकृत होने की अवस्था या भाव। २ खराबी। विकार। ३ वह रूप जो विकार के उपरान्त प्राप्त हो। बिगड़ा हुआ। ४ बीमारी। रोग। ५ परिवर्तन। ६ मन में होनेवाला क्षोभ। ७ काम-वासना। ८ बैर। शत्रुता। ९ धार्मिक क्षेत्र में माया का एक नाम। १० पिंगल में २३ वर्णों-वाले छन्दों की संज्ञा। ११ सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। १२ व्याकरण में शब्द का वह रूप जो उसको मूल धातु से विकृत होने पर प्राप्त होता है।

विकृति विज्ञान—पु० [स०] चिकित्सा-शास्त्र और दैहिकी का वह अंग या विभाग जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि शरीर में किस प्रकार के विकार होने से कौन-कौन-से रोग होते हैं। रोग-विज्ञान। (पैथॉलोजी)

विकृतिवेत्ता—पु० [स०] वह जो विकृति-विज्ञान का ज्ञाता हो। (पैथॉलोजिस्ट)

विकृतीकरण—पु० [स०] किसी की आकृति अथवा कृति के कुछ अंगों को छोटा-बड़ा करके इस उद्देश्य से उसे विकृत करना कि लोग उसे देखकर अनायास हँस पड़ें। (कैरिकेचर)

विकृष्ट—भू० कृ० [स० तृ० त०] [भाव० विकृष्टि] १. खींचा हुआ।

२ खींच या निकालकर अलग किया हुआ। ३. फैलाया या बढाया हुआ। ४ ध्वनि के रूप मे आया या लाया हुआ।

विकृष्टि—स्त्री०[स०] विकृष्ट होने की अवस्था या भाव।

विकेंद्रण—पु०[स०] विकेंद्रीकरण। (दे०)

विकेंद्रीकरण—पु०[स०] १ केन्द्र से हटाकर दूर करना। २ राजनीतिक क्षेत्र मे, शक्ति या सत्ता का एक केंद्र या स्थान मे निहित न होकर अनेक केंद्रो या स्थानो मे थोड़े-थोड़े अशो मे निहित होना। (डिसेन्ट्रलाइज़ेशन)

विकेट—पु०[अं०] १ क्रिकेट के खेल मे वे डडे जिन पर गुल्लियाँ रखी जाती हैं। यष्टि। २ बल्लेबाज। जैसे—तीन विकेट गिर चुके है। ३ दोनो ओर की विकेटो के बीच की जगह।

विकेश—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० विकेशी] १ जिसके सिर के बाल खुले हो। २ जिसके सिर पर बाल न हो। गजा।

पु० १. एक प्रकार का प्रेत। २ पुच्छल तारा।

विकेशी—स्त्री०[स०] १ ऐसी स्त्री जिसके सिर के बाल खुले हो। २ गजे सिरवाली स्त्री। ३ मही (पृथ्वी) के रूप मे शिव की पत्नी का नाम। ४ एक प्रकार की पूतना।

विकोष—वि०[स० ब० स०]१ कोष या म्यान से निकला हुआ (शस्त्र)। २ खुला हुआ। अनाच्छादित। ३. जिस पर भूगी, छिलका आदि न हो।

विक्टोरिया—स्त्री०[अ०] एक प्रकार की घोडा-गाडी जो देखने मे प्राय. फिटन से मिलती-जुलती होती है।

पु० एक छोटा ग्रह जिसका पता सन् १८५० मे हैड नामक एक पाश्चात्य ज्योतिषी ने लगाया था।

विक्रम—पु०[स० वि√क्रम् (चलना आदि)+अच्] १ विपरीत गति। 'सक्रम' का विपर्याय। २ चलने मे पडनेवाला कदम। डग। पग। ३ चलना। गति। ४ किसी को दबाकर अपने अधिकार या वश मे करना। ५ विशिष्ट पौरुष या बल। ६ बहादुरी। वीरता। ७. ढग। तरीका। ८ विष्णु का एक नाम। ९ साठ सवत्सरो मे से चौदहवाँ सवत्सर। ९ बिना किसी क्रम या प्रणाली के होनेवाला वेद-पाठ। १० दे० 'विक्रमादित्य'।

वि० १. क्रम से रहित। बिना क्रम का। २. उत्तम। श्रेष्ठ।

विक्रमक—पु०[स० विक्रम+कन्] कार्तिकेय के एक गण का नाम।

विक्रमण—पु०[स० वि√क्रम् (चलना आदि)+ल्युट्—अन] १. चलना। कदम रखना। २ आगे बढना। 'सक्रमण' का विपर्याय। ३. विक्रम। वीरता।

विक्रम-शिला—स्त्री०[म०] प्राचीन भारत की एक नगरी जिसमे बहुत बडा बौद्ध विद्यालय था।

विक्रमाजीत†—पु०=विक्रमादित्य।

विक्रमादित्य—पु०[स० स० त०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनके सबध मे अनेक प्रवाद प्रचलित हैं। आज-कल का विक्रमी सवत् इन्ही का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रमाब्द—पु०[स० मध्यम० स०] विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्। विक्रम सवत्।

विक्रमार्क—पु०[स० त०]=विक्रमादित्य।

विक्रमी—पु०[स० विक्रम+इनि, दीर्घ, न-लोप विक्रमिन्] १ वह जिसमे बहुत अधिक बल हो। विक्रमवाला। पराक्रमी। २ विष्णु। ३. शेर।

वि० १. विक्रम-सबधी। विक्रम का। २ विक्रमाब्द-सबधी।

विक्रमीय—वि०[स० विक्रम+छ-ईय] विक्रमादित्य-सबधी।

विक्रय—पु० [सं०वि√क्री (बेचना)+अच्] दाम लेकर कोई चीज देना। दाम लेकर किसी चीज का स्वत्वाधिकार दूसरे को देना। बेचना। 'क्रय' का विपर्याय।

पद—क्रय-विक्रय।

विक्रयक—वि० [सं० वि√क्री+ण्वुल्—अक] बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रय-कर—पु०[ष० त०] वह राजकीय कर जो चीजो के विक्रय के समय खरीदनेवाले से लिया जाता है। बिक्रीकर। (सेल-टैक्स)

विक्रयण—पु०[स० वि√क्री (बेचना)+ल्युट्—अन] बेचने की क्रिया। विक्रय। बिक्री।

विक्रय-पंजी—स्त्री०[स० ष० त०] वह पजी (वही) जिसमे व्यापारी नित्य अपनी बेची हुई चीजो के नाम, मूल्य आदि लिखते हैं। (सेल्स जर्नल)

विक्रय-पत्र—पु०[स० ष० त०] वह पत्र या लेख्य जिसमे यह लिखा जाता है कि इतना मूल्य लेकर अमुक व्यक्ति ने अमुक वस्तु दूसरे व्यक्ति के हाथ बेची है। बैनामा। (सेल-डीड)

विक्रय-लेख—पु०[म०] विक्रय-पत्र।

विक्रयिक—पु०=विक्रेता

विक्रयी (यिन्)—पु०=विक्रेता।

विक्रय्य—वि०[स० विक्रय+यत्] जो बेचा जाने को हो।

विक्रात—भू० कृ० [स० वि√क्रम्+क्त] १ जो चल कर पार किया गया हो। २. जिसमे विशेष विक्रम अर्थात् बल या शूरता हो। वीर। ३ विजयी। ४ प्रतापी। ५ तेजस्वी।

पु० १ बहादुर। वीर। २ शेर। सिह। ३ डग। पग। ४ बल और शक्ति। विक्रम। ५ हिरण्याक्ष का एक पुत्र। ७ प्रजापति। ८ साहस। हिम्मत। ९ व्याकरण मे एक प्रकार की सधि जिसमे विसर्ग अविकृत ही रहता है। १०. वैक्रान्त मणि।

विक्राता—स्त्री०[स० विक्रान्त+टाप्] १ अग्निमथ वृक्ष। अरणी। २ जयती। ३ मूसाकानी। ४ अडहुल। गुडहर। ५. अपराजिता। ६ लज्जावती। लजालू। ७ हसपदी नामक लता।

विक्राति—स्त्री०[स०वि√क्रम्+क्तिन्] १ गति। २. विक्रम। वीरता। ३ घोडे की सरपट चाल।

विक्रिया—स्त्री०[स० वि√कृ+श+टाप्] १ विकार। २. प्रतिक्रिया।

विक्रियोपमा—स्त्री०[स० मध्यम० स०] एक प्रकार का उपमालकार जिसमे किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय का अवलब कहा जाता है।

विक्री—स्त्री०=बिक्री (विक्रय)।

विक्रीत—भू० कृ०[सं० वि√क्री+क्त] बेचा हुआ।

विक्रेतव्य—वि०=विक्रेय।

विक्रेता—पु०[सं० वि√क्री+तृच्] बिक्री करनेवाला। बेचनेवाला।

विक्रेय—वि०[वि√क्री+यत्] जो बेचा जाने को हो। बिकाऊ।

विक्रोश—पु०[म० वि√क्रुश् (विलपना)+घञ्] १ लोगो को अपनी सहायता के लिए पुकारना। गोहार। २ कुवाच्य कहना।

विक्रोष्टा (ष्टृ)—पु०[म० वि√क्रुश्+तृच्] १ गोहार करनेवाला। २. गाली देनेवाला।

विक्लव—वि० [स० वि√क्लु (अधीर होना)+अच्] १ विकल। बेचैन। २. क्षुब्ध। ३ भयभीत। ४ दुःखी। संतप्त।

विक्लिन्न—वि० [स० वि√क्लिद् (भीगना)+क्त] १ बहुत पुराना। जीर्ण-शीर्ण। २ गला-सडा। ३ पकाकर मुलायम किया हुआ। ४ गीला। तर।

विक्लेद—पु० [स० वि√क्लिद्+घञ्] १ आर्द्रता। २ गलाना या द्रव करना। ३ क्षय।

विक्षत—भू० कृ० [स० तृ० त०] १ जिसमे क्षत लगा हो। जिसमे खराश पडी हो। २ जिसे क्षत या घाव लगा हो। घायल। जख्मी।

विक्षय—पु० [स० ब० स०] अधिक मद्य-पान के कारण होनेवाला रोग। (वैद्यक)

विक्षिप्त—वि० [स० वि√क्षिप् (फेकना)+क्त] [भाव० विक्षिप्तता] १ फेका या छितराया हुआ। २. छोडा या त्यागा हुआ। व्यक्त। ३ जिसका मस्तिष्क ठीक तरह से काम न करता हो। पागल। सिडी। ४ पागलो की तरह घबराया हुआ और विकल।

विक्षिप्तक—पु० [स० विक्षिप्त+कन्] ऐसी लाश या शव जो जलाया या गाडा न गया हो, बल्कि यो ही कही फेंक दिया गया हो।

विक्षिप्तता—स्त्री० [स० विक्षिप्त+तल्+टाप्] विक्षिप्त या पागल होने की अवस्था या भाव। पागलपन।

विक्षुब्ध—वि० [स० वि√क्षुभ् (अधीर होना)+क्त] जिसमे किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न किया गया हो अथवा आप से आप हुआ हो।

विक्षेप—पु० [वि√क्षिप् (फेकना)+घञ्] १ इधर-उधर छितराना या फेंकना। २ झटका देना। ३ धनुष का चिल्ला या डोरी चढाना। ४ गदायुद्ध मे गदा की कोटि से समीपवर्ती शत्रु पर प्रहार करना। ५ मन इधर-उधर दौडाना या भटकाना। ६ बाधा। विघ्न। ७ सेना का पडाव। छावनी। ८ एक तरह का प्राचीन अस्त्र।

विक्षेपण—पु० [स० वि√क्षिप् (फेकना)+ल्युट्—अन] १ ऊपर अथवा इधर-उधर फेकने की क्रिया। २ झटका देना। ३ धनुष की डोरी खीचना। ४ बाधा। विघ्न। ५ विक्षेप।

विक्षेप लिपि—स्त्री० [कर्म० स०] एक प्रकार की प्राचीन लिपि।

विक्षेप्ता (प्तृ)—पु० [स० वि√क्षिप्+तृच्] विक्षेप या विक्षेपण करने-वाला।

विक्षोभ—पु० [स० वि√क्षुभ् (अधीर होना)+घञ्] १ विशेष रूप से होनेवाला क्षोभ। उद्विग्नता। २ किसी अशुभ या अनिष्ट घटना के कारण मन मे होनेवाला ऐसा विकार जो क्रुद्ध या दुःखी कर दे। ३ उथल-पुथल।

विक्षोभण—पु० [स० वि√क्षुभ्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विक्षोभित] क्षोभ उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

विक्षोभित—भू० कृ० [स० वि√क्षुभ्+क्त]=विक्षुब्ध।

विक्षोभी (भिन्)—वि० [स० वि√क्षुभ्+णिनि दीर्घ न लोप] [स्त्री० विक्षोभिणी] क्षोभ उत्पन्न करनेवाला। क्षोभकारी।

विखंड—वि० [स०] १ टुकडे-टुकडे किया हुआ। २ बहुत छोटे खडो या टुकडो मे परिवर्तित।

विखंड राशि—पु० [स०] भूगोल मे चट्टानो की सतह पर से टूट-फूटकर गिरे हुए ककडो का समूह। मलबा। (डेट्रिलस)

विखंडित—भू० कृ०=खडित।

विखंडी (डिन्)—वि० [स० वि√खड् (टुकडा करना)+णिनि, दीर्घ न लोप] तोडने-फोडने या नष्ट करनेवाला।

विख—वि० [स० वि० नासिका, ब० स०, नासिका-खादेश] जिसकी नाक कटी हुई हो या न हो।

†पु०=विष (जहर)।

विखनस—पु० [स०] १ ब्रह्मा। २ एक प्राचीन ऋषि।

विखाद†—पु०=विषाद।

विखादितक—पु० [स० वि√खद् (खाना)+णिच्+क्त+कन्] ऐसा मृत शरीर जिसका बहुत-सा अंश पशुओं ने खा डाला हो।

विखान†—पु०=विषाण (सींग)।

विखानस—पु०=वैखानस।

विखायँध—स्त्री०=विसायँध।

विखुर—पु० [स० वि√खुर (काटना)+अच्] १. राक्षस। २. चोर। वि० जिसके खुर न हो। खुरो से रहित।

विख्यात—भू० कृ० [स० वि√ख्या (प्रसिद्धि होना)+क्त] [भाव० विख्याति] प्रसिद्ध। मशहूर। जिसकी ख्याति चारो ओर हो।

विख्याति—स्त्री० [स० वि√ख्या (ख्याति)+क्तिन्] विख्यात होने की अवस्था या भाव। प्रसिद्धि। शोहरत।

विख्यापन—पु० [स० वि√ख्या+णिच्+ल्युट्—अन] १. प्रसिद्ध करना। मशहूर करना। २ सार्वजनिक रूप से घोषणा करना।

विख्यापित—भू० कृ० [स०] जिसका विख्यापन हुआ हो।

विगंध—वि० [स० ब० स०] १ जिसमे किसी प्रकार की गध न हो। २ बदबूदार। बुरी गधवाला।

विगंधकीकरण—पु० [स०] वह रासायनिक प्रक्रिया जिसके द्वारा लोहे आदि धातुओं मे मिली हुई गधक निकाल कर दूर की जाती है। (डीसलफराइजेशन)

विगंधिका—स्त्री० [स० विगध+कन्+टाप्+इत्व] १. हपुषा। हाऊबेर। २ अजगध। तिलवन।

विगणन—पु० [स० वि√गण् (गिनती करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विगणित] १ हिसाब लगाना। लेखा करना। २ ऋण से मुक्त होना।

विगत—भू० कृ० [स० वि√गम् (जाना)+क्त] [स्त्री० विगता] १ बीता हुआ। गत। २ गत मे ठीक पहले का। अन्तिम या बीते हुए से ठीक पहले का। जैसे—विगत दिन (बीते हुए कल से पहले अर्थात् परसों का), विगत वर्ष (गत अर्थात् पिछले साल से पहले का)। ३ जो कही इधर-उधर चला गया हो। ४ जिसकी कान्ति या प्रभाव नष्ट हो चुका हो। निष्प्रभ। ५ जो किसी बात से रहित या हीन हो चुका हो। जैसे—विगत यौवन। उदा०—बोले वचन विगत सब दूषन। —तुलसी।

विगता—स्त्री० [स० विगत+टाप्] ऐसी कन्या जो किसी दूसरे व्यक्ति के प्रेम मे पडी हो और इसी लिए विवाह के लिए अनुपयुक्त हो।

विगति—स्त्री० [स० वि√गम्+क्तिन्] दुर्दशा। दुर्गति।

विगद—वि० [स० ब० स०] रोगरहित। नीरोग।

पु० १ बात-चीत। चर्चा। २ शोर-गुल। हो-हल्ला।

विगम—पु० [स० वि√गम्+घञ्] १ प्रस्थान। प्रयाण। २ पार्थक्य। ३ अनुपस्थिति। ४ त्याग। ५. हानि। ६ नाश। ७ समाप्ति। ८ मृत्यु। ९ मोक्ष।

विगर—पु० [स० व० स०] १ दिगवर यति। २ पहाड। ३ भोजन का त्याग करनेवाला व्यक्ति।

विगर्हण—पु० [स०] [वि० विगर्हित] बुरे काम के लिए निन्दा करना और बुरा-भला कहना। भर्त्सना।

विगर्हणा—स्त्री० [स० वि√गर्ह् (निन्दा करना)+णिच्+टाप्] भर्त्सना। डाँट-फटकार।

विगर्हणीय—वि० [स० वि√गर्ह्+अनीयर्] निदनीय।

विगर्हा—स्त्री० [स० वि√गर्ह्+अन्+टाप्]=विगर्हण।

विगर्हित—भू० कृ० [स० वि√गर्ह्+क्त, तृ० त०] १ जिसकी भर्त्सना की गई हो। जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। २ बुरा। खराव। ३ निषिद्ध।

विगर्ही(र्हिन्)—वि० [स० वि√गर्ह्+णिनि] विगर्हण करनेवाला।

विगर्ह्य—वि० [स० वि√गर्ह्+यत्] जो भर्त्सना का पात्र हो। डाँटने-डपटने या निंदा किये जाने के योग्य।

विगलन—पु० [स० वि√गल् (पिघलना)+ल्यु—अन] [भू० कृ० विगलित] १ अच्छी या पूरी तरह से गलना या पिघलना। २ तरल पदार्थ का चूना, वहना या रिसना। ३ मन का आर्द्र होना। ४ नाश या लोप होना। ५ शिथिल होना।

विगलित—भू० कृ० [स० तृ० त०] १ जो गल गया हो। पिघला हुआ। ३. गिरा हुआ। पतित। ४ वहा हुआ। ५ ढीला। शिथिल। ६ विकृत।

विगाढ—भू० कृ० [स० वि√गाह् (विलोडन करना)+क्त] १ नहाया हुआ। स्नात। २ डूबा हुआ। ३ अन्दर घुसा, धँसा या पैठा हुआ। ४. जो वहुत अधिक मात्रा मे हो। वहुत गहन या घना।

विगाथा—स्त्री० [स० वि√गाथ् (कहना)+अक्+टाप्] आर्या छन्द का एक भेद जिसके विषम पदो मे १२-१२, दूसरे मे १५ और चौथे मे १८ मात्राएँ होती है और अन्त का वर्ण गुरु होता है। विषम गणो मे जगण नही होता, पहले दल का छठा गण (२७ ही मात्रा के कारण) एक लघु का मान लिया जाता हे। इसे 'विग्गाहा' और 'उद्‌गीति' भी कहते है।

विगान—पु० [स० कर्म० स०] १ निंदा। २ अपवाद। ३ असामजस्य। ४ घृणा।

विगाहन—पु० [स० वि√गाह्+अच्]=अवगाहन।

विगीत—वि० [स० वि√गै (गाना या कहना)+क्त] १ अनेक प्रकार से या अनेक रूपो मे कहा हुआ। २ बुरी तरह से कहा या गाया हुआ। ३ परस्पर विरोधी। ४ निंदित।

विगीति—स्त्री० [स० वि√गै+क्तिन्] आर्या छद का एक भेद।

विगुण—वि० [स० व० स०] १. जिसमे कोई गुण न हो। गुण-रहित। गुण-विहीन। २ निर्गुण।

विगूढ—भू० कृ० [स० तृ० त०] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. जिसकी निंदा की गई हो।

विगृहीत—वि० [स० वि√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्त] १. फैलाया या विभक्त किया हुआ। २ पकडा हुआ। ३ जिसका विरोध या सामना किया गया हो। ४. रोका हुआ। ५. जिसका विश्लेषण हुआ हो। विश्लिष्ट।

विग्गाहा—स्त्री० [स० विगाथा] विगाथा नामक छन्द जो आर्या का एक भेद है।

विग्रह—पु० [स० वि√ग्रह्+अच्] १. विस्तृत करना। फैलाना। २ अलग या दूर करना। ३. टुकडा। विभाग। ४ यौगिक शब्दो अथवा समस्त पदो के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना। (व्याकरण) ५. लडाई-झगडा और वैर-विरोध। ६ युद्ध। समर। ७ नीति के छ गुणो मे से एक, विपक्षियो मे कलह या फूट उत्पन्न करना। ८. आकृति। सूरत। ९ देह। शरीर। १०. प्रतिमा या मूर्ति। जैसे—शालग्राम की वटिया या शिव का लिंग। ११ शृगार। सजावट। १२. शिव का एक नाम या लिंग। १३ स्कन्द का एक अनुचर। १४ साख्य के अनुसार कोई तत्त्व।

विग्रहण—पु० [स० तृ० त०] रूप धारण करना। शक्ल मे आना।

विग्रही—वि० [स० √ग्रह+णिनि] १ विग्रह या लडाई-झगडा करनेवाला। २ युद्ध करनेवाला। ३ मूर्ति-पूजक।

पु० प्राचीन भारत मे युद्ध-विभाग का मत्री या सचिव।

विग्राह्य—वि० [स० विग्रह+ण्यत्] जिसके साथ विग्रह अर्थात् लडाई या युद्ध किया जा सके।

विघटन—पु० [स० विघट्टन] १ किसी वस्तु के सयोजक अगो का इस प्रकार अलग या नष्ट होना कि उसका प्रस्तुत अस्तित्व या रूप नष्ट हो जाय। 'घटन' का विपर्याय। (डिस-इन्टिग्रेशन) जैसे—किसी सस्था या समाज का विघटन। २ खराव होना या टूटना-फूटना। विगडना। ३ नष्ट करना या होना।

विघटिका—स्त्री० [स० व० स०] समय का एक छोटा मान जो एक घडी का २३वाँ भाग होता है।

विघटित—भू० कृ० [स० वि√घट् (मिलाना)+क्त] १ जिसके सयोजक अलग-अलग किये गये हो। २ तोडा-फोडा हुआ। ३ नष्ट किया हुआ। ४ (सस्था, समिति आदि) जिसे भग कर दिया गया हो। (डिस्साल्वड)

विघट्टन—पु० [स० वि√घट्ट् (सयुक्त करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विघट्टित] १ खोलना। २. पटकना। ३ रगडना। ४. दे० 'विघटन'।

विघट्टी (ट्टिन्)—वि० [स० विघट्ट+इनि] विघटन करनेवाला।

विघन—पु० [स० वि√हन् (मारना)+अप्, ह—घ] १ आघात करना। चोट पहुँचाना। २ वडा और भारी हथौडा। घन। ३ इन्द्र।

†पु०=विघ्न।

विघर्षण—पु० [स० वि√घृष् (रगडना)+ल्युट—अन] अच्छी तरह रगडना या घिसना।

विघस—पु० [स० वि√अद् (खाना)+अप्, अद्—घस्] १ आहार। भोजन। २ देवताओ, पितरो, वडो आदि के उपभोग के उपरान्त वचा हुआ अन्न।

विघात—पु० [स०] १ आघात। चोट। २ विनाश। ३ निवारण। रोक। ४ वाधा। ५. हत्या। ६ आज-कल मालिको को हानि पहुँ-

चाने के विचार से जान-बूझकर उनके यत्र या उपयोगी सामान तोडना-फोडना। तोड-फोड का कार्य। अतर्ध्वंस। (सैबोटेज) ७ नाश।

विघातक—वि०[स० विघात+कन्] १ विघात करनेवाला। २ तोड़-फोड के काम करनेवाला।

विघातन—पु०[स० वि√हन्+ल्युट्—अन] १ विघात करने की क्रिया। २ मार डालना। हत्या।

विघाती (तिन्)—वि०[स०] [स्त्री० विघातिनी]=विघातक।

विघूर्णन—पु० [स०] [भू० कृ० विघूर्णित] १ इधर से उधर घूमना या होना। २ चारो ओर घूमना। ३. आज-कल, किसी अक्ष या केन्द्र के चारो ओर चक्कर काटना या लगाना। (जाइरेशन)

विघ्न—पु०[स० वि √ हन्+क] १ बीच मे आकर पडनेवाली कोई ऐसी बात जिसमे होता हुआ काम रुक जाय। अडचन। बाधा।
क्रि० प्र०—आना।—डालना—पडना।—होना।
२ ऐसा अशुभ चिह्न जिसके कारण बनता हुआ काम विगड जाता हो। (प्रवाद)

विघ्नक—वि० [स० विघ्न+कन्]=विघ्नकारी।

विघ्नकारी (रिन्)—वि० [स०] बाधा उपस्थित करनेवाला। विघ्न डालनेवाला।

विघ्ननाशक—वि०[ष० त०] विघ्नो का नाश करनेवाला।
पु० गणेश।

विघ्नपति, विघ्नराज—पु०[स० ष० त०] गणेश।

विघ्नविनायक—पु०[ष० त०]गणेश।

विघ्नित—भू० कृ०[स० विघ्न+इतच्] १ (कार्य) जिसमे विघ्न पडा या डाला गया हो। २ बाधित।

विघ्नेश—पु०[ष० त०] गणेश।

विचकित—वि०[स० विचक+इतच्] १. चकित। २ घबराया हुआ।

विचक्षण—वि०[स० वि√चक्ष्(कहना)+युच्—अन] १ तीव्र दृष्टि-वाला। बहुत दूर की चीजे या बातें देखनेवाला। २ प्रकाशमान। ३ बुद्धिमान्। समझदार। ४ कुशल। दक्ष।
पु० पडित। विद्वान्।

विचक्षु—वि०[स०] चक्षुओ से रहित। अधा।

विचच्छन†—वि०=विचक्षण।

विचय—पु०[स० वि+चि (बटोरना)+अप्] १ एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना। २ जाँच-पडताल करना।

विचयन—पु०[स० वि√चि+ल्युट्—अन] १. इकट्ठा करना। एकत्र करना। २. जाँचना। परखना। ३ चुराई या छिपाईहुई वस्तु। खोज निकालने के उद्देश्य से किसी की ली जानेवाली तलाशी।

विचयन-प्रकाश—पु०[स०] वह तीव्र प्रकाश जिसके द्वारा बहुत दूर तक की चीजें प्रकाशित होती हो। खोज-बत्ती। (सर्चलाइट)

विचरण—पु०[स० वि√चर् (चलना)+ल्युट्, यु=अन] [भू० कृ० विचरित] १ चलना। २. घूमना-फिरना।

विचरना—अ० [स० विचरण]चलना-फिरना। घूमना-फिरना।

विचर्चिका—स्त्री०[स० वि√चर्च् (फाटना)+ण्वुल्—अक+टाप्, इत्व] १ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर पर दाने निकलते है और खुजली होती है। ब्योची। २. छोटी फुन्सी।

विचल—वि०[स० वि√चल् (हिलना)+अप्] [भाव० विचलता] १ जो बराबर हिलता रहता हो। २ जो स्थिर न हो। अस्थिर। ३ अपने मार्ग या स्थान से गिरा, डिगा या हटा हुआ। ४ प्रतिज्ञा, सकल्प आदि से हटा हुआ।

विचलता—स्त्री०[स०] विचल होने की अवस्था या भाव।

विचलन—पु०[स०] [भू० कृ० विचलित] १ ठीक या सीधा मार्ग छोडकर इधर-उधर होना। पथ मे भ्रष्ट होना। (डेविएशन) जैसे—मनुष्य का नैतिक विचलन। (ख) प्रकाश की रेखाओ की विचलन। २ जान-बूझकर या अनजान मे उपेक्षापूर्वक अपने कर्तव्य या मत से हटकर इधर-उधर होना। कार्य, निश्चय या विचार पर दृढ न रहना। उत्क्रम से भिन्न। (डेविएशन)

विचलना—अ०[स०विचलन]१ अपने स्थान से हट जाना या चल पडना। २ इधर-उधर होना। ३ अधीर या विचलित होना। ४ प्रतिज्ञा, सकल्प आदि से हटना।

विचलाना†—अ०=विचलना।
स० विचलित करना।

विचलित—भू० कृ०[स०] १ भय, साहस की कमी, साधन-हीनता आदि के फलस्वरूप अपनी प्रतिज्ञा, सिद्धान्त या स्थान से हटा हुआ। २ अस्थिर। चचल। ३ विकल।

विचार—पु०[स० वि√चर् (चलना)+घञ्] [वि० विचारणीय, वैचारिक, भू० कृ० विचारित] १ किसी चीज या बात के सबध मे मन ही मन तर्क-वितर्क करके कुछ सोचने या समझने की क्रिया या भाव। आगा-पीछा। ऊँच-नीच आदि का ध्यान रखते हुए कुछ निश्चय करने की क्रिया। जैसे—तुम भी इस बात पर विचार कर लो। २ उक्त प्रकार की क्रिया के फल-स्वरूप किसी बात या विषय के सम्बन्ध मे मन मे बननेवाला उसका चित्र। सोच-समझकर स्थिर की हुई भावना। खयाल। (आइडिया) जैसे—(क) मेरे मन मे एक और विचार आया है। (ख) इस पुस्तक मे आपको बहुत से नये विचार मिलेगे। ३ कोई प्रश्न सामने आने पर उसके सम्बन्ध मे कुछ निर्णय करने के लिए उसके सब अग अच्छी तरह तर्क करते हुए देखना या समझना। (कन्सिडरेशन) ४ दो विरोधी दलो, पक्षो, मतो आदि के विवादास्पद विषय के सम्बन्ध मे कुछ निश्चय करने से पहले किसी न्यायालय या विचारशील व्यक्ति के द्वारा होने-वाली सब अगो और बातो की जाँच-पडताल। फैसले के लिए मुकदमे की सुनवाई। (ट्रायल) जैसे—न्यायालय मे अभियोग के सम्बन्ध मे होने-वाला विचार। ५ घूमना-फिरना। विचरण।

विचारक—वि०[स० वि√चर् (चलना)+णिच्+ ण्वुल्—अक] विचार करनेवाला।
पु० वह जो किसी विषय पर अच्छी तरह विचार करता हो। विचार-शील। २ वह जो न्यायालय आदि मे बैठकर अभियोगो का विचार और निर्णय करता हो। न्यायकर्ता। (मुसिफ) ३ पथ-प्रदर्शन। नेता। ४ गुप्तचर। जासूस।

विचारकर्ता—पु०[स० विचार√कृ (करना)+तृच, ष० त०] १ वह जो किसी प्रकार का विचार करता हो। सोचने विचारनेवाला। २. २. न्यायाधीश। विचाराध्यक्ष।

विचार-गोष्ठी—स्त्री०[स०] विद्वानो या विशेषज्ञो की वह गोष्ठी जो

किसी विशिष्ट गभीर विषय पर विचार करने के लिए बुलाई गई हो। (सेमिनार)

विचारज्ञ—पु०[स० विचार√ज्ञा (जानना)+क] १ वह जो विचार करना जानता हो। २. विचाराध्यक्ष।

विचारण—पु० [सं० वि√चर् (चलना)+णिच्+ल्युट्–अन] विचारने की क्रिया या भाव।

विचारणा—स्त्री०[स० विचारण+टाप्] १. विचारने की क्रिया या भाव। २ सोची-विचारी हुई बात। ३ कोई काम करने से पहले यह सोचना कि यह काम करना चाहिए या नही अथवा हम से हो सकेगा या नही।

विचारणीय—वि०[स० वि√चर् (चलना)+णिच्+अनीयर्] १. (बात या विषय) जिस पर विचार करना उचित हो या विचार किया जाने को हो। चिन्त्य। २ सन्दिग्व।

विचार-धारा—स्त्री०[स०] १ आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य के मन मे विचार कहाँ से और किस प्रकार उत्पन्न होते हैं और उनके कैसे-कैसे भेद या रूप होते हैं। वैचारिकी। २. विचारो का प्रवाह। (आइडियालोजी)

विचारना—अ० [स० विचार] १ विचार करना। सोचना-समझना। गौर करना। २ जानने के लिए किसी से कुछ पूछना। ३ तलाश करना ढूँढना।

विचार-नेता—पु०[स०] वह जो किसी क्षेत्र मे जन-साधारण के विचारो का नेतृत्व या मार्ग-प्रदर्शन करता हो।

विचार-पति—पु०[स० ष० त०] १ बहुत बडा विचारक। २. न्यायाधीश।

विचारवान—पु०[स० विचार+मतुप्, म–व] १ जो ठीक तरह से विचार करता हो। विचारशील। २. जिसमे विचार करने की विशेष क्षमता हो।

विचार-शक्ति—स्त्री०[स० ष० त०] सोचने या विचार करने की शक्ति। बुद्धि। प्रज्ञा। (इन्टेलेक्ट)

विचारशास्त्र—पु०[ष० त०] मीमासा दर्शन।

विचारशील—पु०[स० ष० त०] [भाव० विचारशीलता] वह जिसमे किसी विषय पर अच्छी तरह सोचने या विचारने की शक्ति हो। विचारवान्।

विचार-स्थल—पु०[ष० त०] १. विचार करनेवाला स्थल। २. अदालत। न्यायालय।

विचार-स्वातंत्र्य—पु०[स०] राज्य, शासन आदि की ओर से मिलनेवाली वह स्वतत्रता जिसमे मनुष्य हर तरह की बातें सोच सकता तथा उन्हे व्यक्त या प्रकाशित भी कर सकता है। (लिबर्टी ऑफ थॉट)

विचाराधीन—वि० [स० विचार+अधीन] १. (बात या विषय) जिस पर अभी विचार हो रहा हो २. दे० 'न्यायाधीश'।

विचाराध्यक्ष—पु०[स० ष० त०]=विचारपति।

विचारालय—पु०[स० ष० त०] न्यायालय। कचहरी।

विचारिका—स्त्री० [स० विचार+कन्+टाप्-इत्व] १ प्राचीन काल की वह दासी जो घर मे लगे हुए फूल पौधो की देख-भाल तथा इसी प्रकार के और काम करती थी। २ अभियोगो आदि का विचार करनेवाली स्त्री। स्त्री-विचारक।

विचारित—भू० कृ०[स० विचार+इतच्] १ जिसके सबध मे विचार कर लिया गया हो। २. निश्चित या निर्णीत किया हुआ।

विचारी (रिन्)—पु०[स० वि√चर् (चलना)+णिच्+णिनि] वह जिस पर चलने के लिए बहुत बडे बडे मार्ग बने हो (जैसे—पृथ्वी)। वि० १ विचरण करने या घूमने-फिरनेवाला। २ विचारक। ३ विचारशील।

विचार्य—वि० [स० वि√चर् (चलना)+णिच्+यत्]=विचारणीय।

विचालन—पुं०[स० तृ० त०] १ इधर-उधर चलाना। २ अलग या दूर करना। हटाना। ३ नष्ट करना। ४. विचलित करना।

विचिंतन—पु०[स० वि√चिन्ति (सोचना)+ल्युट्–अन] अच्छी तरह चिंतन करना। खूब सोचना-समझना।

विचिंतनीय—वि० [स० वि√ चिन्ति+अनीयर्] (बात या विषय) जो चिंता करने या सोचने के योग्य हो।

विचिंता—स्त्री० [स० वि√चिन्ति-अच्+टाप्] सोच-विचार। चिंतन।

विचिंत्य—वि०[स० विचिन्त+यत्]=विचिंतनीय।

विचिकित्सा—स्त्री० [स० वि√कित् (रोग दूर करना)+सन्+अ, +टाप्] १ किसी बात या विषय मे होनेवाली शका या सन्देह। २ भूल। ३ सदेह।

विचित—भू० कृ०[स० वि√ चि (इकट्ठा करना)+क्त] अन्वेषित किया या खोजा हुआ।

विचिति—स्त्री०[स० वि√ चि+ क्तिच्] खोज या ढूँढ निकालने की अवस्था या भाव।

विचित्त—स्त्री० [स० विचित्त+इनि] १ मन ठिकाने या शान्त न रहना। २ अन्यमनस्कता। अनमनापन। ३ मूर्च्छा। बेहोशी।

विचित्र—वि० [स० तृ० त०] [भाव० विचित्रता] १ जिसमे कई प्रकार के रग हो। कई तरह के रगो या वर्णोवाला। रग-बिरगा। २ जिसमे मन को कुछ चकित करनेवाली असाधारणता या विलक्षणता हो। अजीब। जैसे—आज एक विचित्र बात मेरे देखने मे आई। २ जिसमे कोई ऐसी नई बात या विशेपता हो जो साधारणत सब जगह न पाई जाती हो और जो अनोखा जान पडता हो। साधारण से भिन्न। नया और विलक्षण। ३. मन मे कुतूहल उत्पन्न करने, चकित या विस्मित करनेवाला। जैसे—वह भी विचित्र स्वभाववाला आदमी है। ४ खूबसूरत। सुन्दर।

पु०१. पुराणानुसार रौच्यमनु के एक पुत्र का नाम। २ साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालकार जो उस समय होता है जब किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उल्टा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है।

विचित्रक—पु०[स० ब० स०+ कन्] भोजपत्र का वृक्ष। वि० विचित्र।

विचित्रता—स्त्री०[स० विचित्र+तल्+टाप्] १ विचित्र होने की अवस्था या भाव। २ वह विशेपता जिसके फलस्वरूप कोई चीज विचित्र प्रतीत होती हो।

विचित्र-विभ्रमा—स्त्री०[स०] केशव के अनुसार वह प्रौढा नायिका जो अपने

सौन्दर्य मात्र मे नायक को आकृष्ट या मोहित करती है। (देव ने इसी को मविभ्रमा कहा है)।

विचित्रवीर्य—पु० [स० ष० त०] चन्द्रवशी शांतनु के एक पुत्र का नाम। (महाभारत)

विचित्रशाला—स्त्री० [ष० त०] अजायबघर। अजायबखाना।

विचित्राग—पु० [स० ब० स०] १. मोर। २. बाघ।

विचित्रा—स्त्री० [स० विचित्र+अच्+टाप्] सगीत मे, एक रागिनी जिसे कुछ लोग भैरव राग की पाँच स्त्रियो मे और कुछ लोग त्रिवण, बरारी, गौरी और जयती के मेल से बनी हुई सकर जाति की मानते हैं।

विचित्रित—भू० कृ० [स० विचित्र+इतच्] १. अनेक रंगो से रगा या अकित किया हुआ। २ सजाया हुआ।

विची—स्त्री० [स० विचित्र+ङीप्] वीचि (लहर)।

विचेतन—वि० [स० ब० स०] १ जिसमे चेतना शक्ति न हो। अचेत। २ सज्ञाहीन। बेहोश। ३ जिसे भले-बुरे का ज्ञान न हो। विवेक-हीन।

पु० १. चेतना से रहित करने का क्रिया या भाव। २ प्राणियों की वह अवस्था जिसमे शरीर या उसका कोई अग चेतनारहित या सज्ञाशून्य हो जाता है। सज्ञा-नाश। निश्चेतन। सवेदनहरण। (ऐनेस्थीशिया)

विचेतनक—वि० [स०] शरीर या उसका कोई अंग चेतना से रहित या सज्ञाशून्य करनेवाला। सज्ञा-नाशक। (एनीस्थेटिक)

विचेतनीकरण—पु० [स०] [भू० कृ० विचेतनीकृत] दे० 'निश्चेतनी-करण'।

विचेता (तस्)—वि० [स० ब० स०] १ जिसका चित्त ठिकाने न हो। घबराया हुआ। २ जो कुछ जानता न हो। ३ दुष्ट। पाजी। ४ बेवकूफ। मूर्ख।

विचेष्ट—वि० [सं० ब० स०] [भाव० विचेष्टता] १ जो सचेष्ट न हो। २ अक्रिय। ३ गतिहीन। अचल।

विचेष्टन—पु० [स० वि√ चेष्ट् (इच्छा करना)+ल्युट्—अन, कर्म० स०] [भू० कृ० विचेष्टित] पीडा आदि होने पर मुँह या शरीर के अगो मे बुरी चेष्टा करना। इधर-उधर लोटना और तडपना।

विचेष्टा—स्त्री० [स० वि √ चेष्ट् +अङ्+टाप्] १ बुरी या खराब चेष्टा करना। भौंहे सिकोडना, मुँह बनाना या हाथ-पैर पटकना। २ क्रिया।

विच्छर्दन—पु० [स० वि√ छर्द् (कै करना)+ल्युट्, अन] [भू० कृ० विच्छर्दित] १ कै या वमन करना। २ बलपूर्वक बाहर निकालना। फेंकना। ३. त्याग करना। छोडना। ५ तिरस्कार कराना।

विच्छर्दिका—स्त्री० [स० विछर्द+क+टाप्, इत्व] वमन। कै।

विच्छाय—पु० [स० ष० त०] १ पक्षियों की छाया। २ मणि। रत्न।

वि० १. जिसकी छाया न पडती हो २ कातिहीन।

विच्छित्ति—स्त्री० [स० वि√छिद् (काटना)+क्तिन्] १. काटकर अलग या टुकड़े करना। २ विच्छेद। ३ कमी। त्रुटि। ४. गले मे पहनने का एक प्रकार का हार। ५ कविता मे होनेवाली यति। विराम। ६ वेशभूषा आदि के सम्बन्ध मे की जानेवाली लापरवाही। ७. ऐसी लापरवाही के कारण वेशभूषा मे दिखाई देनेवाला बेढगापन। ८ रगो आदि से शरीर चिह्नित करने की क्रिया या भाव। ९ साहित्य मे एक प्रकार का हाव जिसमे स्त्री थोडे शृगार से ही पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

विच्छिन्न—भू० कृ० [स० वि√ छिद् +क्त] १ जिसका विच्छेद हुआ हो। २ जो काट या छेदकर अलग कर दिया गया हो। ३ जिसका अपने मूल अग के साथ कोई सम्बन्ध न रह गया हो। ४ अलग। जुदा। पृथक्। ५ जिसका अन्त हो चुका या कर दिया गया हो। ६ कुटिल।

विच्छेद—पु० [स० वि√छिद्+घञ्] १ काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। २ किसी प्रकार बीच से टूटना। विशृंखलता। ३ किसी पूरे मे से उसका कोई अग या अश किसी प्रकार अलग होना। ४ अल-गाव। पार्थक्य। ५ नाश। बरबादी। ५ वियोग। विरह। ६ पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। परिच्छेद। ७ बीच मे पडनेवाला खाली स्थान। अवकाश। ८ कविता की यति या विराम।

विच्छेदक—वि० [स० वि√ छिद् (काटना)+ण्वुल्—अक] विच्छेद करनेवाला।

विच्छेदन—पु० [स० वि √ छिद्+ल्युट्—अन] [वि० विच्छेदनीय] विच्छेद करने की क्रिया या भाव। दे० 'व्यवच्छेदन' (शव का)।

विच्छेदी—वि० [स० वि √ छिद्+णिनि]=विच्छेदक।

विच्छेद्य—वि० [स० विच्छेद+यत्] जिसका विच्छेद किया जा सकता हो अथवा किया जाने को हो।

विच्युत—भू० कृ० [स० वि√ च्यु (मिलना आदि)+क्त] [भाव० विच्युति] १. जो कटकर अथवा और किसी प्रकार इधर-उधर गिर पडा हो। २ जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो। च्युत। भ्रष्ट। ३. (अग) जो जीवित शरीर से काटकर अलग किया या निकाला गया हो। (मुत्युत) ४ नष्ट।

विच्युति—स्त्री० [स० वि√ च्यु (हटना)+क्तिन्] १. विच्युत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। ३ गर्भ-पात। ४ नाश।

विछलना†—अ०=१ =बिछलना (फिसलना)। २ =विचलना।

विछेद†—वि०=विच्छेद।

विछोई†—वि० [हि० विछोह+ई (प्रत्य०)] १ जिसका प्रिय व्यक्ति उससे बिछुड़ चुका हो। २ विछोह से दुखी। विरही।

विछोह†—पु० [स० विच्छेद] १ ऐसी अवस्था जिसमे प्रिय के विदेश चले जाने पर उससे सयोग न होता हो। २ सयोग न होने के फलस्वरूप होनेवाला दुख। विरह।

विछोही†—वि०=विछोई।

विजंघ—वि० [स० ब० स०] १ जिसकी जाँघे कट गई हो या न हो। २. (गाडी या सवारी) जिसमे धुरी, पहिए, आदि न हो।

विजई†—वि०=विजयी।

विजट—वि० [स० ब० स०] १. जटा से रहित। २ (सिर के बाल) जो यो ही खुले हो, जूडे आदि के रूप मे बँधे न हो।

विजड—वि० [स०] जो पूरी तरह से जड हो चुका हो। जिसमे चेतनता का कुछ भी अश न हो।

विजडीकरण—पु० [स०] [भू० कृ० विजड़ीकृत] विजड करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

विजन—वि० [व० स०] १ जनहीन। २ एकात।
पु०=व्यजन (पखा)।

विजनन—पु० [स०] [भू० कृ० विजनित] १ सतान को जन्म देना। जनन। प्रसव। २ प्रयोगशालाओं आदि मे वैज्ञानिक प्रक्रियाओं की सहायता से स्त्री-पुरुष के सयोग के बिना सतान उत्पन्न करना।

विजना†—पु० [स० विजन] [स्त्री० अल्पा० विजनी] पखा।

विजन्मा (न्मन्)—पु० [स० व० स०] १ किसी स्त्री का उसके उपपति या जार से उत्पन्न पुत्र। जारज सन्तान। २ एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति। ३. वह जो जाति से च्युत कर दिया गया हो।

विजन्या—वि० [स० विजन+यत्—टाप्] गर्भवती (स्त्री)।

विजयंत—पु० [स० वि√जि (जीतना)+झ—अन्त] इद्र का एक नाम।

विजयती—स्त्री० [स० वि√जि+ शतृ+ङीप्] १ एक अप्सरा का नाम। २ ब्राह्मी।

विजय—स्त्री० [स० वि√जि+अच्] १ शत्रु को परास्त करने पर होनेवाली जीत। २ प्रतियोगी या प्रतिस्पर्धी को हराकर सिद्ध की जानेवाली श्रेष्ठता। ३ वह अवस्था जिसमे सब विघ्न-बाधाएँ दूर कर दी गई हो। ४ एक प्रकार का छन्द जो केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयद नामक भेद है। ५ भोजन की क्रिया के लिए आदरसूचक पद। (पूरब) जैसे—अब आप विजय के लिए उठे, अर्थात् भोजन करने चले।

विजयक—पु० [स० विजय+कन्] वह जो सदा विजय प्राप्त करता रहता हो। सदा जीतता रहनेवाला।

विजयकच्छंद—पु० [स०] १ एक प्रकार का कल्पित हार जो दो हाथ लबा और ५०४ लडियो का माना जाता है। कहते है ऐसा हार केवल देवता लोग पहनते है। २ ऐसा हार जिसमे ५०० मोती या नग हो।

विजय-कुंजर—पु० [स० च० त०] १ राजा की सवारी का हाथी। २ लडाई मे काम आनेवाला हाथी।

विजय-केतु—पु० [स० प० त०]=विजय-पताका।

विजय-डिंडिम—पु० [स० च० त०] प्राचीन काल मे युद्ध-क्षेत्र मे बजाया जानेवाला एक प्रकार का बडा ढोल।

विजय-दड—पु० [स० ब० स०] सैनिको का वह विभाग जो सदा विजयी रहता हो।

विजयदशमी—स्त्री०=विजयादशमी।

विजय-दीपिका—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजय-नागरी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजय-पताका—स्त्री० [स० प० त०] १ सेना की वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है। २ विजय का सूचक कोई चिह्न।

विजय-पर्पटी—स्त्री० [स० मध्यम० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो पारे, रेड़ की जड, अदरक आदि के योग से बनता और सग्रहणी रोग मे दिया जाता है।

विजय-पूर्णिमा—स्त्री० [स० मध्यम० स०] आश्विन की पूर्णिमा।

विजय-भैरव—पु० [स० च० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

विजय-मर्द्दल—पु० [स० च० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। ढक्का।

विजय-यात्रा—स्त्री० [स० प० त०] वह यात्रा जो किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।

विजय-रत्नाकरी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजय-लक्ष्मी—स्त्री० [स० कर्म० स०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजय-वसंत—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजयशील—वि० [स० व०स०] जो विजय प्राप्त करता हो। सदा जीतता रहनेवाला।

विजय-श्री—स्त्री० [स०] १ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। २ विजय-लक्ष्मी।

विजय-सरस्वती—स्त्री० [सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजय-सामंत—पु० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

विजय-सारग—पु० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

विजयसार—पु० [स० व० स०] एक प्रकार का बडा वृक्ष जिसकी लकडी इमारत के काम आती है। विजैसार।

विजया—स्त्री० [स० विजय+टाप्] १ दुर्गा। २ पुराणानुसार पार्वती की एक सखी जो गौतम की कन्या थी। ३ यम की भार्या। ४ एक योगिनी। ५ दक्ष की कन्या। ६ इन्द्र की पताका पर अकित एक कुमारी। ७ श्रीकृष्ण के पहनने की माला। ८ काश्मीर का एक प्राचीन विभाग। ९ विजयादशमी। १० पुरानी चाल का एक प्रकार का बडा खेमा या तबू। ११ वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत की माता का नाम। १२ एक सम-मात्रिक छद (क) जिसके प्रत्येक चरण मे १०-१० की यति पर ४० मात्राएँ होती है और अत मे रगण होता है। (ख) जिसके प्रत्येक चरण मे १२, १२, १०, १० की यति से ४४ मात्राएँ होती हैं। १३ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे आठ वर्ण होते है। इसके अत मे लघु और गुरु अथवा नगण भी होता है। १४ भग। भाँग। १५ हर्रे। १६ वच। १७ जयती। १८ मजीठ। १९ अग्नि-मथ। २० एक प्रकार का शमी वृक्ष।

विजया एकादशी—स्त्री० [स० मध्यम० स०] १ क्वार सुदी एकादशी। २ फागुन वदी एकादशी।

विजया दशमी—स्त्री० [स० मध्य० स०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिन्दुओ का बहुत बडा त्योहार मानी जाती है।

विशेष—इसी तिथि को राम ने रावण को मारा था।

विजयानद—पु० [स०] सगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

विजयाभरणी—स्त्री० [सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विजयासप्तमी—स्त्री० [स०] रविवार के दिन पडनेवाली किसी मास की शुक्लपक्ष की सप्तमी।

विजयास्त्र—पु० [स० विजय+अस्त्र] वह अस्त्र, क्रिया या साधन जिससे विजय प्राप्त करना निश्चित हो। (ट्रम्पकार्ड)

विजयी—वि० [स० विजि+इनि] १. वह जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। २. (वह व्यक्ति या पक्ष) जिसकी प्रतियोगिता युद्ध, विवाद आदि मे जीत हुई हो।
पु० अर्जुन।

विजयोत्सव—पु० [स० स० त०] १ विजय दशमी के दिन होनेवाला उत्सव। २ युद्ध मे विजय प्राप्त करने पर होनेवाला उत्सव।

विजर—वि० [सं० ब० स०] १ जिसे जरा या बुढापा न आता हो जराहीन। २ नया। नवीन।

विजल—वि० [स० ब० स] जल से रहित। जलहीन। निर्जल।
पु० अनावृष्टि। सूखा।
विजलीकरण—पु० [स०] निर्जलीकरण।
विजल्प—पु० [स० तृ० त०] १ व्यर्थ की बहुत-सी बकवाद। २ किसी को बदनाम करने के लिए कही जानेवाली झूठी बात।
विजल्पन—पु० [स०] [भू० कृ० विजल्पित] १ विजल्प करने की क्रिया या भाव। २ कहना। बोलना। ३ अस्पष्ट रूप से कोई बात पूछना। ४ बे सिर-पैर की या व्यर्थ की बातें कहना।
विजात—वि० [स० कर्म० स०] [स्त्री० विजाता] १ जन्मा हुआ। २ विभिन्न जातियो के माता पिता से उत्पन्न। वर्णसकर। दोगला।
पु० सखी छन्द का एक भेद जिसमे प्रत्येक चरण मे ५-५-४ के विश्राम से १४ मात्राएँ और अत मे मगण या यगण होता है। इसकी पहली और आठवी मात्राएँ लघु रहती है।
विजाता—स्त्री० [स०] ऐसी स्त्री जिसने बच्चे या बच्चो को जन्म दिया हो।
वि० 'विजात' की स्त्री०।
विजाति—वि० [स० ब० स०] विजातीय। (दे०)
स्त्री० दूसरी या भिन्न जाति।
विजातीय—वि० [स० विजाति +छ—ईय] [भाव० विजातीयता] किसी की दृष्टि मे, उसकी जाति से भिन्न जाति का। पराई जाति का। (हेट्रोजीनियस)
विजानक—वि० [स० वि √ ज्ञा (जानना) +ल्यु—अन, +कनज्ञा—जा] जाननेवाला।
विजानता—स्त्री० [स० विजान+तल+टाप्] १ जानकारी। २ चातुर्य।
विजानना—स० [स० विजानता] विशेष रूप से जानना।
विजानु—पु० [स०] १ युद्ध मे लडने का विशेष कौशल। २ तलवार चलाने का एक ढग।
विजार—पु० [देश०] एक तरह की भूमि जिसमे धान, चना आदि बोया जाता है।
विजारत—स्त्री० [अ० विज़ारत] १. वजीर अर्थात् मन्त्री का कार्य या पद। २ मन्त्रियो का समूह। मन्त्रिमण्डल। ३ वजीर या मन्त्री का कार्यालय।
विजिगीषा—स्त्री० [स० विजिगीष+टाप्] विजय पाने की इच्छा।
विजिगीषु—वि० [स० वि√जि+सन् +उ] जिसे विजय पाने की इच्छा हो।
विजिगीषुता—स्त्री० [स०] विजिगीषा।
विजिट—स्त्री० [अं०] १. भेंट। मुलाकात। २. डाक्टरो आदि का रोगी को देखने के लिए उसके घर जाना। ३. उक्त काम के लिए डाक्टर को मिलनेवाली फीस।
विजित—भू० कृ० [स० वि√जि (जीतना) +क्त] जिस पर विजय पाई गई हो। जिसे जीता गया हो।
पु० फलित ज्योतिष मे, पराजय का सूचक ग्रह।
विजितात्मा (त्मन्)—पु० [स० ब० स०] शिव।
विजितारि—पु० [स० ब० स०] वह जिसने शत्रुओ को जीत लिया हो।
विजिति—स्त्री० [स० वि√ जि +क्तिन्] १. विजय। जीत। २. प्राप्ति।
विजिती (तिन्)—वि० [स० विजित+इनि, दीर्घ नलोप] विजयी।
विजितेय—वि० [स० विजित+ठक्, ढ=एय] जिस पर नियत्रण या विजय प्राप्त की जा सके या की जाने को हो।
विजित्व—पु० [स०] १. ऐसा भोजन जिसमे अधिक रस न हो। २. एक प्रकार की लपसी।
विजित्वर—वि० [स० वि√जि +क्विप्, तुक्] विजयी। विजेता।
विजित्वरा—स्त्री० [स० विजित्वर+टाप्] एक देवी का नाम।
विजीष—वि० [स०] विजिगीषु। (दे०)
विजुली—स्त्री० [स० विजुल+ङीप्] पुराणानुसार एक देवी का नाम।
†स्त्री०=विजली।
विजृंभण—पु० [स०] १ खिलना। २ खुलना। ३. तनना या फैलना। ४. विकसित या विस्तृत होना। ५ जँभाई लेना।
विजृंभा—स्त्री० [स० विजृम्भ+टाप्] उबासी। जभाई।
विजृंभिणी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
विजेतव्य—वि० [स० वि √ जि +तव्यत्] =विजेय।
विजेता (तृ)—वि० [स० वि √ जि +तृच्] जीतनेवाला। विजयी
विजेय—वि० [स० वि √जि+यत्] जो जीता जा सके या जीते जाने के योग्य हो।
विजै†—स्त्री०=विजय।
विजैसार—पु० [स० विजयसार] साल की तरह का एक प्रकार का बडा वृक्ष।
विजोग†—पु०=वियोग।
विजोगी†—वि०=वियोगी।
विजोर—वि० [हिं० वि +जोर=बल] जिसमे जोर न हो। बलहीन। निर्बल।
†पु०=विजौरा नीबू।
विजोहा—पु० [स० विमोहा] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण होते है। इसे जोहा, विमोहा और विजोरा भी कहते है।
विज्जल—वि० [स० वि √ जड् (स्थित रहना) +अच्, ड—ल, जुट्] (स्थान) जहाँ फिसलन हो।
पु० १. शाल्मलीकद। २. एक तरह की चावल की लपसी। ३. एक तरह का तीर या बाण।
विज्जव—पु० [स०] एक प्रकार का बाण।
विज्जावइ—पु० [स० विद्यापति] =विद्यापति। उदा०—विज्जावई कविवर एहु गावए।—विद्यापति।
विज्जु*—स्त्री० =विजली।
विज्जुल—पु० [स० विज+उलच्, जुट्] १. त्वचा। छिलका। २. दार-चीनी।
विज्जुलता—स्त्री० [स० विद्युलता] विद्युत्। विजली।
विज्जोहा—पु०=विजोहा (छन्द)।
विज्ञ—वि० [स० वि √ ज्ञा (जानना) +क] [भाव० विज्ञता] १. (व्यक्ति) जिसकी जानकारी बहुत अधिक हो। २. विशेषत विषय का बहुत बडा जानकार। ३ समझदार और पढा-लिखा व्यक्ति।
विज्ञता—स्त्री० [स० विज्ञ+तल्+टाप्] विज्ञ होने की अवस्था या भाव।
विज्ञत्व—पु० [स० विज्ञ+त्व] =विज्ञाता।

विज्ञप्त—भू० कृ० [स० वि√ज्ञप् (जानना)+क्त] १ जिसकी जानकारी दूसरो को करा दी गई हो। २ विज्ञप्ति के रूप मे निकाला या प्रकाशित किया हुआ।

विज्ञप्ति—स्त्री० [सं० वि √ज्ञप्+क्तिन्] १ जतलाने या सूचित करने की क्रिया। २ इश्तहार। विज्ञापन। ३ आज-कल किसी अधिकारी या उसके कार्यालय की ओर से निकलनेवाली ऐसी सूचना जिसमे किसी बात या विषय का स्पष्टीकरण हो। (कम्यूनीक) ४ दे० 'बुलेटिन'।

विज्ञात—वि० [स० वि√ज्ञा+क्त] १. जाना या समझा हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

विज्ञातव्य—वि० [स० वि√ज्ञा+तव्य] जानने या समझने के योग्य (बात या विषय)।

विज्ञाता (तृ)—पु० [स० वि√ज्ञा+तृच्] विज्ञ।

विज्ञाति—स्त्री० [स० वि√ज्ञा+क्तिन्] १. ज्ञान। समझ। २ जानकारी। ३. गय नामक देवयोनि। ४. पुराणानुसार एक कल्प का नाम।

विज्ञान—पु० [स० वि √ज्ञा+ल्युट्—अन] १ ज्ञान। जानकारी। २. बुद्धि विशेषत निश्चयात्मिका बुद्धि। ३ अच्छी तरह काम करने की योग्यता। दक्षता। ४ सासारिक कार्यों, बातों और व्यवहारों का अच्छा अनुभव तथा ठीक और पूरा ज्ञान। ५ आविष्कृत सत्यों तथा प्राकृतिक नियमो पर आधारित क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ज्ञान। ६ विशेषत भौतिक जगत् से सबधित उक्त प्रकार का ज्ञान। ७ दार्शनिक तथा धार्मिक क्षेत्रो मे अविद्या या माया नाम की वृत्ति। ८ बौद्धों के अनुसार आत्मा के स्वरूप का ज्ञान। आत्मा का अनुभव। ९ आत्मा। १० ब्रह्म। ११. मोक्ष। १२ आकाश। १३ कर्म।

विज्ञान कोश—पु० [स० मध्यम० स०] १ वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि। २ विज्ञानमय कोश जो आत्मा को परिवृत्त करने वाला पहला आवरण या कोश कहा गया है।

विज्ञानता—स्त्री० [स० विज्ञान+तल्+टाप्] विज्ञान का धर्म या भाव।

विज्ञान पाद—पु० [सं०] वेदव्यास।

विज्ञानमय कोष—पु० [स०] =विज्ञान कोश।

विज्ञानवाद—पु० [स०] [वि० विज्ञानवादी] बौद्ध महायान का एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमे यह माना जाता है कि ससार के समस्त पदार्थ असत्य होने पर भी विज्ञान या चित् की दृष्टि से सत्य ही हैं।

विज्ञानवादी—वि० [स०] विज्ञानवाद-सबधी।

पु० विज्ञानवाद का अनुयायी।

विज्ञानिक—वि० [स० विज्ञान+ठन्—इक] १ जिसे ज्ञान हो। २ विज्ञ। ३ दे० 'वैज्ञानिक'।

विज्ञानिता—स्त्री० [स० विज्ञानिन्+तल्+टाप्] विज्ञानी का धर्म या भाव।

विज्ञानी (निन्)—पु० [स० विज्ञान+इनि] १ ज्ञानी। २ वैज्ञानिक।

विज्ञानीय—वि० [स० वि√ज्ञा+अनीयर] विज्ञान-सबधी। वैज्ञानिक।

विज्ञापक—वि० [स०] दूसरो को जानकारी करानेवाला।

पु० समाचार-पत्रो आदि मे विज्ञापन छपानेवाला। विज्ञापन-दाता।

विज्ञापन—पु० [स० वि√ज्ञा+णिच्+पुक्+ल्युट्—अन] १ सब लोगों को कोई बात जतलाने या बतलाने की क्रिया या भाव। जानकारी कराना। सूचित करना। २. पत्रों आदि मे लोगों की जानकारी के लिए लिखित रूप मे छपवाई जानेवाली बात या सूचना। ३. उक्त उद्देश्य से बाँटा जानेवाला सूचना-पत्र। ४. प्रचार तथा बिक्री के उद्देश्य से किसी वस्तु के सबध मे सामयिक पत्रों में प्रकाशित कराई जानेवाली सूचना।

विज्ञापना—स्त्री० [स० विज्ञापन+टाप्] विज्ञप्त करना। जतलाना। बतलाना।

विज्ञापनीय—वि० [स० वि √ज्ञप् (जानना)+णिच्+अनीयर्] (बात या विषय) जो दूसरो को सार्वजनिक रूप में बताये जाने के योग्य हो।

विज्ञापित—भू० कृ० [स० वि√ज्ञप्+णिच्+क्त] १. जो बतलाया जा चुका हो। जिसकी सूचना दी जा चुकी हो। २. जिसके विषय मे विज्ञापन प्रकाशित हो चुका हो। ३ जिसकी सूचना दी गई हो। (नोटिफायड)

विज्ञापित क्षेत्र—पु० [स०] स्थानिक स्वशासन और प्रबन्ध के लिए नियत किया हुआ छोटा क्षेत्र। (नोटिफायड एरिया)

विज्ञापी—वि० [स० विज्ञापिन्] =विज्ञापक।

विज्ञाप्ति—स्त्री० [स० वि √ज्ञा (जानना)+णिच्, पुक्+क्तिन्] =विज्ञप्ति।

विज्ञाप्य—वि० [स० वि √ज्ञप्+ण्यत्] =विज्ञापनीय।

विज्ञेय—वि० [स० वि√ज्ञा+यत्] (बात या विषय) जो जानने या समझने के योग्य हो।

विज्वर—वि० [स० ब० स०] १ जिसका ज्वर उतर गया हो। जिसका बुखार छूट गया हो। २ सब प्रकार के क्लेशों, चिन्ताओं आदि से मुक्त।

विट्—पु० [स०√विट्+क्विप्] १ साँचर नमक। २ मल। विष्ठा।

विटंक—वि० [स०] ऊँचा।

पु० १ बैठने का ऊँचा स्थान। २ वह छतरी जिसपर पक्षी बैठते हैं।

विट—पु० [स०] १ वह जिसमे काम-वासना बहुत अधिक हो। कामुक। २. पुरानी रीतियों और वेश्याओं से मेल रखने और प्रायः उन्हीं के साथ रहनेवाला व्यक्ति। लम्पट। ३ बहुत [illegible]। ४ साहित्य मे एक प्रकार का नायक या ऐसा व्यक्ति होता है जो बात-चीत मे बहुत चतुर [illegible] नागरिक भोग-विलास मे [illegible] कुमार या [illegible] और उनके भोग-विलास मे [illegible] अपना निर्वाह भी करता हो और प्रायः वेश्याओं के [illegible] बहुत भोग-विलास भी करता हो। [illegible] का यही नायक होता है। ५ [illegible] ६ [illegible] प्राचीन पर्व। ७ [illegible] ८ [illegible] ९ [illegible] १० [illegible] ११ [illegible]।

विटप—पु० [स० [illegible]] १ [illegible] २ [illegible]।

विटपनि—पु० [स० [illegible]] [illegible] की गुफा मे उत्पन्न होता है।

विटप—पु०[स०] १ वृक्ष या लता की नई शाखा। कोपल। २ छतनार पेड। झाड। ३ पेड। वृक्ष। ४ लता।

विटपी (पिन)—वि०[स० विटप+इनि] (वनस्पति) जिसमे नई शाखाएँ या कोपलें निकली हों।

पु० १ पेड। वृक्ष। २ अजीर का पेड़। ३ वट वृक्ष। वड का पेड।

विटपी मृग—पु०[स० प० त०] शाखामृग (बदर)।

विटमाक्षिक—पु०[स० मध्यम० स०] सोना-मक्खी।

विट-लवण—पु०[स० मध्यम० स०] एक प्रकार का नमक।

विटामिन—पु०[अ० विटैमिन] प्राय सभी अनाजो, तरकारियो और फलो मे बहुत ही सूक्ष्म मात्रा मे पाया जानेवाला एक नव-आविष्कृत तत्त्व जो शरीर के अगो के पोषण, स्वास्थ्य-रक्षण आदि के लिए आवश्यक और उपयोगी माना गया है और जिसके बहुत से भेद तथा उपभेद देखे गये है। (विटैमिन)

विट् खदिर—पु०[स० कर्म० स०] एक प्रकार का खदिर जो बदबूदार होता है।

विट्घात—पु०[स० प० त०] मूत्राघात नामक रोग।

विट्ठल—पु०[?] विष्णु के अवतार एक देवता जिनकी मूर्ति पढरपुर (महाराष्ट्र) मे प्रतिष्ठित है।

विट्शूल—पु०[स०] एक प्रकार का शूल रोग।

विठर—वि०[स०] वाग्मी।

पु० बृहस्पति।

विठल†—पु०=विट्ठल।

विठोबा†—पु०=विट्ठल।

विडंग—पु०[स०√विड्+अङ्गच्] वाय विडग।

पु०[?] घोडा।

विडंबक—वि०[स० वि√डम्ब्(विडम्बना करना)+णिच्+ण्वुल-अक] १ ठीक अनुकरण करनेवाला। पूरी नकल करनेवाला। २ केवल अपमानित करने या चिढाने के लिए किसी की नकल उतारनेवाला। ३ हँसी उडाने के लिए निंदा करनेवाला।

विडंबन—पु०[स०] १ किसी को चिढाने, अपमानित करने आदि के उद्देश्य से उसकी नकल उतारना या हँसी उडाना। २ विडबना।

विडबना—स्त्री०[स० विडबन+टाप्][वि० विडबनीय, भू० कृ० विडबित] १ किसी को चिढाने के लिए उसकी उतारी जानेवाली नकल। २ वह हँसी-मजाक जो किसी को चिढाने या अपमानित करने के लिए किया जाय। ३ दम्भ।

विडंबनीय—वि०[स० वि√डम्ब्+अनीयर्] जिसकी विडबना हो सके या होना उचित हो।

विडबित—भू० कृ०[स०] जिसकी विडबना की गई हो या हुई हो।

विडंबी (बिन्)—वि०[स० विडम्ब+इनि] १ दूसरो की नकल उतारनेवाला। २ चिढाने या अपमानित करने के उद्देश्य से दूसरो का हँसी-मजाक उडानेवाला।

विड—पु०[स०] विट् लवण। विरिया नोन।

विडरना—अ०[स० तलव, हिं० डालना या स० वितरण] १. इधर-उधर होना। तितर-बितर होना। २ भागना।

विडराना—स०=विडारना।

विडलवण—पु०[स० उपमि० स०] साँचर नमक।

विडारक—पु०[स० विड+आरकन्, विडाल+कन्, ल—र] विडाल। बिल्ली।

विडारना—स०[हिं० विडरना का स० रूप] १. तितर-बितर करना। इधर-उधर करना। छितराना २ नष्ट करना।

विडाल—पु०[स०√विड् (निंदा करना)+कालन्] १ आँख का पिंड। २. आँख मे लगाई जानेवाली दवा या उस पर किया जानेवाला लेप। ३ बिल्ली। ४ गन्ध-बिलाव। ५ हरताल।

विडालाक्षी—स्त्री०[स०] बिल्ली-जैसी आँखोंवाली स्त्री।

विडाली—पु०[स० विडाल+ङीप्] १ विदारी कद। २. बिल्ली।

विडीन—पु०[स० वि√डी (उडना)+क्त] पक्षियो की एक विशेष प्रकार की उडान।

विडौजा (जस्)—पु०[स०]=इद्र।

विड्ग्रह--पु०[स०] कोष्ठबद्धता। मलावरोध।

विड्घात—पु०[स०] मलमूत्र का अवरोध। पेशाब और पाखाना रुकना।

विड्ज—वि०[स०] विष्ठा मे से उत्पन्न होनेवाला (कीडा)।

विड्भंग—पु०[स०] दस्त आने का रोग।

विड्भेद—पु०[स० प० त०]=विड्भग।

विड्भेदी (दिन्)—वि० [स०] जिसके खाने से दस्त आते हो। विरेचक।

विड्लवण--पु०[स०] विट्लवण। साँचर नमक।

विड्वराह—पु०[स० मध्यम० स०] गाँवो मे रहनेवाला सुअर।

वितड—पु०[स० वि√तड् (ताडन करना)+अच्] १ हाथी। २ एक तरह का पुरानी चाल का ताला।

वितडा—स्त्री०[स० वितड+टाप्] १ ऐसी आपत्ति, आलोचना या विरोध जो छिद्रान्वेषण के विचार से किया गया हो। २. दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। ३ व्यर्थ की कहा-सुनी। झगडा। ४ दूब। ५ कबूतर। ६ सिला रस।

वितंत्र—पु०[स० वि+तत्र] ऐसा बाजा जिसमे तार न लगे हो। बिना तार का बाजा।

वितत्री—स्त्री०[स० ब० स०] ऐसी वीणा जिसके तारो का स्वर ठीक मिला न हो।

वितंस—पु०[स० वि√तस् (भूषित करना)+अच्] १ पक्षी रखने का पिंजरा। २ वह रस्सी, जजीर आदि जिससे पशु या पक्षी को बाँधा जाय।

वित—वि०[स० विद्] १ जाननेवाला। ज्ञाता। २. चतुर। होशियार।

पु०=वित्त (अर्थ)।

वितत—भू० कृ०[स० वि√तन् (विस्तार होना)+क्त] १ फैला हुआ। विस्तृत। २ खीचा या ताना हुआ। जैसे—वितत धनुष। ३ झुका हुआ।

पु० १ वीणा नाम का बाजा। २ वीणा की तरह का कोई बाजा।

विततााना—अ०[स० व्यथा] व्याकुल या बेचैन होना।

वितति—स्त्री०[स० वि√तन्+क्तिन्] वितत होने की अवस्था या भाव। विस्तार।

विततोरसि—वि०[स० वितत(फैला हुआ)+उरसि] १. चौडी या विस्तृत छातीवाला (वीरो का लक्षण) २ उदार हृदय।

वितथ—वि०[स०वि√तन्+क्थन्] [भाव० वितथता] १ झूठा। मिथ्या। २. निरर्थक। व्यर्थ।

पु०१ गृह-देवताओ का एक वर्ग। २ भरद्वाज ऋषि।

वितथ्य—वि०[स०] १. तथ्य-रहित। २ वितथ। (दे०)

वितद्रु—पु०[स० वि√तन्+रु, दुट्-आगम] पजाव की झेलम नदी का प्राचीन नाम।

वितनु—वि०[स० वि√तन्+उ] १ तनहीन। देहहीन। विदेह। २ कोमल, सूक्ष्म तथा सुदर।

पु० कामदेव।

वितपन्न†—वि०=व्युत्पन्न।

वितमस—वि०=वितमस्क।

वितमस्क—वि०[स०] १ जिसमे तम या अधकार न हो।२ तमोगुण से रहित।

वितरक—वि०[स० वितर+कन्] वितरण करनेवाला। बाँटनेवाला।

पु० व्यावसायिक क्षेत्र मे वह व्यक्ति या सस्था जो किसी उत्पादक सस्था की वस्तुओ की बिक्री आदि का प्रबध करती हो। (डिस्ट्रीब्यूटर)

वितरक नदी—स्त्री०[स०] आधुनिक भूगोल मे, किसी नदी के मुहाने पर बननेवाली उसकी शाखाओ मे से प्रत्येक शाखा जो स्वतत्र रूप मे जाकर समुद्र मे गिरती है। (डिस्ट्रीब्यूटरी)

वितरण—पु०[स० वि√तृ (पार करना)+ल्युट्–अन] १ दान करना। देना। २ अर्पण करना। ३ बाँटना। ४ अर्थशास्त्र मे उत्पत्ति के फलस्वरूप होनेवाली प्राप्ति का उत्पत्ति के साधनो मे बाँटना। ५ व्यापारिक क्षेत्र मे विक्रय तथा प्रदर्शन के उद्देश्य से दुकानदारो तथा व्यापारियो को निर्मित वस्तुएँ देना।

वितरन†—वि०=वितरक।

वितरना—स०[स० वितरण] वितरण करना। बाँटना। उदा०—आकर्पण धन सा वितरे जल। निर्वासित हो सन्ताप सकल। —प्रसाद।

वितरिक्त—अव्य०=अतिरिक्त।

वितरित—भू० कृ०[स० वितर+इतच्] जो वितरण किया गया हो। बाँटा हुआ।

वितरिता—वि०[स० वि√तृ (तरना)+तृच्]=वितरक।

वितरेक—पु०=व्यतिरेक।

वितर्क—पु०[स० वि√तर्क् (तर्क करना)+अच्] १ कुतर्क करना। २ किसी के तर्क का खडन करने के लिए उसके विपरीत उपस्थित किया जानेवाला तर्क। ३ साहित्य मे एक सचारी भाव जो उस समय माना जाता है जब मन मे कोई विचार उत्पन्न होने पर मन ही मन उसके विरुद्ध तर्क किया जाता है और इस प्रकार असमजस मे रहा जाता है। ४ एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे किसी प्रकार के सन्देह या वितर्क का उल्लेख होता है और कुछ निर्णय नही होता।

वितर्कण—पु०[स० वि√तर्क् (तर्क करना)+ल्युट्–अन] १ तर्क करने की क्रिया या भाव। २ सदेह। ३ वाद-विवाद।

वितर्क्य—वि०[स० वितर्क+यत्] १ जिसमे किसी प्रकार के वितर्क या सदेह के लिए अवकाश हो। २ अद्भुत। विलक्षण।

वितर्दि (र्द्धि)—स्त्री० [वि√तर्द् (मारना) + इनि] १ वेदी। २ मत्र। ३. छज्जा।

वितल—पु०[स० तृ० त०] पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोको मे से दूसरा लोक। (पुराण)

वितली (लिन्)—पु०[स० वितल+इनि] वकदेव, जो वितल के धारक माने गए है। (पुराण)

वितस्ता—स्त्री०[स० वि√तस् (ऊपर फेकना) + क्त + टाप्] पजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।

वितस्ताख्य—पु०[स० ब० स०] कश्मीर मे स्थित तक्षक नाग का निवास-स्थान। (महाभारत)

वितस्ताद्रि—पु०[स० मध्यम० स०] राजतरगिणी मे उल्लखित एक पर्वत।

वितस्ति—पु०[स० वि√तस्+ति] बारह अगुल की एक नाप। बित्ता।

विताडन—पु०[स० वि√तड् (मारना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ०विताडित]=ताडन।

वितान—पु० [स० वि√तन् (विस्तार करना)+घञ्] १ फैलाव। विस्तार। २ ऊपर से फैलाई जानेवाली चादर। चँदोआ। ३ जमाव। समूह। ४ धृणा। ५ शून्य स्थान। खाली जगह। ६ यज्ञ। ७ अग्निहोत्र आदि कृत्य। ८ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, भगण और दो दो गुरु होते है। ९ सिर पर बाँधी जानेवाली पट्टी।

वि० १ खाली। शून्य। २ दुखी। ३ मूर्ख। ४ दुष्ट। ५ परित्यक्त।

वितानक—पु०[स०] १ बडा चँदोआ। २ खेमा। ३ धन-सम्पत्ति। ४ धनियाँ।

वि० फैलानेवाला।

वितानना—स०[स० वितान] १ खेमा, शामियाना आदि तानना। २ कोई चीज तानना या फैलाना।

वितार—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का केतु या पुच्छल तारा। (वृहत्सहिता)

वितारक—पु०[स० वितार+कन] विधारा नामक जडी।

विताल—वि०[स० ब० स०] (सगीत या वाक्य) जो ठीक ताल मे न दे रहा हो। बे-ताल।

पु० सगीत मे ऐसा ताल जो गाई या बजाई जानेवाली चीज के उपयुक्त न हो।

वितिक्रम†—पु०=व्यतिक्रम।

वितिमिर—वि०[स० ब० स०] जिसमे तम या अधकार न हो।

वितीत†—वि०=व्यतीत।

वितीपात†—पु०=व्यतीपात।

वितीपाती—वि०[स० व्यतीपात+ई (प्रत्य०)] जो बहुत अधिक उपद्रव करता हो। पाजी। शरारती।

विशेष—फलित के अनुसार ज्योतिष के व्यतीपात योग मे जन्म लेनेवाले बालक बहुत दुष्ट होते है। इसी आधार पर यह विशेषण बना है।

वितीर्ण—पु०[स० वि√तॄ+क्त]=वितरण।

भू० कृ० १. पार किया या लाँघा हुआ। २. दिया या सौपा हुआ। ३ जीता हुआ।

वितुंड—पु०[स०] हाथी।

वितु†—पु०=वित्त (अर्थ)।

वितुद—पु०[सं० वि√तुद् (पीडित करना)+अच्] एक प्रकार की भूत योनि। (वैदिक साहित्य)

वितुन्न—पु०[सं० वि√तुद्+क्त] १ शिरियारी या सुसना नामक साग। २ शैवाल। सेवार।

वितुन्नक—पु०[सं० वितुन्न+कन्] १ धनिया। २ तूतिया। ३ केवटी मोथा। ४ भू-आँवला।

वितुष्ट—वि० [सं० वि√तुष् (सतुष्ट होना)+क्त]=असतुष्ट।

वितृण—वि०[सं० ब० स०] (स्थान) जिसमें तृण, घास आदि न उगती हो। तृण से रहित।

वितृप्त—वि०[सं० ब० स०] जो तृप्त या सतुष्ट न हुआ हो। अतृप्त।

वितृष—वि०[सं० ब० स०]=वितृष्ण।

वितृष्ण—वि०[सं०] [भाव० वितृष्णा] जिसके मन मे कुछ भी या कोई तृष्णा न रह गई हो। तृष्णा-रहित।

वितृष्णा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] [वि० वितृष्ण] १. मन मे किसी बात की तृष्णा न रह जाना। तृष्णा का अभाव। २. बुरी या विकट तृष्णा।

वित्त—पु०[सं०] १. धन। सपत्ति। २ राज्य, सस्था आदि के आय-व्यय आदि की मद या विभाग और उसकी व्यवस्था। (फाइनान्स)

वित्त-कोश—पु०[सं० ष० त०] १ रुपये-पैसे आदि रखने की थैली। २ धन आदि का खजाना।

वित्तगोप्ता—पु०[सं० ष० त०] कुवेर के भडारी का नाम।

वित्तदा—स्त्री०[सं० वित्त√दा (देना)+क,+टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

वित्तनाथ—पु०[सं० ष० त०] कुवेर।

वित्तपति—पु०[सं० ष० त०]=वित्तपाल।

वित्तपाल—पु० [सं० वित्त√पाल् (पालन करना)+अच्] १ कुवेर। २ खजानची। ३. भडारी।

वित्तपुरी—स्त्री०[सं० ष० त०] कुवेर की अलका नगरी।

वित्त-मंत्री—पु०[सं० ष० त०] १ राज्य का वह मत्री जो आय-व्यय वाले विभाग का प्रधान अधिकारी हो। (फाइनान्स मिनिस्टर) २. किसी सस्था के आय-व्यय वाले विभाग का मत्री। अर्थ-मत्री।

वित्त-वर्ष—पु०[सं०] वित्तीय वर्ष।

वित्तवान्(वत्)—वि० [सं० वित्त+मतुप्, म—व, नुम्] धनवान्।

वित्त-विधेयक—पु०[सं० ष० त०] आधुनिक शासन मे विधान सभा मे आगामी वर्ष के लिए उपस्थित किया जानेवाला वह विधेयक जिसमे आय-व्यय सबधी सभी मुख्य बातो का उल्लेख रहता है। (फाइनान्स-बिल)

वित्त-सचिव—पु०[सं०] वित्त मत्री।

वित्त-साधन—पु०[सं० ष० त०] आधुनिक शासन व्यवस्था मे वे सब द्वार या साधन जिनसे राज्य, सस्था आदि को अर्थ या धन प्राप्त होता है। (फाइनान्सेज)

वित्तहीन—वि०[सं० ष० त०] धन-हीन। निर्धन।

वित्ति—स्त्री०[सं० विद् (जानना)+क्तिन्] १ विचार। २. प्राप्ति। ३. लाभ। ४ ज्ञान। ५. सभावना।

वित्तीय—वि०[सं० वित्त+छ—ईय] १ वित्त-सबधी। वित्त का। २ वित्त की व्यवस्था के विचार मे चलने या होनेवाला। (फाइनान्शल)

वित्तीय वर्ष—पु०[सं०] किसी देश की वित्तीय व्यवस्था की दृष्टि से नियत किया हुआ बारह महीनो का समय या वर्ष। जैसे—भारतीय वित्तीय वर्ष १ अप्रैल से ३१ मार्च तक होता है।

वित्तेश, वित्तेश्वर—पु०[सं० ष० त०] कुवेर।

वित्त्व—पु०[सं० विद्+त्व] वेत्ता होने की अवस्था या भाव।

वित्थार†—पु०=विस्तार।

वित्पन्न—भू० कृ० [सं०] घबराया हुआ। व्याकुल।
†वि०=व्युत्पन्न।

वित्रप—वि०[सं० ब० स०] निर्लज्ज। बेहया। बेशरम।

वित्रास—पु०[सं० वि√त्रस् (कॉपना)+घञ्]=त्रास (भय)।

वित्रासन—पु०[सं० वि√त्रस्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वित्रासित] डराने की क्रिया। त्रासन।
वि० डरावना। भयानक।

विथक—पु०[सं० विथ+कन्] पवन।

विथकना—अ०[हिं० थकना] थकना। उदा०—अग अंग विथकित भइ-नारी।—नन्ददास। २ चकित या मुग्ध होकर स्तभित होना।

विथकित—भू० कृ०[हिं० विथकना] थका हुआ। शिथिल। चकित या मुग्ध होने के कारण स्तब्ध।

विथराना—स०=बिथराना। (छितराना)।

विथा†—स्त्री०=व्यथा।

विथारना—स०[सं० वितरण] १ फैलाना। २ छितराना।

विथित—वि०=कथित।

विथुर—पु०[सं०√व्यथ्(पीडित करना)+उरच्, य=इ] १ चोर। २. राक्षस। ३. क्षय। नाश।
वि० १. अल्प। थोड़ा। २. व्यथित।

विथुरा—स्त्री०[सं० विथुर+टाप्] १. विरहिणी स्त्री। २. विधवा स्त्री।

विद्—वि० [सं०√विद्(जानना)+क्विप्]जाननेवाला। ज्ञाता। जैसे—ज्योतिर्विद।
पु० १ पडित। विद्वान्। २ बुध ग्रह। ३ तिल का पौधा।

विद—वि०=विद्।

विदग्ध—भू० कृ०[सं० वि√दह् (जलाना)+क्त] [भाव० विदग्धता] १ जला हुआ। २ नष्ट। ३ तपा हुआ। ४ जिसने किसी विषय का अच्छा या पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक कष्ट सहे हो। ५ चतुर। ६. रसिक।

विदग्धक—पुं०[सं० विदग्ध+कन्] जलती हुई लाश। (बौद्ध)

विदग्धता—स्त्री० [सं० विदग्ध+तल+टाप्] विदग्ध (देखे) होने की अवस्था या भाव।

विदग्धा—स्त्री०[सं० विदग्ध+टाप्] साहित्य मे वह परकीया नायिका जो चतुरतापूर्वक पर-पुरुष को अपने प्रति अनुरक्त करती है।

विदत्त—भू० कृ०[सं० तृ० त०] १ दिया या सौंपा हुआ। २ बाँटा हुआ।

विदमान†—वि०=विद्यमान्।

विदर—पु०[स० वि√दृ (फाडना)+अच्] दराज (सूराख)।

विदरण—पु० [सं० वि√दृ+ल्युट–अन] [भू० कृ० विदरित] १ विदीर्ण करना। फाडना। २ विद्रधि नामक रोग।

विदरना—अ० [स० विदरण] विदीर्ण होना। फटना।
स० १ विदारण करना। फाडना। २ कष्ट देना। पीड़ित करना। उदा०—विदर न मोहि पीत रग ऐसे।—नूर मुहम्मद।

विदर्भ—पु०[स० व० स०] १ आधुनिक महाराष्ट्र के वरार नामक प्रदेश का पुराना नाम। २. उक्त प्रदेश का राजा।

विदर्भजा—स्त्री०[स० विदर्भ√जन् (उत्पन्न करना)+ड+टाप्] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा। २ दमयती। ३ रुक्मिणी।

विदर्भराज—पु०[स० ष० त०] दमयती के पिता राजा भीष्म जो विदर्भ के राजा थे।

विदर्व्य—पु०[स० व० स०] विना फनवाला साँप।

विदल—वि०[स० ष० त०] १ दल से रहित। विना दल का। २ खिला हुआ। विकसित। ३ फटा हुआ।
पु० १. सोना। स्वर्ण। २ अनार का दाना। ३ चना। ४ दाल की पीठी। ५ बाँस की पट्टियों का बना हुआ दौरा या पिटारा।

विदलन—पु०[स० वि√दल् (दलन)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विदलित] १. मलने, दलने या दवाने आदि की क्रिया। २ दलने, पीसने या रगडने की क्रिया।

विदलना—स० [स० विदलन] दलित करना। नष्ट करना।

विदलान्न—पु०[स० व० स०, कर्म० स०]१ दला हुआ अन्न। २. दाल। ३. पकाई हुई दाल।

विदलित—भू० कृ०[स० वि√दल् (दलन करना)+क्त] १ जिसका अच्छी तरह दलन किया गया हो। २ कुचला या रौंदा हुआ। ३. काटा, चीरा या फाडा हुआ। ४ बुरी तरह से ध्वस्त या नष्ट किया हुआ।

विदा—स्त्री०[स०√विद्+अङ्+टाप्] बुद्धि। ज्ञान। अक्ल।
स्त्री० [स० विदाय, मि० अ० विदाअ] १ रवाना होना। प्रस्थान। २ कहीं से चलने के लिए मिली हुई अनुमति।

विदाई—स्त्री०[हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १ विदा होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। २ विदा होने के लिए मिली हुई अनुमति। ३ विदा होने के समय मिलनेवाला उपहार या धन। ४ किसी के विदा होने के समय उसके प्रति शुभ कामना प्रकट करने के लिए लोगों का एकत्र होना। (फेयरवेल)
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना।—मिलना।

विदाय—पु०[स० व० स०] १ विसर्जन। २ प्रस्थान। रवानगी। ३ प्रस्थान करने के लिए मिली हुई अनुमति। ४ दान।
†स्त्री०=विदाई।

विदायी (यिन्)—वि०[स० विदाय+इनि]१. जो ठीक तरह से चलाता या रखता हो। नियामक। २. दाता। दानी।
†स्त्री०=विदाई।

विदार—पु०[स० वि√दृ (फाडना)+घञ्] १ युद्ध। समर। २ फाडना। विदारण।

विदारक—पु०[स० वि√दृ+ण्वुल्–अक] १. वृक्ष, पर्वत आदि जो जल के वीच मे हो। २ छोटी नदियों के तल मे वना हुआ गड्ढा जिसमें नदी के सूखने पर भी पानी वचा रहता है। ३ नौसादर।
वि० विदारण करनेवाला या फाडनेवाला।

विदारण—पु०[स० वि√दृ+णिच्+ण्वुल्—अक] १ वीच मे से अलग करके दो या अधिक टुकडे करना। चीरना, फाडना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना। २ मार डालना। वध। ३ ध्वस्त या नष्ट करना। ४. कनेर। ५. खपरिया। ६ नौसादर।

विदारना—स०[हिं० विदरना] १ विदारण करना। फाडना।

विदारिका—स्त्री० [स० वि√दृ+णिच्+ण्वुल्––अक,+टाप्, इत्व] १. वृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार की डाकिनी जो घर के बाहर अग्निकोण मे रहती है। २ गभारी नामक वृक्ष। ३ शालपर्णी। ४ कड़ुई तुँवी। ५ विदारी कद।

विदारित—भू०कृ०[स० वि√दृ+णिच्+क्त] जिसका विदारण हुआ हो।

विदारी (रिन्)—वि० [स० वि√दृ+णिनि] विदारक।
स्त्री०[स० वि√दृ (फाडना)√णिच्+अच्+ङीप्] १ शालपर्णी। २ भुई कुम्हडा। ३ विदारी कद। ४ क्षीर काकोली। ५ 'भाव प्रकाश' के अनुसार अठारह प्रकार के कठ रोगो मे से एक प्रकार का कठ रोग। ६ एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें वगल मे फुसी निकलती है। ७ वाग्भट्ट के अनुसार मेढा सींगी, सफेद पुनर्नवा, देवदार, अनन्तमूल, वृहती आदि ओषधियो का एक गण।

विदारी कंद—पु०[स० व० स०, ष० त०] भुई कुम्हडा।

विदारी गंधा—स्त्री०[स०]१. सुश्रुत के अनुसार शालपर्णी, भुई कुम्हड़ा, गोखरू, शतमूली, अनतमूल, जीवती, मुगवन, कटियारी, पुनर्नवा आदि औषधियों का एक गण। २ शालपर्णी।

विदाह—पु०[स०वि √दह् (जलाना)+घञ्] [वि० विदाहक, विदाही] १ पित्त के प्रकोप के कारण होने वाली जलन। २ हाथ-पैरों मे होनेवाली जलन।

विदाही—वि०=विदाहक।

विदिक्—स्त्री०[स० वि√दिश्+क्विप्] दो दिशाओ के वीच की दिशा। कोण। विदिशा।

विदित—भू० कृ० [स० विद् (जानना)+क्त] जाना हुआ। अवगत।
पु० कवि।

विदिता—स्त्री०[स० विदित+टाप्] जैनो की एक देवी।

विदिथ—पु०[स० विद्+थन्, इ] १ पडित। विद्वान्। २ योगी।

विदिशा—स्त्री०[स०] दो दिशाओं के वीच का कोण।

विदिषा—स्त्री० [स० तृ० त०,+टाप्] १ वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २. एक पौराणिक नदी जो पारियात्र नामक पर्वत से निकली हुई कही गई है। ३ दो दिशाओं के वीच की दिशा। कोण।

विदीपक—पु०[स० कर्म० स०] दीपक। दीया।

विदीर्ण—भू० कृ० [सं०] १. जिसे फाड़ा गया हो। २ टूटा या तोडा हुआ। ३ जो मार डाला गया हो। निहत।

विदु—पु० [स०√विद् (जानना)+कु]१. हाथी के मस्तक पर का वह गहरा अश जो दोनों कुभो के वीच मे पडता है। २ घोडे के कान के वीच का भाग।
वि० बुद्धिमान्।

विदुख†—पु०[स्त्री० विदुखी]=विदुष (विद्वान्)।
विदुत्तम—पु०[स० प० त०] १ वह जो सब बातें जानता हो। २. विष्णु।
विदुर—पु०[स०√विद् (जानना)+कुरच्] १ वह जो जानकार हो। २ ज्ञानवान्। ज्ञानी। ३ पंडित।
पु० १ अम्बिका के गर्भ से उत्पन्न व्यास के पुत्र जो धृतराष्ट्र और पाडु के भाई थे। २ एक प्राचीन पर्वत। विदूर।
पु०=वैदूर्य (मणि)।
विदुल—पु०[स० वि√दुल् (झूलना)+क,√विद् (जानना) +कुलच्] १ बेत। २ जलबेंत। ३ अमलबेंत। ४ बोल नामक गन्धद्रव्य।
विदुला—स्त्री० [स० विदुल+टाप्] १ सातला नाम का थूहर। २. विट् खदिर।
विदुष—पु०[स०√विद् (जानना)+क्वसु, व–उ] [स्त्री० विदुषी] विद्वान्। पंडित।
विदुषी—स्त्री०[स० विदुष+ङीप्] विद्वान् स्त्री।
विदूर—वि०[स०] जो बहुत दूर हो।
पु० १ बहुत दूर का प्रदेश। दूर देश। २ एक प्राचीन जनपद अथवा उसमे स्थित एक पर्वत जिसमे वैदूर्य रत्न अधिकता से मिलता था। ३ वैदूर्य मणि।
विदूरज—पु०[स०] विदूर पर्वत से उत्पन्न, अर्थात् वैदूर्य मणि।
विदूरत्व—पु०[स० विदूर+त्व] विदूर होने की अवस्था या भाव। बहुत अधिक अन्तर या दूरी।
विदूरथ—पु०[स०] १ कुरुक्षेत्र का एक नाम। २. बारहवें मनु का एक पुत्र।
विदूरित—भू० कृ०[स० विदूर+इतच्] दूर किया या परे हटाया हुआ।
विदूषक—पु०[स०] [स्त्री० विदूषिका] १ दूसरो मे दोष बतलाकर उनकी हँसी उडानेवाला व्यक्ति। उदा०—वेद विदूषक विश्व विरोधी—तुलसी। २ अपने वेष, चेष्टा, बात-चीत आदि मे अथवा ढोंग रचकर और दूसरो की नकल उतार कर लोगो को हँसानेवाला। मसखरा। ३ प्राय नाटको मे इस प्रकार का एक पात्र जो नायक का अतरग मित्र या सखा होता है तथा जिसकी सूरत-शकल, हाव-भाव, बातें आदि सब को हँसानेवाली होती है। ४ साहित्य मे चार प्रकार के नायको मे से एक प्रकार का नायक जो अपने कौतुक और परिहास आदि के कारण कामकेलि मे सहायक होता है। ५ कामुक या विषयी व्यक्ति। ६ भाँड।
विदूषण—पु० [स० विद्√दूष् (दूषित करना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विदूषित] १ किसी पर दोष लगाने की क्रिया या भाव। २ भर्त्सना करना। कोसना।
विदूषना—क्रि०[स० विदूषण] १ दूसरो पर दोष लगाना। बुरा बताना। २ कष्ट या दुख देना।
†अ०=दुखी होना।
विदूषित—भू०कृ०[स० वि√दूष् (दूषित करना)+क्त] १ जिस पर दोष लगाया गया हो। २. दोष से युक्त। खराब। बुरा। ३. जिसकी भर्त्सना की गई हो। निन्दा किया हुआ।
विदृक् (दृश्)—वि०[स० ब० स०] १ जिसे दिखाई न पड़े। अन्धा। २ जो देखने मे किसी से भिन्न हो। 'सदृश' का विपर्याय।
विदेय—वि०[स० तृ० त०] दिये जाने के योग्य। देय।
विदेव—पु०[स० ब० स०] १ राक्षस। २ यक्ष।
विदेश—पु०[स०] स्वदेश से भिन्न दूसरा कोई देश।
विदेशी—वि०[स० विदेश+इनि] १. विदेश अर्थात् दूसरे देश का। २ विदेश मे बनने या होनेवाला। जैसे—विदेशी कपडा।
पु० विदेश अर्थात् दूसरे देश का निवासी।
विदेशीय—वि०[स० विदेश+छ–ईय]=विदेशी।
विदेह—वि०[स०] १. देह अर्थात् शरीर से रहित। जिसका शरीर न हो। २ अचेत। बेहोश। ३. शारीरिक चिन्ताओं आदि से रहित। ४ सासारिक बातो से विरक्त। ५. मृत।
पु० १ वह जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हुई हो। जैसे—देवता, भूत-प्रेत आदि। २ मिथिला के राजा जनक का एक नाम। ३ मिथिला देश। ४ मिथिला देश का निवासी। मैथिल। ५ राजा निमि का एक नाम।
विदेह-कैवल्य—पु० [स०] जीवन्मुक्त व्यक्ति को प्राप्त होनेवाला मोक्ष।
विदेहत्व—पु०[स० विदेह+त्व] १ विदेह होने की अवस्था या भाव। २ मृत्यु। मौत।
विदेहपुर—पु०[स०] राजा जनक की राजधानी। जनकपुर।
विदेहा—स्त्री०[स० विदेह+टाप्] मिथिला नगरी और प्रदेश का नाम।
विदेही (हिन्)—पु०[स०] ब्रह्मा। स्त्री० सीता।
विदोष—वि०[स० ब० स०] दोष-रहित।
पु० १ अपराध। २. पाप।
विद्द†—स्त्री०=विद्या।
विद्ध—भू० कृ०[स०√व्यध् (छेदना)+क्त, य–इ] १ बीच मे छेदा या बेधा हुआ। जैसे—विद्ध कर्ण। २ फेंका हुआ। ३ घायल। ४ जिसमे बाधा पडी हो। ५ टेढा। वक्र। ६ किसी के साथ बँधा हुआ। बद्ध। ७. किसी के साथ मिला या लगा हुआ। जैसे—दशमी विद्ध एकादशी, अर्थात् ऐसी एकादशी जिसमे पहले कुछ दशमी भी रही हो। ८ मिलता-जुलता। ९ पंडित। विद्वान्।
विद्धक—वि०[स० विद्ध+कन्] विद्ध करनेवाला।
पु० मिट्टी खोदने की एक प्रकार की खती या फावडा।
विद्ध-व्रण—पु०[स० तृ० त०] १ काँटा चुभने से होनेवाला घाव। २ ऐसा व्रण जो किसी चीज के अग मे चुभने या धँसने के फल-स्वरूप हुआ हो।
विद्धा—स्त्री०[स० विद्ध+टाप्] छोटी-छोटी फुन्सियाँ।
वि० स० विद्ध का स्त्री०।
विद्धि—स्त्री०[स०√व्यध् (आघात करना)+क्तिन्, य–इ] १ चुभने या धँसने की क्रिया या भाव। वेध। २. इस प्रकार होनेवाला छेद। ३ आघात। चोट। प्रहार।
विद्यमान—वि०[सं०] [भाव० विद्यमानता] १ जो अस्तित्व मे हो। २. जो सामने उपस्थित या मौजूद हो।
विशेष—'उपस्थित' और 'विद्यमान' मे मुख्य अतर यह है कि 'उपस्थित' मे तो किसी के सामने आने या होने का भाव प्रधान है, परन्तु 'विद्यमान' मे कही या किसी जगह वर्तमान रहने या सत्तात्मक होने का भाव मुख्य है।
विद्यमानत्व—पु०[स० विद्यमान+त्व]=विद्यमानता।
विद्या—स्त्री०[स०] १ अध्ययन, शिक्षा आदि से अर्जित किया जाने-

वाला ज्ञान। इल्म। २ पुस्तको, ग्रन्थो आदि मे सुरक्षित ज्ञान। इल्म। ३ किसी तथ्य या विषय का विशिष्ट और व्यवस्थित ज्ञान। ४ किसी गभीर और ज्ञातव्य विषय का कोई विभाग या शाखा। ५. किसी कार्य या व्यापार की वे सब बातें जिनका ज्ञान उस कार्य के सम्पादन के लिए आवश्यक हो। ६ कौशल या चातुर्य से भरा हुआ ज्ञान। जैसे—ठग-विद्या। ७ दुर्गा।

विद्याकर—पु०[स०] विद्वान् व्यक्ति।

विद्या-गुरु—पु०[स०] वह गुरु जिससे विद्या पढी हो। शिक्षक। (मत्र देनेवाले गुरु से भिन्न)

विद्या-गृह—पु०[स०] विद्यालय। पाठशाला।

विद्यात्व—पु०[स०] विद्या का भाव।

विद्या-दान—पु०[स०] किसी को विद्या देना या सिखाना।

विद्या देवी—स्त्री०[स०] १ सरस्वती। २ जैनो की एक देवी।

विद्यादोही—पु०[स०] १ विद्यार्थी। २ विद्या-प्रेमी। उदा०—पहले दीच्छित विद्या दोही।—नूरमोहम्मद।

विद्याधन—पु०[स० कर्म० स०] १ विद्या रूपी धन। २ विद्या के बल से अर्जित किया हुआ धन।

विद्याधर—पु०[स० विद्या√धृ (धारण करना)+अच्] [स्त्री० विद्याधरी] १ एक प्रकार की देव योनि जिसके अन्तर्गत खेचर, गन्धर्व, किन्नर आदि माने जाते है। २ वैद्यक मे एक रसौषधि। ३ कामशास्त्र मे एक प्रकार का आसन या रति—बन्ध।

विद्याधरी—स्त्री०[स० विद्याधर+ङीप्] विद्याधर नामक देवता की स्त्री।

विद्याधारी—पु०[स० विद्याधार+इनि, विद्याधारिन्] एक प्रकार के वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चार मगण होते है।

विद्याधि देवता—स्त्री०[स०प० त०] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधिप—पु०[स० प० त०] १ गुरु। शिक्षक। २ पडित। विद्वान्।

विद्यापति—पु०[स० प० त०] १ राज-दरबार का सबसे बडा विद्वान्। २ मिथिला के प्रसिद्ध कवि।

विद्यापीठ—[स० प० त०] १ शिक्षा का बडा और प्रमुख केन्द्र। २ ऐसा विद्यालय जिसमे ऊँचे दरजे की शिक्षा दी जाती हो। महाविद्यालय।

विद्यामंदिर—पु०[स० प० त०] विद्यालय।

विद्यामहेश्वर—पु०[स० प० त०] शिव।

विद्यारंभ—पु०[स०] हिंदुओ मे, बालक को विद्या की पढाई आरम्भ कराने का सस्कार।

विद्याराज—पु०[स०] विष्णु की एक मूर्ति।

विद्यार्थी—पु०[स० विद्या√अर्थ+णिनि] १ वह बालक जो प्राचीन काल मे किसी आश्रम मे जाकर गुरु से विद्या सीखता था। २ आजकल, वह बालक या युवक जो किसी शिक्षा-सस्था मे अध्ययन करता हो। ३ वह व्यक्ति जो सदा कुछ न कुछ और किसी न किसी विषय मे जानने-सीखने को लालायित तथा प्रयत्नशील रहता है।

विद्यालय—पु०[स०] ऐसी शिक्षण सस्था जिसमे नियमित रूप से विभिन्न कक्षाओ के विद्यार्थियो को शिक्षा दी जाती है।

विद्यावधू—स्त्री०[स० प० त०] सरस्वती।

विद्यावान्—वि०[स० विद्या+मतुप्, म—व] विद्वान्।

विद्या वृद्ध—वि०[स० तृ० त०] विद्या या ज्ञान मे औरो से बहुत आगे बढा हुआ।

विद्या-व्रत—पु०[स० प० त०] गुरु के यहाँ रहकर विद्या सीखने का व्रत।

विद्यु—स्त्री०=विद्युत् (बिजली)।

विद्युच्चालक—वि०[स० प० त०] (पदार्थ) जिसके एक सिरे से स्पर्श होते ही विद्युत् दूसरे सिरे तक चली जाय। जैसे—धातुएँ, द्रव-पदार्थ आदि।

विद्युत्—स्त्री० [स० वि√द्युत् (प्रकाश करना)+क्विप्] १ बिजली। २ सन्ध्या का समय। ३ पुरानी चाल की एक प्रकार की वीणा। ४ एक प्रकार की उल्का।

वि० १ बहुत अधिक चमकीला। २ चमक या दीप्ति से रहित।

विद्युता—स्त्री० [स० विद्युत्+टाप्] विद्युत्। बिजली।

विद्युतिक—वि०=वैद्युत् (बिजली सबधी)।

विद्युत्पात—पु०[स०] आकाश से बिजली गिरना। वज्रपात।

विद्युत्पादक—पु०[स०] प्रलय काल के सात मेघो मे से एक मेघ।

विद्युत्प्रभा—स्त्री०[स० विद्युत-प्रभ+टाप्] १ दैत्यो के राजा बलि की पोती का नाम। २ अप्सराओ का एक गण या वर्ग।

विद्युत्मापक—पु०[स० विद्युत्+मापक, प० त०] एक प्रकार का यत्र जो विद्युत् की गति या वेग अथवा उसके व्यय की मात्रा नापता है। (इलेक्ट्रोमीटर)

विद्युत्माला—स्त्री०[स०] १. आकाश मे दिखाई पडनेवाली बिजली की रेखा। २ चार चरणो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो भगण और दो गुरु होते है।

विद्युत्मुख—पु०[स० ब०स०] एक प्रकार के उपग्रह।

विद्युत्य—वि०[स० विद्युत्+यत्] विद्युत् या बिजली से सबध रखनेवाला। विद्युतिक।

विद्युत्-विश्लेषण—पु०[स०] वह वैज्ञानिक प्रक्रिया जिससे विद्युत् के द्वारा खनिज पदार्थो मे से धातुएँ निकालकर अलग की जाती है। (इलेक्ट्रोलिसिस)

विद्युद् गौरी—स्त्री० [स० उपमि० स०, ब० स०] शक्ति की एक मूर्ति।

विद्युद्दर्शी—पु० [स०] एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से यह देखा जाता है कि किसी वस्तु मे कैसी और कितनी विद्युत् की धारा का सचार है। (एलेक्ट्रोस्कोप)

विद्युद्दाम (न्)—पु०[स० प० त०] बिजली की रेखा।

विद्युन्माला—स्त्री०[स०]=विद्युत्माला।

विद्युल्लता—स्त्री०[स० कर्म० स०] लता के रूप मे आकाश मे चमकने वाली बिजली।

विद्युल्लेखा—स्त्री०[स० ब० स०] १ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो मगण होते है। इसे शेषराज भी कहते है। २ विद्युत्। बिजली।

विद्येश—पु०[स० प० त०] शिव।

विद्योत—स्त्री०[स० वि√द्युत् (प्रकाश करना)+घञ्] १ विद्युत्। बिजली। २ चमक। दीप्ति। प्रभा।

विद्रध—वि० [स० वि√रुध् (आवरण)+कि] १. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २ दृढ। पक्का। मजबूत। ३ उद्यत। प्रस्तुत।
पु०=विद्रधि।

विद्रधि—पु०[स० वि√रुध् (आवरण)+कि, पृषो० सिद्धि] पेट मे होनेवाला ऐसा घाव या फोडा जिसमे मवाद पड गया हो।

विद्रधिका—स्त्री०[स० विद्रधि+कन्+टाप्] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का छोटा फोडा जो पुराने प्रमेह के कारण होता है।

विद्रव—पु०[स० वि√द्रु (जाना)+अप्] १ द्रवित होना। गलना। २. घबराहट की स्थिति। ३ बुद्धि। समझ। ४ भागना।

विद्रवण—पु०[स०] विद्रव।

विद्राव—पु०[स० वि√द्रु+घञ्] विद्रव। (दे०)

विद्रावक—वि०[स०] १ पिघलनेवाला। २ भागनेवाला।

विद्रावण—पु०[स०] [भू० कृ० विद्रावित] [वि० विद्राव्य] १ फाडना। २ नष्ट करना। ३ दे० 'विद्रव'।

विद्रावी (विन्)—वि०[स०] १ पिघलने या पिघलानेवाला। २ भागने या भगानेवाला।

विद्रुत—वि०[स० वि√द्रु (जाना)+क्त] १ भागा हुआ। २ गला, पिघला या बहा हुआ। ३ डरा हुआ। भयभीत।
पु० लडाई का एक ढग।

विद्रुम—पु०[स० कर्म० स०, वि√द्रु+म] १ प्रवाल। मूँगा। २ मुक्ताफल नामक वृक्ष। ३ वृक्षो का नया पत्ता। कोपल।
वि० द्रुमो अर्थात् वृक्षों से रहित (स्थान)।

विद्रुमफल—पु०[स०] कुदरु नामक सुगधित गोद।

विद्रुम-लता—स्त्री०[स०] १ नलिका या नली नामक गध द्रव्य। २ मूँगा। विद्रुम।

विद्रूप—पु०[स० विरूप] किसी का किया जानेवाला उपहास। मजाक उडाना।

विद्रूपण—पु०[हिं० विद्रूप से] किसी का उपहास करना। दिल्लगी या मजाक उडाना।

विद्रोह—पु०[स० वि√द्रुह् (वैर करना)+घञ्] १ किसी के प्रति किया जानेवाला द्रोह अर्थात् शत्रुतापूर्ण कार्य। २. विशेषत राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जानेवाला आचरण और व्यवहार। ३ देश या राज्य मे क्रान्ति करने के लिए किया जानेवाला उपद्रव।

विद्रोही (हिन्)—वि०[स०] १ विद्रोह-सबधी। २ विद्रोह के रूप मे होनेवाला।

विद्वज्जन—पु०[स० कर्म० स०] १ विद्वान्। २ ऋषि।

विद्वत्कल्प—वि०[स० विद्वस्+कल्पप्] नाम-मात्र का थोडा पढा-लिखा (आदमी)।

विद्वत्ता—स्त्री०[स० विद्वस्+तल्+टाप्] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव। पाडित्य।

विद्वत्व—पु०[स० विद्वस्+त्वल्] =विद्वत्ता।

विद्वद्वाद—पु०[स०] विद्वानो मे होनेवाली बहस या विवाद।

विद्वान्—वि०, पु० [स०] १ वह जो आत्मा का स्वरूप जानता हो। २ वह जिसने अनेक प्रकार की विद्याएँ अच्छी तरह पढी हों। ३ सर्वज्ञ।

विद्विष—वि०[स०] द्वेष या शत्रुता रखनेवाला।
पु० दुश्मन। शत्रु।

विद्विष्ट—भू० कृ०[स० वि√द्विष् (द्वेष करना)+क्त] [भाव० विद्विष्टता] जिसके प्रति द्वेष की भावना व्यक्त की गई हो।

विद्विष्टि—स्त्री०[स० वि√द्विष्+क्तिन्] विद्वेष।

विद्वेष—पु०[स० वि√द्विष्+घञ्] १. विशेष रूप से किया जानेवाला द्वेष। २ मनोमालिन्य के कारण मन मे रहनेवाला वह द्वेष या वैर जिसके फलस्वरूप किसी को नीचा दिखाने या हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया जाता है। (स्पाइट) ३ दुश्मनी। शत्रुता।

विद्वेषक—वि०[स० वि√द्विष्+ण्वुल्—अक]=विद्वेषी।

विद्वेषण—पु० [स० वि√द्विष् (द्वेष करना)+णिच्+ ल्युट्—अन] १ विद्वेष करने की क्रिया या भाव। २ दो व्यक्तियों मे विद्वेष उत्पन्न करना।
वि० विद्वेषी।

विद्वेषिता—स्त्री०[स० विद्वेषि+तल्+टाप्]=विद्वेष।

विद्वेषी (षिन्)—वि०[स० वि√द्विष्+णिनि] मन मे किसी के प्रति विद्वेष रखनेवाला। विद्वेष करनेवाला।
पु० दुश्मन। शत्रु।

विद्वेष्य—वि०[स० विद्वेष+यत्] जिसके प्रति मन मे विद्वेष रखा जाय या रखना उचित हो।

विधंस†—पु०=विध्वस।
वि०=विध्वस्त।

विधंसना—स०[स० विध्वसन] नष्ट करना। बरबाद करना।

विध—पुं०[स० विधि] ब्रह्मा।
†स्त्री०=विधि।

विधत्री—स्त्री०[स० विधा+ष्ट्रन्+ङीप्] ब्रह्मा की शक्ति, महासरस्वती।

विधन—वि०[स० ब० स०] धन-हीन।

विधना—स०[स० विधि] १ प्राप्त करना। २ अपने साथ लगना। ऊपर लेना।

विधमन—पु०[स० वि√ध्मा (धौंकना)+ल्यु—अन, वि√ध्मा (धौंकना) +शतृ वा] धौंकनी से हवा करना। धौंकना।

विधर†—अव्य०=उधर (उस तरफ)।

विधरण—पु०[स०] [भू० कृ० विधृत] १. पकडना। २ आज्ञा न मानना।

विधर्ता (र्तृ)—पु०[स० वि√धृ (धारण करना)+तृन्] विधरण करनेवाला।

विधर्म—वि०[स०] १ धर्मशास्त्र की आज्ञा, विधि आदि से बाहर का। अधार्मिक। धर्महीन। २ जिससे किसी की धार्मिक भावना को आघात लगता हो। ३ अन्यायपूर्ण। ४ अवैध।
पु० १ किसी की दृष्टि से उसके धर्म से भिन्न धर्म। २ ऐसा कार्य जो किया तो गया हो अच्छी भावना से, परन्तु जो वस्तुत धर्मशास्त्र के नियम के विरुद्ध हो।

विधर्मक—वि०[स०] १ विधर्म-सबधी। विधर्म का। २ विधर्म के रूप मे होनेवाला।
३ दे० 'विधर्मी'।

विधर्मिक—वि०[स०]=विधर्मक।

विधर्मी (र्मिन्)—पु०[स० विधर्म+इनि] १. वह जो अपने धर्म के

विपरीत आचरण करता हो। धर्म-भ्रष्ट। २ जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी हो। ३ जिसने अपना धर्म छोडकर कोई दूसरा धर्म अगीकृत कर लिया हो।

विधवा--स्त्री०[स०] १ वह स्त्री जिसका धव अर्थात् पति मर गया हो। पतिहीन। राँड। २ विशेपत वह स्त्री जिसने पति के देहात के उपरात फिर और विवाह न किया हो।

विधवापन--पु०[स० विधवा+हिं० पन (प्रत्य०)] वह अवस्था जिसमे विधवा बिना विवाह किये ही अपना जीवन यापन करती है। रँडापा। वैधव्य।

विधवाश्रम--पु०[स० ष० त०, विधवा+आश्रम] वह स्थान जहाँ अनाथ विधवाओ को रखकर उनका पालन-पोषण किया जाता हो।

विधाँसना†--स०[स० विध्वसन] १ विध्वस्त या नष्ट करना। बरबाद करना। २ अस्त-व्यस्त या गडबड करना।

विधा--स्त्री०[स०] १ ढग। तरीका। रीति। २ प्रकार। भाँति। ३ हाथी, घोडे आदि का चारा। ४ वेधन। ५ भाडा। किराया। ६ मजदूरी। ७ कार्य। क्रिया। ८ उच्चारण।

विधातव्य--वि०[स० वि√धा (धारण करना)+तव्यत्] १ जिसके सबध मे विधान हो सकता हो या होने के लिए हो। २ (काम) जो किया जा सकता हो या आवश्यक रूप से किया जाने को हो। कर्तव्य।

विधाता(तृ)--वि० [स० वि√धा+तृच्] [स्त्री० विधातृका, विधात्री] १ विधान करनेवाला। २ रचनेवाला। बनानेवाला। ३ प्रबध या व्यवस्था करनेवाला।

पु० १ सृष्टि की रचना करनेवाली शक्ति। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ कामदेव। ६ विश्वकर्मा।

स्त्री० मदिरा। शराब।

विधातु--स्त्री० दे० 'असार' (धातुओ का)।

विधात्री--वि० स्त्री० [स० विधातृ+ङीप्] १ विधान करनेवाली। २ रचनेवाली। बनानेवाली। ३ प्रबध या व्यवस्था करनेवाली।

स्त्री० पिप्पली। पीपल।

विधान--पु०[स० वि√धा+ल्युट्-अन] [वि० वैधानिक] १ किसी कार्य के सबध मे किया जानेवाला आयोजन और उसका प्रबध या व्यवस्था। २ कोई चीज तैयार करने के लिए बनाना। निर्माण। रचना। सर्जन। ३ किसी चीज या बात का किया जानेवाला उपयोग, प्रयोजन या व्यवहार। जैसे--धातु मे प्रत्यय का विधान करना। ४ यह कहना या बतलाना कि अमुक काम या बात इस प्रकार होनी चाहिए। ढग, प्रणाली या रीति बतलाना। ५ बतलाया हुआ ढग, प्रणाली या रीति। विशेषत धार्मिक रीति। ६ कायदा। नियम। ७ कही या बतलायी हुई ऐसी बात जो आदेश के रूप मे हो और जिसका अनुसरण या पालन आवश्यक और कर्तव्य के रूप मे हो। जैसे--धर्मशास्त्र का विधान। ८ आज-कल राज्य या शासन के द्वारा जारी किया हुआ कोई कानून जिसमे किसी विषय की विधि और निषेध से सबध रखनेवाली सभी बातें धाराओ के रूप मे लिखी रहती है। कानून। (लॉ) ९ नाटक मे, विभिन्न भावनाओ, विचारो आदि मे होनेवाला द्वद्व और सघर्ष। १० अनुमति। आज्ञा। ११ अर्चन। पूजा। १२ धन-सपत्ति। १३ किसी को हानि पहुँचाने के लिए किया जानेवाला दाँव-पेंच या शत्रुता का व्यवहार। शत्रुतापूर्ण आचरण। १४ शब्दो मे उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगाने की क्रिया या रीति। १५ हाथी को मस्त करने के लिए खिलाया जानेवाला चारा।

विधानक--पु०[स० विधान+कन्] १ विधान। २ वह जो विधान का ज्ञाता हो।

वि० विधान करनेवाला।

विधान-परिषद्--स्त्री० [स०] राज्य की विधान सभा से भिन्न दूसरी बडी विधि-निर्मात्री सभा जिसका चुनाव परोक्ष रीति से होता है। (लेजिसलेटिव कौंसिल)

विधान-मंडल--पु० [स०] राज्य के सबध मे विधान बनानेवाले दोनो अगो का सामूहिक नाम और रूप। (लेजिस्लेचर)

विशेष--इसके दो अग या सदन होते है--विधान परिषद् और विधानसभा।

विधान-सप्तमी--स्त्री०[स०] माघ शुक्ल सप्तमी।

विधान-सभा--स्त्री०[स०] किसी देश या राज्य की वह सभा या सस्था, विशेषत निर्वाचित प्रतिनिधियो की सभा या सस्था जिसे कानून या विधान बनाने का अधिकार होता है। (लेजिसलेटिव एसेंबली)

विधानांग--पु०[स०]=विधान-मडल।

विधानी--वि० [स० विधान+इनि, अथवा विधान+हिं० ई(प्रत्य०)] १ विधान जाननेवाला। २ विधान या विधिपूर्वक काम करनेवाला।

विधायक--वि०[स० वि√धा+ण्वुल्-अक, युक्] [स्त्री० विधायिका] १ विधान करनेवाला। जैसे--एकता का विधायक। २ कार्य का सम्पादन करनेवाला। ३ निर्माण या रचना करनेवाला। ४ निर्माण के रूप मे होनेवाला। रचनात्मक। ५ प्रबध या व्यवस्था करनेवाला।

पु० विधान सभा (या परिषद्) का सदस्य।

विधायन--पु०[स०] १ विधान करने या बनाने की क्रिया या भाव। २ आज-कल विशेष रूप से शासन अथवा विधान मडल द्वारा कोई विधान (कानून) बनाने की क्रिया या भाव। (एनैक्टमेन्ट) ३. उक्त प्रकार से बने हुए अधिनियम, विधियाँ आदि।

विधायन-सग्रह--पु०[स०] किसी विषय, विभाग आदि के कार्य-सचालन से सबद्ध नियमो, निर्देशो आदि का सग्रह। सहिता। (कोड) जैसे--बगाल विधायन सग्रह।

विधायिका--वि० स्त्री०[स०] विधान-निर्मात्री सस्था। जैसे--विधान परिषद्, विधान सभा, लोक सभा, राज्य सभा आदि।

विधायी (यिन्)--वि०[स०वि√धा (धारण करना)+णिनि, युक्] [स्त्री० विधायिनी] विधान करने या बनानेवाला। विधायक। (दे०)

पु० १ निर्माण करनेवाला। २ सस्थापक।

विधारण--पु०[स० वि√धृ (धारण करना)+णिच्+ल्युट्-अन] १ रोकना। २ वहन करना।

विधि--स्त्री०[स०] १ कोई काम करने का ठीक ढग या रीति, क्रिया, व्यवस्था आदि की प्रणाली।

मुहा०--*(किसी काम या बात की) विधि बैठना*=लगाई हुई युक्ति का ठीक या सफल सिद्ध होना। जैसे--यदि तुम्हारी विधि बैठ गई तो काम होने मे देर न लगेगी।

२ आपस मे होनेवाली अनुकूलता या सगति।

मुहा०—(आपस में) **विधि बैठना**=अनुकूलता, मेल-मिलाप या संगति होना। जैसे—अब तो उन लोगो मे विधि बैठ गई है। **विधि मिलना**=अनुरूपता होना। जैसे—जन्म-कुडली की विधि मिलना। ३ ऐसी आज्ञा या आदेश जिसका पालन अनिवार्य या आवश्यक हो। ४ धर्म-ग्रन्थो, शास्त्रो आदि मे वतलाई हुई ऐसी व्यवस्था जिसे साधारणत सब लोग मानते हो।

पद—विधि-निषेध=ऐसी बाते जिनमे यह कहा गया हो कि अमुक-अमुक काम या बातें करनी चाहिए और अमुक-अमुक काम या बातें नही करनी चाहिए।

५ आचार-व्यवहार।

पद—गति-विधि=आगे बढने, पीछे हटने आदि के रूप मे होनेवाली चाल-ढाल या रग-ढग। जैसे—पहले कुछ उमके रोजगार की गति-विधि तो देख लो, तब उनके साथ साझेदारी करना।

६ तरह। प्रकार। भाँति। उदा०—एहि विधि राम सबहि समुझावा।—तुलसी। ७ व्याकरण मे वह स्थिति जिसमे किसी से काम करने के लिए कहा जाता है। जैसे—(क) तुम वहाँ जाओ। (ख) यह चीज यही रहनी चाहिए। ८. साहित्य मे, एक अर्थालंकार जिसमे किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। जैसे—वर्षा-काल के ही मेघ, मेघ है। ९ आज-कल राज्य या शासन के द्वारा चलाये या बनाये हुए वे सब नियम, विधान आदि जिनका उद्देश्य सार्वजनिक हितो की रक्षा करना होता है और जिनका पालन सबके लिए अनिवार्य तथा आवश्यक होता है। कानून। (लॉ)

पु० सृष्टि की रचना करनेवाला, ब्रह्मा।

विधिक—वि० [स०] [भाव० विधिकता] १ विधि-सबधी। २ विधि के रूप मे होनेवाला। ३ (कार्य) जिसे करने मे कोई कानूनी अडचन न हो। ४ जो विधि के विचार से न्याय-सगत हो। (लीगल)

विधिकता—स्त्री०[स०] १ विधिक होने की अवस्था या भाव। २ कानून के विचार से होनेवाली अनुरूपता।

विधिक प्रतिनिधि—पु०[स०] वह प्रतिनिधि जिसे किसी की ओर से न्यायालय मे कानूनी कार्रवाई करने का अधिकार प्राप्त हो। (लीगल रिप्रेजेंटेटिव)

विधिकर्ता—पु०[स०] वह जो विधि या कानून बनाता हो। (लॉ-मेकर)

विधिक व्यवहार—पु०[स०] वह कार्य या प्रक्रिया जो किसी व्यवहार या मुकदमे मे विधि या कानून के अनुसार होती है। (लीगल प्रोसीडिंग)

विधिक साध्य—स्त्री०[स०] विधिक-निर्णय। (दे०)

विधिज्ञ—पु०[स०] १ वह जो विधि-विधान आदि का अच्छा ज्ञाता हो। २ कानून का ज्ञाता ऐसा व्यक्ति जो दूसरो के व्यवहारो के सबध मे न्यायालय मे प्रतिनिधि के रूप मे काम करता हो। (लायर)। ३ वह जो काम करने का ठीक ढग जानता हो।

विधितः—अव्य०[स०] १ विधि या रीति के अनुसार। २ कानून के अनुसार। (वाई लॉ) ३ कानून की दृष्टि मे या विचार से। (डी जूरी, लॉ-फुली)

विधि दर्शक—पु०[स०] विधिदर्शी। (दे०)

विधिदर्शी—पु०[स०] यज्ञ मे वह व्यक्ति जो यह देखने के लिए नियुक्त होता था कि होता, आचार्य आदि विधि के अनुसार कर्म कर रहे है या नही।

विधिना†—पु०=विधना (ब्रह्मा)।

विधि-निषेध—पु० [स० प० त०] साहित्य मे आक्षेप अलकार का एक भेद जिसमे कोई काम करने की विधि या अनुमति देने पर भी प्रकारातर से उसका निषेध किया जाता है। जैसे—आप जाते हैं तो जाइए, अगले जन्म मे मैं आपके दर्शन करूँगी। (अर्थात् आप के दर्शन की लालसा मे प्राण दे दूँगी।)

विधि-पत्नी—स्त्री०[स०] सरस्वती।

विधिपाट—पु०[स०] मृदग के चार वर्णो मे से एक वर्ण। शेष तीन वर्ण ये है—पाट, कूटपाट और खडपाट।

विधिपुत्र—पु०[स० विधि+पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र, नारद।

विधिपुर—पु०[स० विधि+पुर] ब्रह्मलोक।

विधि-भंग—पु०[स०] १ विधि अर्थात् कानून का उल्लघन करने की क्रिया या भाव। नियम तोडना। (ब्रीच आफ लॉ)

विधि-भेद—पु०[स०] साहित्य मे, उपमा अलकार का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जब उपमेय और उपमान के गुण, धर्म आदि का मेल ठीक से नही बैठता।

विधिरानी—स्त्री०[स० विधि+हिं० रानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिलोक—पु०[स०] ब्रह्मलोक।

विधिवत्—अव्य०[स०] १ विधिपूर्वक। विधित । २ जिस प्रकार होना चाहिए उसी प्रकार।

विधि-वधू—स्त्री०[स०] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधि-वादपद—पु०[स०] विधिक क्षेत्रो मे वह वादपद जिसका सबध व्यवहार या मुकदमे के केवल विधिक या कानूनी पक्ष से हो। तथ्य-वादपद से भिन्न। (इश्यू आफ लॉ)

विधि-वाहन—पु०[स०] ब्रह्मा की सवारी, हस।

विधिविहित—वि० [स० तृ० त०] शास्त्रीय विधियो आदि मे कहा या बतलाया हुआ। विधि मे जैसा विधान हो, वैसा।

विधिषेध—पु०[स० प० त०] विधि और निषेध।

विधुंत—पु०[स० विधुतुद] राहु।

विधुतुद—पु०[स० विधि√तुद् (दु ख देना)+खच्, मुम्] चद्रमा को दु.ख देनेवाला। राहु।

विधु—पु०[स०] १ चद्रमा। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ वायु। हवा। ५ कपूर। ६ अस्त्र। आयुध। ७ जल से किया जानेवाला स्नान। ८ पाँवो आदि का प्रक्षालन।

विधुकात—पु०[स०] सगीत मे, एक प्रकार का ताल।

विधुदार—स्त्री०[स० प० त०] चन्द्रमा की स्त्री। रोहिणी।

विधुप्रिया—स्त्री० [स० प० त०] १ चद्रमा की स्त्री। रोहिणी। २ कुमुदिनी। कोई। (दे०)

विधु-बधु—पु०[स० प० त०] कुमुद (फूल)।

विधु-बैनी—स्त्री० [स० विधु+वदन, प्रा० वयन] चद्रमुखी। सुदरी स्त्री।

विधुमणि—पु०[स० प० त०] चद्रकात मणि।

विधुमुखी—वि०[स०] चन्द्रमा के समान सुदर मुखवाली (स्त्री)।

विधुर—वि०[स०] [स्त्री० विधुरा] १ दुखी। २. घबराया या डरा

हुआ। ३ बेचैन। विकल। ४ अशक्त। असमर्थ। ५. छोड़ा या त्यागा हुआ। परित्यक्त। ६ मूढ़। ७ जिसकी स्त्री मर चुकी हो। रँडुआ। ८ किसी बात से रहित या हीन। (यौ० के अन्त मे) जैसे—अनुनय-विधुर=जो अनुनय-विनय करना न जानता हो या न करता हो।
पु० १. कष्ट। दुख। २ जुदाई। वियोग। ३ अलगाव। पार्थक्य। ४ कैवल्य। ५ दुश्मन। शत्रु।

विधुरा—स्त्री०[स०] १ कानो के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि, जिसके पीडित या खराब होने से आदमी बहरा हो जाता है। २ मट्ठा। लस्सी।

विधुवदनी—स्त्री०[स० ब० स०] चन्द्रमुखी।

विधूत—भू० कृ०[सं०] [भाव०विधूति] १ काँपता हुआ। २ हिलता हुआ। ३ छोडा या त्यागा हुआ। ४ अलग या दूर किया हुआ। ५ निकाला या बाहर किया हुआ।

विधूति—स्त्री०[स०] कपन।

विधूनन—पु०[स० वि√धू (कपन)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विधूनित] कपन। काँपना।

विधृत—भू० कृ०[स० वि√धृ (धारण करना)+क्त] १ ग्रहण या धारण किया हुआ। २ अलग किया हुआ। ३. रोका हुआ। ४ अपने अधिकार मे लाया हुआ। ५. सँभाला हुआ।
पु० १ आज्ञा की अवज्ञा। २. असतोष।

विधृति—स्त्री०[सं० वि√धृ+क्तिन्] १ अलगाव। पार्थक्य। २. विभाजन। ३ व्यवस्था। ४ नियम। ५ विभाजक रेखा।

विधेय—वि०[स०] १ देने योग्य। २ प्राप्त करने योग्य। ३ जिसके प्रति विधि का आदेश दिया जाय। ४ जिसे कुछ करने का आदेश दिया जाय। ५ जिसके सबध मे विधान किया जाने को हो। ६ प्रदर्शित किये जाने के योग्य। ७ प्रज्वलित किये जाने के योग्य।
पु०१ वह काम जो अवश्य किये जाने के योग्य हो। २ व्याकरण मे, वह पद या वाक्यांश जिसके द्वारा किसी के सबध मे कुछ विधान किया अर्थात् कहा या बतलाया जाता है। हिन्दी मे इसका अन्वय या तो (क) कर्ता से होता है या (ख) प्रधान कर्म से। जैसे—(क) राम जाता है। और (ख) राम रोटी खाता है।, मे 'जाता है' और 'खाता है', विधेय है, क्योकि 'जाता है' से राम (कर्ता) के सबध मे और 'खाता है' से रोटी (कर्म) के सबध मे कुछ कहा या बतलाया गया है। ३ साहित्य मे प्रिय के मान-मोचन के दो उपचारो मे से एक, जिसमे उपेक्षा, धृष्टता, भय, हर्ष आदि दिखलाकर उसे प्रकारान्तर से अनुकूल करने का प्रयत्न किया जाता है।

विधेयक—पुं० [स० विधेय+कन्] आज-कल किसी कानून या विधान का वह प्रस्तावित रूप या मसौदा जो विधान बनानेवाली परिषद् या सभा के सामने विचारार्थ उपस्थित किया जाने को हो। (बिल)

विधेयता—स्त्री०[स० विधेय+तल्+टाप्] १ विधेय होने की अवस्था, गुण या भाव। २ अधीनता।

विधेयत्व—पु०[स० विधेय+त्व] विधेयता।

विधेयात्मा (त्मन्)—पु०[स० ब० स०] विष्णु।

विधेयाविमर्श—पु० [स० ब० स०] साहित्य मे एक प्रकार का वाक्य-दोष जो विधेय अश के प्रधान स्थान प्राप्त होने पर होता है। मुख्य बात का वाक्य-रचना के बीच दबा रहना।

विध्य—वि०[स०√विध् (छेदना)+यत्] जो बीधा जाने को हो या बेधा जा सकता हो।

विध्यात्मक—वि०[स०] १. विधि से सबध रखता हुआ और उससे युक्त। २ जो विधि के पक्ष का हो। सकारात्मक। महिक। 'निषेधात्मक' का विपर्याय। (पाज़िटिव)

विध्वंस—पु०[स० वि√ध्वस् (नाश करना)+घञ्] १ विनाश। नाश। बरबादी। २ घृणा। ३. बैर। शत्रुता। ४ अनादर। अपमान।

विध्वसक—वि०[स० वि√ध्वस् (नाश करना)+ण्वुल्—अक] विध्वस या नाश करनेवाला।
पु० एक प्रकार के विनाशक पोत। (डेस्ट्रायर)

विध्वस्त—भू० कृ०[स० वि√ध्वस्+क्त] नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ।

विन†—सर्व०[हिं० वा=उस] हिं० 'उस' के बहु० 'उन' का स्थानिक रूप। अव्य० विना (बगैर)।

विनत—वि०[स०] [स्त्री० विनता] १ नीचे की ओर प्रवृत्त। झुका हुआ। २. जिसने किसी के सामने मस्तक या सिर झुका रखा हो। ३ विनीत। नम्र। ४ टेढा। वक्र। ५ सिकुडा हुआ। सकुचित। ६ कुबडा। कुब्ज।
पु० महादेव। शिव।

विनतड़ी†—स्त्री०=विनति।

विनता—स्त्री०[स० विनत+टाप्] १ दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी और जिसके गर्भ मे गरुड़ का जन्म हुआ था। २ एक राक्षसी जिसे रावण ने सीता के पास उसे समझाने-बुझाने के लिए रखा था। ३ व्याधि उत्पन्न करनेवाली एक कल्पित राक्षसी। ४ प्रमेह या बहुमूत्र के रोगियो को होनेवाला एक प्रकार का फोडा।

विनति—स्त्री०[स० वि√नम् (नम्र होना)+क्तिन्] १ विनीत होने की अवस्था, गुण या भाव। २ झुकाव। ३ विनीत भाव से की जाने वाली प्रार्थना। अनुनय-विनय। ४ व्यवहार, स्वभाव आदि की नम्रता। ५ दमन। ६ निवारण। रोक। ७ विनियोग।

विनती—स्त्री०[स० विनत+ङीप्]=विनति।

विनद्ध—भू० कृ०[स० वि√नह् (बाँधना)+क्त] १ किसी के साथ जोड़ा या बाँधा हुआ। २ बन्धन से युक्त किया हुआ।

विनमन—पु० [स० वि√नम् (नम्र होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विनमित] १ झुकना। २ नम्रतापूर्वक झुकना।

विनम्र—वि० [स०] [भाव० विनम्रता] १ विशेष रूप से नम्र। २ विनीत और सुशील। ३ झुका हुआ।
पु० तगर का फूल।

विनम्रता—स्त्री०[स०] विनम्र होने की अवस्था या भाव।

विनय—स्त्री०[स०] १ यह कहना या बतलाना कि अमुक काम या बात इस प्रकार होनी चाहिए। कुछ करने का ढग बतलाना या सिखाना। शिक्षा। २. कोई काम या बात करने का अच्छा, ठीक और सुदर ढग। ३ आचार, व्यवहार आदि मे रहनेवाली नम्रता और सौजन्य जो अच्छी शिक्षा से प्राप्त होता है। (मॉडेस्टी)। ४ कर्तव्यो आदि का ऐसा निर्वाह और पालन जिसमे कुछ भी त्रुटि या दोष न हो। ५. आदेशो, नियमो आदि का ठीक ढग से और भले आदमियो की तरह

किया जानेवाला पालन। (डिसिप्लिन) ६ नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनती। ७ नीति। ८ इंद्रिय निग्रह। जितेंद्रिय व्यक्ति। १० किसी को नियंत्रण या शासन मे रखने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जिसके साथ अवज्ञा के लिए दड का भी भय दिखाया जाय या विधान किया गया हो। (स्मृति) ११ वणिक्। व्यापारी।

विनयकर्म(न्)—पु० [स० ष० त०] पढाने, सिखाने आदि का कार्य। शिक्षण। शिक्षा।

विनय-ग्राही(हिन्)—वि०[स०] अनुशासन मे रहकर मर्यादा का पालन करनेवाला।

विनयधर—पु०[स०] पुरोहित।

विनय पिटक—पु०[स०ष०त०] बौद्धो का एक धर्म-ग्रन्थ जिसमे विनय अर्थात् सदाचार सबधी नियम सगृहीत है।

विनयवान्—वि०[स० विनय+मतुप्, विनयवत्] [स्त्री० विनयवती] जिसमे विनय अर्थात् नम्रता हो। शिष्ट।

विनयशील—वि०[स०] जो स्वभावत विनम्र हो। प्रकृति से विनम्र।

विनयाध्यक्ष—पु०=सकायाध्यक्ष।

विनयावनत—भू० कृ०[स० तृ० त०] विनय के कारण झुका हुआ। विनम्र।

विनयी(यिन्)—वि०[स० विनय+इनि, दीर्घ, न-लोप] विनययुक्त।

विनवना†—स०[स० विनय] विनय करना। नम्रतापूर्वक कुछ कहना।
अ० १. नम्र होना। २ झुकना।

विनशन—पु०[स० वि√नश् (नाश करना)+ल्युट्—अन] विनाश करने की क्रिया या भाव।
वि० विनश्वर।

विनश्वर—वि०[स० वि√नश् (नष्ट करना)+वरच्] [भाव० विनश्वरता] जिसका विनाश होने को हो।

विनष्ट—भू० कृ० [स०] [भाव० विनष्टि] १ जो अच्छी तरह नष्ट हो चुका हो या नष्ट किया जा चुका हो। बरबाद। २. मरा हुआ। मृत। ३. विगडा हुआ। विकृत। ४ भ्रष्ट आचरणवाला। पतित।

विनष्टि—स्त्री०[स० वि√नश् (नष्ट करना)+क्तिन्] १ वह अवस्था जो विनाश की सूचक हो। २ विनाश। ३ पतन। ४ लोप।

विनष्टोपजीवी(विन्)—वि०[स० विनष्टोप√जीव् (जीवित करना)+णिनि] मुर्दा खाकर जीनेवाला।

विनस—वि०[स० ब० स०, नासिका—नसादेश] [स्त्री० विनसा, विनसी] १ विना नाक का। नककटा। २. बेशर्म।

विनसना—अ०[स० विनशन] नष्ट होना। लुप्त होना।
†स०=विनसाना।

विनसाना—स०[हिं० विनसना का स० रूप] १ नष्ट करना। २ विगाडना।
†अ०=विनसना।

विना—अव्य० [स० वि+ना] १. न होने पर। अभाव मे। बिना। जैसे—आप के विना काम न चलेगा। २ अलग रहकर अथवा उपयोग न करते हुए। जैसे—विना जूते के चलने मे कष्ट होता है। ३ अतिरिक्त। सिवा। (क्व०) जैसे—तुम्हारे विना उसका है ही कौन।

विनाडी—स्त्री० [स०] एक घडी का साठवाँ भाग। पल। प्राय २४ सेकेंड का समय।

विनाथ—वि०[स० ब० स०] जिसका नाथ न हो। अनाथ।

विनाम—पु०[स० वि√नम्(नम्र होना)+घञ्] १ टेढापन। बक्रता। २ वैद्यक मे, पीडा आदि के कारण शरीर के किसी अग का झुक जाना। ३ किसी पदार्थ का वह गुण जिसके कारण वह झुकाया या मोडा जा सकता है।

विनायक—पु०[स० कर्म० स०] १ गणो के नायक गणेश। २ गरुड। ३ गुरु। ४ गौतम बुद्ध। ५ बाधा। विघ्न।
विशेष—पुराणो मे विनायक के कई रूप कहे गये हैं। यथा कोण विनायक, दतविनायक, सिंदूर विनायक हस्ति विनायक आदि।

विनायक चतुर्थी—स्त्री०[स० मध्यम० स०] माघ सुदी चौथ। गणेश-चतुर्थी।

विनायिका—स्त्री०[स०] १ विनायक अर्थात् गणेश की पत्नी। २ गरुड की पत्नी।

विनाल—वि०[स० ब० स०] जिसमे नाल अर्थात् डठल न हो।

विनाश—पु०[स० वि√नश्+घञ्] १ ऐसी स्थिति जो अत्यधिक धन-जन की हानि की परिचायिका हो। नाश। ध्वस। जैसे—भूकम्प के कारण शहरो, बाढ के कारण गाँवो, अतिवृष्टि या अनावृष्टि के कारण खेती का होनेवाला विनाश। २ अदर्शन। लोप। ३ खराबी। विकार। ४ दुर्दशा। ५. नुकसान। हानि।

विनाशन—पु०[स०] १ नाश करना। २. मार डालना। ३ विगाडना। ४ काल का पुत्र एक असुर।

विनाशित—भू० कृ०[स० वि√नश्+णिच्+क्त]=विनष्ट।

विनाशी(शिन्)—वि०[स० वि√नश्+णिनि] [स्त्री० विनाशिनी] १. विनाश या ध्वंस करनेवाला। (डेस्ट्रॉयर) २ मार डालनेवाला। ३. खराब करने या विगाड़नेवाला।

विनाश्य—वि०[सं० वि√नश् (नष्ट करना)+ण्यत्] जिसका विनाश हो सकता या होने को हो।

विनास†—पु०=विनाश।

विनासक—वि०[स० ब० स०,+कन्, ह्रस्व] विना नाक का। नकटा।
†वि०=विनाशक।

विनासन†—पु०=विनाशन।

विनासना†—स०[स० विनाशन] विनाश करना।
†अ० विनष्ट होना।

विनिंदा—स्त्री०[स० विनिन्द+टाप्] बहुत अधिक निंदा।

विनिगमक—वि०[स० वि+नि√गम्+ण्वुल्—अक] निश्चयपूर्वक एक पक्ष को स्वीकृत करने और दूसरे को त्यागनेवाला।

विनिगमना—स्त्री०[स०] १ विचारपूर्ण निर्णय। २ वह स्थिति जिसमे एक पक्ष का ग्रहण और दूसरे पक्ष का त्याग होता है। ३ नतीजा। परिणाम।

विनिग्रह—पु० [स० वि+नि√ग्रह् (ग्रहण करना)+क] १. निग्रह। सयम। २ बाधा। रुकावट। ३ अवरोध।

विनिद्र—वि०[स० ब० स०] १ जिसे नींद न आई हो। जागता हुआ। २ जिसे नींद न आती हो। ३ खिला हुआ। उन्मीलित।

विनिधान—पु०[स०] [भू० कृ० विनिधित] १ किसी विशिष्ट उद्देश्य अथवा कार्य के लिए अथवा योजना के अनुसार किसी को अलग कर कही रखना। (एलोकेशन) जैसे—छात्रवृत्ति के लिए किसी निधि के कुछ अग का होनेवाला विनिधान।। २ कार्य-प्रणाली आदि के सबध मे दी जानेवाली सूचना। हिदायत।

विनिपात—पु०[स०] १ विशेष रूप मे या अच्छी तरह से किया हुआ निपात। २ विनाश। ३ वध। ४ अपमान। ५ गर्भपात। ६ बहुत बडा कष्ट या सकट उपस्थित करनेवाली घटना या स्थिति। आपद्। (कैलेमिटी)

विनिपातक—वि०[स० वि+नि√पत् (पतन होना)+णिच्+ण्वुल्—अक] विनिपात अर्थात् विनष्ट करनेवाला।

विनिपाती (तिन्)—वि०[स०]=विनिपातक।

विनिमय—पु०[स०] १ एक वस्तु लेकर उसके बदले मे दूसरी वस्तु देना। परिवर्तन। (बार्टर) २ वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न पक्षो या देशो का लेन-देन विनिमय-पत्रो के अनुसार होता है। ३ वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न भिन्न देशो के सिक्को के आपेक्षिक मूल्य स्थिर होते है और जिसके अनुसार आपसी लेन-देन चुकाये जाते है। ४ किसी क्षेत्र मे किसी से कुछ पाकर उसके बदले मे वैसा ही कुछ देना। (एक्स-चेंज, अतिम तीनो अर्थों के लिए) जैसे—विचार-विनिमय।

पद—**विनिमय की दर**=वह निश्चित की हुई दर जिस पर देशो के सिक्के परस्पर बदले जाते है।

५. गिरवी या बधक रखना। ६ साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे कुछ कम देकर बहुत कुछ लेने का वर्णन रहता है।

विनियंत्रण—पु०[स० ब० स०] [भू० कृ० विनियत्रित] १ नियत्रण उठा लेना। २ व्यापारिक क्षेत्र मे, शासन द्वारा किसी चीज की बिक्री, मूल्य आदि पर लगाये हुए नियत्रण का हटाया जाना। (डि-कन्ट्रोल)

विनियम—पु०[स०वि+नि√यम् (रोकना)+घञ्] १ रोक। २ सयम। ३ नियत्रण। ४ शासन। ५ आज-कल कोई ऐसा विशिष्ट नियम जो किसी नये निश्चय या आदेश के अनुसार बनाया गया हो। (रेगुलेशन)

विनियोग—पु०[स० वि+नि√युज् (सयुक्त करना)[+घञ्] १ फल-प्राप्ति के उद्देश्य से किसी वस्तु का होनेवाला उपयोग। २ वैदिक कृत्य मे मन्त्रो का होनेवाला प्रयोग। ३ प्रवेश। पैठ। ४ प्रेषण। भेजना। ५ व्यापार मे पूँजी लगाना। ६ किसी विशिष्ट उद्देश्य, प्रयोजन आदि के निमित्त सपत्ति आदि किसी दूसरे को देना। (एप्रोप्रिएशन) ७ सपत्ति आदि बेचकर निकालना।(डिस्पोजल)

विनियोजक—पु०[स०] विनियोजन या विनियोग करनेवाला।

विनियोजन—पु०[स०] [वि० विनियोज्य, भू० कृ० विनियुक्त, विनि-योजित] १ विनियोग करना। २ विशेष रूप से नियुक्त करना। ३ भेजना। प्रेषण। ४ अर्पण।

विनिर्गत—भू० कृ०[स०] १ बाहर निकाला हुआ। २ बीता हुआ। व्यतीत। ३ मुक्त।

विनिर्गम—पु०[स० वि+निर्√गम् (जाना)+अप्] १ बाहर निकलना। २ प्रस्थान या यात्रा करना।

विनिवेशन—वि०[स० वि+नि√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विनिवेशित, वि० विनिवेशी] १ प्रवेश। घुसना। २ अवस्थित या स्थित होना। अधिष्ठान। ३ स्थान आदि का बसना।

विनिवेशी (शिन्)—वि० [स० वि+नि√विश्+णिनि] [स्त्री० विनिवे-शनी] १ प्रवेश करनेवाला। घुसनेवाला। २ बसने या रहनेवाला।

विनिश्चय—पु०[स० वि+निस्-√चि (चयन करना)+अच्] किसी विषय मे खूब सोच-समझकर किया जानेवाला निश्चय या निर्णय। (डेसीज़न)

विनिषिद्ध—भू० कृ०[स०] [भाव० विनिषिद्धता] १ जिसका विशेष रूप से निषेध हुआ हो। २ जिसका शासन द्वारा विधिक रीति से निषेध किया गया हो। (कन्ट्राबैंड) जैसे—विनिषिद्ध व्यापार।

विनिषिद्ध व्यापार—पु०[स० ष० त०] वह व्यापार जिसे शासन ने विनि-षिद्ध ठहराया हो। (कन्ट्राबैंड ट्रेड)

विनीत—वि०[स० वि√नी (ढोना)+क्त] [भाव० विनीतता, विनीति] १ जिसमे विनय हो। विनय से युक्त। २ सुशील। ३ नम्र और शिष्ट। ४ नम्रतापूर्वक किया जानेवाला। जैसे—विनीत निवेदन। ५ जितेन्द्रिय। सयमी। ६ ग्रहण किया हुआ। ७ शिक्षित। ८ अलग या दूर किया हुआ। ९ दडित। १० माफ किया हुआ।

पु०१ वणिक्। बनिया। २ व्यापारी। ३ ऐसा घोडा जो जोत, सवारी आदि के काम मे सधा हुआ हो। ४ दमनक या दौना नाम का पौधा।

विनीति—स्त्री०[स० वि√नी (ढोना)+क्तिन्] १ विनय। २ सद्-व्यवहार। ३ सम्मान।

विनु†—अव्य०=बिना।

विनुक्ति—स्त्री०[स०] १ श्रौत सूत्र के अनुसार एक प्रकार का एकाह-कृत्य। २ दूर करना। हटाना।

विनूठा†—वि०=अनूठा।

विनोक्ति—स्त्री०[स० ब० स०] साहित्य मे, एक अर्थालकार जो उस समय माना जाता है जब कोई वस्तु स्वय शोभायुक्त होती है तथा किसी अन्य वस्तु के होने या न होने मे उसकी शोभा पर प्रभाव नही पडता।

विनोद—पु० [स० वि√नुद् (प्रेरणा देना)+घञ्] १ ऐसा काम या बात जिसका मुख्य प्रयोजन अपना (और दूसरे का भी) मन बहलाना तथा प्रसन्न रखना होता है। जैसे—खेल, तमाशा आदि। २ उक्त के द्वारा होनेवाला मन-बहलाव तथा प्राप्त होनेवाला आनद। ३ हँसी-ठट्ठा। ४ एक प्रकार का प्रासाद। ५ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन।

विनोद-वृत्ति—स्त्री० [स०] मनुष्य की वह वृत्ति जो उसे विनोद करने और विनोदपूर्ण बातें समझने और प्रसन्नतापूर्वक सहन करने मे समर्थ करती है। (सेन्स ऑफ ह्यूमर)

विनोदी (दिन्)— वि०[स० वि√नुद्+णिनि] [स्त्री० विनोदिनी] १ विनोद-सबधी। २ विनोद-प्रिय। जैसे—विनोदी स्वभाव। ३ विनोद के द्वारा जी बहलाने या मन को प्रसन्न करनेवाला। विनोद-शील। ४ हँसी-दिल्लगी करनेवाला। हँसोड।

विन्यसन—पु०[स०] [भू० कृ० विन्यस्त]=विन्यास।

विन्यस्त—भू० कृ० [स० वि+नि√अस् (होना)+क्त] १ रखा हुआ। स्थापित। २ क्रम से या सजाकर रखा हुआ। ३ अच्छी तरह जोडा, बैठाया या लगाया हुआ। ४ फेंका हुआ। क्षिप्त।

विन्यास—पु०[स० वि+नि√अस् (होना)+घञ्] [वि० विन्यस्त]

१ कोई चीज कही स्थापित करना। जमाकर रखना। २ सजाने-सवाँरने, ठीकस्थानपर रखने तथा ठीक क्रम से लगाने की क्रिया या भाव। जैसे—केश-विन्यास, वस्तु-विन्यास।

विपंचक—पु०[स०वि√पच् (विस्तार करना)+ण्वुल्-अक]भविष्यवक्ता।

विपंची—स्त्री०[स० वि√पच+अच्+ङीष्] १ क्रीडा। खेल। २ वीणा की तरह का एक प्रकार का बाजा।

विपक्व—वि०[स० वि√पच् (पकना)+क्त] १ अच्छी तरह पका हुआ। २ पूरी बाढ पर पहुँचा हुआ। ३. जो पका न हो। कच्चा।

विपक्ष—वि०[स० ब० स०] [भाव० विपक्षता] विपक्षी। (दे०)
पु० १ किसी पक्ष या पहलू के सामने या नीचेवाला पक्ष या पहलू। २ किसी पक्ष, दल आदि के विचार से विरोधी पक्ष या दल। विशेषत ऐसा पक्ष या दल जिससे विरोध, शत्रुता, विवाद आदि हो। ३. विरुद्ध व्यवस्था या बाधक नियम। ४ विरोध। ५ व्याकरण मे, किसी नियम के विरुद्ध अथवा उससे भिन्न व्यवस्था। बाधक नियम। अपवाद। ६ तर्कशास्त्र में ऐसा पक्ष जिसमे साध्य का अभाव हो।

विपक्षी(क्षिन्)—वि०[स०] १ (पक्षी) जिसके डैने या पख न हो। २ जिसका सबध विपक्ष (विरोधी दल आदि) से हो। ३ जिसके पक्ष मे कोई न हो। ४ उलटा। विपरीत।
पु० १. विरोधी। २ दुश्मन। शत्रु। ३ प्रतिद्वन्द्वी।
पु०[स० विपक्षिन्] वह जो किसी पक्ष के विरोधी पक्ष मे हो। दूसरा फरीक।

विपचन—पु०[स०] शरीर मे पोषक तत्त्वो या द्रव्यो का पहुँचकर भिन्न-भिन्न रसो आदि के रूप मे परिवर्तित होना। उपापचयन। चयापचयन। (मेटाबोलिज्म)

विपज्जनक—वि०[स०] विपत्ति उत्पन्न करने या लानेवाला।

विपणन—पु०[स०] बाजार मे जाकर माल खरीदने या बेचने की क्रिया या भाव। (मार्केटिंग)

विपणि(णी)—स्त्री० [स०] १ बाजार। हाट। २ बिक्री का माल। ३ क्रय-विक्रय। खरीद-फरोख्त।

विपत्तन—पु०[स० वि+पत्तन] आधुनिक राजविधानो मे किसी ऐसे व्यक्ति को अपने देश से बाहर निकाल देना जो जनता या राज्य के हित के विरुद्ध आचरण या व्यवहार करता हो। देश-निकाला। (डिपोर्टेशन)

विपत्ति—स्त्री०[स० वि√पद् (गमन)+क्तिन्] १ ऐसी घटना या स्थिति जिसके फल-स्वरूप कष्ट, चिन्ता या हानि अधिक मात्रा मे होती हो या होने की सभावना हो।
क्रि० प्र०—आना।—झेलना।—टलना।—ढाना।—पडना।—भुगतना।—भोगना।
२. झझट या बखेड़े का काम या बात।

विपत्र—पु०[स०] वह पत्र जिसमे किसी से प्राप्य धन का ब्योरा होता है। प्राप्यक। (बिल)

विपथ—पु०[स०] १ खराब या बुरा रास्ता। ऐसा रास्ता जिस पर चलने मे कष्ट, हानि आदि हो सकती हो। २ बगल का रास्ता। ३ एक प्रकार का रथ। ४ अनुचित कामो मे प्रवृत्त होना।

विपथगामी(मिन्)—वि०[स०] १ विपथ पर चलनेवाला। २ चरित्र-हीन। कुमार्गी।

विपथन—पु०[स०] [भू० कृ० विपथित] अपने उचित या नियत पथ अथवा मार्ग से हटकर इधर-उधर होना। (एबेरेशन)

विपद्—स्त्री०[स० वि√पद्(गमन)+क्विप्] १ विपत्ति। आफत। सकट। २ मृत्यु। ३ नाश।

विपदा—स्त्री० [स० विपद्+टाप्] १. विपत्ति। आफत। २ दुख। ३ शोक या सकट।

विपन्न—भू० कृ०[स० वि√पद् (गमन)+क्त] १ विपत्ति मे पडा हुआ। विपत्तिग्रस्त। २ कठिनाई या झझट मे पडा हुआ। ३ आर्त्त। दु.खी। ४ धोखे या भ्रम मे पडा हुआ। ५ मरा हुआ। मृत। जो नष्ट हो चुका हो। विनष्ट। ७ भाग्यहीन। अभागा।

विपरीत—वि०[स०वि+परि√इ(गमन)+क्त][भाव०जो विपरीतता]
१ जैसा होना चाहिए उसका उलटा। उलटे क्रम, स्थिति आदि मे होने-वाला। २ जो अनुकूल या मुआफिक न हो। मेल न खानेवाला। ३ नियम के विरुद्ध होनेवाला। गलत। ४ असत्य। मिथ्या।
पु० केशव के अनुसार एक अर्थालकार जिसमे कार्य की सिद्धि मे स्वय साधक या बाधक होना दिखाया जाता है।

विपरीतक—वि०[स० विपरीत+कन्] विपरीत।
पु०=विपरीत रति।

विपरीत रति—स्त्री०[स० कर्म० स०] साहित्य मे ऐसी रति जिसमे सभोग के समय पुरुष नीचे और स्त्री ऊपर रहती है। काम-शास्त्र का पुरुषा-यित बन्ध।

विपरीत लक्षणा—स्त्री०[स० कर्म० स०] किसी चीज की ऐसी व्यग्यपूर्ण अभिव्यक्ति जिसमे परस्पर विरोधी गुणो, लक्षणो आदि का उल्लेख भी हो।

विपरीत लिंग—पु० दे० 'लिंग' (न्यायशास्त्र वाला विवेचन)।

विपरीता—स्त्री०[स० विपरीत+टाप्]१ बदचलन स्त्री। दुराचारिणी। २ दुश्चरित्रा पत्नी।

विपरीतार्थ—वि०[स० कर्म० स०] विपरीत अर्थात् उलटे अर्थवाला।

विपरीतोपमा—स्त्री०[स० ष० त०]केशव के अनुसार एक अलकार जिसमे किसी भाग्यवान् व्यक्ति की हीनता वर्णन की जाय और अति दीन दशा मे दिखाया जाय।

विपर्ण—वि०[स०] जिसमे पर्ण या पत्ते न हो।
पु० एक साथ या आमने-सामने लगी हुई रसीदो आदि का वह बाहरी भाग जो लिख या भरकर किसी को दिया जाता है। (आउटर फॉयल)

विपर्णक—वि०[स० ब० स०] जिसमे पत्ते न हो।
पुं० टेसू। पलास।

विपर्यय—पु० [सं० वि+परि √ ई (गमन)+अच्]१ ऐसा उलट-फेर या परिवर्तन जिससे किसी क्रम के अतर्गत कोई कुछ आगे और कोई कुछ पीछे हो जाय। पारस्परिक स्थान-परिवर्तन करनेवाला हेर-फेर। (ट्रांसपोजीशन) जैसे—'पिटारा' से 'टिपारा' मे होनेवाला वर्ण-विपर्यय। व्यतिक्रम। २ उलटकर फिर पहले रूप, स्थान आदि मे लाना। (रिवर्शन) ३ कुछ को कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रम। ४ गलती भूल। ५ अव्यवस्था। गडबडी। ६ नाश। बरबादी।

विपर्यस्त—भू०कृ०[स० विपरि+अस्त, वि+परि√ अम् (होना)+क्त]
१. जिसका विपर्यय हुआ हो। जो उलट-पलट गया हो। जो इधर

का उधर हो गया हो। २ इधर-उधर बिखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। ३ चौपट। बरबाद। ५. जो ठीक न समझकर उलट दिया या रद्द कर दिया गया हो।

विपर्यास—पु०[स० वि+परि+ अस् (होना)√घञ्] [वि०विपर्यस्त] १ विपर्यय। उलट-पलट। व्यतिक्रम । २ जैसा होना चाहिए, उसके विरुद्ध कुछ और ही हो जाना। ३. भ्रम। भ्रांति।

विपल—पु०[स० व० स०] पल का साठवाँ अग।

विपश्यन—पु०[स०]प्रकृत ज्ञान। यथार्थ बोध। (बौद्ध)

विपश्चित—वि०[स०] जिसे यथार्थ ज्ञान हो। अच्छा ज्ञाता।

विपाक—पु०[स० वि√ पच् (पकना)+घञ्] १ परिपक्व होना। पकना। २ पूरी तरह से तैयार होकर काम मे आने के योग्य होना। ३ खाई हुई चीज का पचना। हजम होना। ४ परिणाम या फल। ५ किये हुए कर्मो का फल। ६ जायका। स्वाद। ७ दुर्गति। दुर्दशा। ८. विपत्ति। ९ विपर्यय।

विपाटन—पु० [स० वि√पट् (गमन) +णिच्+ल्युट्—अन] [वि० विपाटक, भू० कृ० विपाटित] १ उखाडना। खोदना। २ तोडना-फोडना।

विपाटल—वि०[स० तृ० त०] गहरा लाल (रग)।

विपाठ—पुं०[स०] एक तरह का बड़ा तीर।

विपात—पु० [स० वि√ पत् (गिरना)+घञ्] १ पतन। २ नाश।

विपातन—पु०[स० वि√पत् (गिराना)+णिच्+ल्युट्—अन]१. विपात करना। २ गिराना। ३ नष्ट करना। ४ गलाना।

विपादन—पु०[स० वि√ पद् (गमन)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विपादित] १ वध। हत्या। २ क्षय। नाश।

विपादिका—स्त्री०[स० विपाद+कन्+टाप्, इत्व] १ अपरस नामक रोग। २ पैर मे होनेवाली बिवाई। ३ प्रहेलिका। पहेली।

विपाल—वि०[स० व० स०]१ जिसे किसी ने न पाला हो। २ जिसका कोई पालक न हो। अनाथ।

विपासा—स्त्री०[स० विपास+टाप्] पजाब की व्यास नदी का पुराना नाम।

विपिन—पु०[स० √ वेप् (काँपना)+इनन्] १ वन। जगल। २ उपवन। वाटिका। ३ समूह।

वि० घना। सघन।

विपिनचर—वि०[स० विपिन√चर् (चलना)+अच्] १ वन मे रहने-वाला। वनचर।

पु०१ जगली आदमी। २. जगली जीव-जतु।

विपिनतिलका—स्त्री०[स० प० त०,+टाप्] एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, रगण, नगण और दो रगण होते हैं।

विपिनपति—पु०[स० प० त०] वनराज। सिह।

विपिनविहारी—वि०[स० विपिन-वि√हृ (हरण करना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप, विपिन+विहारी] वन मे विचरनेवाला।

पु० श्रीकृष्ण।

विपुंसक—वि०[स० व० स०] नपुसक।

विपुंसी—स्त्री०[स० विपुस +ङीप्] वह स्त्री जिसकी चेष्टा, स्वभाव या आकृति पुरुषो की-सी हो। मर्दानी औरत।

विपुत्र—वि०[स० व० स०] [स्त्री० विपुत्री] जिसके आगे पुत्र न हो। पुत्र-हीन। निपूत।

विपुर—वि०[सं० व० स०] जिसके रहने का स्थान निश्चित न हो।

विपुल—वि०[स०] [स्त्री० विपुला] [भाव० विपुलता] १. सख्या या परिमाण मे बहुत अधिक। २ बहुत बड़ा। विशाल। ३ बहुत गंभीर या गहरा।

पु०१. सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग। २ हिमालय। ३ एक प्रसिद्ध पर्वत जिसकी अधिष्ठात्री देवी विपुला कही गई हैं। ४ राजगृह के पास की एक पहाडी।

विपुलक—वि० [स० व० स०] १. बहुत चौडा। २ पुलक से रहित।

विपुलता—स्त्री०[स० विपुल+तल्+टाप्] विपुल होने की अवस्था या भाव।

विपुला—स्त्री०[स० विपुल+टाप्]१ पृथ्वी। २ विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी। ३ एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, रगण और दो लघु होते है। ४ आर्या छन्द के तीन भेदो मे से एक भेद जिसके प्रथम चरण मे १८, दूसरे मे १२, तीसरे मे १४ और चौथे मे १३ मात्राएँ होती है।

विपुलाई†—स्त्री०=विपुलता।

विपुष्ट—वि०[स०]१ जो अच्छी तरह पुष्ट न हो। २ जिसे भरपेट खाने को न मिलता हो।

विपुष्प—वि०[स० व० स०] पुष्पहीन (वृक्ष)।

विपूयक—पु०[स०√ पूय् (दुर्गन्ध करना)+अच्+कन्] १ सडायँध। २ सडा हुआ मुर्दा। (बौद्ध)

विपृक्त—भू० कृ०[स० वि√पृच् (पृथक् करना)+क्त] अलग किया हुआ।

विपोहना—स०[स० वि+प्रोत]१ पोतना। २. लीपना।

स०=पोहना।

विप्र—पु० [स० √ वप् (बीज फैलाना)+र निपा० सिद्धि, अथवा वि√ प्रा (पूर्ण करना)+ड]१ ब्राह्मण। २. पुरोहित। ३ कर्मनिष्ठ और धार्मिक व्यक्ति। ४ पीपल। ५ सिरस का पेड। ६ पापर या रेणुका नाम का पौधा।

वि० १ मेधावी। २ विद्वान्।

विप्रक—पु०[स० विप्र+कन्] नीच ब्राह्मण।

विप्रकर्षण—पु०[स० वि+प्र√ कृष् (आकर्षण करना)+ल्युट्—अन] [वि० विप्रकृष्ट]१ दूर खीच ले जाना। दूर हटाना। २ काम पूरा करना।

विप्रकार—पु०[स० वि+प्र√ कृ (करना)+घञ्] [वि० विप्रकृत] १ तिरस्कार। अनादर। २ अपकार।

विप्रकीर्ण—वि०[स० वि+ प्र√ कृ (फेंकना)+क्त]१ बिखरा या छित-राया हुआ। इधर-उधर गिरा-पडा। २ अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित।

विप्रकृष्ट—भू० कृ०[स० वि+प्र √कृष् (खीचना)+क्त] १. खीचकर दूर किया हुआ। २ दूर का। दूरस्थ।

विप्रगीत—वि०[स० वि+प्र √ गा (गाना)+क्त, व० स०] जिसके सबंध मे मतभेद हो। (जैन)

विप्र-चरण—पु०[स०] [म० विप्र+चरण] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

विप्रता—स्त्री०[स० विप्र+तल्+टाप्]१ विप्र होने की अवस्था या भाव। २ ब्राह्मणत्व।

विप्रतिपत्ति—स्त्री०[स०]१ मतों, विचारों, स्वार्थों आदि मे होनेवाला झगडा। मतभेद या सघर्ष। विरोध। २ किसी काम या बात पर की जानेवाली आपत्ति। ३ किसी के प्रति होनेवाला शत्रुतापूर्ण भाव। ४ भूल। ५ न्याय मे, ऐसा कथन जिसमे दो परस्पर विरोधी बाते हो। ६. बदनामी।

विप्रतिपन्न—भू० कृ० [स० वि०+प्रति√पद् (गमन)+क्त]१ जिसमे प्रतिपत्ति का अभाव हो। २ सदिग्ध। ३ जो स्वीकृत न हो। अग्राह्य। अमान्य। ४ जो प्रमाणित या सिद्ध न हुआ हो। अप्रमाणित। असिद्ध।

विप्रतिषिद्ध—वि०[स० वि+प्रति√षिध् (मना करना)+क्त]१. जिसका निषेध किया गया हो। निषिद्ध। (स्मृति) २ उलटा। विरुद्ध। ३ मना किया हुआ। वर्जित।

विप्रतिषेध—पु० [स० वि+प्रति √षिध् (मना करना)+घञ्] १ नियन्त्रण मे रखना। २ दो सम कार्य-प्रणालियों का सघर्ष। ३ व्याकरण मे, वह जटिल स्थिति जो दो विभिन्न नियमो के एक साथ प्रयुक्त होने के फलस्वरूप उत्पन्न होती है।

विप्रत्यय—पु०[स०मध्यम स०]प्रत्यय या विश्वास का अभाव। अविश्वास।

विप्रत्व—पु०[स० विप्र+त्व] विप्रता।

विप्रथित—वि० [स० वि√ प्रथ् (ख्यात करना)+क्त] विख्यात। मशहूर।

विप्र-पद—पु०[स० ष० त०]=विप्र-चरण।

वि-प्रपात—पु०[स० तृ० त०]१ विशेष रूप से होनेवाला पतन। बिलकुल गिर जाना। २ ढालुआँ।
पु०=खाई।

विप्र-बधु—पु०[स० ष० त० या ब० स०] १ वह ब्राह्मण जो अपने कर्म से च्युत हो। नीच ब्राह्मण। २ एक मत्रद्रष्टा ऋषि।

विप्रबुद्ध—वि०[स० तृ० त०] [भाव० विप्रबुद्धता]१. अच्छी तरह जागा हुआ और सचेत। जागरूक। २ ज्ञानी।

विप्रमाथी(थिन्)—वि० [स० वि+प्र√मथि (मथन करना)+णिनि] [स्त्री० विप्रमाथिन]१ अच्छी तरह मथन करनेवाला। २ ध्वस या नाश करनेवाला। ३. व्याकुल या क्षुब्ध करनेवाला।

विप्रयुक्त—वि०[स० तृ० त०] १ अलग किया हुआ। २ बिछुडा हुआ। विमुक्त। ३ बाँटा हुआ। विभक्त।

विप्रयोग—पु०[स०] [भू० कृ० विप्रयुक्त]१ अलग या पृथक् होने की अवस्था या भाव। अलगाव। पार्थक्य। २ किसी बात या वस्तु से रहित या हीन होने की अवस्था या भाव। 'सयोग' का विरुद्धार्थक। जैसे—बिना धनुष-बाण के राम। (यदि धनुष-बाण वाला राम कहा जायगा तो वह 'सयोग' कहलाएगा)। ३ साहित्य मे, विप्रलभ के दो भेदो मे से एक, जो उस मानसिक कष्ट या विरह का सूचक है, जो दूसरे से विवाह हो जाने पर कौमार्य अवस्था के प्रेम-पात्र के स्मरण से होता है। (आयोग से भिन्न) ४. वियोग। विरह। ५ बुरा या दुखद समाचार।

विप्रयोगी(गिन्)—वि०[स० वि+प्रयोग+इनि] १ विप्रयोग-सबंधी। २ वियोग करनेवाला। विमुख।

विप्र-राम—पु०[स०] परशुराम।

विप्रर्षि—पु०[स० विप्र+ऋषि] वह ऋषि जो ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुआ हो। जैसे—विप्रर्षि दुर्वासा।

विप्रलंभ—पु०[स०] १ छलपूर्ण व्यवहार। २ बात बनाकर या वादा पूरा न करके किसी को धोखा देना। ३. मतभेद के कारण होनेवाला झगडा। ४ अभीष्ट वस्तु प्राप्त न होना। चाही हुई चीज न मिलना। ५ एक दूसरे से अलग होना। विच्छेद। ६ साहित्य मे, प्रेमी और प्रेमिका का वियोग या विरह। ७ साहित्य में, अलकार का वह प्रकार या भेद जिसमे नायक और नायिका के विरह का वर्णन होता है। ८ अनुचित या बुरा काम।

विप्रलंभक—वि०[स० विप्रलभ+कन्] धोखा देकर या वचन-भग कर दूसरो को छलनेवाला। धूर्त और धोखेबाज।

विप्रलभन—पु० [स० वि+प्र+नुम्√लभ् (वादा करना)+ल्युट्—अन, नुम्] [भू० कृ० विप्रलभित] छल करना। धोखा देना।

विप्रलंभी (भिन्)—वि० [स०] विप्रलभक।

विप्रलब्ध—भू० कृ०[स०]१ जिसे किसी ने छला हो। २ जिसमे वादा-खिलाफी की गई हो। ३ निराश। ४ वचित। ५ जिसका प्रिय से समागम न हुआ हो। वियुक्त।

विप्रलब्धा—स्त्री०[स० विप्रलब्ध+टाप्]१ साहित्य मे, वह नायिका जिसका प्रिय उसे वचन देकर भी सकेत स्थल पर न आया हो। २ वह नायिका जो प्रिय के वचन भग करने तथा सकेत-स्थल पर न मिलने के कारण दुखी हो।

विप्रलाप—पु०[स०]१ व्यर्थ की बकवाद। प्रलाप। २ झगडा। विवाद। ३ दुर्वचन।

विप्रलापी (पिन्)—वि०[स० वि+प्रलाप+इनि] विप्रलाप करनेवाला।

विप्रलुपक—पु० [स० विप्रलुप+कन्] १ बहुत बडा लालची। अतिलोभी। २ वह जो अपने लिए औरो को कष्ट देता या पीडित करता हो। ३. वह शासक जो बहुत अधिक कर लेता हो।

विप्रलुप्त—भू० कृ०[स० तृ० त०] १ जो लूटा गया हो। अपहृत। २ गायब या लुप्त किया हुआ। ३ जिसके काम मे विघ्न डाला गया हो।

विप्रलोप—पु०[स० तृ० त०] [वि० विप्रलुप्त]१ बिलकुल लोप। २ पूरा नाश।

विप्रवाद—पु०[स० मध्यम० स०] १ बुरे वचन। २ बकवाद। ३ कलह। विवाद। ४ मतैक्य का अभाव। मतभेद।

विप्रवास—पु०[स० कर्म० स०] [भू० कृ० विप्रवासित] १ परदेश मे रहना। प्रवास। २ सन्यासी का अपने वस्त्र दूसरे को देना जो एक अपराध या दोष माना गया है।

विप्र-व्रजनी—स्त्री०[स०] दो पुरुषो से यौन-सबध रखनेवाली स्त्री।

विप्रश्न—पु०[स० मध्यम० स०] ऐसा प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष के द्वारा दिया जाय।

विप्रश्निक—पु०[स०] [स्त्री० विप्रश्निका] दैवज्ञ। ज्योतिषी।

विप्र-हरण—पु०[स० मध्य० स०] १ परित्याग। २. मुक्ति।

विप्राधिप—पुं०[स० ष० त०] चद्रमा।

विप्रिय—वि०[सं० वि√ प्री (प्रसन्न करना)+क्त]१ जो प्रिय न हो। अप्रिय। २. कटु और तीक्ष्ण। ३ जो रुचि के अनुकूल न हो। पु०१. अप्रिय काम या वात। २ अपराध। कसूर। ३ वियोग। विरह।

विप्रेत—वि०[स० तृ० त०]१. वीता हुआ। गत। २ अस्त-व्यस्त। छिन्न-भिन्न।

विप्रेषित—भू० कृ० [स० वि+प्र√वस् (निवास करना)+क्त] १. देश से निकाला हुआ। २ देश से वाहर गया हुआ । ३ अनुपस्थित ।

विप्लव—पु० [स० वि√ प्लु (तैरना, कूदना)+अप्]१. पानी की वाढ। २ किसी चीज का पानी मे डूवना। ३. उथल-पुथल। हल-चल। ४ उत्पात। उपद्रव। ५. देश या राज्य मे होनेवाला ऐसा उपद्रव जिससे शाति मे वाधा पडे। वलवा। ६ आफत। विपत्ति। ७ विनाश। ८ डाँट-डपट। ९. अनादर। १० घोडे की वहुत तेज चाल।

विप्लवक—वि०[स० विप्लव+कन्] विप्लव करनेवाला।

विप्लवी (विन्)—वि०[सं० वि√ प्लु +णिनि] १ क्राति करनेवाला। २. क्षण-भगुर।

विप्लाव—पु० [स० वि√ प्लु+घञ्] १ पानी की वाढ। २. घोडे की वहुत तेज चाल।

विप्लावक—वि० [स० वि√ प्लु +ण्वुल्—अक] विप्लव करने या करानेवाला।

विप्लावन—पु० [स० व० स० या मध्यम० स०] १ निंदा करना। २ अपशब्द कहना।

विप्लावी—वि०[स० विप्लाविन्] [स्त्री० विप्लाविनी] १ उपद्रव करनेवाला। २. वाढ लानेवाला। ३ निंदक।

विप्लुत—वि०[स०] [भाव० विप्लुति] १. छितराया या विखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। २ घवराया हुआ। हक्का-वक्का। ३ तोडा या भग किया हुआ (वचन आदि)। ४ आचार-भ्रष्ट। चरित्रहीन। ५ नियम, प्रतिज्ञा आदि से च्युत। ६ अस्पष्ट। ७ विपरीत। विरुद्ध।

विप्सा—स्त्री०=वीप्सा। (दे०)

विफल—वि०[स०]१. (वृक्ष) जिसमे फल न लगे हो या न लगते हो। २ जिसके अण्डकोश न हो या काट दिये गये हो। ३ निरर्थक। ४ जिसका उद्देश्य सिद्ध न हुआ हो। ५ जिसके प्रयत्न का कोई फल न हुआ हो। ६ जो परीक्षा मे अनुत्तीर्ण हुआ हो।

विफलता—स्त्री०[स० विफल+तल्+टाप्] विफल होने की अवस्था या भाव।

विबंध—पु०[स० व० स०]१. वहुत कडा वन्धन। २ पेट के अफरा नामक रोग का एक भेद। ३ अनाज, भूसे आदि का ढेर। ४ वैलो आदि के कन्धे पर रखा जानेवाला जूआ। जुआठा। ५. चौडी और वडी सडक। राजमार्ग। ६ प्राचीन काल मे, वह आय जो राजा को प्रजा से होती थी। ७ वन्धन। हथकडी।

विबंधन—पु०[स० तृ० त०] [वि० विवधक]१. वाँधने की क्रिया या भाव। २ पीठ, छाती, पेट आदि के घाव या फोडे पर वाँधी जानेवाली पट्टी। (सुश्रुत) ३ वाधा। रुकावट।

५—१०

विबंधु—वि०[सं० व० स०, वि+ वन्धु] १. जिसके भाई-वधु न हों। वन्धुहीन। २ अनाथ।

विबल—वि०[स० मध्यम० स०]१ वल या शक्ति से रहित। अशक्त। २ विशेष रूप से वलवान्। वहुत वडा वली।

विबाध—वि०[स० व० स० या मध्यम० स०] वाधारहित।

विबुद्ध—वि०[स० तृ० त०, वि+ वुद्ध,] [भाव० विवुद्धता]१. जागा हुआ। जाग्रत। २ खिला हुआ। विकसित। ३ ज्ञानवान्।

विबुध—पु०[स० वि√ वुध् (जानना)+क] १ पडित। वुद्धिमान्। २. देवता। ३ चन्द्रमा। ४. शिव।
वि० विद्वानो से रहित।

विबुधतरु—पु० [प० त०] कल्पवृक्ष।

विबुधधेनु—स्त्री०[स०] कामधेनु।

विबुधनदी—स्त्री०[ष० त०] आकाश-गगा।

विबुधपति—पु०[ष० त०] देवताओ का राजा, इन्द्र।

विबुधपुर—पु० [स० ष० त०] देवताओ का देश, स्वर्ग।

विबुधप्रिया—स्त्री०[स०] चचरी या चर्चरी नामक छद का दूसरा नाम।

विबुधबेलि—स्त्री०[स० ष० त०] कल्पलता।

विबुध-वन—पु०[स० ष० त०] इन्द्र का कानन।

विबुध-विलासिनी—स्त्री०[स० ष० त०]१ देवागना। २ अप्सरा।

विबुध-वैद्य—पु०[स० ष० त०] देवताओ के चिकित्सक, अश्विनीकुमार।

विबुधाचार्य—पु०[स० विवुध+आचार्य, ष० त०] वृहस्पति।

विबुधान—पु०[स० वि√ वुध (जानना)+शानच्]१ पडित। आचार्य। २. देवता।

विबुधापगा—स्त्री० [स० विवुध-आपगा, ष० त०] आकाश गगा।

विबुधावास—पु० [स० ष० त०, विवुध +आवास] १ स्वर्ग। २ देव-मन्दिर।

विबुधेंद्र—पु०[सं० विवुध+इन्द्र, ष० त०] इद्र।

विबुधेश—पु० [स० ष० त० विवुध+ईश] देवताओ का राजा, इन्द्र।

विबोध—पु०[स० मध्यम० स०]१ जागरण। जागना। २. अच्छा और पूरा ज्ञान। ३ चेतनता। होश-हवाश।
वि० जिसे वोध या ज्ञान न हो।

विबोधन—पु० [स० वि√वुध् (जानना)+ल्युट्—अन्] [भू० कृ० विवोधित] १ जगाना। प्रवोधन। २ ज्ञान कराना। ३. ढाढस या सात्वना देना। ४ प्रस्फुटित करना। खिलाना।

विब्वोक—पु०[स०] विब्वोक (हाव)।

विभंग—पु०[स० व० स०] [भू० कृ० विभग्न] १ सव चीजें यथास्थान रखना या लगाना। विन्यास। २ टूटना। ३ विभाग। ४ विश्रृखल होना। ५ भौंहो से की जानेवाली चेष्टा। भ्रू-भग। ६ मन का भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा। ७ किसी कडी या ठोस चीज का आघात आदि के कारण वीच से टूट जाना। (फ्रैक्चर) जैसे—अस्थिविभग।

विभंगि—स्त्री०[स० विभग+इनि] १ अनुकृति। २. भगी।

विभंगी (गिन्)—वि०[स० वि√ भज् (भग होना)+णिनि]१ कप-शील। २ झुर्रियोवाला।

विभंगुर—वि०[सं०] अस्थिर।
विभक्त—भू० कृ० [सं० वि√ भज् (भाग करना)+क्त, तृ० त०] १. जिसके विभाग किए गए हो। २ अलग किया हुआ। ३. बाँटा हुआ। ३. जिसे पैतृक संपत्ति मे से अपना अंश प्राप्त हो गया हो।
पु० वह अंश जो किसी को पैतृक सपत्ति मे से प्राप्त हुआ हो।
विभक्तज—पु० [सं० विभक्त+√ जन् (उत्पन्न होना) +ड] सम्पत्ति के बँटवारे के बाद पैदा होनेवाला लडका। (स्मृति)
विभक्तवाद—पु०[सं०] [वि० विभक्तवादी] यह मत या सिद्धान्त कि त्यागियो तथा साधुओ को संसार या समाज से अलग रहना चाहिए।
विभक्ति—स्त्री० [सं० वि√भज् +क्तिन्] १. विभक्त करने या होने की अवस्था या भाव। विभाग। बाँट। २ अलगाव। पार्थक्य। ३. संस्कृत व्याकरण के अनुसार शब्द मे लगनेवाला वह प्रत्यय जिसमे उस शब्द का कारक, लिंग तथा वचन जाना जाता है।
विभज्य—वि०[सं०]=विभाज्य।
विभर—वि०[सं० विभा] १. प्रकाशमान्। २ तेजस्वी।
विभव—पु०[सं०] १ ईश्वर का अवतार। २ ऐश्वर्य। ३. धन-संपत्ति। ४. बल। शक्ति। ५ उदारता। ६ अधिकता। बहुतायत। ७ मोक्ष। ८ पालन। ९ विकास। १० छत्तीसवाँ संवत्सर।
विभवकर—पु०[सं०] वह कर जो किसी की धन-संपत्ति या वैभव के विचार से लिया जाता है। (वेल्थ टैक्स)
विभवशाली—वि०[सं०] १ संपत्तिशाली। २. शक्तिशाली।
विभवी (विन्)—वि०[सं० विभव+इनि, दीर्घ, नलोप]=विभवशाली।
विभाँति—स्त्री०[सं० वि+ हिं० भाँति] प्रकार। किस्म।
वि० अनेक प्रकार का।
अव्य० अनेक प्रकार से।
विभा—स्त्री०[सं० वि√भा (प्रकाश करना) +क्विप्] १. प्रभा। कान्ति। २. किरण। रश्मि। ३ छवि। शोभा।
विभाकर—वि०[सं०] प्रकाश करने या फैलानेवाला।
पु० १. सूर्य। २ आक। मदार। ३ चित्रक। चीता। ४. अग्नि। आग। ५. राजा।
विभाग—पु०[सं० वि+ भज् (भाग करना)+ घञ्] १ कोई चीज कई टुकडो या भागो मे बाँटना। २ उक्त प्रकार से अलग किया हुआ अंश या टुकडा। ३ ग्रन्थ का परिच्छेद या प्रकरण। ४ कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए अलग किया हुआ क्षेत्र (डिपार्टमेन्ट)। जैसे—न्याय-विभाग। ५ कार्य-संचालन के सुभीते के लिए किसी कार्य-क्षेत्र के कई छोटे-छोटे हिस्सो मे से हर एक (सेक्सन)। ६ किसी विशिष्ट कार्य के लिए निश्चित किया हुआ क्षेत्र या खंड (डिविजन)।
विभागक—पु०[सं० विभाग+कन्] १ विभाग करनेवाला। विभाजक। २. विभागीय। (दे०)
विभागात्मक-नक्षत्र—पुं० [सं० कर्म० स०] रोहिणी आर्द्रा, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा और श्रवण आदि आठ प्रकाशमान् नक्षत्र।
विभागी (गिन्)—वि०[सं० वि√भज् (भाग करना)+ णि] १. विभाग। २ हिस्सेदार।
विभागीय—वि०[सं०] किसी विशिष्ट विभाग मे होने या उससे संबंध रखनेवाला। (डिपार्टमेन्टल) जैसे—विभागीय कार्रवाई।
विभाजक—वि०[सं० वि√भज् (भाग करना)+ण्वुल्-अक] १ विभाजन करनेवाला। २ बाँटनेवाला।
पु० वह संख्या या राशि जिससे दूसरी संख्या को भाग दिया जाय। (गणित)
विभाजन—पु० [सं० वि√भज् (भाग करना)+णिच्+ल्युट्-अन] १ हिस्से लगाना। विभाग करना। २. संयुक्त संपत्ति आदि को उसके स्वामियो द्वारा आपस मे बाँटना। ३. पात्र। बरतन।
विभाजित—भू० कृ०[सं० वि√भज् (भाग करना)+णिच्+क्त] १ जिसका विभाजन हो चुका हो। २ विभाजन द्वारा जिसका अंश अलग किया या निकाल लिया गया हो। खंडित। जैसे—विभाजित भारत।
विभाज्य—वि०[सं० वि√भज् (भाग करना)+ण्यत्] जिसका विभाजन हो सके या होने को हो।
विभात—पु०[सं० वि√भा (प्रकाश करना)+क्त] सवेरा। प्रभात।
विभाति—स्त्री० [सं० वि√भा (प्रकाश करना) +क्तिन्] शोभा। सुंदरता।
विभाना—अ०[सं० विभा+हिं० ना (प्रत्य०)] १. चमकना। शोभित होना। फबना।
स० १. चमकाना। सुशोभित करना।
विभाव—पु० [सं०] साहित्य मे, वह निमित्त या हेतु जो आश्रय मे भाव जाग्रत या उद्दीप्त करता हो। इसके दो भेद है—आलंबन और उद्दीपन।
विभावक—वि०[सं० विभाव+कन्] १. अभिव्यक्त करनेवाला। २. तर्क करनेवाला।
विभावन—पु०[वि√भू (होना)+णिच्+युच्-अन] १. सोचने की क्रिया या भाव। २. अनुभूति। ३ परीक्षण। ४. तर्क। ५. साहित्य मे, वह स्थिति जिसमे कविता या नाटक के पात्र के साथ पाठक या दर्शक का तादात्म्य होता है।
विभावना—स्त्री०[सं०] १. कल्पना। २ कारण के अभाव मे कार्य की होनेवाली कल्पना। ३ उक्त के आधार पर साहित्य मे एक विरोध-मूलक अर्थालंकार।
विशेष—यह पाँच प्रकार का कहा गया है—(क) कारण के अभाव मे कार्य होना, (ख) अपर्याप्त कारण से कार्य होना, (ग) प्रतिबंधक तत्त्व के होने पर भी कार्य होना, (घ) विरुद्ध कारण द्वारा कार्य होना, और (ङ) कार्य से कारण की व्युत्पत्ति होना।
विभावनीय—वि०[सं० वि√भू (होना)+णिच्+अनीयर्] जिसकी भावना अर्थात् चिंतन या विचार हो सके।
विभावरी—स्त्री० [सं० वि√भा (प्रकाश करना)+वनिप्+ङीप् आदेश] १ रात्रि। रात। २ तारो से जगमगाती हुई रात। ३ चतुर और मुखरा स्त्री। ४. कुटनी। दूती। ५. पतिता स्त्री। ६. रखैल। ७ हलदी। ८ मेदा। ९ प्रचेतस की नगरी का नाम।
विभावरीश—पु०[सं० विभावरी-ईश, ष० त०] निशापति। चन्द्रमा।
विभावसु—वि०[सं० ब० स] जिसमे विशेष प्रकाश हो। अधिक प्रभा-वाला।
पु०१ सूर्य। २. अग्नि। ३ चन्द्रमा। ४. वसुओ के एक पुत्र। ५ नरकासुर का पुत्र एक दानव। ६ एक गधर्व जिसने गायत्री से वह सोम

छीना था, जो वह देवताओ के लिए ले जा रही थी। ७ आक। मदार। ८. चित्रक। चीता। ९. गले मे पहनने का एक प्रकार का हार।

विभावित—भू० कृ० [स० तृ० त०] १ जिसकी विभावना हुई हो। कल्पित। २ निश्चित। ३ गृहीत या स्वीकृत।

विभावी(विन्)—वि०[सं० वि√भू (होना)+णिनि,] १ भावो का उदय करनेवाला। २ प्रकट करनेवाला। ३ शक्तिशाली।

विभाव्य—वि०[स० वि√भू (होना)+ण्यत्] जिसके सबध मे विभावना या विचार हो सकता हो। विभावना के लिए उपयुक्त।

विभाषा—स्त्री० [सं०] [वि० वैभाषिक] १ यह कहना कि ऐसा हो भी सकता है और नही भी हो सकता। २ व्याकरण मे, ऐसा प्रयोग जिसके सबध मे उक्त प्रकार के दोहरे मत, विचार या सिद्धान्त मिलते हो। ३ उक्त मतो, नियमो आदि के चुनाव के सबध मे होनेवाली स्वतत्रता। ४ भाषा-विज्ञान मे, किसी भाषा की कोई ऐसी बडी शाखा जो उसके विशिष्ट विभाग के अतर्गत हो और जिसके कई स्थानिक भेद, प्रभेद भी हो। बोली। (डायलेक्ट)

विभाषित—वि०[स० विभाषा+इतच्] जो इस रूप मे कहा गया हो कि ऐसा हो भी सकता है और नही भी हो सकता।

विभास—पु०[सं० वि√भास् (प्रकाश करना)+अप्] १ चमक। दीप्ति। २. सगीत मे सवेरे गाया जानेवाला एक प्रकार का राग। ३ पुराणानुसार एक देव-योनि। ४ तैत्तरीय आरण्यक के अनुसार, सप्तर्पियो मे से एक।

विभासक—वि० [स० विभास+कन्] [स्त्री० विभासिका] १ चमकने या चमकानेवाला। प्रकाशयुक्त। २ प्रकट या व्यक्त करनेवाला।

विभासना—अ०[स० विभास+हिं० ना (प्रत्य०)] १ चमकना। २ विभासित होना। जान पडना।

विभासा—स्त्री०[स० विभास+टाप्] १ प्रकाश। २ चमक। ३. काति।

विभासित—भू० कृ०[स०] १ प्रकाशित। २ चमकता हुआ। ३ काति से युक्त।

विभिन्न—भू० कृ० [स०] [भाव० विभिन्नता] १ काट या छेदकर अलग किया हुआ। २. अलग। पृथक्। ३ जो ठीक वैसा ही न हो जैसा कि कोई और प्रस्तुत पदार्थ हो। ४ जिनमे परस्पर कुछ न कुछ विभेद या असमता दिखाई दे।

विभिन्नता—स्त्री०[स० विभिन्न+तल्+टाप्] १ विभिन्न होने की अवस्था या भाव। २ वह तत्त्व जो दो या अधिक वस्तुओ का भेद दरशाता हो। ३. फरक। अतर।

विभीत—भू० कृ० [स० वि√भी (भय करना)+क्त, तृ० त०] [भाव० विभीति] भय-भीत।

विभीति—स्त्री०[स० वि√भी (भय करना)+क्तिन्] १ डर। भय। २ शंका। ३ सन्देह।

विभीषक—वि०[स० वि√भीष् (भयभीत होना)+ण्वुल्—अक] डरानेवाला। भयानक।

विभीषण—वि०[स० वि√भीष् (भयभीत होना)+ल्यु—अन] [स्त्री० विभीषणा] बहुत अधिक भीषण।

पु० १. रावण का एक भाई जिसे राम ने रावण की मृत्यु के उपरात लका का राजा बनाया था। २. अपने भाई-बधुओ से द्रोह करके शत्रुओ के साथ जा मिलनेवाला व्यक्ति। (व्यग्य) ३ नरसल। ४ एक तरह का मुहूर्त।

विभीषिका—स्त्री०[स० विभीषा+कन्+टाप्, इत्व] १ भय-प्रदर्शन। डर दिखाना। २ वह साधन जिससे किसी को भयभीत किया जाय। ३ भय का वह उग्र रूप जिसके उपस्थित होने पर मनुष्य किंकर्तव्य-विमूढ हो जाता है। त्रास। (ड्रेड)

विभु—वि०[स० वि√भू (होना)+डु] [भाव० विभुता] १ जो सर्वत्र वर्तमान हो। सर्वव्यापक। जैसे—दिक्, काल, आत्मा आदि। २ जो सब जगह जा या पहुँच सकता हो। ३ बहुत बडा। महान्। ४. सदा बना रहनेवाला। नित्य। ५ अपने स्थान से न हटनेवाला। अचल। अटल। ६. ऐश्वर्यशाली। ७ शक्तिशाली। सशक्त।

पु० १ ब्रह्म। २. जीवात्मा। ३ ईश्वर। ४ शिव। ५ विष्णु। ६ प्रभु। स्वामी। ७ नौकर। सेवक।

विभुता—स्त्री०[स० विभु+तल्+टाप्] १ विभु होने की अवस्था या भाव। सर्वव्यापकता। २ ऐश्वर्य। वैभव। ३ प्रभुत्व। ४ शक्ति।

विभूति—स्त्री०[स० वि√भू (होना)+क्तिन्] १ बहुत अधिक होने की अवस्था या भाव। बहुतायत। विपुलता। २ बढती। वृद्धि। ३ धन-धान्य आदि की यथेष्टता। ऐश्वर्य। विभव। ४ धन-सपत्ति। दौलत। ५ भगवान् विष्णु का वह ऐश्वर्य जो नित्य और स्थायी माना जाता है। ६ अणिमा, महिमा आदि अलौकिक या दिव्य शक्तियाँ। ७. चिता की वह राख या भस्म जो शिव जी अपने शरीर पर पोतते थे। ८ यज्ञ, होम आदि के बाद बची हुई राख जो शैव लोग माथे पर या शरीर मे लगाते है। ९ लक्ष्मी। १० एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। ११ सृष्टि। १२ प्रभुत्व।

विभूमा(मन)—वि० [स० वि√भू (होना)+मनिन्, विजहु+इमनिच्, वहु—भू वा] ऐश्वर्य्यवान्। शक्तिशाली।

पु० श्रीकृष्ण।

विभूषण—पु०[स० वि√भूष् (भूषित करना)+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० विभूष्य, भू० कृ० विभूषित] १ आभूषणो अर्थात् गहनो से सजाना। २ आभूषण, गहना अथवा अलकरण का कोई और उपकरण। ३ सौन्दर्य। ४ मजुश्री का एक नाम। (बौद्ध)

विभूषना—स० [स० विभूषण] १ विभूषित करना। २ गहनो आदि से सजाना। ३ सजाना-सँवारना। ४ शोभा से युक्त करना।

विभूषा—स्त्री० [स० विभूषण—टाप्] १. आभूषणो, गहनो अथवा सजावट के उपकरणो से युक्त होने की अवस्था। २ उक्त अवस्था से प्रस्फुटित होनेवाली शोभा।

विभूषित—भू० कृ०[स० वि√भूष् (भूषित करना)+क्त] १ आभूषणो से सजा या सजाया हुआ। अलकृत। २ अच्छी बातो या गुणो से युक्त। ३ शोभित।

विभूष्य—वि०[स० वि√भूष् (भूषित करना)+यत्] विभूषित किये जाने के योग्य। सजाये जाने के योग्य।

विभेद—पु० [स० वि√भिद् (काटना)+अच्, घञ्-वा] १ वह तत्त्व जो दो वस्तुओ मे होनेवाली असमता का द्योतक हो। २ अनेक भेद और प्रभेद। ३ कटा हुआ अश, छेद या दरार। ४ खड। विभाग। ५ एक से विकसित होकर अनेक रूप बनना। ६ मिश्रण। मिलावट।

७ दे० 'विभेदन'। ८ विशेष रूप से किया हुआ अलगाव या भेद। (डिस्क्रिमिनेशन)

विभेदक—वि०[सं० वि√भिद्+ण्वुल-अक] १. भेदन करनेवाला। काटने या छेदनेवाला। २ विभेद उत्पन्न करनेवाला। ३ भेदने या छेदनेवाला। ४ घुसने या धँसनेवाला। ५ अन्तर या भेद दिखलाने या बतलानेवाला। ६ आपस मे मतभेद करानेवाला।
पु० विभीतक। बहेडा।

विभेदकारी (रिन्)—वि०[सं०विभेद√कृ(करना)+णिनि]=विभेदक।

विभेदन—पु०[सं० वि√भिद्+ल्युट् अन] [वि० विभेदनीय, विभेद्य, भू० कृ० विभेदित] १ बीच मे से छेदना या भेदना। २ काटना या तोडना। ३ खंड या टुकडे करना। ४ अलग या पृथक् करना। ५. अन्तर या भेद उत्पन्न करना, मानना या समझना। ६ आपस मे मन-मुटाव पैदा करके फूट डालना।

विभेदना—स०[सं० विभेदन] १. भेदन करना। छेदना। काटना। २ विभेद या भेद उत्पन्न करना। ३ छेदते हुए अन्दर घुसना या धँसना। ४. अन्तर उत्पन्न करना। फरक डालना।

विभेदी (दिन्)—वि०[सं०]=विभेदक।

विभेद्य—वि० [सं० वि√भिद् (काटना)+यत्] १ विभेदन के लिए उपयुक्त। जिसका विभेदन हो सके। २. जिसने भेद या अन्तर निकाला जा सके।

विभोर—वि० [सं० विह्वल] १. विकल। विह्वल। २. मग्न। लीन। ३. मत्त। मस्त।

विभौ†—पु०=विभव।

विभ्रंश—पुं०[सं० वि√भ्रश् (नाश करना)+अच्] १ विनाश। ध्वंस। २. अवनति। ३. पतन। ४ पहाड़ के ऊपर का चौरस मैदान। ५ ऊंचा कगार।

विभ्रंशन—पुं०[सं०] [वि० विभ्रंशी, भू० कृ० विभ्रंशित] विभ्रंश करने की क्रिया या भाव।

विभ्रम—पुं०[सं० वि√भ्रम् (चलना)+घञ्) १ चारो ओर घूमना। चक्कर लगाना। भ्रमण। २ किसी काम या बात मे होनेवाला भ्रम। भ्राति। किसी काम या बात मे होनेवाला शक या संदेह। ४ पारस्परिक व्यवहार मे किसी काम या बात का अर्थ, आशय या उद्देश्य समझने मे होनेवाली भूल। और का और समझना। गलत-फहमी। (मिसअन्डर-स्टैंडिंग) ५ मनोविज्ञान मे, किसी विशिष्ट मानसिक विचार के कारण किसी ज्ञानेन्द्रिय के द्वारा होनेवाला ऐसा भ्रम जो प्राय. निराधार होता है। निर्मूल भ्रम। (हैल्यूसिनेशन) जैसे—अँधेरे मे कोई आकृति या भूत-प्रेत दिखाई देना। ६ साहित्य मे, सयोग शृंगार के प्रसग मे स्त्रियों का एक हाव जिसमे वे प्रियतम का आगमन सुनकर अथवा उससे मिलने के लिए जाने के समय उतावली और उत्सुकता के कारण कुछ उलटे-पुलटे गहने-कपड़े पहन लेती हैं। ७ घबराहट। विकलता। ८ शोभा।

विभ्रमी (मिन्)—वि० [सं० वि√भ्रम (घूमना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] चारो ओर घूमने या चक्कर खानेवाला।

विभ्रांत—भू० कृ०[सं०] [भाव० विभ्रांति] १ जो घूम या चक्कर खा चुका हो। २ चारो ओर फैला या बिखरा हुआ। ३ भ्रम मे पड़ा हुआ। ४. घबराया हुआ। ५. अस्थिर। चचल।

विभ्रांति—स्त्री०[सं०वि√भ्रम् (चक्कर खाना)+क्तिन्] १ फेरा। चक्कर। २ भ्रम। भ्रांति। ३ घबराहट।

विभ्राट्—पु०[सं०] १ आपत्ति। विपत्ति। संकट। २. उत्पात। उपद्रव। वि० दीप्त। चमकीला।

विमंडन—पु० [सं० तृ० त०, वि√मण्ड् (सजाना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विमंडित] १. गहनों आदि से सजाना। २ सजाना।
पु० अलंकार। गहना।

विमंडित—भू० कृ० [सं० वि√मण्ड्+क्त, तृ० त०] १ अलंकृत। सजा हुआ। २ सुशोभित। ३ किसी से युक्त। मिला हुआ।

विमत—वि०[मध्य० स०] [भाव० विमति, वैमत्य] १. जिसका मत या विचार अच्छा न हो। २ जो अच्छी राय न देता हो।
पु० १ ऐसा मत या विचार जो किसी के विरुद्ध पडा या दिया गया हो। विमति। (डिस्सेन्ट) २ ऐसी राय जो अनुकूल न हो।

विमति—वि०[सं० मध्यम० स०] जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो। मूर्ख।
स्त्री १ विमत होने की अवस्था या भाव। विरुद्ध मत या विचार। २ खराब या बुरी मति (बुद्धि या विचार) ३ किसी के विपरीत या विरुद्ध मति या विचार। ४. असहमति।

विमत्सर—पु०[सं० मध्यम० स०] बहुत अधिक मत्सर या अहंकार।
वि० मत्सर से रहित।

विमद—वि०[सं० ब० स०] १. मद से रहित। २ (हाथी) जिसे मद न बहता हो।

विमध्य—वि०[वि√मन् (जानना)+यक्, न-ध] [भाव० विमध्यता] १ जिसका अक्ष अपने केन्द्र या ठीक मध्य मे न हो। केंद्र या मध्य से कुछ इधर-उधर हटा हुआ। उत्केंद्र। २. (वृत्त) जिसका मध्य दूसरे वृत्त के मध्य या केन्द्र से भिन्न हो। ३. जो आकृति, गति आदि मे ठीक गोलाकार न हो और इसी लिए वृत्त के हर विंदु से जिसमे एक ही मध्य न पड़ता हो। उत्केंद्र। (एक्सेन्ट्रिक)

विमध्यता—स्त्री०[सं०विमध्य+तल्+टाप्] विमध्य होने की अवस्था या भाव। उत्केंद्रता। (एकसेन्ट्रिसीटी)

विमन—वि०[सं० ब० स० विमनस्]=विमनस्क।

विमनस्क—वि०[सं० ब० स०, कप्] १. अनमना। अन्यमनस्क। २ उदास। खिन्न।

विमर्द—पु०[वि√मद् (रगड़ना)+घञ्] १. रगड़ना। २ रौंदना। ३. संघर्ष। ४ नाश। ५. बाधा। संपर्क। ७ खग्रास (ग्रहण)।

विमर्दक—वि०[सं० विमर्द+कन्] विमर्दन करनेवाला।

विमर्दन—पु०[सं०वि√मृद् (मर्दन करना)+ल्युट्-अन,][वि० विमर्दनीय, भू० कृ० विमर्दित] १ खूब मर्दन करना। अच्छी तरह मलना-दलना। २. खूब रगडना या रौंदना। ३ कुचलना या पीसना। ४ नष्ट करना। ५. मार डालना। ६ बहुत अधिक कष्ट देना या पीड़ित करना। ७ अंकुरित या प्रस्फुटित होना। (सांख्य)

विमर्दित—भू० कृ०[सं० वि√मृद् (रगड़ना)+क्त, तृ० त०] १. मला-दला हुआ। २ कुचला या रौदा हुआ। ३. नष्ट किया हुआ। ४ पीड़ित। ५. अपमानित।

विमर्दी—वि०[सं० विमर्द+इनि, विमर्दिन्] [स्त्री० विमर्दिनी] विमर्दन करनेवाला। विमर्दक।

विमर्श—पु० [वि√मृश् (स्पर्शनादि)+घञ्] १ सोच-विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना। २ किसी बात या विषय पर कुछ सोचना-समझना। विचार करना। ३ गुण-दोष आदि की आलोचना या मीमासा करना। (डेलिवरेशन) ४. जाँचना और परखना। ५ किसी से परामर्श या सलाह करना। ६. ज्ञान। ७ नाटक मे पाँच सधियो मे से एक सधि।
दे० 'विमर्श-सधि'।

विमर्शक—वि० [स०] विमर्श करनेवाला।

विमर्शन—पु० [स० वि√मृश् (तर्क-विवेचन करना)+ल्युट्—अन] [वि० विमृष्ट, विमर्शी भू० कृ० विमर्शित] विमर्श करने की क्रिया या भाव।

विमर्श-संधि—स्त्री० [स०] नाटक की पाँच सधियो मे से एक जो ऐसे अवसर पर मानी जाती है जहाँ क्रोध, लोभ, व्यसन आदि के विमर्श या विचार से फल-प्राप्ति का प्रयत्न किया जाता हो और गर्भ सधि (देखें) के द्वारा यह उद्देश्य बीज रूप मे प्रकट भी हो जाता हो। अवमर्श-सधि।
विशेष—प्रसाद के चद्रगुप्त नाटक मे यह उस समय आती है, जब चाणक्य की नीति से असतुष्ट होकर चन्द्रगुप्त के माता-पिता चले जाते है, और चद्रगुप्त अकेला पडकर अपना असतोष और क्रोध प्रकट करता है और विमर्शपूर्वक साम्राज्य स्थापित करने के लोभ से प्रयत्न आरभ करता है।

विमर्शी (शिन्)—वि० [स० वि√मृश् (विचार करना)+घञ्, विमर्श+इन्] विमर्श अर्थात् विचार या समीक्षा करनेवाला।

विमर्ष—पु० [सं० वि√मृष् (सहन करना)+घञ्] =विमर्श।

विमल—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० विमला, भाव० विमलता] १ जिसमे किसी प्रकार का मल न हो। मलरहित। निर्मल। २ साफ तथा पारदर्शक। जैसे—विमल जल। ३ दूषण, दोष आदि से रहित। जैसे—विमल चरित्र। ४ दर्शनीय। सुन्दर। ५ सफेद तथा चमकता हुआ।
पु० १ चाँदी। २ एक प्रकार की उप-धातु। ३ पद्म-काठ। ४ सेंधा नमक। ५ गत उत्सर्पिणी के ५वे और वर्तमान अवसर्पिणी के १३वें अर्हन् या तीर्थकर। (जैन)

विमलक—पु० [स० विमल+कन्] एक प्रकार का नग या बहुमूल्य पत्थर।

विमलता—स्त्री० [स० विमल+तल्+टाप्] विमल होने की अवस्था, गुण या भाव।

विमलध्वनि—पु० [स० ब० स०] छ चरणो का एक प्रकार का छन्द जो एक दोहे और समान सवैया से मिलकर बनता है।

विमला—स्त्री० [स० प० त०] १ योग मे, सिद्धि की दस भूमियो या स्तरो मे से एक। २ एक देवी जो वास्तुदेव की नायिका कही गई है। ३ सरस्वती। ४ सातला (वृक्ष)।

विमलात्मा (त्मन्)—वि० [स० ब० स०] जिसका हृदय निर्मल तथा शुद्ध हो।
पु० चन्द्रमा।

विमलाद्रि—पु० [स० मध्यम० स०] गुजरात का गिरनार पर्वत।

विमलाशोक—पु० [स० ब० स०] सन्यासियो का एक भेद।

विमली—स्त्री० [म०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विमांस—पु० [स० मध्यम० स०] ऐसा मास जो खराब हो तथा भक्ष्य न हो।

विमा—स्त्री० [म०] [वि० विमीय] किसी दिशा मे काया का होने वाला विस्तार जो नापा जा सकता हो। आयाम। (डाइमेंशन)
विशेष—विमाएँ तीन प्रकार की होती है लंबाई, चौडाई, और ऊँचाई, (जिसके अतर्गत मोटाई या गहराई भी आ जाती है)।
पद—द्विविम, त्रिविम। (दे०)

विमाता (तृ)—स्त्री० [स० मध्यम० स०] सौतेली माँ।

विमातृज—वि [स० विमातृ√जन् (उत्पन्न करना)+ड] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

विमान—वि० [ब० स०] जिसका कोई मान न हो। मान से रहित।
पु० १ पुराणानुसार देवताओ का वह यान या रथ जो आकाश-मार्ग से चलता था। २ आज-कल आकाश-मार्ग से उडनेवाला यान या सवारी। वायुयान। हवाई जहाज। ३ महात्मा, वृद्ध आदि के शव की ऐसी अरथी जो फूल-मालाओ आदि से खूब सजाई गई हो। ४ रासलीला आदि के जलूस मे वह चौकी जिस पर देवताओं की मूर्तियाँ रखकर आदमी लोग कधे पर उठाकर चलते है। ५ रथ। ६ घोडा। ७ सात खडोवाला मकान। ८ परिमाण। ९ वास्तुकला मे, ऐसा देवमदिर जिसका ऊपरी भाग बहुत ऊँचा और गावदुमा या लबोतरा हो।

विमान-चालक—पु० [प० त०] वह जो हवाई जहाज या वायु-यान चलाता है।

विमान-चालन—पु० [प० त०] हवाई जहाज चलाने की विद्या या क्रिया (एविएशन)

विमानन—पु० [स०] विमान अर्थात् हवाई जहाज चलाने की कला, क्रिया या विद्या। (एयर नैविगेशन)

विमान-पत्तन—पु० [म०] हवाई अड्डा। (एयर-पोर्ट)

विमान-वाहक—पु० [स० विमान+वाहक] एक प्रकार का समुद्री जहाज जिसके ऊपर बहुत लबी-चौडी छत होती है और जिस पर बहुत से हवाई जहाज रहते है।

विमानित—भू० कृ० [स० वि√मान् (मान करना)+ क्त, विमान+इतच् वा] जिसका अपमान हुआ हो।

विमार्ग—पु० [कर्म० स०] १ बुरा रास्ता। कुमार्ग। २ बुरा आचरण। ३. झाडू। बुहारी।

विमार्गा—स्त्री० [स०] दुश्चरित्रा स्त्री।

विमार्जन—पु० [स० वि√मृज् (शुद्ध करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विमार्जित] १ धोना। २ साफ करना। ३ पवित्र करना।

विमासना†—अ० [स० विमर्श] राय या विचार करना। विमर्श करना।

विमित—वि० [स०] परिमित। सीमित।
पु० १ भवन। २ विशेषत ऐसा भवन जो चार खभो पर आश्रित हो। ३ बडा कमरा।

विमिश्र—वि० [सं० तृ० त०] १ जिसमे कई तरह की चीजो का मेल हो। मिला-जुला। २ जो विशुद्ध हो।

विमिश्रा—स्त्री० [स० विमिश्र+टाप्] मृगशिरा, आर्द्रा, मघा और अश्लेषा नक्षत्रो मे बुध की होनेवाली गति जिसका मान ३० दिनो तक रहता है।

विमिश्रित—भू० कृ० [स०] जिसमे कई तरह की चीजे मिली हो या मिलाई गई हो।

विमीय—वि० [स०] विमा-सबधी। विमा का। (डाइमेंशनल)

विमुक्त—भू० कृ० [स० तृ० त०] [भाव० विमुक्तता, विमुक्ति] १ कैद, पाश, बधन आदि से जो छूट चुका हो या छोड दिया गया हो। स्वतत्र हुआ या किया हुआ। २. दड आदि से छूटा हुआ। ३ चलाया या छोडा हुआ। जैसे—विमुक्त बाण। ४. स्वच्छदतापूर्वक विचरण करनेवाला। ५ बरखास्त। कार्य-भार से मुक्त किया हुआ।

विमुक्ति—स्त्री० [स०] १. विमुक्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। कष्ट, सकट आदि से होनेवाला छुटकारा। ३ कार्य-भार, नियम, बधन आदि से मिलनेवाला छुटकारा। (एग्जेम्प्शन) ४ विछोह। ५ मोक्ष।

विमुख—वि० [ब० स०] [स्त्री० विमुखी, भाव० विमुखता] १ जिसने किसी ओर से मुँह फेर या मोड लिया हो। २ फलत जो किसी से उदासीन या विरक्त हो चुका हो। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध। ४. जो फल-प्राप्ति से वचित रहा हो।

विमुखता—स्त्री० [स० विमुख+तल्+टाप्] विमुख होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

विमुग्ध—वि० [स० वि√मुह् (मुग्ध करना)+क्त] [भाव० विमुग्धता] १ मोहित। आसक्त। २ भ्रम मे पडा हुआ। भ्रान्त। ३. घबराया और डरा हुआ। विकल। ४ उन्मत्त। मतवाला। ५ पागल। बावला। ६ अचेत। बेसुध।

विमुग्धक—वि० [स० विमुग्ध+कन्] विमुग्ध करनेवाला।
पु० साहित्य मे, एक प्रकार का छोटा अभिनय।

विमुद्र—वि० [स० ब० स०] १ जिस पर मोहर या छाप न लगी हो। २ जिसका मुँह बन्द न हो। खिला या खुला हुआ।

विमुद्रण—पु० [स० वि+मुद्रा+युच्–अन, तृ० त०] [भू० कृ० विमुद्रित] १ मुद्रा या छाप तोडना या हटाना। २ खिलने मे प्रवृत्त करना।

विमूढ—वि० [सं०] [स्त्री० विमूढा, भाव० विमूढता] १ विशेष रूप से मुग्ध। अत्यन्त मोहित। २ भ्रम या मोह मे पडा हुआ। ३ अचेत। बेसुध। ४ बहुत बडा। मूढ या नासमझ।
पु० १ एक देवयोनि। २ एक प्रकार की संगीत-कला।

विमूढक—पु० [स० विमूढ+कन्] साहित्य मे एक प्रकार का प्रहसन।

विमूढ गर्भ—पु० [स० ब० स०] ऐसा गर्भ जिसमे बच्चा मर गया हो या मर जाता हो।

विमूर्च्छ—वि० [स०] जिसकी मूर्च्छा दूर हो गई हो।

विमूर्च्छित—वि० [स०]=मूर्च्छित (बेहोश)।

विमूल—वि० [स० ब० स०] १ मूल से रहित। बिना जड़ का। २ मूल से उखाडा या हटाया हुआ। ३ ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। बरबाद।

विमूलन—पु० [स० वि√मूल् (स्थित करना)+ल्युट्–अन] १ जड से उखाडना। उन्मूलन। २ ध्वस। विनाश।

विमृश—पु० [स०] विमर्श।

विमृश्य—वि० [स० वि√मृश् (विचार करना)+यत्] जिसके विषय मे विमर्श अर्थात् आलोचना या विवेचन हो सके या होने को हो। विमर्श के योग्य।

विमृष्ट—भू० कृ० [स० वि√मृश् (विचार करना)+क्त] १ जिसके सबध मे विमर्श अर्थात् आलोचना या विवेचन हो चुका हो। २. अच्छी तरह विचारा हुआ।

विमोक—वि० [स० ब० स०] १. दुर्वासना, द्वेष, राग आदि से युक्त या रहित। २ जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। ३ स्पष्ट। साफ।
पु० छुटकारा। मुक्ति।

विमोक्ता (क्तृ)—वि० [स० वि√मुच् (छोडना)+तृच्] विमुक्त करने या छुडानेवाला।

विमोक्ष—पु० [स० वि√मोक्ष् (छोडना)+अच्] १. छुटकारा। २ जन्म-मरण के बन्धन से होनेवाला छुटकारा। मुक्ति। ३. पकडी हुई चीज इधर-उधर छोडना या फेंकना। ४. चन्द्रमा या सूर्य के ग्रहण का अन्त। उग्रह। ५. मेरु पर्वत। ६ दे० 'मोक्ष'।

विमोक्षण—पु० [स० वि√मोक्ष् (छोडना)+ल्युट्–अन [भू० कृ० विमोक्षित] १. बधन आदि खोलना। मुक्त करना। २ हथियार आदि चलाना या छोडना।

विमोक्षी (क्षिन्)—वि० [स० वि√मोक्ष् (छोडना)+णिनि] जिसे मुक्ति या निर्वाण प्राप्त हुआ हो।

विमोघ—वि० [स० ब० स०] १. अमोघ (अचूक)। २ व्यर्थ। बेकार।

विमोचक—वि० [स० वि०√मुच् (छोडना)+ण्वुल्–अक] मुक्त करने या करानेवाला।

विमोचन—पु० [स० वि√मुच् (छोडना)+ल्युट्–अन] [वि० विमोचनीय, विमोच्य, भू० कृ० विमोचित] १ बधन आदि खोलकर मुक्त करना, छुडाना या छोडना। २. सवारी मे से खीचनेवाले जानवर को खोलना। जैसे—गाडी या रथ मे से घोडों या बैलों का विमोचन। ३. किसी प्रकार के नियत्रण, सीमा आदि से अलग या बाहर करना। जैसे–रथ से अश्व-विमोचन। (ख) धनुष से बाण का विमोचन। ४ गिराना या फेंकना।

विमोचना†—स० [स० विमोचन] १ विमोचन अर्थात् मुक्त करना या कराना। २ किसी पर से रोक उठा या हटा लेना जिससे वह स्वच्छद गति प्राप्त कर सके। ३ गिराना। ४ निकालना।

विमोच्य—वि० [स० वि√मुच् (छोडना)+यत्] जिसका विमोचन हो सकता हो या होने को हो। मुक्त होने के योग्य।

विमोह—पु० [स० वि√मुह् (मुग्ध करना)+घञ्] १ अज्ञान, भ्रम आदि के कारण उत्पन्न होनेवाला मोह। २ अचेत होने की अवस्था या भाव। बेहोशी। ३ बुद्धिभ्रश। ४ एक नरक।

विमोहक—वि० [स० विमोह+कन्] १ मोहित करनेवाला। लुभावना। २ मन मे लोभ उत्पन्न करने या ललचानेवाला। ३ सुध-बुध भुलानेवाला।
पु० सगीत मे, एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

विमोहन—पु० [स० वि√मुह् (मुग्ध करना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विमोहित, वि० विमोही] १. मुग्ध या मोहित करना। लुभाना। २. किसी का मन अपने वश मे करना। ३ सुध-बुध भूलना। ४ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक। ५. एक नरक का नाम।

विमोहना†—अ० [स० विमोहन] १ मोहित होना। २. अचेत या बेसुध होना। ३. भ्रम मे पडना।
स० १. मोहित करना। २. बेहोश करना। ३. भ्रम मे डालना।

विमोहा—स्त्री० [हिं०] विज्जोहा नामक छन्द का दूसरा नाम।

विमोहित—भू० कृ० [स० वि√मुह् (मुग्ध करना)+क्त] १. जो किसी

पर मोहित या आसक्त हो। २. जो सुध-बुध खो चुका हो। बेसुध। बेहोश। ३ भ्रम या धोखे मे पडा हुआ।

विमोही (हिन्)—वि० [स०] [स्त्री० विमोहिनी] १. जिसमे किसी के प्रति मोह न हो। २. मोहित करनेवाला। मोह लेनेवाला। ३ धोखे या भ्रम मे डालनेवाला।

विमौट—पु०=विमौट (बाँबी)।

वियंग—वि० [स० अव्यग] जो टेढा-मेढा न हो। सीधा।

*पु० [?] शिव।

विय†—वि० [स० द्वि०, द्वितीय, प्रा० विय] १. दो। युग्म। २ दूसरा।

वियत्—पु० [स० वि√यम्+क्विप्, तुक्, म-लोप] १ आकाश। २ वायु-मडल।

वि० १ गमनशील। २. गतिशील।

वियत्-पताका—स्त्री० [स० वियत्+पताका] विद्युत्। बिजली।

वियद्गगा—स्त्री० [स० ष० त०] आकाशगगा।

वियम—पु० [वि√यम्+अप्]=वियाम।

वियाम—पु० [स० वि√यम् (सयम करना)+घञ्] १ इन्द्रिय-निग्रह। सयम। २ विराम। ३ कष्ट। ४ रोक।

वियुक्त—वि० [वि०√युज् (सयुक्त होना)+क्त] [भाव० वियुक्ति] १ जो युक्त या सयुक्त न हो। २ जो किसी से अलग, जुदा या पृथक् हो चुका हो। ३ जिसे औरो ने छोड दिया हो। परित्यक्त। ४ वियोगी। ५ वचित, रहित या हीन।

वियुग्म—वि० [स०] १ जो युग्म अर्थात् जोडा न हो। अकेला। २ (गणित मे वह राशि) जिसे दो से भाग देने पर एक निकलता या बचता हो। (ऑड) ३ जिसमे कुछ अस्वाभाविकता हो।

वियुत—वि० [स० वि√यु (मिलना, न मिलना)+क्त] १. वियुक्त। अलग। २ जो किसी से अलग हुआ हो। वियुक्त। ३. रहित। हीन।

वियो—वि०=विय (दूसरा)।

वियोग—पु० [वि√युज् (सयोग होना)+घञ्, मध्यम० स०] १ योग न होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। २. ऐसी अवस्था जिसमे दो जीव विशेषत प्रेमी एक दूसरे से दूर हो और इस प्रकार उनमे मिलन न होता हो। ३ उक्त अवस्था के फलस्वरूप प्रेमियो को होनेवाला कष्ट। ४. किसी का सदा के लिए बिछुडना। मरने के कारण होनेवाला अलगाव। ५ उक्त के फलस्वरूप होनेवाला शोक।

वियोग-शृंगार—पु० [स०] साहित्य मे, शृगार रस का वह अग या विभाग जिसमे विरही की दशा का वर्णन होता है। विप्रलभ। ४ 'सयोग शृगार' का विपर्याय।

वियोगात—वि० [स० ब० स०] (कथा-कहानी या नाटक) जिसके अतिम दृश्य मे प्रेमी, मित्र आदि के वियोग का वर्णन हो।

वियोगिन—स्त्री०=वियोगिनी।

वियोगिनी—वि० [वियोगिन्+ङीप्] जो नायक, पति या प्रिय के परदेश चले जाने पर उसके विरह मे दुखी हो।

स्त्री० विरहिनी नायिका।

वियोगी (गिन्)—वि० [स० वियोगिन्] [स्त्री० वियोगिनी] १ जिसका किसी से वियोग हुआ हो। २ विरही।

पु० १. नायक जो नायिका से वियुक्त होने पर दुखी हो। २. चकवा पक्षी। चक्रवाक।

वियोजक—वि० [स० वि√युज् (मिलना)+णिच्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० वियोजिका] वियोजन करनेवाला। पृथक् करनेवाला।

पु० गणित मे, वह छोटी सख्या जो किसी बड़ी सख्या मे से घटाई गई हो।

वियोजन—पु० [स० वि√युज् (मिलना)+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० वियोजित, वियुक्त] १ वियोग होना। योग का अभाव। २ जुदाई। वियोग। ३ गणित मे एक सख्या (या राशि) मे, से दूसरी सख्या (या राशि) घटाने की क्रिया।

वियोजित—भू० कृ० [स० वि√युज् (मिलना)+णिच्+क्त] १ जिसका किसी से वियोग हुआ हो। २. जिसे बलात् किसी से अलग या जुदा कर दिया गया हो। ३. वचित।

वियोज्य—वि० [स० वि√युज् (मिलना)+यत्] १ जिसका वियोजन हो सके या होने को हो। २ (गणित मे सख्या) जिसमे से कोई छोटी सख्या घटाई जाने को हो।

विरंग—वि० [सं० ब० स०] १ रगहीन। २ अनेक रगोवाला। रग-विरगा। ३ बदरग।

विरंच (चि)—पु० [स० वि√रञ्च् (रचना करना)+अच्] ब्रह्मा।

विरंचि-सुत—पु० [स० ष० त० विरचि+सुत] नारद।

विरजन—पु० [स०] [भू० कृ० विरजित] १ रजन से रहित करना। २ ऐसी प्रक्रिया जिसमे किसी वस्तु मे के सब रग हट या निकल जायँ। ३ धोकर साफ करना। प्रक्षालन।

विरक्त—वि० [स०] [भाव० विरक्ति, विरक्तता] १ गहरा लाल। रक्त वर्ण। खूनी। २ जिसके रग मे कुछ परिवर्तन आ चुका हो। ३. जिसकी किसी पर आसक्ति न रह गई हो। 'अनुरक्त' का विपर्याय। ४ सासारिक प्रपचो, बधनो आदि से परे रहनेवाला। ५ भोग-विलास आदि से बहुत दूर रहनेवाला। ६ खिन्न।

विरक्तता—स्त्री० [स० विरक्त+तल्+टाप्]=विरक्ति।

विरक्ति—स्त्री० [स० वि√रञ्ज् (राग करना)+क्तिन्] १ विरक्त होने की अवस्था या भाव। २ मन मे अनुराग या चाह न रहने की अवस्था या भाव। ३ सासारिक बातो की ओर से मन हटाना। वैराग्य। ४ भोग-विलास आदि के प्रति होनेवाली अरुचि या उदासीनता। ५ अप्रसन्नता। खिन्नता।

विरचन—पु० [स० वि√रच् (बनाना)+ल्युट्-अन] [वि० विरचनीय, भू० कृ० विरचित] १ रचना करना। निर्माण। बनाना। २ तैयारी।

विरचना—स० [स० विरचन] १ निर्माण करना। बनाना। रचना। २ अलकृत करना। सजाना।

†अ०=विरक्त होना।

विरचित—भू० कृ० [स० वि√रच् (बनाना)+क्त] १ रचा या बनाया हुआ। निर्मित। रचित। २ (ग्रन्थो आदि के सबध मे) लिखित।

विरज—वि० [ब० स०] १ धूल, गर्द आदि से रहित। २. जो रजोगुण प्रधान न हो। ३ जिसमे रजोगुणी प्रवृत्ति न हो। ४ स्वच्छ। निर्मल। ५ (स्त्री) जिसका रजोधर्म रुक गया या समाप्त हो चुका हो।

पु० १ विष्णु। २ शिव।

विरजन—वि०[स०] रग-परिवर्तन करनेवाला।

विरजा—स्त्री०[स०] १. श्रीकृष्ण की एक सखी। २ नहुष की स्त्री।

विरजाक्ष—पु०[स० ब० स०] एक पर्वत जो मेरु के उत्तर मे कहा गया है।

विरजा-क्षेत्र—पु०[स० ष० त०] उडीसा का एक तीर्थ-स्थान जो जाजपुर के पास है।

विरत—वि०[स० वि√रम् (रमण करना)+क्त, म-लोप] [भाव० विरति] १ जो रत अर्थात् अनुरक्त या प्रवृत्त न रह गया हो। जिसका मन किसी ओर से हट गया हो। २ जिसने किसी से अपना संबंध तोड लिया हो। जो अलग हो गया हो। जैसे—किसी काम से विरत होना। ३. जिसने सासारिक विषयो से अपना मन हटा लिया हो। विरक्त। वैरागी। ४ जो विशेष रूप से किसी ओर रत हुआ हो।

विरति—स्त्री०[स० मध्यम० स०, ब० स० वा] १ विरत होने की अवस्था या भाव। उदासीनता या विरक्ति। २ वैराग्य।

विरथ—वि०[स० ब० स०] १ जिसके पास रथ न हो अथवा जो रथ पर आरूढ न हो। २. रथ से गिरा या हटा हुआ। ३. पैदल।
पु० पैदल सिपाही।

विरद—पु०[स० विरुद] १ बडा और सुन्दर नाम। २ ख्याति। प्रसिद्धि। ३ कीर्ति। यश।
वि० जिसे रद अर्थात् दाँत न हो। दन्तहीन।

विरदावली†—स्त्री०=विरुदावली।

विरदैत—वि०[हिं० विरद+ऐत (प्रत्य०)] १ बडे विरदवाला। २ कीर्ति या यशवाला। ३. किसी का विरद बखाननेवाला।
पु० चारण।

विरम—पु०=विराम। उदा०—जागरणोपम यह सुप्ति-विरम भ्रम भर। —निराला।

विरमण—पु०[स० वि√रम्(क्रीडा)+ल्युट्—अन] १ विराम करना। ठहरना। थमना। रुकना। २. रमण करना। रमना। ३. भोग-विलास। ४ रमण से मन हटा कर अलग होना। परित्याग।

विरमना†—अ०[स० विरमण] १ रम जाना। मन लगाना। अनुरक्त हो जाना। किसी से या कही से मन लगाना। २ मन का रमने लगना। ३ ठहरना। रुकना। ४ गति, वेग आदि का कम होना या रुकना।
†अ०=विलबना।

विरमाना†—स० [हिं० विरमना का स० रूप] १ किसी को विरमने मे प्रवृत्त करना। विलमाना। २ धोखे या भ्रम मे डालना।

विरल—वि०[स० वि√रा(लेना)+कलन्] [भाव० विरलता] १ जिसके अग या अश बहुत पास-पास न हो। जो घना न हो। जिसके बीच-बीच मे अवकाश हो। 'सघन' का विपर्याय। जैसे—विरल बुनावटवाला कपडा। २ जो बहुत कम मिलता हो। दुर्लभ। ३ जो गाढा न हो। पतला। ४ निर्जन। एकान्त। ५ खाली। शून्य। ६ अल्प। थोडा।

विरला—वि०[स० विरल] १ विरल। २ जो केवल कही-कही या बहुत कम मिलता अथवा होता हो।

विरलीकरण—पु० [स० विरल+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] सघन को विरल करने की क्रिया।

विरव—पु० [स० मध्यम० स०] अनेक या विविध प्रकार के शब्द।
वि० १ जिसमे शब्द न हो। २. जो शब्द न करता हो। निःशब्द। नीरव।

विरस—वि०[मध्यम० स०] [भाव० विरसता] १ जिसमे रस या मिठास न हो। २. फलत जो स्वाद मे फीका हो। ३ जिसमे रुचि को आकृष्ट करने का कोई गुण या तत्त्व न हो। जिसमे रुचि न लगती हो। ४. (साहित्यिक रचना) जिसमे रस का परिपाक न हुआ हो।
पु० काव्य में होनेवाला रसभग नामक दोष।

विरसता—स्त्री०[स० विरस+तल्+टाप्] १ विरस होने की अवस्था या भाव। २ साहित्य का रस-भग नामक दोष।

विरह—पु०[स०] १ किसी वस्तु से रहित होना। किसी वस्तु के अभाव मे होना। २. प्रिय व्यक्तियों का एक दूसरे से अलग होना जो दोनो पक्षो के लिए बहुत कष्टप्रद हो। वियोग। ३. उक्त के फलस्वरूप होनेवाला मानसिक कष्ट या दुःख। ४ त्याग।
वि० रहित। हीन।

विरह-निवेदन—पु० [स०] साहित्य मे, दूत या दूती का नायक (अथवा नायिका) के पास पहुँचकर उससे यह कहना कि तुम्हारे विरह मे नायक (अथवा नायिका) कितनी दुःखी है।

विरहा†—पु०=बिरहा (गीत)।

विरहागि*—स्त्री०=विरहाग्नि।

विरहाग्नि—स्त्री०[स० ष० त०] प्रिय के विरह या वियोग के कारण होनेवाला तीव्र मानसिक कष्ट या सताप।

विरहानल—पु०[स० ष० त०, मध्यम० स०]=विरहाग्नि।

विरहिणी—वि०[स० विरह+इनि+ङीप्] पति या प्रिय के विरह से सतप्त (नायिका)।

विरहित—वि०[स० वि√रह्(त्याग करना)+क्त] रहित। शून्य।

विरही (हिन्)—वि० [स० विरह+इनि] [स्त्री० विरहिणी] (नायक) जो प्रियतमा के विरह से सतप्त हो।

विरहोत्कंठिता—स्त्री०[स० तृ० त०] साहित्य मे, वह विरहिणी नायिका जो प्रिय के आगमन के लिए अधीर हो रही हो।

विराग—पु०[स० वि√रञ्ज्(राग करना)+घञ्, मध्यम० स०] १ मन मे राग का होनेवाला अभाव। किसी चीज या बात की चाह न होना। 'अनुराग' का विपर्याय। २ किसी काम, चीज या बात से मन उचट या हट जाना। विरक्ति। ३ सासारिक सुख-भोग की चाह न रह जाना। वैराग्य। ४ सगीत मे, दो रागो के मेल से बना हुआ सकर राग।

विरागी (गिन्)—वि० [स० विराग+इनि] [स्त्री० विरागिनी] १ जिसके मन मे राग (चाह या प्रेम) न हो। राग-रहित। २ दे० 'विरक्त'।

विराज—वि० [स० वि√राज् (शोभित होना)+अच्] १ चमकीला। २ राज्य-रहित।
पु १ राजा। २ क्षत्रिय। ३ ब्रह्माण्ड। ४ एक प्रकार का मन्दिर। ५ एक प्रकार का एकाह यज्ञ। ६ एक प्रजापति का नाम।

विराजन—पु०[स० वि√राज्+ल्युट्—अन] १ शोभित होना। २ उपस्थित, वर्तमान या विद्यमान होना।

विराजना—अ०[स० विराजन] १ शोभित होना। प्रकाशित होना। २. उपस्थित या विद्यमान होना। ३ बैठना। (बडो के लिए आदर-सूचक) जैसे—आइए विराजिए।

विराजमान—वि०[स० वि√राज्+शानच्, मुक्] १. प्रकाशमान। चमकता हुआ। चमक-दमकवाला। २ उपस्थित। विद्यमान। (बडो के लिए आदरार्थक, विशेषतः बैठे रहने की दशा मे)

विराजित—भू० कृ० [स० वि√राज्+क्त] १ सुशोभित। २ प्रकाशित। ३. विराजमान।

विराट्—वि०[सं०] बहुत बडा या भारी। जैसे—विराट् सभा, विराट् आयोजन।

पु० १. विश्वरूप ब्रह्मा। २. विश्व। ३ क्षत्रिय। ४. दे० 'विश्व-रूप'।

विराट—पु०[स०] १ मत्स्य देश का पुराना नाम। २ उक्त देश का राजा जिसकी उत्तरा नामक कन्या का विवाह अभिमन्यु से हुआ था। ३. सगीत मे एक प्रकार का ताल।

विराण†—वि०[फा० बेगान] [स्त्री० विराणी] दूसरे का। पराया।

विराध—पु०[स० वि√राध् (पीडित करना)+अच्] १ पीडा। क्लेश। तकलीफ। २ एक राक्षस जो दडकारण्य मे लक्ष्मण के हाथ से मारा गया था।

वि० कष्ट देने या पीडित करनेवाला।

विराधन—पु०[स० वि√राध् (पीडित करना)+ल्युट्-अन] १. किसी का अपकार या हानि करना। २ कष्ट देना। पीडित करना।

विराम—पु०[स०] १ क्रिया, गति, चाल आदि मे होनेवाला अटकाव। २ कार्य-व्यापार मे होनेवाली मदी। ३ आराम या विश्राम के उद्देश्य से चुप-चाप पडे रहने की अवस्था या भाव। ४. विश्राम। ५ कार्य, पद, सेवा आदि से अवकाश ग्रहण करना। ६ पद्य के चरण मे की यति। ७ विराम-चिह्न।

विराम-काल—पु०[स०] वह छुट्टी जो काम करनेवालो को विराम करने या सुस्ताने के लिए मिलती है।

विराम-चिह्न—पु०[स०] लेखन, छपाई आदि मे प्रयुक्त होनेवाले चिह्न। (पक्चुएशन) जैसे—, , .-। आदि।

विराम-संधि—स्त्री०[स०] युद्ध होते रहने की दशा मे बीच मे होनेवाली वह अस्थायी सधि जो स्थायी सधि की शर्तें निश्चित करने के लिए होती है और जिसके अनुसार युद्ध कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया जाता है। अवहार। (आर्मिस्टिस)

विराल—पु०[स० वि√डल्+घञ्, ड—र] विडाल। बिल्ली।

विराव—पु० [स० वि√रु (शब्द करना)+घञ्] १ शब्द। आवाज। २. मुँह से निकलनेवाली वाणी। बोली। उदा०—मोर कौ सोर गान कोकिल विराव कौ।—सेनापति। ३ शोर-गुल। हो-हल्ला।

वि० रव अर्थात् शब्द से रहित। जिसमे आवाज न हो।

विरावण—वि०[स० विराव√नी (ढोना)+ड] [स्त्री० विराविणी] १ बोलने या शब्द करनेवाला। २. रोने-चिल्लानेवाला। ३ शोर-गुल करने या हो-हल्ला मचानेवाला।

विरावी (विन्)—वि०[स०] विरावण।

विरास†—पु०=विलास।

विरासत—स्त्री०=वरासत।

विरासी†—वि०=विलासी।

विरिंच (चि)—पु०[वि√रिच् (बनाना)+ अच्, नुम्] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव।

५—११

विरिक्त—वि०[वि√रिच् (रेचन करना)+क्त] [भाव० विरिक्ति] १. जो रिक्त हो। खाली। २. (पेट) जो जुलाब लेने के बाद साफ हो गया हो।

विरुज—वि०[स० मध्यम० स० या ब० स०] जिसे रोग न हो। निरोग।

विरुजालय—पु०[स०] वह स्थान जहाँ रोगो का निदान तथा उपचार किया जाता हो। (क्लिनिक)

विरुझना†—अ०=उलझना।

विरुझाना†—स०=उलझाना।

†अ०=उलझना।

विरुद—पु०[स० ब० स०] १ उच्च स्वर मे की जानेवाली घोषणा। २. किसी के गुण, प्रताप आदि का वर्णन। प्रशस्ति। ३ उक्त की सूचक कोई पदवी जो प्राय राजाओ के नाम के साथ लगती थी। जैसे—'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' मे 'विक्रमादित्य' विरुद है। ३ कीर्ति। यश।

विरुदावली—स्त्री०[स० ष० त०] १ विरुदो या पदवियो का सग्रह। २. किसी बड़े व्यक्ति के गुणो, पराक्रम आदि का होनेवाला विस्तार-पूर्वक वर्णन। ३. गुणावली।

विरुद्ध—वि०[स०] १ सामने आकर विरोधी होनेवाला। २. कार्य, प्रयत्न आदि का विरोध करने या उसकी विफलता चाहनेवाला। ३. जो अनुकूल नही, बल्कि प्रतिकूल हो। मेल या सगति मे न बैठनेवाला। विपरीत। ४ साधारण नियमो आदि से विभिन्न और उलटा। जैसे—विरुद्ध आचरण।

अव्य० १ प्रतिकूल स्थिति मे। खिलाफ। जैसे—किसी के विरुद्ध चलना या बोलना। २ किसी के मुकाबले या विरोध मे। ३ सामने।

पु०[स०] भारतीय नैयायिको के अनुसार ५ प्रकार के हेत्वाभासो मे से एक जो वहाँ माना जाता है जहाँ दिया हुआ हेतु स्वय अपनी प्रतिज्ञा के विपरीत हो।

विरुद्धकर्मा (कर्मन्)—वि०[स० ब० स०] १. विरुद्ध कर्म करनेवाला। २ विपरीत या निन्दनीय आचरणवाला।

पु० श्लेष अलकार का एक भेद जिसमे किसी क्रिया के फलस्वरूप होनेवाली परस्पर विरुद्ध प्रतिक्रियाओ का उल्लेख होता है। (केशव)

विरुद्धता—स्त्री०[स० विरुद्ध+तल्+टाप्] १. विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। विरोध। २ प्रतिकूलता।

विरुद्ध-मति-कारिता—स्त्री०[ग०] साहित्य मे, एक प्रकार का काव्य-दोष जो ऐसे पद या वाक्य के प्रयोग मे होता है जिससे वाच्य के सबध मे विरुद्ध या अनुचित भाव उत्पन्न हो सकता है। जैसे—"भवानीश" मे यह दोष इसलिए है कि भव से उनकी पत्नी का नाम भवानी हुआ है। अब उसमे ईश शब्द जोडना इसलिए ठीक नही है कि इससे अर्थ हो जायगा—भव की स्त्री के स्वामी।

विरुद्धार्थ—वि०[स०] विरोधी अर्थवाला।

पु० विरुद्ध या विपरीत अर्थ।

विरुद्धार्थ दीपक—पु०[स०] साहित्य मे दीपक अलकार का एक भेद जिसमे एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओ का एक साथ होना दिखाया जाता है।

विरुध†—पु०=विरोध।

†वि०=विरुद्ध।

विरोपणीय, विरोप्य, भू० कृ० विरोपित] १ जमीन मे पौधे आदि लगाना। रोपना। २ लेप करना। चढाना या लगाना।

विरोम—वि०[स० ब० स०] रोम-रहित। बिना रोएँ का।

विरोह—पु०[स० वि√रुह् (अकुर निकलना)+घञ्] १ अकुरित होना। २ उत्पत्ति या उद्भव होना।

विरोहण—पु०[स० वि√रुह (अकुरित होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विरोहित वि० विरोहणीय, एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान पर लगाना। रोपना।

विरोही—वि०[स० वि√रुह् (उगना)+णिनि=विरोहिन्] [स्त्री० विरोहिणी] (पौधा) रोपनेवाला।

विर्त्त†*—स्त्री०=वृत्ति।

पु०=वृत्त।

विलंघन—पु०[स० वि√लघ्(लाँघना)+ल्युट्—अन] १ कूद या लाँघकर पार करना। २. उपवास। लघन। ३ किसी काम, चीज या बात से अपने आपको रहित या वचित रखना।

विलंघना—स०=लाँघना।

विलंघनीय—वि०[स० वि√लघ् (लाँघना)+अनीयर्] १ जिसका विलघन हो सके या होने को हो। २ (काम) जो सहज मे किया जा सके। सुगम।

विलंघित—भू० कृ०[स० वि√लघ् (लाँघना)+क्त] जिसका विलघन हुआ हो।

विलंघी (घिन्)—वि०[स० वि√लघ् (लाँघना)+ णिनि] विलघन करनेवाला।

विलंघ्य—वि०[स० वि√लघ् (लाँघना)+यत्]=विलघनीय।

विलंब—पु०[स० वि√लम्ब् (देर करना)+घञ्] १ ऐसी स्थिति जिसमे अनुमान, आवश्यकता, औचित्य आदि से अधिक समय लगे। अति-काल। देर। २ इस प्रकार अधिक लगनेवाला समय।

विलंबन—पु०[स० वि√लम्ब् (देर होना)+ल्युट्—अन] [वि० विलबनीय, विलबी, भू० कृ० विलबित] १ देर करना। विलब करना। २ टँगना या लटकना। ३. आश्रय या सहारा लेना।

विलंबना—स०[स० विलबन] १ आवश्यकता से अधिक समय लगाना। २ देर या विलब करना।

अ० १ देर या विलब होना। २ लटकना। ३ आश्रय या सहारा लेना। ४ दे० 'विरमना' या 'बिलमना'।

विलंब शुल्क—पु० [प० त०] १. वह शुल्क जो किसी काम या बात मे विलब करने पर देना पडे। (लेट फी) २ वह अतिरिक्त शुल्क जो जहाज, रेल आदि से आया हुआ माल देर से छुडाने पर देना पडता है। (डेमरेज)

विलंबित—वि०[स० वि√लम्ब् (देर करना)+क्त] १ लटकता या झूलता हुआ। २ जिसमे विलब लगा हो या देर हुई हो। ३. देर करने या लगानेवाला।

पु० १. ऐसे जीव-जतु जो बहुत धीरे-धीरे चलते हो। जैसे—गैंडा, भैंस आदि। २ सगीत मे ऐसी लय, जिसमे स्वरो का उच्चारण बहुत मद गति से होता हो। 'द्रुत' का विपर्याय।

विलंबी (बिन्)—वि०[स० वि√लम्ब् (देर करना)+ णिनि] [स्त्री० विलबिनी] १ लटकता हुआ। झूलता हुआ। २ विलब करने या देर लगानेवाला।

पु० साठ सवत्सरो मे से बत्तीसवाँ सवत्सर।

विलक्ष—वि०[स० वि√लक्ष् (लक्षित करना)+अच्] १ जिसमे विशिष्ट चिह्न या लक्षण न हो। २ जिसका कोई लक्ष्य न हो। ३ चकित। ४. लज्जित।

विलक्षण—वि०[स० ब० स०] १. जिसका कोई लक्षण न हो। २ जिसके बहुत से लक्षण हो। ३ अपने वर्ग के अन्यो की अपेक्षा जिसके लक्षणो मे विशेषता हो। जैसा साधारणत होता हो, उससे कुछ अलग प्रकार का। ४ किसी की तुलना मे कुछ अलग और विशिष्ट प्रकार का।

विलक्षणता—स्त्री०[स० विलक्षण+तल्+टाप्] १ विलक्षण होने की अवस्था या भाव। २. वह गुण जिसके कारण कोई चीज विलक्षण कही जाती है।

विलखना†—अ०=बिलखना।

स०=लखना।

विलखाना†—स०[हिं० विलखना का स०] १ =बिलखाना। २ = लखाना।

विलग—वि०[हिं० वि (उप०)+ लगना] जो किसी के साथ लगा हुआ न हो। अलग। जुदा। पृथक्।

पु० अन्तर। फरक। भेद।

विलगाना—अ०[हिं० विलग+ना (प्रत्य०)] अलग होना। पृथक् होना।

स० अलग या पृथक् करना।

विलग्न—वि०[स०] १ किसी के साथ लगा हुआ। सलग्न। २ झूलता या लटकता हुआ। ३. किसी मे बद किया या बाँधा हुआ। ४ बीता हुआ। व्यतीत। ५ कोमल।

पु० १ कमर। २ चूतड। ३ जन्म-पत्री। ४ राशियो का उदय।

विलच्छन†—वि०=विलक्षण।

विलज्ज—वि०[स० ब० स०] निर्लज्ज। बेहया।

विलपन—पु०[स०] १ विलाप करना। २ गप-शप करना। ३. तेल आदि के नीचे जमने या बैठनेवाली मैल। गदगी।

विलपना—अ०[स० विलाप] विलाप करना। रोना।

विलब्ध—भू० कृ० [स० वि√लभ् (प्राप्त होना)+क्त] १ दिया हुआ। पाया हुआ। मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध। २ अलग या पृथक् किया हुआ।

विलम†—पु०=विलब।

विलमना—अ०=बिलमना।

विलय—पु०[स० वि√ली (मिलना, घुलना आदि)+अच्] १ किसी चीज का पानी मे घुलकर मिल जाना। घुलना। २ एक पदार्थ का किसी रूप मे दूसरे पदार्थ मे घुलना-मिलना। विलीन होना। ३ आज-कल किसी छोटे देश या राज्य का अपनी स्वतत्र सत्ता गँवाकर दूसरे बडे देश या राज्य मे मिल जाना। छोटे राज्य का बडे मे लीन होना। (मर्जिंग) ४. आत्मा का शरीर से निकलकर परमात्मा मे मिलना, अर्थात् मृत्यु।

मौत। ५ सृष्टि का नष्ट होकर अपने मूल तत्त्वों में मिल जाना; अर्थात् प्रलय। ६ ध्वंस। नाश।

विलयन—पु०[सं० वि√ली(लय होना)+ल्युट्—अन] १. लय या विलय होने की अवस्था, क्रिया या भाव। विलीन होना। २ एक वस्तु का दूसरी वस्तु में इस प्रकार मिलकर समा जाना कि उस पहली वस्तु का स्वतंत्र अस्तित्व न रह जाय। ३ किसी देशी रियासत का या किसी छोटे राज्य का बड़े राज्य में होनेवाला विलय। (मर्जर)

विलसन—पु०[सं० वि√लस् (चमकना)+ल्युट्—अन] १. चमकने की क्रिया या भाव। २ क्रीडा। प्रमोद। विलास।

विलसना—अ०[सं० विलसन] १ शोभा पाना। फबना। २. क्रीडा या विलास करना। ३ किसी चीज का सुखपूर्वक भोग-विलास करना।

विलसाना†—स०=विलसाना।

विलसित—वि०[सं० वि√लस्+क्त] १. चमकता हुआ। २ व्यक्त। ३. क्रीडा में मग्न। ४ विनोदी।

पु० १ चमकने या चमकाने की क्रिया। २. चमक। दीप्ति। ३. अभिव्यक्ति। ४ क्रीडा। ५ अंग-भंगी। ६ परिणाम। फल।

विलह-बंदी—स्त्री०[?] ब्रिटिश शासन में, जिले के बन्दोबस्त का वह संक्षिप्त ब्योरा जिसमें प्रत्येक महाल का नाम, काश्तकारों के नाम और उनके लगान आदि का ब्योरा लिखा जाता था।

विलहा†—पु० दे० 'बोल्लाह'।

विलाना—अ०, स०=विलाना (नष्ट होना या करना)।

विलाप—पु०[सं० वि√लप् (बोलना)+घञ्] हार्दिक दुःख प्रकट करने के लिए बिलख-बिलख कर या विकल होकर रोने की क्रिया।

विलापन—वि०[सं० वि√लप् (कहना)+ल्युट्—अन] १. रुलानेवाला। २ जो विलाप का कारण हो (शस्त्रादि)। ३. पिघलानेवाला। ४. नष्ट करनेवाला।

पु० १ रुलाने की क्रिया। २. नाश। ३. मृत्यु। ४. पिघलाने का साधन। ५. शिव का एक गण।

विलापना—अ० [सं० विलाप] विलाप करना।

†स०=रोपना (वृक्ष आदि)।

विलापी (पिन्)—वि० [सं०वि० √लप्+णिनि] रोने या विलाप करनेवाला।

विलायत—पु० [अ०] १. पराया देश। दूसरों का देश। बहुत दूर का विशेषतः समुद्र पार का देश। २. भारतीयों की दृष्टि से इंग्लैंड अमेरिका, यूरोप आदि देश या महादेश।

विलायती—वि०[अ०] १. विलायत का। विदेशी। २. विलायत या दूसरे देश का बना हुआ। ३. विलायत या दूसरे देश में रहनेवाला। विदेशी।

विलायती पटुआ—पु०[हिं० विलायती+पटुआ] लाल पटुआ। लाल सन।

विलायती बैंगन—पुं०[हिं०] टमाटर। (देखें)

विलायन—पु०[सं० वि√ली+णिच्+ल्युट्—अन] प्राचीन भारत का एक अस्त्र। कहते हैं कि इस अस्त्र के प्रयोग से शत्रु की सेनाएँ विश्राम करने लगती थी।

विलावल†—पु०=बिलावल (राग)।

विलास—पु०[सं० वि√लस् (साथ में क्रीडा करना)+घञ्] १ ऐसी क्रिया या व्यापार जो अपने को प्रसन्न तथा प्रफुल्लित रखने के लिए किया जाय। २. क्रीडा। खेल। ३. अधिक मूल्य की और सुख-सुभीते की वस्तुओं का ऐसा उपभोग या व्यवहार जो केवल मन प्रसन्न करने के लिए हो। शौकीनी। (लक्जरी) ४. अनुराग तथा प्रेम में लीन होकर की जानेवाली क्रीडा। ५. ऐसी स्त्रियोचित भाव-भंगी या कोमल चेष्टा जो काम-वासना की उत्पादक या सूचक हो। ६. साहित्य में संयोग शृंगार का एक भाव जिसमें प्रिय से सामना होने पर नायिका अपनी कोमल चेष्टाओं तथा भाव-भंगियों से उनके मन में अपने प्रति अनुराग उत्पन्न करती है। ७. मनोहरता। सौन्दर्य। ८ किसी अंग की आकर्षक और कोमल चेष्टा। जैसे—भ्रू-विलास। ९ किसी वस्तु का उक्त प्रकार से हिलना-डोलना। जैसे—विद्युत् विलास। १०. आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष। ११ यथेष्ट सुख-भोग।

विलासक—वि० [सं० विलास+कन्] [स्त्री० विलासिका] १ इधर-उधर फिरनेवाला। २ दे० 'विलासी'। ३ नर्तकी।

विलासन—पु०[सं० वि√लस्+ल्युट्—अन] विलास करने की क्रिया या भाव।

विलासिका—स्त्री० [सं० विलास्+कन्+टाप्, इत्व] साहित्य में, एक प्रकार का शृंगार प्रधान एकांकी रूपक जिसका विषय संक्षिप्त और साधारण होता है।

विलासिता—स्त्री०[सं०] १. विलासी होने की अवस्था या भाव। २ विलास।

विलासिनी—स्त्री०[सं० विलास+इनि+ङीप्] १. सुंदरी युवती। कामिनी। २. रंडी। वेश्या। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, ग, ग होता है।

वि० विलासिता-प्रिय (स्त्री)।

विलासी (सिन्)—वि० [सं० विलास+इनि] १. (व्यक्ति) जो प्रायः ऐसी क्रीड़ाओं में रत रहता हो जिनसे उसे सुख-भोग प्राप्त होता हो। २ हँसी-खुशी में समय बितानेवाला। ३. आराम-तलब। ४ कामुक।

पु० वरुण (वृक्ष)।

विलास्य—पु०[सं० विलास+यत्] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते थे।

वि० विलास के लिए उपयुक्त या योग्य।

विलिंग—वि०[सं० ब० स०] १. लिंग-रहित। २. दूसरे या भिन्न लिंग का।

पुं० लिंग अर्थात् चिह्न का अभाव।

विलिखन—पु० [सं० वि√लिख् (रेखा करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विलिखित] १. लिखना। २. खरोचना। ३. खोदकर अंकित करना।

विलिप्त—भू० कृ०[सं० वि√लिप् (लीपना)+क्त] १. पुता हुआ। लिपा हुआ। २ उखड़ा या खुदा हुआ। ३. अस्त-व्यस्त। ४. कलुषित।

विलीक†—वि०=व्यलीक (असत्य)।

विलीन—भू०कृ० [वि√ली (मिलना, घुलना)+क्त] १. (पदार्थ) जो किसी दूसरे पदार्थ में गल, घुल या मिल गया हो। २ उक्त के आधार पर जो अपनी स्वतंत्र सत्ता खोकर दूसरे में मिल गया हो।

३. जो गायब या लुप्त हो गया हो। अदृश्य। ४ नष्ट। ५ मृत। ६ जो आड़ मे जा छिपा हो। ओझल।

विलुनन—पु०[स०] [भू० कृ० विलुनित] नष्ट करना।

विलुप्त—भू० कृ०[स०] १ जिसका लोप हो गया हो। नष्ट। २. जो अदृश्य या गायब हो गया हो। ३ नष्ट। बरबाद।

विलुलक—वि०[स० वि√लुल् (मर्दन करना)+ण्वुल्-अक] नाश करनेवाला।

विलून—भू० कृ०[स० वि√लू (काटना)+क्त, त-न] १ कटा हुआ। अलग किया हुआ। २. काटकर अलग किया हुआ।

विलेख—पु०[वि√लिख्+घञ्] १ अनुमान। कल्पना। २ सोच-विचार। ३ वह करण या लिखत जिसमे दो पक्षो मे होनेवाला अनुबंध लिखा हो और जिस पर प्रमाण-स्वरूप दोनो पक्षो के हस्ताक्षर हो। दस्तावेज। (डीड)

विलेखन—पु०[स० वि√लिख् (लिखना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विलेखित] १. खरोचना। २. खोदना। ३ उखाडना। ४ चिह्न बनाना। ५ चीरना। ६ नदी का मार्ग। ७ विभाजन।

वि० खरोचनेवाला।

विलेखा—स्त्री०[स० विलेख+टाप्] १ खरोच। २. चिह्न। ३ विलेख। लेख्य।

विलेखी (खिन्)—वि०[स० वि√लिख् (लिखना)+णिनि] १ खरोचनेवाला। २ चिह्न बनानेवाला। ३. इकरार लिखनेवाला। ४. विलेख अर्थात् अनुबंध या संधि-पत्र लिखनेवाला।

विलेप—पु०[स० वि√लिप् (लेपन करना)+घञ्] १ शरीर आदि पर लगाने का लेप। २. दीवारो पर लगाया जानेवाला पलस्तर।

विलेपन—पु० [स० वि√लिप्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विलेपित] १ लेप करने या लगाने की क्रिया या भाव। अच्छी तरह लीपना या लगाना। २ लेप के रूप मे लगाई जानेवाली चीज। लेप।

विलेपनी—स्त्री०[स० विलेपन+ङीप्] १ वह स्त्री जिसने अगराग लगाया हो। शृंगारित स्त्री। २ माँड।

विलेपी (पिन्)—वि०[स० वि√लिप् (लेप करना)+णिनि] [स्त्री० विलेपिनी] १. लेप करनेवाला। २ पलस्तर करनेवाला। ३ चिपका या साथ लगा हुआ। ४ लसदार। लसीला।

विलेय—वि०[स०] १ जिसका विलय हो सके या किया जा सके। २. (पदार्थ) जो पानी या किसी तरल द्रव्य मे घुल सके। (सोल्युबल)

विलेवासी (सिन्)—पु०[स० विले√वस् (रहना)+णिनि, दीर्घ, नलोप सप्तमी-अलुक्] सर्प।

विलेशय—वि०[स० विले√शी (सोना)+अच्, सप्त०-अलुक्] बिल मे वास करनेवाला।

पु० १ साँप। २ चूहा। ३ बिच्छू। ४. गोह। ५ खरगोश।

विलोक—वि०[स० ब० स०] १ लोक या जन से रहित। २ निर्जन।

पु० १ दृष्टि। नजर। २ दृश्य।

विलोकन—पु०[स० वि√लोक् (देखना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विलोकित] १ देखना। २. विचार करना। ३. तलाश करना। ढूँढना। ४. ध्यान देना। ५ अध्ययन करना।

विलोकना—स० [स० विलोकन] १. देखना। २. निरीक्षण करना। ३ ढूँढना।

विलोकनि—स्त्री०[हिं० विलोकना] १. देखने की क्रिया या भाव। २ दृष्टि। नजर।

विलोकनीय—वि०[स० वि√लोक् (देखना आदि)+अनीयर्] देखने योग्य अर्थात् सुन्दर।

विलोकित—भू० कृ० [स०] १. देखा हुआ। २ निरीक्षित।

विलोकी (किन्)—वि०[स० वि√लोक् (देखना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप] १. देखनेवाला। २. निरीक्षण करनेवाला।

विलोचन—पु०[स०] १. लोचन। नेत्र। आँख। २ एक नरक का नाम। वि० लोचन अर्थात् आँख से रहित।

विलोडक—वि०[स० वि√लुड् (मथना आदि)+ण्वुल्-अक] विलोडन करनेवाला।

पु० चोर।

विलोडन—पु०[स० वि√लुड् (मथना आदि)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विलोडित] १ मथना। २ हिलाना। ३ चुराना।

विलोड़ना—स०[स० विलोडन] विलोडन करना। विलोडना।

विलोप—पु०[स० वि√लुप् (भागना)+घञ्] १ लोप। २ बाधा। रुकावट। ३ आपत्ति। संकट। ४ नाश। ५ नुकसान। हानि। ६ कोई चीज चुरा या लेकर भागना।

विलोपक—वि०[स० वि√लुप् (नष्ट करना)+ण्वुल्-अक] विलोप करनेवाला।

विलोपन—पु०[स०] [भू० कृ० विलोपित] १. विलोप करने की क्रिया या भाव। २ जो कुछ पहले से वर्तमान हो, उसे काट या रद्द करके अलग करने, छोड़ने या निकालने की क्रिया या भाव। (डिलीशन)

विलोपना—स०[स० विलोपन] १ लोप करना। २ नाश करना। ३ ले भागना। ४ बाधा या विघ्न डालना।

अ० १ लुप्त होना। २. नष्ट होना।

विलोपी (पिन्)—वि० [स० वि√लुप् (गायब करना आदि)+णिनि, दीर्घ, नलोप] लोप अर्थात् पूर्णतया नष्ट या ध्वस्त करनेवाला।

विलोप्ता (प्तृ)—वि०[स० वि√लुप् (लुप्त करना)+ तृच्] विलोपी। पु० १ चोर। २ डाकू।

विलोप्य—वि०[स० वि√लुप् (लुप्त करना)+यत्] जिसका विलोपन हो सके। विलुप्त किये जाने के योग्य।

विलोभ—वि०[वि√लुभ् (विमोहित करना)+घञ्] जिसे लोभ न हो। लोभ से रहित।

पु० १ ऐसी बात जो मन को ललचाती हो। २. प्रलोभन। ३ माया के कारण उत्पन्न होनेवाला भ्रम या मोह।

विलोभन—पु०[स०] १ विलोभ। २. प्रलोभन।

विलोम—वि० [स०] १ जिसे बाल न हो। लोम-रहित। २ सामान्य या स्वाभाविक स्थिति के विपरीत स्थिति मे होनेवाला। ३. सामान्य क्रम से न होकर विपरीत क्रम से होनेवाला। ४. जो सामान्य रीति, प्रथा आदि के विचार मे नहीं, बल्कि उसके विपरीत हुआ हो। जैसे—विलोम विवाह। ५ क्रम के विचार मे ऊपर से नीचे की ओर जानेवाला। जैसे—विलोम स्वर साधन।

पु० १. साँप। २. कुत्ता। ३. रहट। ४. एक वरुण। ५. संगीत में स्वरों का अवरोहात्मक साधन।

विलोमक—वि० [सं० विलोम+कन्] १. उलटे या विपरीत क्रम से चलने या होनेवाला। २. (औषध या पदार्थ) जिसके प्रयोग से शरीर के बाल, विशेषत फालतू बाल झड़ जाते हों। (डेपिलेटरी)

विलोम जात—वि० [सं०] १ (बच्चा) जो उलटा जन्मा हो। २ जिसकी माता का वर्ण उसके पिता के वर्ण की अपेक्षा ऊँचा हो।

विलोमत—अव्य० [सं०] १ विलोम अर्थात् उलटे प्रकार या रूप से चलकर। विपरीत दिशा या रूप में। (कॉन्वर्सली) २. दे० 'प्रतिक्रमात्'।

विलोमन—पु० [सं०] [भू० कृ० विलोमित] १. विलोम अर्थात् उलटे क्रम से चलाना, रखना या लगाना। २ नाटकों में मुख-सन्धि का एक अंग।

विलोमवर्ण—वि० [सं०] (व्यक्ति) जिसकी माता का वर्ण पिता के वर्ण की अपेक्षा ऊँचा हो।

विलोमा (मन्)—वि० [सं० ब० स०] १. केश-रहित। २ उलटी ओर मुड़ा हुआ।

विलोल—वि० [सं० तृ० त०] १. लहराता या हिलता हुआ। २. अस्थिर। चंचल। ३ सुन्दर। ४. ढीला। शिथिल। ५. अस्त-व्यस्त। बिखरा हुआ।

विलोहित—वि० [सं० तृ० त०] १ गाढ़ा लाल। २. बैंगनी रंग का। २. हलका लाल।

पु० १. रुद्र। २ शिव। ३. एक नरक का नाम। ४. लाल प्याज।

विलोहिता—स्त्री० [सं० विलोहित+टाप्] अग्नि की एक जिह्वा।

विल्व—पु० [सं० √विल् (भेदन करना)+वन्-क्विन्]=बिल्व (बेल का पेड़ और फल)।

विव—वि० [सं०] १. दो। २. दूसरा।

विवक्ता (क्तृ)—पु० [सं० वि√वच् (बोलना)+तृच्] १ कहने या बतलानेवाला। २ स्पष्ट बात कहनेवाला। ३. ठीक या दुरुस्त करनेवाला।

विवक्षा—स्त्री० [सं० वि√वच् (कहना)+सन्, द्वित्व,+टाप्] १ कुछ कहने या बोलने की इच्छा। २ वह जो किसी के स्वभाव का अंग हो। ३ शब्द के अर्थ में होनेवाली विशिष्ट छाया जो उसका स्वाभाविक अंग होती है। ४ फल या परिणाम के रूप में या आनुषंगिक रूप से होनेवाली बात। (इम्प्लिकेशन)

विवक्षित—भू० कृ० [सं०] १ जो कहे जाने को हो। २ (आर्थी छाया) जिसे शब्द व्यक्त कर रहा हो।

विवत्स—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० विवत्सा] संतानहीन।

विवदन—पु० [सं० वि√वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विवदित] विवाद करने की क्रिया या भाव।

विवदना—अ० [सं० विवाद+हिं० नाप्रत्य०] विवाद अर्थात् तर्क-वितर्क या झगड़ा करना।

विवदमान्—वि० [सं०] विवाद या झगड़ा करनेवाला।

विवदित—वि० [सं०] जिसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का विवाद हुआ हो। (डिस्प्यूटेड)

विवर—पु० [सं०] १. छिद्र। बिल। २. गर्त। गड्ढा। ३. दरार। ४. कन्दरा। गुफा। ५. किसी ठोस चीज के अंदर होनेवाला खोखला स्थान। (कैविटी)

विवरण—पु० [सं० वि√वृ (संवरण करना)+ल्युट्-अन] १ स्पष्ट रूप से समझाने के लिए किसी घटना, बात आदि का विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन या विवेचन। २ उक्त प्रकार से कहा हुआ वृत्तान्त या हाल। जैसे—किसी संस्था का वार्षिक विवरण, अधिवेशन या बैठक का कार्य-विवरण। ३. ग्रन्थ की टीका या व्याख्या। ४ किसी अधिकारी आदि के पूछने पर अपने कार्यों आदि के संबंध में बताई जानेवाली विस्तृत बातें।

विवरण-पत्र—पु० [सं०] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार का विवरण लिखा हो। (रिपोर्ट) २. ऐसा सूचीपत्र जिसमें सूचित की जानेवाली वस्तुओं का थोड़ा-बहुत विवरण भी हो।

विवरणिका—स्त्री० [सं०] १. विवरण-पत्र।

विवरना†—अ०=विवरना (सुलझना)।

† स०=विवरना (सुलझाना)।

विवरणी—स्त्री० [सं०] आय-व्यय आदि की स्थिति बतानेवाला वह लेखा जो प्रतिवेदन के रूप में कहीं उपस्थित किया जाने को हो। (रिटर्न)

विवर्जन—पु० [सं०] [भू० कृ० विवर्जित] १ त्याग करने की क्रिया। परित्याग। २. मनाही। निषेध। वर्जन। अनादर। ४. उपेक्षा।

विवर्जित—भू० कृ० [सं० वि√वर्ज् (मना करना)+क्त] जिसका या जिसके सम्बन्ध में विवर्जन हुआ हो।

विवर्ण—वि० [सं०] १ जिसका कोई रंग न हो। रंगहीन। २. जिसका रंग बिगड़ गया हो। ३. कांति-हीन। ४. रंग-बिरंगा। ५. जो किसी वर्ण के अंतर्गत न हो, अर्थात् जाति-च्युत।

पु० साहित्य में एक भाव जिसमें भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण नायक या नायिका के मुख का रंग बदल जाता है।

विवर्णता—स्त्री० [सं०] विवर्ण होने की अवस्था या भाव। वैवर्ण्य।

विवर्त—पु० [सं०] १. घूमना। मुड़ना। २. लुढ़कना। ३. नाचना। ४ एक रूप या स्थिति छोड़कर दूसरे रूप या स्थिति में आना या होना। ५ वेदान्त का यह मत या सिद्धान्त कि सारी सृष्टि वास्तव में असत् या मिथ्या है, और उसका जो रूप हमें दिखाई देता है, वह भ्रम या माया के कारण ही है। ५ लोक-व्यवहार में किसी वस्तु का कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में या किसी कारण से मूल से भिन्न होना। जैसे—रस्सी का साँप प्रतीत होना या ब्रह्म का जगत् प्रतीत होना। ७ ढेर। राशि। ८. आकाश। ९. धोखा। भ्रम।

विवर्तक—वि० [सं०] विवर्तन करनेवाला। चक्कर लगानेवाला।

विवर्तन—पु० [सं०] [भू० कृ० विवर्तित] १ किसी के चारों ओर घूमना। चक्कर लगाना। २. किसी ओर ढलकना या लुढ़कना। ३ भिन्न भिन्न अवस्थाओं में से होते हुए या उन्हें पार करते हुए आगे बढ़ना। विकसित होना। विकास। ४. नाचना। नृत्य। ५ अरविन्द दर्शन में, चेतना का क्रमश: उन्नत तथा जाग्रत होकर विश्व की सृष्टि और विकास करना। 'निवर्तन' का विपर्याय। (इवोल्यूशन)

विवर्तवाद—पु० [सं०] दार्शनिक क्षेत्र में, यह सिद्धान्त कि ब्रह्म ही सत्य है और यह जगत् उसके विवर्त या भ्रम के कारण कल्पित रूप है।

विवर्तवादी—वि० [सं०] विवर्तवाद-सम्बन्धी।

पु० वह जो विवर्तवाद का अनुयायी हो।

विर्वातित—भू० कृ० [स० वि√वृत् (उपस्थित रहना)+क्त] १ जिसका विवर्तन हुआ हो या जो विवर्त के रूप मे लाया गया हो। २ बदला हुआ। परिवर्तित। ३ घूमता या चक्कर खाता हुआ। ४ नाचता हुआ। ५ (अग) जो मुडक या मुड गया हो। ६ (अग) जिसमे मोच आ गई हो।

विवर्ती (तिन्)—वि० [स० वि√वृत् (उपस्थित रहना)+णिनि]=विवर्तक।

विवर्द्धन—पु० [स० वि√वृध् (वढना)+णिच्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विवर्द्धित] १ वढाने या वृद्धि करने की क्रिया। २ वढती। वृद्धि।

विवर्द्धिनी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विवश—वि० [स० वि√वश् (वश मे करना)+अच्] [भाव० विवशता] १ जो स्वय अपनी इच्छा के अनुसार नही वल्कि दूसरो की इच्छा से अथवा परिस्थितियो के वधन मे पडकर काम कर रहा हो। २ जिसका अपने पर वश न हो, वल्कि जो दूसरो के वश मे हो। ३ जिसे कोई विशिष्ट काम करने के अतिरिक्त और कोई चारा न हो। ४ पराधीन।

विवशता—स्त्री० [स० विवश+तल्+टाप्] १ विवश होने की अवस्था या भाव। लाचारी। २. वह कारण जिसके फलस्वरूप किसी को विवश होना पडता हो।

विवस†—वि०=विवश।

विवसन—वि० [स्त्री० विवसना]=विवस्त्र।

विवस्त्र—वि० [स० व० स०] [स्त्री० विवस्त्रा] जिसके पास वस्त्र न हो अथवा जिसने वस्त्र उतार दिये हो।

विवस्वत्—पु० [स०] १ सूर्य। २. सूर्य का सारथी, अरुण। ३. पन्द्रहवे प्रजापति का नाम।

विवस्वान् (स्वत्)—पु० [स० विवस्वत्] १ सूर्य। २ सूर्य का सारथी, अरुण। ३ अर्क। मदार वृक्ष। ४ वर्तमान मनु का नाम। ५ देवता।

विवाक—पु० [स० वि√ वच् (कहना)+घञ्] १. न्यायाधीश। २ मध्यस्थ।

विवाचन—पु० स० वि√वच् (कहना)+णिच्+ल्युट्–अन] आपसी झगडो का पच या पचायतो के द्वारा होनेवाला विचार और निर्णय।

विवाद—पु० [स०] १ किसी वात या वस्तु के सम्वन्ध मे होनेवाला जवानी झगडा। कहा-सुनी। तकरार। २ किसी विषय मे आपस मे होनेवाला मतभेद। ३ ऐसी वात जिसके विषय मे दो या अनेक विरोधी पक्ष हो और जिसकी सत्यता का निर्णय होने को हो। (डिस्प्यूट) ४ न्यायालय मे होनेवाला वाद। मुकदमा।

विवादक—वि० [स० वि √ वद् (कहना)+ण्वुल्—अक] विवाद करनेवाला। झगडालू।

विवादार्थी (थिन्)—पु० [स० विवादार्थ+इनि, व० स०] १ वादी। मुद्दई। २ मुकदमा लडनेवाला व्यक्ति।

विवादास्पद—वि० [स० प० त०] १ (विषय) जिसके सम्वन्ध मे दो या अधिक पक्षो का विवाद चल रहा हो। २ प्रस्ताव, मत, विचार आदि जिसके सबध मे तर्क-वितर्क चल सकता हो। (कान्ट्रोवर्सल)

विवादी (दिन्)—वि० [स० वि√वद् (कहना)+णिनि] १ विवाद करनेवाला। कहासुनी या झगडा करनेवाला। २ मुकदमा लडनेवाला।

पु० सगीत मे वह स्वर जिसका प्रयोग किसी राग मे नियमित रूप से तो नहीं होता फिर भी कभी-कभी राग मे कोमलता या सुन्दरता लाने के लिए जिसका व्यवहार किया जाता है। जैसे—भैरवी मे साधारणत तीव्र ऋषभ या तीव्र निषाद का प्रयोग नही होता फिर भी कभी कभी कुछ लोग सुन्दरता लाने के लिए इसका प्रयोग कर लेते है।

विवाद्य—वि० [स०] (विषय) जिस पर विवाद, वहस या तर्क-वितर्क होने को हो या हो सकता हो। (डिवेटेवुल)

विवान†—पु०=विमान।

विवास—पु० [स०] १ घर छोडकर कही दूसरी जगह जाकर रहना। २ निर्वासन।

विवासन—पु० [स० वि√ वस् (निवास करना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विवासित] १ निर्वासित करना। निर्वासन। २ दे० 'विस्थापन'।

विवास्य—वि० [स० वि√ वस्+ण्यत्] (व्यक्ति) जो अपने निवास-स्थान से निकाल दिया जाने को हो या निकाला जा सके।

विवाह—पु० [स० वि√ वह् (ढोना)+घञ्] १ हिंदू धर्म मे सोलह सस्कारो मे से एक जिसमे वर तथा कन्या पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करते है।

विशेष—हिन्दू धर्म मे आठ प्रकार के विवाह माने गये हैं—ब्राह्म, दैव आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच्य।

३ उक्त सस्कार के अवसर पर होनेवाला उत्सव या समारोह। ४ व्यापक अर्थ मे, वह उत्सव जिसमे पुरुष तथा स्त्री वैवाहिक वन्धन मे वँधना स्वीकार करते है। ५ उक्त अवसर पर होनेवाला धार्मिक कृत्य। जैसे— विवाह पडित जी करावेंगे।

विवाहना†—स०=व्याहना।

विवाहला—पु० [स० विवाह] विवाह के समय गाये जानेवाले गीत। (राज०)

विवाह-विच्छेद—पु० [स० प० त०] वह अवस्था जिसमे पुरुष और स्त्री अपना वैवाहिक सम्वन्ध तोडकर एक दूसरे से अलग हो जाते है। तलाक। (डाइवोर्स)

विवाहा—वि० कृ० [स्त्री० विवाही]=विवाहित।

विवाहित—भू० कृ० [स० विवाह+इतच्] [स्त्री० विवाहिता] १ जिसका विवाह हो गया हो। व्याहा हुआ। २ जिसके साथ विवाह किया गया हो।

विवाह्य—वि० [स० वि√ वह् (ढोना)+ण्यत्] १ जिसका विवाह होने को हो या होना उचित हो। २ जिसके साथ विवाह किया जा सकता हो।

विवि—वि० [स०] १ दो। २ दूसरा। द्वितीय।

विविक्त—भू० कृ० [स० वि√ विच् (पृथक् होना)+क्त] [स्त्री० विविक्ता] १ पृथक् किया हुआ। २ विखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। ३. निर्जन। ४ पवित्र। जैसे—विविक्त स्त्री।

पु० १ त्यागी। २ सन्यासी।

विविक्ति—स्त्री० [स० वि√ विच् (पृथक् करना)+क्तिन्] १ विवेकपूर्वक काम करना। २ अलगाव। पार्थक्य। ३ विभाग।

विविध—[वि० स० व० स०] १ अनेक या वहुत प्रकार का। भाँति-भाँति का। जैसे—विविध विषयो पर होनेवाले भाषण। २ कई विभागो, मदो आदि का मिला-जुला। फुटकर। (मिसलेनियस)

विविर—पु०[स० वि०√वृ (सवरण करना)+अव्]=विवर।
विवीत—पु०[स० वि√वी (गमन, व्याप्त होना आदि)+क्त] १ चारों ओर से घिरा हुआ स्थान। २ पशुओं के रहने का बाडा।
विवुध—पु०=विबुध।
विशेष—'विवुध' के यौ० के लिए दे० 'विबुध' के यौ०।
विवृत—वि०[स०]१ फैला हुआ। विस्तृत। २ खुला हुआ। ३ (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय मुख-द्वार पूरा खुलता हो।
पु० व्याकरण मे उच्चारण की वह अवस्था जिसमे मुख-द्वार पूरा खुलता है।
विशेष—नागरी वर्णमाला मे 'आ' विवृत वर्ण (स्वर) है।
विवृता—स्त्री०[स० विवृत+टाप्] योनि का एक रोग जिसमे उस पर मडलाकार फुसियाँ होती हैं और बहुत जलन होती है।
विवृति—स्त्री० [स०] १ विवृत होने की अवस्था या भाव। २ किसी की कही या लिखी हुई बात की अपनी बुद्धि से प्रसगानुकूल अर्थ लगाना या स्थिर करना। निर्वचन। (इन्टरप्रिटेशन) ३ भाषा विज्ञान का विवृत नामक प्रयत्न अथवा वह प्रयत्न करने की क्रिया या भाव।
विवृतोक्ति—स्त्री०[स० व० स०] साहित्य मे, एक प्रकार का अलकार जिसमे श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वय अपने शब्दो द्वारा प्रकट कर देता है।
विवृत्त—वि०[स०]१ घूमता हुआ या चक्कर खाता हुआ। २ चलता हुआ। ३ ऐंठा हुआ या मुडा हुआ। ४ खुला या खोला हुआ। ५ सामने आया या लाया हुआ।
विवृत्ति—स्त्री०[स० वि√ वृत् (फैलाना आदि) +क्तिन्]१ विवृत्त होने की अवस्था या भाव। २. चक्कर खाना। घूमना। ३. विस्तार। फैलाव। ४ विकास। ५. ग्रन्थ की टीका या व्याख्या।
विवृद्ध—वि०[स०] [भाव० विवृद्धि]१ बहुत बढा हुआ। २ पूरी तरह से विकसित। ३ प्रौढ अवस्था तक पहुँचा हुआ। ४ शक्तिशाली।
विवेक—पु०[स०] [भाव० विवेकता]१ अन्त करण की वह शक्ति-जिसमे मनुष्य यह समझता हे कि कौन-सा काम अच्छा है या बुरा, अथवा करने योग्य है या नही। (कान्शेन्स)२ अच्छी बुद्धि या समझ। ३ सद्विचार की योग्यता। ४ सत्यज्ञान।
विवेकवादी—पु०[स०] वह जो यह कहता या मानता हो कि मनुष्य को वही काम करना चाहिए और वही बात माननी चाहिए जो उसका विवेक ठीक मानता हो।
विवेकवान्—वि०[स० विवेक+मतुप्, म-व, नुम्] १ जिसे सत् और असत् का ज्ञान हो। अच्छे-बुरे को पहचाननेवाला। २ बुद्धिमान।
विवेकाधीन—वि०[स०] (विषय) जो किसी के विवेक पर आश्रित हो। (डिस्क्रीशनरी)
विवेकी (किन्)—वि०[स० विवेक+इनि,] १ जिसे विवेक हो। भले-बुरे का ज्ञान रखनेवाला। विवेकशील। २ बुद्धिमान। ३ ज्ञानी। ३ न्यायशील।
पु० न्यायाधीश।
विवेचक—वि०[स० वि√ विच्+ण्वुल्—अक] विवेचन करनेवाला।
विवेचन—पु०[स० वि√ विच् (जाँच करना)+ल्युट्—अन] १ किसी चीज या बात के सभी अगो या पक्षो पर इस दृष्टि से विचार करना कि तथ्य या वास्तविकता का पता चले। यह देखना कि क्या समझना ठीक है और क्या ठीक नही है। सत् और असत् का विचार। २ तर्क-वितर्क। ३ मीमासा। ४ अनुसधान। ५. परीक्षण।
विवेचना—स्त्री०[विवेचन+टाप्] १. विवेचन। २ विवेचन करने की योग्यता या शक्ति।
विवेचनीय—वि०[स० वि√ विच् (विचारना)+अनीयर्] जिसका विवेचन होने को हो या होना उचित हो।
विवेचित—भू० कृ०[स० वि√विच् (विवेचन करना)+क्त] जिसकी विवेचना की गई हो या हो चुकी हो। २ निश्चित या तै किया हुआ। निर्णीत।
विवेच्य—वि०[स०] विवेचनीय।
विव्वोक—पु०[स० वि√ वा (गमन करना) आदि)+कु, विवु-ओक, ष० त०] साहित्य-शास्त्र के अनुसार एक हाव जिसमे स्त्रियाँ सयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।
विशंक—वि०[स० व० स०] शका-रहित। नि शक।
विशंकनीय—वि०[स० वि०√शक् (सदेह करना)+अनीयर्] जिसमे किसी प्रकार की शका न हो।
विशंका—स्त्री०[स० वि√शक् (सदेह करना)+अच्+टाप्]१ आशका। २. डर। भय। ३. आशका का अभाव।
विशंकी (किन्)—वि०[स० वि√ शक् +णिनि] जिसे किसी प्रकार की आशका हो।
विशंक्य—वि०[स० वि√ शक् +ण्यत्] १ जिसके मन मे कोई शका हो या हो सकती हो। २. प्रश्नास्पद। पूछने योग्य।
विश्—स्त्री०[स० विश् (प्रवेश करना)+क्विप्]१ प्रजा। २ रिआया। ३ कन्या। लडकी।
वि० जिसने जन्म लिया हो।
विश—पु०[स० √ विश् (प्रवेश करना आदि)+क] १ कमल की डडी। मृणाल। २. मनुष्य। ३ चाँदी।
स्त्री० १ कन्या। २ लडकी।
विशद—वि०[स०] [भाव० विशदता] १ स्वच्छ। निर्मल। साफ। २ स्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाला। ३ उज्ज्वल। चमकीला। ४ सफेद। ५. चितारहित। शात तथा स्थिर। ६ खुश। प्रसन्न। ७ मनोहर। सुन्दर। ८ अनुकूल।
पु०१ सफेद रग। २ कसीस। ३ बृहती। बन-भटा।
विशदता—स्त्री०[स०]१ विशद होने की अवस्था या भाव। २ निर्मलता। ३. स्पष्टता।
विशदित—भू० कृ० [स० वि√ शद् (स्वच्छ करना आदि) +क्त]विशद अर्थात् साफ किया हुआ।
विशय—पु०[स० वि√ शी (स्वप्न, सशय आदि)+अच्]१. सशय। सदेह। शक। २ आश्रय। सहारा। २ केन्द्र। मध्य।
विशरण—पु०[स० वि√ शृ (मारना)+ल्युट्—अन] १ मार डालना। हत्या करना। वध करना। २ नाश। ३ विस्फोटन।
विशल्य—वि०[स०]१ (स्थान) जो काँटो से रहित हो। २ तीर

जिसमे नोक न हो। ३. (स्थिति) जिसमे कष्ट या सकट न हो।

विशल्या—स्त्री०[स० विशल्य+टाप्] १ गुडुच। २ दती। ३ नागदती। ४. अग्नि-शिखा नामक वृक्ष। निशोथ। ६ पाटला। ७ खेसारी। ८ एक प्रकार की तुलसी जिसे रमदती भी कहते है। ९ एक प्राचीन नदी। १० लक्ष्मण की स्त्री उर्मिला का दूसरा नाम।

विशसन—पु० [स०] [भू० कृ० विशसित] १ वध करना। २ नष्ट या बरबाद करना। ३ युद्ध।

विशसित—भू० कृ० [स० वि√ शस् (मारना)+क्त] १ जो मार डाला गया हो। २ काटा या चीरा हुआ।

विशस्त—वि०=विशसित।

विशाप्रति—पु०[स० प० त०] राजा।

विशा—स्त्री०[स० विश् (प्रवेश करना)+क+टाप्] १. जाति। २. लोक।

विशाकर—पु०[स० विशा√कृ (करना)+अच्] १ भद्रचूड। लकासिज। २ दती। ३ हाथीशुडी। ४. पाटला या पाढर नामक वृक्ष।

विशाख—पु०[स० विशाखा+अण्, ब० स०]१ कार्तिकेय। २ शिव। ३. धनुप चलानेवाले की वह मुद्रा जिसमे एक पैर आगे और एक पीछे रखा जाता है। ४ पुराणानुसार एक देवता जिनका जन्म कार्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ था। ५ गदहपुरना। पुनर्नवा। ६. बालको को होनेवाला एक प्रकार का रोग। (वैद्यक) वि०—१ शाखाओ से रहित। २ माँगनेवाला। याचक।

विशाख-यूप—पु०[स० ब० स०]एक प्राचीन देश जिसे कुछ लोग मद्रास प्रान्त का आधुनिक विशाखपत्तन मानते हैं।

विशाखा—स्त्री०[स० विशाख+टाप्]१ बडी शाखा मे से निकली हुई छोटी शाखा। २ सत्ताईस नक्षत्रो मे से सोलहवाँ नक्षत्र जो मित्र गण के अन्तर्गत है और इसे राधा भी कहते है। ३ कौशाम्बी के पास का एक प्राचीन जनपद। ५ सफेद गदहपूरना। ५ काली अपराजिता।

विशातन—पु०[स० वि√ शत् (काटना, आदि)+णिच्+ल्युट—अन] [भू० कृ० विशातित]१. खडित या नष्ट करना। २. विष्णु का एक नाम।

वि० काटने, तोडने या नष्ट करनेवाला।

विशारण—पु०[स० वि √ शृ (मारना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ मार डालना। २ चीरना या फाडना।

विशारद—वि० [स० विशाल√दा (देना)+क, ल+र] १ समस्त पदो के अन्त मे किसी विषय का विशेषज्ञ। जैसे—चिकित्सा-विशारद, शिक्षा-विशारद। २ पडित। विद्वान्। ३ उत्तम। श्रेष्ठ। ४. अभिमानी।

पु० बकुल वृक्ष।

विशाल—वि०[स०√ विश् (प्रवेश करना)+कालन्] [भाव० विशालता] १ जो आकार-प्रकार, आयतन, आदि की दृष्टि से अत्यधिक ऊँचा या विस्तृत हो। २ जिसके आकार-प्रकार मे भव्यता हो। ३ सुन्दर। पु० १ पेड। २ पक्षी। ३ एक प्रकार का हिरन।

विशालक—पु०[स० विशाल+कन्]१ कैथ। कपित्थ। २ गरुड।

विशालता—स्त्री०[स० विशाल+तल्+टाप्] विशाल होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

विशाल-पत्र—पु०[स० ब० स०] १ श्रीताल नामक वृक्ष। हिंताल। २ मानकद।

विशाला—स्त्री०[स० विशाल+टाप्] १. इन्द्रवारुणी नामक लता। २ पोई का साग। ३ मुरा-मासी। ४ कलगा नामक घास। ५ महेन्द्र-वारुणी। ६ प्रजापति की एक कन्या। ७ दक्ष की एक कन्या। ८. एक प्राचीन तीर्थ।

विशालाक्ष—पु०[स० ब० स०] [स्त्री० विशालाक्षी] १ महादेव। २. विष्णु। ३ गरुड।

वि० बडी और सुन्दर आँखोवाला।

विशालाक्षी—स्त्री० [स० विशालाक्ष +ङीप्] १ पार्वती। २ एक देवी। ३ चौसठ योगिनियो मे से एक योगिनी। ४ नागदती।

विशिका—स्त्री०[स० विश+कन्+टाप्, इत्व] बालू। रेत।

विशिख—पु०[स० ब० स०]१ रामसर या भद्रभुज नामक घास। २. बाण। ३ रोगी के रहने का स्थान।

वि० १ शिखाहीन। २ (बाण) जिसकी नोक भोथरी हो। ३ (आग) जिसमे से लपट न उठ रही हो।

विशिखा—स्त्री० [स० विशिख+टाप्] १ कुदाल। २ छोटा बाण। ३ एक तरह की सूई। ४ मार्ग। रास्ता। ५ रोगियो के रहने का स्थान।

विशिरस्क—पु० [स० ब० स०,+कप्] पुराणानुसार मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

वि० सिर या मस्तक से रहित।

विशिरा(रस्)—वि० [स०] जिसका सिर न हो या न रह गया हो।

विशिष्ट—वि०[स०] [भाव० विशिष्टता]१ (वस्तु) जिसमे औरो की अपेक्षा कोई बहुत बडी विशेषता हो। २ (व्यक्ति) जिसे अन्यो की अपेक्षा अधिक आदर, मान आदि प्राप्त हो या दिया जा रहा हो। ३ अद्भुत। ४. शिष्ट। ५ कीर्तिशाली। ६ तेजस्वी। ७ प्रसिद्ध।

विशिष्टता—स्त्री० [स०विशिष्ट+तल्—टाप्] विशिष्ट होने की अवस्था, धर्म या भाव।

विशिष्टाद्वैत—पु० [स० विशिष्ट+अद्वैत] आचार्य रामानुज (सन् १०३७—११३७ई०) का प्रतिपादित किया हुआ यह दार्शनिक मत कि यद्यपि जगत् और जीवात्मा दोनो कार्यत ब्रह्म से भिन्न है फिर भी वे ब्रह्म से ही उद्भूत है, और ब्रह्म से उनका उसी प्रकार का सबध है जैसा कि किरणो का सूर्य से है, अत ब्रह्म एक होने पर भी अनेक है।

विशिष्टी—स्त्री०[स० विशिष्ट+ङीप्]शकराचार्य की माता का नाम।

विशिष्टीकरण—पु०[स०]१ किसी काम या बात को कोई विशिष्ट रूप देने की क्रिया या भाव। २. किसी कला, विद्या या शास्त्र मे विशिष्ट रूप से प्रवीणता या योग्यता प्राप्त करने की क्रिया या भाव। (स्पेशलाइजेशन)

विशीर्ण—भू० कृ०[स० वि√शृ(हिंसा करना)+क्त]१ जिसके टुकडे-टुकडे या खण्ड-खण्ड हो गये हो। २ गिरा हुआ। पतित। ३ सकुचित। ४. सूखा हुआ। ५ दुबला-पतला। ६ बहुत पुराना।

विशील—वि०[स० ब० स०] १ बुरे शीलवाला। २ दुश्चरित्र।

विशुद्ध—वि०[सं० तृ० त०] [भाव० विशुद्धि]१ जो बिलकुल शुद्ध हो। खरा। जैसे—विशुद्ध घी। २. जिसमे कुछ भी दोष या मैल न हो। ३. सच्चा। सत्य।

विशुद्ध चक्र—पु०[सं०] हठयोग के अनुसार शरीर के अन्दर के छः चक्रों मे से एक जो धूम्र वर्ण का तथा सोलह दलोंवाला है तथा गले के पास माना गया है।

विशेष—आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी चक्र की ग्रंथियों की प्रक्रिया से शरीर के अन्दर के विष बाहर निकलते हैं।

विशुद्धता—स्त्री०[सं० विशुद्ध+टाप्]१ विशुद्ध होने की अवस्था या भाव। पवित्रता। २. चारित्रिक पवित्रता।

विशुद्धि—स्त्री० [सं०]१ विशुद्धता। २. दोष, शंका आदि दूर करने की क्रिया या भाव। ३ भूल का सुधार। ४ पूर्ण ज्ञान। ५ सादृश्य।

विशुद्धिवाद—पु०[सं०] यह सिद्धान्त कि दूषित प्रभावों से अपने को या अपनी चीजों को निर्दोष तथा विशुद्ध रखना चाहिए।

विशूचिका—स्त्री०[सं० वि√ सूच् (सूचना देना)+अन्+कन्, टाप, इत्व] विसूचिका (रोग)।

विशून्य—वि०[सं० विशून्य+यत्] [भाव० विशून्यता]१ पूरी तरह से रिक्त या शून्य। २ जिसके अन्दर वायु तक न रह गई हो। (वैक्युम)

विशृंखल—वि०[सं० ब० स०] १ जो शृंखलित न हो। बंधनहीन। ३. जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके। अदम्य।

विशृंखलता—स्त्री०[सं०] विशृंखल होने की अवस्था या भाव।

विशृंग—वि०[सं० ब० स०] जिसे शृंग न हो। शृंगरहित।

विशेष—वि०[सं० वि√शिष् (विशेषता होना)+घञ्] १ जिसमे औरों की अपेक्षा कोई नयी बात हो। विशेषता-युक्त। २. जिसमे औरों की अपेक्षा कुछ अधिकता हो। ३ विचित्र। विलक्षण। ४ बहुत अधिक। विपुल। पु०१ वह जो साधारण से अतिरिक्त और उससे अधिक हो। अधिकता। ज्यादती। २ अन्तर। ३. प्रकार। भेद। ४ विचित्रता। विलक्षणता। ५ तारतम्य। ६ नियम। कायदा। ७ अंग। अवयव। ८ चीज। पदार्थ। वस्तु। ९ व्यक्ति। १० निचोड़। सार। ११ साहित्य मे, एक प्रकार का अलंकार जिसके तीन भेद कहे गये है।

विशेषक—वि०[सं०] विशेष रूप देने या विशिष्टता उत्पन्न करनेवाला। पु०१. विशेषता बतलानेवाला चिह्न, तत्त्व या पदार्थ। २ माथे पर लगाया जानेवाला टीका या तिलक जो प्राय किसी सम्प्रदाय के अनुयायी होने का सूचक होता है। ३ प्राचीन भारत मे, अगर, कस्तूरी, चंदन आदि से गाल, माथे आदि पर की जानेवाली एक प्रकार की सजावट। ४ साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमे पदार्थों मे रूप-सादृश्य होने पर भी किसी एक की विशिष्टता के आधार पर उसके पार्थक्य का उल्लेख होता है। उदा०—कागन मे मृदु बानि ते, मै पिक लियो पिछान। —पद्माकर। ५ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे ५ भगण और एक गुरु होता है। इसे अश्वगीत, नील, और लीला भी कहते है। ६ साहित्य मे, ऐसे तीन पदो या श्लोको का वर्ग या समूह जिनमे एक ही क्रिया होती है, और इसी लिए इन तीन पदो या श्लोको का एक साथ अन्वय होता है। ७. तिल का पौधा। ८ चित्रक। चीता।

विशेषक चिह्न—पु०[सं०] वे चिह्न जो वर्णमाला के अक्षरों या वर्णों पर उनका कोई विशिष्ट उच्चारण-प्रकार सूचित करने के लिए लगाये जाते है। (डायाक्रिटिकल मार्क्स)

विशेषज्ञ—पु०[सं० विशेष√ज्ञा (जानना)+क] [भाव० विशेषज्ञता] वह जो किसी विषय का विशेष रूप से ज्ञाता हो। किसी विषय का बहुत बड़ा पंडित।

विशेषण—पु०[सं०]१ वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो। २. व्याकरण मे, ऐसा विकारी शब्द जो किसी संज्ञा की विशेषता बतलाता हो, उसकी व्याप्ति मर्यादित करता हो अथवा उसे अन्य संज्ञाओं से पृथक् करता हो। (एडजेक्टिव)

विशेषता—स्त्री०[सं० विशेष+तल्+टाप्]१. विशेष होने की अवस्था या भाव। २. किसी वस्तु या व्यक्ति मे औरों की अपेक्षा होनेवाली कोई अनोखी बात।

विशेषांक—पु०[सं० विशेष+अंक] सामयिक पत्र का वह अंक जो किसी विशिष्ट अवसर पर या किसी विशेष उद्देश्य से और साधारण अंकों की अपेक्षा विशिष्ट रूप मे या अलग से प्रकाशित होता है। (स्पेशल नम्बर)

विशेषाधिकार—पु०[सं०]किसी विशिष्ट व्यक्ति को विशेष रूप से मिलनेवाला कोई ऐसा अधिकार जिससे उसे कुछ सुभीता भी मिलता हो। (प्रिविलेज)

विशेषित—भू० कृ०[सं० वि√शिष् (विशेषता होना)+क्त]१ जिसमे विशेषता लाई गई हो। २. (संज्ञा शब्द) जिसकी विशेषता कोई विशेषण मर्यादित करता हो।

विशेषी—वि०[सं० वि√ शिष् +णिनि] जिसमे कोई विशेष बात हो। विशेषता-युक्त। विशिष्ट।

विशेषोक्ति—स्त्री० [सं० विशेष+उक्ति] साहित्य मे, एक अर्थालंकार जिसमे कारण के पूरी तरह से वर्तमान रहने भी कार्य के अभाव का अथवा किसी क्रिया के होने पर भी उसके परिणाम या फल के अभाव का उल्लेख होता है। (पिक्यूलियर-एलेजेशन) यह विभावना का बिल्कुल उल्टा है। इसके उक्त निमित्ता, अनुक्त निमित्ता और औचित्य निमित्ता ये तीन भेद माने गये है।

विशेष्य—पु०[सं० वि√ शिष् +ण्यत्] व्याकरण मे, वह शब्द अथवा पद, जिसकी विशेषता कोई विशेषण या विशेषण पद सूचित करता या कर रहा हो।

विशेष्य-लिंग—पु० [सं०] व्याकरण मे, ऐसा शब्द जिसका लिंग उसके विशेष्य के लिंग के अनुसार निरूपित हो। जैसे—पाले या हिम के अर्थ मे शिशिर शब्द पु० है शीत काल के अर्थ मे पुनपुसक तथा शीत से युक्त पदार्थ के अर्थ मे विशेष्य लिंग होता है। अर्थात् उसका वही लिंग होता है, जो उसके विशेष्य का होता है।

विशेष्यासिद्धि—स्त्री० [सं० विशेष्य+असिद्धि, तृ० त०] तर्कशास्त्र मे, ऐसा हेत्वाभास जिसके द्वारा स्वरूप की असिद्धि हो।

विशोक—वि० [सं० ब० स०] [भाव० विशोकता] जिसे शोक न हो। शोक से रहित।

पु०१ अशोक वृक्ष। २ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र।

विशोका—स्त्री०[सं० विशोक+टाप्] योग दर्शन के अनुसार, ऐसी चित्त-

वृत्ति जो सप्रज्ञात समाधि से पहले होती है। इसे ज्योतिष्मती भी कहते हैं।

विशोणित—भू० कृ० [स० ब० स०] जिसका रक्त निकाल लिया गया हो।

विशोध—वि० [स०] विशुद्ध करने के योग्य। विशोध्य।

विशोधन—पु० [स०] [भू० कृ० विशोधित] १ विशुद्ध करने या बनाने की क्रिया या भाव। २. विशुद्धीकरण।

विशोधनी—स्त्री० [स० विशोधन+ङीप्] १. ब्रह्मा की पुरी का नाम। २ ताम्बूल। पान। ३ नागदती। ४ नीली नाम का पौधा।

विशोधित—भू० कृ० [स० वि√शुध् (शुद्ध करना)+क्त] जिसका विशोधन हुआ हो या किया गया हो।

विशोधिनी—स्त्री० [स०] १ नागदती। २ जमालगोटा। ३ नीली नाम का पौधा।

विशोधी (धिन्)—वि० [स० वि√शुध्+णिनि] विशुद्धि करने या बनानेवाला।

विशोध्य—वि० [स० वि√शुध्+यत्] जिसका विशोधन होने को हो या हो सकता हो।
पु० ऋण। कर्ज।

विश्पति—पु० [स० ष० त०] [स्त्री० विश्पत्नी] १ राजा। २ वैश्यो या व्यापारियों का पच या मुखिया।

विश्रंभ—पु० [स०] १. किसी मे होनेवाला दृढ तथा पूर्ण विश्वास। २ प्रेम। मुहब्बत। ३ रति के समय प्रेमी और प्रेमिका मे होनेवाला झगडा। ४ वध। हत्या। ५ स्वच्छन्दतापूर्वक घूमना-फिरना।

विश्रंभी (भिन्)—वि० [स० वि√श्रम्भ् (विश्वास करना)+णिनि] १ विश्वास करनेवाला। विश्वास का पात्र। विश्वसनीय। ३ गोपनीय (वार्ता)। ४ प्रेम-सबधी।

विश्रब्ध—वि० [स०] १ जिसका विश्वास किया जा सके। २ जो किसी का विश्वास करे। ३. निडर। निर्भय। ४. शान्त और सुशील।

विश्रब्ध-नवोढ़ा—स्त्री० [स०] साहित्य मे, वह नायिका (विशेषत ज्ञात-यौवना) जिसमे लज्जा और भय पहले से कम हो गया हो और जो प्रेमी की ओर कुछ-कुछ आकृष्ट होने लगी हो।

विश्रम—पु० [स० वि√श्रम् (श्रम करना)+घञ्, ब० स०]=विश्राम।

विश्रय—पु० [स० वि√श्रि (आश्रय देना)+अच्] आश्रय। स्थान।

विश्रयी (यिन्)—वि० [स० विश्रय+इनि] आश्रय या सहारा लेनेवाला।

विश्रव (स्)—पु० [स०] ख्याति। प्रसिद्धि।

विश्रवा (वस्)—पु० [स०] कुबेर के पिता जो पुलस्त्य के पुत्र थे।

विश्रांत—वि० [स० ब० स०] १ जिसने विश्राम कर लिया हो। २ जो कम हो गया या रुक गया हो। ३ रहित। ४ समाप्त। ५ वचित। ६ क्लात।

विश्रांति—स्त्री० [स०] १ विश्राम। आराम। २ थकावट। ३ कार्य-काल पूरा होने अथवा और किसी कारण से अपने कार्य, पद, सेवा आदि से स्थायी रूप से हट कर किया जानेवाला विश्राम। (रिटायरमेन्ट)

विश्राम—पु० [स०] १ ऐसा उपचार, क्रिया या स्थिति जिससे श्रम दूर हो। थकावट कम करने या मिटानेवाला काम या बात। आराम। (रेस्ट) २ कर्मचारियो, विद्यार्थियो को कुछ नियत घटो तक काम करने के बाद थकावट और सुस्ती मिटाने तथा जलपान आदि करने के लिए मिलनेवाला अवकाश। ३ ठहरने का स्थान। विश्रामालय। ४. चैन। सुख।

विश्रामालय—पु० [स० ष० त०] वह स्थान जहाँ यात्री लोग सवारी के इन्तजार मे ठहर या रुककर विश्राम करते हो।

विश्राव—पु० [स० वि√श्रु (सुनना)+घञ्] १ तरल पदार्थ का झरना, बहना या रिसना। क्षरण। २ बहुत अधिक प्रसिद्धि। ३ ध्वनि।

विश्रावण—पु० [स० वि√श्रु+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विश्रावित] कोई तरल पदार्थ, विशेषत रक्त बहना।

विश्री—वि० [स०] १ जिसकी श्री नष्ट या लुप्त हो गई हो। श्रीहीन। २ (व्यक्ति) जिसके मुख पर सौदर्य की झलक न दिखाई पडती हो। भद्दा।

विश्रुत—वि० [स० तृ० त०] [भाव० विश्रुति] १ जिसे लोग अच्छी तरह से सुन चुके हो। २ जिसे सब लोग जान चुके हो, फलत प्रसिद्ध।

विश्रुतात्मा (त्मन्)—पु० [स० विश्रुत+आत्मा, ब० स०] विष्णु।

विश्रुति—स्त्री० [स० वि√श्रु (ख्याति होना)+क्तिन्] विश्रुत होने की अवस्था या भाव।

विश्लथ—वि० [स० ब० स०] १ बहुत थका हुआ। श्लथ। क्लान्त। २ ढीला। शिथिल। ३ बन्धन से छूटा हुआ। मुक्त।

विश्लिष्ट—भू० कृ० [स० वि√श्लिष् (सयुक्त होना)+क्त] १ जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २ जो अलग किया जा चुका हो। ३ खिला हुआ। विकसित। ४ प्रकट। व्यक्त। ५ खुला हुआ। मुक्त। ६ थका हुआ। शिथिल।

विश्लिष्ट सधि—स्त्री० [स० ब० स०] शरीर के अगो की ऐसी सन्धि या जोड जिसकी हड्डी टूट गई हो। (वैद्यक)

विश्लेष—पु० [स० वि√श्लिष+घञ्] १ अलग या पृथक् होना। २ वियोग। ३ थकावट। शिथिलता। ४ विरक्ति। ५ विकास।

विश्लेषण—पु० [स०] [भू० कृ० विश्लेषित] १ अलग या पृथक् करना। २ किसी वस्तु के सयोजक अगो या द्रव्यों को इस उद्देश्य मे अलग-अलग करना कि उनके अनुपात, कर्तृत्व, गुण, प्रवृत्ति, पारस्परिक सबध आदि का पता चले। ३. किसी विषय के सब अगो की इस दृष्टि से छान-बीन करना कि उनका तथ्य या वास्तविक स्वरूप सामने आए। (एनैलिसिस उक्त दोनो अर्थों के लिए) ४ वैद्यक मे, घाव या फोड़े मे वायु के प्रकोप से होनेवाली एक प्रकार की पीडा।

विश्लेषणात्मक—वि० [स० विश्लेषण+आत्मक] (विचार या निश्चय) जो विश्लेषणवाली प्रक्रिया के अनुसार हो। 'आश्लेषात्मक' का विपर्याय। (एनैलिटिकल)

विश्लेषी (षिन्)—वि० [स० विश्लेष+इनि] १ विश्लेषण करनेवाला। २ वियुक्त।

विश्लेष्य—वि० [स०] जिसका विश्लेषण होने को हो या हो रहा हो।

विश्वंतर—पु० [स० विश्व√तृ (पार करना आदि)+खच्, मुम्] भगवान बुद्ध का एक नाम।

विश्वंभर—वि० [स० विश्व√भृ (भरण-पोषण करना)+खच्, मुम्] [स्त्री० विश्वभरा] विश्व का भरण-पोषण करनेवाला।
पु० १ विष्णु। २. इन्द्र। ३. अग्नि। ४ एक उपनिषद् का नाम।

विश्वंभरा—स्त्री० [स०] पृथ्वी।

विश्वभरी—स्त्री०[स०] १ पृथ्वी। २ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

विश्व—वि०[स०√विश् (प्रवेश करना)+क्वन्] कुल। समस्त।
पु० १ सृष्टि का वह सारा अश जो हमे दिखाई देता है। २ ब्रह्माड। समस्त सृष्टि। ३ जगत्। ससार। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ जीवात्मा। ७. देह। शरीर।

विश्वक—वि०[स०] १ विश्व-सबधी। २ जिसका प्रभाव, प्रसार आदि विश्व-व्यापी हो। (यूनीवर्सल)

विश्वकर्ता—पु०[स० ष० त०] विश्व का स्रष्टा। ईश्वर।

विश्वकर्मा(र्मन्)—पु० [स० ब० स०] १ समस्त ससार की रचना करनेवाला अर्थात् ईश्वर। २. ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ शिव। ५ वैद्यक मे शरीर की चेतना नामक धातु। ६ एक शिल्पकार जो देवताओं के शिल्पी और वास्तु-कला के सर्वश्रेष्ठ आचार्य माने गए हैं। ७ इमारत का काम करनेवाले राज, बढई, लोहार आदि।

विश्वकाय—पु०[स० ब० स०] सारा विश्व जिसका शरीर हो, अर्थात् विष्णु।

विश्वकाया—स्त्री०[स० विश्वकाय+टाप्] दुर्गा।

विश्वकार—पु०[स० ष० त०] विश्वकर्मा।

विश्वकार्य—पु०[स० ब० स०] सूर्य की सात किरणो या रश्मियो मे से एक।

विश्वकृत्—पु०[स०] १. विश्व का निर्माता अर्थात् ईश्वर। २ विश्वकर्मा।

विश्वकेतु—पु०[स० ष० त०] (कृष्ण के पौत्र) अनिरुद्ध।

विश्वकोश—पु० [स०] ऐसा कोश या भडार जिसमे ससार भर के पदार्थ सगृहीत हो। २. ऐसा विशाल ग्रन्थ जिसमें ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओ-प्रशाखाओ तथा महत्त्वपूर्ण बातो का विश्लेषण तथा विवेचन होता है। (एनसाइक्लोपीडिया)
विशेष—विश्व कोश मे विभिन्न विषयो के बडे-बड़े विद्वानो के लिखे हुए ग्रन्थो, निबधो, विवेचनो आदि के साराश सकलित होते है, और उन विषयो के शीर्षक प्राय अक्षर-क्रम से लगे रहते है।

विश्वगंध—पु० [सं० ब० स०] १. बोल (गध द्रव्य)। २ प्याज।
वि० जिसकी गध बहुत दूर-दूर तक फैलती हो।

विश्वगंधा—स्त्री०[स० विश्वगध+टाप्] पृथ्वी।

विश्वग—वि०[स० विश्व√गम् (जाना)+ड] विश्व भर मे जिसका गमन या गति हो।
पु० ब्रह्मा।

विश्वगर्भ—पु०[स० ब० स०] १ विष्णु। २ शिव।

विश्वगुरु—पु०[स० ष० त०] विष्णु।

विश्व-गोचर—वि० [स०] जिसे सब लोग जान या देख सकते हो।

विश्वगोप्ता—पु०[स० ष० त०] १ विष्णु। २ इन्द्र। ३ विश्वम्भर।

विश्व-चक्र—पु०[स० ब० स०] पुराणानुसार बारह प्रकार के महादानो मे से एक। इसमे एक हजार पल का सोने का चक्र बनवाकर दान किया जाता है।

विश्व-चक्षु(ष्)—पु०[स०] ईश्वर।

विश्वजित्—वि०[स०] विश्व को जीतनेवाला।
पु० १ वह जिसने सारे विश्व को जीत लिया हो। २. एक प्रकार की अग्नि। ३ एक प्रकार का यज्ञ। ४. वरुण का पाश।

विश्वजीव—पु०[स० ष० त०] ईश्वर।

विश्वत'(तम्)—अव्य० [स० विश्व+तसिल्] १. विश्व भर मे सब कहीं। सर्वत्र। २. सारे विश्व के विचार से।

विश्वतोया—स्त्री०[स०] गगा नदी।

विश्वत्रय—पु०[स०] आकाश, पाताल और मर्त्य लोक।

विश्वदेव—पु०[स०] देवताओ का एक वर्ग जिसकी पूजा नादी-मुख श्राद्ध मे की जाती है।

विश्वदेवत—पु०[स०] उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

विश्वधर—पु०[स० विश्व√धृ (धारण करना)+अच्], विश्व को धारण करनेवाले विष्णु।

विश्वधाम(न्)—पु० [स०] ईश्वर।

विश्वधारिणी—स्त्री० [स०] पृथ्वी।

विश्वधारी (रिन्)—पु० [स०] विष्णु।

विश्वनाथ—पु०[स०] १. विश्व के स्वामी, शकर। महादेव। २ काशी का एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग।

विश्वनाभ—पु०[स०] विष्णु।

विश्व-नाभि—स्त्री०[स०] विष्णु का चक्र जो विश्व की नाभि के रूप मे माना जाता है।

विश्वपति—पु०[स०] १ ईश्वर। २ श्रीकृष्ण।

विश्व-पदिक—वि०[स०] (रोग या विकार) जो बहुत बडे भू-भाग, सारे महाद्वीप या सारे ससार मे फैला या फैल सकता हो। (पैण्डेमिक)

विश्व-प्रकाश—पु०[स० ष० त०] सूर्य।

विश्वप्स (प्सन्)—पु० [स० विश्व√प्सा (खाना)+कनिन्] १ अग्नि। २ चन्द्रमा। ३. सूर्य। ४ देवता। ५ विश्वकर्मा।

विश्व-बंधु—वि०[स० ष० त०] जो विश्व का मित्र हो।
पु० शिव।

विश्वबाहु—पु०[स०] १. विष्णु। २. महादेव।

विश्व-बीज—पु०[स० ष० त०] विश्व की मूल प्रकृति, माया।

विश्वभद्र—पु० [स० ब० स०] सर्वतोभद्र (चक्र)।

विश्व-भर—वि०[स० ष० त०] जिससे विश्व उत्पन्न हुआ हो।
पु० ब्रह्मा।

विश्वभुज्—पु० [स० विश्व√भुज् (भोग करना)+क्विप्] १ ईश्वर। २ इन्द्र।

विश्व-माता(तृ)—स्त्री०[स० ष० त०] दुर्गा, जो विश्व की माता कही गई है।

विश्वमुखी—स्त्री०[स० ब० स०] पार्वती।

विश्वमूर्ति—वि० [स० ब० स०] जो सब रूपो मे व्याप्त हो।
पु० विष्णु।

विश्व-योनि—पु०[स० ष० त०] ब्रह्मा।

विश्वरुचि—पु०[स०] एक देव-योनि।

विश्वरुची—स्त्री०[स०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक।

विश्वरूप—पु०[स०] १. विष्णु। २ शिव। ३ भगवान श्रीकृष्ण का

वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था। ४ एक प्राचीन तीर्थ।

विश्वरूपी(पिन्)—पु०[स० विश्वरूप+इनि] विष्णु।

विश्वलोचन—पु०[स०] १ सूर्य। २. चन्द्रमा।

विश्ववाद—पु०[स०] १. दार्शनिक क्षेत्र का यह मतवाद कि विज्ञान की दृष्टि से यह सिद्ध किया जा सकता है कि सारा विश्व एक स्वतत्र सत्ता है और कुछ निश्चित नियमो के अनुसार उसका निरतर विकास होता चलता है। (कॉजमिस्म) २ यह सिद्धात कि तत्त्वज्ञान सबधी सभी बातें सारे विश्व मे समान रूप से पाई जाती हैं। (युनिवर्सलिज्म)

विश्ववास—पु०[स०] ससार। जगत्।

विश्वविद्—वि०[स० विश्व√विद् (जानना)+क्विप्] १. जो विश्व की सब बातें जानता हो। २ बहुत बडा पडित।
पु० ईश्वर।

विश्वविद्यालय—पु०[स०] वह बहुत बडी शैक्षणिक सस्था जिसके अन्तर्गत या अधीन सभी प्रकार के विषयों की सर्वोच्च शिक्षा देनेवाले बहुत से महाविद्यालय हो और जिसे, अपने स्नातकों को शिक्षा सबधी उपाधियाँ देने का अधिकार हो। (यूनीवर्सिटी)

विश्वव्यापक—वि०,पु०[स०] विश्वव्यापी। (दे०)

विश्वव्यापी—वि०[स० विश्वव्यापिन्] १ जो सारे विश्व मे व्याप्त हो। २. जो ससार या उसके अधिकतर भागो मे व्याप्त हो।
पु० ईश्वर या परमात्मा।

विश्वश्रवा(वस्)—पु० [सं०] रावण के पिता का नाम।

विश्वसन—पु०[स० वि√श्वस् (जीवन देना)+ल्युट्—अन] १. विश्वास। २. ऋषियों और मुनियों के रहने का स्थान।

विश्वसनीय—वि० [स० वि√श्वस् (विश्वास करना)+अनीयर्] १. (व्यक्ति) जिस पर विश्वास किया जा सकता हो। २ (बात) जिस पर विश्वास किया जाना चाहिए।

विश्वसहा—स्त्री०[स०] अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक।

विश्व-साक्षी(क्षिन्)—पु०[स०] ईश्वर।

विश्वसित—भू० कृ०[स० वि√श्वस् (विश्वास करना)+क्त] १ जिस पर विश्वास किया गया हो। २ विश्वास-पात्र। ३ जिसे अपने पर पूर्ण विश्वास हो।

विश्व-सृज्—पु०[स०] विश्व की सृष्टि करनेवाला ईश्वर या ब्रह्मा।

विश्वस्त—भू० कृ०[स० वि√श्वस् (विश्वास करना)+क्त] १ जिसका विश्वास किया जाय। २ जिसके मन मे विश्वास हो चुका हो।

विश्वहर्ता(र्तृ)—पु०[स० प० त०] शिव।

विश्व-हेतु—पु० [स०] विश्व की सृष्टि करनेवाले विष्णु।

विश्वाड—पु०[स० कर्म० स०] ब्रह्माण्ड।

विश्वा—स्त्री०[स०√विश् (प्रवेशकरना)+क्वन्+टाप्] १. दक्ष की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी और जिससे वसु, सत्य, क्रतु आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए थे। २ बीस पल की एक प्राचीन तौल या मान। ३ पीपल। ४ सोठ। ५ अतीस। ६ शतावर। ७ चोरपुष्पी। शखिनी।

विश्वाक्ष—वि०[स० विश्व+अक्ष] जिसकी दृष्टि पूर्ण विश्व पर हो।
पु० ईश्वर।

विश्वातीत—वि०[स० प० त०] १. जिसे विश्व प्राप्त न कर सकता हो। २ विश्व से अलग या दूर।
पु० ईश्वर।

विश्वात्मा(त्मन्)—पुं० [स० ब० स० विश्व+आत्मन्] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ शिव। ४ सूर्य।

विश्वाद्—पु०[स० विश्व√अद् (खाना)+क्विप्] अग्नि।

विश्वाधार—पु०[स० प० त०] विश्व का आधार अर्थात् परमेश्वर।

विश्वानर—वि०, पु०=वैश्वानार।

विश्वामित्र—वि०[सं० ब० स०, विश्व+मित्र] जो विश्व का मित्र हो।
पु० गाधि नामक कान्यकुब्ज क्षत्रिय नरेश के पुत्र जिन्होंने घोर तपस्या से ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था।
विशेष—भगवान राम ने इन्ही की आज्ञा से ताडका का वध किया था।

विश्वामृत—वि०[स० विश्व+अमृत] जिसकी कभी मृत्यु न हो। अमर।

विश्वायन—पु०[स० प० त०] १ वह जो विश्व की सब बातें जानता हो। सर्वज्ञ। २ ब्रह्मा।

विश्वावसु—पु०[स० ब० स०] १ विष्णु। २. साठ सवत्सरों मे से एक।
स्त्री० रात्रि। रात।

विश्वावास—पु०[स० प० त०] ईश्वर। परमात्मा।

विश्वाश्रय—पु०[स० प० त०] विश्व को आश्रय देनेवाला अर्थात् ईश्वर।

विश्वास—पु०[स० वि√श्वस्+घञ्] १ किसी बात, विषय, व्यक्ति आदि के सबध मे मन मे होनेवाली यह धारणा कि यह ठीक, प्रामाणिक या सत्य है, अथवा उसे हम जैसा समझते हैं, वैसा ही है, उसमे भिन्न नही है। एतबार। यकीन। २ धार्मिक क्षेत्र मे, ईश्वर, देवता, मत, सिद्धान्त आदि के सबध मे होनेवाली उक्त प्रकार की धारणा। (बिलीफ)
मुहा०—**(किसी पर) विश्वास जमना या बैठना**=विश्वास का दृढ रूप धारण करना। **(किसी को) विश्वास दिलाना**=किसी के मन मे उक्त प्रकार की धारणा दृढ करना।
३ केवल अनुमान के आधार पर होनेवाला मन का दृढ निश्चय। जैसे—मेरा तो यह दृढ विश्वास है कि वह अवश्य आएगा।

विश्वास-घात—पु०[स० प० त०, तृ० त०] १ किसी को विश्वास दिला कर उसके प्रति किया जानेवाला द्रोह। २ विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा अपने मित्र या स्वामी के हितों के विरुद्ध किया हुआ ऐसा बुरा काम जिससे उसका विश्वास जाता रहे।

विश्वास-घातक—वि०[स० विश्वास√हन् (मारना)+ण्वुल् अक, ब० स०] विश्वासघात करनेवाला (व्यक्ति)।

विश्वास-पात्र—वि०[सं०] (व्यक्ति) जिसका विश्वास किया जाता हो और जो विश्वास किये जाने के योग्य हो। विश्वसनीय।

विश्वासिक—वि०[स० वैश्वासिक]=विश्वसनीय।

विश्वासित—वि०[सं० विश्वास+इतच्] जिसे विश्वास दिलाया गया हो।

विश्वासी (सिन्)—वि०[सं० विश्वास+इनि] १. जो किसी एक पर विश्वास करता हो। विश्वास करनेवाला। २. जिसका विश्वास किया जा सके।

विश्वास्य—वि० [सं० वि√श्वस्+णिच्+यत्] विश्वास के योग्य। विश्वसनीय।

विश्वेदेव—पु०[सं०] १. अग्नि। २. वैदिक युग मे इन्द्र, अग्नि आदि

ऐसे नौ देवताओं का एक वर्ग जो विश्व के अधिपति और लोकरक्षक माने जाते थे।

विशेष—अग्नि-पुराण मे इनकी संख्या दस कही गई है। यथा—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आद्रव और पुरूरवा। नादीमुख श्राद्ध मे इन्ही का पूजन होता है।

विश्वेश—पु०[स० विश्व+ईश, ष० त०] १ शिव। २ विष्णु। ३ उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके अधिपति विश्व नामक देवता कहे गए है।

विश्वेश्वर—पु०[स० विश्व+ईश्वर, ष० त०] १ ईश्वर। २ शिव की एक मूर्ति।

विषगी(गिन्)—वि० [स० विषग+इनि] जो किसी से सलग्न हो। किसी के साथ लगा हुआ।

विष—पु०[स० √विष्+क] १ कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ जो थोडी मात्रा मे भी शरीर के अन्दर पहुँचने या बनने पर भीषण रोग या विकार उत्पन्न कर सकता और अत मे घातक सिद्ध हो सकता हो। जहर। (प्वाइजन) २ कोई ऐसा तत्त्व या बात जो नैतिक या चारित्रिक पवित्रता अथवा सार्वजनिक कल्याण, सुख, स्वास्थ्य आदि के लिए नाशक या भीषण सिद्ध हो। जैसे—बाल-विवाह समाज के लिए विष है।

पद—**विष की गाँठ**=बहुत बडी खराबी या बुराई पैदा करनेवाली बात, वस्तु या व्यक्ति।

मुहा०—**(किसी चीज में) विष घोलना**=ऐसा दोष या खराबी पैदा करना जिससे सारी भलाई या सुख नष्ट या मजा किरकिरा हो जाय।

३ पानी। ४ कमल की नाल या रेशा। ५ पद्मकेसर। ६. बोल (गधद्रव्य)। ७ बछनाग। ८ कलिहारी।

विष-कटक—पु०[स० ब० स०] दुरालभा।

विष-कटकी—स्त्री०[स० विषकटक+ङीप्] बाँझ ककोंटकी।

विष-कंठ—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

विष-कद—पु० [स० मध्य० स०] १. नीलकद। २ इगुदी। हिंगोट।

विष-कन्या—स्त्री० [स० मध्य० स०] वह कन्या या स्त्री जिसके शरीर मे इस आशय से विष प्रविष्ट किया गया हो कि उसके साथ सम्भोग करनेवाला मर जाय।

विशेष—प्राचीन भारत मे धोखे से शत्रुओ का नाश करने के लिए कुछ लडकियाँ बाल्यावस्था से कुछ दवाएँ देकर तैयार की जाती थी और छल से शत्रुओ के पास भेजी जाती थी।

विष-कृत—वि०[स०] विषाक्त।

विष-गंधक—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का तृण जिसमे भीनी-भीनी गध होती है।

विष-गिरि—पु०[स० ष० त०] ऐसा पहाड जिस पर जहरीले पेड-पौधे होते है।

विषघ—वि० [स० विष√हन् (मारना)+ड, ह—घ] विष का नाश करनेवाला।

विषघा—स्त्री०[स०] गुरुच।

वि० विष दूर करनेवाला। विष-नाशक।

विषघ्न—पु०[स० विष√हन् (मारना)+टक्, कुत्व] १ सिरिस वृक्ष। २. भिलावाँ। ३ भू-कदब। ४ गध-तुलसी। ५ चम्पा।

विषघ्नी—स्त्री० [स० विषघ्न+ङीप्] १ हिलमोचिका या हिलच नामक साग। २ वन-तुलसी। ३ इन्द्रवारुणी। ४ भुई-आँवला। ५ गदहपुरना। पुनर्नवा। ६ हल्दी। ७. गदा करज। ८ वृश्चिकाली। ९ देवदाली। १० कठ-केला। ११ सफेद चिचडा। १२ रास्ना।

विष-ज्वर—पु०[स० मध्य० स०] १ शरीर मे किसी प्रकार का जहर पहुँचने या उत्पन्न होने पर चढ़नेवाला ज्वर जिसमे जलन भी होती है। २ भैसा।

विषणि—पु०[स० विष√नी (होना)+क्विप्] एक प्रकार का साँप।

विषण्ण—वि० [स० वि√सद्+क्त] [भाव० विषण्णता] १ उदास। २ दुखी तथा हतोत्साहित। ३ जिसमे कुछ करने की इच्छा-शक्ति न रह गई हो।

विष-तंत्र—पु०[स० ष० त०] वह तत्र या चिकित्सा-प्रणाली जिससे विष का कुप्रभाव दूर या नष्ट किया जाता था।

विष-तरु—पु०[स० ष० त०] कुचला।

विषता—स्त्री०[स० विष+तल्+टाप्] १ विष का धर्म या भाव। जहरीलापन। २ ऐसी चीज या बात जो विषाक्त प्रभाव उत्पन्न करती हो।

विषदंड—पु०[स० ष० त०] कमलनाल।

विष-दंतक—पु०[स० ब० स०] सर्प। साँप।

विषदंष्ट्रा—स्त्री०[स० मध्य स०] १ साँप का वह दाँत जिसमे विष होता है। २ नाग-दमनी। ३ सर्प-ककालिका नामक लता।

विषद—पु०[स० वि√सद् (क्षीण करना)+अच्] १ बादल। मेघ। २ सफेद रग। ३ अतिविषा। अतीस। ४ हीराकसीस।

वि० १ विषैला। २ साफ। स्वच्छ।

विषदा—स्त्री०[स० विषद+टाप्] अतिविषा। अतीस।

विषदिग्ध—भू० कृ० [स० ब० स०] [भाव० विषदिग्धता] (वस्तु) जिसमे विष का प्रवेश कराया गया हो। विषाक्त।

विष-दुष्ट—वि०[स० तृ० त०] (पदार्थ) जो विष के सम्पर्क के कारण दूषित या विषाक्त हो गया हो।

विष-दूषण—वि०[स० ष० त०] विष का प्रभाव दूर करनेवाला।

विष-द्रुम—पु०[स० ष० त०] कुचला।

विषधर—वि०[स० विष√धृ+अच्] विषाक्त। जहरीला।

पु० साँप।

विषधात्री—स्त्री०[स०] जरत्कारु ऋषि की स्त्री मनसा देवी का एक नाम।

विष-नाशन—वि०[स० ष० त०] विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

पु० १ सिरिस का पेड। २ मानकन्द।

विषनाशिनी—स्त्री०[स० ष० त०] १ सर्प ककाली नामक लता। २ बाँझ ककोडा। ३ गन्ध नाकुली।

विष-पत्रिका—स्त्री०[स० ष० त०] कोई जहरीली पत्ती या छिलका।

विष-पुच्छ—पु०[स० ब० स०] [स्त्री० विष-पुच्छी] बिच्छू।

विषपुष्प—पु०[स० ब० स० या मध्य० स०] १ नीला पद्म। २ अलसी का फूल। ३ मैनफल।

विष-प्रयोग—पु०[स० ष० त०] १ चिकित्सा के लिए विष का ओषधि के रूप मे होनेवाला प्रयोग। २ किसी की हत्या के लिए उसे जहर देना।

विष-मंत्र—पु०[स० प० त०] १ वह जो विष उतारने का मत्र जानता हो। ऐसा मत्र जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो। २ ऐसा व्यक्ति जो उक्त प्रकार का मत्र जानता हो। ३ सँपेरा।

विषम—वि०[स० मध्य० स०] [स्त्री० विषमा] [भाव० विषमता] १ जो सम अर्थात् समान या बराबर न हो। असमान। 'सम' का विपर्याय। २ (सख्या) जो दो से भाग देने पर पूरी न बँटे बल्कि जिसमे एक बाकी बचे। ताक। ३ (कार्य या स्थिति) जो बहुत ही कठिन या विकट हो। ४ (विषय) जिसकी मीमासा सहज मे न हो सके। जैसे—विषम समस्या। ५ बहुत ही उत्कट, प्रचड, भीषण या विकट। जैसे—विषम विपत्ति। ६ भयकर। भीषण। ७ तीव्र। तेज।

पु० १ विपत्ति। सकट। २ छद शास्त्र मे, ऐसा वृत्त जिसके चारो चरणो मे अक्षरो और मात्राओ की सख्या समान न हो। ३ साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे या तो दो परस्पर विरोधी बातो या वस्तुओ के सयोग का उल्लेख होता है, या उस सयोग की विषमता अर्थात् अनौचित्य दिखलाया जाता है। (इन्कांग्रैंचुइटी) ४ गणित मे, पहली, तीसरी, पाँचवी आदि विषम सख्याओ पर पडनेवाली राशियाँ। ५ सगीत मे, ताल का एक प्रकार। ६ वैद्यक मे, चार प्रकार की जठराग्नियो मे से एक जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है।

विषम-कर्ण—पु०[स० ब० स०] (चतुर्भुज) जिसके कोण सम न हो।

विषम-कोण—पु०[स० कर्म० स०] ज्यामिति मे ऐसा कोण जो सम न हो। समकोण से भिन्न कोई और कोण।

विषम-चतुष्कोण—पु०[स० ब० स०] ऐसा चतुष्कोण जिसकी भुजाएँ विषम हो। (ज्यामिति)

विषम-छद—पु०=विषमवृत्त।

विषम ज्वर—पु०[स० कर्म० स०] १ मच्छरो के दश से फैलनेवाला एक प्रकार का ज्वर जिसके साथ प्राय जिगर और तिल्ली भी बढती है। इसके आरभ मे बहुत जाडा लगता है, इसी से इसे जूडी और शीत ज्वर भी कहते है। (मलेरिया) २ क्षय रोग मे होनेवाला ज्वर।

विषमता—स्त्री०[स०विषम+तल्+टाप्] १ विषम होने की अवस्था या भाव। २ ऐसा तत्त्व या बात जिसके कारण दो वस्तुओ या व्यक्तियो मे अतर उत्पन्न होता है। ३ द्रोह। वैर।

विषम त्रिभुज—पु०[स० कर्म० स०] ऐसा त्रिभुज जिसके तीनों भुज छोटे-बडे हों, समान न हो। (ज्यामिति)

विषमत्व—पु०[स० विषम+त्व] विषम होने की अवस्था या भाव। विषमता।

विषम-नयन—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

विषम-नेत्र—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

विषम-बाहु—पु०=विषम-भुज।

विषम-भुज—पु०[स० ब० स०] ज्यामिति मे ऐसा क्षेत्र, विशेषत त्रिभुज जिसके कोई दो भुज आपस मे बराबर न हो। (स्केलीन)

विषम-बाण—पु०[स० ब० स०] १ कामदेव का एक नाम। २ कामदेव।

विषमवृत्त—पु०[स० ब० स०] ऐसा छद या वृत्त जिसके चरण या पद समान न हो। असमान पदोवाला वृत्त।

विषम-शिष्ट—पु० [स०] प्रायश्चित्त आदि के लिए व्यवस्था देने के सबध का एक दोष जो इस समय माना जाता है, जब कोई भारी पाप करने पर हल्का प्रायश्चित्त करने या हल्का पाप करने पर भारी प्रायश्चित्त करने की व्यवस्था दी जाती है।

विषमांग—वि०[स० विषम+अग] जिसके सब अग या तत्त्व भिन्न-भिन्न अथवा परस्पर विरोधी प्रकार के हो। 'समाग' का विपर्याय। (हेटेरोजीनिअस)

विषमा—स्त्री०[स० विषम+टाप्] १ झरबेरी। २ एक प्रकार का बछनाग।

विषमाक्ष—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

विषमाग्नि—पु०[स० कर्म० स०] वैद्यक मे एक प्रकार की जठराग्नि जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है।

विषमान्न—पु०[स० कर्म० स०] विषमाशन।

विषमायुध—पु०[स० ब० स०] कामदेव।

विषमाशन—पु०[स० कर्म० स०] १ ठीक समय पर भोजन न करना। २ आवश्यकता से कम या अधिक भोजन करना।

विषमित—भू० कृ०[स०] विषम रूप मे लाया हुआ। जो विषम किया या बनाया गया हो।

विषमीकरण—पु०[स०] १ 'सम' को विषम करने की क्रिया या भाव। विषम करना। २ भाषा विज्ञान मे, वह प्रक्रिया जिसमे किसी शब्द मे दो व्यजन या स्वर पास-पास आने पर उनमे से कोई उच्चारण के सुभीते के लिए बदल दिया जाता है। 'समीकरण' का विपर्याय। (डिस्सिमिलेशन)

विषमुष्टि—पु० [स०] १ केशमुष्टि। २ बकायन। घोडा नीम। ३ कलिहारी। ४ कुचला।

विषमेषु—पु०[स० ब० स०] कामदेव।

विषय—पु०[स० वि√सि+अच्, षत्व] [वि० विषयक] १ वह तत्त्व या वस्तु जिसका ग्रहण या ज्ञान इन्द्रियो से होता है। जैसे—रस-जिह्वा का और गध नासिका का विषय है। २ कोई ऐसी चीज या बात जिसके सबध मे कुछ कहा, किया या समझा-सोचा जाय। ३ कोई ऐसा काम या बात जिससे सबध रखनेवाली बातो का स्वतत्र रूप से अध्ययन, मीमासा या विवेचन होता है। ४ कोई ऐसी आधारिक कल्पना या विचार जिस पर किसी प्रकार की रचना हुई हो। विषय-वस्तु। (थीम) जैसे—किसी काव्य या नाटक का विषय। ५ कोई ऐसी चीज या बात जिसके उद्देश्य से या प्रति कोई कार्य या प्रक्रिया की जाती हो। (सबजेक्ट, उक्त सभी अर्थों के लिए) ६ वे बाते या विचार जिनका किसी ग्रन्थ, लेख आदि मे विवेचन हुआ हो या किया जाने को हो। (मैटर) ७ सासारिक बातो से इद्रियो के द्वारा प्राप्त होनेवाला सुख। जैसे—विषय-वासना। ८ स्त्री के साथ किया जानेवाला सभोग। मैथुन। ९ सासारिक भोग-विलास और उसके साधन की सामग्री (आध्यात्मिक ज्ञान या तत्त्व से पार्थक्य दिखाने के लिए)। १० जगह। स्थान। ११ प्राचीन भारत मे, कोई ऐसा प्रदेश या भू-भाग जो किसी एक जन या कबीले के अधिकार मे रहता था और उसी के नाम से प्रसिद्ध होता था। १२ परवर्ती काल मे क्षेत्र, प्रदेश या राज्य।

विषयक—वि०[स० विषय+कन्] १ किसी कथित विषय से सबध रखनेवाला। विषय-सबधी। जैसे—ज्ञान-विषयक बाते। २ विषय के रूप मे होनेवाला।

विषय-कर्म(न्)—पु०[स० ष० त०] सासारिक काम-धन्धे।

विषय-निर्धारिणी-समिति—स्त्री०[स० कर्म० स०] वह छोटी समिति जो किसी सभा मे उपस्थित किये जानेवाले विषयो या प्रस्तावो के स्वरूप आदि निश्चित करती हो। (सबजेक्ट्स कमेटी)

विषयपति—पु०[स० प० त०] किसी विषय अर्थात् राज्य का स्वामी या प्रधान व्यवस्थापक।

विषय-वस्तु—स्त्री०[स०] कल्पना, विचार आदि के रूप मे रहनेवाला वह मूल तत्त्व जिसे आधार मानकर कोई कलात्मक या कौशलपूर्ण रचना की गई हो। किसी कृति का आधारिक और मूल विचार-विषय। (थीम) जैसे—इन दोनो नाटको मे भले ही बहुत-कुछ समता हो फिर भी दोनो की विषय-वस्तु एक दूसरी से भिन्न है।

विषय-समिति—स्त्री०=विषय-निर्धारिणी समिति।

विषयांत—पु०[स० विषय+अन्त, ष० त०] विषय अर्थात् देश या राज्य की सीमा।

विषयांतर—वि०[स०विषय+अन्तर,कर्म०स०] समीप स्थित। पडोस का। पु० १ एक विषय को छोड़कर दूसरे विषय पर आना। २ असावधानता आदि के कारण मूल विषय पर कहते-कहते (या लिखते-लिखते) दूसरे विषय पर भी कुछ कहने (या लिखने) लगना।

विषया—स्त्री०[स० विषय+टाप्] १ विषय-भोग की इच्छा। २ विषय-भोग की सामग्री।

विषयाधिप—पु०[स० विषय+अधिप प० त०]=विषयपति।

विषयानुक्रमणिका—स्त्री०[स० ष० त०] विषयो के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विशेषत किसी ग्रन्थ मे विवेचित विषयो की अनुक्रमणिका या सूची। (इन्डेक्स)

विषयासक्त—वि०[स० स० त०] [भाव० विषयासक्ति] सासारिक विषयो का भोग-विलास के प्रति आसक्ति रखनेवाला।

विषयासक्ति—स्त्री०[स० स०त०] सासारिक विषयो के भोग मे रत रहने की अवस्था या भाव।

विषयी(यिन्)—वि० [स० विषय+इनि] १ विषयो अर्थात् भोग-विलास मे रत रहनेवाला। २ कामुक।
पु० १ कामदेव। २. धनवान् व्यक्ति। ३. राजा।

विषरूपा—स्त्री०[स०] १. अतिविषा। अतीस। २. घोड़ा नीम। मीठी नीम। ३. ककोडा। खेखसा।

विषल—पु०[स० विष√ला (ग्रहण करना)+क, विष+लच् वा] विष। जहर।

विष-लता—स्त्री०[स० मध्य० स०] १ इन्द्र वारुणी नाम की लता। २ कमल-नाल। मृणाली।

विष-वल्ली—स्त्री०[स० प० त०] इन्द्र वारुणी (लता)।

विष-विज्ञान—पु०[स० प० त०] वह विज्ञान या विद्या जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के विष किस प्रकार अपना काम करते है और उनका प्रभाव किस प्रकार दूर किया जा सकता है। (टॉक्सीकालोजी)

विषविद्या—स्त्री०[स० च० त०] मत्र आदि की सहायता से झाड-फूंककर विष का प्रकोप, प्रभाव या विकार शान्त करने की विद्या।

विष-विधि—स्त्री०[स० प० त०] एक तरह की परीक्षा जिससे यह जाना जाता था कि अमुक व्यक्ति अपराधी है अथवा निरपराधी।

विष-वृक्ष—पु०[स०] १ ऐसा पेड जिसके अग विष का काम करते हो। २ गूलर।

विष-वैद्य—पु०[स० च० त०] वह जो मत्र-तत्र की सहायता से विष उतारता हो।

विष-व्रण—पु०[स० प० त०] जहरबाद। (दे०)

विष-हता(तृ)—पु०[स० प० त०] सिरिस(पेड)।
वि० विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

विष-हंत्री—स्त्री० [स० विष-हतृ+ङीप् प० त०] १ अपराजिता २ २ निर्विषी।

विषह—वि०[स० विष√हन् (मारना)+ड] जो विष का नाश करता हो। विषघ्न।
पु० १ देवपाली। २ निर्विषी।

विषहर—वि०[स० प० त०] (औषध या मत्र) जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो। विष दूर करनेवाला।

विषहरा—स्त्री०[स० विषहर+टाप्] १ मनसा देवी का एक नाम। २ देवपाली। ३ निर्विषी।

विषहा—स्त्री०[स० विषह+टाप्] १ देवपाली। बदाल। २ निर्विषी।

विषहारक—पु०[स० प० त०] भुइँकदब।
वि० विष का प्रभाव दूर करनेवाला।

विषांकुर—पु०[स० प० त०] तीर।

विषांगना—स्त्री०[स० मध्य० स०] विष-कन्या।

विषांतक—वि०[स० ष० त०] जिससे विष का नाश हो।
पु० शिव। महादेव।

विषा—स्त्री०[स० विष+टाप्] १ अतिविषा। अतीस। २ कलिहारी। ३. कड़वी तोरई। ४ काकोली। ५ बुद्धि। समझ।

विषाक्त—वि०[स०] जिसमे विष मिला हो। २ (वातावरण) जो बहुत अधिक दूषित हो।

विषाण—पु०[स०√विष्+कानच्] १. जानवर का सीग। २ हाथी का बाहरवाला दाँत। हाथी-दाँत। ३ सूअर का दाँत। खाँग। ४. ऊपरी सिरा। चोटी। ६. शिव की जटा। ७ मथानी। ८ मेढा-सिगी। ९ वराही कद।। गेंठी। १० ऋषभक नामक औषधि। ११. इमली। १२ सीग का बनाया हुआ बाजा। सिंगी। उदा०—कि जाने तुम आओ किस रोज बजाते नूतन रुद्र विषाण।—दिनकर। १३ चोटी।

विषाणका—पु०[स० विषाण+कन्] १ सीग। २ हाथी।

विषाणिका—स्त्री०[स० विषाण+ठन्—इक+टाप्] १ मेढासिंगी। २ सातला। ३. काकडासिंगी। ४ भागवत वल्ली नाम की लता। ५ सिंघाडा। ६ ऋषभक नामक ओषधि। ७. काकोली।

विषाणी—वि०[स० विषाण+इनि, विषाणिन्] ८ जिसे सीग हो। सीगवाला।
पु० १ सीगवाला पशु। २ हाथी। ३ सूअर। ४. साँड। ५ सिंघाडा। ६ ऋषभक नामक औषधि। ७ क्षीरकाकोली। ८ मेढासीगी। ९ वृश्चिकाली। १० इमली।

विषाणु—पु०[स० विष+अणु] कुछ विशिष्ट रोगो मे शरीर के अन्दर उत्पन्न होनेवाला एक विषाक्त तत्त्व जो दूसरे जीवो के शरीर मे किसी प्रकार पहुँचकर वही रोग उत्पन्न कर सकता है। (विरस)

विषाद्—पुं०[सं० विष√अद् (खाना)+क्विप्] हलाहल विष खाने-वाले शिव।

विषाद—पु०[सं० वि√सद्+घञ्] [वि० विषण्ण] १ शारीरिक शिथि-लता। २. जड़ता। निश्चेष्टता। ३ मूर्खता। ४ अभिलाषा या उद्देश्य पूरा न होने पर उत्साह या वासना का दु खद रूप से मद पड़ना जो साहित्य के शृगारिक क्षेत्र मे एक सचारी भाव माना गया है। (डिस्पॉन्डेन्सी) ५ आज-कल, मन की वह दु खद अवस्था जो कोई भारी दुर्घटना (बाढ़, भूकप, महापुरुष का निधन आदि) होने पर और भविष्य के सबध मे मन मे गहरी निराशा या भय उत्पन्न होने पर प्राय सामूहिक रूप मे उत्पन्न होती है। (ग्लूम)

विषादन—पु०[सं०] [भू० कृ० विषादित] १ किसी के मन मे विषाद उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २. परवर्ती साहित्य मे, एक प्रकार का गौण अर्थालकार जिसमे बहुत अधिक विषाद उत्पन्न करनेवाली स्थिति का उल्लेख होता है। (यह प्रहर्षण नामक अलकार के विरोधी भाव का सूचक है।)

विषादनी—स्त्री०[सं० विष√अद् (खाना)+ल्युट्—अन+ङीप्] १ पलाशी नाम की लता। २ इन्द्रवारुणी।

विषादिता—स्त्री०[सं० विषाद+तल्+टाप्, इत्व] विषाद का धर्म या भाव।

विषादिनी—स्त्री०[सं० विषाद+इनि,+ङीप्] १ पलाशी नाम की लता। २ इन्द्रवारुणी।

विषादी (दिन्)—वि०[सं०] विषाद-युक्त।

विषानन—पु०[सं० ष० त०] साँप।

विषापह—वि०[सं० विष+अप√हन् (मारना)+ड] विष का नाश करनेवाला।

पु० मोखा नामक वृक्ष।

विषापहा—स्त्री०[सं० विषापह+टाप्] १. इन्द्रवारुणी। इन्द्रायन। २ निर्विषी। ३ नाग-दमनी। ४. अर्कपत्रा। इसरौल। ५ सर्प-काकोली।

विषायुध—पु० [सं० ब० स०] १ जहर मे बुझाया हुआ या जहरीला आयुध। २ साँप।

विषार—पु०[सं० विष√ऋ(प्राप्त होना आदि)+अच्] साँप।

विषारि—पु०[सं० ष० त०] १ महाचचु नामक साग। २ घृत-करज। वि० विष को दूर करनेवाला। विषनाशक।

विषालु—वि०[सं० विष+अलुच्] विषैला। जहरीला। (प्वाइजनस)

विषास्त्र—पु०[सं० ब० स०] १ ऐसा अस्त्र जो विष मे बुझाया गया हो। २ साँप।

विषी—पु०[सं० विष+इनि, विषिन्] १ विषपूर्ण वस्तु। जहरीली चीज। २ जहरीला साँप।

वि० विषयुक्त। जहरीला।

विषुप—पु०[सं० विषु√पा (रक्षा करना)+क] विषुव।

विषुव—पु०[सं० विषु √वा (गमन)+क] गणित ज्योतिष मे, वह समय जब सूर्य विषुवत् रेखा पर पहुँचता है तथा दिन और रात दोनो बराबर होते है।

विषुवत्—वि०[सं० विषु+मतुप्, म—व] बीच का। मध्यस्थित।

पु०=विषुव।

विषुवत्-रेखा—स्त्री०[सं० ष० त०] भूगोल मे, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी तल के पूरे मानचित्र पर ठीक बीचों-बीच गणना के लिए पूर्व-पश्चिम खींची गई है। (इक्वेटर)

विषुवदिन—पु०[सं०] ऐसा दिवस जिसमे दिन और रात दोनो समय के मान से बराबर होते है।

विषुवद्देश—पु०[सं० ष० त०] विषुवत् रेखा के आस-पास पड़नेवाले देश।

विषूचक—पु०[सं०]=विसूचिका (रोग)।

विषूचिका—स्त्री०=विसूचिका।

विषौषधि—स्त्री०[सं० ष० त०] १. जहर दूर करने की दवा। २. नागदती।

विष्कंध—पु०[सं० ब० स०] १ वह जो गति को रोकता हो। २ बाधा। विघ्न।

विष्कंभ—पु० [सं० वि √स्कम्भ्+अच्] १ अड़चन। बाधा। रुकावट। २ दरवाजे का अर्गल। ब्योडा। ३ [illegible]। ४ फैलाव। विस्तार। ४ नाटक या रूपक मे, किसी अक के आरभ का वह अश या स्थिति जिसमे कुछ पात्रो के द्वारा कुछ भूत और कुछ भावी घटनाओं की सक्षिप्त सूचना रहती है। जैसे—भारतेन्दु कृत चन्द्रावली नाटिका के पहले अक के आरभ मे नारद और शुकदेव वार्ता विष्कभ है। ५ फलित ज्योतिष मे, सत्ताईस योगो मे से पहला योग जो आरभ के ५ दडो को छोड़कर शुभ कार्यों के लिए बहुत अच्छा कहा गया है। ८ ज्यामिति मे, किसी वृत्त का व्यास। ८ योग-साधन का एक प्रकार का आसन या बध। ९ पेड़। वृक्ष। १०. एक पौराणिक पर्वत।

विष्कभन—पु० [सं० विष्कम्भ+क्यन्] [भू० कृ० विष्कभित] १ बाधा डालना। २ विदारण करना या फाड़ना।

विष्कभी(भिन्)—पु० [सं० वि√स्कम्भ् (रोकना)+णिनि] १ शिव का एक नाम। २ अर्गल। ब्योडा।

विष्क—पु०[सं० √विष्क् (मारना)+अच्] ऐसा हाथी जिसकी अवस्था बीस वर्ष की हो।

विष्कर—पु०[सं० वि√कृ+अच्] १ एक दानव। २ पक्षी। चिड़िया। ३ अर्गल। ब्योडा।

विष्कलन—पु० [सं० वि√ कल् (खाना) +ल्युट्—अन] भोजन। आहार।

विष्किर—पु०[सं० वि√ कृ(फेंकना)+क, सुट्, षत्व] १ पक्षी। चिड़िया। २ साँप।

विष्टंभ—पु० [सं० वि√ स्तम्भ् (रोकना)+घञ्] १ अच्छी तरह से जमाना या स्थिर करना। २ रोकना। ३ बाधा। रुकावट। ४ आक्रमण। चढ़ाई। ५ अनाह या [illegible] नामक रोग।

विष्टंभी(भिन्)—वि० [सं० वि√ स्तम्भ् (रोकना)+णिनि, दीर्घ न—लोप] कब्जियत करनेवाला (पदार्थ)।

विष्ट—भू० कृ० [सं० √विश् (प्रवेश करना)+क्त] [भाव० विष्टि] १ घुसा हुआ। २ भरा हुआ। ३ युक्त।

विष्टप—पु०[सं० √ विश्+कपन, सुट्] १ स्वर्ग-लोक। २ जगह। स्थान।

विष्टप-हारी—पु०[सं० विष्टप√ हृ (हरण करना)+णिनि, ष० त०] १ भुवन। लोक। २ पान। बरतन।

सत्त्वो के लिए समान रूप से प्रयुक्त होता या हो सकता हो। (डॉक्ट्रिन ऑफ यूनीवर्सल्स)

विष्वक्सेन—पु०[स० व० स०]१ विष्णु। २ शिव। ३ एक मनु का नाम जो मत्स्य पुराण के अनुसार तेरहवे और विष्णु पुराण के अनुसार चौदहवें है।

विष्वग्वात—पु०[स०] एक प्रकार की दूषित वायु।

विसंकट—पु०[स० व०स०] १ इगुदी या हिंगोट नाम का वृक्ष। २ शेर। सिंह।

वि० बहुत बडा। विशाल।

विसंक्रमण—पु०[स०] [भू० कृ० विसक्रमित] बहुत अधिक ताप पहुँचाकर ऐसी क्रिया करना जिससे किसी पदार्थ मे लगे हुए कीटाणु या रोगाणु पूरी तरह से नष्ट हो जायँ और दूसरी वस्तुओ मे लगकर उन्हे दूषित न करने पायें। (स्टरिलाईजेशन) जैसे—शल्य-चिकित्सा मे चीर-फाड करने से पहले नश्तरो आदि का होनेवाला विसक्रमण।

विसंगत—वि० [स० व० स०, तृ० त० वा] जो सगत न हो। जिसके साथ सगति न बैठती हो। बे-मेल।

विसंज्ञ—वि०[स० ब० स०] सज्ञाहीन। बेहोश।

विसंधि—स्त्री०[स०] समस्त-पदो या शब्दो की सधियाँ मनमाने ढग से बनाना-बिगाडना, जो साहित्य मे एक दोष माना गया है।

विसंधिक—वि०[स० ब० स०] जिनकी या जिनसे सधि न हो।

विसँभारा—वि०[हि० वि+ सभार] जिसकी सुध-बुध ठिकाने न हो।

विसंवाद—पु० [स० वि–सम्√वद् (कहना)+घञ्] १ विरोध। झूठा कथन। २ अनुचित कहासुनी। ३ डाँट-फटकार। ४ प्रतिज्ञा भग करना। ५ खडन। ६ असहमति।

वि० अद्भुत। विलक्षण।

विसंवादी—वि०[स० वि-सम्√वद् (कहना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप] १ धोखा देनेवाला। २. वचन-भग करनेवाला। ३ खडन करनेवाला।

पु० सगीत मे, वह स्वर जिसका वादी स्वर से मेल न बैठता हो।

विसहत—भू० कृ० [स० वि- सम्√हन् (हिसा करना)+क्त] १ जो सहत न हो। २ अलग या पृथक् किया हुआ।

विस—पु०[स० वि√सो (तनूकरण)+क]कमल।

†पु०=विष।

वि-सदृश—वि०[स०]१ जो किसी विशिष्ट के सदृश न हो। भिन्न। (डिस्सिमिलर)। २ अनोखा। विलक्षण।

विसमा|—वि०=विषम।

विसम्मति—स्त्री०[स०] किसी विषय मे दूसरे के मत से सहमत न होने की अवस्था या भाव। विमत होना। (डिस्सेन्ट)

विसर्ग—पु०[स० वि√ सृज्+घञ्]१ सामने आये हुए काम या बात के सम्बन्ध मे आवश्यक कार्यवाही, उचित निर्णय, आदि करके उसे निपटाने की क्रिया या भाव। (डिस्पोजल)। २ दान। ३ त्याग। ४ मल-मूत्र का त्याग। शौच। ५ मृत्यु। ६. मोक्ष। ७ प्रलय। ८ वियोग। ९ चमक। दीप्ति। १० सूर्य का एक अयन। ११ वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतुओ का समूह। १२ व्याकरण के अनुसार एक वर्ण जिससे ऊपर-नीचे दो बिन्दु होते है और उसका उच्चारण प्राय अर्द्ध ह के समान होता है।

विसर्गी—वि०[स०] १ जिसमे विसर्ग हो। विसर्ग से युक्त। २ बीच-बीच मे ठहरने या रुकनेवाला। जैसे—विसर्गी ज्वर। ३ दानी। ४ त्यागी।

विसर्गी ज्वर—पु०[स०] वह ज्वर जो बराबर बना न रहता हो, बल्कि बीच-बीच मे कुछ समय के लिए उतर जाता हो। अतरायिक ज्वर। विरामी ज्वर (इन्टरमिटेन्ट फीवर)

विसर्जन—पु०[स० वि√ सृज् (त्याग करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विसर्जित] १ परित्याग करना। छोडना। २ किसी को कुछ करने का आदेश देकर कही भेजना। ३ कही से प्रस्थान करना। विदा होना। ४ अत। समाप्ति। ५ दान। ६ देव-पूजन के सोलह उपचारो मे से अतिम उपचार जिसमे आहूत देवता के प्रति यह निवेदन होता है कि अब पूजन हो चुका, आप कृपया प्रस्थान करें। ७ उक्त के आधार पर, पूजन आदि के उपरान्त प्रतिमा या विग्रह का किसी जलाशय मे किया जानेवाला प्रवाह। भसान। जैसे—दुर्गा या सरस्वती की मूर्ति का गगा मे होनेवाला विसर्जन। ८ कार्य की समाप्ति पर उसके सदस्यो आदि का कार्य-स्थल से होनेवाला प्रस्थान।

विसर्जनी—स्त्री०[स० विसर्जन+ङीप्] गुदा के मुँह पर के चमडे का एक भाग।

विसर्जनीय—वि०[स० वि√ सृज्+अनीयर्] जिसका विसर्जन हो सके अथवा किया जाने को हो।

विसर्जित—भू० कृ०[स० वि√ सृज्+क्त, इत्व] जिसका विसर्जन हुआ हो।

विसर्प—पु०[स० वि√ सृप् (सरकना, चलना)+घञ्]१ रेंगते हुए या मन्द गति से इधर-उधर घूमना, फैलना या बढना। २ खुजली नामक चर्म रोग। ३. नाटक मे, किसी कार्य का अप्रत्याशित रूप से होनेवाला दु:खद परिणाम।

विसर्पण—पु०[स० वि√सृप्+ल्युट्—अन]१ साँप की तरह लहराते हुए चलना। २ उक्त प्रकार की लहराती हुई आकृति या स्थिति। (मिएन्डर) ३ फैलना। ४ फेंकना। ५. फोडो आदि का फूटना।

विसर्पिका—स्त्री०[स०वि√सृप् +ण्वुल्—अक, इत्व,+टाप् या विसर्प+कन्+टाप्, इत्व] विसर्प या खुजली नामक रोग।

विसर्पी (र्पिन्)—वि०[स०]१ तेज चलनेवाला। २ फैलनेवाला। ३ साँप की तरह लहराते हुए चलनेवाला। लहरियेदार। (मिएन्डर) ४. रेंगता हुआ आगे बढ़ने या चलनेवाला। ५ (पौधा या बेल) जो धीरे-धीरे आगे बढकर जमीन पर फैले या किसी आधार पर चढे। (क्रीपिंग)

विसल—पु०[स० विस√ला (ग्रहण करना)+क, अथवा विस+कलच्] वृक्ष का नया पत्ता। पल्लव।

विसवर्त्म—पु०[स० ब० स०] आँखो का एक प्रकार का रोग।

विसार—पु० [स० वि√सृ (गमन)+घञ्] १ विस्तार। २ निर्गम। निकास। ३ प्रवाह। बहाव। ४ उत्पत्ति। ५. मछली।

विसारक—वि०[स०] विसरण करनेवाला।

विसारण—पु०[स०] [भू० कृ० विसारित, वि० विसारी]१ फैलाना। २ चलाना। ३ निकालाप। ५ कार्य का सपादन करना।

विसाल—पु० [अ०] १ मिलन। २ प्रेमी और प्रेमिका का मिलन। २ मृत्यु, जिससे आत्मा जाकर परमात्मा से मिल जाती है।

उदा०—पसे विसाल मयस्सर मुझे विसाल हुआ। मेरे जनाजे मे बैठे रहे व सारी रात।—कोई शायर।

विसिनी—स्त्री०[सं० बिस+इनि+ङीप्] कमलिनी।

†वि०=व्यसनी।

वि-सुकृत—वि०[सं० ब० स०] जिनके कर्म अच्छे न हों।

पु०१ धर्म-विरुद्ध कार्य। २ दुष्कर्म।

विसूचन—पु०[सं० वि√ सूच् (सूचित करना)+ल्युट्—अन] सूचित करना। जतलाना।

विसूचिका—स्त्री०[सं० वि√ सूच्+अच्+कन्, +टाप्, इत्व] वैद्यक के अनुसार, एक प्रकार का रोग, जिसे कुछ लोग हैजा कहते हैं।

विसूची—स्त्री०[सं० वि√ सूच्+अच्,+ङीष्] वह रोग जिसमे कै और दस्त होते है, परन्तु पेशाब नहीं होता।

विसूरण—पु०[सं० वि√ सूर् (दुःख होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विसूरित] १ दुःख। रंज। २. चिन्ता। फिक्र। ३ विरक्ति। वैराग्य।

विसृत—भू० कृ० [सं० वि √ सृ(गमन)+क्त] [भाव० विसृति] १. फैला या फैलाया हुआ। २ ताना हुआ। ३ कथित। उक्त।

विसृष्ट—भू० कृ० [सं० वि√सृज् (रचना) +क्त-षत्व-त-ट] [भाव० विसृष्टि] १ जिसकी सृष्टि हुई हो। २. छोड़ा, त्यागा या निकाला हुआ। ३ प्रेरित।

पु० विसर्ग नामक लेख-चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है—:

विसृष्टि—स्त्री०[सं० वि√ सृज्+क्तिन्] १. विसृष्ट होने की अवस्था या भाव। २ सृष्टि। ३ छोड़ना, त्यागना या निकालना। ४ भेजना। ५ प्रेरणा करना। ६ संतान। ७ स्राव।

विसैन्यीकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० विसैन्यीकृत] युद्ध के आवश्यकता-वश प्रस्तुत किये गये सैनिकों को सैन्य-सेवा से पृथक् करना। सैन्य-विघटन (डिमिलिटराइजेशन)

विसौख्य—पुं०[सं० मध्य० स०] सौख्य या सुख का अभाव। कष्ट। दुःख।

विस्खलन—पुं०[सं०][भू० कृ० विस्खलित]=स्खलन।

विस्त—पु०[सं० √ विस् (छोड़ना)+क्त]१ एक कर्ष का परिमाण। २. सोना। स्वर्ण।

विस्तर—पु०[सं० वि√ स्तृ (फैलना)+अप्] [भाव० विस्तृता] १ विस्तार। २ प्रेम। ३ समूह। ४. आसन। ५ आधार। ६ गिनती। संख्या। ६ शिव का एक नाम।

वि० अधिक। बहुत।

विस्तरण—पु०[सं० वि√ स्तृ+ल्युट्—अन]१. विस्तार बढ़ाना। विस्तृत करना।

विस्तार—पु०[सं० वि √स्तृ+घञ्]१ फैले हुए होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ वह क्षेत्र या सीमा जहाँ तक कोई चीज फैली हुई हो। फैलाव। (एक्सटेन्ट) ३ लंबाई और चौड़ाई। ४ विस्तृत विवरण। ५ शिव। ६ विष्णु। ७ वृक्ष की शाखा। ८. गुच्छा।

विस्तारण—पु०[सं०]१ विस्तार करना। फैलाना। २ काम-काज या कर्म-क्षेत्र बढ़ाना।

विस्तारना—स०[सं० विस्तरण] विस्तार करना। फैलाना।

विस्तारवाद—पु०[सं०]यह मत या सिद्धान्त कि राज्य को अपने अधिकार, क्षेत्र और सीमाओं का निरंतर विस्तार करते रहना चाहिए, भले ही इससे दूसरे राज्यों या राष्ट्रों का अहित होता हो। (एक्सपैन्शनिज्म)

विस्तारिणी—स्त्री०[सं० वि√ स्तृ+णिनि+ङीप्] संगीत मे एक श्रुति।

विस्तारित—भू० कृ० [सं० विस्तार+इतच्] १. जिसका विस्तार हुआ हो। २ व्यापक विवरण से युक्त।

विस्तारी(रिन्)—वि०[सं० विस्तारिन्] १ जिसका विस्तार अधिक हो। विस्तृत। २. शक्तिशाली।

पु० बड़ या बरगद का पेड़।

विस्तीर्ण—भू० कृ०[सं० वि√ स्तृ+क्त] [भाव० विस्तीर्णता]१ जो फैला या फैलाया हुआ हो। विस्तृत किया हुआ। २ व्यापक सूत्र-वाला। ३ बहुत चौड़ा। ४. बहुत बड़ा। ५ विपुल।

विस्तृत—भू० कृ०[सं० वि√स्तृ +क्त] [भाव० विस्तृति]१ जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो। लंबा-चौड़ा। विस्तारवाला। जैसे—यहाँ आप लोगों के लिए बहुत विस्तृत स्थान है। २. (कथन या वर्णन) जिसमे सब अंग या बातें विस्तारपूर्वक बताई गई हों। जैसे—विस्तृत विवेचन। ३ बहुत बड़ा या लंबा-चौड़ा। (एक्स्टेन्सिव, उक्त सभी अर्थों मे)

विस्तृति—स्त्री० [सं० वि√स्तृ+क्तिन्] १. फैलाव। विस्तार। २ व्याप्ति। ३ लंबाई, चौड़ाई या गहराई। ४ वृत्त का व्यास।

विस्थापन—पु०[सं०][भू० कृ० विस्थापित]१. जो कहीं स्थापित या स्थित हो उसे वहाँ से हटाना। २. किसी स्थान पर बसे हुए लोगों को वहाँ से बलपूर्वक हटाना और वह जगह उनसे खाली करा लेना। (डिस्प्लेसमेन्ट)

विस्थापित—भू० कृ० [सं० वि√ स्था+णिच्,पुक्,+क्त] १. जो अपने स्थान से हटा दिया गया हो। २ जिससे उसका निवास-स्थान जबरदस्ती छीन लिया गया हो। (डिस्प्लेस्ड)

विस्थिति—स्त्री० [सं०] ऐसी विकट स्थिति जिसमे उलट-फेर की संभावना हो।

विस्फार—पु०[सं० वि√ स्फुर् (संचालन)+घञ्, उ-आ] [वि० विस्फारित] १. धनुष की टंकार। कमान चलाने का शब्द। २. धनुष की डोरी। ३. फैलाव। विस्तार। ४. तेजी। फुरती। ५. काँपना। कंपन। ६. विकास।

विस्फारक—पु०[सं० विस्फार+कन्] एक प्रकार का विकट सन्निपात ज्वर जिसमे रोगी को खाँसी, मूर्च्छा, मोह और कम्प होता है।

वि० विस्फार करनेवाला।

विस्फारण—पुं०[सं० वि√ स्फुर् (हिलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्फारित]१. खोलना या फैलाना। २. पक्षियो का डैने फैलाना। ३. फाड़ना। ४. धनुष चढ़ाना।

विस्फारित—भू० कृ०[सं० विस्फार+इतच्]१. अच्छी तरह से खोला या फैलाया हुआ। जैसे—विस्फारित नेत्र। २. फाड़ा हुआ।

विस्फीत—भू० कृ०[सं०] [भाव० विस्फीति] जो स्फीत न हो। 'स्फीत' का विपर्याय।

विस्फीति—स्त्री०[सं० ब० स०] दे० 'अवस्फीति'।

विस्फुरण—पु०[सं० वि√ स्फुर् (कंपित होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्फुरित] १ विद्युत् का कंपन। २. स्फुरण।

विस्फुलिंग—पु०[स० वि√ स्फुर् (हिलना) +ड = विस्फु, विस्फु+लिंग , व० स०] १. एक प्रकार का विष। २. आग की चिनगारी। स्फुलिंग।

विस्फूर्जन—पु०[स० वि√ स्फूर्ज् (फैलाना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्फूर्जित] १ किसी पदार्थ का वढना या फैलना। विकास। २ गरजना।

विस्फोट—पु०[स० वि√ स्फुट्+घञ्] १ अन्दर की भरी हुई आग या गरमी का उवल या फूटकर वाहर निकलना। जैसे—ज्वालामुखी का विस्फोट। २ उक्त क्रिया के कारण होनेवाला जोर का शब्द। ३ एकत्र गैस, वारूद, आदि का अग्नि या ताप के कारण जोर का शब्द करते हुए वाहर निकल पडना। (एक्सप्लोजन) ४ वडा और जहरीला फोडा।

विस्फोटक—पु०[स० विस्फोट+कन्] १ फोडा विशेपत जहरीला फोडा। २. चेचक या शीतला नामक रोग।
वि० (पदार्थ) जो अन्दर की गरमी या ताप के कारण चटक कर फूट जाय।

विस्फोटन—†पुं०[स० वि√ स्फुट्+ल्युट्—अन] विस्फोट उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

विस्मय—पु० [स० वि√ स्मि+अच्] १ आश्चर्य। २ अचम्भा। २. वह विशिष्ट स्थिति जव किसी प्रकार की अप्रत्याशित तथा चमत्कारिक वात या वस्तु सहसा देखकर प्रसन्नता-मिश्रित आश्चर्य होता है। ३ साहित्य मे, उक्त के आवार पर अद्भुत रस का स्थायी भाव।
वि० जिसका अभिमान या गर्व चूर्ण हो चुका हो।

विस्मयाकुल—वि०[स० तृ० त०] जो वहुत अविक विस्मय के कारण घवरा या चकरा गया हो।

विस्मयादि-बोधक—पु० [स०] व्याकरण मे, अव्यय का वह भेद जो ऐसे अविकारी शब्द का सूचक होता है जो आश्चर्य, खेद, दु ख, प्रसन्नता आदि का सूचक होता है। जैसे—वाह, हाय, ओह आदि।

विस्मरण—पु० [स० वि√स्मृ (स्मरण करना)+ल्युट्—अन, मध्यम० स०] [भू० कृ० विस्मृत] १. स्मरण न होने की अवस्था या भाव। भूलना। २ भुलाना।

विस्मापन—पु० [स० वि√ स्मि (आनन्द होना)+णिच्, आत्व, पुक्, +ल्युट्—अन] १. गधर्व-नगर। २ कामदेव।
वि० विस्मयकारक।

विस्मारक—वि०[स० वि√ स्मृ (स्मरण करना)+णिच्+ण्वुल्,-अक] विस्मरण कराने या भुला देनेवाला। 'स्मारक' का विपर्याय।

विस्मित—भू० कृ०[स०वि√स्मि(आश्चर्य होना)+क्त][भाव० विस्मृति] जिसे विस्मय हुआ हो।

विस्मिति—स्त्री०[स० वि√ स्मि (आश्चर्य करना)+क्तिन्]=विस्मय।

विस्मृत—भू० कृ०[स० वि√ स्मृ+क्त] [भाव० विस्मृति] १ जिसका स्मरण न रहा हो। भूला हुआ। २ भुलाया हुआ।

विस्मृति—स्त्री० [स० वि√स्मृ+क्ति, मध्यम० स०] भूल जाना। विस्मरण।

विस्रंभ—पु०[स०]=विश्रंभ।

विस्रवण—पु०[स० वि√ स्रु (वहना)+ल्युट्—अन] १. वहना। २ झड़ना। ३. रसना।

विस्रा—स्त्री० [स० विस्र+अच्+टाप्] १. हाऊवेर। हवुषा। २. चरवी।

विस्राम†—पुं०=विश्राम।

विस्राव—पुं०[स० वि√ स्रु (वहना)+घञ्] भात का माँड। पीच।

विस्रावण—पु०[स० वि√स्रु (वहना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्रावित] १ वहना। २. रक्त वहाना। ३ अर्क चुआना।

विस्वर—वि०[स० व० स०]१ स्वरहीन। २ वेमेल। ३ कर्कश (स्वर)।

विस्वाद—वि०[स० व० स० या मध्यम० स०] १. जिसमे स्वाद न हो। २ फीका।

विहंग—पु०[स० विहायस्√गम्+खच्, डित्व, मुम्, विहादेश] १ पक्षी। चिडिया। २. सूर्य। ३ चन्द्रमा। ४. सोना मक्खी। ५ वादल। मेघ। ६ तीर। वाण।

विहंगक—वि०[स० विहग+कन्] आकाश मे उडनेवाले।
पु० छोटा पक्षी।

विहंगम—पु०[स० विहायस्√गम् (जाना)+खच्, मुम्, विहादेश] १ पक्षी। चिडिया। २ सूर्य।
†वि०=वेहगम।

विहंगम मार्ग—पु०[स० कर्म० स०] योग की साधना मे, दो मार्गों मे से एक जिसके द्वारा साधक विना अधिक काया-क्लेश सहे वहुत जल्दी और सहज मे उसी प्रकार अपने प्राण ब्रह्माड तक ले जाता है, जिस प्रकार पक्षी उड़कर वृक्ष के ऊपरी भाग पर जा पहुँचता है। यह दूसरे अर्थात् पिपीलिका मार्ग की तुलना मे श्रेष्ठ समझा जाता है।

विहंगमा—स्त्री० [स० विहगम+टाप्] १ सूर्य की एक प्रकार की किरण। २ चिडिया। ३ वहँगी।

विहंग-राज—पु०[स० प० त०] गरुड।

विहगहा(हन्)—पु० [स०] वहेलिया।

विहगिका—स्त्री०[स० विहग+कन्+टाप्, इत्व] वहँगी।

विहँडना—स०[?]१ नष्ट करना। २ मार डालना।

विहँसना—अ०=हँसना।

विहग—पु०[स० विहायस्√ गम्+ड, विहादेश] १ पक्षी। चिडिया। २ सूर्य। ३ चन्द्रमा। ४ ग्रह। ५ तीर। वाण।

विहगेंद्र—पु०[स० विहग+इन्द्र] गरुड।

विहत—भू० कृ० [स० वि√हन् (मारना)+क्त, न-लोप] १ मारा हुआ। हत। २ फाडा हुआ। विदीर्ण। ३ जिसका निवारण हुआ हो। निवारित। ४ जिसका प्रतिरोव या विरोव किया गया हो।
पु० जैन-मदिर।

विहति—स्त्री०[स० वि√ हन्+क्तिन्] विहत होने की अवस्था या भाव।

विहर—पुं० [स० वि√ हृ (हरण करना)+अच्] वियोग। विछोह।

विहरण—पु०[स० वि√ हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १ विहार करने की क्रिया या भाव। २ फैलना। ३ वियोग। विछोह। ४ घूमना-फिरना।

विहरना—अ० [स० विहार] १. विहार करना। २ घूमना-फिरना।

विहर्ता(र्तृ)—वि० [स० वि√ हृ +तृच्] १ विहार करनेवाला। २. घूमने-फिरने का शौकीन।

पु० डाकू।
विहव—पु०[स० वि√ हु (दान देना, लेना)+अच्]१. यज्ञ। २ युद्ध। लडाई।
विहसन—पु०[स० वि√ हस् (हँसना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वि० हसित]१ मद और मधुर मुस्कान। हास्य। २ किसी की हँसी या मजाक उडाना।
विहसित—पु०[स० वि√ हस् (हँसना)+क्त] ऐसा हास्य जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर। मध्यम हास्य।
भू० कृ० जिसकी हँसी उडाई गई हो। उपहसित।
विहस्त—पु०[ब० स०] पडित। विद्वान्।
विहाग—पु०=विहाग (राग)।
विहाण—पु०=विहान (सबेरा)।
विहाना—स०[स० विहीन] पृथक् करना।
अ०, स० विहाना (बीतना, बिताना)।
विहायस—पु०[स०]१. आकाश। आसमान। २ दान। ३ चिडिया। पक्षी।
विहार—पु०[स० वि√ हृ (हरण करना)+घञ्]१ घूमना। २ आनन्द प्राप्त करने या मौज लेने के लिए घूमना। ३ घूमने-फिरने तथा आनन्द लेने की जगह। जैसे—उद्यान, बगीचा। ४ प्राचीन काल मे, बौद्ध श्रमणो के रहने का मठ या आश्रम। ५ रति-क्रीडा। ६ रति-क्रीडा का स्थान।
विहारक—वि० [स० वि√हृ+ण्वुल्—अक, विहार+कन्] १ विहार करनेवाला। २ विहार अर्थात् बौद्ध मठ-सम्बन्धी।
विहारिका—स्त्री०[स० विहार+कन्+टाप्, इत्व]छोटा विहार या मठ।
विहारी—वि० [स० वि√ हृ+णिनि] [स्त्री० विहारिणी] जो विहार करता हो। विहार करनेवाला।
पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।
विहास—पु०[स०] मुसकान।
विहिसक—वि०[स०]=हिंसक।
विहि—पु०[स० विधि]१ विधाता। २ विधान।
†स्त्री० विधि।
विहित—भू० कृ० [स० वि√ धा+क्त]१ जो विधि के अनुसार हुआ या किया गया हो। २ जो विधि के अनुरूप या अनुसार हो। ३ उचित। मुनासिब।
विहीन—वि० [स० वि√ हा (त्याग करना)+क्त, ईत्व, त-न] [भाव० विहीनता, भू० कृ० विहीनित] १ रहित। बगैर। बिना। २. छोडा या त्यागा हुआ।
विहून—वि०[स० विहीन] रहित।
अव्य० बिना। बगैर।
विहृत—पु० [स० वि√ हृ+क्त] साहित्य मे हाव की वह अवस्था जिसमे प्रिया लज्जा के कारण प्रिय पर अपना मनोभाव नही प्रकट कर पाती।
भू० कृ० हरण किया हुआ।
विहृति—स्त्री०[स० वि√ हृ+क्तिन्]१ जबरदस्ती या बलपूर्वक कुछ ले लेना या कोई काम करना। २ खेलना। ३ क्रीडा। विहार।
विह्वल—वि० [स० वि√ ह्वल्+अच्] [भाव० विह्वलता] आशका, भय आदि मनोविकारो के कारण किंकर्तव्यविमूढ-सा होकर जो अपना चैन तथा साहस छोड चुका हो और घबरा रहा हो।
विह्वलता—स्त्री० [स० विह्वल+तल्+टाप्] विह्वल होने की अवस्था या भाव। व्याकुलता। घबराहट।
वींद—पु०[सं० वीरेंद्र] बहुत बडा वीर। (डि०)
वीक—पु० [स० √अज् (गमन)+कन्, अज—वी]१ वायु। हवा। २ चिडिया। पक्षी। ३ मन।
वीकाश—पु०[स० वि√ कश् (विकाश करना)+घञ्, दीर्घ] १. एकात स्थान। २ प्रकाश। रोशनी।
वीक्ष—पु०[स० वि√ ईक्ष् (देखना)+अच्] दृष्टि।
वीक्षक—वि०[स० वि√ ईक्ष् +ण्वुल्—अक] देखनेवाला।
वीक्षण—पु० [स० वि√ ईक्ष् +ल्युट्—अन] [भू० कृ० वीक्षित, वि० वीक्षणीय] देखने की क्रिया। निरीक्षण।
वीक्षणीय—वि०[स०वि√ ईक्ष् +अनीयर्] जो देखे जाने के योग्य हो। दर्शनीय।
वीक्षा—स्त्री०[स० वि√ ईक्ष्+अङ्+टाप्] देखने की क्रिया। वीक्षण। दर्शन।
वीक्षित—भू० कृ०[स० वि√ ईक्ष्+क्त] देखा हुआ।
पु० दृष्टि। नजर।
वीक्ष्य—वि०[स० वि√ ईक्ष्+ण्यत्] देखने या देखे जाने के योग्य।
पु० १ वह जो देखा जाय। दृश्य। २ घोड़ा। ३ नर्तक। नचनिया।
वीख—पु०[?] कदम। डग। (डि०)
वीखना—स०[स० वीक्षण] देखना। (राज०)
वीचि—स्त्री०[स०√वे+डीचि]१ लहर। तरग। २ बीच की खाली जगह। अवकाश। ३ चमक। दीप्ति। ४ सुख। ५ किरण।
वीचिमाली (लिन्)—पु०[स०] समुद्र।
वीची—स्त्री० [स० वीचि+ङीप्] तरग। लहर।
वीज—पु० [स० वि√ जन् (उत्पन्न होनेवाला)+ड, दीर्घ, वि√ईज् (गमन)+अच्] १ मूल कारण। असल वजह। २ वनस्पति आदि की वह गुठली या दाना जिससे उस जाति की और वनस्पतियाँ उत्पन्न होती है। बीज। बीआ। ३ वीर्य। शुक्र। ४. अकुर। ५ फ..। ६ आधार। ७ निधि। खजाना। ८ तेज। ९ तत्त्व। १० मज्जा। ११ तान्त्रिको के अनुसार, एक प्रकार के मत्र जो बडे बडे मत्रो के मूल तत्त्व के रूप मे माने जाते है। प्रत्येक देवी या देवता के लिए ये मत्र अलग-अलग होते है। १२ दे० 'वीज-गणित'।
†स्त्री० विजली (विद्युत्)।
वीजक—पु०[स० वीज+कन्, वीज√ कै+क] १ वीज। बीआ। २ विजयसार या पियासाल नामक वृक्ष। ३ बिजौरा नीबू। ४ सफेद सहिजन। ५ दे० 'बीजक'।
वीज-कर—पु०[स० वीज√ कृ (करना)+अच्]उडद की दाल जो बहुत पुष्टिकर मानी जाती है।
वीजकृत—वि०[स० वीज√कृ +क्विप्] शुक्र बढाने तथा पुष्ट करनेवाला (पदार्थ)।
वीजकोश—पु०[स० ष० त०]१ फलो, पौधो आदि का वह अग जिसके अन्दर वीज रहते है। २ कमलगट्टा। ३ सिघाडा।
वीज-गणित—पु०[स० तृ० त०] गणित की वह शाखा जिसमे साकेतिक

अक्षरों की सहायता से राशियाँ निकाली जाती है और गणना की जाती है।

वीजधान्य—पु०[स० मध्यम० स०] धनियाँ।

वीजन—पु०[स० वि√ईज् (गमन)+ल्युट्—अन] १ पखा झलना। हवा करना। २ पखा। चँवर। ३ चादर। ४ चकोर पक्षी। ५ लोध।

वीजपुरुष—पु०[स० कर्म० स०] वह पुरुष जिससे किसी वश की परम्परा चली हो।

वीजपूर—पु०[स० व० स०]१ विजौरा नीबू। २ चकोतरा। ३ गलगल।

वीज-मार्गी—पु०[स० वीज√मार्ग् (खोजना)+णिनि, वीजमार्गिन्] एक प्रकार के वैष्णव जो निर्गुण के उपासक होते है, और देवी-देवताओं का पूजन नही करते।

वीजलि—स्त्री०=विजली। (डि०)

वीजसार—पु०[स० व० स०] वायविडग।

वीजसू—स्त्री०[स० वीज√सू (उत्पन्न करना)+क्विप्] पृथ्वी।

वीजा—स्त्री०=विजली।

वि०=दूजा (दूसरा)।

पु० [अ०] पार-पत्र पर लिखा जानेवाला वह लेख जिसके आधार पर विदेशी यात्री को किसी दूसरे देश मे प्रवेश करने और घूमने-फिरने का अधिकार प्राप्त होता है। द्रष्टाक। (वीजा)

वीजित—भू० कृ० [स० वीज+इतच्] १ बोया हुआ। २ पखा झलकर ठढा किया हुआ। ३ सींचा हुआ।

वीजी—वि०[स० वीज+इनि] जिसमे वीज हो। वीजोवाला।

पु० १ पिता। बाप। २ चौराई का साग।

वीजोदक—पु०[स० वीज+उदक, उपमि० स०] आकाश से गिरनेवाला ओला। विनौरी।

वीज्य—वि०[स० वि√ ईज् +यत्, वीज+यत् वा]१ जो बोया जा सकता हो। बोया जाने के योग्य। २ जो अच्छे वीज से उत्पन्न हुआ हो। ३ कुलीन।

वीझण—पु०[स० व्यजन] विजन। पखा। (राज०)

वीझना—स०[स० व्यजन] पखा झलना।

वीटक—पु०[स० वीट+कन्] [स्त्री० अल्पा० वीटिका] पान का वीडा।

वीटा—स्त्री०[स० वि√ इट्+क+टाप्] प्राचीन काल मे, एक प्रकार का खेल जो लकडी के डडे से खेला जाता था।

वीटिका—स्त्री०[स० वि√ इट्+इन्, वीटि+कन्+टाप्] पान का छोटा वीडा।

वीटी—स्त्री० [स० वीटि+ङीप्] १ पान का वीडा। २ गाँठ विशेषत पहने हुए कपडे मे लगाई जानेवाली गाँठ।

वीटुली—स्त्री०[स० वेष्ट] एक प्रकार की पगड़ी। (राज०)

वीण—स्त्री०=वीणा।

वीणा—स्त्री०[स० √ वी+न+टाप्]१ एक तरह का प्राचीन भारतीय बाजा जो सितार, सरोद आदि का मूल रूप है और सब बाजो मे श्रेष्ठ माना जाता है। २ साधको और सिद्धो की परिभाषा मे, जीव की काया या शरीर। ३ विद्युत्। विजली।

वीणा-दंड—पु० [स० ष० त०] वीणा का वह लबोतरा अश जो दोनों तुबो या सिरो के बीच मे पडता है।

वीणाधारी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वीणा-पाणि—स्त्री० [स० व० स०] सरस्वती।

पु० नारद।

वीणा-प्रसेव—पु० [स०] वीणा की वह गद्दी जिसे आगे-पीछे करने मे तार से निकलनेवाला स्वर तीव्र-मद होता है।

वीणावती—स्त्री० [स० वीणा+मतुप्, म—व,+ङीप्] सरस्वती।

वीणा-वादिनी—स्त्री० [सं० व० स०] सरस्वती।

वीणा-हस्त—पु० [स० व० स०] शिव। महादेव।

वीणी—पु०[स० वीणा+इनि] वह जो वीणा-वादन मे कुशल हो।

वीतंस—पु० [वि√तस् (भूषित करना)+घञ्] वह (जाल या पिंजरा) जिसमे पशु-पक्षी फँसाये या रखे जाते है।

वीत—वि० [स०√वी+क्त, वि√इ+क्त] १ गया या बीता हुआ। २ स्वतन्त्र किया हुआ। ३ जो अलग या पृथक् हो गया हो। ४ ओझल। ५ युद्ध करने के लिए उपयुक्त। ६ किसी काम या बात से मुक्त या रहित। जैसे—वीतचिन्त, वीतराग।

पु० १ ऐसी चीज जो पुरानी होने के कारण काम मे आने के योग्य न रह गई हो।

विशेष—प्राचीन भारत मे बुड्ढे घोडे, हाथी, सैनिक आदि वीत कहे जाते थे।

२ अनुमान के दो भेदो मे से एक।

वीतक—पु०[स० वीत+कन्]१ कपूर और चदन का चूर्ण रखने का पात्र। २ घिरी हुई जमीन। वाडा।

वीत-मल—वि०[स०]१ मल से रहित। निर्मल। २ निष्पाप।

वीतराग—पु०[स०व०स०]१ ऐसा व्यक्ति जिसने सासारिक आसक्ति का परित्याग कर दिया हो। वह जो निस्पृह हो गया हो। राग-रहित। ३ गौतम बुद्ध। ३ जैनो के एक प्रधान देवता।

वीतसूत्र—पु०[स०] यज्ञोपवीत। जनेऊ।

वीतहव्य—पु०[स० व० स०] वह जो यज्ञ मे आहुति या हव्य देता हो।

वीतहोत्र—पु०=वीतिहोत्र।

वीति—स्त्री०[स० √ वी+क्तिन्]१ गति। चाल। २ चमक। दीप्ति। ३ खाने-पीने की क्रिया। ४ गर्भ धारण करना। ५ यज्ञ।

पु० [√वी+क्तिच्] घोडा।

वीतिहोत्र—पु०[स० व० स०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ याज्ञिक।

वीथी—स्त्री० [स०√ विथ्+इन्+ङीप्]१ पक्ति। कतार। २ मार्ग। रास्ता। सडक। ३ बाजार। हाट। ४. आकाश मे सूर्य के भ्रमण करने का मार्ग। ५ आकाश मे नक्षत्रो के रहने के स्थानो के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सडक के रूप मे माने गए है। जैसे—नागवीथी, गजवीथी, गो-वीथी आदि। ६ दृश्य काव्य या रूपक के २७ भेदो मे से एक जो एक ही अक का और शृंगार-रस-प्रधान होता है। इसमे एक से तीन तक पात्र होते है। प्राचीन काल मे ऐसे रूपक अलग भी खेले जाते थे और दूसरे नाटको के साथ भी।

वीध्र—पु०[स० वि√ इन्ध् (दीप्त होना)+रक्] १ आकाश। २ अग्नि। ३. वायु।

वीनाह—पुं० [सं० वि√नह् (रोकना)+घञ्, दीर्घ] वह जंगला या ढकना जो कूएँ के ऊपर लगाया जाता है।

वीपा—स्त्री०[सं० वीप+टाप्] बिजली।

वी० पी०—पुं० [अं० वेल्यू-पेएबुल के आरंभिक अक्षर वी० और पी०] १. डाक द्वारा चीजें भेजने की वह व्यवस्था जिसमें पानेवाले व्यक्ति से चीजों का दाम वसूल करके तब उन्हें चीजें दी जाती हैं। २ उक्त प्रकार से भेजी हुई चीज।

वीप्सा—स्त्री०[सं० वि√ आप् (व्याप्त होना)+सन्, द्वित्व, अ+टाप्] १ व्याप्ति। २. कार्य की निरंतरता सूचित करने के लिए होनेवाली शब्द की आवृत्ति। जैसे—खड़े-खड़े या चलते-चलते। ३. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें आदर, घृणा, विस्मय, शोक, हर्ष आदि के प्रसंगों में उपयुक्त शब्दों की पुनरावृत्ति होती है। यथा—रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि-हँसि उठैं साँसें भरि, आँसू भरि कहत दई दई।—देव।

वीभत्स—पुं०[सं०] [भू० कृ० वीभत्सित]=वीभत्स।

वीरंधर—पुं०[सं० वीर√धृ (रखना)+खच्, मुम्] १ जंगली पशुओं को मारने या उनसे बचने के लिए की जानेवाली लड़ाई। २ मोर।

वीर—पुं०[सं० √ अज्+रक्, वी—आदेश,√ वीर+अच् वा] [भाव० वीरता] १ वह जो यथेष्ट बलवान और साहसी हो। बहादुर। शूर। २ योद्धा। सिपाही। सैनिक। ३ उक्त के आधार पर साहित्य में शृंगार आदि नौ रसों में से एक रस जिसमें उत्साह, वीरता, साहस, आदि गुणों का रस-पूर्ण परिपाक होता है। ४ वह जो किसी विकट परिस्थिति में भी आगे बढ़कर अच्छी तरह और साहसपूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करे। ५ वह जो किसी काम में और लोगों में से बहुत बढ़कर हो। जैसे—दानवीर, धर्मवीर। वह जो किसी काम या बात में बहुत चतुर या होशियार हो। जैसे—वाग्वीर। ७ स्त्री की दृष्टि में उसका पति। ८ पुत्र। बेटा। ९ भाई के लिए बहन का एक प्रकार का संबोधन। १० तांत्रिकों की परिभाषा में, साधना के तीन प्रकारों या भावों में से एक जिसमें खूब मद्यपान करके और उन्मत्त होकर मनुष्य, भैंसे या भेड़-बकरी का बलिदान किया जाता है।

विशेष—कहा गया है कि दिन के पहले दस दंडों में पशु भाव से, बीच के १० दंडों में वीर भाव से और अंतिम १० दंडों में दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए। कुछ लोगों के मत से, १६ वर्ष की अवस्था तक पशु भाव से, फिर ५० वर्ष की अवस्था तक वीर भाव से और उसके बाद दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए।

११ तांत्रिकों की परिभाषा में, वह साधक जो उक्त प्रकार के वीर-भाव से साधना करता हो। १२ वज्रयानी सिद्धों की परिभाषा में, वह साधक जो वज्र-प्रज्ञोपाय योग के द्वारा महाराग में विराग का दमन करता हो। १३ साहित्य में एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३१मात्राएँ और १६ मात्राओं पर यति या विराम होता है। आल्हा नामक गीत वस्तुतः इसी छंद में होता है। १४ विष्णु। १५. जैनों के जिनदेव। १६ यज्ञ की अग्नि। १७ सींगिया विष। १८ काली मिर्च। १९ पुष्करमूल। २० काँजी। २१ उशीर। खस। २२ आलूबुखारा। २३ पीली कटसरैया। २४ चौलाई का साग। २५. वाराही कन्द। गैंठी। २६ डिताकरज। २७ अर्जुन नामक वृक्ष। २९ कनेर। काकोली। ३० सिंदूर। ३१ शालिपर्णी। सरिवन। ३२ लोहा। ३३. नगाड़ा। ३४ गुग्गुल। ३५ सिंघाड़ी। ३६ कुश। ३७. ऋषभक नामक ओषधि। ३८ तोरी। तुरई।

वीरक—पुं०[सं० वीर+कन्] १ साधारण वीर या योद्धा। २. नायक। ३. एक तरह का पौधा। ४ पुराणानुसार चाक्षुष मन्वन्तर के एक मनु। ५ सफेद कनेर।

वीर-कर्मा (र्मन्)—वि०[सं०] वीरोचित कार्य करनेवाला।

वीर-काम—वि० [सं०] जिसे पुत्र की कामना हो। पुत्र की इच्छा रखनेवाला।

वीरकाव्य—पुं०[सं०] ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर बना हुआ वह काव्य जिसमें किसी वीर व्यक्ति के युद्ध तथा बड़े बड़े कार्यों का उल्लेख या वर्णन होता है। (हिन्दी में ऐसे काव्य प्रायः रासो के नाम से प्रसिद्ध हैं।)

वीरकुक्षि—वि०[सं० ब० स०] (स्त्री) जो वीर पुत्र प्रसव करती हो।

वीर-केसरी (रिन्)—पुं०[सं० स० त०] वह जो वीरों में सिंह हो।

वीरगति—स्त्री०[सं० ष० त०]१. युद्ध-क्षेत्र में मारे जाने पर योद्धाओं को प्राप्त होनेवाली शुभ-गति। २. इन्द्रपुरी।

वीर-गाथा—स्त्री०[सं० ष० त०] ऐसी इतिवृत्तमयी गाथा जिसमें किसी वीर के वीरतापूर्ण कृत्यों का वर्णन होता है।

वीर-चक्र—पुं०[सं०] एक तरह का पदक जो भारत में शासन द्वारा बहुत वीरतापूर्ण कार्य करने पर सैनिकों को दिया जाता है।

वीरज—वि० [सं०] वीर से उत्पन्न।
†वि०=विरज।

वीरण—पुं० [सं० वि√ईर् (गमनादि)+ल्युट्—अन] १ कुश, दर्भ, काँस, दूब आदि की जाति के तृण। २ उशीर। खस। ३ एक प्राचीन ऋषि। ४ एक प्रजापति।

वीरणी—स्त्री०[सं० वीरण+ङीप्]१ तिरछी चितवन। २ नीची भूमि। ३ वीरण की पुत्री और चाक्षुष की माता।

वीरता—स्त्री०[सं० वीर+तल्+टाप्] १. वीर होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. वीर का कोई वीरतापूर्ण या साहसिक कार्य।

वीरधन्वा (न्वन्)—पुं०[सं०] कामदेव।

वीरपट्ट—पुं०[सं० ष० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का सैनिक पहनावा।

वीरपत्नी—स्त्री०[सं० ष० त०]१ वह जो किसी वीर की पत्नी हो। २ वैदिक काल की एक नदी।

वीर-पान—पुं०[सं० ष० त०] एक तरह का पेय (विशेषतः मादक पेय) जो युद्ध क्षेत्र में जाते समय या युद्ध में योद्धा पीते थे।

वीरपुष्पी—स्त्री०[सं०]१ महाबला। सहदेई। २ सिंदूरपुष्पी। लटकन।

वीर-पूजा—स्त्री० [सं०] मानव समाज में प्रचलित वह भावना जिसके फलस्वरूप उन लोगों के प्रति विशेष भक्ति और श्रद्धा प्रकट की जाती है जो असाधारण रूप से अपनी वीरता का परिचय देते हैं। (हीरो-वर्शिप)

वीर-प्रसू—वि०[सं०] वह (स्त्री) जो वीर संतान उत्पन्न करे।

वीरबाहु—पुं०[सं० ब० स०] १ विष्णु। २. रावण का एक पुत्र। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

वीरभद्र—पुं०[सं०]१ श्रेष्ठ वीर। २. शिव की जटा से उत्पन्न एक वीर

जिसने दक्ष का यज्ञ नष्ट कर दिया था। ३ अश्वमेध यज्ञ का घोडा। ४ खस।

वीर-भुक्ति—स्त्री०[म० प० त०] आधुनिक वीरभूमि का प्राचीन नाम।

वीर-मंगल—पु०[स०] हाथी।

वीर-मत्स्य—पु०[स०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जाति।

वीर-मार्ग—पु० [स० प० त०] स्वर्ग, जहाँ वीर योद्धा मरने के बाद जाते हैं।

वीर-मुद्रिका—स्त्री० [सं०] पहनने का एक तरह का पुरानी चाल का छल्ला।

वीर-रज—पु० [म० वीररजस्] सिंदूर।

वीर-राघव—पु० [स० कर्म० स०] रामचन्द्र।

वीर-रात्रि—स्त्री० [स०] गुप्त काल के गुडों की परिभाषा मे वह रात जिसमें गुडे कोई बहुत बडी दुर्घटना या दुस्साहस का काम कर गुजरते थे।

वीर-रेणु—पु० [स० ब० स०] भीमसेन।

वीर-ललित—वि०[स०] वीरो का-सा, पर साथ ही कोमल (स्वभाव)।

वीर-लोक—पु० [म० प० त०] स्वर्ग।

वीरवती—स्त्री०[स० वीर+मतुप्, म—व,+ङीप्]१ ऐसी स्त्री जिसका पति और पुत्र दोनों जीवित और सुखी हों। २ मासरोहिणी लता।

वीर-वसत—पु०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

वीर-वह—पु०[म०]१ वह रथ जो घोड़ों द्वारा खीचा जाय। २ रथ।

वीर-व्रत—पु०[स० ब० स०]१.ऐसा व्यक्ति जो अपने व्रत पर अडिग रहता हो। २ निष्ठापूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला।

वीर-शयन—पु०[स०] वीरशय्या।

वीर-शय्या—स्त्री०[स०प० त०] वीरों के सोने का स्थान अर्थात् रणभूमि। लडाई का मैदान।

वीरशाक—पु०[स० प० त०, या मध्य० स०] बथुआ (साग)।

वीर-शैव—पु०[स० मध्यम० स०] शैवों का एक सप्रदाय।

वीरसू—वि०[स०] वीरप्रसू। (दे०)

वीरस्य—वि० [स०] बलि चढाया जानेवाला (पशु)।

वीर-स्थान—पु०[स० प० त०]१ स्वर्ग, जहाँ वीर लोग मरने पर जाते हैं। २ तान्त्रिक साधको का वीरासन।

वीरहा—पु० [म० वीरहन्] १ ऐसा अग्निहोत्री ब्राह्मण जिसकी अग्निहोत्रवाली अग्नि आलस्य आदि के कारण बुझ गई हो। २ विष्णु। वि० वीरो को मारनेवाला।

वीरहोत्र—पु०[म०] विंध्य पर्वत पर स्थित एक प्राचीन प्रदेश।

वीरांतक—वि० [स०प० त०] वीरो को नष्ट करनेवाला। वीरो का नाशक।

पु० अर्जुन (वृक्ष)।

वीरा—स्त्री०[म० वीर+टाप्]१ ऐसी स्त्री जिसके पति और पुत्र हो। २ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी। ३ मदिरा। शराब। ४ ब्राह्मी बूटी। ५ मुरामासी। ६ क्षीर काकोली। ७. भुईं आँवला। ८ केला। ९ एलुआ। १० विदारी कन्द। ११ काकोली। १२ घीकुँआर। १३. शतावर।

वीराचार—पु०[स०] वाममार्गियो का एक विशिष्ट प्रकार का आचार या साधना-पद्धति जिसमे मद्य को शक्ति और मास को शिव मानकर शव-साधन किया जाता है।

वीराचारी (रिन्)—पु० [स० वीराचारिन्] [स्त्री० वीराचारिणी] वीराचार के अनुसार साधना करनेवाला वाम-मार्गी।

वीरान—वि०[स० विरिण (ऊसर) से फा०] १ (प्रदेश) जिसमे बस्ती न हो। निर्जन। २ लाक्षणिक अर्थ मे, शोभा-विहीन।

वीराना—पु०[फा० वीरान.] निर्जन प्रदेश।

वीरानी—स्त्री०[फा०] वीरान होने की अवस्था या भाव।

वीराशंसन—पु०[म० वीर+आ √ शस् (कहना)+णिच्+ल्युट्—अन] ऐसी युद्ध-भूमि जो बहुत ही भीषण और भयानक जान पड़ती हो।

वीरासन—पु०[स० वीर+आसन]१ योग-साधन मे, एक विशिष्ट प्रकार का आसन या मुद्रा। २ मध्ययुगीन भारत मे राजदरबारों मे बैठने का एक विशिष्ट प्रकार का आसन या मुद्रा जिसमे दाहिना घुटना मोडकर पैर चूतड के नीचे रखा जाता था और बायाँ मुडा हुआ घुटना सामने खडे बल मे रहता था।

वीरिणी—स्त्री०[स०]१.ऐसी स्त्री जिसका पति और पुत्र दोनो जीवित तथा सुखी हो। २. वीरण प्रजापति की कन्या जो दक्ष को ब्याही थी। ३ एक प्राचीन नदी।

वीरुध—पु० [स० वि√रुध्+क्विन्]१ वृक्ष और वनस्पति आदि। २ औषधि के काम मे आनेवाली वनस्पति।

वीरुधा—स्त्री० [म० वीरुध्+टाप्] दवा के रूप मे काम आनेवाली वनस्पति। ओषधि।

वीरेंद्र—पु०[स० वीर+इन्द्र, प०त०] वीरो मे प्रधान या बहुत बडा वीर।

वीरेश—पु०[म० वीर+ईश, प० त०] १. शिव। महादेव। २ वीरेन्द्र।

वीरेश्वर—पु०[स० वीर+ईश्वर, प० त०] शिव। महादेव।

वीर्य—पु०[स० √वीर्+यत्] १ शरीर की सात धातुओ मे से एक जिसका निर्माण सब के अत मे होता है, और जिसके कारण शरीर मे बल और काति आती है। यह स्त्री प्रसग के समय अथवा रोग आदि के कारण यो ही मूत्रेंद्रिय से निकलता है। इसे चरम धातु और शुक्र भी कहते हैं। २ पराक्रम। वीरता। ३. ताकत। बल। शक्ति। जैसे—बाहुवीर्य=बाहो या हाथो की शक्ति, वाचि वीर्य=बोलने की शक्ति। ४ वैद्यक के अनुसार, किसी पदार्थ का वह सार भाग जिसके कारण उस पदार्थ मे शक्ति रहती है। किसी धातु का मूल तत्त्व। ५ अन्न, फल आदि का बीज जो बोया जाता है।

वीर्यकृत्—वि०[स०] १ जो बल या वीर्य उत्पन्न करता हो। बलकारक। २ बलवान्। शक्तिशाली।

वीर्यज—वि०[स०] वीर्य से उत्पन्न।

पु० पुत्र।

वीर्यवन—पुं०[स०] प्लक्ष द्वीप मे रहनेवाले क्षत्रियो का एक वर्ग।

वीर्यवत्—वि०[स० वीर्य+मतुप, म—व] वीर्यवान्।

वीर्यशुल्क—पु०[स०] ऐसा काम या बात जिसे पूरा करने पर ही किसी से या किसी का विवाह होना सभव हो। विवाह करने के लिए होनेवाली शर्त।

वीर्यांतराय—पु० [स० ब० स०] पाप-कर्म जिसका उदय होने से जीव हृष्ट-पुष्ट होते हुए भी शक्ति-विहीन हो जाता है। (जैन)

वीर्या—स्त्री०[सं० वीर्य+टाप्]१. शक्ति। २ पुंस्त्व।

वीर्याधान—पु०[सं० ष० त०] वीर्य धारण करना या कराना। गर्भाधान।

वीर्यान्वित—वि०[सं० तृ० त०] शक्तिशाली।

वीसा—पु०[अ०] दे० 'वीजा'।

वुजूद—पु०[अ०]=वजूद।

वुसूल—वि०, पु०=वसूल।

वुसूली—वि०, स्त्री०=वसूली।

वृंत—पुं०[सं०√वृ (आच्छादन)+क्त, नि० मुम्]१. स्तन का अगला भाग। २ डंठल। ३. घड़ा रखने की तिपाई। ४. कच्चा और छोटा फल। ५. वह पतला डंठल जिस पर पत्ती या फूल लगा रहता है। पर्णवृंत। (पेटिओल)

वृंताक—पु० [सं०√वृन्त+अक् (प्राप्त होना)+अण्]१. बैंगन। २ पोई का साग।

वृंताकी—स्त्री०[सं० वृन्ताक+ङीप्] बैंगन। भंटा।

वृंद—वि०[सं० √वृ (आच्छादन)+दन्, नुम्, गुणाभाव] बहुसंख्यक। पु०१ समूह। २ सौ करोड़ की संख्या। ३ फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का मुहूर्त। ४ ढेर। राशि। ५ गुच्छा। ६ गले में होनेवाला अर्बुद।

वृंदवाद्य—पु०[सं०] दे० 'वाद्यवृंद'।

वृंदसंगीत—पु०[सं०] समवेतगान। सहगान। गाना।

वृंदा—स्त्री०[सं० वृंद+टाप्] राधिका का एक नाम।

वृंदाक—पु०[सं० वृन्दा+कन्] परगाछा या बाँदा नामक वनस्पति।

वृंदार—पु०[सं० वृन्द√ ऋ (गमन)+अण्]देवता।

वृंदारक—पु०[सं० वृन्द+आरकन्] देवता या श्रेष्ठ व्यक्ति।

वृंदारण्य—पु०[सं० ष० त०] वृन्दावन।

वृंदावन—पु०[सं० ष० त०]१ मथुरा के समीप स्थित एक वन। २ उक्त वन में बसी हुई एक आधुनिक बस्ती जो प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। ३ वह चबूतरा जिसमें तुलसी के पौधे हों।

वृंदावनेश्वर—पु०[सं०] श्रीकृष्ण।

वृंदावनेश्वरी—सं०[वृन्दावनेश्वर+ङीप्] राधिका।

वृंदी—वि०[सं० वृन्द+इनि] जो समूहों में बँटा हो।

वृंहण—वि०[सं० √वृह् (वृद्धि करना)+ल्यु—अन] पुष्ट करनेवाला। पु० १ वह पदार्थ जो पुष्टिकारक हो। बलवर्द्धक द्रव्य। २ एक प्रकार का धूम्रपान। ३ मुनक्का।

वृक—पु०[सं०] [स्त्री० वृकी] १ भेड़िया। २ गीदड़। ३. कौआ। ४ चोर। ५ वज्र। ६ क्षत्रिय। ७ अगस्त वृक्ष।

वृकदेवा—स्त्री०[सं० वृकदेव+टाप्] कृष्ण की माता देवकी।

वृकधूप—पु० [सं० कर्म० स०] १. एक तरह का सुगंधित धूप। २ तारपीन।

वृका—स्त्री० [सं० वृक+टाप्] पाढ़ा (लता)।

वृकायु—पु०[सं० ब० स०]१. जंगली कुत्ता। २. चोर।

वृकोदर—पु०[सं० ब० स०] १. भीमसेन का एक नाम। २. ब्रह्मा।

वृक्क—पु० [सं० वृक्क] पशु, पक्षियों और स्तनपायी जीवों के पेट के अन्दर का एक अंग जो दो बड़ी ग्रन्थियों या गुठलों के रूप में होता है और जिसके द्वारा मूत्र शरीर के बाहर निकलता है। गुरदा। (किड्नी)

वृक्क शोथ—पु० [सं०] एक घातक रोग जिसमें वृक्क या गुरदे सूज जाते हैं। (नेफ्राइटिस)

वृक्का—स्त्री० [सं० वृक्क+टाप्] हृदय।

वृक्ष—पु० [सं०√व्रश्च् (छेदने)+स, कित्] १ मोटे तथा कठोर तनेवाली वनस्पतियों का एक वर्ग। पेड़। दरख्त। २ दे० 'वंश-वृक्ष'।

वृक्षक—पु० [सं० वृक्ष+कन्] १ वृक्ष। पेड़। २ छोटा पेड़।

वृक्ष कुक्कुट—पु० [सं०] जंगली कुत्ता।

वृक्षचर—पु० [सं० वृक्ष√चर्+ट] बंदर।

वृक्ष-दोहद—पु० [सं०] १ कुछ वृक्षों का कृत्रिम उपायों या विशिष्ट प्रक्रियाओं से असमय में ही खिलने लगना या खिलाया जाना। २. भारतीय साहित्य में कवि प्रसिद्धि (देखें) के अन्तर्गत एक प्रकार की मान्यता और उसका वर्णन। जैसे—सुंदरी युवतियों के पैर की ठोकर से अशोक में फूल लगना और खिलना, उनके नाचने से कचनार में फूल आना, उनके गाने से आम में मंजरियाँ लगना, उनके आलिंगन से कुरबक का खिलना, उनके मुस्कराने से चम्पा का और देखने मात्र से तिलक का खिलना आदि। (दे० 'कवि-प्रसिद्धि' और 'कवि-समय')

वृक्ष-धूप—पु० [सं०] चीड़ (पेड़)।

वृक्षनाथ—पु० [सं० ष० त०] वृक्षों में श्रेष्ठ, वट। बरगद।

वृक्ष-निर्यास—पु० [सं० ष० त०] वृक्ष के तने, शाखा आदि में से निकलनेवाला तरल द्रव्य। निर्यास।

वृक्ष-प्रतिष्ठा—स्त्री० [सं०] वृक्ष लगाना। वृक्षरोपण।

वृक्ष-भक्षा—स्त्री०[सं० वृक्ष√भक्ष्+अच्+टाप्] बाँदा नामक वनस्पति।

वृक्ष-मूलिक—वि० [सं०] वृक्ष के मूल में होनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला।

वृक्षराज—पु० [सं० ष० त०] परजाता। पारिजात।

वृक्षरुहा—स्त्री० [सं०वृक्ष√रुह्+क+टाप्] १ परगाछा नाम का पौधा। २ रुद्रवंती। ३ अमरबेल। ४. जतुका लता। ५ विदारी कंद। ६ कर्या नामक पौधा।

वृक्ष-रोपण—पु० [सं०] सामूहिक रूप से वृक्ष लगाने की क्रिया या भाव। पौधों आदि को इस उद्देश्य से कहीं प्रतिष्ठित करना कि वे आगे चलकर बड़े पेड़ों का रूप धारण करें।

वृक्ष-रोपक—वि० [सं०] वृक्ष-रोपण करनेवाला।

वृक्ष-वासी—वि० [सं० वृक्षवासिन्] [स्त्री० वृक्षवासिनी] जो वृक्षों पर रहता हो अथवा प्राकृतिक रूप से वृक्षों पर रहने के लिए उपयुक्त हो। (आरबोरियल)

वृक्ष-संकट—पु० [सं० ब० स०] वह पतला रास्ता जो घने पेड़ों के बीच में दूर तक चला गया हो।

वृक्ष-स्नेह—पु० [सं० ष० त०] वृक्ष निर्यास। (दे०)

वृक्षादन—पु० [सं० वृक्ष√अद् (खाना)+ल्युट्—अन] १ कुल्हाड़ी। २ अश्वत्थ। पीपल। ३ पयाल या चिरौंजी का पेड़। ४ मधुमक्खियों का छत्ता।

वृक्षाम्ल—पु० [सं० ष० त०, मध्यम० स०] १ इमली। २ चुक नाम की खटाई। ३ अमड़ा। ४ अमर बेल।

वृक्षायुर्वेद—पु० [सं० ष० त०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों और उनकी चिकित्सा का वर्णन होता है।

वृक्षालय—पु० [स० ब० स०] १ वह जिसने किसी वृक्ष पर अपना घर (घोंसला) बनाया हो। २. पक्षी। चिड़िया।

वृक्षावास—पु० [स० ब० स०] तपस्वी, साँप या कोई अन्य प्राणी जो वृक्ष की कोटर मे रहता हो।

वृक्षोत्थ—वि० [स० वृक्ष+उद्√स्था (ठहरना)+क] वृक्ष पर उत्पन्न होनेवाला।

वृक्षोत्पल—पु० [स० स० त०] कनियारी या कनकचम्पा नामक पेड।

वृक्षौका (कस्)—पु० [स० ब० स०] वनमानुष।

वृक्ष्य—पु० [स० वृक्ष+यत्] पेड का फल।
वि० वृक्ष-संबंधी।
पु० फल, फूल, पत्ती आदि जो वृक्ष मे लगते हैं।

वृज—पु० [स०√वृज् (त्याग करना)+अच्] व्रज।

वृजन—पुं० [स०√वृज् (त्याग करना)+ल्युट्—अन] १ केश विशेषत कुंचित केश। २ बल। शक्ति। ३ युद्ध। लडाई। ४ निपटारा। निराकरण। ५ दुष्कर्म। पाप। ६ दुश्मन। शत्रु। ७. शरीर के बाल।
वि० १ टेढा। वक्र। २ कुटिल। ३ नश्वर।

वृजन्य—वि० [स० कर्म० स०] बहुत ही सीधा-सादा। परम साधु (व्यक्ति)।

वृजि—स्त्री० [स०√वृज् (त्याग करना)+इनि] १ व्रज भूमि। २ बिहार का तिरहुत या मिथिला प्रदेश जहाँ पहले विदेह, लिच्छवी आदि रहते थे।

वृजिन—पु० [स०√वृज् (त्याग करना)+इनच्, कित्] १ पाप। गुनाह। २ कष्ट। दुख। ३. शरीर पर की खाल। त्वचा। ४ रक्त। लहू। ५ शरीर। ६ शरीर पर के बाल।
वि० १ टेढ़ा। वक्र। २ पापी।

वृज्य—वि० [स०√वृज् (त्याग करना)+यत्] जो घुमाया या मोडा जा सके।

वृत—वि० [स०√वृ (वरण करना))+क्त] १ जो किसी काम के लिए नियुक्त किया गया हो। मुकर्रर किया हुआ। २ ढका हुआ। ३ प्रार्थित। ४ स्वीकृत। ५. गोलाकार।
†पु० =व्रत।

वृति—स्त्री० [स०√वृ (वरण करना)+क्तिन्] १ वह जिससे कोई चीज घेरी या ढकी जाय। २ नियुक्ति। ३ छिपाना। गोपन।

वृत्त—वि० [स० √वृत् (व्यवहार करना)+क्त] १ जो अस्तित्व मे आ चुका हो। २ जो घटित हो चुका हो। ३. मृत। ४ गोल।
पु० १ धर्म या वेद-शास्त्र के अनुकूल आचरण या व्यवहार। २ वृत्तान्त। हाल। ३ चरित्र। ४. वर्णिक छद। (दे०) ५ वह क्षेत्र जो चारो ओर से किसी ऐसी रेखा से घिरा हो जिसका प्रत्येक बिंदु उस क्षेत्र के मध्य बिंदु से समान अतर पर हो। गोल। मडल। ६ ज्यामिति मे उक्त प्रकार की रेखा जो किसी क्षेत्र को घेरती हो। (सर्किल, अन्तिम दोनो अर्थो मे) ७ स्तन का अग्र भाग। ८ गुडा नाम की घास। ९ सफेद ज्वार। १०. अजीर। सतिवन। १० कछुआ। ११ वृत्ति। १२ वृत्तासुर।

वृत्तक—पु० [स० वृत्त+कन्] १ ऐसा गद्य जिसमे कोमल तथा मधुर अक्षरो और छोटे-छोटे समासो का व्यवहार किया गया हो। २ छद।

वृत्त-खंड—पु० [स० प० त०] ज्यामिति मे, किसी वृत्त का वह अश या खड जो चाप तथा दो अर्द्ध व्यासो से घिरा हो। (सेक्टर)

वृत्त-गंधि—स्त्री० [स०] साहित्य मे ऐसा गद्य जिसमे अनुप्रासो की अधिकता होती है तथा जो पद्य का-सा आनन्द देता है।

वृत्त-चित्र—पु० [स०] आज-कल सिनेमा का वह चित्र जिसमे किसी विशिष्ट कार्य या घटना के मुख्य-मुख्य अग-उपाग अथवा ब्योरे की और बातें लोगो की जानकारी या ज्ञानवृद्धि के लिए दिखाई जाती है। (डाक्यूमेन्टरी फिल्म) जैसे—दुर्गापुर के लोहे के कारखाने या राष्ट्रपति की जापान-यात्रा का वृत्त-चित्र।

वृत्त-चेष्टा—स्त्री०[स०] १. स्वभाव। प्रकृति। मिजाज। २. चाल-ढाल।

वृत्त-पत्र—पु० [स०] १. वह पजी जिसमे दैनिक कार्यो, घटनाओ आदि का सक्षिप्त उल्लेख हो। २ किसी सस्था या सभा के निश्चयो, कार्यो आदि के विवरण अथवा तत्सबधी लेख आदि प्रकाशित करनेवाला सामयिक पत्र। (जर्नल) २ पुत्रदात्री नाम की लता।

वृत्तपर्णी—स्त्री० [स० वृत्तपर्ण+ङीप्] १. पाठा। पाढा। २ बडी शखपुष्पी।

वृत्तपुष्प—पु० [स०] १ सिरिस का पेड़। २ कदब। ३ भू-कदब। ४ जल-बेंत। ५ सेवती। ६ मोतिया। ७ चमेली।

वृत्तपुष्पा—स्त्री० [स० वृत्तपुष्प+टाप्] १ नागदमनी। २ सेवती।

वृत्त-फल—पु० [स०] १. *कोई गोलाकार फल*। २ *काली या गोल* मिर्च। ३ अनार। ४. बेर। ५ कपित्थ। कैथ। ६ लाल चिचडा। ७. करज। ८ तरबूज। ९. खरबूजा।

वृत्तफला—स्त्री० [स० वृत्तफल+टाप्] १. बैगन। भटा। २. आँवला।

वृत्तबंध—पु० [स०] छदोबद्ध रचना।

वृत्तवान् (वत्)—वि० [स० वृत्त+मतुप्, म—व] जिसका आचरण उत्तम हो। सदाचारी।

वृत्तशाली (लिन्)—वि० [स०]=वृत्तवान्।

वृत्तांत—पु० [स०] १ किसी घटना, वस्तु, विषय, स्थिति आदि की जानकारी कराने के उद्देश्य से उससे सबद्ध कही या बतलाई जानेवाली बातें या किया जानेवाला वर्णन। २ समाचार। हाल।

वृत्ता—स्त्री० [स० वृत्त+टाप्] १ झिंझरीट नाम का क्षुप। २ रेणुका नामक वनस्पति। ३ प्रियगु। ४ मास-रोहिणी। ५ सफेद सेम। ६ नाग-दमनी।

वृत्तानुवर्ती (र्त्तिन्)—पु० [स०+वृत्त+अनु√वृत् (व्यवहार करना) +णिनि] वृत्तवान्। (दे०)

वृत्तानुसारी (रिन्)—वि० [स० वृत्त+अनु√सृ (गमन आदि)+ णिनि] शुभ आचरण करनेवाला।

वृत्तार्ध—पु० [स० प० त०] वृत्त का आधा भाग जो व्यास तथा चाप से घिरा होता है।

वृत्ति—स्त्री० [स०√वृत्+क्तिन्] १. चक्कर खाना। घूमना। २. किसी वृत्त या गोले की परिधि। वृत्त। ३ वर्तमान होने की अवस्था, दशा या भाव। ४ चित्त, मन आदि का कोई व्यापार। जैसे—चित्त-वृत्ति। ५ उक्त के आधार पर योग मे चित्त की विशिष्ट अवस्थाएँ जो पाँच प्रकार की मानी गई हैं। यथा—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र, और विरुद्ध। ६. कोई ऐसी क्रिया, गति आदि जिसके फलस्वरूप

कुछ होता हो। कार्य। व्यापार। ६ कोई काम करने का ढग या प्रकार। ८. आचरण और व्यवहार तथा इनसे सबध रखनेवाला शास्त्र। आचार-शास्त्र। ९ वह कार्य या व्यापार जिसके द्वारा किसी की जीविका चलती हो। जीवन-निर्वाह का साधन। धधा। पेशा। जैसे—आकाश-वृत्ति, यजमानी वृत्ति, वेश्यावृत्ति, सेवावृत्ति आदि। १०. जीविका-निर्वाह, भरण-पोषण आदि के लिए नियमित रूप से मिलनेवाला धन। जैसे—छात्रवृत्ति। ११ किसी ग्रन्थ विशेषत सूत्रग्रन्थ का अर्थ और आशय स्पष्ट करनेवाली सक्षिप्त परन्तु गभीर टीका या व्याख्या। जैसे—अष्टाध्यायी की काशिका वृत्ति। १२. शब्दो की अभिधा, लक्षणा और व्यजना नाम की अर्थ-बोधक शक्तियाँ। शब्द-शक्ति। १३. व्याकरण मे, ऐसी गूढ वाक्य-रचना जिसकी व्याख्या करनी पडती हो। १४. नाटको मे, आशय और भाव प्रकट करने की एक विशिष्ट शैली जिसे कुछ आचार्य काव्य की रीतियो के अन्तर्गत और कुछ शब्दालकार के अन्तर्गत मानते हैं।

विशेष—प्राचीन आचार्य कायिक और मानसिक चेष्टाओ को ही वृत्ति मानते थे, परन्तु परवर्ती आचार्यो ने इसे विकसित और विस्तृत करके इन्हे काव्यगत रीतियो के समकक्ष कर दिया था, और इनके ये चार भेद कर दिये थे—कौशिकी, आरभटी, भारती और सात्वती तथा अलग अलग रसो के लिए इनका अलग अलग विधान कर दिया गया था। नाटको मे भिन्न-भिन्न रसो के साथ अलग-अलग वृत्तियो का सबध होने के कारण प्रत्येक रस के लिए अनुकूल और उपर्युक्त वर्ण-रचना को भी 'वृत्ति' कहने लगे थे, जिससे 'वृत्यनुप्रास' पद बना है। परवर्ती आचार्यो ने इन वृत्तियो का नाटको के सिवा काव्य मे भी आरोप किया था; और इनके उपनागरिका, कोमला, परुषा आदि भेद निरूपित किये थे। नाट्यशास्त्र की 'प्रवृत्ति' और 'वृत्ति' के लिए दे० 'प्रवृत्त' ६ का विशेष। १५. वृत्तान्त। हाल। १६ प्रकृति। स्वभाव। १७ प्राचीन काल का एक प्रकार का सहारक अस्त्र।

वृत्ति-कर—पु० [स० ष० त०] वह कर जो कोई पेशा या वृत्ति करनेवाले लोगो पर लगता है। पेशे पर लगनेवाला कर। (प्रॉफेशन टैक्स)

वृत्तिकार—पु० [स० वृत्ति√कृ+घञ्] वह जिसने वार्तिक लिखा हो। व्याख्या ग्रन्थ लिखनेवाला।

वृत्ति-विरोध—पु० [स० स० त०] भारतीय साहित्य मे रचना का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जब वृत्तियो (विशेष दे० 'वृत्ति' ५ और ६) के नियमो का ठीक तरह से पालन नही होता। जैसे—शृगार रस के वर्णन मे परुष वर्णों का प्रयोग करना वृत्ति-विरोध है।

वृत्तिस्थ—वि० [स० वृत्ति√स्था+क] १ जो अपनी वृत्ति पर स्थित हो। २ जो अपनी वृत्ति से जीविका उपार्जित करता हो।

वृत्तीय—वि० [स०] १ वृत्ति-सबधी। वृत्ति का। २. जो वृत्त के रूप मे हो। गोलाकार।

वृत्य—वि० [स०√वृत्+क्यप्] १ जो घेरा जाने को हो। २ जिसकी वृत्ति लगने को हो।

वृत्यनुप्रास—पु० [स० मध्यम० स०] एक प्रकार का शब्दालकार जो उस समय माना जाता है जब किसी चरण या पद मे वृत्ति के अनुकूल वर्णों की आवृत्ति होती है। यह अनुप्रास का एक भेद है।

विशेष—वृत्तियाँ तीन है—उपनागरिका या वैदर्भी, गौडी और कोमला या पाचाली। इस प्रकार वृत्यनुप्रास के भी तीन भेद किये गए है—उपनागरिका वृत्यनुप्रास, परुषानुप्रास और कोमला वृत्यनुप्रास।

वृत्र—पु० [स०√वृत्+रक्] १ अन्धकार। अँधेरा। २ बादल। मेघ। दुश्मन। शत्रु। ४ एक असुर जो त्वष्टा का पुत्र था तथा जिसका वध इन्द्र ने किया था।

वृत्रघ्न—पु० [स० वृत्र√हन् (मारना)+क] १ वृत्र नामक असुर को मारनेवाले इन्द्र। २ वैदिक काल का गगा-तटपर का एक देश।

वृत्रघ्नी—स्त्री० [स० वृत्रघ्न+ङीप्] एक नदी। (पुराण) पु०=वृत्रघ्न।

वृत्रत्व—पु० [स० वृत्र+त्व] १. वृत्र का धर्म या भाव। २ दुश्मनी। शत्रुता।

वृत्रनाशन—पु० [स० द्वि० त०] वृत्र नामक असुर को मारनेवाले इन्द्र।

वृत्रशंकु—पु० [स०] एक प्रकार का खभा। (वैदिक)

वृत्रहा—पु० [स० वृत्र√हन्+क्विप्] वृत्रासुर को मारनेवाले इन्द्र।

वृत्रारि—पु० [स० ष० त०] इद्र।

वृत्रासुर—पु० [स० मध्यम० स०] वृत्र नामक असुर। दे० 'वृत्र'।

वृथा—वि० [स०√वृ (वरण करना)+थाल्] जिसका कोई उपयोग या प्रयोजन न हो। व्यर्थ। फजूल।

अव्य० १. बिना किसी आवश्यकता या प्रयोजन के। २ मूर्खता या भूल से।

वृथात्व—पु० [स० वृथा+त्वल्] वृथा होने की अवस्था या भाव।

वृथा-मांस—पु० [सं०] ऐसा मास जिसका व्यवहार या सेवन न किया जा सकता हो। निषिद्ध मास।

वृद्ध—वि० [स०] [स्त्री० वृद्धा, भाव० वृद्धि] १ बढा हुआ। २ अच्छी या पूरी तरह से बढा हुआ। ३. गुण, विद्या आदि के विचार से औरो की अपेक्षा बहुत चतुर, विद्वान् या बहुत श्रेष्ठ। जैसे—तर्क, व्याकरण आदि शास्त्रो के अध्ययन से वृद्ध होना ४ जो अपनी युवा विशेषत प्रौढावस्था पार कर चुका हो। बुड्ढा। ५ पुराना। ६ जो खूब सोम-पान करता हो। जिसकी उमर सोमपान करने मे ही बीती हो।

पु० [√वृधु+क्त] [भाव० वृद्धता, वृद्धत्व] १ वह जो अपनी औसत आयु आधी से अधिक पार कर चुका हो। बुड्ढा। मनुष्यो मे साधारणत ६० वर्ष या इससे अधिक अवस्थावाला व्यक्ति। ३ पडित। विद्वान्। ४ वह जो योग्यता आदि के विचार से औरो की अपेक्षा श्रेष्ठ तथा सम्मानित हो। (एल्डर) ५ वृद्धावस्था। बुढापा। ६ शैलज नामक गन्ध-द्रव्य।

वृद्ध-काक—पु० [स० कर्म० स०] द्रोण काक। पहाडी कौवा।

वृद्ध-केशव—पु० [स०] सूर्य की प्रतिभा। (पुराण)

वृद्ध-गंगा—स्त्री० [स०] हिमालय की एक छोटी नदी।

वृद्धता—स्त्री० [स० वृद्ध+तल्+टाप्] वृद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव।

वृद्धत्व—पु० [स० वृद्ध+त्वल्]=वृद्धता।

वृद्ध-धूप—पु० [स०] १ सिरिस का पेड। २ सरल का पेड।

वृद्ध-नाभि—पु० [स०] जिसकी तोद निकली या बढी हुई हो।

वृद्ध-पराशर—पु० [स०] प्रसिद्ध धर्मशास्त्रकार।

वृद्ध-प्रपितामह—पु० [स०] [स्त्री० वृद्ध प्रपितामही] दादा का दादा। परदादा का पिता।

वृद्ध-युवती—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ कुटनी। २ धाय। दाई।

वृद्धश्रवा (वस्)—पु० [स० वृद्ध (बृहस्पति) √श्रु (सुनना)+असुन्, ब० स०] इंद्र।

वृद्धश्रावक—पु० [स० प० त०] कापालिक।

वृद्धांगुलि—स्त्री० [स० कर्म० स०] अँगूठा।

वृद्धांत—वि० [स० प० त० कर्म० स०] सम्मान या प्रतिष्ठा के योग्य।

वृद्धा—स्त्री० [स० वृद्ध+टाप्] वह स्त्री जो अवस्था मे वृद्ध हो गई हो। बुड्ढी।
वि० बुढिया।

वृद्धाचल—पुं० [स० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक तीर्थ।

वृद्धावस्था—स्त्री० [स०] वृद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। बुढापा।

वृद्धि—स्त्री० [स० √वृध् (बढना)+क्तिन्] १ वृद्ध होने की अवस्था या भाव। २ गुण, मान, मात्रा, सख्या आदि मे अधिकता होना जो उन्नति, प्रगति, विकास आदि का सूचक होता है। जैसे—वेतन, सतान आदि की वृद्धि। ३ उक्त के आधार पर होनेवाली अधिकता जो उन्नति, प्रगति, विकास आदि की सूचक होती है। ४. विशेषत वृत्ति, वेतन आदि मे होनेवाली अधिकता। (इन्क्रीमेंट) ५ अभ्युदय। समृद्धि। ६. ब्याज। सूद। ७. राजनीति मे कृषि, वाणिज्य, दुर्ग, सेतु, कुजरबधन, खन्याकर बलादान और सैन्यसन्निवेश इन आठो वर्गो का उपचय। वर्द्धन। स्फाति। ८ वह अशौच जो घर मे सतान उत्पन्न होने पर सगे-सबधियो को होता है। ९ एक प्रकार की लता जो अष्ट वर्गो के अन्तर्गत मानी गई है। १० फलित-ज्योतिष मे विष्कभ आदि २७ योगो के अन्तर्गत ग्यारहवाँ योग।

वृद्धिक—पु० [स०] लिखाई मे एक प्रकार का चिह्न जो इस बात का सूचक होता है कि लिखाई या छपाई मे यहाँ कोई पद या शब्द भूल से छूट गया है। यह इस प्रकार लिखा जाता है—∧

वृद्धि-कर्म—पु० [स० प० त०]=वृद्धि-श्राद्ध।

वृद्धिका—स्त्री० [स० वृद्धि+कन्+टाप्] १ ऋद्धि नाम की ओषधि। २ सफेद अपराजिता। ३. अर्कपुष्पी।

वृद्धि-जीवक—पु० [स० तृ० त०] वह जो वृद्धि या ब्याज से अपना निर्वाह करता हो। सूद से अपना निर्वाह करनेवाला। महाजन।

वृद्धिद—वि० [स० वृद्धि√दा+क] वृद्धि देनेवाला।
पुं० १. जीवक नामक क्षुप। २. शूकरकन्द।

वृद्धि-पत्र—पु० [स० ब० स०] चिकित्सा के काम आनेवाला एक तरह का शल्य। (सुश्रुत)

वृद्धि-योग—पु० [स० मध्यम० स०] फलित ज्योतिष के २७ योगो मे से एक योग।

वृद्धि-श्राद्ध—पु० [सं० च० त०] नादीमुख नामक श्राद्ध जो मागलिक अवसरो पर होता है।

वृद्धि-सानु—पु० [स०] १ पुरुष। आदमी। २ कर्म। कार्य। ३. पत्ता।

वृध्य—वि० [स० √वृध् (बढना)+क्यप्] १ वृद्धों मे होनेवाला। वृद्ध-सबधी। २ जिसकी वृद्धि हो सकती हो।

वृन्नी—पु०=वर्ण।

वृश—पु० [स० √वृ (वरण करना)+शक्] १ अडूसा। २ चूहा। ३ अदरक।
†पु०=वृष।

वृश्चन—पु० [स० √व्रश्च् (काटना)+ल्युट्—अन, व्र—वृ] वृश्चिक। बिच्छू।

वृश्चिक—पु० [स० √व्रश्च् (काटना)+किकन्, व्र—वृ] १ मकडी की तरह का पर उससे बडा एक तरह का जतु जिसका डक बहुत अधिक जहरीला होता है। २ ज्योतिष मे बारह राशियो मे से आठवी राशि जिसके तारे बिच्छू का-सा आकार बनाते है। (स्कार्पिओ)। ३ अगहन मास जिसमे प्राय सूर्योदय के समय वृश्चिक राशि का उदय होता है। ४. वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ५ गोबर मे उत्पन्न होनेवाला कीडा। शूक कीट। ६ मदन वृक्ष। मैनफल। ७ गदह-पूरना। पुनर्नवा।

वृश्चिकर्णी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] मूसाकानी।

वृश्चिका—स्त्री० [स०] १ बिछुआ या बिच्छू नाम की घास। २ सफेद गदहपूरना। ३ पिठवन।

वृश्चिकाली—स्त्री० [स० ब० स०] बिच्छू नाम की लता। जिसकी जड का प्रयोग ओषधि के रूप मे होता है।

वृश्चिकेश—पु० [स० प० त०] वृश्चिक राशि के अधिष्ठाता देवता, बुध (ग्रह)।

वृश्चिपत्री—स्त्री० [स० वृश्चिपत्र+ङीप्, प० त०] १ वृश्चिकाली। २ मेढासिंगी।

वृष—पु० [स० √वृष् (सीचना)+क] १ साँड। २ कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषो मे से एक जो शखिनी जाति की स्त्री के लिए उपयुक्त कहा गया है। ३ स्त्री का पति। स्वामी। ४ धर्म जिसके चार पैर माने जाते हैं और जो इसी कारण साँड के रूप मे माना जाता है। ५ पुराणानुसार ग्यारहवे मन्वन्तर के इंद्र का नाम। ६ श्रीकृष्ण का एक नाम। ७ दुश्मन। शत्रु। ८ गेहूँ। ९ चूहा। १० अडूसा। ११ ऋषभक नामक ओषधि। १२ धमासा।

वृषक—पु० [स०] १ साँड। २ एक प्रकार का साँप। ३ चूहा। ४ गेहूँ। ४ भिलावाँ। ५ अडूसा। ६ ऋषभक नामक ओषधि।

वृषकर्णी—स्त्री० [स०] १. सुदर्शन नाम की लता। २. एक प्रकार का विधारा।

वृषका—स्त्री० [स० वृषक+टाप्] एक नदी। (पुराण)

वृष केतन—पु० [स० ब० स०] शिव। महादेव।

वृषकेतु—पु० [स० ब० स०] १ शिव या महादेव, जिनकी ध्वजा पर बैल का चिह्न माना जाता है। २ लाल गदहपुरना।

वृषक्रतु—पु० [स० मध्यम० स०, ब० स० वा] वर्षा करनेवाले इंद्र।

वृषगण—पु० [स० प० त०] वैदिक ऋषियो का एक गण।

वृष-चक्र—पु० [स० प० त०] फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिसमे एक बैल बनाकर उसके भिन्न-भिन्न अगो मे नक्षत्रों आदि के नाम लिखते है और तब उसके द्वारा खेती सबधी शुभाशुभ फल आदि निकालते हैं।

वृषण—पु० [स० √वृष (उत्पन्न करना)+क्यु,—अन] १ इंद्र। २.

कर्ण। ३ विष्णु। ४ पीडा के कारण होनेवाली बेहोशी। ५ अंड-कोष। ६. साँड़। ७ घोडा। ८. पेड। वृक्ष।

वृषण-कच्छु—स्त्री० [स० प० त०] १. एक रोग जिसमे पसीने, मैल आदि के कारण अडकोष के आसपास फुन्सियाँ निकल आती है। २ उक्त रोग मे निकलनेवाली फुन्सियाँ।

वृषणाश्व—पु० [स० ब० स० या प० त०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक राजा। २ इन्द्र के घोडे का नाम।

वृषदर्भ—पु० [स० ब० स०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २. राज शिवि का एक पुत्र।

वृषदेवा—स्त्री० [स० ब० स०] वायु पुराण के अनुसार वसुदेव की एक स्त्री।

वृषध्वज—पु० [स० ब० स०] १. शिव। महादेव। २ गणेश। ३ पुण्य-शील व्यक्ति। पुण्यात्मा। ४ पुराणानुसार एक पर्वत।

वृषध्वजा—स्त्री० [स०] दुर्गा का नाम।

वृष-नाशन—पु० [स०] १ पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक नाम। २ वाय-विडग।

वृषपति—पु० [स० प० त०] १ शिव। महादेव। २ नपुसक।

वृषपर्णी—स्त्री० [स०] १ मूसाकानी। आखुकर्णी २. दती। ३ सुद-र्शना लता।

वृषपर्व्वा—पु० [स० ब० स०, वृषपर्व्वन्] १ शिव। महादेव। २ विष्णु। ३ एक असुर या दैत्य जिसने दैत्य-गुरु शुक्राचार्य की सहायता से बहुत दिनों तक देवताओं के साथ युद्ध ठान रखा था। ४. भँगरा। ५. कसेरु। ६ एक प्रकार का तृण।

वृषप्रिय—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

वृषभ—पु० [स०√वृष्+अभच्, कित्] १. बैल या साँड। २. कामशास्त्र के अनुसार वह श्रेष्ठ पुरुष जो शखिनी स्त्री के लिए उपयुक्त हो। ३. सूर्य की एक वीथी। ४ एक प्राचीन तीर्थ। ५. साहित्य मे वैदर्भी रीति का एक भेद। ६ कान का विवर। ७. ऋषभ नामक ओषधि।

वृषभ-केतु—पु० [स० ब० स०] शिव का एक नाम।

वृषभ-गति—पु० [स० ब० स०] १ शिव। महादेव। २. ऐसी सवारी जिसे बैल खीचते हो।

वृषभत्व—पु० [स० वृषभ्+त्वल्] वृषभ होने की अवस्था, धर्म या भाव। वृषभता।

वृषभधुर्जा—पु०=वृषभध्वज (शिव)।

वृषभ-ध्वज—पु० [स० ब० स०] महादेव जिनकी ध्वजा पर वृषभ की मूर्ति बनी होती है।

वृषभ-वीथी—स्त्री० [स०] सूर्य्य की एक वीथी।

वृषभाक—पु० [स० ब० स०] महादेव । शिव।

वृषभा—स्त्री० [स० वृषभ+टाप्] पुराणानुसार एक प्राचीन नदी।

वृषभाक्ष—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

वृषभानु—पुं० [स०] राधिका जी के पिता। (पुराण)

वृषभानुजा—स्त्री० [स० वृषभानु√जन्+ड+टाप्] राधिका जी।

वृषभानु-नंदिनी—स्त्री० [स० प० त०] राधिका जी।

वृषभासा—स्त्री० [स०] इंद्रपुरी।

वृषभी—स्त्री० [स० वृषभ+ङीप्] १ विधवा स्त्री। २. केवाँच। कौछ।

वृषरवि—पु०=वृषभानु।

वृषल—वि० [स०√वृष्+कलच्] [भाव० वृषलता] १. जिसे धर्म आदि का कुछ भी ज्ञान न हो, फलतः कुकर्मी और पापी। २. शूद्र। ३ बदचलनी या शूद्रता के कारण जातिच्युत किया हुआ ब्राह्मण या क्षत्री। ४ घोड़ा। ५ चन्द्रगुप्त का एक नाम।

वृषली—स्त्री० [स०] १ बारह वर्षीय कुमारी कन्या विशेषत ऐसी कन्या जिसे मासिक धर्म होने लगा हो। २ रजस्वला स्त्री। ३ शूद्र-पत्नी। ४ बाँझ स्त्री अथवा मरा हुआ पुत्र जनमनेवाली स्त्री।

वृषलीपति—पु० [स० प० त०] वह पुरुष जिसने ऐसी कन्या से विवाह किया हो जो विवाह से पहले ही रजस्वला हो चुकी हो।

वृषवासी (सिन्)—पु० [स०] केरल स्थित वृष पर्वत पर रहनेवाले अर्थात् शिव जी।

वृषवाहन—पु० [स० प० त०] शिव। महादेव।

वृषशत्रु—पु० [स०] विष्णु।

वृषस्कध—पु० [स० ब० स०] शिव। महादेव।

वृषातक—पु० [स० प० त०] विष्णु।

वृषा—स्त्री० [स० वृष+टाप्] १ गौ। २ मूसाकानी। आखुकर्णी। ३ केवाँच। कौछ। ४ दती। ५. असगध ६ मालकगनी।

वृषाकपि—पु० [स० ब० स०, दीर्घ] १ शिव। २. विष्णु। ३ इन्द्र। ४. सूर्य। ५. अग्नि।

वृषाकृति—पु० [स० ब०स०] विष्णु।

वृषाक्ष—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

वृषाणक—पु० [स० वृषाण+कन्] १ शिव। महादेव। २ शिव का एक अनुचर।

वृषाणी (णिन्)—पु० [वृषण+इनि] ऋषभ नामक ओषधि।

वृषादित्य—पु० [स० प० त०] वृष राशि के अर्थात् वृष राशि के ज्येष्ठ मास की सक्रान्ति का सूर्य जिसका ताप बहुत अधिक होता है।

वृषायण—पु० [स० वृष+कक्, क-आयन, णत्व, ब० स०] १ शिव। महादेव। २ गौरैया पक्षी।

वृषायणी—स्त्री० [स० ब० स०] गगा का एक नाम।

वृषाश्व—पु० [स० ब० स०] १ ऐसे जतु जिनकी बोली बहुत कर्कश होती है। २. वह लकडी जिससे नगाडे पर आघात किया जाता है।

वृषाश्रित—स्त्री० [स० तृ० त०] गगा।

वृषासुर—पु० [स० मध्यम० स०] भस्मासुर दैत्य का एक नाम।

वृषी (षिन्)—पु० [स०] मोर।

वृषेंद्र—पु० [स० प० त०] १ साँड। २ बैल।

वृषोत्सर्ग—पु० [स० प० त०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमे लोग अपने मृत पिता आदि के नाम पर साँड पर चक्र दाग कर उसे यो ही घूमने के लिए छोड देते हैं। ऐसे साँड़ो से किसी प्रकार का काम नही लिया जाता।

वृषोदर—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

वृष्टि—स्त्री० [स०√वृष्+क्तिन्] १ आकाश से जल की वर्षा होने की अवस्था या भाव। पानी बरसना। २. वर्षा का जल। ३ वर्षा की तरह बहुत सी छोटी-छोटी चीजे ऊपर से गिरने की क्रिया या भाव। जैसे—

सुमन वृष्टि। ४ किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना। जैसे— कुवाच्यों की वृष्टि।

वृष्टि-जीवन—वि०[स०] जिसका जीवन वर्षा पर निर्भर हो। पु० १ चातक। २ ऐसा प्रदेश या क्षेत्र जिसकी फसल बहुत कुछ वर्षा पर ही आश्रित हो।

वृष्टिभू—पु०[स०] मेढक।

वृष्टिमान—पु०[स०] वृष्टि-मापक।

वृष्टिमापक—पु०[स०] नल के आकार का एक प्रकार का यत्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितनी मात्रा मे वृष्टि हुई।

वृष्टि-वैकृत—पु०[स० प० त०] वृहत्सहिता के अनुसार बहुत अधिक वृष्टि होना या बिलकुल वृष्टि न होना, जो उपद्रव, सकट आदि का सूचक माना जाता है। ऐसी विकृति या खराबी जो वर्षा की अधिकता अथवा कमी के फलस्वरूप उत्पन्न हुई हो।

वृष्णि—पु०[स०√वृष् (सीचना)+नि, कित्] [वि० वार्ष्णेय] १ मेघ। बादल। २ इन्द्र। ३ अग्नि। ४ शिव। ५ विष्णु। ६ वायु। ७ ज्योति। ८ गौ। ९ यादव वश। १० उक्त वश मे उत्पन्न होने वाले श्रीकृष्ण। ११ मेढा (पशु)। १२ साँड। वि० १ प्रचड। उग्र। तेज। २ नीच। ३ क्रोधी। ४ नास्तिक।

वृष्णिक-गर्भ—पु० [स० व० स०] श्रीकृष्ण।

वृष्ण्य—पु० [म० वृष्ण+यत्] वीर्य।

वृष्य—वि०[स०√वृष्+क्यप्, यत्, वा] १ (पदार्थ) जिससे वीर्य और वल वढता है। २ (पदार्थ) जिसके सेवन से मन मे आनन्द उत्पन्न होता हो। पु०१ ईख। ऊख। २ उडद की दाल। ३ आँवला। ४ ऋषभ नामक ओषधि। ५ कमल की नाल।

वृष्या—स्त्री०[स० वृष्य+टाप्] १ अष्ट वर्ग की ऋद्धि नामक ओषधि। २ शतावर। ३ आँवला। ४ विदारीकन्द। ५ अतिवला। ककही। ६ वडी दती। ७ केवाँच। कौछ।

वृहत्—वि०[स०] आकार-प्रकार, मान-परिमाण आदि मे जो बहुत वडा हो। जैसे—वृहत् कोश।

वृहती—स्त्री० =बृहती।

वृहत्कद—पु०[स० कर्म० स०, व० स०] १ विष्णुकद। २ गाजर।

वृहत्काम—पु० [स०] भीम।

वृहत्कुक्षि—पु०[स० व० स०] जिसका पेट निकला या वढा हुआ हो।

वृहनाल—पु०[स० कर्म० स०] श्रीताल (वृक्ष)।

वृहत्तृण—पु०[स० व० स०, कर्म०स० वा] वाँस।

वृहत्त्वक्—पु०[स० व० स०] सप्तपर्ण या सतिवन नामक वृक्ष।

वृहत्त्वच—पु०[स० व० स०] नीम का पेड।

वृहत्पंचमूल—पु०[स० पचमूल, द्विगु स०, वृहत् पचमूल, कर्म० स०] वेल, सोनापाठा, गभारी, पाँडर और गनियारी इन पाँचो का समूह। (वैद्यक)

वृहत्पत्र—पु०[स० व० स] १ हाथीकद। २ पठानी लोध। ३ वथुआ नामक साग।

वृहत्पत्रा—स्त्री०[स० वृहत्पत्र+टाप्] १ त्रिपर्णी कद। २ काममर्द।

वृहत्पर्ण—पु०[स० व० स०] पठानी लोध।

वृहत्पाद—पु०[स० व० स०] वट का वृक्ष। वरगद।

वृहत्पीलू—पु०[स० कर्म० स०] पहाडी अखरोट, महापीलु।

वृहत्पुष्प—पु०[स० व० स०] १ केला। २ सफेद कुम्हडा। पेठा।

वृहत्फल—पु०[स० व०स०] १ कुम्हडा। २ कटहल। ३. जामुन। ४ चिचडा।

वृहत्फला—स्त्री०[स० वृहत्फल+टाप्] १ कद्दू। लौकी। २ कडवा कद्दू। ३. महेन्द्रवारुणी। ४. जामुन। ५ सफेद कुम्हडा। पेठा।

वृहदंग—पु०[स० व० स०] हाथी।

वृहदेला—स्त्री० [स० कर्म० स०] वडी इलायची।

वृहद्गृह—पु०[स० व० स०] विंध्य पर्वत के पश्चिम मे मालव के पास का एक प्राचीन देश।

वृहद्दती—स्त्री० [स० व० म०, कर्म० स०] वडी दती। द्रवती।

वृहद्दल—पु० [स० व० स०] १ पठानी लोध। २ सप्तपर्ण। छतिवन। ३ लाल लहसुन। ४ श्रीताल या हिंताल नामक वृक्ष। ५ लजालू।

वृहद्दला—स्त्री०[स० वृहद्दल+टाप्] लाजवती। लजालू।

वृहद्धान्य—पु०[म० कर्म० स०] ज्वार।

वृहद्वला—स्त्री० [स० व० स०, कर्म० स०] १ पीत पुष्पा। सहदेई। २ पठानी लोध। ३ लजालू।

वृहद्भानु—पु०[स० व० म०] १ सूर्य। २ अग्नि। ३ चित्रक। चीता।

वृहद्रथ—पु०[स० व० स०] १ इन्द्र। २ यज्ञ-पात्र। ३ सामवेद का एक अग या अश। ४ एक तरह का मत्र।

वृहद्रथा—स्त्री०[स० वृहत्-रथ+टाप्] एक प्राचीन नदी।

वृहद्वल्कल—पु०[स०] १. पठानी लोध। २ सप्तपर्ण। छतिवन।

वृहद्वारुणी—स्त्री०[स० कर्म० स०] महेन्द्रवारुणी। इनारू।

वृहन्नल—पु०[स० व० स०] १ अर्जुन। २ वाहु। वाँह। ३ नरसल का वडा पेड।

वृहन्नला—स्त्री०[स० वृहन्नल+टाप्] स्त्री वेष मे अर्जुन का उस समय का नाम जब वह अज्ञातवास के समय राजा विराट् के यहाँ अत पुर मे नाच-गाना सिखलाते थे।

वृहस्पति—पु०[स० प० त०] =बृहस्पति।

वृही—पु०[स०√वृह(वृद्धि करना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] साठी धान।

वेंकट—पु०[स०] दक्षिण भारत मे स्थित एक पहाड की चोटी जिसपर विष्णु का मदिर है।

वेंकटाचल—पु०[स० मध्यम० स०]=वेंकट पर्वत।

वेंकटेश, वेंकटेश्वर—पु०[स०] वेंकट पर्वत पर स्थापित विष्णु की मूर्ति का नाम।

वे—सर्व०[हि० वह] हि० 'वह' का वहुवचन।
विशेष—विभक्ति लगाने पर 'वे' का रूप 'उन' तथा 'उन्हो' हो जाता है। जैसे—(क) उनमे बहुत से सफल कलाकार है। (ख) उन्होंने ये सब खेत दिखलाये थे।

वेकट—पु०[स०√वि+कटच्] १ युवक। जवान। २ विदूषक। ३ जौहरी। ४ भाकुर मछली।

वेक्षण—पु०[स० अव√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह ढूँढना या देखना। २. देखना।

वेग—पु०[स० विज् (चलना आदि)+घञ्] १. मन मे होनेवाली प्रबल

प्रवृत्ति। मनोवेग। २ गति या चाल में होनेवाला जोर या तेजी। जैसे—नदी का वेग अब कुछ कम होने लगा है। ३ किसी प्रकार की क्रिया के सम्पादन में समय के विचार से होनेवाली तेजी या शीघ्रता। ४ शरीर की वह आन्तरिक वृत्ति या शक्ति, जो प्राणियों को मल, मूत्र आदि का त्याग करने में प्रवृत्त करती है। ५ जल्दी। शीघ्रता। ६ कोई काम करने की दृढ़ प्रतिज्ञा या पक्का निश्चय। ७ उद्यम। उद्योग। ८ बढ़ती। वृद्धि। ९ आनन्द। प्रसन्नता। १०. वीर्य। शुक्र। ११ न्याय के अनुसार चौबीस गुणों में से एक गुण जो आकाश, जल, तेज, वायु और मन में पाया जाता है। १२ लाल इन्द्रायन। १३ महाज्योतिष्मती। १४ दे० 'संवेग'।

वेगग—वि०[सं०] [स्त्री० वेगगा] १ बहुत तेज चलनेवाला। २ बहुत तेज बहनेवाला।

वेग-धारण—पु०[सं०] ऐसी क्रिया को रोकना जो वेगवती हो। विशेषत मल-मूत्र रोकना जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होता है।

वेग-नाशन—पु०[सं०] जिसके कारण शरीर से निकलनेवाला मल आदि रुकता है।

वेग-निरोध—पु०[सं० ष० त०] १ वेग का काम करना या घटाना। २ दे० 'वेगधारा'।

वेगमापक—पु०[सं०] ऐसा यंत्र जो किसी गतिमान वस्तु की गति का वेग मापता हो। जैसे—नदी की धारा का वेग-मापक यंत्र।

वेगवती—वि०[सं० वेग+मतुप्, म—व,+ङीप्] जिसका वेग अत्यधिक हो।
स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी।

वेगवान्—वि०[सं० वेग+मतुप्] वेग-पूर्वक चलनेवाला। तेज चलनेवाला।
पु० विष्णु।

वेग-वाहिनी—स्त्री०[सं०] १ गंगा। २ पुराणानुसार एक प्राचीन नदी। ३ संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वेग-विघात—पु० [सं०] वेग-धारा।

वेगसर—पु०[सं०] १ तेज चलनेवाला घोड़ा। २. खच्चर।

वेगा—स्त्री०[सं० वेग+टाप्] बड़ी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती।

वेगित—भू० कृ०[सं० वेग+इतच्] १ वेग से युक्त किया हुआ। २ क्षुब्ध (समुद्र)।

वेगिनी—स्त्री०[सं० वेग+इनि+ङीप्] नदी।

वेगी (गिन्)—वि० [सं० वेग+इनि] १ जिसका वेग तीव्र या अत्यधिक हो। वेगवान्।
पुं० बाज पक्षी।

वेगीय—वि० [सं० वेग+छ, छ—ईय] १ वेग-संबंधी। वेग का। २ वेग के फलस्वरूप होनेवाला।

वेट्—पु०[सं०√वेट् (शब्द करना)+क्विप्] यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाला स्वाहा की तरह का एक शब्द।

वेट्ट चंदन—पुं० [सं० मध्यम० स०] मलयागिरि चंदन।

वेड—पु०[सं०√विड्+अच्] एक तरह का चंदन।

वेड़ा—स्त्री०=बेड़ा (नावों का समूह)।

वेढमिका—स्त्री०[सं० वेढग+कन्+टाप्, इत्व] वह कचौरी जिसमें उरद की पीठी भरी हुई हो। बेढ़ई।

वेण—पुं० [सं०√वेण् (गमन)+अच्] १ एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो मुख्य रूप से गाने-बजाने का काम करती थी। २ राजा पृथु के पिता का नाम।

वेणवी (विन्)—वि० [सं० वेणु+इनि] जिसके पास वेणु हो।
पु० शिव।

वेणा—स्त्री०[सं० वेण+टाप्] १ एक प्राचीन नदी जिसे पर्णसा भी कहते हैं। २ उशीर। खस।

वेणि—स्त्री०[सं०√वी (गमन)+नि, णत्व] १ बालों की लटकती हुई चोटी। २ चोटी गूँथने की क्रिया। ३ जल-प्रवाह। ४ संगम। ५ देवदाली। बंदाल।

वेणिक—पु०[सं० वेणि+कन्] १ एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जनपद का निवासी।

वेणिका—स्त्री०[सं० वेणिक+टाप्] स्त्रियों की वेणी।

वेणिनी—स्त्री० [सं० वेण+इनि,+ङीप्] स्त्री जिसकी गुँथी हुई चोटी लटक रही हो।

वेणी—स्त्री० [सं० वेण+ङीप्] १ स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। कबरी। २ पानी का बहाव। ३ भीड़-भाड़। ४ देवदाली। ५ एक प्राचीन नदी। ६ भेड़। ७ देवताड़।

वेणीदान—पु०[सं० ष० त०] किसी तीर्थ-स्थान, विशेषत प्रयाग में केश मुँडाने का एक कृत्य या संस्कार।

वेणीर—पु०[सं० वेण+ईन्] १ नीम का पेड़। २ रीठा।

वेणु—पु० [सं०√अज् (गमन)+णु, अज्—वी (वे)] १ बाँस। २ बाँस की बनी हुई वंशी। मुरली। ३ दे० 'वेणु'।
वि० वेणुकीय।

वेणुक—पु०[सं० वेणु+कन्] १ वह लकड़ी या छड़ी जिससे गौ, बैल आदि हाँकते हैं। २. अंकुश। ३ बाँसुरी। ४ इलायची।

वेणुका—स्त्री०[सं० वेणु+कन्+टाप्] १ बाँसुरी। २ हाथी को चलाने का प्राचीन काल का एक प्रकार का दंड जिसमें बाँस का दस्ता लगा होता था। ३ जहरीले फलवाला एक प्रकार का वृक्ष।

वेणुकार—पुं० [सं० वेणु√कृ (करना)+अण्, उप० स०] वह व्यक्ति जिसका पेशा बाँसुरी बनाना हो।

वेणुकीय—वि०[सं० वेणुक+छ, छ—ईय] वेणु-संबंधी। वेणु का।

वेणुज—वि०[सं० वेणु√जन्+ड] जो वेणु अर्थात् बाँस से उत्पन्न हो।
पु० १. बाँस के फूल में होनेवाले दाने जो चावल कहलाते हैं और जो पीसकर ज्वार आदि के आटे के साथ खाये जाते हैं। बाँस का चावल। २ गोल मिर्च।

वेणुज-मुक्ता—स्त्री०[सं० कर्म० स०] बाँस में होनेवाला एक प्रकार का गोलदाना जो प्राय मोती कहलाता है।

वेणुप—पु०[सं०] १. एक प्राचीन जनपद (महाभारत)। २ उक्त जनपद का निवासी।

वेणुपुर—पु० [सं०] आधुनिक बेलगाँव का पुराना नाम।

वेणु-बीज—पुं०[सं०] बाँस के फूल में होनेवाले दाने जो ज्वार आदि के साथ पीसकर खाये जाते हैं। बाँस का चावल।

वेणुमती—स्त्री० [सं० वेणु+मतुप्+ङीप्] पश्चिमोत्तर प्रदेश की एक नदी। (पुराण)

वेणुमान—पु०[स० वेणुमत्] १ एक पौराणिक पर्व। २ एक पौराणिक कुल या वश।

वेणु-मुद्रा—स्त्री०[स०] तान्त्रिको की एक प्रकार की मुद्रा।

वेणु-यव—पु० [स०] वेणु-बीज।

वेणु-वन—पु० [स० प० त०] ऐसा वन जिसमे वाँसो के बहुत अधिक झुर-मुट हो।

वेण्य—स्त्री० [स० वेणु+यत्] पुराणानुसार विन्ध्य पर्वत से निकली हुई एक नदी।

वेण्वा—स्त्री०[स० वेणु+अच्+टाप्] पुराणानुसार पारिपत्र पर्वत की एक नदी।

वेण्वा-तट—पु०[स० प० त०] वेण्वा नदी के तट पर स्थित एक प्रदेश। (महा०) २ उक्त प्रदेश का निवासी।

वेत—पु०=वेंत।

वेतन—पु०[स०√वी (गमन)+तनन्] १ वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले मे दिया जाय। पारिश्रमिक। उजरत। २ वह धन जो निश्चित रूप से निरतर काम करते रहने पर बराबर नियत समय पर मिलता रहता है। तनख्वाह। (पे) जैसे—मासिक या साप्ताहिक वेतन। ३ जीविका निर्वाह का साधन। ४ चाँदी। रजत।

वेतन-भोगी (गिन्)—पु०[स०] वह जो वेतन पर किसी के यहाँ नौकरी करता हो।

वेतस—पु० [स०] १ बेंत। २ जल-बेत। ३ बड़वानल।

वेतसक—पु०[स० वेतस+कन्] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

वेतस-पत्रक—पु०[स०] एक तरह का शल्य। (सुश्रुत)

वेताल—पु०[स०√अज्+विच्, वी, √तल्+घञ्, कर्म० स०] १ द्वार-पाल। सतरी। २. शिव के एक गणाधिप। ३ पुराणानुसार एक तरह की भूत-योनि या प्रेतात्माओ का वह वर्ग जिसका निवास-स्थान श्मशान माना गया है। ४ उक्त योनि के भूत जो साधारण भूतो के प्रधान माने गए हैं। ५ ऐसा शव जिस पर भूतो ने अधिकार कर लिया हो। ६ छप्पय के छठे भेद का नाम जिसमे ६५ गुरु और २२ लघु कुल ८७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ६५ गुरु और १८ लघु कुल ८३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती है।

वेताला—स्त्री०[स० वेताल+टाप्] दुर्गा।

वेत्ता—वि०[स०√विद् (जानना)+तृच्] समस्त पदो के अन्त मे, अच्छा या पूर्ण ज्ञाता। जैसे—तत्ववेत्ता, शास्त्रवेत्ता।

वेत्र—पु० [स०√वी+त्र] १ वेत। २ द्वारपाल के पास रहने-वाला डडा।

वेत्रक—पु०[स० वेत्र+कन्] रामसर। सरपत।

वेत्रकार—पु०[स० वेत्र√कृ (करना)+अण्] वह जो बेंत के सामान बनाता हो।

वेत्रकूट—पु०[स० मध्यम० स०] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी।

वेत्र-गगा—स्त्री०[स० मध्यम० स०] हिमालय से निकली हुई एक नदी।

वेत्रधर—पु०[स० वेत्र√धृ (रखना)+अच्, प० त०] १ द्वारपाल। सतरी। २ चोबदार। ३ लठैत।

वेत्रवती—स्त्री०[स० वेत्र+मतुप्, म—व+ङीप्] वेतवा नदी।

वेत्रहा (हन्)—पु०[स० वेत्र √ हन् (मारना)+क्विप्] इद्र।

वेत्रासन—पु०[स० प० त०] बेंत का बुना हुआ आसन।

वेत्रासुर—पु०[स० मध्यम० स०] एक असुर जिसका वध इन्द्र ने किया था।

वेत्रिक—पु० [स० वेत्र+ठक्—इक] १ एक जनपद। २ उक्त जनपद का निवासी। ३ चोवदार।

वेत्री—पु०[स० वेत्र+इनि, वेत्रिन्] १ द्वारपाल। सतरी। २ चोबदार।

वेद—पु०[स०] १ वह जो जाना गया हो। ज्ञान। २ धार्मिक ज्ञान। तत्त्वज्ञान। ३. भारतीय आर्यों के आद्य प्रधान धार्मिक ग्रन्थ जो हिन्दुओ मे सर्व-प्रधान है।

विशेष—आरभ मे ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद ही तीन वेद थे। जिनके कारण वेदत्रयी पद बना था। पर बाद मे चौथा अथर्ववेद भी इनमे सम्मिलित हो गया था, और अब उनकी सख्या चार हो गई है। ये ससार के सबसे अधिक प्राचीन धर्मग्रन्थ है। प्रत्येक वेद के दो मुख्य विभाग हैं (क) मत्र अथवा सहिता भाग और (ख) ब्राह्मण भाग। हिन्दू इन्हे अ-पौरुषेय मानते हैं, अर्थात् ये मनुष्यो द्वारा रचित नही हैं,बल्कि स्वय ब्रह्मा के मुख से निकले है। स्मृतियो से इनका पार्थक्य जतलाने के लिए इन्हे 'श्रुति' भी कहते हैं, जिसका आशय यह है कि वेदो मे कही हुई बाते लोग परम्परा से सुनते चले आये थे, जो बाद मे लिपिबद्ध करके ग्रन्थ रूप मे सकलित की गई थी। आधुनिक विद्वानो के मत से इनकी रचना लगभग ६००० वर्ष पूर्व हुई होगी।

४ विष्णु का एक नाम। ५ यज्ञो के भिन्न भिन्न अग या कृत्य। यज्ञाग। ६ छद। ७ धन-सम्पत्ति।

वेदक—वि०[स० वेद+कन्] वेदन अर्थात् ज्ञान करानेवाला।

वेदकर्ता (र्तृ)—पु०[स० प० त०] १ वेद या वेदो का रचयिता। २ सूर्य। ३ शिव। ४ विष्णु। ५ वर पक्ष के वे लोग जो विवाह-कृत्य सम्पन्न हो जानेपर वधू के घर पहुँचकर उसे और वर को आशीर्वाद देते तथा मगल-कामना प्रकट करते हैं।

वेदकार—पु०[स०] वेद या वेदो का रचयिता।

वेद-गंगा—स्त्री०[स० मध्यम० स०] दक्षिण भारत की एक नदी जो कोल्हापुर के पास से निकलकर कृष्णा नदी मे मिलती है।

वेदगर्भ—पु०[स० प० त०] १ ब्रह्मा। २ ब्राह्मण।

वेदगर्भा—स्त्री०[स० वेदगर्भ+टाप्] १ सरस्वती नदी। २ रेवा नदी।

वेदगुप्त—पु०[सं० ब० स०] श्रीकृष्ण का एक नाम।

वेदगुह्य—पु०[स० ब० स०] विष्णु।

वेद-जननी—स्त्री० [स० प० त०] सावित्री जो वेद की माता कही गई है।

वेदज्ञ—पु० [स० वेद√ज्ञा (जानना)+क] १ वेदो का ज्ञाता। वेद जानने वाला। २ ब्रह्म-ज्ञानी।

वेदत्व—पु०[सं० वेद+त्व] वेद का धर्म या भाव।

वेद-दीप—पु० [स० प० त०] महीधर का किया हुआ शुक्ल यजुर्वेद का भाष्य।

वेदन—पु०[स०√विद् (जानना)+ल्युट्—अन] १ ज्ञान। २ अनु-भूति। ३ सवेदन। ४ कष्ट। पीडा। वेदना। ५ धन-सम्पत्ति। ६ विवाह। ७ शूद्र स्त्री का उच्च वर्ग के पुरुष के साथ होनेवाला विवाह।

वेदना—स्त्री०[स० वेदन+टाप्] १ बहुत तीव्र मानसिक या शारीरिक

कष्ट। विशेषत प्रसव के समय स्त्रियो को होनेवाला कष्ट। २ तीव्र मानसिक दु ख । व्यथा।

वेदनी—स्त्री०[स०√वेदन+ङीप्] त्वचा।

वेदनीय—वि०[स०√विद् (जानना)+अनीयर्] १ जो वेदन के लिए उपयुक्त हो अथवा जिसका वेदन हो सके। २ जानने के लिए उपयुक्त। ३ वेदना या कष्ट उत्पन्न करनेवाला।

वेदवीज—पु०[सं० प० त०] श्रीकृष्ण।

वेदभू—पु०[स० ब० स०] देवताओ का एक गण। (महा०)

वेद-मत्र—पु० [स० मध्यम स० या प० त०] १ वेदो मे आए हुए मत्र। २ पुराणानुसार एक प्राचीन जनपद। ३ उक्त जनपद का निवासी। ४ मूलमत्र। (दे०)

वेद-माता (तृ)—स्त्री०[स० प० त०] १ गायत्री। सावित्री। २ दुर्गा। २ सरस्वती।

वेद-मूर्ति—पु०[सं० प० त०] १ वेदो का बहुत बडा ज्ञाता। २ सूर्य।

वेद-यज्ञ—पु०[मध्यम० स०] वेद पढना। वेदाध्ययन।

वेदवती—स्त्री०[स०] १ सीता का पूर्वजन्म का नाम। उस जन्म मे ये राजा कुशध्वज की पुत्री थी। २ एक प्राचीन नदी।

वेद-वदन—पु०[ब० स०] १ ब्रह्मा। २ व्याकरण।

वेद-वाक्य—पु०[सं०] ऐसा वाक्य या कथन जिसकी सत्यता असंदिग्ध हो। वेद मे आए हुए वाक्य के समान मान्य कोई अन्य वाक्य या कथन।

वेदवादी (दिन्)—पु०[स०] वेदो का ज्ञाता।

वेदवाह—पु०[स० वेद√वह् (ढोना)+घञ्] वह जो वेदो का ज्ञाता हो।

वेद-वाहन—पु०[स० प० त०] सूर्य।

वेद-व्यास—पु०[स० वेद+वि√अस् (होना)+अण्] एक प्राचीन मुनि जिन्होंने वेदो का वर्तमान रूप मे सकलन किया था। ये सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न पराशर के पुत्र थे । व्यास।

वेद-व्रत—पु०[सं० ब० स०] वह जो वेदो का अध्ययन करता हो।

वेदशिर—पु० [स० ब० स०] १ एक प्रकार का अस्त्र। (पुराण) २ पुराणानुसार मार्कंडेय का एक पुत्र जो मूर्द्धन्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। कहते हैं, भार्गव लोगो का मूल पुरुष यही था।

वेदसार—पु०[स० प० त०] विष्णु।

वेद-स्वरूपी—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

वेदांग—पु०[स० प० त०] १ वेद के अगो मे से हर एक। २ वेद के छ अग। ३ सूर्य।

वेदांत—पु०[स० वेद+अत] १. वेदो मे प्रतिपादित सिद्धान्तो का निरूपण और विवेचन करनेवाला शास्त्र। २ भारतीय छ दर्शनो मे से अतिम दर्शन जो उपनिषदो की शिक्षा और सिद्धान्तों पर आश्रित है और जिसमे वेदो का अतिम या चरम उद्देश्य निरूपित है और जिसे उत्तर-मीमांसा भी कहते हैं।

विशेष—इस दर्शन का मुख्य सिद्धान्त यह है कि यह सारी सृष्टि एकमात्र ब्रह्म से उद्भूत है, और वह ब्रह्म इस सृष्टि के प्रत्येक अणु-परमाणु तक मे व्याप्त है। इस दर्शन मे मुख्यत ब्रह्म और जगत् तथा ब्रह्म और जीव के पारस्परिक सबधो का निरूपण है। अह ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, सोह अस्मि आदि इसके मुख्य सिद्धान्त हैं। लोक मे जो अद्वैत की भावना, भूत या माया के प्रति तिरस्कार आदि के भाव प्रचलित हैं वे अधिकतर इसी वेदात की शिक्षा के फल है।

वेदांत—पु०[स०] व्यास कृत ब्रह्मसूत्र।

वेदांती (तिन्)—पुं०[स० वेदान्त+इनि] वेदात का पूर्ण ज्ञाता। ब्रह्म-वादी।

वेदाग्रणी—स्त्री०[स० प० त०] सरस्वती।

वेदात्मा—पु०[स० प० त०] १ विष्णु। २ सूर्य।

वेदादि—पु०[स० प० त०] प्रणव या ओकार का मंत्र।

वेदाधिदेव—पु०[स० प० त०] ब्राह्मण।

वेदाधिप—पु०[स० प० त०] वेदो के अधिपतिग्रह।

विशेष—ऋग्वेद के अधिपति बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मगल, अथर्व वेद के बुध।

वेदाध्यक्ष—पु०[स० प० त०] विष्णु।

वेदि—स्त्री०=वेदी।

वेदिका—स्त्री०[स० वेदिक+टाप्]=छोटी वेदी।

वेदित—भू० कृ०[स०√विद् (जानना)+क्त] १ निवेदित। २ वेद द्वारा कथित या जतलाया हुआ। २ देखा हुआ।

वेदितव्य—वि०[स०√विद् (जानना)+तव्यत्] बात या विषय जो जाना जा सके।

वेदित्व—पु०[स० वेदि+त्व] विदित होने का भाव। ज्ञान।

वेदी (दिन्)—वि०[सं०] १ जाननेवाला। ज्ञाता। २ पडित। विद्वान्। ३ विवाद करनेवाला।

पु० १ ब्रह्मा। २ आचार्य। ३ एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

स्त्री० १ यज्ञ-कार्य के लिए साफ करके तैयार की हुई भूमि। वेदी। २. मागलिक या शुभ कार्य के लिए तैयार किया हुआ चौकोर स्थान और उसके ऊपर का मडप। ३ सरस्वती। ४ ऐसी अँगूठी जिसपर किसी का नाम अकित हो। ५ पूजन आदि के समय उँगली की एक प्रकार की मुद्रा। ६ अवष्ठा नामक वनस्पति।

वेदीश—पु०[स० प० त०] ब्रह्मा।

वेदुक—वि०[स०√विद् (जानना)+उकञ्] १. जाननेवाला। ज्ञाता। २ प्राप्त करनेवाला। ३ मिला हुआ। प्राप्त।

वेदेश्वर—पु०[सं० प० त०] ब्रह्मा।

वेदोक्त—भू० कृ०[स० स० त०] वेदो मे कहा हुआ।

वेदोपकरण—पु०[स० प० त०] वेदाग।

वेदोपनिषद्—स्त्री०[स० मध्यम० स०] एक उपनिषद् का नाम।

वेद्धव्य—वि०[स०√विध् (छेदना)+तव्यत्] वेधे या छेदे जाने के योग्य।

वेद्धा—वि०[स०√विध् (छेदना)+तृच्] १ वेधने या छेदनेवाला। २ वेध करनेवाला।

वेद्य—वि०[स०√विद् (जानना)+ण्यत्] १ (बात या विषय) जो जानने या समझने के योग्य हो। २ कहे जाने के योग्य। ३ प्रशसनीय। ४. प्राप्त किये जाने के योग्य।

वेद्यत्व—पु०[स० वेद्य+त्व] ज्ञान। जानकारी।

वेध—पु०[स०√विध् (छेदना)+घञ्] १ किसी चीज मे नुकीली चीज धँसाना। वेधना। २ यत्रो आदि की सहायता से आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रो आदि की गति, स्थिति आदि का पता लगाने की क्रिया।

पद—वेधशाला।

३ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान मे पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह मे सामना होता हो। जैसे—युतवेध, पताकी वेध। ४. गभीरता। गहराई। ५ ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७ शिव। ८ सूर्य। ९ दक्ष आदि प्रजापति। १० पडित। विद्वान्। ११ सफेद मदार।

वेधक—पु०[स०√विध् (भेदना)+ण्वुल्–अक] १ वेध करनेवाला। २ वेधन करने या वेधनेवाला।

पु० १ वह जो मणियो आदि को वेधकर अपनी जीविका चलाता हो। २ कपूर। ३ बनिया। ४ अमलवेंत।

वेधनी—पु० [स० वेधन+ङीप्] १ वह उपकरण जिससे मोती आदि वेधे जाते हैं। २ अकुश।

वेधनीय—वि० [स०√विध् (छेदना)+अनीयर्] जिसका वेध या वेधन हो सके या होने को हो।

वेधशाला—स्त्री०[स० प० त०] वह प्रयोगशाला जिसमे ग्रह, नक्षत्रो आदि की गति का पर्यवेक्षण किया जाता है। (आवज़र्वेटरी)

वेधस—पु०[स० वि√धा+अस्, वेधस्+अच्] हथेली मे अँगूठे की जड़ के पास का स्थान। अगुष्ठमूल। ब्रह्मतीर्थ।

विशेष—आचमन के लिए इसी गड्ढे मे जल देने का विधान है।

वेधा (धस्)—पु०[स० वि√धा+अस्, वेधादेश] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३. शिव। ४ सूर्य। ५ दक्ष आदि प्रजापति। ६ आक। मदार।

वेधालय—पु०[स० प० त०]=वेधशाला।

वेधित—भू० कृ०[न० √विध् (छेदना)+णिच्+क्त]१ जिसका वेधन या भेदन किया गया हो। २ (ग्रह या नक्षत्र) जिसका ठीक ठीक पर्यवेक्षण किया जा चुका हो।

वेधिनी—स्त्री०[स० वेधिन्+ङीप्] जोक।।

वि० सं० 'वेधी' का स्त्री०।

वेधी (धिन्)—पु०[स०] १ वेधन या भेदन करनेवाला। २ ग्रह-नक्षत्रो आदि की गति का पर्यवेक्षण करनेवाला।

वेध्य—वि०[स०√विध् (छेदना)+ण्यत्] जिसमे वेध किया जाय। जिसका वेध हो सके या होने को हो।

वेन—पु०[स०√अज् (गमन)+न, अज्-वी] वेण। (दे०)

वेन्य—पु०[सं० वेन+यत्] सुन्दर। मनोहर।

पु० वेण।

वेपथु—पुं०[स०√वेप् (काँपना)+ अथुच्] १ काँपने की क्रिया। कँप-कँपी। २ कप (साहित्यिक अनुभाव)।

वेपन—पु०[स०√वेप् (काँपना)+ल्युट्–अन] १ काँपना। कप। २ वात रोग।

वेर—पु० [स०अज+रन्, अज=वी] १ शरीर। देह। वदन। २ केसर।

वेल—पु०[स०] १ उपवन। २ कुज। ३ बौद्धो के अनुसार एक बहुत बड़ी सख्या।

स्त्री०=वेला।

वेलना—अ०[स० वेल्] १. हिलना। २. काँपना। ३. विकल होना।

वेला—स्त्री०[स०] १ मर्यादा। सीमा। २ समुद्र का तट। ३ तरग। लहर। ४ किसी काम या बात का नियमित या निश्चित समय। जैसे—भोजन की वेला, मृत्यु की वेला, सन्ध्या की वेला आदि। ५ समय का एक विभाग जो दिन और रात का चौबीसवाँ भाग होता है। कुछ लोग दिनमान के आठवें भाग को भी वेला मानते हैं। ६ वाणी। ७ अवकाश। अवसर। ९ आसक्ति। राग। ९ भोजन। १० रोग। बीमारी।

वि० [हिं० उरला] इस ओर या पार का। इधर का। उदा०—सुर नर, मुनिजन ये सब वेलै तीर।—कबीर।

वेला-जल—पु०[स०] चद्रमा के आकर्षण से ऊपर उठनेवाला समुद्र का ज्वार जल। (टाइडल वाटर्स)

वेला-ज्वर—पुं०[स०] मृत्यु के समय होनेवाला ताप या ज्वर।

वेलाद्रि—पु० [स० स० त०] ऐसा पर्वत जो समुद्र के किनारे स्थित हो।

वेलाधिप—पु०[स०] फलित ज्योतिष मे, दिनमान के आठवें भाग या वेला के अधिपति देवता।

वेलार्ख—पु०[?] बाण का फूल। (डिं०) उदा०—वेलार्ख अणी झठि द्रिठि वर्ख।—प्रिथीराज।

वेलावित्त—पु०[स० ब० स०] प्राचीन काल के एक प्रकार के कर्मचारी। (राजतरगिणी)

वेलिका—स्त्री०[स० वेला+कन्+टाप्, इत्व] १ नदी के किनारे का स्थान। २ ताम्रलिप्त का एक नाम।

वेल्लन—पुं०[स०√वेल्ल् (चलना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० वेल्लित] १ गमन। २ कप। कपन। ३ जमीन पर घोडो के लोटने की क्रिया या भाव। ४ झुकना। ५ लिपटना।

वेल्ली—स्त्री०[स० वेल्लि+ङीप्] बेल। लता।

वेशत—पु०[स०] १. पानी का गड्ढा। २. अग्नि। आग।

वेश—पु० [स०√विश् (प्रवेश करना)+घञ्] १ अन्दर जाने या पहुँचने की क्रिया या भाव। प्रवेश। २ प्रवेश का द्वार, मार्ग या साधन। ३ रहने का स्थान, घर या मकान। ४. वेश्या का घर। ५ पहनने के कपड़े आदि। पोशाक। ६ कुछ खास तरह के ऐसे कपड़े जिन्हे पहनने पर कोई विशिष्ट रूप प्राप्त होता है। भेस। (डिस्गाइज़) जैसे—अभिनेता कभी राजा का कभी सेवक का वेश धारण करता है। ७ परिश्रम या सेवा के बदले मे मिलनेवाला धन। पारिश्रमिक। ८ खेमा। तबू।

वेशक—वि०[स० वेश+कन्] प्रवेश करनेवाला।

पु० घर। मकान।

वेशकार—पु०[स०] १ वह जो पुतलियाँ बनाता और उनका शृगार करता हो। २. पहनने के अनेक प्रकार के वस्त्र बनानेवाला। (आउटफिटर)

वेशता—पु० [स० वेश+तल्+टाप्] वेश का धर्म या भाव। वेशत्व।

वेशत्व—पु० [स० वेश +त्व]=वेशता।

वेशधर—पु०[स०] १. वह व्यक्ति जिसने किसी दूसरे का वेश धारण किया हो। २. वह जिसने किसी को छलने के लिए अपना वेश बदल लिया हो। ३ जैनियो का एक सम्प्रदाय।

वेशन—पु०[स०] प्रवेश करना।

वेशनी—स्त्री० [स०√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्—अन,+ङीप्] ड्योढी। पौरी।

वेश-युवती—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रडी।

वेशर—पु०[स० वेश+रक्] खच्चर।

वेश-रथ्या—स्त्री०[स० कर्म० स०] वेश-वीथी।
वेश-वधू—स्त्री०[स० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।
वेश-वनिता—स्त्री०[स०] वेश्या। रडी।
वेश-वार—पु०[सं० प० त०] १ वेश्या का घर। २ धनिया, मिर्च, लौंग आदि मसाले।
वेशवास—पुं० [स० प० त०] वेश्या का कोठा। वेश्यालय।
वेश-वीथी—स्त्री०[स० प० त०] वह गली या बाजार जिसमे वेश्याएँ रहती हों।
वेश-स्त्री—स्त्री०[स० कर्म० स०] वेश्या। रडी।
वेशांत—पुं० [स०√विश् (प्रवेश करना)+झ–अन्त, प० त०, व० स०] छोटा तालाब।
वेशिक—पु०[स० वेश+ठक्–इक्] हस्त-शिल्प। दन्तकारी।
वेशी (शिन्)—वि० [स०√विश् (प्रवेश करना)+णिनि] प्रवेश करनेवाला।
वेश्म—पुं०[स०√विश्+मनिन्] घर। मकान।
वेश्मस्त्री—स्त्री०[स०] वेश्या। रडी।
वेश्मांत—पु०[स०] अन्त पुर। जनानखाना।
वेश्मा—पुं०[स०] १. वेश्या के रहने का मकान। रडी का घर। २. वेश्या की वृत्ति। रडी का पेशा।
वेश्यांगना—स्त्री०[स० कर्म० स०] ऐसी स्त्री जो वेश्या-वृत्ति करती हो।
वेश्या—स्त्री०[स०] १. ऐसी स्त्री जो धन लेकर लोगों के साथ सभोग कराने का व्यवसाय करती हो। गणिका। २. आज-कल ऐसी स्त्री जो उक्त प्रकार का व्यवसाय करने के सिवा लोगों को रिझाने के लिए नाचगाने का भी काम करती हो। तवायफ।
वेश्याचार्य—पुं०[स०] रडियों का दलाल। भडुआ।
वेश्या-पत्तन—पुं० [स०] वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हों। चकला।
वेश्यालय—पुं०[सं० प० त०] वेश्या या वेश्याओं के रहने की जगह।
वेश्या-वृत्ति—स्त्री०[सं० प० त०] १ वेश्या बनकर अर्थात् धन लेकर पर-पुरुषों से सभोग कराना। कसब कमाना। २. गुण, शक्ति का वह परम घृणित और निंदनीय उपयोग जो केवल स्वार्थ-साधन के लिए बहुत बुरी तरह से किया या कराया जाय। (प्रॉस्टीटयुशन)
वेष—पुं०[स०√विष्+अच्] १ पहने हुए कपडे आदि। वेश। २. रंग-मच मे पीछे का वह स्थान जहाँ नट लोग वेश रचना करते हैं। नेपथ्य। ३ वेश्या का घर। रडी का मकान। ४ काम करना या चलाना।
वेषकार—पु० [स०] वह कपडा जो किसी चीज पर उसे सुरक्षित रखने के लिए लपेटा जाता है। वेठन।
वेषण—पु०[स० √ वेष् (व्याप्त होना)+ल्युट्—अन] १. वेष बनाने की क्रिया या भाव। २ परिचर्या। सेवा। ३ कासमर्द। ४. धनिया। ५. सेवा।
वेषधारी—वि०=वेशधारी।
वेष-भूषा—स्त्री०[स०] १ वे कपड़े जो किसी विशिष्ट देश, जाति, सम्प्रदाय आदि के लोग करते हैं। २. शरीर की सजावट के लिए पहने हुए कपड़े आदि।
वेषवार—पु०=वेसवार।
वेष्ट—पुं०[स० √ वेष्ट् (लपेटना)+घञ्] १ वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास। २. गोंद। ३. धूपसरल नामक पेड। ४ सुश्रुत के अनुसार मुँह मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। ५ ब्रह्म। ६. आकाश। ७ पगडी।
वेष्टक—वि०[स० √ वेष्ट्+ण्वुल्—अक] चारों ओर से घेरनेवाला। पु० १ छाल। वल्कल। २ कुम्हडा। ३. उष्णीष। पगडी। ४. चहारदीवारी। परकोटा। ५ दे० 'वेष्ट'।
वेष्टन—पु०[स० √ वेष्ट्+ल्युट्—अन] १. कोई चीज किसी दूसरी चीज के चारों ओर लपेटना। २. इस प्रकार लपेटी जानेवाली चीज। ३ पगडी। ४. मुकुट। ५ कान का छेद।
वेष्टनक—पु०[स० वेष्टन√ कै (प्रकाश करना)+क] कामशास्त्र मे एक प्रकार का रतिबध।
वेष्टव्य—वि०[स०√ वेष्ट् (लपेटना)+तव्यत्] घेरे या लपेटे जाने के योग्य।
वेष्टसार—पु० [स० ब० स०] १ श्रीवेष्ट। गधाविरोजा। २ धूपसरल नामक वृक्ष।
वेष्टित—भू० कृ०[स० √ वेष्ट् (लपेटना)+क्त] १. चारों ओर से घिरा या घेरा हुआ। २ कपडे, रस्सी आदि से लिपटा या लपेटा हुआ। ३ रुका या रोका हुआ। रुद्ध।
पु०१. पगडी। २ एक प्रकार का रतिबध। ३. नृत्य की एक मुद्रा।
वेसां—स्त्री०=वयस।
वेसन्नर—पु०[सं० वैश्वानर]आग। (डिं०)
वेसर—पु०[स० वेस√ रा (लेना)+क] खच्चर।
वेसवार—पु०[स० वेस√ वृ (निवास करना)+अत्] १ जीरा, धनिया, लौंग, मिर्च आदि पीसकर बनाया हुआ मसाला। २ एक प्रकार का पकाया हुआ मांस।
वेसासना—स०[स० विश्वास] विश्वास करना। (डिं०) उदा०—प्रिय पर्णं मति कोई वेसासी।—प्रिथीराज।
वेह—पुं०[?] मगल कलश। (डिं०)
वैंध्य—वि०[स० विध्य+अण्] १. विध्य पर्वत पर होनेवाला अथवा उससे सबध रखनेवाला। २ विध्यवासी।
वै—अव्य० एक निश्चय-बोधक अव्यय।
वि० [स० द्वि] दो।
प्रत्य०[स० वा] १ भी। जैसे—कदुवै (कुछ भी)। २ ही। जैसे—भुत वै (भूत ही)।
वैकक्ष—पु०[स० वि√ कक्ष् (व्याप्त होना)+अण्] १ वह माला जो जनेऊ की तरह शरीर पर धारण की जाय। २ उक्त प्रकार से माला पहनने का ढग।
वैकक्षक—पु०[स० वैकक्ष+यत्+कन्] एक प्रकार का हार जो कन्धे और पेट पर जनेऊ की तरह पहना जाता था।
वैकटिक—पु०[स० विकट+ठक्—इक] जौहरी।
वि० विकट।
वैकट्य—पु०[स० विकट्+ष्यञ्]=विकटता।
वैकयिक—वि०[स० विकय+ठक्—इक] डींग हाँकनेवाला। शेखीबाज।
वैकर्ण—पु०[स० विकर्ण+अण्] १ वैदिक काल का एक जनपद। २ वात्स्य मुनि का दूसरा नाम।

वैकर्णायन—पु०[स० वैकर्ण+फक्—आयन] वह जो वैकर्ण या वात्स्य मुनि के वश मे उत्पन्न हुआ हो।

वैकर्तन—पु०[स०]१ सूर्य के एक पुत्र का नाम। २ कर्ण का एक नाम।
वि० १ सूर्य-सम्बन्धी। २ जो सूर्यवश मे उत्पन्न हुआ हो।
पद—वैकर्तन कुल=सूर्यवश।

वैकर्म—पु०[म० विकर्म+अण्] बुरा कर्म। दुष्कर्म।

वैकल्प—पु०[स० विकल्प+अण्]१ ऐसी स्थिति जिसमे किसी को दो या अधिक चीजो मे से कोई एक चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। २ इस प्रकार चुनी हुई वस्तु।

वैकल्पिक—वि०[स० विकल्प+ठक्—इक]१ जो विकल्प के रूप मे हो। २ जिसके विषय मे विकल्प का उपयोग या प्रयोग किया जाने को हो अथवा किया जा सकता हो। जिसके चुनाव मे अपनी इच्छा या रुचि का प्रयोग किया जा सकता हो। (आप्शनल)३ सदिग्ध। ४. किसी एक ही अग या पक्ष से सबध रखनेवाला।

वैकल्य—पु०[स० विकल+ष्यञ्]१ विकल होने की अवस्था या भाव। विकलता। २ उत्तेजना। ३. बल या शक्ति से हीन होना। निर्बलता। ४ कमी। न्यूनता। ५ भ्रम उत्पन्न करनेवाली त्रुटि या दोष। जैसे—श, ष, और स अथवा व और ब के उच्चारण मे वैकल्य जनित सादृश्य है। ६ कातरता। ७ अग-हीनता। ८ अभाव।
वि० अधूरा। अपूर्ण।

वैकारिक—वि०[स० विकार+ठक्]१ विकार युक्त। २. विकार-सबधी। २ किसी प्रकार के विकार के फलस्वरूप होनेवाला।
पु०=विकार।

वैकारिकी—स्त्री० [स० वैकारिक से] आधुनिक चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा जिसमे इस बात का विचार या विवेचन होता है कि शरीर मे किस प्रकार के विकार होने से कौन-कौन से अथवा कैसे-कैसे रोग उत्पन्न होते है। (पैथालोजी)

वैकार्य—पु०[स० विकार+ष्यञ्] विकार का भाव या धर्म।
वि० जिसमे विकार होता या हो सकता हो।

वैकाल—पु०[स० विकाल+अण्]१ दिन का तीसरा पहर। २ शाम। सन्ध्या।

वैकालिक—वि०[स० विकाल+ठक्—इक]१ विकाल-सबधी। २ सन्ध्या का। सान्ध्य।

वैकासिक—वि० [स०]१ विकास-सम्बन्धी। २ विकास के रूप मे होनेवाला।

वैकुंठ—पु० [स०] [वि० वैकुंठीय]१ विष्णु का एक नाम। २ वह स्वर्गीय लोक जिसमे विष्णु निवास करते है। ३ स्वर्ग। ४ इन्द्र। ५ सफेद पत्तोवाली तुलसी। ६ सगीत मे एक प्रकार का ताल।

वैकृत—वि०[म० विकृत+अण्] [भाव० वैकृति]१ जो विकार के कारण उत्पन्न हुआ हो। २ दुस्साध्य। ३ विकारी। परिवर्तन-शील।
पु०१ विकार। खराबी। २ वीभत्स रस या उसका कोई आलबन।

वैकृत ज्वर—पु० [स० कर्म० स०] वह ज्वर जो प्रस्तुत ऋतु के अनुकूल न हो, बल्कि किसी और ऋतु के अनुकूल हो।

वैकृतिक—वि० [स० विकृति+ठक्]१ विकृति से सबध रखने या उसके कारण उत्पन्न होनेवाला। २ नैमित्तिक।

वैकृत्य—पु०[स० विकृत+ष्यञ्]१ विकार। २ परिवर्तन। ३ दुखा-वस्था। ४ वीभत्स काम या बात।

वैक्रम—वि०[स० विक्रम+अण्] विक्रम-सबधी।

वैक्रमीय—वि० [स० विक्रम+छण्—ईय] विक्रम-सबधी। जैसे—वैक्र-मीय सवत्।

वैक्रांत—पु०[स० विक्राति+अण्] चुन्नी नामक मणि।

वैक्रिय—वि०[स० विक्रिय+अण्] जो बिकने को हो। बेचे जाने के योग्य। विक्रेय।

वैक्लव्य—पु० [स० विक्लव+ष्यञ्] १ विकलता। व्याकुलता। २ पीडा। ३ शोक। ४ अस्त-व्यस्तता।

वैखरी—स्त्री०[स० वि+ख√ रा (लेना)+क+अण,+ङीप्] १ मुँह से उच्चरित होनेवाला शब्द। २ बोलने की शक्ति। ३. सरस्वती। वाग्देवी।

वैखानस—पु०[स० विखन+ड+असुन्+अण्]१ जो वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवृत्त हो चुका हो। २ एक प्रकार के संन्यासी जो वनो मे रहते है। ३ कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। ४ भागवत के दो स्कधो मे से एक।

वैखानसीय—स्त्री०[स० वैखानस+छ—ईय] एक उपनिषद् का नाम।

वैगन—पु० [अं०] मालगाडी का डब्बा जिसमे माल भेजा जाता है।

वैगलेय—पु०[स० विगला+ढक्—एय] भूतो का एक गण। (पुराण)

वैगुण्य—पु० [स० विगुण+ष्यञ्] १ विगुण होने की अवस्था या भाव। विगुणता। २ दोष। ३ नीचता। ४ अपराध।

वैग्रहिक—पु०[स० विग्रह+ठक्—इक] विग्रह या शरीर सबधी। शारी-रिक।

वैघटिक—पु०[स० विघट+ठक्—इक] जौहरी।

वैघात्य—वि०[स० वि√ हन् (मारना)+णिच्—ष्यत्] जिसका घात किया जा सके या हो सके।

वैचक्षण्य—पु०[स० विचक्षण+ष्यञ्] विचक्षणता।

वैचारिकी—स्त्री०=विचारधारा। (आइडियालोजी)

वैचित्त्य—पु०[स० विचित्ति+ष्यञ्] १ चित्त की भ्राति। भ्रम। २ २ अन्यमनस्कता।

वैचित्र—पु०[स० विचित्र+अण्] १ विचित्रता। विलक्षणता। २ भेद। फरक। ३ सुन्दरता।

वैचित्र्य—पु०[स० विचित्र+ष्यञ्] विचित्रता।

वैचित्र्यवीर्य—पु०[स०] विचित्रवीर्य की सतान—धृतराष्ट्र, पाडु, विदुर आदि।

वैच्युति—स्त्री०[स० वैच्युत+इति]१ विच्युत होने की अवस्था या भाव। विच्युति। २ पतन।

वैजनन—पु०[स० विजनन+अण्] गर्भ का अन्तिम मास।

वैजन्य—पु०[स० विजन+ष्यञ्]१ विजनता। एकात। २ इन्द्र की पुरी का नाम।

वैजयंत—पु०[स०]१ इद्र। २ घर। मकान। ३ अग्निमथ।

वैजयंतिक—पु०[स० वैजयन्त+ठक्—इक] वह जो पताका या झडा उठा-कर चलता हो। (हेरल्ड)

वैजयंती—स्त्री०[सं०]१. पताका। झंडा। २. [illegible] माला [illegible]।
३. घुटनों तक [illegible] मोतियों की पचरंगी माला।

वैजयिक—वि०[सं० विजय+ठक्—इक]१ विजय-संबंधी। २. विजय के फलस्वरूप मिलने या होनेवाला।

वैजात्य—पु०[सं० विजाति+ष्यञ्]१. विजातीय होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. विलक्षणता। ३. [illegible]। [illegible]।

वैजिक—पु०[सं० बीज+ठक्—इक]१. आत्मा। २. कारण। हेतु।
वि०१ बीज-सम्बन्धी। २ वीर्य-संबंधी। ३ [illegible]।

वैज्ञानिक—वि०[सं० विज्ञान+ठक्]१ विज्ञान-संबंधी। २ ठीक रीति या विधि से होनेवाला।
पु० विज्ञान का ज्ञाता। विज्ञान-वेत्ता।

वैडाल-व्रत—पु०[सं० उपमि० स०] [वि० वैडालव्रती] पाप और कुकर्म करते हुए भी ऊपर से साधु बने रहने का ढोंग।

वैण—वि०[सं० वेणु+अण्, उ—लोप] वेणु संबंधी। बांस का।
पु० बाँस की [illegible] आदि से चटाइयाँ, टोकरियाँ आदि बनानेवाला कारीगर।

वैणव—पु०[सं० वेणु+अण्]१ बाँस का फल। २ बाँस का [illegible] जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है। ३ वेणु। बाँसुरी।
वि० वेणु-संबंधी। वेणु का।

वैणविक—पु०[सं० वैणव+ठक्—इक] वह जो वेणु बजाता हो। वंशी बजानेवाला।

वैणवी (विन्)—पु० [सं० वैणव+इनि] १ वह जो वेणु बजाता हो। २ शिव।

वैणिक—पु०[सं० वीणा+ठक्—इक] वह जो वीणा बजाता हो। बीनकार।
वि० वीणा-सम्बन्धी। वीणा का।

वैणुक—पु०[सं० वेणु√कै (प्रकाशन करना)+क, +अण्]१ वह जो वेणु बजाने में चतुर हो। वंशी बजानेवाला। २ हाथी चलाने का अंकुश।

वैण्य—पु०[सं० वेणु+ष्यञ्] राजा वेण के पुत्र का एक नाम।

वैतंडिक—पु०[सं० वितंड+ठक्—इक] वितण्डा खड़ा करनेवाला। बहुत बड़ा झगड़ालू व्यक्ति।

वैतसिक—पु०[सं० वितस+ठक्—इक] कसाई।

वैतत्य—पु०[सं० वितत+ष्यञ्]=विततिं (विस्तार)।

वैतथ्य—पु०[सं० वितथ+ष्यञ्]१. वितथ होने की अवस्था या भाव। २ निष्फलता।

वैतनिक—वि० [सं० वेतन+ठक्—इक]१ वेतन-संबंधी। वेतन का। २. जिसे किसी पद पर काम करने के फलस्वरूप वेतन मिलता हो। जैसे—वैतनिक मंत्री।
पु० नौकर। भृत्य।

वैतरणी—स्त्री०[सं० वितरण+अण्,+ङीप्]१ उड़ीसा की एक नदी का नाम जो बहुत पवित्र मानी जाती है। २ पुराणानुसार परलोक की एक नदी जिसे (यह शरीर छोड़ने पर) जीवात्मा को पार करना पड़ता है।

वैतस्त—वि०[सं० वितस्ता+अण्] १. वितस्ता नदी-संबंधी। २ वितस्ता नदी में प्राप्त।

वैतानिक—वि०[सं० वितान+ठक्—इक] १. यज्ञ-संबंधी। २. पवित्र।

वैताल—पु०[सं० वैताल+अण्] स्तुति पाठक। [illegible]।
वि० वेताल-सम्बन्धी। वेताल का।

वैतालिक—पु०[सं० वैताल+ठक्—इक]१ प्राचीन [illegible] स्तुति-पाठक जो प्रातःकाल राजाओं को उनकी स्तुति करके [illegible] था। स्तुति पाठक। २. ऐंद्रजालिक। जादूगर।

वैतालि (लिन्)—पु०[सं० वैताल+इनि] कार्तिकेय का एक अनुचर।

वैतालीय—वि०[सं० वैताल+छ—ईय] वैताल-सम्बन्धी।
पु०१. एक प्रकार का विषम वृत्त जिसके पहले और तीसरे चरणों में चौदह-चौदह और दूसरे और चौथे चरणों में सोलह-सोलह मात्राएँ होती हैं।

वैतृष्ण्य—पु० [सं० वितृष्ण+ष्यञ्] वितृष्ण होने की अवस्था या भाव।

वैत्तिक—वि०[सं०] वित्त-सम्बन्धी।

वैदंश—पु०[सं० विदंश+अण्] विदिशा का एक नाम।

वैदा—पु०=वैद्य।

वैदकी—पु०=वैदा।

वैदग्ध्य (दग्ध्य)—पु०[सं० विदग्ध+ष्यञ् विदग्ध+ष्यञ्] १ विदग्ध या पूर्ण पंडित होने की अवस्था, धर्म या भाव। पांडित्य। विद्वत्ता। २. [illegible]। [illegible]। पटुता। ३. चातुरी। चालाकी। ४. रसिकता। ५. शोभा। श्री। ६. हाव-भाव।

वैदर्भ—वि०[सं० विदर्भ+अण्]१ विदर्भ देश का। २ विदर्भ देश में उत्पन्न। ३ वाक्-शील वचनों में चतुर।
पु०१ विदर्भ का राजा या शासक। २. दमयंती के पिता भीमसेन। ३. रुक्मिणी के पिता भीष्मक। ४ वाक्-चातुरी। ५ मसूड़ा फूलने का रोग।

वैदर्भक—पु०[सं० विदर्भ+अण्—कन्] विदर्भ का निवासी।

वैदर्भी—स्त्री०[सं० विदर्भ+अण्—ङीप्] १ संस्कृत साहित्य में काव्य-रचना का वह विशिष्ट प्रकार या शैली जो मुख्यतः विदर्भ और उसके आस-पास के देशों में प्रचलित थी, और जो सब गुणों से युक्त सुकुमार वृत्ति वाली तथा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी। शृंगार, करुण आदि रसों के लिए यह विशेष उपयुक्त मानी गई है। २ अगस्त्य ऋषि की पत्नी। ३ दमयन्ती। ४. रुक्मिणी।

वैदांतिक—वि०[सं० वेदान्त+ठक्—इक] वेदांत जाननेवाला। वेदांती।

वैदारिक—पु०[सं० विदार+ठक्—इक] सन्निपात ज्वर का एक भेद।

वैदिक—वि० [सं० वेद+ठक्—इक] १. वेद-संबंधी। वेद का। जैसे—वैदिक काल, वैदिक धर्म। २. जो वेदों में कहा गया हो।
पु०१ वह जो वेदों में बतलाये हुए कर्मकांड या अनुष्ठान करता हो। वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २. वह जो वेदों का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो।

वैदिक धर्म—पु०[सं० कर्म० स०] आर्यों का वह धर्म जो वेदों के युग में प्रचलित था। (इसमें प्रकृति की उपासना पितरों का पूजन, यज्ञ कर्म, तपस्या आदि बातें मुख्य थीं, और जादू-टोने या मंत्र-यंत्र का भी कुछ प्रचलन था।)

वैदिक-युग—पु०[सं० कर्म० स०] वह युग या समय, जब वेदों की रचना हुई थी और वैदिक धर्म प्रचलित था।

वैदिश—वि० [सं० विदिशा+अण्] १ विदिशा-सम्बन्धी। विदिशा का। २. विदिशा में होनेवाला।

पु० विदिशा का निवासी।
वैदिश्य—पु०[विदिशा+ष्यञ्] विदिशा के पास का एक प्राचीन नगर।
वैदुरिक—पु०[स० विदुर+ठक्—इक]१ विदुर का भाव। २ विदुर का मत या सिद्धान्त।
वैदुष—पु०[स० विद्वस्+अण्] विद्वान्। पडित।
वैदुष्य—पु०[स० विद्वस्+ष्यञ्] विद्वत्ता। पाडित्य।
वैदूर्य—पु०[स०]१ हरे रग के रत्नो का एक वर्ग। (वेरिल) २ लह-सुनिया नामक रत्न। (लैपिस लेजूली)
वैदेशिक—वि०[स० विदेश+ठक्—इक]१ विदेश मे होनेवाला। २. विदेशो से सबध रखनेवाला।
पु० विदेशी व्यक्ति।
वैदेश्य—वि०=वैदेशिक।
वैदेहक—पु०[स० वैदेह+कन्]१. वणिक्। व्यापारी। २ एक प्राचीन वर्णसकर जाति।
वैदेही—स्त्री०[स० विदेह+अण्+ङीप्]१ विदेह राजा जनक की कन्या, सीता। २ वैदेह जाति की स्त्री। ३. पिप्पली। ४ रोचना।
वैद्य—पु०[स० विद्या+अण्] १ पडित। विद्वान्। २ आयुर्वेद का ज्ञाता। ३ आयुर्वेद द्वारा निर्दिष्ट चिकित्सा पद्धति के अनुसार चिकित्सा करनेवाला। ४ एक जाति जो प्राय बगाल मे पाई जाती है। इस जाति के लोग अपने आप को अवष्ठपतान कहते है। ५ वासक। अडूसा।
वि० वेद-सम्बन्धी। वेद का।
वैद्यक—पु०[स०वैद्य+कन्] वह शास्त्र जिसमे रोगो के निदान और चिकित्सा का विवेचन हो। आयुर्वेद।
वैद्याधर—वि०[स० विद्याधर+अण्] विद्याधर-सम्बन्धी।
वैद्युत्—वि०[स० विद्युत+अण्] विद्युत-सबधी। विजली की।
वैद्रुम—वि०[स० विद्रुम+अण्] विद्रुम-सम्बन्धी। मूँगे का।
वैध—वि०[स० विधि+अण्]१ विधि-सम्मत। २ विधि की दृष्टि मे ठीक। विधि के अनुकूल।
वैधता—स्त्री०[स०] वैध होने की अवस्था, धर्म या भाव।
वैधर्मिक—वि०[स० विधर्मी+कन्+अण्]१ धर्म-विरुद्ध। २ विधर्मियो जैसा।
वैधर्म्य—पु०[स० विधर्म+ष्यञ्]१ विधर्मी होने की अवस्था या भाव। २ नास्तिकता। ३ वह जो अपने धर्म के अतिरिक्त अन्यान्य धर्मो के सिद्धान्तो का भी अच्छा ज्ञाता हो।
वैधव—पु०[स० विधु+अण्] विधु अर्थात् चन्द्रमा के पुत्र, बुध।
वि० विधु-सम्बन्धी। विधु का।
वैधवेय—वि०[स० विधवा+ढक्—एय] विधवा के गर्भ से उत्पन्न।
वैधव्य—पु०[स० विधवा+ष्यञ्] विधवा होने की अवस्था या भाव। रँडापा।
वैधस—पु० [स० वेधस्+अण्] राजा हरिश्चन्द्र जो राजा वेधस के पुत्र थे।
वि० वेधस-सबधी। वेधस का।
वैधात्र—पु० [स० विधातृ+अण्] सनत्कुमार जो विधाता के पुत्र माने जाते हैं।
वैधात्री—स्त्री०[स० वैधात्र+ङीप्] ब्राह्मी (जडी)।
वैधिक—वि०[स० विधि+ठक्—इक] वैध। विधि-सम्मत।
वैधी—स्त्री० [स० विधि+अण्+ङीप्] ऐसी भक्ति जो शास्त्रों मे वतलाई हुई विधि के अनुसार या अनुरूप हो। जैसे—कीर्तन, भजन आदि।
वैधुर्य—पु [स० विधुर+ष्यञ्]१ विधुर होने की अवस्था या भाव। २. हताश या कातर होने की अवस्था या भाव। ३ भ्रम। धोखा। ४. सन्देह। ५. कप।
वैधृति—पु [स० व० स०, पृषो० सिद्धि] १ ज्योतिष मे विष्कभ आदि सत्ताइस योगो मे से एक जो अशुभ कहा गया है। २ पुराणानुसार विधृति के पुत्र एक देवता।
वैधेय—वि०[स० विधि+ढक्—एय या विधेय+अण्] १ विधि-सबधी। विधि का। २ सबधी। रिश्तेदार। ३ मूर्ख। वेवकूफ।
वैनतक—पु० [स० विनता+अण्, अकच्] एक प्रकार का यज्ञ पात्र जिसमे घी रखा जाता था।
वैनतेय—वि०[स० विनता+ढक्—एय] विनता-सम्बन्धी। विनता का।
पु० १ विनता की सतान। २ गरुड। ३ अरुण।
वैनतेयी—स्त्री०[स० वैनतेय+ङीप्] एक वैदिक शाखा।
वैनत्य—वि०[स० विनत+ष्यञ्] विनीत। विनम्र।
वैनयिक—पु०[स०विनय+ठक्—इक] १ विनय। २ निवेदन। प्रार्थना। ३ वह जो शास्त्रो आदि का अध्ययन करता हो। ४ युद्ध-रथ।
वि०१ विनय-सबधी। २ विनय अर्थात् नीतिपूर्ण आचरण करनेवाला।
वैनायक—वि०[स० विनायक+अण्] विनायक या गणेश सम्बन्धी। विनायक का।
पु० पुराणानुसार भूतो का एक गुण।
वैनायिक—पु०[स० विनाय+ठक्—इक] बौद्ध धर्म का अनुयायी। बौद्ध।
वैनाशिक—पु०[स० विनाश+ठक्—इक] १ फलित ज्योतिष मे, जन्म-नक्षत्र से तेरहवाँ नक्षत्र। २ जन्म नक्षत्र से सातवाँ, दसवाँ और अठाहरवाँ नक्षत्र। ये तीनो नक्षत्र अशुभ समझे जाते है और निधन-तारा कहलाते हैं। इन नक्षत्रो मे यात्रा करना वर्जित है। ३. बौद्ध।
वि० १ विनाश-सम्बन्धी। विनाश का। २ परतन्त्र। पराधीन।
वैनीतक—पु०[स० विनीत√कै (प्रकाश करना)+क,+अण्] १ एक तरह की वडी पालकी। विनीतक। २ वाहन का साधन अर्थात् कहार, घोडा आदि।
वैन्य—पु०[स० वेन+ण्य] वेन के पुत्र, पृथु।
वैपयक—वि०[स० विपथ+कन्, +अण्] १ विपथ-सबधी। विपथ का। २ विपथ पर चलनेवाला।
वैपरीत्य—पु०[स० विपरीत+ष्यञ्] विपरीतता।
वैपार†—पु०=व्यापार।
वैपारी†—पु० =व्यापारी।
वैपित्र—वि०[स० विपितृ+अण्](सबध के विचार मे ऐसे भाई या बहनें) जो एक ही माता के गर्भ से परन्तु विभिन्न पिताओं के वीर्य से उत्पन्न हुए हो।
वैपुल्य—पु०[स० विपुल+ष्यञ्] विपुलता।

वैफल्य—पु०[सं० विफल+ष्यञ्]१ विफलता। २ साहित्य मे रचना का एक दोष जो उस समय माना जाता है जब रचना मे शब्दाडबर मात्र होता है पर चमत्कार का अभाव होता है।

वैबुध—वि०[सं० विबुध+अण्] विबुध अर्थात् देवता-सबधी।

वैबोधिक—पु०[सं० विबोधिक+ठक्—इक]१ रात को पहरा देनेवाला व्यक्ति। २ जगानेवाला व्यक्ति। विशेषत स्तुति पाठ द्वारा राजा को जगानेवाला व्यक्ति।

वैभव—पु०[सं० विभु+अण्]१ विभव अर्थात् धनी होने की अवस्था या भाव। २ धन-दौलत। ऐश्वर्य। ३ बड़प्पन। महत्ता। ४ शान-शौकत। ५ शक्ति। सामर्थ्य।

वैभवशाली—वि०[सं०] १ (व्यक्ति) जिसके पास बहुत अधिक धन-सपत्ति हो। विभववाला। २ अत्यधिक समर्थ।

वैभविक—वि० [सं० वैभव+ठक्—इक] १. वैभव-सम्बन्धी। २ वैभवशाली।

वैभातिक—वि० [सं० विभात+ठक्—इक] विभात अर्थात् प्रभात सबधी।

वैभार—पु०[सं०] राजगृह के पास का एक पर्वत।

वैभावर—वि० [सं० विभावरी+अण्] विभावरी अर्थात् रात-सबधी।

वैभाषिक—वि०[सं० विभाषा+ठक्—इक]१ विभाषा मे होनेवाला। विभाषा-सम्बन्धी। २ वैकल्पिक। ३ बौद्धों के विभाषा नामक सप्रदाय से सबध रखनेवाला अथवा उसका अनुयायी।

वैभाष्य—पु०[सं० विभाषा+ष्यञ्] किसी मूल या सूत्रग्रन्थ का विस्तृत भाष्य।

वैभूतिक—वि० [सं० विभूति+ठञ्—इक] १ विभूति-सबधी। विभूति का। २ विभूति के फलस्वरूप होनेवाला। ३. प्रचुर।

वैभोज—पु०[सं० विभोज+अण्] एक प्राचीन जाति जिसका मूलपुरुष द्रुह्यु माना गया है। (महाभारत)

वैभ्राज्य—पु०[सं० विभ्राज+अण्]१ देवताओं का उद्यान या बाग। २. पुराणानुसार मेरु के पश्चिम मे सुपार्श्व पर्वत पर का एक जगल। २ स्वर्ग के अन्तर्गत एक लोक।

वैमत्य—पु०[सं० विमति+ष्य]१ विमति अर्थात् मतभेद की अवस्था या भाव। फूट। २ मतों का न मिलना। ३ मतों मे होनेवाला अतर या फर्क।

वैमनस्य—पु०[सं० विमनस्+ष्यञ्]१ विमनस् या अन्यमनस्क होने की अवस्था या भाव। २ दुश्मनी। वैर। शत्रुता। ३. मानसिक शैथिल्य। उदासी।

वैमल्य—पु०[सं० विमल+ष्यञ्]=विमलता।

वैमात्र—वि० [सं० विमातृ+अण्] [स्त्री० वैमात्रा] (सबंध के विचार से ऐसे भाई या बहनें) जो विभिन्न माताओं के गर्भ से उत्पन्न, परन्तु एक ही पिता की सतान हो।

वैमात्रक—पु०[सं० वैमात्र+कन्] [स्त्री० वैमात्री] सौतेला भाई।

वैमात्रेय—वि०[सं० विमातृ+ढक्—एय] [स्त्री० वैमात्रेयी] १ विमातृ सबधी। विमाता का। २. विमाता या सौतेली माँ की तरह का। (स्टेप-मदरली) जैसे—किसी के साथ किया जानेवाला वैमात्रेय व्यवहार।

वैमानिक—वि० [सं० विमान+ठक्—इक] १ विमान-सबधी। २. विमान मे उत्पन्न।

पु०१. वह जो विमान पर सवार हो। २ हवाई जहाज चलानेवाला। (पायलट) ३ जैनमत के अनुसार स्वर्गलोक मे रहनेवाले जीव। २ वह जो आकाश मे विचरण करता या कर सकता हो।

वैमानिकी—स्त्री०[सं० वैमानिक+ङीप्] विमान या हवाई जहाज चलाने की क्रिया, विद्या या शास्त्र। (एयरोनाटिक्स)

वैमुख्य—पु० [सं० विमुख+ष्यञ्] १ विमुखता। २ विरक्ति। ३ घृणा। ४ पलायन।

वैमूढक—पु०[सं०] नृत्य का वह प्रकार जिसमे स्त्रियों का वेश धारण करके पुरुष नाचते है।

वैमूल्य—पु०[सं० विमूल्य+अण्] मूल्य की भिन्नता।

वैमृध—पु०[सं० विमृध+अण्] इद्र।

वैयक्तिक—वि०[सं० व्यक्ति+कन्, +अण्]१. किसी विशिष्ट व्यक्ति अथवा उसके अधिकार, गुण, स्वभाव आदि से सबध रखनेवाला। (पर्सनल) २ जो पारिवारिक, सामूहिक या सार्वजनिक कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत न आता हो। बल्कि जिस पर एक ही व्यक्ति का विधिक अधिकार हो। (प्राइवेट)

वैयक्तिक बध—पु०[सं०]वह बध या प्रतिज्ञापत्र जिसके अनुसार लेखक या हस्ताक्षरकर्ता अपने आप को कोई काम करने या कोई प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए बद्ध करता है। (पर्सनल बाण्ड)

वैयक्तिक विधि—स्त्री०[सं०] आधुनिक राजकीय विधानों मे देशव्यापी विधियों या कानूनों से भिन्न वह विधि या कानून जिसका प्रयोग किसी क्षेत्र के विशिष्ट निवासी या निवासियों के सबध मे कुछ विशिष्ट अवस्थाओं मे होता है। (पर्सनल ला)

वैयग्र—पु०[सं०]=व्यग्रता।

वैयर्थ्य—पु० [सं० व्यर्थ+ष्यञ्] व्यर्थ होने की अवस्था या भाव। व्यर्थता।

वैयसन—वि०[सं० व्यसन+अण्] व्यसन-सबधी। व्यसन का।

वैयाकरण—वि० [सं० व्याकरण+अण्] व्याकरण-सम्बन्धी। व्याकरण का।

पु० १. वह जिसे व्याकरण-शास्त्र का पूर्ण ज्ञान हो। व्याकरण का ज्ञाता। २ व्याकरण-शास्त्र की रचना करनेवाला।

वैयाघ्र—पु०[सं० व्याघ्र+अण्]१ व्याघ्र-सम्बन्धी। २ व्याघ्र की तरह का। ३. जिस पर व्याघ्र की खाल मढ़ी गई हो।

पु० पुरानी चाल का एक तरह का रथ जिस पर बाघ की खाल मढ़ी होती थी।

वैयास—वि०[सं० व्यास+अण्] व्यास-सम्बन्धी। व्यास का।

वैयासकि—पु०[सं० व्यास+इञ्, अकङ्-आदेश, ऐच्] वह जो व्यास का वशज हो।

पु० व्यास द्वारा रचित।

वैर—पु०[सं० वीर+अण्] शत्रुता का वह उत्कट या तीव्र रूप जो प्राय जाग्रत रहता और बहुत कुछ स्थायी या स्वाभाविक होता है।

विशेष—'वैर' और 'शत्रुता' का अतर जानने के लिए देखें 'शत्रुता' का विशेष।

शरच्चन्द्र—पु० [स० मध्यम० स०] १ शरत् ऋतु का चन्द्रमा। २ विशेषत. शरत् पूर्णिमा का चन्द्र।

शरज—पु० [स० शर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मक्खन। नवनीत। वि० शर से उत्पन्न या बना हुआ।

शरट—पु० [स०√शृ (गमनादि)+अटन्] १ कुसुभ नाम का साग। २ करज। ३ गिरगिट।

शरटी—स्त्री० [स० शरट्—ङीप्] लज्जालुक। लाजवती।

शरण—स्त्री० [स० श्रृ (पूरा करना)+ल्युट्-अन] १ उपद्रव, कष्ट आदि से बचने के लिए किसी समर्थ के पास आकर अपनी रक्षा कराने की क्रिया या भाव। पनाह।
क्रि० प्र०—मे आना या जाना।
२. ऐसा स्थान जहाँ पर जाकर कोई रक्षित रहे।
क्रि० प्र०—पाना।—लेना।
३ रक्षा के लिए भागकर आये हुए व्यक्ति के शत्रु को मारना या उसका नाश करना। ४ घर। मकान। ५ अधीनस्थ व्यक्ति। मातहत। ६. सारन प्रदेश का पुराना नाम।

शरण-क्षेत्र—पु० [सं० प० त०] १ ऐसा स्थान जहाँ अपराधी, भगोडे आदि पहुँचकर शरण लेते और सुरक्षित रहते हो। शरणस्थान।
विशेष—मध्य युग मे ईसाई धर्माधिकारी अपनी शरण मे आये हुए लोगो को राजकीय अधिकारियो के हाथो से बचा कर अपने यहाँ रख लेते थे। जिससे यह शब्द बना था। आजकल दूसरे देशो के अपराधियो को शरण देनेवाले राज्यो या क्षेत्रो के लिए व्यवहृत।
२ पशु-पक्षियो आदि के लिए वह सुरक्षित स्थान जहाँ वे निर्भयता-पूर्वक रह सकते हो और जहाँ उनका शिकार करने की मनाही हो। शरणस्थान। (सक्चुअरी)

शरणगृह—पु० [स० प० त०] जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण से बचने के लिए छिपकर रहते है। (शेल्टर)

शरणद—वि० [स० शरण√दा+क] शरण देनेवाला।

शरणस्थान—पु० [स० शरण प० त०] शरण-क्षेत्र। (दे०)।

शरणा—स्त्री० [स० शरण-टाप्] गध-प्रसारिणी (लता)।

शरणागत—भू० कृ० [द्वि० त० स०] किसी की शरण मे आया हुआ।

शरणागति—स्त्री० [स०] किसी की शरण मे आए हुए होने की अवस्था या भाव।

शरणापन्न—वि० [स० द्वि० त० स०] शरणागत।

शरणार्थी(र्थिन्)—वि० [स० शरण√अर्थ (माँगना)+णिनि व० स० वा०] जो किसी की शरण चाहता हो। फलत असहाय तथा विस्थापित। पु० आज-कल वे लोग जो पाकिस्तान मे भागकर शरण लेने के लिए भारत मे आकर बस गये है। (रिफ्यूजी)

शरणि—स्त्री० [स० श्रृ+अनि] १ मार्ग। पथ। रास्ता। २ जमीन। भूमि। ३. हिंसा।

शरणी—स्त्री० [स० शरण-ङीष्] १ गध-प्रसारिणी नाम की लता। २. जयती। ३ पथ। मार्ग।
वि० स्त्री० शरण देनेवाली। जैसे—अशरण-शरणी भवानी।

शरण्य—वि० [स० शरण+यत्] १. जिसके पास या जहाँ पहुँच कर शरण ली जाय या ली जा सके। २ आक्रमण, विकार आदि से रक्षित रखने वाला। (प्रोटेक्टिव) जैसे—आयुर्वेद का शरण्य स्वरूप।

शरण्यता—स्त्री० [स० शरण्य+तल्—टाप्] शरण्य का भाव।

शरण्यशुल्क—पु० दे० 'सरक्षण शुल्क'।

शरण्या—स्त्री० [स० शरण्य—टाप्] दुर्गा।

शरण्यु—पु० [स० शृ+अन्यु] १ मेघ। बादल। २ वायु। हवा। स्त्री० सूर्य की पत्नी का नाम।

शरत्—स्त्री० [स० शृ +अदि चर्त्व] १ वैदिक युग मे, भाद्रपद और आश्विन महीनो की ऋतु। २ आज-कल, आश्विन और कार्तिक महीनो की ऋतु। ३ वत्सर। वर्ष।

शरत—स्त्री० १ =शरत्। २ =शर्त्त।

शरता—स्त्री० [स०] १ शर का भाव। २ बाण-विद्या। उदा०—छोडि दई शरता . . .।—केशव। ३ बाण-विद्या मे होनेवाली पटुता।

शरतिया—अव्य० =शर्तिया।

शरत्काल—पु० [स० प० त० स०] आश्विन और कार्तिक के दिन। शरद् ऋतु।

शरत्पद्म—पु० [स० मध्यम० स०] श्वेत पद्म।

शरत्पर्व—पु० [स० प० त० स०] शरद पूर्णिमा।

शरदंड—पु० [स० व० स०] १ चाबुक। २ सरकडा। ३ शरदडा नदी के तट पर बसी हुई साल्व जाति की एक शाखा।

शरदडा—स्त्री० [स० शरदड—टाप्] पूर्वी पजाब की एक प्राचीन नदी (कदाचित् शरावती)।

शरदत—पु० [स० प० त०] शरद् ऋतु का अत। अर्थात् हेमत ऋतु का आरभ।

शरद—स्त्री० =शरत्।

शरदई—वि० =सर्दई (सर्दे के रग का)।

शरद पूर्णिमा—स्त्री० [स० प० त० स०] क्वार मास की पूर्णिमा। शारदीय पूर्णिमा।

शरदा—स्त्री० [स० शरद—टाप्] १ शरद ऋतु। २ वर्ष। साल।

शरदिंदुमुखी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शरदिज—वि० [स० शरदि√जन् (उत्पन्न करना)+ड] शरत् ऋतु मे उत्पन्न होनेवाला।

शरदेंदु—पु० [स० प० त० स०] शरद् ऋतु का चन्द्रमा। शरच्चद्र।

शरद्वत्—पु० [स० शरत्+मतुप्—म=व] शरत् ऋतु।

शरधि—पु० [स० शर्√ धा (रखना)+कि] तूणीर। तरकश।

शरन्मुख—पु० [स० प० त० स०] शरद ऋतु का आरभ।

शरपख—पु० [स० व० स०] जवासा। घमासा।

शर-पंजर—पु० [स०] शर-कोट। (दे०) उदा०—जार्‍यो शर-पजर छार कर्‍यो, नैऋत्यन को अति चित्त डर्‍यो।—केशव।

शरपुंख—पु० [स० व० स०] १. नील की तरह का सर-फोका नाम का पौधा। २ तीर या बाण मे लगाया हुआ पख या पर। ३ वैद्यक मे, चीर-फाड के काम के लिए एक प्रकार का यत्र।

शरफ़—पु० [अ०] १. खूबी। २ बडाई। प्रशसा। ३ सौभाग्य। ४ मान। प्रतिष्ठा। महत्त्व।

शरबत—पु० [अ०] १. चीनी आदि मे पकाकर तैयार किया हुआ ओपधि

या फल का गाढा रस। जैसे—अनार, संतरे या शहतूत का शरबत। २. उक्त का कुछ अंश पानी में घोलकर बनाया हुआ पेय। ३. किसी फल का रस निचोड़कर तथा उसमें चीनी, पानी, आदि मिलाकर बनाया हुआ पेय। ४ ऐसा पानी जिसमें गुड़, चीनी, मिसरी आदि में से कोई चीज घुली हो। ५. मुसलमानों में एक रीति जिसमें विवाह के उपरांत कन्यापक्ष वाले वर पक्षवालों को शरबत पिलाते हैं। ६ उक्त अवसर पर वह धन जो शरबत पीने के उपलक्ष में वर पक्षवालों को दिया जाता है।

शरबत-पिलाई—स्त्री०[हिं०शरबत+पिलाना]वह धन जो वर और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे को शरबत पिलाकर देते हैं। (मुसल०)

शरबती—वि०[हिं० शरबत]१. शरबत की तरह मीठा या तरल। जैसे—शरबती तरकारी। २ उक्त के आधार पर रसपूर्ण, मधुर तथा प्रिय। जैसे—शरबती आँखें। ३ जो शरबत बनाने के काम आता हो। जैसे—शरबती नीबू, शरबती फालसा। ४. जो शरबत के रंग का हो। कुछ कुछ लाल। गुलाबी।

पु० १ पानी में घुली हुई चीनी की तरह का एक प्रकार का हलका पीला रंग जिसमें हलकी लाली भी होती हो। २. एक प्रकार का नगीना जो पीलापन लिए लाल रंग का होता है। ३ एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा जो तनजेब से कुछ मोटा और अद्धी से कुछ पतला होता है। ४. मीठा नीबू। ५ एक प्रकार का बढ़िया आम।

शरबती नींबू—पु०[हिं० शरबत+नीबू]१. चकोतरा। २. गलगल। ३. जंबीरा या मीठा नीबू।

शरबान—पु०[सं० शर+बान] अगिया घास।

शरभंग—पुं०[सं० ब० स०] एक प्राचीन महर्षि जो दक्षिण में रहते थे।

शरभ—पु०[सं० शर√भृ+अभच्] १ टिड्डी। २ फतिंगा। ३. हाथी का बच्चा। ४. विष्णु। ५. ऊँट। ६. एक प्रकार का पक्षी। ७. शेर। सिंह। ८ आठ पैरोंवाला एक कल्पित मृग। ९ राम की सेना का एक यूथपति बन्दर। १०. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ४ नगण और १ सगण होता है। इसे शशिकला और मणिगुण भी कहते हैं। ११. दोहे का एक भेद जिसमें २० गुरु और ८ लघु मात्राएँ होती हैं।

शरभा—स्त्री०[सं० शरभ-टाप्]१. शुष्क अवयवों वाली और विवाह के अयोग्य कन्या। २ लकड़ी का एक प्रकार का यंत्र।

शरभू—पु०[सं० शर√भू+क्विप्] कार्तिकेय।

शरम—स्त्री०[फा० शर्म]१. लज्जा। हया। गैरत।

मुहा०—शरम से गड़ना=मारे लज्जा के दबे या झुके जाना। बहुत लज्जित होना। शरम से पानी पानी होना=बहुत लज्जित होना।

२. किसी बड़े का लिहाज या संकोच। ३. इज्जत। प्रतिष्ठा।

शरमनाक—वि०[फा० शर्मनाक] (कार्य या व्यवहार) जिसके कारण शर्म आती हो या आनी चाहिए। लज्जाजनक। निर्लज्जतापूर्ण।

शरमल्ल—पु० [सं० सप्त० त० स०]१. वह जो तीर चलाने में निपुण हो। धनुर्धारी। २. मैना पक्षी।

शरमसार—वि०[फा० शर्मसार] [भाव० शरमसारी] १ जिसे शरम हो। लज्जावाला। २. लज्जित। शरमिन्दा।

शरम-हुजूरी—स्त्री० [अ० शर्म+फा० हुजूर।] मुँह देखने की लाज।

शरमाऊ†—वि०[हिं० शरम+आऊ (प्रत्य०)] शरमानेवाला। लजीला।

शरमाना—अ०[अ० शर्म+आना (प्रत्य०)]१. किसी के सामने कुछ करने या कहने का उत्साह न होने के फलस्वरूप झेंपना। लाज से नम्र होना। २ लज्जित होना।

स० लज्जित या शरमिन्दा करना।

शरमालू†—वि०=शरमाऊ।

शरमा-शरमी—अव्य०[फा० शर्म]१. लज्जा के कारण। २ संकोचवश।

शरमिंदगी—स्त्री०[फा०] शरमिंदा या लज्जित होने की अवस्था, धर्म या भाव। लाज। झेंप।

क्रि० प्र०—उठाना।

शरमिंदा—वि०[फा० शर्मिन्दः]जो अपने किसी अनुचित कार्य या व्यवहार के फलस्वरूप लज्जित तथा दुःखी हो। लज्जा से जिसका मस्तक नत हो गया हो।

शरमीला—वि० [फा० शर्म+ईला(प्रत्य०)]लाज-भरा। लाज से युक्त। 'निर्लज्ज' का विरुद्धार्थक। जैसे—शरमीली आँखें, शरमीली वधू।

शरयू†—स्त्री०=सरयू (नदी)।

शरर—पु०[अ०] चिनगारी।

शरलोमा(मन्)—पुं० [सं० ब० स०]एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने भरद्वाज जी से आयुर्वेद संहिता लाने के लिए प्रार्थना की थी।

शरवाणि—स्त्री०[सं०] १ शर। २ तीर का फल।

पु०१. तीर चलानेवाला योद्धा। २. पैदल सिपाही।

शर-वारण—पु०[सं०ब० स०] ढाल, जिससे तीरों की बौछार रोकी जाती है। ढाल, जिससे तीरों का वारण किया जाता है।

शरव्य—पुं० [सं० शरु+यत्—शर√व्ये (मुक्त होना)+ड]१ वाण का लक्ष्य। २. तीरदाज।

शरह—स्त्री०[अ०]१ वह कथन या वर्णन जो किसी बात को स्पष्ट करने के लिए किया जाय। अच्छी तरह अर्थात् स्पष्ट और विस्तृत रूप से कुछ कहना। २. व्याख्या। ३ ग्रन्थ की टीका या भाष्य। ४ किसी चीज की बिक्री की दर या भाव। ५ किसी काम या चीज की दर। जैसे—लगान की शरह।

शरह-बंदी—स्त्री०[अ० शरह+फा०बन्दी]१ दर या भाव निश्चित करने की क्रिया। २. (मंडी आदि के) भावों की तालिका।

†स्त्री० =शरअ।

शराकत—स्त्री०[फा०]१. शरीक या सम्मिलित होने की अवस्था या भाव। २ हिस्सेदारी। साझा।

शराटिका—स्त्री०[सं०]१. टिटिहरी। २. लजालू लता।

शराध†—पु०=श्राद्ध।

शराप—पु०=शाप।

शरापना—स० [सं० शाप+हिं० ना (प्रत्य०)] किसी को शाप देना।

शराफ †—पु०=सराफ।

शराफत—स्त्री० [अ० शराफत]१ शरीफ या सज्जन होने की अवस्था या भाव। २. सज्जनोचित कोई व्यवहार या शिष्टाचार।

शराफा†—पु०=सराफा।

शराफी†—स्त्री०=सराफी।

शराब—स्त्री० [अ०] १. मदिरा। सुरा। वारुणी। मद्य। दारू। २.

हकीमो की परिभाषा मे, किसी चीज का मीठा अरक या शरबत। जैसे—शराब बनफशा।

शराबखाना—पु० [अ० शराब+फा० खाना] शराब बनने तथा बिकने की जगह। वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

शराबखोरी—स्त्री० [फा०] १ शराब पीने का कृत्य। मदिरा पान। २ शराब पीने की आदत या लत।

शराबख्वार—पु० [फा०] वह जो शराब पीता हो। मदिरा पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

शराबी—पु० [अ० शराब+हि० ई (प्रत्य०)] व्यक्ति जिसे शराब पीने का व्यसन हो।

शराबोर—वि० [फा०] पानी से तर। गीला।

शरारत—स्त्री० [अ०] १ शरीर या पाजी होने की अवस्था या भाव। २. दुष्टतापूर्ण कार्य।

शरारतन्—क्रि० वि० [अ०] शरारत या पाजीपन से।

अव्य० [अ०] शरारत अर्थात् किसी को तग करने की नियत से।

शरारि—पु० [स० शर√ ऋ (गमनादि)+इ] १ राम की सेना का एक यूथपति बदर। २ टिटिहरी नाम की चिडिया।

शरारी—स्त्री० [शरारि—ङीष्] टिटिहरी।

शरारोप—पु० [स० ब० स०] धनुष जिस पर शर चढाया जाता है। कमान।

शराली—स्त्री० [स० शरालि—ङीप्] टिटिहरी नाम की छोटी चिडिया।

शराव—पु० [स० शर√अव (रक्षा करना)=अण्] १ मिट्टी का एक प्रकार का पुरवा। कुल्हड। २. वैद्यक मे एक प्रकार का परिमाण या तौल जो चौसठ तोले या एक सेर की होती है। (वैद्यक मे सेर चौसठ तोले का ही होता है)।

शरावती—स्त्री० [सं० शरा+मतु—प्-म=व—दीर्घ—ङीप्] १ गगा नामक नदी का पुराना नाम। २ एक प्राचीन नगरी जिसे लव ने अपनी राजधानी बनाई थी।

शरावर—पु० [स० ब० स०] १ ढाल। २ कवच। वर्म।

शरावरण—पु० [स० ब० स०] ढाल जिससे तीर का वार रोकते है।

शराविका—स्त्री० [स० शराव+कन्—टाप् इत्व] १ ऐसी फुसी जो ऊपर से ऊँची और बीच मे गहरी हो। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग।

शराश्रय—पु० [स० ष० त० स०] तीर रखने का स्थान, तरकश।

शरासन—पु० [स० शर√ अस् (फेंकना)+ल्युट्—अन] धनुष। कमान। चाप।

शरास्य—पु० [स० शर√ अस् (रखना)+ण्यत्] धनुष। कमान।

शरिष्ठ—वि०=श्रेष्ठ।

शरी—स्त्री० [स० शरि—ङीष्] एरका या मोथा नाम का तृण।

शरीअत—स्त्री० [अ०] मुसलमानी धर्म मे शरअ के अनुसार आचरण करना। नमाज, रोजे आदि का निर्वाह और पालन।

विशेष—सूफी सप्रदाय मे यह साधना की चार स्थितियो मे से पहली है। शेष तीन स्थितियो तरीकत, मारफत और हकीकत कहलाती है।

शरीक—वि० [अ०] १ किसी के साथ मिला हुआ। शामिल। सम्मिलित। २. कष्ट आदि के समय सहानुभूति दिखाने या सहायता करनेवाला।

पु० १. वह जो किसी बात मे किसी के साथ रहता हो। साथी। २. साझीदार। हिस्सेदार। ३ ऐसा निकट सम्बन्धी जो पैतृक सपत्ति का हिस्सदार हो या रहा हो।

शरीफ—पु० [अ० शरीफ] १ ऊँचे घराने का व्यक्ति। कुलीन मनुष्य। २ सज्जन और सभ्य व्यक्ति। भला आदमी। ३ मक्के के प्रधान अधिकारी की उपाधि।

वि० पवित्र या शुभ। जैसे—मिजाज शरीफ।

पु० [अ० शेरिफ] अगरेजी शासन मे, कलकत्ते, बम्बई और मद्रास मे सरकार की ओर से नियुक्त किए जानेवाले एक प्रकार के अवैतनिक अधिकारी जिनके सुपुर्द शाति-रक्षा तथा इसी प्रकार के और कुछ काम होते हैं।

शरीफा—पु० [स० श्रीफल या सीताफल] १ मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जो प्राय. सारे भारत मे फल के लिए लगाया जाता है। २ उक्त वृक्ष का फल जो अमरूद की तरह गोल और खाकी रग का होता है। इसके अन्दर सफेद मीठा गूदा (बीजो मे लिपटा हुआ) होता है। श्रीफल। सीताफल। रामसीता।

शरीर—पु० [स० शृ (हिंसा करना)+ईरन्] [भाव० शरीरता, वि० शारीरिक] १ मनुष्य या पशु आदि के समस्त अगो की समष्टि। सिर से पैर तक के सब अगो का समूह। देह। तन। बदन। जिस्म।

वि० [अ०] दुष्ट-प्रकृति।

शरीरक—पु० [स० शरीर+कै+ क+कन्] १. छोटा शरीर। २ आत्मा।

शरीरज—वि० [स० शरीर√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो शरीर से उत्पन्न हुआ हो या होता हो।

पु० १. पुत्र। बेटा। २. कामदेव।

शरीरता—स्त्री० [स० शरीर+तल्—टाप्] शरीर का भाव या धर्म।

शरीरत्याग—पु० [स० प० त०] मृत्यु। मौत।

शरीरत्व—पु० [स० शरीर+त्व] शरीर का भाव या धर्म। शरीरता।

शरीर-पतन—पु० [स० प० या त०, ब० स०] १ शरीर का धीरे-धीरे क्षीण होना। २ मृत्यु। मौत।

शरीर-पात—पु० [स० प० त०] देह का अंत या नाश। शरीरात। देहावसान। मृत्यु। मौत।

शरीर-भृत—पु० [स० शरीर√भृ+क्विप्+तुक्] १. वह जो शरीर धारण किए हो। शारीरी। २. विष्णु। ३ जीवात्मा।

शरीर-यापन—स्त्री० [ब० स०] जीवन का निर्वाह या यापन।

शरीर-रक्षक—पु० [प० त० स०] अगरक्षक (दे०)।

शरीर-वृत्ति—स्त्री० [स० मध्यम स०] जीवन निर्वाह करने की वृत्ति।

शरीर-शास्त्र—पु० [स०] शारीर।

शरीर-शोधन—पु० [स० ब० स० प० त०] वह औषधि जो कुपित मल, पित्त और कफ ऊर्ध्व अथवा अधोमार्ग से शरीर के बाहर निकाल दे।

शरीर-संस्कार—पु० [स० प० त०] १ शरीर को शुद्ध तथा स्वच्छ करने की क्रिया। २ गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के मनुष्य के वेद-विहित सोलह संस्कार।

शरीर-सेवा—स्त्री० [स० प० त०] ऐसे सब काम जिनसे शरीर अच्छी तरह और सुख से रहे।

शरीर-सेवी—पु०[सं० शरीर सेवा+इनि] वह जो केवल अपने शारीरिक सुखों का ध्यान रखता हो।
शरीरस्थ—वि०[सं० शरीर√स्था (ठहरना)+क]१. शरीर में रहनेवाला या स्थित। २ जीवित।
शरीरांत—पु० [सं० ष० त० स०] मृत्यु।
शरीरार्पण—पु०[सं० ष० त० स०] सेवा-भाव से किसी कार्य में जी-जान से जुटना।
शरीरावरण—पु०[सं० ष० त० स०] १. शरीर को ढकनेवाली कोई चीज। २ खाल। चमड़ा। ३. ढाल। वर्म।
शरीरास्थि—पु० [सं० ष० त० स०, शरीर+अस्थि] कंकाल। पिंजर।
शरीरी—वि०[सं० शरीर+इनि, दीर्घ न लोप] शरीरधारी।
पु०१. प्राणी। २ आत्मा। जीव।
शरु—पु०[सं० शृ (हिंसा करना)+उन्]१. वज्र। २. तीर। बाण। ३ हिंसा। ४ आयुध। अस्त्र। ५. क्रोध। गुस्सा।
वि०१ हिंसक। २ बहुत पतला। ३ नुकीला।
शरेज—पु०[सं० शरे√जन् (उत्पन्न करना)+ड, सप्तमी, अलुक्] कार्तिकेय।
शरेष्ट—पु०[सं०√शृ+अच्=शर. काम-इष्ट; ष० त०] आम। आम्र।
†वि०=श्रेष्ठ।
शर्कर—पु०[सं०√ शृ (हिंसा करना)+करन्] १. कंकड़। २ बालू का कण। ३ एक पौराणिक देश। ४. उक्त देश का निवासी। ५ एक प्रकार का जल-चर जन्तु। ६ शक्कर। चीनी।
शर्करकंद—पु०[सं० ष० त० या ब० स०] शकरकंद।
शर्करक—पु० [सं० शर्कर+कन्] मीठा नीबू। शरबती नीबू।
शर्करजा—स्त्री०[सं०शर्कर√जन् (उत्पन्न करना)+ड—टाप्] चीनी।
शर्करा—स्त्री० [सं० शर्कर—टाप्] १ शक्कर। चीनी। २ बालू का कण। ३ पथरी नामक रोग। ४ कंकड़। ५ ठीकरा। ६ पुराणानुसार एक देश जो कूर्मचक्र के पुच्छ भाग में कहा गया है। ७. दे० 'शर्करार्बुद'।
शर्कराचल—पु०[सं० ष० त०]पुराणानुसार चीनी का वह पहाड़ जो दान करने के लिए लगाया जाता है।
शर्कराधेनु—स्त्री०[सं० ष० त० स०] पुराणानुसार चीनी की वह गौ जो दान करने के लिए बनाई जाती है।
शर्कराप्रभा—स्त्री०[सं० ब० स०] जैनों के अनुसार एक नरक का नाम।
शर्कराप्रमेह—पु० [सं० मध्य० स०] ऐसा प्रमेह जिसमें मूत्र का रंग सफेद हो जाता है और उसके साथ शरीर की शर्करा भी निकलती है।
शर्करामापी—पु० [सं०ष० त०] एक प्रकार का यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि किसी घोल या तरल पदार्थ में शर्करा या चीनी का कितना अंश है। (सैक्रिमीटर)
शर्करार्बुद—पु०[ब० स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें त्रिदोष के कारण मांस, शिरा और स्नायु में गाँठें पड़ जाती हैं।
शर्करा-सप्तमी—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] वैशाख शुक्ल सप्तमी; इस दिन सुवर्णाश्व का पूजन होता है।
शर्करासव—पु०[सं० मध्यम० स०] चीनी से बनाई जानेवाली शराब।
शर्करिक—वि० [सं० शर्करा+ठन्—इक] १. शर्करा से युक्त। २. शर्करा से बना हुआ।
शर्करी—स्त्री० [सं० शर्करा—ङीप्] १ नदी। २. मेखला। ३. कलम। लेखनी। ४. वर्णवृत्त के अन्तर्गत चौदह अक्षरों की एक वृत्ति। इसके कुल १६३८४ भेद होते हैं जिनमें १३ मुख्य हैं।
शर्करील—वि० [सं० शर्करा+इल—ईय] शर्करा-संबंधी। शर्करा का।
शर्करोदक—पु० [सं० मध्यम० स०] शरबत।
शर्कोट—पु०[सं० ब० स०] साँप।
शर्ट—स्त्री० [अं०] एक प्रकार का पाश्चात्य पहनावा जो कुरते से नम्र का तथा कालरदार होता है। कमीज।
शर्त—स्त्री०[अ०] १. किसी बात, घटना आदि की सत्यता या असत्यता अथवा विद्यमानता तथा अविद्यमानता आदि के संबंध में दो पक्षों द्वारा दाँव पर लगाया जानेवाला धन। बाजी।
क्रि० प्र०—जीतना।—बदना।—बाँधना।—लगाना।—हारना।
२. कोई ऐसी बात जो किसी काम या बात की सिद्धि के लिए आवश्यक रूप से अपेक्षित हो। (टर्म) जैसे—वह यहाँ आ तो सकता है, पर शर्त यह है कि तुम उनसे लड़ने लगो। ३ दे० 'प्रतिबन्ध'।
क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।
शर्तिया—अव्य०[अ०]शर्त बदकर, अर्थात् बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक। जैसे—मैं शर्तिया कहता हूँ कि आप अच्छे हो जायँगे।
वि० बिलकुल ठीक और निश्चित।
शर्तों—अव्य० =शर्तिया।
शर्द्ध—पु०[सं०√शृधु [अपान वायु के निस्सिरण शब्द]+घञ्]१ तेज। २ अपान वायु। पाद।
शर्द्धन—पु०[सं०√ शृधु (अपान वायु के शब्द)+ल्युट्—अन] अपानवायु त्याग करना। पादना।
शर्बत—पु०=शरबत।
शर्बती—वि०, पु०=शरबती।
शर्म—पु० [सं०√ शृ (हिंसा करना)+मनिन्] १ सुख। आनन्द। २ घर। मकान।
वि० परम सुखी।
स्त्री०=शरम।
विशेष—शर्म और हया का अन्तर जानने के लिए दे० 'हया' का विशेष।
शर्मद—वि०[सं० शर्म्म √ दा (देना)+क] [स्त्री० शर्मदा] आनंद देनेवाला। सुखदायक।
पु० विष्णु का एक नाम।
शर्मन्—पु०=शर्म्मा।
शर्मर—पु० [सं० शर्म्म √ रा (लेना)+क] एक प्रकार का वस्त्र।
शर्मरी—स्त्री०[सं० शर्म्मर—ङीप्] दारु हल्दी।
शर्मसार—वि०[फा०][भाव० शर्मसारी]१ लज्जाशील। २ लज्जित। शरमिन्दा।
शर्मा—पु०[सं० शर्म्मन् दीर्घ, नलोप] ब्राह्मणों के नाम के अन्त में लगने वाली उपाधि। जैसे—पं० पद्मसिंह शर्मा।
शर्माऊ, शर्मालू—वि०=शरमीला।
शर्माना —अ०, स०=शरमाना।

शर्माशर्मी—अ० य०=शरमा-शरमी।

शर्मिंदगी—स्त्री०=शरमिंदगी।

शर्मिंदा—वि०=शरमिंदा।

शर्मिष्ठा—स्त्री०[सं० शर्म्म+इष्ठन्—टाप्] दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या जो शुक्राचार्य की कन्या देवयानी की सखी थी।

शर्मीला—वि०=शरमीला।

शर्य—पु० [सं० √ शृ (हिंसा करना)+यत्] १ योद्धा। २. तीर। बाण। ३ उँगली।

शर्यण—पु०[सं० शर्य्य √ नी (ढोना)+ड]वैदिक काल का एक जनपद जो कुरुक्षेत्र के अंतर्गत था।

शर्यणावत्—पु० [सं०शर्य्यन√अव् (रक्षा करना)+क्विप् तुक्] शर्य्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर जो तीर्थ माना जाता था।

शर्या—स्त्री० [सं० शर्य्य—टाप्] १. रात्रि। रात। २ उँगली। ३ छोटा तीर।

शर्र—पु० [फा०]१ शरारत। २ झगडा-फसाद। ३ बुराई। खराबी।

शर्व—पु० [सं०√शृ (हिंसा करना)+व, शर्व+अच्] १ शिव। महादेव। २. विष्णु।

शर्वपत्नी—स्त्री०[सं० ष० त० स०]१ पार्वती। २ लक्ष्मी।

शर्वपर्वत—पु० [सं० ष० त० स०] कैलाश (पर्वत)।

शर्वर—पु० [सं० √ शर्व्+अरन्] १ अधकार। अँधेरा। २ सन्ध्या। ३ कामदेव।

शर्वरी—स्त्री०[सं०√शृ+वनिप्—ङीप्] १ रात। रात्रि। २ सन्ध्याकाल। ३ हलदी। ४ औरत। स्त्री। ५ वृहस्पति के साठ सवत्सरो मे से चौतीसवाँ सवत्सर।

शर्वरीकर—पु०[सं० शर्वरी√कृ (करना)+ट-अच्-वा] विष्णु।

शर्वरी-दीपक—पु०[सं० ष० त० स०] चन्द्रमा।

शर्वरीपति—पु०[सं० ष० त० स०]१ चन्द्रमा। २ शिव।

शर्वरीश—पु०[सं० ष० त० स०] चन्द्रमा।

शर्वला—स्त्री०[सं०√ शर्व+घञ्√ला+क-टाप्] तोमर नामक अस्त्र।

शर्वाक्ष—पु०[सं०ब० स०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

शर्वाचल—पु०[सं० ष० त० स०] कैलाश।

शर्वाणी—स्त्री०[सं० शर्व+ङीष्—आनुक्] पार्वती।

शर्वारीक—वि०[सं०√शृ (हिंसा करना)+ईकन्]१ हिंसक। २ खल। दुष्ट।

पु० १ अग्नि। २ घोडा।

शलंग—पु०[सं० √शल्+अङ्गच्, ब०स०]१ लोकपाल। २. एक प्रकार का नमक।

शल—पु० [सं०√शल् (गमनादि)+अच्]१ ब्रह्मा। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३. कंस का एक अमात्य। ४ ऊँट। ५ भाला। ६ साही का काँटा। ७ दे० 'शल्यराज'।

शलक—पु०[सं० शल+वुन्—अक]१. मकडी। २ ताड का पेड। ३. साही का काँटा।

शलगम—पु०[फा० शलजम] एक प्रकार का कद जो चरी के काम आता है तथा जिसकी तरकारी भी बनाई जाती है।

शलभ—पु० [सं०√शल् (गमनादि)+अभच्] १ टिड्डी। शरभ। २ फतिगा। ३ छप्पय के ३१वे भेद का नाम। इसमे ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण या मात्राएँ होती है।

शलवार—स्त्री०=सलवार।

शलाक-धूर्त्त—पु०[सं० तृ० त० स०] वह जो शलाकाओ आदि की सहायता से पक्षियो को पकडता हो। चिडीमार। बहेलिया।

शलाका—स्त्री०[सं० शल+आकन्—टाप्]१ धातु, लकडी आदि की लबी सलाई। सलाखा। सीख। २ आँख मे सुरमा लगाने की सलाई। ३ घाव की गहराई आदि नापने की सलाई। ४ जूआ खेलने का पासा। ५ काठ का छोटा टुकडा जिसकी सहायता से निर्वाचन मे मत लिया जाता था। (बैलट) ६ अस्थि। हड्डी। ७ तिनका। तृण। ८ मैना पक्षी। ९ मदन वृक्ष। १० सलाई का पेड। सल्लकी। ११ वच। १२ पैर की नली की हड्डी।

शलाकापत्र—पु० [ष० त० स०] प्राचीन भारत की शलाका के स्थान पर आज-कल प्रयुक्त होनेवाला वह पत्र जिसके द्वारा चुनाव के समय लोग अपना मत प्रकट करते है। (बैलट पेपर)

शलाकापुरुष—पु०[सं० मध्यम० स०] बौद्धो के ६३ दैवपुरुषो मे से एक।

शलाका मुद्रा—स्त्री०[सं०] सभ्यता के आरभिक काल की वे मुद्राएँ या सिक्के जो छोटे-छोटे धातु खडो के रूप मे होते थे और धातुओ के छड या शलाकाएँ काटकर बनाये जाते थे। (बेन्टवार क्वायन)

विशेष—ऐसे सिक्को पर प्राय कोई अक या चिह्न नही होता था।

शलाखा—स्त्री०=सलाख।

शलातुर—पु० [सं०ब०स०] एक प्राचीन जनपद जो पाणिनि का निवास-स्थान था।

शली—स्त्री० [सं० √ शल् (हिंसा करना)+अच्—ङीष्] साही (जतु)।

शलीता—पु०=सलीता।

शलूका—पु०[फा०सलूक] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती जो प्राय. स्त्रियाँ पहना करती है।

शल्क—पु०[सं० शल+क]१ टुकडा। खड। २. कुछ विशिष्ट फलो का ऊपरी कडा छिलका। ३ मछली के शरीर पर का छिलका, जो कडा और चमकीला होता है। (स्केल)

शल्कल—पु० [सं०√ शल् (सवरण करना आदि) +कलन्]=शल्क।

शल्कली—पु०[सं० शल्कल+इनि शल्कलिन्] मछली।

शल्मलि—पु०[सं० √शल्+मलच्-इनि, इल् वा] शाल्मली वृक्ष। सेमल।

शल्य—पु० [सं०√ शल+यत्]१ मद्र देश के एक राजा का नाम जो द्रौपदी के स्वयवर के समय भीमसेन के साथ मल्लयुद्ध मे हार गये थे। २ एक प्रकार का तीर। ३ फोडो आदि की चीर-फाड के द्वारा की जानेवाली चिकित्सा। ४ हड्डी। ५ आँख मे सुरमा लगाने की सलाई। ६ छप्पय के ५६ वे भेद का नाम। इसमे १५ गुरु १२२ लघु कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ७ मैनफल। ८ सफेद खैर। ९ शिलिंग मछली। १० लोध। ११ बेल का पेड। १२ साही नामक जन्तु। १३ साग। बरछी। १४ दुर्वचन। १५ पाप। १६ वे पदार्थ जिनसे शरीर मे किसी प्रकार की पीड़ा या रोग आदि उत्पन्न होता है

शल्यकंठ—पु०[स० ब० स०] साही जतु।

शल्यक—पु०[स० शल्य√कै+क]१ साही नामक जन्तु। २ मैनफल। ३. खादिर। खैर। ४ बेल का पेड या फल। ५. लोध। ६. एक प्रकार की मछली।

वि० १. शल्य-सबधी। २. शल्य चिकित्सा या शल्य कर्म से सबध रखनेवाला। (सर्जिकल)

शल्य-कर्तन—पु० [स० ब० स०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जनपद।

शल्य-कर्त्ता—पु०[स०√शल्य√कृ+तृच्] शल्यकार।

शल्यकार—पु० [स० शल्य √कृ+अण्] वह जो शल्य-चिकित्सा का अच्छा ज्ञाता हो; या शल्य-चिकित्सा करता हो। (सर्जन)

शल्यकारी—स्त्री० [स०] शल्य अर्थात् चीर-फाड करके चिकित्सा करने की क्रिया। (सर्जरी)

शल्यकी—स्त्री०[स० शल्यक—ङीप्] साही।

शल्य-क्रिया—स्त्री०[स० ष०त०स०] शारीरिक विकार को दूर करने के लिए की जानेवाली चीर-फाड। (सर्जरी)

शल्य-चिकित्सक—पु०[स०]=शल्यकार।

शल्य-चिकित्सा—स्त्री० [स०]=शल्यकारी।

शल्यज नाड़ी व्रण—पु०[स० नाडी-व्रण-ष० त० स० शल्यज—नाडी व्रण कर्म०स०] नाडी मे होनेवाला एक प्रकार का व्रण या घाव जो नाडी मे ककडी या काँटा पहुँच जाने पर होता है।

शल्य-तंत्र—पुं०[स० मध्य म० स०] वह विद्या जिसमे शल्य-चिकित्सा के सब अगो का विवेचन हो।

शल्य-लोम (मन्)—पु०[स० ब० स०] साही।

शल्य-शालक—पु०[स० ष० त० स०]=शल्यकारी।

शल्य-शास्त्र—पु० [स० ष त०] चिकित्सा शास्त्र का वह अग जिसमे शरीर मे गडे हुए काँटों आदि के निकालने का विधान रहता है। (सर्जरी)

शल्या—स्त्री०[स० शल्य—टाप्]१. मेदा नाम की ओषधि। २ नाग वल्ली। ३. विकंकत।

शल्यारि—पु०[स० ष० त० स०] युधिष्ठिर।

शल्योद्धार—पु०[स० ष० त० स०] शरीर मे गडे हुए काँटे, तीर आदि को निकालने का कार्य।

शल्योपचार—पु०[स० मध्य०स०] चिकित्सा क्षेत्र मे, शल्य के द्वारा किया जानेवाला उपचार। चीर-फाड। (ऑपरेशन)

शल्योपचारक—पु०=शल्योपचारी।

शल्योपचारिक—वि०[स० ष० त०] शल्योपचार-सबधी।

शल्योपचारी—पु०[स० शल्योपचार+इनि] वह जो शल्योपचार द्वारा चिकित्सा करता हो। (सर्जिकल आपरेटर)

शल्ल—पु०[स० शल्√ला (लेना)+क—शल+लच् वा]१. चमडा। २. वृक्ष की छाल। ३. मेढक।

वि० शिथिल तथा सुस्त।

शल्लक—पु०[स० शल्ल+कन्]१ शोणवृक्ष। सलई। २. साही नामक जन्तु। ३ शरीर की खाल या चमडा।

स्त्री०[तु०] बकवाद।

शल्लकी—स्त्री०[स० शल्लक—ङीष्]१. साही। २. सलाई का पेड।

शल्व—पु०[शल् + व] शाल्व नामक एक प्राचीन जनपद।

शव—पु [स० √शव् (गमनादि) +अच्]१. जीवनी-शक्ति से रहित शरीर। देह जिसमे से प्राण-पखेरू उड गये हों। लाश। २. लाक्षणिक अर्थ मे ऐसी वस्तु जो अभिष्ट और निर्जीव हो चुकी हो। ३ जल।

शवच्छेद(न)—पु०=शव-छेद (न)

शवछेद (न)—पु०[स० ष०त०]१. वैज्ञानिक अनुसधान के लिए शव का किया जानेवाला शल्योपचार। २. दे० 'शव-परीक्षा'।

शवता—स्त्री०[स० शव + तल्—टाप्]१. शव का भाव। २ निर्जीवता। मुर्दापन।

शव-दाह—पुं०[स० ष० त०] हिन्दुओं मे एक सस्कार जिसमे शव जलाया जाता है।

शव-दूष्य—पु०[स० ष० त०] मृत शरीर पर डाला जानेवाला कफन या चादर। कफन।

शवपान—पु०[स० ब० स०] पुराणानुसार शल्वान प्रदेश का दूसरा नाम।

शव-परीक्षा—स्त्री०[सं० ष० त०] दुर्घटनावश या सन्दिग्ध अवस्था मे मरे हुए व्यक्ति के शव की वह जाँच या परीक्षा जिससे यह जाना जाता है कि मृत्यु आकस्मिक और स्वाभाविक हुई है या किसी के हत्या करने पर हुई है। (पोस्ट मार्टम)

शव-भस्म—पु० [स० ष० त०] चिता की भस्म जो शिव जी शरीर पर लगाते थे।

शव-मंदिर—पुं०[सं० ष० त० स०]१ श्मशान। मरघट। २ समाधि। मकबरा।

शव-यान—पु०[स०ष०त०]१. अर्थी जिसपर शव ले जाते हैं। टिकठी। २. वह सवारी जिसमे मुर्दे ढोये जाते है।

शवर—पु०[सं० शव + अरन् बाहु० शव√रा (लेना)+क वा] [स्त्री० शवरी] शबर। (दे०)

शव-रथ—पु०[स०]=शव-यान।

शवरी—स्त्री०[स० शवर-ङीष्]=शबरी।

शवल—पु०[सं० √शप् (निन्दा करना)+कलन्, प=व]१ चीता। चित्रक। २ जल। पानी।

वि० चित-कबरा। शबल।

शवला—स्त्री०[स० शवल—टाप्] चितकबरी गाय।

शवलित—भू० कृ०[स० शवल+इतच्]=शबलित।

शवली—स्त्री० [स० शवल—ङीप्] चितकबरी गाय।

शव-शयन—पु०[स० ब० स०] श्मशान। मरघट।

शव-समाधि—स्त्री०[स० ष० त०] किसी महात्मा का अथवा कुछ विशिष्ट रोगो के कारण मरे हुए व्यक्ति का शव जल मे प्रवाहित करने अथवा गाडने का एक सस्कार।

शव-साधन—पु०[स० तृ० त०] तत्र मे, शव पर या श्मशान मे बैठकर मत्र जगाने की क्रिया।

शवान्न—पु०[स० उपमि० स०]१. मनुष्य के शव का मास। २ सडा-गला अन्न।

शवासन—पुं०[सं० शव+आसन मध्य० स०] हठयोग में एक प्रकार का

आसन जिसमे मृत व्यक्ति की तरह चित्त लेटकर शरीर के सब अग बिल्कुल ढीले या शिथिल कर दिये जाते है।

शव्य—पु०[स० शव+यत्] वह कृत्य जो शव को अन्त्येष्टि क्रिया के लिए ले जाने के समय होता है।
वि० शव सम्बन्धी। शव का।

शव्वाल—पु०[अ०] दसवाँ अरबी महीना।

शश—पु०[स० √शश् (गमनादि)+अच्]१ खरगोश। २. चन्द्रमा का कलक या लाछन। ३. लोध। ४ कामशास्त्र मे चार प्रकार के पुरुषो मे से ऐसा पुरुष जो सर्वगुण सम्पन्न हो। यह मधुर-भाषी, सत्यवादी, सुशील तथा कोमलाग होता है।
वि० [फा०] छ।
पु० छ की सख्या।

शशक—पु०[स० शश+क] खरगोश।

शशगानी—पु०[फा० शश=छ+गानी?] चादी का एक प्रकार का सिक्का जो फिरोजशाह के राज्य मे प्रचलित था।

शशदर—पु०[फा०] चौसर के पासे मे वह घर जहाँ पहुँच कर गोटी रुक जाती है और इस प्रकार खिलाडी निरुपाय हो जाता है।
वि०१ निरुपाय। २ चकित। ३ हैरान।

शशधर—पु०[स० प० त०]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

शशभृत्—पु०[स०शश√भृ(भरण करना)+क्विप्—तुक] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

शशमाही—वि०[फा०] हर छ. महीने पर होनेवाला। छमाही।

शशमौलि—पु०[स० ब० स०] शिव।

शश-लक्षण—पु०[स० ब० स०] चन्द्रमा।

शश-लाछन—पु०[स० ब० स०] चन्द्रमा।

शश-शृग—पु० [स० ष० त० स०] वैसी ही असभव या अनहोनी बात अथवा कार्य जैसा खरगोश को सीग होना होता है। ('आकाश-कुसुम' की तरह प्रयुक्त)

शश-स्थली—स्त्री०[स० उपमि० स०] गगा-यमुना के बीच का प्रदेश। दोआब।

शशांक—पु०[स० ब० स०]१ चन्द्रमा। २ कपूर।

शशाकज—पु०[म०शशाक√जन् (उत्पन्न होना)+ड] बुध जो चन्द्रमा का पुत्र कहा गया है।

शशांक-शेखर—पु०[स० ब० स०] महादेव। शिव।

शशाक-सुत—पु०[स० प०त० स०] चन्द्रमा का पुत्र बुध (ग्रह)।

शशाकोपल—पु०[स० मध्यम० स०] चद्रकातमणि।

शशा—स्त्री०[शश-टाप्] मादा खरगोश।

शशाद (न)—पु०[स० शश√ अद्(खाना)+ल्यु—अन] बाज नाम का पक्षी।

शशि (शिन्)—पु०[स० शश+इनि] १ चन्द्रमा। इदु। २ मोती। ३ छ की सख्या का वाचक शब्द। ४. छप्पय के ५४वें भेद का नाम। इसमे १७ गुरु और ११८ लघु कुल १३५ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। ५ रगण के दूसरे भेद (।ऽऽ) की सज्ञा।

शशिक—पु०[स० शशि+कन्]१ एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जनपद मे रहनेवाली जाति।

शशिकर—पु०[स० प० त० स०] चन्द्रमा की किरण।

शशि-कला—स्त्री०[स० प० त० स०] १ चन्द्रमा की १६ कलाओ मे से हर एक। २. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ४ नगण और १ सगण होता है।

शशिकात—पु०[स० ब० स०]१ चन्द्रकात मणि। २. कुमुद। कोईं।

शशिखड—पु०[स० प० त० या ब० स०]१ चन्द्रमा की किरण। २. महादेव।

शशिज—पुं०[स० शशि√जन् (उत्पन्न करना)+ड] चन्द्रमा का पुत्र, बुध (ग्रह)।
वि० शशि से उत्पन्न।

शशि-तिथि—स्त्री०[स० प० त० स०] पूर्णिमा। पूर्णमासी।

शशि-दैव—पु०[स० ब० स०] मृगशिरा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देव चन्द्रमा कहे गये है।

शशिधर—पु०[सं० √ धृ+अच् प० त० स०] शिव।

शशिनी—स्त्री०[स०] चद्रमा की १६ कलाओ मे से एक।

शशि-पुत्र—पु०[स० प०त० स०] बुध (ग्रह) जो चन्द्र का पुत्र कहा गया है।

शशिपुष्प—पु०[स० प० त०] कमल। पद्म।

शशि-पोषक—वि० [स० प० त० स०] चन्द्रमा का पोषण करनेवाला।
पु० उजला पाख। शुक्ल पक्ष।

शशि-प्रकाशी—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शशि-प्रभ—वि० [स० ब० स०] चन्द्रमा के समान प्रभावाला।
पु० १. मोती। २ कुमुद। कुईं।

शशि-प्रभा—स्त्री०[स० शशिप्रभ-टाप्] ज्योत्स्ना। चाँदनी।

शशि-प्रिय—पु०[स० प० त० स०]१. कुमुद। कोईं। २. मोती।

शशि-प्रिया—स्त्री०[स० शशिप्रिय—टाप् प० त०] सत्ताइसो नक्षत्र जो चन्द्रमा की पत्नियाँ माने जाते है। (पुराण)

शशि-भाल—पु०[स० ब० स०] महादेव। शकर।

शशि-भूषण—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

शशिभृत्—पु०[स० शशि√भृ (भरण करना)+क्विप्-तुक्] शिव। महादेव।

शशि-मंडल—पु०[स० प० त० स०] चन्द्रमा का घेरा या मडल। चन्द्र-मडल।

शशि-मणि—पु०[स० मध्यम० स०] चन्द्रकात मणि।

शशि-मुख—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० शशिमुखी] शशि सदृश सुन्दर मुखवाला।

शशि-मौलि—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

शशि-रस—पु०[स० प० त० स०] अमृत।

शशि-रेखा—स्त्री०[स० प० त० स०] चन्द्रमा की एक कला।

शशि-लेखा—स्त्री० [स० प० त० स०]१ चन्द्रमा की कला। २ गिलोय। गुडुच। ३ बकुची।

शशि-वदना—वि०[ब० स०] शशि-मुखी।
स्त्री० एक प्रकार का वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण मे १ नगण(।।।) और १ यगण (।ऽऽ) होता है। इसे चौवसा, चडरसा और पादाकुलक भी कहते हैं।

शशि-शाला—स्त्री० [प० त० या फा० शीशा+सं० शाला] शीशों का बना हुआ या बहुत से शीशों से सजा हुआ घर। शीश-महल।

शशि-शेखर—पु० [सं० ब० स०] शिव। महादेव।

शशि-शोषक—वि० [सं० प० त० स०] चन्द्रमा की कलाओं का शोषक। पु० अंधेरा पाख। कृष्णपक्ष।

शशि-सुत—पु० [सं० प० त०] चन्द्रमा का पुत्र, बुध (ग्रह)।

शशि-हीरा—पु० [सं०+हिं०] चन्द्रकांत मणि।

शशी—पु०=शशि।

शशीकर—पु० [सं० शशिकर] चन्द्रमा की किरण।

शशीश—पु० [सं० प० त०] १. शिव। महादेव। २. कार्तिकेय।

शश्वत—वि०=शाश्वत।

शष्कुली—स्त्री० [सं० शष्कुल—ङीप्] १ पूरी, पकवान आदि। २ कान का छेद। ३ सौरी मछली।

शष्प—स्त्री० [सं० शष+पक्] १ नई घास। २ नीली दूब। ३. ज्ञान या बुद्धि का नाश। ४ उपस्थ पर के बाल।

शसन—पु० [सं०√ शस् (वध करना)+ल्युट्—अन] १ बलि के निमित्त पशु का किया जानेवाला वध। २ हत्या।

शसा—पु० [सं० शश] खरगोश। खरहा।

शसि—पु०=शशि।

शसी—पु०=शशि।

शस्त—पु० [सं०√ शंस् (कल्याण करना)+क्त] १ शरीर। बदन। २ कल्याण। मगल।

भू० कृ० १ प्रशस्त। २. प्रशंसित। ३ जो मार डाला गया हो। निहत। ४ आहत। घायल। ५ मांगलिक।

पु० [फा०] १ वह हड्डी या बालों का छल्ला जो तीर चलाने के समय अँगूठे मे पहना जाता था। २ निशाना। लक्ष्य।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

३ दूरबीन की तरह का वह यंत्र जिससे जमीन नापने के समय उसकी सीध देखी जाती है। ४ मछली फंसाने का कांटा। बंसी।

शस्तक—पु० [सं० शस्त+कन्] हाथ मे पहनने का चमडे का दस्ताना। अगुलित्र।

शस्ति—स्त्री० [सं० √शस् (कल्याण करना)+क्तिन्] स्तुति। प्रशंसा। प्रशस्ति।

शस्त्र—पु० [सं० √शस्+ष्ट्रन्] १ कोई ऐसी चीज जिससे लडाई-झगडे या युद्ध के समय शत्रु पर प्रहार किया जाता हो। हथियार। २ लाक्षणिक रूप मे कोई ऐसी चीज या बात जिसके द्वारा विपक्षी या विरोधी को दबाया अथवा मात किया जाता हो। (वेपन) ३. किसी प्रकार का उपकरण या औजार। ४ लोहा। ५ फौलाद। ६ स्तोत्र। ७ कुछ पढकर सुनाना। पाठ।

शस्त्रक—पु० [सं० शस्त्र+कन्] लोहा।

शस्त्र-कर्म (कर्म्मन्)—पु० [सं०] घाव या फोडे मे नश्तर लगाना। फोडों आदि की चीर-फाड का काम। शल्यकारी।

शस्त्र-क्रिया—स्त्री० [सं० प० त० स०] १ शस्त्र-कर्म। २ शल्योपचार।

शस्त्र-गृह—पु० [सं० प० त० स०]=शस्त्रागार।

शस्त्रजीवी (विन्)—पु० [सं० शस्त्र√ जीव् (जीवित रहना)+णिनि शस्त्रजीविन्] योद्धा। सैनिक।

शस्त्रदेवता—पु० [सं० प० त० स०] युद्ध का अधिष्ठाता देवता।

शस्त्रधर—पु० [सं० प० त०] योद्धा। सैनिक।

शस्त्रधारी (रिन्)—वि० [सं० शस्त्र√धृ+णिनि] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद।

पु० १ योद्धा। सैनिक। २. एक प्राचीन देश। ३. सिलहपोश नाम का जन्तु।

शस्त्रपाणि—पुं० [सं० ब० स०] शस्त्रधारी।

शस्त्रभृत—पु० [सं०]=शस्त्रधारी।

शस्त्र-विद्या—स्त्री० [सं० प० त०] १ शस्त्र चलाने का कौशल या ज्ञान। २ यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद, जिसमे सब प्रकार के अस्त्र चलाने की विधियों और लडाई के सपूर्ण भेदों का वर्णन किया गया है।

शस्त्रशाला—स्त्री० [सं० प० त०]=शस्त्रागार।

शस्त्रशास्त्र—पु० [सं० प० त०]=शस्त्रविद्या।

शस्त्रहत चतुर्दशी—स्त्री० [सं० शस्त्र-हत तृ० त०—चतुर्दशी प० त०] गौण आश्विन कृष्ण चतुर्दशी और गौण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी। इन दोनों तिथियों मे उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है, जिनकी हत्या शस्त्रों द्वारा होती है।

शस्त्राख्य—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का केतु। (बृहत्संहिता)

शस्त्रागार—पु० [सं० प० त० स०] १ शस्त्र आदि रखने का स्थान। शस्त्रशाला। शस्त्रालय। सिलहखाना। २ वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के शस्त्र प्रदर्शित किए अथवा सुरक्षित रखे जाते हो।

शस्त्राजीव—पु० [सं० शस्त्र-आ√जीव् (जीवित रहना)+अच् ब० स०] =शस्त्रजीवी।

शस्त्रायस—पु० [सं० मध्यम स० समा०—अच्] ऐसा लोहा जिससे शस्त्र बनाये जाते हैं।

शस्त्रालय—पु० [सं० प० त०]=शस्त्रागार।

शस्त्री—पु० [सं० शस्त्र+इनि शस्त्रिन्] १. वह जो शस्त्र आदि चलाना जानता हो। २ वह जिसके पास शस्त्र हो। ३ छोटा शस्त्र, विशेषत छुरी या चाकू।

शस्त्रीकरण—पुं० [सं० शस्त्र+च्वि√कृ+ल्युट्—अन, दीर्घ] आक्रमण आदि से राष्ट्र की रक्षा के उद्देश्य से सेना तथा निवासियों को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

शस्त्रोपजीवी (विन्)—पु० [सं० शस्त्र-उप√जीव् (जीवित रहना)+णिनि] शस्त्रजीवी। (दे०)

शस्प—पु०=शष्प।

शस्य—वि० [सं०√शस्+ यत] १ प्रशंसनीय। २ बढिया।

पुं० १ नई घास। कोमल तृण। २ वृक्ष का फल। ३ फसल। ४ अन्न। ५ प्रतिभा का नाश या हानि। ६ सद्गुण।

शस्यक—पु० [सं० शस्य+कन्] एक प्रकार का रत्न।

शस्यागार—पु० [सं० प० त० स०] खलिहान।

शहंशाह—पु० [फा०] १ राजाओं का राजा। सम्राट्। २. चक्रवर्ती राजा।

शहंशाही—वि० [फा०] १ शहंशाहों मे होनेवाला। २ शहंशाह द्वारा

किया हुआ। ३ शाहो का सा। शाही। राजसी। जैसे—शह-शाही ठाठ-बाट।

स्त्री०१. शहशाह होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. शहशाह का पद। ३ लेन-देन का खरापन।

शह—पु०[फा० शाह का सक्षिप्त रूप]१ बहुत बडा राजा। बादशाह। २ दूल्हा। वर।

वि० बडा और श्रेष्ठ।

स्त्री०[फा०]१ शतरज के खेल मे कोई मोहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात मे पडता हो।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—लगाना।

२ गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव। जैसे—ये तुम्हारी शह पाकर ही तो इतना उछलते है।

क्रि० प्र०—देना।

३ गुड्डी, पतग या कनकौवे आदि को धीरे-धीरे डोर ढीली करते हुए आगे बढाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

शहचाल—स्त्री०[फा० शह+हिं० चाल] शतरज मे बादशाह की वह चाल जो बाकी सब मोहरों के मारे जाने पर चली जाती है।

शहजादा—पु० [फा० शाहजाद] [स्त्री० शहजादी]१ शाह का बेटा। राजपुत्र। २ युवराज।

शहजादी—स्त्री०[फा० शहजादी] १ राजकुमारी। २ युवराज्ञी।

शहजोर—वि०[फा०] [भाव० शहजोरी] बलवान। ताकतवर।

शहजोरी—स्त्री० [फा०] १. शहजोर होने की अवस्था या भाव। २ बल-प्रयोग। जबरदस्ती।

शहत†—पु०=शहद।

शहतीर—पु०[फा०] लकड़ी का चीरा हुआ बहुत बडा और लबा लट्ठा जो प्राय छत छाने के काम आता है।

शहतूत—पु०[फा०]१ तूत का पेड और उसका फल। २. उक्त वृक्ष की मीठी फली।

शहद—पु०[अ०] एक बहुत प्रसिद्ध मीठा, गाढा और परम स्वादिष्ट तरल पदार्थ जो कई प्रकार के कीडे विशेषत मधुमक्खियाँ अनेक प्रकार के फूलो के मकरन्द से सग्रह करके अपने छत्तो मे रखती है। मधु।

विशेष—यह प्राय सभी प्रकार के रोगो मे गुणकारी माना जाता और सभी अवस्थाओ के प्राणियों के लिए लाभ-दायक माना जाता है।

पद—शहद की छुरी=मीठी छुरी। (देखें)

मुहा०—शहद लगाकर अलग होना=उपद्रव का सूत्रपात करके अलग होना। आग लगाकर दूर होना। **शहद लगाकर चाटना**= किसी निरर्थक पदार्थ को यो ही लिए रहना और उसका कुछ भी उपयोग न कर सकना। (व्यग्य) जैसे—आप अपनी पुस्तक शहद लगाकर चाटिये, मुझे उससे कही अच्छी पुस्तक मिल गई है।

वि० अत्यधिक मीठा।

शहनगी—पु०[अ० शहन] १ शहना होने की अवस्था या भाव। २ शस्य-रक्षक का काम। ३ वह धन जो चौकीदार को देने के लिए असामियो से वसूल किया जाता है।

शहनशीन—पु०[फा०] बहुत बडे आदमियो के बैठने के लिए सबसे ऊँचा या मुख्य आसन।

शहना—पु०[अ० शहन]१ खेत की चौकसी करनेवाला। शस्यरक्षक। २ खेतिहरो से राज-कर उगाहनेवाला अधिकारी। उदा०—राज्य का शहना आया, आठवाँ अश ले गया।—वृन्दावनलाल वर्मा। ३. वह व्यक्ति जो जमीदार की ओर से असामियो को बिना कर दिए, खेत की उपज उठाने से रोकने और उसकी रक्षा के लिए नियुक्त किया जाता है। ४ नगर का कोतवाल।

शहनाई—स्त्री०[फा०]१ बाँसुरी या अलगोजे के आकार का, पर उससे कुछ बडा, मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो प्राय रोशन-चौकी के साथ बजाया जाता है। नफीरी। २ रोशनचौकी।

शहबाज—पु०[फा०] एक प्रकार का बडा बाज पक्षी।

शहबाला—पु०[फा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा उसके पीछे घोडे पर बैठकर वधू के घर जाता है।

शहबुलबुल—स्त्री०[फा०] एक प्रकार की बुलबुल जिसका सारा शरीर लाल, कठ काला और सिर पर सुनहले रग की चोटी होती है।

शहमात—स्त्री०[फा०] शतरज के खेल मे ऐसी मात जिसमे बादशाह को केवल शह या किस्त देकर इस प्रकार मात किया जाता है कि बादशाह के चलने के लिए कोई घर ही नही रह जाता।

शहर—पु०[फा० शह्र] मनुष्यो की बस्ती जो कस्बे से बहुत बडी हो, जहाँ हर तरह के लोग रहते हो और जिसमे अधिकतर बडे पक्के मकान हो। नगर।

शहर-पनाह—स्त्री०[फा०] वह दीवार जो किसी नगर की रक्षा के लिए उसके चारो ओर बनाई जाय। शहर की चार-दीवारी। प्राचीर। नगरकोटा।

शहरी—वि० [फा०] १. शहर से सबध रखनेवाला। शहर का। २ शहर का निवासी। नागरिक। ३ शहरियो का सा।

शहवत—स्त्री० [अ०] १ इच्छा, विशेषत भोग-विलास की इच्छा। २ स्त्री-सभोग के लिए होनेवाली इच्छा। काम-वासना। ३ स्त्री-सभोग। मैथुन।

शहवत परस्त—वि० [अ०+फा०] जिसमे भोग-विलास या स्त्री-सभोग की प्रबल प्रवृत्ति हो।

शह-सवार—वि० [फा०] कुशल घुडसवार।

शहादत—स्त्री० [अ०] १ शहीद होने की अवस्था या भाव विशेषत जहाद मे लडते हुए प्राण देना। २ वध। ३ गवाही। ४ प्रमाण।

शहाना—वि० [फा० शहाना] [स्त्री० शाहानी] १ शाहो का। २ शाहो मे होनेवाला। ३ शाहो जैसा। राजसी। ४ उत्तम। बढिया।

पु० १ कपडों का वह जोडा जो विवाह के समय वर को पहनाया जाता है। २ मुसलमानो मे विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत।

पु० [देश० या फा० शाही से] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

शांतिकलश—पु० [स० मध्यम० स०] शुभ अवसरो पर शाति के निमित्त स्थापित कलश।

शांतिगृह—पु० [स० ष० त०] वह स्थान जहाँ पर यज्ञ की समाप्ति के वाद स्नान करने का विधान होता था।

शांतिद—वि० [स० शाति√दा+क] [स्त्री० शांतिदा] शाति देनेवाला।
पु० विष्णु।

शांतिदाता (तृ)—वि० [स० ष० त०] [स्त्री० शांतिदात्री] शाति देनेवाला।

शांतिदायक—वि० [स० शाति√दा+ण्वुल् अक-युक्] [स्त्री० शांतिदायिका] शाति देनेवाला।

शांतिदायी (यिन्)—वि० [सं०शाति√दा+णिनि-युक्] [स्त्री० शांतिदायिनी] शाति देनेवाला।

शांतिनाथ—पु० [स० व० स०] जैनो के एक तीर्थंकर या अर्हत् का नाम।

शांतिपर्व—पु० [स०√मध्य० स०]महाभारत का बारहवाँ और सब से बडा पर्व जिसमे युद्ध के उपरात युधिष्ठिर की चित्तशाति के लिए कही हुई बहुत सी कथाएँ, उपदेश और ज्ञान-चर्चाएँ हैं।

शांतिपाठ—पु० [स० मध्य० स०] १. किसी मागलिक कार्य के आरभ मे, विघ्न-बाधा दूर करने के लिए, किया जानेवाला धार्मिक पाठ या कृत्य। २ बराबर यह कहते रहना कि शाति रहे, शाति रहे।

शांतिपात्र—पु० [स० मध्यम० स०] वह पात्र जिसमे ग्रहो, पापो आदि की शाति के लिए जल रखा जाय।

शांतिभंग—पु० [सं० ष० त०] १ शात स्थिति मे होनेवाली गडबडी या बाधा। २ ऐसा अनुचित काम या उपद्रव जिससे जन-साधारण के सुख और शातिपूर्वक रहने मे बाधा होती हो। (ब्रीच ऑफ पीस)

शांतिवाचन—पु० [स० मध्यम० स०] शातिपाठ।

शांतिवाद—पु० [स० शाति√वद्+घञ्] [वि० शातिवादी] आधुनिक राजनीति मे वह वाद या सिद्धान्त जिसमे सब प्रकार की सैनिक शक्तियो के प्रयोगों और युद्धो का विरोध करते हुए यह कहा जाता है कि सब राष्ट्रो को शातिपूर्वक रहना और आपसी झगडो को शातिपूर्ण उपायो से निपटाना चाहिए। (पैसिफिज्म)

शांति-वादी—वि० [स०] शातिवाद सबधी। शातिवाद का।
पु० वह जो शातिवाद के सिद्धान्तो का अनुयायी और समर्थक हो। (पैसिफिस्ट)

शांति-सन्धि—स्त्री० [स० मध्य० स०] युद्ध के उपरात युद्ध-रत राष्ट्रो मे होनेवाली वह सधि जिसके द्वारा शाति स्थापित होती और परस्पर मित्रता का व्यवहार आरम्भ होता है। (पीस ट्रीटी)

शांब—पु० [स०]=साब।

शांबर—वि०[स० शबर+अण्]१ शबर दैत्य सबधी। २ साँभर मृग सबधी।
पु० लोध का पेड।

शांबर-शिल्प—पु० [स० कर्म० स०] इन्द्रजाल। जादू।

शांबरिक—पु० [स० शम्बर+ठक्-इक] जादूगर। मायावी।

शांबरी—स्त्री० [स० शाबर-ङीप्] १ माया। इन्द्रजाल। २ जादूगरनी।
पु० १. एक प्रकार का चदन। २ लोध। ३ मूसाकानी।

शांबविक—पु० [स० शबु+ठञ्-इक] शख का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति।

शांबुक—पु० [स० शबु+कन्] घोघा।

शांभर—स्त्री० [स० शभर+अण्] साँभर झील।
पु० साँभर नामक नमक।

शांभव—वि० [स० शभु+अण्] १. शंभु-संबधी। शिव का। २ शभु से उत्पन्न। ३ शिव का उपासक।
पु० १. देवदार। २. कपूर। ३ गुग्गुल। ४ एक प्रकार का विष।

शांभवी—स्त्री० [स० शाभव-ङीप्] १. दुर्गा। २ नीली दूब।

शाइस्तगी—स्त्री० [फा०] शाइस्ता होने की अवस्था या भाव।

शाइस्ता—वि० [फा० शाइस्त] १ शिष्ट तथा सभ्य। २ नम्र तथा सुशील। ३ जिसे अच्छा आचरण या व्यवहार सिखाया गया हो।

शाकंभरी—स्त्री० [स० शाक√भृ (भरण करना)+खच्-मुम्-ङीप्] १. दुर्गा। २ साँभर नगर का प्राचीन नाम।

शाकंभरीय—वि० [स० शाकभर+छ-ईय] साभर झील से उत्पन्न।
पु० साँभर नमक।

शाक—वि० [स० शक+अण्] १ शक जाति सबधी। २ शक राजा का। ३ शक सम्वत् सबधी।
पु० १.वनस्पति। २. विशेषत ऐसी वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती हो। ३ किसी वनस्पति के वे पत्ते जिनकी तरकारी बनाई जाती है। ४ उक्त की बनी हुई तरकारी। ५ सागवान। ६ भोजपत्र। ७ सिरिस। ८. सात द्वीपो मे से छठा द्वीप। ९. शक जाति के लोग। १० एक युग, विशेषत शक राजा शालिवाहन का युग। ११ उक्त के द्वारा चलाया हुआ सवत्। १२ शक्ति।
वि० [अ० शाक] १ भारी। २ दूभर। दुस्सह।
मुहा०—शाक गुजरना=कष्टकर प्रतीत होना। खलना।
३ कष्ट या दुख देनेवाला (काम)।

शाकट—वि० [स० शकट+अण्] १ शकट या गाडी सबधी। २ (वह जो कुछ) गाडी पर लादा गया हो।
पु० १ गाडी खीचनेवाला पशु। २ गाडी पर लादा जानेवाला बोझ। ३ लिसोड़ा। ४ धौ का पेड। ५. खेत।

शाकटायन—पु० [स०शकट+फक्-आयन] १. शकट का पुत्र या वशज। २ एक बहुत प्राचीन सस्कृत वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है। ३ एक दूसरे अर्वाचीन वैयाकरण जिनके व्याकरण का प्रचार जैनो मे है।

शाकटिक—पु०[स० शकट+ठक्-इक] १ सग्गड हाँकनेवाला व्यक्ति। २ गाडीवान।

शाकटीन—पु० [स० शकट+खञ्-ईन] १. गाडी का बोझ। २ बीस तुला या दो हजार पल की एक पुरानी तौल।

शाकद्रुम—पु० [स० मध्यम० स०] १. वरुण वृक्ष। २ सागौन।

शाकद्वीपीय—वि० [स० शाकद्वीप+छ-ईय]शक (द्वीप) का रहनेवाला।
पु० ब्राह्मणो का एक वर्ग जिसे मग भी कहते हैं और शक द्वीप से आया हुआ माना जाता है।

शाक-भक्ष—वि० [स० व० स०] =शाकाहारी।

शाकरी—स्त्री० [सं० शाक√रा (लेना)+क ङीप्]दे० 'शाकारी'।

शाकल—वि० [सं० शकल+अण्] १. शकल अर्थात् अंग या खंड से संबंध रखनेवाला। २ शकल नामक रंग से बना या रँगा हुआ।
पु० १ अंग। खण्ड। टुकड़ा। २ ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३ लकड़ी का बना हुआ जंतर या तावीज। ४ एक प्रकार का साँप। ५ प्राचीन भारत में मद्र जनपद की राजधानी। (आजकल का स्यालकोट नगर)।
शाकलिक—वि० [सं० √शाकल+ठक्–इक] शकल या शाकल संबंधी।
शाकली—पु० [सं० शाकल–ङीप्] एक प्रकार की मछली।
शाकल्य—पु० [सं० शकल+यञ्] एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद की शाखा के प्रचारक थे और जिन्होंने पहले-पहल उसका पद पाठ किया था।
शाकशाल—पु० [सं० शाक√शाल् (सुशोभित होना)+अच्] बकायन। महानिंब वृक्ष।
शाका—स्त्री० [सं० शाक–टाप्] हरीतकी। हड़। हर्रे।
शाकारी—स्त्री० [सं० शकार+अण्–ङीप्] शकों अथवा शाकरों की बोली जो प्राकृत का एक भेद है।
शाकाष्टका—स्त्री० [सं० मध्य० स०] फाल्गुन कृष्ण पक्ष की अष्टमी। (इस दिन पितरों के उद्देश्य से शाकदान किया जाता है।)
शाकाष्टमी—स्त्री० [सं० मध्यम० स०]=शाकाष्टका।
शाकाहार—पु० [सं० ष०, त० स०] अनाज अथवा फल-फूल का भोजन। (मांसाहार से भिन्न)
शाकाहारी—पु० [सं० शाकाहारिन्] वह जो केवल अन्न, फल और साग-भाजी खाता हो; मांस न खाता हो। निरामिषभोजी। (वेजीटेरियन)
शाकिनी—स्त्री० [सं० शाक+इनि–ङीप्] १ शाक अर्थात् साग-भाजी की खेती। २ वह भूमि जिसमें साग-भाजी बोई जाती हो। [सं० शाकिन्–ङीप्] ३ एक पिशाची या देवी जो दुर्गा के गणों में समझी जाती है। डाइन। चुड़ैल।
शाकिर—वि० [अ०] १ शुक्र करने अर्थात् कृतज्ञता प्रकाशित करनेवाला। शुक्रगुजार। २ संतोषी।
शाकी—वि० [अ०] १. शिकायत करनेवाला। २ नालिश या फरियाद करनेवाला। ३. चुगल-खोर।
शाकुंतल, शाकुंतलेय—वि० [सं० शकुंतला+अण्, शकुंतला+ढक्–एय] शकुंतला संबंधी।
पु० शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न राजा भरत।
शाकुतिक—पु० [सं० शकुत+ठञ्-इक] बहेलिया।
शाकुन—वि० [सं० शकुन+अण्] १ पक्षी संबंधी। चिड़ियों का। २ शकुन संबंधी।
पु० १ बहेलिया। २. दे० 'शकुन'।
शाकुनि—पु० [सं० शाकुन+इन] बहेलिया।
शाकुनी—पु० [सं० शाकुन+इन, दीर्घ, नलोप शाकुनिन्] १ मछली पकड़नेवाला। मछुआ। २ शकुन का विचार करनेवाला पंडित। ३ एक प्रकार का प्रेत।
शाकुनेय—वि० [सं० शकुन+ढक्–एय] पक्षी-संबंधी। शकुन संबंधी।
पु० १. बकासुर दैत्य का एक नाम। २. एक प्रकार का छोटा उल्लू।
शाकुल—पु०=शाकुलिक।
शाकुलिक—पु० [सं० शकुल+ठक्–इक] १ मछलियों का झोल या समूह। २ मछुआ। मल्लाह।
शाक्त—वि० [सं० शक्ति+अण्] १. शक्ति-संबंधी। बल-संबंधी। २ दुर्गा-संबंधी।
पु० वह जो तांत्रिक रीति से शक्ति अर्थात् देवी की पूजा करता हो। शक्ति का उपासक, अर्थात् वाम-मार्गी।
शाक्तागम—पु० [सं० ष० त० स०] शाक्तों का आगम या शास्त्र अर्थात् तंत्रशास्त्र।
शाक्तिक—पु० [सं० शक्ति+ठक्–इक] १ शक्ति का उपासक। शाक्त। २ शक्ति (एक प्रकार का भाला) चलानेवाला। भाला-बरदार।
शाक्तीक—वि० [सं० शक्ति+ईकक्] शाक्तिक।
शाक्तेय—पु० [सं० शक्ति+ढक्–एय] शक्ति का उपासक। शाक्त।
शाक्य—पु० [सं० शक+घञ्+यत्–ञ्य वा] १ गौतम बुद्ध के वंश का नाम। २ गौतम बुद्ध।
शाक्यमुनि—पु० [सं० कर्म० स०] गौतमबुद्ध।
शाक्य सिंह—पु० [सं० सप्त० त०] गौतमबुद्ध।
शाक्र—पु० [सं० शक्र+अण्] शक्र (इंद्र) संबंधी।
पु० ज्येष्ठा नक्षत्र जिसके अधिपति इंद्र माने जाते हैं।
शाक्री—स्त्री० [सं० शक्र-ङीप्] १ दुर्गा। २ इन्द्राणी।
शाक्वर—पु० [सं०√शक्+ष्वरच्-अण्] १ इन्द्र। २ इन्द्र का वज्र। ३ साँड। ४ प्राचीन आर्यों का एक संस्कार।
शाख—पुं० [सं० √शाख् (व्याप्त होना)+अच्] कृत्तिका का पुत्र, कार्तिकेय। २ भाँग। ३. करज।
स्त्री० [सं० शाखा से फा०] १. वृक्ष की शाखा। डाली।
मुहा०—(किसी बात में) शाख निकालना=व्यर्थ दोष या भूल निकालना।
२ किसी वस्तु, संस्था आदि का वह अंग या विभाग जो उसके संबंध के अथवा उसकी तरह के कुछ काम करता हो। शाखा। ३ पशु का सींग। ४ शरीर का दूषित रक्त निकालने का सींग का उपकरण। सिंगी। ५ किसी बड़ी चीज के साथ लगा हुआ छोटा खंड या टुकड़ा। ६. नदी आदि की बड़ी धारा में से निकली हुई छोटी धारा। शाखा।
शाखदार—वि०[फा०] १. शाखाओं से युक्त। २ सींगवाला (पशु)।
शाखसाना—पुं० [फा०] १ झगड़ा। विवाद। २ तर्क-वितर्क। बहस। ३. किसी काम या बात में निकाला जानेवाला व्यर्थ का दोष। ४. किसी बात का कोई विशिष्ट अंग या पक्ष। ६ ईरान में फकीरों का एक फिरका जो अपने आप को घायल कर लेने की धमकी देकर लोगों से पैसे लेते हैं।
शाखा—स्त्री० [सं०] १ वृक्षों आदि के तने से इधर-उधर निकले हुए अंग। टहनी। डाल। २ किसी मूल वस्तु से इसी रूप में या इसी प्रकार के निकले हुए अंग। जैसे—नदी की शाखा।
मुहा०—(किसी की) शाखाओं का वर्णन करना=(क) गुण, महत्त्व आदि का वर्णन करना। उदा०—साखा बरनै रावरी द्विजवर ठौरे ठौर।—दीनदयाल। (ख) शाखोच्चार करना।
३ किसी मूल वस्तु के वे अंग जो दूर रहकर भी उसके अधीन और उसके अनुसार काम करता हो। जैसे—किसी दुकान या बैंक की शाखा।

(ब्राच, उक्त सभी अर्थो के लिए) ४ वेद की सहिताओ के पाठ और क्रम-भेद। ५. किसी विषय या सिद्धान्त के सबध मे एक ही तरह के विचार या मत रखनेवाले लोगो का वर्ग। वर्ग। सम्प्रदाय। (स्कूल) ६ ज्ञान या मत से सबध रखनेवाला किसी विषय की कई भिन्न भिन्न विचार-प्रणालियो या सिद्धान्तो मे से कोई एक। (स्कूल) ७ शरीर के हाथ और पैर नामक अग। ८ हाथो या पैरो की उँगलियाँ। ९ दरवाजे की चौखट। १० घर का किसी ओर निकला हुआ कोना। ११ विभाग। हिस्सा। १२ किसी चीज का किसी प्रकार का अग या अवयव।

शाखा चंक्रमण—पु०[स० प० त०] १ एक डाल पर से दूसरी डाल पर कूद कर जाना। २ बिना किसी एक काम को पूरा किये दूसरे काम को हाथ मे ले लेना। ३ थोडा-थोडा करके काम करना।

शाखाचद्र-न्याय—पु० [स० मध्य० स०] उसी प्रकार मिथ्या बात को सत्य मानने का एक प्रकार का न्याय जैसे शाखा पर चद्र का होना मान लिया जाय।

शाखानगर—पु० [कर्म० स०] उप-नगर।

शाखापित्त—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमे हाथो-पैरो मे जलन और सूजन होती है।

शाखापुर—पु० [स०] उप-नगर।

शाखामृग—पु० [स० प० त०] १ वानर। बदर। २. गिलहरी।

शाखायित—वि० [स० शाखा+क्यड्क्त+] शाखाओ से युक्त।

शाखारंड—पु० [स०] ऐसा ब्राह्मण जो अपनी वैदिक शाखा को छोडकर किसी दूसरी वैदिक शाखा का अध्ययन करे।

शाखालंबी—वि० [स०] वृक्ष की शाखा मे लटकने वाला।
पु० बदरो की तरह का एक जतु जो प्राय वृक्षो की शाखाओ मे लटका रहता है, और अधिक चल-फिर नही सकता।

शाखा-वात—पु० [स० ब० स०] हाथ या पैर मे होनेवाला वात रोग।

शाखाशिफा—स्त्री० [स० प० त० स०] पेड की वह शाखा जिसने जड का रूप धारण कर लिया हो।

शाखी (खिन्)—वि० [स० शाखा+इनि, दीर्घ, नलोप] १ (वृक्ष) जिसकी अनेक शाखाएँ हो। २ (सस्था) जिसके अधीनस्थ कार्यालय अनेक स्थानो पर हो। ३ किसी शाखा से सबधित।
पु० १ पेड। वृक्ष। २ वेद। ३ वेद की किसी शाखा का अनुयायी। ४ पीलू वृक्ष। ५ तुर्किस्तान का निवासी।

शाखीय—वि० [स० शाखा+छ-ईय] १. शाखा सबधी। शाखा का। २ शाखा पर का।

शाखोच्चार—पु० [स० प० त० स०] १ विवाह के समय वर और वधू की ऊपर की पीढियो का सबधित पुरोहित द्वारा होनेवाला कथन। २ किसी के पूर्वजो के नाम ले-लेकर उनपर कलक लगाना या उनके दोष बताना। (व्यग)

शाखोट—पु० [स० ब० स०] सिहोर (पेड)।

शाख्य—वि० [स० शाखा+यत्]=शाखीय।

शागिर्द—पु० [फा०] [भाव० शागिर्दगी] १ चेला। शिष्य। २ सबध के विचार से किसी के द्वारा सिखाया-पढाया हुआ व्यक्ति।

शागिर्द-पेशा—पु० [फा० शागिर्द-पेशा] १ वह जो किसी के अधीन रहकर कोई काम सीखता हो। २ कर्मचारी। अहलकार। ३ खिदमतगार। ४ मकान के पास ही नौकर-चाकर के रहने के लिए बनाई हुई कोठरी।

शागिर्दी—स्त्री० [फा०] १ शागिर्द होने की अवस्था या भाव। शिष्यता। २ टहल या सेवा जो शागिर्द का कर्तव्य है।

शाचिव—पु० [स०] वि० १ प्रबल। २ शक्तिशाली। ३ प्रसिद्ध। ख्यात। १ ऐसा जौ जिसका छिलका या भूसी कूटकर निकाल दी गई हो। २ जौ का दलिया।

शाज—वि० [अ०] १ दुर्लभ। २ अद्भुत। अनोखा।
पद—शाजो नादिर=कभी-कभी यदा-कदा।

शाट—पु० [स०√शट् (डोरा)+अण्] १ कपडे का टुकडा। २ कमर मे लपेटकर पहना जानेवाला कपडा। जैसे—धोती, तहमद आदि। ३ एक प्रकार की कुरती या फतुही। ४ कोई ढीला-ढाला पहनावा। जैसे—चोगा।
पु०—[अ०] खेल मे गेद पर किया जानेवाला जोर का आघात।

शाटक—पु० [स०√शाट् (डोरा)+ण्वुल्-अक] वस्त्र। कपडा।

शाटिका—स्त्री० [स० शाटक+टाप्-इत्व] १ साडी। धोती। २ स्त्रियो की पहनने की धोती या साडी। ३ कचूर।

शाटी—स्त्री० [स० शाट-ङीप्] १ साडी। २ धोती।

शाठ्य—पु० [स० शठ+ष्यञ्]=शठता।

शाण—पु० [स० शण+अण्] १ हथियारो की धार तेज करने का पत्थर या और कोई उपकरण। १ कसौटी नामक काला पत्थर। २ चार माशे की एक पुरानी तौल।
वि० १ सन के पौधे से सबध रखनेवाला। २ सन के रेशो से बना हुआ।
पु० सन के रेशे का बना हुआ कपडा। भँगरा।

शाणवास—पु० [स० ब० स०] १ वह जो सन का बना हुआ वस्त्र पहनता हो। २ जैनो का एक अर्हत्।

शाणाजीव—पु० [स० शाण-आ√जीव्+अच्] सान लगानेवाला कारीगर।

शाणिता—भू० कृ० [स० शाण+इतच्—टाप्] १ (शस्त्र) जिसे सान पर चढाकर चोखा या तेज किया गया हो। २ कसौटी पर कसा हुआ।

शाणी—स्त्री० [स० शाण+ङीप्] १ सन के रेशो से बना हुआ कपडा। भँगरा। २ फटा-पुराना कपडा। फटी पोशाक। ३ वह छोटा कपडा जो यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को पहनने के लिए दिया जाता है। ४ धार तेज करने की सान। ५ कसौटी नामक पत्थर। ६. छोटा खेमा। रावटी। ७ आरा। ८ चार माशे की तौल। ९ सकेत।

शात—भू० कृ० [स०√शो (पतला करना)+क्त] १ सान पर चढाकर तेज किया हुआ। २ पतला। बारीक। ३ दुर्बल। कमजोर।
पु० १ धतूरा। २ सुख। ३. आनद।

शात-कुंभ—पु० [स० शतकुभ+अण्] १ कचनार का वृक्ष। २ धतूरा। ३ कनेर। ४ सोना। स्वर्ण।

शातन—पु० [स०√ शो (पतला करना)+णिच् तट्-ल्युट्-अन] [वि० शातनीय, भू० कृ० शातित] १ सान पर चढाकर धार तेज करना। चोखा करना। २ पेड आदि को काटना या कटवाना। ३ नष्ट करना। ४ छीलना। तराशना। ५ लकडी रँदना।

शात-पत्रक—पु० [स० शतपत्र+अण्–कन्] चद्रिका। चाँदनी। ज्योत्स्ना।
शातला—स्त्री०=सातला।
शातिर—पु० [अ०] १ शतरज का अच्छा खिलाडी। २. बहुत बडा चालाक और चालबाज। परम धूर्त। ३ दूत।
शातोदर—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० शातोदरी] १. पतली कमरवाला। क्षीण-कटि। २ दुबला-पतला।
शात्रव—पु० [स० शत्रु+अण्] १ शत्रुत्व। शत्रुता। २ शत्रु। दुश्मन। ३ शत्रुओ का समूह।
वि० १. शत्रु-सबधी। २ दुश्मन का। ३ शत्रुतापूर्ण।
शाद—पु० [स० √शो (पतला करना)+द] १. गिरना या पडना। पतन। २ घास। ३ कीचड।
शाद-मान—वि० [फा०] [भाव० शादमानी] प्रसन्न। खुश।
शादाब—वि० [फा०] [भाव० शादाबी] १ सिंचित। २ हराभरा। सरसब्ज।
शादियाना—पु० [फा० शादियान] १ खुशी या आनद-मगल के समय बजनेवाले बाजे। २ आनन्द-मगल के समय गाया जानेवाला गीत। ३ वह धन जो किसान जमीदार को व्याह के अवसर पर देते है। ४ बधावा। बधाई।
शादी—स्त्री० [फा०] १ खुशी। प्रसन्नता। आनन्द। २ आनन्द विशेषत व्याह के अवसर पर मनाया जानेवाला उत्सव। ३ विवाह। व्याह।
क्रि० प्र०—करना। —रचना।—होना।
शादी-गमी—स्त्री० [स० फा०+अ०] १. विवाह तथा मृत्यु। २ बोलचाल मे, गृहस्थी मे लगे रहनेवाले जन्म, मृत्यु विवाह आदि सुख-दु ख।
शाद्वल—वि० [स० शाद्+ड्वलच्] हरित तृण या दूब से युक्त। हरी घास से ढका हुआ। हरा-भरा।
पु० १ हरी घास। २ मरु द्वीप। (दे०) ३ साँड। ४ बैल।
शान—पु० [स० शान (तेज करना)+अच्] १ कसौटी। २ सान नामक उपकरण जिससे चाकू, छुरी आदि की धार तेज करते है।
स्त्री० [अ०] १ तडक-भड़कवाली सजावट। ठाट-बाट। जैसे—कल बडी शान से सवारी निकली थी।
पद–शान-शौकत। (देखे)
२ गर्व, महत्त्व, वैभव आदि सूचित करनेवाली चर्चा या स्थिति। जैसे—वह खूब शान से बातें करता (या रहता) है। ३ विशालता। जैसे—(क) उसके मकान की शान देखने योग्य है। (ख) वह सब खुदा की शान है। ४ मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा। मान्यता।
पद—किसी की शान मे=किसी बडे के सबध मे। किसी के प्रति या किसी के विषय मे। जैसे—उसकी शान मे, ऐसी बात नही कहनी चाहिए।
मुहा०–शान गवाँना=शान मे बट्टा लगाना। **शान मारी जाना**=शान पर ऐसा आघात लगना कि वह नष्ट हो जाय। **शान मे बट्टा लगाना**=शान या मान-मर्यादा मे कमी या त्रुटि होना।
शानदार—वि० [अ० शान+फा० दार] [भाव० शानदारी] १ ऐश्वर्यवाला। २ तडक-भडकवाला। ३. उच्च कोटि का तथा प्रशसनीय। **जैसे**—शानदार जीत।
शानपाद—पु० [सं० प० त० स०] १. चन्दन रगडने का पत्थर। २ पारियात्र पर्वत।
शान-शौकत—स्त्री० [अ०] तडक-भड़क। वैभव-सूचक ठाटबाट या सजावट।
शाना—पु० [फा० शान] १ कघा। कघी। २ कन्धा। मोढा।
मुहा०—शाने मे शान छिलना=बहुत अधिक भीड और रेल-पेल होना।
शाप—पु० [स० √शप् (निंदा करना)+घञ्] १. अनिष्ट-कामना के उद्देश्य से किया जानेवाला कथन। २ उक्त की सूचक बात या वाक्य।
विशेष—प्राचीन भारत मे प्राय कुपित या पीडित होने पर ऋषि, मुनि, ब्राह्मण आदि हाथ मे जल लेकर किसी दुष्ट या पीडक के सम्बन्ध मे कोई अशुभ कामना प्रकट करते थे।
२ धिक्कार। भर्त्सना। ३ ऐसी शपथ जिसके न पालन करने पर कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय। बुरी कसम।
शापग्रस्त—भू० कृ० [स० तृ० त०] जिसे किसी ने शाप दिया हो। शापित।
शाप-ज्वर—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का ज्वर जो माता-पिता, गुरु आदि बडो के शाप के कारण होनेवाला कहा गया है।
शापांबु—पु० [स० मध्यम० स०] वह जल जो किसी को शाप देने के समय हाथ मे लिया जाता था।
शापास्त्र—पु० [स० मध्य० स०] शाप रूपी अस्त्र।
शापित—भू० कृ० [स० शाप+इतच्] शाप से पीडित।
शापोत्सर्ग—पु० [स० प० त० स०] किसी को शाप देने की क्रिया।
शापोद्धार—पु० [स० प० त०] शाप या उसके प्रभाव से होनेवाला छुटकारा। शाप-मुक्ति।
शाफरिक—पु० [सं० शफर+ठक्—इक] मछुआ। धीवर।
शाबर—वि० [स० शबर+अञ्] दुष्ट। कपटी।
पु० १. खराबी। बुराई। २. हानि। ३ लोध का पेड। ४ ताँबा। ५. अँधेरा। अन्धकार। ६. एक प्रकार का चदन।
शाबर-तंत्र—पु० [स० मध्य० स०] एक तन्त्र ग्रन्थ जो शिव का बनाया हुआ माना जाता है।
शाबर-भाष्य—पु० [स० तृ० त० स०] मीमासा सूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या।
शाबरी—स्त्री० [स० शाबर–ङीप्] १ शबरो की भाषा। २ एक प्रकार की प्राकृत भाषा।
शाबल्य—पु० [स० शबल+ष्यञ्] शबलता।
शाबाश—अव्य० [फा० शाद बाश=प्रसन्न रहो] एक प्रशसा-सूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह। धन्य हो। क्या कहना।
शाबाशी—स्त्री० [फा०] किसी कार्य के करने पर 'शाबाश' कहना। वाह-वाही। साधुवाद।
क्रि० प्र०—देना।–पाना।–मिलना।
शाब्द—वि० [शब्द+अण्] [स्त्री० शाब्दी] १. शब्द सम्बन्धी। शब्द या शब्दो का। २ वाक्य के शब्दो मे रहने या होनेवाला। ३ साहित्य मे, शब्दो के कारण स्पष्ट रूप से कहा हुआ। कथित 'अर्थ' से भिन्न और उसका उल्टा। जैसे—शाब्दी विभावना या व्यजना। ४ मौखिक। ५ शब्द करता हुआ।
पु० १. शब्द-शास्त्र का पडित। २. वैयाकरण।

शाब्दबोध—पु०[सं० कर्म० स०] शब्दों के प्रयोग द्वारा होनेवाले अर्थ का ज्ञान। वाक्य के तात्पर्य का ज्ञान।

शाब्दिक—वि०[सं० शब्द+ठक्—इक]१ शब्द-संबंधी। शब्द का। २. शब्द करता हुआ। ३ शब्दों के रूप मे होनेवाला। मौखिक। जैसे—शाब्दिक सहानुभूति।

पु० १ शब्दशास्त्र का ज्ञाता। २. वैयाकरण।

शाब्दी—वि० [सं०] १ शब्द-संबंधी। २ केवल शब्दों मे होनेवाला। जैसे—शाब्दी व्यंजना।

शाब्दी व्यंजना—स्त्री०[सं० मध्य० स०] व्यंजना शब्द-शक्ति का एक भेद, जिसमे व्यंजित होनेवाला अर्थ किसी विशेष शब्द तक ही सीमित रहता है, उससे आगे नही बढ़ता।

शाम—वि०[सं० शम+अण्] शम अर्थात् शांति-संबंधी।

पु०[सं० शामन्] सामगान।

वि०,पु०=श्याम।

वि०[फा०] सायं। साँझ।

मुहा०—शाम फूलना=संध्या समय पश्चिम की ललाई का प्रकट होना।

स्त्री०[देश०] लोहे, पीतल आदि धातु का बना हुआ वह छल्ला जो हाथ मे ली जानेवाली छड़ियो,डंडो आदि के निचले भाग में अथवा औजारो के दस्ते मे लकड़ी को घिसने या छीजने से बचाने के लिए लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—जड़ना।—लगाना।

पु० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर मे है।

शामक—वि०[सं० √ शम्+ण्वुल्—अक]१ शमन करनेवाला। २. (दवा) जो कष्ट, घबराहट या पीड़ा कम करे। (सेडीटिव)

शामकरण†—पु०=श्यामकर्ण (घोड़ा)।

शामत—स्त्री०[अ०] १. बदकिस्मती। दुर्भाग्य। २ दुर्दशा करनेवाली विपत्ति।

क्रि० प्र०—आना।—घेरना।—मे पड़ना या फँसना।

पद—शामत का मारा=जिसे शामत ने घेरा हो।

मुहा०—शामत सवार होना या सिर पर खेलना=शामत आना। दुर्दशा का समय आना।

शामत जदा—वि० [अ० शामत+फा० जदा] १ जिस पर शामत या विपत्ति आई हो। विपदग्रस्त। २. कमबख्त। बदनसीब। अभागा।

शामती—वि०[अ० शामत+हि० ई (प्रत्य०)] जिसकी शामत आई हो। जिसकी दुर्दशा होने को हो।

शामन—पु०[सं० शमन+अण्]१ शमन। २ शांति। ३ मार डालना। हत्या।

शामनी—स्त्री० [सं० शामन—ङीप्]१ दक्षिण दिशा जिसके अधिपति यम माने गए है। २ शांति। ३ स्तब्धता। ४ अन्त। समाप्ति। ५ वध। हत्या।

शामा—पु० [?]१ एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ कोढ़ के रोगो के लिए लाभदायक मानी जाती है।

†वि०, स्त्री० श्यामा।

शामित्र—स्त्री०[सं० शमितृ-अण्] १ यज्ञ मे मास पकाने के लिए जलाई हुई अग्नि। २ वह स्थान जहाँ उक्त आग जलाई जाती है।

शामियाना—पु०[फा० शामियान:] एक प्रकार का तंबू जो बाँसो पर रस्सियो की सहायता से टाँगा जाता है।

क्रि० प्र०—खड़ा करना।—गाड़ना।—तानना।—लगाना।

शामिल—वि०[फा०]१ मिला हुआ। सम्मिलित।

पद—शामिल-हाल।

२ इकट्ठा।

शामिल-हाल—वि० [फा० शामिल+अ० हाल] १ जो दुःख, सुख आदि अवस्थाओ मे साथ रहे। साथी। शरीक। २ (परिवार के लोग) जो एक साथ मिलकर रहते हो।

शामिलात—स्त्री०[अ०] संयुक्त संपत्ति। साझी जायदाद।

शामिलाती—वि० [अ० शामिलात] किसी के साथ मिला हुआ। सम्मिलित।

शामी—वि०[श्याम (देश)]१ शाम देश-सम्बन्धी। २ शाम देश मे होनेवाला। जैसे—शामी कबाब।

पु०[देश०]एक प्रकार का लोहे का छल्ला जो छड़ी या लकड़ी की मूठ आदि पर चढ़ाया जाता है।

क्रि० प्र०—जड़ना।—लगाना।

शामी-कबाब—पु० [हिं० शामी+कबाब] टिकियों के रूप मे तवे पर भूना हुआ मास जिसमे मसाले आदि मिलाये गये होते है।

शामूल—पु०[सं० शम+ऊलच्—अण्] ऊनी कपड़ा।

शाम्य—पु०[सं० शाम+यत्] १ शम का धर्म या भाव। शमता। २ भाई-चारा। बन्धुत्व। ३ शांति।

शायक—पु०[सं० √ शो+ण्वुल्—अक—युक्]१ बाण। तीर। शर। २ तलवार।

वि० [अ० शाइक] १ शौक करने या रखनेवाला। शौकीन। २ अभिलाषी। इच्छुक।

शायद—अव्य०[सं० स्यात् से फा०] सन्देह और संभावना सूचक अव्यय। कदाचित्। संभव है कि। जैसे—शायद वह आज आएगा।

शायर—पुं०[अ०] [स्त्री० शायरा]१ वह जो उर्दू फारसी आदि के शेर आदि बनाता हो। २. काव्य-रचना करनेवाला।

शायराना—वि० [अ० शायर+फा० आना (प्रत्य०)]। १. शायर संबंधी। २ शायरो जैसा। जैसे—शायराना तबीयत। ३ कवि-सुलभ।

शायरी—स्त्री०[अ०]१ कविता करने का भाव या कार्य। २ कविता। काव्य।

शायाँ—वि०[फा०] अनुरूप। उपयुक्त।

शाया—वि०[फा०]१ प्रकट। जाहिर। २ छापकर प्रकट किया हुआ। प्रकाशित।

शायिक—वि०[सं० शय्या-ठक्+इक] १ शय्या बनानेवाला। २ सेज सजानेवाला।

शायिका—स्त्री० [सं० शायिक—टाप्] १ शयन। २ निद्रा। ३ दे० 'शयनिका'।

शायित—भू० कृ० [सं० शी (शयन करना)+णिच्—क्त] [स्त्री० शायिता] १ सुलाया या लेटाया हुआ। २ गिराया हुआ।

शायिता—स्त्री० [सं० शायिन्+तल्—टाप्] शयन। सोना।

शायी—वि०[सं० √शी (शयन करना)+णिनि] [स्त्री० शायिनी] शयन करनेवाला। सोनेवाला। जैसे—शेषशायी भगवान्।

शारंग—पु०=सारंग।

शारंगक—पु०[सं० शारंग+कन्] एक प्रकार का पक्षी।

शारंग-धनुष—पु०[सं० ब० स०]१. सारंग नामक धनुष से सुशोभित अर्थात् विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

शारंगपाणि—पु०[सं० ब० स०]१ हाथ मे सारंग नामक धनुष धारण करनेवाले; विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. रामचन्द्र।

शारंग-पानी†—पु०=शारंगपाणि।

शारंग-भृत्—पुं०[सं० शारंग√भृ (रखना)+क्विप्—तुक्] १. सारंग धनुष को धारण करनेवाले विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शारंगवत—पु० [सं० शारंग+मतुप्—म=व] कुश वर्ष नामक देश।

शारंगष्टा—स्त्री०[सं० शारंग, स्था (ठहरना)+क—टाप्] १. काक जघा। २ मकोय। ३ गुजा। घुंघची।

शारंगी—स्त्री०[सं० शारंग-ङीप्] सारंगी नामक बाजा।

शार—वि०[सं० √शृ+घञ्]१ चितकबरा। कई रंगों का। २ पीला। ३ नीले-पीले और हरे रंग का।

पु०१ एक प्रकार का पासा। २ वायु। हवा। ३ हिंसा।

स्त्री० कुश। कुशा।

शारअ—पु०[अ० शारिअ] १. बडी सडक। राजमार्ग। २ लोगों को धर्म का मार्ग बतलानेवाला। धर्मशास्त्री।

शारक—स्त्री०[फा० मिलाओ सं० शारिका] मैना।

शारणिक—वि०[सं० शरण+ठक्-इक]१ शरण देनेवाला। २. शरण-चाहनेवाला। शरणार्थी।

शारद—वि०[सं० शरद्+अण्]१. शरद्-संबंधी। २ शरद ऋतु मे होनेवाला। ३ नवीन। ४ वार्षिक। ५ शालीन।

पु० १ वर्ष। साल। २ बादल। मेघ। ३ सफेद कमल। ४ मौलसिरी। ५ कांस नामक तृण। ६ हरी मूंग। ७. एक प्रकार का रोग।

शारदा—स्त्री०[सं० शारद—टाप्] १. सरस्वती। २. भारत की एक प्राचीन लिपि जो दसवीं शताब्दी के लगभग पंजाब और कश्मीर मे प्रचलित हुई थी। आज-कल की कश्मीरी, गुरुमुखी और टाकरी लिपियाँ इसी से निकली है। ३ एक प्रकार की वीणा। ४ दुर्गा। ५. ब्राह्मी। ६ अनतमूल।

शारदाभरण—पुं०[सं०ब०स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

शारदिक—पु०[सं० शरद्+ठञ्-इक]१ शरद् ऋतु मे होनेवाला ज्वर। २. शरद् की धूप। ३. श्राद्ध। ४ बीमारी। रोग।

शारदी—स्त्री० [सं० शारद—ङीप्] १ जलपीपल। २ छतिवन। सप्तपर्णी। ३ आश्विन मास की पूर्णिमा।

पु० [सं० शारदिन्]१. अपराजिता। २ सफेद कमल। ३ अन्न, फल आदि।

वि० शरद काल का।

शारदीय—वि०[सं० शरद+छण्—ईय] [स्त्री० शारदीया] शरद्काल का। शरद् ऋतु-सम्बन्धी। जैसे—शरदीय नवरात्र।

शारदीय महापूजा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] शरद्काल में होनेवाली दुर्गा की पूजा। नवरात्रि की दुर्गापूजा।

शारद्य—वि०[सं० शारद्+यत्] शरद् काल का। शरद् ऋतु-सम्बन्धी।

शारि—पु०[सं० √शृ (हिंसा करना)+इञ्]१. पासा, शतरंज आदि खेलने की गोटी। मोहरा। २ चौसर, शतरंज आदि की बिसात। ३ कपट। छल। ४. मैना पक्षी। ५. एक प्रकार के गीत।

शारिका—स्त्री०[सं० शारि+कन्—टाप्]१. मैना चिड़िया। २ चौसर, शतरंज आदि के खेल। ३ सारंगी बजाने की कमानी। ४ वीणा, सारंगी आदि कोई बाजा। ५ दुर्गा।

शारिका कवच—पु० [सं० ष० त०] दुर्गा का एक कवच जो रुद्रयामल तन्त्र मे है।

शारित—वि०[सं० शारि+इतच्] चित्र-विचित्र। रंग-बिरंगा।

शारिपट्ट—पु० [सं०ष०त०स०] शतरंज, चौसर आदि खेलने की बिसात।

शारिफल—पु०[सं० ष० त० स०]=शारिपट्ट।

शारिवा—स्त्री०[सं० शारि√वन् (पृथक् करना)+ड—टाप्] १. अनतमूल। सालसा। दुरालभा। २ जवासा। धमासा।

शारी—स्त्री०[सं० शारि—ङीष्]१. कुश नामक घास। २ एक प्रकार का पक्षी। ३. मूंज।

पु०१. गोटी। मोहरा। २. गेंद।

शारीर—वि०[सं० शरीर+अण्] १. शरीर-संबंधी। शरीर का। २ शरीर से उत्पन्न।

पु० १. जीवात्मा। २. सांड। ३. गृह। मल।

शारीरक—वि०[सं० शरीर+कन्—अण्]१. शरीर से उत्पन्न। २ शरीर-संबंधी। ३ शरीर मे स्थित।

पु० १. आत्मा। २ आत्मा-सम्बन्धी अन्वेषण।

शारीरक भाष्य—पु०[सं० मध्य० स०]शंकराचार्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

शारीरक-सूत्र—पु० [सं० कर्म० स०] वेदव्यास कृत वेदात सूत्र।

शारीरकीय—वि०[सं० शारीरक+छ—ईय]=शारीरक।

शारीरतत्त्व—पु० [सं० शरीर-तत्व-ष० त० स०+अण्] शरीर-विज्ञान।

शारीर विज्ञान(शास्त्र)—पु० [सं० ब० स०] वह शास्त्र जिसमे जीवों की शारीरिक रचना और उनके बाहरी तथा भीतरी सभी अगों, अस्थियों, नाडियों और उनके कार्यों आदि का विवेचन होता है। (एनाटमी)

शारीर-विद्या—स्त्री०[सं० मध्यम० स०]=शारीर विज्ञान।

शारीरविधान—पु०[सं० ब० स०]१. वह शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार से उत्पन्न होते और बढते है। २ शारीर विज्ञान।

शारीरव्रण—पु०[सं० ब० स०] वह रोग जो वात, पित्त, कफ और रक्त के विकार से उत्पन्न हो।

शारीर शास्त्र—पु०[सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे प्राणियों और वनस्पतियों के अगों और उपागों का व्यवच्छेदन करके उनकी क्रियाओ आदि का अध्ययन किया जाता है। (एनाटमी)

शारीरिक—वि० [सं० शरीर+ठक्—इक] १ शरीर-संबंधी। २ भौतिक।

शारुक—वि०[स०√ शृ (हिंसा करना)+उकञ्] हत्या या नाश करनेवाला।

शार्ग—पु० [स० शृंग+अण्] १. धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ मे रहनेवाला धनुष। ३ अदरक। आदी। ४ एक प्रकार का साग। ५. धनुर्धारी।

वि०१ शृंग-सम्बन्धी। शृंग का। २ सींग का बना हुआ।

शार्गक—पु०[स० शार्ङ्ग+कन्]पक्षी। चिड़िया।

शार्गधन्वा (न्वन्)—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ वह जो धनुष चलाता हो। कमनैत।

शार्गधर—पु०[स० ष० त० स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

शार्गपाणि—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ वह जो धनुष चलाता हो। कमनैत।

शार्गभृत्—पु०[स० शार्ङ्ग√ भृ+क्विप्—तुक] विष्णु।

शार्गवैदिक—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का स्थावर विष।

शार्गेष्टा—स्त्री० [स० शार्ङ्ग√ स्था (ठहरना)+क—टाप्] १. काक जंघा। २ घुंघची।

शार्गेष्ठा—स्त्री० [स०] १ महाकरज। २ लता करज।

शार्गायुध—पु०[स० ब० स०] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ धनुर्धारी। कमनैत।

शार्गी (ङ्गिन्)—पु० [स० शार्ङ्ग+इनि] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ धनुर्धर। कमनैत।

शार्क—पु०[स० शृ+कन्—अण्] चीनी। शर्करा।

स्त्री० [अ०] एक प्रकार की बड़ी हिंसक मछली जो समुद्रो मे रहती है।

शार्कक—पु०[स० शार्क+कन्] १ दूध का फेन। दुग्धफेन। २. चीनी का डला। ३. मास का टुकडा।

शार्कर—पु० [स० शर्करा+अण्] १. दूध का फेन। २. लोध। ३ ककरीली या पथरीली जगह।

वि०१ जिसमे ककड, पत्थर आदि हो। २ शर्करा या चीनी से बना हुआ।

शार्करक—पु०[स० शार्कर+कन्] १ वह स्थान जो ककडो और पत्थरो से भरा हो। ककरीली-पथरीली जगह। २ चीनी बनाने का स्थान। खडसार।

वि० ककड, पत्थर आदि से भरा हुआ।

शार्करमय—पु०[स० शार्कर-मयट्] प्राचीन काल की एक प्रकार की शराब जो चीनी और जौ से बनाई जाती थी।

शार्करी-धान—पु० [स० ब० स०] एक प्राचीन देश जो उत्तर दिशा मे था।

शार्करीय—वि०[स० शर्करा+ छण्—ईय] शार्करीक।

शार्दूल—पु० [स० √शृ (हिंसा करना)+उलच्-दुकुच निपा सिद्ध] १ चीता। बाघ। २ केसरी। सिंह। ३ राक्षस। ४ शरभ नामक जंतु। ५ एक प्रकार का पक्षी। ६. यजुर्वेद की एक शाखा। ७. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ८ दोहे का एक भेद जिसमे ६ गुरु और ३६ लघु मात्राएँ होती हैं।

वि० सर्वश्रेष्ठ।

शार्दूल-कंद—पु०[स० ब० स०] जगली प्याज।

शार्दूलज—पु० [स० शार्दूल√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] व्याघ्र-नख नामक गंध-द्रव्य।

वि० शार्दूल से उत्पन्न।

शार्दूल-ललित—पु० [स०ब०स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक पद अठारह अक्षरो का होता है और उनका क्रम इस प्रकार है—म, स, ज, स, त, स।

शार्दूल-लसित—पु०[स० ब० स०]=शार्दूलललित।

शार्दूल-वाहन—पु०[स० ब० स०] एक जिन। (जैन)

शार्दूल-विक्रीडित—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक पद १९ अक्षरो का होता है। उनका क्रम इस प्रकार है—म, स, ज, स, त, त, एक गुरु।

शार्यात—पु०[स० शर्यात्+अण्] १. वैदिक काल के एक प्राचीन राजर्षि। २ एक प्रकार का साग।

शार्वर—पु०[स० शर्वर+अण्] बहुत अधिक अधकार।

शार्वरिक—वि०[स० शर्वरी+ठक्—इक] रात्रि सबधी। रात का।

शार्वरी—स्त्री० [स० शर्वरी+अण्—ङीप्] १ रात। २. लोध।

पु०[स० शार्वरिन्] बृहस्पति के साठ सवत्सरो मे से ३४वाँ संवत्सर।

शालंकटाकह—पु० [सं०] सुकेशी राक्षस का एक नाम जो वामन पुराण के अनुसार विद्युत्केशी का पुत्र था।

शालंकायन—पु०[स० शलक+फक्—आयन] १ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २ शिव का नंदी।

शालंकायनि—पु०[स० शालकायन+ङीप्] एक प्राचीन गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

शालंकि—पु०[स० शलक+इञ्] पाणिनि।

शालंकी—स्त्री० [स० शालक—ङीप्] १ गुडिया। २. कठ-पुतली।

शाल—पु० [स० √शल् (प्रशस्त होना)+घञ्] १. साखू (वृक्ष)। २. पेड। वृक्ष। ३. एक प्राचीन नद। ४. एक प्रकार की मछली। ५. धूना। राल। ६. राजा शालिवाहन का एक नाम।

स्त्री० [फा०] ओढने की एक प्रकार की गरम चादर।

शालक—पु०[स० शाल+कन्] १. पटुआ। २. मसखरा। हँसोड़।

शाल-कल्याणी—स्त्री०[स० उपमि० स०] एक प्रकार का साग जो चरक के अनुसार भारी, रूखा, मधुर, शीतवीर्य और पुरीष-भेदक होता है।

शालग्राम—पु०[स० ब० स०] गोलाकार बटिया के रूप मे गडक नदी मे मिलनेवाले पत्थर के टुकडे जिनकी पूजा की जाती है।

शालज—पु०[स० शाल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] एक प्रकार की मछली।

वि० शाल (साखू) से उत्पन्न या बना हुआ।

शाल-दोज—पु०[फा०] वह जो शाल के किनारे पर बेल-बूटे आदि बनाता हो।

शाल-निर्यास—पु०[सं० ष० त० स०] १. राल। धूना। २. साल या सर्ज नामक वृक्ष।

शाल-पत्रा—स्त्री०[स० ब० स०] शालपर्णी।

शालपर्णिका—स्त्री० [स० व० स०] १ मुरा नामक गध द्रव्य। २ एकागी नामक वनस्पति।

शालपर्णी—स्त्री० [स० व० स०] सरिवन नामक वृक्ष।

शालवाफ़—पु० [फा०] [भाव० शालवाफी] १ शाल या दुशाला बुननेवाला। २. लाल रग का एक प्रकार का रेशमी कपडा।

शालवाफी—स्त्री० [फा०] १. दुशाला बुनने का काम। शालबाफ का काम। २. शाल बुनने की मजदूरी।

शाल-भंजिका—स्त्री० [स० शाला√भज् (बनाना)+ण्वुल्—अक-टाप्, इत्व] १. कठ-पुतली। २ गुड़िया। पुतली। ३. प्राचीन भारत मे, राज-दरवार मे नाचनेवाली स्त्री। ४ रडी। वेश्या।

शाल-भंजी—स्त्री० [स०]=शाल भजिका।

शालभ—पु० [स० शलभ+अण्] विना सोचे-विचारे उसी प्रकार आपत्ति मे कूद पडना जिस प्रकार पतग आग या दीपक पर कूद पडता है।
वि० शलभ-सवधी। शलभ का।

शालमत्स्य—पु० [स० मध्य० स०] शिलिंद नामक मछली।

शाल-युग्म—पु० [स० प० त० स०] दोनो प्रकार के शाल अर्थात् सर्जवृक्ष और विजय सार।

शालरस—पु० [स० प० त० स०] राल। धूना।

शालव—पु० [स० शाल√वल् (जाना आदि)+ड] लोध्र। लोध।

शालवानक—पु० [स० व० स०] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

शालवाहन—पु० [स० व० स०]=शालिवाहन।

शालसार—पु० [स० प० त० स०] १. हीग। हिंगु। २ धूना। राल। ३. शाल या साखू नामक वृक्ष। ४ पेड। वृक्ष।

शाला—स्त्री० [स० √शो (पतला करना)+कालन्—टाप्] १ घर। गृह। मकान। २ किसी विशिष्ट कार्य के लिए वना हुआ मकान या स्थान। जैसे—गो-शाला, नृत्यशाला, पाठशाला। ३ पेड की डाल। शाखा। ४. इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के योग से वननेवाले सोलह प्रकार के वृत्तों मे से एक प्रकार का वृत्त।

शालाक—पु० [स० शाला+कन्] १ झाड-झखाड़। २ झाड़-झखाड से उत्पन्न होनेवाली आग।

शालाकी (किन्)—पु० [स० शालाक+इनि] १ शल्य चिकित्सा करने-वाला। जर्राह। २ नापित। हज्जाम। ३ भाला-बरदार।

शालाक्य—पु० [स० शलाक+ण्य] १ आयुर्वेद की एक शाखा जिसमे कान, आँख नाक, जीभ, मुँह आदि रोगो की चिकित्सा सम्बन्धी विवरण है। २ वह जो आँख, नाक, मुँह आदि के रोगो की चिकित्सा करता हो।

शालाजिर—पु० [स०व०स०] मिट्टी की तश्तरी, पुरवा, प्याला आदि वरतन।

शालातुरीय—वि० [स० शालातुर+छ—ईय] शालातुर प्रदेश सम्बन्धी। पु० १ शालातुर का निवासी। २. पाणिनि।

शाला-मृग—पु० [स० सप्त० त०] १. गीदड। शृगाल। २ कुत्ता।

शालार—पु० [स० शाला√ऋ (गमनादि)+अण्] १. सीढी। २ पिंजरा। ३. दीवार मे लगी हुई खूंटी। ४ हाथी का नख।

शाला-वृक—पु० [स० सप्त० त०] १. कुत्ता। २ वन्दर। ३ बिल्ली। ४ हिरन। ५. गीदड। शृगाल। ६. लोमडी।

शालि—पु० [स० √ शल+इञ्] १. हेमत ऋतु मे होनेवाला धान। जडहन। २. चावल। विशेषत. जडहनी धान का चावल। ३. बास-मती चावल। ४ काला जीरा। ५ गन्ना। ६. गन्ध-विलाव। ७. एक प्रकार का यज्ञ।

शालिक—पु० [स० शालि+कन्] १. जुलाहा। २. कारीगरों की वस्ती। ३. एक तरह का कर।

शालिका—स्त्री० [स० शालि√ कै (होना)+क—टाप्] १. विदारी कद। २. शालपर्णी। ३. घर। मकान। ४. मैना पक्षी।

शालि-धान—पु० [स० शालि धान्य] वासमती चावल।

शालिनी—स्त्री० [सं० शालि√नी (ढोना)+ड, ङीप्] १ गृहस्वामिनी। २. ग्यारह अक्षरो का एक वृत्त जिसमे क्रम से १ यगण, २ तगण और अत मे २ गुरु होते है। ३. पद्मकद। भसीड। ४ मेथी।

शालिपर्णी—स्त्री० [स० व० स०] १. मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ पिठवन। ३ वन-उरदी। ३. सरिवन।

शालि-वाहन—पु० [स० व० स०] एक प्रसिद्ध भारतीय सम्राट् जिन्होने शक सवत् चलाया था।

शालिहोत्र—पु० [स० शालि√ हु (देन-लेन)+ष्ट्रन्] १. घोडा। २ अश्व चिकित्सा। ३ घोडो और दूसरे पशुओ आदि की चिकित्सा का शास्त्र। पशु-चिकित्सा। (वेटेरिनरी)

शालिहोत्री—पु० [स० शालि होत्र+इनि (प्रत्य०)] १. घोडो की चिकित्सा करनेवाला। २ पशु चिकित्सक।

शाली—स्त्री० [स० शाल+अच्—ङीष्] १ काला जीरा। २. शाल-पर्णी। ३. मेथी। ४ दुरालभा।
प्रत्य० [स० शालिन्] [स्त्री० शालिनी] एक प्रत्यय जो सज्ञा शब्दो के अत मे लगकर युक्त, वाला आदि का अर्थ देता है। जैसे—ऐश्वर्यशाली, भाग्यशाली, शक्तिशाली।

शालीन—वि० [स० शाला+ख—ईन] [भाव० शालीनता] १ लज्जाशील। हयावाला। २ विनीत। नम्र। ३. अच्छे आचरणवाला। ४ सदृश्य। समान। ५. शाला-सवधी।

शालीनता—स्त्री० [स० शालीन+तल्—टाप्] शालीन होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शालीनत्व—पु० [स० शालीन+त्व] शालीनता।

शालीय—वि० [स० शाला+छ—ईय] शाला अर्थात् घर सम्बन्धी।

शालु—पु० [स० शाल+उण्] १. भसीड। कमलकद। २ चोरक नामक गन्ध द्रव्य। ३. कसैली चीज। ४ मेढक। ५ एक प्रकार का फल।

शालुक—पु० [स० शल+उकञ्] १. भसीड। पद्मकद। २ जायफल।

शालूक—पु० [स० शाल+ऊकञ्] १ जायफल। जातीफल। २ मेढक। ३. भसीड। ४. एक प्रकार का रोग।

शालेय—पु० [स० शालि+ढक्—एय] १. शालि अर्थात् धान का खेत। २ सौफ। ३. मूली।
वि० १. शाल सम्बन्धी। शाल का। २ शाला अर्थात् घर सम्बन्धी।

शाल्मलि—पु० [स० शाल+मलिच्—ङीप् वा] १. सेमल का पेड।

२ पृथ्वी के सात खण्डो मे से एक जिसकी गिनती नरको मे होती है। ३. पुराणानुसार एक द्वीप।

शाल्मली—स्त्री० [स० शाल्मल—ङीप्] १ शाल्मलि। सेमर। २ पाताल की एक नदी।
पु० गरुड़।

शाल्मली-कंद—पु० [स० ष० त० स०] शाल्मलि की जड़ जो वैद्यक मे ओषधि के रूप मे व्यवहृत होती है।

शाल्मली-फलक—पु० [स० शाल्मली—फल+कन्] एक तरह की लकडी जिस पर रगडकर शल्य तेज किये जाते थे। (सुश्रुत)

शाल्मली वेष्ट—पु० [स०] सेमल के वृक्ष का गोद,। मोचरस।

शाल्व—पु० [स० शाल+व]१ एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का राजा या निवासी।

शाव—पु० [स० √शव् (गमनादि)+घञ्]१. बच्चा विशेषत. पशुओ आदि का बच्चा। शावक। २ मृत शरीर। शव। ३ घर मे किसी के मरने पर होनेवाला अशौच। सूतक। ४. मरघट। मसान। ५ भूरा रग।
वि० १ शव-सम्बन्धी। शव का। २ मृत्यु के फलस्वरूप होनेवाला।

शावक—पु०[स० शाव+कन्]१ किसी पशु या पक्षी का बच्चा। २ झाऊ नामक वृक्ष।

शावर—पु० [स० शव+णिच्—अरन]१ पाप। गुनाह। २ अपराध। कसूर। ३ लोध का पेड।
वि०,पु०=शावर।

शावरक—पु० [स० शावर+कन्] पठानी लोध।

शावरी—स्त्री० [स० शावर+अण्—ङीष्] कौछ। केवाँच।

शाश्वत—वि० [स० शश्वत+अण्] जो सदा से चला आ रहा हो और सदा चला-चलने को हो। नित्य। (एटर्नल)
पु०१ स्वर्ग। २ अतरिक्ष। ३ शिव। ४ वेदव्यास।

शाश्वतवाद—पु०[स० ष० त०] यह दार्शनिक सिद्धान्त कि आत्मा एक रूप, चिरन्तन और नित्य है, उसका न तो कभी नाश होता है और न कभी उसमे कोई विकार होता है। 'उच्छेदवाद' का विपर्याय।

शाश्वतिक—वि०[स० शाश्वत+ठक्—इक]=शाश्वत।

शाश्वती—स्त्री०[स० शाश्वत-ङीप्] पृथ्वी।

शाष्कुल—वि०[स० शष्कुल+अण्] मास-मछली खानेवाला।

शास—पु० [स०√शास् (अनुशासन करना)+घञ्]१. अनुशासन। २ प्रशसा। स्तुति।

शासक—पु० [स० √ शास् (अनुशासन करना) +ण्वुल्—अक] [स्त्री० शासिका] १ वह जो शासन करता हो। शासन-कर्ता। २ किसी शासनिक इकाई का प्रधान अधिकारी। (हाकिम)

शासन—पु० [स०√ शास्+ल्युट्—अन] १ ज्ञान-वृद्धि के लिए किसी को कुछ वतलाना, समझाना या सिखाना। २ किसी को इस प्रकार अपने अधिकार, नियत्रण या वश मे रखना कि वह आज्ञा, नियम आदि के विरुद्ध आचरण या व्यवहार न कर सके। ३ किसी देश, प्रान्त या स्थान पर नियत्रण रखते हुए उसकी ऐसी व्यवस्था करना कि किसी प्रकार की गडवडी या अराजकता न होने पाए। हुकूमत। सरकार। (गवर्नमेंट) ५ वह प्रमुख अधिकारी और उसके मुख्य सहायको का वर्ग जो उक्त प्रकार की व्यवस्था करते हो। हुकूमत। (गवर्नमेट) ६ आज्ञा। आदेश। हुकुम। ७ वह आज्ञा पत्र जिसमे किसी को प्रवध या व्यवस्था करने का अधिकार या आदेश दिया गया हो। ८ कोई ऐसा पत्र जिस पर कोई निश्चय, प्रतिज्ञा या समझौता लिखा गया हो। जैसे—पट्टा, शर्तनामा आदि। ९ राजा या राज्य के द्वारा निर्वाह आदि के लिए दान की हुई भूमि। १० इन्द्रिय-निग्रह। ११ शास्त्र। १२ दड। सजा। १३. कायदा। नियम।
वि० दड देने या नष्ट करनेवाला। (यौ० के अन्त मे) जैसे—(क) पाक-शासन=पाक नामक असुर को मारनेवाला, अर्थात् इन्द्र। (ख) स्मर शासन =कामदेव का नाश करने वाले, अर्थात् शिव।

शासन-कर—पु० [स०] गुप्त-काल मे वह अधिकारी जो राजा या शासन का आदेश लिखकर निम्न अधिकारियों के पास भेजता था।

शासन-कर्ता (तृ)—पु० [स० ष० त० स०] वह जो शासन करता हो। शासक।

शासन-तन्त्र—पु०[स० ष० त० स०]१ वे सिद्धान्त जिनके अनुसार शासन होता या किया जाता हो। २ शासन करने के लिए होनेवाली व्यवस्था।

शासन-धर—पु०[स० ष० त० स०]१ शासक। २ राजदूत।

शासन-निकाय—पु० [स०] वह समिति या निकाय जो किसी सस्था की प्रशासनिक व्यवस्था करने के लिए और सब प्रकार से उसपर नियत्रण रखने के लिए नियुक्त किया गया हो। शासी-निकाय। (गवर्निंग वाडी)

शासन-पत्र—पु०[स० ष० त०] सरकारी हुकुम-नामा। राज्यादेश।

शासन-प्रणाली—स्त्री०[स० ष० त०] किसी देश या राज्य पर शासन करने की कोई विशिष्ट प्रणाली या ढग। शासन-तत्र।

शासन-वाहक—पु०[स० ष० त० स०]१ वह जो राजा की आज्ञा लोगो के पास पहुँचाता हो। २ राजदूत।

शासन-शिला—स्त्री०[स० ष० त०] वह शिला जिसपर कोई राजाज्ञा लिखी हो। वह पत्थर जिस पर किसी शासक की घोषणा, लेख आदि अकित हो।

शासनहर—पु०[स० ष० त०]=शासन-वाहक।

शासनहारी (रिन्)—पु०[स० शासनहारिन्]=शासन-वाहक।

शासना—स्त्री०[स०] दड। सजा।

शासनिक—वि०[स०शासन+ठक्—इक]१ शासन से सबध रखनेवाला। २ सरकारी। राजकीय। ३. शासन-विभाग का। जैसे—शासनिक अधिकारी।

शासनी—स्त्री०[स० शासन-ङीप्] धर्मोपदेश करनेवाली स्त्री।

शासनीय—वि०[स० √शास्+अनीयर] १ जिस पर शासन करना उचित हो। २ जिस पर शासन किया जा सके। ३ दड पाने के योग्य। दडनीय। ४. जिसमे सुधार करना हो या किया जा सके।

शासित—भू० कृ०[सं०√शास (शासन करना)+क्त] [स्त्री०शासिता] १ (प्रदेश) जो शासन के अधीन हो। २ (व्यक्ति) जो नियन्त्रण मे हो। ३ जिसे दड दिया गया हो। दडित।
पु०१ प्रजा। २ निग्रह। सयम।

शासी (सिन्)—वि०[स० √शास् (शासन करना)+णिनि] शासन करनेवाला।

शाहजादा—पु० [फा० शाहजाद] [स्त्री० शाहजादी] बादशाह का लडका। राजकुमार।

शाहजादी—स्त्री० [फा०] १ बादशाह की कन्या। राजकुमारी। २ कमल के फूल के अदर का पीला जीरा।

शाहतरा—पु० [फा०] पित्त पापडा।

शाहदरा—पु० [फा०] किले या महल के आस-पास की बस्ती।

शाहदाना—पु० [फा० शाहदान] १ बहुत बडा मोती। २ भाँग के बीज।

शाहदारू—पु० [फा०] औषधो का राजा अर्थात् भाँग या शराब।

शाहनशीं—पु० [फा०] शह-नशीन।

शाहबलूत—पु०=बलूत (वृक्ष)।

शाहबाज—पु० [फा० शाहबाज] एक प्रकार का बाज।

शाहबाला—पु०=शहबाला।

शाहबुलबुल—स्त्री० [अ० शाह+फा० बुलबुल] एक प्रकार की बुलबुल जिसका सिर काला सारा शरीर सफेद और दुम एक हाथ लबी होती है।

शाहरग—स्त्री० [फा०] वह बडी और सीधी नली जो गले से नीचे की ओर जाती है और जिससे सास लेते है। श्वास नली।

शाहराह—स्त्री० [फा०] १ वह बडा मार्ग जिसपर बादशाह की सवारी निकलती थी। २ बडा और चौडा रास्ता। राजमार्ग। ३ सडक।

शाह सुलेमान—पु० [फा०] हुदहुद पक्षी का मुसलमानी नाम।

शाहाना—वि० [फा० शाहान.] १ शाहो का। २ शाहो का-सा। ३ शाहो के योग्य। ४ बहुत बढिया।

पु०=शहाना। (राज०)

शाहिद—पु० [अ०] शहादत देनेवाला। गवाह।

वि० मनोहर। सुन्दर।

शाही—वि० [फा०] १ शाह का। २. शाह द्वारा रचाया हुआ। ३ शाहो का-सा। ४ राजसी।

स्त्री० १ बादशाह का शासन अथवा राज्य-काल। २ किसी प्रकार का आधिकारिक प्रकार, व्यवहार या स्वरूप। जैसे—नादिरशाही, नौकरशाही।

शिंगरफ—पु० [फा० शगर्फ] इगुर। हिंगुल।

शिंगरफी—वि० [फा० शगर्फी] १ शिंगरफ सबधी। २ शिंगरफ के रग का। लाल। सुर्ख।

पु० उक्त प्रकार का रग।

शिंघाण—पु० [स०√शिघ् (सूघना)+ल्युट्-अन णत्व पृपो० शिघ√नी (ढोना)+ड] १. अन्दर की वायु की जोर से नाक का मल बाहर निकालना। २ लौहमल। मडूर। ३ तराजू की डडी के ऊपर का काँटा या सूई। ४ काँच का बरतन। ५ दाढी। ६ फूला हुआ अडकोश।

शिंघाणक—पु० [स० शिंघाण+कन्] [स्त्री० शिंघाणिका] १ नाक के अन्दर का चेप। २. कफ। बलगम।

शिंघाणी (णिन्)—पु० [स० शिंघाण+इनि] नाक।

शिंघित—भू० कृ० [स० शिघ् (सूंघना)+क्त] सूंघा हुआ। आघ्रात।

शिंघिनी—स्त्री० [स० शिघ+इनि-डीप्] नाक।

शिंजन—पु० [स० शिंज् (आभूषणो आदि की झनकार]+ल्युट्-अन] [वि० शिंजित] १ आभूषणो का होनेवाला शब्द। २ धातु खण्डो के बजने से होनेवाला शब्द।

शिंजा—स्त्री० [स० शिंज् (ध्वनि होना)+अच्-टाप्] १ शिंजन। आवाज। झकार। २ धनुष की डोरी।

शिंजिका—स्त्री० [स०] करधनी।

शिंजित—भू० कृ० [स० शिंज (ध्वनि होना)+क्त] शब्द करता हुआ।

शिंजिनी—स्त्री० [स०√शिंज् (ध्वनि होना)+णिनि -डीप्] १ धनुष की डोरी। चिल्ला। पतचिका। २ करधनी, नूपुर आदि के घुंघरू।

शिंजी (जिन्)—वि० [स०√शिंज् (ध्वनि करना)+णिनि] १ शब्द करनेवाला। २ बजनेवाला।

शिपंजी—पु० [?] अफ्रीका के जगलो मे पाया जानेवाला एक प्रकार का वन-मानुष। चिंपैंजी।

शिंब—पु० [स० शम+डिम्बच् बाहु०] १ फली। छीमी। २ चकवँड। चक्रमर्द।

शिंबा—स्त्री० [स० शिंब-टाप्] १ छीमी। फली। २ सेम। ३ शिंबी धान्य।

शिंबिक—पु० [स० शिंब+टक् इक] मूँगफली।

शिंबिका—स्त्री० [स० शिंबिक-टाप्] १ फली। छीमी। २ सेम।

शिंबिनी—स्त्री० [स० शिंब+इनि-डीप्] १ श्यामा चिडिया। कृष्ण चटक। २ बडी सेम।

शिंबिपर्णी—स्त्री० [स० ब० स०-डीप्] वनमूँग। मुद्गपर्णी।

शिंबी—स्त्री० [सं० शिंब-डीप्] १ छीमी। फली। बौडी। २ सेम। ३ केवाँच। कौंछ। ४ वन-मूँग।

शिंबी धान्य—पु० [स० मध्यम० स०] वह अन्न जिसके दानो मे दो दल हो। द्विदल अन्न। दाल। जैसे—मूँग, मसूर, मोठ, उडद आदि।

शिंशपा—स्त्री० [स० शिंश√पा (रक्षा करना)+क-टाप्] शिंश, √पा (पान करना)+क पृपो० सिद्ध वा] १ शीशम का पेड। २ अशोक वृक्ष।

शिंशुपा—स्त्री०=शिंशपा।

शिंशुमार—पु० [स० शिशु√मृ (मारना)+णिच्-अच्] सूंस नामक जल जन्तु।

शिकंजा—पु० [फा० शिकज] १ कोई ऐसा यत्र जिससे चीजे कसकर दबाई जाती हो। २ जिल्दबदो का एक यत्र जिससे वे बनकर तैयार होनेवाली किताबे दबाकर उनके किनारे काटते हैं। ३ वह तागा जिससे जुलाहे घुमावदार बद बनाते है। ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का यत्र जिसमे अपराधियो को यत्रणा देने के लिए उनके पैर कसकर जकड दिये जाते थे।

मुहा०—(किसी को) शिकजे मे खिंचवाना=(क) उक्त प्रकार के यत्र मे किसी के पैर फँसा कर या और किसी प्रकार बहुत अधिक यत्रणा देना। (ख) बहुत अधिक कष्ट देना।

५ रुई की गाँठें बाँधने के समय उन्हे दबाने का यत्र। पेंच। ६. ऊख तेल आदि पेरने का कोल्हू।

शिकन—स्त्री० [फा०] किसी समतल सतह के दबने, मुडने, बढने, सिकुडने आदि के फलस्वरूप बननेवाला रेखाकार चिह्न।

क्रि० प्र०—आना।—डालना।—निकालना।—पडना।

मुहा०—चेहरे पर शिकन आना=आकृति से असन्तोष, कष्ट आदि व्यक्त होना।

शिकम—पु० [फा०] पेट। उदर।
पद—शिकम परवर=पेटू।

शिकमी—वि० [फा०] १ पेट सबंधी। २ निज का। अपना। ३ किराये, लगान आदि के विचार से जो किसी दूसरे के अन्तर्गत हो। जैसे—शिकमी काश्तकार, शिकमी किरायेदार।
मुहा०—शिकमी देना=किराये, लगान आदि पर ली हुई जमीन किसी दूसरे को किराये या लगान पर देना।

शिकमी काश्तकार—पु० [फा०] ऐसा काश्तकार जिसे जोतने के लिए खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

शिकरा—पु० [फा० शिकर] एक प्रकार का बाज जो दूसरे पक्षियों का शिकार करने के लिए सधाया या सिखाया जाता।

शिकवा—पु० [अ० शिकव] १ शिकायत। उलाहना। २ ग्लानि।

शिकस्त—स्त्री० [फा०] १. भग। २ टूटना। ३ विफलता। ४ पराजय।
क्रि० प्र०—खाना।—देना
स्त्री० [फा० शिकस्त:] उर्दू लिपि की घसीट लिखावट।
वि० टूटा-फूटा।

शिकस्तगी—स्त्री० [फा०] १ टूटे-फूटे हुए होने की अवस्था या भाव। २. तोड-फोड।

शिकस्ता—वि० [फा० शिकस्त] टूटा-फूटा। भग्न।
स्त्री०=शिकस्त (लिपि)।

शिकायत—स्त्री० [अ०] १ किसी के अनुचित या नियम-विरुद्ध व्यवहार के फलस्वरूप मन मे होनेवाला असतोष। २. उक्त असतोष को दूर करने के लिए सबधित अथवा आधिकारिक व्यक्ति से किया जानेवाला निवेदन। ३ किसी के अनुचित काम का किसी के सम्मुख किया जानेवाला कथन। ४ दडित करवाने के उद्देश्य से किसी की किसी दूसरे से कही जानेवाली सही या गलत बात। ५. कोई ऐसा आरभिक या हलका शारीरिक कष्ट जो रोग के रूप मे हो। जैसे—बुखार की शिकायत।

शिकायती—वि० [अ० शिकायत+हिं० ई (प्रत्यय)] १ शिकायत करने वाला (पत्र या लेख)। २. जिसमे किसी की या कोई शिकायत हो।

शिकार—पु० [फा०] १ जगली विशेषत हिंसक पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का कार्य। मृगया। आखेट।
क्रि० प्र०—खेलना।
२ वह जानवर जो उक्त प्रकार से मारा जाय। ३ ऐसे पशु का मास जो खाया जाता हो। गोश्त। ४ भक्ष्य पदार्थ। आहार। भोजन। जैसे—छिपकली को शिकार मिल गया। ५. फँसाया हुआ ऐसा व्यक्ति जिससे लाभ उठाया जा सकता हो।
क्रि० प्र०—बनना।—बनाना।—होना।
६ असामी।

शिकारगाह—स्त्री० [फा०] शिकार खेलने का स्थान।

शिकारबंद—पु० [फा०] वह तस्मा जो घोडे की दुम के पास चारजामे के पीछे शिकार किये हुए जानवर को लटकाने या आवश्यक सामान बाधने के लिए लगाया जाता है।

शिकारा—पु० [फा० शिकार:] कश्मीर मे होनेवाली एक प्रकार की बडी नाव जिसमे पूरी गृहस्थी के सुखपूर्वक रहने की व्यवस्था होती है। (हाउस-बोट)

शिकारी—पु० [फा०] शिकार या आखेट करनेवाला अहेरी।
वि० १ शिकार-सबंधी। २. जिसका शिकार किया जाता हो उसके सबध रखनेवाला। ३ जिससे शिकार किया जाता हो। जैसे—शिकारी राइफल।

शिकोह—पु० [फा० शुकोह] भय।

शिक्थ—पु० [सं० सिच्+थक्—कुत्व पृषो० स=श वा] मोम।

शिक्य—पु० [स० शि+यत्—कुक च] =शिक्या।

शिक्या—स्त्री० [स० शिक्य—टाप्] १ बहँगी के दोनों छोरों पर बँधा हुआ रस्सी का जाल जिस पर बोझ रखते हैं। २ छीका। सिकहर। ३. तराजू की रस्सी।

शिक्षक—पु० [स०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+ण्वुल्—अक] शिक्षा या हुनर सिखलानेवाला व्यक्ति।

शिक्षण—पु० [स०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+ल्युट्—अन] शिक्षा देने अर्थात् पढाने का काम। तालीम। शिक्षा।

शिक्षण-विज्ञान—पु० [स० ष० त०] वह विज्ञान जिसमे शिक्षार्थियों को शिक्षा देने के सिद्धान्तों का विवेचन होता है। (पेडागोजी)

शिक्षणालय—पु० [सं० ष० त०] वह स्थान जहा शिक्षार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं।

शिक्षणीय—वि० [स०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+अनीयर्] जिसे शिक्षा दी जा सके या दी जाने को हो। सिखाये-पढाये जाने के योग्य।

शिक्षा—स्त्री० [सं०√शिक्ष्+अ] [वि० शिक्षित, शैक्षणिक] १ किसी प्रकार का ज्ञान या विद्या प्राप्त करने के लिए सीखने-सिखाने का काम। तालीम। जैसे—किसी भाषा विज्ञान या शास्त्र की शिक्षा। २ उक्त प्रकार से प्राप्त किया हुआ ज्ञान या विद्या। (एजूकेशन) जैसे—आप अभी अमेरिका से चिकित्सा-शास्त्र की शिक्षा प्राप्त कर लौटे हैं।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।
विशेष—आज-कल शिक्षा के अन्तर्गत वे सभी बातें हैं जो किसी को किसी विषय का अच्छा ज्ञाता या उपयुक्त कार्यकर्ता बनाने के लिए पढाई या सिखाई जाती है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को विद्या या विषय का ज्ञाता बनाने के सिवा नैतिक, मानसिक और शारीरिक सभी दृष्टियों से कर्मठ, योग्य, सदाचारी, समर्थ, स्वावलबी आदि बनाना भी होता है।
३ किसी प्रकार के अनुचित कार्य या व्यवहार से मिलनेवाला उपदेश या ज्ञान। नसीहत। जैसे—उस मुकदमेबाजी ने तुम्हे शिक्षा तो मिली। ४. (क) छ. वेदांगो मे से एक जिसमे वैदिक साहित्य के वर्णो, मात्राओ, स्वरों आदि के उच्चारण-प्रकार का विवेचन है। (ख) आज-कल, व्याकरण का वह अग जिसमे अक्षरो या वर्णो और उनके सयुक्त रूपो आदि के ठीक ठीक उच्चारण स्वरूप और फलत उनके लेखन-प्रकार (अक्षरी या हिज्जे) का विवेचन होता है। (आर्थोग्रैफी) ५ नम्रता। विनय। ६ दक्षता। निपुणता। ७. उपदेश। ८ मत्रणा। सलाह। ९. शासन। दड। सजा।

शिक्षाकर—पु० [सं०√शिक्षा√कृ (करना)+अच] व्यास।

शिक्षाक्षेप—पु० [स० ब० स०] काव्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे प्रिय को किसी प्रकार की शिक्षा देकर अर्थात् अच्छी बात बतलाकर कही जाने से रोका जाता है। (केशव)

शिक्षा-गुरु—पु० [स० प० त० स०] शिक्षा देने अर्थात् विद्या पढानेवाला गुरु।

शिक्षा-दंड—पु० [स० मध्यम० स०] वह दड जो कोई बुरी आदत या चाल छुड़ाने के लिए दिया जाय।

शिक्षा-दीक्षा—स्त्री० [स० मध्यम० स०] ऐसी शिक्षा जो चारित्रिक, बौद्धिक या मानसिक विकास के उद्देश्य से दी जाती हो।

शिक्षा-पद—पु० [स० प० त० स०] १. उपदेश। २ बौद्धो मे, पचशील के नियम जिनका लोगो को उपदेश दिया जाता है।

शिक्षा-पद्धति—स्त्री० [स० प० त० स०] शिक्षा देने का ढग या तरीका। जैसे—भारतीय शिक्षा-पद्धति।

शिक्षा-परिषद्—स्त्री० [स० प० त० स०] १ प्राचीन भारत मे किसी ऋषि का वह शिक्षालय जहाँ वैदिक ग्रन्थो की पढाई होती थी। २ आज-कल शिक्षा-सबधी व्यवस्था करनेवाली परिषद्।

शिक्षा-प्रणाली—स्त्री० [स० प० त० स०] विद्यार्थियो को शिक्षा देने की प्रणाली अर्थात् ढग या तरीका।

शिक्षार्थी (र्थिन्)—वि० [स० शिक्षार्थ+इनि] १. जो शिक्षा प्राप्त करना चाहता हो। २. शिक्षा प्राप्त करनेवाला।

शिक्षालय—पु० [स० प० त० स०] शिक्षणालय। (दे०)

शिक्षा-विभाग—पु० [स० प० त० स०] शिक्षा-सबधी राजकीय विभाग।

शिक्षा-व्रत—पु० [स० मध्यम० स०] जैन धर्म के अनुसार गार्हस्थ्य धर्म का एक प्रधान अग जो चार प्रकार का कहा गया है—सामयिक, देशावकाशिक, पौष और अतिथि सविभाग।

शिक्षा-शक्ति—स्त्री० [स० ष० त०] शिक्षा ग्रहण करने का सामर्थ्य।

शिक्षित—भू० कृ० [स०√शिक्ष् (अभ्यास करना) +क्त, शिक्षा+इतच् वा] १. (वह) जो शिक्षा प्राप्त कर चुका हो। २. जिसे शिक्षा मिली हो। पढा-लिखा। साक्षर। ३. सिखाया हुआ।

शिक्ष्यमाण—पु० [स०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+यक्—शानच्-मुक्] १ वह जिसे किसी प्रकार की शिक्षा दी जा रही हो। २ वह जिसे किसी कार्यालय मे काम मिलने से पहले किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करनी पड रही हो।

शिखंड—पु० [स० शिखा√अम्+ड, प० त० स०] १ मोर की पूँछ। मयूर-पुच्छ। २ चोटी। शिखा। ३ काक-पक्ष। काकुल।

शिखंडक—पु० [स० शिखड+कन्] १ काक-पक्ष। काकुल। २ मोर की पूँछ।

शिखंडिक—पु० [स० शिखड+ठन्—इक] १ कुक्कुट। मुर्गा। २. एक प्रकार का मानिक (रत्न)।

शिखंडिका—स्त्री० [स० शिखडिक—टाप्] शिखा। चोटी।

शिखंडिनी—स्त्री० [स० शिखड+इनि—ङीप्] १ मोरनी। मयूरी। २. जूही। ३ मुरगी।

वि० स्त्री० शिखड युक्त।

शिखंडी—पु० [स० शिखडिन्] [स्त्री० शिखडिनी] १ मोर। २ मुरगा। ३. वाण। तीर। ४ शिखा। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ बृहस्पति। ८ कृष्ण। ९ द्रुपद का पुत्र जो जन्मत स्त्री था, पर बाद मे तपस्या से पुरुष बन गया था। महाभारत मे, अर्जुन ने इसी को बीच मे खड़ा करके इसकी आड से भीष्म को घायल किया था। १० फलत ऐसा व्यक्ति जिसमे पौरुष या बल का अभाव हो, पर जिसकी आड लेकर दूसरे लोग अपना काम निकालते हो। ११. पीली जूही। स्वर्ण-यूथिका। १२ गुजा। घुँघची।

शिख—स्त्री०=शिखा।

शिखर—पु० [स० शिखा+अरच् अलोप] १ किसी चीज का सबसे ऊपरी भाग। सिरा। चोटी। २ पहाड की चोटी। पर्वत-शृग। ३ गुबद, मदिर, मसजिद आदि का ऊँचा नुकीला सिरा। ४ गुबद। ५ मडप। ६ मदिर या मकान के ऊपर का उठा हुआ नुकीला सिरा। कँगूरा। कलश। ७ जैनो का एक प्रसिद्ध तीर्थ। ८ एक प्रकार का छोटा रत्न। ९. उँगलियो की एक मुद्रा जो तान्त्रिक पूजन मे बनाई जाती है। १० प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ११ लौग। १२ कुद की कली। १३ काँख। बगल। १४ पुलक। रोमाच।

शिखरणी—स्त्री० [स० शिखर√नि+क्विप्-ङीप्] =शिखरिणी।

शिखर-दशना—वि० स्त्री० [स० ब० स०] (स्त्री) जिसके दात कुद की कली के समान हों।

शिखरन—पु० [स० शिखर√नी (ढोना)+ड शिखरिणी] दही और चीनी का बना हुआ एक प्रकार का मीठा गाढा पेय पदार्थ जिसमे केसर, कपूर, मेवे आदि पड़े होते है।

शिखर-वासिनी—स्त्री० [स० शिखर√वस् (रहना)+णिनि] शिखर पर बसनेवाली दुर्गा।

शिखर-सम्मेलन—पु० [प० त०] कई राष्ट्रो के सर्वोच्च अधिकारियों अथवा शासको का ऐसा सम्मेलन जो किसी महत्वपूर्ण राजनीतिक विषय पर विचार करने के लिए हो। (सम्मिट कान्फरेन्स)

शिखरा—स्त्री० [स० शिखर—टाप्] १. मूर्व्वा। मरोडफली। मुर्रा। २ एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचन्द्र को दी थी।

शिखरिणी—स्त्री० [स० शिखर+इनि+ङीप्] १ श्रेष्ठ स्त्री। २ शिखरन नामक पेय पदार्थ। ३ १७ अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसमे छठें और ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है। ४. रोमावली। ५ बेला या मोतिया नामक फूल। ६. नेवारी। ७ आम। ८. किशमिश। ९ मूर्वा। मरोड-फली।

शिखरी—पु० [स० शिखर+इनि-दीर्घ-नलोप] १ पर्वत। पहाड। २. पहाडी किला। ३ पेड। वृक्ष। ४ अपामार्ग। चिचडा। ५. बदाक। बाँदा। ६. लोबान। ७ काकडा सिंगी। ८ ज्वार। मक्का। ९ कुदरू नामक गन्ध द्रव्य। १०. एक प्रकार का मृग। स्त्री० [स० शिखरा] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचन्द्र को दी थी। शिखरा।

शिखांत—पु० [स० शिखा+अन्त ष० त०] सिरा का अतिम अर्थात् सबसे ऊपरी भाग।

शिखा—स्त्री० [स० शि+खक् पृषो०—टाप्] १ हिंदुओ मे, मुडन के समय सिर के बीचोबीच छोड़ा हुआ बालो का गुच्छा जो फिर कटाया नही जाता और बढकर लबी चोटी के रूप मे हो जाता है। चुदी। चोटी।

पद—शिखासूत्र=चोटी और जनेऊ जो द्विजो के मुख्य चिह्न है और जिनका त्याग केवल सन्यासियों के लिए विहित है।

२ मोर, मुर्गी आदि पक्षियो के सिर पर उठी हुई चोटी या परो का गुच्छा।

चोटी। कलगी। ३. आग, दीपक आदि की ऊपर उठने वाली लौ। ४. प्रकाश की किरण। ५. किसी चीज का नुकीला सिरा। नोक। ६. ऊपर उठा हुआ सिरा। चोटी। ७ पैर के पंजों का सिरा। ८ स्तन का अगला भाग। चूचुक। ९ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके विषम पादों में २८ लघु मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है। सम पादों में ३० लघु मात्राएँ और अन्त में एक गुरु होता है। १० पहने हुए कपड़े का आँचल। दामन। ११ पेड़ की जड़। १२. पेड़ की डाल। शाखा। १३. श्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति। १४. नायक। सरदार। १५. काम-वासना की तीव्रता के कारण होनेवाला ज्वर। काम-ज्वर। १६ तुलसी। १७ वच। १८ जटामासी। बालछड़। १९ कलियारी नामक विष। लागली। २० मरोड़-फली। मूर्वा।

शिखाकंद—पु० [सं० ब० स०] शलजम। शलगम।

शिखातरु—पु० [सं० ष० त० स०] दीप-वृक्ष। दीवट। दीयट।

शिखाधर—पुं० [सं० ष० त० स०] मयूर। मोर।
वि० शिखा धारण करनेवाला।

शिखाधार—पु० [सं०]=शिखाधर।

शिखापित्त—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ-पैर की उँगलियों में सूजन और जलन होती है।

शिखाभरण—पु० [सं० ष० त० स०] १ शिरोभूषण। २ मुकुट।

शिखामणिक—पु० [सं० ष० त० स०] १. सिर पर धारण किया जानेवाला रत्न। २ मुकुट में लगाया जानेवाला रत्न। ३ सर्व-श्रेष्ठ पदार्थ या वस्तु।

शिखामूल—पु० [सं० ब० स०] ऐसा कन्द जिसके ऊपर पत्तियाँ या पत्ते हों। जैसे—गाजर, शलजम आदि।

शिखालु—पु० [सं० शिखा+आलुच्] मोर की चोटी। कलगी।

शिखावल—पु० [सं० शिखा+वलच्] [स्त्री० शिखावली] १ मोर। मयूर। २ कटहल।

शिखावान् (वत्)—वि० [सं० शिखा+मतुप्—म=व—नुम्—दीर्घ नलोप] [स्त्री० शिखावती] शिखावाला।
पु० १ अग्नि। २ चित्रक। चीता। ३ केतु ग्रह। ४. मयूर। मोर।

शिखावृक्ष—पु० [सं० ष० त० स०] वह आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीवट।

शिखावृद्धि—स्त्री० [सं० ष० त० स०] १ ब्याज का प्रतिदिन बढ़ना। २ ब्याज पर भी जोड़ा जानेवाला ब्याज। सूद-दर-सूद। (कम्पाउंड इन्टरेस्ट)

शिखि (खिन्)—पु० [सं० शिखा+इन] १. मोर। मयूर। २ तामस मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ३. कामदेव। ४ अग्नि। ५ तीन की संख्या का वाचक शब्द।
वि०=शिखावान्।

शिखि-ग्रीव—पु० [सं० शिखि-ग्रीवा+अच् ब० स० वा] १ नीलाथोथा। २ कांत पाषाण नाम का नीला पत्थर।

शिखिध्वज—पु० [सं० ष० त० स०] १. धूम। धूआँ। २ एक प्राचीन तीर्थ। ४ मयूरध्वज राजा का दूसरा नाम।

शिखिनी—स्त्री० [सं० शिखा+इनि—ङीप्] १ मयूरी। मोरनी। २ मुरगी। ३. जटाधारी नाम का पौधा।

शिखि-वाहन—पु० [सं० ब० स०] मयूर की सवारी करनेवाले कार्तिकेय।

शिखींद्र—पु० [सं० ष० त०] १. तेंदू (पेड़)। २ आबनूस (वृक्ष)।

शिखी (खिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० शिखिनी] शिखा या शिखाओं से युक्त। चोटी या चोटियोंवाला।
पु० १ मोर। मयूर। २. मुरगा। ३ एक प्रकार का सारस। ४. बगला। ५. बैल या साँड़। ६ घोड़ा। ७ चित्रक। चीता। ८. अग्नि। ९ तीन की संख्या का वाचक शब्द। १०. दीपक। दीया। ११ पित्त। १२ पुच्छल तारा। केतु। १३. मेथी। १४. शतावर। १५ पेड़। वृक्ष। १६ पर्वत। पहाड़। १७ ब्राह्मण। १८ बाण। तीर। १९ जटाधारी। साधु। २०. इन्द्र। २१ एक प्रकार का विष।

शिखीश्वर—पु० [ष० त० स०] कार्तिकेय।

शिगाफ—पु० [फा० शिगाफ] १. दरार। दरज। २. सूराख। छेद। ३ चिकित्सा के उद्देश्य से नश्तर से फोड़े आदि में लगाया जानेवाला चीरा।

शिगाल—पु० [सं० शृगाल से फा०] गीदड़। सियार।

शिगूड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जंगली पौधा जो दवा के काम आता है।

शिगूफा—पु०=शगूफा।

शिग्रु—पु० [सं० शि+रक्-गुक् च] १. सहिजन का वृक्ष। शोभांजन। २ शाक। साग।

शित—भू० कृ० [सं०√शो (पतला करना)+क्त] १. सान पर चढ़ा कर तेज किया हुआ। २. नुकीला। ३. दुर्बल।
†वि०=सित।

शितद्रु—स्त्री० [सं० शित√द्रु (पिघलना)+कु] १. शतद्रु। सतलज। २ क्षीर-मोरठ। मोरठ।

शिताफल—पु० [सं० ब० स०] शरीफा। सीताफल।

शिताब—अव्य० [फा०] जल्द। झटपट। शीघ्र।

शिताबी—स्त्री० [फा०] १. शीघ्रता। जल्दी। २ उतावली। हड़बड़ी।

शितावर—पु० [सं० शतावर] १ बकुची। सोमराजी। २ शिरियारी। ३. शतावर।

शिति—वि० [सं०√शो (पतला करना)+क्तिच्] १ सफेद। २. काला। ३ नीला। ४. रंग-बिरंगा।
पु० भोजपत्र।

शितिकंठ—पु० [सं० ब० स०] १ महादेव। शिव। २ नाग देवता। ३ जल-काक। मुरगाबी। ४ पपीहा। ५ मोर।

शिति-चंदन—पु० [सं० ब० स०] कस्तूरी।

शितिपक्ष—पु० [सं० ब० स०] हंस।

शिति-रत्न—पु० [मध्यम० स०] नीलम।

शितपुट—पु० [सं० ब० स०] १ बिल्ली की तरह का एक जानवर। २ एक प्रकार का काला भौंरा।

शिथिल—वि० [√श्लथ् (हिंसा करना)+किलच्—पृषो०] [भाव० शिथिलता] १ जिसमें खिंचाव न होने के कारण ढिलाई हो। ढीला। २. (व्यक्ति) जिसके वृद्धावस्था, थकावट, बीमारी आदि के फल-स्वरूप

अंग-अंग ढीले पड़ गये हों। ३. जिसमें तेजी या फुर्ती न हो। जिसकी गति मंद हो। ४. आलस्य के कारण काम न करनेवाला। ४. जो अपनी बात पर दृढ़ न रहता हो। ५. (काम या बात) जिसका पालन दृढ़तापूर्वक न होता हो। ६. निर्बल या दबाव में रखा हुआ। ७ (शब्द) जो स्पष्ट न हो।

शिथिलता—स्त्री० [सं० शिथिल+तल्—टाप्] १. शिथिल होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ साहित्य में, वाक्य-रचना का वह दोष जिसमें आर्थी दृष्टि से शब्द अच्छी तरह गठे हुए न हों। ३. तर्क में किसी अवयव का अभाव।

शिथिलाई†—स्त्री०=शिथिलता।

शिथिलाना—अ० [सं० शिथिल+आना (प्रत्य०)] १. शिथिल होना। ढीला पड़ना। २ श्रान्त होना। थकना।
स० १ शिथिल करना। २. थकाना।

शिथिलित—भू० कृ० [सं० शिथिल+इतच्] जो शिथिल हो गया हो। ढीला पड़ा हुआ।

शिथिलीकरण—पु० [सं० शिथिल+च्वि√कृ (करना)+ल्युट् अन-दीर्घ] [वि० शिथिलीकृत] शिथिल करना। ढीला करना।

शिथिलीभूत—भू० कृ० [सं० शिथिल+च्वि√भू (होना)+क्त-दीर्घ] जो शिथिल हो गया हो। ढीला पड़ा हुआ।

शिद्दत—स्त्री० [अ०] १ तीव्रता। प्रबलता। २. उग्रता। प्रचंडता। ३ अधिकता। ज्यादती। ४ कठिनाई। कष्ट।

शिनाख्त—स्त्री० [फा०] १. यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है। किसी व्यक्ति, वस्तु आदि को देख कर बतलाना कि यही अमुक व्यक्ति या वस्तु है। पहचान। २. भला-बुरा पहचानने की योग्यता। तमीज। परख। जैसे—उसे हीरों की अच्छी शिनाख्त है।

शिनास—वि० [फा०] [भाव० शिनासी] पहचाननेवाला। जानकार।

शिनासाई—स्त्री० [फा०] १ पहचान। परिचय। २. जानकारी।

शिनि—पु० [सं० शि+निक्] १ गर्ग ऋषि के पुत्र का नाम। २. क्षत्रियों का एक भेद।

शिप्र—पु० [सं० शि+रक्—पुक् च] हिमालय पर्वत का एक सरोवर।

शिप्रा—स्त्री० [सं० शिप्र-टाप्] एक नदी जिसके तट पर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है। (कहते हैं कि यह शिप्र नामक सरोवर से निकली थी।)

शिफर—पु०=शिपर (ढाल)।

शिफा—स्त्री० [सं० शि+फक्—टाप्] १ एक प्रकार के वृक्ष की रेशेदार जड़ जिससे प्राचीन काल में कोड़े बनते थे। २ कोड़े या चाबुक की फटकार अथवा मार। ३ कोड़ा या चाबुक।
पद—शिफा-दंड=कोड़े या बेंत मारने का दंड।
४. माता। माँ। ५. हल्दी। ६ कमल की नाल। मसीड़। ७. लता। वल्ली। ८. नदिया। नदी। ९. जटामासी। १०. चोटी। शिखा।

शिफ़ा—स्त्री० [अ०] १. बीमारी, रोग आदि से होनेवाला छुटकारा। २. स्वास्थ्य।

शिफ़ाकंद—पुं० [सं० उपमि० स०] कमल की जड़। भसींड।

शिफारुह—पु० [सं० शिफा√रुह् (आरोहण करना)+क] बरगद (पेड़)। वटवृक्ष।

शिबि—पु० [सं० शिवि-नि॒] =शिवि।

शिमाल—स्त्री० [अ०] [वि० शिमाली] उत्तर दिशा।

शिया—पुं०=शीया (सम्प्रदाय)।

शिरःकपाली—पु० [सं० शिरःकपाल+इनि] कापालिक संन्यासी।

शिरःखंड—पु० [सं० ष० त० स०] माथे की हड्डी। कपालास्थि।

शिरःफल—पु० [सं० ब० स०] नारिकेल। नारियल।

शिर (स्)—पु० [सं० श्रृ+क] १. सिर। कपाल। मुंड। खोपड़ा। २. मस्तक। माथा। ३. ऊपरी भाग। चोटी। ४. अगला भाग। सिरा। ५ सेना का अगला भाग। ६. पद्य के चरण का आरंभ। टेक। ७. अगुआ, प्रधान या मुखिया। ८ पिप्पलीमूल। ९. शय्या। १०. बिछौना। बिस्तर। ११. अजगर।

शिरकत—स्त्री० [अ०] १. शरीक होने की अवस्था, क्रिया या भाव। मिलना। २. एक साथ मिलकर किसी काम में प्रवृत्त होना। ३. व्यापार में हिस्सेदार बनना। साझेदारी।

शिरकती—वि० [फा०] १. साझे का। सम्मिलित। २. शिरकत के फलस्वरूप होनेवाला।

शिरखिश्त—पु० शीर-खिश्त।

शिरगोला—पु० [देश०] दुग्ध-पाषाण नामक वृक्ष।

शिरज—पु० [सं० शिर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] केश। बाल। वि० शिर या शिर से उत्पन्न।

शिरत्रान†—पु०=शिरस्त्राण।

शिरनेत—पु० [देश०] १. गढ़वाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। २. क्षत्रियों का एक वर्ग।

शिरफूल—पुं० =सीस-फूल (गहना)।

शिरमौर—पु०=सिर-मौर।

शिरश्चन्द्र—पु० [सं० ब० स०] महादेव। शिव।

शिरसा—अव्य० [सं० शिरस्+आप्] सिर झुकाकर या आदरपूर्वक। शिरोधार्य करते हुए। जैसे—कोई बात शिरसा मानना या स्वीकार करना।

शिरसिज—पु० [सं० शिरसि√जन् (उत्पन्न करना)+ड सप्तमी अलुक् स०] केश। बाल।

शिरसिरुह—पु० [सं० शिरसि√रुह् (उगना)+क-अलुक् स०] केश। बाल।

शिरस्क—पु० [सं० शिरस्√कै (प्रकाशित)+क] १. पगड़ी। २. शिरस्त्राण।

शिरस्त्र—पु० [शिरस्√त्रै (रक्षा करना)+क] =शिरस्त्राण।

शिरस्त्राण—पु० [सं० शिरस्√त्रै+ल्युट्—अन] वह टोप जो युद्ध आदि के समय सैनिक सिर पर पहनते हैं।

शिरहन—पुं० [सं० शिर+आधान] १. तकिया। २ सिरहाना।

शिरा—स्त्री० [illegible] श्र+क—टाप्] १. रक्त की छोटी नाड़ी। नस की [illegible] (लहू वेसल) २. पानी का नाला; विशेषतः जमीन [illegible] वाला सोता। ३. कुएँ से पानी खींचने का

शिराफत—स्त्री०=शराफत।

शिराग्रह—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का वात रोग।

शिराज—स्त्री० [देश०] हिन्दुओं की एक जाति जो चमड़े का काम करती है।

शिराजाल—पु० [स० ष० त० स०] १ शरीर के अन्दर की छोटी रक्त-नाड़ियों का समूह। २. आँख सबधी एक रोग।

शिरापत्र—पु० [स० ब० स०] १. पीपल का पेड़। २. हिंताल। ३ कपित्थ। कैथ।

शिरापीड़िका—स्त्री० [स० ब० स०] १. आँख का एक रोग जिसमे पुतली के पास एक फुसी निकल आती है। २ मधुमूत्र के रोगियो को निकलने वाली एक प्रकार की घातक फुंसी।

शिराफल—पु० [स० ब० स०] नारियल।

शिरामल—पु० [स० ब० स०] नाभि।

शिरायु—पु० [स० ब० स०] रीछ। भालू।

शिराल—वि० [स० शिरा+लच्] १ शिरा-सबधी। २. शिरायुक्त। ३ बहुत सी शिराओंवाला।

पु० कमरख।

शिरावरोध—पु० [स० ब०स०] एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर के अदर किसी शिरा मे रक्त के कणो की गाँठ बनकर ठहर जाती और उस अग के रक्त-सचार मे बाधक होती है। (थ्राम्बोसिस)

शिराहर्ष—पु० [ष० त० स० ब० स० वा] १. नसो का सनसनाना। २. एक रोग जिसमे आँखें लाल हो जाती है।

शिरि—पु० [स०√शृ+कि] १. खड्ग। तलवार। २. तीर। बाण। ३. फतिगा। ४. टिड्डी।

शिरियारी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की जगली बूटी या शाक जो औषध के काम मे आती है। सुसना।

शिरीष—पु० [स० शृ+ईषन्—किन्] १. सिरस का पेड। २. उक्त का पुष्प।

शिरोगृह—पु० [स० मध्यम० स०] अट्टालिका का सब से ऊपरवाला कमरा।

शिरोग्रह—पु० [स० ब० स०] समल्वाई नामक रोग।

शिरोज—पु० [स० शिरस्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] बाल। केश।

शिरोदाम—पु० [स० ष० त० स० शिरोदामन्] पगडी। साफा।

शिरोधरा—स्त्री० [स० शिरस्√धर् (रखना)+अच्-टाप्] ग्रीवा। गरदन।

शिरोधाम—पु०[सं० ष० त० स०] चारपाई का सिरहाना।

शिरोधार्य—वि० [स० तृ० त० स०] आदरपूर्वक सिर पर धारण किए जाने या माने जाने के योग्य। सादर अगीकार किए जाने के योग्य।

शिरोपाव—पु०=सिरोपाव।

शिरोभूषण—पु०[स० ष० त० स०]१ सिर पर पहनने का गहना। जैसे—सीसफूल। २ मुकुट। ३ श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोभूषा—स्त्री०[स० ष० त०]१ सिर की भूषा। २ सिर पर धारण किया जानेवाला वस्त्र, पगडी, टोपी आदि।

शिरोमणि—पु०[स० मध्यम० स०]१. सिर पर का रत्न। चूडामणि। २. मान्य और श्रेष्ठ व्यक्ति। ३. माला मे का सुमेरु।

शिरोमाली (लिन्)—पु०[स० शिरस्-माला-ष० त० स०—इनि, दीर्घ, नलोप] मनुष्य की खोपड़ियों या मुडो की माला धारण करनेवाले, शिव।

शिरोमौलि—पु०[सं० ष० त० स०]१. सिर पर पहना जानेवाला आभूषण या रत्न। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोरक्षी (क्षिन्)—पु०[सं० शिरस्-रक्षा-ष० त० स०—इनि] प्राचीन भारत मे, सदा राजा के साथ रहनेवाला रक्षक। अग-रक्षक। (बॉडी गॉर्ड)

शिरोरत्न—पुं०[स० ष० त० स०]=शिरोमणि।

शिरोवर्ती (र्तिन्)—वि०[स० शिरस्√वृत् (रहना)+णिनि, दीर्घ नलोप] प्रधान। मुखिया।

पु० प्रधान। मुखिया। नायक।

शिरोवल्ली—स्त्री०[स० तृ० त०] मोर, मुर्गे आदि की चोटी। कलगी।

शिरोवस्ति—पुं०[स० ष० त० स०] वैद्यक मे, सिर के वातज दर्द का एक उपचार।

शिरोबिंदु—पु०[सं० मध्य० स०] आकाश मे वह स्थान या उसका सूचक बिंदु जो हमारे सिर के ठीक ऊपर पडता है। 'अधोबिंदु' का विपर्याय। (जेनिथ)

शिरोहर्ष—पु०[स० ब० स०] समल्वाई नामक रोग।

शिरोहारी (रिन्)—पु० [स० शिरस्√हृ+णिनि]खोपडियो की माला पहननेवाले, शिव।

शिलंधिर—पु० [स० ब० स०] एक प्राचीन गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि।

शिलंब—पुं० [स० ब० स०] १. जुलाहा। तनुवाय। २. बुद्धिमान् व्यक्ति।

शिल—पु०[स०√शिल् (एक, एक कण का बीनना)+क] उछ नामक वृत्ति।

स्त्री०१.=शिला। २.=सिल।

शिलज—पु०[स० शिल√जन् (उत्पन्न करना)+ड]=शैलज (छरीला)।

शिल-रति—पु०[स० ब० स०] उछशील। (दे०)

शिला—स्त्री० [स० शिल+क—टाप्] १ पाषाण। पत्थर। २ पत्थर का बडा और चौडा टुकडा। चट्टान। सिल। ३ पत्थर की ककडी या रोडा। ४. मन शिल। मैंनसिल। ५. कपूर। ६ शिलाजीत। ७ गेरू। ८ नील का पौधा। ९ हर्रे। १० गोरोचन। ११ दूब। १२ उछवृत्ति।

शिलाकुसुम—पु०[स० ष० त० स०]१ शैलेय नामक गन्ध द्रव्य। २ शिलाजीत।

शिलाक्षार—पु०[स० ष० त० स०] चूना।

शिलाखंड—पु०[स० ष० त०]१. पत्थर का बडा टुकडा। चट्टान। २ आज-कल पुरातत्व मे पत्थरों का वह ढेर जो बहुत प्राचीन काल मे किसी घटना या स्मारक के रूप मे लगाया जाता था।

शिलाज—पु० [स० शिला√जन् (उत्पन्न करना)+ड]१ छरीला। पत्थर का फूल। २ लोहा। ३. शिलाजीत। ४. पेट्रोल।

शिला-जतु—पु०[मध्य० स०] शिलजीत।

शिलाजा—स्त्री०[स० शिलाज—टाप्] सगमरमर।

शिलाजीत—स्त्री० [स० शिलाजतु] कुछ विशिष्ट प्रकार की चट्टानो

के अत्यधिक तपने पर उनमे से निकलनेवाला एक प्रकार का रस जो काले रंग का होता है और अत्यधिक पौष्टिक माना जाता है।

शिलाटक—पु०[स० शिला√अट् (जाना) +ण्वुल्—अक] १ बहुत बडा मकान। अट्टालिका। २. घर के ऊपर का कोठा। अटारी। ३ बडी इमारत की चहारदीवारी। परकोटा। ४. गड्ढा। गर्त्त।

शिलात्व—पु० [स० शिला+त्व] १ शिला का भाव। २ शिला का धर्म अर्थात् कठोरता, जडता आदि।

शिला-दान—पु०[स० ष० त० स०] पत्थर की मूर्ति विशेषत शालग्राम का दिया जानेवाला दान।

शिलादित्य—पु०[स०] हर्षवर्द्धन।

शिलाधातु—पु०[स० ष० त० स०]१ सोनगेरू। २ खपरिया। ३ चीनी। शक्कर।

शिलानिर्यास—पु०[ष० त० स०]=शिलाजीत।

शिला-न्यास—पु०[स० ष० त०]१. नये भवन की नीव के रूप मे रखा जानेवाला पहला पत्थर। २ नीव रखने का कृत्य।

शिला-पट्ट—पु० [स० ष० त० स०]१ पत्थर की चट्टान। २ मसाले आदि पीसने की सिल।

शिला-पुत्र (क)—पु०[ष०त०] पत्थर का वह टुकडा जिससे सिल पर रगड कर चीजे पीसी जाती है। लोढा।

शिलापुष्प—पु०[स० ष० त०]१ छरीला। शैलेय। २ शिलाजीत।

शिलाप्रमोक्ष—पु० [स० ष० त० स०] लडाई मे शत्रुओं पर पत्थर फेंकना या लुढकाना। (कौ०)

शिला-बंध—पु०[ब० स०] पत्थर की चहारदीवारी या परकोटा।

शिला-भव—पु०[स० त० स०]१ शिलाजीत। २ छरीला।

शिलाभेद—पु०[स०+ शिला √भिद्+अण्]१ पत्थर तोडने की छेनी। २ पाषाणभेदी वृक्ष। पखानभेद।

शिला-मल—पु०[ष० त० स०] शिलाजीत।

शिला-मुद्रण—पु० [स० तृ० त०] [भू० कृ० शिलामुद्रित] पुस्तकों आदि की पुरानी चाल की एक प्रकार की छपाई जो पत्थर की शिला पर अकित चिन्हों या अक्षरो की सहायता से होती थी। (लीथोग्राफ)

शिलायु—पु० [स० ब० स०] गले मे होनेवाला एक प्रकार का विकार।

शिला-रस—पु०[स०ष० त० स०]१ शैलेय नामक गन्ध द्रव्य। २ लोबान की तरह का एक प्रकार का सुगधित गोद।

शिलारोपण—पु०[ष०त०]नीव मे पत्थर को प्रस्थापित करना। शिला-न्यास।

शिला-लेख—पु०[सप्त० त०] १. वह लेख जो पत्थर पर खुदा हो। २ वह पत्थर जिसपर लेख आदि खुदा हो। ३ दे० 'पुरालेख'।

शिलालेखविद्—पु० [स० शिलालेख√ विद्+ क्विप्] वह जो पुराने शिलालेखो के लेख आदि पढने मे प्रवीण हो। पुरालेखविद्। (एपिग्राफिस्ट)

शिलावह—पु० [स० ब० स०]१ एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जनपद का निवासी।

शिला-वृष्टि—स्त्री०[स० ष० त० स०] १ आकाश से ओले या पत्थर गिरना। २. पत्थर के टुकडे किसी पर फेकना।

शिलावेश्म (न्)—[स० ष० त० म०]१ कदरा। गुफा। २ पत्थरो का बना हुआ मकान।

शिलासन—पु०[स० ब० स०]१. पत्थर का बना हुआ आसन। २ शिलाजीत। ३. शैलेय नामक गन्ध द्रव्य।

शिलासार—पु०[स० ष० त० स०] लोहा।

शिलास्वेद—पु०[स० ष० त० स०] शिलाजीत।

शिला-हरि—पु० [स० मध्यम० स०] शालग्राम की मूर्ति।

शिलाहारी (रिन्)—वि०[स० शिला√ हृ(हरण करना)+णिनि]खेतो से अन्न बिनकर जीविका चलानेवाला। उछशील।

शिलाह्व—पु०[स० ब० स०] शिलाजीत।

शिलिंद—पु०[स० शिलि√ दा (देना)+क पृषो० सिद्ध] एक प्रकार की मछली।

शिलि—पु०[सं०√ शिल् (एक-एक दाना बीनना)+कि] भोजपत्र। भूर्जवृक्ष।

स्त्री० डेहरी।

शिलींध्र—पु०[स० शिली√धृ (रखना)+क पृषो० मुम्]१ केले का फूल। २ आकाश से गिरनेवाला ओला। बिनौरी। ३ भुंइछत्ता। ४ कठ-केला। ५. शिलिंद नामक मछली।

शिलींध्रक—पु० [स० शिलींध्र+कन्] कुकुरमुत्ता। खुमी।

शिलींध्री—स्त्री० [स० शिलींध्र—ङीप्] १ केचुआ। गडूपदी। २ मिट्टी। ३ एक प्रकार का पक्षी।

शिली—स्त्री० [स० शिल—ङीप्]१. केंचुआ। २ मेढक। ३ देहलीज। ४ भोजपत्र। ५. तीर। बाण। ६ भाला।

शिलीपद—पु० [स० ब० स] फीलपाँव नामक रोग। श्लीपद।

शिलीभूत—भू० कृ० [स०] जो जमकर पत्थर के सदृश कठोर हो गया हो।

शिलीमुख—पु०[स० ब० स०]१ भ्रमर। २ तीर। बाण। ३ युद्ध। समर।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

शिलूष—पु०[स० ब० स०]१ नाट्यशास्त्र के आचार्य एक प्राचीन ऋषि। २ बेल का वृक्ष।

शिलेय—वि०[स०] शिला-सबधी। शिला का।

पु० शिलाजीत।

शिलोंछ—पु०[स० शिल√उछि+घञ्] खेतो से अन्न बिनकर जीविका निर्वाह करना। उछवृत्ति।

शिलोच्चय—पु० [स० ब० स०] पर्वत। पहाड।

शिलोत्थ—पु० [स० शिल-उद्√स्था (ठहरना)+क, स,=थ, लोप] १ छरीला या शैलेय नामक गध-द्रव्य। २ शिलाजीत।

शिलोद्भव—पु०[स० ब० स०]१ शैलेय। छरीला। २ पीला चन्दन।

शिलौका—वि० [स० ब० स० शिलौकस] पर्वत पर होनेवाला।

पु० गरुड।

शिल्प—पु०[स० शिल्+पक्] हाथ से काम करने का हुनर। दस्तकारी। हस्तकला।

शिल्पक—पु०[स० शिल्प+कन्] एक प्रकार का नाटक जिसमे इद्रजाल तथा अध्यात्म सबधी बातो का वर्णन रहता है।

शिल्पकर—पु०[शिल्प√कृ (करना) +अच्]शिल्पकार।

शिल्पकला—स्त्री०[स० प० त० स०] शिल्प। (दे०)

शिल्पकार—पु०[स० शिल्प√कृ करना)+अण् उप० स०] १ शिल्पी। कारीगर। २. मकान बनानेवाला राज। मेमार।

शिल्पकारी—पु०[स० शिल्प√कृ (करना)+णिनि शिल्पकारिन्]=शिल्पकार।
स्त्री०=शिल्प।

शिल्प-गृह—पु०[प० त० स०] वह स्थान जहाँ शिल्प-सम्बन्धी कोई कार्य होता हो। कारखाना।

शिल्पजीवी (विन्)—पु०[स० शिल्प√जीव् (जीवन निर्वाह करना)+णिनि] शिल्प से जिसकी जीविका चलती हो। शिल्पी।

शिल्पज्ञ—वि०-पु०[स० शिल्प√ज्ञा (जाना)+क] शिल्प जाननेवाला।

शिल्पता—स्त्री०[स० शिल्प+तल्—टाप्] शिल्प का भाव या धर्म। शिल्पत्व।

शिल्पत्व—पु०[सं० शिल्प+त्व]=शिल्पता।

शिल्पप्रजापति—पु०[स० मध्यम० स०] विश्वकर्मा का एक नाम।

शिल्प-यंत्र—पु०[मध्य० स०] ऐसा यंत्र जिससे शिल्प सम्बन्धी काम होता या चीजें बनती हो।

शिल्प-लिपि—स्त्री०[स०मध्यम० स०]पत्थर, ताँबे आदि पर अक्षर खोदने की कला।

शिल्प-विद्या—स्त्री० [प० त०, स० मध्यम० स०]१. हाथ से तरह तरह की चीजें बनाने की कला। २ गृह-निर्माण कला। मकान आदि बनाने की विद्या।

शिल्प-विद्यालय—पु० [प० त० स०] वह विद्यालय जिसमे अनेक प्रकार के शिल्प अर्थात् चीजें बनाने की कला सिखाई जाती हो।

शिल्पशाला—स्त्री०[स० प० त० स०] कारखाना। शिल्पगृह।

शिल्पशास्त्र—पु०[स० मध्यम० स०]१. वह शास्त्र जिसमे दस्तकारियो का विवेचन होता है। २ वास्तुशास्त्र।

शिल्पिक—पु०[स० शिल्प+इनि+कन्]१. वह जो शिल्प द्वारा निर्वाह करता हो। कारीगर। शिल्पी। २ शिव का एक नाम। ३ नाटक का शिल्पक नामक भेद।

शिल्पिका—स्त्री० [स० शिल्पिक—टाप्] एक प्रकार का तृण जो ओषधि रूप मे काम आता है।

शिल्पिनी—स्त्री०[सं० शिल्पिन्—ङीप्]१ स्त्री शिल्पी।
२. एक प्रकार की घास।

शिल्पी (ल्पिन्)—पु०[सं०]१ शिल्प सम्बन्धी काम करनेवाला व्यक्ति। शिल्पकार। कारीगर। २. मेमर। राज। ३. चित्रकार। ४ नखी नामक गन्ध-द्रव्य।

शिल्हक—पु० दे० 'शिलारस'।

शिवंकर—पु० [स० शिव√कृ (करना)+खच्—मुम्] मंगल करनेवाले, शिव। २. शिव का एक गण। ३ एक असुर जो रोग फैलानेवाला कहा गया है। ४ एक प्रकार का बालग्रह। ५ तलवार।

शिवंसा—पु० [स० शिव+अश] पैदावार या फसल का वह अश जो शैव साधुओं के लिए अनाज काटने के समय पृथक् कर दिया जाता है।

शिव—वि० [स०√शो (पतला करना)+वन् पृपो०] १. मागलिक। शुभ। २. स्वस्थ तथा सुखी। ३. भाग्यवान्।
पु० १. कल्याण। मगल। २. हिन्दुओ के प्रसिद्ध देवता महादेव जो त्रिमूर्ति के अतिम देवता तथा सृष्टि का सहार करनेवाले माने गये है। ३ देवता। ४. वेद। ५. लिंग जो शिव का चिह्न माना जाता है। ६. परमेश्वर। ७. महाकाल या रुद्र नामक देवता। ८ वसु। ९ मोक्ष। १०. शुभग्रह। ११. जल। पानी। १२. बालू। रेत। १३. फलित ज्योतिष मे, विष्कंभ आदि सत्ताइस योगो मे से एक योग। १४ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे ५-६ के विश्राम से ११ मात्राएँ अत मे सगण, रगण, नगण मे से कोई एक होती है। तीसरी, छठी और नवी मात्राएँ लघु रहती हैं। १५ प्लक्ष द्वीप तथा जंबू द्वीप के एक वर्ष का नाम। १६. पारा। १७ सिन्दूर। १८ गुग्गुल। १९. पुडरीक वृक्ष। २०. काला धतूरा। २१ आँवला। २२. कदब। २३. मिर्च। २४. तिल का फूल। २५. चन्दन। २६ मौलसिरी। २७. लोहा। २८ फिटकरी। २९ सेंधा नमक। ३० समुद्री नमक। ३१ सुहागा। ३२. नीलकठ पक्षी। ३३ कौआ। ३४. एक प्रकार का मृग। ३५ गीदड। ३६. खूंट। ३७. गुड की शराब। ३८ एक प्रकार का नृत्य।

शिवक—पु० [स० शिव+कन्] १ काँटा। कील। २. खूँटा।

शिवकर—पु० [स० शिव√कृ (करना)+अच्] चौबीस जिनो मे से एक।

शिवकर्णी—स्त्री० [सं० व० स०—ङीप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

शिवकांची—स्त्री० [सं० प० त० स०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

शिव-कांता—स्त्री० [प० त० स०] पार्वती।

शिवकारिणी—स्त्री० [स० शिव√कृ (करना)+णिनि—ङीप्] मगल करनेवाली, दुर्गा।

शिवकारी—वि० [शिव√कृ (करना) णिनि—दीर्घ, नलोप] [स्त्री० शिवकारिणी] १. कल्याण करनेवाला। २. शुभ।

शिव-कीर्तन—पुं० [स० प० त० स०] १ शिव का भजन तथा स्तुति। २. शिव का कीर्तन करनेवाला, शैव। २. विष्णु। ३. शिव के द्वारपाल।

शिवक्षेत्र—पु० [स० प० त० स०] १. कैलास। २ काशी।

शिवगंगा—स्त्री० [स० प० त०] ऐसी नदी या जलाशय जो शिव के मदिर के समीप हो।

शिव-गति—पु० [स० व० स० वा] जैनो के अनुसार एक अर्हत् का नाम।
वि० १. सुखी। २. समृद्ध।

शिवगिरि—पु० [स० प० त० स०] कैलास (पर्वत)।

शिव-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्यम० स०] १ फाल्गुन वदी चौदस जिस दिन शिवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है। २. शिवरात्रि।

शिवता—स्त्री० [स०] १. शिव का धर्म, पद या भाव। २ शिव-सायुज्य। मोक्ष। अमरता।

शिव-तीर्थ—पु० [मध्य० स०] काशी।

शिवतेज (स्) —पुं० [स० प० त० स०] पारा। पारद।

शिवत्व—पु० [शिव+त्व]=शिवता।

शिवदत्त—पुं० [सं० तृ० त० स०] विष्णु का चक्र।

शिव-दिशा—स्त्री० [स० प० त०] ईशान कोण जिसके स्वामी शिव है।
शिवदूती—स्त्री० [स० व० स०] १ दुर्गा। २ एक योगिनी।
शिव-दैव—पु०[स० व० स०] आर्द्रा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता शिव हैं।
शिव-द्रुम—पु० [स० मध्यम० स०] बेल का पेड जिसकी पत्तियाँ भगवान शिव को चढ़ाई जाती है ।
शिवधातु—पु०[स० प० त०स०] १. पारद। पारा । २. गोदती नामक मणि ।
शिवनंदन—पु० [स० शिव√नन्द् (हर्षित करना)+ल्यु-अन] शिव जी के पुत्र, गणेश ।
शिवनाथ—पु० [स० कर्म० स०] शिव । महादेव ।
शिव-नाभि—पु० [स० प० त०] एक प्रकार का शिव-लिंग जो अन्य शिव-लिंगो मे श्रेष्ठ माना जाता है ।
शिवनामी—स्त्री० [स०+हि] वह चादर जिसपर शिव का नाम अनेक स्थानो पर छपा होता है तथा जिसे शिवभक्त ओढते है।
शिवनारायणी (णिन्)—पु० [स० शिव-नारायण, द्व० स०-इनि] हिन्दुओ का एक सप्रदाय।
शिव-निर्माल्य—पु० [स० प० त० स०] १ शिव को अर्पित किया या चढाया हुआ पदार्थ जिस का उपभोग वर्जित है। २ परम अग्राह्य वस्तु।
शिव-पीठिका—स्त्री० [स० प० त०] वह आधार जिस पर शिवलिंग स्थापित किया जाता है।
शिवपुत्र—पु० [स० प० त० स०] १ गणेश । २ कार्त्तिकेय । ३ पारा। पारद ।
शिवपुर—पु० [स० व० त० स०] १. जैनो का स्वर्ग जहाँ वे मुक्ति का सुख भोगते है। मोक्ष-शिला । २ काशी।
शिवपुराण—पु० [स० मध्यम० स०] अठारह पुराणो मे से एक पुराण जो शैव पुराण भी कहा जाता है और जिसमे शिव की महिमा बतलाई गई है।
शिवपुरी—स्त्री० [स० प० त० स०] काशी।
शिव-प्रिय—पु० [स० प० त० स०] १ रुद्राक्ष। २. धतूरा। ३ भाँग। विजया। ४ अगस्त का पेड। ५. बिल्लौर। स्फटिक।
शिव-प्रिया—स्त्री० [स० प० त० स० टाप्] दुर्गा।
शिव-बीज—पु० [स० प० त० स०] पारा जो शिव जी का वीर्य कहा गया है।
शिवमल्लिका—स्त्री० [स० शिवमल्ल+कन्-टाप्-इत्व] १. वसु नामक पुष्प वृक्ष। २ आक । मदार । ३ अगस्त का पेड। ४ शिवलिंग । ५. श्रीवल्ली वृक्ष।
शिवमल्ली—स्त्री० [स० शिवमल्ल-ङीप्] १. मौलसिरी। २ आक । मदार। ३ वक वृक्ष। ४ लिंगनी लता।
शिवमात्र—पु० [स० शिव+मात्रच्] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बडी सख्या का नाम ।
शिवरंजनी—स्त्री० [स० प० त०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी ।
शिवराजी—पु० [हिं० शिव+राज] एक प्रकार का बहुत बडा कबूतर।
शिवरात्र—स्त्री०=शिवरात्रि ।
शिवरात्रि—स्त्री० [स० मध्यम० स०] १ फाल्गुन वदी चतुर्दशी । (कहते हैं कि इसी रात्रि को शिव-पार्वती का विवाह हुआ था।) २ किसी चान्द्र मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।
शिव-रानी—स्त्री० [स०+हिं०] पार्वती ।
शिव-लिंग—पु० [स० प० त० स०] लिंग के आकार का वह शिला-खंड जिसे महादेव जी की पिंडी मानकर पूजा जाता है। शिव की लिंग-मूर्ति।
शिवलिंगी—स्त्री० [स० शिवलिंग-ङीर्] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता । विजगुरिया । पचगुरिया।
वि० शिव-लिंग संबधी।
शिव-लोक—पु० [स० प० त०] शिव जी का लोक, कैलास।
शिव-वल्लभा—स्त्री० [स० प० त०] १ दुर्गा। २ सेवती।
शिववल्ली—स्त्री०=शिवलिंगी ।
शिव-वाहन—पु० [स० प० त० स०] नदी नामक बैल जिसकी सवारी शिव करते थे ।
शिव-वीर्य—पुं० [स० प० त० स०] पारा जो शिव जी का वीर्य कहा गया है।
शिव-वृषभ—पु० [स० प० त० स०] शिव का बैल अर्थात् नदी।
शिव-शंकरी—स्त्री०[स०शिव शकर-ङीप्,शिवशंकरी]देवी की एक मूर्ति।
शिव-शेखर—पु० [स० व० स०, प० त० स० वा] १ शिव का मस्तक २. धतूरा। ३ आक। मदार। ४. वक वृक्ष।
शिव-शैल—पु० [स० प० त० स०] कैलास पर्वत।
शिव-सायुज्य—पुं०[स०प०त०स०] १ शिव का पद। मोक्ष। २ मृत्यु।
शिव-सुन्दरी—स्त्री० [स० प० त० स०] दुर्गा ।
शिवा—स्त्री० [स० शिव-टाप्] १ पार्वती। २ दुर्गा। ३ मुक्ति। मोक्ष। ४. मादा गीदड। गीदडी। ५ हर्रे। ६ मोआ नामक साग। ७ सफेद कीकर। शमी। ८ आँवला। ९ हल्दी १० दूब। ११ गोरोचन। १२ श्यामा लता । १३ घी। १४ अनतमूल । १५ एक बुद्धि-शक्ति।
शिवाक्ष—पु० [स० व० स०] रुद्राक्ष।
शिवाटिका—स्त्री० [स० शिव√अट् (खोजना)+ण्वुल् अक-टाप्, इत्व] १ वशपत्री नामक तृण। २ सफेद पुनर्नवा । ३ हिंगुपत्री। ४. कठूमर।
शिवात्मक—पु० [स० व० स०] सेंधा नमक।
शिवानंदी—पु० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
शिवानी—स्त्री० [स० शिव-ङीप्-आनुक] १ दुर्गा । २ जयती वृक्ष।
शिवा-प्रिय—पुं० [स० प० त० स०] १ शिव। २ बकरा जिसका शिवा अर्थात् दुर्गा के आगे बलिदान किया जाता है।
शिवा-बलि—पु० [स० चतु० त० स०] दुर्गा के निमित्त दी जानेवाली बलि। (तत्र)
शिवायतन—पु० [स प० त० स०]=शिवालय।
शिवारुत—पु० [स० प० त० स०] गीदड के बोलने का शब्द जिनसे शुभा-शुभ शकुन का विचार किया जाता है।
शिवालय—पु० [सं० प० त० स०] १. ऐसा देवालय जिसमे शिव-लिंग

स्थापित हो। २ देव-मदिर। (क्व०) ३ श्मशान। मरघट। ४ लाल तुलसी।

शिवाला—पु० [स० शिवालय] १ शिव जी का मदिर। शिवालय। २ देव-मदिर। (क्व०) ३ लोहारों, सुनारों आदि की भट्ठी।

शिवालु—पु० [स० शिव√अल् (पूरा होना)+उन्] शृगाल। सियार।

शिवि—पु० [स०√शि+वि गुणाभाव] १. एक प्रसिद्ध दानी राजा जो उशीनर के पुत्र और ययाति के नाती थे। प्रसिद्ध है कि ये कपोत (अग्नि) के रक्षार्थ बाज (इन्द्र) को अपने शरीर का सारा मास देने के लिए उद्यत हो गये थे।

शिविका—स्त्री० [स० शिव+णिच्–ण्वुल्–अक–टाप्–इत्व] पालकी। डोली।

शिविर—पु० [स०√शो (पतला करना)+किरच्, वुकच] १ खेमा। २. सैनिक पडाव। छावनी। ३ किला। दुर्ग। ४ आज-कल, वह स्थान जहाँ कोई बडा आदमी या दल कुछ समय के लिए ठहरा हो। पडाव। (कैम्प) ५ एक प्रकार का धान्य।

शिवीरथ—पु० [स० कर्म० स०] पालकी। शिविका।

शिवेतर—वि० [स० प० त० स०] जो शिव अर्थात् मागलिक न हो। अमागलिक। अशुभ।

शिवेश—पु० [स० प० त० स०] शृगाल। गीदड। सियार।

शिवेष्ट—पु० [स० प० त० स०] १ अगस्त वृक्ष। २ विल्व। बेल।

शिवेष्टा—स्त्री० [स० शिवेष्ट-टाप्] दूब।

शिवोद्भव—पु० [स० व० स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

शिवोपनिषद्—स्त्री० [स० मध्यम० स०] एक उपनिषद् का नाम।

शिशन†—पु०=शिश्न।

शिशिर—पु० १ माघ और फाल्गुन की ऋतु। २ शीतकाल। जाडा। ३ हिम। पाला। ४ विष्णु। ५ एक प्रकार का अस्त्र। ६ सूर्य। ७ लाल चन्दन।

वि० [शश+किरच्–निपा०] १ बहुत अधिक ठढा। २ ठढ से जमा हुआ।

शिशिर-कर—पु० [व० स०] चन्द्रमा।

शिशिर-किरण—पु० [व० स०] चन्द्रमा।

शिशिरता—स्त्री० [स० शिशिर+तल्–टाप्] १ शिशिर का भाव या धर्म। २ बहुत अधिक सर्दी।

शिशिर-मयूख—पु० [व० स०] चन्द्रमा।

शिशिर-रश्मि—पु० [व० स०] चन्द्रमा।

शिशिरांत—पु० [स० प० त० स० व० स० वा] शिशिर ऋतु के अत मे होनेवाली ऋतु अर्थात् वसत।

शिशिरांशु—पु० [स० व० स०] चन्द्रमा।

शिशिराक्ष—पु० [स० व० स०] पुराणानुसार एक पर्वत जो सुमेरु के पश्चिम मे कहा गया है।

शिशु—पु० [स० शो+कु सन्वद्भावोद्वित्वञ्च] [भाव० शिशुता, शैशव] १. बहुत ही छोटा बच्चा। (बेबी) २ सात-आठ वर्ष तक की अवस्था का बालक। (इन्फैन्ट) ३ पशुओं आदि का बच्चा। ४ कार्तिकेय का एक नाम।

शिशुक—पु० [स० शिशु+कन्] १ शिशुमार या सूँस नामक जल-जंतु। २ छोटा शिशु। ३. एक प्रकार का वृक्ष। ४ एक प्रकार का साँप।

शिशुकल्याण केंद्र—पु० [ष० त० स०] छोटे बच्चों की देखभाल तथा कल्याण के उद्देश्य से बनाया हुआ स्थान। (चाइल्ड वेलफेयर सेंटर)

शिशुकृच्छ्र—पु० [स० मध्यम० स०] एक प्रकार का चन्द्रायण व्रत जिसे शिशु चान्द्रायण या स्वल्प चान्द्रायण भी कहते हैं।

शिशु-गंध—स्त्री० [स० व० स] मल्लिका। मोतिया।

शिशु-चान्द्रायण—पु० [स० मध्यम० स०] शिशुकृच्छ्र (दे०)।

शिशुता—स्त्री० [स० शिशु+तल्–टाप्] शिशु होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शिशुताई†—स्त्री०=शिशुता।

शिशुत्व—पु० [स० शिशु+त्व]=शिशुता।

शिशुधानी—स्त्री० [स० प० त०] [वि० शिशुधानीय] कुछ विशिष्ट प्रकार के जतुओ मे पेट के आगे की वह थैली जिसमे वे अपने नव-जात बच्चे रखकर चलते हैं।

शिशुनाग—पु० [स० व० स०] १ एक राक्षस का नाम। २ दे० 'शैशुनाग'।

शिशुपन—पु०=शिशुता।

शिशुपाल—पु० [स० शिशु√पाल् (पालन करना)+अच्] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

शिशुमार—पु० [स० शिशु√मृ (मरना)+णिच्–अच्] १ सूँस नामक जलजतु। २ एक नक्षत्र-मडल जिसकी आकृति मगर या सूँस की तरह है। ३ कृष्ण। ४ विष्णु। ५ सौर जगत्।

शिशुमार-चक्र—पु० [स० मध्यम० स०] सौर जगत्।

शिश्न—पु० [स० शश+नक् नि०] पुरुष की जननेन्द्रिय। लिंग।

शिश्नोदरपरायण—वि० [स० शिश्नोदरपर+फक्–आयन] कामुक (या लपट) और पेटू।

शिश्नोदरवाद—पु० [स० शिश्नोदर√वद् (कहना)+अण्] वह वाद, मत, या सप्रदाय जिसका सबध जननेंद्रिय और उदर से हो, जैसे—फ्रायड का काम सिद्धान्त या मार्क्स का समाजवाद। (व्यग्य के रूप में)

शिष†—पु०=शिष्य।

† स्त्री०=सीख (शिक्षा)।

शिषरी—पु० [स० शिष√रा (लेना)+क–इनि] अपामार्ग। चिचडा।

वि०=शिखरी (शिखर से युक्त)।

शिषा†—स्त्री०=शिखा।

शिषि†—पु०=शिष्य।

शिषी†—पु०=शिखी।

शिष्ट—वि० [स०√शास्+क्त√शिष्+क्त] [भाव० शिष्टता] १ (व्यक्ति) जो एक सामाजिक प्राणी के रूप मे दूसरो से सभ्यतापूर्ण तथा सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता हो। २ धीर तथा शान्त। ३ बुद्धिमान्। ४ आज्ञाकारी। ५ प्रसिद्ध।

पु० १ मत्री। वजीर। २ सभासद्। सभ्य।

शिष्ट-कथ—वि० [स० शिष्ट√कथ्+णिच्-अच्] शिष्टतापूर्वक बातचीत करनेवाला।

शिष्टता—स्त्री० [शिष्ट+तल्–टाप्] १. शिष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २. शिष्ट आचरण। ३ उत्तमता। श्रेष्ठता। ४. अधीनता।

शिष्टत्व—पु० [शिष्ट+त्व]=शिष्टता।

शिष्टमंडल—पु० [स० प० त०] १ शिष्ट व्यक्तियो का दल। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिए कही भेजा जानेवाला विशिष्ट व्यक्तियो का दल। (डेपुटेशन) जैसे—जापान या रूस से सास्कृतिक सम्पर्क बढाने के लिए भेजा जानेवाला शिष्ट-मडल। ३ दे० 'प्रतिनिधिमडल'।

शिष्ट-सभा—स्त्री० [स० प० त० स०] प्राचीन भारत की राज्यसभा या राज्यपरिषद्।

शिष्टाचार—पु० [प० त० स०] १ शिष्टतापूर्ण आचरण और व्यवहार। २ ऐसा आचरण जो साधारणतया एक सामाजिक प्राणी से अपेक्षित हो। ३ ऊपरी या दिखावटी सभ्य व्यवहार। ४ आवभगत। सत्कार।

शिष्टाचारी (रिन्)—पु० [सं० शिष्टाचार+इनि शिष्ट-आ √चर (चलना)+णिनि वा] १ शिष्ट आचरण करनेवाला। २ सदाचारी। ३. विनम्र। ४ किसी समाज, सस्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमो के अनुसार आचरण करनेवाला।

वि० शिष्टाचार-सबधी।

शिष्टि—स्त्री० [स०√शास् (अनुशासन करना)+क्तिन्] १ आज्ञा। आदेश। २ शासन। हुकूमत। ३ दड। सजा। ४ सुधार। ५. सहायता।

शिष्ण—पुं०=शिश्न।

शिष्य—पु० [स०√शास् (अनुशासन करना)+क्यप्] [भाव० शिष्यता] १ वह जो शिक्षक से किसी प्रकार की शिक्षा पाता हो। विद्यार्थी। २. किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जिसने उससे विद्या सिखी हो। चेला। ३. वह जिसने किसी को अपना गुरु और आदर्श मानकर उससे कुछ पढा या सीखा हो या उसके दिखलाये हुए मार्ग का श्रद्धापूर्वक अनुकरण किया हो। चेला। शागिर्द। (डिसाइपुल) ४ वह जिसने गुरु आदि से गुरुमत्र लिया हो। चेला। ५ वह जो अभी हाल मे श्रावक बना हो।

शिष्यता—स्त्री० [स० शिष्य+तल्–टाप्] शिष्य होने की अवस्था या भाव। शिष्यत्व।

शिष्यत्व—पु० [स० शिष्य+त्व]=शिष्यता।

शिष्य-परंपरा—स्त्री० [स० प० त० स०] किसी गुरु के सम्प्रदाय की परम्परागत शिष्य-मडली।

शिष्या—स्त्री० [स० शिष्य-टाप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात गुरु अक्षर होते हैं। शीर्परूपक।

स्त्री० स० शिष्य का स्त्री०।

शिस्त—स्त्री० [फा०] १ मछली पकडने का काँटा। वसी। २ आघात आदि का लक्ष्य। निशाना।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

३. दूरबीन की तरह का एक प्रकार का यत्र जिससे जमीन नापने के समय सीध आदि देखी जाती है। ४ अँगूठा।

शिस्तबाज—पु० [फा०] १ शिस्त लगाकर मछली पकडनेवाला। २. निशानेबाज।

शिह्लक—पु० [स० शिर+लक् नि० स्=ग] शिलारस नाम का गध द्रव्य।

शी—स्त्री० [स०√ (शयन करना)+क्विप्] १. शाति। २ शयन। ३. भक्ति।

शीआ—पु०=शीया।

शीकर—पु० [स०√शीक+करन्] १ पानी की बूँद। २ बहुत छोटी बूँदो के रूप मे होनेवाली वर्षा। फुहार। ३ ओस। ४. वायु। ५ जाडा। ठड। शीत। ६. गन्ध-विरोजा। ७. धूप नामक गन्ध द्रव्य।

शीघ्र—अव्य० [स० शिघि+रक् पृषो०] १ विना विलव किए। विना अधिक समय विताये। २. तत्क्षण। तुरत।

पद—शीघ्र ही=कुछ ही समय बाद।

३ फुरती से।

शीघ्रकारी—वि० [स० शीघ्र√कृ (करना)+णिनि, शीघ्रकारिन्] १. शीघ्र कार्य करनेवाला। काम करने मे तेज। फुरतीला। २ शीघ्र प्रभाव दिखानेवाला। ३ उग्र। तीव्र।

पु० एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

शीघ्रकोपी—वि० [स० शीघ्र√कुप् (क्रोध करना)+णिनि] १ जल्दी गुस्सा होनेवाला। २ चिडचिडे स्वभाववाला।

शीघ्रग—वि० [सं० शीघ्र√गम् (जाना)+ड] तेज चलनेवाला। द्रुतगामी।

पु० १. सूर्य। २. वायु। ३. खरगोश।

शीघ्रगामी (मिन्)—वि० [स० शीघ्र√गम (जाना)+णिनि शीघ्रगामिन्] [स्त्री० शीघ्रगामिनी] तेज चलनेवाला।

शीघ्रता—स्त्री० [सं० शीघ्र+तल्–टाप्] १ वह स्थिति जिसमें जल्दी जल्दी कोई काम किया जाता है। जल्दी। २ तेजी। ३. जल्दबाजी। उतावलापन।

शीघ्रत्व—पु० [सं०शीघ्र+त्व] =शीघ्रता।

शीघ्रपतन—पु० [स० ब० स०] स्त्री-सहवास के समय पुरुष के वीर्य का जल्दी स्खलित हो जाना।

शीघ्रवेधी—पु० [स० शीघ्र√विध् (वेधना)+णिनि] शीघ्रता से बाण चलाने या निशाना लगानेवाला। लघु-हस्त।

शीघ्रा—स्त्री० [स० शीघ्र-टाप्] १ एक प्राचीन नदी। २ दती वृक्ष।

शीघ्रिय—पु० [स० शीघ्र+घ–इय] १. शिव। २ विष्णु। ३ विल्लियो की लडाई।

वि० १ शीघ्रगामी। २. तेज।

शीघ्री (घ्रिन्)—वि० [स० शीघ्र+इनि] १ शीघ्रकारी। २. शीघ्रगामी। ३ तुरत उच्चारण करनेवाला।

शीघ्र्य—पु० [स० शीघ्र+यत्]=शीघ्रता।

शीत—वि० [√श्यै (स्पर्श करना)+क्त] १ ठढा। शीतल। २ शिथिल। सुस्त।

पु० १ जाडा। ठंढ। सरदी। २. जाडे का मौसम। ३ जुकाम। प्रतिश्याय। ४. कपूर। ५ दालचीनी। ६ बेंत। ७ लिसोडा। ८ नीम। ९ ओस। १० कोहरा। तुपार। ११ पित्तपापडा। १२. एक प्रकार का चंदन। १३. जल। पानी।

शीतक—वि० [शीत√कृ (करना)+ड] १ ठढ या ठंढक उत्पन्न करनेवाला । २ आलसी ।
पु० [स० शीत√कृ (करना)+ड] १ शीतकाल । जाडे का मौसम । २ विच्छू । ३ वन-सनई । ४ एक प्रकार का चन्दन । ५. शीत विशेषत ठढक उत्पन्न करनेवाला एक यत्र जिससे गर्मी के दिनो मे कमरे ठढे रख जाते हैं। (कूलर)

शीत कटिबंध—पु० [स० व० स०] भूगोल मे पृथ्वी के वे कल्पित विभाग जो भूमध्यरेखा से २३½ अश उत्तर के वाद और २३½ अश दक्षिण के वाद पडते हैं और जिनमे अपेक्षया अधिक सरदी पडती है। (फरीजिड जोन)

शीतकर—पु० [स० व० स०] १. ठढी किरणोवाला, अर्थात् चद्रमा । २ कपूर ।
वि० ठढा या शीतल करनेवाला ।

शीत-काल—पु० [स० प० त०] १ हेमत ऋतु । २ सरदी के दिन । जाडे का मौसम ।

शीत-किरण—वि० [स० व० स०] शीतल किरणोवाला ।
पु० चद्रमा ।

शीत किरणी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी ।

शीत-कृच्छ्र—पु० [स० मध्यम० स०] मिताक्षरा के अनुसार एक प्रकार का व्रत ।

शीतक्षार—पु० [स० कर्म० स०] शुद्ध सुहागा ।

शीतगंध—पु० [स०व० स०] चदन । सदल ।

शीतगात्र—पु० [स० व०स०] शरीर के ठढे पडने का एक रोग ।

शीतगु—पु० [सं० व० स०] १ चन्द्रमा । २ कपूर ।

शीतचंपक—पु० [स०] १ दर्पण। शीशा । २. दीपक । दीआ ।

शीत-च्छाय—वि० [व० स०] जिसकी छाया शीतल हो।
पु० वड का पेड, जिसकी छाया ठढी होती है ।

शीत-ज्वर—पु० [स० मध्य० स०] जाडा देकर आनेवाला बुखार। विपम ज्वर। जूडी ।

शीत-तरंग—स्त्री० [स०] १ शीतकाल मे सहसा तापमान के गिरने से होनेवाली ऐसी उग्र ठढ जिसमे हाथ-पैर गलने लगते हैं। २ किसी दिशा मे वढनेवाली शीत की वह तरग जिससे दो-चार दिनों के लिए सरदी वहुत वढ जाती है । (कोल्ड वेव)

शीतता—स्त्री० [स० शीत+तल्—टाप्] १ शीत का भाव या धर्म। शीतत्व । ठंढापन । २ सरदी ।

शीतत्व—पु० [स० शीत+त्व]=शीतता ।

शीतवंत—पु० [स० व० स०] एक रोग जिसमे ठढी हवा तथा ठढा पानी दाँतो मे लगने के फलस्वरूप पीडा होती है ।

शीत-दीधिति—पु० [स० व० स०] चन्द्रमा जिसकी किरणे शीतल होती है।

शीतद्युति—पु०[स० व० स०] चन्द्रमा।

शीतन—पु०[स०] [भू० कृ० शीतित] ठढा करने की क्रिया या भाव। (कूलिंग)

शीतपर्णी—स्त्री०[स० व० स०] अर्कपुष्पी।

शीतपाकी—स्त्री०[स० व० स०] १. काकोली नामक अष्टवर्गीय ओपधि। २ घुंघची। ३ अनिवला । ककही।

शीतपित्त—पु०[स० व० स०] शीतकाल मे होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे अचानक सारे शरीर मे छोटे छोटे चकत्ते निकल आते हैं और उनमे वहुत तेज खुजली होती है। जुड-पित्ती । (युरिकेरिआ)

शीतपुष्प—पु०[स० व० स०]१. छरीला। शैलेय। २ केवटी मोथा। ३ सिरिस का पेड।

शीतपुष्पा—स्त्री०[स० शीतपुष्प—टाप्] ककही। अतिवला।

शीत-पूतना—स्त्री०[स० मध्यम० स०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का वालग्रह या वालरोग।

शीतप्रभ—पु०[स० व० स०] १ चन्द्रमा। २. कपूर।

शीतफल—पु० [स० व०स०] १ गूलर। २ पीलू। ३ अखरोट। ४ आवला । ५ लिसोढा।

शीतभानु—पु०[स० व० स०] चन्द्रमा।

शीत-मयूख—पु०[स० व० स०] १. चन्द्रमा। २ कपूर।

शीत-मरीचि—पु०[स० व० स०]१ चन्द्रमा। २ कपूर।

शीत-मेह—पु०[सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का प्रमेह रोग ।

शीतमेही (हिन्)—पु०[स०शीतमेह+इनि] वह जिसे शीत-मेह रोग हो।

शीतयुद्ध—पु०[स मध्य० स०] राष्ट्रों के पारस्परिक व्यवहार मे वह स्थिति जिसमे प्रत्यक्ष रूप से युद्ध तो नही होता, फिर भी प्रत्येक राष्ट्र अपने आपको प्रभावशाली तथा सशक्त वनाने के लिए ऐसी राजनीतिक चालें चलता है जिनके कारण दूसरे राष्ट्रों के सामने वडी वडी उलझनें खडी हो जाती हैं। (कोल्ड वार)

शीत-रश्मि—पु० [स० व० स०] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

शीत-रस—पु०[स० व० स०] प्राचीन भारत मे, ईख के कच्चे रस की वनी हुई एक प्रकार की मदिरा।

शीतरुच—पु०[स० व०स०] चन्द्रमा।

शीतरुह—पु०[स० व० स०] सफेद कमल ।

शीतल—वि०[स० शीत√ ला+क] १ शीत उत्पन्न करनेवाला। सर्द। ठढा। 'उष्ण' का विपर्याय। २ जिसमे कुछ कुछ ठढक हो। जैसे—शीतल समीर। ३ जो शीतलता या ठढक प्रदान करता हो। ४. जिसमे आवेश न हो। शात। ५ प्रसन्न। ६ सतुष्ट।
पु०१ कसीस। २ छरीला। ३. चन्दन। ४ मोती। ५ उशीर। खस। ६ वनसनई। ७ लिसोडा। ८ चपा। ९. राल। १० पद्मकाठ। ११ पीत चदन। १२ भीमसेनी कपूर। १३ शाल वृक्ष। १४ हिम। १५ मटर। १६ चन्द्रमा। १७ जैनो का एक प्रकार का व्रत।

शीतलक—पु०[स० शीतल√कन्]१ मरुआ। मरुवक। २ कुमुद। वि० शीतल करनेवाला।

शीतल-चीनी—स्त्री०[सं शीतल+हि० चीनी] कवाव चीनी।

शीतलच्छाय—वि०[स० व० स०]=शीतच्छाय।

शीतलता—स्त्री०[स० शीतल+तल्—टाप्]१ शीतल होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २ जडता।

शीतलताई†—स्त्री०=शीतलता।

शीतलत्व—पु०[स० शीतल+त्व]=शीतलता।

शीतल-पाटी—स्त्री० [स०+हिं०] एक प्रकार की चिकनी, पतली और वढिया चटाई।

शीतल भंडार—पु०[स० ब० स०]१ विशेष प्रकार से निर्मित तथा यंत्रो आदि से सचालित वह भडार गृह जिसका तापमान कृत्रिम रूप से कम कर दिया जाता है तथा जिसके फल स्वरूप उसमे रखी हुई चीजें ताप के कुप्रभाव से सुरक्षित रहती है। ठढा गोदाम। (कोल्ड स्टोरेज) २ शीतागार। सर्दखाना।

शीत-लहरी—स्त्री०[स०]=शीत तरग। (देखें)

शीतला—स्त्री०[स० शीतल—टाप्]१ एक प्रसिद्ध रोग जिसमे शरीर पर दाने या फफोले निकल आते है। २ उक्त की अधिष्ठात्री देवी। ३ नीली दूब। ४ अर्क पुष्पी।

शीतला-वाहन—पु०[प० त० स०] गधा, जो शीतला देवी का वाहन कहा गया है।

शीतला-षष्ठी—स्त्री० [प० त०] माघ शुक्ला षष्ठी जो शीतला देवी के पूजन की तिथि कही गई है।

शीतलाष्टमी—स्त्री० [स० प० त० म०] चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी जो शीतलादेवी के पूजन की तिथि कही गई है।

शीतली—स्त्री०[स० शीतल-ङीप्]१ जल मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा। २ श्रीवल्ली। ३ चेचक या शीतला नामक रोग।

शीतवल्ली—स्त्री०[स० ब० स०] नीली दूब।

शीतवासा—स्त्री०[स० ब० स०] जूही। यूथिका।

शीत-वीर्य—पु० [स० ब० स०]१ पद्मम काठ। २ पाषाण-भेद नामक वनस्पति। ३ पित्त-पापडा। ४ पाकर वृक्ष। ५ नीली दूब। ६ वच।
वि० (पदार्थ) जो खाने पर शरीर मे ठढक लाता हो। ठढी तासीर वाला।

शीत-शिव—पु०[स० कर्म० स०] १. सेधा नमक। २ छरीला। पत्थर-फूल। ३ सोआ नामक साग। ४ शमी वृक्ष। ५ कपूर।

शीतशिवा—स्त्री०[स० शीत-शिव-टाप्]१ शमी वृक्ष। २ सौफ।

शीतशूक—पु०[स० ब० स०] जौ। यव।

शीत-संग्रह—पु०[स० प० त० स०]=शीतल भडार।

शीत-सन्निपात—पु० [स० मध्यम० स०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमे शरीर सुन्न और ठढा हो जाता है।

शीत-सह—पु०[स० शीत√सह (सहन करना)+अच्] पीलू। झल्ल वृक्ष।
वि० जिसमे शीत अर्थात् ठढ या सरदी सहने की विशेष क्षमता हो।

शीत-सहा—स्त्री०। [स० शीतसह-टाप्] १ शेफालिका। २ नेवारी। ३ मोतिया। वेला। ४ चमेली। ५ पीलू वृक्ष।

शीत-सीमांत—पु० दे० 'शीताग्र'।

शीतांग—पु०[स० ब० स०] शीत सन्निपात।
वि० ठढे अगोवाला।

शीतांगी—स्त्री० [स० शीताग—ङीप्] हसपदी लता।

शीतांशु—पु० [स० ब० स०] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

शीता—स्त्री० [स० शीत—टाप्] १ सरदी। ठढ। २ एक प्रकार की दूब। ३ शिल्पिका नामक घास। ४ अमलतास।

शीतागार—पु० [स०]=शीतल भडार।

शीताग्र—पु०[स०प० त०] किसी ओर से आनेवाली शीतल वायु की धारा का वह अग्र भाग जो गरम वायु के सामने आ पड़ने के कारण कुछ नीचे दब जाता है और शीत की हलकी तह के रूप मे किसी प्रदेश के ऊपर से होता हुआ आगे बढता है। (कोल्ड फ्रन्ट)
विशेष—जब यह शीताग्र किसी प्रदेश के ऊपर से होकर गुजरता है तब उस प्रदेश मे तापमान और वायुभार गिर जाता है, आँधी आती और वर्षा होती है।

शीतातप—पु० [स० द्व० स०] शीत और आतप दोनों। जाडा और गरमी।

शीताद—पु० [सं० शीत-आ√दा (देना) +का] एक प्रकार का रोग जिसमे मसूडो से दुर्गंध निकलने लगती है।

शीताद्रि—पु० [स० मध्यम० स०] हिमालय पर्वत।

शीताद्य—पु० [स० शीताद+यत्] शीतज्वर। जूडी बुखार।

शीताभ—पु० [स० ब० स०]१ चन्द्रमा। २ कपूर।

शीतालु—वि०[स० शीत+आलुच्]१ शीत के फलस्वरूप जो काँप रहा हो। २ शीत से सत्रस्त।

शीताश्म (मन्)—पु०[स० कर्म० म०] चद्रकात मणि।

शीतोदक—पु०[स० ब० स०] एक नरक का नाम।

शीतोष्ण—वि०[स० द्व० स०] १ ठंढा और गरम। २ कुछ कुछ ठढा और कुछ कुछ गरम।

शीतकार—पु०=सीत्कार।

शीधु—पु०[स० शी+धुक्] मदिरा। शराब। विशेषत ऊख के रस को सडाकर बनाई जानेवाली शराब।

शीन—वि०[सं० √ श्यै (गमनादि)+क्त-सप्रसा० त=न] १ मूर्ख। २ जमा हुआ।
पु०=अजगर।
पु०[अ०]१ अरबी-फारसी वर्णमाला का एक वर्ण जिसका उच्चारण तालव्य 'श' का सा होता है। २ उक्त वर्ण का सूचक लिपिचिह्न।
मुहा०—शीन काफ दुरुस्त होना=शब्दो के ठीक उच्चारण का उचित ज्ञान होना।

शीर—पु०[स० क्षीर से फा०] दूध।
पु०[स०] अजगर।
वि० नुकीला।

शीरखिस्त—पु०[फा०] एक प्रकार की यूनानी रेचक ओषधि।

शीरखोरा—वि० [फा० शीरख्वार] (बालक) जो अभी अपनी माँ का दूध पीता हो।

शीरगर्म—वि० [फा०] (तरल पदार्थ) जो उबलता हुआ न हो, बल्कि साधारण गर्म हो। उतना ही गरम जितना पीने योग्य दूध होता है।

शीरमाल—पु०[फा०] एक प्रकार की मीठी रोटी जिसे पकाते समय दूध का छींटा दिया जाता है।

शीरा—पु०[फा० शीर.] गुड, चीनी, मिसरी आदि के घोल को उबालकर तैयार की हुई चाशनी।

शीराज—पु० [फा०] एक प्रसिद्ध ईरानी नगर।

शीराजा—पु० [फा० शीराज]१ वह फीता जो किताबो की सिलाई की छोर पर शोभा और मजबूती के लिए लगाया जाता है। २ इन्तजाम। प्रबन्ध। व्यवस्था। ३ क्रम। सिलसिला। ४ कपड़ो की सिलाई। सीयन।

क्रि० प्र०—खुलना।—टूटना।

शीराजी—वि०[फ़ा०] शीराज का।
पु०१. शीराज का निवासी। २. एक प्रकार का कबूतर।

शीरीं—वि०[फ़ा०] १ मधुर। मीठा। २. प्रिय। रुचिकर।

शीरी—पु०[सं० शीर+इनि]१. कुश। कुशा। २. मूंज। ३. कलिहारी। लागली।

शीरीनी—स्त्री० [फ़ा०] १ मिठास। मधुरिमा। २ मिठाई। मिष्ठान्न। ३. गुरु, देवता, पीर आदि के सामने आदरपूर्वक रखी जानेवाली मिठाई।
क्रि० प्र०—चढ़ाना। बाँटना।

शीर्ण—भू० कृ०[सं० √ शृ (टुकड़े होना)+क्त] [भाव० शीर्णता] १. खड-खड। टुकडे-टुकड़े। २. गिरा हुआ। च्युत। ३. टूटा या फटा हुआ और फलत बहुत पुराना। ४. कुम्हलाया या मुरझाया। हुआ। ५ दुबला-पतला। कृश।
पु० थुनेर नामक गन्ध द्रव्य।

शीर्णता—स्त्री०[शीर्ण+तल्—टाप्] शीर्ण होने की अवस्था या भाव।

शीर्णत्व—पु०[शीर्ण+त्व]=शीर्णता।

शीर्णपत्र—पु० [सं० ब० स०] १. कर्णिकार। कनियारी। २. पठानी लोध। ३. नीम।

शीर्णपर्ण—पु०[सं० ब० स०] निंब। नीम।

शीर्णपाद—पु० [सं० ब० स०] यमराज।

शीर्णपुष्पी—स्त्री० [सं० शीर्णपुष्प—ङीप्] सौंफ।

शीर्ति—पु०[सं०√शृ (टुकड़े करना)+क्तिन्] तोड़ने-फोडने की क्रिया। खडन।

शीर्य—वि०[सं० शृ (खड करना)+ क्विप्-यत्] १. जो तोड़ा-फोडा जा सके। २. भंगुर। नाशवान्।
पु० एक प्रकार की घास।

शीर्ष—पु०[शिरस् -शीर्ष पृषो० √शृ+क, सुक् वा] १. किसी चीज का सबसे ऊपरी तथा उन्नत सिरा। २. सिर। ३ मस्तक। ललाट। ४ काला अगर। ५ एक प्रकार की घास। ६ एक प्राचीन पर्वत। ७. ज्यामिति मे वह बिंदु जिस पर दो ओर से दो तिरछी रेखाएँ आकर मिलती हो। (वर्टेक्स) ८ खाते मे किसी मद का नाम। (हेड)

शीर्षक—पु०[सं० शीर्ष√कै (होना)+क] १. सिर। २. मस्तक। माथा। ३ ऊपरी भाग। चोटी। ४. सिर की हड्डी। ५. टोपी आदि शिरस्त्राण। ६ लेखों आदि के ऊपर दिया जानेवाला उनका ऐसा नाम जिससे उनके विषय का कुछ परिचय मिलता हो। (हेडिंग) ७. राहु ग्रह।

शीर्ष-कोण—पु० [सं० मध्य० स०] ज्यामिति मे, किसी आकृति का वह कोण जो तल के ठीक ऊपरी भाग मे खड़े बल मे होता है। (वर्टिकल एंगिल)

शीर्ष-नाम—पुं०[सं० मध्य० स०] लेख्य, विधान आदि का वह पूरा नाम जो उसके आरम्भ मे विशेषत. मुख-पृष्ठ पर रहता है।

शीर्ष-पट—पु० [सं० ष० त० स०] सिर पर लपेटा जानेवाला वस्त्र अर्थात् पगड़ी या साफा।

शीर्ष-रक्ष—पुं०[शीर्ष√ रक्ष् (रक्षा करना)+अण्] शिरस्त्राण।

शीर्ष-रेखा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. किसी वर्ण के ऊपरवाली रेखा या लकीर। २. देव-नागरी लिपि मे चिह्नों के ऊपर की सीधी बेडी रेखा।

शीर्ष-बिंदु—[सं० ष० त० स०] १. आँख का मोतिया-बिंद नामक रोग। २. दे० 'शिरोबिंदु'।

शीर्ष-स्थान—पु० [सं० मध्य० स०]१. सबसे ऊँचा स्थान। २. सिर।

शीर्षण्य—पु०[सं० शीर्ष+यत्—शीर्षन्] १. टोपी। २ सिरके साफ और सुलझे बाल। ३ खाट या चारपाई का सिरहाना। ४ पगड़ी। साफा।

शीर्षासन—पु०[सं० शीर्ष+आसन] हठयोग, व्यायाम आदि मे एक प्रकार का आसन या मुद्रा जिसमे सिर नीचे और पैर ऊपर करके सीधे खडा हुआ जाता है।

शीर्षोदय—पु०[सं० ष० त० स०] मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ और मीन राशियाँ जिनका उदय शीर्ष की ओर से होना माना गया है।

शील—पु०[सं० √शील (अभ्यास)+अच्]१. मनुष्य का नैतिक आचरण और व्यवहार ; विशेषत. उत्तम और प्रशसनीय या शुभ आचरण और व्यवहार। (डिस्पोजीशन)
विशेष—शील वस्तुत. मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व से सबद्ध होता है, और इसी लिए कही कही यह स्वभाव के पर्याय के रूप मे भी प्रयुक्त होता है। यह प्राय सुनिश्चित और अस्थायी या स्थिर भी होता है। यह स्वभाव के चारित्रिक पक्ष या रूप मे होता है; इसीलिए इसे देह-स्वभाव भी कहते हैं।
मुहा०—**शील निभाना**=(क) सद्-व्यवहार मे अंतर न आने देना। (ख) किसी के द्वारा अनिष्ट होने पर भी उसका अनिष्ट न करना। **(किसी स्त्री का) शील भंग करना**=किसी स्त्री के साथ व्यभिचार करके उसका सतीत्व नष्ट करना।
२. हमारे मन की वह सद्भावना पूर्ण वृत्ति जो विकट प्रसग आने पर भी हमे उग्र, उद्धत या कटु नही होने देती और जो हमारी विनम्रता, शिष्टता आदि की सूचक होती है। (माडेस्टी)
विशेष—यह वृत्ति बहुत कुछ अर्जित होती और शिक्षा तथा शिष्ट समाज के सपर्क से प्राप्त होती है।
३ वह मानसिक वृत्ति जिसमे लज्जा और सकोच की प्रधानता होती है, और इसी लिए उचित अवसरो पर भी प्राय. कोई बात नही कहने देती। मुरौवत।
मुहा०—**शील तोड़ना**=मुरौवत न करना या न रखना।

शीलन—पु०[सं०√शील् (अभ्यास करना)+ल्युट्—अन]१. अभ्यास। २. विवेचना। ३ प्रवर्तन। ४. धारण करना। ५. ग्रहण करना।

शीलवान्—वि० [सं० शील+मतुप्—म=व-नुम् शीलवत्] [स्त्री० शीलवती] १. उत्तम शीलवाला। २. शीलो का पालन करनेवाला। (बौद्ध)

शीलींध्र—पु०[सं० शिली √धृ (रखना)+क पृषो० मुम्]१ केले का फूल। २ ओला। ३. कुकुरमुत्ता। ४ शिलिंद मछली।

शीश—पु० दे० 'शीर्ष'।

शीश-तरंग—पु० [हिं० शीश+सं० तरग] जलतरग की तरह का एक

बाजा। जिसमे दो पटरियो पर शीशे के छोटे-बडे बहुत से टुकडे जडे होते हैं। इन्ही शीशो पर आघात करने से अनेक प्रकार के स्वर निकलते हैं।

शीशम—पु०[स० शिंशिपा से फा०] एक प्रकार का पेड जिसकी लकड़ी बहुत बढिया होती है और इमारत तथा मेज, कुरसियाँ आदि बनाने के काम आती है।

शीश-महल—पु०[फा० शीश+अ० महल] १. शीशे का बना हुआ मकान। २ वह कमरा या कोठरी जिसकी दीवारो मे सर्वत्र शीशे जडे हों। **पद—शीशमहल का कुत्ता**=ऐसा व्यक्ति जो उस कुत्ते की तरह घबराया या बौखला गया हो जो शीशमहल मे पहुँचकर अपने चारो ओर कुत्ते ही कुत्ते देखकर घबरा या बौखला जाता है।

शीशा—पु० [फा०] १. एक प्रसिद्ध कडा और भगुर पदार्थ जो बालू, रेह या खारी मिट्टी को आग मे गलाने से बनता है, और जिससे अनेक प्रकार के पात्र, दर्पण आदि बनते हैं। २. उक्त का वह रूप जिसमें ठीक ठीक प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। आईना। दर्पण।

पद—शीशा-बाशा=बहुत नाजुक चीज।

मुहा०—शीशे मे मुँह तो देखो=पहले अपनी पात्रता या योग्यता तो देखो। (व्यग्य)

३. उक्त पदार्थ का बना हुआ वह पात्र जिसमे प्राचीन काल मे शराब रखी जाती थी।

पद—शीशे का देव=शराब।

मुहा०—शीशे में उतारना= (क) भूत, प्रेत आदि को मत्र बल से बाँधकर शीशे के पात्र मे बन्द करना। (ख) किसी को अपनी ओर आकृष्ट या अनुरक्त करके अपने वश मे करना।

४ झाड, फानूस आदि काँच के बने सजावट के सामान। ५ लाक्षणिक अर्थ मे बहुत ही चिकनी तथा चमकीली वस्तु।

शीशागर—पु०[फा०] [भाव० शीशागरी] शीशे बनानेवाला कारीगर।

शीशागरी—स्त्री० [फा०] शीशे की चीजें बनाने का काम तथा हुनर।

शीशी—स्त्री० [फा० शीशा] काँच की लम्बी कुप्पी। बोतल के आकार का छोटा पात्र।

मुहा०—शीशी सुंघाना=अस्त्र चिकित्सा करने से पहले एक खास दवा सुंघाकर रोगी को इसलिए बेहोश करना कि चीर-फाड से उसे कष्ट या पीड़ा न हो।

शुंग—पु०[स० शम्+ग, अ=उ] १ वट वृक्ष। बरगद। २ आँवला। ३ पाकड़। ४ वृक्षो आदि का नया पत्ता। ५. फूल के नीचे की कटोरी। ६ एक क्षत्रिय राजवश जिसने मौर्यों के उपरात मगध पर शासन किया था।

शुंगी (गिन्)—पु०[स० शुग+इनि शुङ्गिन्] १. पाकर। पाकड का पेड। २ वट-वृक्ष। बरगद।

शुंठी—स्त्री०[स० शुठ—ङीप्] सोठ।

शुंड—पु०[स० शुन्+ड] १ हाथी का सूँड। २ हाथी का मद। ३ एक तरह की शराब।

शुंडक—पु०[स० शुड+कन्] १. एक प्रकार की रणभेरी। २. शौडिक।

शुंडा—स्त्री०[स० शड—टाप्] १ सूँड। २. शराबखाना। हौली। ३. मदिरा। शराब। ४. रडी। वेश्या। ५ कुटनी।

शुंडा-दंड—पुं०[स० उपमि० स०] हाथी का सूंड।

शुंडार—पु०[स० शुडा+र] १ हाथी की सूँड। २. साठ वर्ष की अवस्था का हाथी। ३. कलवार।

शुंडाल—पु० [स० शुडा+लच्] हाथी।

शुंडिक—पु०[स० शुडा+ठक्—इक] १ वह जो शराब बनाने का व्यवसाय करता हो। २ शराब बनानेवाली एक जाति। ३ मद्य बिकने का स्थान। मद्यशाला।

शुंडिका—स्त्री०[स० शुडिक—टाप्] गले के अन्दर की घाँटी। अलि-जिह्वा। ललरी। घाँटी।

शुंडी—पु०[स० शुड+अच्—ङीप् शुडिन्] १ हाथी। २. कलवार। शौंडिक।

स्त्री० १ हाथी सूँड़ी नाम का पौधा। २ गले के अन्दर की घाँटी। कौआ।

शुंभ—पु० [स०√शुभ् (दीप्त होना आदि)+अच्] प्रह्लाद का पौत्र एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।

शुंभ-मर्दिनी—स्त्री०[शुभ√मृद् (मर्दन करना)+णिनि—ङीप्] दुर्गा।

शुक—पु० [√शुक् (गमनादि)+क] १ तोता। सुग्गा। २. शुक-देव मुनि। ३. कपड़ा। वस्त्र। ४ पहने हुए कपड़े का आँचल। ५ पगडी। साफा। ६ सिरिस का पेड। ७ लोध। ८. सोना-पाठा। ९. भड़-भाँड। १०. तालीश पत्र। ११ एक प्रकार की गठिवन।

शुक-कीट—पु०[सं० उपमि० स०] हरे रग का एक प्रकार का फतिंगा जो प्राय खेतों मे उडता फिरता है।

शुक-कूट—पु०[स० प० त० स०] दो खभो के बीच मे शोभा के लिए लटकाई हुई माला।

शुकच्छद—पु०[स० प० त० स०] १. तोते का पर। २ गठिवन। ३ तेजपत्ता।

शुकतरु—पु०[स० मध्य० स०] शिरीष (वृक्ष)।

शुकतुंड—पु०[स० प० त० स०] १. तोते की चोच। २ हाथ की एक मुद्रा जो तात्रिक पूजन के समय बनाई जाती है।

शुकतुडी—स्त्री० [स० शुक-तुड—ङीप्] सूआठोंठी नामक पौधा।

शुकदेव—पु०[स० मध्यम० स०] कृष्ण द्वैपायन व्यास के पुत्र जो पुराणो के बहुत बडे वक्ता और ज्ञानी थे।

शुकद्रुम—पु०[स० मध्य० स०] शिरीष वृक्ष।

शुकनलिकान्याय—पु० [स० प० त० मध्य० स०] एक प्रकार का न्याय। जिस प्रकार तोता फँसाने की नली मे लोभ के कारण फंस जाता है, वैसे ही फँसने की क्रिया या भाव।

शुकनास—पु० [स० ब० स०] १. केवाँच। कौंछ। २ गभारी। ३ नलिका नामक गध-द्रव्य। ४ श्योनाक। सोना-पाठा। ५. अगस्त का पेड।

शुकपुष्प—पु०[स० ब० स०] १ थुनेर। २ सिरिस का पेड। ३. गन्धक। ४ अगस्त का पेड।

शुकप्रिय—वि०[स० प० त०] तोते को प्रिय लगनेवाला।

पु० १. सिरिस का पेड़। २. कमरख।

शुकप्रिया—स्त्री०[सं० शुकप्रिय—टाप्] १. नीम। २. जामुन।
शुक-फल—पु०[सं० ब० स०] १. आक। मदार। २ सेमल।
शुक-वाहन—वि०[सं० ब० स०] जिसका वाहन शुक हो।
पु० कामदेव।
शुर्कशिबा, शुर्कशिबि—स्त्री० [सं० उपमि० स०] कपिकच्छु। केवांच। कौंछ।
शुकशीर्षा—स्त्री० [सं० ब० स०] १ थुनेर। २. तालीश पत्र। ३. तेजपत्ता।
शुकादन—पु०[सं० शुक√अद् (खाना)+ल्युट्—अन] अनार। दाडिम।
शुकायन—पु०[सं० ब०स०] १ गौतम बुद्ध। २ अर्हत्।
शुकी—स्त्री०[सं० शुक—ङीप्] १ तोते की मादा। तोती। सुग्गी। २ कश्यप मुनि की पत्नी का नाम।
शुकेष्ट—पु०[सं० ष० त० स०] शिरीष वृक्ष।
शुकोदर—पु०[सं० ब० स०] तालीश पत्र।
शुकोह—पु०[फा०] दे० 'शिकोह'।
शुक्त—भू० कृ०[सं० √ शुच् (शोक करना)+क्त] [भाव० शुक्ति] १ स्वच्छ। निर्मल। २ खट्टा। अम्लीय। ३ कड़ा। ४ रुखड़ा। ५ अप्रिय। ६. उजाड़। ७ निर्जन। ८. मिला हुआ। मिश्रित। ९ दिलष्ट।
पु०१ अम्लता। खटाई। २. खटाकर खट्टी की हुई चीज। खमीर। ४ कांजी। ५ सिरका। ६ चुक नाम की खटाई। ७. गोश्त। मास। ८ अप्रिय और कठोर बात।
शुक्ता—स्त्री०[सं० शुक्त—टाप्] १. चुक का पौधा। २. कांजी।
शुक्ति—स्त्री० [सं० √ शुच् (शोकादि)+क्तिन्]१. सीप। सीपी। २ सुतुही। ३ शख। ४ बेर। ५ नखी नामक गन्ध द्रव्य। ६ अर्श या बवासीर नामक रोग। ७. कापालिको के हाथ मे रहनेवाला कपाल। ८ अस्थि। हड्डी। ९. दो कर्ष या चार तोले की एक तौल। १० आँख का एक रोग जिसमे मास की एक बिंदी सी निकल आती है। ११ घोडे के गरदन की एक भौरी।
शुक्तिक—पु० [सं० शुक्ति+कन्] १. एक प्रकार का नेत्र रोग। २ गन्धक।
शुक्तिका—स्त्री० [सं० शुक्तिक—टाप्]१ सीप। २ चुक नामक साग। ३ आँख का शुक्ति नामक रोग।
शुक्तिज—पु० [सं० शुक्ति√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मोती।
वि० शुक्ति अर्थात् सीप से उत्पन्न।
शुक्तिपुट—पु० [सं० ष० त० स०] १ सीप का खोल। २ शख। ३ सुतुही नामक जल-जन्तु तथा उसका खोल।
शुक्तिबीज—पु०[सं० ष० त०स०] मोती।
शुक्तिमणि—पु० [ष० त० स०] मोती।
शुक्तिमती—स्त्री०[सं० शुक्ति+मतुप्—ङीप्] १ एक प्राचीन नदी। २ चेदि राज्य की राजधानी।
शुक्तिमान्(मत्)—पु० [सं०शुक्तिमत्—नुम्—दीर्घ] एक पर्वत जो आठ कुल-पर्वतो मे से है।
शुक्ति वधू—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १ सीप। सीपी। २. सीपी मे रहनेवाला कीड़ा।
शुक्र—वि० [सं० शुच्+रक्]१. चमकीला। देदीप्यमान। २. साफ। पु०१. अग्नि। आग। २ हमारे सौर ग्रह का एक प्रमुख तथा बहुत चमकीला ग्रह जो कभी कभी दिन के प्रकाश मे भी दिखाई देता है तथा जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है।
विशेष—यह सूर्य से ६७,०००,००० मील दूर है। यह सूर्य का पूरा चक्कर प्राय २०० से कुछ अधिक दिनों मे लगाता है।
३ शुद्ध और स्वच्छ सोम। ४ सोना। स्वर्ण। ५.धन-सम्पत्ति। दौलत। ६ सार भाग। सत्त। ७ पुरुष का वीर्य। ८ पौरुष। ९. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १०. एरड। रेंड। ११ आँख की पुतली का फूली नामक रोग। १२ दे० 'शुक्रवार'।
पु०[अ०] किसी उपकार या लाभ के लिए किया जानेवाला कृतज्ञता का प्रकाश। जैसे—शुक्र है, आप आ तो गये।
शुक्र-कर—वि०[सं० शुक्र√कृ (करना)+अच्] वीर्य बनानेवाला। पु० मज्जा, जिससे शुक्र या वीर्य का बनना कहा गया है। (वैद्यक)
शुक्र-कृच्छ्र—पु०[सं० ब० स०] मूत्रकृच्छ्र रोग। सूजाक।
शुक्रगुजार—वि०[अ० शुक्र+फा० गुजार] [भाव० शुक्रगुजारी] १. किसी का शुक्र अर्थात् आभार माननेवाला। २ आभार प्रकट या प्रदर्शित करनेवाला।
शुक्रगुजारी—स्त्री० [अ०+फा०] शुक्रगुजार होने की अवस्था या भाव। आभार प्रकट या प्रदर्शित करना।
शुक्रज—पु० [सं० शुक्र√ जन् (उत्पन्न करना)+ड]१. पुत्र। बेटा। २. जैन देवताओ का एक वर्ग।
वि० शुक्र से उत्पन्न।
शुक्र-ज्योति—स्त्री०[सं० ब० स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
शुक्र-दोष—पु०[सं० ब० स०] नपुसकता।
शुक्र-पुष्प—पु०[सं० ब० स०] १ कटसरैया। २ सफेद अपराजिता।
शुक्र-प्रमेह—पु०[सं० ब० स०] वीर्य के क्षय होने का एक रोग। धातु का गिरना।
शुक्रभुज—पु०[सं० शुक√भुज् (खाना)+क्विप्] मयूर। मोर।
शुक्रभू—पु० [सं० शुक्र√भू (होना)+क्विप्] मज्जा।
शुक्रमेह—पु० [सं०] वीर्य के क्षय होने का एक रोग।
शुक्रल—वि०[सं० शुक्र√ला (लेना)+क]१ जिसमे शुक्र या वीर्य हो। २ शुक्र या वीर्य उत्पन्न करने या बढानेवाला।
शुक्रवार—पु०[सं० ष० त० स० मध्यम० स० वा]सप्ताह का छठा दिन। बृहस्पतिवार के बाद का और शनिवार से पहले का दिन। जुमेरात।
शुक्र-वासर—पु०[ष० त० स०]—शुक्रवार।
शुक्र-शिष्य—पु०[सं०] १. शुक्राचार्य। २ असुर।
शुक्र-स्तंभ—पु०[सं० ब० स०] काम का वेग रोकने के फलस्वरूप होनेवाली नपुसकता।
शुक्रांग—पु०[सं० ब०स०] मयूर। मोर।
शुक्राचार्य—पु०[सं० कर्म० स०] १ असुरो के देवता जो महर्षि भृगु के पुत्र थे और युद्ध मे मरे हुए असुरो को मन्त्र-बल से फिर से जिला देते थे। पुराणो के अनुसार वामन रूप धारण करके विष्णु ने इन्हे काना कर दिया था। २. काना या एकाक्ष व्यक्ति। (व्यग्य)

शुक्राणु—पु०[स० प० त०] नर या पुरुष के वीर्य का वह अणु जो मादा या स्त्री के अड अथवा गर्भ मे प्रविष्ट होकर सतान उत्पत्ति का कारण होता है। (स्पर्म)

शुकाना—पु०[फा० शुकान] वह धन जो किसी को शुक्रिया अदा करते समय दिया जाता है। जैसे—वकील या डाक्टर को दिया जानेवाला शुकाना।

शुक्रिम—वि०[स० शुक्र+इमनिच]=शुक्ल।

शुक्रिय—वि०[स० शुक्र+घ–इय] १ शुक्र-सम्बन्धी। शुक्र का। २ जिसमे शुद्ध रस हो। ३० शुक्र बढानेवाला।

शुक्रिया—पु० [फा० शुक्रिय] किसी के उपकार या अनुग्रह के बदले मे कृतज्ञता प्रकट करते समय कहा जानेवाला शब्द। धन्यवाद।
क्रि० प्र०—अदा करना।

शुक्ल—वि०[स० √शुच(पवित्र करना आदि)+लच्, कुत्व]१ सफेद। श्वेत। २ सात्विक। ३ यशस्कर। ४ चमकीला।
पु०१. सरयूपारी आदि ब्राह्मणो के एक वर्ग का अल्ल या कुल नाम। २. चान्द्रमास का शुक्ल पक्ष। ३ सफेद रेंड का पेड। ४ आँखो का एक प्रकार का रोग जो उसके सफेद तल या डेले पर होता है। ५ कुन्द का पौधा और फूल। ६ सफेद लोध। ७ मक्खन। ८ चाँदी। ९. धव। धौ। १० योग।

शुक्ल-कंद—पु० [स० ब० स०] १ भँसाकद। २ शखालू। साँख। ३. अतीस।

शुक्ल-कंदा—स्त्री० [स० कर्म० स० टाप्] १ सफेद अतीस। २. विदारी कद।

शुक्लक—पु०[स० शुक्ल+कन्]१ शुक्ल पक्ष। २ खिरनी का पेड।
वि०=शुक्ल।

शुक्ल-कुष्ठ—पु०[स० कर्म० स०] सफेद कोढ।

शुक्ल-क्षेत्र—पु० [स० कर्म० स०] १ पवित्र स्थान। २ तीर्थ स्थान।

शुक्लता—स्त्री०[स० शुक्ल+तल्—टाप्] शुक्ल होने की अवस्था धर्म या भाव।

शुक्लत्व—पु०[स० शुक्ल+त्व]=शुक्लता।

शुक्ल-पक्ष—पु०[स० कर्म०स०] चान्द्रमास मे कृष्ण पक्ष से भिन्न दूसरा पक्ष। चाँदना पक्ष।

शुक्ल-पुष्प—पु०[स० ब० स०]१ छत्रक वृक्ष। २ कुंद का पौधा और फूल। ३. मरुआ पौधा। ४ सफेद ताल-मखाना। ५. पिंडार। ६ मैन-फल।

शुक्लपुष्पा—स्त्री० [स० शुक्ल पुष्प-टाप्]१. हाथी शुडी नामक क्षुप। २ शीत कुभी। ३ कुद नामका पौधा और फूल।

शुक्लपुष्पी—स्त्री० [स० शुक्ल पुष्प–ङीप्] १. नागदती। २ कुद का पौधा और फूल।

शुक्लफेन—पु०[स० ब स०] समुद्र फेन।

शुक्ल-बल—पु०[स० ब० स०] जैनो के अनुसार एक जिन देव का नाम।

शुक्ल-मंडल—पु०[स०ब०स०] आँखो का सफेद भाग जो पुतली से भिन्न होता है।

शुक्ल-मेह—पु०[स०] चरक के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह रोग।

शुक्ल-शाल—पु०[स० ब०स०]१ गिरि निंब।२ सफेद शाल का वृक्ष।

शुक्लांग—वि० [सं० ब० स०] श्वेत अगो वाला।

शुक्लांगा—स्त्री० [स० शुक्लाग-टाप्] शेफालिका।

शुक्लांबर—पु०[स० कर्म० स०] सफेद कपडा।
वि० जो श्वेत वस्त्र पहने हो।

शुक्ला—स्त्री० [म० शुक्ल+अच्–टाप्] १ सरस्वती। २ चीनी। ३ काकोली। ४ शेफालिका। ५ बिदारी कन्द। ६ शूकर कन्द।

शुक्लाभिसारिका स्त्री० [स० मध्य० स०] साहित्य मे वह परकीया नायिका जो शुक्ल पक्ष या चाँदनी रात मे अपने प्रेमी से मिलने के लिए सजधज कर सकेत-स्थल पर जाती है।

शुक्लाम्ल—पु०[स० कर्म० स०] चूका या चुक्रिका नामक साग।

शुक्लिमा (मन्)—स्त्री० [स० शुक्ल+इमनिच्] सफेदी। श्वेतता।

शुक्लोदन—पु०[स० ब स०] ललित विस्तर के अनुसार महाराज शुद्धोदन के भाई का नाम

शुक्लोपला—स्त्री०[स० कर्म० ब० स० अच् टाप्]चीनी। शर्करा।

शुक्लौदन—पु० [स० कर्म० स०] अरवा चावल।

शुगल†—पु०=शगल।

शुचा—स्त्री० [स० √शुच् (शोक करना) +क्विप्—टाप्] शोक। स्त्री०=शुचि।

शुचि—वि०[स०√शुच्+कि]। [भाव० शुचिता] १ शुद्ध। पवित्र। २ साफ। स्वच्छ। ३ निर्दोष। ४ स्वच्छ हृदयवाला। ईमानदार और सच्चा। ५ चमकीला।
स्त्री० १. पवित्रता। शुद्धता। २ स्वच्छता।
पु०१ सफेद रग। २ सूर्य। ३ चन्द्रमा। ४ अग्नि। ५ शिव। ६. शुक्र नामक ग्रह। ७ ग्रीष्म ऋतु। गरमी के दिन। ८ ज्येष्ठ मास। जेठ का महीना।
पु० [स० शुच्+कि]१ अग्नि। २. चन्द्रमा। ३ ग्रीष्म ऋतु। ४ शुक्र। ५ ब्राह्मण। ६ कार्तिकेय। ७ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

शुचिकर्मा (मन्)—वि०[स० ब० स०] सदाचारी।

शुचिता—स्त्री०[स० शुचि+तल्—टाप्] १ शुचि होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से खान-पान, रहन-सहन आदि मे भद्रता और सफाई रखने की अवस्था या भाव। (सैनिटेशन)

शुचिद्रुम—पु०[सं० कर्म० स०] पीपल।

शुचिरोचि—पु० [स० ब०स० शलिरोचिस्] चन्द्रमा।

शुचिश्रवा (वस्)—पु० [स० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

शुची—वि० [स०शुच्(पवित्र करना)+क्विप्—इति, शुचिन्] शुचि अर्थात् पवित्र या शुद्ध रहनेवाला।

शुजा—वि०[अ० शुजाअ] शूरवीर। दिलेर।

शुजाअत—स्त्री०[अ०] वीरता। शूरता

शुद्दीर्य—पु०[स०] १ वीरता। २ वीर्य।

शुतुद्रि, शुतुद्रु—स्त्री०[स०] शतद्रु या सतलज नदी।

शुतुर†—पु०[स० उष्ट्र से फा०] ऊँट।

शुतुर गमजा—पु० [फा०] वह भद्दा और भोंडा नखरा जो ऊँट के नखरे की तरह का जान पडे।

शुतुर बे मुहार—वि० [फा०] बिना सोचे-समझे अनियंत्रित रूप मे इधर-उधर या किसी ओर चल पडनेवाला।

शुतुरमुर्ग—पु० [फा०]मुर्गे की जाति का एक पक्षी जिसकी गरदन काफी लम्बी होती है।

शुतुरी—वि० [फा०] १ ऊँट-सबधी। २ ऊँट के रग का। ३ ऊँट के बालो का बना हुआ।

शुदनी—स्त्री० [फा०]आकस्मिक और निश्चित रूप से होनेवाली घटना या बात। भावी। होनी। होनहार।

शुदबुद—स्त्री० [फा०] किसी काम या बात का थोडा ज्ञान।

†स्त्री०=सुध-बुध।

शुदा—वि० [फा० शुद.] जो हो या बीत चुका हो। (समास मे के अत मे) जैसे—पासशुदा, रजिस्ट्रीशुदा।

शुद्ध—वि० [स०√शुध् (शोधन करना)+क्त]१ (पदार्थ)जिसमे किसी प्रकार का खोट या मैल न हो। खालिस। २ (पदार्थ या व्यक्ति) जिसमे कोई ऐब या दोष न हो। निर्दोष। ३. (व्यक्ति) जिसका धार्मिक या नैतिक दृष्टि से पतन न हुआ हो। जो भ्रष्ट न हुआ हो।४ (आचरण, विचार या व्यवहार) जिसमे कोई त्रुटि या दोष न हो। ५ पाप से रहित। निष्पाप। ६ साफ और सफेद। ७ उज्ज्वल। चमकीला। ८ (गणना या लेख) जिसमे कोई अशुद्धि, गलती या भूल न हो। ९ अनुपम। बेजोड। १० (शास्त्र) जिसकी धार चोखी या तेज की गई हो। सान पर चढाया हुआ।

पु० १ सेंधा नमक। २. काली मिर्च। ३. चाँदी। ४ एक तरह की घास। ५ शिव। ६. चौदहवें मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक। ७. संगीत शास्त्र मे प्राचीन अथवा मार्ग रागों की सज्ञा। जैसे—भैरव, मेघ आदि राग।

शुद्ध-कर्मा (र्मन्)—वि० [ब० स०] शुद्ध और पवित्र कर्म करनेवाला।

शुद्ध-तरंगिणी—स्त्री० [स० ब० स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुद्धता—स्त्री० [सं० शुद्ध+तल्—टाप्] शुद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शुद्धत्व—पु० [सं० शुद्ध+त्व]=शुद्धता।

शुद्ध-पक्ष—पु० [स०] चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष।

शुद्ध-भोगी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुद्ध-मंजरी—स्त्री० [स० ब० स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुद्ध-मनोहरी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुद्धमांस—पु० [सं०] पकाया हुआ ऐसा मांस जिसमे हड्डी न हो। (वैद्यक)

शुद्धांत—पु० [सं० ब० स०] १ प्राचीन भारत मे, राजाओ का अत पुर जो शुद्ध और पवित्र माना जाता था। २. दे० 'धवलगृह'।

शुद्धांत पालक—पु० [सं० ष० त०]वह जो अत.पुर के द्वार पर पहरा देता हो।

शुद्धांता—स्त्री० [स० शुद्धांत—टाप्] रानी।

शुद्धा—स्त्री० [स० शुद्ध—टाप्]कुटज बीज। इन्द्र-जौ।

शुद्धात्मा (त्मन्)—पु० [स० ब० स०] शिव का एक नाम।

शुद्धाद्वैत—पु० [स० शुद्ध+अद्वैत] वल्लभाचार्य का चलाया हुआ एक वेदातिक सम्प्रदाय। इसमे मायारहित ब्रह्म को अद्वैत तत्त्व माना जाता है और सारा जगत् प्रपच उसी की लीला का विलास है।

शुद्धापह्नुति—स्त्री० [स० मध्य० स०] साहित्य मे, अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे अति सादृश्य के कारण सत्य होने पर भी उपमेय को असत्य कहकर उपमान को सत्य सिद्ध किया जाता है।

शुद्धाशुद्धि—स्त्री० [स० द्व० स० या ब० स०] शुद्ध और अशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

शुद्धि—स्त्री० [स०√शुध् (शोधन करना)+क्तिन्] १. शुद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। शुद्धता। २ सफाई। स्वच्छता। ३ पवित्रता। शुचिता। ४ चमक। द्युति। ५ ऋण आदि का चुकता होना या चुकाया जाना। परिशोध। ६ गणित मे घटाने की क्रिया। बाकी। ७ कोई ऐसा धार्मिक कृत्य जो किसी अपवित्र वस्तु को पवित्र अथवा धर्म-च्युत व्यक्ति को फिर से धर्म मे मिलाने या धार्मिक बनाने के लिए किया जाय। ८. दुर्गा का एक नाम।

शुद्धिकंद—पु० [स० ब० स०] लहसुन।

शुद्धिपत्र—पु० [स० मध्यम० स०]१ आज-कल ग्रन्थो आदि के अन्त मे लगाया जानेवाला वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है। (एर्राटा) २ प्राचीन भारत मे वह व्यवस्था पत्र जो प्रायश्चित्त के उपरान्त शुद्धि के प्रमाण मे पडितो की ओर से दिया जाता था। (शुक्र-नीति)

शुद्धोद—पुं० [स० ब० स०] समुद्र। सागर।

शुद्धोदन—पु० [स० ब० स०] भगवान् बुद्धदेव के पिता का नाम।

शुद्धोदनि—पु० [स० शुद्धोदन+इनि्] विष्णु का एक नाम।

शुनः शेफ—पु० [सं०]अजीगर्त ऋषि के पुत्र जिन्हे अजीगर्त ने यज्ञ मे बलि चढाने के लिए दे दिया था पर जिन्होने कुछ वेदमत्र सुनाकर अपने आपको बलिदान होने से बचाया था।

शुन—पुं० [स०√शुन् (गमनादि)+क] १ कुत्ता। २ वायु। हवा। ३. आराम। सुख।

शुनक—पु० [स० शुन+कन्] १. कुत्ता। २ एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

शुनहोत्र—पु० [स० शुन√ह (देना-लेना)+ष्ट्रन ष० त० स० वा] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ भारद्वाज ऋषि के पुत्र जो ऋग्वेद के कई मत्रो के द्रष्टा हैं।

शुनामुख—पुं० [स० ब० स०] हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश

शुनाशीर, शुनासीर—पुं० [स० ब० स०] १ इद्र। २ सूर्य। ३. देवता।

शुनासीरी (रिन्)—पुं० [स० शुनासीर+इनि] [वि० शुनासीरीय] इद्र।

शुनि—पुं० [सं०√शुन् (गमनादि)+क—इनि] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।

शुबहा—पुं० [अ० शुब्ह.] १ अनुमानजन्य परन्तु आधार रहित यह दृढ धारणा की अमुक आपत्तिजनक या अपराधपूर्ण आचरण सभवतया अमुक व्यक्ति ने ही किया है। २ सन्देह। शक। ३ धोखा। भ्रम।

शुभंकर—वि० [सं० शुभ√कृ (करना)+खच् मुम्] [स्त्री शुभकरी] मगलकारक। शुभकारी।

शुभंकरी—स्त्री० [स०√शुभं√कर—ङीज्] १. पार्वती। २. शमीवृक्ष।

शुभ—वि० [स०√शुभ् (दीप्ति करना)+क] १ चमकीला। २ सुन्दर। जैसे—शुभ दत। ३. (चिन्ह, मुहूर्त, लक्षण, समय आदि) जो अनुकूल, लाभप्रद तथा सुखप्रद हो अथवा अनुकूलता, लाभ, सुख आदि का सूचक हो। ४ पवित्र।

पुं० १ कल्याण। मगल। २ विष्कभादि सत्ताईस योगो के अतर्गत एक योग। ३ पदुम काठ। ४ चाँदी। ५ बकरा।

शुभकर—वि० [स० शुभ√कृ (करना)+अच्] शुभ या मगल करनेवाला।

शुभकरी—स्त्री० [स० शुभकर-ङीप्] पार्वती।

शुभकूट—पु० [सं० मध्यम० स०] सिहल द्वीप या लका का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसपर चरण-चिह्न बने हुए हैं।

शुभग—वि० [स० शुभ√गम् (जाना)+ड] १ सुन्दर। २ भाग्य-वान्।

शुभ-ग्रह—पु० [स० कर्म० स०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति, शुक्र, अपापयुक्त बुध और अर्द्धाधिक चद्रमा जो शुभ माने जाते हैं।

शुभ-चिंतक—वि० [स० प० त०] १ शुभ-चिंतन करनेवाला। २ किसी की भलाई की बातें सोचनेवाला। शुभेच्छु।

शुभ-चिंतन—पु० [स० प० त०] शुभ या भला चाहना।

शुभदंता—स्त्री० [स० ब० स०] पुराणानुसार पुष्प-दंत नामक हाथी की हथनी का नाम।

शुभद—पु० [स० शुभ√दा (देना)+क] पीपल का पेड।

वि० शुभ फल देनेवाला। शुभकारक।

शुभ-दर्शन—वि० [स० ब० स०] १ जिसका दर्शन होने पर शुभ फल होता हो। २ सुन्दर।

शुभ-प्रद—वि० [स० प० त०] शुभद। मगलकारी।

शुभमस्तु—अव्य० [स०] शुभ हो। मंगल हो।

शुभराज—पु० [स० सुभ्राज] महाराज का शुभ हो। (आशीर्वाद) उदा०—साम्हड वीस आविया पु शुभराज।—ढो० मा०।

शुभ-वासन—वि० [स० शुभ्√वासि+ल्यु-अन] मुख को सुगन्धित करनेवाला (द्रव्य)।

शुभव्रत—पुं० [स० मध्यम० स०] एक प्रकार का व्रत जो कातिक शुक्ला पचमी को किया जाता है।

शुभशंसी (सिन्)—वि० [स० शुभ√शस्+णिनि] शुभ सूचना देनेवाला।

शुभ-सूचन—पु० [स० शुभ्√सूच्+णिच्-ल्युट्—अन] शुभ सूचना। मगल सूचना।

शुभस्थली—स्त्री० [स० मध्य० स०] १ मगलकारक भूमि। २ यज्ञ भूमि।

शुभांग—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० शुभांगी] १ शुभ अंगोवाला। २ सुन्दर।

शुभांगी—स्त्री० [स० शुभांग-ङीप्] १ कुबेर की पत्नी का नाम। २ कामदेव की पत्नी, रति। ३. सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुभांजन—पु०=शोभांजन।

शुभा—स्त्री० [स० शुभ+क—टाप्] १ शोभा। २ इच्छा। ३ अच्छी या सुन्दर स्त्री। ४ देवताओ की सेना। ५ वंशलोचन। ६ गोरो-चन। ७ शमी। ८ सफेद दूब। ९ बकरी। १०. अरारोट। ११ पुरइन की पत्ती। १२. सोआ नामक साग। १३ सफेद वच। १४. असवरग।

पु०=शुबहा।

शुभाकांक्षी (क्षिन्)—वि० [स० शुभ-आ√ काक्ष् (चाहना)+णिनि] १ (किसी के) शुभ या मगल की आकाक्षा करनेवाला। २ किसी की भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।

शुभाक्ष—पु० [स० ब० स०] शिव।

शुभागमन—पु० [स० कर्म० स०] मगलप्रद और सुखद आगमन।

शुभानन—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० शुभानना] सुन्दर मुखवाला। खूबसूरत।

पु०=चन्द्रमा।

शुभाशय—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० शुभाशया] (वह) जिसका आशय शुभ हो। अच्छे विचारवाला।

शुभेच्छु—वि० [स० ब० स०] १ शुभ कामना करनेवाला। २. किसी की भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।

शुभ्र—वि० [स० √शुभ्+रक्] [भाव० शुभ्रता] १ श्वेत। सफेद। २. उज्ज्वल। चमकीला।

पुं० १ चाँदी। २ अबरक। ३ साँभर नमक। ४ कसीस। ५ पदुम काठ। ६ खस। ७ चरबी। ८ रूपामक्खी। ९ वंशलोचन। १० फिटकरी। ११ चीनी। १२ सफेद बिधारा। १३ चन्द्रमा।

शुभ्रक—वि० [स०] शुभ या सफेद करनेवाला।

पु० अगराग या प्रसाधन सामग्री के रूप मे एक प्रकार का तैलाक्त तरल पदार्थ जिसके व्यवहार से बालो मे चमक आती है। (ब्रिलियन्टीन)

शुभ्रकर—पु० [स०] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

शुभ्रता—स्त्री० [स० शुभ्र+तल्—टाप्] १ शुभ्र होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

शुभ्र-भानु—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।

शुभ्र-रश्मि—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।

शुभ्रांशु—पु० [स० ब० स०] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

शुभ्रा—स्त्री० [स० शुभ्र—टाप्] १. गगा। २ वसलोचन। ३ फिटकरी। ४. चीनी।

शुभ्रालु—पु० [स० कर्म० स०] १ भैंस कद। २ शखालु।

शुभ्रिका—स्त्री० [स० शुभ्रि+कन्—टाप्] मधुशर्करा।

शुमार—पुं० [फा०] [भाव० शुमारी] १ सख्या। २ लेखा। हिसाब।

मुहा०—**(किसी बात का) शुमार बाँधना**=अनुमान या कल्पना से यह समझाना कि आगे चलकर अमुक बात या उसका अमुक रूप होगा।

शुमार-कुनिंदा—पु० [फा० शुमार-कुनिंद] वह जिसका काम किसी प्रकार की गिनती करना हो।

शुमारी—स्त्री० [फा०] शुमार करने या गिनने की क्रिया या भाव। जैसे—मर्दुमशुमारी।

शुमाल—पुं० [अ०] [वि० शुमाली] १ बायाँ हाथ। २ उत्तर दिशा जो सूर्योदय की दिशा (पूरब) की ओर मुँह करके खडे होने पर बाँई ओर पड़ती है।

शुमाली—वि० [अ०] उत्तर दिशा मे होनेवाला। उत्तरीय।

शुरबा—पु०=शोरबा।

शुरुआत—स्त्री०[अ० शुरूआत] पहल।

शुरू—पु०[अ० शुरुऊ] प्रारभ। आरभ।

शुल्क—पु०[स० √ शुल्क्+घञ्] १ वह धन जो वस्तुओ की उत्पत्ति, उपभोग, आयात, निर्यात आदि करने पर कानूनन कर के रूप मे देय हो। २ वह धन जो किसी सस्था को विशिष्ट सुविधा प्रदान करने पर दिया जाता है। जैसे—प्रवेश शुल्क, चिकित्सा शुल्क, शिक्षा शुल्क। ३ प्राचीन भारत मे वह धन जो कन्या का विवाह करने के बदले मे उसका पिता वर के पिता से लेता था। ४ कन्या के विवाह मे दिया जानेवाला दहेज। ५ बाजी। शर्त। ६ किराया। भाडा। ७ दाम। मूल्य।

शुल्क-शाला—स्त्री०[स० प० त० स०]१ वह स्थान जहाँ पर घाट, मार्ग आदि का अथवा और किसी प्रकार का शुल्क या महसूल चुकाया जाता हो। २. चुगीघर।

शुल्काध्यक्ष—पु०[स० प० त०] लोगो से शुल्क लेनेवाले विभाग का प्रधान अधिकारी। (कौ०)

शुल्कार्ह—वि०[स०] १ (पदार्थ) जिसका शुल्क देय हो। २ शुल्क लगाये जाने के योग्य। (ड्यूटिएबुल)

शुल्व—पु०[स० √शुल्व् (मान-दान करना)+घञ्, अच् वा] १ ताँबा। २ रस्सी। ३ यज्ञ-कर्म। ३ आचार-विचार।

शुल्वज—पु०[स० शुल्व√जन् (उत्पन्न करना) ड] पीतल।

सुल्वावारि—पु० [स० ष० त० स०] गधक।

शुल्वा-सूत्र—पु०[स० व० स०] वैदिक काल मे ज्यामिति का नाम।

शुश्रू—स्त्री०[स०] माँ। माता।

शुश्रूषक—वि० [स०√श्रु(सुनना)+सन—शुश्रुष+ण्वुल्—अक] सेवा-सुश्रूषा करनेवाला।

शुश्रूषण—पु० [स०] शुश्रूषा करने की कला, क्रिया या विधा।

शुश्रूषा—स्त्री०[स० शुश्रूष+अ—टाप्] [वि० शुश्रूष्य]१ सुनने की इच्छा। २ वह सेवा जो किसी के कहने के अनुसार की जाय। ३ सेवा। टहल। ४ खुशामद। चापलूसी।

शुश्रुषु—वि०[स० शुश्रुष+उ] १ शुश्रूषा या सेवा करने को उत्सुक। २ आज्ञानुवर्ती। ३ सुनने का अभिलाषी।

शुषिर—पु० [स०√शुष् (सोखना)+किरच्] १. लौग। २ अग्नि। आग। ३ भूसा। ४ आकाश। ५ फूंककर बजाया जानेवाला बाजा।

शुषिरा—स्त्री० [स० शुषिर—टाप्] १ नदी। २ पृथ्वी। ३ नली नामक गन्ध द्रव्य।

शुषेण—वि०, पु०=सुषेण।

शुष्क—वि०[स०√शुष्(सोखना)+क] [भाव० शुष्कता]।१ (पदार्थ या वातावरण) जो आर्द्र या नम न हो। २ (स्थान) जहाँ वर्षा न हुई हो या न होती हो। ३. (व्यक्ति) जिसमे कोमलता, ममता, मोह, सहृदयता आदि का अभाव हो। ४ (विषय) जो सपूर्ण न हो। जिससे मनोरंजन न होता हो। नीरस। जैसे—शुष्क वाद-विवाद। ५ जिसमे साथ रहने या न रह सकनेवाली कोई दूसरी बात न हो। पु० काला अजगर।

शुष्क-कृषि—स्त्री०[सं० कर्म० स०] सूखी खेती। (देखे)

शुष्क-क्षेत्र—पु० [स० व० स०] वितस्ता नदी के किनारे का एक पर्वत।

शुष्कगर्भ—पु०[स० व० स०] एक रोग जिसमे वात के कुप्रभाव से गर्भ सूख जाता है। (वैद्यक)

शुष्कता—स्त्री०[स० शुष्क+तल्—टाप्] शुष्क होने की अवस्था या भाव। सूखापन।

शुष्कल—पु०[स० शुष्क√ला (लेना)+क]मास।
वि० मास-भक्षी।

शुष्क व्रण—पु० [स० कर्म० स०, व० स० वा] वह घाव जो सूख तथा भर गया हो।

शुष्कांग—पु० [स० व० स०] धव वृक्ष। धौ।
वि०[स्त्री० शुष्कागी] सूखे हुए अगोवाला। दुबला-पतला।

शुष्कांगी—पु०[स० शुष्काग—ङीष्] १ प्लव जाति का एक प्रकार का पक्षी। २ गोह नामक जन्तु।

शुष्का—स्त्री० [स० शुष्क—टाप्] स्त्रियो का योनिकद नामक रोग।

शुष्णा—पु०[स०√शुष् (सुखाना)+नक्] १ सूर्य। २ अग्नि। ३ बल। शक्ति

शुष्म—पु०[स० शुष+मन्]१ अग्नि। २ सूर्य। ३ तेज। पराक्रम। ४ वायु। ५ चिडिया। पक्षी।

शुष्मा (मन्)—पु०[स० शुष+मनिन्]१ अग्नि। २. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ३ पराक्रम। ४ तेज।

शुहदा—पु०=शोहदा।

शुहरत—स्त्री०=शोहरत।

शुह्य—पु० [स०] एक प्राचीन आर्येतर जाति जो बाद मे आर्यो मे मिल गई थी।

शूक—पु०[स०√श्वि (पतला करना)+कक्]१ अन्न की बाल या सीका जिसमे दाने लगते है। २ जौ। यव। ३ काँटा। ४ एक प्रकार का कीडा। ५ नुकीला सिरा। नोक। ६ एक प्रकार का रोग जो लिंग-वर्द्धक ओषधियो के लेप के कारण होता है। ७ दे० 'शूकतृण'।

शूकक—पु०[स० शूक√ कै (होना आदि)+क] १ एक तरह का अन्न। २ अनुकम्पा। दया। ३ वर्षाकाल। ४ शरीर का रस नामक धातु।

शूक-कीट—पु०[स० मध्य० स०]एक प्रकार का नुकीले ओवाना कीडा।

शूक-तृण—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार की घास। इसे सूकडी भी कहते है।

शूक धान्य—पु०[मध्य० स०]अन्नो का वह वर्ग जिसके दाने या बीज बालो मे लगते है।

शूकपत्र—पु०[स० व० स०] ऐसा साँप जिसमे विष न होता हो। जैसे—पानी का साँप।

शूकर—पु०[स०शूक√रा(लेना)+क]१. सूअर। २ वाराह (अवतार)।
स्त्री० शूकरी।

शूकरकंद—पु०[स० मध्य० स०] वाराही कद।

शूकरक—पु०[स० शूकर+कन्] एक प्रकार का शालिधान्य।

शूकर-क्षेत्र—पु०[स० मध्यम० स०] एक प्राचीन तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है।

शूकरता—स्त्री०[स० शूकर+तल्-टाप] सूअर होने की अवस्था या भाव। सूअरपन।

शूकर-दंष्ट्र—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसे सूअर दाढ कहते हैं।

शूकरपादिका—स्त्री०[स० ब० स०] १. केवाँच। कौंछ। २ कोल-शिंबी। सेम।

शूकरमुख—पु० [स० ब० स०] एक नरक का नाम।

शूकराक्षिता—स्त्री०[स०, शूकराक्षि, ब०स०+तल्—टाप्] एक प्रकार का नेत्र-रोग।

शूकरास्या—स्त्री०[स० ब० स०] एक बौद्ध देवी जिसे वाराही भी कहते हैं।

शूकरिक—पु०[स० शूकर+ठन्—इक] एक प्रकार का पौधा।

शूकरिका—स्त्री०[स० शूकरिक—टाप्] एक प्रकार की चिडिया।

शूकरी—स्त्री०[स० शूकर—ङीप्]१ सुअरी । वाराही। २ खैरी माग। ३. वाराही कद। गेंठी। ४ सूँस नामक जल-जतु। ५ विधारा।

शूकल—पु०[स० शूक√ला(लेना)+क] ऐसा घोडा जो जल्दी चौंक या भडक जाता हो और फिर जल्दी वश मे आता हो।

शूका—स्त्री०[स० शूक+अच्—टाप्] कौंछ। केवाँच।

शूकी—स्त्री०[स० शूक] छोटा नुकीला काँटा। (स्पाइक)

शूक्त—पु०[स० शुक्त] सिरका।

शूक्ष्म—वि०=सूक्ष्म।

शूची—स्त्री०=सूई।

शूद्र—पु०[स० शुच्+रक् पृषो० च=द—दीर्घ] [स्त्री० शूद्रा] १ हिन्दुओ मे चार प्रकार के प्रमुख वर्णों या जातियो मे से एक जिसका मुख्य आचरण अन्य तीन वर्णो (अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) की सेवा करना कहा गया है। २ उक्त वर्ण का व्यक्ति। ३ दास। सेवक। ४. नैऋत्य कोण मे स्थित एक देश।
वि०[भाव० शूद्रता] बहुत खराब या बुरा। निकृष्ट।

शूद्रक—पु०[स० शूद्र+कन्]१ सस्कृत के प्रसिद्ध 'मृच्छकटिक' के रचयिता। २ शूद्र। ३ दे० 'शबुक'।

शूद्रक्षेत्र—पु० [स० उपमि० स०] काले रग की ऐसी भूमि जिसमे अनेक प्रकार की घास, तृण तथा अनेक प्रकार के धान उत्पन्न होते हैं।

शूद्रता—स्त्री० [स० शूद्र+तल्—टाप्] शूद्र होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शूद्र-द्युति—पु० [स० उपरि ब० स०] नीला रग जो रगो मे शूद्र वर्ण का माना जाता है।

शूद्र-प्रेष्य—पु०[स० प० त० स०] ऐसा ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य जो किसी शूद्र की नौकरी करता हो।

शूद्रा—स्त्री०[स० शूद्र—टाप] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्राणी।

शूद्राणी—स्त्री० [स० शूद्र—ङीप्—आनुक] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्रा।

शूद्रान्न—पु०[स० प० त० स०]शूद्र वर्ण के स्वामी से प्राप्त होनेवाला अन्न या चलनेवाली जीविका।

शूद्री—स्त्री०[स० शूद्र—ङीप्] शूद्र की स्त्री। शूद्रा।

शून—वि० दे० 'शून्य'।

शूना—स्त्री०[स०√शिव(गति वृद्धि)+क्त—न—स०प्र०दीर्घ—टाप्] १.गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान मे अनेक जीवो की हत्या हुआ करती है। जैसे—चूल्हा। २ गले के अन्दर की घटी। ललरी। ३ थूहड। स्नूही।

शून्य—वि०[स० शूना+यत्] [भाव० शून्यता]१ जिसमे कुछ न हो। खाली। जैसे—शून्यगर्भ। २ जिसका कोई आकार या रूप न हो। निराकार। ३ जिसका अस्तित्व न हो। ४ जो वास्तविक न हो। असत्। ५ समस्त पदो के अत मे, रहित। जैसे—ज्ञानशून्य।
पु० १. खाली स्थान। अवकाश। २ आकाश। ३ एकात स्थान। ४ गणित मे, अभाव सूचक चिह्न। ५. बिंदु। बिंदी। ६ अभाव। ७ विष्णु। ८ स्वर्ग। ९ ईश्वर। परमात्मा। १०. विज्ञान मे, ऐसा अवकाश जिसमे वायु भी न हो।

शून्य-गर्भ—वि०[स० ब० स०]१ जिसके गर्भ मे कुछ न हो। २ मूर्ख। ३. निस्सार।
पु० पपीता।

शून्य-चक्र—पु०[स० मध्य० स०]हठ योग मे सहस्रार चक्र का एक नाम। (नाथ-पथी)

शून्यता—स्त्री०[स० शून्य+तल्—टाप्]१. शून्य होने की अवस्था या भाव। २. अभाव।

शून्यत्व—पु०[स० शून्य+त्व] शून्यता।

शून्य-दृष्टि—स्त्री०[स० कर्म० स०]ऐसी दृष्टि जिससे सूचित होता हो कि मन मे नाम को भी कोई भाव नहीं है।

शून्यपथ—पु०[स० कर्म० स० ब० स०वा] आकाश।

शून्यपाल—पु० [स० शून्य√पाल् (पालन करना)+णिच—अच्]१. प्राचीन काल मे, वह व्यक्ति जो राजा की अविद्यमानता, असमर्थता या अल्पवयस्कता के कारण अस्थायी रूप से राज्य का प्रधान बनाया जाता था। २. स्थानापन्न अधिकारी।

शून्य-बहरी—स्त्री०[स०] सोन बहरी (रोग)।

शून्य-मंडल—पु०[स० कर्म० स०]हठ योग मे, सहस्रार चक्र का एक नाम।

शून्य-मध्य—वि०[स० ब० स०]जिसके मध्य मे शून्य या अवकाश हो।

शून्य-मनस्क—वि० [स० ब० स० –कप्] अन्यमनस्क।

शून्य-मूल—पु०[स० ब० स०]१ प्राचीन भारत मे, सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना। २ ऐसी सेना जिसका वह केन्द्र नष्ट हो गया हो जहाँ से सिपाही आते रहे हो। (कौ०)

शून्यवाद—पु०[स० शून्य√ वद् +घञ्] [वि० शून्यवादी] बौद्धो की महायान शाखा के माध्यमिक नामक विभाग का मत या सिद्धान्त जिसमे ससार को शून्य और उसके सब पदार्थों को सत्ताहीन माना जाता है। (विज्ञानवाद से भिन्न)

शून्यवादी (दिन्)—पु०[स०शून्य√ वद् +णिनि]१ शून्यवाद का अनुयायी। २. बौद्ध। ३. नास्तिक।
वि० शून्यवाद-सम्बन्धी।

शून्यहर—पु० [स० शून्य√हृ (हरण करना)+अच्] १ प्रकाश। उजाला। २ सोना। स्वर्ण।

शून्य-हृदय—वि०[स० ब० स०] १ अनवधान। २ खुले दिलवाला।

शून्या—स्त्री० [स० शून्य+अच्—टाप्]१ नलिका या नली नाम का गध द्रव्य। २. बाँझ स्त्री। ३ थूहड।

शून्यालय—स्त्री०[स० कर्म० स०] एकात स्थान।

शून्यावस्था—स्त्री०[सं० कर्म० स०] नाथ-पंथ मे, वह अवस्था जिसमे आत्मा शून्य चक्र या सहस्रार में पहुँचकर सब द्वन्द्वो से मुक्त हो जाती है।

शून्याशून्य—पुं०[सं० ब० स०] जीवन्मुक्ति।

शूप—पुं०= सूप।

शूम—पुं०=सूम।

शूमी—स्त्री०[फा०]१. शूम होने की अवस्था या भाव। सूमपन। २. मनहूसी।

शूर—पुं०[सं० √शूर्+अच्] [भाव० शूरता, शौर्य]१ वीर। बहादुर। २. योद्धा। सूरमा। ३ वह जो किसी काम या बात मे औरो से बहुत बढ-चढकर हो। जैसे—दान-शूर, शब्द-शूर आदि। ४ सूर्य। ५. सिंह। शेर। ६. सूअर। ७. चीता। ८. सालू का पेड़। ९. बड़हर। १०. मसूर। ११. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १२ आक। मदार। १३. कृष्ण के पितामह का नाम। १४. जैन हरिवंश के अनुसार उत्तर दिशा के एक देश का नाम।

शूरण—पुं० [सं० √ शूर् (हिंसा करना)+ल्यु—अन्]१. सूरन। ओल। २. श्योनाक। सोनापाढा।

शूरता—स्त्री०[सं० √ शूर्+तल्-टाप्] १ शूर होने की अवस्था या भाव। २ शूर का धर्म।

शूरताई|—स्त्री०=शूरता।

शूरत्व—पुं०=शूरता।

शूरन—पुं०=सूरन (जमीकंद)।

शूरमन्य—वि०[सं० शूर√मन्य (मानना)+खच्—मुम्] अपनी बहादुरी के किस्से बढ़ा-चढाकर सुनानेवाला।

शूर-मानी (निन्)—पुं०[सं० शूर√मन् (मानना)+णिनि] वह जिसे अपनी शूरता या वीरता का अभिमान हो।

शूरवीर—पुं० [सं० सप्त० त० स०, कर्म० स० वा] [भाव०शूरवीरता] बहुत बड़ा वीर। वीर-शिरोमणि।

शूरसेन—पुं०[सं० ब० स०] १ मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता थे। २ मथुरा और उसके आस-पास के क्षेत्र का नाम।

शूर-सेनप—पुं० [सं० शूर-सेना√ पा (पालना) +क] वीर सेना के रक्षक, कार्तिकेय।

शूरा—स्त्री०[सं० शूर—टाप्] क्षीरकाकोली।
पुं०=शूर।
|पुं०=सूर्य।

शूर्प—पुं०[सं० √शूर्प् (परिमाण)+घञ्]१ अनाज फटकने का सूप। २. दो द्रोण का एक प्राचीन परिमाण।

शूर्पक—पुं०[सं० शूर्प+कन्] एक असुर जो किसी के मत से कामदेव का शत्रु था।

शूर्पकर्ण—वि०[सं० ब स०] जिसके सूप के समान कान हो।
पुं० १. हाथी। २ गणेश। ३. एक प्राचीन देश। ४. उक्त देश का निवासी। ५. एक पौराणिक पर्वत।

शूर्पकारि—पुं०[सं० प० त० स०] शूर्पक का शत्रु अर्थात् कामदेव।

शूर्पणखा—वि०[सं० ब० स०] (स्त्री) जिसके नख सूप के समान हो।
स्त्री० रावण की बहन।

शूर्पनखा—स्त्री०= शूर्पणखा।

शूर्प-श्रुति—पुं०[सं० ब० स०] शूर्पकर्ण।

शूर्पाद्रि—पुं० [सं० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

शूर्पारक—पुं०[सं०] बबई प्रांत के थाना जिले के सोपारा नामक स्थान का प्राचीन नाम।

शूर्पी—स्त्री० [सं० शूर्प-ङीप्] १. छोटा सूप। २ शूर्पणखा। ३ एक प्रकार का खिलौना।

शूर्म—पुं०[सं० ब० स० अच्] [स्त्री० शूर्मि]१ लोहे की बनी हुई मूर्ति। २ निहाई।

शूल—पुं०[सं० √ शूल्+क]१. बरछे की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। विशेष दे० 'त्रिशूल'। २. बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा। ३ वायु के प्रकोप से पेट या आँतो मे होनेवाली एक प्रकार की प्रबल और विकट पीड़ा। (कॉलिक पेन) ४ किसी नुकीली चीज के चुभने की तरह की शारीरिक पीड़ा। ५ सूली जिस पर प्राचीन काल मे लोगो को प्राणदंड दिया जाता था। ६ पीड़ा विशेषत. छाती और पेट मे होने-वाली ऐसी पीड़ा जो बरछी की तरह चुभती हुई जान पड़ती है। ७ एक रोग जिसमें रह रहकर उक्त प्रकार की पीड़ा होती है। ८ छड़। सलाख। ९. मृत्यु। मौत। १०. ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों के अन्तर्गत नवाँ योग। ११. झडा। पताका। १२ पोस्ते की पत्तियो की वह तह जो अफीम की चक्की चलाने के समय उसके चारो ओर ऊपर-नीचे लगाई जाती है। (बगाल)
वि०=नुकीला।

शूलक—पुं० [सं० शूल+कन्]१. पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। २. दुष्ट या पाजी घोड़ा।

शूलकार—पुं०[सं० शूल√कृ (करना)+अण् उप० प० स०] पुराणानुसार एक नीच जाति।

शूलगव—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

शूलगिरि—पुं० [सं० उपमि० मध्य० स० वा] मदरास राज्य का एक पर्वत।

शूलग्रह—पुं०[सं० शूल√ग्रह् (रखना)+अच्] शिव।

शूलग्राही (हिन्)—पुं०[सं० शूल√ ग्रह् (रखना)+णिनि] शिव। महादेव।

शूलघ्नी—स्त्री०[सं०] सज्जी मिट्टी।

शूल-धन्वा (न्वन्)—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

शूल-धर—पुं०[सं० प० त० स०] शिव।

शूल-धरा—स्त्री०[सं० शूलधर—टाप्] दुर्गा।

शूल-धारिणी—स्त्री०[सं० प० त० स०] दुर्गा।

शूलधारी (रिन्)—पुं०[सं० शूल√ धृ (रखना)+णिनि] शिव।

शूलना—अ० [हिं० शूल+ना] १. शूल की तरह गड़ना। २ शूल गड़ने के समान पीडा होना।
स० शूल गड़ाना या चुभाना।

शूल-नाशन—पुं० [सं० शूल√नश्+णिच्—ल्यु—अन] १ सौवर्चल्य लवण। २. हींग। ३. पुष्कर मूल। ४ वैद्यक मे, एक प्रकार का चूर्ण जिसका व्यवहार प्राय. शूल रोग मे किया जाता है।

शूल-पत्री—स्त्री० एक प्रकार की घास, जिसे शूली भी कहते हैं।

शूल-पाणि—पु०[स० व० स०] शिव।
शूल-स्तूप—पु०[स०उपमि० स०] शूल के आकार-प्रकार का स्तूप।
शूल हंत्री—स्त्री०[स० प० त० स०] अजवाइन।
शूलहस्त—पु०[स० व० स०] शिव।
शूलाक—पु०[स० व० स०] शिव। महादेव।
शूला—स्त्री० [सं० शूल—टाप्]१. वेश्या। रंडी। २. छड। सलाख। ३ दे० 'सूली'।
शूलि—पु० [स० शूल+इनि] शिव का एक नाम।
†स्त्री०=सूली।
शूलिक—पु०[स० शूल+ठन्—इक]१ खरगोश। खरहा। २ वह जो लोगो को शूली पर चढाता था।
शूलिका—स्त्री०[स० शूलिक—टाप्] सीख मे गोद कर भूना हुआ मास। कवाव।
शूलिनी—स्त्री०[स०शूलिन—ङीप्]१ दुर्गा का नाम। २ नागवल्ली। पान। ३ पुत्रदात्री नाम की लता।
शूली (लिन्)—वि० [स० शूल+इनि] शूल रोग से ग्रस्त।
पु०१. शिव। २. एक नरक। ३. खरगोश।
†स्त्री०=सूली।
शूल्य —पु०[स० शूल+यत्]=शूलिका।
शूल्यपाक—वि०[स० व० स०]सीख पर पकाया हुआ।
पु० कवाव।
शूल्यवाण—पु०[स० व० स०] भूतयोनि।
शृखल—पु० [स० शृग√खल् (तुष्टता करना) +अच्—पृषो०]१ मेखला। २ सिक्कड। ३ वेडी और हथकडी। ४. नियम। कायदा।
वि० [भाव० शृखलता]१ शृखला के रूप मे हो। सुशृंखल। २ व्यवस्थित तथा ठीक। ३ नियम, नियन्त्रण आदि के अधीन।
शृखलक—पु०[स० शृखल+कन्] १ ऊँट। २. दे० 'शृखला'।
शृंखलता—स्त्री० [स० शृखल+तल्—टाप्] शृंखल होने की अवस्था या भाव। सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।
शृंखला—स्त्री०[स० शृखल—टाप्]१ एक दूसरी मे पिरोई हुई वहुत सी कडियो का समूह। २ क्रम से आने या होनेवाली वहुत-सी वातें, चीजें, घटनाएँ आदि। (चेन, उक्त दोनो अर्थो मे)। ३ एक प्रकार के कार्यो, वस्तुओं आदि का एक के वाद एक करके चलनेवाला क्रम। माला। (सीरीज) ४ कतार। श्रेणी। पक्ति। ५ मेखला। ६ करधनी। ७ साहित्य मे, एक अलकार जिसमे कहे हुए पदार्थो का क्रम से वर्णन किया जाता है।
शृंखला-बद्ध—वि०[स० तृ० त० स०] १ जजीर या सिक्कड से वँधा हुआ। २ जो शृंखला के रूप मे किसी विशिष्ट क्रम से लगा हो।
शृंखलित—भू० कृ०[स० शृखला+इतच्]१ सिक्कड से वंधा हुआ। २. शृखला के रूप मे वंधा या लाया हुआ। ३ तागे आदि मे पिरोया हुआ।
शृग—पु० [स०√शृ (हिंसा करना)+गन्नुट्]१ पशुओ का सीग। २ चोटी। शिखर। जैसे—पर्वत शृग। ३ कंगूरा। ४ सिंगी नामक वाजा जो मुँह से फूँककर वजाया जाता है। ५ कमल। ६ जीवक नामक ओषधि। ७ सोठ। ८ अदरक। आदी। ९ अगर। १० काम-वासना। ११ चिह्न। निशान। १२. स्त्री की छाती। स्तन। १३ प्रधानता। प्रमुखता। १४ पानी का फुहारा। १४ दे० 'ऋष्यशृंग' (ऋषि')
वि० तीक्ष्ण। तेज।
शृंगकंट—पु०[स० व० स०] सिंघाड़ा।
शृंगज—पु०[स० शृंग√ जन् (उत्पन्न करना)+ड]१. अगर। अगरु। २ तीर। वाण।
वि० शृग से उत्पन्न।
शृंग-धर—पु०[स० प० त० स०] पर्वत। पहाड।
शृंगनाम—पु०[स० व० स०] एक प्रकार का विष।
शृंग-पुर—पु०[स० मध्यम० स०] शृगवेरपुर।
शृगला—स्त्री० [स० शृग √ ला (लेना)+क] मेढासिंगी।
शृंगवान् (वत्)—वि०[स० शृग+मतुप-म=व-नुम्—दीर्घ, नलोप] शृंगवाला।
पु० पर्वत। पहाड।
शृंगवेर—पु० [स० व० स०]१. आदी। अदरक। २ सोठ। ३ दे० 'शृगवेरपुर'।
शृंगवेरपुर—पु०[स० मध्यम० स०] इलाहावाद जिले मे गगा तट पर स्थित सिंगरौर नामक स्थान जो प्राचीन काल मे निषाद राजा गुह की राजधानी थी।
शृंगवेरिका—स्त्री०[स० शृगवेर+कन्—टाप्, इत्व]गोभी।
शृगमुख—पु०[स० मध्यम० स०] सिंगी या सिंघा नामक वाजा।
शृंगसोर—पु०[स० उपमि स०] सोर नामक मछली।
शृंगाट—पु०[स० शृग√अट् (प्राप्त होना)+अच्]१ सिंघाडा। २ गोखरू। ३. विककत। कंटाई। ४ चौमुहानी या चौराहा। ५ कामरूप देश का एक पर्वत।
शृगाटक—पु०[स० शृगाट+कन्]१ सिंघाडा। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का खाद्य-पदार्थ जो मास से वनाया जाता था। ३ तीन चोटियोवाला पर्वत। ४ चौमुहानी। ५ दरवाजा। ६. वैद्यक मे, शरीर का एक मर्मस्थान जो मस्तक मे उस स्थान पर माना जाता है, जहाँ नाक, कान, आँख और जीभ से सवध रखनेवाली चारो गिराएँ हैं।
शृंगार—पु०[स० शृग√ऋ (गमन करना आदि)+अण्]१ मूर्ति, शरीर आदि मे ऐसी चीजें जोडना या लगाना जिनसे उनकी शोभा या सौन्दर्य और भी वढ जाय, और वे अधिक आकर्षक तथा प्रिय-दर्शन वन जायँ। २ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा तत्त्व या गुण जिससे किसी की शोभा वढती तथा सौन्दर्य निखरता है। जैसे—लज्जा स्त्री का शृगार है। ३ स्त्रियो की वह क्रिया जो वे सुन्दर कपडे, गहने आदि लगाकर अपने आप को अधिक आकर्षक तथा सुन्दर वनाने के लिए करती हैं। सजावट। ४ वे सव पदार्थ जिनके योग से किसी चीज की शोभा या सौदर्य वढता हो। प्रसाधन-सामग्री। सजावट का सामान। ५ साहित्य का नौ रसो मे से एक रस जिसमे प्रेमी और प्रेमिका के पारस्परिक प्रेमपूर्ण व्यवहारो की चर्चा होती है।
विशेष—शृगार का मूल शब्दार्थ ही है—ऐसी स्थिति जिसमे काम-वासना की प्राप्ति या वृद्धि हो। मनुष्य की काम-वासना से सम्वद्ध वातो से

मिलनेवाला आनन्द या सुख ही इस रस का मूल आधार है, और यह सब रसों मे प्रधान माना गया है। इसके दो मुख्य विभाग किए गए है—संयोग और वियोग शृगार।

५ उक्त के आधार पर भक्ति का वह पक्ष जिसमें भक्त अपने इष्टदेव को पति तथा अपने आपको उसकी पत्नी मानकर उसकी आराधना करता है। ६ मैथुन। रति। संभोग। ७ सिंदूर जो स्त्रियों के सौभाग्य का मुख्य चिह्न है। ८. लौंग। ९ अदरक। आर्दा। १०. चूर्ण। ११. काला अगर। १२ सोना। स्वर्ण।

शृंगारक—पु०[स० शृंगार+कन्]१. प्रेम। प्रीति। २. सिंदूर। ३. लौंग। ४ अदरक। आर्दा। ५ काला अगर।

वि० शृगार करनेवाला।

शृंगार-जन्मा (न्मन्)—पु० [स० ब० स०] कामदेव।

शृंगारण—पु०[स० √शृगार√नी (ढोना)+ड] कामवासना से प्रेरित होने पर किया जानेवाला प्रेमप्रदर्शन।

शृंगारना—स० [हिं० शृगार+हिं० ना (प्रत्य०)] शृगार करना। सजाना। सँवारना।

शृंगारभूषण—पु० [स० ष० त०]१ सिंदूर। २ हरताल।

शृंगारयोनि—पु०[स० ष० स०] कामदेव।

शृंगारवेश—पु०[स० ष० त०] वह सुन्दर वेश जिसे धारण करके प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है, अथवा प्रेमिका अपने प्रेमी के पास जाती है।

शृंगारहाट—स्त्री०[स० शृगार+हिं० हाट] वह हाट या बाजार जिसमे मुख्यत वेश्याएँ रहती हों। चकला।

शृंगारिक—वि० [स० शृगार+ठक्—इक] १ शृगार-संबधी। शृंगार का। जैसे—शृगारिक सामग्री। २. शृंगार रस से संबध रखनेवाला। जैसे—शृगारिक काव्य।

शृंगारिणी—स्त्री०[सं०]१ शृगार करनेवाली स्त्री। २ वह स्त्री जिसका यथेष्ट शृंगार हुआ हो। ३ संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ४ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे चार रगण (SIS) होते है। इसको 'स्त्रग्विणी' 'कामिनी' 'मोहन' 'लक्षीधरा' और 'लक्ष्मीधरा' भी कहते हैं।

शृंगारित—भू० कृ०[स० शृंगार+इतच्]१ जिसका शृगार हुआ हो। सजाया हुआ। २. सुन्दर।

शृंगारिया—पु०[स० शृगार+हिं० इया (प्रत्य०)] १. वह जो शृगार करने की कला मे निपुण हो। २ देव-मूर्तियों का शृंगार करनेवाला व्यक्ति। ३. बहुरूपिया।

शृंगारी—वि०[स० शृगारिन्]१ शृगार-संबधी। शृगार का। २. शृगार रस का प्रेमी। ३. किसी के प्रेमपाश में बँधा हुआ। अनुरक्त।

पु०१. वेश-भूषा और सजावट आदि। २. हाथी। ३. चुन्नी या मानिक नामक रत्न। ४ सुपारी।

शृंगाह्व—पु०[स० ब० स०] १ जीवक नामक ओषधि। २ सिंघाड़ा।

शृंगाह्वा—स्त्री०[स० शृंगाह्व+टाप्]=शृगाह्व।

शृगि—पु०[स० शृग+इनि] सिंघी मछली।

वि० शृंगी।

शृगिक—पु०[स० शृगी+कन्] सिंगिया नामक विष।

शृंगिका—स्त्री० [स० शृगिक—टाप्] १. सिंघी नामक बाजा। २ अतीस। ३ काकड़ा-सिंगी। ४ मेढ़ा-सिंगी। ५. पीपल।

शृंगिणी—स्त्री०[स० शृग+इनि—ङीप्]१. गाय। गौ। २. मोतिया। ३ माल-कगनी। ४ अतीस।

शृंगी—वि०[स० शृगिन्] [स्त्री० शृगिणी] जिसमें शृंग हो। शृग से युक्त।

पु०१. सींगवाला जानवर। २. पर्वत। पहाड। ३. हाथी। ४ पेड़। वृक्ष। ५ बरगद। ६. पाकर। ७ अमड़ा। ८ जीवक नामक ओषधि। ९ ऋषभक नामक ओषधि। १० सिंगिया नामक विष। ११ सिंगी नामक बाजा। १२ महादेव। शिव। १३ एक प्राचीन देश। १४. एक प्रसिद्ध ऋषि जो शमीक के पुत्र थे।

स्त्री०१. अतीस। २. काकड़ा-सिंगी। ३ सिंगी मछली। ४. मजीठ। ५. आँवला। ६ पोई का साग। ७ पाकर। ८. बरगद। ९ जहर। विष। १०. सोना। ११ ऋषभक नामक ओषधि।

शृंगी गिरि—पु०[स० मध्यम० स०] एक प्राचीन पर्वत जिस पर शृगी ऋषि तप किया करते थे।

शृंगेरी—पु०[स०] मैसूर राज्य मे स्थित शकराचार्य के मतानुयायी सन्यासियो का एक प्रसिद्ध मठ।

शृंगोन्नति—स्त्री०[स० ष० त० स०] ज्योतिष मे ग्रहो, नक्षत्रों आदि की एक प्रकार की गति।

शृग—पु०=शृगाल।

शृगाल—पु०[सं० असृक √ला+क, पृषो०] १. सियार। गीदड। २ बौद्ध साधुओं की परिभाषा मे ज्ञानवान् मन का प्रतीक जो वासनामय मन के प्रतीक सिंह का शिकार करनेवाला कहा गया है। ३ वासुदेव। ४ कायर या डरपोक व्यक्ति। ५. निर्दय व्यक्ति। ६ खल। दुष्ट।

शृगालिका—स्त्री०[सं० शृगाल+कन्—टाप्—इत्व]१ गीदड की मादा। गीदड़ी। २ लोमडी। ३ विदारी कंद।

शृगाली—स्त्री० [स० शृगाल—ङीप्]१ ताल-मखाना। २ विदारी कद। ३. मादा सियार।

शृत—पु०[स० √ शृ (पाक करना)+क्त]१. काढा। क्वाथ। २ उबाला या औटाया हुआ दूध।

शृत-शीत—पु० [स० मध्य० स० (शृतरूपान् शीत)] औटाया हुआ पानी जो प्राय. ज्वर के रोगियो को दिया जाता है।

शृष्टि—पु०[सं०] कंस के आठ भाइयो मे से एक।

†स्त्री०=सृष्टि।

शेख—पु०[अ०] [स्त्री० शेखानी]१ पैगंबर मुहम्मद के वशजो की उपाधि। २. मुसलमानो की चार जातियो में से एक जो अन्य तीनो से श्रेष्ठ मानी गई है। ३ इस्लाम धर्म का उपदेशक। ४ वृद्ध और पूज्य व्यक्ति। पीर।

†पु०=शेष।

शेखचिल्ली—पु०[अ०+हिं०]१ एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके संबध मे बहुत-सी विलक्षण और हास्यास्पद कहानियाँ कही जाती है। २ ऐसा मूर्ख व्यक्ति जो बिना समझे-बूझे बहुत बढ-चढकर बे-सिर पैर की बातें कहता हो।

शेखर—पु० [स० √शिखि+अरन—पृषो०]१ शीर्ष। सिर। माथा। २. सिर पर पहनने का किरीट या मुकुट। ३ सिर पर लपेटी जानेवाली

माला। ४ पहाड की चोटी। शिखर। ५. ऊपरी सिरा। ६. उच्चता या श्रेष्ठता का सूचक पद। ७ छद शास्त्र मे टगण के पाँचवे भेद की सज्ञा (।।ऽ।) जैसे—व्रजनाथ। ८ सगीत मे, ध्रुव या स्थायी पद का एक प्रकार का भेद।

शेखर-चंद्रिका—स्त्री०[स०प०त०]सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

शेखरापीड़ योजन—पु० [स० व० स०] चौसठ कलाओ मे से एक कला। जिसमे सिर पर पगड़ी, माला आदि सुन्दर रूप से पहनाई जाती है।

शेखरी—स्त्री० [स० शेखर—ङीप्]१ वदाक। बाँदा। २ लौग। ३ सहिजन की जड। ४ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शेखसद्दो—पु०[अ० शेख+देश० सद्दो]मुसलमान स्त्रियो के उपास्य एक कल्पित पीर जो कभी कभी भूत-प्रेत की तरह उनके सिर पर आते या उन्हे आविष्ट करते है।

शेखावत—पु० [अ० शेख] राजस्थान के राजपूतो की एक उपजाति।

शेखी—स्त्री०[फा० शेखी]१ मुसलमानो की शेख नामक जाति या वर्ग का अभिमान या घमड। २ इस प्रकार का झूठा अभिमान कि हमने अमुक अमुक बडे काम किये है अथवा हम ऐसे ऐसे काम कर सकते है। डीग। ३ झूठी शान। अकड।

क्रि० प्र०—बघारना।—हाँकना।

शेखीबाज—वि०[अ० शेखी+फा० बाज] [भाव० शेखीबाजी] शेखी बघारने या डीग हाँकनेवाला।

शेप—पु०[स० शी+पन्]१ पुरुष की इद्रिय। लिंग। २ अण्डकोष। ३ दुम।

शेफ—पु०[स० शी+फन्] शेप।

शेफालि, शेफालिका, शेफाली—स्त्री० [स० व० स०] नील सिंधुआर का पौधा। निर्गुंडी।

शेयर—पु०[अ०]१ सपत्ति आदि मे होनेवाला अश। २ व्यापार आदि मे होनेवाला हिस्सा। पत्ती।

शेर—पु०[स० दशेर से फा०] [स्त्री० शेरनी] १ एक प्रसिद्ध हिंसक पशु। सिंह।

पद—शेर बबर, शेर बच्चा, शेरमर्द।

मुहा०—शेर और बकरी का एक घाट पर पानी पीना=ऐसी स्थिति होना जिसमे दुर्बल को सबल का कुछ भी भय न हो।

२. अत्यन्त निर्भीक, वीर और साहसी पुरुष। (लाक्षणिक) ३ बहुत उग्र या तीव्र पदार्थ या व्यक्ति।

मुहा०—(बत्ती) शेर करना=चिराग की बत्ती बढ़ाकर रोशनी तेज करना।

वि० बहुत गहरा या चटकीला (रग)। जैसे—शेर गुलाब या शेर लाल।

पु०[अ०] फारसी, उर्दू आदि की कविता के दो चरणो का समूह।

शेर अफगान—वि०[फा०] शेर को गिराने या पछाडनेवाला।

शेरगढ़ी—स्त्री०[हि०]सम्राट् अशोक के स्तम्भो पर की वह आकृति जिसमे चारो ओर चार शेरो के मुँह होते है और जिसकी अनुकृति स्वतन्त्र भारत का राजचिह्न है।

शेर-दरवाजा—पु०]० फा]=सिंह-द्वार।

शेर-दहाँ—वि०=शेरमुहाँ। (दे०)

शेर-पंजा—पु० [फा० शेर+पज] शेर के पजो के आकार का एक अस्त्र। बघनहाँ।

शेरपा—पु० [फा० शेर+पा (नेपाली प्रत्य०] १ चीता। बाघ। २ वह पहाडी मजदूर जो २४-२५ हजार फुट से भी अधिक ऊँचाई वाले पहाडो पर चढने का अभ्यस्त हो। ३ साधारणत ऊँचे पहाडो पर, विशेषत हिमालय पर चढनेवाला मजदूर।

शेर-बच्चा—पु०[फा०शेर-बच्च]१ बहुत ही पराक्रमी तथा वीर व्यक्ति। २ पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी बन्दूक।

शेर-बबर—पु०[फा०] सिंह। केसरी।

शेर-मर्द—पु० [फा०] [भाव० शेरमर्दी] बहुत ही पराक्रमी और वीर व्यक्ति।

शेर-मुहाँ—वि०[फा०+हि०]१ जिसका मुँह या अगला भाग शेर की आकृतिवाला हो। जैसे—शेरमुहाँ कडा। २ (जमीन या मकान) जिसका अगला भाग चौडा और पिछला भाग सँकरा हो। नाहर-मुखी। (अशुभ)

शेरवानी—स्त्री०[देश०] मुसलमानी ढग का एक प्रकार का अगा।

शेल—पु०=दे० 'सेल'।

शेलुक—पु०[स० शेलु+कन्]१ लिसोडा। २ मेथी। ३ लोध।

शेलुका—स्त्री०[स० शेलुक—टाप्]वनमेथी।

शेव—पु० [स० शी+वन्]१ उन्नति। २ उच्चता। ऊँचाई। ३ धन-दौलत। ४ लिंग। ५ मछली। ६ साँप। ७ अग्नि।

शेवड़ा—पु०[स० श्रावक] जैन यति या साधू।

शेवल—पु० [स० शेव√ला (लेना)+क] सेवार। शैवाल।

शेवलिनि—स्त्री०[स० शेवल+इनि]१ ऐसी नदी जिसमे सेवार हो। २ नदी।

शेवा—पु०[फा० शेव]तौर तरीका। (आचार-व्यवहार आदि का) ढग।

शेवाल—पु०[स० √शी +विच्√ वल्+घञ्] सेवार। सेवाल।

शेवाली—स्त्री०[स०शेवाल—ङीप्]एक प्रकार की जटामासी (वनस्पति)।

शेष—वि० [स०√शिष् (मारना)+अच्] १ औरो विशेषत साथ वालो के न रह जाने पर भी जो अभी विद्यमान हो। २ अनावश्यक या आवश्यकता से अधिक होने पर जिसका आभोग या उपयोग न किया जा सका हो। ३ जो पूर्णतया क्षीण, नष्ट या समाप्त हो गया हो। ४ जिसका उल्लेख, कथन आदि अभी होने को हो। जैसे—कहानी अभी खत्म नही हुई शेष फिर सुनाऊँगा।

पु०१ बाकी बची हुई चीज या भाग। अवशिष्ट अश। २ किसी घटना या व्यक्ति का स्मरण करनेवाला कोई बचा हुआ पदार्थ या वस्तु। स्मारक। ३. बडी सख्या मे से छोटी सख्या घटाने से बची हुई सख्या। बाकी। ४ वह पद या शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ या आशय पूरा और स्पष्ट करने के लिए लगाना पडता हो। अध्याहार। ५ अत। समाप्ति। ६ परिणाम। फल। ७ मृत्यु मौत। ८ नाग। ९ पुराणानुसार सहस फणो के सर्पराज जो पाताल मे है और जिनके फनो पर पृथ्वी का ठहरा होना कहा गया है। १० रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण जो उक्त सर्पराज के अवतार माने जाते है। ११ बलराम। १२ एक प्रजापति। १३ दस दिग्गजो मे से एक। १४ परमेश्वर। १५

हाथी। १६ जमालगोटा। १७. पिंगल में टगण के पाँचवें भेद का नाम। १८ छप्पय छंद के पचीसवें भेद का नाम जिसमें ४६ गुरु, ६० लघु कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

शेष जाति—स्त्री० [सं० ष० त०] गणित में बचे हुए अंक को लेने की क्रिया।

शेषधर—पु० [सं० ष० त०] शेष अर्थात् सर्प को धारण करनेवाले, शिवजी।

शेषनाग—पुं०[सं० मध्य० स०] सर्पराज शेष जो पुराणानुसार पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करनेवाले माने गये हैं।

शेषनाद—पु०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

शेषर—पु०=शेखर।

शेषराज—पुं०[सं०]१. एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं। विद्युल्लेखा। २. शेषनाग।

शेषव्रत—पु०[शेष+मतुप् म=व]न्याय में अनुमान का एक भेद जिसमें किसी परिणाम के आधार पर पूर्ववर्त्ती कारण या घटना का अनुमान किया जाता है। जैसे—नदी की बाढ़ देखकर ऊपर हुई वर्षा का अनुमान।

शेषशायी (यिन्)—पु०[सं० शेष√शी+णिनि]शेषनाग पर शयन करने वाले, विष्णु।

शेषांश—पुं०[सं० कर्म० स०]१ बचा हुआ अंश या भाग। २. अन्तिम अंश या भाग।

शेषा—स्त्री० [सं० शेष—टाप्] देवताओं को चढ़ी हुई वस्तु जो दर्शकों या उपासकों को बाँटी जाय। प्रसाद।

शेषाचल—पुं०[सं० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

शेषोक्त—भू० कृ० [सं० सप्त० त० स०] कड़ियों में से अन्त में कहा हुआ। जिसका उल्लेख सब के अन्त में हुआ हो।

शै—स्त्री०[अ०] १. वस्तु। पदार्थ। चीज। २. भूत-प्रेत।
†स्त्री० दे० 'शह।' (उत्तेजना)।

शैक्य—पुं०[सं० शैक+यत्] सिकहर। छींका।

शैक्ष—पु०[सं० शिक्षा+अण्] आचार्य के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाला शिष्य।

शैक्षणिक—स्त्री० [सं० शिक्षण+ठक्—इक] १. शिक्षण या शिक्षा-सम्बन्धी।(एजुकेशन) २ शिक्षाप्रद। ३. शास्त्रीय ज्ञान अथवा उसके शिक्षण से संबंध रखनेवाला। शास्त्रीय। (एकेडेमिक)

शैक्षिक—वि० [सं० शिक्षा+ठक्—इक] शिक्षा-संबंधी। शिक्षा का। (एजुकेशनल)
पु० १. वह जो शिक्षा (वेदांग) का ज्ञाता या पंडित हो। २. वह जो आधुनिक शिक्षा-विज्ञान का पंडित हो। (एजुकेशनिष्ट)

शैख—पुं०[सं०] नीच तथा पतित ब्राह्मण की संतान। (स्मृति)

शैखरिक—पुं०[सं० शिखर+ठक्—इक]अपामार्ग। चिचड़ा। लटजीरा।

शैघ्र्य—पुं०[सं० शीघ्र+ष्यञ्] शीघ्रता। तेजी।

शैतान—पु०[अ०] १.ईश्वर के सन्मार्ग का विरोध करनेवाली शक्ति जो कुछ सामी धर्मो (यथा इस्लाम धर्म, ईसाई आदि) में एक दुष्ट देवता और पतित देवदूतों के अधिनायक के रूप में मानी गई है। यह भी माना जाता है कि यही मनुष्यों को बहकाकर कुमार्ग में लगाता और ईश्वर तथा धर्म से विमुख करता है।
पद—शैतान का बच्चा=बहुत दुष्ट आदमी। शैतान की आँत=बहुत लंबी-चौड़ी चीज या बात। (व्यंग्य) शैतान की खाला=बहुत दुष्ट या पाजी औरत (गाली)। शैतान के कान बहरे=ईश्वर करे, शैतान यह शुभ बात न सुन सके और इसमें बाधक न हो। (मंगलाकांक्षा का सूचक)।
२. दुष्टदेव योनि। भूत-प्रेत आदि।
मुहा०—(सिर पर) शैतान चढ़ना या लगना=भूत-प्रेत आदि का आवेश होना। प्रेत का भाव पड़ना।
३ बहुत बड़ा अत्याचारी या दुष्ट व्यक्ति। ४. दुर्वृत्ति, प्रबल काम-वासना, क्रोध आदि।
मुहा०—शैतान सवार होना=दुर्वृत्तियों का बहुत प्रबल होना।
५. लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव।
मुहा०—शैतान उठाना या मचाना=झगड़ा खड़ा करना। उपद्रव मचाना।

शैतानी—वि०[अ० शैतान] १. शैतान-संबंधी। शैतान का। जैसे—शैतानी गोल। शैतानियों की तरह का बहुत दुष्ट।
स्त्री०१. दुष्टता। पाजीपन। शरारत। २. ऐसा आचरण जो किसी को परेशान करने के लिए किया जाय।

शैत्य—पु०[सं० शीत+ष्यञ्] शीतलता। ठंडक।

शैथिल्य—पुं०[सं० शिथिल+ष्यञ्]१. शिथिल होने की अवस्था या भाव। शिथिलता। २. तत्परता का अभाव। सुस्ती।

शैदा—वि०[फा०] जो किसी के प्रेम में मुग्ध हो। प्रेम से पागल।

शैन्य—पु०[सं० शिनि+यञ्] शिनि का वंश।

शैल—वि०[सं० √शिला+अण्] १. शिला संबंधी। पत्थर का। २ जिसमें पत्थर के टुकड़े मिले हों। पथरीला। ३. कड़ा। कठोर। सख्त।
पुं०१. पर्वत। पहाड़। २. चट्टान। ३. छरीला नामक वनस्पति। शैलेय। ४. रसौत। ५. शिलाजीत। ६. लिसोड़ा।

शैलक—पुं० [सं० शैल+कन्] छरीला। शैलेय।

शैलकटक—पुं०[सं० ष० त०] पहाड़ की ढाल।

शैल-कन्या—स्त्री० [सं० ष० त० स०] हिमालय पर्वत की पुत्री,पार्वती।

शैलकुमारी—स्त्री० [सं० ष० त० स०]=शैलकन्या। पार्वती।

शैल-गंगा—स्त्री०[सं० ष० त० स०] गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी जिसमें श्री कृष्ण ने सब तीर्थों का आवाहन किया था।

शैल-गंध—पुं०[सं० ब० स०] शबर चंदन। बर्बर चन्दन।

शैलगृह—पुं० [सं० सप्त० त०] पहाड़ या चट्टान में खोदकर बनाया हुआ प्रसाद या मन्दिर।

शैलज—पुं०[सं० शैल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] पत्थर। फूल। छरीला।
वि० [स्त्री० शैलजा] पर्वत से उत्पन्न।

शैलजा—स्त्री०[सं० शैलज—टाप्] १. पार्वती। २. गज पिप्पली। ३. दुर्गा। ४. सैंहली।

शैलजात—पुं० =शैलेय।

शैल-तटी—स्त्री०[सं० ष० त० स०] पहाड़ की तराई।

शैल-धन्वा (न्वन्)—पुं०[सं० ब० स०] महादेव। शिव।

शैलधर—पु०[स० प० त० स०] गोवर्धन पर्वत धारण करनेवाले,श्रीकृष्ण।
शैलनंदिनी—स्त्री० [स०] पार्वती।
शैलनिर्यास—पु०[स०] शिलाजीत।
शैलपति—पु०[स० प० त० स०] हिमालय पर्वत।
शैलपत्र—पु०[सं० प० त० स०] बेल का पेड और फल।
शैलपुत्री—स्त्री०[स० प० त० स०]१ पार्वती।२ नौ दुर्गाओ मे से एक। ३ गगा नदी।
शैल-पुष्प—पुं० [सं० प० त० स०] शिलाजीत। शिलाजतु।
शैलबीज—पु० [स० प० त०] भिलावाँ।
शैलभेद—पुं०[स० प० त० स०] पखान-भेदी (पौधा)।
शैलमंडप—पु० [स० स० त०]=शैल-गृह।
शैलरंध्र—पु० [स० प० त०] गुफा।
शैलराज—पु०[सं० प० त०] हिमालय पर्वत।
शैलशिविर—पु० [सं० प० त०, व० स० वा] समुद्र। सागर।
शैल-संभव—पु०[सं० व० स०] शिलाजीत।
शैल-सुता—स्त्री०[स० प० त० स०]१ पार्वती। २ दुर्गा। ३ गगा नदी।
शैलाग्र—पु० [स० प० त० स०] पर्वत का शिखर।
शैलाट—पु०[स० शैल√ अट्(चलना)+अच्] १. पहाडी आदमी। परवतिया। २ विल्लौर। स्फटिक। ३ शेर। सिंह।
शैलाधिप, शैलाधिराज-पु० [स० प० त०] हिमालय।
शैलाभ—पु० [स० व० स०] विश्वदेवो मे मे एक।
शैलाली—पु०[स० शिलालि+णिनि—दीर्घ-नलोप] नट।
शैलिक—पु०[स० शिला+ठक्—इक] शिलाजीत।
शैली—स्त्री०[स० शैल-डीप्]१. ढग। तरीका। २. साहित्य मे, बोल या लिखकर विचार प्रकट करने का वह विशिष्ट ढग जिसपर वक्ता या उसके काल, समाज आदि की छाप लगी होती है। जैसे—भारतेंदु की शैली, द्विवेदीयुगीन शैली। ३ कोई काम करने अथवा कोई चीज निर्मित, प्रस्तुत या प्रदर्शित करने का कलापूर्ण ढग। जैसे—चित्र-कला की पहाडी शैली, मुगल शैली, राजस्थानी शैली आदि। ४ कठोरता। सख्ती।
शैलीकार—पु० [स० शैली√कृ+अण्] वह जिसने कला, काव्य, साहित्य आदि के किसी क्षेत्र मे किसी नई और विशिष्ट शैली का प्रचलन किया हो।
शैलू—पु०[देश०] लिसोड़ा।
स्त्री० गुजरात और दक्षिण भारत मे बननेवाली एक प्रकार की चटाई।
शैलूक—पु०[स० शैल+ऊकन्]१ लिसोड़ा। २ भसीड।
शैलूष—पु०[स० शिलूष+अण्]१. अभिनय करनेवाला व्यक्ति। अभिनेता। नट। २. गधर्वो का नेता। ३ बेल का पेड।
वि० धूर्त।
शैलूषिक—पु० [स० शिलूष+ठक्–इक] [स्त्री० शैलूषिकी] अभिनेता।
वि०, पुं०=शैलूष।
शैलेंद्र—पु०[स० नित्य० स०] हिमालय पर्वत।
शैलेय—वि०[स० शिला+ढक्—एय] १. जिसमे पत्थर हो। पथरीला। २. पहाड का। पहाडी। ३. जो पत्थर से उत्पन्न हो।
पु० १. शिलाजीत। २. छरीला। ३. मूसलीकद। ४ सेंधा नमक। ५ सिंह। ६. भौरा।
शैलेयी—स्त्री०[स० शैलेय-डीप्] पार्वती।
शैलेश्वर—पु०[स० प० त० स०] शिव। महादेव।
शैलोदा—स्त्री०[स० ब० स०] उत्तर दिशा की एक प्राचीन नदी।
शैल्य—वि० [स० शिला+ष्यञ्] १ पत्थर का। २ पथरीला। ३. पहाडी। ४ कठोर। सख्त।
शैव—वि० [स० शिव+अण्] १ शिव-सबधी। शिव का। जैसे—शैव दर्शन। २ शैव सम्प्रदाय का अनुयायी।
पु०१. शिव का उपासक या भक्त। २. हिन्दुओ का एक प्रसिद्ध सप्रदाय (वैष्णव से भिन्न) जो शिव का उपासक है। ३ पाशुपत अस्त्र। ४. धतूरा। ५ अडूसा। ६ जैनो के अनुसार पाँचवे कृष्ण या वासुदेव का एक नाम।
शैवपत्र—पु०[स० ब० स०]बिल्व वृक्ष, जिसकी पत्तियाँ शिव पर चढती हैं। बेल।
शैव पुराण—पु०[स० कर्म० स०] शिव पुराण।
शैवल—पु०[स० √शी (शयन करना)+वलच्]१ पद्म काष्ठ। पदमकाठ। २ सेवार। ३ एक प्राचीन पर्वत।
शैवलिनी—स्त्री०[स० शैवल+इनि—ङीप्] नदी।
शैवागम—पु०[स०]शैवमत के प्रतिपादक धर्म ग्रन्थ जो प्राय ई० सातवी शती से पहले बने थे।
शैवाल—पु० [स० √ शि (शयन करना)+वालञ्] सेवार।
शैवी—स्त्री०[शैव-ङीप्]१ पार्वती। २ मनसा देवी। ३. कल्याण। मगल।
शैव्य—वि० [स० शिव+ष्य] शिव-सबधी। शिव का।
पु०१ कृष्ण के एक घोडे का नाम। २. पाण्डवों की सेना का एक यूथप।
शैव्या—स्त्री० [स० शैव्य—टाप्] अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चन्द्र की रानी। (चड कौशिक)
शैशव—वि०[स० शिशु+अण्]१ शिशु सबधी। बच्चो का। २ शिशु या छोटे बच्चों की अवस्था से सम्बन्ध रखनेवाला।
पु० १ शिशु होने की अवस्था या भाव। २ १६ वर्ष से कम अवस्था। बचपन। ३ लडकपन।
शैशविक—वि० [स० शैशव+ठक्—इक-] शैशव-सबधी। शैशव का।
शैशविकी—स्त्री० [स०] आधुनिक चिकित्सा-प्रणाली की वह शाखा जिसमे शिशुओ के लालन-पालन, रक्षण आदि के प्रकारो एव सिद्धान्तो का विवेचन होता है। (पेडियाट्रिक्स)
शैशिर—वि०[स० शिशिर+अण्] १ शिशिर-सबधी। शिशिर काल या ऋतु का। २ शिशिर-ऋतु मे होनेवाला।
पु०१ ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक एक ऋषि। २. चातक।
शैषिक—वि०[स० शेष+ठञ्—इक] शेष या अन्तिम भाग से सबध रखनेवाला। शेष का।
शोक—पु०[स० √शुच् (शोक करना)+घञ्]१ किसी आत्मीय या

महान् पुरुप की मृत्यु के कारण होनेवाला घोर दु ख। सोग। (मॉनिंग) २ बहुत अधिक दु ख।

शोकघ्न—पु० [स० शोक √हन् (मारना)+टच्, कुत्व] अशोक वृक्ष।

शोकहर—पु०[स० ब० स०]१ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक पद मे ८, ८, ८, ६ के विश्राम से (अत मे गुरु सहित) तीस मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पद के दूसरे, चौथे और छठे चौकाल मे जगण न पडे। इसे शुभगी भी कहते है।
वि० शोक दूर करनेवाला।

शोकाकुल—वि०[स० तृ० त० स०] शोक में विकल।

शोकारि—पु०[स० प० त० स०] कदम का पेड। कदव का वृक्ष।

शोकार्त—वि०[स० तृ० त० स०] शोक मे विकल।

शोकी (किन्)— वि०[स० शोक+इनि] [स्त्री० शोकिनी] जिसे शोक हुआ हो या जो शोक कर रहा हो।
स्त्री० रात।

शोख़—वि० [फा०] [भाव० शोखी]१ ढीठ तथा निडर। २ ऐसा चचल या चपल जो केवल दूसरो को चिढाने या तग करने के लिए बढ-बढकर धृष्टतापूर्ण बातें तथा व्यवहार करता हो। नटखट। (उर्दू-फारसी की कविताओं मे प्रेम-पात्र का विशेपण)। ३ (रग) जो बहुत चटकीला या तेज हो।

शोखी—स्त्री० [फा०] शोख होने की अवस्था, गुण या भाव। (उर्दू-फारसी कविताओ मे प्रेमपात्र का एक विशिष्ट गुण) २ रग की चटकाहट।

शोच (न्)—पु०[स०]१ दुख। रज। २ चिन्ता। फिक्र।

शोचन—पु०[स० √ शुच् (शोक करना)+ल्युट्—अन] [वि० शोचनीय, शोचितव्य, शोच्य] १. शोक करना। रज करना। २ चिन्ता करना। ३ शोक।

शोचनीय—वि०[स० √शुच् (शोक करना)+अनीयर्] जिसके संबध मे शोच करना पडता हो। जो चिन्ता या फिक्र का विषय हो।

शोचि—स्त्री०[स०]१. लौ। लपट। २ चमक। दीप्ति। ३. रग। वर्ण।

शोच्य—वि०[स० शुच्+ण्यत्]=शोचनीय।

शोटीर्य—पु०[स० शुटीर+यन्]बल। वीर्य। पराक्रम।

शोठ—वि०[स० √ शुठ् (आलस्य करना)+अच्]१ मूर्ख। वेवकूफ २ दुष्ट। बुरा। ३ आलसी।

शोण—वि०[स० √शोण् (गत्यादि)+अच्]१ रक्त वर्ण। लाल। उदा०—अरुण जलज के शोण कोण थे।—प्रसाद।
पु० १ लाल रग २ अरुणता। लाली। ३ अग्नि। ४ सिंदूर। ५ रक्त। लहू। ६ पद्मराग मणि। ७ लाल गदहपूरना। ८ सोनापाठा। ९ लाल गन्ना। १० सोन (नद)।

शोणक—पु०[स० शोण+कन्]१. सोनापाठा। २ लाल गन्ना।

शोणगिरि—पु०[स० मध्य० स०] विहार की एक पहाडी जिस पर मगध देश की पुरानी राजधानी (राजगृह) वसी थी।

शोणझिंटी—स० स्त्री०[स० कर्म० स०] पीली कटसरैया।

शोणपत्र—पु०[सं० ब० स०] लाल पुनर्नवा।

शोणपद्म—पु०[सं० कर्म० स०] लाल कमल।

शोणपुष्प—पु०[सं० ब० स०] कचनार।

शोणपुष्पी—स्त्री०[स०] सिंदूर पुष्पी।

शोणभद्रा—पु०[स० शोणभद्र-टाप्] सोन नामक नद।

शोणरत्न—पु०[स० कर्म० स०] मानिक। लाल।

शोणाबु—पु०[स० ब० स०] प्रलयकाल के मेघो मे से एक मेघ।

शोणा—स्त्री०[स० शोण्—टाप्]१ सोन नामक नद। २ लाल कटसरैया।

शोणित—वि० [सं०√शोण् (रंग)+क्त शोण्+इतच् वा] लाल। जैसे—शोणित चदन।
पु०१ रक्त। लहू। २ वनस्पतियो का रस। ३ केसर। ४ सिंदुर। ५ ताँबा। ६ तृण-केसर।

शोणितपुर—पु०[स० मध्य० स०] बाणासुर की राजधानी का नाम।

शोणित-शर्करा—स्त्री०[स० कर्म० स०] शहद की चीनी।

शोणितार्बुद—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमे लिंग पर फुसियाँ हो जाती है।

शोणितोपल—पु०[स० मध्य० स०] मानिक। लाल।

शोणिमा (मन्)—स्त्री०[स० शोण+इमनिच्]लालिमा। लाली।

शोणोपल—पु०[स० मध्य० स०] मानिक। लाल।

शोथ—पु०[स०√शु (गत्यादि)+थन्] १ शरीर के किसी अग का फूलना। सूजन। २ अग मे सूजन होने का रोग। (इन्फ्लेमेशन)

शोथक—वि०[स० शोथ+कन्] शोक उत्पन्न करनेवाला।
पु०१. शोथ। सूजन। २ मुरदाशख।

शोथघ्नी—स्त्री०[स० शोथ √हन्+टच्—कुत्व-ङीप्]१ गदहपूरना। पुनर्नवा। २ शालिपर्णी। सरिवन।

शोथजित्—पुं०[स० शोथ√जि+क्विप्—तुक्]१ भिलावाँ। भल्लातक। २ गदहपूरना।

शोथारि—पु०[स० प० त० स०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

शोद्धव्य—वि०[स०√शुध् (शोधन करना)+तव्य] शोधे जाने के योग्य।

शोध—पु०[स० √ शुध् (शोधन करना) +अच्]१ शुद्ध करना या बनाना। २ कमी, त्रुटियाँ आदि ठीक तथा दुरुस्त करना। ३ छिपी हुई तथा रहस्यपूर्ण बातो की खोज करना। ४ ऋण चुकाना। ५ जाँच। परीक्षण।

शोधक—वि०[स० √शुध्+णिच्—ण्वुल्—अक]१ शुद्ध या साफ करनेवाला। जैसे—तेल-शोधक यत्र। २ शोध या अन्वेपण करनेवाला। ३ ढूँढने या पता लगानेवाला।

शोधन—पु०[स०√ शुध् (शोधन करना) +णिच्—ल्युट्+अन] १ शुद्ध या साफ करने की क्रिया या भाव। अनमेल या हानिकर तत्त्व निकालकर किसी चीज को शुद्ध बनाना। २ अशुद्धि, दोष, भूल आदि का सुधार करना। (करेक्शन) ३ वह प्रक्रिया जिसमें धातुओ को शुद्ध करके ओपधि का रूप दिया जाता है। ४ नई बातो की खोज करना। खोज का कार्य। अन्वेपण। ५ ऋण चुकाना। ६ प्रायश्चित्त। ७ विरेचन। ८ भाज्य मे से भाजक को घटाना। ९ मल। विष्ठा। १० नीबू। ११ हीरा कसीस।

शोधनक—वि०[स० शोधन+कन्]शोधन करनेवाला।

शोधना—स०[स० शोधन]१. शुद्ध या साफ करना। २ ठीक या दुरुस्त

करना। ३ तलाश करना। खोजना। ढूँढना। ४ वैद्यक मे, धातुओ को विशेष रीति से इस प्रकार शुद्ध करना कि वे ओषधियाँ वन जायँ।

शोध-निबंध—पु०[स० मध्य० स०] ऐसा निवध जिसमे किसी गभीर विचारणीय विषय के सब अगो की अच्छी तरह जाँच-पडताल करके उसके सबध मे कोई मत या विचार स्थिर किया गया हो। (डिस्सर्टेशन)

शोधनी—स्त्री०[स० शोधन-ङीप्] १ मार्जन। झाडू। २. ताम्रवल्ली। ३ नील। ४ ऋद्धि नामक औषधि। ५ जमालगोटा।

शोधनीय—वि० [स०√शुध् (शोधन करना)+अनीयर्] १ जिसका शोधन होने को हो। २ (ऋण या देन) जो चुकाया जाने को हो। ३ जो ढूँढा जाने को हो।

शोधवाना—स०[हिं० शोधना का प्रे०] १ शोधने का काम किमी से कराना। शुद्ध कराना। २ तलाश कराना। ढुँढवाना।

शोध-शाला—स्त्री०[स०]१ वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का शोधकार्य होता हो। २. वह स्थान जहाँ धातुओ को शोधकर उनकी ओषधियाँ वनाई जाती है। ३ आज-कल वह कारखाना जहाँ तेल, धातु आदि प्राकृतिक पदार्थो को रासायनिक प्रक्रियाओं से शुद्ध और निर्मल करके काम मे लाने योग्य वनाया जाता हो। (रीफाइनरी)

शोधा—पु० [हिं० शोधना]सोना-चाँदी शुद्ध करनेवाला व्यक्ति। शोधन करने या शोधनेवाला।

शोधाक्षम—वि० [स० शोध+अक्षम] (व्यक्ति) जो अपना ऋण चुकाने मे अक्षम या असमर्थ हो। दिवालिया।

शोधित—भू० कृ०[स० शोध+इतच्] १ जिसका शोधन हुआ हो। शुद्ध या साफ किया हुआ। २ जो दोष या भूल सुधारकर ठीक किया गया हो। (करेक्टेड) ३ जिसका या जिसके सबध मे शोध हुआ हो। ४ (ऋण या देन) जिसका परिशोधन हुआ हो। चुकाया हुआ।

शोधैया—वि०[हिं० शोधना+ ऐया (प्रत्य०)] शोधनेवाला।

शोध्य—पु० [स० शुध+यत्]अपने अपराध के विषय मे सफाई देनेवाला। अपराधी व्यक्ति।

वि०=शोधनीय।

शोध्यपत्र—पु०[स० कर्म० स०] छापाखाने मे छापनेवाली चीज का वह नमूना जो छापने से पहले भूले आदि सुधारने के लिए तैयार होता है। (प्रूफ)

शोफ—पु०[स०]१ शरीर पर होनेवाली ऐसी सूजन जिसमे जलन या पीडा न हो। (ओएडिमा) २ शरीर पर होनेवाली गाँठ। अर्वुद।

शोफघ्नी—स्त्री० [स० शोफ√हन्+टच्—ङीप्-कुत्व] रक्त पुनर्नवा।

शोफहारी—पु०[स० शोफ√हृ (हरण करना)+णिनि] जगली वर्वरी का पौधा।

शोफारि—पु०[स० प० त० स०] हाथीकद। हस्तिकद।

शोवदा—पु०[अ० शुअवद]१ इद्रजाल। जादू। २ वाजीगरी। ३ हाथ की चालाकी।

शोभ—पु०[स०]१ एक प्रकार के देवता। २ एक प्रकार के नास्तिक।

वि०=शोभन।

शोभन—वि०[स० √शुभ् (शोभित होना)+ण्वुल्-अक]१. शोभा से युक्त। २ शोभा वढानेवाला। ३ उपयुक्त जान पडने तथा फवनेवाला। ४ मगलकारक। शुभ।

पु० १ शिव। २ अग्नि। ३ ग्रह। ४ कमल। ५ राँगा। ६. आभूषण। ७ कल्याण। ८ पुण्यकार्य। ९ सुन्दरता। सौन्दर्य। १० सिन्दूर। ११ ज्योतिष मे विष्कभक आदि सत्ताइस योगो मे से पाँचवाँ योग। १२ वृहस्पति का ग्यारहवाँ सवत्सर। १३ सगीत मे, एक प्रकार का राग जो मालकोश राग का पुत्र कहा गया है। १४ २४ मात्राओ का एक छद जिसमे १४ और १० मात्रा पर यति होती है और अंत मे जगण होता है। इसका दूसरा नाम 'सिंहिका' है।

शोभनक—पु०[स० शोभन+कन] महिजन या शोभाजन।

शोभना—पु० [स० शोभन—टाप्]१ सुन्दरी स्त्री। २ हलदी। ३ गोरोचन। ४ स्कन्द की एक मातृका।

अ० [स० शोभन]शोभित होना। सुहावना लगना।

शोभनिक—पु०[स०शोभन+ठन्—इक] एक प्रकार के नट या कुशल अभिनेता।

शोभनी—स्त्री०[स० शोभन—ङीप्]सगीत मे, एक रागिनी जो मालकोश की पुत्री कही गई है।

शोभाजन—पु०[स० व० स०] सहिंजन (पेड)।

शोभा—स्त्री० [स० शुभ+अ—टाप्] १ काति। चमक। २ ऐसी सुन्दरता या सौन्दर्य जिसका देखने वाले पर विशेष प्रभाव पडता हो। जैसे—पर्वतमालाओ की शोभा। ३ वह तत्व या वात जिसमे किसी का सौन्दर्य वढता हो। ४ अच्छा गुण। ५ रग। वर्ण। ६ हल्दी। ७ वीस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे यगण मगण, दो नगण, दो तगण और दो गुरु होते है तथा छ और सात पर यति होती है। ८ फारसी सगीत से गृहीत कुछ विशिष्ट गायन-तत्व जिसकी सख्या २४ कही जाती है। ९ दलाली के रूप मे मिलनेवाला धन। दलाली की रकम। (दलाल) १० गोरोचन।

शोभानक—पु०[स०] शोभाजन। सहिंजन।

शोभान्वित—वि०[स० तृ० त० स०] शोभा से युक्त।

शोभायमान—वि०[स०] शोभा देता हुआ। सुन्दर।

शोभा-यात्रा—स्त्री० [स०] १ जलूस। २ वरात। (वँगला से गृहीत)।

शोभित—भू० कृ० [स०√ शुभ् (शोभित)+क्त]१ शोभा से युक्त। फवता हुआ। सुन्दर। २ सजा हुआ।

शोभिनी—स्त्री० [स० शोभा+इनि—ङीप्] शोभा देनेवाली।

शोभी—वि०[स०] [स्त्री० शोभिनी] शोभा देनेवाला।

शोर—पु० [फा०]१ ऊँची, तीखी तथा कर्णकटु आवाज या आवाजें। जैसे—रात भर कुत्ते शोर करते रहे। २ लोगो के चीखने-चिल्लाने आदि की सामूहिक ध्वनि। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी चीज की सहसा होनेवाली व्यापक चर्चा।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

शोरवा—पु०[फा० शोर्व] १. तरकारी, दाल आदि का जूम। रसा। २ पकाये हुए मास का रसा।

शोरा—पु० [फा० शोरः] सफेद रग का एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी मे से निकलता है।

मुहा०—शोरे की पुतली=बहुत गोरी स्त्री।
शोरा आलू—पु०[हिं० शोरा+आलू] वन आलू।
शोरा पुश्त—वि० [फा० शोरः पुश्त]१ लडाका। २. उपद्रवी। फसादी।
शोरिश—स्त्री०[फा०] १ खलबली। हलचल। २. बगावत। विद्रोह।
शोरी—पु०[फा० शोर] फारसी सगीत मे एक मुकाम का पुत्र।
शोला—पु०[अ०] एक प्रकार का छोटा पेड जिसकी लकडी बहुत हल्की होती है।
पु०[अ० शुअल.] आग की लपट। ज्वाला।
शोशा—पु०[फा० शोशा]१. आगे निकली हुई नोक। २ किसी बात मे निकाली हुई कोई ऐसी अनोखी और नई शाखा जो उसे किसी दूसरी ओर प्रवृत्त कर सकती हो या उसमे कोई त्रुटि दिखलाती हो।
मुहा०—शोशा निकालना= कोई दोष दिखाते हुए साधारण आपत्ति खड़ी करना।
३. कोई व्यग्यपूर्ण या झगडा लगानेवाली बात कहना।
क्रि० प्र०—छोडना।
शोष—पु०[स० √शुष् (सोखना)+घञ्]१. सूखने की क्रिया या भाव। २. शुष्कता। खुश्की। ३. क्षीण होना। क्षय। ४. धीरे-धीरे शरीर का क्षीण या दुबला होना। ५ क्षय नामक रोग। तपेदिक। ६. बच्चो का सुखंडी नामक रोग।
शोषक—वि० [स० √शुष्(सोखना)+णिच्, ण्वुल्—अक]१ सोखनेवाला। २. आर्द्रता, नमी आदि चूस या सोख लेनेवाला। ३. क्षीण करनेवाला। ४. अपने लाभ या स्वार्थ के लिए नष्ट करनेवाला। ५. दूर करने या हटानेवाला।
पुं० १. वह जो दूसरो का धन हरण करता हो, तथा उनका पूरा पूरा वास्तविक देय भाग न देता हो। २. समाज का वह वर्ग जो धन खीचता तथा बटोरता चलता हो और गरीबो को और अधिक गरीब बनाता चलता हो। (एक्सप्लाइटर, उक्त दोनो अर्थो मे)
शोष-कर्म—पु०[स० कर्म० स०] बावली या तालाब आदि से पानी निकलवाना और उससे खेत सिंचवाना। (जैन)
शोषण—पु०[स० √शुष् (सोखना)+ल्युट्—अन] [वि० शोषी, शोषनीय]१. एक पदार्थ का किसी दूसरे पदार्थ मे से उसका जलीय या तरल अश धीरे धीरे खीचकर अपने अन्दर करना या लेना। सोखना। (ऐब्जार्पशन)२. सुखाना। ३. किसी चीज की ताजगी या हरापन धीरे धीरे कम या दूर करना। ४ परोक्ष उपायो से किसी की कमाई या धन धीरे धीरे अपने हाथ मे करना। (एक्सप्लाएटेशन)५ न रहने देना। दूर करना। ६. क्षीण या दुबला करना। ७. कामदेव के पाँच बाणो मे से एक जो मनुष्य को चिंतित करके उसका रक्त सोखनेवाला कहा गया है। ८ सोठ। ९ सोनापाढा। १०. पिप्पली।
शोषणीय—वि०[सं० √शुष् (सोखना)+अनीयर्] जिसका शोषण हो सके या होने को हो।
शोषयितव्य—वि०[स०√शुष्(सोखना)+णिच्—तव्य]=शोषणीय।
शोषहा—वि० [स० शोष√हन् (मारना)+क्विप्] शोष रोग का नाश करनेवाला।
पु० अपामार्ग। चिचडा।
शोषित—भू० कृ०[स० √शुष् (सोखना)+णिच्—क्त]१. जिसका शोषण हुआ हो। सोखा हुआ। २ सूखा या सुखाया हुआ। ३. (व्यक्ति या वर्ग) जिसका देय भाग उसे पूरा पूरा न मिलता हो और इस प्रकार जिसकी दुर्बलता या असहाय अवस्था का दूसरे फायदा उठाते हो।
शोषी (षिन्)—वि०[सं०√शुष् (सोखना)+णिनि] [स्त्री० शोषिणी] १ शोषण करने या सोखने वाला। २ सुखानेवाला।
शोषना—स०[स० शोषण] शोषण करना। सोखना।
शोहदा—वि०[अ० शहीद के बहु० शुहदा से शुहद]१ व्यभिचारी। लपट। २. बदमाश। लुच्चा। ३. आवारा और गुडा।
शोहदापन—पु०[हिं० शोहदा+पन (प्रत्य०)]१. शोहदा होने की अवस्था या भाव। २. शोहदे की कोई हरकत।
शोहरत—स्त्री० [अ० शुहरत] १ ख्याति। प्रसिद्धि। २ जोरो की चर्चा या फैली हुई खबर।
शोहरा—पु०=शोहरत।
शौंग—पु०[स० शुग+अण्]भरद्वाज ऋषि का एक नाम जो शुग के अपत्य थे।
शौंगेय—पु०[स० शुगा+ढक्—एय]१. गरुड। २ बाज पक्षी।
शौंड—पु०[स० शुड+अण्][भाव० शौडता]१ कुक्कुट पक्षी। मुरगा। २ देव-धान्य। पुनेरा। ३. वह जो शराब पीकर मतवाला हो जाता हो।
शौंडायन—पुं० [स० शुडा+फक्-आयन] प्राचीन भारत की एक प्रकार की योद्धा जाति।
शौंडिक—वि०[सं० शुडा+ठक्—इक] [स्त्री० शौंडिकी] शराब बनाने तथा बेचनेवाला।
पुं० पिप्पलीमूल।
शौंडिकागार—पु०[स० ष० त० स०] शराब की दुकान। हौली। मधुशाला।
शौंडी—पु०[स० शौड +इनि—दीर्घ—नलोप शौंडिन्] प्राचीन काल की शौंडिक नामक एक प्रकार की जाति।
स्त्री०[स० शौड—ङीप्] १. पीपल। पिप्पली। २ चव्य। चाव। ३. मिर्च।
शौंडीर—वि०[स०√ शुडा+ईरन्—अण्] अभिमानी। अहकारी।
शौक—पु०[सं० शुक्+अण्]शुको का समूह। तोतो का झुड।
शौक—पु०[अ०]१ मनोविनोद या आनन्द प्राप्ति के लिए कोई काम बराबर या पुन पुन. करने की स्वाभाविक या अभ्यास जन्य लालसा। २. उक्त के आधार पर ऐसा काम या खेल जिसमे कोई मग्न रहता हो। जैसे—क्रिकेट या ताश का शौक। ३ सुख-भोग।
मुहा०—शौक करना या फरमाना=किसी पदार्थ का भोग करके उसमे सुख प्राप्त करना। जैसे—चाय हाजिर है, शौक फरमाइए।
शौक चर्राना=शौक पैदा होना। (व्यग्य)
पद—शौक से=प्रसन्नतापूर्वक।
४ कोई शुभ आकाक्षा या कामना। ५ किसी काम या बात का चसका।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
६. किसी काम या बात की ओर विशेष रूप से होनेवाली प्रवृत्ति या रुचि।

शौकत—स्त्री० [अ०] १. बल। शक्ति। २. दबदबा। ३ शानदार। ठाठ-बाट।
पद—शान-शौकत।
४. गौरव।

शौकर—पु० दे० 'शूकर-क्षेत्र'।

शौकरी—स्त्री० [स० शूकर+अण्—ङीप्] वराही कद। गेंठी।

शौकिया—क्रि० वि० [अ० शौकिय.] शौक के कारण अर्थात् यो ही। बिना किसी विशिष्ट प्रयोजन के।
वि० शौक से भरा हुआ। जैसे—शौकिया सलाम।

शौकीन—वि० [अ० शौक+हिं० ईन (प्रत्य०)] [भाव० शौकीनी] १ जिसे किसी काम, चीज या बात का बहुत शौक हो। जैसे—खाने-पीने का शौकीन, ताश खेलने का शौकीन। २. जो सदा सजा-सँवारा तथा बना-ठना रहता हो। ३ वेश्यागामी।

शौकीनी—स्त्री० [हिं० शौकीन] १. शौकीन होने की अवस्था या भाव। २ सदा बने-ठने रहने की इच्छा। ३. वेश्या-गमन की वृत्ति। रडीबाजी।

शौक्तिक—वि० [स० शुक्तिका+अण्] शुक्तिका या सीपी से उत्पन्न।
पु० मोती। मुक्ता।

शौक्तिका—स्त्री० [स० शौक्तिक-टाप्] सीप।

शौक्तिकेय—वि०, पु०=शौक्तिक।

शौक्तेय—पु० [स० शुक्ति+ठक्-एय] मोती।

शौक्र—वि० [स० शुक्र+अण्] १. शुक्र-सबधी। २ शुक्र से उत्पन्न।

शौक्ल—वि० [स० शुक्ल+अण्] शुक्ल-सबधी। शुक्ल का।

शौच—पु० [स० शुचि+अण्] शुचि होने की अवस्था या भाव। शुचिता। शुद्धता। २ शास्त्रीय परिभाषा मे सब प्रकार से पवित्रता या शुद्धता-पूर्वक जीवन व्यतीत करना। ३ शरीर की शुचिता के लिए सवेरे सोकर उठते ही किये जानेवाले कृत्य। जैसे—पाखाने जाना, कुल्ला करना, नहाना आदि। ४ पाखाने जाना। टट्टी जाना।
† पु० अशौच।

शौच-कर्म—पु० [स० मध्य० स०] मल-मूत्र आदि का त्याग करना।

शौच-गृह—पु० [स० प० त०] वह कोठरी जिसमे लोग बैठकर मल-मूत्र का विसर्जन करते है। पाखाना।

शौचनी—स्त्री० [स० शौच से] आज-कल का वह पात्र जिसमे लोग पाखाना फिरते हैं।

शौच-विधि—स्त्री० [स०]=शौच-कर्म।

शौचागार—पु० [प० त० स०] शौचालय।

शौचालय—पु० [स० शौच+आलय] १ घरो आदि मे वह स्थान जहाँ लोग मल त्याग करने के लिए जाते है और जहाँ हाथ, मुँह धोने के लिए जल की व्यवस्था रहती है। (लेवेटरी) २. कोई ऐसा स्थान जहाँ पर सार्वजनिक उपयोग के लिए पाखाने बने हुए हो।

शौचासनी—स्त्री० [स० शौच+आसन] काठ आदि का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिस पर बैठकर लोग पाखाना फिरते है। (कामोड)

शौचिक—पु० [स० शौच+ठन्-इक] प्राचीन काल की एक वर्ण सकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौडिक पिता और कैवर्त्त माता से कही गई है।
वि० शौच-सबधी। शौच का।

शौची (चिन्)—वि० [स०√शुच् (शुद्ध करना)+णिनि+दीर्घ, नलोप] [स्त्री० शौचिनी] विशुद्ध। पवित्र।

शौचेय—पु० [स० शौच+ठक् एक] रजक। धोबी।

शौटीर—पु० [स०√शौट् (करना)+ईरन्] [भाव० शौटीरता] १ वीर। बहादुर। २ अभिमानी। ३ त्यागी।

शौटीर्य—पु० [सं० शौटीर+ष्यञ्] १ वीर्य। शुक्र। २ वीरता। बहादुरी। ३. अभिमान। ४ त्याग।

शौत—स्त्री०=सौत (सपत्नी)।

शौद्धोदनि—पु० [सं० शुद्धोदन-इञ्] महाराज शुद्धोदन के पुत्र, बुद्ध।

शौद्र—पु० [स० शूद्रा+अण्] ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न पुत्र।

शौध—वि०=शुद्ध।

शौन—पु० [स० शुन्+अण्] बेचा जानेवाला अथवा बिक्री के निमित्त रखा हुआ मास।
वि० श्वान-सम्बन्धी। कुत्ते का।

शौनक—पु० [स० शुनक्+अण्] एक वैदिक आचार्य और ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे।

शौनायण—पु० [स० शुन+फक्-आयन] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शौनिक—पु० [स० शुन+ठक्-इक] १ मास बेचनेवाला। कसाई। २ शिकारी। ३ आखेट। शिकार।

शौनिक शास्त्र—पु० [सं० प० त० स०] वह शास्त्र जिसमे शिकार खेलने, घोडो आदि पर चढने की विद्या का वर्णन हो।

शौनिकायन—पु० [स० शौनिक+फक्-आयन] वह जो शुनक के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

शौभ—पु० [स० शोभा+अण्] १ देवता। २ राजा हरिश्चन्द्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश मे मानी गई है। ३ चिकनी सुपारी।

शौभांजन—पु० [स० शोभाजन+अण्] शोभाजन। सहिजन।

शौभायन—पु० [स० शुभ+फक्-आयन] प्राचीन भारत की एक योद्धा जाति।

शौभिक—पु० [स० शोभा+ठक्-इक] ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

शौभ्रायण—पु० [स० शुभ्र+फक्-आयन] १. एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

शौभ्रेय—वि० [स० शुभ्रा+ठक्, एय] शुभ्र वस्तु या व्यक्ति-सबधी।
पु० एक प्राचीन योद्धा जाति।

शौरसेन—पु० [स० शूरसेन+अण्] मथुरा के आस-पास के प्रदेश का नाम।

शौरसेनिका—स्त्री० [सं० शौरसेन+कन्-टाप्-इत्व]=शौरसेनी।

शौरसेनी—स्त्री० [स०] शौरसेन प्रदेश की एक प्रसिद्ध प्राचीन प्राकृत साहित्यिक भाषा जिसमे आधुनिक खडी बोली का विकास माना गया है।

शौरि—पु० [सं० शूर+इञ्] १ विष्णु। २ कृष्ण। ३ बलदेव। ४ वसुदेव। ५. शनैश्चर ग्रह।

शौरि-रत्न—पु० [स० प० त० स०] नीलम।

शौर्प—वि० [स० शूर्प+अण्] १ शूर्प। सूप-सबंधी। २ सूप द्वारा नापा हुआ।

शौर्पारक—पु० [स० शूर्पारक+अण्] शूपारक प्रदेश मे पाया जानेवाला काले रग का एक प्रकार का हीरा।
वि० शूर्पारक सम्बन्धी। शूर्पारक का।

शौर्पिक—वि० [स०]=शौर्प।

शौर्य—पु० [स० शूर-ष्यञ्] १ शूर होने की अवस्था, धर्म या भाव। शूरता। २ पराक्रम। शूरतापूर्ण कोई कृत्य। ३. नाटको मे आरभटी नाम की वृत्ति।

शौलायन—पु० [स० शूल+फक्-आयन] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

शौल्क—वि० [स० शुल्क-अण्] शुल्क-सबधी। शुल्क का।

शौल्किक—पु० [स० शुल्क+ठक्+इक] प्राचीन भारत मे वह अधिकारी जो लोगो से शुल्क लेता था। शुल्काध्यक्ष।

शौल्किकेय—पु० [स० शुल्किक+ठक्-एय] एक प्रकार का विष।

शौल्फ—पु० [स० शुल्फ+अण्] १ सौफ। शतपुष्पा। २ सुल्फा नाम का साग।

शौल्विक—पु० [स० शुल्व+ठक्-इक] १ प्राचीन भारत की एक वर्ण सकर जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति। ३ कसेरा। ठठेरा।

शौवन—पु० [स० श्वन्+अण्] १ कुत्ते का स्वभाव। २ कुत्ते का मास। ३. कुत्तो का झुड।
वि० १ स्वान-सबधी। कुत्ते का। २ जिसमे कुत्तो के से गुण हो।

शौवापद—वि० [स० श्वापद+अण्] श्वापद-सबधी। जगली जानवरो का।

शौहर—पु० [फा०] खाविंद। पति।

श्नुष्टि—स्त्री० [स० श्नुस्+क्तिन् षत्व-ष्टुत्व] वैदिक काल मे, समय का एक परिमाण।

श्मशान—पु० [स० ब० स०, ष० त० स०] १ मुरदे या शव जलाने का स्थान। मसान। मरघट। २ कब्रिस्तान। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा स्थान जो बिलकुल उजडा हुआ हो।

श्मशान-कालिका—स्त्री० [स० ष० त० स०] तान्त्रिको के अनुसार काली का एक रूप जिसका पूजन मास-मछली खाकर, मद्य पीकर और नगे होकर श्मशान मे किया जाता है।

श्मशानपति—पु० [स० ष० त० स०] १ श्मशान के स्वामी, शिव। २ एक प्रकार के पुराने ऐन्द्रजालिक।

श्मशान-भैरवी—स्त्री० [स० मध्यम० स०] १. श्मशान मे रहनेवाली देवियो मे से हर एक। (तत्र) २ दुर्गा।

श्मशानवासिनी—स्त्री० [स० श्मशान√वस् (रहना)+णिनि-ङीप्] काली।

श्मशानवासी (सिन्)—पु० [सं० श्मशान्-वासिन्-दीर्घ, नलोप] १ महादेव। शिव। २ चाडाल। ३ भूत-प्रेत।
वि० श्मशान मे रहनेवाले।

श्मशान-वैताल—पु० [स० मध्य० स०] एक भूत-योनि जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि वह श्मशानो मे रहती है और मुरदो का मास खाती है।

श्मशान-वैराग्य—पु० [स० सप्त० त०] वह क्षणिक वैराग्य जो श्मशान मे मृत शरीरो को जलाते हुए देखकर ससार की असारता के सम्बन्ध मे मन मे उत्पन्न होता है।

श्मशान-साधन—पु० [सं० सप्त० त०] तान्त्रिको की एक प्रकार की साधना जो कुछ विशिष्ट महीनो मे रात के समय श्मशान मे किसी मृत शरीर की छाती पर बैठकर की जाती है।

श्मश्रु—पु० [स० श्म√श्रि (रहना)+डुन्] दाढी और मूँछें।

श्मश्रुकर—पु० [स० श्मश्रु√कृ (करना)+अच्] नाई। नापित। हज्जाम।

श्मश्रुमुखी—वि० [स० ब० स०] दाढी-मूँछोंवाली (स्त्री)।

श्मश्रुल—वि० [स० श्मश्रु+लनच्] दाढी-मूँछोंवाला।

श्याम—वि० [सं० श्यै+मक् ब० स०] १. काला और नीला मिला हुआ (रग)। २ काला। कृष्ण। ३ हलका काला। साँवला।
पु० १. श्रीकृष्ण का एक नाम, जो उनके शरीर के श्याम वर्ण होने के कारण पडा था। २. प्रयाग के अक्षयवट का एक नाम। ३ सगीत मे, एक प्रकार का राग जो श्रीराग का पुत्र कहा गया है। ४. बादल। मेघ। ५ कोयल पक्षी। ६ प्राचीन भारत मे कन्नौज के पश्चिम का एक प्रदेश। ७ साँवाँ नामक कदन्न।

श्यामकंठ—पु० [स० ब० स०] १. शिव। २ मोर। मयूर। ३ नील कठ नामक पक्षी।

श्यामक—पु० [सं० श्याम-+कन्] १ साँवाँ नामक कदन्न। २ गन्ध-तृण। राम-कपूर। ३ भारत के पूर्व का स्याम नामक देश।

श्याम-कर्ण—पु० [स० ब० स०] ऐसा घोडा जिसका शरीर सफेद और कान काले हो। ऐसा घोड़ा बहुत बढिया समझा जाता है।
वि० शुभ।

श्यामकाडा—स्त्री० [स० ब० स०] गाँडर दूब।

श्याम-कृष्ण—वि० [स० मध्य० स०] जिसका रग कुछ कालापन लिये नीला हो।
पु० कुछ कालापन लिये हुए नीला रग।

श्याम-घन—पु० [स० मध्य० स०] घनश्याम।

श्याम-चकेना—पुं० [?] एक प्रकार का लोक गीत। (मैथिल)

श्यामचितामणि—पु० [स० ब० स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

श्यामचूडा—स्त्री० [स० ब० स०] श्यामा (पक्षी)।

श्यामता—स्त्री० [स० श्याम+तल्-टाप्] १ श्याम होने की अवस्था, गुण या भाव। २ कालापन। कृष्णता। ३ मलिनता। ४ उदासी। फीकापन। ५ एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर का रग काला होने लगता है।

श्याम-नीलांबरी—स्त्री० [स० ब० स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्यामपत्र—पु० [स० ब० स०] तमाल वृक्ष।

श्यामपर्ण—पु० [स० ब० स०] सिरिस का पेड। शिरीस वृक्ष।

श्यामपर्णी—स्त्री० [स० श्यामपर्ण-ङीप्] चाय।

श्यामपूरबी—पु० [स० श्याम+हिं० पूरबी] सगीत मे, एक प्रकार का सकर राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं, केवल मध्यम तीव्र लगता है।

श्याम-भैरव—पु० [स०] सगीत मे, एक प्रकार का राग।

श्याम-मंजरी—स्त्री० [स० उपमि० स०] उडीसा देश की एक प्रकार की काली मिट्टी जिसका वैष्णव तिलक लगाते हैं।

श्यामल—वि० [स० श्याम+लच्] १ श्याम वर्ण का, काला। साँवला। पु० १. पीपल। २ काली मिर्च। ३ भ्रमर। ४ काला रग।
श्यामलता—स्त्री० [स० श्यामल+तल्–टाप्] १ श्यामल होने की अवस्था, गुण या भाव। साँवलापन। कालापन।
श्यामलांगी—स्त्री० [स० उपमि० स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
श्यामला—स्त्री० [स० श्यामल+टाप्] १ अश्वगधा। २ कटभी। ३ जामुन। ४ कस्तूरी। ५ पार्वती का एक नाम।
वि० स० श्यामल का स्त्री०।
श्यामलिका—वि० [स०] नीली।
श्यामलिमा—स्त्री० [स० श्यामल+इमनिच्] श्यामलता।
श्यामली—स्त्री०=श्यामला।
श्याम-शबल—पु० [स० द्व० स०] पुराणानुसार यम के अनुचर दो कुत्ते जो पहरा देने का काम करते है।
श्याम-शर—पु० [स०] एक प्रकार की ईख जो गुणकारक और अच्छी मानी जाती है।
श्याम-शालि—पु० [स० मध्यम० स०] काला शालिधान्य।
श्याम सुंदर—पु० [स० उपमि० स० कर्म० स०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २. एक प्रकार का बडा वृक्ष।
श्यामांग—वि० [स० व० स०] [स्त्री० श्यामागला] जिसका शरीर कृष्ण वर्ण का हो। काले रग के अगोवाला।
पु० बुध ग्रह।
श्यामागी—स्त्री० [सं० श्यामाग-ङीप्] नीली दूब।
श्यामा—वि० स्त्री० [स० श्याम+टाप्] श्याम रग वाली। काली। २ तपाये हुए सोने के रग वाली।
स्त्री० १ राधा या राधिका का एक नाम। २ कालिका का एक नाम। ३ काले रग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसका स्वर बहुत मधुर होता है। ४ सोम लता। ५ कस्तूरी। ६ यमुना नदी। ७ काले रग की गौ। ८ सोलह वर्ष की तरुणी। ९ सुन्दरी स्त्री। १० एक प्रकार की लता। ११ हलदी। १२. सोमराजी। बकुची। १३ गुग्गुल। १४ तुलसी। १५ कस्तूरी। १६ लता कस्तूरी। मुश्कदाना। १७. गोरोचन। १८ हर्रे। १९ काली निसोथ। २० प्रियगु। २१ नील। २२ भद्रमोथा। २३ हरी दूब। २४ गिलोय। गुडुच। २५ पापाणभेदी। वटपत्री। २६ पिप्पली। २७ कमलगट्टा। २८ विधारा। २९ शीशम। ३० काली गदहपूरना। ३१ मेढासिंगी। ३२ बादा। ३३ कोयल नामक पक्षी। ३४ सावा नामक अन्न। ३५ रात्रि। रात। ३६ मादा कबूतर। कबूतरी। ३७ छाया।
श्यामाक—पु० [स० श्यामा+कन्] साँवाँ नामक कदन्न।
श्यामायन—पु० [स० व० स०] विश्वामित्र के एक पुत्र जो गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि थे।
श्यामायनी—पु० [स० श्यामायनि+दीर्घ नलोप] १ वैशपायन के शिष्यो का एक सम्प्रदाय। २ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।
श्यामा-रजनी—स्त्री०=रजनीगधा (पौधा और फूल)।
श्यामिका—स्त्री० [स० श्यामा+कन्–टाप् इत्व] १. कालापन। श्यामता। २ हलकी काली धारी या रेखा। ३ युवावस्था मे ऊपरी होठ पर उभरने वाली मूँछो की रेखा। ४ काला रग। ५ मलिनता। ६ मल। मैल। ७ ऐब। खराबी। दोष। बुराई।
श्यामित—भू० कृ० [स० श्याम+इतच्] काला किया हुआ।
श्यामेक्षु—पु० [स० कर्म० स०] काली ईख। कजली ईख।
श्याल—पु० [स०√श्यै (प्राप्त होना) कालन् बाहु०] १ पत्नी का भाई। साला। २ बहनोई।
पु०=शृगाल।
श्यालक—पु० [स० श्याल+कन] [स्त्री० श्यालिका] किसी की पत्नी का भाई। साला।
श्याल काँटा—पु० [स० श्याल+हिं० काँटा] सत्यानाशी। भडभाँड।
श्यालकी—स्त्री० [स० श्यालक–ङीप्] किसी की पत्नी की बहन। साली।
श्याली—स्त्री० [स० श्याल-ङीप्] साली।
श्याव—वि० [स०√श्यै+कन्] [भाव० श्यावता] कालापन लिये पीला। कपिश।
पु० उक्त प्रकार का रग जो काले और पीले रग के योग से बनता है। कपिश।
श्याव-दंत—पु० [स० ब० स०] दातो का एक रोग जिसमे रक्त मिश्रित पित्त से दाँत जलकर काले, पीले या नीले हो जाते है।
वि० काले रग के दाँतोवाला।
श्येत—वि० [स०√श्यै (गमनादि)+क्तन्व] श्वेत। सफेद।
श्येन—पु० [स० श्यै+इनन्] १ बाज (पक्षी)। २ हिंसा। ३ पीला रग। ४ दोहे का एक भेद जिसमे दो गुरु और दस लघु मात्राएँ होती है।
श्येन-करण—पु० [स० उपमि० स०] किसी काम मे होनेवाली उतनी ही तेजी और दृढता जितनी बाज के शिकार पर झपटने मे होती है।
श्येन-व्यूह—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।
श्योनाक—पु० [स०√श्यै (गत्यादि)+निपा० ओनाक सिद्ध] सोनापाढा।
श्रथन—पु० [स०√श्रथ्+ल्युट-अन] १ ढीला करना। २ मुक्त करना।
श्रग्ग—पु०=स्वर्ग।
श्रद्ध—वि० [स० श्रत्√धा (रखना)+अड] श्रद्धा करनेवाला। श्रद्धावान्।
श्रद्धाजलि—स्त्री० [स० श्रद्धा-अजलि मध्य० स०] किसी पूज्य या बडे व्यक्ति के सबध मे श्रद्धा और आदरपूर्वक कही जानेवाली बाते।
श्रद्धा—स्त्री० [स०] [वि० श्रद्धालु, श्रद्धेय] १ किसी काम या बात की प्रबल इच्छा या उत्कट वासना। २ गर्भवती स्त्री के मन मे उत्पन्न होती रहनेवाली अनेक प्रकार की इच्छाएँ और वासनाएँ। दोहद। ३ आचार, धर्म आदि के क्षेत्र मे किसी की अच्छी चीज या बात (जैसे—ईश्वर, धर्म, मोक्ष, स्वर्ग आदि) अथवा पूज्य और बडे लोगो के प्रति मन मे रहनेवाली आदरपूर्ण आस्था या भावना, अथवा उनके प्रति होनेवाला विश्वास। ४ बौद्ध धर्म मे, बुद्ध, धर्म और सघ के प्रति होनेवाला उक्त प्रकार का विश्वास। ५ शुद्धाचरण आदि के द्वारा मन मे होनेवाली प्रसन्नता। ६ कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थी। ७ वैवस्वत मनु की पत्नी जो कामदेव और रति की कन्या थी। कामायनी।
श्रप्प—पु०=शाप।

श्रम—पुं० [सं०√श्रम्+घञ् न वृद्धि] [वि० श्रमित, भू० कृ० श्रांत, कर्ता श्रमी] १ कोई ऐसा शारीरिक या मानसिक काम जिसे लगातार कुछ समय तक करते रहने से शरीर में थकावट या शिथिलता आने लगती हो। शरीर को थकानेवाला काम। परिश्रम। मेहनत। (लेबर)
क्रि० प्र०—उठाना।—करना।—पड़ना।—होना।
मुहा०—श्रम साधना (क) उक्त प्रकार का कोई कठिन काम करना। (ख) किसी काम या बात का अभ्यास करना। उदा०—मदुहि हेतु जोगी सम (श्रम) साधै अगर निरोधै पानै।—सूर। २ जीविका-निर्वाह या धन-उपार्जन के लिए किया जानेवाला उक्त प्रकार का कोई काम। ३. उक्त प्रकार के काम करनेवालों का वर्ग या समूह। ४ हाथ से किये हुए किसी काम से पानेवाली मजदूरी। (लेबर, उक्त सभी अर्थों के लिए) ५. क्लांति। थकावट। ६. दौड़-धूप और प्रयत्न। प्रयास। ७. थकावट के कारण शरीर से निकलनेवाला पसीना। ८ साहित्य में, एक प्रकार का संचारी भाव जिसमें कोई काम करते करते मनुष्य थककर शिथिल हो जाता है। ९. कसरत। व्यायाम। १० अस्त्र-शस्त्र आदि चलाने का अभ्यास। ११ [illegible]। निरिला। १२. खेद। रंज। १३ तपस्या।
श्रम-कार्यालय—पुं० [सं० मध्य० स०] श्रमिकों की संख्या, स्थिति। संबंधी जानकारी रखनेवाला सरकारी कार्यालय। (लेबर ब्यूरो)
श्रमणा—स्त्री० [सं०√श्रम (श्रम् करना)+ल्युट्—अन+टाप्] १. सुंदरी स्त्री। २ सुदर्शना ओषधि। ३. गोरखमुंडी। ४ जटामासी।
श्रमणी—स्त्री० [सं० श्रमण+ङीप्] बौद्ध संन्यासिनी।
श्रमना—अ० [सं० श्रम] श्रमित होना। थकना। उदा०—जागे से, जगे से, ताकके से, तके से, थके से, भूले से, भ्रमे से, भभरे से, भकुवाने से।—रत्नाकर।
श्रम-विभाजन—पुं० [सं० मध्य० स०] अर्थशास्त्र में, किसी कार्य के अलग अलग अंगों की क्रिया, रचना आदि के संपादन के लिए अलग अलग व्यक्ति नियत करना। (डिस्ट्रिब्यूशन आफ लेबर)
श्रम-विवाद—पुं० [सं० मध्यम० स०] श्रमिकों के वेतन, अधिक लाभांश तथा अन्य प्रश्नों के संबंध में मालिकों से होनेवाला विवाद या झगड़ा। (लेबर डिस्प्यूट)
श्रम-संघ—पुं० [सं० ष० त० स०] कारखानों आदि में काम करनेवाले श्रमिकों का संघ जो उनके स्थिति-सुधार तथा हित-रक्षा की ओर ध्यान रखता है। (लेबर यूनियन)
श्रमिक-कल्याण-कार्य—पुं० [सं० ष० त० स०] श्रमिकों की भलाई के लिए किये जानेवाले कार्य। जैसे—स्वास्थ्य रक्षा, साफ और हवादार मकानों की व्यवस्था आदि। (लेबर वेल्फेयर)
श्रमिक-संघ—पुं० [सं० ष० त० स०]=श्रम-संघ।
श्रयण—पुं० [सं०√श्रि+ल्युट्—अन] आश्रय।
श्रवण—पुं० [सं०√श्रु+ल्युट्—अन] [वि० श्रवणीय] १ सुनने की क्रिया या भाव। सुनना। २. देवताओं के चरित्र, कथाएँ आदि सुनना जो कि नवधा भक्ति में से एक प्रकार की भक्ति है। ३ सुनने की इंद्रिय। कान। ४ उक्त इन्द्रिय के द्वारा प्राप्त होनेवाला ज्ञान। ५. ज्योतिष में अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से बाइसवाँ नक्षत्र जिसमें तीन तारे हैं और जिसका आकार तीर की तरह माना गया है।

श्रवण-दर्शन—पुं० [सं० द्व० स०] साहित्य में, वह अवस्था जब कोई किसी के गुण सुनकर और उसके प्रति मन में अनुरक्त होता है।
श्रवण-द्वादशी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] भाद्र के शुक्ल पक्ष की ऐसी द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र में पड़ती हो। कहते हैं कि भगवान् का वामन अवतार इसी द्वादशी को हुआ था और इस दिन का पुण्य विशेष माना जाता है।
श्रवणपुट—पुं० [सं०] श्रवण के बाहरी का [illegible] भाग।
श्रवणेंद्रिय—स्त्री० [सं० मध्य० स०] सुनने की इंद्रिय। कान।
श्रव्य—वि० [सं०√श्रु+यत्] [भाव० श्रव्यता] १. जो सुना जा सके या सुनाई देता हो। २. सुनने के योग्य। अच्छा। प्रशंसनीय।
श्रव्यता—स्त्री० [सं० श्रव्य+तल्—टाप्] श्रव्य होने का गुण या सुने जा सकने की अवस्था या भाव। (आडिबिलिटी)
श्रांत—वि० [सं०√श्रम्+क्त] [भाव० श्रांति] १. जो परिश्रम करने के कारण थका हुआ हो। २. खिन्न। दुःखी। ३ जितेंद्रिय। ४ शांत। ५. जो सुख-भोग से तृप्त हो चुका हो।
पुं० तपस्वी।
श्राद्ध—पुं० [सं० श्रद्धा+अण्] १. वह काम जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २. सनातनी हिंदुओं में पितरों या मृत संबंधियों के उद्देश्य से किये जानेवाले पिंड-दान, ब्राह्मण-भोजन आदि जो उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए किये जाते हैं। ३. आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें विहित रूप से उक्त प्रकार के कृत्य करने का विधान है। पितृ-पक्ष। ४. कोई काम या बात करने की बुरी तरह से बिगाड़ते हुए करने की क्रिया या भाव। (व्यंग्य) जैसे—उन्होंने इस रचना में तो कवि की कविता का श्राद्ध ही किया है। ५. श्रद्धा। ६ विश्वास।
वि० श्रद्धा से युक्त।
श्राद्ध-देव—पुं० [सं० मध्य० स०] १. यमराज। २. विवस्वान्। ३ वैवस्वत मनु। ४. ब्राह्मण।
श्रावक—पुं० [सं०√श्रु+ण्वुल्—अक] [स्त्री० श्राविका] १ बौद्ध संन्यासी। २. जैन संन्यासी। ३. जैन धर्म का अनुयायी। जैनी। ४. नास्तिक। ५. दूर से आनेवाला शब्द। ६. कौआ। ७ छात्र। शिष्य।
वि० श्रवण करने या सुननेवाला। श्रोता।
श्रावकयान—पुं० [सं०]बौद्धों के हीनयान का शिष्टतासूचक नाम।
श्रावण—वि० [सं० श्रवण+अण्] १. श्रवण-संबंधी। कान-संबंधी। २. श्रवण नक्षत्र-संबंधी। श्रवण नक्षत्र का।
पद—श्रावण वर्ष। (देखें)
३ श्रावण नक्षत्र में उत्पन्न।
पुं० १. चांद्र गणना के अनुसार वह महीना जिसकी पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र होता और जो असाढ़ तथा भादों के बीच में पड़ता है। सावन। २. उक्त मास की पूर्णिमा। ३. श्रवणेंद्रिय का विषय अर्थात् आवाज या शब्द। ४ पुराणानुसार योगियों के योग में होनेवाले पाँच प्रकार के विघ्नों में से एक प्रकार का विघ्न या उपसर्ग जिसमें योगी हजार योजन तक के शब्द ग्रहण करके उनके अर्थ हृदयंगम करता था। ५ पाखंड।
श्रावण वर्ष—पुं० [सं० मध्य० स०] ज्योतिष की गणना में, एक प्रकार का

वर्ष जो उस दिन से माना जाता है जिस दिन श्रवण या धनिष्ठा नक्षत्र मे बृहस्पति उदित होता है। फलित ज्योतिष के अनुसार ऐसे वर्ष मे साधारण लोग धन-धान्य से सुखी रहते हैं, परन्तु दुष्ट और पाखडी बहुत ही दुःखी रहते हैं।

श्रावणिक—पु० [स० श्रावणी+ठन्—इक] गुप्त काल मे, वह कर्मचारी या सेवक जो न्यायालय मे वाद उपस्थित होने पर वादी, प्रतिवादी और साक्षी को बुलाने के लिए जोर से आवाज लगाता था।

श्रावणी—स्त्री० [स० श्रावण—ङीप्] श्रावण मास की पूर्णिमा को होनेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमे यज्ञोपवीत का पूजन भी होता है।

श्राविका—स्त्री० [स० श्रु (सुनना)+णिच्—ण्वुल् अक-इत्व—टाप्] स० श्रावक का स्त्री० रूप।

श्रावित—भू० कृ० [स० श्रु (सुनना)+णिच्-क्त] सुनाया हुआ।

श्राव्य—वि० [स०√श्रु+ण्यत्] [भाव० श्राव्यता] १ जो सुना जा सके। सुनाई पडने के योग्य। २ जो इतना आवश्यक या उपयोगी हो कि लोग उसे सुनना पसद करें। ३. जो बिलकुल स्पष्ट सुनाई पडता हो।

श्रित—भू० कृ० [स०√श्रि (सेवा करना)+क्त] १. आश्रय या शरण के लिए आया हुआ। २ रक्षित। ३ सेवित। ४ पका हुआ।

श्रितवान् (वत्)—वि० [स०√श्रि (सेवा करना)+क्तवत्—नुम्, दीर्घ] १ आश्रयदाता। २ सेवक।

श्रिति—स्त्री० [स०√श्रि (सेवा करना)+क्तिन्] आश्रय। सहारा।

श्री—स्त्री० [स०√श्रि+क्विप्] १ विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। २ सरस्वती। ३ सिद्धि। ४. धन-दौलत। सपत्ति। ५ ऐश्वर्य। वैभव। ६ धर्म, अर्थ और काम तीनो का समूह। त्रिवर्ग। ७ कीर्ति। यश। ८ शोभा। सौंदर्य। ९ काति। चमक। १० अधिकार। ११ कमल। १२ सफेद चदन। १३ लौंग। १४ ऋद्धि नामक ओषधि। १५ मस्तक पर ऊर्ध्व पुड्र के बीच मे लगाई जानेवाली लबी रेखा। १६ स्त्रियो का माथे पर पहनने की बेंदी नामक गहना। १७ धूप-सरल नामक वृक्ष। १८ सामुद्रिक के अनुसार पैर के तलुए मे होनेवाली एक प्रकार की शुभ रेखा। १९ बेल का पेड और फल। २० षाडव जाति की एक रागिनी जो सूर्यास्त के समय गाई जाती है। वि० १ योग्य। २ शुभ। ३ सुन्दर। ४ श्रेष्ठ। ५ एक प्रकार का आदरसूचक विशेषण जो पुरुषो के नाम के पहले लगाया जाता है। जैसे—श्री नारायणदास।

पु० १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ कुबेर। (डिं०) ४. एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय। ५. एक प्रकार का एकाक्षरी छद या वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक गुरु वर्ण होता है। जैसे—गो। श्री। धी। ही। ६ सगीत मे, ६ रागो के अन्तर्गत सम्पूर्ण जाति का एक राग जो शरद् ऋतु मे गाया जाता है। कहते हैं कि यह राग गाने से सूखा वृक्ष भी हरा हो जाता है। ७ बेल।

श्रीकंठी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्रीकरी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्रीकात—पु० [स० ष० त०] विष्णु।

श्रीकृच्छ्र—पु० [स० ब० स० या मध्यम० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमे केवल श्रीफल (बेल) खाकर रहते है।

श्रीगणेश—पु० [स० मध्य० स०] किसी कार्य का आरभ या सूत्रपात (जो पहले प्राय. 'श्रीगणेशाय नम' कहकर किया जाता था)।

श्रीधर—पुं० [स०] विष्णु।

श्रीफल—पु० [स० ब० स०] १ बेल। २ नारियल। ३ शरीफा। ४. खिरनी। ५ आँवला। ६. कच्ची सुपारी। ७. द्रव्य। धन।

श्रीवन—पु०=वृन्दावन।

श्रीमंडप—पु० [स० मध्य० स०] प्राचीन भारत मे, धवलगृह का वह भाग जिसमे राजा अपने अतिथियो से मिलते थे। (प्रेजेन्स चैम्बर)

श्रीमंत, श्रीमान्—वि० [स०] १ श्री से युक्त। २ धनवान्। सम्पन्न। ३ 'श्री' की तरह प्रयुक्त एक आदरसूचक विशेषण।

श्रीमालवी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

श्रीमुख—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु का मुख अर्थात् वेद। २ सुशोभित या सुन्दर मुख।

श्रीरंजनी—स्त्री० [सं०] सगीत मे, काफी ठाठ की एक रागिनी।

श्रील—वि० [सं० श्री+लच्] १ शोभायुक्त। २ जो अश्लील न हो। ३. धनवान्।

श्रुत—भू० कृ० [स०√श्रु+क्त] १. सुना हुआ। २ फलत प्रसिद्ध।

श्रुतादान—पुं० [स० ष० त०] ब्रह्मवाद।

श्रुतानुश्रुत—पु० [स०] इधर-उधर से या दूसरे लोगो से सुनी हुई ऐसी बात जिसकी प्रामाणिकता अनिश्चित हो। (हियरसे)

श्रुतार्थ—पु० [सं० कर्म० स०] जबानी कही या सुनी हुई बात।

श्रुति—स्त्री० [स०√श्रु+क्तिन्] १ सुनने की क्रिया या भाव। श्रवण करना। सुनना। २ सुनने की इन्द्रिय। कान। ३ कही या सुनी हुई बात। ४. आवाज। शब्द। ५. अफवाह। किंवदन्ती। जनश्रुति। ६ उक्ति। कथन। ७ भारतीय आर्यो और सनातनी हिन्दुओं की दृष्टि मे चारो वेद जिनमे उनके विश्वास के अनुसार सृष्टि के आरभ से चला आया हुआ सारा अपौरुषेय और पवित्र ज्ञान भरा है। (स्मृति से भिन्न)

विशेष—परवर्ती काल मे उपनिषदो की गिनती भी (श्रुति) मे होने लगी।

८. चारो वेदो के आधार पर, चार की सख्या का सूचक शब्द। ९ भाषा-विज्ञान मे, वह ध्वनि जो किसी शब्द का उच्चारण करने के समय एक वर्ण या स्वर से दूसरे वर्ण या स्वर तक पहुँचने के समय प्राय अज्ञात तथा अस्पष्ट रूप से मध्यवाले अवकाश मे होती है। १०. सगीत शास्त्र मे, उक्त के आधार पर वह निशिष्ट प्रकार की ध्वनि जो किसी स्वर का उच्चारण करने मे आशिक रूप से सहायक होती है।

विशेष—सगीत शास्त्र के आचार्यों का मत है कि नाभि के नीचे की ब्रह्म-ग्रथि मे जो वायु रहती है, उसके स्फुरण से २२ नाडियो के द्वारा २२ प्रकार की अलग अलग ध्वनियाँ होती हैं जो पारिभाषिक क्षेत्र मे २२ श्रुतियों के नाम से प्रसिद्ध है। सगीत के सातों स्वर कई कई श्रुतियो के योग से उत्पन्न होते हैं। यथा—तीव्रा, कुमुद्वती, मद्रा और छंदावती के योग से षड्ज, पद्मावती, रंजनी और रतिका के योग से गाधार, वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति और मार्जनी के योग से मध्यम, क्षिति, रक्ता, सदीपनी और आलापिनी के योग से पंचम, मदंती, रोहिणी और रम्या के योग से धैवत, तथा उग्रा और क्षोभिणी के योग से निषाद स्वर बनता है।

११. ज्यामिति मे, समकोणिक त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। १२. नाम। सज्ञा। १३ पाडित्य। विद्वत्ता। १४. विद्या। १५ अत्रि ऋषि की कन्या जो कर्दम ऋषि की पत्नी थी। १६. दे० 'श्रुत्यानुप्रास'।

श्रुति-कटु—वि० [सं० सप्त० त०] जो सुनने मे बहुत अप्रिय या बुरा लगता हो। कर्कश।

श्रुति-धर—पु० [स० प० त०] [भाव० श्रुतिधरता] १. वह जो एक बार सुनकर ही हर बात याद कर ले। बहुत बडा पडित या विद्वान्।

श्रुति-धरता—स्त्री० [स० श्रुतिधर+तल्–टाप्] श्रुतिधर होने का भाव।

श्रुति-भाल—पु० [स० ब० स०] ब्रह्मा।

श्रुति-मधुर—वि० [स० सप्त० त०] जो सुनने मे भला और मीठा लगता हो।

श्रुति-रंजनी—स्त्री० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

श्रुति-सुख—वि० [स० सप्त० त०] सुनने मे मधुर। सुमधुर।

श्रुति-हर—वि० [स० श्रुति√हृ+अच्] कानो को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला; अर्थात् श्रुति-मधुर।

श्रुवा—पु०=स्रुवा।

श्रूयमाण—वि० [स०√श्रु (सुनना)+शानच् मुक्] १ जो सुना जाय या सुनाई दे। २ प्रसिद्ध।

शृंखल—पु०=शृखला।

शृंखला—स्त्री०[स० शृंख√ला+क टाप्] १ एक दूसरी मे पिरोई हुई बहुत-सी कडियों की लडी। जजीर। सिकडी। २. लगातार एक क्रम से आने या होनेवाली बहुत सी घटनाएँ, चीजें, बातें आदि। (चेन, उक्त दोनों अर्थो के लिए)। ३ एक ही प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदि का एक के बाद एक करके चलनेवाला क्रम। माला। (सीरीज) जैसे—कार्य-शृंखला। ४. एक ही दिशा, रूप, विभाग आदि से कुछ दूर तक चलता रहनेवाला क्रम। माला। श्रेणी। (रेंज) ५. क्रम। सिलसिला। ६. कमर मे पहनने की करधनी। तागडी। ७. साहित्य मे, एक प्रकार का अलकार जिसमे पहले एक क्रम से कुछ चीजें या बातें गिनाई जाती है; और तब उसी क्रम से उनका वर्णन किया जाता है।

शृंग नाद—पु० [स०] शृगी या सिंगी नाम का बाजा। उदा०—सूने गिरि पथ मे गुंजारित शृगनाद की ध्वनि चलती।—प्रसाद।

शृंगार-सामग्री—स्त्री० [प० त०] अनेक प्रकार के सुगधित चूर्ण, तेल आदि ऐसे पदार्थ जिनका उपयोग कुछ लोग विशेषत: स्त्रियाँ अपने अग, बालो, शरीर की रगत आदि का सौंदर्य बढाने के लिए करती हैं। अगराग। (कास्मेटिक्स)

श्रेढ़िक—वि० [स०] १ श्रेढी-सबधी। २ श्रेढी से युक्त। २. क्रमश: आगे बढता हुआ। प्रगतिशील। (प्रोग्रेसिव)

श्रेढ़ी—स्त्री० [स० श्रि√ढौक्+क, पृषो० डीप्] [वि० श्रेढिक] १. गणित मे, सख्याओ आदि का नियमित क्रमिक रूप से घटते या बढते चलना। २. किसी कार्य या बात का निरतर बढ़ते चलना। (प्रोग्रेशन)

श्रेणी—स्त्री० [स० श्रि√नि+क्विप्, डीप्] १. अवली। कतार। पक्ति। २ लगातार चलता रहनेवाला क्रम या सिलसिला। शृखला। ३. एक ही तरह की ऐसी चीजो या बातो का वर्ग जो कुछ दूर तक एक ही रूप मे चलता रहे। (सीरीज) ४. प्राचीन भारत में, एक ही प्रकार के व्यवसाय करनेवाले व्यापारियों का संघटन। (कार्पोरेशन) ५. कार्य, योग्यता आदि के विचार मे पदार्थों, व्यक्तियों आदि का होनेवाला वर्ग या विभाग। दरजा। (क्लास) ६. जीना। सीढी। ७ दल। समूह। ८ जजीर। सिकडी। ९ किसी चीज का अगला भाग या सिरा। १० पानी भरने का डोल।

श्रेणीकरण—पु० [सं० प० त०] [भू० कृ० श्रेणीकृत] १. श्रेणी के रूप मे रखने या लाने की क्रिया। वर्गीकरण। २. क्रम से या व्यवस्थित रूप से रखना या लगाना।

श्रेणी-पाद—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, ऐसा राष्ट्र या जनपद जिसमे श्रेणियों या पचायतो की प्रधानता हो। (कौ०)

श्रेणी-प्रमाण—पु० [स० ब० स०] प्राचीन भारत मे, वह शिल्पी या व्यापारी जो किसी श्रेणी के अन्तर्गत हो और उसके मन्तव्यों के अनुसार काम करता हो। (कौ०)

श्रेय (स्)—वि० [स०√श्रि+ईयसुन्–आदेश्च्] १ किसी की तुलना मे अधिक बढ़कर। बेहतर। २ उत्तम। श्रेष्ठ। ३ वाछनीय। मगलकारक। ४ शुभ। ५. कीर्ति या यश देनेवाला।

पु० १. अच्छापन। अच्छाई। उत्तमता। २. कल्याण। मगल। ३. शुभ आचरण। ४. कर्ता को मिलनेवाला यश। ५ आध्यात्मिक क्षेत्र मे ऐसा धार्मिक कृत्य जो मोक्ष की प्राप्ति मे सहायक होता हो। 'प्रेय' का विपर्याय।

श्रेय मार्ग—पु० [सं० मध्य० स०] धार्मिक क्षेत्र मे, ऐसा काम या मार्ग जो मनुष्य को स्वर्ग पहुँचाता या मोक्ष दिलाता हो।

श्रेष्ठ—वि० [स०√श्रि+इष्ठन्, श्रादेश] १. गुण, मान आदि के विचार से बढकर। जैसे—श्रेष्ठ विचार। २ (व्यक्ति) जो उच्च मानवीय गुणों से सम्पन्न हो।

पु० १. ब्राह्मण। २. राजा। ३. विष्णु। ४. कुबेर।

श्रेष्ठाश्रम—पु० [स० कर्म० स०] गृहस्थाश्रम जिससे शेष तीनो आश्रमो का पालन होता है।

श्रेष्ठि-चत्वर—पु० [स० प० त० स०] प्राचीन भारत मे, वह चबूतरा जिसपर बैठकर सेठ-साहूकार आपस का लेन-देन करते थे।

श्रोणि—स्त्री० [सं० श्रोण+इन्] १ कटि। कमर। २ नितब। चूतड। ३ पेड़ू। ४ मार्ग। पंथ।

श्रोत—पु० [स०√श्रु (सुनना)+असुन्–तुट्] १. कर्ण। कान। २ इन्द्रिय (जिनके मार्ग से शरीर के मल तथा आत्मा निकलती हैं)। ३. हाथी का सूँड। ४ नदी का वेग या स्रोत।

श्रोतव्य—वि० [स०√श्रु (सुनना)+तव्य] १ जो सुना जाय। जो सुना जाने के योग्य हो।

श्रोत्र—पु० [स० श्रोत्र+अण्] १. कर्ण। कान। २ वेदो का ज्ञान। ३. वेद।

श्रोत्र-ग्राह्य—वि० [स० तृ० त०] जिसका ग्रहण या ज्ञान श्रोत्र या कानो के द्वारा हो सकता हो। जो सुनाई पडता हो या पड सकता हो। (ऑडिटरी)

श्रोत्रिय—पु० [सं० छन्दस्+घ-इय, श्रोत्रादेश] प्राचीन भारत मे, वह विद्वान् जो छन्द आदि कठस्थ करके उनका अध्ययन और अध्यापन करता था।

श्रोन*—पु० १. =श्रवण। २. =शोण।
श्रौत—वि० [स० श्रुति+अण्] १ श्रुति-संबंधी। २. श्रुतियों मे कहा या बताया हुआ। ३. कान-संबंधी। कान का।
श्रौती—स्त्री० [स०] साहित्य मे, पूर्णोपमा के दो भेदो मे से एक। दूसरा भेद 'आर्थी' कहलाता है।
श्रौत्र—पु० [स० श्रोत्र+अण्] १. श्रोत्रिय-कर्म। २ श्रोत। कान। ३. वेदो का ज्ञान।
वि० कान संबंधी।
श्लथन—पु० [स०√श्लथ्+ल्युट्-अन] मानसिक अशांति मिटाने के लिए तथा शरीर मे फुरती लाने के लिए अगो को ढीला छोडना।
श्लिष्ट—भू० कृ० [स०√श्लिष्+क्त] १ किसी के साथ जुडा, मिला या लगा हुआ। २ जो श्लेषण या सश्लेषण की क्रिया के अनुसार किसी से मिलकर एक हो गया हो। सश्लिष्ट (सिन्थेटिक)। ३ साहित्यिक क्षेत्र मे, जो श्लेष से युक्त हो, अर्थात् दो अर्थोवाला।
विशेष—श्लिष्ट और द्व्यर्थक में भेद यह है कि श्लिष्ट का प्रयोग तो ऐसे पदों, वाक्यो, शब्दो आदि के सबध मे होता है जो जान-बूझकर इस दृष्टि से कहे गये हों कि सुभीते के अनुसार उनका दूसरा अथवा कोई ओर अर्थ भी निकाला या लगाया जा सके, परन्तु द्व्यर्थक का प्रयोग ऐसे पदो, वाक्यो, शब्दो आदि के सबध मे होता है जिनके साधारणत और स्वभावत दो अर्थ होते हैं।
श्लीपद—पु० [स० ब० स० पृषो०] फीलपाँव। (दे०)
श्लेष—पु० [स०√श्लिष्+घञ्] [वि० श्लेषक, श्लेषी, भू०कृ०श्लिष्ट] १. सयोग होना। जुडना। मिलना। २ आलिंगन। परिरंभण। ३ बोल-चाल, लेख आदि मे वह स्थिति जिसमे कोई शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि उसके दो या अधिक अर्थ निकलें और फलत वह लोगो के परिहास का विषय बने। ४. साहित्य मे, एक प्रकार का अलकार जो कुछ अवस्थाओ मे अर्थालकार और कुछ अवस्थाओ मे शब्दालकार होता है। इसमे किसी या कुछ शब्दो के दो या अधिक अर्थ निकलते हैं। (पैरोनोमेशिया)
विशेष— इसमे ऐसे शब्दो का प्रयोग होता है जिनके कई कई अर्थ होते है और प्रसगों के अनुसार उनके अलग अलग अर्थ होते हैं। यथा—नाही नाही करै थोरे माँगे बहु देन कहै, मगन को देखि पट देत बार बार है। इसमे कही हुई बातें अलग अलग प्रकार से कृपण पर भी घटती है और दाता पर भी। इसके दो भेद होते हैं—अभग पद और भग-पद।
श्लेषक— वि० [स०√श्लिष्+ण्वुल्—अक] श्लेषण करने या मिलाने-वाला।
श्लेष-चित्र—पु० [स० मध्य० स०] १ साहित्य मे, ऐसा चित्र जिसमे स्पष्ट रूप से व्यक्त होनेवाले भाव के सिवा कोई और भाव भी छिपा हो। जैसे—यदि कोई नायक कई नायिकाओ मे से किसी एक नायिका पर रीझकर अन्य नायिकाओ को भूल जाय और उससे चिढकर कोई मानिनी नायिका ऐसा चित्र अंकित करे जिसमे वह नायक कई कुमुदि-नियो के बीच मे से किसी एक कुमुदिनी का रस लेता हुआ दिखाई दे तो ऐसा चित्र श्लेष-चित्र कहा जायगा। २ दे० 'कूट चित्र'।
श्लेषण—पु० [स०√श्लिष्+ल्युट्-अन] [वि० श्लेषणी, श्लेषी, भू० कृ० श्लेषित, श्लिष्ट] १ सयोग करना। मिलाना। २ किसी के साथ जोड़ना या लगाना। ३. गले लगाना। आलिंगन।
श्लेष्म—पु० [स०] श्लेष्मा।
श्लेष्मा—पु० [स० श्लिष्+मनिन्, श्लेष्मन्] १ शरीर मे का कफ नामक विकार जो शरीर की तीन धातुओ मे से एक माना गया है। बलगम। २. बाँधने की डोरी या रस्सी। ३. लिसोडा।
श्लोक—पु० [स०√श्लोक्+अच्] १. आवाज। ध्वनि। शब्द। २ पुकारने का शब्द। आह्वान। पुकार। ३. प्रशसा। स्तुति। ४ कीर्ति। यश। ५ किसी गुण या विशेषता का प्रशंसात्मक कथन या वर्णन। जैसे—शूर-श्लोक अर्थात् शूरता का वर्णन। ६ सस्कृत के अनुष्टुप छद का पुराना नाम। ७ आज-कल सस्कृत का कोई छद या पद्य।
श्वः—पु० [स० श्वस्] आनेवाला दूसरा दिन। आगामी कल।
श्वपच—वि० [स० श्व√पच्+अच्] [स्त्री० श्वपचा, श्वपची] कुत्ते का मास खानेवाला।
पु० प्राचीन भारत मे, एक प्रकार के चाडाल जिनकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न स्मृतियो मे अलग अलग वर्णो के माता-पिता से कही गई है।
श्वपाक—पु० [स०]=श्वपच (चडाल)।
श्ववानर—पु० [स० (श्वान)+वानर] अफ्रीका और अरब मे पाया जानेवाला एक प्रकार का भीषण बंदर जिसका थूथन और दाँत प्राय कुत्तो के से होते हैं। (बेबून)
श्वसन—पु० [स०√श्वस् (साँस लेना)+ल्युट् अन] साँस लेने की क्रिया।
श्वसित—पु० [स०√श्वस् (साँस लेना)+क्त] १ श्वास। २ आह। वि० १ श्वास निकालने या ग्रहण करनेवाला। श्वास युक्त। जीवित। २. आह भरनेवाला।
श्वसुर, श्वसुरक—पु० [स०] किसी के पति या पत्नी का पिता। ससुर।
श्वान्—पु० [स०√श्वि+कनिन्] कुत्ता।
श्वान—पु० [स०] [स्त्री० श्वानी] कुत्ता।
श्वास—पु० [स०√श्वस्+घञ्] १ प्राणियो का नाक से हवा खींचकर अन्दर फेफड़ो या हृदय तक पहुँचाना और फिर बाहर निकालना जो जीवन का मुख्य लक्षण है। साँस। (ब्रेथ) २ श्वासनली का एक प्रसिद्ध रोग जिसमे साँस बहुत जोर जोर से चलती और रोगी को बहुत कष्ट होता है। दमा। (एज्मा)
श्वासनली—स्त्री० [स०] सिर, गले और छाती के अदर की वह नली जिससे प्राणी साँस लेते और निकालते हैं। (ट्रैकिया)
श्वासायाम—पु० [स०] १ साँस लेने मे होनेवाली कठिनता या कष्ट। २ कठिनता या कष्ट से लिया जानेवाला साँस।
श्वासावरोध—पु० [स० श्वास+अवरोध] साँस के आने-जाने मे होनेवाली बाधा। दम घुटना। (एस्फिकिया)
श्वासी (सिन्)—पु० [स०√श्वस् (साँस लेना)+णिच्—णिनि, श्वास इनि वा] १. श्वास लेनेवाला प्राणी। २. वायु।
श्वित—वि० [स०√श्वित् (सफेदी)+क्विप्]=श्वेत।
स्त्री० [स० श्वित+इनि] श्वेतता। सफेदी।
श्वेत—वि० [स०√श्वेत+अच् या घञ्] [भाव० श्वेतता, श्वेतिमा]

१. जिसमे किसी प्रकार का रग या वर्ण दिखाई न देता हो। विना किसी विशिष्ट रग का। चाँदी, दही आदि की तरह का। उजला। धवल। सफेद।

विशेष—आधुनिक विज्ञान के मत से सातो रगो के मेल से ही चीजें श्वेत या सफेद दिखाई देती हैं, क्योकि सूर्य की किरणे जो सफेद दिखाई देती है, वस्तुत. सातों रगों से युक्त होती है।

२. निर्मल। साफ। स्वच्छ। ३ कलक, दोप आदि से रहित। ४. उज्वल वर्ण का। गोरा।

पु० १. सफेद रंग। २. चांदी। रजत। ३. शख। ४ कौड़ी। कपर्दक। ५ सफेद घोडा। ६ सफेद वादल। ७ सफेद जीरा। ८. शिव का एक अवतार। ९ वराह की सफेद मूर्ति या रूप। १०. पुराणानुसार एक पर्वत जो रम्य वर्ष और हिरण्य वर्ष के वीच मे माना गया है। ११. पुराणानुसार एक द्वीप। १२. आयुर्वेद मे, शरीर की त्वचा की तीसरी तह की सज्ञा। १३. स्कन्द का एक अनुचर। १४ शोभाजन। सहिजन। १५. शुक्र ग्रह का एक नाम जो उसके सफेद रग के कारण पडा है। १६ एक केतु या पुच्छल-तारा।

श्वेतकुंजर—पु० [सं० कर्म० स०] इन्द्र का ऐरावत नामक हाथी।

श्वेतकुष्ठ—पु० [स० कर्म० स०] रक्त-विकार के कारण होनेवाला एक रोग, जिसमे शरीर पर सफेद दाग या धव्वे वनने और वढने लगते हैं। यह कोढ मे गिना जाता है। (ल्यूकोडरमा)

श्वेतकेतु—पु० [स० कर्म० स०] गौतम वुद्ध।

श्वेतच्छद—पु० [स० व० स०] हस।

श्वेत-द्युति—पु० [स० व० स०] चन्द्रमा।

श्वेत-द्वीप—पु० [स० कर्म० स०] वैकुठ।

श्वेत-पत्र—पु० [स० मध्य० स०] आधुनिक राजनीति मे, वह राजकीय विज्ञप्ति जो किसी महत्त्वपूर्ण राजनीतिक चर्चा, वार्ता आदि के सवध मे (प्राय सफेद कागज पर लिखकर) प्रकाशित की जाती है। (ह्वाइट पेपर)

श्वेत-प्रदर—पु० [स० कर्म० स०] स्त्रियों के प्रदर नामक रोग का एक प्रकार जिसमे योनि से सफेद रग का गाढा और वदवूदार पानी निकलता है और जिसके कारण वे वहुत क्षीण तथा दुर्वल हो जाती है। (ल्यूकोरिया)

श्वेतरथ—पु० [स० व० स०] व्रह्मा जिनकी सवारी हस है।

श्वेतवाजी—पु० [स० व० स०] चन्द्रमा।

श्वेतवाह—पु० [स० व० स०] १ चन्द्रमा। २ इन्द्र। ३ अर्जुन। ४. कपूर।

श्वेतसार—पु० दे० 'जलाक'।

श्वेतांक—पु० [स० व० स०] अनाजो, आलुओ, मटरो आदि मे पाया जानेवाला एक प्रकार का गधहीन सफेद खाद्य पदार्थ जिसका उपयोग औषधो और शिल्पीय कार्यों मे भी होता है। चावलो मे से यही माँड़ के रूप मे निकलता है। (स्टार्च)

श्वेतिमा (मन्)— स्त्री० [स० श्वेत+इमनिच् टाप्] श्वेतता।

ष

ष—नागरी वर्णमाला का इकतीसवाँ व्यंजन जो भाषा-विज्ञान तथा व्याकरण के अनुसार ऊष्म, मूर्धन्य, अघोष, महाप्राण तथा ईषद्विवृत है। अवधी मे इसका उच्चारण 'ख' की तरह होता है।

षंजन—पु० [सं०] १. आलिंगन। २. मिलन।

षंड—पु० [स०√सन्+ड, पृषो० षत्व] १ साँड। वैल। २ नपुसक। ३. ढेर। राशि। ४ भेडो आदि का झुड। ५ पद्मो का समूह।

षंडक—पु० [स० पण्ड+कन्] नपुसक।

षंडता—स्त्री० [स० षड+तल्+टाप्] नपुसकता।

षंडत्व—पु० [स० पण्ड+त्व] नपुसकता।

षंडयोनि—स्त्री० [स०] = पडी।

षंडाली—स्त्री० [सं०] १. तालाव। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

षंडी—स्त्री० [स०] ऐसी स्त्री जिसमे स्त्री के मुख्य लक्षणों का अभाव हो, अर्थात् न तो जिसके स्तनो का विकास हुआ हो और न रजस्वलता होती हो। (ऐसी स्त्री पुरुष समागम के अयोग्य होती है।)

षंढ—पु० [स०√सन्+ढ] १. नपुसक। २ क्लीव। ३ शिव।

षंढा—स्त्री० [स० पढ-टाप्] मरदानी औरत। (शरीर तथा स्वभाव के विचार से)

षंढिता—स्त्री० [स०]=पडयोनि।

ष—पु० [स०] १. केश। वाल। २. स्वर्ग। ३ वुद्धिमान्। ४. विद्वान् आदमी। ५. निद्रा। ६. अत। ७. वची हुई वस्तु। ८. हानि। ९. ज्ञान-हानि। १० चूचुक। ११. मोक्ष। १२ गर्भ-स्राव। १३ भ्रूण। १४. सहिष्णुता।

वि० १. विद्वान्। विज्ञ। २ वुद्धिमान्। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।

षट्—वि० [स०√सो+क्विप्,+सु] जो गिनती मे पाँच से एक अधिक हो। छः।

पु० १. छ का सूचक अक या सख्या। २ सगीत मे, पाडव जाति का एक राग जो सवेरे के समय गाया जाता है। ३ कुछ लोगो के मत से यह असावरी, टोडी, भैरवी आदि छ. रागिनियो के योग से वना हुआ सकर राग है।

षट्क—वि० [स०] १ छ गुना। २. छठी वार होनेवाला या किया जानेवाला।

पु० १ छ का अक या सख्या। २. एक ही प्रकार की वस्तुओ का वर्ग या समूह। ३ दर्शन-शास्त्रो के अनुसार इच्छा, द्वेप, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान का वर्ग या समूह।

षट्-कर्म—पु० [स० द्वि० स०] १. शास्त्रो के अनुसार व्राह्मणो के ये छ कर्म—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह। २. स्मृतियो के अनुसार ये छ कर्म जिनके द्वारा आपत्काल मे व्राह्मण अपना निर्वाह कर सकते है—उछवृत्ति, दान लेना, भिक्षा, कृषि, वाणिज्य और महाजनी (लेन-देन)। ३ तंत्र-शास्त्र के अनुसार मारण, मोहन (या वशीकरण), उच्चारण, स्तभन, विद्वेषण और शाति ये छ कर्म। ४. योगशास्त्र मे, धौति, वस्ति, नेती, नौलिक, त्राटक, और कपाल-

माती ये छ. कर्म। ५. साधारण लोगो के लिए विहित ये छ. काम जो उन्हें नित्य करने चाहिए—स्नान, सध्या, तर्पण, पूजन, जप और होम। ६. लोक-व्यवहार और बोल-चाल मे व्यर्थ के झगड़े-बखेड़े या प्रपच।

षट्-कर्मा—पु० [स० व० स०] षट्-कर्म करनेवाला, ब्राह्मण, तान्त्रिक, योगी या गृहस्थ।

षट्-कला—स्त्री० [सं० ब० स०] सगीत में, ब्रह्मताल के चार मुख्य भेदो मे से एक।

षट्क-संपत्ति—स्त्री० [स० द्वि० स०] धर्मशास्त्र के अनुसार ये ६ कर्म—दम, शम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान।

षट्कोण—वि० [स० ब० स०] छ कोणोवाला। (हेक्सेगुलर)
पु० ज्यामिति मे छः कोणोवाली आकृति।

षट्-चक्र—पु० [स० द्वि० स०] १ योग मे ये छ चक्र—मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा। २. झगडे-बखेडे या झझट के काम।

षट्-चरण—वि० [स० ब० स०] छ पैरोवाला।
पु० १ भौरा। २ जूँ। ३. टिड्डी।

षट्-ताल—पु० [स०] सगीत मे, मृदग का एक प्रकार का ताल।

षट्-तिला—स्त्री० [स०] माघ के कृष्ण पक्ष की एकादशी जिस दिन तिल-दान करने का माहात्म्य है।

षट्-दर्शन—पु० [स० द्वि० स०] हिन्दुओ के तत्त्व-ज्ञान सम्बन्धी ये छ दर्शन या शास्त्र–सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व-मीमासा और उत्तर मीमासा।

षट्-दर्शनी—पु० [स० ब० स०] वह जो हिन्दुओ के षट् दर्शनो का अच्छा ज्ञाता या पडित हो।

षट्-पद—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० षट्पदी] छ. पैरोवाला।

षट्पदी—स्त्री० [स०ब०स०] छप्पय छद जिसमे छ. पद या चरण होते है।

षट्-प्रज्ञ—वि० [स० ब० स०] चारो पुरुषार्थ अर्थात् लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञाता।

षट्-भुज—पु० [स० ब० स०] ज्यामिति मे, वह क्षेत्र या आकृति जिसकी छ. भुजाएँ हो। (हेक्सागन)

षट्-रस—पु० [स० द्वि० स०] खाने-पीने की चीजो के ये छ रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

षट्-राग—पु० [स० द्वि० स०] १ सगीत के ये छ मुख्य राग—भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, मालकोश और दीपक। २. व्यर्थ का झगडा या बखेडा।

षट्-रिपु—पु० [स० द्वि० स०] धर्मशास्त्र के अनुसार ये छ मनोविकार जो मनुष्य के शत्रु माने गये हैं—काम, क्रोध, भय, मोह, लोभ और अह-कार या (किसी किसी के मत से) मत्सर।

षट्-वर्ग—पु० [स० द्वि० स०] १ एक ही तरह की छ चीजो का वर्ग या समूह। २. फलित ज्योतिष मे, क्षेत्र होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशाश और त्रिशाश का वर्ग या समूह। ३ दे० 'षट्-रिपु'।

षट्वांग—पु० [स०] एक प्राचीन राजर्षि जिन्हे केवल दो घडी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

षट्-विकार—पु० [स० द्वि० स०] १. दार्शनिक क्षेत्र मे, प्राणियो के ये छ. विकार या परिणाम—जन्म, शरीर-वृद्धि, बाल्यावस्था, प्रौढ़ता, वार्द्धक्य और मृत्यु। २.=षट्-रिपु।

षट्-शास्त्र—पु० [स०]=षट्-दर्शन।

षडंग—पु० [स० द्वि० स०] १. वेदो के ये छ. अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। २ शरीर के ये छ अग—दो पैर, दो-हाथ, सिर और धड।

षडक्षरी—पु० [स० द्वि० स०] रामानुज के श्री-वैष्णव सम्प्रदाय का दीक्षामत्र जो छः अक्षरो का है।

षडग्नि—स्त्री० [स०] कर्मकाड के अनुसार ये छ प्रकार की अग्नियाँ—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि।

षडज—पु०=षड्ज (स्वर)।

षडानन—वि० [स० ब० स०] छ मुखोवाला। जिसके छ. मुँह हो।
पु० १. कार्तिकेय जिनके छ मुँह कहे गये है। २ सगीत मे, स्वर-साधना की एक प्रणाली जो आरोही मे इस प्रकार है—सा रे ग म प ध रे ग म प ध नि, ग म प ध नि सा और अवरोही मे इसके विपरीत है।

षड्-अक्षरी—स्त्री०=षडक्षरी।

षड्गुण—पु० [स० द्वि० स०] १. छ. गुणो का समूह। २ प्राचीन भारतीय राजनीति मे राज्य के ये छ गुण या कार्य—सन्धि, विग्रह, यान (चढाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और सश्रय।

षड्ज—पु० [स० षट्√जन्] सगीत के सात स्वरो मे से पहला स्वर जो साधारणत. 'सा' कहलाता है।
विशेष—सगीत-शास्त्र के अनुसार इस स्वर का उच्चारण नासा, कठ, उर, तालु, जीभ, और दाँतों के सम्मिलित प्रयत्न से होता है, इसलिए इसका नाम षड्ज पड़ा है।

षड्-दर्शन—पु० =षट्-दर्शन।

षड्-भाग—पु० [स०] भूमि की उपज का वह छठा अश जो भूमि-कर के रूप मे लिया जाता था।

षड्भाषा—स्त्री० [स०ब०स०] सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, शौरसेनी, मागधी और पैशाची शब्दो के योग से बनी हुई एक प्राचीन मिश्र भाषा जिसका रूप चन्दवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो मे देखने को मिलता है।

षड्यंत्र—पु० [स०] १ वह योजना जो कुछ लोग सामूहिक रूप से कोई अनुचित तथा अपराधपूर्ण काम करने के लिए बनाते हैं। २. कोई बडा परिवर्तन करने के लिए गुप्त रूप से की जानेवाली कार्रवाई। (कान्सपिरेसी)
क्रि० प्र०—रचना।

षड्रस—पु० [स०] षट्-रस।

षड्रिपु—पु० [स०]=षट्-रिपु।

षड्वर्ग—पु० [स०] षट्-वर्ग।

षड्विंदु—पु० [स० ब० स०] १. विष्णु। २ गुबरैले की तरह का एक प्रकार का कीडा जिसकी पीठ पर बुँदकियाँ होती हैं।

षड्विकार—पु०=षट्-विकार।

षण्मुख—वि० [स०]=षडानन।

षष्टि—वि० [स० षट्+दशति, नि० सिद्धि] जो गिनती मे पचास से दस अधिक हो। साठ।

स्त्री० साठ की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।
षष्टिक—पु० [सं०] साठी नामक धान।
षष्टिका—स्त्री० [सं०] साठी धान।
षष्ठ—वि० [सं० षष्+टट्—थुक्] गिनती में छ के स्थान पर पडनेवाला। छठा।
षष्ठान्न—पु० [सं०] वह अन्न जो तीन दिन का व्रत रखकर उन तीन दिनों में केवल एक बार खाया जाय।
षष्ठी—स्त्री० [सं० षष्ठ+डीप्] १ चांद्र मास के शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। छठ। २ संस्कृत व्याकरण में संबंध सूचक विभक्ति। ३ बच्चे के जन्म से छठे दिन होनेवाला कृत्य। छठी। ४ सोलह मातृकाओं में एक मातृका। ५ दुर्गा का एक नाम।
षांट—पु० [सं०] शिव।
षांड्य—पु० [सं०]=षडता।
षाड्व—पु० [सं० षष्√षज्+अच्+अण्] संगीत में, ऐसा राग जिसमें केवल छ. स्वर लगते हों और कोई एक स्वर न लगता हो।
षाड्व-ओड़व—पु० [सं०] संगीत में, ऐसा राग जो आरोही में षाड्व और अवरोही में ओडव हो।
षाड्व-संपूर्ण—पु० [सं०] संगीत में ऐसा राग जो आरोही में षाडव और अवरोही में संपूर्ण हो।
षाड्गुण्य—पु० [सं०] १ किसी संख्या को छ से गुणा करने पर प्राप्त होनेवाला गुणनफल। २ षड्गुण (देखें) होने की अवस्था या भाव।
षाण्मातुर—वि० [सं० षण्मातृ+अण्, उत्व] जिसकी छ. माताएँ हों। पु० कार्तिकेय।
षाण्मासिक—वि० [सं० षण्मास+ठक्] १. अवस्था में छः महीनेवाला। २ जिसकी अवधि छ मास की हो। जैसे—षाण्मासिक चंदा। पु० मृतक का होनेवाला वह श्राद्ध जो उसकी मृत्यु के छ महीने बाद किया जाता है। छ-माही।
षाण्मुख—वि० [सं०] छ मुखोंवाला। पु० कार्तिकेय।
षाष्ठिक—वि० [सं०] षष्ठी-संबंधी।
षोडश—वि० [सं० षोडशन्+डट्] जो गिनती में दस से छ. अधिक हो। सोलह। पु० सोलह की संख्या।
षोडशक—पु० [सं० षोडश+कन्] सोलह।
षोडश कला—स्त्री० [सं० द्वि० स०] चन्द्रमा की सोलहों कलाएँ। (दे० 'कला')
षोडश गण—पुं० [सं० द्वि० स०] दार्शनिक क्षेत्र में, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, पाँचों कर्मेन्द्रियों, पाँचों भूतों और मन का वर्ग या समूह।
षोडश दान—पु० [सं० द्वि० स०] धार्मिक क्षेत्र में, नीचे लिखी १६ चीजों का एक साथ किया जानेवाला दान—भूमि, आसन, जल, वस्त्र, अन्न, दीपक, पान, छत्र, सुगंधित द्रव्य, पुष्प माला, फल, शास्त्र, खड़ाऊँ, गौ, सोना और चाँदी।
षोडश पूजन—पु० [सं०]=षोडशोपचार।
षोडश मातृका—स्त्री० [सं० द्वि० स०] इन सोलह मातृकाओं (एक प्रकार की देवियों) का वर्ग या समूह—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातृ और आत्म-देवता।
षोडश श्रृंगार—पु० [सं०] संपूर्ण शृंगार जिसमें सोलह बातें होती हैं—उबटन लगाना, स्नान करना, वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, अंजन लगाना, सिंदूर भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक बनाना, ठोडी पर तिल बनाना, मेंहदी रचाना, सुगन्धित द्रव्यों का प्रयोग करना, अलंकार धारण करना, पुष्पहार पहनना, पान खाना, होंठ रँगना और मिस्सी लगाना।
षोडश-संस्कार—पुं० [सं०] गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक के सोलह संस्कार। विशेष दे० 'संस्कार'।
षोडशांग—वि० [सं०] जिसके १६ अंग या अवयव हों। पु० सोलह गंध-द्रव्यों से तैयार किया हुआ धूप।
षोडशांशु—पु० [सं० ब० स०] शुक्र ग्रह।
षोडशाह—पु० [सं० ब० स०] १. सोलह दिन तक किया जानेवाला एक प्रकार का उपवास। २. मृतक की षोडशी (देखें) नामक कृत्य।
षोडशिक—वि० [सं० षोडश+ठक्] १ सोलह से संबंध रखनेवाला। २ सोलहवाँ।
षोडशी—वि० [सं०] सोलह वर्षों की (युवती)। स्त्री० १. सोलह वर्षों की युवती स्त्री। २ वह कृत्य जो किसी के मरने के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है। (हिन्दू) ३ दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या। ४ नीचे लिखी १६ वस्तुओं का वर्ग या समूह—ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और नाम।
षोडशोपचार—पु० [सं० कर्म० स०] पूजन के सोलह अंग या कृत्य—आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।
ष्ठीवन—पु० [सं०√ष्ठीव्+ल्युट्] [भू० कृ० ष्ठ्यूत] १. थूकने की क्रिया या भाव। २. थूक।
ष्ठीवी—स्त्री० [सं०] =ष्ठीवन।
ष्ठ्यूत—भू० कृ० [सं०√ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] थूका हुआ।
ष्ठ्यूति—स्त्री० [सं०√ष्ठिव्+क्तिन् ऊठ्] थूकने की क्रिया या भाव।

स

स—नागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन जो भाषा-विज्ञान तथा व्याकरण के अनुसार ऊष्म, दन्त्य, अघोष, महाप्राण तथा ईषद्विवृत है।
सं—उप० [सं० सम्] एक संस्कृत उपसर्ग जो कुछ शब्दों के पहले लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—१ संग, सहित या साथ, जैसे—संगम, संभाषण, संयुक्त आदि। २ अच्छी या पूरी तरह से; जैसे—संतोष, संन्यास, संपादन आदि। ३ उत्कृष्टता या सुन्दरता; जैसे—संस्तुति। विशेष—कभी-कभी इसके योग में मूल शब्द का अर्थ प्रायः ज्यों का त्यों बना रहता है, और उसमें कोई विशेषता नहीं आती। जैसे—संप्राप्ति। † अव्य० द्वारा। से।
संइतना†—स०=सैंतना।

सँउपना†—स०=सौंपना।

संका†—स्त्री०=शका।

सकट—पु०[स० सम्√कट् (वरसना या ढकना)+अच्]१ सँकरा रास्ता। तग राह। २ विशेषत जल या स्थल के दो भागो को जोडनेवाला तग रास्ता। जैसे—गिरि-सकट, जल-सकट, स्थल-सकट। ३. दो पहाडो के वीच का रास्ता। दर्रा। ४. ऐसी स्थिति जिसमे दोनो ओर कष्टो-या विपत्तियो का सामना करना पडता हो और वीच मे निश्चितता या सुखपूर्वक रहने के लिए वहुत ही थोड़ा अवकाश रह गया हो। ५ आफत। विपत्ति।

वि० सँकरा। जैसे—सकट मुख।

संकट-चौथ—स्त्री० [सं० सकट+हिं० चौथ] माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी।

संकट-मुख—वि० [स०] जिसका मुँह सँकरा हो।

संकट-संकेत—पु० [म० प० त०] विपत्ति या सकट मे पडे हुए लोगो का वह सांकेतिक सदेश जो आस-पास के लोगो को अपनी रक्षा या सहायता के लिए भेजा जाता है। (एस० ओ० एस०) जैसे—डूवते या जलते हुए जहाज का सकट-सकेत।

संकटा—स्त्री० [स० सकट-टाप्] १ एक प्रसिद्ध देवी जो सकट या विपत्ति का निवारण करनेवाली मानी जाती है। २ फलित ज्योतिष मे, अष्ट योगिनियों मे से एक।

संकटापन्न—भू० कृ० [स० द्वि० त०] १ सकट या कष्ट मे पड़ा हुआ। २ सकटपूर्ण।

संकटी (टिन्)—वि० [स० सकट+इनि] जो सकट मे पडा हो।

संकत†—पु०=सकेत।

संकना†—अ० [स० शका] १ शका करना। सदेह करना। २. आशकित या भयभीत होना। डरना।

संकर—वि० [स० सम्√कृ (फेंकना) +अप्] १. दो या अधिक भिन्न भिन्न तत्त्वो या पदार्थों के मेल से वना हुआ। जैसे—सकर राग। २ दो अलग अलग जातियो, वर्णो आदि के जीवो या प्राणियो के ससर्ग से उत्पन्न। दोगला।

पु० १ अलग अलग तरह की दो चीजो का आपस मे मिलकर एक होना। २ वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न वर्गों या जातियो के पिता और माता से हुई हो। दोगला। ३ साहित्य मे, ध्वनि का वह प्रकार या भेद जिसमे एक ही आश्रय से कई अभिप्राय या ध्वनियाँ निकलती हो। जैसे—प्रिय के आने पर पीन स्तनो और चचल तथा विशाल नेत्रोंवाली नायिका द्वार पर मगल कलश और कमलो के वदनवार का काम विना आयास के ही सपादित कर रही थी। यहाँ स्तनो से कलशो और नेत्रो से कमलो के वदनवार का भी भाव निकलता है। ४ साहित्य मे, दो या अधिक अलकारो के इस प्रकार एक साथ और मिले-जुले रहने की अवस्था जिसमे या तो वे एक दूसरे से अलग न किए जा सकें या जिनका उस प्रसग मे स्वतत्र रूप सिद्ध न हो सके। (काम्प्लिक्सचर) उदाहरणार्थ—यदि किसी वर्णन मे दो या अधिक अलकार समान रूप से घटित होते हो तो उन्हे सकर कहा जायगा। इसकी गणना स्वतत्र अलकार के रूप मे होती है। ५ न्याय के अनुसार किसी एक ही स्थान या पदार्थ मे अत्यताभाव और समानाधिकरण का एक ही मे होना। जैसे—मन मे मूर्तत्व तो है, पर भूतत्त्व नही है, और आकाश मे भूतत्त्व है, पर मूर्तत्व नही है। परन्तु पृथ्वी में भूतत्व भी है और मूर्तत्व भी है। ६ झाड़ देने पर उडनेवाली धूल। ७. आग के जलने का शव्द।

†पु०=शकर।

संकरक—वि० [स० सकर+कन्] १ मिलाने या मिश्रण करनेवाला। २ संकर रूप मे लानेवाला।

संकरखण†—पु०=सघर्षण।

संकर घरनी—स्त्री० [स० शकर+गृहिणी] शकर की पत्नी, पार्वती।

संकरण—पु० [स०] १ सकर या मिश्रित करने की क्रिया या भाव। २ दो भिन्न भिन्न जातियो या वर्गों के प्राणियो, वनस्पतियो आदि का सयोग करा के किसी अच्छी या नई जाति का प्राणी या वनस्पति उत्पन्न करने की क्रिया, प्रणाली या भाव। (क्रास ब्रीडिंग)

संकरता—स्त्री० [स० सकर+तल्+टाप्] १ सकर होने की अवस्था, धर्म या भाव। साकर्य। २ दोगलापन।

संकर पद—पु० [स०] भाषा मे, ऐसा समस्त पद जो दो विभिन्न स्रोतो या भाषाओं के शव्दो के योग से वना हो।

सकर समास—पु० [स०] व्याकरण मे, दो ऐसे शव्दो का समास जिनमे से एक शव्द किसी एक भाषा का और दूसरा किसी दूसरी भाषा का हो।

संकरा—वि० [म० सकीर्ण][स्त्री० सँकरी] १ (रास्ता) जिसकी चौडाई कम हो। २ (वस्त्र) जो पहनने पर कस जाता हो या जो वहुत मुश्किल से पहना जाता हो। तग।

†पु० कठिनता, विपत्ति आदि की स्थिति।

†पु० [स० शृखला] सिक्कड।

संकरा—पु०=शकराभरण (राग)।

सँकराना†—स० [हिं० सँकरा+आना (प्रत्य०)] सकुचित करना। तग करना।

स० [हिं० साँकल] अन्दर वन्द करके वाहर से साँकल लगाना।

†अ० सँकरा या तग होना।

सकरित—भू० कृ० [म० सकर+इतच्] किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ।

संकरिया—पु० [स० सकर ?] एक प्रकार का हाथी।

संकरी (रिन्)—पु० [म० सकर+इनि] वह जो भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से उत्पन्न हो। सकर। दोगला।

†स्त्री०=शकरी।

संकरीकरण—पु० [स० सकर+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्-अन] १ दो या अधिक अलग अलग जातियो, जीवो, पदार्थो आदि के योग से नया जीव या पदार्थ उत्पन्न करने की क्रिया। २ धर्म-शास्त्र मे, नौ प्रकार के पापो मे से एक जो जातियो या प्राणियो मे वर्ण-सकरता उत्पन्न करने से लगता है।

संकर्षण—पु० [स०] १ अपनी ओर खीचने की क्रिया या भाव। २ खेत मे हल जोतना। ३ ग्यारह रुद्रो मे से एक रुद्र। ४ श्रीकृष्ण के भाई वलदेव का एक नाम। ५ वैष्णवो का एक सप्रदाय जिसके प्रवर्तक निम्वार्क जी थे। ६ कानून मे अधिकार, उत्तरदायित्व आदि के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान पर दूसरी वस्तु या व्यक्ति का रखा या नाम चढाया जाना। (सवरोगेशन)

संकर्षी (र्षिन्)—वि० [स०√कृष्(खीचना)+णिनि अथवा सकर्ष+इनि] १ खीचने या खीचकर मिलानेवाला। २. छोटा करनेवाला।

संकल—पु० [स० सम्√कल् (गणना करना)+अच्] १ दो या अधिक चीजो को एक मे मिलाना। २. इकट्ठा करना। सकलन। ३. गणित मे जोड या योग नाम की क्रिया। ४ पश्चिमी पजाब की एक प्राचीन पहाडी और उसके आस-पास का स्थान। (आज-कल का सागला)
†स्त्री० [स० शृखला] साँकल। सिकडी।

संकलन—पु० [स० सम्√कल्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सकलित] १. एकत्र करने की क्रिया। सग्रह करना। जमा करना। २ काम की और अच्छी चीजें चुनकर एक जगह एकत्र करना। ३. कोई ऐसी साहित्यिक कृति जिसमे अनेक ग्रन्थो या स्थानो से बहुत-सी बातें इकट्ठी करके रखी गई हो। (कम्पाइलेशन) ४ ढेर। राशि। ५ गणित मे, योग नाम की क्रिया। जोड।

संकलप†—पु० =सकल्प।

संकलपना—स० [स० सकल्प+हिं० ना (प्रत्य०)] १ किसी बात का सकल्प या दृढ निश्चय करना। २ धार्मिक रीति से सकल्प या मत्र-पाठ करते हुए कोई चीज दान करना। इस प्रकार छोड देना मानो सकल्प करके दान कर दिया हो। उदा०—सुख सकलपि दुख साँवर लीन्हेउँ—जायसी। ४ मन मे किसी बात की कल्पना या विचार करना। सोचना।

संकला†—पु० [स० शाक] शाक द्वीप।

सँकलाना†—स० [हिं० सकल्पना] १. धार्मिक वृत्ति से सकल्प का मत्र-पाठ करते हुए दान करना। उदा०—जब मेरे बाबा सँकलाए हे होरिलो तोहारि।—लोकगीत।

संकलित—भू० कृ० [स० सम्√कल्+क्त] १ जिसका सकलन हुआ हो। २. जो सकलन की क्रिया से बना हो। ३ चुन या छाँटकर इकट्ठा किया हुआ। ४ (राशियाँ या सख्याएँ) जिसका जोड लगाया गया हो। ५ इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६. जो थोडा-थोडा करके बडा या इकट्ठा होकर एक हो गया हो। (एग्रिगेट)

संकल्प—पु० [स० सम्√कृप्+घञ्,र—ल] १. कोई कार्य करने की इच्छा जो मन मे उत्पन्न हो। विचार। इरादा। २. कोई कार्य करने का मन मे होनेवाला दृढ निश्चय। ३. सभा-समिति मे किसी विषय मे विचार-पूर्वक किया हुआ पक्का निश्चय। (रिजोल्यूशन) ४. धार्मिक क्षेत्र मे, दान, पुण्य या और कोई देवकार्य आरभ करने से पहले एक निश्चित मत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ निश्चय या विचार प्रकट करना। ५ वह मत्र जिसका उच्चारण करते हुए उक्त प्रकार का निश्चय या विचार कार्य-रूप मे परिणत किया जाता है।
मुहा०—(कोई चीज) **संकल्प करना**=दान करना या दान करने का दृढ निश्चय करना।

संकल्पक—वि० [स० सकल्प+कन्] सकल्प करनेवाला।

संकल्पना—स्त्री० [स०] १. सकल्प करने की क्रिया या भाव। २. शब्द, प्रतीक आदि का लगाया हुआ सामान्य से भिन्न विचारपूर्ण तथा बौद्धिक अर्थ। (कन्सेपशन) ३ धारणा। ४. इच्छा।
स०=सकलपना।

संकल्पा—स्त्री० [स० सकल्प+टाप्] दक्ष की एक कन्या जो धर्म की भार्या थी।

संकल्पित—भू० कृ० [स० सकल्प+इतच्] १. सकल्प किया हुआ। २ निश्चयपूर्वक स्थिर किया हुआ। ३. जिसकी कल्पना की गई हो।

संकल्य—वि० [स० सम्√कल्+ण्यत् वृद्ध्यभाव] १. जिसका सकलन होने को हो या हो सकता हो। २. जो जोडा या युक्त किया जाने को हो। योग्य।

संकष्ट—पुं० [स०] सकट (कष्ट)।

संका—स्त्री०=शका।

संकाना*—अ० [स० शका] १. शकित होना। २. भयभीत होना। डरना।
स० १. शकित करना। भयभीत करना। २. डराना।

संकाय—स्त्री० [स०] उच्च कोटि के अध्ययन के लिए ज्ञान-विज्ञान आदि का कोई विशिष्ट विभाग या शाखा। (फैकल्टी)

संकायाध्यक्ष—पु० [स०] आज-कल विश्वविद्यालयों मे किसी सकाय का प्रधान अधिकारी। (डीन आफ फैकल्टी)

संकार—पु० [स० सम्√कृ (करना)+घञ्] १ कूडा-करकट। २ वह धूल जो झाड देने से उडे। ३ आग के जलने का शब्द।
स्त्री० [हिं० सँकारना] १. सँकारने की क्रिया या भाव। २ इशारा। सकेत।

सँकारना†—स० [हिं० सकार+ना (प्रत्य०)] सकेत करना। इशारा करना।

सँकारा†—पु०=सकारा (प्रात काल)।

संकाश—वि० [स० सम्√काश् (प्रकाश करना)+अच्] समस्त पदो के अत मे, सदृश्य या समान। जैसे—अग्निसकाश।
पु० १ प्रकाश। रोशनी। २. चमक। दीप्ति।
अव्य० १. सदृश। समान। २. पास। समीप।

संकास—वि०, पुं०, अव्य०=सकाश।

संकिस्त—वि० [स० सकृष्ट] जो अधिक चौडा न हो। सँकरा। तग।

संकीर्ण—वि० [स० सम्√कृ+क्त] [भाव० सकीर्णता] १ जो अधिक चौड़ा या विस्तृत न हो। सकुचित। तग। सँकरा। २. किसी के साथ मिला हुआ। मिश्रित। ३ छोटा। ४ तुच्छ। ५ नीच। ६ वर्ण-सकर। ७ लाक्षणिक अर्थ मे, जो उदार न हो। जिसमे व्यापकता न हो। जैसे—सकीर्ण विचारधारा।
पु० १ ऐसा राग या रागिनी जो दो अन्य रागो या रागिनियो के मेल से बना हो। २ विपत्ति। सकट। ३ साहित्य मे, एक प्रकार का गद्य जिसमे कुछ वृत्तगधि और कुछ अवृत्तगधि का मेल होता है।

संकीर्णता—स्त्री० [स० सकीर्ण+तल्+टाप्] १ सकीर्ण होने की अवस्था या भाव। २ नीचता। ३ ओछापन। क्षुद्रता।

संकीर्तन—पु० [सं० सम्√कीर्त् (वर्णन करना)+ल्युट्—अन] १ भली-भाँति किसी की कीर्ति का वर्णन करना। २ ईश्वर, देवता आदि का नाम जपना या यश गाना। कीर्तन।

संकुचक—वि० [स०] सकुचित करने या सिकोड़नेवाला।
पु० कुछ ऐसी मछलियाँ जो सिकुडकर छोटी और फैलकर बडी हो सकती हैं।

संकुचन—पु० [सं० सम्√कुच् (संकुचित होना)+ल्युट्—अन] १ संकुचित करने या होने की क्रिया या भाव। सिकुड़ना। २ एक प्रकार का बाल ग्रह रोग।

संकुचना†—अ०=सकुचना।

संकुचित—भू० कृ० [सं० सम्√कुच् (संकोच करना)+क्त] १. जिसमें संकोच हो। संकोच युक्त। लज्जित। जैसे—संकुचित दृष्टि। २. सिकुड़ा या सिकोड़ा हुआ। ३ तंग। संकरा। संकीर्ण। ४ जिसमें उदारता का अभाव हो। अनुदार।

संकुड़िता—वि०=संकुचित।

संकुरना†—अ०=सिकुड़ना।

संकुल—वि० [सं० सम्√कुल् (इकट्ठा होना)+क] [भाव० संकुलता] १ संकुलित। घना। २ भरा हुआ। पूर्ण। ३ पूरा। सारा। समूचा।

पु० १ युद्ध। समर। २ झुंड। दल। ३ जन-समूह। भीड़। ४. जनता। ५ असंगत वाक्य। ६. ऐसे वाक्य जो परस्पर विरोधी हों।

संकुलता—स्त्री० [सं० संकुल+तल्+टाप्] संकुल होने की अवस्था या भाव।

संकुलित—भू० कृ० [सं० संकुल+इतच् अथवा सम्√कुल (इकट्ठा होना)+क्त वा] १ घना किया हुआ। २. भरा हुआ। ३ पूरा किया हुआ। ४. इकट्ठा किया हुआ।

संकृष्ट—भू० कृ० [सं० सम्√कृष् (खींचना)+क्त] १. खींचकर नजदीक लाया हुआ। २. एक साथ किया हुआ।

संकृष्टि—स्त्री०=संकर्षण।

संकेंद्रण—पु० [सं०] १ चारों ओर से इकट्ठा करके एक केन्द्र पर लाना या स्थिर करना। २. मन के भाव या विचार किसी एक ही बात या विषय पर लाकर लगाना। (कान्सेन्ट्रेशन)

संकेता†—वि०=संकरा।

पु०=संकेत।

संकेत—पु० [सं० सम्√कित् (बहाना)+घञ्] १ चिह्न। निशान। २ वह चीज जो किसी को किसी प्रकार की निशानी या पहचान के लिए दी जाय। (टोकन) ३ ऐसी शारीरिक चेष्टा जिससे किसी पर अपना उद्देश्य, भाव या विचार प्रकट किया जाय। इंगित। इशारा। जैसे—आँख या हाथ से किया जानेवाला संकेत। ४ कोई ऐसी बात या क्रिया जो किसी विशेष और बँधी हुई बात या कार्य की सूचक हो। ५ किसी घटना, प्रसंग आदि पर प्रकाश डालनेवाली कोई बात। प्रतीक। ६ संकेत-स्थल। (दे०)

संकेतकी—स्त्री० [सं० संकेत] आपस के व्यवहार में संक्षेप और गोपन के लिए स्थिर की हुई वह वार्ता-प्रणाली जिसमें साधारण शब्दों और पदों के लिए छोटे छोटे सांकेतिक शब्द बना लिए जाते हैं। व्यापारिक और राजनीतिक क्षेत्रों में प्राय. तार द्वारा समाचार और आदेश भेजने के लिए इसका उपयोग होता है। सांकेतिक भाषा। (कोड)

संकेत-ग्रह—पु० [सं० ब० स०] साहित्य में, शब्द की अभिधा शक्ति से ग्रहण किया जाने अथवा निकलनेवाला अर्थ। 'बिंबग्रहण' से भिन्न।

संकेत-चित्र—पु० [सं०] ऐसा चित्र जिसमें प्रतीक के सहारे कोई बात दिखाई गई हो।

संकेत चिह्न—पु० [सं०] १ वह चिह्न जो शब्द के संक्षिप्त रूप के आगे लगाया जाता है। जैसे—पु० में का—०। २ शब्द का संक्षिप्त रूप। जैसे—मध्य प्रदेश का संकेत चिह्न है—म० प्र०।

संकेतन—पु० [सं० सम्√कित् (बहाना)+ल्युट्—अन] १ संकेत करने की क्रिया या भाव। ३ ठहराव। निश्चय। ३ संकेत-स्थल।

संकेतना—अ० [सं० संकेत+हिं० ना (प्रत्य०)] संकेत या इशारा करना।

स० [सं० संकीर्ण] संकट में डालना।

संकेत-स्थल—पु० [सं० ष० त०] १ साहित्य में, वह स्थल जहाँ पर प्रेमी और प्रेमिका मिलते हों। २ वह स्थान जो औरों से छिपाकर कुछ लोगों ने किसी विशेष कार्य के लिए नियत या स्थिर किया हो।

संकेताक्षर—पु० [सं० ब० स०] ऐसी लिपि-प्रणाली जिसमें वर्ण-माला के अक्षर अपने शुद्ध रूप में नहीं बल्कि निश्चित संकेत रूप में लिखे जाते हैं। (साइफर)

संकेतित—भू० कृ० [सं० सम्√कित् (बहाना) +क्त, अथवा संकेत+इतच्] १ संकेत के रूप में लाया हुआ। जिसके संबंध में संकेत हुआ हो। २ ठहराया हुआ। निश्चित। ३ आमंत्रित।

संकेतितार्थ—पु० [सं० संकेतित+अर्थ] शब्द या पद का संकेत रूप से निकलनेवाला अर्थ। (साधारण शब्दार्थ से भिन्न)

संकेलना†—स० [सं० संकुल] १ इकट्ठा करना। २ समेटना।

संकोच—पु० [सं०] १ सिकुड़ने की क्रिया या भाव। २ वह मानसिक स्थिति जिसमें भय या लज्जा अथवा साहस के अभाव के कारण कुछ करने को जी नहीं चाहता। ३ असमंजस। आगा-पीछा। ४ थोड़े में बहुत सी बातें कहना। ५ साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसमें 'विकास अलंकार' के विरुद्ध वर्णन होता है या किसी वस्तु का अतिशय संकोच पूर्वक वर्णन किया जाता है। ६ एक प्रकार की मछली। ७ केसर।

संकोचक—वि० [सं० सम्√कुच् (सिकुड़ना)+ण्वुल्—अक] १ संकोच करनेवाला। २ सिकोड़नेवाला।

संकोचन—पुं० [सं० सम्√कुच्+ल्युट्—अन्] सिकुड़ने या सिकोड़ने की क्रिया या भाव।

संकोचना—स० [सं० संकोच] संकुचित करना।

अ० मन में संकोच करना। असमंजस में पड़ना।

संकोचित—भू० कृ० [सं० संकोच+इतच्] १ संकोच युक्त। जिसमें संकोच हुआ हो। लज्जित। शरमिन्दा।

पु० तलवार चलाने का एक ढंग।

संकोची (चिन्)—वि० [सं० सम्√कुच्+णिनि, अथवा संकोच इति] १ संकोच करनेवाला। २ सिकुड़नेवाला। ३ जिसे स्वभावत या प्राय संकोच होता हो। संकोचशील।

संकोपना*—अ० [सं० संकोप+हिं० ना (प्रत्य०)] कोप या क्रोध करना। क्रुद्ध होना। गुस्सा करना।

संकोरना—स०=सिकोड़ना।

संक्रंदन—पु० [सं० सम्√क्रन्द (रोदन) +ल्युट्—अन] १ शक्र। इंद्र। २ पुराणानुसार भौत्य मनु का एक पुत्र। ३ दे० 'क्रंदन'।

संक्रम--पु० [स०] १ सीधी अर्थात् सामने की ओर होनेवाली गति। 'विक्रम' का विपर्याय। २ सूर्य की दक्षिणायन गति। ३ दे० 'सक्रमण'।

संक्रमण--पु० [स० सम्√क्रम् (चलना)+ल्युट्–अन] १. आगे की ओर चलना या बढना। 'विक्रमण' का विपर्याय। २ अतिक्रमण। लाँघना। ३ घूमना-फिरना। ४ एक अवस्था से धीरे धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था मे पहुँचना। जैसे–सक्रमण काल। ५. एक के हाथ या अधिकार से दूसरे के हाथ या अधिकार मे जाना। (पासिंग) ६ सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि मे प्रवेश करना। ७ एक स्थिति पार करते हुए दूसरी स्थिति मे जाना या पहुँचना। ८. कीटाणु, रोग, आदि का फैलते हुए एक से दूसरे को होना।

संक्रमण-काल--पुं० [स० ष० त०] १. वह समय जब कोई पहले रूप से बदलकर दूसरे रूप मे आ रहा हो। २ दे० 'सक्राति'।

संक्रमण-नाशक--वि० [स० ष० त०] रोग के सक्रमण से बचाने या मुक्त करनेवाला। (डिसइनफेक्टैंट)

संक्रमना†--अ० [स० सक्रामण] सक्रमण करना या होना। जैसे--सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे सक्रमना।

संक्रमिक--वि० [स० सम्√क्रम्+ठन्] १ जिसका सक्रमण हुआ या हो रहा हो। २ अतरित या हस्तातरित होनेवाला।

संक्रमित--भू० कृ० [स० सम्√क्रम्+क्त] १ जिसका या जिसमे सक्रमण हुआ हो। २ किसी मे युक्त या सम्मिलित किया हुआ। जैसे--सक्रमित वाक्य। ३ किसी के अन्दर पहुँचाया या प्रविष्ट किया हुआ। ४ परिवर्तित किया या बदला हुआ।

संक्रमिता (तृ)--वि० [स० सम्√क्रम्+तृच्] १ सक्रमण करनेवाला। २ जानेवाला। गमन करनेवाला। ३ प्रवेश करनेवाला।

संक्रांत--पु० [स० सम्√क्रम् (चलना)+क्त] १ दायभाग के अनुसार वह धन जो कई पीढियो से चला आ रहा हो। २ दे० 'सक्राति'।

संक्रांति--स्त्री० [स० सम्√क्रम् (चलना)+क्तिन्] १ सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे जाना। २ वह समय जब सूर्य एक राशि पार करके दूसरी राशि मे पहुँचता है। ३ वह दिन जिसमे सूर्य का उक्त प्रकार का सचार होता है और इसी लिए जो हिन्दुओ मे पर्व या पुण्य-काल माना जाता है। ४ अतरण या हस्तारण।

संक्राम--पु० [स० सम्√क्रम् (चलना)+घञ्] १ कठिनाई से गमन करना। २ दुर्गम मार्ग। ३ संक्रमण।

संक्रामक--वि० [सं०] १ (रोग) जो या तो रोगी के संसर्गज से या पानी हवा आदि के द्वारा भी उत्पन्न होता अथवा फैलाता हो। ससर्ग से भिन्न। (कान्टेजियस)

विशेष--सक्रामक और ससर्गज रोगो का अंतर जानने के लिए देखे 'संसर्गज' का विशेष।

२ (काम या बात) जिसके औचित्य या अनौचित्य का विचार किये बिना और केवल दूसरो की देखादेखी प्रचलन या प्रचार होता हो। (काटेजियस)

संक्रामित--भू० कृ० [स० सम्√क्रम् (चलना)+क्त] संक्रमण के द्वारा कही तक पहुँचाया हुआ।

संक्रीडन--पु० [सं० सम्√क्रीडा (खेलना) करना)+ल्युट्–अन] १ क्रीड़ा करना। खेलना। २ परिहास करना।

संक्रोन*--स्त्री०=सक्राति।

†पु०=संक्रमण।

संक्रोश--पु० [सं० सं√क्रुश् (चिल्लाना)+घञ्] जोर से शब्द करना। चिल्लाना।

संक्षय--पु० [सं० सम्√क्षि+अच्] १. पूरी तरह से होनेवाला नाश। २ प्रलय।

संक्षारक--वि० [सं०√क्षर्+ण, क्षार+कन्, सम्+क्षारक] संरक्षण करनेवाला। (कोरोसिव)

संक्षारण--पु० [स०] [भू० कृ० संक्षारित] क्षार आदि की उत्पत्ति या योग के कारण किसी पदार्थ का धीरे धीरे क्षीण होकर नष्ट होना। (कोरोजन)

संक्षालन--पु० [सं० सम्√क्षल् (धोना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० सक्षालित] १. धोने की क्रिया। २ वह जल जो धोने, नहाने आदि के काम में आता हो।

संक्षिप्त--वि० [स० √क्षिप् (फेंकना)+क्त] १ ढेर के रूप मे आया या लगाया हुआ। २ जो सक्षेप मे कहा या लिखा गया हो। ३. (लेख, पुस्तक आदि का वह रूप) जिसमे कुछ बातें घटाकर उसका रूप छोटा कर दिया गया हो। ४. (शब्द आदि का रूप) जो लघु हो।

संक्षिप्तक--पु० [स० सक्षिप्त] शब्द या पद का सक्षिप्त रूप या सकेत चिह्न। (एब्रिविएशन)

संक्षिप्त लिपि--स्त्री० [स० कर्म० स०] एक प्रकार की लेखन-प्रणाली जिसमे ध्वनियों के सूचक अक्षरों या वर्णों के स्थान पर छोटी रेखाओं, विन्दुओं आदि का प्रयोग करके लिपि का रूप बहुत सक्षिप्त कर दिया जता है। (शार्ट हैन्ड)

विशेष--इसमे लिपि उतनी ही जल्दी लिखी जाती है, जितनी जल्दी आदमी बोलता चलता है।

संक्षिप्ता--स्त्री० [सं० सक्षिप्त–टाप्] ज्योतिष मे, बुध ग्रह की एक प्रकार की गति।

सक्षिप्ति--स्त्री० [स० सम्√क्षिप् (सक्षिप्त करना)+क्तिन्] नाटक मे चार प्रकार की आरभटियों मे से एक।

संक्षेप--पु० [स० सम्√क्षिप् (सक्षिप्त करना)+घञ्] १. थोडे मे कोई बात कहना। २. थोडे मे कही हुई बात का रूप। ३ कम करना। घटाना। ४ लेख आदि का काट-छाँट कर कम किया हुआ रूप। समाहार। ५ चुबक पत्थर।

संक्षेपक--वि० [स०] १. फेंकनेवाला। २ नष्ट करनेवाला। ३. सक्षिप्त रूप में लानेवाला।

संक्षेपण--पु० [स० सम्√क्षिप् (कम करना)+ल्युट्–अन] काट-छाँटकर कर या और किसी प्रकार सक्षिप्त (कम या छोटा) करने की क्रिया या भाव।

संक्षेपतः--अव्य० [स० सक्षिप+तसिल्] सक्षेप मे। थोडे मे।

संक्षेपतया--अव्य० [स० सक्षेप+तल्–टाप्–टा] सक्षेप मे। सक्षेपत।

संक्षोभ--पुं० [स० सम्√क्षुभ् (चचल होना)+घञ्] १ चचलता। २. कपन। ३ विप्लव। ४. उलट-फेर। ५. अहकार। घमड। ६ किसी अप्रिय घटना के कारण मन को लगनेवाला गहरा आघात या धक्का। (शॉक)

संख†—पु०=शख।

संख दराउ—पु० [स० शखद्राव] अमलबेंत।

संख-नारी—स्त्री० [स० शखनारी] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे दो यगण (य, य) होते हैं। सोमराजी वृत्त।

संखा हुली—स्त्री० दे० 'शखपुष्पी'।

संखिया—पु० [स० शृंगिका या शृंग विष] १. एक प्रकार की बहुत जहरीली प्रसिद्ध उपधातु जो प्राय. सफेद पत्थर की तरह होती है। २ उक्त धातु की भस्म। सोमल।

संख्यक—वि० [स० सख्य+कन्] जिसकी या जिसमे सख्या हो। सख्यावाला। जैसे—अल्पसख्यक, बहुसख्यक।

संख्यता—स्त्री० [सं० सख्य+तल्–टाप्] सख्या का गुण, धर्म या भाव। सख्यत्व।

संख्यांक—पु० [स० सख्या+अंक] गणित मे, कोई सख्या सूचित करनेवाला अक। (न्यूमरल) जैसे—१ से ९ तक के अक।

संख्यांकन—पु० [सं०] पदार्थों पर क्रम से सख्या-सूचक अंक लगाना या लिखना। (नम्बरिंग)

संख्या—स्त्री० [सं०संख्या+अङ्–टाप्] १ गिनती। तादाद। २ राशि। ३. १,२, ३ आदि अक। ४ जोड़। ५ विचार। ६ सामयिक पत्र का कोई अंक। ७. वृद्धि।

संख्याता—स्त्री० [सं० सख्यात-टाप्] संख्या के सहारे बनी हुई एक तरह की पहेली।

वि० संख्या या गिनती करनेवाला।

संख्यातीत—वि० [सं० सख्या√अत् (गमन करना)+क्त] जिसकी गणना न हो सके। बहुत अधिक। अनगिनत।

संख्यान—पु० [स० सं√ख्या (ख्याल होना)+ल्युट–अन्] १ संख्या। गिनती। २. गिनने की क्रिया या भाव। ३ ध्यान। ४ प्रकाश।

संख्या-लिपि—स्त्री० [स०] वह साकेतिक लिपि-प्रणाली जिसमे अक्षरो के स्थान पर सख्या-सूचक अको का प्रयोग किया जाता है।

संख्येय—वि० [सं० संख्या+यत्] १. जो गिना जा सके। गणनीय। २. विचारणीय।

संग—पु० [सं० सङ्ग] १. मिलने की क्रिया। मिलन। २ साथ होने या रहने की अवस्था या भाव। सहवास। सोहबत। साथ।

विशेष—संग और साथ के अतर के लिए दे० 'साथ' का विशेष।

३ सांसारिक विषयों या सुख-भोग के प्रति होनेवाला अनुराग या आसक्ति। ४ नदियो का संगम। ५. संपर्क। सम्बन्ध। ६ मैत्री। ७ युद्ध। लडाई। ८. रुकावट। बाधा।

क्रि०वि० साथ। हमराह। सहित। जैसे—कोई किसी के संग नही जाता।

मुहा०—**(किसी के) संग लगना**=साथ हो लेना। पीछे लगना। **(किसी को) संग लेना**=अपने साथ लेना या ले चलना। **(किसी के) संग सोना**=मैथुन या सभोग करना।

पु० [फा०] [वि० संगी, संगीन] पत्थर। पाषाण। जैसे—संगमूसा, सगमरमर।

वि० पत्थर की तरह का। बहुत कठोर। बहुत कडा। जैसे—सग दिल।

संग अंगूर—पु० [फा० सग+हिं० अंगूर] एक प्रकार की वनस्पति जो हिमालय पर होती है।

संग-असवद—पु० [फा० सग+अ० असवद] काले रग का एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर।

संगकूपी—स्त्री० [?] एक प्रकार की वनस्पति जो ओषधि के काम आती है।

संग खारा—पु० [फा० सग+खार] चकमक पत्थर।

संगच्छध्वं—अव्य० [स०] साथ साथ चलो। उदा०—सगच्छध्व के पुनीत स्वर, जीवन के प्रति पग गाओ।—पत।

संग जराहत—पु० [फा०सग+अ० ज राहत] एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर।

संगठित—भू० कृ०=सघटित।

संगणन—पु०[स०]१ गणना का वह गभीर और जटिल प्रकार या रूप जिसमे साधारण गणना के सिवा अनुभवो, घटनाओं, नियत सिद्धातो आदि का भी उपयोग किया जाता है। (कम्प्यूटेशन) जैसे—फलित ज्योतिष मे आँधियो, भूकपो आदि की भविष्यद्वाणी सगणन के आधार पर ही होती है। २ दे० 'अनुगणन'।

सगणना—स्त्री [सं०] अभिकलन। (दे०)

संगत—वि० [स०] १ किसी के साथ जुडा, मिला या लगा हुआ। २ इकट्ठा किया हुआ। ३ जो किसी वर्ग, जाति आदि का होने के कारण उसके साथ रखा, बैठाया या लगाया जा सका हो। ४ पूर्वापर या आस-पास की बातो के विचार से अथवा और किसी प्रकार से ठीक बैठने या मेल खानेवाला। (रेलेवेन्ट) ५. जिसमे सगति हो। ६ किसी के साथ दाम्पत्य या वैवाहिक बधन से बँधा हुआ।

स्त्री० [स०√गम् (जाना)+क्त] १ सग रहने या होने का भाव। साथ रहना। सोहबत। सगति। २ साथ रहनेवालों का दल या मडली। ३ गाने-बजानेवालो के साथ रहकर सारगी, तबला, मँजीरा आदि बजाने का काम।

क्रि० प्र०—बजाना।—मे रहना।

मुहा०—**संगत करना**=गानेवाले के साथ साथ ठीक तरह से तबला, सारगी, सितार आदि बजाना।

४ गाने-बजाने वालो का दल या मडली। उदा०—इधर और उधर रखके कधे पे हाथ। चलो नाचती गाती सगत के साथ।—कोई शायर। ५ वह जो इस प्रकार किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर साज बजाता हो। ६ उदासी, निर्मले आदि साधुओ के रहने का मठ। ७ लगाव। सपर्क। ससर्ग। ८ स्त्री और पुरुष का मैथुन। सभोग। (बाजारू)

संगतरा†—पु०=सतरा (मीठी नारगी)।

संग-तराश—पु० [फा०] १ पत्थर काटने या गढनेवाला मजदूर। पत्थर-कट। २ पत्थर काटने का एक प्रकार का औजार।

संग-तराशी—स्त्री० [फा०] सग-तराश का कार्य, पद या भाव।

संगत-संधि—स्त्री० [सं०ष०त०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे अच्छे राष्ट्र के साथ होनेवाली सधि जो अच्छे और बुरे दिनो मे एक-सी बनी रहती है। काचन सधि।

संगति—स्त्री० [स०] [वि० सगत] १. सगत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कम्पैटिबिलिटी) २. किसी के सग मिलने की क्रिया या भाव। मेल। मिलाप।

मुहा०—**संगति बैठाना, मिलाना या लगाना**=दो चीजो या बातो का

मेल मिलाकर उन्हे सगत सिद्ध करना।

३ सग। साथ। सोहवत। ४ सपर्क। सवध। ५ साहित्य मे आगे-पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का अर्थ के विचार मे या कार्यों आदि का पूर्वापर के विचार मे ठीक बैठना या मेल खाना। (कन्सिस्टेन्सी)

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।—मिलना।—मिलाना।

६ कला के क्षेत्र मे, किसी कृति के भिन्न भिन्न अगों की ऐसी सुसघटित स्थिति जिसमे कही से कोई चीज या बात उखडती या टूटती हुई न जान पडे और उसका सारा प्रवाह या रूप कही से खटकता हुआ न जान पडे। तालमेल। सामजस्य। (हार्मनी) ७ लोक-व्यवहार मे, आस-पास की बातों या पूर्वापर स्थितियों के विचार से सब बातों के उपयुक्त और ठीक रूप से यथा-स्थान होने की ऐसी अवस्था या भाव जिसमे कही परस्पर विरोधी तत्त्व न दिखाई देते हों। (रेलेवेन्सी)

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना—मिलना।—मिलाना।

८. कोई बात जानने या समझने के लिए उसके सबध मे बार-बार प्रश्न करना। ९. जानकारी। ज्ञान। १० सभा। समाज। ११ मैथुन। सभोग। १२ मुक्ति। मोक्ष।

संगतिया—पु० [स० सगत+हिं० इया (प्रत्य०)] १ गवैया या नाचनेवालों के साथ रहकर तवला, मँजीरा, सारगी आदि बजानेवाला व्यक्ति। साजिदा। २. सगी। साथी।

संगती—पु० [स० सगत+हिं० ई (प्रत्य०)] १ वह जो साथ मे रहता हो। सग रहनेवाला। २. दे० 'सगतिया'।

संगथ—पु० [स०] सग्राम। युद्ध।

संगदिल—वि० [फा०] [भाव० सगदिली] पत्थर हो दिल जिसका। अर्थात् निर्दय।

संगपुश्त—वि० [फा०] जिसकी पीठ पत्थर के समान कडी हो।

पु० कछुआ।

संगवसरी—पु० [फा०] एक प्रकार की मिट्टी जिसमे लोहे का अश अधिक होता है।

संगम—पु० [स० सम्√गम् (जाना)+अप्] १ दो वस्तुओं के मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। सयोग। मेल। २ दो धाराओं या नदियों के मिलने का स्थान। जैसे—गगा और यमुना का सगम। ३ दो या अधिक रेखाओं, वस्तुओं आदि के एक साथ मिलने का भाव या स्थान। (जक्शन) ४ सग। साथ। ५ मैथुन। सभोग। ६ सम्पर्क। सम्बन्ध। उदा०—तेउ पुनि तिहि चली रँगीली तजिगृह सगम।—नन्ददास। ७ वर्तमान काल की सब बातों का ज्ञान। उदा०—आगम नगम निगम मति ऐसे मत्र विचारि।—केशव। ८. ज्योतिष मे ग्रहों का योग। कई ग्रहों आदि का एक स्थान पर मिलना या एकत्र होना।

संगमन—पु० [स० सम्√गम् (जाना)+ल्युट्—अन] लोगों मे आपस मे होनेवाला पत्राचार, मेल-मिलाप और व्यवहार। सचार। (कम्यूनिकेशन)

संग-मरमर—पु० [फा० सग+अ० मर्मर] सफेद रग का एक प्रकार का बहुत चिकना और मुलायम प्रसिद्ध पत्थर।

संग-मूसा—पु० [फा०] काले रग का एक प्रकार का चिकना बहुमूल्य पत्थर।

संग-यशव—पु० [फा०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर जो नीले सफेद, हरे आदि रगों का होता है।

विशेष—हौलदिली इसी पत्थर की बनती है।

संगर—पु० [स० सम्√गृ (शब्द करना)+अप] १ युद्ध। समर। सग्राम। २ विपत्ति। सकट। ३ प्रतिज्ञा। ४ अगीकरण। स्वीकरण। ५ प्रश्न। सवाल। ६ नियम। ७ जहर। विष। ८ शमी वृक्ष का फल।

पु० [फा०] १ वह धुस या दीवार जो ऐसे स्थान मे बनाई जाती है जहाँ सेना ठहरती है। रक्षा के लिए सैनिक पडाव के चारों ओर बनाई हुई खाई, धुस या दीवार। २. मोरचेबन्दी।

संगरा—पुं० [फा० सग ?] १ कूएँ के तल्ले पर बना हुआ वह छेद जिसमे पानी खींचने का पप बैठाया हुआ होता है।

†पु०=सँगरा।

संग-रासिख—पु० [फा०] ताँबे की मैल जो खिजाब बनाने के काम मे आती है।

संगरेजा—पु० [फा० सग+रेज] पत्थर के छोटे छोटे टुकडे। ककड। बजरी।

संग-रोध—पु० [स०] वह क्रिया या व्यवस्था जो देश मे बाहर से आनेवाले किसी सक्रामक रोग को रोकने के लिए मार्ग मे किसी स्थान पर की जाती है, और जिसके अनुसार यात्री आदि निरीक्षण, परीक्षण आदि के लिए कुछ समय तक रोक रखे जाते हैं। (क्वारटीन)

संगल—पु० [देश०] एक प्रकार का रेशम।

†स्त्री० [स० शृखला] १. लोहे की जजीर या सिक्कड। २ अपराधियों के पैरों मे पहनाई जानेवाली बेडी।

संगव—पु० [स०] प्रात स्नान के तीन मुहूर्त बाद का समय जो दिन के पाँच भागों मे से दूसरा है और जिस मे गौएँ दुहने के बाद चरने के लिए ले जायी जाती थीं।

संगवाना†—स० [स० सगर ?] १ हत्या कराना। मरवा डालना। २ अधिकार या वश मे करना।

संगविनी—स्त्री० [स० सगव+इनि] वह स्थान जहाँ गौएँ दुहने के लिए एकत्र की जाती थीं।

संग-सार—पु० [फा०] प्राचीन काल का एक प्रकार का प्राण-दड जिसमे अपराधी को पत्थरों के साथ दीवार के रूप मे चुनवा दिया जाता था।

वि० पूरी तरह से ध्वस्त या बरबाद किया हुआ।

सग-सुरमा—पु० [फा० सग-सुर्म.] काले रग की एक प्रकार की उपधातु जिसे पीसकर आँखों मे लगाने का सुरमा बनाया जाता है।

संगाती†—पु० [हिं० सग+आती (प्रत्य०)] १ वह जो सग रहता हो। साथी। सगी। २ दोस्त। मित्र।

वि० पूरी तरह से ध्वस्त या बरबाद किया हुआ।

संग-सुरमा—पु० [फा० सग-सुर्म] काले रग की एक प्रकार की उपधातु जिसे पीसकर आँखों मे लगाने का सुरमा बनाया जाता है।

संगाती†—पु० [हिं० सग+आती (प्रत्य०)] १. वह जो सग रहता हो। साथी। सगी। २ दोस्त। मित्र।

संगायन—पु० [स० सम्√गै (गान करना)+ल्युट्-अन] १. साथ-साथ गाना या स्तुति करना। २. प्राचीनकाल मे वह सभा जिसमे बौद्ध भिक्षु साथ मिलकर महात्मा बुद्ध के उपदेशों का गान या पाठ करते थे। ३. आज-कल कोई बडी धर्म-सभा।

संगिनी—स्त्री० [हिं० संगी का स्त्री० रूप] १ साथ रहनेवाली स्त्री। सहचरी। २. पत्नी। भार्या।

संगिस्तान—पु० [फा०] पथरीला-प्रदेश।

संगी—पु० [स० सग+हि० ई (प्रत्य०)] [स्त्री० सगिनी] १ वह जो सदा या प्राय सग रहता हो। साथी। २ दोस्त। मित्र।
स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपडा।
वि० [फा० सग=पत्थर] पत्थर का।

संगीत—पु०[स० सम्√गै (गाना)+क्त] मधुर ध्वनियो या स्वरो का कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार और कुछ विशिष्ट लय मे होनेवाला प्रस्फुटन। यह दो प्रकार का होता है—(क) कठ्य सगीत और (ख) वाद्य सगीत।

संगीतक—पु० [स० सगीत+कन्] १. गान, नृत्य और वाद्य के द्वारा लोगो का मनोरजन। २. एक प्रकार का अभिनयात्मक और सगीत प्रधान नृत्य।

संगीत कला—स्त्री० [स०] गाने-वजाने की विद्या।

सगीतज्ञ—पु० [स०] सगीत (कला तथा शास्त्र) मे निपुण।

संगीत-रूपक—पु० [स०] आज-कल प्राय रेडियो से प्रसारित होनेवाला एक प्रकार का छोटा नाटक या रूपक,जिसमे गीतो की प्रधानता होती है और जिसकी मुख्य कथा कही तो पात्रो के वार्तालाप के द्वारा और कही रूपक प्रस्तुत करनेवाले व्यक्ति की वार्ता से सम्बद्ध रूप मे वतलाई जाती है।

संगीत विद्या—स्त्री०=सगीत शास्त्र।

संगीत शास्त्र—पु० [स०] वह शास्त्र जिसमे गाने-वजाने की रीतियो, प्रकारो आदि का विवेचना होता है।

संगीति—स्त्री० [स० सम्√गै (गाना)+क्तिन्] १ वार्तालाप। वातचीत। २ दे० 'सगीत'।

संगीतिका—स्त्री० [स०] पाश्चात्य शैली का ऐसा नाटक जिसका अधिकाश सगीत के रूप मे होता है। गेय नाटक। सागीत। (ऑपिरा)

संगीन—वि० [फा०] [भाव० सगीनी] १ पत्थर का वना हुआ। जैसे—सगीन इमारत। २ मोटी तह या मोटे दलवाला। जैसे—सगीन पोत का कपडा। ३ पत्थर की तरह कठोर। ४ मजवूत। ५ घोर तथा दडनीय (अपराध)।
स्त्री० [फा०] लोहे का एक प्रकार का अस्त्र जो तिपहला और नुकीला होता है।

संगीनी—स्त्री० [फा०] सगीन होने की अवस्था, गुण या भाव।

सगुप्ति—स्त्री० [स० स√गुप् (रक्षा करना)+क्तिन्] १ छिपाव। दुराव। २. सुरक्षा।

संगढ़—पु० [स० सम्√ ग्रह् (सवरण करना)+क्त] चीजो का ऐसा ढेर या राशि जिस पर सुरक्षा आदि के विचार से रेखाएँ अकित हो।

संगृहीत—भू० कृ० [स०] १ सग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ जमा किया हुआ। सकलित। २ प्राप्त। लब्ध। ३ शासित। ४ स्वीकृत। ५ सक्षिप्त किया हुआ।

संगृहीता (तृ)—वि० [स०सम्√ग्रह् (रखना)+तृच्] सग्रह करनेवाला।

संगोपन—पु०[स० सम्√गुप् (रक्षा करना)+ल्युट्-अन्] अच्छी तरह से छिपाकर रखना।

संग्रह—पु० [स०] १ एकत्र करने की क्रिया या भाव। इकट्ठा या जमा करना। सचय। जैसे—धन सग्रह करना। २ इकट्ठी की हुई चीजो का ढेर या समूह। जैसे—चित्रो या पुस्तको का सग्रह। ३ ग्रहण करने या लेने की क्रिया। ४ जमघट। जमावडा। ५ गोष्ठी या सभा-समाज। ६ पाणिग्रहण। विवाह। ७ स्त्री-प्रसग। मैथुन। सभोग। ८ वह ग्रथ जिसमे अनेक विषयो की वाते एकत्र की गई हो। ९. अपना फेका हुआ अस्त्र मत्र-वल से अपने पास लौटाने की क्रिया। १० तालिका। सूची। फेहरिस्त। ११ निग्रह। सयम। १२ रक्षा। हिफाजत। १३. कोष्ठ-वद्धता। कब्जियत। १४ स्वीकार। मजूरी। १५. शिव का एक नाम। १६ सोम याग।

संग्रहक—वि०=सग्राहक।

संग्रहण—पु० [स०] १ ग्रहण करना। लेना। २ प्राप्ति। लाभ। ३ गहनो मे नग आदि जडना। ४ मैथुन। सभोग। ५ व्यभिचार। ६ स्त्री के गोप्य अगो का किया जानेवाला स्पर्श। ७ अपहरण।

संग्रहणी—स्त्री० [स०] पाचन क्रिया के विकार के कारण होनेवाला एक रोग जिसमे वरावर और वार वार पतले दस्त होते रहते है। (स्प्रू)

सग्रहणीय—वि० [स० सम्√ग्रह् (रखना)+अनीयर्] १ सग्रह किए जाने के योग्य। सग्राह्य। २ (ओषधि या औषध) जिसका सेवन आवश्यक और उपयोगी हो।

सग्रहना*—स० [स० सग्रहण] सग्रह करना। सचय करना। जमा करना।

सग्रहाध्यक्ष—पु०=सग्रहालयाध्यक्ष।

सग्रहालय—पु० [स० ष० त०] १ वह स्थान जहाँ एक ही अथवा अनेक प्रकार की वहुत सी चीजो का सग्रह हो। २ वह भवन अथवा उसका कोई अग जिसमे स्थायी महत्व की वस्तुएँ प्रदर्शित की तथा सुरक्षित रखी गई हो। (म्यूजियम)

सग्रहालयाध्यक्ष—पु० [?] किसी सग्राहलय (म्यूजियम) की देखरेख या व्यवस्था करनेवाला प्रधान अधिकारी। (क्यूरेटर)

संग्रही (हिन्)—वि० [स०] १ सग्रह या एकत्र करनेवाला। सग्राहक। जैसे—सर्व-सग्रही। २ सासारिक वैभव की कामना रखने और धन-दौलत इकट्ठा करनेवाला। 'त्यागी' का विपर्याय।
पु० महसूल या लगान आदि उगाहनेवाला कर्मचारी। कर एकत्र करनेवाला अधिकारी।

संग्रहीता (तृ)—पु० [स० स√ग्रह् (रखना)+तृच्] वह जो सग्रह करता हो। जमा करनेवाला। एकत्र करनेवाला।

संग्राम—पु० [स०] युद्ध। लडाई। समर।

सग्राम-तुला—स्त्री० [स०] युद्ध के रूप मे होनेवाली अग्निपरीक्षा।

संग्राम-पटह—पु० [स०] रण मे वजनेवाला एक प्रकार का वाजा। रण भेरी। रण-डिमडिम।

संग्राह—पु० [स० सम्√ग्रह् (रखना)+घञ्] १ औजार या हथियार का दस्ता या मूठ पकडना। २ मुट्ठी। ३ मुक्का।

सग्राहक—वि० [स० सग्राह+कन्] जो सग्रह करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला। सग्रहकारी।

संग्राही (हिन्)—पु० [स०] १ वैद्यक मे वह पदार्थ जो कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थो को खीचता हो। वह पदार्थ जो मल

के पेट से निकलने में बाधक होता है। कब्जियत करनेवाली चीज। २ कुटज।
वि० संग्रह करनेवाला। संग्राहक।

संग्राह्य—वि० [सं० सम्√ग्रह् (रखना)+ण्यत] संग्रह किए जाने के योग्य। जमा करके रखने लायक।

संघ—पु० [सं०] १. लोगों का समुदाय या समूह। २. लोगों का एक साथ मिलकर रहना। ३ आपस में गठे या मिले हुए होने की अवस्था या भाव। ४. मनुष्यों का वह समाज या समुदाय जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए बना हो। ५ प्राचीन भारत में, एक प्रकार का लोकतंत्री राज्य या शासन प्रकार जिसकी व्यवस्था जनता के चुने हुए प्रतिनिधि करते थे। ६. उक्त के अनुकरण पर गौतम बुद्ध की बनाई हुई वह प्रतिनिधिक संस्था जो बौद्ध धर्म के अनुयायियों और विशेषत भिक्षुओं आदि के संबंध में आचार, व्यवहार आदि के नियम बनाती और व्यवस्था करती थी। इसका महत्त्व इतना अधिक था कि बुद्ध और धर्म के साथ इसकी गणना भी बौद्धों में होने लगी थी। ७ साधु संन्यासियों विशेषत बौद्ध भिक्षुओं और श्रमणों के रहने का मठ। ८ आधुनिक राजनीति में, राज्यों, राष्ट्रों आदि के पारस्परिक समझौते से बननेवाला ऐसा संघटन जो कुछ विशिष्ट बातों में एक केन्द्रीय सत्ता का अधिकार और अनुशासन मानता हो। (फेडरेशन)

संघचारी (रिन्)—वि० [सं०] १. (पक्षी या पशु) जो झुंड बनाकर रहता हो। २ (व्यक्ति) जो अधिकतर लोगों अर्थात् बहुमत के अनुसार कोई काम करता हो।
पु० मछली।

संघट—पु० [सं० सम्√घट् (मिलना)+अच्] १ समूह। राशि। ढेर। २ मुठ-भेड। संघर्ष। ३ दे० 'संघटन'।

संघटन—पु० [सं०] १ किसी चीज के विभिन्न अवयवों को जोडकर उसे प्रतिष्ठित करना। रचना। २. व्यक्तियों का मिलना। ३ किसी विशिष्ट वर्ग या कार्य-क्षेत्र के लोगों का मिलकर एक इकाई का रूप धारण करना जिससे वे सामूहिक रूप से अपने हितों की रक्षा कर सकें। ४. बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिलाकर उन्हें किसी काम के लिए तैयार करना। ५. इस उद्देश्य से बनाई हुई संस्था। (आरगनाइज़ेशन, अंतिम तीनों अर्थों के लिए)
२ स्वरों या शब्दों का संयोग।

संघटित—भू० कृ० [सं०] १ जिसका संघटन हुआ हो। २ (व्यक्तियों का वर्ग) जो एक होकर तथा सामूहिक रूप से अपने ध्येय की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील हो। ३ युद्ध, प्रतियोगिता आदि में लगा हुआ। उदा०—सुर विमान हिम-भानु, भानु संघटित परस्पर। —तुलसी। ४ बजाता हुआ।

संघट्ट—पु० [सं०] १ रचना का प्रकार या स्वरूप। बनावट। गठन। २. संघर्ष।

संघट्ट-चक्र—पु० [सं० कर्म० स०] फलित ज्योतिष में, युद्ध का परिणाम जानने के लिए बनाया जानेवाला एक प्रकार का चक्र।

संघट्टन—पु० [सं०] १. बनावट। रचना। गठन। २ मिलन। संयोग। ४. घटना। ४. दे० 'संघटन'।

संघट्टित—भू० कृ० [सं० सं√घट्ट् (इकट्ठा करना)+क्त] १. एकत्र किया हुआ। २ बनाया हुआ। निर्मित। रचित। ३. चलाया हुआ। चालित। ४ रगडा या पीसा हुआ। घर्षित।

संघतिया†—पु० १ =संगतिया। २ =संघाती (साथी)।

संघती†—पु० [सं० संघ, हिं० संग] १ संगी। साथी। सहचर। २. दे० 'संगतिया'।

संघ-न्यायालय—पु० [ष० त०] संघराज्य का सर्वोच्च न्यायालय। (फ़ेडरल कोर्ट)

संघपति—पु० [सं० ष० त०] किसी संघ का प्रधान अधिकारी।

संघरना*—स० [सं० संहार+हिं० ना (प्रत्य०)] १ संहार करना। मार डालना। २. नाश करना।

सँघराना†—स० [हिं० संग?] दुःखी या उदास गौ को, उसका दूध दूहने के लिए, परचाना और पुचकारना।

संघर्ष—पु० [सं०] १. कोई चीज घिसने, घोंटने या रगडने की क्रिया। २ किसी चीज के कण अलग करने या उसका तल घटाने या घिसने के लिए की जानेवाली कोई ऐसी क्रिया जिसमें बल लगाकर किसी कडी चीज से बार बार रगडते हैं। रगड। ३ दो विरोधी दलों या पक्षों में एक दूसरे को दबाने के लिए होनेवाला कोई ऐसा प्रयत्न जिसमें दोनों अपनी सारी शक्ति लगा देते और यथा-साध्य एक दूसरे का उपकार या हानि करने पर तुले रहते हैं। ४ उक्त के आधार पर, कठिनाइयों, बाधाओं आदि से बचने तथा प्रबल विरोधी शक्तियों को दबाने के लिए प्राणपन से की जानेवाली चेष्टा या प्रयत्न। (स्ट्रगल; अंतिम दोनों अर्थों के लिए) ५ आधुनिक पाश्चात्य साहित्यकारों के मत से नाटक में वह स्थिति जिसमें दो परस्पर विरोधी शक्तियाँ एक दूसरी को दबाने का प्रयत्न करती हैं। ६ वह अहंकारपूर्ण बात जो अपने प्रतिपक्षी को अपना बडप्पन जतलाने के लिए कही जाय। ७ बाजी या शर्त लगाना। ८ स्पर्धा। होड। ९ द्वेष। बैर। १०. काम की प्रबल वासना। ११ धीरे धीरे खिसकना, चलना या रेंगना।

संघर्षण—पु० [सं० सम्√घृष् (रगड़ना)+ल्युट्—अन] १. संघर्ष करने की क्रिया या भाव। २. भूगोल में, धारा में बहते हुए कंकडों की चट्टानों आदि से होनेवाली रगड। (कोरेसन)

संघर्षी (र्षिन्)—वि० [सं०] १. संघर्ष-रत। संघर्ष करनेवाला। २ घिसने या रगडनेवाला।
पु० व्याकरण में ख् ग् फ् व् और द् व्यंजन वर्ग जिनका उच्चारण करते समय मुख द्वार खुला रहता है परन्तु फिर भी हवा टकराती हुई झटके से बाहर निकलती है।

संघ-वृत्ति—स्त्री० [सं०] मिलकर काम करने के लिए सम्मिलित होने की क्रिया या प्रवृत्ति।

संघाट—वि० [सं० संघ√अट् (गमनादि)+यञ्] दल या समूह में रहनेवाला। जो दल बाँधकर रहता हो।

संघाटिका—स्त्री० [सं० सम्√घट् (मिलना)+णिच्-ण्वुल्—अक-इत्व-टाप्] १ प्राचीन भारत में स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा। २ कुटनी। दूती। ३. सिंघाडा। ४ कुंभी।

संघाटी—स्त्री० [सं०] बौद्ध भिक्षुओं के पहनने का चीवर।

संघाणक—पु० [सं०] श्लेष्मा। कफ।

संघात—पु० [सं०] १. जमाव। समूह। समष्टि। २. आघात;

विशेषत: अकस्मात् तथा जोर से लगनेवाला आघात। टक्कर। (इम्पैक्ट) ३ वध। हत्या। ४. कफ। श्लेष्मा। ५ देह। शरीर। ६. रहने की जगह। निवास-स्थान। ७ एक नरक का नाम।

संघातक—वि० [स० सघात+कन्] १ घात करनेवाला। २ प्राण लेनेवाला। ३. नष्ट या बरबाद करनेवाला।

संघातन—पु० [स०] सघात करने की क्रिया या भाव।

सँघाती†—पुं०=सँगाती (सगी)।

संघाती—पु० [स० सघात+इनि] सघातक। प्राणनाशक।

संघाधिप—पु० [स० ष० त०] १. धार्मिक सघ का प्रधान। (जैन) २. किसी प्रकार के सघ का अध्यक्ष।

संघार*—पु०=सहार।

संघारना*—स०=सहारना।

संघाराम—पु० [स० ष० त०] बौद्ध भिक्षुओं, श्रमणो आदि के रहने का मठ। विहार।

संघी—वि० [स० सघीय] १ दे० 'सघीय'। २. किसी संघ मे सबद्ध। जैसे—जन-सघी। ३. समूहो मे रहनेवाला।

पु० किसी सघ का सदस्य।

संघीय—वि० [स०] १ सघ-सबधी। सघ का। २ जिनका सघटन सघ के रूप मे हुआ हो। (फेडरल)

संघृष्ट—भू० कृ० [स० स√घृष् (रगडना)+क्त] १. रगड खाया हुआ २. रगडा हुआ।

संघेला—पुं० [स० सग] १ साथी। सहचर। सगी। २ दोस्त। मित्र।

संघोष—पु० [स० सम्√घुष् (ध्वनि होना)+घञ्] जोर का शब्द। घोष।

संच—पु० [स० सम्√चि (सग्रह करना)+ड] लिखने की स्याही। †पु० सचने की क्रिया या भाव।

संचक—पु० [स० संच+कन्] साँचा।

संचकर*—वि० [सं० सचय+कर] १ सचय करनेवाला। २ देख-भाल करनेवाला। ३ कजूस। कृपण।

संचना*—पु० [स० सचयन] १. एकत्र या सग्रह करना। सचय करना। २. देख-भाल करना।

*अ० [स० स०+चर] प्रविष्ट होना।

संचय—पु० [स० सम्√चि (चयन करना)+अच्] [भू० कृ० सचित] १ चीजे इकट्ठी करने की क्रिया या भाव। २. जमा करना। सकलन। २. इकट्ठी की हुई चीजो का ढेर या राशि। (एक्यूमुलेशन) ३ अधिकता। बहुलता।

संचयन—पु० [स० सम्√चि (एकत्र करना)+ल्युट्-अन] १. सचय करने या होने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु का धीरे धीरे एकत्र होते हुए किसी बडी राशि का चित्र धारण करना। इकट्ठा या जमा होना। (एक्यूमुलेशन)

संचयिक—वि० [स० सचय+ठञ्-इक] जो संचय करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला।

संचयी (यिन्)—वि० [स० सचय+इनि] सचय करनेवाला जमा करनेवाला।

पु० कजूस। कृपण।

संचर—पु० [स० सम्√चर् (चलना)+घ] १ गमन। चलना। २. पुल। सेतु। ३. पानी निकलने का रास्ता। ४ मार्ग। रास्ता। ५ जगह। स्थान। ८. देह। शरीर। ७ सगी। साथी।

संचरण—पु० [स० सम्√चर् (चलना)+ल्युट्-अन] १ सचार करने की क्रिया या भाव। चलना। गमन। २ पसरना। फैलना। ३. काँपना।

संचरना*—अ० [स० सचरण] १ घूमना-फिरना। चलना। २ फैलना। ३ प्रचलित होना।

†स०=सचारना।

संचल—पु० [सं० सम्√चल (अस्थिर)+अच्] सौवर्च्चल लवण। साँचर नमक।

वि० काँपता हुआ।

संचलन—पु० [स० सम्√चल् (हिलना)+ल्युट्-अन] १ हिलना-डोलना। २ चलना। ३ काँपना।

संचार—पु० [स०] १ गमन। चलना। २ चलाना। ३ किसी के अन्दर पैठकर दूर तक फैलना। ४ वह राह जिसपर से होकर कोई चीज फैलती हो। ५ आज-कल सदेश, समाचार आदि तथा आदमी सामान आदि भेजने की क्रिया प्रकार और साधन। (कम्यूनिकेशन) ६ रास्ता दिखाना। मार्गदर्शन। ७ विपत्ति। ८ साँप की मणि। ९ देश। १०. उत्तेजित करना। भडकाना। ११ सक्रमण (ग्रह आदि का)।

संचारक—वि० [स० सम्√चर् (चलना)=ण्वुल्-अक] [स्त्री० सचारिका] सचार करने या फैलानेवाला।

पु० १. नेता। सरदार। २. अन्वेषक।

संचारण—पु० [स० सम्√चर् (चलना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० सचारित] सचार करने की क्रिया या भाव।

संचारना*—स० [स० सचारण] १ सचार करना। फैलाना। २ २ चलाना। ३ चलने और घूमने फिरने मे प्रवृत्त करना। उदा०—पुनि इवलीस सँचारेउ डरत रहे सब कोउ।—जायसी।

संचार-साधन—पु० [ष० त०] दो या अधिक स्थानो या व्यक्तियो के बीच सबध स्थापित करने के साधन। डाक, तार, समुद्री तार, रेडियो आदि और गमनागमन के साधन। (मीन्स ऑफ कम्यूनिकेशस)

संचारिका—स्त्री० [स०] १ दूती। कुटनी। २. नासिका। नाक। ३ बू। गध।

वि० 'सचारक' का स्त्री०।

संचारिणी—स्त्री० [स० सम्√चर् (चलना)+णिनि-ङीप्] १ हसपदी नाम की लता। २. लाल लजालू।

वि० 'सचारी' का स्त्री।

संचारित—भू० कृ० [स० सम्√चर् (चलना)+णिच्-क्त] १ जिसका सचार किया गया हो। चलाया या फैलाया हुआ। २. भडकाया हुआ। ३. पहुँचाया हुआ।

संचारी—वि० [स० सम्√चर् (चलना)+णिनि-दीर्घ-नलोप] [स्त्री० सचारिणी] १. सचरण या सचार करनेवाला। २ आया हुआ। आगतुक।

पु० १ साहित्य मे वे तत्त्व, पदार्थ या भाव जो रस मे सचार करते हुए उसके परिपाक मे उपयोगी तथा सहायक होते हैं। इन्ही को 'व्यभिचारी भाव' भी कहते हैं। (स्थायी भाव से भिन्न)

विशेष—यह माना गया है कि स्थायी भाव तो रस के परिपाक तक स्थिर रहते है परन्तु संचारी भाव अस्थिर होते और आवश्यकता तथा स्थिति के अनुसार सभी रसों मे संचार करते रहते है। इनकी संख्या ३३ कही गई है, यथा—निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, श्रम, मद, धृति, आलस्य, विषाद, मति, चिंता, मोह, स्वप्न, विबोध, स्मृति, आमर्ष, गर्व, उत्सुकता, अवहित्थ, दीनता, हर्ष, व्रीडा, उग्रता, निद्रा, व्याधि, मरण, अपस्मार, आवेग, त्रास, उन्माद, जड़ता, चपलता और वितर्क।

२ संगीत मे किसी गीत के चार चरणों मे से तीसरा। ३. वायु। हवा। ४ धूप नामक गंध-द्रव्य।

संचाल—पु० [सं०सम्√चल् (काँपना)+ण—घञ् या संचालन] १ काँपना। २ चलना।

संचालक—वि० [सं० संचाल+कन्, सम्√चल (चलना)+ण्वुल्—अक] जो संचालन करता हो। चलाने या गति देनेवाला। परिचालक। पु० वह प्रधान अधिकारी जो किसी कार्य, विभाग, संस्था आदि चलने की सारी व्यवस्था करता हो। निरीक्षण तथा निर्देशन करनेवाला विभागीय अधिकारी। निदेशक। (डाइरेक्टर)

संचालन—पु० [सं० सम्√चल् (चलना)+णिच्—ल्युट्—अन] १. चलाने की क्रिया। परिचालन। २ ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था जिससे कोई काम चलता या होता रहे। किसी कार्य आदि का किया जानेवाला निर्देशन। ३ नियंत्रण।

संचालित—भू० कृ० [सं०] (कार्य, विभाग या संस्था) जिसका संचालन किया गया हो या किया जा रहा हो।

संचाली—स्त्री० [सं० संचाल–ङीप्] गुंजा। घुँघची। वि० दे० 'संचालक'।

संचिका—स्त्री० [सं० संचय] वह नत्थी जिसमे पत्र, कागज आदि इकट्ठे करके रखे जाते है। मिसिल। (फ़ाइल)

संचित—भू० कृ०[सं०] १ संचय किया हुआ। इकट्ठा, एकत्र या जमा किया हुआ। २ ढेर के रूप मे रखा, लगाया या लाया हुआ। (एक्यूमुलेटेड) ३ संचिका या नत्थी मे लगाया हुआ।

संचित कर्म—पु० [सं०] १ वैदिक युग मे यज्ञ की अग्नि संचित कर लेने पर किया जानेवाला एक विशिष्ट कर्म। २ आज-कल, पूर्व जन्म मे किए हुए वे सब कर्म जिनका फल इस जन्म मे अथवा आनेवाले जन्मों मे भोगना पडता है।

संचिति—स्त्री० [सं० सम्√चि (रखना)+क्तिन्] १. संचित करने की क्रिया या भाव। संचय। २. तह लगाना।

संछर्दन—पु० [सं० सं√छर्द् (वमन करना)+ल्युट्—अन] ग्रहण मे एक प्रकार का मोक्ष। (ज्योतिष)

संज—पु० [सं० सम्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १. शिव। २ ब्रह्मा।

संजन—पु० [सं०√ सञ्ज् (बाँधना)+ल्युट्–अन] १ बाँधना। २ बन्धन। ३ संघठन।

संजनन—पु० [सं० सम्√जन् (उत्पन्न करना)+ल्युट्–अन][भूत कृ० संजनित]=जनन।

संजनी—स्त्री० [सं० संजन-ङीप्] वैदिक काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे वध या हत्या की जाती थी।

संजनीपति—पु० [सं०] यमराज। (डिं०)

संजम†—पु० =संयम।

संजमी†—वि०=संयमी।

संजय—पु०[सं० सं√जि (जीतना)+अच्] १ ब्रह्मा। २. शिव। ३ धृतराष्ट्र का मुख्य मंत्री जिसने उन्हें युद्ध-क्षेत्र का सारा हाल सुनाया था।

संजल्प—पु० [सं०] साथ बैठकर आपस मे की जानेवाली बात-चीत।

संजात—भू० कृ० [सं०] १ किसी के साथ उत्पन्न। २ किसी से उत्पन्न। जात। जैसे—वात-संजात=हनुमान्। ३. मिला हुआ। प्राप्त। पु० पुराणानुसार एक प्राचीन जाति।

संजात बलि—वि० [सं०] मरे हुए प्राणियों का मांस खानेवाला। पु० डोमकौआ।

संजाफ—स्त्री०[फा० संजाफ] १ झालर। किनारा। कोर। २ रजाइयों आदि मे लगाई जानेवाली गोट। मगजी। पु० वह घोड़ा जिसका आधा भाग लाल तथा आधा भाग सफेद (या हरा) होता है।

संजाफी—वि० [फा० संजाफ] जिसमे संजाफ लगी हो। किनारेदार। झालरदार।

संजाब—पु० [फा०] १. चूहे के आकार का एक जंतु जो प्राय तुर्किस्तान मे होता है। २. एक प्रकार का चमड़ा। ३. संजाफ (घोड़ा)।

संजीदगी—स्त्री० [फा०] १ संजीदा होने की अवस्था या भाव। २ आचरण, विचार या व्यवहार की गंभीरता। ३ स्वभाव संबंधी शिष्टता तथा सौम्यता।

संजीदा—वि० [फा० संजीदा][भाव० संजीदगी] १ जिसके व्यवहार या विचारों मे गम्भीरता हो। गंभीर और शात। २ बुद्धिमान्। समझदार।

संजीव—पु० [सं०] १. मरे हुए को फिर से जिलाना। पुन जीवन देना। २ वह जो मरे हुए को फिर से जीवित करता हो। ३ बौद्धों के अनुसार एक नरक।

संजीवक—वि० [सं० सम्√जीव् (जिलाना)+ण्वुल्–अक] पुनर्जीवित करनेवाला। नया जीवन देनेवाला।

संजीवकरणी—स्त्री० [सं०] १. एक कल्पित बूटी जिसके द्वारा मृत को फिर से जीवित किया जाता था। २ एक प्रकार की विद्या जिसके प्रभाव से मृत प्राणी फिर से जीवित किया जाता है।

संजीवन—पु०[सं० सम्√जीव् (जीवित करना)+ल्युट्–अन] १ भली-भांति जीवन व्यतीत करने की क्रिया। अच्छी तरह जीवित रहना या जीवन बिताना। २ पुनर्जीवित करना। नया जीवन देना। ३. मनु-स्मृति के अनुसार एक नरक। वि० जीवन देने या जिलानेवाला।

संजीवनी—स्त्री० [सं० संजीवन–ङीप्] १ पुनर्जीवित करनेवाली एक कल्पित ओषधि। २ पुनर्जीवित करने की विद्या।

संजीवित—भू० कृ० [सं० सम्√जीव् (जीवित रखना)+क्त] १ जो मर जाने पर फिर से जीवित किया गया हो। २ संजीवनी द्वारा जिसे पुनर्जीवित किया गया हो।

संजीवी (विन्)—वि० [सं० सम्√जीव् (जीवित करना)+णिनि] मृत को जीवित करनेवाला।

संजुक्त†—वि०=सयुक्त।

संजुग*—पु० [म० सयुक्त] सग्राम। युद्ध। लडाई।

संजुत†—वि०=सयुक्त।

संजुता—स्त्री० [म० सयुक्ता] एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे स, ज, ज, ग होते हैं। इसे 'सयुक्त' या 'सयुक्ता' भी कहते हैं।

संजूत—वि० [?] सावधान। उदा०—होहू सजूत वहुरि नहिं अवना।—जायसी।

सँजोइल*—वि० [स० सज्जित, हिं० सँजोना] १. अच्छी तरह सजाया हुआ। सुसज्जित। २ एकत्र किया हुआ।

सँजोऊ*—पु० [हिं० सँजोना] १ सजावट। २ तैयारी। उपक्रम। ३ सामग्री। सामान।

†पु०=सयोग।

सँजोग†—पु० =सजोग।

संजोगिता†—स्त्री०=सयोगिता।

संजोगिनी—स्त्री०=सयोगिनी (जो वियोगिनी न हो अर्थात् जिसका प्रेमी उसके पास हो)।

संजोगी—वि० [स० सयोगिन्] १ सयुक्त। मिला हुआ। २ जो अपने प्रियतम के पास या साथ हो। सयोगी। 'वियोगी' का विपर्याय।
पु० एक तरह का वडा पिंजरा जो वस्तुत दो पिंजरों को जोडकर वनाया गया होता है।

सँजोना†—स० [म० सज्जा] १. सज्जित करना। अलकृत करना। सजाना। २ सामग्री आदि एकत्र करके क्रम से रखना।

सँजोवन†—पु० [हिं० सँजोना] सज्जित करने की क्रिया या भाव। सजाने का व्यापार।

सँजोवना—स०=सँजोना।

सँजोवल†—वि० [हिं० सँजोना] १ सुसज्जित। २. आवश्यक सामग्री से युक्त। ३. सेना या सैनिक सामग्री से युक्त। ४. सजग। सावधान।

सँजोवस†—वि०=सजोवल।

सँजोवा†—पुं० [हिं० सँजोना] १. सजावट। शृगार। २ लोगों का जमघट। जमावडा।

सँजोहा†—पु० [स० सयोग] लकडी का वह चौखटा जो जुलाहे कपडा वुनते समय छत से लटका देते है और जिसमे राछ या कवी लटकी रहती है।

संज्ञ—वि० [स० सम्√ज्ञा (जानना)+क] १ जिसे सज्ञा प्राप्त हो। चेतन। २ नामधारी। ३ चलते समय जिसके घुटने टकराते हो।
पु० झाऊ या पीतकाष्ठ नामक पौधा।

संज्ञक—वि० [सं० सज्ञ+कन्] जिसकी कुछ सज्ञा हो। सज्ञा से युक्त। जैसे—गोपाल सज्ञक व्यक्ति।

संज्ञपन—पु० [स० सम√ज्ञप् (जानना)+ल्युट्—अन] १ मार डालने की क्रिया। हत्या। २ कोई वात किसी पर अच्छी तरह प्रकट करना। ठीक और पूरी तरह से वतलाना।

संज्ञप्त—भू० कृ० [स०] [भाव० संज्ञप्ति] सूचित किया हुआ।

संज्ञप्ति—स्त्री० [स० सम्√ज्ञप् (वताना)+क्तिन्] सूचित करना। सज्ञपन।

संज्ञा—स्त्री० [स०] १. प्राणियों के शारीरिक अगो की वह शक्ति जिससे उन्हे वाह्य पदार्थों का ज्ञान और अपने शरीर या मन के व्यापारो की अनुभूति होती है। चेतनाशक्ति। होश। (सेन्स) २ वुद्धि। ३. ज्ञान। ४ वस्तु, व्यक्ति आदि के पुकारे जाने का नाम। ५. किसी वस्तु या कार्य के लिए पारिभाषिक रूप मे प्रचलित नाम। (टेक्निकल टर्म) ६ व्याकरण मे वह विकारी शब्द जो किसी वास्तविक या कल्पित वस्तु का वोधक होता है। जैसे—राम, पर्वत, घोड़ा, दया आदि। (नाउन) ७ आँख, हाथ आदि हिलाकर किया जानेवाला इशारा या सकेत। ८ विश्वकर्मा की एक कन्या जो सूर्य को व्याही थी। ९ गायत्री का एक नाम।

संज्ञात—भू० कृ० [स० सम्√ज्ञा (जानना)+क्त] अच्छी तरह जाना या समझा हुआ।

संज्ञान—पु० [स० सम्√ज्ञा (जानना)+ल्युट्—अन] १ सकेत। इशारा। २ ज्ञान विशेषत सम्यक् ज्ञान।

संज्ञापद—पु० [स०] वह शब्द जो किसी वस्तु या भाव की सज्ञा या नाम के रूप मे प्रचलित हो। नामवाचक शब्द।

संज्ञापन—पु० [स० सम्√ज्ञा (जानना)+णिच्—प्रक—ल्युट्—अन्] १ ज्ञान कराना या सूचित करना। २ सूचना-पत्र, विशेषत. ऐसा सूचना पत्र जो माल के साथ भेजा जाता है और जिसमे भेजे हुए माल का मूल्य, विवरण आदि रहता है। (एडवाइस) ३ कथन।

संज्ञापुत्री—स्त्री० [स० प० त०] सूर्य की पुत्री, यमुना जो सज्ञा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

संज्ञावलि—स्त्री०=नामावली।

संज्ञावान् (वत्)—वि० [स० संज्ञा+मतुप्—य=व—नुम्—दीर्घ] १. जो संज्ञा से युक्त हो। २ जिसमे चेतना या होश-हवास हो। ३ जिसका कोई नाम हो।

संज्ञाहीन—वि० [स० तृ० त०] जिसे सज्ञा या चेतना न हो। चेतना-रहित। वेहोश। वेसुध।

संज्ञिका—स्त्री० [सं० सज्ञा+कन्—इत्व—टाप्]=सज्ञा (नाम)।

संज्ञी—वि०=सज्ञावान्।
पु० जीव। प्राणी।

संज्वर—पु० [स० स√ज्वर (ताप वढना)+णिच्—अच्] १ वहुत तीव्र ज्वर। वहुत तेज वुखार। २ क्रोध का उग्र आवेश।

सँझ—स्त्री० हिं० 'साँझ' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदो के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सँझला, सँझवाती।

सँझला—वि० [स० सध्या, प्रा० सझा+हिं० ला (प्रत्य०)] संध्या सवधी। सध्या का।
वि० [हिं० मँझली का अनु०] मँझला से कुछ छोटा, और छोटा से वडा।

सँझवाती—स्त्री० [स० सध्या+वती] १ सध्या के समय जलाया जाने-वाला दीपक। शाम का चिराग। २ देहात मे दीपक जलाने के समय गाया जानेवाला गीत।
वि० सन्ध्या-सम्वन्धी। सध्या का।

संझा†—स्त्री०=सन्ध्या।

संझिया, सँझैया†—पु० [स० सध्या] वह भोजन जो सध्या समय किया जाता है। रात्रि का भोजन।
स्त्री०=साँझ (सध्या का समय)।

सँझोखा—पु० [स० सन्ध्या] सन्ध्याकाल।

वि०[स्त्री० सँझोखी] सन्ध्या के समय का। उदा०—चलि वरि अलि अभिसार को, भली सँझोखी सैल।—विहारी।

सँझोखें†—अव्य०=सन्ध्या समय।

सँठ—पु०[सं० शांत]१ शांति। २ निस्तब्धता। ३ चुप्पी। मौन।

मुहा०—सँठ मारना=चुप हो जाना। चुप्पी साधना।

†वि०=शठ।

संड—पु०[सं० शंड] साँड।

पद—संड-मुसंड ।

संड-मुसंड—वि०[सं० शुंड, शुंडि=हाथी, हिं० संड+मुसंड (अनु०)] हट्टा-कट्टा। मोटा-ताजा।

सँडसा—पु०[हिं० सँड़सी] बड़ी सँडसी।

सँड़सी—स्त्री०[?] रसोई में वरता जानेवाला एक तरह का कैंची-नुमा उपकरण जिसके द्वारा वटलोई, तसला आदि चूल्हे पर से उतारे जाते हैं।

संडा—वि०[हिं० साँड] साँड के समान ताकतवाला। हृष्ट-पुष्ट। उदा० —मुल्कों में सरनाम कि जिनके अधिक विराजे झंडे। जितने चेले गुरु नानक के, सदा बने रहे संडे।

पद—संडा-मुसंडा।

पु० बलवान् और हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति या प्राणी।

संड़ाई†—स्त्री०[हिं० साँड] मशक की तरह बना हुआ भैंस आदि का वह हवा भरा हुआ चमड़ा जो नदी आदि पार करने के लिए नाव के स्थान पर काम में लाते हैं।

संडास—पु०[?] कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा गड्ढा जिसमें लोग मल-त्याग करते हैं। शौच-कूप।

संडास टंकी—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार की लोहे की टंकी जिसमें घर भर का मल या पाखाना इकट्ठा होता रहता है। (सेप्टिक टैंक)

संत—पु०[सं० सत्]१ साधु, सन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष। सज्जन और महात्मा। २ परम धार्मिक और साधु व्यक्ति। ३ साधुओं की परिभाषा में, वह सम्प्रदाय मुक्त साधु जो विवाह करके गृहस्थ बन गया हो। ४ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में २१ मात्राएँ होती हैं।

वि० बहुत ही निर्मल और पवित्र।

संतत—अव्य०[सं०] निरंतर। बराबर। लगातार।

वि०१. फैला या फैलाया हुआ। विस्तृत। २ लगातार चलता या बना रहनेवाला। जैसे—संतत ज्वर, संतत वर्षा।

†स्त्री०=संतति।

संतति—स्त्री०[सं०]१. फैलाव। विस्तार। २ किसी काम या बात का लगातार होता रहना। ३. बाल-बच्चे। संतान। औलाद। ४ प्रजा। रिआया। ५ गोत्र। ६ झुंड। दल। ७ मार्कंडेय पुराण के अनुसार ऋतु की पत्नी जो दक्ष की कन्या थी।

संतति होम—पु०[सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का यज्ञ जो संतान की कामना से किया जाता था।

संतपन—पु०[सं० सम्√ तप् (तप्त होना)+ल्युट्—अन]१ अच्छी तरह तपने या तपाने की क्रिया या भाव। २. बहुत अधिक संताप या दुःख देना।

संतप्त—भू० कृ०[सं०]१ बहुत अधिक तपा या जला हुआ। दग्ध। २ जिसे बहुत अधिक संताप या मानसिक कष्ट पहुँचा हो। ३. जिसका मन बहुत दुःखी हो। ४ थका हुआ। श्रान्त। ५. गला या पिघला हुआ।

संतरण—पु० [सं० सम्√ तृ (तैरकर पार होना)+ल्युट्—अन]१ अच्छी तरह से तरने या पार होने की क्रिया या भाव।

वि०१. तारनेवाला। २ नष्ट करनेवाला। (यौ० के अन्त में)

संतरा—पु०[पुर्त० संगतरा] एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू। बड़ी नारंगी।

संतरी—पु०[अं० सेंटरी]१ किसी स्थान पर पहरा देनेवाला सिपाही। पहरेदार। २ द्वारपाल।

संतर्जन—पु०[सं०] [भू० कृ० संतर्जित]१ डाँट-डपट करना। डराना-धमकाना। २ कार्तिकेय का एक अनुचर।

संतर्पक—वि०[सं० सम्√ तृप् (तृप्त करना)+ण्वुल्—अक] संतर्पण करनेवाला।

संतर्पण—पु०[सं०] [कर्ता संतर्पक, भू० कृ० संतृप्त] १ अच्छी तरह तृप्त, प्रसन्न या संतुष्ट करने की क्रिया या भाव। २ आधुनिक विज्ञान में, कोई ऐसी प्रक्रिया जिससे (क) कोई घोल किसी वस्तु के अन्दर पूरी तरह से समा जाय, या (ख) कोई तत्त्व या वस्तु किसी दूसरे पदार्थ के अन्दर अच्छी तरह भर जाय।

संतान—पु०[सं०] १ स्त्री और पुरुष या नर और मादा के संयोग से उत्पन्न होनेवाले उसी प्रकार या वर्ग के अन्य जीव आदि। २ बाल-बच्चे लड़के-वाले। संतति। औलाद। ३. कुल। वंश। ४ विस्तार। फैलाव। ५ लगातार चलता रहनेवाला क्रम। धारा। ६ प्रबंध। व्यवस्था। ७ कल्पतरु। ८ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

संतान गणपति—पु०[सं०] पुराणानुसार एक विशिष्ट गणपति जो संतान देनेवाले कहे गये हैं।

संतान-संधि—स्त्री०[सं०] राजनीतिक क्षेत्र में ऐसी संधि जो अपना लड़का या लड़की देकर की जाय।

संतानिक—वि०[सं० संतान+ठन्—इक] कल्पतरु के फूलों से बना हुआ।

वि० संतान-सम्बन्धी। संतान का।

संतानिका—स्त्री०[सं० संतानिक—टाप्]१ क्षीर सागर। २ फेन। ३. मलाई। ४ चाकू का फल। ४. एक तरह की घास।

संतानिनी—स्त्री०[सं० संतान+इनि—ङीप्] दूध या दही पर की मलाई। साढ़ी।

वि० संतान अर्थात् बाल-बच्चोंवाली (स्त्री)।

संताप—पु० [सं० सम्√तप् (तपना)+घञ्]१ अग्नि, धूप आदि का बहुत तीव्र ताप। आँच। २ शरीर में किसी कारण से होनेवाली बहुत अधिक जलन। ३ ज्वर। बुखार। ४ शरीर में होनेवाला दाह नामक रोग। ५ कोई ऐसा बहुत बड़ा कष्ट या दुःख जिससे मन जलता हुआ सा जान पड़े। बहुत तीव्र मानसिक क्लेश या पीड़ा। ६ दुश्मन। शत्रु। ७ पाप आदि करने पर मन में होनेवाला अनुताप।

संतापन—पु०[सं० सम्√ तप् (तपाना)+णिच्—ल्युट्—अन] १ संताप देने या संतप्त करने की क्रिया। जलाना। २ किसी को बहुत

अधिक कष्ट या दुःख देना। सतप्त करना। ३ एक हथियार। ४ कामदेव के पाँच वाणो मे से एक।
वि० सतप्त करनेवाला।

संतापना[२]—स० [स० सतापन] सताप देना। बहुत अधिक दुःख देना। सताना।

संतापित—भू० कृ० [स० सम्√ तप् (ताप पहुँचाना)+णिच्—क्त] जिसे बहुत सताप पहुँचाया गया हो। पीडित। सतप्त।

संतापी (पिन्)—वि० [स० सम्√तप् (तप्त करना)+णिनि, सतापिन्] सतप्त करने या सताप देनेवाला।

संताप्य—वि० [स० सम्√तप् (तपाना)+णिच्—ण्यत्] १. जलाये या तपाये जाने के योग्य। २ पीडित या सतप्त किये जाने के योग्य।

संति—स्त्री० [स०√सन् (दान करना)+क्तिच्] १ दान। २ अन्त। समाप्ति।

संती—अव्य० [स० सति?] १ वदले मे। एवज मे। स्थान पर। २ द्वारा।

संतुलन—पु० [स०] १ अच्छी तरह तौलने की क्रिया या भाव। २ तौलते समय तराजू के दोनों पलड़े वरावर या ठीक करना या होना। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, वह स्थिति जिसमे सभी अग या पक्ष वरावर के या यथास्थान हों। (वैलेन्स)

संतुलित—भू० कृ० [स०] १ जिसका सतुलन हुआ हो। २ जिसमे दोनों पक्षो का वल या प्रभाव समान हो या रखा जाय। ३ न अधिक, न कम। ठीक। (वैलेन्सड)

संतुष्ट—भू०कृ० [स० सम्√तुष् (सतोष होना)+क्त] [भाव० सतुष्टि] १ जिसका सतोष कर दिया गया हो अथवा हो गया हो। जिसकी तृप्ति हो गई हो। तृप्त। २ जो समझाने-बुझाने से राजी हो गया या मान गया हो।

संतुष्टि—स्त्री० [स० सम्√तुष् (तुष्ट होना)+क्तिच्] १ सतुष्ट होने की क्रिया या भाव। तृप्ति। २ सतोष। ३ प्रसन्नता।

संतूर—पु० [कश्मी०] शत-तत्री वीणा का कश्मीरी नाम।

संतोख†—पु०=सतोष।

संतोष—पु० स० स√ तुष् (सतोष करना)+घञ्] १. वह मानसिक अवस्था जिसमे व्यक्ति प्राप्त होनेवाली वस्तु को यथेष्ट समझता है और उससे अधिक की कामना नही रखता। २ वह अवस्था जिसमे अभीष्ट कार्य होने या वाछित वस्तु प्राप्त होने पर क्षोभ मिट जाता है और फलत कुछ अवस्थाओ मे हर्ष भी होता है। जैसे—मजदूरो की माँगें पूरी हो जाने पर ही सतोष होगा। २ हर्ष। आनन्द। ४ धैर्य।

संतोषक—वि० [स० सतोष+कन्] १ सतुष्ट करनेवाला। २ प्रसन्न करनेवाला।

संतोषण—पु० [स० सम्√तुष् (सतोष होना)+ल्युट्—अन] १ सन्तोष करने की क्रिया या भाव। २ सन्तुष्ट करने की क्रिया या भाव।

संतोषणीय—वि० [स० सम्√ तुष् (सतोष करना)+अनीयर्] जिससे या जितने मे सन्तोष हो सके।

संतोषना—अ० [स० सतोष] १ सतोष होना। २ संतुष्ट होना।
स० १ सन्तोष करना। २ सतुष्ट करना।

संतोषी (षिन्)—वि० [स० सम्√तुष् (प्रसन्न रहना)+णिनि] (व्यक्ति) जो प्राप्त होनेवाली वस्तु को यथेष्ट समझता होता हो और उसी मे सतुष्ट रहता हो।

संतोष्य—वि० [स० सम्√तुष् (सतोष करना)+यत्] जिसका सतोष करना या जिसे सतुष्ट करना आवश्यक या उचित हो।

संत्रस्त—भू० कृ० [स०] १ जिसे वहुत सताप हुआ हो। २ बहुत डरा हुआ। ३ भय से काँपता हुआ।

संत्रास—पु० [स० सम् √ त्रस् (भयभीत होना)+घञ्] १ वहुत अधिक या तीव्र त्रास। २ आतक।

संत्री†—पु०=सतरी।

संथा—स्त्री० [स० सहिता?] एक वार मे पढा या पढाया हुआ अश। पाठ। सवक।

संदंश—पु० [स० स√दश् (पकडना)+अच्] १ सडसी नाम का औजार। २ सुश्रुत के अनुसार सडसी के आकार का, प्राचीन काल का एक प्रकार का, औजार जिसकी सहायता से शरीर में गडा हुआ काँटा आदि निकालते थे। ककमुख। ३ न्याय या तर्कशास्त्र मे अपने प्रतिपक्षी को दोनो ओर से उसी प्रकार जकड या वाँध देना जिस प्रकार सडसी से कोई वरतन पकडते है।

संदंशक—पु० [स० सदश+कन्] [स्त्री० अल्पा० सदशिका] १ चिमटा। २. सँडसी।

संदंशिका—स्त्री० [स० सं√ दश् (पकडना)+ण्वुल्—अक—टाप्-इत्व] १ सडसी। २ चिमटी। ३ कैंची।

संद†—स्त्री० [स० सधि] १. दरार। छेद। विल। २ दवाव।
†पु०=चद्र।

संदन*—पु०=स्यदन (रथ)।

संदर्प—पु० [स० स√दर्प् दप् (गर्व करना)+घञ्] अहकार। घमड।

संदर्भ—पु० [स०] १ भिन्न भिन्न तत्वों या वस्तुओं को मिलाकर कोई नया और उपयोगी रूप देना। जैसे—पिरोना, वुनना, सीना आदि। २ बनावट। रचना। ३ पुस्तक, लेख आदि मे वर्णित प्रसग, विषय आदि जिसका विचार या उल्लेख हो। (कन्टेक्स्ट) जैसे—यह पद्य 'रामवनगमन' सदर्भ का है। ४ किसी गूढ विषय पर लिखा हुआ कोई विवेचनात्मक ग्रन्थ। ५ किसी ग्रन्थ मे लिखा हुआ वह पाठ जिसके आधार पर पूर्वापर के विचार से सगति बैठाकर उसका अर्थ लगाया जाता है। (कन्टेक्स्ट) जैसे—सदर्भ से तो इसका यही अर्थ ठीक जान पडता है। ६ एक ग्रन्थ मे आई हुई ऐसी वातें जिनका उपयोग लोग अपनी जानकारी वढाने के लिए या सदेह दूर करने के लिए करते है। वि० दे० 'सदर्भ ग्रथ'।

संदर्भ ग्रंथ—पु० [स०] ऐसा ग्रन्थ जिसमे जानकारी या विमर्श के लिए कुछ विशिष्ट प्रसगो की वातें देखी जाती हो।
विशेष—ऐसा ग्रन्थ आद्योपान्त पढा नही जाता वल्कि किसी जिज्ञासा की पूर्ति या सदेह के निवारण के उद्देश्य से देखा जाता है। जैसे—कोश, विश्वकोश, साहित्य कोश आदि सदर्भ ग्रन्थ है।

संदर्भ साहित्य—पु० [स०] साहित्य का वह अग या वर्ग जिसमे ऐसे वडे और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ आते हैं जिनमे एक अथवा अनेक विषयो की गूढ वातो की पूरी छान-वीन और विवेचन होता है।
विशेष—ऐसे साहित्य का उपयोग साधारण रूप से पढी जानेवाली

पुस्तकों की तरह नहीं, बल्कि विशिष्ट अवसरों पर विशेष प्रकार की गभीर जानकारी प्राप्त करने के लिए ही किया जाता हो। जैसे—विश्व कोश, शब्द कोश, विभिन्न जातियों, देशों और साहित्य के इतिहास आदि। (रेफरेन्स बुक्स)

संदर्भिका—स्त्री० [स० सदर्भ] किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्ध रखनेवाले संदर्भ ग्रन्थों की नामावली या सूची। (बिब्लियोग्राफी)

संदर्श—पु०[स० स √ दृश (देखना)+अच्] दे० 'परिदृष्टि'।

संदर्शन—पु० [स०]१. अच्छी तरह देखना या दिखाना। अवलोकन करना या कराना। २. जाँच। परीक्षा। ३ ज्ञान। ४. आकृति। शक्ल। सूरत। ५. दर्शन।

संदल—पु०[स० चन्दन से फा०] चदन।

संदली—वि०[फा० सदल]१ सदल अर्थात् चन्दन के रग का। हलका पीला (रग)। २. चन्दन की लकडी का बना हुआ। ३. (खाद्य पदार्थ) जिसमे सदल का सत्त छोड़ा गया हो फलत. जिसमे सदल की महक हो।
पु०१. हल्का पीला रंग। २ वह हाथी जिसके बाहरी दात नही होते।

संदष्ट—भू० कृ०[स०]१. जिसे अच्छी तरह डक या दश लगा हो या लगाया गया हो। २ कुचला या रौंदा हुआ।
पु० वीणा, सितार आदि की तूँबी की घोडिया मे तारो के बैठने के लिए बनाये हुए खाँचे या निशान।

संदान—पु०[फा०]१. एक प्रकार की निहाई जिसका एक कोना नुकीला और दूसरा चौड़ा होता है। अहरन। २. बाँधने की रस्सी या सिकड़ी। ३. बाँधने की क्रिया या भाव। ४. हाथी का गडस्थल जहाँ से उसका मद बहता है।

संदानिनी—स्त्री० [स० सदान+इनि—ङीप्] गौओ के रहने का स्थान। गोशाला।

संदाह—पुं० [स० स√ दह् (जलना)+घञ्] वैद्यक के अनुसार मुख, तालू और होंठो मे होनेवाली जलन।

संदि†—स्त्री०=सधि।

संदिग्ध—वि०[स०]१. (कथन या वाक्य) जिसके सबध मे निर्विवाद रूप से कुछ भी कहा न जा सकता हो। २. (अर्थ, निर्वचन या व्याख्या) जिसके सबध मे किसी प्रकार का अनिश्चय हो। ३ (व्यक्ति) जिसके सबध मे अनुमान हो कि वह अपराधी या दोषी है। (सस्पेक्टेड)
पु०१ अस्पष्ट कथन। २. अनिश्चय। ३. एक प्रकार का व्यग्य। ४. वह व्यक्ति जिसके अपराधी होने का सदेह हो। ५ तर्क मे एक प्रकार का मिथ्या उत्तर।

संदिग्धत्व—पु० [स० सदिग्ध+त्व] १. सदिग्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। सदिग्धता। २. साहित्य मे, एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है जब किसी आलकारिक उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट नही होता या अर्थ के सबध मे कुछ सदेह बना रहता है।

संदिग्धार्थ—वि०[स० कर्म० स०] जिसका अर्थ सदिग्ध या अस्पष्ट हो।
पु० विवादग्रस्त विषय।

संदिष्ट—वि०[स० स√ दिश् (कहना)+क्त]१ कहा हुआ। उक्त। कथित। २. सन्देह के रूप मे कहा या कहलाया हुआ।
पु० १. वार्ता। २. समाचार। ३. सदेशवाहक।

संदी—स्त्री० [स०स√दो (बँधना)+ड—ङीप्] शय्या। पलग। खाट।

संदीपक—वि० [स० सं √दीप् (प्रदीप्त)+ण्वुल्—अक] सदीपन करनेवाला। उद्दीपक।

संदीपन—पु०[स० स√ दीप् (प्रदीप्त करना)+ल्युट्—अन]१ उद्दीप्त अर्थात् तीव्र या प्रबल करने की क्रिया या भाव। उद्दीपन। २. श्रीकृष्ण के गुरु का नाम। ३ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक।
वि० उद्दीप्त करनेवाला।

संदीपनी—स्त्री०[स० सदीपन—ङीप्] सगीत मे, पचम स्वर की चार श्रुतियों मे से तीसरी श्रुति।
वि० सदीपन या उद्दीपन करनेवाली।

संदीपित—भू० कृ० =सदीप्त।

संदीप्त—भू० कृ०[स०] [भाव० सदीप्ति] १. जिसका भली-भाँति सदीपन या उद्दीपन हुआ हो। २ जलता हुआ। प्रज्वलित। ३ खूब चमकता हुआ या प्रकाशमान्।

संदीप्य—पु०[सं० स√ दीप् (प्रदीप्त करना)+य—यक्] मयूर शिखा नामक वृक्ष।
वि० जिसका सदीपन हो सके या होने को हो। सदीपनीय।

संदुष्ट—भू० कृ०[स० स√ दुष् (खराब करना)+क्त]१. दूषित या कलुषित किया हुआ। खराब किया हुआ। २ दुष्ट। ३ कमीना।

संदूक—पु०[अ० सदूक] [अल्पा० सदूकचा] लकडी, लोहे, चमडे आदि का बना हुआ एक प्रकार का चौकोर आधान या पिटारा जिसमे प्राय कपडे, गहने आदि चीजें रखते है। पेटी। बकस।

संदूकचा—पु०[अ० सदूक+च. (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० संदूकची] छोटा सदूक। छोटा बकस। छोटी पेटी।

संदूकची†—स्त्री०=सदूकचा।

संदूकड़ी†—स्त्री०[अ० सदूक+हिं० डी (प्रत्य०)] छोटा सदूक। छोटा बकस।

संदूकी—वि०[अ०]१. सदूक की शकल का। २ जो चारों ओर से सदूक की तरह बद हो।

संदूर†—पु०=सिंदूर।

संदूषण—पु०[स० स√दूष् (दूषित करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सदूषित, सदुष्ट] १. कलुषित करना। २ गदा या खराब करना।

संदेश—पु०[स०]१ खबर। समाचार। २ वह कथन या बात जो लिखित या मौखिक रूप से एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को भेजी गई हो। सदेशा। ३. अलौकिक, ईश्वरी या दैवी प्रेरणादायक विचार। ४ आजकल किसी बहुत बडे आदमी का वह कथन जिसमे उसके मतों या विचारो का मुख्य सारांश होता है और प्राय. जिसमे किसी विशिष्ट प्रकार का आचार-व्यवहार करने का उल्लेख होता है। (मेसेज, अन्तिम दोनो अर्थों के लिए) ५ आज्ञा। आदेश।

संदेश-काव्य—पु०[स०] ऐसा काव्य जिसमे विरही की विरह-वेदना किसी के द्वारा सदेश के रूप मे अपने प्रिय के पास भेजने का वर्णन होता है।
विशेष—ऐसे काव्यो की परम्परा कालिदास के सुप्रसिद्ध काव्य मेघदूत से चली थी। उसके अनुकरण पर पवन-दूत, हंस-दूत, आदि अनेक काव्यो की रचना हुई थी।

संदेश-हर—पु०[स०] सदेश या समाचार ले जानेवाला दूत। वार्तावह।

संदेशा†—पु०= सदेश।

संदेशी—पु० [सं० सं√ दिश् (कहना)+णिनि, सदेशिन्] सदेश लाने या ले जानेवाला। संदेशवाहक।

संदेसा†—पु०=सदेश।

संदेसी†—पु० [हिं० सदेसा+ई (प्रत्य०)] वह जो सदेशा ले जाता हो।

संदेह—पु० [स०] १. किसी चीज या वात के सवध मे मन मे उत्पन्न होनेवाला यह भाव या विचार कि कही यह अनुचित, त्याज्य या दूषित तो नही है अथवा क्या इसकी वास्तविकता या सत्यता मानने योग्य है। शक। (सस्पिशन)

विशेष—मन मे इस प्रकार का भाव प्राय यथेष्ट प्रमाण के अभाव मे ही उत्पन्न होता है, और ऊपर से दिखाई देनेवाले तथ्य या रूप पर सहसा विश्वास नही होता। दे० 'शका' और 'सशय'।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—मिटना।—मिटाना।—होना।

२ उक्त के आधार पर साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे किसी चीज या वात को देखकर उसकी यथार्थता या वास्तविकता के सवध मे मन मे सदेह वने रहने का उल्लेख होता । इस प्रकार का कथन कि जो कुछ सामने है, वह अमुक है अथवा कुछ और ही है। यथा (क) कैवौ फूली दुपहरी, कैवो फूली साँझ।—मतिराम। (ख) निद्रा के उस अलसित वन मे वह क्या भावो की छाया। दृग पलको मे विचर रही या वन्य देवियो की माया।—पत।

संदेहवाद—पु० [स०] दार्शनिक क्षेत्र मे यह मत या सिद्धान्त कि वास्तविक या सत्य का कभी ठीक और पूरा ज्ञान नही होने पाता, इसलिए हर वात के सम्बन्ध मे मन मे सदेह का भाव वना ही रहना चाहिए।

विशेष—इसमे जिज्ञासा की तृप्ति के लिए सदेह का स्थायी रूप मे वना रहना आवश्यक माना जाता है।

संदेहवादी—वि० [स०] सदेहवाद-सम्वन्धी।

पु० वह जो सदेहवाद का अनुयायी और समर्थक हो।

संदेहात्मक—वि० [स०] सदिग्ध। (दे०)

संदेहास्पद—वि० [स०] सदिग्ध। (दे०)

संदोल—पु० [स० स√ दुल् (झूलना)+घञ्] कान मे पहनने का कर्ण-फूल नाम का गहना।

संदोह—पु० [स० स√ दुह् (पूरा करना)+घञ्] १ दूध दोहना। २. किसी वस्तु का समूचा मान या रूप। ३ ढेर। राशि। ४ समूह। झुड।

संद्रव—पु० [स० स√ द्रु (गूथना)+अच्] गूँथने की क्रिया। गुथन।

संद्राव—पु० [स० स√ द्रु (भागना)+घञ्] युद्ध-क्षेत्र से पराजित होने पर अथवा पराजय के भय से भागना। पलायन।

संध†—स्त्री० [स० संधि] १. जोड। सधि। २ दो चीजो के वीच मे पडनेवाली थोडी सी जगह। ३ दे० 'सेंध'।

संधउरा†—पु०=सिंधोरा।

संधना†—अ० [स० सधि] सयुक्त होना। मिलना।

†स० सयुक्त करना। मिलाना।

†स०=सधानना।

संधा—वि० [स०] १. अभिसधि या अभिप्राय से युक्त। जैसे—सधा भाषा। स्त्री० १. मेल। सधि। २ घनिष्ठ सवध। ३ अभिप्राय। आशय। ४. आपस मे होनेवाला करार, निश्चय या समझौता। ५. किसी प्रकार का दृढ निश्चय। ६ सीमा। हद। ७ स्थिति। ८ सवेरे और सध्या के समय दिखाई पडनेवाली सूर्य की लालिमा या उसके कारण होनेवाला प्रकाश। ९ सध्या का समय। १० अनुसधान। तलाश।

संधाता—पु० [स० स√ धा (रखना)+तृच्, सधातृ] १ शिव। २. विष्णु।

संधान—पु० [सं०] [भू० कृ० सधानित] १. निशाना लगाने के लिए कमान पर तीर ठीक तरह से लगाना। निशाना बैठाना। २ ढूँढने या पता लगाने का काम। ३ युक्त करना। मिलाना। ४. मृत शरीर को जीवित करना। सजीवन। ५ दो चीजो का मिलना। सधि। ६ किसी का किसी उद्देश्य से किसी ओर मिलना। संश्रय। (एलायन्स) ७ धातु आदि के खडो को मिलाकर जोडना। (वेल्डिंग) ८ किसी चीज को सडाकर उसमे खमीर उठाना। (फमटेशन) ९. मदिरा या शराव चुआना। १० मदिरा। शराव। ११ काजी। १२. अचार। १३ सीमा। हद। १४. काठियावाड या सौराष्ट्र प्रदेश का पुराना नाम। १५ सधि।

संधानना†—स० [स० सधान+ना (प्रत्य०)] १. धनुष पर वाण चढाकर लक्ष्य करना। निशाना लगाना। २ तीर या वाण चलाना। ३ किसी प्रकार का शस्त्र चलाने के लिए निशाना साधना।

सधाना—पु० [स० सधानिका] अचार।

संधानित—भू० कृ० [स० सधान+इतच्] १ जोडा बाँधा या मिलाया हुआ। २. लक्ष्य किया हुआ। जिस पर निशाना साधा गया हो।

संधानिनी—स्त्री० [स० सधान+इनि—ङीप्] गौओ के रहने का स्थान। गौशाला।

संधानी—स्त्री० [स०] १. एक मे मिलने या मिश्रित होने की क्रिया या मिलन। मिश्रण। २ प्राप्ति। लाभ। ३ वन्धन। ४ अन्वेषण। तलाश। ५ पालन-पोषण। ६ काँजी। ७ अचार। ८ शराव वनाने की जगह। ९ धातुओ आदि की ढलाई करने की जगह। १० दे० 'सधान'।

संधापगमन—पु० [स०] समीपवर्ती शत्रु से सधि करके दूसरे शत्रु पर चढाई करना।

संधा भाषा—स्त्री० [स०] बौद्ध तान्त्रिको और परवर्ती साधको मे प्रचलित एक प्राचीन भाषा-प्रणाली जिसमे अलौकिक और रहस्यात्मक बातें सीधे सादे शब्दो मे नही, वल्कि ऐसे प्रतीकात्मक जटिल शब्दो मे कही जाती थी, जिनसे जन-साधारण कुछ भी मतलव नही निकाल सकते थे।

संधा-वचन—पु०=सधा भाषा।

सधि—स्त्री० [स०] १. दो या अधिक चीजो का एक मे जुडना या मिलना। मेल। सयोग। २ वह स्थान जहाँ कई चीजें एक मे जुडी या मिली हो। मिलने की जगह। जोड। ३ शरीर मे वह स्थान जहाँ कई हड्डियाँ एक दूसरी से मिलती है। गाँठ। जोड। (ज्वाइन्ट) जैसे—कोहनी, घुटना आदि। ४. व्याकरण मे शब्दो के रूपो मे होनेवाला वह विकार जो दो अक्षरो के पास-पास आने पर उनके मेल या योग के कारण होता है। ५ एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरम्भ के वीच का समय। युग-सधि। ६ एक अवस्था की समाप्ति और दूसरी अवस्था के आरम्भ के वीच का समय। जैसे—वय सधि। ७. दो चीजो के

बीच की खाली जगह। अवकाश। ८ दरज। दरार। ९ राजाओं या राज्यों आदि में होनेवाला वह निश्चय या प्रतिज्ञा जिसके अनुसार पारस्परिक युद्ध बन्द किया जाता है, मित्रता या व्यापार-संबंध स्थापित किया जाता है, अथवा इसी प्रकार का और कोई काम होता है। (ट्रीटी) १० नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ये संधियाँ पाँच प्रकार की कही गई हैं—मुखसंधि, प्रतिमुख-संधि, गर्भसंधि, अवमर्श या विमर्श-संधि और निर्वहण संधि। ११. चोरी आदि करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। १२. स्त्री की भग। योनि। १३ दोस्ती। मित्रता। १४ संघटन। १५ भेद। रहस्य। १६ कार्य करने का साधन।

संधिक—पु० [सं०[वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का सन्निपात, जिसमें शरीर की संधियों में वायु के कारण बहुत पीड़ा होती है।

संधि-गुप्त—पु० [सं०] वह स्थान जहाँ शत्रु की आनेवाली सेना पर छापा मारने के लिए सैनिक लोग छिपकर बैठते हैं।

संधि-चौर—पु० [सं०] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। सेंधिया चोर।

संधिच्छेद—पु० [सं०] १ चोरी करने के लिए किसी के घर में सेंध लगाना। २ प्राचीन भारतीय राजनीति में, पारस्परिक संधि के नियम भंग करनेवाला पक्ष। ३ दे० 'संधिविच्छेद'।

संधिज—पु० [सं०] १ (चुआकर तैयार किया हुआ) मद्य, आसव आदि। २ शरीर के संधि-स्थान पर होनेवाली गाँठ या फोड़ा।
वि० संधि से उत्पन्न या बना हुआ।

संधित—भू० कृ० [सं० संधा+इतच्] जिसमें संधि हो। संधियुक्त।
पु० आसव। अरक।

संधिनी—स्त्री० [सं० संधा+इनि—ङीप्] १ गाभिन गौ। २ ऐसी गौ जो गाभिन होने की दशा में भी दूध देती हो। ३ ऐसी गौ जो बछड़ा पास न रहने पर भी दूध देती हो। ४ दिन-रात में केवल एक बार दूध देनेवाली गौ।

संधिप्रच्छादन—पु० [सं०] संगीत में, स्वर-साधन की एक विशिष्ट प्रणाली जो इस प्रकार होती है। आरोही—सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसा। अवरोही—सानिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा।

संधि-पत्र—पु० [सं०] वह पत्र जिस पर आपस की संधि या मेल-जोल की बात निश्चित होने पर उसके सम्बन्ध की शर्तें लिखी जाती हैं।

संधि-बंधन—पु० [सं०] शिरा। नाड़ी। नस।

संधि-भंग—पु० [सं०] १ संधि की शर्तों का टूटना या तोड़ना। २. वैद्यक के अनुसार हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ की हड्डी टूटना।

संधिभग्न—पु० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें अंग की संधियों में बहुत पीड़ा होती है।

संधि-मोक्ष—पु० [सं० प० त०] १. राजनीति में पुरानी सन्धि तोड़ना। संधिभंग। २. दे० 'समाधिमोक्ष'।

संधिरंध्रिका—स्त्री० [सं०] १ सुरंग। २ सेंध।

संधि-राग—पु० [सं०] सिंदूर।

संधिला—स्त्री० [सं०] १ सुरंग। २. सेंध। ३. नदी। ४. मदिरा। शराब।

संधि-विग्रहक (हिक)—पु० [सं०] प्राचीन भारत में परराष्ट्रों के साथ युद्ध या संधि का निर्णय करनेवाला मंत्री या राजकीय अधिकारी।

संधि-विग्रही—पु० =संधि-विग्रहक।

संधि-विच्छेद—पु० [सं०] १ आपस की संधि या समझौता तोड़ना या टूटना। २ व्याकरण में किसी पद को संधि के स्थान से तोड़कर उसके शब्द अलग अलग करना। जैसे—'मतैक्य' का संधि विच्छेद होगा= मत+ऐक्य।

संधि-विद्ध—पु० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ पैर के जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

संधिवेला—स्त्री० [सं०] संध्या का समय। सायंकाल। शाम।

संधिहारक—पु० [सं० संधि√हृ (हरण करना)+ण्वुल्—अक] वह चोर जो सेंध लगाकर चोरी करता हो। सेंधिया चोर।

संधेय—वि० [सं० सं√ धा (रखना) यत्] जिसके साथ संधि की जा सके।

संध्यंग—पु० [सं० प० त०] नाटक में मुखसंधि आदि संधियों के अंग।

संध्यंतर—पु० [सं० संधि+अन्तर] =उप-सन्धि।

संध्य—वि० [सं० संधि+यत्] सन्धि-संबंधी। संधि का।

संध्यांश—पु० [सं०] दो युगों के बीच का समय। युग-संधि।

संध्या—स्त्री० [सं०] १. दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधि-काल। २. वह समय जब दिन का अंत और रात का आरंभ होने को होता है। सूर्यास्त से कुछ पहले का समय। सायंकाल। शाम।
मुहा०—संध्या फूलना=दिन ढलने पर धीरे-धीरे सन्ध्या का सुहावना समय आना।
३ भारतीय आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो सवेरे, दोपहर, और संध्या को होती है। ४ एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के बीच का समय। दो युगों के मिलने का समय। युग-संधि। ५ सीमा। हद। ६ एक प्राचीन नदी। ७ एक प्रकार का फूल और उसका पौधा। ८ दे० 'संधा भाषा'।

संध्याचल—पु० [सं० प० त०] =अस्ताचल।

संध्याबल—पु० [सं०] निशाचर। निश्चर।

संध्या भाषा—स्त्री० दे० 'संधा भाषा'।

संध्याराग—पु० [सं०] १ संगीत में, श्याम कल्याण राग। २. सिंदूर।

संध्यालोक—पु० [सं०] सान्ध्य प्रकाश।

संध्यावधू—स्त्री० [सं० प० त०] रात्रि। रात। निशि।

संध्यासन—पु० [सं०] आपस में लड़कर शत्रुओं का कमजोर होकर बैठ जाना। (कामंदक)

संध्योपासन—पु० [सं० प० त०] संध्या के समय की जानेवाली आर्यों की सन्ध्या-पूजा आदि।

संनिक्षिप्ता—पु० [सं० सम् नि√ क्षिप् (फेंकना)+तृच्] श्रेणी या संघ के धन का रक्षक या खजाँची। (कौ०)

संन्यसन—पु० [सं० सम्-नि√ अस् (होना)+ल्युट्—अन] [वि० संन्यस्त] १. फेंकना। छोड़ना। २ अलग या दूर करना। हटाना। ३ सांसारिक विषयों से सम्बन्ध छोड़कर अलग होना। ४ धरना। रखना। ५ जमाना। बैठाना। ६ खड़ा करना।

संन्यस्त—भू० कृ० [सं०] १. फेंका या छोड़ा हुआ। २ हटाया

या अलग किया हुआ। ३ धरा या रखा हुआ। ४ जमाया या बैठाया हुआ। ५. खड़ा किया हुआ। ६ जिसने सन्यास आश्रम मे प्रवेश किया हो।

संन्यास—पु०[स०] [वि० सन्यस्त]१ पूरी तरह से छोड़ना। परित्याग करना। २ हिंदुओं के चार आश्रमो मे से अतिम, जिसमे सब प्रकार के सासारिक बधन या सबध तोडकर और त्यागी तथा विरक्त होकर सब कार्य निष्काम भाव से किये जाते है। चतुर्थ आश्रम। ३ किसी निश्चित क्षेत्र या सीमा के अन्दर ही रहने अथवा कोई काम करने या उस क्षेत्र या सीमा से बाहर न निकलने की प्रतिज्ञा या व्रत। जैसे—गृह-सन्यास, क्षेत्र-सन्यास। (देखें) ४ अपने विधिक या कानूनी अधिकारों का स्वेच्छापूर्वक त्याग। (सिविल सुइसाइड) ५ अपस्मार, भीषण ज्वर, विषयोग आदि के कारण होनेवाली वह अवस्था जिसमे रोगी की चेतना-शक्ति बिलकुल नष्ट हो जाती है। (कॉमा)

विशेष—मूर्च्छा और सन्यास मे यह अन्तर है कि मूर्च्छा तो अनेक अवस्थाओ मे आप से आप दूर हो जाती है, परन्तु सन्यास किसी प्रकार के उपचार या चिकित्सा के बिना दूर नही होता।

६ सहसा होनेवाली मृत्यु। अचानक मर जाना। ७ बहुत अधिक थक जाना या परम शिथिल होना। ८ थाती। धरोहर। न्यास। ९ इकरार। वादा। १० प्रतिस्पर्धा। होड।

संन्यासी (सिन्)—पु०[स० सन्यास+इनि] १ वह जिसने सन्यास आश्रम ग्रहण किया हो। सन्यास आश्रम मे रहने और उसके नियमो का पालन करनेवाला। २ त्यागी और विरक्त व्यक्ति। यति।

सँपई†—स्त्री०[हिं० साँप]१ एक प्रकार का लबा कीडा जो मनुष्यो और पशुओं की आँतो मे उत्पन्न होता है। पेट का केंचुआ। २. वेला नाम का पौधा और फूल।

संपक—वि०[स० सम्√ पच् (पकाना)+क्त—व] १ अच्छी तरह उबाला या पकाया हुआ। २ जो पूरा पक चुकने पर अन्त या समाप्ति के समीप पहुँच चुका हो।

संपत्—स्त्री०[स०] सपद्।

संपति†—स्त्री०=सपत्ति।

संपत्कुमार—पु०[स०] विष्णु का एक नाम।

संपत्ति—स्त्री० [स०] १. धन-दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार मे हो और जो खरीदी या बेची जा सकती हो। जायदाद। (प्रापर्टी, एफेक्ट्स)२ कोई ऐसी चीज जो महत्त्व की और स्वामी के लिए लाभदायक हो। जैसे—वन्य-सपत्ति, पशु-सपत्ति आदि। ३ ऐश्वर्य। वैभव। ४ अधिकता। बहुतायत।

संपत्तिकर—पु० [स०] वह कर जो किसी पर उसकी सपत्ति के विचार से लगाया जाता है। (प्रापर्टी टैक्स)

संपद्—स्त्री०[स०]१ कार्य की पूर्णता या सिद्धि। काम पूरा होना। २ धन-दौलत। सम्पत्ति। २ भण्डार। जैसे—शब्द-सपद। ४ सुख और सौभाग्य की स्थिति। ५ जैसे—सपद-विपद् सबमे साथ देनेवाला व्यक्ति। ६ प्राप्ति। लाभ। ७ अधिकता। बहुतायत। ८. मोतियों की माला। ९ वृद्धि नामक ओषधि।

संपदा—स्त्री०[सं० सपद्] १. धन। दौलत। २. ऐश्वर्य। वैभव।

संपना†—अ० [स० सम्पन्न] १. (कार्य) पूरा होना। २. (पदार्थ समाप्त होना। न बचना।

संपन्न—वि०[सं०]१. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। साधित। मुकम्मल। २ (कार्य) जो पूरा या सिद्ध हो चुका हो। ३ किसी गुण या वस्तु से भली-भाँति युक्त। जैसे—धन-सपन्न, विद्या-सपन्न।४ धनवान्। अमीर।

पु० अच्छा और स्वादिष्ट भोजन। व्यजन।

संपन्न-क्रम—पु०[स०] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

संपराय—पु०[स० सम्-पर √इण (गमनादि)+घञ्] १ ऐसी स्थिति जो सदा से चली आ रही हो। २ मृत्यु। मौत। ३ युद्ध। लडाई। ४ आपत्ति। मुसीबत। ५ भविष्य।

संपरिग्रह—पु०[सं०] अच्छी तरह आदर या स्वागत करना।

संपरीक्षण—पु०[स० स परि√ईक्ष (देखना)+ल्युट्—अन] लेख्य आदि की अच्छी तरह जाँच करके यह देखना कि वह सब प्रकार से नियमानुसार ठीक है या नही। (स्क्रुटिनी)

संपर्क—पु०[स० स√पृच् (मिलाना)+घञ्] [वि० सपृक्त] १ मिश्रण। मिलावट। २ मेल। सयोग। ३ आपस मे होनेवाला किसी प्रकार का लगाव, वास्ता या ससर्ग। ४ स्पर्श। ५ गणित मे, राशियो या सख्याओं का जोड। योग।

संपर्क-अधिकारी—पु०[स०] वह राजकीय अधिकारी जो (क) प्रजा और सरकार मे अथवा (ख) भिन्न देशो के साथ सैनिक अथवा और किसी प्रकार का सपर्क बनाये रखने के लिए नियत होता है। (लिएसन आफिसर)

संपा—स्त्री०[स० सम्√ यत् (गिरना)+ड—टाप्] विद्युत्। बिजली।

संपाक—पु०[स० ब० स०]१ अच्छी तरह पकना। परिपाक। २ अमलतास।

वि० १ तर्क-वितर्क करनेवाला। २ लम्पट। ३ चालाक। धूर्त। ४ अल्प। कम। थोडा।

संपाट—पु०[स०√पट् (गत्यादि)+घञ्]१ ज्यामिति मे, किसी त्रिभुज की बढी हुई भुजा पर लम्ब का गिरना। २ चरखे का तकला।

संपात—पु०[स०] [वि० सपातिक] १ एक साथ गिरना या पडना। २ सपर्क। ससर्ग। ३ सगम। समागम। ४ मिलने का स्थान। सगम। ५ वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरे पर पडती या उससे मिलती हो। ६ किसी पर झपटना या टूट पडना। ७ पहुँच। पैठ। प्रवेश। ८ घटित होना। ९. गाद। तलछट। १० उपयोग मे आ चुकने के बाद किसी चीज का बचा हुआ अश।

संपाति—पु० [स० सम्√पत् (गिरना)+णिच्—इनि] १ एक गीध जो गरुड का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २ माली नामक राक्षस का एक पुत्र जो विभीषण का मत्री था।

संपाती (तिन्)—वि०[स०] [स्त्री० सपातिनी] १ एक साथ टूटने या झपटनेवाला। २ उडने, कूदने आदि मे होड लगानेवाला।

पु०=सपाति।

संपादक—वि०[स० सम्√ पद् (स्थान आदि)+णिच् ण्वुल्—अक]१. कार्य सपन्न करनेवाला। कोई काम पूरा करनेवाला। २ प्रस्तुत या तैयार करनेवाला।

पु० वह जो किसी पुस्तक, सामयिक पत्र आदि के सब लेख या विषय

अच्छी तरह ठीक करके या देख कर क्रम से लगाता और उन्हें प्रकाशन के योग्य बनाता हो। (एडिटर)

संपादकत्व—पु०[सं० सपादक+त्व] सपादक का कार्य या पद।

संपादकी—स्त्री०[सं० सपादक+हिं० ई (प्रत्य०)] सपादक का काम या पद। जैसे—उन्हें एक पत्र की सपादकी मिल गई है।

संपादकीय—वि० [सं०] १. सपादक-सबधी। संपादक का। २. स्वय सपादक का लिखा हुआ।
वि० सपादक द्वारा लिखी हुई टिप्पणी या अग्रलेख।

संपादन—पु०[सं०] [वि० सपादनीय, सपादी, सपाद्य] १ किसी काम को अच्छी और ठीक तरह से पूरा करना। अजाम देना। २. तयार या प्रस्तुत करना। ३. ठीक या दुरुस्त करना। ४ किसी पुस्तक का विषय या सामयिक पत्र के लेख आदि अच्छी तरह देखकर, उनकी त्रुटियाँ आदि दूर करके और उनका ठीक क्रम लगाकर उन्हें प्रकाशन के योग्य बनाना। (एडिटिंग)

संपादयिता—वि० [सं० सम्√ पद् (स्थान आदि)+णिच्-तृच्, सपादयितृ]=सपादक।

संपादित—भू० कृ०[सं० सम्√पद् (स्थान आदि)+णिच्—क्त]१. (काम)जो पूरा किया गया हो। २ (ग्रन्थ, सामयिक-पत्र या लेख) जिसका क्रम, पाठ आदि ठीक करके सम्पादन किया गया हो।

संपादी—वि०[सं० सपादित] [स्त्री० सपादिनी]=सपादक।

संपाद्य—वि०[सं०]१. जिसका संपादन किया जाने को हो या होने को हो। २. दे० 'निर्मेय'।

संपालक—पु० [सं० स√ पाल् (पालन करना)+णिच्—ण्वुल्—अक] =अभिरक्षक।

संपित—पु०[देश०] असम मे होनेवाला एक प्रकार का बास जिसके टोकरे बनते है।

संपिष्ट—भू० कृ० [सं० सम्√ पिष् (चूर करना)+क्त] १. अच्छी तरह पीसा हुआ। २. अच्छी तरह दबाकर नष्ट किया हुआ।

संपीडन—पु०[सं०] [भू० कृ० सपीडित]१. चारो ओर से इस प्रकार दबाना कि आयति या विस्तार कम हो जाय। (काम्प्रेशन) २. निचोडना, मलना या मसलना। ३ बहुत अधिक कष्ट या दुःख देना। पीडित करना। ४. साहित्य में, शब्दों के उच्चारण का एक दोष जो उस दशा में माना जाता है जब किसी शब्द पर व्यर्थ ही बहुत जोर दिया या जोर से उच्चारण किया जाता है।

संपुट—पु०[सं० सम्√ पुट् (संबध रखना)+क] १. किसी पदार्थ को कुछ मोडकर दिया हुआ वह रूप जिसके अन्दर कुछ खाली जगह बन गई हो और इसी लिए जिसमे कुछ रखा जा सके। आधान या पात्र का-सा गोलाकार और अन्दर से खाली अवकाश रखनेवाला रूप। जैसे—पत्तो का सपुट, हथेली का सपुट। २. पत्तो का बना हुआ दोना। ३ ढक्कन-दार डिब्बा, पिटारी या सन्दूक। ४. हथेली की अजलि। ५. फूल के दलो का ऐसा समूह जिसके बीच खाली जगह हो। कोश। ६ वैद्यक मे औषध पकाने या रस बनाने के समय किसी पात्र को दिया जानेवाला वह रूप जिसमें गीली मिट्टी आदि से उसका मुँह बन्द करके उसे चारो ओर से गीली मिट्टी से लपेट देते हैं। ७. मृतक की खोपडी। कपाल। खप्पर। ८ लेन-देन मे वह धन जो उधार दिया गया हो या किसी के यहाँ बाकी पडा हो। ९. कटसरैया का फूल। कुरवक।

संपुटक—पु० [सं० सपुट+कन्] १ ढकने की चीज। आवरण। २. गोल डिब्बा या पिटारा। ३ एक प्रकार का आसन या रतिबन्ध।

संपुटिका—स्त्री०[सं०]१. औषध के रूप मे खाने के लिए ऐसी गोली या टिकिया जो ऐसे आवरण के अन्दर बन्द हो जो किसी खाद्य पदार्थ का बना हो। २. कोई ऐसा सपुट किसी जो दूसरे पदार्थ के चारो ओर से आवृत्त या बन्द हो। (कैपस्यूल)

संपुटी—स्त्री०[सं० सपुट-ङीप्] एक तरह की छोटी कटोरी जिसमे पूजन के लिए घिसा हुआ चन्दन, अक्षत आदि रखते हैं।

संपुष्टि—स्त्री०[सं०]१ अच्छी तरह होनेवाली पुष्टि। २. दे० 'परि-पुष्टि।'

संपूज्य—वि० [सं० सम्√ पूज् (पूजा करना)+ण्यत्] बहुत आदरणीय या पूज्य।

संपूरक—वि० [सं०] १. सपूर्ण या पूरा करनेवाला। २. विशेष रूप से किसी पूर्ण वस्तु की उपादेयता, सार्थकता आदि बढाने के लिए उसके अत मे जोडा या मिलाया जानेवाला। 'अनुपूरक' से भिन्न। (काम्प्लीमेन्टरी)
विशेष—अनुपूरक और सपूरक मे मुख्य अन्तर यह है कि अनुपूरक तो किसी पूरी चीज के पीछे या बाद मे स्वतन्त्र इकाई के रूप मे जोडा या लगा हुआ होता है, परन्तु सपूरक किसी चीज या बात का कोई अभाव या कमी पूरी करने के लिए आकर उसमे मिल जाता है।
पु० वह अश, मात्रा या भाव जो किसी पदार्थ मे उसे पूर्ण करने के लिए लगाया जाता हो या लगाना आवश्यक होता हो। किसी चीज को पूर्ण बनाने के लिए बाद मे जोडा जानेवाला अंग। 'अनुपूरक' से भिन्न। (काम्प्लिमेन्ट)

संपूरण—पु०[सं० सम्√पूर (पूरा होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संपूरित] अच्छी तरह भरना।

संपूर्ण—वि०[सं०]१ अच्छी तरह भरा हुआ। २. आदि से अत तक सब। पूरा। सारा। ३ पूरा या समाप्त किया हुआ। ४. जो अपने पूर्ण रूप में हो।
पु०१. सगीत मे ऐसा राग जिसमे सातो स्वर लगते हो। २. दार्शनिक क्षेत्र मे, आकाश नामक भूत।

संपूर्ण ओड़व—पु०[सं०] सगीत मे ऐसा राग जो आरोही मे सपूर्ण और अवरोही मे ओडव हो।

संपूर्णत—अव्य० [सं० सपूर्ण+तसिल] पूरा पूरा। पूर्ण रूप से।

संपूर्णतया—अव्य० [सं० सपूर्ण+तल्—टाप् टा] सपूर्णत.।

संपूर्णता—स्त्री० [सं० सपूर्ण+तल्—टाप्]१ सपूर्ण होनेकी अवस्था या भाव। पूरापन। २. अन्त। समाप्ति।

संपेला—पुं०=संपोला।

संपृक्त—भू० कृ० [सं० सम्√ पृ (मिलना)+क्त] १ जिससे सपर्क स्थापित हो चुका हो या किया गया हो। २. सबद्ध। ३ लगा या सटा हुआ।

संपृष्ट—वि० [सं० स√प्रच्छ् (पूछना)+क्त–] १ जिससे प्रश्न किए गये हो। २ जिससे पूछ-ताछ की गई हो।

संपेखना—स० [सं० सप्रेक्षण] देखना।

सँपेरा—पु० [हिं० साँप+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन] वह जो साँप पकड़कर पालता और लोगों को उनके तमाशे दिखाता हो। मदारी।

सँपेला†—पु०=सँपोला।

संपै†—स्त्री० १ =संपत्ति। २ =शंपा। (बिजली)।

सँपोला—पु० [हिं० साँप+ओला (अल्पा० प्रत्य०)] १ साँप का छोटा बच्चा। २ लाक्षणिक अर्थ मे, खतरनाक व्यक्ति।

सँपोलिया†—पु० [हिं० साँप+ओलिया] =सँपेरा।

संपोषक—वि० [सं०] [स्त्री० संपोषिका] १. भली-भाँति पालन-पोषण करनेवाला। २ अच्छी तरह बढ़ानेवाला।

संपोषण—पु० [सं०] [भू० कृ० संपोषित, वि० संपोष्य] अच्छी तरह पोषण करना।

संपोष्य—वि०[सं० सम्√पुष् (पालन करना)+ण्यत्] जिसका संपोषण हो सकता हो या होना उचित हो।

संप्रक्षाल—वि०[सं० सम् प्र√क्षाल् (धोना)+अच्] पूर्ण विधि से स्नान करनेवाला।

पु० १ एक प्रकार के यति या साधु। २. एक ऋषि जिनके संबंध मे कहा गया है कि ये प्रजापति के चरणोदक से उत्पन्न हुए थे।

संप्रक्षालन—पु०[सं० सं प्र √क्षाल् (धोना)+ल्युट्+अन] १. अच्छी तरह धोना। खूब धोना। २ पूरी तरह से स्नान करना। ३ जल-प्रलय।

संप्रज्ञात—भू० कृ० [सं०] अच्छी तरह जाना हुआ।

पु० योग मे समाधि का एक भेद जिसमे विषय-भावना बनी रहती है।

संप्रति—अव्य० [सं०] १. इस समय। अभी। २. वर्तमान समय मे। ३ किसी के सामने। ४. तुलना या मुकाबले मे। ५ ठीक तरह से।

पु० १. पूर्व अवसर्पिणी के २४वे अर्हत का नाम। (जैन) २. अशोक के पुत्र कुणाल का एक पुत्र।

संप्रतिपत्ति—स्त्री० [सं०] १. पहुँच। गुजर। २ प्राप्ति। लाभ। ३ किसी बात का ठीक और पूरा ज्ञान। ४ बुद्धि। समझ। ५ किसी के साथ होनेवाली मत या विचार की एकता। मतैक्य। ६ कार्य का संपादन। ७ मंजूरी। स्वीकृति। ८ अभियुक्त द्वारा न्यायालय मे सच्ची बात मानना या कहना।

संप्रतिपन्न—भू० कृ० [सं० सम्-प्रति√पद् (स्थान आदि)+क्त] १ आया या पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. मंजूर। स्वीकृत। ३. उपस्थित-बुद्धि। प्रत्युत्पन्न-मति।

संप्रतीति—स्त्री० [सं० सम्-प्रति√इ (गमनादि)+क्तिन्] १. पूर्ण विश्वास। २ पूर्ण ज्ञान। ३. विनय।

संप्रत्यय—पु० [सं० सं०-प्रति√इ (गमनादि)+घञ्] १. स्वीकृति। मंजूरी। २. दृढ विश्वास। ३ सम्यक् ज्ञान या बोध। ४. मन की भावना या विचार।

संप्रदा†—पु०=संप्रदाय।

†स्त्री०=संपदा।

संप्रदान—पु० [सं० सम्-प्र√दा (देना)+ल्युट्—अन] १. दान देने की क्रिया या भाव। २ दीक्षा के समय शिष्य को गुरु का मंत्र देना। ३. उपहार। भेंट। ४. व्याकरण मे, एक कारक जो उस मनाकी स्थिति का बोध कराता है जिसके निमित्त कोई कार्य किया गया होता है। इसकी विभक्ति 'को' तथा 'के लिए' है। ५ किसी की वस्तु उसे देना या उसके पास तक पहुँचाना। (डेलिवरी)

संप्रदाय—वि० [सं०] [वि० सांप्रदायिक] देनेवाला।

पु० १ परम्परा से चला आया हुआ ज्ञान, मत या सिद्धान्त। २. परम्परा से चली आई हुई परिपाटी, प्रथा या रीति। ३ गुरु-परम्परा से मिलनेवाला उपदेश या मंत्र। ४ किसी धर्म के अन्तर्गत कोई विशिष्ट मत या सिद्धान्त। ५ उक्त प्रकार का मत या सिद्धान्त माननेवालो का वर्ग या समूह। जैसे—वैष्णव या शैव सम्प्रदाय। फिरका। ६. कोई विशिष्ट धार्मिक मत या सिद्धान्त। धर्म। जैसे—भारत मे अनेक मतो और सम्प्रदायो के लोग रहते हैं। ७ किसी विचार, विषय या सिद्धान्त के संबंध मे एक ही तरह के विचार या मत रखनेवाले लोगो का वर्ग। (स्कूल) ८. मार्ग। रास्ता।

संप्रदायक†—वि०=सांप्रदायिक।

संप्रदायी (यिन्)—वि० [सं० सम्-प्र√दा (देना)+णिनि—युक्] [स्त्री० संप्रदायिनी] १ देनेवाला। २. कोई काम करने या कोई बात सिद्ध करनेवाला। ३ किसी संप्रदाय का अनुयायी।

संप्रभु—वि० [सं०] ऐसा प्रभु या सत्ताधारी जिसके ऊपर और कोई प्रभु या सत्ताधारी न हो। सर्वप्रधान प्रभु अथवा सत्ताधारी (व्यक्ति या राष्ट्र)। (सावरेन)

संप्रभुता—स्त्री० [सं०] संप्रभु होने की अवस्था, गुण या भाव। (सावरेंटी)

संप्रयुक्त—भू० कृ० [सं० सम्-प्र√युज् (मिलाना)+क्त] १. किसी के साथ अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। २ किसी के साथ बाँधा या लगाया हुआ। ३ प्रयुक्त।

संप्रयोग—पु० [सं० सम्-प्र√युज् (संयोग करना)+घञ्] १. जोड़ने या मिलाने की क्रिया या भाव। एक साथ करना। मिलाना। २. मेल। समागम। ३. मैथुन। संभोग। ४. उपयोग। प्रयोग। ५ ज्योतिष मे, किसी नक्षत्र के साथ चन्द्रमा का होनेवाला योग। ६ इन्द्रजाल। जादूगरी। ७ उच्चाटन, मोहन, वशीकरण आदि का प्रयोग।

संप्रयोगी (गिन्)—पु० [सं० सम्-प्र√युज् (संबंध करना)+घिनुण्, संप्रयोग+इनि वा] [स्त्री० संप्रयोगिनी] १ कामुक। लंपट। २. ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

संप्रयोजन—पु० [सं० सम्-प्र√युज् (मिलाना)+ल्युट्—अन] [वि० संप्रयोजनीय, संप्रयोज्य, भू० कृ० संप्रयोजित, संप्रयुक्त] अच्छी तरह जोड़ना या मिलाना।

संप्रवर्तक—वि०[सं० सम्-प्र√वृत् (वर्तमान रहना)+ण्वुल्-अक] १ चलानेवाला। २ जारी या प्रचलित करनेवाला।

संप्रवर्तन—पु० [सं० सम्-प्र√वृत् (वर्तमान रहना)+ल्युट्—अन] [वि० संप्रवर्तनीय] १. गीति देना। चलाना। २ घुमाना। मोड़ना। ३ जारी या प्रचलित करना।

संप्रवर्ती (तिन्)—वि० [सं० सम्-प्र√वृत (रहना)+णिनि] ठीक या व्यवस्थित करनेवाला।

संप्रवाह—पु० [स० स-प्र√वह् (ढोना)+घञ्] लगातार चलता रहनेवाला क्रम या होता रहनेवाला प्रवाह।

संप्रवृत्त—वि० [स० सम्-प्र√वृत्त् (रहना)+क्त] १. आगे आया या बढा हुआ। अग्रसर। २. प्रस्तुत। मौजूद। ३ आरम्भ या प्रचलित किया हुआ।

संप्रवृत्ति—स्त्री० [स० सम्-प्र√वृत्त् (रहना)+क्तिन्] १. आसक्ति। २ किसी का अनुकरण करने की इच्छा। ३ उपस्थिति। मौजूदगी। ४ मिलकर एक होना। सघटन।

संप्रसादन—पु० [स०] [वि० सप्रसाद्य, भू० कृ० सप्रसादित] किसी को अच्छी तरह या सब प्रकार से प्रसन्न करना।

संप्रसाद्य—वि० [स०] [स्त्री० सप्रसाद्या] जिसे सब प्रकार से प्रसन्न और सतुष्ट रखना आवश्यक या उचित हो।

संप्राप्त—भू० कृ० [स०] [भाव० सप्राप्ति] १ आया या पहुँचा हुआ। उपस्थित। २ मिला हुआ। प्राप्त। ३ जो घटित हुआ हो।

संप्राप्ति—स्त्री० [स०] १ सप्राप्त होने की अवस्था या भाव। २ शरीर विज्ञान मे, वह क्रिया या प्रक्रम जो शरीर मे किसी रोग के कीटाणु पहुँचने, उस रोग के परिपक्व होने और वाह्य लक्षण या स्वरूप होने तक होती है। (इन्क्यूवेशन) जैसे—चेचक का सप्राप्ति-काल दो सप्ताह माना गया है। ३ घटना आदि का उपस्थित या घटित होना।

संप्रेक्षक—पु० [स०-सम्-प्र√इक्ष् (देखना)+ण्वुल्-अक] देखनेवाला। दर्शक।

संप्रेक्षण—पु० [स० सम्-प्र√इक्ष् (देखना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० सप्रेक्षित, वि० सप्रेक्ष्य] १. अच्छी तरह देखना। २ जाँच-पडताल या देख-भाल करना।

संप्रेक्ष्य—वि० [स०] जिसका सप्रेक्षण होने को हो या हो सकता हो। देखने या निरीक्षण करने योग्य।

संप्रेषक—वि० [स०] सप्रेषण करनेवाला। (ट्रान्समिटर)

संप्रेषण—पु० [स०] १ अच्छी तरह एक जगह से दूसरी जगह भेजना। २ मार्ग, माध्यम या साधन बनकर कोई चीज (जैसे—आज्ञा, प्रकाश, विद्युत्, समाचार आदि) एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना। (ट्रान्समिशन) ३ काम या नौकरी से अलग करना। बरखास्त करना।

संप्रेषणी—स्त्री० [स० सप्रेषण-ङीप्] हिन्दुओ मे मृतक का एक कृत्य जो द्वादशाह को होता है।

संप्रैष—पु० [स० सम्-प्र√इष् (इच्छा करना)+घञ्] १ यज्ञादि मे ऋत्विजो को नियुक्त करना। २ आमत्रण। आह्वान।

संप्रोक्त—भू० कृ० [स० सम्-प्र√वच् (कहना)+क्त-व-ड] १ सबोधित। २. कथित। ३ घोषित।

संप्रोक्षण—पुं० [स०] [भू० कृ० सप्रोक्षित, वि० सप्रोक्ष्य] १. खूब पानी छिडककर (मदिर आदि) साफ करना। ३ धोना। ३. मदिरा आदि का उत्सर्ग।

संप्लव—पु० [स० सम्√प्लु (डूबना)+अप्] [भू० कृ० सप्लुत] १. पानी की बाढ। २ बहुत बडी राशि या समूह। ३. हो-हल्ला। शोर-गुल। ४. आन्दोलन। हलचल।

संप्लुत—भू० कृ० [स० सम्-प्लु (डूबना)+क्त] १ जल से तराबोर। २. डूबा हुआ।

संफेट—पु० [स०] १ क्रोध मे आकर किसी से भिडना। भिडंत। लडाई। २ कहासुनी। तकरार।

संबंध—पु० [स०] १ किसी के साथ बँधना, जुडना या मिलना। २ वह स्थिति जिसमे कोई किसी के साथ जुडा बँधा या लगा रहता है। ताल्लुक। लगाव। (कनेक्शन) ३. एक कुल मे होने के कारण अथवा विवाह, दत्तक आदि सस्कारो के कारण होनेवाला पारस्परिक लगाव। नाता। रिश्ता। ४ आपस मे होनेवाली बहुत अधिक घनिष्ठता या मेल-जोल। ५. किसी प्रकार का मेल या सयोग। ६. विवाह। शादी। ७. व्याकरण मे एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का सबध या लगाव सूचित होता है। जैसे—राम का घोडा। ८. प्रसगवश किसी सिद्धान्त का किया जानेवाला उल्लेख। हवाला। ९ ग्रन्थ। पुस्तक। १० एक प्रकार की ईति या उपद्रव।

संबंधक—वि० [स० सबध+कन्] १ सबध रखनेवाला। सबधी। विषयक। २. उपयुक्त। योग्य। ३ जो दो वस्तुओ, व्यक्तियो आदि में पारस्परिक सबध करता या कराता हो (कनेक्टिंग)
पु० १ रक्त या विवाह का सबधी। २ मैत्री। ३ मित्र। ४ रिश्तेदार। सबधी। ५ राजाओ मे होनेवाली वह सधि जो आपस मे विवाह-सबध स्थापित करके की जाती थी।

संबंध तत्व—पु० [स०] भाषा विज्ञान मे, वह तत्त्व जो किसी पद या वाक्य मे आये हुए अर्थ तत्त्ववाले शब्दो का पारस्परिक सबध मात्र बतलाता है। 'अर्थतत्त्व' का विपर्याय। (मॉरफीम) जैसे—'समाज का स्वरूप' मे 'का' शब्द सबधतत्त्ववाला, है; क्योकि वह 'समाज' और 'स्वरूप' मे सबध-मात्र स्थापित करता है।

संबंधातिशयोक्ति—स्त्री० [स० मध्यम० स०] अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमे पारस्परिक सबध का अभाव होते हुए भी सबध दिखाया जाता है।

संबंधित—भू० कृ० [स०] जिसका किसी से सबध स्थापित हो। सबद्ध।

संबंधी (धिन्)—वि० [स०] [स्त्री० सबधिनी] १ सबध या लगाव रखनेवाला। २ किसी विषय से लगा हुआ। विषयक।
पु० १ वह जिसके साथ रक्त अथवा विवाह का सम्बन्ध हो। रिश्तेदार। २ दे० 'समधी'।

संबंधु—पु० [स० सम्√बन्ध् (बाँधना)+ड] १ आत्मीय। भाई-बिरादर। २ नातेदार। सम्बन्धी।

संब†—पु०=शव।

संबत†—पु०=सबत्।

संबद्ध—वि० [स०] १. किसी के साथ जुडा, मिला या लगा हुआ। २ किसी प्रकार का सबध रखनेवाला।

संबद्ध लिंग—पु० दे० 'लिंग' (न्याय-शास्त्रवाला विवेचन)।

संबद्धीकरण—पु० [स०] १ सबद्ध करने की क्रिया या भाव। २ विद्यालय, संस्था आदि को अपना अग या सदस्य मानकर उसे अपने साथ सबद्ध करना। अपने परिवार या सघटन का सदस्य बनाना। (एफ़िलिएशन)

संबरन†—पु०=सवरण।

संबरना*—स० [स० संवरण] सवरण करना। रोकना।

संबल--पु० [√सम्ब्+कलच्] १ कहीं जाने के समय रास्ते के लिए साथ मे रखा हुआ खाने-पीने का सामान। २ कोई ऐसी चीज, बात या साधन जिससे किसी काम या बात मे आगे-बढने मे पूरी-पूरी सहायता मिलती हो या जिसका आश्रय लिया जाता हो। (रिसोरसेज) ३ सहारा। ४. गेहूँ की फसल का एक रोग जो पूरब की हवा अधिक चलने से होता है। ४ सेमल का वृक्ष।

†पु०=सबुल (सखिया)।

संवाद*—पु०=सवाद।

संबाध--पु०[स०सम्√बाध् (बाधा देना)+घञ्, ब० स०] १. बाधा। अड़चन। २ भीड। समूह। ३ मघर्ष। ४ भग। योनि। ५ कष्ट। तकलीफ। ६ नरक का मार्ग।

वि० १ सकीर्ण। २ भरा हुआ। ३ जनाकीर्ण।

संबाधक--वि० [स० सम्√बाध (बाधा देना)+ण्वुल्—अक] १ बाधा डालनेवाला। बाधक। २ तग करने या सतानेवाला।

संबाधन—पु० [स० ब० स०] १ बाधक होना। बाधा डालना। २ रेल-पेल। ३ रुकावट। ४ द्वारपाल। ५ शूल की नोक। ६ भग। योनि।

†पु०=शबुक या शबूक।

संबुद्ध—वि० [स० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना)+क्त] १ जिसे बोध या ज्ञान हो चुका हो। २ जिसे ज्ञान प्राप्त हो चुका हो। ३ जागा हुआ। जाग्रत। ४ अच्छी तरह जाना हुआ। ज्ञात।

पु० १ ज्ञानी। २ गौतम बुद्ध। ३ जैनो के जिन देव।

संबुद्धि—स्त्री० [स० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना) क्तिन्] १ सबुद्ध होने की अवस्था या भाव। २ पूरी तरह से होनेवाला ज्ञान या बोध। ३ बुद्धिमत्ता। समझदारी। ४. आह्वान। पुकार।

संबुल--पु० [अ० सुबुल] १. बाल-छड नामक सुगधित वनस्पति। २ अनाज की बाल जिसमे दाने रहते है।

संबुल खताई—पु० [फा०] तुर्किस्तान मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा जो औषध के काम मे आता है और जिसकी पत्तियो की नसे मिठाई मे पडती हैं।

संबेसरा†—पु० [स० स+हिं० बसेरा] नीद। (डिं०)

संबोध—पु० [स० सम्√बुध् (ज्ञान करना)+घञ्] १. सम्यक् ज्ञान। पूरा बोध। २ अच्छी और पूरी जानकारी। ३ ढारस। सान्त्वना।

संबोधक—वि० [स०] सबोधन करनेवाला।

संबोधन—पु० [स० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना)+ल्युट्—अन] [वि० सबोधित, सबोध्य] १ नीद से उठाना। जगाना। ४ ज्ञान या बोध कराना। ३ समझाना-बुझाना। ४. अह्वान करना। पुकारना। ५ व्याकरण मे, वह शब्द जिससे किसी को पुकारा जाता है।

विशेष—भूल से इसकी गिनती कारको मे की जाती है, जबकि यह क्रिया के रूप का साधन नही करता है।

६ वह स्थिति जिसमे किसी से कुछ कहने के लिए उसके प्रति ध्यान दिया या मुख किया जाता है।

संबोधनगीति—स्त्री० [स०] आधुनिक साहित्य मे ऐसा विशद जाति-काव्य जो किसी को सबोधित करके लिखा गया हो और उच्च भावनाओ से युक्त हो। (ओड) जैसे—दिनकर कृत 'हिमालय' या पत कृत 'भावी पत्नी के प्रति'।

संबोधना*—स० [स०] १ समझाना-बुझाना। बोध कराना। २ ढारस या सान्त्वना देना।

संबोधि—स्त्री० [स० सबोध+इनि] पूर्ण ज्ञान। (बौद्ध)

संबोधित—भू० कृ० [स०] १ जिसे संबोधन किया गया हो। २. जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो। ३ जिसे बोध कराया गया हो। ४ (विषय) जिसका ज्ञान या सबोधन कराया गया हो।

संबोध्य—वि० [स०] १ जिसे सबोधन किया जाय। २. जिसे बोध या ज्ञान कराया जाय।

संभ†—पु०=शभु।

संभक्त—भू० कृ०[स० सम्√भज् (भाग करना)+क्त] [भाव० सभक्ति] १ बँटा हुआ। विभक्त। २ भाग या हिस्सा पाने या लेनेवाला। ३ भोग करनेवाला।

पु० अच्छा और पूरा भक्त।

संभक्ति—स्त्री०[स० सम्√भज् (भाग करना)+क्तिन्] १. विभाजन। २ विभाग। ३ उपभोग। ४ उत्तम और पूरी भक्ति।

संभक्ष—वि०[स० सम्√भक्ष् (खाना)+अच्] खानेवाला (समास मे)।

पु०१ किसी के साथ बैठकर खाना। सहभोज। २. खाद्य पदार्थ।

संभग्न—वि०[स०]१. बहुत टूटा फूटा। २ हारा हुआ। परास्त। ३ विफल।

पु० शिव।

संभर—वि० [स० सम्√भृ (भरण करना)+अच्] भरण पोषण करने-वाला।

पु०=साँभर (झील)।

संभरण—पु० [स० सम्√भृ (भरण करना)+ल्युट्—अन] [वि० सभर-णीय, सभृत] १ पालन-पोषण। २ एकत्र करना। चयन। सचय। ३ किसी काम या बात की योजना या विधान। ४. सामग्री। सामान। ५ लोगो की आवश्यकता की चीजे उनके पास पहुँचाने की व्यवस्था। समायोजन। (सप्लाई) ६ यज्ञ की वेदी मे लगाई जानेवाली ईंटें।

संभरणी—स्त्री०[स० सभरण—ङीप्] सोमरस रखने का एक यज्ञपात्र।

सँभरना†—अ०=सभलना।

†स०[स० स्मरण]=स्मरण करना।

संभल--पु०[स०] १ किसी लड़की से विवाह करने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। २ स्त्रियो का दलाल। ३ वह स्थान जहाँ विष्णुव्यास नामक ब्राह्मण के घर विष्णु का दसवाँ कल्कि अवतार होने को है। इसे कुछ लोग मुरादाबाद जिले का सभल नाम का कसबा समझते है।

सँभलना—अ० [स० सभरण]१ किसी ओर गिरने, फिसलने, लुढकने, भ्रष्ट आदि होने से रुकना। २ किसी बोझ आदि का रोका या किसी कर्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सकना। ३. किसी आधार या सहारे पर रुका रहना। ४. होशियार या सावधान रहना। ५ चोट या हानि से बचाव करना। ६. स्वस्थ होना। ७. बुरी दशा से बचकर रहना। ८ अच्छी दशा मे आना।

*स०[स० श्रवण] सुनना।

सँभला—पु०[हिं० सँभलना]एक बार बिगड़कर फिर सँभली हुई फसल।

सँभली—स्त्री० [सं० संभली] कुटनी। दूती।

संभव—वि०[सं०] १. (काम) जो किया जा सकता हो अथवा हो सकता हो। किए जाने अथवा हो सकने के योग्य। २ जिसके घटित होने की संभावना हो। जिसके संबंध में यह समझा या सोचा जा सकता हो कि ऐसा हो सकता है। मुमकिन। (पॉसिबुल)

पु० १ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। जैसे—कुमार संभव। २. कोई काम या बात घटित होने की अवस्था या भाव। ३ मूल कारण। हेतु। मिलन। ४. संयोग। ५ स्त्री-प्रसंग। सहवास। ६. उपयुक्तता। समीचीनता। ७. किसी को अंतर्गत कर सकने की योग्यता। समाई। ८. ध्वंस। नाश। ९. मान, मूल्य आदि में समान होने की अवस्था या भाव जो तर्क में एक प्रकार का प्रमाण माना जाता है। जैसे—एक रुपया और सौ नये पैसे दोनों बराबर हैं। १०. वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत। (जैन) ११. बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।

संभवतः—अव्य० [सं० संभव+तसिल्] १. हो सकता है। संभव है कि। मुमकिन है कि। गालिबन। २ संभावना है कि। हो सकता है कि।

संभवन—पु०[सं० सम्√भू (होना)+ल्युट्—अन] [वि० संभवनीय, संभाव्य, भू० कृ० संभूत] १ उत्पन्न होना। पैदा होना। २. संभव या मुमकिन होना। ३ घटित या संभूत होना।

संभवना*—स० [सं० सम्भव+हिं० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न करना। पैदा करना।

अ० उत्पन्न होना।

संभवनाथ—पु०[सं० ष० त०] वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे तीर्थंकर। (जैन)

संभवनीय—वि० [सं० सम्√भू (होना)+अनीयर्] १. जो हो सकता हो। मुमकिन। २. जिसकी संभावना हो।

संभविष्णु—पु०[सं० सम्√भू(होना)+इष्णुच्] १ जनक। २ उत्पादक। ३. स्रष्टा।

संभवी—वि० [सं० संभविन्] १. किसी से संभूत या उत्पन्न होनेवाला। जैसे—स्वतः संभवी वस्तु या हेतु। २ जो हो सकता हो। मुमकिन। संभव।

संभव्य—पु०[सं० सम्√भू (होना)+यत्] कपित्थ। कैथ।

वि० जो हो सकता हो। संभव।

संभाखन†—पुं०=संभाषण।

सँभार†—स्त्री०=सँभाल।

संभार—पु०[सं०] १. एकत्र या इकट्ठा करना। संचय। २ साज-सामान। सामग्री। ३. आयोजन। तैयारी। ४ धन-संपत्ति। ५ दल। झुंड। ६ ढेर। राशि। ७ पालन-पोषण। ८ देख-रेख। निगरानी। ९. नियंत्रण। निरोध।

संभार तंत्र—पु०[सं०]आधुनिक युद्ध कला का वह अंग जिसमें सेना के संचालन, निवास आदि और सैनिकों को उनकी आवश्यक सामग्री पहुँचाने की व्यवस्था होती है।

सँभारना*—स० [सं० स्मरण] स्मरण करना। याद करना।

†स०=सँभालना।

संभाराधिप—पुं०[सं०] राजकीय पदार्थों का अध्यक्ष। तोशा खाने का अफसर। (शुक्रनीति)

संभारी (रिन्)—वि०[सं० संभार+इनि सं० √भृ (भरण करना)+णिनि, सम्भारिन्] [स्त्री० संभारिणी] १ संभार करनेवाला। २ भरा हुआ। पूर्ण।

सँभाल—स्त्री०[सं० सम्भार] १ सँभलने या सँभालने की क्रिया या भाव। २ कोई चीज सँभालकर रखने की क्रिया या भाव। देख-रेख। हिफाजत। ३ शरीर के अंग आदि सँभालकर रखने की शक्ति या समता। तन-बदन की सुध। जैसे—वह इतना वृद्ध हो गया है कि उसे शरीर की भी सँभाल नहीं रही। ४. प्रबंध। व्यवस्था। जैसे—गृहस्थी की सँभाल। ५ किसी का किया जानेवाला पालन-पोषण।

सँभालना—स०[हिं० सँभलना का स०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ या कोई सँभले। २. गिरते हुए को बीच में ही रोकना। बीच में ही पकड़ या रोक रखना। ३. बिगड़ते हुए के संबंध में ऐसी क्रिया करना कि वह अधिक बिगड़ने न पावे और धीरे धीरे सुधरने लगे। ४ ऐसी देख-रेख रखना कि बिगड़ने या नष्ट न होने पाए। निगरानी करना। जैसे—घर की चीजें सँभालकर रखना। ५ किसी का पालन-पोषण करना। ६ उचित प्रबंध या व्यवस्था करना। ७ कर्तव्य, कार्य-भार आदि अपने ऊपर लेकर उसका ठीक तरह से निर्वाह करना। जैसे—शासन का कार्य सँभालना। ८. यह देखना कि कोई चीज जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी ही है न। जैसे—अपना सब सामान सँभाल लो। ९. अपने आपको आवेग-युक्त या क्षुब्ध न होने देना। जैसे—उस पर क्रोध मत करना; अपने आपको सँभाले रहना।

संयो० क्रि०—देना।—लेना।

सँभाला—पु०[हिं० सँभलना] १. सँभलने या सँभालने की क्रिया या भाव। २. मरणासन्न व्यक्ति की वह स्थिति जिसमें वह कुछ समय के लिए थोड़ा चैतन्य हो जाता है और ऐसा जान पड़ता है कि उसकी स्थिति सँभल जायगी—वह मरने से बच जायगा। उदा०—बीमारे मुहब्बत ने लिया तह में सँभाला लेकिन वह सँभाले से सँभल जाय तो अच्छा।—कोई शायर।

क्रि० प्र० —लेना।

सँभालू—पु०[हिं० सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष।

संभावन—पुं०[सं० सम्√भू (होना)+णिच्—ल्युट्—अन सम्भावन] [वि० संभावनीय, संभावितव्य, संभाव्य, भू० कृ० संभावित] १ कल्पना। भावना। अनुमान। २. इकट्ठा करना। ३. ठीक या पूरा करना। ४. आदर-सम्मान। ५. किसी के प्रति होनेवाली पूज्य बुद्धि या श्रद्धा। ६. पात्रता। योग्यता। ७ ख्याति। प्रसिद्धि। ८ स्वीकृति।

संभावना—स्त्री०[सं० संभावन+टाप्] १. किसी घटना या बात के संबंध की वह स्थिति जिसमें उस घटना के घटित होने या उस बात के पूरे होने की शक्यता होती है। ऐसा जान पड़ता है कि अमुक घटना या बात होना बहुत कुछ संभव प्रतीत होता है। (पॉसिबिलिटी) २ साहित्य में, उक्त के आधार पर एक प्रकार का अलंकार जिसमें इस बात का उल्लेख होता है कि यदि अमुक बात हो जाय तो अमुक बात हो सकती है। जैसे—एहि विधि उपजै लच्छि जब होइ सीय सम तूल।—तुलसी। ३ दे० 'संभावन'।

संभावनीय—वि०[स० सम्√भू(होना)+णिच्—अनीयर्] १. जिसकी सभावना हो या हो सकती हो। २. जिसकी कल्पना की जा सकती हो। ध्यान या विचार मे आ सकने योग्य।

संभावित—भू० कृ०[स०]१ जिसकी कल्पना या विचार किया गया हो। २. उपस्थित या प्रस्तुत किया हुआ। ३. आदृत। ४. प्रसिद्ध। ५ उपयुक्त। योग्य। ६. जिसकी सभावना हो। सभावनीय। सभव। मुमकिन।

संभावितव्य—वि०[स० स√ भू (होना)+णिच्—तव्य] १. कल्पना या अनुमान के योग्य। २. जिसके सम्बन्ध मे अनुमान या कल्पना की जा सके। ३ जिसका सत्कार किया जा सकता हो या किया जाने को हो। ४ मुमकिन। सभव।

संभाव्य—वि०[स० सम्√ भू (होना)+णिच्—यत्] १ जिसकी सभावना हो। जो हो सकता हो। २ प्रशसनीय। ३ आदर या पूजा का अधिकारी अथवा पात्र। पूज्य और मान्य। ४. जो कल्पना या विचार मे आ सकता हो।

संभाव्यतः—अव्य०[स०] सभावना है कि।

संभाष—पु०[स० स√ भाष् (कहना)+घञ्, सम्भाष] १ कथन। वातचीत। सभाषण। २ करार। वादा।

संभाषण—पु०[स० सम्√ भाष् (भाषण करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सभाषित, वि० सभाषणीय, सभाष्य] आपस मे होनेवाली वातचीत। वार्तालाप।

संभाषणीय—वि०[स० सम्√ भाष् (भाषण करना)+अनीयर्] जिसके साथ वात-चीत या वार्तालाप किया जा सकता हो।

संभाषा—स्त्री०[स० सम्√भाष् (कहना)+अङ—टाप्] १ सभाषण। २. किसी वात या विषय का तथ्य या स्वरूप जानने के लिए होनेवाला वाद-विवाद या विचार। (डिवेट)

संभाषित—भू० कृ०[स० स√ भाष् (भाषण देना)+क्त]१ अच्छी तरह कहा हुआ। २ जिसके साथ वात-चीत की गई हो।

संभाषी(षिन्)—वि०[स०सभाष् (भाषण करना)+णिनि] [स्त्री०सभाषिणी]१ कहनेवाला। २. वातचीत करनेवाला।

संभाष्य—वि०[स० सम√ भाष् (वातचीत करना)+यत्]१ जिससे वातचीत करना उचित हो। जिससे वार्तालाप किया जा सकता हो। २ (विषय) जिस पर सभाष हो सके। (डिवेटेवुल)

संभिन्न—भू० कृ०[स०] १. पूर्णत टूटा हुआ। २ तोडा-फोडा हुआ। ३ जिसमे क्षोभ या हलचल उत्पन्न की गई हो। ४. गठा हुआ। ठोस। ५. खिला हुआ। प्रस्फुटित। ६ ठोस।

संभिन्न प्रलाप—पु०[स०] व्यर्थ की वातचीत जो बौद्ध शास्त्र के अनुसार एक पाप है।

संभीत—भू० कृ०[स० सम्√भी (डरना)+क्त] वहुत अधिक डरा हुआ।

संभु—पु०[स० सम्√ भू (होना)+डु]=शभु।

संभुक्त—भू० कृ०[स० स√ भुज् (खाना)+क्त] १. खाया हुआ। २ उपभोग किया या भोगा हुआ। प्रयोग मे लाया हुआ। ३ अतिक्रात।

संभूत—भू० कृ०[स०] [भाव० सभूति] १. जो किसी दूसरे के साथ उत्पन्न हुआ हो। २. उत्पन्न। जात। ३ युक्त। सहित। ४ विलकुल वदला हुआ। ५. उपयुक्त। योग्य। ६ वरावर। समान।

संभूति—स्त्री०[स०]१ सभूत होने की अवस्था या भाव। उत्पत्ति। २ विभूति। वैभव। ३. वढती। वृद्धि। ४. योग मे प्राप्त होनेवाली विभूति या अलौकिक शक्ति। ५ क्षमता। शक्ति। ६ शक्ति का प्रदर्शन। ७ उपयुक्तता। ८ पात्रता। योग्यता। ९ मरीचि की पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या थी।

संभूय—अव्य०[स०] १ एक मे। एक साथ। २ साझे मे।

संभूयकारी—पु०[स०] १ प्राचीन भारत मे, किसी सघ मे मिलकर व्यापार करनेवाला व्यापारी जो उस सघ का हिस्सेदार होता था। (स्मृति) २. किसी के साथ साथ काम करनेवाला।

संभूय-क्रय—पु०[सं०] थोक माल वेचना या खरीदना। (कौ०)

संभूय-गमन—पु०[स०] शत्रु पर होनेवाली ऐसी चढ़ाई जिसमे सव सामत भी अपने दलवल के साथ हो। (कामदक)

संभूय-समुत्थान—पु०[स०] कई हिस्सेदारो के साथ मिलकर किया जानेवाला व्यापार। साझे का कारवार।

संभृत—भू० कृ०[स०] [भाव० सभृति]१. इकट्ठा या जमा किया हुआ। एकत्र। २. पूरी तरह से भरा या लदा हुआ। ३. युक्त। सहित। ४. पाला-पोसा हुआ। ५. जिसका आदर या सम्मान किया गया हो। ६ तैयार। प्रस्तुत। ७ वनाया हुआ। निर्मित।

पु० चीख-पुकार। हो-हल्ला।

संभृति—स्त्री० [स० सम्√ भृ (भरण करना)+क्तिन्, सम्भृति]१ एकत्र करने की क्रिया या भाव। २ भीड। समूह। ३ ढेर। राशि। ४ अधिकता। वहुतायत। ५. सामान। सामग्री। ६ पालन-पोषण।

संभृष्ट—भू० कृ०[स० सम्√भ्रज्ज् (भूनना)+क्त—भ्र=भृ षत्व—ष्टुत्व] १. खूव भुना या तला हुआ। कुरकुरा। २ भूने या तले जाने के कारण जो करारा हो गया हो।

संभेद—पु०[स० सम्√ भिद् (पृथक् करना)+घञ्, सम्भेद] १ अच्छी तरह छिदना या भिदना। २ ढीला होकर खिसकना या स्थान-भ्रष्ट होना। ३ अलग या जुदा होना। ४ भेद-नीति। ५. प्रकार। भेद। ६ मिलन।

संभेदन—पु० [स० सम्√ भिद् (भेदन करना)+ल्युट्—अन] [वि० सभेदनीय, सभेद्य, भू० कृ० सभिन्न] अच्छी तरह छेदना या आर-पार घुसाना। खूव धँसाना।

संभेद्य—वि० [स० सम्√भिद् (फाडना)+यत्] जिसका सभेदन होने को हो या हो सकता हो।

संभोग—पु०[स०] १. किसी वस्तु का भली-भाँति किया जानेवाला पूरा उपयोग। २ स्त्री और पुरुष का मैथुन। रति-क्रीड़ा। ३ हाथी के कुम्भ या मस्तक का एक विशिष्ट भाग। ४ साहित्य मे शृगार का वह अग जो सयोग शृगार कहलाता है। (दे० 'शृगार')

संभोग काय—पु०[स०] वौद्धो के अनुसार वह शरीर जिसमे आकर इस ससार के सुख-दुख आदि भोगे जाते है।

सभोग-शृगार—पु०=सयोग-शृगार।

संभोगी (गिन्)—वि०[स० सभोग+इनि] [स्त्री० सभोगिनी] १. सभोग करनेवाला। २. व्यवहार करके सुख भोगनेवाला।

पु०१ विलासी व्यक्ति। २ कामुक व्यक्ति।

संभोग्य—वि० [सं० सम्√भुज् (भोग करना)+ण्यत्]१ जिसका भोग या

व्यवहार होने को हो। जो काम मे लाया जाने को हो। २ जिसका भोग या व्यवहार हो सकता हो।

संभोज—पु०[स० स√ भुज् (खाना)+घञ्] १. भोजन। खाना। २. खाद्य पदार्थ।

संभोजक—वि० [स० सम्√भुज् (खाना)+ण्वुल-अक] १ भोजन करने या खानेवाला। २ स्वाद लेनेवाला।

संभोजन—पु०[स० सम्√भुज् (खाना)+ल्युट्—अन] [वि०सभोजनीय, सभोज्य, भू० कृ० सभुक्त]१ बहुत से लोगों का मिलकर खाना। २ भोज। दावत। ३ खाने की चीजें। भोजन की सामग्री।

संभोजनीय—वि० [स० सम्√भुज् (खाना)+अनीयर्]१. जो खाया जाने को हो। २ जो खाया जा सकता हो।

संभोज्य—वि०[स०]=सभोजनीय।

संभ्रम—पु०[स०]१ चारो ओर घूमना या चक्कर लगाना। फेरा। २ उतावली। जल्दबाजी। ३ घबराहट। ४ बेचैनी। विकलता। ५ किसी का सामना होने पर उससे सहमना या सिटपिटाना। ६ किसी को बडा समझकर उसके आगे आदरपूर्वक सिर झुकाना। ७. किसी की वह स्थिति जिसके कारण लोग उसका आदर करते या उससे सहमते हो। ८ किसी के प्रति होनेवाला पूज्य भाव। ९ गहरी चाह। उत्कठा। १० साहस। हौसला। ११ गलती। चूक। भूल। १२ छवि। शोभा। १३. शिव के एक प्रकार के गण।

संभ्रात—भू० कृ० [स०] [भाव० सभ्राति] १ चारो ओर घुमाया हुआ। २. क्षुब्ध। ३ प्रतिष्ठित। सम्मानित।

संभ्राति—स्त्री०[स०]१ सभ्रात होने की अवस्था या भाव। २ क्षोभ। ३ प्रतिष्ठा। सम्मान।

संभ्राजना*—अ०[स० सभ्राज] पूर्णत सुशोभित होना।

समत—वि०[स० सम्√ मन् (मानना)+क्त नलोप]=सम्मत।

समान—पु०[स०√ मन् (मानना)+अच्]=सम्मान।

संमित—भू० कृ०[स०√ मा (नाप)+क्त]=सम्मित।

संमुख—वि०[स०]१ जो किसी के सामने या किसी की ओर मुँह किए हो। २ सामने आया हुआ। उपस्थित। प्रस्तुत।
अव्य० समक्ष। सामने।

संमुखीन†—वि०=समुख।

समुद्रण—पु०[स०] बहुत बढिया छपाई करना।

संमेलन—पु० [स० स√ मिल् (मिलना) ल्युट्—अक]=सम्मेलन।

संम्राज*—पु०=साम्राज्य।

संयंता—वि० [स० सम्√ यम् (सयम करना)+तृच्, सयतृ]१. सयम करने वाला। निग्रही। २ शासक।

संयंत्रित—भू० कृ०[स० सयत्र+इतच्]१ बँधा या जकड़ा हुआ। बद्ध। २ दबाया या रोका हुआ। ३ बन्द।

संयत्—वि०[स० सम्√ यत्न (यत्न करना)+क्विप्—यम्+क्विप्—तुक वा] १ सबद्ध। लगा हुआ। २ जिसका क्रम न टूटे। लगातार होनेवाला।
पु० १ नियत स्थान। २ करार। वादा। ३ लडाई-झगडा। ४. एक प्रकार की पुरानी चाल की ईट जो वेदी बनाने के काम आती थी।

संयत—वि० [स०]१. बँधा या जकड़ा हुआ। बद्ध। २. दबाया या रोका हुआ। ३ कैद या बन्द किया हुआ। ४. किसी प्रकार की मर्यादा या सीमा के अन्दर रहनेवाला। मर्यादित। (मॉडरेट) ५. क्रम, नियम आदि से व्यवस्थित किया हुआ। ६ उद्यत। सन्नद्ध। ७ इन्द्रिय-निग्रही। ८. सीमा के अन्दर रखा हुआ।
पु०१ शिव। २ योगी।

संयत-प्राण—वि०[स०] जिसने प्राणायाम के द्वारा प्राणवायु या श्वास को वश मे किया हो।

संयतात्मा (त्मन्)—वि०[स० ब० स०] जिसने मन को वश मे किया हो। चित्तवृत्ति का निरोध करनेवाला।

संयति—स्त्री०[स० सम्√यम् (रोकना)+क्तिन्—नलोप] १ सयत रहने या होने की अवस्था या भाव। २. निरोध। रोक।

संयद्वसु—पु०[स०] सूर्य की सात किरणो में से एक।
वि० धनवान्। सम्पन्न।

संयम—पु० [स० सम्√ यम्(सयम करना)+घञ्] [कर्ता सयमी, भू० कृ० सयमित, वि० सयत] १ दबा या रोक कर रखने की क्रिया या भाव। वश में रखना। २ धार्मिक तथा नैतिक दृष्टि से मन को विषय-वासनाओ को अनुचित, बुरे या हानिकारक मार्गो मे प्रवृत्त होने मे रोकना। चित्त की अनुचित वृत्तियो का निरोध। इन्द्रिय-निग्रह। ३ शरीर-रक्षा अथवा स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक कार्यो या बातो से बचते हुए अलग या दूर रहना। परहेज। ४ व्याव-हारिक दृष्टि से अपने आपको अनौचित्य की सीमा से बचाना। अनुचित कामो या बातो से अपने आपको रोकना। (मॉडरेशन) ५ क्रोध आदि मे न आना। शात बने रहना। ६ अच्छी तरह या व्यवस्थित रूप से बद करना या बाँधना। जैसे—केश-सयम। ७. खुला न रहने देना। मूँदना। ८ बधन। ९ योग मे, ध्यान, धारणा, और समाधि का साधन। १० उद्योग। प्रयत्न। ११. प्रलय।

संयमक—वि० [स० सम्√यम् (रोकना)+ ण्वुल्—अक या सयम+कन्] सयम करनेवाला।

संयमन—पु०[स० सम्√यम् (रोकना)+ल्युट्—अन]१ सयम करने की क्रिया या भाव। २ अनुचित या बुरी बातो से मन को रोकना। निग्रह। ३ दमन। ४ आत्म-निग्रह। ५ बन्धन या रुकावट मे रहना। ६ अच्छी तरह बाँधना। जकडना। ७ अपनी ओर खीचना या तानना। ८ यम की पुरी। सयमिनी।

संयमनी—स्त्री०=सयमिनी।

संयमित—भू०कृ०[स० सम्√यम् (रोकना)+णिच्—क्त सयम+ इतच्-वा]१. जिसके विषय या सम्बन्ध मे सयम किया गया हो। २ रोक-कर वश मे किया या लाया हुआ। ३ जिसका दमन किया गया हो अथवा हुआ हो। ४ कसा या बाँधा हुआ। ५. अच्छी तरह पकडा हुआ।
वि० इन्द्रियो का सयम करनेवाला। इन्द्रिय-निग्रही।

संयमिता—स्त्री० [स०√ यम् (रोकना आदि)+णिच्—तृच्] सयम करने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

संयमिनी—स्त्री० [स० सयम+इनि—ङीप्] १ यमराज की नगरी। यमपुरी जो मेरु पर्वत पर स्थित कही गई है। २ काशी पुरी।

संयमी (मिन्)—वि०[स० सयमिन्—दीर्घ, नलोप] १ सयम करनेवाला।

२ सयमपूर्वक जीवन वितानेवाला। सयम से रहनेवाला। आत्म-निग्रही।

पु०१ योगी। २ राजा। ३ शासक।

संयात—वि०[स० सम्√ या (गमनादि)+क्त]१ साथ चलने या जानेवाला। २ साथ लगा हुआ। ३ आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त।

संयात्रा—स्त्री०[स०]१. यात्रा मे किसी का साथ होना। साथ साथ यात्रा करना। २ ऐसी यात्रा जिसमे समुद्र पार करना पडे।

संयान—पु०[स० सम्√ या (गमनादि)+ल्युट्—अन] [वि० सयात, सयायी]१ किसी के साथ चलना या जाना। सह-गमन। २ यात्रा। **पद—उत्तम संयान**=मृत शरीर को अन्त्येष्टि क्रिया के लिए ले जाना। ३ प्रस्थान। रवानगी। ४ गाडी। यान।

संयाम—पु०[स० स√ यम् (रोकना)+घञ्]=सयम।

संयुक्त—भू० कृ० [स० स√युज् (जोडना)+क्त] १ किसी के साथ जुड़ा, मिला, लगा या सटा हुआ। २ (सघटन या सस्था) जिसका विघटन न हुआ हो। जैसे—सयुक्त परिवार। ३ जिसके दो या अधिक भागीदार हो। जैसे—सयुक्त खाता। ४ सहित। ५ साथ रहकर या मिलकर काम करनेवाले। जैसे—सयुक्त सपादक।

संयुक्त खाता—पु०[स० +हिं०]लेन-देन आदि का वह लेखा या हिसाव जो एक से कुछ अधिक आदमियो के नाम से चलता हो। (ज्वाइन्ट एकाउन्ट)

संयुक्त राष्ट्र संघ—पु०[स०]पुराने राष्ट्र सघ की तरह की वह सस्था जो दूसरे महायुद्ध के उपरात उसके स्थान पर अप्रैल १९४६ मे बनाई गई थी, और आज-कल जो सारे ससार मे शाति वनाये रखने, मानव-हितो की रक्षा करने तथा इसी प्रकार के और अनेक लोक-कल्याण के कार्यों मे सक्रिय है। (युनाइटेड नेशन्स ऑर्गनिजेशन)

संयुक्त लेखा—पु०=सयुक्त खाता।

संयुक्त वाक्य—पु० [स०] व्याकरण मे ऐसा वाक्य जिसमे दो या अधिक ऐसे उपवाक्य होते हैं जो एक दूसरे के अधीन न हो। (कम्पाउन्ड सेन्टेन्स)

सयुक्त सरकार—स्त्री०[स० +हिं०] किसी देश की वह सरकार जो किसी आपात या विशेष सकट के समय सभी प्रमुख राजनीतिक दलों के सहयोग से वनी हो। (कोएलिशन गवर्नमेंट)

संयुक्ताक्षर—पु० [स० सयुक्त+अक्षर] वह अक्षर जो दो अक्षरो के मेल से वना हो। जैसे—क् और त् के योग से 'क्त' या प् और ल् के योग से 'प्ल'।

संयुग—पु० [स० सम्√ युम् (मना करना)+अच्—नलोप—पृपो०]१ मेल। मिलाप। २ सयोग। समागम। ३. भिडन्त। ४ युद्ध। लडाइ।

संयुत—वि०[स०] १. किसी के साथ मिला या लगाया हुआ। २. जो कई वस्तुओ के योग से वहुत अधिक या इकट्ठा हो गया हो। (क्युमुलेटेड)

संयुति—स्त्री०[स०]१ सयुत होने की अवस्था या भाव। २ दो या अधिक पदार्थों का एक मे या एक स्थान पर इकट्ठा होना या मिलना। जैसे—ग्रहो की सयुति। (कजक्शन)

संयोग—पु० [स०]१ दो या अधिक वस्तुओं का एक मे या एक साथ होना। मेल। मिश्रण। (काम्बिनेशन) २. समागम। ३ लगाव। सवध। ४ स्त्री और पुरुष या प्रेमी और प्रेमिका का मिलन। ५. मैथुन। रतिक्रीडा। सभोग। ६ वैवाहिक सबध। ७ किसी काम या वात के लिए कुछ लोगो मे होनेवाला मेल। ८. आकस्मिक रूप से आनेवाली वह स्थिति जिसमे एक घटना के साथ ही कोई दूसरी घटना भी घटित हो।

पद—संयोग से=विना पहले से निश्चित किए हुए और आकस्मिक रूप से। जैसे—मैं वहाँ वैठा हुआ था; इतने मे सयोग से वे भी आ पहुँचे। ९ किसी वात या विचार मे होनेवाला पारस्परिक मतैक्य। 'भेद' का विपर्याय। १० व्याकरण मे, कई व्यजनों का एक साथ होनेवाला मेल। १० अनेक सख्याओं का योग। जोड।

संयोग-पृथकत्व—पु० [स० द्व० स०-त्व, या व० स०] ऐसा पार्थक्य या अलगाव जो नित्य न हो। (न्याय)

संयोग-मंत्र—पु०[स० प० त०, या मध्य० स०] विवाह के समय पढा जानेवाला वेदमत्र।

संयोग-विरुद्ध—पु० [स० तृ० त०]ऐसे पदार्थ जो साथ साथ खाने के योग्य नही होते, और यदि खाये जायँ तो रोग उत्पन्न करते हैं। जैसे—घी और मधु; मछली और दूध।

संयोगिता—स्त्री०[स०] जयचद की कन्या जिसका पृथ्वीराज ने हरण किया था।

संयोगिनी—स्त्री० [स० स योग+इनि—ङीप्] वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतम के साथ हो। 'वियोगिनी' का विपर्याय।

संयोगी (गिन्)—वि०[स० सयोगिन्—दीर्घ—नलोप] [स्त्री० सयोगिनी]१ जिसका सयोग हो चुका हो। २ जो सयोग के फलस्वरूप हुआ हो। ३ विवाहित। ४ जिसकी प्रिया उसके पास या साथ रहती हो।

संयोजक—वि०[स० सम्√युज् (मिलाना)+ण्वुल्—अक] सयोजन करनेवाला।

पु०१ व्याकरण मे वह शब्द (अव्यय) जो दो शब्दो या वाक्यो को जोडने का काम करता हो। जैसे—अथवा, और, या। २ आज-कल सभा-समितियो का वह सदस्य जो अन्य सदस्यो को वुलाकर उनका अधिवेशन कराता हो तथा सभापति के कर्तव्यो का पालन भी करता हो (कन्वीनर)

संयोजन—पु०[स०सम्√ युज् (जोडना)+ल्युट्—अन] [वि० सयोगी, सयोजनीय, सयोज्य, सयोजित] १ सयोग करने अर्थात् जोडने या मिलाने की अवस्था या भाव। युग्मन। (कान्जुगेशन) २. एक के साथ किसी दूसरी चीज को सलग्न या सम्मिलित करने की क्रिया या भाव। (अटैचमेन्ट) ३ दो या अधिक चीजों का आपस मे मिलना या मिलाया जाना। (काम्बिनेशन) ४ मैथुन। सभोग। ५ कार्य का आयोजन या व्यवस्था। प्रवन्ध। ६ ससार के जजाल मे मनुष्य को लगाये रखने वाला भव-वधन या कारण। (वौद्ध)

संयोजना—स्त्री०[स० सयोजन—टाप्]=सयोजन।

सयोजित—भू० कृ० [स० सम्√युज् (मिलाना)+णिच्—क्त] जिसका सयोजन हुआ हो या किया गया हो।

संयोज्य—वि०[स० सम्√युज् (मिलाना)+ण्यत्] जिसका सयोजन हो सकता हो अथवा होने को हो।

संयोध—पु० [स०] युद्ध। लडाई।

संयोना†—स०= संजोना

संरंभ—पु० [स०] १ ग्रहण करना। पकडना। २ आतुरता। उत्कठा। ३ उद्विग्नता। उद्वेग। ४. खलबली। क्षोभ। ५ उत्साह। उमग। ६ क्रोध। कोप। ७ शोक। ८ ऐंठ। ठसक। ९ अधिकता। बाहुल्य। १० आरभ। शुरू। ११. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। १२ फोडे या घाव का सूजना या लाल होना। (सुश्रुत)

संरक्त—वि० [स० √रञ्ज् (राग होना)+क्त] १ अनुरक्त। आसक्त। २ आकर्षक। मनोहर। ३ जो क्रोध से लाल हो रहा हो।

संरक्षक—वि० [स० सम्√ रक्ष् (रक्षा करना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० सरक्षिका] १ सरक्षण करनेवाला। २ देख-रेख, पालन-पोषण आदि करनेवाला। ३ आश्रय या शरण देनेवाला।

पु० १ वह जो किसी बालक, स्त्री आदि की देख-रेख, भरण-पोषण आदि का भार वहन करता हो। अभिभावक। (गार्जियन) २ वह जिसके निरीक्षण या देख-रेख मे किसी वर्ग के कुछ लोग रहते हो। (वार्डन) ३ आज-कल सस्थाओ आदि मे वह बहुत बडा और मान्य व्यक्ति जो उसके प्रधान पोषको या समर्थको मे माना जाता हो। (पेट्रन)

विशेष—प्राय सस्थाएँ अपनी प्रामाणिकता, मान्यता आदि बढाने के लिए गणमान्य विशिष्ट व्यक्तियो को अपना सरक्षक बना लेती हैं।

संरक्षकता—स्त्री० [सरक्षक+तल्—टाप्] १ सरक्षक होने की अवस्था या भाव। २ सरक्षक का कार्य या पद।

संरक्षण—पु० [स० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+ल्युट्—अन] १ अच्छी और पूरी तरह से रक्षा करने की क्रिया या भाव। पूरी देख-रेख और हिफाजत। २ अधिकार। कब्जा। ३ अपने आश्रय मे रखकर पालना-पोसना। ४ आर्थिक क्षेत्र मे, देशी तथा विदेशी माल की प्रतियोगिता होने पर शासन द्वारा देशी माल की रक्षा करना। (प्रोटेक्शन; उक्त सभी अर्थों मे)

संरक्षणवाद—पु० [स०] आधुनिक राजनीति मे यह सिद्धान्त कि राष्ट्र को अपने आर्थिक क्षेत्र मे राष्ट्रीय उद्योग-धन्धो का सरक्षण करना और बाहरी प्रतियोगिता के दुष्परिणामो से बचाना चाहिए। (प्रोटेक्शनिज्म)

संरक्षण शुल्क—पु० [स०] आधुनिक अर्थशास्त्र मे, वह शुल्क या कर जो अपने देश मे बनी हुई चीजो को प्रतियोगिता के कारण नष्ट होने से बचाने के लिए ऐसी विदेशी चीजो पर लगाया जाता है जो सस्ती बिक सकती हो। भरण्य शुल्क (प्रोटेक्शन ड्यूटी)। जैसे—देशी चीनी का व्यापार बढाने के लिए पहले यहाँ विदेशी चीनी पर सरक्षण शुल्क लगाया गया था।

संरक्षणीय—वि० [सं० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+अनीयर] १. जिसका सरक्षण करना आवश्यक या उचित हो। सरक्षण का अधिकारी या पात्र। २ बचाकर रखे जाने के योग्य।

संरक्षित—भू० कृ० [स० स √रक्ष् (रक्षा करना)+क्त] १ जिसका सरक्षण किया गया हो या हुआ हो। २ जो अच्छी तरह बचाकर रखा गया हो।

पु० वह जो किसी सरक्षक की देखरेख मे रहता हो। प्रतिपाल्य। (वार्ड)

संरक्षित राज्य—पु० [स०] आधुनिक राज्य मे वह दुर्बल राज्य जिसे किसी दूसरे सबल राज्य ने अपने सरक्षण मे ले लिया हो। (प्रोटेक्टोरेट)

संरक्षितव्य—वि० [स० √रक्ष् (रक्षा करना)+तव्य] जिसका सरक्षण करना आवश्यक या उचित हो।

संरक्षी—वि० [स० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+णिनि सरक्षा+इनि] [स्त्री० सरक्षिणी] १. सरक्षण करनेवाला। २ देखभाल करनेवाला।

संरक्ष्य—वि० [स० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+ण्यत्—यत वा] =सरक्षणीय।

संरचना—स्त्री० [सं०] [भू० कृ० सरचित] १ कोई ऐसी चीज बनाने की क्रिया या भाव जिसमे अनेक प्रकार के बहुत से अगो-उपागो का प्रयोग करना पडता हो। जैसे—किले, पुल या भवन की सरचना। लाक्षणिक रूप मे, किसी अमूर्त वस्तु का सारा ढाँचा। बनावट। २ उक्त प्रकार से बनी हुई कोई चीज। (स्ट्रक्चर)

संरब्ध—वि० [स० सम्√रभ् (मिलना)+क्त] १. किसी के साथ अच्छी तरह जुडा, मिला या लगा हुआ। २. जो किसी के साथ हाथ मिलाये हो। ३. उद्विग्न। क्षुब्ध। ४ क्रोध से भरा हुआ। ५ फूला या सूजा हुआ। ६ घबराया हुआ।

संराधक—वि० [स० सम्√राध् (ध्यान करना)+ण्वुल्—अक] १ सराधन करनेवाला। आराधना करनेवाला।

संराधन—पु० [स०] [वि० सराधनीय, सराध्य, भू० कृ० सराधित] १ आराधना या पूजन और ध्यान करना। २ जयजयकार। ३ आज-कल किसी अप्रसन्न व्यक्ति को समझा-बुझाकर तुष्ट और प्रसन्न करना। (कान्सिलिएशन)

संराधन अधिकारी—पुं० [ष० त०] आज-कल वह राजकीय अधिकारी जो कल-कारखानो आदि मे काम करनेवाले कर्मचारियो और उनके मालिको मे झगडा होने पर दोनो को समझा-बुझाकर उनमे समझौता कराता हो। (कन्सिलिएशन आफिसर)

संराधनीय—वि० [स० सम्√राध् (आराधना करना)+अनीयर्] जिसकी आराधना करना उचित या आवश्यक हो।

संराधित—भू० कृ० [स० सम्√ राध् (पूजा करना)+क्त] जिसका सराधन किया गया हो।

संराध्य—वि० [सं० सम्√राध् (आराधना करना)+ण्यत] =सराधनीय।

संराव—पु० [सं०] १ कोलाहल। शोर। २ हलचल। धूम।

संरुद्ध—वि० [स०] १ अच्छी तरह रोका हुआ। २. चारो ओर से घिरा या घेरा हुआ। ३ अच्छी तरह बन्द किया हुआ। ४ छाया या ढका हुआ। ५ पूरी तरह से भरा हुआ। ६ मना किया हुआ। वर्जित।

संरूढ—वि० [स०] १. अच्छी तरह चढा हुआ। २ किसी पर अच्छी तरह लगा या जमा हुआ। ३ अकुरित। ४. (घाव) जो पूज या सूख रहा हो। ५ आगे निकला या बाहर आया हुआ। ६ धृष्ट। प्रगल्भ। ७ पुष्ट और प्रौढ।

संरोदन—पु० [सं० सम्√ रुद् (रोना)+ल्युट्—अन] जोर-जोर से या ढाढ मारकर रोना।

संरोध—पु० [स०] १. रोक। रुकावट। २ अडचन। बाधा। ३ आधुनिक राजनीति मे शत्रु के किसी देश या स्थान को चारो ओर से इस प्रकार घेरना कि बाहरी जगत से उसे कोई सहायता न मिल सके। नाकेबदी (ब्लाकेड)। ४. बद करना। मूँदना। ५. हिंसा।

संरोधन—पु० [स०] [वि० सरोधनीय, सरोध्य, सरुद्ध] १. रुकावट

डालना। रोकना। २. बाधा खडी करना। बाधक होना। ३ चारो ओर से घेरना। ४ सीमा या हद बनाना। ५ बन्द करना। मूँदना। ६ बंदी बनाना। कैद करना। ७ दमन करना। दबाना।

संरोधनीय—वि०[स० सम्√रुध् (घेरना)+अनीयर्] जिसका सरोधन हो सके या किया जाने को हो।

संरोध्य—वि०[स० सम्√रुध् (ढकना)+ण्यत्]=सरोधनीय।

संरोपण—पु०[स० सम्√ रुह् (अकुरित होना)+णिच्—ह=प—ल्युट्—अन][वि० सरोपणीय, सरोप्य, भू०कृ० सरोपित] १ पेड़-पौधा लगाना। जमाना। बैठाना। रोपना। २ घाव को सुखाकर अच्छा करना।

संरोपित—भू० कृ० [स० √रुह (उगना)+णिच्—ह=प—क्त] १ जिसका सरोपण हुआ हो अथवा किया गया हो। २. ऊपर से लगाया या रोपा हुआ।

संरोप्य—वि० [स०√रुह् (उगना)+णिच्—ह=प—ण्यत्] जिसका सरोपण हो सकता हो या किया जाने को हो।

संरोह—पु०[स० सम्√ रुह् (उगना)+अच्]१ ऊपर चढना, जमना या बैठना। २ घाव सूखने पर पपडी जमना या बनना। ३ बीज आदि का अकुरित होना। ४ आविर्भूत या प्रकट होना। आविर्भाव।

संरोहण—पु०[स० सम्√ रुह् (अकुरित होना)+ल्युट्—अन] [वि० सरोहणीय, संरोही, भू० कृ० सरोहित] सरोह होने की क्रिया या भाव।

संलक्षण—पु० [स० सम्√लक्ष् (देखना आदि)+ल्युट्-अन] [वि० सलक्षणीय, सलक्ष्य, भू० कृ० सलक्षित] १. रूप या उसका लक्षण निश्चित करना। २ पहचानना। ३ ताडना। लखना।

संलक्षित—भू० कृ० [स० सम्√लक्ष् (देखना आदि)+क्त] १ लक्षणो से जाना या पहचाना हुआ। २ ताडा या लखा हुआ।

संलक्ष्य—वि० [स०सम्√लक्ष् (देखना आदि)+यत्] १ जो लक्षण से पहचाना जाय। २ जो देखने मे आ सके। ३ जो ताडा या लखा जा सके।

सलक्ष्य क्रम व्यंग्य—पु० [स०समलक्ष्य,-क्रम-ब० स०,-व्यग्य-मध्य० स०] साहित्य मे, व्यग्य के दो भेदो मे से एक, ऐसा व्यग्य या व्यजना जिसमे वाच्यार्थ से व्यग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो।

संलग्न—वि०[स०√लग् (सग रहना)+क्त पर्याण, सम्√लाज् (लज्जित आदि)+क्त—न] १ किसी के साथ मिला हुआ। २ किसी काम या बात मे लगा हुआ। ३ जुडा हुआ। सबद्ध। ४ किसी दूसरे के साथ अन्त मे या पीछे से जोडा या लगाया हुआ। (एपेंडेड, अटैच्ड)

संलपन—पु०[सम्√लप् (कहना)+ल्युट्-अन] इधर-उधर की बातचीत। गप-शप।

संलब्ध—वि० [सम्√लभ् (प्राप्त होना)+क्त] =लब्ध।

संलय—पु० [सम्√ली (गमनादि)+अच] [वि० सलीन] १ पक्षियो का उतरना या नीचे आना। २ निद्रा। नीद। ३ प्रलय।

संलयन—पु०[स√ली (गमनादि)+ल्युट्-अन] १ पक्षियो का नीचे आना या उतरना। २ लय को प्राप्त होना। लीन होना। ३ नष्ट होना। न रह जाना।

संलाप—पु० [सम्√लप् (कहना)+घञ्] १. आपस की बात-चीत। वार्त्तालाप। २ नाटक मे, ऐसी बात-चीत या सवाद जो धीरतापूर्ण हो और जिसमे आवेश या क्षोभ न हो। ३. साहित्य मे, जो आप ही आप कुछ बोलना या बडबडाना जो पूर्व राग की दस दशाओ मे से एक माना गया है। ४ वियोग की दशा मे प्रिय से मन ही मन की जानेवाली बाते।

संलापक—पु० [सलाप+कन्] नाटक मे, सलाप।

वि० सलाप करनेवाला।

संलिप्त—भू० कृ० [सम्√लिप् (लेप करना)+क्त] १. भली-भाति लिप्त या लीन। २ अच्छी तरह लगा हुआ।

संलीन—वि० [स०] १ अच्छी तरह लगा हुआ। २ छाया या ढका हुआ। ३ पूरी तरह से किसी मे समाया हुआ। ४ सिकुडा हुआ। सकुचित।

सलेख—पु० [स०] १. बौद्ध धर्म के अनुसार पूरा-पूरा सयम। २ आज-कल कोई ऐसा पत्र या लेख जिसमे किसी विधिक कृत्य का प्रामाणिक विवरण हो। विलेख। ३ विधिक क्षेत्र मे, वह लेख या विलेख जो नियमानुसार लिखा हुआ, ठीक और प्रामाणिक माना जाता हो। (वैलिड डीड) ४ राज्यो मे होनेवाली सधि का वह पूर्व रूप या मसौदा जिस पर पारस्परिक समझौते की मुख्य मुख्य बाते लिखी हो तथा जिस पर सबद्ध पक्षो के प्रतिनिधियो के हस्ताक्षर हुए हो। पूर्व-लेख। (प्रोटोकोल)

संलोडन—पु० [सम्√लोड् (घोलना)+ल्युट्-अन] [वि० सलोडित] १.(जल आदि की) खूब हिलाना या चलना। मथना। २ झकझोरना। ३ उलटना-पुलटना। ४ उथल-पुथल करना या मचाना।

संलोभन—पु०=प्रलोभन।

संवत्—पु० [स०] १ वर्ष। साल। २ किसी विशिष्ट गणना-क्रम वाली काल-गणना। जैसे—विक्रमी सवत्, शक सवत्।

विशेष—इसका प्रयोग मुख्यत भारतीय गणना प्रणालियो के सम्वन्ध मे ही होता है। पाश्चात्य गणना प्रणालियो के सम्वन्ध मे प्राय सन् का प्रयोग होता है।

संवत्सर—पु० [स०] १. वर्ष। साल। २ फलित ज्योतिष मे, पाँच-पाँच वर्षों के युगो मे से प्रत्येक का प्रथम वर्ष। ३. शिव का एक नाम।

सवत्सरीय—वि० [सम्वत्सर+छ—ईय] १. सवत्सर सम्बन्धी। सवत्सर का। २ हर साल होनेवाला। वार्षिक।

संवदन—पु० [सम्√वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] १ बातचीत। वार्त्तालाप। २ सदेशा। ३ आलोचनात्मक विचार। ४ जाँच-पडताल।

संवदना—स्त्री० [सम्वदन-टाप्] मत्र-तत्र आदि से अथवा और किसी प्रकार किसी को वश मे करने की क्रिया। वशीकरण।

संवनन—पु०[सम्√वन् (वश करना)+ल्युट्-अन][भू० कृ० सवनित] १. यत्र-मत्र आदि के द्वारा स्त्रियो को फँसाना या वश मे करना। २ दे० 'सवदन'।

सँवर—स्त्री० [स० स्मरण] १. याद। स्मृति। २. वृत्तान्त। हाल। ३ खबर। समाचार।

स्त्री० [हिं० सँवरना] सँवरे अर्थात् सजे हुए होने की अवस्था या भाव।

संवर—पु० [सम्√वृ (वरण करना)+अप्] १ सवरण करने की क्रिया

या भाव। २. रुकावट। रोक। ३ इन्द्रिय-निग्रह। ४ जैन दर्शन मे कर्मों का प्रवाह रोकना। ५ बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का व्रत। ६. जलाशयो आदि का बाँध। ७ पुल। सेतु। ८ चुनने की क्रिया या भाव। चुनाव। ९ कन्या का अपने लिए वर चुनना। स्वयवर।

संवरण—पु० [स०] [वि० सवरणीय] १. दूर करना। हटाना। २. वन्द करना। ३ आच्छादित करना। ढकना। ४. छिपाना। ५. कोई ऐसी चीज जिसमे कोई दूसरी चीज छिपाई, ढकी या रोकी जाय। ६ आड करने या बचानेवाली चीज। ७ मनोवेग आदि को दवा या रोककर वश मे रखना। नियत्रण से वाहर न होने देना। निग्रह। जैसे—क्रोध या लोभ सवरण करना। ८ जलाशयो आदि का बाँध। १० पुल। सेतु। ११ पसद करना। चुनना। १२ कन्या का विवाह के लिए अपना पति या वर चुनना। १३ वैद्यक मे गुदा के चमडे की तीन तहों या परतो मे से एक। १४ आज-कल सभा-समितियो, ससदो आदि मे किसी विपय पर यथेष्ट वाद-विवाद हो चुकने पर किया जानेवाला उसका अन्त या समाप्ति। (क्लोजर)

संवरणीय—वि० [सम्√वृ (वरण करना)+अनीयर्] [स्त्री० सवरणीया] १. जिसका सवरण हो सकता हो या होना उचित हो। २ जिसे छिपाकर रखना वाछित हो। गोपनीय। ३ जो वरण अर्थात् विवाह के योग्य हो चुका हो।

सँवरना—अ० [स० सवर्णन] १ वनकर अच्छी या ठीक दशा को प्राप्त होना, अथवा सुन्दर रूप मे आना। सँवारा जाना। २ अलकृत या सज्जित होना।

स० [स० स्मरण] स्मरण करना। उदा०—सँवरौ आदि एक करतारू। —जायसी।

†अ० स्मरण होना। याद आना। उदा०—पुनि विसरा भा सँवरना, जनु सपने भइ भेंट।—जायसी।

सँवरा†—वि०=साँवला।

सँवरिया†—वि०=साँवला।

†पु०=साँवलिया।

संवर्ग—पु० [सम्√वृजी (मना करना)+घञ्] १ अपनी ओर समेटना। २ इकट्ठा करना। ३ खा जाना। भक्षण। ४. खपत। ५. विलय। ६ (गणित मे) गुणन-फल।

संवर्जन—पु० [सम्√वृज् (त्यागना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० सवर्जित, वि० सवर्जनीय, सवृक्त] १ वलपूर्वक ले लेना। हरण करना। छीनना। २ उडा डालना। समाप्त कर देना।

संवर्त—पु० [स०] १ लपेटना। २ घुमाव। फेरा। लपेट। ३. लपेट कर वनाई हुई पिंडी। ४ शत्रु से भिडना। ५ गोली। वटी। ६ वडी राशि या समूह। ७ सवत्सर। ८ एक प्रकार का दिव्यास्त्र। ९ ग्रहो का एक प्रकार का योग। १० एक केतु का नाम। ११ एक कल्प का नाम। १२ प्रलय काल के भेदो मे से एक। १३ इन्द्र का अनुचर एक मेघ, जिससे वहुत जल वरसता है। १४. वादल। मेघ। १५ वहेडा।

संवर्तक—वि० [स√वृत् (रहना)+णिच्-ण्वुल्—अक] १ संवर्तन करने या लपेटनेवाला। २ नाश या लय करनेवाला।

पु० १ कृष्ण के भाई वलराम का एक नाम। २ वलराम का अस्त्र, हल। ३ वडवानल। ४ वहेडा। ५. प्रलय नामक मेघ। ६. प्रलय मेघ की अग्नि।

संवर्तकल्प—पु० [मध्यम० स०] बौद्धो के अनुसार प्रलय का एक प्रकार या रूप।

संवर्तकी—पु० [सवर्तक+इनि, संवर्तविन्] कृष्ण के भाई वलराम का एक नाम।

संवर्तन—पु० [स०√वृत् (रहना)+ल्युट्-अन] [वि० सवर्तनीय, संवृत, भू० कृ० सवर्तित] १. लपेटना। २. चक्कर या फेरा देना। ३ किसी ओर प्रवृत्त होना या मुडना। ४ पहुँचना। ५ खेत जोतने का हल। ६ भारतीय युद्ध कला में, शत्रु का प्रहार रोकना।

संवर्तनी—स्त्री० [सवर्तन-ङीप्] सृष्टि का लय। प्रलय।

संवर्तनीय—वि० [स√वृत् (रहना)+अनीयर्] जिसका सवर्तन हो सकता हो या होने को हो।

संवर्ति—स्त्री० [सवृत+इति] दे० 'सवर्तिका'।

संवर्तिका—स्त्री० [सवर्ति+कन्+टाप्] १. लपेटी हुई वस्तु। २ वत्ती। ३. ऐसा बँधा हुआ पत्ता जो अभी खिलने या खुलने को हो। ४ खेत जोतने का हल।

संवर्तित—भू० कृ० [स√वृत् (रहना)+क्त] १. लपेटा हुआ। २ घुमाया, फेरा या मोडा हुआ।

संवर्ती—वि० [स०] [स्त्री० सवर्तिनी] १ किसी के साथ वर्तमान रहने या होनेवाला। २ किसी के समान पद या स्थिति मे रहनेवाला। ३ एक ही काल मे औरो के साथ, प्राय उसी रूप मे परन्तु भिन्न-भिन्न स्थानो मे होनेवाला। (कान्करेन्ट) जैसे—सवर्ती घोपणा या सूची =ऐसी घोपणा या सूची जो एक साथ कई स्थानो से प्रकाशित हो।

संवर्द्धक—वि० [सम्√वृध् (वढाना)+णिच्—ण्वुल्—अक] सवर्धन करनेवाला।

संवर्द्धन—पु० [सम्√वृध् (वढाना)+णिच्—ल्युट्—अन] [वि० सवर्द्धनीय, सवर्द्धित, सवृद्ध] १. अच्छी तरह वढना या वढाना। २ जितना या जो पहले से वर्तमान हो उसमे कुछ और अधिकता या वृद्धि करना। (आग्मेन्टेशन) ३ पशु-पक्षियो, पौधो आदि के सवध मे ऐसी क्रिया और देख-भाल करना जिससे उनके वश आदि का विकास, विस्तार या वृद्धि हो। (कल्चर) जैसे—पपीते के पेडो, मधुमक्खियो आदि का सवर्धन। पाल पोसकर वडा करना। ५ उन्नत करना। वढाना।

संवर्द्धनीय—वि० [सम्√वृध् (वढाना)+णिच्—अनीयर्] १ जिसका सवर्द्धन करना आवश्यक या उचित हो। २ जिसका पालन-पोषण करना आवश्यक या उचित हो।

संवर्द्धित—भू० कृ० [सम्√वृध् (वढना)+णिच्—क्त] जिसका सवर्द्धन किया गया हो या हुआ हो।

संवर्धन—पु०=सवर्द्धन।

संवल—पु० [सम्√वल् (सवरण करना)+क]=सवल।

संवलन—पु० [स० सम्+वलन] [वि० सवलित] १ किसी ओर घुमाना या मोडना। २ मिलाना। मिश्रण। ३. मेल। ४. मिलावट। मिश्रण। ५ ऐसी व्यवस्था करना कि आवश्यकता के अनुसार घटाया-वढाया जा सके। (कडीशनिंग) जैसे—वायु-सवलन। ६ वल दिखाने के लिए मुठ-भेड करना। भिडना।

संँवलाना—अ० [हिं० साँवला] रग का साँवला पडना या होना। उदा०—लड़की का चेहरा और ज्यादा सँवला गया।—सआदत हसन मन्टो। स० साँवला करना। जैसे—धूप ने उस का रग सँवला दिया था।

संवलित—भू० कृ० [सम्√वल् (पकड़ना)+क्त] १. जिसका सकलन हुआ हो या किया गया हो। २ किसी के साथ मिला हुआ। युक्त। सहित। ३. घिरा या घेरा हुआ। ४. जो शत्रु से भिड या लड गया हो।

संवसथ—पुं० [सम्√वस् (रहना)+अथ] मनुष्यो की बस्ती।

संवह—वि० [सम्√वह् (ढोना)+अच्] १. वहन करनेवाला। ले जानेवाला।

पु० १. एक वायु जो आकाश के सात मार्गो मे से तीसरे मार्ग मे रहती है। २ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक।

संवहन—पु० [सम्√वह् (ढोना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सवहित] १. वहन करना। ले जाना। ढोना। २. प्रदर्शित करना। दिखाना।

संवाच्य—पु० [सम्√वच् (कहना)+ण्यत्] अच्छी तरह बात-चीत करने या कथा कहने का ढंग जो ६४ कलाओ मे से एक है।

संवातन—पु० [स०] [वि० सवातनी, भू० कृ० सवातित] ऐसी अवस्था या व्यवस्था जिससे कमरे, कोठरी आदि मे हवा ठीक तरह से आती-जाती रहे। हवादारी। (वेंटिलेशन)

सवाद—पु० [सं०] [वि० सवादिक] १ एक-रूपता, सादृश्य आदि के कारण चीजो, बातो आदि का आपस मे ठीक बैठना या मेल खाना। २ किसी से की जानेवाली बातचीत। वार्तालाप। ३ किसी के पास भेजा हुआ या आया हुआ विवरण या वृत्तान्त। ४. खबर। समाचार। ५ चर्चा। ६ नियुक्ति। ७ मुकदमा। व्यवहार। ८ सहमति। ९ स्वीकृति।

संवादक—वि० [सम्√वद् (कहना)+विच् ण्वुल—अक] १. बोलने या बात-चीत करनेवाला। २. संवाद या समाचार देनेवाला। ३. किसी के मत से सहमत होनेवाला। ४. बात मान लेनेवाला। ५ बजानेवाला।

संवाददाता—पु० [स०] १. वह जो किसी प्रकार का सवाद या खबर देता हो। २. आज-कल वह व्यक्ति जो समाचारपत्रो मे छपने के लिए स्थानिक घटनाओ का विवरण लिखकर भेजता हो। (रिपोर्टर, कारेस्पान्डेन्ट)

संवादन—पु० [सम्√वद् (कहना)+णिच्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० सवादित] [वि० सवादनीय, सवादी, सवाद्य] १. बात-चीत करना। बोलना। २ किसी के कथन या मत से सहमत होना। ३. किसी का अनुरोध या बात मान लेना। ४ बाजे आदि बजाना।

संवादिका—स्त्री० [सम्√वद् (कहना)+णिच्—ण्वुल्—अक—टाप्] १. कीट। कीडा। २ च्यूँटी।

संवादित—भू० कृ० [स√वद् (कहना)+णिच्—क्त] १. सवाद अर्थात् बात-चीत मे लगाया या प्रवृत्त किया हुआ। २ प्रसन्न करके मनाया या राजी किया हुआ।

संवादिता—स्त्री० [सवादित—टाप्] सवादी होने की अवस्था, गुण या भाव।

संवादी—वि० [सम्√वद् (कहना)+णिनि] [स्त्री० सवादिनी] १ सवाद अर्थात् बातचीत करनेवाला। २. राजी या सहमत होनेवाला। ३ किसी के साथ अनुकूल पड़ने, बैठने या होनेवाला। ४. बाजा बजानेवाला।

पु० सगीत मे, वह स्वर जो किसी राग के वादी स्वर के साथ मिलकर उसका सहायक होता और उसे अधिक श्रुति-मधुर बनाता है। जैसे—पंचम से षड्ज तक जाने मे बीच के तीन स्वर सवादी होगे।

सँवार—स्त्री० [हिं० सँवरना] १. सँवरने या सँवारने की क्रिया, भाव या स्थिति। २ सँवारा या सँवारा हुआ रूप। ३ सशोधन। उदा०—केर सँवार गोसाँई जहाँ परै कछु चूक।—जायसी। ४ 'मार' के स्थान पर मगल-भाषित रूप मे बोला जानेवाला शब्द। (मुसलमान स्त्रियाँ) जैसे—तुझ पर खुदा की सँवार (अर्थात् मार)।

†पु० [स० सवाद या स्मरण] हाल। समाचार। उदा०—पुनि रे सँवार कहेसि अरु दूजी।—जायसी।

संवार—पु० [सम्√वृ (ढकना)+घञ्] १ आवरण डालकर कोई चीज छिपाना या ढकना। २ शब्दो के उच्चारण के समय कठ के भीतरी भाग का कुछ दबना या सिकुडना। ३ उच्चारण के बाह्य प्रयत्नो मे से एक जिसमे कठ का आकुचन होता है। 'विवार' का उलटा। ४ बाधा। अड़चन।

सवारण—पु० [सम्√वृ (वारण करना)+णिच्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० सवारित, वि० सवार्य] १ दूर करना। निवारण करना। हटाना। २ न आने देना। रोकना। ३ निषेध करना। मनाही। ४. छिपाना। ५. ढकना।

संवारणीय—वि० [सम्√वृ (दूर करना)+णिच्—अनीयर] जिसका सवारण हो सके या होने को हो।

सँवारना—स० [स० सवर्णन] १ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह अच्छा या सुन्दर जान पड़े। २ ठीक और दुरुस्त करके काम मे आने के योग्य बनाना। ३ अलकृत करना। सजाना। ४. क्रम से लगाकर या ठीक करके रखना। ५ सुचारु रूप से कोई कार्य सम्पन्न करना। जैसे—ईश्वर ही हमारे सब काम सँवारता है।

संवारित—भू० कृ० [सम्√वृ (हटाना)+णिच्—क्त] जिसका सवारण किया गया हो या हुआ हो।

संवार्य—वि० [सम्√वृ (मना करना)+णिच्—ण्यत्]=सवारणीय।

संवास—पु० [सम्√वस् (रहना)+घञ्] १ साथ बसना या रहना। २ पारस्परिक सम्बन्ध। ३ स्त्री सभोग। मैथुन। ४ सभा। समाज। ५ जन-साधारण के उपयोग के लिए नियत खुला स्थान। ६ घर। मकान।

संवासन—पु० [स०] [भू० कृ० सवासित] १ सवास करने की क्रिया या भाव। २ अच्छी तरह सुगन्धित करने की क्रिया या भाव।

संवासी (सिन्)—वि० [सम्√वस् (रहना)+णिनि] सवास करनेवाला।

संवाह—पु० [सम्√वह् (ढोना)+णिच्—अच्] १. ले जाना। ढोना। २ पैर दबाना। ३. पीडित करना। सताना। ४ बाजार। मडी। ५ जन-साधारण के लिए उपयोग के लिए रक्षित खुला स्थान।

संवाहक—वि० [स०] ढोकर अथवा और किसी प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जानेवाला। वहनक। वाहक। (कैरिअर)

पु० शरीर के हाथ-पैर आदि अग दबानेवाला सेवक।

संवाहकता—स्त्री० [सं०] १. संवाहक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. आधुनिक विज्ञान में, किसी पदार्थ का वह गुण या धर्म जिसके फल-स्वरूप ताप, विद्युत्, शीत आदि उसके एक अंग से बढ़कर शेष अंगों में पहुँचते अथवा दूसरे सधर्मी पदार्थों में संवहन करते हैं। (कन्डक्टिविटी)

संवाहन—पुं०[सं०] [भू० कृ० संवाहित, कर्ता संवाहक, संवाही; वि० संवाहनीय, संवाह्य] १ कोई चीज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। २. ताप, वाष्प, विद्युत् आदि एक स्थान से किसी दूसरे अंग या विंदु तक पहुँचाने की क्रिया या भाव। (कन्डक्शन) ३. परिचालित करना। चलाना। ४. शरीर के हाथ-पैर, अंग आदि दबाना या उनमें मालिश करना।

संवाहित—भू० कृ० [सम्√वह् (ढोना)+णिच्-क्त] १ जिसका संवाहन हुआ हो या किया गया हो।

संवाही—वि०[सम्√वह् (ढोना)+णिनि] [स्त्री० संवाहिनी]=संवाहक।

संवाह्य—वि० [सम्√वह् (ढोना)+ण्यत्] जिसका संवाहन हो सके या होने को हो। संवाहन का अधिकारी या पात्र।

संविग्न—वि० [सं०] १. घबराया हुआ। उद्विग्न। २ क्षुब्ध। ३. डरा हुआ। भीत।

संविज्ञ—वि० [सम् वि√ज्ञा (जानना)+क] अच्छा जानकार। सुविज्ञ।

संविज्ञान—पुं० [सं०] १ ठीक और पूरा ज्ञान। सम्यक् बोध। २. स्वीकृति। मंजूरी। ३. सहमति।

संवित्—स्त्री० [सं०]='संविद्'।

संवित्ति—स्त्री०[सम्√विद् (जानना)+क्तिन्] १ प्रतिपत्ति। २ सहमति। ३. चेतना। संज्ञा। ४. अनुभव। तजरबा। ५ बुद्धि। समझ।

संवित्पत्र—पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसमें दो राज्यों या प्रदेशों के बीच किसी बात के लिए मेल की प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो। (शुक्रनीति) २. किसी प्रकार का इकरारनामा या पट्टा। संविदापत्र।

संविद्—स्त्री० [सं०] १. चेतना-शक्ति। चैतन्य। २ ज्ञान। बोध। समझ। ३ सांख्य में, महत्त्व। ४ अनुभूति। संवेदन। ५ आपस में होनेवाला इकरार या समझौता। ६. उपाय। तदबीर। युक्ति। ७ वृत्तान्त। हाल। ८. प्रथा। रीति। ९. नाम। संज्ञा। १०. तुष्टि। तृप्ति। ११ युद्ध। लड़ाई। १२ प्रचारणा। ललकार। १३ इशारा। संकेत। १४ प्राप्ति। लाभ। १५ जायदाद। सम्पत्ति। १६. मिलने के लिए नियत किया हुआ स्थान। संकेत-स्थल। १७. योग में प्राणायाम से प्राप्त होनेवाली एक भूमि। १८ भाँग। विजया।

वि० चेतनायुक्त। चेतन।

संविदा—स्त्री० [सं०] १. कुछ खास शर्तों पर आपस में होनेवाला किसी प्रकार का इकरार, ठहराव या समझौता। (कन्ट्रैक्ट) २. गाँजे या भाँग का पौधा।

संविदापत्र—पुं०[सं०] वह पत्र जिस पर किसी संविदा की शर्तें लिखी हों। इकरारनामा। ठीकानामा। (कन्ट्रैक्ट डीड)

संविदा प्रविधि—स्त्री० [सं०] वह प्रविधि या कानून जिसमें संविदा या ठीके से सम्बन्ध रखनेवाले नियमों का विवेचन हो। (लॉ ऑफ कन्ट्रैक्ट)

संविदित—भू० कृ०[सम्√विद् (जानना)+क्त] १. अच्छी तरह जाना हुआ। पूर्णतया ज्ञात। २. खोजा या ढूँढ़ा हुआ। ३ सबकी सम्मति से ठहराया या निश्चित किया हुआ। ४ जिसके सम्बन्ध में वचन दिया या वादा किया गया हो। ५ अच्छी तरह बतलाया या समझाया हुआ।

संविद्वाद—पुं० [ष० त०] पाश्चात्य दर्शन का एक सिद्धान्त जिसमें वेदान्त के समान चैतन्य के अतिरिक्त और किसी वस्तु की पारमार्थिक सत्ता नहीं मानी जाती। चैतन्यवाद।

संविधा—स्त्री० [सम्-वि√धा (रखना)+क-टाप्] १ रहन-सहन। आचार-व्यवहार। २ प्रबन्ध। व्यवस्था।

संविधातृ (तृ)—वि० [सम्-वि√धा (रखना)+तृच्] संविधान करनेवाला।

पुं० विधाता (स्रष्टा)।

संविधान—पुं० [सं० वि√धा (रखना)+ल्युट्-अन] १ ठीक तरह से किया गया विधान या व्यवस्था। उत्तम प्रबंध। २. बनावट। रचना। ३ आधुनिक राजनीति और शासन-तंत्र में, कानून या विधान के रूप में बने हुए वे मौलिक नियम और सिद्धान्त जिनके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन और व्यवस्था होती है। (कान्स्टिट्यूशन) ४ दस्तूर। प्रथा। रीति। ५. अनुष्ठापन। विलक्षणता।

संविधानक—वि० [सं० संविधान+कन्] संविधान करनेवाला। संविधाता।

पुं० १ कोई विचित्र घटना या व्यापार। २ उपन्यास, नाटक आदि की कथनानुसार कथानक। (प्लाट)

संविधान परिषद्—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वह परिषद् या सभा जो किसी देश, राष्ट्र या संस्था की व्यवस्था और शासन के लिए नियमावली या संविधान बनाने के लिए नियुक्त या संघटित की गई हो। (कान्स्टिच्यूएन्ट एसेम्बली)

संविधानवाद—पुं० [सं० संविधान√वद्+घञ्] [वि० संविधानवादी] १ यह मत या सिद्धान्त कि किसी देश या राज्य का शासन निश्चित संविधान के अनुसार होना चाहिए। (कान्स्टिच्यूशनलिज्म)

संविधानवादी—वि० [सं० संविधान√वद्+णिनि] संविधानवाद सम्बन्धी। संविधानवाद का।

पुं० वह जो संविधानवाद का अनुयायी और पोषक हो। (कान्स्टि-च्यूशनलिस्ट)

संविधानसभा—स्त्री०=संविधान परिषद्।

संविधानिक—वि० [सं० संविधान+ठन्-इक] संविधान अथवा उसके नियमों आदि से सम्बन्ध रखनेवाला। (कान्स्टिच्यूशनल)

संविधानी—वि०=संविधानिक।

संविधि—वि० स्त्री०[सम् वि√धा (रखना)+कि] १ विधान। रीति। दस्तूर। २ प्रबन्ध। व्यवस्था। ३ दे० 'प्रविधान'।

पुं० [सं०] विधान सभा द्वारा पारित प्रस्ताव जो विधान के अंग के रूप में स्वीकार किया जाता है। (स्टैच्यूट)

संविधेय—वि० [सम्-वि√धा (रखना)+यत्-आ=ए] १. जिसका संविधान होने को हो या हो सकता हो। २ (काम) जो किया जाने को हो या जिसका प्रबन्ध होने को हो।

संविभक्त—वि० [सम् वि√भज् (देना)+क्त] १ अच्छी तरह बँधा हुआ। २ ठीक और सुन्दर बना हुआ। सुडौल। ३ विभक्त किया हुआ।

संविभाग—पु० [सम्-वि√भज् (देना)+घञ्] १ ठीक तरह से किया गया विभाग। २. प्रदान। ३. राज्य के मत्री का कार्यालय और वह विशिष्ट विभाग जिसके सब कार्य वहाँ होते हों। (पोर्टफोलियो)

संविभागी (गिन्)—पु० [सविभाग+इनि] अपना अश या भाग लेने-वाला। हिस्सेदार।

संविभाजन—पु० [स० सवि√भज्+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० सविभाजित, [सविभक्त]=विभाजन।

संविवेक—पु० [स० स-वि√विच्+घञ्] १ विवेक। २ वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा विकट अवसरो पर हम सब बाते सोच-समझकर उचित कर्तव्य या निर्णय करते है। (डिस्क्रीशन)

संविष्ट—वि० [स√विस् (प्रवेश करना)+क्त] १ आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त। २ लेटा या सोया हुआ। ३ बैठा हुआ।

संवीक्षण—पु० [सम्-वि√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्-अन][वि० सवीक्षणीय, सवीक्ष्य] १. अच्छी तरह इधर-उधर देखना। अवलोकन। २. तलाश करना। ढूँढना। ३ जाँच-पडताल। अन्वेषण।

संवीक्षा—स्त्री० [स०√सवीक्ष्+अ-टाप्] [भू० कृ० सवीक्षित, वि० सवीक्ष्य] किसी चीज या बात के बिलकुल ठीक होने की ऐसी जाँच-पडताल जिसमे ब्योरे की छोटी से छोटी भूल-चूक पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। (स्क्रूटिनी)

संवीत—भू० कृ० [सम्√वृ (सवरण करना)+क्त-य-इए] १ ढका हुआ। आवृत्त। २. कवच द्वारा सुरक्षित किया हुआ। ३ जो कुछ पहने हुए हो। ४. रुका हुआ। रुद्ध। ५ जो दिखाई न दे रहा हो। अदृश्य। लुप्त। ६ देखकर भी अनदेखा किया या टाला हुआ। पु० १. पहनने के कपडे। परिच्छद। पोशाक। २ सफेद कटभी।

संवीती—वि० [स० सवीत+इनि] जो यज्ञोपवीत पहने हो।

संवृक्त—भू० कृ० [सम्√वृज् (रखना आदि)+क्त,√वृक् (लेना)+क्त वा] १. छीना हुआ। हरण किया हुआ। २ लापरवाही से खरचा, खाया या उडाया हुआ (धन)।

संवृत—भू० कृ० [सम्√वृ (ढकना)+क्त] १. ढका या बद किया हुआ। आच्छादित। २ लपेटा हुआ। ३ घिरा या घेरा हुआ। ४ युक्त। सहित। ५ रक्षित। ६. जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। ७. जो अलग या दूर हो गया हो। ८ धीमा किया हुआ। ८ रुँधा हुआ (गला)। ९ (अक्षर या वर्ण) जिसके उच्चारण मे सवार नामक बाह्य प्रयत्न होता हो। 'विवृत' का विपर्याय।

पु० [स√वृ (लेना)+क्त] १. वरुण देवता। २ गुप्त स्थान। ३ एक प्रकार का जलबेत।

संवृति—स्त्री० [सम्√वृ (छिपाना)+क्तिन्] सवृत होने की अवस्था या भाव।

संवृत्त—भू० कृ० [स० सवृत् (रहना)+क्त] १ पहुँचा हुआ। समागत। प्राप्त। २ जो घटित हो चुका हो। ३. (उद्देश्य या विचार) जो पूरा सिद्ध हो चुका हो। ४ उत्पन्न। ५ उपस्थित। मौजूद। पु० वरुण देवता।

संवृत्ति—स्त्री० [सम्√वृत् (रहना))+क्तिन्] १ उद्देश्य, कार्य आदि की निष्पत्ति। सिद्धि। २ एक देवी का नाम।

संवृद्ध—वि० [सम्√वृध् (बढना)+क्त] १ बढा या बढाया हुआ। २ ऊपर उठा हुआ। उन्नत।

संवृद्धि—स्त्री० [सम्√वृध् (बढना)+क्तिन्] १ बढने की क्रिया या भाव। बढती। वृद्धि। २ समृद्धि।

सवेग—पु०[सम्√विज् (आकुल होना)+घञ्] १ गति आदि का पूरा वेग। चाल की तेजी। २ मन मे होनेवाली खलबली। उद्विग्नता। घबराहट। ३ डर। भय। ४ अतिरेक। ५. दे० 'मनोवेग'।

संवेजन—पु०[सम्√विज् (घबडाना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० सवेजित, वि० सवेजनीय] १. उद्विग्न करना। २ खलबली ,या हलचल मचाना। ३ भयभीत करना। डराना। ४ उत्तेजित करना। भडकाना। ५ ऊपर उठना या खडा होना। जैसे—रोम-सवेजन।

संवेत गान—पु० [स० कर्म० स०] ऐसा सगीत जिसमे अनेक प्रकार के बाजे एक साथ बजते हो। २ कई आदमियो का एक साथ मिलकर कोई चीज गाना। महगान। (कोरस)

सवेद—पु० [सम्√विद् (जानना)+घञ्] १ सुख-दु ख आदि की अनुभूति। २ ज्ञान। बोध।

संवेदन—पु० [स० सम्√विद्+ल्युट्-अन] [वि० सवेदनीय, सवेद्य, भू० कृ० सवेदित] १ मन मे सुख-दु ख आदि की होनेवाली अनुभूति या प्रतीति। २ किसी प्रकार के प्रभाव, स्पर्श आदि के कारण शरीर के अगो या स्नायुओ मे प्राकृतिक रूप से होनेवाला वह स्पन्दन जिससे मन को उसकी अनुभूति होती है। उदा०—मन् का मन था विकल हो उठा सवेदन से खाकर चोट।—प्रसाद। ३ किसी को किसी बात का ज्ञान या बोध कराना। ४ नक-छिकनी नाम की घास।

सवेदन-सूत्र—पु० [स० मध्य० स०] प्राणियो के सारे शरीर मे जाल के रूप मे फैली हुई बहुत ही सूक्ष्म नसो मे से प्रत्येक नस। (नर्व) विशेष दे० 'तत्रिका'।

संवेदनहारी—वि० दे० 'निश्चेतक'।

संवेदना—स्त्री० [स० सवेदन+टाप्] १. मन मे होनेवाला अनुभव या बोध। अनुभूति। २ किसी को कष्ट मे देखकर मन मे होनेवाला दु ख। किसी की वेदना देखकर स्वय भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना। सहानुभूति। (सिम्पैथी) ३ उक्त प्रकार का दु ख या सहानुभूति प्रकट करने की क्रिया या भाव। (कन्डोलेन्स)

संवेदनीय—वि० [सम्√विद् (जानना)+अनीयर्] १ जिसमे या जिसे सवेदन या ज्ञान हो सकता हो। २ जो जतलाया या बतलाया जा सकता हो।

सवेदित—भू० कृ० [सम्√विद् (जानना)+णिच्-क्त] १ जिसकी सवेदना के रूप मे अनुभूति हुई हो। २ जतलाया या बतलाया हुआ।

सवेद्य—वि० [सम्√विद् (जानना)+ण्यत्] [भाव० सवेद्यता] १ सवेदना के रूप मे जिसकी अनुभूति या ज्ञान हो सकता हो। २ (बात या विषय) जिसका अनुभव या ज्ञान कराया जा सकता हो। ३. सवेदनीय।

सवेद्यता—स्त्री० [स० सवेद्य+तल्-टाप्] सवेद्य होने की अवस्था, गुण या भाव। (सेन्सिबिलिटी)

संवेश—पु० [सम्√विश् (घुसना)+घञ्] १. पास आना या जाना। पहुँचना। २. प्रवेश। भेंट। ३. आसन लगाना। बैठना। ४ लेटना या सोना। ५. बैठने का आसन या पीढ़ा। ६ काम-शास्त्र मे, एक प्रकार का रति-बन्ध। ७. अग्नि देवता जो रति के अधिष्ठाता माने गये है।

संवेशक—वि० [सम्√विश्+णिच्-ण्वुल्-अक] चीजें क्रम से तथा यथा-स्थान रखनेवाला।

संवेशन—पु० [सम्√विश् (बैठना)+णिच्-ल्युट्-अन] [वि० संवेशनीय, संवेश्य, भू० कृ० संवेशित] १. बैठना। २ लेटना या सोना। ३ घुसना। पैठना। ४. स्त्री-सभोग। मैथुन। रति।

संवेशी—वि० [सम्√विश् (रहना)+णिनि]=संवेशक।

संवेश्य—वि० [सम्√विश् (बैठना)+ण्यत्] १ जिस पर लेटा जा सके। २ जिसके अन्दर घुसा या पैठा जा सके।

संवेष्ट—पु० [सम्√वेष्ट् (लपेटना)+घञ्] लपेटने का कपड़ा। बेठन।

संवेष्टक—पु० [स० सम्√वेष्ट्+णिच्-ण्वुल्-अक, कन, वा] वह जो वस्तुओं का संवेष्टन करता हो। पोटली आदि बाँधनेवाला। (पैकर)

संवेष्टन—पु० [स० सम्√वेष्ट्+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संवेष्टित] १. कोई चीज चारो तरफ से अच्छी तरह से लपेटकर बाँधना। २. वह कपड़ा, कागज, टाट या ऐसी और कोई चीज जिसमे कही भेजने के लिए कोई चीज बाँधी जाय। (पेकिंग) ३. चारो ओर से घेरना। ४ बंद करना।

संवेष्टित—वि० [सम्√वेष्ट (लपेटना)+णिच-क्त] चारो ओर से घेरा या बंद किया हुआ। परिवेष्टित। (एन्कलोज्ड)

संवैधानिक—वि० [स० संविधान+ठक्-इक] संविधान से संबंध रखने-वाला। संविधान संबंधी। (कन्स्टिट्यूशनल)

संवैधानिक राजतंत्र—पु० [स० कर्म० स०] किसी राज्य का ऐसा तन्त्र या शासन जिसका प्रधान अधिकारी ऐसा राजा हो जिसके अधिकार और कर्त्तव्य संविधान द्वारा नियमित और मर्यादित हों। (कान्स्टि-च्यूशनल मॉनर्की)

संव्यवहार—पु० [सम्-वि-अव√हृ (हरण करना)+घञ्] १. अच्छा व्यवहार या सलूक। एक दूसरे के प्रति उत्तम आचरण। २ बात-चीत का प्रसग या विषय। ३. लेन-देन या व्यवहार। ४. लगाव। सम्पर्क। ५. किसी पदार्थ का उपयोग या व्यवहार। ६ व्यवसायी। रोजगारी। ७. महाजन। ८ लोक मे प्रचलित सुबोध शब्द।

संशप्त—वि० [सम्√शप् (शाप देना)+क्त] १. जो शापग्रस्त हो। जिसे शाप मिला हो। २. जिसने किसी से प्रतिज्ञा की हो या किसी को वचन दिया हो। वचन-बद्ध।

संशप्तक—पु० [संशप्त ब० स०+कप्] १. ऐसा योद्धा जिसने बिना सफल हुए लड़ाई आदि से न हटने की शपथ खाई हो। २. कुरुक्षेत्र के युद्ध मे एक दल जिसने उक्त प्रकार से अर्जुन के वध की प्रतिज्ञा की थी पर स्वयं मारा गया था।

संशब्द—पु० [सम्√शब्द् (शब्द करना)+घञ्] १. ललकार। २. उक्ति। कथन। ३ प्रशंसा। स्तुति।

संशम—पु० [सम्√शम् (शान्त होना)+अच्] कामना, वासना आदि से पूरी तरह से निवृत्त होना। इच्छाओं आदि का दमन।

संशमन—पु० [सम्√शम् (शान्त होना)+ल्युट्—अन] १ शान्त करना। २. नष्ट करना। ३. वैद्यक मे, ऐसी दवा जो दोषो को बिना घटाए-बढ़ाए रोग दूर करे।

संशमन वर्ग—पु० [प० त०] वैद्यक मे, संशमन करनेवाली ओषधियो (कुट, देवदारु, हलदी आदि) का वर्ग।

संशय—पु० [स० सम्√शी+अच्] १ पड़े रहना। लेटना। २. मन की वह स्थिति जिसमे किसी बात के सम्बन्ध में निराकरण या निश्चय नही होता, और उस बात का ठीक रूप जानने या समझने के लिए मन मे उत्कंठा या जिज्ञासा बनी रहती है। तथ्य या वास्तविकता तक पहुँचने के लिए मन की जिज्ञासापूर्ण वृत्ति। शक। (डाउट)

विशेष—संशय बहुधा ऐसी बातों के सम्बन्ध मे होता है जिनपर पहले से और लोग कोई निश्चय तो कर चुके हों, फिर भी उस निश्चय से हमारा सन्तोष या समाधान न होता हो। हमारे मन मे यह भाव बना रहता है कि ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता। यथा—कछु संशय तो फिरती बारा।—तुलसी। प्राय शंका और सन्देह के स्थान पर भी इसका प्रयोग होता है। दे० 'शंका' और 'सन्देह'। इसी आधार पर यह न्यायशास्त्र मे १६ पदार्थों मे एक माना गया है।

३. खतरे या संकट की आशंका या संभावना। जैसे—प्राणो का संशय। ४ होना। साहित्य मे, सन्देह नामक काव्यालंकार का दूसरा नाम।

संशयवाद—पु० [स० संशय√वद्+घञ्] १ दार्शनिक क्षेत्र मे, वह सैद्धा-न्तिक स्थिति जिसमे अन्धविश्वास या श्रद्धा और शब्द प्रमाण की उपेक्षा करके यह सोचा जाता है कि अब तक जो मान्यताएँ चली आ रही हैं, वे ठीक भी हैं, तथा नहीं भी और वे ठीक हो भी सकती है और नही भी हो सकती। (स्केप्टिसिज्म)

विशेष—इसमे प्रत्यय, प्रमाण और प्रयोगात्मक अनुभव ही ग्राह्य या मान्य होते हैं। शेष बातों के सम्बन्ध मे मन मे संशय ही बना रहता है।

संशयवादी—पु० [स० संशय√वद्+णिनि] वह जो संशयवाद का अनुयायी या समर्थक हो।

संशय-सम—पु० [स०] न्याय दर्शन मे २४ जातियों अर्थात् खंडन की असगत युक्तियो मे से एक। वादी के दृष्टान्त मे साध्य और असाध्य दोनों प्रकार के धर्मो का आरोप करके उसके साध्य विषय को संदिग्ध सिद्ध करने का प्रयत्न।

संशयाक्षेप—पु० [प० त०] १ संशय का दूर होना। २ साहित्य मे एक प्रकार का अलंकार।

संशयात्मक—वि० [ब० स०] जिसमे संशय के लिए अवकाश हो।

संशयात्मा—पु० [मध्य० स०] वह जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करता हो। वह जिसके मन मे हर बात के विषय मे कुछ न कुछ संशय बना रहता हो।

संशयालु—वि० [संशय+आलुच्] बात-बात मे संशय या सन्देह करने-वाला।

संशयावह—वि० [संशय—आ√ वह (ढोना)+अच्] १ मन मे संशय उत्पन्न करनेवाला। २ जो संकट उत्पन्न कर सकता हो। भयावह।

संशयित—भू० कृ० [सम्√ शी (शयन करना)+क्त] १ (व्यक्ति) जिसके मन में संशय उत्पन्न हुआ हो। २. (बात) जिसके विषय मे संशय किया गया हो। संदिग्ध।

संशयिता—वि० [सम्√शी (शयन करना)+तृच्] सशय करनेवाला।

संशयी—वि० [सं० सशय+इनि] १ जिसके मन मे प्राय सशय होता रहता हो। शक्की स्वभाववाला। २ जिसके मन मे सशय उत्पन्न हुआ हो। ३ जो प्राय सशय करता रहता हो। जैसे—सशयी वुद्धि या स्वभाव।

संशयोपमा—स्त्री० [मध्य० स०] साहित्य मे, सशय अलकार का एक भेद जिसमे कई वस्तुओ की समानता का उल्लेख करके सशय का भाव प्रकट किया जाय।

संशरण—पु० [सम्√शृ (चूर्ण करना)+ल्युट्—अन्] १ भग करना। तोडना। २ चूर-चूर या टुकडे टुकडे करना। २ किसी की शरण लेना।

संशरुक—वि० [सम्√शृ (भग करना)+उन्—कन्] सशरण करनेवाला।

संशासन—पु० [सम्√शास् (शासन करना)+ल्युट्—अन] अच्छा शासन। उत्तम राज्य-प्रवन्ध।

संशित—भू० कृ० [स० सम्√शो+क्त] १ सान पर चढाकर चोखा या तेज किया हुआ। ३ उद्यत। तत्पर। ३ दक्ष। निपुण। ४. दृढ। पक्का। जैसे—सशित व्रत।

संशितात्मा (त्मन्)—वि० [कर्म०स०] जिसने दृढ सकल्प कर लिया हो।

संशिति—स्त्री० [स० √शो (तेज करना आदि)+क्तिच्] १ सशय। सन्देह। शक। २ सान पर चढाकर धार तेज करने की क्रिया या भाव।

संशीत—भू० कृ० [सम्√शो (गमनादि)+क्त—सप्र०] १ ठढा किया हुआ। २ ठड के कारण जमा हुआ।

संशीलन—पु० [सम्√शील् (अभ्यास करना)+ल्युट्—अन] १ नियमित रूप से अभ्यास करना। २ ससर्ग।

संशुद्ध—वि० [स०] १ यथेष्ट शुद्ध। विशुद्ध। २ अच्छी तरह साफ किया हुआ। ३ (ऋण या देन) चुकाया हुआ। ४ जाँचा हुआ। परीक्षित। ५ अपराध, दोष आदि से मुक्त किया हुआ। ६ प्रायश्चित्त आदि के द्वारा पापो से मुक्त किया हुआ।

संशुद्धि—स्त्री० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+क्तिन्] सशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

संशुष्क—वि० [स०√शुष् (सूखना)+क्त=क] १ विलकुल सूखा हुआ। खुश्क। २ नीरस। फीका। ३ जो रसिक या सहृदय न हो।

संशोधक—वि० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+णिच्-ण्वुल्—अक] १ शोधन करनेवाला। दुरुस्त या ठीक करनेवाला। २ सस्कार या सुधार करनेवाला। ३. ऋण या देन चुकानेवाला। ४ (तत्त्व) जो किसी वात या पदार्थ की शुद्धि मे सहायक होता हो। (करेक्टिव)

संशोधन—पु० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+णिच्-ल्यूट-अन] [वि० सशोधनीय सशोधित, सशुद्ध, संशोध्य] १ शुद्ध करना या साफ करना। २ त्रुटि, दोष आदि दूर करके ठीक और दुरुस्त करना। (करेक्शन) ३ आजकल विशेष रूप से किसी प्रस्ताव या प्रस्तुत किए हुए विचार के सम्बन्ध मे यह कहना कि इसमे अमुक वात घटाई या वढाई जाय अथवा उसका रूप वदलकर उसे अमुक प्रकार का वनाया जाय। (अमेण्डमेण्ट) ४ ऋण, देन आदि चुकाने की क्रिया या भाव।

संशोधनीय—वि० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+अनीयर्] जिसका सशोधन हो सके या होने को हो।

संशोधित—भू० कृ० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+णिच्+क्त] १ जिसका सशोधन हुआ हो। २ जो ठीक, दुरुस्त या शुद्ध किया गया हो। ३ (ऋण या देन) जो चुकाया गया हो।

संशोधी—वि० [स० √शुध् (शुद्ध करना)+णिनि] [स्त्री० सशोधिनी] सशोधक।

संशोध्य—वि० [स० √शुध् (शुद्ध करना)+ण्यत्]=सशोधनीय।

संशोभित—वि० [सम्√शुभ्] (शोभित होना)+णिच्+क्त] १ अलकृत। २ सुशोभित।

संशोषण—पु० [सम्√शुष् (सोखना)+णिच्—ल्युट्—अन] [वि० सशोषणीय, सशोष्य] १ अच्छी तरह सोखना। २ सुखाना।

संशोषित—भू० कृ० [सम् √शुष् (सोखना)+क्त] सुखाया या सोखा हुआ।

संशोषी (षिन्)—वि० [सम्+शुष् (सुखना)+णिनि] १ सोखनेवाला। २ सुखानेवाला। जैसे—सशोषी ज्वर।

संशोष्य—वि० [सम्√शुष् (सुखाना)+ण्यत्] जो सोखा जा सकता हो या सोखा जाने को हो।

संश्रय—पु० [सम्√श्रि (सेवा करना)+अच्] [भू० कृ० सश्रित] १ सयोग। मेल। २ आज-कल कुछ विशिष्ट प्रकार के दलो, शक्तियो आदि का किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए आपस मे मेल या मैत्री स्थापित करना। (एलायन्स) ३ लगाव। सम्पर्क। ४ आश्रय। शरण। ५ अवलम्व। सहारा। ६ आश्रय या शरण लेने की जगह। ७ अश। भाग। ८ घर। मकान। ९ उद्देश्य। लक्ष्य। १०. अश। भाग। ११ राजाओ मे पारस्परिक और सहायता के लिए होनेवाली सधि।

संश्रयण— पु० [सम् √ श्रि (सेवा करना)+ल्युट्-अन] [वि० सश्रयणीय, सश्रयी, भू० कृ० सश्रित] १ सहारा लेना। अवलम्व पकडना। २. किसी के पास जाकर उसका आश्रय लेना। पनाह लेना।

संश्रयणीय—वि० [सम्+श्रि (सेवा करना)+अनीयर्] १ जिसका आश्रय लिया जा सके। २ जिसे आश्रय दिया जा सके।

संश्रयी—वि० [सम्+श्रि (सेवा करना)+इनि] १ सश्रय अर्थात् आश्रय या सहारा लेनेवाला। २ शरण लेनेवाला।
पु० नौकर। भृत्य।

संश्रवण—पु० [सम्√श्रु (सुनना)+ल्युट्—अन] [वि० सश्रवणीय, सश्रुत] १ अच्छी तरह ध्यान लगाकर सुनना। २. अगीकृत या स्वीकृत करना। ३ वचन देना। वादा करना।

संश्राव—पु० [सम्√श्रु (सुनना)+घञ्] [वि० सश्रावणीय, भू० कृ० सश्रावित]=सश्रवण।

संश्रावक—वि० [सम्√ श्रु (सुनना)+ण्वुल्—अक] १ सुननेवाला। श्रोता। २ सुनकर मान लेनेवाला।
पु० चेला। शिष्य।

संश्रावित—भू० कृ० [सम्+श्रु (सुनना)+णिच्—क्त] १ सुनाया हुआ। २ जोर से पढकर सुनाया हुआ।

संश्राव्य—वि० [सम्√ श्रु (सुनना)+ण्यत्] १. जो सुना जा सके। २ जो सुनाया जा सके।

संश्रित—भू० कृ० [स० √ श्रि (सेवा करना)+क्त] १ जुडा या मिला

हुआ। सयुक्त। २ साथ लगा हुआ। सलग्न। ३ जो किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी दल या वर्ग मे मिल गया हो। जिसने किसी के साथ सश्रय स्थापित किया हो। (एलायड) ४. टाँगा, टिकाया या लटकाया हुआ। ५ गले से लगाया हुआ। आलिंगित। ६ शरण मे आया हुआ। शरणागत। ७. जिसे आश्रय देकर शरण मे रखा गया हो। ८ जिसने सेवा करना स्वीकृत किया हो। ९. जो किसी काम या बात के लिए दूसरे पर आश्रित हो। परावलम्बी।

पु० नौकर। भृत्य।

संश्रुत—भू० कृ०[सम्√श्रु (सुनना)+क्त]१ अच्छी तरह सुना हुआ। २. अगीकृत। स्वीकृत।

संश्लिष्ट—भू० कृ०[स०]१ किसी से अच्छी तरह जुडा, मिला, लगा या सटा हुआ। २. किसी के साथ मिलाकर एक किया हुआ। एकीकृत। ३ मिश्रित या सम्मिलित किया हुआ। ४. गले लगाया हुआ। आलिंगित। ५ सश्लेषण की क्रिया से किसी के साथ बना या मिला हुआ। श्लिष्ट। (सिन्थेटिक)

पु०१ ढेर। राशि। २ समूह। ३. वास्तु-शास्त्र मे, एक प्रकार का मडप।

संश्लेष—पु०[स० √श्लिष् (मिलाना)+घञ्]१. मिलने या मिलाये जाने की क्रिया या भाव। २ गले लगाना। आलिंगन। परिरम्भण।

संश्लेषक—वि०[स०] सश्लेषण या सश्लेष करनेवाला।

संश्लेषण—पु० [सम्√ श्लिष् (मिलाना)+ल्युट्—अन] [वि० सश्लेषणीय, भू० कृ० सश्लेषित, सश्लिष्ट]१. किसी के साथ जोडना, मिलाना या लगाना। २ टाँगना या लटकाना। ३ वह जिससे कुछ जोडा या बाँधा जाय। बधन। ४ कार्य से कारण अथवा किसी नियम या सिद्धान्त से किसी चीज या बात के परिणाम या फल का विचार करना। मिलान करना। 'विश्लेषण' का विपर्याय। (सिन्थेसिस) ५ भाषा-विज्ञान मे, वह स्थिति जिसमे किसी पद से अर्थ का भी और पर-सर्ग आदि के द्वारा सबध का भी बोध होता है। जैसे—'मेरा' शब्द मे 'मैं' वाले अर्थ तत्त्व के सिवा 'रा' पर-सर्ग के कारण सबध सूचक तत्त्व भी सम्मिलित है। (एग्लूटिनेशन)

विशेष—सस्कृत व्याकरण मे इसी तत्त्व या प्रक्रिया को 'सामर्थ्य' कहते है।

संश्लेषित—भू० कृ०[सम् √श्लिष् (मिलाना)+णिच्—क्त] जिसका सश्लेषण किया गया हो या हुआ हो।

संश्लेषी—वि०[सम् √ श्लिष् (मिलाना)+इनि] [स्त्री० सश्लेषिणी] सश्लेषक।

संषा†—स्त्री०=सख्या।

†पु०=शख।

संस†—पु०=सशय।

संसइ†—पु०=सशय।

संसक्त—भू० कृ०[स०]१ किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ। (कन्टिगुअस) २ जुडा हुआ। सम्बद्ध। ३ किसी कार्य मे लगा हुआ या प्रवृत्त। ४ किसी के प्रेम मे फँसा हुआ। आसक्त। ५ सासारिक विषय-वासना मे लगा हुआ। ५ प्रतियोगिता, युद्ध, विवाद आदि मे किसी से भिड़ा हुआ। ७ युक्त। सहित। ८ घना। सघन।

संसक्ति—स्त्री०[स०] [वि० ससक्त]१. किसी के साथ सटे या लगे होने का भाव। (कन्टीगुइटी) २ एक ही तरह के पदार्थों या तत्त्वों का आपस मे मिल या सटकर एक रूप होना। ३ वह शक्ति जिसमे वस्तु के सब अग एक साथ लगे या सटे रहते हैं। (कोहेशन) ४ सबध। लगाव। ५ विशेष अनुराग या आसक्ति। लगन। ६ लीनता। ७ प्रवृत्ति।

ससगर†—वि०[स० शस्य=अन्न, फसल+आगार]१ (भूमि) जिसमे पैदावार अधिक हो। उपजाऊ। उर्वर। २ लाभ-दायक।

संसज्जन—पुं०[स० सम्√सज्ज् (तैयार होना)+ल्युट्—अन, [भू० कृ० ससज्जित]१ अच्छी तरह सजाने की क्रिया या भाव। २. आज-कल युद्ध आदि के लिए सैनिक एकत्र करने और उन्हे अस्त्र-शस्त्र आदि से पूर्णत युक्त करने की क्रिया। (मोबिलाइजेशन)

संसद—स्त्री० [स०] १. समाज। सभा। मडली। २ किसी विशेष कार्य के लिए सगठित बहुत से लोगों का निकाय या समुदाय। (एसोसिएशन) ३. आज-कल राज्य या शासन सम्बन्धी कार्यों मे सहायता देने, पुराने विधानो मे सशोधन करने तथा नये विधान बनाने के लिए प्रजा के प्रतिनिधियो की चुनी हुई सभा। (पार्लमेण्ट) ४ प्राचीन भारत मे (क) राज-सभा। (ख) न्याय सभा। ५ एक प्रकार का यज्ञ जो २४ दिनो मे पूरा होता था।

संसदीय—वि०[स० ससद] ससद-सबधी। सांसद।

संसय†—पु०=सशय।

ससरण—पु०[सम्√सृ (गमनादि)+ल्युट्—अण्] [वि० ससरणीय, ससरित, ससृत]१ आगे की ओर खिसकना या बढना। सरकना। २. गमन करना। चलना। ३. सेना या सैनिको का बिना बाधा के आगे बढ़ते चलना। ४. एक जीवन त्यागकर दूसरा नया जन्म लेना। ५ बहुत दिनो से चला आया हुआ मार्ग या रास्ता। ६ जगत्। ससार। ७ युद्ध का आरम्भ। ८ लडाई छिडना। ९ प्राचीन भारत में, नगर के मुख्य द्वार के बाहर बना हुआ वह स्थान जहाँ फाटक बन्द हो जाने के बाद आये हुए यात्री रात के समय ठहरा करते थे।

संसर्ग—पु०[स०]१ ऐसा लगाव या सम्बन्ध जो पास या साथ रहने से उत्पन्न होता है। (कन्टैक्ट) जैसे—(क) ससर्ग से ही गुण और दोष उत्पन्न होते है। (ख) यह रोग ससर्ग से फैलता है। २ व्यावहारिक घनिष्ठता। मेल-जोल। ३ सपर्क। सबध। ४ किसी के साथ रहने की क्रिया या भाव। सहवास। ५. मैथुन। सभोग। ६ सपत्ति का ऐसी स्थिति मे होना कि परिवार के सब लोगो का उसपर समान अधिकार हो। ७ वैद्यक मे, वात, पित्त, और कफ मे से दो का एक साथ होनेवाला प्रकोप या विकार। ८ वह बिन्दु जहाँ एक रेखा दूसरी को काटती हो।

संसर्गज—वि०[स०]१ ससर्ग से उत्पन्न होनेवाला। २. (रोग) जो किसी रोगी को छूने से उत्पन्न होता है। छुतहा। (इन्फेक्सस)

विशेष—सक्रामक और ससर्गज रोगो मे अतर यह है कि सक्रामक रोग तो पानी, हवा आदि के द्वारा भी फैलते है, परन्तु ससर्गज रोग केवल रोगी के ससर्ग मे रहने अथवा उसे छूने मात्र से उत्पन्न होते है। अर्थात् ससर्गज रोग तो केवल प्रत्यक्ष सबध से उत्पन्न होते है, परन्तु सक्रामक रोग अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष दोनो रूपो मे फैलते है।

संसर्ग-दोष—पु०[म०] वह दोष या बुराई जो किसी के संसर्ग से उत्पन्न हो।

संसर्ग-रोध—पु०[म०]१. ऐसी व्यवस्था जो किसी स्थान को संक्रामक रोगों आदि से बचाने के लिए बाहर से आनेवाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखकर की जाती है। २. उक्त कार्य के लिए अलग या नियत किया हुआ स्थान। (क्वारेन्टाइन)

संसर्ग-विद्या—स्त्री० [प० त०] लोगों से मेल-जोल पैदा करने की कला। व्यवहार-कुशलता।

संसर्गाभाव—पु०[प० त०]१. संसर्ग का अभाव। सम्बन्ध का न होना। २ न्याय शास्त्र मे अभाव का वह प्रकार या भेद जो संसर्ग न रहने की दशा में माना जाता है। जैसे—यदि घर मे घडा न हो तो वह संसर्गाभाव माना जायगा। क्योंकि घर में न होने पर भी कहीं बाहर तो घडा होगा ही।

संसर्गी—वि० [संसर्ग+इनि, सम्√सृज् (छोडनादि)+घिनुण वा][स्त्री० संसर्गिन] १ संसर्ग या लगाव रखनेवाला। २ प्राय या सदा साथ रहनेवाला। संगी। साथी।

पु० धर्मशास्त्र आदि के अनुसार वह जो पैतृक सम्पत्ति का विभाग हो जानेपर भी कुटुम्बियों आदि के साथ रहता हो।

संसर्जन—पु०[सम√सृज् (देना आदि)+ल्युट्—अन] [वि० संसर्जनीय, संसर्ज्य भू० कृ० संसर्जित] १ संयोग होना। मिलना। २ जुडना या सटना। ३ अपनी ओर मिलाना। ४ त्याग करना। छोडना।

संसर्प—पु०[सम्√सृप (धीरे चलना)+घञ्] १ रेंगना। २ खिसकना। सरकना। ३ ज्योतिष मे, चन्द्र-गणना के अनुसार वह अधिक मास जो किसी क्षय मास वाले वर्ष मे पडता है।

संसर्पण—पु०[स०√सृप् (धीरे चलना)+ल्युट्—अन] [वि० संसर्पणीय, भू० कृ० संसर्पित] १ धीरे धीरे आगे की ओर चलना या बढना। २ खिसकना या रेंगना। ३ उक्त प्रकार या रूप से ऊपर की ओर बढना या चढना। ४ सहसा आक्रमण करना। अकस्मात् हमला करना।

संसर्पी—वि० [संसर्प+इनि, सम्√सृप् (धीरे चलना)+णिनि वा] १ संसर्पण करनेवाला। २ वैद्यक मे पानी पर तैरने या उतरनेवाला।

संसा†—पु०१ =संशय। २ =सांस। ३ =सँडसा।

संसादन—पु० [स० सम्√सद् (गत्यादि)+णिच्—ल्युट—अन] [वि० संसादनीय, संसाद्य, भू० कृ० संसादित]१ इकट्ठा करना या एकत्र करना। जमा करना। २ क्रम या सिलसिले मे रखना या लगाना।

संसाधक—वि०[सम्√साध् (सिद्ध करना)+ण्वुल्—अक] जीतने या वश मे करनेवाला।

संसाधन—पु० [सम्√साध् (सिद्ध करना)+ल्युट्—अन] [वि० संसाधनीय, संसाध्य, भू० कृ० संसाधित] १ कोई काम अच्छी तरह पूरा करना। २ काम की तैयारी। आयोजन। ३ जीत या दबाकर वश मे करना। दमन करना।

संसाधनीय—वि०[सम्√साध् (सिद्ध करना)+अनीयर्]=संसाध्य।

संसाध्य—वि० [सम्√ साध् (सिद्ध करना)+ण्यत्] १ काम जो पूरा किया जा सकता हो या हो सकता हो। २ जो जीता या दबाया जा सकता हो। ३. जो किये जाने के योग्य हो। ४ जो जीते या दबाए जाने के योग्य हो।

संसार—पु०[स०]१. लगातार एक अवस्था मे दूसरी अवस्था में जाते रहना। २ यह जगत् या दुनिया जिसमे जीव या प्राणी आते-जाते रहते हैं। इहलोक। मर्त्यलोक। ३ इस संसार मे बार बार जन्म लेने और मरने की अवस्था। ४ जीवन तथा संसार का प्रपंच और माया। ५. घर-गृहस्थी और उसमे का जीवन। उदा०—मेरे सपनो मे कलरव का संसार आँख जब खोल रहा।—प्रसाद। ६ समूह। (क्व०) ७ दुर्गन्ध खादिर। विट् खदिर।

संसार-गुरु—पु०[स०] १. संसार को उपदेश देनेवाला। जगद्गुरु। २ कामदेव।

संसार-चक्र—पुं०[मध्यम० स०] १ बार बार इस संसार मे आकर जन्म लेने और मरकर यह संसार छोडने का क्रम या चक्र। २ संसार का जंजाल या झंझट। सांसारिक प्रपंच। ३ संसार मे होता रहनेवाला उलट-फेर या परिवर्तन।

संसारण—पु० [सम्√सृ (गमनादि)+णिच्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० संसारित] गति देना। चलाना।

संसार-तिलक—पु०[स० प० त०]१ एक प्रकार का बढिया चावल।

संसार-पथ—पु० [प०त०] १ संसार मे आने का मार्ग। २. स्त्रियो की जननेंद्रिय। भग। योनि।

संसार-भावन—पु०[स०] संसार को दुःखमय समझना।

संसार-सारथि—पु०[स०]१ संसार की जीवन यात्रा चलानेवाला; परमेश्वर। २ शिव।

संसारी—वि०[सम्√सृ (गत्यादि)+णिन् संसार+इनि वा][स्त्री० संसारिणी] १ संसार-सम्बन्धी। लौकिक। सांसारिक। २ घर मे रहकर घर-गृहस्थी चलाने या गृहस्थ जीवन व्यतीत करनेवाला। ३ संसार मे आकर बार-बार जन्म लेने और मरनेवाला। ४. लोक-व्यवहार मे कुशल। दुनियादार।

संसिक्त—भू० कृ० [सम्√सिच् (सींचना)+क्त] अच्छी तरह सींचा हुआ। जिसपर खूब पानी छिडका गया हो।

संसिद्ध—वि० [सम्√सिध् (पूरा करना)+क्त] १ (काम) जो अच्छी तरह किया गया हो या ठीक तरह से पूरा उतरा हो। २. (खाद्य पदार्थ) जो अच्छी तरह सीझा या पका हो। ३ प्राप्त। लब्ध। ४ नीरोग। स्वस्थ। ५ उद्यत। प्रस्तुत। ६ कुशल। दक्ष। निपुण। ८. जिसने योग-साधन करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो।

संसिद्धि—स्त्री० [सम्√सिध् (पूरा होना)+क्तिन्]१ संसिद्ध होने की अवस्था या भाव। २ सफलता। ३ पक्वता। ४ पूर्णता। ५. स्वस्थता। ६ परिणाम। ७ मुक्ति। ८ अवश्य और निश्चित होनेवाली बात। अवश्यभावी। ९ निसर्ग। प्रकृति। १० स्वभाव। ११ मदमत्त स्त्री।

संसी†—स्त्री०=सँडसी।

संसुप्त—भू० कृ०[सम्√सुप् (शयन करना)+क्त] गहरी नींद मे सोया हुआ।

संसुप्ति—स्त्री०[स०] गहरी नींद।

संसूचक—वि० [सम्√ सूच् (सूचना देना)+णिच्—ण्वुल्—अक] स्त्री० संसूचिका]१ प्रकट करने या जतानेवाला। २ भेद या रहस्य बतलानेवाला। ३ समझाने-बुझानेवाला। ४ डाँटने-डपटनेवाला।

संसूचन—पु० [सम्√सूच् (सूचना देना)+णिच्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० ससूचित] [वि० ससूचनीय, ससूच्य] १ प्रकट या जाहिर करना। २. वतलाना। ३ भेद खोलना। ४ समझाना-बुझाना। ५. डाँटना-डपटना। फटकार वताना।

संसूची—वि०[सम्√ सूच् (सूचना देना)+णिनि] [स्त्री० ससूचिनी]=ससूचक।

संसूच्य—वि० [सम्√ सूच् (सूचना देना)+ण्यत्] जिसके सम्वन्ध मे या जिसके प्रति ससूचन हो सके। ससूचन का अधिकारी या पात्र।

पु० दे० 'सूच्य'। (नाटक का)

संसृति—स्त्री० [सम्√सृ (गत्यादि)+क्तिन्] १. ससार मे वार-वार जन्म लेने की परम्परा। आवागमन। २. जगत्। ससार।

संसृष्ट—भू० कृ० [स०] १. जो एक साथ उत्पन्न या आविर्भूत हुए हो। २. जो आपस मे एक दूसरे से मिले हो। सश्लिष्ट। ३. परस्पर सवद्ध। ४ जो किसी के अतर्गत या अतर्भूत हो। ५. वहुत अधिक हिला-मिला हुआ। वहुत मेल-जोलवाला। ६ (काम) पूरा या सम्पन्न किया हुआ। ७ इकट्ठा किया हुआ। सगृहीत। ८ वैद्यक मे, (रोगी) जिसका पेट वमन, विरेचन आदि के द्वारा साफ कर दिया गया हो। ९. धर्म शास्त्र मे, (परिवार) जो वँटवारा हो चुकने के वाद भी मिल कर एक हो गये हो।

पु०१ घनिष्ठता। हेल-मेल। २ एक पौराणिक पर्वत।

संसृष्टत्व—पु० [स० ससृष्ट+त्व] १ ससृष्ट होने की अवस्या, गुण या भाव। २ सपत्ति का वँटवारा हो जाने के वाद फिर हिस्सेदारो का एक मे मिलकर रहना। (स्मृति)

संसृष्ट होम—पु० [स०] अग्नि और सूर्य को एक साथ दी जानेवाली आहुति।

संसृष्टि—स्त्री० [स० सम्√सृज् (वना)+क्तिव्+पत्व स्टुत्व] १ ससृष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २ घनिष्ठता। हेल-मेल। ३ मिलावट। मिश्रण। ४. लगाव। सम्वन्ध। ५. वनावट। रचना। ६ सग्रह। ७ धर्म-शास्त्र मे, वँटवारा या विभाजन हो जाने पर भी परिवारो का फिर मिलकर एक हो जाना। ८ साहित्य में, दो या अधिक काव्यालकारो का इस प्रकार ससृष्ट होना या साथ साथ आना कि वे सव अलग अलग दिखाई दे। इसकी गणना एक स्वतन्त्र अलकार के रूप मे होती है।

संसृष्टी (ष्टिन्)—पु० [स० सृष्ट+इनि] धर्मशास्त्र मे, ऐसे परिवार या सम्वन्धी जो विभाजन हो चुकने पर भी मिलकर एक हो गये हों।

संसेक—पु०[स० सम्√सिच् (सीचना)+घञ्] अच्छी तरह किया जानेवाला पानी आदि का छिडकाव।

संसेचन—पु०[स०] सभोग के समय नर का वीर्य मादा के अड मे मिलना जो प्रजनन के लिए आवश्यक होता है। (इन्सेमिनेशन)

विशेष—अव यह क्रिया रासायनिक पद्धतियो मे भी होने लगी है।

संसेवन—पु०[स० सम्√सेव् (सेवा करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० ससेवित, वि० ससेवनीय, ससेव्य] १ अच्छी तरह की जानेवाली सेवा। २ सदा सेवा मे उपस्थित रहने की क्रिया या भाव। ३ अच्छी तरह किया जानेवाला उपयोग या व्यवहार। ४ अच्छी तरह किया जानेवाला आदर-सत्कार।

संसेवा—स्त्री०[स० स√सेव् (सेवा करना)+अ]=ससेवन।

संसेवित—भू० कृ० [स० सम् √सेव् (सेवा करना)+क्त] जिसका अच्छी तरह से ससेवन किया गया हो अथवा हुआ हो। उदा०—सुरागना, मपदा, सुराओ से ससेवित, नर पशुओ भूभार मनुजता जिनसे लज्जित।—पन्त।

संसेवी (विन्)—वि०[स०, सम्√ सेव् (सेव् करना)+णिनि] ससेवन करनेवाला।

पु० टहलुआ। खिदमतगार।

संसेव्य—वि० [स० सम्√सेव् (सेवा करना)+यत्] जिसका ससेवन हो सकता हो अथवा आवश्यक या उचित हो।

संसौ†—पु० [स० श्वास] १. श्वास। साँस। २. जीवनी-शक्ति। प्राण।

पु०=सशय।

संस्करण—पु० [सं० सम्√कृ (करना)+ल्युट—अन —सुट्] १ सस्कार करने की क्रिया या भाव। २. अच्छी तरह ठीक, दुरुस्त या शुद्ध करना। सुधारना। ३ अच्छा, नया और सुन्दर रूप देना। ४ द्विजातियो के लिए विहित सस्कार करना। ५ आज-कल पुस्तको, समाचार-पत्रो आदि की एक वार मे और एक तरह की होनेवाली छपाई। आवृत्ति (एडिशन) जैसे—(क) पुस्तक का राज सस्करण, (ख) समाचार पत्र का प्रात सस्करण।

संस्कर्ता—वि०[स० सम्√कृ (करना)+तृच्-सुट्] सस्कार करनेवाला।

संस्कार—पु०[स०]१ किसी चीज को ठीक या दुरुस्त करके उचित रूप देने की क्रिया। जैसे—व्याकरण मे होनेवाला शब्दो का सस्कार। २ किसी चीज की त्रुटियाँ, दोष, विकार आदि दूर करके उसे उपयोगी तथा निर्मल वनाने की क्रिया। जैसे—वैद्यक मे होनेवाला पारे का सस्कार। ३ किसी प्रकार की असगति, भद्दापन आदि दूर करके उसे शिष्ट और सुन्दर रूप देने की क्रिया। जैसे—भाषा का सस्कार। ४ धो-पोछ या माँजकर की जानेवाली सफाई। जैसे—शरीर का सस्कार। ५ किसी को उन्नत, सभ्य, समर्थ, आदि वनाने के लिए कुछ वताने, सिखाने या अच्छे मार्ग पर लाने की क्रिया। जैसे—बुद्धि का सस्कार। ६ मनोवृत्ति, स्वभाव आदि का परिष्करण तथा सशोधन करने की क्रिया। (कल्चर) ७ उपदेश, शिक्षा सगीत, आदि के प्रभाव का वह वहुत कुछ स्थायी परिणाम जो मन मे अज्ञात अथवा ज्ञात रूप से वना रहता हे और हमारे परवर्ती आचार-व्यवहार, रहन-सहन आदि का स्वरूप स्थिर करता है। जैसे—वाल्यावस्था का सस्कार, देश, समाज आदि के कारण वननेवाला सस्कार। ८ भारतीय दार्शनिक क्षेत्र मे, इन्द्रियों के विषय-भोग से मन पर पडनेवाला सस्कार। ९ धार्मिक क्षेत्र मे पूर्वजन्मो के किए हुए आचार-व्यवहार, पाप-पुण्य आदि का आत्मा पर पडा हुआ वह प्रभाव जो मनुष्य के परवर्ती जन्मो मे उसके कार्यों, प्रवृत्तियो, रुचियो आदि के रूप मे प्रकट होता है। १०. सामाजिक क्षेत्र मे, धार्मिक दृष्टि से किया जानेवाला कोई ऐसा कृत्य जो किसी मे कोई पात्रता अथवा योग्यता उत्पन्न करनेवाला माना जाता हो और जिसका कुछ विशिष्ट अवसरो के लिए विधान हो। (सेक्रामेन्ट) जैसे—(क) जातिच्युत या विधर्मी को जाति या धर्म मे मिलाने के लिए किया जानेवाला सस्कार। (ख) मृतक का अन्त्येष्टि सस्कार। ११ हिन्दुओ मे, जन्म से मरण

तक होनेवाले वे विशिष्ट धार्मिक कृत्य जो द्विजातियों के लिए विहित हैं। जैसे—मुडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि सस्कार। (रिचुअल, राइट)

विशेष—मनुस्मृति मे, ये १२ सस्कार कहे गये हैं—गर्भाधान, पुसवन, सीमन्तोन्नयन, जाति-कर्म, नाम-कर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडा-कर्म उपनयन, केशात, समावर्तन और विवाह। परवर्ती स्मृतिकारो ने इनमे चार और सस्कार बढाकर इनकी सख्या १६ कर दी है। परन्तु इन नये सस्कारो के नामो के सबध मे उनमे मतभेद है।

१२ वैशेषिक दर्शन मे गुण का वह धर्म जिसके कारण या फलस्वरूप वह अपने आपको अभिव्यक्त करता है। १३ अन्न आदि कूट-पीसकर पकाने और उन्हे खाद्य बनाने की क्रिया। १४ स्मरण-शक्ति। १५ अलकरण। सजावट। १६ पत्थर आदि का वह टुकडा जिससे रगडकर कोई चीज साफ की जाती हो। जैसे—पैर के तलुओं के रगडने का झाँवाँ, धातुएं चमकाने के लिए पत्थर की बटिया आदि।

संस्कारक—वि०[स०] सस्कार करनेवाला।

संस्कारवर्जित—वि० [स०] (व्यक्ति) जिसका धर्मशास्त्र के अनुसार सस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कारवान् (वत्)—वि० [स० सस्कार+मतुप्—म=व-नुम् दीर्घ] १ जिसका सस्कार हुआ हो। २ जिस पर किसी सस्कार का प्रभाव दिखाई देता हो। ३ सुन्दर।

संस्कारहीन—वि० [स०] (व्यक्ति) जिसका धर्म-शास्त्र के अनुसार सस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कारी—वि०[स० स√ कृ (करना)+णिनि, सस्कारिन्] जिसका सस्कार हुआ हो।

पु० एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ होती हैं।

सस्कार्य—वि० [स० स√कृ (करना)+ण्यत्]१ जिस का सस्कार हो सकता हो। २ जिसका सस्कार होना आवश्यक या उचित हो।

सस्कृत—वि० [सम् √ कृ (करना)+क्त—सुट्] [भाव० सस्कृति] १ जिसका सस्कार किया गया हो। २ परिमार्जित। परिष्कृत। ३. निखारा और साफ किया हुआ। ४. (खाद्य पदार्थ) पकाया या सिझाया हुआ। ५ ठीक किया या सुधारा हुआ। ६ अच्छे रूप मे लाया हुआ। सँवारा या सजाया हुआ। ७ जिसका उपनयन सस्कार हो चुका हो।

स्त्री० भारतीय आर्यो की प्राचीन साहित्यिक और शिष्ट समाज की भाषा जो जन-साधारण की बोल-चाल की तत्कालीन प्राकृत भाषा को परिमार्जित करके प्रचलित की गई थी। देव-वाणी।

विशेष—इस भाषा के दो मुख्य रूप हैं—वैदिक और लौकिक। पाणिनी ने अपने व्याकरण के द्वारा इसे एक निश्चित और परिनिष्ठित रूप दिया था।

संस्कृति—स्त्री०[स० सम्√कृ (करना)+क्तिन्—सुट्] [वि० सास्कृतिक] १. सस्कार करने अर्थात् किसी वस्तु को सस्कृत रूप देने की क्रिया या भाव। परिमार्जित, शुद्ध या साफ करना। सस्कार। २. अलकृत करना। सजाना। ३ आज-कल किसी समाज की वे सब बातें जिनसे विदित होता है कि उसने आरम्भ से अब तक कुछ विशिष्ट क्षेत्र मे कितनी उन्नति की है।

विशेष—आधुनिक विद्वानो के मत से सस्कृति भी सभ्यता का ही दूसरा अग या पक्ष है। सभ्यता मुख्यत आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सिद्धियों से सबद्ध है, और सस्कृति आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा मानसिक सिद्धियों से सबद्ध है। यह सस्कृति कला-कौशल के क्षेत्र की उन्नति, सामाजिक रहन-सहन और परम्परागत योग्यताओ तथा विशिष्टताओं के आधार पर आँकी जाती है। सभ्यता मानव समाज की बाह्य और भौतिक सिद्धियो की मापक है, और सस्कृति लोगो के आतरिक तथा मानसिक उन्नति की परिचायक होती है। इसी लिए सभ्यता समाज-गत और सस्कृति मनोगत होती है।

४. छदशास्त्र मे २४ वर्णो वाले वृत्तो की सज्ञा।

संस्कृतीकरण—पु०[स०]१ कोई चीज सस्कृत करने की क्रिया या भाव। २ अन्य भाषा के शब्दों को सस्कृत रूप देना।

संस्क्रिया—स्त्री०[स० सम्√कृ (करना)+श्—यक—रिपङ्—रिट् इयङ् वा] सस्कार।

संस्खलन—पु० [स० सम्√स्खल् (गिरना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० स्खलित]=स्खलन।

सस्तंभ—पु० [सम्√स्तम्भ् (रोकना)+घञ्] १ गति का सहसा होनेवाला रोध। एकबारगी रुक जाना। २ निश्चेष्टता। ३ स्तब्धता। ४ लकवा या इसी प्रकार का कोई ऐसा रोग जिसमे कोई अग बेकार और सुन्न हो जाता हो। ५ दृढता। ६ धीरता। ७ जिद। हठ। ८ आधार। सहारा।

संस्तंभन—पु० [स०] [वि० सस्तब्ध, सस्तभनीय, सस्तभित] १ गति का सहसा रुकना या रोकना। एकबारगी ठहर जाना। २ निश्चेष्ट या स्तब्ध करना या होना। ३ सहारा देना या लेना।

संस्तंभी (भिन्)—वि० [स० सम्√स्तम्भ् (रोकना)+णिनि] सस्तभन करनेवाला।

सस्तब्ध—वि० [स० सम्√स्तम्भ् (रुकना)+क्त=ध-भ्-म लोप] १ एकबारगी रुका या ठहरा हुआ। २. निश्चेष्ट। स्तब्ध। ३. सहारा देकर रोका हुआ।

संस्तर—पु० [स० सम्√स्तृ (रुकना)+अच्] १. तह। परत। २ घास, फूस आदि की चटाई या बिछौना। ३. घास, फूस आदि का छप्पर। ४. बिछौना या बिस्तर। ५ जलाशय या नदी का नीचेवाला भू-भाग। तल। ६ भू-गर्भ मे, कोई ऐसी तह या परत जो एक ही तरह के तत्त्व या पदार्थ की बनी हो, अथवा किसी विशिष्ट काल मे जमी हो। (बेड) जैसे—कोयले का सस्तर, चूने का सस्तर आदि।

संस्तरण—पु०[स० सम्√स्तृ (आच्छादन करना)+ल्युट्—अन] १ फैलाना। पसारना। २ बिछौना। बिछावन। ३ छितराना। बिखेरना। ४ तह या परत चढाना। ५ बिछौना। बिस्तर।

संस्तव—पु०[स०] १ प्रशसा। स्तुति। तारीफ। २ उल्लेख। कथन। जिक्र। ३. जान-पहचान। परिचय। ४. घनिष्ठता। हेल-मेल।

संस्तवन—पु० [स० सम्√स्तु (प्रशसा करना)+ल्युट्—अन] १ प्रशसा करना। स्तुति करना। २. कीर्ति या यश का गान करना। ३. आज-कल किसी की प्रशसा करते हुए उसके सम्बन्ध मे यह कहना कि यह अमुक (काम, बात या सेवा के लिए उपयुक्त और योग्य है। (कॉमि-न्डेशन)

संस्तार—पु० [स०] १ तह। परत। २. बिछौना। बिस्तर। ३ खाट या पलग। शय्या। ४. एक प्रकार का यज्ञ।

संस्ताव—पु० [स०सम्√स्तु (स्तुति करना)+घञ्] १. यज्ञ मे स्तुति करनेवाले ब्राह्मणो के बैठने का स्थान। २ प्रशसा। स्तुति। ३ जान-पहचान। परिचय।

संस्ताव्य—वि० [सम्√स्तु (प्रशसा करना)+विच्+यत्] प्रशसनीय। जिसका या जिसके सम्बन्ध मे सस्तवन हो सकता हो। (कॉमेडेबिल)

संस्तीर्ण—वि० [स० सम्√स्तृ (अच्छादन)+क्त-रू-दीर्घ] १. फैलाया या पसारा हुआ। २. विछाया हुआ। ३. छिटकाया या बिखेरा हुआ। ४. ढका या छिपाया हुआ।

संस्तुत—वि०[स०सम्√स्तु (स्तुति करना)+क्त]१ जिसकी खूब प्रशसा या स्तुति की गई हो। २. साथ मे गिना हुआ। ३ जाना हुआ। ज्ञात। ४ परिचित।

संस्तुति—स्त्री०[स० सम्√स्तु (स्तुति करना)+क्तिन्] १ अच्छी या पूरी तरह से होनेवाली तारीफ या स्तुति। २. अनुशसा। सिफारिश। (रिकमेन्डेशन)

संस्तृत—भू० कृ० [स० सम्√स्तृ (आच्छादन करना)+क्त]=सस्तीर्ण।

संस्थ—पु० [स० स√स्था(ठहरना)+क] १ अपने देश का निवासी। स्वदेश वासी। २ चर। दूत।

संस्था—स्त्री० [स०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। स्थिति। २. प्रगट होने की क्रिया या भाव। अभिव्यक्ति। आविर्भाव। ३ बँधा हुआ नियम, मर्यादा या विधि। रुढि। ४. आकृति। रूप। ५. गुण। सिफत। ६. कोई काम, चीज या बात ठिकाने लगाने की क्रिया। आवश्यक या उचित परिणाम तक पहुँचना। ७ अत। समाप्ति। ८. मृत्यु। मौत। ९. ध्वस। नाश। १०. वध। हिसा। ११. प्रलय। १२. यज्ञ का मुख्य अग। १३. गुप्तचरो या भेदियो का दल या वर्ग। १४. पेशा। व्यवसाय। १५. गिरोह। जत्था। दल। १६. राजाज्ञा। फरमान। १७. समानता। सादृश्य। १८ समाज। १९. आज-कल कोई सघटित वर्ग, समाज या समूह। (बॉडी) २०. किसी विशिष्ट सामाजिक या सार्वजनिक कार्य की सिद्धि के उद्देश्य से संघटित मडल या समाज। (इन्स्टिट्यूशन) २१. व्यावसायिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट नियमो और सिद्धातो के अनुसार काम करनेवाला कोई सघटित दल, वर्ग या समाज। (सोसाइटी) जैसे—सहकारी सस्था। २२ राजनीतिक या सामाजिक जीवन से सबध रखनेवाला कोई नियम, विधान या परम्परागत प्रथा जो किसी समाज में समान रूप से प्रचलित हो। (इन्स्टिट्यूशन) जैसे—हिन्दुओ मे विवाह धार्मिक सस्था है, अन्यान्य जातियो की तरह मात्र सामाजिक समझौता नही।

संस्थान—पु० [स०] १. ठहराव। स्थिति। २. बैठाना। स्थापन। ३ अस्तित्व। ४. देश। ५. सर्व-साधारण के इकट्ठे होने का स्थान। ६. किसी राज्य के अतर्गत जागीर आदि। ७ साहित्य, विज्ञान, कला आदि की उन्नति के लिए स्थापित समाज। (इन्स्टीच्यूशन) ८ प्रबध। व्यवस्था। १०. किसी काम या बात का अच्छी तरह किया जानेवाला अनुसरण या पालन। १०. जनपद। बस्ती। ११. आकृति। रूप। शकल। १२. काति। चमक। १३ सुदरता। सौदर्य। १४. प्रकृति। स्वभाव। १५ अवस्था। दशा। १६ जोड। योग। १७ समष्टि। १८ अत। समाप्ति। १९. नाश। ध्वस। २०. मृत्यु। मौत। २१. निर्माण। रचना। २२. निकटता। सामीप्य। २३. पास-पडोस। २४ चौमुहानी। चौराहा। २५ चौखटा या ढाँचा। २६. साँचा। २७ रोग का लक्षण। २९ ब्रिटिश शासन के समय देशी रियासत। (दक्षिणभारत)

संस्थापक—वि० [स० सम्√स्था (ठहरना)+णिच् पुक्-ण्वुल्-अक] [स्त्री० सस्थापिका] १. सस्थापन करनेवाला। २ बनाकर खडा या तैयार करनेवाला ३ नये काम या बात का प्रवर्तन करनेवाला। प्रवर्तक। ४ चित्र, खिलौना आदि बनानेवाला। ५ किसी प्रकार का आकार या रूप देनेवाला।

पु० आज-कल किसी सस्था, सभा या समाज का वह मूल व्यक्ति, जिसने पहले-पहल उसकी स्थापना की हो।

संस्थापन—पु० [स० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-यक, ल्युट्-अन] [वि० सस्थापनीय, सस्थाप्य, भू० कृ० सस्थापित] १. अच्छी तरह जमाकर बैठाना या रखना। २ मशीनो, यत्रो आदि को किसी स्थान पर लगाना। प्रतिष्ठित करना। ३ उक्त रूप मे बैठाये या लगाये हुए यत्रो की सामूहिक सज्ञा। प्रस्थापन। (इन्स्टालेशन) ४ कोई नई चीज बनाकर खडी या तैयार करना। निर्मित करना। जैसे—भवन का सस्थापन। ५. कोई नया काम या नई बात चलाना या जारी करना; अथवा उसके लिए कोई सस्था स्थापित करना। ६ उक्त प्रकार से स्थापित की हुई सस्था अथवा उसमे काम करनेवाले लोगो का वर्ग या समूह। (एस्टैब्लिशमेन्ट) ७ किसी काम, चीज या बात को कोई नया आकार या रूप देना। ८ नियत्रित करना। रोकना। ९. शात करना।

संस्थापना—स्त्री० [स० सस्थापन-टाप्]=सस्थापन।

संस्थापनीय—वि० [स० स√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्-अनीयर्] जिसका सस्थापन हो सकता हो अथवा होने को हो।

संस्थापित—भू० कृ० [स० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्, क्त] १ जिसका सस्थापन किया गया हो या हुआ हो। २ जमा कर बैठाया, रखा या स्थित किया हुआ। ३. चलाया या प्रचलित किया हुआ। ४. इकट्ठा किया हुआ। सचित।

संस्थाप्य—वि० [स० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्, यत्] जिसका सस्थापन हो सकता हो या होना उचित हो।

संस्थित—वि०[स० सम्√स्था (ठहरना)+क्त] १ टिका, ठहरा या रुका हुआ। २ अच्छी तरह जमा या बैठा हुआ। ३ किसी नये और विशिष्ट रूप मे आया या लाया हुआ। ४ बनाकर खडा या तैयार किया हुआ। ५. इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६ मरा हुआ। मृत।

संस्थिति—स्त्री०[स० सम्√स्था (ठहरना)+क्तिन्] १ खडे होने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ ठहराव। स्थिरता। ३ बैठने की क्रिया या भाव। ४ एक ही अवस्था मे बने रहने की क्रिया या भाव। सस्थान। ५. दृढता। मजबूती। ६ धीरता। ७ अस्तित्व। हस्ती। ८. आकृति। रूप। ९ गुण। १०. क्रम। सिलसिला। ११ प्रबध। व्यवस्था। १२ प्रकृति। स्वभाव। १३ अन्त। समाप्ति। १४ मृत्यु। मौत। १५. नाश। १६. कोष्ठबद्धता। कब्जियत। १७ ढेर। राशि।

संस्पर्द्धा—स्त्री० [सं० सम्√स्पर्ध (संघर्ष करना)+घञ् टाप्] १ स्पर्धा। २ ईर्ष्या।

संस्पर्द्धी—वि० [सं०सम्√स्पर्ध (स्पर्धा करना)+णिनि] [स्त्री०संस्पर्द्धिनी] संस्पर्धा करनेवाला।

संस्पर्श—पुं० [सं० सम्√स्पृश् (छूना)+घञ्] अच्छी या पूरी तरह से होनेवाला स्पर्श।

संस्पर्शी—वि० [सं० सम्√स्पृश् (छूना)+णिनि संस्पर्शिन्] स्पर्श करने या छूनेवाला।

संस्पृष्ट—भू० कृ० [सं०] १ छूआ हुआ। जिसका किसी के साथ स्पर्श हुआ हो। २ किसी के साथ लगा या सटा हुआ। ३ किसी के साथ जुडा या बँधा हुआ। ४ जो बहुत पास हो। समीपस्थ। ५ जिस पर किसी का बहुत थोड़ा या नाममात्र का प्रभाव पडा हो।

संस्फुट—वि०[सं० सम्√स्फुट् (विकसित होना)+क] १ अच्छी तरह फटा या खुला हुआ। २ अच्छी तरह खिला हुआ।

संस्फोट—पुं० [सं० सम्√स्फुट् (भेदन करना)+घञ्] युद्ध। लडाई।

संस्मरण—पुं० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+ल्युट्-अन] [वि० संस्मरणीय] १. अच्छी तरह या बार-बार स्मरण करना। २ इष्टदेव आदि का बार बार स्मरण करना या उनका नाम जपना। ३ पूर्व-जन्म के संस्कारों आदि के कारण उत्पन्न या प्राप्त होने अथवा बना रहने वाला ज्ञान। ४ आजकल किसी व्यक्ति विशेषतः मृत व्यक्ति के संबंध की महत्त्वपूर्ण और मुख्य घटनाओं या बातों का उल्लेख या कथन। (रेमिनिसेन्सेज)

संस्मरणीय—वि० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+अनीयर्] १ जिसका प्रायः संस्मरण होता रहता है। बहुत दिनों तक याद रहने लायक। २ जिसका संस्मरण (नाम, जप आदि) करना अवश्यक और उचित हो।

संस्मारक—वि० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+णिच्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० संस्मारिका] स्मरण करनेवाला। याद दिलानेवाला।

संस्मारण—पुं० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संस्मरित] १. स्मरण करना। याद दिलाना। २ चौपायों आदि की गिनती करना।

संस्मृत—वि० [सं० सं√स्मृ (स्मरण करना)+क्त] स्मरण किया हुआ। याद किया हुआ।

संस्मृति—स्त्री० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+क्तिन्] पूर्ण स्मृति। पूरी याद।

संस्रव—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहाव मे जाना)+णिच्] [स्त्री० संस्रवा] १ मिल जुल कर एक साथ बहना। २ अच्छी तरह बहना। ३ बहती हुई चीज। ४ जल की धारा या प्रवाह। ५ तरल पदार्थ का रस कर टपकना या बहना। ६ किसी चीज मे से उखाडा या नोचा हुआ अंश। ७ एक प्रकार का पिंड-दान।

संस्रवण—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहना)+ल्युट्-अन] १ प्रवाहित होना। बहना। २. गिरना। चूना या टपकना। जैसे—गर्भ का संस्रवण।

संस्रष्टा—वि०[सं०सम्√सृज् (सृजन करना)+क्तच,ज, त्र-तृच संस्रष्ट] [स्त्री० संस्रष्टी] १ आयोजन करनेवाला। २ मिलाने-जुलाने वाला। ३ बनानेवाला। रचयिता। ४ लडाई-झगडा करानेवाला।

संस्राव—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहना)+घञ्] १ प्रवाह। बहाव। २ शरीर के घाव, फोडे आदि मे मवाद का इकट्ठा होना। ३ गाद। तलछट।

संस्रावण—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संस्रावित] १ प्रवाहित करना। बहाना। २. प्रवाहित होना। बहना।

संस्रावित—भू० कृ० [सं० सम्√स्रु (बहना)+णिच्-क्त] १ बहाया हुआ। २ बहा हुआ। ३ चू, टपक या रसकर निकला हुआ।

संस्राव्य—वि० [सं० सं√स्रु (बहाना)+णिच्- यत्] १ बहाने या टपकाने योग्य। २ बहाये या टपकाये जाने के योग्य।

संस्वेद—पुं० [सं०] स्वेद। पसीना।

संस्वेदी (दिन्)—वि० [सं√स्विद् (पसीना होना)+णिच्] १ जिसके बदन से पसीना निकल रहा हो। २ जिसके प्रभाव से बहुत पसीना आता या आने लगता हो। पसीना लानेवाला।

संहता—वि० [सं०सम्√हन् (मारना)+तृच्, संहतृ] [स्त्री० संहत्री] हनन या वध करनेवाला। मार डालनेवाला।

संहत—वि०[सं०सम्√हन् (मारना)+क्त] १ अच्छी तरह गठा, जुडा, मिला या सटा हुआ। २ जो जमकर बिलकुल ठोस हो गया हो। ३ गाढा या घना। ४ दृढ। मजबूत। ५ इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६ अच्छी तरह मिलाकर एक किया हुआ। (कन्सालिडेटेड्) ७ चोट खाया हुआ आहत। घायल।

पुं० नृत्य मे एक प्रकार की मुद्रा।

संहत जानु—पुं० [सं०] दोनों घुटने सटाकर बैठने की मुद्रा।

संहतांग—वि० [सं० कर्म० सं०, ब० सं० वा] हृष्ट-पुष्ट। मजबूत।

संहति—स्त्री० [सं०] १ आपस मे चीजों का मिलना। मेल। २ इकट्ठा या एकत्र होना। ३ ढेर। राशि। ४ झुंड। दल। ५ घनत्व। घनापन। ६ जोड। संधि। ७ गठकर या मिलकर एक होना। संघटन। (कंसालिडेशन)

संहनन—पुं० [सं० सम्√हन् (मारना)+ल्युट्-अन] १ संहत करना। एक मे मिलाना। जोडना। २ अच्छी तरह घना या ठोस करना। ३ मार डालना। वध करना। ४ मिलन। मेल। ५ दृढता। मजबूती। ६ पुष्टता। ७ सामंजस्य। ८ देह। शरीर। ९ कवच। १० शरीर की मालिश।

संहरण—पुं० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+ल्युट्-अन] १ एकत्र या संग्रह करना। बटोरना। २ सिर के बाल इकट्ठे करके बाँधना। ३. जबरदस्ती लेना। छीनना। हरण। ४ नाश या संहार करना। ५ प्रलय।

संहरता†—वि०=संहर्ता (संहारक)।

संहरना—स० [सं० संहार] संहार करना।

अ० १ संहार होना। २ नष्ट होना।

संहर्ता—वि० [सम्√हृ (हरण करना)+तृच्] [स्त्री० संहर्त्री] १. इकट्ठा करनेवाला। बटोरने या समेटने वाला। २ नाश या संहार करनेवाला ३ मार डालने या वध करनेवाला।

संहर्ष—पुं०[सं० सम्√हृष् (हर्षित होना)+घञ्] १ प्रसन्नता के कारण शरीर के रोओं का खड़ा होना। पुलक। उमंग। २. भय से रोएँ खड़े

होना। रोमांच। ३ लाग-डाँट। स्पर्धा। होड़। ४. ईर्ष्या। डाह। ५ रगड़। संघर्ष ६. शरीर की मालिश।

संहर्षण—पुं० [सं० सम्√हृष् (प्रसन्न होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संहर्षित, संहृष्ट] १. पुलकित होना। २ लाग-डाँट। स्पर्धा। होड़।

संहर्षी—वि० [सं० सम्√हृष् (रोमांच होना)+णिनि, संहर्षिन्] [स्त्री० संहर्षिणी] १. पुलकित होनेवाला। २. पुलकित करनेवाला। ३. ईर्ष्या करनेवाला। ४ स्पर्धा करनेवाला।

संहात—पुं० [सं० सम्√हन् (मारना)+क्त, न—आ, कुत्वाभाव] १. समूह। २ एक नरक का नाम। ३ दे० 'संघात'।

संहार—पुं० [सं०] १. एक में करना या मिलाना। इकट्ठा करना। २. संचय। ३ सिर के बाल अच्छी तरह बाँधना। ४ अंत। समाप्ति। जैसे—वेणी संहार। ५ ध्वंस। नाश। ६ बहुत से व्यक्तियों की युद्ध आदि में एक साथ होने वाली हत्या। ७ कल्पांत। प्रलय। ८ संक्षेप में और सार रूप में कही हुई बात। ९ किसी काम या बात को निष्फल या व्यर्थ करने की क्रिया। निवारण। परिहार। जैसे—किसी के चलाये हुए अस्त्र का संहार अर्थात् विफलीकरण। १०. अपना छोड़ा हुआ अस्त्र फिर से लौटाना या वापस लाना। ११. कौशल। निपुणता। १२ सिकुड़ना। आकुंचन। १३. पुराणानुसार एक नरक का नाम।

संहारक—वि० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+णिच्-ण्वुल्-अक, संहार+कन् वा] [स्त्री० संहारिका] संहार करनेवाला। संहर्ता।

संहारकारी—वि० [सं० संहार√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० संहारकारिणी] संहार या नाश करनेवाला।

संहार काल—पुं० [सं०] विश्व के नाश का समय। प्रलय काल।

संहारना—स० [सं० संहरण] मार डालना।

संहार भैरव—पुं० [सं०] भैरव के आठ रूपों या मूर्तियों में से एक। काल भैरव।

संहार-मुद्रा—स्त्री० [सं०] तांत्रिक पूजन में अंगों की एक प्रकार की स्थिति, जिसे विसर्जन मुद्रा भी कहते हैं।

संहारिक—वि० [सं० संहार+ठन्—इक्] १. संहार करनेवाला। संहारक। २. संहार संबंधी। संहार का।

संहारी (रिन्)—वि० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+णिनि] संहार या नाश करनेवाला।

संहार्य—वि० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+ण्यत्] १ समेटने या बटोरने योग्य। संग्रह करने योग्य। इकट्ठा करने लायक। २ जिसका संहार किया जाने को हो या किया जा सकता हो। ३. जो कहीं दूसरी जगह ले जाया जा सकता हो या ले जाया जाने को हो। ४. जिसका निवारण या परिहार हो सकता हो।

संहित—वि० [सं० सम्√धा (रखना)+क्त, धा=हि] १ एक स्थान पर जोड़ या मिलाकर रखा हुआ। एकत्र किया या बटोरा हुआ। २. मिलाया या सम्मिलित किया हुआ। ३ संबद्ध। संश्लिष्ट। ४. अन्वित। युक्त। ५ अनुकूल। अनुरूप। ६. आज-कल जो अधिकारियों के द्वारा नियमों, विधियों आदि की संहिता के रूप में लाया गया हो। (कोडिफायड)

संहिता—स्त्री० [सं०] १ संहित अर्थात् एक में मिले हुए होने की अवस्था या भाव। मेल। संयोग। २. वह नया रूप जो बहुत सी चीजें एकत्र करने या एक साथ रखने पर प्राप्त होता है। संकलन। संग्रह। ३ कोई ऐसा ग्रंथ जिसके पाठ आदि का क्रम परम्परा से किसी नियमित और निश्चित रूप में चला आ रहा हो। जैसे—अत्रि (या मनु) की धर्म-संहिता। ४ वेदों का वह मंत्र (ब्राह्मण नामक भाग से भिन्न) जिसके पद, पाठ आदि का क्रम निश्चित है और जिसमें स्तोत्र, आशीर्वादात्मक सूक्त, यज्ञ-विधियों से संबंध रखनेवाले मंत्र और अरिष्टों आदि की शांति से संबंध रखनेवाली प्रार्थनाएँ सम्मिलित हैं। ५ व्याकरण में अक्षरों की होनेवाली पारस्परिक संधि। ६ राजकीय अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत किया हुआ नियमों, विधियों, आदि का संग्रह। (कोड) जैसे—भारतीय दंड संहिता। (इन्डियन पेनल कोड) ७ ब्रह्म जो समस्त विश्व को धारण किये है और उसका नियंत्रण करता है।

संहिताकरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० संहिताकृत] नियमों, विधानों आदि को व्यवस्थित रूप देने की क्रिया या भाव। किसी बात या विषय को संहिता का रूप देना। (कोडिफिकेशन)

संहिति—स्त्री० [सं०] १ संहित होने की अवस्था या भाव। २ दे० 'संश्लेषण'।

संहृत—भू० कृ० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+क्त] १ एकत्र किया हुआ। समेटा हुआ। २ ध्वस्त। नष्ट। बरबाद। ३. पूरा किया हुआ। समाप्त। ४ दूर किया या रोका हुआ। निवारित।

संहृति—स्त्री० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+क्तिन्] १ बटोरने या समेटने की क्रिया। २. संग्रह। ३ नाश। ४ प्रलय। ५ अंत। समाप्ति। ६ परिहार। रोक। ७. लूट-खसोट। हरण।

संहृष्ट—भू० कृ० [सं०] १. खड़ा (रोम)। २ (व्यक्ति) जिसके रोएँ भय से खड़े हों या हुए हों। रोमांचित। ३ पुलकित।

संह्लाद—पुं० [सं० सम्√ह्लाद् (अव्यक्त ध्वनि)+घञ्] १ कोलाहल। शोर। २ हिरण्यकशिपु का एक (पुत्र)।

संह्लादन—पुं० [सं० सम्√ह्लाद् (अव्यक्त ध्वनि)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संह्लादित] १. कोलाहल करना। शोर मचाना। २ चीखना। चिल्लाना।

स—उप० एक उपसर्ग जिसका उपयोग शब्दों के आरम्भ में कई प्रकार के अर्थ सूचित करने के लिए होता है। यथा—१ 'एक ही' का भाव सूचित करने के लिए, जैसे—सकुल, सगोत्र आदि। २ 'एक ही तरह का' या 'एक सा' का भाव सूचित करने के लिए; जैसे—सदृश, समान आदि। ३. संज्ञाओं से विशेषण और क्रिया विशेषण बनाने के लिए, जैसे—सतृष्ण, सप्रेम आदि। ४ बहुव्रीहि समास में 'युक्त' या 'सह' का भाव सूचित करने के लिए; जैसे—सजीव, सपरिवार आदि। ५ हिन्दी शब्दों में 'सु' या अच्छा का भाव प्रगट करने के लिए, जैसे—सपूत आदि।

पुं० [सं० सो (नाश करना)+ड] १ ईश्वर। २ महादेव। शिव। ३ चन्द्रमा। ४. जीवात्मा। ५ भृगु। ६ वायु। हवा। ७ ज्ञान। ८ चिन्ता। ९ चमक। दीप्ति। १० चिड़िया। पक्षी। ११ साँप। १२ रास्ता। सड़क। १३ संगीत में षडज स्वर का सूचक अक्षर। जैसे—रे, ग, म, ध, नि, स। १४ छंद शास्त्र में 'सगण' का सूचक अक्षर या संक्षिप्त रूप।

सआदत—स्त्री०[अ०]१ अच्छाई। भलाई। २ सौभाग्य।

सआदतमंद—वि०[अ०+फा०] [भाव० सआदतमदी] १ भला। सज्जन। २ आज्ञाकारी (सन्तान आदि के लिए प्रयुक्त)। ३ भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।

सइ†—अव्य०[स० सह] से। साथ।

सइअन†—पु०=सहिजन।

सइन†—स्त्री०[स० सधि] नाडी का व्रण। नासूर।
स्त्री०=सेना (फौज)।

सइना†—स्त्री०=सेना।

सइयाँ†—पु०=सैयाँ।

सइयो†—स्त्री०[स० सखी] सखी। सहेली।

सइल†—स्त्री०=सैल।
†पु०=शैल।
*वि०=सरल।

सइवर†—पु०=सेवार।

सई†—स्त्री०[स० सरस्वती] सरस्वती नदी।
स्त्री०१.=सखी। २=सती।
स्त्री०[अ०] कोशिश। प्रयत्न।
स्त्री० [?] वृद्धि। वरकत। उदा०—खग मृग सवर निसाचर सव की पूँजी विन् वाढी सई।—तुलसी।

सईकंटा—पु०[?] एक प्रकार का पेड।

सईद—वि०[अ०]१ शुभ। मागलिक। २ उत्तम। भला।

सईस†—पु०=साईस।

सउँ—अव्य०=सो।

सउखा—पु०=शौक।

सउजा—पु०=साउज (शिकार)।
पु०=सौजा।

सउत†—स्त्री०=सौत।

सउतेला†—वि०=सौतेला।

सऊँस—वि० [?] सव। सारा। उदा०—सऊँस अयोध्या मे रामजी दुलरूआ।—लोकगीत।

सऊँह—अव्य०=सौह (सामने)।

सऊ*—वि०=सौ (सख्या)।
स्त्री०=सक्रान्ति। जैसे—मकर सऊ=मकर सक्रान्ति।

सऊदी अरव—पु० मध्य अरव का एक आधुनिक राज्य जो पहले हिजाज कहलाता था और जिसकी राजधानी मक्का है।

सऊर†—पु०=शऊर।

सकूँकर—पु०[रूमी सकन्कूर] गोह की तरह का लाल रग का एक जतु। इसका मास वहुत वलवर्द्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या 'रेगमाही' भी कहते है।

सक*—पु०[स० शाका]१ वीरता का कार्य। साका। २ शक्ति का आतक। धाक।
मुहा०—**सक वाँधना**= अपने प्रभुत्व, वल आदि की धाक जमाना।
३ मर्यादा। सीमा।
क्रि० प्र०—वाँधना।
†स्त्री०[शक्ति]१ ताकत। वल। २ सामर्थ्य।
†पुं० शक (सन्देह)।

सकट—पु०[स० अव्य० स०] शाखोट वृक्ष। सिहोर।
†पु०[स० शकट] [अल्पा० सकटी] छकडा। गाडी।

सकट चौथ†—स्त्री०=सकट चौक (गणेश चौथ)।

सकटान्न—पु०[स० अव्य० स०] ऐसे व्यक्ति का अन्न जिसे किसी प्रकार का अशौच हो। ऐसा अन्न अग्राह्य कहा गया है।

सकटी—स्त्री०[स० शकट] छोटा सग्गड। सगडी।

सकडी†—स्त्री०=सिकरी।

सकत†—स्त्री०[स० शक्ति]१ वल। शक्ति। २ सामर्थ्य। ३ धन-सम्पत्ति।
अव्य० जहाँ तक हो सके। भर-सक। यथा-साध्य।
वि०, पु०=शाक्त।

सकता—स्त्री०[स० शक्ति]१ शक्ति। ताकत। वल। २ सामर्थ्य। वूता।
पु०[अ० सक्त]१ वेहोशी या मूर्च्छा नाम का रोग। २ भौचक्कापन। स्तब्धता। ३ पद्य के चरणो मे होनेवाली यति। विराम। ४ कविता मे यति-भग नामक दोष।
क्रि० प्र०—पडना।

सकति†—स्त्री०=शक्ति।
पु०=शाक्त।

सकती†—स्त्री०=शक्ति।

सकन—पु०[देश०] १ लता। २. कस्तूरी। मुश्कदाना।
अव्य० [स० स+कर्ण] कान लगाकर। उदा०—जदि तोहे चचल सुनह सकन भए अपना धवन काए।—विद्यापति।

सकना—अ०[स० शक् या शक्य] कोई काम करने मे समर्थ होना। करने योग्य होना। जैसे—कह सकना, खा सकना, जा सकना, वैठ सकना आदि।
†अ०[स० शका, हिं० शकना= शका करना] १ शका के कारण घवराना, डरना या सकोच करना। उदा०—सूखे से, श्रमे से, सकवके से, सके से, थके से, भूले से, भ्रमे से, भभरे से, भकआने से।—रत्नाकर।
२ दे० 'सकाना'।

सकपक—स्त्री०[अनु०] सकपकाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

सकपकाना—अ०[अनु० सकपक]१ चकित होना। चकपकाना। २. आगापीछा करना। हिचकना। ३ लज्जित होना। शरमाना। ४ सकोच करना।
स० १ चकित करना। २ असमजस या दुविधा मे डालना। ३. लज्जित या सकुचित करना।

सकरकंदी—स्त्री०=शकरकद।

सकर-खंडी—स्त्री०[फा० शकर+हिं० खाँड] लाल और विना साफ की हुई चीनी। खाँड। शक्कर।

सकरना—अ०[स० स्वीकरण]१ सकारा जाना। स्वीकृत या अगीकृत होना। मजूर होना। जैसे—हुडी सकरना। २ माना जाना। जैसे—दाम या देन सकरना।
सयो० क्रि०—जाना।

सकरपाला†—पुं० =शकर-पारा।

सकरा—वि० १.=सँकरा। २.=सखरा।

सकरिया—स्त्री०[फा० शकर] लाल शकरकद। रतालू।

सकरंड—पु०[गुज०] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ आदि का व्यवहार ओपधि के रूप मे होता है।

सकरुण—वि०[स० अव्य० स०] जिसे करुणा हो। दयाशील।

सकर्ण—पु०[स०] वह जो सुनता या सुन सकता हो।
वि० जिसके कान हो। कानोवाला।

सकर्मक—वि०[स०]१ जो किसी प्रकार के कर्म से युक्त हो।
पद—सकर्मक क्रिया। (देखें)
२. जो किसी प्रकार का कर्म या क्रिया कर रहा हो। क्रियाशील। उदा०—प्रस्फुटित उत्तर मिलते, प्रकृति सकर्मक रही समस्त।—कामायनी।

सकर्मक क्रिया—स्त्री० [स०] व्याकरण में दो प्रकार की क्रियाओ मे से वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता हो। जैसे—खाना, देना, माँगना, रखना आदि।

सकल—वि०[स०] सब। समस्त। कुल।
पु०१ निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति। २. दर्शन-शास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवो मे से पशुवर्ग के जीव। ३ रोहित घास या तृण।

सकलात—पु०[?] [वि० सकलाती]१ ओढने की रजाई। दुलाई। २ उपहार। भेट। ३ सौगात। मखमल नाम का कपडा।

सकलाती—वि०[हिं० सकलात]१ जो उपहार या भेंट के रूप मे दिया जा सके। २. अच्छा। बढिया।

सकली—स्त्री०[डिं०] मत्स्य। मछली।

सकलेंदु—पु०[स०] पूर्णिमा का चन्द्रमा। पूरा चाँद।

सकस|—पु०=शख्स।

सकसकाना—अ० [अनु०] बहुत अधिक डरना या डर कर काँपना।

सकसना—अ०[स० शका, हिं० सकना]१ भयभीत होना। डरना। २ अडना। ३ धँसना। उदा०—निकसे सकसिन न वचन भयौ हिचकिनी गहवर भर।—रत्नाकर।

सकसाना*—स०[अनु०] भयभीत करना। डराना।

सका|—पु०=सक्का।

सकाकुल—पु०[स० शकाकुल] १. एक प्रकार का कद जिसे अबर कद कहते है। २ एक प्रकार का शतावर। ३ सुधा-मूली।

सकाकोल—स० [अव्य० स०] मनु के अनुसार एक नरक का नाम।

सकाना—अ०[स० शका, हिं० सकना]१ मन मे शका या सदेह करना। २ संशकित होकर पीछे हटना। आगे बढने से हिचकना। उदा०—क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना।—तुलसी। ३. भयभीत होना। डरना। उदा०—सोच सबै सकाइ कहा करिहै कमलासन।—रत्नाकर। ४ मन मे दुखी होना। उदा०—सुनि मुनिवर के परुष वचन, कछु भूप सकाए।—रत्नाकर।
स० हिं० 'सकना' का सकर्मक और प्रेरणार्थक रूप। जैसे—सके तो सकाओ, नही तो छोड दो। (परिहास)

सकाम—वि०[म० अव्य० स०] जिसके मन मे कोई कामना या इच्छा हो। २ जिसकी कामना या इच्छा पूरी हो गई हो। सफल-मनोरथ। ३ मैथुन या सयोग की इच्छा रखनेवाला। कामी। ४. प्रेम करनेवाला। प्रेमी। ५ स्वार्थ साधन की भावना से काम करनेवाला।

सकाम निर्जरा—स्त्री०[स० ब०रा०] जैन धर्म मे चित् की वह वृत्ति जिसमे बहुत अधिक क्षति होने पर भी शत्रु को परम शातिपूर्वक क्षमा कर दिया जाता है।

सकामा—स्त्री०[स० अव्य० म०] ऐसी स्त्री जो मैथुन की इच्छा रखती हो। कामवती स्त्री।

सकामी (मिन्)—वि०[स० सकाम+इनि,]१ जिसे किसी प्रकार की कामना हो। कामनायुक्त। वासनायुक्त। २ कामुक। विषयी।

सकार—पु०[स० स+कार] १ 'स' अक्षर। २ 'स' वर्ण की या उससे मिलती-जुलती ध्वनि। जैसे—उस समय किसी के मुँह से सकार भी न निकाला।
स्त्री०[हिं० सकारना] सकार अर्थात् स्वीकृत करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। (ऐक्सेप्टेन्स)

सकारना—स०[स० स्वीकरण] [भाव० सकार]१ स्वीकृत करना। मजूर करना। २. महाजनी बोलचाल मे, हुडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुडी देखकर उस पर हस्ताक्षर करना और रुपए चुकाने का उत्तरदायित्व मानना। (ऑनरिंग आफ ए ड्राफ्ट)

सकारा—पु०[हिं० सकारना] १ सकारने की क्रिया या भाव। २ २. महाजनी लेन-देन मे, वह धन जो हुडी सकारने और उसका समय फिर से बढाने के बदले मे लिया जाता है।
पु०[सं० सकाल]=सकाल (सवेरा)।

सकारात्मक—वि०[स०]१ (उत्तर या कथन) जो सहमति या स्वीकृति का सूचक हो। नकारात्मक के विपरीत। (एफर्मेटिव) २ जिसका कोई निश्चित मान या स्थिर स्वरूप हो। निश्चयी। (पाजिटिव)

सकारी—पु०[हिं०सकारना] वह जो कोई हुडी सकारता हो या जिसके नाम कोई हुडी लिखी गई हो। (ड्राई)

सकारे—अव्य०[स० सकाल] १ प्रात काल। सबेरे। तडके। २ नियत समय से कुछ पहले ही। जल्दी।

सकालत—स्त्री०[अ०]१ सकील या गरिष्ठ होने की अवस्था या भाव। गरिष्ठता। २ गुरुता। भारीपन।

सकाश—अव्य०[स० अव्य० स०] पास। निकट। समीप।

सकिया|—स्त्री०[?] एक प्रकार की बडी गिलहरी जिसके पजे काले होते है।

सकिलना—अ०[हिं० सरकना]१ फिसलना। सरकना। २ सिकुडना। सिमटना। ३ कुछ कर सकने के योग्य या समर्थ होना। ४ (कार्य) पूरा होना।

सकीन—पु०[देश०] एक प्रकार का जतु।

सकील—वि०[अ०] [भाव० सकालत] १. जो जल्दी हजम न हो। गरिष्ठ। गुरुपाक। २ भारी। वजनी।

सकुच*—स्त्री० —सकोच।

सकुचाई*—स्त्री०[स० सकोच, हिं० सकुच+आई (प्रत्य०)]१ सकुचित होने की क्रिया या भाव। २ सकोच।

सकुचाना—अ०[स० सकोच, हिं० सकुच+आना (प्रत्य०)] १. सकोच करना। लज्जा करना। शरमाना। २ फूलो आदि का सपुटित या बन्द होना। ३. सिकुड़ना।

स०[हिं० सकुचाना का प्रे०] किसी को संकोच करने में प्रवृत्त करना। लज्जित करना।

सकुची—स्त्री०[सं० शकुल मत्स्य] एक प्रकार की मछली जो साधारण मछलियों से भिन्न और प्रायः कछुए के आकार की होती है। इसके चार छोटे-छोटे पैर होते हैं, और एक लम्बी पूँछ होती है। इसी पूँछ से यह शत्रु पर आघात करती है। जहाँ पर इसकी चोट लगती है, वहाँ घाव हो जाता है, और चमड़ा सड़ने लगता है। यह स्थल में भी रह सकती है।

सकुचीला—वि०[हिं० सकुच+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सकुचीली] जिसे अधिक और प्रायः संकोच होता हो। संकोच करनेवाला। शरमीला।

सकुचीली—स्त्री०[हिं० सकुचीला] लजवती। लज्जावती लता।

सकुचौहाँ—वि०[सं० संकोच+हिं० औहाँ (प्रत्य०) [स्त्री० सकुचौहीं] अधिक और प्रायः संकोच करनेवाला। लजीला।

सकुड़ना†—अ०=सिकुड़ना।

सकुन*—पु०[सं० शकुत] पक्षी। चिड़िया।

पु०=शकुन।

सकुनी*—स्त्री०[सं० शकुत] चिड़िया। पक्षी।

सकुपना*—अ०=सकोपना।

सकुल—पु०[सं० कर्म० स०] अच्छा कुल। उत्तम कुल। ऊँचा खानदान।

पु०=सकुची (मछली)।

सकुलज—वि०[सं० सकुल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] एक ही कुल में उत्पन्न (दो या अधिक व्यक्ति)।

सकुला—पु०[सं० सकुल—टाप्] बौद्ध भिक्षुओं का नेता या सरदार।

सकुलादनी—स्त्री०[सं० ब० स०]१ महाराष्ट्री या मेरठी नाम की लता। २. कुटकी।

सकुली—स्त्री०=सकुची (मछली)।

सकुल्य—वि०[सं० सकुल+यत्] (दो या अधिक) जो एक ही कुल में उत्पन्न हुए हों।

सकूतरा—पु०[?]एक द्वीप जो अरब सागर में अफ्रीका के पूर्वी तट के समीप है। यहाँ मोती और प्रवाल अधिक मिलते हैं।

सकूनत—स्त्री०[अ०] रहने का स्थान। निवास-स्थान। पता। जैसे—वहाँ वल्दियत और सकूनत भी पूछी जाती है।

सकृत्—अव्य०[सं०]१. एक बार। एक मरतबा। २ सदा। हमेशा। ३ सहित। साथ। उदा०—जँह तँह काक उलूक, बक, मानस सकृत मराल।—तुलसी।

पु०१ गुह। मल। विष्ठा। २ कौआ।

सकृत्प्रज—वि०[सं०] जिसे एक ही बच्चा हो।

पु० कौआ।

सकृतप्रजा—स्त्री०[सं०] १ बन्ध्या रोग। बाँझपन। २ शेर या सिंह की मादा। शेरनी।

सकृत्फल—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सकृत्फला] (पौधा या वृक्ष) जो एक ही बार फलता हो। जैसे—केला।

सकृत्सू—वि० स्त्री०[सं० सकृत्√सू (उत्पन्न करना)+क्विप] (स्त्री) जिसने अभी बालक प्रसव किया हो।

सकृद्—अव्य०[सं० सकृत् का वह रूप जो उसे समस्त पदों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सकृद्ग्रह।

सकृदागामी मार्ग—पु०[सं० कर्म० स०] बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का धार्मिक मार्ग जिसमें जीव केवल एक बार जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त करता है।

सकेत†—पु०[सं० संकेत]१ संकेत। इशारा। २ प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का कोई एकान्त स्थान।

†वि०[सं० संकीर्ण] सँकरा। संकीर्ण।

पु०१. संकट की स्थिति। २ कष्ट। दुःख। उदा०—जिनही उठै खिन बूडै, अस हिय कँवल सकेत।—जायसी।

सकेतना*—अ०[हिं० सकेत] संकुचित होना। सिकुड़ना।

स० संकुचित करना। सिकोड़ना।

सकेती—स्त्री०[हिं० सकेत]१ कष्ट या विपत्ति में होने की अवस्था या भाव। २ कष्ट। दुःख।

सकेरना†—स०=सकेलना।

सकेलंग—पु०[अ० सकिलंग]एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसकी लकड़ी नरम और सफेद होती है और इमारत आदि बनाने के काम में आती है।

सकेलना†—स०[सं० संकलन या सकल]१ इकट्ठा करना। जमा करना। उदा०—जो वनिता सुत-जूथ सकेलै, हय गय विभव घनेरो।—सूर। २ बिखरे हुए काम या चीजें समेटना। उदा०—ज्यों बाजीगर स्वाँग सकेला।—कबीर। २ काम पूरा करना। निपटाना।

सकेला—स्त्री०[अ० सैकल] एक प्रकार की तलवार जो कड़े और नरम लोहे के मेल से बनाई जाती है।

पु० [अ० सकील ?] एक प्रकार का लोहा।

सकोच†—पु०=संकोच।

सकोचना*—स० [सं० संकोच+हिं० ना (प्रत्य०)] संकुचित करना। सिकोड़ना।

अ० संकोच करना। शरमाना।

सकोड़ना†—स०=सिकोड़ना।

सकोतरा†—पु०=चकोतरा।

सकोपना*†—अ० [सं० कोप+ना (प्रत्य०)] कोप करना। गुस्सा करना।

सकोपित†—वि०=कुपित।

सकोरना—स०=सिकोड़ना।

सकोरा†—पु०[हिं० कसोरा] [स्त्री० सकोरी] मिट्टी की एक प्रकार की छोटी कटोरी। कसोरा।

सक्कर†—स्त्री०=शक्कर।

सक्करी—स्त्री०[सं० शर्करी] शर्करी नामक छन्द।

सक्का—पु०[अ० सक्का]१ भिश्ती। माशकी। २ वह जो मशक में पानी भरकर लोगों को पिलाता फिरता हो।

सक्त—वि०[सं०]१ किसी के साथ लगा या सटा हुआ। संलग्न। २. आसक्त

†वि०=सख्त। (कड़ा)।

सक्त-चक्र—पु०[सं०] ऐसा राष्ट्र जो चारों ओर शक्ति-शाली राष्ट्रों से घिरा हो। राष्ट्रचक्र।

सक्तमूत्र—पु० [स०] चरक के अनुसार वह व्यक्ति जिसे थोडा थोडा पेशाब होता हो।

सक्ति†—स्त्री०=शक्ति।

सक्तु—पु०[स० शक्तु] भुने हुए अनाज को पीसकर तैयार किया हुआ आटा। सत्तू।

सक्तुक—पु०[स०] १ एक प्रकार का विषाक्तफल जिसकी गाँठ मे सत्तू के समान चूरा भरा रहता है। २. सत्तू।

सक्तुकार—पु०[स०] वह जो सत्तू बनाता और बेचता हो।

सक्तुफला—स्त्री०[स०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर।

सक्थि—पु०[स०√सज्ज् (मिलना)+क्थिन्] सुश्रुत के अनुसार एक मर्म-स्थान जो शरीर के ग्यारह मुख्य मर्म स्थानो मे माना गया है।

सक्थी—पु०[स० सक्थिन्—दीर्घ न लोप, सक्थिन्] १ हड्डी। अस्थि। २ जघा। जाँघ। ३ छकडे या बैलगाडी का एक अग या अश।

सक्र†—पु०=शक्र (इन्द्र)।

सक्रघण†—पु०[स० शक्रघन] इन्द्र का अस्त्र, वज्र। (डिं०)

सक्रपति—पु०[स० शक्रपति] विष्णु। (डिं०)

सक्र सरोवर—पु०[स० शक्र-सरोवर] इद्र-कुड नामक स्थान जो व्रज मे है।

सक्रारि*—पु०[स० शक्रारि] इद्र का शत्रु, मेघनाद।

सक्रिय—वि०[स० अव्य० स०] १ जो अपनी अथवा कोई क्रिया कर रहा हो। २ (काम) जिसमे कुछ करके दिखाया जाय। ३. जो क्रियात्मक रूप मे हो। (ऐक्टिव)

सक्रियता—स्त्री०[स०] सक्रिय होने या अवस्था का भाव। (ऐक्टिविटी)

सक्ष—वि०[स०] १ जिसका अतिक्रमण हो सके। जो लाँघा जा सके। २ हारा हुआ। पराजित।

सक्षम—वि०[स०] १ जिसमे किसी विशिष्ट कार्य के लिए क्षमता हो। क्षमताशाली। २ जो किसी विशिष्ट कार्य करने के लिए उपयुक्त और फलत उसका अधिकारी या पात्र हो। (काम्पीटेन्ट)

सक्षमता—स्त्री०[स०] सक्षम होने की अवस्था, गुण या भाव। (कॉम्पीटेन्सी)

सख—पु०[स० सखि] १ सखा। मित्र। साथी। २ एक प्रकार का वृक्ष।

सखत†—वि०=सख्त।

सखती†—स्त्री०=सख्ती।

सखत्व—पु० [स० सख+त्व] सखा होने की अवस्था, धर्म या भाव। सखापन। मित्रता। दोस्ती।

सखयाऊ †—पु०[हिं० सखा] एक प्रकार का फाग जो बुन्देलखड मे गाया जाता है।

सखर—पु०[स० अव्य० स०] एक राक्षस का नाम।
†वि०[स० स+खर] १. तेज धारवाला। चोखा। पैना। २ प्रखर। ३. प्रबल,।

सखरच, सखरज*—वि०[फा० शाह-खर्च] खुलकर अमीरो की तरह खर्च करनेवाला। शाहखर्च। उदा०—बनिय क सखरच, ठकुर क हीन। बैद क पूत, व्याधि नहिं चीन्ह। —घाघ।

सखरण†—पु०=शिखरन।

सखरस—पु०[सख ?+हिं० रस] मक्खन। नैनू।

सखरा—वि०[हिं० निखरा का अनु०] (भोजन) जिसकी गिनती कच्ची रसोई मे होती हो। 'निखरा' का विपर्याय।
†पु० दे० 'सखरी'।

सखरी—स्त्री० [हिं० निखरी (अनु०)] हिन्दुओ मे, दाल भात, रोटी आदि, खाद्य-पदार्थ जो घी मे नही तले या पकाये जाते और इसलिए जो चौके के बाहर या किसी अन्य जाति के आदमी के हाथ के बनाए हुए खाने मे छूत और दोष मानते है। 'निखरी' का विपर्याय।
स्त्री०[स० शिखर] छोटा पहाड। पहाडी। (डिं०)

सखस†—पु०=शख्स (व्यक्ति)।

सखसावन—पु०[?] १. पालकी। २ आरामकुरसी। पलग।

सखा(खिन्)—पु०[स०] [स्त्री० सखी] १ ऐसा व्यक्ति जो सदा साथ-साथ रहता हो। साथी। सगी। २. दोस्त। मित्र। ३ साहित्य मे, वह व्यक्ति जो नायक का सहचर हो और जो सुख-दुख मे बराबर उसका साथ देता हो। ये चार प्रकार के होते है। पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

सखावत—स्त्री०[अ०] १. सखी या दाता होने की अवस्था, गुण या भाव। दानशीलता। २ आर्थिक उदारता।

सखिता—स्त्री०[स० सखी+तत्व—टाप्] १ सखी होने की अवस्था, गुण या भाव। २ बन्धुता। मित्रता।

सखित्व—पु०[स० सखि+त्व]=सखिता।

सखिनी†—स्त्री०=सखी (सखा का स्त्री०)।

सखी—स्त्री० [स०] १ सहेली। सहचरी। सगिनी। २ साहित्य मे, नायिका के साथ रहनेवाली वह स्त्री जो उसकी अतरग सगिनी होती, सब बातो मे उसकी सहायक रहती और नायक से उसे मिलाने का प्रयत्न करती है। शृगार रस मे इसकी गणना उद्दीपन विभावो मे होती है। इसके कार्य मडन, शिक्षा, उपालभ और परिहास कहे गये है। ३ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ और अत मे १ भगण या १ यगण होता है। इसकी रचना मे आदि से अत तक दो दो कले होती है—२+२+२+२+२+२ और कभी कभी २+३+३+२+२+२ भी होती है और विराम ८ तथा ६ पर होता है।
वि० [अ० सखी] दाता। दानी। दानशील। जैसे—सखी से सूम भला जो तुरत दे जबाब। (कहावत)

सखीभाव—पु०[स० ष० त०, मध्यम० स० वा] वैष्णव सप्रदाय मे, भक्ति का एक प्रकार जिसमे भक्त अपने आपको इष्ट-देवता की पत्नी या सखी मानकर उनकी उपासना करते है। विशेष दे० 'सखी सप्रदाय'।

सखी संप्रदाय—पु०[स०] निम्बार्क मत की एक शाखा जिसकी स्थापना स्वामी हरिदास (जन्म स० १५४१ वि०) ने की थी। इसमे भक्त अपने आपको श्रीकृष्ण की सखी मानकर उनकी उपासना तथा सेवा करते और प्राय स्त्रियो के भेष मे रहकर उन्ही के आचारो, व्यवहारो आदि का पालन करते है।

सखुआ—पु०[स० शाक]=साखू (शाल वृक्ष)।

सखुन—पु० [फा० सखुन] १=बातचीत। वार्तालाप। २ उक्ति। कथन।

मुहा०—सखुन डालना=किसी से (क) कुछ चाहना या माँगना। (ख) प्रश्न करना। पूछना।
३. कविता। काव्य। ४ किसी को दिया जानेवाला वचन। वादा। क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

सखुनचीन—वि०[फा०] [भाव० सखुनचीनी]इधर की बात उधर लगानेवाला। चुगुलखोर।

सखुनतकिया—पु० [फा० सखुन-तकिय] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगो की जबान पर ऐसा चढ जाता है कि बातचीत करने मे प्राय मुँह से निकला करता है। तकिया कलाम। जैसे—क्या नाम, जो है सो, राम आसरे आदि।

सखुनदाँ—पु०[फा०]१. वह जो सखुन अर्थात् काव्य अच्छी तरह समझता हो। काव्य का रसिक। २ वह जो बातचीत का आशय अच्छी तरह समझता हो।

सखुनदानी—स्त्री० [फा०] सखुनदाँ होने की अवस्था, गुण या भाव।

सखुन-परवर—पु०[फा०] [भाव० सखुनपरवरी]१ वह जो अपनी कही हुई बात का सदा पालन करता हो। जबान या बात का धनी।
२ वह जो अपनी बात पर अडा रहता हो। हठी।

सखुन-शनास—पु०[फा०] [भाव० सखुनशनासी] १ वह जो सखुन या काव्य भली भाँति समझता हो। काव्य का मर्मज्ञ। २ वह जो बातचीत का अर्थ ठीक तरह से समझता हो।

सखुन-संज—पुं०[फा०]१ वह जो बातचीत अच्छी तरह समझता हो। २ काव्य का मर्मज्ञ।

सखुन-साज—पु०[फा०] [भाव० सखुन-साजी]१. वह जो सखुन कहता हो। काव्य-रचना करनेवाला। कवि। शायर। २ वह जो प्राय झूठी मनगढन्त बातें कहा करता हो।

सख्त—वि०[फा०सख्त] [भाव० सख्ती]१ कठोर। कडा। जैसे—पत्थर की तरह सख्त। २. दृढ। पक्का। ३ कठिन। मुश्किल। जैसे—सख्त सवाल। ४. तीक्ष्ण । प्रखर। तेज। जैसे—सख्त गरमी। ५ दया, ममता आदि से रहित या हीन। जैसे—सख्त दिल, सख्त बरताव। ६ बहुत अधिक। औरो से बहुत बढा हुआ। (केवल दुर्गुणो और दुर्गुणियो के सबध मे) जैसे—सख्त नालायकी, सख्त बेवकूफी।

सख्ती—स्त्री०[फा०]१ सख्त या कडे होने की अवस्था या भाव। कडापन। २. व्यवहार आदि की उग्रता या कठोरता। जैसे—बिना सख्ती किये काम न चलेगा। ३ कष्ट । विपत्ति। सकट। उदा०—सख्तियाँ दो ही सही थी, मैंने सारी उम्र मे। एक तेरे आने से पहले एक तेरे जाने के बाद।—कोई शायर।

सख्य—पु०[स०]१ सखा होने की अवस्था या भाव। २. मित्रता। दोस्ती। ३ बराबरी। समानता। ४ वैष्णव धर्म मे भक्ति का वह प्रकार या रूप जिसमे भक्त अपने इष्टदेव को अपना सखा मानकर उसकी आराधना तथा उपासना करता है। (नौ प्रकार की भक्तियो मे से एक)

सख्यता—स्त्री० [सख्य+तल्—टाप्]=सख्य।

सगंध—वि०[स० अव्य० स०]१. जिसमे गध हो। गधयुक्त। महकदार। २. अभिमानी। घमडी।

सगधा—स्त्री०[स० सगंध—टाप्] सुगधशालि। बासमती चावल। वि० [स्त्री० सगवी]=सगा।

सगधी—वि० [स० सगन्ध+इनि=सगधिन्] जिसमे गध हो। महकदार।

सग—पु०[फा०] कुत्ता। श्वान।

सग-जुबान—पु० [फा०] ऐसा घोडा जिसकी जीभ कुत्ते की जीभ के समान पतली और लम्बी हो। ऐसा घोडा ऐबी समझा जाता है।

सगड़ी†—स्त्री०[हिं० सग्गड]। छोटा सग्गड।

सगण—पु०[स० अव्य० स०] छद शास्त्र मे एक गण जिसमे दो लघु और एक गुरु अक्षर होता है। जैसे—उपमा-कमला-मनमा आदि। इस गण का प्रयोग छद के आदि मे अशुभ है। इसका रूप ।।ऽ है।

सगत†—स्त्री०[स० शक्ति]१ शिव की भार्या। पार्वती। (डिं०) २ शक्ति।

सगती†—स्त्री० =शक्ति।

सगदा†—पु०[देश०] एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अनाज से बनाया जाता है।

सगन—पु०[?] १. दे० 'सगण'। २ दे० 'शकुन'।

सगनौती —स्त्री०=शकुनौती।

सगपन†—पु०=सगापन।

सग-पहुती —स्त्री० [हिं० साग+पहुती=दाल] ऐसी दाल जो साग के साथ पकाई गई हो।

सगबग —वि०[अनु०] १ सराबोर। लथपथ। २ पिघला हुआ। द्रवित। ३ भरा हुआ। परिपूर्ण।
क्रि० वि० १ जल्दी या तेजी से। २ चटपट। तुरन्त।

सगबगाना—अ० [अनु० सग-बग]१ लथपथ होना। २ जल्दी या फुरती करना। ३ दे० 'सकपकाना'।

सगभत्ता†—पु०[हिं० साग+भात] एक प्रकार का भात जो चावल मे साग मिलाकर पकाया जाता है।

सगर—पु०[स०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो रामचन्द्र के पूर्वज थे। (जब इनके सौवें अश्वमेध यज्ञ का घोडा चुराकर इन्द्र पाताल ले गया था तब इनके ६०००० पुत्रो ने पाताल पहुँचने के लिए पृथ्वी खोदी थी जिससे समुद्र की सीमा बढी थी। इसी लिए समुद्र का नाम सागर पडा था।
†वि०=सगरा (सब)।
पु०[हिं० तगर] तगर का फूल या पौधा।

सगरा†—वि०[स० समग्र] [स्त्री० सगरी] सब। तमाम। सकल। कुल।
पु०[स० सागर] १ समुद्र। सागर। २ झील। ३ तालाब।

सगर्भ—वि०[स० ब० स०] एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा। (भाई, बहन आदि)।

सगर्भा—वि० स्त्री०[स० सगर्भ+आ]१. (स्त्री) जिसे गर्भ हो। गर्भवती स्त्री। २ दो या कइयो मे से कोई जो एक ही गर्भ से हुई हो। सहोदरा।

सगर्भ्य—वि०[स० सगर्भ+यत्]=सगर्भ।

सगल†—वि०=सकल (सब)।

सग-लगी—स्त्री०[हिं० सगा+लगना]१. किसी से बहुत सगापन दिखाने की क्रिया या भाव। बहुत अधिक आत्मीयता या आपसदारी दिखलाना। २ खुशामद।

सगलत*—स्त्री०[हिं० सगल=सकल]१ सकल या समस्त का भाव। समस्तता। २ समष्टि।
वि० पूरा। सारा। सब।

सगला†—वि०[स० सकल] सब। समस्त। कुल।

सगवती†—स्त्री०[?] खाने का मास। गोश्त। कलिया।

सगवारा†—पु०[स० स्वक्, हिं० सगा] गाँव के आस-पास की और उससे सबध रखती हुई भूमि।

सगा—वि०[स० स्वक्] [स्त्री० सगी] [भाव० सगापन]१ एक ही माता से उत्पन्न। सहोदर। २ सबध या रिश्ते मे अपने ही कुल या परिवार का। जैसे—सगा चाचा।
*पु०=सगापन। उदा०—स्वारथ को सबको सगा, जग सगला ही जाणि।—कबीर।

सगाई—स्त्री० [हिं० सगा+आई (प्रत्य०)] १. सगे होने का भाव। सगापन। २ घनिष्ठ पारिवारिक सबध। नाता। रिश्ता। उदा०—देखहु लोग हरि कै सगाई। माय धरै पुत्र धिया सग जाई।—कबीर। ३ आत्मीयता और घनिष्ठता का सग-साथ। उदा०—(क) परिहरि झूठा करि सगाई।—कबीर। (ख) सबसो ऊँची प्रेम सगाई।—सूर। ४ बिलकुल एक से या एक वर्ग के होने की अवस्था या भाव। जैसे—वैन सगाई=वर्णमैत्री या अनुप्रास। ५ विवाह का निश्चय। मँगनी। ६. विधवा स्त्री के साथ पुरुष का वह सबध जो कुछ जातियों मे विवाह के ही समान माना जाता हो। ७ सबध। नाता। रिश्ता।

सगापन—पु०[हिं० सगा+पन (प्रत्य०)]सगा होने की अवस्था या भाव।

सगावी—स्त्री०[फा० सग+आवी] ऊद-बिलाव नामक जन्तु।

सगारत—स्त्री०[हिं० सगा+आरत (प्रत्य०)] सगा होने का भाव। सगापन।

सगीर—वि०[अ०]१. छोटा। २. उमर या पद मे छोटा। ३ हीन।

सगुण—वि०[स०] गुण से युक्त। जिसमे गुण हो।
पु० सत्त्व, रज, तम तीनो गुणो से युक्त परमात्मा का वह रूप जिसमे वह अवतार धारण करके प्राणियों या मनुष्यों के से आचरण और व्यवहार करता है। साकार ब्रह्म। 'निर्गुण' का विपर्याय।
विशेष—मध्ययुग मे उत्तर भारत मे भक्ति मार्ग मे दो सप्रदाय हो गये थे—निर्गुण और सगुण। राम, कृष्ण आदि के अवतार ब्रह्म के सगुण रूप के अतर्गत आते है। निर्गुण रूप मे अवतार की कल्पना नही होती।

सगुणता—स्त्री०[स०] सगुण होने की अवस्था, धर्म या भाव। सगुण-पन।

सगुणी†—वि०=सगुण।

सगुन†—पु० १.=सगुण। २ =शकुन।

सगुनाना—स०[सं० शकुन+हिं० आना (प्रत्य०)] शकुन शास्त्र की विशिष्ट प्रक्रियाओ के अनुसार शकुन देखकर शुभ और अशुभ फलो का विचार करना।

सगुनिया†—पु० [स० शकुन, हिं० सगुन+इया (प्रत्य०)] वह मनुष्य जो लोगो को शकुनो के शुभाशुभ फल बतलाता हो। शकुन विचारने और उनका फल-बतलानेवाला।

सगुनौती—स्त्री०[हिं० सगुन] १. शकुन विचारने की क्रिया या भाव। २. वह पुस्तक जिसमे शकुनो के अच्छे और बुरे फलो का विवेचन हो। ३. मगलाचरण। मगलपाठ।

सगुरा†—वि०[हिं० स+गुरु]१ जिसने किसी गुरु से दीक्षा ली हो। २. जिसने किसी गुरु से, किसी अच्छी बात या काम की शिक्षा पाई हो। 'निगुरा' का विपर्याय।

सगृह—पु०[स० अव्य० स०]=गृहस्थ।

सगोत†—वि०=सगोत्र।

सगोती—पु०[स० सगोत्र] एक ही गोत्र अथवा कुल या परिवार के लोग भाई-बद। सगोत्र।

सगोत्र—पु०[स० ब० स०, अव्य० स० वा]१ ऐसे लोग जो एक ही गोत्र के अर्थात् एक ही पूर्वज से उत्पन्न हुए हो। (किन्ड्रेड, किन्समैन) २ कुल। वश। ३. जाति।

सगोत्रता—स्त्री०[स०] सगोत्र होने की अवस्था या भाव। (किनशिप्)

सगोती—स्त्री०[देश०] खाने का मास। गोश्त। कलिया।
†पु०=सगोत्र।

सघन—वि०[स० अव्य० स०] १. घना। गझिन। अविरल। गुजान। 'विरल' का विपर्याय। जैसे—सघन वन। २ ठोस।

सघनता—स्त्री०[स० सघन+तल्—टाप्] सघन होने की अवस्था, गुण या भाव।

सघला†—वि०[स० सकल] [स्त्री० सघली] सब। सारा।

सच—वि०[स० सत्य] १. जो यथार्थ हो। वास्तविक। २ झूठ रहित। सत्य।

सचक्री—पु०[स० सचक्र+इनि] वह जो रथ चलाता हो। सारथी।

सचन—पु०[स० चन्+अच् —समान=स] सेवा करने की क्रिया या या भाव। सेवन।

सचना†—स०[स० संचयन]१ सचय करना। इकट्ठा करना। २ कार्य का सपादन करना। काम पूरा करना। ३ बनाना। रचना।
†अ०=सचरना।
†अ० १. सचित या एकत्र होना। उदा०—मालती मल्लि मलैज लवंगनि सेवाती सग समूह सची है।—देव। २ कार्य का सपादित या पूरा होना। उदा०—बहु कुड शोनित सो भरे, पितु तर्पणादि क्रिया सची।—कबीर। ३ रचा जाना। बनना।

सचनावत्—पु० [स० सचन√अन् (रक्षा करना)+क्विप्—तुक] परमेश्वर जिसका भजन सब लोग करते है।

सच-मुच—अव्य०[हिं० सच+मुच(अनु०)] १ यथार्थत। ठीक ठीक। वास्तव मे। वस्तुत। २ निश्चित रूप से। अवश्य।

सचरना—अ०[स० सचरण]१ किसी के ऊपर प्रविष्ट होकर सचरित होना। फैलना। २ किसी वर्ग या समाज मे पहुँचकर लोगो से हेल-मेल बढाना। उदा०—जा दिन तै सचरे गोपिन मे, ताहि दिन तै करत लगरैया।—सूर। ३ किसी चीज या बात का लोगो मे प्रचलन या प्रचार होना। फैलना।

सचराचर—पु०[स० द्व० स०] ससार की सब चर और अचर वस्तुएँ। स्थावर और जगम सभी वस्तुएँ।

सचल—वि०[स०] [भाव० सचलता]१ जो अचल न हो। चलता हुआ। जगम। २ जो एक से दूसरी जगह आ-जा सके। ३ जो बराबर एक जगह से दूसरी जगह जाता रहता हो। (मूविंग) जैसे—सचल पुस्तकालय, सचल निरीक्षण आदि। ४. जो स्थिर न रहे। चचल। ५ जगम।

सचल-लवण—पुं०[म० मध्यम० स०] साँचर नमक।

सचा†—पुं० =सखा।

सचाई†—स्त्री०=सच्चाई।

सचान—पुं०[सं० सचान=श्येन] श्येन पक्षी। बाज।

सचाना†—स० [हिं० सच=सत्य] सच्चा कर दिखलाना।
उदा०—झूठहिं सचावैं, कर कलम मचावैं, अहो जुलुम मचावैं ये अदालत के अमला।

सचारना†—स०[हिं० सचरना का सकर्मक रूप] सचारित करना। फैलाना।

सचावट†—स्त्री० [हिं० सच+आवट (प्रत्य०)] सच्चापन। सच्चाई। सत्यता।

सचित—वि०[म० अव्य० स०] जिसे चिंता हो। फिक्रमद।

सचिक्कण—वि० [सं० अव्य० स०] बहुत अधिक चिकना। जैसे—सचिक्कण केश।

सचिक्कन—वि०=सचिक्कण।

सचित—वि०[सं० √चित् (ज्ञान करण)+क्विप्=म] जिसमे अथवा जिसे चित् अर्थात् ज्ञान या चेतना हो।

सचित्त—वि०[म० अव्य० स०] जिसका ध्यान किसी एक ओर लगा हो।

सचिव—पुं०[सं०]१. मित्र। दोस्त। २ मत्री या वजीर। ३. सहायक। मददगार। ४ आज-कल किसी बडे अधिकारी या विभाग का वह व्यक्ति जो अभिलेख आदि सुरक्षित रखता हो और मुख्य रूप से पत्र-व्यवहार आदि की व्यवस्था करता हो। (सेक्रेटरी)
विशेष—प्राचीन भारत मे, मत्री और सचिव प्राय समानक शब्द माने जाते थे, परन्तु आज-कल सचिव से मत्री का पद भिन्न होता है। मत्री का काम मत्रणा या परामर्श देना होता है परन्तु सचिव को ऐसा कोई अधिकार नही होता।
५ धतूरे का पेड।

सचिवता—स्त्री०[सं० सचिव+तल्—टाप्] सचिव होने की अवस्था, पद या भाव।

सचिव-मंडल—पुं०[सं०]=मत्रि-मडल।

सचिवाधिकार—पुं०[सं० सचिव+अधिकार] किसी राज्य के मन्त्रियों अर्थात् सचिवों का शासन-काल। (मिनिस्टरी) जैसे—काग्रेस सचिवाधिकार से शासन-विधि मे अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए हैं।

सचिवालय—पुं०[सं०] वह स्थान जहाँ राज्य के प्रमुख विभागों के सचिवों और प्रमुख अधिकारियों के कार्यालय हों। (सेक्रेटेरिएट)

सची†—स्त्री०[सं० शची] अगर। अगुरु।
†स्त्री०=शची (इन्द्राणी)।

सची-सुत—पुं०[सं० शची-सुत]१ शची का पुत्र, जयत। २ श्री चैतन्य महाप्रभु।

सचु†—पुं०[?]१ प्रसन्नता। खुशी। २. सुख।
वि०=सच।

सचेत—वि०[सं० सचेतन]१ जिसे या जिसमे चेतना हो। चेतन-युक्त। सचेतन। २. समझदार। सयाना। ३. सजग। सावधान।

सचेतक—वि०[सं०] सचेत या सजग करनेवाला।
पुं० विधायिका, सभाओ, ससदो आदि मे वह अधिकारी जिसका कर्तव्य सदस्यों को इस विषय मे सचेत कराना होता है कि अमुक प्रस्ताव या विषय पर मत देने के लिए आपकी उपस्थिति आवश्यक है। (ह्विप)

सचेतन—पुं०[सं० अव्य० स०]१. ऐसा प्राणी जिसमे चेतना हो। विवेक-युक्त प्राणी। २. ऐसी वस्तु जो जड न हो। चेतन।
वि०१ चेतनायुक्त। चेतन। २ सजग। सावधान। ३ चतुर। होशियार।

सचेता (तस्)—वि०[सं० चित्+असन्—सह=स] समझदार।
†वि०=सचेत।

सचेती—स्त्री० [हिं० सचेत+ई (प्रत्य०)] सचेत होने की अवस्था, गुण या भाव।

सचेष्ट—वि०[सं० अव्य० स०]१ जिसमे चेष्टा हो। २ जो चेष्टा या प्रयत्न कर रहा हो।
पुं० आम का पेड़।

सचैयत—स्त्री०[हिं० सच्च-ऐयत (प्रत्य०)]=सच्चाई।

सच्चरित—वि० [सं० कर्म० स०] जिसका चरित्र अच्छा हो। सच्चरित्र। सदाचारी।

सच्चा—वि०[सं० सत्य] [स्त्री० सच्ची]१ सच बोलनेवाला। जो कभी झूठ न बोलता हो। सत्यवादी। २ जिसमे किसी प्रकार का छल-कपट या झूठा व्यवहार न हो। अथवा जिसकी प्रामाणिकता, सत्यता आदि मे किसी प्रकार के अतर या सदेह की सभावना हो। जैसे—(क) जवान का सच्चा अर्थात् सदा सत्य बोलनेवाला और अपने वचन का पालन करनेवाला। (ख)लगोट का सच्चा अर्थात् जो परस्त्रीगामी न हो और पूर्ण ब्रह्मचारी हो। (ग) हाथ का सच्चा, जो कभी चोरी या बेईमानी न करता हो। ३ जिसमे कोई खोट या मेल न हो। खरा। विशुद्ध। जैसे—सच्चा सोना। ४ जितना या जैसा होना चाहिए उतना या वैसा। त्रुटि, दोष आदि से रहित। जैसे—सच्ची जडाई करना, सच्चा हाथ मारना। ५ जो नकली या बनावटी न हो, बल्कि असली या वास्तविक हो। जैसे—साडी पर सच्ची जरी का काम।

सच्चाई—स्त्री०[हिं० सच्चा+आई (प्रत्य०)] सच अर्थात् सत्य होने का गुण या भाव। सत्यता।

सच्चापन—पुं० [हिं० सच्चा+पन (प्रत्य०)] सच अर्थात् सत्य होने का गुण या भाव। सत्यता।

सच्चाहट—स्त्री०=सच्चाई। (क्व०)

सच्चित्—पुं०[सं० द्व० म०] सत् और चित् से युक्त। ब्रह्म।

सच्चिदानंद—पुं०[सं० कर्म० स०] सत्, चित् और आनन्द से युक्त परमात्मा का एक नाम। ईश्वर। परमेश्वर।

सच्चिन्मय—वि०[सं० सच्चित्-मयट्]१ सत् और चैतन्य स्वरूप। २ सत् और चैतन्य से युक्त।

सच्ची टिपाई—स्त्री० [हिं०] भारतीय मध्य-युगीन चित्र कला मे चित्र बनाने के समय पहले रूप-रेखा अकित कर चुकने पर गेरू से होनेवाला अकन।

सच्छंद*—वि०=स्वच्छद।

सच्छ*—वि०=स्वच्छ।

सच्छत†—वि०[सं० स+क्षत] जिसे क्षत लगा हो। घायल।

सच्छांति—स्त्री०[सं० सद्+शाति] सद् या उत्तम शाति। पूरी या विशुद्ध शाति।

सच्छाय —वि०[स० अव्य० स०]१. छायादार। २ सुन्दर रगोंवाला। ३. चमकदार। ४. एक ही रग का।

सच्छी*—स्त्री०=साक्षी।

सच्छील—पु० [स० कर्म० स०] सदाचार।
वि० अच्छे शीलवाला। शीलवान्।

सज—स्त्री०[स० सज्जा] [वि० सजीला] १. सजाने अथवा सजे हुए होने का गुण या भाव। सजावट। २. गठन या बनावट का ढग। (स्टाइल) जैसे—इमारत की सज मुसलमानी है। ३. शोभा। ४ सुन्दरता।
पु०[देश०] पियासाल नामक वृक्ष।

सजग—वि० [स० जागरण] १ सावधान। सचेत। सतर्क। २. चालाक। होशियार।

सजड़ा†—पु०=सहिंजन (वृक्ष)।

सजदार—वि०[हिं० सज+फा० दार (प्रत्य०)] जिसकी सज या बनावट अच्छी हो। सुन्दर।

सज-धज—स्त्री० [हिं० सज+धज अनु०] बनाव-सिगार। सजावट। जैसे—उसकी बरात बहुत सज-धज से निकली थी।

सजन—पु०[स० सत्+जन=सज्जन] [स्त्री० सजनी]१ भला आदमी। सज्जन। सरीफ। २ स्त्री का पति। स्वामी। ३. प्रियतम या प्रिय के लिए शिष्ट सम्बोधन।
वि० [स०] लोगों से युक्त। जन-सहित।

सजना—स० [स० सज्जा] १ सज्जित करना। सजाना। २ शरीर पर कपडे या हथियार आदि धारण करना। जैसे—सिपाहियो का ढाल, तलवार आदि से सजना। ३ कपडे आदि पर साज टाँकना या लगाना।
अ०१ आभूषण, वस्त्रादि से सज्जित या अलकृत होना। सजाया जाना।
पद—सजना-बजना= भली भाँति या बहुत सज्जित होना। २. सेना या सैनिकों का अस्त्र-शस्त्र आदि से युक्त होना। ३ उपयुक्त, भला या सुन्दर जान पडना। सुशोभित होना।
*पु०१ =साजन। २.=सहिंजन।

सजनी—स्त्री०[हिं० सजन]१ सखी। सहेली। २ मिथिला मे गाये जानेवाले पट गभनी (दे०) नामक लोक-गीत का दूसरा नाम।

सजप—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार के यति।

सज-बज†—स्त्री०=सजधज।

सजल—वि० [स०] [स्त्री० सजला]१. जल से युक्त या पूर्ण। जिसमे पानी हो। २ तरल पदार्थ से युक्त। ३ आँसुओ से युक्त। जैसे—सजल नेत्र। ४. जिसमे आब या चमक हो। चमकदार।

सजला†—वि०=सँझला।

सजवना* —स०=सजाना।
†पु०=सजावट।

सजवाई—स्त्री०[हिं० सजना+वाई (प्रत्य०)]सजवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

सजवाना—स० [हिं० सजाना का प्रे० रूप] सजाने का काम किसी से कराना। किसी को कुछ सजाने मे प्रवृत्त करना।

सजा—स्त्री०[फा० सज़ा]१. अपराध आदि के कारण अपराधी को दिया जानेवाला दड। २. कारागार या जेल मे रखे जाने का दड। कारावास। (इम्प्रिजनमेन्ट)

सजाइ*—स्त्री०=सजा (दड)।

सजाई—स्त्री०[स० सजाना+आई (प्रत्य०)]सजाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
†स्त्री०= सजा (दड)।

सजागर—वि०[स० अव्य० स०]१. जागता हुआ। २ सजग। होशियार।

सजात—वि०[स०]१. जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। २ जो अपने सम्बन्धियों से युक्त या उनके सहित हो। ३. जो उत्पत्ति, उद्गम अथवा आपेक्षिक स्थिति के विचार से एक प्रकार या वर्ग के हो। (होमोलोगस)

सजाति—वि०[स० ब० स०]१. जो जाति या वर्ग मे हो। २. (पदार्थ) जो एक ही प्रकार, प्रकृति या स्वरूप के हो।

सजातीय—वि०[स० कर्म० स० जाति+छ—ईय] एक ही जाति या जोड़ के (दो या अधिक)।

सजात्य—वि० [स० जाति+यत्] =सजातीय।

सजान—वि० [स० सज्ञान] १. जानकार। जाननेवाला। २ चतुर। होशियार।

सजाना—स०[स० सज्जा]१ चीजे ऐसे क्रम और ढग से रखना या लगाना कि वे आकर्षक और सुन्दर जान पडे। जैसे—आलमारी मे पुस्तकें सजाना। २ (व्यक्ति या स्थान) ऐसी चीजो से युक्त करना कि देखने मे भला और सुन्दर जान पडे। अलकृत करना। किसी चीज की शोभा या सुन्दरता बढाने के लिए उसमे और भी अच्छी चीजे मिलाना या लगाना। (डिकोरेशन)

सजाय—वि०[स० उपव्य० स०] जो अपनी जाया अर्थात् पत्नी के साथ उपस्थित या वर्तमान हो।
†स्त्री०=सजा (दड)।

सजा-याफ्ता—वि०[फा० सज़ायाफ्त] जिसने दडविधान के अनुसार दड पाया हो। । जो सजा भोग चुका हो।

सजायाब—वि०[फा०]१ जो दड पाने के योग्य हो। दडनीय। २ जो कारागार का दड भोग चुका हो। सजायाफ्ता।

सजार, सजारू—पु०[स० शल्य] शल्य।

सजाल—वि०[स० उपव्य० स०] अयाल से युक्त।

सजाव—पु०[स० सजाना] एक प्रकार का दही।
†पु०=सजावट।

सजावट—स्त्री०[हिं० सजाना] १. सजे हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—दुकान या मकान की सजावट। २ किसी चीज के आस-पास या इधर-उधर पडनेवाले खाली स्थानो मे ऐसी चीजें भरना या लगाना जिनमे उसकी शोभा या सौंदर्य बहुत बढ जाय। (डेकोरेशन) ३. शोभा।

सजावन—पु०[हिं० सजाना]१. सजाने की क्रिया। अलकृत करना। मडन। २ तैयार करना। प्रस्तुत करना।

सजावल—पु०[तु० सज़ावुल्]१. सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी।

तहसीलदार। २ राज-कर्मचारी। सरकारी नौकर। ३ सिपाहियों का जमादार।

सजावली—स्त्री०[हिं० सजावल] सजावल का पद या काम।

सजावार—वि०[फा०] जो दंड का भागी हो। जो सजा पाने के योग्य हो। दंडनीय।

सजिन—पु०=सहिंजन।

सजीउ†—वि०=सजीव।

सजीला—वि०[हिं० सजना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सजीली] १ सज-धज से या बनठनकर रहनेवाला। छैला। २ सुन्दर। आकर्षक। ३ जो बनावट के ढंग के विचार से बहुत अच्छा हो। सुन्दर और सुडौल। तरहदार। (स्टाइलिश)

सजीव—वि०[सं० अव्य० स०] १ जीवयुक्त। जिसमे प्राण हों। २ जिसमे जीवनी-शक्ति है। ३ जो देखने मे जीवयुक्त या जीवित सा जान पड़ता हो। ओज-पूर्ण। ४ तेज। फुरतीला।

पु० जीवधारी। प्राणी।

सजीवता—स्त्री०[सं० सजीव+तल्—टाप्] सजीव होने की अवस्था, गुण या भाव। सजीवपन।

सजीवन—पु०[सं० सजीवन] सजीवनी नामक बूटी।

सजीवन बूटी—स्त्री०[सं० सजीवनी+हिं० बूटी] १. रुदती। रुद्रवती। २ दे० 'सजीवनी'।

सजीवनी मंत्र—पु०[सं० सजीवन+मंत्र] १. वह कल्पित मंत्र जिसके संबंध मे लोगों का विश्वास है कि मरे हुए मनुष्य या प्राणी को जिलाने की शक्ति रखता है। २ ऐसी मंत्रणा जिससे कठिन काम सहज मे पूरा हो सकता हो।

सजीवनमूर, सजीवनमूरि†—स्त्री०=सजीवनी (बूटी)।

सजुग—वि०=सजग (सचेत)।

सजुता—स्त्री०[सं० संयुता] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है। (सजजग)

सजूत—वि०=संयुत (संयुक्त)।

सजरी—स्त्री०[?] एक प्रकार की मीठी पूरी।

सजोना—स०[हिं० सजाना] १ सज्जित करना। शृंगार करना। सजाना। २ आवश्यक सामग्री एकत्र करके व्यवस्थित रूप से रखना। ३. दे० 'संजोना'।

सजोयल†—वि०=संजोइल।

सज्ज†—पु०=साज।

स्त्री० १ =सज्जा। २ =सेज।

सज्जक—पु०[सं० सज्ज+कन्] सज्जा। सजावट।

वि० सज्जा या सजावट करनेवाला।

सज्जण—पु०[सं०] १ =सज्जन। २.=सज्जा। ३.=साजन।

सज्जता—स्त्री०[सं० सज्ज+तल्—टाप्] सज्जा अर्थात् सजे हुए होने का भाव। सजावट।

सज्जन—पु०[सं० कर्म० सं०, सत् +जन्] १ भला आदमी। सत्पुरुष। शरीफ। २. अच्छे कुल का व्यक्ति। ३ प्रिय व्यक्ति। ४. पहरेदार। संतरी। ५. जलाशय का घाट। ६ दे० 'सज्जा'।

सज्जनता—स्त्री०[सं० सज्जन+तल्—टाप्] सज्जन होने की अवस्था, गुण या भाव।

सज्जनताई—स्त्री०=सज्जनता।

सज्जा—स्त्री०[सं० सज्ज-अच्—टाप्] १ सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २ वेष-भूषा। ३ कोई काम सुन्दर रूप मे प्रस्तुत करने के लिए सभी आवश्यक उपकरण, साधन आदि एकत्र करके यथास्थान बैठाना या लगाना। ४ उक्त कार्य के लिए सभी आवश्यक और उपयोगी उपकरणों और साधनों का समूह। (ईक्विपमेन्ट, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)

स्त्री०[सं० शय्या] १ सोने की चारपाई। शय्या। २ श्राद्ध आदि के समय मृतक के उद्देश्य से दान की जानेवाली शय्या जिसके साथ ओढ़ाने, बिछाने आदि के कपड़े भी रहते है।

वि० [सं० सव्य] दाहिना (पश्चिम)।

सज्जाकला—स्त्री०[सं०] चीजों, स्थानों आदि को अच्छी तरह सजाकर आकर्षक तथा मनोहर बनाने की कला या विद्या। (डेकोरेटिव आर्ट)

सज्जाद—वि०[अ०] सिजदा करनेवाला। पूजक। उपासक।

सज्जाद नशीन—पु० [अ० सज्जाद +फा० नशीन] मुसलमानो मे वह पीर या फकीर जो गद्दी और तकिया लगाकर बैठता हो।

सज्जादा—पु०[अ० सज्जाद] १ बिछाने का वह कपड़ा जिसपर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। मुसल्ला। २ पीरों, फकीरों आदि की गद्दी। ३ आसन।

सज्जित—भू० कृ०[सं० √ सज्ज् (सजावट करना)+क्त] १ जिसकी खूब सजावट हुई हो। सजाया हुआ। अलंकृत। आरास्ता। २. आवश्यक उपकरणों, साधनों, सामग्री आदि से युक्त। (इक्विप्ड) जैसे—सज्जित सेना।

सज्जी—स्त्री०[सं० सर्जि, सर्जिका] मिट्टी की तरह का एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार जो सफेदी लिए हुए भूरे रंग का होता है। (फुलर्स अर्थ)

सज्जीखार—पु०=सज्जी।

सज्जीबूटी—स्त्री०[सं० सजीवनी] क्षुप जाति की एक वनस्पति जिसकी शाखाएँ कोमल और पत्ते बहुत छोटे और तिकोने होते हैं। प्राय इसी के डंठलों और पत्तियों से सज्जीखार तैयार होता है।

सज्जुता—स्त्री०[सं० संयुता] सजुता या संयुता नामक छंद।

सज्जे—सर्व० [सं० सर्व] सब।

अव्य० पूरी तरह से। सर्वत।

अव्य०[सं० सव्य] दाहिनी ओर। (पश्चिम)

सज्ञान—वि०[सं० अव्य० सं०] १. जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवाला। २ समझदार। सयाना। ३ प्रौढ़। वयस्क। बालिग। ४. सचेत। सावधान।

सज्या—स्त्री० १ =सज्जा। २.=शय्या।

सझ—स्त्री०[सं० सज्जा] १. सजावट। २ तैयारी। (डिं०)

सझणू—पु०[सं० सज्जा] सेना को सज्जित करने की क्रिया। फौज तैयार करना। (डिं०)

सझनी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा पक्षी जिसकी पीठ काली, छाती सफेद और चोंच लम्बी होती है।

सझिदार—पु०[भाव० सझिदारी]=साझीदार।

सझिया—वि०=साझीदार।

सझ्झ—वि०१ =साध्य। २ =सह्य।

सट—पु०[स० √सट्+अच्] जटा।
अव्य०[अनु०] सट शब्द करते हुए।

सटई—स्त्री०[देश०] अनाज रखने का एक प्रकार का बरतन।

सटक—स्त्री०[अनु० सट से]१. सटकने अर्थात् धीरे से चंपत होने या खिसकने की क्रिया। २ तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा जो अन्दर छल्लेदार तार देकर बनाया जाता है। ३ पतली लचीली छड़ी या डंठल।

सटकन—स्त्री०[हि० सटकना] सटकने की क्रिया या भाव।

सटकना—अ० [अनु० सट से] धीरे से खिसक जाना। रफूचक्कर होना। चल देना। चंपत होना।
स० बालों में से अनाज निकालने के लिए उसे कूटने की क्रिया। कूटना। पीटना।

सटकाना—स०[अनु० सट से]१. छड़ी, कोड़े आदि से इस प्रकार मारना कि 'सट' शब्द हो। जैसे—कोड़ा सटकाना, बेंत सटकाना। २ सट-सट शब्द करते हुए कोई क्रिया करना।

सटकार—स्त्री०[अनु० सट]१ सटकाने की क्रिया या भाव। २. सटकाने से होनेवाला शब्द । ३ गौ, बैल आदि छड़ी से हाँकने की क्रिया। ४ दे० 'झटकार'।

सटकारना—स०—१.=सटकाना। २ =झटकारना।

सटकारा—वि० [अनु०] चिकना और लंबा (बाल)। उदा०—लसत लछारे सटकारे तेरे केस हैं।—सेनापति।

सटकारी—स्त्री०[अनु०] ऐसी पतली छड़ी जिसे तेजी से हिलाने पर सट शब्द हो।

सटक्का—पु०[अनु० सट से]१ दौड़। २. झपट।
क्रि० प्र०—मारना।
३ दे० 'सटका'।

सटना—अ०[?]१ दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। जैसे—दीवार से आलमारी सटना। २. चिपकना। ३ मैथुन या संभोग करना। ४ लाठियों आदि से मारपीट होना। (बाजारू)
संयो० क्रि०—जाना।

सट-पट—स्त्री०[अनु०] १. सिटपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। २. शील। संकोच। ३. असमंजस या दुविधा की स्थिति। आगा-पीछा। ४ डर। भय। ५ घबराहट। उदा०—अरी खरी सट-पट परी बिधु आधैं मग हेरि।—बिहारी।

सटपटाना—अ० [अनु०] १ सटपट की ध्वनि होना । २ दे० 'सिट-पिटाना'।
स० सटपट शब्द उत्पन्न करना।

सटपटी—स्त्री० [अनु०]१. सटपटाने की क्रिया या भाव। २ सट-पट।

सटर-पटर—वि० [अनु०] १ छोटा-मोटा। तुच्छ। जैसे—सटर-पटर सामान। २ बहुत ही साधारण और सामान्य।
पुं० उलझन, झंझट या बखेड़े का काम।

सट-सट—अव्य० [अनु०] १. सट शब्द करते हुए। सटासट। २. झट-पट। तुरन्त। शीघ्र।

सटा—स्त्री० [स० सट+टाप्] १. साधुओं आदि के सिर पर की जटा। २. घोड़े, शेर आदि के कंधों पर के बाल। अयाल। ३. सूअर के बाल। ४ बालों की चोटी। ५. चोटी। शिखर।

सटाक—पु० [अनु०] सट शब्द।
मुहा०—सटाक से=सट या सटाक शब्द करते हुए।

सटाकी—स्त्री० [अनु०] चमड़े की वह रस्सी या पट्टी जो कुछ छड़ियों के सिरे पर बँधी रहती है।

सटान—स्त्री० [हि० सटना+आन (प्रत्य०)] १. सटने की अवस्था या भाव। मिलान। २. वह स्थान जहाँ दो चीजें सटती हैं। सन्धि-स्थल।

सटाना—स० [हि० सटना का स०] १ दो तलों, पार्श्वों आदि को इस प्रकार एक दूसरे के समीप ले जाना कि दोनों एक दूसरे को स्पर्श करने लगें। जैसे—(क) मेज को दीवार से सटा दो। (ख) खटिया को खटिया से सटाना। २ किसी लसीले पदार्थ की सहायता से एक चीज को दूसरी चीज पर चिपकाना। जैसे—दीवार पर इश्तहार सटाना। ३ पुरुष का परस्त्री या वेश्या से सम्बन्ध कराना। (बाजारू) ४ लाठियों आदि से मार-पीट या लड़ाई कराना। (गुंडे)

सटाय—वि० [देश०] १. दलालों की परिभाषा में उचित या नियत से कम। न्यून। २ निम्न कोटि का। घटिया। हलका।

सटाल—पु० [स० सटा+लच्] शेर बबर। केसरी। सिंह।
वि० भरा हुआ।
†पु०=स्टाल

सटासट—क्रि० वि० [अनु०] १ सटसट शब्द उत्पन्न करते हुए। जैसे—सटासट बेंत चलाना। २ बहुत जल्दी-जल्दी या फुर्ती। जैसे—सटासट काम निपटाना।

सटि—स्त्री० [स० सट+इनि] कचूर।

सटियल—वि० [देश० सटाय] घटिया। रद्दी।

सटिया—स्त्री० [हि० सटना] १. सोने, चाँदी आदि की एक प्रकार की चूड़ी। २ माँग में सिन्दूर भरने का एक उपकरण। ३ दे० 'साटी'।

सटी—स्त्री० [स० सट्+अटि+ङीप्] वनहल्दी। जंगली कचूर।

सटीक—वि० [सं० अव्य० स०] (पुस्तक) जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। टीका-सहित। व्याख्यासहित। जैसे—सटीक रामायण।
वि० [हि० स+ठीक] १. बिलकुल ठीक। उपयुक्त।

सटैया†—वि० [देश० सटाय] १. कम गुण या मूल्यवाला। घटिया। निकम्मा। रद्दी।

सटैला†—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सटोरिया—पु० [हि० सट्टा+ओरिया (प्रत्य०)] व्यक्ति जो सट्टा खेलने का शौकीन हो। सट्टेबाज।

सट्ट—पु० [स० सट्ट+अच्] दरवाजे के चौखटे में दोनों ओर की लकड़ियाँ। बाजू।
†पुं०=सट्टा।

सट्टक—पु० [स० सट्ट+कन्] १ एक प्रकार का उपरूपक जिसमें अद्भुत रस की प्रधानता होती है। इसमें प्रवेशक और विष्कंभक नहीं होते। इसके अंक जवनिका कहलाते हैं। किसी समय में केवल प्राकृत भाषा में लिखे जाते थे। २. जीरा मिला हुआ मट्ठा।

सट्टा—पु० [स० सार्य या प्रा० सट्ट, पु० हिं० साट] १ वह इकरारनामा जो दो पक्षों मे कोई निश्चित काम करने या कुछ शर्तें पूरी करने के लिए होता है। इकरारनामा। जैसे—बाजेवालो को पेशगी देकर उनसे सट्टा लिखा लो। २ काश्तकारो मे खेत की उपज के बँटवारे के सम्बन्ध मे होनेवाला इकरारनामा । ३ साधारण व्यापार से भिन्न क्रय-विक्रय का एक कल्पित प्रकार जिसमे लाभ-हानि का निश्चय भाव के उतरने-चढने के हिसाब से होता है; और इसी लिए जिसकी गिनती एक प्रकार के जूए मे होती है। (स्पेक्यूलेशन)
स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का पक्षी। २ बाजा।
†पुं०=हाट (बाजार)।

सट्टा-बट्टा—पु० [हिं० सटना+अनु० बट्टा] १ उद्देश्य-सिद्धि के लिए की हुई धूर्तता-पूर्ण युक्ति । चालबाजी।
क्रि० प्र०—लडाना।
२ किसी प्रकार की अभिसन्धि के रूप मे या दुष्ट उद्देश्य से किसी के साथ किया जानेवाला मेल-जोल।
क्रि० प्र—भिडाना।—लडाना।
३ स्त्री और पुरुष का अनुचित और गुप्त सबध।

सट्टी—स्त्री० [हिं० हाट या हट्टी] वह बाजार जिसमे एक ही मेल की बहुत सी चीजें लोग दूर दूर से लाकर बेचते हो। हाट। जैसे—तरकारी की सट्टी; पान की सट्टी।
मुहा०—सट्टी करना—सट्टी मे से सामान खरीदना। **सट्टी मचाना**=सट्टी मे जैसा शोर होता है वैसा शोर मचाना। **सट्टी लगाना**=बहुत सी चीजे इधर-उधर फैला देना।

सट्टे—अव्य० [अनु० सट से] १ दफा। बार। २ अवसर पर। मौके पर। जैसे—हर सट्टे यही कहते थे—पान खिलाओ। (केवल 'हर' के साथ प्रयुक्त)

सट्टेबाज—पु० [हिं०] [भाव० सट्टेबाजी] वह जो सट्टे की तरह का व्यापार और भाव की तेजी-मन्दी के हिसाब से (बिना माल खरीदे-बेचे) लेन-देन करता हो। (स्पेक्यूलेटर)

सट्वा—स्त्री० [स०] २ एक तरह का पक्षी। २ एक तरह का बाजा।

सठ†—पु०=शठ।

सठई†—स्त्री०=शठता।

सठता†—स्त्री०=शठता।

सठमति—वि० [स० शठ+मति] दुष्ट प्रकृतिवाला। दुष्ट। उदा०—तजतु अठान न हठ पर्‌यौ सठमति, आठौ जाम।—विहारी।

सठियाना—अ० [हिं० साठ=६०] [भाव० सठियाव] १ साठ वर्ष का बुड्ढा होना। २ मनुष्य का ६० वर्ष या इससे अधिक का हो जाने पर मानसिक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण ठीक तरह से काम-धंधा करने या सोचने-समझने के योग्य न रह जाना।
मुहा०—सठिया जाना=ऐसी अवस्था मे पहुँचना जब कि बुद्धि ठीक से काम करना छोड देती है।

सठियाव—पु० [हिं० सठियाना+आव (प्रत्य०)] सठिया जाने या सठियाये हुए होने की अवस्था या भाव। वह अवस्था जिसमे मनुष्य ६० वर्ष या अधिक का हो जाने पर ठीक तरह से काम-धधा करने या सोचने-समझने के योग्य नही रह जाता। (सेनिलिटी)

सठुरी†—स्त्री० [हिं० सीठी या साँठी] गेहूँ, जौ आदि के डठलो का वह गठीला अग जिसका भूसा नही होता और जो ओसाकर अलग कर दिया जाता है। गठुरी। कूँटा। कूँटी।

सठेरा—पु० [हिं० साँठा] सन का वह डठल जो सन निकाल लेने पर बच रहता है। सठा। सरई। सलई।

सठोरना—स० [हिं० बटोरना का अनु०; बटोरना-सठोरना] एकत्र या सचित करना।

सठोरा†—पु०=सोंठौरा।

सठ्ठो—पु० [?] ऊँट। (राज०)

सड़क—स्त्री० [अ० शरक] १. वह कच्चा या पक्का मार्ग जिस पर गाडियाँ, टाँगे, मोटरें आदि भी चलती हो। २ लाक्षणिक अर्थ मे, पथ या मार्ग। जैसे—राम नाम स्वर्ग तक पहुँचाने की सडक है।

सड़क्का†—पु० दे० 'सटक्का'।

सड़न—स्त्री० [हिं० सडना] १ सडने की अवस्था, क्रिया या भाव। (डिकाम्पोजिशन) २ दे० 'पूयन'।

सड़ना—अ० [स० शादन या सरण ?] १ किसी पदार्थ मे ऐसा विकार होना जिसमे उसके सयोजक तत्त्व या अग अलग अलग होने लगें; उसमे से दुर्गंध आने लगे और वह काम के योग्य न रह जाय। जैसे—अनाज या फल सडना। २ लाक्षणिक अर्थ मे, हीन अवस्था मे पडे रहना। जैसे—जेल मे कैदियो का सडना। ३ जल मिले हुए पदार्थ मे खमीर उठना या आना।
सयो० क्रि०—जाना।
४ बहुत ही कष्ट या बुरी दशा मे पड़े-पड़े समय बिताना। जैसे—बरसो उसे जेल मे सडना पडा।
पद—सड़ी गरमी=प्राय वर्षा ऋतु मे होनेवाली वह गरमी जिसमे उमस बहुत अधिक हो।
† अ० जलना। (पश्चिम)

सड़सठ—वि० [हिं० सड़ (सात का रूप)+साठ] जो गिनती मे साठ से सात अधिक हो।
पुं० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६७।

सड़सी†—स्त्री०=सँडसी।

सड़ा—पु० [हिं० सडना] कुछ चीजो को सडाकर बनाया हुआ वह घोल जो गौओ को बच्चा होने के समय पिलाते हैं।

सड़ाक—पु० [अनु० सड से] कोडे आदि की फटकार की आवाज, जो प्राय. सड के समान होती है।
पद—सड़ाक से=बहुत जल्दी।

सड़ान—स्त्री० [हिं० सडना] सडने की क्रिया या भाव। सडन।

सड़ाना—स० [हिं० सडना का स० रूप] १ किसी वस्तु को सडने मे प्रवृत्त करना। किसी पदार्थ मे ऐसा विकार उत्पन्न करना कि उसके अवयव गलने लगें और उसमे से दुर्गन्ध आने लगे। जैसे—सब आम तुमने रखे-रखे सडा डाले।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
२ बहुत अधिक कष्ट या दुर्दशा मे इस प्रकार रखना कि कोई उपयोग न हो सके। जैसे—किसी को जेल मे रखकर सड़ाना।

सड़ायँध—स्त्री० [हिं० सड़ना+गंध] सड़ी हुई चीज से निकलनेवाली दूषित उग्र गंध। सड़ने से उठनेवाली बदबू।

सड़ाव—पु० [हिं० सड़ना+आव (प्रत्य०)] १. सड़ने की क्रिया या भाव। २ सड़ने के फलस्वरूप होनेवाला विकृत रूप या स्थिति।

सड़ासड़—अव्य०[अनु० सड़ से] सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़ शब्द हो। जैसे—सड़ासड़ कोड़े या बेत लगाना।

सड़ियल—वि० [हिं० सड़ना+इयल(प्रत्य०)] १. सड़ा या गला हुआ। २ बहुत ही निकम्मा, निम्न कोटि का या रद्दी। ३ (व्यक्ति) जो जला-भुना उत्तर देता हो।

सणगार†—पु०=शृंगार। (डिं०)

सत्—वि० [सं०√अस् (होना)+शतृ-अलोप] १ सच। सत्य। २ सज्जन। साधु। ३. धीर। ४ स्थायी। ५ पंडित। विद्वान्। ६ पूज्य। मान्य। ७ प्रशस्त। ८ पवित्र। शुद्ध। ९ उत्तम। श्रेष्ठ।

पु० १ ब्रह्मा। २ माध्व संप्रदाय का एक नाम।

सत—पु० [सं० सत्] सत्यता-पूर्ण धर्म।

मुहा०—**सत करना या सत पर चढ़ना**=पति का मृत शरीर लेकर पत्नी का चिता पर बैठना और उसके साथ सती होना। उदा०—(क) मूवां पीछे सत करे, जीवत क्यू न कराइ।—कबीर। (ग) जब सती सत पर चढ़े तब पान खाना रस्म है। **सत पर रहना**=(क) सत्य धर्म का पालन करना। (ख) स्त्री का पतिव्रता और साध्वी होना।

पु० [सं० सत्व] १. किसी चीज में से निकला हुआ सार भाग। तत्त्व। २ जीवनी शक्ति।

वि० १ सत्यतापूर्ण। जैसे—सतगुरु, सतनाम। २ अच्छा। भला। जैसे—सत भाय। ३ शत। सौ। जैसे—सतदल।

वि० 'सात' (संख्या) का संक्षिप्त रूप (यौ० के आरंभ में, जैसे—सतकोना, सतनजा, सतनदी, सतसई आदि)।

सतकार†—पु०=सत्कार।

सतकारना*—स० [सं० सत्कार+हिं० ना (प्रत्य०)] सत्कार या सम्मान करना। इज्जत करना।

सत-कोना—वि० [हिं० सात+कोना] सात कोनोंवाला।

सत-खंडा—वि० [हिं०सात+खंड] सात खंडों या मंजिलोंवाला। (मकान या महल)

सत-गाँठिया—स्त्री० [हिं० सात+गाँठ] एक प्रकार की वनस्पति, जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

सत-गजरा—पु० दे० 'सतनजा'। (बुन्देल०) उदा०—सतगजरा की मोंबी रोटी, मिरच हरीरी मेवा।—लोकगीत।

सत-गुरु—पु० [हिं० सत=सच्चा+गुरु] १ अच्छा गुरु। २ ईश्वर। परमात्मा।

सतजीत†—पु०=सत्यजित्।

सत-जुग—पु०=सत्य युग।

सतत—अव्य० [सं०] १. निरन्तर। बराबर। लगातार। २ सदा। हमेशा।

वि० [भाव० सतति] निरन्तर चलता रहनेवाला। (परपेचुअल) जैसे—सतत उत्तरोत्तरता या अनुक्रम। (परपेचुअल सक्सेशन)

सततक—वि० [सं०] दिन में दो बार आने या होनेवाला। जैसे—सततक ज्वर।

सततग—वि० [सं०] वह जो सदा चलता रहता हो। निरंतर गतिशील।

पु० वायु। हवा।

सतत-ज्वर—पु० [सं०] ऐसा ज्वर जो दिन में दो बार आए या रात्रि दिन में एक बार और फिर रात को भी एक बार आए। द्विकालिक विषम ज्वर।

सतत्व—पु० [सं० अव्य० स०] स्वभाव। प्रकृति।

सत-दंता—वि० [हिं० सात+दाँत] (पशु) जिसके सात दाँत हों।

सत-दल†—वि०, पु०=शत-दल।

सत-ध्रत†—पु०=शतधृत (ब्रह्मा)।

सतनजा—पु० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अनाजों का मिश्रित रूप। वह मिश्रण जिसमें सात भिन्न-भिन्न प्रकार के अनाज हों।

वि० अनेक प्रकार के तत्त्वों, पदार्थों आदि से मिल-जुल कर बना हुआ।

सतनी†—स्त्री० [सं० सप्तपर्णी] १. सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन। छतिवन। २. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी से सन्दूक आदि बनते हैं।

सतनु—वि० [सं० अव्य० स०] तन या शरीर से युक्त। शरीरधारी।

सत-पतिमा—वि० स्त्री० [हिं० सात+पति] १ (स्त्री) जिसने सात पति किये हों। २ दुश्चरित्रा। पुंश्चली।

वि० सात पतियोंवाला (या वाली)।

†स्त्री०=सतपुतिया।

सतपदी—स्त्री०=सप्तपदी।

सत-परब†—पु० [सं० शतपर्वा] १ शत पर्वा। बाँस। २. ऊख। गन्ना।

सत-पात†—पु० [सं० शतपत्र] शतपत्र। कमल।

सत-पुतिया—स्त्री० [सं०सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तरोई जिसमें प्रायः पाँच या सात फलियाँ एक साथ गुच्छे के रूप में लगती हैं।

सत-पुरिया—स्त्री० [?] एक प्रकार की जंगली मधुमक्खी।

सतफल—पु० [सं० शतफला] घुँघची।

सतफेरा—पु० [हिं० सात+फेरा] विवाह के समय होनेवाला सप्तपदी नामक कर्म।

सतबरग†—पु०=सदबरग (पौधा)।

सतबरवा†—पु० [सं० शतपर्व=बाँस] एक प्रकार का वृक्ष जिसके रेशों से नैपाली कागज बनाया जाता है।

सतभइया†—वि० स्त्री०[हिं० सात+भइया] १ जो सात भाई हों। २ जिसके सात भाई हों।

स्त्री० पेंगिया मैना।

सत-भाएँ—अव्य० [सं० सद्भाव] अच्छे भाव से।

सत-भाय*—पु०=सद्भाव।

सतभाव—पु० [सं० सद्भाव] १ सद्भाव। अच्छा भाव। २ सरलता। सीधापन। ३ सचाई। सत्यता।

सतभिखा†—स्त्री०=शतभिषा (नक्षत्र)।

सतभौंरी—स्त्री० [सं० सप्त भ्रमण] सप्तपदी। (दे०)

सतम*—वि०=सप्तम (सातवाँ)।

सतमख—पु० [स० शतमख] इद्र। (डिं०)

सत-माय†—स्त्री० [हिं० सौत+माँ] सौतेली माँ।

सतमासा—वि० [हिं० सात+मास] [स्त्री० सतमासी] (शिशु या बालक) जो गर्भ मे सात ही महीने रहने के उपरान्त जनमा हो, नौ महीने अर्थात् पूरी अवधि तक न रहा हो।

पु० एक रसम जो गर्भाधान के सातवें महीने में होती है।

सतमूली†—स्त्री०=शतमूली।

सत-युग—पु०[स० सत्य युग] १ सत्य युग। २ ऐसा समय जब कि लोग सब प्रकार से सुखी, सच्चे और सदाचारी हों।

सतयुगी—वि० [हिं० सत-युग] १. सत-युग के समय का। २ बहुत पुराना। ३ बहुत ही सच्चा, सात्विक या सीधा।

सत-रंग—वि०=सत-रगा।

सतरगा—वि० [हिं० सात+स० रग] [स्त्री० सत-रगी] जिसमे सात रग हों। सात रगोंवाला। जैसे—सतरगा साफा, सतरगी साडी।

पु० इन्द्र-धनुष।

सतरंज†—स्त्री०=शतरज।

सतरंजी—स्त्री०=शतरजी।

सतर—पु० [अ०] १ छिपाव। २. मनुष्य का वह अग जो ढका रखा जाता है और जिसके न ढके रहने पर उसे लज्जा आती है। गुह्य इद्रिय। **पद—बे-सतर**=(क) नगा। नग्न। (ख) बुरी तरह से अपमानित किया हुआ।

३ आड़। ओट। परदा।

स्त्री० [अ०] १ लकीर। रेखा।

क्रि० प्र०—खींचना।

२. अवली। कतार। पक्ति।

वि० १ टेढा। वक्र। २ कुपित। क्रुद्ध।

†अव्य० [स० सत्वर] जल्दी या तेजी से।

सतरकी†—स्त्री०=सत्रही (मृतक की क्रिया)।

सतराई*—स्त्री० [स० शत्रु+हिं० आई (प्रत्य०)] दुश्मनी। शत्रुता।

सतराना—अ०[हिं० सतर या स० सतर्जन] १ क्रोध करना। कोप करना। २ कुढना। चिढना।

सयो० क्रि०—जाना।

३ चोचला, दुलार या नखरा दिखाते हुए धृष्टता-पूर्ण आचरण करना।

स० १ क्रोध चढाना। २ चिढ़ाना।

सतराहट†—स्त्री० [हिं० सतराना+हट (प्रत्य०] सतराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

सतरी—स्त्री० [स० सर्पदंष्ट्रा] सर्पदष्ट्रा नामक ओषधि।

सतरु†—पु०=शत्रु।

सतरौहाँ+—वि० [हिं० सतराना] [स्त्री० सतरौही] १ कुपित। क्रोधयुक्त। २ सतरानेवाला। सतराहट से युक्त। (फलत कुढने, चिढने या रूठनेवाला)

सतरौहें†—अव्य० [हिं० सतराना] सतराते हुए। सतराहट लिये हुए।

सतर्क—वि० [स०] [भाव० सतर्कता] १ जो तर्क करने मे कुशल हो। २ (व्यक्ति) जो अपनी तथा दूसरो की आवश्यकताओं, विचारों, भावनाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखता हो। (कानसिडरेट) ३ जो दूसरों के व्यापारों, कार्यो, आदि की थाह पहले से लगा या अनुमान कर लेता हो और इसी लिए चौकन्ना रहता हो। सावधान।

सतर्कता—स्त्री० [स० सतर्क+तल्–टाप्] १ सतर्क होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सावधानी। होशियारी।

सतर्पना*—स० [स० सतर्पण] भली-भाँति तृप्त या सतुष्ट करना।

सतर्ष—वि० [स० अव्य० स०] तृषित। प्यासा।

सतलज—स्त्री० [सं० शतद्रु] पजाब की पाँच नदियों मे से एक। शतद्रु नदी।

सत-लड़ा—वि० [हिं० सात+लड़] [स्त्री० सतलडी] सात लडोंवाला। जैसे—सतलडा हार।

पु० [स्त्री० अल्पा० सतलडी] सात लडियोंवाला बडा हार।

सतवंती†—स्त्री० [स० सत्यवती] पतिव्रता या सती और साध्वी स्त्री।

सतवाँसा†—वि० पु०=सतमासा।

सतवार—वि०[स० सत्] सत् या धर्म पर होनेवाला। सदाचारी और धर्मनिष्ठ।

सतवारा†—पु० [हिं० सात+वार] सात दिनों का समूह। सप्ताह।

सतसंग†—पु०=सत्सग।

सतसंगत†—स्त्री०=सत्सग।

सतसंगी†—वि०=सत्सगी।

सतसई†—स्त्री० [स० सप्तशती] वह ग्रथ जिसमे सात सौ पद्य हों। सात सौ पद्यो का समूह या सग्रह। सप्तशती। जैसे—बिहारी-सतसई।

सतसठ†—वि०=सडसठ।

सतसल—पु० [देश०] शीशम का पेड।

सतह—स्त्री० [अ०] [वि० सतही] १ किसी वस्तु का ऊपरी भाग या विस्तार। १ बाहर या ऊपर का फैलाव। तल। (लेविल) जैसे—जमीन या समुद्र की सतह। २ रेखागणित मे, वह विस्तार जिसमे लम्बाई-चौडाई तो हो पर मोटाई न हो।

सतहत्तर—वि०[स० सप्तसप्तति, पा० सत्तसत्तति, प्रा० सत्तहत्तरि] जो गिनती मे सत्तर से सात अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७७।

सतही—वि० [हिं० सतह] १. सतह या ऊपरी स्तर पर होनेवाला। २ ऊपरी। दिखौआ।

सतांग—पु०=शताग (रथ)।

सतानंद—पु०[स० ब० स०] गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना—स० [स० सतापन, प्रा० सतावन] १ सतप्त करना। २ मानसिक क्लेश पहुँचाकर परेशान करना। ३ तग या परेशान करना।

सतार—पु० [स० अव्य० स०] जैनो के अनुसार ग्यारहवाँ स्वर्ग।

वि० १ तारकों या तारो से युक्त। उदा०—चुनरी स्याम सतार नभ, मुख ससि के अनुहारि।—बिहारी। २ जिसमे तारे टँके, बने या लगे हुए हों।

सतारुक—पु०[स० अव्य० स०] एक रोग जिस मे शरीर पर लाल और काली फुसियाँ निकलती है ।

सतारू†—पु०=सतारुक।

सतालुई—वि० [हि० सतालू] सतालू (फल) की तरह का हलका लाल। (क्रिम्सन)

पु० उक्त प्रकार का रग जो गुलनारी से हलका होता है।

सतालू—पु० [स० सप्तालुक मि० फा० शफतालू] १. एक प्रकार का पेड जिसके गोल फल खाये जाते है। २. उक्त पेड का फल। आडू। शफतालू।

सतावना†—स०=सताना।

सतावर—स्त्री०[स० शतावरी] एक प्रकार का झाडदार वेल जिसकी जड और बीज औषध के काम आते हैं। शतमूली। नारायणी।

सतासी—वि०, पु०=सत्तासी।

सति†—पु० दे० 'सत्य'।

† वि०=सत्।

† स्त्री०=सती।

सतिगुर†—पु०=सद्गुरु।

सतिभाएँ†—अव्य०=सतभाएँ।

सतिया†—वि०=सौतेला।

† पु०=सथिया।

सतिवन—पु० [स० सप्तपर्ण, प्रा० सत्तवन्न] एक सदावहार वडा पेड जिसकी छाल दवा के काम आती है। सप्तपर्णी। छतिवन।

सती—वि० स्त्री० [स०] १ अपने पति के अतिरिक्त और किसी पुरुष का ध्यान मन मे न लानेवाली। साध्वी। पतिव्रता। २. अपने पति के मरने पर उसके साथ ही जल या मर जानेवाली। सहगामिनी। क्रि० प्र०—होना।

स्त्री० १. दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को व्याही थी। २ विश्वामित्र की पत्नी का नाम। ३. पतिव्रता स्त्री। साध्वी। ४ वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता मे जले। सहगामिनी स्त्री। **मुहा०—(पति के साथ) सती होना**=मरे हुए पति के शरीर के साथ चिता मे जल मरना। सहगमन करना। **(किसी काम या वात के लिए) सती होना**=वहुत अधिक कष्ट झेलते हुए मर मिटना।

६ मादा पशु। ७ सुगधित या सोंधी मिट्टी। ७ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण और एक गुरु होता है।

पु० [स० सत्] १ वह जो सत्धर्म का पालन करता हो। २. सात्विक वृत्तियोंवाला साधु या महात्मा। जैसे—वडे-वडे जोगी, जती और सती भी उसकी महिमा का पार नही पा सके।

† स्त्री० १ =शती। २. =शक्ति।

सती-चौरा—पु० [स० सती+हि० चौरा] वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक मे वनाया जाता है।

सतीत्व—पु० [स० सती+त्व] सती होने की अवस्था, धर्म या भाव। पातिव्रत्य।

मुहा०—(किसी स्त्री का) सतीत्व विगाड़ना या नष्ट करना=किसी स्त्री से वलात्कार करना।

सतीत्व-हरण—पु० [स० प० त०] किसी सच्चरित्रा स्त्री के साथ वलात्कार करके उसका सतीत्व विगाडना।

सतीदोषोन्माद—पु० [स० मध्यम० स०] स्त्रियों का वह उन्माद रोग जिसका प्रकोप किसी सतीचौरे को अपवित्र करने के कारण माना जाता है।

सतीन—पु० [स० सती√नी (ढोना)+ड] १. एक प्रकार का मटर। २. अपराजिता या कोयल नाम की लता।

सतीपन†—पु०=सतीत्व।

सतीर्थ—पु० [म० व० स०] १. एक ही आचार्य से पढनेवाले विद्यार्थी या ब्रह्मचारी। सहाध्यायी। २. सहपाठी।

सतील—पु० [म० अव्य० स०] १ वाँस। २ अपराजिता। ३ वायु। हवा।

सतुआ†—पु०=सत्तू।

सतुआन†—स्त्री०=सतुआ सक्राति।

सतुआ संक्रांति—स्त्री०[हि० सतुआ+स० सक्रान्ति] मेष की सक्राति जो प्राय. वैशाख मे पडती है। इस दिन लोग सत्तू दान करते और खाते है।

सतुआ सोंठ—स्त्री० [हि० सतुआ+सोंठ] एक प्रकार की सोंठ।

सतुला—स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का जाँघिया जो घुटनों तक होता है।

सतून—पु० [स० स्थाणु से फा० सुतून] स्तभ। खभा।

सतूना—पु०[हि० सतून=खभा] वाज की एक प्रकार की झपट जिसमे वह पहले शिकार के ठीक ऊपर उड़ जाता है और फिर एक-वारगी नीचे की ओर उस पर टूट पड़ता है।

सतेरक—पु० [स० सतेर+कन्] ऋतु। मौसम।

सतेरी†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मधुमक्खी।

सतोखना*—स०[स० सतोषण] १. सतुष्ट करना। प्रसन्न करना। २ समझा-बुझाकर सतोष या ढाढस दिलाना।

सतोगुण—पु०=सत्त्वगुण।

सतोगुणी—वि०=सत्त्वगुणी।

सतोदर†—पु०=शतोदर (शिव)।

सतौला—पु० [हि० सात+औला (प्रत्य०)] प्रसूता स्त्री का वह विधिवत् स्नान जो प्रसव के सातवे दिन होता है।

सतौसर—वि० [स० सप्तसृक्] सात लडो का। सतलडा।

सत्कदंब—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का कदब।

सत्करण—पु० [स० प० त०, कर्म० स०] [वि० सत्करणीय, भू० कृ० सत्कृत] १ सत्कार करना। आदर करना। २ मृतक की अन्त्येष्टि-क्रिया करना।

सत्करणीय—वि० [स० सत√कृ (करना)+अनीयर, कर्म० स०] जिसका सत्कार करना आवश्यक और उचित हो। सत्कार का पात्र। आदरणीय। पूज्य।

सत्कर्ता (र्तृ)—वि० [स० कर्म० स०] [स्त्री० सत्कर्त्री] १ अच्छा काम करने वाला। सत्कर्म करनेवाला। २ आदर-सत्कार करनेवाला। पु० आज-कल वह व्यक्ति जो आगत और निमत्रित व्यक्तियो का किसी रूप मे सत्कार करता हो।

सत्कर्म—पु० [स० कर्म० स०, सत्कर्मन्] १ अच्छा कर्म। अच्छा काम। २ धर्म या पुण्य का काम।

सत्कर्मा (मन्)—वि० [स० ब० स०] सत्कर्म करनेवाला।

सत्कला—स्त्री० [स० कर्म० स०] =ललित कला।

सत्काय दृष्टि—स्त्री० [स०] मृत्यु के उपरात आत्मा, लिंग-शरीर आदि के बने रहने का सिद्धान्त जो बौद्धो की दृष्टि मे मिथ्या है।

सत्कार—पु० [स०] १ अभ्यागत, अतिथि आदि की की जानेवाली खातिरदारी तथा सेवा। २ धन आदि भेंट देकर किसी का किया जानेवाला आदर-सम्मान या सेवा।

सत्कारक—वि० [स०] सत्कार करनेवाला। सत्कर्ता।

सत्कार्य—वि० [स० सत्√कृ(करना)+ण्यत्] १ जिसका सत्कार होना आवश्यक या उचित हो। सत्कार का पात्र। २. (मृतक) जिसकी अन्त्येष्टि क्रिया होने को हो।

पु० उत्तम कार्य। अच्छा काम।

सत्कार्यवाद—पु० [स० मध्यम० स०] १ साख्य का यह दार्शनिक सिद्धान्त कि बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नही हो सकती। फलत यह सिद्धान्त कि इस जगत की उत्पत्ति शून्य से नही किसी मूल सत्ता से है। (यह सिद्धान्त बौद्धो के शून्यवाद के विपरीत है।) २ दे० 'परिणामवाद'।

सत्कीर्ति—स्त्री० [स० कर्म० स०] उत्तम कीर्ति। यश। नेकनामी।

सत्कुल—पु० [स० कर्म० स०] उत्तम कुल। अच्छा या बडा खानदान। वि० जो अच्छे कुल मे उत्पन्न हुआ हो।

सत्कृत—वि० [स० सत्√कृ (करना)+क्त] १ अच्छी तरह किया हुआ। २. जिसका सत्कार किया गया हो। ३ सजाया हुआ। अलकृत।

पु० १. सत्कार। २ सत्कर्म।

सत्कृति—स्त्री० [स०] अच्छी या उत्तम कृति।

वि० सत्कर्मा।

सत्क्रिया—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ धर्म का काम। सत्कर्म। २ आदर-सत्कार। ३ किसी कार्य का आयोजन या तैयारी।

सत्त—पुं० [स० सत्व] १ किसी पदार्थ का सार भाग। असली तत्व। रस। जैसे—गेहूँ का सत्त, मुलेठी का सत्त। २ मुख्य उपयोगी तत्व। ३ बल। शक्ति।

†वि०=सत्य।

†पु० १ =सत्य। २. =सतीत्व।

सत्तम—वि० [स० सत्+तमप्] १ सबसे अधिक सत् या अच्छा। २ सर्वश्रेष्ठ। ३ परम पूज्य।

सत्तर—वि० [स० सप्तति, प्रा० सत्तरि] जो गिनती मे साठ से दस अधिक हो।

पु० उक्त की बोधक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७०।

सत्तरह—वि० [स० सप्तदश, प्रा० सत्तरह] जो गिनती मे दस से सात अधिक हो।

पु० उक्त की बोधक सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—१७।

सत्तांतरण—पु० [स० सत्ता+अतरण] [भू० कृ० सत्तातरित] १ सत्ता का एक के हाथ से दूसरे के हाथ मे जाना। २ सत्ताधारी का सत्ता दूसरे को सौंपना। (ससेसन, उक्त दोनो अर्थो मे)

सत्तातरित—भू० कृ० [सं० सत्तातरण] (देश या राज्य) जिसके शासन की सत्ता दूसरे को सौंप दी गई हो। (सीडेड)

सत्ता—स्त्री० [स० सत्+तल्—टाप्] १ मूर्त रूप से वर्तमान रहने या होने की अवस्था, गुण या भाव। अस्तित्व। हस्ती। 'अभाव' का विपर्याय। (बीइग) २ शक्ति। सामर्थ्य। ३ वह अधिकार, शक्ति या सामर्थ्य जो किसी प्रकार का उपभोग करती हुई और अपनी सक्षमता दिखलाती हुई काम करती हो। (पावर) जैसे—राज सत्ता।

मुहा०—(किसी पर) सत्ता चलाना=अपना अधिकार दिखलाते हुए और वश मे रखते हुए उपभोग, व्यवहार, शासन आदि करना।

४ राजनीति-शास्त्र मे, किसी विशिष्ट राष्ट्र का वह अधिकार या शक्ति जिससे बढकर और कोई अधिकार या शक्ति न हो। (सावरेटी)

पु० [हिं० सात] ताश या गजीफे का वह पत्ता जिसमे सात बूटियाँ हो।

सत्ताईस—वि० [स० सप्त-विंशति, प्रा० सत्ताईस] जो गिनती मे बीस से सात अधिक हो।

पु० उक्त की बोधक सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—२७।

सत्ताधारी (रिन्)—वि० [स० सत्ता√धृ (रखना)+णिनि] जिसे किसी प्रकार की सत्ता प्राप्त हो। सत्तावान। जैसे—सत्ताधारी राज्य। पु० सत्ताप्राप्त अधिकारी। प्राधिकारी। (देखें)

सत्तानवे—वि० [स० सप्तनवति, प्रा० सत्तानव] जो गिनती मे सौ से तीन कम हो।

पु० उक्त की बोधक सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—९७।

सत्तानाश†—पु०=सत्यानाश।

सत्तानाशी—वि०=सत्यानाशी।

सत्तार—वि० [अ०] दोषो आदि पर परदा डालनेवाला।

पु० ईश्वर का एक नाम।

सत्तारूढ़—वि० [स० सत्ता+आरूढ]जो सत्ता प्राप्त कर उसका उपयोग और पालन कर रहा हो।

सत्तावन—वि० [स० सप्तपचाशत, प्रा० सत्तावन्न] जो गिनती मे पचास से सात अधिक हो।

पु० उक्त की बोधक सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—५७।

सत्तावाद—पु० [स०] [वि० सत्तावादी] यह मत या सिद्धान्त कि किसी अधिनायक या अधिनायक वर्ग के तत्र या शासन की सभी बातें बिना किसी विरोध के मानी जानी चाहिए। (ऑथॉरिटेरियनिज्म)

सत्ताशास्त्र—पु० [स० मध्यम० स०] पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमे मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन होता है।

सत्ता-सामान्यत्व—पु० [स० ब० स०, त्व] न्याय मे, वह स्थिति जब अनेक द्रव्यो, रूपो आदि मे एक ही तत्त्व सामान्य रूप से पाया जाता हो। जैसे—कुडल, ककण आदि अनेक गहनो मे 'सोना' नामक द्रव्य सामान्य रूप से पाया जाता है।

सत्तासी—वि० [स० सप्ताशीति, प्रा० सत्तासी] जो गिनती मे अस्सी से सात अधिक हो।

पु० उक्त की बोधक सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है–८७।
सत्तू—पु० [स० सक्तुक, प्रा० सत्तुअ] भुने हुए जौ, चने आदि का आटा या चूर्ण।
सत्त्व—पु०[स०] १ सत्ता से युक्त होने की अवस्था या भाव। अस्तित्व। हस्ती। २ किसी वस्तु मे से निकाला हुआ मूल और सार भाग। तत्त्व। सत्त। (एक्स्ट्रैक्ट) ३ किसी वस्तु की मुख्य और वास्तविक प्रवृत्ति। गुण सबधी विशिष्टता। खासियत। ४ चित्त या मन की प्रवृत्ति। ५ अच्छे और शुभ कर्मो की ओर होनेवाली प्रवृत्ति। शुभवृत्ति। ६ सास्य के अनुसार प्रकृति के तीन गुणो मे से एक जो सब मे उत्तम कहा गया है, और जिसके लक्षण, ज्ञान, शाति, शुद्धता आदि है। ७ आत्म-तत्त्व। चित्-तत्त्व। चैतन्य। ८ जीवनी-शक्ति। प्राण-तत्त्व। ९. जीवधारी। प्राणी। १०. भूत-प्रेत। ११ मन की दृढता और वीरता। १२ वल। शक्ति। १३ गर्भ। हमल।
सत्त्वक—पु० [स०] मृत मनुष्य की जीवात्मा। प्रेत।
सत्त्वगुण—पु० [स० मध्यम० स०] सत्त्व अर्थात् अच्छे कर्मो की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण, जो प्रकृति के तीन गुणो मे से एक तथा तीनो मे सर्वश्रेष्ठ है।
सत्त्वगुणी—वि० [स० सत्वगुण+इनि] १ सत्त्वगुण से युक्त। २ साधु और विवेकी। उत्तम प्रकृति का।
सत्त्व-दीप्ति—स्त्री० [स०] मनुष्य के स्वभाव की तेजस्विता।
सत्त्वधाम—पु० [स० ब० स०] विष्णु का एक नाम।
सत्त्वलक्षण—वि० स्त्री० [स० ब० स०] जिसमे गर्भ के लक्षण हो। गर्भवती। हामिला।
सत्त्ववती—वि० [सत्त्व+मतुप्-म=व डीष्] १ सत्त्वगुण से सम्पन्न (स्त्री)। २ गर्भवती।
स्त्री० बौद्ध तात्रिको की एक देवी।
सत्त्ववान्—वि० [स० सत्त्ववत्–नुम्-दीर्घ सत्त्ववत्] [स्त्री० सत्त्ववती] १ सत्त्व या सार भाग से युक्त। २ जीवनी-शक्ति या प्राणो से युक्त। ३ साहसी। ४ दृढ। मजबूत।
सत्त्वशाली—वि० [स० सत्त्वशालिन्] [स्त्री० सत्त्वशालिनी] दृढ, धीर और साहसी।
सत्त्वशील—वि० [स० ब० स०] १ सात्त्विक प्रकृतिवाला। अच्छी प्रकृति का। २ सदाचारी और धर्मात्मा।
सत्त्वस्थ—वि० [स०] १ अपनी प्रकृति में स्थित। २ अपनी बात या स्थान पर दृढतापूर्वक ठहरा रहनेवाला। ३ बलवान्। सशक्त। ४ जीवनी-शक्ति से युक्त। प्राणवान्।
सत्यक—पु० [पा०] कैंची। (डि०)
सत्थी—स्त्री० [?] जाँघ का मोटा भाग। (राज०)
सत्पथ—पु० [स०] १ उत्तम मार्ग। २ उत्तम पथ या सम्प्रदाय। ३. अच्छा आचरण। सदाचार।
सत्पशु—पु० [स०] ऐसा पशु जिसे देवता को वलि चढाया जा सकता हो।
सत्पात्र—पु० [स०] १ उपदेश, दान आदि देने के योग्य उत्तम अधिकारी व्यक्ति। २ श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति। ३ विवाह के योग्य उत्तम वर।
सत्पुरुष—पु० [स० कर्म० स०] सदाचारी और योग्य व्यक्ति।
सत्यंकार—पु० [स०] [भू० कृ० सत्यकृत] १ किसी को दिया हुआ वचन सत्य करना। वादा पूरा करना। २ पेशगी दिया जानेवाला धन जो इस बात का सूचक होता है कि जिस काम के लिए वह दिया गया है वह अवश्य किया या कराया जायगा। ३ किसी निश्चय, सविदा आदि को ठीक या सत्य ठहराना। विशेष दे० 'सत्याकन'।
सत्य—वि० [स०] [भाव० सत्यता] १ सत् सबधी। सत् का। २ सत् से युक्त। जैसे—ससार मे ईश्वर का नाम ही सत्य है। ३. (कथन या बात) जो मूल या वास्तविक के ठीक अनुरूप हो। जिस पर पूरा पूरा विश्वास किया जा सकता हो। जिसमे झूठ या मिथ्या का लेश भी न हो। जैसे—वह सदा सत्य बोलता है। ४ (घटना का उल्लेख या विवरण) जो सत्य या वास्तविकता के ठीक अनुरूप हो। ठीक। यथार्थ। जैसे—यह सत्य है कि आप वहाँ नही गये थे। ५ जैसा हो या होना चाहिए, ठीक वैसा ही। जैसे—सत्यव्रत, सत्यसघ। (उक्त अतिम तीनो अर्थो के लिए।) ६ असल। वास्तविक।
पु० १ ठीक, यथार्थ और वास्तविक तथ्य या बात। जैसे—सत्य कही छिपा नही रह सकता। २ उचित और न्याय-सगत पक्ष या बात। जैसे—उन्हे सत्य से कोई डिगा नही सकता। ३ वह पारमार्थिक सत्ता जिसमे कभी कोई विकार नही होता। जैसे—ब्रह्म ही सत्य है, और यह जगत् मिथ्या है। ४ पुराणानुसार ऊपर के सात लोको मे से सबसे ऊपर का लोक। ५ विष्णु। ६ विश्वदेवो मे से एक। ७ नादीमुख श्रद्धा के अधिष्ठाता देवता। ८ एक प्रकार का दिव्यास्त्र। ९ पुराणानुसार नवे कल्प का नाम। १०. अश्वत्थ। पीपल। ११ प्रतिज्ञा। १२ कसम। शपथ। १३ दे० 'सत्य युग'।
सत्यक—वि० [स० सत्य+कन्] =सत्यकार।
सत्यकाम—वि० [स० ब० स०] सदा सत्य की कामना रखनेवाला। बहुत सच्चा।
सत्यकीर्ति—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का अस्त्र जो मत्रबल से चलाया जाता था।
सत्यकेतु—पु०[स० ब० स०]१ एक बुद्ध का नाम। २ अक्रूर का एक पुत्र।
सत्यजित्—पु०[स०]१ तीसवे मन्वतर के इन्द्र का नाम। २ वसुदेव का एक भतीजा।
सत्यतः—अव्य०[स०] सत्य यह है कि। वास्तव मे। यथार्थत। सच-मुच।
सत्यता—स्त्री०[स० सत्य+तल्—टाप्]१ सत्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। सच्चाई। २ वास्तविकता। ३ नित्यता।
सत्य-नारायण—पु०[स०] नारायण या विष्णु भगवान का एक नाम जिसके सबध मे आज-कल लोक मे एक कथा बहुत प्रचलित तथा प्रसिद्ध है।
सत्यपर—वि०[स०] [भाव० सत्यपरता] सत्य मे प्रवृत्त। ईमानदार।
सत्य-पुरुष—पु०[स०]१ सारी सृष्टि उत्पन्न करनेवाला वह तत्त्व जो सबसे अतीत, ऊपर और परे माना गया है। २ परमात्मा।
सत्य-प्रतिज्ञ—वि०[स० ब० स०] अपनी प्रतिज्ञा पर सदा दृढ रहने और उसका पूर्णत. पालन करनेवाला।

सत्यभामा—स्त्री०[सं०] श्री कृष्ण की आठ पटरानियों में से एक जो सत्राजित् की कन्या थी।

सत्यभूषणी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सत्य युग—पुं०[सं० मध्यम० स०] पौराणिक काल-गणना के अनुसार चार युगों में से पहला युग जो इसलिए सर्वश्रेष्ठ कहा गया है कि इसमें धर्म और सत्य की पूरी प्रधानता थी। इसकी अवधि १७२८००० वर्ष कही गई है। इसे कृत् युग भी कहते हैं।

सत्ययुगाद्या—स्त्री०[सं०] वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन से सत्य युग का आरंभ माना गया है।

सत्ययुगी—वि०[सं० सत्य-युग+इनि]१ सत्य-युग का। सत्य-युग सम्बन्धी। २ सत्य-युग में होनेवाला। ३ सत्य युग के लोगों की तरह का अर्थात् बहुत धर्मात्मा और सच्चा। ४ बहुत पुराना।

सत्यलोक—पुं०[सं०] ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा का अवस्थान माना गया है। (पुराण)

सत्यवती—वि०[सं० सत्यवान् का स्त्री०]१ सत्य का आचरण और पालन करनेवाली। २ पतिव्रता। सती। ३ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
स्त्री०१ पराशर की पत्नी और व्यास की माता मत्स्यगंधा का वास्तविक नाम। २ एक प्राचीन नदी।

सत्य-वसु—पुं० [सं०] एक विश्वेदेवा।

सत्यवाच्—पुं०[सं०]१ सत्य वचन। २ प्रतिज्ञा। ३ मंत्र-बल से चलनेवाला एक प्रकार का अस्त्र। ४ कौआ।

सत्यवाद—पुं०[सं०] [वि० सत्यवादी]१ सत्य बोलना। सच कहना। २ धर्म पर दृढ़ रहना।

सत्यवादिनी—स्त्री०[सं०]१ दाक्षायिणी का एक नाम। २ बोधिद्रुम की एक देवी।

सत्यवादी—वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] १ सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २ अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। ३ धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। ४ सत्यवाद संबंधी।

सत्यवान्—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यवती] सत्य का आचरण और पालन करनेवाला।
पुं० शाल्व देश का एक प्रसिद्ध राजा जो सावित्री का पति था। (पुराणों में कहा गया है कि जब ये युवावस्था में ही मर गये, तब इनकी पत्नी सावित्री ने अपने पातिव्रत्य के बल पर इन्हें यम के हाथों से छुड़ाकर पुनरुज्जीवित किया था।)

सत्यव्रत—वि०[सं०] जिसने सत्य बोलने का व्रत लिया हो।
पुं० सत्य का पालन करने का नियम या व्रत।

सत्यशील—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यशीला] सदा सत्य का पालन करनेवाला। सच्चा।

सत्य-संकल्प—वि०[सं०] जो अपने संकल्प पर सदा दृढ़ रहे।

सत्यसंध—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यसंधा] वचन को पूरा करनेवाला। सत्य-प्रतिज्ञ।
पुं०१. भगवान् रामचन्द्र का एक नाम। २ भरत का एक नाम। ३. जनमेजय का एक नाम। ४ कार्तिकेय का एक अनुचर।

सत्या—स्त्री०[सं० सत्य-टाप्] १ सच्चाई। सत्यता। २ व्यास की माता सत्यवती का एक नाम। ३ सीता का एक नाम। ४ दुर्गा।

सत्याकृति—स्त्री०[सं० सत्य+डाच्-आकृति, ष० त०]=सत्यकार।

सत्याग्रह—पुं०[सं०]१ सत्य का पालन और रक्षा करने के लिए किया जानेवाला आग्रह या हठ। २ आधुनिक राजनीति में, वह अहिंसात्मक कार्रवाई जो किसी अधिकारी या सत्ता के किसी निश्चय, व्यवहार आदि के प्रति अपना असंतोष, विरोध आदि प्रकट करने के लिए की जाती है, और जिसका मुख्य अंग उस निश्चय या व्यवहार के अनुसार कार्य न करने अथवा उसका पालन न करने के रूप में होता है। (पैसिव रेज़िस्टेन्स)

सत्याग्रही—वि०[सं०] सत्य के पालन या रक्षा के लिए आग्रह या हठ करनेवाला।
पुं०वह जो सत्याग्रह (देखें) करता हो। सत्याग्रह करनेवाला व्यक्ति।

सत्यात्मा(त्मन्)—वि०[सं० ब० स०] पूर्ण रूप से सत्यपरायण।

सत्यानाश—पुं०[सं० सत्ता+नाश] पूरी तरह से होनेवाला नाश। सर्वनाश। मटियामेट। बरबादी।

सत्यानाशी—वि०[हिं० सत्यानाश+ई(प्रत्य०)][स्त्री० सत्यानाशिनी] १. सत्यानाश करनेवाला। चौपट करनेवाला।
स्त्री० भड़भाँड़ नाम का कँटीला पौधा।

सत्यानृत—पुं०[सं० ब० स०]१ झूठ और सच का मेल। ऐसी बात जिसमें कुछ सच भी हो और कुछ झूठ भी हो। २ रोजगार। व्यापार।

सत्यापन—पुं०[सं० सत्य+णिच् आ-पुक्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० सत्यापित]१ जाँच या मिलान करके देखना कि ज्यों का त्यों और ठीक या सत्य है कि नहीं। (वेरीफिकेशन)

सत्यापना—स्त्री०[सं० सत्याप+णुच्—अन—टाप्]=सत्यापन।

सत्यापित—भू० कृ०[सं०] जिसका सत्यापन हुआ या हो चुका हो। (वेरीफाइड)

सत्यार्जव—वि०[सं०] सीधा-सादा और सच्चा।

सत्येतर—वि०[सं०] सत्य से भिन्न अर्थात् मिथ्या।

सत्योत्तर—पुं०[सं० कर्म० स०] १. सत्य बात की स्वीकृति देना। २ अपने किए हुए अपराध, दोष आदि का स्वीकरण। इकबाल।

सत्र—पुं०[सं०]१ यज्ञ। २ सौ दिनों में पूरा होनेवाला एक प्रकार का सोम याग। ३ आड़ या ओट करके छिपाना। ४ ऐसा स्थान जहाँ आदमी छिप सकता हो। छिपने की जगह। ५ घर। मकान। ६ धोखा। भ्रांति। ७ धन-संपत्ति। ८ तालाब। ९ जंगल। वन। १० विकट समय या स्थान। ११ वह स्थान जहाँ गरीबों को भोजन दिया जाता हो। अन्नसत्र। सदावर्त। १२ आज-कल वह नियत काल जिसमें कोई काम एक बार आरंभ होकर कुछ समय तक निरंतर चलता रहता हो। (सेशन) १३ संस्था, सभा आदि की निरंतर नियमित रूप से कुछ समय तक होनेवाली बैठक या अधिवेशन। (सेशन)
†पुं०=शत्रु।

सत्र-न्यायालय—पुं०[सं०] किसी जिले के जज का वह न्यायालय जिसमें कुछ विशिष्ट गुरुतर अपराधों का विचार होता है और जिसमें किसी मुकदमे का आरम्भ होने पर उसका विचार और सुनवाई तब तक चलती रहती है जब तक उसका निर्णय नहीं हो जाता। (सेशन कोर्ट)

सत्रप—पुं० दे० 'क्षत्रप'।

सत्रह—वि० दे० 'सत्तरह'।
सत्राजित्—पुं०[सं० सत्र—आ√जि (जीतना)+क्विप्—तुक्]१. सत्यभामा का पिता, एक यादव। २ एक प्रकार का एकाह यज्ञ।
सत्राजिती—स्त्री०[सं० सत्राजित्—ङीप्]सत्राजित् की कन्या सत्यभामा का एक नाम।
सत्रायण—पुं०[सं० सत्र+फक्—आयन] यज्ञों का लगातार चलनेवाला क्रम।
सत्रावसान—पुं०[सं० ष० त०] आधुनिक राजतंत्र में, विधानमडल या ससद के सर्वप्रधान अधिकारी के द्वारा अनिश्चित और दीर्घ काल के लिए किया जानेवाला स्थगन। (प्रोरोगेशन)
सत्रि—वि०[सं० सत्र+इनि] बहुत यज्ञ करनेवाला।
पुं०१ हाथी। २ बादल। मेघ।
सत्री—वि०[सं० सत्रिन्—दीर्घ-नलोप सत्रिन्] यज्ञ करनेवाला।
पुं०राजदूत।
सत्रु†—पुं०=शत्रु।
सत्रुघन, सत्रुहन†—पुं०=शत्रुघ्न।
सत्व†—पुं०=सत्त्व।
सत्वर—अव्य०[सं० अव्य० स०]१ त्वरापूर्वक। शीघ्र। २ तुरन्त। झटपट।
वि० शीघ्रगामी। तेज-रफ्तार।
सत्संग—पुं०[सं०]१ सज्जनों के साथ उठना-बैठना। अच्छा साथ। भली संगत। अच्छी सोहबत। २ साधु-महात्मा या धर्म-निष्ठ व्यक्ति के साथ उठना-बैठना और धर्म-सबधी बातों की चर्चा करना। ३ बोलचाल मे, वह समाज या जनसमूह जिसमे कथा-वार्ता या राम-नाम का पाठ होता हो।
सत्संगति†—स्त्री०=सत्सग।
सत्संगी—वि०[सं० सत्सग+इनि, सत्सगिन्] [स्त्री० सत्सगिनी]१ सत्सग करनेवाला। अच्छी सोहबत मे रहनेवाला। २ सबसे मेल-जोल रखनेवाला। ३ धार्मिक व्यक्तियों के साथ रहकर धर्म-चर्चा करनेवाला।
सत्समागम—पुं०[सं०ष०त०]१ भले आदमियों का ससर्ग। २ सत्संग।
सत्सार—पुं०[सं० ब० स०]१ चित्रकार। चितेरा। २. कवि। ३. एक प्रकार का पौधा।
सथर*—स्त्री०[सं० स्थल] पृथ्वी। भूमि।
सथरी†—स्त्री०=साथरी।
सथिया—पुं०[सं० स्वस्तिक]१ आर्यों का स्वस्तिक चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है卐 २ सामुद्रिक के अनुसार उक्त प्रकार का वह चिह्न जो देवताओं आदि के तलुए मे रहता है। ३. भारतीय ढग से फोड़ों की चीरफाड़ करनेवाला। अस्त्र-चिकित्सक।४ साँझी नामक खेल-कृत्य का वह प्रकार या रूप जो गुजरात मे प्रचलित है। ५ जुलाहों के काम की बाँस या सरकडे की पतली छड़ी। सर।
सद्—वि०[सं०] सत् का वह रूप जो उसे कुछ विशिष्ट अवस्थाओं मे शब्दों के आरम्भ मे लगाने पर प्राप्त होता है। जैसे—सदुपदेश।
सदंजन—पुं०[सं० कर्म० स०] पीतल से बनाया जानेवाला एक प्रकार का अंजन।
सदंशक—पुं०[सं० अव्य० स०] केकड़ा।
सद—पुं०[सं० सदस्]१ सभा। समिति। मडली। २. यज्ञशाला मे बनाया जानेवाला एक प्रकार का छोटा मडप।
अव्य०[सं० सद्य.] तत्क्षण। तुरंत। तत्काल।
वि०१. नवीन। नया। २. हाल का। ताजा।
स्त्री०[सं० सत्व]१. प्रकृति। स्वभाव। २ आदत। टेव। बान।
स्त्री०[अ० सदा=आवाज]गडरियो का एक प्रकार का गीत। (पजाब)
†पुं०=शब्द।
सदइ†—अव्य०[सं० सद्य] तुरत।
†वि०=सदय।
सदई—अव्य०[सं०] सदैव।
वि०=सदय।
सदका—पुं०[अ० सद्क]१ वह वस्तु जो ईश्वर के नाम पर दी जाय। दान। २ वह वस्तु जो कुदृष्टि या नजर, रोग आदि के निवारण के लिए टोने-टोटके के रूप मे किसी के सिर पर से उतार कर किसी को दी या रास्ते मे रखी जाय। उतारा।
क्रि० प्र०—उतारना।—करना।
३. निछावर।
पद—सदके जाऊँ—मैं तुम पर निछावर होऊँ या बलि जाऊँ। (मुसल०)
सदन—पुं०[सं०]१. रहने का स्थान। निवास-स्थान। २. घर। मकान। ३ वह स्थान जहाँ प्राणियो या व्यक्तियो को आश्रय और रहने-सहने का सुभीता मिलता हो। जैसे—गो-सदन। ४ वह स्थान जहाँ विशिष्ट रूप से कोई लोकोपकारी कार्य हो। जैसे—सेवा सदन। ५. वह मकान जिसमे किसी देश या राज्य के विधान बनाने के कार्य होते हों। (हाउस)
विशेष—कुछ देशों मे तो इस प्रकार का एक ही सदन होता है; और कुछ देशों मे दो-दो सदन होते है; जिनमे से एक मे तो साधारण जनता के प्रतिनिधि और दूसरे मे कुछ विशिष्ट वर्गों के प्रतिनिधि सदस्य होते हैं। भारत मे केंद्रीय सदन के दो अग हैं—लोक-सभा और राज्य-सभा।
६ उक्त भवन मे अथवा किसी सभा-समिति के अधिवेशन के समय उपस्थित होनेवाले आधिकारिक व्यक्तियों, सदस्यों आदि का वर्ग या समूह। (हाउस) जैसे—सदन की यही इच्छा जान पडती है कि इस विषय का निर्णय आज ही हो जाय। ७ ठहराव। विराम। ८ शिथिलता। ९ एक प्रसिद्ध भगवत्भक्त कसाई।
सदन-त्याग—पुं०[सं०] ससद, सभा आदि के किसी कार्य या अध्यक्ष की किसी व्यवस्था या निर्णय से असतुष्ट होकर किसी या कुछ सदस्यों का सदन छोड़कर वहाँ से हट जाना। (वॉक-आउट)
सदन-नेता—पुं०[सं०] ससद् या विधान-सभा द्वारा निर्वाचित वह नेता जो कार्यक्रम आदि निश्चित करता और बहुधा देश या राज्य का प्रधान मत्री होता है। (लीडर आफ दि हाउस)
सदन-सचिव—पुं०[सं०ष०त०] विधान-सभा या लोक-सभा का वह वैतनिक सदस्य जो किसी मत्री के साथ रहकर उसके समस्त विभागीय कार्यों मे सहायता करता हो। ससद-सचिव। (पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी)

सदना—अ०[स० सदन=थिराना]१ छेद मे से रसना। चूना। २ नाव के पेंदे के छेदो से पानी अन्दर आना।
†पु०=सदन (भगवद्भक्त कसाई)।
सदफ़—स्त्री०[अ०] सीपी।
सद-बरग†—पु०=सद्वर्ग।
सदबर्ग—पु०[फा०] हजारा गेंदा नामक पौधा और उसके फूल।
सदमा—पु० [अ० सद्म.] १. आघात। धक्का। चोट। २ ऐसा मानसिक आघात जो वहुत अधिक कष्ट-प्रद हो। ३. वहुत वडी हानि।
क्रि०—उठाना।—पहुँचना।—लगना।
सदय—वि०[स०]१ दयावान्। दयालु। २ दयापूर्ण।
सदर—वि०[स० अव्य० स०] भययुक्त। डरा हुआ।
क्रि० वि० डरते हुए।
सदर—वि०[अ० सद्र] प्रधान। मुख्य। जैसे—सदर अमीन, सदर दरवाजा, सदर वाजार।
पु०१ छाती। सीना। २ सवसे ऊपर का भाग या स्थान। ३ उच्च पदस्थ लोगो के वैठने या रहने का स्थान। ४ सभा का सभापति। ५ किसी सस्था या राज्य का प्रधान शासक। जसे—सदरे रियासत।
अव्य० ऊपर।
सदर आला—पु०[अ०] दीवानी अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज।
सदर-नशीन—पु०[अ०+फा०] [भाव० सदरनशीनी] मजलिस या सभा का सभापति।
सदर बाजार—पु०[अ०+फा०]१ नगर का बडा या खास वाजार। २. छावनी के पास का वाजार।
सदरी—स्त्री०[अ० सद्र=छाती] विना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती या वडी जो और कपड़ो के ऊपर पहनी जाती है। सीनावद।
†वि० स्त्री० सदर का स्त्री० स्थानिक रूप। जैसे—सदरी दरवाजा। (पूरव)
सदर्थ—पु०[स० कर्म० स०]१ असल या मुख्य वात अथवा विषय। २ धनवान् व्यक्ति।
सदर्थना—स०[स० सदर्थ] समर्थन या पुष्टि करना।
सदस्—पु०[स०]१ रहने का स्थान। मकान। घर। २. सभा। समाज। ३ यज्ञशाला मे, एक प्रकार का छोटा मडप।
सदसत्—वि०[स० द्व० स०]१ सत् और असत्। २ सच और झूठ। ३ अच्छा और वुरा।
पु०१ किसी वस्तु के होने और न होने का भाव। २ सच्ची और झूठी वातें। ३ अच्छाई और वुराई।
सदसद्विवेक—पु०[स० प० त०] सद् और असद् अर्थात् अच्छे और वुरे की पहचान। भले-वुरे का ज्ञान या विवेक।
सदसि†—स्त्री०[स० सदस्] सदस्यो या सभ्यो के वैठने का स्थान।
उदा०—विपुल भूपति सदसि महँ नर-नारि कह्यौ प्रभु पाहि।—तुलसी।
सदस्य—पु०[स० सदस्+यत्] [भाव० सदस्यता]१ यज्ञ करनेवाला। याजक। २ उन व्यक्तियो मे से हर एक जिनके योग से कुटुव, परिवार, सघ, समाज आदि वनते हैं। ३ विशेषत वह व्यक्ति जिसका संवध किसी समुदाय से हो और जिसका वह नियमित रूप से चदा आदि देता हो अयवा जिसके कार्यों आदि मे सम्मिलित होता हो। (मेम्वर, उक्त दो अर्थों के लिए)
सदस्यता—स्त्री०[स० सदस्य+तल्—टाप्] सदस्य होने की अवस्था या भाव। मेंवरी। (मेंवरशिप)
सदहा—पु०[स०] यज्ञ करनेवाला। याजक। २ सभासद। सदस्य।
पु०[देश०] अनाज लादने की वडी वैलगाडी।
वि०[फा०] सैंकडो। वहुत से।
सदही—क्रि० वि०=सदैव।
सदा—अव्य०[स०]१ हर समय। हर वक्त। जैसे—सदा भगवान् का नाम लेते रहना चाहिए। २ निरतर। लगातार। ३ किसी भी अवस्था या स्थिति मे। जैसे—मनुष्य को सदा सच्च वोलना चाहिए।
स्त्री०[अ०, मि० स० शब्द, प्रा० सद्द] १ गूँज। प्रतिध्वनि। २ आवाज। शब्द। ३ पुकारने की आवाज। पुकार।
मुहा०—सदा देना या लगाना=फकीर का भीख पाने के लिए पुकारना।
उदा०—देर से हम दरे दौलत पे सदा देते है। —कोई शायर।
४ कोई मनोहर या सुन्दर ध्वनि।
सदाकत—स्त्री०[अ० सदाकत] सच्चाई। सत्यता।
सदाकारी—वि०[स० सदाकार+इनि] अच्छे आकार या आकृतिवाला।
सदा-कुसुम—पु०[स०] धव। धातकी।
सदा-गति—पु०[स० व० स०]१ वायु। पवन। २ शरीर मे का वात। ३ सूर्य। ४. ब्रह्म।
वि० सदा चलता रहनेवाला।
सदागम—पु०[स० प० त०]१ सज्जन का आगमन। २. श्रेष्ठ आगम या शास्त्र।
सदाचरण—पु०[स० कर्म० स०] अच्छा चाल-चलन। सात्विक व्यवहार। सदाचार।
सदाचार—पु०[स०]१ धर्म, नीति आदि की दृष्टि से किया जानेवाला अच्छा और शुभ आचरण। अच्छा चाल-चलन। २. उक्त का भाव। (मॉरैलिटी) ३ शिष्टतापूर्ण व्यवहार। ४ प्रथा। रीति।
सदाचारिता—स्त्री०[स० सदाचार+इनि—तल्—टाप्]=सदाचार।
सदाचारी (रिन्)—वि० [स० सदाचार+इनि] [स्त्री० सदाचारिणी] १ अच्छे आचरणवाला व्यक्ति। अच्छे चाल-चलन का आदमी। सद्वृत्तिशील। २ धर्मात्मा। पुण्यात्मा।
सदातन—पु०[स० सदा+ल्यु—अन, तुट् आगम] विष्णु।
सदात्मा (त्मन्)—वि० [स० व० स०] अच्छे स्वभाव का। नेक। सज्जन।
सदादान—पु०[स० व० स०]१ ऐसा हाथी जिसका मद सदा वहता रहता हो। २ ऐरावत। ३ गणेश।
सदानंद—पु०[स० सद्+आनन्द]१ सदा वना रहनेवाला परम सुख। परमानद। २ शिव। ३ विष्णु। ४. परमात्मा।
वि० सदा प्रसन्न रहने और रखनेवाला।
सदानर्त—वि०[स० सदा√ नृत् (नाचना)+अच्] जो वरावर नाचता हो।
पु० खजन नामक पक्षी।

सदापुष्प—पु०[स०] १ नारिकेल। नारियल। २ आक। मदार। ३ कुन्द का फूल।
वि० हमेशा फूलनेवाला (वृक्ष या फूल)।

सदापुष्पी—स्त्री०[स०]१ आक। मदार। २ कपास। ३ चमेली। मल्लिका।

सदा-प्रसून—पु०[स०]१ रोहितक वृक्ष। २ आक। मदार। ३. कुन्द का पौधा।

सदाफर†—वि०=सदाफल।

सदा-फल—वि०[स०] सदा अर्थात् वारहो महीने फलता रहनेवाला (वृक्ष)।
पु०१. गूलर। २ नारियल। ३ वेल का वृक्ष। ४ एक प्रकार का नीवू।

सदाफली—स्त्री० [सं० सदाफल—टाप् ङीप्] १ जपापुष्प। गुडहर। देवीफूल। २ एक प्रकार का वैगन।

सदावरत†—पु०=सदावर्त।

सदावर्त—पु०=सदावर्त।

सदा-वहार—वि०[स० सदा+फा० वहार=फूल-पत्ती का समय] १ (वृक्ष या पौधा) जो सदा हरा-भरा रहे और जिसमे पतझड न होता हो। २ जिसमे सदा फूल लगते रहते हो।

सदार—वि०[स० अव्य० स०] जो दारा अर्थात् पत्नी के साथ हो।

सदारत—स्त्री०[अ०] सभापतित्व।

सदावर्त—पु० [स० सदा+व्रत] १ हमेशा अन्न वाँटने का व्रत। नित्य दीन-दुखियों तथा भूखो को भोजन देना।
क्रि० प्र०—खुलना।—खोलना।—चलना।—चलाना।
२ इस प्रकार दिया जानेवाला भोजन।
क्रि० प्र०—वँटना।—वाँटना।

सदावर्ती—वि०[हिं० सदावर्त] १ सदावर्त वाँटनेवाला। भूखो को नित्य अन्न वाँटनेवाला। २ वहुत वडा दाता या दानी।

सदाव्रत—पु०=सदावर्त।

सदाशय—वि० [स०] [भाव० सदाशयता] जिसके मन का आशय या भाव उदार और श्रेष्ठ हो। उच्च विचारोवाला। सज्जन। भला मानस।
पु० वह स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति अच्छे और शुभ आशय मे कोई काम करता हो। 'कदाशयता' का विपर्याय। (वोनाफाइडीज)

सदाशयी—वि०[स०]१ सदाशय सबधी। २ (व्यक्ति) जो सदाशय मे युक्त हो। ३ (काम या वात) जिसमे अच्छा आशय ही हो, वुरा आशय न हो। 'कदाशयी' का विपर्याय। (वोनाफाइड)

सदाशयता—स्त्री० [स०]१ सदाशय होने की अवस्था, गुण या भाव। २ विधिक क्षेत्र मे वह स्थिति जिसमे मनुष्य ईमानदारी और सच्चाई से अथवा मन मे सद् आशय रखकर कोई काम करता है, और जिसके फल स्वरूप कोई अनुचित कार्य हो जाने पर भी वह दोपी नही माना जाता।

सदाशिव—वि०[स०] सदा कल्याण और मगल करनेवाला।
पु० शिव का एक नाम।

सदा-सुहागिन—वि० स्त्री० [स० सदा+हिं० सुहागिन] (स्त्री) जो सदा सौभाग्यवती रहे। जो कभी पतिहीन न हो।
स्त्री०१ वेश्या। (परिहास) २ सिंदूरपुष्पी। ३ स्त्रियो का वेश वनाकर रहने वाले मुसलमान फकीरो का एक सम्प्रदाय।

सदिया—स्त्री०[फा० साद=कोरा] लाल पक्षी का एक भेद जिसका शरीर भूरे रग का होता है। विना चित्ती की मुनियाँ।

सदी—स्त्री०[अ०]१ सौ वर्षो का समूह। शताब्दी। शती। जैसे—पहली सदी (१—१०० सन्); वीसवी सदी (१९०१—२००० सन्)। २ सौ चीजो का समूह। जैसे—फी सदी दस आदमी लिये जायँगे।

सदुपदेश—पु०[स० कर्म० स०] १ अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २ अच्छा परामर्श। वढिया सलाह।

सदूर*—पु० [स० शार्दूल] सिंह। उदा०—पदुमनि अछित हस सदूर।—जायसी।

सदृश—वि०[स०] [भाव० सादृश्य] जो आकार-प्रकार, रूप-रग आदि के विचार से किसी दूसरे से विलकुल मिलता-जुलता हो। (सिमिलर)
विशेष—'सदृश' और 'समान' मे यह अन्तर है कि सदृश का प्रयोग तो वहाँ होता है जहाँ चीजें या वातें ऊपर से देखने पर एक सी जान पडें। परन्तु 'समान' का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ चीजो या वातो के महत्त्व, मान, मूल्य आदि मे वरावरी वतलाना अभीष्ट होता है। 'तुल्य' मे इन दोनो से भिन्न तौल अर्थात् गुरुता या भार का भाव निहित है।

सदृशता—स्त्री०[स० सदृश+तल्—टाप्]१. सदृश होने की अवस्था, गुण या भाव। २ समानता। तुल्यता।

सदेह—वि०[स०]१ देह या शरीर से युक्त। २ जो कोई विशिष्ट देह धारण करके सामने आया हो। उदा०—और कर्ण से पूछ लो जो सदेह उत्पात।—मैथिलीशरण। ३ प्रत्यक्ष। मूर्तिमान्।
क्रि० वि० शरीर धारण किये रहने की अवस्था मे। जैसे—आप तो यहाँ सदेह वैठे है।

सदैव—अव्य०[सं० सर्व+दाच्, सर्वस-एव] सदा। सर्वदा। हमेशा।

सदोष—वि०[स०] [भाव० सदोषता]१ जिसने दोष किया हो। दोषी। २ जिसमे दोष हो या हो। दोष से युक्त या दोष से भरा हुआ।

सद्गति—स्त्री०[स०]१. अच्छी दशा या हालत। २ अच्छा आचरण। सदाचरण। ३ मरने के उपरात होनेवाली उत्तम लोक की प्राप्ति, और दुर्गति से होनेवाली रक्षा। मुक्ति।

सद्गुण—पु०[स०] अच्छा गुण। उदा०—जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा।—तुलसी।

सद्गुणी(णिन्)—वि०[स० सद्-गुण+इनि] अच्छे गुणोवाला।

सद्गुरु—पुं०[स०]१ अच्छा और श्रेष्ठ गुरु। २ धार्मिक क्षेत्र मे, ऐसा गुरु या पथ-प्रदर्शक जिसे स्वानुभूति हो चुकी हो, और जो साधना का ठीक मार्ग या प्रणाली वतला सके। ३ परमात्मा।

सद्ग्रंथ—पु०[सं० सद्+ग्रथ] आध्यात्मिक दृष्टि से अच्छा ग्रन्थ। सन्मार्ग वतलानेवाली पुस्तक।

सद्द*†—पु०[स० शव्द, प्रा० सद्द] शव्द। ध्वनि।
अव्य०=सद्य (तत्काल)।

सद्दर†—पु०[हिं० सात+दाँत] सात दाँतोवाला वैल।

सद्भाव—पु०[स०]१ अच्छा अर्थात् शुभ भाव। हित का भाव। २. दो व्यक्तियो या पक्षो मे होनेवाली मैत्रीपूर्ण स्थिति। ३ छल-कपट, द्वेष आदि से रहित भाव या विचार।

सद्भावना—स्त्री०[स०]=सदभाव।

सद्भावी—वि०[स०]१. सद्भाववाला। सद्भाव से युक्त। २. सदाशयी। (बोनाफाइडी)

सद्म--पु०[स० सद्+मनिन्, सद्मन्]१. रहने का स्थान। २. घर। मकान। ३ दर्शक। ४ युद्ध। लडाई। ५ पृथ्वी और आकाश।

सद्मिनी—स्त्री० [स० सद्म] १. वडा मकान। हवेली। २ प्रासाद। महल।

सद्य—पु०[स०] शिव का एक नाम।
अव्य०=सद्य.।

सद्यः—अव्य०[स०]१ आज ही। २ इसी समय। अभी। ३ तत्काल। तुरन्त।
पु० शिव का एक नाम।

सद्यःपाक--वि०[स०] जिसका फल तुरन्त मिले। जिसके परिणाम मे विलव न हो।
पु० रात के चौथे पहर का स्वप्न (जो लोगो के विश्वास के अनुसार ठीक ,घटा करता है)।

सद्यःप्रसूत—वि०[स०] तुरत का उत्पन्न।

सद्यःप्रसूता—वि० स्त्री० [स०] जिसने अभी या कुछ ही समय पहले वच्चा प्रसव किया हो।

सद्यस्क—वि०[स० सद्यस्√ कृ (करना)+क]१ वर्तमान काल का। २ इसी समय का। ३ ताजा। ४ आज-कल जिसके सबध मे वहुत ही जल्दी जल्दी या तुरत कोई उपचार या काम करना आवश्यक हो। वहुत आवश्यक या जरूरी। (अर्जेन्ट) जैसे—उन्हे सद्यस्क तार (या पत्र) भेजो।

सद्योजात—वि०[स० कर्म० स०] [स्त्री० सद्योजाता] जो अभी या कुछ ही समय पहले उत्पन्न हुआ हो।
पु० शिव का एक रूप या मूर्ति।

सद्र—वि० [अ०] अव्य० दे० 'सदर'।

सधना—अ०[हिं० साधना]१ किसी काम या वात का पूरा या सिद्ध होना। जैसे—काम सधना। २ अभिप्राय या उद्देश्य सिद्ध होना। मतलव निकलना। ३ हाथ से किये जानेवाले किसी काम का ठीक तरह से अभ्यस्त होना। जैसे—आरी या हथौडा चलाने मे हाथ सधना। ४ ठीक जगह पर जाकर लगना। जैसे—गोली या तीर चलाने मे निशाना सधना। ५ शिक्षा आदि पाकर किसी विशिष्ट उपयोग या कार्य के लिए उपयुक्त होना। जैसे—(क) सवारी के लिए घोडे का सधना। (ख) वाइसिकिल पर वैठने मे शरीर सधना। ७ नाप-तौल आदि मे ठीक या पूरा उतरना या वैठना। जैसे--(क) शरीर पर कुरता सधना। (ख) पसंगा निकल जाने पर तराजू सधना।

सधर—पु०[स० अव्य० स०] ऊपर का ओठ। 'अधर' का विपर्याय।
वि०[?] कठोर। कडा। उदा०—धर धर शृग सधर सुपीन पयोधर।—प्रिथीराज।

सधर्म—वि०=सधर्मक।

सधर्मक—वि०[स०]१. समान गुण या क्रियावाला। एकही प्रकार का। २. तुल्य। समान। ३. पुण्यात्मा। ४. सच्चा और सरल। ५ किसी की दृष्टि से उसी के धर्म या सम्प्रदाय का अनुयायी।

सधर्मा(र्मन्)—वि०[स० व० स०] =सधर्मक।

सधर्मिणी—स्त्री० [स० सहधर्म+इनि—सह=स-ङीप्]=सहधर्मिणी (पत्नी)।

सधर्मी(मिन्)—वि०[स०] [स्त्री० सधर्मिणी] किसी की दृष्टि से उसी के धर्म का अनुयायी।

सधवा—स्त्री० [स० अव्य० स०] ऐसी स्त्री जिसका पति जीवित हो। जो विधवा न हो। सुहागिन। सौभाग्यवती। 'विधवा' का विपर्याय।
वि० धव अर्थात् पति से युक्त (स्त्री)।

सधाना--स० [हिं० सधना का प्रे०] १. साधने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को साधने मे प्रवृत्त करना। २ जगली पशु-पक्षियो को अपने पास या साथ रखकर पालतू वनाना और उन्हे विशिष्ट प्रकार के आचरण सिखाना। उदा०—मुद्दत मे अब इस वच्चे को है हमने सधाया। लडने के सिवा नाच भी है इसको सिखाया।--नजीर। ३ उचित आचरण या उपयोग करते हुए किसी काम या चीज का अत या समाप्ति करना। ४ किसी को अपने अनुकूल वनाने के लिए परचाना।

सधाव--पु०[हिं० साधना] सधे या साधे हुए होने की अवस्था या भाव। जैसे--सगीत मे स्वरो का सधाव।

सधावर--पु०[हिं० सधवा] वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातव महीने दिया जाता है।

सधिया—स्त्री०१ =सदिया। २ =साध।

सधौर†—पु० दे० 'सधावर'।

सध्रीची--स्त्री०[स० सह√अञ्च् (पूजित होना)+क्विम् सह=सध्रि अलोप, ङीप्—दीर्घ] सखी। (डिं०)

सन्—पु० [स० सवत् मे, के स से फा०] १ वर्ष। साल। सवत्सर। २. गणना मे कोई विशिष्ट वर्ष। ३. किसी विशिष्ट गणना क्रमवाली काल-गणना।
विशेष—इसका प्रयोग प्राय पाश्चात्य गणना प्रणालियो के सवध में ही होता है। जैसे—ईसवी सन्, हिजरी सन् आदि। भारतीय गणना प्रणालियो के सवध मे सवत् का प्रयोग होता है।

सनंक—पु०[अनु० सन् सन्] सन्नाटा। नीरवता।

सनंदन—पु०[स० व० स०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक।

सन—पु०[स०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक।
पु०[स० शरण] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशो से टाट, वोरे रस्सियाँ आदि वनती है।
प्रत्य०[स० सग] अवधी मे करण कारक का चिह्न; से। साथ।
स्त्री०[अनु०] वेग से निकल जाने का शब्द। जैसे—तीर सन मे निकल गया।
वि०=सन्न (स्तब्ध)।
पु०=सन् (वर्ष)।

सनअत—स्त्री०[अ०] १ कारीगरी। २ हुनर। पेशा। ३ साहित्यिक क्षेत्र मे, अलकार (अर्थालकार और शब्दालकार दोनों)।

सनई—स्त्री ०[हिं० सन] छोटी जाति का सन।

सनक—पु०[स०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक।
पद—सनक नंदन।

स्त्री०[हिं० सनकना]१. वह अवस्था जिसमे मनुष्य का मस्तिष्क ठीक तरह से और पूरा काम न करता हो और किसी ओर प्रवृत्त होने पर प्राय. उधर ही बना रहता हो। २ पागलो की-सी धुन, प्रवृत्ति या आचरण।

मुहा०—सनक चढ़ना या सवार होना=पागलपन की सीमा तक पहुँचती हुई धुन चढना।

सनकना—अ० [स० स्वन] १ पागल हो जाना। २ पागलो की तरह व्यर्थ बढ-बढ कर बातें करना।

अ०[अनु० सन-सन] सन-सन शब्द करते हुए उडना, दौड़ना या भागना।

सनकाना।—स०[हिं० सनकना] ऐसा काम करना जिससे कोई सनके या पागल हो।

*अ० दे० 'सनकना'।

सनकारना — स०[हिं० सैन+करना]१ किसी काम या बात के लिए संकेत करना। इशारा करना। २. इशारे से पास बुलाना।

सयो० क्रि०—देना।

सनकियाना—स०[हिं० सनकाना का स०] किसी को सनकाने मे प्रवृत्त करना।

अ०=सनकना।

स०=सनकारना।

सनकी—वि०[हिं० सनक] जिसे किसी तरह की सनक या झक हो। झक्की। (एस्सेन्ट्रिक)

स्त्री०[हिं० सैन=सकेत] आँख से किया जानेवाला सकेत। आँख का इशारा।

मुहा०—सनकी मारना= आँख से इशारा करना।

सनत्—पु०[स०] ब्रह्मा।

सनत्कुमार—पु०[स० मध्यम० स०]१. ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों मे से एक। २ बारह सार्वभौमो या चक्रवर्तियों मे से एक। (जैन) ३ जैनियो के अनुसार तीसरा स्वर्ग।

सनत्ता—पु०[हिं० सन] ऐसा वृक्ष जिस पर रेशम के कीडे पाले जाते हों। जैसे—शहतूत, बेर आदि।

सनत्सुजान--पु० [स० मध्यम० स०] ब्रह्मा के सात मानस पुत्रो मे से एक।

सनद—स्त्री० [अ०] १ वह स्थान जहाँ बडे अधिकारी, फकीर आदि तकिया लगाकर बैठते है। २ ऐसी चीज या बात जिस पर भरोसा किया जा सके। ३ प्रामाणिक कथन या बात। ४ प्रमाण-पत्र।

सनदयाफ्ता—वि०[अ० सनद+फा० याफ्ता] १ जिसे किसी बात की सनद मिली हो। प्रमाण-पत्र प्राप्त। २ जिसे किसी परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की सनद या प्रमाण-पत्र मिला हो।

सनदी—वि०[अ०]१ जिसे सनद मिली हुई हो। २ सनद सम्बन्धी। ३ प्रामाणिक।

सनना—अ० [स० सधम्]१ आटे, मैदे, सत्तू आदि का घी, दूध, जल आदि के योग से गूँधा जाना। २ सूखे मसाले मे पानी मिलाकर गीला किया जाना। ३. सम्मिलित होना या किया जाना। जैसे—हमे क्यों सान रहे हो। ४. लीन होना।

सननी।—स्त्री०=सानी (चौपायो का खाना)।

सनबंध।—पु०=सबध।

सनम—पु०[अ०]१ प्रेमपात्र अथवा प्रियतम। २. देवमूर्ति।

सनमकदा—पु० [अ० सनम+फा० कद] देव-मन्दिर।

सनमान।—पु०=सम्मान।

सनमानना*—स० [स० सम्मान+हिं० ना (प्रत्य०)] सम्मान अर्थात् आदर-सत्कार करना। इज्जत बढ़ाना।

सनमुख*—अव्य०=सम्मुख।

सनय—वि०[स०] प्राचीन। पुराना।

सनस।—पु० =सशय।

सनसनाना —अ०[अनु० सनसन] १. सनसन शब्द होना। २ सनसन शब्द करते हुए उडना, दौडना या भागना। ३ झुनझुनी के कारण अग का हिलना और सन सन शब्द करना।

सनसनी—स्त्री० [अनु० सनसन]१ शरीर की वह स्थिति जिसमे आश्चर्य, भय आदि के कारण सवेदनसूत्रों मे रक्त सन सन करता हुआ जान पडता है। २ किसी विकट या विलक्षण घटना के कारण समाज या समूह मे फैलनेवाली हलकी उत्तेजना और घबराहट। खलबली। (सेन्सेशन)

क्रि० प्र०—फैलना।

सनहकी—स्त्री०[अ० सहनक] मिट्टी का एक प्रकार का बरतन जो बहुधा मुसलमान काम मे लाते है।

सनहाना—पु०[देश०] नाँद की तरह का वह बरतन जिसमे जूठे बरतन इसलिए डाल दिए जाते है कि वे भीग जायँ और उनमे लगी हुई जूठन फूल जाय जिससे उन्हे माँजते समय आसानी हो।

सना—पु०[अ०] प्रशसा। स्तुति।

स्त्री०=सनाय।

सनाई —स्त्री० [हिं० सनना] सनने या साने जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री०=शहनाई।

सनाका।—पु०[अनु०]१ सनसनाहट। २. किसी आकस्मिक आघात के कारण उत्पन्न होनेवाली चचलता या विकलता। उदा०—चद्रलेखा का हृदय सनाका खा गया।—हजारीप्रसाद द्विवेदी।

क्रि० प्र०—खाना।

सनाढ्य—पु०[स० सन=दक्षिण+आढ्य=सपन्न] गौड ब्राह्मणो की एक शाखा या वर्ग।

सनातन—वि०[स०] [भाव० सनातनता] १ जो आदि अथवा बहुत प्राचीन काल से बराबर चला आ रहा हो। जिसके आदि का समय ज्ञात न हो। जो परंपरानुसार आचार-विचार आदि पर निष्ठा रखता हो। परपरानिष्ठ। (आर्थोडाक्स)। २ सदा बना रहनेवाला। नित्य। शाश्वत। ४. निश्चल। स्थिर। ४ अनादि और अनत।

पु०[वि० सनातनी] १. अत्यन्त प्राचीन काल। २. बहुत दिनो से चला आया हुआ व्यवहार, क्रम या परम्परा। (विशेषत धार्मिक आचार, विश्वास आदि के सबध मे)। ३ वह जिसे श्राद्ध आदि मे भोजन कराना आवश्यक हो। ४ ब्रह्मा। ५ विष्णु। ६ शिव।

सनातन धर्म—पु० [स० मध्यम० स०, कर्म० स० वा] १ ऐसा धर्म जो अनादि अथवा बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा हो। २ वर्तमान हिंदू धर्म जिसके सबध मे उसके अनुयायियो का विश्वास है कि यह अनादि

काल से चला आ रहा है। इसके मुख्य अग है—बहुत से देवी-देवताओं की उपासना, मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, श्राद्ध, तर्पण आदि।

सनातन-धर्मी—पु० [स०] सनातन धर्म का अनुयायी या माननेवाला।

सनातन पुरुष—पु० [स०] विष्णु भगवान्।

सनातनी—पु० [स० सनातन+ई (प्रत्य०)] सनातन धर्म का अनुयायी। वि० १. सनातन। २ सनातन धर्मावलम्बियों मे प्रचलित या होनेवाला।

सनाथ—वि० [स० अव्य० स०] [स्त्री० सनाथा] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो। जिसके ऊपर कोई मददगार या सरपरस्त हो। 'अनाथ' का विपर्याय।

मुहा०—किसी को सनाथ करना=शरण मे लेकर आश्रय देना। पूरा सहायक बनना।

†अव्य० नाथ-सहित।

सनाथा—वि० [स० सनाथ—टाप्] (स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सधवा।

सनाभ—पु० [स० ब० स०] १. सगा भाई। २ सगा सबधी।

सनाभि—पु० [स० ब स०] १ सबध के विचार से एक ही माँ के पेट से उत्पन्न दो बच्चे चाहे वे एक ही पिता की सन्तान हो या एक से अधिक पिताओं की। २ दे० 'सनाभ'।

सनामक, सनामा (मन्)—वि० [स०] एक ही नामवाले (दो या अधिक)। नाम-रासी।

सनाय—स्त्री० [अ० सना] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती है। सोनामुखी।

सनासन†—अव्य० [अनु०] सनसन शब्द करते हुए।

सनाह†—पु०=सन्नाह।

सनि†—पु०=शनि (शनैश्चर)।

सनित—भू० कृ० [हिं० सनना] किसी के साथ सना या मिला हुआ।

सनिद्र—वि० [स० अव्य० स०] सोया हुआ। निद्रायुक्त।

सनीचर—पु० १ =शनैश्चर। २ =शनिवार।

सनीचरी—स्त्री० [हिं० सनीचर] फलित ज्योतिष के अनुसार शनि की दशा जिसमे दुःख, व्याधि आदि की अधिकता होती है।

वि० १. शनि से ग्रस्त। २ मनहूस और अशुभ। जैसे—सनीचरी सूरत।

सनीड़—अव्य० [स० अव्य० स०] १ पडोस मे। बगल मे। २ निकट। पास।

वि० १ जो एक ही नीड या घोसले मे रहते हो। २ एक ही स्थान पर साथ साथ रहनेवाले। ३ पडोसी।

सनु†—विभ० हिं० 'से' विभक्ति का अवधी रूप।

सनेम*—अव्य० [हिं० स+नेम=नियम] १ नियमपूर्वक। २ व्रत आदि का पालन करते हुए। सदाचारपूर्वक। उदा०—आयुस होइ त रहहुँ सनेमा।—तुलसी।

सनेस, सनेसा*—पु०=संदेसा।

सनेह†—पु०=स्नेह।

सनेही†—वि०=स्नेही।

सनै सनै*—अव्य०=शनै शनै।

सनोबर—पु० [अ०] चीड़ का पेड।

सनौढ़िया—पु०=सनाढ्य (गौड ब्राह्मणो की एक शाख)।

सन्न—वि० [स० शून्य, हिं० सुन्न] १ सज्ञाशून्य। सवेदनारहित। बिना चेतना का-सा। जड़। २ भौचक्का। स्तभित। स्तब्ध। जैसे—यह सुनते ही वह सन्न रह गया। ३ बिलकुल चुप। मौन।

मुहा०—सन्न मारना=बिलकुल चुप हो जाना। आवश्यकता होने पर भी कुछ न बोलना। सन्नाटा खीचना।

पु० [स०] चिरौजी का पेड़।

सन्नक—वि० [स०] बौना।

सन्नत—भू० कृ० [स० सम् √ नम् (झुकना)+क्त=न] १ अच्छी तरह झुका हुआ। २. नीचे आया हुआ। ३ भरा हुआ।

सन्नति—स्त्री० [स० सम् √ नम् (झुकना)+क्तिन्] १ झुकाव। नति। २ नम्रता। विनय। ३ किसी ओर होनेवाली प्रवृत्ति। ४ कृपा-दृष्टि। मेहरबानी की नजर। ५ आवाज। शब्द। ६ दक्ष की एक कन्या जो ऋतु को ब्याही थी।

सन्नद्ध—वि० [स० सम् √ नह् (बाँधना)+क्त] १ किसी के साथ कसा या बँधा हुआ। २ जो कवच आदि पहनकर युद्ध के लिए तैयार हो गया हो। ३ कोई कार्य करने के लिए उद्यत। तैयार। ४ किसी के साथ जुडा या लगा हुआ। ५. पास या समीप का।

सन्नयन—पु० [स०] १ ले जाना। २ सपत्ति विशेषत. अचल सपत्ति का लेख्य आदि के द्वारा एक के हाथ से दूसरे के हाथ मे जाना या दिया जाना। अभिहस्तातरण। (कन्वेएन्स)

सन्नयनकार—पु० [स०] वह जो सन्नयन सबधी लेख्य आदि लिखकर प्रस्तुत करता हो। (कन्वेएसर)

सन्नयन-लेखक—पु०=सन्नयनकार।

सन्नयन-लेखन—पु० [स०] सन्नयन विषयक लेख्य आदि लिखने का काम। (कन्वेयसिंग)

सन्नयन-विद्या—स्त्री० [स०] वह विद्या या शास्त्र जिसमे सन्नयन सबधी लेख्य आदि प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। (कन्वेयसिंग)

सन्नाटा—पु० [स० सनष्ट] १ ऐसी वातावरणीय स्थिति जिसमे किसी भी प्रकार का शब्द न हो रहा हो। २ उक्त स्थिति मे पडकर भयभीत तथा भौचक होने का भाव।

मुहा०—सन्नाटे में आना=भयभीत तथा स्तब्ध हो जाना।

३ मौन। चुप्पी।

क्रि० प्र०—खीचना।—मारना।

४ निर्जनता। ५ चहल-पहल का अभाव।

मुहा०—सन्नाटा बीतना=उदासी मे समय काटना।

६ लेन-देन, व्यापार आदि मे सहसा आनेवाली मदी। जैसे—आज-कल बाजार मे सन्नाटा है।

विशेष—इस अर्थ मे इसका प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है। जैसे—आज-कल बाजार सन्नाटा है।

वि० १ जहाँ किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पडता हो। नीरव। स्तब्ध। २. निराला। निर्जन। ३ (स्थान) जिसमे किसी प्रकार की क्रिया न हो रही हो।

पु० [अनु० सन सन] १ हवा के जोर से चलने की आवाज। वायु के बहने का शब्द।

पद—सन्नाटे का=सन सन शब्द करता हुआ और तेजी से चलता हुआ। जैसे—सन्नाटे की हवा।

सन्नादी—पुं०[सं० सम्+नादिन्] व्याकरण में, ऐसा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण किसी स्वर की सहायता से ही होता हो; बिना स्वर लगाये जिसका उच्चारण हो ही न सकता हो। (कान्सोनेन्ट) जैसे—क, ख, ग आदि।

विशेष—बिना स्वर की सहायता के जहाँ किसी वर्ण का उच्चारण होता है, वहाँ वह हल कहलाता है।

वि०१ नाद या स्वर से युक्त। २. नाद करनेवाला।

सन्नाह—पुं०[सं० सम्√नह् (बाँधना)√+घञ्] १. कवच। बकतर। २ उद्योग। प्रयत्न।

सन्निकट—अव्य०[सं० सम्-निकट] बहुत निकट। बिल्कुल पास।

सन्निकर्ष—पुं०[सं० सम्+नि√ कृष् (समीप करना)+घञ्] [भू० कृ० सन्निकृष्ट]१ संबंध। लगाव। २ निकटता। समीपता। ३ नाता। रिश्ता। ४ आधार। आश्रय। ५ न्याय में, इन्द्रियों से होनेवाला विषयों का सम्बन्ध।

सन्निकाश—वि०[सं० सम-निकाश] सदृश। समान।

सन्निकृष्ट—भू० कृ० [सं० सम्-नि√कृष् (समीप करना)+क्त] १. पास लाया हुआ। २ निकट। करीब। पास।

सन्निधि—पुं० [सं० सम्-नि√ धा (रखना)+क] १ सामीप्य। २ आमने-सामने होने की स्थिति।

सन्निधाता (तृ)—पुं०[सं० सम्-नि√ धा (रखना)+तृच्]१ प्राचीन भारत में, वह राजकर्मचारी जो लोगों को अपने साथ ले जाकर न्यायालय में उपस्थित करता था। २ राजकोष का प्रधान अधिकारी।

सन्निधान—पुं०[सं० सम्-नि √धा (रखना)+ल्युट्—अन]१ दो या अधिक चीजों को साथ-साथ या अलग-अलग रखना। २. वह अवस्था जिसमें चीजें साथ साथ या अगल-बगल रहती या होती है। निकटता। समीपता। ३ पड़ोस। ४ इन्द्रिया का विषय। ५ स्थापित करना। स्थापन।

*अव्य० निकट। पास।

सन्निधि—स्त्री० [सं० सम्-नि√ धा (रखना)+कि] सन्निधान। (दे०)

सन्निपात—पुं० [सं० ब० सं०] १ नीचे आना, उतरना या गिरना विशेषत साथ साथ नीचे आना, उतरना या गिरना। २ जुटना। मिलना। ३ टकराना। भिड़ना। ४ इकट्ठा या एकत्र होना। ५ कई घटनाओं का एक साथ घटित होना। ६ बहुत-सी चीजों या बातों का मिश्रण। समाहार। ७. वैद्यक में, ज्वर की एक अवस्था जिसमें कफ, पित्त और वात एक साथ कुपित होकर बहुत उग्र रूप धारण करते हैं। त्रिदोष। सरसाम।

सन्निबंध—पुं०[सं० सम्-नि √बन्ध् (बाँधना)+घञ्][भू० कृ० सन्निबद्ध] १. एक में बाँधना। जकड़ना। २. लगाव। सम्बन्ध। ३ आसक्ति। ४ असर। प्रभाव। ५ परिणाम। फल। नतीजा।

सन्निबद्ध—भू० कृ० [सं० सम्—नि√बन्ध् (बाँधना)+क्त, नलोप] १. एक में बाँधा या जकड़ा हुआ। २. अटका या फँसा हुआ। ३ सहारे पर टिका हुआ।

सन्निभ—वि०[सं० सम्-नि√ भा (प्रकाशित करना)+क]मिलता-जुलता। २.दृश। समान।

सन्निभृत—वि० [सं० सम्-नि√भृ (भरण-पोषण करना)+क्त]१. छिपा हुआ। २ समझ-बूझकर बातें करनेवाला।

सन्निमग्न—वि०[सं०]१. खूब डूबा हुआ। २. सोया हुआ।

सन्नियोग—पुं० [सं० सम्-नि √युज् (मिलना)+घञ्] १. संबंध। २. संयोग। ३. आसक्ति। ४. नियुक्ति। ५ आदेश।

सन्निरुद्ध—भू० कृ०[सं०]१ ठहराया या रोका हुआ। २. दमन किया या दबाया हुआ। ३ अच्छी तरह या कसकर भरा हुआ।

सन्निरोध—पुं०[सं० सम्-नि √रुध् (रोकना)+घञ्] १ रोक। रुकावट। २ बाधा। ३. निवारण। ४ दमन। ५ तंगी। संकोच। ६ तंग रास्ता।

सन्निवास—पुं०[सं० सम्-नि√ वस् (रहना)+घञ्]१ साथ रहना। २. बसना। ३. घोंसला।

सन्निविष्ट—भू० कृ० [सं० सम् -नि √विश् (प्रवेश करना)+क्त] १ अंदर या भीतर आया या लगाया हुआ। २. जुटा या जुटाया हुआ। ३. बीच में जोड़ा, बढ़ाया या लगाया हुआ। (इन्सर्टेड) ४ किसी के साथ जमा, बैठा या रखा हुआ। ५ स्थापित किया हुआ।

सन्निवेशन—पुं० [सं०] १ अंदर जाना या साथ में ले जाना। प्रवेश करना या कराना। २. एकत्र होना या करना। जुटना या जुटाना। ३. किसी के बीच में जोड़ना, बढ़ाना या लगाना। ४ किसी के पास या साथ बैठना। ५ सजा या जमाकर रखना। ६ आधार। आश्रय। ७ वास-स्थान। ८ घर। मकान। ९ समूह। १० प्रबंध। व्यवस्था। ११. रचना। गठन।

सन्निवेशित—भू० कृ०[सं०]१ जिसका सन्निवेश हुआ या किया गया हो। २ बीच में जोड़ा, बढ़ाया या लगाया हुआ।

सन्निहित—भू० कृ०[सं० सम्—नि√ धा (रखना)+क्त, धा=हि] १ किसी के साथ या पास रखा हुआ। २ समीपस्थ। ३ पड़ोस का। ४. टिकाया, ठहराया या रखा हुआ। ५ कोई काम करने के लिए उद्यत। तैयार।

सन्नी—वि०[हिं०] १ सन या पटसन से संबंध रखनेवाला। २ सन या पटसन से बना हुआ।

स्त्री०१. सन से बुना हुआ कपड़ा। २. सन की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा जो बगीचों में शोभा के लिए लगाया जाता है।

†पुं०=सनिवार।

सन्मन—पुं०[सं० सद्+मन्] शुद्ध या अच्छा मन। उदा०—किसी अपर सत्ता के सन्मुख सन्मन से नत होना।—दिनकर।

वि० अच्छे या सद् मनवाला।

सन्मान—पुं०[सं० प० त०] सम्मान।

सन्माननी—स०=सनमानना।

सन्मार्ग—पुं०[सं०] उत्तम या भला मार्ग।

सन्मुख—पुं०[सं०] अच्छा या सुन्दर मुख।

वि० अव्य० सं० 'सम्मुख' का अशुद्ध रूप।

सन्यास†—पुं०=सन्यास।

सपंक (?)—वि० [स० स+पंक=कीचड] १ कीचड से भरा हुआ। २. जिसे पार करना बहुत कठिन हो। बीहड। विकट।

सपई†—स्त्री०=सपई।

सपक्ष—वि० [स० ब० स०] १ जिसे पक्ष या पर हो। परोवाला। २ किसी की दृष्टि से, उसके पक्ष मे रहने या होनेवाला। ३ पोषक या समर्थक। ४ सहायक और साथी।

पु०१ अनुकूल पक्ष। २ न्याय मे, वह बात या दृष्टात जिसमे साध्य अवश्य हो। जैसे—जहाँ धूआँ होता है, वहाँ आग भी रहती है। इस दृष्टि से रसोई घर का दृष्टान्त सपक्ष कहलाता है।

सपक्षी†—वि०=सपक्ष।

सपचना—अ०=सपुचना (पूरा होना)।

सपच्छ*—वि०=सपक्ष।

सपटा—पु०[देश०]१ सफेद कचनार। २ एक प्रकार का टाट।

सपत†—स्त्री०=शपथ।

†वि०=सप्त (सात)।

सपतना—अ०[?] किसी स्थान पर पहुँचना। (राज०)

सपत्न—वि० [स०] सपत्नी या सौत की तरह का द्वेष और वैर रखनेवाला।

पु० दुश्मन। वैरी। शत्रु।

सपत्नता—स्त्री०[स० सपत्न+तल्—टाप्] वैर। शत्रुता।

सपत्नी—स्त्री० [स० ब० स० ङीप्] किसी विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पति की दूसरी पत्नी। सौत। सौतिन।

सपत्नीक—वि० [स० अव्य० स०—कप्] (व्यक्ति) जो अपनी पत्नी या भार्या के साथ हो। जैसे—वह यहाँ सपत्नीक आनेवाले है।

सपथ†—पु०=शपथ।

सपदि—अव्य० [स० सम् √पद् (गत्यादि)+इन—नलोप पृषो०] १ उसी समय। तुरत। २ शीघ्र। जल्दी।

सपन†—पु०=सपना।

सपना—पु०[स० स्वप्न] १ वह घटना, बात या दृश्य जो सोये होने पर अतर्मन मे काल्पनिक रूप से भासित होता है। स्वप्न। २ लाक्षणिक अर्थ म, ऐसी बात (क) जिसका अस्तित्व ही न हो। (ख) जो अब दुर्लभ हो गई हो अथवा (ग) जो मनगढत या कपोल-कल्पित हो और कार्य रूप मे न लाई जा सकती हो।

सपनाना†—अ० [स० स्वप्न] स्वप्न देखना। जैसे—तुम तो दिन भर बैठे सपनाते रहते हो।

स० स्वप्न दिखाना। जैसे—आज देवी ने उन्हे फिर कुछ सपनाया है (अर्थात् स्वप्न दिखाया है)।

सपनीला—वि०[स्त्री० सपनीली]=स्वप्निल।

सपरदाई—पु०[स० सम्प्रदायी] तवायफ के साथ तबला, सारगी या और कोई साज बजानेवाला। समाजी। साजिन्दा।

सपरना—अ०[स० सपादन, प्रा० सपाडन]१ किसी काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना।

मुहा०—(व्यक्ति का) सपर जाना=मर जाना। परलोकगत होना। २ काम का किया जा सकना। हो सकना। जैसे—यह काम हमसे नही सपरेगा। ३ काम-धन्धे आदि से निवृत्त होना। निपटना। ४ किसी काम की तैयारी के लिए पहले और कामो से निवृत्त होना। जैसे—वह सवेरे से मेले मे चलने के लिए सपर रहे हैं।

सपराना—स०[हिं० सपरना का स०]१ काम पूरा करना। निबटाना। खतम करना। २. अन्त या समाप्त करना।

सपरिकर—वि०[स०] अनुचर वर्ग के साथ।

सपरिच्छद—वि०[स० अव्य० स०] तैयारी या ठाट-बाट के साथ।

सपरिजन—वि०[स० अव्य० स०]१ सपरिकर।

सपरिवार—वि०[स० अव्य० स०] परिवार के सदस्यो के साथ।

सपरिश्रम कारावास—पु०[स०] कैद की वह सजा जिसमे कैदी को कठिन परिश्रम भी करना पडता है। कडी सजा। (रिगरस इम्प्रीजनमेन्ट)

सपर्ण—वि०[स० अव्य० स०] पत्तियो मे युक्त।

सपाट—वि० [स० स+पट्ट, हिं० पाटा=पीढा] १. जिसका तल बराबर या सम हो। समतल। २. जिसके तल पर कोई दूसरी चीज उभरी, खडी या टिकी न हो। जैसे—सपाट मैदान। ३ जो क्षितिज की ओर एक ही सीध मे दूर तक चला गया हो। क्षैतिज। (हारिजन्टल)

सपाटा—पु०[स० सर्पण] १ चलने या दौडने का वेग। २ तीव्र गति। दौड।

पद—सैर-सपाटा—मन बहलाने के लिए कही जाकर घूमना-फिरना। **सपाटे की तान**=सगीत मे एक प्रकार की तान जिसमे स्वरो का उतार-चढाव बहुत तेजी से होता है।

३ आक्रमण करने के लिए झपटने की क्रिया या भाव। उदा०—दो सौ सवारो का सपाटा पडा।—वृंदावनलाल वर्मा।

क्रि० प्र०—पडना।—मरना।—मारना।

४ तमाचा। थप्पड।

क्रि० प्र०—लगाना।

५ छल। धोखा।

सपाद—वि०[स०]१ पाद या चरण से युक्त। २ (ऐसा पूरा) जिसके साथ चतुर्थांश और भी मिला हो। सवाया। जैसे—सपाद लक्ष=एक लाख और पचीस हजार।

सपिंड—पु०[स० ब० स०] धर्म-शास्त्र मे पारम्परिक दृष्टि से एक ही कुल की सात पीढियों तक के लोग जो एक दूसरे को पिंडदान कर सकते और उनका श्राद्ध करने के अधिकारी होते हैं।

सपिंडी—स्त्री०[स० सपिड—ङीप्] मृतक के निमित्त किया जानेवाला वह कर्म जिसमे वह और पितरो या परिवारो के मृत प्राणियों के साथ पिंडदान द्वारा मिलाया जाता है।

सपिंडीकरण—पु० [स० सपिंड+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अनदीर्घ] एक प्रकार का श्राद्ध जिसमे मृतक को पिंड-दान द्वारा पितरो के साथ मिलाते है।

सपीड—वि०[स० अव्य० स०] पीडा युक्त।

सपुन†—वि० =सपूर्ण। उदा०—सपुन सुधानिधि दधि भरु भेल।—विद्यापति।

सपुर्द—वि०[फा० सिपुर्द] [भाव० सपुर्दगी]१ देख-रेख, पालन-पोषण, रक्षण आदि के निमित्त किसी को सौंपा हुआ। जैसे—बालक या सामान किसी को सपुर्द करना। २ उचित कार्य, विचार आदि के लिए किसी

अधिकारी के हाथ सौंपा हुआ। (कमिटेड) जैसे—चोर को पुलिस के सपुर्द करना।

सपुर्दगी—स्त्री०[फा० सिपुर्दगी] सपुर्द करने या सौंपने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कमिटमेन्ट)

सपूत—पु०[स० सत्पुत्र, प्रा० सपुत्र, सउत्त] १ वह पुत्र जो अपने कर्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र। २ वह पुत्र जिसने अपने कुल या पूर्वजो की कीर्ति बढाई हो।

सपूती—स्त्री०[हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)] १. सपूत होने की अवस्था या भाव। २ ऐसी स्त्री जिसने सपूत को जन्म दिया हो।

सपेट†—पु० [?] झपट।

सपेटा—पु०[?] १ महोगनी वृक्ष का फल। चीकू। २. [हिं० सप्रेटा] वह दूध जिसे कच्चे ही मथकर उसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो।

सपत (द)†—वि०=सफेद।

सपेती (दी)†—स्त्री०=सफेदी।

सपेरा†—पु०=सँपेरा।

सपेला†—पु०=सँपोला।

सपोला†—पु०=सँपोला।

सप्त—वि० [स०] जो गिनती मे सात हो। जैसे—सप्तभुज, सप्त-ऋषि।

सप्तऋषि—पु०=सप्तर्षि।

सप्तक—पु०[स०] १ एक ही तरह की सात वस्तुओ, कृतियो आदि का समूह। सात वस्तुओं का सग्रह। जैसे—तारसप्तक, सतसई सप्तक। २ सगीत मे, सातो स्वरो का समूह। 'षडज' से 'निषाद' तक के सातो स्वर। (ऑक्टेव)

विशेष—साधारणत गाने-बजाने के तीन सप्तक होते है। संगीत सदा मध्य सप्तक मे होता है। पर कभी कभी स्वर नीचा होकर मन्द्र मे और ऊँचा होकर तार मे भी पहुँच जाता है।

वि० १ सात। २ सातवाँ।

सप्तकी—स्त्री०[स० सप्तक—ङीप्] सात लडियोवाली करधनी।

सप्तकृत—पु०[स० त० त०] विश्वेदेवो मे से एक।

सप्तग्रही—स्त्री०[स०] एक ही राशि मे सात ग्रहों का एकत्र होना, जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ फल देता है।

सप्तच्छद—पु०[स०] सप्तवर्ण वृक्ष। छतिवन।

सप्तजिह्व—वि०[स०] जिसकी सात जिह्वाएँ हो।

पु० अग्नि।

विशेष—अग्नि की सात जिह्वाएँ हैं—काली, कराली मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, उग्रा, और प्रदीपा।

सप्त-तंत्री—स्त्री० [स०] वह वीणा जिसमे बजाने के लिए सात तार लगे हों।

सप्तति—वि०[सं० सप्तान् +ति—नलोप] सत्तर।

सप्ततितम—वि० [स० सप्तति+तमप्] सत्तरवाँ।

सप्तत्रिंश—वि० [स० सप्तत्रिंशत—ड] सैंतीसवाँ।

सप्तत्रिंशत्—वि०[स०] सैंतीस।

सप्तदश (न्)—वि०[स०] सत्रह।

सप्तद्वीप—पु०[स० कर्म० स०] पुराणानुसार पृथ्वी के ये सात बडे और मुख्य विभाग—जम्बू, कुश, प्लक्ष, क्रौच, शाल्मलि, शाक और पुष्कर द्वीप।

सप्त-धातु—पु०[स०] १ आयुर्वेद के अनुसार शरीर के ये सात सयोजक द्रव्य—रक्त, पित, मास, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र। २ चन्द्रमा का एक घोडा।

सप्तधान्य—पु०[स०] जौ, धान, उरद आदि सात अन्नो का मेल जो पूजा के काम आता है। सत-नजा।

सप्तनाड़ी चक्र—पु०[स० मध्यम० स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जिसमे सब नक्षत्रो के नाम रहते हैं; और जिसके द्वारा वर्षा का आगम बताया जाता है।

सप्तपंचाश—वि०[स० सप्तपचाशत+ड, मध्यम० स०] सत्तावनवाँ।

सप्तपंचाशत—वि० [स०] सत्तावन।

सप्तपत्र—वि०[स० ब० स०] जिसमे सात पत्ते या दल हो। सात पत्तो वाला।

पु० १. सूर्य। २. मोतिया या मोगरा नाम का बेला। ३ सप्तपर्ण। छतिवन।

सप्तपदी—स्त्री०[स०] १ हिन्दुओ मे एक वैवाहिक रीति जिसमे वर और वधू एक दूसरे का वरण करते समय अग्नि को साक्षी मानकर उसकी सात परिक्रमाएँ करते हैं। भँवरी। भाँवर। २ उक्त के आधार पर अग्नि को साक्षी करके कोई बात पक्की करने या वचन देने की क्रिया।

सप्तपर्ण—पु०[स०] १ छतिवन का पेड। २ प्राचीन काल की एक प्रकार की मिठाई।

सप्तपर्णी—स्त्री०[स०] लज्जालु। लज्जावती लता।

सप्त-पाताल—पु०[स०] पृथ्वी के नीचे के सात लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल।

सप्तपुत्री—स्त्री०[स०] सतपुतिया। (दे०)

सप्तपुरी—स्त्री०[स०] पुराणानुसार ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्ष दायक कहे गये है—अयोध्या, मथुरा, माया (हरद्वार), काशी, काची, अवन्तिका (उज्जयिनी) और द्वारका।

सप्त-प्रकृति—स्त्री०[स०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे, राज्य के ये सात अग—राजा, मत्री, सामत, देश, कोश, गढ और सेना।

सप्तबाह्य—पु०[स०] बाह्लीक देश। बलख।

सप्त-भंगी—स्त्री०[स०] जैन न्याय के सात मुख्य अग जिनपर उनका स्याद्वाद मत आश्रित है।

सप्तभद्र—पु०[स० ब० स०] १. सिरसि। शिरीष वृक्ष। २ नव-मल्लिका। नेवारी। ३. गुजा। घुँघची।

सप्तभुवन—पु०[स०] भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपर्लोक और सत्यलोक ये सात भुवन या लोक।

वि० सत मजिल। सात खण्डोवाला। (मकान)

सप्तभूम—वि०[स०] सात खडो का। सतमजिला (मकान)।

सप्तम—वि०[स० सप्तन्+डट्—मट्] [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमातृका—स्त्री०[स०] ये सात माताएँ या शक्तियाँ जिनका पूजन, विवाह आदि शुभ अवसरों के पहले होता है—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुडा।

सप्तमी—स्त्री०[सं०]१ चांद्र मास के किसी पक्ष की सातवी तिथि। सातवाँ दिन। २ व्याकरण मे, अधिकरण कारक की विभक्ति।
सप्त-मृत्तिका—स्त्री०[सं०] शांति-पूजन मे काम आनेवाली इन सात स्थानो की मिट्टी—अश्वशाला, गजशाला, गोशाला, तीर्थस्थान, राजद्वार, गुरुद्वार और नदी।
सप्त-रक्त—पु०[सं०] शरीर के सात अवयव जिनका रग लाल होता है। यथा—हथेली, तलवा, जीभ, आँख, पलक का निचला भाग, तालू और होठ।
सप्त-रात्र—पु०[सं०] सात रातो का समय।
वि० सात रातो मे समाप्त होनेवाला।
सप्त-राशिक—पु०[सं० ब० स०] गणित की एक क्रिया जिसमे सात राशियो के आधार पर किसी प्रश्न का उत्तर निकाला जाता है।
सप्तरुचि—पु०[सं०] अग्नि का एक नाम।
सप्तर्षि—पु०[सं० कर्म० स०] १ सात प्राचीन ऋषियो का समूह या मडल।
विशेष—(क) शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ये सात ऋषि—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि है। (ख) महाभारत के अनुसार ये सात ऋषि—मरीचि, अत्रि, अगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ हैं। २ उत्तरी आकाश मे के सात तारो का एक प्रसिद्ध मडल या समूह जो रात मे ध्रुव तारे की आधी परिक्रमा करता हुआ दिखाई देता है। (उर्सा मेजर)
विशेष—वास्तव मे ये सातो तारे एक बडे नक्षत्र पुज के (जिसमे कुल मिलाकर ५३ दृश्य नक्षत्र हैं) अग या उनके अतर्गत हैं, जो पुराणानुसार ध्रुव की परिक्रमा करते हुए कहे गये है।
सप्तला—स्त्री०[सं०]१ सातला। २ चमेली। ३ रीठा। ४ घुँघची।
सप्तवादी—पु०[सं० सप्तवादिन्] सप्तभगी न्याय का अनुयायी अर्थात् जैन।
सप्तविंश—वि०[सं० सप्तविंशत्] सत्ताईसवाँ।
सप्तविंशति—वि०[सं०] सत्ताईस।
स्त्री० उक्त सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—२७।
सप्तशती—स्त्री०[सं० द्वि० स०] १ एक ही तरह की सात चीजो का वर्ग या समूह। २. सात सौ पदो या वृत्तो का सग्रह। सतसई। जैसे—दुर्गा सप्तशती।
पु० बगाली ब्राह्मणो की एक जाति या वर्ग।
सप्तशीर्ष—पु०[सं०] विष्णु का एक नाम।
सप्तषष्ठ—वि०[सं० मध्यम० स०] सडसठवाँ।
सप्तषष्ठि—वि०[सं०] सडसठ।
वि० सडसठ की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६७।
सप्तसप्त—वि०[सं०] सतहत्तरवाँ।
सप्तसप्तति—वि०[सं०] सतहत्तर।
स्त्री० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७७।
सप्तसागर—पु०[सं०] १ पृथ्वी पर के सातो सागरो का समूह। २ एक प्रकार का दान जिसमे सात पात्रो मे घी, दूध, मधु, दही आदि रखकर ब्राह्मण को दिया जाता है।
सप्तसिंधु—पु०[सं०] प्राचीन आर्यावर्त की ये प्रसिद्ध सात नदियाँ, सिन्धु परुष्णी (रावी), शतुद्री (सतलज), वितस्ता (झेलम), सरस्वती, यमुना और गगा।
सप्तस्वर—पु०[सं०] सगीत के ये सातो स्वर—स, रे ग, म, प, ध, नि।
सप्त-स्वरा—स्त्री० [सं०] पुरानी चाल की एक प्रकार की वीणा।
सप्तांग—वि०[सं० ब० स०] सात अगोवाला।
पु०=सप्त-प्रकृति। (राजनीति का)।
सप्तांशु—पु०[सं०] अग्नि।
वि० सात किरणोवाला।
सप्तात्मा (त्मन्)—पु०[सं० ब० स०] ब्रह्मा।
सप्तार्चि—पु० [सं०] १ शनि ग्रह। २ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।
सप्तार्णव—पुं०[सं० कर्म० स०] पृथ्वी पर के सातो समुद्र।
सप्तालु—पु०[सं० सप्त+अलुच्] सताल्। शफतालू।
सप्ताशीति—वि०[सं० मध्यम० स०] सतासी।
स्त्री० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८७।
सप्ताश्र—पु०[सं० ब० स०] ज्यामिति मे, सात भुजाओवाला क्षेत्र।
सप्ताश्व—पु०[सं० ब० स०] सूर्य (जिनके रथ मे सात घोडे जुते हुए माने गये हैं)।
सप्ताह—पु०[सं० कर्म० स०]१ सात दिन। सात दिनो की अवधि। जैसे—वे एक सप्ताह बाहर रहेंगे। २ सात दिनो का समय विशेषत सोमवार से रविवार तक के सात दिन। ३ उक्त सात दिनो मे पड़ने-वाले, काम, व्यापार या नौकरी के दिन। जैसे—दो सप्ताह स्कूल और जाना है। ४ कोई ऐसा कृत्य या अनुष्ठान जो सप्ताह भर चलता रहे। जैसे—भागवत का सप्ताह, रक्षियो सप्ताह।
क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।—सुनना।—सुनाना।
विशेष—महीनो को चार सप्ताहो मे विभक्त किया जाता है। परन्तु कई महीनो मे अट्ठाइस मे अधिक दिन होते हैं। २८ से जितने अधिक दिनो का महीना हो उन दिनो की गिनती अतिम सप्ताह मे होती है। इस प्रकार का अतिम सप्ताह ८, ९, १० या ११ दिनो का भी होता है।
सप्ताहांत—पु० [सं० सप्ताह+अत] सप्ताह का अतिम दिन जो शुक्रवार की आधी रात से रविवार के सवेरे तक माना जाता है। (वीक-एंड)
सप्पन—पु०[देश०] बक्कम का पेड।
स-प्रमाण—वि०[सं० अव्य० स०] १ प्रमाण से युक्त। २ प्रामाणिक।
क्रि० वि० प्रमाण या सबूत के साथ।
सप्रेटा—पु०[अ० सेपरेटेड मिल्क] ऐसा दूध जिसमे से मक्खन या चिकना अश निकाल लिया गया हो। सखनिया दूध।
सफ—स्त्री०[अ० साफ] १ पक्ति। कतार। २ बिछाने की चटाई। ३ बिछौना। बिस्तर।
पु० शफ।
सफगोला—पु०=इसबगोल।
सफदर—वि० [अ०] सफो अर्थात् सैनिक पक्तियाँ तोडने या भेदनेवाला।
पु०१. बहुत बडा वीर। २ एक प्रकार का बढिया आम।
सफर—पु०[अ० सफ़र]१ हिजरी सन् का दूसरा महीना। २ रास्ते मे चलना। २ रवाना होना। ३ वह अवस्था जब कोई एक स्थान से

दूसरे नजदीक या दूर के स्थान को जा रहा हो। ३ यात्रा काल मे तै की जानेवाली दूरी। जैसे—५० मील लबा सफर उन्हे करना पडा।
†पु०=सफरी (मछली)।

सफरदाई—पु०=सपरदाई।

सफर भत्ता—पु० दे० 'यात्राभत्ता'।

सफरमैना—स्त्री० [अ० सैपर्स ऐंड माइनर्स] सेना के वे सिपाही जो सुरग लगाने तथा खाइयाँ आदि खोदने को आगे चलते हैं।

सफरा—पु०[अ० सफर] [वि० सफरावी] पित्त।

सफरी—वि०[अ० सफर]१. सफर-सबधी। २. सफर मे साथ ले जाया जानेवाला। जैसे—सफरी बिस्तर।
स्त्री० रास्ते का व्यय और सामग्री।
†पु०[?] अमरूद नामक फल।
†स्त्री०=शफरी (मछली)।
स्त्री० [?] टिकली जो हिंदू स्त्रियाँ माथे पर लगाती है।

सफल—वि० [स० अव्य० स०]१. वृक्ष जिसमे फल लगा हो। फलयुक्त। २ (कार्य) जिसका उद्दिष्ट फल या परिणाम हुआ हो। जैसे—परिश्रम सफल होना। ३ (व्यक्ति) जिसका उद्देश्य या परिश्रम अपना परिणाम या फल दिखा चुका हो। जैसे—विद्यार्थी का परीक्षा मे सफल होना। ४ पशु जिसका अडकोश कटा न हो या जो बधिया न किया गया हो।

स-फलक—वि०[स० अव्य० स०] जिसके पास फलक अर्थात् ढाल हो।

सफलता—स्त्री०[स० सफल+तल्—टाप्]१ सफल होने की अवस्था या भाव। कामयाबी। सिद्धि। २ सफल होने पर होनेवाली सिद्धि।

सफला—स्त्री०[स० सफल—टाप्] पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

सफलित—वि०[स० सफल+इतच्]=सफलीभूत।

सफलीकरण—पु० [स० सफल+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन, दीर्घ] [भू० कृ० सफलीकृत] सफल करने की क्रिया या भाव।

सफलीभूत—भू० कृ०[स० सफल+च्वि√भू (होना)+क्त दीर्घ] १ (व्यक्ति) जिसे सफलता मिली हो। जो सफल हो चुका हो। २ (कार्य) जो पूरा या सिद्ध हो चुका हो।

सफहा—पु० [अ० सफह]१. तल। पार्श्व। २ पुस्तक का पृष्ठ। पन्ना। वरक।

सफा—वि० [अ० सफा]१ साफ। स्वच्छ। जैसे—सफा कमरा। २ निर्मल। पवित्र। ३ साफ करनेवाला। जैसे—बालसफा पाउडर। ४. खाली। रहित। जैसे—रात भर मे उनका जेब सफा हो गया।

सफाई—स्त्री०[अ० सफा+हि० ई (प्रत्य०)]१ साफ होने की अवस्था या भाव। स्वच्छता। निर्मलता। २ कूडे-करकट, मैल आदि से रहित करने या होने की अवस्था या भाव। जैसे—कपडे, बरतन या मकान की सफाई। ३ त्रुटि, दोष आदि से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—बोलने या लिखने मे दिखाई देनेवाली सफाई। ४. छल-कपट आदि से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—व्यवहार या हृदय की सफाई। ५ ऋण आदि का परिशोध। लेन-देन या हिसाब चुकता होना। ६ लगाये हुए इलजाम या आरोपित दोष से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—मामले-मुकदमे मे दी जानेवाली सफाई।
क्रि० प्र०—देना।
७ वाद-विवाद आदि का निपटारा या निर्णय।

सफा-चट—वि० [अ०+हि०] १. (तल) जो ऊपर से पूरी तरह से साफ कर दिया गया हो। जिसके ऊपर कुछ भी जमा या लगा न रहने दिया गया हो। जैसे—सफाचट खोपडी, सफाचट दाढी। २ तल जिस पर कुछ भी जमा या लगा न रह गया हो। जो बिलकुल चिकना हो। जैसे—सफाचट मैदान। ३ बिलकुल साफ और स्वच्छ। जैसे—सफाचट दीवार। ४. जिसका कुछ भी अश या चिह्न बाकी न रहने दिया गया हो। जैसे—जो कुछ उसने पाया वह सब सफाचट कर दिया।

सफाया—पु०[अ० सफा] १. जीवो के सबध मे, उनका होने या किया जानेवाला पूरा सहार। जैसे—(क) युद्ध मे जातियो का होनेवाला सफाया। २ वस्तुओ के सम्बन्ध मे, उनका किया जानेवाला ऐसा उपयोग या भोग कि वे नष्ट या समाप्त हो जायँ। जैसे—दो ही वर्षो मे उसने बाप-दादा की कमाई का सफाया कर दिया।

सफीना—पु०[अ० सफीन.]१ बही। किताब। नोट-बुक।
२ अदालत का लिखा हुआ परवाना। हुकुमनामा।

सफीर—पु०[अ० सफीर] एलची। राजदूत।
स्त्री०१ चिडियो के बोलने की आवाज। २ सीटी, विशेषत वह सीटी जो पक्षियो, साथियो आदि को अपने पास बुलाने के लिए बजाई जाती है।

सफील—स्त्री०[अ० फसील]१ पक्की चहारदीवारी। २ शहरपनाह। परकोटा।

सफेद—वि० [स० श्वेत से फा० सुफेद] १ जो रगीन न हो। जैसे—सफेद बाल।
पद—सफेद खून =पुरुष का वीर्य।
२. स्वच्छ तथा उज्ज्वल। जैसे—सफेद पोशाक। ३ (कागज आदि) (क) जिस पर कुछ लिखा न हो। कोरा। (ख) जिस पर लकीरें आदि न खिची हों।
पद—स्याह सफेद=(क) भला-बुरा। (ख) हानि-लाभ।
मुहा०—खून सफेद होना=मोह, ममता, सहानुभूति आदि का भाव मन मे न रह जाना।
४. साफ। स्पष्ट।
पद—सफेद-झूठ। (देखें)

सफेद-झूठ—पु० [हि०] ऐसा झूठ जो ऊपर से देखने पर ही साफ झूट जान पडता हो, और वस्तु-स्थिति के स्पष्ट विपरीत हो।
विशेष—हिन्दी मे यह पद अँगरेजी के 'व्हाइट लाई' के अनुकरण पर बना है, पर इसका आशय बिलकुल उलटा लिया जाने लगा है। वस्तुतः अँगरेजी मे 'व्हाइट लाई' ऐसे झूठ को कहते है जो केवल औपचारिक रूप मे प्राय बोला जाता है और जिसमे किसी के अनिष्ट या छल-कपट का कुछ भी उद्देश्य नही होता।

सफेद पलका—पु० [फा० सुफैद+हि० फलक] ऐसा कबूतर जिसके पर कुछ सफेद और काले हो।

सफेद-पोश—वि० [फा०] [भाव० सफेद-पोशी] १ साफ कपडे पहनने-वाला।
पु० कुलीन और शिक्षित और सभ्य व्यक्ति।

सफेद सुरमा—पु० [हि०] चिरोडी नामक खनिज पदार्थ जो सफेद ग का होता है। (जिप्सम)

सफेद हाथी—पु० [हिं०] १. वरमा मे पाया जानेवाला सफेद रग का हाथी जो वहाँ वहुत पवित्र माना जाता है और जिससे कोई काम नही लिया जाता। २ ऐसा व्यक्ति विशेषत वेतन-भोगी कर्मचारी, जिसपर व्यय तो वहुत अधिक पडता हो, पर जिसका उपयोग प्राय वहुत कम या नही के समान होता हो। (व्हाइट एलिफेन्ट)

सफेदा—पु० [फा० सुफेदा] १. जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा लोहे, लकडी आदि की रँगाई मे रग में मिलने के काम मे आती है। ३ एक प्रकार वढिया आम। ४ एक प्रकार का वडा और वढिया खरवूजा। ५ एक प्रकार का पाकवान जिमका प्रचलन मुसलमानो मे है। ६ पजाव और कश्मीर मे होनेवाला एक वहुत ऊँचा और खभे की तरह सीधा जानेवाला पेड जिसकी छाल का रग सफेद होता है। इसकी लकडी सजावट के समान वनाने के काम मे आती है।

सफेदी—स्त्री० [फा० सुफैदी] १ सफेद होने की अवस्था या भाव। श्वेतता। धवलता। २ वालो के सफेद होने की अवस्था जो वृद्धावस्था की सूचक होती है।

मुहा०—सफेदी आना=दाढी मूँछें और सिर के वाल सफेद होना। वुढापा आना।

३. दीवारो आदि पर होनेवाली चूने के घोल की पोताई जिससे वे विलकुल सफेद हो जाती हैं। ४ सूर्य के निकलने के पहले का उज्ज्वल प्रकाश जो पूर्व दिशा मे दिखाई पडता है।

सफ्तालू†—पु०=शफ्तालू।

सवंध, सवंधक—वि० [स०] जिसके लिए या जिसके सवध मे कोई वध लिखा गया हो या कोई जमानत दी गई हो।

सव—वि० [स० सर्व] १ अवधि, मान, मात्रा, विस्तार आदि के विचार से जितना है वह कुल। जैसे—(क) यहाँ सव दिन रोना पडा रहता है। (ख) सव खुशियाँ वह अपने साथ लेता गया। (ग) सव सामान उसके पास है। २. अग, अश, सदस्य आदि के विचार से हर एक। जैसे—वहाँ सव जा सकते है किसी के लिए मनाही नही है। ३ जोड के विचार से होनेवाला।

पद—सब मिलाकर=गिनती में जितना जोड़ हुआ है उसके विचार से। जैसे—सव मिलाकर उन्होंने १००००) विवाह मे खर्च किये है।

सर्व० कुल व्यक्ति। जैसे—सव ने यही मत दिया।

वि० [अ०] १ किसी के आधीन रहकर उसी की तरह काम करनेवाला। जैसे—सव रजिस्ट्रार। २ किसी के अतर्गत और गौण या छोटा। उप। जैसे—सव-डिवीजन।

सवक—पु० [फा० सवक] १ अध्ययन के समय उतना अश जितना एक वार मे पढाया जाय। पाठ। २ नसीहत। शिक्षा।

क्रि० प्र०—मिलना।—सीखना।

सबकत—स्त्री० [अ० सवकत] किसी विषय मे औरो की अपेक्षा आगे वढ जाना। विशिष्टता प्राप्त करना।

सवज†—वि०=सब्ज।

सवद*—पु० [स० शब्द] १ शब्द। आवाज। २ किसी महात्मा की वाणी या भजन आदि। जैसे—कवीर जी के सवद, दादू दयाल के सवद।

सवदी—वि० [हिं० सवद] किसी सावु-महात्मा के सवद (वचन या आज्ञा) पर विश्वास रखनेवाला।

सवव—पु० [अ०] १ कारण। वजह। हेतु। २ किसी प्रकार की क्रिया का द्वार या सावन। जैसे—कोई सवव निकालो तो यह काम हो।

सवर†—पु० =सब्र।

सवरा—पु० [?] वह औजार जिसमे कसेरे टाँका लगाते है। वरतन मे जोड लगाने का औजार।

† वि०=सव (पूरा या सारा)।

सवल—वि० [स० अव्य० स०] [भाव० सवलता] १ जिसमे वहुत वल हो। वलवान्। वलशाली। ताकतवर। २ जिसकी सेना या सैनिक सवल हो।

सवा—स्त्री० [अ०] १ रास्ता। मार्ग। २ पूरव की ओर से आनेवाली अच्छी और ठढी हवा जो प्रिय लगती है।

सवात—स्त्री० [अ०] १ स्थिरता। स्थायित्व। २ दृढता। मजवूती।

सवार*—अव्य० [हिं० सवेरा] उचित समय से कुछ पहले ही।

सवील—स्त्री० [अ०] १ द्वार। सावन। २ उपाय। युक्ति।

क्रि० प्र० निकालना।

३. वह स्थान जहाँ लोगो को वर्मार्थ जल या शरवत पिलाया जाता हो। पौसरा। प्याऊ।

क्रि० प्र०—वैठाना।—लगाना।

सवीह†—स्त्री०=शवीह।

सवुज†—वि०=सब्ज (हरा)।

सवुनाना—स० [हिं० सावुन] सावुन लगाना।

सवू—पु० [फा० सुव्र] १ मिट्टी का घडा। मटका। गगरी। २ शराव रखने का पात्र।

सवूत—पु० [अ० सुवूत] वह चीज या वात जिससे कोई और वात सावित अर्थात् प्रमाणित होती हो। प्रमाण।

† वि०=सावूत (पूरा या सारा)।

सवून†—पु०=सावुन।

सवूरा—पु० [अ० सब्र] [स्त्री० अल्पा० सवूरी] काठ, कपडे, चमडे आदि का वना हुआ एक प्रकार का लवा खड जिससे कुँआरी, विधवा या पतिहीना स्त्रियाँ अपनी काम-वासना तृप्त करती हैं। (मुसल० स्त्रियाँ)

सवूरी—स्त्री० [अ० सब्र] १ सतोप। सब्र। उदा०—कहत कवीर सुनो भाई सतो साहव मिलत सवूरी मे।—कवीर। २ किसी के द्वारा पीड़ित होने पर तथा असमर्थ या असहाय होने के कारण चुप-चाप वैठकर किया जानेवाला सब्र।

मुहा०—(किसी को) सवूरी पड़ना=किसी पीडित के उक्त प्रकार के सब्र के फलस्वरूप उत्पीड़क को दैवी गति से दड मिलना या उसका कोई उपकार होना।

सवेरा—पु०=सवेरा।

सब्ज—वि० [फा० सब्ज] १ कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि)।

मुहा०—(किसी को) सब्ज वाग दिखलाना=अपना काम निकालने या जाल मे फँसाने के लिए भविष्य के सवध मे वड़ी वडी आशाएँ दिखलाना।

२. (रग) हरा। हरित । ३ भला। शुभ । जैसे—सब्ज-बख्त= भाग्यवान् ।

सब्ज-कदम—वि० [फा० सब्ज+अ० कदम] जिसके कही पहुँचते ही कोई अशुभ घटना हो। जिसके चरण अशुभ हो। (उपहास और व्यग्य)

सब्जा—पु० [फा० सब्ज़.] १ हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। क्रि० प्र०—लहलहाना।

२ भग। भाँग। विजया । ३ पन्ना नामक रत्न। ४ कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ५ घोडे का एक रग जिसमे सफेदी के साथ कुछ कालापन भी मिला होता है। ६.उक्त रग का घोडा। ७. सौ रुपयों का नोट जो प्राय सब्ज या हरे रग की स्याही से छपा होता है। (बाजारू) जैसे—एक सब्जा उसके हाथ पर रखो तो काम हो जाय।

सब्जी—स्त्री० [फा०] १ सब्ज होने की अवस्था या भाव। हरापन। २. हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। ३ हरी तरकारी। साग-सब्जी । ४. पकाई हुई तरकारी। जैसे—आलू-मटर की सब्जी।

सब्र—पु० [अ०] १. वह मानसिक स्थिति जिसमे मनुष्य उत्तेजित, उत्पीडित, दुखी या सतप्त किये जाने अथवा किसी प्रकार की विपत्ति या विलम्ब का सामना होने पर भी धीरे और शात भाव से चुप रहता या सहन करता है। जैसे—(क) थोडा सब्र करो, समय आने पर उससे समझ लिया जायगा। (ख) अपमानित होने (या मार खाने) पर भी वह सब्र करके बैठ रहा।

मुहा०—सब्र आना=किसी का कुछ अनिष्ट करके अथवा बदला चुकाकर ही चुप या शात होना। उदा०—मारा जमी मे गाड़ा, तब उसको सब्र आया।—कोई शायर। **सब्र कर बैठना या कर लेना**= चुपचाप और शात भाव से सहन करते हुए कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार न करना। **(किसी पर किसी का) सब्र पड़ना**=उत्पीडक को उत्पीडित के सब्र के फलस्वरूप किसी प्रकार का दुष्परिणाम या प्रतिफल भोगना पडना। जैसे—तुम पर मेरा सब्र पडेगा, अर्थात् ईश्वर की ओर से तुम्हे इसका दुष्परिणाम भोगना पडेगा। **(किसी का) सब्र समेटना**—किसी को पीडित करने पर उसके सब्र के फल भोग का भागी बनना।

२ जल्दी, हडबडी आदि छोडकर धैर्य धारण करना। जैसे—सब्र करो, गाडी छूटी नही जाती है।

सब्रह्मचारी—पु० [स० अव्य० स०] वे ब्रह्मचारी जिन्होंने एक साथ एक ही गुरु के यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त की हो।

सभंग—वि० [स०] जिसके खड या टुकडे किये गये हो। टूटा या तोड़ा हुआ। भग्न।

सभंग श्लेष—पु० [स०] साहित्य में, श्लेष अलकार के दो मुख्य भेदो मे से जो उस समय माना जाता है जब किसी शब्द या पद का भग अर्थात् खड या विच्छेद करके कोई दूसरा अर्थ निकाला या लगाया जाता है। यथा—भोगी ह्वै रहत विलसत अपनी के मध्य कनकन जोरै दान पाठ परिवार है।—सेनापति। इसमे के 'कनकन' पद का भग करने पर एक अर्थ होगा—'कनक न जोरै' का और दूसरा अर्थ होगा—कन कन जोरै का।

विशेष—इसका दूसरा और विपरीत भेद 'अभग श्लेष' कहलाता है।

सभ†—वि०=सब।

सभय†—वि० [स० अव्य० स०] १. डरा हुआ। भयभीत। २. जिसमे या जिससे भय की आशका हो। भय-कारक। खतरनाक।

क्रि० वि० भयपूर्वक। डरते हुए।

सभर्तृका—वि० स्त्री० [स० अव्य० स०] (स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सधवा।

सभा—स्त्री० [सं०] १. एक स्थान पर बैठे हुए बहुत से भले आदमियो का समूह। परिषद्। समिति। जैसे—राज-सभा। २ सभ्य लोगो की वह मडली जो किसी कार्य की सिद्धि या किसी विषय पर विचार, करने के लिए एकत्र हुई हो। जैसे—इसका निर्णय करने के लिए पडितो की सभा की जानी चाहिए। ३ वह सस्था जो किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए सघटित हुई हो, और नियमित रूप से अपना कार्य करती हो। जैसे—नागरी प्रचारिणी सभा, विद्यार्थी सहायक सभा। ४. वैदिक काल की एक सस्था जिसमे कुछ लोग एकत्र होकर राजनीतिक, सामाजिक आदि विषयो पर विचार करते थे। ५. प्राचीन भारत मे, उक्त प्रकार की सस्था का सदस्य। सभासद। सामाजिक। ६ जुआडियो का जमघट या समूह। ७. जूआ। द्यूत। ८ झुंड। समूह। ९ घर। मकान।

सभाई—वि० [स० सभा+हिं० आई (प्रत्य०)] सभा से सबध रखनेवाला। सभा का। जैसे—विधान सभाई दल, हिंदू सभाई प्रतिनिधि।

सभाकक्ष—पु० [स० ष० त०] दे० 'प्रकोष्ठ'।

सभाग—वि० [स०] १ जिसका हिस्सा हुआ हो। २ सामान्य। ३. सार्वजनिक।

वि० [स० स+भाग्य] [स्त्री० सभागी] १ भाग्यवान्। खुशकिस्मत।

वि०=सुभग (सुन्दर)।

सभा-गृह—पुं० [स०] वह स्थान जहाँ सार्वजनिक सभाएँ या किसी बडी सस्था के अधिवेशन होते हो। (एसेम्बली हाउस)

सभाग्रणी—पु० दे० 'सदन-नेता'।

सभा-चतुर—वि० [स०] [भाव० सभा-चातुरी] १ वह जो सभा या शिष्ट समाज मे बातचीत करने का अच्छा ढग जानता हो। विशेषत जो अपनी चतुराई से लोगो को अपने अनुकूल बना, प्रभावित और प्रसन्न कर सकता हो।

सभा-चातुरी—स्त्री० [स० सभा-चतुर+हिं० ई (प्रत्य०)] सभा-चतुर होने की अवस्था गुण या भाव।

सभाचार—पु० [स०] १. वे आचरण और व्यवहार जिनका पालन करना किसी सभा मे जाने पर आवश्यक तथा उचित माना जाता हो। २ समाज के रीति-रिवाज। ३ न्यायालयों मे काम होने का ढग या तरीका।

सभा-त्याग—पु० [स०] किसी सभा के कार्य या व्यवहार से असन्तुष्ट होकर उसके अधिवेशन से उठकर चले जाना। सदन-त्याग।

सभानेता—पु० दे० 'सदननेता'।

सभापति—पु० [स०] किसी गोष्ठी या सार्वजनिक सभा के कार्यो के सचालन के लिए प्रधान रूप मे चुना हुआ व्यक्ति। (प्रेसिडेन्ट)

विशेष—किसी समिति, सस्था आदि का स्थायी प्रधान अध्यक्ष कहलाता

है, जिसका कार्यालय उस समिति, सस्था आदि के विधान द्वारा नियत होता है, परन्तु सभापति अस्थायी होता है। किसी अधिवेशन के लिए ही चुना जाता है। फिर भी लोक-व्यवहार मे दोनो शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते हुए देखे जाते है।

सभा-परिषद्—स्त्री०[स०]१. बहुत से लोगो का एकत्र होकर साहित्य, राजनीति आदि से सबध रखनेवाले किसी विषय पर विचार करना। २ उक्त कार्य के लिए बनी हुई परिषद् या सभा। ३ सभा-भवन।

सभार्यक—वि०=सपत्नीक।

सभावी—पु०[स० सभाविन्] सभिक।

सभासचिव—पु०=सदन-सचिव।

सभासद—पु०[स०] वह जो किसी सस्था, समुदाय आदि का सदस्य हो। (मेम्बर)

सभिक—पु० [स०] वह जो लोगो को अपने यहाँ बैठाकर जूआ खेलाता हो। जूए खाने का मालिक।

सभीत*—क्रि० वि०[स० स+भीति] डरते हुए। भयपूर्वक।

सभेय—वि० [स० सभा+ढक्—एय] जो सभा या शिष्ट समाज के उपयुक्त हो।

पु०१. विद्वान्। २ शिष्ट व्यक्ति। ३ वह जो सभा समाज मे बैठ कर अच्छी तरह बातचीत कर सकता हो। सभा-चतुर।

सभ्य—वि० [सं० सभा+यत] [भाव० सभ्यता] १ सभा से सम्बन्ध रखनेवाला। २ सभा, समाज आदि के लिए उपयुक्त। ३ अच्छे विचार रखने और भले आदमियो का सा व्यवहार करनेवाला। शिष्ट। ४. (काम या बात) जो भले आदमियों के उपयुक्त और शोभन हो। शिष्ट। (सिविल) जैसे—सभ्य व्यवहार।

पु०१ वह जो किसी सभा, सस्था आदि का सदस्य हो। सभासद। २ भला आदमी।

सभ्यता—स्त्री०[स०]१ सभ्य होने की अवस्था, गुण या भाव। २ किसी सभा या समाज की सदस्यता। ३ शीलवान् और सज्जन होने की अवस्था और भाव। ४ आज-कल वे सब काम और बातें जो किसी जाति या देश के लोग प्रकृति पर विजय पाने और जीवन निर्वाह मे सुगमता लाने के लिए भौतिक साधनो का उपयोग करते हुए आरभ से अब तक करते आये हैं। किसी जाति या देश की बाह्य तथा भौतिक उन्नतियो का सामूहिक रूप। (सिविलिजेशन)

विशेष—सभ्यता और सस्कृति का अन्तर जानने के लिए,दे० 'सस्कृति' का विशेष।

सभ्येतर—वि०[स० पच० त०] जो सभ्य न होकर उससे भिन्न हो। अर्थात् उजड्ड या बेशउर।

समंग—वि० [स० ब० स०] सभी अगो से युक्त पूर्ण।

समंगा—स्त्री० [स० ब० स०—टाप्] १ मजीठ। २ लजालू लज्जाती। ३ वराह क्राता। गेठी। ४ बला या बाला नामक ओषधि।

समंगिनी—स्त्री० [स० समग+इनि—डीप्] बौद्धो की एक देवी।

समंगी (गिन्)—वि० [स० समगिन्—दीर्घ, नलोप] [स्त्री० समगिनी] १ जिसके सभी अग पूर्ण हो। २ सभी आवश्यक साधनो से युक्त। ३ जिसके सभी अग समान हो।

समंचार†—पु०=समाचार।

समंजन—पु०[स०] [वि० समजनीय, भू० कृ० समजित]१. एक चीज दूसरी चीज के साथ जोडना, बैठाना या मिलाना। २ यत्रो के पुरजो आदि को ठीक तरह से यथा-स्थान बैठाना। ३ जमा-खर्च आदि का हिसाब यथास्थान ले जाकर ठीक और पूरा करना। लेखा-जोखा बराबर करना। (ऐडजस्टमेंट) ४ मेल मिलाना। ५ लेप करना या लगाना ६ मालिश करना। मलना।

समंजस—वि०[स० ब० स०-अच] [भाव० सामजस्य]१ उचित। ठीक। वाजिब। २ आस-पास की बातों, वस्तुओ आदि के साथ ठीक जान पडने या मेल खानेवाला। ३ किसी काम या बात का अभ्यस्त।

समंजित—भू० कृ०[स०]१ जिसका समजन हुआ हो। २ जो ठीक करके परिस्थितियो के अनुकूल या उपयुक्त किया अथवा बनाया गया हो। (एडजेस्टेड)

समंत—पु०[स०] किनारा। सिरा।

वि०१ समस्त। सारा। २ सार्वजनिक।

समंतदर्शी—वि० [स० समन्तदर्शिन्] जिसे सब कुछ दिखाई देता हो। सर्वदर्शी।

पु० गौतम बुद्ध।

समंत-पंचक—पु०[स०] कुरुक्षेत्र का एक नाम।

विशेष—कहा गया है कि परशुराम समस्त क्षत्रियो को मार कर उनके लहू से यही पाँच तालाब बनाए थे, और उन्ही मे लहू से उन्होने अपने पिता का तर्पण किया था। इसी से इस स्थान का नाम समतपचक पडा।

समंत-भद्र—पु०[स०] गौतम बुद्ध।

समंतर—पु० [म० ब० स०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

समंतालोक—पु० [स० ब० स०] योग मे ध्यान करने का एक प्रकार।

समंद—पु० [फा०] १ बदामी रग का ऐसा घोडा जिसका अयाल, दुम और पुट्ठे काले हो। २ घोडा। ३ अच्छा या बढिया घोडा।

समंदर—पु०[फा०]एक कल्पित जतु जो फारसी कवि-समय के अनुसार अग्निकुड मे उत्पन्न होता और उससे बाहर निकलने पर तुरन्त मर जाता है।

†पु०=समुद्र।

सम—वि० [स०] [स्त्री० समा, भाव० साम्य, समता] १ जो आदि से अत तक प्राय एक-सा चला गया हो। जिसमे कही बहुत उतार-चढाव या हेर-फेर न हो। २ जिसका तल बराबर हो, ऊबड-खाबड न हो। चौरस। ३ एक बराबर। तुल्य। समान। (इक्वल) यौ० के आरभ मे, जैसे—समकोण, समसीमात। ४ (सख्या) जिससे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस। (ईवेन) ५ सब। समस्त। ६ (किसी के) समान या बराबर। की तरह। के समान। जैसे—पुत्र-सम मानना।

पु०१ सगीत मे वह स्थान जहाँ लय के विचार से गति की समाप्ति होती है और जहाँ गाने-बजानेवालो का सिर हिलता या हाथ आप से आप आघात सा करता है। २ साहित्य मे, एक अलकार जिसमे स्थिति के ठीक अनुरूप किसी कार्य का अथवा रूप या नाम के अनुरूप

कार्यो, गुणों आदि का वर्णन होता है। (डवल) ३ ज्योतिष में, वह राशि जो सम संख्या पर पड़े। दूसरी, चौथी, छठी आदि राशियाँ। वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन ये छ राशियाँ। ४. गणित में, वह सीधी रेखा जो उस अंक के ऊपर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है।
†पु०=शम (शमन)।
पु०[अ०] जहर। विष।
पु० [फा० कसम] कसम। शपथ। सौगंध।

सम-अजिर—पु०[सं०] प्राचीन भारत में, वह स्थान जहाँ जनसाधारण के मनोविनोद के लिए कुश्तियाँ, नाटक और तरह तरह के खेल होते थे।

सम-कक्ष—वि०[सं० ब० स०]१ कद के विचार से एक ही ऊँचाई वाले। २ अधिकार, पद, विद्या, संपत्ति, आदि के विचार में तुल्य। ३ सब बातों में किसी की बराबरी करनेवाला। जोड़ या बराबरी का।

समकक्ष सरकार—स्त्री०[सं०+फा०] वह नई सरकार जो किसी देश की पुरानी सरकार को अयोग्य या अवैध समझकर उसे नष्ट करने और उसका स्थान स्वयं ग्रहण करने के लिए बनाई या गठित की जाती है। (पैरेलल गवर्नमेंट)

समकना—अ०=चमकना (चौंकना)।

समकर्णा—पु०[सं० ब० स०]१ ज्यामिति में किसी चतुर्भुज के आमने सामने वाले कोणों के ऊपर की रेखाएँ। २. शिव। ३ गौतमबुद्ध।

समकालिक—वि०[सं०]१. (दो या कई काम या बातें) जो एक ही समय में या एक साथ घटित हों। युगपत्। (साइमल्टेनियस) २. दे० 'सम-कालीन'।

समकालीन—वि०[सं०] १. जो उसी काल या समय में जीवित अथवा वर्तमान रहा हो, जिसमें कुछ और विशिष्ट लोग भी रहे हैं। एक ही समय में रहनेवाले। जैसे—महाराणा प्रताप अकबर के समकालीन थे। २ जो उत्पत्ति, स्थिति आदि के विचार से एक ही समय में हुए हों। (कन्टेम्पोरेरी)

समकोण—वि०[सं० ब० स०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दोनों कोण समान हों।

सम-कोणक—वि०=सम-कोण।

समक्रमण—पु०[सं०] [भू० कृ० समक्रमित, कर्ता समक्रामक] एक से अधिक कार्यो या घटनाओं का एक ही समय में, पर भिन्न भिन्न स्थानों में घटित होना। समकालन। (सिंक्रोनाइजेशन)

सम-क्रमिक—वि०[सं०] [भाव० समक्रमिकता] (कार्य या घटनाएँ) जो एक ही समय में भिन्न भिन्न स्थानों पर घटित हुई हों। (सिंक्रोनस)

सम-क्रामक—वि०[सं०] समक्रमण करने या करनेवाला। (सिंक्रोनाइ-जर)

सम-क्वाथ—पु०[सं० कर्म० स०] वैद्यक में, वह क्वाथ या काढ़ा जिसका पानी आदि जलाकर आठवाँ भाग रह जाय।

समक्ष—अव्य०[सं०] १ आँखों के सामने। २ सामने। जैसे—अब वह कभी आप के समक्ष न आएगा।

समक्षता—स्त्री०[सं० समक्ष+तल्—टाप्]१. समक्ष होने की अवस्था या भाव। २. गोचर या दृश्य होने की अवस्था या भाव।

समग्र—वि०[सं०] [भाव० समग्रता] आदि से अन्त तक जितना हो, वह सब। समस्त। समूचा। सारा।

समग्री†—स्त्री०=सामग्री।

समचतुर्भुज—वि०[सं० ब० स०] (ज्यामिति में, क्षेत्र) जिसके चारों भुज या बाहु तो एक से लंबे हों, पर जो समकोणिक न हों। (रहॉम्बस) पुं० उक्त प्रकार की आकृति या क्षेत्र। (रहॉम्बस)

सम-चर—वि०[सं०] १. सदा समान व्यवहार करनेवाला। २. सब के साथ एक-सा आचरण करनेवाला।

समचार†—पु०=समाचार।

सम-चित्त—वि०[सं०] जिसके चित्त की अवस्था सदा समान रहती हो। जिसका चित्त कभी दुःखी या क्षुब्ध न होता हो। समचेता।

समचेता (तस्)—वि० [सं०]=समचित्त।

समज—पु० [सं०]१. वन। जंगल। २ पशुओं का झुंड।
†स्त्री०=समझ।

सम-जातिक—वि०[सं०] पारस्परिक विचार से एक ही जाति, प्रकार या वर्ग के। एक से। सह-जातिक। (होमोजीनियस)

सम-जातीय—वि० [सं०] १. एक ही जाति के। सजातीय। २. दे० 'सम-जातिक'।

समज्ञा—स्त्री०[सं०]१. कीर्ति। यश। २. ख्याति। प्रसिद्धि।

समज्या—स्त्री०[सं०]१ प्राचीन भारत में, वह उत्सव जिसमें छोटे बड़े स्त्रियाँ-पुरुष सभी मिलकर तरह तरह के खेल-तमाशे करते और देखते थे। बाद में साधारण बोलचाल में इसी को समाज्य कहने लगे थे। २. बहुत से लोगों का समाज या समूह। सभा। जैसे—विद्वानों की सम-ज्या में उनका यथेष्ट आदर हुआ था।

समझ—स्त्री०[सं० सबुद्धि, प्रा० समुज्झ] वह मानसिक शक्ति जिससे प्रा-णियों को देखकर मन में तर्क-वितर्क करने सब चीजों और बातों के अर्थ, आशय, भलाई, बुराई आदि का परिज्ञान होता है। अक्ल। बुद्धि। (इन्टलेक्ट)
पद—समझ में=ध्यान या विचार के अनुसार। ख्याल में। जैसे—हमारी समझ में तो यह बात ठीक नहीं जान पड़ती है।

समझदार—वि०[हिं० समझ+फा० दार (प्रत्य०)] [भाव० समझदारी] जिसमें अच्छी समझ हो। बुद्धिमान्। अक्लमंद।

समझदारी—स्त्री०[हिं० समझदार+ई (प्रत्य०)] समझदार होने की अवस्था, गुण या भाव।

समझना—अ०[हिं० समझ+ना (प्रत्य०)]१. वह जो कुछ सामने हो, उसे ध्यान में रखकर उसके आशय, प्रकार, स्वरूप आदि से अवगत होना। ठीक और पूरा ज्ञान प्राप्त करना। जैसे—पहले यह तो समझ लो कि बात क्या है। २ किसी बात का स्वरूप आदि देखकर उसके संबंध की दूसरी आवश्यक बातों का अनुमान या कल्पना करना। (डीम)
क्रि० प्र०—जाना।—पड़ना।—रखना।—लेना।
पद—समझ बूझकर=अच्छी तरह ज्ञान, परिचय आदि प्राप्त करके। सारी स्थिति अच्छी तरह जानकर। जैसे—समझकर मैंने ही तुम्हें वहाँ जाने से मना किया था।
मुहा०—(अपने आपको) कुछ समझना=अपने मन में यह अभिमान-पूर्ण भाव रखना कि हममें भी कुछ विशिष्ट योग्यता है।

३ किसी के व्यवहार के वदले मे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना। जैसे—कोई कही समझता है, कोई कही।

मुहा०—(किसी से) समझना या समझ लेना=(क) निपटारा या समझौता करना। जैसे—दोनो को आपस मे समझ लेने दो। (ख) अनिष्ट, अपकार, अपमान आदि का उचित और उपयुक्त वदला लेना। जैसे—अच्छा हम भी तुमसे समझ लेगे।

समझाना—स० [हि० समझना का स०] १ शव्द, सकेत आदि के अर्थ से किसी को भली भाँति परिचित कराना। २ कोई वात अच्छी तरह किसी के मन मे वैठाना। जैसे—न जाने इसे इसकी माँ ने क्या समझाकर यहाँ भेजा था।

समझावा—पु०[हि० समझना] समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

समझौता—पु० [हि० समझना+औता (प्रत्य०)] १ लडाई-झगडे, लेन-देन, विवाद आदि के सवध मे दो या अधिक पक्षो मे होनेवाला ऐसा निपटारा या निर्णय जिसके अनुसार आगे निर्विरोध रूप मे सव काम होते रहे। (कॉम्प्रोमाइज) २. आपस मे होनेवाला करार या निश्चय।

समत†—पु०=सवत्।

सम-तट—पु०[स०]१. समुद्र के किनारे पर का प्रदेश। २ वगाल के पूर्व का एक प्राचीन देश।

सम-तत्त्व—पु० [स०] वेदात मे अद्वैत और द्वैत दोनो से परे और भिन्न तत्त्व।

सम-तल—वि० [स०] (पदार्थ) जिसका तल सम हो, ऊवड-खावड न हो। जिसकी सतह वरावर हो। हमवार। जैसे—समतल भूमि।

समतलन—पु० [स०] [भू० कृ० समतलित] किसी पदार्थ (जैसे—जमीन आदि) के ऊवड-खावड तल को सम या वरावर करने की क्रिया या भाव। चौरसाई। (लैवलिंग)

समता—स्त्री०[स०]१ सम या समान होने का भाव। वरावरी। तुल्यता। (इक्वैलिटी)। २ ऐसी स्थिति जिसमे कोई अग या पक्ष आनुपातिक दृष्टि से अनुपयुक्त, वेढगा या भारी जान न पडे। सतुलन।

सम-तौल—वि०[स० सम+हि० तोल (तौल)]भार, महत्त्व आदि के विचार से, एक वरावर। समान।

सम-तोलन—पु०[स०]१ भार, महत्त्व आदि के विचार से सव को समान रखना। २ दोनो पक्षो या पलडो को समान रखना। घटने-वढने न देना। (वैलेंसिंग)

समत्थ†—वि०=समर्थ।

†पु०=सामर्थ्य।

सम-त्रय—पु०[स० ष० त०] हर्रे, नागरमोथा, और गुड इन तीनो के समान भागो का समूह। (वैद्यक)

सम-त्रिभाजन—पु०[स०] [भू० कृ० समत्रिभक्त] किसी चीज को तीन वरावर भागो मे काटना। (ट्राईसेक्सन)

सम-त्रिभुज—पु०[स० व० स०] ऐसा त्रिभुज जिसके तीनो त्रिभुज वरावर या समान हो।

समत्व—पु०[स०] सम या समान होने की अवस्था या भाव। समता।

सम-थल—वि०=समतल (भूमि)।

समद—वि० [स०]१. मद से मत्त। मतवाला। मस्त। २ प्रसन्न।

पु०=समुद्र।

स-मदन—वि० [स०] [स्त्री० समदना] प्रवल कामवासना से युक्त। कामातुर।

क्रि० वि० खुशी या प्रसन्नता से। उदा०—भेटि घाट समदन कै फिरें नाह कै साथ।—जायसी।

समदन—पु०[स०] युद्ध। लडाई।

†स्त्री०[स० हि० समदना] उपहार भेंट।

समदना—अ०[स० समद=प्रसन्न]१. प्रेमपूर्वक मिलना। भेंटना। २ आनन्द या खुशी मनाना।

स०१ उपहार या भेंट देना। २ किसी के साथ विवाह करना। ३ सपुर्द करना। सौपना। ४ धरना। रखना।

स० [सवाद] सवाद या समाचार देना।

सम-दर्शन—पु०[स०] सव को एक समान समझना और सव कार्यो या वातो मे एक सा भाव रखना।

वि०=समदर्शी।

समदर्शी (शिन्)—वि० [स०] [स्त्री० समदर्शिनी] जो सव मनुष्यो, स्थानो, पदार्थो आदि को समान दृष्टि से देखता हो। किसी प्रकार का भेद-भाव न रखता हो। सव को एक सा देखने या समझनेवाला।

समदाना—स०[हि० समझना]१ विवाह के वाद वहू को विदा करना या कराना। २ ठीक या दुरुस्त करना। ३ समदना।

समदावन—पु० [हि० समदना (विवाह करना)] एक प्रकार के गीत जो दुलहिन की विदाई के समय गाये जाते है। (मिथिला)

सम-दृष्टि—स्त्री०[स०] ऐसी दृष्टि जो सव अवस्थाओ मे और सव पदार्थो को देखने के समय समान रहे। समदर्शी की दृष्टि।

समद्वादशास्त्र—पु०[स०] वारह वरावर भुजाओवाला क्षेत्र।

सम-द्विभाजन—पु०[स०] [भृ० कृ० समद्विभाजित] किसी चीज को दो समान भागो मे वाँटना या विभक्त करना। (वाई सेक्सन)

समद्विभुज—पु० [स०] ऐसा चतुर्भुज जिसकी प्रत्येक भुजा अपने सामने-वाले भुजा के समान हो। वह चतुर्भुज जिसके आमने-सामने के भुजाएँ वरावर हो।

समधाना†—स०=समदाना।

समधिक—वि० [स०] १ जितना होना चाहिए, उससे अधिक या वढा हुआ। (एक्सीडिंग) २ वहुत। अधिक।

समधिन—स्त्री०[हि० समधी का स्त्री०] समधी की पत्नी। किसी के पुत्र या पुत्री की सास।

समधियाना—पु०[हि० समधी+इयाना]१ किसी की दृष्टि से उसके पुत्र या पुत्री की ससुराल। २ पुत्र या पुत्री के ससुरालवाले।

समधी—पु० [स० सम्वन्धी] [स्त्री० समधिन] सम्वन्ध के विचार से किसी के पुत्र या पुत्री के ससुर।

समधीन—वि०[स० कर्म० स०] १. (व्यक्ति) जिसने अच्छी तरह अध्ययन किया हो। २ (विषय) जिसका किसी ने अच्छी तरह अध्ययन किया हो।

समघौस—पु०[हि० समधी] विग्रह की एक रसम जिसमे समधी परस्पर मिलते है। मिलनी।

सम-ध्वनि—पु० [स०] ऐसे शब्द जो उच्चारण या ध्वनि के विचार से तो एक हों पर जिनके अर्थ भिन्न भिन्न हों। (होमोनिम) जैसे—हिंदी मेल (मिलाप) और अँगरेजी 'मेल' (डाक) समध्वनिक है।
वि० (शब्द) जो भिन्नार्थक होने पर भी उच्चारण के विचार से समान ध्वनिवाले हों। (होमोनिमस)

समनंतर—वि०[स०] ठीक बगलवाला। बिलकुल सटा हुआ। बराबरी का।
अव्य० अनतर। उपरांत। बाद।

समन—वि० [स० शमन] [स्त्री० समनि] शमन करनेवाला।
पु० दे० 'शमन'।
स्त्री ०[फा०] चमेली का पौधा और फूल।
पु०=सम्मन।

समनगा—स्त्री०[स० ब० स०] १ बिजली। विद्युत्। २. सूर्य की किरण।

समनचार†—पु०=समाचार।

समनीक—पु०[स०] युद्ध। लडाई।

समनुज्ञा—स्त्री० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० समनुज्ञात] १. अनुमति। २ दे० 'अनुज्ञा'।

समन्यु—पु०[स० अव्य० स०] शिव का एक नाम।

समन्वय—पु०[सं०] १ समान रूप से मिलना। इस प्रकार मिलना कि एक इकाई बन जाय। २ एक को दूसरे मे विलय करना। ३ परस्पर विरोध न होने की अवस्था या भाव। विरोध का अभाव। ४ कार्य और कारण का निर्वाह या सबध। ५ वह अवस्था जिसमे कथनों या बातों का पारस्परिक भेद या विरोध दूर करके उनमे एकता या एकरूपता लाई जाती है।

समन्वित—भू० कृ०[स०]१ जिसका समन्वय हुआ हो। २. किसी के साथ जुडा, मिला या लगा हुआ। ३. जिसमे कोई बाधा या रुकावट न हो।

समन्वेषक—वि०[स०] समन्वेषण करनेवाला। (एक्सप्लोरेटर)

समन्वेषण—पु०[स०] [भू० कृ० समन्वेषित]१ अच्छी तरह किया जानेवाला अन्वेषण। २. आज-कल मुख्य रूप से, घूम-घूमकर ऐसे देशो, स्थानों आदि का पता लगाना जिन्हे लोग पहले न जानते रहे हो या जिनके सबध मे बहुत कम जानते हो। (एक्सप्लोरेशन)

सम-पद—पु०[स०]१ धनुष चलानेवालो का खडे होने का एक ढग जिसमे वे अपने दोनो पैर बराबर रखते है। २ सयोग का एक प्रकार का आसन या रतिबध।

समपना†—स० सौपना।

सम-पाद—वि०[स०] (कविता या छद) जिसके सब चरण बराबर या समान हों।
पु०१ उक्त प्रकार का छद या वृत्त।
२ दे० 'समपद'।

समप्पन†—पु०=समर्पण।

समबुद्धि—वि०[स०] जिसकी बुद्धि सुख और दुःख, हानि और लाभ सब मे समान रहती हो।

सम-बाहु—वि०=समभुज।

समबोल—पु०=समध्वनिक।

समभिहरण—पुं०[स० प्रा० स०]=समापहरण।

समभिहार—पु०[स० सम्-अभि √ हृ (हरण करना)+घञ्] १ किसी काम या बात के बार बार होने का भाव। २ अधिकता। ज्यादती।

सम भुज—वि०[स०] (क्षेत्र) जिसकी सब भुजाएँ बराबर या समान हों। सम बाहु। (इक्विलेटरल)

समभूमिक—वि०[स०] समतल।

सममति—वि०[स० ब० स०]=समबुद्धि।

सममित—वि० [स०] [भाव० सम-मिति]जिसके अगो मे अनुपात और सुरूपता के विचार से पारस्परिक समानता और एकरूपता हो। सम-मिति से युक्त। (सिमेटिकल)

सममिति—स्त्री० [स०] [वि० सममित] किसी मूर्त कृति या रचना के आकार, बनावट, मान आदि के भिन्न भिन्न अगो मे अनुपात और सुरूपता के विचार से होनेवाली आपेक्षिक और पारस्परिक एकरूपता। किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अगो का ठीक और सगजित विन्यास। (सिमेट्री)

समय—पु०[स०] [वि० सामयिक] १ सवेरे-सध्या या दिन-रात के विचार से काल का कोई मान। वक्त। २ अवसर। मौका। वक्त।
पद—समय विशेष पर=(क) किसी निश्चित समय पर। (ख) आनेवाले किसी ऐसे समय पर जबकि कोई बात हो सकती हो और जिसके सबध मे कोई विधान या व्यवस्था की गई हो। (फार दि टाइम बीइग)
समय कुसमय=(क) अच्छे या शुभ दिन और बुरे या सकट के दिन। (ख) उपयुक्त अवसर पर भी और अनुपयुक्त अवसर पर भी। मौके-बेमौके। जैसे—आप समय कुसमय अपना ही राग अलापते रहते।
३. अवकाश। फुरसत। खाली वक्त।
क्रि० प्र०—निकालना।
४. किसी काम या बात का नियत या निश्चित काल। जैसे—अब उसका समय आ गया था अत उन्हे बचाने के लिए सब प्रयत्न विफल हुए। ६ आपस मे होनेवाला किसी प्रकार का निश्चय, करार या समझौता। ७ कोई धार्मिक सामाजिक या प्रथा या परिपाटी। जैसे—कवि समय। (देखे) ८ सिद्धात। ९ परिणाम। अत। १० प्रतिज्ञा। ११ शपथ। १२ आकृति। शकल। १३ ठहराव। समझौता। १४ आज्ञा। निर्देश। १५ भाषा। १६ इशारा। सकेत। १७ व्यवहार। १९ धन-दौलत। सम्पत्ति। १९ कर्तव्य-पालन। २०. घोषणा। २१ उपदेश। २२ कष्टो या दुखो का अत या समाप्ति। २३ कायदा। नियम। २४. धर्म। २५. सन्यासियो, वैदिको, व्यापारियो आदि के सघो मे प्रचलित नियम। (स्मृति)

समय-क्रिया—स्त्री० [स०] प्राचीन भारत मे, शिल्पियो या व्यापारियो का परस्पर व्यवहार के लिए नियम स्थिर करना। (बृहस्पति)

समयज्ञ—वि०[स०] [भाव० समयज्ञता] जो समय की प्रवृत्ति, स्थिति आदि का ज्ञान रखता हो। समय के अनुसार चलनेवाला।
पु० विष्णु।

समय-निष्ठ—वि० [स० ब० स०] [भाव० समय-निष्ठता, समय-निष्ठा] १. जो निश्चित समय का ध्यान रखकर ठीक उसी समय काम करता हो। २ अपने ठीक या निश्चित समय पर नियत रूप से होनेवाला। (पक्चुअल)

समय-निष्ठता—स्त्री० [सं०] समय-निष्ठ होने की अवस्था या भाव। (पंक्चुएलिटी)

समय-बम—पु० [सं०+अं० बाम्ब] वह विशेष प्रकार का बम (गोला) जिसमे ऐसी योजना होती है कि कही रखे जाने पर पहले से निर्धारित किये हुए समय पर वह आप से आप फूटकर अपना घातक कार्य करता है। (टाइम-बॉम्ब)

समय-संकेत—पु० [सं०] वह नियत संकेत जो मुख्यत यह सूचित करने के लिए होता है कि इस समय घडी के अनुसार बिल्कुल ठीक समय यह है। (टाइम सिगनल) जैसे—दोपहर बारह बजे या रात आठ बजे का समय-संकेत।

समय-सारिणी—स्त्री० [सं० प० त०] १ समय सूचित करने के लिए बनाई हुई सारणी। २ वह पुस्तिका जिसमे विभिन्न गाड़ियों के विभिन्न स्टेशनों पर पहुँचने तथा छूटने के समय का उल्लेख सारणियों मे किया जाता है। (टाइम-टेबुल)

समय-सूची—स्त्री०=समय-सारिणी।

समयानंद—पु० [सं० ब० स०] तान्त्रिकों के एक भैरव।

समयानुवर्ती (तिन्)—वि० [सं० प० त०] समय देखकर उसी के अनुसार चलनेवाला। (अपॉर्च्यूनिस्ट)

समयानुसार—वि० [सं०समय+अनुसार] जो समय की आवश्यकता देखते हुए उचित या ठीक हो।

अव्य० समय की उपयुक्तता या औचित्य का ध्यान रखते हुए।

समयानुसारी—वि० [सं०] प्रस्तुत समय को देखते हुए उसकी प्रथा या रीति के अनुसार काम करने या चलनेवाला।

समयुगल—पु० [सं०] बौद्धकाल मे, एक प्रकार का पटका (धोती या साडी) जो बराबर लबाई के रंगोवाले वस्त्रो को एक साथ सटाकर पहना या बाँधा जाता था।

समयोचित—वि० [सं० चतु० स०] जो प्रस्तुत समय की आवश्यकता देखते हुए उचित अर्थात् उपयुक्त और ठीक हो। कालोचित। (एक्सपीडिएन्ट)

समयोचितता—स्त्री० [सं०] समयोचित होने की अवस्था, गुण या भाव। कालोचितता। (एक्सपीडिएन्सी)

समर—पुं० [सं०] युद्ध। संग्राम। लडाई।

पु० [सं० स्मर] १. कामदेव। २ काम-वासना। उदा०—सम-रस समर-सकोच बस बिबस न ठिकु ठहराइ।—बिहारी।

पु० [फा०] १ वृक्ष का फल। २. कार्य का परिणाम या फल।

समरकंद—पु० [फा०] [वि० समरकंदी] तुर्किस्तान का एक इतिहास प्रसिद्ध नगर जो अमीर तैमूर की राजधानी था और अब उजबक (सोवियत) प्रजातंत्र के अंतर्गत है। उजबक प्रजातंत्र का एक सूबा।

सम-रज्जु—स्त्री० [सं० ब० स०] बीज-गणित मे, वह रेखा जिससे दूरी या गहराई जानी जाती है।

सम-रत—पु० [सं० ब० स०] कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रति-बंध या आसन।

समरत्थ*—वि०=समर्थ।

समरना†—स०=सुमिरना।

†अ०=सँवरना।

समर-भूमि—स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र। लडाई का मैदान।

समरशायी—वि० [सं० समरशायिन्] जो युद्ध मे मारा गया हो। वीरगति को प्राप्त।

सम-रस—वि० [सं०] [भाव० समरसता] १. (पदार्थ) जिसमे एक ही प्रकार का रस या स्वाद हो। २ (व्यक्ति) जो सदा एक ही प्रकार की मानसिक स्थिति मे रहता हो। जो न तो कभी क्रोध करता हो और न असाधारण रूप से प्रसन्न होता हो। सदा एक-सा रहनेवाला। ३ (परस्पर ऐसे पदार्थ या व्यक्ति) जो एक ही प्रकार या विचार के हो। जिनके गुण, प्रकृति आदि मे कोई अन्तर न हो।

समरागण—पु० [सं० कर्म० स०, प० त०] लडाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

समरा—पुं० [अ० समर] नतीजा। परिणाम। फल।

समराजिर—पु० [सं० कर्म० स०] युद्ध-क्षेत्र।

समराना*—स० हिं० 'समरना' का स०।

समर्घ—वि० [सं०] [भाव० समर्घता] कम दाम का। सस्ता।

समर्चक—वि०, पु० [सं० सम्√अर्च् (पूजा करना)+ण्वुल्—अक] समर्चन या पूजा करनेवाला।

समर्चन—पु० [सं० सम्√अर्च् (पूजा करना)+ल्युट्-अन] अच्छी तरह अर्चन या पूजा करने का काम।

समर्चना—स्त्री० [सं०]=समर्चन।

समर्थ—वि० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+अच्] [भाव० समर्थता, सामर्थ्य] १. शक्तिशाली। २ जो कोई काम सम्पादित करने की शक्ति या योग्यता रखता हो। आर्थिक, मानसिक या शारीरिक बल से कुछ कर सकने के योग्य। ३. अनुभव, प्रशिक्षण आदि द्वारा जिसने किसी पद के कर्तव्यों का निर्वाह करने की योग्यता प्राप्त कर ली हो। ४. लबा। चौडा। प्रशस्त। ५ अभिलषित। ६ युक्ति-सगत।

समर्थक—वि० [सं० समर्थ+कन्] १. जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला। २. पुष्टि या पोषण करनेवाला।

वि०=समानार्थक।

पु० चन्दन की लकड़ी।

समर्थता—स्त्री० [सं०] समर्थ होने की अवस्था, गुण या भाव। सामर्थ्य। शक्ति। ताकत।

समर्थन—पु० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+ल्युट्-अन] किसी के प्रस्ताव, मत, विचार के संबध मे यह कहना कि इससे हमारी भी सहमति है। अनुमोदन। (सेकैंडिंग)

समर्थनीय—वि० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+अनीयर्] जिसका समर्थन किया जा सकता हो या हो सकता हो।

समर्थित—भू० कृ० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+क्त] १. जिसका समर्थन किया गया हो। समर्थन किया हुआ। २. जिसका अच्छी तरह विवेचन हुआ हो। विवेचित। ३ स्थिर किया हुआ। निश्चित। ४ जिसकी संभावना हो। संभावित।

समर्थ्य—वि० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+यत्-ण्यत्] जिसका समर्थन किया जा सके या किया जाने को हो।

समर्द्धक—पुं० [सं० सम्√ऋध् (बढना)+ण्वुल्-अक] वरदान देनेवाले, देवता आदि।

समर्पक—वि० [स० सम्√अर्प् (देना)+णिच्-ण्वुल्-अक] [स्त्री० समर्पिका] १ जो समर्पण करता हो। समर्पण करनेवाला। २ कही पहुँचाने के लिए कोई माल देने या भेजनेवाला। परेषक। (कन्साइनर) ३ (काम या बात) जिससे कोई दूसरा काम या बात ठीक तरह से पूरी हो सके या उद्देश्य सिद्ध हो सके। जैसे—समर्पक व्याख्या।

समर्पण—पु० [स०] [भू० कृ० समर्पित, वि० समर्पणीय, सामर्प्य, कर्ता समर्पक] १ किसी को आदरपूर्वक कुछ देना। भेंट या नजर करना। २. धर्म-भाव से या श्रद्धाभक्ति पूर्वक कुछ कहते हुए अर्पित करना। (डेडिकेशन) ३ अपना अधिकार, स्वामित्व, भार आदि किसी दूसरे के हाथ मे देना। सौपना। ४ युद्ध, विवाद आदि वद करके अपने आपको शत्रु या विपक्षी के हाथ मे सौंपना। (सरेन्डर, अतिम दोनो अर्थो मे) ६ वैष्णवो मे किसी भक्त को भगवान् के विग्रह के सामने उपस्थित करके उसे नियमित रूप से आचारवान् भक्त या वैष्णव वनाना। ७ स्थापित करना। स्थापना। ८ दे० 'आत्मसमर्पण'।

समर्पण-मूल्य—पु० [स०] आधुनिक अर्थ-शास्त्र मे, वह धन जो वीमा करनेवाले को अवधि पूरी होने से पहले ही अपना वीमा रद्द कराने या वीमा पत्र लौटा देने पर मिलता है। (सरेन्डर वैल्यू)

समर्पणी—पु० [स० समर्पण] वह जो भगवान् का पूरा भक्त और आचारवान् वैष्णव वन गया हो। विशेष दे० 'समर्पण'।

समर्पना*—स० [स० समर्पण] १ समर्पण करना। २. सौपना।

समर्पित—भू० कृ० [स० सम्√अर्प् (देना)+क्त] १ जो समर्पण किया गया हो। समर्पण किया हुआ। २ स्थापित।

समर्प्य—वि० [स० सम्√अर्प् (देना)+णिच्-यत्] जो समर्पण किया जा सके या किया जाने को हो। समर्पण किये जाने के योग्य।

समर्याद—वि० [स० अव्य० स०] १. मर्यादा-युक्त। २ अच्छे आचरण-वाला। सदाचारी।

अव्य० निकट। पास। समीप।

स-मल—वि० [स०] १ मल से युक्त। २ मलिन। मैला।

समल—पु० [स० अव्य० स०] मल। विष्ठा। पुरीष। गू।

सम-लिंगी-रति—स्त्री० [स०] यौन विज्ञान तथा लोक मे, कामवासना की वह तृप्ति जो पुरुष किसी अन्य पुरुष (मुख्यत बालक) के साथ अथवा स्त्री किसी दूसरी स्त्री के साथ सभोग करके करती है।

समली—स्त्री० [स० श्यामली ?] चील।

समवकार—पु० [स०] रूपक का एक भेद जिसमे देवासुरो के सग्राम या सघर्ष से सम्वन्ध रखनेवाले वीरतापूर्ण कार्यों का उल्लेख होता है। इसमे तीन अक होते है।

समवतार—पु० [स० सम्-अव√तॄ (पार करना)+घञ्] १ उतरने की जगह। उतार। २ उतरने की क्रिया। अवतरण।

समवयस्क—वि० [स०] [भाव० समवयस्कता] समान वय या अवस्था-वाला।

समवरोध—पु० [स०] [भू० कृ० समवरुद्ध, कर्ता समवरोधक] चारो ओर से अच्छी तरह रोकना।

समवर्गी—वि० [स०] १ वे जो किसी एक वर्ग के अतर्गत हो या गिनाये गये हो। २ दे० 'सश्रित'।

समवर्तन—पु० [स०] आवश्यकता, उपयोगिता आदि के विचार से किसी वस्तु का ठीक या यथोचित रूप में होनेवाला विभाजन या सचार। समान वर्तन या व्यवहार। जैसे—शरीर मे शर्करा का ठीक तरह से सम वर्तन न होने पर रक्त विषाक्त होने लगता है।

समवर्ती—वि० [स०] १ जो समान रूप से स्थित रहता हो। २ जो पास ही स्थित हो।

पु० यमराज का एक नाम।

समवलंब—पु० [स० व० स०] ऐसा चतुर्भुज जिसकी दोनो लवी रेखाएँ समान हो।

समवसरण—पु० [स० सम्-अव√सृ (गत्यादि)+ल्युट्-अन] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का धार्मिक उपदेश होता हो।

समवाक—पु० [स०] सम-ध्वनिक। (दे०)

समवाय—पु० [स०] [भाव० समवायत्व, समवायता] १ समूह। झुड। २ ढेर। राशि। ३. मेल। सयोग। ४ आपस मे होनेवाला अभेद्य घनिष्ठ और नित्य सवध। ५ न्यायदर्शन मे, तीन प्रकार के सवधो मे ऐसा सवध जो सदा एक सा वना रहता हो और जिसमे कभी अतर न पडता हो। नित्य संवध। जैसे—अग और अगी अथवा गुण और गुणी मे समवाय सवध होता है। ६ कोई ऐसा सवध जो सदा एक सा वना रहता हो। ७ कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार वनी हुई वह व्यापारिक सस्था जिसके हिस्सेदारो को अपनी लगाई पूँजी के अनुपात से नफे या लाभ का अश मिलता हो। (कम्पनी)

समवायिक—वि० [स० समवाय+ठक्-इक] १. समवाय सम्वन्धी। समवाय का।

समवायी (यिन्)—वि० [स०] १. किसी के साथ समवाय सवध रखने-वाला। २ जो इकट्ठा करके ढेर के रूप मे लगाया हो।

पु० १ अग। अवयव। २ साझेदार। हिस्सेदार।

सम-वृत—पु० [स० त० त०] ऐसा छद जिसके चारो चरण समान हो।

समवेग—पु० [स०] कृष्ण के रथ का घोडा।

समवेत—वि० [स० सम्-अव√इण् (गत्यादि)+क्त] १ एक जगह इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २ जमा किया हुआ। सचित। ३ किसी वर्ग या श्रेणी से मिलाया या लाया हुआ। ४ सवद्ध।

समवेतन—पु० [स०] १ समवेत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ आजकल वालचरो, अनुयायियो, सैनिको आदि का एक स्थान पर जमा होना। (रैली)

सम-व्यूह—पु० [स० व० स०] प्राचीन भारत मे, ऐसी सेना जिसमे २२५ सवार, ६७५ सिपाही तथा इतने ही घोडे और रथ होते थे।

सम-शंकु—पु० [स० व० स०] ठीक मध्याह्न का समय।

समशीतोष्ण कटिबंध—पु० [स० समशीतोष्ण-व० स०, कटिवन्ध कर्म० स०] भूमध्य रेखा और उष्णकटिवध के मध्य मे पडनेवाले प्रदेश। (टेम्परेट ज़ोन)

समशील—वि० [स०] शील, स्वभाव, प्रकृति आदि के विचार से एक ही तरह के। समान।

समष्टि—स्त्री० [स० सम्√अश् (व्याप्त होना)+क्तिन्] १ जितने हो, उन सब का सम्मिलित या सामूहिक रूप। वह रूप या स्थिति जिसमे सभी अगो, व्यष्टियो या सदस्यो का अतर्भाव या समावेश हो। 'व्यष्टि' का विपर्याय। २ साधु-सन्यासियो आदि का ऐसा

भंडारा या भोज जिसमे सभी स्थानिक साधु-सन्यासी आदि निमंत्रित किये गये हों।

समष्टि-निगम—पु० [सं०] ऐसा निगम जो समष्टि या समुदाय पर आश्रित हो, अथवा बहुतों या सब के सहयोग से काम करता हो, या चलता हो। (एग्रिगेट कारपोरेशन)

समष्टिवाद—पु० [सं०] आधुनिक साम्यवाद की वह शाखा जिसका सिद्धात यह है कि सभी पदार्थो के उत्पादन और वितरण का सारा अधिकार समष्टि रूप से सारे राष्ट्र के हाथ मे रहना चाहिए। (कलेक्टिविज्म)

समष्टिवादी—वि० [सं०] समष्टिवाद सम्बन्धी। समष्टिवाद का। पु० समष्टिवाद का अनुयायी या समर्थक।

समष्ठिल—पु० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+इलच्] कोकुआ नाम का कँटीला पौधा। २ गडीर या गिडिनी नाम का साग।

समष्ठिला—स्त्री० [सं० समष्ठिल+टाप्] १ समष्ठिल। कोकुआ। २ जमीकद। सूरन। ३ गिडिनी नामक साग।

समष्य†—वि०=समक्ष।

सम-संधि—स्त्री० [सं० कर्म० स०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे, ऐसी सन्धि जिसमे सन्धि करानेवाले राजा या राष्ट्र आपत्काल मे अपनी पूरी शक्ति के साथ सहायता करने को तैयार हो। (कौ०)

सम-समुन्नत—वि० [सं०] [भाव० सम-समुन्नति] १ जो थोडी थोडी दूरी पर, एक के बाद एक करके पहलेवाले धरातल से बराबर कुछ और ऊँचा होता जाता हो। २ जो कुछ रह रहकर सीढ़ियों की तरह बराबर अधिक ऊँचा होता जाता हो। सीढीनुमा। (टेरेस-लाइक)

सम-सर (सरि)*—वि० [सं० सम+हिं० सर (सदृश)] तुल्य। बराबर। समान। उदा०—मोहि समसारि पापी।—कबीर। स्त्री० बराबरी। समता। उदा०— ..उपमा समसरि है न। —नागरीदास।

सम-सामयिक—वि० [सं०] समकालीन। (दे०)

समस्त—वि० [सं०] [भाव० समस्तता] १. आदि से अत तक जितना हो, वह सब। कुल। पूरा। (होल) जैसे—समस्त भारत, समस्त ससार। २. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। सयुक्त। ४ (व्याकरण मे पद या शब्द-समूह) जो समास के नियमो के अनुसार मिलकर एक हो गया हो। समास-युक्त। (कम्पाउड)

समस्तिका—स्त्री० [सं० समस्त से] कथन, लेख आदि का सक्षिप्त रूप या साराश। (एब्सट्रैक्ट)

सम-स्थली—स्त्री० [सं० कर्म० स०] गगा और यमुना के बीच का देश। अतर्वेद।

समस्य—वि० [सं० सम्√अस् (होना)+ण्यत्-क्यप् वा] १ जो किसी के साथ मिलाया जा सके या मिलाया जाने को हो। २. (पद या शब्द) जिन्हे व्याकरण के अनुसार समास के रूप मे मिलाया जा सकता हो।

समस्यमान्—वि० [सं०] (व्याकरण मे वह पद) जो किसी दूसरे पद के साथ मिलकर समस्त पद बनाता हो या बना सकता हो।

समस्या—स्त्री० [सं० समस्य-टाप्] १ मिलने की क्रिया या भाव। मिलन। २ मिश्रण। संघटन। ३. उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज मे न हो सकता हो। कठिन या विकट प्रसग। (प्रॉब्लेम) ५ छद, श्लोक आदि का ऐसा अतिम चरण या पद जो काव्य-रचना के कौशल की परीक्षा करने के लिए इस उद्देश्य से कवियो के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरूप पूरा छद या श्लोक प्रस्तुत करें।
क्रि० प्र०—देना।—पूर्ति करना।

समस्या-पूर्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] साहित्यिक क्षेत्र मे, किसी समस्या के आधार पर कोई छद या श्लोक बनाकर तैयार करना।

समहं†—अव्य० [सं० समस्त] साथ। सग।

समहर†—पु० =समर (युद्ध)। उदा०—मारु परधर मारका ठहरे समहर ठौड।—बाँकीदास।
†वि०=सम-थल।

समहित—पु० [सं०] वह स्थिति जिसमे अनेक देश या राष्ट्र प्राय एक से विचार रखते हों, एक ही तरह के स्वार्थों का ध्यान रखते हों और अनेक विषयो मे एक ही नीति के अनुसार मिलकर चलते हों। (एन्टेन्ट)

समाँ—पु० [सं० समय] १. समय। वक्त।
मुहा०—समाँ बँधना=(सगीत आदि कार्यों का) इतनी उत्तमता से सम्पन्न होता रहना कि सभी उपस्थित लोग स्तब्ध हो जायँ, और ऐसा जान पडे कि मानो समय भी उसका आनद लेने के लिए ठहर या रुक गया है।
विशेष—आशय यही है कि लोगो को यह पता नही चलने पाता कि इतना अधिक समय कैसे बीत गया।
२ ऋतु। ३ जमाना। युग। जैसे—आज-कल ऐसा समाँ आ गया है कि कोई किसी की नही सुनता। ४ अवसर। मौका। ५ सुदर और सुहावना दृश्य। उदा०—अजब गगा के बहने का समाँ है।—नजीर बनारसी।

समांग—वि० [सं० सम+अग] जिसके सब अग या तत्त्व एक-से अथवा एक ही प्रकार के हों। 'विषमाग' का विपर्याय। (होमोजीनियस)

समांजन—पु० [सं०] सुश्रुत के अनुसार आँखो मे लगाने का एक प्रकार का अजन।

समांण†—पु० [सं०] १ श्मशान। २ शव। (राज०)
वि०=मसान।

समांत—पु० [सं० ष० त०] १ वर्ष का अन्त। २ पडोसी।

समांतक—पु० [सं० समात+कन्] कामदेव।

समांशिक—वि० [सं० समाश+ठन्-इक] १ समान भागोवाला। २ समान अग या भाग पानेवाला।

समा—स्त्री० [सं०] १ वर्ष। साल। उदा०—राका राज जरा सारा मास मास समा समा।—केशव। २ ग्रीष्म ऋतु।
वि० स० 'सम' का स्त्री०। जैसे—कामिनी समा=कामिनी के समान।
† पु० दे० 'समाँ'।

समाअत—स्त्री० [अ०] १ सुनने की क्रिया या भाव। २ ध्यान देने या विचार करने के लिए अवधानपूर्वक सुनने की क्रिया या भाव। जैसे—फरियाद की समाअत, मुकदमे की समाअत।

समाई—स्त्री० [हिं० समान+आई (प्रत्य०)] १ समाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वह अवकाश जिसमे कोई चीज समाती हो।

जैसे—इस घर मे पद्रह आदमियो की समाई नही हो सकती। ३ धारण करने की गुंजाइश तथा समर्थता। जैसे—जिसकी जितनी समाई होगी, वह उतना ही खरच करेगा।

समाउ†—पु०=समाई।

समाकर्षण—पु० [स०] [भू० कृ० समाकर्षित, समाकृष्ट] विशेष रूप से होनेवाला आकर्षण। खिंचाव।

समाकलन—पु० [स०] [भू० कृ० समाकलित] एक ही तरह की बहुत सी इकट्ठी की हुई चीजो का मिलान करके देखना कि उनका क्रम या व्यवस्था ठीक है या नही। (कोल्लेशन)

समाकार—वि० [स० कर्म० स०] जो आकार के विचार से आपस मे समान हो।

समाकुल—वि० [स० सम्-आ√कुल (बन्धु आदि)+अन्] बहुत अधिक आकुल या घबराया हुआ।

समाक्षार—पु० [स०] उन पदार्थों का वर्ग या समूह जो किसी अम्ल या खट्टे पदार्थ के साथ मिलकर लवण और जल बनाते है।

समाख्या—स्त्री० [स० सम्-आ√ख्या (ख्यात होना)+अङ्] १ यश। कीर्ति। २. आख्या। नाम। संज्ञा।

समागत—भू० कृ० [स०] १. आया हुआ। जैसे—समागत अतिथि। २. जो आकर सामने उपस्थित या घटित हुआ हो। जैसे—समागत परिस्थिति, समागत प्रसग।

समागता—स्त्री० [स० समागत-टाप्] एक तरह की पहेली जिसका अर्थ पदो का सन्धि-विच्छेद करने पर निकलता है।

समागति—स्त्री० [स० सम्-आ√गम् (जाना)+क्तिन्] १. समागत होने की अवस्था या भाव। आगमन। २. आकर मिलना। योग।

समागम—पुं० [स०] १. पास या सामने आना। पहुँचना। २. बहुत से लोगो का एक स्थान पर एकत्र होना। जैसे—संतो का या साहित्य-कारो का समागम। ३ स्त्री-प्रसग। संभोग। मैथुन।

समाघात—पु० [स० सम्-आ√हन् (मारना)+घञ् कुत्व, न=त] १ युद्ध। लडाई। २. वध। हत्या।

समाचरण—पु० [स०] [भू० कृ० समाचरित] १. अच्छा, ठीक या शुद्ध आचरण। २ कार्य या व्यवहार करना। आचरण। ३ कार्य का सम्पादन।

समाचरना*—स० [स० समाचरण] (किसी का) आचरण या व्यवहार करना।

अ० १ आचरण या व्यवहार के रूप मे होना। २ व्याप्त या सचरित होना। उदा०—(क) ऐसी बुधि समचरी घर माँहि तिआही।—कबीर। (ख) समाचरे उसको मेरा ही सोदर निस्सकोच अहो।—मैथिलीशरण।

समाचार—पुं० [स०] १. आगे बढना। चलना। २ अच्छा आचरण या व्यवहार। ३ (मध्य और परवर्ती काल मे) किसी कार्य या व्यापार की सूचना। उदा०—समाचार मिथिलापति पाए।—तुलसी। ४ ऐसी ताजी या हाल की घटना की सूचना जिसके सबध मे पहले लोगो को जानकारी न हो। (न्यूज) ५ हाल-चाल। ६ कुशल-मगल।

समाचार-पत्र—पु० [सं० ष० त०, समाचार+पत्र] १. नियमित समय पर प्रकाशित होनेवाला वह पत्र जिसमे अनेक प्रदेशो, राष्ट्रो आदि से संबधित समाचार रहते हो। खबर का कागज। अखबार। (न्यूज-पेपर) २. उक्त प्रकार के सभी पत्रो का वर्ग या समूह।

समाच्छन्न—वि० [सं०] ऊपर या चारो ओर से पूरी तरह छाया या ढका हुआ।

समाच्छादन—पु० [सं०] [भू० कृ० समाच्छादित] ऊपर या चारो ओर से अच्छी तरह छाया या ढका हुआ।

समाज—पु० [सं०] १. बहुत से लोगो का गरोह या झुड। समूह। जैसे—सतसग समाज। २ एक जगह रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का काम करनेवाले लोगो का वर्ग, दल या समूह। समुदाय। ३. किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा। जैसे—आर्य समाज, सगीत समाज। ४. किसी प्रदेश या भूखड मे रहनेवाले लोग जिनमे सास्कृतिक एकता होती है। ५ किसी सम्प्रदाय के लोगो का समुदाय। जैसे—अग्रवाल समाज। (सोसाइटी, उक्त सभी अर्थो मे)। ६. प्राचीन भारत का समज्या (देखें) नामक सार्वजनिक उत्सव। ७* आयोजन। तैयारी। उदा०—बेगि करहु वन गवन समाजू।—तुलसी।

समाजत—स्त्री० [अ०] १. शरमिन्दगी। लज्जा। २ विनय। ३ निवेदन। प्रार्थना।

समाजवाद—पुं० [सं०] यह आर्थिक तथा राजनीतिक विचार-प्रणाली कि सत्ता तथा स्वामित्व व्यक्तिगत हाथो मे नही रहना चाहिए, बल्कि समष्टिक या सामूहिक रूप से समाज मे निहित रहना चाहिए। (सोशलिज्म)

विशेष—समाजवाद प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहकारिता को, मुनाफा-खोरी के स्थान पर लोकहित तथा समाज सेवा की भावना को प्रधानता देना चाहता है, और धन के वितरण मे आज जैसी विषमता है उसे बहुत कुछ कम करना चाहता है।

समाजवादी—वि० [स०] समाजवाद-संबंधी। समाजवाद का।

पु० वह जो समाजवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (सोशलिस्ट)

समाज-शास्त्र—पु० [स०] वह आधुनिक शास्त्र जिसमे मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानकर उनके समाज और सस्कृति की उत्पत्ति, विकास, सघटन और समस्याओ आदि का विवेचन होता है। (सोशियालॉजी)

समाज-शास्त्री—पु० [स०] वह जो समाज-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो।

समाजशील—वि० [सं०] समाज के सदस्यों अर्थात् लोगो से बराबर मिलता-जुलता रहनेवाला। (सोशिअल)

समाज-सुधार—पु० [स०] मानव समाज अथवा किसी देश मे रहनेवाले समाज मे फैली हुई कुरीतियाँ, दुर्गुण, दोष आदि दूर करके उन्हे सुधारने का प्रयत्न। (सोशल रिफार्म)

समाज-सुधारक—पु० [स०] वह जो मानव-समाज के दुर्गुणो, दोषो आदि को दूर करने का प्रयत्न करता हो। (सोशल रिफार्मर)

समाजी—वि० [स० समाज] समाज-सम्बन्धी। समाज का।

पु० वह जो वेश्याओ, गाने-बजानेवाली मडलियो आदि के साथ रहकर तबला, सारगी या ऐसा ही और कोई साज बजाता हो। साजिन्दा।

पु०=आर्य-समाजी।

समाजीकरण—पु० [स०] किसी काम, बात या व्यवहार को ऐसा रूप देना कि उस पर समाज का अधिकार या स्वामित्व हो जाय और सब लोग समान रूप से उसका लाभ उठा सकें। (सोशलाइज़ेशन)

समाज्ञप्त—वि० [स० सम्-आ√ज्ञप् (बताना)+क्त] जिसे समाज्ञा दी गई हो या मिली हो।

समाज्ञा—स्त्री० [सं०] १ आज्ञा। आदेश। २ नाम। सज्ञा। ३ कीर्ति। यश।

समाता (तृ)—स्त्री० [स० ष० त०] ऐसी स्त्री जो माता के समान हो। २. सौतेली माँ। विमाता।

समातृक—वि० [स०] [स्त्री० समातृका] जिसके साथ उसकी माता भी हो।

अव्य० माता के साथ।

समातृका—वि० स्त्री० [स०] (वेश्या) जो किसी खाला या वृद्धा कुटनी के साथ और उसकी देख-रेख मे रहती हो।

समादर—पुं० [स० सम्-आ√दृ (आदर करना)+अप्] अच्छा और उचित आदर। सम्मान। खातिर।

समादरणीय—वि० [सम्-आ√दृ (आदर करना)+अनीयर्] जिसका समादर करना आवश्यक और उचित हो। समादर का अधिकारी या पात्र।

समादान—पु० [स० सम्-आ√दा (देना)+ल्युट्-अन] १. पूरी तरह से ग्रहण या प्राप्त करना। २ उपयुक्त उपहार, भेंट आदि गहण करना। ३ बौद्धो का सौगताह्निक नामक नित्य कर्म। ४ जैनों मे ग्रहण किये हुए आचारों, व्रतों, आदि की अवज्ञा या उपेक्षा। ५ निश्चय।

समादिष्ट—भू० कृ० [स०] १ नियोजित। २ निर्दिष्ट।

समादृत—वि० [स० सम्-आ√दृ (आदर करना)+क्त] जिसका अच्छी तरह आदर हुआ हो। सम्मानित।

समादेय—वि० [स०] १ जो समादान के लिए उपयुक्त हो। २ समादरणीय।

समादेश—पु० [स०] [भू० कृ० समादिष्ट] १ अधिकारपूर्वक किसी को कोई काम करने का आदेश या आज्ञा देना। २ इस प्रकार दिया हुआ आदेश या आज्ञा। (कमाड) ३. निषेधाज्ञा। व्यादेश।

समादेशक—पु० [स०] १ वह जो किसी को कोई काम करने का आदेश दे। २. वह प्रधान सैनिक अधिकारी जिसके आदेश से सेना के सब काम होते हैं। (कमाडर)

समादेश याचिका—स्त्री० [स०] विधिक क्षेत्र मे, वह याचिका या प्रार्थना-पत्र जो उच्च न्यायालय मे इस उद्देश्य से उपस्थित किया जाता है कि कोई राजनीतिक या विधिक आदेश कार्यान्वित होने से तब तक के लिए रोक दिया जाय जब तक उच्च न्यायालय मे उसके औचित्य का निर्णय न हो जाय। परमादेश। (रिट ऑफ मैन्डमस)

समाध†—स्त्री०=समाधि।

समाधा—पु० [स० सम्-आ√ धा (रखना)+अङ] १ निराकरण। निपटारा। २ विरोध दूर करना। ३. सिद्धात। ४. दे० 'समाधान'।

समाधान—पु० [स० सम्-आ√धा (रखना)+ल्युट्—अन] [वि० समाधानीय] १ एक ही आधान या स्थल पर रखना। २ मन को सब ओर से हटाकर एकाग्र करना और ब्रह्म मे लीन करना। ३. सशय दूर करना। ४. आपत्ति की निवृत्ति करना। ५. समस्या का निराकरण करना। ६. असगति, भ्राति, विरोध आदि दूर करना। ७. नियम। ८. वह युक्ति या योजना जिसके द्वारा समस्या हल की जाती हो। ९. तपस्या। १०. अनुसधान। अन्वेषण। ११ किसी के कथन या मत की पुष्टि। समर्थन। १२ ध्यान। १३ नाटक की मुख्य सधि के १२ अगो मे से एक अग जिसमे बीज ऐसे रूप मे फिरसे प्रदर्शित किया जाता है कि वह नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत होता है।

समाधानना*—स [सं० समाधान] १ किसी का समाधान करना। सशय दूर करना। २. सान्त्वना देना।

समाधि—स्त्री० [स०] १ ईश्वर के ध्यान मे मग्न होना। २ योग-साधना का चरम फल, जिसमे मनुष्य सब क्लेशो से मुक्त होकर अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त करता है। यह चार प्रकार की कही गई हैं—सप्रज्ञात, सवितर्क, सविचार और सानन्द।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

३. वह स्थान जहाँ किसी का मृत शरीर या अस्थियाँ गाडी गई हो। ४ प्राणियो की वह अवस्था जिसमे उनकी सज्ञा या चेतना नष्ट हो जाती है और वे कोई शारीरिक क्रिया नहीं करते। ५. साहित्य मे एक अलकार जिसमे किसी आकस्मिक कारण से सहायता मिलने पर किसी के कार्य मे सुगमता होने का उल्लेख होता है। इसे 'समाहित' भी कहते हैं। ६ साहित्य मे, काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओ का दैव सयोग से एक ही समय मे होना प्रकट होता है और जिसमे एक ही क्रिया का दोनों कर्ताओ के साथ अन्वय होता है। ७ किसी असभव या असाध्य कार्य के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ८ किसी कष्ट-साध्य काम के लिए मन एकाग्र करना। ९. झगडे या विवाद का अत या समाप्ति करना। १० चुप्पी। मौन। ११. समर्थन। १२. नियम। १३ ग्रहण या अगीकृत करना। १४ आरोप। १५ प्रतिज्ञा। १६. बदला चुकाना। प्रतिशोध। १७ निद्रा। नीद।

†स्त्री०=समाधान। (क्व०) उदा०—व्याधि भूत जनित उपाधि काहू खल की समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुरकै।—तुलसी।

समाधि-क्षेत्र—पु० [स० ष० त०] १ वह स्थान जहाँ योगियो के मृत शरीर गाडे जाते हो। २ मुरदे गाडने की जगह। कब्रिस्तान।

समाधित—भू० कृ० [स० सम्-आ√ धा (रखना)+क्त] जिसने समाधि लगाई हो। समाधि अवस्था को प्राप्त।

समाधित्व—पु० [स० समाधि-त्व] समाधि का गुण, धर्म या भाव।

समाधिदशा—स्त्री० [स० ष० त०] योग मे वह दशा जब योगी समाधि मे स्थित होता और तन्मय होकर परमात्मा मे लीन हो जाता और चारो ओर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

समाधि लेख—पु० [स०] वह लेख जो किसी मृत व्यक्ति का सक्षिप्त परिचय कराने के लिए उसकी समाधि या कब्र पर लिखा या अकित किया रहता है। (एपिटैफ)

समाधिस्थ—वि० [स० समाधि√ स्था (ठहरना)+क] जो समाधि मे स्थित हो। जो समाधि लगाये हुए हो।

समाधि-स्थल—पु० [स० ष० त०] 'समाधि-क्षेत्र'।

समाधी (धिन्)—वि० [सं० समाधि+इनि] समाधिस्थ।

स्त्री०=समाधि।

समाधेय—वि० [स० सम्-आ √धा (रखना)+यत्] जिसका समाधान हो सके या होने को हो।

समान—व० [स०] [भाव० समानता] १. गुण, मूल्य महत्त्व आदि के विचार से किसी के अनुरूप या बराबरी का। बराबर। तुल्य। (ईक्वल) जैसे—दोनो बाते समान है। २. आकार, प्रकार रूप आदि के विचार से किसी की तरह का। सदृश। (सिमिलर) जैसे—ये दोनो गहने समान है।

विशेष—सदृश, समान और तुल्य का अतर जानने के लिए दे० 'सदृश' का 'विशेष'।

पद—एक समान= एक ही जैसे। बराबर। **समान वर्ण**=ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण एक ही स्थान से होता हो। जैसे—क, ख, ग, घ, समान वर्ण है।

पु० १ सत्। २. शरीर से, नाभि के पास रहनेवाली एक वायु। स्त्री०=समानता।

समानक—वि० [स०] १ =समान। २ =समानार्थक।

समान-कालीन—वि०=समकालीन।

समान-गोत्र—पु० [स०]सगोत्र।

समान-तंत्र—पु० [स०] १ सम-व्यवसायी। हमपेशा। २. वेद की किसी एक शाखा का अध्ययन करने तथा उसके अनुसार यज्ञ आदि करनेवाले व्यक्ति।

समानता—स्त्री० [स० समान+तल्—टाप्] १ समान होने की अवस्था या भाव। तुल्यता। बराबरी। जैसे—इन दोनो मे बहुत कुछ समानता है। २. वह गुण, तत्त्व या बात जो दो या अधिक वस्तुओं आदि मे समान रूप से हो।

समानत्व—पु० [स० समान+त्व]=समानता।

समाननाम—पु० [स० समाननामन्] ऐसे व्यक्ति जिनके नाम एक से ही हो। एक ही नामवाले। नाम-रासी।

समानयन—पु० [स० सम् - आ √नी (ढोना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० समानीत] अच्छी तरह अथवा आदरपूर्वक ले आने की क्रिया।

समानर्ष—पु० [स० व० स०] वे जो एक ही ऋषि के गोत्र या वश मे उत्पन्न हुए हो।

समानस्थान—पु० [स०] १. मध्यवर्ती स्थान। २. भूगोल मे, वह स्थान जहाँ दिन-रात का मान बराबर हो।

समाना—अ० [स० समावेशन] १ अदर आना। भरना। अटना। जैसे—इस घडे मे २० सेर पानी समाता है। २. व्याप्त होना। जैसे—दिल मे भय समाना। ३. कही से चलकर आना। पहुँचना। †स० अदर करना। भरना।

समानाधिकरण—पु० [स० व० स०] १ समान आधार। २. व्याकरण मे, वे दो शब्द या पद जो एक ही कारक की विभक्ति से युक्त हो। जैसे—राजा दशरथ के पुत्र राम को वनवास मिला; 'यहाँ राजा दशरथ के पुत्र' पद 'राम' का समानाधिकरण है क्योकि 'को' विभक्ति समान रूप से उक्त दोनो पक्षो मे लगती है।

समानाधिकार—पु० [स० कर्म० स०] १. जातीय गुण, धर्म या विशेषता। २. बराबर का अधिकार।

समानार्थ—पु० [स० व० स०] वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय। (सिनॉनिम)

समानार्थक—वि० [स० व० स०] (किसी शब्द के) समान अर्थ रखने वाला (दूसरा शब्द)। पर्यायवाची। (सिनॉनिमस)

समानार्थी—वि० [स०]=समार्थनाक।

समानिका—स्त्री० [स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, जगण और एक गुरु होता है।

समानी—स्त्री०=समानिका।

समानुपात—पु० [स० सम-अनुपात] [वि० समानुपातिक] किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अगो मे होनेवाला वह तुलनात्मक सबध जो आकार, प्रकार विस्तार आदि के विचार से स्थिर होता है और जिससे उन सब अगो मे सगति, सामजस्य, स्वरूपता आती है। (प्रोपोर्शन)

समानुपातिक—वि० [स०] समानुपात की दृष्टि, विचार या हिसाब से होनेवाला। समानुपात सबधी। (परोपोर्शनेट)

समानोदक—पु० [स० व० स०] धर्म-शास्त्र मे ऐसे लोग जिनकी ग्यारहवी से चौदहवी पीढी तक के पूर्वज एक हो।

वि० साथ-साथ तर्पण करनेवाले।

समानोपमा—स्त्री० [स० मध्यम स०] उपमा अलकार का एक प्रकार जिसमे उच्चारण की दृष्टि से एक ही शब्द भिन्न प्रकार से खड करने पर भिन्न अर्थो का द्योतक होता है।

समापक—वि० [स० सम्√आप् (प्राप्त होना)+ण्वुल्—अक] समापन पर करनेवाला।

समापत†—वि०=समाप्त।

समापत्ति—स्त्री० [स०] १. बहुतो का एक ही समय मे और एक ही स्थान पर उपस्थित होना। मिलना। २ भेट। मिलन। ३. अवसर। मौका। ४. योग मे ध्यान का एक अग। ५ अन्त। समाप्ति। ६. आज-कल दगा, दुर्घटना, युद्ध आदि के कारण लोगो के प्राणो या शरीर पर आनेवाला सकट। (कैजुएलटी)

समापन—पु० [स०] १. समाप्त करने की क्रिया या भाव। पूरा करना। (डिस्पोजल) २. विचार, विवाद आदि का अन्त करने के लिए कोई विशेष बात कहना। (वाइंडिंग अप) ३. मार डालना।

समापनीय—वि० [स० सम्√अप् (प्राप्त होना)+अनीयर] १ जिसका समापन होने की हो अथवा होना उचित हो। समाप्त किये जाने के योग्य। २. मारे जाने के योग्य।

समापन्न—भू० कृ० [स० सम्-आ√पद् (गमनादि)+क] १ प्राप्त किया हुआ। २. घटना के रूप मे आया हुआ। घटित। ३ पहुँचा हुआ। ४ पूरा किया हुआ। ५ दुखी। ६. मृत।

समापवर्तक—वि० [स०] समापवर्तन करनेवाला।

पु० गणित मे, वह राशि जिससे दो या अधिक राशियो को अलग-अलग भाग देने पर शेष कुछ न बचे। (कॉमन फैक्टर) जैसे—यदि २४, ३६ या ४८ को १२ से भाग दिया जाय तो शेष कुछ नही बचता। अतः १२ उक्त तीनो राशियो का समापवर्तक है।

समापवर्तन—पु० [स० सम-अपवर्तन] गणित मे, वह क्रिया जिससे राशियो या सज्ञाओ का अपवर्तन करके उनका समापवर्तक निकाला जाता है। (दे० 'अपवर्तन' और 'समापवर्तन')।

समापिका क्रिया—स्त्री० [स०] व्याकरण मे, वाक्य के अतर्गत अपने स्थान के विचार से क्रिया के दो भेदो मे से एक। वह पूर्ण क्रिया जिसका काल

किसी दूसरी अपूर्ण क्रिया के काल के बाद आता है और जिससे किसी कार्य की समाप्ति सूचित होती है। जैसे—वह घर जाकर बैठ रहा। मे 'बैठ रहा' समापिका क्रिया है, क्योंकि उससे कार्य की समाप्ति सूचित होती है। (दूसरा भेद पूर्वकालिक क्रिया कहलाता है। उक्त वाक्य मे 'जाकर' पूर्वकालिक क्रिया है।)

समापित†—भू० कृ०=समाप्त।

समापी (पिन्)—वि० [स० सम्√ आप् (प्राप्त करना) +णिनि] [स्त्री समापिनी] १ समापन करनेवाला। २ समाप्त करनेवाला।

समाप्त—भू० कृ० [स०] १. (कार्य) जिसे पूरा कर दिया गया हो। जैसे—विद्यालय का कार्य समाप्त हो गया है। २ (वस्तु) जिसका भोग, सहार आदि के कारण अस्तित्व नष्ट हो गया हो। जैसे—धन समाप्त होना। ३ (वस्तु) जो बिक चुकी हो फलत विक्रयार्थ उपलब्ध न हो। जैसे—पापलीन समाप्त हो गई है, नई दो चार दिन मे आ जायगी। ४ (नौकरी या सेवा) जिसका कार्य-काल बीत चुका हो। जैसे—उनकी नौकरी समाप्त हो चुकी है। ५ मृत।

समाप्त सैन्य—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, ऐसी सेना जो किसी एक ही ढग की लडाई करना जानती थी।

समाप्ति—स्त्री० [स० सम्√आप् (प्राप्त होना) +क्तिन्] १. समाप्त होने की अवस्था या भाव। खतम या पूरा होना। २. अवधि, सीमा आदि का अत होना। (एक्सपायरी, एक्सपायरेशन) ३ किसी काम, चीज या बात का सदा के लिए स्थायी रूप मे अन्त होना। न रह जाना। (एक्स्टिक्शन)

समाप्तिक—पु० [स०] वह जो वेदो का अध्ययन समाप्त कर चुका हो। वि० समाप्त या पूरा करने वाला।

समाप्य—वि० [स० सम् √आप् (प्राप्त होना) +ण्यत्] समाप्त किये जाने के योग्य। खतम या पूरा करने या होने के लायक।

समाम्ना—पु० [स० सम्+आ √ म्ना+य] [वि० समाम्नायिक] १. शास्त्र। २. समष्टि। समूह।

समाम्नायिक—पु० [स० समाम्नाय+ठन्—इक] वह जिसे शास्त्रो का अच्छा ज्ञान हो। शास्त्रवेत्ता।
वि० समाम्नाय या शास्त्र सबधी। शास्त्रीय।

समायत—वि० [स०] [स्त्री० समायता] १ बडा या फैला हुआ। विस्तृत। २. बडा। विशाल।
†स्त्री०=समाअत (सुनवाई)।

समायुक्त—वि० [स० सम्-आ√युज् (मिलाना) +क्त] १ जोडा हुआ। २ तैयार किया हुआ। ३ नियुक्त। ४ सपर्क मे लाया हुआ। ५ दत्तचित्त। ६ आवश्यकता पडने पर दिया या किसी के पास पहुँचाया हुआ। (सप्लायड)

समायुक्तक—पु० [स०] समायोजक। (दे०)

समायुत—भू० कृ० [स० सम्-आ√यु (मिलाना) +क्त] १ जोडा या लगाया हुआ। २ एकत्र किया हुआ। सगृहीत।

समायोग—पु० [स०] १ सयोग। २ जनसमूह। भीड। ३ दे० 'समायोजन'।

समायोजक—पु० [स०] समायोजन करनेवाला। (सप्लायर)

समायोजन—पु० [स० सम्-आ√युज् (मिलाना) ++ल्युट्—अन] [भू० कृ० समायोजित] १ समायोग। २ लोगो की आवश्यकता की चीजें उनके पास पहुँचाने की व्यवस्था। सभरण। (सप्लाई)

समारंभ—पु० [स० सम्-आ√रभ् (शीघ्रता करना) +घञ्-मुम्] १ आरभ। शुरुआत। २ कोई काम, क्रिया या व्यापार। ३ समारोह। ४ लेप।

समारंभण—पु० [स० सम्-आ√रभ् (शीघ्रता करना) +ल्युट्-अन—मुम्] [भू० कृ० समारभित] १ कार्य आरम्भ करना। २ गले लगाना। आलिगन।

समारना†—स० १ =सँवारना। २ =सँभालना।

समारब्ध—भू० कृ० [स० सम्-आ√ रभ् (प्रारम्भ करना) +क्त] जिसका समारभ हुआ हो। आरभ किया हुआ।

समारम्य—वि० [स० सम्-आ √रभ् (शीघ्रता करना) +यत्] जिसका समारम्भ हो सकता हो या होने को हो।

समारूढ़—भू० कृ० [स० सम्-आ √रुह् (होना) +क्त] १ किसी के ऊपर चढा हुआ। आरूढ। २ बढा हुआ। ३ अगीकृत। ४ (घाव) जो भर गया हो। (वैद्यक)

समारोप(ण)—पु० [स०] [वि० समारोपित] अच्छी तरह आरोप या आरोपण करने की क्रिया या भाव।

समारोह—पु० [स० सम-आ √रुह् (होना) +घञ्] १ ऊपर जाना विशेषत. चढाई करना। २ कोई ऐसा शुभ आयोजन जिसमे चहल-पहल तथा धूमधाम हो। (फक्शन)

समार्थ—वि०=समार्थक।

समार्थक—वि० [सं० ब० स० कप्] समान अर्थवाले (शब्द)। समानक। पु० पर्याय।

समार्थी (र्थिन्)—वि० [स० समार्थ+इनि] बराबरी करने की इच्छा रखनेवाला। २ दे० 'समार्थक'।

समालंभन—पु० [स०] [भू० कृ० समालभित] १ शरीर पर केसर आदि का लेप करना। २ वध। हत्या। ३ गले लगाना। आलिगन। ३ सहारा होना।

समालय—पु० [स० सम्-आ√ लय् (करना) +घञ्] अच्छी तरह बात-चीत करना।

समालिंगन—पु० [स० सम्-आ√लिंग (गत्यादि) +ल्युट्—अन] [भू० कृ० समालिंगित] प्रगाढ आलिगन।

समालोकन—पु० [स० सम् -आ √लोक् (देखना) +ल्युट्+अन] [भू० कृ० समालोकित] अच्छी तरह देखना।

समालोचक—पु० [स० सम्+आ √लोच् (देखकर कहना) +ण्वुल्-अक] वह जो समालोचना करता हो। समीक्षक।

समालोचन—पु० [स० सम्-आ√ लोच् (देखना) +ल्युट्—अन] समालोचना।

समालोचना—स्त्री० [स० समालोचन+टाप्] १ अच्छी तरह देखना। २ किसी कृति के गुण-दोषो का किया जानेवाला विवेचन। ३ साहित्य मे, वह लेख जिसमे किसी कृति के गुण-दोषो के सबध मे किसी ने अपने विचार प्रकट किये हो। (रिव्यू) ४ साहित्यिक कृतियो के गुण-दोष विवेचन करने की कला या विद्या।

समालोची—वि० [स० सम्-आ √लोच् (देखना) +णिनि] =समालोचक।

समालोच्य--वि० [स०] जिसकी समालोचना हो सकती हो या होने को हो।

समावा--पु०=समाई।

समावरण--पु० [स०] [भू० कृ०समावृत] कोई छोटा लेख या सूचना जो किसी बड़े पत्र के साथ एकही लिफाफे मे रखकर कही भेजी जाय। (एन्क्लोजर)

समावर्जन--पु० [स० सम्-आ √ वृज् (मना करना)+ल्युट्-अन] १. अपनी ओर झुकाना या मोडना। २ उपयोग के लिए अपने अधिकार मे लाना या लेना। ३. वश मे करना।

समावर्जित--भू० कृ० [स०] १ अपनी ओर झुकाया या मोडा हुआ। २ अपने अधिकार या वश मे लाया हुआ।

समावर्त--पु०[स० सम-आ√वृत् (रहना)+घञ्] १ वापस आना। लौटना। २ दे० 'समावर्तन'।

समावर्तन--पु०[स०]१ वापस आना। लौटना। २ प्राचीन भारत मे, वह समारोह जिसमे गुरुकुल के स्नातको को विद्याध्ययन कर लेने के उपरात विदाई दी जाती थी। ३ आज-कल विश्वविद्यालयो आदि मे होनेवाला वह समारोह जिसमे उच्च परीक्षाओं मे उत्तीर्ण होनेवाले परीक्षार्थियो को उपाधियाँ, पदक, प्रमाण-पत्र आदि दिये जाते है। (कान्वोकेशन)

समावर्तनीय--वि०[स० सम्-आ √वृत् (रहना)+अनीयर] १ वापस होने के योग्य।लौटाने लायक।२ जो समावर्तन सस्कार के योग्य हो गया हो।

समावर्ती (र्तिन्)--वि०[स०] समावर्तन सस्कार के उपरान्त गुरुकुल से लौटनेवाला स्नातक।

समावास--पु०[स० सम्-आ√वस् (रहना)+घञ्] १. निवास स्थान। २ टिकने या ठहरने का स्थान। ३. शिविर। पडाव।

समाविष्ट--भू०कृ०[स०सम्-आ√विश्(प्रवेश करना)+क्त]१ जिसका समावेश हो चुका हो या कर दिया गया हो। २. जो छा, भर या व्याप्त हो चुका हो। ३ बैठा हुआ। आसीन। ४ एकातचित्त।

समावृत्त--वि० [स० सम्-आ √वृ (वरण ररना)+क्त] [भाव० समावृत्ति]१ अच्छी तरह ढका, छाया या लपेटा हुआ। २ समावर्तन सस्कार के उपरान्त घर लौटा हुआ। ३. सूचनात्मक टिप्पणी या लेख) जो किसी पत्र के साथ एक ही लिफाफे मे बन्द करके कही भेजा गया हो।(इन्क्लोज्ड) जैसे--इस पत्र के साथ सभा का कार्य-विवरण समावृत है।

समावृत्ति--स्त्री०[स०]१ समावृत्त होने की अवस्था या भाव। २. समावर्तन।

समावेश--पु०[स० सम्-आ√ विश् (प्रवेश करना)+घञ्]१. एक या एक जगह जाना, पहुँचना, साथ रहना या होना। २. किसी चीज या बात का दूसरी चीज मे होना। ३. चित्त या मन किसी ओर लगाना। मनोनिवेश।

समावेशक--वि०[समावेश+कन्] समावेश करनेवाला।

समावेशन--पु०[स० सम्-आ √विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्--अन] २. किसी के अन्दर पैठना। प्रवेश। ३. अधिकार या वश मे करना। ३. विवाह-सस्कार।

समावेशित--भू० कृ० स० [सम-आ√ विश् (प्रवेश करना)+णिच् --क्त समावेश+इतच् वा]=समाविष्ट।

समाश्रय--भु०[स०]१. आश्रय। सहारा। २ मदद। सहायता।

समाश्रित--भू० कृ० [स० सम्-आ √श्रि (सेवा करना)+क्त] १. जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय लिया हो। २. सहारे पर टिका हुआ।

पु० वह जो भरण-पोषण के लिए किसी पर आश्रित हो।

समासंग--पु० [स० सम्-आ√ सञ्ज्(साथ करना)+घञ्] मिलन। मिलाप। मेल।

समासंजन--पु०[स० सम्-आ √सञ्ज् (मिलना)+ल्युट्--अन] [भू० कृ० समासजित] १. संयुक्त करना। मिलाना। २. किसी पर जडना या रखना। ३ सपर्क। सबध।

समास--पु०[स०]१ योग। मेल। २. सग्रह। सचय। ३. सक्षेप। ४ सस्कृत व्याकरण मे, वह अवस्था जब अनेक पदो का एक पद, अनेक विभक्तियों की एक विभक्ति या अनेक स्वरो का एक स्वर होता है। इसके अव्ययी भाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व चार भेद हैं।

समासक--वि०[स० समास+कन्] विराम-चिह्नों के अन्तर्गत एक प्रकार का चिह्न जो समस्त पदो के अलग अलग शब्दो के बीच लगाया जाता है। समास का चिह्न।

समासक्ति--स्त्री०[स०सम-आ√सञ्ज् (मिलना)+क्तिन्] [वि० समासक्त] १ योग। मेल। २. सबध। ३ अनुराग। ४. समावेश। अतर्भाव।

समासन्न--भू० कृ०[स० सम्-आ √सद् (गत्वादि)+क्त] १ पहुँचा हुआ। प्राप्त। २ निकटवर्ती। पास का।

समासीन--वि०[सं० सम्√ आस् (बैठना)+क्विप--ख-ईन] अच्छी तरह आसीन या बैठा हुआ।

समासोक्ति--स्त्री०[स० समास+उक्ति]साहित्य मे, एक अलकार जिसमे श्लिष्ट सज्ञाओ की सहायता से कोई ऐसा वर्णन किया जाता है जो प्रस्तुत विषय के अतिरिक्त किसी दूसरे अप्रस्तुत विषय पर भी समान रूप से घटता है। जैसे--बडो डील लखि पील को सबन तज्यो बन थान। धनि सरजा तू जगत मे ताको हरयो गुमान। इसमे 'सरजा' (सज्ञा) प्रस्तुत(सिंह या शेर) अप्रस्तुत (शिवाजी) के सबध मे घटता है। यह अप्रस्तुत प्रशसा के विरुद्ध या उल्टा है।(स्पीच ऑफ ब्रेविटी)

समाहना--अ०[स० समाहन] सामना करना। सामने आना। उदा०--त्रिवली, नाभि दिखाई कर, सिर कि सकुचि समाहि।--बिहारी।

समाहरण--पुं०[स० सम्-आ√हृ (हरण करना)+ल्युट्--अन] १ चीजें आदि एक स्थान पर एकत्र करना। सग्रह। २. ढेर। राशि। ३. कर, चन्दा, प्राप्य धन आदि उगाहना। वसूली। (कलेक्शन) ४ क्रम, नियम आदि के अनुसार ठीक ढग से या सजाकर बनाया या रखा जाना। (फार्मेशन) जैसे--वायु-यानो का समाहरण। ५ दे० 'समाहार'।

समाहर्ता (र्तृ)--वि० [स०-सम्-आ√हृ (हरण करना)+तृच्]१.समाहार अर्थात् एकत्र या पुजीभूत करनेवाला। २ सक्षिप्त रूप देनेवाला। ३ मिलने या सम्मिलित होनेवाला।

पु० वह राज कर्मचारी जिसके जिम्मे किसी जिले से राज-कर या प्राप्त धन आदि उगाहने का काम होता है। (कलेक्टर)

समाहार—पुं० [स० सम्-आ√ हृ (हरण करना)+घञ्] १. बहुत सी चीजो को एक जगह इकट्ठा करना। सग्रह। २ ढेर। राशि। ३ मिलन। मिलाप।

समाहार द्वंद्व—पु० [स० मध्यम० स०] व्याकरण मे, ऐसा द्वद्व समास जिससे उसके पदो के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता है। जैसे—सेठ-साहूकार, हाथ-पाँव, दाल-रोटी आदि। इनमे से प्रत्येक अपने पदो के अर्थ के सिवा उसी प्रकार वे कुछ और व्यक्तियों या पदार्थो का भी बोध कराता है।

समाहित—वि० [स०] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ, विशेषत सुदर और व्यवस्थित रूप से इकट्ठा किया या सजाकर लगाया हुआ। १ केन्द्रित २. शात। ३ समाप्त। ४ व्यवस्थित। ५. प्रतिपादित। ६ स्वीकृत। ७ सदृश। समान।
पु० १ पुण्यात्मा और साधु पुरुष। २ साहित्य मे, वह अवस्था जब कोई भावशाति (देखें) इस प्रकार होती है कि वह किसी दूसरे भाव के सामने दबकर गौण रूप धारण कर लेती है। इसकी गिनती अलकारो मे होती है। ३ 'समाधि' नामक अलकार का दूसरा नाम।

समाहूत—भू० कृ० [स० सम्-आ√ ह्वे(बुलाना)+क्त, व=उ-दीर्घ] १ जिसे बुलाया गया हो। आहूत। २ जिसे ललकारा गया हो। ३. एकत्र किया हुआ।

समाहृत—भू० कृ० [स०] जिसका समाहरण या समाहर हुआ हो।

समाह्वान—पु० [स० सम्-आ√ ह्वे (बुलाना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० समाहूत] १. आवाहन। बुलाना। २ जूआ खेलने के लिए बुलाना या ललकारना।

समित—भू० कृ० [स० सम्√इण् (गत्यादि)+क्त] १ मिला हुआ। सयुक्त। २ समानातर। ३ अगीकृत। स्वीकृत। ४. पूरा किया हुआ। ५. मापा हुआ। ६. निरतर लगा हुआ। जैसे—समित प्रवाह।
पु० युद्ध। लडाई। समर।

समिता—स्त्री० [स० समित-टाप्] बहुत महीन पीसा हुआ आटा। मैदा।

समितिंजय—पु० [स० समिति√जि (जीतना)+खच्-मुम्] १ वह जिसने वाद-विवाद, प्रतियोगिता, युद्ध आदि मे विजय प्राप्त की हो। विजयी। २ यम। ३ विष्णु।

समिति—स्त्री० [स०] १. सभा। समाज। २ प्राचीन भारत मे, राजनीतिक विषयो पर विचार करनेवाली एक सस्था। ३. आज-कल शासन, सस्था, समाज, मुहल्लेवालो आदि द्वारा चुने या मनोनीत किये गये व्यक्तियो का वह दल जिसके जिम्मे कोई विशेष कार्य-भार सौपा गया हो। जैसे—जलकर समिति, सहकारी समिति।

समिथ—पु० [स० सम्√इण् (गत्यादि)+थक्] १ अग्नि। २. आहुति। ३ युद्ध। लडाई।

समिद्ध—भू० कृ० [स० सम्√इन्ध् (जलना)+क्त, नलोप] जलता हुआ। प्रज्वलित। प्रदीप्त।

समिद्धन—पु० [स० सम्√इन्ध् (जलने की लकडी)+ल्युट्—अन] १ आग जलाने या सुलगाने की क्रिया। २. जलाने की लकडी। ईंधन। ३. उत्तेजित या उद्दीप्त करने की क्रिया।

समिध—पु० [स० सम्√इन्ध् (जलना)+क्त] अग्नि।
स्त्री०=समिधा।

समिधा—स्त्री० [स० समिधि] १. लकडी, विशेषत यज्ञकुड मे जलाने की लकडी। २ हवन, यज्ञ आदि की सामग्री।

समिधि—स्त्री०=समिधा।

समिर†—पु०=समीर।

समी—वि०=सम (समान)। उदा०—लिखमी समी रुक्मणी लाडी। —प्रिथीराज।

समीक—पु० [स० सम्+ईकक्] युद्ध। समर। लडाई।

समीकरण—पु० [स०] [भू० कृ० समीकृत] १ दो या अधिक राशियो, वस्तुओ आदि को समान या बराबर करने की क्रिया या भाव। २. गणित मे, वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात राशि जानी जाती है। ३ यह सिद्ध कर दिखलाना कि अमुक अमुक राशियाँ या मान आपस मे बराबर है। (ईक्वेशन)

समीकार—वि० [स० सम्-च्वि√कृ (करना)+घञ्] जो छोटी-बडी, ऊँची-नीची या अच्छी बुरी चीजो को समान करता हो। बराबर करनेवाला।

समीकृत—भू० कृ० [स० सम्-च्वि√कृ (करना)+क्त] १ जिसका समीकरण किया गया हो। २ सामान किया हुआ। बराबर किया हुआ।

समीकृति—स्त्री० [स० सम्+च्वि√कृ (करना)+क्तिन]=समीकरण।

समीक्रिया—स्त्री०=समीकरण।

समीक्ष—पु० [स० सम्√ईक्ष् (देखना)+घञ्] १ समीकरण। २. समीक्षा।

समीक्षक—वि० [स० समीक्ष+कन्] सम्यक् रूप से देखने या समीक्षा करनेवाला। समालोचक।

समीक्षण—पु० [स० सम्√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० समीक्षित] १. दर्शन। देखना। २ अनुसन्धान। जाँच-पडताल। ३ दे० 'समीक्षा'।

समीक्षा—स्त्री० [स० सम्√ईक्ष् (देखना)+अ-टाप्] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया। २ छान-बीन या जाँच-पडताल करने के लिए अच्छी तरह और ध्यानपूर्वक देखना। परीक्षण। (एग्जैमिनिंग) ३. ग्रन्थो, लेखो आदि के गुण-दोषो का विवेचन। समालोचन। (रिव्यू) ४ मीमासा दर्शन। ५ सांख्य दर्शन मे, पुरुष प्रकृति, बुद्धि, अहकार आदि तत्त्व। ६. बुद्धि। समझ। ७ कोशिश। प्रयत्न।

समीक्षित—भू० कृ० [स० सम्√ईक्ष् (देखना)+क्त] जिसकी समीक्षा की गई हो। जो भली-भाँति देखा गया हो।

समीक्ष्य—वि० [स०] जिसकी समीक्षा हो सकती हो या होने को हो।

समीच—पु० [स० सम्√इण् (गत्यादि)+चट्-दीर्घ] समुद्र। सागर।

समीचीन—वि० [सं० समीच+ख-ईन] [भाव० समीचीनता] १ यथार्थ। ठीक। २ उचित। वाजिब। ३ न्याय-सगत।

समीति†—स्त्री०=समिति।

समीप—वि० [स०] निकट। पास। 'दूर' का विपर्याय।

समीपता—स्त्री० [सं० समीप+तल्-टाप्] समीप होने की अवस्था या भाव। निकटता।

समीपवर्ती (र्तिन्)—वि० [स०] जो किसी के समीप या पास मे स्थित हो। जैसे—भारत के समीपवर्ती टापुओ मे सिंहल प्रधान है।

समीपस्थ—वि० [स०] जो समीप मे स्थित हो। पास का। समीपवर्ती।

समीभाव—पु० [स० सम्+च्वि√भू (होना)+घञ्] १. सामान्य अवस्था। साधारण स्थिति। २ आचरण और जीवन संबधी सब बातो मे रखा जानेवाला समता का भाव।

समीय—वि० [स० सम+छ-ईय] सम सबधी। सम का।

समीर—पु० [स० सम्√ईर् (गमनादि)+क] १. वायु। हवा। २ आधुनिक वायुविज्ञान के अनुसार भली जान पड़नेवाली वह हलकी हवा जिसकी गति प्रति घटे १३ से १८ मील तक की हो। (मॉडरेट ब्रीज) ३ प्राण-वायु। ४. शमी वृक्ष।

समीरण—पु० [स०] [भू० कृ० समीरित] १. चलना। २ वायु। हवा। ३ पथिक। बटोही। ४ प्रेरणा। ५ मरुआ नाम का पौधा। वि० १ चलता हुआ या चलनेवाला। गतिशील। २. उद्दीपक।

समीरित—भू० कृ० [स० सम्√ईर् (प्रेरित करना)+क्त] १. चलाया हुआ। २ भेजा हुआ। ३. प्रेरित। ४ उच्चरित (शब्द)।

समीहा—स्त्री० [स० सम्√ईह (चेष्टा करना)+अच्-टाप्] [भू० कृ० समीहित] १ उद्योग। प्रयत्न। कोशिश। २ इच्छा। कामना। ३. अन्वेषण। तलाश। ४ जाँच-पड़ताल।

समीहित—भू० कृ० [स०] चाहा हुआ। इच्छित।

समुंद*—पु० १=समुद्र। २ समद।

समुंदर†—पु०=समुद्र।

समुंदर-पात—पु०=समुदर-सोख।

समुंदर फल—पु० [स० समुद्र-फल] एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार वृक्ष जो नदियों और समुद्रो के किनारे और तर भूमि मे बहुत अधिकता से पाया जाता है।

समुंदर-फेन†—पु०=समुद्र-फेन।

समुंदर फेन—पुं० [हिं०] समुद्र की लहरो पर की झाग जो सुखाकर ओषधि के रूप मे काम मे लाई जाती है।

समुंदर-सोख—पु० [हिं० समुदर+सोखना] एक प्रकार का पौधा जिसके बीज वैद्यक मे दवा के काम आते हैं। इसके डठल बहुत चमकीले और मजबूत होते हैं। समुदर-पात।

समुक्त—वि० [स० सम√वच् (कहना)+क्त, वा=उ] १. जिससे कुछ कहा गया हो। सम्बोधित। २. जिसकी भर्त्सना की गई हो।

समुख—वि० [स० अव्य० स०] १. बहुत अधिक बोलनेवाला। २. सुवक्ता। वाग्मी।

समुचित—वि० [स० सम्√उच् (एक होना)+क्त] १ जो हर तरह से उचित या ठीक हो। वाजिब। २. उपयुक्त। योग्य। ३. जैसा होना चाहिए, अथवा होता आया हो, वैसा।

समुच्च—वि०[स० सम्√उत्√चि (चयन करना)+ड] बहुत ऊँचा। †वि०=समूचा।

समुच्चक—वि० [स०] १ ऊपर उठानेवाला। २ आगे की ओर ले जाने या बढानेवाला।

समुच्चय—पु० [स०][भू० कृ० समुच्चित] १. कुछ वस्तुओ का एक मे मिलना। (कॉम्बिनेशन) २. समूह। राशि। ३ कुछ वस्तुओ या बातो का एक साथ एक जगह इकट्ठा होना। सयुति। (क्युमुलेशन) ४ प्राचीन भारतीय राजनीति मे, वह स्थिति जिसमे प्रस्तुत उपाय के सिवाय अन्य उपायो से भी कार्य सिद्ध हो सकता हो। ५ साहित्य मे, एक अलंकार जिसमे कई भावों के एक साथ उदित होने, कई कार्यो एक साथ होने या कई कारणो मे एक ही कार्य होने का वर्णन होता है। (कन्जक्शन)

विशेष—इसके दो भेद कहे गये है। एक तो वह जिसमें आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि अनेक भावो का एक साथ उल्लेख होता है। दूसरा वह जिसमे एक कार्य के अनेक उपायों से सिद्धि हो सकने का वर्णन होता है।

समुच्चयक—वि० [स०] १. समुच्चय संबधी। २ समुच्चय के रूप मे होनेवाला।

समुच्चयन—पु० [स०] १ ऊपर उठाने की क्रिया या भाव। २ इकट्ठा करने या ढेर लगाने की क्रिया या भाव।

समुच्चय बोधक—पु० [स०] व्याकरण मे, अव्यय का एक भेद जिसका कार्य दो वाक्यो मे परस्पर सबध स्थापित करना होता है। और, किंतु, तथा, परन्तु, बल्कि या वरन् आदि समुच्चय बोधक हैं।

समुच्चयार्थक—वि० [स०] समुच्चय या सारे वर्ग के अर्थ से सबध रखने या वैसा अर्थ सूचित करनेवाला। (कलेक्टिव) जैसे—भीड और समाज समुच्चयार्थक सज्ञाएँ हैं।

समुच्चयोपमा—पु० [स०] उपमा अलकार का एक भेद जिसमे उपमेय मे उपमान के अनेक गुण या धर्मो का एक साथ आरोप होता है।

समुच्चित—भू० कृ० [सं० सम्√उत्√चि (ढेर लगाना) +क्त] १ जो धीरे-धीरे बढकर इकट्ठा और एकाकार हो गया हो। पुजीभूत। २. संग्रहीत। (क्युमुलेटेड)

समुच्छिन्न—भू० कृ० [स०] बुरी तरह से उखडा, तोडा या फाडा हुआ।

समुच्छेद—पु० [स० सम्-उत्√छिद् (नष्ट करना)+घञ्] १. जड से उखाडना। उन्मूलन। २. ध्वस। नाश। बरबादी।

समुच्छेदन—पु० [स० सम्-उत्√छिद् (नष्ट करना)+ल्युट्-अन] १. जड से उखाडना। २ नष्ट करना।

समुज्ज्वल—वि०[स०सम्-उत्√ज्वल् (चमकना)+अच्]खूब उज्ज्वल। चमकता हुआ।

समुज्झित—वि० [स० सम्√उज्झ् (त्यागना)+क्त] १ त्यागा हुआ। परित्यक्त। २ मिला हुआ। युक्त।

समुझ*—स्त्री०=समझ।

समुझना†—अ०=समझना।

समुत्थ—वि० [स० सम्-उत्√स्था (ठहरना)+क, स=थ लोप] १ उठा हुआ। २. उत्पन्न। जात।

समुत्थान—पु० [स० सम्-उद्√स्था (ठहरना)+ल्युट्-अन] १ ऊपर उठाने की क्रिया। २ उन्नति। ३ उत्पत्ति। ४. आरभ। ५ रोग का निदान। ६ रोग का शमन या शान्ति।

समुत्थित—भू०कृ० [स० सम्-उद्√स्था (ठहरना)+क्त] १. अच्छी तरह उठा हुआ। २ जो प्रकट हुआ हो। ३. उद्भूत। उत्पन्न। ४ घिरा हुआ (बादल)। ५ प्रस्तुत। ६. जो आरोग्य लाभ कर चुका हो। ७ फूला हुआ। ८ किसी के मुकाबले मे उठा हुआ।

समुत्पन्न—वि० [स० सम्-उत्√पद् (गत्यादि))+क्त=न] =उत्पन्न।

समुत्सुक—वि० [सं० सम्-उत्√सुच् (शोक करना)+अच्, कर्म० स०] विशेष रूप से उत्सुक। उत्कंठित।

समुद--वि० [स०] मोद या प्रसन्नता से युक्त।
अव्य० मोद या प्रसन्नतापूर्वक।
†पु०=समुद्र।

समुदय--पु० [स० समुदय.] [भू० कृ० समुदित] १. ऊपर उठना या चढना। २ ग्रह, नक्षत्र आदि का उदित होना। उदय। ३. शुभ लग्न। साइत। ४. ढेर। राशि। झुड। समुदाय। ५ कोशिश। प्रयत्न। ६ युद्ध। समर। ७ राज-कर।
वि० समस्त। सब। सारा।

समुदाचार--पु० [स० सम्-उद् आ√चर् (चलना)+घञ्] १. भलमन-साहत का व्यवहार। शिष्टाचार। २. नमस्कार। ३ प्रणाम। ४ अभिप्राय। आशय। मतलब।

समुदाय--पु० [स० सम्-उद्√अय् (गत्यादि)+घञ्] [वि० सामुदायिक] १ बहुत से लोगों का समूह। २. झुड। दल। ३. ढेर। राशि। ४ उदय। ५. उन्नति। ६ सेना का पिछला भाग। ७ किसी वर्ग, जाति के लोगों द्वारा बनाई हुई ऐसी सस्था जिसका मुख्य उद्देश्य सामान्य हितों की रक्षा होता है। (एसोसियेशन)

समुदाव†--पु०=समुदाय।

समुदित--भू०कृ०[स०सम्-उद्√इण्(गत्यादि)+क्त]१ जिसका समुदय हुआ हो। २ उदित। उठा हुआ। ३ उन्नत। ४ उत्पन्न। जात।

समुद्गत--भू० कृ० [स० सम्-उद्√गम् (जाना)+क्त] १. जो ऊपर उठा हो। उदित। २ उत्पन्न। जात।

समुद्गार—पु० [स० कर्म० स०] बहुत अधिक वमन होना। ज्यादा कै होना।

समुद्धरण—पु० [स०] [भू० कृ० समुद्धृत] १ ऊपर उठाना। २. उद्धार। ३. वह अन्न जो वमन करने पर पेट से निकला हो। ४ दूर करना। हटाना।

समुद्धर्ता(र्तृ)—वि० [स० सम्√उद्√हृ (हरण करना)+तृच्]१. ऊपर की ओर उठाने या निकालनेवाला। २ उद्धार करनेवाला। ३ ऋण चुकानेवाला।

समुद्धार†—पु०=समुद्धरण।

समुद्भव—पु० [स०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. पुनरुज्जीवन। ३ उपनयन के समय, हवन के लिए जलाई हुई आग।

समुद्भूति—स्त्री० [स० सम्-उद्√भू (होना)+क्तिन्] [वि० समुद्भूत]=समुद्भव।

समुद्यत—वि० [स० सम्-उद्√यम् (शान्त होना)+क्त] जो पूर्ण रूप से उद्यत हो। अच्छी तरह से तैयार।

समुद्यम—पु० [स० कर्म० स०] १ उद्यम। चेष्टा। २ आरभ। शुरू।

स-मुद्र—वि० [स०] १ मुद्रा से युक्त। २ जिस पर मुद्रा अकित हो।

समुद्र—पुं० [स०] १ वह विशाल जल-राशि जो इस पृथ्वी तल के प्राय तीन-चौथाई हिस्से मे व्याप्त है। सागर। अबुधि। जलधि। रत्नाकर। २. लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत बडा आगार या आश्रय। जैसे—विद्या-सागर, शब्द-सागर आदि। ३. एक प्राचीन जाति।

समुद्र-कंप—पु० [स०] समुद्र के किसी भाग मे सहसा उत्पन्न होनेवाला वह कप जो आस-पास के स्थलो मे भू-कप होने अथवा भूगर्भ मे प्राकृतिक विस्फोट होने के कारण उत्पन्न होता है। (सी-क्वेक)

समुद्र-कफ—पु० [स०] समुद्र फेन।

समुद्र-कांची—स्त्री० [स० व० स०] पृथ्वी जिसकी मेखला समुद्र है।

समुद्र-कांता—स्त्री० [स०] नदी जिसका पति समुद्र माना जाता है। समुद्र की स्त्री अर्थात् नदी।

समुद्रगा—स्त्री० [स०] १. नदी जो समुद्र की ओर गमन करती है। २. गगा नदी।

समुद्रगुप्त—पु० [स०] मगध के गुप्त राजवश के एक बहुत प्रसिद्ध और वीर सम्राट् जिनका समय सन् ३३५ से ३७५ तक माना जाता है। इनकी राजधानी पाटलिपुत्र मे थी।

समुद्र-चुलुक—पु० [स०] अगस्त्य मुनि जिन्होने चुल्लुओं से समुद्र पी डाला था।

समुद्रज—वि० [स०] समुद्र से उत्पन्न। समुद्र-जात।
पु० मोती, हीरा आदि रत्न जिनकी उत्पत्ति समुद्र से होती या मानी जाती है।

समुद्र-झाग—पु०=समुंदर-फेन।

समुद्र-तारा—स्त्री० [स०] एक प्रकार की समुद्री मछली जिसका आकार तारे की तरह का होता है। (स्टार फिश)

समुद्र-नवनीत—पु० [स०] १. अमृत। २ चन्द्रमा।

समुद्रनेमि—स्त्री० [स०] पृथ्वी।

समुद्र-पत्नी—स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

समुद्र-फेन—पु०=समुदर-फेन।

समुद्र-मंडूकी—स्त्री० [स०] सीपी। सीप।

समुद्र-मंथन—पु० [स०] १. एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा जिसमे देवताओं और दानवो ने मिलकर समुद्र मथा था। इस मथन के फलस्वरूप उन्हे लक्ष्मी, मणि, रभा, वारुणी, अमृत, शख, ऐरावत हाथी, कल्पवृक्ष, चन्द्रमा, कामधेनु, धन, धनवतरि, विप और अश्व ये चौदह पदार्थ मिले थे। २ कुछ ढूँढने के लिए बहुत अधिक की जानेवाली छान-बीन।

समुद्र-मालिनी—स्त्री० [स०] पृथ्वी जो समुद्र को अपने चारो ओर माला की भाँति धारण किये हुए है।

समुद्र-मेखला—स्त्री० [स०] पृथ्वी जो समुद्र को मेखला के समान धारण किये हुए है।

समुद्र-यात्रा—स्त्री० [सं०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशो की होनेवाली यात्रा। (सी वॉयेज)

समुद्र-यान—पु० [स०]१. समुद्र के मार्ग से होनेवाली यात्रा। २. समुद्र के तल पर चलने वाली सवारी। समुद्री जहाज।

समुद्र-रसना—स्त्री० [स० व० स०] पृथ्वी।

समुद्र-लवण—पु० [स०] करकच नाम का नमक जो समुद्र के जल से तैयार किया जाता है।

समुद्र-लहरी—पु० [स०+हिं०] समुद्र के रग की तरह का हरा रग। (सी ग्रीन)
वि० उक्त रग के रग का।

समुद्र-वसना—स्त्री० [स०] पृथ्वी।

समुद्र-वह्नि—पु० [स०] वडवानल।

समुद्र-वासी(सिन्)—वि० [स०] [स्त्री० समुद्र-वासिनी] १. जो समुद्र मे रहता हो। २. जो समुद्र के किनारे रहता हो।

समुद्र-वृष्टि न्याय—पु० [स०] कहावत की तरह प्रयुक्त होनेवाला एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग यह जानने के लिए होता है कि अमुक काम या बात भी उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे समुद्र के ऊपर वृष्टि होना।

समुद्र-सार—पु० [स०] मोती।

समुद्र-स्थली—स्त्री० [स० प० त०] एक प्राचीन तीर्थ जो समुद्र के तट पर था।

समुद्रांबरा—स्त्री० [स० व० स०] पृथ्वी।

समुद्राभिसारिणी—स्त्री० [स० प० त०] वह कल्पित देववाला जो समुद्र देव की सहचरी मानी जाती है।

समुद्रारु—पु० [स० समुद्र√ऋ (गमनादि)+उण्] १. कुभीर नामक जल जतु। २. तिमिगल नामक जल-जन्तु। ३. समुद्र के किसी अश पर बना हुआ पुल।

समुद्रावरण—स्त्री० [स० व० स०] पृथ्वी।

समुद्रिय—वि० [स० समुद्र+घ—इय] १ समुद्र-सबधी। समुद्र का। २ समुद्र से उत्पन्न। ३. समुद्र मे या उसके तट पर रहने या होने वाला। ४. नौ-सैनिक। (नैवेल)

समुद्री—वि०=समुद्रिय।

समुद्री गाय—स्त्री० [हि०] नीले रग का एक प्रकार का समुद्री पशु जो प्राय. गौ के आकार का होता है। इसका मास खाया जाता है और चरबी अच्छे दामो पर बिकती है।

समुद्री डाकू—पु० [हि०] वह जो समुद्र मे चलनेवाले जहाजो आदि पर डाके डालता हो। जल-दस्यु। (पाइरेट)

समुद्री तार—पु० [स० कर्म० स०] समुद्र मे पानी के भीतर से जानेवाला तार। (केबिल)

समुद्वह—वि० [स० सम्—उद्√वह् (ढोना)+अच्] १. श्रेष्ठ। उत्तम। बढिया। ३. ढोने या वहन करनेवाला।

समुद्वाह—पुं० [स० सम्—उद्√वह् (ढोना)+घञ्] विवाह।

समुन्नत—वि० [स० सम्—उत्√नम् (झुकना)+क्त] [भाव० समुन्नति] १. जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। खूब बढा-चढा। २ बहुत ऊँचा।

पु० वास्तु शास्त्र मे एक प्रकार का खभा या स्तभ।

समुन्नद्ध—वि० [स० सम्—उत्√नह् (बाँधना)+क्त] १ जो अपने आपको पंडित समझता हो। २. अभिमानी। घमडी। ३ उत्पन्न। जात।

पु० प्रभु। मालिक। स्वामी।

समुन्नयन—पु० [स०] [भाव० समुन्नति] १ ऊपर की ओर उठाने या ले जाने की क्रिया। २ प्राप्ति। लाभ।

समुपकरण—पु० [स० सम्—उप√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १. उपकरण। २. सामग्री।

समुपवेशन—पु० [स० सम्—उप√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्—अन] १. अच्छी तरह बैठने की क्रिया। २ अभ्यर्थना।

समुपस्थान—पु० [स० सम्—उप√स्था (ठहरना)+ल्युट्—अन] सामने आकर उपस्थित होना।

समुपस्थित—वि० [स० सम्—उप√स्था (ठहरना)+क्त] [भाव० समुपस्थिति] १. सामने आया हुआ। उपस्थित। २. प्रकट।

समुपस्थिति—स्त्री० [स० सम्—उप√स्था (ठहरना)+क्तिन्]=समुपस्थान।

समुपेत—वि० [सं० सम्-उप√इण् (गत्यादि)+क्त] १. पास आया या पहुँचा हुआ। २. एकत्र किया हुआ। ३. ढेर के रूप मे लगाया हुआ। ३. बसा हुआ। आबाद।

समुल्लास—पु० [स० सम्-उत्√लस् (क्रीड़ा करना)+घञ्] [भू० कृ० समुल्लसित] १. उल्लास। आनन्द। प्रसन्नता। खुशी। २. ग्रन्थ आदि का परिच्छेद या प्रकरण।

समुहा†—वि० [सं० सम्मुख] १. सामने का। २ सामने की दिशा मे स्थित।

अव्य० १. सामने। २ सीधे।

समुहाना—अ० [हिं० समुहा] सामने आना या होना।

स० सामने करना या लाना। उदा०—सबही तन समुहानि छिन चलति सबनि पै दीठ।—बिहारी।

समुहैं†—अव्य०=सामुहे। (सामने)।

समूचा—वि० [स० समुच्चय] आदि से अन्त तक जितना हो, वह सब। जिसके खड या विभाग न किये गए हो। कुल। पूरा। सब।

समूढ—वि० [सं० सम्√वह् (ढोना)+क्त, ह=दृढ-त=थ=ढ-व=ड] १ ढेर के रूप मे लगाया हुआ। २ इकट्ठा किया हुआ। सगृहीत। ३ पकडा हुआ। ४ भोगा हुआ। भुक्त। ५. विवाहित। ६ जो अभी उत्पन्न हुआ हो। सद्य.जात। ७ जो मेल मे ठीक बैठता हो। सगत।

पु० १ ढेर। समूह। २. आगार। भडार।

समूर—पु० [फा० समूरु से] शबर या साँबर नामक हिरन।

समूल—वि० [स० अव्य० स०] १. जिसमे मूल या जड हो। २ जिसका कोई मुख्य कारण या हेतु हो।

क्रि० वि० जड या मूल से। जैसे—किसी का समूल नाश करना।

समूह—पु० [स०] १ एक स्थान पर एक ही तरह की सख्या मे अत्यधिक वस्तुओ की स्थिति। जैसे—पक्षियो या पशुओ का समूह। २ बहुत से व्यक्तियो का जमघट। समुदाय।

समूहतः—क्रि० वि० [स०] समूह के रूप मे। सामूहिक रूप से। (एन ब्लॉक) जैसे—सुधारवादियो ने समूहत त्याग-पत्र दे दिया।

समूहना—पु० [स०] [भू० कृ० समूहित] १. कई चीजो को एक मे मिलाकर उन्हे समूह का रूप देना। २ राशि। ढेर। ३ दे० 'सश्लेषण'। (भाषा-विज्ञान)

समूहनी—स्त्री० [स० समूहन-ङीष्] झाड़ू। बुहारी।

समूहित—भू० कृ० [स०] समूह के रूप मे रखा या लाया हुआ।

समूहीकरण—पु० [स० समूह+करण] वस्तुओ के ढेर या समूह बनाने की क्रिया या भाव।

समृति—स्त्री०=स्मृति।

समृद्ध—वि० [स० सम्√ऋध् (वृद्धि करना)+क्त] [भाव० समृद्धि] १ जिसके पास बहुत अधिक सपत्ति हो। सपन्न। धनवान्। समृद्धिशाली। २ कृतार्थ। सफल। ३ सशक्त। ४ अधिक। बहुत। ५. प्रभावशील।

समृद्धि—स्त्री० [स०] १. समृद्ध होने की अवस्था या भाव। २ वहुत अधिक सपन्नता। ऐश्वर्य। अमीरी। ३ कृतकार्यता। सफलता। ४ अधिकता। वहुलता। ५. शक्ति। ६. प्रभावकारक प्रधानता।

समृद्धी (द्धिन्)—वि० [स० समृद्धि+इनि] जो वरावर अपनी समृद्धि करता रहता हो।
स्त्री०=समृद्धि।

समृष्ट—भू० कृ० [स०] झाड-पोछ की अच्छी तरह साफ किया हुआ।

समेकन—पु० [स० सम+एकन] [वि० समेकनीय, भू० कृ० समेकित] १. दो या अधिक वस्तुओ आदि का आपस मे मिलकर पूर्णत एक हो जाना। २. रसायन-शास्त्र मे, दो या अधिक पदार्थों का गलकर या और किसी रूप मे एक हो जाना (फ्यूजन)

समेकनीय—वि० [स०] जिसका समेकन हो सके। जो दूसरो मे पूर्णत मिलकर उसके साथ एक हो सके। (फ्यूजिबुल)

समेकित—भू०कृ० [स०] जिसका समेकन किया गया हो अथवा हुआ हो। (फ्यूज्ड)

समेट—स्त्री० [हि० समेटना] १. समेटने की क्रिया या भाव। २. समेटी हुई वस्तु।

समेटना—स० [हि० सिमटना] १ विखरी हुई चीजो को इकट्ठा करना। २. ग्रहण या धारण करना जैसे—किसी का सब समेटना।

समेत—वि० [स०] १. किसी के साथ मिला या लगा हुआ। सयुक्त। २ पास आया हुआ।
अव्य० सहित। साथ।

समेध—पु० [स० सम्√एध् (वृद्धि करना)+अच्] पुराणानुसार मेरु के अतर्गत एक पर्वत।

समै, समैया*—पु०=समय।

समो*—पु०=समय।

समोखना*—स० [?] जोर देकर या ताकीद से कहना।

समोच्च रेखा—स्त्री० दे० 'रूप-वेध'।

समोदक—वि० [स० व० स०, सम +उदक] जिसमे आधा पानी हो।
पु० १ घोल। २ मठा।

समोना—स० [स० समन्वय] १ कोई चीज अच्छी तरह किसी दूसरी चीज मे भरना या मिलाना। समाविष्ट या सम्मिलित करना। जैसे—इतना वडा कथानक छोटी-सी कहानी मे समो दिया है। २. इकट्ठा या सगृहीत करना। ३ प्रस्तुत करना। वनाना।
अ० १ निमग्न होना। डूवना। २ मग्न या लीन होना। उदा०—यो ही वृच्छ गये तें अव लौ राजस रग समोये।—नागरीदास।

समोसा—पु० [?] १ मैदे का वना हुआ तथा घी मे तला हुआ नमकीन पकवान जिसके अन्दर आलू आदि भरे जाते है। २ उक्त प्रकार का वना हुआ कोई पकवान। जैसे—मलाई का समोसा।

समोह—पु० [स०] समर। युद्ध।

समौं—पु०=समय।

समौरिया—वि० [स० सम+हि० उमर-इया (प्रत्य०)] किसी की तुलना मे समान वय वाला। समवयस्क।

सम्मत—वि० [स० सम्√मन् (मानना)+क्त] १. जिसकी राय किसी की वात से मिलती हो। २. जो किसी वात पर राजी या सहमत हो।
पु० १ सम्मति। राय। २. अनुमति।

सम्मति—स्त्री० [स०] [वि० सम्मत] १ सलाह। राय। २. अनुज्ञा। अनुमति। ३ किसी विषय मे प्रकट किया जानेवाला मत या विचार। राय। (ओपीनियन) ४. किसी विषय मे कुछ लोगो का एकमत होना। सहमति। (एग्रीमेन्ट) ५. किसी के प्रस्ताव या विचार को ठीक और उचित मानकर उसके निर्वाह के लिए दी जानेवाली अनुमति। सहमति। (कन्सेन्ट) ५ प्रतिष्ठा। सम्मान। ७. इच्छा। कामना। ८. आत्म-ज्ञान।

सम्मद—वि० [स० सम् √मद् (हर्षित होना)+अप्] आनदित। प्रसन्न।
पु० १. आमोद। प्रसन्नता। २ एक प्रकार की वहुत वडी मछली।

सम्मन—पु० [अ० समन] न्यायालय द्वारा प्रेषित वह पत्र जिसमे किसी को न्यायालय मे उपस्थित होने का आदेश दिया जाता है।

सम्मर्द—पु० [स० सम्√मृद् (मर्दन करना)+घञ्] १. युद्ध। लड़ाई। ३ जन-समूह। भीड। ३. वाद-विवाद। ४. लडाई-झगडा।

सम्मर्दन—पु० [स० सम्√मृद् (मर्दन करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सम्मर्दित] अच्छी तरह किया जानेवाला मर्दन।

सम्मर्दी (र्दिन्)—वि० [स० सम्√मृद् (मर्दन करना)+णिनि] अच्छी तरह मर्दन करनेवाला।

सम्मातृ—वि० [स० व० स०] जिसकी माता पतिव्रता हो। सती माता वाला।

सम्माद—पुं० [स० सम्√मद् (उन्मत्त होना)+घञ्] १ उन्माद। पागलपन। २ नशा।

सम्मान—पु० [स० सम्√मान् (मान करना)+अच्] १ किसी के प्रति मन मे होनेवाला आदरपूर्ण भाव। २ वे सब वातें जिनके द्वारा किसी के प्रति पूज्य भाव प्रकट या प्रदर्शित किया जाता है।
वि० मान या प्रतिष्ठा से युक्त।
अव्य० मान या प्रतिष्ठापूर्वक।

सम्मानन—पु० [स० सम्√मान् (आदर करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सम्मानित] १ सम्मान या आदर करना। २. वतलाना या सिखलाना।

सम्मानना—स० [स० सम्मान] सम्मान करना। आदर करना।
स्त्री० [स०] सम्मान।

सम्मानित—भू० कृ० [स० सम्√मान् (सम्मानित होना)+क्त] १. जिसका सम्मान किया गया हो। २ जिसे सम्मानपूर्वक लोग देखते हो।

सम्मानी (निन्)—वि० [स० सम्√मान् (आदर करना)+णिनि] जिसमे सम्मान का भाव हो।

सम्मान्य—वि० [स० सम्√मान् (आदर करना)+यत्] जिसका सम्मान किया जाना आवश्यक और उचित हो। आदरणीय।

सम्मार्ग—पु० [स० कर्म० स०] १. अच्छा मार्ग। सत् मार्ग। २. ऐसा मार्ग जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो।

सम्मार्जक—वि० [स० सम्√मृज् (शुद्ध करना)+ण्वुल्—अक] सम्मार्जन करनेवाला।
पु० झाड़।

सम्मार्जन—पु० [स० सम्√मृज् (शुद्ध करना)+णिच् ल्युट्-अन] [भू० कृ० सम्मार्जित] १ झाड़ना-बुहारना। २ साफ करना। ३ स्नानादि (मूर्ति का)। ४ स्रुवा के साथ काम आनेवाला कुश का मुट्ठा। ५ झाड़ू।

सम्मार्जनी—स्त्री० [स० सम्मार्जन—ङीप्] झाड़ू। बुहारी। कूँचा।

सम्मित—भू० कृ० [स० सम्√मा (सदृश करना)+क्त] १ मापा हुआ। २. समान। सदृश। ३. जिसके अगों मे आनुपातिक एकरूपता तथा सामजस्य हो। (सिमेट्रिकल)

सम्मिति—स्त्री० [स० सम्√मा (ऊँची कामना)+क्तिन्] १ तुल्य या समान करना। २ तुलना। करना।

सम्मिलन—पु० [स० सम्√ मिल् (मिलना)+ल्युट्—अन] १ मेल-मिलाप। २ दो विभिन्न इकाइयो का मिलकर एक होना। जैसे—भारत मे गोवा का सम्मिलन। ३. सम्मेलन। (दे०)

सम्मिलनी†—स्त्री०=सम्मेलन। उदा०—सम्मिलनी का बिगुल बजा। —अज्ञेय।

सम्मिलित—भू० कृ० [स० सम्√मिल् (मिलना)+क्त] १ किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ। २ जो मिल-जुल कर किया गया हो। सामूहिक। जैसे—सम्मिलित प्रयास से ही यह सभव हुआ है।

सम्मिश्र—वि० [स० सम्√ मिश्र् (मिलाना)+अच्] एक मे या साथ-साथ मिलाया हुआ।

सम्मिश्रक—पु० [स०] १ वह जो किसी प्रकार का सम्मिश्रण करता हो। २ वह व्यक्ति जो ओपधियो, विशेपत विलायती ओपधियो आदि के मिश्रण प्रस्तुत करता हो। (कम्पाउडर)

सम्मिश्रण—पु० [स०] [भू० कृ० सम्मिश्रित, कर्ता सम्मिश्रक] १ अच्छी तरह मिलाने की क्रिया। २. मेल। मिलावट। ३ ओपध तैयार करने के लिए कई प्रकार की ओपधियाँ एक मे मिलाना। (कम्पाउडिंग)

सम्मीलन—पु० [स० सम् √ मिल् (सकुचित होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सम्मिलित] १ (पुष्पादि का) सकुचित होना। मुँदना। २. ढका जाना। ३ (चन्द्रमा) या सूर्य का पूर्णग्रहण। खग्रास।

सम्मुख—अव्य० [स० ब० स०] १. सामने। समक्ष। आगे। २. बिलकुल सीधे।

सम्मुखी—वि० [स० सम्मुख+इनि] जो सम्मुख या सामने हो। सामने का।

पु० दर्पण। आइना।

सम्मुखीन—वि० [स० सम्मुख+ईन] जो सम्मुख हो। सामने का।

सम्मूढ़—वि० [स० सम्√मुह् (मुग्ध होना)+क्त] १. मोह मे पडा हुआ। २ मूढ। मूर्ख। ३ अनजान। अबोध। ४ टूटा हुआ। ५ ढेर के रूप मे लगा हुआ।

सम्मूढ़-पीड़िका—स्त्री० [स०] वैद्यक मे, एक प्रकार का शुक्र रोग जिसमे लिंग टेढा हो जाता है और उस पर फुसियाँ निकल आती है।

सम्मूर्च्छन—पु० [स० सम्√ मूर्च्छा (मुग्ध होना आदि)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सम्मूर्च्छित] १. भली भाँति व्याप्त होने की क्रिया। अभिव्याप्ति। २. मूर्च्छा। बेहोशी। ३. बढती। वृद्धि। ४. फैलाव। विस्तार।

सम्मृष्ट—भू० कृ० [स० सम्√मृज् (शुद्ध होना)+क्त] १ अच्छी तरह साफ किया हुआ। २ छाना हुआ।

सम्मेलन—पु० [स०] १. मनुष्यों का किसी विशेप उद्देश्य से अथवा किसी विशेप विषय पर विचार करने के लिए एकत्र होनेवाला समाज। (कॉन्फ्रेंस) २ जमावडा। जमघट। ३. मिलाप। सगम। ४ कोई बहुत बडी सख्या। जैसे—हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

सम्मोद—पु० [स० सम्√मुद् (हर्पित होना)+घञ्] १ प्रीति। प्रेम। २ मोद। हर्ष।

सम्मोह—पु० [स० सम्√मुह् (मोहित करना)+घञ्] १. मोह। २ प्रेम। ३. भ्रम। धोखा। ४. सन्देह। ५ मूर्च्छा। बेहोशी। ६. एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और एक गुरु होता है।

सम्मोहक—वि० [स० सम्√मुह् (मुग्ध होना)+णिच्-ण्वुल्-अक] १ सम्मोहन करनेवाला। सम्मोहन-शक्ति से युक्त। २ मनोहर। सुन्दर।

पु० सन्निपात ज्वर का एक भेद।

सम्मोहन—पु० [स०] १ इस प्रकार किसी को मुग्ध करना कि उसमे हिलने-डुलने, करने-धरने तथा सोचने-विचारने की शक्ति न रह जाय। २. वह गुण या शक्ति जिसके द्वारा किसी को उक्त प्रकार से मुग्ध किया जाता है। ३. शत्रु को मुग्ध करने का एक प्राचीन अस्त्र। ४ कामदेव का एक बाण।

वि० सम्मोहक।

सम्मोहनी—स्त्री० [सं० सम्मोहन-ङीप्] १. लोगो को मोह मे डालने या मुग्ध करनेवाली एक तरह की माया। २ लाक्षणिक अर्थ मे, वह शक्ति जो मनुष्य को असमर्थ बनाकर भुलावे मे डाल देती है।

सम्मोहित—भू० कृ० [स० सम्-मुह् (मुग्ध करना)+णिच्-क्त] १. सम्मोहन के द्वारा जो मुग्ध, मोहित या वशीभूत किया गया हो। २ बेहोश किया हुआ।

सम्राज*—पु०=साम्राज्य।

सम्यक्—पु० [स०] समुदाय। समूह।

वि० १ पूरा। सब। समस्त। २ उचित। उपयुक्त। ३ ठीक। सही। ४. मनोनुकूल।

क्रि० वि० १. पूरी तरह से। २ सब प्रकार से। ३. अच्छी तरह। भली भाँति।

सम्यक्-चरित्र—पु० [स०] जैनियों के अनुसार धर्मत्रय मे से एक धर्म। बहुत ही धर्म का तथा शुद्धतापूर्वक आचरण करना।

सम्यक्-ज्ञान—पु० [स०] उचित ज्ञान।

पु० [स०] जैनियों के अनुसार धर्मत्रय मे से एक। रत्नत्रय, सातो तत्वो, आत्मा आदि मे पूरी पूरी श्रद्धा होना।

सम्यक्-संबुद्ध—वि० [स०] वह जिसे सब बातो का पूरा और ठीक ज्ञान प्राप्त हो गया हो।

पु० गौतम बुद्ध का एक नाम।

सम्यक् समाधि—स्त्री० [स०] बौद्धो के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

सम्याना†—पु०=शामियाना।

सम्रथ†—वि०=समर्थ।

सम्राजना—अ० [सं० सम्राज्] अच्छी तरह प्रतिष्ठित, स्थापित या विराजमान होना। उदा०—नाम-प्रताप शम्भु सम्राजे।—निराला।

सम्राज्ञी—स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जो किसी साम्राज्य की स्वामिनी हो। २. सम्राट् की पत्नी।

सम्राट्—पु० [सं०] साम्राज्य का स्वामी।

विशेष—प्राचीन भारत मे, यह पद उसी बडे राजा को प्राप्त होता था जो राजसूय यज्ञ कर चुका होता था।

सम्रिति†—स्त्री०=स्मृति।

सम्हलना—अ०=सँभलना।

सयण†—पु० [सं० सज्जन]=साजन (प्रियतम)। (राज०)

सयन—पु० [सं०] बधन।

†पु०=शयन।

सयल†—वि० [सं० सकल] सब उदा०—सवालप्प उत्तर सयल, कमऊँ गढ दूरग।—चदवरदायी।

†स्त्री०=सैर।

†पु०=शैल।

सयान†—वि०=सयाना।

पु०=सयानपन।

सयानप*—स्त्री०=सयानपन।

सयानपत*—स्त्री० [हिं० सयाना+पत (प्रत्य०)] १ सयाने होने की अवस्था या भाव। २. चालाकी। होशियारी।

सयानपन—पु० [हिं० सयान+पन (प्रत्य०)] १ सयाना होने की अवस्था, गुण या भाव। २ चतुरता। होशियारी। ३ चालाकी। धूर्तता।

सयाना—वि० [सं० सज्ञान] [स्त्री० सयानी] १. जो बाल्यावस्था पार करके युवक या वयस्क हो चला हो। जैसे—अब तुम लडके नही हो, सयाने हुए। २ बुद्धिमान्। समझदार। ३ चालाक। होशियार। ४ कपटी और धूर्त।

पु० १ अनुभवी तथा बुद्धिमान् विशेषत अधिक अवस्थावाला। अनुभवी तथा बुद्धिमान् व्यक्ति। २. ओझा। ३. हकीम। ४ गाँव का मुखिया।

सयानाचारी—स्त्री० [हिं० सयाना+चार (प्रत्य०)] वह रसूम जो गाँव के मुखिया को मिलता था।

सयानी—स्त्री० [हिं० सयाना] १ सयाने होने की अवस्था या भाव। सयानपन। २. चतुराई। चालाकी। उदा०—तू काहे कौं करति सयानी।—सूर। ४. अनुभवी तथा बुद्धिमान् स्त्री। जैसे—किसी सयानी से राय लेनी थी।

सयोनि—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सयोनिता] १ जो एक ही योनि से उत्पन्न हुए हो। २ एक ही जाति या वर्ग के।

पु० इद्र।

सरंग—वि० [सं० √ स (गायादि)+अङ्गच्] १ रंगदार। २ सानुनासिक।

पु० १. चौपाया। २ चिडिया। पक्षी। ३ एक तरह का हिरन।

सरंगा†—स्त्री० [हिं० सारग?] पुरानी चाल का एक प्रकार की नाव जो बहुत तेज चलती थी। उदा०—सरगा सरगा पेलि चलाएसि खिनखिन जियहिं सकाइ।—मल्ला दाऊद।

†पु० [हिं० सारगी] बड़ी सारगी (बाजा)।

सरंगी—स्त्री०=सारगी।

सरंजाम—पु० [फा०] १ काम का पूरा होना। पूर्ति। २ प्रबंध। व्यवस्था। ३ तैयारी।

सरंड—पु० [सं० √सृ (गत्यादि)+अ ड्च्] १ पक्षी। २. लपट। ३ गिरगिट। ४ दुष्ट व्यक्ति। ५ एक प्रकार का आभूषण।

सरंदीप—पु०=सरनदीप।

सरंध्र—वि० [सं०] जिसमे छिद्र हो। दे० 'छिद्रल'।

सर (स)—पु० [सं०] बडा तालाव। ताल।

स्त्री० [सं० सदृक् या सदृश] समानता। बराबरी।

मुहा०—किसी की सर पूजना=किसी की बराबरी तक पहुँचना।

†स्त्री० [सं० शर] चिता। उदा०—अब सर चढी, जरौं जस सती।—जायसी।

†पु० [सं० स्वर] आवाज। ध्वनि। उदा०—कोकिल कठ सुहाइ सर।—प्रिथीराज।

पु० [सं० अवसर का अनु०] ऐसा अवसर जो किसी काम के लिए उपयुक्त न हो।

मुहा०—सर अवसर न देखना या समझना= यह न सोचना कि अमुक काम के लिए यह अवसर ठीक है या नही। उदा०—नृप सिसुपाल महापद पायौ, सर अवसर नहिं जान्यौ।—सूर।

†अव्य० [सं० सह] सं० 'स' की तरह युक्त या 'सहित' के अर्थ मे प्रयुक्त होनेवाला अव्यय। जैसे—सरजीव=सजीव, सरधन=धनवान।

†पु० दे० 'साथिया'।

पु० [सं० शीर्ष या शिरस् से फा०] १ सिर। (मुहा० के लिए दे० 'सिर' के मुहा०) २ अतिम या ऊपरी भाग। सिरा। ३ चरम सीमा। हद।

मुहा०—(कोई काम या बात) सर पहुँचाना= (क) समाप्त करना। (ख) ठिकाने या हद तक पहुँचना।

वि० १. बलपूर्वक दबाया हुआ। जैसे—प्रतियोगी को सर करना। २. हराया हुआ। पराजित। जैसे—लडाई मे दुश्मन की फौज को सर करना। ३. (काम) पूरा या समाप्त किया हुआ। ४. सबसे बडा, प्रधान या मुख्य। जैसे—अगर वह खूनी है तो मैं सर खूनी हूँ।

स्त्री० १ गजीफा, ताश, आदि के खेल मे, ऐसा पत्ता जिससे जीत निश्चित हो। २ उक्त खेलो मे जीती जानेवाली बाजी या हाथ। जैसे—हमारी चार सरें बनी है।

पु० [अं०] १. महोदय २ ब्रिटिश राज्य की एक सम्मानित उपाधि। जैसे—सर फीरोजशाह मेहता।

सर अंजाम—पु० [फा०]=सरजाम।

सरई†—स्त्री०=सरहरी (सरपत)।

सरकंडा—पु० [सं० शरकड] सरपत की जाति का एक पौधा जिसमे गाँठ वाली छडें होती है।

सरक—पु० [सं० √सृ (गत्यादि)+वुन्—अक] १ सरकने की क्रिया। खिसकना। चलना। २. यात्रियो का दल। ३. शराब पीने का पात्र। ४ गुड की शराब। ५ शराब पीना। मद्य-पान। ६ शराब की खुमारी।

सरकना—अ० [स० सरक, सरण] १. गोजर, छिपकली, साँप आदि के सबंध मे, पेट से रगड खाते हुए आगे बढना। २ धीरे-धीरे तथा थोडा-थोडा आगे बढना। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, काम चलना।
मुहा०—सरक जाना= मर जाना। (बाजारू)
सरकश—वि० [फा०] [भाव० सरकशी] १ किसी के विरुद्ध सिर उठानेवाला। २ सहज मे न दबनेवाला। उद्दड। उद्धत। ३. विद्रोही। बागी। ४ बहुत बडा दुष्ट और पाजी।
सरकशी—स्त्री० [फा०] सरकश होने की अवस्था या भाव।
सरका—पु० [अ० सर्क] चोरी।
†पुं० [हिं० सरकना] हस्त-क्रिया। हस्त-मैथुन।
क्रि० प्र०—कूटना।
सरकार—स्त्री० [फा०] [वि० सरकारी] १ किसी देश के वे सब राज्य-कर्मचारी जिनके हाथ मे प्रशासन सबधी अधिकार होते है। शासन। २ किसी देश के सम्राट्, राष्ट्रपति या मुख्य मन्त्री द्वारा चुने हुए मत्रियो का वह दल जो सामूहिक रूप से उस देश को शासित करता है। (गवर्नमेंट)
पु० १ प्रभु। २ मालिक। स्वामी। २ राजा, शासक या सम्राट्।
सरकारी—वि० [फा०] १ सरकार-सबधी। जैसे—सरकारी काम, सरकारी हुकुम। २ जिसका दायित्व या भार सरकार पर हो। जैसे—वे सरकारी खर्च पर दिल्ली गये है। ३. राज्य-सबधी। जैसे—सरकारी गवाह। ४ नौकर की दृष्टि से उसके मालिक का।
सरकारी कागज—पु० [हिं०] १ सरकारी कार्यालय या विभाग का कागज। २ प्रामिसरी नोट।
सरकारी गवाह—पु० [हिं०] वह व्यक्ति जो अपराधियो का साथ छोडकर उनके विरुद्ध गवाही देता हो। भेद-साक्षी।
सरक्क*—वि० [हिं० सरक=मद्य-पात्र] मत्त। मस्त। उदा०—मद सरक्क, पट्टे तिना।—चदवरदाई।
सरखत—पु० [फा०] १. वह कागज या छोटी वही जिस पर मकान आदि के किराये या इसी प्रकार के और लेन-देन का ब्योरा लिखा जाता है। २. किसी प्रकार का अधिकार-पत्र या प्रमाण-पत्र। उदा०—तुलसी निहाल कै कै दियो सरखतु है।—तुलसी। ३ आज्ञापत्र। परवाना। ४ इकरारनामा।
सरखप*—पु०=सर्षप (सरसो)।
सरग*—पु०=स्वर्ग।
सरगना†—पु० [फा० सर्गन] सरदार। अगुवा। जैसे—चोरो का सरगना।
†अ० [?] डीग हाँकना। शेखी बघारना।
सरग दुवारी†—पु०=स्वर्ग-द्वार।
सरग-पताली—वि० [स० स्वर्ग+पताल +हिं० ई (प्रत्य०)] १ एक ओर स्वर्ग को और दूसरी ओर पताल को छूनेवाला। २ (गाय या बैल) जिसका एक सीग ऊपर उठा हो और दूसरा नीचे झुका हो। ३. (व्यक्ति) जिसकी एक आँख की पुतली ऊपर की ओर और दूसरी नीचे की ओर रहती हो।
सरगम—पु० [हिं० सा, रे, ग, म] १ सगीत मे, षडज से निषाद तक के सातो स्वरो का समूह। स्वर-ग्राम। २ उक्त स्वर भिन्न भिन्न प्रकारो से साधने की क्रिया या प्रणाली। ३ किसी गीत, तान या राग मे लगनेवाले स्वरो का उच्चारण। जैसे—इस तान या लय का सरगम तो कहो।
सर-गरोह—पुं० [फा०] किसी गरोह (जत्थे या दल) का प्रधान नेता। मुखिया।
सरगर्म—वि० [फा०] [भाव० सरगर्मी] १ जोशीला। आवेगपूर्ण। २. उत्साह या उमग से भरा हुआ।
सरगर्मी—स्त्री० [फा०] १ सरगर्म होने की अवस्था या भाव। २ बहुत बढा हुआ आवेग, उत्साह या उमग।
सर-गुजश्त—स्त्री० [फा०] १ सिर पर बीती हुई बात। २. बयान। वर्णन। ३ जीवन-चरित्र।
सरगुना†—वि०=सगुण।
सरगुनिया—पु० [हिं० सरगुन] सगुण ब्रह्म का उपासक।
सरगोशी—स्त्री० [फा०] १ कान मे कोई बात कहना। २ किसी के पीठ पीछे उसकी शिकायत करना।
सर-घर—पु० [स० शर+हिं० घर] तरकश। तूणीर।
सरघा—स्त्री० [स०] सर√हन् (मारना) +ड, निपा० सिद्ध] मधुमक्खी।
सरज†—स्त्री० [स० सृज्] माला। उदा०—सरज दिहे तें स्रवन लजाना।—नूरमोहम्मद।
स्त्री० [अ० सर्ज] एक प्रकार का बढिया ऊनी कपडा।
सरजद—वि० [फा० सर-जदन से] १. प्रकट। जाहिर। २ किया हुआ। कृत।
सरजना*—स० [स० सर्जन] १ सर्जन करना। २ बनाना। रचना।
सर-जमीन—स्त्री० [फा०] १ भूमि। जमीन। २ देश। मुल्क।
सरजा—वि० [स०] ऋतुमती (स्त्री)।
पु० [फा० सरजाह] १ सरदार। २. सिंह। शेर। ३ छत्रपति शिवाजी की उपाधि।
सरजिव (जीव)*—वि०=सजीव। उदा०—सरजीउ काटहि, निरजीउ पूजहि अत काल कहुँ भारी।—कबीर।
सर जीवन†—वि० [स० सजीवन] १. सजीवन। जिलानेवाला। २ उपजाऊ। २ हरा-भरा।
सरजेंट†—पु०=सार्जेंट (एक सैनिक अधिकारी)।
सर-जोर—वि० [फा०] [भाव० सरजोरी] १ जबरदस्त। प्रबल। २. उद्दड। उद्धत।
सरट—पु० [सं०√सृ (गत्यादि)+अरन्] १ छिपकली। २ छिपकली की तरह के सरीसृपो का एक वर्ग जिनका शरीर और दुम प्राय दोनो बहुत लबे होते है। (लिजर्ड)
विशेष—जीव-सृष्टि के आरंभिक युगो मे इस वर्ग के बहुत बडे-बडे जतु हुआ करते थे, पर आज-कल उनके वशज अपेक्षया छोटे होते हैं।
३ गिरगिट। ४ वायु। ५ धागा।
सरण—पु० [स०] १ धीरे धीरे आगे बढना या चलना। २ सरकना। खिसकना।
†स्त्री०=शरण।
सरणि—स्त्री० [स०]=सरणी।

सरणी—स्त्री०[स०]१. मार्ग। रास्ता। २. पगडडी। ३ सीधी रेखा। लकीर। ४. चली आई हुई परिपाटी या प्रथा। ढर्रा।

सरण्यु—पु०[स० √सृ (गत्यादि)+अन्यु] १. वायु। २ वादल। ३. जल। ४. वसत। ५ अग्नि। ६. यम।

सरतान—पु० [अ०] १. केकडा। २. कर्क राशि। ३. कर्कट नामक साधातिक व्रण। कर्कटार्वुद। (कैन्सर)

सरता-वरता—पु०[स० वर्त्तन, हि० वरतना+अनु० सरतना] आपस मे वाँटने या विभाजन करने की क्रिया या भाव।

सर-तावी—स्त्री०[फा०]१ विद्रोह। २. उद्दडता।

सरतारा*—वि० [?] १. जिसे सब प्रकार की निश्चिन्तता हो। २ अपना काम पूरा कर लेने के उपरान्त जो निश्चिन्त हो गया हो।

सरद†—स्त्री०=शरद ऋतु।

वि०=सर्द (ठढा)।

सरदई—वि० [हि० सरदा+ई (प्रत्य०)] सरदे के रग का। हरापन लिये पीला।

पु० उक्त प्रकार का रग।

सरद-परब (पर्व)—पु० दे० 'शरद् पूर्णिमा'।

सर-दर—अव्य०[फा० सर+दर=भाव]१ एक सिर से। २. सब मिलाकर एक साथ। सबको एक मानकर उनके विचार से। ३. औसत के विचार या हिसाब से।

सरदल—पु०[देश०] दरवाजे का वाजू या साह।

अव्य०=सर-दर।

सरदा—पु०[फा० सर्दः] कश्मीर तथा अफगानिस्तान मे होनेवाला खरबूजे की जाति का एक प्रकार का फल जो खरबूजे की अपेक्षा अधिक वडा तथा अधिक मीठा होता है।

सरदाना†—अ० [हि० सरदी] सरदी लगने के कारण ठढा, मन्द या शिथिल होना।

स० सरदी के प्रभाव से युक्त करके ठढा या मन्द करना।

सरदावा—पु०[फा० सर्दाव] १ ठढे जल से किया जानेवाला स्नान। २ वह स्थान जहाँ ठढा करने के लिए पानी रखा जाता हो। ३ जमीन के नीचे वना हुआ कमरा। तहखाना। ४. कब्रिस्तान या समाधि-स्थल।

सरदार—पु०[फा०]१ किसी मडली का नेता। नायक। अगुआ। नेता। जैसे—मजदूरो या सिपाहियो का सरदार। २. किसी छोटे प्रदेश का प्रधान शासक। ३. अमीर। रईस। ४ सिक्खो के नाम से पहले लगनेवाली एक मान-सूचक उपाधि। जैसे—सरदार योगेन्द्र सिह। ५ वह जिसका वेश्या से सवध हो। (वेश्याएँ)

सरदारी—स्त्री०[फा०] सरदार का पद, भाव या स्थिति। सरदारपन।

सरदियाना—अ०[हि० सरदी]१. (जीव का) सरदी लगने से अस्वस्थ होना। २. लाक्षणिक अर्थ मे, आवेश आदि शान्त होना। ठढा पडना।

सरदी—स्त्री० [फा० सर्दी]१. ऋतु या वातावरण की वह स्थिति जिसमे भारी और मोटे कपडे ओढने-पहनने की आवश्यकता प्रतीत होती है। जाडा। शीत। 'गरमी' का विपर्याय। २ जाड़े का मौसिम। पूस-माघ के दिन। शीत काल। ३. जुकाम या प्रतिश्याय नामक रोग।

मुहा०—सरदी खाना=ठढ सहना। शीत सहना।

सरदेशमुखी—स्त्री० [फा० सर=शीर्ष+स० देश +मुखी ?] चौथ की तरह का एक प्रकार का राज-कर जो मराठा शासन-काल मे जनता पर लगता था।

सरधन†—वि०=धनवान्।

सरधा†—स्त्री०=श्रद्धा।

पु०=सरदा (फल)।

सरन*—स्त्री०=शरण।

सरन-दीप—पु०[स० स्वर्ण द्वीप या सिंहल द्वीप] उर्दू साहित्य मे लंका द्वीप का पुराना नाम जो अरव वालो मे प्रसिद्ध था।

सरना—अ० [स० सरण=चलना, सरकना] १ सरकना। खिसकना। २. हिलना-डोलना। ३ कार्य आदि का निर्वाह होना। पूरा होना। जैसे—ब्याह का काम सरना। ४ उपयोग मे आना। उदा०—हाथ वही, उन गात सरै।—रसखान। ५ शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार होना। जैसे—जितना हमसे सरेगा, उतना हम भी दे देंगे। ६ परस्पर सद्भाव वना रहना। निभना। पटना।

सरनाई*—स्त्री०[स० सरणागति] किसी की विशेषत ईश्वर की शरण मे जाने की अवस्था या भाव। शरणागति।

सरनापन्न†—वि०=शरणापन्न।

सरनाम—वि०[फा०] [भाव० सरनामी] जिसका नाम हो। प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात।

सरनामा—पु०[फा०]१ किसी लेख या विषय का निर्देश जो ऊपर लिखा रहता है। शीर्षक। २ चिट्ठी-पत्री आदि के आरम्भ मे सम्बोधन के रूप मे लिखा जानेवाला पद। ३ भेजे जानेवाले पत्रो आदि पर लिखा जानेवाला पता।

सरनी†—स्त्री०=सरणी (मार्ग)।

सर-पंच—पु०[फा० सर+हि० पच] पचो मे वडा और मुख्य व्यक्ति। पचायत का सभापति।

सरपट—स्त्री०[स० सर्पण] घोडे की वहुत तेज चाल जिसमे वह दोनो अगले पैर साथ-साथ आगे फेंकता है।

अव्य० घोडे की उक्त चाल की तरह तेज या दौडते हुए।

सरपत—पु० [स० शरपत्र] कुश की तरह की एक घास जिसमे टहनियाँ नही होती, वहुत पतली और हाथ दो हाथ लवी पत्तियाँ ही मध्य भाग से निकलकर चारो ओर फैली रहती हैं। यह छप्पर आदि वनाने के काम मे आता है। सरकडा। सेंठा।

सरपना—अ०[स० सर्पण] १. खिसकना। २ आगे वढना।

सर-परदा—पु० [फा० सर-पर्द] सगीत मे, विलावल ठाठ का एक राग।

सर-परस्त—वि० [फा०] [भाव० सरपरस्ती] १ रक्षा करनेवाला। २. सरक्षक।

सर-परस्ती—स्त्री० [फा०] सरपरस्त होने की अवस्था या भाव। सरक्षण।

सरपी†—पु०=सर्पी।

सर-पुत†—पु०[हि० सार=साला+पुत्त] साले का लडका।

सर-पेच—पु०[फा०]१. पगडी के ऊपर कलगी की तरह लगाने का एक जडाऊ गहना। २ एक प्रकार का गोटा जो दो-ढाई अगुल चौडा होता है।

सर-पोश—पु०[फा०] थाल या तश्तरी ढकने का कपडा।

सर-फ़राज—वि०[फा०] १ ऊँचे पद पर पहुँचा हुआ। २. जो कोई बडा काम करके धन्य हुआ हो। ३ जिसका सम्मान बढाया गया हो। **मुहा०—किसी को सरफराज करना**= वेश्या के साथ प्रथम समागम करना। (बाजारू)

सरफराना†—अ० [अनु०] व्यग्र होना। घबराना।

सरफा—पु०[फा० सर्फ] १ खर्च। व्यय। २. मितव्ययिता। कम-खर्ची।

सर-फोंका†—पु०=सरकडा।

सरबंग*—पु०=सर्वांग।

अव्य० सर्वांगपूर्ण रूप से। सब तरह से।

सरबंधी—पु०[स० शरबंध] तीरदाज। धनुर्धर।

†पु०१.=सबधी। २. समधी।

सरब†—वि०=सर्व।

†पु०=सर्वस्व।

सरबग्य*—वि०=सर्वज्ञ।

सरबदा†—अव्य०=सर्वदा।

सर-बर—स्त्री०[हिं० सर+अनु० बर] समानता। बराबरी।

स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बकवाद या बहुत बढ-चढकर की जानेवाली बात।

सरबरना*—अ०[हिं० सर-बर] किसी की समता य बराबरी करना।

सर-बराह—वि० [फा०] [भाव० सर-बराही] १. प्रबंधक। व्यवस्थापक। २. राज, मजदूरो आदि का सरदार। ३. रास्ते मे खान-पान का और ठहरने आदि का प्रबंध करनेवाला।

सर-बराही—स्त्री०[फा०] सर-बराह का कार्य, पद या भाव।

सर-बरि†—स्त्री०=सरबर (बराबरी)। उदा०—प्रथमैं बैस न सरबरि कोई।—जायसी।

सरबस†—पु०=सर्वस्व।

सर-बुलंद—वि० [फा०] जिसका सिर ऊँचा हो या हुआ हो, फलत प्रतिष्ठित या सफल।

सरबेटा—पु० दे० 'सर-पूत'।

सरबोर†—वि०=शराबोर।

सरभंग—पु०[स० शर+भग] अघोर पथ (देखे) का एक नाम।

सरम†—पु०=श्रम।

†स्त्री०=शरम।

सर-मग्जी—स्त्री० [फा० सर+मग्ज] माथा-पच्ची। सिर-खपाई।

सरमद—वि०[अ०]१. सदा बना रहनेवाला। २. मस्त। मत्त।

सरमना*—अ०=शरमाना (लज्जित होना)।

*स०=शरमाना (लज्जित करना)।

सरमा—स्त्री० [स०]१ कुतिया। २. देवताओ की एक कुतिया। ३. दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ४ कश्यप की पत्नी।

पु०[फा०] [हिं० सरमाई] शीत-काल।

सरमाई—वि०[फा०] जाडे का।

स्त्री० जाडे के कपडे। जडावर।

सरमाया—पु० [फा० सरमाय] १. मूल-धन। पूँजी। २ धन-दौलत। सम्पत्ति।

सरया—पु०[देश०] एक प्रकार का मोटा धान जिसका चावल लाल होता है। सारो।

सरयू—स्त्री० [स०√सृ (गत्यादि)+अण्] उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी। इसी के तट पर अयोध्या बसी है।

सरयूपारी—वि०[हिं०] मध्य देशवालो की दृष्टि मे, सरयू नदी के उस पार का। जैसे—सरयूपारी बैल।

पु० ब्राह्मणो का वह वर्ग जो सरयू के उस पार अर्थात गोरखपुर बस्ती आदि के रहनेवाले है।

सरर—पु०[हिं०सरकडा] बाँस या सरकडे की पतली छडी जो ताना ठीक करने के लिए जुलाहे लगाते हैं। सथिया। सतगारा।

सरराना—अ०[अनु० सर सर] हवा बहने या हवा मे किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।

सरल—वि० [स०] [स्त्री० सरला]१ जो सीधा किसी ओर चला गया हो, बीच मे कही इधर-उधर घूमा या मुडा न हो। २ जो टेढा या वक्र न हो। सीधा। ३ जिसके मन मे छल-कपट न हो। सीधा और भोला। ४. ईमानदार और सच्चा। ५ (कार्य) जिसे पूरा करने मे कुछ भी कठिनता न हो। ६ (लेख आदि) जिसका अर्थ समझने मे कठिनता न हो। आसान। सहज। ७. असली। खरा।

पु०१ अग्नि। २ चीड का पेड। ३ चीड का गोद। गंधा बिरोजा। ४ एक प्रकार का पक्षी। ५ गौतम बुद्ध का एक नाम।

सरल-काष्ठ—पु०[स० ष० स०] चीड की लकडी।

सरलता—स्त्री०[स०]१. सरल होने की अवस्था गुण या भाव। २ चरित्र, व्यवहार, स्वभाव आदि का सीधापन। सिधाई। भोलापन। ३ ईमानदारी और सच्चाई। ४ आसानी। सुगमता।

सरल-द्रव—पु०[स०]१ गंधा-बिरोजा। २ ताडपीन का तेल।

सरल-निर्यास—पु० [स० ष० स०, प० त० वा]१ गंधा-बिरोजा। २ ताडपीन का तेल।

सरल-रस—पु०[स०]१. गंधा-बिरोजा। २ ताडपीन का तेल।

सरलांग—पु०[स० ब० स०]१ गंधा-बिरोजा। २ ताडपीन का तेल।

सरला—स्त्री०[स० सरल-टाप्]१ चीड का पेड। २ काली तुलसी। ३ मल्लिका। मोतिया। ४ सफेद निसोथ।

सरलित—भू० कृ०[स० सरल+इतच्]सीधा या सहज किया हुआ।

सरलीकरण—पु०[स०] किसी कठिन काम,चीज, बात या विषय आदि को सरल करने की क्रिया या भाव। (सिम्प्लिफिकेशन) जैसे—भाषा का सरलीकरण, वैज्ञानिक प्रक्रिया का सरलीकरण।

स-रव—वि०[सं० अव्य० स०]१ जिसमे रव या शब्द होता हो। २. शब्द करता हुआ।

†पु०१.=सरो। २.=सराव।

सरवत—स्त्री०[अ० सर्वत] अमीरी। सम्पन्नता।

सरवती—स्त्री०[स० सरवत्-ङीप्] वितस्ता नदी।

सरवन—पु०[स० श्रमण] अधक मुनि के पुत्र श्रवण जो अपने पिता को एक बहँगी मे बैठाकर ढोया करते थे।

सरवनी†—स्त्री०=सुमरनी।

सरवर—पु०[फा०] सरदार। अधिपति।

†पु०=सरोवर।

†स्त्री०=सरवरि।

सरवरि—स्त्री०[सं० सदृश, प्रा० सरिस+वर] बराबरी। तुलना। समता।

†स्त्री०=शर्वरी (रात)।

सरवरिया—वि०[हिं० सरवर] सरयूपार या सरवार का।

पु०=सरयूपारी ब्राह्मण।

सरवरी—स्त्री०[फा०] सरवर होने की अवस्था या भाव। सरदारी।

सरवा†—पु०[सं० शरावक] १ कटोरा। २ कसोरा। उदा०—द्वै उलटे सरवा मनौं दीसत कुछ उनहार।—रहीम।

†पु०=साला (गाली)।

सरवाक—पु०[सं० शरावक=प्याला] १ सपुट। प्याला। २ कसोरा। ३ दीया।

सरवान*—पु०[?]१ तबू। खेमा। २ झडा। पताका।

†पु०[फा० सारवान] [स्त्री० सरवानी] ऊँट चलानेवाला। उदा०—सरवानी विपरीत रस, किय चाहै न डराई।—रहीम।

सरवार—पु० [हिं० सरयू+पार] सरयू नदी के उस पार का भूखण्ड, जिसमे गोरखपुर, देवरिया, बस्ती आदि नगर है।

सरवाला—पु०[देश०] एक प्रकार की लता जिसे घोडा-वेल भी कहते है। बिलाई कद इसी की जड़ होती है। घोडा-वेल।

†पु०=सरवाला (सह-बाला)।

सर-शार—वि०[फा०] [भाव० सरशारी]१. मुँह तक भरा हुआ। लवालब। २ नशे मे चूर। ३ मद-मत्त।

सरस—वि०[सं०] [भाव० सरसता]१. रस अर्थात् जल या किसी अन्य द्रव-पदार्थ से युक्त। २ किसी की तुलना मे अपेक्षाकृत अधिक अच्छा। ३ हरा और ताजा। ४ (रचना) जो भावमयी हो तथा जिसमे पाठक के मन के कोमल भाव जगाने की शक्ति हो। ५. रसिक। सहृदय। ६ सुन्दर। मनोहर।

पु० छप्पय छद के ३५वे भेद का नाम जिसमे ३६ गुरु, ८० लघु, कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है।

पु०[सं० सर] [स्त्री० अल्पा० सरसी] तालाब। जलाशय।

सरसई†—स्त्री०[हिं० सरसों] फल के छोटे अकुर या दाने जो पहले दिखाई पडते है। जैसे—आम की सरसई।

स्त्री०१ =सरस्वती (देवी और नदी)। २ =सरसता।

सरसता—स्त्री०[सं०]१ सरस होने की अवस्था, गुण या भाव। २ रचना आदि का वह गुण जिसमे वह बहुत ही भावमयी और प्रिय लगती है। ३ व्यक्ति मे होनेवाली रस ग्रहण करने की शक्ति। रसिकता। ४ मधुरता।

सरसती†—स्त्री०=सरस्वती।

सरसना—अ० [सं० सरस] १ हरा होना। पनपना। २ उन्मत्त होना। ३ अधिक होना। बढना। ४ शोभित होना। सोहना। ५. रसपूर्ण होना। ६ बहुत अधिक कोमल या सरल भाव से युक्त होना। उदा०—सब देवनि सादर प्रनाम कर अति सुख सरसे।—रत्नाकर। ७. (आशय, कार्य आदि) पूरा होना। उदा०—कहि कबीर मन सरसी काज।—कबीर।

सर-सब्ज—वि० [फा०] [भाव० सर-सब्जी] १. हरा-भरा। जो सूखा या मुरझाया न हो। लहलहाता हुआ। जैसे—सर-सब्ज पेड। २ वनस्पतियो या हरियाली से युक्त। जैसे—सर-सब्ज मैदान।

सर-सर—पु० [अनु०] १ जमीन पर रेंगने का शब्द। विशेषत गोजर, साँप आदि जीवो के रेंगने से होनेवाला सर सर शब्द। २ वायु के चलने से होनेवाला सर सर शब्द।

क्रि० वि० १. सर-सर शब्द करते हुए। २ बहुत तेजी या फुरती से।

सरसराना—अ०[अनु० सर-सर]१ सर-सर की ध्वनि होना। जैसे—वायु का सरसराना, साँप का चलने मे सरसराना। २. जल्दी जल्दी काम करना।

स० सर-सर शब्द उत्पन्न करना।

सरसराहट—स्त्री० [हिं० सर-सर+आहट (प्रत्य०)] १ वायु आदि चलने या साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २ शरीर के किसी अग मे होनेवाली सुरसुराहट।

सरसरी—वि०[फा० सरासरी]१ जमकर या अच्छी तरह नही, बल्कि यो ही और जल्दी मे होनेवाला। जैसे—सरसरी नजर से देखना। २ चलते ढग से या मोटे तौर पर होनेवाला। (समरी) जैसे—सरसरी प्रक्रिया। (समरी प्रोसिडिंग); सरसरी व्यवहार दर्शन (समरी ट्रायल)।

सरसाई†—स्त्री० [हिं० सरसना+आई] सरसने की अवस्था या भाव। शोभा। सुहावनापन।

†स्त्री०=सरसता।

सरसाना—स० [हिं० सरसना का स०] सरसने मे प्रवृत्त करना। दे० 'सरसना'।

†अ०=सरसना।

सरसाम—पु०[फा०]सन्निपात या त्रिदोष नामक रोग।

सरसार—वि०=सरशार (मग्न)।

सरसिका—स्त्री० [सं०] १ छोटी सरसी। तलैया। २ बावली। ३. हिंगुपत्री।

सरसिज—वि० [सं० सरसि √ जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो ताल मे होता हो।

पु० कमल।

सरसिज-योनि—पु०[म० ब० स०] कमल से उत्पन्न, ब्रह्मा।

सरसिरुह—वि०, पु०=सरसिज।

सरसी—स्त्री०[सं०]१. छोटा सरोवर या जलाशय। २ बावली। ३ एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २७ मात्राएँ (१६ वी मात्रा पर यति) और अत मे गुरु और लघु होते है। इसे सुमदर भी कहते हैं। होली के दिनो मे गाया जानेवाला कबीर प्राय. इसी छद मे होता है।

†स्त्री०[हिं० सरस] वह जमीन जिसमे सरसता या नमी हो।

सरसीक—पु०[सं० सरसी√कै (शब्द करना)+क] सारस पक्षी।

सरसीरुह—पु०[सं०]१ कमल। २ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सरसुति†—स्त्री०=सरस्वती।

सरसेटना—स०[अनु०] किसी को दवाने के लिए खरी-खोटी सुनाना। फटकारना।

सरसों—स्त्री०[स० सर्षप]१. एक प्रसिद्ध फसल जिसकी खेती होती है। इसमे पीले-पीले रग के फूल और काले रग के छोटे छोटे दाने लगते है। **मुहा०—(किसी की) आँखों में सरसो फूलना**=अभिमान, प्रेम आदि के कारण सब जगह हरा-भरा दिखाई पडना।
२. उक्त पौधे के बीज जिन्हे पेर कर कडआ तेल निकाला जाता है।

सरसौहाँ†—वि०[हिं० सरसना +औहाँ (प्रत्य०)]१. सरस। २. मधुर। ३. प्रिय।

सरस्वती—स्त्री०[स०] [वि० सारस्वत]१ भारतीय पुराणो मे, विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी जिनका वाहन हस कहा गया है; और जिनके एक हाथ मे पुस्तक दिखाई जाती है। वाग्देवी। भारती। शारदा। २ विद्या। इल्म। ३. पजाव की एक प्राचीन नदी जिसका सूक्ष्म अश अव भी कुरुक्षेत्र के पास वर्तमान है। ४. हठयोग मे, सुषुम्ना नाडी। ५ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ६ उत्तरभारतीय सगीत मे, एक प्रकार की सकर रागिनी। ७ सोम लता। ८. ब्राह्मी बूटी। ९ मालकगनी। १० गौ। ११. एक प्रकार का छद या वृत्त।

सरस्वती-कंठाभरण—पु०[स०]१ ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। २. धार के परमार वशी राजा भोज के द्वारा स्थापित की हुई एक प्रसिद्ध प्राचीन पाठशाला।

सरस्वती-पूजा—स्त्री०[स०] १ सरस्वती की की जानेवाली पूजा। २ वसंत पचमी जिस दिन सरस्वती की पूजा की जाती है। ३. उक्त अवसर पर होनेवाला उत्सव।

सरस्वान् (स्वत्)—वि०[सं० सरस्वत-नुम्-दीर्घ, नलोप] [स्त्री० सरस्वती] १. जलाशय-सबधी। २. रसीला। ३. स्वादिष्ट। ४. सुन्दर। ५. भावुक।
पुं०१ समुद्र। २ नद। ३ भैसा।

सरहंग—पु०[फा०] [भाव० सरहगी]१ सेना का प्रधान अधिकारी और नायक। २ पैदल सिपाही। ३. पहलवान। मल्ल। ४. चोवदार। पहरेदार। ५ कोतवाल।
वि० वलवान्। शक्तिशाली।

सरह—पु०[सं० शलभ, प्रा० सरह] १ फतिगा। २. टिड्डी।

सरहज—स्त्री०=सलहज।

सरहटी—स्त्री०[सं० सर्पाक्षी] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुल कद।

सरहत†—पु०[देश०] खलिहान मे फैला हुआ अनाज वुहारने का झाडू।

सरहतना†—स० [देश०] साफ करने के लिए अनाज फटकना। पछोड़ना।

सरहय—पु०[स० शर या शल्य+हिं० हाथ] वरछी की तरह का एक हथियार जिससे वडी मछलियो का शिकार किया जाता है।

सरहद—स्त्री०[फा० सर+अ० हद] [वि० सरहदी]१ किसी देश, भू-खड या राज्य की सीमा। (दे० 'सीमा')२. ऐसी सीमा के आस-पास का प्रदेश।

सरहद-बंदी—स्त्री०[फा०] कार्य, क्षेत्र आदि की सरहद या सीमा निश्चित करने का काम।

सरहदी—वि०[फा० सरहद+ई (प्रत्य०)]१. सरहद-सबंधी। सीमा-सबधी। जैसे—सरहदी झगड़े। २. सरहद या सीमा प्रात का निवासी। जैसे—सरहदी गाधी।

सरहना†—स्त्री०[देश०] मछली के ऊपर का छिलका। चूई।

सरहर†—पु०=सरपत।

सरहरा—वि०[स० सरल+वड] १ सीधा ऊपर को गया हुआ। जिस से इधर-उधर शाखाएँ न निकली हो (पेड)। २ चिकना।

सरहरी—स्त्री०[स० शर]१. मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा जिसकी छड पतली, चिकनी और विना गाँठ की होती है। २ गडनी या सार्पाक्षी नाम की वनस्पति।

सराँग—स्त्री०[स० शलाका]१ लोहे का एक मोटा छड जिसपर पीटकर लोहार वरतन वनाते है। २. कोई ऐसी लकड़ी जिसकी सहायता से सीधी रेखाएँ खींची जाती हो। ३. किसी प्रकार का सीधा छड या पट्टी। ४. खमा।

सराँ दीप†—पु०=स्वर्णद्वीप।

सरा*—स्त्री० [स० शर] चिता।
स्त्री०[तातारी]१ किला। दुर्ग। २ महल। प्रासाद। जैसे—ख्वाजा सरा, ३. दे० 'सराय'।
*पु०=शर (वाण)।

सराई—स्त्री०[स० शलाका]१ सरकडे की पतली छडी। २ दे० 'सलाई'।
स्त्री०[सं० शराव=प्याला] मिट्टी का प्याला या दीया। सकोरा।
†स्त्री०[?] पाजामा।

सराक—पु० [स० शराक या श्रावक] विहार और वगाल मे रहनेवाली जुलाहो की एक जाति।

सराख†—स्त्री०=सलाख।

सराजामा†—पु०=सरजाम।

सराध*—पुं०=श्राद्ध।

सराना—स० [हिं० सरना या सारना का प्रे०] (काम) पूरा या सपन्न करना।

सरापना*—स०[स० शाप, हिं० सराप+ना (प्रत्य०)]१ शाप देना। वद्दुआ देना। अनिष्ट मनाना। कोसना। २ बुरा-भला कहना और गालियाँ देना।

सरापा—पु०[फा० सर=सिर+पा=पैर] किसी के सिर से पैर तक के सव अगो का काव्यात्मक वर्णन। नख-सिख।
अव्य०१ सिर से पैरो तक। २ ऊपर से नीचे तक। ३ आदि से अत तक।

सराफ—पु०[अ० सर्राफ़]१. सोने-चाँदी का व्यापारी। २ वह दूकानदार जो वडे सिक्को को कुछ दलाली लेकर छोटे सिक्को मे वदल देता हो। ३. प्रामाणिक और सम्पन्न व्यापारी। ४ अच्छा पारखी।

सराफा—पु०[अ० सर्राफ़]१ सराफ का पेशा। २ वह वाजार जिसमे अनेक सराफो की दूकान हो।

सराफी—स्त्री०[हिं० सराफ+ई (प्रत्य०)]१ सराफ का अर्थात् चाँदी-सोने या सिक्कों आदि के परिवर्तन का रोजगार। २. महाजनी लिपि। मुडा।

सराव—पुं०[अ०]१ मृगतृष्णा। २ धोखा देनेवाली चीज या बात। ३ धोखेबाजी।
†स्त्री०=शराव।

सराबोर—वि०=शराबोर।

सराय—स्त्री०[तातारी सरा=दुर्ग या प्रासाद।]१ रहने का स्थान। २ मध्ययुग मे, यात्रियो, सौदागरो आदि के ठहरने का स्थान जहाँ उनके खाने-पीने तथा मनोरजन आदि की व्यवस्था भी होती थी।
पद—सराय का कुत्ता=बहुत ही तुच्छ या नीच और स्वार्थी व्यक्ति।

सरायत—स्त्री०[अ०] प्रवेश करना। घुसना। पैठना।

सरार*—पु० [देश०] घोडा-वेल नाम की लता जिसकी जड़ विलाई कद कहलाती है।

सराव*—पु० [स० शराव]१ मद्यपात्र। शराव पीने का प्याला। २ कटोरा। ३ कसोरा। दीया। ४ एक प्रकार की पुरानी तौल जो ६४ तोले की होती थी।
†पु०[?] एक प्रकार का जगली, डरपोक और सीधा जानवर जो बकरी और हिरन दोनो से कुछ-कुछ मिलता तथा हिमालय के पहाडो मे पाया जाता है।

सरावग†—पु०=श्रावक (जैन)।

सरावगी—पु०[स० श्रावक] श्रावक धर्मावलबी। जैन।

सरावना—पु०[स० सरण, हिं० सरना] पाटा। हेगा।

सरास†—पु०[?] भूसी।

सरासन†—पु०=शरासन (धनुष)।

सरासर—अव्य०[फा०] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक। यहाँ से वहाँ तक। २ एक सिरे से। पूर्णतया। बिलकुल। जैसे—सरासर झूठ बोलना। ३ प्रत्यक्ष। साक्षात्। जैसे—यह तो सरासर जबरदस्ती है।

सरासरी—स्त्री०[फा०]१ सरासर होने की अवस्था या भाव। २ किसी काम या बात मे की जानेवाली ऐसी तीव्रता और शीघ्रता जिसमे ब्योरे की बातो पर विशेष ध्यान न दिया जाय।
अव्य० १. जल्दी मे। २ मोटे हिसाब से। अनुमानत।

सराह*—स्त्री०=सराहना।

सराहत—स्त्री०[अ०] किसी बात को स्पष्ट करने के लिए की जानेवाली उसकी व्याख्या। स्पष्टीकरण।

सराहना—स०[स० श्लाघन] तारीफ करना। बडाई करना। प्रशसा करना।
स्त्री० तारीफ। प्रशसा।

सराहनीय—वि० [बगला से गृहीत] १ प्रशसा के योग्य। तारीफ के लायक। श्लाघनीय। प्रशसनीय। २ अच्छा। बढिया। (असिद्ध रूप)

सरि—स्त्री० [स०√ सृ (गत्यादि)+इनि] झरना। निर्झर।
†स्त्री०=सरिता (नदी)।
स्त्री०[स० सृक्] लडी। शृखला। उदा०—मोतिन की सरि सिर कठमाल हार।—केशव।
स्त्री०=सरवर (बराबरी)।

सरिका—स्त्री० [सं० सरिक-टाप्] १ मुक्ता। मोती। २ मोतियो की माला या लडी। ३. जवाहर। रत्न। ४ छोटा ताल या तालाब। ५ एक प्राचीन तीर्थ। ६ हिंगुपत्री।

सरिगम†—पुं०=सरगम।

सरित्—स्त्री० [स०√सृ (गत्यादि)+इति] नदी।

सरित—स्त्री०=सरिता (नदी)।

सरितराज—पु०=समुद्र।

सरिता—स्त्री०[स० सरित्=बहा हुआ]१ धारा या प्रवाह। २. नदी।

सरिताल—वि०[स० सरिता+ल (प्रत्य०)]सरिताओ या नदियो से युक्त (प्रदेश)।

सरित्त—स्त्री०=सरिता।

सरित्पति—पु०[स० ष० त०] समुद्र।

सरित्वान्(त्वत्)—पु०[स० सरित+मतुप्+म-व नुम्] समुद्र।

सरित्सुत—पु०[स० ष० त०] (गगा के पुत्र) भीष्म।

सरिद्—स्त्री०[स०] 'सरित्' का वह रूप जो उसे समस्त पद के आरभ मे लगाने पर प्राप्त जाता होहै।

सरिदिही—स्त्री० [फा० सर=सरदार+देह=गाँव] वह नजर या भेंट जो मध्य युग मे जमीदार या उसका कारिदा किसानो से हर फसल पर लेता था।

सरिमा (मन्)—पु० [स० √ सृ (गत्यादि)+इमनिच्] वायु।
स्त्री० गति। चाल।

सरियाँ—स्त्री०[?] एक प्रकार का गीत जो बुदेलखड मे बच्चा होने के समय गाया जाता है।

सरिया—पु० [स० शर] १ सरकडे का छड जो सुनहले या रुपहले तार बनाने के काम आता है। सरई। २ पतली छड़ी। ३ लोहे का पतला लबा छड जो स्लैब, लिंटल आदि के काम आता है।
†स्त्री०[?] ऊँची जमीन।
†पु०[?] सुनारो की परिभाषा मे पैसा या ऐसा ही और कोई सिक्का।

सरियाना—स०[?]१ तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। बिखरी हुई चीजें ढग से समेटना। जैसे—लकडी सरियाना, कागज सरियाना। २. पीटना या मारना। (व्यग्य) ३ कपडो की तह लगाना। जैसे—कमीज सरियाना।

सरिवन—पु०[स० शालपर्ण] शाल पर्ण नाम का पौधा। त्रिपर्णी। अशुमती।

सरिवर, सरिवरि*—स्त्री०=सरवर (बराबरी)।
†पु०=सरोवर।

सरिश्त—स्त्री०[स० सृष्टि से फा०]१ सृष्टि। २ बनावट। ३ प्रकृति। स्वभाव।

सरिश्ता—पु० [फा० सरिश्त] १ अदालत। कचहरी। २ शासनिक कार्यालय का कोई विभाग। ३ उक्त विभाग का दफ्तर।

सरिश्तेदार—पु०[फा० सरिश्त दार] १ किसी विभाग या सरिश्ते का प्रधान अधिकारी। २ अदालतो मे मुकदमो की नत्थियाँ आदि रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तेदारी—स्त्री०[फा०]१ सरिश्तेदार होने का काम, पद या भाव।

सरिस*—वि०[स० सदृश, प्रा० सरिस] सदृश। समान। तुल्य।

*पु०=सिरस (वृक्ष)।
सरी—स्त्री० [सं० सरि—ङीप्] १ छोटा सरोवर। २ सोता। ३. झरना। नदी।
सरीक†—वि०[भाव० सरीकता]=शरीक।
सरीकत—स्त्री०[फा० शिरकत]१ शिरकत। २ साझा।
सरीकता*—स्त्री०[अ० शरीक+हिं० ता (प्रत्य०)]१. शिरकत। २ साझा। ३ हिस्सा।
सरीखा†—वि०=सरीखा।
सरीखा—वि०[सं० सदृश, प्रा० सरिस] [स्त्री० सरीखी] अवस्था, गुण, रूप आदि मे किसी के तुल्य। जैसा। जैसे—तुम सरीखा।
सरीर*—पु०=शरीर (देह)।
वि०=शरीर (शरारती)।
सरीसृप—पु०[सं०]१. वे जन्तु जो जमीन पर रेंगते हुए चलते है। जैसे—कनखजूरा, छिपकली, मगर, साँप, आदि। २ विष्णु का एक नाम।
सरीसृप विज्ञान—पु० [सं०] जीव-विज्ञान की वह शाखा जिसमे सरीसृपो के गुणो, विभागो, स्वभावो आदि का विवेचन होता है। (हर्पेटॉलोजी)
सरीह—वि०[अ०] १ प्रकट। खुला हुआ। २ स्पष्ट।
सरु—वि०[सं० √सृ (गत्यादि)+उन]१ पतला। २ छोटा।
पु०१ तीर। बाण। २ तलवार की मूठ।
सरुज—वि०[सं०] रोग-युक्त। रोगी।
सरुष—वि०[सं० अव्य० स०] रोष या क्रोध युक्त। कुपित।
अव्य० क्रोधपूर्वक। रोषपूर्वक।
सरुहना*—अ० १ =सुधरना। २ =सुलझना।
सरुहाना—स०[सं० सरुज?]१ चगा करना। २ सुधारना। ३ सुलझाना।
सरूप—वि०[सं० ब० स०] [भाव० सरूपता]१ जिसका वैसा ही रूप हो। किसी के रूप जैसा। समान। सदृश। २ सुन्दर रूपवाला। ३ आकार वाला। रूप युक्त।
†अव्य० रूप मे। तौर पर।
सरूपता—स्त्री०[सं०]१ सरूप होने की अवस्था, गुण या भाव। वह स्थिति जिसमे एक का रूप दूसरे से मिलता हो। २ ब्रह्मरूप हो जाना।
सरूपत्व—पु०=सरूपता।
सरूपा—स्त्री०[सं० सरूप—टाप्] भूत की स्त्री जो असख्य रुद्रों की माता कही गई है।
सरूपी—वि० [सं० सरूप+इनि] सरूप। (दे०)
सरूर—पु०[फा० सुरूर] १ आनन्द। खुशी। प्रसन्नता। २ किसी मादक पदार्थ का हलका और सुखद नशा। ३ खुमार।
सरूव†—पु०=स्वरूप।
सरेख—वि०[सं०श्रेष्ठ][स्त्री०सरेखी]१ अवस्था मे बडा और समझदार। सयाना। २ चतुर। चालाक।
सरेखना—स०=सहेजना।
सरेखा—पु०[हिं० सरेखना] सरेखने की क्रिया या भाव।
†स्त्री०=श्लेषा (नक्षत्र)।
सरे-दस्त—अव्य०[फा०]१ इस समय। अभी। २ प्रस्तुत समय मे। फिलहाल।
सरे-नौ—अव्य०[फा०]१ प्रारभ मे। शुरू से। २ नये सिरे से।
सरेबाजार—अव्य०[फा०] खुले बाजार मे और जनता के सामने।
सरेला—पु०[सं० शृखला]१ पाल मे लगी हुई रस्सी जिसे ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है। २ वह रस्सी जिसमे मछली फँसाने का काँटा या बसी बँधी रहती है। शिस्त।
सरेश†—पु०=सरेस।
सरे-शाम—अव्य०[फा०] सन्ध्या होते ही या उससे कुछ पहले ही।
सरेष—वि०=सरेख (चतुर)।
सरेस—पु०[फा० सरेश] एक प्रसिद्ध लसदार पदार्थ जो ऊँट, गाय, भैंस आदि के चमडे और हड्डियों या मछली के पोटे को पकाकर निकालते है। तथा जो मुख्य रूप से लकडियाँ आदि जोडने के काम आता है। सहरेश। सरेश।
वि० लसीला और चिपकनेवाला।
सरेस-माही—पुं०[फा० सरेश-माही] मछली के पोटे को उबालकर बनाया हुआ सरेस।
सरोट*—स्त्री०=सिलवट (कपडो की)।
सरो—पु०[फा० सर्व] एक प्रकार का सीधा छतनार पेड जो बगीचो मे शोभा के लिए लगाया जाता है। बनझाऊ।
विशेष—उर्दू-फारसी कविताओं मे इसका प्रयोग मनुष्य की ऊँचाई या कद की सुन्दरता सूचित करने के लिए उपमा के रूप मे होता है।
सरोई—पु०[हिं० सरा?] एक प्रकार का बडा पेड।
सरोकार—पु० [फा०] १ परस्पर व्यवहार का सबध। २ लगाव। वास्ता। सम्बन्ध।
सरोकारी—वि०[फा०] १ सरोकार रखनेवाला। २ जिससे सरोकार या सबध हो।
सरोज—पु० [सं०] [स्त्री० अल्पा० सरोजिनी]१ कमल। २ एक प्रकार का छद या वृत्त।
वि० सर अर्थात् जलाशय से उत्पन्न।
सरोजना*—स०[?] प्राप्त करना। पाना।
सरोजमुख—वि०[सं०] [स्त्री० सरोजमुखी] कमल के समान सुन्दर मुखवाला।
सरोजिनी—स्त्री०[सं०]१ कमल से भरा हुआ ताल। २ जलाशय मे खिले हुए कमलो का समूह। कमलवन। ३ कमल।
सरोजी (जिन्)—वि० [सं० सरोज+इनि—दीर्घ, नलोप]१ कमल सबधी। कमल का। २ (स्थान) जहाँ बहुत से कमल हो। ३ कमलो से युक्त।
पु० १ ब्रह्मा। २ गौतम बुद्ध का एक नाम।
सरोट†—स्त्री०=सिलवट।
सरोत†—पु०=श्रोत (कान)।
सरोतर†—क्रि० वि०[सं० सर्वत्र] आदि से अत तक।
वि०१ आदि से अत तक बिलकुल ठीक या पूरा। २. सागोपाग।
सरोता—पु०१.=श्रोता। २ =सरौता।
सरोत्सव—पु० [सं० ब० स०]१. बगला पक्षी। बक। २. सारस।

सरोद—पु०[स० स्वरोदय से फा०]१ वीणा की तरह का एक प्रकार का बाजा। २ नाच-गाना।
सरोधा—पु०=स्वरोदय (विद्या)।
सरोरुह—पु० [स० सरस्√रुह् (उत्पन्न होना)+क]कमल।
सरोला—पु०[देश०] एक प्रकार की मिठाई।
सरोवर—पु० [स० सरस्√वृ (वरण करना)+अप्]१ तालाब। २ बडा ताल। झील।
स-रोष—वि०[स० अव्य० स०] रोष या क्रोध से युक्त। कुपित।
क्रि० वि० रोष या क्रोधपूर्वक।
सरोसामान—पु०[फा० सर+व+सामान] सामग्री। असबाब।
सरोही†—स्त्री०=सिरोही।
सरौ—पु०[स० शराव]१ कटोरी। प्याली। २ ढकना। ढक्कन।
पु०=सरो (वृक्ष)।
सरौता—पु०[स० सार=लोहा+यत्र, प्रा० सारवत्त] [स्त्री० अल्पा० सरौती]१ कैंची की तरह का एक प्रकार का उपकरण जो सुपारी काटने के काम आता है। २ काठ मे जडा हुआ एक प्रकार का उपकरण जो कच्चे आम आदि काटने के काम आता है।
सर्क—पु०[स० √सृ (गत्यादि) क, इत्वाभाव]१ मन। चित्त। २ वायु। हवा। ३ एक प्रजापति का नाम।
सर्कस—पु० [अ०]१ वह स्थान जहाँ जानवरो का खेल दिखाया जाता है। २ वह बडी मडली जिसके लोग अपने तथा पशुओ के अनोखे तथा साहसपूर्ण खेल दिखलाते है। ३ उक्त मडली के खेलों का प्रदर्शन। जैसे—हम सरकस देखने जा रहे है।'
सर्का—पु०[अ० सर्क] चोरी।
†पु०=सरका।
सर्कार†—स्त्री०=सरकार।
सर्कारी†—वि०=सरकारी।
सर्किल—पु०[अ०]१ वृत्त। २ घेरा। ३ मडल। ४ किसी प्रदेश का छोटा खड या विभाग।
सर्कुलर—पु० [अ०] गश्ती चिट्ठी। परिपत्र।
सर्ग—पु०[स०]१ चलना या आगे बढना। गमन। २. गति। चाल। ३ प्रवाह। बहाव। ४ अस्त्र आदि चलाना, छोडना या फेंकना। ५ चलाया, छोडा या फेंका हुआ अस्त्र। ६ उत्पत्ति स्थान। उद्गम। ७ जगत्। ससार। ८ जीव। प्राणी। ९ औलाद। सतान। १० प्रकृति। स्वभाव। ११ झुकाव। प्रवृत्ति। रुझान। १२ चेष्टा। प्रयत्न। १३ दृढ निश्चय या विचार। सकल्प। १४ बेहोशी। मूर्छा। १५ किसी ग्रन्थ विशेषत काव्य-ग्रथ का अध्याय या प्रकरण। १६ शिव का एक नाम।
सर्गक—वि०[स० सर्ग+कन्] जन्म देनेवाला। उत्पादक।
सर्ग-पताली—वि०=सरग-पताली।
सर्ग-पुट—पु०[स० ब० स०] सगीत मे, शुद्ध राग का एक भेद।
सर्गबंध—वि० [स० ब० स०] ग्रन्थ या काव्य जो कई अध्यायो मे विभक्त हो। जैसे—सर्गबध काव्य।
सर्ग-लेख—पु०[स०]वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे ब्रह्माण्ड या विश्व की रचना, विस्तार, स्वरूप आदि का विवेचन हो। (कास्मोग्राफी)
विशेष—आधुनिक विचारको के मत से ज्योतिष, भूगोल, भौमिकी आदि इसी के अग या विभाग है।
सर्गुन†—वि०=सगुण।
सर्जंट—पु० [अ० सर्जेन्ट] सिपाहियो का हवलदार। जमादार।
सर्ज—पु०[स०] १ बडी जाति का शाल वृक्ष। अजकर्ण वृक्ष। २ सलई का पेड। ३ धूना। राल। ४ विजय साल नामक वृक्ष।
स्त्री०[अ०] एक प्रकार का बढिया ऊनी कपडा। सरज।
सर्जक—वि० [स०]१ सर्जन करने या चलानेवाला। २ सृष्टि या रचना करनेवाला। स्रष्टा।
पु०१. बडी जाति का शाल वृक्ष। २. विजयसाल नामक वृक्ष। ३. सलई का पेड। ४ मठा डालकर फाडा हुआ दूध।
सर्जन—पु०[स० √सृज् (त्यागना)+ल्युट—अन] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १ छोडना। त्याग करना। फेंकना। २ निकालना। ३. उत्पन्न करना या जन्म देना। ४ सेना का पिछला भाग। ५ सरल का गोंद।
पु०[अ०] पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली के अनुसार चीर-फाड आदि के द्वारा चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। शल्य-चिकित्सक।
सर्जनी—स्त्री०[स० सर्जन-ङीप्] गुदा की वलियो मे से बीचवाली वली जिसके द्वारा पेट का मल और वायु बाहर निकलती है।
सर्जमणि—पु०[स० ष० त०]१. सेमल का गोंद। मोचरस। २. धूना। राल।
सर्जि—स्त्री० =सज्जी।
सर्जिका—स्त्री०[स०] सज्जीखार।
सर्जिक्षार—पु०[स० प० त०] सज्जीखार।
सर्जित—भू० कृ०[स०] जिसका सर्जन हुआ हो। सृष्ट। २ बनाया हुआ। रचित।
सर्जु—पु० स०√सृज् (लगना)+उन्] वणिक। व्यापारी।
स्त्री० बिजली। विद्युत्।
सर्जू—पु० [स० √ सृज् (त्यागना)+ऊ] १ वणिक। व्यापारी। २. माला। हार।
स्त्री०=सरयू।
स्त्री०=सर्जु (बिजली)।
सर्जेंट—पु०[अ०] पुलिस, सेना आदि के सिपाहियो का जमादार। हवलदार।
सर्टिफिकेट—पु०[अ०] प्रमाण-पत्र ()। सनद।
सर्त†—स्त्री०=शर्त्त।
सर्द—वि०[फा०]१ इतना अधिक ठढा कि कँपकँपी होने लगे। जैसे—सर्द हवा।
मुहा०—सर्द हो जाना=मर जाना।
२. ढीला। शिथिल। ३. धीमा। मद। ४ काहिल। सुस्त। ५. आवेग, उत्साह, प्रखरता आदि से रहित या हीन।
क्रि० प्र०—पडना।
६ नपुसक। नामर्द। ७ स्वाद-रहित। फीका।
सर्दई—वि०, पु०=सरदई।
सर्दखाना—पु०[फा० सर्दखान] १ वह बडा और ठढा कमरा जो

मध्ययुग मे कस्बों और छोटे छोटे नगरो मे घनी छाँह वाले वृक्षों के नीचे इस उद्देश्य से बनाया जाता था कि गरमी के दिनों मे लोग दोपहर के समय वहाँ आकर ठढक मे समय वितावें। २. आज-कल विशिष्ट प्रकार से बनाई हुई वह इमारत जिसमे यात्रिक साधनों से ठढक की व्यवस्था रहती है ; और इसी लिए जहाँ तरकारियाँ, फल आदि सड़ने से बचाने के लिए सुरक्षित रूप मे रखे जाते है। ठढा गोदाम। शीतागार। (कोल्ड स्टोरेज)

सर्द-बाई—स्त्री०[फा० सर्द+हिं० बाई] हाथी की एक बीमारी जिसमे उसके पैर जकड जाते हैं।

सर्द-बाजारी—स्त्री०[फा०+हिं०] बाजार की वह अवस्था जब माल तो यथेष्ट होता है परन्तु उसके ग्राहक नही होते।

सर्दमिज़ाज—वि०[फा०+अ०] [भाव० सर्द-मिजाजी] १ (व्यक्ति) जिसमे आवेग, उमग, प्रखरता आदि बातें सहसा न आती हो। उत्साह-हीन। मुर्दादिल। २ जिसमे शील, सकोच, आदि का अभाव हो। रूखे स्वभाववाला।

सर्दा†—पु०=सरदा (फल)।

सर्दावा†—पु०=सरदावा।

सर्दार†—पु०=सरदार।

सर्दी†—स्त्री०=सरदी।

सर्धा†— स्त्री०=श्रद्धा।

†पु०=सरदा (फल)।

सर्प—पु०[स० √ सृप् (जाना)+अच्—घञ् वा] [स्त्री० सर्पिणी] १. रेंगते हुए चलने की क्रिया या भाव। २ सरीसृप वर्ग का प्रसिद्ध जन्तु; साँप। ३. पुराणानुसार ग्यारह रुद्रों मे से एक। ४ एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। ५ नागकेसर। ६ ज्योतिष मे, एक दुष्ट योग।

सर्पकाल—वि०[स० ष० त०] जो सर्प का काल हो।

पु० गरुड।

सर्पगंधा—स्त्री०[स०]१. गध नाकुली। २ नकुलकद। ३. नाग-दमन।

सर्पगति—वि०[स० ष० त०]१. साँप की तरह टेढी चाल चलनेवाला। २. कुटिल प्रकृति का।

स्त्री० टेढी चाल।

सर्पच्छत्र—पु०[स०] छत्राक। खुमी। कुकुरमुत्ता।

सर्पण—पु०[स० √सृप् (धीरे चलना)+ल्युट्—अन] [वि० सर्पणीय, भू० कृ० सर्पित] १ पेट के बल खिसकना। रेंगना। २. धीरे-धीरे चलना। ३. छोडे हुए तीर का जमीन से कुछ ही ऊपर रहकर चलना। ४. टेढा चलना।

सर्प-तृण—पुं० [सं०] नकुलकद।

सर्पदंती—स्त्री० [सं०] नागदती। हाथी शुंडी।

सर्प-दंष्ट्र—पु०[स०]१. साँप का दात। २. विशेषत. साँप का विष दात। ३ साँप के विष-दाँत से लगनेवाला घाव। ४. जमाल गोटा। ५. दती।

सर्प-दंष्ट्री—स्त्री०[स० सर्पदष्ट्र—ङीप्] १. वृश्चिकाली। २. दती।

सर्प-नेत्रा—स्त्री०[स०]१. सर्पाक्षी। २ गध-नाकुली।

सर्पपति—पु०[स०] शेषनाग।

सर्पपुष्पी—स्त्री०[स०]१. नागदती। २. बाँझ ककोडा।

सर्प-फण—पु०[स०] अफीम। अहिफेन।

सर्प-बंध—पु०[सं०] १. कुटिल या पेचीली गति, रेखा आदि। २. कपटपूर्ण-युक्ति।

सर्प-बेलि—स्त्री०[स०] नागवल्ली। पान।

सर्प-भक्षक—पु०[स०] १. नकुलकद। नाकुलीकद। २. मोर। मयूर।

सर्पभक्, सर्पभुज्—पु०[स०] सर्प-भक्षक।

सर्प-मीन—पु०[स०] एक प्रकार की समुद्री मछली जो साँप की तरह लबी होती है और जिनके शरीर मे डैने या पंख नही होते। (ईल)

सर्प-यज्ञ—पु० [सं०] जनमेजय का वह प्रसिद्ध यज्ञ जो उन्होंने नागो अर्थात् सर्पों का नाश करने के लिए किया था। नाग-यज्ञ।

सर्पयाग—पु०[स०] सर्पयज्ञ।

सर्पराज—पु०[स०]१. साँपो के राजा, शेषनाग। २. वासुकि।

सर्प-लता—स्त्री०[स०] नागवल्ली। पान।

सर्प-वल्ली—स्त्री० [सं०] नागवल्ली।

सर्प-विद्या—स्त्री०[स०]१. वह विद्या जिसमे, सर्पों उनकी जातियों, उनके स्वभावों आदि का विवेचन होता है। २ साँपों के पकडने और उनको वश मे करने की विद्या।

सर्प-व्यूह—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसमे सैनिकों की स्थापना सर्प के आकार की होती थी।

सर्प-शीर्ष—पु०[स०]१. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम मे आती थी। २. तांत्रिक पूजन मे, पजे और हाथ की एक मुद्रा। ३. एक प्रकार की मछली जिसका सिर साँप की तरह होता है। (ओफिसेफैलस)

सर्प-सत्र—पु०[स० मध्यम० स०] सर्प-यज्ञ।

सर्प-सत्री—पु०[स० सर्पसत्र+इनि] सर्प-सत्र अर्थात् नाग-यज्ञ रचनेवाले राजा जनमेजय।

सर्पहा (हन्)—वि० [स०] सर्प को मारनेवाला।

पु० नेवला।

स्त्री० सर्पाक्षी। सरहँटी।

सर्पांगी—स्त्री०[स० ब० स०]१. सरहँटी। २. नकुलकद। ३. सिंहली पीपल।

सर्पा—स्त्री०[स० सर्प-टाप्]१. साँपिन। सर्पिणी। २ फणि-लता।

सर्पाक्ष—पु०[सं० ब० स०]१ रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २. सर्पाक्षी। सरहँटी।

सर्पाक्षी—स्त्री०[सं० सर्पाक्ष-ङीष्]१ सरहँटी। गध-नाकुली। ४ सफेद अपराजिता। ५ शखिनी।

सर्पादनी—स्त्री०[सं० ब० स०] १ गध नाकुली। गधरास्ना। रास्ना। २. नकुलकन्द।

सर्पारि—पु०[स० ष० त०]१. गरुड। २. नेवला। ३. मोर।

सर्पावास—पु० [स० ष० त०] १. साँप के रहने का स्थान। २ चन्दन का पेड।

सर्पाशन—वि०[सं० ब० स०] सर्प जिसका भोजन हो।

पु० १. गरुड़। २. मोर।

सर्पास्य—वि०[स० ब० स०] साँप के समान मुखवाला।

सर्पास्या—स्त्री० [स० सर्पास्य—टाप्] पुराणानुसार एक योगिनी।

सर्पि--पुं० [सं० √ सृप् (इत्यादि)+इति] घृत। घी।
सर्पिका—स्त्री० [सं० सृप्+कन्—टाप्—इत्व] १. छोटा साँप। २. एक प्राचीन नदी।
सर्पिणी—स्त्री० [सं० √सृप् (धीरे धीरे चलना)+णिनि—ङीप्] १. साँप की मादा। साँपिन। २. भुजगी नाम की लता। ३. रहस्य सम्प्रदाय मे, माया की एक सज्ञा।
सर्पित—भू० कृ० [सं० सर्प+इतच्] १ सर्प के रूप मे आया या लाया हुआ। २. साँप की तरह टेढा-मेढा चलता या रेंगता हुआ। उदा०—सुख से सर्पित मुखर स्रोत नित प्रीति स्रवित पिक कूजन।—पंत।
पु० साँप के काटने से शरीर मे होनेवाला क्षत या घाव। सर्प-दश।
सर्पिल—वि० [सं०] [भाव० सर्पिलता] जो साँप की तरह टेढा-मेढा होता हुआ आगे बढता हो। (सर्पेन्टाइन)
सर्पी (पिन्)—वि० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] १ रेंगनेवाला। २ धीरे धीरे चलनेवाला।
†पु०=सर्पि।
सर्पेष्ट—पु० [सं० ष० त०] सर्प का इष्ट अर्थात् चदन का वृक्ष।
सर्पेश्वर—पु० [सं० ष० त०] सर्पों के स्वामी, वासुकि।
सर्पोन्माद—पु० [सं०] उन्माद (रोग) का एक भेद जिसमे मनुष्य साँप की तरह फुफकारने लगता है। (वैद्यक)
सर्फ—वि० [अ० सर्फ] व्यय किया हुआ। खर्च किया हुआ। जैसे—इस काम मे सौ रुपए सर्फ हो गये।
पु० शब्द-शास्त्र। व्याकरण।
सर्फा—पु० [अ० सर्फः] १. खर्च। व्यय। २ किफायत। मित-व्यय। ३. वह अवस्था जिसमे मनुष्य आवश्यकताओ की पूर्ति नही करता बल्कि धन जोडता चलता है।
सर्बरी—स्त्री०=शर्वरी (रात)।
सर्बस†—वि०=सर्वस्व।
सर्म†—पु०=शर्म (आनन्द)।
स्त्री०=शर्म (लज्जा)।
सर्रक—स्त्री० [हिं० सर्राना] सर्राते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव।
सर्रा—पु० [अनु० सरसर] लोहे या लकडी का वह छड जिस पर गराडी घूमती है। धुरी। धुरा।
सर्राटा—पु० [अनु० सरसर] १ हवा के तेज चलने से होनेवाला शब्द। २ किसी के तेज चलने से होनेवाला सर-सर शब्द।
मुहा०—सर्राटे भरना=तेजी से इधर-उधर आना-जाना।
सर्राना—अ० [अनु०] सरसर करते हुए आगे बढना।
सर्राफ—पु० दे० 'सराफ'।
सर्राफा—पु०=सराफा।
सर्राफी—स्त्री०=सराफी।
सर्वंकष—वि० [सं० सर्व√ कष् (हिंसा करना)+खच्-नुम्] १ सबको पीड़ित करनेवाला। २. सब से कुछ न कुछ ऐंठकर या छीन-झपटकर ले लेनेवाला।
पु० १. दुष्ट व्यक्ति। २. पाप।
सर्व—वि० [सं०] आदि से अन्त तक। सब। समस्त। सारा।
पु० १. शिव। २. विष्णु। ३. पारा। ४. रसौत। ५. शिलाजीत।
पु०=सरो (पेड)।
सर्वक—वि० [सं० सर्व+कन्] सब। समस्त। सारा।
सर्वकर्ता—पुं० [सं० ष० त० सर्वकर्तृ] ब्रह्मा।
सर्व-काम—वि० [सं०] १ सब प्रकार की कामनाएँ रखनेवाला। २. सब प्रकार की कामनाएँ पूरी करनेवाला।
पु० १. शिव। २ एक अर्हत् या बुद्ध का नाम।
सर्व-कामद—वि० [सं०] [स्त्री० सर्व-कामदा] सभी प्रकार की कामना पूरी करनेवाला।
पु० शिव।
सर्व-काल—अव्य० [सं०] हर समय। सदा।
सर्व-केसर—पु० [सं०] बकुल वृक्ष या पुष्प। मौलसिरी।
सर्व-क्षमा—स्त्री० [सं०] प्रधान शासक द्वारा बदियो विशेषत राजनीतिक बदियो को सामूहिक रूप से किया जानेवाला क्षमा-दान। (एमनेस्टी)
सर्व-क्षार—पुं० [सं०] १ सब कुछ क्षार अर्थात् नष्ट करना। २. युद्ध मे, हारती हुई सेना का पीछे हटते समय फसलो, पुलो आदि को इस उद्देश्य से नष्ट करना कि शत्रु उससे लाभ न उठा सकें। (स्कार्च्ड अर्थ)
सर्व-गंध—पु० [सं०] १ दालचीनी। २ इलायची। ३. केसर। ४ तेजपत्ता। ५. शीतलचीनी। ६. लौंग। ७ अगर। अगरु। ८ शिला रस। ९ नाग-केसर।
सर्वग—वि० [सं० सर्व√ गम् (जाना)+ड] [स्त्री० सर्वगा] जिसकी गति सभी ओर या सब जगह हो।
पु० १ ब्रह्मा। २ जीवात्मा। ३ शिव। ४ जल। पानी।
सर्वगत—वि० [सं०] १ जो सब मे व्याप्त हो। सर्वव्यापक। २ जो किसी जाति, वर्ग या समष्टि के सभी अगो, सदस्यो आदि के सामान्य रूप से पाया जाता हो।
पु० प्राचीन काल मे, ऐसा राजकर्मचारी जिसे सभी जगहो मे आने-जाने का पूर्ण अधिकार हो।
सर्व-गति—वि० [सं०] १ सब को गति प्रदान करनेवाला। २ जो सब को गति (आश्रय या शरण) देता हो। जैसे—सर्व-गति परमात्मा।
सर्व-गामी—वि०=सर्वग।
सर्व-ग्रास—पु० [सं०] १ चन्द्र या सूर्य के ग्रहण का वह प्रकार या स्थिति जिसमे उसका मडल पूर्ण रूप से छिप जाता है। पूर्ण ग्रहण। खग्रास। २ किसी का सब कुछ लेकर खा या पचा जाना।
सर्वग्रासी (सिन्)—वि० [सं०] १ सब कुछ ग्रस या अपने वश मे कर लेनेवाला। २ किसी का सर्वस्व हर लेनेवाला।
सर्व-चक्रा—स्त्री० [सं०] बौद्ध तान्त्रिको की एक देवी।
सर्व-चारी—वि० [सं० सर्वचारिन्] [स्त्री० सर्वचारिणी] १ सब जगह घूमने-फिरनेवाला। २ सब मे रहने या सचार करनेवाला। सर्व-व्यापक।
पु० शिव का एक नाम।
सर्व-जन—वि० [सं०] १. सब लोगो से सबध रखनेवाला। सार्वजनिक। सार्विक। २ सभी स्थानो मे प्राय समान रूप से पाया जानेवाला। सार्वदेशिक।

सर्व-जनीन—वि०[स०]१ जिसका सम्बन्ध जाति, राष्ट्र या समाज से हो। 'व्यक्तिगत' का विपर्याय। जैसे—सर्वजनीन आज्ञा। २. जिसके उपभोग पर किसी को मनाही न हो। जैसे—सर्वजनीन चित्र।

सर्वजया—स्त्री०[स०]१ सवजय नाम का पौधा जो बगीचो मे फूलो के लिए लगाया जाता है। देवकली। ३ मार्गशीर्ष महीने मे होनेवाला स्त्रियो का एक प्राचीन पर्व।

सर्वजित्—वि०[स०]१. सब को जीतनेवाला। २ जो सब से बढ़-चढ कर हो। सर्व-श्रेष्ठ। उत्तम।

पु० १ काल या मृत्यु जो सबको जीतकर अपने अधीन कर लेती है। २ एक प्रकार का एकाह यज्ञ। ३ २१वां सवत्सर'।

सर्व-जीवी (विन्)—वि० [स०] जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह तीनो जीवित हो।

सर्वज्ञ—वि०[स०] [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे सारी बातो या विषयो का ज्ञान हो।

पु०१ ईश्वर। २ देवता। ३ गौतम बुद्ध। ४ अर्हत्। ५. शिव।

सर्वज्ञता—स्त्री०[स० सर्वज्ञ+तल्—टाप्] सर्वज्ञ होने की अवस्था, गुण या भाव।

सर्वज्ञत्व—पु०[स० सर्वज्ञ+त्व]=सर्वज्ञता।

सर्वज्ञानी—वि०[स०] सब बातो का ज्ञान रखनेवाला। सर्वज्ञ।

सर्व-तंत्र—पु०[स०]१ सभी प्रकार के शास्त्रीय सिद्धान्त। २ व्यक्ति जिसने सब शास्त्रो का अध्ययन किया हो।

वि० जो सभी प्रकार के शास्त्रीय सिद्धान्तो के अनुकल हो। जिसने सभी शास्त्र सम्मत हो।

सर्वतः—अव्य०[स० सर्व+तस्] १ सभी ओर। चारो तरफ। २ सभी जगह। ३ सभी प्रकार से। हर तरह से। ४. पूर्ण रूप से। पूरी तरह से।

सर्व-तापन—पु०[स० प० त०]१ (सब को तपानेवाला) सूर्य। २ कामदेव।

सर्वतो—अव्य०[स०] सस्कृत सर्वत का वह रूप जो उसे समस्त पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सर्वतोचक्र, सर्वतोभद्र आदि।

सर्वतोचक्र—पु०[स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का वर्गाकार चक्र जो कुछ विशिष्ट प्रकार के शुभाशुभ फल जानने के लिए बनाया जाता है।

सर्वतोभद्र—वि०[स०] १ सब ओर से मगल कारक। सर्वांश मे शुभ या उत्तम। २ जिसके दाढी, मूँछें और सिर के बाल मुडे हुए हो।

पु०१ विष्णु के रथ का नाम। २ ऐसा चौकोर प्रासाद या भवन जो चारो ओर से खुला हो और जिसकी परिक्रमा की जा सकती हो। ३ कर्मकाण्ड मे, एक प्रकार का चौकोर चक्र जो पूजन के समय भूमि, वस्त्रो आदि पर बनाया जाता है। ४ प्राचीन भारत मे, एक प्रकार की चौकोर सैनिक व्यूह-रचना। ५ साहित्य मे, एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमे चौकोर स्थापित किए हुए बहुत से खानो मे कविता के चरणो के अक्षर लिखे जाते हैं। ५ योग-साधन का एक प्रकार का आसन या मुद्रा। ६ एक प्रकार की पहेली जिसमे शब्द के खडाक्षरो के भी अलग-अलग अर्थ लिए जाते है। ७ एक प्रकार का गध-द्रव्य। ८ नीम का पेड़। ९. बास।

सर्वतोभद्रा—स्त्री० [स० सर्वतोभद्र-टाप्]१. काश्मरी। गभारी। २. अभिनेत्री। नटी।

सर्वतोभाव—अव्य०[स०]१ सब प्रकार से। सपूर्ण रूप से। २ अच्छी तरह। भली-भाँति।

सर्व-तोभोगी—पु०[स०] प्राचीन भारतीय राजनीति में, वश मे किया हुआ ऐसा मित्र जो आसपास के जागलिको, पडोसी जातियो आदि से रक्षित रहने मे सहायता देता हो।

सर्वतोमुख—वि०[स०] सर्वतोमुखी।

पु० १. ब्रह्मा। २ जीव। ३. शिव। ४. अग्नि। ५. जल। ६. स्वर्ग। ७. आकाश। ८ एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

सर्वतोमुखी (खिन्)—वि०[सं०]१ जिसका मुंह चारो ओर हो। २ जो सभी ओर प्रवृत्त रहता हो। ३. जो सभी तरह के कार्यों या क्षेत्रो के हर विभाग मे दक्ष हो। (आल राउण्डर)

पु०=सर्वतोमुख।

सर्वतोवृत्त—वि०[स० ब० स०] सर्व-व्यापक।

सर्वथा—अव्य०[स० सर्व+थाल्]१ सब प्रकार से। सब तरह से। २ हर दृष्टि से। हर विचार से। ३ निरा। बिलकुल। सरासर। जैसे—आप का यह कथन सर्वथा मिथ्या है।

सर्वथैव—अव्य०[स० सर्वथा+एव] १ पूरी तरह से। निरा। बिलकुल। २ सर्वथा।

सर्वदंड-नायक—पु० [स० सर्वदण्ड-कर्म० स० -नायक प० त०] प्राचीन भारत मे, सेना या पुलिस का एक ऊँचा अधिकारी।

सर्वद—वि०[स० सर्व√दा (देना)+क] सब कुछ देनेवाला।

पु० शिव का एक नाम।

सर्वदमन—पु०[सं० ब० स०] शकुतला के पुत्र भरत का एक नाम।

सर्वदर्शी (शिन्)—वि० [स० सर्व√ दृश् (देखना)+णिनि] [स्त्री० सर्वदर्शिणी] विश्व मे होनेवाली सभी बाते देखनेवाला।

सर्व-दल—पु०[स०] [वि० सर्वदलीय] किसी विषय पर विचार करने अथवा किसी क्षेत्र में काम करनेवाले सभी दल या वर्ग। जैसे—उस समय एक सर्वदल सम्मेलन हुआ था।

वि०=सर्वदलीय।

सर्व-दलीय—वि०[स०]१ सब दलो से संबध रखनेवाला। २ जिसमे सभी दल योग दे रहे हो। सभी दलो द्वारा सामूहिक रूप से किया जाने-वाला। (आल पार्टी)

सर्वदा—अव्य०[स०] सब समयो मे हमेशा। सदा।

सर्वधारी (रिन्)—पु०[सं० सर्व √ धृ (रखना)+णिनि] १. साठ सवत्सरो मे से बाइसवां सवत्सर। २ शिव।

सर्वनाभ—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

सर्वनाम—पु०[स० सर्व-नामन्]१ वह जो सब का नाम हो, अथवा हो सकता हो। २ व्याकरण मे, ऐसे विकारी शब्दो का भेद या वर्ग जिनका प्रयोग सभी नामो या सज्ञाओ के स्थान पर, उनके प्रतिनिधि के रूप मे होता है। (प्रोनाउन) जैसे—तुम, हम, यह, वह आदि। ३ उक्त शब्द-भेद का कोई शब्द।

सर्वनाश—पु०[स० प० त०, पच०, त० वा] पूरी तरह से होनेवाला ऐसा नाश जिसके उपरात कुछ भी बच न रहे। पूरा विनाश।

सर्व-नाशक—वि०[सं०] सर्वनाश करनेवाला। विध्वंसकारी।

सर्वनाशन—पुं०[सं०] सर्वनाश करना।
वि० सर्वनाशक।

सर्व-नाशी—वि०=सर्व-नाशक।

सर्व-निधान—पुं०[सं०]१ सब का नाश या वध। २ एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्व-नियंता (तृ)—वि०[सं०] सब को अपने नियमण या वश मे रखनेवाला।

सर्वपा—वि०[सं०] सब कुछ पीनेवाला।
स्त्री० बलि की स्त्री का नाम।

सर्व-प्रिय—वि०[सं०] [भाव० सर्वप्रियता] सब को प्यारा। जिसे सब चाहे। जो सब को अच्छा लगे। (पापुलर)

सर्व-प्रियता—स्त्री० [सं०]सब का प्रिय होने या अच्छा लगने का भाव। लोक-प्रियता। (पापुलैरिटी)

सर्वभक्षी—वि०[सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला।
पुं० अग्नि। आग।

सर्वभाव—पुं०[सं०]१ सपूर्ण सत्ता। सारा अस्तित्व। २ सपूर्ण आत्मा। विश्वात्मा। ३ पूरी तरह से होनेवाली तुष्टि।

सर्वभावन—पुं०[सं०] महादेव। शिव।

सर्व-भोग—पुं०[सं० ब० स०]प्राचीन भारतीय राजनीति में, ऐसा वैश्य मित्र, जो सेना कोश तथा भूमि से सहायता करे। (कौ०)

सर्वभोगी (गिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वभोगिनी]१ सब का भोग करने और आनन्द लेनेवाला। २ सब कुछ खा लेनेवाला।

सर्व-मंगला—वि०[सं० ब० स०] सब प्रकार का मगल करनेवाली।
स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।

सर्व-मान्य—वि०[सं०] [भाव० सर्वमान्यता] जिसे सब लोग मानते हों।

सर्व-मूषक—पुं०[सं०] (सब को मूसने या ले जानेवाला) काल या मृत्यु।

सर्व-मेध—पुं० [सं०] १. सार्वजनिक सत्र। २ एक प्रकार का सोमयाग।

सर्वयोगी (गिन्)—पुं०[सं० सर्वयोगिन्] शिव का एक नाम।

सर्वरत्नक—पुं०[सं०] जैन पुराणों की नौ निधियों में से एक।

सर्व-रस—पुं०[सं०]१ वह जो सभी क्रियाओं या विषयों का अच्छा ज्ञाता हो। २. राल। धूना। ३. नमक। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

सर्व-रसा—स्त्री०[सं०] धान की खीलों का माँड़। (वैद्यक)

सर्वरी*—स्त्री०=शर्वरी (रात)।

सर्व-रूप—वि०[सं० ब० स०] जो सब रूपों मे हो। सर्वस्वरूप। जो सभी रूपों मे वर्तमान या व्याप्त रहता हो।
पुं० एक प्रकार की समाधि।

सर्वलिंगी (गिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वलिंगिनी] आडंबर रखनेवाला। पाखंडी।
पुं० नास्तिक।

सर्व-लोकेश—पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कृष्ण।

सर्व-लोचना—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का पौधा जो औषध के काम में आता है।

सर्वलौह—पुं० [सं०] १ तांबा। ताम्र। २. तीर। बाण।

सर्व-वर्तुल—वि०[सं०] (पिंड)जिसका प्रत्येक बिंदु उसके मध्य बिन्दु से समान अन्तर पर हो। गोल। (स्फेरिकल)

सर्व-वल्लभा—स्त्री०[सं०] कुलटा या पुंश्चली।

सर्ववाद—पुं०[सं०] सर्वेश्वरवाद।

सर्ववास—पुं०[सं०] शिव का एक नाम।

सर्वविद्—वि०[सं० सर्व √विद् (जानना)+क्विप्] सर्वज्ञ।
पुं० १ ईश्वर। २. ओंकार।

सर्व-वैनाशिक—वि०[सं०]आत्मा आदि सब को नाशवान् माननेवाला।
पुं० बौद्ध।

सर्व-व्यापक, सर्वव्यापी (पिन्)—वि० [सं०] जो सब पदार्थों और सब स्थानों मे व्याप्त हो।
पुं०१ ईश्वर। २. शिव।

सर्वशः—अव्य०[सं०] १ पूरा-पूरा। बिलकुल। २. पूरी तरह से। ३ सभी प्रकारों या दृष्टियों से। ४ अपने पूर्ण रूप से। (टोटली)

सर्व-शक्तिमान् (मत्)—वि० [सं०] [भाव० सर्वशक्तिमत्ता] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] जिसमें सम्पूर्ण शक्ति निहित हो।
पुं० ईश्वर का एक नाम। (ऑम्नीपोटेन्ट)

सर्व-शून्यवादी—पुं०[सं०] बौद्ध।

सर्व श्री—वि०[सं०] एक आदरसूचक विशेषण जो अनेक व्यक्तियों के नामों का उल्लेख होने पर उन सबके साथ अलग-अलग श्री न लगाकर उन सब के नाम सामूहिक सूचक के रूप मे, आरंभ मे लगाया जाता है। जैसे—सर्वश्री सीताराम, माधवप्रसाद, बालकृष्ण, नारायणदास आदि।

सर्व-श्रेष्ठ—वि० [सं०] [भाव० सर्वश्रेष्ठता] सब मे बड़ा। सब से बढ़कर।

सर्व-संहार—पुं०[सं०]१. ऐसा संहार जिसमे कोई न बच निकला हो। (पोग्रोम) २ काल, जो सब का संहार करता है।

सर्वसा—पुं०=सर्वस्व।

सर्व-सख—वि०[सं०] १ जो सब का सखा हो। २ जो सब के साथ हिल-मिल जाता हो। जो सब के साथ मिलता या सख्य-भाव स्थापित कर लेता हो। यारबाश।

सर्व-सत्ता—स्त्री० [सं०] [वि० सर्व-सत्ताक] किसी कार्य या विषय से संबंध रखनेवाली सब प्रकार की सत्ताएँ या अधिकार।

सर्व-सत्ताक—वि०[सं०]१ सब प्रकार की सत्ताओं से संबंध रखनेवाला। २ सब प्रकार की सत्ताएँ या अधिकार रखनेवाला।

सर्व-सम्मत—भू० कृ०[सं०] जो सब की सम्मति से हुआ हो। (यूनैनिमस) जैसे—वह प्रस्ताव सर्व-सम्मत था।

सर्व-सम्मति—स्त्री० [सं०] सब की एक सम्मति या राय। मतैक्य। (यूनैनिमिटी)

सर्वसर—पुं०[फा०] एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह मे छाले से पड़ जाते हैं और खुजली तथा पीड़ा होती है।

सर्व-सहा—स्त्री०[सं०]पृथ्वी का एक नाम।

सर्वसाक्षी(क्षिन्)—पु० [स०] १. ईश्वर। परमात्मा। २ अग्नि। आग। ३ वायु। हवा।

सर्वसाधन—पु०[स०]१ सोना। स्वर्ण। २ धन। दौलत। ३ शिव का एक नाम।
वि० सब का साधन।

सर्व-साधारण—पु० [स०] सभी प्रकार के लोग। जनता। आम लोग।
वि०[भाव० सर्व-साधारणता]१ जो सब मे समान रूप से पाया जाता हो। सामान्य। (कामन) २. जो सब लोगो के लिए हो। (पब्लिक)

सर्व-सामान्य—वि०[स०] [भाव० सर्व-सामान्यता]१ जो सब मे समान रूप मे पाया जाय। (कामन) २ जो सब लोगो के लिए हो। (पब्लिक)

सर्व-सिद्धा—स्त्री०[स०] फलित ज्योतिष मे, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी ये तीन तिथियाँ।

सर्व-सिद्धि—स्त्री०[स०]१ सब प्रकार की इच्छाओ तथा कार्यो की सिद्धि होना। २ बेल का पेड और फल।

सर्व-सोख—वि०[स० सर्व+हि० सोखना]सब कुछ सोख लेने, निगल जाने या ले लेनेवाला। उदा०—सत्यानासी जुद्ध कालहूँ सर्व-सोख सो।—रत्ना०।

सर्वस्तोम—पु०[स०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वस्व—पु०[स०]१ किसी की दृष्टि से वह सारी सपत्ति जिसका वह स्वामी हो। जैसे—लडके की पढाई मे उसने सर्वस्व गँवा दिया। २ अमूल्य तथा महत्त्वपूर्ण पदार्थ। जैसे—यही लडका उस बुढिया का सर्वस्व था।

सर्वस्व-संधि—स्त्री०[स०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे, शत्रु को अपना सर्वस्व देकर उससे की जानेवाली सधि।

सर्वस्वाहा—स्त्री० दे० 'सर्वक्षार'।

सर्वस्वी(स्विन्)—पु०[स०] [स्त्री० सर्वस्विनी] नापित पिता और गोप माता से उत्पन्न एक सकर जाति। (ब्रह्म-वैवर्त्त पुराण)

सर्वहर—वि०[स०]१ सब कुछ हर लेनेवाला।
पु० १ यमराज। २ काल। मृत्यु। ३. शिव। ४ वह जो किसी की समस्त सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो।

सर्वहारा—वि०[स० सर्व+हरण; बगला से गृहीत]१ जिसका सब कुछ हरण कर लिया गया हो। २ जो अपना सब कुछ खो या गँवा चुका हो।
पु०१ वह जो अपना सर्वस्व गँवाकर कगाल हो गया हो। २ आधुनिक राजनीति मे, समाज का वह परम निर्धन व्यक्ति या वर्ग जो केवल मेहनत-मजदूरी करके ही निर्वाह करता हो। (प्रोलिटेरिएट)

सर्वहारी(रिन्)—वि०[स०] [स्त्री० सर्वहारिणी] सब कुछ हरण कर लेनेवाला।

सर्वांग—पु०[स०]१ सब अग। समस्त अवयव। २ विशेषत शरीर के सभी अग। ३ समूह। ३ सभी अगो का समूह। शरीर। ४ सभी वेदाग। ५ शिव।

सर्वांगपूर्ण—वि०[स०] अपने सब अगो या अवयवो से युक्त।

सर्वांगिक—वि० [स० सर्वाङ्ग+ठन्-इक] १ सब अगो से सबद्ध। २. सब अगो मे होनेवाला।

सर्वांगीण—वि०[स० सर्वाङ्ग+ख—ईन]१ जो सभी अगो से युक्त हो। २ सभी अगो से सबध रखने या उनमे व्याप्त रहनेवाला।

सर्वांत—पु०[स०] सब का अन्त।

सर्वांतक—वि० [स० सर्वांत-कन्] सब का अन्त या नाश करनेवाला।

सर्वांतरस्य—वि०[स० सर्वांतर√स्था (ठहरना)+कन्] जो सबके अन्दर स्थित हो।
पु० परमात्मा।

सर्वांतरात्मा (त्मन्)—पु० [स० ष० त०] ईश्वर।

सर्वांतर्यामी(मिन्)—वि०[स० ष० त०] सब के अन्त करण मे रहनेवाला।
पु० ईश्वर।

सर्वांत्य—पु०[स०] साहित्य मे, ऐसा पद्य जिसके चारो चरणो के अन्त्याक्षर एक से हो।

सर्वाक्ष—पु०[स० ब० स०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

सर्वाक्षी—स्त्री०[स० सर्वाक्ष-ङीप्]दुधिया घास। दुद्धी।

सर्वाजीव—वि० [स० ष० त०] सब की जीविका चलानेवाला।
पु० ईश्वर। परमात्मा।

सर्वाणी—स्त्री०[स० सर्व-ङीप्—आनुक्] दुर्गा। पार्वती।

सर्वातिथि—पु०[स० ब० स०] वह जो सभी अतिथियों का आतिथ्य करता हो।

सर्वात्मवाद—पुं०[स०] १. भारतीय दर्शन मे, शकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद जिसमे सृष्टि की सभी चीजो को एक ही आत्मा से युक्त माना गया है। २ आज-कल पाश्चात्य दर्शन के आधार पर माना जानेवाला यह मत या सिद्धान्त कि सृष्टि के सभी पदार्थ आत्मा से युक्त है, भले ही अचेतन या जड़ पदार्थों की आत्मा सुप्तावस्था मे हो। सर्वेश्वर-वाद। (पैनन्थिइज्म)
विशेष—इसमे ईश्वर का कोई पृथक् अस्तित्व या स्वतन्त्र अस्तित्व नही माना जाता, बल्कि यह माना जाता है कि जो कुछ है वह सब ईश्वर की आत्मा या शक्ति से युक्त है और ईश्वर की व्याप्ति सब मे है।

सर्वात्मवादी—वि० [स०] सर्वात्मवाद-सबधी। सर्वात्मवाद का।
पु० वह जो सर्वात्मवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (पैनथिईस्ट)

सर्वात्मा(त्मन्)—पु०[स० ष० त०]१ सब की या सारे विश्व की आत्मा। सत्ता। २ परमात्मा। ब्रह्म। ३. शिव। ४. अर्हत्।

सर्वाधिक—वि०[स० पच० त०] सख्या मे, सबसे अधिक। जैसे—निर्दल उम्मीदवार को सर्वाधिक मत मिले है।

सर्वाधिकार—पु०[स०]१ सब कुछ करने का अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व। पूरा इख्तियार। २. सभी प्रकार के अधिकार।

सर्वाधिकारी(रिन्)—पु०[स० सर्वाधिकार+इनि] वह जिसे सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हो। सबसे बडा तथा सब अधिकारियो का अधिकारी।

सर्वाधिपति—पु०[स०] [भाव० सर्वाधिपत्य] वह जो सब का अधिपति (प्रधान या स्वामी) हो।

सर्वाधिपत्य—पु०[सं० ष० त०] सब पर होनेवाला आधिपत्य।

सर्वाध्यक्ष—पु०[स० ष० त०] सब का शासन, निरीक्षण आदि करनेवाला। अधिकारी या स्वामी।

सर्वापहरण—पु०=सर्वापहार।

सर्वापहार—पु०[स०]१. किसी के पास जो कुछ हो, वह सब छीन, लूट या ले लेना। २ जितनी बाते कोई पहले कह चुका हो उन सबसे इन्कार कर जाना या मुकर जाना।

सर्वापेक्षा न्याय—पु०[सं०] कहावत की तरह का एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब कोई निमंत्रित व्यक्ति सबसे पहले नियत स्थान पर पहुँच जाता है, और तब उसे वहाँ और सब लोगों के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

सर्वार्थ—पु०[सं०]१. सभी प्रकार के अर्थ अर्थात् पदार्थ और योग के विषय। २ फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का मुहूर्त।

सर्वार्थवाद—पु०[सं०] यह दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि अंत में सभी आत्माओं को ईश्वर की कृपा से मोक्ष प्राप्त होगा। (यूनीवर्सलिज्म)

सर्वार्थ-साधन—पु०[सं०] सभी प्रकार के प्रयोजन सिद्ध करना या होना। सारे मतलब पूरे करना या होना।

सर्वार्थ-सिद्धि—पु०[सं०]१. सब प्रकार के अर्थों के प्राप्ति या सिद्धि। २. जैनों के अनुसार सबसे ऊपर का अर्थात् स्वर्गों के ऊपर का लोक। ३ गौतम बुद्ध।

सर्वासर—पु०[सं० ब० स०] आधी रात।

सर्वावसु—पु०[सं० ब० स०] सूर्य की एक किरण का नाम।

सर्वावासी (सिन्)—वि०[सं०] सब में तथा सब स्थानों पर वास करने वाला।

पु० ईश्वर।

सर्वाशय—वि०[सं०] जो सबका आधार या आश्रय हो।

पु० शिव।

सर्वाशी (शिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। जो खाने में किसी पदार्थ का परहेज न करता हो।

सर्वाश्रय—वि० [सं० ब० स०] सब को आश्रय देनेवाला।

पु० शिव।

सर्वास्तिवाद—पु०[सं०] १. एक प्रकार का दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि संसार की सभी वस्तुओं की सत्ता या अस्तित्व है वे असार नहीं हैं। २ बौद्ध दर्शन के वैभाषिक सिद्धान्तों के चार भेदों में से एक जिसके प्रवर्तक गौतम बुद्ध के पुत्र राहुल कहे जाते हैं।

सर्वास्तिवादी (दिन्)—वि०[सं०] सर्वास्तिवाद सम्बन्धी।

पु० १ सर्वास्तिवाद का अनुयायी। २ बौद्ध।

सर्वास्त्र—वि०[सं०] सब प्रकार के अस्त्रों से सज्जित।

पु० सब प्रकार के अस्त्र।

सर्वास्त्रा—स्त्री०[सं० ब० स०] जैनों की सोलह विद्या देवियों में से एक।

सर्वीय—वि०[सं० सर्व+छ—ईय]१ सबसे संबंध रखनेवाला। सार्विक। २ सब में समान रूप से होनेवाला।

सर्वेक्षक—पु०[सं०] सर्वेक्षण करनेवाला। (सर्वेयर)

सर्वेक्षण—पु०[सं० सर्व+ईक्षण] [भू०कृ० सर्वेक्षित, वि० सर्वेक्ष्य]१ किसी विषय के सही तथ्यों की जानकारी के लिए उस विषय के सब अंगों का किया जानेवाला अधिकारिक निरीक्षण। जैसे—भूमि-सर्वेक्षण। २ कोई ऐसा परिदर्शन या विवेचन जिसमें किसी विषय के सब अंगों का ध्यान रखा गया हो। (सर्वे)

सर्वेश—पु०=सर्वेश्वर।

सर्वेश्वर—पु०[सं० ष० त०]१. सब का स्वामी या मालिक। २ ईश्वर। ३ चक्रवर्ती राजा। ४ एक प्रकार की ओषधि।

सर्वेश्वरवाद—पु०[सं०] दार्शनिक क्षेत्र का यह मत या सिद्धान्त कि संसार के सभी तत्त्वों, पदार्थों और प्राणियों में ईश्वर वर्तमान है, और ईश्वर ही सब कुछ है, अर्थात् ईश्वर ही जगत् और जगत् ही ईश्वर है। सर्वात्मवाद। (पैन्थिइज्म)

सर्वेश्वरवादी—वि०[सं०] सर्वेश्वरवाद-संबंधी। सर्वेश्वरवाद का।

पु० वह जो सर्वेश्वरवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (पैन्थिइस्ट)

सर्वे-सर्वा—पु०[सं० सर्वे सर्व]किसी घर, दफ्तर, संस्था आदि में वह व्यक्ति जिसे सब प्रकार के काम करने का अधिकार होता है। पूरा मालिक।

सर्वोच्च—वि०[सं० सर्व+उच्च] [भाव० सर्वोच्चता] १ जो सबसे ऊँचा और बढ़कर हो। सर्वोपरि। २ जो पद, मर्यादा आदि के विचार से और सबसे बढ़कर हो और दूसरों को अपने अधीन रखता हो। (सुप्रीम) जैसे—सर्वोच्च न्यायालय।

सर्वोच्च न्यायालय—पु०[सं० सर्वोच्च पं० त०; न्यायालय कर्म० स०]१. किसी देश या राज्य का वह सबसे बड़ा न्यायालय जिसके अधीन वहाँ की सारी न्यायपालिका हो और जिसमें वहाँ के उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि के संबंध में अंतिम रूप से पुनर्विचार होता हो। उच्चतम न्यायालय। (सुप्रीम कोर्ट) २. भारतीय संघ का प्रधान न्यायालय।

सर्वोत्तम—वि०[सं० पं० त०] सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोदय—पु०[सं० सर्व+उदय] १ सभी लोगों का उदय अर्थात् उन्नति। २ भारत की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि समस्याओं के निराकरण के लिए महात्मा गांधी का चलाया हुआ एक सामूहिक आन्दोलन जो मानव-जीवन के दार्शनिक पक्ष पर आश्रित है और जिसका उद्देश्य समाज को ऐसा रूप देना है जिसमें आर्थिक विषमता, दरिद्रता, शोषण आदि के लिए कोई अवकाश न रहे और सब लोग समान रूप से उन्नत, समृद्ध तथा सुखी हो सकें।

सर्वोपकारी—वि०[सं० ष० त०] सबका उपकार करनेवाला।

सर्वोपयोगी—वि०[सं०सर्व+उपयोगी] १ जो सब के लिए उपयोगी हो। २ जो सब लोगों के उपयोग में आता या आ सकता हो।

सर्वोपरि—वि०[सं०]१ जो सबसे ऊपर हो। २ जो अधिकार, प्रभाव आदि के विचार से अपने क्षेत्र में सबसे ऊपर और बढ़कर हो। (पैरामाउन्ट) जैसे—सर्वोपरि सत्ता।

सर्वोपरि सत्ता—स्त्री० [सं०] सबसे बड़ा या प्रधान सत्ता। (पैरामाउन्ट पावर)

सर्वौघ—पु०[सं० कर्म० स०] १ सर्वांगपूर्ण सेना। २ एक प्रकार का शहद।

सर्वौषधि—वि० [सं०ब०स०, कर्म० स० वा]जिसमें सब तरह की ओषधियाँ हों।

सर्वौषध—स्त्री० [सं०कर्म० स०] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं और जिनका उपयोग कर्मकांडी पूजनों आदि में भी होता है।

सर्षप—पु०[सं०] १ सरसों। २ सरसों के बराबर तौल या मान। ३ एक प्रकार का विष।

सर्षप-कंद—पु०[सं०] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ जहरीली होती है।

सर्षपक—पु०[सं० सर्षप+कन्] एक प्रकार का साँप।

सर्षप नाल—पुं० [सं०] सरसों का साग।
सर्षपा—स्त्री० [सं० सर्षप-टाप्] सफेद सरसों।
सर्षपारुण—पुं० [सं०] ष० त० त०, ब० स०] पारस्कर गृह्य-सूत्र के अनुसार असुरों का एक गण।
सर्षपिक—पुं० [सं० सर्षप+ठक्—इक] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला कीड़ा जिसके काटने से आदमी मर जाता है।
सर्षपिका—स्त्री० [सं० सर्षप+कन्—टाप्—इत्व] एक प्रकार का लिंग रोग। २ मसूरिका रोग का एक भेद।
सर्षपी—स्त्री० [सं० सर्षप-ङीप्] १ अविद्या। २ सफेद सरसों। ३ खजन पक्षी। भभोला। ४ एक प्रकार का रोग जिसमे सारे शरीर मे सरसों के समान दाने निकल आते हैं।
सर्सों†—स्त्री०=सरसों।
सर्हद—स्त्री०=सरहद।
सलंबा नोन—पुं० [सलवा+हिं० नोन] कचिया नोन। काच लवण।
सल—पुं० [सं०] १ जल। पानी। २ सरल वृक्ष। ३ घास-पात मे रहनेवाला बोट नाम का कीड़ा।
सलई—स्त्री० [सं० शल्लकी] १ शल्लकी वृक्ष। चीड़। २ चीड़ का गोंद। कुदुरु।
सलग†—वि० [सं० सलग्न] १ किसी के साथ लगा हुआ। सलग्न। २ जिसके सब अग साथ लगे हो, अलग न किये गये हो। अखडित। ३ समग्र। सारा।
सलगम†—पुं०=शलजम।
सलगा—स्त्री० [सं० शल्लकी] शलकी। सलई। चीड़।
सलज—पुं० [सं० सल=जल] पहाड़ी बरफ का पानी।
वि० सलज्ज। लजीला।
सलजम†—पुं०=शलजम।
सलज्ज—वि० [सं० तृ० त०] १. जिसमे या जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावान। लज्जाशील। २ जो शरमा रहा हो।
अव्य० १ लजाते हुए। २ लाज से।
सलतनत—स्त्री० दे० 'सल्तनत'।
सलना—अ० [सं० शल्य, हिं० सालना का अ०] १ साला जाना। छिदना। भिदना। २ छेद मे डाला या पहनाया जाना।
†पुं० लकड़ी मे छेद करने का बरमा।
पुं० [सं०] मोती।
सलपन—पुं० [देश०] एक प्रकार की झाड़ी जिसकी टहनियों पर सफेद रोएँ होते है। यह वर्षा ऋतु मे फूलती है। इसके पत्तों आदि का व्यवहार औषधि रूप मे होता है।
सलब—वि० [अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद।
सलभ†—पुं०=शलभ।
सलमा—पुं० [अ० सल्मः] कपड़ों पर बेल-बूटे काढने के काम आनेवाला सोने-चाँदी का सुनहला-रुपहला तार। बादला।
सलवट†—स्त्री०=सिलवट।
सलवन—पुं० [सं० शालिपर्णी] सरिवन।
सलवात—स्त्री० [अ०] १. बरकत। २ अनुग्रह। मेहरबानी। ३. गाली। दुर्वचन। (परिहास और व्यग्य)
क्रि० प्र०—सुनाना।
सलसलबोल—पुं० [अ०] १ बहुमूत्र रोग। २ मधु-प्रमेह नामक रोग।
सलसलाना—अ० [अनु०] १ धीरे-धीरे खुजली होना। सरसराहट होना। गुदगुदी होना। ३. दे० 'सरसराना'।
स० १ खुजलाना। २ गुदगुदाना। ३. दे० 'सरसराना'।
सलसलाहट—स्त्री० [अनु०] १ सलसलाने की क्रिया या भाव। २ खुजली। ३ गुदगुदी। ४. सलसल होनेवाला शब्द।
सलसी—स्त्री० [देश०] माजूफल की जाति का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। बूक।
सलहज—स्त्री० [हिं० साला] सबध के विचार से साले अर्थात् पत्नी के भाई की स्त्री।
सलाई—स्त्री० [सं० शलाका] १. काठ, धातु आदि का छोटा, पतला छड़। जैसे—सुरमा लगाने की सलाई, घाव मे दवा भरने की सलाई, मोजा, गुलूबन्द आदि बुनने की सलाई।
मुहा०—(आँखो मे) सलाई फेरना= अधा करना। (मध्य-युग मे, दण्ड रूप मे अपराधी की आँखों मे गरम-गरम सलाई फेरी जाती थी।
२ दीया सलाई।
†स्त्री०=सल्लई।
सलाक*—स्त्री० [फा० सलाख] १ सलाख। छड़। २ बाण। तीर।
सलाकना†—स० [हिं० सलाक] १. सलाख या शलाका से किसी चीज पर निशान करना या लकीर खींचना। २ किसी की आँखों मे तपी हुई सलाई फेरकर उसे अधा करना।
सलाख—स्त्री० [फा० सलाख़, मि० सं० शलाका] १ धातु का छड़। शलाका। सलाई। २ रेखा। लकीर।
सलाखना†—स०=सलाकना।
सलाजीत†—स्त्री०=शिलाजीत।
सलाद—पुं० [अ० सैलाड] १. एक प्रकार के कद के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे खाये जाते हैं। २ .कद, फल आदि जो बिना पकाये हुए, केवल कच्चे काटकर भोजन के साथ, प्राय नमक, मिर्च, खटाई आदि मिलाकर खाये जायें। जैसे—खीरे, टमाटर, मूली आदि का सलाद।
सलाबत—स्त्री० [अ०] १ कठोरता। २ व्यवहार आदि की कठोरता। ३ वीरता। ४ प्रताप।
सलाम—पुं० [अ०] अभिवादन का एक मुसलमानी ढग जिसमे दाहिने हाथ की उँगलियाँ जोड़कर माथे तक ले जाई जाती हैं।
क्रि० प्र०—करना।—लेना।
मुहा०—(अमुक को) सलाम देना=अमुक से हमारा सलाम कहो। (आशय यह होता है कि वे आकर हमसे मिलें।) **सलाम फेरना**= (क) नमाज खतम करने के बाद ईश्वर को अत मे फिर से नमस्कार करना। (ख) रोष आदि के कारण किसी का सलाम स्वीकार न करना। **किसी को दूर से सलाम करना**=किसी बुरी वस्तु या व्यक्ति से बिलकुल अलग या बहुत दूर रहना। जैसे—उनको तो हम दूर से ही सलाम करते है, अर्थात् उनके पास जाना पसन्द नही करते।
सलाम अलैकुम—अव्य० [अ०] एक अरबी पद जिसका प्रयोग किसी को सलाम करने के समय किया जाता है, और जिसका अर्थ है—आप सकुशल और सुखी रहे। (मुसल०)

सलाम-कराई—स्त्री०[अ० सलाम+हिं० कराई]१ सलाम करने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो दूल्हे या दुल्हिन को ससुराल मे बडे लोगों को सलाम करने पर मिलता है।

सलामत—वि०[अ०]१ (व्यक्ति) जो जीवित तथा कुशलपूर्वक हो। २ (वस्तु) जो रक्षित या अच्छी दशा मे हो। ३ जो कायम या स्थित हो।
क्रि० वि० कुशलतापूर्वक।

सलामती—स्त्री०[अ०]१ सलामत होने की अवस्था या भाव। २ कुशल। क्षेम। ३ अच्छी तन्दुरुस्ती। उत्तम स्वास्थ्य। जैसे—किसी की सलामती मनाना।
पद—सलामती से=सकुशल। कुशलतापूर्वक।

सलामी—स्त्री०[अ०]१. सलाम करने की क्रिया या भाव। २ विशेषत सिपाहियो, सैनिको, स्काउटों आदि का एक साथ किसी बडे अधिकारी, अभ्यागत आदि का अभिवादन करना।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
३. किसी बडे आदमी के आगमन के समय उसके स्वागतार्थ बदूको, तोपो आदि का दागा जाना।
मुहा०—सलामी उतारना= किसी महान् व्यक्ति के स्वागतार्थ तोपो को दागना।
४. वह धन जो मकान, दुकान आदि को किराये पर देने के समय पगडी के रूप मे लिया जाता है।
वि० १ ढालुआँ। जैसे—सलामी छत। २ गाव-दुम।

सलार†—पु०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

सलासत—स्त्री०[अ०]१ भाषा के सलीस अर्थात् सरल और सुबोध होने की अवस्था या भाव। २ कोमलता। मृदुता। ३ सफाई।

सलाह—स्त्री०[अ०]१ अच्छापन। भलाई। जैसे—खैर-सलाह= कुशल-मगल। २ यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए। सम्मति। राय। ३ आपस मे होनेवाला विचार-विमर्श। परामर्श। ४ भविष्य के सबध मे होनेवाला विचार। इरादा। ५ राय। सम्मति।
वि०[?] जो गिनती मे दस हो। (दलाल)

सलाहकार—पु०[अ० सलाह+फा० कार (प्रत्य०)] वह जो सलाह या परामर्श देता हो। राय देनेवाला। परामर्शदाता।

सलाहियत—स्त्री० [अ०] १. भलाई। २ योग्यता। ३ नरमी। ४ व्यवहार आदि की कोमलता।

सलाही†—पु०=सलाहकार।

सलि†—स्त्री०=सर (चिता)।

सलिता†—स्त्री०=सरिता (नदी)।

सलिल—पु०[स०] जल। पानी।

सलिल कुंतल—पु०[स०] शैवल। सिवार।

सलिल क्रिया—स्त्री० [स०]१ जलाजलि। उदक क्रिया। २ पितरो का तर्पण।

सलिल-चर—पु०[स०] जल-जीव।

सलिलज—वि०[स० सलिल√जन् (उत्पन्न करना)+ड]जो जल से उत्पन्न हो। जल-जात।
पु० कमल।

सलिलद—वि०[सं०]१ सलिल देनेवाला। जल देनेवाला। जो जल दे। २ पितरो का तर्पण करनेवाला।
पु० बादल। मेघ।

सलिल-निधि—पु०[स०] १ जलनिधि। समुद्र। २. सरसरी छद का एक नाम।

सलिलपति—पु०[स०]१ जल के अधिष्ठाता देवता वरुण। २ समुद्र।

सलिल-योनि—वि०[स०] जो जल मे उत्पन्न हो, जल-जात।
पु०=ब्रह्मा।

सलिलराज—पु०[स०]=सलिल-पति।

सलिल-स्थलचर—वि०[स०] (जंतु या प्राणी) जो जल और स्थल दोनो मे विचरण करता हो। जैसे—हस, साँप आदि।

सलिलांजलि—स्त्री०[स० प० त०]=जलाजलि।

सलिलाकर—पु०[स० प० त०]समुद्र। सागर।

सलिलाधिप—पु०[स० प० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

सलिलार्णव—पु०[स०] समुद्र। सागर।

सलिलालय—पु०[स० प० त०] समुद्र। सागर।

सलिलाशन—वि०[स० ब० स०] जिसका आहार मात्र जल हो। जल पीकर जीवित रहनेवाला।

सलिलाशय—पु०[स० प० त०] जलाशय।

सलिलाहार—वि०=सलिलाशन।

सलिलेंद्र—पु०[स० प० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

सलिलेंधन—पु०[स० ब० स०] बाडवानल।

सलिलेचर—पु०[स० सलिले √चर (चरना)+ट-अलुक] जल-जीव। जलचर।

सलिलेश—पु०[स० प० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

सलिलेशय—वि० [स० सलिले√शी (सोना)+अच्—अलुक] जल मे सोनेवाला। जलशायी।
पु० विष्णु।

सलिलेश्वर—पुं०[स० प० त०] वरुण।

सलिलोद्भव—वि०[स० ब० स०] जो जल मे या जल से उत्पन्न हो।
पु० कमल।

सलिलोदन—पु० [स० मध्यम० स०] जल मे पकाया हुआ अन्न।

सलीका—पुं०[अ० सलीक] १ कार्य सपादन करने का सामान्य तथा स्वाभाविक ढग। प्रचलित या रूढ फलत अच्छा या मान्य ढग। २ शऊर। तमीज। ३ योग्यता। लियाकत। ४ आचरण और व्यवहार। ५ सभ्यता और शिष्टता।

सलीकामंद—वि० [अ० सलीका+फा० मद (प्रत्य०)]१ जिसे अच्छा सलीका आता हो। शऊरदार। २ शिष्ट और सभ्य।

सलीता—पु०[स० सत्तलिका=मोटी चादर] मारकीन की तरह का परन्तु उससे अधिक मोटा तथा गझिन कपड़ा, जिसकी चादरें, चाँदनियाँ आदि बनाई जाती हैं।

सलीब—स्त्री० [अ०] सूली।

सलीबी—वि०[अ०] सलीब सम्बन्धी। सलीब का।

पु० ईसाई, जो उस मूली को अपना पवित्र धर्म-चिह्न मानते है, जिसपर ईसा मसीह टाँगे गये थे।

सलीम—वि० [अ०] १ ठीक। दुरुस्त। २ सच्चा और सीधा। सरल-हृदय।

सलीमशाही—पु०[अ०+फा०] पुरानी चाल का एक प्रकार का वढिया जूता।

सलीमी—स्त्री०[अ० सलीम] पुरानी चाल का एक प्रकार का कपडा।

सलील—वि० [स०] १ क्रीडाशील। लीला-रत। २ खिलाडी । ३ किसी प्रकार की भाव-भगी से युक्त।

अव्य० क्रीडा के रूप मे या क्रीडा करते हुए। उदा०—दुर्भर की गर्भ-मधुर पीडा, झेलती जिसे जननी सलील।—प्रसाद।

सलीस—वि० [अ०] [भाव० सलासत]१ सहज। सुगम। आसान। २ सम-तल। हमवार। ३ भाषा या लेख जो सरल और शिष्टोचित या शिष्ट-सम्मत हो।

सलूक—पु० [अ०] १ तौर। तरीका। ढग। (क्व०) २ किसी के प्रति किया जानेवाला व्यवहार। जैसे—पत्नी का पति से सलूक अच्छा नही है। ३ लोगो के साथ रखा जानेवाला मेल-मिलाप। ४ किसी का किया जानेवाला उपकार। नेकी । भलाई।

सलूका—पु०[फा० शलूक] पूरी वाँह की कुरती या वडी।

सलूग—पु०[स० त० त०] एक प्रकार का वहुत छोटा कीडा। २. जूँ। लीख।

सलूना—पु० [स० स+लवण] पकाई या वनाई हुई तरकारी। सालन। (पश्चिम)। जैसे—आलू का सलूना।

वि०=सलोना।

सलूनी—स्त्री० [हिं० स+लोन=नमक] चूका शाक। चुक्रिका।

सलेक—पु०[स०] तैत्तिरीय सहिता के अनुसार एक आदित्य का नाम।

सलेमशाही†—स्त्री०=सलीमशाही।

सलैला†—वि०[स० सलिल+हिं० ऐला (प्रत्य०)]१ जिसमे पानी मिला हो। २ इतना चिकना कि उस पर पैर या हाथ फिसले।

सलोक—पु०[स० त० त० व० स० वा] १ नगर। शहर। २. नगर निवासी। नागरिक।

†पु०=श्लोक।

सलोकता—स्त्री०[स० सलोक+तल्—टाप्]=सालोक्य।

सलोट†—स्त्री०=सिलवट।

सलोतर†—पु०=शालिहोत्र।

सलोतरी†—पु०=शालिहोत्री।

सलोन†—वि०=सलोना।

सलोना—वि०[हिं० स+लोन=नमक] [स्त्री० सलोनी]१ (पदार्थ) जिसमे नमक पडा हो। नमक मिला हुआ। नमकीन। २ (व्यक्ति का रूप) जिसमे लावण्य अर्थात् कोमल और मोहक सौन्दर्य हो।

स्त्री० [फा० साले नौ=नव वर्ष।] श्रावण शुक्ला पूर्णिमा अर्थात् रक्षा-बधन का दिन और त्योहार। राखी पूनो।

विशेष—फसली सन् का आरभ इसी के दूसरे दिन से होता है; इसलिए भारत के मुसलमान शासक इसे साले-नौ (नव-वर्ष) कहते थे। इसी 'साले-नौ' का अपभ्रष्ट रूप सलोना' है।

सलोनापन—पु०[हिं० सलोना+पन (प्रत्य०)] सलोना होने की अवस्था, गुण या भाव।

सलोनो—स्त्री० [स० श्रावणी] श्रावणी पूर्णिमा को होनेवाला रक्षा-बन्धन का नामक त्योहार।

सल्तनत—स्त्री० [अ०] १. सुल्तान के अधीन रहनेवाला राज्य। वादशाहत। साम्राज्य। २ शासन। हुकूमत। ३. सुख और सुभीते की स्थिति। जैसे—तुम्हारी तो किसी तरह सल्तनत ही नही बैठती।

क्रि० प्र०—जमना।—बैठना।

सल्ल—पु०[स० सरल] सरल वृक्ष। सरल द्रुम।

†पु०[स० शल्प] काँटा।

सल्लकी—स्त्री०[स० शल्लकी]१ शल्लकी वृक्ष। सलई। २ सलई का गोद। कुँदरु।

सल्लम—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपडा। गजी। गाढा।

सल्लाह†—स्त्री०=सलाह।

सल्ली—स्त्री०[स० शल्लकी] शल्लकी। सलई।

सल्लू—पु०[हिं० सलना] चमडे की डोरी।

वि०[?] वेवकूफ। मूर्ख।

सल्लेअल्ला—अव्य[अ०] वाहवाह। वहुत खूव। सुभानअल्ला। (मुसल०)

सल्व—पुं०=शल्व ।

सव—पु० [स० √ सू (उत्पन्न होना)+अव]१ जल। पानी। २ फूलो का रस। ३ यज्ञ। ४ सूर्य। ५ चन्द्रमा। ६ औलाद। सतान।

वि० अज्ञ। ना-समझ।

†पु०=शव (लाश)।

मुहा०—सवसाजना= चिता के ऊपर शव रखना।

सवत (ति)†—स्त्री०=सौत।

सवतिया†—वि०=सौतिया।

स-वत्स—वि०[स०] [स्त्री० स-वत्सा] जिसके साथ उसका वच्चा भी हो। जैसे—स-वत्सा गौ।

सवन—पुं० [स०]१ वच्चा जनना। प्रसव। २ यज्ञ। ३. यज्ञ के स्नान समय का सोम-पान। ४. यज्ञ के उपरात होनेवाला स्नान। अवभृत स्नान। ५ चन्द्रमा। ६ अग्नि। ७ स्वायभुव मनु के एक पुत्र। ८ रोहित मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक ऋषि का नाम।

†पु०[?] वतख की जाति का एक प्रकार का जल-पक्षी। कलहस। काज।

सवनिक—वि०[स०] सवन-सवधी। सवन का।

सवय—वि०[स०] [स्त्री० सवया]१ जिसका वय किसी के वय के समान हो। २ समान वय वाले। समवयस्क।

पु० सखा।

सवयस्क—वि०, पुं०=सवय।

सवर—पु०[स० सव√रा (लेना)+क] १ जल। पानी। २ शिव का एक नाम।

सवर्ण—वि०[स० ब० स०] १. (वे) जो वर्ण या रूप-रग के विचार से एक ही प्रकार के हो। सदृश। समान। २ (वे) जो एक ही जाति या वर्ग के हो। ३ (शब्द जिनका उच्चारण तो भिन्न हो परन्तु) वर्ण या अक्षर एक-से हो। जैसे—फा० कौल और स० कौल सवर्ण शब्द हैं।

सवर्ण-विवाह—पु०[स०]१ हिंदुओ मे वह विवाह जिसमे कन्या और वर दोनो एक ही वर्ण या जाति के हो। २ साधारणत अपनी जाति, धर्म, वर्ग या समाज मे किया जानेवाला विवाह। 'अतर्जातीय विवाह' से भिन्न। (एन्डोगैमी)

सवर्णा—स्त्री०[स०] सूर्य की पत्नी छाया का नाम।

सवाँग†—पु०[हिं० स्वाँग]१ कृत्रिम वेष। भेस। स्वाँग। (देखें) २ व्यक्तियो के लिए सख्या सूचक शब्द। (पूरब) जैसे—चार सवाँग तो घर के ही हो जायँगे।

सवाँगना†—अ० [हिं० स्वाँग] १ नकली भेस बनाना। २ किसी का रूप धारण करना। रूप भरना।

सवा—वि०[स० स+पाद] पूरा और एक चौथाई। सपूर्ण और एक अग का चतुर्थांश जो अको मे इस प्रकार लिखा जाता है—४¼।

सवाई—स्त्री० [हिं० सवा+ई (प्रत्य०)] ऋण का वह प्रकार जिसमे मूलधन का चतुर्थांश ब्याज के रूप मे देना पडता है।

†वि०=सवाया।

पु०[?] मध्ययुग मे, जयपुर (राजस्थान) के महाराजाओ की उपाधि। जैसे—सवाई मानसिंह।

स्त्री०[?] मूत्रेंद्रिय का एक प्रकार का रोग।

सवाद†—पु०=स्वाद।

सवादिक†—वि०=स्वादिष्ठ।

सवाब—पु०[अ०]१ शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग मे पहुँचने पर मिलता है। पुण्य। २. नेकी। भलाई। ३ सत्कर्मो का पर-लोक मे मिलनेवाला शुभ फल।

सवाया—वि०[हिं० सवा] [स्त्री० सवाई]१ पूरे से एक चौथाई से अधिक। सवा गुना। २ किसी की तुलना मे कुछ अधिक या बढा हुआ। उदा०—निज से भी पर-दुख देखकर स्वय सवाया।—मैथिली शरण। ३ पहले जितना रहा हो, उससे भी कुछ और अधिक। उदा० —राणा राख छत्र की व्यापैं करि करि प्रीति सवाई।—कबीर।

सवार—पु०[फा०]१ वह जो किसी सवारी या यान पर आरूढ हो। जैसे —पाँचवाँ सवार। २ वह जो सवारी करने मे कुशल हो। जैसे— घुडसवार। ३. वह जो किसी दूसरे के ऊपर चढा या बैठा हो और उसे किसी रूप मे दबाये हुए हो।

मुहा०—(किसी पर या किसी के सिर पर) सवार होना=किसी को पूर्ण रूप से अभिभूत करके (क) उसे अपने वश मे रखना अथवा (ख) उसे अपने विचारो के अनुसार चलाना।

सवारी—स्त्री०[फा०]१ सवार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ कोई ऐसा साधन जिस पर सवार होकर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हो। यान। जैसे—गाडी, घोडा, नाव, मोटर, रेल, हवाई जहाज आदि। ३ वह जो उक्त पर चढकर कही जाता हो। उक्त पर सवार होनेवाला व्यक्ति। ४. कोई ऐसा जुलूस जिसमे कोई बहुत बडा व्यक्ति, कोई धर्मग्रन्थ या देवता की मूर्ति किसी यान पर कही ले जाई जाती हो। जैसे—राष्ट्रपति की सवारी, रामजी या वेद भगवान् की सवारी।

क्रि० प्र०—निकलना।—निकालना।

५ कुश्ती मे, एक प्रकार का पेंच जिसमे विपक्षी को जमीन पर गिराकर उसकी पीठ पर बैठकर उसे चित करने का प्रयत्न करते है।

क्रि० प्र०—कसना।

६ सभोग या प्रसग के लिए स्त्री पर चढने की क्रिया। (बाजारू)

क्रि० प्र०—कसना।—गाँठना।

सवारे†—अव्य० [स० स+वेला] १ प्रात काल। सवेरे। २. समय से कुछ पहले। जल्दी। ३ आनेवाले दूसरे दिन। कल के दिन।

सवारै*—अव्य०=सवारे।

सवाल—पु०[अ०] [बहु० सवालात] १ पूछने की क्रिया या भाव। २ वह बात जो पूछी जाय। प्रश्न।

पद—सवाल-जवाब।

३ गणित मे, कोई ऐसी समस्या जिसका उत्तर निकालना या निराकरण करना हो। प्रश्न। (क्वेश्चन, उक्त सभी अर्थो मे)। ४ कुछ पाने या माँगने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। जैसे—भिखारिन ने रूखे मिख के सामने दात निकालकर सवाल किया।—उग्र। ५. वह प्रार्थना-पत्र जो न्यायालय मे किसी पर कोई अभियोग चलाने के लिए न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया जाता है।

मुहा०—(किसी पर) सवाल देना=(क) नालिश करना। (ख) फरियाद करना।

६ प्रार्थना। विनती।

सवाल-जवाब—पु० [अ०]१ प्रश्न और उसका उत्तर। २. तर्क-वितर्क। वाद-विवाद। बहस। जैसे—बडो से सवाल-जवाब करना ठीक नही। ३ झगडा। तकरार। हुज्जत।

सवालिया—वि०[अ० सवालिय]१ सवाल के रूप मे होनेवाला। २ (व्याकरण मे, वाक्य) जो पाठक या श्रोता से उत्तर की अपेक्षा रखता हो। प्रश्नात्मक।

सवाली—वि० [हिं० सवाल]=सवालिया।

पु० वह जिसने कोई सवाल अर्थात् प्रार्थना या याचना की हो।

सविकल्प—वि०[स०]१ जिसमे किसी प्रकार का विकल्प हो। २. जिसके विषय मे कोई सन्देह हो। सदिग्ध। ३ जो स्वय कुछ निश्चय न कर सकने के कारण किसी प्रश्न के दोनो पक्षो को थोडा बहुत ठीक समझता हो। ४ समाधि का एक प्रकार। ५. वेदात मे ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान।

स-विचार—पु० [स० अव्य० स०] चार प्रकार की विकल्प समाधियो मे से एक प्रकार की समाधि।

क्रि० वि० विचारपूर्वक। सोच-समझकर।

सवितर्क—पु०[स० ब० स०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियो मे से एक प्रकार की समाधि।

क्रि० वि० तर्क-वितर्कपूर्वक।

सविता—पु०[स०√सू(प्राण प्रदान करना)+तृच्] १ सूर्य। दिवाकर। २ बारह आदित्यो के आधार पर १२ की सख्या का वाचक शब्द।

३ आक। मदार। ४ कुछ लाली लिए हुए सफेद रग की एक धातु जो प्राय निकल और लोहे के साथ पाई जाती है। (कोवाल्ट)

सविता-तनय—पु० [स० सवितृ+तनय, ष० त०] सूर्य के पुत्र हिरण्यपाणि।

सविता-दैवत—पु० [स० सवितृ दैवत, ब० स०] हस्त नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता सूर्य्य माने जाते हैं।

सविता-पुत्र—पु०[स० सवितृपुत्र, ष० त०] सूर्य्य के पुत्र, हिरण्यपाणि।

सवितासुत—पु० [स० सवितृसुत ष० त०] सूर्य के पुत्र, शनैश्चर।

सवित्र—पु०[स० सू (प्रसव करना)+इत्र] प्रसव करना। लडका जनना।

सवित्रिय—वि० [स० सवित्+ घ—इय] सविता-सबधी-। सविता या सूर्य का।

सवित्री—स्त्री०[स० सवित्र— ङीप्] १ प्रसव करानेवाली धाई। धात्री। दाई। २ माता। माँ। ३. गाय। गौ।

सविद्य—वि०[स० अव्य० स०] विद्वान्। पडित।

स-विधि—वि०[स० त० त०] विधि युक्त।

अव्य० विधि के अनुसार। विधिपूर्वक।

सविनय—वि० [स०] १ विनय से पूर्ण। २ विनम्र। ३ शिष्टतापूर्ण या शिष्ट।

अव्य० विनय या नम्रतापूर्वक।

सविनय अवज्ञा—स्त्री०[स०] नम्रता या भद्रतापूर्वक राज्य या प्रधान अधिकारी की किसी ऐसी व्यवस्था या आज्ञा को न मानना जो अन्यायमूलक प्रतीत हो और ऐसी अवस्था मे राज्य या अधिकारी की ओर से होनेवाले पीडन तथा कारादड आदि को धीरतापूर्वक सहन करना। (सिविल डिस्ओबीडिएस)

सविभास—पु० [स० त० स०] सूर्य का एक नाम।

सविभ्रम—वि०[स० अव्य० स०] विभ्रम अर्थात् क्रीडा, प्रणय, चेष्टा, विलास आदि से युक्त।

क्रि० वि० विभ्रमपूर्वक।

सविभ्रमा—स्त्री०=विचित्र विभ्रमा (नायिका)।

सविशेष—वि०[स० तृ० त०] किसी विशेष गुण, बात या विशिष्टता से युक्त। 'निर्विशेष' का विपर्याय। जैसे—ब्रह्म का सविशेष रूप।

सविस्तार—अव्य० [सं०] विस्तारपूर्वक।

सवेरा—पु०[हिं० स+स० वेला]१ प्रात काल। सुबह। २ निश्चित समय के पूर्व का समय। (क्व०)

सवेरे—अव्य०[हिं० सवेरा] १ प्रात काल के समय। २. नियत या साधारण समय से कुछ पहले। जैसे—न सोना सवेरे, न उठना सवेरे। —गालिब।

सवैया—पु०[हिं० सवा+ऐया (प्रत्य०)]१. तौलने का वह बाट जो सवा सेर का हो। २ वह पहाडा जिसमे एक, दो, तीन आदि सख्याओ का सवाया मान बतलाया जाता है। ३ हिन्दी छन्दशास्त्र मे, वर्णिक वृत्तो के चरणवाले प्राय. सभी जाति-छद आ जाते हैं। इन छदो मे लय की प्रधानता होती है, अत इन्हे पढते समय कुछ स्थलो पर गुरु मात्राओ का ह्रस्व मात्राओ के समान उच्चारण करना पडता है। इसके १४ भेद कहे गये है, दुर्मिल, मदिरा मानिनी, सुन्दरी आदि।

सव्य—वि०[स०]१ वाम। बायाँ। २ दक्षिण। दाहिना। ३. प्रतिकूल। विपरीत।

पु०१ यज्ञोपवीत। जनेऊ। २. विष्णु। ३ अगिरा के पुत्र, एक ऋषि जो ऋग्वेद के कई मत्रो के द्रष्टा थे। ४ चन्द्र या सूर्य ग्रहण के दस प्रकार के ग्रासो मे से एक प्रकार का ग्रास।

सव्यचारी (रिन्)—पु० [स०] १. अर्जुन का एक नाम। २. अर्जुन वृक्ष। ३ दे० 'सव्यसाची'।

सव्यभिचार—पु०[स०] भारतीय न्यायशास्त्र मे, ५ प्रकार के हेत्वाभासो मे से एक।

सव्यसाची (चिन्)—पु०[स०] अर्जुन (पाडव)।

वि० जो दाहिने और बायें दोनो हाथो से सब काम समान रूप से कर सकता हो।

सशंक—वि०[स०]१ जिसके मन मे कोई शका हो। २ शका के कारण जो भयभीत हो रहा हो। ३ शका या भय उत्पन्न करनेवाला।

सशंकना—अ० [स० सशक+हिं० ना (प्रत्य०)]१ शकायुक्त होना। शकित होना। २ भयभीत होना। डरना।

सशस्त्र—वि० [स०]१ जिसके पास शस्त्र हो या हो। २ शस्त्र या शस्त्रो से लैस या शस्त्रधारी। जैसे—सशस्त्र बल।

क्रि० वि० शस्त्र या शस्त्रो से सज्जित होकर।

सशस्त्र तटस्थता—स्त्री०[स०] आधुनिक राजनीति मे, किसी राष्ट्र अथवा राष्ट्रो से बिलकुल अलग या तटस्थ रहने पर भी अस्त्र-शस्त्रो से इतने सज्जित रहना है कि किसी ओर से आक्रमण होने पर तत्काल अपना बचाव या रक्षा कर सकें। (आर्म्ड न्यूट्रैलिटी)

सशेष—वि० [स० स० त०]१ जिसका कुछ अश अभी बचा हो। २ (काम) जिसका कुछ अश अभी पूरा होने को बाकी हो। अधूरा।

सखुन†—पु०=सखुन (उक्ति)।

स-श्रम—वि०[स० त० त०] थका हुआ। श्रमित।

क्रि० वि० परिश्रमपूर्वक।

ससंकना*—अ०=सशकना।

सस†—पु०[स० शशि] चद्रमा। शशि।

†पु०[स० शशक] खरगोश।

†पु०[स० शस्य]१. अनाज। धान्य। २ खेती-बारी। ३ फसल। ४. हरियाली।

ससक—पु०[स० शशक]१. खरगोश। २. रहस्य सम्प्रदाय मे, (क) जीव या आत्मा। (ख) ओकार शब्द।

ससकना†—अ०१.=ससकना। २ =सिसकना।

ससत†—अव्य०[स० स+सत्य] सचमुच। वस्तुत। उदा०—साखियात गुणमै ससत।—प्रिथिराज।

स-सत्त्व—वि०[स० त० त०] [स्त्री० ससत्त्वा] १ सत्व से युक्त। २ जीवन से युक्त। जानदार। ३. जीव से युक्त। जैसे—ससत्त्वा स्त्री=गर्भवती स्त्री।

ससन—पु०[स० √सस् (हिंसा करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० ससित] यज्ञ के बलि-पशु का हनन। बलिदान।

†पु०[स० श्वसन]१ साँस। २ उच्छ्वास।

ससना—स०[स० ससन]१ यज्ञ मे पशु का वलिदान करना। २ मार डालना। वध करना।

अ० १ वलिदान होना। २ मारा जाना।

†अ०[स० श्वसन] साँस लेना।

†अ० १.=ससकना। २=सिसकना।

ससमा†—पु०[स० शशि] चन्द्रमा। उदा०—प्रगट परिपूरन ससमा। —भगवत रसिक।

ससरना—अ०[स० सरण] सरकना। खिसकना।

ससवाना†—स०[हिं० ससना का प्रे०] १ सशंकित करना। २ भयभीत करना। डरवाना।

स०[स० ससन] हत्या कराना।

ससहर†—पु०[स० शशधर] चन्द्रमा।

ससा†—पु०[स० शशा] खरगोश। शशक।

पु०=शशि (चन्द्रमा)।

ससाना†—स० [स० सशंक] १. सशंकित करना। २ वेचैन या विकल करना।

स०[स० शासन]१ दंड देना। २ कष्ट देना।

†अ० १ =ससकना। २ =सिसकना।

ससि*—पु०=शशि (चंद्रमा)।

ससिअर*—पु०=शशिधर (चन्द्रमा)। दा०—अनु घनि तूँ ससिअर निसि माहाँ।—जायसी।

ससि-गोती—पु०[स० शशि+गोत्र] मोती। उदा०—हार लागि वेधा ससि-गोती।—नूर मुहम्मद।

ससिता†—स्त्री०=शिशुता (वचपन)।

ससिधर†—पु०=शशधर (चंद्रमा)।

ससिभान†—पु०=शशुभानु (चंद्रमा)।

ससिहर†—पु०=शशिधर (चन्द्रमा)।

ससी†—पु०=शशि (चन्द्रमा)।

ससीम—वि०[स० स+सीमा] [भाव० ससीमता] जिसकी सीमा हो या नियत हो। सीमित। (लिमिटेड)

ससुर—पु०[स० श्वसुर]१ विवाहित व्यक्ति के संवध के विचार से उसकी पत्नी (या पति) का पिता। २ संवध के विचार से ससुर के समान और उसके स्थान पर होनेवाला व्यक्ति। जैसे—चचिया ससुर, ममिया ससुर।

ससुरा—पु० [स० श्वसुर]१ श्वसुर। ससुर। २ एक प्रकार की गाली। जैसे—उस ससुरे को मैं क्या समझता हूँ। ३ दे० 'ससुराल'।

ससुरार†—स्त्री०=ससुराल।

ससुराल—स्त्री० [स० श्वसुरालय] १. श्वसुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर। २ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा घर जहाँ पहुँचने पर पका-पकाया भोजन ठाठ से मिलता हो। ३ कारागृह। जेलखाना। (गुंडे और वदमाश)

पद—ससुराल का कुत्ता=वह दामाद जो ससुराल मे पडा रहता हो।

सस्ता—वि०[स० स्वस्थ] [स्त्री० सस्ती]१. (पदार्थ) जिसका मूल्य अपेक्षया साधारण से कुछ कम हो। २. (पदार्थ) जिस के मूल्य में पहले की अपेक्षा कमी हो। जिसका भाव उतर गया हो। ३ जो वहुत ही थोडे व्यय से अथवा सहज मे मिल जाय। जैसे—सस्ता यश। ४ जिसका महत्त्व वहुत ही कम या प्राय नही के समान हो। जैसे—सस्ता अनुवाद, सस्ता परिहास।

सस्ताना—अ०[हिं० सस्ता+ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु का कम दाम पर विकना। सस्ता हो जाना।

स० भाव कम करना। सस्ता करना।

सस्ती—स्त्री०[हिं० सस्ता+ई (प्रत्य०)] १ सस्ते होने की अवस्था या भाव। सस्तापन। २ ऐसा समय जव सव चीजें अपेक्षया कम मूल्य पर विकती हो।

वि० स्त्री० हिं० 'सस्ता' का स्त्री०।

सस्त्रीक—वि०[स० त० त०] जिसके साथ उसकी पत्नी या स्त्री हो। सपत्नीक।

सस्मित—वि० [स०] मुस्कराहट या हँसी से युक्त। जैसे—सस्मित मुखारविंद।

क्रि० वि० मुस्कराते हुए।

सस्य—पु०[स० शस्य]१ अनाज। धान्य। २ पौधो, वृक्षो आदि का उत्पादन। ३ शस्त्र। हथियार। ४. विशेषता। गुण।

सस्यक—पु० [सं० सस्य+कन्] १ वृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार की मणि। २. असि। तलवार। ३. शस्य। धान्य। ४ साधु व्यक्ति।

वि० गुणो या विशेषताओ से युक्त।

सस्वेदा—स्त्री०[स० अव्य० स०] ऐसी कन्या जिसका हाल ही मे कौमार्य भग हुआ हो। दूषित कन्या।

सहगा*—वि०[हिं० महँगा का अनु०] [स्त्री० सहँगी, भाव० सहँगापन] सस्ता। उदा०—मनि, मानिक सहँगे किए महँगे तृन जल नाज। —तुलसी।

सह—अव्य०[स०]सहित। समेत।

वि०१ उपस्थित। विद्यमान। २ सदृश। समान। ३ सक्षम। समर्थ। ४ सहनशील। सहिष्णु। ५ (पदार्थ) जो किसी प्रकार का प्रभाव सहन करने मे यथेष्ट समर्थ हो। (प्रूफ़) जैसे—अग्निसह-तापसह आदि।

उप० कुछ विशेषणो, संज्ञाओ आदि के पहले यह उपसर्ग के रूप मे लगकर यह अर्थ देता है—किसी के साथ मे; जैसे—सहगामी, सहचर, सहजात आदि।

पु० १ सादृश्य। समानता। वरावरी। २ शक्ति। सामर्थ्य। ३ अगहन-का महीना। मार्गशीर्ष। ५ पांशु लवण। ५ शिव का एक नाम।

स्त्री० समृद्धि।

सह-अपराधी—पु०[स०] वह जो किसी अपराधी के साथ रहकर उसके अपराध मे सहायक हुआ हो। अभिषंगी। (एकम्लिप्स)

सह-अस्तित्व—पु०[स०]=सह-जीवन।

सहकर्मी(र्मिन्)—वि०[स०]१ (वह) जो किसी के साथ काम करता हो। किसी के साथ मिलकर काम करनेवाला। २ किसी कार्यालय, संस्था आदि मे जो साथ-साथ मिलकर काम करते हो। (कॉलीग, उक्त दोनो अर्थो मे)

सहकार—पु०[स०]१. सुगंधित पदार्थ। २ आम का वृक्ष। ३. एक दूसरे के कार्यों मे सहयोग करना। ४ औरो के साथ मिलकर काम करने की वृत्ति, क्रिया या भाव। सहयोग।(कोऑपरेशन)५. दे० 'सहकर्मी'।

सहकारता—स्त्री० [स० सहकार+तल्—टाप्]=सहकारिता।

सहकार-समिति—स्त्री०[स०] वह समिति या सस्था जो कुछ विशेष प्रकार के उपभोक्ता, व्यवसायी आदि आपस मे मिलकर सब के हित के लिए बनाते है और जिसके द्वारा वे कुछ चीजें बनाने-बेचने आदि की व्यवस्था करते है। (कोआपरेटिव सोसाइटी)

सहकारिता—स्त्री०[स०]१ साथ मिलाकर काम करना। सहकारी-होना। (कोआपरेशन) २ सहकारी या सहायक होने का भाव। ३. मदद। सहायता।

सहकारी—वि० [स०] १ सहकार-सबधी। सहकार का। २ सह-कारिता सबधी।३ (व्यक्ति) जो साथ-साथ काम करते हों तथा एक दूसरे के कामो मे सहायता करते हों। ४. सहायक। मददगार।

सहगण—पु०[स०]=सश्रय।

सह-गमन—पु०[सं० सह√गम् (जाना)+ल्युट्—अन्] १. किसी के साथ जाने की क्रिया। २ मृत पति के शव के साथ पत्नी का चिता पर चढना।

सहगवन†—पु०=सहगमन।

सह-गान—पु०[स०] १ कई आदमियो का साथ मिलकर गाना। २. ऐसा गाना जो कई आदमी मिलकर गते हो। सवेतगान। (कोरस)

सहगामिनी—स्त्री० [स० सह√ गम् (जाना)+णिनि—ङीप्]१. वह स्त्री जो मृत पति के शव के साथ सती हो। पति की मृत्यु पर उसके साथ जल मरनेवाली स्त्री। २ पत्नी। ४. सहचरी।

सहगामी (मिन्)—वि० [स० सह√ गम् (जाना)+णिनि] [स्त्री० सहगामिनी]१ साथ चलनेवाला। साथी। २ अनुयायी।

सहगौन†—पु० =सहगमन।

सहचर—वि०[स०] [स्त्री० सहचरी]१. साथ-साथ चलनेवाला। २. उठने-बैठने, चलने-फिरने आदि मे प्राय साथ रहनेवाला। साथी।
पु० १ मित्र। २ सेवक।

सहचरी—स्त्री०[स० सह√ चर् (चलना)+ङीप्]१ सहचर का स्त्री० रूप। २. साथ रहनेवाली स्त्री। सखी। ३. पत्नी। भार्या।

सहचार—पु०[स०]१ दो या अधिक व्यक्तियों का साथ चलना। २ वह अवस्था जिसमें व्यक्तियों, विचारो आदि मे पूरी पूरी सगति होती है। (एसोसिएशन)३ सहचर। साथी।

सहचार उपाधि लक्षणा—स्त्री०[स० सहचार-उपाधि-ब० स० लक्षणा मध्यम० स०] साहित्य मे, एक प्रकार की लक्षणा जिसमे जड सहचारी के कहने से चेतन सहचारी का बोध होता है।

सहचारिणी—वि०[स०]१. साथ मे रहनेवाली। सहचरी। २. पत्नी। भार्या।

सहचारिता—स्त्री०[स० सहचारि—तल्—टाप्] सहचारी होने की अवस्था, गुण या भाव।

सहचारित्व—पु०[स० सहचारि+त्व]=सहचारिता।

सहचारी (रिन्)—वि० [स०] [स्त्री० सहचारिणी] साथ चलने या रहनेवाला।
पु०१. सगी। साथी। २. नौकर। सेवक।

सहज—वि० [स०] [स्त्री० सहजा, भाव० सहजता]१ (गुण, तत्त्व, पदार्थ या प्राणी) जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। जैसे—सहज कर्तव्य, सहज ज्ञान आदि। २ प्राकृतिक। स्वाभाविक। ३ जो सभी दृष्टियों मे ठीक और पूरा हो। पूरी तरह और निर्विवाद रूप से ठीक और आदर्श। उदा०—मिलहिं सो बर सहज सुन्दर सांवरो।—तुलसी। ४. जिसके प्रतिपादन या सपादन मे कोई कठिनता न हो। सरल। सुगम। ५ जन्म से प्रकृति के साथ उत्पन्न होने अथवा अपने साधारण रूप मे रहनेवाला। प्रकृत। (नार्मल) ६. मामूली। साधारण।
पु० १ सगा भाई। सहोदर। २. प्रकृति। स्वभाव। ३ बौद्धो के अनुसार वह मानसिक स्थिति जो प्रज्ञा और उपाय के योग से उत्पन्न होती है। ४ फलित ज्योतिष मे, जन्म-लग्न से तृतीय स्थान जिसमे भाइयो, बहनो आदि का विचार किया जाता है। ५ दे० 'सहज-ज्ञान'।

सहज-ज्ञान—पु०[सं०] १. ऐसा ज्ञान जो जीव या प्राणी के जन्म के साथ ही उत्पन्न हुआ हो। प्रकृति-दत्त ज्ञान। सहज-बुद्धि। (देखें) २ वह ज्ञान या चेतना-शक्ति जिससे आत्मा सदा आनन्द और शाति से सम्पन्न रहती है।

सहजता—स्त्री०[स० सहज+तल्—टाप्]१ सहज होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सरलता। आसानी।

सहजधारी (धारिन्)—पुं० [स०] सिक्ख संप्रदाय मे, वह व्यक्ति जो सिर तथा दाढी के बाल न बढाता हो पर फिर भी गुरु ग्रथ साहब का अनुयायी समझा जाता हो।

सहज-ध्यान—पु०[स०] सहज समाधि। (दे०)

सहजन†—पु०=सहिजन।

सहजन्मा (न्मन्)†—वि० [स०] १. किसी के साथ एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई आदि)। २ यमज (सन्तान)।

सहजपंथ—पु०[हिं० सहज+पथ] पूर्वी भारत मे प्रचलित एक गौडीय वैष्णव सम्प्रदाय जो बौद्ध तथा हिन्दू तान्त्रिको से प्रभावित है।
विशेष—यह संप्रदाय मूलत. बौद्धो के सहजयान का एक विकृत रूप है।

सहज-बुद्धि—स्त्री०[स०] वह बुद्धि या समझ जो जीवो या प्राणियो मे जन्म-जात होती है; और जिसके फलस्वरूप वे विशिष्ट अवस्थाओ मे आप ही आप कुछ विशिष्ट प्रकार के आचरण और व्यवहार करते हैं। (इंस्टिंक्ट)जैसे—स्तनपायी जतुओ का अपने बच्चो को दूध पिलाना, चिडियो का घोसला बनाना आदि।

सहज-मार्ग—पु०[स०] सहजयान वाली साधना का प्रकार।

सहज-मित्र—पु०[स० कर्म० स०] ऐसे व्यक्ति जो प्राय तथा स्वभावत मित्रता का भाव रखते हों और जिनसे किसी प्रकार के अनिष्ट की आशका न की जाती हो।
विशेष—हमारे शास्त्रो मे भानजा, मौसेरा भाई और फुफेरा भाई सहज-मित्र और वैमात्रेय तथा चचेरे भाई सहज-शत्रु कहे गये हैं।

सहज-यान—पु०[स०] एक बौद्ध सप्रदाय जो हठयोग के कुछ सिद्धान्तो के अनुसार धार्मिक साधना करता था।

सहज-यानी—वि०[सं० सहज-यान] सहज-यान सबधी। सहज-यान का। पु० वह जो सहज-यान सप्रदाय का अनुयायी हो।

सहज-योग—पु०[स०] ईश्वर के नाम के जप के रूप मे की जानेवाली साधना, जिसमे हठयोग आदि की कष्टदायक क्रियाओ की आवश्यकता नही होती।

सहजवाद—पु०[स०] सहज पथ का मत या सिद्धान्त।

सहजवदी—वि०[स०] सहजवाद-सम्बन्धी। सहजवाद का। पु० वह जो सहजवाद का अनुयायी हो।

सहज-शत्रु—पु०[स० कर्म० स०] सौतेला या चचेरा भाई जो सपत्ति के लिए प्रायः झगडा करता है। (शास्त्र)

सहज-शून्य—पु०[स०] ऐसी स्थिति जिसमे किसी प्रकार का परिज्ञान, भावना या विकार नाम को भी न रह जाय।

सहज-समाधि—स्त्री०[स०]१ बौद्ध तात्रिको और हठयोगियो के अनुसार वह स्थिति जिसमे मनुष्य समस्त वाह्य आडवरो से रहित होकर सरलतापूर्वक जीवन निर्वाह करता है। २ वह अवस्था जिसमे मनुष्य विना समाधि लगाये जीते जी ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है। जीवन्मुक्ति।

सहज-सुंदरी—स्त्री०[स०] बौद्ध तत्र शास्त्र मे, चाडाली या सुपुम्ना नाडी का वह रूप जो उसे अपनी ऊर्ध्व गति से डोम्बी मे पहुँचाने पर प्राप्त होता है।

सहजस्थान—पु०[स०] जन्म-कुडली मे का तीसरा घर, जिससे इस वात का विचार होता है कि किसी के कितने भाई या वहने होगी।

सहजात—वि०[स०] १ जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। २ (परस्पर वे) जो एक ही माता-पिता से उत्पन्न हुए हो। (कान्जेनिटल)। ३ यमज। पु० सगा भाई। सहोदर।

सहजाधिनाथ—पु०[स०] जन्म-कुडली के सहज स्थान (तीसरे घर) का अधिपति ग्रह।

सहजानद—पु०[स० सहज+आनन्द] वह आनन्द या सुख जो योगियो को सहजावस्था मे पहुँच जाने पर मिलता है।

सहजानि—स्त्री० [स०] पत्नी। स्त्री। जोरू।

सहजारि—पु०[स०]=सहज-शत्रु।

सहजार्श—पु०[स०] ऐसा अर्श या ववासीर (रोग) जिसके मस्से कठोर पीले रग के और अदर की ओर मुँहवाले हो। (वैद्यक)

सहजावस्था—स्त्री०[स० सहज+अवस्था] योग-साधन मे, मन की वह अवस्था जिसमे वह पूर्ण रूप से सहज-शून्य (देखे) या इच्छा, ज्ञान, विकार आदि से विलकुल रहित हो जाता है।

सहजिया—पु० दे० 'सहजपथी'।

सहजीवन—पु०[स०]१. सब देशो और राष्ट्रो के लोगो का आपस मे मिलजुलकर शातिपूर्वक रहना और युद्ध आदि से बचना। (को-एग्जिस्टेन्स) २ वनस्पति विज्ञान मे, अलग-अलग प्रकार के दो पेड-पौधो (या एक पौधे और एक जीव) का इस प्रकार सटकर या एक दूसरे पर आश्रित और स्थित होकर रहना कि दोनो का एक दूसरे से पोपण हो। (सिम्वायोसिस) जैसे—मूँगा और उसके साथ रहनेवाला समुद्री जीव।

सहजीवी (विन्)—वि०[स०] किसी के साथ रहकर जीवन वितानेवाला। विशेप दे० 'सहजीवन'।

सहजेंद्र—पु० [स०] 'सहजाधिनाथ'। (दे०)

सहजे*—अव्य०[हिं० सहज] वहुत सहज मे। आसानी से। अनायास।

सहत†—पु०=शहद।
†वि०=सस्ता।

सहत-महत—पु०=श्रावस्ति।

सहतरा—पु०[फा० शाहतरह] पित्त पापडा। पर्पटक।

सहता—वि०[हिं० सहना] [स्त्री० सहती]१. जो सहज मे सहन किया जा सके। २ जो इतना गरम हो कि सहन किया जा सके। जैसे—सहते पानी से स्नान करना।
†वि०=सस्ता। उदा०—आँखिया के आँधर सूझत नाही, दरुआ ले सहता वा वीउ।—विरहा।

सहताना*—अ०[हिं० सहता=सस्ता] सस्ता होना।
अ०=सुस्ताना।

सहतूत†—पु०=शहतूत।

सहत्व—पु०[स० √सह् (सहन करना)+अच्—त्व]१ सह अर्थात् साथ होने की अवस्था या भाव। २. एकता। ३. मेलजोल।

सह-दान—पु०[स० कर्म० स०] वहुत से देवताओ के उद्देश्य से एक या एक मे किया जानेवाला दान।
†स्त्री०=सहदानी।

सहदानी—स्त्री०[स० सज्ञान] स्मृति-चिह्न। निशानी। यादगार। उदा०—रैदास सत मिले मोहि सतगु दीन्ही सुरत सहदानी।—मीराँ।

सहदूल†—पु०=शार्दूल (सिंह)।

सहदेई—स्त्री०[स० सहदेवा] क्षुप जाति की एक पहाडी वनस्पति जिसका उपयोग ओपधि के रूप मे होता है।

सहदेव—पु०[स० ब० स०, त० त० वा]१ राजा पाडु के पाँच पुत्रो मे से सबसे छोटे पुत्र का नाम। २ जरासन्ध का एक पुत्र।

सहदेवा—स्त्री० [स० सहदेव—टाप्] १ सहदेई । पीतपुष्पी। २ वरियारा। वला। ३ अनन्तमूल। ४. ददोत्पल। ५ प्रियगु। ६ नील। ७ सर्पाक्षी। ८ सोनवली। ९ भागवत के अनुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी का नाम।

सहदेवी—स्त्री०[स० सह√दिव् (पूजन करना आदि)+अच्—ङीप] १ सहदेई। पीतपुष्पी। २ सर्पाक्षी। सरहटी। ३ महानीली। ४ प्रियगु।

सहदेवीगण—पु०[स० प० त०] वैद्यक मे, सहदेई, वला, शतमूली, शतावर, कुमारी, गुडुच, सिंही और व्याघ्री आदि ओपधियो का वर्ग जिनसे देवप्रतिमाओ को स्नान कराया जाता है।

सहदेस†—वि०[?] स्वतन्त्र। उदा०—तासो नेह जो दिढ करै थिर आर्छाह सहदेस।—जायसी।

सह-धर्मचारिणी—स्त्री०[स०] पत्नी। भार्या।

सह-धर्मिणी—स्त्री०[स०] पत्नी। भार्या।

सह-धर्मी (र्मिन्)—वि०[स०] [स्त्री० सहधर्मिणी]१ पारस्परिक दृष्टि से वे जो एक ही धर्म के अनुयायी हो। २ साथ मिलकर धर्म का आचरण या पालन करनेवाले।

सहन--पु०[स०]१. सहने की क्रिया या भाव। २ आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। (एवाइड) ३ क्षमा। तितिक्षा।
पु०[अ०]१ घर के बीच का खुला भाग। आँगन। चौक। २ घर के सामने का और उससे सलग्न खुला भाग। ३ एक प्रकार का रेशमी कपडा। ४. गजी या गाढा नाम का मोटा सूती कपडा।

सहनक--स्त्री०[अ०]१. एक प्रकार की छिछली रकावी जिसका व्यवहार प्राय मुसलमान लोग करते है। तवक। २ बीबी फातिमा की निमाज या फातिहा। (मुसल०)

सहनची--स्त्री०[अ० सहन से स्त्री० अल्पा० फा०] सहन या आँगन के इधर-उधर वाली छोटी कोठरी।

सहनशील--वि०[व० स०] [भाव० सहनशीलता] (व्यक्ति) जिसमे अत्याचार, दुर्व्यवहार, विपत्ति आदि सहन करने की स्वाभाविक क्षमता या प्रवृत्ति हो।

सहनशीलता--स्त्री०[स० सहनशील+तल्--टाप्] १. सहनशील होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सतोष। सब्र।

सहना--स०[स० सहन]१ कोई अनुचित, अप्रिय अथवा हानिकारक बात होने पर अथवा कष्ट आदि आने पर किसी कारण-वश चुपचाप अपने ऊपर लेना।
विशेष--यद्यपि झेलना, भोगना और सहना बहुत कुछ समानार्थक समझे जाते हैं, परन्तु तीनो मे कुछ अन्तर है। झेलना का प्रयोग ऐसी विकट परिस्थितियो के प्रसग मे होता है जिनमे मनुष्य को अध्यवसाय और साहस से काम लेना पडता है। जैसे--विधवा माता ने अनेक कष्ट झेलकर लडके को अच्छी शिक्षा दिलाई थी। भोगना का प्रयोग कष्ट या दु ख के सिवा प्रसन्नता या सुख के प्रसगो मे भी होता है, पर कष्टप्रद प्रसगो मे मुख्य भाव यह रहता है कि आया हुआ कष्ट या सकट दूर करने मे हम असमर्थ है; इसी लिए विवशतापूर्वक सिर झुकाकर उसका भोग करते है। परन्तु सहना मुख्यत मनुष्य की शक्ति पर आश्रित होता है। जैसे--इतना घाटा तो हम सहज मे सह लेगे। सहना मे मुख्य भाव यह है कि हम व्यर्थ की झझट नही बढाना चाहते, मन की शाति नष्ट नही करना चाहते अथवा जानबूझकर उपेक्षा कर रहे है। जैसे--हम उनके सब अत्याचार चुपचाप सहते रहे।
२ अपने ऊपर कोई भार लेकर उसका निर्वाह या वहन करना। ३ किसी प्रकार का परिणाम या फल अपने ऊपर लेना।
अ० किसी वस्तु का ग्रहण, धारण या भोग करने पर उसका सह्य या अच्छी तरह फलदायक सिद्ध होना। जैसे--(क) यह नीलम मुझे सह गया है। (ख) वह मकान उन्हे नही सहा।
अ०हिं० 'रहना' के साथ प्रयुक्त होनेवाला उसका अनुकरण-वाचक शब्द। जैसे--कही या किसी के साथ रहना-सहना।
†पु० साहनी।

सहनाइन--स्त्री०[फा० शहनाई+आयन (प्रत्य०)] शहनाई बजानेवाली स्त्री।

सहनाई--स्त्री०=शहनाई।

सहनीय--वि०[स० √सह् (सहन करना)+अनीयर्] जो सहा जा सके। सहे जाने योग्य। सह्य।

सहपति--पुं०[स०] ब्रह्मा का एक नाम।

सहपाठी (ठिन्)--पु० [स०] [स्त्री० सहपाठिन] १ वे जो साथ साथ किसी गुरु से या किसी विद्यालय मे पढते हो या पढे हो। सहाध्यायी। २ जो एक ही कक्षा मे पढते हो। (क्लासफैलो; उक्त दोनो अर्थो मे)

सहपिंड--पु०[स० त० त०] कर्मकाड मे, सपिंड नाम की क्रिया।

सहबा--स्त्री० [अ०] एक प्रकार की अगूरी शराब।

सह-भागिनी--वि०[स० सह-भागी का स्त्री०] समानता के भाव से किसी कार्य मे सम्मिलित होनेवाली। 'सह-भागी' का स्त्री०।
स्त्री० पत्नी। जोरू।

सह-भागी (गिन्)--वि०[स०] [स्त्री० सहभागिनी] समानता के भाव से किसी काम मे किसी के साथ सम्मिलित होनेवाला।
पु०१ वह जो व्यापार आदि मे किसी के साथ समानता के भाव से सम्मिलित हो और हानि-लाभ आदि का समान रूप से भागी हो। हिस्सेदार। (को-पार्टनर, शेयरर) २ धर्म-शास्त्रीय या विधिक दृष्टि से वह जो किसी सपत्ति का आंशिक रूप से उत्तराधिकारी हो। (को-पार्टनर)

सहभावी--वि०[स० सहभाविन्] सहवर्ती।
पु०१ सगा भाई। सहोदर। २ सहचर। साथी। ३ मददगार। सहायक।

सहभू--वि०[स०] साथ साथ उत्पन्न। सहजात।

सह-भोज, सह-भोजन--पु०[स०] बहुत से लोगो का साथ बैठकर भोजन करना। ज्योनार।

सहभोजी (जिन्)--वि० [स०] (वे) जो एक साथ बैठकर खाते हो। साथ भोजन करनेवाले।

सहम--पु०[फा०] १ डर। भय। खौफ। २ लिहाज। ३ सकोच।

सह-मत--वि०[स०] [भाव० सहमति] १ जिसका मत किसी दूसरे के साथ मिलता हो। २. जो दूसरे के मत को ठीक मानकर उसकी पुष्टि करता हो। ३ जो दूसरे से बातचीत, सधि, समझौता आदि करने के लिए तैयार हो।

सहमति--स्त्री०[स०]१ किसी बात या विषय मे किसी से सहमत होने की अवस्था या भाव। २ किसी बात या विषय मे कुछ या बहुत से लोगो का आपस मे एक-मत होना। (एग्रीमेन्ट)

सहमना--अ० [फा० सहम+हिं० ना (प्रत्य०)] भय खाना। भयभीत होना। डरना।
सयो० क्रि०--जाना।--पड़ना।

सह-मरण--पु०[स० त० त०] [भू० कृ० सह-मृत]१ साथ साथ मरना। २ पत्नी का पति के शव के साथ सती होना।

सह-मात--स्त्री०=शह-मात।

सहमाना--स०[हिं० सहमना का स०] ऐसा काम करना जिससे कोई सहम जाय। भयभीत करना। डराना।
सयो० क्रि०--देना।

सहमृता--वि०[स० ब० स०] (स्त्री) जो अपने पति के शव के साथ सती हो जाय।

सह-युक्त--भू० कृ०[स०]१ किसी के साथ मे मिला या लगा हुआ। २ जिसका साथ युक्त किया गया हो।

सहयोग—पु०[सं० सह√ युज् (मिलना)+घञ्]१ किसी के काम मे योग देकर या सम्मिलित होकर उसका हाथ बटाना। किसी के साथ मिलकर उसके काम मे सहायता करना। २. बहुत मे लोगों के साथ मिलकर कोई काम करने का भाव। (कोआपरेशन) ३. सहायता।

सहयोगवाद—पु०[सं० सहयोग√ वद् (कहना)+ घञ्]ब्रिटिश शासन मे, राजनीतिक क्षेत्र मे सरकार से सहयोग अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने का सिद्धान्त। 'असहयोगवाद' का विपर्याय।

सहयोगवादी--वि०[सं० सहयोग√वद् (कहना)+णिनि] सहयोगवाद-सम्बन्धी।

पु० सहयोगवाद का अनुयायी।

सहयोगिता--स्त्री० [सं० सहयोग+इनच्—टाप्-वृचि, मध्यम० स०] सहयोगी होने की अवस्था या भाव।

सहयोगी—वि०[सं० सह√युज् (मिलना) णिनि, सहयोग+इनि वा] १ सहयोग करने अर्थात् काम मे साथ देनेवाला। साथ काम करनेवाला। २ समकालीन। ३ समवयस्क।

पु०१ वह जो किसी के साथ मिलकर कोई काम करता हो। सहयोग करनेवाला। साथ काम करनेवाला। २ ब्रिटिश शासन मे, असहयोग आन्दोलन छिड़ने पर सब कामों मे सरकार के साथ मिले रहने, उसकी काउंसिलो आदि मे सम्मिलित होने और उसके पद तथा उपाधियाँ आदि ग्रहण करनेवाला व्यक्ति।

सहयोजन—पु०[सं०] [भू० कृ० सहयुक्त, सहयोजित] १ साथ मिलाने की क्रिया या भाव। २. आज-कल वह रीति या व्यवस्था जिसके अनुसार किसी सभा या समिति के सदस्य ऐसे लोगों को भी अपने साथ सम्मिलित कर लेते हैं, जो मूलत निर्वाचित नहीं हुए होते; फिर भी जिनसे काम मे सहायता मिलने की आशा होती है। (कोआप्शन)

सहयोजित—भू०कृ०[सं०] आज-कल किसी सभा-समिति का वह सदस्य जिसे दूसरे सदस्यो ने अपनी सहायता के लिए चुनकर अपने साथ सम्मिलित किया हो। (कोआप्टेड)

सहर—स्त्री०[अ०] प्रात काल। सवेरा।

पु०१ =शहर। २ =सिहोर (वृक्ष)।

पु० [अ० सेह्र ?] जादू। टोना।

सहर-गही—स्त्री०[अ०सहर+फा० गह] वह आहार जो किसी दिन निर्जल व्रत रखने से पूर्व प्रात किया जाता है। सरगी।

विशेष--मुसलमान 'रोजों' मे और सधवा हिंदू स्त्रियाँ तीज, करवा-चौथ आदि के दिन सहरगही खाती हैं।

सहरना†--अ० =सिहरना।

सहरा--पु०[अ०] [वि० सहराई]१ वन। जंगल। २ चित्रकला मे, चित्र की वह भूमिका जिसमे जंगल, पहाड़ आदि दिखाये गये हो। ३. सियाहगोश नामक जंतु।

†पु०दे० 'सेहरा'।

सहराई—वि०[अ०]१ जंगली। वन्य। २. लाक्षणिक अर्थ मे, पागल।

सहराज्य—पु०[सं०] ऐसा राज्य जिसमे दो या अधिक प्रभुसत्ताएं अथवा राष्ट्र मिलकर शासन करते हो। (कन्डोमीनियम)

सहराना*—स०=सहलाना।

†अ०=सिहरना।

सहरिया—पु०[?] एक प्रकार का गेहूँ।

†वि०=शहरी (नागर)।

सहरी—स्त्री०[सं० शफरी] सफरी मछली। शफरी।

†स्त्री०=सहर-गही।

†वि०[सं० सदृशी, प्रा० सरिसी] सदृश। समान। (राज०) उदा०—जूं सहरी भ्रूह नयण मृग जूता।—प्रिथीराज।

वि०=शहरी (नागर)।

सहरण--पु० [सं० ब० स०] चंद्रमा के एक घोड़े का नाम।

सहल—वि०[अ० सरल से अ०] आसान। सरल।

सहलगी--पु०[हिं० साथ+लगना] वह जो चलते समय किसी के साथ हो ले। रास्ते का साथी। हमराही।

सहलाना—स०[हिं० सहर=धीरे]१ किसी अक्रिय, सुप्त या दुखते हुए अंग पर इस प्रकार धीरे धीरे हाथ या उँगलियाँ फेरना तथा बार बार रगड़ना कि उसमे चेतना या सक्रियता आ जाय अथवा सुख की अनुभूति हो। जैसे—किसी का हाथ, पैर या सिर सहलाना। २ प्यार से किसी पर हाथ फेरना। ३ मलना।

सहवन—पुं०[देश०] एक प्रकार का तेल्हन।

सहवर्ती—वि० [सं०] [स्त्री० सहवर्तिनी] किसी के साथ वर्तमान रहने-वाला। साथ मे रहने या होनेवाला। (कान्कामिटेंट)

सहवर्ती लिंग—पु० दे० 'लिंग' (न्यायशास्त्र वाला विवेचन)।

सहवाद--पु०[सं० सह√वद् (कहना)+घञ्] आपस मे होनेवाला तर्क-वितर्क। वाद-विवाद। बहस।

सह-वास—पु०[सं०]१ किसी के साथ रहना। २ एक ही घर मे दो परिवारो का या एक ही कमरे मे दो विद्यार्थियो, कर्मियो आदि का मिलकर रहना। २ मैथुन। संभोग।

सहवासी(सिन्)—वि०[सं० सहवासिन्]साथ रहनेवाला।

पु० संगी-साथी।

सहव्रता—स्त्री०[सं० ब० स०] पत्नी। भार्या। जोरू।

सहसंभव—वि० [सं० ब० स०] जो एक साथ उत्पन्न हुए हो। सहज।

सहस—वि०, पु०=सहस्र (हजार)।

सहसकिरन†—पु०=सहस्र-किरण (सूर्य)।

सहसगो†—पु०=सहस्रगु (सूर्य)।

सहसजीभ†—पु०=सहस्रजिह्व (शेषनाग)।

सहसदल*—पु०=सहस्रदल (कमल)।

सहसनयन—पु०=सहस्रनयन (इंद्र)।

सहसफण—पु०=सहस्रफन (शेषनाग)।

सहसवदन—पु०=सहस्रवदन (शेषनाग)।

सहस-बाहु†—पु०=सहस्रबाहु।

सहसमुख†—पु०=सहस्रमुख (शेषनाग)।

सहसमेखी†—स्त्री०[सं० सहस्र +हिं० मेख] युद्ध के समय हाथ मे पहनने का एक प्रकार का प्राचीन दस्ताना जिसमे मेखें लगी होती थी और जो कोहनी से कलाई तक का भाग ढकता था।

सहससीस—पु०=सहस्रशीर्ष (शेषनाग)।

सहसा—अव्य० [सं०] १ इस प्रकार एकदम जल्दी से या ऐसे रूप मे जिसकी पहले से आशा या कल्पना न की गई हो। अकस्मात्।

अचानक। एकाएक। जैसें—वह सहसा उठकर वहाँ से चला गया। २ विना विचारे उतावली से। जैसे—सहसा वह भी नदी मे कूद पड़े।

विशेष—सहसा मे मुख्य भाव विना कुछ सोचे-विचारे शीघ्रतापूर्वक कोई काम कर बैठने का है। जैसे—वह सहसा डरकर चिल्ला पडा। अकस्मात् मे मुख्य भाव अकल्पित या अतर्कित रूप से कोई वात होने का है। जैसे—अकस्मात डाकुओ ने आकर गोलियाँ चलानी शुरू कर दी। अचानक भी वहुत कुछ वही है, जो अकस्मात् है, फिरभी इसमे उग्रता और तीव्रतावाला तत्त्व अपेक्षया कम है। जैसे—अचानक घर मे आग लग गई। एकाएक मे किसी चलते हुए क्रम मे एकदम से कोई नया परिवर्तन होने का प्रधान भाव है। जैसे—एकाएक आँधी चलने लगी, और आकाश मे वादल घिर आए।

सहसाक्षि—पु०=सहस्राक्ष (इद्र)।

सहसाखी†—पु०=सहस्राक्ष (इद्र)।

सहसानन†—पु०=सहस्रानन (शेषनाग)।

सहस्त—वि० [स० अव्य स०] १ हस्तयुक्त। २ हथियार चलाने मे कुशल।

सहस्र—वि० [स०]१. जो गिनती मे दस सौ हो। हजार। २ लाक्षणिक अर्थ मे, अत्यधिक। जैसे—सहस्र धी।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००० ।

सहस्रक—वि०[स० सहस्र+कन्] १ सहस्र-सम्बन्धी। २ एक हजार वाला।

पु० एक ही प्रकार या वर्ग की एक हजार वस्तुओ का समाहार या कुलक।

सहस्रकर—पु० [स०] सूर्य।

सहस्र-किरण—पु० [स०] सूर्य।

सहस्रगु—पु० [स०] सूर्य।

सहस्रचक्षु(स्)—पु०[स०] इद्र।

सहस्र-चरण—पुं० [स० व० स०] विष्णु।

सहस्रजित—पु०[स०]१ विष्णु। २ मृगमद। कस्तूरी। ३ जावंवती के गर्भ से उत्पन्न श्री कृष्ण का एक पुत्र।

सहस्रणी—पु० [स० सहस्र√नी (ढोना)+क्विप्] हजारो रथियो की रक्षा करनेवाले, भीष्म।

सहस्र-दंष्ट्रा—स्त्री० [स०]१ एक प्रकार की मछली जिसके मुँह मे वहुत अधिक दाँत होते हैं। २ कुछ लोगो के मत से पाठीन नामक मछली।

सहस्रद—पु०[स० सहस्र√दा (देना)+क] १ वहुत वडा दानी। २ हजारो गौएँ आदि दान करनेवाला वहुत वडा दानी। ३ पहिना या पाठीन मछली।

सहस्रदल—पु० [स० व० स०] हजार दलोवाला अर्थात् कमल।

सहस्रदृश—पु०[स०]१ विष्णु। २ इन्द्र।

सहस्रधारा—स्त्री०[स०]देवताओ आदि का अभिषेक करने का एक प्रकार का पात्र जिसमे हजारो छेद होते है।

सहस्रधी—वि०[स० व० स०] वहुत वडा वुद्धिमान्।

सहस्रधौत—वि०[स० मध्यम० स०] हजार वार धोया हुआ।

पु० हजार वार पानी से धोया हुआ घी जिसका व्यवहार औषध के रूप मे होता है।

सहस्रनयन—पु०[स० व० स०]१ विष्णु। २ इन्द्र।

सहस्रनाम—पु० [स० व० स०, कम० स० व] वह स्तोत्र जिसमे किसी देवता या देवी के हजार नाम हों। जैसे—विष्णु सहस्रनाम, शिव सहस्रनाम, दुर्गा सहस्रनाम आदि।

सहस्रनामा(मन्)—पु० [स० व० स०] १ विष्णु। २ शिव। ३. अमल्वेत।

सहस्रनेत्र—पु०[स०] १. इद्र। २ विष्णु।

सहस्रपति—पु०[स० प० त०] प्राचीन भारत मे, हजार गाँवो का स्वामी और शासक।

सहस्रपत्र—पु०[स०] कमलपत्र।

सहस्रपाद—पु०[स० व० स०]१ विष्णु। २. शिव। २ महाभारत के एक ऋषि।

सहस्रपाद—पु०[स० व० स०]१ सूर्य। २. विष्णु। ३ सारस पक्षी।

सहस्रबाहु—पु० [स० व० स०] १ शिव। २. कार्तवीर्यार्जुन या हैहय का एक नाम। ३ राजा वलि के सवसे वडे पुत्र का नाम।

सहस्र-भागवती—स्त्री०[सं०] देवी की एक मूर्ति।

सहस्रभुज—पुं०=सहस्रवाहु।

सहस्रभुजा—स्त्री०[स० व स०] दुर्गा का हजार वाहोवाला वह रूप जो उन्होंने महिषासुर को मारने के लिए धारण किया था।

सहस्र-मूर्ति—पु० [स० व० स०] विष्णु।

सहस्र-मूर्द्धा (र्द्धन्)—पु०[स०]१ विष्णु। २ शिव।

सहस्रमूलिका, सहस्रमूली—स्त्री०[स०] १ काडपत्री। २ वड़ी दती। ३ मूसाकाणी। ४ वडी शतावर। ५ मुद्गपर्णी। वनमूँग।

सहस्रमौलि—पु०[स० व० स०]१ विष्णु। २. अनतदेव का एक माम।

सहस्ररश्मि—पु० [स० व० स०] सूर्य।

सहस्र-लोचन—पु०[स० व० स०] इद्र।

सहस्र-वीर्य—वि०[स०व०स०]वहुत वडा वलवान्। वहुत वडा ताकतवर।

सहस्रशः (शस्)—अ०[स० सहस्+शस्] हजारो तरह से।

वि० कई हजार। हजारो।

सहस्रशाख—पु०[स० व० स०] वेद, जिनकी हजार शाखाएँ हैं।

सहस्र-शिखर—पु०[पु० व० स०] विंध्य पर्वत का एक नाम।

सहस्र-शीर्ष(न्)—पु[स० व० स०] विष्णु।

सहस्र-श्रुति—पु० [स० व० स०] पुराणानुसार जंवूद्वीप का एक वर्ष-पर्वत।

सहस्रसाव—पु०[स० व० स०] अश्वमेध यज्ञ।

सहस्रांक—पु०[स० व० स०] सूर्य।

सहस्रांशु—पुं० [स० व० स०] सूर्य।

सहस्रांशुज—पु०[स० सहस्राशु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] शनिग्रह।

सहस्रा—स्त्री०[स० सहस्त्र—टाप्]१ मात्रिका। अवष्टा। मोइया। २ मयूरशिखा।

सहस्राक्ष—वि०[स० व० स०] हजार आँखोवाला।

पु०१ इंद्र। २ विष्णु। ३ उत्पलाक्षी देवी का पीठ स्यान। (देवी भागवत)

सहस्रात्मा (त्मन्)—पु०[स० व० स०] ब्रह्मा।

सहस्राधिपति—पु०[स० ष० त०] प्राचीन भारत मे, वह अधिकारी जो

किसी राजा की ओर से एक हजार गाँवों का शासन करने के लिए नियुक्त होता था।

सहस्रानन—पु० [स० ब० स] विष्णु।

सहस्राब्दि—स्त्री०[स०] किसी संवत् या सन् के हरएक से हर हजार तक के वर्षों अर्थात् दस शताब्दियों का समूह। (माइलीनियम)

सहस्रायु—वि० [स० ब० स०] हजार वर्ष जीनेवाला।

सहस्रार—पु०[स० ब० स०] १ हजार दलोंवाला एक प्रकार का कल्पित कमल। २ जैन पुराणों के अनुसार बारहवें स्वर्ग का नाम। ३ हठयोग के अनुसार शरीर के अन्दर के आठ कमलों या चक्रों मे से एक जो हजार दलों का माना गया है। इसका स्थान मस्तक का ऊपरी भाग माना जाता है। इसे शून्य चक्र भी कहते हैं। आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह विचार-शक्ति और शरीर का विकास करनेवाली ग्रन्थियों का केंद्र है।

सहस्रार्चि (स्)—वि०[स० ब० स०] हजार किरणोंवाला।
पु० सूर्य।

सहस्रावर्ता—स्त्री०[स० सहस्रावर्त्त—टाप्] देवी की एक मूर्ति।

सहस्रास्य—पु०[स० ब० स०]१ विष्णु। २ अनंत नामक नाग।

सहस्रिक—वि० [स० सहस्र+ठन्—इक] हजार वर्ष तक चलता रहने या होनेवाला।

सहस्री (स्रिन्)—पु० [स० सहस्र+इनि] वह वीर या नायक जिसके पास हजार योद्धा, घोडे, हाथी आदि हों।
स्त्री० एक ही तरह की हजार चीजों का वर्ग या समूह।

सहस्रेक्षण—पु०[स० ब० स०] इंद्र।

सहांश—पुं०[स० सह+अंश] किसी और के साथ रहने या होने पर मिलनेवाला अंश या भाग।

सहांशी—पु०[स० सह+अंशी]वह जो किसी के साथ किसी प्रकार के लाभ या संपत्ति मे अपना भी अंश या हिस्सा पाने का अधिकारी हो। साझीदार। (कोशेयरर)

सहा—स्त्री० [स०√ सह् (सहन करना)+अच्—टाप्] १ घीकुआर। ग्वारपाठा। २ वनमूंग। ३ दंडोत्पल। ४ सफेद कटसरैया। ५ कवी का ककही नामक वृक्ष। ६ सर्पिणी। ७ रासना। ८ सत्यानाशी। ९ सेवती। १० हेमंत ऋतु। ११ अगहन मास। १२ मरवन। १३ देवताड का वृक्ष। १४ मेंहदी।

सहाइ†—स्त्री०=सहायता।
†वि०=सहायक।

सहाई*—वि० [स० सहाय्य] सहायक। मददगार। उदा०—नैन सहाई पलक ज्यों देह सहाई हाथ।
†स्त्री०=सहायता।

सहाउ†—वि०, पु०=सहाय।

सहाध्यायी (यिन्)—वि०[स० सह-आ-अधि√ ई (पढना)+णिनि] जिसने किसी के साथ अध्ययन किया हो। सहपाठी।
पु० साथ साथ अध्ययन करनेवाले शिक्षार्थी।

सहाना—स० [हिं० सहना का स०] ऐसा काम करना जिससे किसी को कुछ सहना पडे।
†पु०=शहाना (राग)।

सहानी—वि० स्त्री०=शहानी।

सहानुगमन—पु०=सहगमन। (दे०)

सहानुभूति—स्त्री०[स० सह-अनु √भू (होना)+क्तिन्]१ ऐसी अनुभूति जो साथ साथ दो या अधिक व्यक्तियों को हो। २ वह अवस्था जिसमे मनुष्य दूसरे की अनुभूति (विशेषत कष्टपूर्ण अनुभूति) का अनुभव शुद्ध हृदय से करता है और उससे उसी प्रकार प्रभावित होता है जिस प्रकार दूसरा व्यक्ति हो रहा हो। संवेदना। हमदर्दी। (सिम्पैथी) ३ अनुकम्पा। दया।

सहानुसरण—पु० [स०सह-अनु√सृ (गत्यादि)+ल्युट्—अन]=सहानुगमन (सहगमन)।

सहापराधी—पु० [स० सहापराध+इनि] किसी अपराध मे मुख्य अपराधी का साथ देने और उसकी सहायता करनेवाला (व्यक्ति)। (एकाम्प्लिस)

सहाब—पु० =सहाब।

सहाबी—पु० [अ०][स्त्री० सहाबिया] वे लोग जो मुहम्मद साहब के उपदेश से मुसलमान हो गये थे और मरण पर्यन्त इस्लाम धर्म को मानते रहे।

सहाय—वि०[स०] सहायता करनेवाला।
पुं० १ वह जो दूसरों की सहायता करता हो और उनके कष्ट-दुःख दूर करता हो। २ साथी। ३ अनुयायी। ४ सहायता। ५ आश्रय। सहायता। ६ एक प्रकार का हंस। ७ एक प्रकार की वनस्पति।

सहायक—वि०[स०] १ किसी की सहायता करनेवाला। जैसे—दुःख-सुख मे अपने ही सहायक होते है। २ कार्य, प्रयोजन आदि के संपादन या सिद्धि मे योग देनेवाला। जैसे—पढने मे आँखें ही सहायक होंगी। ३ (वह अधिकारी या कर्मचारी) जो किसी उच्च अधिकारी के अधीन रहकर उसके कार्यों के संपादन मे योग देता हो। जैसे—सहायक मंत्री सहायक संपादक। ४ किसी के साथ मिलकर उसकी वृद्धि करनेवाला। जैसे—सहायक आजीविका, सहायक नदी।

सहायक-नदी—स्त्री०[स०] भूगोल मे, किसी बडी नदी मे आकर मिलनेवाली कोई छोटी नदी। (ट्रिब्यूटरी)

सहायता—स्त्री० [स०] १ सहाय होने की अवस्था या भाव। २ उद्योग या प्रयत्न जो दूसरे का काम संपादित करने या सहज बनाने के निमित्त किया जाता है। जैसे—उसने उन्हें पुस्तक लिखने मे सहायता दी। ३ अभावग्रस्त का अभाव दूर करने के लिए उसे दिया जानेवाला धन या अनुदान। जैसे—सरकारी सहायता से यह उद्योग चल रहा है। ४ अनाथों, निर्धनो आदि को निर्वाह या भरण-पोषण के उद्देश्य से दिया जानेवाला धन या वस्तुएँ।

सहायन—पु०[स०सह√अच् (गत्यादि)+ल्युट्—अन √इण (गत्यादि)+ल्युट्—अन वा]१ साथ चलना या जाना। २ साथ देना। ३ सहायता करना।

सहायी†—वि० =सहायक।
†स्त्री०=सहायता।

सहार—पु० [स० सह√ऋ (गमनादि)+अच्, त० त० वा] १ आम का पेड़। सहकार। २ महाप्रलय।

स्त्री०[हिं० सहारना]१. सहारने की क्रिया या भाव। २. सहनशीलता। जैसे—अब उनमे कष्ट सहने की सहार नही रह गई है।

सहारना—स०[स० सहन या हिं० सहारा]१. सहन करना। ४. बरदाश्त करना। सहना। २. किसी प्रकार का भार अपने ऊपर लेकर उसे सँभाले रहना। ३ उत्पात, कष्ट आदि होने पर उसकी ओर ध्यान न देना। गवारा करना।

सहारा—पु०[हिं० सहारना]१ कोई ऐसा तत्त्व या बात जिससे कष्ट आदि सहन करने या कोई बड़ा काम करने मे सहायता मिलती हो या कष्ट की अनुभूति कम होती हो। २. ऐसी वस्तु या व्यक्ति जिस पर किसी प्रकार का भार सहज मे रखा जा सके और जो वह भार सह सके। कोई ऐसा तत्त्व या बात जिससे किसी प्रकार का आश्वासन मिलता हो।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

सहारिया—वि०, पु०=सहराई। उदा०—*गाँव क्या था सहारियो की पर्ण-कुटीरो का समूह।*—वृन्दावनलाल वर्मा।

सहार्य—वि० [स०] १ समान अर्थ रखनेवाले। २. समान उद्देश्य रखनेवाले।

पु०१. आनुषगिक विषय। २ सहयोग।

सहार्द—वि०[स० तृ० त०] स्नेहयुक्त।

सहार्ह—वि० [स० सह (न)+अर्ह] जो सहन किया जा सके। योग्य।

सहालग—पु० [स० सह+लग] १ वह वर्ष जो हिन्दू ज्योतिषियो के मत से शुभ माना जाता हो। २ फलित ज्योतिष के अनुसार वे दिन जिनमे विवाह आदि शुभ कृत्य किये जा सकते हो।

सहावल—पुं०=साहुल (सीध नापने का उपकरण)।

सहासन—वि०[स० सह+आसन]१. किसी के साथ उसके बराबर के आसन पर बैठनेवाला। २. साथ बैठनेवाला।

पुं० बराबरी का हिस्सेदार। उदा०—*सहासन का भाग छीनकर, दो मत निर्जन वन को।*—दिनकर।

सहिंजन—पु०=सहिजन।

सहि—वि०=सभी। उदा०—*समाचार इणि माहि सहि।*—प्रिथीराज।

सहिक—वि०[स० सह+हिं० इक (प्रत्य०)]१ जो सचमुच वर्तमान हो। सत्ता से युक्त। वस्तविक। २. जिसमे कोई विशिष्ट तत्त्व या भाव वर्तमान हो। ३ जिसमें किसी प्रकार की दुविधा या सकोच न हो। ठीक और निश्चित। ४. (कथन या मत) जो निश्चित और स्पष्ट रूप से प्रतिपादित या प्रस्थापित किया गया हो। ठीक मानकर और साफ साफ कहा हुआ। ५ गणित मे, शून्य की अपेक्षा अधिक, जो 'धन' कहलाता है। ६. (प्रतिकृति या मूर्ति) जिसमे मूल के समान ही छाया या प्रकाश हो। जो उलटा न जान पड़े। सीधा। 'नहिक' का विपर्याय। (पॉजीटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)

पु० १. ऐसा कथन या बात जिसमे किसी तत्त्व, मत या सिद्धान्त का निश्चत रूप से निरूपण या प्रस्थापन किया गया हो। ठीक मानकर दृढ़तापूर्वक कही हुई बात। २. किसी विषय, निश्चय आदि का वह अश या पक्ष जिसमे उक्त प्रकार का निरूपण या प्रस्थापन हो। ३. ऐसी प्रतिकृति या मूर्ति जिसमे मूल की छाया के स्थान पर छाया और प्रकाश के स्थान पर प्रकाश हो। ऐसी नकल जो देखने मे सीधी जान पड़े, उल्टी नही। ४. छाया चित्र मे, नहिक शीशे पर से कागज पर छापी हुई वह प्रति जो मूल के ठीक अनुरूप होती है। 'नहिक' का विपर्याय। (पॉज़िटिव, उक्त सभी अर्थो के लिए)

सहिकता—स्त्री० [हिं० सहिक+ता (प्रत्य०)] 'सहिक' होने की अवस्था या भाव। (पॉज़िटिविटी, पॉज़िटिवनेस)

सहिजन—पु०[स० शोभांजन] एक प्रकार का बडा वृक्ष जिसकी लबी फलियाँ तरकारी, अचार आदि बनाने के काम आती हैं। मुनगा।

सहिजनी—स्त्री०[स० सज्ञान] निशानी। चिह्न। पहचान। (दे० 'सहदानी')

स-हित—क्रि० वि०[स० स+हित]हितपूर्वक। प्रेम से।

सहित—अव्य०[स० सह से] (किसी के) साथ। समेत।

वि०१. किसी के साथ मिला हुआ। युक्त।

विशेष—सहित और युक्त मे मुख्य अतर यह है कि सहित का प्रयोग तो प्राय क्रिया विशेषण पदो मे होता है और युक्त का विशेषण पदो मे। जैसे—(क) चतुर्थांग सहित दे दो। (ख) चतुर्थांगयुक्त रूप।

२ (प्राणायाम) जिसमे पूरक और रेचक दोनो क्रियाएँ की जाती हैं। ('केवल' से भिन्न)

भू० कृ०[स० सहन से] जो सहन किया गया हो। सहा हुआ।

सहितत्व—पु० [स० सहित+त्व] सहित का धर्म या भाव।

सहितव्य—वि०[स०√सह् (सहन करना)+तव्य] सहन होने के योग्य। जो सहा जा सके। सह्य।

सहियी—स्त्री०[?] बरछी।

सहिदान*—पुं०=सहदानी (निशानी)।

सहिदानी—स्त्री०=सहदानी।

सहिरिया—स्त्री०[देश०] बसत ऋतु की वह फसल जो बिना सींचे हुए होती है।

सहिष्णु—वि०[स० √सह् (सहन करना)+इष्णुच्] जो कष्ट या पीडा आदि सहन कर सके। बरदाश्त करनेवाला। सहनशील।

सहिष्णुता—स्त्री० [स०] सहिष्णु होने की अवस्था, गुण या भाव। सहनशीलता।

सही—वि०[अ० सहीह]१ जिसमे किसी प्रकार का झूठ या मिथ्यात्व न हो। यथार्थ। वास्तविक। २ सच। सत्य। ३ जिसमे कोई त्रुटि, दोष या भूल न हो। बिलकुल ठीक। जैसे—यह इस हिसाब का सही जवाब है।

स्त्री०१ किसी बात को मान्य, यथार्थ या सत्य होने की साक्षी के रूप मे किया जानेवाला हस्ताक्षर। दस्तखत। २ किसी बात की प्रामाणिकता या मान्यता का सूचक कथन। उदा०—*ब्रह्मा वेद सही कियो, सिव जोग पसारा हो।*—कबीर।

मुहा०—(किसी कथन या बात की) सही भरना=सत्यता की साक्षी देना। यह कहना कि हाँ, यह बात ठीक है। उदा०—*सही भरी लोमस भुसुंडि बहु बारिखो।*—तुलसी।

३ किसी बात की प्रामाणिकता या उसके फलस्वरूप होनेवाली मान्यता। जैसे—चुप रहने की सही नही। ४. प्रामाणिकता, मान्यता या शुद्धता सूचक शब्द। जैसे—चलो, यही सही।

अव्य०[सं० सहन, हिं० सहना या स० सिद्ध] एक अव्यय जो विशिष्ट प्रसगों मे वाक्य के अत मे आकर ये अर्थ देता है—(क) कोई वात सुनकर मान या सह लेना। जैसे—अच्छा यह भी सही। (ख) अधिक नही, तो इतना अवश्य। जैसे—आप वहाँ चलिए तो सही। (ग) कोई असभावित वात होने पर कुछ जोर देते हुए आश्चर्य प्रकट करना। जैसे—फिर भी आप वहाँ गये सही। उदा०—प्रभु आसुतोष कृपालु शिव अवला निरखि वोले सही।—तुलसी।

†स्त्री०=सखी। (राज०)

सहीफा—पु०[अ० सहीफ]१ ग्रन्थ। पुस्तक। २ चिट्ठी। पत्र। ३. सामयिक पत्र।

सहुँ*—अव्य०[स० सन्मुख] १. सन्मुख। सामने। २ ओर। तरफ।

सहु†—वि०[स० सर्व+ही] सभी। उदा०—मन प ु यियो सहु सेन मुरछित ।—प्रिर्थीराज।

सहुह†—पु०[स० सह्व] भूल-चूक। अपराध। दोष। उदा०—सहुह दूरि देखै ता भउ पवै।

सहूलत—स्त्री० =सहूलियत।

सहूलियत—स्त्री०[अ० सहूलत] १ आसानी। सुगमता। २ सुभीता। ३ शिष्टता और सम्यतापूर्वक आचरण करने की कला और पात्रता। जैसे—अव तुम सयाने हुए, कुछ सहूलियत सीखो।

सहृदय—वि० [स०] [भाव० सहृदयता] १. (व्यक्ति) जो दूसरे के सुख-दु.ख की अनुभूति करता हो। २. कोमल गुणो से युक्त हृदयवाला। ३. काव्य, साहित्य आदि के गुणो की परख रखने और उसकी विशेषताओ से प्रभावित होनेवाला। साहित्य का अधिकारी और योग्य पाठक। रसिक। ४. अच्छे गुणो और स्वभाववाला। भला। सज्जन। ५. प्राय या सदा प्रसन्न रहनेवाला।

सहृदयता—स्त्री०[स० सहृदय+तल्—टाप्]१ सहृदय होने की अवस्था, गुण या भाव। २ वह कार्य या वात जो इस तथ्य की सूचक हो कि व्यक्ति सहृदय है। सहृदय व्यक्ति का कोई कार्य।

सहेज†—पु०[देश०] वह दही जो दूध जमाने के लिए उसमे डाला जाता है। जामन।

स्त्री०[हिं० सहेजना]१ सहेजने की क्रिया या भाव। २ चीजें सहेज कर रखने की प्रवृत्ति या स्वभाव।

सहेजना—स०[अ० सही ?] १. कोई चीज लेने के समय अच्छी तरह देखना कि वह ठीक या पूरा है या नही। जैसे—कपडे, गहने या रुपए सहेजना।

सयो० क्रि०—लेना।

२ अच्छी तरह दिखला या वतलाकर कोई चीज किसी को सौंपना। सुपुर्द करना। जैसे—सव चीजें उन्हे सहेज देना।

सयो० क्रि०—देना।

सहेजवाना—स०[हिं० सहेजना का प्रे०] सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेट—पु०=सहेत। उदा०—भवन तें निकसि वृषभानु की कुमारी देख्यो ता समै सहेट को निकुज गिर्‌यो तीर को।—मतिराम।

सहेत†—पु०[स० सकेत] वह निर्दिष्ट एकान्त स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलते हैं। अभिसार का पूर्व निर्दिष्ट स्थान।

सहेतु—वि० =सहेतुक।

सहेतुक—वि०[स० व० स०] जिसका कोई हेतु हो। जिसका कुछ उद्देश्य या मतलव हो। जैसे—यहाँ यह पद सहेतुक आया है, निरर्थक नही है।

सहेलरी†—स्त्री०=सहेली। उदा०—विजन-मन-मुदित सहेलरियाँ।—निराला।

सहेली—स्त्री०[स० सह=हिं० एली (प्रत्य०)]१ साथ मे रहनेवाली स्त्री। सगिनी। २. परिचारिका। दासी। (क्व०) ३ सखी। ४ गौरैया की तरह की काले रग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

सहैया*—वि०[हिं० सहाय] सहायता करनेवाला। सहायक।

वि० [हिं० सहना]१ सहनेवाला। २ सहनशील।

सहो—पु० [अ० सह्व] १ अपराध। दोष। २ भूल-चूक। गलती।

सहोक्ति—स्त्री०[स०] साहित्य मे, एक अलकार जिसमे 'सह' 'सग' 'साथ' आदि शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते है कि किसी क्रिया के (क) एक कार्य के साथ और भी कई आर्यो का होना सूचित होता है। जैसे—रात्रि के समय तुम्हारे मुख के साथ ही चद्रमा भी सुशोभित हो जाता है अथवा (ख) कोई श्लिष्ट शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि अलग अलग प्रसगो मे अलग अलग अर्थ देता है। (कनेक्टेड डेस्क्रिप्शन) जैसे—यौवन मे उसके ओष्ठ तथा प्रिय दोनो साथ ही रागयुक्त (क्रमात् लाल और प्रेमपूर्ण या अनुरक्त) हो गये। उदा०—वल प्रताप वीरता वडाई। नाक पिनाकी सग सिवाई।—तुलसी।

सहोढ़—पु०[स०] १. वह चोर जो चोरी के माल के साथ पकडा गया हो। २ धर्मशास्त्र मे, वारह प्रकार के पुत्रों मे से वह जो गर्भवती कन्या के साथ विवाह करने पर विवाह के उपरात उत्पन्न होता है।

सहोदक—वि०[स० व० स०] समानोदक।

सहोदर—वि०[सं० व० स०] [स्त्री० सहोदरा] १ (जन्म के विचार से वे) जो एक ही माता के उदर या गर्भ से उत्पन्न हुए हो। २. सम्वन्ध के विचार से अपना और सगा।

पु०१ सगा भाई। २ वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, वे सव जो एक ही मूल से उत्पन्न हुए हो और जिनमे परस्पर रक्त या वश का सम्वन्ध हो। एक ही कुल या वश के सदस्य।

सहोपमा—स्त्री०[सं० व० स०, मध्य० स० वा] साहित्य मे, उपमा अलकार का एक प्रकार या भेद।

सहोर—पु०[स० शाखोट] एक प्रकार का जगली वक्ष।

सह्य—वि०[स०]१ जो सहा जा सके। जो सहन हो सके। २. आरोग्य। ३. प्रिय।

पु०=सह्याद्रि।

सह्याद्रि—पु०[स० मध्यम० स०] वर्तमान महाराष्ट्र राज्य की एक पर्वत-माला।

सांईं—पु०[स० स्वामी] १ स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। परमात्मा। ३ स्त्री का पति। ४ मुसलमान फकीर। ५. वोलचाल मे, सिंधियो के लिए प्रयुक्त आदरसूचक सवोधन।

सांकड़—पु०१ =सिक्कड। २.=सांकडा।

*वि० [स० सकीर्ण] सँकरा। उदा०—जमुनक तिरे तिरे सांकड़ वाटी।—विद्यापति।

†स्त्री०=सांकल।

साँकड़ा—पुं०[स० शृखला] पैरो मे पहना जानेवाला कडे की तरह का एक प्रकार का गहना।

साँकर*—वि०[स० सकीर्ण] १ सकीर्ण। तग। सँकरा। २ कष्ट-दायक।

पु० कष्ट या सकट की दशा अथवा समय।

स्त्री०=साँकल।

साँकरा†—पु०=साँकडा।

†वि०=सँकरा।

सांकरिक—वि०[स० सकर+ठञ्—इक] वर्ण-सकर। दोगला।

साँकल—स्त्री० [स० शृखला] १ शृखला। जजीर। २ दरवाजे मे लगाई जानेवाली जजीर। ३ पशुओ के गले मे बाँधने की जजीर। ४ गहने की तरह गले मे पहनने की चाँदी-सोने की जजीर। सिकडी।

सांकल्पिक—वि० [स० सकल्प+ठञ्+इक]१ सकल्प-सम्बन्धी। २ काल्पनिक।

सांकेतिक—वि०[स०]१ सकेत-सवधी। २ सकेत के रूप में होनेवाला। ३ शब्द की अभिधा-शक्ति मे सबध रखने अथवा उससे निकलनेवाला। जैसे— साकेतिक अर्थ।

सांकेतिक भाषा—स्त्री०[स०] कुछ विशिष्ट लोगो के निजी व्यवहार के लिए उनकी बनाई हुई गोपनीय तथा कृत्रिम भाषा। साधारण या जन-भाषा से भिन्न भाषा। (कोड-लैंगवेज)

सांकेतिकी—स्त्री०=सकेतकी।

सांक्रामिक—वि०[स०] संक्रामक।

सांक्षेपिक—वि०[स० सक्षेप+ठञ्—इक]१ सक्षिप्त। २ सकुचित।

सांख्य—वि०[स०]१. सख्या-सवधी। जो सख्या के रूप मे हो।

पु०१ सख्याएँ आदि गिनने और हिसाव लगाने की क्रिया। २ तर्क-वितर्क या विचार करने की क्रिया। ३ भारतीय हिन्दुओ के छ प्रसिद्ध दर्शनो मे से एक दर्शन जिसके कर्ता महर्षि कपिल कहे गये है।

विशेष—यह दर्शन इसलिए साख्य कहा गया है कि इसमे २५ मूल तत्त्व गिनाये गये है, और कहा गया कि अतिम या पचीसवे तत्त्व के द्वारा मनुष्य आत्मोपलब्धि या मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसमे आत्मा को ही पुरुष या ब्रह्म माना गया हे।

सांख्य-मार्ग—पु०[स०]साख्य-योग।

सांख्य-योग—पु०[स०]ऐसा साख्य जो अच्छी तरह चित्त शुद्ध करके और पूरा ज्ञान प्राप्त करके सच्चे त्याग के आधार पर ग्रहण किया जाय।

सांख्यायन—पु०[स० साख्य+क-फ—आयन] एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य जिन्होने ऋग्वेद के साख्याय ब्राह्मण की रचना की थी। इनके कुछ श्रौत्र सूत्र भी हे। साख्यायन कामसूत्र इन्ही का वनाया हुआ माना जाता है।

सांख्यिक—वि०[स०] सख्या या गिनती से सवध रखनेवाला। सख्या-सवधी।

सांख्यिकी—स्त्री०[स०]१ किसी विषय की (यथा—अपराध, उत्पादन, जन्ममरण, रोग आदि की) सख्याएँ एकत्र करके उनके आधार पर कुछ सिद्धात स्थिर करने या निष्कर्ष निकालने की विद्या। स्थिति-शास्त्र। २ इस प्रकार एकत्र की हुई सख्याएँ। (स्टैटिस्टिक्स)

साँग—स्त्री० [स० शक्ति] [अल्पा० साँगी]१ एक प्रकार की छोटी पतली वरछी। २ एक प्रकार का औजार जो कूआँ खोदते समय पानी फोडने के काम मे आता है। ३ भारी वोझ उठाने या खिसकाने के काम मे आनेवाला एक प्रकार का डडा।

पुं०[हिं० स्वाँग]१ स्वाँग। २ जाटो मे प्रचलित एक प्रकार का गीत काव्य।

सांग—वि० [स० स+अंग] अग या अगो से युक्त।

पद—सांगोपाग। (दे०)

सांगतिक—वि० [स० सगति+ठक्—इक] १ संगति-सवधी। २. सामाजिक।

पु० १ अतिथि। २ वह जो किसी कारवार के सिलसिले मे आया हो। अपरिचित। अजनवी।

सांगम—पु०[स० सगम+अण्]=सगम।

साँगर†—पु०[?] शामी वृक्ष। (राज०)

साँगरी—स्त्री०[फा० जगार] कपडे रँगने का एक प्रकार का रग जो जगार अर्थात् तूतिये से निकाला जाता हे।

साँगी—पु०[हिं० साँग] वह जो साँग नामक गीत काव्य लोगों को सुनाता हो।

स्त्री० छोटी साँग (वरछी)।

स्त्री० [स० शकु] १ वैलगाडी मे गाडीवान के वैठने का स्थान। २ एक्के, गाडी आदि मे जाली का वह छीका जिसमे छोटी छोटी आवश्यक चीजे रखी जाती है।

सांगीत—पु०[सं०]=सगीतिका। (ऑपेरा)

पु०=सेनापति।

सागोपाग—वि०[स० अग+उपाग] जो अपने सभी अगो और उपागो

अव्य०१ सभी अगों और उपागों सहित। २ अच्छी और पूरी तरह से।

सांग्रामिक—वि०[स०] १ सग्राम या युद्ध-सवधी। २ जो अस्त्र-शस्त्रो से युक्त या सम्पन्न हो।

सांघाटिका—स्त्री०[स० सघाट+ठञ्—इक—टाप्]१ मैथुन। रति। २ कुटनी। दूती। ३ एक प्रकार का वृक्ष।

सांघात—पु०[स० सघात+अण्]=सघात।

साघातिक—वि०[स० सघात्+ठञ्—इक]१ सघात या समूह-सम्वन्धी। २ जो सघात अर्थात् हनन कर सकता हो। ३ जिसके फलस्वरूप मृत्यु तक हो सकती हो। जिससे आदमी मर सकता हो। (फटल) ४. जिससे प्राणो पर सकट आ सकता हो। वहुत जोखिम का।

पु० फलित ज्योतिप मे, जन्म नक्षत्र से सोलहवाँ नक्षत्र जिसके प्रभाव से मृत्यु तक होने की संभावना मानी जाती है।

सांघिक—वि०[स०] सघ-सवधी। सघीय।

साँच*—वि०[स० सत्य] [स्त्री० साँची]=सच्चा (सत्य)।

साँचना*—स०[स० सचय] १ सचित या एकत्र करना। उदा०—दे० 'भाँडा' (सपत्ति) मे। २. किसी चीज मे भरना।

†अ०[?]१ किसी वडे का कही आना। पदार्पण करना। पधारना। (गुज०, राज०) उदा०—सामलो घरे नू म्हारे साँचु दे।—मीराँ।

साँचर—पु०[स० सौवर्चल]एक प्रकार का नमक। सौवर्चल लवण।

साँचला†—वि० [हिं० साँच+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० साँचली] जो सच वोलता हो। सच्चा। सत्यवादी।

सांचा†—पु०[स० सचक]१ वह उपकरण जिसमे कोई तरल या गाढा पदार्थ ढालकर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज वनाई जाती है। (मोल्ड) जैसे—ईट या मूर्तियाँ वनाने का साँचा।
मुहा०—(किसी चीज का) साँचे मे ढला होना=अग-प्रत्यग से वहुत सुन्दर होना। रूप, आकार, आदि मे वहुत सुन्दर होना। **साँचे मे ढालना**=आकर्षक, प्रशसनीय या सुन्दर रूप देना। उदा०—हमारे इश्क ने साँचे मे तुमको ढाला है।—दाग।
२ वह उपकरण जिसके ऊपर कोई चीज रख या लगाकर उसे कोई नया आकार या रूप दिया जाता है। कलवूत। फरमा। जैसे—जूता या पगडी वनाने का साँचा।
विशेष—वस्तुत साँचा वही होता है जिसका विवेचन ऊपर पहले अर्थ मे किया गया है। दूसरे अर्थ मे प्राय. लोग भूल से उसका उपयोग करते है। दूसरा रूप वस्तुत 'कलवूत' कहलाता है।
३. वह छोटी आकृति जो कोई वडी आकृति वनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है और जिसके अनुकरण पर दूसरी वडी आकृति वनाई जाती है। प्रतिमान। (मॉडल) ४ कपडे पर आकृति वनाने का रगरेजो का ठप्पा।

साचारिक—वि०[स० सचर+ठक्—इक] १. सचार-सवधी। २. जो सचार करता हो। ३ चलता हुआ। जगम।

साँचिया—पु०[हिं० साँचा+इया (प्रत्य०)]१ किसी चीज का साँचा वनानेवाला कारीगर। २: साँचे मे ढालकर चीजें वनानेवाला कारीगर।

साँचिला*—वि०=साँचा (सच्चा)।

साँची—स्त्री०[?] छपाई का वह प्रकार जिसमे पक्तियाँ वेडे अर्थात् लम्वाई के वल छापी जाती थी।
विशेष—अव यह प्रकार वहुत कुछ उठ-सा चला है।
पु०[साँची नगर] एक प्रकार का पान और उसकी वेल।

साँझ—स्त्री०[स० सन्ध्या]१ सूर्य डूवने से कुछ पहले तथा कुछ वाद तक का समय। शाम।
पद—साँझ ही=(क) उचित समय से वहुत पहले ही। (ख) वहुत जल्दी ही और अनुपयुक्त समय पर। उदा०—लेकर भाग साँझ ही फूटे।—घाघ।
२ सूर्य ढलने के वाद का समय।
†स्त्री०=साझा।

साँझ-पाती*—स्त्री०=साझा-पत्ती।

साँझला—पु०[स० सध्या, हिं० साँझ+ला (प्रत्य०)] उतनी भूमि जितनी एक हल से दिन भर मे जोती जा सके।

साँझा†—पु०=साझा।

साँझी—स्त्री०[हिं० साँझ] प्राय स्त्रियो मे प्रचलित एक लोक-कला जिसमे त्योहारो आदि पर घरों और मदिरो की भूमि या फर्श पर रगीन चूर्णो, अनाज के दानो और भूसियो तथा फूल-पत्तियो से वेल-वूटों, पशु-पक्षियो या दूसरे पदार्थो की आकृतियाँ वनाई जाती है। (गुजरात मे इसी को सथिया, महाराष्ट्र मे रगोली, वगाल मे अल्पना तथा दक्षिण भारत मे कोल (कोलम्) कहते है।
†पु०=साझेदार।

साँझेदार†—पु०=साझेदार।

साँट—स्त्री० [सट से अनु०]१ पतली कमची या छडी। २ कोडा। ३ शरीर पर कोडे, छडी, थप्पड आदि की मार का ऐसा दाग या निशान जो आकार मे वहुत कुछ उसी वस्तु के अनुरूप होता है, जिससे आघात किया या मारा गया हो।
क्रि० प्र०—उभड़ आना।—पडना।
†स्त्री०[हिं० सटना]१ सटने या सलग्न होने की क्रिया या भाव। उदा०—ललित किशोरी मेरी वाकी, चित की साँट मिला दे रे।—ललित किशोरी। २ लगन। लौ। ३ किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी से किया जानेवाला मेल।
पद—साँट-गाँठ। (देखें)
†स्त्री०[?]लाल गदहपूरना।
†स्त्री० दे० 'साँठ'।

साँट-गाँठ—स्त्री०[हिं० साँट (सटना)+गाँठ] आपस मे होनेवाला ऐसा निश्चय जिसका कोई गुप्त या गूढ उद्देश्य हो। किसी अभिसधि के कारण होनेवाला मेलजोल।
विशेष—यद्यपि 'सटना' का भाव० रूप 'साट' ही होता है, पर उक्त मे गाँठ के साथ सपृक्त होने के कारण 'साट' का रूप भी 'साँट' हो गया है।

साँट-नाँठ†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

साँटा—पु०[हिं० साँट=छडी]१ करघे के आगे लगा हुआ वह डडा जिसे ऊपर-नीचे करने से ताने के तार ऊपर-नीचे होते हैं। २. मोटे कपडे का वटकर वनाया हुआ कोडा। ३ सवारी के घोडे को लगाई जानेवाली एड। ४. ईख। गन्ना।

साँटिया†—पु०[हिं० साँटी]१ डौंडी पीटनेवाला। डुग्गी वजानेवाला। २ साँटेमार। (दे०)

साँटी—स्त्री०[हिं० साँटा का स्त्री० अल्पा०]छोटी और पतली छडी।
स्त्री०[हिं० सटना] प्रतिकार। वदला।
†स्त्री०=१ =साँट। २ साँठ-गाँठ।

साँटे-मार—पु० [हिं० साँटा+मारना] वह चोवदार या सिपाही जो हाथ मे साँटा या कपडे का वना हुआ कोडा रखता और आवश्यकता पडने पर भीड हटाने, घोडे, हाथियो आदि को वश मे करने के लिए उन पर साँटे चलाता है।
विशेष—मध्ययुग मे, राजाओ की सवारी के साथ साँटेमार चलते थे।

साँठ—पु०[देश०]१ पैरो मे पहनने का साँकडा नामक गहना। २ ईख। गन्ना। ३ सरकडा। ४ डडा। ५ वह डडा जिससे पीटकर फसल की वालो मे से अनाज के दाने अलग किये जाते है।
†स्त्री०[स० सस्या] मूलघन। पूँजी। उदा०—साँठि नाहिं लागि वात को पूछा।—जायसी।
†स्त्री०=साँट।

साँठ-गाँठ†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

साँठ-नाँठ†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

साँठना—स०[हिं० साँठ]१ हाथ मे लेना। पकडना। २ ग्रहण करना।

साँठा*—पु०[स० शरकाड]१. सरकडा। २ गन्ना।

साँठि†—स्त्री०=साँठ।

साँठी—स्त्री०[स० सस्या] पूँजी। धन।

†स्त्री०[?] गदहपूरना। पुनर्नवा।

†पु०=साठी (धान)।

साँठें—अव्य०[हिं० साँठ]१ कारण या वजह से। २ आधार पर। उदा०—बलि बलि गयो चलि बात के साँठे।—तुलसी।

साँड़—पु०[स० षड]१. गौ का वह नर जो संतान उत्पन्न करने के उद्देश्य से विना वधिया किये पाला गया हो और इसी लिए जिससे कोई काम न लिया जाता हो। २ गौ का उक्त प्रकार का वह नर जो हिंदुओं मे, किसी मृतक की स्मृति मे दागकर यो ही छोड दिया जाता है। वृषोत्सर्गवाला वृष। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह निश्चित व्यक्ति जो हृष्टपुष्ट हो तथा लडने-भिडने और उत्पात करने मे तेज तथा स्वतन्त्र हो।

मुहा०—साँड़ की तरह घूमना=बिलकुल निश्चिंत और स्वतन्त्र रहकर इधर-उधर घूमते रहना। **साँड़ की तरह डकरना**= मदमत्त होकर अभिमानपूर्वक जोर जोर से बाते करना या चिल्लाना।

४. वह घोडा जिसे जोता न जाता हो, बल्कि घोडियो से सतान उत्पन्न करने के लिए पाला जाता हो।

†पु० [?] [स्त्री० साँड़नी] ऊँट।

साँड़नी—स्त्री०[हिं० साँड ?] सवारी के काम मे आनेवाली तथा बहुत तेज दौडनेवाली ऊँटनी।

पद—साँड़नी सवार।

साँडसी†—स्त्री०=सँडसी।

साँड़ा—पु०[हिं० साँड] छिपकली की जाति का पर उससे कुछ बडा एक प्रकार का जगली जानवर जिसकी चरबी दवा के काम मे आती है।

साँड़िया—पु०[हिं० साँड] १ तेज चलनेवाला ऊँट। २ उक्त प्रकार के ऊँट का सवार। (राज०)

साँड़ी—स्त्री०=साढी (मलाई)। उदा०—कुम्हरा कै घरि हाँडी आछै अहीरा कै घर साँडी।—गोरखनाथ।

साँढ़िया†—पु०=साँडिया।

सांत—वि०[स० सात] अत से युक्त। जिसका अत या सीमा हो। 'अनत' का विपर्याय।

†वि०=शात।

सांततिक—वि०[स० सतति+ठञ्—इक] सतति प्रदान करनेवाला।

सांतपन कृच्छ्र—पु० [स०] एक प्रकार का व्रत जिसमे व्रत करनेवाला भोजन त्यागकर पहले दिन गोमूत्र, गोमय, दूध, दही और घी को कुश के जल मे मिलाकर पीता और दूसरे दिन उपवास करता है।

सांतानिक—वि० [स० सतान+ठक्—इक] सतान-सबधी। सतान या औलाद का।

सांतापिक—वि०[स० सताप+ठक्—इक] सताप देने या उत्पन्न करने-वाला।

सांतर—वि०[स० तु० त०]१ अन्तर या अवकाश से युक्त। २ झीना।

साति†—स्त्री०=शाति।

सांतीड़ा†—पु० [हिं० साँड़ ?] बिगडैल बैलो को नाथने का मजबूत और मोटा रस्सा। उदा०—सतना सातीडा समधावो।—गोरखनाथ।

सात्वन—पु०[स०√सात्व् (अनुकूल करना)+ल्युट्—अन]१. किसी दुखी को सहानुभूतिपूर्वक शाति देने की क्रिया। आश्वासन। ढारस। २ आपस मे स्नेहपूर्वक होनेवाली बात-चीत। ३. प्रणय। प्रेम। ४ मिलन। मिलाप।

सांत्वना—स्त्री०[स० सात्वन—टाप्]१ दुखी, शोकाकुल या सतप्त व्यक्ति को शात करने तथा समझाने-बुझाने की क्रिया। २ किसी को यह समझाना कि जो कुछ हो गया है या बिगड गया वह अनिवार्य था। अब साहस तथा धैर्य से उसका परिमार्जन किया जा सकता है। ३ उक्त आशय की सूचक उक्ति या कथन। ४ चित्त की शाति और स्वस्थता। ५ प्रणय। प्रेम।

सांत्ववाद—पु०[स०√सात्व (अनुकूल करना)+अच्√वद् (कहना)+घञ् उप० स०] वह बात जो किसी को सात्वना देने के लिए कही जाय। सात्वना का वचन।

सांत्वित—भू० कृ०[स० √सात्व् (अनुकूल करना)+क्त] जिसे सात्वना दी गई हो या मिली हो।

साँथरी—स्त्री० [स० सस्तर] १ चटाई। २. बिछौना। बिस्तर। ३ बिछाने की गद्दी।

साँथा†—पु०[देश०] लोहे का एक औजार जो चमडा कूटने के काम आता है।

साँथी—स्त्री० [देश०]१ करघे की वह लकडी जो ताने के तारो को ठीक रखने के लिए करघे के ऊपर लगी रहती है। २ बुनाई के समय ताने के सूतो का ऊपर उठना और नीचे गिरना।

साँद (।)—पु०[देश०] वह भारी लकडी जो पशुओं के गले मे इसलिए बाँध दी जाती है कि वे भागने न पावें। लगर। ढेका।

सांदृष्टिक—वि०[स० सदृस्+ठञ्—इक] एक ही दृष्टि मे होनेवाला। देखते ही तुरन्त होनेवाला। तात्कालिक।

सादृष्टिक न्याय—पु०[स० सदृष्ट+ठञ्—इक-न्याय—मध्य० स०] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब कोई चीज देखकर उसी तरह की कोई दूसरी चीज याद आ जाती है।

सांद्र—वि०[स०] [भाव० साद्रता]१ एक मे गुथा, जुडा या मिला हुआ। २ गभीर। घना। उदा०—उठा साद्र तन का अवगुठन।—दिनकर। ३ हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा। ४ तीव्र। प्रबल। ५ बहुत अधिक। प्रचुर। ६ चिकना। स्निग्ध। ७ कोमल। मृदु। ८ मनोहर। सुन्दर।

पु०। जगल। वन।

सांद्रता—स्त्री०[स० साद्र+तल्—टाप्] साद्र होने की अवस्था, गुण या भाव।

सांद्र-प्रसाद—पु० [स०] एक प्रकार का कफज प्रमेह जिसमे मूत्र का कुछ अश गाढ़ा और कुछ अश पतला निकलता है।

साद्रमेह—पु०=साद्र-प्रसाद।

साँध—स्त्री०[स० सधान] निशाना। लक्ष्य।

†स्त्री०[स० सधि]१ सीमा। हद। २. दे० 'सधि'। ३ दे० 'सेंध'।

†स्त्री०=साँझ।

साध—वि०[स० सधि+अण्] सधि-सबधी। सधि का।

साँधना—स०[स० सधान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। सधान करना।

स०[स० साधन] काम पूरा करना।

स०[स० सन्धि]१. आपस मे मिलाकर एक करना। २ चीजो मे जोड़ या टाँका लगाना।

सांधा—पु०[स० सधि] दो रस्सियों आदि मे दी हुई गांठ। (लग०) क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

सांधिक—पु०[स० मधा+ठक्—इक] वह जो मद्य वनाता या बेचता हो। शौंडिक।
वि० सन्धि या मेल करानेवाला।

सांधि-विग्रह—पु०[स० सधि-विग्रह, द्व० स० ठन्—क]प्राचीन भारत मे, वह राजकीय अधिकारी जिसे दूसरे राज्यों के साथ सधि और विग्रह करने का अधिकार होता था।

सांध्य—वि० [स०] १ सध्या-सवधी। सध्या का। २. सध्या के समय होनेवाला।

सांध्य कुसुमा—स्त्री०[स०] ऐसी वनस्पतियाँ या वेलें जो सध्या के समय फूलती हों।

सांध्य गोष्ठी—स्त्री०[स०] सध्या के समय आमन्त्रित मित्रों की गोष्ठी जिसमे जलपान भी होता है। (इवनिंग पार्टी)

सांध्य प्रकाश—पु०[स०] सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय दिखलाई पड़नेवाला धुँधला प्रकाश।

सांप—पु० [स० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० सांपिन] एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला जतु जो काफी लवा होता है तथा बिलों, पेडों, पानी आदि मे रहता है।
विशेष—इनकी हजारो जातियाँ होती हैं, जिनमे से अधिकतर ऐसी होती है जिनके काटने से जीव मर जाते है। अजगर, नाग आदि जतु इसी वर्ग के होते है।
पद—सांप की लकीर=पृथ्वी पर का चिह्न जो सांप के चलने से बनता है। **सांप की लहर**=सांप के काटने से उसके जहर के कारण शरीर मे होनेवाली वह बेहोशी जिसमे आदमी लहरो की तरह छटपटाता रहता है। **सांप के मुँह मे**=बहुत ही जोखिम या सांसत की स्थिति मे।
मुहा०—सांप की तरह केंचुली झाडना या बदलना=(क) पुराना भद्दा रूप-रग छोड़कर नया सुन्दर रूप धारण करना। (ख) जैसा समय देखना, वैसा रूप बनाना, या वैसा आचरण-व्यवहार करना। **सांप खेलाना**=मत्र बल से या और किसी प्रकार सांप को पकडना और उससे क्रीडा करना। **सांप-छछूंदर की दशा होना**=ऐसी विकट स्थिति मे पडना कि दोनो ओर घोर सकट की सभावना हो।
विशेष—लोक मे ऐसा प्रवाद है कि सांप यदि छछूंदर को एक बार मुंह मे पकड ले तो उसके लिए छछूदर को छोडना भी घातक होता है और निगलना भी, क्योकि उसे उगलने पर वह अधा हो जाता है और निगलने पर कोढी हो जाता है।
मुहा०—(किसी को) सांप सूंघ जाना= (क) सांप का काट लेना जिससे आदमी प्राय मर जाता है। (ख) किसी का इस प्रकार बेसुध होकर पड जाना कि मानो उसे सांप ने काट लिया हो और वह बेहोश होकर मरणासन्न हो रहा हो। **(किसी के) कलेजे पर सांप लोटना**=ईर्ष्याजन्य घोर कष्ट होना। अत्यन्त दुःख होना।
२ आतिशबाजी मे वह दाना जो जलाये जाने पर सांप की तरह लवा होता जाता है। ३ वह व्यक्ति जो समय का लाभ उठाकर विश्वासघात करने से भी न चूकता हो।

सांपड़ना†—अ०[स० सप्रापण] प्राप्त होना। मिलना।
†अ०[स० सपूर्ण] काम पूरा करके निवृत्त होना। सपरना। उदा०—सांपड किया असनान सूरज मारी जप करे।—मीरां।

सांपत्तिक—वि०[स०] सपत्ति से सवध रखनेवाला। सपत्ति का। जैसे—सांपत्तिक व्यवस्था।

सांपद—वि०[स० साम्पद] सपदा-सम्बन्धी। सपदा का।

सांप-धरन—पु० [हिं० सांप+धरना] सर्पधारण करनेवाले, शिव। महादेव।

सांपातिक—वि०[सं० संपात+ठञ्—इक] १. सपात-सबधी। सपात का। २ सपात काल मे होने अथवा सपात काल मे सबध रखनेवाला। (ज्योतिष)

सांपिन—स्त्री०[हिं० सांप+इन (प्रत्य०)] १ सांप की मादा। २ सांप के आकार की एक प्रकार की भौंरी या शारीरिक चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार बहुत शुभ माना जाता है। ३ बहुत अधिक दुष्ट या विश्वासघातिनी स्त्री।

सांपिया—वि०[हिं० सांप+इया (प्रत्य०)] सांप के रग का मैलापन लिये काले रग का।
पु० उक्त प्रकार का काला रग।

सांप्रत—अव्य०[स० साम्प्रत] १ इसी समय। अभी। तत्काल। २ इस समय। आज-कल। ३ उचित। उपयुक्त। ४ सामयिक।
वि० किसी के साथ मिला हुआ। युक्त।

सांप्रतिक—वि० [स०]१ जो सप्रति या इस समय हो या चल रहा हो। (करेन्ट) २ जो इस समय या आवश्यकता को देखते हुए ठीक और उपयुक्त हो।

सांप्रदायिक—वि०[स०] [भाव० सांप्रदायिकता]१ सप्रदाय-सबधी। सप्रदाय का। २ किसी विशिष्ट सप्रदाय से ही सबद्ध रहकर शेष सप्रदायो का विरोध करने या उनसे द्वेष रखनेवाला। ३ विभिन्न सप्रदायो के पारस्परिक विरोध के फलस्वरूप होनेवाला। (कम्यूनल; उक्त सभी अर्थो मे)

सांप्रदायिकता—स्त्री०[स०]१ सांप्रदायिक होने का भाव। २. केवल अपने सप्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना और दूसरे सप्रदायो से द्वेष रखना। (कम्यूनलिज्म)

सांबंधिक—वि०[स० सबध+ठक्—इक] सबध का। सबधी।
पु० किसी की पत्नी का भाई। साला।

सांब—पु०[स० साम्ब] १ अम्बा अर्थात् पार्वती सहित शिव। २. कृष्ण के एक पुत्र जो जाम्बवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

सांबपुर—पु०[स० साम्बीपुर] पाकिस्तान के मुलतान नगर का प्राचीन नाम।

सांबपुराण—पुं०[स०] एक उपपुराण का नाम।

सांबर*—पु०=सबल (राह-खर्च)।

सांबर—पु०[स०]१ सांभर (हिरण)। २ सांभर (नमक)।

सांबरी—स्त्री०[स० साबर-ङीप्] १ सब को धोखे मे रखनेवाली माया। २ इन्द्रजाल। जादूगरी।

सांभर—पु० [स० सम्भल या साम्भल] १ राजस्थान की एक झील जिसके खारे पानी से नमक बनाया जाता है। २ उक्त झील के पानी

से बनाया हुआ नमक जिसे साँभर कहते है। ३ एक प्रकार का बडा बारहसिंघा।

†पु०=सबल (पाथेय)।

साँभलना†—स० [स० स्मृत] १ स्मरण करना। २ सुनना। उदा०—साँभल्याँ राम गगा-फल होइ।—नरपतिनाल्ह।

†अ०=सँभलना।

साँमुहें†—अव्य०[स० सम्मुखे] सामने। सम्मुख।

साँवक—पु०[देश०] वह ऋण जो हलवाहों को दिया जाता है और जिसके सूद के बदले मे वे काम करते हैं।

†पु०[स० श्यामक] साँवा नामक कदन्न।

साँवटा—वि० [?] १ समतल। बराबर। २ पूरी तरह से समाप्त किया हुआ। सफाचट। उदा०—तुमने खा पीकर साँवटा कर दिया होगा।—वृन्दावनलाल वर्मा।

साँवत†—पु०=सामत।

साँवती†—स्त्री०[देश०] बैलगाडी आदि के नीचे की वह जाली जिसमे बैलो के लिए घास आदि रखते हैं।

सांवत्सर—वि०, पु०[स०]=सावत्सरिक।

सावत्सरिक—वि०[स०]१. सवत्सर-सम्बन्धी। २ प्रतिवर्ष होनेवाला। वार्षिक।

पु०१ ज्योतिषी। २ चाद्र मास।

सांवत्सरीय—वि०[स० सवत्सर+इण्—ईय]१ सवत्सर-सम्बन्धी। २ वार्षिक।

सांवन—पु०[?] मझोले आकार का एक प्रकार का पहाडी पेड जिसका गोद ओषधि के रूप मे काम आता है। कहते है कि यह गोंद मछली के लिए बहुत घातक होता है।

†पु०=सावन (महीना)।

साँवर†—वि०=साँवला।

साँवलताई†—स्त्री०=साँवलापन।

साँवला—वि० [स० श्यामल] [स्त्री० साँवली, भाव० साँवलापन] जिसके शरीर का रग हलका कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

पु० १ कृष्ण। २ पति के लिए सबोधन।

साँवलापन—पु०[हिं० साँवला+पन (प्रत्य०)] साँवला होने की अवस्था, गुण या भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवलिया—वि० [हिं० साँवला] साँवले रग का (व्यक्ति)।

पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।

साँवाँ—पु० [स० श्यामक]कगनी या चेना की जाति का एक अन्न जो जेठ मे तैयार होता है।

सांवादिक—वि०[स० सवाद+ठञ्—इक] १. विवादास्पद। २ प्रचलित। ३. संवाद-सबधी। ४ समाचार-सबधी।

पु०१. नैयामियक। २ पत्रकार।

सावेंदिक—वि० [स०] शरीर के सवेदन सूत्रो से सबध रखनेवाला। (सेन्सरी)

साशयिक—वि०[स० सशय+ठञ्—इक] १. संशय-सबधी। २. जिसके सम्बन्ध मे कुछ सशय हो।

साँस—पु०[स० श्वास] १ प्राणियो का जीवन धारण के लिए नाक या मुंह से हवा अदर खीचकर फेफडो तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम। (ब्रीद)

विशेष—(क) जल मे रहनेवाले जीवों और वनस्पतियों मे भी यह क्रिया होती है, पर उनका प्रकार और स्वरूप कुछ भिन्न होता है। जब तक यह क्रिया चलती रहती है, तब तक प्राणी या शरीर जीवित रहता है। (ख) स० श्वास से व्युत्पन्न हिं० साँस सर्वथैव पुल्लिग है। पर उर्दू के कुछ कवियों ने भूल से इसका प्रयोग स्त्रीलिंग मे किया है, और उनके अनुकरण पर हिंदी कोशो मे भी इसे स्त्रीलिंग माना गया है जो ठीक नही है।

क्रि०प्र०—आना।—खीचना।—छोडना।—जाना।—निकलना।—लेना। **मुहा०—साँस उखड़ना**=(क) साँस लेने की क्रिया का बीच मे कुछ समय के लिए रुकना। जैसे—गाने मे गवैये का साँस उखडना। (ख) मरने के समय रोगी का बहुत कष्ट से और रुक-रुककर साँस लेना। **साँस ऊपर-नीचे होना**=चिंता, भय आदि के कारण साँस की क्रिया बार बार रुकना। **साँस खींचना**=वायु अदर खीचकर उसे इस प्रकार रोक रखना कि ऊपर से देखने पर निर्जीव या मृत जान पडे। जैसे—शिकारी को देखते ही हिरन साँस खीचकर पड गया। **साँस चढना**=बहुत परिश्रम करने के कारण थक जाने पर साँस का जल्दी जल्दी आना-जाना। **साँस चढ़ाना**=प्राणायाम के समय अथवा यो ही वायु अदर खीचकर उसे कुछ समय के लिए रोक रखना। **साँस छूटना**=साँस लेने की क्रिया बद होना जो मृत्यु का लक्षण है। **साँस टूटना**= दे० ऊपर 'साँस उखडना'। **साँस तक न लेना**=इस प्रकार चुप या मौन हो जाना कि मानो अस्तित्व या उपस्थिति ही नही है। जैसे—जब मैंने उसे फटकारना शुरू किया, तब उसने साँस तक न लिया। **साँस फूलना**= अधिक शारीरिक श्रम करने के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलने लगना। (ख) दमे का रोग होना। **साँस भरना**=दे० नीचे 'ठंडा साँस लेना'। **साँस रहते**= जब तक जीवन रहे। जीते जी। जैसे—साँस रहते तो मैं कभी ऐसा न होने दूंगा। **साँस लेना**= परिश्रम करते-करते थक जाने पर सुस्ताने के लिए ठहरना या रुकना। **उलटा साँस लेना**= (क) मरने के समय बहुत कष्ट से और रुक-रुक कर साँस लेना। (ख) दे० नीचे 'गहरा या ठंडा या लबा साँस लेना'। **गहरा, ठंडा या लंबा साँस लेना**=(क) बहुत अधिक मानसिक कष्ट के कारण अथवा (ख) मन पर पडा हुआ भार हलका होने के कारण कुछ अधिक देर तक हवा अदर खीचते हुए फिर कुछ अधिक देर तक उसे बाहर निकालना जो ऐसे अवसरो पर प्राय शरीर का स्वाभाविक व्यापार होता है।

विशेष—साँस के शेष मुहा० के लिए दे० 'दम' के मुहा०।

२ किसी प्रकार की जीवनी-शक्ति या सक्रियता। दम। जैसे—अब मामले मे कुछ भी साँस नही रह गया, अर्थात् उसके सबध मे अब कुछ भी नही हो सकता, या अब यह और आगे नही बढाया जा सकता। ३ निरतर बहुत समय तक काम करते रहने या थक जाने पर सुस्ताने के लिए बीच मे किया जानेवाला विश्राम या लिया जानेवाला अवकाश। **मुहा०—साँस लेना**=कोई काम करते समय सुस्ताने के लिए बीच मे कुछ ठहरना या रुकना। जैसे—जब तक यह काम पूरा न हो जाय, तब तक मुझे साँस लेने की भी फुरसत न मिलेगी।

४ किसी चीज के फटने आदि के कारण उसके तल मे पड़नेवाली पतली दरज या सकीर्ण सधि।

मुहा०—(किसी चीज का) साँस लेना=किसी चीज का वीच मे से इस प्रकार फटना कि उसकी दरज मे से हवा आ जा सके। जैसे—दीवार या फर्श का साँस लेना, अर्थात् वीच मे से फटना।

५ उक्त प्रकार के अवकाश, दरज या सधि मे भरी हुई हवा।

मुहा०—(किसी चीज में का) साँस निकलना= अदर भरी हुई हवा का वाहर निकल जाना। जैसे—गुब्बारे या रवर के गेंद का साँस निकलना। **(किसी चीज मे) साँस भरना**= अदर हवा पहुँचाना या भरना।

६ एक प्रसिद्ध रोग जिसमे साँस वहुत जोर जोर से और जल्दी जल्दी चलता है। दम या साँस फूलने का रोग। दमा।

सांसत—स्त्री०[हिं० साँस+त (प्रत्य०)] १. दम घुटने का सा कष्ट। २ वहुत अधिक शारीरिक कष्ट या यातना। ३. वहुत कठोर शारीरिक दड।

सांसत घर—पु०[हिं० साँसत+घर]१ कारागार की वहुत ही तग तथा अत्यन्त अवकारपूर्ण कोठरी जिसमे दुष्ट कैदी इसलिए रखे जाते है कि उन्हे वहुत अधिक शारीरिक कष्ट हो। २ वहुत ही अँधेरी और छोटी कोठरी।

सांसद—वि० [स० ससद] (कथन, व्यवहार या आचरण) जो ससद या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो। पूर्ण भद्रोचित। (पार्लमेन्टरी)

सांसद सचिव—पु०[स०] किसी राज्य के मत्री से सम्बद्ध वह सचिव जो उसे ससद के कार्यो मे सहायता देता हो। (पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी)

सांसदी—पु०[स० ससद] वह जो ससद के रीति-व्यवहारो का अच्छा ज्ञाता हो और उसमे वैठकर सव काम ठीक तरह से चलाने मे पूर्ण पटु हो। (पार्लमिन्टेरियन)

सांसना*—स० [स० शासन] १. शासन करना। दड देना। २ डाँटना-डपटना। ३ साँसत मे डालकर वहुत कष्ट या दुख देना।

सांसर्गिक—वि०[स० ससर्ग+ञ्—इक] १ ससर्ग सम्वन्धी। २ ससर्ग से उत्पन्न होने या वढनेवाला। (कन्टेजस)

सांसल—पु० [?] १ एक प्रकार का कवल। २ खेतो मे वीज वोना।

सांसा—पु० [हिं० साँस] १ श्वास। साँस। २ जीवन। जिंदगी। जैसे—जव तक साँसा, तव तक आशा।

पु०[स० सशय]१ सदेह। शक। उदा०—सतगुर मिलिया साँसा भाग्या, सैन वताई साँची।—मीराँ। २ भय। डर।

†पु०=साँसत। जैसे—मेरी जान तभी से साँसे मे पडी है।

†वि०=साँचा (सच्चा)।

सांसारिक—वि० [स०] [भाव० सासारिकता] १ जिसका सवध इस ससार या उसकी वस्तुओं, व्यापारो आदि से हो। आध्यात्मिक तथा पारलौकिक से भिन्न। २ जिसका सवध मुख्यत जीवन की आवश्यकताओ, विषय-भोगो आदि से हो।

सांसिद्धिक—वि०[स० सासिद्धि+ठञ्—इक]१ ससिद्धि सम्वन्धी। २ प्राकृतिक। स्वाभाविक। ३ आत्म-भू। स्वतः प्रसूता।

सांसी—पु०[?] एक जगली और यायावर या खानावदोश जाति।

सांस्कारिक—वि० [स० सस्कार+ठञ्—इक] १ सस्कार-सवधी। २ सस्कार-जन्य। ३ अन्त्येष्टि क्रिया से सम्वन्व रखनेवाला।

सांस्कृतिक—वि०[स० सस्कृति+ठञ्—इक] सस्कृति से सम्वन्ध रखने या सस्कृति के क्षेत्र मे आने या होनेवाला। (कलचरल)

सांस्थानिक—वि० [स० सस्थान+ठक्—इक] सस्थान-सम्वन्धी। सस्थान का।

सांस्पर्शिक—वि० [सं० सस्पर्श+ठञ्—इक] १ सस्पर्श-सम्वन्धी। २ सस्पर्श से उत्पन्न होने या फैलनेवाला। २ दे० 'सक्रामक'।

साँहि—पु०[स०स्वामी]१ स्वामी। मालिक। २ देख-रेख और रक्षा करने-वाला। उदा०—साँहि नाहिं जग वात को पूछा।—जायसी।

सा—अव्य०[स० सम=समान]१ एक सवंध-सूचक अव्यय जिसका प्रयोग कही क्रिया विशेषण की तरह और कही विशेषण की तरह नीचे लिखे आशय या भाव सूचित करने के लिए होता है—१ तुल्य, वरावर, सदृश या समान। जैसे—कमल सी आँखें, फूल सा शरीर। २ किसी की तरह या प्रकार का। वहुत कुछ मिलता-जुलता। जैसे—धूर्तो के से काम, वच्चो की सी वातें। ३ सादृश्य होने पर भी किसी प्रकार की आशिक अल्पता, न्यूनता या हीनता का भाव सूचित करने के लिए। जैसे—(क) वहाँ वैठे-वैठे मुझे नीद सी आने लगी। (ख) वह एक मरियल सा टट्टू ले आया। ४ अववारण या निश्चय सूचित करने के लिए। जैसे—तुम्हे इनमे की कौन सी पुस्तक चाहिए। ५ किसी अनिश्चित मात्रा या मान पर जोर देने के लिए। जैसे—जरा सा नमक, थोडे से आदमी, वहुत सी वाते। ६ पूरा-पूरा न होने पर भी वहुत कुछ। जैसे—वहाँ एक गड्ढा-सा वन गया।

विशेष—(क) जैसा कि ऊपर के कुछ उदाहरणो से सूचित होता है इस अव्यय का कुछ अवस्थाओं मे विशेषण के समान भी प्रयोग होता है, इसी लिए विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार इसके रूप भी वदलकर सी और से हो जाते है। (ख) यह अव्यय क्रिया विशेषणो, विशेषणो और सज्ञाओं के साथ लगता ही है, क्रियाओ के भूत-कृदत रूपो और विभक्तियो के साथ भी लगता है। जैसे—(क) उठता हुआ सा, चलता हुआ-सा। (ख) घर का सा व्यवहार, मूर्खो का सा आचरण।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ विशेषणों के अत मे लगकर तरह, प्रकार, रूप रग आदि का भाव सूचित करता है। जैसे—ऐसा=इस-सा, कैसा=किस-सा, वैसा=उस-सा।

पु०[स० षडज] सगीत मे, षडज स्वर का सूचक शब्द या सक्षिप्त रूप। जैसे—सा, रे, ग, म।

साअत—स्त्री०[अ०] दे० 'साइत'।

साइंस—पु०[अ०] दे० 'विज्ञान'।

साइक—पुं०=शासक।

†पु०=सायकाल।

साइकिल—स्त्री०[अ०] दो पहियोवाली एक प्रसिद्ध सवारी। पैरगाडी। वाइसिकिल।

साइक्क†—पु०=शायक (तीर)।

साइत—स्त्री०[अ० साअत] १ एक घटे या ढाई घडी का समय। २ समय का वहुत ही छोटा विभाग। क्षण। पल। लमहा। ३ किसी शुभ कार्य के लिए फलित ज्योतिष के विचार से स्थिर किया हुआ कोई

शुभ काल या समय। मुहूर्त। जैसे—द्वारचार की साइत, भाँवर की साइत।
क्रि० प्र०—दिखाना।—देखना।—निकलना।—निकालना।
†अव्य०=शायद।

साइनबोर्ड—पु०[अ०]वह तख्ता या धातु आदि का टुकड़ा जिस पर किसी व्यक्ति, सस्था आदि का नाम और सक्षिप्त विवरण सर्वसाधारण के सूचनार्थ लिखा रहता है। नाम-पट्ट।

साइयाँ†—पु०=साँई (स्वामी या ईश्वर)।

साइर—वि०, पु०=सायर।
†पु०=सागर। उदा०—सर सरिता साइर गिरि भारे।—नन्ददास।

साईं†—पु०=साँई।

साई—स्त्री०[हिं० साइत]१ कार्य आदि के सम्पादन के लिए बातचीत पक्की होने पर दिया जानेवाला पेशगी धन। बयाना। २ विशेषत. वह धन जो गाने-बजानेवाले से किसी कार्यक्रम की बात पक्की होने पर उन्हे दिया जाता है।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।
†स्त्री०[स० सहाय] सहायता।
स्त्री०[देश०]१ वे छड जो बैलगाडी के अगले हिस्से मे बेडे बल मे मजबूती के लिए एक दूसरे को काटते हुए रखे जाते है। २ एक प्रकार का कीडा।
†स्त्री०=साई-काँटा।

साई-काँटा—पु०[हिं० शाही (जतु)+काँटा]एक प्रकार का वृक्ष जो दक्षिण भारत, गुजरात और मध्य प्रदेश मे होता है। साई। मोगली।

साईस—पु० [रईस का अनु०] [भाव० साईसी] किसी रईस का वह नौकर जो उसके घोडे या घोडो की देख-भाल करता हो।

साईसी—स्त्री०[हिं०साईस+ई(प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

साउज†—पु०=सावज (पशु)।

साएर†—पुं०=१. सायर। २. सागर।

साकंभरी†—पु०=शाकभरी (झील)।

साक†—पु० [स० शाक] शाक। साग। सब्जी। तरकारी। भाजी।
†पु०=साखू।

साकचोरि—स्त्री०[?] मेंहदी। हिना।

साकट†—पु०=साकत।

साकत—पु०[स० शाक्त]१ शाक्त मत का अनुयायी। २ वह जो मद्य, मास आदि का सेवन करता हो। ३ वह जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो। निगुरा।
वि० दुष्ट। पाजी।

साकर†—स्त्री० १.=साँकल। २=शक्कर।
वि०=साँकर (सँकरा)।

साकल्य—पु०[स०]सकल की अवस्था, गुण या भाव। सकलता। समग्रता।
†पु०=शाकल्य।

साकवर†—पु०[?] बैल। वृषभ।

साकांक्ष—वि०[स० त० त०]१. (व्यक्ति) जिसके मन मे कोई आकाक्षा हो। आकाक्षा रखनेवाला। २. (काम, चीज या बात) जिसे किसी और की कुछ अपेक्षा हो। सापेक्ष।
पु० भारतीय साहित्य म, एक प्रकार का अर्थदोष जो ऐसे वाक्यो मे माना जाता है जिनमे किसी अपेक्षित आशय का स्पष्ट उल्लेख न हो, और फलत उस अपेक्षित आशय के सूचक शब्दों की आकाक्षा बनी रहती हो। यथा—'जननी, रुचि, मुनि पितु वचन क्यो तजिहैं बन राम।—तुलसी। इसमे मुख्य आशय तो यह है कि राम वन जाना क्यो छोडे। परन्तु 'क्यो तजिहैं बन राम' से यह आशय पूरी तरह से प्रकट नही होता, इसलिए इसमे साकाक्ष नामक अर्थ दोष है।

साका—पु०[स० शाका]१ सवत्। शाका।
क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।
२ ख्याति। प्रसिद्धि। ३ कीर्ति। यश। ४ बडा काम जिससे कर्ता की बहुत कीर्ति हो।
मुहा०—साका करके (कोई काम) करना= सबके सामने, दृढता और वीरतापूर्वक। उदा०—तस फल उन्हहि देउँ करि साका।—तुलसी।
५ कोई ऐसा बडा काम जो सहसा सब लोग न कर सकते हो और जिसके कारण कर्ता की कीर्ति हो।
मुहा०—साका पूजना=किसी का अभीष्ट या उक्त प्रकार का कोई बहुत बडा काम सम्पन्न या सम्पादित होना। उदा०—आजु आइ पूजी वह साका।—जायसी।
६ धाक। रोब।
मुहा०—साका चलाना या बाँधना= (क) आतक फैलाना। (ख) रोब जामाना।

साकार—वि०[स० तृ० त०] [भाव० साकारता]१ जिसका कुछ या कोई आकार हो। आकारयुक्त। २ विशेषत ऐसा अमूर्त, असासारिक या पारलौकिक जीव या तत्त्व जो मूर्त रूप धारण करके पृथ्वी पर अवतरित हुआ हो। ३ बात या योजना जिसे उद्दिष्ट, उपयोगी या क्रियात्मक आकार अथवा रूप प्राप्त हुआ हो। जैसे—सपने साकार होना। ४ मोटा। स्थूल।
पु०ईश्वर का वह रूप जो साकार हो। ब्रह्म का मूर्तिमान् रूप। जैसे—अवतारो आदि मे दिखाई देनेवाला रूप।

साकारोपासना—स्त्री० [स० ष० त०]ईश्वर की वह उपासना जो उसका कोई आकार या मूर्ति बनाकर की जाती है। ईश्वर अथवा उसके किसी अवतार की यो ही अथवा मूर्ति बनाकर की जानेवाली उपासना। निराकार उपासना से भिन्न।

साकिन—वि०[अ०] १ जो एक ही स्थान पर स्थिर रहता हो। अचल। २. चो चलता-फिरता या हिलता-डोलता न हो। गति-रहित। ३ किसी विशिष्ट स्थान पर रहने या निवास करनेवाला। निवासी। जैसे—चुन्नीलाल साकिन मौजा नरहरपुर।
स्त्री०[अ० साकी का स्त्री०] साकी (मद्य पिलानेवाला) का स्त्री०रूप।
पु०[?] कश्मीर से नेपाल तक के जगलो मे पाया जानेवाला बकरी की तरह का एक प्रकार का पशु जिसका मास खाया जाता है। कश्मीर मे इसे 'कैल' कहते है।

साकी—पु०[अ०] [स्त्री० साकिन]१ वह जो लोगो को मद्य का पात्र भर कर देता और हुक्का पिलाता हो। शराब और हुक्का पिलाने का काम करनेवाला व्यक्ति। २ उर्दू-फारसी काव्यो मे प्रेमिका की एक सज्ञा जिसका काम मद्य पिलाना माना जाता है।

विशेष—हमारे यहाँ कुछ सत कवियो ने इसके स्थान पर 'कलाली' (देखे) का प्रयोग किया है।
†स्त्री०[?] कपूर-कचरी।
साकुश†—पु० [?] घोडा। अश्व। (डि०)
साकृतिक—वि०[स०] आकृति से युक्त अर्थात् साकार किया हुआ।
साकेत—पु० [स०]१ अयोध्या नगरी। अवधपुरी। २. भगवान् रामचन्द्र का लोक जिसमे उनके भक्तों को मरने पर स्थान मिलता है।
साकेतक—पु०[स० साकेत+कन्] साकेत का निवासी। अयोध्या का रहनेवाला।
वि० साकेत-सम्बन्धी। साकेत का।
साकेतन—पु०[स०] साकेत। अयोध्या।
साकोह†—पु०=साखू (शाल वृक्ष)।
सावतुक—पु०[स० शक्तु+ढक्=क] जौ, जिससे सत्तू बनता है।
वि० १. सत्तु-सम्बन्धी। सत्तू का। २ सत्तू से बना हुआ।
साक्ष—वि०[स० त० त०]१ अक्ष से युक्त। २. आँखो या नेत्रों से युक्त। आँखोवाला।
साक्षर—वि०[स०] [भाव० साक्षरता]१ अक्षर या अक्षरो से युक्त। २ (व्यक्ति) जो अक्षरो को पढ-लिख सकता हो। ३ शिक्षित। सुशिक्षित। (लिटरेट, उक्त दोनो अर्थो मे)
साक्षरता—स्त्री०[स०] साक्षर अर्थात् पढे-लिखे होने की अवस्था या भाव। (लिटरेसी)
साक्षात्—अव्य०[स०]१ आँखो के सामने। प्रत्यक्ष। सम्मुख। २ प्रत्यक्ष या सीधे रूप मे। ३ शरीरधारी व्यक्ति (या वस्तु) के रूप मे। जैसे—विद्या मे तो आप साक्षात् बृहस्पति थे।
वि० मूर्तिमान्। साकार। जैसे—आप तो साक्षात् सत्य हैं।
पु०=साक्षात्कार। (क्व०)
साक्षात्कार—पु०[स०]१ आँखो के सामने प्रत्यक्ष या साक्षात् उपस्थित होना। सामने आना या होना। जैसे—ईश्वर या देवी-देवताओं का (या से) होनेवाला साक्षात्कार। २ प्रत्यक्ष रूप से होनेवाली भेंट। मुलाकात। ३ इन्द्रियो या मन को (किसी बात या विषय का) होनेवाला पूरा या स्पष्ट ज्ञान। जैसे—मानसिक साक्षात्कार।
साक्षातकारी(रिन्)—वि०[स०] साक्षात् करनेवाला।
साक्षिता—स्त्री०[स०]१ साक्षी होने की अवस्था या भाव। २ गवाही। साक्ष्य।
साक्षिभूत—पु०[स० कर्म० स०] विष्णु का एक नाम।
साक्षी(क्षिन्)—पु० [स०] [स्त्री० साक्षिणी] १ वह मनुष्य जिसने किसी घटना को घटित होते हुए अपनी आँखो से देखा हो। २ उक्त प्रकार का ऐसा व्यक्ति जो किसी बात की प्रामाणिकता सिद्ध करता हो। गवाह। ३ वह जो कोई घटना घटित होते हुए देखता हो। प्रत्यक्ष-दर्शी। जैसे—हमारे शरीर मे आत्मा साक्षी रूप मे रहती है, भोग से उसका कोई सम्बन्ध नही होता।
स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया। गवाही। शहादत।
साक्षीकरण—पु०[स० साक्षि√च्वि√कृ(करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० साक्षीकृत] दे० 'साक्ष्यकन'।
साक्षीकृत—भू० कृ०[स०] दे० साक्ष्यकित'।
साक्षेप—वि०[स० तृ० त०]१ जिसके सम्बन्ध मे किसी प्रकार का आक्षेप या आपत्ति की जा सकती हो। २ आक्षेप अर्थात् ताने या व्यग्य से युक्त (कथन)।
क्रि० वि० आक्षेपपूर्वक।
साक्ष्यंकन—पु०[स० साक्षी+अंकन] [भू० कृ० साक्ष्यकित] किसी पत्र, लेख्य, हस्ताक्षर आदि के सम्बन्ध मे साक्षी के रूप मे यह लिखवाना कि यह ठीक और वास्तविक है। प्रमाणीकरण।(एटेस्टेशन)
साक्ष्यंकित—भू० कृ०[स०] जिस पर साक्ष्यंकन हुआ हो। (एटेस्टेड)
साक्ष्य—पु०[स० साक्षि+यत्]१ वह जो कुछ अपनी आँखो से देखा गया हो। २ आँखो से देखी हुई घटना का कथन। ३ गवाही। शहादत।
साख—स्त्री०[स० शाका, हिं० साका]१ धाक। रोब। २ लेन-देन और व्यापार-व्यवहार मे, खरेपन की ऐसी प्रामाणिकता और मान्यता जिसके विषय मे किसी का कोई सन्देह न हो। (क्रेडिट) जैसे—आजकल बाजार (या समाज) मे उनकी बहुत साख है।
विशेष—ऐसी प्रामाणिकता व्यक्ति की प्रतिष्ठा और मर्यादा की सूचक होती है।
३ प्रतिष्ठा। मर्यादा।
क्रि० प्र०—बँधना।—बनना।—बनाना।—बाँधना।—बिगडना।—बिगाडना।
†स्त्री० [स० शाखा] १ वृक्षो आदि की डाल। शाखा। २ खेत की उपज। पैदावार। ३ पीढी। पुश्त। उदा०—बिन मेहरारु घर करै, चौदह साख लबार।—घाघ।
स्त्री०[स० साक्षी] गवाही। शहादत। साक्षी।
साखत†—पु०[सं० शाक्त]१ शक्ति या देवी का उपासक। शाक्त। २ देवी-देवताओं का उपासक। देव-पूजक। (क्व०) उदा०—सापित (साखत) के तू हरता-करता हरि भगतन कै चेरी।—कबीर।
साखना*—स० [स० साक्षि, हिं० साख+ना (प्रत्य०)] साक्षी या गवाही देना। शहादत देना।
साखर*—वि०=साक्षर।
स्त्री०=शक्कर। (महाराष्ट्र)
साखा*—स्त्री० [स० शाखा]१ वह कीली जो चक्की के बीच में लगी होती है। चक्की का धुरा। २ दे० 'शाखा'।
साखिआ*—वि०=सारखा (सरीखा या सदृश)।
*स्त्री०=शाखा।
साखियात*—अव्य०=साक्षात्।
साखी—पु०[स० साक्षिन्]१ गवाह। २ आपसी झगडों का निपटारा करनेवाला पच। ३ मित्र और सहायक। ४ सगी। साथी।
स्त्री०१ साक्षी। गवाही। शहादत।
मुहा०—साखी पुकारना= गवाही देना।
२ ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र मे, महापुरुषो, सतो, साधु-महात्माओं आदि के वे पद जिनमे वे अपने अनुभव, मत या साक्षात्कार की प्राप्ति के लिए अन्य साधु-महात्माओ के वचन साक्षी रूप मे उद्धृत करते है। जैसे—कबीर की साखी।

†पु०[स० साखिन्=शाखी] पेट। वृक्ष।

साखू—पु०[स० शाल] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है।
स्त्री० उक्त वृक्ष की लकडी।

साखेय—वि०[स० सखि+इक्—एय] १ सखा-सम्बन्धी। सखा का। २. लोगो को सहज मे अपना सखा बना लेनेवाला, अर्थात् मिलनसार। यार-बाश।

साखोच्चारण—पु०=शाखोच्चार।

साखोट—पु०[स० शाखोट] सिहोर वृक्ष। सिहोरा।

साख्त—स्त्री०[फा०] १ किसी चीज की बनावट या रचना का कार्य। २. बनावट या रचना का ढग या प्रकार। ३. बनाकर तैयार की हुई चीज।

साख्ता—वि०[फा० साख्त]१ बनाया हुआ। २. नकली। बनावटी।

साख्य—पु०[स० सखि+ष्यञ्]=सख्यता।

साग—पु०[सं० शाक] १ कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधो की वे पत्तियाँ जो तरकारी आदि की तरह पकाकर खाई जाती हैं। शाक। भाजी। जैसे—सोए, पालक, सरसो या बथुए का साग।
पद—साग-पात=(क) खाने के साग, पत्ते, कन्द, मूल आदि। (ख) बहुत ही उपेक्ष्य और तुच्छ वस्तु। जैसे—वह तो औरो को अपने सामने साग-पात समझता है।
२. पकाई हुई भाजी। तरकारी। जैसे—आलू का साग, कुम्हडे का साग। (वैष्णव)

सागर—पुं०[स०]१. समुद्र, जो पुराणानुसार महाराज सगर का बनाया हुआ माना जाता है। उदधि। जलधि। २. बहुत बडा तालाब। झील। ३. दशनामी सन्यासियो का एक भेद। ४ उक्त प्रकार के सन्यासियो की उपाधि। ५. एक प्रकार का हिरन।
पु०[अ० सागर] १. बडा प्याला। कटोरा। २ शराब पीने का प्याला।

सागरज—वि०[सं०] सागर या समुद्र से उत्पन्न।
पु० समुद्री नमक।

सागर-धरा—स्त्री०[स०] पृथ्वी। भूमि।

सागरनेमि—स्त्री०[स०] पृथ्वी।

सागरमुद्रा—स्त्री०[स०] इष्टदेव का ध्यान या आराधना करने की एक प्रकार की मुद्रा।

सागर-मेखला—स्त्री०[स०] पृथ्वी।

सागर-लिपि—स्त्री० [स० मध्यम० स०] एक प्राचीन लिपि।

सागरवासी (सिन्)—वि० [स० सागर√वस् (रहना)+णिनि]१ समुद्र मे वास करने या रहनेवाला। २. समुद्र के तट पर रहनेवाला।

सागर-संगम—पु०[स०] नदी और समुद्र का सगम स्थान, विशेषत. वह स्थान जहाँ समुद्र की लहरें नदी की धारा से मिलती हैं। (एस्चुअरी)

सागरांत—पु०[स०प०त०] १ समुद्र का किनारा। समुद्र-तट। २. समुद्र-तट का विस्तार।

सागरांता—स्त्री०[स० सागरात-टाप्] पृथ्वी।

सागरांबरा—स्त्री० [स० ब० स० सागराम्बरा] पृथ्वी।

सागरालय—पु०[स० ब० स०] सागर मे रहनेवाले, वरुण।

सागस†—अव्य० [?] सामने। सम्मुख। उदा०—प्रीतम कौं जब सागस लहै।—नददास।

सागा†—पु०[स० सह] संग। साथ। (राज०)

सागार—वि० [स० स+आगार] आगार से युक्त। आगार या घर वाला।
पु० गृहस्थ।

सागी†—क्रि० वि० दे० 'सागे'। उदा०—मेरी आरति मेटि गुसांई आई मिलौ मोंहि सागी री।—मीरां।

सागू—पु०[अ० सैगो]१ ताड की जाति का एक प्रकार का पेड जिसके तने से आटे की तरह गूदा निकलता है। दे० 'सागूदाना'।

सागूदाना—पु०[हिं० सागू+दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो पहले आटे के रूप मे होता है और फिर कूटकर दानो के रूप मे बनाकर सुखा लिया जाता है। यह पौष्टिक होता है और जल्दी पच जाता है, इसी लिए प्राय. रोगियो को पथ्य के रूप में दिया जाता है।

सागे†—क्रि० वि०[सं० सह] सग। साथ। (राज०)

सागो†—पु०=सागू।

सागोन—पु०[स० शाल] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकडी बहुत सुन्दर तथा मजबूत होती है और इमारत के काम आती है। शाल वृक्ष।

साग्निक—वि० [स०] १. अग्नि से युक्त। अग्निसहित। २ यज्ञ की अग्नि से युक्त।
पु० वह गृहस्थ जो सदा घर मे अग्निहोत्र की अग्नि रखता हो। अग्निहोत्री।

साग्र—वि०[स० तृ० त०] आदि से लेकर, पूरा। कुल। सब।

साचक़—स्त्री०[तु०] मुसलमानों मे विवाह की एक रस्म जिसमे से एक दिन पहले वर पक्ष वाले कन्या के लिए मेंहदी, मेवे, फल, सुगधित द्रव्य आदि भेजते हैं।

साचरी—स्त्री०[स०] सगीत मे, एक प्रकार की रागिनी।

साचिव—वि०[स० सचिव] १. सचिव-सबधी। सचिव का। २ सचिव के कार्य, पद आदि से सबध रखने या उनके पारस्परिक व्यवहार के रूप मे होनेवाला। (मिनिस्टीरियल) जैसे—अब दोनो राज्यो मे साचिव स्तर पर बात-चीत होगी।

साचिव्य—पु०[स० सचिव+ष्यञ्]१ सचिव होने की अवस्था या भाव। सचिवता। २ सचिव का पद। ३ मदद। सहायता।

साची कुम्हड़ा—पु० [देश० साची+कुम्हडा] सफेद कुम्हडा। पेठा।

साछी†—पु०, स्त्री०=साक्षी।

साज—पुं०[स० त० त०] पूर्व भाद्रपद नक्षत्र।

साज—पुं०[स० सज्जा से फा० साज़]१ सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। सजाने के उपकरण या सामग्री।
पद—साज-सामान (देखें)। **बडे साज से**=खूब सजधज कर।
२ सगीत मे, बाजे या वाद्य-यत्र जो गाने-बजाने मे विशेष रोचकता उत्पन्न करते हैं।
मुहा०—साज छेड़ना=बाजा बजाने का काम आरम्भ करना। **साज मिलाना**=बाजा बजाने से पहले उसका सुर आदि ठीक करना।
३ लडाई मे काम आनेवाले हथियार। जैसे—तलवार, बदूक, ढाल, भाला आदि। ५ बढइयो का एक प्रकार का रदा जिससे गोल गलता बनाया जाता है। ६ पारस्परिक अनुकूलता के कारण आपस मे होनेवाला मेल-जोल या घनिष्ठता।

पद—साज-बाज। (देखें)

वि०[भाव० साजी]१ बनानेवाला। जैसे—कारसाज=काम बनानेवाला, जिल्दसाज=पुस्तको की जिल्द बनानेवाला। २. चीजो की मरम्मत करके उन्हे ठीक बनानेवाला। जैसे—घडी-साज =घड़ियों की मरम्मत करनेवाला।

साजगिरी—स्त्री०[देश०] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

साजड़†—पुं०=साजर।

साजन—पु०[स० सज्जन]१ पति। भर्ता। स्वामी। २ प्रेमी। ३. ईश्वर। ४ भला आदमी। सज्जन। ४ सगीत मे, खम्माच ठाठ का एक राग।

साजना†—स०=सजाना।

†पु० 'साजन' के लिए सम्बोधक सज्ञा।

साज-बाज—पु०[स० साज+बाज (अनु०)]१ आवश्यक सामग्री। साज-सजाना। २. किसी काम या बात के लिए होनेवाली तैयारी और सजावट। ३ आपस मे होनेवाली घनिष्ठता। मेल-जोल। हेल-मेल।

साजर—पु०[देश०] गुलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोद निकलता है। (दे० 'गुलू')

साज-सगीत—पु० [फा०+स०] साज या बाजों पर होनेवाला सगीत। वाद्य सगीत। कठ-सगीत से भिन्न।

साज-सामान—पु०[फा०] १ वे सब आवश्यक चीजें जो प्रतिष्ठा या मर्यादा के अनुरूप हो। सामग्री। उपकरण। असबाव। जैसे—बरात का साज-सामान। ३ ठाट-बाट।

साजा†—वि०[हिं० सजाना]१ सजा हुआ। २ सुन्दर। ३. अच्छा। बढिया।

साजात्य—पु०[स० सजाति+ष्यञ्] सजात या सजाति होने की अवस्था, गुण या भाव जो वस्तु के दो प्रकार के धर्मो मे से एक है। 'वैजात्य' का विपर्याय।

साजिंदा—पु०[फा० साजिन्दः] १ वह जो कोई साज (बाजा) बजाता हो। साज या बाजा बजानेवाला। २ वेश्याओ आदि के साथ कोई साज या बाजा बजानेवाला।

साजिया—वि०[फा० साज+हिं० इया (प्रत्य०)] सजानेवाला।

साजिश—स्त्री०[फा०]१ मेल। मिलाप। २ दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए होनेवाली अभिसन्धि। षड-यन्त्र।

साजिशी—वि०[फा०]१ जिसमे किसी प्रकार की साजिश हो। २ साजिश करनेवाला। कुचक्री।

साजुज्य†— पु०=सायुज्य।

साझा—पुं०[स० सहार्द्ध या सहार्घ्य, प्रा० सहायो,]१ व्यापार आदि के लिए किसी काम मे कुछ लोगो को मिलाकर रुपए लगाने, परिश्रम या व्यवस्था करने और उससे होनेवाले हानि-लाभ के आशिक रूप से दायी और अधिकारी होने के लिए आपस मे होनेवला समझौता। हिस्सेदारी। क्रि० प्र०—करना।—रखना।—लगाना।

२ उक्त प्रकार के समझौते के फलस्वरूप उत्पन्न होनेवाली स्थिति। ३. उक्त प्रकार के कार्यो मे किसी व्यक्ति का उतना अश जिसके विचार से वह लाभ के उचित अश का अधिकारी या हानि के उचित अश का उत्तरदायी होता है। ४. किसी वस्तु या सम्पत्ति मे से कुछ अश या भाग पाने का अधिकार। हिस्सेदारी। जैसे—उस मकान मे तीनो भाइयो का साझा है।

साझा-पत्ती—स्त्री०[हिं०]१ किसी कार्य या व्यापार मे होनेवाला साझा या हिस्सेदारी। २ कुछ लोगो मे किसी चीज का होनेवाला बटवारा।

साझी—पु०=साझेदार।

साझेदार—पु०[हिं० साझा+दार (प्रत्य०)]१ शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी। २ व्यापार आदि मे साझा करनेवाला व्यक्ति। हिस्सेदार।

साझेदारी—स्त्री०[हिं० साझेदार+ई (प्रत्य०)] साझेदार होने की अवस्था या भाव। हिस्सेदारी। शराकत।

साट†—स्त्री० १. दे० 'साडी'। (स्त्रियों के पहनने की) २ दे० 'साँट'। पु०[स० सार्थ या प्रा० सट्ट]१ बेचने की क्रिया। विक्रय। २. आपस मे होनेवाला विनिमय या लेन-देन। उदा०—जबहि पाइअहि पारखू, तब हीरन की साट।—कबीर। ३ व्यापार। ४ सट्टा।

स्त्री०[हिं० सटना]१ सटने की क्रिया या भाव। २ दे० 'साँट'।

साटक—पु० [?] १ अन्न आदि का छिलका या भूसी। २ बहुत ही तुच्छ या निकम्मी चीज। ३ एक प्रकार का छन्द।

साट-गाँठ—स्त्री०[स० शाठ्य-ग्रंथि] किसी को कष्ट देने या हानि पहुँचाने के उद्देश्य से कुछ लोगो का आपस मे मिलकर गुट या दल बनाना। (कोल्यूजन)

विशेष—मिली-भगत और साट-गाँठ मे कई मुख्य अन्तर हैं। मिली भगत एक तो अस्थायी या क्षणिक होती है और दूसरे उसका उद्देश्य अपने आपको बिलकुल निर्दोष दिखलाते हुए या तो अपना कोई छोटा-मोटा स्वार्थ सिद्ध करना होता है या दूसरे को केवल ठगना और धोखा देना होता है। पर साटगाँठ प्राय बहुत कुछ स्थायी या दीर्घकाल व्यापी होता है और दूसरे उसका उद्देश्य अधिक उग्र, कठोर या क्रूर होता है।

साटन—स्त्री०[अ० सैटिन] एक प्रकार का बढिया रेशमी कपडा जो प्राय. एकरुखा और कई रगो का होता है।

साटना*—स०=सटाना।

साटनी—स्त्री०[देश०] भालू का नाच। (कलदर)

साटा—पु० [हिं० सट्टा]१ सट्टाबाजी अथवा इसी प्रकार के किसी अन्य अनुचित तथा निन्दनीय उपाय से अर्जित किया हुआ धन। २ दे० 'सट्टा'।

पु०[?]अदला-बदली परिवर्तन। विनिमय।

साटी—स्त्री०[हिं० सटना]१ साथ रहनेवाली चीजें। २ सामग्री। सामान।

†स्त्री०[?]१ पतली छडी। कमची। २ गदहपूरना। पुनर्नवा।

†वि०=साँठी।

साटे†—अव्य०[देश०] बदले मे। परिवर्तन मे।

साटोप—वि०[स० त० त०]१. घमड से फूला हुआ। २ गरजता हुआ (बादल)।

साठ—वि०[स० षष्ठि] जो गिनती मे पचास से दस अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

†स्त्री०=मार्टी।
पु०=साथ (संग)।

साठ-नाठ—वि०[हिं० साँठि+नाठ (नष्ट)]१ जिसकी पूँजी नष्ट हो गई हो। निर्धन। दरिद्र। २ फीका या रूखा। नीरस। ३ छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।
स्त्री०१ मेल-जोल। २ अनुचित संबंध। ३ षड्यंत्र।

साठसाती†—स्त्री०=साढ़ेसाती।

साठा—वि०[हिं० साठ] जिसकी अवस्था साठ वर्ष की हो गई हो। साठ वर्ष की उम्र वाला। जैसे—साठा सो पाठा। (कहा०)
पु०[देश०]१ बहुत बड़ा या लंबा चौड़ा खेत। २ ईख। गन्ना। ३. एक प्रकार की मधुमक्खी जिसे सठपुरिया भी कहते है।
†पु०=साठी (धान)।

साठी—पु०[सं० षष्टिक] एक प्रकार का धान जो लगभग ६० दिन मे पककर तैयार हो जाता है।

साड़ा—पु०[देश०]१ घोड़े का एक प्राण-घातक रोग। २. बाँस का वह टुकड़ा जो नाव में मल्लाहों के बैठने के स्थान के नीचे लगा रहता है।

साड़ी—स्त्री०[सं० शाटिका] १ स्त्रियों के पहनने की धोती। २ विशे-षत ऐसी धोती जो रेशमी हो तथा जिस पर कला-पूर्ण काम हुआ हो। जैसे—बनारसी साड़ी, मदरासी साड़ी।

साढ़साती†—स्त्री०=साढ़ेसाती।

साढ़ी—स्त्री०[?] मलाई (दूध की)।
†स्त्री०=असाढ़ी (असाढ़ की फसल)।
स्त्री०[सं० शाल] शाल वृक्ष का गोंद।
†स्त्री०=मार्डी।

साढ़ू—पु० [सं० श्यालिवोढ़ृ] संबंध के विचार से पत्नी की बहन का पति। साली का पति।

साढ़े-चौहरा—पु०[हिं० साढ़े+चौ (चार)+हरा (प्रत्य०)] मध्ययुग मे, फसल की एक प्रकार की बँटाई जिसमे फसल का ५।१६ भाग जमींदार को मिलता था और शेष ११।१६ भाग काश्तकार को मिलता था।

साढ़े-साती—स्त्री०[हिं० साढ़े-सात+ई(प्रत्य०)] शनि ग्रह की अशुभ और कष्ट-दायक दशा या प्रभाव जो प्राय साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने, या साढ़े सात दिन तक रहता है।
क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।—चलना।—बीतना।

सात—वि०[सं०सप्त] जो गिनती मे पाँच और दो हो। छ से एक अधिक।
पद—सात-पाँच= (क) कुछ लोग। उदा०—सात-पाँच की लकड़ी एक जने का बोझ। (ख) चालाकी और बहानेबाजी या शरारत की बातें। जैसे— हमसे इस प्रकार सात-पाँच मत किया करो। **सात समुद्र पार**= बहुत अधिक दूर विशेषत विदेश मे। जैसे—उन्होंने सात समुद्र पार की चीजें लाकर इकट्ठी की थीं।
मुहा०—सात परदे मे रखना=(क) अच्छी तरह छिपाकर रखना। अच्छी तरह सँभालकर रखना। **सात राजाओं की साक्षी देना**= (ख) बहुत दृढ़तापूर्वक कोई बात कहना। किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। **सात सींकें बनाना**—शिशु जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं। **सातो भूल जाना**=विपत्ति या संकट आने पर पाँचो इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि का ठिकाने न रह जाना और ठीक तरह से अपना काम न कर सकना।
पु० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७।

सातत्य—पु०[सतत+ष्यञ्]१ सतत होने की अवस्था या भाव। सदा होते रहना। निरंतरता। (कन्टिन्यूइटी) २ सदा बने रहने का भाव। स्थायित्व। (पर्पिचुइटी)

सातपूती—वि० [हिं० सात-पूत+ई (प्रत्य०)] (स्त्री) जिसके सात पुत्र हो।
†स्त्री०=सतपुतिया।

सातला—पु०[सं० सप्तला] थूहर पौधे का एक प्रकार।

सातव*—वि०=सातवाँ।

सातवाँ—वि० [हिं० सात+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे सात के स्थान पर पड़नेवाला।

सातिक (ग)†—वि०=सात्विक।

साती—स्त्री०[देश०] साँप काटने की एक प्रकार की चिकित्सा जिसमे साँप के काटे हुए स्थान को चीर कर उस पर नमक या बारूद मलते हैं।
वि०[हिं० सात+ई (प्रत्य०)] सात वर्षों, महीनो, दिनो, घड़ियो, पलों तक चलनेवाला। (ज्यो०) जैसे—साढ़े-साती अर्थात् साढ़े सात वर्षों तक चलनेवाली दशा।

सात्त्व—वि० [सं० सात्त्व+अञ्] १ सत्त्व गुण-संबंधी। सात्त्विक। २. सत्त्व या सार संबंधी।

सात्त्विक—वि०[सं० सत्त्व+ठञ्—क] १ जिसमे सत्त्व गुण हो। सतो-गुणी। २ सत्त्वगुण से संबंध रखनेवाला। ३ सत्य-निष्ठ। ४ प्राकृतिक। ५ वास्तविक। ६ अनुभूति या भावना-जन्य।
पु०१ साहित्य मे, सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्ग जाति मे आठ अंगविकार—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वर-भंग, कंप या वेपथु, वैवर्ण्य, अश्रु-पात और प्रलय।
विशेष—वस्तुत. ये बातें अन्त करण के सत्त्व से ही उत्पन्न होनेवाली मानी गई है। इसलिए इन्हे सात्त्विक कहा गया है। बाद मे कुछ आचार्यों ने इनमे जृंभा नामक नवाँ अंग-विकार भी बढ़ाया था।
२ नाट्य-शास्त्र मे, स्त्रियों के अंगज और अयत्नज कुछ शारीरिक गुण तथा विशेषताएँ जो आकर्षक तथा मोहक होती हैं, और इसी लिए जिनकी गणना स्त्रियो के अलंकारो मे की गई है।
विशेष—हिन्दी मे इनका अन्तर्भाव 'हाव' मे ही होता है। दे० 'हाव'।
३ नाट्य-शास्त्र मे, नाटक के नायक के विशिष्ट गुण जो आठ माने गये है। यथा—शोभा, विलास, माधुर्य, गांभीर्य, स्थैर्य, तेज, ललित और औदार्य। ४ नाट्य-शास्त्र मे, चार प्रकार के अभिनयों मे से एक जिसमे केवल सात्त्विक भावो का प्रदर्शन होता है। ५ काव्य और नाट्य-शास्त्र की सात्वती नाम की वृत्ति। (दे० सात्वती) ६ ब्रह्मा। ७ विष्णु।

सात्त्विक अलंकार—पु०[सं०] नाट्यशास्त्र मे, नायिकाओं के वे क्रिया-कलाप तथा सौन्दर्यवर्धक तत्त्व जिनके अंगज, अयत्नज और स्वभावज ये तीन भेद किये गये हैं। (दे० अंगज अलंकार, अयत्नज अलंकार और स्वभावज अलंकार)

सात्त्विकी—स्त्री० [सं० सात्त्विक+ङीप्], १. दुर्गा का एक नाम। २.

गौणी भक्ति का एक प्रकार या भेद जिसमे विशुद्ध भक्ति-भाव बनाये रखने के उद्देश्य से ही इष्टदेव का अर्चन और पूजन होता है।

वि० स० 'सात्विक' का स्त्री०।

सात्म—वि०[स० त० स०] [भाव० सात्म्य] आत्मा से युक्त। आत्मा-सहित।

सात्म्य—वि०[स० सात्म+कन्] सात्मन्।

सात्म्यक—वि० [स० आत्मन्+ष्यञ्, त० स०]१ सात्म-सबधी। सात्म का। २ प्रकृति के अनुकूल। स्वास्थ्यकर।

पु० १ सात्म्य होने की अवस्था या भाव। २ सरूपता। सारूप्य। ३ एक विशेष प्रकार का रस जिसके सेवन से प्रकृति विरुद्ध कार्य करने पर शारीरिक शक्ति क्षीण नही होती। ४ अवस्था, समय, स्थान आदि के अनुकूल पडनेवाला आहार-विहार।

सात्यकि—पु०[स०] कृष्ण का सारथी एक प्रसिद्ध यादव वीर जो सत्यक का पुत्र था।

सात्यरथि—पु०[स० सत्यरथ+इल, क० स०] वह जो सत्यरथ के वश मे उत्पन्न हुआ हो।

सात्यवत्—पु० [स० सत्यवती+अण्] सत्यवती के पुत्र, वेदव्यास। वि० सत्यवती सबधी। सत्यवती का।

सात्राजित्—पु०[सत्राजित्+अच्] राजा शतानीक जो सत्राजित् के वशज थे।

सात्राजिती—स्त्री०[स० सत्राजित्+ङीप्] सत्यभामा का एक नाम।

सात्वत—पु०[स० सत्त्वत्+अञ्]१ यदुवशी। यादव। २ श्रीकृष्ण। ३ बलराम। ४ विष्णु। ५ एक प्राचीन देश। ६ एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति।

पु०[स०]१ एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो उत्तर भारत के शूरसेन मडल मे रहती थी। २ उक्त जाति का मत जो 'पाचरात्र' कहलाता था।

सात्वती—स्त्री०[स० सात्वत+ङीप्] १ साहित्य मे, चार प्रकार की नाट्य-वृत्तियो मे से एक जिसका प्रयोग मुख्य रूप से वीर, रौद्र, अद्भुत आदि रसो मे होता है तथा जिसमे ज्ञान, न्याय, औचित्य आदि की प्रधानता रहती है। २ शिशुपाल की माता का नाम। ३ सुभद्रा का एक नाम।

साथ—पु०[स० सह या सहित]१ वह अवस्था जिसमे (क) दो या अधिक वस्तुएँ एक दूसरे के निकट स्थित हो। जैसे—दोनो मकान साथ ही हैं। और (ख) दो या अधिक जीव निकट सपर्क मे रहते हो। जैसे—छात्रावास मे हम दोनो का कुछ दिनो तक साथ रहा है।

विशेष—सग और साथ मे मुख्य अतर यह है कि सग तो अधिक गहरा या घनिष्ठ और चिर-कालिक होता है, पर साथ अपेक्षया कम घनिष्ठ और प्राय अल्पकालिक होता है।

पद—साथ का (या को)=पूरी, रोटी आदि के साथ खाई जानेवाली तरकारी, भाजी या सालन। **साथ का खेला**=बचपन का ऐसा साथी जिससे मिलकर खेलते रहे हो।

मुहा०—(किसी का) साथ देना=किसी काम मे सग रहना। सहानुभूति रखते हुए सहायता देना। जैसे—इस काम मे हम तुम्हारा साथ देंगे। **(किसी को अपने) साथ लेना**= अपने सग रखना या ले चलना। जैसे—जब तुम चलने लगना, तो हमे भी साथ ले लेना। **(किसी के) साथ सोना**= मैथुन या सभोग करना।

२ वह जो सग रहता हो। बराबर पास रहनेवाला। साथी। सगी। ३ आपस मे होनेवाली घनिष्ठता या मेल-जोल। जैसे—आज-कल उन दोनो का बहुत साथ है। ४ मिलकर उडनेवाले कबूतरो का झुड या टुकडी। (लखनऊ)

अव्य० १ एक सबध सूचक अव्यय जो प्राय सहचार या सग रहने का भाव या स्थिति सूचित करता है। सहित। से। जैसे—तुम भी उनके साथ रहना।

पद—साथ ही= सिवा। अतिरिक्त। जैसे—साथ ही यह भी एक बात है कि आप वहाँ नही जा सकेंगे। **साथ ही साथ**=एक साथ। एक सिलसिले मे। जैसे—साथ ही साथ दोहराते भी चलो। **एक साथ**= एक सिलसिले मे। जैसे—(क) एक साथ दोनों काम हो जायँगे। (ख) जब एक साथ इतने आदमी पहुँचेंगे तो वे घबरा जायँगे। **के साथ**=(क) साथ रहते हुए। पूर्वक। जैसे—आराम के साथ काम करना चाहिए। (ख) प्रति। से। जैसे—छोटों के साथ हँसी-मजाक करना ठीक नही। २ द्वारा। उदा०—नखन साथ तब उदर विदार्‍यो।—सूर।

सायर†—पु०=साथरा।

साथरा†—पु०[स० स्तरण] [स्त्री० अल्पा० साथरी]१ बिछौना। बिस्तर। २. चटाई, विशेषत कुश की बनी चटाई।

साथिया†—पु०=स्वास्तिक।

साथी—पु०[हिं० साथ+ई (प्रत्य०)]१ वे दो या अधिक व्यक्ति जिनका परस्पर साथ हो। २ साथ रहनेवालो मे से एक की दृष्टि से दूसरा। जैसे—पुरुष को स्त्री का सच्चा साथी होना चाहिए। ३ मित्र। सखा।

साद—पु०[स० साद]१ अस्त होना। डूबना। २ क्लाति। थकावट। ३ विषाद। ४ क्षीणता। ५ नाश। ६ कष्ट। पीडा। ७ विशुद्धता। ८ स्वच्छता। ९ क्षरण। १० दे० 'अवसाद'।

†पु०१ =शब्द। (राज०)२ =स्वाद।

वि०[अ०]१ अच्छा। भला। २ मागलिक। शुभ।

पु० अरबी वर्ण-माला का एक वर्ण जिसका उच्चारण 'स' के समान होता है और जिसका उपयोग लाक्षणिक रूप मे किसी बात को ठीक मानकर उससे अपनी सहमति प्रकट करने के लिए होता है। जैसे—उस्ताद ने उसकी बात का साद किया।

सादक—वि०[स०] नि शक्त या शिथिल करनेवाला।

सादगी—स्त्री० [फा० सादा का भाववाचक रूप]१ सादा होने की अवस्था, गुण या भाव। सादापन। सरलता। २ आचरण, व्यवहार आदि की निष्कपटता और सिधाई। ३ खान-पान, रहन-सहन आदि मे आडबर, तडक-भडक, कृत्रिमता आदि का होनेवाला अभाव।

सादन—पु०[स०] [भू० कृ० सादित]१ नष्ट करना। २ क्लात होना। थकना। ३ थकावट। ४ पात्र। बरतन। ५ सदन (घर या मकान)।

सादर—अव्य० [स० स+आदर] आदरपूर्वक। इज्जत से। जैसे—सादर नमस्कार या प्रणाम।

सादरा—पु०[?] उच्च शास्त्रीय सगीत मे, एक विशिष्ट प्रकार की गायन-शैली जिसके गाने या पद अनेक राग-रागिनियो मे निबद्ध होते है।

सादा—वि० [सं० साध् से फा० साद] [स्त्री० सादी] १ जिसमे एक ही तत्त्व हो या एक ही प्रकार के तत्त्व हों। जिसमे औरों का मेल या योग न हो। जैसे—सादा पानी। २ जिसमे किसी तरह की उलझन, झझट, पेंच की बात या बनावट न हो। सरल। जैसे—सादा हिसाब। ३ जिसकी बनावट या रचना मे स्वाभाविकता ही हो, विशेष कौशल न हो। ४ जिस पर किसी तरह के बेल-बूटे, सजावट आदि का काम न हो। जिस पर किसी प्रकार का अकन न हो। जैसे—सादे कपडे, सादा कागज। ५ जिसे समझने मे विशेष कठिनता न हो। ६ (व्यक्ति) जो छल-कपट से रहित हो। सरल। सीधा। (सिम्पुल)
पद—सीधा-सादा। (देखे)
७ बुद्धि और विवेक से रहित। ना-समझ। मूर्ख। (पश्चिम) जैसे—यहाँ कौन सा सादा है जो तुम्हारी ये बाते मान लेगा।

सादात—पु०[अ०] सैयद जाति या वश।

सादापन—पु०[फा० सादा+हिं० पन (प्रत्य०)] सादगी। (दे०)

सादाशिव—वि०[सं० सदाशिव+अव्] सदाशिव-सबधी।

सादिक—वि०[अ०]१ सच्चा। २ ठीक। दुरुस्त।
मुहा०—सादिक आना=(क) सत्य रूप मे घटित होना। (ख) ठीक आना। पूरा उतरना।

सादिर—वि०[अ०]१ बाहर निकलनेवाला। २ जारी किया हुआ। जैसे—हुक्म सादिर होना।

सादी—स्त्री०[हिं० सादा]१ वह पूरी या रोटी जिसके अन्दर पूरन या कोई चीज भरी न हो। 'कचौरी' का विपर्याय। २ लाल नामक पक्षी की मादा जिसके शरीर पर चित्तियाँ नही होतीं। मुनियाँ। सदिया।
पु० [सं० सदि] १ रथ चलानेवाला। सारथी। २ योद्धा। ३ हवा। वायु।
पु० [फा० सद=शिकार] १ शिकारी। २. घोडा। ३ सवार। (डिं०)
†स्त्री०=शादी।

सादी सजा—स्त्री०[हिं० +फा०]कारावास का ऐसा दड (कडी सजा से भिन्न) जिसमे कैदी को कोई काम न करना पडता हो। (सिम्पुल इम्प्रिजन्मेन्ट)

सादूर†—पु०=सार्दूल (सिंह)।

सादृश्य—पु० [सं०] १ सदृश्य होने की अवस्था, गुण या भाव। एक-रूपता। (सिमिलेरिटी) २ तुलना। बराबरी। ३. मृग। हिरन।

साद्यंत—वि० [सं०] आदि से अत तक का अर्थात् सपूर्ण। सारा।
अव्य० आदि से अत तक।

साद्यस्क—वि०[सं० ब० स०]=सद्यस्क।

साध—स्त्री०[सं०श्रद्धा=प्रबल वासना] १ ऐसी अभिलाषा या आकाक्षा जो बहुत समय से मन मे हो और जिसकी पूर्ति के लिए व्यक्ति उत्कठित हो।
मुहा०—(किसी बात की) साध न रहने देना=सब प्रकार से इच्छा पूरी कर लेना। कुछ कमी या कसर न रखना। उदा०—व्याध अपराध की साध राखी कहा, पिंगलै कौन मति भक्ति भई।—तुलसी। **साध राधना**=अभिलाषा पूरी करना या होना।
२ गर्भवती स्त्री के मन मे प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होनेवाली अनेक प्रकार की अभिलाषाएँ और इच्छाएँ। दोहद। ३ स्त्री के गर्भवती होने के सातवे महीने मे होनेवाली एक प्रकार की रसम।
पु०[सं० साधु] १ साधु। सत। महात्मा। भला आदमी। सज्जन। २ उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध सप्रदाय जिस पर आगे चलकर कबीर पथ का विशेष प्रभाव पडा था। ३ उक्त सप्रदाय का अनुयायी जो ईश्वर के सिवा और किसी को प्रणाम, नमस्कार आदि का अधिकारी नही समझता, और इसलिए व्यक्तियों के सामने सिर नही झुकाता।
†वि०[सं० साधु] उत्तम। अच्छा।

साधक—वि०[सं०√साध्(सिद्ध होना)+ण्वुल्—अक][स्त्री०साधिका] १ साधना करनेवाला। २ साधनेवाला। ३ जो साध्य या ध्येय की प्राप्ति मे साधन बना हो फलत सहायक हुआ हो।
पु०१ वह जो आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र मे फल-प्राप्ति के उद्देश्य से किसी प्रकार साधना मे लगा हुआ हो। जैसे—तात्रिक, योगी, तपस्वी आदि। २ कोई ऐसी चीज या बात जिससे कोई कार्य पूरा या सिद्ध करने मे सहायता मिलती हो। जरिया। वसीला। साधन। ३ वह जो किसी काम या बात मे अनुकूल रहकर सहायक होता हो। ४ वह जो ऊपर से तटस्थ रहकर, परन्तु मन मे कपट रखकर किसी का दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने मे सहायक होता हो। जैसे—वे दोनो सिद्ध-साधक बनकर मेरे पास आये थे।
पद—सिद्ध-साधक। (देखे)
५ न्याय मे, वह लक्षण जिसके आधार पर कोई बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है। हेतु। ६ भूत-प्रेत आदि को साधने या अपने वश मे करनेवाला। ओझा। ७ पुत्रजीव नामक वृक्ष। ८ दमनक। दौना। ९. पित्त।

साधकता—स्त्री०[सं० साधक+तल्—टाप्]१ साधक होने की अवस्था या भाव। २ उपयुक्तता। ३ उपयोगिता।

साधकत्व—पु०[सं० साधक+त्व]१ साधकता। २ जादू या बाजीगरी। ३ सिद्धि।

साधन—पु० [सं०] [वि० साधनिक, साध्य, भू० कृ० साधित, कर्ता साधक]१ किसी कार्य का आरभ करके उसे सिद्ध या पूरा करना। २ आज्ञा, निर्णय आदि के अनुसार किसी काम या बात को उचित और पूरा रूप देना। कार्यान्वित करना। पालन करना। ३ विधिक क्षेत्र मे, आदेशों, लेख्यो, सूचनाओ आदि के अनुसार ठीक तरह से काम पूरा करना। निष्पादन। पालन। ४ अपने कार्यो का निर्वाह या अपने पद के कर्तव्यो आदि का पालन करना। ५ कोई चीज तैयार करने का सामान। सामग्री। ६ कोई ऐसी बात जिससे किसी प्रकार की क्षति, त्रुटि, दोष आदि का परिहार होता हो। उपचार। प्रतिविधि। ७ कोई काम पूरा करने मे सहायता देनेवाली कोई चीज या सब चीजें। उपकरण। (इन्स्ट्रूमेंट)८ कोई ऐसी चीज या बात जिससे कुछ कर सकने की शक्ति या समर्थता आती हो। (मीन्स) जैसे—युद्ध करने के लिए सैनिक साधन। ९ वे सब तत्त्व जिनके सहारे कोई काम पूरा होता हो अथवा आवश्यकता पडने पर जिनका उपयोग किया जा सकता हो। (रिसोर्सेज) १०. कोई ऐसा तत्त्व या वस्तु जिसके द्वारा या

सहायता से काम पूरा होता हो। (एजेन्सी) ११ वैद्यक मे, औषध बनाने के लिए धातुएँ आदि फूँकने और शोधने का काम। १२ उपाय। तरकीब। युक्ति। १३ मदद। सहायता। १४ कारण। सबब। १५ धन-सपत्ति। दौलत। १६ पदार्थ। वस्तु। १७ प्रमाण। सबूत। १८ जाना। गमन। १९ उपासना। २०. सधान। २१ मृतक का अग्नि-सस्कार। दाह-कर्म। २२ दे० 'साधना'।

साधन-क्रिया—स्त्री० [स०] समापिका क्रिया। (दे०)

साधनता—स्त्री०[स०]१. साधन का धर्म या भाव। २ साधन की क्रिया। साधना।

साधनहार*—वि०[स० साधन+हिं० हार (प्रत्य०)]१ साधने करने या साधनेवाला। साधक। २ जो साध या सिद्ध किया जा सके। साध्य।

साधना—स्त्री०[स०]१ कोई कार्य सिद्ध या सपन्न करने की क्रिया। साधन। २ ऐसी आराधना तथा उपासना जो विशेष कष्ट सहन, परिश्रम तथा मनोयोगपूर्वक बहुत दिनो तक करनी पडती हो, अथवा जिसमे किसी विशिष्ट प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती हो। जैसे—तत्र या योग की साधना। ३ उक्त के आधार पर किसी बहुत बडे तथा महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए विशेष त्याग, परिश्रम तथा मनोयोगपूर्वक बहुत दिनो तक किया जानेवाला प्रयत्न या प्रयास। जैसे—अधिकतर बडे बडे आविष्कार विशिष्ट साधना करने से होते है।

स०[स० साधना]१ विशेष परिश्रम तथा प्रयत्नपूर्वक निरतर कोई कार्य करते हुए उसमे पारगत या सिद्धहस्त होना। जैसे—योग साधना। २ किसी काम या बात का इस प्रकार अभ्यास करना कि वह ठीक तरह से, बहुत सहज मे या स्वाभाविक रूप से सम्पादित होने लगे। जैसे—दम साधना=दम या साँस रोकने का अभ्यास करना। ३ किसी चीज को ऐसी स्थिति मे लाना कि वह ठीक तरह से और सतुलित रूप मे अपने स्थान पर रहकर पूरा काम कर सके। जैसे—(क) गुड्डी या पतग साधना=उसमे चिप्पी या पुछल्ला लगाकर उसे सतुलित करना। (ख) तराजू या बटखरा साधना=यह देखना कि तराजू या बटखरा ठीक या पूरा तौलता है या नही। (ग) बाइसिकिल पर चढने या रस्से पर चलने मे शरीर साधना=शरीर को ऐसी अवस्था मे रखना कि वह इधर-उधर गिरने न पाए। ४ शुद्ध या सत्य प्रमाणित करना। ५ निश्चित या पक्का करना। ठहराना। ६ किसी को अपनी ओर मिलाकर अपने अनुकूल या वश मे करना। उदा०—गाधिराज को पुत्र साधि सब मित्र शत्रु बल।—केशव।

स० [स० सधान, पु० हिं० सधानना] निशाना लगाना। सधान करना।

साधनिक—वि०[स०] १ साधन-सबधी। साधन का। २ किसी या कई प्रकार के साधनों से युक्त या सम्पन्न। ३ किसी राज्य या सस्था के प्रबध, शासन या कार्य-साधन से सम्बन्ध रखनेवाला। कार्यकारी। अधिशासी।

पु० प्राचीन भारत मे, एक प्रकार के राज-कर्मचारी जो सेना आदि के किसी उप-विभाग के व्यवस्थापक होते थे।

साधनी—स्त्री०[स० साधन]१ लोहे या लकडी का एक औजार जिससे दीवार या जमीन की सतह की सीध नापते है। २ राज। मेमार। उदा०—चोलि साधनी-पुज मंजु मडप रचवायो।—रत्ना०।

साधनीय—वि०[स०] १ जिसका साधन हो सके। २ जिसकी साधना होने को हो। ३. जो साधना से प्राप्त किया जा सकता हो।

साधयितव्य—वि० [स० √सिध् (गत्यादि)+णिच्-साधादेश, तव्य] (कार्य) जिसका साधन हो सकता हो या किया जा सकता हो।

साधयिता—वि० [स० √सिध् (गत्यादि)+णिच्-साधादेश-तृच्] जो साधन करता हो। साधन करनेवाला। साधक।

साधर्मिक—पु०[स० सधर्म-प० स०—ठक्-इक] किसी की दृष्टि से उसी के धर्म का दूसरा अनुयायी। सधर्मी।

साधर्म्य—पु०[सं० सधर्म+ष्यञ्] समान धर्म से युक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। एकधर्मता। समान-धर्मता। तुल्य-धर्मता। जैसे—इनमे कुछ भी साधर्म्य नही है।

साधस—पु० दे० 'साध्वस'।

साधार—वि०[स०]१ (रचना) जो आधार या नीव पर स्थित हो। २ कथन, विचार आदि जिसका कुछ या कोई आधार हो। तथ्य-पूर्ण।

साधारण—वि०[स० साधारण, अव्य० स०-अण्] १ जैसा साधारणत सब जगह पाया जाता अथवा होता हो। आम। (यूजुअल) २ जिसमें औरो की अपेक्षा कोई विशेषता न हो। (कॉमन) ३ प्रकार, प्रकृति, रूप आदि के विचार से जैसा सब जगह होता हो, वैसा। प्रकृत। सहज। ४ जिसमे कोई बहुत बडी उत्कृष्टता या विशेषता न हो, फिर भी जो अच्छे या बढिया से कुछ हलके दरजे का हो। मामूली। (आर्डिनरी) ५ जो प्राय. सभी लोगो के करने या समझने के योग्य हो। सरल। सहज। सुगम। ६. तुल्य। सदृश। समान। ७ दे० 'सामान्य'।

पु०१ भावप्रकाश के अनुसार ऐसा प्रदेश जहाँ जगल अधिक हों, रोग अधिक होते हो, और जाडा तथा गरमी भी अधिक पडती हो। २. उक्त प्रकार के देश का जल।

साधारण गांधार—पु०[सं० कर्म० स०] सगीत मे, एक प्रकार का विकृत स्वर जो वज्रिका नामक श्रुति से आरम्भ होता है। इसमे तीन श्रुतियाँ होती हैं।

साधारणतः—अव्य०[स०]=साधारणतया।

साधारणतया—अव्य० [स० साधारण+तल्—टाप्-टा] साधारण रूप से। आमतौर पर। साधारणत।

साधारणता—स्त्री०[सं० साधारण] साधारण होने की अवस्था, गुण धर्म या भाव।

साधारण धर्म—पु०[स०]१ ऐसा कर्तव्य, कर्म या कार्य जो साधारणत और समान रूप से सब के लिए बना हो। २ ऐसा कर्तव्य, कर्म या धर्म जिसका विधान किसी वर्ग के सब लोगो के लिए हुआ हो। ३ ऐसा गुण, तत्त्व या धर्म जो साधारणत किसी प्रकार के सब पदार्थों आदि मे समान रूप से पाया जाता हो।

विशेष—साधरणीकरण ऐसे ही गुणो, तत्त्वो या धर्मों के आधार पर किया जाता है।

साधारण निर्वाचन—पु०[स०] वह निर्वाचन जिसमे हर चुनाव क्षेत्र से प्रतिनिधि चुने जाते हों। आम-चुनाव। (जनरल इलेक्शन)

साधारण वाक्य—पु०[स०] व्याकरण मे, तीन प्रकार के वाक्यो मे से पहला जो प्राय बहुत छोटा होता है और जिसमे एक कर्ता और एक

क्रिया (सकर्मक होने पर क्रिया के साथ कर्म भी) होती है। (वाक्य के शेष दो प्रकार मिश्र और सयुक्त कहलाते हैं)।

साधारणीकरण—पुं०[स०] [भू० कृ० साधारणीकृत] १. हमारे प्राचीन साहित्य मे, रस-निष्पत्ति की वह स्थिति जिसमे दर्शक या पाठक कोई अभिनय देखकर या काव्य पढकर उससे तादात्म्य स्थापित करता हुआ उसका पूरा-पूरा रसास्वादन करता है।

विशेष—यह वही स्थिति है जिसमे दर्शक या पाठक के मन से 'मैं' और 'पर' का भाव दूर हो जाता है और वह अभिनय या काव्य के पात्रो या भावों मे विलीन होकर उनके साथ एकात्मता स्थापित कर लेता है।

२. आज-कल एक ही प्रकार के बहुत से विशिष्ट गुणों, तत्त्वो आदि के आधार पर किसी विषय मे कोई ऐसा साधारण नियम या सिद्धात स्थिर करना जो उन सब गुणो या तत्त्वों पर समान रूप से प्रयुक्त हो सके। ३. किसी सामान्य गुण या धर्म के आधार पर अनेक गुणों, तत्त्वो आदि को एक तल पर एक वर्ग मे लाना। गुणो आदि के आधार पर समानता निरूपित करना। (जेनरलाइज़ेशन)

साधारण्य—पु०[स० साधारण+ष्यञ्]=साधारणता।

साधिका—वि० स्त्री० [स०√सिध् (गत्यादि)+णिच्—साधादेश-ण्वुल्—अक, टाप्] स० 'साधक' का स्त्री०।

स्त्री० गहरी नींद।

साधिकार—अव्य०[स०] १ अधिकारपूर्वक। २. आधिकारिक रूप से। (ऑथॉरिटेटिव्ली)

वि० १ जिसे कोई अधिकार प्राप्त हो। २. अधिकारपूर्वक या आधिकारिक रूप से कहा या किया हुआ। (ऑथॉरिटेटिव) जैसे—साधिकार घोषणा।

साधित—भू० कृ०[स० √सिध् (गत्यादि)+णिच्-साधादेश-क्त] १ जिसका साधन किया गया हो। सिद्ध किया हुआ। २ (काम) जो पूरा सिद्ध किया गया हो। ३ जिसे दड दिया गया हो। दडित। ४ शुद्ध किया हुआ। शोधित। ५ नष्ट किया हुआ। ६. (ऋण या देन) जो चुका दिया गया हो। शोधित।

साधित्र—पु०[स०] कोई ऐसी वस्तु या साधन जिसकी सहायता से कोई काम पूरा किया जाता हो। उपकरण। (एपरेटस)

साधी (धिन्)—वि० [स० √सिध् (गत्यादि)+णिनि—साधादेश] साधक।

वि० [हिं० साधक या साधना=सिद्ध करना] किसी के दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि मे सहायक होनेवाला। साधक। उदा०—जो सो चोर, सोई साधी।—कबीर।

साधु—वि०[स०] [भाव० साधुता, स्त्री० साध्वी] १ अच्छा। भला। २ जिसमे कोई आपत्तिजनक बात या दोष न हो; फलतः ग्राह्य और प्रशसनीय। ३ सच्चा। ४. चतुर। निपुण। होशियार। ५. उपयुक्त। योग्य। ६ उचित। मुनासिब। वाजिब।

अव्य० १. बहुत अच्छा किया या बहुत अच्छा हुआ।

मुहा०—साधु साधु कहना=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी बहुत प्रशसा करना।

२ बहुत ठीक, ऐसा ही किया जाय अथवा ऐसा ही हो। ३ बस बहुत हो चुका, अब रहने दो।

पु० १. वह जिसका जन्म उत्तम कुल मे हुआ हो। कुलीन। आर्य। २. वह जिसकी कोई साधना, विशेषतः आध्यात्मिक या धार्मिक साधना पूरी हो चुकी हो। सिद्ध। ३ वह धार्मिक, परोपकारी और सदाचारी व्यक्ति जो धर्म, सत्य आदि का उपदेश करके दूसरो का कल्याण करता हो। महात्मा। संत। ४. वह जो सासारिक प्रपच छोड़कर त्यागी और विरक्त हो गया हो। ५ बहुत ही शात भाव से रहनेवाला सदाचारी और सुशील व्यक्ति। बहुत ही भला आदमी। सज्जन। ६. वणिक। व्यापारी। ७. वह जो लोगों को धन आदि उधार देकर उनके ब्याज या सूद से अपना निर्वाह करता हो। महाजन। साहु। ८ जैन यति, मुनि या साधु। ९ जिन देव। १०. दौना नामक पौधा। दमनक। ११. वरुण वृक्ष।

साधुकारी (रिन्)—वि०[स० साधु√कृ (करना)+णिनि] जो उत्तम कार्य करता हो। अच्छे काम करनेवाला।

साधुज—वि०[सं०] जिसका जन्म उत्तम कुल मे हुआ हो। कुलीन।

साधुजात—वि०[स०] १ सुन्दर। खूबसूरत। २ चमकीला। उज्ज्वल। ३ साफ। स्वच्छ। ४ कुलीन।

साधुता—स्त्री०[स० साधु+तल्—टाप्] १ साधु होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। साधुपन। २. भलमनसाहत। सज्जनता। ३ नेकी। भलाई। ४ सीधापन। सिधाई।

साधुत्व—पुं० [स० साधु+त्व]=साधुता।

साधुमती—स्त्री०[सं० साधु-मतु, ङीप्] १. तात्रिकों की एक देवी। ३. दसवी पृथ्वी। (बौद्ध)

साधुवाद—पु०[स०] १ किसी के कोई उत्तम कार्य करने पर "साधु साधु" कहकर उसकी प्रशसा करना। २ उक्त रूप मे की हुई प्रशसा या कही हुई बात।

साधु-वृत्त—वि०[सं०] उत्तम स्वभाव और चरित्रवाला। साधु आचरण करनेवाला।

साधु-वृत्ति—स्त्री०[स०] उत्तम और श्रेष्ठ आचरण तथा वृत्ति।

साधु-साधु—अव्य० [स०] साधुवाद का सूचक पद। धन्य-धन्य।

साधू—पु०[स० साधु] १. महात्मा और सत पुरुष। २ विरक्त और संसार त्यागी व्यक्ति।

साधो—पु०[स० साधु] हिं० 'साधु' का सम्बोधन कारक का रूप। जैसे—कहे कबीर सुनो भई साधो।—कबीर।

साध्य—वि०[स०] १ (कार्य) जिसका साधन हो सके। जो सिद्ध या पूरा किया जा सके। जैसे—यह कार्य सबके लिए साध्य नही है। २ आसान। सहज। सुगम। ३. तर्क या न्याय मे, (पक्ष या विषय) जो प्रमाणित किया जाने को हो। ४ वैद्यक मे, (रोग) जो चिकित्सा के द्वारा दूर किया जा सकता हो। ५ (काम या बात) जिसका प्रतिकार हो सकता हो अथवा किया जा सकता हो। ६ (विषय) जो प्रयत्न करने पर जाना जा सकता हो।

पु० १ कोई काम पूरा कर सकने की योग्यता या शक्ति। सामर्थ्य। जैसे—यह काम हमारे साध्य के बाहर है। २ न्याय मे, वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। जैसे—पर्वत से धुँआँ निकलता है अत वहाँ अग्नि है। यहाँ अग्नि साध्य है, जिसका अनुमान किया गया है। ३. इक्कीसवाँ योग। (ज्यो०) ४. गुरु से लिये जानेवाले चार प्रकार के

मत्रो मे से एक प्रकार का मत्र। (तत्र) ५ एक प्रकार के गण देवता जिनकी सख्या १२ है। ६. देवता।

साध्यता—स्त्री०[सं० साध्य+तल्—टाप्] साध्य होने की अवस्था, गुण या भाव।

साध्यवसान रूपक—पु०[स०] साहित्य मे, रूपक अलकार का वह प्रकार या भेद जो साध्यवसाना लक्षणा से युक्त होता है। (एलिगोरी)

साध्यवसाना—स्त्री०[स०] साहित्य मे, लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिसमे स्वय उपमान मे उपमेय का अध्यवसाय या तादात्म्य किया जाता अर्थात् उपमेय को बिलकुल हटाकर केवल उपमान इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उपमेय से उसका कोई अतर या भेद नही रह जाता। जैसे—किसी परम मूर्ख के विषय मे कहना—यह तो गधा (या बैल) है। उदा०—अद्भुत् एक अनूप बाग। जुगल कमल पर गज क्रीड़त है, तापर सिंह करत अनुराग। ....फल पर पुहुप, पहुप पर पल्लव ता पर सुक, पिक,मृग-मद काग। इसमे केवल उपमानो का उल्लेख करके राधा के सब अंगो के सौंदर्य का वर्णन किया है।

साध्यवसानिका—स्त्री०=साध्यवसाना (लक्षणा)।

साध्यवसाय—वि०[पु० ब० स०] (उक्ति या कथन) जो साध्यवसाना लक्षणा से युक्त हो।

साध्यवान् (वत्)—वि० [स०साध्य+मतुप् म=व] (व्यवहार मे, वह पक्ष) जिस पर अपना कथन या मत प्रमाणित करने का भार हो।

साध्यसम—पु०[स०]भारतीय नैयायिको के अनुसार पाँच प्रकार के हेत्वाभासो मे से एक, जिसमे किसी हेतु को साध्य के ही समान सिद्ध करने की आवश्यकता होती है। जैसे—यदि कहा जाय "छाया भी द्रव्य है क्योकि उसमे द्रव्यो के ही समान गति होती है।" तो यहाँ यह सिद्ध करना आवश्यक होगा कि स्वत छाया मे गति होती है।

साध्याभक्ति—स्त्री०=परा-भक्ति। (देखें)

साध्र—स्त्री०=साध(कामना)। उदा०—रमण रोक मनि साध्र रही।—प्रिथीराज।

साध्वस—पु०[स०] १ भय। डर। २ घबराहट। ३ बेचैनी। विकलता। ४ प्रतिभा।

साध्वाचार—पुं०[स० उपमि० स०]१. साधुओ का सा आचार और व्यवहार। २ शिष्टाचार।

साध्वी—वि०[स० साधु-ङीप्]१ भली तथा शुद्ध आचरणवाली (स्त्री)। २ पतिपरायण। पतिव्रता।

पद—सती-साध्वी। (दे०)

स्त्री० मेदा (ओपधि)।

सानंद—वि०[स० स+आनद] जो आनन्द से युक्त हो। जैसे—यहाँ सब लोग सानद है।

अव्य० आनद या प्रसन्नतापूर्वक। जैसे—आप सानद वहाँ जा सकते हैं।

पु०१ एक प्रकार की सप्रज्ञात समाधि। २ सगीत मे, १६ प्रकार के ध्रुवको में से एक जिसका व्यवहार प्राय वीर रस के वर्णन मे होता है। ३ गुच्छ करज।

सान—पु०[सं० शाण]१. प्राय चक्की के पाट के आकार का वह कुरुड पत्थर जिस पर रगडकर धारदार औजारो और हथियारों की धार चोखी या तेज और साफ की जाती है। (ह्वटस्टोन)

मुहा०—(किसी चीज पर) सान देना, धरना या रखना= उक्त पत्थर पर रगड़कर औजारों की धार चोखी या तेज करना।

२. प्राय चक्कर के आकार का वह यत्र जिसमे उक्त पत्थर लगा रहता है और जिसे तेजी से घुमाते हुए औजारों आदि पर सान रखते हैं।

पु०[स० सज्ञपन] सकेत। इशारा। (पूरब) उदा०—काहु के पान काहु दिअ सान।—विद्यापति।

पद—सान-गुमान=किसी काम या बात का बहुत ही अल्प रूप मे हो सकनेवाला अनुमान या नाम मात्र को हो सकनेवाली कल्पना। जैसे—मुझे तो इस बात का कोई सान-गुमान ही नही था कि वह चोर निकलेगा।

†स्त्री०=शान (ठाठ-बाट)।

सानना†—स०[हिं० सनना का स०]१ दो वस्तुओं को आपस मे मिलाना विशेपत चूर्ण आदि को तरल पदार्थ मे मिलाकर गीला करना। गूँधना। जैसे—आटा सानना। मसाला सानना। २ मिश्रित करना। मिलाना। ३ लाक्षणिक रूप मे, किसी को उत्तरदायी या दोषी ठहराने के उद्देश्य से कोई ऐसा काम करना या ऐसी बात कहना कि दूसरो की दृष्टि मे वह (दूसरा व्यक्ति) भी किसी अपराव या दोप मे सम्मिलित जान पडे। जैसे—आप तो व्यर्थ ही मुझे इस मामले मे सानते हैं।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

स०[हिं० सान+ना (प्रत्य०)]सान पर चढाकर धार तेज करना। (क्व०)

सानल—वि० [स० तृ० त०] १ अग्नि-युक्त। २ कृतिका नक्षत्र से युक्त।

साना†*—अ०[स० शात] १ शात होना। २ समाप्त होना। न रह जाना। उदा०—कृपा-सिंधु विलोकिए जन मन की सांसति सान।—तुलसी।

स०१ शात करना। २ नष्ट करना। ३ समाप्त करना।

सानी—स्त्री०[हिं० सान (ना)+ई (प्रत्य०)]१. गौओ, बैलो, बकरियो आदि को खली-कराई मे सानकर दिया जानेवाला भूसा।

पद—सानी-पानी=खली-कराई और भूसे को एक मे मिलाना।

२ अनुपयुक्त रूप से एक मे मिलाये हुए कई प्रकार के खाद्य पदार्थ।

स्त्री०[?] गाडी के पहिये मे लगाई जानेवाली गिट्टक। वि० [अ०] १ दूसरा। द्वितीय। जैसे—औरगजेब सानी। २ जोड का। बराबरी का। तुल्य। समान।

पद—ल-सानी=अद्वितीय। अतुल्य।

†स्त्री०=सनई।

सानु—पु० [स०] १ पर्वत की चोटी। शिखर। २. छोर। शिरा। ३. समतल भूमि। चौरस मैदान। ४ जगल। वन। ५ मार्ग। रास्ता। ६ पेड़ का पत्ता। पर्ण। ७ सूर्य। ८ पडित। विद्वान्।

वि०[?] १ लबा-चौडा। २. चौरस। सपाट।

सानुकंप—वि० [स० ब० स०] जिसके मन मे अनुकपा या दया हो। दयालु।

क्रि० वि० अनुकपा या दया करते हुए।

सानुकूल—वि० [स० तृ० त०] पूरी तरह से अनुकूल।

सानुज—पु०[स० सानु√जन् (उत्पन्न करना)+ज, तृ० त०] १ प्रपौंड्रीक वृक्ष। पुंडेरी। २. तुंबुरु नामक वृक्ष।

अव्य० अनुज सहित। छोटे भाई के साथ।

सानुनय—वि०[स० तृ० त०] विनयशील। शिष्ट।
अव्य० अनुनय या विनयपूर्वक।

सानुनासिक—वि० [स० तृ० त०] १ (अक्षर या वर्ण) जिसके उच्चारण के समय मुंह के अतिरिक्त नाक से अनुस्वारात्मक ध्वनि निकलती हो। २. नकियाकर गाने या बोलनेवाला।

सानुप्रास—वि० [स० अव्य० स०] अनुप्रास से युक्त।
अव्य० अनुप्रास सहित।

सानुमान् (मत्)—पु० [स० सानु+मतुप्] पर्वत।

सानो†—पु०[?] सूअर की तरह का एक प्रकार का जगली जानवर।

सान्नाहिक—वि० [स० सन्नाह+ठञ्-इक] जो सन्नाह पहने हो। कवचधारी।

सान्निध्य—पु० [स० सन्निव+यञ्] १ वह अवस्था जिसमे दो या अधिक जीव या वस्तुएँ साथ-साथ रहती है। २. सन्निध होने अर्थात् निकट या समीप होने की अवस्था या भाव। निकटता। समीपता। ३. वह स्थिति जिसमे यह माना जाता है कि आत्मा चलकर ईश्वर के पास पहुँच गई है।

सान्निपातकी—स्त्री० [स० सन्निपात+ठञ्—इक—ङीप्] वैद्यक मे, एक प्रकार का योनि-रोग जो त्रिदोष से उत्पन्न होता है।

सान्निपातिक—वि० [स०] १ सन्निपात-सबधी। सन्निपात का। २. त्रिदोष के कारण उत्पन्न होनेवाला (रोग)।

सान्यासिक—पु० [स० सन्यास+ठक—इक]=सन्यासी।

सान्वय—वि० [स० अव्य० स०] १. किसी विशिष्ट अर्थ से युक्त। २ वशपरपरा से आने या होनेवाला। आनुवशिक। वशानुगत।
अव्य० परिवार अथवा वशजों के साथ।

साप*—पु०=शाप।

सापल—वि०[स० सपल+अण्]१ सपत्नी या सौत सम्बन्धी। २ सौत से उत्पन्न। सौतेला।
पु० सौत के लड़के-वाले। सौत की सन्तान।

सापत्नेय—वि०[स० सपत्नि+ठक्—एय] सत्पनी से उत्पन्न। सौतेला।

सापत्न्य—पु० [स० सपत्न+ष्यञ्] १ सपत्नी होने की अवस्था, धर्म या भाव। सौतपन। २ सपत्नियों मे होनेवाली द्वेष-भावना, लाग-डाँट या स्पर्धा। ३ सपत्नी या सौत का लडका। ४. दुश्मन। शत्रु।

सापत्न्यक—पु०[स०सापत्न्य+कन्]१. सपत्नियो मे होनेवाली प्रतिद्वद्विता या लाग-डाँट का भाव। २ शत्रुता।

सापत्य—वि०[स०]१. जिसके आगे सतान हो। २ जो अपनी सतान के साथ हो।

सापन—पु० [?] सिर के बाल के झडने का एक रोग।

सापना*—स० [स० शाप, हिं० साप+ना (प्रत्य०)] १ शाप देना। कोसना। उदा०—सापत ताड़त परुष कहन्ता।—कबीर। २ गालियाँ देना। दुर्वचन कहना।

सापवाद—वि०[स०] (नियम या सिद्धान्त) जिसके अपवाद भी हो।

सापह्नवातिशयोक्ति—स्त्री०[स०] साहित्य मे, अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमे रूपकातिशयोक्ति के साथ अपह्नुति भी मिली रहती है। इसे कुछ लोग रूपकातिशयोक्ति के अतर्गत और कुछ लोग परिसख्या के अतर्गत भी मानते है।

सापिड्य—पु० [स० सपिड+ष्यञ्] सपिड होने की अवस्था या भाव। वे लोग जो किसी एक ही पितर को पिड-दान करते हो।

सापुरस†—पु० [स० स+पुरुष] शूरवीर। उदा०—सिह सीचाणो सापुरस। —जटमल।

सापेक्ष—वि०[स०] [भाव० सापेक्षता]१ जो किसी दूसरे तत्त्व, विचार, दृष्टिकोण आदि से सबद्ध होने के कारण उसकी अपेक्षा रखता हो। बिना किसी दूसरे सबद्ध अग के ठीक या पूरा न होनेवाला। (रिलेटिव) २ किसी की अपेक्षा करनेवाला।

सापेक्षता—स्त्री०[स०] १. सापेक्ष होने की अवस्था या भाव। २. सुप्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक आइन्स्टीन का सिद्धान्त जिसमें विश्व-सबधी पुराने गुरुत्वाकर्षण आदि के सिद्धातों का खडन करके यह सिद्ध किया गया है कि विश्व की सारी गति सापेक्ष है। (रिलेटिविटी)

सापेक्षवाद—पु०[स०]१ वह वाद या सिद्धात जिसमे दो बातो या वस्तुओ को एक दूसरी का अपेक्षक माना जाता है। २. दे० 'सापेक्षता'।

सापेक्षवादी—वि०[स०] सापेक्षवाद-सबधी।
पु० सापेक्षवाद के सिद्धातो का अनुयायी या समर्थक।

सापेक्षिक—वि०[स०]=सापेक्ष।

साप्ततंतव—पु०[स० ब० स०] एक प्राचीन धार्मिक सप्रदाय।

साप्तपद—वि०[स० सप्तपद+अण्] सप्तपदी-सम्बन्धी।
पु०१. सप्तपदी। २. मैत्री। ३ घनिष्ठता।

साप्तपदीन—वि०[पु० स० सप्तपद-खञ्—ईन]=साप्तपद।

साप्तमिक—वि०[स० सप्तमी+ठक्—इक] सप्तमी-सबधी। सप्तमी का।

साप्तहिक—वि० [स० सप्ताह+ठञ्-इक] १ सप्ताह-सम्बन्धी। २ सात दिनो तक लगातार चलनेवाला। जैसे—साप्ताहिक समारोह। ३ सप्ताह मे एक बार होनेवाला। हर सातवें दिन होनेवाला। जैसे—साप्ताहिक पत्र। साप्ताहिक छुट्टी।
पु० वह पत्र जिसका प्रकाशन हर सातवें दिन होता हो।

साफ—वि०[अ० साफ] [भाव० सफाई] १ जिस पर या जिसमे कुछ भी धूल, मैल आदि न हो। निर्मल। 'गदा' या 'मैला' का विपर्यय। जैसे—साफ कपडा, साफ पानी, साफ शीशा। २ जो दोष, विकार आदि से रहित हो। जैसे—साफ तबीयत, साफ दिल, साफ हवा। ३ जिसमे किसी प्रकार का खोट या मिलावट न हो। खालिश। जैसे—साफ दूध, साफ सोना। ४ जिसका तल ऊबड-खाबड, गाँठदार या शाखा-प्रशाखाओ से युक्त न हो। समतल। जैसे—साफ रास्ता, साफ लकडी। ५ जिसकी बनावट, रचना, रूप आदि मे कोई त्रुटि या दोष न हो। जैसे—साफ तसवीर, साफ लिखावट। ६ जिसमे किसी प्रकार का छल, कपट या धोखा-धडी न हो। नैतिक दृष्टि से बिलकुल ठीक और शुद्ध। जैसे—साफ बरताव, साफ मामला, साफ लेन-देन। ७ जो इतना स्पष्ट हो कि उसके सबध मे किसी प्रकार का भ्रम या सदेह न रह गया हो। जैसे—अभी बात साफ नहीं हुई। ८ जिसमे किसी प्रकार का अधकार या धुँधलापन न हो। देखने मे निर्मल और स्वच्छ। जैसे—साफ आसमान, साफ रोशनी। ९. (कार्य)

जिसके सम्पादन मे अनुचित या नियम-विरुद्ध बात न हो। जैसे—साफ खेल, साफ लेन-देन। १० (उक्ति या कथन) जिसमे किसी प्रकार का छिपाव या दुराव न हो। निश्छल और स्पष्ट रूप से कहा हुआ। जैसे—साफ इन्कार, साफ जवाब।

पद—साफ और सीधा=(क) स्पष्ट और बाधाहीन। (ख) स्पष्ट और उपयुक्त।

मुहा०—साफ साफ सुनाना=बिलकुल स्पष्ट और ठीक बात कहना। खरी बात कहना।

११. जो स्पष्ट सुनाई पडे या समझ मे आवे। जिसके समझने या सुनने मे कोई कठिनाई न हो। जैसे—साफ आवाज, साफ खबर, साफ प्रतिलिपि। १२ जिसके तल पर कुछ भी अकित न हो। जैसे—साफ कागज। १३ जिसमे कुछ भी तत्त्व या दम न रह गया हो। जैसे—(क) मुकदमे ने उन्हे पूरी तरह से साफ कर दिया। (ख) हैजे से गाँव के गाँव साफ हो गये। १४. जिसका पूरी तरह से अत कर दिया गया हो। समाप्त किया हुआ। जैसे—(क) इस लडाई मे दोनो तरफ की बहुत सी फौज साफ हो गई। (ख) कुछ ही दिनो मे उसने घर का सारा माल साफ कर दिया। १५ (ऋण या देन) जो पूरी तरह से चुका दिया गया हो। चुकता किया हुआ। जैसे—जब तक कर्ज साफ न कर लो, तब तक कुछ भी फजूल खरच मत करो। १६ जो अनावश्यक या रद्दी अश निकालकर ठीक और काम मे आने लायक कर दिया गया हो। जैसे—दस्तावेज का मसौदा साफ करना।

अव्य०१ निश्चित और स्पष्ट रूप से। पूरी तरह से। जैसे—यह साफ जाहिर है कि किताब आप ही ले गये है। २. इस प्रकार कि किसी को कुछ पता न चल सके या कोई कुछ भी बाधक न हो सके। जैसे—कही से कोई चीज साफ उडा ले जाना। ३ इस प्रकार कि कुछ भी आँच न आने पाए। बिना कुछ भी कष्ट भोगे या हानि सहे। जैसे—किसी सकट से साफ बच निकलना। ४ बिना लाछित हुए। निर्दोष भाव या रूप से। जैसे—किसी मुकदमे से साफ छूटना। ५ निरा। बिलकुल। जैसे—यह तो साफ झूठ या (बेईमानी) है।

साफल्य—पु०[स० सफल+ष्यञ्]१. सफल होने की अवस्था या भाव। सफलता। २ कृतकार्यता। ३ प्राप्ति। लाभ।

साफा—पु०[अ०साफ] १ सिर पर बाँधने की पगडी। मुरेठा। मुडासा। २ पहनने के कपडो आदि मे साबुन लगाकर उन्हे साफ करने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

पद—साफा-पानी=नगर के बाहर कही एकान्त मे जाकर भाँग पीने और कपडो मे साबुन लगाकर उन्हे साफ करने की क्रिया।

३ शिकारी जानवरो को शिकार के लिए या कबूतरो को दूर तक उडने के लिए तैयार करने के उद्देश्य से उन्हे उपवास कराना कि उनका पेट साफ हो जाय और शरीर भारी न रहे।

क्रि० प्र०—देना।

साफी—स्त्री०[अ० साफ]१ हाथ मे रखने का रूमाल। दस्ती। २ वह कपडा जिसमे पीसी और घोली हुई भाँग छानते है। ३ चिलम के नीचे लपेटा जानेवाला कपडा। ४ कपडे का वह टुकडा जिसकी सहायता से चूल्हे पर से बरतन उतारा जाता है। ५. एक प्रकार का रदा।

वि०१ साफ करनेवाला। २ खून साफ करनेवाला (औषध)।

साबड़†—पु० साबर (चमडा)।

साबत—पु०[स० सामत] सामत। सरदार। (डि०)

†वि०=साबुत (समूचा)।

साबति*—स्त्री० [अ० साबूत=पूरा] साबुत या पूरे होने की अवस्था या भाव। पूर्णता।

वि० दे०'साबुत'।

साबर—पु०[स० शबर]१. साँभर मृग का चमडा, जो बहुत मुलायम होता है। २ शबर नामक जाति। ३ थूहड। ४ मिट्टी खोदने की सबरी। ५ एक प्रकार का सिद्ध मत्र, जो शिवकृत माना जाता है।

†स्त्री० साँभर (झील)।

साबल†—पु०[स० शबर] बरछी। भाला।

साबस†—पु०=शाबास।

साबिक—वि० [अ० साबिक] पूर्व का। पहले का। पुराने समय का।

पद—साबिक दस्तूर=ठीक पहले जैसा। वैसा ही।

साबिका—पु०[अ० साबिक]१ जान-पहचान। मुलाकात। २ लेन-देन आदि का व्यवहार या व्यावहारिक सम्बन्ध। सरोकार। वास्ता।

मुहा०—किसी से साबिका पड़ना=ऐसी स्थिति आना कि लेन-देन, व्यवहार या और किसी प्रकार का निकट का सम्बन्ध हो।

साबित—वि०[फा०] १ सबूत (अर्थात् प्रमाण) द्वारा सिद्ध किया हुआ (तथ्य)। २ दृढ। पक्का।

पु० वह नक्षत्र, तारा आदि जो एक स्थान पर स्थिर रहता हो।

†वि०=साबुत।

साबिर—वि० [अ०]१. सब्र करनेवाला। २ सहन करनेवाला। सहन-शील।

साबुत—वि० [फा० सबूत] १ जो सपूर्ण इकाई के रूप मे हो। जैसे—साबूत आम, साबुत रोटी। २ समूचा। सारा। ३ ठीक। दुरुस्त। जैसे—काम साबुत उतरना।

†पु०=सबूत (प्रमाण)।

†वि०=साबित।

साबुन—पु०[अ०] तेल, सोडे आदि के योग से रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत किया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ, जिससे शरीर के अग और कपडे आदि साफ किये जाते है।

विशेष—साधारणत यह छोटी बटी के रूप मे बनता है। परन्तु आज-कल चूर्ण के रूप मे और तरल रूप मे भी साबुन बनने लगे हैं।

साबूदाना—पु० दे० 'सागूदाना'।

साभा—वि०[स० स+आभा] १ आभा से युक्त। २. चमकदार। चमकीला।

साभिप्राय—वि० [स० तृ० त०] १ अभिप्राय से युक्त। २ विशेष अर्थ-युक्त। ३ जिसका कोई विशिष्ट प्रयोजन या हेतु हो।

अव्य० किसी प्रकार का अभिप्राय अर्थात् आशय या उद्देश्य सामने रखते हुए।

साभिमान—वि०[स० तृ० त०] गर्वीला। घमडी।

अव्य० अभिमान या घमड से। अभिमानपूर्वक।

सामंजस्य—पु०[स०]१. समजस होने की अवस्था या भाव। २. उपयुक्तता। ३. औचित्य। ४ अनुकूलता। ५ वह स्थिति जिसमें परस्पर किसी प्रकार की विपरीतता या विषमता न हो।

सामंत—वि०[स०] सीमा पर या पडोस मे रहनेवाला।
पु०१. पडोसी। २ राजा के अधीन रहनेवाला बडा सरदार। ३ प्रजावर्ग का श्रेष्ठ व्यक्ति। ४ वीर। योद्धा। ५. पडोस। ६. निकटता। समीपता। ७ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

सामंत-तंत्र—पु०[स०] आधुनिक राजनीति मे, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक आदि क्षेत्रो की वह व्यवस्था, जिसमे अधिकतर अधिकार बडे-बडे सामतों या सरदारो के हाथ मे रहते हैं। (फ्यूडल सिस्टम)

सामंत-प्रणाली—स्त्री०=सामत-तत्र। (दे०)

सामंत-प्रथा—स्त्री०[स०]=सामत-तत्र।

सामंत-भारती—पु०[स०] सगीत मे, मल्लार और सारग के मेल से बना हुआ एक प्रकार का सकर राग।

सामंतवाद—पु०[स०] यह सिद्धान्त कि राजनीतिक और सामाजिक आदि क्षेत्रो मे सामत-तन्त्र ही अधिक उपयोगी सिद्ध होता है (फ्यूडलिज्म)

सामंतशाही—स्त्री०=सामत-तत्र।

सामंत-सभा—स्त्री०[स०]१ सामतो की सभा। २ इग्लैण्ड मे सामतो की सभा, जिसके बहुत कुछ अधिकार भारतीय राज्य-सभा के समान है। (हाउस आफ लार्डस्)

सामंत सारंग—पु०[स० मध्यम० स०] संगीत मे, एक प्रकार का सारग राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

सामंतिक—वि०[स०]१. सामत-सबधी। सामत का। २. सामत-प्रणाली से सबध रखनेवाला। सामती (फ्यूडल)

सामती—स्त्री०[स० सामत—डीष्] सगीत मे, एक प्रकार की रागिनी, जो मेघराग की पत्नी मानी जाती है।
स्त्री०[हिं० सामत] सामत होने की अवस्था या भाव।
वि०=सामतिक।

सामंतेश्वर—पु०[स० ष० त०]१. सामतो का मुखिया। २ चक्रवर्ती सम्राट्। शाहशाह।

साम—पु०[स० सामन्]१ भारतीय आर्यो के वे वेदमंत्र, जो प्राचीन काल मे यज्ञ आदि के समय गाये जाते थे। (दे० 'सामवेद') २ प्राचीन भारतीय राजनीति मे, चार प्रकार के उपायो मे से पहला उपाय, जिसमे विरोधी या वैरी से मीठी-मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने अथवा सतुष्ट करने का प्रयत्न किया जाता था।
विशेष—शेष तीन उपाय, दाम, दड और भेद कहलाते है।
स्त्री० १ मीठी-मीठी बाते करना। मधुर भाषण। २ दोस्ती। मित्रता। ३ मित्रता या स्नेह के कारण प्राप्त होनेवाली कृपा। उदा०—अवर न पाइए गुरु की साम।—कबीर।
पु०[यू० सेम, इब्रा० शेम] [वि० सामी] पुरातत्व के क्षेत्र मे, दक्षिणी-पश्चिमी एशिया और उत्तर-पूर्वी अफ्रीका के उन क्षेत्रो का सामूहिक नाम, जिनमे अरब, एसीरिया (या असुरिया), फिनीशिया, वैबिलोन आदि प्रदेश पडते है।
विशेष—इन देशो के प्राचीन निवासी एक विशिष्ट जाति के थे, जिन्हे आज-कल सामी कहते हैं, और इनकी भाषा भी 'सामी' कहलाती थी। दे० "सामी"।
*वि०, पु०=श्याम।
*पु० १. स्वामी। २. सामान। उदा०—बाल्मीकि अजामिल के कछु हुतो न साधन सामी।—तुलसी।
*पु०=श्याम देश।
*स्त्री०१ शाम (सध्या)। २. सामी (छडी या डडे की)।

सामक—वि०[स०] सामवेद स बधी।
पु०१ वह जो साम वेद का अच्छा ज्ञाता हो। २. वह मूलधन जो ऋण-स्वरूप लिया या दिया गया हो। कर्ज का असल रुपया। ३ सान रखने का पत्थर।
*पु०=श्यामक (साँवा)।

सामकारी—वि०[स० सामकारिन्-साम √कृ (करना)+णिनि] जो मीठे वचन कहकर किसी को ढारस देता हो। सात्वना देनेवाला।
पु० एक प्रकार का सामगान।

सामग—पु० [स० साम√गम् (जाना)+ड=√गै (शब्द करना)+टक्] [स्त्री० सामगी] १. वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो, और अनेक मत्र ठीक तरह गा या पढ सकता हो। २ विष्णु का एक नाम।

साम-गान—पु० [स०]१. एक प्रकार का साम नामक वेद-मंत्र। २ दे० 'सामग'।

सामग्री—स्त्री० [स० समग्र+ष्यञ्-डीष यलोपः] १ वे चीजें जिनका सामूहिक रूप से किसी काम मे उपयोग होता है। जैसे—लेखन-सामग्री, यज्ञ-सामग्री। २. किसी उत्पादन, निर्माण, रचना आदि के सहायक अग या तत्त्व। सामान। ३. साधन। ४. घर-गृहस्थी की चीजें।
विशेष—इसका प्रयोग सदा एकवचन मे होता है।

सामज—वि० [स० साम√जन् (उत्पन्न करना)+ड]जो सामवेद से उत्पन्न हुआ हो।
पु० हाथी, जिसकी उत्पत्ति सामगान से मानी गई है।

सामत—पु० दे० 'सामत'।
†स्त्री०=शामत।

सामत्रय—पु० [स० ष० त०] हर्रे, सोंठ और गिलोय तीनो का समूह।

सामत्व—पु० [स० सामन्+त्व] साम का धर्म या भाव। सामता।

सामध—स्त्री० [हिं० समधी] विवाह के समय समधियो की आपस मे मिलने की रसम। मिलनी।

सामधी—पुं० दे० 'समधी'।

सामन†—पु०=सावन (महीना)।
स्त्री० [अ० सैल्मन] एक विशेष प्रकार की ऐसी मछलियों का वर्ग जिनका मास पाश्चात्य देशो मे बहुत चाव से खाया जाता है। (सैल्मन)

सामना—पु० [हिं० सामने, पु० हिं० सामुहे] १ किसी के समक्ष होने की अवस्था, क्रिया या भाव।
पद—सामने का=(क) जो किसी के देखते हुआ हो। जो किसी की उपस्थिति मे हुआ हो। जैसे—यह तो तुम्हारे सामने का लड़का

है। (ख) किसी की वर्तमानता मे। जैसे—यह तो हमारे सामने की घटना है।
२. भेंट। मुलाकात। जैसे—जब उनसे सामना हो, तब पूछना।
३ किसी पदार्थ का अगला भाग। आगे की ओर का हिस्सा। आगा। जैसे—उस मकान का सामना तालाब की ओर पड़ता है। ४ किसी के विरुद्ध या विपक्ष मे खड़े होने की अवस्था, क्रिया या भाव। मुकाबला। जैसे—(क) वह किसी बात मे आप का सामना नही कर सकता। (ख) युद्ध-क्षेत्र मे दोनो दलो का सामना हुआ।
मुहा०—(किसी का) सामना करना=सामने होकर जवाब देना। धृष्टता या गुस्ताखी करना। जैसे—जरा सा लडका अभी से सबका सामना करता है।
५ प्रतियोगिता। लाग-डाँट। होड। जैसे—आज अखाडे मे दोनो पहलवानो का सामना होगा।

साम-नारायणी—स्त्री०[स०]सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सामनी—स्त्री० [स०] पशुओ को बाँधने की रस्सी।
†वि०, स्त्री०=सावनी।

सामने—अव्य० [हिं० सामना] १ उपस्थिति मे। आगे। समक्ष। जैसे—बडो के सामने ऐसी बात नही कहनी चाहिए।
मुहा०—(किसी के) सामने करना, रखना या लाना=किसी के समक्ष उपस्थित करना। आगे करना, रखना या लाना। **(स्त्रियो का किसी के) सामने होना**=परदा न करके समक्ष आना। जैसे—उनके घर की स्त्रियाँ किसी के सामने नही होती।
२ किसी के वर्तमान रहते हुए। जैसे—इस किताब के सामने उसे कौन पूछेगा। ३ जिस ओर मुँह हो, सीधे उसी ओर। जैसे—सामने चले जाओ, थोडी दूर पर उनका मकान है। ४ मुकाबले मे। विरुद्ध। जैसे—वह तुम्हारे सामने नही ठहर सकता।
मुहा०—(किसी को किसी के) सामने करना या लाना=प्रतियोगी, विपक्षी आदि के रूप मे खडा करना। मुकाबले के लिए खडा करना। जैसे—वे तो आड मे बैठे रहे, और मुकदमा लडने के लिए लडके को सामने कर दिया।

सामयिक—वि० [स०] [भाव० सामयिकता] १. समय अर्थात् परिपाटी के अनुसार होनेवाला। २ अनुबंध के अनुसार या अनुरूप होनेवाला। ३ ठीक समय पर होनेवाला। ४ प्रस्तुत या वर्तमान समय का। जैसे—सामयिक पत्र।

सामयिकता—स्त्री० [स०] १. सामयिक होने का भाव। २ वर्तमान समय, परिस्थिति आदि के विचार से उपयुक्त दृष्टि-कोण या अवस्था।

सामयिक पत्र—पु० [स०कर्म०स०] १ भारतीय धर्मशास्त्र मे, वह इकरारनामा या दस्तावेज जिसमे बहुत से लोग अपना-अपना धन लगाकर किसी मुकदमे की पैरवी करने के लिए आपस मे लिखा-पढी करते थे। २ आज-कल नियत समय पर बराबर निकलता रहनेवाला कोई पत्र या प्रकाशन। (पीरियॉडिकल)

सामयिकी—स्त्री० [स० सामयिक] १ सामयिक होने की अवस्था या भाव। २ सामयिक बातो से सबध रखनेवाली चर्चा या विवेचन।

सामयोनि—पु० [स० ब० स०] १ ब्रह्मा। २ हाथी।

सामर—वि० [स० समर+अण्] समर-सबधी। समर का। युद्ध का।
†पु०=समर (युद्ध)।

सामरथ—स्त्री०=सामर्थ्य।
†वि०=समर्थ।

सामरा—वि० पु० [स्त्री० सामरी] =साँवला। उदा०—तहु दुहु सुललित नयन सामरा।—विद्यापति।

सामराधिप—पु० [स० प० त०] सेनापति।

सामरिक—वि० [स० समर+ठक्-इक] [भाव० सामरिकता]समर सबधी। युद्ध का। जैसे—सामरिक सज्जा।

सामरिकता—स्त्री० [स० सामरिक+तल्-टाप्] १ सामरिक होने की अवस्था, गुण या भाव। (मिलिटरिज्म) २ युद्ध। लडाई। समर।

सामरिकवाद—पु० [स० कर्म० स०] यह मत या सिद्धान्त कि राष्ट्र को सदा सैनिक दृष्टि से सशक्त रहना चाहिए, और अपने हितो की रक्षा युद्ध या समर की सहायता से करनी चाहिए। (मिलिटरिज्म)

सामरेय—वि० [स० समर+ढक्-एय] समर-सबधी। सामरिक।

सामर्थ—पु० दे० 'सामर्थ्य'।

सामर्थी—वि० [स० सामर्थ्य+ई (प्रत्य०)] १ सामर्थ्य रखनेवाला। जिसमे सामर्थ्य हो। २ कोई कार्य करने मे समर्थ। ३ ताकतवर। बलवान्।

सामर्थ्य—पु० [स०] १ समर्थ होने की अवस्था या भाव। २ कोई कार्य सपादित करने की योग्यता और शक्ति। (कैपेसिटी) ३ साहित्य मे, शब्द की व्यजना शक्ति। शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है। ४ व्याकरण मे, शब्दो का पारस्परिक सम्बन्ध। (मूल से स्त्री० मे प्रयुक्त)

सामल†—वि०=श्यामल।

सामवायिक—वि० [स० समवाय+ठञ्-इक] १ समवाय-सबधी। २ समूह-सम्बन्धी।
पु० मत्री।

सामवायिक राज्य—पु० [स० समवाय+ठक्-इक राज्य, कर्म० स०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे, वे राज्य जो किसी युद्ध के निमित्त मिलकर एक हो जाते थे।

सामविद्—पु० [स० साम√विद् (जानना)+क्विप्] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।

साम-विप्र—पु०[स०] वह ब्राह्मण जो अपने सब कर्म सामवेद के विधानानुसार करता हो।

साम-वेद—पु० [स० सामन्-मध्य० स०] भारतीय आर्यों के चार वेदो मे से प्रसिद्ध तीसरा वेद, जिसमे साम (देखें) नामक वेद मत्रो का सग्रह है।

सामवेदिक, सामवेदीय—वि० [स०] सामवेद-सबधी।
पु० सामवेद का अनुयायी ब्राह्मण।

साम-सर—पु० [स० श्यान+शर ?] एक प्रकार का गन्ना जो डुमराँव (बिहार) मे होता है।

साम-साली*—पुं० [स० साम+शाली] राजनीति के साम, दाम, दड और भेद नामक अगो को जाननेवाला राजनीतिज्ञ।

सामस्त्य—पु० [स० समस्त+ष्यञ्] =समस्तता।

सामहिं*—अव्य० [स० सम्मुख] सामने। सम्मुख। समक्ष।

सामाँ—पु० १.=सामान। २.=साँवा।
†स्त्री०=श्यामा।

सामाजिक—वि० [सं० समाज+ठक्-इक] १ प्राचीन भारत मे 'सभा' नामक सस्था से सबध रखनेवाला। २ आज-कल समाज विशेष जन-समाज से सबध रखनेवाला। समाज का। जैसे—सामाजिक व्यवहार, सामाजिक सुधार। ३ सामाजिक सबधो के फलस्वरूप होनेवाला। जैसे—सामाजिक रोग।
पुं० १ प्राचीन भारत मे, वह जो 'सभा' नामक सस्था का सदस्य होता था। २ वह जो जीविका निर्वाह या धनोपार्जन के लिए समाज (या समज्या अर्थात् तरह-तरह के खेल-तमाशो की व्यवस्था करता था। ३ वे लोग जो उक्त प्रकार के खेल-तमाशे देखने के लिए एकत्र होते थे। ४ साहित्यिक क्षेत्र मे, वह जो काव्य, सगीत आदि का अच्छा मर्मज्ञ हो। रसिक। सहृदय।

सामाजिकता—स्त्री० [सं० सामाजिक+तल्–टाप्] १ सामाजिक होने की अवस्था या भाव। लौकिकता। २ मनुष्य मे समाजशील बनने की होनेवाली वृत्ति।

सामान—पुं० [फा०] १ किसी कार्य के लिए साधन स्वरूप आवश्यक और उपयुक्त वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। जैसे—लड़ाई का सामान, सफर का सामान। २ घर-गृहस्थी की उपयोगिता की चीजें। असबाव। जैसे—चोर घर का सारा सामान उठा ले गये। ३ उपकरण। औजार। जैसे—बढई या लोहार का सामान।
विशेष—'सामग्री' की तरह सदा एक वचन मे प्रयुक्त।
४ इन्तजाम। प्रबन्ध। व्यवस्था।

सामानिक—वि० [सं० समान+ठञ्-इक] पद, योग्यता आदि के विचार से किसी के समान।

सामान्य—वि० [सं०] [भाव० सामान्यता] १ जिसमे कोई विशेषता न हो। मामूली। २ सब या बहुतो से सबध रखनेवाला। ३ प्राय सभी व्यक्तियो, अवसरो, अवस्थाओ आदि मे पाया जानेवाला या उनसे सबध रखनेवाला। सार्वजनिक। आम। (जनरल, उक्त दोनों अर्थो के लिए) ४ जो अपनी सगत या साधारण अवस्था, स्थिति आदि मे ही हो, विशेष घटा-बढा या इधर-उधर हटा हुआ न हो। प्रसम। (नार्मल)
पु० १ समान होने की अवस्था, गुण या भाव। समानता। बराबरी। २ वैशेषिक दर्शन मे, वह गुण या धर्म जो किसी जाति के सब प्राणियो या किसी प्रकार की सब वस्तुओ मे समान रूप से पाया जाता हो। जाति-साधर्म्य। जैसे—मनुष्यो मे मनुष्यत्व सामान्य और पशुओ मे पशुत्व।
विशेष—वैशेषिक मे यह ६ पदार्थों मे से एक माना गया है और इसी को 'जाति' भी कहा गया है।
३ एक प्रकार का लोक-न्याय मूलक अलकार जिसमे उपमान और उपमेय अथवा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का स्वरूप पृथक् होने पर भी दोनो मे गुणो, धर्मो आदि के बिलकुल समान या एक से होने का उल्लेख रहता है। जैसे—यह कहना कि चाँदनी रात मे अटारी पर खडी हुई नायिका और चंद्रमा मे इतनी समानता है कि यह पता नही चलता कि मुख कौन है और चद्रमा कौन। ४. दे० 'मध्यक'।

सामान्य छल—पु० [सं० मध्यम० स०] न्याय शास्त्र में, एक प्रकार का छल, जिसमे सभावित अर्थ के स्थान मे जाति-सामान्य अर्थ के योग से असभूत अर्थ की कल्पना की जाती है।

सामान्यत—अव्य० [सं० सामान्य+तासिल्] सामान्य रूप से। सामान्यतया। (नार्मेली)

सामान्यतया—अव्य० [सं० सामान्य+तल्–टाप्-टा] सामान्य रूप से। मामूली तौर से। सामान्यत।

सामान्यता—स्त्री० [सं०] १, सामान्य या मामूली होने की अवस्था या भाव। २ वह गुण, तत्त्व या बात जो सामान्य हो। ३ सामान्य होने या सब जगह सामान्य रूप से होने या पाये जाने की अवस्था या भाव। (जनरैलिटी)

सामान्यतोदृष्ट—पुं० [सं० सामान्यतस्√दृश् (देखना)+क्त] १ तर्क और न्याय शास्त्र मे, अनुमान-सबधी एक प्रकार का दोष या भूल, जो उस समय मानी जाती है जब किसी ऐसे पदार्थ के आधार पर अनुमान किया जाता है जो न तो कार्य हो और न कारण। जैसे—आम को बौरते देखकर कोई यह अनुमान करे कि अन्य वृक्ष भी बौरने लगे होंगे। २ दो वस्तुओ या बातो में ऐसा साम्य, जो कार्य-कारण सबध से भिन्न हो। जैसे—बिना चले कोई दूसरे स्थान पर नही पहुँच सकता। इसी से यह भी समझ लिया जाता है कि यदि किसी को कही पहुँचना हो तो उसे किसी प्रकार चलने मे प्रवृत्त करना पडेगा।

सामान्य-निबंधना—स्त्री० [सं०] साहित्य मे, अप्रस्तुत प्रशसा नामक अलकार का एक भेद जिसमें प्रस्तुत के लिए किसी अप्रस्तुत सामान्य का कथन होता है।

सामान्य बुद्धि—स्त्री० [सं०] प्राय सब प्रकार के जीवो मे पाई जानेवाली वह सामान्य या सहज बुद्धि जिससे वे साधारण बातें बिना किसी प्रयत्न के या आप से आप समझ लेते हैं। (कॉमन सेन्स)

सामान्य भविष्यत्—पु० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण मे, भविष्यत् काल का एक भेद, जिससे यह ज्ञात होता है कि अमुक बात आगे चलकर होगी अथवा आगे चलकर अमुक व्यक्ति कोई क्रिया करेगा। धातु मे 'एगा' 'ऊँगा' लगाकर इस काल के क्रिया-पद बनाये जाते हैं। जैसे—जाएगा, खाएगा, हँसेगा, खेलूँगा। इनमे उद्देश्य के लिंग-वचन के अनुसार परिवर्तन होता है।

सामान्य भूत—पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण मे, भूतकालिक क्रिया का एक भेद, जिसमे किसी बीती हुई घटना का उल्लेख मात्र होता है। धातु मे 'आ' या 'या' प्रत्यय जोडकर सामान्य भूत काल का क्रिया-पद बनाते है। जैसे—उठा, हँसा, नाचा, आया, लाया, नहाया आदि।

सामान्य लक्षण—पु० [सं०] तर्क मे, एक ही जाति या प्रकार के सब जीवो या पदार्थों मे समान रूप से पाया जानेवाला वह लक्षण या वे लक्षण जिनके आधार पर उस जाति या प्रकार के सब जीवो या पदार्थों की पहचान होती है। जैसे—किसी घोड़े के *सामान्य लक्षण* की सहायता से ही शेष सब घोडो की पहचान होती है

सामान्य वर्तमान—पु० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण मे, वर्तमान काल का एक भेद जिससे किसी कार्य के प्राकृतिक रूप से घटित होते रहने या तत्क्षण घटित होने का पता चलता है। धातु मे ता है, ता हूँ आदि प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे—आता है, जाता है, सोता है, हँसता

हूँ आदि।

सामान्य विधि—स्त्री० [सं०] १ कोई साधारण विधि या आज्ञा। जैसे—बुरे काम मत करो। २ किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश या राष्ट्र के निवासियों का आचरण या व्यवहार परिचालित होता है। (कॉमन लॉ)

सामान्य विभाजक—पुं० [सं०] गणित में, समापवर्तक राशि। (दे० 'समापवर्तक')

सामान्या—स्त्री० [सं० सामान्य-टाप्] १. ऐसी स्त्री जो सर्व-साधारण के लिए उपलब्ध या सुलभ हो। २. साहित्य में वह नायिका जो धन कमाने के उद्देश्य से पर-पुरुष से प्रेम करने का ढोंग करती है।

सामान्यीकरण—पुं०=साधारणीकरण। (प्राचीन भारतीय साहित्य का)

सामायिक—वि० [सं०] माया से युक्त। माया सहित।

पुं० जैनों के अनुसार एक प्रकार का व्रत या आचरण जिसमें सब जीवों पर सम भाव रखकर एकांत में बैठकर आत्म-चिंतन किया जाता है।

सामाश्रय—पुं० [सं० ब० स०-अण्] प्राचीन भारतीय वास्तु में, ऐसा भवन या प्रासाद जिसके पश्चिम ओर वीथिका या सड़क हो।

सामासिक—वि० [सं० समास+ठक्-इक] १. समास से संबंध रखनेवाला। समास का। २ समास के रूप में होनेवाला। ३ लघु या संक्षिप्त किया हुआ।

सामिक—पुं० [सं० सामि+कन्] १ यज्ञों में, बलि पशु को अभिमंत्रित करनेवाला व्यक्ति। २ पेड़। वृक्ष।

सामिग्री†—स्त्री०=सामग्री।

सामित्य—वि० [सं० समिति+घञ्] समिति सम्बन्धी। समिति का।

पुं० समिति का गुण, धर्म या भाव।

सामिधेन—वि० [सं० सम्√इन्ध् (प्रदीप्त करना)+ल्युट्-अन] समिधा या यज्ञ की अग्नि से सम्बन्ध रखनेवाला।

सामिधेनी—स्त्री० [सं० सामिधेन-ङीप्] १ एक प्रकार का ऋक् मंत्र जिसका पाठ होम की अग्नि प्रज्वलित करने के समय किया जाता है। २ ईंधन। ३ कोई ऐसी चीज या बात जो किसी प्रकार का ताप या तेज उत्पन्न करती हो। उग्र, तीव्र या प्रबल करनेवाली चीज या बात।

सामिधेन्य—पुं० [सं० सामिधेनी+यत्]=सामिधेनी।

सामियाना†—पुं० =शामियाना।

सामिल†—वि०=शामिल।

सामिष—वि० [सं० तृ० त०] १ मांस से युक्त। २. गोश्त सहित। जैसे—सामिष भोजन।

सामिष श्राद्ध—पुं० [सं० कर्म० स०] पितरों आदि के उद्देश्य से किया जानेवाला वह श्राद्ध जिसमें मांस, मत्स्य आदि का भी व्यवहार होता था। जैसे—मासाष्टका आदि सामिष श्राद्ध है।

सामी—पुं० [हिं० साम (देश०)] पुरातत्त्व के अनुसार प्राचीन साम (देखें) नामक भू-भाग के निवासी जिनके अंतर्गत अरब, इब्रानी, एसीरिया (या असुरिया) और फिनीशिया तथा बैबिलोन के लोग आते हैं।

स्त्री० उक्त प्रदेश की प्राचीन भाषा जिसकी शाखाएँ आज-कल की अरबी, इब्रानी फिनिशिया और बैबिलोन आदि की भाषाएँ हैं।

†स्त्री०=सामी (छड़ी, डंडे आदि की)।

†पुं०=स्वामी।

सामीची—स्त्री० [सं०] १ वंदना। प्रार्थना। स्तुति। २ नम्रता। ३ शिष्टता।

सामीचीन्य—पुं० [सं० समीचीनी+ष्यञ्]=समीचीनता।

सामीप्य—पुं० [सं० समीप+ष्यञ्] १ समीपता। २ मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक, जिसमें मुक्तात्मा ईश्वर के समीप होती है।

सामीर—पुं० [सं०]=समीर (पवन)।

सामीर्य—वि० [सं०] समीर-संबंधी। समीर का। हवा का।

सामुक्षि†—स्त्री०=समक्ष।

सामुदायिक—वि० [सं० समुदाय+ठक्-इक] १. समुदाय-संबंधी। समुदाय का। २ समुदाय के प्रयत्न से होनेवाला।

पुं० बालक के जन्म के समय के नक्षत्र से आगे के अठारह नक्षत्र जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ माने जाते हैं और जिनमें किसी प्रकार का शुभ कर्म करने का निषेध है।

सामुद्र—वि० [सं०] १ समुद्र-संबंधी। समुद्र का। २ समुद्र से निकला हुआ। समुद्र में उत्पन्न।

पुं० १ समुद्र के पानी से तैयार किया हुआ नमक। समुद्री नमक। २. समुदर फेन। ३ समुद्र के द्वारा दूर-दूर के देशों में जाकर व्यापार करनेवाला व्यापारी। ३ शरीर में होनेवाले ऐसे चिह्न या लक्षण जिन्हें देखकर शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता है। दे० 'सामुद्रिक'। ४ नारियल।

सामुद्रक—वि० [सं० सामुद्र+कन्] समुद्र संबंधी। समुद्र का।

पुं० १ समुद्र के जल से बनाया हुआ नमक। समुद्री नमक। २. दे० 'सामुद्रिक'।

सामुद्र-स्थलक—पुं० [सं० कर्म० स०] समुद्र की तह का विस्तार।

सामुद्रिक—वि० [सं० समुद्र+ठक्-इक] समुद्र से संबंध रखनेवाला। समुद्र या सागर-संबंधी। समुदरी।

पुं० १ फलित ज्योतिष का वह अंग या शाखा जिसमें इस बात का विचार होता है कि मनुष्य की हस्तरेखाओं तथा शरीर पर के अनेक प्रकार के चिह्नों या लक्षणों के क्या-क्या शुभ और अशुभ फल होते हैं। २. उस शास्त्र का ज्ञाता या पंडित। ३. दे० 'आकृति-विज्ञान'।

सामुहाँ*—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। सम्मुख।

वि० सामने का।

†पुं०=सामना।

सामुहिक—वि० [सं० समूह+ठक्-इक]=सामूहिक।

सामुहें*—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। सम्मुख।

सामूहिक—वि० [सं०] [भाव० सामूहिकता] १ समूह या बहुत से लोगों से संबंध रखनेवाला। 'वैयक्तिक' का विपर्याय। २ समूह द्वारा होनेवाला। (कलेक्टिव) जैसे—सामूहिक खेती।

सामृद्ध्य—पुं० [सं०समृद्धि+ष्यञ्] समृद्ध होने की अवस्था, गुण या भाव।

सामोद—वि० [सं० तृ० त०] १ आमोद या आनंद से युक्त। प्रसन्न। २ सुगंधित।

सामोद्भव—पुं० [सं० ब० स०] हाथी।

सामोपनिषद्—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] एक उपनिषद् का नाम।

साम्नी—स्त्री० [स०] १. पशुओ को बाँधने की रस्सी। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के वैदिक छन्दों का एक वर्ग। जैसे—साम्नी अनुष्टुप, साम्नी गायत्री, साम्नी जगती, साम्नी बृहती आदि।

साम्मत्य—पु० [स० सम्मति+ष्यञ्] सम्मति का गुण, धर्म या भाव।

साम्मुखी—स्त्री० [सं० सम्मुख+अण्—ङीप्] गणित ज्योतिष मे, ऐसी तिथि जो मायकाल तक रहती हो।

साम्मुख्य—पु० [स० सम्मुख+ष्यञ्] सम्मुख होने की अवस्था या भाव। सामना।

साम्य—पु० [सं०] समान होने का भाव। समानता। जैसे—इन दोनों पुस्तको मे बहुत कुछ साम्य है।

साम्यता—स्त्री०=साम्य।

साम्यवाद—पुं० [स० साम्य+√वद् (कहना)+घञ्] मार्क्स द्वारा प्रतिष्ठित तथा लेनिन द्वारा सवर्धित वह विचारधारा जो व्यक्ति के बदले सार्वजनिक उत्पादन, प्रबंध और उपयोग के सिद्धान्त पर समाज-व्यवस्था स्थिर करना चाहती है और इसकी सिद्धि के लिए हर सभव उपाय से शोषित वर्ग को सशक्त करना चाहती है। (कम्युनिज्म)

साम्या—स्त्री० [स०] साधारण न्याय के अनुसार सब लोगों के साथ निष्पक्ष और समान भाव से किया जानेवाला व्यवहार। समदर्शितापूर्ण व्यवहार। (इक्विटी)

साम्यामूलक—वि० [स० साम्या+मूलक] जिसमे साम्या या समदर्शिता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया हो। साम्यिक। (ईक्विटेबुल)

साम्यावस्था—स्त्री० [स०] १. दार्शनिक क्षेत्र मे, वह अवस्था जिसमे सत्त्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों; उनमे किसी प्रकार का विकार या वैषम्य न हो। प्रकृति। २ आज-कल लौकिक क्षेत्र मे, वह अवस्था या स्थिति जिसमे परस्पर विरोधी शक्तियाँ इतनी तुली हो कि एक दूसरी पर अपना अनिष्ट प्रभाव डालकर कोई गडबडी उत्पन्न न कर सकें। (ईक्विलिब्रियम)

साम्यिक—वि० [स०]=साम्या-मूलक।

साम्राज्य—पु० [स०] १. वे अनेक राष्ट्र या देश जिन पर कोई एक शासन-सत्ता राज करती हो। सार्वभौम राज्य। सलतनत। २ किसी कार्य या क्षेत्र मे होनेवाला किसी का पूर्ण आधिपत्य।

साम्राज्य-लक्ष्मी—स्त्री० [स०] १. साम्राज्य का वैभव। २ तंत्र के अनुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी गई है।

साम्राज्यवाद—पु० [स०] [वि० साम्राज्यवादी] वह वाद या सिद्धान्त जिसमे यह माना जाता है कि किसी देश को अपने अधिकृत क्षेत्रो मे वृद्धि करते हुए अपने साम्राज्य का बराबर विस्तार करते रहना चाहिए। (इम्पीरियलिज्म)

साम्राज्यवादी—वि० [स०] साम्राज्यवाद-सबधी।

पु० वह जो साम्राज्यवाद के सिद्धांतों का अनुयायी तथा समर्थक हो। (इम्पिरियलिस्ट)

साम्हना†—पु०=सामना।

साम्हने†—अव्य०=सामने।

साम्हर†—पु०=साँभर।

साम्हा†—अव्य०=सामने। उदा०—घर गिरि पुर साम्हा धावति। —प्रिथीराज।

पु०=सामना। (राज०)

सायं—वि० [स०] सध्या-सबधी। सायकालीन। संध्याकालीन।

अव्य० सन्ध्या के समय। शाम को।

पुं० १. सध्या का समय। शाम। २ तीर। वाण।

सायंकाल—पु० [स०] [वि० सायकालीन] दिन का अतिम भाग। दिन और रात के बीच का समय। सध्या। शाम।

सायंकालीन—वि० [स०] संध्या के समय का। शाम का।

सायं-गृह—वि० [स०] जो सन्ध्या समय जहाँ पहुँचता हो, वहीं अपना डेरा जमा लेता है।

सायंतन—वि० [स०] सायकालीन। सध्या-सबधी। सध्या का।

सायं-भव—वि० [स० साय√भू (होना)+अच्] १ सध्या का। शाम का। २ सध्या के समय उत्पन्न होनेवाला।

सायं-संध्या—स्त्री० [स०] १ संध्या नाम की वह उपासना जो सायकाल मे की जाती है। २ सरस्वती देवी जिसकी उपासना सध्या समय की जाती है।

सायंस—स्त्री० [अ० साइन्स] १ विज्ञान। शास्त्र। २. भौतिक विज्ञान। ३ रसायन विज्ञान।

साय—पु० [स०√सो (नष्ट करना)+घञ्] १ सध्या का समय। शाम। २ तीर। वाण।

सायक—पु० [सं०] १ वाण। तीर। शर। २ कामदेव के पाँच वाणों के आधार पर पाँच की सख्या का वाचक शब्द। ३. खड्ग। ४ भद्रमुंज। रामसर। ५ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है। (।।ऽ, ऽ।।, ऽऽ।, ।ऽ)

सायण—पु० [स०√सो (नष्ट करना)+ल्युट्—अन] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने चारो वेदों के विस्तृत और प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।

सायणीय—वि० [स० सायण+छ-ईय] सायण-सबधी। सायण का।

सायत—स्त्री०=साइत।

†अव्य०=शायद।

सायन—वि० [स० स+अयन] १ जो अयन मे युक्त हो। २ (ज्योतिष मे कालगणना) जो अयन अर्थात् राशिचक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित हो।

पु० १ किसी ग्रह का वह देशातर जो वसत-सपात के आधार पर स्थिर किया जाता है। २ भारतीय ज्योतिष मे, काल की गणना करने और पचाग बनाने की वह पद्धति या विधि (निरयण से भिन्न) जो अयन अर्थात् राशिचक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित होती है। (विशेष विवरण के लिए दे० 'निरयण'।)

सायब†—पु० [फा० साहब] पति। स्वामी। (डिं०)

सायबान—पु० [फा० साय बान] मकान या कमरे के आगे बनाई जानेवाली टीन आदि की छाजन।

सायबी†—स्त्री०=साहबी।

सायमाहुति—स्त्री० [स०] सध्या के समय दी जानेवाली आहुति।

सायर—पु० [अ०] १. ऐसी भूमि जिसकी आय पर कर न लगता हो। २ ब्रिटिश शासन मे जमींदारो की आमदनी की वे मदें जिन पर उन्हे कोई

कर नही देना पडता था। जैसे—जगल, ताल, नदी, वाग आदि से होनेवाली आय की मदे। ३ चुगी, महसूल या ऐसा ही और कोई कर। ४ फुटकर खरचो की मदे। मुतफर्रकात।

पु० [देश०] १ हेगा। २ पशुओ के रक्षक एक देवता। ३ किसी चीज का ऊपरी भाग।

*पु०=सागर।

सायल—वि० [अ०] १ सवाल या प्रश्न करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २ सवाल अर्थात् याचना करनेवाला। माँगनेवाला।

पु० १. वह जिसने न्यायालय मे किसी विवाद के निर्णय के लिए प्रार्थना-पत्र दिया हो। प्रार्थी। २ वह जो कोई नौकरी या सुभीता माँगता हो। ३ भिखमगा। भिखारी।

पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो असम देश मे होता है।

साया—पु० [स० छाया से फा० साय.] १ छाया। छाँह। २ परछाँई।

मुहा०—(किसी के) साये से भागना=वहुत अलग या दूर रहना। वहुत वचना।

३ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि जिनके सवध मे माना जाता है कि ये छाया के रूप मे होते है और उस छाया से युक्त होने पर लोग रोगी, विक्षिप्त आदि हो जाते है।

मुहा०—साये मे आना=भूत-प्रेत आदि के प्रभाव से आविष्ट होकर रोगी या विक्षिप्त होना। प्रेत-वाधा से युक्त होना।

४ ऐसा सपर्क या सवध जो किसी को अपने अधीन करता अथवा उसे अपने गुण, प्रभाव आदि से युक्त करता हो।

मुहा०—(किसी पर अपना) साया डालना=(क) किसी को अपने प्रभाव से युक्त करना। **(किसी पर किसी का) साया पड़ना**=सगति आदि के कारण अथवा यो ही किसी के गुण, प्रभाव आदि से युक्त होना।

पु० [अ० शेमीज] १. घाघरे की तरह का एक प्रकार का पहनावा जो प्राय पाश्चात्य देशो की स्त्रियाँ पहनती हैं। २ एक प्रकार का छोटा लहँगा जिसे स्त्रियाँ प्राय महीन साडियो के नीचे पहनती हैं। अस्तर।

सायावंदी—स्त्री० [फा० साय वदी] विवाह के लिए मडप वनाने की क्रिया। (मुसलमान)

सायाम—वि० [स० स+आयाम] लवा-चौडा। विस्तृत।

सायास—अव्य० [सं० स+आयास] आयास अर्थात् परिश्रम या प्रयत्नपूर्वक।

सायाह्न—पु० [स० प० त०] दिन का अतिम भाग। सध्या का समय। शाम।

सायुज्य—पु० [स०] १ किसी मे मिलकर उसके साथ एक होने की अवस्था या भाव। इस प्रकार पूरी तरह से मिलना कि दोनो मे कोई अतर या भेद न रह जाय। पूर्ण मिलन। २ पाँच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति जिसके सवध मे यह माना जाता है कि जीवात्मा जाकर परमात्मा के साथ मिल गयी और उसमे लीन हो गयी। ३ विज्ञान मे, दो पदार्थो का गलकर और किसी रासायनिक प्रक्रिया से मिलकर एक हो जाना। समेकन। (फ्यूजन)

सायुज्यता—स्त्री० [स० सायुज्य+तल्-टाप्] सायुज्य का गुण, धर्म या भाव। सायुज्यत्व।

सायुज्यत्व—पु० [स० सायुज्य+त्व] =सायुज्यता।

सायुध—वि० [स० स+आयुध] आयुध या शस्त्रों से युक्त। जिसके पास हथियार हों। स-शस्त्र। (आर्म्ड) जैसे—सायुध रक्षा-दल।

सारंग—वि० [स०] [स्त्री० सारगी] १ रँगा हुआ या गदार। रगीन। २ सुदर। सुहावना। ३ रसीला। सरस।

पुं० १ चितकवरा रग। २. काति। चमक। दीप्ति। ३ छटा। शोभा। ४ दीपक। दीआ। ५ ईश्वर। ६. सूर्य। ७ चद्रमा। ८ शिव। ९ श्रीकृष्ण। १० कामदेव। ११. आकाश। १२. आकाश के ग्रह, तारे और नक्षत्र। १३. वादल। मेघ। १४ विजली। विद्युत्। १५ समुद्र। १६ सागर। १७ तालाव। १८ सर। १९ जल। पानी। २०. शख। २१ मोती। २२ कमल। २३ जमीन। भूमि। २४ चिडिया। पक्षी। २५ हस २६. मोर। २७ चातक। पपीहा। २८ कवूतर। २९ कोयल। ३० सोन-चिडी। खजन। ३१ वाज। श्येन। ३२. कौआ। ३३. शेर। सिंह। ३४ हाथी। ३५ घोडा। ३६ हिरन। ३७ साँप। ३८ मेंढक। ३९ सोना। स्वर्ण। ४० आभूषण। गहना। ४१ दिन। ४२ रात। ४३ खड्ग। तलवार। ४४. तीर। वाण। ४५ हिरन। ४६ वारहसिंगा। ४७ चीतल। ४८. भौंरा। भ्रमर। ४९ एक प्रकार की मधुमक्खी। ५० सुगधित पदार्थ। ५१ कपूर। ५२ चदन। ५३ कर। हाथ। ५४ कुच। स्तन। ५५ सिर के वाल। केश। ५६ हल। ५७ पुष्प। फूल। ५८ कपडा। ५९ छाता। ६० काजल। ६१ एक प्रकार का छद जिसमे चार तगण होते है। इसे मैनावली भी कहते है। ६२ छप्पय छद के २६ वें भेद का नाम। ६३ सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सव शुद्ध स्वर लगते हे। ६४ सारगी नाम का वाजा।

स्त्री० नारी। स्त्री।

पु० [स० शार्ङ्ग] १ कमान। धनुप। २. विष्णु का धनुप।

सारग-नट—पु० [स० व० स०] सगीत मे, सारग और नट के योग से वना हुआ एक सकर राग।

सारंगनाथ—पु० [स० सार्गनाथ] काशी के समीप स्थित एक स्थान जो अव सारनाथ कहलाता है।

सारंगपाणि—पु० [स० शार्ङ्गपाणि] सारग नामक धनुप धारण करनेवाले, विष्णु।

सारग-भ्रमरी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सारंग-लोचन—वि० [स०] [स्त्री० सारग-लोचना] जिसकी आँखें हिरन की आँखो के समान सुदर हो।

सारंगा—स्त्री० [स० सारग] १ एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकडी की वनती है। २ एक प्रकार की वहुत वडी नाव जिस पर हजारो मन माल लादा जा सकता है। ३. सगीत मे, एक प्रकार की रागिनी।

†पु० [हिं० सारगी] साधारण से वडी सारगी। (व्यग्य)

सारगिक—पु० [स० सारग+ठक्-इक] १. चिडीमार। वहेलिया। २ एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

सारंगिका—स्त्री०=सारगी।

सारंगिया—पु० [हिं० सारगी+आ (प्रत्य०)] सारगी वजानेवाला कलाकार।

सारंगी—स्त्री० [स० सारग] एक प्रकार का वहुत प्रसिद्ध वाजा जिसमे लगे हुए तार कमानी से रेत कर वजाये जाते है।

सारंभ—पु० [स० तृ० त०] १ क्रोधपूर्ण वात-चीत। २ गरमा-गरम वहस।

सार—वि० [स०] [भाव० सारता] १ जो मूल तत्त्व के रूप मे हो। २ उत्तम। वढिया। श्रेष्ठ। जैसे—सार धान्य। ३. असली। वास्तविक। ४ सव प्रकार की त्रुटियो, दोपो आदि से रहित। ५. पक्का। मजवूत। ६ न्यायसगत।

पु० १ किसी पदार्थ का वह मुख्य और मूल अश या भाग जो उसमे प्राकृतिक रूप से वर्तमान रहता है और जो उसके गुण, रूप, विशेपता आदि का आधार होता है। तत्त्व। सत्त। जैसे—इस चीज या वात मे कुछ भी सार नही है। २ किसी चीज मे से निकाला हुआ उसका ऐसा उक्त अग या भाग जिसमे उस चीज की यथेष्ट गध, गुण या स्वाद वर्तमान हो। किसी चीज का निकाला हुआ अरक, रस या ऐसी ही और कोई चीज। (एसेन्स, उक्त दोनो अर्थो के लिए) जैसे—इत्र या तेल मे फूलो का सार रहता है। ३ किसी चीज के अदर रहनेवाला वह तत्त्व जिससे उस चीज का पोषण और वर्धन होता है। गूदा। मग्ज। (मैरो) ४. चरक के अनुसार शरीर के अतर्गत आठ स्थिर पदार्थ जिनके नाम इस प्रकार से है—त्वक्, रक्त, मास, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र और सत्व (मन)। ५ कही या लिखी हुई वातो, विवरणो आदि का वह सक्षिप्त रूप जिसमे दिग्दर्शन के लिए उनकी सभी मुख्य वातो का समावेश हो। तात्पर्य या निष्कर्प। साराश। (ऐवस्ट्रैक्ट) जैसे—इस पुस्तक मे दर्शन (या व्याकरण) का सार दिया गया है। ६ साहित्य मे, एक अलकार जिसमे एक वात कहकर उत्तरोत्तर उसके उत्कर्प-सूचक सार के रूप मे दूसरी अनेक वातो का उल्लेख होता है। (क्लाइमेक्स) जैसे—सव प्राणियो मे मनुष्य श्रेष्ठ है और सव मनुष्यो मे उदार, धर्मात्मा और सज्जन श्रेष्ठ है। ७ पिंगल मे, एक प्रकार का मातृक सम छद जिसके प्रत्येक चरण मे २८ मात्राएँ होती हैं। अत मे दो गुरु होते है, तथा १७ मात्राओ पर यति होती है। ८ पिंगल मे, एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक गुरु और एक लघु होता है। जैसे—राम। नाम। सत्य। धाम। ९ आध्यात्मिक साधको की परिभापा मे, भापा या वाणी के चार भेदो मे से एक जो भ्रम दूर करनेवाली और वहुत ही सुवोध तथा स्पष्ट होती है। १० वल। शक्ति। ११ धन। दौलत। १२ काढा। क्वाथ। १३ परिणाम। फल। १४ जल। पानी। १५ दही, दूध आदि मे से निकाला हुआ मक्खन या मलाई। १६ लोहा। १७ लोहे आदि का वना हुआ औजार या हथियार। १८ तलवार। १९ वैद्यक मे, रासायनिक क्रिया से फूँका हुआ लोहा। वग। २० चौसर, शतरज आदि खेलने की गोट। २१ जुआ खेलने का पासा। २२ अमृत। २३ अस्थि। हड्डी। २४ आम, इमली आदि का पना। पन्ना। २५. वायु। हवा। २६ वीमारी। रोग। २७ खेती-वारी की जमीन। २८ खेतो मे दी जानेवाली खाद। २९ चिरौजी का पेड़। पियाल। ३०. अनार का पेड़। ३१. नील का पौवा। ३२. मूँग।

†पु० [स० शल्य, हिं०, 'साल' का पुराना रूप] १ वरछी, भाला या इसी प्रकार का और कोई नुकीला औजार या हथियार। २ काँटा। ३ मन मे खटकती रहनेवाली कोई वात। उदा०—मोइ दुसार कियौ हियौ तन द्युति भेदैं सार।—विहारी।

†स्त्री० [हिं० सारना] १. सारने की क्रिया, ढग या भाव। २ पालन-पोषण। ३ देख-रेख। ४ एक प्रकार के गीत जो शिशु की छठी के दिन उसे नहलाने-धुलाने के समय गाये जाते है। ५ खाट। पलग।

†पु० [स० शाला] गौएँ, भैसे आदि वाँधने की जगह।

†पु० [स० शस्य] खेतो की उपज या पैदावार। फसल। उदा०—चूल्ही कै पीछे उपजै सार।—घाघ।

†पु० [स० घनसार] कपूर।

†पु० [स० सारिका] मैना। पक्षी।

†पु० १ =साल। २ =साला (पत्नी का भाई)।

†स्त्री०=साल।

सारक—वि० [स० सार+कन्] १ सारण करने या निकालनेवाला। २ दस्तावर। विरेचक।

†पु० जमालगोटा।

सार-खदिर—पु० [स० व० स०] दुर्गंध खदिर। ववुरी।

सारखा*—वि०=सरीखा।

सार-गंध—पु० [स० व० स०] चदन।

सार-गर्भित—वि० [स०] १ जिसमे सार या तत्त्व भरा हो। तत्त्वपूर्ण। २ महत्त्वपूर्ण तथा मूल्यवान तथ्यो, युक्तियो आदि से युक्त। जैसे—सार-गर्भित भापण।

सार-ग्राही—वि० [स०] [भाव० सरग्राहिता] वस्तुओ या विपयो का तत्त्व या सार ग्रहण करनेवाला।

सारघ—पु० [स० सरघा+अण्] मधु या शहद जो मधुमक्खी तरह-तरह के फूलो से सग्रह करती है।

वि० मधु-मक्खियो से सम्वन्ध रखनेवाला।

सारजंट—पु० [अ०] पुलिस और सेना मे, सिपाहियो का छोटा अफसर। जमादार।

सारज—पु० [स० सार√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मक्खन।

सारजासव—पु० [स० मध्यम० स०] वैद्यक मे, धान, फल, फूल, मूल, सार, टहनी, पत्ते, छाल और चीनी—इन नौ चीजो से वनाया जानेवाला एक प्रकार का आसव।

सारटिफिकट—पु० [अ०] प्रमाण-पत्र। सनद।

सारण—पु० [स०] [भू० कृ० सारित, कर्ता सारक] १ कही से हटाना या हटाने मे प्रवृत्त करना। २ अवाछित, विरोधी या हानिकारक तत्त्वो या व्यक्तियो को कही से निकालना या हटाना। (पजिंग) ३ अतिसार नामक रोग। ४ वैद्यक मे, पारे आदि रसो का शोधन। ५ मक्खन। ६ गध। महक। ७ गध-प्रसारिणी। ८ आँवला। ९ आम्रातक। अमडा। १०. रावण का एक मत्री जो रामचन्द्र की सेना मे उनका भेद लेने गया था।

सारणा—स्त्री० [स० सारण—टाप्] दे० 'सारण'।

सारणि—स्त्री० [स० √सृ (गत्यादि)+णिच्—अनि] १ नाले या छोटी

नहर के रूप मे होनेवाला जल-मार्ग। २ गध प्रसारिणी। ३ गदह-पूरना। पुनर्नवा।

सारणिक—पु०[स० सरणि+ठक्—इक] १ पथिक। राही। २. सौदागर।

सारणित—भू० कृ०[स०] सारणी के रूप मे अकित किया हुआ।

सारणी—स्त्री०[स०]१ पानी वहने की नाली। २ छोटी नदी। ३ नहर। ४ आज-कल कोई ऐसा कागज या फलक जिसमे वहुत से कोठे, खाने या स्तम्भ बने रहते है और जिनके कोठो आदि मे किसी विशेप प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन, गणना या विवेचन के लिए कुछ अक, पद या शब्द आदि अकित होते है। (टेवुल)

सारणीक—पु०[स०] १ ऐसा टाइपराइटर जिसमे अलग-अलग स्तम्भो मे अंकादि भरकर सारणी तैयार की जाती हो। (टेवुलेटर) २ दे० 'सारणीकार'।

सारणीकरण—पु०[स०]१ सारणी वनाने की क्रिया या भाव। २ तथ्यो आदि को सारणी के रूप मे अकित करना। सारणीयन। (टेवुलेशन, उक्त दोनो अर्थो मे)

सारणीकार—पु०[स०] वह जो अनेक प्रकार की सारणियाँ वनाने का काम करता हो। (टेवुलेटर)

सारणी-यंत्र—पु०[स०]एक प्रकार का आधुनिक यत्र जिसकी सहायता से सारणियाँ वनाई जाती है। (टेवुलेटर)

सारणीयन—पु०[स०] सारणीकरण।

सारणेश—पु० [स० व० स०, प० त० वा] एक प्राचीन पर्वत।

सार-तंडुल—पु०[स०] चावल।

सार-तरु—पु०[स०]१ केले का पेड। २ खैर का वृक्ष।

सारता—स्त्री०[स० सार+तल्—टाप्] सार के रूप मे होने की अवस्था, धर्म या भाव।

सारथि—पु०[स०√सृ (गत्यादि)+अथिन्]१ रथ का चालक। सूत। २ समुद्र। ३ नायक। ४ साथी।

सारथित्व—पु०[स० सारथि+त्व] सारथि का कार्य, धर्म या पद।

सारथी—पु०[स० सारथि] [भाव० सारथित्व, सारथ्य] १ रथ चलानेवाला। सूत। २ सव कारवार चलाने, देखने या सँभालनेवाला व्यक्ति। ३ सागर। समुद्र।

सारथ्य—पु० [स० सारथि+ष्यञ्] सारथी का काम या पद।

सारद—वि०[स०] [स्त्री० सारदा] सार या तत्त्व देनेवाला।
†वि०=शारदीय।
†स्त्री०=शारदा (सरस्वती)।

सारदा†—स्त्री०=शारदा।
पु०[स० शरद] स्थल कमल।
†स्त्री०=शारदा (सरस्वती)।

सार-दारु—पु०[स०]ऐसी लकडी जिसमे सार या हीर वाला अश अपेक्षया अधिक हो।

सारदा-सुदरी—स्त्री०[स०] दुर्गा का एक नाम।

सारदी—वि०=शारदीय।

सारदूल—पु०=शार्दूल (सिंह)।

सार-द्रुम—पु०[स०]१ खैर का वृक्ष। २ वह पेड जिसकी लकडी मे हीर या सार-भाग अधिक हो।

सारधाता(तृ)—पु०[स०]१ ज्ञान या वोध करानेवाला व्यक्ति। २ शिव।

सारना*—स० [हिं० सरना का स०]१ (काम) पूरा या ठीक करना। वनाना। २ सुन्दर वनाना। सजाना। ३ रक्षा करना। वचाना। ४. (आँखो मे अजन या सुरमा) लगाना। ५ (अस्त्र-शस्त्र) चलाना। ६ प्रहार करना। ७ पालन-पोपण या देख-रेख करना। सँभालना। ८ पूरा करना। जैसे—पैज सारना=प्रतिज्ञा पूरी करना। ९ दूर करना। हटाना। १० हटाने मे प्रवृत्त करना। ११ वुझाना। १२. साफ करना। १३ (खेत मे) खाद डालना।

सारनाथ—पु०[स० सारगनाथ] वाराणसी की उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित एक प्राचीन नगरी जहाँ से गौतम वुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार आरभ किया था।

सारपद—पु० [स० व० स०]१ ऐसा पत्ता जिसमे सार अर्थात् खाद हो। २ एक प्रकार का पक्षी।

सारपाक—पु० [स० व० स०] एक प्रकार का जहरीला फल। (सुश्रुत)

सार-फल—पु०[स० व० स०] जँवीरी नीवू।

सारवान—पु०[फा०] [भाव० सारवानी] वह जो ऊँट चलाने या हाँकने का काम करता हो।

सार-भांड—पु० [स० व० स०] १ असली, चोखा या वढिया माल। २ उक्त प्रकार के माल का व्यापार। ३ कस्तूरी।

सार-भाग—पु०[स०] किसी कथन, तथ्य, पदार्थ आदि का वह सक्षिप्त अश जिसमे उसके मुख्य तथा मूल तत्त्व सम्मिलित हो।

सार-भाटा—पु०[हिं० सार+भाटा] ज्वार आने के वाद की समुद्र की वह स्थिति जव लहरे उतार पर होती है।

सारभुक्—पु० [स० सार√भुज् (खाना)+क्विप्] अग्नि। आग।

सार-भूत—वि०[स०]१ जो किसी तत्त्व या पदार्थ के सार रूप मे निकाला गया हो। २. सवसे वढिया। श्रेष्ठ।

सारभृत—वि० [स० सार√ भृ (भरण करना)+क्विप्—तुक्] १ सार ग्रहण करनेवाला। सारग्राही। २ अच्छी चीजे चुनने या छाँटने वाला।

सार-मती—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सारमिति—स्त्री०[स०] वेद। श्रुति।

सारमेय—पु०[स०]१ सरमा नामक वैदिक कुतिया की सतान, चार चार आँखोवाले दो कुत्ते जो यम के द्वार पर रहते है। २ कुत्ता। श्वान। वि० सरमा-सवधी। सरमा का।

सार-लोह—पु०[स० सप्त० त०] इस्पात। लोहसार।

सारल्य—पु०[स० सरल+ष्यञ्] सरल होने की अवस्था, गुण या भाव। सरलता।

सारवती—स्त्री०[स०]१ एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे तीन भगण और गुरु होता है। यथा—मोहि चली वन सग लिये। पुत्र तुम्है हम देखि जिये।—केशव। २ योग मे, एक प्रकार की समाधि।

सारवत्ता—स्त्री०[स० सारवत्+तल्—टाप्]१ सारवान् होने की अवस्था या भाव। २ सार ग्रहण करने का कार्य या भाव।

सारवर्ग—पु०[स० प०त०]ऐसे वृक्षो तथा वनस्पतियो की सामूहिक सज्ञा जिनमे से दूध सा सफेद निर्यास निकलता हो। (वैद्यक)

सारवान् (वत्)—वि०[स०]१. जो सार या तत्त्व से युक्त हो। २ ठोस। ३ पक्का। मजबूत। ४ (वृक्ष) जिसमे से निर्यास निकलता हो।

सार-संग्रह—पु०[स०] किसी विषय की सक्षिप्त और सार-भूत बातो का सग्रह। (कम्पेन्डियम)

सारस—वि०[स०] सर या सरसी अर्थात् तालाव से सम्बन्ध रखनेवाला। पु०१ लबी टाँगोवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध और बडा सफेद पक्षी जो प्राय जलाशयो के पास अपनी मादा के साथ रहता है, और मछलियाँ खाता है। सरसीरु। २ हस। ३. चन्द्रमा। ४. कमर मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ५. कमल। ६ छप्पय नामक छन्द के ३७ वे भेद का नाम।

सारसक—पु०[स० सारस+कन्] सारस पक्षी।

सारस-प्रिय—पु० [स०] सगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सारसाक्ष—पु०[स०व०स०] लाल नामक रत्न का एक प्रकार या भेद। वि०[स्त्री०सारसाक्षी] सारस अर्थात् कमल के समान सुन्दर नेत्रोवाला।

सारसिका—स्त्री० [स० सारस+कन्—टाप् इत्व] मादा सारस।

सारसी—स्त्री०[स० सारस—ङीप्] १ आर्या छद का २३ वाँ भेद। २ मादा सारस।

सार-सुता*—स्त्री० [स० सुरसुता]=यमुना।

सारसुती*—स्त्री०=सरस्वती।

सार-सूची—स्त्री० [स०] कोई ऐसी सूची जिसमे किसी विषय से सबध रखनेवाली मुख्य-मुख्य बातो का सार रूप मे उल्लेख हो। (ऐब्सट्रैक्ट)

सारसैंधव—पु०[स० मध्यम० स०] सेंधा नमक।

सारस्वत—वि०[स०] १ सरस्वती से सम्बन्ध रखनेवाला। सरस्वती का। २ विद्या, विद्वत्ता, शास्त्रीय ज्ञान आदि से सबध रखनेवाला। शास्त्रीय। (एकेडेमिक) ३. सरस्वती नदी से सबध रखने या उसके आस-पास होनेवाला। ४ सारस्वत देश या जाति से सबध रखनेवाला। पु० १ प्राचीन भारत में, सरस्वती नदी के दोनो तटो पर का प्रदेश जो आधुनिक दिल्ली के उत्तर-पश्चिम मे पडता है और जो अब पजाब का दक्षिणी भाग है। प्राचीन आर्यो का यही पवित्र मूल निवास-स्थान था। २ उत्तर प्रदेश मे बसनेवाले ब्राह्मणो और उनके वशजो की सज्ञा। ३ एक मुनि जो सरस्वती नदी के पुत्र कहे गये है। ४ वैद्यक मे, एक प्रकार का चूर्ण जो उन्माद, प्रमेह, वायु-विकार आदि मे गुणकारी माना जाता है। ५ पुराणानुसार सरस्वती को प्रसन्न करने के उद्देश्य से किया जानेवाला एक प्रकार का व्रत जो प्रति रविवार या प्रति पचमी को किया जाता है। कहते है कि यह व्रत करने से आदमी बहुत बडा विद्वान् और भाग्यवान् होता है।

सारस्वती†—वि०=सारस्वतीय। †स्त्री०=सरस्वती।

सारस्वतीय—वि० [स० सरस्वती+घग्—ईय]१. सरस्वती का। सरस्वती सबधी। २. सारस्वत का।

सारस्वतोत्सव—पुं० [स० कर्म० स०]१ एक प्राचीन उत्सव जिसमे सरस्वती का पूजन होता था। २ आज-कल वसत पचमी को होनेवाला सरस्वती-पूजन।

सारस्वत्य—वि० [सं० सरस्वती+ष्यञ्] सरस्वती का। सरवस्ती-सम्बन्धी। पुं० सरस्वती का पुत्र जिसे राजशेखर ने काव्य-पुरुष कहा है।

विशेष—महाभारत मे कथा है कि भगवान ने सरस्वती को एक पुत्र इसलिए दिया था कि वह वेदो का अध्ययन करके ससार मे उनका प्रचार करे। वही सारस्वत्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सार-हल—पु०[स० सार (शल्य)+फल] [स्त्री अल्पा० सार-हली] बरछी, भाले आदि की नुकीली अनी या फल। उदा०—सारहली जिउँ सल्हियाँ सज्जण मंझ शरीर।—ढोलामारु।

सारहली†—स्त्री० दे० 'साँडनी'। (डि०) उदा०—असप सारहली बाजइ ढूल।—नरपतिनाल्ह।

साराभस—पु० [स० ब० स०] नीबू का रस।

सारांश—पु०[स० सार+अश]१ किसी पूरे तथ्य, पदार्थ आदि के मुख्य तत्त्वो का ऐसा छोटा या सक्षिप्त रूप जिससे उसके गुण, स्वरूप आदि का ज्ञान हो सके। मुख्य सार भाग। खुलासा। निचोड। समस्तिका। (ऐब्सट्रैक्ट) २. किसी पूरी बात या विवरण की मुख्य और सारभूत विशेषताएँ जो एक जगह एकत्र की गई हो। (समरी) ३. कोई ऐसा छोटा लेख जिसमे कि बडे लेख की सब बाते आ गई हो। सार-सग्रह। (कम्पेन्डियम) ४. तात्पर्य। मतलब। जैसे—साराश यह कि आप को वहाँ नही जाना चाहिए था। ५. परिणाम। नतीजा। ६ उपसहार।

सारांशक—पु०[स०] वह कथन या लेख जो किसी विस्तृत उल्लेख या विवरण के साराश के रूप मे हो। (समरी)

सारा—वि०[स० समग्र] [स्त्री० सारी]१ जितना हो वह सब। कुल। समस्त। २ आदि से अत तक जितना हो, वह सब। पूरा। समग्र। स्त्री०[स०]१ काली निसोथ। २ दूब। ३ सातला। ४ थूहड। ५ केला। ६ तालीश पत्र। पु०[?] एक प्रकार का अलकार जिसमे एक वस्तु दूसरी से बढकर कही जाती है। †पु०=साला।

साराम्ल—पु०[स० ब० स०] १. जँबीरी नीबू। २. धामिन।

सारावली—स्त्री०[स०] सारवली। (दे०)

सारि—पु०[स० सार+इनि,√सृ (गत्यादि)+इण् वा]१. जूआ खेलने का पासा। २ पासे से जुआ खेलनेवाला जुआरी। ३ शतरज आदि की गोटी या मोहरा।

सारिउँ*—स्त्री०=सारिका (मैना पक्षी)।

सारिक—वि०[स० सार से] १ जो सार रूप मे हो या साराश से सबध रखता हो। २. सक्षेप मे कहा गया या सक्षिप्त रूप मे लाया हुआ। (ब्रीफ) ३ साराश के रूप मे एक जगह इकट्ठा या सघटित किया हुआ। (कन्साइज) पु० दे० 'सारिका'।

सारिका—स्त्री०[सं० सारिक+टाप्] मैना नामक पक्षी।

सारिखा†—वि०=सरीखा।

सारिणी—स्त्री० [स०] १. गन्ध प्रसारिणी लता। २. लाल पुनर्नवा। ३. दुरालभा। ४. दे० 'सारणी'। वि० स० सारी (सारिन्) का स्त्री०।

सारित—भू० कृ०[स०] दूर किया या हटा या हटाया हुआ।

सारिफलक—पु०[स० ब० स०] चौपड़ की गोटी या पासा। बिसात।

सारिवा—स्त्री०[स० सारिव—टाप्]१ अनतमूल। २ कृष्ण अनन्त-मूल।

सारिष्ट—वि०[स०] [भाव० सारिष्टता] १ सबसे अच्छा। श्रेष्ठ। २ अच्छी तरह बढा हुआ। उन्नत। ३ मृत्यु के समीप पहुँचा हुआ। मरणासन्न।

सारी—स्त्री० [स०] १. सारिका पक्षी। मैना। २ जूआ खेलने की गोटी या पासा। ३ थूहर।

वि०[स० सारिन्] अनुकरण या अनुसरण करनेवाला।

*स्त्री० [हिं० सारना] १ सारने (बनाने, रक्षित रखने आदि) की क्रिया या भाव। उदा०—कबीर सारी सिरजन हार की जानै नाही कोइ।—कबीर। २ रची या बनाई हुई चीज। रचना। सृष्टि।

वि० हिं० 'सारा' का स्त्री०। सब। समस्त।

स्त्री० १ दे० 'साडी'। २ दे० 'सार्ली'।

सारु*—पु०=सार।

सारूप, सारूप्य—पु०[स०] १. दो या अधिक वस्तुओ के रूप अर्थात् आकार-प्रकार के विचार से होनेवाली समानता। समरूपता। (सेम्ब्लेन्स) २ पाँच प्रकार की मुक्तियो मे से एक जिसके सबध मे यह माना जाता है कि इसमे भक्त अपने उपास्य देवता के साथ मिलकर रूप विचार से ठीक उसी के अनुरूप हो जाता है।

सारूप्यता—स्त्री०[स० सारूप्य+तल्—टाप्]=सारूप्य।

सारूप्य निबंधना—स्त्री०[स०] साहित्य मे, अप्रस्तुत प्रशसा नामक अलकार का एक भेद जिसमे प्रस्तुत का कथन न करके उसी तरह के किसी अप्रस्तुत का उल्लेख होता है।

सारो†—पु०[स० शालि] एक प्रकार का धान जो अगहन मे पक जाता है।

†स्त्री०=सारिका (मैना)।

†वि०, पु०=सारा।

सारोदक—पु०[स० कर्म० स०, न० स० वा] अनतमूल या सारिवा का रस।

सारोपा—स्त्री०[स०] साहित्य मे, लक्षणा का एक प्रकार या भेद जो उस समय माना जाता है जब उपमेय मे उपमान का इस प्रकार आरोप होता है कि उपमेय से उपमान का कोई विशिष्ट गुण या धर्म सूचित होने लगे। जैसे—विद्या मे आप बृहस्पति हैं, अर्थात् आप बृहस्पति के समान विद्वान् है। इसके गौण सारोपा तथा शुद्ध सारोपा दो भेद है।

सारोष्ट्रिक—पु०[स० सारोष्ट्र-ब० स०—ठक्-इक] एक प्रकार का विष।

सार्रौ†—स्त्री०=सारिका (मैना पक्षी)।

सारौ†—स्त्री०=सारिका (मैना)।

सार्गिक—पु०[स० सर्ग+ठञ्—इक] वह जो सृष्टि कर सकता हो। स्रष्टा।

सार्ज—पु०[स० √सृज् (त्यागना)+अण्] धूना। राल।

सार्टिफिकेट—पु०[अ०]प्रमाण-पत्र।

सार्थ—वि० [स०] १. अर्थयुक्त। अर्थवान्। २. धनी। ३. उद्देश्य-पूर्ण। ४. उपयोगी।

पु०१. धनी व्यक्ति। २ व्यापारियो का जत्था। ३ सेना की टुकडी। ४. समूह। गोल। ५ यात्रियो का दल।

सार्थक—वि०[स० सार्थ+कन्] [भाव० सार्थकता] १. (शब्द या पद) जिसका कुछ अर्थ हो। अर्थवान्। २ जिसका उपयोग निरुद्देश्य न हो। जो किसी उद्देश्य की पूर्ति करता हो। जैसे—वाक्य मे होनेवाला किसी शब्द का सार्थक प्रयोग। ३ उपयोगी तथा लाभप्रद।

सार्थकता—स्त्री०[स० सार्थक+तल्—टाप्] सार्थक होने की अवस्था गुण या भाव।

सार्थपति—पु०[स०] व्यापार करनेवाला। वणिक।

सार्थवाह—पु०[स०] व्यापारी (विशेषत दूर तक माल बेचने जानेवाला)।

सार्थिक—वि०[स० सार्थ+ठक्—इक्] जो किसी के साथ यात्रा कर रहा हो।

पु० यात्रा काल मे सग-साथ रहने के कारण बननेवाला साथी।

सार्थी—पु०[स० सार्थ+इनि, सारथिन्]=सारथी।

सार्दूल—वि०, पु०=शार्दूल।

सार्द्ध—वि०=सार्ध।

सार्द्र—वि०[स० अव्य० स०]=आर्द्र (गीला या तर)।

सार्ध—वि०[स०]जो मान, मात्रा आदि के विचार से किसी पूरे एक से आधा और बढ गया हो। जैसे—साढे चार, साढे दस।

सार्प, सार्प्य—वि०[स०] सर्प-सबधी। सर्प का।

पुं० अश्लेषा नक्षत्र।

सार्व—पु०[स०]१. सर्व अर्थात् सब से सबध रखनेवाला। सब का। जैसे—सार्वजनिक। २ सब के लिए उपयुक्त।

पुं०१ गौतम बुद्ध। २ जिन देव।

सार्वकामिक—वि० [स०]१ सब प्रकार की कामनाओ से सबध रखनेवाला। २ जो सब तरह की कामनाएँ पूरी करता हो।

सार्वकालिक—वि०[स०]१ जो हर समय होता हो। २ सब कालो मे होनेवाला। सब समयो का। ३ जिसका सबध सब कालो से हो। सर्वकाल सबधी।

सार्वगुण—वि० [स० सर्वगुण+अण्] सर्वगुण सबधी। सब गुणो का।

पु०=खारा नमक।

सार्वजनिक—वि०[स०]१. सब लोगो से सबध रखनेवाला। सर्वसाधारण सबधी। (पब्लिक) जैसे—सार्वजनिक उपयोग। २ समान रूप से सब लोगो के काम मे आनेवाला। (कॉमन) जैसे—सार्वजनिक कूआँ या धर्मशाला।

सार्वजनीन—वि०=सार्वजनिक।

सार्वजन्य—वि०[सं०] सार्वजनिक।

सार्वज्ञ्य—पु०[स०]=सर्वज्ञता।

सार्वत्रिक—वि०[स०]जो सब स्थानो तथा स्थितियों में प्राय समान रूप से मिलता, रहता या होता हो। (युनिवर्सल)

सार्वदेशिक—वि०[स०]१ जो सब देशो मे होता हो। २. जिसका सबध सब देशो से हो। (युनिवर्सल) ३ सपूर्ण देश मे होनेवाला।

सार्वनामिक—वि०[स० सर्वनाम] १ सर्वनाम सबधी। सर्वनाम का। २ सर्वनाम से निकला या बना हुआ। जैसे—सार्वनामिक विशेषण।

सार्वभौतिक—वि०[स०]१ जिसका सबध सब भूतो या तत्त्वो से हो। २. सब प्राणियो से सबध रखने या उनमे होनेवाला।

सार्वभौम—वि० [स०]१ सपूर्ण भूमि से सबध रखनेवाला। २ सब देशो से सबध रखने या सब मे होनेवाला।

पु०१. चक्रवर्ती राजा। २. हाथी।

सर्वभौमिक—वि०[सं०] सार्वभौम। (दे०)
पुं० वह जिसका दृष्टिकोण इतना विस्तृत हो कि संसार के सब देशों तथा उनके निवासियों को एक समान देखता, समझता तथा मानता हो। ऐसा व्यक्ति स्थानिक, राष्ट्रीय, जातीय तथा अन्य संकुचित विचारों से रहित होता है। (कॉस्मोपालिटन)

सार्वराष्ट्रीय—वि० [सं०] [भाव० सार्वराष्ट्रीयता] १. सब या अनेक राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला। अंतर्राष्ट्रीय। (इन्टरनेशनल) २ (नियम या सिद्धान्त) जिसे सब राष्ट्र में मान्यता मिली हो।

सार्व-लौकिक—वि०[सं०] १. जो संपूर्ण लोक या विश्व में प्रचलित या व्याप्त हो। २ जिसका संबंध सब लोगों से हो। ३. जिसे सब लोग जानते हों। ४ विश्वक।

सार्विक—वि० [सं० सर्व] [भाव० सार्विकता] १. जो साधारणतः सब जगह या सब बातों में प्रायः समान रूप से देखने में आता हो। (युनिवर्सल) २ विशेषतः किसी जाति, राष्ट्र, समाज आदि के सब सदस्यों में समान रूप से मिलने या होनेवाला। आम। (जेनरल)

सार्विक वध—पुं० [सं०] किसी स्थान पर रहने या एकत्र होनेवाले की की जानेवाली सामूहिक हत्या। (मैसेकर)

सार्विक हड़ताल—स्त्री०[सं०+हिं०] ऐसी हड़ताल जिसमें साधारणतया सभी संबंधित कर्मचारीगण सम्मिलित होते हैं।

सार्षप—पुं०[सं० सर्षप+अण्]१. सरसों। २ सरसों का तेल। ३ सरसों संबंधी। सरसों का।

सार्ष्टि—स्त्री०[सं० सृष्टि+ष्यञ्] पाँच प्रकार की मूर्तियों में से एक।
वि० [भाव० सार्ष्टिता] अधिकार, पद, स्थिति आदि में किसी के समान।

सार्ष्टिता—स्त्री०[सं०] अधिकार, पद, स्थिति आदि के विचार से होनेवाली समानता।

सालंक—पुं०[सं०] संगीत में, राग के तीन प्रकारों में से एक। ऐसा राग जो बिल्कुल शुद्ध और स्वतन्त्र होने पर भी किसी दूसरे राग की छाया से युक्त जान पड़ता हो।

सालंकार—वि०[सं० तृ० त०] अलंकारों से सजा हुआ। अलंकृत।

सालंग—पुं०[सं० सलंग+अण्]=सालंक (राग)।

सालंब—वि०[सं०] तृ० त०] अवलंब या सहारे से युक्त। (समास में)

साल—पुं०[पहलवी सालक से फा०, मि० सं० शारद] १. किसी सन् या संवत् के आरंभिक महीने से अंतिम महीने तक का पूरा समय। वर्ष। बरस। जैसे—इस साल अच्छी वर्षा (या फसल) होने की आशा है। २ किसी दिन या महीने से आरंभ करते हुए बारह महीनों का समय। जैसे—यह इमारत साल भर में बनकर तैयार होगी।
स्त्री० [हिं० सालना]१. 'सालने' की क्रिया या भाव। २ सालने, खटकने या चुभनेवाली कोई चीज। जैसे—काँटा या सूई। उदा०—कछु सालतें लोभ बिसाल से हैं।. ।—केशव। ३. मन में होनेवाला कष्ट। वेदना। पीड़ा। कसक। ४ क्षत। घाव। ५. लकड़ियाँ जोड़ने के लिए उनमें किया जानेवाला चौकोर छेद। ६ छेद। सूराख।
पुं० [सं०] १ पेड़। वृक्ष। २ जड़। मूल। ३. धूना। राल। ४. चहारदीवारी। परकोटा। ५ एक प्रकार की मछली। ६ गीदड़। सियार। ७. किला। गढ़। (डिं०)
†पुं० [?]१. कूचबंदों की परिभाषा में, घास की जड़ जिससे वे कूच बनाते हैं। २ एक प्रकार का जंगली जंतु जिसके मुँह में दाँत नहीं होते और जो च्यूँटियाँ, दीमक आदि खाता है।
†पुं०१.=शाल (वृक्ष)। २=शालि। ३ =शल्य।
†स्त्री०=शाला। जैसे—धर्मशाला।

सालक—वि० [हिं० सालना+क (प्रत्य०)] सालने या दुःख देनेवाला।

सालग—पुं०[सं०]=सालंक।

सालगा†—पुं० दे० 'सलई'।

साल-गिरह—स्त्री०[फा०] वर्ष-गाँठ। जन्म-दिन।

सालग्राम—पुं०=शालग्राम।

सालग्रामी—स्त्री०[सं० शालग्राम] गंडक नदी।

सालज—पुं०[सं० साल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] सर्जरस। धूना। राल।

साल-द्रुम—पुं०[सं० मध्यम० स०, ब० स० या] सागौन का पेड़। साखू।

सालन—पुं०[सं० सलवण] मांस-मछली या साग-सब्जी की ससालेदार तरकारी।
†पुं०[सं० साल] धूना। राल।

सालना—अ०[सं० शूल]१. किसी कँटीली चीज या शरीर के किसी अंग में गड़कर या चुभकर पीड़ा उत्पन्न करना। २ लाक्षणिक रूप में, किसी कष्टदायक बात या मन में इस प्रकार घर करना कि वह रह-रहकर विशेष कष्ट देती रहे। ३. गड़ना। चुभना।
संयो० क्रि०—जाना।
स०१. कोई नुकीली चीज किसी दूसरी चीज के अंदर गाड़ना या धँसाना। २ चुभाना। ३. किसी को दुःख देना।

साल-निर्यास—पुं०[सं० ष० त०] धूना। राल।

सालपर्णी—स्त्री०[सं० ब० स० ङीष्] शालपर्णी। सरिवन।

सालपान—पुं०[सं० शालिपर्णी?] एक प्रकार का क्षुप जो वर्षा ऋतु के अंत में फूलता है। इसकी जड़ का व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। कनरवा। चाँचर।

साल-पुष्प—पुं०[सं०] स्थल कमल।

सालब मिसरी—स्त्री० दे० 'सालम मिसरी'।

साल भंजिका—स्त्री०=शाल भंजिका।

सालम मिसरी—स्त्री०[अ० सअलब+मिस्री=मिस्र देश का] एक प्रकार के पौधे का कन्द जो पौष्टिक होने के कारण ओषधियों में प्रयुक्त होता है। वीरकंदा। सुधामूली।

सालर†—पुं०=सलई।

सालरस—पुं० [सं० ष० त०] धूना। राल।

सालस—पुं० [अ० सालिस=तीसरा]१ वह तीसरा व्यक्ति जो दो व्यक्तियों के झगड़े का निपटारा करता हो। तिसरैत। २ पंच।

साल-साँभर—पुं० दे० 'बारहसिंगा'।

सालसा—पुं०[अं०] रक्त शोधक ओषधियों के योग से बना हुआ पाश्चात्य ढंग का एक प्रकार का काढ़ा।

सालसी—स्त्री०[अ०]१ सालस होने की अवस्था या भाव। २. दूसरों का झगड़ा निपटाने के लिए तीसरे व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों की बनी हुई पंचायत।

सालहज†—स्त्री० =सलहज।

साला—पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १ संबंध के विचार से किसी व्यक्ति की दृष्टि में उसकी पत्नी का भाई। २ लोक-व्यवहार में उक्त प्रकार का संबंध सूचित करनेवाली एक गाली।
पुं० [सं०] सारिका। मैना पक्षी।
†स्त्री० =शाला।
वि० [हिं० साल=वर्ष] नियत साल या वर्ष पर होनेवाला या उससे सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—दो-साला पेड=दो साल का लगा हुआ पेड। तिन-साला बंदोबस्त = तीन साल के लिए होनेवाला बन्दोबस्त।

सालाना—वि० [फा० सालान] हर साल होनेवाला। वार्षिक।

सालार—पुं० [फा०] नायक। नेता। जैसे—सिपह-सालार=सिपाहियों (फौजियों) का नेता।

सालारजंग—पुं० [फा०] १ योद्धा। २. प्रधान सेनापति। ३ 'साला' (पत्नी का भाई) के लिए उपहासात्मक शब्द।

सालि†—पुं० =शालि।

सालिक—वि० [अ०] १ पथिक। यात्री। २ मुसलमानों में वह साधक जो गृहस्थाश्रम में रहकर भी ईश्वराधना में रत रहता हो।

सालिका—स्त्री० [सं०] बाँसुरी।

सालिग्राम—पुं० =शालग्राम।

सालिनी—स्त्री० =शालिनी (गृहिणी)।

सालिब मिश्री—स्त्री० =सालम मिस्री।

सालिम—वि० [अ०] जो कहीं से खंडित न हो। पूर्ण। संपूर्ण। समूचा। जैसे—सालिम तरबूज।

सालियाना—वि० =सालाना (वार्षिक)।

सालिसी—स्त्री० [अ०] दे० 'सालसी'।

सालिहोत्री—पुं० =शालिहोत्री।

साली—स्त्री० [हिं० साला] १ संबंध के विचार से पत्नी की बहन। २ हठयोगियों की परिभाषा में माया, वासना आदि।
स्त्री० [फा० साल] १ साल या वर्ष का भाव। (यौ० के अंत में) जैसे—कहतसाली, खुश्कसाली। २ हर साल या प्रति वर्ष के हिसाब से दिया जानेवाला पारिश्रमिक, पुरस्कार या वेतन।

सालू*—पुं० [हिं० सालना] १ वह जिसके मन को दूसरों का उत्कर्ष सालता हो। ईर्ष्यालु। २ सालनेवाली बात।
पुं० [?] एक प्रकार का लाल कपडा जिसे मांगलिक अवसरों पर स्त्रियाँ ओढती हैं। (पश्चिम)

सालूर—पुं० =शालूर (मेंढक)

सालेया—स्त्री० [सं० सालेय+टाप्] सौंफ।

सालोक्य—पुं० [सं० सलोक, ब० स० ष्यञ्] पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति, जिसके फल-स्वरूप साधक अपने इष्टदेव के लोक में जाकर उसमें लीन हो जाता है।

सालोहित—पुं० [सं० ब० स०] १ ऐसा व्यक्ति जिसके साथ रक्त-संबंध हो। नातेदार। २ कुल या वंश का व्यक्ति।

साल्मली†—पुं० =शाल्मली (सेमल का पेड)।

साल्व—पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जाति जो किसी समय मध्य (या उत्तरी ?) पंजाब में रहती थी। २. पंजाब का मध्यप्रदेश जिसमें उक्त जाति रहती थी। ३ उक्त प्रदेश का निवासी। ४ एक दैत्य जिसका वध विष्णु ने किया था।

साल्वेय—वि० [सं० साल्व+ढक्—एय] साल्व देश-संबंधी। साल्व का।

सावँकरन†—पुं० =श्यामकर्ण (घोडा)।

सावँत†—पुं० =सामंत।

साव—पुं० [सं० सावक=शिशु] बालक। पुत्र। (डिं०)
†पुं० =साहु।

सावक†—पुं० =श्रावक (जैन या बुद्ध भिक्षु)।

सावका†—अव्य० [अ० साबिक?] नित्य। सदा। उदा०—वायु सावका करै लराई, माइआ सद मतवारी।—कबीर।

सावकाश—अव्य० [सं०] अवकाश होने पर। छुट्टी या फुरसत के समय।
†पुं० =आकाश।

सावगी†—पुं० =सरावगी।
†स्त्री० =किशमिश। (पंजाब)

सावचेत*—वि० [सं० सा+हिं० चेत] [भाव० सावचेती] =सावधान।

सावज†—पुं० [सं० शावक ?]। जंगली जानवर जिसका शिकार किया है। (गेम)

सावणिक—पुं० [सं० श्रावण] श्रावण मास। (डिं०)

सावत—स्त्री० [हिं० सौत] १ सौतों का आपस में भेद या डाह। सौतिया डाह। २ ईर्ष्या। जलन। डाह। उदा०—तहँ गये मद मोह लोभ अति, सरगहुँ मिटत न सावत।—तुलसी।

सावद्य—वि० [सं०] जिसके संबंध में कोई आपत्तिजनक बात कही जा सकती हो। जो किसी रूप में दोष, भ्रम आदि से युक्त हो। 'निरवद्य' का विपर्याय। जैसे—आपका यह कथन मेरी दृष्टि में कुछ सावद्य है।
पुं० योग में तीन प्रकार की सिद्धियों में से एक। (शेष दो प्रकार निरवद्य और सूक्ष्म कहलाते हैं।)

सावधान—वि० [सं० अव्य० स०] [भाव० सावधानता] १ जो अवधान या ध्यानपूर्वक कोई काम करता हो। २ जिसे ठीक समय पर तथा ठीक तरह से काम करने की प्रवृत्ति हो। ३ जो परिस्थितियों आदि की क्रियाशीलता के प्रति जागरूक तथा सचेत हो।

सावधानता—स्त्री० [सं० सावधान+तल्—टाप्] १ सावधान होने की अवस्था, गुण या भाव। २ वह सुरक्षात्मक कार्रवाई जो खतरे आदि से सावधान रहने के लिए की जाती है।

सावधि—वि० [सं०] १ जिसकी कोई अवधि निश्चित हो। निश्चित कार्य-कालवाला। २ जिसकी सीमा बाँध दी गई हो।

सावन—पुं० [सं० श्रावण] १ असाढ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण। २ वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।
पुं० [सं०] १ सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का काल या समय। पूरा एक दिन और एक रात जिसका मान ६० दंड है। २ यज्ञ का अंत या समाप्ति। ३ यजमान। ४ वरुण।
वि० १ एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक के काल से संबंध रखनेवाला। २ (काल-मान) जिसकी गणना एक सूर्योदय से दूसरे

सूर्योदय तक के काल के विचार से हो। जैसे—सावन दिन, सावन मास, सावन वर्ष आदि।
पु०[?] मंझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष जिसका गोंद ओषधि के रूप मे काम मे आता और मछलियो के लिए विष होता है।
†पु०=सावनी (गीत)।

सावन दिन—पु०[स०]१ उतना समय जितना सूर्य को एक बार याम्योत्तर रेखा से चलकर फिर वही आने मे लगता है। २. एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दडो का समय।
विशेष—(क) यह नाक्षत्र दिन से कभी कुछ छोटा और कभी कुछ बड़ा होता है इसी लिए ज्योतिषी लोग नक्षत्र दिन-मान का ही व्यवहार करते हैं। (ख) तीन सौ साठ सौर दिनो का एक सावन वर्ष होता है।

सावन-भादों—पु०[हिं०] राजमहल का वह विभाग जिसमे जल-विहार के लिए तालाब, झरने, फुहारे आदि होते थे।
अव्य० सावन और भादो के महीने मे।

सावन मास—पु०[स०] भारतीय ज्योतिष की गणना के अनुसार व्यापारिक और व्यावहारिक कार्यो के लिए माना जानेवाला एक प्रकार का मास जो किसी तिथि से आरभ होकर उसके तीसवें दिन तक होता है। यदि गणना चाद्र मास की तिथि के अनुसार हो तो उसे चाद्र सावन कहते है, और यदि सौर मास की तिथि के अनुसार हो तो उसे सौर सावन मास कहते है।

सावन वर्ष—पु०[स०] ज्योतिष की गणना मे वह वर्ष जो ३६० सौर दिनो का होता है। (ट्रापिकल ईयर)

सावन-हिंडोला—पु०[हिं०] वे सब गीत जो (क) स्त्रियां सावन मे झूला झूलने के समय गाती है, अथवा (ख) देवताओ के झूलन के उत्सव के समय गाये जाते है। ऐसे गीत प्राय शृगारात्मक होते हैं।

सावनी—वि०[हिं० सावन (महीना)] १ सावन सबधी। सावन का। २. सावन मे होनेवाला।
स्त्री०१ सावन मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। २ सावन मे वर पक्ष से कन्या के लिए भेजे जानेवाले कपडे, फल, मिठाइयाँ आदि। ३ सावन के लगभग तैयार होनेवाली फसल। ४ एक प्रकार का पौधा और उसके फूल।
†पु० सावन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।
†स्त्री०=श्रावणी।

सावनी कल्याण—पुं०[हिं० सावनी+स० कल्याण] सावनी और कल्याण के मेल से बना हुआ एक प्रकार का सकर राग। (सगीत)

सावर—पु० [स० सवर+अण्] १ लोध। २ अपराध। दोष। ३ पाप।
†पु०१.=शावर। २=सावर।

सावरणी—स्त्री०[स० सावरण—ङीप्] वह बुहारी जो जैन यति अपने साथ रखते हैं।

सावरिका—स्त्री०[स० सावर+कन्—टाप्, इत्व]एक प्रकार की जोक जो जहरीली नही होती।

सावर्ण—वि०[स० सवर्ण+अण्] जो एक जाति या वर्ण के हो। सवर्ण।
पु० दे० सावर्णि'।

सावर्णक—पु०[स०सावर्ण+कन्]=सावर्णि।

सावर्णि—पु०[स० सवर्णा+इञ्]१ सूर्य के पुत्र आठवें मनु। २ उक्त मनु का मन्वन्तर।

सावर्णिक—वि०[स० सावर्णि+कन्] जिनका सबध एक ही जाति या वर्ण से हो।

सावर्ण्य—पु० [सं० सवर्ण+ष्यञ्] सवर्ण होने की अवस्था, गुण या भाव।

सावष्टंभ—पु० [स० अव्य० स०] ऐसा मकान जिसके उत्तर-दक्षिण सडक हो। (ऐसा मकान बहुत शुभ माना जाता है।)
वि०१ मजबूत। दृढ। २. आत्म-निर्भर।

साविका—स्त्री०[स० अव्य० स०] धाय। दाई।

सावित्र—वि०[स०] १. सविता अर्थात् सूर्य-सबधी। जैसे—सावित्र होम। २. सविता या सूर्य से उत्पन्न।
पु०१. सूर्य। २. शिव। ३ वसु। ४ ब्राह्मण। ५. सूर्य के पुत्र। कर्ण। ६ गर्भ। ७ यज्ञोपवीत। ८ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

सावित्री—स्त्री०[स०]१ सूर्य की किरण। २ ऋग्वेद का गायत्री नामक मत्र जिसमे सूर्य की स्तुति की गई है। ३ सरस्वती। ४. सूर्य की एक पुत्री जो ब्रह्मा को ब्याही थी। ५ दक्ष की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। ६ मत्स्य देश के राजा अश्वपति की कन्या जो सत्यवान को ब्याही थी और जिसने सत्यवान को काल के हाथ से छुडाया था। इसकी गणना परम सती स्त्रियो मे होती है। ७ कोई सती-साध्वी स्त्री। ८ सधवा स्त्री। ९. सरस्वती नदी। १० यमुना नदी। ११. उपनयन संस्कार। १२. आंवला।

सावित्री व्रत—पु० [स०] एक व्रत जो स्त्रियां ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी को अपने पति की दीर्घायु की कामना से करती हैं।

सावित्री सूत्र—पु०[स० ष० त०, मध्यम० स०] यज्ञोपवीत। यज्ञोपवीत जो सावित्री दीक्षा के समय धारण किया जाता है।

सावित्रेय—पु०[स० सावित्री+ढक्—एय] यमराज। यम।

सावेरी—स्त्री०[?] सगीत में भैरव ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।

साशंस—वि०[सं०] इच्छुक। आकाक्षी।

साशिव—पु०[स० ब० स०]१ प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी। ३ ऋषि का पुत्र। ऋषीक।

साश्चर्य—वि० [स०] १. आश्चर्यजनक। चकित करनेवाला। २ चकित।

साश्रु—वि०[स० ब० स०] १. आंसुओ से युक्त। अश्रुपूर्ण। २ रोता हुआ।
अव्य० १. आंसुओ से युक्त होकर। २ आंखों मे आंसू भरकर। रोते हुए।

साश्वत†—वि०=शाश्वत।

साष्टांग—वि० [स० तृ० त०] आठो अगो से युक्त।
क्रि० वि० आठो अगो से। जैसे—साष्टाग प्रणाम करना।

साष्टांग प्रणाम—पु०[स०] सिर, हाथ, पैर, हृदय, आंख, जांघ, वचन और मन इन आठो से युक्त होकर और जमीन पर सीधे लेटकर किया जानेवाला प्रणाम।

सास—स्त्री०[सं० श्वश्रु]१. सबध के विचार से किसी की पत्नी या पति की माता। २ सबध के विचार से उक्त स्थान पर पडनेवाली स्त्री। जैसे—चचिया सास, ममिया सास। ३ नाथ और सिद्ध सम्प्रदायो

मे मणिपूर चक्र मे स्थित अपान वायु जो माया, मोह, वासना आदि की जननी मानी गई है। उदा०—सास ननद को मार अदल मैं दिहा चलाई।—पल्टूदास।

सासण†—पु० =शासन।

सासत†—स्त्री०=साँसत।

सासति†—स्त्री०=शास्ति।

सासन†—पु०=शासन।

सासन लेट—स्त्री०[?] एक प्रकार का सफेद जालीदार कपडा।

सासना†—स०[स० शासन]१. शासन करना। २. दड देना। ३ कष्ट देना।

†पु०=शासन।

सासरा†—पु०=ससुराल।

सासा *—स्त्री०[स० सशय] सदेह।

पु० साँस।

सासु—वि० [स० तृ० त०] प्राणयुक्त।जीवित।

†स्त्री० सास।

सासुर†—पु० १ ससुर। २ ससुराल

सास्मित—पु०[स० ब० स०, तृ० त० वा] शुद्ध सत्व को विषय बनाकर की जानेवाली भावना।

सास्वादन—पु०[सं० ब० स०] जैनो मे, निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओ मे से दूसरी अवस्था।

साह—पु०[स० साधु]१ सज्जन और साधु पुरुष। २ वणिक। महाजन। साहूकार। ३ धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति। ४ चीते आदि की तरह का एक प्रकार का पहाडी हिंसक जतु जिसके शरीर पर छल्लेदार चित्तियाँ या धब्बे होते हैं। ५ लकडी या पत्थर का वह लबा टुकड़ा जो दरवाजे के चौखटे मे देहलीज के ऊपर दोनों पार्श्वों मे लगा रहता है।

†स्त्री०[स० शाखा या स्कध] बाँह। भुजदड। उदा०—सकल भुआन मगल-मदिर के द्वार बिसाल सुहाई साह।—तुलसी।

†पु०=शाह (बादशाह)।

साहचर्य—प०[स०]१ सहचर होने की अवस्था या भाव। २. साथ साथ रहने या होने का भाव। सग-साथ। (एसोसियेशन)

साहजिक—वि०[स०]१ (कार्य या व्यापार) जो प्राणी की सहज बुद्धि या आन्तरिक प्रेरणा से सपन्न होता हो। वृत्तिक। सहज। (इस्टिक्टिव) २ स्वाभाविक।

साहजिक धन—पु०[स०] पारितोपिक, वेतन, विजय आदि मे मिला हुआ धन। (शुक्र नीति)

साहण—पु० [स साधन] १. साथी। सगी। २. सेना। फौज। ३. परिषद्। (डिं०)

साहना—स० [स० सह] १ ग्रहण या प्राप्त करना। लेना। उदा०—खाँताताार मारुफ खाँ लिए पान कर साहि।—चन्दवरदाई। २ भैंस से भैंसे का सभोग कराना।

स०[स० साधन] १. सहारा देना। २ दे० 'साधना'।

†स्त्री०=साधना।

साहनी—पु० [स० साधनिक, प्रा० साहनिअ] १ प्राचीन भारत मे, एक प्रकार के राजकर्मचारी जो किसी सैनिक विभाग मे अधिकारी होते थे। २ मध्ययुग मे, एक प्रकार के राजकर्मचारी जो नगर की व्यवस्था करते थे। उदा०—भरत सकल साहनी बोलाये।—तुलसी। ३. परिषद्। दरबारी। ४ सगी। साथी।

स्त्री० सेना। फौज।

साहब—पु० [अ० साहिब] [स्त्री० साहिबा] १ मालिक। स्वामी। २. परमात्मा। ३. मित्र। साथी। शिष्ट समाज मे, भले आदमियो के नाम या पेशे के साथ प्रयुक्त होनेवाला आदरार्थक शब्द। जैसे—बाबू कालिकाप्रसाद साहब, डा० साहब, वकील साहब। ५ अंग्रेजी शासन-काल मे, इगलैण्ड या युरोप का कोई निवासी।

साहबजादा—पु० [अ० साहिब+फा० जादा] [स्त्री० साहबजादी] भले आदमी या रईस का लडका।

साहब-सलामत—स्त्री० [अ०] परस्पर मिलने के समय होनेवाला अभिवादन। बदगी। सलाम। जैसे—अब तो दोनो मे साहब-सलामत भी बद हो गई है।

साहबान—पु० [अ०] 'साहब' का बहु०।

†पु० सायबान।

साहबाना—वि० [अ०] १. साहबो अर्थात् पाश्चात्य देशो के गोरे अथवा अफसरो की तरह का या उनके ग-ढग जैसा। २ साहबो अर्थात् भले आदमियों की तरह का।

साहबी—वि०[अ० साहिब+ई (प्रत्य०)] साहब का। साहब सबधी। जैसे—साहबी ठाट-बाट, साहबी रग-ढग।

स्त्री०१ साहब अर्थात् स्वामी होने की अवस्था या भाव। अधिकार-पूर्ण प्रभुत्व या स्वामित्व। २ साहब अर्थात् पाश्चात्य देश के गोरे निवासी होने की अवस्था, ढग या भाव। ३ बडप्पन। महत्त्व।

साहबीयत—स्त्री०[?]'साहबी' या साहब होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

साहस—पु० [स०] [वि० साहसिक, साहसी] १ प्राचीन भारत मे, बलपूर्वक किया जानेवाला कोई अनुचित, क्रूरतापूर्ण तथा नीति-विरुद्ध कार्य। जैसे—किसी के धन या स्त्री का अपहरण, मार-काट, लूट-पाट आदि।

विशेष—इसी लिए यह शब्द अत्याचार, दुष्कर्म, बलात्कार आदि का भी वाचक हो गया था।

२ वैदिक युग मे, वह अग्नि जिस पर यज्ञ के लिए चरु पकाया जाता था।

३ आज-कल मन की दृढता और शक्ति का सूचक वह गुण या तत्त्व जिसके फलस्वरूप मनुष्य बिना किसी भय या सकोच के कोई बहुत कठिन, जोखिम का बहुत बडा या बूते के बाहर का काम करने मे प्रवृत्त होता है। (करेज) ४. अर्थशास्त्र मे, उत्पत्ति के पाँच साधनो मे से एक जिसमे उत्पत्ति के शेप साधनो (भूमि, श्रम, पूँजी तथा प्रबध) को एकत्र करके उनके द्वारा किसी वस्तु की उत्पत्ति की जाती है। उद्यम। (एन्टरप्राइज़) ५. दड। सजा। ६. जुरमाना।

साहसांक—पु० [सं० ब० स०] राजा विक्रमादित्य का एक नाम।

साहसिक—वि० [स०] १. साहस सबधी। साहस का। २. जिसमे साहस हो। साहसी। हिम्मतवर। ३. पराक्रमी। ४. निडर। निर्भीक। ५. अत्याचार या क्रूरतापूर्ण अथवा निंदनीय कृत्य करनेवाला। जैसे—चोर, डाकू, लुटेरा, लंपट, झूठा, बेईमान आदि।

साहसी (सिन्)—वि० [स०] १ साहसपूर्ण काम करनेवाला। २.जिसमे साहस हो।
पु० १. अर्थशास्त्र मे वह व्यक्ति जो उत्पत्ति के साधन (भूमि, श्रम, पूँजी तथा प्रवध) एकत्र करके किसी वस्तु का उत्पादन करता हो। (एन्टरप्राइज़र) २ दे० 'साहसिक'।
साहस्र—वि० [स०] सहस्र-सवधी। हजार की संख्या से सबध रखनेवाला।
पु० १ हजार का समूह। २ हजार सैनिको का दल।
साहस्रिक—वि० [स० सहस्र+ठक्–इक] सहस्र-सबधी। साहस्र।
पु० किसी इकाई का हजारवाँ अश।
साहस्री—स्त्री० [सं०] १. एक ही प्रकार की एक हजार चीजो का वर्ग या समूह। २. दे० 'सहस्राब्दि'।
साहा—पु० [स० साहित्य] १ वह वर्ष जो हिंदू ज्योतिष के अनुसार विवाह के लिए शुभ माना जाता है। २ विवाह का मुहूर्त। (पश्चिम) ३. किसी प्रकार का शुभ मुहूर्त। उदा०—सकल दोख विवरजित साहौ।—प्रिथीराज।
साहाय्य—पु० [स०] सहायता। मदद।
साहि*—पु० [फा० शाह] १ शाह या वादशाह। २ मालिक। स्वामी। ३. धनी। महाजन। साहू। ४ मुसलमान फकीरो की उपाधि।
साहित्य—पु० [स०] १ 'सहित' या साथ होने की अवस्था या भाव। एक साथ होना, रहना या मिलना। २ वे सभी वस्तुएँ जिनका किसी कार्य के सपादन के लिए उपयोग होता है। आवश्यक सामग्री। जैसे—पूजा का साहित्य=अक्षत, जल, फूल-माला, गध-द्रव्य आदि। ३. किसी भाषा अथवा देश के उन सभी (गद्य और पद्य) ग्रथो, लेखो आदि का समूह या सम्मिलित राशि, जिसमे स्थायी, उच्च और गूढ विषयो का सुदर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो। (लिटरेचर) **विशेष**—वाङमय और साहित्य मे मुख्य अतर यह है कि वाङमय के अतर्गत तो ज्ञान-राशि का वह सारा सचित भडार आता है जो मनुष्य को नवीन दृष्टि देता और उसे जीवन-सवधी सत्यो का परिज्ञान मात्र कराता है। परतु साहित्य उक्त समस्त भडार का वह विशिष्ट अश है जो मनुष्य को ऐसी अतर्दृष्टि देता है जिससे कलाकार किसी प्रकार की कलासृष्टि करके आत्मोपलब्धि करता है, और रसिक लोग उस कला का आस्वादन करके लोकोत्तर आनद का अनुभव करते हैं। ४. वे सभी लेख, ग्रथ आदि जिनका सौंदर्य गुण, रूप या भावुकतापूर्ण प्रभावो के कारण समाज मे आदर होता है। ५ किसी विषय, कवि या लेखक से सवध रखनेवाले सभी ग्रन्थो और लेखो आदि का समूह। जैसे—वैज्ञानिक साहित्य, तुलसी साहित्य। ६ किसी विषय या वस्तु से सवध रखनेवाली सभी वातो का विस्तृत विवरण जो प्राय. उसके विज्ञापन के रूप मे बँटता है। जैसे—किसी वडे ग्रन्थ, सस्था, यत्र आदि का साहित्य। (लिटरेचर) ७ गद्य और पद्य की शैली और लेखो तथा काव्यो के गुण-दोष, भेद-प्रभेद, सौदर्य अथवा नायिका-भेद और अलकार आदि से सवध रखनेवाले ग्रन्थो का समूह।
साहित्य शास्त्र—पु० [स० मध्यम० स०] १ वह विद्या या शास्त्र जिसमे रचनाओ के साहित्य पक्ष तथा स्वरूप पर शास्त्रीय ढग से विचार किया जाता है। २ काव्य-शास्त्र। ३ विशेपत. प्राचीन काव्य शास्त्र जिसमे रसो, अलकारो, रीतियो आदि पर विचार किया जाता था।
साहित्यिक—वि० [स० साहित्य] १ साहित्य (विशेपत साहित्यिक कृतियो) से सवध रखनेवाला अथवा उसके अनुरूप होनेवाला। जैसे—साहित्यिक रचना। २. जो साहित्य का ज्ञाता या पारखी हो अथवा साहित्य की रचना करना ही जिसका पेशा हो। जैसे—साहित्यिक व्यक्ति, साहित्यिक सस्था।
साहित्यिक चोरी—स्त्री० [स०+हिं०] किसी की साहित्यिक कृति चुराकर (कविता, लेख आदि) उसको अपनी मौलिक कृति के रूप मे लोगो के सामने उपस्थित करना। (प्लेजिअरीज्म)
साहिनी†—पु०=साहनी।
साहिव†—पु०=साहव।
साहिवी—स्त्री०=साहवी।
साहियाँ*—पु०=साँई।
साहिर—पुं० [अ०] [भाव० साहिरी] जादूगर।
साहिल—पु० [अ०] १. किनारा। तट। २ विशेपत समुद्र-तट।
साहिली—स्त्री० [अ० साहिल=समुद्र-तट] १. काले रग का एक पक्षी जिसकी लवाई एक वालिश्त से कुछ अधिक होती है। २ वुलवुल-चश्म।
वि० १. साहिल या तट से सवध रखनेवाला। २ साहिल पर रहने या होनेवाला।
साही—स्त्री० [स० शल्यकी] एक प्रकार का जतु जिसके सारे शरीर पर लवे लवे खड़े काँटे होते हैं। सेई।
†स्त्री० [फा० शाही] एक प्रकार की पुरानी चाल की तलवार।
साहु†—पु०=साह।
साहुरड़ा*—पुं० [प० सौहरा] ससुराल। उदा०—पेवकडे दिन भारी हैं, साहुरडे जाणा।—कवीर।
साहुल—पु० [फा० शाकूल] १ समुद्र की गहराई नापने का एक उपकरण जिसमे एक लवी डोरी के एक सिरे पर सीसे का लट्टू लगा रहता है। २ वास्तु मे, उक्त आकार-प्रकार वह उपकरण जिससे दीवारें आदि वनाने के समय उनकी सीध नापते हैं। (प्लम्मेट)
†पु० [?] शोर-गुल। होहल्ला। (राज०)
साहू—पु०=साह।
साहूकार—पु० [हिं० साहु+स० कार (प्रत्य०)] [भाव० साहूकारी] १. वह व्यक्ति जिसके पास यथेष्ट सपत्ति हो। वडा महाजन। २ धनाढ्य व्यापारी। कोठीवाला।
साहूकारा—पु० [हिं० साहूकार+आ (प्रत्य०)] १ साहूकारो का कार्य, पद या व्यवसाय। महाजनी। रुपयो का लेन-देन। २ वह वाजार जिसमे मुख्य रूप से रुपयो का लेन-देन होता है।
वि० १ साहूकारो का। २. साहूकारो का-सा।
साहूकारी—स्त्री० [हिं० साहूकार+ई (प्रत्य०)] साहूकार होने की अवस्था या भाव।
साहूत—पु० [अ० नासूत का अनु०] कुछ मुसलमान विशेषत. सूफी फकीरो के अनुसार ऊपर के नौ लोको मे से सातवाँ लोक।
साहेब†—पु०=साहव।
साईं†—अव्य०=सामुहे (सामने)।
स्त्री० [हिं० वाँह] भुज-दड।

सिउं*—अव्य=त्यों ।

सिकना—अ० [हिं० सेंकना का अ०] सेंका जाना ।

सिकरी†—स्त्री०=सिकडी ।

सिंग†—पु०=१ =शृंग। २ =सींग।

सिंगड़ा—पु० [स० शृंग+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सिंगडी] सीग की वह नली जिसमे सैनिक लोग बारूद रखते थे ।

सिंगरफ—पु०=शिंगरफ (ईंगुर) ।

सिंगरी—स्त्री०=सिंगी (मछली) ।

सिंगल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।
†पु० दे० 'सिगनल' ।

सिंगा—पु० [हिं० सींग] सीग के आकार-प्रकार का एक बाजा जिसे फूंककर बजाते है।

सिंगार†—पु०=शृगार ।

सिंगारदान—पु० [हिं० सिंगार+स० आधान या फा० दान (प्रत्य०)] शृगार की सामग्री रखने का छोटा सदूक ।

सिंगारना—स० [हिं० सिंगार+ना (प्रत्य०)] शृगार करना। प्रसाधन सामग्री तथा आभूषणों से अपने को या किसी को सजाना ।

सिंगारहाट—पुं०[स० शृगारहट्ट] वह बाजार जिसमे वेश्याएँ रहती हो। चकला ।

सिंगारहार—पु० [स० हारशृगार] १ हरसिंगार नामक वृक्ष। परजाता। २ उक्त के फूल ।

सिंगारिया—पु० [हिं० सिंगार+इया (प्रत्य०)] १ शृगार करनेवाला। २ वह पुजारी जो देव-मूर्तियो का शृगार करता हो।

सिंगारी—वि० [हिं० सिंगार+ई (प्रत्य०)] सिंगार-सबधी।
पु०=सिंगारिया ।

सिंगाल—पु० [देश०] एक प्रकार का पहाडी बकरा जो कुमायूँ से नैपाल तक पाया जाता है ।

सिंगाला—वि० [हिं० सीग+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० सिंगाली] सीगवाला (जन्तु)।

सिंगिया—पु० [स० शृगिक] एक प्रसिद्ध विष जो एक पौधे की जड है।

सिंगी—स्त्री० [हिं० सीग] १ सीग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूंककर बजाया जाता है। तुरही। २ सीग की तरह वह नली जिससे जर्राह लोग फसद लगाते अर्थात् शरीर का दूषित रक्त चूसकर निकालते हैं।
क्रि० प्र०—लगाना ।
३ बरसाती पानी मे होनेवाली एक प्रकार की मछली । ४ सीग के आकार का घोडो का एक अशुभ लक्षण।

सिंगी-मोहरा—पु० [हिं० सिंगी+मुहरा] सिंगिया (विष) ।

सिंगौटी—स्त्री० [हिं० सीग+औटी (प्रत्य०)] १ बैल के सीग पर पहनाने का एक आभूषण। २ सीग का बना हुआ घोटना जिससे चमक लाने के लिए कपडे आदि घोटे जाते है। ३ सीग को खोखला करके बनाया हुआ एक प्रकार का पात्र जिसमे घी, तेल आदि रखते थे। ४ जगली मे मरे हुए जानवरो के सीग ।
स्त्री० [हिं० सिंगार+औटी (प्रत्य०)] वह पिटारी जिसमे स्त्रियाँ शृगार की सामग्री रखती हैं।

सिंघ†—पु०=सिंह (शेर) ।

सिंघल†—पु०=सिंहल द्वीप ।

सिंघली—वि०=सिंहली।

सिंघाड़ा—पु० [सं० शृगाटक] १ पानी मे होनेवाला एक पौधा। २ उक्त पौधे का फल जिसके दोनो ओर सीगो की तरह दो कांटे होते है। पानी-फल। (वॉटर चेस्टनट) ३ चित्र-कला मे, पत्तो की तरह का तिकोना अकन । ४. सिंघाडे के आकार की तिकोनी सिलाई या वेल-बूटे। ५ समोसा नामक पकवान। ६ एक प्रकार की मुनिया (पक्षी)। ७ एक प्रकार की आतिशबाजी। ८ रहट की लाट मे ठोकी हुई लकडी जो लाट को पीछे की ओर घूमने से रोकती है। ९. सुनारो का एक औजार जिससे वे माला बनाते है।

सिंघाडी—स्त्री० [हिं० सिंघाड़ा+ई (प्रत्य०)] वह ताल जिसमे सिंघाडा होता है ।

सिंघाण—पु० दे० 'सिंहाण' ।

सिंघाली—वि० [स० सिंह] १ वीर । २ श्रेष्ठ । (डिं०)
वि०, पु०, स्त्री० दे० 'सिंहली' ।

सिंघासन†—पु०=सिंहासन ।

सिंघिनी†—स्त्री०=सिंहिनी (सिंह का मादा) ।

सिंघिया—पु० =सिंगिया (विष) ।

सिंघी—स्त्री० [हिं० सीग] १ सोठ । शुठी। २ दे० 'सिंगी'।
†स्त्री०=सिंगिया (विष) ।

सिंघू—पु० [देश०] एक प्रकार का जीरा जो फारस से आता और प्राय काले जीरे की तरह होता है ।

सिंघेला—पु० [हिं० सिंघ+एला (प्रत्य०)] १ शेर का बच्चा। २ वीरपुत्र।

सिंचन—पु० [स० √सिंच् (सीचना)+ल्युट्-अन] १ खेतो आदि मे पानी सीचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। २ पानी का छिडकाव।

सिंचना—अ० [हिं० सीचना का अ०] १ सिंचाई होना । २ जल का छिडकाव होना ।

सिंचाई—स्त्री० [हिं० सीचना] १ सीचने या पानी छिडकने का काम या भाव। २ आब-पाशी। ३ वह स्थिति जिसमे फसल उपजाने के उद्देश्य से खेतो मे नदी, कुएँ, ताल, वर्षा आदि का जल पहुँचता या पहुँचाया जाता है। (इरिगेशन) ४ खेत सीचने के काम का पारिश्रमिक या मजदूरी ।

सिंचाना—स० [हिं० सीचना का प्रे०] सीचने का काम किसी और से कराना।
†अ०=सिंचना ।

सिंचित—भू० कृ० [स०√सिंच् (सीचना)+क्त] जिसकी सिंचाई हो चुकी हो। सीचा हुआ ।

सिंचौनी†—स्त्री०=सिंचाई ।

सिंजा—स्त्री० [स० सिंज-टाप्] शरीर पर पहने हुए गहनो की खनक या झकार ।

सिंजाफ—पु० [फा० सिंजाफ़] =सजाफ ।

सिंजित—स्त्री० [स० सिंजा+इतच्] १ सिंजा। २ ध्वनि । शब्द ।
उदा०—घुटरुन चलत घुंघरू बाजै। सिंजित सुनत हस हिय लाजै।—लाल कवि ।

सिंदन*—पु०=स्यदन (रथ)।
सिंदुक—पु० [स० सिंदु+कन्] सिंधुआर या सँभालू नामक पौधा।
सिंदुरिया†—वि०=सिंदूरी।
सिंदुवार—पु० [स०] निर्गुंडी। सँभालू।
सिंदूर—पु० [स०] १ ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल चूर्ण जो सौभाग्यवती हिन्दू स्त्रियाँ अपनी माँग मे भरती हैं। गणेश और हनुमान् की मूर्तियो पर भी यह घी मे मिलाकर पोता जाता है। (वर्मिलियन)
मुहा०—सिंदूर चढ़ना=कुमारी का विवाह होना। सिंदूर भरना या देना=विवाह के समय वर का कन्या की माँग मे सिंदूर डालना।
२ बबूल की जाति का एक पहाडी पेड जो हिमालय के निचले भागो मे पाया जाता है।
वि०=सिंदूरी।
सिंदूर-तिलक—पु० [स० ब० स०] हाथी।
सिंदूर-तिलका—स्त्री० [स० सिंदूर-तिलक-टाप्] सधवा स्त्री जिसके माथे पर सिंदूर रहता है।
सिंदूरदान—पुं० [स०] विवाह के समय वर का कन्या की माँग मे सिंदूर भरना।
सिंदूर-पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०] एक पौधा जिसमे लाल फूल लगते हैं। वीर-पुष्पी। सदासुहागिन। सिंदूरी।
सिंदूर-वंदन—पु० [स०] विवाह-संस्कार के समय एक रीति जिसमे वर कन्या की माँग मे सिंदूर भरता है।
सिंदूर रस—पु० [स०] रस सिंदूर नामक खनिज पदार्थ। रस कपूर।
सिंदूरिया—स्त्री० [स० सिंदूर+हिं० इया (प्रत्य०)] सिंदू के रग का। जैसे—सिंदूरिया आग
स्त्री० सिंदूरपुष्पी। सदासुहागिन।
सिंदूरिष्ठा—स्त्री० [स० सिंदूर+कन-टाप्-इत्व] सिंदूर।
सिंदूरी—वि० [सं०सिंदूर+हिं० ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रग का। पीला मिला लाल।
पु० १ उक्त प्रकार का रग जो पीलापन लिए चमकीला लाल होता है। (वर्मिलियन) २ एक प्रकार का बढिया आम। ३ बलूत की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड। ४. लाल हलदी। ५ धव। धातकी। ६. सिंदूरपुष्पी। ७. लाल रग का कपडा।
सिंदोरा†—पु०=सिंधोरा।
सिंध—पु० [स० सिंधु] अखण्ड भारत की पश्चिमी सीमा पर (आज-कल पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर) स्थित एक प्रदेश जो अब पश्चिमी पाकिस्तान मे है।
विशेष—दे० 'सिंधु'।
स्त्री० सैंधवी नामक रागिनी।
सिंधव†—पु०=सैंधव। (दे०)
सिंधवी—स्त्री०=सैंधवी (रागिनी)।
सिंधारा†—पु० [देश०] भेंट आदि के रूप मे सावन बदी तथा सुदी तृतीया के दिन विवाहिता कन्या के घर भेजे जानेवाले पकवान, मिठाइयाँ आदि।
सिंधी—वि० [हिं० सिंध] १ सिंध प्रदेश-सबधी। २. सिंध प्रदेश मे बनने या होनेवाला।
पु० १. सिंध प्रदेश का निवासी। २ सिंध देश का घोडा जो बहुत तेज चलनेवाला और सगवत होता है।
स्त्री० सिंध देश की भाषा।
सिंधु—पुं० [स०] १. समुद्र। सागर। २ एक प्रसिद्ध नद जो पजाब के पश्चिम भाग से होता हुआ सिंध देश मे समुद्र में मिलता है। ३. वरुण देवता। ४ सिंध नामक देश। ५ उक्त देश का निवासी। ६ हाथी के सूँड से निकलनेवाला पानी। ७ हाथी का मद। ८. कुछ लोगो के मत से चार और कुछ लोगों के मत से सात की सख्या का सूचक शब्द। ९ खूब सफेद और साफ सोहागा। १०. सिंधुआर या निर्गुंडी का वृक्ष। ११. सपूर्ण जाति का एक राग जो मालकोश का पुत्र कहा गया है।
स्त्री० एक छोटी नदी जो यमुना मे मिलती है।
सिंधुआर—पु० [स० सिंधुवार] निर्गुंडी। सँभालू।
सिंधु-कन्या—स्त्री० [स० प० त०] सिंधु की पुत्री, लक्ष्मी।
सिंधु-कफ—पु० [स० प० त०] समुद्र-फेन।
सिंधु-कालक—पु० [स० ब० स०] एक प्राचीन देश जो नैर्ऋत्य कोण मे था।
सिंधु-खेल—पु० [स० ब० स०] सिंध प्रदेश।
सिंधुज—वि० [स० सिंधु√जन् (उत्पन्न होना)+ट] १. सिंधु अर्थात् समुद्र से निकलने या समुद्र मे उत्पन्न होनेवाला। २ सिंधु देश मे उत्पन्न होनेवाला।
पु० १ सेंधा नमक। २ सिंधी घोडा। ३. शख। ४ पारा। ५ सोहागा।
सिंधु-जन्मा (न्मन्)—पु० [स० ब० स०] १ समुद्र से निकली हुई कोई वस्तु। २. सिंधुपुत्र, चन्द्रमा। ३ सिंधु-प्रदेश मे उत्पन्न होनेवाला व्यक्ति।
सिंधुजा—स्त्री० [स० सिंधुज-टाप्] १ सिंधु की पुत्री, लक्ष्मी। २ मोती का सीप या सीपी।
सिंधु-जात—पु० [स०] सिंधुज। (दे०)
सिंधु नंदन—पु० [स० सिंधु√नद् (हर्षित करना)+ल्यु-अन] सिंधुपुत्र, चन्द्रमा।
सिंधुपति—पु० [स० प० त०] १ सिंधु प्रदेश का शासक। २ जयद्रथ।
सिंधुपर्णी—स्त्री० [स० ब० स०] गभारी का पेड।
सिंधु-पुत्र—पु० [स० ष० त०] १. चन्द्रमा। २ तिंदुक जाति का वृक्ष। तेंदू।
सिंधुपुष्प—पु० [स० ष० त०, ब० स०] १. शख। २ कदम। कदब। ३. बकुल। मौलसिरी।
सिंधु-भैरवी—स्त्री० [स०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।
सिंधु-मंदारी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
सिंधु-माता—स्त्री० [स० सिंधु-मातृ] सरस्वती, जो नदियो की माता मानी जाती है।
सिंधुर—पुं० [स० सिंधु√रा (ग्रहण करना)+क] [स्त्री० सिंधुरा] १ हाथी। २. आठ की सख्या का वाचक शब्द।
सिंधुर-मणि—पु० [स० प० त०] गज-मुक्ता।
सिंधुर-वदन—पु० [स० ब० स०] गजवदन। गणेश।

सिंधुरागामी—वि० [सं०] स्त्री० सिंधुरागामिनी]=गजगामी। स्त्री० गज-गामिनी।

सिंधु-लवण—पु० [स०] सेंधा नमक।

सिंधुवार—पु० [स०] निर्गुंण्डी। सँभालू।

सिंधुविष—पु० [स०] हलाहल जो समुद्र-मथन करते समय निकला था।

सिंधु-शयन—पु० [स० व० स०] विष्णु।

सिंधु-संगम—पु० [सं०] १ वह स्थान जहाँ पर नदी और समुद्र मिलते हो। नदी और सागर का सगम-स्थल। २ नदियो का सगम-स्थल।

सिंधु-सुत—पु० [स० प० त०] जलधर नामक राक्षस जिसे शिव जी ने मारा था।

सिंधु-सुता—स्त्री० [स० प० त०] १ लक्ष्मी। २ सीप।

सिंधूरा—पु० [स० सिंधुर] सगीत मे एक प्रकार का राग।

सिंधूरी—स्त्री० [स० सिंधुर] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी। †स्त्री०= सिंदूरी।

सिंधोरा—पु० [स० सिंदूर+हिं० ओरा (प्रत्य०)] सिंदूर रखने की काठ की डिबिया।

सिंव—पु० दे० 'शिव'।

सिंवा—स्त्री० दे० 'शिवा'।

सिंवी—स्त्री० [स०] शिंबी (छीमी या फली)।

सिंसप—पु० [स० शिंशपा] शीशम का पेड।

सिंसपा—स्त्री०=शिंशपा (शीशम)।

सिंह—पु० [स०] [स्त्री० सिंहिनी] १ बिल्ली की जाति का, पर उससे बहुत बडा एक प्रसिद्ध हिंसक जतु जो अपने वर्ग मे सबसे अधिक पराक्रमी, बलवान् और देखने मे भव्य होता है। इसकी गरदन पर बडे-बडे बाल (केसर) होते हैं। शेर बबर। केसरी। २ लोक-व्यवहार मे, उक्त के आधार पर बल-वीर्य और श्रेष्ठता का सूचक शब्द। जैसे—पुरुष सिंह। ३ ज्योतिष मे, मेष आदि बारह राशियो मे से पाँचवी राशि। ४ छप्पय छद के सोलहवें भेद का नाम। ५ वास्तुकला मे ऐसा प्रासाद जिसमे बारह कोनो पर सिंह की मूर्तियाँ बनी होती थी। ६ एक प्रकार का आभूषण जो रथ के बैलो के माथे पर पहनाया जाता था। ७ वर्तमान अवसर्पिणी के २४ वें अर्हत् का चिह्न जो जैन लोग रथ यात्रा आदि के समय झडो पर बनाते हैं। ८ दिगम्बर जैन साधुओ के चार भेदो मे से एक। ९. सगीत मे एक प्रकार का राग। १० वेंकट गिरि का एक नाम। ११ एक प्रकार का कल्पित पक्षी। १२. लाल सहिंजन।

सिंह-कर्ण—पु० [स०] खिडकी या गवाक्ष का कोना।

सिंहकर्मा(र्मन्)—वि० [स० व० स०] सिंह के समान पराक्रम दिखानेवाला। पराक्रमी। वीर।

सिंह-केसर—पु० [स० प० त०] १ सिंह की गरदन पर के बाल। २ फेनी नामक पकवान का पुराना नाम। ३ बकुल। मौलसिरी।

सिंहग—पु० [स० सिंह√गम् (जाना)+ड] शिव का एक नाम।

सिंह-घोष—पु० [स० ष० त०, ब० स०, वा] एक बुद्ध का नाम।

सिंहच्छदा—स्त्री० [स० ब० स०] सफेद दूब।

सिंह-तुंड—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार की विकट मछली जो नदियो से सटी हुई चट्टानो की दरारो मे रहती है।

सिंह-द्वार—पु० [स०] १ प्राचीन भारतीय वास्तु मे, किले, नगर या महल का वह प्रधान और बडा द्वार, जिसकी बाहरी तरफ दोनो ओर सिंह की आकृतियाँ बनी होती थी। २ बडा और मुख्य द्वार। सदर फाटक।

सिंह-नंदन—पु० [स०] सगीत मे, ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

सिंह-नाद—पु० [स०] १ शेर की गरज या दहाड। २. प्रतियोगिता, युद्ध आदि के समय गरजकर की जानेवाली ललकार। जोरदार शब्दो मे ललकार कर कही जानेवाली बात। ३ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से सगण, जगण, सगण, सगण और एक गुरु वर्ण होता है। इसे कलहस और नदिनी भी कहते हैं। ४. सगीत मे, एक प्रकार का ताल। ५ शिव का एक नाम। ६ बौद्धो मे धार्मिक ग्रथो आदि का होनेवाला पाठ।

सिंहनादक—पु० [स० सिंह√नद् (ध्वनि करना) ण्वुल्-अक्, ब० स०] सिंघी नामक बाजा।

सिंहनादी (दिन्)—वि० [स० नाद+इन्] [स्त्री० सिंहनादिनी] १ जो सिंहनाद करता हो। २ जो सिंह के समान गर्जना करता हो। पु० एक बोधिसत्व का नाम।

सिंहनी—स्त्री० [स०] १ शेर की मादा। शेरनी। २ एक प्रकार का छद जिसके चारो चरणो मे क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती है। यह क्रम उलट देने पर जो रूप होता है उसे 'गाहिनी' कहते हैं।

सिंह-पर्णी—स्त्री० [स०] मापपर्णी।

सिंह-पिप्पली—स्त्री० [स०] सिंहली पीपल।

सिंह-पुच्छ—पु० [स०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

सिंह-पुच्छी—स्त्री० [स०] १ चित्रपर्णिका या चित्रपर्णी। २ वन उडद। मापपर्णी। ३ पिठवन। पृश्निपर्णी।

सिंह-पुरुष—पु० [स० उपमि० स०] १ सिंह के समान पराक्रमी पुरुष। २ जैनियो के नौ वासुदेवो मे से एक।

सिंह-पुष्पी—स्त्री० [स०] पृश्निपर्णी। पिठवन।

सिंह पौर—पु०=सिंह-द्वार।

सिंह भैरवी—स्त्री० [स०] सगीत मे भैरवी रागिनी का एक प्रकार या भेद।

सिंह-मल—पु० [स०] एक प्रकार की मिश्र धातु। पच-लौह।

सिंह-मुख—वि० [स० ब० स०] जिसके मुख की आकृति शेर के मुख की आकृति जैसी हो। पु० १ शिव का एक गण। २ एक राक्षस।

सिंह-मुखी—वि० [स०] सिंह-मुख। स्त्री० १. अडूसा। २ बाँस। ३ वन उडद। ४ एक प्रकार की खारी मिट्टी। ५ काली निर्गुण्डी या सँभालू।

सिंहयाना—स्त्री० [स० ब० स०] सिंह पर सवारी करनेवाली, दुर्गा।

सिंहल—पु० [स०] [वि० सिंहली] १ पीतल। २ टीन। ३ प्राचीन भारत के दक्षिण का एक द्वीप जो कुछ लोगो के मत मे आधुनिक 'लका' (देश) है। लका-द्वीप। ४ उक्त देश का निवासी। सिंहली।

सिंहलक—वि० [स० सिंहल+कन्] सिंहल-सबधी। सिंहल का। पु० १ पीतल। २ दारचीनी।

सिंहला—स्त्री० [सं० सिंहल-टाप्] १. सिंहल द्वीप। लंका। २ राँगा। ३. पीतल। ४ छाल या बकला। ५. दारचीनी।

सिंहली—वि० [सं० सिंहल+हिं० ई० (प्रत्य०)] सिंहल द्वीप में होनेवाला। लंका-संबंधी।
पुं० १ सिंहलद्वीप का निवासी। लंकानिवासी। २. सिंहल द्वीप का हाथी।
स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।

सिंहली पीपल—स्त्री० [सं० सिंह-पिप्पली] सिंहल में होनेवाली एक प्रकार की लता जिसके बीज दवा काम में आते हैं।

सिंहलीलिल—पुं० [सं०] १ संगीत में, एक प्रकार का ताल। २ कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति-बंध।

सिंह-वाहना—स्त्री० [सं० ब० स०] दुर्गा (जिनका वाहन सिंह है)।

सिंह-वाहिनी—स्त्री० [सं०] १ सिंह पर सवारी करनेवाली, दुर्गा। २ संगीत में, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सिंह-विक्रम—वि० [सं० ब० स०] घोड़ा जिसमें सिंह के समान शक्ति हो।
पुं० १ घोड़ा। २ संगीत में, एक प्रकार का ताल।

सिंह-विक्रांत—पुं० [सं०] १ शेर की चाल। २ शेर के समान पराक्रमी और वीर पुरुष। ३ घोड़ा। ४ ऐसे दंडक वृत्त जिनके प्रत्येक चरण में दो नगण और सात अथवा सात से अधिक यगण हों।

सिंह विक्रीड—पुं० [सं०] दंडक वृत्त का एक भेद जिसमें नौ से अधिक यगण होते हैं। इसका प्रयोग अधिकता से प्राकृत भाषा के कवियों ने किया है।

सिंह-विक्रीडित—पुं० [सं०] १ योग में एक प्रकार की समाधि। २ संगीत में, एक प्रकार का ताल। ३ दे० 'सिंह-विक्रीड'।

सिंह विजृंभित—पुं० [सं० ब० स०, उपमि० स०] बौद्ध मत में, एक प्रकार की समाधि।

सिंहस्थ—वि० [सं० सिंह√स्था (ठहरना)+क] सिंह राशि में स्थित कोई (ग्रह)। जैसे—सिंहस्थ वृहस्पति।
पुं० वह समय जब बृहस्पति सिंह राशि में होता है, और इसी लिए तब विवाह आदि कुछ शुभ कार्य वर्जित हैं।

सिंह-हनु—वि० [सं० ब० स०] जिसकी दाढ़ सिंह के समान हो।
पुं० गौतम बुद्ध के पितामह का नाम।

सिंहा—स्त्री० [सं०] १ करेमू का साग। २ कटाई। भटकटैया। ३ बहती। बन-भाँटा।
पुं० १ नाग देवता। २. सिंह लग्न। ३. वह समय जब सूर्य इस लग्न में रहता है।
†पुं०=नर-सिंघा (बाजा)।

सिंहाण (क)—पुं० [सं० सिंघ+आनच् पृषो० सिद्ध] १ लोहे पर लगनेवाला जंग या मोर्चा। २ नाक में से निकलनेवाला मल। रेंट। सींड।

सिंहानन—पुं० [सं० ब० स०] १ काला सँभालू। काली निर्गुंडी। २ अडूसा।
वि० सिंह के समान मुखवाला।

सिंहारव—पुं० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

सिंहार-हार†—पुं०=हर-सिंगार।

सिंहाली—स्त्री० [सं० सिंह+लच्+ङीप] १ सिंहली पीपल। सैंहली। २. दे० 'सिंहली'।

सिंहावलोकन—पुं० [सं०] १ सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. किये हुए कामों या बीती हुई बातों का स्वरूप जानने या बतलाने के लिए उन पर दृष्टिपात करना। ३ संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन या वर्णन। (रिट्रास्पेक्शन) ४. कविता में ऐसी रचना जिसमें किसी चरण के अंत में आये हुए कुछ शब्दों से ही फिर उसके बाद वाले चरण का आरंभ किया जाता है। जैसे—यदि पहले चरण के अंत में 'पारिजात' हो और उसके बादवाले चरण का आरंभ भी 'पारिजात' से हो तो यह सिंहावलोकन कहलाएगा। ५. साहित्य में, यमक अलंकार का एक प्रकार या भेद जिसमें छंद का अंत भी उसी शब्द में किया जाता है जिससे उसका आरंभ होता है।

सिंहावलोकनिक—वि० [सं०] १. सिंहावलोकन के रूप में या उसके सिद्धांत से संबंध रखनेवाला। जिसमें सिंहावलोकन होता हो। (रिट्रासपेक्टिव) २. दे० 'प्रतिवर्ती'।

सिंहावलोकित—भू० कृ० [सं०] जिसका या जिसके संबंध में सिंहावलोकन हुआ हो। (रिट्रास्पेक्टेड)

सिंहासन—पुं० [सं० सिंह+आसन, मध्य० स०] १ राजाओं के बैठने या देवमूर्तियों की स्थापना के लिए बना हुआ एक विशेष प्रकार का आसन जो चौकी के आकार का होता है और जिसके दोनों ओर शेर के मुख की आकृति बनी होती है। २. देवताओं का एक प्रकार का आसन जो कमल के पत्ते के आकार का होता है। ३ काम-शास्त्र में, सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक। ४ चंदन, रोली आदि का वह टीका या तिलक जो दोनों भौंहों के बीच में लगाया जाता है। ५ लोहे की कीट। मंडूर। ६ फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिसमें मनुष्य की आकृति में विभक्त २७ कोठे या खाने होते हैं। इन कोठों या खानों में नक्षत्रों के नाम भरे जाते हैं और उनसे शुभाशुभ फल जाना जाता है।

सिंहास्य—पुं० [सं० ब० स०] १ अडूसा। २ कचनार। ३ एक बड़ी मछली।

सिंहिका—स्त्री० [सं०] १ दाक्षायणी देवी की एक मूर्ति का रूप। २. एक राक्षसी जो कश्यप की पत्नी और राहु की माता थी। ३ ऐसी कन्या जिसके घुटने चलने के समय आपस में टकराते हों और इसी लिए जो विवाह के अयोग्य कही गई है। ४ शोभन नामक छंद। ५. कटकारी। भटकटैया। ६ अडूसा। ७ बन-भंटा।

सिंहिकेय—पुं० [सं० सिंहिका+ढक्-एय] सिंहिका (राक्षसी) के पुत्र राहु।

सिंही—स्त्री० [सं०] १ सिंह या शेर की मादा। शेरनी। सिंहनी। २ आर्या नामक छन्द का एक भेद। ३. राहु की माता, सिंहिका। ४ अडूसा। ५ थूहड़। ६ बन-मूँग। ७ पीली कौड़ी। ८ नर-सिंघा नाम का बाजा।
स्त्री०=सिंगी।

सिंहेश्वरी—स्त्री० [सं० ष० त०] दुर्गा।

सिंहोड़†—पुं०=सेहुँड़।

सिंहोदरी—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] सिंह की कमर की तरह पतली कमरवाली (सुन्दरी स्त्री)।

सिंहोन्नता—स्त्री० [स० ब० स०, उपमि० स०] वसंत-तिलका छद का दूसरा नाम ।

सिअरा†—वि० [स० शीतल] ठढा। शीतल।
पु० १. वृक्ष की छाया से युक्त स्थान जो साधारणत ठंढा होता है। २ छाँह। छाया।
†पु० =सियार (गीदड) ।

सिआर†—पुं०=सियार ।

सिउँ*—स्त्री०=सीमा ।
*विभ० से। उदा०—आन देव सिउँ नाँही काम ।—कबीर ।

सिएटो—पु०[अ० साउथ ईस्ट एशिया ट्रीटी आर्गेनाइजेशन के आरंभिक अक्षरो का समूह] दक्षिण-पूर्वी एशिया की सुरक्षा के उद्देश्य से स्थापित एक राजनीतिक सघटन जिसमे अमेरिका, ब्रिटेन, पाकिस्तान आदि राष्ट्र सम्मिलित हैं।

सिकंजबी—स्त्री० [फा० शिकजबीन] १ नीबू के रस या सिरके मे पकाया हुआ शरबत। २. मधुर पेय, जो जल मे नीबू का रस और चीनी मिलाकर तैयार किया जाता है।

सिकंजा†—पु०=शिकंजा ।

सिकदर—पु० [फा०] एक प्रसिद्ध यूनानी सम्राट् ।
पद—तकदीर का सिकदर=बहुत बडा भाग्यवान् आदमी।

सिकंदरा—पु० [फा० सिकदर] रेल-लाइन के किनारे लगाया जानेवाला वह ऊँचा खभा जिसके ऊपर हाथ के आकार की पटरियाँ लगी होती हैं। इन पटरियो के ऊपर उठे या नीचे गिरे हुए होने के सकेत से गाडियाँ आगे बढती या उस स्थान पर रुककर खडी रहती है। सिगनल ।

सिकटा—पु० [देश०] टूटे हुए मिट्टी के बरतन या खपडे का छोटा टुकडा।

सिकडी—स्त्री० [सं० शृंखला] १. जजीर । शृंखला। २. किवाड बन्द करने के लिए उसमे लगाई जानेवाली जजीर। साँकल। ३ जजीर के आकार का गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना । ४. कमर मे पहनने की करधनी। ५ जजीर के आकार की कोई बनावट या रचना ।

सिकता—स्त्री० [स० सिक+अतच्-टाप्] १ रेतीली भूमि। २ रेत। बालू। ३ चीनी। ४ पथरी (रोग) । ५. लोनी का साग ।

सिकता-मेह—पु० [म० मध्य० स०] प्रमेह का एक भेद जिसमे पेशाब के साथ रेत के-से कण निकलते हैं।

सिकतिल—वि० [म० सिकता+इलच्] रेतीला । बलुआ ।

सिकत्तर†—पु० [अ० सेक्रेटरी] मत्री।

सिकदार†—पुं० [अ० सिक =विश्वसनीय] विश्वसनीय और बलवान् अधिकारी या रक्षक। उदा०—एक कोटु पच सिकदारा,पंचे मांगहि हाला।—कबीर ।

सिकमार†—पु० [?] जगली बिल्ली की तरह का एक जन्तु ।

सिकरी†—स्त्री०=सिकडी।

सिकली—स्त्री० [अ० सैकल] १ हथियारो की धार तेज करने और उन्हे चमकाने के उद्देश्य से उन्हे विशेष प्रकार से रगडकर माँजने का काम। २ उक्त की मजदूरी।

सिकलीगर—पुं० [हिं० सिकली (अ० सैकल)+फा०गर] सिकली करनेवाला कारीगर । हथियारो को माँजने तथा उन पर सान धरनेवाला कारीगर ।

सिकसोनी—स्त्री० [देश०] काकजघा नामक वनौषधि ।

सिकहर†—पुं० [सं० शिक्या] छत मे टाँगा जानेवाला छीका ।
वि० दे० 'छीका' ।

सिकहुली—स्त्री० [हिं० सीक+औली] मूंज, कास आदि की बनी हुई छोटी डलिया ।

सिकार†—पुं०=शिकार ।

सिकारी†—वि०, पु०=शिकारी।

सिकुड़न—स्त्री० [हिं० सिकुडना] १ सिकुडे हुए होने की अवस्था या भाव। वह स्थिति जिसमे कोई वस्तु पहले की अपेक्षा कम विस्तार घेरने लगती है। २. किसी चीज के सिकुड़ने के कारण उसके तल या विस्तार मे पडनेवाला बल । शिकन। जैसे—चाँदनी की सिकुडन, माथे की सिकुडन।

सिकुड़ना—अ०[स० सकुचन] १ ताप, शीत आदि के प्रभाव से अथवा और किसी कारण से किसी विस्तृत पदार्थ का ऐसी स्थिति मे आना या होना कि उसका तल या विस्तार कुछ कम हो जाय। आयाम मे खिंचाव आना। आकुचित होना। बटुरना। 'फैलना' का विपर्याय। जैसे—धुलने से कपडा सिकुडना । चलने या बैठने से चाँदनी सिकुडना । २ व्यक्ति अथवा उसके अगो के सबंध मे ऐसी स्थिति मे आना या होना कि अपेक्षया विस्तार कम हो जाय । जैसे—(क) टूटने से हाथ या पैर सिकुडना । (ख) भीड या सरदी के कारण किसी का कोने में सिकुडना ।
सयो० क्रि०—जाना।

सिकुरना†—अ०=सिकुडना

सिकोड़ना—स० [हिं० सिकुडना] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज सिकुड जाय। २. (प्राणी द्वारा) अपने अग या अगो को इस प्रकार एक दूसरे से सटाना कि वह पहले की अपेक्षा कम जगह घेरने लगे ।

सिकोरना†—स०=सिकोड़ना ।

सिकोरा*—पुं० दे० 'कसोरा'।

सिकोली—स्त्री० [देश०] कास मूज,बेंत या बाँस की कमाचियो की बनी हुई टोकरी।

सिकोही—वि० [फा० शिकोह=तड़क-भडक] १. आन-बानवाला । २ गरबीला । ३. बहादुर । वीर ।

सिक्कक—पुं० [स०√सिक् (सीचना)+ककन्] बाँसुरी मे लगाने की जीभी या उसका स्वर मधुर बनाने के लिए लगाया हुआ तार ।

सिक्कड़—पु० [हिं० सिकडी] लोहे आदि की बडी और मोटी सिकडी।

सिक्कर†—पु०=सिक्कड।

सिक्का—पु० [अ० सिक्क:] १. प्राचीन काल मे, वह ठप्पा जिससे धातु-खडो की प्रामाणिकता और शुद्धता सूचित करने के लिए विशिष्ट चिह्न अकित किये जाते थे। मोहर करनेवाला ठप्पा। २ आज-कल निर्दिष्ट मूल्य का वह धातु-खड जो किसी राजकीय टकसाल मे ढला या ठप्पे से दबाकर बनाया गया हो और पदार्थों के क्रय-विक्रय, लेन-देन

आदि विनिमय के साधन के रूप मे काम आता हो। जैसे—रुपया, अठन्नी, पैसा, अशरफी, गिन्नी आदि। (कॉयन) ३. किसी व्यक्ति का ऐसा अधिकार, प्रभाव या प्रभुत्व जिसके आगे प्राय. सभी लोग विशेषत' विरोधी लोग दबते या सिर झुकाते हो।

मुहा०—सिक्का जमना या बैठना=ऐसी आतकपूर्ण स्थिति होना जिससे सब लोग दबे रहे या विरोध न कर सके।

४. खरीदे हुए माल का दिया जानेवाला नगद दाम। (दलाल) ५ लकडी का एक विशिष्ट टुकडा जो नाव के अगले भाग पर लगा होता है। ६ धातु की वह नली जिससे मशाल पर तेल डाला जाता है।

सिक्की—स्त्री० [अ० सिक्क:] १ छोटा सिक्का। २ आठ आने वाला सिक्का, अठन्नी।

सिक्के—क्रि० वि० [हिं० सिक्का] सिक्को के रूप मे अर्थात् नगद पूरा दाम देने पर।

विशेष—महाजनी बोल-चाल मे इस शब्द का प्रयोग यह सूचित करने के लिए होता है कि जो दाम दिया या लिया जायगा उसमे किसी तरह की छूट या बट्टा अथवा दलाली आदि की रकम सम्मिलित नही होगी।

सिक्ख—पु० [स० शिष्य] १. शिष्य। चेला। उदा०—कबीर गुरु बैस बनारसी, सिक्ख समुदर पार।—कबीर। २ गुरु नानक के पथ का अनुयायी। ३ इन अनुयायियो का वर्ग जिसने अब एक स्वतत्र जाति का रूप धारण कर लिया है।

विशेष—ये अनुयायी केश, कंघा, कडा, कृपाण और कच्छा (जाँघिया) सदा धारण करते है।

*स्त्री० [स० शिक्षा] सीख। शिक्षा।

स्त्री० [स० शिखा] शिखा। चोटी।

सिक्खी—स्त्री० [हिं० सिख+ई (प्रत्य०)] सिक्ख धर्म-मत।

सिक्खेकार—पु० [हिं० सीखना+कार] [भाव० सिक्खेकारी] वह जिसने किसी गुरु या विशेषज्ञ से किसी कला या विद्या की नियमित रूप से और यथेष्ट शिक्षा पाई हो। 'अताई' का विपर्याय। (सगीतज्ञ)

सिक्त—भू० कृ० [स०√सिच् (सीचना)+क्त] सीचा हुआ। सिंचित। २. भीगा हुआ। तर।

सिक्थ—पु० [स०] १. भात। २. उबाले हुए चावलो या भात का कोई दाना। सीथ। ३. भात का कौर या ग्रास। ४. पिंड-दान के लिए बनाया हुआ भात का पिंड। ५ मोतियो का ऐसा गुच्छा जो तौल मे एक धरण या ३२ रत्ती हो। ६ मोम। ७. नील।

सिखंड†—पु०=शिखड।

सिखंडी†—पु०=शिखडी।

सिख—पु०=सिक्ख।

†स्त्री० १ शिखा (चोटी)। जैसे—नख-सिख। २ सीख (शिक्षा)।

सिखड़ा†—पु० [हिं० सिख] सिख के लिए उपेक्षासूचक शब्द।

सिखर†—पं०=शिखर।

†वि० चरम। अत्यत।

सिखरन†—स्त्री०=शिखरन (श्रीखड)।

सिखलाना—स०=सिखाना।

सिखवन†—स्त्री०=सिखावन।

सिखा†—स्त्री०=शिखा।

सिखाना—स० [हिं० सीखना का प्रे० रूप] १ किसी को कोई नया काम, बात या विषय सीखने मे प्रवृत्त करना। २ सब प्रकार की सबद्ध बातें बताकर शिक्षित या प्रशिक्षित करना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी व्यक्ति को विशेष ढग से कोई काम करने के लिए अच्छी तरह समझाना-बुझाना।

मुहा०—(किसी को) सिखाना-पढ़ाना=किसी से विशेष प्रकार का आचरण कराने के उद्देश्य से उसके मन मे कोई बात अच्छी तरह बैठाना।

सिखावन—स्त्री० [पु० हिं० सिखावना=सिखाना] १ सिखाने की क्रिया या भाव। २ सिखाया हुआ काम, बात या विद्या। ३ उपदेश। नसीहत। शिक्षा।

सिखावना*—स०=सिखाना।

सिखिर†—पु० १.=शिखर। २.=शिशिर।

सिखी†—पु०=शिखी।

सिगता†—स्त्री०=सिक्ता।

सिगनल—पु० [अ०] १ किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए अथवा कोई कार्य आरभ कराने के लिए किया जानेवाला सकेत। २ रेल-लाइन के पास लगा हुआ सिकदरा (देखें)।

सिगरा†—वि० [स० समग्र] [स्त्री० सिगरी] सब। सपूर्ण। समस्त। उदा०—सिगरे जग माँझ हँसावत है। रघुबसिन्ह पाप नसावत है।—केशव।

सिगरेट—पु० [अ०] कागज मे गोलाकार लपेटा हुआ सुरती का चूरा जिसका धुआँ पीया जाता है, और जिसके अनुकरण पर हमारे यहाँ बीडी बनी है।

सिगार—पु० [अ०] एक विशेष प्रकार का बडा तथा मोटा सिगरेट। चुरूट।

सिगोती—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

सिगोन—स्त्री० [स० सिकता, सिगता] रेत मिली लाल मिट्टी जो प्राय नालो के पास पाई जाती है।

सिचान*—पु०=सचान (बाज पक्षी)।

सिच्छक†—पु०=शिक्षक।

सिच्छा†—स्त्री०=शिक्षा।

सिजदा—पु० [अ० सज्द] १. घुटने टेककर और सिर झुकाकर किया जानेवाला प्रणाम। (विशेषत ईश्वर-प्रार्थना के समय)

सिजल—वि० [हिं० सजीला] १. जो रूप-रग के विचार से देखने मे अच्छा हो। सजा हुआ। सुकर। २. किसी की तुलना मे, बढिया। जैसे—सिजल मिठाई।

सिजली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम मे आता है।

सिझना—अ० दे० 'सीझना'।

सिझान—स्त्री० [हिं० सीझना] १. सीझने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ व्यापारिक क्षेत्र मे, दलाली, ब्याज आदि के रूप मे मिलनेवाला धन। क्रि० प्र०—सिझाना।—सीझना।

सिझाना—स० [स० सिद्ध] १ आँच पर पकाकर गलाना। २ कष्ट देना। ३. मिलने के योग्य कराना। प्राप्य कराना। जैसे—हम्ही ने तुम्हारी

दलाली सिझा दी। ४ अनुचित रूप से या बहकाकर वसूल करना। उतारना। जैसे—उन्होंने जुए मे उनसे सौ रुपए सिझा लिए। (बाजारू) ५ खाल को विशिष्ट प्रक्रियाओ से पक्का और मुलायम करना। (टैनिंग) ६. विशेष दे० 'सीझना'।

सिटकिनी—स्त्री० [अनु० सिट-सिट] खिडकियो, दरवाजो को अदर से बद करने के लिए उनमे लगायी जानेवाली एक प्रकार की विदेशी कुडी जो ऊँची उठाये जाने पर ऊपरी चौखट से जा चिपकती है।

सिटपिटाना—अ०[अनु०]प्राय. असमजस मे पड़ने के कारण और किसी के प्रश्न का उसे तत्काल ठीक या स्पष्ट उत्तर न दे सकने की दशा मे कुछ लज्जित होकर इधर-उधर करने लगना।

अ० [हिं० सीटना] १.खिन्न तथा व्यथित होकर अनुनय-विनय करना। २ इधर-उधर की हाँकना तथा वढ-बढकर बोलना

सिटी—पु०[अं०] नगर। शहर। जैसे—कानपुर सिटी, बनारस सिटी।

सिट्टी—स्त्री० [हिं० सीटना] सीटने अर्थात् बहुत बढ-बढ कर बोलने की क्रिया या भाव।

मुहा०—**सिट्टी गुम होना या भूल जाना**=इस प्रकार घबरा या सिटपिटा जाना कि मुँह से उत्तर तक न निकल सके।

सिट्ठी†—स्त्री०=सीठी।

सिठना†—पु०=सीठना।

सिठनी†—स्त्री०=सीठनी।

सिठाई—स्त्री०[हिं० सीठी] सीठे होने की अवस्था या भाव। सीठापन। सीठी।

सिड—स्त्री० [हिं० सिडी]उन्माद या पागलपन का एक हलका रूप जिसमे आदमी हठपूर्वक कोई काम करता चलता है और रोकने या समझाने पर भी नही मानता। झक। सनक।

क्रि० प्र०—चढना।—सवार होना।

सिड-बिल्ला—पु० [हिं० सिडी+बिल्ला] [स्त्री० सिडबिल्ली]१ पागल। सिडी। २ बुद्धू। बेवकूफ।

सिड़ी—वि०[स० श्रृणीक] [स्त्री० सिडिन] जिसे सिड नामक रोग हो। झक्की। सनकी।

सिडीपन—पु० [हिं०] सिडी होने की अवस्था या भाव।

सिणगा*—पु०=श्रृगार। (डिं०)

सितबर—पु०[अं० सेप्टेंबर] पाश्चात्य पचाग मे वर्ष का नवाँ महीना जो अगस्त के बाद और अक्तूबर से पहले पडता है। यह सदा ३० दिनो का होता है।

सित—वि०[स०] [भाव० सितता]१ उजला। श्वेत। सफेद। २ चमकीला और साफ। स्वच्छ।

पु०१ शुक्र नामक ग्रह। २ शुक्राचार्य का एक नाम। ३. चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। ४ चीनी। शक्कर। ५ चन्दन। ६ सफेद कचनार। ७ मूली। ८. सफेद तिल। ९ भोजपत्र। १० चाँदी। रजत।

सित-कंठ—वि०[स० शितिकठ] जिसका गला सफेद हो।

पु०१ शिव। २ दात्यूह पक्षी। मुरगाबी।

सितकर—पु०[स०]१ भीमसेनी कपूर। २ चन्द्रमा।

सितकर्णी—स्त्री०[स०] अडूसा। वासक।

सित-काच—पु०[स० ब० स०, मध्य० स० वा]१ हलकी शीशा। २. बिल्लौर।

सितकारिका—स्त्री० [स० सित√कृ (करना)+ण्वुल—अक, टाप्-इत्व] बरियार। बला (पौधा)।

सित-कुंजर—पु०[स० मध्य० स०]१ ऐरावत हाथी। २ इन्द्र।

सित-कुंभी—स्त्री०[स० मध्यम० स०] सफेद पाँडर। श्वेत पाटल (वृक्ष)।

सितक्षार—पु०[सं० मध्य० स०, ब० स०] सोहागा।

सितच्छद—पु०[स० ब० स०]१ हस। २. लाल सहिजन।

सितच्छदा—स्त्री०[स० सितच्छद—टाप्] सफेद दूब।

सितता—स्त्री०[स० सित+तल्—टाप्] सित अर्थात् सफेद होने की अवस्था, गुण या भाव। सफेदी।

सित-तुरग—पु०[स० ब० स०] अर्जुन।

सित-दीधिति—पु०[स० ब० स०] सफेद किरणोवाला। चन्द्रमा।

सित-द्रुम—पु०[स० मध्य० स०] १ अर्जुन वृक्ष। २ मोरट नामक क्षुप।

सित-पक्ष—पु०[स० ब० स०] हस।

सित-पच्छ*—पु०=सित-पक्ष।

सितपर्णी—स्त्री०[स०] अर्कपुष्पी। अधाहुली।

सित-पुष्प—पु०[स० ब० स०]१ तगर का पेड या फूल। गुल चाँदनी। २ सिरिस का पेड। ३ पिंड खजूर। ४ एक प्रकार का गन्ना।

सित-पुष्पा—स्त्री० [स० सितपुष्प-टाप्] १. बला। बरियार। २ कघी (पौधा)। ३ चमेली। मल्लिका। ४ सफेद कुष्ठ।

सित-पुष्पी—स्त्री०[स० सितपुष्प—ङीप्] १ सफेद अपराजिता। २. केवटी मोथा। ३ काँसा नामक तृण। ४ पान का पौधा। नागवल्ली। ५ नागदती।

सित-प्रभ—पु०[स० ब० स०] चाँदी।

सित-भानु—पु०[स० ब० स०] चन्द्रमा।

सितम—पु० [फा०]१ ऐसा क्रूर कार्य जो दूसरो पर विशेषत निरीहो पर बलात् किया जाय। ३ शासक या अधिकारी द्वारा अपनी प्रजा पर किया जानेवाला अत्याचार। ३ अनर्थ। गजब।

मुहा०—**सितम टूटना**=बहुत बडा अनर्थ होना। भारी विपत्ति या सकट आना। **सितम ढाना**=बहुत बडा अनर्थ या अत्याचार करना।

सितमगर—वि०[फा०] [भाव० सितमगरी] दूसरो पर विशेषत निरीहो पर अत्याचार करनेवाला। दुखियो तथा बेगुनाहो को सतानेवाला।

सितमणि—स्त्री०[स० ब० स०, मध्य० स०] बिल्लौर। स्फटिक।

सित-माष—पु०[स०] बोडा। लोबिया। राज-माष।

सित-रश्मि—पु०[स० ब० स०] सफेद किरणोवाला। चन्द्रमा।

सित-राग—पु०[स० ब० स०] चाँदी। रजत।

सित-रुचि—पु०[स० ब० स०] चन्द्रमा।

सितली—स्त्री०[स० शीतल] बेहोशी या अधिक दर्द के समय निकलनेवाला पसीना।

क्रि० प्र०—छूटना।

सित-सागर—पुं०[स० मध्यम० स०] क्षीर सागर।

सित-सिंधु—पु०[स० मध्य० स०]१ क्षीर सागर। २. गगा।

सित-हूण—पु०[स० मध्य० स०] हूणो की एक शाखा।

सितांक—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार की मछली।

सितांग—पुं०[सं० ब० स०]१. श्वेत रोहितक वृक्ष। सफेद रोहेड़ा। २ बेला। ३ कपूर। ४. शिव।

सितांबर—वि०[सं० ब० स०]=श्वेतांबर।

सितांशु—पुं०[सं० ब० स०]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

सितांशुक—वि०[सं० ब० स०] श्वेत वस्त्रधारी। सफेदपोश।

सिता—स्त्री०[सं० सित—टाप्]१ चन्द्रमा का प्रकाश। चन्द्रिका। चाँदनी। २. चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। ३. चीनी। ४. सफेद दूब। ५. मद्य। शराब। ६ त्रायमाणा लता। ७. चमेली। मल्लिका। ८ सफेद भटकटैया। ९ बकुली। सोमराजी। १० बिदारीकंद। ११. वच। १२. अधाहुली। १३. सिंहली पीपल। १४. गोरोचन। १५ चाँदी। १६. सफेद गदहपूरना।

सिताइश—स्त्री०[फा०] तारीफ। प्रशंसा। वाहवाही।

सिताखंड—पुं०[सं०]१. मधु शर्करा। शहद से बनाई हुई शक्कर। २ मिसरी।

सितानन—वि०[सं० ब० स०] सफेद मुँह वाला।
पुं० १ गरुड। २. बेल का पेड़।

सिताब†—क्रि० वि० [फा० शताब] १ शीघ्र। जल्दी। २. सहज मे। उदा०—नूपुर के ऊपर बढी कहत न बनत सिताब।—विक्रम।

सिताबी†—क्रि० वि० दे० 'सिताब'।
स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।
†स्त्री० महताबी नाम की आतिशबाजी। उदा०—सिताबी मोड़ रहा विधुकांत, बिछा है सेज कमलिनी जाल।—प्रसाद।

सिताब्ज—पुं० [सं० कर्म० स०] सफेद कमल।

सिताभ—पुं० [सं० ब० स०] कपूर।

सितार—पुं० [फा० सेहतार]१. वीन की तरह का, पर उससे छोटा एक प्रसिद्ध बाजा, जिसके तारो को तर्जनी मे पहनी हुई मिराब से झनकारते है तथा इस प्रकार राग-रागिनियाँ निकालते हैं। २ उक्त वाद्य की ध्वनि या उससे निकलनेवाला स्वर-क्रम।

सितारबाज—पुं० [फा० सेहतारबाज] [भाव० सितारबाजी] १ वह जो सितार बजाकर अपनी जीविका अर्जित करता हो। सितारिया। २. सितार बजाने का शौकीन। ३. सितार बजाने की कला मे पारगत।

सितारा—पुं०[सं० सप्त तारक से फा० सितार:]१. आकाश का तारा या नक्षत्र। २. मनुष्य का भाग्य जो आकाश के ग्रहों और नक्षत्रो से प्रभावित माना जाता है।
मुहा०—सितारा चमकना=भाग्योदय होना। सितारा बुलन्द होना=सितारा चमकना। सितारा मिलना=ग्रह मैत्री मिलना। गणना बैठना। (फलित ज्योतिष)
३. रुपहले या सुनहले पत्तरो के छोटे गोलाकार टुकडे जो कपडो आदि की शोभा के लिए टाँके जाते या गाल और माथे पर सौन्दर्य बढाने के लिए चिपकाये जाते हैं। चमकीला।
†पुं० [हिं० सितार]सितार नामक ऐसा बाजा जो अपेक्षया अधिक बडा हो।

सितारा-पेशानी—वि०[फा०](घोड़ा) जिसके माथे पर सफेद टीका या बिन्दी हो। (ऐसा घोड़ा बहुत ऐबी समझा जाता है।)

सितारिया—पुं०[हिं० सितार+इया (प्रत्य०)] वह जो सितार बजाकर अपनी जीविका अर्जित करता हो। वि० दे० 'सितारबाज'।

सितारी—स्त्री०[हिं० सितार+ई (प्रत्य०)] छोटी सितार (बाजा)। वि० सितार-संबंधी।

सितारे हिंद—पुं० [फा० सितारए हिन्द] एक प्रकार की उपाधि जो ब्रिटिश शासन काल में बड़े लोगों को सम्मानार्थ दी जाती थी। जैसे—राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द।

सितालर्क—पुं० [सं० ब० स०] सफेद मदार।

सितालता—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. अमृतवल्ली। अमृतस्रवा। २ सफेद दूब।

सितालिका—स्त्री०[सं० ब० स० सितालता—टाप्-इत्व] तालावों मे होनेवाली सीपी।

सितावर—स्त्री०[देश०]एक प्रकार का बरसाती पौधा जो दवा के काम मे आता है। सर्पदंष्ट्रा।

सितावर—पुं० [सं० सिता√वृ (वरण करना)+अच्—टाप्] सुसना नामक साग। सिरियारी।

सितावरी—स्त्री०[सं० सितावर-ङीप्] ब्राह्मी। सोमराजी।

सिताश्व—पुं०[सं० ब० स०]१. अर्जुन का एक नाम। २. चन्द्रमा।

सितासित—वि०[सं० द्व० स०] श्वेत और श्याम। सफेद और काला।
पुं०१. बलदेव। २ शुक्र और शनि ग्रह जो क्रमशः सफेद और काले हैं। ३ गंगा और यमुना जिनका जल क्रमश: सफेद और काला है। ४ आँख का एक रोग।

सिताह्वय—पुं० [सं० ब० स०] १. शुक्र ग्रह। २. सफेद रोहित वृक्ष। ३ सफेद फूलोंवाला सहिजन। ४ सफेद तुलसी।

सिति—वि०=शिति (सफेद)।

सितिकंठ†—वि०, पुं०=शितिकंठ।

सितिमा—स्त्री०[सं० सित+इमनिच्] श्वेतता। सफेदी।

सितिवार—पुं० [सं० शितिवार]१. सुसना नामक साग। २ कुटज। कुड़ा।

सितिवास—पुं०[सं० शितिवासस् ब० स०] (नीले वस्त्रवाले) बलराम।

सितुही†—स्त्री० [सं० शुक्तिका] ताल की सीपी। सुतुही।

सितून—पुं०[फा०] १. स्तंभ। खंभा। २ चाँड़। थूनी। ३. मीनार। लाट।

सितेतर—वि० [सं० पंच० त०] (श्वेत से भिन्न) काला या पीला।
पुं०१. काला धान। २ कुलथी।

सितोत्पल—पुं० [सं० मध्य० स०] सफेद कमल।

सितोदर—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० सितोदरा] श्वेत उदर वाला।
पुं० कुबेर का एक नाम।

सितोपल—पुं०[सं० कर्म० स०]१ खरिया मिट्टी। दुद्धी। २ बिल्लौर। स्फटिक।

सितोपला—स्त्री०[सं० सितोपल—टाप्]१ चीनी। २ मिसरी।

सित्त† —वि०[सं० शत] सौ।
वि० [सं० सप्त] सात।

सिथिल*—वि०=शिथिल।

सिदका†—पुं०=सदका।

सिदना† —अ०, स०=सीदना।

सिदरा—पु०[फा० सेह =तीन+दर] [स्त्री० अल्पा० सिदरी] तीन दरो वाला कमरा या दालान।

सिदामा†—पु०=श्रीदामा।

सिदिक—वि० [अ० सिद्दीक] सच्चा। सत्यनिष्ठ।

सिदौसी†—अव्य०=सुदौसी।

सिद्ध—वि०[स०] [भाव० सिद्धि, सिद्धता] १ (काम या बात) जिसका साधन या साधना हो चुकी हो। अच्छी तरह पूरा किया हुआ। जैसे—उद्देश्य या कार्य सिद्ध होना। २ (आध्यात्मिक साधन) जो पूरा हो चुका हो या पूरा किया जा चुका हो। जैसे—मत्र सिद्ध होना। ३ जिसने किसी काम मे पूरी दक्षता या सफलता प्राप्त की हो। दक्ष और सफल। जैसे—सिद्धहस्त। ४. (व्यक्ति) जिसने योग की सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हो। जैसे—सिद्ध पुरुष, सिद्ध महात्मा। (बात, मत या विषय) जो तर्क प्रमाण आदि के द्वारा ठीक या सत्य मान लिया गया हो या माना जाता हो। (एस्टैब्लिश्ड) जैसे—(क) अब यह सिद्ध हो चुका है कि भारी चीजें भी हवा मे उड सकती हैं। (ख) अब यह सिद्ध हो चुका है कि अणु-शक्ति के द्वारा बहुत बडे-बडे काम सहज मे पूरे हो सकते है। ५ जो प्रमाण, युक्ति आदि के द्वारा ठीक ठहर चुका हो। प्रमाणित। (प्रूव्ड) जैसे—उन्होने अपना पक्ष सिद्ध कर दिखलाया। ६ जो नियमो, विधियो, सिद्धातो आदि के अनुसार ठीक हो। शुद्ध। जैसे—व्याकरण से सिद्ध प्रयोग अथवा शब्द का रूप। ७ (खाद्य पदार्थ) जो आग पर रखकर उबाला, पकाया या सिझाया गया हो। जैसे—सिद्ध अन्न। ८ (कथन या वचन) जो ठीक ठहरा या पूरा उतरा हो। जैसे—किसी का आशीर्वाद (या भविष्यवाणी) सिद्ध होना। ९ (वाद या विवाद) जिसका निर्णय या फैसला हो चुका हो। १०. (ऋण या देन) जो चुकाया जा चुका हो। ११ जो नियम, सिद्धात आदि के अनुसार ठीक तरह से होता हो। जैसे—जन्म-सिद्ध अधिकार, स्वभाव-सिद्ध बात। १२ जो किसी अभिप्राय या उद्देश्य के अनुकूल कर लिया गया हो। जैसे—उसे तो तुमने खाली बातो से ही सिद्ध कर लिया। १३ बनाकर तैयार किया हुआ। १४ प्रसिद्ध। विख्यात।

पु० १ वह जो किसी प्रकार की साधना पूरी करके उसमे पारगत हो चुका हो। साधना मे निष्णात। २ वह जिसने तपस्या, योग आदि के द्वारा किसी प्रकार की अलौकिक दक्षता, शक्ति या सिद्धि प्राप्त कर ली हो, अथवा जो मोक्ष का अधिकारी हो चुका हो। ३ वह जिसने अणिमा, महिमा आदि आठो सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हो और इसी लिए जिसमे अनेक प्रकार के अलौकिक तथा चमत्कारपूर्ण कृत्य करने की शक्ति आ गई हो। **विशेष**—मध्य युग मे ऐसे लोग अजर-अमर तथा परम पवित्र धर्मात्मा तथा डाकिनियो, देवो, यक्षो के स्वामी माने जाते थे।

४ ऐसा त्यागी या विरक्त जो आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा महात्मा या सत हो अथवा माना जाता हो।

मुहा०—सिद्ध-साधक बनना=एक व्यक्ति का सिद्ध का स्वाग रचना और दूसरे लोगों का उसकी अलौकिक सिद्धियो की प्रशसा करके उसका लाभ कराना। विशेष दे० 'साधक'।

५ एक प्रकार के गण देवता। ६. बौद्ध योगी। (नाथ सप्रदाय के अथवा अन्य हिन्दू योगियो से भिन्न) ७ अर्हत्। जिन। ८. ज्योतिष मे, एक प्रकार का योग जो सभी कार्यो के लिए शुभ माना गया है। ९. गुड। १० काला धतूरा। ११ सफेद सरसो।

सिद्धई†—स्त्री०[स० सिद्धि] पीसी और छानी हुई भाँग।

†स्त्री०[स० सिद्ध+ई (प्रत्य०)] सिद्धता।

सिद्धक—वि०[स० सिद्ध+कन्] कार्य सिद्ध करनेवाला।

पु०१ सँभालू। सिदुवार वृक्ष। २ शाल वृक्ष। साखू।

सिद्धक-साधक—पु० दे० 'सिद्ध-साधक'।

सिद्ध-काम—वि० [स० ब० स०] जिसकी कामनाएँ पूरी हो गई हो। सफल-मनोरथ।

सिद्ध-कामेश्वरी—स्त्री० [स० ष० त०] कामाख्या अर्थात् दुर्गा की एक मूर्ति या रूप।

सिद्धकारी (रिन्)—वि० [स० सिद्ध√ कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० सिद्धकारिणी] धर्मशास्त्रो के अनुसार आचरण करनेवाला।

सिद्ध-क्षेत्र—पु० [स० ष० त०]१ वह स्थान जहाँ योग या तत्र प्रयोग जल्दी सिद्ध हो। २ दडक वन के एक विशिष्ट क्षेत्र का नाम।

सिद्ध-गंगा—स्त्री० [स० ष० त०] आकाश-गगा। मन्दाकिनी।

सिद्ध-गति—स्त्री० [स, कर्म० स०, ब० स०] जैन मतानुसार वे कर्म जिनसे मनुष्य सिद्ध बनता या होता हो।

सिद्ध-गुटिका—स्त्री० [स० कर्म० स०]एक प्रकार की कल्पित मत्र-सिद्ध गोली जिसे मुँह मे रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत् शक्ति आ जाती है।

सिद्ध-ग्रह—पु०[स० मध्य ष० स०]उन्माद या पागलपन का विशेष प्रकार।

सिद्ध-जल—पु०[स० ब० स०]१ औटाया हुआ पानी। २ काँजी।

सिद्धता—स्त्री०[स० सिद्ध+तल्—टाप्]१ सिद्ध होने की अवस्था या भाव। सिद्धि। २ पूर्णता।

सिद्धत्व—पु०[स० सिद्ध+त्व]=सिद्धता।

सिद्ध-देव—पु० [स० कर्म० स०] शिव। महादेव।

सिद्ध-धातु—पु०[स० कर्म० स०] पारा। पारद।

सिद्ध-नाथ—पु०[स० ष० त०] सिद्धेश्वर। महादेव।

सिद्ध-पक्ष—पु०[स० कर्म० स०]किसी तर्क का वह अश जो सिद्ध हो चुका हो और इसी लिए मान्य हो।

सिद्ध-पथ—पु०[स०] अतरिक्ष।

सिद्ध-पीठ—पु०[स० मध्य० स०]१ वह स्थान जहाँ योग या आध्यात्मिक अथवा तात्रिक साधन सहज मे सम्पन्न होता हो। २. कोई ऐसा स्थान जहाँ पहुँचने पर कोई कामना या कार्य प्राय. सहज मे सिद्ध होता हो।

सिद्ध-पुर—पु० [स० ष० त०] एक कल्पित नगर जो किसी के मत से पृथ्वी के उत्तरी छोर पर और किसी के मत से पाताल मे है। (ज्योतिष)

सिद्ध-पुष्प—पु०[स० ब० स०] करवीर। कनेर।

सिद्ध-भूमि—स्त्री० [स० कर्म० स०, ष० त०] सिद्ध-पीठ। सिद्ध-क्षेत्र।

सिद्ध-मातृका—स्त्री०[स० मध्य० स०]१. एक देवी का नाम। २ एक प्रकार की प्राचीन लिपि।

सिद्ध-यामल—पु०[स०] तत्र शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

सिद्ध-योग—पु०[स० मध्य० स०] ज्योतिष मे, एक प्रकार का योग जो सर्वकार्य सिद्ध करनेवाला माना गया है।

सिद्ध-योगी (गिन्)—पु०[स० कर्म० स०] शिव। महादेव।

सिद्धर—पु० [?] एक ब्राह्मण जो कंस की आज्ञा से कृष्ण को मारने आया था।

सिद्ध-रस—पु० [स० मध्य० स०] १ पारा। पारद। २ वह योगी जिसने पारा सिद्ध कर लिया अर्थात् रसायन बना लिया हो।

सिद्ध-रसायन—पु० [स० कर्म० स०] वह रसौषध जिसके सेवन से दीर्घ जीवन और यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है।

सिद्ध-वस्ति—पु० [स०] तैल आदि की वस्ति या पिचकारी। (आयुर्वेद)

सिद्ध-विद्या—स्त्री० [स० मध्य० स०] एक महाविद्या।

सिद्ध-विनायक—पु० [स० मध्य० स०] गणेश की एक मूर्ति।

सिद्ध-शिला—स्त्री० [स० ब० स०] ऊर्ध्व लोक का एक स्थान। (जैन)

सिद्ध-सरित्—स्त्री० [स० प० त०] १ आकाश-गंगा। २ गंगा।

सिद्ध-सलिल—पु० [स० ब० स०] काँजी। २ सिद्धजल।

सिद्ध-साधक—पु० [स० कर्म० स०] १. शिव। २ कल्प-वृक्ष जो सब प्रकार के मनोरथ सिद्ध करनेवाला माना गया है। ३ ऐसे दो व्यक्ति जिनमे से एक तो झूठ-मूठ सिद्ध या सत्पुरुष बन बैठा हो और दूसरा सबको उसकी सिद्धता का विश्वास दिलाकर उसके फन्दे मे फँसाता हो।

विशेष—प्राय ऐसा होता है कि कोई ढोंगी और स्वार्थी व्यक्ति सिद्ध या महात्मा बनकर कही बैठ जाता है, और उसका कोई साथी लोक मे उसका बड़प्पन या महत्त्व स्थापित करता फिरता और लोगों को लाकर उसके जाल मे फँसाता है। इसी आधार पर उक्त पद अपने तीसरे अर्थ मे प्रचलित हुआ है।

सिद्ध-साधन—पु० [स० प० त] १. सिद्धि प्राप्त करने के लिए योग या तंत्र की क्रिया करना। २. जो बात सिद्ध या प्रमाणित हो चुकी हो, उसे फिर से सिद्ध या प्रमाणित करना। ३. सफेद सरसो।

सिद्ध-साधित—वि० [स० ब० स०] जिसने किसी कला, विद्या या शास्त्र का ठीक तरह से अध्ययन किये बिना ही केवल प्रयोग या व्यवहार के द्वारा उसमे थोड़ी बहुत योग्यता प्राप्त कर ली हो। अताई।

सिद्ध-साध्य—वि० [स० प० त०] १ जो सिद्ध किया जा चुका हो। प्रमाणित। २. जिसे संपादित कर दिया गया हो।

पु० एक प्रकार का मन्त्र।

सिद्ध-सिंधु—पु० [स०] आकाश गंगा।

सिद्ध-सेन—पु० [स० तृ० स०] १. कार्तिकेय। २ संगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

सिद्ध-सेवित—पु० [स० तृ० त०] शिव का एक रूप।

सिद्ध-स्थाली—स्त्री० [स० प० त०] सिद्ध योगियो की वह बटलोई जिसके विषय मे यह माना जाता है कि उसमे से इच्छानुसार अपेक्षित अन्न निकाला जा सकता है।

सिद्ध-हस्त—वि० [स० ब० स०] १. जिसने कोई काम करते-करते उसमे कुशलता प्राप्त कर ली हो। जिसका हाथ किसी काम मे मँजा हो। २ जिसे कुछ विशेष प्रकार के काम करने का बहुत अच्छा अभ्यास हो।

सिद्धांगना—स्त्री० [स० प० त०] सिद्ध नामक देवताओं की स्त्रियाँ।

सिद्धांजन—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित अंजन जिसके विषय मे यह माना जाता है कि इसे आँख मे लगा लेने से भूमि के नीचे की वस्तुएँ (गड़े खजाने आदि) भी दिखाई देने लगती है।

सिद्धांत—पु० [स० सिद्ध+अंत, ब० स०] १ किसी विषय का वह अंत अर्थात् अंतिम निर्णय या निश्चय जो पूरी तरह से ठीक सिद्ध या प्रमाणित हो चुका हो और इसलिए जिसमे किसी प्रकार के परिवर्तन के लिए अवकाश न रह गया हो। २ किसी विषय मे तर्क-वितर्क, विचार-विमर्श आदि के उपरांत निश्चित किया हुआ ऐसा मत जो सभी दृष्टियों से ठीक माना जाता हो। असूल। उसूल। (प्रिंसिपुल) ३ कला, विज्ञान, शास्त्र आदि के संबंध मे ऐसी कोई मूल बात या मत जो किसी विद्वान् द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जिसे बहुत से लोग ठीक मानते है। उपपत्ति। (थिअरी) ४ धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रो मे वे सुविचारित तत्त्व जिनका प्रचलन किसी विशिष्ट वर्ग मे प्राय सर्वमान्य होता है। मत। (डाक्ट्रिन) ५ कोई ऐसा ग्रंथ जिसमे उक्त प्रकार की बातें या मत निरूपित हो। जैसे—सूर्य-सिद्धांत। ६ साधारण बोल-चाल मे किसी बात या विषय का तत्वार्थ या साराश। मतलब की या सारभूत बात।

सिद्धांतज्ञ—वि० [स० सिद्धांत√ज्ञा (जानना)+क] सिद्धांत की बात जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। विद्वान्। २. दे० 'सिद्धांतवादी'।

सिद्धांत-वाद—पु० [स० सिद्धांत√वद् (बोलना)+घञ्] यह विचार-प्रणाली कि अपने सिद्धांत का दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिए।

सिद्धांत-वादी(दिन्)—वि० [स० सिद्धांत√वद् (कहना)+णिनि] सिद्धांतवाद-संबंधी।

पु० वह जो अपने मान्य सिद्धान्तों के अनुसार चलता हो।

सिद्धांताचार—पु० [स० प० त०] तांत्रिकों का आचार अर्थात् एकाग्र चित्त से शक्ति की उपासना करना।

सिद्धांतित—भू० कृ० [स० सिद्धांत+इतच्] तर्क आदि के द्वारा प्रमाणित। साबित।

सिद्धांती—वि० [स० सिद्धांत] १ शास्त्रो आदि के सिद्धांत जाननेवाला। २ अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाला।

पु० तर्कशास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

सिद्धांतीय—वि० [स० सिद्धांत+छ+ईय] सिद्धांत-संबंधी।

सिद्धांबा—स्त्री० [स० कर्म० स०] दुर्गा।

सिद्धा—स्त्री० [स० सिद्ध-टाप्] १ सिद्ध की स्त्री। देवांगना। २. एक रागिनी। ३ चन्द्रशेखर के मत से आर्याछन्द का १५वाँ भेद जिसमे १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं। ४. ऋद्धि नामक ओषधि।

सिद्धाई—स्त्री० [स० सिद्ध+हि० आई] सिद्ध होने की अवस्था, गुण या भाव। सिद्धता।

सिद्धाग्नि—स्त्री० [स० सिद्ध+अग्नि] १ खूब जलती हुई अग्नि। २ ऐसी पवित्र अग्नि जो दूसरो को भी पवित्र और शुद्ध कर दे।

सिद्धान्न—पु० [स० कर्म० स०] पकाया हुआ अन्न। जैसे—भात, रोटी आदि।

सिद्धापगा—स्त्री० [स० प० त०] १ आकाश गंगा। २ गंगा नदी।

सिद्धायिका—स्त्री० [स०] जैनो की चौबीस देवियों में से एक जो अर्हतो का आदेश कार्यान्वित करती है।

सिद्धारि—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का मंत्र।

सिद्धार्थ—वि० [स० ब० स०] जिसका अर्थ अर्थात् उद्देश्य या कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हो। सफल-मनोरथ। पूर्णकाम।

पु० १ गौतम बुद्ध का एक नाम। २ स्कद या कार्तिकेय का एक अनुचर। ३ ज्योतिष मे, साठ सवत्सरो मे से एक। ४. महावीर स्वामी के पिता। (जैन)

सिद्धार्थक—पु० [स० सिद्धार्थ+कन्] १ श्वेत सर्षप। सफेद सरसो। २ एक प्रकार का मरहम।

सिद्धार्था—स्त्री० [स० सिद्धार्थ-टाप्] १ जैनो के चौथे अर्हत् की माता का नाम। २ सफेद सरसो।

सिद्धासन—पु० [स० मध्य० स०] ८४ आसनो मे से एक। (हठ योग)

सिद्धि—स्त्री० [स०] १ कोई काम या बात सिद्ध करने या होने की अवस्था या भाव। कोई काम ठीक तरह से पूरा करना या होना। २ कार्य का ठीक रूप मे पूरा उतरना। ३ कोई ऐसा उद्देश्य पूरा होना अथवा किसी ऐसे लक्ष्य तक पहुँचना जिसके लिए विशेष परिश्रम और प्रयत्न किया गया हो। (अटेनमेन्ट) ४ ऐसी विशिष्ट क्षमता, योग्यता या स्थिति जो उक्त प्रकार के परिश्रम या प्रयत्न के फल-स्वरूप प्राप्त हुई हो। (अटेन्मेन्ट) ५ परिणाम या फल के रूप मे होनेवाली प्राप्ति, लाभ या सफलता। जैसे—इस प्रकार की कहा-सुनी मे तो कोई सिद्धि होगी नही। ६ ऐसा तथ्य या निर्णय जिसके ठीक होने मे कोई सदेह न रह गया हो। ७ वाद-विवाद, व्यवहार आदि का अतिम निर्णय। झगडे या मुकदमे का फैसला। ८ किसी प्रकार की समस्या की मीमासा। ९ आपस मे होनेवाला किसी प्रकार का निर्णय। निश्चय। १० नाट्यशास्त्र मे, वह स्थिति जिसमे कोई उद्देश्य पूरा करनेवाले साधनो के प्रस्तुत होने का उल्लेख होता है। ११ छद शास्त्र मे, छप्पय के ४१वें भेद का नाम जिसमे ३० गुरु और ९२ लघु वर्ण और कुल १५२ मात्राएँ होती है। १२ तपस्या, तात्रिक उपासना, हठयोग की साधना आदि के फल-स्वरूप साधक को प्राप्त होनेवाली कोई विशिष्ट प्रकार की अलौकिक या लोकोत्तर क्षमता या शक्ति।
विशेष—योग-साधन से प्राप्त होनेवाली ये आठ सिद्धियाँ कही गई हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। बौद्ध तत्रो के अनुसार आठ सिद्धियाँ ये है—खड्ग, अजन, पादलेप, अतर्धान, रस-रसायन, खेचर, भूचर और पाताल।
१३ खाद्य पदार्थ या भोजन का आग पर पकाया जाना या पककर तैयार होना। १४ दक्ष-प्रजापति की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी। १५ गणेश की एक पत्नी का नाम। १६ दुर्गा का एक नाम। १७ ऋण का परिशोध। कर्ज चुकता होना। १८ कार्य-कुशलता। क्षमता। पटुता। १९ वृद्धि। २० सुख-समृद्धि। २१ मुक्ति। मोक्ष। २२ ऋद्धि या वृद्धि नामक ओषधि। २३ विजया। भाँग।

सिद्धि-गुटिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] =सिद्ध गुटिका।

सिद्धिद—वि० [स० सिद्धि√दा (देना)+क] सिद्धि देनेवाला।
पु० १ वटुक भैरव का एक नाम। २ पुत्र-जीव नामक वृक्ष।

सिद्धिदाता(तृ)—वि० [स० सिद्धि√दा (देना)+तृच्, ष० स०] [स्त्री० सिद्धिदात्री] सिद्धि देने या कार्य सिद्धि करानेवाला।
पु० गणेश का एक नाम।

सिद्धि-भूमि—स्त्री० [स० ष० त०] १ ऐसी भूमि जहाँ लोगो को सिद्धियाँ प्राप्त हुई हो। सिद्धि-स्थान। २ ऐसा स्थान जहाँ तपस्या या धार्मिक साधना करने पर सहज मे अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती है।

सिद्धि-योग—पु० [स० ष० त०] ज्योतिष मे, एक प्रकार का योग जो सब कार्य सहज मे सिद्ध करनेवाला माना जाता है।

सिद्धि-योगिनी—स्त्री० [स०]=सिद्ध-योगिनी।

सिद्धि-रस—पु०=सिद्ध-रस।

सिद्धि-स्थान—पु० [स० ष० त०] १ पुण्य स्थान। तीर्थ। २ आयुर्वेद के ग्रन्थो मे, वह अश जिसमे चिकित्सा-सबधी बातों का विवेचन होता है। ३ दे० 'सिद्धि-पीठ' और 'सिद्ध-भूमि'।

सिद्धीश्वर—पु० [स० ष० त०] १ शिव। महादेव। ३ एक प्राचीन पुण्य-क्षेत्र।

सिद्धेश्वर—पु० [स० ब० स० या कर्म० स०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १ बहुत बडा सिद्ध। महायोगी। २ महादेव। शिव। ३ गुल्तुर्रा। शखोदरी।

सिद्धोदक—पु० [स० ब० स०] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ काँजी।

सिद्धौघ—पु० [स० ष० त०] तात्रिको के आचार्यो या गुरुओ का एक वर्ग।

सिध†—वि०, पु०=सिद्ध।

सिधरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

सिधवाई†—स्त्री० [हिं० सीधा, सिधवाना] वह लकडी जो टेक के रूप मे तथा पहिये के स्थान पर लगाई जाती थी।

सिधवाना†—स० [हिं० सीधा] सीधा करना।

सिधाई—स्त्री० [हिं० सीधा] सीधापन। सरलता।

सिधाना*—अ०=सिधारना (जाना)।

सिधारना—अ० [सं० सिद्ध=पूरा किया हुआ] १ गमन या प्रस्थान करना। जाना। (सम्मान सूचक) २ इस लोक मे उठ जाना। परलोकवासी होना। ३ परलोक-गत या स्वर्गवासी होना। जैसे—वे तो कल रात्रि मे ही सिधार गये।
सयो० क्रि०—जाना।
†स०=सुधारना।

सिधि*—स्त्री०=सिद्धि।

सिधु†—पु०=सीधु।

सिधोई†—स्त्री०=सिधवाई।

सिध्म—वि० [स०] १. जिस पर सफेद दाग हो। २ जिसे श्वेत कुष्ठ नामक रोग हो।
पु० सेहुआँ नामक रोग।

सिध्मल—वि० [स० सिध्म+लच्] १ जिस पर सफेद दाग हो। २ जिसे श्वेत कुष्ठ रोग हुआ हो।

सिध्मा—स्त्री० [स० सिध् (गत्यादि)+मन-टाप्] १. कुष्ठ का दाग। २ कुष्ठ रोग।

सिध्य—पु० [स०√सिध् (गत्यादि)+क्यच्] पुष्य (नक्षत्र)।

सिध्र—वि० [स०√सिध् (गमनादि)+रक्] १. साधु। २ अपना प्रभाव दिखानेवाला।
पु० पेड। वृक्ष।

सिन—पु० [स०√षिञ् (बाँधना) नक्] १ शरीर। देह। २ पहनने के कपडे। पोशाक। ३. कौर। ग्रास। ४ कुभी नामक वृक्ष।
वि० १ एक आँखवाला। काना। २ सफेद।
पु० [अ०] अवस्था। उमर।

सिनक—स्त्री० [हिं० सिनकना] १. सिंनकने की क्रिया या भाव। २ सिनकने पर निकलनेवाला मल। नाक का मल।

सिनकना—स० [स० शिंघण] अन्दर से जोर की वायु निकालते हुए नाक का मल या कफ बाहर करना। जैसे—नाक सिनकना।

सिनि—पु० [स० शिनि] १. क्षत्रियो की एक प्राचीन शाखा। २ सात्यकि यादव के पिता का नाम।

सिनी†—पुं०=शिनि।
स्त्री०=सिनीवाली।

सिनीत—स्त्री० [देश०] सात रस्सियों को वटकर बनाई गई चिपटी रस्सी। (लश्करी)

सिनीवाली—स्त्री० [स०] १ एक वैदिक देवी जिसका आह्वान, वैदिक मत्रो मे सरस्वती आदि के साथ होता है। २ दुर्गा। ३. शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा। ४ चाँदनी रात।

सिनेट—स्त्री० [अ०] दे० 'सीनेट'।

सिनेटर—पुं० दे० 'सीनेटर'।

सिनेमा—पु० [अं०] १. चल-चित्र। २ वह भवन जिसमें लोगो को चल-चित्र दिखाये जाते हैं।

सिन्नी*—स्त्री० [फा० शीरीनी] १. मिठाई। २ मुराद पूरी होने पर अथवा देवता, पीर आदि को प्रसन्न करने के लिए चढाई तथा प्रसाद रूप मे बाँटी जानेवाली मिठाई।
क्रि० प्र०—चढाना।—बाँटना।

सिपर—स्त्री० [फा०] तलवार आदि का वार रोकने की ढाल। (शील्ड)

सिपरा†—स्त्री०=शिप्रा (नदी)।

सिपरिहा—पु० [?] क्षत्रियो की एक जाति या भेद।

सिपह—स्त्री० [फा०] समस्त पद मे पूर्वपद के रूप मे प्रयुक्त होनेवाला। सिपाह (सेना) का लघु रूप। जैसे—सिपहसालार=सेनापति।

सिपहगरी—स्त्री० [फा०] सैनिक का पद या पेशा।

सिपहरा*—पु०=सिपाही। (उपेक्षासूचक)

सिपह-सालार—पु० [फा० सिपह (=फौज)+सालार (=नेता)] सेना का प्रधान अधिकारी। सेना-पति।

सिपाई*—पु०=सिपाही।

सिपारस*—स्त्री० [फा० सिपास] १. सस्तुति। २ खुशामद।

सिपारसी*—वि० [हिं० सिपारस] जो सिपारस के रूप मे हो। प्रशसात्मक। पु० खुशामदी।

सिपारसी टट्टू—पु० [हिं०] वह जो केवल सिपारस अर्थात् खुशामद करके अपना काम या जीविका चलाता हो।

सिपारा—पु० [फा० सिपार:] कुरान के तीस भागो मे से कोई एक।

सिपाव—पु० [फा० सेहपाव] लकडी की एक प्रकार की टिकठी या तीन पायो का ढाँचा जो छकडे, बैलगाडी आदि मे आगे की ओर इसलिए लगाया जाता है कि छकडा या गाडी आगे की ओर न झुकने पाये।

सिपावा-भाथी—स्त्री० [फा० सेहपाव+हिं० भाथी] हाथ से चलाई जानेवाली धौकनी या भाथी।

सिपास—स्त्री० [फा०] १. कृतज्ञता। २. धन्यवाद। ३. कृतज्ञता-प्रकाश। धन्यवाद प्रकाशन।

सिपासनामा—पु० [फा० सिपासनाम.] कृतज्ञता तथा सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से लिखा हुआ पत्र। अभिनन्दन-पत्र।

सिपाह—स्त्री० [फा०] फौज। सेना।

सिपाहगिरी—स्त्री०=सिपाहगरी।

सिपाहियाना—वि० [फा० सिपाहियान:] १ सैनिकों या सिपाहियो से सबध रखनेवाला। २ सैनिको या सिपाहियों के रग-ढग जैसा अथवा उनकी मर्यादा के अनुकूल।

सिपाही—पु० [फा०] १. सेना मे युद्ध का काम करनेवाला व्यक्ति। फौजी आदमी। सैनिक। २. पुलिस विभाग मे साधारण कर्मचारी जो पहरे आदि का काम करता है। (कास्टेबल) ३ चपरासी। जैसे—तहसील का सिपाही।

सिपुर्द†—वि०, पु०=सुपुर्द।

सिप्पर—स्त्री०=सिपर (ढाल)।

सिप्पा—पु० [देश०] १ पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी तोप। २ निशाने पर किया हुआ वार। लक्ष्य-वेध। ३. कार्य-साधन का कौशल-पूर्ण उपाय या युक्ति। तरकीब। (बाजारू)
क्रि० प्र०—बैठाना।—भिडाना।—लगाना।
मुहा०—सिप्पा लड़ाना=कार्य-साधन का कौशल पूर्ण उपाय या युक्ति करना।
४. कार्य-साधन की आरभिक कार्रवाई या योजना। डौल।
मुहा०—सिप्पा जमाना=किसी काम या बात की भूमिका तैयार करना।

सिप्पी†—स्त्री०=सीपी।
स्त्री० [हिं० सिप्पा का अल्पा० रूप] छोटी तोप।

सिप्र—पु० [स०√सृप् (एकत्र होना)+रक् पृषो० सिद्ध] १ चन्द्रमा। २ पसीना। ३ एक प्राचीन सरोवर।

सिप्रा—स्त्री० [स० सिप्र+टाप्] १ महिषी। भैंस। २. स्त्रियो का कटि-बध। ३ दे० 'शिप्रा'।

सिफत—स्त्री० [अ० सिफत] [भाव० सिफाती] कोई ऐसा गुण या विशेषता (क) जो किसी व्यक्ति का स्वभाव बन गई हो अथवा (ख) किसी वस्तु की प्रशसा या प्रसिद्धि का कारण बन गई हो। जैसे—(क) इस नौकर की सिफत यह है कि वह काम मे घबराता नही। (ख) इस कपडे की सिफत है कि यह फटता नही है।

सिफर—वि० [अ० सिफर] १. (पात्र) जिसमे कुछ भरा न हो। खाली। रिक्त। २ (व्यक्ति) जिसमे गुण, बुद्धि, योग्यता, विद्या आदि का पूरा-पूरा अभाव हो। बिलकुल अयोग्य और निकम्मा। जैसे—मुझे तो यह आदमी बिलकुल सिफर मालूम होता है।
पु० १. गिनती मे वह अक जहाँ से गिनती आरम्भ होती है। वस्तुत. 'कुछ नही' का यह सूचक होता है। जैसे—उसे हिसाब के परचे मे सिफर मिला है। ३ उक्त का चिह्न —०।

सिफलगी—स्त्री०=सिफलापन।

सिफला—वि० [अ० सिफ्ल] [स्त्री० सिफली, भाव० सिफलापन] १ नीच। कमीना। २ ओछा। छिछोरा। ३ घटिया दरजे का।

सिफलापन—पु० [अ० सिफ्ल:+हिं० पन (प्रत्य०)] सिफला होने की अवस्था या भाव। कमीनापन। नीचता।

सिफा—स्त्री०=शफा (आरोग्य)।

सिफात—स्त्री० [फा० सिफात] 'सिफत' का बहु० ।
सिफाती—वि० [अ० सिफाती] १. सिफत अर्थात् गुण से सम्बन्ध रखनेवाला । २ सिफत के रूप मे होनेवाला । ३ अभ्यास, शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया हुआ (गुण या विशेषता) ।
सिफारत—स्त्री० [अ० सिफारत] सफीर अर्थात् राजदूत का कार्य, पद या भाव । २ सफीर अर्थात् राजदूत का कार्यालय । दूतावास ।
सिफारिश—स्त्री० [फा० सुफारिश] १ किसी से कही जानेवाली कोई ऐसी बात जिससे अपना या किसी दूसरे का उपकार या भलाई होती हो । २ कोई ऐसी बात जो किसी का अपराध क्षमा कराने के लिए किसी अधिकारी से कही जाय । ३ किसी के गुण, योग्यता आदि का परिचय देनेवाली ऐसी बात जो किसी ऐसे दूसरे आदमी से कही जाय जो उस पहले व्यक्ति का कोई उपकार या भलाई कर सकता हो । सस्तुति ।(रिकमेन्डेशन) जैसे—उन्हे यह नौकरी शिक्षा-मत्रालय की सिफारिश से मिली है । ४ बोल-चाल मे, प्रार्थना के रूप मे किसी से कही जानेवाली अपने संबध मे अथवा किसी दूसरे के सबध मे ऐसी बात जिसका मुख्य उद्देश्य कृपा-दृष्टि या अनुग्रह प्राप्त करना होता है ।
सिफारिशी—वि० [फा० सुफारिशी] १ सिफारिश सबधी । जैसे—सिफारिशी बातें । २ जो सिफारिश के रूप मे हो । जैसे—सिफारिशी चिट्ठी । ३ जो सिफारिश के द्वारा हुआ हो । ४ खुशामदी ।
सिफारिशी टट्टू—पु० दे० 'सिपारसी टट्टू' ।
सिबिका*—स्त्री०=शिबिका (पालकी) ।
सिमत†—पु०=सीमत ।
सिमई†—स्त्री०=सिवँई ।
सिमट—स्त्री० [हिं० सिमटना] सिमटने की अवस्था, क्रिया या भाव ।
सिमटना—अ० [हिं० समेटना का अ०] १. दूर तक फैली या बिखरी हुई चीज या चीजो का खिचकर थोडे विस्तार या स्थान मे आना । सकुचित होना । समेटा जाना । २ दूर तक फैली हुई चीज या तल मे शिकन या सिलवट पडना । ३ इकट्ठा होना । बटुरना । ४ क्रम या तरतीब से लगना । ५ काम पूरा या समाप्त होना । ६ भय, लज्जा, आदि के कारण व्यक्ति का सकुचित होना । सिकुडना । जैसे—वह सिमटकर कोने मे बैठ गया ।
सयो० क्रि०—जाना ।
सिमटी—स्त्री० [देश०] खेस की तरह का एक प्रकार का मोटा कपडा ।
सिमरख†—पु०=शिगरफ (ईंगुर) ।
सिमर-गोला—पु० [देश० सिमर ? +हिं० गोला] एक प्रकार की मेहराब ।
सिमरना †—स०=सुमिरना ।
सिमरनी† —स्त्री०=सुमिरनी ।
सिमरिख—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया ।
सिमल—पु० [स० सीर+हल+माला] १ हल का जूआ । २ उक्त जूए मे लगी हुई खूटी ।
सिमला आलू—पु० [हिं० शिमला+आलू] एक प्रकार का पहाडी बडा आलू । मरबुली ।
सिमाना†—पु० [स० सीमान्त] सिवाना । हद ।
†स०=सिलाना ।
सिमिटना†—अ०=सिमटना ।

५—४७

सिमृति*—स्त्री०=स्मृति ।
सिमेंट—स्त्री०=सीमेंट ।
सिमेटना* —स०=समेटना ।
सिम्त—स्त्री० [अ०] ओर । तरफ ।
सिम्रिति†—स्त्री०=स्मृति ।
सिय†—स्त्री० [स० सीता] सीता । जानकी ।
सियना*—स० [स० सर्जन] उत्पन्न करना । रचना ।
स०=सीना (सिलाई करना) ।
अ० [हिं० सीना] सीया जाना ।
सियरा*—वि० [स० शीतल, प्रा० सीअड] [स्त्री० सियरी, भाव० सियराई] १ ठढा । शीतल । २. अपरिपक्व । कच्चा ।
सियराई*—स्त्री० [हिं० सियरा+ई (प्रत्य०)] १ शीतलता । ठडक । २ कच्चापन । कचाई ।
सियह†—वि० [फा०]=सियाह (काला) ।
सिया*—स्त्री०=सीता ।
सियाना†—स०=सिलाना ।
†वि०=सयाना ।
सियापा—पु०=स्यापा ।
सियार—पु० [स० शृगाल, प्रा० सिआड] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड ।
सियार लाठी—पु० [हिं०] अमलतास ।
सियारा—पुं० [स० सीता, प्रा० सरिया+रा] एक प्रकार का फावडा जिससे जोती हुई जमीन समतल की जाती है ।
*पु०=सियाला ।
*वि०=सियरा ।
सियारी—स्त्री० [हिं सियार] गीदड की मादा ।
सियाल—पु० [स० श्रृगाल] गीदड ।
सियाला—पु०[स० शीतकाल] जाडे का मौसम । शीत काल ।
सियाला पोका—पु० [हिं० सीप+पोका=कीडा] एक प्रकार का बहुत छोटा कीडा जो सफेद चिपटे कोश के अन्दर रहता है, और पुरानी लोनी मिट्टीवाली दीवारो पर मिलता है । लोना-पोका ।
सियाली—स्त्री० [देश०]एक प्रकार का विदारन कद ।
वि० [स० शीतकाल, हिं सियाला] जाडे मे तैयार होनेवाली फसल । खरीफ ।
सियावड†—पु०=सियावडी ।
सियावड़ी—स्त्री० [हिं० सीता+वटी] १ अनाज का वह हिस्सा जो फसल कटने पर खलिहान मे से साधुओ के निमित्त निकाला जाता है । २ बिजूखा । (दे०)
सियासत—स्त्री० [अ०] [वि० सियासती] १. देश का शासन-प्रबन्ध तथा व्यवस्था । २ राजनीति ।
†स्त्री०=सांसत ।
सियासती—वि० [अ०] राजनीतिक ।
सियाह—वि० [फा० स्याह] कृष्ण वर्ण का । काला । २. दूषित । बुरा । जैसे—सियाह-बख्त =अभागा । ३. दे० 'स्याह' ।
सियाह कलम—स्त्री० दे० 'स्याह कलम' । (चित्र-कला)

सियाहगोश—वि० पुं० =स्याह-गोश।

सियाहत—स्त्री० [अ०] १. सैर करने की क्रिया या भाव। सैर। २ देश-देशान्तरो का पर्यटन या भ्रमण।

सियाहपोश†—पु०=स्याहपोश।

सियाहा—पु० [फा० स्याह] १. वह पजी या वही जिसमे नित्य के आय-व्यय का हिसाव लिखा जाता है। २ मुगल-शासन मे वह पजी जिसमे सैनिको की उपस्थिति लिखी जाती थी। ३ आज-कल वह पजी या रजिस्टर जिसमे सरकार को प्राप्त होनेवाली मालगुजारी या लगान का हिसाव लिखा जाता है।

सियाहा-नवीस—पु० [फा०] वह कर्मचारी जो सियाहा लिखता हो।

सियाही†—स्त्री०=स्याही।

सिर—पु० [स० शिरस्] १ मनुष्यो, जीव-जन्तुओ आदि के शरीर मे गरदन से आगे या ऊपर का वह गोलाकार भाग जिसमे आँख, कान, नाक, मुँह आदि अग होते है, और जिसके अन्दर मस्तिष्क रहता है। कपाल। खोपडी। (हेड)

विशेष—कुछ अवस्थाओ मे यह प्राणियो की जान या प्राण का सूचक होता है, और कुछ अवस्थाओ मे व्यक्तियो की प्रतिष्ठा या सम्मान का सूचक होता है।

मुहा०—**(किसी को) सिर आँखों पर बैठाना**=वहुत आदर-सत्कार करना। वहुत आवभगत करना। **(किसी की आज्ञा, कथन आदि) सिर-आँखो पर होना**=सहर्ष मान्य या स्वीकृत होना। शिरोधार्य होना। जैसे—आपकी आज्ञा सिर-आँखो पर है। **सिर उठाकर चलना** =अभिमानपूर्वक, अथवा अपनी प्रतिष्ठा या मर्यादा के भाव से युक्त होकर चलना। **सिर उठाना**=(क) किसी के विरोध मे खडे होना। जैसे—प्रजा का राजा के विरुद्ध सिर उठाना। (ख) सिर और मुँह ऊपर करके किसी की ओर प्रतिष्ठा, प्रयत्न या साहसपूर्वक देखना। जैसे—अव वह तुम्हारे सामने सिर नही उठा सकता। **सिर उठाने की फुरसत न होना**=कार्य मे वहुत अधिक व्यस्त होने के कारण इधर-उधर की वातो के लिए नाम को भी अवकाश न होना। **(किसी का) सिर उतारना**=सिर काट कर हत्या करना। **सिर ऊँचा करना**=दे० ऊपर 'सिर उठाना'। **सिर ऊँचा होना**=आदर, प्रतिष्ठा या सम्मान मे वृद्धि होना। **(स्त्रियो का) सिर करना**=वाल सँवारना। चोटी गूँथना। **सिर काढ़ना**=दे० 'नीचे सिर निकालना।' **सिर का बोझ उतरना** =दे० नीचे 'सिर से बोझ उतारना'। **(किसी के पास) सिर के बल जाना**=वहुत ही आदर, प्रेम या श्रद्धा से युक्त होकर और सव प्रकार के कष्ट सहकर जाना। **सिर खपाना**=ऐसा काम या वात करना जिससे कोई लाभ न हो और व्यर्थ मस्तिष्क थक जाय। माथापच्ची करना। **(किसी का) सिर खाना**=व्यर्थ की वातें करके किसी को तग या परेशान करना। **सिर खाली करना**=दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **(किसी का) सिर खुजलाना**=ऐसा उपद्रव या शरारत करना कि उसके लिए यथेष्ट दड मिल सके। शामत आना। जैसे—तुम्हारी इन चालो से तो ऐसा जान पडता है कि तुम्हारा सिर खुजला रहा है, अर्थात् तुम मार खाना चाहते हो। **सिर गूँथना**= (क) सिर के वाल वाँधने के लिए कघी-चोटी करना। (ख) कलियों, फूलों आदि से सिर अलकृत करना। **सिर घुटवाना**=दे० 'नीचे सिर मुँड़वाना'। **सिर घूमना**= (क) सिर मे चक्कर आना। (ख) कोई विकट स्थिति सामने आने पर वुद्धि चकराना। जैसे—उन लोगो की मार-पीट देखकर तो मेरा सिर घूमने लगा। **सिर चकराना**=सिर घूमना। **(किसी के) सिर चढ़कर मरना**=(**किसी को) सिर चढ़ाना**। किसी के ऊपर जान देना। **(किसी के आगे अपना) सिर चढाना**= किसी देवी या देवता के सामने अपना सिर काटकर गिराना। आप ही अपना वलिदान करना। **(किसी को) सिर चढाना**=किसी की छोटी-मोटी वातो की उपेक्षा करते हुए उसे वहुत उद्दड या गुस्ताख वना देना। **(कोई चीज अपने) सिर चढ़ाना**=आदरपूर्वक या पूज्य भाव से ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर जाना**=मृत्यु हो जाना। उदा०—सर (सिर) जाता है, सर (सिर) से तेरी उलफत नही जाती।—कोई शायर। **(किसी के साथ) सिर जोड़कर बैठना**=वहुत ही पास सटकर या हिल-मिलकर वैठना। **सिर जोड़ना**=किसी काम या वात के लिए कुछ लोगो को इकट्ठा करना। **सिर झाड़ना**=सिर के वालो मे कघी करना। **(किसी का) सिर झुकाना**=किसी को इस प्रकार परास्त करना कि वह नत मस्तक होने के लिए विवश हो जाय। **(किसी के आगे) सिर झुकाना**= (क) नम्रतापूर्वक सिर नीचे करना। नत-मस्तक होना। (ख) लज्जा आदि के कारण सिर नीचा करना। **(किसी के) सिर डालना**=किसी प्रकार का उत्तरदायित्व या भार किसी को देना या किसी पर रखना। **सिर ढारना**=प्रसन्न होकर सिर हिलाना या झूमना। उदा०—मुरली की धुनि सुनि सुर वधू सिर ढोरै।—सूरदास मदन मोहन। **(किसी का) सिर तोड़ना**=अभिमान, उद्दडता, शक्ति आदि नष्ट करना। जैसे—यदि वे मुझसे मुकदमेवाजी करेंगे तो मैं उनका सिर तोड दूँगा। **(किसी काम, बात या व्यक्ति के लिए) सिर देना**=प्राण निछावर करना। जान देना। **(किसी के) सिर धरना**=किसी के सिर मढना या रखना। **(कोई चीज या बात) सिर धरना**=आदरपूर्वक या पूज्यभाव से ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर धुनना**=पश्चात्ताप या शोक के कारण वहुत अधिक दु ख प्रकट करना। **(अपना) सिर नंगा करना**=सिर के वाल खोल कर इधर-उधर विखेरना। **(किसी का) सिर नंगा करना**=अपमानित या वेइज्जत करना। **सिर नवाना**=दे० ऊपर 'सिर झुकाना'। **सिर निकालना**=दवी हुई, शात या साधारण स्थिति से वाहर निकलने का प्रयत्न करना। **सिर नीचा होना**=(क) अप्रतिष्ठा होना। इज्जत विगडना। मान भंग होना। (ख) पराजय या हार होना। (ग) खेद, लज्जा आदि का अनुभव होना। **सिर पचाना**=दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **सिर पटकना**=वहुत कुछ विवश होते हुए भी किसी काम के लिए निरतर परिश्रम और प्रयत्न करते रहना। **सिर पड़ना**=दे० नीचे 'सिर पर पडना'। **(भूत, प्रेत, देवी, देवता आदि का) सिर पर आना**=किसी व्यक्ति का भूत-प्रेत आदि के आवेश या वश मे होना। भूत-प्रेत, देवी-देवता आदि के आवेश से प्रभावित होना। **(कोई अवसर) सिर पर आना**=वहुत ही पास आ जाना। जैसे—वरसात (या होली) सिर पर आ गई है। **(कोई कष्टदायक अवसर या बात) सिर पर आना या आ पड़ना**=वहुत ही पास या विलकुल सामने आ जाना। जैसे—कोई आफत या सकट सिर पर आना या आ पडना। **(कुछ) सिर पर उठा लेना**=इतना अधिक उपद्रव करना या हल्ला मचाना कि

आस-पास के लोग ऊब या घबरा जायँ। जैसे—तुमने जरा-सी बात पर सारा घर सिर पर उठा लिया। **सिर पर काल चढ़ना**=मृत्यु या विनाश का समय बहुत पास आना। **(किसी के सिर पर) खून चढ़ना या सवार होना**=(क) इतना अधिक आवेश या क्रोध चढ़ना कि मानो किसी के प्राण ले लेंगे। (ख) हत्याकारी का अपने अपराध की भीषणता के विचार से आपे मे न रह जाना या सुध-बुध खो बैठना। **(अपने) सिर पर खेलना**=ऐसा काम करना जिसमे जान तक जा सकती हो। जान जोखिम में डालना। **(किसी बात का) सिर पर चढ़कर बोलना**=प्रत्यक्ष रूप से सामने आकर अपना अस्तित्व प्रकट करना। जैसे—जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले। **(किसी के) सिर पर पड़ना**=(क) उतरदायित्व या भार आकर पडना। जैसे—जिसके सिर पर पडेगी वह आप ही सँभालेगा। (ख) कष्ट, सकट आदि घटित होना। गुजरना। जैसे—सारी आफत तो उसी के सिर पडी है। **(अपने) सिर पर पाँव रखकर भागना**=बहुत जल्दी या तेजी से भाग जाना। जैसे-सिपाही की आवाज सुनते ही चोर सिर पर पाँव रखकर भागा। **(किसी के) सिर पर बीतना**=कष्ट, सकट आदि घटित होना। जैसे—जिसके सिर पर बीतती है, वही जानता है। **(कोई चीज या बात) सिर पर रखना**=आदरपूर्वक ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर पर लेना**=अपने ऊपर उतरदायित्व या जिम्मेदारी लेना। जैसे—झगडे या बदनामी की बात अपने सिर पर लेना। **सिर पर शैतान चढ़ना**=क्रोध, भय आदि के कारण विवेक नष्ट होना। जैसे—सिर पे शैतान के एक और भी शैतान चढा।—कोई शायर। **सिर पर सींग जमना**=ऐसी स्थिति मे आना कि औरो से व्यर्थ लडाई-झगडा करने को जी चाहे। **सिर पर सींग होना**=कोई विशेषता होना। (परिहास और व्यग्य) जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर सीग है जो तुम्हारी हर बात मान ली जाय। **सिर पर सेहरा होना**=किसी प्रकार की विशेषता होना। (व्यग्य) जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर सेहरा है जो सब चीजें तुम्ही को दे दी जायें। **(किसी काम या बात का किसी के) सिर पर सेहरा होना**=किसी कार्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। जैसे—इस काम का सेहरा तुम्हारे सिर पर ही रहा। **(किसी के) सिर पर हाथ फेरना**=किसी को आश्वस्त करने के लिए प्रेमपूर्वक उसके सिर पर हाथ फेरना। **(किसी के) सिर पर हाथ रखना**=किसी अनाथ या पीडित को अपनी रक्षा मे लेकर उसका समर्थक और सहायक बनना। **(किसी का किसी के) सिर पर होना**=पोषक, समर्थक या सरक्षक का वर्तमान होना। जैसे—उसके सिर पर कोई होता तो यह नौबत न आती। **(कोई बात) सिर पर होना**=(क) सामने या समक्ष होना। बहुत पास होना। (ख) थोडे ही समय मे घटित होने की आशा या सभावना होना। जैसे—होली सिर पर है, कपडे जल्दी बनवा लो। **सिर फिरना या फिर जाना**=बुद्धि या मस्तिष्क का ठिकाने न रहना। पागलपन के लक्षण प्रकट होना। जैसे—तुम्हारी इन बातो से तो ऐसा जान पडता है कि तुम्हारा सिर फिर गया। **(किसी से) सिर फोड़ना**=व्यर्थ का प्रयत्न या बकवाद करना। जैसे—तुम तो किसी की बात मानोगे नही, तुमसे कौन सिर फोडे। **सिर बाँधना**=सिर के बाल बाँधना या कघी-चोटी करना। **(किसी का) सिर बाँधना**=सिर पर आक्रमण या वार करना। (पटेबाज) **(घोड़े का) सिर बाँधना**=लगाम इस प्रकार खीचे या पकडे रहना कि चलने के समय घोडे का सिर सीधा या सामने रहे। (सवार) **सिर बेचना**=सेना की नौकरी मे नाम लिखाना। **सिर भारी होना**=सिर मे पीडा होना या थकावट जान पडना। (रोगी होने के पूर्व लक्षण) **सिर भन्नाना**=दे० ऊपर 'सिर घूमना'। **(कोई काम या बात किसी के) सिर मढ़ना**=(क) कोई काम या बात जबरदस्ती किसी के जिम्मे लगाना। (ख) किसी को किसी अपराध या दोष के लिए उत्तरदायी ठहराना या बनाना। **(कोई काम या बात) सिर मानकर करना**=आज्ञा के रूप मे मानकर कोई काम करना। उदा०—सहज सुहृद् गुरु, स्वामी सिख, जो न करइ सिर मानि।—तुलसी। **(किसी से) सिर मारना**=दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **(कोई चीज किसी के) सिर मारना**=बहुत ही उपेक्षापूर्वक कोई चीज किसी को देना या लौटाना। जैसे—तुम यह किताब लेकर क्या करोगे ? जिसकी है, उसके सिर मारो। **सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना**=प्रारभ मे ही कार्य बिगडना। कार्यारभ होते ही विघ्न पडना। **सिर मुँड़ाना**=(क) सिर के बाल मुँडवाकर त्यागी या साधु बनना। (ख) अपने पास का धन गँवा डालना। **(किसी का) सिर रँगना**=लाठी आदि से प्रहार करके सिर लहू-लुहान करना। **(किसी के) सिर रखना**=दे० ऊपर '(किसी के) सिर मढना'। **सिर रहना**=(क) मान रहना। प्रतिष्ठा बनी रहना। (ख) जीवन या प्राण रहना। जैसे—सिर रहते मैं कभी यह काम न होने दूँगा। **(किसी काम या बात के) सिर रहना**=इस बात का बराबर ध्यान रखना कि कोई काम किस प्रकार हो रहा है। **(किसी का किसी व्यक्ति के) सिर रहना**=किसी के अतिथि, आश्रित या भार बनकर रहना। जैसे—वहाँ जायँगे तो किसी दोस्त (या ससुराल) के सिर रहेंगे। **(अपराध या दोष किसी के) सिर लगाना**=अपराधी या दोषी ठहराना या बताना। उदा०—तुम तो दोष लगावनि कौं सिर बैठे देखत तेरें।—सूर। **सिर सफेद होना**=सिर के बाल पकना। (वृद्धावस्था का लक्षण) **(किसी का) सिर सहलाना**=किसी को प्रसन्न करने के लिए उसका आदर-सत्कार करना। **सिर सूँघना**=छोटो पर अपना प्रेम दिखाते हुए उनका सिर सूँघने की क्रिया करना। उदा०—दै असीस तुम सूँघि सीस सादर बैठायो।—रत्नाकर। **सिर से कफन बाँधना**=जान-बूझकर मरने के लिए तैयार होना। **सिर से खेल जाना**=जान-बूझकर प्राण दे देना। **सिर से खेलना**=(क) सिर पर भूत-प्रेत आदि का आवेश होने की दशा मे बार बार सिर इधर-उधर हिलाना। अभुआना। (ख) जान जोखिम मे डालना। **सिर से पानी गुजरना**=ऐसी स्थिति मे पड़ना कि कष्ट या सकट पराकाष्ठा तक पहुँच जाय और बचने की कोई आशा न रह जाय। (बाढ मे डूबते हुए आदमी की तुलना के आधार पर) **सिर से पैर तक**=(क) ऊपर से नीचे तक। (ख) आदि से अत तक। (ग) पूरी तरह से। **सिर से पैर तक आग लगना**=अत्यत क्रोध चढना और दुःख होना। जैसे—उसकी बातें सुनकर मेरे तो सिर से पैर तक आग लग गई। **सिर से बला टलना**=व्यर्थ की झझट या परेशानी दूर होना। **सिर से बोझ उतरना**=(क) उत्तरदायित्व से मुक्त होने या काम पूरा हो चुकने पर निश्चित होना। (ख) झझट या बखेडा दूर होना। **सिर हिलाना**=(क) स्वीकृति या अस्वीकृति जताने के लिए सिर को गति देना। (ख) प्रसन्नता सूचित करने के लिए सिर को गति देना। जैसे—अच्छा सगीत सुनकर सिर हिलाना।

(किसी काम या वात के) **सिर होना**=कोई गुप्त काम या वात होने पर लक्षणो से उसे ताड या समझ लेना। जैसे—हमने तो सवकी आँख वचाकर उसे रुपया दिया था, पर तुम सिर हो गये (अर्थात् तुमने ताड या समझ लिया)। (किसी के) **सिर होना**=किसी के पीछे पडना। जैसे—अव तुम उन्हे छोडकर हमारे सिर हुए हो। (**वोष आदि किसी के) सिर होना**=जिम्मे होना। ऊपर पडना। जैसे—यह सारा दोप तुम्हारे सिर है।
२. ऊपर का सिरा। चोटी।
वि० १ वडा। महान्। २ उत्तम। श्रेष्ठ। ३ अच्छा। वढिया।
*अव्य० १. के ऊपर। पर। २. ठीक अवसर पर। जैसे—सब काम समय सिर होते हैं। उदा०—कही समय सिर भगत गति।—तुलसी। ३ आधार या आश्रय पर। जैसे—(क) वह वहाने-सिर वहाँ से उठकर चला गया अर्थात् वहाना वनाकर चला गया। (ख) मैं तो वहाँ काम सिर गया था; अर्थात् काम होने के कारण गया था।

सिरई†—स्त्री० [हिं० सिर+ई (प्रत्य०)] खाट या पलग के चौखट मे उस ओर की लकडी जिस ओर सोने के समय सिरहाना रखते है।

सिर-फटा—वि० [हिं० सिर+कटा] [स्त्री० सिर-कटी] १. जिसका सिर कट गया हो। जैसे—सिर-कटी लाश। २ दूसरो का सिर काटने अर्थात् वहुत अधिक अपकार करनेवाला।

सिरका—पु० [फा० सिर्क] अगूर, ईख, जामुन, आदि के रस का वह रूप जो उसे धूप मे रखकर और सूर्य की गरमी से पकाकर तैयार किया जाता है।

सिरका-फश—पु० [फा०] सिरका या अर्क खीचने का एक प्रकार का यत्र।

सिरकी—स्त्री० [हिं० सरकडा] १. सरकडा। सरई। सरहरी। २. सरकडे की तीलियो की वनी हुई टट्टी, जिसे वैल-गाडियों पर धूप, वरसात आदि से वचने के लिए लगाते है। ३. वाँस की पतली नली जिसमे वेल-वूटे काढने का कलावत्तू भरा रहता है।
*पु०=कुजर (जाति)।

सिर-खप—वि० [हिं० सिर+खपना] १ दूसरो का सिर खपानेवाला। वक-वककर तग या परेशान करनेवाला। २ वहुत अधिक परिश्रम करके अपना सिर खपानेवाला। ३ (काम) जिसमे वहुत अधिक सिर खपाना पडता हो। जैसे—यह वहुत ही वाहियात और सिर-खप काम है।

सिर-खपना†—वि०=सिर-खप।

सिर-खपी—स्त्री० [हिं० सिर+खपना] सिर खपाने की क्रिया या भाव।

सिर-खिली—स्त्री० [देश०] मटमैले रग की एक प्रकार की चिडिया जिसकी चोंच और पैर काले होते हैं।

सिरखिस्त—पु० [फा० शीरखिश्त] दवा के काम आनेवाला एक प्रकार का गोद। यवशर्करा।

सिरगा—पु० [देश०] घोडो की एक जाति।

सिरगिरी—स्त्री० [हिं० सिर+गिरि=चोटी] १ टोपी, पगडी आदि मे लगाने की कलगी। २ चिडियो के सिर पर की कलगी।

सिरगोला—पु० [?] दुग्ध पाषाण।'

सिर-घुरई*—स्त्री० [हिं० सिर+घूरना=घूमना] ज्वराकुश तृण।

सिर-चंद—पु० [हिं० सिर+चद्र] हाथी के मस्तक पर शोभा के लिए लगाया जानेवाला एक प्रकार का अर्द्ध चन्द्राकार आभूषण।

सिरजक*—वि० [स० सृजक, हिं० सिरजना] सृजन या सर्जन करनेवाला। रचनेवाला।
पु० ईश्वर।

सिरजन-हार*—वि० [स० सर्जन+हिं० हार (=वाला)] सृजन करने अर्थात् वनाने या रचनेवाला।
पु० ईश्वर। परमात्मा।

सिरजना*—स० [स० सर्जन] सृजन करना। वनाना। रचना।
*स०=सचना (संचय करना)।

सिरजित†—वि० [स० सर्जित] सिरजा अर्थात् वनाया या रचा हुआ।

सिर-ढकाई—स्त्री० [हिं० सिर+ढकना] १. सिर ढाँकने की क्रिया। २. कुमारी वेश्या के सवध की वह रसम जिसमे वह पहले-पहल पुरुष से समागम करती है और उसका सिर ढककर उसे वधू का रूप धारण कराया जाता है।

सिर-ताज—वि० [फा० सर+अ० ताज] अग्र-गण्य। प्रधान। मुख्य।
पु० १. सिर पर पहनने का ताज। मुकुट। २ अपने वर्ग मे सर्वश्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति। शिरोमणि।

सिरतान†—पु० [हिं० सीर+तान ?] १ काश्तकार। २ मालगुजार।

सिर-ता-पा—अव्य० [फा० सर-ता-पा] १. सिर से पाँव तक। २ ऊपर से नीचे तक। ३ कुल का कुल। पूरा का पूरा।

सिरती*—स्त्री० [हिं० सीर] वह रकम जो असामी जमीन जोतने के वदले मे जमीदार को देता था। लगान।

सिरत्राण*—पु०=शिरस्त्राण।

सिरदार*—पु०=सरदार।

सिरदारी*—स्त्री०=सरदारी।

सिरदुआली—स्त्री० [फा० सरदुआल] घोडे के मुँह पर का वह साज जिसमे लगाम अटकी रहती है।

सिर-धरा—वि० [हिं० सिर+धरना] १ जिसे सिर पर रखा जा सके। शिरोधार्य। २ वहुत अधिक प्यार-दुलार मे पला हुआ।
पु० वह जो किसी को अपने सिर पर रखता अर्थात् उसका सरक्षक होता है।

सिरधरू†—वि०=सिर-धरा।

सिर-नामा—पु० [फा० सरनाम; मि० स० शीर्ष-नाम] १ पत्र के आरभ मे पत्र पानेवाले का नाम, उपाधि, अभिवादन आदि। २. पानेवाले का नाम और पता जो चिट्ठी या लिफाफे के ऊपर लिखा जाता है। ३. लेखो आदि का शीर्षक।

सिरनेत—पु० [हिं० सिर+स० नेत्री=धज्जी या डोरी] १ पगडी। २ क्षत्रियों का एक वर्ग या शाखा।

सिर-पच्ची—स्त्री० [हिं० सिर+पचाना] १ सिर खपाने की क्रिया या भाव। २ सिर खपाने के कारण होनेवाला कष्ट।

सिर-पाव*—पु०=सिरोपाव। (दे०)

सिर-पेच—पु० [फा० सर-पेच] १ पगडी। २ पगडी के ऊपर वाँधा जानेवाला एक प्रकार का आभूषण या गहना।

सिर-पोश—पु० [फा० सर-पोश] [भाव० सिरपोशी] १ सिर ढकने का टोप। सिर पर का आवरण। २. वन्दूक का गिलाफ। ३ किसी चीज को ऊपर से ढकने का गिलाफ।

सिर-फिरा—वि० [हिं० सिर+फिरना] [स्त्री० सिर-फिरी] १ जिसका सिर फिर गया अर्थात् मस्तिष्क उलट या विकृत हो गया हो। २ जिसकी वुद्धि सामान्य स्तर से वहुत घट कर हो और इसी लिए जो ऊल-जलूल काम करता हो। ३ कुछ-कुछ पागलों का-सा। जैसे—सिर-फिरी वातें।

सिर-फूल—पु० [हिं० सिर+फूल] सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियो का एक आभूषण।

सिर-फेंटा—पु० [हिं० सिर+फेंटा] साफा। पगडी। मुरेठा।

सिर-वंद—पु० [हिं० सिर+फा० वद] साफा।

सिर-वंदी—स्त्री० [हिं० सिर+फा० वंदी] माथे पर पहनने का स्त्रियो का एक आभूपण।
पु० एक प्रकार का रेशम का कीडा।

सिर-वेंदी†—स्त्री०=सिर-वदी।

सिर-वोझी—पुं० [हिं० सिर-वोझ] एक प्रकार का पतला वाँस जो पाटन के काम आता है।

सिरमट—पु०=सीमेंट। उदा०—'सार्थकता, को पुष्ट करनेवाला सिरमट है उनका परस्पर समीपत्व।—अज्ञेय।

सिरमनि*—वि०, पु०=शिरोमणि।

सिरमिट†—पु०=सीमेंट।

सिरमौर—वि० [हिं० सिर+मौर] शिरोमणि। सिर-ताज।
पु० सिर का मुकुट।

सिरवह*—पु०=शिरोरुह (सिर के वाल)।

सिरवा—पु० [हिं० सरा] वह कपडा जिससे खलिहान मे अनाज वरसाने के समय हवा करते है। ओसाने मे हवा करने का कपडा।
क्रि० प्र०—मारना।

सिरवार—पु० [हिं० सीर+कार] जमीदार का वह कारिंदा जो उसकी खेती का प्रवध करता है।
*पु०=सिवार।

सिरस—पु० [स० शिरीप] शीशम की तरह का लम्वा एक प्रकार का ऊँचा पेड।

सिरसा*—पु०=सिरस।

सिरसी—पु० [देश०] एक प्रकार का तीतर।

सिरहर—वि० [हिं० सिर+हर] शिरोमणि।
वि०=सिर-धरा।

सिरहाना—पु० [स० शिरस्+आधान] १ तकिया जिसे सिर के नीचे रखते है। (पश्चिम) २ खाट या पलग का वह स्थान जहाँ तकिया (सोते समय) साधारणतया रखते है।

सिराँचा—पु० [देश०] एक प्रकार का पतला वाँस जिससे कुरसियाँ और मोढे वनते है।

सिरा—पु० [हिं० सिर] १ किसी चीज के सिर या ऊपरी भाग का अतिम अश। शीर्ष भाग। जैसे—सिरे की चमेली। २ किसी लम्वी चीज के दोनो छोरों या अतिम अशों मे से हर एक। जैसे—उनकी दूकान वाजार के इस सिरे पर और मकान उस सिरे पर है। ३ किसी काम, चीज या वात का वह अतिम अश जो उसकी समाप्ति का सूचक होता है।
पद—सिरे का=सवसे वडा-चढा। उच्च कोटि या प्रथम श्रेणी का।
मुहा०—(किसी काम या वात का) सिरे चढ़ना=ठीक तरह से पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचना।
४ आरंभ का भाग। शुरू का हिस्सा। जैसे—अव यह काम नये सिरे से करना पडेगा। ५ किसी चीज के आगे या सामने का भाग।
स्त्री० [सं० शिरा] १ रक्त-नाडी। २ सिंचाई की नाली। ३ खेत की सिंचाई। ४. पानी की पतली धार।
पु० पानी रखने का कलसा या गगरा।

सिराज—पु० [अ०] १ सूर्य। २ दीपक। चिराग।

सिराजी—वि०, पु०=शीराजी।

सिराना—अ० [स० शीतल, प्रा० सीअड, पु० हिं० सीयर, सीरा] १ ठढा या शीतल होना। २. धीमा या मद होना। ३ तृप्त होना।
स० [हिं० सीरा=शीतल] १ ठढा या शीतल करना। २ धीमा या मद करना। ३ धार्मिक अवसरो पर गेहूँ, जौ आदि की उगाई हुई वालें, या पत्तियाँ किसी जलाशय या नदी मे ले जाकर प्रवाहित करना। ४ तृप्त करना। ५. गाडना।
अ० [हिं० सिरा] १ सिरे अर्थात् पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचना। २ खतम होना। न रह जाना। ३ गुजरना। वीतना। ४ निपटना। तै होना।
स० [हिं० सिरा] १ सिरे अर्थात् पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचाना। समाप्त करना। २ वनाकर तैयार करना। ३ न रहने देना। नप्ट करना। उदा०—एहि विधि धरि मन धीर चीर अँसुवन सिराई कै।—नन्ददास। ४ समय गुजारना। विताना। ५ तै करना। निपटाना।

सिरापत्र—पु० [स०] १. पीपल। अश्वत्थ। २ एक प्रकार की खजूर।

सिरामूल—पु० [स०] नाभि।

सिरा-मोक्ष—पु० [स०] शरीर का दूपित रक्त निकलवाना। फसद खुलवाना।

सिरार†—स्त्री० [हिं० सिरा] पाई के सिरे पर लगाई जानेवाली लकडी। (जुलाहे)

सिराल—वि० [स० सिरा+लच्] १ शिराओ से युक्त। २ जिसमे लवी या वहुत-सी शिराएँ हो।

सिरालक—पु० [स० सिराल+कन्] एक प्रकार का अगूर।

सिराला—स्त्री० [स० सिराल+टाप्] १ एक प्रकार का पौवा। २. कमरख।

सिराली—स्त्री० [हिं० सिर] मोर की कलगी। मयूर-शिखा।

सिरालु—वि० [स० सिरा+आलुच्] शिराओंवाला। सिराल।

सिरावन†—वि० [हिं० सिराना] १ ठढा या शीतल करनेवाला। २ सताप दूर करनेवाला।
*पु० सिराने की क्रिया या भाव। (पूरव)
पु० [स० सीर=हल] हेगा।

सिरावना†—स०=सिराना।
वि०=सिरावन।

सिराहर्ष—पु० [स०] १ पुलक। रोमाच। २ आँखो के डोरों की लाली।

सिरिख*—पु०=सिरस वृक्ष।

सिरिन†—पु० [देश०] लाल सिरस वृक्ष। रक्तवृक्ष।

सिरिफल†—पु०=श्रीफल।

सिरियारी—स्त्री० [सं० शिरियारी] सुसना का साग। हाथी शुडी।

सिरिश्ता—पु०=सरिश्ता (विभाग)।

सिरिश्तेदार—पु०=सरिश्तेदार।

सिरी—स्त्री० [स० सिर+ङीष्] १. करघा। २ कलिहारी। लागली।
†स्त्री० [सं० श्री] १. लक्ष्मी। २. शोभा। ३ रोली।
†स्त्री० [हिं० सिर] १ सिर पर पहनने का एक गहना। २ 'सिर' का अल्पा० रूप। छोटा सिर। ३ काटी या मारी हुई वकरी, मछली, मुर्गी आदि के गले के ऊपर का सारा अश जो वहुत चाव से खाया जाता है।

सिरीस†—पु०=सिरस (वृक्ष)।

सिरी-साफ—पु० [?] एक प्रकार की मखमल।

सिरेयस*—पु०=श्रेयस्।

सिरोना—पु० [हिं० सिर+ओना] इडुरी। (दे०)

सिरोपाव—पु० [हिं० सिर+पाँव] सिर से पैर तक पहनने के सब कपडे, (अगा, पगडी, पाजामा, पटका और दुपट्टा) जो राज-दरवार से किसी को सम्मान के रूप मे दिया जाता है। खिलअत।

सिरोमनि†—पु०=शिरोमणि।

सिरोरुह†—पु०=शिरोरुह (वाल)।

सिरोही—पु० [?] राजपूताने का एक नगर जहाँ की वनी हुई तलवार वहुत ही लचीली और वढिया होती है।
स्त्री० तलवार, विशेपत उक्त नगर की वनी हुई तलवार।
स्त्री० [देश०] काले रग की एक चिड़िया जिसकी चोच और पजे लाल रग के होते है।

सिर्का†—पु०=सिरका।

सिर्फ—अव्य० [अ० सिर्फ] १ किसी निश्चित तथा निर्दिष्ट परिमाण या मात्रा मे। जैसे—(क) सिर्फ दस आदमी वहाँ गये थे। (ख) सिर्फ दो सेर मिठाई भेजी गई है। २. वस इतना ही या यही, और कुछ नही। जैसे—मैं सिर्फ कह ही सकता था।
वि० अकेला।

सिल—स्त्री० [स० शिला] १. पत्थर की चट्टान। शिला। २ पत्थर की चौकोर पटिया जो छतें आदि पाटने के काम आती है। सिल्ली। ३. पत्थर की चौकोर पटिया जिस पर वट्टे से मसाला आदि पीसते है। ४. उक्त आकार-प्रकार का ढला हुआ चाँदी, सोने आदि का खड। (इनगॉट) जैसे—चाँदी की सिलें वेचकर सोने की सिल खरीदना। ५. काठ की वह पटरी जिससे दवाकर रूई की पूनी वनाते है।
पु० [स० शिल] कटे हुए खेत मे गिरे हुए अनाज के दाने चुनकर निर्वाह करने की वृत्ति। दे० 'शिलोंछ'।
पु० [देश०] वलूत की जाति का एक प्रकार का पहाडी वृक्ष जिसे 'वज' और 'मारू' भी कहते हैं।
पुं० [अ०] क्षय नामक रोग। राजयक्ष्मा। तपेदिक। दिक।

सिलक—स्त्री० [हिं० सलग=लगातार] १. लड़ी। शृखला। २. गले मे पहनने की माला या हार, विशेपत. चाँदी या सोने का। ३ पक्ति। श्रेणी। ४ तागा। धागा।
*पु०=सिल्क (रेशम)।

सिलकी†—स्त्री० [देश०] वेल। लता। वलनी।

सिल-खड़ी—स्त्री० दे० 'गोरा-पत्थर'।

सिलगना*—अ०=सुलगाना।

सिलना†—अ०[हिं० सीना] सिलाई होना। सीया जाना। जैसे—कुरता सिल रहा है।

सिलप*—पु०=शिल्प।

सिलपची†—स्त्री०=चिलमची।

सिलपट—वि० [स० शिला-पट्ट] १ जिसका तल चिकना, चौरस और साफ हो। २ घिसने आदि के कारण जिसके ऊपर के अक, चिह्न आदि नष्ट हो गये हो। जैसे—सिलपट अठन्नी। ३ वुरी तरह से नष्ट किया हुआ। चौपट।

सिलपोहनी—स्त्री० [हिं० सिल+पोहना] विवाह की एक रीति।

सिलफची—स्त्री० [फा० सैलावी] चिलमची।

सिल-फोड़ा—पु० [हिं० सिल+फोडना] पत्थर-चूर नाम का पौधा। पाषाण-भेद।

सिल-वरुआ—पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो पूरवी वगाल की ओर होता है।

सिलवट—स्त्री० [देश०] किसी समतल तथा कोमल तल के मुडने, दवने, पिचकने या सूखने के कारण उसमे उभरनेवाला वह रेखाकार अश जो उसकी समतलता नष्ट करता है। शिकन। सिकुडन।
क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

सिलवाना—स० [हिं० सीना का प्रे०] किसी को कुछ सीने मे प्रवृत्त करना।

सिलसिला—पु० [अ०] १. वह सवध जो एक क्रम मे होनेवाली घटनाओ, वातो आदि मे होता है। एक के वाद एक करके चलता रहनेवाला क्रम। २ कोई वँधा हुआ क्रम। परम्परा। ३. कतार। पक्ति। श्रेणी। ४ लड़ी। शृखला। ५. ठीक तरह से लगा हुआ क्रम। तरतीव।
वि० [स० सिक्त] [स्त्री० सिल-सिली] १. भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। तर। २ ऐसा चिकना जिसपर पैर या हाथ फिसलता हो।

सिलसिलाबंदी—स्त्री० [अ०+फा०] १ क्रम का वँधान। तरतीव। २ पक्ति, श्रेणी आदि के रूप मे लगे हुए होने की अवस्था या भाव।

सिलसिलेवार—वि० [अ०+फा०] सिलसिले या क्रम से लगा हुआ।
अव्य० सिलसिले या क्रम का ध्यान रखते हुए। क्रमिक रूप से।

सिलह—पु० [अ० सिलाह] १ हथियार। शास्त्र। २ कवच। (राज०)

सिलहखाना—पु० [अ० सिलाह+फा० खान] वह स्थान जहाँ सव तरह के वहुत-से हथियार रखे जाते है। शस्त्रागार।

सिलहट—पु० [?] १. असम प्रदेश का एक नगर। २ उक्त नगर के आस-पास की नारगी जो वहुत वढिया होती है। ३. एक प्रकार का अगहनी धान।

सिलहवद—वि० [अ० सिलह+फा० वद] सशस्त्र। हथियारवद। शस्त्रो से सुसज्जित।

सिलहसाज—पु० [अ० सिलह+फा० साज] [भाव० सिलहसाजी] हथियार बनानेवाला कारीगर।

सिलहार, सिलहारा—वि० दे० 'सिलाहर'।

सिलहिला—वि० [हिं० सील, सीड+हीला=कीचड] [स्त्री० सिलहिली] (स्थान) जिस पर पैर फिसले। रपटन वाला। कीचड से चिकना।

सिलही—स्त्री० [देश०] वतख की जाति का एक प्रकार का पक्षी जो प्राय जलाशयो के पास रहता और सिवार खाता है।

सिला—पु० [स० शिल] १ फसल कट चुकने के बाद खेत में गिरे-पडे या बचे-खुचे अन्न-कण चुनने की वृत्ति। २ उक्त प्रकार से बचे और खेत मे बिखरे हुए अनाज के दाने।

क्रि० प्र०—चुनना।—बीनना।

३ अनाज का वह ढेर जो अभी पछोरा तथा फटका जाने को हो।

†स्त्री०=शिला।

पु० [अ० सिलह] १ प्रतिकार। बदला। २ पारिश्रमिक या पुरस्कार। इनाम।

सिलाई—स्त्री० [हिं० सिलना+आई (प्रत्य०)] १ सूई से सीने की क्रिया, ढग या भाव। जैसे—कपडे या किताब की सिलाई। २ सीने पर दिखाई पडनेवाले टाँके। सीवन। ३ सीने के बदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी।

† स्त्री०=सलाई।

स्त्री० [स० शलाका] बिजली। उदा०—सिहरि सिहरि समरवै सिलाइ प्रिथीराज।

स्त्री० [देश०] ऊखकी फसल को हानि पहुँचानेवाला भूरापन लिए गहरे लाल रग का कीडा।

सिलाजीत—पु०=शिलाजीत (शिलाजतु)।

सिलाना—स० [हिं०सिलना का प्रे०] सीने का काम किसी दूसरे से कराना। जैसे—दरजी से कपडे या जिल्दसाज से किताबें सिलाना।

स०[हिं० सीलना का प्रे०]सीड या सील मे रखकर ठढा या गीला करना।

† अ०=सीलना।

सिलापाक—पु० [हिं० शिला+पाक] पथरफूल। छरीला। शैलज।

सिलाबी—वि० [हिं० सील+फा० आव=पानी या फा० सैलाबी] सीडवाला। तर।

सिलारस—पु० [स० शिलारस] १ सिल्हक वृक्ष। २ उक्त वृक्ष का गोद या निर्यास जो सुगधित होता है।

सिलावट—पु० [स० शिला+पट्ट] पत्थर काटने और गढ़ने वाले। सग-तराश।

† स्त्री० [हिं० सिलना] सिलने या सीये जाने की क्रिया या ढग। सिलाई।

सिलासार—पु० [स० शिलासार] लोहा।

सिलाह—पु० [अ०] १ जिरह-बकतर। कवच। २ अस्त्र-शस्त्र। हथियार।

सिलाहखाना—पु०=सिलहखाना (शस्त्रागार)।

सिलाहर†—वि०[हिं० सिला+हर (प्रत्य०)] १ जो सिला वृत्ति से अपनी जीविका चलाता हो। २. बहुत ही निर्धन। अकिंचन। दरिद्र।

सिलाही—पु० [अ० सिलाह+ई (प्रत्य०)] शस्त्र धारण करनेवाला। सैनिक। सिपाही।

सिलिंगिया—स्त्री० [शिलाग नगरी] पूरबी हिमालय के शिलाग प्रदेश मे पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड।

सिलिप†*—पु०=शिल्प।

सिलिमुख*—पु०=शिलीमुख (भौंरा)।

सिलिया—पु० [स० शिला] एक प्रकार का पत्थर जो मकान बनाने के काम मे आता है।

सिलियार, सिलियारा†—पु० दे० 'सिलाहर'।

सिली—स्त्री० [स० शिली] १ धारदार या नुकीली चीज। २. आँख मे अजन लगाने की सलाई। (राज०)

सिलीपर—पु० [अ० स्लिपर] १ एक प्रकार का हलका जूता जिसके पहनने पर पजा ढका रहता है और एडी खुली रहती है। आराम पाई। २ लकडी की बडी धरन। ३ विशेषत रेल की पटरी के नीचे बिछाई जानेवाली लकडी की धरन।

पु० [अ० स्लीपर] शयनिका। (दे०)

सिलीमुख—पु०=शिलीमुख (भौंरा)।

सिलेट—स्त्री० [अ० स्लेट] १ एक प्रकार का कोमल मटमैला पत्थर। २ उक्त पत्थर की वह चौकोर पट्टी जिस पर छोटे बालक लिखने का अभ्यास करते है। ३ उक्त प्रकार की पट्टी जिसमे पत्थर के बजाय लोहे, शीशे आदि की चद्दर भी लगी होती है।

सिलेटी—पु० [हिं० सिलेट] सिलेट की तरह का खाकी रग।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

सिलेदार—पु० [फा० सिलहदार] १ सिलहखाने या शस्त्रागार का प्रधान अधिकारी।

सिलोध—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बडी मछली जो प्राय ६ फुट तक लबी होती है।

सिलोच्च—पु०[स० शिलोच्च] एक पर्वत जो गगा-तट पर विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से मिथिला जाते समय राम को मार्ग मे मिला था।

सिलौआ—पु० [देश०] सन के मोटे रेशे जिनसे टोकरियाँ बनाई जाती है।

सिलौट†—स्त्री० =सिलौटी।

सिलौटा—पु० [हिं० सिल+बट्टा] १ चीजें पीसने की सिल और बट्टा दोनों। २ बडी सिल।

सिलौटी—स्त्री० हिं० 'सिलौट' का स्त्री० अल्पा०।

सिल्क—पु० [अ०] १ रेशम। २. रेशमी कपडा।

सिल्किन—वि० [अ० सिल्केन] सिल्क का। रेशमी। जैसे—सिल्किन साड़ी।

सिल्प†—पु०=शिल्प।

सिल्लकी—स्त्री० [स० सिल्ल+कन् ङीप्] =शल्लकी (सलई)।

सिल्ला—पु० दे० 'सीला'।

सिल्ली—स्त्री० [स० शिला] १. पत्थर की छोटी पतली पटिया जो प्राय छत पाटने के काम आती है। २ लकडी का वह तख्ता जो उक्त पत्थर की तरह छत पाटने के काम आता है। (पश्चिम) ३. एक विशेष प्रकार के पत्थर का वह छोटा टुकडा जिस पर रगड़कर नाई लोग उस्तरे

की धार तेज करते हैं। (ह्वेट-स्टोन)। ४ उक्त प्रकार के रूप मे ढाली हुई चाँदी या सोने का खड। सिल।

स्त्री० [हिं० सिल्ला] फटकने के लिए लगाया हुआ अनाज का ढेर।

स्त्री० [?] १ नदी मे वह स्थान जहाँ पानी कम और धारा बहुत तेज होती है। (माझी) २ एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका मास खाया जाता है।

सिल्हक—पु० [स०] १ सिलारस नामक वृक्ष। २ उक्त वृक्ष से निकलने वाला गन्ध द्रव्य।

सिल्हकी—स्त्री० [स० सिल्हक-ङीष्]=सिल्हक।

सिव—पु०=शिव।

†पु० [स० सिवक] दरजी।

सिवई—स्त्री०=सेवई।

सिवक—वि० [स० षिव् (सीना)+ण्वुल्-अक] सिलाई करनेवाला। पु० दरजी।

सिव-रात†—स्त्री०=शिव-रात्रि।

सिवा—अव्य० [अ०] १ जो है या हो, उसके अतिरिक्त। इसे छोड या बाद देकर। अलावा। जैसे—शिवा उसके यहाँ कोई नही पहुँचा था।

विशेष—वाक्य के बीच मे सिवा से पहले 'के' विभक्ति लगती है। जैसे—इन बातो के सिवा एक और बात भी है। तुम्हारे सिवा, हमारे सिवा आदि प्रयोगो मे यह 'के' विभक्ति 'तुम्हारे', 'हमारे' आदि शब्दो मे अतर्भुक्त होती है।

२ किसी की तुलना मे और अधिक या बढकर। उदा०—तुम जुदाई मे बहुत याद आये। मौत तुम से भी सिवा याद आई।—कोई शायर।

वि० फालतू और व्यर्थ।

*स्त्री०=शिवा।

सिवाइ*—अव्य०=सिवा।

सिवाई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिट्टी।

†स्त्री०=सिलाई।

सिवान—पु० [स० सीमात] १ किसी राज्य की सीमा। २ सीमा पर स्थित प्रदेश। ३ गाँव की सीमा पर की भूमि।

सिवाय—अव्य०, वि०=सिवा।

सिवार—स्त्री०=सेवार (घास)।

सिवाल—स्त्री०=सेवार।

सिवाला†—पु०=शिवालय।

सिवाली—पु० [स० शैवाल] कुछ हलके रग का एक प्रकार का मरकत या पन्ना जिसमे ललाई की झलक भी होती है।

सिवि†—पु०=शिवि।

सिविका—स्त्री०=शिविका (पालकी)।

सिविर†—पु०=शिविर।

सिविल—वि० [अ०] १ नगर-निवासियों से सबध रखनेवाला। २ नगर या जनपद की व्यवस्था से सबध रखनेवाला। जनपद। जैसे—सिविल पुलिस। ३ आर्थिक। माली। ४ सभ्य। शिष्ट। ५ दे० 'दीवानी'।

सिवैयाँ†—स्त्री०=सेवई।

सिषंड†—पु०=शिखंड (चोटी)।

सिष—पु० १ =शिष्य। २ =सिक्ख।

*स्त्री०=सीख (शिक्षा)।

सिष्ट†—वि०=शिष्ट।

स्त्री० [फा० शिस्त] मछली फँसानेवाली बसी की डोरी।

सिष्य†—पु०=शिष्य।

सिस†—पु०=शिशु।

स्त्री०=सिसक।

सिसक—स्त्री० [हिं० सिसकना] १ सिसकने की क्रिया या भाव। २ सिसकने से होनेवाला शब्द।

सिसकना—अ० [अनु० सी-सी] १. इस प्रकार धीरे-धीरे रोना कि नाक और मुँह से सी-सी ध्वनि निकलती रहे।

विशेष—रोने मे मुँह खुला रहता है और गले से आवाज भी निकलती है। सिसकते समय प्राय मुँह बद रहता है और गले से आवाज धीमी हो जाती है।

†२ हिचकना।

सिसकारना—अ० [अनु० सीसी+हिं० करना] १ जीभ दबाते हुए वायु मुँह मे इस प्रकार छोडना जिसमे सीटी का-सा सी-सी शब्द होता है। जैसे—किसी को बुलाने या कुत्ते को किसी पर झपटाने के लिए सिसकारना।

सयो० क्रि०—देना।

२ सीत्कार करना।

सिसकारी—स्त्री० [हिं० सिसकारना] १ सिसकारने की क्रिया, भाव या शब्द। जीभ दबाते हुए मुँह से वायु छोडने का सीटी का-सा शब्द।

२ दे० 'सीत्कार'।

क्रि० प्र०—देना।

सिसकी—स्त्री० [हिं० सिसकना] १ सिसकने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—भरना।—लेना।

२ दे० 'सिसकारी'।

सिस-बोनी—स्त्री० [हिं० शीशम+बोना] वह स्थान जहाँ शीशम के बहुत-से पेड लगाये गये हो अथवा हों। (पूरब)

सिसहर†—पु०=शशिधर। (चद्रमा)

सिसियाँद†—स्त्री० [?+गध] मछली की-सी-गध। विसायँध।

सिसिर†—पु०=शिशिर (जाडा)।

सिसु†—पु०=शिशु।

सिसुता*—स्त्री०=शिशुता (बचपन)।

सिसुपाल*—पु०=शिशुपाल।

सिसुमार*—पु०=शिशुमार।

सिसृक्षा—स्त्री० [स०√सृज् (बनना)+सन्-द्वित्व-अ-टाप्] रचने या निर्माण करने की इच्छा।

सिसृक्षु—वि० [स० √सृज् (बनाना)+सन्+द्वित्व-उ] सृष्टि करने की इच्छा रखनेवाला। रचना का इच्छुक।

सिसोदिया—पु० [सिसोद (स्थान)] गहलौत राजपूतो की एक प्रतिष्ठित शाखा, जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड मे और फिर आधुनिक उदयपुर मे थी।

सिस्न†—पु०=शिश्न (पुरुष का लिंग)।

सिस्य†—पु०=शिष्य ।

सिहद्दा—पु० [फा० सेह=तीन+अ० हद] १. तीन देशों या प्रदेशों की सीमाओं के एक स्थान पर मिलने का भाव। २ वह स्थान जहाँ तीन हदें मिलती हों।

सिहर†—पु० [स० शिखर] चोटी। शिखर ।
†स्त्री०=सिहरन ।

सिहरन—स्त्री० [हिं० सिहरना] १. सिहरने की क्रिया, दशा या भाव। २ सहलाने के फल-स्वरूप होनेवाला रोमाच ।

सिहरना†—अ० [स० शिशिर+हिं० ना (प्रत्य०)] १ ठढ से काँपना। २ भय आदि से रोमाचित होना। ३ भयभीत होने के कारण हिचकना ।

सिहरा†—पु०=सेहरा ।

सिहराना—स० [हिं० सिहरना का स०] ऐसा काम करना जिसमे कोई सिहरे ।
*अ०=सिहरना ।
*स०=सहलाना ।

सिहरावन—पु० [हिं०सिहरना] १ सिहरन। २ सरदी। ठढ। जाडा।

सिहरी—स्त्री०[हिं० सिहरना+ई (प्रत्य०)] १ सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरन। २ सरदी के कारण होनेवाली कँपकँपी। ३ जूडी-बुखार। ४ रोंगटे खडे होना। रोमाच ।

सिहरू—पु० [देश०] संभालू ।

सिहलाना†—स०=सहलाना।
अ०=सीलना ।

सिहली—स्त्री० [स० शीतली] शीतली लता ।

सिहान—पु० [स० सिहाण] मडूर । लोहकिट्ट ।

सिहाना†—अ० [स० ईर्ष्या ?] १ ईर्ष्या करना। डाह करना। २ पाने या लेने के लिए ललचना। उदा०—मेरी भलो कि अवर्ते सकुचाहुँ सिहाहुं।—तुलसी। ३ मुग्ध या मोहित होना ।
स० ईर्ष्या या लोभ की दृष्टि से देखना ।

सिहारना†—स० [देश०] १ तलाश करना। ढूंढना। २ इकट्ठा, एकत्र या सचित करना।

सिहिकना—अ० [स० शुष्क] १ सूखना। २ विशेषत पौधों या फसल का सूखना। जैसे—धान सिहिकना ।
†अ०=सिसकना ।

सिहिटि*—स्त्री०=सृष्टि ।

सिहुड—पु० [स०] =थूहर (पेड) ।

सिहोर†—पु० [स० सिहुड] थूहर ।

सिह्लकी—स्त्री०=सिल्हकी ।

स्रिग*—पु०=सृक् (माला) ।

सींक—स्त्री० [स० इषीका] १ मूंज, सरपत आदि जातियों के पौधो का सीधा पतला डठल जिसमे फूल या घूआ लगता है। २ किसी प्रकार की वनस्पति का बहुत पतला और लबा डठल। लबा तिनका। ३ सूई की तरह का कोई पतला और लबा खड या टुकडा। ४ नाक मे पहनने का कील या लौंग नाम का गहना। ५. किसी चीज पर की पतली, लबी धारी।

सींक-पार—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बत्तख ।

सींकर—पु० [हिं० सीक] सीक मे लगा फूल या घूआ ।

सींक-सलाई—वि० [हिं०] बहुत ही दुबला-पतला ।

सींका—पु० [हिं० सीक] पेड-पौधों की वह बहुत पतली और सबसे छोटी उपशाखा या टहनी जिसमे पत्तियाँ और फूल लगते हैं।

सींकिया—वि० [हिं० सीक] १ सीक-सा पतला । २ बहुत अधिक दुबला-पतला। कमजोर। जैसे—सीकिया पहलवान । ३ जिसमे सीकों के आकार की लबी-लबी धारियाँ या रेखाएँ हों। जैसे—सीकिया कपडा, सीकिया छपाई।
पु० एक प्रकार का रगीन कपडा जिसमे सीकों के आकार की लबी-लबी धारियाँ होती हैं।

सींकिया-पहलवान—पु० [हिं०] दुबला-पतला आदमी जो अपने को बहुत बडा शक्तिशाली समझता हो। (व्यग्य और परिहास)

सींग—पु० [स० शृग] १ वे कठोर, लबे और नुकीले अवयव जो खुरवाले पशुओं के सिर पर दोनों ओर निकलते है। विषाण। जैसे—गौ, बैल या हिरन के सीग।
मुहा०—सींग जमना या निकलना= साधारण-सी बात के लिए भी लडने को उद्यत या प्रवृत्त होना। **सिर पर सींग होना**=कोई विशेषता होना। (परिहास) **सींग लगाना**=अभिमान बल, या महत्त्व प्रदर्शित करने के लिए कोई अनोखा और नया काम या बात करना। **(किसी के) कहीं सींग समाना**=कहीं रहने पर गुजारा या निर्वाह होना। ठिकाना लगना। (आश्चर्यसूचक) जैसे—तुम अभी से इतने उद्दड हो, तुम्हारे सीग कहाँ समाएंगे ।
कहा०—सींग कटाकर बछड़ों मे मिलना=वयस्क या वृद्ध हो जाने पर भी लडकों मे खेलना अथवा उनका-सा आचरण या व्यवहार करना ।
२ हाथ का अँगूठा जो प्राय उपेक्षा सूचित करने के लिए दूसरों को दिखाया जाता है और अशिष्ट लोगों मे पुरुषेन्द्रिय का प्रतीक माना जाता है ।
क्रि० प्र०—दिखाना ।
मुहा०—सींग पर मारना, रखना या समझना=बहुत ही उपेक्षित तथा तुच्छ समझना ।
३ सिंगी नाम का बाजा ।
†पु० [स० शार्ङ्ग] धनुष की प्रत्यचा। (डिं०)

सींगड़ा—पु० [हिं० सीग+डा (प्रत्य०)] १ ऐसा पशु जिसके सिर पर सीग हों। २ सिंगी नामक बाजा। ३ वह चोंगा या सीग जिसमे प्राचीन काल मे बारूद रखते थे ।

सींगण—पु०[स० सीग] सीग का बना हुआ नरसिंहा नाम का बाजा। (राज०)

सींगदाना†—पु०=मूंग-फली।

सींगना—स०[हिं० सीग] चुराए हुए पशु पकड़ने के लिए उनके सीग देखना और उनकी पहचान करना।

सींगरी—स्त्री०[देश०]१ एक प्रकार का पौधा। २ उक्त पौधे की फली जिसकी तरकारी बनाते है। मोगरे की फली। सीगर ।

सींगी—स्त्री० [हिं० सीग] १ वह पोला सीग जिससे जर्राह शरीर का दूषित रक्त खीचते है।

क्रि० प्र०—लगाना ।
२. सिंघी नाम का बाजा । ३ छोटी नदियों तथा तालाबों में होनेवाली एक प्रकार की मछली जिसके मुँह के दोनों ओर सींग सदृश पतले लंबे काँटे होते हैं।
सींधन—पु० [देश०] घोडों के माथे पर ऐसा टीका या निशान जिसमें दो या अधिक भौरियाँ हों।
सींच—स्त्री० [हिं० सींचना] १. सींचने की क्रिया या भाव । सिंचाई । २. छिडकाव ।
सींचना—स० [सं० सिंचन] १. खेतो मे या जमीन पर बोई हुई चीजों की जडों तक पहुँचाने के लिए पानी गिराना, डालना या बहाना । आबपाशी करना । २ तर करना । भिगोना ।
सींचाण†—पुं० =सचान (बाज पक्षी) ।
सींची—स्त्री० [हिं० सींचना] खेतो या फसल को पानी से सीचने का समय ।
सींड़—पु०[सं० शिंघण या सिंहाण] नाक के अन्दर से निकलनेवाला कफ-युक्त मल ।
सींथ—स्त्री० [सं० सीमंत] स्त्रियों के सिर की माँग ।
मुहा०—(किसी स्त्री का) **सींथ भरना**=किसी स्त्री की माँग मे सिन्दूर डालकर उससे विवाह करना । पत्नी बनाना ।
सींव*—स्त्री० [सं० सीमा] १. सीमा । २. मर्यादा ।
मुहा०—(किसी को) **सींव काटना**=सीमा या मर्यादा का उल्लघन करके किसी को दबाना या पीडित करना ।
सी—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो अत्यत पीडा, प्रसन्नता या रसास्वाद के समय मुँह से निकलता है । सीत्कार । सिसकारी ।
मुहा०—**सी करना**=असहमति या असतोष प्रकट करना ।
†स्त्री० [सं० सीत] बीज बोने की क्रिया । बोआई ।
अव्य० हिं० 'सा' का स्त्री० । जैसे—जरा सी बात ।
†पु०=शीत (सरदी) ।
सीउ*—पु० १.=शीत । २ =शिव ।
*स्त्री०=सीमा ।
सीक†—पु० [सं० इपीक] तीर । उदा०—सीक धनुष सायक सधाना । —तुलसी ।
†स्त्री०=सींक ।
सीकचा—पु० [हिं० सीखचा] १. सीखचा । लोहे का छड । २ बरामदे आदि के किनारे आड़ के लिए लगाया हुआ लकड़ी का वह ढाँचा जिसमे छड़ लगे होते हैं।
सीकर—पु० [सं० सीक् (सींचना)+अन्] १. पानी की बूँदें । जल-कण । २ पसीने की बूँदें । स्वेद-कण ।
†पु०=सिक्कड ।
सीकल—पु० [देश०] डाल का पका हुआ आम ।
स्त्री० दे० 'सिकली' ।
सीकस—पु० [देश०] ऊसर ।
सीका—पु० [सं० शीर्षक] सोने का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है।
†पुं० [स्त्री० अल्पा० सीकी] =छींका ।
†पु० =सीका ।
पु० [देश०] चवन्नी । (दलाल)
सीका-काई—स्त्री० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियाँ रीठे की तरह सिर के बाल आदि मलने के काम मे आती हैं ।
सीकी†—स्त्री० [हिं० सीका] चवन्नी । (दलाल)
सीकुर†—पु०[सं० शूक] गेहूँ, जौ, धान आदि की बालों में निकलनेवाले सूत की तरह पतले और नुकीले अग ।
सीख—स्त्री० [सं० शिक्षा] १. शिक्षा । तालीम । २ सिखाई हुई अच्छी बात । ३ अनुभव से प्राप्त होनेवाला ज्ञान । ४ परामर्श । स्त्री० [फा० सीख] १. लोहे की सलाई । २. तीली । ३ वह कबाब जो लोहे की सलाई पर चिपका कर आग पर भूना जाता है।
सीखचा—पु० [फा० सीखच.] १ लोहे की सीख जिस पर मास लपेट कर भूनते है। २. लोहे का पतला लबा छड जो खिडकियों, दरवाजों आदि मे आड या रोक के लिए लगाया जाता है ।
सीखन*—स्त्री० [हिं० सीखना] शिक्षा । सीख ।
सीखना—स० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खण] १. किसी से कला विद्या आदि का ज्ञान या शिक्षा प्राप्त करना । जैसे—अँगरेजी या सस्कृत सीखना, चित्रकारी या सिलाई सीखना । २ स्वय अभ्यास या अनुभव से कोई क्रिया, शिल्प या विद्या सीखना । जैसे—लडका बोलना सीख रहा है । ३ किसी प्रकार का कटु अनुभव होने पर भविष्य मे सचेत रहने की शिक्षा ग्रहण करना । जैसे—सौ रुपये गँवाकर तुम यह तो सीख गये कि अनजान आदमियो का विश्वास नहीं करना चाहिए ।
सयो० क्रि०—जाना ।—लेना ।
सीगा—पु० [अ० सीग.] १. साँचा । ढाँचा । २ कार्य, व्यापार आदि का कोई विशिष्ट विभाग । ३. मुसलमानों मे विवाह के समय कहे जाने-वाले कुछ विशिष्ट अरबी वाक्य ।
क्रि० प्र०—पढ़ना ।
सीझना—अ० [सं० सिद्ध] [भाव० सीझ] १. आँच पर पकना या गलना । २. आग मे पड़कर भस्म होना । जलना । उदा०—लै करसी प्रयाग कब सीझे ।—तुलसी । ३ शारीरिक कष्ट सहना । दुख भोगना । ४ तपस्या करना । ५ इमारत आदि के काम के लिए वृक्ष की ताजी कटी हुई लकड़ी का कुछ दिनो तक पडे रहकर सूखना और पक्का या टिकाऊ होना । (सीज़निंग) ६ सूखे हुए चमडे का मसाले आदि मे भीग कर मुलायम और टिकाऊ होना । (टैनिंग) ७ दलाली, व्याज, लाभ आदि के रूप मे कुछ धन मिलना या उसकी प्राप्ति का निश्चित हो जाना । (दलाल) । जैसे—(क) बात की बात मे पाँच रुपये सीझ गये । (ख) इस रोजगार में रुपए सैकडे का व्याज सीझता है ।
सीट—स्त्री० [अ०] बैठने का स्थान । आसन ।
स्त्री० [हिं० सीटना=घमड भरी बातें कहना] सीटने की क्रिया या भाव।
पद—सीट-पटाँग ।
सीटना—स० [अनु०] बढ-बढ़कर बातें करना । डींग हाँकना । शेखी बघारना ।
सीट-पटाँग—स्त्री० [हिं० सीटना+(ऊँट) पर टाँग] बहुत बढ-बढ कर की जानेवाली बातें । आत्म-प्रशसा की घमड-भरी बात । डींग ।

सीटी—स्त्री० [स० शीत] १ वह पतला महीन शब्द जो होठो को गोल सिकोडकर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है। २ किसी विशिष्ट क्रिया के द्वारा कही से उत्पन्न होनेवाला उक्त प्रकार का शब्द। जैसे—रेल की सीटी।

मुहा०—सीटी देना=बुलाने या सकेत करने के लिए उक्त प्रकार का शब्द उत्पन्न करना।

३. एक प्रकार का छोटा उपकरण या बाजा जिसमे मुँह से हवा भरने पर उक्त प्रकार का शब्द निकलता है

क्रि० प्र०—बजाना।

सीठ†—स्त्री०=सीठी।

सीठना—पु० [स० अशिष्ट, प्रा० असिट्ठ+ना (प्रत्य०)] एक प्रकार के गीत जो स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं और जिनके द्वारा सबधियो का उपहास करती है।

सीठनी—स्त्री०=सीठना।

सीठा—वि० [स० शिष्ट, प्रा० सिट्ठ=बचा हुआ] [भाव० सीठापन] बिना रस या स्वाद का। नीरस। फीका।

सीठी—स्त्री० [प्रा० सिट्ठ] १ पत्ते, फाँक, फल आदि का वह अश जो रस निचोड लेने पर शेष बचता है। जैसे—मोसम्मी की सीठी। २ लाक्षणिक अर्थ मे ऐसी वस्तु जो सारहीन हो।

सीड़—स्त्री० [स० शीत] १ वह तरी या नमी जो आस-पास मे पानी की अधिकता के कारण कही उत्पन्न हो जाती है। सील। सीलन। २ ठडक। उदा०—कीन्हेसि धूप, सीड औ छाँहाँ।—जायसी।

सीढ़ी—स्त्री० [स० श्रेणी] १ वास्तु-कला मे वह रचना अथवा रचनाओ का समूह जिस या जिन पर क्रमश पैर रखकर ऊपर चढा या नीचे उतरा जाता है। २ बाँस के दो बल्लो या काठ के लम्बे टुकडो का बना लम्बा ढाँचा जिसमे थोडी-थोडी दूर पर पैर रखने के लिए डडे लगे रहते हे और जिसके सहारे किसी ऊँचे स्थान पर चढ़ते है।

पद—सीढी का डंडा=पैर रखने के लिए सीढी मे बना हुआ स्थान।

३. लाक्षणिक रूप मे, उन्नति या बढाव के मार्ग पर पड़नेवाली विभिन्न स्थितियो मे से प्रत्येक स्थिति।

मुहा०—सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ना=क्रम-क्रम से ऊपर की ओर बढ़ना। धीरे-धीरे उन्नति करना।

४ छापे आदि के यत्रो मे काठ की सीढी के आकार का वह खड जिस पर से होकर बेलन आदि आगे-पीछे आते जाते हैं। ४. किसी प्रकार के यत्र मे उक्त आकार-प्रकार का कोई अश या खड।

सीढ़ीनुमा—वि० [हिं०+फा०] जो देखने मे सीढियो की तरह बराबर एक के बाद एक ऊँचा होता गया हो। सम-समुन्नत। (टैरेस-लाइक)

सीत—पु० [?] बहुत ही थोडा-सा अश। उदा०—हाँडी के चावलो की एक सीत थी।—वृंदावनलाल।

†पु०=शीत (सरदी)।

सीत-पकड़—पु० [स० शीत+हिं० पकड़ना] १. शीत द्वारा ग्रस्त होने का रोग। २ हाथियो का एक रोग जो उन्हे सरदी लगने से होता है।

सीतल†—वि०=शीतल।

सीतल-चीनी—स्त्री० दे० 'कबाब चीनी'।

सीतल-पाटी—स्त्री० [सं० शीतल+हिं० पाटी] १ पूर्वी बगाल और असम के जगलो मे होनेवाली एक प्रकार की झाडी जिससे चटाइयाँ बनती है। २. उक्त झाडी के डठलो से बनी हुई चटाई। ३ एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सीतल-बुकनी—स्त्री० [स० शीतल+हिं० बुकनी] १. सत्तू। सतुआ। २ साधुओ की परिभाषा मे सन्तो की बानी जो हृदय को शीतल करती है।

सीतला†—स्त्री०=शीतला।

सीता—स्त्री० [स० √षिञ् (बाँधना)+क्त बाहु० दीर्घ—टाप्] १ वह रेखाकार गड्ढा जो जमीन जोतते समय तल के फाल के धँसने से बनता है। कूँड। २ मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो रामचन्द्र को ब्याही थी। जानकी। वैदेही।

पद—सीता की रसोई=(क) बच्चो के खेलने के लिए बने हुए रसोई के छोटे-छोटे बरतन। (ख) एक प्रकार का गोदना। **सीता की पंजीरी**=कर्पूर वल्ली नाम की लता।

३. वह भूमि जिस पर राजा की खेती होती हो। राजा की निज की भूमि। सीर। ४. वह अन्न जो प्राचीन भारत मे सीताध्यक्ष प्रजा से लेकर एकत्र करता था। ५ दाक्षायणी देवी का एक नाम या रूप। ६ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते है। ७ आकाश-गगा की उन चार धाराओ मे से एक जो मेरु पर्वत पर गिरने के उपरात हो जाती है। ८ मदिरा। शराब। ९ पाताल-गारुडी नाम की लता। ककही या कघी नाम का पौधा।

सीता-जानि—पु० [स० ब० स०] श्रीरामचन्द्र।

सीतात्यय—पु० [स०] किसानो पर होनेवाला जुरमाना। खेती के सबध का जुरमाना। (कौ०)

सीतावर—पु० [स० सीता√धृ+अच्] सीता (हल) धारण करनेवाले बलराम।

सीताध्यक्ष—पु० [स० ष० त०] प्राचीन भारत मे वह राज-अधिकारी जो राजा की निजी भूमि मे खेतीबारी आदि का प्रबध करता था।

सीता-नाथ—पु० [स० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीता-पति—पु० [स० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीता-फल—पु० [स० मध्य० स० ब० स०] १. शरीफा। २ कुम्हड़ा।

सीता-यज्ञ—पु० [स० मध्य० स०] प्राचीन भारत मे हल जोतने के समय होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

सीता-रमण—पु० [स० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीतारवन, सीतारौन*—पु०=सीता-रमण।

सीता-वट—पु० [स० मध्य० स०] १. प्रयाग और चित्रकूट के बीच स्थित एक वट वृक्ष जिसके नीचे राम और सीता ने विश्राम किया था। २ उक्त वृक्ष के आस-पास का स्थान।

सीतावर—पु० [स० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीता-वल्लभ—पु० [स० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सीताहार—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का पौधा।

सीत्कार—पु० [स०] मुँह से निकलनेवाला सी-सी शब्द जो शीघ्रतापूर्वक साँस खीचने या लेने से होता है। सी-सी ध्वनि।

विशेष—यह ध्वनि अत्यधिक आनद, पीडा या सरदी के फल-स्वरूप होती है।
सीत्कृति—स्त्री०[स०] सीत्कार। (दे०)
सीत्य—पु०[स० सीत+यत्]१. धान्य। धान। २. खेत।
सीथ—पु०[स० सिक्थ] उबाले या पकाये हुए अन्न का दाना।
सीद—पु०[स०√सद् (नष्ट करना) जिच् सद्]१. ब्याज या रुपये देने का धधा। २. सूदखोरी। कुसीद।
सीदना—अ०[स०, सीदति] १. दुःख पाना। कष्ट झेलना। २. नष्ट होना।
स०१. दुःख देना। २ नष्ट करना।
सीदिया—पु०[?]दक्षिण-पूर्वी युरोप का एक प्राचीन देश जिसकी ठीक सीमाएँ अभी तक निर्धारित नही हुई है। कहते है कि शक लोग मूलत. यही के निवासी थे और यही से भारत आये थे।
सीदी—पु०[सीदिया देश] सीदिया देश का अर्थात् शक जाति का मनुष्य।
वि० सीदिया नामक देश का।
सीद्य—पु०[स० √सद् (नष्ट करना)+यत् सद-सीद]१. आलस्य। काहिली। २. शिथिलता। सुस्ती। ३. अकर्मण्यता। निकम्मापन।
सीद्यमान—वि० [स० सीद्य से] ठढा या सुस्त पडा हुआ।
सीध—स्त्री०[स० सिद्धि]१. सीधे होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सीधे या ठीक सामने का विस्तार या स्थिति। जैसे—बस इसी सीध मे चले जाओ, आगे एक कूआँ मिलेगा।
पद—सीध में=किसी विंदु से अमुक ओर सीधे।
मुहा०—सीध बाँधना=(क) सडक, क्यारी आदि बनाने के लिए पहले सीधी रेखा बनाना। (ख) सीधी रेखा स्थिर करना।
३ निशाना। लक्ष्य।
मुहा०—सीध बाँधना= निशाना या लक्ष्य साधना।
सीधा—वि०[स० शुद्ध, ब्रज० सूधा, सूधो] [स्त्री० सीधी, भाव० सिधाई, सीधापन]१ जो विना घूमे, झुके या मुडे कुछ दूर तक किसी एक ही ओर चला गया हो। जिसमे फेर या घुमाव न हो। सरल। ऋजु। 'टेढा' का विपर्याय। जैसे—सीधी लकडी, सीधा रास्ता। २ जो ठीक एक ही ओर प्रवृत्त हो। जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। जैसे—सीधा निशाना।
मुहा०—सीधी सुनाना= साफ साफ कहना। खरी बात कहना।
३. (व्यक्ति) जो कपटी, कुटिल या धूर्त न हो। निष्कपट और सरल प्रकृति का।
पद—सीधा-सादा= जो कुछ भी छल-कपट न जानता हो।
४ शात और सुशील। भला। जैसे—सीधा आदमी, सीधी गौ। ५ (व्यवहार) जिसमे उद्दडता, कपट या छल न हो।
पद—सीधी तरह=शिष्टता और सभ्यतापूर्वक। जैसे—पहले उसे सीधी तरह समझाकर देखो। **सीधे सुभाव (या स्वभाव)**=मन मे विना कोई छल-कपट रखे। सरल और सहज भाव से। जैसे—मैने उन लोगों को सीधे-सुभाव क्षमाकर दिया था। **सीधे-से**=स्पष्ट रूप से। जैसे—उन्होने सीधे से कह दिया कि मैं यह काम नही करूँगा।
मुहा०—(किसी को) सीधा करना= कठोर व्यवहार करके अथवा दड देकर किसी को अपने अनुकूल बनाना या ठीक रास्ते पर लाना।
६. अच्छा, अनुकूल और लाभदायक। जैसे—जब भाग्य सीधा होगा (या सीधे दिन आएँगे) तब सब बातें आप से आप ठीक हो जायँगी।
७. (संबध) जिसमे और किसी प्रकार का अतर्भाव, फेर या लगाव न हो।' प्रत्यक्ष।
पद—सीधा-सीधा=सुगम और प्रत्यक्ष।
८ (कार्य)जिसके सपादन या साधन मे कोई कठिनता या जटिलता न हो। सरल और सुगम। आसान। सहज। जैसे—सीधा काम।
९. (बात या विषय) जिसे समझने मे कोई कठिनता न हो। जैसे—सीधी बात, सीधा सवाल। १० (पदार्थ) जिसका अगला या ऊपरी भाग सामने या ठीक जगह पर हो। 'उल्टा' का विपर्याय। जैसे—सीधा करके पहनो। ११ दाहिना। दक्षिण। जैसे—सीधे हाथ से रुपये दे दो।
क्रि० वि०—ठीक सामने की ओर (सम्मुख)।
पु० किसी पदार्थ के आगे, ऊपर या सामने का भाग।'उलटा' का विपर्याय (आववर्स) जैसे—इस कपडे मे सीधे और उलटे का जल्दी पता नही चलता।
पुं०[असिद्ध] बिना पका हुआ अन्न जो प्राय ब्राह्मणो आदि को भोजन बनाने के लिए दिया जाता है।
•**सीधापन**—पु०[हिं० सीधा+पन (प्रत्य०)]१ सीधा होने की अवस्था, गुण या भाव। सिधाई। २ व्यवहारगत वह विशेषता जिसमे किसी प्रकार का छल-बल नही होता।
सीधु—पु०[स०]१ गुड या ईख के रस से बना हुआ मद्य। गुड की शराब। २. अमृत।
सीधु-गंध—पु०[सं०] मौलसिरी। बकुल।
सीधुप—पु०[स०] मद्यप।
सीधु-पुष्प—पु०[स०]१ कदव। कदम। २. वकुल। मौलसिरी।
सीधु-रस—पु०[सं० ब० स०] आम का पेड।
सीधे—अव्य०[हिं० सीधा]१. ठीक ऊपर की ओर उठे हुए बल मे। जैसे—सीधे खडे हो। २ सीध मे। बराबर सामने की ओर। सम्मुख। ३ बिना बीच मे इधर-उधर घूमे या मुडे हुए। जैसे—इसी सडक से सीधे चले जाओ। ४ बिना बीच मे कही ठहरे या रुके हुए।जैसे—पहले तुम सीधे उन्ही के पास जाओ। ५ नरमी या शिष्ट व्यवहार से। जैसे—वह सीधे रुपया न देगा। ६ शान्त भाव से। जैसे—सीधे बैठो।
सीध्र—पु०[स० √सिध् (गमन करना आदि)+रक्—पृषो० दीर्घ] गुदा। मलद्वार।
सीन—पु०[अं०]१. दृश्य। २ रग मच का परदा जिसपर अनेक प्रकार के दृश्य अकित रहते है।
सीनरी—स्त्री०[अ०] प्राकृतिक दृश्य।
सीना—स०[स० सीवन]१ सूई-धागे या सूजे-रस्सी आदि की सहायता से दो या अधिक कपडे, कागज, टाट, नाइलन, प्लास्टिक, मास, चमडे आदि के टुकडो को साथ साथ जोडना। जैसे—फटी हुई धोती सीना, कापी या किताब सीना, जूता सीना। २ सिलाई करना। जैसे—कमीज या पाजामा सीना।
पद—सीना-पिरोना=सिलाई, बेलबूटे आदि का काम करना।
३. लाक्षणिक अर्थ मे, दो पक्षो के मत-भेद दूर करना।

पु०[फा० सीन]१. छाती। वक्षस्थल।
मुहा०—(किसी को) सीने से लगाना=प्रेमपूर्वक गले लगाना। आलिंगन करना।
२ स्त्री का स्तन।
*पु०=सीवाँ (कीड़ा)।

सीना-कोबी—स्त्री० [फा० सीन.कोबी] छाती पीटते हुए शोक प्रकट करना।

सीना-जोर—वि०[फा० सीन जोर] [भाव० सीना-जोरी] १. अपने वल के जोर पर या अभिमान से दूसरो से जबरदस्ती काम करानेवाला। जबरदस्त। २ अत्याचारी।

सीना-ज़ोरी—स्त्री०[फा० सीन ज़ोरी] १ जबरदस्ती। २ अत्याचार।

सीना-तोड़—पु०[हि० सीना+तोडना] कुश्ती का एक पेच।

सीना-पनाह—पु०[फा०] जहाज के निचले खड मे लवाई के वल दोनो ओर का किनारा। (लश०)

सीना-बंद—पु०[फा० सीनबन्द] १ सीना बाँधनेवाला वस्त्र या पट्टी। २ अगिया। चोली। ३ एक प्रकार की कुरती जिसे सदरी भी कहते हैं। ४ पट्टी विशेषत घोडे की पेटी। ५ ऐसा घोड़ा जिसका अगला पैर लगडाता हो।

सीना-बाँह—स्त्री० [हि० सीना+बाँह] एक प्रकार की कसरत।

सीना-मोढ़ा—पु०[फा०सीन.=छाती+हि० मोडा=कन्धा] छाती, कन्धो आदि का विचार जो प्राय. व्यक्तियो, विशेषत पशुओ के पराक्रम, वल आदि का अनुमान करने के लिए होता है। जैसे—घोडे, बकरे आदि का दाम, उनके सीने-मोढे पर ही लगता है।

सीनियर—वि०[अ०]१. वड़ा। वयस्क। २ पद मर्यादा आदि मे श्रेष्ठ। प्रवर। ज्येष्ठ।

सीनी—स्त्री०[फा०]१ तश्तरी। थाली। २. छोटी नाव।

सीनेट—स्त्री०[अ०]१. विश्वविद्यालय की प्रबधकारिणी सभा। २ अमेरिका की राज्य सभा।

सीनेटर—पु० [अ०] सीनेट का सदस्य।

सीप—पु०[स० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] [स्त्री० अल्पा० सीपी]१. घोघे, शख आदि के वर्ग का और कठोर आवरण के भीतर रहनेवाला एक जल-जन्तु जो छोटे तालावो और झीलो से लेकर वड़े-वडे समुद्रो तक मे पाया जाता है। शुक्ति। मुक्ता माता। २ उक्त जल-जन्तु का सफेद, कडा और चमकीला आवरण या सपुट जो बटन, चाकू आदि के दस्ते आदि बनाने के काम मे आता है, और जिससे छोटे बच्चो को दूध पिलाया जाता है। ३ एक प्रकार का लबोतरा पात्र जिसमे देव-पूजा, तर्पण आदि के लिए जल रखा जाता है।

सीपति—पु०=श्रीपति (विष्णु)।

सीपर*—पु०=सिपर (ढाल)।

सीप-सुत—पु०[हि० सीप+स० सुत] मोती।

सीपारा—पु०[फा०] दे० 'सिपारा'।

सीपिज—वि० सीप या सीपी से उत्पन्न।
पु०[हि० सीपी+स० ज] सीपी से उत्पन्न अर्थात् मोती।

सीपी—स्त्री हि० 'सीप' का स्त्री० अल्पा०।

सीबी—स्त्री०[अनु० सी-सी] सीत्कार। (दे०)

सीमंत—पु०[सं०] १. सीमा-रेखा। २ स्त्रियो के सिर की माँग। ३. शरीर मे हड्डियो का जोड़। ४ दे० 'सीमतोन्नयन'।

सीमंतक—पुं०[स० सीमत √ कृ (करना)+क]१ माँग निकालने की क्रिया। २. सिंदूर जो स्त्रियो की माँग मे डालते है। ३ जैन पुराणो के अनुसार एक नरक। ४ उक्त नरक का निवासी। ५ एक प्रकार का माणिक (रत्न)।

सीमंतवान् (वन्)—वि० [स० सीमत+मतुप्-य=व-नुम्-दीर्घ] [स्त्री० सीमतवती] जिसके सिर के बालो मे माँग निकली हो।

सीमतित—भू० कृ०[स०सीमत +इतच्] सीमत के रूप मे लाया हुआ। माँग निकाला हुआ। जैसे—सीमतित केश।

सीमंतिनी—स्त्री०[स० सीमत+इनि—ङीप्] १ स्त्री। नारी।
विशेष—स्त्रियाँ माँग निकालती हैं, इससे उन्हें सीमतिनी कहते हैं।
२ सगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सीमंतोन्नयन—पु० [स० ब० स०] द्विजो के दस सस्कारो मे से तीसरा सस्कार, जो गर्भाधान के चौथे, छठे, आठवें महीने होता है, तथा जिसमे गर्भवती स्त्री के सिर के बालो मे माँग निकाली जाती है।

सीम†—पु०[स० सीमा] सीमा। हद।
मुहा०—**सीम काँड़ना या चरना**=(क) अपने अधिकारो का उल्लघन करते हुए दूसरे के अधिकार-क्षेत्र मे अतिक्रमण करना। (ख) जोर-जबरदस्ती करना।
पु०[फा०] चाँदी।

सीमक—पु०[स० सीम+कन्] सीमा। हद।

सीमल†—पु०=सेमल।

सीम-लिंग—पु०[स० ष० त०]प्रदेश की सीमा का चिह्न। हद का निशान।

सीमांकन—पु०[स० सीमा+अकन, ष० त०] [भू० कृ० सीमाकित] अधिकार, कार्य, क्षेत्र आदि के अलग-अलग विभाग करके उनकी सीमा निर्धारित या निश्चित करना। (डिमार्केशन)

सीमांकित—भू० कृ०[स०] जिसका सीमाकन हुआ हो। (डिमार्केटेड)

सीमांत—पु०[स०]१ वह स्थान जहाँ किसी सीमा का अत होता हो। वह जगह जहाँ तक हद पहुँचती हो। सरहद। (फ्रन्टियर) २ गाँव की सीमा। सिवाना। ३ सीमा पर का प्रदेश।

सीमांत-पूजन—पु० [स० ष० त०] वर का वह पूजन या स्वागत जो वरात आने के समय वधू-पक्ष की ओर से गाँव की सीमा पर होता है।

सीमांत-वध—पु०[स० ष० त०, ब० स०]आचरण-सबधी नियम या मर्यादा।

सीमा—स्त्री०[स०]१ किसी प्रदेश या स्थान के चारो ओर के विस्तार की अतिम-रेखा या स्थान। हद। सरहद। (बाउडरी)
मुहा०—**सीमा बंद करना**=ऐसी राजनीतिक व्यवस्था करना कि देश की सीमा पर से आदमियो और माल का आना-जाना रुक जाय।
२ किसी विस्तार की अतिम लबाई या घेरा। (बार्डर) जैसे—सीमा के प्रदेश। ३ वह अतिम स्थान जहाँ तक कोई बात या काम हो सकता हो। या होना उचित हो। नियम या मर्यादा की हद। (लिमिट)
मुहा०—**सीमा से बाहर जाना**=उचित से अधिक वढ जाना। (निषिद्ध)

४. भाँग। विजया।

सीमा-कर—पु०[सं०ष०त०]वह कर जो किसी प्रदेश की सीमा पर आने-जानेवाले व्यक्तियों या सामान पर लगता है। (टरमिनल टैक्स)

सीमा-चौकी—स्त्री० [स०+हिं०] सीमा पर स्थित वह स्थान जहाँ पर सीमा-रक्षा के निमित्त सैनिक रखे जाते हो।

सीमातिक्रमण—पु० [स० ष० त०] अपनी सीमा का उल्लघन करके दूसरे के प्रदेश मे किया जानेवाला अनधिकार प्रवेश।

सीमातिक्रमणोत्सव—पु०[स०] प्राचीन भारत मे, युद्ध यात्रा के समय सीमा पार करने का उत्सव। विजय-यात्रा। विजयोत्सव।

सीमापाल—पु०[स०]सीमा प्रान्त का रक्षक अधिकारी।

सीमाब—पु०[फा०] पारा। पारद।

सीमा-बद्ध—भू० कृ०[स०]१ जिसकी सीमा निश्चित कर दी गई हो। हद के भीतर किया हुआ। जैसे—सीमा-बद्ध प्रदेश। २. मीमाओ अर्थात् मर्यादाओ से बँधा हुआ।

सीमा-शुल्क—पु०[स०] वह कर या शुल्क जो किसी राज्य की सीमा पर कुछ विशिष्ट प्रकार के पदार्थों या उनके आयात तथा निर्यात के समय लिया जाता है। (ड्यूटी)

सीमा-संधि—स्त्री० [स० ष० त०] वह स्थान जहाँ पर दो या अनेक देशो, राज्यो आदि की सीमाएँ मिलती हो।

सीमा-सेतु—पु० [स० मध्य० स०] वह पुश्ता या मेड़ जो सीमा निश्चित करने के लिए बनाई जाती है।

सीमिक—पु० [स०√स्यम् (शब्द करना)+किनन्-सतृप्ता+दीर्घ] १. एक प्रकार का वृक्ष। २. दीमक। ३. दीमको की बाँबी।

सीमिका—स्त्री० [स० सीमिक+टाप्] १. दीमक। २ चीटी। च्यूँटी।

सीमित—भू० कृ०[सं०]१. सीमाओ से बँधा हुआ। २ जिसका प्रभाव या विस्तार एक निश्चित सीमा के अन्तर्गत हो। २ राजनीति शास्त्र मे जिसपर सांविधानिक बधन लगे हो। 'परम' का विरुद्धार्थक। (लिमिटेड) जैसे—सीमित राज्य-तंत्र।

सीमी—वि०[फा०] चाँदी का बना हुआ।

सीमेंट—पु०[अ०]दीवारो आदि की चुनाई मे काम आनेवाला एक प्रकार का चूर्ण जिसमे वालू मिलाने पर गारा बनता है तथा जो जुड़ाई और प्लास्तर के काम आता है एव सूखने पर बहुत कडा और मजबूत हो जाता है।

सीय*—स्त्री०[स० सीता] सीता। जानकी।
†पु०[स० शीत] ठढ।
वि० ठढा।

सीयन*—स्त्री०=सीवन।

सीयरा*—वि०=सियरा (ठढा)।

सीर—पु०[स०] १ हल। २. जोता जानेवाला बैल। ३ सूर्य। ४. आक। मदार।
स्त्री०१.वह जमीन जिसे भू-स्वामी या जमीदार स्वय जोतता या अपनी ओर से किसी दूसरे से जोतवाता आ रहा हो, अर्थात् जिस पर उसकी निज की खेती होती हो। २. वह जमीन जिसकी उपज या आमदनी कई हिस्सेदारो मे बँटती हो। ३. हिस्सेदारी। साझेदारी।
स्त्री०[स० शिरा] रक्तवाहिनी नाड़ी। नस।
मुहा०—सीर खुलवाना=नश्तर से शरीर का दूषित रक्त निकलवाना।
पु०[?] १ चौपायो का एक सक्रामक रोग। २ पानी का ऐसा बहाव जो किनारे की जमीन काटता हो। (लश०)
†*वि०=सियरा (ठढा)।

सीरक—पु० [स० सीर+कन्] १. हल। २. सूर्य। ३. शिशुमार। सूँस।
वि०[हिं० सीरा] ठंढा या शीतल करनेवाला।

सीरख*—पुं०=शीर्ष।

सीरत—स्त्री०[अ०]१. प्रकृति। स्वभाव। २ गुण। विशेषता।

सीर-धर—वि०[स० ष० त०] हल धारण करनेवाला।
पु० बलराम का एक नाम।

सीर-ध्वज—पु० [स० ब० स०] राजा जनक का पहला और वास्तविक नाम। २ बलराम।

सीरन†—पुं०[?] बच्चो का एक प्रकार का पहनावा।

सीरनी—स्त्री०[फा० शीरीनी] मिठाई। (दे० 'सिरनी')

सीर-पाणि—पु०[स० ब० स०] बलराम का एक नाम।

सीर-भृत्—पु०[स० सीर√भृ (सुरक्षित रखना आदि)+क्विप्—तुक्] १. हल चलानेवाला अर्थात् खेतिहर या हलवाहा। २. बलराम।

सीरम—पु० [अ०] कुछ विशिष्ट प्रकार के प्राणियो और मनुष्यो के शरीर के रक्त मे से निकला हुआ एक तरल पदार्थ जिसमे कुछ विशिष्ट रोगो का आक्रमण रोकने की शक्ति होती है; और इसीलिए जो दूसरे प्राणियो या व्यक्तियो के शरीर मे उन्हे किसी रोग से रक्षित रखने के उद्देश्य से सूई के द्वारा प्रविष्ट किया जाता है।

सीरवाह(क)—पु०[स०]१ हल चलाने या जोतनेवाला। हलवाहा। २ जमीदार की ओर से उसकी खेती का प्रबध करनेवाला कारिन्दा।

सीरष†—पु०=शीर्ष।

सीरा—स्त्री०[स०] एक प्राचीन नदी।
वि०[स० शीतल, प्रा० सीअड] [स्त्री० सीरी]१. ठढा। शीतल। २. धीर और शात प्रकृतिवाला।
†पु०[फा० शीर]१ चीनी आदि का पकाया हुआ शीरा। २ मोहन-भोग। हलुआ।
पु० १.=सिरा (शीर्ष या सिरहाना)। २ =सिरहाना।

सीरायुध—पु०[स० ब० स०] बलराम।

सीरियल—पु०[अ०]१. वह लबी कहानी या लेख जो कई बार और कई हिस्सो मे प्रकाशित हो। २. ऐसी कहानी या खेल जो सिनेमा मे उक्त प्रकार से कई भागो मे विभक्त करके दिखाया जाता हो।

सीरी (रिन्)—पु०[स०] (हल धारण करनेवाले) बलराम।
वि०हिं० 'सीरा' का स्त्री०।

सीरीज—स्त्री० [स०]१ किसी एक क्रम मे पूर्वापर घटित होनेवाली घटनाओ का समाहार या समूह। २ पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र मे, किसी एक प्रकाशन सस्था द्वारा प्रकाशित वह पुस्तक-माला जिसका विषय, मूल्य या जिल्द समान हो।

सीलंध—स्त्री०[स०] एक प्रकार की मछली।

सील—स्त्री०[स० शलाका] लकडी का एक हाथ लबा औजार जिस पर चूड़ियाँ गोल और सुडौल की जाती है।

†स्त्री०=सीड।
†पुं०=शील।
स्त्री०[अ०]१ पत्रों आदि पर लगाई जानेवाली मोहर। छाप। मुद्रा। २ प्राय ठढे देशो के समुद्रों मे रहनेवाला एक प्रकार का बडा स्तनपायी चौपाया जो मछलियाँ खाकर रहता है।

सीलना—अ०[हिं० सील]१ सील से युक्त या प्रभावित होना। जैसे—दीवार या फरश सीलना। २. सील या नमी के कारण ठढा होकर विकृत होना।

सीला†—पु०=सिला।

सीवँ*—स्त्री०=सीमा।

सीवक—वि०[स०] सीनेवाला। सिलाई करनेवाला।

सीवडा(ड़ो)—पु० [स० सीमात] ग्राम का सीमात। सिवाना। (डिं०)

सीवन—पु०[सं० √ षिवु (सीना)+ल्युट्—अन]१ सीने का काम। सिलाई। २ सीने के कारण पडे हुए टांके। सिलाई के जोड। उदा०—सीवन को उधेडकर देखोगे क्यो मेरी कन्या को।—पत। ४ दरज। दरार। सधि।
*स्त्री०=सीवनी।

सीवना*—स०=सीना।

सीवनी—स्त्री० [स०सीवन-ङीप्]वह रेखा जो लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है। सीवन।

सीवाँ—पु०[सं०सीमिक] एक प्रकार का कीड़ा जो ऊनी कपडो को काट डालता है।

सीवी—स्त्री०=सीबी (सीत्कार)।

सीव्य—वि०[स०√षिवु (सीना)+यत् (क्यप्)] जो सीया जा सके। सीये जाने के योग्य।

सीस—पु०[स० शीर्ष]१. सिर। माथा। मस्तक। २. कधा। (डिं०) ३ अतरीप। (लश०)
†पु०=सीसा (धातु)।

सीसक—पु०[स०] सीसा नामक धातु।

सीसज—पु०[स०] सिंदूर।
वि० 'सीसा' नामक धातु से उत्पन्न या बना हुआ।

सीस-ताज—पु०[हिं० सीस+फा०ताज] वह टोपी या ढक्कन जो शिकार पकडने के लिए पाले हुए जानवरो के सिर चढा रहता है और शिकार के समय उतारा या खोला जाता है। कुलहा।

सीस-त्रान†—पु०=शिरस्त्राण।

सीस-पत्र—पु०[स०] सीसा नामक धातु।

सीस-फूल—पु०[हिं० सीस+फूल] सिर पर पहनने का फूल के आकार का एक प्रकार का गहना।

सीसम†—पु०=शीशम।

सीस-महल†—पु०=शीश-महल।

सीसर—पु०[स० सीस√रा (रोना)+क]१. देवताओ की सरमा नाम की कुतिया का पति। (पाराशर गृह्यसूत्र) २. एक प्रकार का बालग्रह जिसका रूप कुत्ते का-सा कहा गया है।

सीसल†—पु०=राम-बाँस।

सीसा—पु०[स० सीसम] मटमैले रंग की एक मूल धातु जो अपेक्षया बहुत भारी या वजनी होती है। (लेड)
पु०=शीशा।

सीसी—स्त्री०[अनु०]१. सी-सी शब्द। २ दे० 'सीत्कार'।
स्त्री० शीशी

सीसो*—पु०=शीशम।

सीसोपधातु—पु०[स०]सिंदूर या ईंगुर जिसे सीसे की उपधातु माना गया है।

सीसोदिया—पु०=सिसोदिया।

सीस्तान—पु०[फा०] ईरान के दक्षिण मे स्थित एक प्रदेश।

सीह—स्त्री०[स० सीधु=मद्य] महक। गध।
†पु०१=सिंह। २ सेही (साही जन्तु)। ३.=शीत।

सीह गोस—पु०=स्याह-गोश।

सीहण(णी)*—स्त्री० [स० सिहनी] १ सिंह की मादा। शेरनी। उदा०—'सीहण रण साके नही, सीह जणे रणसूर।'—बाँकीदास।

सीहुँड—पु०[स०सीहुड+वृषो दीर्घ] सेहुँड। थूहर।

सुखड़—पु०[?] साधुओं का एक सप्रदाय।

सुंग—पु०[स०] एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवश जो अतिम मौर्य-सम्राट् बृहद्रथ के प्रधान सेनापति पुष्यमित्र ने ईसा से प्राय दो सौ वर्ष पूर्व प्रतिष्ठित किया था।

सुंघनी—स्त्री०[हिं० सूँघना] तम्बाकू को पीस तथा छानकर तैयार किया हुआ चूर्ण जिसे लोग सूंघते हैं तथा दाँतो आदि पर भी मलते है।

सुंघाना—स०[हिं० सूँघना का प्रे०] किसी को कुछ सूँघने मे प्रवृत्त करना।
मुहा०—(किसी को) कुछ सुंघाना=ऐसी चीज सुंघाना जिससे कोई बेहोश हो जाय।

सुंठि†—स्त्री०=सोठ।

सुंड†—पु०१=शुड। २=सूँड।

सुंड-दंड†—पु०=शुडादड।

सुंड-मुसुंड—पुं० [स० शुड भुशुडि] जिस का अस्त्र सूँड हो। हाथी।
वि०=सड-मुसड।

सुंडस—पु० [?] लद्दू गधे की पीठ पर रखने की गद्दी।

सुंडा—पुं०[स० शुडि] [स्त्री०अल्पा० सुडी] हरे रग का एक प्रकार का कीडा जो प्राय' तरकारियो, फलियों आदि मे लगकर उन्हे कुतरता है।
पु०[?] लद्दू गधे की पीठ पर रखने की गद्दी या गद्दा।
पु०=सूंड।

सुंडाल—पु०[स० सुडा+लच्] हाथी।

सुंडाली—वि०[स० शुडाल=सूँडवाला] सूँडवाला।
स्त्री० एक प्रकार की मछली।

सुंडी-बेंत—पुं०[सुंडी ?+हिं० बेंत]एक प्रकार का बेंत जो बगाल, असम और खसिया की पहाडियों पर होता है।

सुंद—पुं०[स० √सुद् (नष्ट करना)+अप्]१. एक प्रसिद्ध असुर जो निसुद का पुत्र और उपसुन्द का भाई था। २ विष्णु।

सुंदर—वि० [स०] [स्त्री० सुन्दरी, भाव० सुन्दरता, सौंदर्य] १. जो गठन, रंग, रूप आदि के विचार से देखने मे सुखद लगता हो। २. इंद्रियों को भला प्रतीत होनेवाला। जैसे—सुन्दर बात, सुन्दर विचार, सुन्दर समाचार। ३ शुभ। जैसे—सुंदर मुहूर्त

पुं०१. कामदेव। २. लका का एक पर्वत। ३. एक प्रकार का वृक्ष।

सुंदरक—पुं०[सं० सुंदर-कन] एक प्राचीन तीर्थ।

सुंदरता—स्त्री० [सं० सुन्दर+तल्—टाप्] १ भौतिक या शारीरिक रचना, प्रकार या रूप-रग जो नेत्रों को भला प्रतीत होता हो। २ लाक्षणिक अर्थ मे कोई सुन्दर वस्तु।

सुंदरताई*—स्त्री० [सं० सुन्दर+हिं० ताई (प्रत्य०)]=सुन्दरता।

सुंदरत्व—पुं० [सं० सुन्दर+त्व] सुन्दरता। सौन्दर्य।

सुंदरम्मन्य—वि०[सं० सुन्दर√मिन्(मानना)+खश पक्-मुम्]जो अपने आपको बहुत सुन्दर मानता या समझता हो। अपने आपको सुन्दर समझनेवाला।

सुंदराई†—स्त्री०=सुन्दरता।

सुंदरापा—पुं०[सं० सुन्दर+हिं० आपा (प्रत्य०)] सुंदरता। सौन्दर्य।

सुंदरी—वि० स्त्री० [सं०] सुन्दर रूपवाली। अच्छी सूरत-शकल वाली। रूपवती।

स्त्री०१ सुन्दर रूपवाली स्त्री। खूबसूरत औरत। २. त्रिपुर-सुन्दरी देवी। ३ एक योगिनी का नाम। ४. सवैया नामक छद का दसवाँ भेद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ सगण और एक गुरु होता है। ५. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे चार भगण होते है। इसका एक प्रसिद्ध नाम मोदक भी है। ६. तेइस अक्षरो की एक प्रकार की वर्ण-वृत्ति। ७ द्रुत-विलबित नामक छद का दूसरा नाम। ८ हल्दी। ९ एक प्रकार की मछली। १० एक प्रकार का बडा जगली वृक्ष जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती और नाव बनाने तथा इमारत के काम आती है। ११ पीतल आदि के वे लबे टुकडे जो बीन, सारगी, सितार आदि के दड पर बँधे रहते हैं और जो स्वर उतारने-चढाने के लिए ऊपर-नीचे खिसकाये जाते हैं। १२. शहनाई की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुंदोपसुंद—पुं० [सं० द्व० स०]सुंद और उपसुद नाम के दो भाई जो तिलोत्तमा (अप्सरा) को प्राप्त करने के लिए आपस मे लड मरे थे।

विशेष—इन दोनो भाइयो ने यह वर प्राप्त किया था कि हम तब तक नही मरें जब तक स्वय एक दूसरे को न मारें। अत. इन्द्र द्वारा प्रेषित तिलोत्तमा अप्सरा की प्राप्ति के लिए ये आपस मे लड मरे थे।

सुंदोपसुंद न्याय—पुं० [सं०] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग ऐसे अवसरो पर होता है जहाँ दो शक्तिशाली व्यक्ति आपस मे घनिष्ठ मित्र होने पर भी अन्त मे सुन्द और उपसुन्द नामक दैत्यों की तरह लड मरते हैं।

सुंधाई—स्त्री०[हिं० सोंधा] सोंधे होने की अवस्था, गुण या भाव। सोंधापन।

सुंधावट†—स्त्री०=सुंधाई।

सुंधिया—स्त्री०[हिं० सोंधा+इया (प्रत्य०)]१ गुजरात मे होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति जो पशुओं के चारे के काम मे आती है। २ एक प्रकार की ज्वार।

सुंबा—पुं०[देश०] [स्त्री० अल्पा० सुंबी]१. वह गीला कपडा या पुचारा जिसे तोप की गरम नाल पर उसे ठढा रखने के लिए फेरते या फैलाते थे। २ तोप की नाल साफ करने का गज। ३ लोहे मे छेद करने का एक प्रकार का औजार। ४ इस्पंज।

सुंबी—स्त्री० [हिं० सुंबा] लोहा काटने की छेनी।

सुंबुल†—पुं०=सबुल।

सुंभ—पुं०१.=शुंभ। २.=सुंभ।

सुंभा†—पुं० [स्त्री० अल्पा० सुंभी]=सुंबा।

सुंभी†—स्त्री०=सुंबी।

सुंमारी—स्त्री० [देश०] अनाजो में लगनेवाला एक प्रकार का काला कीड़ा।

सु—उप० [सं०] एक संस्कृत उपसर्ग जो प्राय. सज्ञाओं और विशेषणो के पहले लगकर उनमे नीचे लिखे अर्थों की वृद्धि करता है। १ अच्छा, उत्तम या भला। जैसे—सुगधि, सुनाम, सुमार्ग। २ मनोहर या सुन्दर। जैसे—सुदर्शन, सुकेशी। ३ अच्छी या पूरी तरह से। भली भाँति। जैसे—सुयोजित, सुव्यवस्थित। ४ सरलतापूर्वक या सहज मे। जैसे—सुकर, सुगम, सुसाध्य,। ५. बहुत अधिक। जैसे—सुदीर्घ, सुसम्पन्न। ६ मागलिक या शुभ। जैसे—सुदिन, सुसमाचार। ७ उचित और अधिकारी। जैसे—सुपात्र।

पुं०१. सुन्दरता। खूबसूरती। २ उत्कर्ष। उन्नति। ३ आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष। ४ समृद्धि। ५ अर्चन। पूजन। ६ अनुमति। सहमति। ७ कष्ट। तकलीफ।

†सर्व०[सं० स०] सो। वह।

†अव्य० [सं० सह] कुछ क्षेत्रीय भाषाओं मे करण तथा अपादान कारकों का और कहीं-कहीं सबध-सूचक चिह्न।

†वि०=स्व (अपना)।

सुअ†—पुं०=सुत (बेटा)।

सुअटा—पुं०[सं० शुक, प्रा० सूअ, हिं० सूआ] तोता।

सुअन†—पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] पुत्र। बेटा।

†वि०=सोना (स्वर्ण)। जैसे—सुअन जरद=सोनजर्द।

सुअना*—अ० [हिं० सुअन] १. उत्पन्न होना। २ उदित होना। उगना।

†पुं०=सुगना (तोता)।

सुअर—पुं० हिं०'सूअर' का वह रूप जो उसे यौगिक शब्दो के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सुअरदता।

सुअर-दंता†—वि० [हिं० सुअर+दन्ता=दाँतवाला] सुअर के-से दाँतों वाला।

पुं० वह हाथी जिसके दाँत झुके हुए हो।

सुअर्ग†—पुं०=स्वर्ग।

सुअर्ग-पताली—पुं० दे० 'स्वर्ग-पताली'।

सु-अवसर—पुं०[सं० क० स०]ऐसा अवसर या समय जिसमे कार्य साधन के लिए अनुकूल तथा उपयुक्त परिस्थितियाँ होती हो।

सुआ—स्त्री० [?]साफ पानी मे रहनेवाली हरे रंग की एक मछली जिसके दाँत अत्यन्त मजबूत और लबे होते हैं।

†पुं०=सुअटा (तोता)। २.=सूआ (बडी सूई)।

सुआउ†—वि० [सं० सु+आयु] जिसकी आयु बडी हो। दीर्घायु।

सुआद—पुं०[?] स्मरण। याद। (डिं०)

†पुं०=स्वाद।

सुआन†—पुं०[देश०] एक प्रकार का बडा वृक्ष जिसके पत्ते प्रतिवर्ष

झड जाते हैं। इसकी लकडी इमारत और नाव के काम मे आती है।
†पु०=श्वान।
पु०=सूनु (पुत्र)।
सुआना—स० [हिं० सूना का प्रे०] सूने मे प्रवृत्त करना। उत्पन्न या पैदा कराना।
†स०=सुलाना।
सुआमी†—पु०=स्वामी।
सुआर†—पु० [स० सूपकार] भोजन बनानेवाला, रसोइया।
सुआरव—वि०[स० ब० स०] उत्तम शब्द करनेवाला। मीठे स्वर से बोलने या बजनेवाला।
सुआसिन†—स्त्री०=सुआसिनी।
सुआसिनी*†—स्त्री० [सं० सुवासिनी] १. स्त्री, विशेषत आस-पास मे रहनेवाली स्त्री। २ सौभाग्यवती स्त्री। सधवा।
सुआहित—पु०[स०सु+आहत?]तलवार के ३२ हाथो मे से एक हाथ।
सुइना†—पु०=सोना (स्वर्ण)।
सुइया—स्त्री०[हिं० सूआ] एक प्रकार की चिड़िया।
†स्त्री०=सूई।
सुइस†—स्त्री० दे० 'सूंस'।
सुई†—स्त्री०=सूई।
सुकंकवान् (वत्)—पु० [सं० सुकक+मतुप्-म-व] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार मेरु के दक्षिण का एक पर्वत।
सुकंटका—स्त्री०[स० ब० स०]१. घीकुआर। २ पिंडखजूर।
सुकंठ—वि०[स० ब० स०]१. जिसका कठ सुन्दर हो। सुन्दर गलेवाला। २ जिसके गले का स्वर कोमल और मधुर हो।
पु० सुग्रीव का एक नाम।
सुकंद—पु०[स० कर्म० स०] कसेरू।
सुकंदक—पु०[स० सुकद+कन्]१. महाभारत काल का एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी। ३ वाराही कद। गेंठी। ४. प्याज।
सुकंदन—पु०[स० ब० स०]१ वैजयती तुलसी। २ बबई तुलसी। बर्बरक।
सुकंदा—स्त्री० [स०] १ लक्षणा कद। पुत्रदा। २. बाँझ ककोडा।
सुकंदी—पु०[स० सुकद-ङीप्] सूरन। जमीकद।
सुक*—पु०१ दे० 'शुक'। २ दे० 'शुकदेव'।
†पु०१ दे० 'शुक्र'। २ दे० 'शुक्रवार'।
सुकचण—पु० [स० सकुचण] लज्जा। सकोच। (डिं०)
सुचकना†—अ०=सकुचना।
सुकचाना†—अ०=सकुचाना।
सुकटि—वि०[स० ब० स०] अच्छी कमरवाली। जिसकी कमर सुन्दर हो।
स्त्री०१. सुन्दर कमर। २. सुन्दर कमरवाली स्त्री।
सुकड़ना†—अ०=सिकुडना।
सुकदेव*—पु०=शुकदेव।
सुकन*—पु०=शकुन। (डिं०)
सुकना†—पु०[देश०]एक प्रकार का धान जो भादो के अत मे होता है।
†स०=सूखना। (पश्चिम)

सुक-नासा*—स्त्री०[स० शुक+नासिका]१ तोते की ठोर जैसी नाक। २. स्त्री जिसकी नाक तोते की ठोर जैसी हो।
सुकमार†—वि०=सुकुमार (कोमल)।
सुकर —वि०[स० सु√कृ (करना)+खल्] [भाव० सुकरता] (कार्य) जो सहज मे किया जा सके। सरल। आसान।
सुकरता—स्त्री०[स० सुकर+तल्—टाप्]१ सुकर होने की अवस्था या भाव। सौन्दर्य। २ सुन्दरता।
सुकरा—स्त्री०[स० सुकर-टाप्] ऐसी अच्छी और सीधी गौ जो सहज मे दुही जा सके।
सुकरात—पु० एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो अफलातून (प्लेटो) का गुरु था। (सॉक्रटीज़)
सुकराना†—पु०=शुकराना।
सुकरित—वि०[स० सुकृत]१ अच्छा। भला। २ मागलिक। शुभ।
सुकरीहार†—[पुं०] गले मे पहनने का एक प्रकार का हार।
सुकर्णक—वि०[स० ब० स०] सुन्दर कानोवाला।
पु० हस्तिकंद। हाथीकद।
सुकर्णिका—स्त्री०[स० मुकर्ण+कन्—टाप्, इत्व] १ मूसाकानी नाम की लता। २ महाबला।
सुकर्णी—स्त्री०[स० मुकर्ण -ङीप्] इन्द्रवारुणी। इन्द्रायन।
सुकर्म—पुं०[स० कर्म० स०]१ अच्छा या उत्तम काम। सत्कर्म। २. देवताओ का एक गण या वर्ग।
सुकर्मा (र्मन्)—वि० [स० सुकर्मन्+सु लोप दीर्घ-नलोप] अच्छे कार्य करनेवाला। सुकर्मी।
पु०१ विषकभ आदि २७ योगों मे से सातवाँ योग। २ विश्वकर्मा। ३ विश्वामित्र।
सुकर्मी (र्मिन्)—वि०[स० सुकर्म+इनि] १ अच्छा काम करनेवाला। २ धर्म और पुण्य के कार्य करनेवाला। ३ सदाचारी।
सुकल—वि०[स० ब० स०] १ कोमल और मधुर परन्तु अस्फूट स्वर करनेवाला। २ वह जो धन के दान तथा व्यय करने मे उदार तथा सुख्यात हो।
†वि०, पु०=शुक्ल।
†पु०=सुकुल (आम)।
सुकवाना—अ०[?]अचभे मे आना। आश्चर्यान्वित होना।
†स०=सुखवाना। (पश्चिम)
सुकवि—पु०[स० कर्म० स०] उत्तम कवि।
सुकांड—वि०[स० ब० स०] सुन्दर काड या डालोवाला।
पु० करेले का पौधा या बेल।
सुकांडी—वि०[सं० सुकाडिन्, सुकाड +इनि] सुन्दर कान्ड या शाखाओ वाला।
पु० भ्रमर। भौंरा।
सुकाज—पुं०[स० सु+हिं० काज] उत्तम कार्य। अच्छा काम। सुकार्य।
सुकातिज—पु०[स० शुक्तिज] मोती। (डिं०)
सुकाना*—स०=सुखाना।
सुकानी*—पु०[अ० सुक्कान=पतवार] मल्लाह। माझी।

सुकाम—वि०[स०] अच्छी कामनाएँ करनेवाला।

सुकाम-व्रत—पु०[स० चतु० स०] किसी उत्तम कामना से धारण किया जानेवाला व्रत।

सुकामा—स्त्री०[स० सुकाम-टाप्] त्रायमाणा लता। त्रायमान।

सुकार—वि०[स० सु√कृ (करना)+अण्] [स्त्री० सुकारा]१ सहज साध्य। सहज मे होनेवाला। (काम) जो सहज मे हो सके। सुकर। २. (पशु) जो सहज मे वश मे किया जा सके। ३. (पदार्थ) जो सहज मे प्राप्त हो सके।

सुकाल—पु०[स० कर्म० स०]१. अच्छा या उत्तम समय। २ ऐसा समय जब अन्न यथेष्ट होता हो और सहज मे मिलता हो। 'अकाल' का विपर्याय।

सुकाली (लिन्)—पु०[स० सुकाल+इनि] मनु के अनुसार शूद्रो के पितरो का एक वर्ग।

सुकावना†—स०=सुखाना।

सुकाशन—वि०[स० सु√काश् (चमकना)+ल्युट्—अन]अत्यन्त दीप्तिमान्। बहुत चमकीला।

सुकाष्ठ—पु०[स० ब० स०] अच्छी लकड़ीवाला (वृक्ष)।
पु० काष्ठाग्नि।

सुकाष्ठक—पु०[स० सुकाष्ठ+कन्] देवदारु।
वि०=सुकाष्ठ।

सुकाष्ठा—स्त्री०[स० सुकाष्ठ-टाप्]१. कुटकी। २. कठ-केला।

सुकिज*—पु०=सुकृत (अच्छा कर्म या कार्य)।

सुकिया†—स्त्री०=स्वकीया (नायिका)।

सुकी—स्त्री० हिं० सुक (तोता)का स्त्री०। तोते की मादा।

सुकीय*—स्त्री०=स्वकीया (नायिका)।

सुकुंद—पु०[स० ब० स०] राल। धूना।

सुकुंदक—पु०[स० ब० स०] प्याज।

सुकुआर†—वि०=सुकुमार।

सुकुट्ट—पु०[स० ब० स०]महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद।

सुकुड़ना†—अ०=सिकुडना।

सुकुति*—स्त्री०=शुक्ति।

सुकुमार—वि०[स० कर्म० स०] [स्त्री० सुकुमारी, भाव० सुकुमारता] १ (व्यक्ति या शरीर) जिसमे सौन्दर्यपूर्ण कोमलता हो। २ (पदार्थ)जो सहज मे कुम्हला या मुरझा सकता अथवा थोडी-सी असावधानी से खराब हो सकता हो।
पुं०१. सुन्दर कुमार। सुन्दर बालक। २. वह जो बालको के समान कोमल अगोवाला हो। ३. ईख। ४ वनचपा। ५. चिचडा। ६ कँगनी। ७ मेरु पर्वत के नीचे का वन।

सुकुमारक—पु०[स० ब० स०]१ तम्बाकू का पत्ता। २ तेजपत्ता। ३ सांवा नामक अन्न।

सुकुमारता—स्त्री० [सी० सुकुमार+घल—टाप्] सुकुमार होने की अवस्था, गुण या भाव। सौन्दर्य-पूर्ण कोमलता।

सुकुमारा—स्त्री०[स० सुकुमार-टाप्]१. जूही। चमेली। ३. केला। ४ मालती।

सुकुमारिका—स्त्री०[स० सुकुमारिक—टाप्] केले का पेड।

सुकुमारी—वि०[स० सु√कुमार(खेलना)+अच्—ङीप्]स०सुकुमार का स्त्री०। कोमल और सुन्दर अगोवाली।
स्त्री०१ कुमारी कन्या। २ पुत्री। बेटी। ३. चमेली। ४ ऊख। ५ केला। ६. स्पृक्का। ७ शंखिनी नामक ओषधि। ८ करेला।

सुकुरना†—अ०=सिकुडना।

सुकुर्कुर—पु०[स० ब० स०]बालको का एक प्रकार का रोग जिसकी गणना बालग्रहो मे होती है।

सुकुल—वि०[स०] जो अच्छे कुल या वश मे उत्पन्न हुआ हो।
पु०१ उत्तम या श्रेष्ठ कुल। २. एक प्रकार का बढिया आम जो उत्तर प्रदेश और बिहार में होता है।
†वि०, पु० शुक्ल।

सुकुलता—स्त्री०[स० सुकुल+तल्-टाप्] सुकुल होने की अवस्था या भाव। कुलीनता।

सुकुल-बेद—पु०[सं० शुक्ल+हिं० बेत] एक प्रकार का वृक्ष।

सुकुवांर(वार)*—वि०=सुकुमार।

सुकूत—पुं०[अ०[१. मौन। चुप्पी। २ नीरवता।

सुकूनत—स्त्री०[अ० सकूनत] १. ठहरने की जगह। २ निवास। ३ निवास-स्थान।

सुकृत्—वि०[स० सु+√कृ (करना)+क्विप्—तुक्]१. उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला। २ धर्म के और पुण्य कार्य करनेवाला। ३ भाग्यवान्। ४ धार्मिक, पवित्र तथा शुभ।
पु० निपुण कारीगर। दक्ष शिल्पी।

सुकृत—भू० कृ०[स०]१. (काम) जो अच्छे ढग से किया गया हो। जैसे—सुकृत कर्म अर्थात् पुण्य का और शुभ काम। २ (कृति) जो बहुत बढिया बनाई गई हो।
पुं०१ कोई भलाई का कार्य। सत्कार्य। पुण्य कार्य। २ धर्मशील और पुण्यात्मा व्यक्ति। ३ भाग्यवान् व्यक्ति।
मुहा०—सुकृत मनाना=अपने सुकृतो का स्मरण करते हुए यह मनाना कि उनके फलस्वरूप हमारा संकट दूर हो। उदा०—लगी मनावन सुकृत, हाय कानन पर दीन्हे।—रत्ना०।

सुकृत-कर्मा—पु०[स० सुकृतकर्मा कर्म०स०]धर्मात्मा या पुण्यात्मा व्यक्ति।

सुकृत-व्रत—पुं०[स० मध्य० स०]एक प्रकार का व्रत जो प्राय द्वादशी के दिन किया जाता है।

सुकृतात्मा—वि०[स० सुकृतात्मन्, ब० स०] पुण्य कर्म करने की जिसकी वृत्ति हो।

सुकृति—स्त्री०[सं० सु√कृ (करना)+क्तिन्]१ धर्म और पुण्य का काम। २. तपश्चर्या। ३. कोई अच्छी या सुन्दर कृति। सत्कर्म।

सुकृतित्व—पु०[स० सुकृति+त्व] सुकृति का भाव या धर्म।

सुकृती(तिन्)—वि० [सं० सुकृत+इनि] १ सत्कर्म करनेवाला। २ धार्मिक और पुण्यशील। ३ भाग्यवान्। ४ बुद्धिमान्।

सुकृत्य—पु०[स० सु√कृ (करना)+क्यप्—तुक्] उत्तम कार्य। सत्कर्म।

सुकेत—पु०[स० ब० स०] आदित्य। सूर्य।

सुकेतु—वि०[स० ब० स०] सुन्दर केशो या बालोवाला।
पु०१. चित्रकेतु राजा का एक नाम। २ ताडका राक्षसी के पिता का नाम। ३. वह जो पशु-पक्षियो तक की बोली समझता हो।

सुकेश—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुकेशा] उत्तम केशोंवाला। जिसके बाल सुन्दर हों।
पु०=सुकेशि।
सुकेशा—वि० स्त्री०[स० सुकेश-टाप्] सुन्दर अर्थात् घने तथा लबे बालोंवाली (स्त्री)।
सुकेशि—पु० [स०] विद्युत्केश राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान्, सुमाली और माली नामक राक्षसों का पिता।
सुकेशी—स्त्री० [स० सुकेश-ङीप्] १. सुन्दर अर्थात् घने तथा लंबे बालोवाली स्त्री। २ एक अप्सरा का नाम।
वि०=सुकेशा।
सुकेसर—पु०[स० ब० स०] सिंह। शेर।
सुक्कान—पु०[अ०] नाव की पतवार।
सुक्कानी—पु० [अ०] पतवार थामनेवाला अर्थात् मल्लाह। माझी।
सुक्की—वि०[स० स्वकीय] अपना। निजी। उदा०—ए बार सुर बदहु नहिं बधि लेहु सुक्की बधुअ।—चदबरदाई।
स्त्री० [स० सुकीर्ति] नेकनामी। सुयश।
सुक्ख†—पु०=सुख।
सुक्त—पु०[स०] एक प्रकार की कांजी।
सुक्ता—स्त्री०[सं० सुक्त-टाप्] इमली।
सुक्ति—पु०[स० ब० स०] एक प्राचीन पर्वत।
†स्त्री०=शक्ति।
सुक्र—पु०[स० सक्नु] अग्नि। (डिं०)
†वि०, पु०=शुक्र।
सुक्रत*—पु०=सुकृत।
सुक्रति*—पु०=स्त्री०=सुकृति।
सुक्रतु—वि०[स० ब० स०] सत्कर्म करनेवाला। पुण्यशील।
पु० १ अग्नि। २. शिव। ३ इन्द्र। ४ सूर्य। ५ सोम। ६ वरुण।
सुक्ल*—वि०=शुक्ल।
सुक्षत्र—वि० [स० ब० स०] १ बहुत बडा धनवान्। २ बहुत बडा राज्यशाली। ३ बलवान्। शक्तिशाली।
सक्षिति—स्त्री०[स० कर्म० स०, ब० स०] १. सुन्दर निवास-स्थान। २ उक्त प्रकार के स्थान मे रहनेवाला व्यक्ति। ३ वह जो धन, धान्य और संतान से बहुत सुखी हो।
सुक्षेत्र—वि० [स० ब० स०] जिसका जन्म अच्छे गर्भ से हुआ हो।
पु० ऐसा घर जिसके दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर दीवारें या मकान हों, और जो पूर्व की ओर से खुलता हो। (ऐसा मकान बहुत शुभ माना जाता है।)
सुखकर—वि० [स० सुख√कृ (करना)+रच्] सुकर। सहज।
सुखंडी—स्त्री० [हि० सूखना] प्राय. बच्चों को होनेवाला एक रोग जिसमे उनका शरीर अत्यन्त क्षीण हो जाता है।
वि० लाक्षणिक अर्थ मे, अत्यन्त क्षीण अशक्त और दुर्बल।
सुखंद†—वि०=सुखद।
सुख—पु० [स०] १ वह प्रिय अनुभूति जो अनुकूल या अभीप्सित वातावरण या स्थिति की प्राप्ति पर होती है। जैसे—इस शुभ समाचार से उसे सुख मिला। २ साधारणतया व्यक्ति की वह स्थिति जिसमें वह आर्थिक, मानसिक तथा शारीरिक कष्टों से मुक्त रहता है और उसे अपेक्षित सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, अथवा प्राप्त सुविधाओं से संतोष होता है
मुहा०—सुख की नींद सोना=निश्चिन्त होकर आनन्द से सोना या रहना। खूब मजे मे समय बिताना। सुख मानना=किसी विशिष्ट परिस्थिति की अनुकूलता के कारण, अच्छी तरह प्रसन्न और सतुष्ट रहना। जैसे—यह पेड सभी प्रकार की जमीनों में सुख मानता है।
३ कल्याण। मगल। ४. धन-धान्य आदि की सपन्नता। ५ स्वर्ग। ६. सुखी नामक छंद का दूसरा नाम।
वि० यौ० पदो के आरम्भ मे, १ जो अनुकूल और प्रिय रूप मे होता हो। जैसे—सुखक्रिया। २. जहाँ या जिसमे सुख प्राप्त होता हो। जैसे—सुख-कदर। ३ जो सहज में या सुभीते से होता हो। जैसे—सुख-दोहन। ४. स्वभावत अच्छे रूप में होनेवाला। उदा०—जाके मुख-सुख बास से बासित होत दिगत।—केशव।
क्रि० वि० सुखपूर्वक। आराम से। सुखद रूप से।
सुख-आसन—पु० [स० मध्य० स०]=सुखासन।
सुख-कंद—वि०[स० मध्य० स० सुख+कद] सब प्रकार के सुख देनेवाला।
सुख-कंदन†—वि०=सुखकद।
सुख-कंदर—वि०[स० सुख+कदरा] ऐसा स्थान जहाँ बहुत सुख मिलता हो।
सुखक*—वि० [हिं० सूखा] सूखा शुष्क।
†वि०=सुखद।
सुखकर—वि०[स०] १ सुख देनेवाला। सुखद। २ जो सहज मे किया जा सके। सुकर।
सुख-करण—वि० [स० प० त० सुख+करण] सुख उत्पन्न करनेवाला।
सुखकरन—वि०=सुख-करण।
सुखकरी—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
सुखकारक—वि० [स०] सुख देनेवाला। सुखद।
सुखकारी—वि०=सुखकारक।
सुख-क्रिया—स्त्री० [सं०] १. सुख-प्राप्ति के लिए किया जानेवाला कार्य। २ ऐसा कार्य जिसे करते समय सुख मिलता हो। ३ ऐसा कार्य जिसे करने मे किसी प्रकार का कष्ट न होता हो।
सुख गंध—वि० [स० ब० स०] अच्छी गधवाला। सुगधित।
सुखग—वि०[सं० सुख√गम् (जाना)+ड] सुख या आराम से चलने या जानेवाला।
सुख-गम—वि० [सं० सुख√गम् (जाना)-अच्]=सुगम।
सुख-चार—पु० [सं० सुख√चर् (चलना)+घञ्] अच्छा या उत्तम घोडा। बढिया घोडा।
वि०=सुख-गम।
सुख-चाव—पु० [स०+हिं] १. ऐसा कार्य करने का शौक जिससे सुख मिलता हो। २ आनद-मगल।
सुख-जात—वि० [सं० तृ० त०] सुखी।
सुख-जीवी (विन्)—पुं० [स०] १ वह जो सुखी जीवन बिता रहा हो अथवा सुखी जीवन बिताने के लिए इच्छुक हो। २ वह जो परिश्रम न करना चाहता हो और पकी-पकाई खाना चाहता हो।

सुख-डैना*—पुं० [हिं० सूखना+डैना (प्रत्य०)] बेलों का एक प्रकार का रोग।

सुख-ढरन—वि० [सं० सुख+हिं० ढरना] १ सुख देनेवाला। सुखदायक। २. सहज में अनुकूल या प्रसन्न होनेवाला।

सुखता—स्त्री० [सं०] सुख का धर्म या भाव। सुखत्व।

सुखथर*—पुं० [सं० सुख+स्थल] ऐसा प्रदेश जहाँ के लोग सुखी हों।

सुखद—वि० [सं०] [स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। जो सुख दे या देता हो। सुखदायी। आरामदेह।

पुं० १ विष्णु। २. विष्णु का लोक या स्थान। ३ संगीत में एक प्रकार का ताल।

सुखद-गीत—वि० [सं० ब० स० सुखद+गीत] जिसकी बहुत अधिक प्रशंसा हो। प्रशंसनीय।

सुख-दनियाँ*—वि०, स्त्री०=सुख-दानि।

सुखदा—वि० [सं० सुखद का स्त्री०] सुख देनेवाली। सुखदायिनी।

स्त्री० १ गंगा। २ अप्सरा। ३. शमीवृक्ष। ४. एक प्रकार का छन्द।

सुख-दाता (दातृ)—वि० [सं०] सुख देनेवाला। सुखद।

सुख-दानि*—वि० [सं० सुखदायिनी] सुखदेनेवाला। सुखद।

पुं०=प्रियतम।

स्त्री० [सं०] १ सुंदरी नाम का छंद का दूसरा नाम। २ कुछ आचार्यों के मत से एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में ८ मात्राएँ होती हैं। कुछ लोग अंत में गुरु और लघु रखना भी आवश्यक समझते हैं।

सुखदानी—वि० स्त्री० [हिं० सुखदान] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली।

स्त्री०=सुख-दानि।

सुखदायक—वि० [सं० सुख√दा (देना)+ण्वुल्—अक, पुक्] सुखदेनेवाला। सुखद।

पुं० एक प्रकार का छन्द।

सुखदायी (दायिन्)—वि० [सं० सुख√दा (देना)+णिनि-युक्] [स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। सुखद।

सुखदायो*—वि०=सुखदायी।

सुखदाव*—वि०=सुखदायी।

सुखदास—पुं० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान।

सुखदेनी—वि०, स्त्री०=सुखदायिनी।

सुखदेव†—पुं०=शुकदेव।

सुखदेन—वि०=सुखदायी।

सुखदैनी—वि०, स्त्री०=सुखदायिनी।

सुखदोह्या—वि० स्त्री० [सं०] (मादा पशु विशेषत. गाय) जिसे आसानी से दूहा जा सके।

सुख-धाम—पुं० [सं० ष० त०] १ ऐसा स्थान जहाँ सब प्रकार के सुख प्राप्त हों। २ वह जिसमें सब प्रकार के सुख वर्तमान हों। ३. स्वर्ग।

सुख ध्वनि—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुखन | पुं० [फा० सखुन] १. बात-चीत। ५ कविता।

विशेष—सुखुन के यौ० पदों के लिए दे० 'सखुन' के यौ०।

सुखना†—अ०=सूखना।

सुख-नीलांबरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुख-पर—वि० [सं०]=सुखी।

सुख-पति†—स्त्री०=सुषुप्ति। (ब्रज०)

सुखपाल—पुं० [सं० सुख+हिं० पालकी में का पाल] पुरानी चाल की एक प्रकार की पालकी जिसका ऊपरी भाग शिवालय के शिखर-सा होता है।

सुखपूर्वक—अव्य० [सं०] सुख से। जैसे—वे सुखपूर्वक वहाँ रहते हैं।

सुखप्रद—वि० [सं० सुख-प्र√दा+क] सुखदेनेवाला। सुखद।

सुख-प्रश्न—पुं० [सं०] किसी का सुख-क्षेम जानने के लिए की जानेवाली जिज्ञासा।

सुख-प्रसवा—वि० स्त्री० [सं०] जिसे प्रसव करने के समय विशेष कष्ट न होता हो।

सुख-प्रिय—वि० [सं० ब० स०] जो सदा सुख से रहना चाहता हो।

पुं० संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुख-बोध—वि० [सं०] (बात या विषय) जिसका बोध या ज्ञान सहज में हो सकता हो।

सुख-मंदिर—पुं० [मं० मध्य० स०] महल का वह विभाग जिसमें राजा लोग बैठकर नृत्य संगीत आदि देखते-सुनते थे।

सुखमणा†—स्त्री०=सुषुम्ना (नाड़ी)।

सुखमणि—पुं० [सं० सुख+मणि] सिक्खों का एक छोटा धर्मग्रन्थ जिसका वे प्राय: नित्य पाठ करते हैं।

सुखमन*—स्त्री० [सं० सुषुम्ना] सुषुम्ना नाम की नाड़ी।

†पुं०=सुख-मणि।

सुखमा—स्त्री० [सं० सुषमा] १. एक प्रकार का वृत्त। २ सुषमा। शोभा।

सुख-मानी (मानिन्)—वि० [सं०] १ किसी विशिष्ट अवस्था में सुख माननेवाला। २. हर अवस्था में सुखी रहनेवाला।

सुख-मुख—वि० [सं०] १. (शब्द या वर्ण) जिसका उच्चारण सरलता से किया जा सकता हो। २. सुन्दर बातें करनेवाला। ३ जो मुँहजोर न हो।

सुख-राज—पुं० दे० 'महासुख'।

सुख-रात†—स्त्री०=सुख-रात्रि।

सुख-रात्रि—स्त्री० [सं० ष० त०] १. दीपावली की रात। कार्तिक मास की अमावस्या की रात। २ वह रात जिसमें पति-पत्नी सुख के लिए रति करते हैं।

सुख-रात्रिका—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

सुख-रास†—वि० [सं० सुख+राशि] जो सर्वथा सुखमय हो। सुख की राशि।

सुख-रासी*—वि०=सुख-रास।

सुख-रूप—वि० [सं०] सुहावने रूपवाला।

सुख-रूपी—वि०=सुख-रूप।

सुख-रोग—पुं० [हिं०] [वि० सुख-रोगी] कोई ऐसा बे-नाम का अथवा नाम-मात्र का रोग जिसका बड़े आदमी प्राय. काल्पनिक रूप में अपने आप में आरोप कर लिया करते हैं।

सुखलाना—पुं०=सुखाना। (पश्चिम)

सुखवंत—वि० [सं०] १ सुखी। प्रसन्न। खुश। २ सुख देनेवाला। सुखद।

सुखवत्—वि० [स० सुख+मतुप्-म=व] सुखयुक्त । सुखी ।
सुखवती—स्त्री० [स० सुखवत्-ङीप्] अमिताभ बुद्ध का स्वर्ग ।
वि० स० सुखवान् का स्त्री० ।
सुखवत्ता—स्त्री० [स० सुखवत्+तल्-टाप्] १ सुख का भाव या धर्म । २. सुखी होने की अवस्था या भाव ।
सुखवन†—पु० [हिं० सूखना] १ सुखाने की क्रिया या भाव । २. वह फसल जो सूखने के लिए धूप मे डाली जाती है । ३ कोई चीज सूखने या सुखाने पर उसकी तौल या मान मे होनेवाली कमी । ४. गीले अक्षरो को सुखाने के लिए उन पर छिडका या छोडा जानेवाला बालू ।
सुखवाद—पु० [स०] १ यह मत या सिद्धात कि इस दुःखपूर्ण ससार मे रहकर भी मनुष्य को यथासाध्य सुखभोग करना चाहिए और भविष्य मे भी सुख तथा शुभ फल की आशा तथा कामना बनाये रखनी चाहिए। इसमे केवल अर्थ और काम पुरुषार्थ माने जाते है। 'दु खवाद' का विपर्याय । २ दे० 'आशावाद'।
सुखवादी—वि० [स०] सुखवाद-सवधी ।
पु० १. वह जो सुखवाद का अनुयायी हो । २. आशावादी ।
सुखवान् (वत्)—वि० [स० सुख+मतुप्-म=व-नुम-दीर्घ] [स्त्री० सुखवती] सुखी ।
सुखवार—वि० [स० सुख+हिं० वार (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखवारी] १ सुखी । २ सहज । सरल ।
सुखवास—पु० [स० मध्य० स०] वह स्थान जहाँ का निवास सुखकर हो ।
सुख-सलिल—पु० [स० मध्य० स०] उष्ण जल । गरम पानी ।
सुख-साध्य—वि० [स० तृ० त०] [भाव० सुखसाध्यता] १ जिसे सुखपूर्वक प्राप्त किया जा सके । २ सुगम । सहज ।
सुख-सार—पु० [स० सुख+सार] मुक्ति । मोक्ष ।
सुख-सुभीता—पु० [स०+हिं०] १ ऐसी वाते जिनके होने पर मनुष्य सुख-पूर्वक जीवन विता सके। (एमेनिटी) २ सुख और सहूलियत ।
सुख-स्पर्श—वि० [स० मध्य० स०] जिसे छूने से सुख मिलता हो।
सुख-स्वप्न—पु० [स०] भावी सुख की ऐसी कल्पना जिसका कोई दृढ आधार न हो ।
सुख-स्वरावली—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी ।
सुखांत—वि० [स० ब० स०] १ जिसका अत या समाप्ति सुखमय वातावरण मे होती हो । २ (साहित्यिक रचना) जिसका अतिम अश मुख्य-पात्र के भावी सुखी-जीवन की ओर इगित करता हो ।
सुखांबु—पु० [स० मध्य० स०] गरम पानी ।
सुखा—स्त्री० [स० सुख-टाप्] वरुण की पुरी का नाम ।
सुखाई*—क्रि० वि० [हिं० सुखी] १ सुखपूर्वक । अच्छी तरह । २. विना किसी परिश्रम के । सहज मे । उदा०—प्रभु प्रताप मैं जाव सुखाई ।—तुलसी ।
स्त्री० [हिं० सुखाना+आई (प्रत्य०)] सुखाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।
सुखाकर—पु० [स० ब० स०] बौद्धो के अनुसार एक लोक ।
सुखाधार—वि० [स० ष० त०, ब० स०] जो सुख का आधार । पु० स्वर्ग ।
सुखाधिकार—पु० [स० सुख+अधिकार] विधिक क्षेत्र मे, जमीन, मकान आदि के सबध मे सुख-सुभीते का वह अधिकार जो उसे पहले से या बहुत दिनो से प्राप्त हो; और इसी लिए दूसरो के द्वारा उसका अतिक्रमण दडनीय अपराध माना जाता है । (राइट आफ ईजमेन्ट) जैसे—किसी मकान मे पहले से यदि कोई खिडकी चली आ रही हो, तो उसे इस सबध मे सुखाधिकार प्राप्त होता है । यदि कोई पडोसी उस खिडकी से ठीक सटाकर नई दीवार खडी करता है तो वह दूसरो के सुखाधिकार का अतिक्रमण करता है ।
सुखाना—स० [हिं० सूखना का प्रे०] १ ऐसी क्रिया करना जिससे किसी चीज की नमी दूर हो जाय । जैसे—धूप मे बाल सुखाना । २. (शरीर के सबध मे) क्षीण तथा दुर्बल करना । ३ नष्ट करना । जैसे—खून सुखाना ।
अ० [स० सुख+हिं० आना (प्रत्य०)] १. सुखकर प्रतीत होना । अच्छा या भला लगना । २ शरीर के लिए अनुकूल तथा सह्य होना ।
सुखानी—पु० [अ० सुक्कान ?] माँझी । मल्लाह । (लश०)
सुखायत—वि० [स०] सहज मे वश मे आनेवाला । सीखा और सधा हुआ ।
सुखारा—वि० [स० सुख+हिं० आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखारी] १ सुखी । २. सरल ।
सुखारि—पु० [स० सुख√ऋ (गत्यादि)+अण्+इति] उत्तम हवि भक्षण करनेवाले अर्थात् देवता आदि ।
सुखारी†—वि०=सुखारा ।
पु०=सुखारि (देवता) ।
सुखार्थी (र्थिन्)—वि० [स०] [स्त्री० सुखार्थिनी] सुख चाहनेवाला । सुख की इच्छा करनेवाला ।
सुखाला—वि० [स० सुख+हिं आला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखाली] १. सुखी । २ सहज । सुगम । (पश्चिम)
सुखालोक—वि० [स० ब० स०] सुन्दर । मनोहर ।
सुखावत्†—वि०=सुखवत् ।
सुखावती—स्त्री० [स०] बौद्धो के अनुसार एक स्वर्ग ।
सुखावतीश्वर—पु० [स० ष० त०] १. बुद्ध देव । २ बौद्धो के एक देवता ।
सुखावह—वि० [स० सुख-आ√वह् (ढोना)+अच्] सुख देनेवाला । सुखद ।
सुखाश—वि० [स० सुख+अश् (खाना)+अच्] जो खाने मे बहुत अच्छा जान पडे ।
पु० १ वरुण । २. तरबूज ।
वि० जिससे सुख प्राप्त होने की आशा हो ।
सुखाशा—स्त्री० [स० ष० त०] सुख पाने की आशा । आराम की उम्मीद ।
सुखाश्रय—वि० [स० ष० त०] जिस पर सुख अवलम्बित हो । सुख का आधार ।
पु० ऐसा स्थान जहाँ सुख मिलता हो ।
सुखासन—पु० [स० मध्य० स०] १. वह आसन जिस पर बैठने से सुख हो । सुखद आसन । २. पालकी । ३. आजकल, आराम कुर्सी ।

सुखिआ†—वि०=सुखी।
सुखित†—वि० [हिं० सूखना] सूखा हुआ। शुष्क।
वि० [हिं० सुख] सुखी।
सुखिता—स्त्री० [स० सुख+इतच्-टाप्] सुखी होने की अवस्था या भाव। सुख। आनद।
सुखित्व—पु० [स० सुखी+त्व]=सुखिता।
सुखिया*—वि०=सुखी। उदा०—नानक दुखिया सब ससार। सोइ सुखिया जिन राम अधार।—गुरु नानक।
सुखिर—पु० [स० सुषिर ?] साँप के रहने का बिल। बाँबी।
सुखी (खिन्)—वि० [स० सुख+इनि] १ जिसे सुख की अनुभूति हो रही हो। २. जिसे सुख प्राप्त हो। सुखपूर्ण वातावरण मे रहने या पलनेवाला। ३. सुखो से भरा। जैसे—सुखी जीवन।
स्त्री० सवैया छद का चौदहवाँ भेद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ सगण और तव लघु और गुरु वर्ण होता है। इसमे १२ और १४ वर्णो पर यति होती है।
सुखीन—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी पीठ लाल, छाती और गर्दन सफेद तथा चोच चिपटी होती है।
सुखेतर—पु० [स० पच० त०] सुख से इतर या भिन्न अर्थात् दुख क्लेश, कष्ट आदि।
सुखेन—अव्य० [स०] १. सुखपूर्वक। सुख से। २. बहुत ही सहज मे। बिना विशेप प्रयास के। उदा०—(क) लरहिं सुखेन काल किन होऊ।—तुलसी। (ख) जो करिवर मुख मूक ही गिरा नचाव सुखेन। —दीनदयाल गिरि।
†पु० =सुषेण (करमर्द)।
सुखेलक—पु० [स० सु√खेल (लना)+ण्वुल्-अक्] एक प्रकार का वृत्त या छन्द।
सुखेष्ठ—पु० [स० सुख+इष्ठन्] शिव। महादेव।
सुखैना*—वि० [स० सुख+हिं० ऐना (प्रत्य०)] १. सुखी। २. सुख देनेवाला। ३ सहज मे प्राप्त होनेवाला।
सुखोदक—पु० [स० मध्य० स०] गरम पानी। उष्ण जल।
सुखोदय—वि० [स० प० त०] जिसका परिणाम सुखद हो।
पु० १. ऐसी स्थिति जिसमे सुख-समृद्धि का आरम्भ हो रहा हो। २. सुख की होनेवाली अनुभूति। ३ कोई मादक पेय। ४. पुराणानुसार एक वर्ष या भू-खड।
सुखोष्ण—वि० [स० मध्य० स०] जो इतना उष्ण हो कि सुखद प्रतीत होता हो। गुनगुना।
पु० कुनकुना जल।
सुख्य—वि० [स० √सुख्+यत्, सु√(प्रसिद्ध करना)] सुख-सबधी। सुख का।
सुख्यात—वि० [स० सु√ख्या (प्रसिद्ध करना)+क्त] [भाव०सुख्याति] जिसकी अच्छी या विशेप प्रसिद्धि हो। प्रसिद्ध। मशहूर।
सुख्याति—स्त्री० [स० सु√ख्या+क्तिन्] सुख्यात होने की अवस्था या भाव। विशेष रूप से होनेवाली प्रसिद्धि।
सुगंध—स्त्री० [सं०] १. ऐसी गंध जो प्रिय लगती हो। प्रिय महक। सुवास। खुशबू। २. वह पदार्थ जिसमे से अच्छी गध निकलती हो। खुशबूदार चीज। ३. अगिया घास। गधतृण। ४. श्रीखड चदन। ५. गधराज। ६ नील कमल। ७ काला जीरा। ८. गठिवन। ९ चना। १०. भूतृण। ११. लाल सहिजन। १२. मरुआ। १३. माधवी लता। १४. कसेरू। १५. सफेद ज्वार। १६. केवडा। १७ रूसा घास। १८ शिलारस। १९ राल। धूना। २० गधक। २१. एक प्रकार का कीडा।
वि० १ गधयुक्त। २. सुगध से युक्त। सुगधित। ३ यशस्वी। उदा०—गध्रपसेन सुगध नरेसू।—जायसी।
†स्त्री०=सौगध।
सुगंधक—पु० [स० व० स०] १. द्रोण-पुष्पी। गूमा। २ साठी धान। ३. धरणी कंद। कदालु। ४. लाल तुलसी। ५. गध-तृण। ६. नारगी। ७ ककोडा। ८ गधक।
सुगंध-केसर—पु० [स०] लाल सहिजन।
सुगंध-कोकिला—स्त्री० [स० मध्य०स०] गधकोकिला नामक गध द्रव्य।
सुगंध-गंधा—स्त्री० [स० व० स०] दारुहलदी। दारुहरिद्रा।
सुगंध-गण—पु० [स०] वैद्यक मे सुगधित द्रव्यों का एक गण या वर्ग।
सुगंध-तृण—पु० [स० मध्य० स०] गध-तृण। रूसा घास।
सुगंध-त्रय—पु०[स० प० त०] चदन, वला और नागकेसर, इन तीनो का वर्ग या समूह।
सुगंध-त्रिफला—स्त्री० [स० प० त०] जायफल, लौग और इलायची अथवा जायफल, सुपारी तथा लौंग इन तीनो का समूह। (वैद्यक)
सुगंधन—पु० [स० सु√गन्ध (गत्यादि)+ल्युट्-अन्] जीरा।
सुगंधनाकुली—स्त्री० [स० मध्य० स०] =गधनाकुली।
सुगंध-पत्रा—स्त्री० [सं० व० स०] १. शतमूली। सतावर। २ अपराजिता। ३ धमासा। ४ कठ-जामुन। ५ वनभाँटा। ६ जीरा। ७ वरियारा। ववला। ८. विधारा। ९ रुद्रजटा।
सुगंधपत्री—स्त्री० [स० सुगधपत्र+ङीप्] १ जावित्री। २. फूल प्रियगु। ३ रुद्र-जटा। ४. ककोल।
सुगंध-बाला—स्त्री० [स० सुगध+हिं० वाला] क्षुप जाति की एक वनौषधि।
सुगध-भूतृण—पु० [स०] १ रूसा घास। अगिया घास। २ दे० 'भूतृण'।
सुगंध-मुख्या—स्त्री० [स० व० स०] कस्तूरी। मृगनाभि।
सुगंध-मूल—पु० [स० व० स०] हरफा-रेवडी। लवलीफल।
सुगंध-मूला—स्त्री० [स० सुगध-मूल-टाप्] १. स्थल कमल। स्थल पद्म। २ रासना। ३. आँवला। ४. कपूरकचरी। ५ हरफा-रेवडी।
सुगंध-मूली—स्त्री० [स० सुगधमूल+ङीप्] गध पलाशी। कपूरकचरी।
सुगंध-मूषिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] छछूंदर।
सुगंधरा—पु० [स० सुगध+हिं० रा] एक प्रकार का क्षुप और उसका फूल।
सुगंध-रौहिष—पु० [स० मध्य० स०] रोहिष घास। अगिया घास।
सुगंध-वल्कल—पु० [स० व० स०] दारचीनी।
सुगंध-शालि—पु० [स० मध्य० स०] वह चावल जिसमे से मीठी भीनी गध निकलती है। वासमती चावल।
सुगंध-षट्क—पु० [स० प० त०], जायफल, ककोल (शीतल चीनी), लौग, इलायची, कपूर और सुपारी का वर्ग या समूह। (वैद्यक)

सुगंध-सार—पु० [स० ब० स०] सागोन। शाल वृक्ष।
सुगंधा—स्त्री० [सं०] १ रासन। रासना। २. काला जीरा। ३ कपूर कचरी। ४ रुद्रजटा। ५ सौंफ। ६ बाँझ-ककोडा। ७ नवमल्लिका। नेवारी। ८ पीली जूही। ९ नकुल-कद। नाकुली। १० असवरग। ११ सलई। १२ माधवी लता। १३ अनतमूल। १४ बिजौरा नीबू। १५ तुलसी। १६ निर्गुंडी। १७ एलुआ। १८. वकुची। सोमराजी। १९ एक देवी जिनका स्थान माधव वन मे कहा गया है और जिनकी गणना बाइस पीठ-स्थानो मे होती है
सुगंधाढ्य—वि० [स० तृ० त०] सुगधित। खुशबूदार।
सुगंधाढ्या—स्त्री० [स०] १ त्रिपुरमाली। त्रिपुर मल्लिका। २ बासमती चावल।
सुगंधि—स्त्री० [स०] प्रिय लगनेवाली गंध। खुशबू। वास।
पु० १ परमात्मा। २ आम। ३. कसेरू। ४ पिपरा मूल। ५ धनियाँ। ६ अगिया घास। ७ मोथा। ८ एलुआ। ९ वन-तुलसी। १० गोरख ककडी। ११. चन्दन। १२ तुंबरू। १३ अनंतमूल।
वि०=सुगधित।
सुगंधिक—पु० [स० सुंगधि+कन्] १ गाँडर की जड। उशीर। खस। २ बासमती चावल। ३. कुमुदिनी। कूई। ४ पुष्करमूल। ५ काला जीरा। ६ मोथा। ७ एलुआ। ८. शिलारस। ९. कपित्थ। कैथा। १०. पुन्नाग। ११ गधक।
सुगधिका—स्त्री० [स०] १ कस्तूरी। मृगनाभि। २ केवडा। ३ सफेद अनतमूल। ५ काली निर्गुंडी।
सुगंधि-कुसुम—पु० [स० ब० स०] १. पीला कनेर। २ असवरग।
सुगंधित—भू० कृ० [स०] १ सुगध से युक्त किया हुआ। २ (पदार्थ) जिसमे से सुगधि निकल रही हो।
सुगंधिता—स्त्री० [सं०]=सुगधि।
सुगंधि-त्रिफला—स्त्री० [स०]=सुगध त्रिफला।
सुगंधिनी—स्त्री० [स०] १ आराम शीतला नाम का शाक। सुनदिनी। २. पीली केतकी।
सुगंधि-पुष्प—पु० [सं०] धारा कदब।
सुगंधि-फल—पु० [स०] शीतल चीनी। कबाब चीनी।
सुगंधि-माता (तृ)—स्त्री० [स० प० त०] पृथिवी।
सुगधि-मूल—पु० [स०] खस। उशीर।
सुगंधि-मूषिका—स्त्री० [स०] छछूँदर।
सुगंधी (धिन्)—वि० [स० सुगध+इनि] जिसमें अच्छी गध हो। सुवासित। सुगधयुक्त। खुशबूदार।
पु० एलुआ।
† स्त्री०=सुगधि।
सुग—वि० [स० सु+ग=गति] १ अच्छी तरह, तेज या बहुत चलनेवाला। २ खूब जागते या सचेत रहनेवाला। ३ अच्छा गानेवाला। ४ सुगम। सहज। ५ सुलभ। ६ सुबोध।
पु० १. सुमार्ग। २ सुख। ३ विष्ठा। मल।
सु-गठन—स्त्री० [स० सु (उप०)+हिं० गठन] शरीर के अंगो की अच्छी गठन।
वि०=सुगठित।
सुगठित—वि० [सं० सु+हिं० गठित] १. अच्छी तरह से गठा हुआ। २ सघटित।
सुगत—पुं० [स०] १ बुद्ध देव का एक नाम। २ बुद्ध देव का अनुयायी। बौद्ध।
वि० [सं० सुगति] १ अच्छी गतिवाला। अच्छे आचरणवाला। २ जिसे सुगति अर्थात् मोक्ष प्राप्त हुआ हो। ३ सुगम।
† स्त्री०=सुगति।
सुगतदेव—पुं० [स० कर्म० स०] गौतम बुद्ध।
सुगतायतन—पुं० [सं० ष० त०] बौद्ध मन्दिर।
सुगति—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ अच्छी या उत्तम गति। २ सदाचरण। ३ मरने के उपरात होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। ४ एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
सुगन—पुं० [देश०] छकडे मे गाडीवान के बैठने की जगह के सामने आडी लगी हुई दो लकडियाँ जिनकी सहायता मे बैल खोल लेने पर भी गाडी खडी रहती है।
† पुं०=सगुन।
सुगना†—पु० [स० शुक, हिं० सुग्गा] सुग्गा। तोता।
† पुं०=सहिजन।
सुगभस्ति—वि० [स० ब० स०] अत्यत दीप्तिमान्। बहुत चमकीला।
सुगम—वि० [स० सु√गम् (जाना)+अच्] [भाव० सुगमता] १ (स्थान) जहाँ सरलता से पहुँचा जा सके। २ (मार्ग) जिस पर आसानी से चला और आगे बढा जा सके। ३ (कार्य) जिसका सपादन या साधन सुखपूर्वक किया जा सके।
सुगमता—स्त्री० [सं० सुगम+तल्—टाप्] १ सुगम होने की अवस्था या भाव। सरलता। आसानी। जैसे—इससे आप के कार्य मे बहुत सुगमता हो जायगी। २ वह गुण या तत्त्व जिससे कोई कार्य सरलता से और जल्दी से सपन्न हो जाता है।
सुगम्य—वि० [स० सु√गम् (जाना)+यत्] स्थान जिसमे सहज मे प्रवेश हो सके। सरलता से जाने योग्य।
सुगर—पु० [स० ब० स०] शिगरफ। हिंगुल।
† वि०=सुघड।
† वि०=सुगम।
सुगरूप—पु० [देश०] एक प्रकार की सवारी जो प्राय रेतीले देशो मे काम आती है।
सुगल†—पु०=सुग्रीव।
सुग-सुग†—स्त्री० [अनु०] कानाफूसी।
सुग-सुगाना†—अ० [अनु०] कानाफूसी करना।
सुगह—वि० [सं० सु+गाह] जो सहज मे पकडा या ग्रहण किया जा सके।
सुगहना—स्त्री० [स०] प्राचीन काल मे यज्ञ-भूमि के चारो ओर बनाया जानेवाला घेरा जिसके परिणाम-स्वरूप अस्पृश्यों का प्रवेश रुक जाता था।
सुगाली—स्त्री० [स० ब० स०] १. सुन्दर शरीरवाली स्त्री। २. संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुगाध—वि० [स० ब स०] (नदी) जिसमे सुख से स्नान किया जा सके; अथवा जिसे सहज में पार किया जा सके।

सुगाना*—अ० [स० शोक] १ दुखी होना। २. दुखी होकर नाराज होना। बिगडना।
†स०=दुखी करना।
†अ० [?] शक या सन्देह करना।

सुगाल†—पु०=सुकाल। (डिं०)

सुगीत—पुं० [प्रा० स०] =सुगीतिका।

सुगीतिका—स्त्री० [सं० ब० स०] आर्या छन्द का एक भेद।

सुगुंडा—स्त्री० [सुगुण्डा, ब० स०] गुंडासिनी तृण। गुंडाला।

सुगुरा†—वि० [स० सुगुरु] १. जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो। २. जिसने अच्छे गुरु से शिक्षा पाई हो।

सुगृह—पुं० [स० प्रा० स०] सुन्दर घर।

सुगृही—वि० [स० सुगृह+इनि] १. जिसके पास सुन्दर घर हो। २ जिसकी पत्नी सुन्दर और सुयोग्य हो।

सुगेष्णा—वि० स्त्री० [स० ब० स०] सुदर रूप से गानेवाली।
स्त्री० किन्नरी।

सुगैया—स्त्री० [हिं० सुग्गा] अँगिया। चोली।

सुगौतम—पुं० [स० प्रा० स०] गौतम बुद्ध।

सुग्गा†—पु० [स० शुक] [स्त्री० सुग्गी] तोता।

सुग्गा-पंखी—पु० [हिं० सुग्गा+पख] एक प्रकार का अगहनी धान।

सुग्गा-सांप—पु० [हिं० सुग्गा+सांप] एक प्रकार का सांप।

सुग्गी—स्त्री० [हिं० सुग्गा का स्त्री०] मादा तोता। तोती।

सुग्द—पुं० [?] वक्षु और सीर नदियों के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

सुग्दी—वि० [सुग्द प्रदेश से] सुग्द प्रदेश का।
पु० सुग्द प्रदेश का निवासी।
स्त्री० सुग्द प्रदेश की बोली।

सुग्रंथि—पु० [स० ब० स०] १. चोरक नामक गध द्रव्य। २. पिपरामूल।

सुग्रह—पु० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ या अच्छे ग्रह। जैसे—बृहस्पति, शुक्र आदि।

सुग्रीव—वि० [स० ब० स०] अच्छी या सुन्दर ग्रीवा (गरदन) वाला।
पु० १ विष्णु या कृष्ण के चार घोडो मे से एक। २. वानरो का राजा जो बलि का भाई और श्रीरामचन्द्र का सखा तथा सहायक था। ३ वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत के पिता का नाम। ४. इन्द्र। ५ शिव। ६. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ७. शख। ८. राज-हस। ९ एक प्राचीन पर्वत। १० वास्तु-कला मे एक प्रकार का मडप। ११. नायक। सरदार।

सुग्रीवी—स्त्री० [स० सुग्रीव-ङीप्] दक्ष की एक कन्या तथा कश्यप की पत्नी जो घोडो, ऊँटो तथा गधो की जननी कही गई है।

सुग्रीवेश—पु० [स० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

सुघट—वि० [स०] १. जिसकी सुंदर गठन या बनावट हो। सुडौल। २ जो अच्छी तरह और सहज मे बन सकता हो।

सुघटित—वि० [स० सुघट+इतच्] १. गठन या बनावट के विचार से जो सुडौल फलत सुन्दर हो। २. गठे हुए शरीरवाला। ३. संघटित।

सुघट्य—वि० [स०] जिसे मनमाने ढग से दबा या मोड़कर सभी प्रकार के रूपों मे लाया जा सके। (प्लैस्टिक) जैसे—सुघट्य मिट्टी।
पुं० दे० 'सुनम्य'।

सुघट्यता—स्त्री० [सं० सुघट्य+तल्-टाप्] सुघट्य होने की अवस्था, गुण या भाव। (प्लैस्टिसिटी)

सुघड़—वि० [सं० सुघट] [भाव० सुघडई, सुघडपन] १. अच्छी तरह गढा हुआ; फलत: सुडौल और सुन्दर। २. जो हर काम अच्छी तरह या ठीक ढग से कर सकता हो। कुशल। निपुण। होशियार।

सुघड़ई—स्त्री० १. =सुघडपन। २ =सुघरई (रागिनी)।

सुघड़ता—स्त्री०=सुघडपन।

सुघड़पन—पु० [हिं० सुघड+पन (प्रत्य०)] सुघड होने की अवस्था, गुण या भाव। सुघडई।

सुघड़-भलाई—स्त्री० [हिं०] १ कौशल या चतुराई से भरी हुई चापलूसी की बातें। २ मीठी पर स्वार्थपूर्ण बातें करने का गुण या योग्यता।

सुघड़ाई†*—स्त्री०=सुघडई।

सुघड़ापा—पुं० [हिं० सुघड+आपा (प्रत्य०)]=सुघड़पन।

सुघड़ी—स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी शुभ घडी।

सुघर†—वि०=सुघड।

सुघरई†—स्त्री०=सुघडई (सुघडपन)।

सुघरई-कान्हड़ा—पुं० [हिं०सुघरई+कान्हडा] सपूर्ण जाति का एक संकर राग।

सुघरई-टोड़ी—स्त्री० [हिं० सुघरई+टोडी] सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी।

सुघरता—स्त्री०=सुघडता (सुघडपन)।

सुघरपन†—पु०=सुघडपन।

सुघराई—सुघडाई (सुघडपन)।

सुघरी—वि० हिं० सुघर (सुघड) का स्त्री०।
स्त्री० [हिं० सु+घडी] अच्छी घडी। शुभ काल या समय। सुघडी।

सुघोष—वि० [स०] जो उच्च या मधुर घोष करता हो। सुन्दर घोष या स्वरवाला।
पुं० चौथे पांडव नकुल के शख का नाम।

सुघोषक—पुं० [स० ब० स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

सुचंग—वि० [हिं० सु+चगा] १. अच्छा। बढिया। २ सुन्दर।
पुं० घोड़ा। (डिं०)

सुचंद—वि०=सुचग।
पुं० [हिं० सु+चांद] पूर्णिमा का चद्रमा। उदा०—गुन ज्ञान-मान सुचंद है।—पद्माकर।

सुचंदन—पुं० [सं० ब० स० प्रा० स०] पतग या बक्कम नाम की लकडी जिसका व्यवहार औषध और रग आदि मे होता है। रक्तसार। सुरग।

सुचंद्र—पुं० [स० ब० स०] १. एक गधर्व का नाम। २. सिंहिका के पुत्र का नाम।

सुचंद्रा—स्त्री० [सं० सुचंद्र-टाप्] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

सुच*—वि०=शुचि।

सुचकना†—अ०=सकुचना। उदा०—वो जब घर से निकले सुचकते-सुचकते। कुछ कदम भी उठाये झिझकते झिझकते।—नजीर।

सुचक्षु(स्)—वि० [सं० ब० स०] १. सुन्दर चक्षुओं या नेत्रोंवाला।
पुं० १. शिव। २. पण्डित। विद्वान्। ३. गूलर।
स्त्री० एक प्राचीन नदी।

सुचना—स० [सं० संचय] संचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना।
*अ० एकत्र किया जाना। इकट्ठा होना।
अ० [हिं० सोचना का अ०] सोचा या विचारा जाना। (क्व०)

सुचरित—वि० [सं०] सुचरित्र।

सुचरिता—स्त्री० [सं० सुचरित-टाप्] १. अच्छे आचरणवाली स्त्री। २. पतिव्रता स्त्री।

सुचरित्र—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सुचरित्रता] जिसका चरित्र शुद्ध हो। उत्तम आचरणवाला। सच्चरित्र।

सुचरित्रा—वि० [सं०] अच्छे चरित्र या शुद्ध आचरण वाली (स्त्री)।
स्त्री० सुचरिता।

सुचा*—स्त्री० [सं० सूचना] ज्ञान। चेतना। सुध।
*वि०=शुचि।

सुचाना—स० [हिं० सोचना का प्रे०] १ किसी को कुछ सोचने या समझने मे प्रवृत्त करना। २ किसी का किसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना। सुझाना।

सुचार*—स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल] सुचाल। अच्छी चाल।
वि० सदाचारी और सच्चरित्र।
वि० [सं० सुचारु] मनोहर। सुन्दर।

सुचारु—वि० [सं० सु+चारु] अत्यत सुन्दर। अतिशय मनोहर। बहुत खूबसूरत।

सुचाल—स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल] उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार।

सुचालक—वि० [सं०] वह (वस्तु) जिसमे विद्युत्, ताप आदि का परिचालन सुगमता से हो सके। सुसवाहक। (गुड कडक्टर)

सुचाली—वि० [सं० सु+हिं० चाल+ई (प्रत्य०)] १. जिसकी चाल या गति अच्छी हो। २ अच्छे आचरणवाला। सच्चरित्र।
†स्त्री० पृथ्वी। (डिं०)

सुचाव—पु० [हिं० सुचाना] १. सुचाने की क्रिया या भाव। २. दे० 'सुझाव'।

सुचि—स्त्री० [सं० सूची] सुई।
वि०=शुचि।

सुचित—वि० [सं० सुचित्त] १ सुदर चित्तवाला अर्थात् जिसके चित्त मे विकार न हो। २ जिसे किसी प्रकार की चिताग्रस्त न किये हुए हो। ३ जो सब प्रकार के कामो, झगडो आदि से निवृत्त हो चुका हो।
†वि० शुचि (पवित्र)।

सुचितई†—स्त्री० [हिं० सुचित+ई (प्रत्य०)] १. सुचित होने की अवस्था या भाव। निश्चिंतता। बे-फिक्री। २ मन की एकाग्रता और शान्ति। ३. अवकाश। फुरसत।

सुचिता—स्त्री०=शुचिता (पवित्रता)।

सुचिती—वि०=सुचित।

सुचित्त—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सुचित्तता] सुचित। (दे०)

सुचित्र—वि० [सं०] अनेक प्रकारों या रंगो का।
पुं० सुंदर चित्र।

सुचित्रक—पु० [सं० सुचित्र+कप्] १. मधुरज नामक पक्षी। मुरगाबी। २. चितला साँप।

सुचित्रा—स्त्री० [सं० सुचित्र-टाप्, ब० स०] चिर्भटा या फूट नामक फल।

सुचिमंत—वि० [सं० शुचि+मत्] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी।

सुचिर—वि० [सं० प्र० स०] १ बहुत दिनो तक बना रहनेवाला। चिर-स्थायी। २. बहुत दिनो का। पुराना। प्राचीन।
पु० बहुत अधिक समय। दीर्घ काल।

सुचिरायु(स्)—वि० [सं० ब० स०] दीर्घ या लबी आयुवाला।
पु० देवता।

सुची*—वि०=शुचि (पवित्र)।
स्त्री०=शची (इन्द्राणी)।

सुचीत*—वि० [सं० सुचित्त] १ उत्तम। भला। शुभ। २ मनोहर। सुन्दर। ३ दे० 'सुचित'।

सुचुटी—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १. चिमटा। २. सँडसी।

सुचेत (स्)—वि० [सं०] सचेत। सावधान।
*वि०=सुचित।

सुचेतन—पु० [सं०] विष्णु। (डिं०)
वि०=सुचेत।

सुचेता—वि०=सुचेत।

सुचेलक—पुं० [सं० सुचेल+कन्] बढिया और बहुमूल्य कपडा। पट।
वि० जो अच्छे कपडे पहने हो।

सुच्छंद*—वि०=स्वच्छंद।

सुच्छ†—वि०=स्वच्छ।

सुच्छत्र—पु० [सं० ब० स०] शिव का एक नाम।

सुच्छत्री—स्त्री० [सं०] पजाब की सतलज नदी।

सुच्छद—वि० [सं०] सुन्दर पत्तोंवाला।

सुच्छम—पु० [?] घोड़ा। (डिं०)
†वि०=सूक्ष्म।

सुच्छाय—वि० [सं० ब० स०] १. (वृक्ष) जिसकी छाया अच्छी और यथेष्ट हो। २ (रत्न) जो यथेष्ट चमकीला हो।

सुजंगी—पुं० [गढवाली] भाँग का वह पौधा जिसमे बीज लगे हो।

सुजंघ—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर जाँघोवाला।

सुजड—पु० [?] तलवार। (डिं०)

सुजडी—स्त्री० [?] कटारी। (डिं०)

सुजन—वि० [कर्म० स०] [भाव० सुजनता] १. नेक। भला। २. कृपालु। दयालु।
पु० १. भला आदमी। नेक आदमी। २. दूसरो की सहायता करने-वाला। आदमी।
पु०=स्वजन।

सुजनता—स्त्री० [सं० सुजन+तल्-टाप्] १. सुजन अर्थात् भले होने की ...ाव। भलमनसाहत। २ कृपालुता।
...ी० [सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुजनी—स्त्री० [फा० सोजनी] एक तरह की बडी और मोटी बिछाने की चादर।

सुजन्मा(न्मन्)—वि० [स० ब० स०]१ जिसका उत्तम रूप से जन्म हुआ हो। उत्तम रूप से जन्मा हुआ। सुजातक। २ जो विवाहित पुरुष और स्त्री से उत्पन्न हुआ हो फलत जो जारज न हो। ३ अच्छे कुल मे उत्पन्न।

सुजय—वि०[स० सु√जी (जीतना)+अच्]जो सहज मे जीता जा सकता हो।

सुजल—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुजला] जहाँ जल यथेष्ट हो और सहज मे मिलता हो।

पु० कमल। पद्म।

सुजल्प—पु० [स० प्रा० स०] १. उत्तम या सुन्दर कथन। २ सुन्दर भाषण।

सुजस†—पु०=सुयश।

सुजाक†—पु०=सूजाक।

सुजागर—वि०[स० सु=भली-भाँति+जागर=प्रकाशित होना] प्रकाशमान्। शोभन और सुन्दर।

सुजात—वि०[स० कर्म० स०]१ जो उत्तम कुल मे जन्मा हो। २ जो औरस सतान हो, जरज न हो। ३ सुन्दर।

पु० साँड। (बौद्ध)

सुजातक—पु० [स० सुजात+कन्] सौंदर्य। सुन्दरता।

सुजाता—स्त्री०[स०]१ गोपी चन्दन। २ मगध की एक बौद्ध-कालीन ग्रामीण कन्या जिसने गौतम बुद्ध को बुद्धत्व प्राप्त करने के उपरांत अपने यहाँ निमत्रित करके भोजन कराया था।

सुजाति—वि०[स० प्रा० स०] अच्छी जाति का।

स्त्री० अच्छी और उत्तम जाति।

सुजातिया—वि० [स० सु+जाति+इया (प्रत्य०)] उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।

†वि०[स० स्व+जाति+इया (प्रत्य०)] किसी व्यक्ति की दृष्टि से उसकी जाति का।

सुजान—वि०[स० सज्ञान] [भाव० सुजानता] १ समझदार। चतुर। सयाना। २ कुशल। निपुण। प्रवीण। ३ सुविज्ञ। ४ सज्जन।

पु०१ पति या प्रेमी। २ परमात्मा।

सुजानता—स्त्री०[हि० सुजान+ता (प्रत्य०)] सुजान होने की अवस्था धर्म या भाव। सुजानपन।

सुजानी†—वि०=सुजान।

सुजाव—पु०[स० सुजात] पुत्र। (डि०)

सुजावा—पु०[देश०] बैलगाडी मे की वह लकडी जो पैंजनी और फड मे जडी रहती है।

सुजिह्व—वि०[स० ब० स०]१ जिसकी जिह्वा या जीभ सुन्दर हो। २ मीठा बोलनेवाला। मधुर-भाषी।

सुजीता—स्त्री०[स० ब० स०] गोपी चदन।

सुजीर्ण—वि०[स० प्रा० स०]१. (भोजन) अच्छी तरह पचा हुआ। (खाना) जो खूब पच गया हो। २. (पदार्थ) जो बहुत पुराना और जर्जर हो गया हो।

सुजेय—वि०[स० सु√जी (जीतना)+यत्] जो सहज मे जीता जा सकता हो।

सुजोग*†—पु०=सुयोग।

सुजोधन*—पु०=सुयोधन।

सुजोर—वि०[स० सु (या फा० शह ?)+फा० ज़ोर] [भाव० सुजोरी] १ जोरदार। प्रबल। २ दृढ। पक्का। मजबूत।

सुज्ञ—वि०[स० सु√ ज्ञा+क] सुविज्ञ।

सुझाखा—वि०[हि० सूझना] [स्त्री० सुझाखी]१ जिसे दिखाई देता हो। 'अधा' का विपर्याय। २ चतुर। होशियार। (पश्चिम)

सुझाना—स०[हि० सूझना का प्रे०] १ किसी के ध्यान मे कोई नई बात लाना। नई तरकीब बताना। २ सुझाव के रूप मे किसी के सामने कोई बात रखना। किसी को उसे सुझाये हुए ढग से काम करने के लिए प्रवृत्त करना।

सुझाव—पु०[हि० सुझाना] १ सुझाने की क्रिया या भाव। २ वह नयी बात जो किसी को सुझाई गई हो या जिसकी ओर ध्यान आकृष्ट किया गया हो। (सजेशन)

सुटंक—वि०[स०] कठोर, कर्कश या जोर का (शब्द)।

सुटकुन†—स्त्री०[हि० सुटका का अल्पा०] पतली छोटी छडी।

†स्त्री०=सिटकिनी।

सुटुकना—स० [हि० सुटका+ना (प्रत्य०)]सुटका मारना। चाबुक लगना।

अ०१ =सटकना। २ =सुडकना। ३ =सिकुडना।

सुठ†—वि०=सुठि (सुन्दर)।

सुठहर†—पु०[स० सु०+हि० ठहर=जगह] अच्छा ठिकाना। ठहरने का अच्छा स्थान।

सुठार*—वि०=सुढार (सुडौल)।

सुठि†—वि० [स० सुष्ठु] १ सुन्दर। २ बढिया। अच्छा। ३ बहुत अधिक। ४ पूरा। समूचा।

अव्य० निरा। बिलकुल।

सुठौना†—वि०=सुठि (सुन्दर)।

सुठौन*—वि० दे० 'सुठि'।

†स्त्री०[हि० सु+ठवन]सुन्दर ठवन या बैठने आदि का ढग।

सुड़क—स्त्री०[हि० सुडकन] १ सुडकने की क्रिया या भाव। २ कोई चीज सुडकते समय होनेवाला शब्द।

सुड़कना—स०[अनु०] किसी तरल पदार्थ को नाक की राह, साँस के साथ भीतर खीचना। नास लेना।

सुड़-सुड़—स्त्री०[हि० सुडसुडाना]१. सुडसुडाने की क्रिया या भाव। २ सुडसुडाने पर उत्पन्न होनेवाला शब्द।

सुड़सुड़ाना—स०[अनु०] कोई कार्य करते समय सुडसुड शब्द उत्पन्न करना। जैसे—नाक सुडसुडाना। हुक्का सुडसुडाना।

†अ० सुडसुड शब्द करना।

सुडीनक—पु०[स० प्रा० स०] पक्षियो की एक विशेष प्रकार की उडान।

सुड्कना—स०=सुडकना।

सुडौल—वि०[स० सु+हि० डौल] [भाव० सुडौलपन]१ सुन्दर डौल या आकारवाला। २ जिसके अगों मे आनुपातिक सामजस्य हो।

सुड्ढा†—पुं०[देश०] [स्त्री० अल्पा० सुड्ढी] धोती की वह लपेट जिसमे रुपया-पैसा रखते है। अटी। ऑट।

सुढंग—वि०[स० सु+हिं० ढग] जिसका ढग, प्रकार या रीति सुन्दर हो। पु० अच्छा ढग, प्रकार या रीति।

सुढर—वि०[स० सु+हिं० ढलना] प्रसन्न और दयालु होकर सहज मे अनुकम्पा करनेवाला।
†वि०=सुघड।

सुढार*—वि०=सुडौल।

सुण-घड़िया†—पु० [हिं० सुण (सोना)+घडिया (गढनेवाला)]सुनार। (डिं०)

सुणना—स०१ =सुनना। २ =सुनाना।

सुतत, सुतंतर†—वि०=स्वतत्र।

सुतंतु—पु०[स० व० स०]१ शिव। २ विष्णु।

सुतत्र†—वि०=स्वतन्त्र।

सुतंत्रि—पु०[स० व० स०]१ वह जो तार के वाजे (वीणा आदि) वजाने मे प्रवीण हो। वह जो तत्र-वाद्य अच्छी तरह वजाता हो। २ वह जो कोई वाजा अच्छी तरह वजाता हो।
वि०१ वढिया तारोवाला (वाजा)। २ फलत. मधुर स्वरवाला।

सुत—पु०[स०] [स्त्री० सुता]१ माता या पिता अथवा दोनो की दृष्टि से वह वालक जो उनके रज और वीर्य से उत्पन्न हुआ हो। पुत्र। आत्मज। वेटा। २ जन्म-कुडली मे लग्न से पाँचवाँ घर जहाँ सन्तान के सम्वन्ध मे विचार किया जाता है।
वि०१ उत्पन्न। जात। २ पार्थिव।
पु० वीस की सख्या।

सुतकरी—स्त्री०[हिं० सूत+करी] स्त्रियो के पहनने की पुरानी चाल की जूती।

सुत-जीवक—पु०[स० सुत√जीव (जीवित करना) ण्वुल्—अक्]पुत्र-जीव (वृक्ष)।

सुतत्व—पु०[स० सुत+त्व] सुत होने की अवस्था, धर्म या भाव।

सुतदा—वि० स्त्री०[स० सुत√दा(देना)+क—टाप्] सुत या पुत्र देनेवाली।
स्त्री०=पुत्रदा (लता)।

सुतधार†—पु०=सूत्रधार।

सुतनु—वि०[स० सु+तनु] १ सुन्दर शरीरवाला। खूबसूरत। २ सुकुमार शरीरवाला। नाजुक और दुवला-पतला।
स्त्री०१ सुन्दरी स्त्री। २ अक्रूर की पत्नी का नाम। ३. उग्रसेन की एक कन्या।

सुतनुता—स्त्री०[स० सुतनु+तल्—टाप्] सुतनु होने की अवस्था, गुण या भाव। सुन्दरता।

सुतप—वि०[स० सुत√पा (पीना)+क, व० स०] सोमपान करनेवाला।

सुतपा (पस्)—वि० [स० व० स०] वहुत अधिक तपस्या करनेवाला।
पु० १ सूर्य। २ विष्णु।

सुत-पेय—पु०[स०] यज्ञ मे सोम पीने की क्रिया। सोमपान।

सुत-याग—पु०[स०] पुत्र की कामना से किया जानेवाला यज्ञ। पुत्रेष्टि-यज्ञ।

सुतर—वि०[स० व० स०] (जलाशय) जो सुख या आराम से तैरकर या नाव आदि से पार किया जा सके।
†पु०=शुतुर (ऊँट)।

सुतर-नाल—स्त्री०=शुतुरनाल।

सुतरां—अव्य० [स० सुतराम्] १ अत। इसलिए। २ और भी। अपितु। किं वहुना। ३ विवश होकर। लाचारी की हालत मे। ४ वहुत अधिक। अत्यन्त। ५ अवश्य। जरूर।

सुतरा—पु०[हिं० सूत] सूत की तरह का वह पतला चमडा जो प्राय उँगलियो मे नाखून की जड के पास उचडकर निकलने लगता है।

सुतरी—पु०[फा० शुतुर] ऊँट के से रगवाला वैल।
स्त्री०[?]१ करघे मे की वह लकड़ी जो पाई मे साँथी अलग करने के लिए साँथी के दोनो तरफ लगी रहती है। २ एक प्रकार की घास जिसे हुर-वाल भी कहते हैं।
†स्त्री० १ =सुतारी। २ =सुतली।

सुतर्द्दन—पु०[स० व० स०] कोकिल पक्षी। कोयल।

सुतल—पु०[स० व० स०]पुराणानुसार सात पाताल लोको मे से एक जो किसी के मत से दूसरा और किसी के मत से छठा लोक है।

सुतली—स्त्री०[हिं० सूत+ली (प्रत्य०)] रुई, सन या इसी प्रकार के और रेशो के सूतो या डोरो को एक मे वटकर वनाया हुआ लवा और कुछ मोटा खड जिसका उपयोग चीजें वाँधने, कूएँ से पानी खीचने, पलग वुनने आदि कामो मे होता है। डोरी। रस्सी।

सुत-वस्करा—स्त्री०[स०]वह स्त्री जिसने सात पुत्रो को जन्म दिया हो।

सुतवान्(वत्)—वि०[स० सुत+मतुप्-म=व-नुम्-दीर्घ] पुत्रोवाला।

सुतवाना†—स०=सुलवाना।

सुत-स्थान—पु०[स० ष० त०]जन्म-कुडली मे लग्न से पाँचवाँ स्थान जहाँ से सन्तान सम्वन्धी विचार होता है।

सुतहर †—पु०=सुतार।

सुतहा†—वि०, पु० [हिं० सूत+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० सुतही] १. सूत-सवधी। सूत का। २ सूत का वना हुआ। सूती।
पु० सूत का व्यापारी।

सुतहार† —पु०=सुतार।

सुतही†—स्त्री०=सुतुही।

सुतहौनिया†—पु०=सुथौनिया।

सुता—स्त्री०[स०]१. पुत्री। वेटी। २. सखी। सहेली। (डिं०)

सुतात्मज—पु०[स० ष० त०] [स्त्री० सुतात्मजा] १ लडके का लडका। पोता। २ लडकी का लड़का। नाती।

सुतान—वि०[स० व० स०] अच्छे स्वरवाला। सु-स्वर।

सुताना†—स०=सुलाना।

सुता-पति—पु०[स० ष० त०] किसी की दृष्टि से उसकी कन्या का पति। दामाद। जामाता।

सुतार—वि०[स०]१ चमकीला। २ जिसकी आँखो की पुतलियाँ सुन्दर हो।
पु०१. एक प्रकार का सुगन्धि द्रव्य। २ गुरु से पढे हुए अध्यात्म-शास्त्र का ठीक और पूरा ज्ञान जिसकी गिनती साख्य-दर्शन मे सिद्धियो मे की गई है।

पुं०[सं० सूत्रकार] [भाव० सुतारी]१. बढ़ई। २. कारीगर।
†पुं०[?]१ सुख-सुभीता। २ हुद-हुद (पक्षी)।
सुतारका—स्त्री०[सं०] चौवीस शासन देवियों मे से एक। (बौद्ध)
सुतारा—स्त्री०[सं०]१ सांख्य के अनुसार (क) नौ प्रकार की तुष्टियों मे से एक और (ख) आठ प्रकार की सिद्धियों मे से एक।
सुतारी—स्त्री०[हिं० सुतार+ई (प्रत्य०)]१ सुतार या बढ़ई का काम। २ वह सूआ जिससे मोची चमड़ा सीते है। ३ पुरानी चाल का एक प्रकार का हथियार।
पुं० कारीगर। शिल्पी।
सुतार्थी (थिन्)—वि० [सं०] पुत्र की कामना करनेवाला। जिसे पुत्र की अभिलाषा हो।
सुताल—पुं०[सं०] ताल का एक भेद (संगीत)।
सुताली†—स्त्री०=सुतारी।
सुतावना†—स०=सुलाना।
सुतासुत—पुं०[सं० ष० त०] पुत्री का पुत्र। दौहित्र। नाती।
सुतिक्त—पुं०[सं०] पित्त-पापड़ा।
वि० बहुत अधिक तिक्त या तीता।
सुतिक्तक—पुं० [सं०] १ चिरायता। २. पारिभद्र। परहद। ३. पित्त-पापड़ा।
सुतिक्ता—स्त्री०[सं०]१ तोरई। कोशातकी। २. शल्लकी। सलई।
सुतिन*—स्त्री०=सुतनु (सुन्दर स्त्री)।
सुतिनी—स्त्री०[सं०] पुत्रवती। स्त्री जिसे पुत्र हो।
सुतिया†—स्त्री०[देश०] गले मे पहनने का हँसुली नाम का गहना।
सुतिहार†—पुं०=सुतार (बढ़ई)।
सुती (तिन्)—पुं० [सं० सुति] [स्त्री० सुतिनी] जिसके आगे बेटा या बेटे हों, फलतः पिता।
सुतीक्षण—पुं०=सुतीक्ष्ण।
सुतीक्ष्ण—वि० [सं०] १ बहुत अधिक तीक्ष्ण या तीखा। २. बहुत अधिक तीता। ३ दरद-भरा। पीड़ा-युक्त।
पुं०१. अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास के समय श्री रामचन्द्र जी से मिले थे। २ सहिजन।
सुतीक्ष्णक—पुं०[सं०] सुतीक्ष्ण।
सुतीक्ष्णका—स्त्री०[सं०] सरसो। सर्षप।
सुतीखन†—पुं०=सुतीक्ष्ण।
सुतीर्थ—वि०[सं०] (जलाशय) जो सहज मे पार किया जा सके।
पुं०१. शिव। २ एक पौराणिक पर्वत।
सुतुंग—वि०[सं०] बहुत अधिक ऊँचा।
पुं० १ नारियल का पेड। २ ज्योतिष मे ग्रहो का उच्चांश।
सुतुहा†—पुं०[हिं० सुतुही] बड़ी सुतुही।
सुतुही—स्त्री० [सं० शुक्ति]१ सीपी, जिससे प्राय छोटे बच्चों को दूध पिलाते है। २ बीच में से घिसकर काटी हुई वह सीपी जिससे आम के छिलके छीले जाते है, पोस्ते मे से अफीम खुरची जाती है, तथा इसी प्रकार के कुछ और काम किये जाते है।
सुतून—पुं०[फा०] खभा। स्तम्भ।
सुतेकर—पुं०[सं०] वह जो यज्ञ करता हो। ऋत्विक्।
सुतेजन—पुं०[सं०]१ धामिन नामक वृक्ष। २. बहुत नुकीला तीर।
वि० १. तेज धारवाला। २ नुकीला।
सुतेजा (जस्)—पुं० [सं०]१. जैनों के अनुसार गत उत्सर्पिणी के दसवें अर्हत का नाम। २ हुरहुर नाम का पौधा।
सुतोष—वि०[सं०] संतुष्ट।
पुं० पूर्ण तुष्टि। २ संतोष।
सुत्ता†—वि० [हिं० सोना] [स्त्री० सुत्ती] सोया हुआ। (पश्चिम)
सुत्तुर†—पुं०[हिं० सूत या फा० शुतुर?]जुलाहों के करघे का वह बाँस जिसमे कघी बँधी रहती है। कुलवाँसा।
सुत्थना—पुं०[स्त्री०अल्पा० सुत्थनी] कुछ खुली मोरीवाला एक तरह का पाजामा। सूथन। (पश्चिम)
सुत्या—स्त्री०[सं०] १. सोमरस निकालना या बनाना। २ यज्ञ के लिए सोमरस निकालने का दिन।
सुत्रामा (मन्)—पुं०[सं०] १. वह जो उत्तम रूप से रक्षा करता हो। २ इन्द्र। ३ पुराणानुसार तेरहवें मन्वंतर का एक देवगण।
सुत्री†—स्त्री०[सं० सु+स्त्री]१ सुन्दरी स्त्री। २ औरत। स्त्री। (डिं०)
सुथना†—पुं०=सुत्थना।
सुथनिया†—स्त्री०=सुथनी।
सुथनी—स्त्री०[देश०]१ स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पाजामा। सूथन। २. पिंडालू। रतालू।
सुथरा—वि०[सं० स्वस्थ] [स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ।
पुं० [सुथरेशाह] सुथरेशाह के पथ का अनुयायी साधु।
सुथराई†—स्त्री०=सुथरापन।
सुथरापन—पुं० [हिं० सुथरा+पन (प्रत्य०)] सुथरे अर्थात् साफ होने की अवस्था, गुण या भाव।
सुथरेशाह—पुं०[भाव० सुथरेशाही] गुरु नानक के एक प्रसिद्ध शिष्य जिन्होंने अपना एक स्वतन्त्र सप्रदाय चलाया था।
सुथरेशाही—स्त्री० [सुथरेशाह (महात्मा)] १ सुथरेशाह का चलाया हुआ एक सप्रदाय।
पुं० उक्त सप्रदाय का अनुयायी साधु। ऐसे साधु प्राय सुथरेशाह के बनाये हुए पद गाकर भीख माँगते हैं।
सुथौनिया—पुं०[देश०] जहाज के मस्तूल के ऊपरी भाग मे वह छेद जिसमे पाल लगाने के समय उसकी रस्सी पहनाई जाती है। (लश०)
सुदंड—पुं०[सं० ब० स०] बेंत। बेल।
सुदंडिका—स्त्री० [सं०] १. गोरख इमली। गोरक्षी। २ अजदडी। ब्रह्म-दडी।
सुदंत—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर दाँतोंवाला।
पुं० १. अभिनेता। नट। २ नर्तक। ३. हाथी।
सुदंती—स्त्री०[सं०]१. एक दिग्गज की हथिनी का नाम। २ मादा हाथी। हथिनी।
सुदंष्ट्र—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर दाँतोंवाला।
पुं० श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
सुदक्षिणा—स्त्री० [सं०] १ राजा दिलीप की पत्नी का नाम। २ पुराणानुसार श्रीकृष्ण की एक पत्नी।

सुदत—वि० [स०] [स्त्री० सुदती] सुन्दर दाँतोवाला।
सुदम†—वि०=दमदार।
सुदमन—पु०[स०] आम का पेड और फल।
सुदरसन—वि०, पु०=सुदर्शन।
सुदर्भा—स्त्री० [स०] एक प्रकार का तृण जिसे 'इक्षुदर्भा' भी कहते है।
सुदर्श—वि०[स०] सुदर्शन। (दे०)
सुदर्शक—पु० [स०] एक प्रकार की समाधि।
सुदर्शन—वि० [स०] [स्त्री० सुदर्शना]१ जो देखने मे बहुत अच्छा और भला लगे। सुन्दर। २ जिसके दर्शन सरलता से होते हो या हो सकते हो।
पु०१ विष्णु के हाथ का चक्र। २ शिव। ३ एक प्रकार का पौधा और उसके फूल। ४ वैद्यक मे, एक प्रकार का चूर्ण जिसका प्रयोग विषम ज्वर मे होता है। ५ कबीर पंथियो के अनुसार एक श्वपच भक्त जो कबीर का शिष्य था। ६ सुमेरु पर्वत। ७ इन्द्र की पुरी, अमरावती। ८ वर्तमान अवसर्पिणी के अठारहवें अर्हत के पिता का नाम। (जैन) ९ जैनो के नौ बलदेवो मे से एक। १० दधीचि का एक पुत्र। ११ भरत का एक पुत्र। १२ मछली। १३ एक प्रकार की सगीत-रचना। १४. जामुन। १५ जबूद्वीप। १६ गिद्ध। १७ सन्यासियो का एक दड जिसमे छ गाँठे होती हैं। १८ सोम लता। १९ मदनमस्त नामक पौधा और उसका फूल।
सुदर्शन-पाणि—पु० [स० ब० स०] विष्णु जिनके हाथ मे सुदर्शन नामक चक्र रहता है।
सुदर्शना—स्त्री०[स०]१ सुन्दरी स्त्री। रूपवती नारी। २. इन्द्र की पुरी, अमरावती। ३ शुक्ल पक्ष की रात। ४ एक प्रकार की मदिरा। ५. कमलो का सरोवर। ६ सोमलता। ७ जामुन का पेड। ८ आज्ञा। आदेश।
वि० स० 'सुदर्शन' का स्त्री०।
सुदर्शनी—स्त्री०[स०] इन्द्र की पुरी, अमरावती।
सुदल—पु०[स० प्रा० स०] १ अच्छा और बडा दल। २ मोरट या क्षीर मोरट नाम की लता। ३ मुचकुद।
वि० अच्छे दलवाला।
सुदला—स्त्री०[स० ब० स०]१ सरिवन। शालपर्णी। २ सेवती।
सु-दशन—वि०[स०] [स्त्री० सुदशना] सुन्दर दाँतोवाला। सुदत।
सुदांत—वि०[स०] बहुत अधिक शात और सुशील।
पु० एक प्रकार की समाधि।
सुदाम—पु०[स०]१ श्रीकृष्ण के सखा, एक गोप। सुदामा। २ एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)
सुदामन—वि०[स०] उदारतापूर्वक देनेवाला।
पु० राजा जनक के एक मत्री का नाम। २ देवताओ का एक प्रकार का अस्त्र। ३ सुदामा।
सुदामा (मन्)—पु०[स०] १ एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सहपाठी और परम सखा था तथा जिसे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था। २ इन्द्र का हाथी, ऐरावत। ३ एक प्राचीन पर्वत। ४ समुद्र। ५ बादल। मेघ।
स्त्री०१ रामायण के अनुसार उत्तर भारत की एक नदी। २ पुराणानुसार स्कद की एक मातृका।
वि० अच्छी तरह और बहुत दान देनेवाला।
सुदाय—पु०[स०]१. उत्तम दान। २ उपहार के रूप मे दिया जानेवाला सुन्दर पदार्थ। ३. यज्ञोपवीत सस्कार के समय ब्रह्मचारी को दी जानेवाली भिक्षा। ४ उपहार, दान या भिक्षा देनेवाला व्यक्ति। ५ विवाह के अवसर पर कन्या या जामाता को दिया जानेवाला दान। दहेज। ६ उक्त प्रकार का धन या चीजें देनेवाला व्यक्ति।
सुदारु—पु० [स०] १ देवदारु। देवदार। २ सरल नामक वृक्ष। ३ विंध्य पर्वत के पारिपात्र खड का एक नाम।
सुदारुण—वि०[स०] बहुत अधिक दारुण, भीषण या विकट।
पु० एक प्रकार का दिव्य या दैवी अस्त्र।
सुदावन†—पु०=सुदामन।
सुदास—पु० [स०]१. एक प्राचीन जनपद। २ वह जो सम्यक् रूप से ईश्वर की आराधना या उपासना करता हो।
सुदि—स्त्री० दे० 'सुदी'।
सुदिन—पु०[स० सु+दिन्]१ अच्छा दिन। साफ दिन। विशेषत जिस दिन-सुबह सुबह बादल न छाये हो। 'दुर्दिन' का विपर्याय। २ शुभ दिन।
सुदिव—वि०[स०] बहुत अधिक दीप्तिमान्।
सुदिह—वि० [स०]१ बहुत तीखा। धारदार। नुकीला। २ बहुत चिकना। ३ बहुत उज्ज्वल।
सुदी—स्त्री० [सं० शुक्ल में का शु+दिवस मे का दि=शुदि] चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। जैसे—कार्तिक सुदी छठ।
सुदीक्षा—स्त्री०[स०] लक्ष्मी।
सुदीप्ति—वि०[स०] बहुत अधिक दीप्तिमान्। बहुत उज्ज्वल और चमकीला। अगिरस गोत्र के एक ऋषि।
सुदीर्घ—वि०[स०] [स्त्री० सुदीर्घा] [भाव० सुदीर्घता] बहुत अधिक लबा-चौडा। खूब-विस्तृत।
पु० चिचडा।
सुदीर्घा—स्त्री० [स०] चीना ककडी।
सुदुघ—वि०=सुदुघा।
सुदुघा—वि०[स०]१ अच्छा और बहुत दूध देनेवाली। २ जो सहज मे दूही जाती हो। (गौ, बकरी, भैस आदि)
सुदूर—वि०[स०] बहुत दूर। अति दूर। जैसे—सुदूर पूर्व।
†पु०=शार्दूल। उदा०—लक देखि कै छपा सुदूरू।—जायसी।
सुदृढ—वि०[स०] [भाव० सुदृढता] बहुत दृढ। खूब मजबूत। जैसे—सुदृढ बधन।
सुदृष्टि—वि०[स०]१ अच्छी या शुभ दृष्टिवाला। २ दूरदर्शी।
स्त्री० अच्छी और शुभ दृष्टि।
पु० गिद्ध।
सुदेल्ल—पु०=सुदेष्ण (पर्वत)।
सुदेव—पु०[स०]१ उत्तम देवता। २ विष्णु का एक पुत्र।
वि० अच्छी क्रीडा या खेल करनेवाला।
सुदेवस—पु० [हिं० सु+देव=देवता] देवता का नाम लेकर किया जाने-

वाला (किसी काम या बात का) आरम्भ। जैसे—अब आप अपने काम का सुदेवस कीजिए।
सुदेव्य—पु०[स०] भले या श्रेष्ठ देवो का समुदाय।
सुदेश—पु०[स०]१ अच्छा और सुन्दर देश। २ किसी काम या बात के लिए उपयुक्त स्थान।
वि० मनोहर। सुन्दर।
सुदेशिक—पु०[स०] अच्छा पथ-प्रदर्शक।
सुदेष्ण—पु०[स०]१ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २ एक प्राचीन जनपद। ३. एक पौराणिक पर्वत।
सुदेष्णा—स्त्री०[स०]१ बलि की पत्नी। २ विराट् की पत्नी।
सुदेस†—वि०[स० सु+दृश्] देखने मे सुन्दर।
पु०[स० सु+देश] अच्छा देश या स्थान।
*पु०=स्वदेश।
सुदेसी†—वि०=स्वदेशी।
सुदेह—पु०[स०] सुन्दर देह। सुदर शरीर।
वि० सुन्दर देह या शरीर वाला।
सुदैव—पु०[स०]१ सौभाग्य। २ अच्छा सयोग।
सुदोग्ध्री—वि०[स०] अधिक दूध देनेवाली।
स्त्री० अधिक दूध देनेवाली गाय।
सुदोघ—वि०[स०] दानशील। उदार।
सुदोघा—वि०, स्त्री [स०] सुदोग्ध्री। (दे०)
सुदोह—वि०[स०] (मादा जतु) जिसे दूहने मे कोई कष्ट न हो।
सुदौसी†—अव्य० [स० सद्यस्=तुरन्त] उचित या ठीक समय से। कुछ पहले ही। कुछ जल्दी ही। (पश्चिम) जैसे—रेल पकडने के लिए घर से कुछ सुदौसी ही चलना चाहिए।
सुद्दा—पु० [स० सुद्] [स्त्री० अल्पा० सुद्दी] वह मल जो पेट के अदर सूखकर आँतो से चिपक गया हो, और बहुत कष्ट से बाहर निकलता हो।
सुद्ध†—वि० [स० शुद्ध] १ शुद्ध। खालिश। २ (उपकरण) जो प्रसम गति या स्थिति मे हो अथवा ठीक तरह से काम कर रहा हो। जैसे—लहू सुद्ध चल रहा है।
स्त्री०=सुध (चेतना)। उदा०=होनहार हिरदे बसै विसर जाय सुद्ध। —कहावत।
सुद्धाँ†—अव्य० [स० सह] सहित। समेत। मिलाकर। जैसे—उसके सुद्धां वहाँ चार आदमी थे।
सुद्धांत†—पु०=सुद्धात (अत पुर)।
सुद्धा*—अव्य०=सुद्धाँ।
सुद्धि*—स्त्री० १ दे० 'शुद्धि'। २ दे० 'सुध'।
सुद्युत—वि०[स० प्रा० स०] खूब प्रकाशमान्।
सुद्युम्न— पु०[स०] वैवस्वत मनु का पुत्र जो इड के नाम से ख्यात है।
सुद्रष्ट—वि०[स० सदृष्ट] दयावान्। कृपालु। (डि०)
सुधंग (गा)—वि०[हिं० सीधा+अग या सु+ढग?] १. सरल या सीधे स्वभाव वाला। २ सीधा।
पु० अच्छा या सुन्दर ढग।
सुध—स्त्री०[स० सुधी?]१. अच्छी बुद्धि। २. सचेतनता। होश।
क्रि० प्र०—खोना।—विसरना।
३ स्मृति। याद।
मुहा०—**सुध दिलाना**=याद दिलाना। **सुध विसारना या भूलना**=याद न रखना। **सुध लेना**= (क) किसी का हाल-चाल पूछने के लिए उसके पास जाना। (ख) किसी बात की ओर ध्यान देना।
सुधन (स्)—वि०[स०] बहुत धनी। बडा अमीर।
सुधनु—पु० [स०]१ राजा कुरु का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २ गौतम बुद्ध के एक पूर्वज।
सुधन्वा (न्वन्)—वि०[स० ब० स०] १ उत्तम धनुष धारण करनेवाला। २ अच्छा धनुर्धर। होशियार तीरन्दाज।
पु०१ विष्णु। २. विश्वकर्मा। ३ अगिरा ऋषि। ४ पुराणानुसार एक प्राचीन जाति जिसकी उत्पत्ति व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से कही गई है। ५ शेषनाग।
सुध-बुध—स्त्री०[स० शुद्ध+बुद्धि]१ होश-हवाश। चेतना। सज्ञा। २ ज्ञान।
क्रि० प्र०—ठिकाने न रहना।—भूलना।—मारी जानी।
सुध-मना—वि० [हिं० सुध=होश+मना] [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।
सुधर—पु०[स०]१ जैनो के एक अर्हत। २ बया पक्षी। (डि०)
सुधरना—अ०[हिं० सुधारना]१ खराब होने या बिगडी हुई चीज का मरम्मत आदि होने पर ठीक होना। त्रुटि, दोष आदि का दूर होना। जैसे—हालत सुधरना। २ व्यक्ति के सबध मे, अच्छे आचरणो की ओर प्रवृत्त होना तथा बुरे आचरणो की पुनरावृत्ति न करना। जैसे—लडके का सुधरना।
सुधरमा—वि०, स्त्री०=सुधर्मा।
सुधराई—स्त्री०[हिं० सुधरना+आई (प्रत्य०)] सुधरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
सुधर्म (न्)—वि०[स०] धर्मपरायण। धर्मात्मा।
पु०[स०]१ अच्छा और उत्तम धर्म। २. जैन तीर्थंकर महावीर के दस शिष्यो मे से एक।
सुधर्मा—वि० [स० सुधर्मन्] अपने धर्म पर दृढ रहनेवाला। धर्मपरायण।
पु०१ कुटुब से युक्त व्यक्ति। गृहस्थ। २ क्षत्रिय। ३ जैनो के एक गणाधिप।
स्त्री० देवताओ की सभा। देव-सभा।
सुधर्मी (र्मिन्)—वि०[स०] धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।
स्त्री० देवताओ की सभा।
सुधवाना—स० [हिं० सुधरना का प्रे०] १. सोधने या ठीक करने का काम किसी से कराना। ठीक या दुरुस्त कराना। २ मुहूर्त आदि के सबध मे, निकलवाना।
सुधाग—पु०[स० ब० स०] चन्द्रमा।
सुधांशु—पु०[स०] १. चन्द्रमा। २ कपूर।
सुधांशु-रक्त—पु० [स०] मोती। मुक्ता।
सुधा—स्त्री०[स०] १ अमृत। पीयूष। २ जल। पानी। ३ गगा। ४ दूध। ५ किसी चीज का निचोडा हुआ रस। ६ पृथ्वी। ७ बिजली। विद्युत्। ८ जहर। विष। ९ चूना। १०. ईंट। ११

रुद्र की पत्नी। १२ एक प्रकार का छन्द या वृत्त। १३. पुत्री। बेटी। १४ वधू। १५ शहद। १६. घर। मकान। १७. मकरन्द। १८ आँवला। १९ हर्रे। २० मरोड फली। २१ गिलोय। गुडुच। २२ सरिवन। शालपर्णी।

सुधाई—स्त्री०[हिं० सूधा+आई (प्रत्य०)] सिधाई। सरलता।
स्त्री०[हिं० सोधना] सोधने की क्रिया या भाव।

सुधा-कंठ—वि० [सं०] मधुर-भाषी।
पु० कोकिल। कोयल।

सुधाकर—पु० [सं०] चन्द्रमा।

सुधाकार—पु०[सं०] १ चूना पोतने या सफेदी करनेवाला मजदूर। २ मकान बनानेवाला मिस्तरी। राज।

सुधा-क्षार—पु०[सं०] चूने का खार।

सुधा-गेह—पु०[सं०] चन्द्रमा।

सुधा-घट—पु०[सं० सुधा+घट] चन्द्रमा।

सुधाजीवी (विन्)—पु०[सं०] सुधाकार। (दे०)

सुधाता (तृ)—वि० [सं०] सुव्यवस्थित करनेवाला।

सुधातु—पु०[सं०] सोना।

सुधातु-दक्षिण—पु०[सं०] वह जो यज्ञादि मे अथवा यों ही दक्षिणा मे सुधातु अर्थात् सुवर्ण देता हो।

सुधा-दीधिति—पु०[सं० ब० स०] सुधांशु। चन्द्रमा।

सुधाधर—वि०[न० प० त०] चन्द्रमा जिसके अधरो मे अमृत हो।
पु० चन्द्रमा।

सुधाधरण—पु०[सं० सुधाधर] चन्द्रमा। (डि०)

सुधा-धवल—वि०[सं०]१ चूने के समान सफेद। २. जिस पर चूना पुता हुआ हो।

सुधा-धाम—पु०[सं० सुधा+धाम] चन्द्रमा।

सुधाधार—पु०[सं०]१ वह बरतन जिसमे अमृत रखा हो। २ चन्द्रमा।

सुधाधी—वि०[सं०] सुधा के समान। अमृत के तुल्य।

सुधा-धौत—वि०[सं०] चूना या सफेदी किया हुआ।

सुधा-नजर—वि० [हिं० सूधा=सीधा+नजर] दयावान्। कृपालु। (डि०)

सुधाना—स०[हिं०सुध+आना(प्रत्य०)] स्मरण कराना। याद दिलाना।
स०†=सुधवाना।

सुधा-निधि—पु० [सं०] १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ समुद्र। सागर। ४ दडक वृत्त का एक प्रकार या भेद।

सुधा-पाणि—वि०[सं० ब० स०]१ जिसके हाथ मे अमृत हो। २ (चिकित्सक) जिसकी दवा से सबको तुरन्त लाभ होता हो।
पु० देवो के वैद्य। धन्वन्तरि।

सुधापाषाण—पु०[सं०] सफेद खली।

सुधा-भवन—पु०[सं०] अस्तर कारी किया हुआ मकान।

सुधाभित्ति—स्त्री०[सं०] दीवार, जिस पर चूना पुता हुआ हो।

सुधाभुज—पु०[सं०]=सुधा-भोजी (देवता)।

सुधाभृति—पु०[सं०]१ चन्द्रमा। २. यक्ष।

सुधाभोजी (जिन्)—वि० [सं०] अमृत भोजन करनेवाले।
पु० अमृत खानेवाला, देवता।

सुधाम—पुं०[सं०] अच्छा घर या स्थान।
पुं०=सुधामा।

सुधामय—वि०[सं०] [स्त्री० सुधामयी] १ जिसमे अमृत हो। अमृत से युक्त। २ सुधा से भरा हुआ। अमृत-स्वरूप। ३ चूने का बना हुआ।
पु० राज-प्रासाद। महल।

सुधा-मयूख—पु०[सं०] चन्द्रमा।

सुधामा (मन्)—पु०[सं०] चन्द्रमा।

सुधा-मूली—स्त्री०[सं०] सालम मिस्री। सालब मिस्री।

सुधा-योनि—पु० [सं०] चन्द्रमा।

सुधार—पु० [हिं० सुधारना] १ वह तत्त्व जो किसी के सुधरने या सुधरे हुए होने पर लक्षित होता है। २ वह प्रक्रिया जो किसी के दोष, विकार आदि दूर करने के लिए की जाती है। ३ वह काट-छाँट या संशोधन-परिवर्तन जो रचना को अच्छा रूप देने के लिए किया जाता है।

सुधारक—वि०[हिं० सुधार+क(प्रत्य०)] (कार्य) जो सुधार के उद्देश्य या विचार से हो। (रिफ़ार्मेटरी)
पु०१ दोषो या त्रुटियो का सुधार करनेवाला। संशोधक। २ धार्मिक या सामाजिक सुधार के लिए प्रयत्न करनेवाला। (रिफार्मर)

सुधारना—स०[सं० शोधन]१ बिगड़ी हुई वस्तु को इस प्रकार ठीक करना कि वह फिर से काम करने या काम मे आने के योग्य हो जाय। २ दोषो, विकारो आदि का उन्मूलन कर अथवा उनमे परि-वर्तन लाकर किसी स्थिति मे सुधार करना। ३ लेख आदि की गलतियाँ दूर करना।

सुधा-रश्मि—पु०[सं०] चन्द्रमा।

सुधारा†—वि०=सूधा (सीधा)।

सुधारालय—पु०[हिं० सुधार+सं० आलय] वह स्थान जहाँ पर अपराधियो के जीवन-सुधार की व्यवस्था की जाती है। (रिफार्मेटरी)

सुधारू†—वि० [हिं० सुधारना+ऊ(प्रत्य०)] सुधारनेवाला। सुधारक।

सुधा-लता—स्त्री०[सं०] एक प्रकार की गिलोय।

सुधाव—पुं०[हिं० सुधरना+आव(प्रत्य०)]सोधने या सुधाने की क्रिया या भाव। सुधार।

सुधा-वर्षी (र्षिन्)—वि०[सं०] सुधा अर्थात् अमृत बरसानेवाला।
पुं० १ ब्रह्मा। २. बुद्ध का एक नाम।

सुधावास—पु०[सं०]१ चन्द्रमा। २ खीरा।

सुधाश्रवा—वि०[सं० सुधा+स्रवण] अमृत बरसानेवाला।

सुधा-सदन—पु०[सं० सुधा+सदन] चन्द्रमा।

सुधासित—भू० कृ०[सं०] जिस पर चूना पोतकर सफेदी की गई हो।

सुधासू—पु०[सं०] चन्द्रमा।

सुधासूति—पु० [सं०]१ चन्द्रमा। २ यज्ञ। ३ कमल।

सुधा-स्पर्धी—वि०[सं० सुधा-स्पर्धिन्] १ अमृत की बराबरी करनेवाला। २ अमृत के समान मधुर (भाषण आदि)।

सुधास्रवा—स्त्री० [सं०]१ गले के अंदर की घंटी। छोटी जीभ। कौआ। २ रुदती या रुद्रवती नामक वनस्पति।

सुधाहर—पु०[सं०] गरुड़।

सुधि—स्त्री० [सं० शुद्ध या शोध] १ चेतना। होश। २. ज्ञान। ३. याद। स्मृति। विशेष दे० 'सुध'। ४. 'दोहा नामक' छद का दूसरा नाम। ५. दे० 'सुध'।

सुधित—भू० कृ० [सं०] १. सुधा से युक्त किया हुआ। २ सुधा जैसा फलत मधुर। ३. जो सुधा या अमृत के रूप मे लाया गया हो। ४. सुव्यवस्थित।

सुधी—वि० [सं०] १ अच्छी बुद्धिवाला। २. बुद्धिमान्। समझदार। पु० १. पण्डित। विद्वान्। २ धार्मिक व्यक्ति।

सुधीर—वि० [सं०] जिसमे यथेष्ट धैर्य हो। बहुत धैर्यवान्।

सुधुम्नानी—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पुष्कर द्वीप के सात खडो मे से एक।

सुधूपक—पु० [सं०] चन्द्रमा।

सुधूम्र-वर्णा—स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक।

सुधोद्भव—पु० [सं०] धन्वन्तरि।

सुधोद्भवा—स्त्री० [सं०] हरीतकी। हर्रे।

सुनंद—पु० [सं०] १. एक देव-पुत्र। २ बलराम का मूसल। ३ कुजंभ नामक दैत्य का मूसल जो विश्वकर्मा का बनाया हुआ माना जाता है। ४ वास्तुशास्त्र मे, बारह प्रकार के राज-भवनो मे से एक। वि० आनददायक।

सुनंदन—पु० [सं०] कृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण०)

सुनंदा—स्त्री० [सं०] १ उमा। गौरी। २ श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ३ सार्वभौम दिग्ज की हथिनी। ४ भरत की पत्नी। ६ एक प्राचीन नदी। ६. सफेद गौ। ७. गोरोचन। ८ अर्कपत्री। इसरौल। ९ औरत। स्त्री।

सुनंदिनी—स्त्री० [सं०] १. आरामशीतला नामक पत्रशाक। २. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

सुन—वि० १ =सुन्न। २ =शून्य।

सुनका—पु० [देश०] चौपायो के गले का एक रोग। गरारा। घुरकवा।

सुन-कातर—पु० [हिं० सोन+कातर ?] एक प्रकार का साँप।

सुनकार—वि० [हिं० सुनना+कार (प्रत्य०)] जो गाना-बजाना सुनने-समझनेवाला हो। अच्छी तरह ध्यानपूर्वक गुणो की परख करते हुए गाना सुननेवाला। उदा०—बसन्त बहार का ख्याल था, और महफिल सुनकार थी।—अमृतलाल नागर।

सुन-किरवा†—पु०=सोन-किरवा।

सु-नक्षत्र—वि० [सं०] १ उत्तम नक्षत्रवाला। २ भाग्यवान्। पु० उत्तम नक्षत्र।

सुनक्षत्रा—स्त्री० [सं०] १ कर्म मास का दूसरा नक्षत्र। २. स्कद की एक मातृका।

सुन-खरचा—पु० [?] एक प्रकार का धान जो आश्विन के अत और कार्तिक के आरभ मे होता है।

सुन-गुन—स्त्री० [हिं० सुनना+अनु० गुनना] १. किसी बात की बहुत दबी हुई चर्चा जो लोगो मे होती है। जैसे—अविश्वास प्रस्ताव रखने की सुन-गुन इधर कुछ दिनो से होने लगी है।
क्रि० प्र०—होना।
२. वह बात या भेद जिसकी दबी हुई चर्चा सुनाई पड़ी हो।
क्रि० प्र०—लगना।

सु-नजर—वि० [सं० सु+फा० नज़र] दयावान्। कृपालु। (डिं०)

सुनत(ति)†—स्त्री०=सुन्नत।

सुनना—स० [सं० श्रवण] १ ऐसी स्थिति में होना कि कानो के द्वारा ध्वनि, शब्द आदि की अनुभूति हो। जैसे—वर्षों से इस घटे की आवाज सुनता आया हूँ। २. सुनकर ज्ञान प्राप्त करना। जैसे—खबर सुनना। ३. किसी निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए ध्यानपूर्वक लोग या लोगों की बातें सुनना। ४. किसी की प्रार्थना आदि पर विचार करने के लिए सहमत होना। जैसे—उन्होंने कहा है कि आपकी फरियाद सुनी जायगी। ५ कठोर वचनो का श्रवण करना। जैसे—तुम्हारे लिए दूसरों की बातें मुझे सुननी पड़ी।
क्रि० प्र०—पड़ना।
६. रोग आदि के सबध मे, उपचार आदि से कम होना या बढने से रुकना।

सुनफा—स्त्री० [सं० ?] ज्योतिष में ग्रहों का एक योग।

सुन-बहरी—स्त्री० [हिं० सुन+बहरी] एक प्रकार का चर्म रोग जिसकी गिनती कुष्ठ रोग मे होती है।

सुनम्य—वि० [सं०] १. जो सहज मे झुकाया या दबाया जा सके। २ जो गीला होने पर मनमाने ढग से और मनमाने रूप मे लाया जा सके। (प्लैस्टिक) जैसे—सुनम्य मिट्टी।
पु० आज-कल रासायनिक प्रक्रियाओं से तैयार किया हुआ गीला द्रव्य जो सभी प्रकार के साँचो मे ढाला जा सकता है और जिससे खिलौने, जूते, खम्भे आदि सैकडों प्रकार की चीजें बनाई जाती हैं। (प्लास्टिक)

सुनय—पु० [सं०] उत्तम नीति। सुनीति।

सुनयन—वि० [सं०] [स्त्री० सुनयना] सुन्दर नेत्रोवाला।
पु० मृग। हिरन।

सु-नयना—स्त्री० [सं०] १. सुन्दर स्त्री। सुदरी। २. राजा जनक की एक पत्नी जिन्होंने सीता जी को पाला था।
वि० स० सुनयन का स्त्री०।

सुनर—वि० [सं० प्रा० सं०] नरो मे श्रेष्ठ।
पु० अर्जुन। (डिं०)
† वि०=सुदर।
†स्त्री० [सं० सु+हिं नार] =सुनारि।

सुनरिया†—स्त्री०=सुदरी (रूपवती स्त्री)।

सुनर्द—वि० [सं०] बहुत गरजने या जोर का शब्द करनेवाला।

सुनवाई—स्त्री० [हिं० सुनना+वाई (प्रत्य०)] १ सुनने की क्रिया या भाव। २ मुकदमे या विवाद के विचार के लिए न्यायकर्ता के द्वारा दोनो पक्षो की बातें सुनने की क्रिया या भाव। (हियरिंग) ३. किसी तरह की शिकायत या फरियाद आदि का सुना जाना। जैसे—तुम लाख चिल्लाया करो, वहाँ कुछ सुनवाई नही होगी।

सुनवैया—वि० [हिं० सुनना+वैया (प्रत्य०)] सुननेवाला।
वि० [हिं० सुनाना+वैया (प्रत्य०)] सुनानेवाला।

सुनस—वि० [सं०] सुदर नाकवाला।

सुनसर—पु० [?] एक प्रकार का गहना।

सुनसान—वि० [स० शून्य+स्थान] १ जिसमे व्यक्तियो का वास न हो। जैसे—सुनसान कोठरी। २. जिसमे जीवो का आवागमन न हो। जैसे—सुनसान दोपहरी।
पु० निर्जन स्थान। उजाड।

सुनहरा, सुनहरी—वि०=सुनहला।

सुनहला—वि० [हिं० सोना] [स्त्री० सुनहली] १ सोने का बना हुआ। २ चमक, रंग आदि मे सोने की तरह का। (गोल्डन्) जैसे—सुनहले फूल, सुनहली आँखे।

सुनहा†—पु० [स० श्वान] १ कुत्ता। उदा०—दरपन केरि गुफा मे सुनहा पैठा आया।—कबीर। २ कोशी नामक जतु।

सुनाई†—स्त्री० [हिं० सुनना+आई (प्रत्य०)] १ सुनने की क्रिया या भाव। २ सुनवाई।

सुनाद—वि० [स०] सुन्दर नादवाला।
पु० शख।

सुनादक—वि० [स०] सुदर शब्द करनेवाला।
पु० शख।

सुनाद-प्रिय—पु० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुनाद-विनोदनी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुनाना—स० [हिं० सुनना का प्रे०] १ दूसरो को सुनने मे प्रवृत्त करना। विशेषत. उस दृष्टि से ऊँचे स्वर मे पढना कि दूसरे के कानो तक वह पहुँच जाय। २ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे लोग कुछ सुन सकें। जैसे—ग्रामोफून या रेडियो सुनाना। ३ अपना रोष प्रकट करने के लिए खरी-खोटी बातें कहना। जैसे—(क) भरी सभा मे उन्होने मत्री जी को खूब सुनाईं। (ख) कोई एक कहेगा तो चार सुनाएँगे।
स० क्रि—डालना।—देना।

सुनानी†—स्त्री०=सुनावनी।

सुनाभ—पु० [स०] १ सुदर्शन चक्र। २ मैनाक पर्वत।
वि०=सुनाभि।

सुनाभि—वि० [स०] १ सुन्दर नाभिवाला। २. जिसका केन्द्र-स्थल सुन्दर हो।

सुनाम—पु० [स०] लोक मे होनेवाला अच्छा नाम जो कीर्ति या यश का सूचक होता है।

सुनाम-द्वादशी—स्त्री० [स०] एक प्रकार का व्रत जो वर्ष की बारहो शुक्ला द्वादशियो को किया जाता है।

सुनामा (मन्)—वि० [स०] जिसका अच्छा नाम या कीर्ति हो। कीर्तिशाली।
पु० १ कस के आठ भाइयो मे से एक। २ कार्तिकेय का एक पारिषद।

सुनामिका—स्त्री० [स०] त्रायमाणा लता।

सुनार—पु० [स० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, भाव० सुनारी] १ वह जिसका पेशा सोने-चाँदी के आभूषण बनाना हो। २ जो सुनारो के वश मे उत्पन्न हुआ हो।
पु० [स०] १ कुतिया का दूध। २ साँप का अडा। ३ चटक पक्षी। गौरैया।

सुनारि—स्त्री० [स०] सुदर स्त्री। सुदरी।

सुनारिन—स्त्री० [हिं० सुनार+इन (प्रत्य०)] १ सुनार की पत्नी। २ सुनार जाति की स्त्री।

सुनारी—स्त्री० [हिं० सुनार+ई (प्रत्य०)] १ सुनार का काम, पेशा या भाव। २. दे० 'सुनारिन'।

सुनाल—पु० [स०] लाल कमल।

सुनालक—पु० [स०] अगस्त्य का पेड या फूल।

सुनावनी—स्त्री० [हिं० सुनाना] १ परदेश या विदेश से किसी सगे-सबधी की मृत्यु का आया हुआ समाचार जो स्थानिक सबधियो के पास सूचनार्थ भेजा जाता है।
क्रि० प्र०—आना।
२ उक्त प्रकार का दुखद समाचार आने पर सगे-सबधियो आदि का होनेवाला सामूहिक शोक प्रकट, स्नान आदि।

सुनासा—स्त्री० [स०] कौआ ठोंठी। काकनासा।

सुनासिक—वि० [स०] सुदर नाकवाला। सुनास।

सुनासीर—पु० [स०] १ इन्द्र। २ देवता।

सुनाहक†—अव्य०=नाहक (व्यर्थ)।

सुनिद्र—पु० [स०] खूब सोना।

सुनिनद—वि० [स०] सुन्दर नाद या शब्द करनेवाला।

सुनियाना†—अ० [हिं० सोना?+इयाना (प्रत्य०)] पौधो, फसल आदि का शीतरोग आदि से नष्ट-प्राय हो जाना। (रुहेल खड)

सुनिरुहन—पु० [स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का वस्तिकर्म जिससे पेट और आँतें बिलकुल साफ हो जाती है।

सुनिश्चय—पु० [स०] १ पक्का निश्चय। २ सुदर निश्चय।

सुनिश्चित—भू० कृ० [स०] अच्छी तरह या दृढता से निश्चय किया हुआ। भली भाँति निश्चित किया हुआ।
पु० एक बुद्ध का नाम।

सुनिश्चित पुर—पु० [स०] काश्मीर का एक प्राचीन नाम।

सुनिहित—भू० कृ० [स०] अच्छी तरह से छिपा या दबा हुआ। उदा०—या समर्पण मे ग्रहण का एक सुनिहित भाव।—पन्त।

सुनीच—पु० [स०] ज्योतिष मे, किसी ग्रह का किसी राशि मे किसी विशेष अश का होनेवाला अवस्थान।

सुनीत—वि० [स०] [भाव० सुनीति] १ नीतिपूर्ण व्यवहार करनेवाला। २ उदार।

सुनीति—स्त्री० [सं०] १ उत्तम नीति। २ भक्त ध्रुव की माता।
पु० शिव।

सुनीथ—पु० [स०] १ कृष्ण का एक पुत्र। २ सुषेण का एक पुत्र। ३ शिशुपाल का एक नाम। ४ एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
वि० १ नीतिमान्। २ न्यायशील।

सुनीथा—स्त्री० [स०] मृत्यु की पुत्री और अग की पत्नी।

सुनील—वि० [स०] १. गहरा नीला। २ गहरा काला।
पु० १ अनार का पेड। २ लाल कमल।

सुनीलक—पु० [स०] १ नीलम नामक रत्न। २ काला भँगरा।

सुनीला—स्त्री० [स०] १ चणिका तृण। चनिका घास। २. नीली अपराजिता। ३ तीसी।

सुनु—पु० [स०] जल।

सुनेत्र—वि० [सं०] [स्त्री० सुनेत्रा] सुंदर नेत्रोंवाला। सुलोचन।
पु० १ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २ बौद्धों के अनुसार मार का एक पुत्र। ३ चकवा पक्षी।

सुनेत्रा—स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार नौ तुष्टियों में से एक।

सुनैया†—वि०=सुनवैया।

सुनोची—पु० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न—वि० [सं० शून्य] १ जिसमें कुछ न हो। शून्य। २ शरीर का अंग जिसमें रक्त का संचार बिलकुल शून्य होने के फल-स्वरूप स्पंदन-हीनता हो। स्पंदनहीन। ३ शीत अथवा विशिष्ट उपचार के फल-स्वरूप किसी अंग का संज्ञाहीन होना। जैसे—आपरेशन से पहले उनका हाथ सुन्न कर लिया गया था। ४. व्यक्ति के संबंध में, स्तब्ध और किंकर्तव्य-विमूढ़। जैसे—मित्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही वह सुन्न हो गया।
क्रि० प्र०—होना।

सुन्नत—स्त्री० [अ०] [वि० सुन्नती] लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काटने की कुछ धर्मों की प्रथा जिसे मुसलमानों में मुसलमानी और सुन्नत कहते हैं। खतना। (सरकमसीजन)

सुन्नती—वि० [हिं० सुन्नत] जिसकी सुन्नत हुई हो।
पु० मुसलमान।

सुन्नर†—वि०=सुंदर।

सुन्नसान—वि०=सुनसान।

सुन्ना—पु० [सं० शून्य] बिंदी। सिफर। जैसे—एक (१) पर सुन्ना (०) लगाने से दस (१०) होता है।
†स०=सुनना।

सुन्नी—पु० [अ०] मुसलमानों का एक वर्ग या संप्रदाय जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। चार-यारी।

सुन्नैया†—वि०=सुनवैया।

सुपंख—वि० [सं०] १ सुन्दर पंखों या परोंवाला। २ सुन्दर तीरोंवाला।

सुपंथ—पु० [सं०] सन्मार्ग।

सुपक्क†—वि०=सुपक्व।

सुपक्व—वि० [सं०] अच्छी तरह पका हुआ।
पु० बढ़िया और सुगंधित आम।

सुपक्ष—वि० [सं०] जिसके सुंदर पंख हों। सुंदर पंखों वाला।

सुपच—पु०=श्वपच।
†वि०=सुपाच्य।

सुपट—वि० [सं०] सुंदर वस्त्रों से युक्त। अच्छे वस्त्रोंवाला।
पु० सुन्दर पट या वस्त्र। बढ़िया कपड़ा।

सुपठ—वि० [सं०] जो सहज में पढ़ा जा सके।

सुपड़ा—पु० [देश०] लंगर का वह अँकुड़ा जो जमीन में धँस जाता है।

सुपत—वि० [सं० सु+हिं० पत=प्रतिष्ठा] अच्छी पत या प्रतिष्ठावाला। प्रतिष्ठित।

सुपतिक—पु० [डिं०] ऐसा डाका जो रात के समय पड़े।

सुपत्थ†—पु०=सुपथ।

सुपत्नी—स्त्री० [सं०] १ अच्छी पत्नी। २. स्त्री जिसका पति अच्छा हो।

सुपत्र—वि० [सं०] १ सुंदर पत्तोंवाला। २ सुंदर पंखों या परोंवाला।
पु० [सं०] १. तेजपत्र। तेजपत्ता। २ इंगुदी। हिंगोट। ३ ३ हुरहुर। आदित्य-पत्र। ४ एक पौराणिक पक्षी।

सुपत्रक—पु० [सं०] सहिजन।

सुपत्रा—स्त्री० [सं०] १. रुद्रजटा। २. शतावर। ३. शालपर्णी। सरिवन। ४ पालक का साग।

सुपत्रित—भू० कृ० [सं०] १. सुन्दर पत्तों या पत्रों से युक्त। २. सुन्दर पंखों या परों से युक्त। ३. अच्छे तीरों से युक्त।

सुपत्री (त्रिन्)—वि० [सं०] पंखों या तीरों से भली-भाँति युक्त।
स्त्री० गंगापत्री नाम का पौधा।

सुपथ—पु० [सं०] १ उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सत्पथ। सदाचरण। २ एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
वि० सम-तल। हमवार।

सुपथी (थिन्)—वि० [सं०] सुपथ पर चलनेवाला।

सुपथ्य—पु० [सं०] १ ऐसा आहार या भोजन जो रोगी के लिए हितकर हो। अच्छा पथ्य। २ आम।

सुपथ्या—स्त्री० [सं०] बथुआ नामक साग।

सुपद—वि० [सं०] १ सुंदर पैरोंवाला। २ तेज चलने या दौड़नेवाला।

सुपद्‌भा—स्त्री० [सं०] वच। बचा।

सुपन*—पु०=स्वप्न।

सुपनक—वि० [हिं० सपना=स्वप्न] स्वप्न देखनेवाला। जिसे स्वप्न दिखाई देता हो।

सुपना†—पु०=सपना।

सुपनाना†—स० [हिं० सुपना] १. सपना देखना। २. सपना दिखाना।

सुपरण†—पु०=सुपर्ण।

सुपरन†—पु०=सुपर्ण।

सुपरमतुरिता—स्त्री० [सं०] एक देवी। (बौद्ध)

सुपर रायल—पु० [अं०] छापेखाने में कागज आदि की एक नाप जो २२ इंच चौड़ी और २९ इंच लंबी होती है।

सुपरवाइजर—पु० [अं०]=पर्यवेक्षक।

सुपरस*—पु०=स्पर्श।

सुपरिंटेंडेंट—पु० [अं०]=अधीक्षक।

सुपर्ण—वि० [सं०] १ सुंदर पत्तोंवाला। २ सुंदर पंखों या परोंवाला।
पु० १ विष्णु। २. गरुड़। ३ देव-गन्धर्व। ४. सोम। ५ किरण। ६. एक वैदिक शाखा जिसमें १०३ मंत्र हैं। ७ एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ८ घोड़ा। ९ चिड़िया। पक्षी। १० मुरगा। ११ अमलतास। १२ नागकेसर।

सुपर्णक—पु० [सं०] १ गरुड़ या दिव्य पक्षी। २ अमलतास। ३ सप्तपर्ण। सतिवन।
वि०=सुपर्ण।

सुपर्णकुमार—पु० [सं०] जैनियों के एक देवता।

सुपर्णकेतु—पु० [सं०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

सुपर्णराज—पु० [सं०] गरुड़।

सुपर्णसद्—वि० [सं०] पक्षी पर चढ़नेवाला।
पु० विष्णु।

सुपर्णांड—पु० [स०] शूद्रा माता और सूत पिता से उत्पन्न पुत्र।
सुपर्णा—स्त्री० [स०] १ पद्मिनी। कमलिनी। २ गरुड की माता। ३ एक प्राचीन नदी।
सुपर्णिका—स्त्री० [स०] १ स्वर्ण जीवती। पीली जीवती। २. रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ३. पलाशी। ४ शालपर्णी। सरिवन।
सुपर्णी—स्त्री० [स०] १ गरुड की माता। सुपर्णा। २ एक देवी का नाम। ३ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। ४ रात। रात्रि। ५ मादा पक्षी। चिडिया। ६. कमलिनी। ७. रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ८ पलाशी।
सुपर्णेय—पु० [स०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड।
सुपर्व—वि० [स०] १ सुदर जोडोवाला। जिसके जोड या गाँठें सुदर हो। २. (ग्रन्थ) जिसमे सुन्दर पर्व या अध्याय हो।
पु० १ शुभ मुहूर्त। शुभ काल। २ देवता। ३ तीर। वाण। ४ धूआँ। ५ वाँस।
सुपर्वा—स्त्री० [स०] सफेद दूब।
सु-पश्चात्—अव्य० [स०] बहुत रात गये।
सुपाकिनी—स्त्री० [स०] आमा हल्दी।
सुपाक्य—पु० [स०] विडलोण नामक नमक जो अत्यत पाचक माना गया है।
सुपाच्य—वि० [स०] सहज मे पचने या हजम हो जानेवाला (खाद्य पदार्थ)।
सुपात्र—पु० [स०] [स्त्री० सुपात्री] [भाव० सुपात्रता] १. अच्छा और उपयुक्त पात्र या वरतन। २ उत्तम आधार। ३ कोई अधिकारी तथा उपयुक्त व्यक्ति। ४ सुयोग्य व्यक्ति।
सुपाद—वि० [स०] जिसके अच्छे या सुदर पैर हो।
सुपार—वि० [स०] जिसे सहज मे पार किया जा सके।
सुपारग—वि० [स०] जो सहज मे पार जा सकता हो।
पु० शाक्य मुनि।
सुपारा—स्त्री० [स०] नौ प्रकार की तुष्टियो मे से एक। (साख्य)
सुपारी—स्त्री० [स० सुप्रिय] १ नारियल की जाति का एक बहुत ऊँचा पेड। २ उक्त वृक्ष का फल जो छोटी कडी गोलियो के रूप मे होता है और जिसके छोटे छोटे टुकडे यो ही अथवा पान के साथ खाये जाते हैं। कसैली। छालिया।
मुहा०—सुपारी लगना=सुपारी खाने पर उसका कोई टुकडा गले की नली मे अटकना जिससे कुछ खाँसी और बेचैनी सी होती है। उदा०—सोर भयो सकुचे समुझे हरवाहि कह्यो हरि लागि सुपारी।—केशव।
३ लिगेद्रिय का अगला अडाकार भाग जो प्राय सुपारी (फल) की तरह होता है। (बाजारू)
सुपारी का फूल—पु० [हिं० सुपारी+फूल] मोचरस या सेमल का गोद।
सुपार्श्व—पु० [स०] १. परास पीपल। राजदड। गर्दभाड। २ पाकर का पेड। ३ एक प्राचीन पर्वत। ४ एक पौराणिक पीठ-स्थान। ५ जैन धर्म मे, सातवें तीर्थंकर। ६ जटायु के भाई सपाती के पुत्र का नाम।
वि० सुन्दर पार्श्ववाला।
सुपिंगला—स्त्री० [स०] १. जीवती। डोडी शाक। २. मालकगनी।
सुपीत—वि० [सु+पीत (पीला)] बहुत या बढिया पीला।
भू० कृ० [स० सु+पीत (पीया हुआ)] १ अच्छी तरह या जी भर कर पीया हुआ। २ जिसने अच्छी तरह या जी भरकर पीया हो।
पु० [स०] १ गाजर। २ पीली कटसरैया। ३ चन्दन। ४ ज्योतिष मे, एक प्रकार का मुहूर्त।
सुपीन—वि० [स०] बहुत बडा, भारी या मोटा।
सुपुंसी—स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति वीर्यवान् और सुपुरुष हो।
सुपुट—पु० [स०] १ कोलकद। चमार आलू। २ विष्णुकद।
सुपुटा—स्त्री० [स०] सेवती। वनमल्लिका।
सुपुत्र—पु० [स०] १ अच्छा, सुशील और सुयोग्य पुत्र। २ जीवक पुत्र।
सुपुत्रिका—वि० [स०] अच्छे पुत्र या पुत्रोवाली (स्त्री)।
स्त्री० जतुका लता। पपडी।
सुपुर—पु० [स०] पक्का और मजबूत दुर्ग।
सुपुरुष—पु० [स०] १ सुन्दर पुरुष। उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष। सत्पुरुष।
सुपुर्द—पु०=सपुर्द।
सुपुष्करा—स्त्री० [स०] स्थल कमलिनी। स्थल पद्मिनी।
सुपुष्प—पु० [स०] १. लौंग। लवग। २. परास पीपल। ३. मुचकुद वृक्ष। ४. शहतूत। ५ पारिभद्र। फरहद। ६ सिरिस। ७ हरिद्रु। हलदुआ। ८ बडी सेवती। ९ सफेद मदार। १० देवदार। ११ पुडेरी।
वि० सुन्दर फूलो से युक्त।
सुपुष्पक—पु० [स०] १ शिरीष वृक्ष। सिरिस। २ मुचकुद। ३ सफेद मदार। ४ पलास। ५. बडी सेवती।
सुपुष्पा—स्त्री० [स०] १. कोशातकी। तरोई। तुरई। २ द्रोणपुष्पी। गूमा। ३ सौंफ। ४. सेवती।
सुपुष्पिका—स्त्री० [स०] १. एक प्रकार का विधारा। जीर्णदारु। २ सौंफ। ३. सोआ नामक साग। ४ पातालगारुडी। ५. वन-सनई।
सुपुष्पी—स्त्री० [स०] १. श्वेत अपराजिता। सफेद कोपल लता। २. सौंफ। ३ केला। ४. सोआ नामक साग। ५ विधारा। ६ द्रोणपुष्पी। गूमा।
सुपूत—वि० [स०] अत्यन्त पूत या पवित्र।
†पु०=सपूत (सुपुत्र)।
सुपूती—स्त्री० [हिं० सुपूत+ई (प्रत्य०)] १ सुपूत होने की अवस्था या भाव। सुपूतपन। २. सुपूत का कोई कौशल। सुपूत का वीरतापूर्ण कार्य। ३. स्त्री, जो सुपूतो की जननी हो। सुपूतो की माता।
सुपूर—पु० [स०] बीजपूर। बिजौरा नीबू।
वि० १ जिसे अच्छी तरह भरा जा सके। २ खूब भरा हुआ। ३ (कार्य) जो सहज मे पूरा हो सके।
सुपूरक—पु० [स०] अगस्त वृक्ष। वक वृक्ष। २ विजौरा नीबू।
सुपेती*—स्त्री० १ =सुपेदी। २ =सफेदी।
सुपेद†—वि०=सफेद।
सुपेदा†—पु०=सफेदा।

सुपेदी—स्त्री० [फा० सफेदी] १ ओढने की रजाई। २. बिछाने की तोशक। ३ बिछौना। विस्तर। ४ दे० 'सफेदी'।

सुपेली—स्त्री० [हिं० सूप+एली (प्रत्य०)] छोटा सूप।

सु-पोष—वि० [स०] जिसका पालन-पोषण सहज मे हो सकता हो।

सुप्त—वि० [स०] [भाव० सुप्ति] १ सोया हुआ। निद्रित। शयित। २ सोने के उद्देश्य से लेटा हुआ। ३ (पदार्थ का गुण, प्रभाव या वल) जो अन्दर वर्तमान होने पर भी कुछ कारणो से दवा हुआ हो और सक्रिय न हो। प्रसुप्त। (डॉर्मेन्ट) ४. ठिठुरा या सिकुडा हुआ। ५ जो खिला या खुला न हो। मूँदा हुआ। ६ जो अभी काम मे न आ रहा हो या आ सकता हो। वेकार। ७ सुस्त।

सुप्तक—पु० [स०] निद्रा। नीद।

सुप्तघ्न—वि० [स०] १ १ सोये हुए प्राणी पर आघात या वार करनेवाला। २ हिसक।

सुप्तज्ञान—पु० [स०] स्वप्न।

सुप्तता—स्त्री० [स०] सुप्त होने की अवस्था या भाव।

सुप्त-प्रलपित—पु० [स०] निद्रित अवस्था मे होनेवाला प्रलाप। सोये-सोये बकना।

सुप्तमाली—पु० [स० सुप्तमालिन्] पुराणानुसार तेइसवे कल्प का नाम।

सुप्त-वाक्य—पु० [स०] निद्रित अवस्था मे कहे हुए वाक्य या बाते।

सुप्त-विज्ञान—पु० [स०] स्वप्न। सपना।

सुप्तस्थ—वि० [स०] सोया हुआ। निद्रित।

सुप्तांग—पु० [स०] वह अग जिसमे चेतना या चेष्टा न रह गई हो। निश्चेष्ट अग।

सुप्तांगता—स्त्री० [सं०] सुप्ताग होने की अवस्था या भाव। अगो की निश्चेष्टता।

सुप्ति—स्त्री० [स०] १. सोये हुए होने की अवस्था या भाव। निद्रा। नीद। २. उँघाई। निदाँस। ३ प्रत्यय। विश्वास। ४ सुप्तागता।

सुप्तोत्थित—वि० [स०] जो अभी सोकर उठा हो। नीद से जागा हुआ।

सुप्रकेत—वि० [स०] १ ज्ञानवान्। २ बुद्धिमान्।

सुप्रचेता—वि० [स० सुप्रचेतस्] वहुत वडा बुद्धिमान् या समझदार।

सुप्रज—वि० [स०] अच्छी और यथेष्ट सन्तान से युक्त।

सुप्रजा—स्त्री० [स०] १. उत्तम सतान। अच्छी औलाद। २. अच्छी प्रजा या रिआया।

सुप्रजात—वि० [स०] सुप्रज। (दे०)

सुप्रज्ञ—वि० [स०] बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रतर—वि० [स०] (जलाशय) जो सहज मे तैरकर या नाव से पार किया जा सके।

सुप्रतिज्ञ—वि० [स०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न हटे। दढ-प्रतिज्ञ।

सुप्रतिभा—स्त्री० [स०] मदिरा। शराब।

सुप्रतिष्ठ—वि० [स०] १ अच्छी प्रतिष्ठावाला। २ बहुत प्रसिद्ध।
पु० १ एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। २ एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

सुप्रतिष्ठा—स्त्री० [स०] १ देव मन्दिर, प्रतिमा आदि की स्थापना। २ अभिषेक। ३ अच्छी प्रतिष्ठा या स्थिति। ४ प्रसिद्धि। ५ कार्तिकेय की एक मातृका।

सुप्रतिष्ठित—भू० कृ० [स०] १. जिसकी अच्छी तरह से प्रतिष्ठा या स्थापना की गई हो। २ जिसकी लोक मे प्रतिष्ठा हो।
पु० १. गूलर। २ एक प्रकार की समाधि।

सुप्रतीक—पु० [स०] १ अच्छा या उपयुक्त प्रतीक। २ शिव। ३. कामदेव। ३. ईशान कोण के दिग्गज का नाम।
वि० १ सुन्दर। २ सज्जन।

सुप्रतीकिनी—स्त्री० [स०] सुप्रतीक नामक दिग्गज की हथिनी।

सुप्रदर्श—वि० [स०] जो देखने मे सुन्दर हो। प्रियदर्शन। सुदर्शन।

सुप्रदीप—पु० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सुप्रदोहा—वि० स्त्री० [स०] (मादा प्राणी) जिसका दूध सहज मे दूहा जा सके।

सु-प्रबुद्ध—वि० [स०] जिसे यथेष्ट बोध या ज्ञान हो। अत्यन्त बोधयुक्त।
पु० गौतम बुद्ध।

सुप्रभ—वि० [स०] १ सुन्दर प्रभा या चमकवाला। प्रकाशवान्। २ सुन्दर।
पु० १ पुराणानुसार शाल्मली द्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष या भू-भाग। २ जैनियो के नौ वलो (जिनो) मे से एक।

सुप्रभा—स्त्री० [स०] १ स्कद की एक मातृका। २ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। ३ सात सरस्वतियो मे से एक। ४ सोमराजी। बकुची।
पु० पुराणानुसार पृथ्वी का एक वर्ष या खड जिसके अधिष्ठाता देवता 'सुप्रभ' कहे गये हैं।

सुप्रभात—पु० [स०] १ प्रभात का आरम्भिक समय। २ मगलमय प्रभात। ३ वह प्रभात जिससे आरंभ होनेवाला दिन मगलकारक और शुभ हो।

सुप्रभाता—स्त्री० [स०] १. पुराणानुसार एक नदी का नाम।
वि० (रात) जिसका प्रभाव शुभ या सुन्दर हो।

सुप्रभाव—वि० [स०] १ प्रभावपूर्ण। २ शक्तिशाली।

सुप्रलंभ—वि० [स०] जो सहज मे प्राप्त हो सके। सुलभ।

सुप्रलाप—पु० [स०] सुन्दर भाषण।

सुप्रश्न—पु० [स०] कुशल-मगल जानने के लिए किया जानेवाला प्रश्न।

सुप्रसन्न—वि० [स०] १ अत्यन्त प्रसन्न। २ अत्यन्त निर्मल। ३ अच्छी तरह खिला या फूला हुआ।
पु० कुवेर का एक नाम।

सुप्रसाद—पु० [स०] १. अत्यन्त प्रसन्नता। २ शिव। ३ विष्णु। ४ कार्तिकेय का एक अनुचर।

सुप्रसादक—पु० =सुप्रसाद।

सुप्रसिद्ध—वि० [स०] [भाव० सुप्रसिद्धि] बहुत अधिक प्रसिद्ध। बहुत मशहूर।

सुप्रसू—वि० स्त्री० [स०] (मादा प्राणी) जो सहज मे अर्थात् विना विशेष कष्ट के प्रसव करे।

सुप्रिय—वि० [स०] अत्यन्त प्रिय। बहुत प्यारा।

सुप्रिया—स्त्री० [स०] एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण रहता है। यह चौपाई का ही एक

रूप है। यथा—कहुँ द्विज गन मिलि सुज स्तुति पटहीं।—केशव। (कुछ लोग इसे 'सुचिरा' भी कहते है।)

सुफरा—पु०[देश०] चौकी या मेज पर बिछाने का कपडा।

सुफल—वि०[स०]१ सुन्दर फलवाला। २ जिसका या जिसके फल अच्छे और सुन्दर हो। ३ कृतकार्य। सफल।

पु०[स०]१ वृक्ष का अच्छा और सुन्दर फल। २ किसी काम या बात का अच्छा परिणाम या फल।

मुहा०—सुफल बोलना=धार्मिक कृत्य, श्राद्ध आदि के उपरान्त अन्तिम दक्षिणा लेकर पडे, पुरोहित आदि का यजमान से कहना कि तुम्हे इस कार्य का सुफल मिलेगा।

३ अनार। ४ बादाम। ५ बेर। ६ कैथ। ७ मूंग। ८ बिजौरा नीबू।

सुफलक—पु०[स०] अक्रूर के पिता का नाम।

सुफला—वि० स्त्री० [स०] १ यथेष्ट या सुन्दर फल अथवा फलो से युक्त। २ तेज धारवाली (कटार, छुरी या तलवार)।

स्त्री० १ इन्द्रायण। इन्द्रवारुणी। २ कुम्हडा। ३ केला। ४ मुनक्का। ५ काश्मरी। गभारी।

सुफुल्ल—वि०[स०]१ सुन्दर फूलोवाला। २ अच्छी तरह फूला हुआ (पेड या पौधा)।

सुफेद—वि०[भाव० सुफेदी]=सफेद।

सुफेन—पु०[स०] समुद्र-फेन।

सुफेर—पु०[स० सु+हिं० फेर]१ शुभ या लाभदायक अवसर या स्थिति। २ अच्छी दशा या अच्छे दिन। 'कुफेर' का विपर्याय।

सुबंत—वि०[स०] (व्याकरण मे शब्द) जो सुप् विभक्तियो से (अर्थात् प्रथमा से सप्तमी तक की किसी विभक्ति से) युक्त हो।

सुबंध—वि० [स०] अच्छी तरह बँधा हुआ।

पु० तिल।

सुबधु—वि०[स०] जिसके अच्छे बधु या मित्र हो।

सुबड़ा—पु०[देश०] ऐसी चाँदी जिसमे ताँबा या और कोई धातु मिली हुई हो।

सुबरन†—पु०१ =स्वर्ण (सोना)। २ =सुवर्ण।

सुबरनी†—स्त्री०[स० सुवर्ण] छडी।

सुबल—वि०[स०] [स्त्री० सुबला] बली। शक्तिशाली।

पु०१ शिवजी का एक नाम। २ वैनतेय का वशज एक पक्षी। ३ पुराणानुसार भौत्य मनु का एक पुत्र। ४ धृतराष्ट्र के ससुर गधार नरेश।

सुबस*—वि०[हिं० सु+बसना] अच्छी तरह बसा हुआ।

वि०[स० स्ववश] स्वतन्त्र। स्वाधीन।

अव्य०१ स्वतन्त्रतापूर्वक। २ अपनी इच्छा से।

सुबह—स्त्री०[अ०]१. दिन के निकलने का समय। सवेरा।

मुहा०—सुबह-शाम करना= (क) किसी प्रकार जीवन के दिन बिताना। (ख) बार बार यह कहकर टालना कि आज सध्या को अमुक काम कर देंगे, कल सवेरे कर देंगे। टाल-मटोल करना।

२ व्यापक अर्थ मे मध्याह्न से पहले तक का समय। जैसे—कालेज आजकल सुबह का है। ४. आरभिक अश। जैसे—जिदगी की सुबह।

सुबह-दम—अव्य० [अ० सुबह+फा० दम] बहुत सवेरे। तड़के।

सुबहान—पु०[अ०] ईश्वर को पवित्र भाव से स्मरण करना। लोक में 'सुभान' के रूप मे प्रचलित।

सुबहान अल्ला—अव्य० [अ०] जिसका अर्थ है—मैं ईश्वर को पवित्र हृदय से स्मरण करता हूँ, और जिसका प्रयोग प्रशसात्मक रूप में विशेष आश्चर्य या हर्ष प्रकट करने के लिए होता है।

सुबहानी—वि०[अ०] ईश्वरीय।

सुबही—वि०[अ० सुबह+ही (प्रत्य०)] सुबह का। जैसे—सुबही तारा।

सुबाल—वि०[स०]१ जो अभी बिलकुल बच्चा (अर्थात् अबोध या नादान) हो। २ बच्चो का सा। बचकाना।

पु० १ अच्छा बालक। अच्छा लडका। २ एक देवता का नाम। ३ एक उपनिषद्।

सुबास—पु०[सं० सु+वास] एक प्रकार का अगहनी धान।

स्त्री०=सुवास (सुगध)।

सुबासना—स्त्री०[स० सु+वास] अच्छी महक। सुगध। खुशबू।

स० सुवास या सुगन्ध से युक्त करना। सुगधित करना। महकाना।

सुबासिक†—वि०=सुवासित।

सुबासित†—वि०=सुवासित।

सुबाहु—वि०[स०]१. सुन्दर बाहोवाला। २ सशक्त भुजाओवाला। ३ वीर। बहादुर।

पु०१. एक बोधिसत्व। २ नागासुर। ३ कार्तिकेय का एक अनुचर। ४ शत्रुघ्न का एक पुत्र। ५ पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ६ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ७ एक राक्षस, जो मारीच का भाई था और अगस्त मुनि के शाप से राक्षस हो गया था।

स्त्री० सेना।

सुबिस्ता†—पु०=सुभीता।

सुबीज—वि० [स०] अच्छे बीजोवाला।

पु० १.अच्छा और बढिया बीज। २ शिव। महादेव। ३ पोस्ते का दाना। खसखस।

सुबीता†—पु०=सुभीता।

सुबुक—वि० [फा०] १ कम भारवाला। हलका। जैसे—सुबुक गहने। २ जो अधिक गहरा या तेज न हो। जैसे—सुबुक रग। ३ जिसमे ज्यादा जोर न लगे या न लगाया जाय। जैसे—सुबुक हाथ से लिखना।

पु० एक प्रकार का घोडा।

सुबुक-दोश—वि० [फा०] [भाव० सुबुक-दोशी] जिसके कन्धो पर से उत्तरदायित्व या कोई और भार उतर गया हो।

सुबुकी—स्त्री०[फा०]१ सुबुक होने की अवस्था या भाव। हलकापन। २ लोक मे होनेवाली कुछ या सामान्य अप्रतिष्ठा। हेठी।

सुबुद्धि—वि०[स०] उत्तम बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

स्त्री० अच्छी या उत्तम बुद्धि।

सुबुध—वि०[स०]१ बुद्धिमान्। धीमान्। २ सतर्क। सावधान।

स्त्री०=सुबुद्धि।

सुबू—पु०[फा०] मिट्टी का घड़ा।

स्त्री०=सुबह (सवेरा)।

सुबूत†—वि०=साबुत।

†पु०=सबूत (प्रमाण)।
सुबोध—वि०[स०] (बात या विषय) जो सहज में समझ मे आ जाय। सरल और बोधगम्य। जैसे—सुबोध व्याख्यान।
पु० अच्छा बोध या ज्ञान।
सुब्रह्मण्य—वि०[स०] ब्रह्मण्य के सब गुणो से युक्त।
पु० १. शिव। २. विष्णु। ३. कार्तिकेय। ४. यज्ञों में उद्गाता पुरोहित या उसके तीन सहकारियों में से एक। ५. कन्नड प्रदेश का एक प्राचीन प्रदेश जो पवित्र तीर्थ माना जाता था।
सुब्रह्म वासुदेव—पु०[स०] श्रीकृष्ण।
सुभंग—पु०[स०] नारियल का पेड।
सुभ†—वि०=शुभ।
सुभक्ष्य—वि०[स०] भक्षण के योग्य।
पु० अच्छा और बढिया भोजन।
सुभग—वि०[स०] [स्त्री० सुभगा, भाव० सुभगता]१ जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्। फलत समृद्ध और सुखी। २ सुन्दर। ३ प्रिय। ४. सुखद।
पु०१. सौभाग्य। २. सौभाग्य का सूचक कर्म। (जैन) ३ शिव। ४ चपा। ५ अशोक वृक्ष। ५ पत्थरफूल। ७. गधक।
सुभगता—स्त्री०[स०]१. सुभग होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सौभाग्य का सूचक लक्षण। ३ प्रेम। स्नेह। ४. स्त्री के द्वारा प्राप्त होनेवाला सुख।
सुभगा—स्त्री०[स०]१ सौभाग्यवती स्त्री। सधवा। २ ऐसी स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। प्रियतमा पत्नी। ३. कार्तिकेय की एक अनुचरी। ४ पाँच वर्ष की बालिका। ५. सगीत मे एक प्रकार की रागिनी। ६ तुलसी। ७. हलदी। ८. नीली दूब। ९ केवटी मोथा। १० कस्तूरी। ११. प्रियगु। १२. सोन केला। १३ बेला।
वि०[स०] 'सुभग' का स्त्री०।
सुभगानन्द—पु०[स०] तान्त्रिको के एक भैरव।
सुभग्ग†—वि०=सुभग।
सुभट—पु०[स०] [भाव० सुभटता] बहुत बडा योद्धा या वीर।
सुभटवंत—पु०=सुभट।
सुभट्ट—पु० [स०] बहुत बडा पण्डित। दिग्गज विद्वान्।
सुभड़†—पु०=सुभट।
सुभद*—वि०=शुभद (शुभकारक)।
सुभद्र—पु० [स०] १. विष्णु। २. सनत्कुमार। ३ पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक वर्ष या भू-भाग। ४. भैरवी के गर्भ से उत्पन्न वसुदेव का एक पुत्र। ५. सौभाग्य। ६ मगल। कल्याण।
वि०१ अत्यन्त भाग्यवान्। २. भला।
सुभद्रक—पु०[स०]१. देवरथ। २. बेल का पेड या दल।
सुभद्रा—स्त्री०[स०]१ श्रीकृष्ण और बलराम की बहन तथा अभिमन्यु की माता जो अर्जुन को ब्याही थी। २. दुर्गा की एक मूर्ति या रूप। ३. कुछ आचार्यो के मत से सगीत मे एक श्रुति। ५. वालि की पुत्री जो अवीक्षित को ब्याही थी। ५. एक प्राचीन नदी। ६. अनन्तमूल। ७. काश्मरी। गभारी। ८. मकड़ा नाम की घास।
सुभद्राणी—स्त्री०[स०] त्रायमाण लता। त्रायती।
सुभद्रिका—स्त्री०[स०]१. श्री कृष्ण की छोटी बहन। २ एक प्रकार का छन्द या वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, न, र, ल और ग होता है।
सुभद्रेश—पु०[सं०] सुभद्रा के पति, अर्जुन।
सुभना*—अ०[स० सुशोभन] सुशोभित होना। सुन्दर जान पडना।
सुभर†—वि०=शुभ्र।
†पु०=सुभट।
सुभव—वि०[स०] जिसका उद्भव या जन्म अच्छे रूप से हुआ हो।
पु० साठ सवत्सरों में से अतिम सवत्सर।
सुभांजन—पु०=शोभाजन (सहिजन)।
सुभा†—स्त्री०=शोभा।
†स्त्री०=सुबह।
सुभाइ*—पुं०=स्वभाव।
अव्य०=सुभाएँ।
सुभाउ*—पु०=स्वभाव।
सुभाएँ—अव्य० [सं० स्वभावत.] स्वभाव से ही। स्वभावत।
अव्य० [सं० सद्-भावत] अच्छे भाव या विचार से। सहज भाव से।
सुभाग—वि०[स०] भाग्यवान्। खुशकिस्मत।
†पु०=सौभाग्य।
सुभागी—वि०[सं० सुभाग] भाग्यवान्। भाग्यशाली। खुशकिस्मत।
वि०[हिं० सुभाग] [स्त्री० सुभागिनी] भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।
सुभाग्य—वि०[स०] अत्यन्त भाग्यशाली। बहुत बडा भाग्यवान्।
पु०=सौभाग्य।
सुभान—पु० दे० 'सुबहान'।
सुभान-अल्ला—अव्य० दे०'सुबहान-अल्ला'।
सुभाना*—अ०[हिं० शोभना]१. शोभित होना। देखने मे भला जान पडना। २. फबना।
सुभानु—पु० [स०]१. चतुर्थ हुतास नामक युग के दूसरे वर्ष का नाम। २ कृष्ण का एक पुत्र।
वि० बहुत अधिक प्रकाशमान्।
सुभाय†—पु०=स्वभाव।
सुभायक*—वि० [स० स्वाभाविक] जो स्वभाव से ही होता हो।
सुभाव†—पु०=स्वभाव।
सुभावित—भू० कृ०[स०]१ अच्छी तरह सोचा-विचारा हुआ। २. (औषध) जिसकी अच्छी तरह भावना की गई हो। अच्छी तरह तैयार किया हुआ।
सुभाषण—पु०[स०] [भू० कृ० सुभाषित] सुन्दर भाषण।
सुभाषिणी—वि०[स०] स० 'सुभाषी' का स्त्री०।
स्त्री० सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
सुभाषित—भू० कृ० [स०] अच्छे ढग से कहा हुआ (कथन आदि)।
पु०१ वह उक्ति या कथन जो बहुत अच्छा या सुन्दर हो। सूक्ति। २ कोई ऐसी विलक्षण और सुन्दर बात जिससे हास्य भी उत्पन्न हो। चोज। (विट) ३. एक बुद्ध का नाम।
सुभाषी (षिन्)—वि० [स०] १. अच्छी तरह से बोलनेवाला। २. प्रिय और मधुर बातें करनेवाला।

सुभास—वि०[स०] वहुत प्रकाशमान्। खूब चमकीला।
सुभास्वर—वि०[स०] खूब चमकनेवाला। दीप्तिमान्।
पु० पितरो का एक गण या वर्ग।
सुभिक्ष—पु०[स०]१ मूलत ऐसा समय जब भिक्षुको को सहज मे यथेष्ट भिक्षा मिलती हो। २. फलत ऐसा काल या समय जब देश मे अन्न पर्याप्त हो और सब लोगो को सहज मे यथेष्ट मात्रा मे मिलता हो। सुकाल। 'दुर्भिक्ष' का विपर्याय। ३. अन्न की प्रचुरता।
सुभी—वि० स्त्री०[स०] शुभकारक। मगलकारक।
सुभीता—पु०[स० सुविधा]१. ऐसी स्थिति जो किसी व्यक्ति या बात के लिए अनुकूल हो और जिसमे कठिनाइयाँ, वाधाएँ आदि अपेक्षया कम हो या कुछ भी न हों। अच्छा अनुकूल और उपयुक्त अवसर या परिस्थिति। २ आराम। सुख।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।
सुभुज—वि०[स०] सुन्दर भुजाओवाला। सुबाहु।
सुभूता—स्त्री०[स०] उतर दिशा जिसमे प्राणी भली प्रकार स्थित होते है। (छादोग्य)
सुभूति—स्त्री०[स०]१. कुशल। क्षेम। मगल। २ उन्नति। तरक्की।
सुभूम—पु०[स०] कार्तवीर्य जो जैनियो के आठवें चक्रवर्ती थे।
सुभूमिक—पु०[स०] एक प्राचीन जनपद जो सरस्वती नदी के किनारे था। (महाभारत)
सुभूषण—वि०[स०] सुन्दर आभूषणो से अलकृत। अच्छे अलकार धारण करनेवाला।
सुभूषित—भू० कृ०[स०] अच्छी तरह भूषित किया हुआ। भली भाँति अलकृत।
सुभृष—वि० [स०] वहुत अधिक। अत्यन्त।
सुभोग्य—वि०[स०] अच्छी तरह भोगे जाने के योग्य।
सुभौटी*—स्त्री० [स० शोभा+हिं० टी (प्रत्य०)] शोभा।
सुभौम—पु०[स०] एक चक्रवर्ती राजा जो कार्तवीर्य के पुत्र थे।(जैन)
सुभ्र—पु०[?] जमीन मे का विल। (डिं०)
†वि०=शुभ्र।
सुभ्रू—वि० [स०] सुन्दर भौहोवाला।
स्त्री०१ नारी। स्त्री। औरत। २ कार्तिकेय की एक मातृका।
सुमंगल—वि०[स०]१ अत्यन्त शुभ। कल्याणकारी। २ सदाचारी।
पु० एक प्रकार का विष।
सुमंगला—स्त्री०[स०]१. कार्तिकेय की एक मातृका। २ एक प्राचीन नदी। ३. मकड़ा नामक घास।
सुमंगली—स्त्री०[स० सुमगला] १. विवाह के समय सप्तपदी पूजा करने के उपलक्ष्य मे पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा। २ नव-विवाहिता स्त्री। वधू।
सुमंगा—स्त्री०[स०] एक पौराणिक नदी।
सुमत*—पु०=सुमत्र।
सुमंत्र—पु०[स०]१. राजा दशरथ के मत्री और सारथि का नाम। २ प्राचीन भारत मे राज्य के आय-व्यय की व्यवस्था करनेवाला मत्री। अर्थमत्री।
सुमंत्रित—भू० कृ०[स०]१. जिसे अच्छी सलाह मिली या दी गई हो। जो विचार-विमर्श के उपरान्त प्रस्तुत किया गया हो। जैसे—सुमत्रित योजना।
सुमंथन—पु०[सु+मथ=पर्वत] मदर पर्वत।
सुमंदर†—पु०=समुद्र।
सुमंदा—स्त्री०[स०] एक प्रकार की दिव्य शक्ति।
सुमंद्र—पु०[स०] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
सुम—पु०[स०]१ पुष्प। फूल। २ चन्द्रमा। ३ आकाश।
पु०[देश०] एक प्रकार का पेड जो असाम मे होता है और जिस पर 'मूगा' (रेशम) के कीडे पाले जाते है।
पु०[फा०] चौपायो का खुर। टाप।
सुमख—पु०[स०] आनन्दोत्सव।
सुम-खारा—पु०[फा० सुम+खार] ऐसा घोडा जिसकी एक (आँख की) पुतली वेकार हो गई हो।
सुमत†—वि०=सुमति।
सुमतिंजय—पु०[स०] विष्णु।
सुमति—वि०[स०] सुन्दर मति (वुद्धि या विचार) वाला। २. वुद्धिमान्। होशियार।
स्त्री०१ अच्छी मति या वुद्धि। २ लोगो मे आपस मे होनेवाला मेल-जोल और सद्भाव। उदा०—जहाँ सुमति तहँ सपति नाना।—तुलसी। ३ राजा सगर पत्नी जिससे ६० हजार पुत्र उत्पन्न हुए थे। (पुराण) ४ मैना पक्षी।
पु०१ वर्तमान अवसर्पिणी के पाँचवे अर्हंत। (जैन) २ भरत का एक पुत्र। ३ जनमेजय का एक पुत्र।
सुमद—वि०[स०] मदोन्मत्त। मतवाला।
सुमदन—पु० [स०] आम का पेड और फल।
सुमधना—स्त्री०[स०] एक पौराणिक नदी।
सुमधुर—वि०[स०] वहुत अधिक मधुर या मीठा।
पु० जीव शाक।
सुमध्य—वि०[स०] [स्त्री० सुमध्या] १ जिसका मध्य भाग सुदर हो। २ पतली कमरवाला।
सुमध्यमा—वि० स्त्री०[स०] सुन्दर कमरवाली (स्त्री)।
सुमन—वि० [स० सुमनस्] १ अच्छे मन या हृदय वाला। सहृदय। २ मनोहर। सुन्दर।
पु० १. देवता। २ पण्डित। विद्वान्। ३. पुष्प। फूल। ४ पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। ५ मित्र और सहायक। (डिं०) ६ गेहूँ। ७ धतूरा। ८ नीम। ९ घृतकरज।
सुमन-चाप—पु० [स०] कामदेव जिसका धनुष फूलो का माना गया है।
सुमनस (नस्)—वि०[स०]१ अच्छे हृदयवाला। सहृदय। २ सदा प्रसन्न रहनेवाला।
पु०१ देवता। २ फूल।
सुमन-प्रध्वज—पु०[स० सुमनस्+ध्वज]कामदेव।
सुमनस्क—वि०[स०]१ प्रसन्न। खुश। २. सुखी।
सुमना—स्त्री० [स०] १ चमेली। २. सेवती। ३ कवरी गाय। ४. दशरथ की पत्नी कैकेयी का वास्तविक नाम।
सुमनायन—पु०[स०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

सुमनित—भू० कृ०[सं० सुमणि+त (प्रत्य०)] सुन्दर मणियों से युक्त किया हुआ। उत्तम मणियों से जड़ा हुआ।

वि०[सं० सुमन से] फूलों से युक्त।

सुमनोत्तरा—स्त्री०[सं०] राजाओं के अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री।

सुमनौकस—पु०[सं०] देवलोक। स्वर्ग।

सुमन्यु—वि०[सं०] अत्यन्त क्रोधी। बहुत गुस्सेवर।

सुम-फटा—पु० [फा० सुम+हिं० फटना] घोड़ों का एक प्रकार का रोग जो उनके खुर के ऊपरी भाग से तलवे तक होता है।

सुमर—पु०[सं०] १ वायु। हवा। २. स्वाभाविक रूप से होनेवाली मृत्यु।

सुमरन†—पु०=स्मरण।

†स्त्री०=सुमरनी।

सुमरना†—स०=सुमिरना।

सुमरनी—स्त्री०=सुमिरनी।

सुमरा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली जो नदियों और विशेष कर गरम भरनों में पाई जाती है।

सुमरीचिका—स्त्री०[सं०] पाँच बाह्य तुष्टियों में से एक। (सांख्य)

सुमर्मग—वि०[सं०] (तीर या बाण) जो मर्मस्थान के अन्दर तक घुस जाता हो।

सुमल्लिक—पु०[सं०] एक प्राचीन जनपद।

सुम-सायक—पु०[सं० सुमन+सायक] कामदेव। (डिं०)

सुम-सुखड़ा—वि०[फा० सुम+हिं० सूखना] (घोड़ा) जिसके खुर सूख कर सिकुड़ गये हों।

पु० घोड़ों का एक रोग जिसमें उनके सुम या खुर सूखने लगते हैं।

सुमात्रा—पु० मलय द्वीप-पुंज का एक प्रसिद्ध बड़ा द्वीप जो बोर्नियो के पश्चिम और जावा के उत्तर-पश्चिम में है।

सुमानस—वि०[सं०] अच्छे मनवाला। सहृदय।

सुमानिका—स्त्री०] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

सुमानी (निन्)—वि०[सं०] १. बहुत बड़ा अभिमानी। २ प्रतिष्ठित। सम्मानित। उदा०—ये हमारे मार्ग के तारे सुमानी।—मैथिलीशरण।

सुमान्य—वि०[सं०] विशेष रूप से मान्य और प्रतिष्ठित।

पु० १ आज-कल कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े नगरों में एक विशिष्ट अवैतनिक सम्मानित राजपद, जिस पर नियुक्त होनेवाले व्यक्ति को शान्ति, रक्षा और न्याय संबंधी कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं। २ इस पद पर नियुक्त होनेवाला व्यक्ति। (शेरिफ़)

सुमाय—वि०[सं०]१. माया से युक्त। २ बहुत बुद्धिमान्।

सुमार—स्त्री०[हिं० सु+मारना] अच्छी तरह पड़नेवाली मार। गहरी मार। उदा०—'हठ्यौ दै इठलाय हम करैं गँवारि सुमार।—बिहारी।

पु०=शुमार (गिनती)।

सुमार्ग—पु०[सं०] उत्तम और श्रेयस्कर रास्ता।

सुमार्गी—वि०[सं०] अच्छे मार्ग पर चलनेवाला।

सुमाल—पु०[सं०] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

सुमालिनी—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त।

सुमाली (लिन्)—पु०[सं०] एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था। २. राम की सेना का एक वानर।

पु० [फा० शुमाल] एक अरब जाति जो अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी सिरे पर और अदन की खाड़ी के दक्षिणी भाग में रहती है।

सुमाल्यक—पु०[सं०] एक पौराणिक पर्वत।

सुमावलि—स्त्री०[सं०]१. फूलों की अवली या कतार। २ फूलों की माला।

सुमित्र—पु०[सं०]१. पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २. अभिमन्यु का सारथि। ३. मगध का एक राजा जो अर्हत सुव्रत का पिता था। ४ इक्ष्वाकु वंश के अंतिम राजा सुरथ के पुत्र का नाम।

सुमित्रभू—पुं०[सं०] १ जैनियों के चक्रवर्ती राजा सगर का नाम। २ वर्तमान अवसर्पिणी के बीसवें अर्हत का नाम।

सुमित्रा—स्त्री० [सं०]१. राजा दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता। २ मार्कण्डेय ऋषि की माता का नाम।

सुमित्रा-नंदन—पुं०[सं०] रानी सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सुमित्र्य—वि० [सं०] उत्तम मित्रोंवाला। जिसके अच्छे मित्र हों।

सुमिरण†—पु०१ =स्मरण। २ = सुमरन।

सुमिरना*—स० [सं० स्मरण] १. स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना। २. सुमिरनी फेरते हुए देवता आदि का बार बार नाम लेते रहना।

सुमिरनी—स्त्री०[हिं० सुमरना+ई (प्रत्य०)] १ नाम जपने की छोटी माला जो सत्ताइस दानों की होती है। २. हाथ में पहनने का एक प्रकार का दानेदार गहना।

सुमिराना†—स०[हिं० सुमिरना] किसी को सुमिरने में प्रवृत्त करना।

सुमिरिनिया†—स्त्री०=सुमिरनी।

सु-मिल—वि०[सं० सु+हिं० मिलना]१ किसी के साथ सहज में मिल जानेवाला। २. सहज में हेल-मेल बढ़ानेवाला। मिलनसार। ३ मेल-जोल या स्नेह का संबंध रखनेवाला। ४ अनुकूल रहकर ठीक तरह से साथ देनेवाला। उदा०—सरस सुमिल चित तुरग कीकरि करि अमित उठान।—बिहारी।

सुमुख—वि०[सं०] [स्त्री० सुमुखी]१. सुन्दर मुखवाला। २ मनोहर। सुन्दर। ३. प्रसन्न। ४ अनुकूल। ५ अत्यन्त नुकीला (तीर)।

पु०१. शिव। २. गणेश। ३ पण्डित। विद्वान्। ४. गरुड का एक पुत्र। ५ द्रोण का पुत्र। ६. एक प्रकार का जलपक्षी। ७ एक प्रकार का साग। ८ तुलसी। ९. राई।

सुमुखा—स्त्री०[सं०] सुन्दरी स्त्री।

वि० स्त्री० जिसका प्रवेश-द्वार अच्छा हो।

सुमुखी—स्त्री०[सं० सुमुख—ङीप्]१ सुन्दर मुखवाली स्त्री। २ दर्पण। ३ संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। ४ सवैया छंद का तीसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और तब लघु और गुरु वर्ण होता है। मदिरा सवैया के आदि में लघु वर्ण जोड़ने से यह छंद बनता है। इसमें ११ और १२ वर्णों पर यति होती है। ५ नीली अपराजिता। नीली कोयल। ६ शंखपुष्पी। शसाहुलि।

सुमूर्ति—पु०[सं०] शिव का एक गण।

सुमूल—वि०[सं०]१ (वृक्ष) जिसकी जड़ें अच्छी हों। दीर्घ तथा पुष्ट जड़ोंवाला। २ उत्तम आधारवाला। ३ जिसका मूल अर्थात् आरम्भ अच्छा हो।

पु०१. उत्तममूल। २. सफेद सहिजन।
सुमूलक—पुं०[सं०] गाजर।
सुमूला—स्त्री०[स०]१. सरिवन। शालपर्णी। २ पिठवन।
सुमृग—पु०[सं०]१ श्रेष्ठ जानवर। २. वन या वनस्थली जिसमे बहुत से जंगली जानवर रहते हो। ३. वह स्थान जहां शिकार के लिए जगली जानवर मिलते हो।
सुमृति†—स्त्री०=स्मृति।
सुमेखल—पु०[स०] मूंज। मुजतृण।
सुमेड़ी—स्त्री०[?] खाट बुनने का वाध।
सुमेद्य—पु०[स०] रामायण के अनुसार एक पर्वत।
सुमेव—वि०=सुमेवा।
सुमेधा (धस्)—वि०[सं०] जिसकी मेधा-शक्ति अर्थात् वुद्धि बहुत अच्छी हो। मेधावी।
पु०१. चाक्षुष मन्वन्तर के एक ऋषि। २ पांचवें मन्वन्तर के विशिष्ट देवता। ३. पितरों का एक गण या वर्ग।
स्त्री० मालकगनी।
सुमेध्य—वि०[स०] अत्यन्त पवित्र। बहुत पवित्र।
सुमेर—पु०[स० सुमेरु] १. गगाजल रखने का वडा पात्र। २ दे० 'सुमेरु'।
सुमेरु—पु०[स०]१ एक कल्पित पर्वत जो पुराणो मे सब पर्वतो का राजा और सोने का कहा गया है। कहते है कि अस्त होने पर सूर्य इसी की ओट मे हो जाता है। २ जप करने की माला मे सबके ऊपर वाला अपेक्षाकृत् कुछ वडा दाना। ३ उत्तरी ध्रुव। (नार्थ पोल) ४. दक्षिणी इराक का पुराना नाम। ५ पिंगल मे एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे १९ मात्राएँ होती है। अत मे यगण होता है, १२ मात्राओ पर यति होती है, तथा पहली आठवी और पन्द्रहवी मात्राओ का लघु होना आवश्यक होता है। ६ शिव।
वि० १ सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ। २ बहुत अधिक ऊँचा। ३ बहुत सुन्दर।
सुमेरुजा—स्त्री०[स०] सुमेरु पर्वत से निकली हुई नदी।
सुमेरु-ज्योति—स्त्री०[स०] सुमेरु अर्थात् उत्तरी ध्रुव के आस-पास के क्षेत्रो मे कभी-कभी रात के समय दिखाई पडनेवाली एक विशेष ज्योति या विद्युत् का प्रकाश। 'कुमेरु ज्योति' का विपर्याय। (आरोरा बोरियालिस)
सुमेरु-वृत्त—पु०[स०] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षाश पर स्थित है।
सुमेरु-समुद्र—पु०[स०] उत्तर महासागर का एक नाम।
सुम्मा—पु०[स्त्री० सुम्मी] दे० 'सुवा'।
†पु०[देश०] वकरा।
सुम्ह—पु०[स० सुम्म] एक प्राचीन जाति।
†पु०=सुम (खुर)।
सुम्हार—पु० [?] एक प्रकार का धान।
सुयं*—अव्य०=स्वय।
सुयंत्रित—वि०[स०]१ अच्छी तरह शासित। २ स्व-नियत्रित। ३ अच्छे यत्रो से युक्त।
सुयंबर†—पु०=स्वयवर।

५—५२

सुयज्ञ—वि० [स०] उत्तमता या सफलता से यज्ञ करनेवाला। जिसने उत्तमता से यज्ञ किया हो।
पु०१ उत्तम यज्ञ। २ वसिष्ठ का एक पुत्र। ३ ध्रुव का एक पुत्र। ४ रुचि नामक प्रजापति का एक पुत्र।
सुयत—वि०[स०]०१. उत्तम रूप से सयत। सुसयत। २. जितेन्द्रिय।
सुयम—पु०[स०] देवताओ का एक गण जिसका जन्म सुयज्ञ की पत्नी दक्षिणा के गर्भ से कहा गया है। (पुराण)
सुयश—पु०[स०] अच्छा यश। अच्छी कीर्ति। सुख्याति। सुकीर्ति। वि० जिसे अच्छा या यथेष्ट यश प्राप्त हुआ हो।
सुयशा—स्त्री० [स०]१. राजा दिवोदास की पत्नी का नाम। २ राजा परीक्षित की एक पत्नी। ३. अवसर्पिणी।
सुयाम—पु० [स०] ललित विस्तर के अनुसार एक देवपुत्र।
सुयामुन—पु०[स०]१ विष्णु। २ एक प्रकार का मेघ। ३. एक पौराणिक पर्वत। ४ राजभवन। महल।
सुयुद्ध—पु०[स०] १. धर्म, नीति और न्यायपूर्वक किया जानेवाला युद्ध। २ धर्म की रक्षा के लिए किया जानेवाला युद्ध।
सुयोग—पु० [स०] ऐसा अवसर या समय, जो उपयुक्त तथा समयानुकूल हो।
सुयोग्य—वि०[स०] [भाव० सुयोग्यता] जिसमे अच्छी योग्यता हो।
सुयोधन—पु० [स०] धृतराष्ट्र के वडे पुत्र दुर्योधन का एक नाम।
सुरंग—वि०[स०]१ अच्छे रग का। २ लाल रग का। ३ रस-पूर्ण। ४. सुन्दर। ५ सुडौल। ६ स्वच्छ। साफ।
पु० १ नारगी। २ रग के विचार से घोडो का एक भेद। ३ शिगरफ। ४ पतग। वक्कम।
स्त्री०[स० सुरगी] [अल्पा० सुरगिका] १ जमीन खोदकर या वारूद से उडाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता। बोगदा। (टनेल) २. वारूद आदि की सहायता से किला या उसकी दीवार उड़ाने के लिए उसके नीचे खोद कर बनाया हुआ गहरा और लवा गड्ढा। ३. एक प्रकार का आधुनिक यत्र, जिससे (क) समुद्र मे शत्रुओ के जहाजो के पेंदे मे छेदकर उन्हे डुबाया अथवा (ख) जिसे स्थल मे शत्रुओ के रास्ते मे विछाकर उनका नाश किया जाता है। (माइन, उक्त सभी अर्थो के लिए) ४ चोरी करने के लिए दीवार मे लगाई जानेवाली सेंध।
क्रि० प्र०—लगना।
मुहा०—सुरंग मारना= दीवार मे सेंध लगाकर चोरी करना।
सुरंगद—पु०[स०]पतग या वक्कम जिससे आल नामक बढिया लाल रग निकलता है।
सुरंग-धातु—पु०[स०] गेरू मिट्टी।
सुरंग-प्रसार—पु०[फा०+स०] एक प्रकार का जहाज जो समुद्र के किसी भाग मे शत्रु का सचार रोकने के लिए जगह-जगह सुरगे विछाता चलता है। (माइन लेयर)
सुरंग-बुहार—पु०[स० सुरग+हिं० बुहारना] एक विशेष प्रकार का समुद्री जहाज जो समुद्र मे विछाई हुई सुरगें हटाकर अलग करता या निकालता और दूसरे जहाजो के लिए आगे वढने का रास्ता साफ करता है। (माइन स्वीपर)

सुरंग-मार्जक—पु०=सुरंग-बुहार।

सुरंगा—स्त्री० [सं०] १. कैवर्तिका लता। २. सेंध।

सुरंगिका—स्त्री०[सं०] १. छोटी सुरंग। २. ईंट, गारे आदि से बनी हुई वह नलाकार नाली जिसके द्वारा जल, तेल आदि तरल पदार्थ दूर तक पहुँचाये जाते है। (एक्वेडक्ट) ३. शरीर के अन्दर की कोई ऐसी छोटी नली या नस जिससे होकर कोई चीज इधर-उधर आती-जाती हो। जैसे—मूत्राशय की सुरंगिका जिससे होकर मूत्र जननेंद्रिय के ऊपरी भाग तक पहुँचता है। ४ मरोड़फली। मूर्वा। ५. पोई का साग। ५. सफेद मकोय।

सुरंगी—स्त्री०[सं०] १ काकनासा। कौआठोंठी। २. सुलताना चंपा। पुन्नाग। ३ लाल सहिजन। ४. आल का पेड़ वृक्ष जिसमे आल नामक रंग निकलता है।

वि०[सं० सुरंग+हिं० ई (प्रत्य०)] सुन्दर रंग या रंगोंवाला।

सुरंजन—पु० [सं०] सुपारी का पेड़।

सुरंधक—पु०[सं०] १ एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जन पद का निवासी।

सुर—पु०[सं०] [भाव० सुरता, सुरत्व] १ देवता। २. सूर्य। ३ अग्नि का एक विशिष्ट रूप। ४. ऋषि या मुनि। ५ पण्डित। विद्वान्। ६ पुराणानुसार एक प्राचीन नगर जो चन्द्रभागा नदी के तट पर था।

पु०[सं० स्वर] गले, बाजे आदि से निकलनेवाला स्वर।

मुहा०—सुर देना—किसी के गाने के समय उसे सहारा देने के लिए किसी बाजे से कोई एक स्वर निकालना (संगत करने से भिन्न)। **सुर-पूरना** = (क) फूँककर बजाये जानेवाले बाजे के बजाने के लिए उनमे मुँह से हवा भरना। उदा०—मंद मंद सुर पूरत मोहन, राग मल्लार बजावना।—सूर। (ख) दे० 'किसी के सुर मे सुर मिलाना'। **(किसी के) सुर में सुर मिलाना**—किसी की हाँ मे हाँ मिलाना। खुशामद करते हुए किसी का समर्थन करना। **नया सुर अलापना**—कोई विलक्षण, नई या औरो से अलग तरह की बात कहना।

सुरकांत*—पु०[सं० सुर+कान्त] देवो के अधिपति, इन्द्र।

सुरक—स्त्री०[हिं० सुरकना] १ सुरकने की क्रिया या भाव। २ सुरकने से होनेवाला शब्द।

पु०[सं०] भाले के आकार का तिलक जो नाक पर लगाया जाता है।

सुरकना—स०[अनु०] सुर-सुर शब्द करते हुए तथा एक-एक घूँट भरते हुए कोई तरल पदार्थ पीना। जैसे—गरम दूध सुरकना चाहिए।

सुर-करी (रिन्)—पु०[सं०] देवताओ का हाथी। दिग्गज। सुरगज।

सुर-कली—स्त्री०[हिं० सुर+कली] संगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

सुर-कानन—पु०[सं०] देवताओ का वन।

सुर-कारु—पु०[सं०] देवताओ के कारीगर, विश्वकर्मा।

सुर-कार्मुक—पु० [सं०] इन्द्र-धनुष।

सुर-काष्ठ—पु०[सं०] देवदारु (वृक्ष और उसकी लकड़ी)।

सुर-कुदाव†—पु० [सं० सुर=स्वर+कुदाना] १. दूसरो को धोखे मे डालने के लिए स्वर बदल कर बोलना। २. उक्त प्रकार से बोलने का ढंग। ३ स्वर बदल कर बोले जानेवाले शब्द।

सुर-कुनठ—पु०[सं०] ईशान कोण मे स्थित एक देश। (बृहत्संहिता)

सुर-कुल—पुं०[सं०] देवताओ का निवास-स्थान। स्वर्ग।

सुर-केतु—पु०[सं०] १ देवताओं या इन्द्र की ध्वजा। २. इन्द्र।

सुरक्त—वि० [सं०] [भाव० सुरक्तता] १ जिसमें अच्छा रक्त हो। २ फलत स्वस्थ और सुन्दर। ३ गहरे लाल रंग का। ४. बहुत अधिक अनुरक्त।

सुरक्तक—पु०[सं०] १. कोशाम्र। कोसम। सोनगेरू।

सुरक्ष—पु०[सं०] एक पौराणिक पर्वत।

वि०=सुरक्षित।

सुरक्षण—पु० [सं०] [भू० कृ० सुरक्षित] अच्छी तरह से रक्षा करने की क्रिया या भाव। रखवाली। हिफ़ाजत।

सुरक्षा—स्त्री०[सं०] १ अच्छी तरह या समुचित रूप से की जानेवाली रक्षा। २. आक्रमण, आघात आदि से बचने के लिए किया जानेवाला प्रबन्ध। (सिक्योरिटी) जैसे—सुरक्षा परिषद्।

सुरक्षात्मक—वि०[सं०] १. सुरक्षा-सम्बन्धी। २ सुरक्षा के विचार से किया जानेवाला। जैसे—सुरक्षात्मक कार्रवाई।

सुरक्षा-परिषद्—स्त्री०[सं०] संयुक्त राष्ट्र-संघ का वह अंग या शाखा, जो यथासाध्य इस बात का प्रयत्न करती है कि राष्ट्रों मे परस्पर लड़ाई-झगड़े न होने पावें। (सिक्योरिटी कौंसिल)

सुरक्षित—भू० कृ०[सं०] १. जिसकी समुचित रक्षा का प्रबन्ध हो। २ जो अच्छी तरह तथा अच्छी अवस्था मे रखा गया हो। जैसे—आपकी पुस्तक मेरे पास सुरक्षित है।

सुरक्षी (क्षिन्)—पु०[सं० सुरक्षिन्] उत्तम या विश्वस्त रक्षक। अच्छा अभिभावक या रक्षक।

सुरक्ष्य—वि०[सं०] १. जिसे सुरक्षित रखना आवश्यक हो। २ जिसकी सहज मे सुरक्षा की जा सकती हो।

सुर-खंडनिका—स्त्री०[सं०] एक प्रकार की वीणा जिसे सुर-मंडलिका भी कहते है।

सुरख—वि०[फा० सुर्ख] गहरा लाल।

सुरखा—पु०[फा० सुर्ख] १ वह सफेद घोड़ा जिसकी दुम लाल हो। २. वह घोड़ा जिनका रंग सफेदी या भूरापन लिए काला हो। ३ मद्य। शराब।

वि०=सुर्ख (लाल)।

पु०[?] एक प्रकार का लंबा पौधा जिसमे पत्ते बहुत कम होते है।

सुरखाब—पु०[फा०] चकवा या चक्रवाक नामक पक्षी।

पद—सुरखाब का पर=विलक्षण विशेषता।

स्त्री० बलख प्रदेश की एक नदी।

सुरखिया—पु० [फा० सुर्ख+इया (प्रत्य०)] बगले की जाति का एक प्रकार का छोटा पक्षी जो प्राय गायो के पास रहता और इसी लिए 'गाय बगला' भी कहलाता है।

सुरखी—स्त्री०[हिं० सुरख+ई (प्रत्य०)] १ ईंटो का बनाया हुआ महीन चूरा जिसमे चूना मिलाकर जुड़ाई के लिए गारा बनाया जाता है।

स्त्री० दे० 'सुर्खी'।

सुरखुरू—वि०=सुर्खरू।

सुरगंड—पु०[सं०] एक प्रकार का फोड़ा।

सुरग†—पु०=स्वर्ग ।
†वि०=सुरग (सुन्दर) ।
सुर-गज—पु०[सं०]१ देवताओं का हाथी। २ ऐरावत।
सुर-गति—स्त्री०[सं०] दैवी गति। भावी।
सुरग-बेसाँ—स्त्री०[सं० स्वर्ग-वेश्या] अप्सरा। (डिं०)
सुर-गर्भ—पु०[सं०] देवताओं की संतान।
सुर-गाय—स्त्री०[सं० सुर+गो] कामधेनु।
सुर-गायक—पु०[सं०] देवों के गायक। गंधर्व।
सुर-गिरि—पु०[सं०] देवों के रहने का पर्वत
सुरगी—पु०[सं० स्वर्गीय] देवता। (डिं०)
वि० स्वर्ग का रहनेवाला।
सुरगी-नदी—स्त्री० [सं० स्वर्गीय+नदी] गंगा। (डिं०)
सुर-गुरु—पु०[सं०] देवों के गुरु, बृहस्पति।
सुर-गृह—पु० [सं०]१ देवताओं का निवास-स्थान। २ देव-मन्दिर। देवालय।
सुर-गैया —स्त्री० [सं० सुर+गैया] कामधेनु।
सुर-ग्रामणी—पु०[सं०] देवताओं का नेता, इन्द्र।
सुर-चाप—पु० [सं०] इन्द्रधनुष ।
सुरच्छन†—पु०=सुरक्षण।
सुरज (स्)—वि०[सं०] (फूल) जिसमें उत्तम या यथेष्ट पराग हो।
†पु०=सूरज (सूर्य) ।
सुरजन—पु०[सं०] देवताओं का वर्ग। देव-समूह ।
†वि०[हिं० सुजन] चतुर। चालाक।
†पु०=सुजन (सज्जन)।
सुरजनपन—पु०[हिं० सुरजन+पन (प्रत्य०)] १ सज्जनता। भलमनसत। २ चालाकी। होशियारी।
सुरजा—स्त्री०[सं०] एक पौराणिक नदी।
सुर-जेठ—पु०[सं० सुरज्येष्ठ] ब्रह्मा। (डिं०)
सुर-ज्येष्ठ—पु०[सं०] देवताओं में बड़े, ब्रह्मा।
सुरझन†—स्त्री०=सुलझन।
सुरझना†—अ०=सुलझना।
सुरझाना†—स०=सुलझाना।
सुरझावना†—स०=सुलझाना।
सुर-टीप†—स्त्री०[हिं० सुर+टीप] स्वर का आलाप। सुर की तान।
सुरत—पु० [सं०] १ रति-क्रीडा। काम-केलि। संभोग। मैथुन। २ दे० 'सुरति'।
स्त्री०[सं० स्मृति] १ याद। स्मृति। २ ध्यान। सुध।
मुहा०—**(किसी पर) सुरत धरना**=किसी की ओर ध्यान देना। जैसे—पराये धन पर सुरत नहीं धरनी चाहिए। **(किसी) की सुरत बिसराना या बिसारना**=किसी को बिलकुल भूल जाना और उसे याद न करना। **(किसी ओर) सुरत लगाना**=किसी ओर ध्यान बँधना या लगना। **सुरत सँभालना**=होश सँभालना। चेतन अवस्था में आना।
सुरत-ग्लानि—स्त्री० [सं० मध्य० स०] रति या संभोग के उपरान्त होनेवाली ग्लानि या ग्लानिजन्य विरक्ति।
सुरत-ताली—स्त्री०[सं०]१ नायक और नायिका के बीच की दूती। २ सिर पर पहना या बाँधा जानेवाला सेहरा।
सुरत-बंध—पु०[सं० च० त०] संभोग का एक आसन। (कामशास्त्र)
सुर-तरंगिणी—स्त्री०[सं० ष० त०] १ गंगा। २ सरयू नदी। ३. आकाश-गंगा।
सुर तरु—पु० [सं० ष० त०] कल्पवृक्ष।
सुरता—स्त्री०[सं० सुर+तल्—टाप्]१ सुर अर्थात् देवता होने की अवस्था या भाव। २ वह गुण जिसके कारण देवताओं की प्रतिष्ठा मानी जाती है। देवत्व। ३ देवताओं का समूह। ४ रति-सुख।
स्त्री०[सं० स्मृति, हिं० सुरत]१. चेत। सुध। २ किसी की ओर लगा रहनेवाला ध्यान।
†वि० समझदार और सयाना। होशियार।
†पु०[?] बाँस की वह नली जिसमें डालकर बीज बोने के लिए छिड़के जाते हैं।
सुर तात—पु०[सं०] १ देवताओं के पिता, कश्यप। २ देवताओं के राजा, इन्द्र।
सुरतान—स्त्री०[हिं० सुर+तान्] संगीत में सुर के आधार पर ली जानेवाली तान।
†पु०=सुलतान।
सुरति—स्त्री०[सं०]१ पति पत्नी का वह प्रेम जो काम-वासना की तृप्ति से उत्पन्न होता है। २ मैथुन। संभोग। ३ दे० 'रति'।
†स्त्री०[सं० श्रुति]१ अपौरुषेय ज्ञान का भंडार, वेद। श्रुति। उदा०—सुरति, स्मृति दोउ को बिसवास। —कबीर। २ हठयोग के अनुसार अंतःकरण में होनेवाला अन्तर्नाद। वि० दे० 'सुरति-निरति'। उदा०—सुरति समानी निरति में, निरति रही निरधार।—कबीर।
†स्त्री०१ =सुरत। २.=सूरत।
सुरति-कमल—पु०[सं० च० त०] हठ-योग में आठ कमलों या चक्रों में से अंतिम चक्र जिसका स्थान मस्तक में सहस्रार के ऊपर माना गया है।
सुरति-गोपना—स्त्री०[सं०] साहित्य में ऐसी नायिका जो रति-क्रीडा करके आई हो और अपनी सखियों आदि से यह बात छिपाती हो।
सुरति-निरति—स्त्री०[सं० श्रुति+निर्वृति] परवर्ती हठ-योगियों की परिभाषा में अन्तर्नाद सुनना और उसी में लीन हो जाना। (अर्थात् ससीम का असीम में या व्यक्त का अव्यक्त में समा जाना।)
सुरति रव—पु० [सं० मध्य० स०] रति-क्रीडा के समय होनेवाली भूषणों की ध्वनि।
सुरतिवंत—वि० [सं० सुरत+वान्] कामातुर।
सुरति-विचित्रा—स्त्री० [सं० ब० स०] साहित्य में ऐसी मध्या नायिका जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।
सुरती—स्त्री० [सूरत (नगर)+ई (प्रत्य०)] १ तंबाकू का पत्ता। २ उक्त पत्तों का वह चूरा, जो पान के साथ या यों ही चूना मिलाकर खाया जाता है। खैनी।
सुर-तोषक—पु०[सं० ष० त०] कौस्तुभ मणि।
सुरत्त†—स्त्री०=सुरति।
सुरत्न—पु०[सं० प्रा० स०] १ उत्तम या बढ़िया रत्न। २ माणिक। लाल। ३ स्वर्ण। सोना।

वि०१. उत्तम रत्नो से युक्त। २. सब मे श्रेष्ठ।
सुर-त्राण—पु०=सुर-त्राता।
सुर-त्राता—पु०[स० प० त०]१. विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. इन्द्र।
सुरथ—पु०[स० प्रा० स०]१. अच्छा या सुन्दर रथ। २ द्रुपद का एक पुत्र। ३ जनमेजय का एक पुत्र। ४. एक पौराणिक पर्वत। ५. कुश द्वीप का एक वर्ष या खड।
सुरथा—स्त्री०[स० सुरथ—टाप] एक पौराणिक नदी।
सुरथाकार—पु०[स०] एक पौराणिक वर्ष या भू-खड।
सुर-थान—पु० [स० सुर+स्थान] स्वर्ग। (डिं०)
सुरदार—वि०[हिं० सुर+फा० दार]१. अच्छे सुरवाला। सुरीला। जैसे—सुरदार वाजा। २ वढिया स्वर में गानेवाला। जैसे—सुरदार गला।
सुर-दारु—पुं०[स० प० त०] देवदार।
सुर-दीर्घिका—स्त्री०[स० प० त०] आकाश-गंगा।
सुर-दुंदुभि—स्त्री०[स० प० त०]१. देवताओ का नगाडा। २. तुलसी।
सुर-देवी—स्त्री०[स० प० त०] योगमाया। (दे०)
सुर-देश—पु०[स० प० त०] देवताओं का देश। देव-लोक। स्वर्ग।
सुर-द्रुम—पु०[स० प० त०]१. कल्प-वृक्ष। २. नरकट। नरकुल।
सुर-द्विप—पु०[स० प० त०]१. देवताओ का हाथी। देवहस्ती। २ ऐरावत।
सुर-द्विष्—वि०[स०] देवताओं से द्वेष करनेवाला।
पु० १. राक्षस। २. राहु।
सुर-धनुष (षस्)—पु०[स० प० त०] इन्द्र-धनुष।
सुर-धाम (मन्)—पु०[सं० प० त०] देव-लोक। स्वर्ग।
क्रि० प्र०—सिधारना।
सुर-धुनी—स्त्री०[स० प० त०] गंगा।
सुर-धूप—पु०[स० प० त०] धूना। राल। सर्जरस।
सुर-धेनु—स्त्री०[स० प० त०] कामधेनु।
सुर-ध्वज—पु० [स० प० त०] इन्द्र-ध्वज।
सुर-नंदा—स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी।
सुर-नगर—पु०[स० प० त०] स्वर्ग।
सुर-नदी—स्त्री०[स०प०त०] १ गगा। २. आकाश-गगा। ३. सरयू नदी।
सुर-नाथ—पु०[स० प० त०] देवताओ के स्वामी, इन्द्र।
सुर-नायक—पु०[स० प० त०] इन्द्र।
सुर-नारी—स्त्री०[स० प० त०] देवागना। देव-वधू।
सुर-नाल—पु०[स०] वडा नरसल। देवनल।
सुर-नाह*—पु०=सुर-नाथ (इन्द्र)।
सुर-निम्नगा—स्त्री०[स० प० त०] गंगा।
सुर-निर्झरिणी—स्त्री०[स० प० त०] आकाश-गगा।
सुर-निलय—पु० [स० प० त०] १. देवताओ के रहने का स्थान, स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत।
सुर-पंवरी—स्त्री०=सुरपौरी।
सुरप*—पु०[स० सुरपति] इन्द्र।
सुरपति—पु०[स० प० त०]१ देवराज इन्द्र। २ विष्णु।
सुरपति-गुरु—पु०[स० प० त०] बृहस्पति।
सुरपति-चाप—पुं० [स० प० त०] इन्द्र-धनुष।
सुरपतित्व—पुं०[सं० सुरपति+त्व] सुरपति होने की अवस्था, पद या भाव।
सुर-पथ—पु०[स० प० त०] आकाश।
सुरपन—पु०[सं० सुरपुन्नाग] पुन्नाग। सुलताना चपा।
सुर-पर्ण—पु०[स० प० त०] एक प्रकार का सुगधित शाक।
सुर-पर्णिका—पु०[स० सुरपर्ण+कन्—टाप्, इत्व] पुन्नाग वृक्ष।
सुर-पर्णी—स्त्री०[स०]१. पलासी। पलाशी। २ पुन्नाग।
सुर-पर्वत—पु०[सं० प० त०] सुमेरु।
सुर-पांसुला—स्त्री०[सं० प० त०] अप्सरा।
सुर-पादप—पु०[सं० प० त०] कल्पतरु।
सुरपाल—पुं०[स० सुर-पालक] इन्द्र।
सुरपुन्नाग—पुं० [स०] एक प्रकार का पुन्नाग।
सुर-पुर—पु०[स० प० त०][स्त्री० सुरपुरी] देवताओं की पुरी,अमरावती।
क्रि० प्र०—सिधारना।
सुरपुर-केतु—पु० [स० प० त०] इन्द्र।
सुर-पुरोधा(धस्)—पु०[स० प० त०] देवताओ के पुरोहित, बृहस्पति।
सुरपौरी—स्त्री० [हिं० सुर-पौर] राज-दरबार या राजमहल की पहली ड्योढी। राजद्वार।
सुर-प्रतिष्ठा—स्त्री०[सं० प० त०] देवमूर्ति की स्थापना।
सुर-प्रिय—पु०[स० प० त०] १. इन्द्र। २. बृहस्पति। ३. एक पौराणिक पर्वत। ४. अगस्त का पेड़। ५. एक प्रकार का पक्षी।
वि० जो देवताओं को प्रिय हो।
सुर-प्रिया—स्त्री०[स० प० त०]१. चमेली। २. सोन-केला।
सुर-फांकताल—पुं० [हिं०सुर+फांक=खाली+ताल]तबला और पखावज बजाने का एक प्रकार का ताल।
सुर-फाख्ता—पु०=सुर-फांक (ताल)।
सुर-वहार—पु०[हिं० सुर+फा० बहार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।
सुर-वाला—स्त्री०[स० प० त०] देवता की स्त्री। देवागना।
सुरवुली†—स्त्री०[सं० सुरवल्ली ?] चिरखल नाम का पौधा।
सुरवृच्छ*—पु०=सुर-वृक्ष (कल्पतरु)।
सुर-वेल—स्त्री०[स० सुर+वल्ली] कल्पलता।
सुर-भंग—पु०[स० स्वरभग] प्रेम, आनद और भय आदि के अतिरेक के कारण होनेवाला स्वर का विपर्यास जो साहित्य मे सात्विक भावो के अन्तर्गत माना गया है।
सुर-भवन—पु०[स० प० त०]१ देवताओं का निवास-स्थान। मदिर। २. देवताओ की नगरी। अमरावती।
सुरभान—पु०[स० सुर+भानु]१. इन्द्र। २. सूर्य।
सुरभि—स्त्री०[स०]१ पृथ्वी। २ गौ। ३. कामधेनु। ४ गौओ की जननी और अधिष्ठात्री देवी। ५ कार्तिकेय की एक मातृका। ६. सुगध। खुशबू। ७ मदिरा। शराव। ८ सेवती। ९ तुलसी। १०. सलई। ११ सप्तजटा। १२ एलुआ। १३ केवांच। कौछ। १४ सुगन्धित शालिधान्य। १५ रासना। १६ चन्दन।
पु० [स०] १. वसत काल। २. चैत का महीना। ३. वह आग जो

यज्ञ-यूप की स्थापना के समय जलाई जाती थी। ४. सोना। स्वर्ण। ५. गन्धक। ६ जायफल। ७ कदव। कदम। ८ चपक। चपा। ९ वकुल। मौलिसिरी। १० सफेद कीकर। शमी। ११ रोहित घास। १२. धूना। राल। १३ वर्वर चन्दन।

वि० १ सुगधित। सुवासित। २ मनोरम। सुन्दर। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. गुणवान्। गुणी। ५. सदाचारी। ६ वदन पर ठीक और चुस्त वैठनेवाला (कपडा)।

सुरभि-कांता—स्त्री० [स० व० स०] वासती। नेवारी।

सुरभिका—स्त्री० [स० सुरभि+कन्—टाप्—इत्व] स्वर्णकदली। सोनकेला।

सुरभि-गंध—वि० [स० व० स०] सुरभित। सुगधित।

पु० तेजपत्ता।

सुरभि-गंधा—स्त्री०[स० व० स०] चमेली।

सुरभित—भू० कृ०[स०] सुरभि से युक्त किया हुआ। सुगधित। सुवासित।

सुरभि-तनय—पु०[स० प० त०]१ वैल। २ साँड।

सुरभि-तनया—स्त्री०[स०] गाय। गौ।

सुरभिता—स्त्री०[स०]१ सुरभि का गुण या भाव। २ सुगध। खुशवू।

सुरभि-त्रिफला—स्त्री० [स० प० त०] जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनो का समूह। (वैद्यक)

सुरभित्वक्—स्त्री० [स० व० स०] वडी इलायची।

सुरभि-दारु—पु०[स० मध्य० स०] धूप सरल।

सुरभि-पत्रा—स्त्री०[स० व० स०] गुलाव जामुन का पेड और फल।

सुरभि-पुत्र—पु० [स० प० त०] १. साँड। २ वैल।

सुरभि-भक्षण—पु० [स०] हठ-योग की एक क्रिया जिसमे साधक खेचरी मुद्रा के द्वारा अपनी जीभ उलटकर तालू के मूल वाले छेद मे लगाता और सहस्त्रार में स्थित चन्द्रमा से निकलनेवाला अमृत पीता है। इसे गोमास-भक्षण भी कहते है।

सुरभि-मंजरी—स्त्री०[सं० व० स०] सफेद तुलसी।

सुरभि-मान—वि०[स० सुरभिमत्] सुगधित। सुवासित।

पु० अग्नि।

सुरभि-मास—पु०[स० मध्य० स०] वसत (ऋतु)।

सुरभि-मुख—पु०[स० व० स०] वसत ऋतु का प्रारम्भिक काल।

सुरभि-वल्कल—पु०[स० व० स०] दालचीनी।

सुरभि-वाण—पु०[स० व० स०] कामदेव।

सुरभि-शाक—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का सुगधित साग।

सुर-भिषक्—पु०[स० प० त०] देवताओ के वैद्य, अश्विनीकुमार।

सुरभि-समय—पु०[स० मध्य० स०] वसत ऋतु, जिसमे फूलो की मधुर गध चारो ओर फैलती है।

सुरभी—स्त्री०=सुरभि।

सुरभीपुर—पु० [सं० प० त०] गोलोक।

सुर-भूप—पु०[स० प० त०]१ इन्द्र। २. विष्णु।

सुर-भूषण—पु०[स० प० त०] देवताओ के पहनने का १००८ मोतियो का चार हाथ लवा हार।

सुर-भूषणी—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुर-भूरुह—पु०[स० प० त०]१ कल्पतरु। २ देवदार।

सुर-भोग—पु० [स० प० त०] देवताओ के भोग की वस्तु, अमृत।

सुर-भौन†—पु०=सुर-भवन (स्वर्ग)।

सुर-मंडल—पु०[स० प० त०]१. देवताओ का मडल। २. सारगी, सितार आदि की तरह का एक प्रकार का वाजा।

सुर-मडलिका—स्त्री०=सुर-खडनिका।

सुर-मंत्री (त्रिन्)—पु०[स० प० त०] वृहस्पति।

सुर-मंदिर—पु० [स० प० त०] देव-मन्दिर। देवालय।

सुरमई—वि०[फा०]१ सुरमे के रग का। नीला। सफेदी लिए हलका नीला या काला। जैसे—सुरमई कवूतर, सुरमई घोडा। २ सुरमे के रग मे रँगा हुआ।

पु० एक प्रकार का काला रग।

स्त्री० काले रग की एक प्रकार की चिडिया जिसकी गरदन नीली होती है।

सुरमई कलम—स्त्री०[फा०]आँखो मे सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।

सुरमचू—पु०[फा० सुरम+चू (प्रत्य०)] आँखो मे सुरमा लगाने की सलाई।

सुर-मणि—पु०[स० प० त०] चिंतामणि (रत्न)।

सु-रमण्य—वि०[स० प्रा० स०] वहुत अधिक रमणीय।

वहुत सुन्दर।

सुरमा—पु० [फा० सुरम.] हलके सफेद रग का एक प्रकार का भुरभुरा खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग धातुओ मे मिलाने तथा रासायनिक कार्यों के लिए होता है, और जिसका महीन चूर्ण आँखों की सुन्दरता वढाने और उसके अनेक प्रकार के रोग दूर करने के लिए अजन के रूप मे होता है।

पु० [?] एक प्रकार का पक्षी।

स्त्री०[?] असम देश की एक नदी।

†पु०=शूरमा (शूर-वीर)।

सुर-मानी (निन्)—वि० [स०] अपने आप को देवता समझनेवाला।

सुर-मृत्तिका—स्त्री० [स० प० त०] गोपीचदन। सौराष्ट्र मृत्तिका।

सुर-मेदा—स्त्री० [स०] महामेदा।

सुरमे-दानी—स्त्री०[फा० सुरम+दान (प्रत्य०)] लकडी या धातु का शीशीनुमा पात्र जिसमे आँखो में लगाने का सुरमा रखा जाता है।

सुरमै*—वि०, पु०=सुरमई।

सुर-मौर—पु० [स० सुर+ हिं० मौर] विष्णु।

सुरम्य—वि०[स० प्रा० स०]१ अत्यन्त मनोरम और रमणीय। २ वहुत सुन्दर।

सुरया†—स्त्री० [देश०]एक प्रकार की दाँती, जो झाडियाँ काटने के काम आती है।

सुर-यान—पु० [स० प० त०] देवताओ की सवारी का रथ।

सुर-युवती—स्त्री० [स० प० त०] अप्सरा।

सुर-योषित्—स्त्री०[स० प० त०] अप्सरा।

सुर-राई*—पु० [स० सुरराज]१ इन्द्र। २ विष्णु।

सुर-राज—पु०[स०] देवताओ के राजा, इन्द्र।

सुर-राजगुरु—पु० [स० प० त०] वृहस्पति।

सुर-राजता—स्त्री०[सं०] सुर-राज होने की अवस्था, पद या भाव। इन्द्रत्व। इन्द्रपद।
सुरराज वृक्ष—पु०[सं० ष० त०] पारिजात। परजाता।
सुरराजा (जन्)—पु०[सं० ष० त०] इन्द्र।
सुरराय*—पु०=सुरराज।
सुरराव*—पु०=सुरराज।
सुर-रिपु—पु०[सं०] १. देवताओं के शत्रु, असुर। राक्षस। २. राहु।
सुर-रुख—पु०[सं० सुर+हिं० रुख=वृक्ष†] कल्पवृक्ष।
सुरर्षभ—पु०[सं० सप्त० स०] १ देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र। २ महादेव। शिव।
सुरर्षि—पु०[सं० ष० त०] देवऋषि। देवर्षि।
सुर-लता—स्त्री०[ष० त०] बड़ी मालकगनी। महाज्योतिष्मती लता।
सुर-ललना—स्त्री० [सं० ष० त०] देवबाला। देवांगना।
सुरला—स्त्री०[सं०] १ गंगा। २ एक प्राचीन नदी।
सुर-लासिका—स्त्री० [सं०]१. वंशी। बाँसुरी। २ वंशी की ध्वनि।
सुरली—स्त्री०[सं० सु+हिं० रली] सुन्दर और प्रेमपूर्ण क्रीड़ा।
सुरलोक—पु० [सं० ष० त०] देवताओं का लोक। स्वर्ग। देवलोक।
सुर-वधू—स्त्री०[सं० ष० त०] देवता की पत्नी। देवांगना।
सुर-वर—पु०[सं० सप्त० त०] देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र।
सुर-वर्त्म (र्त्मन्)—पु० [सं० ष० त०]१ देवों का मार्ग। आकाश। २ स्वर्ग।
सुर-वल्लभा—स्त्री०[सं०] सफेद दूब।
सुर-वल्ली—स्त्री०[सं० ष० त०] तुलसी।
सुरवस†—पु० [देश०] जुलाहों की वह पतली, हलकी छड़ी या सरकंडा जिसका व्यवहार ताना तैयार करने में होता है।
सुरवा*—पु०=श्रुवा।
†पु०=शोरवा।
सुरवाड़ी—स्त्री०[हिं० सूअर+वाड़ी (प्रत्य०)] सूअरों के रहने का स्थान। सूअरवाड़ा।
सुर-वाणी—स्त्री० [सं० ष० त०] देवताओं की वाणी, संस्कृत।
सुरवाल—पु०=सलवार।
†पु०[?] सेहरा।
सुरवास—पु०[सं० ष० त०] देव-स्थान। स्वर्ग।
सुर-वाहिनी—स्त्री०[सं०]१ गंगा।
सुर-विटप—पु० [सं० ष० त०] कल्पवृक्ष।
सुर-वीथी—स्त्री०[सं० ष० त०] नक्षत्रों का मार्ग।
सुर-वीर—पु०[सं० सप्त० त०] इन्द्र।
सुर-वृक्ष—पु०[सं० ष० त०] कल्पतरु।
सुर-वेश्म(मन्)—पु०[सं० ष० त०] स्वर्ग। देवलोक।
सुर वैरी—पु०[सं० सुरवैरिन्] देवों के शत्रु, असुर।
सुर-शत्रु—पु०[सं० ष० त०]१ राक्षस। २ राहु।
सुर-शत्रुहन्—पु० [सं० सुरशत्रु√हन् (मारना)+क्विप्] देवताओं के शत्रुओं का नाश करनेवाले, शिव।
सुर-शयनी—स्त्री०[सं० ष० त०] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। विष्णु-शयनी एकादशी। देव-शयनी एकादशी।
सुर शाखी (खिन्)—पु०[सं० ष० त०] कल्पवृक्ष।
सुर-शिल्पी (ल्पिन्)—पु०[सं० ष० त०] विश्वकर्मा।
सुर-श्रेष्ठ—पु०[सं० सप्त० त०]१ वह जो देवों में श्रेष्ठ हो। २ विष्णु। ३ शिव। ४ गणेश। ५ इन्द्र। ६ धर्म।
सुर-श्रेष्ठा—स्त्री०[सं० सुरश्रेष्ठ—टाप्] ब्राह्मी।
सुरस—वि० [सं०] १. सुन्दर रसवाला। २ रसीला। सरस। ३. मधुर। ४ स्वादिष्ट। ५ सुन्दर।
पु० १ तेजपत्ता। २. दालचीनी। ३ तुलसी। ४ रूसा घास। ५. सँभालू। ६. मोचरस। ६ बोल नामक गन्धद्रव्य। ८ पीत-शाल।
†पु० दे० 'सुरवस' (जुलाहों का)।
सुर सख—पु०[सं० ष० त०] देवताओं के सखा, इन्द्र।
सुर-सत—स्त्री०=सरस्वती। (डिं०)
सुरसत-जनक—पु०[सं० सरस्वती+जनक] ब्रह्मा। (डिं०)
सुरसती*—स्त्री० [सं० सरस्वती] १ सरस्वती। २ एक प्रकार की नाव।
सुर-सत्तम—पु०[सं० सप्त० स०] सुरश्रेष्ठ। (दे०)
सुर-सदन—पु० [सं० ष० त०] देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग।
सुर-सद्म(मन्)—पु०[सं० ष० त०] स्वर्ग।
सुर-समिध—स्त्री० [सं० ष० त०] देवदारु।
सुर-सर—पु०[सं० सुर+सर] मानसरोवर।
†स्त्री०=सुरसरि।
सुरसर-सुता—स्त्री०[सं०] सरयू नदी।
सुरसरि—स्त्री० [सं० सुरसरित्] १ गंगा। २ गोदावरी। ३ कावेरी।
सुर-सरित—स्त्री०[सं० ष० त०] गंगा।
सुर-सरिता—स्त्री० =सुरसरित्।
सुर-सरी—स्त्री०=सुरसरि।
सुर-सर्षक—पु०[सं० ष० त०] देव-सर्षप।
सुरसा—स्त्री०[सं० सुरस—टाप्]१ पुराणानुसार एक राक्षसी, जो नागों या सर्पों की माता कही गई है और जिसने हनुमान् को लंका जाते समय समुद्र पार करने से रोकना चाहा था। २ एक प्रकार का छंद या वृत्त। ३ संगीत में एक प्रकार की रागिनी। ४ दुर्गा का एक नाम। ५ एक पौराणिक नदी। ६ अंकुश के आगे का नुकीला भाग। ७ ब्राह्मी। ८ तुलसी। ९ सौंफ। १० बड़ी शतावर। ११ जूही। १२ सफेद निसोथ। १३ शल्लकी। सलई। १४ निर्गुंडी। १५ रास्ना। १६ भटकटैया। कँटेरी। १७. वन-भंटा। बहती।
सुरसाई—पु० [सं० सुर+हिं० साँई=स्वामी]१. इन्द्र। २ शिव। ३ विष्णु।
सुर-सागर—पु०[सुर=स्वर से+सागर]एक तरह का बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते हैं।
सुरसाग्रज—पु०[सं०] सफेद तुलसी।
सुरसाग्रणी—स्त्री०=सुरसाग्रज।
सुरसारी—स्त्री० = सुरसरि।
सुरसालु*—पु० [सं० सुर+हिं० सालना] देवताओं को सतानेवाला अर्थात् असुर या राक्षस।

सुरसाष्ट—पु०[स० प० त०] सँभालू, तुलसी, ब्राह्मी, वनभटा, कटकारी और पुनर्नवा—इन सब का वर्ग या समूह।
सुर-साहब—पु०[स० सुर+फा० साहब] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।
सुर-सिंधु—पु०[स० प०-त०]१ गगा। २ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।
सुर-सुंदर—पु० [स० सप्त० स०] सुन्दर देवता।
वि० देवता के समान सुन्दर।
सुर-सुंदरी—स्त्री०[स०]१ दुर्गा। २ देवकन्या। ३ एक योगिनी का नाम। ४. अप्सरा।
सुर-सुत—पु० [स० प० त०] [स्त्री० सुर-सुता] देवपुत्र।
सुर-सुरभी—स्त्री०[स० सुर+सुरभी] देवताओं की गाय, कामधेनु।
सुरसुराना—अ० [अनु०] १ कीडों आदि का सुरसुर करते हुए रेंगना। २ शरीर मे हलकी खुजली या सुरसुराहट होना।
स० कोई ऐसी क्रिया करना जिससे सुरसुर शब्द हो।
सुरसुराहट—स्त्री०[हिं० सुरसुराना+आहट(प्रत्य०)] १ सुरसुराने की क्रिया या भाव। २ शरीर मे होनेवाली हलकी खुजली। ३ गुदगुदी।
सुरसुरी—स्त्री०[अनु०]१ एक प्रकार का कीडा जो चावल, गेहूँ आदि मे होता है। २ दे० 'सुरसुराहट'।
सुरसेन—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
सुरसेनप—पु० [स० सुर+सेनापति] देवताओं के सेनापति, कार्तिकेय।
सुरसेना—स्त्री०[स० प० त०] देवताओं की सेना।
सुरसैनी—स्त्री०=सुर-शयनी (एकादशी)।
सुरसैयाँ*—पु०[सं० सुर+हिं० सैयाँ (स्वामी)]=सुर-साईं (इन्द्र)।
सुर-स्त्री—स्त्री०[स० प० त०] देवता की स्त्री। देवागना।
सुर-स्थान—पु०[स०प०] देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग। सुर-लोक।
सुर-स्रवंती—स्त्री०[स०] आकाश-गगा।
सुर स्रोतस्विनी—स्त्री०[स०] गगा।
सुर-स्वामी—पु०[स० प० त०] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।
सुरहउ†—स्त्री०=सुरभि।
सुरहट†—वि० [?] ऊँचा। उच्च।
सुरहना=—अ०[?] (घाव आदि का) भरना या सूखना।
सुरहर (ा)—वि० [स० सरल] जो सीधा ऊपर की ओर गया हो।
वि०[अनु० सुरसुर] जो सुर-सुर या सुर-हुर शब्द करता हो।
†वि० सुनहरा।
सुरहिया†—स्त्री०=१ सोरहिया। २ =सुरही।
सुरही†—स्त्री०[हिं० सोलह] १ सोलह। १ सोलह चित्ती कौडियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २ उक्त कौड़ियो से खेला जानेवाला जूआ।
स्त्री०[सं० सुरभि] १ सुरभि। २ गाय। उदा०—इन सुरही का दूध न मीठा।—कबीर। ३ चमरी गाय। ५ परती जमीन मे होनेवाली एक प्रकार की घास।
सुरही भच्छन†—पु०=सुरभि-भक्षण।
सुरहुर(ा)—वि०=सुरहरा।
सुरहोनी†—पु०[कर्ना० सुरहोनेप] पुन्नाग की जाति का एक पेड।
सुरांगना—स्त्री०[स० प० त०]१ देवपत्नी। देवागना। २. अप्सरा।
सुरा—स्त्री०[स०√सु+कट्, सुष्टु रापनत्वनरेति वा अड्—टाप्]१ मद्य। मदिरा। शराब। २ जल। पानी। ३ पानी पीने का पात्र। ४ साँप। ५ दे० 'सुरासव'।
सुराई—स्त्री०[स० सुर]१ 'सुर' होने की अवस्था या भाव। २ आधिपत्य। प्रभुत्व।
*स्त्री०=शूरता (वीरता)। उदा०—हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।—तुलसी। ३ रानियों की छतरी या समाधि। (बुदेल०)
सुरा कर्म (न्)—पु०[स० मध्य० स०] वह यज्ञ-कर्म जो सुरा द्वारा किया जाता है।
सुराकार—पु०[स०]१ वह जो सुरा या शराब बनाता हो। कलाल। कलवार। २ शराब चुआने की भट्ठी।
सुराख—पु०=सूराख (छेद)।
†पु०=सुराग।
सुराग—पु०[अ० सुराग] किसी गुप्त अपराध या रहस्य का वह सूत्र जिससे उसका ठीक पता चल सके।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लगना।—लगाना।
पु० [स० सु+राग] १ उत्तम प्रेम। गहरा प्यार। २ बढिया राग।
सुरा गाय—स्त्री०[स० सुर+गाय] एक प्रकार की दो नस्ली गाय जिसकी पूँछ गुफ्फेदार होती है और जिससे चँवर बनता है। लोग इसका दूध भी पीते है और इस पर बोझ भी ढोते हैं। चमरी। वन-चौर।
विशेष—उत्तरी हिमालय और तिब्बत मे इसी को 'याक' कहते हैं।
सुरागार—पु०[स० प० त०]१ देवताओ का स्थान। २ मद्य बनाने या बेचने का स्थान। मदिरालय।
सुरागृह—पु०=सुरागार।
सुराचार्य—पु०[स० प० त०] देवताओ के आचार्य, बृहस्पति।
सुराज (न्)—वि०[स०] सुन्दर राजा वाला। अच्छे राजा द्वारा शासित (देश)।
पु०१ =सुराज्य।२ =स्वराज्य।
सुराजा (जन्)*—पु०[स०] उत्तम राजा। अच्छा राजा।
†पु०=सुराज्य।
सुराजिका—स्त्री०[स०] छिपकली।
सुराजीव—पु०[स०] विष्णु।
सुराजीवी (विन्)—वि०[स०]१ जो मद्य पीकर जीता हो। २ जिसका पेशा शराब बनाना और बेचना हो।
सुराज्य—पु०[स० प्रा० स०]१ अच्छा राज्य। २ ऐसा राज्य जिसमे प्रजा सुखी और सुरक्षित हो। सुराज।
†पु०=स्वराज्य।
सुरायी—स्त्री०[?] लकडी का वह डडा जिससे अनाज के दाने निकालने के लिए बाल आदि पीटते हैं।
सुराद्रि—पु०[स० प० त०] देवताओ का पर्वत, सुमेरु।
सुराधा (धस्)—वि०[स० प्रा० स०]१ उत्तम दान देनेवाला। बहुत बडा दाता। २ बहुत बडा धनवान्।
सुराधानी—स्त्री०[स०] मद्य रखने का पात्र।
सुराधिप—पु०[स० प० त०] देवताओ के स्वामी, इन्द्र।

सुराधीश—पु०=सुराधिप।
सुराध्यक्ष—पु०[सं० ष० त०]१. ब्रह्मा। २ शिव। ३. इन्द्र। ४ श्रीकृष्ण।
सुराध्वज—पु०[सं० ष० त०] मद्यशाला पर लगाया जानेवाला झंडा।
सुरानक—पु०[सं०ष० त०] देवताओं का नगाड़ा।
सुरानीक—पु०[सं० ष० त०] देवताओं की सेना।
सुराप—वि०[सं० सुरा√पा (पीना)+क] १. सुरा या मद्य पान करने वाला। मद्यप। शराबी। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३. मधुर। प्रिय।
सुरापगा—स्त्री०[सं० ष० त०] आकाश गंगा।
सुरा-पात्र—पु०[सं०ष० त०] वह पात्र (विशेषतः प्याला) जिसमें शराब पीते है।
सुरा-पान—पु०[सं०]१ मद्यपान करने की क्रिया। शराब पीना। २. शराब पीने के समय खाई जानेवाली चटपटी चीजें। चाट।
सुरापी(पिन्)—वि०[सं०] शराब पीनेवाला।
सुरा-पीत—भू० कृ०[सं० ब० स०] जिसने शराब पी हो।
सुराब्धि—पु०[सं० ष० त०] सुरा का समुद्र।
सुराभाग—पु०[सं०] वह खमीर जिससे शराब तैयार की या बनाई जाती है।
सुरामंड—पु०[सं० ष० त०] शराब की मॉड।
सुरा-मुख—वि० [सं० ब० स०] जिसके मुँह मे शराब हो या शराब की दुर्गन्ध आती हो। जो शराब पीये हुए हो।
सुरा-मेह—पु०[सं०] वैद्यक के अनुसार प्रमेह रोग का एक भेद।
सुरामेही(हिन्)—वि०[सं० सुरामेह+इनि] सुरामेह से पीड़ित।
सुराय*—पु०[सं० सु+हिं० राय] अच्छा राजा।
सुरायुध—पु०[सं० ष० त०] देवताओं का आयुध या अस्त्र।
सुराराणि—स्त्री०[सं० ष० त०] देवताओं की माता, अदिति।
सुरारि—पु०[सं० ष०त०] देवताओं का शत्रु, राक्षस।
सुरारिघ्न—पु०[सं०सुरारि√हन् (मारना) +ठक्] असुरों का नाश करनेवाले, विष्णु।
सुरारिहंता(तृ)—पु०[सं० ष० त०] असुरों का नाश करनेवाले, विष्णु।
सुरारी—पु०[देश०] एक प्रकार की बरसाती घास।
सुरार्चन—पु०[सं० ष० त०] देवताओं की की जानेवाली अर्चना। देव-पूजा।
सुरार्दन—पु०[सं० सुर√अर्द् (मारना)+ल्यु—अन] देवताओं को सतानेवाले, राक्षस।
सुरार्ह—पु०[सं०]१. हरिचन्दन। २ सोना। स्वर्ण।
सुराल—पु०[सं०] धूना। राल।
पु०[?] घोड़ा बेल नाम की लता जिसकी जड़ त्रिलाईकन्द कहलाती है।
सुरालय—पु०[सं०ष०त०]१ देवताओं के रहने का स्थान। स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत। ३. देव मन्दिर। ४ शराब बनाने या बेचने की जगह। शराबखाना।
सुरालिका—स्त्री० [सं०] सातला या सप्तला नाम की जंगली बेल।
सुराव—पु०[सं०प्रा०स०]१. अच्छी ध्वनि। २. एक प्रकार का घोड़ा।
सुरावट—स्त्री० [हिं० सुर+आवट (प्रत्य०)] १. संगीत में, स्वरों का ठीक तरह से होनेवाला आरोह और अवरोह। स्वरों का मंगत उतार-चढ़ाव। २ सुरीलापन। उदा०—सुरज वीणा वेणु आदिक बज उठे। विरद वैतालिक सुरावट सज उठे।—मैथिली०।
सुरावती—स्त्री०=सुरावनि।
सुरावनि—स्त्री० [सं० ष० त०]१. देवताओं की माता, अदिति। २. पृथ्वी।
सुरा-वारि—पु० [सं० ष० त०] सुरा का समुद्र।
सुरावास—पु०[सं० ब० स०] सुमेरु।
सुरावृत्त—पु०[सं०] सूर्य।
सुराश्रय—पु०[सं० ष० त०]सुमेरु।
सुराष्ट्र—पु०[सं० प्रा० स०, ब० स०] सौराष्ट्र देश का दूसरा नाम।
सुराष्ट्रज—पुं०[सं० सुराष्ट्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड]१ गोपी चंदन। सौराष्ट्र मृत्तिका। २ काला मूँग। ३ लाल कुल्थी। ४ एक प्रकार का विष।
वि० सुराष्ट्र देश में उत्पन्न।
सुराष्ट्रजा—स्त्री०[सं०] गोपीचन्दन।
सुरा-संधान—पु०[सं० ष० त०] भभके से शराब चुआने की क्रिया।
सुरा-समुद्र—पु०=सुराब्धि।
सुरासव—पु०[सं० सुरा+आसव]१ वैद्यक में एक प्रकार का आसव। २. एक प्रकार का बहुत तेज मादक आसव या द्रव पदार्थ जो भभके से चुआकर बनाया जाता है और जिसका व्यवहार विलायती दवाओं, शराबों, सुगंधियों आदि मे मिलाने अथवा तेज आँच पैदा करने के लिए जलावन के रूप में होता है। (स्पिरिट)
सुरासार—पु० [सं०] वह तात्त्विक तथा मूल तरल मादक द्रव्य जिससे शराब बनती है। (एलकोहल)
सुरासुर—पुं० [सं० द्व० स०] सुर और असुर। देवता और दानव।
सुरासुर-गुरु—पु०[सं० ष० त०]१ शिव। २. कश्यप।
सुरास्पद—पु०[सं० ष० त०] देव-मन्दिर।
सुराही—स्त्री०[अ०]१. जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध मिट्टी, धातु, शीशे आदि का पात्र, जिसके नीचे और बीच का भाग बड़े लोटे की तरह और ऊपर का भाग लम्बे चोंगे या नल की तरह होता है। २. कुछ आभूषणों तथा दूसरे पदार्थों के सिरे पर का उक्त आकार का छोटा खंड। ३ कपड़े की एक प्रकार की काट। (दरजी)
सुराहीदार—वि० [अ० सुराही+फा० दार] सुराही के आकार-प्रकार वाला। सुराही की सी आकृतिवाला।
सुराहीनुमा—वि०[अ० +फा०]१. जो देखने मे सुराही के समान हो। सुराही के आकार का। २ दे० 'सुराहीदार'।
सुराह्व—पुं०[सं०]१ देवदार। २. मरुआ। ३. हलदुआ।
सुराह्वय—पु०[सं० ब० स०] १ एक प्रकार का पौधा। २ देवदारु वृक्ष।
सुरिंद—पुं० [सं० सुर] इन्द्र। (डिं०)
सुरिया-खार—पुं०[फा० शोरा+हिं० खार] शोरा।
सुरी—स्त्री० [सं०] देवपत्नी। देवांगना
सुरीला—वि० [हिं० सुर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुरीली, भाव० सुरीलापन]१. संगीत मे (आलाप, तान आदि) जिसका गायन स्वरों के अनुरूप या अनुसार हो रहा हो। २. महीन और मीठा (स्वर)।

सुरंगा—स्त्री०=सुरग।
सुरुक्म—वि०[स०] अच्छी तरह प्रकाशित। प्रदीप्त।
सुरुख—वि० [हि० सु+फा० रुख] १. सुन्दर आकृति या रूपवाला। खूबसूरत। २ प्रसन्न रहकर दया करनेवाला। अनुकूल। उदा०—सुरुख सुमुख एक रस एक रूप तोहि।—तुलसी।
वि० दे० 'सुर्ख'।
सुरुखरू—वि०=सुर्खरू।
सुरुच—वि०[स०] उज्ज्वल या सुन्दर प्रकाशवाला।
पु० उज्ज्वल प्रकाश। अच्छी रोशनी।
सुरुचि—स्त्री०[स० प्रा० स०]१ अच्छी विशेषत नागर और परिष्कृत रुचि। २. प्रसन्नता। ३ ध्रुव की विमाता।
वि० सुरुचिपूर्ण।
सुरुचिर—वि०[सं० प्रा० स०]१ जिसमे तबीयत खूब रुचती हो। २ व्यापक अर्थ मे सुन्दर। ३ उज्ज्वल। चमकीला। प्रकाशमान्।
सुरुज—वि०[स०] बहुत बीमार। अस्वस्थ। रुग्ण।
†पु०=सूर्य।
सुरुजमुखी†—पु०=सूर्यमुखी।
सुरुति*—स्त्री०=श्रुति।
सुरुद्रि—स्त्री०[स०] शतद्रु (वर्तमान सतलज) नदी का एक पुराना नाम।
सुरुर—पु० दे० 'सरूर'।
सुरुल—पु०[देश०] मूँगफली के पौधो मे होनेवाला एक रोग।
सुरुवा—पु० १ =स्रुवा। २ =शोरबा।
सुरूप—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुरूपा, भाव० सुरूपता]१ जिसका रूप या आकृति अच्छी हो। २. सुन्दर। खूबसूरत। ३ पण्डित। विद्वान्। ४. बुद्धिमान्। समझदार।
पु०१ शिव। २ कपास। ३ पलास। ४ पीपल।
†पु०=स्वरूप।
सुरूपक—वि०=स्वरूपवान्।
सुरूपता—स्त्री०[स० सुरूप+तल्—टाप्] सुरूप होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। खूबसूरती।
सुरूपा—स्त्री०[स० सुरूप—टाप्]१ सखिन। शालपर्णी। २ भारगी। ३ सेवती ४. बेला।
वि० सुन्दर रूपवाली (स्त्री)।
सुरूहक—पु०[स०] खच्चर।
सुरेंद्र—पु० [स० ष० त०]१ सुरराज। इन्द्र। २ बहुत बडा राजा।
सुरद्र-कंद—पु०=सुरेंद्रक।
सुरेंद्रक—पु० [स०] जगली ओल या सूरन।
सुरेंद्रगोप—पु०[स०] इन्द्रगोप नामक कीडा। बीरबहूटी।
सुरेंद्रचाप—पु० [स० ष० त०] इन्द्रधनुष।
सुरेंद्रजित्—पु०[स० सुरेन्द्र √जि (जीतना)+क्विप्—तुक्] इन्द्र को जीतनेवाले, गरुड।
सुरेंद्रता—स्त्री० [स० सुरेन्द्र +तल्—टाप्] सुरेन्द्र होने की अवस्था, गुण या भाव। इन्द्रत्व।
सुरेंद्रपूज्य—पु०[स० ष० त०] बृहस्पति।
सुरेंद्रलोक—पु०[स० ष० त०] इन्द्रलोक।

सुरेंद्रवज्रा—स्त्री० [स०] इन्द्रवज्रा नामक वृत्त का दूसरा नाम।
सुरेंद्रवती—स्त्री०[सं० सुरेन्द्र+मतुप्—म-व—ङीप्] शची। इन्द्राणी।
सुरेख—वि०[सं० ब० स०] १ सुन्दर रेखाएँ बनानेवाला। २. सुन्दर रेखाओ से युक्त।
स्त्री० [प्रा० स०] सुन्दर रेखा।
सुरेज्य—पु० [स० ष० त०] बृहस्पति।
सुरेज्या—स्त्री०[सं०]१ तुलसी। २ ब्राह्मी।
सुरेणु—स्त्री०[स०] १. त्रसरेणु। २ एक प्राचीन नदी। ३. विवस्वान् की पत्नी जो त्वाष्ट्री की पुत्री थी।
सुरेतना†—स०[?] खराब अनाज मे से अच्छे अनाज अलग करना।
सुरेतर—पु०[स० पच० त०] असुर।
वि० सुरों से इतर या भिन्न।
सुरेता (तस्)—वि० [स० ब० स०] १ बहुत वीर्यवान्। २ विशेष सामर्थ्यवान्।
सुरेतिन*—स्त्री०[स० सुरति] उपपत्नी। रखेली।
सुरेय—पु० [?] सूंस। शिशुमार।
सुरेनुका—स्त्री०=सुरेणु।
सुरेभ—वि० [स० ब० स०] सुन्दर स्वरवाला। सुरीला।
पु० देवहलदी।
सुरेश—पु० [स० ष० त०]१. देवताओं के राजा, इन्द्र। २. शिव। ३. विष्णु। ४ श्रीकृष्ण। ५ राजा।
सुरेशी—स्त्री०[स० सुरेश+ङीप्] दुर्गा।
सुरेश्वर—पु०[स० ष० त०]१ देवताओ के राजा, इन्द्र। २ ब्रह्मा। ३ रुद्र। ४ शिव।
सुरेश्वरी—स्त्री०[स० सुरेश्वर—ङीप्] देवताओ की स्वामिनी, दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३ राधा। ४ आकाश-गगा।
सुरेष्ट—पु०[स०]१ सुर-पुन्नाग। २ अगस्त्य का पेड और फूल। ३. मौलसिरी। ४ शालवृक्ष। साखू।
सुरेष्टक—पु०[स०] शाल वृक्ष। साखू।
सुरेष्टा—स्त्री०[स०] ब्राह्मी।
सुरेस—पु०=सुरेश।
सुरैं—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास जो गर्मी के दिनो मे पैदा होती है।
†स्त्री०=सुरभि।
सुरैंत—स्त्री०[स० सुरति]१ विषय-भोग के निमित्त रखी जानेवाली स्त्री। उपपत्नी। रखेल। २ वेश्या।
सुरैंतवाल—पु०[हि०सुरैंत+वाल] सुरैंत या उपपत्नी से उत्पन्न सन्तान।
सुरैंतिन—स्त्री० दे० 'सुरैंत'।
सुरोचन—पु०[स०] पुराणानुसार एक वर्ष या भू-खड।
सुरोचना—स्त्री०[स०] कार्तिकेय की एक मातृका।
सुरोचि—वि० [स० सुरुचि] सुन्दर।
सुरोत्तम—पु०[स० सप्त० त०]१ देवताओ मे श्रेष्ठ, विष्णु। २. सूर्य।
सुरोत्तर—पु०[स०] चदन।
सुरोद—पु०[स० ष० त०] मदिरा का समुद्र।
सुरोदक—पु०=सुरोद।

सुरोदय†—पुं०=स्वरोदय।
सुरोधा (धस्)—पुं०[सं०] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।
सुरोपम—वि० [सं० ब० स०]१ देवताओं के समान। देव-तुल्य।
सुरोमा (मन्)—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर रोमोंवाला। जिसके रोएँ सुन्दर हों।
सुरौका (कस्)—पुं०[सं० ष० त०] १. स्वर्ग। २. देव-मन्दिर।
सुर्ख—वि० [फा० सुर्ख] रक्त-वर्ण। लाल। जैसे—सुर्ख गाल।
पुं० लाल रंग। रक्त वर्ण।
सुर्खदाना—पुं०[फा० सुर्ख दान] एक प्रकार की वनस्पति।
सुर्खरू—वि० [फा०] [भाव० सुर्खरूई] १. जिसके मुखपर लाली और फलतः तेज हो। तेजस्वी। २. यश या सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके चेहरे पर लाली अर्थात् प्रफुल्लता या प्रसन्नता आ गई हो। कीर्तिशाली। यशस्वी। ३ प्रतिष्ठित।
सुर्खरूई—स्त्री०[फा०]१ सुर्खरू होने की अवस्था या भाव। २. कीर्ति। यश। ३ प्रतिष्ठा। मान।
सुर्खा—पुं०[फा० सुर्ख] लाल रंग का एक प्रकार का कबूतर।
सुर्खाब—पुं०=सुरखाब (चकवा)।
सुर्खी—स्त्री० [फा० सुर्खी]१ लाली। ललाई। २ लेखों आदि का शीर्षक जो पहले लाल स्याही से लिखा जाता था। ३ लाल स्याही। ४ खून। रक्त। लहू। ५. दे० 'सुरखी'।
सुर्खीदार सुरमई—पुं० [फा०] एक प्रकार का सुरमई या बैंगनी रंग जो कुछ लाली लिए होता है।
सुर्जना†—पुं० =सहिजन (वृक्ष)।
सुर्ना—वि०=सुग्ना (समझदार)।
सुर्ती—स्त्री०=सुरती।
सुर्त्त†—स्त्री०१.=सुरत। २ =सुरति।
सुर्मा†—पुं०=सुरमा।
सुर्रा—पुं०[देश०]१ एक प्रकार की मछली। २ छोटी थैली। बटुआ।
पुं०[अनु० सुर-सुर] हवा का सुर-सुर करता हुआ तेज झोंका।
सुलंक†—पुं० दे० 'सोलंक'।
सुलंकी†—पुं०=सोलंकी।
सुलक्ष—वि०=सुलक्षण।
सुलक्षण—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुलक्षणा]१ अच्छे या शुभ लक्षणोंवाला। २ भाग्यवान्।
पुं०[प्रा० स०]१ शुभलक्षण। २ एक प्रकार का छंद।
सुलक्षणता—स्त्री० [सं० सुलक्षण+तल्—टाप्] १. सुलक्षण होने की अवस्था या भाव। २ वह तत्त्व जिससे सुलक्षण होने का भाव सूचित होता है।
सुलक्षणत्व—पुं०[सं०] सुलक्षणता।
सुलक्षणा—स्त्री०[सं० ब० स०] अच्छे लक्षणोंवाली स्त्री।
सुलक्षणी—वि० स्त्री०=सुलक्षणा।
सुलक्षित—भू० कृ० [सं०]१. अच्छी तरह से देखा तथा पहचाना हुआ। २ लक्ष्य के रूप में आया हुआ। ३. सुपरीक्षित। ४. सुनिश्चित।
सुलखना†—वि० [सं० सुलक्षणा] [स्त्री० सुलखनी]१. अच्छे लक्षणोंवाला। २. शुभ। जैसे—सुलखनी घड़ी। (पश्चिम)
*अ०=सुलगना।
सुलग—स्त्री०[हिं० सुलगना] सुलगने की क्रिया, अवस्था या भाव।
स्त्री०[हिं० सु+लगना] समीप होना।
अव्य० समीप। पास।
सुलगन—स्त्री० [हिं० सुलगना] सुलगने की अवस्था, क्रिया या भाव। सुलग।
सुलगना—अ०[सं० सु+हिं० लगना] १. किसी चीज का इस प्रकार जलना कि उसमें से लपट न निकले, बल्कि धूआँ निकले। जैसे—बीड़ी या सिग्रेट सुलगना। २ धीरे-धीरे जलने लगना। जैसे—आग सुलग रही है। ३ लाक्षणिक अर्थ में, ईर्ष्या, क्रोध, कुढ़न आदि के कारण मन ही मन बहुत कुढ़ना या संतप्त होना।
सुलगाना—स०[हिं० सुलगना] इस प्रकार प्रयास करना कि कोई चीज सुलगने लगे। जैसे—बीड़ी सुलगाना।
सुलग्न—पुं० [सं० प्रा० स०] शुभ मुहूर्त। शुभ लग्न। अच्छी सायत।
वि० किसी के साथ अच्छी तरह लगा हुआ।
सुलच्छन*—वि० [स्त्री० सुलच्छनी]=सुलक्षण।
सुलछ†—वि०[सं० सुलक्ष] १. जो भली भाँति दिखाई पड़ रहा हो। २. अच्छे लक्षणोंवाला। ३. सुन्दर।
सुलझन—स्त्री०[हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव। 'उलझन' का विपर्याय।
सुलझना—अ०[हिं० उलझना का अनु०]१. उलझनों से मुक्त होना। २. समस्या की जटिलता, पेचीदगी आदि का दूर होना।
सुलझाना—स०[हिं० सुलझना का स० रूप]१. किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर करना। उलझन या गुत्थी खोलना। २ किसी बात या विषय की जटिलताएँ दूर करना। 'उलझाना' का विपर्याय। जैसे—मामला सुलझाना।
सुलझाव—पुं० [हिं० सुलझना+आव(प्रत्य०)] सुलझने या सुलझाने की क्रिया या भाव। सुलझन।
सुलटा—वि०[हिं० उलटा का अनु०] [स्त्री० सुलटी] जो उलटा न हो। सीधा।
सुलतान—पुं०[फा०] बादशाह। सम्राट्।
सुलताना चंपा—पुं० [फा० सुलतान+हिं० चंपा] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती कामों और जहाज के मस्तूल तथा रेल की पटरियाँ बनाने के काम आती है। पुन्नाग।
सुलतानी—वि० [फा० सुलतान]१ सुलतान या बादशाह संबंधी। २. लाल (रंग का)।
स्त्री०१ सुलतान होने की अवस्था, पद या भाव। २ सुलतान का राज्य या शासन-काल। बादशाही। राजत्व।
पुं०१. प्रकार का बढ़िया महीन रेशमी कपड़ा। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का कागज जो फारस से बनकर आता था।
वि० लाल रंग का। रक्त-वर्ण। सुर्ख।
सुलप†—पुं० [सु+आलाप] सुन्दर आलाप। (क्व०)
†वि० [सं० स्वल्प]१. बहुत थोड़ा। अल्प। २. धीमा। मन्द।
सुलफ—वि०[सं० सु+हिं० लफना]१ सहज में लचनेवाला। लचीला। २. कोमल। नाजुक। मुलायम।

सुलफा—पु० [फा० सुल्फ]१ गाँजा, चरस आदि। २ तम्बाकू की चिलम भरने का वह प्रकार जिसमे मिट्टी के तवे का प्रयोग नही होता। २. सूखा तम्बाकू जिसे गाँजे की तरह पतली चिलम मे भरकर पीते हैं। ककड। ३ चरस।
क्रि० प्र०—पीना।—भरना।
पु०[स० शौल्फ] एक प्रकार का साग।
सुलफेबाज—वि०[हिं० सुल्फा+फा० बाज़] [भाव० सुल्फेबाजी] गाँजा या चरस पीनेवाला। गँजेडी या चरसी।
सुलब—पु०[?] गंधक। (डिं०)
सुलभ—वि०[स०] [भाव० सुलभता, सुलभत्व]१ जो प्राप्त हो सकता हो। जिसे प्राप्त करने मे विशेष कठिनाई या परिश्रम न हो। २ सरल। सहज। ३. साधारण। मामूली। ४. उपयोगी।
पु० अग्निहोत्र की अग्नि।
सुलभ-गणक—पु० [स०] ऐसी सारिणी या सारिणी-सग्रह जिसके द्वारा नित्य के व्यवहार की गणित-सबधी प्रक्रियाओ के फल या परिकलन सहज मे जाने जा सके। (रेडी-रेकनर) जैसे—किसी निश्चित दर से १२ दिनो का वेतन, २३ दिनो का व्याज आदि जानने की सारिणी।
सुलभता—स्त्री० [स० सुलभ+तल्—टाप्] सुलभ होने की अवस्था, गुण या भाव। सुलभत्व।
सुलभत्व—पु०[स०] सुलभता।
सुलभ-मुद्रा—स्त्री०[स०]अर्थशास्त्र मे, किसी ऐसे देश की मुद्रा जो किसी राष्ट्र या राज्य को उस देश से माल मँगाने के लिए सहज मे प्राप्त हो सके। (सॉफ्ट करेन्सी)
विशेष—यदि हमारे देश मे किसी दूसरे देश से आयात कम और निर्यात अधिक होता हो तो फलत उस देश की मुद्रा हमारे लिए सुलभ और इसकी विपरीत दशा मे दुर्लभ होगी।
सुलभा—स्त्री०[स०]१ वैदिक काल की एक ब्रह्मवादिनी विदुषी। २ तुलसी। ३ बेला। ४ जगली उडद। मषवन।
सुलभेतर—वि०[स० प० त०]१ जो सहज मे प्राप्त न हो सके। 'सुलभ' से भिन्न। दुर्लभ। २ कठिन। मुश्किल। ३ महँगा।
सुलभ्य—वि० [स० सु√लभ् (प्राप्त होना)+यत्] जो सहज मे मिलता या मिल सकता हो। सुलभ।
सुललित —वि०[स० प्रा० स०] अति ललित। अत्यन्त सुन्दर।
सुलवण—वि० [स० प्रा० स०] (खाद्य पदार्थ) जिसमे उचित मात्रा मे नमक मिला हो।
सुलस—पु०[?] स्वीडन देश का एक प्रकार का बढिया लोहा।
सुलह—स्त्री०[फा०]१. वह स्थिति जब दो विरोधी पक्ष परस्पर विरोध-भाव छोडकर मित्रता का सबध स्थापित करते है। मेल। मिलाप। २ वह मेल जो किसी प्रकार की लडाई या झगडा समाप्त होने पर हो। ३. उक्त प्रकार के मेल के उपरान्त होनेवाली सन्धि।
सुलहनामा—पु०[अ० सुलह+फा० नाम]१ वह कागज जिसपर आपस मे लडनेवाले दलो या व्यक्तियो मे मेल होने पर उसकी शर्तें लिखी रहती है। २ वह कागज जिसपर दो या अधिक परस्पर लडनेवाले राजाओ या राष्ट्रो मे सुलह या मेल होने पर उस मेल की शर्तें लिखी रहती है। सधिपत्र। (ट्रीटी)

सुलाक—पु०[फा० सूराख] सूराख। छेद। (लश०)
†स्त्री०=सलाख।
सुलाखना†—स० [स० सु +हिं० लखना=देखना] सोने या चाँदी को तपाकर परखना।
†स० [फा० सलाख] सलाख से या और किसी प्रकार छेद करना।
सुलागना†—अ०=सुलगना।
सुलाना—स० [हिं० सोना का प्रे०]१ किसी को सोने मे प्रवृत्त करना। शयन कराना। निद्रित कराना। २. किसी को मैथुन या सभोग के लिए अपने पास लेटाना।
सुलाभ†—वि०=सुलभ।
सुलास†—पु०[स० सु+लास्य] अच्छा नाच। उत्तम नृत्य। उदा०—आरभित तव रुचिर राम, अद्भुत सुलास जहँ।—नन्ददास।
सुलाह†—स्त्री०=सुलह।
सुलिपि—स्त्री०[स० प्रा० स०] उत्तम और स्पष्ट लिपि।
सुलूक—पु०=सलूक।
सुलेक—पु०[स०] एक आदित्य का नाम।
सुलेख—वि०[स० ब० स०] १ शुभ रेखाओवाला। २ शुभ रेखाएँ बनानेवाला।
पु०[?] अच्छा या उत्तम लेख। अच्छी और बढिया लिखावट की लिपि।
सुलेमाँ†—पु०=सुलेमान।
सुलेमान—पु०[फा०]१ यहूदियो का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है। २ पश्चिमी पजाब (आज-कल के पाकिस्तान) और बलोचिस्तान के बीच का एक पहाड।
सुलेमानी—वि०[फा०] सुलेमान सबधी। सुलेमान का। जैसे—सुलेमानी सुरमा।
पु०१ एक प्रकार का प्रसिद्ध पाचक नमक जो कई ओषधियो के योग से बनता है। २. सफेद आँखोवाला घोडा। ३. एक प्रकार का पत्थर जो कही से सफेद और कही से काला होता है।
सुलोक—पु०[स० प्रा०स०]१. उत्तम लोक। २. स्वर्ग।
सुलोचन—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० सुलोचना] सुन्दर आँखोवाला। जिसके नेत्र सुन्दर हो।
पु०१=हिरन। २=चकोर।
सुलोचना—स्त्री०[स० सुलोचन—टाप्] वासुकी की एक कन्या जो मेघनाद की पत्नी थी।
वि० सुन्दर नेत्रोवाली।
सुलोचनी—वि० स्त्री०[सं० सुलोचना] सुन्दर नेत्रोवाली। जिसके नेत्र सुन्दर हो।
सुलोम—वि०[स०] [स्त्री० सुलोमा] सुन्दर लोमो या रोमों से युक्त। जिसके रोएँ सुन्दर हो।
सुलोमनी—स्त्री०[स०] जटामांसी। बालछड।
सुलोमश—वि०=सुलोम।
सुलोमशा—स्त्री०[स०]१ काकजघा। २ जटामांसी।
सुलोमा—स्त्री०[सं०]१ ताम्रवल्ली। २ मास-रोहिणी।
वि० स० 'सुलोम' का स्त्री०।

२. अशोक की एक राजधानी जो किसी के मत से राजगृह मे और किसी के मत से दक्षिण भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर थी।
सुवर्ण-गैरिक—पु०[सं० मध्य० स०] लाल गेरू।
सुवर्णगोत्र—पु०[सं० ब० स०] बौद्धो के अनुसार एक प्राचीन राज्य।
सुवर्णघ्न—पु०[सं० सुवर्ण√हन् (मारना)+टक] राँगा। वग।
सुवर्ण-चूड़—पु०[सं० ब० स०] एक प्रकार का पक्षी।
सुवर्ण-जीविक—पु० [सं० ब०स०] एक प्राचीन वर्णसकर जाति जो सोने का व्यापार करती थी।
सुवर्णता—स्त्री०[सं० सुवर्ण+तल्—टाप्] सुवर्ण का गुण, धर्म या भाव। सुवर्णत्व। २. सुनहलापन।
सुवर्ण-तिलका—स्त्री० [सं० ब० स०] मालकगनी।
सुवर्ण-द्वीप—पु०[सं०] सुमात्रा टापू का पुराना नाम।
सुवर्ण-धेनु—स्त्री०[सं० ष० त०] दान देने के लिए सोने की बनाई हुई गौ।
सुवर्ण-पक्ष—वि० [सं० ब० स०] जिसके पख या पर सोने के हो।
पु० गरुड़।
सुवर्ण-पद्म—पु०[सं० उपमि० स०] लाल कमल। रक्त कमल।
सुवर्ण-पद्मा—स्त्री०[सं०] आकाश गगा।
सुवर्ण-पार्श्व—पु०[सं० ब० स०] एक प्राचीन जनपद।
सुवर्ण-पालिका—स्त्री०[सं०] सोने का बना हुआ एक प्रकार का प्राचीन पात्र।
सुवर्ण-पुष्प—पु०[सं० ब० स०] बडी सेवती। राजतरुणी।
सुवर्ण-फला—स्त्री०[सं० ब० स०] चपा केला। सुवर्ण कदली।
सुवर्ण-बिंदु—पु०[सं० ब० स०] विष्णु।
सुवर्ण-भूमि—पु०[सं० ब० स०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का पुराना नाम।
सुवर्ण-माक्षिक—पु०[सं० मध्य० स०] सोनामक्खी। स्वर्णमाक्षिक।
सुवर्ण-माषक—पु०[सं०] बारह धान की एक पुरानी तौल।
सुवर्ण-मित्र—पु०[सं०] सुहागा, जिसकी सहायता से सोना जल्दी गल जाता है।
सुवर्ण-मुखरी—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्राचीन नदी।
सुवर्ण-यूथिका—स्त्री० [सं० उपमि० स०] सोनजुही। पीली जुही।
सुवर्ण-रंभा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चपा केला। सुवर्ण कदली।
सुवर्ण-रूपक—पु० [सं०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक प्राचीन नाम।
सुवर्ण-रेखा—स्त्री० [सं०] उडीसा और बगाल की एक प्रसिद्ध नदी।
सुवर्णरेता(तस्)—पु०[सं० ब० स०] शिव का एक नाम।
सुवर्णरोमा (मन्)—वि०[सं० ब० स०] जिसके रोएँ सुनहले हों।
पु० भेड। मेष।
सुवर्णलता—स्त्री०[सं० मध्य० स०] मालकगनी। ज्योतिष्मतीलता।
सुवर्ण-वणिक्—पु०[सं०] बगाल की एक वणिक् जाति।
सुवर्ण-वर्ण—वि०[सं० ब० स०] जिसका रग सोने के रग की तरह हो। सुनहला।
पु० विष्णु।
सुवर्ण-श्री—स्त्री०[सं० ब० स०] आसाम की एक नदी जो ब्रह्मपुत्र की मुख्य शाखा है।
सुवर्ण-सिद्ध—पु० [सं० ब० स०] वह जो इन्द्रजाल से सोना बना लेता हो।
सुवर्ण स्तेय—पु०[सं० ष० त०] सोने की चोरी जो मनु के अनुसार पाँच महापातको मे से एक है।
सुवर्णस्तेयी (यिन्)—पु०[सं० ष० त०] सोना चुरानेवाला, जो मनु के अनुसार महापातकी होता है।
सुवर्ण स्थान—पु०[सं० ष० त०] १. एक प्राचीन जनपद। २. आधुनिक सुमात्रा द्वीप का पुराना नाम।
सुवर्णा—स्त्री०[सं०] १. अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। २ इक्ष्वाकु की पुत्री और सुहोत्र की पत्नी। ३ हलदी। ४ काला अगर। ५ बरियारा। बला। ६. कटेरी। सत्यानाशी। ६ इन्द्रायन। इनारू।
सुवर्णाकर—पु०[सं० ष० त०] सोने की खान।
सुवर्णाक्ष—पु०[सं० ब० स०] शिव।
सुवर्णाख्य—पुं० [सं० ब० स०] १. नागकेसर। २. धतूरा। ३ एक प्राचीन तीर्थ।
सुवर्णाभ—वि०[सं० ब० स०] जिसमे सोने की-सी आभा या चमक हो।
पु० राजावर्त नामक मणि। लाजवर्द।
सुवर्णार—पु०[सं०] लाल कचनार।
सुवर्णाह्वा—स्त्री०[सं० ब० स०] पीलीजूही। सोनजूही।
सुवर्णिका—स्त्री०[सं०] पीली जीवती। स्वर्ण जीवती।
सुवर्णी—स्त्री० [सं०] मूसाकानी। आखुपर्णी।
सुवर्तुल—वि०[सं०] ठीक और पूरा गोल।
पु० तरबूज।
सुवर्म्मा (वर्म्मन्)—वि०[सं० ब० स०] उत्तम कवच से युक्त। जिसके पास उत्तम कवच हो।
पु० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
सुवर्षा—स्त्री०[सं० सुवर्ष-टाप्, प्रा० स०] १. अच्छी वर्षा। २. मोतिया। मल्लिका।
सुवल्लिका—स्त्री०[सं०]१ जतुका लता। २ सोमराजी।
सुवल्ली—स्त्री०[सं०]१. बकुची। सोमराजी। २ पुत्रदात्री लता। ३ कुटकी।
सुवसत—पु०[सं० प्रा० स०]१. चैत्र की पूर्णिमा। चैत्रावली। २ मदनोत्सव जो उक्त पूर्णिमा के दिन मनाया जाता था।
सुवसतक—पु०[सं०]१. मदनोत्सव जो प्राचीन काल मे चैत्र पूर्णिमा को मनाया जाता था। २ नेवारी।
सुवसंता—स्त्री०[सं०] १. माधवी लता। २ चमेली।
सुवस*—वि०[सं० स्व+वश] जो अपने वश या अधिकार मे हो। वशवर्ती।
सुवह—वि०[सं०]१ जो सहज मे वहन किया या उठाया जा सके। २. धैर्यशाली। धीर।
पु० एक प्रकार का वायु।
सुवहा—स्त्री०[सं०]१ वीणा। बीन। २ रासना। ३ सँभालू। ४. हसपदी। ४ रुद्रजटा। ६ मूसली। ७ सलई। ८ गन्धनाकुली। ९ निसोथ। १० शेफालिका।
सुवाँग†—पु०=स्वाँग।
सुवाँगी†—पु०=स्वाँगी।
सुवा—पु०=सुआ (तोता)।
सुवाक्य—वि०[सं०] सुन्दर वचन बोलनेवाला। मधुरभाषी। सुवाग्मी।

सुवाच्य—वि०[स० प्रा० स०] जो सहज मे पढा जा सके।

सुवाजी (जिन्)—वि० [स०] (तीर) जिसमे अच्छे या सुन्दर पख लगे हो।

सुवाना†—स०=सुलाना।

सुवामा—स्त्री०[स०] वर्तमान रामगगा नदी का पुराना नाम।

सुवार—पु०[स० प्रा० स०] उत्तम वार। अच्छा दिन।
†पु०=सूपकार (रसोइया)।

सुवाल†—पु०=सवाल।

सुवास—पु०[स० प्रा० स०]१. अच्छी वास या महक। खुशबू। सुगध। २. अच्छा निवास-स्थान। ३ शिव। ४. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
वि० जो अच्छे कपड़े पहने हो।
†पु०=श्वास। (डि०)

सुवासक—पु०[स०] तरबूज।

सुवासरा—स्त्री०[स०] हालो नाम का पौधा। चसुर। चन्द्रशूर।

सुवासा (सस्)—पु० [स० ब० स०]१. जो अच्छे और सुन्दर कपडे पहने हुए हो। २ (तीर) जिसमे अच्छे या सुन्दर पर लगे हो।

सुवासिक—वि०[स०] [स्त्री० सुवासिका] सुवास या सुगन्ध से युक्त। सुगधित।

सुवासित—भू० कृ०[स०] सुवास या सुगध से युक्त किया हुआ।

सुवासिन†—स्त्री०=सुवासिनी।

सुवासिनी—स्त्री०[स० प्रा० स०]१. ऐसी विवाहिता या कुआँरी स्त्री जो अपने पिता के घर मे ही रहती हो। २. सधवा स्त्री।

सुवासी (सिन्)—वि०[स० सु√ वस् (वास करना)+णिनि] [स्त्री० सुवासिनी] उत्तम या भव्य भवन मे रहनेवाला।

सुवास्तु—स्त्री०[स०] गाधार देश की आधुनिक स्वात नामक नदी का वैदिक-कालीन नाम।
पु०१ उक्त नदी के तटवर्ती देश का पुराना नाम। २. उक्त देश का निवासी।

सुवाह—पु०[स० प्रा० स०]१. स्कद का एक पारिषद्। २. अच्छा या बढिया घोडा।
वि०१ जो सहज मे वहन किया या उठाया जा सके। २. अच्छे घोडो से युक्त।

सुविक्रम—वि०[स० ब० स०] बहुत बडा विक्रमी या पुरुषार्थी।

सुविक्रात—वि०[स० प्रा० स०]१. अत्यन्त विक्रमशाली। अतिशय पराक्रमी। २ बहादुर। वीर।
पु० बहादुर। वीर।

सुविख्यात—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० सुविख्याति] अत्यन्त प्रसिद्ध।

सुविगुण—वि०[स० प्रा० स०]१. जिसमे कोई गुण या योग्यता न हो। गुणहीन। २. बहुत बडा दुष्ट। नीच या पाजी।

सुविग्रह—वि०[स० ब० स०] सुन्दर शरीर या रूपवाला। सुदेह। सुरूप।

सुविचार—पु०[स० प्रा० स०] १ अच्छी तरह और सूक्ष्मतापूर्वक किया हुआ विचार। २ अच्छी तरह समझ-बूझकर किया हुआ निर्णय। ३. रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण का एक पुत्र।

सुविचारित—भू० कृ०[स० प्रा० स०] सूक्ष्म या उत्तम रूप मे विचार किया हुआ। अच्छी तरह सोचा-समझा हुआ।

सुविज्ञ—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक विज्ञ या ज्ञानवान्। अच्छा जानकार।

सुविज्ञान—वि०[स० प्रा० स०]१ जो सहज में जाना जा सके। २. बहुत बडा चतुर या बुद्धिमान्।

सुविज्ञेय—वि०[सं० प्रा० स०] जो सहज मे जाना जाता हो या जाना जा सकता हो।
पु० शिव।

सुवित—वि०[स०] जो सहज मे प्राप्त हो सके।
पु० १. अच्छा मार्ग। सुपथ। २ कल्याण। मगल। ३. सौभाग्य।

सुवितल—पु०[स०] विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति।

सुवित्त—वि० [स० ब० स०] बहुत बडा धनी या अमीर।

सुवित्ति—पु०[स०] एक देवता का नाम।

सुविद्—पु०[स० सु √ विद् (जानना)+क्विप्] [स्त्री० सुविदा]विद्वान् या चतुर व्यक्ति।

सुविद—पु०[स०] १. अत पुर या निवास का रक्षक। सौविद्। कचुकी। २ तिलकपुष्प नामक वृक्ष।

सुविदत्र—वि०[स० प्रा० स०] १. अतिशय सावधान। २. सहृदय। ३. उदार।
पु० १ अनुग्रह। कृपा। २. धन-सपत्ति। ३ कुटुंब। परिवार। ४ ज्ञान।

सुविदर्भ—पु०[स० प्रा० स०] एक प्राचीन जाति।

सुविदला—स्त्री०[स०] विवाहिता स्त्री।

सुविद्य—वि०[स० ब० स०] उत्तम विद्वान्। अच्छा पण्डित।

सुविध—वि०[स० ब० स०] अच्छे स्वभाव का। सुशील।

सुविधा—स्त्री०[स० प्रा० स०]१. वह तत्त्व या बात जिसके सहज उपलब्ध होने से किसी काम को सरलता से निष्पन्न किया जाता है। २ वह आराम या छूट जो विशेष रूप से उपलब्ध हुई हो। जैसे—यहाँ दोपहर को एक घटे की फुरसत मिल जाती है, यही एक सुविधा मेरे लिए बहुत है।
†स्त्री०=सुभीता।

सुविधि—पु०[स०] जैनियों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के नवे अर्हत का नाम।
स्त्री० १. अच्छी विधि। २. सुन्दर ढग या युक्ति।

सुविनय—वि०[स० ब० स०]=सुविनीत।

सुविनीत—वि०[स० प्रा० स०] [स्त्री० सुविनीता]१ अतिशय नम्र या विनीत। २. (पशु) जो अच्छी तरह सिखाकर अपने अनुकूल कर लिया गया हो।

सुविनेय—वि०[स० सु-वि√नी (ढोना)+यत्] जो सहज मे शिक्षा आदि के द्वारा विनीत और अनुकूल किया जा सकता हो।

सु-विपिन—वि०[स० ब० स०] जहाँ या जिसमे बहुत-से जगल हो। जगलो से भरा हुआ।

सुविशाल—वि०[स० प्रा० स०] बहुत अधिक विशाल या बडा।

सुविशाला—स्त्री०[स०] कार्तिकेय की एक मातृका।

सुविशुद्ध—पु०[स० प्रा० स०] एक लोक। (बौद्ध)

सुविषाण—वि०[स० ब० स०] बड़े दाँतो वाला (हाथी)।

सुविष्टंभी (भिन्)—पु०[स०] शिव का एक नाम।
वि० अच्छी तरह पालन-पोषण करने या सँभालनेवाला।

सुविस्तर—वि०[स० प्रा० स०] १ बहुत अधिक विस्तारवाला। खूब लंबा-चौडा। २ विस्तारपूर्वक कहा हुआ।
पु०१ बहुत अधिक फैलाव या विस्तार। २ प्रचुरता। बहुतायत।

सुवीथी—स्त्री०[स० प्रा० स०] प्राचीन भारत मे, वह दालान या पाटनदार रास्ता जो चतुश्शाल के कमरो के आगे होता था।

सुवीर—पु०[स० प्रा० स०]१ बहुत बडा वीर या योद्धा। २. शिव। ३ कार्तिकेय। ४ एकवीर नामक कन्द। छाछ की बनाई हुई खडी।

सुवीरक—पु०[स०]१ बेर नाम का पेड और फल। २ एक वीर नामक वृक्ष। ३. सुरमा।

सुवीरज—पु०[स० सुवीर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] सुरमा। सौवीराजन।

सुवीर्य—वि० [स० ब० स०] बहुत बडा वीर्यशाली या शक्तिमान्।
पु० बेर का पेड और फल।

सुवीर्या—स्त्री० [स० सुवीर्य—टाप्]१ वनकपास। २ बडी शतावर। ३ नाडी हीग। डिकामाली।

सुवृत्त—वि०[स० ब० स०] १ सच्चरित्र। २ गुणवान्। ३ सज्जन और साधु। ४. भली-भाँति छन्दो या वृत्तो मे बाँधा हुआ (काव्य)।
पु० ओल। जमीकन्द। सूरन।

सुवृत्ता—स्त्री०[स० प्रा० स०]१ एक प्रकार का छन्द या वृत्त। २ किशमिश। ३ सेवती।

सुवृत्ति—स्त्री०[स० प्रा० स०]१ उत्तम वृत्ति या जीविका। २ सदाचार।
वि०१. जिसकी जीविका या वृत्ति उत्तम हो। २. सदाचारी।

सुवृद्ध—पु०[स० प्रा० स०] दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम।
वि०१ बहुत वृद्ध। २ बहुत पुराना।

सुवेग—वि०[स० ब० स०] तेज गतिवाला। वेगवान्।

सुवेणा—स्त्री०[स० ब० स०] एक प्राचीन नदी।

सुवेद—वि०[स० प्रा० स०]१ वेदो का ज्ञाता। २ बहुत बडा ज्ञाता।

सुवेल—वि०[स० ब० स०]१. बहुत झुका हुआ। प्रणत।
पु० लका मे समुद्र-तट का एक पर्वत जहाँ रामचन्द्र सेना सहित ठहरे थे।

सुवेश—वि० [स० ब० स०] [भाव० सुवेशता]१ सुन्दर वेश-भूषावाला। २ सुन्दर।
पु०१. सुन्दर वेष-भूषा। २ सफेद ईख।

सुवेशित—भू० कृ०[स० सुवेश+इतच्]जिसने सुन्दर वेश धारण किया हो।

सुवेशी (शिन्)—वि०[स० सुवेश+इनि] जिसने सुन्दर वेश धारण किया हो। अच्छे भेषवाला।

सुवेष†—वि०=सुवेश।

सुवेषी†—वि०=सुवेशी।

सुवेस†—वि०=सुवेश।

सुवेसल†—वि०[स० सुवेश+हिं० ल (प्रत्य०)] सुन्दर। मनोहर।

सुवैणा—पु०[स० सु+हिं० वैन (वचन)] १ सुन्दर वचन। २. मित्रता। दोस्ती। (डि०)

सुवैया†—वि०[हिं० सोना+ऐया (प्रत्य०)] सोनेवाला।

सुवो†—पु०=सुवा (तोता)।
†स्त्री०=सुवा।

सुव्यवस्था—स्त्री०[स० प्रा० स०] [वि० सुव्यवस्थित] अच्छी और सुन्दर व्यवस्था। सुप्रबध।

सुव्यवस्थित—वि०[स० प्रा० स०] जिसकी या जिसमे अच्छी या सुन्दर व्यवस्था हो।

सुव्रत—वि०[स० ब० स०]१ दृढता से अपने व्रत का पालन करनेवाला। २ धर्मनिष्ठ। ३ नम्र। विनीत।
पु० [स०] १ स्कद का एक अनुचर। २ एक प्रजापति। ३ रौच्य मनु का एक पुत्र। ४. जैनो मे वर्तमान अवसर्पिणी के २९ वे अर्हत्। मुनि सुव्रत। ५ भावी उत्सर्पिणी के ११ वें अर्हत। ६ ब्रह्मचारी।

सुव्रता—स्त्री०[स० ब० स०]१ सहज मे दूही जानेवाली गौ। २ गुणवती और पतिव्रता स्त्री। ३ दक्ष की एक पुत्री। ४ वर्तमान कल्प के १५ वे अर्हत् की माता का नाम। ५ गन्ध पलाशी।

सुशंस—वि०[स० प्रा० स०]१ अच्छी तरह से कहा जानेवाला। २. प्रसिद्ध। मशहूर। ३ प्रशसनीय।

सु-शक—वि० [स०] (काम) जो आसानी से किया जा सके। सहज। सुगम।

सुशक्त—वि० [स० प्रा० स०] अच्छी शक्तिवाला। शक्तिशाली।

सुशाख्य—पु०[सं० प्रा० स०] शिव। महादेव।

सुशब्द—वि०[स० ब० स०] अच्छा शब्द या ध्वनि करनेवाला। जिसकी आवाज अच्छी हो।
पु० अच्छा शब्द।

सुशरीर—वि०[स० ब० स०] सुन्दर शरीरवाला।
पु० सुन्दर शरीर।

सुशर्मा (र्मन्)—पु०[स०]१ निन्दनीय अथवा निन्दित ब्राह्मण। (व्यग्य) २ मैथुन अभिलाषी व्यक्ति।

सुशांत—वि०[स० प्रा० स०] [भाव० सुशाति] अत्यन्त शात।

सुशाति—पु०[स० प्रा० स०]१. पूर्ण शाति। २. तीसरे मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ३ अजमीढ का एक पुत्र।

सुशाक—पु०[स० प्रा० स०] १ अदरक। आर्द्रक। २. चौलाई का साग। ३ चेंच का साग। ४. भिडी।

सुशारद—पु०[स०] शालंकायन गोत्र के एक वैदिक आचार्य।

सुशासित—वि०[स० प्रा० स०] (प्रदेश) जिसकी शासन-व्यवस्था अच्छी। हो।

सुशिक्षित—वि०[स० प्रा० स०] [स्त्री० सुशिक्षिता] (व्यक्ति, सप्रदाय या समाज) जिसने अच्छी शिक्षा प्राप्त की हो।

सुशिख—पु०[स० ब० स०] अग्नि का एक नाम।

सुशिखा—स्त्री०[स० सुशिख—टाप्]१. मोर की चोटी। २. मुरगे की कलगी या चोटी।

सुशिर (शिरस्)—वि० [स० ब० स०] सुन्दर शिरवाला। जिसका सिर सुन्दर हो।
†पु०=सुषिर।

सुशीत—पु०[सं० प्रा० स०]१ पीला चदन। हरिचदन। २. पाकर। ३. जल-बेत।
वि० बहुत अधिक शीतल या ठढा।

सुशीतल—पु०[स० प्रा० स०]१. गधतृण। २ सफेद चदन। ३ नागदौन।
वि० बहुत अधिक शीतल या ठढा।

सुशीम—वि०, पु०=सुषीम।

सुशील—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुशीला, भाव० सुशीलता] १ जिसका शील (प्रवृत्ति तथा स्वभाव) अच्छा हो। शीलवान्। २. सज्जन तथा सदाचारी। ३. सरल। सीधा।

सुशीलता—स्त्री०[स० सुशील+तल्—टाप्] सुशील होने की अवस्था, गुण या भाव। सुशीलत्व।

सुशीला—स्त्री० [स० ब० स०] १. श्री कृष्ण की एक पत्नी। २ राधा की एक सखी। ३ यम की पत्नी। ४ सुदामा की पत्नी।

सुशीली (लिन्)—वि०[स०]=सुशील।

सुशृंग—वि०[स० ब० स०] सुन्दर शृग से युक्त। सुन्दर सीगोंवाला।
पु० शृगी ऋषि।

सुशोण—वि० [स० प्रा० स०] गहरा लाल रग।

सुशोभन—वि० [स० प्रा० स०]१ बहुत अधिक शोभावाला। २ फबनेवाली (चीज)। ३ प्रियदर्शन। सुन्दर।

सुशोभित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यन्त शोभायमान्।

सुश्रव—वि०[स० प्रा० स०] जो सहज में और अच्छी तरह सुना जा सके।

सुश्रवा—वि०[स०]१ उत्तम हवि से युक्त। २. कीर्तिमान्। यशस्वी। ३ प्रसिद्ध। मशहूर।
पु० एक प्रजापति का नाम।

सुश्राव्य—वि०[स० प्रा० स०]१ जो सुनने मे अच्छा जान पडे। २. जो अच्छी तरह और सहज मे सुनाई पडे।

सुश्री—वि० [स० ब० स०] १ बहुत सुन्दर। शोभायुक्त। २. बहुत बडा धनी।
स्त्री० आज-कल स्त्रियो विशेषत अविवाहित स्त्रियो के नाम के पहले लगनेवाला एक आदरसूचक और शिष्टतापूर्ण सबोधन-पद। जैसे—सुश्री पद्मा देवी।

सुश्रीक—पु०[स० ब० स० कप्] सलई। शल्लकी।
वि०=सुश्री।

सुश्रुत—भू० कृ०[स० प्रा० स०]१. अच्छी तरह सुना हुआ। २. प्रसिद्ध। मशहूर।
पु० १ श्राद्ध के समय ब्राह्मण को भोजन करा चुकने पर उनसे यह पूछना कि आप भली भाँति तृप्त हो गये न? २ प्रसिद्ध आयुर्वेदीय ग्रथ 'सुश्रुत-सहिता' के रचयिता।

सुश्रुत-सहिता—स्त्री० [स० मध्य० स०] आचार्य सुश्रुत का बनाया आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध और सर्वमान्य ग्रन्थ।

सुश्रूखा*—स्त्री०=शुश्रूषा।

सुश्रूषा—स्त्री०=शुश्रूषा।

सुश्रोणा—स्त्री०[सं० ब० स०] एक पौराणिक नदी।

सुश्रोणि—स्त्री०[स० ब० स०] एक देवी का नाम।
वि० जिसके नितब सुन्दर हों।

सुश्लिष्ट—वि०[स० सु√श्लिष् (सयोग)+क्त] [भाव० सुश्लिष्टता] १ अच्छी तरह से मिला हुआ। व्यवस्थित। २. फबनेवाला। उपयुक्त।

सुश्लोक—वि०[स० ब० स]१ पुण्यात्मा। पुण्यकीर्ति। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

सुष*—पु०=सुख।

सुषम—वि०[स० पं० त०] १ बहुत सुन्दर। सुषमा-पूर्ण। २ तुल्य। समान।

सुषमना*—स्त्री०=सुषुम्ना।

सुषमनि—स्त्री०=सुषुम्ना।
पु०=सुखमणि (सिक्खो का धर्म-ग्रन्थ)।

सुषम-प्रायमा—स्त्री०[स०] जैन मतानुसार काल-चक्र के दो आरे।

सुषमा—स्त्री०[स० प्रा० स०]१. परम शोभा। अत्यन्त सुन्दरता। २ विशेषत. नैसर्गिक शोभा। प्राकृतिक सौंदर्य। ३. एक प्रकार का छन्द या वृत्त। ४. एक प्रकार का पौधा। ५ जैनो के अनुसार काल का एक नाम।

सुषमित—भू० कृ०[स० सुषमा+इतच्] सुषमा से युक्त।

सुषाढ़—पु०[स० ब० स०] शिव का एक नाम।

सुषाना*—अ०=सुखाना।

सुषारा*—वि०=सुखारा।

सुषि—स्त्री० [स० सु√ सो (विनाश करना)+कि बाहु० √शुष् (सोखना)+इनिश=पृषो० स०] [भाव० सुषित्व]१. छिद्र। छेद। सूराख। २ शरीर अथवा किसी तल परके वे छोटे-छोटे छेद जिसमे से होकर तरल पदार्थ अन्दर पहुँचते या बाहर निकलते हैं।

सुषिक—पु०[सं० सुषि+कन्] शीतलता। ठढक।
वि० ठढा। शीतल।

सुषिम—वि० पु०=सुषीम।

सुषिर—वि० [स० √शुष् (शोषण करना)+किरच् श=स पृषो०] छेदो या सूराखो से भरा हुआ।
पु०१. छेद। २ दरार। ३ फूँककर बजाया जानेवाला बाजा। ४. वायु-मडल। ५ अग्नि। ६ लकडी। ७ बांस। ८. लौग। ९. चूहा।

सुषिरच्छेद—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार की वशी।

सुषिरत्व—पु०[स० सुषिर+त्व] दे० 'छिद्रलता'।

सुषिरा—स्त्री० [स० सुषिर—टाप्] १ कलिका। विद्रुम लता। २ दरिया। नदी।

सुषीम—पु०[स० सुशीम+पृषो०]१. एक प्रकार का सांप। २. चन्द्रकान्त मणि।
वि०१ मनोहर। सुन्दर। २. ठढा। शीतल।

सुषुप्(स्)—वि० [स०] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

सुषुप्त—भू० कृ०[स० सु √स्वप्(सोना) +क्त] १. सोया हुआ, विशेषत गहरी नीद मे सोया हुआ। २ (गुण या तत्त्व) जो निष्क्रिय अवस्था में किसी चीज मे स्थित हो।

सुषुप्ति—स्त्री०[सं० सु√स्वप्(सोना)+क्तिन्]१. गहरी नीद मे सोये हुए

होने की अवस्था या भाव। २ पातजलि दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति। ३. वेदान्त के अनुसार जीव की अज्ञानावस्था।

सुषुप्सा—स्त्री०[स०√स्वप् (सोना)+सन्-सयु द्वित्व—टाप्] १ सोने की इच्छा। २. नींद मे होने की अवस्था।

सुषुम्ना—स्त्री०[स० सुषु√म्ना (अभ्यास)+क—टाप्] [वि० सौषुम्न] शरीर-शास्त्र के अनुसार एक नाडी जो नाभि से आरभ होकर मेरुदड मे से होती हुई ब्रह्मरध्र तक गई है। (स्पाइनल कार्ड)

विशेष—(क) हठयोग के अनुसार यह इडा और पिंगला के बीच मे है, और इसी के अन्तर्गत वह ब्रह्मनाडी है जिससे चलकर कुडलिनी ब्रह्मरध्र तक पहुँचती है। (ख) वैद्यक मे, यह शरीर की चौदह प्रधान नाडियो मे से एक है जिसके साथ बहुत-सी छोटी-छोटी नाड़ियाँ लिपटी हुई है।

सुषेण—पु० [स० सु√सेन+अच्, षत्व] १ विष्णु। २ दूसरे मनु का एक पुत्र। ३. परीक्षित का एक पुत्र। ४. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ५ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ६ करमर्द (वृक्ष)। ७. वेत।

सुषेणी—स्त्री०[स०] निसोथ। त्रिवृता।

सुषोपति*—स्त्री०=सुषुप्ति।

सुषोप्ति*—स्त्री०=सुषुप्ति।

सुष्ट—पु०[स० दुष्ट का अनु०] [भाव० सुष्टता] अच्छा। भला। 'दुष्ट' का विपर्याय।

सुष्ठु—अव्य० [स० सु√स्था (ठहरना)+कु] [भाव० सुष्ठुता]१ अतिशय। अत्यत। २. अच्छी तरह। भली-भाँति। ३ जैसा चाहिए, ठीक वैसा। यथा-तथ्य। ४. वास्तव मे।

†वि०=सुष्ट।

सुष्म—पु०[स० √सु (गमनादि)+मक्—सुक्—षत्व] रस्सी। रज्जु।

सुष्मना —स्त्री०=सुषुम्ना।

सुसंकट—वि०[स० प्रा० स०] १ दृढतापूर्वक वद किया हुआ। २. जिसकी व्याख्या करना कठिन हो।

पु०१ कठिन काम। २ कठिनता। दिक्कत।

सु-संग—पु०[स०+हिं० सग] अच्छा सग। सु-सगति।

सु-संगत—वि० [स० सु+सगत, प्रा० स०] उत्तम या विशिष्ट रूप से सगत। बहुत युक्ति-युक्त। बहुत उचित।

स्त्री०=सुगति।

वि० [सु+सगति] अच्छी सगतिवाला।

सु-संगति—स्त्री०[स० प्रा० स०] अच्छे लोगो से होनेवाला सग-साथ। अच्छा सग-साथ। सत्सग।

सुसंध—वि०[स० ब० स०] वचन का सच्चा। बात का पक्का।

सु-संस्कृत—वि०[स० सु -सम् √कृ (करना)+क्त सुट्]१ (व्यक्ति या समाज) जो सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत हो। २ (आचरण या व्यवहार) जो शिष्टतापूर्ण और सस्कृति के अनुरूप हो।

सुसंहत—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० सुसहति] जो अच्छी तरह या विशिष्ट रूप से सहत हो। खूब अच्छी तरह गठा हुआ।

सुस—स्त्री०=सुसा।

सुसकना†—अ०=सिसकना।

सुसकल्यो—पु० [स० शश] खरगोश। खरहा। शशा। (डिं०)

सुसका—पु० [अनु०] हुक्का। (सुनार)

सुसज्जित—भू० कृ० [स० प्रा स०] १ भली-भाँति सजा या सजाया हुआ। भली-भाँति शृगार किया हुआ। शोभायमान्। २. तैयार। लैस।

सुसताना—अ०[फा० सुस्त +आना (प्रत्य०)] सुस्ताना।

सुसती†—स्त्री०=सुस्ती।

सुसत्या—स्त्री० [स० ब० स०] जनक की एक पत्नी। (पुराण)

सुसत्त्व—वि० [स० ब० स०]१ दृढ। पक्का। २. वीर। बहादुर।

सुसना—पु० [?] एक प्रकार का साग।

सु-सबद†—पु० [स० सुशब्द] कीर्ति। यश। (डिं०)

सु-सभेय—वि० [स० सुसभा+ढक्—एय]जो सभ्यो के समाज या सभा मे अच्छी तरह अपना कौशल या चातुर्य दिखा सकता हो।

सुसमन*—स्त्री०=सुषुम्ना (नाडी)।

सुसमय—पु० [स० प्रा० स०]१ सुन्दर समय। अच्छा वक्त। २. वे दिन जिनमे अकाल न हो। सुकाल। सुभिक्ष। ३ ऐसा समय जब सब प्रकार की उन्नति और कल्याण होता हो।

सुसमा†—स्त्री०[स० ऊष्मा] अग्नि। (डिं०)

†स्त्री०=सुषमा।

†पु०=सुसमय।

सु-समुझि*—वि० [स० सु+हिं० समझ] अच्छी समझवाला। समझदार।

सुसर†—पु०=ससुर।

सुसरण—पु०[स०] शिव का एक नाम।

सुसरा—पु०=ससुर। (उपेक्षासूचक)

सुसरार†—स्त्री०=ससुराल।

सुसराल†—स्त्री०=ससुराल।

सु-सरित—स्त्री०[स० सु+सरित] १. अच्छी नदी। २. नदियो में श्रेष्ठ, गगा।

सुसरी†—स्त्री०[?] अनाजों मे लगनेवाला एक प्रकार का लाल रंग का छोटा कीडा। (पश्चिम)

†स्त्री०१ =ससुरी। २. सुरसरी।

सुसह —वि०[स० प्रा० स०] जो सहज में सहन किया जा सके।

पु० शिव का एक नाम।

सुसा†—स्त्री० [स० स्वसृ] बहन। भगिनी।

†पुं०[?] एक प्रकार का पक्षी।

†पु०=शश (खरगोश)।

सुसाइटी†—स्त्री०=सोसाइटी (समाज)।

सु-साध्य—वि०[स० प्रा० स०] (कार्य) जिसका सहज मे साधन किया जा सके। जो सहज मे पूरा किया जा सके। सुख-साध्य।

सुसाना†—अ०[स० श्वसन] सिसकियाँ भरना। सिसकना।

सुसार—पु०[स० ब० स०] जिसका सार उत्तम हो। तत्त्वपूर्ण।

पु०१. अच्छा सार या तत्त्व। २ नीलम। ३ लाल खैर।

सुसारवान् (वत्)—वि० [स० सुसार+मतुप्—म व नुम्—दीर्घ] सुसार। (दे०)

पु० स्फटिक।

सु-सिकता—स्त्री० [स० प्रा० स०]१. अच्छी रेत। २ चीनी। शर्करा।

सुसिद्ध—वि० [सं० प्रा० स०, ब० स०] [भाव० सुसिद्धि]१ अच्छी

तरह पका या पकाया हुआ (खाद्य पदार्थ)। २ (व्यक्ति) जिसे अच्छी सिद्धि प्राप्त हो।

सुसिद्धि—स्त्री०[स० प्रा० स०] साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे एक व्यक्ति के प्रयत्न करने पर दूसरे व्यक्ति को उसके फल प्राप्त करने का उल्लेख होता है।

सुसीतलताई*—स्त्री०=सुशीतलता।

सुसीता—स्त्री० [स० प्रा० स०] सेवती। शतपत्री।

सुसीम—वि०[स० सुषिम] शीतल। ठढा। (डि०)

सुसुकना*—अ०=सिसकना।

सुसुंडी†—स्त्री०=सुसरी (कीडा)।

सुसुपि*—स्त्री०=सुषुप्ति।

सुसुम*—वि०[स० सुषुम] सुषुमापूर्ण। सुन्दर।

†वि०=सूक्ष्म।

सुसूक्ष्म—वि०[स० प्रा० स०] अत्यन्त सूक्ष्म। बहुत अधिक सूक्ष्म। बहुत ही छोटा।

†पु० परमाणु।

सुसेन*—पु०=सुषेण।

सुसेव्य—वि०[स० प्रा० स०] १ जिसकी अच्छी तरह सेवा की जानी चाहिए। २ जिसका अनुसरण सहज मे किया जा सके।

सुसैंधवी—स्त्री०[स० प्रा० स०] सिंध देश की अच्छी घोडी।

सुसो*—पु०[स० शश] खरगोश। खरहा। (डि०)

सुसौभग—पु०[स० प्रा० स०] पति-पत्नी सबधी सुख। दाम्पत्य सुख।

सुस्त—वि०[फा०] [भाव० सुस्ती]१ (जीव) जो भली-भाँति और मन लगाकर काम न करता हो। 'उद्योगी' का विपर्याय। २ फलत स्वभाव से अकर्मण्य तथा मद गति से काम करनेवाला। ३ चिता, रोग आदि के कारण अथवा निराश होने या उदास रहने के कारण अस्वस्थ या शिथिल। ४ अस्वस्थ। बीमार। (लश०) ५ जिसके शरीर मे बल न हो। दुर्बल। कमजोर। ६ चिता, परिश्रम, रोग आदि के कारण जो मद या शिथिल हो गया हो। ७ जिसका उत्साह या तेज मद पड गया हो। हतप्रभ। जैसे—मेरे रुपये माँगने पर वह सुस्त हो गया। ८ जिसकी तीव्रता या प्रबलता कम हो गई हो। जिसकी गति या वेग मद हो गया हो। जैसे—यह घडी कुछ सुस्त है। ९ जिसे कोई काम करने या कोई बात समझने मे आवश्यक या उचित से अधिक समय लगता हो। जैसे—इधर की गाडियाँ भी बहुत सुस्त है।

क्रि० वि० सुस्ती से। मद गति से। जैसे—गाडी बहुत सुस्त चल रही है।

सु-स्तना—वि० स्त्री० [स० ब० स०] सुन्दर छातियो या स्तनोवाली (स्त्री)।

स्त्री० वह स्त्री जो पहले-पहल रजस्वला हुई हो।

सुस्तनी—वि० स्त्री०=सुस्तना।

सुस्त-पाँव—पु०[फा० सुस्त+हिं० पाँव] एक प्रकार का चतुष्पाद जन्तु जो प्राय वृक्षो की शाखा मे लटका रहता और बहुत कम तथा बहुत मद गति से चलता है। (स्लॉफ)

सुस्त-रीछ—पु०[फा० सुस्त+हिं० रीछ] एक प्रकार का पहाडी रीछ।

सुस्ताई†—स्त्री०=सुस्ती। उदा०—पथी कहाँ, कहाँ सुस्ताई।—जायसी।

सुस्ताना—अ०[फा० सुस्त+हिं० आना (प्रत्य०)] अधिक श्रम करने पर तथा थकावट मिटाने के उद्देश्य से थोडी देर के लिए दम लेना या विश्राम करना।

सुस्ती—स्त्री०[फा० सुस्त]१. सुस्त होने की अवस्था या भाव। शिथिलता। २ आलस्य, चिता, रोग आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह अवस्था जिसमे शरीर कुछ-कुछ शिथिल होता है तथा मन मे कुछ करने के प्रति अरुचि होती है। ३. पुस्त्व का अभाव या कमी। ४ बीमार होने की अवस्था। (लश०)

सुस्तैन†—पु०=स्वस्त्ययन।

सुस्थ—वि०[स० सु√स्था (ठहरना)+क]१ ठीक तरह से स्थित होना। २. भला। चगा। नीरोग। स्वस्थ। तदुरुस्त। ३ सब प्रकार से सुखी। ४. मनोहर। सुन्दर।

सुस्थ-चित्त—वि०[स० ब० स०] जिसका चित्त सुखी या प्रसन्न हो।

सुस्थता—स्त्री०[स० सुस्थ+तल्—टाप्] सुस्थ होने की अवस्था या भाव।

सुस्थत्व—पु०=सुस्थता।

सुस्थल—पु०[स० प्रा० स०]१ अच्छा स्थान। २ एक प्राचीन जनपद।

सुस्थावती—स्त्री० [स० सुस्था+मतुप्—म-व —ङीप्] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

सुस्थित—वि०[स० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्थिता, भाव० सुस्थिति] १ उत्तम रूप मे या भली-भाँति स्थित। २ दृढ। पक्का। मजबूत। ३ स्वस्थ। तन्दुरुस्त। ४. भाग्यवान्।

पु०१ ऐसा मकान जिसके चारो ओर छज्जे हो। २ एक प्रकार का रोग जिसमे घोड़े अपने को निहारते और हिनहिनाते रहते हैं।

सुस्थितत्व—पु०[स० सुस्थित+त्व] सुस्थित होने की अवस्था या भाव।

सुस्थिति—स्त्री०[स० प्रा० स०]१ अच्छी या उत्तम स्थिति। सुखपूर्ण अवस्था। २ कल्याण। मगल। ३ प्रसन्नता। हर्ष। ४ अच्छा स्वास्थ्य।

सुस्थिर—वि०[स० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्थिरा]१ जो अच्छी तरह स्थिर या शान्त हो। २ जो अच्छी तरह या दृढ़तापूर्वक जमाया, बैठाया या लगाया गया हो।

सुस्थिरा—स्त्री०[स० प्रा० स०] रक्तवाहिनी। नस। लाल रग।

सुस्ना—स्त्री०[स० ब० स०] खेसारी। त्रिपुट।

सुस्नात—वि०[स० प्रा० स०] १ जिसने यज्ञ के उपरान्त स्नान किया हो। २ जो नहा-धोकर पवित्र हो गया हो।

सुस्मित—पु०[स० ष० त०] [स्त्री० सुस्मिता] मधुर हँसी हँसनेवाला।

सुस्वध—पु०[स० ब० स०] पितरो की एक श्रेणी या वर्ग।

सुस्वधा—स्त्री०[स०]१ कल्याण। मगल। २ सौभाग्य।

सुस्वन—वि०[स० ब० स०]१ उत्तम ध्वनि या अच्छा शब्द करनेवाला। २ बहुत ऊँचा। ३ मनोहर। सुन्दर।

पु० शख।

सुस्वप्न—पु०[स० प्रा० स०]१. शुभ स्वप्न। अच्छा सपना। २ शिव का एक नाम।

सुस्वर—वि०[स० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्वरा] [भाव० सुस्वरता] १. मधुर। २ सुरीला। ३. उच्च या घोर।

पु०१. मधुर, सुरीला या उच्च स्वर। २ शब्द। ३ वह कर्म जिससे मनुष्य का स्वर मधुर, सुरीला या उच्च होता है। (जैन)
सुस्वरता—स्त्री०[स०] सुस्वर होने की अवस्था, गुण या भाव।
सुस्वादु—वि०[न० ब० स०] अत्यन्त स्वादयुक्त। बहुत स्वादिष्ट। बहुत जायकेदार।
सुस्वाप—पु०[सं० प्रा० स०] प्रगाढ निद्रा। गहरी नीद।
सुहँग*—वि०=सुहँगा।
सुहँगम†—वि०[स० सुगम] सहज। आसान।
सुहँगा†—वि०[हिं० महँगा का अनु०] अपेक्षया कम मूल्य का या कम मूल्य पर मिलनेवाला। सस्ता। 'महँगा' का विपर्याय।
सुहटा*—वि०[हिं० सुहावना] [स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुन्दर।
सुहड—पु०[स० सुभट] सुभट। योद्धा। शूर-वीर। (डिं०)
सुहनी†—स्त्री०=सोहनी।
सुहवत†—स्त्री०=सोहवत।
सुहराना†—स०=सहलाना।
सुहराव—पु०[फा०] ईरान के सुप्रसिद्ध वीर रुस्तम का बेटा जो उसी के हाथो मारा गया था।
सुहल†—पु०=सुहेल (तारा)।
सुहव†—पु०=सूहा (राग)।
सुहवि (विस्)—पु०[स०] एक अगिरस का नाम।
सुहवी†—स्त्री०=सूहा (राग)।
सुहस्त—वि०[स० ब० स०]१ सुन्दर हाथोवाला। २ जिसके हाथ किसी काम मे मँज गये हो, फलत जो कोई काम सहज मे तथा बढिया रूप मे करता हो।
सुहा—पु०[हिं० सुआ] [स्त्री० सुही] लाल नामक पक्षी।
†पु०=सूहा (राग)।
सुहाग—पु० [स० सौभाग्य] १ विवाहिता स्त्री की वह स्थिति जिसमे उसका पति जीवित और वर्तमान हो। अहिवात। सौभाग्य।
मुहा०—सुहाग भरना=स्त्री की माँग मे सिंदूर भरना। **सुहाग मनाना**=स्त्री का सदा सुहाग या सौभाग्य बना रहने की कामना करना। पति-सुख के अखड रहने के लिए कामना करना।
२ वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३ विवाह के समय कन्या पक्ष मे गाये जानेवाले मागलिक गीत, जिनमे कन्या के सौभाग्यवती बने रहने की कामना होती है।
क्रि० प्र०—गाना।
पु०[?] मँझोले आकार का एक प्रकार का सदाबहार पेड जिसके बीजों से जलाने के लिए और औषध के काम मे लाने के लिए तेल निकाला जाता है।
†पु०=सुहागा।
सुहाग-घर—पु०=सुहाग-मदिर।
सुहागन—वि० स्त्री०=सुहागिन।
सुहाग-मंदिर—पु०[स०] १ राजमहल का वह विभाग जिसमे राजा अपनी रानियो के साथ विहार करते थे। २ वह कोठरी या कमरा जिसमे वर और वधू सोते हो।
सुहागा—पु०[स० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम पानी वाले सोतो मे निकलता है।
†पु०[?] खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेंगा।
सुहागिन—वि० स्त्री०[हिं० सुहाग+इन (प्रत्य०)] सुहाग अर्थात् सौभाग्य प्राप्ता (स्त्री)। सधवा।
सुहागिनी†—स्त्री०=सुहागिन।
सुहागिल*—स्त्री०=सुहागिन।
सुहाता—वि०[हिं० सहना] जो सहा जा सके। सहने योग्य। सह्य।
†वि०=सुहावना। जैसे—उसे मेरी कोई बात नहीं सुहाती है।
सुहान†—पु०=सोहान।
सुहाना—अ०[स० शोभन]१ देखने मे सुन्दर प्रतीत होना। २ भला लगना। सुखद होना। ३ सत्य होना।
सुहामण†—वि०=सुहावना।
सुहार†—पु०=सुहाल (पकवान)। उदा०—हारके सरोज सूकि होत है सुहार से।—सेनापति।
सुहारी†—स्त्री०[स० सु+आहार] पूरी। सादी।
सुहाल—पु० [स० सु+आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान जो मैदे का बनता है और जिसका आकार तिकोना तथा परतदार होता है।
सुहाली†—स्त्री०=सुहारी।
सुहाव*—वि०[हिं० सुहाना] सुहावना। सुन्दर।
पु०[स० सु+हाव] सुन्दर हाव-भाव।
सुहावता†—वि०[हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावती]१ सुहानेवाला। देखने मे अच्छा लगनेवाला। सुहावना।
सुहावन†—वि०=सुहावना।
सुहावना—वि०[हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावनी] जो सुन्दर भी हो और सुखद भी। जैसे—सुहावनी बात, सुहावनी रात।
†अ०=सुहाना।
सुहावनापन—पु०[हिं० सुहावना+पन (प्रत्य०)] 'सुहावना' होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। मनोहरता।
सुहावला*—वि०=सुहावना।
सुहास—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुहासा] सुन्दर हँसी हँसनेवाला।
सुहासिनी—वि० स्त्री [स०] हिं० 'सुहासी' का स्त्री०।
सुहासी (सिन्)—वि० [स० सुहास+इनि—दीर्घ, नलोप] [स्त्री० सुहासिनी] सुन्दर हँसी हँसनेवाला।
सुहिणा*—पु०=स्वप्न। (राज०)
सुहित—वि०[स० ब० स०]१ बहुत अधिक हित अर्थात् उपकार करने या लाभ पहुँचानेवाला। २. (कार्य) जो पूरा किया गया हो। सम्पादित। ३ तृप्त। सन्तुष्ट। ४ उपयुक्त। ठीक।
सुहिता—स्त्री०[सं० ब० स०]१ अग्नि की एक जिह्वा का नाम। २ रुद्रजटा।
सुहिया†—स्त्री०=सुहा (राग)।
सुहुत†—वि०=सुस्त।
सुहृत्—वि०, पु०=सुहृद।
सुहृत्ता—स्त्री०=सुहृदता।
सुहृद—वि०[स०] [भाव० सुहृदता] अच्छे हृदयवाला। प्यारा।

पु०[सं०]१ शिव का एक नाम। २. मित्र।

सुहृदय—वि०[सं० ब० स०] [भाव० सुहृदयता]१. अच्छे हृदयवाला। २ सबसे प्यार करनेवाला। ३ सहृदय।

सुहेल—पु०[अ०] एक कल्पित तारा, जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह यमन देश में दिखलाई देता है और इसके उदित होने पर चमडे मे सुगध आ जाती है, तथा सब जीव मर जाते है। (हिंदी के कवियों ने इसका निकलना शुभ माना है।)

सुहेलरा*—वि०=सुहेला।

सुहेला—वि० [सं० शुभ?] १. सुहावना। सुन्दर। २. सुखदायक। सुखद।

पु०१. विवाह के अवसर पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। २. प्रशसा, स्तुति।

सुहेस†—वि० [सं० शुभ] अच्छा। सुन्दर। भला।

सुहोता—पु०[सं० सुहेत] वह जो उत्तम रूप से हवन करता हो। अच्छा होता।

सुहोत्र—पु०[सं० प्रा० स०]१. एक वैदिक ऋषि। २. एक बार्हस्पत्य का नाम। ३. सहदेव का एक पुत्र। ४. सुधन्वा का एक पुत्र। ५ वितथ का एक पुत्र।

सुह्म—पु०[सं०]१. एक प्राचीन प्रदेश जो गौड देश के पश्चिम मे था। ताम्रलिप्ति(आधुनिक तामलूक) यही का राजनगर था। २. यवनो की एक जाति।

सुह्मक—पु०=सुह्म।

सूँ*—अव्य० [सं० सह] ब्रजभाषा में करण और अपादान का चिह्न। सों। से।

सूँइस†—स्त्री०=सूँस (जल-जन्तु)।

सूँघना—स० [सं० सिंघण]१ किसी पदार्थ की गध जानने के उद्देश्य से उसे नाक के पास ले जाकर साँस खीचना। जैसे—फूल सूँघना। २. कोई विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उक्त क्रिया करना। जैसे—रीछ ने उस मृतप्राय व्यक्ति को सूँघा।

मुहा०—जमीन सूंघना=बैठे बैठे इस प्रकार ऊँघना कि सिर बार बार जमीन की ओर झुकता रहे। (व्यग्य) **(किसी छोटे का) सिर सूँघना**=अपनी मगल-कामना प्रकट करने के लिए छोटों का मस्तक सूंघना या सूंघने का नाट्य करना। **(किसी को) साँप सूंघना**=साँप का काटना जिससे आदमी मर जाता है। (व्यग्य) जैसे—बोलते क्यों नही क्या साँप सूंघ गया है?

३ बहुत अल्प आहार करना। बहुत कम या नाम-मात्र का भोजन करना। (व्यग्य) जैसे—आपने भोजन क्या किया है, सिर्फ सूंघकर छोड दिया है।

सूंघा—पु० [हिं० सूँघना]१ वह जो केवल सूंघकर यह जान लेता हो कि अमुक पदार्थ या व्यक्ति किधर गया है; अथवा किसी स्थान पर अमुक पदार्थ है या नही?

विशेष—प्राचीन तथा मध्य युग मे कुछ लोग ऐसे होते थे जो केवल सूंघकर यह बतला देते थे कि चीजे चुराकर चोर कहाँ या किधर गये है, अथवा अमुक जमीन के नीचे पानी या खजाना है कि नही।

२ सूँघकर शिकार तक पहुँचनेवाला कुत्ता। ३. जासूस। भेदिया।

सूँठ†—स्त्री०=सोंठ।

सूँड़—पु०[सं० शुण्ड]१. हाथी की नाक जो बहुत लम्बी होती और नीचे की ओर प्राय. जमीन तक लटकती रहती है। २ जन्तुओं के मुँह के आगे का निकला हुआ उक्त प्रकार का छोटा अग।

सूँड़डंड—पु० [सं० शुण्ड-दंड] हाथी। (डिं०)

सूँड़हल—वि०[सं० शुण्डाल] सूँडवाला।

पु० हाथी।

सूँडा—पु०[हिं० सूंड] बड़ी शूड।

सूँड़ाल—वि०[सं० शुडाल] सूँडवाला।

पु० हाथी।

सूँडी—स्त्री०[सं० शुण्डी] पौधो, फलों आदि मे लगनेवाला एक प्रकार का छोटा लबोतरा कीडा।

सूँबी—स्त्री० [सं० शोधन] सज्जी मिट्टी।

सूँस—स्त्री० [सं० शिशुमार] प्राय. आठ-दस हाथ लबा एक प्रसिद्ध बडा जल-जन्तु, जिसके जबड़े मे तीस दाँत होते है।

सूँह†—अव्य०=सौंहें (सामने)।

सू—वि० [सं० √पू(उत्पन्न करना) +क्विप्] उत्पन्न करनेवाला (समासात मे)। जैसे—रलसू।

स्त्री०[फा०] ओर। दिशा।

सूअर—पु०[सं० शूकर, सूकर] [स्त्री० सूअरी]१ एक प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो मुख्यत: दो प्रकार का होता है। (क) वन्य या जगली और (ख) ग्राम्य या पालतू।

विशेष—ग्राम्य या पालतू सूअर छोटा और डरपोक होता है, पर जगली सूअर बहुत बडा शक्तिशाली और परम हिंसक प्रवृत्ति का होता है।

२ एक गाली।

पद—सूअर कहीं का=नालायक।

सूअर-दाढ़—स्त्री०[सं० शूक-दष्ट्र] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमे मसूडों मे अकुर-सा निकलने लगता है।

सूअर-बियान†—पु० [हिं० सूअर+बिआना=जनना] मादा सूअर की तरह बहुत अधिक सतान उत्पन्न करना।

वि० स्त्री० मादा सूअर की तरह बहुत अधिक संतान प्रसव करनेवाली (भार्या या स्त्री)।

सूअरमुखी—स्त्री० [हिं० सूअर+मुखी] एक प्रकार की बडी ज्वार।

सूआ†—पु० [सं० शुक, प्रा० सुअ] सुग्गा। तोता। शुक। कीट।

पु०[हिं० सूई] १. बडी, मोटी और लबी सूई जिससे टाट आदि सीते है। २ बडी नहर की छोटी उपशाखा। (पश्चिम) ३ सीक। (लश०)

सूई—स्त्री०[सं० सूची]१ लोहे का वह नुकीला, पतला और लबा उपकरण जिसके छेद मे धागा पिरोकर कपडे आदि सीते है।

मुहा०—सूई का फावडा या भाला बनाना=जरा सी बात को बहुत अधिक बढाना। व्यर्थ विस्तार करना। **आँखो की सूइयाँ निकालना**=किसी विकट काम के प्राय समाप्त हो चुकने पर उसका शेष थोडा-सा सुगम अश पूरा करके उसका श्रेय पाने का प्रयत्न करना।

२.किसी विशेष परिणाम, अक, दिशा आदि का सूचक तार या काँटा। जैसे—घडी की सूई। ३. पौधे का छोटा पतला अकुर। ४. चिकित्सा

क्षेत्र मे नली के आकार का एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण, जिसकी सहायता से कुछ तरल दवाएँ शरीर के रगो या पट्ठो मे पहुँचाई जाती है। पिचकारी। शृगक। (सीरिंज) ५ उक्त उपकरण से शरीर के रगो या पट्ठों मे तरल औषध आदि पहुँचाने की क्रिया। (इजेक्शन)

मुहा०—सूई लगाना=उक्त नली के द्वारा शरीर के अदर दवा पहुँचाना। **सूई लेना**=रोगी का उक्त उपकरण द्वारा कोई दवा अपने शरीर मे प्रविष्ट कराना

सूईकारी—स्त्री०[हिं० सूई+फा० कारी(किया हुआ काम)]१ कपडे पर सूई और डोरे की सहायता से (तीलीकारी से भिन्न) बनाये हुए वेल, बूटे आदि। सूची-शिल्प। (नीडल वर्क, स्टिच-क्रैफ्ट)२ चित्र-कला मे, उक्त आकार-प्रकार का अकन।

सूई-डोरा—पु०[हिं० सूई+डोरा] मालखभ की एक कसरत।

सूक—पु० [स० √ सू (प्रेरणा देना) +क्विप्—कन्]१ वाण। २ वायु। हवा। ३. कमल।

†पु०१ =शुक्र। २ =शुक।

सूकना*—अ०=सूखना।

सूकर—पु० [स० सू√कृ (करना)+अच्] [स्त्री० सूकरी]१ सूअर। शूकर। २ एक प्रकार का हिरन। ३. कुम्हार। ३ सफेद धान। ५ पुराणानुसार एक नरक का नाम।

विशेष—'सूकर' के यौ० के लिए देखो 'शूकर' के यौ०।

सूकर-खेत†—पु०=शूकर-क्षेत्र।

सूकरी—स्त्री० [स० शूकर—ङीप्] १. मादा सूअर। सूअरी। शूकरी। २ वराहक्राता। ३. वाराहीकद। ४ वाराही देवी। ५ एक प्रकार की चिडिया।

सूकरेष्ट—पु०[स० प० त०]१ कसेरु। २ एक प्रकार का पक्षी।

सूका—पु०[स० सपादक=चतुर्थांश सहित] [स्त्री० सूकी] चार आने (अर्थात् २५ नये पैसे) के मूल्य का सिक्का। चवन्नी।

†वि०=सूखा।

†पु०[?] प्रभात।

मुहा०—सूका उगना=सवेरा होना ।

सूकी†—स्त्री० [हिं० सूका=चवन्नी?] रिश्वत। घूस।

†स्त्री०=सूका (चवन्नी)।

सूक्त—वि०[स० सु√ वच् (कहना)+क्त] उत्तम रूप से या भली भाँति कहा हुआ।

पु०१ उत्तम रूप से या भली-भाँति कही हुई वात। अच्छी उक्ति। सूक्ति। २ ऋचाओ या वेद-मत्रो का विशिष्ट वर्ग या विभाग। जैसे—देवी-सूक्त, श्रीसूक्त आदि।

सूक्तचारी (रिन्)—वि०[स० सूक्त√चर् (प्राप्तादि)+णिनि] उत्तम वाक्य या परामर्श माननेवाला।

सूक्तदर्शी (शिन्)—पु० [स० सूक्त√दृश् (देखना)+णिनि] वह ऋषि जिसने वेदमत्रो का अर्थ किया हो। मत्रद्रष्टा।

सूक्तद्रष्टा—पु० [स० प० त०] दे० 'सूक्त-दर्शी'।

सूक्ता—स्त्री० [स० सूक्त—टाप्] मैना। सारिका।

सूक्ति—स्त्री० [स० प्रा० स०] अच्छे और सुन्दर ढग से कही हुई कोई वढिया वात। अच्छी उक्ति।

सूक्तिक—पु०[स० सूक्ति+कन्] एक प्रकार की झाँझ।

सूक्षम†—वि०, पु०=सूक्ष्म।

सूक्ष्म—वि०[स० √सूक् (चुगुली करना)+स्मन्—मन्-सुकुवी] [स्त्री० सूक्ष्मा, भाव० सूक्ष्मता] १. वहुत छोटा, पतला या थोडा। २ जो अपनी वारीकी के कारण सव के ध्यान या समझ मे जल्दी न आ सके। वारीक। (सप्ल) ३. वहुत ही छोटे-छोटे अगो या उनकी प्रक्रिया, विचार आदि से सवंध रखनेवाला। (फाइन)

पु० १. साहित्य मे एक अलकार जिसमे किसी सूक्ष्म चेष्टा या साकेतिक व्यापार से ही अपने मन का भाव प्रकट करने का, अथवा किसी के प्रश्न या सकेत का उत्तर देने का, उल्लेख होता है। यथा—लखि गुरुजन विच कमल सौ सीस छुवायौ स्वाम। हरि सन्मुख करि आरसी हियें लगाई वाम।—विहारी। २ योग मे, तीन प्रकार की सिद्धियो मे से एक प्रकार की सिद्धि। (शेष दो प्रकार निरवद्य और सावद्य कहलाते है)३ दे० 'सूक्ष्म शरीर'। ४ परमाणु। ५ परव्रह्म। ६ शिव। ७ जैनो के अनुसार एक प्रकार का कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य सूक्ष्म जीवो की योनि मे जन्म लेता है। ८ वह ओषधि जो रोम-कूप के मार्ग से शरीर मे प्रवेश करे। जैसे—नीम, शहद, रेडी का तेल, सेंधा नमक आदि। ९ वृहत्सहिता के अनुसार एक प्राचीन देश। १०. जीरा। ११. सुपारी। १२ निर्मली। १३ रीठा। १४ छल। कपट।

सूक्ष्म कोण—पु०[स० मध्य० स०] ज्यामिति मे, वह कोण जो समकोण से छोटा हो।

सूक्ष्म-घंटिका—स्त्री०[स०] सनई। क्षुद्र शणपुष्पी।

सूक्ष्म-तंडुल—पु० [स० व० स०] १ पोस्त-दाना। खसखस। २ धूना। राल।

सूक्ष्म-तंडुला—स्त्री०[स० सूक्ष्म-तडुल—टाप्] १ पीपल। पिप्पली। २. धूना। राल।

सूक्ष्मता—स्त्री०[स० सूक्ष्म+तल्—टाप्] सूक्ष्म होने की अवस्था, गुण या भाव। वारीकी।

सूक्ष्म-तुंड—पु०[स० व० स०] एक प्रकार का कीडा। (सुश्रुत)

सूक्ष्मदर्शक यंत्र—पु० [स० मध्य० स०] सूक्ष्मवीक्षक यत्र। (दे०)

सूक्ष्म-दर्शिता—स्त्री०[स० सूक्ष्मदर्शी+तल—टाप्] सूक्ष्मदर्शी होने की अवस्था, गुण या भाव। सूक्ष्म या वारीक वात सोचने-समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी—वि० [स० सूक्ष्म√दृश् (देखना)+णिनि] १ सूक्ष्म वातें या विशेष समझनेवाला। वारीक वाते सोचने-समझनेवाला। कुशाग्र-वुद्धि। २ फलत विशेष वुद्धिमान् या समझदार।

पु० एक प्रकार का यत्र जिसके द्वारा कोई वहुत छोटी चीज या उसका कोई अश वहुत वडे आकार का दिखाई देता है। (माइक्रोस्कोप)

सूक्ष्म-दल—पु०[स० व० स०] एक प्रकार की सरसो। देवसर्षप।

सूक्ष्म-दृष्टि—स्त्री०[स० कर्म० स०] ऐसी दृष्टि जिससे वहुत ही सूक्ष्म वातें भी दिखाई दें या समझ मे आ जायँ।

वि० उक्त प्रकार की दृष्टि रखनेवाला।

सूक्ष्म-देह—पु०=सूक्ष्म-शरीर।

सूक्ष्म देही (हिन्)—वि०[स० सूक्ष्म-देह+इनि] सूक्ष्म शरीरवाला। जिसका शरीर वहुत ही सूक्ष्म या छोटा हो।

पु० परमाणु।

सूक्ष्म-नाभ—पु० [स० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

सूक्ष्म-पत्र—पु० [स० ब० स०] १ धनिया। धन्याक। २. वन-तुलसी। ३ लाल ईख। ४ काली जीरी। ५ देव-सर्षप। ६. बेर। ७. माची-पत्र। ८ कुकरौंदा। ९ कीकर। बबूल। १० धमासा। ११ उड़द। १२. अर्कपत्र।

सूक्ष्म-पत्रक—पु० [स० सूक्ष्मपत्र+कन्] १ पित्तपापड़ा। पर्पटक। २. वन-तुलसी।

सूक्ष्म पत्रा—स्त्री० [स० सूक्ष्मपत्र—टाप्] १. वन-जामुन। २ धमासा। बृहती। ४ शतमूली। ५. आकाशजिना। ६. जीरे का पौधा। ७ बला।

सूक्ष्मपत्रिका—स्त्री० [स० सूक्ष्मपत्रक—टाप्, इत्व] १ सौंफ। सत-पुष्पा। २ शतावर। ३ छोटी पत्तियोंवाली ब्राह्मी। ४ पाई नाम का साग।

सूक्ष्मपत्री—स्त्री० [स० सूक्ष्मपत्र—ङीष्] १. आकाश मांसी। २. शतावर।

सूक्ष्मपर्णा—स्त्री० [स० ब० स०] १ विधारा। २ वन-भंटा। कुटकी। ३. छोटी मरुई।

सूक्ष्म-पर्णी—स्त्री० [स० सूक्ष्मपर्ण—ङीष्] नागतुलसी। रामदूती।

सूक्ष्म-पाद—वि० [स० ब० स०] छोटे पैरोंवाला। जिसके पैर छोटे हों।

सूक्ष्म पिप्पली—स्त्री० [स० मध्य० स०] जंगली पीपल। वन-पिप्पली।

सूक्ष्म-पुष्पा—स्त्री० [स० ब० स०] मरुई। शण-पुष्पी।

सूक्ष्म-पुष्पी—स्त्री० [स० सूक्ष्म-पुष्प—ङीष्] १ शंखिनी। २. यव-तिक्ता नाम की लता।

सूक्ष्म-फल—पु० [स० ब० स०] १ लिसोड़ा। २ बेर।

सूक्ष्म-फला—स्त्री० [स० सूक्ष्म-फल—टाप्] १ भुई आँवला। भूम्यामलकी। २ मालकगनी। ३. तालीशपत्र।

सूक्ष्म-बदरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] झड़बेरी। भूबदरी।

सूक्ष्म-बीज—पु० [स० ब० स०] पोस्तदाना। खसखस।

सूक्ष्म-भूत—पु० [स० कर्म० स०] आकाश, अग्नि, जल आदि ऐसे शुद्ध भूत जिनका पंचीकरण न हुआ हो।

सूक्ष्म-मति—वि० [स० ब० स०] सूक्ष्म और तीव्र बुद्धिवाला।

सूक्ष्म-मूला—स्त्री० [स० ब० स०] १ जीवंती। २ ब्राह्मी।

सूक्ष्म-रूपी—पु० [स० सूक्ष्मरूप+इनि] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सूक्ष्म-लोभक—पु० [स०] जैन मतानुसार मुक्ति की चौदहवी अवस्थाओं में से दसवीं अवस्था।

सूक्ष्मवल्ली—स्त्री० [स० कर्म० स०] १. ताम्रवल्ली। २. जतुका। ३ करेली।

सूक्ष्म-वीक्षक—वि० [स० ष० त०] बहुत ही सूक्ष्म चीजें देखनेवाला। पु०=सूक्ष्मदर्शी (यंत्र)।

सूक्ष्म-शरीर—पु० [स० कर्म० स०] वेदांत दर्शन के अनुसार जीव या प्राणी के तीन प्रकार के शरीरों में से एक जो उसके स्थूल शरीर के ठीक अनुरूप परन्तु बहुत छोटा और अँगूठे के बराबर होता है। लिंग शरीर।

विशेष—यह माना जाता है कि मृत्यु के समय यह शरीर स्थूल शरीर से निकल कर परलोक में अपने पाप-पुण्य का फल भोगता है। यह भी माना जाता है कि आत्मा इसी शरीर में आवृत रहती है। शेष दो कारण-शरीर और स्थूल-शरीर कहलाते हैं।

सूक्ष्म शर्करा—स्त्री० [स० कर्म० स०] बालू। रेत।

सूक्ष्म-शाक—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार की बबूल जिसे बन-बबूल भी कहते हैं।

सूक्ष्म शालि—पु० [स० कर्म० स०] गोरे नामक धान।

सूक्ष्म-स्फोट—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का कोढ़। विचर्चिका रोग।

सूक्ष्मा—स्त्री० [स० सूक्ष्म—टाप्] १. जूही। यूथिका। २. छोटी इलायची। ३. बालू। ४. छोटी जटामासी। ५ करुणी नाम का पौधा। ६ किसी बात की बारीकियों में से गुण।

सूक्ष्माक्ष—वि० [स० ब० स०] सूक्ष्म-दृष्टिवाला। तीव्रदृष्टि।

सूक्ष्मात्मा (त्मन्)—पु० [स० ब० स०] शिव। महादेव।

सूक्ष्माह्वा—स्त्री० [स० ब० स०] महामेदा नामक अष्टवर्गीय औषधि।

सूक्ष्मेक्षिका—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ वर्तमान काल में, किसी बात या विषय की ऐसी छानबीन या जाँच पड़ताल जो बहुत सूक्ष्म दृष्टि से की गई हो। २ सूक्ष्म दृष्टि।

सूक्ष्मैला—स्त्री० [स० कर्म० स०] छोटी इलायची।

सूख†—वि० सूखा।

स्त्री० [हि० सूखना] सूखने की अवस्था, क्रिया या भाव।

सूखना—अ० [स० शुष्क, हि० सूखा, ना (प्रत्य०)] १ किसी आर्द्र या तर पदार्थ का ऐसी स्थिति में आना कि उसकी आर्द्रता या तरी नष्ट हो जाय। जैसे—गीली धोती सूखना, तरकारी या फल सूखना। २. किसी आधार में के पानी का किसी प्रकार नष्ट हो जाना या न रह जाना। जैसे—कूआँ, तालाब, नदी सूखना। ३ जल के अभाव में किसी पदार्थ का जीवनी-शक्ति से हीन होना। जैसे—वर्षा न होने से फसल सूखना; चिंता या डर से जान सूखना। ४ कष्ट, चिंता, रोग आदि के कारण शरीर का क्षीण और दुर्बल होना। जैसे—चार दिन की बीमारी से उनका सारा शरीर सूख गया।

मुहा०—सूखकर काँटा होना=बहुत ही क्षीण और दुर्बल हो जाना। सूखकर सोंठ होना=सूखकर बिलकुल चुचक या सिकुड़ जाना। सूखे खेत लहलहाना=कष्ट, चिंता, दुःख आदि दूर होने पर फिर से यथेष्ट प्रसन्न या सुखी होना।

संयो० क्रि०—जाना।

सूखर—पु० [?] एक शैव संप्रदाय।

सूखा—वि० [स० शुष्क] [स्त्री० सूखी, भाव० सूखापन] १. जिसमें जल या उसका कोई अंश न हो या न रह गया हो। निर्जल। जैसे—सूखा कपड़ा, सूखी नदी। २ जिसमें आर्द्रता या नमी न हो या न रह गई हो। शुष्क। जैसे—सूखा मौसम=ऐसा मौसम जिसमें वर्षा न हो और हवा में नमी न हो। ३ जिसमें से जीवनी-शक्ति का सूचक हरापन निकल गया हो। जैसे—सूखा पत्ता, सूखा वृक्ष। ४ जिसमें जीवनी-शक्ति बहुत कम या नहीं के समान हो। जैसे—सूखा चेहरा, सूखा शरीर। ५ जिसमें भावुकता, मनोरंजकता, सरसता आदि कोमल गुणों का अभाव हो। जैसे—सूखा व्यवहार, सूखा स्वभाव। (ड्राई, उक्त सभी अर्थों के लिए) ६. कोरा। निरा। जैसे—सूखा अन्न, सूखी शेखी।

मुहा०—सूखा जवाब देना=साफ इन्कार करना।

७ जिसमे जल आदि का योग न हो। जिसमे आवश्यकता होने पर भी जल का उपयोग न किया गया हो। जैसे—(क) यह चूरन सूखा ही घोट आओ। (ख) वह बोतल की सारी शराब सूखी ही पी गया। ८ (बात या व्यवहार) जो दिखाने भर को या नाममात्र को हो। तत्व, तथ्य आदि मे रहित। उदा०—लेके मै ओढ़ूँ, बिछाऊँ या लपेटूँ, क्या करूँ, । रूखी, फीकी, ऐसी सूखी मेहरबानी आपकी।—इन्शा।

पु० १. पानी न बरसने की दशा या समय। अनावृष्टि। खुश्क-साली। (ड्रॉट)

क्रि० प्र०—पडना।

२ ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। स्थल। जैसे—सूखे पर नाव लगाना। ३ तम्बाकू का सुखाया हुआ चूरा या पत्ता। ४ एक प्रकार की खाँसी जिसमे कफ नही निकलता और साँस जोरो से चलता है। हब्बा-डब्बा। ५ कोई ऐसा रोग जिसमे शरीर जल्दी-जल्दी सूखने लगता हो।

क्रि० प्र०—लगना।

६ भाँग की सूखी हुई पत्तियाँ।

सूखिम†—वि०=सूक्ष्म।

सूखी खाँसी—स्त्री० [हिं०] ऐसी खाँसी जिसमे गले से कफ या बलगम न निकलता हो।

सूखी खेती—स्त्री० [हिं०] खेती करने की एक आधुनिक प्रणाली जिससे उन स्थानो मे भी कुछ फसल उत्पन्न कर ली जाती है, जिनमे वर्षा अपेक्षया बहुत कम होती है, और जल के अभाव मे सिंचाई की भी कोई व्यवस्था नही हो सकती। (ड्राई फार्मिंग)

विशेष—इस प्रणाली मे कई प्रकार के उपाय होते है, जैसे—(क) जमीन बहुत गहरी जोतना, जिसमे पानी गहराई मे समाकर जमा रहे। (ख) जमीन का ऊपरी भाग पत्थरो आदि से ढक देना, जिसमे उसकी तरी बनी रहे। (ग) खेत के नीढीनुमा विभाग कर देना जिसमे वर्षा के जल का बहाव नियंत्रित किया जा सके आदि।

सूखी धुलाई—स्त्री० [हिं०] रासायनिक द्रव्यो के योग से कपडे साफ करने की वह क्रिया जिसमे जल का उपयोग न हो। (ड्राइ-वाशिंग)

सूघर†—वि०=सुघड।

सूच—पु० [स०] कुश का अकुर, जो सूई की तरह नुकीला होता है। †वि०=शुचि। (डिं०)

सूचक—वि० [स० √ सूच् (सूचित करना)+णवुल्—अक] [स्त्री० सूचिका] सूचना देनेवाला। सूचित करने या बतानेवाला। ज्ञापक। बोधक।

पु० १ कपडा, चमडा आदि सीने की सूई। सूची। २ सिलाई का काम करनेवाला कारीगर। ३ प्राचीन भारत मे अभिनय का व्यवस्थापक। सूत्रधार। ४. सिद्ध पुरुष। ५ गौतम बुद्ध का एक नाम। ६ चुगलखोर अथवा दुष्ट और नीच व्यक्ति। ७ आयोगव माता और क्षत्रिय पिता से उत्पन्न पुत्र। ८ गुप्तचर। जासूस। भेदिया। ९ पिशाच। १० कुत्ता। ११ बिल्ली। १२ कौआ। १३. गीदड। १४ ऊँची दीवार। १५ कटघरा या जँगला। १६ छज्जा या बरामदा। १७ सोरो नामक धान।

सूचकांक—पु० [स०] खाद्यान्न, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओ का विभिन्न समय का मूल्य बतलानेवाला अक या लेखा। (सामान्य स्थिति के समय का मूल्य प्राय १०० मान लिया जाता है। इससे बढते या घटते हुए अक आपेक्षिक महँगी या सस्ती के परिदर्शक होते है।) (इन्डेक्स नबर)

सूचन—पु० [स० √ सूच् (बताना)+ल्युट्—अन] [स्त्री० सूचनी] १ सूचित करने अर्थात् बताने या जताने की क्रिया। ज्ञापन। उदा०—जगत का अविरत हृत्कपन। तुम्हारा ही है भय सूचन।—पन्त। २. सुगध फैलाने की क्रिया या भाव।

सूचना—स्त्री० [स० सूच+णिच्+युच्—टाप्] [वि० सूचनीय, भू० कृ० सूचित] १ सूई आदि के छेदने या भेदने की क्रिया या भाव। २ वह बात जो किसी व्यक्ति को किसी विषय का ज्ञान या परिचय कराने के लिए कही या बतलाई जाय। अवगत कराने या जताने के लिए कही हुई बात। (इन्फार्मेशन) ३ वह बात जो किसी व्यक्ति या जन-समाज को किसी विषय मे सचेत या सावधान करने के लिए कही जाय। (नोटिस) ४ वह कागज या पत्र जिस पर उक्त प्रकार की कोई बात छपी या लिखी हो। इश्तहार। विज्ञापन। (नोटिस) ५ वह बात जो कोई कार्रवाई करने से पहले सबद्ध व्यक्ति या जन-समूह को पहले से विदित कराने के लिए कही या प्रकाशित की जाय। (नोटिस) ६ दुर्घटना आदि के सबध मे अदालती या और किसी तरह की कार्रवाई करने से पहले पुलिस या किसी और उपयुक्त अधिकारी से उसका हाल कहना। प्रतिवेदन। (रिपोर्ट) ७ कही से आनेवाले माल के साथ या उसके सबध मे आया हुआ विवरण, सूची आदि। बीजक। चलान। (एडवाइस)

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—भेजना।—मिलना।

८ अभिनय। ९ नजर। दृष्टि। १० टोह या भेद लेना। रहस्य का पता लगाना। ११ हिंसा।

†स० [स० सूचन से] अवगत या सूचित करना। जतलाना। बतलाना।

सूचना अधिकारी—पु० [स० ष० त०] किसी राज्य या विभाग अथवा सस्था आदि का वह अधिकारी जो जन-साधारण को मुख्य मुख्य बातो की सूचना देता रहता हो। (इनफार्मेशन आफिसर)

सूचना-पत्र—पु० [स० ष० त०] वह पत्र या विज्ञप्ति जिसके द्वारा कोई बात लोगो को बताई जाय। विज्ञप्ति। इश्तहार। (नोटिस)

सूचनालय—पु० [स० ष० त०] राज्य या उसके किसी विभाग का वह कार्यालय जहाँ से जन-साधारण को समय-समय पर उपयोगी सूचनाएँ दी जाती है। (इनफार्मेशन ब्यूरो)

सूचनीय—वि० [स० √ सूच् (बताना)+अनीयर] (बात या विषय) जिसकी सूचना किसी को देना आवश्यक हो अथवा जिसकी सूचना दी जा सकती हो।

सूचयितव्य—वि०=सूचनीय।

सूचा†—स्त्री० [हिं० सुचित] जो होश मे हो। सचेत। सावधान।

स्त्री० [स०]=सूचना।

†वि० [स० स्वच्छ] १ शुद्ध। साफ। २ जिसमे से किसी ने कुछ खाया या चखा न हो। 'जूठा' का विपर्याय।

सूचि—पु० [स० √सूच्+णिन्] १ निषाद पिता और वैश्या माता से उत्पन्न पुत्र। २ सूप बनानेवाला कारीगर। ३ उपकरण।

स्त्री०=सूची।

†वि०=शुचि (पवित्र)।

सूचिक—पु०[स० सूची+ठन्—इक]१ सूई से काम करनेवाला व्यक्ति। २. दरजी।

सूचिका—स्त्री०[स० सूचि+कन्—टाप्]१ सूई। २. हाथी का सूँड़। ३. केतकी। केवडा।

सूचिका-धर—पु०[स० प० त०] सूँड धारण करनेवाला, हाथी।

सूचिकाभरण—पु०[स०] वैद्यक मे एक प्रकार की ओषधि जो सन्निपात, विसूचिका आदि प्राणनाशक रोगो तथा साँप के काटने की अतिम ओषधि मानी गई है।

विशेष—इसका प्रयोग सूई की नोक से मस्तक की त्वचा के अन्दर पहुँचा कर भी किया जाता है और बहुत छोटी छोटी गोलियो के रूप मे खिलाकर भी।

सूचिका मुख—वि० [स० ब० स०] जिसका मुँह सूई के समान नुकीला हो।

पु० शख।

सूचिकार—पु० [स० सूचि√कृ करना)+अण्] वह जो सुइयाँ बनाने का काम करता हो।

सूचित—भू० कृ०[√सूच् (बताना)+क्त]१. जिसमे सूई आदि से छेद किया गया हो। २ जिसकी ओर इशारा या सकेत किया गया हो। जताया हुआ। ३ सूचना के रूप मे कहा या भेजा हुआ। ४ जिसे सूचना दी गई हो।

सूचिनी—स्त्री०[स०√ सूच् (कहना)+णिनि-इन्—ङीप्] सूचना देनेवाली स्त्री।

स्त्री०१ सूई। २ रात।

सूचिपत्र—पु०[स० ब० स०] १ एक प्रकार का ऊख। २ चौपतिया नामक साग। ३ दे० 'सूचीपत्र'।

सूचिपुष्प—पु०[स० ब० स०] केवडा। केतकी।

सूचिभेद्य—वि०[स० तृ० त०]१ जो सूई से छेदा या भेदा जा सकता हो। २ जो इतना घना हो कि उसे छेदने या भेदने के लिए सुई की सहायता की आवश्यकता पडती हो। जैसे—सूचिभेद्य अन्धकार।

सूचिरदन—पु०[स० ब०स०] नेवला, जिसके दाँत बहुत नुकीले होते है।

सूचिवदन—पु०[स० ब० स०]१. नेवला। नकुल। २. मच्छर।

सूचिवान् (वत्)—वि०[स० सूचि+मतुप्म=वनुम=दीर्घ] नुकीला।

पु० गरुड।

सूचि-शालि—पु०[स० कर्म० स०] सोरो नामक धान।

सूचि-सूत्र—पु०[स० प० त०] १ सूई में पिरोया जानेवाला धागा। २ सूई-धागा।

सूची—स्त्री० [स० √सिव् (सीना)+चट्—टेरुत्व—ङीप्] १ कपडा सीने की सूई। २ शल्य चिकित्सा मे, सूई के आकार-प्रकार का एक उपकरण जिससे क्षत सीया जाता था। (सुश्रुत) ३. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना, जो लबी और सुई के आकार की होती थी। ४. किसी प्रकार की चीजो, नामो, बातो आदि का क्रम-बद्ध लेखा या विवरण। अनुक्रमणिका। ५ ऐसा लेखा या विवरण जिसमे बहुत से नाम किसी क्रम मे आये हो। तालिका। फेहरिस्त। (लिस्ट)६ सूचीपत्र। ७ चहारदीवारी आदि मे हर दो खभो के ऊपर आडा रखा जानेवाला पत्थर। ९. छन्द-शास्त्र मे प्रत्यय के अन्तर्गत वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कुछ नियत वर्णों या मात्राओं से कितने प्रकार के छन्द या वृत्त बनते या बन सकते है और उनके आदि तथा अत में कितनी लघु और कितनी गुरु मात्राएँ होती है। ९. एक प्रकार का नृत्य। १०. दृष्टि। नजर। ११ केतकी। केवडा। १२. सफेद कुश। १३ कटारा। जंगला। १४ दरवाजे मे लगाने की सिटकिनी। १५ मैथुन या सभोग का एक प्रकार।

पु०[स० सूचिन्] १. गुप्तचर। भेदिया। २. चुगलखोर। पिशुन। ३ दुष्ट और नीच। ४. दे० 'स्वयभुक्ति' (साक्षी)।

सूचीक—पु०[स० सूची+कन्] मच्छर आदि ऐसे जतु जिनके डक सूई के समान होते है।

सूचीकटाह-न्याय—पु०[स० मध्य० स०] लोक व्यवहार मे प्रचलित एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग ऐसे अवसर पर होता है जहाँ कोई कठिन और बडा काम करने से पहले सहज और छोटा काम पूरा कर लिया जाता है अथवा करना अभीष्ट होता है।

सूचीकर्म—पु०[स० प० त०] सूई का काम। सिलाई। सूईकारी।

सूचीपत्र—पु०[स० प० त०]१. वह पत्र जिसपर कोई सूची लिखी या छपी हुई हो। २. विशेषत वह सूचना-पत्र या पुस्तिका जिसमें किसी सस्था मे उपलब्ध सामग्री का विवरण होता है। जैसे—(क) प्रकाशन सस्था का सूची-पत्र। (ख) चित्रशाला का सूची-पत्र। (कैटलाग)

सूची पद्म—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

सूचीपाश—पु०[स०] सूई मे होनेवाला भेद।

सूचीभेद—वि०=सूचिभेद्य।

सूचीमुख—पु०[स० प० त०]१. सूई की नोक या छेद जिसमें धागा पिरोया जाता है। २ हीरा। ३. कुश। ४. पुराणानुसार एक नरक।

वि० सूई के मुख के समान नुकीला।

सूचीवक्त्र—पु०[सं० ब० स०] स्कद का एक अनुचर।

सूचीवक्त्रा—स्त्री०[स० सूची वक्त्र—टाप्]ऐसी योनि जिसका द्वार इतना छोटा हो कि वह पुरुष के ससर्ग के योग्य न हो।

सूच्छम*—वि०=सूक्ष्म।

सूच्य—वि०[स०] जो सूचित किया जा सकता हो या सूचित किये जाने के योग्य हो। जो जताया जा सकता हो या जताया जाने को हो।

पु० नाटको या रूपको मे वे अनुचित, गर्हित, रसहीन और वर्जित बातें जो रगमच पर अभिनय के लिए अनुपयुक्त होने के कारण केवल अर्थोपेक्षको के द्वारा सूचित कर दी जाती हैं। समूच्य।

सूच्यग्र—पु०[सं० प० त०] सूई का अगला भाग। सूई की नोक।

वि०१. जिसकी नोक सूई के समान नुकीली हो। २. सूई की नोक के बराबर, अर्थात् बहुत ही थोडा।

सूच्याकार—वि०[स० सूची+आकार] सूई के आकार का। लबा और नुकीला।

सूच्यार्थ—पु०[स० प० त०] साहित्य मे, पद आदि का वह अर्थ जो शब्दो की व्यंजना शक्ति से निकलता या सूचित होता है।

सूछम*—वि०=सूक्ष्म।

सूछिम*—वि०=सूक्ष्म।

सूजंध*—स्त्री०=सुगंध। (डिं०)

सूज*—स्त्री०१.=सूजन। २=सूई।

सूजन—स्त्री०[हिं० सूजना]१ सूजे हुए होने की अवस्था या भाव। २ वह विकार जो उक्त के फलस्वरूप शरीर या शरीर के किसी अग मे दृष्टिगत होता है। शोथ। (इन्फ्लेमेशन)

सूजना—अ० [फा० सोजिश, मि० स० शोथ] रोग, चोट, वात आदि के प्रकोप के कारण शरीर के किसी अग का अधिक फूल या फैल जाना। शोथ होना।

मुहा०—(किसी का) मुँह सूजना=आकृति मे अप्रसन्नता, रोष आदि के लक्षण स्पष्टत. व्यक्त होना। जैसे—रुपये माँगते ही उनका मुँह सूज गया।

सूजनी†—स्त्री०=सुजनी (बिछाने की चादर)।

सूजा—पु०[सं० सूची, हिं० सूई, सूजी]१ बडी और मोटी सूई। सूआ। २ उक्त आकार का कूचवदो का एक औजार, जिससे कैंचियाँ बनाने के लिए दस्ते मे छेद किया जाता है। ३ वह खूँटा जो छकडा गाडी के पीछे की ओर उसे टिकाने के लिए लगाया जाता है।

*वि०[अ० शुजाअ=बहादुर] बहादुर। वीर।

सूज़ाक—पु०[फा०] मूत्रेंद्रिय का एक रोग जिसमे उसके अंदर घाव हो जाता है और बहुत तेज जलन होती है। उपदश। (गनोरिया)

सूजी—स्त्री०[?]१. चूर्ण से भिन्न कणो के रूप मे होनेवाला गेहूँ का पिसा हुआ रूप। २. एक प्रकार का सरेस जो मॉड़ और चूने के मेल से बनता है और बाजो के पुरजो को जोडने के काम मे आता है।

स्त्री०[स० सूची]१ सूई। २ वह सूआ जिससे गडेरिए लोग कम्बल की पट्टियाँ सीते है।

पु०=सूचिक (दरजी)।

सूझ—स्त्री०[हिं० सूझना]१ सूझने की क्रिया, धर्म या भाव। २ दृष्टि। नजर। ३ मन मे सूझने अर्थात् उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी नई बात, जो अनोखी या असाधारण भी हो। उद्भावना। उपज। जैसे—कवियो की सूझ अनोखी होती है।

पद—सूझ-बूझ। (देखें)

सूझना—अ०[स० सज्ञान]१ दृष्टि मे आना। दिखाई पडना। २. ध्यान में आना। ३. युक्ति के रूप मे उद्भासित होना। जैसे—पते की सूझना।

अ० [हिं० सुलझना] छुट्टी पाना। मुक्त होना।

सूझ-बूझ—स्त्री०[हिं० सूझना+बूझना]१ देखने और देखकर अच्छी तरह समझने की विशिष्ट योग्यता या शक्ति। २ समझदारी।

पद—सूझ बूझ से=समझदारी से। किसी बात के सब पक्ष सोच-समझकर।

सूझा—पु० [देश०] फारसी सगीत मे एक मुकाम (राग) के पुत्र का नाम।

सूट—पु०[अ०] १ कई ऐसे कपडो का जोडा, जो एक साथ पहने जाते हो। जैसे—कोट, पतलून, आदि का सूट, सलवार, कमीज आदि का सूट। २ दावा। नालिश। ३ मुकदमा।

सूट-केस—पु०[अ०]१ सूट (अर्थात् कपडो के जोड) रखने का केस या खाना। २ एक प्रकार का चिपटा छोटा बक्स जिसमे यात्रा आदि के समय पहनने के कपडे रखे जाते हैं।

सूटा—पु० [अनु०] मुँह से तबाकू, चरस या गाँजे का धूआँ जोर से खीचने की क्रिया।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

सूठरी†—स्त्री०=मुठरी (भूसा)।

सूड़ा—पु०[सं० शुक] शुक पक्षी। तोता। (डिं०)

सूणहर—पु०[स० शयन+गृह] शयनागार। (राज०)

सूत—पु० [स०सूत्र]१ रूई, रेशम आदि का वह पतला बटा हुआ तागा, जिससे कपडा बुनते हैं। ततु। धागा। डोरा। सूत्र। (थ्रेड) २ किसी चीज मे से निकलनेवाला इस प्रकार का तार। ३ लबाई नापने का एक छोटा मान। ४ इमारत के काम मे जमीन, लकड़ी आदि पर विभाजन की रेखाएँ या निशान डालने की डोरी।

मुहा०—सूत धरना, फटकना या बाँधना=मकान आदि बनाने के समय नीव डालने से पहले उसकी छेंकन ठीक करने या कमरो, दालानो, आँगन आदि का विभाजन करनेवाली रेखाएँ निश्चित करना। (पहले उक्त सूत या डोरी पर चूने का चूरा लगाते हैं, और तब डोरी को नीव मे रखकर फटकते या झटकारते हैं, जिस से जमीन पर चूने की रेखा बन जाती है।)

५ गले, बाँह आदि मे पहनने का वह डोरा, जिसमे कोई जतर या तावीज बँधा रहता है। ६ वह मोटा डोरा, जो कमर मे करधनी की तरह पहना जाता है। ७ करधनी।

पु०=सूत्र।

†पु० [स० सुत] पुत्र। बेटा।

पु०[स०] १ एक प्राचीन वर्णसकर जाति, जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता से कही गई है और जिसका कार्य रथ हाँकना था। २ रथ हाँकनेवाला व्यक्ति। सारथि। ३ चारण। भाट। बदीजन। ४. पुराणो की कथाएँ सुनानेवाला व्यक्ति। पौराणिक। ५ बढई। सूत्रकार। ६ सूर्य। ७. पारा।

†वि०[?] अच्छा। भला।

वि०१ =प्रसूत। २.=प्रेरित।

सूतक—पु० [स० सुतक=जन्म] १. जन्म। २. घर मे सतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को लगनेवाला अशौच। ३ अस्पृश्यता। छूत। उदा०—जलि है सूतकु थलि है सूतकु, सूतक सूतक ओपति होई।—कबीर। ४. चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण। उपराग। ५ पारद। पारा।

सूतक-गेह†— पु०=सूतिकागार।

सूतका—स्त्री० [स०] जच्चा।

सूतका-गृह—पु० [स०] जच्चा-घर। सूतिकागार।

सूतकान्न—पु० [स०] १ वह खाद्य पदार्थ जो सतान-जन्म के कारण अशुद्ध हो जाता है। २ ऐसे घर या व्यक्ति का अन्न, जिसे सूतक लगा हो और इसी लिए जो अन्न अग्राह्य कहा गया है।

सूतकाशौच—पु० [सं०] वह अशौच जो घर मे सतान उत्पन्न होने के कारण होता है। जननाशौच।

सूतकी (किन्)—वि० [स०] जिसे सूतक (अशौच) लगा हो।

सूतज—वि० [स०] =सूत से उत्पन्न।

पु०=सूत-तनय (कर्ण)।

सूत-तनय—पु० [स० ष० त०] कर्ण का एक नाम, जो उनके सूत-पुत्र होने के कारण पडा था।

सूतता—स्त्री० [स० सूत+तल्—टाप्] सूत का कार्य, पद या भाव।

सूत-धार—पु० [स० सूत्रधार] बढई।

सूतनंदन—पु० [सं० सूत√नद् (सुखदेनेवाला)+ल्यु—अन] १. उग्रश्रवा। २. सूत-तनय (कर्ण)।

सूतना†—अ०=सोना।

सूत-पुत्र—पु० [सं० प० त०] १. सारथि का पुत्र। २. सारथि। ३. कर्ण। ४. कीचक।

सूत फूल—पु० [हिं० सूत+फूल] महीन आटा। मैदा। (अव०)

सूतरी†—स्त्री०=सुतली।

सूत-लड†—पु० [हिं० सूत+लड] अरहर। रहँट।

सूता—पु० [सं० सूत्र] १ भूरे रग का एक प्रकार का रेशम जो मालदह (बगाल) से आता है। २ जूते मे वह बारीक चमडा, जिसमे टूक का पिछला हिस्सा आकर मिलता है। (चमार) ३. सूत। धागा।

पु० [सं० शुक्ति] वह सीपी जिससे डोडे मे की अफीम काछते हैं।

स्त्री० [सं०]=प्रसूता।

सूति—स्त्री० [सं०√सू(प्रसव करना)+क्तिन्] १. जन्म। २. जनन। प्रसव। ३ उत्पत्ति का स्थान। उद्गम। ४ फसल की पैदावार। ५ यज्ञों मे सोम का रस निकालने की क्रिया। ६ वह स्थान जहाँ यज्ञो के लिए सोम का रस निकाला जाता था। ७ कपडा सीने की क्रिया या भाव।

पु० हस।

सूतिका—स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री या मादा जीव जिसने अभी हाल मे बच्चा जना हो। सद्य प्रसूता। २. वैद्यक मे प्रसूता स्त्री को होनेवाले कुछ विशिष्ट प्रकार के रोग जो अनुचित आहार, विहार आदि के कारण होते हैं।

सूतिकागार—पु० [सं० प० त०] १ वह कमरा या घर जिसमे स्त्री बच्चा जनती है। सौरी। प्रसव-गृह। २. चिकित्सालय का वह पार्श्व या विभाग जिसमे प्रसव कराने के लिए प्रसूता स्त्रियाँ रखी जाती हैं। (मैटरनिटी वार्ड)

सूतिका-गृह—पु०=सूतिकागार।

सूति-काल—पु० [सं० प० त०] प्रसव करने या बच्चा जनने का समय।

सूतिकावास—पु०=सूतिकागार।

सूतिकाषष्ठी—स्त्री० [सं०] सतान के जन्म से छठे दिन होनेवाला एक सस्कार तथा जच्चा का नहाना।

सूति-गृह—पु०=सूतिकागार।

सूति-मास—पु० [सं०] वह मास जिसमें किसी स्त्री को सतान उत्पन्न हो। प्रसव-मास। वैजनन।

सूति-वात—पुं० [सं०] प्रसव के समय प्रसूता को होनेवाली पीड़ा।

सूती—वि० [हिं० सूत+ई (प्रत्य०)] सूत का बना हुआ। जैसे—सूती कपडा। सूती गलीचा।

†स्त्री० [सं० शुक्ति] सीपी।

स्त्री० सं० सूत का स्त्री०। (सूत जाति की स्त्री)

सूती-गृह—पु० [सं०] सूतिकागार।

सूतीघर—पुं०=सूतिकागार।

सूतीमास—पु०=सूतिमास।

सूत्कार—पु०=सीत्कार।

सूत्तर—वि० [सं०] बहुत श्रेष्ठ। बहुत बढकर।

†पु०=सूत। (पश्चिम)

सूत्य—पुं०=सुत्य।

सूत्या—स्त्री० [सं०] १. यज्ञ के उपरात होनेवाला स्नान। अवभृथ। २ यज्ञों में सोम का रस निकालना और पीना।

सूत्याशौच—पुं० [सं०] =सूतकाशौच।

सूत्र—पु० [सं०] [भू० कृ० सूत्रित] १. कपास का बटा हुआ बहुत पतला और महीन डोरा या तागा। सूत। २ किसी प्रकार के रेशों का बटा या बढा हुआ लंबा रूप। (थ्रेड) ३. गले में पहनने का जनेऊ। यज्ञोपवीत। ४ कमर में करधनी की तरह पहना या बाँधा जानेवाला डोरा। कटि-सूत्र। ५ शरीर के अदर की डोरी की तरह की नली या मोटी नस। (कॉर्ड) जैसे—स्वर-सूत्र। ६ यथासाध्य बहुत थोडे शब्दों मे कहा हुआ कोई ऐसा कथन, पद या वाक्य जिसमें बहुत-कुछ गूढ अर्थ भरा हो। जैसे—कल्प-सूत्र। ७ बौद्ध साहित्य मे, कोई ऐसा मूल ग्रथ जिसकी टीका या व्याख्या हुई हो। ८ कोई ऐसी सकेतात्मक बात, जिसके सहारे किसी दूसरी बहुत बडी बात, घटना, पहेली, रहस्य, आदि का पता लगे। सकेत। पता। सुराग। (क्लू) ९ वह सांकेतिक पद या शब्द, जिसमें कोई वस्तु बनाने या कार्य करने के मूल सिद्धात, प्रक्रिया आदि का सक्षिप्त विधान निहित हो। (फ़ार्मूला) १० किसी कार्य या योजना के सबध मे उन अनेक बातो मे से कोई जो उन कार्य या योजना की सिद्धि के लिए सोची जाय। (प्वाइन्ट) जैसे—इस योजना के चार सूत्रो मे से दो बहुत ही उपयोगी और आवश्यक हैं। ११ रेखा। लकीर। १२. किसी प्रकार की व्यवस्था करने के नियम। १३. वह मूल कारण या बात जिससे कुछ और चीजें या बातें निकली हों।

सूत्र-कंठ—पु० [सं० प० त०] १. वह जो गले में यज्ञ-सूत्र या यज्ञोपवीत पहनता हो या पहने हो। २. ब्राह्मण। ३. कबूतर। ४ खजन पक्षी।

सूत्रक—पु० [सं०] १. सूत। ततु। तार। २. माला या हार। ३. सेवई नामक पकवान। ४. लोहे के तारों का बना हुआ कवच।

सूत्रकर्त्ता—पु० [सं० सूत्रकर्तृ] सूत्र-ग्रथ का रचयिता। सूत्र-प्रणेता।

सूत्र-कर्म (र्मन्)—पु० [सं०] १ बढई का काम। २ मेमार या राज का काम।

सूत्रकार—पु० [सं०] १ वह जिसने सूत्रो मे किसी ग्रथ की रचना की हो। सूत्र-रचयिता। २ बढ़ई। ३. जुलाहा। ४ मेमार। राज। ५ मकडी।

सूत्र कृमि—स्त्री० [सं०] आँतो में उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के धागे की तरह पतले कीडे जो शरीर मे अनेक विकार उत्पन्न करते हैं। (थ्रेडवर्म)

सूत्र कोण—पुं० [सं०] डमरू।

सूत्र-कोश—पु० [सं०] सूत्र की अंटी। लच्छी।

सूत्र-क्रीड़ा—स्त्री० [सं०] धागो की सहायता से कठपुतलियाँ नचाने का काम, जो ६४ कलाओं के अन्तर्गत माना गया है।

सूत्र ग्रंथ—पुं० [सं०] १ ऐसा ग्रंथ जिसमे सूत्रो का संग्रह हो। २ सूत्र-रूप मे प्रस्तुत किया हुआ ग्रथ।

सूत्र-ग्रह—वि० [सं०] सूत धारण या ग्रहण करनेवाला।

सूत्रण—पुं० [सं०] [भू० कृ० सूत्रित] सूत्र बनाने या बटने की क्रिया या भाव।

सूत्र-तर्कुटी—स्त्री० [सं०] सूत कातने का तकला। टेकुवा।

सूत्र-धार—पु० [सं० सूत्र√धृ (धारण करना)+अण्] १. प्राचीन भारत मे मूलत. वह व्यक्ति जो अपने हाथ मे पकडे या बँधे हुए सूत्रो अर्थात् डोरो की सहायता से कठपुतलियाँ नचाता और उनके तमाशे दिखाता था। २. परवर्ती काल में नाट्यशाला का वह प्रधान व्यवस्थापक, जो नटो को अभिनय-कला सिखाकर उनसे अभिनय कराता और रग-मच की व्यवस्था करता था। ३ लाक्षणिक रूप मे वह व्यक्ति, जिसके हाथ मे किसी कार्य की सारी व्यवस्था हो। ४ पुराणानुसार एक प्राचीन वर्णसकर जाति, जिसकी उत्पत्ति शूद्रा माता और विश्वकर्मा पिता से कही गई है और जो प्राय. बढई का काम करती थी। ५. बढई। सुतार। ६ इन्द्र का एक नाम।

सूत्रधारी(रिन्)—वि० [स०] सूत्र धारण करनेवाला।
स्त्री० सूत्रधार की स्त्री। नटी।

सूत्र-पात—पु० [स०] १ नीव आदि रखने के समय होनेवाली नाप-जोख। २ किसी नये तथा बडे काम का होनेवाला आरम्भ। जैसे—इस योजना का सूत्र-पात सन् ६२ मे हुआ था।

सूत्र-पिटक—पु० [स०] बौद्ध सूत्रो का एक प्रसिद्ध सग्रह।
दे० 'त्रिपिटक'।

सूत्र-पुष्प—पु० [स०] कपास का पौधा जिसके फूलो डोडो से सूत बनता है।

सूत्रभृत—पु०=सूत्रधार।

सूत्र-यत्र—पु० [स०] १. करघा। २. करघे की ढरकी। ३. सूत का बुना हुआ जाल।

सूत्रपी—वि० [स० सूत्र] सूत्र जानने या रचनेवाला।

सूत्रला—स्त्री० [स०] तकला। टेकुवा।

सूत्रवाप—पु० [स०] सूत से कपडा बुनने की क्रिया। वपन। बुनाई।

सूत्र-वीणा—स्त्री० [स०] प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा, जिसमे बजाने के लिए तार की जगह सूत्र लगे रहते थे।

सूत्र-वेष्ठन—पु० [स०] १ करघा। २. सूतों की बुनाई।

सूत्र-शाख—पु० [स०] शरीर।

सूत्र-शाला—स्त्री० [स०] वह स्थान या कारखाना जहाँ सूत काता, तैयार किया या बनाया जाता है।

सूत्रांग—पु० [स०] उत्तम काँसा।

सूत्रांत—पु० [सं०] बौद्ध सूत्रो की सज्ञा।

सूत्रांतक—वि० [सं०] बौद्ध सूत्रो का ज्ञाता या पडित।

सूत्रा—स्त्री० [स० सूत्रकार] मकड़ी। (अनेकार्थ)

सूत्रात्मा (त्मन्)—पु० [स०] १. एक प्रकार की परम सूक्ष्म वायु जो धनजय से भी अधिक सूक्ष्म कही गई है। २. जीवात्मा।

सूत्राध्यक्ष—पु० [स०] कपडो के व्यापार या व्यवसाय का अध्यक्ष। (कौ०)

सूत्रामा (मन्)—पु० [स०] इन्द्र।

सूत्राली—स्त्री० [स०] १. सूत को लपेटकर बनाई जानेवाली माला। हार। २ गले मे पहनने की मेखला।

सूत्रिका—स्त्री० [स०] १ सेवईं। २. हार। माला।

सूत्रिता—भू० कृ० [स०] १. सूत से बाँधा या नत्थी किया हुआ। २ सूत्रो के रूप मे कहा या लाया हुआ। ३ क्रम या सिलसिले से लगाया हुआ।

सूत्री(त्रिन्)—वि० [स०] समस्त पदो के अंत मे—(क) जिसमे सूत्र हो। सूत्रो से युक्त। जैसे—त्रिसूत्री योजना। (ख) नियमों से युक्त। जैसे—दीर्घसूत्री।
पु० १. काक। कौआ। २. दे० 'सूत्रधार'।

सूत्रीय—वि० [सं०] १. सूत्र-सबधी। सूत्र का। २. सूत्रो से युक्त। सूत्री।

सूथन—स्त्री० [देश०] १. पाजामा। सुथना।
पु० एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकडी बहुत अच्छी होती है। खेऊँ।

सूथनी—स्त्री० [सुथना का स्त्री० अल्पा०] १. स्त्रियो के पहनने का पाजामा। सुथना।
†स्त्री०=सुथनी (कन्द)।

सूयार†—पु०=सुतार (बढई)।

सूद—पु० [स०√षूद् (नष्ट करना)+अच्] १. रसोइया। सूपकार। पाचक। २ पकी हुई दाल, रसेदार तरकारी आदि। ३. सारथि का काम या पद। सारथ्य। ४ अपराध। दोष। ५. एक प्राचीन जनपद। ६ उक्त जनपद का सूचक पद जो व्यक्तिवाचक नामो के साथ उत्तर पद के रूप मे लगता था। जैसे—दामोदर सूद। ७ आज-कल खत्रियो और कुछ दूसरी जातियो के वर्गों का नाम। ८. लोध।
पु० [फा०] १. लाभ। फायदा। २. ऋण के रूप मे दिये हुए धन के उपभोग के बदले मे दिया या लिया जानेवाला वह धन जो मूल धन के अतिरिक्त होता है। व्याज। (इन्टरेस्ट)
क्रि० प्र०—चढना।—बढ़ना।—लगना।
पद—सूद दर सूद। (देखें)
*पु०=शूद्र। उदा०—तुम कत बाम्हन, हम कत सूद।—कबीर।

सूदक—वि० [स०] सूदन। (दे०)

सूद-कर्म (न्)—पु० [स०] भोजन बनाना। खाना पकाना।

सूदखोर—पु० [फा०] [भाव० सूदखोरी] १ वह जो अत्यधिक व्याज की दर पर ऋण देता हो। २. वह जिसकी जीविका मिलनेवाले व्याज से चलती हो।

सूदता—स्त्री० [स०] सूद अर्थात् रसोइए का काम, पद या भाव। रसोईदारी।

सूदत्व—पु० [स०]=सूदता।

सूद-दर-सूद—पु० [फा०] १ उधार दिये हुए धन के सूद या व्याज पर भी जोडा जानेवाला सूद या व्याज। चक्रवृद्धि। शिखा-वृद्धि। (कम्पाउड इन्टरेस्ट) २ उक्त के अनुसार व्याज जोडने की प्रक्रिया या रीति।

सूदन—वि० [सं०] १. नष्ट करने या मार डालनेवाला। जैसे—मधुसूदन, रिपुसूदन। २. प्रिय। प्यारा।
पु० १ नाश या हनन। २. फकना।

सूदना*—स० [सं० सूदन] १. नष्ट करना। २. मार डालना।

सूदर†—पु०=शूद्र। (डिं०)

सूद-शाला—स्त्री० [स० सूदशाला] रसोई-घर। पाकशाला। (डिं०)

सूद-शास्त्र—पु० [स०] भोजन बनाने की कला। पाक-शास्त्र।

सूदा—पु० [देश०] मध्य युग में ठगों के गिरोह का वह आदमी, जो यात्रियों को फुसलाकर अपने दल में ले आता था।

सूदाध्यक्ष—पुं० [सं०] रसोइयों का मुखिया या सरदार। पाकशाला का अधिकारी।

सूदित—भू० कृ० [सं०] १ जो मार डाला गया हो। हत। २. नष्ट किया हुआ। विनष्ट। ३ आहत। घायल।

सूदी—वि० [फा० सूद] १ सूद से संबंध रखनेवाला अथवा सूद के रूप में होनेवाला। २ (पूंजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर लगी हो। ब्याजू। ३ (कर्ज) जो सूद पर लिया गया हो।

सूद्र†—पु०=शूद्र।

सूध†—पु० [स० सौध] महल। प्रासाद। उदा०—मणि दीपक करि सूध मणि।—प्रिथीराज।

वि० १=सूधा। २ सीधा।

†वि०=शुद्ध।

सूधन†—पु० [स० शोधन] शुद्ध करना। (डिं०)

सूधना*—अ० [स० शुद्ध] १ ठीक या सत्य सिद्ध होना। २. शुद्ध होना।

† स०=शोधना।

सूधरा†*—वि०=सूधा (सीधा)।

सूधे†—अव्य० [हिं० सूधा] सीधी तरह से या सीध रूप में।

सून—वि० [स०] १. प्रसव किया हुआ। २. उत्पन्न। जात। ३. खिला हुआ। विकसित। (फूल)

पु० १ जनन। प्रसव। २ पुत्र। वेटा। ३. प्रसून। फूल। ४. फल।

†वि० [सं० शून्य] १. रहित। हीन। २. निर्जन। सूना।

सून-नायक—पु० [स०] कामदेव।

सून-शर—पु० [स०] कामदेव।

सूनरी†—स्त्री० [स० सु+नर] सुखी स्त्री।

† स्त्री०=सुंदरी।

सूनसान†—वि०=सुनसान।

सूना—वि० [स० शून्य] [स्त्री० सूनी] १ (स्थान) जहाँ लोगो की चहल-पहल या आना-जाना बिलकुल न हो। जनहीन। निर्जन। जैसे—सूना घर। २ (पदार्थ या रचना) जो किसी आवश्यक, उपयुक्त या शोभन तत्त्व अथवा वस्तु के अभाव के कारण अप्रिय जान पड़े या खटके। जैसे—सीता बिना रसोइयाँ सूनी।—गीत।

मुहा०—सूना लगना या सूना-सूना लगना=किसी वस्तु या व्यक्ति के अभाव के कारण निर्जीव मालूम होना। उदास मालूम होना।

स्त्री० [स० सून—टाप्] १. पुत्री। बेटी। २ वध। हत्या। ३. धर्मशास्त्र के अनुसार घर-गृहस्थी की ऐसी जगह जहाँ अनजान में प्राय. छोटे-छोटे जीवो की हत्या होती रहती है। जैसे—अनाज कूटने-पीसने की जगह, रसोई आदि। दे० 'पंच-सूना'। ४. वह स्थान जहाँ मास के लिए पशुओं की हत्या की जाती हो। कसाई-खाना। ५. [illegible]ने के लिए मास बेचने का काम। ६. हाथी के अकुश का दस्ता।

पु० एकांत या निर्जन स्थान।

सूना-दोष—पु० [स०] वह दोष जो अनजान में गृहस्थी के कामों में होनेवाली जीव-हत्या के कारण लगता है। दे० 'पंच-सूना'।

सूनापन—पु० [हिं० सूना+पन (प्रत्य०)] सूना होने की अवस्था या भाव।

सूनिक—पु० [स०] जीव-हत्या करनेवाला।

पु० १. कसाई। २ शिकारी।

सूनी—पु० [स० सूनिन्] मास बेचनेवाला। बूचड़।

सूनु—पु० [स०] १ पुत्र। बेटा। २. औलाद। सन्तान। ३. छोटा। भाई। अनुज। ४. दौहित्र। नाती। ५. सूर्य। ६. आक-मदार। ७ वह जो यज्ञों में सोम का रस निकालता था।

सूनू—स्त्री० [स०] पुत्री। बेटी।

सूनृत—पु० [स०] १. सत्य और प्रिय भाषण (जो जैन धर्मानुसार सदाचार के पाँच गुणो में से एक है)। २. आनन्द। प्रसन्नता।

वि० १ प्रिय और सत्य। २. अनुकूल। ३ दयालु।

सूनृता—स्त्री० [सं०] १ सत्य और प्रिय भाषण। २. सत्यता। सचाई। ३ धर्म की पत्नी का नाम।

सून्मद—वि०=सून्माद।

सून्माद—वि० [स०] जिसे उन्माद रोग हुआ हो। पागल।

सूप—पु० [स०] १ खाने के लिए पकाई हुई दाल। २ उक्त प्रकार की दाल का पतला पानी या रसा। ३ रसेदार तरकारी। ४. पात्र। बरतन। ५. सूपकार। पाचक। रसोइया। ६ तीर। बाण।

पु० [स० शूर्प] अनाज फटकने का बना हुआ पात्र। सरई या सींक का छाज।

पद—सूप भर=ढेर सा। बहुत।

पु०[देश०] कपड़े या सन का झाड़ू; जिससे जहाज के डेक आदि साफ किये जाते हैं। (लश०)

पु० [अ० सूफ=ऊन] १. एक प्रकार का काला कपड़ा। २. दे० 'सूफ'।

सूपक—पु० [स० सूप] रसोइया। सूपकार।

सूपकार—पु० [स०] रसोइया। पाचक।

सूपकारी—पु०=सूपकार।

सूपच*—पु०=श्वपच (चांडाल)।

सूप झरना—पु० [हिं० सूप+झरना] अनाज फटकने का एक प्रकार का सूप जिसका तल झरने की तरह छेददार होता है। इसमें बारीक अनाज नीचे गिर जाता है, और मोटा ऊपर रह जाता है।

सूपड़ा†—पु० [हिं० सूप] सूप। छाज। (डिं०)

सूप तीर्थ—पु०[सं० ब० स०] ऐसा जलाशय जिसमें नहाने के लिए अच्छी सीढ़ियाँ बनी हों।

सूप-नखा—स्त्री०=शूर्पणखा।

सूप-पर्णी—स्त्री० [स०] वनमूँग। मुँगवन। मुद्गपर्णी।

सूप-शास्त्र—पुं० [स०] भोजन बनाने की कला। पाक-शास्त्र।

सूप-स्थान—पु० [सं०] पाकशाला। रसोइघर।

सूपा—पु० [हिं० सूप] सूप। छाज।

सूपिक—पु० [सं०] १. पकी हुई दाल या तरकारी का रसा। २. रसोइया। सूपकार।

सूप्य—वि० [स०] १. सूप-सबधी। सूपका। २ जिस का सूप, अर्थात् रसा या शोरवा बनाया जा सकता हो।
पु० रसेदार तरकारी आदि।

सूफ—पु० [अ० सूफ] १ ऊन। २ वह लत्ता जो देशी काली स्याही वाली दवात मे डाला जाता है।
†पु० =सूप (अनाज फटकने का)।

सूफिया—पु० [अ० सूफिय] मुसलमान साधुओ का एक सप्रदाय।

सूफियाना—वि० [अ० सूफ़ियाना] सूफियो की तरह का सादा, परन्तु सुन्दर।

सूफी—वि० [अ० सूफी] १ ऊनी वस्त्र पहननेवाला। २. पवित्र और स्वच्छ। ३ निरपराध। निर्दोष।
पु० १ मुसलमानो का एक रहस्यवादी सप्रदाय, जो यह मानता है कि मनुष्य पवित्र और स्वच्छ रहकर तपस्या और साधना के द्वारा ही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। इसमे यह भी माना जाता है कि जीवात्मा मे परमात्मा के साथ मिलने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। इसके चार मुख्य भेद है, यथा—चिश्ती, कादिरी, सुहरावरदी और नक्शवदी। २. उक्त सप्रदाय का अनुयायी।

सूब—पु० [देश०] तॉंबा। (सुनार)

सूबड़ा†—पु० [स० सुवर्ण] वह चाँदी जिसमे तावे और जस्ते का मेल हो। (सुनार)

सूबा—पु० [फा० सूब] १ किसी देश का कोई विशिष्ट खड या भाग। प्रात। प्रदेश। २ दे० 'सूबेदार'।

सूबेदार—पु० [फा० सूबा+दार (प्रत्य०)] [भाव० सूबेदारी] १. किसी सूबे या प्रात का प्रधान अधिकारी या शासक। प्रादेशिक शासक।
२ सेना विभाग मे वह सैनिक जिसके अधीन कुछ और सैनिक भी रहते हो।

सूबेदारी—स्त्री० [फा०] १ सूबेदार होने की अवस्था या भाव। २ सूबेदार का पद।

सूभर*—वि० [स० शुभ्र] १ सफेद। २ सुन्दर।

सूम—पु० [स०] १ दूध। २ जल। पानी। ३ आकाश। ४ स्वर्ग।
†पु० [स० कुसुम] फूल। (डि०)
पु० [अ० शूम =अशुभ] कजूस। कृपण।

सूमड़ा—वि० पु० [स्त्री० सूमडी] सूम। कजूस।

सूमा†—स्त्री० [देश०] टूटी हुई चारपाई की रस्सी।

सूमी—पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत बडा पेड जिसकी लकडी इमारतो मे लगती और मेज, कुर्सी आदि बनाने के काम मे आती है। इसे रोहन और सोहन भी कहते है।

सूय—पु० [स०] १ सोम रस निकालने की क्रिया। २. यज्ञ। जैसे—राजसूय।

सूरंजान—पु० [फा०] केसर की जाति का एक पौधा जिसका कद दवा के काम मे आता है। यह दो प्रकार का होता है। मीठा और कडुआ।

सूर—पु० [स०] [स्त्री० सूरी] १ सूर्य। २. आक। मदार। ३ बहुत बडा पडित। आचार्य। ४ वर्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवें अर्हत् कुथु के पिता का नाम। (जैन) ५ छप्पय छद के ७१ भेदो मे से ५४ वाँ भेद जिसमें १६ गुरु, १२० लघु, कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती हैं। ६ मसूर। ७ दे० 'सूरदास'।
वि० अन्धे या नेत्र-हीन व्यक्ति के लिए आदरसूचक विशेषण।
पु० [स० शूकर, प्रा० सूअर] १ सूअर। २ भूरे रग का घोडा।
पु० [देश०] पठानो का एक भेद। जैसे—शेरशाह सूर।
†पु० १ =शूर (वीर)। २ =शूल।

सूर-कंद—पु० [सं०] जमीकद। सूरन। ओल।

सूर-कांत—पु०=सूर्यकात।

सूर-कुमार—पु० [स० सूर=शूरसेन+कुमार=पुत्र] वसुदेव।

सूरज—वि० [स० सूर+ज] सूर (अर्थात् सूर्य) से उत्पन्न।
पु० १. शनि। २ सुग्रीव।
पु० [स० शूर+ज] शूर अर्थात् बहादुर या वीर की सतान।
पु० [स० सूर्य] १ सूर्य। रवि।
मुहा०—सूरज को दीपक दिखाना= (क) जो स्वय अत्यन्त कीर्तिशाली या गुणवान् हो, उसे कुछ बतलाना। (ख) जो स्वयं प्रसिद्ध या विख्यात हो, उसका सामान्य परिचय देना। **सूरज पर धूल फेंकना**=किसी साधु व्यक्ति पर कलक लगाना या उसका उपहास करना।
२ एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ दाहिने हाथ मे गुदाती हैं।
†पु० दे० 'सूरदास'।

सूरजजी—पु० [स० सूर्य+हिं० जी] राजस्थान, मालवे आदि मे प्रचलित एक प्रकार के गीत जो शिशु के जन्म के दसवें दिन सूर्य की पूजा के समय गाये जाते हैं।

सूरज तनी*—स्त्री०=सूर्य-तनया (यमुना)।

सूरज-भगत—पु० [स० सूर्य + भक्त] असम और नैपाल की एक प्रकार की गिलहरी जो भिन्न-भिन्न ऋतुओ के अनुसार रग बदलती है।

सूरज-मुखी—पु० [स० सूर्यमुखी] १ एक प्रकार का पौधा जिसमे पीले रग का बहुत बड़ा फूल लगता है। २ उक्त पौधे का फूल जिसका मुख सवेरे से सध्या तक प्राय. सूर्य की ओर ही रहता है। ३ आतिशी शीशा। (देखें) ४ ऐसा व्यक्ति जिसके शरीर का वर्ण लाल और आँखें प्रकृत या साधारण से कुछ भिन्न रग की और अप्रसम हो। (एल्वाइनो)
विशेष—ऐसे लोगो का शरीर और बाल प्राय सफेद रग के और आँखें नीले या पीले रग की होती हैं।
स्त्री० १ उक्त प्रकार की फूल के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी। २ जलूसो, राज-दरबारो आदि मे प्रदर्शन और शोभा के लिए रहनेवाला एक प्रकार का पखा, जिस पर सलमे-सितारे आदि से सूर्य की आकृति बनी रहती है। ३. सुबह या शाम के समय सूर्य के आस-पास दिखाई पडनेवाली हलकी बदली।

सूरज-सुत—पु०=सूर्य-पुत्र। (१. सुग्रीव। २. कर्ण। ३ शनि।)

सूरज-सुता—स्त्री०=सूर्य-सुता (यमुना)।

सूरजा—स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री यमुना।

सूरण—पु० [स०] सूरन। जमीकद।

सूरत—स्त्री० [अ०] १ जीव-जतु, पदार्थ, व्यक्ति आदि की आकृति या रूप जिससे उसकी पहचान होती है। शकल (विशेषत व्यक्तियो के लिए प्रयुक्त)
मुहा०—सूरत दिखाना=सामने आना। जैसे—तुम तो कभी

सूरत भी नही दिखाते। **सूरत बनाना**=(क) ऐसी अच्छी आकृति या रूप वनाना जो देखने योग्य हो जाय। (ख) किसी का वेश धारण करना। भेस वनाना। (ग) अरुचि, उपेक्षा आदि सूचित करने के लिए नाक-भौंह सिकोडना। (उपहास और व्यग्य) जैसे—आप तो कभी-कभी ऐसी सूरत वनाते है कि वात करने को जी नही चाहता। २. चित्र, मूर्ति आदि के रूप मे वनी हुई आकृति। ३. अवस्था। दशा। जैसे—ऐसी सूरत मे वहाँ जाना ठीक नही। ४. किसी जटिल समस्या के निराकरण के लिए सोचा हुआ उपाय या युक्ति। जैसे—अव तो तुम्ही कोई सूरत निकालो तो काम चले।

क्रि० प्र०—निकालना।

५ शोभापूर्ण सौंदर्य। (वव०)

पु० [स० सौराष्ट्र, प्रा० हिं० सोता] गुजरात या सौराष्ट्र प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर।

वि० [स० सुरत] जो अनुरक्त होने के कारण अनुकूल, दयालु या प्रसन्न हुआ हो।

†स्त्री० १.=सुरत (स्मृति) २. =सुरति।

पु० [देश०] एक प्रकार का जहरीला पौधा।

स्त्री० [अ० सूर] कुरान का कोई प्रकरण।

सूरत-परस्त—वि० [अ०+फा०] [भाव० सूरत-परस्ती] १. रूप का उपासक। सौन्दर्योपासक। ३. मूर्ति-पूजक।

सूरत-हराम—वि० [अ०+फा०] १ जो अपने सौंदर्य से दूसरो को मुसीवत मे डालता हो। २. जो शक्ल-सूरत से अच्छा, परन्तु तात्त्विक दृष्टि से निस्सार हो।

सूरताई*—स्त्री०=शूरता (वीरता)।

सूरति* —स्त्री०=सूरत।

*स्त्री०=सुरति।

सूरतीखपरा—पु०[सूरती=सूरत शहर का+स० खर्पटी] खपरिया नामक खनिज द्रव्य।

सूरदास—पु० [स०] १. कृष्ण-भक्ति शाखा के प्रसिद्ध वैष्णव कवि जो 'सूर-सागर', 'साहित्य लहरी', आदि काव्य ग्रथो के रचयिता माने जाते हैं। ये जन्माध थे। [जन्म १५४० वि०—मृत्यु १६२० वि०] २ लाक्षणिक अर्थ मे अन्धा व्यक्ति।

सूरन—पु० [स० सूरण] एक प्रसिद्ध कद जो स्वाद में कसैला तथा गुण मे अग्नि दीपक और अर्श रोगनाशक होता है। ओल। जमी-कद।

सूरपनखा†—स्त्री०=शूर्पनखा।

सूर-पुत्र—पु० [स०] सूर्य-सुत्र (१ सुग्रीव। २. कर्ण। ३ शनि)।

सूर-वीर* —पु०=शूर-वीर।

सूरमस—पु० [स०] १ सभवत असम-देश की सूरमा नदी की दून और उपत्यका का पुराना नाम। २. उक्त उपत्यका का निवासी।

सूरमल्लार—पु० [सूरदास (कवि)+मल्लार (राग)] सारग और मल्लार के योग से वना हुआ एक संकर राग जो वर्षा ऋतु मे दिन के दूसरे पहर मे गाया जाता है।

सूरमा—पु० [सं० शूर] [भाव० सूरमापन] योद्धा। वीर। वहादुर।

सूरमुखी* —पु० स्त्री०=सूरजमुखी।

सूरवाँ†—पु०=सूरमा।

सूरसावत—पु० [स० शूर+सामत] १. युद्ध-मत्री। २ नायक। सरदार।

सूरसुत—पु० [सं०] १. शनि ग्रह। २. सुग्रीव।

सूर-सुता—स्त्री० [सं०] यमुना।

सूर-सूत—पु० [स० ष० त०] सूर्य के सारथि, अरुण।

सूरसेन*—पु०=शूरसेन।

सूरसेनपुर†—पु० [सं० शूरसेन+पुर] मथुरा नगरी।

सूरा—पु० [हिं० सुडी] अनाज के गोले में पाया जानेवाला एक प्रकार का कीडा, जिससे अनाज को किसी प्रकार की हानि नही होती। अनाज के व्यापारी इसे मागलिक समझते हैं।

पु० [अ०] कुरान के प्रकरणों में से कोई एक प्रकरण।

सूराख—पु० [फा०] १. छेद। छिद्र। २. छोटी कोठरी या घर। (लश०)

सूरापण†—पु०=सूरमापन। (राज०)

सूरिजान—पु० =सूरजान।

सूरि—पु० [स०] १. यज्ञ करानेवाला पुरोहित। ऋत्विज्। २. वहुत वडा पडित या विद्वान् आचार्य। ३. वृहस्पति का एक नाम। ४. कृष्ण का एक नाम। ५. सूर्य। ६. यादव।

सूरी (रिन्)—पु० [स०] १. विद्वान्। पडित। आचार्य। २ जैन विद्वान् यतियो की उपाधि।

स्त्री० [स०] १. विदुषी। पडिता। २. सूर्य की पत्नी। ३ कुती। ४. राई।

†स्त्री० [सं० शूल] भाला।

†स्त्री०=सूली।

सूरुज*—पु०=सूर्य।

सूरुवाँ* —पु०=सूरमा।

पु०=शोरवा।

सूरेठ—पु० [देश०] एक हाथ लम्वी खपची जिससे वहेलिये चोगे मे से लासा निकालते है।

सूर्मि, सूर्मी—स्त्री० [सं०] १ लोहे की वनी हुई स्त्री की मूर्ति। २ पानी वहने की नाली।

सूर्य—पु० [स०] १. हमारे सौर जगत् का वह सवसे उज्ज्वल वडा और मुख्य ग्रह, जिसकी अन्य सव ग्रह परिक्रमा करते और जिससे सव ग्रहो को ताप तथा प्रकाश प्राप्त होता है। दिनकर। प्रभाकर।

विशेष—हमारे यहाँ यह वहुत वडा देवता माना गया है और छाया तथा सज्ञा नाम की इसकी दो पत्नियाँ कही गई हैं; और इसके रथ का सारथि अरुण माना गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह जलती हुई गैसों का वहुत वडा गोला है, जो समस्त सौर जगत् को ऊर्जा तथा जीवनी-शक्ति प्रदान करता है। पृथ्वी से यह ९३०००,००० मील की दूरी पर है। इसका व्यास ८०५,००० मील है और यह पृथ्वी से १३००,००० गुना वड़ा है, परतु इस का घनत्व पृथ्वी के घनत्व का चौथाई ही है।

मुहा०—सूर्य को दीपक दिखाना=जो स्वय परम प्रसिद्ध, महान् या श्रेष्ठ हो, उसके सवध में कुछ कहना, वतलाना या उसका परिचय देना। **सूर्य पर थूकना**=जो वहुत महान् हो, उसके सवध मे कोई अनुचित या निंदनीय वात कहना।

२ पुराणानुसार सूर्यों की सख्या बारह होने के कारण, साहित्य मे बारह की सख्या का सूचक । ३ अपने क्षेत्र या विषय का बहुत बड़ा कृती, ज्ञाता या पडित । ४. आक । मदार ।
सूर्य-कमल—पु० [स०] सूरजमुखी फूल।
सूर्य-कर—पु० [स०] सूर्य की किरण।
सूर्यकांत-मणि—पु० [स०] १. एक प्रकार का कल्पित रत्न या मणि। कहते हैं कि जब यह धूप मे रखा जाता है, तब इसमे से आग निकलने लगती है। सूर्यमणि। २ सूरजमुखी शीशा । आतशी शीशा । ३ आदित्यपर्णी।
सूर्यकाति—स्त्री० [स०] १ सूर्य की दीप्ति या प्रकाश । २. तिल का फूल । ३ आदित्यपर्णी नाम का पौधा और उसका फूल ।
सूर्य-काल—पु० [स० १ सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। २ दिन का समय। ३ फलित ज्योतिष मे, शुभाशुभ का विचार करने के लिए एक प्रकार का चक्र।
सूर्यकालानल—पु० [स०] फलित ज्योतिष मे, मनुष्य का शुभाशुभ जानने का एक प्रकार का चक्र।
सूर्य-कांत—पु० [स०] १ सगीत मे एक प्रकार का ताल। २ एक प्राचीन जनपद ।
सूर्य-ग्रह—पु० [स०] १ सूर्य। २. सूर्य पर लगनेवाला ग्रहण। ३. राहु। ४ केतु। ५ घडे का पेंदा।
सूर्य-ग्रहण—पु०[स०] १ पृथ्वी और सूर्य के बीच मे चन्द्रमा के आ जाने और सूर्य आड मे हो जाने के कारण होने वाला ग्रहण। (सोलर इक्लिप्स) २ हठयोग की परिभाषा मे, वह अवस्था जब प्राण पिंगला नाडी से होकर कुडलिनी मे पहुँचते हैं।
सूर्य-चित्रक—पु० [स०] एक प्रकार का उपकरण या यत्र जिससे सूर्य के चित्र लिए और उसके ताप की घनता नापी जाती है। (हीलियोग्राफ)
सूर्य-चित्रीय—वि० [स०] १ सूर्य के चित्र से सबध रखनेवाला। २. सूर्य-चित्रक से सबध रखनेवाला। (हीलियोग्राफिक)
सूर्यज—वि० [स०] सूर्य से उत्पन्न।
पु० १ शनिग्रह। २ यम। ३ सावर्णि। ४. कर्ण। ५. सुग्रीव। ६ रेवत।
सूर्यजा—स्त्री० [स०] यमुना नदी।
सूर्य-तनय—पु० [स०] सूर्य-पुत्र।
सूर्य-तनया—स्त्री० [स० ष० त०] यमुना।
सूर्य-ताप—पु० [स०] सूर्य की किरणो से उत्पन्न होनेवाला ताप या गरमी जिससे वातावरण गरम होता है, और जीव-जन्तुओं, वनस्पतियो आदि की जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। आतप। (इन्सोलेशन)
सूर्य-तापिनी—स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।
सूर्य-ध्वज—पु० [स०] शिव का एक नाम।
सूर्य-नंदन—पु० [स०] १ शनि। २ कर्ण। ३. सुग्रीव।
सूर्य-नमस्कार—पु० [स०] आज-कल एक विशिष्ट प्रकार का व्यायाम जो सूर्योदय के समय धूप मे खडे होकर किया जाता है।
सूर्य-नाड़ी—स्त्री० [स०] पिंगला नाडी। (हठयोग)
सूर्यपति—पु० [स०] सूर्यदेवता।
सूर्यपत्र—पु० [स०] १ ईसरमूल। अर्कपत्री। २ हुरहुर। ३ आक। मदार।
सूर्यपर्णी—स्त्री०[स०] १. ईसरमूल। अर्कपत्री। २. बनउडद। मखवन।
सूर्य-पर्व्व (न्)—पु०[स०] किसी नई राशि मे सूर्य के प्रवेश करने का काल। सूर्य-सक्राति।
सूर्य-पाद—पु० [स०] सूर्य की किरण।
सूर्य-पुत्र—पु० [स०] १. शनि। २ यम। ३ वरुण। ४ अश्विनी-कुमार। ५ सुग्रीव। ६ कर्ण।
सूर्य-पुत्री—स्त्री० [स०] १ यमुना। २ बिजली। विद्युत्।
सूर्य प्रदीप—पु० [स०] एक प्रकार का ध्यान या समाधि। (बौद्ध)
सूर्य-प्रभ—वि० [स०] सूर्य के समान प्रभावाला।
पु० योग मे एक प्रकार की समाधि।
सूर्य-प्रशिष्य—पु० [स०] राजा जनक का एक नाम।
सूर्य फणि—पु०[स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र, जिससे कोई कार्य प्रारभ करते समय उसका शुभाशुभ परिणाम निकलाते है।
सूर्य-भक्त—पु० [स०] बधूक नामक पौधा और उसका फूल। गुल-दुपहरिया।
सूर्य-भक्तक—पु० [स०] १. सूर्य का उपासक। २. गुल-दुपहरिया। बन्धूक।
सूर्यभक्ता—स्त्री० [स०] हुरहुर। आदित्य भक्ता।
सूर्यभा—वि० [स०] सूर्य के समान अर्थात् बहुत अधिक प्रकाशमान।
सूर्य-भ्राता—पु० [स० सूर्यभ्रातृ] ऐरावत हाथी का एक नाम।
सूर्य-मणि—पु० [स०] सूर्यकात मणि।
सूर्यमाल—पु० [स०] शिव का एक नाम।
सूर्यमास—पु०=सौर मास।
सूर्यमुखी (खिन्)—पु०, स्त्री० सूरजमुखी।
सूर्य-रश्मि—पु० [स०] १. सूर्य की किरण। २ सविता नामक वैदिक देवता।
सूर्यर्क्ष—पु० [स०] वह नक्षत्र जिसमे सूर्य की स्थिति हो।
सूर्य-लता—स्त्री० [स०]=सूर्य-वल्ली।
सूर्य-लोक—पु० [स०] सूर्य का लोक।
विशेष—ऐसा प्रवाद है कि वीर गति प्राप्त होने के उपरात योद्धा इसी लोक मे आते हैं।
सूर्य-वंश—पु० [स०] क्षत्रियो के दो आदि और प्रधान वशो मे से एक जिसका आरभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।
सूर्यवंशी (शिन्)—पु० [सं०] सूर्यवश मे जन्म लेनेवाला।
सूर्य-वंशीय—पु०[स०]=सूर्यवश सबंधी।
सूर्य-वन—पु०[स०] एक प्राचीन तीर्थ।
सूर्य-वर्चस्—वि०[स०] सूर्य की भाँति अर्थात् बहुत अधिक प्रकाशमान्।
सूर्य-वल्लभा—स्त्री०[स०] १. हुरहुर। आदित्यभक्ता। २ कमलिनी।
सूर्य-वल्ली—स्त्री०[स०] १ अधाहुली। अर्कपुष्पी। २. क्षीर काकोली।
सूर्यवान् (वत्)—पु०[स०] रामायण मे उल्लिखित एक पर्वत।
सूर्यवार—पु०[स०] रविवार।
सूर्य-विलोकन—पु० [स०] हिन्दुओ मे एक प्रकार का मागलिक कार्य जिसमें चार महीने के बच्चे को सूर्य के दर्शन कराये जाते हैं।

सूर्य वृक्ष—पु०[सं०] १ आक। मदार। २ अधाहुली।
सूर्य व्रत—पु०[सं०]१ एक प्रकार का व्रत जो सूर्य भगवान् को प्रसन्न करने के लिए रविवार को किया जाता है। २ ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र।
सूर्य-शिष्य—पु०[सं०]१ याज्ञवल्क्य का एक नाम। २. राजा जनक का एक नाम।
सूर्य श्री—पु०[सं०] विश्वेदेवा में से एक।
सूर्य-संक्रमण—पु०[सं०]=सूर्य-संक्रांति।
सूर्य संक्रांति—स्त्री० [सं०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, जो एक पर्व माना गया है। संक्रांति।
सूर्य मणि—पु० [सं०] १ सूर्य। २ आक। मदार। ३. केसर। ४ तांबा। ५ एक प्रकार का मानिक।
सूर्य-सारथि—पु०[सं०] (सूर्य का सारथि) अरुण।
सूर्य-सावर्णि—पु०[सं०] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार आठवें मनु का नाम। ये सूर्य और संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न (औरस) माने गये हैं।
सूर्यसावित्र—पु०[सं०] विश्वेदेवों में से एक।
सूर्य-सुत—पु०[सं०]=सूर्य-पुत्र।
सूर्यसूक्त—पु० [सं०] ऋग्वेद का एक सूक्त, जिसमें सूर्य की स्तुति है।
सूर्यसूत—पु०[सं०] सूर्य का सारथि, अरुण (देव)।
सूर्य स्नान—पु०[सं०] धूप-स्नान।
सूर्यांशु—पु०[सं०] सूर्य की किरण।
सूर्या—स्त्री०[सं०]१ सूर्य की पत्नी, संज्ञा। २. नव-विवाहिता स्त्री। नवोढा। ३ इन्द्र-वारुणी।
सूर्याकर—पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद। (रामायण)
सूर्याक्ष—पु०[सं०] विष्णु।
वि० सूर्य के समान नेत्रोंवाला।
सूर्याणी—स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी, संज्ञा।
सूर्यातप—पु०[सं०]१ सूर्यताप। २ धूप। घाम।
सूर्यात्मज—पु०[सं०] सूर्य-पुत्र।
सूर्यायाम—पु०[सं०] सूर्यास्त का समय।
सूर्यालोक—पु०[सं०] १ सूर्य का प्रकाश। २ धूप।
सूर्यावर्त—पु०[सं०] १ अधकपारी या आधासीसी नाम का सिर का दर्द। २ हुरहुर। ३ सुवर्चला। ४ गज पिप्पली। ५ एक प्रकार का जल-पात्र। ६ बौद्धों में एक प्रकार की समाधि।
सूर्याश्म (श्मन्)—पु०[सं०] सूर्यकान्त मणि।
सूर्याश्व—पु० [सं०] सूर्य का घोड़ा।
सूर्यास्त—पु०[सं०]१ सूर्य का अस्त होना। २. सूर्य के अस्त होने का समय।
सूर्याह्व—पु० [सं०]१. तांबा। ताम्र। २. आक। मदार। ३. महेन्द्र वारुणी।
सूर्येन्दुसंगम—पु०[सं०] अमावस्या, जिसमें सूर्य और इन्दु अर्थात् चन्द्रमा एक ही राशि में स्थित रहते हैं।
सूर्योच्च—पु०[सं०] =रवि-उच्च। (देखें)
सूर्योदय—पु०[सं०]१ सूर्य का उदित होना या निकलना। २ सूर्य के उदित होने का समय। प्रातःकाल। सवेरा।
सूर्योदय-गिरि—पु०[सं०]=उदयाचल।
सूर्योदयन—पु०[सं०]=सूर्योदय।
सूर्योद्यान—पु०[सं०] सूर्यवन नामक तीर्थ।
सूर्योपनिषद्—स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।
सूर्योपस्थान—पु० [सं०] सूर्य की एक प्रकार की उपासना।
सूर्योपासक—पु०[सं०] सूर्य की उपासना करनेवाला। सूर्यपूजक। सौर।
सूर्योपासना—स्त्री०[सं०] सूर्य की आराधना, उपासना या पूजा।
सूल—पु०[सं० शूल]१ बरछा। भाला। साँग। २. कोई नुकीली चीज। ३. किसी नुकीली चीज के गड़ने की सी पीड़ा। ४ पेट की शूल नामक पीड़ा या रोग।
क्रि० प्र०—उठना।
५. माला के ऊपर का फुदन। ६=दे० शूल।
वि०=वसूल। (दलालों की बोली)।
सूलधर, सूलधारी*—पु०=शूलधर (शिव)।
सूलना—स०[हिं० सूल+ना (प्रत्य०)]१ भाले से छेदना। २. नुकीली चीज चुभाना। ३. कष्ट देना। पीड़ित करना।
अ० १. कोई नुकीली चीज गड़ना या चुभना। २ कष्ट पाना। पीड़ित होना।
सूलपानि*—पु०=शूलपाणि (शिव)।
सूली—स्त्री० [सं० शूल] १. प्राणदंड की एक प्राचीन प्रणाली जिसमें दंडित मनुष्य एक नुकीले लोहे के डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके सिर पर मुँगरे से आघात किया जाता था। इससे नीचे से ऊपर तक उसका सारा शरीर छिद जाता था और वह मर जाता था।
क्रि० प्र०—चढ़ना।—चढ़ाना।—देना।—पाना।—मिलना।
२. आज-कल फाँसी नामक प्राणदंड। ३. बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा की स्थिति।
मुहा०—प्राण सूली पर टँगा रहना=किसी प्रकार की दुबधा में पड़ने के कारण बहुत अधिक मानसिक कष्ट होना। जैसे—जब तक लड़का लौटकर नहीं आया था, तब तक प्राण सूली पर टँगे थे।
३. एक प्रकार का नरम लोहा जिसके छड़ बनाये जाते हैं। (लुहार)
४ दक्षिण दिशा। (लश०)
†पु०=शूली (शिव)।
सूवना*—अ०[सं० स्रवण] प्रवाहित होना। बहना।
†स० प्रसव करना। जनना। (पश्चिम)
†पु० सूआ (तोता)।
सूवर†—पु०=सूअर।
सूवा—पु० [?] फारसी संगीत के अंतर्गत २४ शोभाओं में से एक।
†पु०=सूआ, (तोता)।
सूस—पु० [सं० शिशुमार]=सूँस (जल-जन्तु)।
सूसमार—पु०[सं० शिशुमार] सूँस (जल-जन्तु)।
सूसला†—पुं०[सं० शश] खरगोश।
सूसि*—पुं०=सूँस (जल-जन्तु)।
सूसी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
सूहवा†—वि०=सहवा (स्त्री)।
†पु०=सूहा (राग)।

सूहा—पु०[हिं० सोहना] एक प्रकार का चमकीला गहरा लाल रंग। (ब्राइट रेड)
वि० [स्त्री० सूही] उक्त प्रकार के लाल रंग का। लाल। सुर्ख।
पु०[स० सुहव?] संगीत मे ओडव-षाडव जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर के अंत में गाया जाता है।

सूहा-टोडी—स्त्री०[हिं० सूहा+टोडी] संगीत में संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

सूहा-बिलावल—पु० [हिं० सूहा+बिलावल] संगीत मे संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

सूहा-श्याम—पु०[हिं० सूहा+श्याम] संगीत मे संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

सृंखला†—स्त्री०=शृंखला।

सृंग†—पु०=शृंग (चोटी)।

सृंगवेरपुर†—पु०=शृंगवेरपुर।

सृंगी*—पु०=शृंगी (ऋषि)।

सृंजय—पु०[स०]१. देववात का एक पुत्र। (ऋग्वेद) २ मनु का एक पुत्र। ३ पुराणानुसार एक प्राचीन राजवंश जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे।

सृकंडू—स्त्री०[स०] खाज या खुजली नामक रोग। कंडु।

सृक—पु० [स०] १ शूल। २. बरछा। भाला। ३ तीर। बाण। ४ वायु। हवा। ५ कमल।
†पु० [स० स्रक्] माला या हार।

सृकाल*—पु०=शृगाल (गीदड)।

सृक्कणी, सृक्किणी—स्त्री० [स०] होंठो का कोना। मुँह का कोना।

सृक्व (न्)—पु०[स०] होंठो का छोर। मुँह का कोना।

सृग*—पु०[स० सृक]१ बरछा। भाला। २. तीर। बाण।
†पु०[स० स्रक्] माला या हार।

सृगाल†—पु०=शृगाल (गीदड)।
विशेष—'सृगाल' के यौ० के लिए दे० 'शृगाल' के यौ०।

सृग्विनी*—स्त्री०=स्रग्विणी (छंद)।

सृजक*—पु० [स०] सृजन (सर्जन) करनेवाला।

सृजन*—पु० [स० सृज, सर्जन] १ सृष्टि करने अर्थात् जन्म देने की क्रिया या भाव। सर्जन। रचना। २ उत्पत्ति। सृष्टि। ३. छोडना या निकालना।

सृजनहार*—पु० [स० सृज, सर्जन+हिं० हार] सृजन (सर्जन) करनेवाला। सृष्टिकर्ता।

सृजना—स० [स० सृज+हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि करना। जन्म देना। उत्पन्न करना, रचना या बनाना।

सृज्य—वि०[स०]१ जो उत्पन्न किया जाने को हो। २. जो सृजन किये जाने के योग्य हो। ३. छोडे या निकाले जाने के योग्य।

सृणि—पु०[स०]१ चन्द्रमा। २ शत्रु।
स्त्री० हाथी को वश मे करनेवाला, अंकुश।

सृणिक—पु०[स०] महावत का अंकुश।
स्त्री० थूक।

सृणीक—पु०[स०]१. वायु। हवा। २ अग्नि। ३ वज्र। ४. मदोन्मत्त व्यक्ति।

सृणीका—स्त्री० [सं०] थूक। लार।

सृत—भू० कृ०[स०] १ जो खिसक गया हो। सरका हुआ। २ जो चला गया हो।
पु० चकमा देकर शत्रु पर शस्त्र से प्रहार करना।

सृता—स्त्री० [स०] सृति। (दे०)

सृति—स्त्री०[स०]१ जाने या खिसकने की क्रिया या भाव। २ आवागमन। ३ जाने का मार्ग। पथ। ४. आचरण। ५ जन्म। ६ निर्माण।

सृत्वन्—पु० [स०] १ खिसकने या सरकने की क्रिया या भाव। २ बुद्धि। ३ प्रजापति।

सृत्वर—वि०[स०] १ जो जा या चल रहा हो। २ चलता हुआ। गतिशील।

सृत्वरी—स्त्री०[स०]१. नदी। धारा। २ माता।

सृप—पु०[स०] चन्द्रमा।

सृप्त—भू० कृ०[स०] खिसका या फिसला हुआ।

सृप्र—वि०[स०]१. चिकना। स्निग्ध। २ जिस पर हाथ या पैर फिसलता हो।
पु०१. चन्द्रमा। २. मधु। शहद।

सृप्रा—स्त्री०[स०]=सिप्रा (नदी)।

सृमर—वि०[स०]१. जो चल रहा हो। २ गतिशील।
पु० एक प्रकार का पशु। (कदाचित् बालमृग)

सृष्ट—भू० कृ०[स०]१ बनाया या रचा हुआ। २ उत्पन्न या पैदा किया हुआ। ३ मिला हुआ। युक्त। ४ छोडा या निकाला हुआ। त्यागा हुआ। परित्यक्त। ६ जिसके संबंध मे दृढ निश्चय या संकल्प किया गया हो। ७ अलंकृत। भूषित।
पु० तिन्दुक या तेंदू का वृक्ष।

सृष्ट-मारुत—वि०[स०] वैद्यक मे पेट की वायु को निकालनेवाला (औषध या खाद्य पदार्थ)।

सृष्टि—स्त्री०[स० √सृज् (सर्जन करना)+क्तिन्]१ बना या रचकर तैयार करने की क्रिया या भाव। निर्माण। रचना। २. उत्पत्ति। पैदाइश। ३ वह चीज जो बनाकर या पैदा करके तैयार की गई हो। ४ जगत् या संसार का आविर्भाव या उत्पत्ति। ५ यह सारा विश्व और इसमे के सभी चर और अचर प्राणी तथा पदार्थ। (क्रियेशन, उक्त सभी अर्थों मे) ६ निसर्ग। प्रवृत्ति। ७ उदारता या दानशीलता। ८ एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी के लिए बनाई जाती थी। ९ गंभारी का पेड।

सृष्टिकर्ता—पु० [सं० सृष्टिकर्तृ]१. सृष्टि या संसार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २ ईश्वर। परमात्मा।

सृष्टि-तत्त्व—पु० [स०] सृष्टि-विज्ञान।

सृष्टिपत्तन—पु० [सं०] एक प्रकार की मंत्र-शक्ति।

सृष्टि-विज्ञान—पु०[स०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि ब्रह्माण्ड मे ग्रह, तारे, नक्षत्र आदि किस प्रकार उत्पन्न होते, बढते और अन्त मे नष्ट होते हैं। (कास्मोलोजी)

सृष्टि-शास्त्र—पु० =सृष्टि-विज्ञान।
सृष्ट्यन्तर—पुं० [सं०] चार वर्णों के अंतर्गत अंतर-जातीय विवाह से उत्पन्न होनेवाली संतान।
सेक—पु० [हिं० सेकना] १. सेंकने की क्रिया या भाव। २. ताप। गरमी। ३ शरीर के किसी रुग्ण अंग पर गर्म चीज से पहुँचाई जानेवाली गर्मी। टकोर। (फॉमेन्टेशन) ४ किसी प्रकार का सामान्य कष्ट, विपत्ति या संकट। (पश्चिम) जैसे—ईश्वर करे, तुम्हे जरा भी सेंक न लगे।
क्रि० प्र०—आना।—लगना।
स्त्री० [हिं० सीक] लोहे की कमानी जो छीपी कपड़े छापने के काम में लाते हैं।
सेंकना—स० [सं० श्रेपण=जलाना, तपाना] १ आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। जैसे—रोटी सेंकना। २ आँच के पास या ताप के सामने रखकर गरम करना। जैसे—(क) सरदी में अँगीठी से हाथ-पैर सेंकना। (ख) खुली जगह में बैठकर धूप सेंकना। ३. कपड़ा, रूई, आदि गरम करके पीड़ित अंग पर उसका ताप पहुँचाना। जैसे—पेट या फोड़ा सेंकना। (फोमेन्टेशन)
मुहा०—आँखें सेंकना=रूपवती या सुन्दरी स्त्री को बारबार देखकर तृप्त या प्रसन्न होना।
सेंकाई—स्त्री० [हिं० सेंकना] सेंकने की क्रिया या भाव।
सेंकी†—स्त्री० [फा० सीनी, हिं० सनहकी] तश्तरी। रकाबी।
सेंगर—पु० [सं० शृंगार] १ एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २ उक्त पौधे की फली। ३ बबूल की फली। ४ एक प्रकार का अगहनी धान।
पु० क्षत्रियों की एक जाति।
सेंगरा†—पु० [फा० संग या सं० शृंखल ?] मोटे बाँस का वह छोटा टुकड़ा जिसकी सहायता से मेमराज लोग मिलकर भारी धरनें, पत्थर आदि उठाते हैं।
विशेष—सेंगरे में मोटे रस्से बाँधे जाते हैं और उन्हीं रस्सों पर धरनें, पत्थर आदि लटकाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाये जाते हैं।
†पु० संगरा।
सेंजी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। (पंजाब)
सेंट*—स्त्री० [?] दूध की धार।
पु० [अं०] १. खुशबू। २ सुगंधिपूर्ण द्रव्य। जैसे—इत्र।
सेंटर—पु० [अं०] केन्द्र। (दे०)
सेंट्रल—वि० [अं०] केंद्रीय। (दे०)
सेंठा—पु० [देश०] १. मूंज या सरकंडे के सींके का निचला मोटा मजबूत हिस्सा जो मोढ़े आदि बनाने के काम में आता है। कसा। २. एक प्रकार की घास, जो प्रायः छप्पर छाने के काम आती है। ३. वह पोली लकड़ी जिसमें जुलाहे ढरी फँसाते हैं। डाँड़।
सेंढ़—पु० [देश०] सुनारी के काम में आनेवाला एक प्रकार का खनिज पदार्थ।
सेंत†—स्त्री० =सेंती।
सेंतना†—स० =सतना।
सेंत-मेंत—अव्य० [हिं० सेंत+मेंत (अनु०)] १. बिना दाम दिये सेंत में। २ बिना कुछ किये या दिये। मुफ्त में। ३. फजूल। व्यर्थ।
सेंति†—विभ० आधुनिक हिंदी की 'से' विभक्ति का पुराना रूप।
स्त्री० —सेंती।
सेंती†—स्त्री० [सं० सहति=(क) किफायत (ख) ढेर या राशि] ऐसी स्थिति जिसमें या तो (क) पास का कुछ भी व्यय न करना पड़े, (ख) कुछ भी परिश्रम न करना पड़े, अथवा (ग) अनायास ही कोई चीज बहुत अधिक मात्रा या संख्या में प्राप्त हो।
मुहा०—सेंती का या सेंती-मेंती का=(क) जिसके लिए कुछ भी परिश्रम न करना पड़ा हो। मुफ्त का या मुफ्त में। जैसे—उन्हें बाप-दादा का सेंती का माल मिला है। (ख) जिसके लिए कुछ भी व्यय न करना पड़ा हो। उदा०—संगा संग लीन्हें ज् सेंति के फिरत रैन दिन बन में ठाढे।—सूर। (ग) जो बहुत अधिक मात्रा या मान में उपस्थित या प्रस्तुत हो। उदा०—दधि में परी सेंति की चींटी, सो पै सबै कढाई।—सूर। (घ) बिलकुल अकारण या व्यर्थ। जैसे—उसके लिए कोई सेंती का प्रयत्न क्यों करे।
प्रत्य० [प्रा० सुंतो, पंचमी विभक्ति] पुरानी हिन्दी की करण और अपादान की विभक्ति; से। उदा०—राजा सेंति कुँवर सब रहहीं। अस अस मच्छ समुद मह अहहीं।—जायसी।
सेंथा†—पु० =सेंठा।
सेंथी†—स्त्री० [सं० शक्ति] छोटा भाला। बरछी।
सेंद†—स्त्री० =सेंध।
सेंदुर†—पु० [सं० सिन्दूर] ईंगुर की बुकनी जो प्रायः सौभाग्यवती स्त्रियाँ माँग में लगाती हैं। सिंदूर।
क्रि० प्र०—भरना।—लगाना।
मुहा०—सेंदुर चढ़ना=स्त्री का विवाह होना। सेंदुर पहनना=माँग में सिन्दूर भरना या लगाना। (किसी की माँग में) सेंदुर देना=किसी स्त्री की माँग में सिन्दूर डालकर उससे विवाह करना या उसे अपनी पत्नी बनाना।
सेंदुरदानी†—स्त्री० [हिं० सेंदुर+फा० दानी] सिंदूर रखने का छोटा डिब्बा। सिंदूर की डिबिया।
सेंदुरा, सेंदुरिया —वि०, पु० =सिंदूरिया।
सेंदुरी†—वि० स्त्री० [हिं० सेंदुर+ई (प्रत्य०)] सिंदूरी गाय।
सेंद्रिय—वि० [सं०] १. जिसमें इन्द्रियाँ हों। इन्द्रियोंवाला। जैव। (जीव या जन्तु) (आर्गनिक) २ पुंस्त्व या पौरुष से युक्त।
सेंध—स्त्री० [सं० संधि] १. चोरी करने के लिए मकान की दीवार में किया हुआ बड़ा छेद, जिसमें से होकर चोर किसी कमरे या कोठरी में घुसता है। संधि। नकब।
क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।
२. इस प्रकार छेद करके की जानेवाली चोरी।
क्रि० प्र०—लगना।
स्त्री० [देश०] १. गोरख ककड़ी। फूट।। २. कचरी नामक फल। पेहँटा।
सेंधना†—स० [हिं० सेंध] चोरी करने के उद्देश्य से दीवार में छेद करके मकान में घुसने के लिए रास्ता बनाना।

सेंधा नमक—पु०[सं० सैंधव] एक प्रकार का नमक जो पश्चिमी पाकिस्तान की खानों से निकलता है। सैंधव। लाहौरी नमक।

सेंधिया—वि० [हिं० सेंध] दीवार मे सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। जैसे—सेंधिया चोर।
पु० [?] १. ककड़ी की जाति की एक बेल जिसमे तीन-चार अगुल लम्बे छोटे-छोटे फल लगते हैं। कचरी। सेंध। पेहँटा। २ फूट नामक फल। ३. एक प्रकार का विष।
†पु०=सिंधिया।

सेंधी—स्त्री०[सिंघ (देश०)]१ खजूर। २. खजूर की शराब।
†स्त्री०=सेंधिया (फल)।

सेंधुआर†—पु०=सिंधुआर (जन्तु)।

सेंधुर†—पु० =सिंदुर।

सेंवर†—पु०=सेमल।

सेंभा†—पु०[देश०] घोड़ो का एक वात रोग।

सेंवई†—स्त्री०=सेवई।

सेंवर†—पु०=सेमल।

सेंशर—पु०[अ०]१ यह कहना कि तुमने यह दोष या भूल की है। २ निंदात्मक भर्त्सना।

सेंसर—पु०[अ०]१ वह सरकारी अफसर जिसे पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि छपने या प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, चित्रपट दिखाये जाने पर या तार से कही समाचार भेजे जाने के पूर्व उन्हे देखने या जाँचने और टोकने का अधिकार होता है। २ उक्त प्रकार की जाँच का काम।

सेंसर-बोर्ड—पु० [अ०] सेंसर करनेवाले अधिकारियों की समिति।

सेंह†—स्त्री० =सेंध।

सेंहा—पु०[हिं० सेंध] कूआँ खोदने का पेशा करनेवाला मजदूर। कुईंरा।
†स्त्री०=सेंध।

सेंही†—स्त्री०=सेंध।

सेंहुड़—पु० [सं० सेहुण्ड] थूहर।

से—विभ०[प्रा० सुंतो, पु० हिं० सेंति]१ करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पचमी की विभक्ति, जिसका प्रयोग इन अर्थों मे होता है—(क) द्वारा, जैसे—हाथ से देना, (ख) आपेक्षिक मान मे कम या अधिक, जैसे—इससे कम, (ग) सीमा का आरम्भ; जैसे—यहाँ से।
मुहा०—(स्त्री का किसी पुरुष) से रहना=पर-पुरुष से सभोग करना। उदा०—मीर गुल से अब के रहने मे हुई वह बेकली। टल गई क्या नाफदानी पेड पत्थर हो गया।—जानसाहब।
२. पुरानी हिंदी और बोलचाल मे, कही-कहीं सप्तमी या अधिकरण के चिह्न 'पर' की तरह प्रयुक्त। उदा०—कहहि कबिर गूँगे गुर खाया, पूछे से का कहिया।—कबीर।
वि० हिं० 'सा' (समान) का बहु०। जैसे—थोड़े से कपडे, बहुत से लोग।
*सर्व० हिं० 'सो' (वह) का बहु०।
स्त्री०[सं०]१ सेवा। २ कामदेव की पत्नी रति का एक नाम।

सेई†—स्त्री०[हिं० सेर] अनाज नापने का काठ का एक गहरा बरतन।
†सर्व० [हिं० से (वह)+ई (प्रत्य०)] वही। उदा०—सेई तुम सेई हम कहियत।—कबीर।

सेउ*—पु० १. दे० 'सेव' (पकवान)। २ दे० 'सेव' (फल)। ३ दे० 'शिव'।

सेउवा†—स्त्री०=सेवा।

सेकंड—पु०[अं०] एक मिनट का ६०वाँ भाग।
वि० गिनती मे दो के स्थान पर पड़नेवाला। दूसरा।

सेक—पु०[सं०]१. पानी से सीचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। २. पानी का छिड़काव। ३ अभिषेक। ४. तेल आदि की मालिश। (वैद्यक)
†पु०=सेंक। (पश्चिम)

सेकड़ा†—पु० [देश०]वह चाबुक या छड़ी, जिससे हलवाहे बैल हाँकते हैं। पैना।

सेकतव्य—वि०[सं०] १. छिड़के या सीचे जाने के योग्य। २ मालिश के योग्य।

सेक-पात्र—पु० [सं०] पानी छिड़कने या सीचने का पात्र या बरतन।

सेकुआ†—पु० [देश०] काठ के दस्ते का लंबा करछी या डौआ, जिससे हलवाई दूध औटाते है।

सेक्ता—वि०[सं० सेक्तृ] [स्त्री० सेक्त्री] १ सीचनेवाला। २ गौ, घोड़ी आदि मे गर्भाधान करानेवाला।
पु० स्त्री का पति। शौहर।

सेक्रेटरी—पु०[अं०] १. मत्री। २ सचिव।

सेक्रेटरियट—पु० [अं०]=सचिवालय।

सेक्शन—पु०[अं०]१. विभाग। जैसे—इस दरजे मे दो सेक्शन हैं। २. धारा।

सेख†—वि०, पुं०=शेष।
†पु०=शेख।

सेखर*—पु०=शेखर।
†पु०=शिखर।

सेखी†—स्त्री०=शेखी।

सेगा—पु०[अ० सेग़.]१ किसी काम या बात का कोई विशिष्ट विभाग या शाखा। २. व्यवस्था, शासन आदि का महकमा।

सेगुन†—पु०=सागौन (वृक्ष)।

सेगोन, सेगौन—पु०[देश०]मटमैले रंग की वह लाल मिट्टी जो नालो के पास पाई जाती है।
†पु०=सागौन (वृक्ष)।

सेच—पु०[सं०]१ सिंचाई। २. छिड़काव।

सेचक—वि० [सं०]१. सेचन करने या सीचनेवाला। २ छिड़कनेवाला। तर करनेवाला।
पु० बादल। मेघ।

सेचन—पु०[सं०√सिच् (सीचना)+ल्युट्—अन] १. पानी मे सीचने की क्रिया या भाव। सिंचाई करना। २. पानी छिड़कना। ३. पानी के छींटे देना। ४. अभिषेक। ५ धातुओ की ढलाई। ६ वह कड़ाही-नुमा छोटा बरतन जिससे नाव मे का पानी बाहर फेंका जाता है।

सेचनक—पु० [सं०] अभिषेक।

सेचनी—स्त्री०[सं०] पानी भरने का बरतन। जैसे—डोल, बालटी आदि।

सेचनीय—वि०[सं०] जिसका सेचन हो सके या होने को हो।

सेचित—भू० कृ० [सं०] जो सींचा गया हो। तर किया हुआ।

सेच्य—वि०[सं०]= सेचनीय।

सेज—स्त्री०[सं० शय्या प्रा० सज्जा]१. बिछौना, विशेषत. सुन्दर और कोमल बिछौना। २. साहित्यिक तथा शृंगारिक क्षेत्र मे वर या वधू का बिछौना।

क्रि० प्र०—करना।

सेजपाल—पु०[हिं० सेज+पाल] प्राचीन काल मे, वह सैनिक जो राजा की शय्या पर पहरा देता था।

सेजरिया*—स्त्री० = सेज।

सेजा—पु०[देश०] आसाम और बगाल मे होनेवाला एक प्रकार का पेड जिस पर टसर के कीडे पाले जाते है।

सेजिया, सेज्या†—स्त्री० = सेज।

सेझ†—स्त्री० = सेज।

सेझदादि†—पु०=सह्याद्रि (पर्वत)।

सेझदारि*—पु०=सह्याद्रि (पर्वत)।

सेझना—अ० [सं० सेधन =दूर करना, हटाना] दूर होना। हटना स० दूर करना। हटाना।

सेट—पु०[सं०] एक प्राचीन तौल या मान।

पु०[अं०] एक साथ पहनी या काम मे लाई जानेवाली चीजो का समूह। कुलक। जैसे—गहनो का सेट, कपडो का सेट, बरतनो का सेट।

पु०=सेंठा।

सेटना—अ०[सं० श्रुत] किसी का महत्त्व, मान आदि स्वीकार करना या मानना।

सेटिल—वि०[अं० सेटिल्ड]१. (झगडा या विवाद) जो निपट गया हो। २ जो निश्चित या तै हो गया हो।

सेटिलमेंट—पु०[अं०]१ खेती के लिए भूमि को नापकर उसका राज-कर निर्धारित करने का काम। बदोबस्त। २ आपस मे होनेवाला निपटारा या समझौता। ३ नई बसाई हुई जगह।

सेठ—पु०[सं० श्रेष्ठी] [स्त्री० सेठानी]। १ बहुत बडा कोठीवाल, महाजन, व्यापारी या साहूकार। २ बहुत बडा धनवान् या सम्पन्न व्यक्ति। ३. खत्रियो की एक जाति। ४. सुनारो का अल्ल या जाति-नाम। ५ दलाल। (डिं०)।

सेठन—पु०[देश०] झाडू। बुहारी।

सेठा—पु०[हिं० सेंठा] सरकडे का निचला भाग।

सेठानी—स्त्री०[हिं० सेठ+आनी (प्रत्य०)]१ सेठ की पत्नी। २. महाजन स्त्री।

सेड़ा†—पु० [देश०] भादो मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

सेड़ी—स्त्री० [सं० चेटि, प्रा० चेडि, हिं० चेरी] सहेली। सखी। (डिं०)

सेढ़—पु० [अ० सेल] बादबान। पाल। (लश०)

क्रि० प्र०—खोलना।—चढाना।—तानना।—बाँधना।—लगाना।

मुहा०—**सेढ़ बजाना**=पाल मे से हवा निकालना जिससे वह लपेटा जा सके। (लश०) **सेढ़ सपटाना**=रस्सा खीचकर पाल तानना।

सेढ़खाना—पु० [सं० सेल=फा० खाना] १. जहाज मे वह कमरा या कोठरी जिसमें पाल भरे रहते हैं। २. वह स्थान जहाँ पाल बनाये जाते है।

सेढ़ा†—पु०[देश०] सेढा नामक भादो मास मे होनेवाला धान।

सेत¹—वि०=श्वेत (सफेद)।

पु०=सेतु।

सेतकुली—पु०[सं० श्वेतकुलीय] सर्पों के अष्ट कुल मे से एक। सफेद जाति के नाग।

सेतदीप*—पु०=श्वेतदीप।

सेत-दुति†—पु० [सं० श्वेतद्युति] चन्द्रमा।

सेतना†—स०=सैंतना (सचित करना)।

सेतबंध†—पु०=सेतुबंध।

सेतवा—पु० [सं० शुक्ति, हिं० सितुही] अफीम काछने की लोहे की कलछी।

सेतवारी†—स्त्री०[सं० सिकता,=बालू+बारी (प्रत्य०)] हरापन लिए हुए बलुई चिकनी मिट्टी।

सेतवाह†—पु०[सं० श्वेतवाहन]१. अर्जुन। २ चन्द्रमा। (डिं०)

सेता†—वि०[सं० श्वेत] [स्त्री० सेती] सफेद। उदा०—सेतो सेतो सब भलो सेतो भलो न केस।

सेतिका†—स्त्री० [सं० साकेत] अयोध्या नगरी का एक नाम।

सेती†—अव्य०[प्रा० सुत] १ किसी के प्रति। को। २. द्वारा। विभ० दे० 'से'।

सेतु—पु०[सं०]१. बाँधने की क्रिया या भाव। बन्धन। २ नदी आदि पार करने के लिए बनाया हुआ रास्ता। पुल। ३ दूर रहनेवाली दो चीजो को आपस मे मिलानेवाला अग या रचना। (ब्रिज)४. पानी की रुकावट के लिए बँधा हुआ बाँध। ५ खेत की मेंड। ६ सीमा। हद। मर्यादा। उदा०—राखहिं निज श्रुति सेतु।—तुलसी। ७ सीमा की सूचक किसी प्रकार की रचना। जैसे—डाँड, मेंड आदि। ८ ओंकार या प्रणव की एक सज्ञा। ९. ग्रन्थ की टीका या व्याख्या। १० वरुण वृक्ष। बरना।

†वि०=श्वेत।

सेतुक—पु०[सं०] १ पुल। २ जलाशय का धुस्स। बाँध। ३ वरुण नामक वृक्ष। बरना।

सेतु-कर—पु०[सं०] सेतु या पुल बनानेवाला।

सेतु कर्म (न्)—पु०[सं०]सेतु या पुल बनाने का काम।

सेतुज—पु०[सं०] दक्षिणापथ के एक स्थान का नाम।

सेतुपति—पु०[सं०] दक्षिण भारत के पुराने रामनद राज्य के राजाओ की वंश परम्परागत उपाधि।

सेतु-पथ्य—पु०[सं०] दुर्गम स्थानो मे जानेवाली सडक। ऊँची-नीची पहाडी घाटियो मे जानेवाली सडक। (कौ०)

सेतुप्रद—पु०[सं०] कृष्ण का एक नाम।

सेतुबंध—पु० [सं०] १ पुल बनाने या बाँधने की क्रिया। २. नहर। ३. वह पथरीला मार्ग जो रामेश्वरम् से कुछ दूर आगे लका की ओर समुद्र में बना हुआ है। प्रवाद है कि इसे नील और उनके साथियो ने श्रीरामचन्द्र जी के लका पर चढाई करने के समय बनाया था।

सेतुबंध रामेश्वर—पु० [सं०] भारत की दक्षिणी सीमा का वह स्थान

जहाँ लका पर चढाई करने के लिए रामचन्द्र ने पुल बनाया और शिव-लिंग स्थापित किया था।

सेतुवा†—पु०=सूस।

†पु०=सेहुँवा (चर्म रोग)।

सेतुशैल—पु०[स०] दो देशो के बीच का सीमा-सूचक पर्वत। सरहद का पहाड।

सेथिया—पु० [तेलगू चेट्टि, चेट्टिया, हिं० सेठिया] आँख, गुदा, मूत्रेंद्रिय आदि संबधी रोगो की चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। (दक्षिण)

सेद†—पु०=स्वेद (पसीना)।

सेदज†—वि० [स्वेदज] पसीने से उत्पन्न होनेवाला कीडा।

सेदरा—पु०[फा० सेह=तीन+दर=दरवाजा] वह मकान, जिसके तीन तरफ खुली जमीन हो। तिदरी।

सेध—पु०[स०] मनाही। निवारण।

सेधक—वि०[स०] हटाने या रोकनेवाला।

सेधा—स्त्री०[स०] साही नाम का जन्तु।

सेन—पु० [स०] १. तन। शरीर। २ जीवन। ३. प्राचीन भारत मे, व्यक्तियो के नाम के अत मे लगनेवाला एक पद। जैसे—शूरसेन। ४ चार प्रकार के दिगम्बर जैन साधुओ मे से एक। ५ बगाल का सिद्ध राजवश जिसने ११वीं से १५वी शताब्दी तक राज्य किया था। ६ बगाल की वैद्य नामक जाति का अल्ल।

वि०१ जिसके सिर पर कोई मालिक हो। सनाथ। २ अधीन। आश्रित।

†वि०=सेना (फौज)।

†पु०=श्येन (बाज पक्षी)।

†स्त्री०=सेध।

सेनजित्—वि०[स०] सेना को जीतनेवाला।

सेनप—पु०[स० सेनापति] सेनापति।

सेनपति*—पु०=सेनापति।

सेनांग—पु०[स०]१ सेना के चार अगो (हाथी, घोडे, रथ और पैदल) मे से हर एक। २ सैनिकों का छोटा दल या टुकडी। सेना का विभाग।

सेना—स्त्री०[स०]१ युद्ध के लिए सिखाये हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए सैनिको या सिपाहियो का बडा दल या समूह। फौज। पलटन। (आर्मी) २ किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए सघटित किया हुआ कोई बडा दल या समूह। जैसे—बालसेना, मुक्ति सेना, वानरसेना आदि।३ इन्द्र का वज्र। ४ भाला। ५ साग। ६ इन्द्राणी। ७ वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत् शभव की माता का नाम। (जैन) ८ प्राचीन भारत मे स्त्रियो के नाम के साथ लगनेवाला एक पद। जैसे—वसतसेना।

†स०[स० सेवन]१. सेवा-टहल करना।

मुहा०—चरण सेना=(क) पैर दबाना। (ख) तुच्छ चाकरी या सेवा करना।

२ आराधना या उपासना करना। ३. औषध आदि का नियमित रूप से प्रयोग या व्यवहार करना। ४ पवित्र स्थान पर निरन्तर वास करना। जैसे—काशी या वृन्दावन सेना। ५ यों ही किसी चीज पर बराबर पडे रहना। जैसे—चारपाई सेना। ६ मादा पक्षी का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अडो पर बैठना। ७ कोई चीज व्यर्थ लेकर बैठे रहना। (व्यग्य)

सेना-कक्ष—पु०[स०] सेना का पार्श्व। फौज का बाजू।

सेना कर्म—पु०[स०]१ सेना का सचालन या व्यवस्था। २. सैनिक सेवा का काम।

सेनागोप—पु०[स०] प्राचीन भारत मे, वह व्यक्ति जो सेना रखता था।

सेनाग्र—पु०[सं०] सेना का अग्रभाव। फौज का अगला हिस्सा।

सेनाग्रणी—पु०[स०]१. सेना का अग्रणी या प्रधान नायक। २. सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सेनाचर—पु०[स०]१. सैनिक। २. शिविर मे रहनेवाला सैनिक।

सेनाजयंती—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सेनाजीवी (विन्)—पु० [स०] सेना में रहकर अपनी जीविका चलानेवाला सैनिक। सिपाही। योद्धा।

सेनादार—पु०[स सेना+फा० दार] सेना-नायक। फौजदार।

सेनाधिकारी—पु० [स०] फौज का अफसर। सेना का अधिकारी।

सेनाधिप—पु०[स०] =सेनापति।

सेनाधिपति—पु०[स०]=सेनापति।

सेनाधीश—पु०[स०] सेनापति।

सेनाध्यक्ष—पु०[स०] फौज का अफसर। सेनापति।

सेनानायक—पु० [स०] सेना का अफसर। फौजदार।

सेनानी—पु० [स०] १ सेनापति। सिपहसालार। २. कार्तिकेय का एक नाम। ३ एक रुद्र का नाम। ४. जूआ खेलने का एक प्रकार का पासा।

सेनापति—पु०[स०]१. सेना का नायक। फौज का अफसर। सिपहसालार। २ कार्तिकेय, जो देवताओ की सेना के प्रधान अधिकारी माने गये हैं। ३ शिव का एक नाम।

सेनापत्य—पु०[स०] सेनापति होने की अवस्था, पद या भाव।

सेनापरिधान—पु०[स०] सेना के साथ रहनेवाले आवश्यक व्यक्तियो का सारा सामान। लवाजमा। (एकाउन्टरमेन्ट)

सेनापाल—पु०[स० सेनापाल] सेनापति।

सेनाभक्त—पु०[स०] सेना के लिए रसद और बेगार। (कौ०)

सेनाभक्ति—स्त्री०[स०] प्राचीन भारत मे, वह कर जो राजा या राज्य की ओर से सेना के भरण-पोषण के लिए लिया जाता था।

सेनामणि—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सेनामनोहरी—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सेनामुख—पु० [स०] १. सेना का अगला भाग। २ सेना का एक विभाग, जिसमे ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोडे और १५ पैदल सवार रहते थे। ३. नगर के मुख्य द्वार के सामने का बाहरी रास्ता।

सेनायोग—पु०[स०] सैन्य-सज्जा। फौज की तैयारी।

सेनावास—पु०[स०] १ वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी। २ खेमा। डेरा। शिविर।

सेनावाह—पु०[स०] सेनानायक।

सेनाव्यूह—पु० [स०] युद्धकाल मे विभिन्न स्थानो पर की गई सेना के विभिन्न अगो की स्थापना या नियुक्ति। सैन्य-विन्यास। दे० 'व्यूह'।

सेनि†—स्त्री०=श्रेणी।

सेनिका—स्त्री०[सं० श्येनिका]१ बाज पक्षी की मादा। मादा बाज पक्षी। २ श्येनिका नामक छन्द।

सेनी—स्त्री० [फा० सीनी] १ तश्तरी। रकाबी। २. एक विशेष प्रकार की नक्काशीदार तश्तरी।

स्त्री०[स० श्येनी]१ बाज पक्षी की मादा। मादा बाज पक्षी।

†स्त्री० [स० श्रेणी] १ अवली। पंक्ति।२. सीढी। ३. दे० 'श्रेणी'।

पु०[?]विराट् के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का रखा हुआ कल्पित नाम।

सेनुर—पु०=सिंदूर।

सेनेट—स्त्री० दे० 'सीनेट'।

सेनेटर—पु०=सीनेटर।

सेफ—पु०[अ०] लोहे की मोटी चादर का बना हुआ एक प्रकार का छोटा अलमारीनुमा बक्स, जिसमे रोकड और बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते है।

वि० [अ०] सुरक्षित।

†पु०=शेफ।

सेब—पु०[फा०] १ नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड। २ उक्त पेड का फल, जो मेवो मे गिना जाता है।

†पु०=सेव।

सेभ्य —पु०[स०] शीतलता। ठढक।

वि० ठढा। शीतल।

सेमंतिका—स्त्री०=सेमती।

सेमंती—स्त्री० [स०] सफ़ेद गुलाब का फूल।सेवती।

सेम—स्त्री० [स० शिंबी] एक प्रकार की फली, जिसकी तरकारी खाई जाती है।

सेमई—पु० [हिं० सेम] सेम की तरह का हल्का सब्ज रग।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

† स्त्री०=सेवई।

सेम का गोद—पु० [हिं०] एक प्रकार के कचनार का गोद, जो इद्रिय-जुलाब और स्त्रियो का रुका हुआ रज खोलने के लिए उपयोगी माना जाता है।

सेमर†—पु० [देश०] दलदली जमीन।

†पु०=सेमल।

सेमल—पु० [स० शाल्मलि] १ एक बहुत बडा पेड, जिसके फल मे से एक प्रकार की रूई निकलती है। २ उक्त वृक्ष के फल की रूई, जो रेशम की तरह चिकनी और मुलायम होती है। (सिल्क-कॉटन)

पद—सेमल का सुआ=व्यर्थ का काम या परिश्रम करके उसके बुरे परिणाम से दुःखी होने और पछतानेवाला। (सेमल के बीज मे चोच मारनेवाले तोते के दृष्टात पर)उदा०—कतहूँ सुवा होत सेमर को, अतहि कपट न बचिबौ।—सूर।

सेमल मूसला—पु० [स० शाल्मलि-मूल] सेमल की जड़।

सेमा—पु० [हिं० सेम] बडी सेम।

सेमार†—पु०=सिवार।

सेमिटिक—पु० [अ०] दे० 'सामी' (साम देश का)।

सेर—पु० [?]१ एक मान या तौल, जो सोलह छटाँक या अस्सी तोले की होती है। मन का चालीसवाँ भाग।

मुहा०—सेर का सवा सेर मिलना=किसी अच्छे या जबरदस्त का उससे भी बढकर अच्छे या जबरदस्त से मुकाबला या सामना होना।

२. पानो की १०६ ढोलियो का समूह। (तमोली)

पु० (देश०) एक प्रकार का धान, जो अगहन महीने मे तैयार हो जाता है और जिसका चावल बहुत दिनो तक रह सकता है।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

वि० [फा०] जिसका पेट या मन भर गया हो। तृप्त।

†पु०=शेर।

सेरन—स्त्री० [देश०] पहाडी देशो मे होनेवाली एक प्रकार की घास।

सेरवा†—पु० [स० शट ?] वह कपड़ा, जिससे हवा करके अन्न बरसाते समय भूसा उडाया जाता है। झूली।

†पु० [हिं० सिर] चारपाई या बिस्तर का सिरहाना।

पु० [हिं० सेराना=ठढा करना, शात करना] दीवाली के प्रात काल 'दरिद्दर' (दरिद्रता)भगाने की रस्म, जो सूप बजाकर की जाती है।

सेरही—स्त्री०[हिं० सेर]एक प्रकार का कर या लगान, जो किसान को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पडता था।

सेरा—पु० [हिं० सेर]चारपाई की वह पाटी,जो सिरहाने की ओर रहती है।

पु० [फा० सेराब] आबपाशी की हुई जमीन। सीची हुई जमीन।

†पु०=सेढ।

सेराना†—अ०, स०=सिराना।

सेराब—वि० [फा०] [भाव० सेराबी] १ पानी से तर किया या भरा हुआ। सीचा हुआ।

सेराबी—स्त्री० [फा०] सेराब करने की क्रिया या भाव।

सेराह—पु० [स०] दूध की तरह सफेद रगवाला घोडा।

सेरी—स्त्री० [फा०] सेर होने अर्थात् अच्छी तरह तृप्त और सतुष्ट होने की अवस्था, क्रिया या भाव। तृप्ति।

स्त्री० [स० श्रेणी] लबी पतली गली। (राज०)

स्त्री० [हिं० सेर] सेर भर का बटखरा या बाट। (पश्चिम)

सेरीना—स्त्री० [हिं० सेर] अनाज या चारे का वह हिस्सा जो असामी जमीदार को देता था।

सेरुआ—पु० [?] १ वैश्य। (सुनार)। २. वेश्याओ की परिभाषा मे वह व्यक्ति, जो मुजरा सुनने आया हो।

†पु०=सेरवा।

सेरू†—पु० [स० शेलु] लिसोड़े का पेड। लभेडा।

†पु० [हिं० सिर] चारपाई मे सिरहाने और पैताने की ओर की लकडियाँ। (पश्चिम)

सेल—पु० [स० शल, प्रा० सेल] बरछा। भाला। साँग।

पु० [स० सिलना=एक पौधा जिसके रेशो से रस्से बनते थे] १. एक प्रकार का सन का रस्सा, जो पहाडो मे पुल बनाने के काम मे आता है। २ हल मे लगी हुई वह नली,जिसमे से होकर कूड मे भरे हुए बीज जमीन पर गिरते है।

पु० [?] नाव से पानी उलीचने का काठ का बरतन।
स्त्री० [?] १ गले मे पहनने की माला। २ एक प्रकार की समुद्री मछली, जिसके ऊपरी जवडे वहुत तेज धारवाले होते हैं।
पु० [अ० शेल] तोप का वह गोला, जिसमे गोलियाँ आदि भरी रहती है। (फौजी)
पु० [अ०] बिक्री। विक्रय।
पद—सेल टैक्स=बिक्री-कर।

सेलखड़ी†—स्त्री०=सिलखडी (खडिया)।

सेलग—पु० [स०] लुटेरा। डाकू।

सेलना—अ० [प्रा० सेल=जाना] मर जाना। चल बसना।

सेला—पु० [स० शल्लक, शल्क=छिलका, मछली का सेहरा] १ रेशमी चादर या दुपट्टा। २ एक प्रकार का रेशमी साफा।
पु० [स० शालि] भुँजिया चावल।

सेलार—पु०=सेलिया (घोडा)।

सेलिया—पु० [स० सेराह] सफेद घोडा। सेराह।

सेली—स्त्री० [हि० सेल] वरछी।
स्त्री० [हि० सेला] १ छोटा दुपट्टा। २ गाँती। ३ गोरखपंथियो मे वे ऊनी धागे, जिनमे गले मे पहनने की सीग की सीटी (नाद या शृगीनाद) वँधी रहती है। ४ ऊन, रेशम या सूत की वह माला जो योगी लोग गले मे पहनते या सिर पर लपेटते है। ५ गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना।
स्त्री० [स० शल्क=मछली का सेहरा] एक प्रकार की मछली।
स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का पेड, जिसकी लकडी से खेती के औजार वनाये जाते है।

सेलून—पु० [अ०] १ उत्सवो आदि के लिए सजाया हुआ वडा कमरा। २ जहाजो मे ऊँचे दरजे के यात्रियो के रहने का कमरा। ३ विशिष्ट प्रतिष्ठित यात्रियो के लिए वना हुआ रेल का वढिया डब्बा। ४ आमोद-प्रमोद, क्षौरकर्म, मद्यपान आदि के लिए वना हुआ वढिया और सजाया हुआ कमरा।

सेलो†—पु० [देश०] खेती की ऐसी जमीन जिस पर वृक्ष आदि की छाया पडती हो।

सेल्ला—पु०=सेल (भाला)।

सेल्ह*—पु०=सेल (भाला)।

सेल्हा—पु० [स० शाल] एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल वहुत दिनो तक रह सकता है।
†पु० [स्त्री० अल्पा० सेल्ही] =सेला (भाला)।

सेवँ†—पु० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड जिसकी लकडी कुछ पीलापन या ललाई लिए सफेद रग की, नरम, चिकनी, चमकीली और मजबूत होती है। कुमार।

सेवँई †—स्त्री० = सेवई।

सेवंत †—पु० [स० सामत] एक राग जो हनुमत के अनुसार मेघ राग का पुत्र है।

सेवँर†—पु०=सेमल।

सेव—पु० [स० सेविका] सूत के रूप मे वना हुआ आटे, मैदे आदि का एक पकवान।
पु० [?] खेत की हलकी या कम गहरी जोताई। 'अवाई' का विपर्याय।
†पु०=सेव (फल)।
स्त्री०=सेवा।

सेवई—स्त्री० [स० सेविका] मैदे के सुखाये हुए वहुत पतले सूत के से लच्छे जो घी मे तलकर या दूध मे पकाकर खाये जाते हैं।
क्रि० प्र०—पूरना।—वढना।
स्त्री० [स० श्यामक, हि० सावाँ] एक प्रकार की लवी घास, जिसकी वालें चारे के काम आती है। कही-कही इसके दाने या वीज वाजरे के साथ मिलाकर खाये भी जाते हैं। सेवन।

सेवक—वि० [स०] [स्त्री० सेविका] किसी की सेवा या खिदमत करने-वाला। जैसे—देश-सेवक, समाज-सेवक।
पु० [स्त्री० सेविका, सेवकिन, सेवकी] १ वह जो किसी की सेवा करने के काम पर नियुक्त हो। नौकर। २. वह जो किसी की छोटी-मोटी सेवाएँ या टहल करने के काम पर नियुक्त हो। चाकर। परिचारक। ३. वह जो किसी देवता का विशिष्ट रूप से आराधक, उपासक या पूजक हो। देवता का भक्त। ४ वह जो किसी वस्तु का सेवन अर्थात् उपभोग या व्यवहार करता हो। जैसे—मद्य-सेवक। ५ वह जो धार्मिक दृष्टि से किसी विशिष्ट पवित्र स्थान मे नियमित या स्थायी रूप से रहता हो। जैसे—तीर्थ-सेवक। ६ सिलाई का काम करनेवाला व्यक्ति। दरजी। ७ अनाज आदि रखने का वोरा।

सेवकाई†—स्त्री० [स० सेवक+हि० आई (प्रत्य०)] १ ब्राह्मणो, साधु-महात्माओ की दृष्टि से, अनेक सेवको, शिष्यो, यजमानो आदि का वर्ग या समूह। २ सेवा। टहल। उदा०—इहै हमार-वडी सेवकाई। —तुलसी।

सेवग*—पु०=सेवक।

सेवड़ा—पु० [हि० सेव+डा (प्रत्य०)] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।
पु० [स० श्वेतपट] १. एक प्रकार के देवता। २. एक प्रकार के जैन साधु।

सेवति†—स्त्री०=स्वाती (नक्षत्र)।

सेवती—स्त्री० [स० सेमती] सफेद गुलाव।
वि० उक्त गुलाव की तरह सफेद।
पु० सफेद रग।

सेव-दाना—पु० [हि०] सोयावीन के दाने।

सेवन—पु० [स०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, कर्ता सेवी] १. परिचर्या। टहल। सेवा। २ उपासना। आराधना। ३. नियमित रूप से किया जानेवाला प्रयोग या व्यवहार। इस्तेमाल। जैसे—औषध का सेवन। ४ वरावर किसी वडे के पास या किसी पवित्र स्थान पर रहना। जैसे—काशी-सेवन। ५ उपभोग। जैसे—मद्य-सेवन, स्त्री-सेवन। ६ कपडे सीने का काम। सिलाई।
†पु०=सेवई (घास)।

सेवना†—स०=सेना।
स० [स० सेवन] सेवा-टहल करना।
स० दे० 'सेना'।

सेवनी—स्त्री० [स०] १. सूई। सूची। २. सिलाई के टाँके। सीवन।

सीवन। ३ शरीर के अंगों मे सीअन की तरह दिखाई पडनेवाला जोड़। ४ जूही।

†स्त्री०=सेविका।

सेवनीय—वि० [स०] १. जिसका सेवन करना आवश्यक या उचित हो। २ पूज्य। ३ जो सीये जाने के योग्य हो।

सेवरा†—पु० १ =सेवड़ा। २ =सेहरा। (राज०)

सेवरी†—स्त्री०=शबरी।

सेवल—पु० [देश०] व्याह की एक रस्म।

सेवांजलि—स्त्री० [स०] कर-संपुट या अंजलि मे भरी या रखी वस्तु गुरु, देवता आदि को समर्पण करना।

सेवा—स्त्री० [स०] १. बड़े, पूज्य, स्वामी आदि को सुख पहुँचाने के लिए किया जानेवाला काम। परिचर्या। टहल।

मुहा०—सेवा में=बड़े के सामने आदरपूर्वक।

२ सेवक या नौकर होने की अवस्था या काम। नौकरी। ३. व्यक्ति, संस्था आदि से कुछ वेतन लेकर उनका कुछ काम करने की क्रिया या भाव। नौकरी। ४ किसी लोकोपयोगी वस्तु, विषय, कार्य आदि मे रुचि होने के कारण उसके हित, वृद्धि उन्नति आदि के लिए किया जानेवाला काम। जैसे—साहित्य-सेवा, देश-सेवा आदि। ५ सार्वजनिक अथवा राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जिम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो। जैसे—वैचारिक-सेवा (जुडिशियल सर्विस)। साधनिक सेवा। (इक्जिक्यूटिव सर्विस)६ इस प्रकार के किसी विभाग मे काम करनेवालों का समूह या वर्ग। (सर्विस, उक्त सभी अर्थों के लिए) ७ धार्मिक दृष्टि से देवताओ की मूर्तियों आदि को स्नान कराना, फूल चढाना, भोग लगाना आदि। जैसे—ठाकुरजी की सेवा। ८ किसी के पालन-पोषण, रक्षण, सवर्धन आदि के लिए किये जानेवाले उपयुक्त काम। जैसे—गौ की सेवा, पेड-पौधो की सेवा। ९ उपभोग। जैसे—स्त्री-सेवा। १० आश्रम। शरण। जैसे—वे बहुत दिनो तक महाराज की सेवा मे पडे रहे।

सेवा-काकु—स्त्री० [स०] सेवा काल मे स्वर-परिवर्तन या आवाज बदलना। (अर्थात् कभी जोर से बोलना, कभी मुलायमियत से, कभी क्रोध से और कभी दुःख भाव से।)

सेवा-काल—पु० [स०] वह अवधि, जिसमे कोई किसी सेवा मे नियुक्त रहा हो। (पीरियड आफ सर्विस)

सेवाजन—पु० [स०] सेवा करनेवाले व्यक्ति।

सेवा-टहल—स्त्री० [स० सेवा+हिं० टहल] बड़ों, रोगियो आदि की परिचर्या। खिदमत। सेवा-शुश्रूषा।

सेवाती—स्त्री०=स्वाती (नक्षत्र)।

सेवादार—पु० [स०+फा०] [भाव० सेवादारी] १ वह सिक्ख जो किसी सिक्ख गुरु की सेवा मे रहकर परम निष्ठा और श्रद्धा-भक्तिपूर्वक उसकी सेवा करता था। २ आज-कल वह सिक्ख, जो किसी गुरुद्वारे मे रहकर गुरुग्रन्थ साहब की पूजा आदि के काम पर नियुक्त रहता है। ३ द्वारपाल।

सेवादास—पु० [स०] [स्त्री० सेवा-दासी] छोटी-छोटी सेवाएँ करनेवाला नौकर। टहलुआ।

सेवाधर्म—पु० [स०] सेवक का धर्म।

सेवाधारी—पु०=सेवादार।

सेवा-पंजी—स्त्री० [सं०] वह पंजी या पुस्तिका जिसमे सेवकों विशेषत. राजकीय सेवकों के सेवा-काल की कुछ मुख्य बातें लिखी जाती हैं। (सर्विस-बुक)

सेवा-पद्धति—स्त्री० [स०] वैष्णव संप्रदायों मे देवताओं आदि की सेवा-पूजा की कोई विशिष्ट प्रणाली।

सेवापन—पु० [स० सेवा+हिं० पन (प्रत्य०)] सेवा करने की क्रिया, ढंग या भाव।

सेवा-बंदगी—स्त्री० [स० सेवा+फा० बंदगी] १. साहब-सलामत। २ आराधना। पूजा।

सेवा-भाव—पु० [स०] सेवा विशेषत उपकार करने की भावना। जैसे—वे साहित्य-साधना सेवा-भाव से ही करते है।

सेवाय†—अव्य०=सिवा (अतिरिक्त)।

सेवायत†—पु० [हिं० सेवा] वह जो किसी देव-मूर्ति की सेवा आदि के काम पर नियुक्त हो।

सेवार—स्त्री० [स० शैवाल] १ नदियों, तालों आदि मे होनेवाली लंबे, कड़े तथा तेज किनारोंवाली घास। २. मिट्टी की तहें जो किसी नदी के आस-पास जमी हों।

†पु० पान। (सुनार)

सेवारा†—पुं०=सेवड़ा (पकवान)।

सेवाल†—स्त्री०=सेवार।

सेवावाद—पु० [स०] खुशामद। चापलूसी।

सेवावादी—पु० [स०] खुशामदी। चापलूस।

सेवा वृत्ति—स्त्री० [स०] सेवा या नौकरी करके जीविका उपार्जन करना या जीवन बिताना।

सेविंग बैंक—पु० [अ०] आधुनिक अर्थ-व्यवस्था मे वह सस्था, जिसमे लोग अपनी बचत के रूप मे जमा करते है और उस पर व्याज भी प्राप्त करते हैं।

सेवि—पु० [स०] १ बदर फल। बेर। २ सेब नामक फल।

वि० १.=सेवी। २ =सेव्य। ३ =सेवित।

सेविका—स्त्री० [स०] १ सेवा करनेवाली स्त्री। दासी। परिचारिका। नौकरानी। २ सेवई नामक व्यंजन।

सेवित—भू० कृ० [स०] १. जिसकी सेवा या टहल की गई हो। उपचरित। २ जिसकी आराधना, उपासना या पूजा की गई हो। ३ जिसका सेवन अर्थात् उपयोग या व्यवहार किया गया हो। ४. आश्रित। ५. उपभुक्त।

पु० १. बेर। २. सेब। (फल)

सेवितव्य—वि० [स०]=सेव्य।

सेविता—स्त्री० [स०] १. सेवक का कर्म। सेवा। दास-वृत्ति। २. आराधना। उपासना। ३ आश्रय।

पु० [स० सेवितृ] सेवक।

सेवी(विन्)—वि० [स०] १ सेवा करनेवाला। २ आराधना या पूजा करनेवाला। ३ किसी वस्तु या स्थान का सेवन करनेवाला।

सेवोपहार—पु० दे० 'आनुतोपिक'।

सेव्य—वि० [स०] [स्त्री० सेव्या] १. जिसकी सेवा करना आवश्यक,

उचित या उपयुक्त हो। २. जिसकी आराधना, उपासना या पूजा करना आवश्यक, उचित या उपयुक्त हो। ३. जिसका सेवन अर्थात् उपभोग या व्यवहार करना आवश्यक, उचित या उपयुक्त हो। ४. जिसकी रक्षा करना आवश्यक या उचित हो। ५. जिसका उपभोग या भोग करना आवश्यक या उचित हो।

पु० १. स्वामी। मालिक। २. उशीर। खस। ३ अश्वत्थ। पीपल। ४ हिज्जल नामक वृक्ष। ५. लमज्जक नामक घास, या तृण। ६ गौरैया पक्षी। चिडा। ७. सुगंधवाला। ८ लाल चंदन। ९ समुद्री नमक। १०. जल । पानी। ११. दही । १२ पुरानी चाल की एक प्रकार की शराब ।

सेव्य-सेवक भाव—पु० [स०] उस प्रकार का भाव, जिस प्रकार का वस्तुत. सेव्य और सेवक के बीच मे रहता हो या रहना चाहिए। स्वामी और सेवक अथवा उपास्य और उपासक के बीच का पारस्परिक भाव।

सेव्या—स्त्री० [स०] १. बदा या बाँदा नामक वनस्पति जो दूसरे पेडो पर रहकर पनपती है। २ आँवला। ३ एक प्रकार का जगली धान।

सेशन कोर्ट—पु० [अ०] =सत्र-न्यायालय ।

सेश्वर—वि० [स०] १ ईश्वरयुक्त। २ जिसमें ईश्वर का अश या सत्ता मानी गई हो।

सेष†—पु० १.=शेष। २ =शेख।

सेषुक—वि० [स०] तीर या बाण से युक्त।

सेस†—वि०, पु०=शेष।

सेस-रग†—पु० [स० शेष+रग] सफेद रंग। (शेष नाग का रंग सफेद माना गया है।)

सेसर—पु० [फा० सेह=तीन+सर=बाजी] १. ताश का एक प्रकार का खेल जिसमे तीन-तीन ताश हर एक आदमी को बाँटे जाते हैं और उसकी बिंदियो के जोड पर हार-जीत होती है। २. जालसाजी। ३. धोखेबाजी।

सेसरिया—वि० [हिं० सेसर+इया (प्रत्य०)] छल-कपट करके दूसरो का माल मारनेवाला। जालिया।

सेसी—पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड जिसकी लकडी के सामान बनते है। पगूर।

सेह—वि० [फा०] दो और एक तीन। यौ० के आरम्भ मे। जैसे—सेह-खानी। सेह-हजारी।।

†पु०=सेहा।

सेहखाना—पु० [फा० सेह=तीन+खाना=घर] ऐसा घर जिसमे तीन खड हो। तिमजिला मकान।

सेहत—स्त्री० [अ०] [वि० सेहती] १. सुख। चैन। राहत। २ तन्दुरुस्ती। स्वास्थ्य। ३ रोग से रहित होने की अवस्था। आरोग्य।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

सेहत-खाना—पु० [अ० सेहत+फा० खाना] पेशाब आदि करने और नहाने-धोने के लिए जहाज पर या मकान मे बनी हुई एक छोटी-सी कोठरी।

सेहती—वि० [अ० सेहत] १ सेहत अर्थात् स्वास्थ्य सबधी। २. स्वस्थ।

सेहथना†—स० [स० सह+हस्त=सहस्य+ना (प्रत्य०)] १. हाथ से लीप कर साफ करना। सैंतना। २ झाड़ू देना। बुहारना।

सेहर—पु० [अ० सेह्र] जादू-मतर। टोना-टोटका।

†पु०=शेखर।

सेहरा—पु० [हिं० सिर+हार] १ विवाह के समय वर को पहनने के लिए फूलों या सुनहले-रुपहले तारो आदि की बडी मालाओ की पंक्ति या पुज। २. विवाह का मुकुट। मौर।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

पद—**सेहरा बंधाई**=वह धन या नेग जो दूल्हे को सेहरा बाँधने पर दिया जाता है। **सेहरे-जलवे की बीवी**=वह स्त्री जिसके साथ रीतिपूर्वक सेहरा बाँधकर और धूम-धाम से बरात निकालकर विवाह किया गया हो। (उपपत्नी या रखेली से भिन्न)

मुहा०—**(किसी काम या बात का) किसी के सिर सेहरा बंधना**=किसी कार्य के सफलतापूर्ण सम्पादन का श्रेय प्राप्त होना। किसी काम या बात का यश मिलना।

३. विवाह के समय वर-पक्ष से गाये जानेवाले मागलिक गीत या पढे जानेवाले पद्य। ४ मछली के शरीर पर के सीपी की तरह चमकीले छिलके जो छोटे-छोटे टुकडो के रूप मे निकलते हैं। (फिश-स्केल) ५. चित्रकला मे, सजावट के लिए उक्त आकार-प्रकार का अकन।

सेहराबंदी—स्त्री० [हिं० सेहरा+फा० बन्दी] विवाह के अवसर पर बरात निकलने से पहले वर को सेहरा बाँधने का धार्मिक और सामाजिक कृत्य।

सेहरी—स्त्री० [सं० शफरी] छोटी मछली। सहरी।

सेहवन—पु०=सेहुआँ (रोग)।

सेह-हजारी—पु० [फा०] एक उच्च पद जो मुसलमान बादशाहो के समय मे सरदारो और दरबारियो को मिलता था। (ऐसे लोग या तो तीन हजार सवार या सैनिक रख सकते थे अथवा तीन हजार सैनिको के नायक होते थे।)

सेहा—पु० [हिं० सेंध] कूआँ खोदनेवाला मजदूर।

सेहियान—पु० [हिं० सेहियना] खलियान साफ करने का कूँचा।

सेही—स्त्री० [स० सेधा, सेधी] =साही (जन्तु)।

सेहुँड़†—पु० [स० सेहुण्ड] थूहर का पेड।

सेहुँआँ—पु० [?] एक प्रकार का चर्म रोग, जिसमे शरीर पर भूरी-भूरी महीन चित्तियाँ-सी पड़ जाती हैं।

सेहुआन—पु० [देश०] एक प्रकार का करम-कल्ला, जिसके बीजो से तेल निकलता है।

सैंगर—पु०=सेंगर।

सैंणर—पु० [सं० स्वामी+नर=साईं-नर] पति। (डिं०)

सैंतना†—स० [स० संचय] १. संचित करना। इकट्ठा करना। उदा०—कचन मनि तजि काँचहि सैंतत, या माया के लीन्हे।—सूर। २. हाथो से समेटना। ३ सँभाल और सहेज कर लेना। ४ सँभाल कर ठीक जगह पर रखना। उदा०—(क) सैंतति महरि खिलौना हरि के।—सूर। (ख) मानों सध्या के प्रकाश को जगल और पहाड सैंत रखने की होड-सी लगा रहे हो।—वृन्दावनलाल वर्मा। ५. रसोई-घर मे चौका लगाना और बरतन साफ करके ठीक जगह पर रखना। ६. आघात करना। ७. मार डालना। (बाजारू)

सैंतालीस—वि० [स० सप्तचत्वारिंशत्, पा० सत्तचत्तालीसति, प्रा० सत्तालीस] जो गिनती मे चालीस से सात अधिक हो। चालीस और सात।

पु० उक्त की सख्या, जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—४७।

सैंतालीसवाँ—वि० [हिं० सैंतालीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती में सैंतालीस के स्थान पर आता या पडता हो।

सैंतीस—वि० [स० सप्तत्रिंशत्, पा० सत्ततिसति, प्रा० सत्तिसइ] जो गिनती मे तीस से सात अधिक हो। तीस और सात।

पु० उक्त की सूचक सख्या, जो अंको में इस प्रकार लिखी जाती है—३७।

सैंतीसवाँ—वि० [हिं० सैंतीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती मे सैंतीस के स्थान पर आता या पडता हो।

सैंथी†—स्त्री० [स० शक्ति] छोटा भाला। बरछी।

सैंदूर—वि० [स०] १ सिंदूर से रँगा हुआ। २. सिंदूर के रग का।

सैंधव—वि० [स०] १ सिंध देश संबधी। सिंध का। २. सिंध देश मे होने या पाया जानेवाला। ३ सिंधु अर्थात् समुद्र सबंधी। समुद्र का। ४. समुद्र मे उत्पन्न होने या पाया जानेवाला।

पु० १. सिंध देश का निवासी। २ सिंध देश का घोडा। ३. सेंधा नमक। ४ राजा जयद्रथ का एक नाम।

सैंधवक—वि० [स०] सैंधव सबधी।

सैंधवपति—पु० [स० सैंधव+पति] जयद्रथ का एक नाम।

सैंधवायन—पु० [स०] १ एक प्राचीन ऋषि। २. उक्त ऋषि के वशज।

सैंधवी—स्त्री० [स०] सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी, जो भैरव राग की पुत्र-वधू मानी गई है।

सैंधी—स्त्री० [स०] १ खजूर या ताड का रस। २. उक्त को सडाकर बनाई जानेवाली शराब।

सैंधू—स्त्री०=सैंधवी।

सैंबल†—पु०=सेमल।

सैंयाँ†—पु०=सैंयाँ।

सैंवर†—पु०=साँभर।

सैंह—वि० [सं०] १. सिंह संबधी। सिंह का। २. सिंह की तरह।

†क्रि० वि०=सौंह (सामने)।

सैंहथी†—स्त्री०=सैंथी (बरछी)।

सैंहल—वि० [स०] [स्त्री० सैंहली] सिंहली। (दे०)

सैंहली—स्त्री० [स०] सिंहली पीपल।

सैंहिक—पु० [सं०] सिंहिका से उत्पन्न, राहु।

वि०=सैंह।

सैंहिकेय—पु० [स०] (सिंहिका के पुत्र) राहु।

सैंहुड़†—पु०=सेहुँड।

सैंहूँ—पु० [हिं० गेहूँ का अनु०] गेहूँ के वे दाने जो छोटे, काले और बेकार होते हैं।

सै—स्त्री० [सं० सत्त्व] १ तत्त्व। सार। २. बल-वीर्य। ओज। शक्ति। ३ प्राप्ति। लाभ। ४ वृद्धि। बढ़ती।

वि० [सं० शत] सौ।

सैकंट—पु० [स० शतकंटक] बबूल की जाति का एक पेड जिसकी छाल सफेद होती है। धौला खैर। कुमतिया।

सैकड़ा—पु० [सं० शतकाण्ड, प्रा० सयकंड] सौ का समूह या समष्टि। जैसे—चार सैकडे आम।

सैकडे—अव्य० [हिं० सेकडा] प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत। फी सदी। जैसे—ब्याज की दर २) सैकड़े है।

वि० सैकडे के रूप में होनेवाला। जैसे—दो सैकडे आम खरीदे जायँगे।

सैकड़ों—वि० [हिं० सैकडा] १. कई सौ। २. बहुत अधिक।

सैकत—वि० [सं०] [स्त्री० सैकती] १. सिकता या रेत से संबंध रखनेवाला। २. रेतीला। बलुआ। बालुकामय। ३. बालू से बना हुआ।

पु० १. नदी आदि का रेतीला तट। रेती। २. रेतीली जमीन या मिट्टी।

सैकतिक—पु० [सं०] १. साधु। संन्यासी। क्षपणक। २. कलाई, गले आदि में बाँधा जानेवाला गंडा। मंगलसूत्र।

वि० १ सिकता या रेत से संबंध रखनेवाला। २. मरीचिका या सन्देह में पडा रहनेवाला।

सैकती (तिन्)—वि० [सं०] सिकता-युक्त। रेतीला। बलुआ। (तट या भूमि)

सैकल—पु० [अ०] धातु के बरतन। हथियार आदि साफ करने और उन्हे चमकाने का काम।

सैकलगर—पुं० [अ० सैकल+फा० गर] बरतनों, हथियारों आदि पर सैकल करनेवाला कारीगर। सिकलीगर।

सैका—पुं० [स० सेक (पात्र)] [स्त्री० अल्पा० सैकी] १. घडे की तरह का मिट्टी का एक बरतन जिससे कोल्हू से गन्ने का रस निकालकर पकाने के लिये कड़ाहे में डालते हैं। २ मिट्टी का वह छोटा बरतन जिससे रेशम रँगने का रंग ढाला जाता है। ३. रबी की कटी हुई फसल का ढेर या राशि।

पु० [सं० शत, हिं० सै] घास, डंठलों आदि के सौ पूलों का समूह।

सैक्य—वि० [सं०] १. ऐक्य, अर्थात् एकता से युक्त। २ सिंचाई से सम्बन्ध रखनेवाला।

पुं० एक प्रकार का बढिया पीतल।

सैक्षव—वि० [सं०] ईख के रस आदि से युक्त, अर्थात् मीठा।

सैक्सन—पु० [अं०] योरप की एक प्राचीन जाति जो पहले जर्मनी के उत्तरी भाग में रहती थी, पर पाँचवी और छठी शताब्दी मे जो इगलैंड पर धावा करके वहाँ जा बसी थी।

सैचान†—पु०=सचान (बाज)।

सैजन†—पु०=सहिजन।

सैढ†—पु० [देश०] गेहूँ की कटी हुई फसल, जो दाँई गई हो, पर ओसाई न गई हो।

सैण*—पु० [सं० स्वजन] मित्र। (डिं०)

†पु०=सैन (सकेत)।

*स्त्री०=सेना।

सैतव—वि० [स०] सेतु संबधी। सेतु का।

सैथी—स्त्री० [स०]=सैंथी (बरछी)।

सैद—पुं० [अ०] १. वह जानवर जिसका शिकार किया जाता हो या जो जाल में फँसाया जाता हो। २ किसी के जाल या फन्दे मे फँसे हुए होने की अवस्था या भाव।

†पु०=सैयद।

सैदपुरी—स्त्री० [सैदपुर स्थान] एक प्रकार की नाव, जिसके आगे और पीछे दोनों ओर के सिक्के लंबे होते हैं।

सैद्धांतिक—वि० [सं०] १ सिद्धान्त के रूप मे होनेवाला। २. सिद्धात सबधी।
पु० १ सिद्धातो के अनुसार चलनेवाला व्यक्ति। सिद्धांतो का पालन करनेवाला। २. तात्रिक।

सैध्रक—वि० [सं०] सिध्रक (वृक्ष) की लकडी का बना हुआ।

सैन—स्त्री० [सं० सज्ञपन] १. सकेत विशेषतः शरीर के किसी अग से किया जानेवाला सकेत। २. चिह्न। निशान। ३. लक्षण।
पु० [सं० श्येन] १. बाज पक्षी। २. एक प्रकार का बगला।
† पु०=शयन।
† स्त्री०=सेना।

सैनक—पु० [फा० सनी, सहनक] रिकाबी। तश्तरी।
† पु०=सैनिक।
† स्त्री०=सहनक।

सैनप—पु०=सेनापति।

सैनपति†—पु० =सेनापति।

सैन-भोग †—पु०=शयन-भोग (देवताओ का)।

सैना—स्त्री०=सेना।
† सं०=सेना।

सैनानीक—वि० [सं०] सेना के अग्र भाग का।

सैनान्य—पु० [सं०] सेनानी या सेनापति का कार्य या पद। सैनापत्य। सेनापतित्व।

सैनापति†—पु०=सेनापति।

सैनापत्य—पु० [सं०] सेनापति का कार्य या पद। सेनापतित्व।
वि० सेनापति सम्बन्धी।

सैनिक—वि० [सं०] १ सेना सबधी। सेना का। (मिलिटरी) जैसे—सैनिक न्यायालय, सैनिक आयोजन। २. जो सेना के लिए उपयुक्त हो, उसके ढग पर चलता हो या उसके प्रति अनुरक्त हो। (मार्शल)
पु० १. सेना या फौज मे रहकर युद्ध करनेवाला सिपाही। फौजी आदमी। २ वह जो किसी प्राणी का वध करने के लिए नियुक्त किया गया हो। ३ पहरेदार। सन्तरी।

सैनिकता—स्त्री० [सं०] १. सैनिक या योद्धा होने की अवस्था या भाव। २ सैनिक सामग्री से युक्त और युद्ध करने की शक्ति का भाव या दशा। ३. यह विश्वास या सिद्धान्त कि सैनिक बल की सहायता से सब काम निकाले जा सकते हैं। (मिलिटरिज्म) ४. युद्ध। लड़ाई।

सैनिक-न्यायालय—पु० सैनिक विभाग का वह विशिष्ट न्यायालय, जो साधारणत. सेना-विभाग मे होनेवाले अपराधो का विचार और न्याय करता है। (कोर्ट मार्शल)

सैनिक सहचारी—पु० राजदूत के साथ रहनेवाला वह सैनिक अधिकारी जो सामरिक दृष्टि से उसका सलाहकार और सहायक हो। (मिलिटरी एटेची)

सैनिका—स्त्री० [सं० श्येनिका] एक प्रकार का छन्द।

सैनिकीकरण—पु० दे० 'सैन्यीकरण'।

सैनिटोरियम—पु० दे० 'आरोग्य-निवास'।

सैनी—पु० [सेनाभगत नाई] नाई। हज्जाम।
† स्त्री०=सेना (फौज)।

सैनूं—पु० [हिं० नैनूं का अनु०] नैनूं की तरह का एक प्रकार का बूटीदार कपड़ा।

सैनेय*—वि०=सैन्य।

सैनेश, सैनेस—पु० [सं० सैन्य+ईश=सैन्येश] सेनापति।

सैन्य—वि० [सं०] सेना का।
पुं० १. सैनिक। २. सेना। ३. पहरेदार। सन्तरी। ४. छावनी। शिविर।

सैन्य-क्षोभ—पु० [सं० ष० त०] १ सैनिकों में होने या फैलनेवाला क्षोभ। २ सैनिक विद्रोह। गदर।

सैन्य नायक—पुं० [सं० ष० त०] सेनापति।

सैन्य-पति—पु० [सं० ष० त०] सेनापति।

सैन्य-पाल—पु० [सं०] सेनापति।

सैन्यवाद—पु० [सं०] यह वाद या सिद्धात कि राज्य के नागर तथा राजनीतिक आदर्श सैनिक आदर्शों के अनुसार स्थिर होने चाहिए और राज्य को सदा सैनिक दृष्टि से पूर्ण सबल तथा समर्थ रहना चाहिए। (मिलिटरिज्म)

सैन्यवादी—वि० [सं०] सैन्यवाद सबधी। जैसे—सैन्यवादी नीति।
पु० वह जो सैन्यवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (मिलिटरिस्ट)

सैन्य-वास—पु० [सं०] सेना का पड़ाव। छावनी। शिविर।

सैन्य-वियोजन—पुं० दे० 'विसैन्यीकरण'।

सैन्य-सज्जा—स्त्री० [सं० ष० त०] युद्ध के लिए होनेवाली सैनिक तैयारी। लाम-बदी। युद्ध के लिए हथियारो से लैस होना।

सैन्याधिपति—पु० [सं०] सेनापति।

सैन्याध्यक्ष—पु० [सं०] सेनापति।

सैन्यीकरण—पु० [सं० सैनिक+करण] लोगो को सैनिक बनाने और सैनिक सामग्री से सज्जित करने का काम। (मिलिटराइजेशन)

सैफ—स्त्री० [अ० सैफ़] तलवार।

सैफग†—पु० [सं० शतफल ?] लाल देवदार।

सैफा—पु० [अ० सैफ़] जिल्दसाजो का एक औजार, जिससे वे किताबो का हाशिया काटते हैं।

सैफी—वि० [अ० सैफ़=तलवार] १. तलवार की तरह टेढा। वक्र। २ आडा। तिरछा।

सैमंतिक—पु० [सं०] सीमंत अर्थात् माँग सम्बन्धी।
पु० सिंदूर।

सैम—पु० [देश०] धीवरो के एक देवता या भूत।

सैयद—पु० [अ०] [स्त्री० सैयदा, सैयदानी, सैदानी] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। २. मुसलमानो के चार वर्गों या जातियो मे से दूसरी जाति।

सैयाँ—पु० [सं० स्वामी, हिं० साईं] १. स्त्री का पति। स्वामी। २. प्रियतम।

सैया†—स्त्री०=शय्या।

सैयाद—पु० [अ०] १. वह जो पशु-पक्षियो को जाल मे फँसाता हो। चिड़ीमार। बहेलिया। २. व्याध। शिकारी। ३. मछुआ।

सैयार—वि० [अ०] [भाव० सैयारी] सैर या भ्रमण करनेवाला।

सैयारा—पु० [अ० सैयार] आकाश मे परिक्रमा करनेवाला तारा, नक्षत्र या ग्रह।
सैयाह—पु० [अ०][भाव० सैयाही]सियाहत अर्थात् पर्यटन करनेवाला। पर्यटक।
सैरंध्र—पु० [स०] [स्त्री० सैरध्री] १ घर-गृहस्थी मे काम करनेवाला नौकर। २ एक सकर जाति जो स्मृतियो में दस्यु (पुरुष) और अयोगवी (स्त्री) से उत्पन्न कही गई है।
सैरंध्रिका—स्त्री० [स०] परिचारिका। दासी।
सैरंध्री—स्त्री० [स०] १. सैरध्र जाति की स्त्री। २. अत.पुर की दासी।
सैरिंध्र—पु० [स०] १ पुराणानुसार एक प्राचीन जन-पद। २. दे० 'सैरध्र'।
सैरिंध्री—स्त्री०=सैरध्री।
सैर—स्त्री० [फा०] १ मन बहलाने के लिए और साफ जगह में घूमना-फिरना। मनोरजन या वायु-सेवन के लिए भ्रमण। परिमार्गन। (एक्स-कर्सन) २ मित्र-मडली का शहर या बस्ती के बाहर केवल मौज लेने के लिए होनेवाला खान-पान आदि। गोष्ठी। ३ बहार। मौज। आनद। ४. कौतुकपूर्ण और मनोरजक दृश्य। ५ असाढ-सावन मे गाये जानेवाले एक प्रकार के लोक-गीत। (बुदेल०) ६ रासलीला की तरह का एक प्रकार का अभिनय। (बुदेल०)
सैर-गाह—पु० [फा०] सैर करने की अच्छी और खुली जगह।
सैर-सपाटा—पु० [फा० सैर+ हिं० सपाटा] सैर करने के लिए इधर-उधर घूमना-फिरना।
सैरा—पु० [फा० सैर] १ हाथ से अकित चित्रो में भूमिका के रूप मे वह प्राकृतिक दृश्य, जिसके आगे व्यक्तियों या घटनाओ का चित्र अकित होता है। २. असाढ मे गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत। (बुदेल०)
सैरि—पु० [स०] १ कातिक महीना। २ पुराणानुसार एक प्राचीन जनपद।
सैरिक—पु० [स०] १ हलवाहा। हलवर। किसान। कृषक। २. हल मे जोता जानेवाला बैल। ३ आकाश।
वि० सीर अर्थात् हल से सबध रखनेवाला।
सैरिभ—पु० [स०] १ आकाश। २. इद्र की पुरी या लोक। ३ भैसा नामक पशु।
सैरिभी—स्त्री० [स०] भैस। महिषी।
सैरीय—पु० [स०] कटसरैया। झिंटी।
सैल—स्त्री० [फा० सैर] १. मनोविनोद के लिए किया जानेवाला पर्यटन। सैर।
स्त्री० [अ०] १ पानी का बहाव। २ बाढ। सैलाब।
†पु० १. शैल। २. सैला।
सैल-कुमारी—स्त्री०=शैलकुमारी (पार्वती)।
सैलजा†—स्त्री०=शैलजा (पार्वती)।
सैलवेशन आर्मी—स्त्री० [अ०]=मुक्ति सेना। (दे०)
सैल-सुता*—स्त्री० =शैल-सुता (पार्वती)।
सैला—पु० [स० शल्य] [स्त्री० अल्पा० सैली] १. लकड़ी की वह गुल्ली या पच्चड जो किसी छेद या सधि में ठोकी जाय। किसी छेद में डालने या फँसाने का टुकडा। मेख। २. लकडी की बडी मेख। खूँटा। ३ नाव की पतवार की मुठिया। ४. लकडी की वह खूँटी जो बैलगाडी मे कँवावर के पास दोनो ओर लगी होती है और जिसके कारण बैल अपनी गरदन इधर-उधर नही कर सकता। ५ यह मुँगरी जिससे कटी हुई फसल के डठल दाना झाडने के लिए पीटते हैं। ६ जलाने की लकड़ी का छोटा टुकडा। चैला।
†पु० [फा० सैर] मध्य प्रदेश के गोडो और भीलो का एक प्रकार का नृत्य।
सैलात्मजा*—स्त्री० [स० शैलात्मजा] पार्वती।
सैलानी—वि० [हिं० सैल (=सैर)+आनी (प्रत्य०)] १ जो बहुत अधिक सैर करता हो। २. इधर-उधर घूमता-फिरता रहनेवाला।
सैलाब—पु० [फा०] नदियो आदि की बाढ।
सैलाबा—पु० [फा० सैलाब] वह फसल जो पानी मे डूब गई हो।
सैलाबी—वि० [फा०] १ सैलाब सबधी। सैलाब या बाढ का। जैसे—सैलाबी पानी। २ (जमीन) जिसकी सिंचाई सैलाब या बाढ के पानी से होती हो।
†स्त्री०=सीड (सील)।
सैली—स्त्री० [हिं० सैला] १ ढाक की जड़ के रेशो की बनी रस्सी। २ एक प्रकार की टोकरी।
वि०=सैलानी।
सैलूख*—पु० [स्त्री० सैलूखी]=शैलूष (अभिनेता)।
सैलून—पु०=सेलून।
सैव†—वि०, पु०=शैव।
सैवल*—पु०=शैवल (पौधा)।
सैवलिनी*—स्त्री०=शैवलिनी (नदी)।
सैवाल*—स्त्री० [स० शैवाल] १ सेवार। २ जाल।
सैविक—वि०[स०] सेवा-सबधी। सेवा का।
सैव्य†—पु०=शैव्य (घोडा)।
सैसक—वि०[स०]१ सीसे से सबध रखनेवाला। २. सीसे का बना हुआ।
सैसव*—पु० [भाव० सैसवता]=शैशव।
सैहथी—स्त्री०[स० शक्ति]=सैथी (बरछी)।
सैहा†—पु० [स० सेक=सिंचाई+हिं० हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सैही]पानी, रस आदि ढालने का मिट्टी का बरतन।
सों†—प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।
†क्रि० वि०१. सग। साथ। २. समक्ष। सामने।
†सर्व०=सो (वह)।
†स्त्री०=सौंह (सौगद)।
†वि०=सा (सदृश)।
सोंइटा†—पु०=चिमटा।
सोंच†—पु०=सोच।
सोंचर नमक—पु०[स० सौवर्चल+फा० नमक]=काला नमक।
सोंज†—स्त्री०=सौज।

सोंझिया†—पु०=सझिया (साझीदार)।

सोंट†—पुं०=सोंटा।

सोंटना†—स०[?] मुधारना।

सोंटा—पु०[स० शुण्ड या हिं० सटना] [स्त्री० अल्पा० सोंटी] १. मोटी-लंबी सीधी लकडी या बाँस जो हाथ मे लेकर चलते है। मोटी छडी। डडा। लट्ठ।

मुहा०—सोंटा चलाना या जमाना=सोंटे से प्रहार करना।

२. भाँग घोटने का मोटा डडा। भग-घोटना। ३. लोबिये का पौधा। ४ ऐसा लट्ठा जिससे मस्तूल बनाया जा सके। (लश०)

सोंट बरदार—पु०[हिं० सोंटा+फा० बरदार] सोंटा या आसा लेकर किसी राजा या अमीर की सवारी के साथ चलनेवाला। आसाबरदार। बल्लमदार।

सोंठ—स्त्री०[स० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक। शुण्ठी।

वि०१ जो जान-बूझकर बिलकुल चुप हो गया हो। २ बहुत बडा कजूस।

पु० चुप्पी। मौन।

मुहा०—सोंठ मारना=बिलकुल चुप हो जाना। सन्नाटा खीचना।

सोंठ-मिट्टी—स्त्री०[सोंठ?+हिं० मिट्टी] एक प्रकार की पीली मिट्टी जो तालों या धान के खेतो मे पाई जाती है। यह काबिस बनाने के काम आती है।

सोंठूराय—पु०[हिं० सोंठ+राय=राजा] बहुत बडा कजूस। (व्यग्य)

सोंठौरा†—पु० [हिं० सोंठ+औरा (प्रत्य०)]एक प्रकार का सूजी का लड्डू जिसमे मेवों के सिवा सोंठ भी पडती है। यह प्राय. प्रसूता स्त्रियो को खिलाया जाता है।

सोंध†—अव्य०=सौंह।

सोंधा—वि०[स० सुगध] [स्त्री० सोंधी] १. सुगध युक्त। सुगधित। खुशबूदार। २ मिट्टी के नये बरतन या सूखी जमीन पर पानी पडने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगध से युक्त अथवा उसके समान। जैसे—सोंधी मिट्टी, सोंधा चना।

पु०१ एक प्रकार का सुगधित मसाला जिससे स्त्रियाँ सिर के बाल धोती है। २. एक प्रकार का सुगधित मसाला जिसे बगाल मे स्त्रियाँ नारियल के तेल मे उसे सुगधित करने के लिए मिलाती है।

†पु०=सुगध।

सोंधिया—पु०[हिं० सोंधा=सुगधित+इया (प्रत्य०)] सुगध तृण। रोहिप घास।

सोंधी—पु०[हिं० सोंधा] एक प्रकार का बढिया धान जो दलदली जमीन मे होता है।

वि०[स० सुगध] मीठी-मीठी सुगधवाला। जैसे—सोंधी मिठाई।

सोंधु†—वि०=सोंधा।

सोंपना†—स०=सौंपना।

सोंवनिया—पु०[स० सुवर्ण] नाक मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

सोंह*—स्त्री०=सौंह (सौगंद)।

†अव्य०=सौंह (सामने)।

सोंहट†—वि०[?] सीधा-सादा। सरल।

सोंहीं†—अव्य०=सौंह (सामने)।

सोंहै—अ०=सौंह।

सो—सर्व०[स० सः या सा+उ] 'जो' के साथ आनेवाला सबध-सूचक शब्द। वह। अव्य० इसलिए। अतः। जैसे—वह आ गया, सो मैं उससे बातें करने लगा।

*वि० दे० 'सा'।

स्त्री०[स०] पार्वती का एक नाम।

सोऽहम्—अव्य०=सोऽहमस्मि।

सोऽहमस्मि—अव्य०[स० स+अहम्+अस्मि] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ। (वेदान्त का प्रसिद्ध सैद्धान्तिक वाक्य)

सोअना†—अ०=सोना।

†पु०=सोना (स्वर्ण)।

सोअर†—स्त्री०=सौरी।

सोआ—पु०[स० मिकेया]१. एक पौधा। २. उक्त पौधे की पत्तियाँ जिनका साग बनाया जाता है।

पद—सोआ-पालक=सोआ और पालक का साग।

सोई—स्त्री० [स० स्रोत, हिं० सोता] वह जमीन या गड्ढा जहाँ बाढ या नदी का पानी रुका रह जाता है और जिसमे अगहनी धान की फसल रोपी जाती है। डाबर।

†वि० सर्व०=वही (वह ही)।

†अव्य०=सो।

सोक†—पु० [देश०] चारपाई बुनने के समय बुनावट मे का वह छेद जिसमे से रस्सी या निवार निकालकर कसते है।

†पु०=शोक।

सोकन†—पु०=सोखन।

सोकना†—अ० [सं० शोक+हिं० ना (प्रत्य०)] शोक-विह्वल होना।

†स०=सोखना।

सोकनी†—वि०[?] कालापन लिए सफेद रग का।

पु०१ कालापन लिए सफेद रंग। २ उक्त रग का बैल।

सोकार†—पु०[हिं० सोकना, सोखना] वह स्थान जहाँ पर मोट का पानी गिराया जाता है जिससे वह खेत तक पहुँच जाय। चौंढा।

सोकित*—वि०[स० शोक] जिसे शोक हुआ हो या हो रहा हो।

सोखक*—वि० [स० शोषक]१. शोषण करनेवाला। शोषक। २. नाशक।

सोखता—वि०, पु०=सोख्ता।

सोखन—पु०[देश०] १. स्याही लिए सफेद रंग का बैल। सोकनी। २. एक प्रकार का जगली धान जो नदियों के रेतीले तट पर होता है।

सोखना—स०[सं० शोषण]२ किसी चीज का जल या दूसरे तरल पदार्थ को अपने में खीच लेना। जैसे—आटे का घी सोखना। २ पीना। (व्यग्य)

†पु०=सोख्ता।

सोखा†—वि० [स० सूक्ष्म या चोखा?]चतुर। चालाक। होशियार।

पु० जादूगर।

सोखाई—स्त्री०[हिं० सोखना] १. सोखने की क्रिया या भाव। २. सोखने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

स्त्री० [हिं० सोखा] जादूगर।
सोख्त—स्त्री० [फा०] जलन।
सोख्ता—वि० [फा० सोख्त.] १. जला हुआ। २. बहुत अधिक दुःखी या सन्तप्त।
पु० स्याही सोखनेवाला एक प्रकार का मोटा खुरदरा कागज। स्याही-चूस। स्याही-सोख। (ब्लॉटिंग पेपर)
सोगंद†—स्त्री०=सौगंध।
सोग—पु० [सं० शोक] १. किसी के मरने से होनेवाला दुःख। शोक।
मुहा०—सोग मनाना=उक्त दुःखपूर्ण भाव सूचित करने के लिए मैले-कुचैले या विशेष प्रकार के कपड़े पहनना, उत्सवों आदि में सम्मिलित न होना।
सोगन—स्त्री० [हिं० सौगंध] सौगंध। कसम। (राज०) उदा०—थानें सोगन म्हारी।—मीराँ।
सोगवार—वि० [हिं० सोग (शोक)+वार (प्रत्य०)] [भाव० सोगवारी] सोग अर्थात् शोक से युक्त।
सोगवारी—स्त्री० [हिं० सोगवार] मृतक का शोक मनाने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—अभी तो उनका जवान लड़का मरा है। साल भर उसी की सोगवारी रहेगी।
सोगिनी*—वि० स्त्री० [हिं० सोग] विरह के कारण शोक करनेवाली। शोकाकुल। शोकमाना।
सोगी—वि० [सं० शोक, हिं० सोग] [स्त्री० सोगिनी] जो शोक मना रहा हो। शोक विह्वल।
सोच—स्त्री० [हिं० सोचना] १. सोचने की क्रिया या भाव। २ यह बात जिसके सम्बन्ध में कोई बराबर सोचता रहता हो। ३. चिंता। फिक्र। ४. दुःख। रंज। ५. पछतावा। पश्चात्ताप।
सोचक—पु० [सं० सौचिक] दरजी। (डिं०)
सोचना—अ० [सं० शोचन] १ किसी विषय पर मन में विचार करना। जैसे—ठीक है, हम सोचेंगे। २. विशेषतः किसी कार्य, परिणाम या प्रणाली के विषय में विचार करना। जैसे—वह सोच रहा था कि आगे पढ़ूँ या नौकरी करूँ। ३. चिंता या फिक्र में पड़ना। जैसे—वह अपनी बूढ़ी माँ के बारे में सोचता रहता है।
स० कल्पना करना। अनुमान करना। जैसे—उसने एक युक्ति सोची है।
सोच-विचार—पु० [हिं० सोच+सं० विचार] सोचने और समझने या विचार करने की क्रिया या भाव।
सोचाई†—स्त्री० [हिं० सोचना] सोचने की क्रिया या भाव।
सोचाना†—स० =सुचाना।
सोचु*—पु० सोच।
सोच्छ्वास—वि० [सं०] १. उच्छ्वास-युक्त। २. हाँफता हुआ।
अव्य० गहरा साँस लेते हुए।
सोज—स्त्री० [हिं० सूजना] वह विकार जो सूजे हुए होने का सूचक होता है।
पु० [फा०] १. जलन। दाह। २. तीव्र मानसिक कष्ट या वेदना। ३ ऐसा मरसिया या शोक-सूचक शब्द जो लय-सुर में गाकर पढ़ा जाता हो। (मुसल०)
†स्त्री० =सौंज।
सोजन*—पु० [फा०] १. सूई। २. काँटा। (लश०)।
सोजना†—अ० [हिं० सजना] शोभा देना। भला जान पड़ना।
सोजनी†—स्त्री० =सुजनी।
सोजा—पु० [हिं० सावज] शिकार करने के योग्य पशु या पछी।
सोजि—वि० [हिं० सो+जु] १. वह भी। २. वही।
सोजिश—स्त्री० [फा०] सूजन। शोथ।
सोझ—वि०, =सोझा।
सोझण†—पु० =शोधन। (राज०)
सोझना—स० [सं० हिं० सोधना] १. शुद्ध करना। शोधना। २. ढूंढ़ना।
सोझा—वि० [सं० सम्मुख, म० प्रा० समुज्झ] [स्त्री० सोझी] १. जो ठीक सामने की ओर गया हो। २. सरल प्रकृति का। सीधा।
सोटा†—पुं० १.=सोटा। २.=सुअटा (तोता)।
सोडा—पु० [अ०] एक प्रकार का क्षार जो सज्जी को रासायनिक क्रिया से साफ करके बनाते हैं।
सोडा-वाटर—पु० [अं०] एक प्रकार का पाचक पेय जो प्रायः मामूली पानी में कारबोनिक एसिड मिला करके बनाते हैं और बोतल में हवा के जोर से बंद करके रखते हैं। खारा-पानी।
सोढ—भू० कृ० [सं०] सटा हुआ।
वि० सहनशील।
सोढर—वि० [हिं० सु+ढरना=झुकना, अनुरक्त होना] १. जो सहज में किसी ओर प्रवृत्त या अनुरक्त होता हो। सुढर। २. बेवकूफ। मूर्ख।
सोढव्य—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। सत्य।
सोढ़ी (ढिन्)—वि० [सं०] १. सहनशील। २ समर्थ। सशक्त।
सोणक†—वि० [सं० शोण] लाल रंग का। सुर्ख। (डिं०)
सोणत—पु० [सं० शोणित] खून। लोहू। रक्त। (डिं०)
सोत†—पु० =स्रोत।
सोता—पु० [सं० स्रोत] [स्त्री० अल्पा० सोतिया] १. जल की बराबर बहनेवाली या निकलनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। जैसे—पहाड़ का सोता, कूएँ का सोता। २ नदी की छोटी शाखा।
सोतिया†—स्त्री० [हिं० सोता=इया (प्रत्य०)] पानी का छोटा सोता।
सोतिहा†—वि० [हिं० सोता+इहा (प्रत्य०)] कूआँ या तालाब जिसमें नीचे से सोते का पानी आता है।
सोती—स्त्री० [हिं० सोता का स्त्री० अल्पा०] १. पानी का छोटा सोता। २. किसी नदी से निकली हुई कोई छोटी धारा। जैसे—गंगा की सोती।
†स्त्री० =स्वाती (नक्षत्र)।
†पु० =श्रोत्रिय (ब्राह्मणों की एक जाति)।
सोत्कंठ—वि० [सं० स०+उत्कंठा] जिसे विशेष उत्कंठा या प्रबल उत्सुकता हो।
क्रि० वि० विशेष उत्कंठा या गहरी उत्सुकता से।
सोत्कर्ष—वि० [सं०] उत्कर्ष युक्त। उत्तम।
सोत्प्रास—वि० [सं०] १. बढ़ाकर कहा हुआ। अतिरंजित। २. व्यंग्य-पूर्ण।
पु० १. प्रिय या मधुर बात। २. खुशामद से भरी बात। ३. जोर की हँसी। ठहाका।

सोत्संग—वि०[स०] शोकाकुल। दुःखित।
सोत्सव—वि० [स०] १ उत्सव-युक्त। उत्सव-सहित। २. खुश। प्रसन्न।
सोत्साह—अव्य०[स० स+उत्साह] उत्साहपूर्वक। उमग से।
सोत्सुक—वि०[स०] उत्सुकता से युक्त। उत्कठित।
सोत्सेक—वि०[स०] अभिमानी। घमडी।
सोथ†—पु०=शोथ (सूजन)।
सोदकुंभ—पु०[स०]पितरो के उद्देश्य से किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य।
सोदन—पु०[देश०] वह कागज जिसमे छोटे-छोटे छेद करके बेल-बूटे बनाये जाते हैं और राखी की सहायता से कपडे पर छापते है।(कढाई-बुनाई)।
सोदय—वि०[स०]१ जो वढोतरी की ओर हो। २ व्याज या सूद-समेत। वृद्धि-युक्त।
पु० वह मूल-धन जिसमे ब्याज या सूद भी मिल गया हो।
सोदर—वि०[स० व० स०] [स्त्री० सोदरा] एक ही उदर से जन्म लेने वाले। सगे। जैसे—ये तीनो सोदर भाई हैं।
पु० सगा भाई।
सोदरा (री)—स्त्री० [स०] सहोदरा भगिनी। सगी वहिन।
सोदरीय—वि०=सोदर।
सोदर्य—वि०[स०] सहोदर। सोदर। सगा।
पु० सगा भाई।
सोध—पु०[स० सौध]१ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। २ राज-प्रासाद। महल। (डिं०)
†पु०=शोध।
सोधक†—वि०, पु०=शोधक।
सोधणी—स्त्री०[स० शोधनी] झाडू। बुहारी। मार्जनी। (डिं०)
सोधन†—पु०=शोधन।
सोधना†—स० [स० शोधन]१ शुद्ध या साफ करना। शोधन करना। २ शुद्धता की जाँच की परीक्षा करना। उदा०—सिय लौ सोधति तिय तनहि लगनि अगनि की ज्वाल।—विहारी। ३. दोष या भूल दूर करना। ४ तलाश करना। पता लगाना। ढूँढना। उदा०—सोधेउ सकल विश्व मनमाही।—तुलसी। ५ अच्छी तरह गणना या विचार करके अथवा खूब सोच-समझकर कोई निर्णय अथवा निश्चय करना या परिणाम निकालना। ६ कुछ सस्कार करके धातुओ को औषधरूप मे काम मे लाने के योग्य बनाना। ७ ठीक या दुरुस्त करना। ८ ऋण या देन चुकाना। ९ मैथुन या सभोग करना।
सोधवाना—स०=शोधवाना।
सोधस—पु०[स० स+उद]१ जलाशय, ताल आदि। २. किनारे पर का जल।
सोधाना†—स० [हिं० सोधना का प्रे० रूप] सोधने का काम दूसरे से कराना। किसी को सोधने मे प्रवृत्त करना।
सोधी†—स्त्री० [स० शुद्ध या शुद्धि या हिं० सुध का पुराना रूप] १. शुद्ध करने की क्रिया या भाव। शोधन। शुद्धि। उदा०—दादू सोधी नाहि सरीर की, कहै अगम की वात।—दादूदयाल। २ परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान। केवल ज्ञान। उदा०—सतगुरु थैं सोधी भई, तब पाया हरि का खोज।—दादूदयाल। ३ याद। स्मृति। ४. ईश्वर या भगवान् का ध्यान या स्मरण।
सोन—पु०[स०शोण] एक प्रसिद्ध नद का नाम जो मध्य प्रदेश के अमरकटक की अधित्यका से निकला है और मध्य प्रदेश तथा बुदेलखड होता हुआ विहार मे दानापुर से १० मील उत्तर मे गगा मे मिला है। शोणभद्र नद।
वि० रक्तवर्ण का। लाल।
स्त्री०[हिं० सोना=स्वर्ण]एक प्रकार की सदावहार लता जिसमें पीले फूल लगते है।
वि० हिं० 'सोना' का सक्षिप्त रूप जो यौ० शब्दो के पहले लगकर प्राय पीले रग का वाचक होता है। जैसे—सोन-जर्द, सोन-जूही आदि।
†पु०=सोना (स्वर्ण)। उदा०—मारग मानुस सोन उछारा।—जायसी।
पु०[स० रसोनक] लहसुन। (डिं०)
पु०[देश०] एक प्रकार का जल-पक्षी।
सोन-किरवा—पु०[हिं० सोन+किरवा=कीडा]१ चमकीले तथा सुनहरे परोंवाला एक प्रकार का कीडा। २ जुगनूँ।
सोनकीकर—पु०[हिं० सोना+कीकर] कीकर की जाति का एक प्रकार का वहुत वडा पेड।
सोन-केला—पु०[हिं० सोना+केला] चपा केला। सुवर्ण कदली। पीला केला।
सोन-गढ़ी—पु०[सोनगढ (स्थान)] एक प्रकार का गन्ना।
सोन-गहरा—वि०, पु०[हिं० सोना+गहरा] गहरा सुनहला (रग)।
सोन-गेरू—पु० दे० 'सोना गेरू'।
सोन-चंपा—पु०[हिं० सोना+चपा] पीला चपा। सुवर्ण चपक। स्वर्ण चपक।
सोन-चिरी—स्त्री० [हिं० सोना+ चिरी=चिड़िया] १. नटी। २. नर्तकी।
सोन-जरद (जर्द)—वि०[हिं० सोना=स्वर्ण+फा० जर्द=पीला] सोने की तरह के पीले रगवाला।
पु० उक्त प्रकार का रग। (गोल्डेन येलो)
सोन जूही—स्त्री० [हिं० सोना+जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल हलके पीले रग के और अधिक सुगधित होते हैं।
सोन-पेडुकी—स्त्री०[हिं० सोना+पेडुकी] एक प्रकार का पक्षी जो सुनहलापन लिए हरे रग का होता है।
सोनभद्र—पु०=सोन (नद)।
सोनवाना†—वि० [हिं० सोना+वाना (प्रत्य०)] [स्त्री० सोनावानी] १. सोने का वना हुआ। २ सोने के रग का। सुनहला।
सोनहला†—वि०=सुनहला।
सोनहा†—पु० [स० शुन=कुत्ता] १ कुत्ते की जाति का एक छोटा जगली हिंसक जन्तु जो झुड मे रहता है। २. एक प्रकार का पक्षी।
सोनहार—पु०[देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी।
सोना—पु०[स० स्वर्ण]१ एक प्रसिद्ध वहु-मूल्य पीली धातु जिसके गहने आदि वनते हैं। स्वर्ण। काचन। (गोल्ड)
पद—सोने की कटार=ऐसी चीज जो सुन्दर होने पर भी घातक या

हानिकारक हो। सोने की चिड़िया=ऐसा सम्पन्न व्यक्ति जिससे बहुत कुछ धन प्राप्त किया जा सकता हो।

मुहा०—सोने का घर मिट्टी करना=बहुत अधिक धन-संपत्ति व्यर्थ और पूरी तरह से नष्ट करना। सोने में घुन लगना=परम असम्भव बात होना। सोने में सुगंध होना=किसी बहुत अच्छी चीज में और भी कोई ऐसा अच्छा गुण या विशेषता होना कि जिससे उसका महत्त्व या मूल्य और भी बढ़ जाय।

विशेष—लोक में भूल से इसी की जगह 'सोने में सुहागा होना' भी प्रचलित है।

२ बहुत सुन्दर या बहुमूल्य पदार्थ। ३ राजहंस।

स्त्री०[?] प्रायः एक हाथ लंबी एक प्रकार की मछली जो भारत और बरमा की नदियों में पाई जाती है।

पुं०[?] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष।

अ०[सं० शयन] १ थककर शरीर और मस्तिष्क को विश्राम देनेवाली निद्रा की अवस्था में होना। नींद लेना।

मुहा०—सोते जागते=हर समय।

२ शरीर के किसी अंग का एक ही स्थिति में रहने के कारण कुछ समय के लिए सुन्न हो जाना। जैसे—पैर या हाथ सोना। ३. किसी विषय या बात की ओर से उदासीन होकर चुप या निष्क्रिय रहना।

सोना-कुत्ता—पुं०=सोनहा (जन्तु)।

सोना-गेरू—पुं०[हिं० सोना+गेरू] एक प्रकार का गेरू जो मामूली गेरू से अधिक लाल, चमकीला और मुलायम होता है।

सोना-पठा—पुं०[सं० शोण+हिं० पाठा] एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जो भारत और लंका में सर्वत्र होता है और जिसके कई भेद होते हैं। श्योनाक।

सोनापुर—पुं०[हिं०] स्वर्ग।

मुहा०—सोनापुर सिधारना=मर जाना।

सोना-पेट—पुं० [हिं० सोना+पेट=गर्भ] सोने की खान।

सोना-फूल—पुं०[हिं० सोना+फूल] आसाम और खसिया पहाड़ियों पर होनेवाली एक प्रकार की झाड़ी।

सोना-मक्खी—स्त्री० [सं० स्वर्णमक्षिका] १. माक्षिक नामक खनिज पदार्थ का वह भेद जो पीला होता है। (देखें मक्षिका) २. रेशम का एक प्रकार का कीड़ा।

सोना-माखी†—स्त्री०=सोनामक्खी।

सोनार†—पुं०=सुनार।

सोनित*—पुं०=शोणित (खून)।

सोनी—पुं०[देश०] तुन की जाति का एक वृक्ष।

†पुं०=सुनार।

सोनैया—स्त्री०[देश०] देवदाली। घघरबेल। बदाल।

सोप—पुं० [देश०] एक प्रकार की छपी हुई चादर।

पुं० [अं०] साबुन।

पुं०[अं० स्वाब] बुहारी। झाड़ू। (लश०)

सोपकरण—वि०[सं०] सभी प्रकार के उपकरणों या साज-सामान से युक्त। जैसे—सोपकरण शय्या।

सोपकार—पुं०[सं०] ब्याज-सहित मूलधन। असल में सूद।

सोपचार—वि०[सं०] शिष्टतापूर्वक बर्ताव करनेवाला।

अव्य० आनुपूर्वक।

सोपत—पुं०[सं० सुपत्ति]=सुभीता।

सोपसर्ग—वि०[सं०] [स्त्री० सोपसर्गा] १. उत्पात या उपद्रव से भरा हुआ। २. ग्रह-बाधा से युक्त। ग्रहमारा हुआ।

सोपाक—पुं०[सं०] १. पार्थ्यादि बेचनेवाला। ओषधि बेचनेवाला। २. चांडाल। श्वपच। श्वपाक।

सोपाधि (क)—वि०[सं०] उपाधि (दे०) से युक्त।

सोपाधिकप्रदान—पुं०[सं०] ऋण लेनेवाले से ऋण की रकम बिना लिये अपनी चीज दे देना।

सोपान—पुं०[सं०] १ सीढ़ी। जीना। २ जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति का उपाय या साधन।

सोपानक—पुं०[सं०] सोने के तार में पिरोई हुई मोतियों की माला।

सोपान कूप—पुं०[सं० मध्य० स०] सीढ़ीदार कूआँ। बावली।

सोपानावरोहण-न्याय—पुं०[सं०] एक प्रकार का न्याय या कहावत जिसका प्रयोग ऐसे प्रसंगों में होता है, जहाँ सीढ़ियों की तरह क्रम-क्रम से एक एक स्थान पार करते हुए आगे बढ़ना अभीष्ट होता है।

सोपानित—भू० कृ०, वि० [सं०] सोपान से युक्त किया हुआ। सीढ़ियों से युक्त।

सोपारी†—स्त्री०=सुपारी।

सोपाश्रय—वि०[सं०] जो आश्रय या अवलम्ब से युक्त हो।

अव्य० आश्रय या अवलम्ब का उपयोग करते हुए।

पुं० योग में एक प्रकार की समाधि।

सोऽपि—वि०[सं० स+अपि] १. वह भी। २ वही।

सोफता—पुं०[हिं० सुभीता] १. एकांत स्थान। निराली जगह। २ अवकाश का समय। फुरसत का समय। ३. चिकित्सा के फलस्वरूप रोगों आदि में होनेवाली कमी।

सोफा—पुं०[अं०] एक प्रकार का गदिया गद्देदार कोच या लंबी बेंच जिस पर दो या तीन आदमी आराम से टाँगना लगाकर बैठ सकते हैं।

सोफा-सेट—पुं०[अं०] कमरों की सजावट के लिए रखा जानेवाला एक प्रकार का जोड़ जिसमें साधारणतः एक सोफा और वैसी ही दो, तीन या चार कुर्सियाँ होती हैं।

सोफियाना—वि०[अ० सूफी+फा० इयाना (प्रत्य०)] १. सूफियों का। सूफी-संबंधी। २. सूफियों की तरह का अर्थात् सुन्दर और स्वच्छ। सूफियाना।

सोफी†—पुं०=सूफी।

सोबन*—पुं०=सुवर्ण।

सोभ—पुं०[सं०] स्वर्ग में गंधर्वों के नगर का नाम।

†स्त्री०=शोभा।

सोभन†—वि०, पुं०=शोभन।

सोभना*—अ० [सं० शोभन] शोभित होना। भला लगना। सोहना।

सोभनीक†—वि०=शोभन (सुन्दर)।

सोभर—पुं०[?] वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्रियाँ प्रसव करती हैं। सौरी। सूतिकागार।

सोभांजन†—पुं०=शोभांजन।

सोभा†—स्त्री०=शोभा।

सोभाकारी†—वि०=शोभन (सुन्दर)।

सोभायमान†—वि०=शोभायमान।

सोभार—वि०[सं० स+हिं० उभार] उभारदार।
क्रि० वि० उभरते हुए। उभरकर।

सोभित*—वि०=शोभित।

सोम—पुं० [सं०]१. एक प्राचीन भारतीय लता जिसके रस का सेवन वैदिक ऋषि विशेषतः यज्ञों के समय मादक पदार्थ के रूप मे करते थे। २. हठ-योग मे, तालू की जड में स्थित चन्द्रमा से निकलनेवाला रस। विशेष दे० 'अमृत'। ३. एक प्राचीन वैदिक देवता। ४ चन्द्रमा। ५. सोमवार। ६ अमृत। ७. जल। ८ कुवेर। ९ यम। १०. वायु। हवा। ११. सोम-यज्ञ। १२. वह जो सोम-यज्ञ करता हो। १३. एक प्राचीन पर्वत। १४ एक प्रकार की ओषधि। १५ आकाश। १६. स्वर्ग। १७. आठ वसुओं मे से एक वसु। १८ पितरों का एक गण या वर्ग। १९. स्त्री का विवाहित पति। २०. स्त्रियो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। २१ यज्ञ की सामग्री। २२ काँजी। २३. माँड। २४. संगीत में एक प्रकार का राग जो मालकोश राग का पुत्र कहा गया है। २५. एक प्रकार का ऊँचा और वडा पेड जिसकी लकडी चिकनी और मजबूत होती तथा चीरी जानेपर लाल हो जाती है। २६ दक्षिणी भारत की पथरीली भूमि मे होनेवाला एक प्रकार का क्षुप जिसकी डालो मे पत्ते कम और गाँठें अधिक होती हैं।

सोमक—पु०[सं०]१. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ पुराणानुसार कृष्ण का एक पुत्र। ३. स्त्रियों का सोम नामक रोग।

सोम-कर—पुं० [सं० सोम+कर] चन्द्रमा की किरण। चन्द्र-किरण।

सोम-कल्प—पु०[स०] पुराणानुसार २१ वें कल्प का नाम।

सोम-कांत—पुं०[सं०] चन्द्रकात मणि।
वि०१. जो चन्द्रमा के समान प्रिय तथा सुन्दर हो। २. जिसे चन्द्रमा प्रिय हो।

सोम-काम—पु०[सं०] सोमपान करने की इच्छा।
वि० सोम-पान की कामना करनेवाला।

सोम-क्रिय—पु०[सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-क्षय—पु०[स०]१. चन्द्रमा की कलाओ का घटना। २ अमावस्या, जिसमे चन्द्रमा के दर्शन नही होते।

सोम-खड्डक—पु०[स०] नैपाल के एक प्रकार के शैव साधु।

सोम-गर्भ—पु०[स०] विष्णु।

सोम-गिरि—पु०[स०]१ महाभारत के अनुसार एक पर्वत। २ मेरु-ज्योति। ३ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-ग्रह—पु० [स०] १. चन्द्रमा का ग्रहण। चन्द्रग्रहण। २. घोडो का एक ग्रह जिससे ग्रस्त होने पर वे काँपा करते हैं।

सोम-ग्रहण—पु०[स०] चन्द्र-ग्रहण।

सोम-चमस—पु०[स०] सोमपान करने का पात्र।

सोमज—वि०[स०] चन्द्रमा से उत्पन्न।
पु० १. वुध नामक ग्रह। २. दूध।

सोमजाजी†—पु०[स० सोमयाजी] सोम याग करनेवाला।

सोमदिन—पु०[स० सोम=दिन] सोमवार। चन्द्रवार।

सोम-दीपक—पु०[सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोमदेव—पुं०[सं०]१. सोम नामक देवता। २. चन्द्रमा।

सोम-देवत (त्य)—वि०[सं०] जिसके देवता सोम हों।

सोम-दैवत—पुं०[सं०] मृगशिरा (नक्षत्र)।

सोम-धारा—स्त्री० [सं०] १. आकाश। आसमान। २. स्वर्ग। ३. आकाश-गंगा।

सोम-धेय—पुं०[सं०] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

सोमन—पुं०[सं० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र।

सोमनस†—पु०=सौमनस्य।

सोमनाथ—पुं०[सं०]१ प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २. काठियावाड़ के दक्षिणी तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग का मंदिर है। इस मदिर के अतुल धन-रत्न की प्रसिद्धि सुनकर सन् १०२४ ई० मे महमूद गजनवी इसे ध्वस्त करके यहाँ से करोड़ों की सम्पत्ति गजनी ले गया था। अव स्वतन्त्र भारत में इस मन्दिर का जीर्णोद्धार हो गया है।

सोमनेत्र—वि०[सं०]१. जिसका नेता या रक्षक सोम हो। २. जिसकी आँखें सोम के समान हो।

सोमप—वि०[सं०]१. सोम-रस पीनेवाला। २. जिसने यज्ञ में सोम रस का पान किया हो।
पु० १. वह जिसने सोम यज्ञ किया हो, अथवा जो सोमयज्ञ करता हो। सोमयाजी। २. विश्वेदेवों में से एक का नाम। ३. एक प्राचीन ऋषि वंश। ४ पितरों का एक वर्ग। ५. कार्तिकेय का एक अनुचर। ६ एक पौराणिक जनपद।

सोमपति—पु०[सं०] इन्द्र का एक नाम।

सोमपत्र—पु०[स०] कुश की तरह की एक घास। डाम। दर्भ।

सोमपद—पु०[सं०]१. एक लोक। (हरिवंश) २. महाभारत काल का एक तीर्थ।

सोम-पर्व (न्)—पुं०[सं०]१. सोमपान करने का उत्सव या पुण्य काल। २. कोई ऐसा पर्व जिसमें लोग सोम पीते थे।

सोमपा—वि०, पुं०=सोमप।

सोम-पान—पु०[सं०] सोम रस पान करना।

सोमपायी (यिन्)—वि०[स०] [स्त्री० सोमपायिनी] सोम रस पीनेवाला।

सोमपाल—पु०[सं०] सोम के रक्षक, गन्धर्व लोग।

सोम-पुत्र—पु०[स०] सोम या चन्द्रमा के पुत्र, वुध।

सोम-पुरुष—पु०[सं०] १. सोम का रक्षक। २. सोम का अनुचर या भक्त।

सोमपेय—पु०[स०]१. एक प्रकार का यज्ञ जिसमे सोमपान किया जाता था। २. सोमपान।

सोम-प्रताप—पुं० [सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-प्रदोष—पु०[स०] सोमवार को पड़नेवाला प्रदोष (व्रत), जो विशेष महत्त्वपूर्ण माना गया है।

सोम-प्रभ—वि० [सं०]सोम या चन्द्रमा के समान प्रभावाला। परम काति-मान।

सोम-प्रभावी—स्त्री०[सं०] सगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सोमबंधु—पुं०[सं०]१. सूर्य। २. वुध ग्रह। ३. कुमुद।

सोमभवा—स्त्री०[सं०] नर्मदा (नदी)।

सोमभू—वि० [सं०]१ सोम से उत्पन्न। २. जो चन्द्रवंश में उत्पन्न हुआ हो। चन्द्रवंशी।
पु०१ चन्द्रमा के पुत्र, बुध। २. जैनो के चौथे कृष्ण वसुदेव का एक नाम।

सोमभूपाल—पु०[सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-भैरवी—स्त्री०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सोम-मंजरी—स्त्री० [सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सोम-मद—पु०[सं०] सोमरस पान करने से होनेवाला नशा।

सोममुखी—पु०[सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सोम-यज्ञ—पु० [सं०] एक प्रकार का त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सुत्यन सोम रस पीया जाता था।

सोमयाजी (जिन्)—पु०[सं०] वह जो सोमयाग करता हो। सोम-पान करनेवाला।

सोम-योनि—पु०[सं०]१ देवता। २ ब्राह्मण। ३. पीला चन्दन।

सोम-रस—पु०[सं०]१ वैदिक काल मे सोम नामक लता का रस जो ऋषि, मुनि आदि पीते थे। २ हठयोग मे, तालु-मूल मे स्थित माने जानेवाले चन्द्रमा से निकलनेवाला रस जो योगी लोग जीभ उलटकर और उसे तालु-मूल तक ले जा कर पान करते हैं।

सोमरा—पु० [देश०] जुते हुए खेत का दोबारा जोता जाना। दो चरस।

सोमराज—पु०[सं०] चन्द्रमा।

सोमराजी—स्त्री०[सं०] १ बकुची। २ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे दो यगण होते हैं। यथा—सुनी, एक रूपी, सुनी वेद गावैं। महादेव जा को सदाचित्त लावैं।—केशव।

सोम-राज्य—पु०[सं०] चन्द्रलोक।

सोमराष्ट्र—पु०[सं०] एक प्राचीन जनपद।

सोमल—पु०[देश०]एक प्रकार का संखिया जिसे सफेद संखुल भी कहते है।

सोम-लता—स्त्री०[सं०]१ सोम नामक वनस्पति की लता। २. गिलोय। गुडुच।

सोम-लोक—पु०[सं०] चन्द्र-लोक।

सोम-वंश—पु०[सं०]१ युधिष्ठिर का एक नाम। २ क्षत्रियों का चन्द्र-वंश।

सोमवंशीय—वि०[सं०] १ चन्द्रवंश मे उत्पन्न। २ चन्द्रवंश सम्बन्धी।

सोमवंश्य—वि० [सं०] सोमवंशीय।

सोमवत्—वि०[सं०] [स्त्री० सोमवती]१. सोमयुक्त। २ चन्द्रमा से युक्त (ग्रह)। ३ चन्द्रमा के समान शीतल या सुन्दर।

सोमवती—स्त्री०[सं०]१ एक प्राचीन तीर्थ। २ दे० 'सोमवती अमावस्या'।

सोमवती अमावस्या—स्त्री० [सं०] १ सोमवार को पडनेवाली अमावस्या जो पुराणो के अनुसार पुण्यतिथि मानी गई है। प्राय. लोग इस दिन गंगास्नान और दान-पुण्य करते हैं।

सोमवर्चस्—पु०[सं०] विश्वेदेव मे से एक।
वि० सोम के समान तेजवाला।

सोम-वल्क—पु० [सं०] १. सफेद खैर। २. कायफल। ३ करंज। ४. रीठा करंज। ५ बबूल।

सोम-वल्लरी—स्त्री० [सं०] १. सोम नामक लता। २ ब्राह्मी। ३ एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण, जगण, और रगण होते हैं। इसे 'चामर' और 'तूण' भी कहते हैं।

सोम-वल्लिका—स्त्री०[सं०]१. बकुची। सोमराजी। २ सोमलता।

सोम-वल्ली—स्त्री०[सं०]१ गिलोय। गुडूची। २. सोमराजी। बकुची। ३ पाताल गारुड़ी। छिरेंटी। ४. ब्राह्मी। ५. सुदर्शन नामक पौधा। ६ कठकरंज। लता करंज। ७ गज-पीपल। ८ वन-कपास। ९. सोमलता।

सोम वायव्य—पु०[सं०] एक ऋषि-वंश का नाम।

सोमवार—पु०[सं०] सात वारों में से एक वार जो सोम अर्थात् चन्द्रमा का दिन माना जाता है। यह रविवार के बाद और मंगलवार के पहले पड़ता है। चन्द्रवार।

सोमवारी—वि०[सं० सोमवार] सोमवार संबंधी। सोमवार का। जैसे—सोमवारी बाजार, सोमवारी अमावस्या।
स्त्री० सोमवारी अमावस्या।

सोम-वीथी—स्त्री० [सं०] चन्द्र-मंडल।

सोम वृक्ष—पु०[सं०]१. कायफल। कटफल। २. सफेद खैर।

सोम संस्था—स्त्री० [सं०] सोम यज्ञ का एक प्रारंभिक कृत्य।

सोम सलिल—पु०[सं०] सोमलता का रस।

सोम-सव—पु०[सं०] यज्ञ में किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य जिसमें सोम का रस निकाला जाता था।

सोम सार—पु० [सं०] १ सफेद खैर। श्वेत खदिर। २ कीकर। बबूल।

सोम-सिंधु—पु०[सं०] विष्णु का एक नाम।

सोम सिद्धांत—पु०[सं०] १. एक बुद्ध का नाम। २ फलित ज्योतिष।

सोम-सुंदर—वि०[सं०] चन्द्रमा के समान सुन्दर। बहुत सुन्दर।

सोम-सुत्—वि०, पु० [सं०] सोमरस निकालनेवाला।
पु० यज्ञ मे सोमरस की आहुति देनेवाला ऋत्विज्।

सोम-सुत—पु०[सं०] चन्द्रमा के पुत्र, बुध।

सोम-सुता—पु०[सं०] (चन्द्रमा की पुत्री) नर्मदा नदी।

सोम-सूत्र—पु०[सं०] शिवलिंग की जलधरी से जल निकलने का स्थान या नाली।

सोमांग—पु०[सं०] सोम-याग का एक अंग।

सोमांशु—पु०[सं०]१ चन्द्रमा की किरण। २. सोम लता का अंकुर। ३ सोमयज्ञ का एक कृत्य।

सोमा—स्त्री०[सं०]१ सोम लता। २. एक पौराणिक नदी।

सोमाख्य—पु०[सं०] लाल कमल।

सोमाद—वि०[सं०] सोम भक्षण करनेवाला। सोमपायी।

सोमाधार—पु० [सं०] पितरो का एक गण या वर्ग।

सोमापूषण—पु०[सं०] [वि० सोमापौष्ण] सोम और पूषण नामक देवता।

सोमापौष्ण—पु०[सं०] सोम और पूषण संबंधी।

सोमाभ—वि०[सं०] जिसमे चन्द्रमा की-सी आभा हो।
स्त्री० चन्द्रमा की किरणें। चन्द्रावली।

सोमायन—पु०[सं०]महीने भर का एक व्रत जिसमे २७ दिन दूध पीकर रहने और तीन दिन तक उपवास करने का विधान है।

सोमारुद्र—पु०[स०] [वि० सौमारौद्र] सोम और रुद्र नामक देवता।
सोमारौद्र—वि०[स०] सोम और रुद्र सबधी।
सोमार्च्ची—पु०[स० सोमार्च्चिस्] स्वर्ग मे देवताओ का एक प्रासाद। (रामा०)
सोमार्द्धधारी (रिन्)—पु० [स०] (मस्तक पर अर्द्ध चन्द्र धारण करनेवाले) शिव।
सोमाल—वि०[स०] कोमल। नरम। मुलायम।
सोमालक—पु०[स०] पुष्पराग मणि। पुखराज।
सोमावती—स्त्री०[स०] चन्द्रमा की माता का नाम।
†स्त्री० =सोमावती अमावस्या।
सोमाष्टमी—स्त्री०[स०] सोमवार को पडनेवाली अष्टमी तिथि। इस दिन व्रत का विधान है।
सोमास्त्र—पु०[स०] चन्द्रमा का अस्त्र।
सोमाह—पु० [स०] चन्द्रमा का दिन, सोमवार।
सोमाहुत—वि० [स०]१ जिसे सोम की आहुति दी गई हो। २ जिसकी सोमरस से तृप्ति की गई हो।
सोमाहुति—स्त्री०[स०] यज्ञ-कुण्ड मे दी जानेवाली सोम की आहुति।
पु० मत्र-द्रष्टा भार्गव ऋषि का एक नाम।
सोमाह्वा—स्त्री०[स०] महा-सोमलता।
सोमी (मिन्)—वि० [स०] १ जिसमे सोम हो। सोम-युक्त। २ यज्ञ मे सोम की आहुति देनेवाला।
पु० सोमयाजी।
सोमीय—वि० [स०] १ सोम-सम्बन्धी। सोम का। २ सोमरस से युक्त।
सोमेंद्र—वि०[स०] सोम और इन्द्र सम्बन्धी।
सोमेश्वर—पु०[स०]१ एक शिवलिंग जो काशी मे स्थापित है। २ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ दे० 'सोमनाथ'।
सोमोत्पत्ति—पु० [स०]१. चन्द्रमा का जन्म। २ अमावस्या के उपरान्त चन्द्रमा का फिर से निकलना।
सोमोद्भव—पु० [स०] (चन्द्रमा को उत्पन्न करनेवाले) श्रीकृष्ण का एक नाम।
वि० चन्द्रमा से उत्पन्न।
सोमोद्भवा—स्त्री०[स०] नर्मदा नदी का एक नाम।
सोमौनी†—स्त्री० =सोमवती अमावस्या।
सोम्य—वि०[स०]१ सोम-सम्बन्धी। सोम का। २. सोम से युक्त। ३ जो सोम-पान कर सकता हो या जिसे सोम-पान करने का अधिकार हो। ४ यज्ञ मे सोम की आहुति देनेवाला। ५. अच्छा। सुन्दर।
सोय†—सर्व० =सो।
सोया†—पु० =सोआ (साग)।
सोयावीन—पु० दे० 'भटवाँस'।
सोरजान†—स्त्री० =सूरजान (ओषधि)।
†पु० =सूरजन (सुपारी का पेड)।
सोर†—पु०[फा० शोर]१ कोलाहल। हल्ला। २ प्रसिद्धि। ख्याति।
†स्त्री०[स० शटा] पेड़ो की जड़। मूल।
†पु०[?] बारूद (राज०)। उदा०—उठै सोर फाला अनल, आभ धुआँ अँधियार।—बाँकीदास।
पु०[तामिल शुडा, तेलुगु सोर] हाँगर की जाति की एक प्रकार की बहुत भीषण और बडी समुद्री मछली। (शार्क)
पु० [स०] वक्र गति। टेढी चाल।
सोरट्ठ†—पु० =सोरठ।
सोरठ—पु०[स० सौराष्ट्र] १ सौराष्ट्र (प्रदेश)। २ उक्त प्रदेश की प्राचीन राजधानी, सूरत। ३ ओडव जाति का एक राग जो हिंडोल का पुत्र कहा जाता है।
मुहा०—खुली सोरठ कहना=खुले आम कहना। कहने मे सकोच या भय न करना।
सोरठ मल्लार—पु०[हिं० सोरठ+मल्लार] सोरठ और मल्लार के योग से बना हुआ एक सकर राग।
सोरठा—पु०[स० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ (देश)] अड़तालीस मात्राओ का एक छद जिसके पहले और तीसरे चरण मे ग्यारह-ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण मे तेरह-तेरह मात्राएँ होती है। इसके सम चरणो मे जगण का निषेध है। दोहे के चरणो को आगे-पीछे कर देने से सोरठा हो जाता है।
सोरठी—स्त्री० [सोरठ (देश)] सगीत मे एक रागिनी जो मेघराग की पत्नी कही गई है।
वि० सोरठ-सम्बन्धी। सोरठ का।
सोरण—वि० [स०] जो स्वाद मे उग्र हो। विशेषत खट्टा और चरपरा।
सोरनी—स्त्री०[स० शोधनी]१ झाड़ू। बुहारी। २. जलाये हुए शव की राख बहाने का सस्कार।
सोरवा†—पु० =शोरवा।
सोरभ†—पु० =सौरभ (सुगध)।
सोर-भखी†—स्त्री०[स० शूरभक्षी] तोप या बन्दूक। (डिं०)
सोरह†—वि०, पु० =सोलह।
सोरहिया†—स्त्री०[हिं० सोलह?] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव जो सोलह हाथ चौड़ी होती थी।
†स्त्री० =सोरही।
सोरही†—स्त्री० =सोलह।
सोरा†—पु० =शोरा।
सोराना—अ०[हिं० सोर=जड] बोई हुई चीज मे सोर या जड निकलना। उदा०—तुम्हारा आलू सोरा कर ऐसा ही रह जायगा।—जयशकर प्रसाद।
सोरी—स्त्री० [स० स्रवण=बहना या चूना] बरतन मे का महीन छेद जिसमे से होकर पानी बह जाता हो।
सोर्मि, सोर्मिक—वि० [स०] तरग-युक्त।
सोलकी—पु० [देश०] क्षत्रियो का एक प्राचीन राजवश जिसने बहुत दिनो तक गुजरात पर शासन किया था।
सोल—वि० [स०] १. शीतल। ठढा। २ कसैला, खट्टा और तिक्त या तीता।
पु० १. शीतलता। ठढक। २ स्वाद। जायका।
सोलपंगो—पु० [हिं० सोलह+पग] केंकड़ा। (डिं०)

सोलह—वि० [सं० षोडश, प्रा० सोलस, सोरह] जो गिनती में दस से छः अधिक हो। षोडश।
पु० उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।
मुहा०—सोलहो आने=कुल का कुल। सब का सब। सोलह-सोलह गंडे सुनाना=खूब गालियाँ देना।

सोलह-नहाँ—पु० [हिं० सोलह+नहँ=नख] एक प्रकार का ऐबी हाथी जिसके १६ नाखून होते हैं।

सोलहवाँ—वि० [हिं० सोलह+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सोलहवीं] संख्या के विचार से १६ की जगह पड़नेवाला।

सोलह सिंगार—पु० [हिं० सोलह+सिंगार] स्त्रियों के पूरा श्रृंगार करने के लिए बताये हुए ये सोलह कार्य—अंग में उबटन लगाना, नहाना; स्वच्छ वस्त्र धारण करना; बाल सँवारना, काजल लगाना; सिंदूर से माँग भरना; महावर लगाना, भाल पर तिलक लगाना; चिबुक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना; इत्र आदि सुगंधित द्रव्य लगाना, आभूषण पहनना; फूलों की माला पहनना; मिस्सी लगाना; पान खाना और होठों को लाल करना।
मुहा०—सोलह सिंगार सजाना=बनना-ठनना।

सोलही†—स्त्री० [हिं० सोलह+ई (प्रत्य०)] १. सोलह चित्ती कौड़ियाँ। २. उक्त कौड़ियों से खेला जानेवाला जूआ। ३ पैदावार की १६-१६ अँटियों या पूलों के रूप में होनेवाली गिनती।

सोला—पु० [?] १. एक प्रकार की रेशमी धोती। २ एक प्रकार का बड़ा झाड़ जिसकी डालियाँ बहुत मजबूत और सीधी होती हैं।
विशेष—सोला हैट नामक अँगरेजी ढंग का टोप इसी की डालियों से बनता है।

सोलाना†—स०=सुलाना।

सोलाली—स्त्री० [?] पृथ्वी। (डिं०)

सोल्लास—वि० [सं०] उल्लास-युक्त। प्रसन्न। आनंदित।
अव्य० उल्लास-पूर्वक। हर्ष से भर कर। बहुत प्रसन्न होकर।

सोवज—पु० १.=सावज। २.=सौजा।

सोवड़†—पु० [सं० सूत,—प्रा० सूड़आ] सूतिकागार। सौरी।

सोवणी†—स्त्री० [सं० शोधनी] बुहारी। झाड़ू। (डिं०)

सोवन*—पु० [हिं० सोवना] सोने की क्रिया या भाव। शयन।
†वि० १.=शोभन। २.=सुनहला।

सोवन-वानी—वि० [सं० सुवर्ण+वर्ण] सुनहला। (राज०)

सोवना†—वि० [हिं० सोना=स्वर्ण] १. सोने के रंग का। सुनहला। २ सोने का। उदा०—चोंच मढाऊँ थारी सोवनी री।—मीराँ।
†अ०=सोना (शयन करना)।

सोवनार*—स्त्री० [सं० शयनागार] सोने का कमरा। शयनागार।

सोवरी†—स्त्री०=सौरी (सूतिकागार)।

सोवा—पु०=सोआ (साग)।

सोवाना†—स०=सुलाना।

सोवारी—पु० [?] संगीत में पन्द्रह मात्राओं का एक ताल जिसमें पाँच आघात और तीन खाली होते हैं।

सोवियत—पु० [रूसी सोव्हिएट] १. परिषद्। सभा। २. प्रतिनिधियों की सभा। ३. आज-कल समाजवाद के सिद्धांतों पर आश्रित रूस की वह शासन-प्रणाली जिसमें सभी छोटे-छोटे क्षेत्रों में मजदूर, सैनिकों आदि के चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में सारे अधिकार रहते हैं। यही लोग जिले की शासन-परिषद् के लिए प्रतिनिधि चुनते हैं। फिर जिले की परिषदें प्रांत के शासन के लिए और तब प्रांतीय परिषदें केंद्रीय शासन के लिए प्रतिनिधि चुनती हैं।
वि० (स्थान) जहाँ उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली प्रचलित हो। जैसे—सोवियट रूस।

सोवैया†—पु० [हिं० सोवना+ऐया (प्रत्य०)] सोनेवाला।

सोशल—वि० [अं०] १. समाज-संबंधी। सामाजिक। जैसे—सोशल कानफ्रेंस। २. समाज के लोगों के साथ हेल-मेल बढ़ाकर रहनेवाला। समाजशील। जैसे—सोशल लड़का।

सोशलिज्म—पु० =समाजवाद।

सोशलिस्ट—पुं० = समाजवादी।

सोषक*—वि० =शोषक।

सोषण†—पु०=शोषण।

सोषना†—स० =सोखना।

सोषु†—वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला। शोषक।

सोष्णीष—पु० [सं०] ऐसा घर जिसके अग्रभाग में बरामदा भी हो।

सोष्यंती—स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके शीघ्र ही प्रसव होने को हो। आसन्न-प्रसवा।

सोष्यंती-कर्म—पु० [सं० सोष्यंती-कर्मन्] आसन्न-प्रसवा स्त्री के संबंध में किया जानेवाला कृत्य या संस्कार।

सोस†—वि० [सं० शुष्क] १. सूखा। २. सोखनेवाला। शोषक।
†पु०=शोषण।

सोसन—पु० [फा० सौसन] १. एक पौधा जो कश्मीर में होता है। २. उक्त पौधे का फूल।

सोसनी—वि० [फा० सौसन] सोसन के फूल के रंग का। लाली लिए नीला।
पु० उक्त प्रकार का रंग।

सोसाइटी, सोसायटी—स्त्री० [अं०] १. समाज। २. संगत। सोहबत। ३. सार्वजनिक संस्था।

सोस्मि†—अव्य०=सोऽहमस्मि।

सोहँ†—स्त्री०=सौंह (कसम)।
*अव्य० =सौंह (सामने)।

सोहंज†—दे०=सोऽहम्।

सोहंग†—अव्य०=सोहम्।
†पु०=सास।

सोहंम—अव्य०=सोऽहम्।

सोहगी—स्त्री० [हिं० सोहाग] विवाह से पूर्व कन्या के लिए वर-पक्षवालो की तरफ से भेजी जानेवाली चीजें जो सौभाग्य-सूचक मानी जाती हैं।

सोहगैला—पु० [हिं० सुहाग या सोहाग] [स्त्री० अल्पा० सोहगैली] लकड़ी की वह कँगूरेदार डिबिया जिसमें विवाह के दिन सिंदूर भर कर देते हैं। सिंदूरा।

सोहड़†—पु०=सुभट। (राज०)

सोहन—वि० [स० शोभन, प्रा० सोहण] [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुदर। सुहावना।
पु० १ सुन्दर पुरुष । २ स्त्री के लिए उसका पति या प्रेमी।
पु० एक प्रकार का वडा जगली वृक्ष।
स्त्री०=सोहन चिडिया।
पु० [?] एक प्रकार का रदा।

सोहन-चिड़िया—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का वडा पक्षी जिसका मास स्वादिष्ट होता है।

सोहन-पपड़ी—स्त्री० [हिं० सोहन+पपडी] मैदे की वनी हुई एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरो या लच्छो के रूप मे होती है।

सोहन-हलुआ—पु० [हिं० सोहन+हलुआ] एक प्रकार की वहुत वढिया और स्वादिष्ट मिठाई जो जमे हुए कतरो के रूप मे और घी से तर होती है।

सोहना—अ० [स० शोभा] सुशोभित होना। फवना।
वि० [स्त्री० सोहनी] सुदर और सुहावना।
पु० [फा० सोहान] कसेरो का छेद करने का एक औजार।
स० [स० शोधन] १ साफ करना। २ निराई करना।

सोहनी—स्त्री० [हिं० सोहना] १ झाड। वुहारी। २ खेत मे की जानेवाली निराई। ३ निराई करते समय गाया जानेवाला गीत। ४ आधी रात के वाद गायी जानेवाली एक रागिनी।

सोहवत—स्त्री० [अ०] १. सग-साथ। सगत।
पद—सोहवत का फल=वह वात (विशेपत वुरी वात) जो वुरी सगत के कारण सीखी गयी हो।
२ स्त्री-प्रसग। सभोग।

सोहवतदारी—स्त्री० [अ०+फा०] स्त्री-प्रसग। सभोग।

सोहवती—वि० [अ० सुहवत] जिससे सोहवत हो। साथी। सगी।

सोहमस्मि—अव्य०=सोऽहमस्मि।

सोहर—पु० [हिं० सोहना, सोहला] १ घर मे सतान होने पर गाया जानेवाला मगल गीत। २ उक्त अवसर पर गाये जानेवाले गीतों की सज्ञा। ३ मागलिक गीत।
स्त्री० [?] १ नाव का फर्श। २ पाल खीचने की रस्सी।
विशेष—खिलौना (गीत) और सोहर मे यह अतर है कि सोहर मे तो पुत्र-जन्म की पूर्व-पीठिका का उल्लेख होता है, परन्तु खिलौना मे उत्तर-पीठिका का उल्लेख होता है। इसमे आनन्द और उत्साह की मात्रा अधिक होती है।

सोहरत*—स्त्री०=शोहरत (प्रसिद्धि)।

सोहराना†—स०=सहलाना।

सोहला†—पु०=सोहर (गीत)।

सोहली†—स्त्री० [?] माथे पर पहनने का एक गहना। (राज०)

सोहाइन†—वि०=सुहावना।

सोहाई—स्त्री० [हिं० सोहना=आई (प्रत्य०)] १ सोहने की क्रिया या भाव। निराई करना। २. निराई करने की मजदूरी।

सोहाग†—पु०=सुहाग।

सोहागा†—पु०=सुहागा।

सोहागिन (नी)†—स्त्री०=सुहागिन।

सोहागिल†—स्त्री०=सुहागिन।

सोहाता—वि० [हिं० सोहाना] [स्त्री० सोहाती] १ सोहानेवाला। फवनेवाला। २. सत्य।

सोहान—पु० [फा०] रेती नामक औजार।

सोहाना—अ०=सुहाना (भला लगना)।
अ० [स० सहन] वरदाश्त होना। जैसे—आप की वात उनको नही सोहाती। (पश्चिम)

सोहापा†—वि०=सुहावना।

सोहारद†—पु०=सौहार्द (सद्भाव)।

सोहारी†—स्त्री० [हिं० सोहाना=रचना] पूरी नाम का पकवान।

सोहाल†—पुं०=सुहाल (पकवान)।

सोहाली—स्त्री० [?] ऊपर के दाँतो का मसूड़ा। ऊपरी दाँतो के निकलने की जगह।
† स्त्री०=सोहारी।

सोहावटी—स्त्री० [हिं० सोहाना ?] १ पत्थर की वह पटिया या लकडी का मोटा तख्ता जो खिड़की या दरवाजे के ऊपरी भाग पर पाटन के रूप में लगा रहता है। करगहना। २. ईंटो आदि की उक्त प्रकार की जोडाई या सीमेंट आदि की ऐसी रचना। (लिन्टेल)

सोहावन†—वि०=सुहावना।

सोहावना†—वि०=सुहावना।
† अ०=सुहाना (भला लगना)।

सोहासित†—वि० [सं० सुभाषित] प्रिय लगनेवाला। रुचिकर।
पु० चापलूसी की वातें। ठकुर-सुहाती।

सोहिं†—अव्य०=सौंह (सामने)।

सोहिनी—वि०, स्त्री०=सोहनी।

सोहिल†—पु०=सुहेल (अगस्त्य तारा)।

सोहिला†—पु०=सोहला (सोहर)।

सोहीं (हैं)†—अव्य०=सौंह (सामने)।

सोहौटी†—स्त्री०=सोहावटी।

सौं†—अव्य० १. दे० 'सो'। २. दे० 'सा' (समान)। उदा०—हरि सौं ठाकुर और न जन कौं।—सूर। ३. दे० 'सौंह' (सामने)।
† स्त्री०=सौंहि (शपथ)।

सौंकारा†—पु० [स० सकाल] प्रात.काल। सवेरा। तडका।

सौंकारे, सौंकेरे*—अव्य० [स० सकाल, पु० हिं० सकारे] १. तडके। सवेरे। २ उचित या ठीक समय से कुछ पहले ही।

सौंघाई—स्त्री० [हिं० सोहागा=सस्ता] अधिकता। वहुतायत। ज्यादती।

सौंघी—वि० [?] १. अच्छा। २. उचित। ठीक। वाजिव।

सौंचन†—स्त्री० [स० शौच] मल-त्याग। शौच।

सौंचना†—स० [स० शौच] १. शौच करना। मल-त्याग करना। २. मल-त्याग के उपरान्त हाथ-पैर आदि धोना।

सौंचर—पु०=सोचर (नमक)।

सौंचाना†—स० [हिं० सौंचना का प्रे०] शौच कराना या मल-त्याग कराना। (मुख्यत. वच्चो के सवंध मे प्रयुक्त)

सौंज*—स्त्री० [फा० साज़] साज (सामान)।

सौंजा—पु० [हिं० सौंपना] १ सुपुर्द करना। सौंपना। २ जोतने-बोने के लिए किसी को खेत देना। ३. आपस में होनेवाला परामर्श या समझौता।
†पु० [स० श्वापद] जगली (विशेषत: शिकारी) जानवर।
सौंड (ड़ा) †—पु० [हिं० सोना+ओढना] ओढने का (विशेषत सोते समय ओढ़ने का) भारी कपडा। जैसे—रजाई, लिहाफ, आदि।
सौंण†—पु०=शकुन। (राज०)
सौंतुख—अव्य० [स० सम्मुख] १ आंखो के आगे। प्रत्यक्ष। सामने। २ आगे। सामने।
पु० आगा। सामना।
सौंदन—स्त्री० [हिं० सौंदना] रेह मिले पानी मे कपडे भिगोना। (धोबी)
सौंदना—स० [स० सधम्=मिलना] १ सौंदन का काम करना। २ दे० 'सानना'।
सौंदर्ज —पु०=सौंदर्य।
सौंदर्य—पु० [स०] १ सुदर होने की अवस्था, गुण या भाव। सुदरता। खूबसूरती। २ किसी वस्तु का वह गुण या तत्त्व समूह जो उसके आकार या रूप को आकर्षक और नेत्रो के लिए सुखद बनता है। सुदरता। (ब्यूटी)
विशेष—यह तत्त्व प्राय व्यक्तिगत रुचि और विचार पर आश्रित रहता है, और कला के क्षेत्र तक ही परिमित नही है।
३ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।
सौंदर्यता†—स्त्री०= सौंदर्य।
सौंदर्यवाद—पु० [स०] यह मत या सिद्धान्त कि कला मे सौन्दर्य की ही प्रधानता होनी चाहिए और मनुष्य की सुरुचि उसी के प्रति रहनी चाहिए। (एस्थिटिसिज्म)
सौंदर्यवादी—वि० [स०] सौन्दर्यवाद-सबधी। सौंदर्यवाद का।
पु० वह जो सौन्दर्यवाद का अनुयायी, पोपक या समर्थक हो।
सौंदर्यविज्ञान—पु० [स०] =सौंदर्य-शास्त्र।
सौंदर्यशास्त्र—पु० [स०] वह शास्त्र जिसमे कलात्मक कृतियो, रचनाओ आदि से अभिव्यक्त होनेवाले अथवा उनमे निहित रहनेवाले सौंदर्य का तात्त्विक, दार्शनिक और मार्मिक विवेचन होता है। (एस्थेटिक्स)
विशेष—किसी सुदर वस्तु को देखकर हमारे मन मे जो आनन्ददायिनी अनुभूति होती है उसके स्वभाव और स्वरूप का विवेचन तथा जीवन की अन्यान्य अनुभूतियो के साथ उसका समन्वय स्थापित करना इनका मुख्य उद्देश्य होता है।
सौंध†—पु०=सौध।
†स्त्री०=सुगध।
सौंधना†—स० [सं० सुगधि] सुगधित करना। सुवासित करना। वासना।
†स० सौंदना।
सौंधा—वि०, पु०=सोधा। उदा०—गधी कौ सौंधने नही, जन जन हाथ बिकाय।—नन्ददास।
सौंनी—पु०=सुनार।
सौंपना—स० [स० समर्पण, प्रा० सउप्पण] १. किसी के अधिकार मे देना। २ पूरी तरह से और सदा के लिए किसी को दे देना। ३ समर्पण करना।
सौंफ—स्त्री० [स० शतपुष्पा] १. पाँच-छ. फुट ऊँचा एक पौधा जिसकी पत्तियां सोए की पत्तियो के समान ही बहुत बारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते है। फूल लबे सीको मे गुच्छो के रूप मे लगते है। २ उक्त पौधे के बीज जो जीरे के रूप मे होते और मसाले के काम मे आते है।
सौंफिया—स्त्री० [हिं० सौंफ+इया (प्रत्य०)] १ सौंफ की बनी हुई शराब। २ रूसा नाम की घास जब कि वह पुरानी और लाल हो जाती है।
सौंफी—वि० [हिं० सौंफ] सौंफ सबधी। सौंफ का।
स्त्री० =सौंफिया (शराब)।
सौंभरि—पु०=सौभरि।
सौंर—पु० [हिं० सौरी] मिट्टी के बरतन, भाँडे आदि जो सतानोत्पत्ति के दसवें दिन (अर्थात् सूतक हटने पर) तोड दिये जाते है।
†स्त्री०=सौरी।
सौंरई†—स्त्री० [हिं० साँवरा] सांवलापन।
सौंरना*—स० [स० स्मरण, हिं० सुमरना] स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना।
†अ० =सँवरना।
सौंरा*—वि० =साँवला।
सौंराई*—स्त्री०=सांवलापन।
सौंसे*—वि० [सं० समस्त] सब। कुल। पूरा। (पु० हिं०)
सौंह†—स्त्री० [हिं० सौगद] शपथ। कसम। (पश्चिम)
क्रि० प्र०—करना।—खाना।—देना।
अव्य०=सोहे।
सौंहन—पु०=सोहन।
सौंही—स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार।
†अव्य०=सोहे (सामने)।
सौ—वि० [सं० शत] जो गिनती मे पचास का दूना हो। नब्बे और दस। शत।
पु० उक्त की सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।
पद—सौ की एक बात या सौ की सीधी एक बात=ठीक और सार-भूत बात। वास्तविक तात्पर्य। **सौ जान से**=पूरी शक्ति से। सब तरह से।
†अव्य० सा।
सौक—वि० [हिं० सौ+एक] सौ के लगभग। अर्थात् बहुत-सा।
उदा०—लीन्ही सौक माला, परे अँगुरीन जप-छाला'' ।—सेनापति।
†पु० =शौक।
†स्त्री०=सौत (सपत्नी)।
सौकन†—स्त्री० =सौत।
सौकन्य—वि० [स०] सुकन्या-सबधी। सुकन्या का।
सौकर—वि० [स०] [स्त्री० सौकरी] १. सूकर या सूअर सबधी। सूअर का। २. सूअर की तरह का। ३. सूअर या वाराह अवतार से सबध रखनेवाला।
पु० वाराह सेन नामक तीर्थ।

सौकरक—पु० [सं०] सौकर तीर्थ।

सौकरायण—पु० [सं०] शिकारी। व्याध। अहेरी।

सौकरिक—पु०[सं०] १ सूअर, रीछ आदि का शिकार करनेवाला शिकारी। २ शिकारी। अहेरी। ३. सूअरो का व्यापारी।
वि० सूअर सबधी। सूअर का।

सौकरीय—वि० [सं०] सूअर सबधी। सूअर का।

सौकर्य—पु० [सं०] १ सुकर होने की अवस्था, गुण या भाव। सुकरता। सुगाध्यता। २ सुभीता। ३ कुशलता। दक्षता।
पु० [सं० सूकर+ता] सूकर अर्थात् सूअर होने की अवस्था गुण या भाव।

सौकीन†— वि०=शौकीन।

सौकुमारक—पु० [सं०] सौकुमार्य।

सौकुमार्य—पु० [सं०] १ सुकुमार होने की अवस्था, गुण या भाव। सुकुमारता। २ यौवन। जवानी। ३ काव्य का एक गुण जो ग्राम्य और श्रुति-कटु शब्दो का त्याग करने और सुदर तथा कोमल शब्दो का प्रयोग करने से उत्पन्न होता है। ४ यौवन काल। जवानी।
वि०=सुकुमार।

सौकृति—पु० [सं०] १ एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। २ उक्त ऋषि का गोत्र।

सौकृत्य—पु० [सं०] १ यज्ञादि पुण्य कर्म का सम्यक् अनुष्ठान। २ दे० 'सौकर्म'।

सौकृत्यायन—पु० [सं०] वह जो सुकृत्य के गोत्र या वश मे उत्पन्न हुआ हो।

सौक्तिक—वि० [सं०] १ सूक्त-सबधी। सूक्त का। २ सूक्त के रूप मे होनेवाला।
पु०=शौक्तिक।

सौक्ष्म—पु० =सूक्ष्मता।

सौक्ष्मक—पु० [सं०] छोटा घोडा।

सौक्ष्म्य—पु० [सं०] =सूक्ष्मता।

सौख—पु० [सं०] सुख का गुण, धर्म या भाव। सुख। आराम।
†पु०=शौक।

सौख शायिक—पु० [सं०] वैतालिक। स्तुति पाठक। वदी।

सौखा†—वि० [हिं० सुख] सहज। सुगम।

सौखिक—वि० [सं०] १ सुख-सबधी। २ सुख के रूप मे होनेवाला। ३ सुख चाहनेवाला। सुखार्थी।

सौखी†—पु० [फा० शोख या शौकीन] गुडा। बदमाश।

सौखीन†—वि०=शौकीन।

सौख्य—पु० [सं०] १ सुख का गुण, धर्म या भाव। सुखता। सुखत्व। २. सुख। आराम।

सौख्यद—वि० [सं०] =सुखदायी। सौख्य देनेवाला।

सौख्यदायी (यिन्)—वि० [सं०] सुखदायी।

सौगंद—स्त्री० [सं० सौगन्ध] शपथ। कसम। सौह।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।

सौगध—पु० [सं०] १ सुगधित तेल, इत्र आदि का व्यापार करनेवाला, गधी। २ सुगध। खुशबू। ३ एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति। ४. अगिया घास। भूतृण।
वि० सुगधित। खुशबूदार।
†स्त्री०=सौगद (शपथ)।

सौगंधक—पु० [सं०] नीला कमल। नील कमल।

सौगंधिक—वि० [?] सुगधवाला।
पु० [सं०] १ नील कमल। २ लाल कमल। ३ सफेद कमल। ४ गध-तृण। राम-कपूर। ५ रूसा नामक घास। ६ गधक। ७ पुखराज नामक रत्न। ८ सुगधित तेल, इत्र आदि का व्यवसायी। गन्धी। ९ एक प्रकार का कीडा जो श्लेष्मा से उत्पन्न होता है। (चरक) १० एक प्रकार का नपुसक जिसे किसी पुरुष की इद्री अथवा स्त्री की योनि सूंघने से उद्दीपन होता है। नासायोनि। (वैद्यक) ११ दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता इन तीनो का समूह। त्रिसुगधि। १२ एक पौराणिक पर्वत।
वि०=सुगधित।

सौगंधिका—स्त्री० [सं०] अलकापुरी की एक नदी।

सौगंध्य—पु० [सं०] सुगधि का भाव या धर्म। सुगधता। सुगधत्व।

सौगत—पु० [सं०] सुगत (बुद्ध) का अनुयायी। बौद्ध।
वि० सुगत-सबधी। सुगत का।

सौगतिक—पु० [सं०] १ बौद्ध धर्म का अनुयायी। २ बौद्ध भिक्षु। ३ नास्तिक। ४ नास्तिकता।

सौगम्य—पु० [सं०] सुगम होने की अवस्था, गुण या भाव। सुगमता। आसानी।

सौगरिया—पु० [?] क्षत्रियो की एक जाति या वश।

सौगात—स्त्री० [तु०] किसी प्रदेश विशेष की कोई नई चीज जो उपहार के रूप मे किसी को भेजी या दी जाती है। तोहफा।

सौगाती—वि० [हिं० सौगात] १ जो सौगात के रूप मे हो या जो सौगात के रूप मे दिया गया हो। जैसे—सौगाती सेब। २ जो सौगात के रूप मे दिये जाने के योग्य हो, अर्थात् बहुत बढिया।

सौंघा†—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। अल्प मूल्य का। कम दाम का। 'महँगा' का विपर्याय।

सौच†—पु०=शौच।

सौचिक—पु० [सं०] सूची कर्म या सिलाई द्वारा जीविका निर्वाह करने वाला, अर्थात् दरजी। सूचिक।

सौचिक्य—पु० [सं०] सूचिक का कार्य। दरजी का काम। कपडे आदि सीने का काम। सिलाई।

सौचित्ति—पु० [सं०] वह जो सुचित्त के अपत्य हो।

सौज—वि० [सं० सौजस्] शक्तिशाली। बलवान्। ताकतवर।
†स्त्री० [फा० साज] साज-सामान। उपकरण। सामग्री।

सौजना†—अ०=सजना (शोभित होना)।

सौजन्य—पु० [सं०] सुजन होने की अवस्था, गुण या भाव। सुजनता। भलमनसत।

सौजन्यता—स्त्री०=सौजन्य। (असिद्ध रूप)

सौजा†—पु०=सावज (शिकार का जानवर)।

सौजात—पु० [सं०] सुजात के वश मे उत्पन्न व्यक्ति।
वि० सुजात सबधी। सुजात का।

सौड़†—पु०=सौड़ (चादर)।

सौत—स्त्री० [स० सपत्नी] किसी स्त्री की दृष्टि से उसके पति या प्रेमी की दूसरी पत्नी या प्रेमिका। सपत्नी।
पद—सौतिया डाह। (दे०)
वि० [स०] १. सूत से सबंध रखनेवाला। सूत का। २. सूत से बना हुआ। सूती।

सौतन†—स्त्री०=सौत।

सौतापा—पु० [हिं० सौत+आपा (प्रत्य०)] १. सौत होने की अवस्था या भाव। सौतपन। २. सौतों मे होनेवाली पारस्परिक ईर्ष्या या डाह। सौतिया डाह।

सौति—पु० [स०] सूत के अपत्य, कर्ण।
†स्त्री० =सौत (सपत्नी)।

सौतिन†—स्त्री०=सौत।

सौतिया—वि० [हिं० सौत+इया (प्रत्य०)] सौत सम्बन्धी। सौत का।
पद—सौतिया डाह।

सौतियाडाह—स्त्री० [हिं०] सौतो मे होनेवाली पारस्परिक ईर्ष्या या डाह।

सौतुक (तुख)†—पु० =सौतुख।

सौतेला—वि० [हिं० सौत+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० सौतेली भाव० सौतेलापन] १ सौत से उत्पन्न। सौत का। जैसे—सौतेला लडका। २ जो सौत के सबंध के विचार से नाते या रिश्ते में किसी स्थान पर पडता हो। जैसे—सौतेला भाई; अर्थात् माँ की सौत का लड़का। सौतेली माँ अर्थात् किसी की माँ की सौत।

सौत्य—पु० [स०] सूत या सारथि का काम।
वि० १ सूत या सारथी से सबंध रखनेवाला। २. सुत्य अर्थात् सोम के अभिषेक से सबंध रखनेवाला।

सौत्र—वि० [स०] १. सूत-संबंधी। सूत का। २. सूत्र-सबंधी। सूत्रो का या सूत्रो के रूप मे लिखा हुआ।
पु० ब्राह्मण।

सौत्रांतिक—पु० [स०] बौद्धो का एक भेद।

सौत्रामण—वि० [स०] [स्त्री० सौत्रामणी] इन्द्र-संबंधी। इन्द्र का।
पु० एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सौत्रामणिक—वि० [स०] सौत्रामणी से सबंध रखनेवाला।

सौत्रामणी—स्त्री० [स०] इन्द्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।
पु० पूर्व।

सौत्रिक—वि० [स०] १. सूत्रो से सबंध रखनेवाला। २. सूत से बना या बुना हुआ। सूती।
पु० १ वह जो कते हुए सूत बेचने का व्यापार करता हो। २. जुलाहा। ३. सूतो से बुना हुआ कपड़ा या और कोई चीज।

सौदंति—वि० [स०] सुदत सम्बन्धी।
पुं० सुदत के अपत्य या वशज।

सौदंतेय—पुं० [स०] = सौदंति।

सौदक्ष—वि० [स०] १. सुदक्ष-सबंधी। सुदक्ष का। २. सुदक्ष से उत्पन्न।

सौदक्षेय—पु० [स०] सुदक्ष के अपत्य या वशज।

सौदत्त—वि० [स०] १ सुदत्त-सबंधी। सुदत्त का। २. सुदत्त से उत्पन्न।

सौदर्य—वि० [सं०] १. जो एक ही उदर से उत्पन्न हुए हो। सहोदर। २. सहोदरों का। ३. सहोदरों-जैसा।
पु० भाई-चारा। भ्रातृत्व।

सौदा—पु० [अ०] १. खरीदने और बेचने की चीज। क्रय-विक्रय की वस्तु। माल।
यौ०—सौदा-सुल्फ (सुलुफ)=खरीदने की चीजें या वस्तुएँ। कई तरह की चीजें। सौदा सूत=सौदा-सुलुफ।
२ खरीदने-बेचने या लेन-देन की बात-चीत या व्यवहार। ३. ऐसा व्यवहार जिसमे किसी का कोई काम या हित करके उसके बदले में उससे अपना कोई काम या हित कराया जाता हो।
मुहा०—सौदा करना या पटाना=बात-चीत करके लेन-देन, आदान-प्रदान आदि का कोई व्यापार या व्यवहार पक्का या स्थिर करना।
४. खरीदने या बेचने की बात-चीत पक्की करना। (बार्गेन, उक्त सभी अर्थों मे) जैसे—उन्होंने पचास गाँठ का सौदा किया।
पद—सौदागर। (देखें)
५. काट-छाँट कर साफ किये हुए वे पान जो ढोली में सड गये हो। (तबोली)। ६ यूनानी चिकित्सा-पद्धति मे माने हुए शरीर के चार दूषित तत्वो मे से एक जिसका रग काला कहा गया है। ७ उन्माद या पागलपन नामक रोग जो उक्त दूषित तत्त्व के प्रकोप से उत्पन्न माना गया है।

सौदाई—पुं० [अ० सौदा+ई (प्रत्य०)] जिसे सौदा या पागलपन हुआ हो। पागल। बावला।
मुहा०—(किसी का) सौदाई होना=(किसी के प्रेम मे) पागल-सा हो जाना।

सौदाकारी—स्त्री० [अ०+फा०] १ सौदा खरीदने या बेचने अथवा उसके निश्चय करने के सबंध में होनेवाली बातचीत। (बार्गेनिंग)
२. दे० 'सौदेबाजी'।

सौदागर—पु० [फा०] [भाव० सौदागरी] रोजगारी। चीजें खरीदने और बेचने का व्यापार करनेवाला। व्यापारी।

सौदागर-बच्चा—पु० [फा० सौदागर+हिं० बच्चा] ऐसा पुत्र या वशज जो स्वय भी सौदागरी करता हो। पुश्तैनी सौदागर।

सौदागरी—स्त्री० [फा०] सौदागर का काम, पद या भाव। व्यापार। व्यवसाय। रोजगार।

सौदामनी—स्त्री० [स०] १. बिजली। विद्युत्। २ विशेषत माला के आकार की विद्युत् या बिजली। ३. सगीत मे एक प्रकार की रागिनी जो मेघ राग की सहचरी कही गई है।

सौदामनीय—वि० [स०] १ सौदामनी या विद्युत् से सबंध रखनेवाला।
२ सौदामनी या विद्युत्-सा।

सौदामिनी†—स्त्री०=सौदामनी।

सौदामिनीय—वि० [प०]=सौदामनी संबंधी।

सौदामेय—पु० [स०] सुदामा के अपत्य या वशज।

सौदाम्नी†—स्त्री०=सौदामनी।

सौदायिक—पु० [सं० सुदाय+ठक्—इक] १. विवाह के समय वधू को उसके माता-पिता तथा सबंधियो के द्वारा मिलनेवाला धन। २. इस अवसर पर वधू को दिया जानेवाला उपहार।

सौदेबाजी—स्त्री० [अ० सौदा+फा० बाज़ी (प्रत्य०)] (खूब समझ-बूझकर या अड़कर अथवा अपने लाभ का पूरा ध्यान रखकर किसी ठहराव, लेनदेन या व्यवहार के संबंध मे की जानेवाली वात-चीत। (बारगेनिंग)

सौदेव—पु० [स०] सुदेव के पुत्र, दिवोदास।

सौद्युम्नि—पु० [स०] सुद्युम्न के वशज।

सौध—वि० [स०] १. सुधा से बना हुआ। २ सफेदी या पलस्तर किया हुआ।

पु० १ वह ऊँचा और वडा पक्का मकान जिस पर चूना पुता हुआ हो। २. प्रासाद। महल। ३ प्राचीन भारत मे धवलगृह का वह ऊपरी भाग (वासभवन से भिन्न) जो केवल रानियो के उठने-बैठने के लिए रक्षित रहता था। ४ चाँदी। रजत। ५. दूधिया पत्थर। दुग्धपाषाण।

सौधकार—पु०[सं०] सौध अर्थात् प्रासाद या भवन बनानेवाला कारीगर। राज। मेमार।

सौधना†—स०=सोधना।

सौधन्य—वि० [स०] १ सुधन-सवधी। २. सुधन से उत्पन्न।

सौधन्वा (न्वन्)—पु० [सं०] १ सुधन्वा के पुत्र, ऋभु। २ एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति।

सौधर्म—पु० [स०] १ 'सुधर्म' का गुण या भाव। २ सुधर्म का पालन। ३ सुजनता। साधुता। ४ जैनो के अनुसार देवताओ का निवास-स्थान। कल्प-भवन।

सौधर्मज—पु० [स०] सौधर्म मे उत्पन्न एक प्रकार के देवता। (जैन)।

वि० सौधर्म मे उत्पन्न।

सौधर्म्य—पु० [स०] १. सुधर्म का गुण या भाव। २ भलमनसत। सज्जनता। ३. ईमानदारी।

सौधाकर—वि० [स०] सुधाकर या चन्द्रमा-सवधी। चान्द्र।

सौधात—पु० [स०] ब्राह्मण और भृज्जकंठी से उत्पन्न सतान।

सौधातिक—पु० [स०] सुधाता के वशज।

सौधार—पु० [स०] नाट्य-शास्त्र के अनुसार नाटक के चौदह भागो मे से एक।

सौधावति—पु० [स०] सुधावति के अपत्य।

सौधृतेय—पु० [स०] सुधृति के वशज।

सौनद—पु० [स०] बलराम के मूसल का नाम।

सौनंदी (दिन्)—पु० [स०] सौनदधारी बलराम।

सौन—वि० [स०] १ सून या सूना से सबंध रखनेवाला। २ पशु-पक्षियो के वध या हत्या से सबंध रखनेवाला।

पु० १ कसाई। बूचड। २. बिल्ली के लिए रखा हुआ ताजा मास।

†अव्य० [स० सम्मुख] प्रत्यक्ष। सामने।

सौनक—पु०=शौनक (ऋषि)।

सौनन†—स्त्री०=सौंदन।

सौनना—स०=सौंदना।

सौनहोत्र—पु०=शौनहोत्र।

सौना†—पु०=सोना।

†पु०=सौंदन।

सौनाग—पु० [स०] वैयाकरणो की एक शाखा, जिसका उल्लेख पतजलि के महाभाष्य मे है।

सौनामि—पु० [सं०] वह जो सुनाम के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

सौनिक—पु० [सं०] १. मास बेचनेवाला। कसाई। वैतंसिक। मासिक। २ बहेलिया। व्याध।

सौनीतेय—पु० [स०] सुनीति के पुत्र, ध्रुव।

सौपर्ण—पु० [स०] १. पन्ना। मरकत। २. सोंठ। ३. ऋग्वेद का एक सूक्त। ४ गरुड के अस्त्र का नाम। ५ गरुड पुराण का एक नाम।

वि० सुपर्ण सवधी। सुपर्ण का।

सौपर्णेय—पु० [स०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड।

सौपर्ण्य—पु० [स०] सुपर्ण पक्षी (बाज या चील) का स्वभाव या धर्म।

वि० सौपर्ण।

सौपर्व—वि० [स०] सुपर्व-संबधी। सुपर्व का।

सौपाक—पु० [स०] एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति।

सौपिक—वि० [स०] १ सूप या व्यजन से सबध रखनेवाला। २ जिसमे सूप या शोरवा मिला या लगा हो। शोरबेदार।

सौपिष्ट—पु० [स०] वह जो सुपिष्ट के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

सौपुष्पि—पु० [स०] वह जो सुपुष्प के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुपुष्प का गोत्रज।

सौप्तिक—वि० [स० सुप्त+ठक्—इक] सुप्ति या नीद-सवंधी।

पु० १ रात के समय किया जानेवाला आक्रमण। २ सोते हुए व्यक्ति पर किया जानेवाला आक्रमण।

सौप्रजास्त्व—पु० [स०] अच्छी सतानो का होना। अच्छी औलाद होना।

सौप्रतीक—वि० [सं०] १ सुप्रतीक दिग्गज सवधी। २ हाथी से सबध रखनेवाला। हाथी का।

सौबल—पु० [स०] गाधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि।

वि० सुबल सवधी। सुबल का।

सौबलक—पुं० [स०] =सौबल (शकुनि)।

सौबली—स्त्री० [स०] सुबल की पुत्री, गाधारी (धृतराष्ट्र की पत्नी)।

सौबलेय—पु० [स०]=सौबल (शकुनि)।

सौबिगा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की बुलबुल जो ऋतु के अनुसार रग बदलती है।

सौबीर†—पुं०=सौवीर।

सौभ—पु०[स०] १ राजा हरिश्चन्द्र की उस कल्पित नगरी का नाम जो आकाश मे मानी गई है। कामचारिपुर। (महाभारत) २ प्राचीन भारत में, शाल्वो का एक नगर या जनपद।

सौभकि—पु०[स०] द्रुपद का एक नाम।

सौभग—पु०[स०] १ सुभग होने की अवस्था, धर्म या भाव। सौभाग्य। खुशकिस्मती। २ सुख। ३ धन-सपत्ति। ४. सुन्दरता।

वि० सुभग सम्बन्धी। सुभग का।

सौभद्र—वि०[सं०] सुभद्रा-सवधी।

पु० १ सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु। २ वह युद्ध जो सुभद्राहरण के समय हुआ था। ३ एक प्राचीन तीर्थ।

सौभद्रेय—पु०[सं०]१. सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २. बहेडा।

सौभर—पु०[सं०] एक वैदिक ऋषि।

सौभरायण—पु०[स०] वह जो सौभर के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सौभर का गोत्रज।

सौभरि—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि, जो वडे तपस्वी थे। (भागवत)

सौभागिनी—स्त्री०[स० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सुहागिन।

सौभागिनेय—पु०[स०] प्रिय पत्नी का पुत्र।

सौभाग्य—पु०[स०]१. अच्छा भाग्य। उत्तम प्रारब्ध। अच्छी किस्मत। २. यथेष्ट सुख। ३ कल्याण। मगल। ४. स्त्रियों के पक्ष मे वह अवस्था, जिसमे उनका पति जीवित और वर्तमान रहता है। अहिवात। सुहाग। ५. सिन्दूर जो सौभाग्यवती स्त्रियो का मुख्य चिह्न है। ६ अनुराग। प्रेम। ७. धन-सपत्ति। ८. सुंदरता। ९. शुभ-कामना। मगल-कामना। १० सफलता। ११ एक प्रकार का व्रत जो सब तरह से सुखी रहने के लिए किया जाता है। १२ ज्योतिष में, विष्कभ आदि सताइस योगो मे से चौथा योग जो बहुत शुभ माना जाता है। १३. एक प्रकार का पौधा। १४. सुहागा।

सौभाग्य तृतीया—स्त्री०[सं०] भाद्र शुक्ल पक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिए बहुत पवित्र मानी गई है। हरितालिका तीज।

सौभाग्यवती—स्त्री०[स०] १. (स्त्री) जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो। जिसका पति जीवित और वर्तमान हो। सधवा। सुहागिन। २ अच्छे भाग्यवाली।

सौभाग्यवान् (वत्)—वि०[सं०] [स्त्री० सौभाग्यवती]१ जिसका भाग्य अच्छा हो। अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। खुशनसीब। २. सब प्रकार से सुखी और सम्पन्न।

सौभाग्य-व्रत—पु०[स०] फागुन शुक्ल तृतीया को किया जानेवाला एक व्रत।

सौभासिक—वि०[सं०] चमकीला। प्रकाशमान्।

सौभिक—पु०[स०] जादूगर। इन्द्रजालिक।

सौभिक्ष—वि०[स०] सुभिक्ष या सुसमय लानेवाला।
पु० घोडो को होनेवाला एक प्रकार का शूल रोग।

सौभिक्ष्य—पु०[स०]=सुभिक्ष।

सौभूत—पु०[स०] एक प्राचीन स्थान जो सभवत. केकय देश मे था।

सौभेय—पु०[स०] सौभ जनपद या नगर का निवासी।

सौभेषज—वि०[स०] जिसमें सुभेषज या उत्तम ओषधियाँ हों। उत्तम औषधियो से युक्त।

सौभ्रात्र—पु०[स०] अच्छा भाई-चारा। सुभ्रातृत्व।

सौमंगल्य—पु० [स०] १. सुमगल। कल्याण। २. मागलिक द्रव्य या सामग्री।

सौमंत्रिण—पु०[सं०] वह जिसके अच्छा मंत्री हो।

सौम—वि०[सं०] १. सोमलता-सबधी। २. सोम अर्थात् चन्द्रमा सम्बन्धी।
†वि०=सौम्य।

सौमन—पु०[सं०]१. एक प्रकार का अस्त्र (रामायण)। २ सुमन। फूल।

सौमनस—वि०[सं०]१. सुमन या फूल सबंधी। २. फूलो का बना हुआ। ३ फूल के जैसा सुन्दर और कोमल।
पु०१. आनन्द। प्रसन्नता। २. अनुग्रह। कृपा। ३. पश्चिम दिशा के दिग्गज। ४. कर्म मास या सावन की आठवी तिथि। ५ अस्त्रो को निष्फल करने का एक सहारक अस्त्र। ६. जायफल।

सौमनस्य—वि० [स०] आनन्द देनेवाला। प्रसन्न करनेवाला।
पु०१. प्रसन्नचित्तता। प्रसन्नता। आनद। २ आपस मे होनेवाला सद्भाव। ३. किसी विषय की सुबोधता। ४. श्राद्ध मे पुरोहित या ब्राह्मण के हाथ मे फूल देना। (भागवत)

सौमायन—पु०[स०] (सोम अर्थात् चन्द्रमा के पुत्र) बुध।

सौमिक—वि०[स०]१. सोमरस से किया जानेवाला (यज्ञ)। २. सोम यज्ञ सबधी। ३. चन्द्रमा सबधी। (ल्यूनर) जैसे—सौमिक ग्रहण।
पु०१. चान्द्रायण व्रत करनेवाला। २ सोम रखने का पात्र।

सौमिकी—स्त्री०[स०] १. यज्ञ के समय सोम का रस निचोडने की क्रिया। २. एक प्रकार का यज्ञ जिसे दीक्षणीयेष्टि भी कहते हैं।

सौमित्तिका—स्त्री०[स०]१. पालकी, रथ आदि के ऊपर उन्हें ढकने के लिए डाला जानेवाला कपडा। ओहार। २ घोडे, हाथी आदि की पीठ पर डाला जानेवाला कपडा। झूल।

सौमित्र—वि० [सं०] सुमित्रा-सम्बन्धी। सुमित्रा का।
पु०१ सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २. दोस्ती। मित्रता।

सौमित्रा—स्त्री०=सुमित्रा।

सौमित्रि—पु०[स०] [वि० सौमित्रीय] सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण।

सौमित्रीय—वि० [सं०] लक्ष्मण सबधी।

सौमिलिक—पुं०[स०] बौद्ध भिक्षुओ का एक प्रकार का दड जिसमें रेशम का गुच्छा लगा रहता है।

सौमी—स्त्री०=सौम्यी (चांदनी)।

सौमुख्य—पुं०[सं०] १. सुमुखता। चित्त की प्रसन्न अवस्था। २. प्रसन्नता।

सौमेंद्र—वि०[स०] सोम और इन्द्र का। सोम और इन्द्र-सम्बन्धी।

सौमेधिक—वि०[स०]१. सुमेधा से युक्त। २. दिव्य ज्ञान-सम्पन्न। जिसे दिव्य ज्ञान हो।
पुं० सिद्ध पुरुष।

सौमेरु—वि०[स०] सुमेरु सबधी। सुमेरु का।

सौमेरुक—वि०, पु० [स०] सोना। सुवर्ण।
वि० =सौमेरु।

सौम्य—वि०[सं० सोम+ष्यञ्] [स्त्री० सौम्या]१ सोम सबंधी। २ चन्द्रमा सबधी। ३ सोमलता संबधी। ४ सोम नामक देवता से सबध रखनेवाला। ५ शीतल और स्निग्ध। ६ कोमल ठंडा और रसीला। ७ कोमल, नम्र तथा शात प्रकृतिवाला। ८ उत्तर दिशा का। ९ मागलिक। शुभ। १०. प्रसन्न। ११ मनोहर। सुन्दर। १२ उज्ज्वल। चमकीला। प्रकाशमान्।
पु० १. सोमयज्ञ। २ चन्द्रमा के पुत्र, बुध। ३ ब्राह्मण। ४ ब्राह्मणो के पितरो का एक वर्ग। ५. एक प्रकार का कृच्छ्र व्रत। ६ पुराणानुसार एक द्वीप। ७. एक प्रकार का दिव्यास्त्र। ८ साठ सवत्सरो मे से एक। ९ मृगशिरा नक्षत्र। १० मार्गशीर्ष मास। अगहन। ११ फलित ज्योतिष मे वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियाँ जो सौम्य प्रकृतिवाली मानी गई है। १२. पुराणानुसार सातवें युग

की संज्ञा। १३. आयुर्वेद में लाल होने से पहले की रक्त की अवस्था या रूप। १४. आधुनिक विज्ञान मे, रक्त का वह अंश या तत्त्व जिसके फलस्वरूप जीव-जंतु कुछ विशिष्ट रोगों से रक्षित रहते हैं। लस। (सीरम) दे० 'सौम्य-विज्ञान'। १५. पित्त। १६ बायाँ हाथ। १७ बाई आँख। १८ हथेली का मध्य भाग। १९. सज्जनता और सुशीलता। २० गूलर।

सौम्य-कृच्छ्र—पु०[सं०] एक प्रकार का व्रत जिसमे पाँच दिन क्रम से खली (पिण्याक) भात, मट्ठे, जल और सत्तू पर रहकर छठे दिन उपवास करना पड़ता है।

सौम्यगंधा—स्त्री०[स०] सेवती।

सौम्य-गोल—पु०[स०] उत्तरी गोलार्द्ध।

सौम्य-ग्रह—पु०[स० मध्य० स०] चंद्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र ग्रहो मे से हर एक।

विशेष—फलित ज्योतिष मे इनकी गिनती शुभ ग्रहो मे होती है।

सौम्य-ज्वर—पु०[स०] एक प्रकार का ज्वर जिसमे कभी शरीर गरम हो जाता है और कभी ठंढा। (वैद्यक)

सौम्यता—स्त्री०[स०]१, सौम्य होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सुशीलता। ३ सुन्दरता। ४. शीतलता।

सौम्यत्व—पु०=सौम्यता।

सौम्य-दर्शन—वि० [स०] जो देखने मे सुन्दर हो। प्रिय-दर्शन।

सौम्यवार—पु०[स०] बुधवार।

सौम्य-विज्ञान—पु० [स०] वह विज्ञान जिसमे औषध के काम के लिए जीवो के रक्त से सौम्य बनाने का विवेचन होता है।

विशेष—अनेक जीव-जन्तुओ के रक्त मे कुछ ऐसे तत्त्व होते है, जो उन्हे कुछ विशिष्ट रोगो से रक्षित रखते है। जैसे—बकरी के रक्त मे क्षय रोग से और कबूतर के रक्त मे पक्षाघात आदि से रक्षित रखनेवाले कुछ विशिष्ट तत्त्व होते हैं जो 'सौम्य' कहलाते हैं। सौम्यविज्ञान इसी प्रकार के तत्त्वो की परीक्षा करके और उसके रूप मे उन्हे निकालकर क्षीण प्राणियो के शरीर मे इसलिए प्रविष्ट करते हैं कि वे उन रोगो से रक्षित रहे।

सौम्य-शिखा—स्त्री० [स०] छन्द-शास्त्र मे मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदो मे से एक जिसके पूर्व दल मे १६ गुरु वर्ण और उत्तर दल मे ३२ लघु वर्ण होते हैं।

सौम्या—स्त्री०[स०]१ दुर्गा का एक नाम। २ मृगशिरा नक्षत्र। ३. मोती। ४ आर्या छन्द का एक भेद। ५. ब्राह्मी। ६ बडी इन्द्रायन। ७ रुद्रजटा। ८. बडी मालकगनी। ९. पाताल गारुडी। १० घुंघुची। ११. कचूर। १२. मोतिया। १३. शालिपर्णी। सरिवन।

सौम्यी—स्त्री०[स०] चाँदनी। चन्द्रिका।

सौर—वि०[स० सूर या√सृ (गत्यादि)+अण्] १ सूर्य सबधी। सूर्य का। २. सूर्य से उत्पन्न। ३ जिसकी गणना सूर्य के परिभ्रमण के आधार पर होती हो। जैसे—सौर मास, सौर-वर्ष। ४. सूर्य के प्रभाव से होनेवाला। (सोलर) ५. सुर या देवता से सबध रखनेवाला। ६ सुरा या मद्य से सबध रखनेवाला। जैसे—सौर ऋण अर्थात् वह ऋण जो सुरा या मद्य पीने के लिए दिया जाता था।

पु०१. सूर्य का उपासक या भक्त। २. शनि ग्रह जो सूर्य का पुत्र माना गया है। ३. पुराणानुसार बीसवें कल्प का नाम। ४. तुंबरु। ५. धनियाँ। ६. दाहिनी आँख। ७. यम।

स्त्री०[सं० शाट, हिं० सौंड] चादर। ओढना। उदा०—कुस साँथरि भई सौर सुपेता।—जायसी।

‡स्त्री०=सौरी (मछली)।

पु०[अ०]१. बैल या साँड़। २. वृष राशि।

सौरज—पु०[स०]१. तुंबुरू। तुंबरू। २. धनियाँ।

पु०=शौर्य (शूरता)।

सौर-जगत्—पु० [स०] हमारे सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले नौ ग्रहो, अट्ठाइस उपग्रहो आदि का वर्ग या समूह जो आकाशचारी पिंडो मे स्वतन्त्र ईकाई के रूप मे है। (सोलर सिस्टम)

सौरण—वि०[स०] सूरन-सबधी।

सौरत—वि०[सुरत+अण्]१. सुरति से संबंध रखनेवाला। २. सुरति के परिणामस्वरूप होनेवाला।

पु०१. रति-क्रीडा। सुरति। २. रति-सुख।

सौरत्य—पु०[स०] सुरति। रति-क्रीड़ा।

सौरथ—पु०[स०]१. नायक। २. योद्धा।

सौर-दिन—पु०[स०] एक सूर्योदय के आरम्भ से दूसरे सूर्योदय के पूर्व तक का समय, जो पूरे एक दिन के रूप मे माना जाता है। इसी को सावन दिन भी कहते है।

सौरध्री—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का तबूरा या सितार।

सौरपत—पु०[स०] सूर्योपासक। सूर्य-पूजक।

सौर-परिकर, सौर-परिवार—पु० दे० 'सौर जगत'।

सौरभ—वि०[स०] १. सुरभि-सबंधी। सुगधित। २. सुरभि (गाय) सबधी अथवा उससे उत्पन्न।

पु०१. सुरभि का भाव या धर्म। सुगध। खुशबू। महक। २. केसर। ३. तुंबरू। ४. धनियाँ। ५. बोल नामक गन्ध-द्रव्य। ६. आम।

सौरभक—पु०[स०]एक प्रकार का वर्ण-वृत्त, जिसके पहले चरण मे, सगण, जगण, सगण और लघु; दूसरे मे नगण, सगण, जगण और गुरु, तीसरे मे रगण, नगण, भगण और गुरु तथा चौथे मे सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु होता है।

सौरभित—भू० कृ०[स० सौरभ] सौरभ से युक्त। सुगधित।

सौरभी—स्त्री० [स०] १. सुरभि नाम की गाय की पुत्री। २. गाय। गौ।

सौरभीला*—वि० [स० सौरभ+ईला (प्रत्य०)] १. सौरभ या सुगंधि से युक्त। २ सब प्रकार से सुन्दर और सुखद। उदा०—उनका पूरा सदन उसने सौरभीला बनाया।—हरिऔध।

सौरभेय—वि०[स०] सुरभि-सबंधी। सुरभि का।

पु० सुरभि का पुत्र अर्थात् वृष या साँड़।

सौरभेयक—पु०[स०] साँड़। वृष।

सौरभेयी—स्त्री०[स०] गाय। गौ।

सौरभ्य—पु० [सं०] १. सुरभि का गुण या भाव। सुरभिता। २. सुगध। खुशबू। ३. सुन्दरता। ४. कीर्ति। यश। ५. कुबेर का एक नाम।

सौर-मंडल—पु०=सौर-जगत्।

सौर मास—पु० [स०] एक सूर्य-सक्रान्ति से दूसरी सूर्य-सक्रान्ति तक का सारा समय जो लगभग ३० या ३१ दिनो का होता है।
विशेष—सौर गणना के अनुसार कार्तिक, माघ, फागुन और चैत ३०-३० दिनों के, मार्ग-शीर्ष और पौष २९-२९ दिनो के, आषाढ ३२ दिनो का और शेष सब मास ३१-३१ दिनो के होते हैं।

सौर-वर्ष—पु०[स०] उतना काल जितना सूर्य को मेष, वृष आदि बारह राशियो मे भ्रमण करने मे लगता है। एक मेष सक्रान्ति से दूसरी मेष सक्रान्ति तक का समय। (सोलर इयर)

सौरस—पु०[स०] १ सुरसा का अपत्य या पुत्र। २ जूँ नाम का कीडा। ३. तरकारी आदि का नमकीन रस या शोरबा।
वि० सुरसा-सबधी। सुरसा का।

सौर-सावन मास—पु० दे०'सावन मास' के अन्तर्गत।

सौरसेन†—पु०=शूरसेन।
†पु०[सं० शौरसेन] आधुनिक व्रज-मडल। शौरसेन।

सौरसेय—पु० [स०] कार्तिकेय या स्कद का एक नाम।

सौरसैंधव—वि० [स०]१ गंगा का। गगा-सबधी। २. गगा से उत्पन्न
पु०१ भीष्म जो गगा से उत्पन्न हुए थे। २. सूर्य का घोडा।

सौरस्य—पु० [सं०] सुरस अर्थात् रसपूर्ण तथा स्वादिष्ट होने की अवस्था या भाव।

सौराज्य—पु० [स०]१ अच्छा राज्य। सुराज्य। २. अच्छा शासन।

सौराटी—स्त्री०[स०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

सौराष्ट्र—पुं०[स०] [वि० सौराष्ट्रिक] १. गुजरात-काठियावाड का प्राचीन नाम। सूरत के आस-पास का प्रदेश। सोरठ देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। ४. सगीत मे सोरठ नाम का राग। ५. काँसा नामक धातु। ६. कुदरू नामक गध-द्रव्य।
वि० सोरठ या सौराष्ट्र देश का।

सौराष्ट्रक—पु०[स०]१. सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश का रहनेवाला। २ एक प्रकार का विष। ३. पच लौह।
वि०=सौराष्ट्रिक।

सौराष्ट्र-मृत्तिका—स्त्री०[स०] गोपीचदन।

सौराष्ट्रिक—वि०[स०]१. सौराष्ट्र सबधी। २. सौराष्ट्र मे होनेवाला।
पु० सौराष्ट्र का निवासी।

सौराष्ट्री—स्त्री०[स०]१ गोपीचदन। २. सौराष्ट्र की भाषा।

सौराष्ट्रेय—वि०[स०] सोरठ प्रदेश का। गुजरात-काठियावाड का।

सौरास्त्र—पु०[स०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

सौरिंध्र—पु०[स०] [स्त्री० सौरिंध्री]१. ईशान कोण मे स्थित एक जनपद। (वृहत्सहिता)२. उक्त जनपद का निवासी।

सौरि—पु०[स०]१. सूर्य के पुत्र, शनि। २. असन या विजैसार नामक वृक्ष। ३ दक्षिण भारत का एक प्राचीन जनपद।
†पु०=शौरि।

सौरिक—पु०[स०] १. शनैश्चर ग्रह। २. स्वर्ग। ३. वह ऋण जो सुरा या शराब पीने के लिए लिया गया हो।
वि०१. सुर अर्थात् देवता-सबधी। २. सुरा-सबधी। ३. स्वर्ग का। स्वर्गीय।

सौरिरत्न—पु० [स०] नीलम नामक मणि।

सौरी—स्त्री० [स० सूति-गृह] वह कोठरी, जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है। सूतिकागार। जच्चाखाना। (लेबर रूम)
मुहा०—सौरी कमाना=नाइन चमारी आदि का सौरी मे जाकर प्रसूता की सेवा-सुश्रूषा करना।
स्त्री०[स०]१ सूर्य की पत्नी। २. गाय।
†स्त्री०=शफरी (मछली।

सौरीय—वि०[स०] सूर्य-सबधी। सूर्य का। सौर।
पु०१ एक प्रकार का वृक्ष जिसमे से विषैला गोंद निकलता है। २. उक्त वृक्ष का विष।

सौरेयक—पु०[स०] सफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी।

सौर्य—वि०[स०] १. सूर्य-सबधी। सूर्य का। २. सूर्य से उत्पन्न होने-वाला।
पु०१. सूर्य का पुत्र, शनिदेव। २ साठ सवत्सरो मे से एक। ३ हिमालय की एक चोटी का नाम।

सौर्य-याम—वि०[स०] सूर्य और यम सबधी। सूर्य और यम का।

सौर्योदयिक—वि०[स०] सूर्योदय-सबंधी।

सौलंकी—पु०=सोलकी (राजवश)।

सौल—पु०[स० शकुल] एक प्रकार की बड़ी मछली जिसका सिर साँप के सिर की तरह का होता है।
†पु०=साहुल।

सौलक्षण्य—पु०[स०] शुभ या अच्छे लक्षणो का होना। सुलक्षणता। सुलक्षणो से युक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। सुलक्षणता।

सौलभ्य—पु० [स०] सुलभता।

सौली†—स्त्री०=सौल (मछली)।

सौल्विक—पु० [स०] धातु के बरतन आदि बनानेवाला अर्थात् ठठेरा।

सौव—पु० [स०] अनुशासन। आदेश।
वि०१ 'स्व' से सम्बन्ध रखनेवाला। २ निज का। अपना। ३ स्वर्गीय।

सौवर—वि०[स०] स्वर-सबधी।

सौवर्चल—वि०[स०] सुवर्चल प्रदेश-सबधी। सुवर्चल का।
पु०१. सोचर (नमक)। २ सज्जी।

सौवर्चला—स्त्री०[स०] रुद्र की पत्नी का नाम।

सौवर्चस—वि०[स०] =सुवर्चस (दीप्तिमान्)।

सौवर्ण—वि०[स०]१. स्वर्ण-सबधी। सोने का। २. सोने का बना हुआ। ३. जो तौल मे एक सौवर्ण या कर्ष भर हो।
पु०१ स्वर्ण। सोना। २. सोना तौलने की एक पुरानी तौल जो एक कर्ष या १६ माशे के बराबर होती थी। ३. सोने की बाली।

सौवर्णिक—वि०[स०] सुवर्ण-सबधी।
पु० सुनार।

सौवर्णिका—स्त्री० [स०] एक प्रकार का विषैला कीडा। (सुश्रुत)

सौवर्ण्य—पु०[स०]१. 'सुवर्ण' होने की अवस्था, गुण या भाव। २ वर्णो का शुद्ध और सुन्दर उच्चारण।

सौवस्तिक—वि०[स०] स्वस्ति कहने अर्थात् मगल-कामना करनेवाला।
पु० कुल-पुरोहित।

सौवाध्यायिक—वि० [सं०] स्वाध्याय-संबंधी।
पु० स्वाध्यायी।
सौवासिनी—स्त्री०=सुवासिनी (सद्र स्त्री)।
सौवास्तव—वि० [सं०] १ सुवास्तु अर्थात् भवन निर्माण की कुशलता से युक्त। अच्छी कारीगरी का (मकान)। २. अच्छे स्थान पर बना हुआ (मकान)।
सौविद—पु० [सं०] अंतःपुर या रनिवास का रक्षक। कंचुकी। सुविद।
सौविदल्ल—पु०=सौविद।
सौवीर—पु० [सं०] १. सिंध नद के आसपास के एक प्राचीन प्रदेश का नाम। २. उक्त प्रदेश का निवासी या राजा। ३. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग। ४. जौ की कांजी और मद्य। ५ बेर का पेड़। ६ जयद्रथ।
सौवीरक—पु० [सं०] १ जयद्रथ का एक नाम। २. सौवीर।
सौवीरांजन—पु० [सं० सौवीर+अंजन] सौवीर प्रदेश में होनेवाला प्रसिद्ध सुरमा।
सौवीरा—स्त्री०=सौवीरी।
सौवीरी—स्त्री० [सं०] १. संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। २ सौवीर की एक राजकुमारी।
सौवीर्य—पु० [सं०] १ 'सुवीर' होने की अवस्था, गुण या भाव। पराक्रम। बहादुरी। २ सौवीर का राजा।
वि० बहुत बड़ा वीर।
सौव्रत्य—पु० [सं०] १ सुव्रत का भाव। २ एक निष्ठा। भक्ति। ३. आज्ञा-पालन।
सौशम्य—पु० [सं०] सुगमता। सुशांति।
सौशल्य—पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)
सौशील्य—पु० [सं०] सुशीलता।
सौश्रय—पु० [सं०] ऐश्वर्य। वैभव।
सौश्रवस—पु० [सं०] १ सुश्रवा के अपत्य, उपगु। २ अच्छी कीर्ति। सुयश।
वि० कीर्तिशाली। यशस्वी।
सौश्रुत—वि० [सं०] १ सुश्रुत-संबंधी। सुश्रुत का। २ सुश्रुत का बनाया या रचा हुआ। ३ सुश्रुत के गोत्र में उत्पन्न।
सौषिर—पु० [सं०] १ दाँतों तथा मसूड़ों का एक रोग। २. वाद्य-यंत्र जो हवा के जोर से या हवा फूँकने पर बजता हो। जैसे—बाँसुरी आदि।
सौषिर्य—पु० [सं०]=सुषिरता (पोलापन)।
सौषुम्न—वि० [सं०] सुषुम्ना नाड़ी से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। (स्पाइनल)
पु० सूर्य की एक विशिष्ट किरण।
सौष्ठव—पु० [सं०] १. सुष्ठ होने की अवस्था, गुण या भाव। सुष्ठुता। २ सुन्दरता। ३ तेजी। ४ नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।
सौसन—पु०=सोसन।
पु० [फा०] १. फारस देश का एक पौधा जिसमें नीली लिए सीठे रंग के फूल लगते हैं। २. उक्त का फूल।
सौसनी—वि० पु०=सोसनी।
वि० [फा० सौसन] १. सौसन-संबंधी। २. सौसन-जैसा। ३. सौसन के रंग का।
सौस्थित्य—पु० [सं०] १. अच्छी स्थिति में होने की अवस्था या भाव। २. फलित ज्योतिष में ग्रहों की अच्छी या शुभ स्थिति।
सौस्नातिक—वि० [सं०] यज्ञ के अन्त में यजमान या [illegible] से यह [illegible] कि स्नान सफल हो गया न ?
सौस्वर्य—पु० [सं०] सुस्वर होने की अवस्था या भाव। सुस्वरता।
सौहँ—स्त्री० [सं० शपथ, प्रा० सवह] शपथ। कसम।
अव्य० समक्ष। सामने।
सौहन—पु० [देश०] पैसे का चौथाई भाग। छदाम। [illegible]। (सुनार)
†पु०=सोहन।
सौहर†—पु० १=शौहर। २=सोहर (गीत)।
सौहरा†—पु० [हिं० ससुर] १. ससुर। श्वशुर। २. ससुराल। (पश्चिम)
सौहाँग†—पु० [देश०] दो मन का बाट या बटखरा। (सुनार)
सौहार्द—पु० [सं०] १. सुहृद का भाव। मित्रता। मैत्री। दोस्ती। २. सुहृद् अर्थात् मित्र का पुत्र।
सौहार्द-व्यंजक—पु० [सं०] मैत्रीभाव को प्रकट करनेवाला।
सौहार्द्य—पु० [सं०] सौहार्द।
सौहित्य—पु० [सं०] १. तृप्ति। संतोष। २. पूर्णता। ३ सुन्दरता।
सौहीं—स्त्री० [फा० सोहन] १. एक प्रकार की रेती। २. एक प्रकार का अस्त्र या हथियार।
अव्य०=सौंह (सामने)।
सौहृद—वि० [सं०] सुहृद् या मित्र-संबंधी।
पु० १ सुहृद्। मित्र। २. एक प्राचीन जनपद।
सौहृद्य—पु० [सं०] सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।
सौहोत्र—पु० [सं०] सुहोत्र के अपत्य अजमीढ़ और पुरुमीढ़ नामक वैदिक ऋषि।
सौह्म—वि० [सं०] सुह्म देश का।
स्कंद—पु० [सं०] [वि० स्कंदित] १. निकलना या बाहर आना। २ विनाश। नाश। ३ कार्तिकेय जो देवों के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४. शरीर। देह। ५ [illegible] जो उसके गाढ़े होकर गाँठ के रूप में जमने पर प्राप्त होता है। [illegible] जैसे—रक्त-स्कंद। ६ पारा। ७. शिव। ८ पंडित। विद्वान। ९. राजा। १० नदी का तट या किनारा। ११ बालकों के नौ बालग्रहों या रोगों में से एक।
स्कंदक—वि० [सं०] उछलने या उछालने वाला।
पु० १ सैनिक। सिपाही। २ एक प्रकार का प्राचीन छंद।
स्कंद-गुप्त—पु० [सं०] गुप्तवंश के एक प्रतापी तथा प्रसिद्ध सम्राट् जिनका राज्यकाल ई० ४५० से ४६७ तक माना जाता है।
स्कंद-जननी—स्त्री० [सं०] (स्कंद या कार्तिकेय की माता) पार्वती।
स्कंदजित्—पु० [सं०] (स्कंद को जीतनेवाले) विष्णु।
स्कंदता—स्त्री० [सं०] स्कंद का धर्म या भाव।
स्कंदत्व—पु० स्कंदता।
स्कंदन—पु० [सं०] [भू० कृ० स्कंदित; वि० स्कंदनीय] १. [illegible]।

निकलना। २. पेट का मल बाहर निकलना। रेचन। ३. सोखना। शोषण। ४ जाग। गम। ५. शरीर के रक्त का जमना।

स्कंद पुराण—पु० [सं०] अठारह पुराणो मे से एक प्रसिद्ध पुराण।

स्कंद-माता—स्त्री० [स० स्कदमातृ] (स्कद की माता) दुर्गा।

स्कन्द-षष्ठी—स्त्री० [स०] १ चैत सुदी छठ जो कार्त्तिकेय के देव सेनापति पद पर अभिषिक्त होने की तिथि मानी जाती है। २. तान्त्रिकों की एक देवी जो स्कद की पत्नी मानी गई है।

स्कंदापस्मार—पु० [स०] एक प्रकार का बालग्रह या रोग।

स्कदापस्मारी (रिन्)—वि० [स०] जो स्कदापस्मार से ग्रस्त हो।

स्कंदित—भू० कृ० [स०] निकला हुआ। गिरा हुआ। झडा हुआ। स्खलित। पतित।

स्कंदी—वि० [स० स्कदिन्] १. वहने या गिरनेवाला। पतनशील। २. उछलने या कूदने वाला।

स्कंदेश्वर—पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ।

स्कंदोपनिषद्—स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

स्कध—पु० [स०] १. मोढा। कधा। २ वृक्ष के तने का वह ऊपरी भाग जिसमे से डालियाँ निकलती है। काड। (स्टेम) ३ कोई ऐसा मूल और वड़ा अग जिसके साथ दूसरे छोटे अग या उपाग लगे हो। (स्टेम) ४ शाखा। डाल। ५ समूह। झुड। ६ वह स्थान जहाँ विक्रय, उपयोग आदि के लिए बहुत-सी चीजें जमा रहती है। भडार। (स्टाक) ७ ग्रथ का वह विभाग जिसमे कोई पूरा विषय हो। ८ शरीर। देह। ९ युद्ध। लड़ाई। १०. हिन्दू दर्शन शास्त्र मे शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध। ११. बौद्ध दर्शन मे रूप, वेदना, विज्ञान, सज्ञा और सस्कार। १२ मार्ग। रास्ता। १४. राज्याभिषेक के समय काम आनेवाली सामग्री। १४. राजा। १५. आचार्य। १६ आपस मे होनेवाला करार या सधि। १७. आर्या छन्द का एक भेद। १८. सफेद चील।

स्कंधक—पु० [स०] आर्या गीत या स्वधा नामक छद का एक नाम।

स्कंध-चाप—पु० [स०] विहगिका। वहँगी।

स्कंधज—पु० [स०] १. सलई। शल्लकी वृक्ष। २ वड़ का पेड। वट-वृक्ष।

स्कंध-देश—पु० [स०] १. कधा। २. हाथी के शरीर का वह भाग जिस पर महावत वैठता है। ३ तना।

स्कंध-पंजी—स्त्री० [स०] वह पजी या वही जिसमे स्कध या भडार मे रखी हुई वस्तुओ का विवरण हो। (स्टाक-बुक)

स्कंध-पथ—पु० [स०] पगडडी।

स्कंध-परिनिर्वाण—पु० [स०] बौद्धो के अनुसार शरीर के पाँचो स्कधो का नाश। मृत्यु।

स्कंध-पाल—पु० [स०] वह अधिकारी जो किसी स्कध या भडार की देख-रेख आदि के लिए नियत हो। (स्टोर-कीपर)

स्कंध-फल—पु० [स०] १. नारियल का पेड़। २ गूलर।

स्कंध-बीज—पु० [स०] ऐसी वनस्पति या वृक्ष जिसके स्कध से ही शाखाएँ निकलकर जमीन तक पहुँचती और वृक्ष का रूप धारण करती हो। जैसे—वड़, पाकर आदि।

स्कंध-मणि—पु० [स०] एक प्रकार का यत्र या तावीज।

स्कंध-मार—पु० [सं०] बौद्धो के चार मारों अर्थात् कामदेवो में से एक।

स्कंधरुह—पु० [स०] वट वृक्ष। वट का पेड़।

स्कंधवाह—पु० [स०] १. वह जो कधो पर माल ढोता हो। २. ऐसा पशु जो कधो के बल बोझ खीचता हो। जैसे—बैल, घोड़ा आदि।

स्कंध-वाहक—वि० [स०] कधे पर बोझ उठानेवाला। जो कधे पर रख-कर बोझ ढोता हो।

पु०=स्कद-वाह।

स्कंधा—स्त्री० [स०] १. पेड की डाल। शाखा। २. लता। बेल।

स्कंधाक्ष—पु० [स०] कार्त्तिकेय के अनुसार देवताओं का एक गण।

स्कंधावार—पु० [स०] १. प्राचीन भारत मे, किसी बड़े राजा की वह सारी छावनी या पडाव जिसमे घोड़े, हाथी, सेना, सामत और छोटे या वाहर से आये हुए राजाओ के शिविर आदि होते थे। २. सेना का पडाव। छावनी। ३. सेना। ४. वह स्थान जहाँ पर यात्री, व्यापारी आदि डेरा डाले पड़े हो।

स्कंधी—वि० [स० स्कधिन्] काड से युक्त। तने से युक्त।

पुं० पेड। वृक्ष।

स्कंधोपनेय—पु० [सं०] राजाओ मे होनेवाली एक प्रकार की सधि जिसमे नियत या निश्चित बातें क्रम-क्रम से और कुछ दिनो मे पूरी होती थी। (कौ०)

स्कंध्य—वि० [स०] स्कध-सबधी। स्कध का।

स्कंभ—पु० [स०] १. खभा। स्तभ। २. परमेश्वर जो सारे विश्व को धारण किये हुए है।

स्कन्न—वि० [स०] १. गिरा हुआ। पतित। च्युत। स्खलित। जैसे—स्कन्न-वीर्य। २ गया या बीता हुआ। गत। ३. सूखा हुआ। शुष्क।

स्कभ्ध—वि० [स०] सहारा देकर ठहराया या रोका हुआ।

स्कांद—वि० [स०] स्कद-सबधी। स्कद का।

पु०=स्कद पुराण।

स्कांधी (धिन्)—पु० [स०] स्कध के शिष्य या उनकी शाखा के अनुयायी।

स्काउट—पु० [अ०] १ चर। भेदिया। २. दे० 'बाल-चर'।

स्कालर—पु० [अ०] १. वह जो स्कूल मे पढता हो। छात्र। विद्यार्थी। २. वहुत वडा अध्ययनशील और विद्वान्।

स्कालरशिप—पु० [अ०] =छात्र-वृत्ति।

स्कीम—स्त्री० [अ०]=योजना।

स्कूल—पु० [अ०] १ वह विद्यालय जहाँ किसी भाषा, विषय या कला आदि की आरम्भिक या सामान्य शिक्षा दी जाती हो। मदरसा। २. किसी ज्ञान या विज्ञान की कोई विशिष्ट शाखा और उसके अनुयायियो का वर्ग। शाखा।

स्कूली—वि० [अ० स्कूल+हिं० ई (प्रत्य०)] १. स्कूल-सबधी। स्कूल मे होनेवाला। जैसे—स्कूली पढाई। २ स्कूल जानेवाला। जैसे—स्कूली लडका।

स्क्रू—पु० [अ०] वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्कर-दार गराड़ियाँ बनी होती है और जो ठोक कर नही, बल्कि घुमाकर जडा जाता है। पेच।

क्रि० प्र०—कसना।—खोलना।—जड़ना।—लगना।

पद—**स्क्रू होल्डर** =पेचकस।

स्खदन—पु० [सं०] [भू० कृ० स्खदित] १. फाडना। चीरना। टुकडे-टुकडे करना। विदारण। २ वध। हत्या। ३. कष्ट देना। उत्पीडन। ४ स्थिरता।

स्खलन—पु० [स०] १. अपने स्थान से नीचे आना या गिरना। पतन। २ मार्ग से च्युत या विचलित होना। विशेष दे० 'विचलन'। ३ काम मे गलती या भूल करना। ४ वचित या विफल होना। ५ वोलने मे हकलाना। ६ रगड। सघर्ष।

स्खलित—भू० कृ० वि० [स०] १ अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। पतित। २. खिसका या फिसला हुआ। ३ चूका हुआ। ४. डगमगाया हुआ। विचलित।

पु० प्राचीन भारत मे धर्मयुद्ध के नियमो को छोडकर युद्ध मे छल-कपट या घात करना।

स्खलीकरण—पु० [स०] १ स्खलित करने की क्रिया या भाव। २ उपेक्षा। लापरवाही।

स्टांप—पु० [अ०] १ ठप्पा। २ कागजो आदि पर की जानेवाली मोहर। ३ कुछ निश्चित मूल्य का कागज का कोई ऐसा टुकडा या कागज जिस पर राजकीय ठप्पा या मोहर छपी हो; और जिसका मूल्य किसी प्रकार के शुल्क के रूप मे चुकाया जाता हो। जैसे—डाक का टिकट, अदालतो मे अभियोग-पत्र उपस्थित करने का सरकारी कागज आदि।

स्टाक—पु० [अ०] १ विक्री करने के लिए सचित करके रखा हुआ माल। २ वह माल जो घर मे हो और अभी विका न हो। जैसे—उसकी दूकान मे स्टाक कम है। ३ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार की वस्तुएँ रहती हो। भडार। ४ वह धन या पूँजी जो व्यापारी लोग या उनका कोई समूह किसी काम मे लगाता हो। ५ साझे के काम मे लगाई हुई पूँजी।

स्टाफ—पु० [अ०] किसी कार्यालय, विभाग या सस्था के कार्यकर्ताओ का वर्ग या समूह। अमला।

स्टाल—पु० [अ०] १ प्रदर्शिनी, मेले आदि मे वह छोटी दूकान जिस पर वेचने के लिए चीजें सजाई रहती है। २ छोटी दूकान।

स्टीम—पु० [अ०] भाप। वाष्प।

मुहा०—**(किसी मे) स्टीम भरना**=आवेश, उत्साह आदि से युक्त करना। जोश दिलाना।

स्टीम इंजिन—पु० [अं०] भाप से चलनेवाला इजन।

स्टीमर—पु० [अ०] नदियो में चलनेवाला एक प्रकार का छोटा जहाज जो भाप से चलता है।

स्टूल—पु० [अ०] एक प्रकार की ऊँची छोटी चौकी।

स्टेज—पु० [अ०] १ रग-मच। २ मच।

स्टेट—पु० [अ०] १ राज्य। २ किसी सघ राज्य की कोई इकाई। राज्य। ३ अँगरेजी। शासन मे भारतीय देशी रियासत।

पु० [अ० एस्टेट] १ वडी जमीदारी। २ किसी की सारी जगम और स्थावर सपत्ति। जैसे—वह दस लाख का स्टेट छोडकर मरे थे।

स्टेशन—पु० [अ०] १ वह स्थान जहाँ रेलगाडियाँ, मोटरें आदि यात्रियो को उतारने, चढाने के लिए ठहरती या रुकती हो। जैसे—रेलवे-स्टेशन, वस-स्टेशन। २ किसी विशेष कार्य के सचालन के लिए नियत स्थान। अवस्थान।

स्टोव—पु० [अ०] एक विशेष प्रकार का आधुनिक चूल्हा जो खजाने मे भरे हुए तेल, गैस आदि से या विजली के द्वारा गरम होकर ताप उत्पन्न करता है।

स्ट्राइक—स्त्री० [अ०] कर्मचारियो आदि की हडताल।

स्तंब—पु० [स०] १ ऐसा पौधा जिसकी जड से कई पौधे निकलें और जिसमे कडी लकडी या डठल न हो। गुल्म। २ घास का पूला। ३ रोहतक या रोहेडा नामक वृक्ष।

स्तंबक—पु० [स०] १. गुच्छा। २. नक-छिकनी।

स्तंबपुर—पु० [स०] ताम्रलिप्तपुर का एक नाम।

स्तंभ—पु० [स०] [स्त्री० अल्पा० स्तभिका] १ खभा। २ वह व्यक्ति, तत्त्व या तथ्य जो किसी सस्था, कार्य, सिद्धात आदि के आधार के रूप मे हो। जैसे—आप उस सस्था के स्तभ है। ३ समाचार पत्रो के पृष्ठो, सारिणियो आदि मे खडे वल का वह विभाग, जिसमे ऊपर से नीचे तक कुछ विशेष वार्ते, अक आदि होते है। ४ समाचार पत्रों मे उक्त प्रकार के विभागो का वह वर्ग जिसमे किसी विशेष विषय का प्रतिपादन या निरूपण होता है। जैसे—सपादकीय स्तभ, स्थानिक स्तभ आदि (कालम, उक्त सभी अर्थों के लिए) ५ पेड का तना। ६. [वि० स्तभित] किसी कारण या घटना (जैसे—हर्ष, लज्जा, भय आदि) से अगो का विलकुल शिथिल हो जाना। ७ साहित्य मे उक्त आधार पर माना जानेवाला एक सात्त्विक अनुभाव जिसमे भय, रोग, लज्जा, विषाद, हर्ष आदि के कारण शरीर सुन्न हो जाता है और उसमे अग-सचालन की शक्ति नही रह जाती। ८ जडता। अचलता। ९ प्रतिवध। रुकावट। १० तत्र मे किसी शक्ति को रोकनेवाला प्रयोग। ११ अभिमान। घमड। १२ रोग आदि के कारण होनेवाली मूर्च्छा।

स्तंभक—वि० [स०] १. स्तभन करने या रोकनेवाला। रोधक। २ कब्जियत करनेवाला। ३. वीर्य को गिराने या स्खलित होने से कुछ समय तक रोक रखनेवाला।

पु० १ खंभा। २ शिव का एक नाम।

स्तंभ-कर—वि० [स०] १. रोकनेवाला। रोधक। २ जडता उत्पन्न करनेवाला। जड वनानेवाला।

स्तंभकी (किन्)—पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का वाजा जिस पर चमडा मढा होता था।

स्त्री० एक देवी का नाम।

स्तंभ-तीर्थ—पुं० [सं०] आधुनिक खभात नगर का प्राचीन नाम।

स्तंभन—पु० [स०] [भू० कृ० स्तभित] १ रोकने की क्रिया या भाव। रुकावट। अवरोध। २ वीर्य आदि को स्खलित होने या मल को पेट से वाहर निकलने से रोकना। ३. वीर्यपात रोकने की दवा। ४ जड़ या निश्चेष्ट करना। जडीकरण। ५ किसी की चेष्टा, क्रिया या शक्ति रोकने वाला तात्रिक प्रयोग। ६ कामदेव के पाँचों वाणों मे से एक। ७ गिरने से रोकने के लिए लगाया जानेवाला सहारा।

स्तंभनी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का इन्द्रजाल या जादू, जिससे लोगो को स्तभित वा जड कर दिया जाता था।

स्तंभनीय—वि० [स०] जिसका स्तभन हो सके या होने को हो।

स्तंभ-लेखक—पु० [स०] वह जो प्राय. भिन्न-भिन्न सामयिक पत्रो के स्तभो के लिए लेख आदि लिखता हो। (कालमिस्ट)

स्तंभ-वृत्ति—स्त्री० [स०] प्राणो को जहाँ का तहाँ रोक देना, जो प्राणायाम का एक अग है।

स्तंभि—पु० [स०] समुद्र। सागर।

स्तंभिका—स्त्री० [स०] १ चौकी या आसन का पाया। २. छोटा खभा। खँभिया।

स्तंभित—भू० कृ० [स०] १ जो जड या अचल कर दिया गया हो या हो गया हो। जडीभूत। निश्चल। २ निस्तब्ध। सुन्न। ३. ठहरा या रुका हुआ।

स्तंभिनी—स्त्री० [स०] योग के अनुसार पाँच धारणाओ मे से एक।

स्तंभी (भिन्)—वि० [स०] १. स्तभ या खभो से युक्त। २. दे० 'स्तभक'।

पु० समुद्र। सागर।

स्तंभोत्कीर्ण—वि० [स०] जो खभो मे खोदकर बनाया गया हो। (आकृति, मूर्ति आदि)

स्तन—पु० [स०] स्त्रियो या मादा पशुओ की छाती जिसमे से दूध निकलता है। जैसे—गौ का स्तन।

क्रि० प्र०—पिलाना।—पीना।

स्तन-कलश—पु० [स० उपमि० स०] कलश की तरह गोल और बडे या मोटे स्तन।

स्तन-कील—पु० [स०] स्त्रियो की छाती में होनेवाला थनैला नाम का फोड़ा।

स्तन-चूचुक—पु० [स०] स्तन या कुच के ऊपर की घुडी। चूची। ढेपनी।

स्तन-दात्री—वि० स्त्री० [स०] (छाती का) दूध पिलानेवाली।

स्तनन—पु० [स०] [भू० कृ० स्तनित] १. ध्वनि। नाद। शब्द। आवाज। २. बादलो की गडगडाहट। ३ कराहने की आवाज। कराह।

स्तनप—वि०, पुं०=स्तनपायी।

स्तन-पतन—पु० [स० ष० त०] स्तन का ढीला पड़ना या लटकना।

स्तन-पान—पु० [स०] स्तन पान करना। स्तन चूसकर दूध पीना।

स्तनपायी (यिन्)—वि० [स०] स्तनपान करनेवाला। स्तन चूसकर दूध पीनेवाला।

पु० १ वह जो स्तन पान करता हो। दूध पीनेवाला बच्चा। २ वे जीव जो माता का दूध पीते या दूध पीकर बडे होते है। ३. उक्त प्रकार के जीवों का वर्ग।

स्तन-बाल—पु० [स०] १ एक प्राचीन जनपद। (विष्णु पुराण) २ उक्त देश का निवासी।

स्तन-भर—पु० [स०] १ स्थूल या पुष्ट स्तन। बडी और भारी छाती। २ ऐसा पुरुष जिसकी छातियाँ स्त्रियो की छातियो की सी बडी या मोटी हो।

स्तन-भव—पु० [स०] एक प्रकार का रति-बध या सभोग का आसन।

स्तन-मध्य—पु० [स०] स्त्री के दोनो स्तनो के बीच का स्थान या गड्ढा।

स्तन-मुख—पुं० [सं०] स्तन या कुच का अगला भाग। चूचुक। चूची।

स्तन-रोग—पु० [स०] गर्भवती और प्रसूता स्त्रियो के स्तनो मे होनेवाला रोग।

स्तन-विद्रधि—पु० [स०] स्तन पर होनेवाला फोडा। थनैली।

स्तन-वृंत—पु० [स०] स्तन या कुच का अग्रभाग। चूचुक। चूची।

स्तन-शिखा—स्त्री० [सं०]=स्तनवृंत।

स्तन-शोष—पु० [स०] स्त्रियो को होनेवाला एक प्रकार का रोग जिससे उनके स्तन सूख जाते हैं।

स्तनांतर—पु० [सं०] १ हृदय। दिल। २. स्त्रियो के स्तनो पर होनेवाला एक प्रकार का चिह्न जो वैधव्य का सूचक माना जाता है। (सामुद्रिक)

स्तनांशुक—पु० [सं०] कपडे की चौड़ी पट्टी जिससे स्त्रियाँ स्तन बाँधती है।

स्तनाग्र—पु० [सं०] स्तन का अगला भाग। चूचुक।

स्तनाभुज—वि०, पु०=स्तनपायी।

स्तनित—पु० [स०] १. मेघ-गर्जन। बादलो की गरज। २. आवाज। ध्वनि। शब्द। ३. ताली बजाने का शब्द। करतल ध्वनि।

भू० कृ० १. ध्वनित। २. गर्जित।

स्तनित-कुमार—पु० [सं०] १. भुवनाधीश नामक जैन देवो का वर्ग। २ उक्त वर्ग का कोई देवता।

स्तनी (निन्)—वि० [स०] स्तनोवाला। स्तन-युक्त।

स्तनोत्तरीय—पु० [स० पु० त०] प्राचीन काल की वह पट्टी जो स्त्रियाँ स्तनो पर बाँधती थी। कुचांशुक। स्तनांशुक।

स्तन्य—वि० [स०] १ स्तन-संबंधी। स्तन का। २ जो स्तन मे हो।

पु० १ माता का दूध। २. दूध।

स्तन्य-त्याग—पु० [स०] माता का दूध पीना छोडना।

स्तन्यदा—वि० [स्त्री०] जिसके स्तनो मे से दूध निकलता हो। दूध देनेवाली।

स्तन्य-दान—पु० [स०] स्तन पिलाना। स्तन का दूध पिलाना।

स्तन्यप—वि० [सं०] [स्त्री० स्तन्यपा] स्तन या दूध पीनेवाला। स्तनपायी।

पु० दूध पीता बच्चा। शिशु।

स्तन्य-पान—पुं० [स०] स्तन-पान।

स्तन्य-पायी (यिन्)—वि०, पु०=स्तनपायी।

स्तन्य-रोग—पु० [स०] माता के दूध के कारण होनेवाला रोग। स्तन-पान करने से होनेवाला रोग।

स्तन्य-स्राव—पु० [सं०] १ वात्सल्य भाव से विह्वल होने पर आप से आप स्तनो से दूध बहने लगना। २. इस प्रकार बहनेवाला दूध।

स्तब्ध—वि० [स०] [भाव० स्तब्धता] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। जडीभूत। निश्चेष्ट। सुन्न। २ अच्छी तरह जकडा या बाँधा हुआ। ३. दृढ। पक्का। मजबूत। ४ धीमा। मन्द। सुस्त। ५ दुराग्रही। हठी। ६ अक्खड और अभिमानी।

पु० वशी के छ दोषों मे से एक जिसमे उसका स्वर कुछ धीमा होता है।

स्तब्धता—स्त्री० [स०] १ स्तब्ध होने की अवस्था या भाव। जडता। २ दृढता। ३. बहरापन।

स्तब्ध-पाद—वि० [स०] [भाव० स्तब्धपादता] जिसके पैर जकड़ गये हो। लँगड़ा। पगु।

स्तब्ध-मति—वि०[सं०] मदबुद्धि। कुंद-जहन।
स्तब्धि—स्त्री०[सं०] स्तब्धता।
स्तर—पु०[सं०] १ एक दूसरी के ऊपर पडी या लगी हुई तह। परत। २. ऊपर का वह सपाट भाग, जो कुछ दूर तक समान रूप से चला गया हो और जो वैसे दूसरे भागों से अलग या स्वतन्त्र हो। तल। (लेवेल) जैसे—देश या समाज का स्तर। ३ भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो भिन्न-भिन्न कालो मे बनी हुई उसकी तहों के आधार पर किया गया है। (स्ट्रेटा) ४ शय्या। सेज।
स्तरण—पु० [सं०]१ फैलाना या बिखेरना। २. वह स्थिति जिसमे कोई वस्तु स्तरो या परतो के रूप मे बनी हुई होती है। ३. भू-विज्ञान मे प्राकृतिक कारणो से पृथ्वी के धरातल, पर्वतो आदि के भिन्न-भिन्न स्तरो का बनना या बनावट। (स्ट्रैटिफिकेशन) ४ दीवारों आदि की अस्तरकारी। ५. बिछौना। बिस्तर।
स्तरणीय—वि०[सं०] १. फैलाये या बिखेरे जाने के योग्य। २ बिछाये जाने के योग्य।
स्तरिमा (मन्)—पु० [सं०] पलग। शय्या।
स्तरी—स्त्री०[सं०]१ धूआँ। धूम्र। २ ऐसी गाय जो दूध न दे रही हो।
स्तर्य—वि०=स्तरणीय।
स्तव—पु० [सं०] १ किसी देवता का छदवद्ध स्वरूप-कथन या गुणगान। स्तुति। स्तोत्र। जैसे—शिव-स्तव, दुर्गास्तव। २ ईश-प्रार्थना।
स्तवक—पु० [सं०]१ फूलो का गुच्छा। २ एक या अनेक तरह के वहुत से फूलो को सजाकर वनाया हुआ रूप, जिसे शोभा के लिए मेजो आदि पर रखते हैं। गुलदस्ता। ३ ढेर। राशि। ४ मोर का पख। ५ पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद। ६ स्तोत्र। स्तव।
वि० स्तव या स्तुति करनेवाला।
स्तविक —भू० कृ० [सं०] फूलो के गुच्छो, गुलदस्तों, फूल-मालाओ आदि से युक्त या सजा हुआ।
स्तवन—पु० [सं०] १ स्तुति करने की क्रिया या भाव। २ स्तुति।
स्तवनीय—वि० [सं०] जिसका स्तव या स्तुति की जा सके या की जाने को हो।
स्तवरक—पु० [सं०]१ कमखाब की तरह का एक पुराना रेशमी कपडा। २ घेरा।
स्तवितव्य—वि० [सं०] स्तवनीय।
स्तविता (तृ)—पु० [सं०] स्तुति करनेवाला। गुण-गान करनेवाला।
स्तव्य—वि० [सं०] =स्तवनीय।
स्तान—पु० [सं० स्थान से फा०] [वि० स्तानी] एक स्थान वाचक शब्द जो कुछ जातियो, पदार्थो आदि के नामो के अन्त मे लगकर उनके रहने या होने के स्थान का अर्थ देता है। जैसे—अफगानिस्तान, हिन्दुस्तान, गुलिस्तान, चमनिस्तान आदि।
स्तावक—वि० [सं०] १ स्तव या स्तुति करनेवाला। गुण-कीर्तन करने-वाला। प्रशसक। उदा०—स्तावक, स्तुत्य, निन्द्य और निंदक जब कि सभी है एक।—पन्त। २ खुशामद करनेवाला।
पु० वन्दीजन। भाट।
स्ताव्य—वि० [सं०] स्तव के योग्य। स्तुत्य।
स्तिमित—वि० [सं०] १. भीगा हुआ। तर। नम। आर्द्र। २. निश्चल। स्थिर। ३ शांत। ४ प्रसन्न। ५ सन्तुष्ट।
पु० १ आर्द्रता। तरी। नमी। २ निश्चलता।
स्तीर्ण—वि० [सं०] १ फैला या बिखेरा हुआ। छितराया हुआ। २. लंबा-चौडा। विस्तृत।
पु० शिव का एक अनुचर।
स्तुत—भू० कृ० [सं०] १. जिसकी स्तुति की गई हो। २ प्रशसित। ३ चूआ या बहा हुआ।
पु० १. शिव। २ स्तुति।
स्तुति—स्त्री० [सं०] १ आदर-भाव से किसी के गुणो का कथन करना। जैसे—देवता की स्तुति करना। २ वह पद या रचना जिसमे किसी देवता आदि का गुण कथन हो। ३ प्रशसा। तारीफ। बडाई। ४. दुर्गा का एक नाम।
पु० शिव का एक नाम।
स्तुति-पाठक—पु० [सं०] वदी जिसका काम प्राचीन काल मे राजाओ की स्तुति या यशोगान करना था। चारण। मागध। सूत।
स्तुतिवाद—पु० [सं०] प्रशसात्मक कथन। यशोगान। गुणगान।
स्तुति-वादक—पु० [सं०] १ स्तुति या प्रशसा करनेवाला। प्रशसक। २ खुशामदी।
स्तुत्य—वि० [सं०] १. स्तुति या प्रशसा का अधिकारी या पात्र। प्रशस-नीय। २ जिसकी स्तुति या प्रशसा होने को हो या होनी चाहिए।
स्तुभ—पुं० [सं०] १. एक प्रकार की अग्नि। २. बकरा।
स्तूप—पु० [सं०] १ मिट्टी, पत्थर आदि का ऊँचा ढूह। २ वह ढूह या टीला जो भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध-महात्मा की अस्थि, दांत, केश आदि स्मृति-चिह्नों को सुरक्षित रखने के लिए उनके ऊपर बनाया गया हो। ३ ऊँचा ढेर। ४. केश-गुच्छ। बालो की लट। ५. इमारत मे लगा हुआ बहुत बडा शहतीर।
स्तृत—भू० कृ० [सं०] १. ढका हुआ। आच्छादित। २. फैला हुआ। विस्तृत।
स्तृति—स्त्री० [सं०] १. ढाँकने की क्रिया। आच्छादन। २ फैलाने की क्रिया।
स्तेन—पु० [सं०] १ चोर। डाकू। तस्कर। २ चोरी। ३ चोर नामक गन्ध-द्रव्य।
स्तेय—पु० [सं०] चोरी।
वि० चुराया हुआ।
स्तेयी (यिन्)—पु० [सं०] १. चोर। २. चूहा। ३. सुनार।
स्तैन—पु० =स्तैन्य।
स्तैन्य—पु० [सं०] १ चुराने या डाका डालने का काम। २ दे० 'स्तेन'।
स्तोक—वि० [सं०] १ थोडा। जरा। २ कुछ। कम। ३ छोटा। ४ नीचा।
पु० १. बूंद। बिंदु। २ चातक। पपीहा।
स्तोतक—पु० [सं०] १ पपीहा। चातक। २. वत्सनाग नामक विष। बछनाग।
स्तोतव्य—वि० [सं०] स्तव या स्तुति का अधिकारी या पात्र। स्तुत्य।

स्तोता(तृ)—वि० [सं०] १. स्तुति करनेवाला। २. उपासना करनेवाला। ३ प्रार्थना करनेवाला।
पु० विष्णु का एक नाम।

स्तोत्र—पु० [सं०] १ स्तव। स्तुति। २ वह रचना, विशेषतः पद्यबद्ध रचना जिसमें किसी देवता आदि की स्तुति की गयी हो। जैसे—दुर्गा-स्तोत्र, शिव-स्तोत्र।

स्तोत्रिय, स्तोत्रीय—वि० [सं०] स्तोत्र-संबंधी। स्तोत्र का।

स्तोभ—पु० [सं०] १ सामवेद का एक अंग। २ अवज्ञा, उपेक्षा या तिरस्कार। ३. स्तमन।

स्तोभित—भू० कृ० [सं०] १. जिसकी स्तुति की गई हो। स्तुत। २ जिसका जय-जयकार किया गया हो।

स्तोम—पु० [सं०] १. स्तुति। २ यज्ञ। ३ वह जो यज्ञ करता हो। ४ ढेर। राशि। ५ मस्तक। ६. धन-सम्पत्ति। ७ अनाज। अन्न। ८ पुरानी चाल की एक प्रकार की ईंट। ९. ऐसा डंडा जिसमें लोहे की नोक लगी हो। लोहांगी। १० दस धन्वन्तर अर्थात् चालीस हाथ की एक माप।
वि० टेढ़ा। वक्र।

स्तोमायन—पु० [सं०] यज्ञ में बलि दिया जानेवाला पशु।

स्तोमीय—वि० [सं०] स्तोम-संबंधी। स्तोम का।

स्तोम्य—वि० [सं०]=स्तुत्य।

स्तौपिक—पु० [सं०] १ किसी महापुरुष के वे अस्थि, चिह्न जिन पर स्तूप बनाया गया हो। (बौद्ध) २ वह मार्जनी जो जैन यति अपने साथ रखते हैं।

स्तौभ—वि० [सं०] स्तोभ-संबंधी। स्तोभ का।

स्तौभिक—वि० [सं०] स्तोभ से युक्त। जिसमें स्तोभ हो।

स्त्यान—वि० [सं०] १ समूहों में इकट्ठा किया हुआ। २ कठोर। ३ घना। ४ चिकना। ५. ध्वनि या शब्द करनेवाला।
पु० १ घनापन। घनता। २ आवाज। शब्द। ३. सत्कर्म के प्रति होनेवाला आलस्य। ४ अमृत।

स्त्येन—पु० [सं०] १ चोर। २ डाकू। ३ अमृत।

स्त्यैन—पु० [सं०] १. चोर। २. डाकू।
वि० कम। थोड़ा।

स्त्रियम्मन्य—वि० [सं०] जो अपने को स्त्री मानता या समझता हो।

स्त्रियोपयोगी—वि० [सं० स्त्री+उपयोगी, शुद्ध और सिद्ध रूप स्त्र्युपयोगी] जो विशेष रूप से स्त्रियों के काम का हो। जैसे—स्त्रियोपयोगी साहित्य।

स्त्रींद्रिय—स्त्री० [सं०] स्त्री की योनि। भग।

स्त्री—स्त्री० [सं०] [भाव० स्त्रीत्व, वि० स्त्रैण] १ मनुष्य जाति की वयस्क मादा। 'पुरुष' का विपर्याय। २ उक्त जाति की कोई विशेष सदस्या। जैसे—पुरुष स्त्री का गुलाम बन जाता है। ३. पत्नी। जोरू। ४ मादा जन्तु। पुरुष या नर का विपर्याय। ४. एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो-दो गुरु वर्ण होते हैं। कामा। ५ दीमक। ६ प्रियंगुलता। ७. व्याकरण में स्त्रीलिंग का संक्षिप्त रूप।
† स्त्री०=इस्त्री।

स्त्री-करण—पु० [सं०] १ स्त्री बनाना। पत्नी बनाना। २. संभोग। मैथुन।

स्त्री गमन—पु० [सं०] स्त्री-संभोग। मैथुन।

स्त्री ग्रह—पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार बुध, चन्द्र और शुक्र ग्रह जो स्त्री जाति के माने गये हैं।

स्त्री-चंचल—वि० [सं०] १ कामुक। कामी। २. लंपट।

स्त्री-चिह्न—पु० [सं०] वे सब बातें या चिह्न जिनसे यह जाना जाता है कि प्राणी स्त्री जाति का है।

स्त्री-चौर—पु० [सं०] लंपट। व्यभिचारी।

स्त्री-जननी—स्त्री० [सं०] केवल लड़कियों को जन्म देनेवाली स्त्री। (मनु)

स्त्री-जित्—वि० [सं०] (ऐसा पुरुष) जो पत्नी की जी-हुजूरी करता हो।

स्त्रीता—स्त्री०=स्त्रीत्व।

स्त्रीत्व—पु० [सं०] १. 'स्त्री' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। औरतपन। २ गुण, धर्म आदि के विचार से स्त्रियों का-सा होने का भाव। जनानापन। ३. शब्दों के अंत में लगनेवाला स्त्रीलिंग का सूचक प्रत्यय। (व्याकरण)

स्त्री-देहार्द्ध—पु० [सं०] शिव जिनके आधे अंग में पार्वती का होना माना गया है।

स्त्री-धन—पु० [सं०] ऐसा धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो और जो पुरुषों को न मिल सकता हो। यह छः प्रकार का कहा गया है—अन्वाधेय, बन्धुदत्त, यौतक, सौदायिक, शुल्क, परिणाम, लावण्यार्जित और पादवन्दनिक।

स्त्री-धर्म—पु० [सं०] १. स्त्री या पत्नी का कर्तव्य। २ स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन। ३. मैथुन। संभोग। ४ स्त्रियों से संबंध रखनेवाला नियम या विधान।

स्त्री-धर्मिणी—स्त्री० [सं०] रजस्वला स्त्री।

स्त्री-धूर्त—पु० [सं०] स्त्री को छलनेवाला पुरुष।

स्त्री-ध्वज—वि० [सं०] जिसमें स्त्रियों के चिह्न हों। स्त्री के चिह्नों से युक्त।
पु० हाथी।

स्त्रीपण्योपजीवी—पु०=स्त्र्याजीव।

स्त्री-पर—वि० [सं०] कामुक। विषयी।
पु० व्यभिचारी पुरुष।

स्त्री-पुर—पु० [सं०] अंतःपुर। जनानखाना।

स्त्री-पुष्प—पु० [सं०] स्त्री का रज।

स्त्री-प्रसंग—पु० [सं०] मैथुन। संभोग।

स्त्री-प्रिय—पु० [सं०] १ आम का पेड़। २. अशोक।
वि० जिसे स्त्री प्यार करती हो।

स्त्री-प्रेक्षा—स्त्री० [सं०] ऐसा खेल-तमाशा जिसमें स्त्रियाँ ही जा सकती हों।

स्त्री-भोग—पु० [सं०] मैथुन। प्रसंग।

स्त्री-मंत्र—पु० [सं०] ऐसा मंत्र जिसके अंत में 'स्वाहा' हो।

स्त्री-मय—वि० [सं०] १ जनाना। २. जनखा।

स्त्री-रत्न—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

स्त्री-राज्य—पु० [सं०] ऐसी राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था जिसमें सब प्रकार के अधिकार और कार्य स्त्रियों के हाथों में ही रहते हों, पुरुषों के हाथ में कुछ भी सत्ता न रहती हो। (गाइनार्की)

स्त्री-लिंग—पु० [स०] १. हिन्दी व्याकरण मे, दो लिंगो मे से एक जो स्त्री जाति का अथवा किसी शब्द के अल्पार्थक रूप का वाचक होता है। (फैमिनिन) जैसे—'लडका' का स्त्रीलिंग 'लडकी' या 'छुरा का स्त्री० लिंग 'छुरी' है। २ स्त्री का चिह्न अर्थात् भग या योनि।

स्त्री वश(श्य)—वि० [स०] (पुरुष) जो स्त्री के वश मे हो।

स्त्री-वार—पु० [स०] सोम, बुध और शुक्रवार। (ज्योतिष मे चद्र, बुध और शुक्र ये तीनो स्त्री-ग्रह माने गए है, अत इनके वार भी स्त्री-वार कहे जाते हैं।)

स्त्री-वास (सस्)—पु० [स०] ऐसा वस्त्र जो रतिवध या सभोग के समय के लिए उपयुक्त हो।

स्त्री-विषय—पु० [स०] सभोग। मैथुन।

स्त्री-व्रण—पु० [स०] योनि। भग।

स्त्री-व्रत—पु० [स०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना। एक स्त्री-परायणता। पत्नी-व्रत।

स्त्री-सग—पु० [स०] सभोग। मैथुन।

स्त्री-संग्रहण—पु० [स०] किसी स्त्री से बलात् सभोग आदि करना। व्यभिचार।

स्त्री-संभोग—पु० [स०] स्त्री-प्रसग। मैथुन।

स्त्री-समागम—पु० [स०] स्त्री-प्रसग। मैथुन।

स्त्री-सुख—पु० [स०] १ स्त्री का सुख। २ मैथुन। सभोग। ३ ३ सहिजन।

स्त्री-सेवन—पु० [स०] सभोग। मैथुन।

स्त्रैण—वि० [स०] १ स्त्री-सबधी। स्त्रियो का। २ स्त्रियो का-सा। स्त्रियो की तरह का। ३ स्त्री या पत्नी के वश मे रहनेवाला। स्त्री-रत (पुरुष)। ४ सदा स्त्रियो की मडली मे रहने की प्रकृति रखनेवाला।

स्त्रैणकी—स्त्री० [स० स्त्रैण से] चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा जिसमे स्त्रियो के रोगो विशेषत उनकी जननेन्द्रिय के रोगो के निदान और चिकित्सा का विवेचन होता है। (जैनिकॉलोजी)

स्त्रै-राजक—पु० [स०] स्त्री-राज्य का निवासी।

स्त्र्यध्यक्ष—पु० [स०] रानियो की देख-रेख करनेवाला और अत पुर का प्रधान अधिकारी।

स्त्र्याजीव—पु० [स०] १ वह पुरुष जो स्त्री या स्त्रियो की सम्पत्ति का भोग करता हो। २ स्त्री या स्त्रियो से वेश्या-वृत्ति कराकर दलाली खानेवाला व्यक्ति।

स्त्र्युपयोगी—वि० [स० स्त्री+उपयोगी] विशेष रूप से स्त्रियो के उपयोग मे आनेवाला। (भूल से 'स्त्रियोपयोगी' रूप मे प्रचलित)

स्थडिल—पु० [स०] १ भूमि। जमीन। २ यज्ञ के लिए साफ की हुई भूमि। ३ सीमा। हद। ४ मिट्टी का ढेर। ५ एक प्राचीन ऋषि।

स्थंडिल शय्या—स्त्री० [स०] (व्रत के कारण) भूमि या जमीन पर सोना। भूमि-शयन।

स्थंडिलशायी—पु० [स० स्थडिल-शायिन्] वह जो व्रत के कारण भूमि या यज्ञ-स्थल पर सोता हो।

स्थडिलेशय—पु० [स०] दे० 'स्थडिलशायी'।

स्थ—प्रत्य० [स०] एक प्रत्यय जो शब्दो के अत मे लगकर अर्थ देता है—(क) स्थित। जैसे—तटस्थ। (ख) उपस्थित। वर्तमान। जैसे—कठस्थ। (ग) किसी विशिष्ट स्थान मे रहने या होनेवाला। जैसे—आत्मस्थ, काशीस्थ। (घ) लीन। रत। मग्न। जैसे—ध्यानस्थ।

स्थकित—वि० [हि० थकित] थका हुआ। शिथिल। ढीला।

स्थग—पु० [स०] १. धूर्त। २ ठग।

स्थगन—पु० [स०] [वि० स्थगित] १ छिपाना या ढाँकना। २ सभा की बैठक, बात की सुनवाई अथवा और कोई चलता हुआ काम कुछ समय के लिए रोक रखना। (ऐडजोर्नमेंट) ३ विचार आदि के लिए कुछ समय तक रोकना। (निलबन)

स्थगनक प्रस्ताव—पु० [स०] वह प्रस्ताव जो विधायिका सभाओ आदि मे यह कहकर उपस्थित किया जाता है कि और काम छोड कर पहले इसी पर विचार होना चाहिए। (एडजोर्नमेन्ट मोशन)

स्थगिका—स्त्री० [स०] १ पनडब्बा। पानदान। ३ अँगूठे, उँगलियो और लिंगेन्द्रिय के अग्रभाग पर के घाव पर बाँधी जानेवाली (पनडब्बे के आकार की) एक प्रकार की पट्टी। (वैद्यक)

स्थगित—भू० कृ० [स०] १. ढका हुआ। आच्छादित। २ ठहराया या रोका हुआ। ३. जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो। मुलतवी। (एडजोर्न्ड) ४ छिपा हुआ। गुप्त। ५ बन्द किया या रोका हुआ।

स्थगी—स्त्री० [स०] स्थगिका।

स्थपति—पु० [स०] १ राजा। २ सामत। ३ शासक। ४ अत-पुर का रक्षक। कचुकी। ५ वास्तुशास्त्र का ज्ञाता या पडित। ६ रथ बनानेवाला कारीगर। ७ सारथी। ८ वह जिसने वृहस्पति-सवन नामक यज्ञ किया हो। ९ कुबेर। १०. वृहस्पति।
वि० प्रधान। मुख्य।

स्थपनी—स्त्री० [स०] भौंहो के मध्य का स्थान जिसकी गिनती मर्मस्थानो मे होती है।

स्थपुट—वि० [सं०] १ कुबडा। कुब्ज। २ पीडित। विपन्न। ३. कठिन स्थिति मे पडा हुआ।
पु० कुबडा।

स्थल—पु० [स०] [वि० स्थलीय] १. भूमि। जमीन। २ भूमि का खड या विभाग। भू-भाग। ३ जल से रहित भूमि। खुश्की। (लैण्ड) जैसे—स्थल मार्ग से जाने मे बहुत दिन लगेंगे। ४ स्थान। जगह। (स्पेस) ५ ऐसी जगह जिसमे जल बहुत कम हो। निर्जल और मरुभूमि। ६ कोई ऐसी जगह, जहाँ कोई विशेष बात, रचना आदि हो या होने को हो। (साइट) ७ अवसर। मौका। ८ टीला। ढूह। ९ खेमा। तबू। १०. पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।

स्थल-कंद—पु० [स०] जगली सूरन। कटैला जमीकद।

स्थल-कमल—पु० [स०] १. स्थल मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसमे कमल जैसे फूल लगते है। २ उक्त पौधे का फूल।

स्थल-कमलिनी—स्त्री० [स०] स्थल कमल का पौधा।

स्थल-काली—स्त्री० [स०] दुर्गा की एक सहचरी।

स्थल-कुमुद—पु० [स०] कनेर। करवीर।

स्थलग—वि० [स०]=स्थलचर।
स्थलगामी(मिन्)—वि० [स०] [स्त्री० स्थलगामिनी]=स्थलचर।
स्थल-चर—वि० [स०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला। 'जल-चर' और 'नभ-चर' से भिन्न।
स्थलचारी (रिन्)—वि०[स०] [स्त्री० स्थल-चारिणी]=स्थल-चर।
स्थलज—वि० [स०] १ स्थल मे उत्पन्न होनेवाला। २. स्थल या सूखी जमीन पर रहनेवाला। (टेरेस्ट्रिअल)
स्थल-डमरुमध्य—पु०[स०] दाहिने और वाँयें पानी से घिरा हुआ, स्थल का वह लवा भाग, जो दोनो ओर के दो वडे स्थलो के वीच में हो और उन्हे मिलाता हो।
स्थल-नलिनी—स्त्री०=स्थल-कमलिनी।
स्थल-पद्म—पु०[स०] १. स्थल-कमल। २. मान-कच्चू। ३. गुलाव।
स्थल-पद्मिनी—स्त्री०=स्थल-कमलिनी।
स्थल-युद्ध—पु० [स०] जमीन पर होनेवाला युद्ध। हवाई और समुद्री युद्ध से भिन्न।
स्थल-रुहा—स्त्री० [स०] स्थल-कमल।
स्थल-विहंग—पु० [स०] स्थल पर विचरण करनेवाले मुर्ग, मोर आदि पक्षी।
स्थल-सेना—स्त्री० [स०] स्थल या जमीन पर लडनेवाली फौज। पैदल सिपाही और घुडसवार आदि। (आर्मी)। वायु और जल सेना से भिन्न।
स्थला—स्त्री० [स०] जल-शून्य भू-भाग। स्थल।
स्थलालेख्य—पु० [स० स्थल+आलेख्य] किसी स्थल का रेखा-चित्र। (साइट प्लान)
स्थली—स्त्री० [स०] १. जल-शून्य भूभाग। खुश्क जमीन। भूमि। २. ऊँची सम भूमि। ३. जगह। स्थान। ४. ऐसा मैदान जिसमे सुन्दर प्राकृतिक दृश्य हो।
स्थली देवता—पु० [स०] ग्राम-देवता।
स्थलीय—वि० [स०] १. स्थल या भूमि-सवध। स्थल का। जमीन का। २ दे० 'स्थानीय।'
स्थलेशय—पु० [स०] (स्थल अर्थात् भूमि पर सोनेवाले) कुरग, कस्तूरी मृग आदि जन्तु।
स्थलौक (स्)—पु० [स०] स्थल-चर जीव-जन्तु।
स्थवि—पु० [स०] १. थैला या थैली। २ स्वर्ग। ३ अग्नि। ४. फल। ५ जगल। ६ जुलाहा। ७. कोढी।
स्थविर—पु० [स०] [भाव० स्थविरता] १ लकडी टेककर चलने वाला वुड्ढा। २ वौद्ध भिक्षुओ का एक सम्प्रदाय। ३ ब्रह्मा। ४. कदव। ५. छरीला।
वि० वृद्ध और पूज्य।
स्थविरा—स्त्री० [स०] १ वृद्ध और पूज्य स्त्री। २ गोरखमुडी।
स्थांडिल—वि० [स०] व्रत के कारण भूमि पर शयन करनेवाला।
स्थाई—वि०=स्थायी।
स्थाणव—वि० [स०] स्थाणु अर्थात् वृक्ष के तने से वना या उत्पन्न।
स्थाणवीय—वि० [सं०] स्थाणु या शिव सवधी। शिव का।
स्थाणु—पु० [स०] १. पेड़ का ऐसा वड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गये हो। ठूंठ। २. खभा। ३. शिव का एक नाम। ४ ग्यारह रुद्रो मे से एक। ५ एक प्रजापति। ६. एक प्रकार का वरछा या भाला। ७ धूप-घडी का काँटा। ८ स्थावर पदार्थ। ९ जीवक नामक अष्ट-वर्गीय ओषधि। १०. दीमक की वाँवी। ११ घोडे का एक प्रकार का रोग जिसमे उसकी जाँघ मे व्रण या फोडा निकलता है। १२. कुरुक्षेत्र के थानेश्वर नामक स्थान का प्राचीन नाम जो किसी समय वहुत प्रसिद्ध तीर्थ माना जाता था।
वि० अचल। स्थावर।
स्थाण्वीश्वर—पु० [स०] स्थाणु तीर्थ मे स्थित एक प्रसिद्ध शिवलिंग। (वामन पुराण)
स्थाता (तृ)—वि० [स०] १ स्थित या स्थिर रहनेवाला। दृढ। २. अचल।
स्थान—पु० [स०] [वि० स्थानिक, स्थानीय] १ स्थिति। ठहराव। २ खुला हुआ भूमि-भाग। जमीन। मैदान। ३. निश्चित और परिमित स्थितिवाला वह भू-भाग जिसमे कोई वस्ती, प्राकृतिक रचना या कोई विशेष वात हो। जगह। स्थल। (प्लेस) जैसे—वहाँ देखने योग्य अनेक स्थान है। ४ रहने की जगह (मकान, घर आदि)। ५ सेवा या लोकोपकार आदि के काम करने की जगह। पद। ओहदा। (पोस्ट) ६. वैठने का वह विशिष्ट स्थान जो निर्वाचित अथवा प्रतिनिधित्व करनेवाले लोगों के लिए होता है। ७ देवालय, आश्रम या इसी प्रकार का और कोई पवित्र स्थान। ८ अवसर। मौका। ९ देश। प्रदेश। १० मुँह के अन्दर का वह अग या स्थल जहाँ से किसी वर्ण या शब्द का उच्चारण हो। जैसे—कंठ, तालु, मूर्धा, दत, ओष्ठ। (व्याकरण) ११. किसी राज्य के मुख्य आधार या वल जो चार माने गये हैं। यथा—सेना, कोश, नगर और देश। (मनु०) १२ प्राचीन भारतीय राजनीति में, वह स्थिति जव युद्ध-यात्रा न करके राजा लोग किसी उद्देश्य से चुप-चाप या उदासीन भाव से वैठे रहते थे १३. आखेट मे शरीर की एक प्रकार की मुद्रा। (यह आसन का एक भेद माना गया है)। १४ अभिनय मे अभिनेता का कार्य या चरित्र। १५ अवस्था। दशा। १६ गोदाम। भडार। १७ कारण। हेतु। १८. किला। दुर्ग। १९ ग्रथ का अध्याय या परिच्छेद।
स्थानक—पु०[स०]१. अवस्था। स्थिति। २ रूपक मे कोई विशेष स्थिति। जैसे—पताका स्थानक। ३ जगह। स्थान। ४ नगर। शहर। ५. दरजा। पद। ६ वृक्ष का थाला। आल-वाल। ७ फेन। ८ नृत्य मे एक प्रकार की मुद्रा।
स्थानकवासी—पु०[स०] जैनो मे एक विशिष्ट सप्रदाय।
स्थान-चिंतक—पु०[स०] वह सैनिक अधिकारी जो सेना के पडाव डालने, चौकी वनाने आदि के उद्देश्य से स्थान-स्थान की व्यवस्था करता है।
स्थान-च्युत—भू० कृ०[स०] [भाव० स्थान-च्युति]१. जो अपने स्थान से गिर, हट या अलग हो गया हो। २. पद से हटाया हुआ। पद-च्युत।
स्थान-पदिक—वि०[स०] नियमित रूप से या प्राय किसी एक स्थान अथवा प्रदेश मे होने या पाया जानेवाला। (एन्डेमिक) जैसे—स्थान-पदिक रोग।
स्थान-पाल—पु०[स०]१. स्थान या देश का रक्षक। २. चौकीदार। पहरेदार।

स्थान-भ्रष्ट—भू० कृ० [स०] स्थान-च्युत।

स्थानविद्—वि०[स०] जो किसी स्थान का जानकार हो।

स्थानस्थ—वि० [स०]१ किसी स्थान पर टिका या टिककर रहनेवाला। २. स्थानीय।

स्थानांतर—पु०[स०]१ प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न कोई और स्थान। दूसरा स्थान। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या भाव। बदली।

स्थानांतरण—पु०[स०] भू० कृ० स्थानांतरित] किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर पहुँचाना, देखना या भेजना। बदली। (ट्रान्सफरेन्स)

स्थानांतरित—भू० कृ०[स०] जो अपने पहले स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर भेज दिया गया हो। (ट्रान्सफर्ड)

स्थानाध्यक्ष—पु०[स०] वह व्यक्ति जिसपर किसी स्थान की रक्षा का भार हो। स्थान-रक्षक।

स्थानापत्ति—स्त्री०[स०] स्थानापन्न होने की अवस्था या भाव। किसी की जगह पर या बदले मे काम करना।

स्थानापन्न—वि०[स०]१ जिसने किसी दूसरे का स्थान ग्रहण किया हो। २ शासनिक क्षेत्र मे किसी अधिकारी की अस्वस्थता, अनुपस्थिति या अविद्यमानता मे उसके स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला। (आफिशिएटिंग)

स्थानिक—वि०[स०] १ स्थान-सबधी। २ किसी स्थान विशेष मे ही होनेवाला। जिसका क्षेत्र किसी स्थान विशेष तक ही सीमित हो। स्थानीय। जैसे—स्थानिक शब्द।

पु०१ स्थान-रक्षक। २ देव मदिर का प्रबधक।

स्थानिक अधिकरण—पु०[स०] किसी विशेष स्थान पर रहनेवाले अधिकारियो का समूह वर्ग या निकाय। (लोकल ऑथॉरिटी)

स्थानिक-कर—पु० [स०] किसी स्थान विशेष पर लगनेवाला कर। (लोकल टैक्स)

स्थानिक-परिषद्—स्त्री०[स०] किसी बस्ती के निवासियो के प्रतिनिधियो की वह परिषद् या सभा जिस पर वहाँ के कुछ विशिष्ट लोक-हित सबंधी सार्वजनिक कार्यो का भार हो। (लोकल बोर्ड)

स्थानिक स्वराज्य—पु०, दे० 'स्थानिक स्वायत्त शासन'।

स्थानिक स्वायत्त शासन—पु०[स०] १ लोकतत्र शासन प्रणाली मे शहरो, कसबो, गाँवो आदि के लोगो द्वारा की जानेवाली अपने यहाँ की शासन-व्यवस्था। २ उक्त शासन का अधिकार। ३. उक्त शासन-प्रणाली। (लोकल सेल्फ गवर्नमेंट)

स्थानी (निन्)—वि० [स०]१ स्थान या पद से युक्त। २ उपयुक्त। ३ स्थायी।

स्थानीकरण—पु०[स०] [भू० कृ० स्थानीकृत] इधर-उधर या दूर तक फैले हुए कार्यो, व्यापारो आदि को नियत्रित करके एक केन्द्र या स्थान मे आबद्ध या सीमित करना। (लोकलाइजेशन)

स्थानीकृत—भू० कृ० [स०] जो या जिसका स्थानीकरण हुआ हो या किया गया हो। (लोकलाइज्ड)

स्थानीय—वि०[स०] १ उस स्थान या नगर का जिसके सबध मे कोई उल्लेख हो। उल्लिखित, वक्ता या लेखक के स्थान का। मुकामी। स्थानिक। (लोकल) जैसे—स्थानीय पुलिस कर्मचारी। स्थानीय समाचार। २. किसी स्थान पर ठहरा हुआ। स्थित।

पु० १. नगर। शहर। २ प्राचीन भारत मे ८०० गाँवो के बीच मे बना हुआ किला या गढ।

स्थानीय स्वशासन—पु०[स०]=स्थानिक स्वायत्त शासन।

स्थानेश्वर—पु०[सं०]१ कुरुक्षेत्र का थानेश्वर नामक स्थान जो किसी समय एक प्रसिद्ध तीर्थ था। २ स्थानाध्यक्ष।

स्थापक—वि०[सं०]१. स्थापन या स्थापना करनेवाला। २ मूर्तियाँ आदि बनानेवाला। ३. अमानत या धरोहर रखनेवाला। ४. दे० 'सस्थापक'।

पु० भारतीय नाट्यशास्त्र में वह नट जो पूर्व-रंग मे सूत्रधार के मंगलाचरण करके चले जाने पर वैष्णव रूप मे आकर नाटक की कथावस्तु के काव्यार्थ की स्थापना करता अर्थात् सूचना देता है।

स्थापत्य—पु०[स०] १. स्थपति का अर्थात् मकान आदि बनाने का कार्य। राजगीरी। मेमारी। २ भवन बनाने की विद्या। वास्तु-विज्ञान। ३ अतःपुर का रक्षक।

स्थापत्य-वेद—पु०[स०] चार उपवेदो मे से एक जिसमें वास्तु-शिल्प या भवन-निर्माण कला का विषय वर्णित है। कहते हे कि यह विश्वकर्मा ने अथर्ववेद से निकाला था।

स्थापन—पुं०[सं०] [वि० स्थापनीय, भू० कृ० स्थापित, कर्ता० स्थापक] १ उठाना या खडा करना। २ दृढतापूर्वक जमाना, रखना या बैठाना। जैसे—वृक्ष या देवता का स्थापन। ३ दृढ या पुष्ट आधार पर स्थिर करना। स्थायी रूप देना। ४ कोई नई सस्था या व्यापारिक कार-बार खडा करना। (एस्टैब्लिशमेन्ट)५ किसी को किसी पद पर काम करने के लिए लगाना या नियत करना। (पोस्टिंग) ६ कोई मत या विचार इस प्रकार युक्तिपूर्वक लोगो के सामने रखना कि वह ठीक या प्रामाणिक जान पडे। प्रतिपादन। ७ (शरीर की) रक्षा या आयुवृद्धि का उपाय। ८ रक्त-स्राव रोकने का उपाय या क्रिया। ९ समाधि। १० प्रसवन। ११ रहने की जगह। घर। मकान। १२ अनाज का ढेर। १३ दे० 'स्थापना'।

स्थापन-निक्षेप—पु० [स०] अर्हत् की मूर्ति का पूजन। (जैन)

स्थापना—स्त्री० [स०] १ स्थापित करने की क्रिया या भाव। स्थापन। २ तर्क, प्रमाण, युक्ति आदि के द्वारा अपना पक्ष या मत ठीक सिद्ध करते हुए दूसरो के सामने रखना। अपना पक्ष स्थापित करना। निरूपण। प्रतिपादन। (एस्टैब्लिशमेंट) ३ इकट्ठा या जमा करना। ४ भारतीय नाट्य-शास्त्र मे नाटक के पूर्व-रग मे सूत्रधार के द्वारा मगलाचरण हो चुकने पर स्थापक नामक नट के द्वारा इस बात का सूचित किया जाना कि नाटक की कथा-वस्तु और उसका काव्यार्थ क्या है। ५ जैन धर्म मे किसी मूर्ति मे देवता, व्यक्ति आदि का आरोप करना।

† स० ठीक तरह से जमाना, बैठाना या रखना। स्थापित करना।

स्थापनिक—वि० [स०] १. स्थापन सबधी। स्थापन का। २ एकत्र या जमा किया हुआ।

स्थापनीय—वि० [स०] स्थापित किये जाने के योग्य। जिसका स्थापन हो सके या होने को हो।

स्थापयितव्य—वि० [स०] =स्थापनीय।

स्थापयिता (तृ)—वि० [स०] =स्थापक।

स्थापित—भू० कृ० [स०] १ जिसकी स्थापना की गई हो। कायम किया हुआ। २ इकट्ठा या जमा किया हुआ। ३ सँभालकर रखा हुआ। रक्षित। ४ निर्धारित या निश्चित। ५. व्यवस्थित। ६ विवाहित। ७ दृढ। पक्का। मजबूत।

स्थापी(पिन्)—पु० [स०] प्रतिमा निर्माण करने या मूर्ति बनानेवाला कारीगर।

स्थाप्य—वि० [स०] =स्थापनीय।

पु० १ देवता आदि की मूर्ति। देव-प्रतिमा। २ अमानत। धरोहर।

स्थाय—पु० [स०] १ वह जिसमे कोई चीज रखी जाय। वह जिसमे धारिता शक्ति हो। २ जगह। स्थान।

स्थाया—स्त्री० [स०] पृथ्वी। धरती।

स्थायिक—वि० [स०] १ स्थायी। २ विश्वसनीय।

स्थायिता—स्त्री०=स्थायित्व।

स्थायित्व—पु० [स०] १ 'स्थायी' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २ किसी वस्तु विशेषत सेवा या नौकरी के पद आदि पर होनेवाला ऐसा अधिकार जो कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार सुरक्षित और नियत काल के लिए स्थायी हो। (टेन्योर)

स्थायी—वि० [स०] १ किसी स्थान पर स्थित होनेवाला। २ सदा स्थित रहनेवाला। हमेशा बना रहनेवाला। (परमानेन्ट) जैसे—स्थायी पद। ३ बहुत दिनो तक चलनेवाला। टिकाऊ। ४. स्थायी भाव। (दे०)

स्थायीकरण—पु० [स०] [भू० कृ० स्थायीकृत] १ किसी वस्तु, कार्य या बात को स्थायी रूप देना। २ किसी पद पर, अस्थायी रूप से अथवा परीक्षण के रूप मे काम करनेवाले व्यक्ति को उस पर स्थायी रूप से नियत करना। ३ उक्त कार्य के लिए दी जानेवाली आज्ञा या स्वीकृति। (कन्फर्मेशन)

स्थायी कोष—पु० [स०] किसी सस्था आदि का वह कोष या धन राशि जो उसे स्थायी रूप से बनाये रखने के लिए क्रम-क्रम से बराबर सचित होती रहती है और जिसका उपयोग उस सस्था को पुष्ट रूप देने और स्थायी बनाये रखने मे होता है।

स्थायी निधि—स्त्री० [स०] १ वह निधि जो कोई काम चलाये चलने के लिए स्थापित की गई हो और जिसके ब्याज मात्र से वह काम चलता हो। २. स्थायी कोष। (एन्डाउमेन्ट)

स्थायी भाव—पु० [स०] साहित्य मे वे मूल तत्त्व या भाव जो मूलत मनुष्यो के मन मे प्राय सदा निहित रहते और कुछ विशिष्ट अवसरो पर अथवा कुछ विशिष्ट कारणो से स्पष्ट रूप से प्रकट होते है। जैसे—प्रेम, हर्ष या उससे उत्पन्न होनेवाला हास्य, खेद, दु ख, शोक, भय, वैराग्य आदि। इन्ही तत्त्वो या भावो के आधार पर साहित्य के ये नौ रस स्थिर हुए हैं—शृगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और शात। इन्ही रसो मे मूल तथा स्थायी रूप से स्थापित रहने और किसी दूसरे भाव के आने पर भी प्रबलता तथा स्पष्ट रूप से व्यक्त होने के कारण ये भाव स्थायी कहलाते है।

स्थायी समिति—स्त्री०[सं०]१. वह समिति जो स्थायी रूप से बनी रहकर काम करने के लिए नियुक्त की गई हो। २. किसी सम्मेलन या महासभा आदि की यह समिति जो उस सम्मेलन या महासभा के अगले अधिवेशन तक सब कार्यो की व्यवस्था के लिए चुनी जाती है। (स्टैडिंग कमिटी)

स्थाल—पु० [स०] १. पात्र (बरतन)। २ बडी थाली। थाल। ३ देगची। पतीला। ४. दांत का खोखलापन।

स्थाली—स्त्री० [स०] १. मिट्टी के वे बरतन जो भोजन बनाने और खाने-पीने के काम मे आते हो। जैसे—कसोरा, तश्तरी, हाँडी आदि। २. मिट्टी की वह तश्तरी जिसमे यज्ञ के समय सोम का रस निचोडा जाता था। ३ थाली। ४ खीर। ५. पाटला नामक वृक्ष।

स्थाली-पाक—पु० [स०] १. आहुति के लिए एक प्रकार का चरु जो दूध मे चावल या जौ डालकर पकाने से बनता था। २ वैद्यक मे लोहे की एक पाकविधि।

स्थाली-पुलाक-न्याय—पु० [स०] एक प्रकार का न्याय या कहावत जिसका प्रयोग यह आशय सूचित करने के लिए होता है कि हाँडी मे उबाले हुए चावलो का एक दाना देखने से ही यह पता चल जाता है कि सब चावल अच्छी तरह पके है या नही। जैसे—मैं ने उनका एक ही व्याख्यान सुन कर स्थाली पुलाक-न्याय से सब विषयो मे उनका मत जान लिया।

स्थाल्य—वि० [स०] १. स्थल-सबधी। २. स्थल पर होनेवाला।

पु० १. अन्न। २ जडी-बूटी।

स्थावर—वि० [स०] [भाव० स्थावरता] १ इस प्रकार जड़ा, रखा या लगाया हुआ कि हट न सके। स्थिर। २ जो सदा एक ही जगह जमा रहता हो और वहाँ से कभी हटता न हो। ('जगम' का विप०) ३. अचल। गैर मनकूला। (इम्मूवेबुल) ४ उक्त प्रकार के पदार्थो से उत्पन्न होने या सबध रखनेवाला। जैसे—स्थावर विष।

पु० १ अचल सपत्ति। जैसे—खेत, बाग, मकान आदि। २ पर्वत। ३ अचेतन पदार्थ। जैसे—मिट्टी, बालू आदि। ४ वह पारिवारिक वस्तु जिसे बेचने का अधिकार किसी को नही होता। ५ स्थूल शरीर।

स्थावरता—स्त्री० [स०] स्थावर होने की अवस्था, गुण या भाव।

स्थावर-नाम—पु० [स०] वह पाप कर्म जिसके उदय से जीव स्थावर काय (स्थूल शरीर) मे जन्म ग्रहण करते है। (जैन)

स्थावर-राज—पु० [स०] हिमालय।

स्थावर-विष—पु०[स०] वह विषय जो वृक्षो की जडो, पत्तो, फल, फूल, छाल, दूध, सार, गोद, धातु और कद मे होता है। स्थावर पदार्थो मे होनेवाला जहर। (वैद्यक)

स्थाविर—पु० [स०] वृद्धावस्था। वार्धक्य। बुढौती।

स्थाविर-लगुडन्याय—पु० [स०] जैसे वृद्ध की लाठी निशाने पर नही पहुँचती वैसे यदि कोई बात लक्ष्य तक पहुँचने मे विफल हो, तो यह न्याय प्रयुक्त होता है।

स्थित—भू० कृ० [स०] [भाव० स्थिति] १ किसी स्थान पर खडा, ठहरा या बना हुआ। जैसे—दिल्ली स्थित मकान। २ बसा हुआ। जैसे—प्रयाग स्थित पारिवारिक सदस्य। ३ दृढ। पक्का। जैसे—स्थित प्रज्ञ। ४ प्रतिष्ठित या प्रस्थापित किया हुआ। ५ बैठा हुआ। ६ ऊपर की ओर उठा हुआ। ७. अचल। ८ उपस्थित। मौजूद।

पु० १ अवस्थान। निवास। २ कुल या परिवार की मर्यादा।

स्थितता—स्त्री० [स०] स्थित होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थिति।

स्थित-धी—वि० [स०] १ स्थिर बुद्धिवाला । २ सोच-समझ कर निश्चय करने और उस पर स्थिर रहनेवाला । ३ दुःख-सुख मे विचलित या विह्वल न होनेवाला ।

स्थित-पाठ्य—पु० [स०] नाट्य-शास्त्र मे विरही नायक या नायिका का एकान्त मे बैठकर दुःखी मन से आप ही आप बातें करना या बडबडाना।

स्थित-प्रज्ञ—वि० [स०] १ जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २ सब प्रकार के मनोविकारो से रहित या शून्य और सदा आत्मा मे ही प्रसन्न तथा सतुष्ट रहनेवाला ।

स्थिति—स्त्री० [स०] [वि० स्थित] १ स्थित होने की क्रिया, दशा या भाव। रहना या होना । अवस्थान । अस्तित्व । २ एक ही स्थान पर या एक ही रूप मे बना रहना । टिकाव । ठहराव । ३ आपेक्षिक, आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियो से समझी जानेवाली किसी विषय या व्यक्ति की अवस्था । दशा । हालत । जैसे—(क) आज-कल उनकी स्थिति अच्छी नही है। (ख) देश की राजनीतिक (या सामाजिक) स्थिति बिलकुल बदल गई है। ४ पद, मर्यादा आदि के विचार से समाज मे किसी को प्राप्त होनेवाला स्थान । (पोजीशन) ५ किसी व्यक्ति, सस्था आदि की वह विधिक दशा या मर्यादा जो उसे अपने क्षेत्र मे कुछ निश्चित सीमा मे प्राप्त होती है, और जो उसके पद, सम्मान आदि की सूचक होती है। (स्टेटस) ६ वे बातें जो कोई पक्ष अपने वक्तव्य, अभियोग, आरोप आदि के सबध मे कहता या उपस्थित करता है । (केस) जैसे—इस विषय मे मैं अपनी स्थिति आप को बतला चुका हूँ। ७ निवास-स्थान। ८ अस्तित्व । ९ पालन-पोषण । १० नियम या विधान । ११ विचारणीय विषय का निर्णय या निष्पत्ति । १२ मर्यादा। १३ सीमा। हद। १४ छुटकारा । निवृत्ति। १५ ढग। तरीका। १६ आकृति । रूप।

स्थिति गणित—पु०[स०] गणित की वह शाखा जिसमे सांख्यिक विवरण सगृहीत तथा वर्गीकृत किये जाते हैं और विशेष रूप से पदार्थों की साम्यावस्था पर प्रभाव डालनेवाली शक्तियो का अको मे विवेचन होता है। (स्टैटिस्टिक्स)

स्थितिता—स्त्री० [स०] १ स्थिति का भाव या धर्म । २ स्थिरता।

स्थितिमान् (मत्)—वि० [स०] १ जिसमे दृढता या धीरता हो। २ स्थायी। ३ धार्मिक ।

स्थिति-शील—वि० [स०] [भाव० स्थितिशीलता] १ बराबर एक ही स्थिति मे होता या बना रहनेवाला। २ जो किसी स्थिति मे पहुँचकर ज्यो का त्यो रह जाय। (स्टेटिक)

स्थिति-स्थापक—वि० [स०] [भाव० स्थिति-स्थापकता] १ दाब हट जाने पर फिर ज्यो का त्यो हो जानेवाला। नमनीय। लचीला। २ दे० 'लचक'।

स्थिर—वि० [स०] [भाव० स्थिरता] १ सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति मे रहनेवाला। अचर। निश्चल। (कान्स्टेन्ट) २ बहुत दिनो तक या सदा ज्यो का त्यो बना रहनेवाला। स्थायी। (स्टेबल) ३ इस प्रकार निश्चित किया हुआ जिसमे जल्दी या सहज मे कोई परिवर्तन या हेर-फेर न हो सके। जैसे—मत स्थिर करना। ४ जो किसी स्थान पर पहुँचकर स्थायी रूप से रुक या ठहर गया हो। एक ही जगह पर बहुत दिनो तक टिका रहनेवाला। (स्टेशनरी) ५ जिसमे किसी प्रकार का उद्वेग, चचलता आदि न हो। धीर। शात। ६ (प्रस्ताव या विचार) जो निश्चय के रूप मे लाया गया हो। निश्चित। ७ एक ही स्थान पर जडा, बैठाया या लगाया हुआ। ८ स्थायी। ९ विश्वसनीय।
पु० १ शिव। २ देवता । ३ मोक्ष । ४ पर्वत। ५ वृक्ष ६ शनिग्रह। ७ ज्योतिष मे एक प्रकार का योग। ८ ज्योतिष मे वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुभ—ये चारो राशियाँ स्थिर मानी गई हैं। ९ एक प्रकार का मत्र जिससे शास्त्र अभिमत्रित किये जाते थे। १० वह कर्म जिससे जीव को स्थिर अवयव प्राप्त होते हैं। (जैन) ११ वृष। साँड। १२ धौ का पेड।

स्थिर गध—वि० [स०] जिसकी सुगध स्थिर रहती हो। स्थिर या स्थायी गध युक्त।
पु० चपक चपा।

स्थिर-गधा—स्त्री० [स०] १ केवडा। केतकी। २ पाटला। पाढर।

स्थिर-चक्र—पु० [स०] मजुघोष या मजुकी नामक प्रसिद्ध बोधिसत्व का एक नाम।

स्थिर-चित्र—वि०[सं०] १ जिसका मन स्थिर या दृढ हो। २ उत्तेजित, विचलित या विह्वल न होनेवाला।

स्थिर-चेता—वि०=स्थिर-चित्त ।

स्थिर-जीवी (विन्)—पु०[स०] कौआ, जिसका जीवन बहुत दीर्घ होता है।

स्थिरता—स्त्री०[स०]१ स्थिर रहने या होने की अवस्था, गुण या भाव। २ दृढता। मजबूती। ३ धीरता। ४ स्थायित्व।

स्थिरत्व—पु०=स्थिरता।

स्थिर-दंष्ट्र—पु० [स०] १ साँप। सर्प। २ ध्वनि। ३ विष्णु का वाराह अवतार।

स्थिर-पत्र—पु० [स०] १ श्रीताल वृक्ष। २ हिंताल वृक्ष।

स्थिर पुष्प—पु०[स०] १ चपक वृक्ष। चपा। २ बकुल। मौलसिरी। ३ तिल-पुष्पी।

स्थिर-बुद्धि—वि०[स०] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। ठहरी हुई बुद्धिवाला। दृढचित्त।

स्थिर-मति—वि०=स्थिर-बुद्धि।

स्थिरमना—वि०=स्थिर-चित्त।

स्थिर मूल्य—पु० [स०] किसी वस्तु का वह निश्चित मूल्य जिसमे कमी-बेशी न हो सकती हो। (फिक्स्ड प्राइस)

स्थिर यौवन—वि० [स०] [स्त्री० स्थिरयौवना] जिसका यौवन-काल या जवानी अधिक दिनो तक बनी रहे।
पु० विद्याधर।

स्थिर-यौवना—वि० स्त्री० [स०] (स्त्री) जिसका यौवन अपेक्षया अधिक समय तक बना या स्थिर रहे।

स्थिरा—स्त्री० [स०] १ दृढ चित्तवाली स्त्री। २ पृथ्वी। ३ काकोली। ४ वनमूँग। ५ सेमल। ६ मूसाकानी। ७ माष-पर्णी। मखवन।

स्थिरात्मा (त्मन्)—वि० [स०] दृढ चित्तवाला।

स्थिरायु—वि० [स०] १ जिसकी आयु बहुत अधिक हो। चिरजीवी। २. अमर।

पु० सेमल का पेड।

स्थिरीकरण—पु० [सं०] १. स्थिर करने की क्रिया या भाव। २. घटती-बढ़ती रहनेवाली वस्तुओं का स्वरूप या मानक स्थिर करना। (स्टैबिलाइज़ेशन) जैसे—मूल्य या भाव का स्थिरीकरण। ३ पुष्टि। समर्थन।

स्थूण—पु०[सं०]१ थूनी। २ खभा।

स्थूणा—स्त्री० [सं०] १ थूनी। २ खभा। ३. पेड का ठूंठ। ४. लोहे का पुतला। ५ निहाई। ६. एक प्रकार का रोग।

स्थूणाकर्ण—पु० [सं०] १ एक प्रकार का सैनिक व्यूह-रचना। २. एक प्रकार का तीर। ३ एक प्रकार का रोग-ग्रह।

स्थूणापक्ष—पु० [सं०] सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना।

स्थूणीय, स्थूण्य—वि०[सं०] स्तभ-सबधी।

स्थूल—वि०[सं०] [भाव० स्थूलता]१ भारी और मोटे अगोवाला। मोटा। 'सूक्ष्म' का विपर्याय। २. तुरन्त या बिना परिश्रम के समझ मे आनेवाला। ३. जिसमे छोटे और बारीक अगो का विचार न हो। (रफ)४ मोटे हिसाब से अनुमान किया या ध्यान मे आया हुआ। (रफ) ५ अभी जिसमे से लागत, व्यय आदि न निकाला गया हो। 'पक्का' का विपर्याय। (ग्रास) जैसे—स्थूल आय। ६ जिसका तल सम न हो। ७ मूर्ख।

पु० १ वह पदार्थ जिसका साधारणतया इद्रियो द्वारा ग्रहण हो सके। वह जो स्पर्श, घ्राण, दृष्टि आदि की सहायता से जाना जा सके। गोचर-पिंड। २ वैद्यक के अनुसार शरीर की सातवी त्वचा। ३ अन्नमय कोश। ४ ढेर। राशि। समूह। ५. विष्णु। ६ शिव का एक गण। ७ कटहल। ८. कगनी। प्रियगु। ९ ईख। ऊख। १०. एक प्रकार का कदब।

स्थूल-कंटक—पु० [सं०] बबूल की जाति का एक प्रकार का पेड जिसे आरी भी कहते है।

स्थूल-कंद—पु०[सं०] १ लाल लहसुन। २ जमीकद। सूरन। ३. हाथीकद। ४ मान कद। ५. मुखालु।

स्थूल-जंघा—स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की समिधाओ मे से एक। (गृह्यसूत्र)

स्थूल जिह्व—वि०[सं०] जिसकी जीभ बहुत बडी हो।

पु० एक प्रकार के भूत।

स्थूल-जीरक—पु०[सं०] मँगरैला।

स्थूल-तंडुल—पु०[सं०] एक प्रकार का मोटा धान।

स्थूलता—स्त्री०[सं०]१. स्थूल होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थूलत्व। २ मोटाई। ३. भारीपन।

स्थूलत्व—पु० =स्थूलता।

स्थूल-दर्भ—पु०[सं०] मूंज नामक तृण।

स्थूल-दर्शक—पु०[सं०] सूक्ष्म-दर्शक यंत्र।

स्थूल देह—पु०[सं०] - स्थूल शरीर।

स्थूल-नास (नासिक)—पु०[सं०] सूअर। शूकर।

वि० लम्बी नाकवाला।

स्थूल पत्र—पु० [सं०]१. दौना नामक क्षुप। दमनक। २ सप्तपर्ण। छतिवन।

स्थूल पर्णी—स्त्री०[सं०] सप्तपर्ण। छतिवन।

स्थूल-पाद—पु०[सं०]१. वह जिसे श्लीपद या फीलपा रोग हो। २. हाथी।

स्थूल-पुष्प—पु०[सं०]१. बक या अगस्त नामक वृक्ष। २ गुलमखमली। झडुक।

स्थूल-पुष्पी—स्त्री०[सं०] शखिनी। यवतिका।

स्थूल-फल—पु०[सं०] १ सेमल। शाल्मली। २ बडा नीबू।

स्थूल फला—स्त्री० [सं०]१ शणपुष्पी। बनसनई। २ सेमल।

स्थूल भद्र—पु०[सं०] जैनियो का भेद या वर्ग। श्रुतकेवलिक।

स्थूल मरिच—पु०[सं०] शीतलचीनी। कबाबचीनी। कक्कोल।

स्थूल-रोग—पु० [सं०] मोटा होने का रोग। मोटाई की व्याधि।

स्थूल-लक्ष—पु० [सं०][भाव० स्थूललक्षिता] १. वह जो बहुत अधिक दान करता हो। बहुत बडा दानी। २. पडित। विद्वान्। ३ कृतज्ञ।

स्थूल-लक्षिता—स्त्री० [सं०] १ दानशीलता। २ पाडित्य। विद्वत्ता। ३. कृतज्ञता।

स्थूल-लक्ष्य—पु०[सं०]१ वह जो बहुत अधिक दान करता हो। बहुत बडा दाता। २ किसी विषय की ऊपरी या मोटी बाते बताना।

स्थूल-शर—पु०[सं०] रामशर।

स्थूल-शरीर—पु०[सं०] वेदान्त के अनुसार जीव या प्राणी के तीन प्रकार के शरीरो मे से वह जो भौतिक तत्त्वो या हाड-मास का बना होता है और जो प्राण, बुद्धि, मन, कर्मेन्द्रियो तथा ज्ञानेन्द्रियो से युक्त होता है। जीव इसी शरीर मे जन्म लेता और ससार के सब काम करता है।

विशेष—शेष दोनो कारण शरीर और सूक्ष्म शरीर कहलाते है।

स्थूल शालि—पु०[सं०] एक प्रकार का मोटा चावल। स्थूल तडुल।

स्थूल-हस्त—पु०[सं०] हाथी की सूँड।

वि० लबे या मोटे हाथोवाला।

स्थूलांत्र—पु०[सं०] पेडू के अन्दर की बडी अँतडी।

स्थूला—स्त्री०[सं०]१ बडी इलायची। २ गजपीपल। ३. सौंफ। ४ मुनक्का। ५ कपास। ६ ककडी। ७ सोआ नामक साग।

स्थूलाम्र—पु०[सं०] कलमी आम।

स्थूलास्य—पु०[सं०] साँप। सर्प।

स्थूली (लिन्)—पु०[सं०] ऊँट।

स्थूलोच्चय—पु० [सं०] हाथी की मध्यम चाल, जो न बहुत तेज हो और न बहुत सुस्त।

स्थूलोदर—वि०[सं०] बडी तोदवाला।

स्थेय—वि०[सं०] स्थापित किये जाने के योग्य। जो स्थापित किया जा सके या किया जाने को हो।

पु०१ पुरोहित। २ विवाद आदि का निर्णायक। न्यायकर्ता या पंच।

स्थैर्य—पु०[सं०]१. स्थिरता। २ दृढता।

स्थौर—पु०[सं०]१ स्थिरता। २. दृढता। ३ उतनी सामग्री जितनी एक बार मे अपनी या किसी की पीठ पर लादकर ले जाते हैं। बोझ।

स्थौल्य—पु०[सं०]१. स्थूल होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थूलता। २. शरीर की देह-वृद्धि जो वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग है। मोटापा। ३. भारीपन।

स्नपन—पु० [सं०] [भू० कृ० स्नपित] नहाने की क्रिया। स्नान।

स्नसा—स्त्री० [सं०] स्नायु।

स्नात—भू० कृ० [सं०] जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ। जैसे—चन्द्रिका स्नात।

पु०=स्नातक।

स्नातक—पुं० [सं०] १ वह जिसने विद्या का अध्ययन और ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त कर लिया हो। २. वह जिसने किसी विश्वविद्यालय की कोई परीक्षा पारित की हो। (ग्रैजुएट)

स्नातकोत्तर—वि० [सं०] (अध्ययन या परीक्षा) जो स्नातक हो जाने के उपरान्त और आगे हो। (पोस्ट ग्रैजुएट)

स्नातव्य—वि० [सं०] जिसे स्नान कराना आवश्यक या उचित हो।

स्नान—पु० [सं०] [वि० स्नात] १ स्वच्छ या शीतल करने के लिए सारा शरीर जल से धोना या जलराशि मे प्रवेश करना। नहाना। २ धार्मिक दृष्टि से (क) कुछ दिनों तक बराबर नियमपूर्वक किसी जलाशय मे जाकर वहाँ की जानेवाली उक्त क्रिया। जैसे—कातिक स्नान, माघ स्नान आदि। (ख) कुछ विशिष्ट अवसरो या पर्वो पर उक्त कार्य के संबंध मे किसी तीर्थ या पवित्र स्थान मे लगनेवाला मेला। जैसे—कुंभ स्नान, प्रयाग स्नान आदि। ३ धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना, लेटना या होना कि सारे शरीर पर उसका पूरा प्रभाव पड़े। जैसे—वायु-स्नान, आतप-स्नान। ४ इस प्रकार किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का पडनेवाला प्रभाव या प्रसार। जैसे—चन्द्रमा की चाँदनी मे पृथ्वी का स्नान। (बाथ)

स्नान-गृह—पु० [सं०] नहाने का कमरा। गुसलखाना। हमाम।

स्नान-तृण—पु० [सं०] कुश जिसे हाथ मे लेकर नहाने का शास्त्रों मे विधान है।

स्नान-यात्रा—स्त्री० [सं०] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को होनेवाला एक उत्सव जिसमे विष्णु को महास्नान कराया जाता है। इस दिन जगन्नाथजी के दर्शन का बहुत माहात्म्य कहा गया है।

स्नान-वस्त्र—पु० [सं०] वह वस्त्र जिसे पहनकर स्नान किया जाता है। (बेदिंग सूट)

स्नान-शाला—स्त्री० [सं०] स्नान-गृह। गुसलखाना।

स्नानागार—पु० [सं०] स्नान-गृह।

स्नानी (निन्)—वि० [सं०] स्नान करनेवाला।

स्त्री०=स्नान-गृह।

स्नानीय—वि० [सं०] १ जो नहाने के योग्य हो। २ जल जिसमे स्नान किया जा सके।

स्नानोदक—पु० [सं०] नहाने के काम मे आनेवाला जल। नहाने का पानी।

स्नापक—वि० [सं०] स्नान कराने या नहलानेवाला।

पु० वह सेवक जो स्वामी को स्नान कराता हो अथवा स्नान करने के लिए जल आदि लाता हो।

स्नापन—पु० [सं०] स्नान कराना। नहलाना।

स्नापित—भू० कृ० [सं०] नहलाया हुआ।

स्नायन—पु० [सं०] स्नान। नहाना।

स्नायविक—वि० [सं०] स्नायु-संबंधी। स्नायु का। (नर्वस)

स्नायवीय—वि० [सं०] स्नायु-संबंधी। स्नायविक।

पु० आँख, पैर, हाथ आदि कर्मेन्द्रियाँ।

स्नायी (यिन्)—वि० [सं०] जो स्नान करता हो। नहानेवाला।

स्नायु—स्त्री० [सं०] १ धनुष की डोरी। २ दे० 'तंत्रिका'। (नर्व)

स्नायुक—पु० [सं०] नहरुआ नामक रोग।

स्नायु-वर्म (न्)—पुं० [सं०] आँख का एक प्रकार का रोग जिसमे उसकी कौडी या सफेद भाग पर एक छोटी गाँठ-सी निकल आती है। (वैद्यक)

स्नायु शूल—पु० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग, जिसमे स्नायु मे शूल के समान तीव्र वेदना होती है।

स्निग्ध—वि० [सं०] [भाव० स्निग्धता] १ जिसमे स्नेह या प्रेम हो। २ जिसमे स्नेह या तेल रहता हो या लगा हो। चिकना (ऑयली) ३ जो अपने तेलवाले अंश और चिकनेपन के कारण यंत्रो के पहियो, पुरजो आदि को सरलतापूर्वक चलने मे सहायता देता हो। (ल्यूब्रिकेटिंग)

पु० १ लाल रेड। २ धूपसरल या सरल नामक वृक्ष। ३ गन्धाबिरोजा। ४. दूध पर की मलाई।

स्निग्धता—स्त्री० [सं०] १ स्निग्ध या चिकना होने की अवस्था, गुण या भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २ प्रेमपूर्ण भाव या व्यवहार से युक्त होने की अवस्था या गुण।

स्निग्धत्व—पु०=स्निग्धता।

स्निग्ध-दारु—पु० [सं०] १ देवदारु का पेड। २ धूपसरल। ३ शाल वृक्ष।

स्निग्ध पत्र—पु० [सं०] १ घृतकरंज। घीकरंज। २ गुच्छ करंज। ३ भगवतवल्ली। ४ माजुरवास।

स्निग्ध-पत्रा—स्त्री० [सं०] १ बेर। २ पालक का साग। ३ अमलोनी। ४ काश्मरी। गंभारी।

स्निग्ध-पत्री—स्त्री० [सं०]=स्निग्धपत्रा।

स्निग्ध-पर्णी—स्त्री० [सं०] १ पृश्निपर्णी। पिठवन। २ मरोड फली। मूर्वा।

स्निग्ध-फल—पु० [सं०] गुच्छ करंज।

स्निग्ध फला—स्त्री० [सं०] १. फूट नामक फल। २. नकुलकंद। नाकुली।

स्निग्धबीज—पु० [सं०] यशव गोल। ईसबगोल।

स्निग्ध-मज्जक—पु० [सं०] बादाम।

स्निग्ध-राजि—पु० [सं०] एक प्रकार का साँप जिसकी उत्पत्ति काले साँप और राजमती जाति की साँपिनी से होती है। (सुश्रुत)

स्निग्धा—स्त्री० [सं०] १ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ अस्थि के अन्दर का गूदा। मज्जा। ३ विककत।

स्नुषा—स्त्री० [सं०] १. पुत्र-वधू। लड़के की स्त्री। २. थूहड।

स्नुहा (ही)—स्त्री० [सं०] थूहड।

स्नेय—वि० [सं०] १ जिसमें या जिससे स्नान किया जा सके। २ जो स्नान करने को हो या जिसे स्नान करना आवश्यक या उचित हो।

स्नेह—पु० [सं०] १ चिकना पदार्थ। चिकनाहटवाली चीज। जैसे—

घी, तेल, चरवी आदि। २. प्रेमियों, हमजोलियों, बच्चों आदि के प्रति होनेवाला प्रेम-भाव। ३ कोमलता। मुलायमत। ४. सिर के अन्दर का गूदा। मज्जा। ५. एक प्रकार का राग जो हनुमत के मत से हिंडोल राग का पुत्र है। ६. सरसो। ७. दही या दूध पर की मलाई।

स्नेहक—पु० [स०] १ वह तेल या चिकना पदार्थ जो यत्रो के पहियो आदि मे उन्हे सरलता से चलाने के लिए डाला जाता है। (लूब्रिकेन्ट) २ प्रेमी। स्नेही।

वि० १ स्निग्ध या चिकना करनेवाला। २ स्नेही।

स्नेहन—पु० [स०] १ किसी चीज मे स्नेह या तेल लगाने अथवा उसे चिकना करने की क्रिया या भाव। चिकनाना। २. यत्रो आदि के अगो और पहियो मे उन्हे सरलता से चलाने के लिए तेल डालना। (ल्युब्रिकेशन) ३ किसी चीज से चिकनाहट उत्पन्न करना या लाना ४ शरीर मे तेल लगाना। ५ नवनीत। मक्खन। ६. कफ। श्लेष्म।

स्नेहनीय—वि० [स०] १ जिस पर तेल लगाया जा सके। २ जिसके साथ स्नेह किया जा सके।

स्नेह-पात्र—वि० [स०] [स्त्री० स्नहपात्री] जो स्नेह का पात्र या भाजन हो। जिसके प्रति स्नेह हो।

स्नेह-पान—पु० [स०] १ तेल पीना। २ वैद्यक के अनुसार एक प्रकार की क्रिया जिसमे कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, घी, चरवी आदि पीने का विधान है।

स्नेह-फल—पु० [स०] तिल।

स्नेह-बीज—पु० [स०] चिरौजी।

स्नेह-मापक—पु० [स०] एक प्रकार का यत्र जिससे यह पता चलता है कि दूध मे स्नेह या चिकनाई (मक्खन, घी आदि का अश) कितना होता है। (वुटाइरोमीटर)

स्नेह-मीन—पु० [स०] एक प्रकार की बडी समुद्री मछली जिसका मास खाया जाता है और चरबी का उपयोग कई प्रकार के रोगों मे पौष्टिक ओषधि के रूप मे होता है। (कॉड)

स्नेहल—वि० [स०] १ स्नेह-पूर्ण। २. कोमल। ३. चिकना।

स्नेह-वस्ति—स्त्री० [स०] १ वह वस्ति या पिचकारी जिसमें तेल भर कर गुदा के द्वारा रोगी के शरीर में प्रविष्ट किया जाता है। (वैद्यक) २ उक्त क्रिया या भाव।

स्नेह-वृक्ष—पु० [स०] देवदारु।

स्नेह-सार—पु० [स०] मज्जा नामक धातु। अस्थिसार।

स्नेहाश—पु० [स०] दीपक। चिराग।

स्नेहिक—वि० [स०] १ स्नेह-युक्त। चिकना। २ रोगनदार।

स्नेहित—भू० कृ० [स०] १. स्नेह से युक्त किया हुआ। २ जिसे किसी का स्नेह प्राप्त हो। ३ जिस पर चिकनाई लगाई गई हो।

स्नेही (हिन्)—वि० [स०] १. जो स्नेह करता हो। २ जिससे स्नेह किया जाता हो।

पु० १ मित्र। २ लेप आदि करनेवाला चिकित्सक। ३. चित्रकार।

स्नेहोत्तम—पु० [स०] तिल का तेल।

स्नेह्य—वि० [स०] जिसके साथ स्नेह किया जा सके। स्नेह या प्रेम का अधिकारी या पात्र।

स्पंज—पु० दे० 'इस्पज'।

स्पंजी—वि० दे० 'इस्पजी'।

स्पंद—पु० [स०] [वि० स्पंदित] १. धीरे-धीरे हिलना या कॉपना। २ स्पदन की क्रिया मे होनेवाला हल्का आघात या फडक। (पल्स) विशेष दे० 'स्पदन'।

स्पंदन—पु० [स०] [भू० कृ० स्पदित] १ रह-रहकर धीरे-धीरे हिलना या कॉपना। २. जीवो के शरीर मे रक्त के प्रवाह या सचार के कारण कुछ रुक-रुक कर होनेवाली वह लपक गति जो हृदय के बार-बार फूलने और संकुचित होने से आघात या खटक के रूप मे उत्पन्न होती है। (बीट) जैसे—नाडी या हृदय का स्पदन। ३ भौतिक क्षेत्रो मे किसी प्रक्रिया से होनेवाला उक्त प्रकार का व्यापार या स्थिति। फडक। (पल्सेशन)

स्पंदित—भू० कृ० [स०] जिसमें स्पदन उत्पन्न हुआ हो अथवा उत्पन्न किया गया हो। हिलता या कॉपता हुआ।

स्पंदिनी—स्त्री० [स०] १ रजस्वला स्त्री। २ बराबर या सदा दूध देती रहनेवाली गौ। ३ काम-धेनु।

स्पंदी (दिन्)—वि० [स०] जिसमे स्पदन हो। हिलने, कॉपने या फड-कनेवाला। स्पंदशील।

स्परांटो†—स्त्री०=एस्पराटो।

स्प(र्द्ध)र्धन—पु० [स०]=स्पर्धा करने की क्रिया या भाव।

स्प(र्द्ध)र्धनीय—वि० [स०] १ जिससे स्पर्धा की जा सके। २ जिसके विषय मे स्पर्धा की जा सके।

स्पर्द्धा—स्त्री० [स०] [भू० कृ० स्पर्द्धित] १ रगड। सघर्ष। २ प्रतियोगिता आदि में किसी से होनेवाली होड। ३. सामर्थ्य या योग्यता से अधिक कुछ करने या पाने की इच्छा। ४ किसी मे कोई अच्छी बात देखकर सद्भावपूर्वक उसके समान होने की कामना। (एम्यूलेशन) ५. साहस। हौसला। ६ ईर्ष्या। डाह। ७ बरा-बरी। समता।

स्पर्द्धी (र्द्धिन्)—वि० [स०] स्पर्द्धा करनेवाला।

पु० ज्यामति मे किसी कोण में की उतनी कमी जिसकी पूर्ति से वह कोण १८० अश का अथवा अर्द्ध-वृत्त होता है।

स्पर्धा—स्त्री०=स्पर्द्धा।

स्पर्धित—भू० कृ० =स्पर्द्धित।

स्पर्धी—वि०=स्पर्द्धी।

स्पर्श—पु० [स०] [भू० कृ० स्पर्शित, स्पृष्ट] १ त्वचा का वह गुण जिससे छूने, दबने आदि का अनुभव होता है। २ एक वस्तु के तल का दूसरी वस्तु के तल से सटना या छूना। (टच) ३ व्याकरण के उच्चारण के चार प्रकार के आभ्यन्तर प्रयत्नो में से एक जिसमे उच्चारण करते समय जीभ कुछ ऊपर उठकर और तालु को स्पर्श करके बहुत थोडे समय के लिए श्वास रोक देती है। ('क' से 'म' तक के व्यजनो का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है।) ४. ग्रहण के समय सूर्य अथवा चन्द्रमा पर छाया पड़ने लगना। ग्रहण का आरम्भ। 'मोक्ष' का विपर्याय।

५. संभोग का एक प्रकार का आसन या रति-बंध। ६ दान। ७ वायु। हवा। ८ कष्ट। पीडा।

स्पर्श-कोण—पु० [सं०] ज्यामिति मे वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा के बीच मे बनता है।

स्पर्श-ग्राह्य—वि० [सं०] [भाव० स्पर्श-ग्राह्यता] स्पर्श द्वारा जिसे जाना तथा समझा जाता हो। (टैक्टाइल)

स्पर्श-जन्य—वि० [सं०] १ स्पर्श के परिणाम स्वरूप होनेवाला। जैसे—स्पर्श-जन्य सुख। २ छुतहा। संक्रामक।

स्पर्शतन्मात्र—पु०[सं०] स्पर्श भूत का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप। दे० 'तन्मात्र'।

स्पर्शता—स्त्री० [सं०] स्पर्श का धर्म या भाव। स्पर्शत्व।

स्पर्श-दिशा—स्त्री० [सं०] वह दिशा जिधर से सूर्य या चन्द्रमा को ग्रहण लगा हो या लगने को हो। चन्द्रमा या सूर्य पर ग्रहण की छाया आने अर्थात् स्पर्श का आरम्भ होने की दिशा।

स्पर्शन—पु० [सं०] १ स्पर्श करने या छूने की क्रिया या भाव। २. देने की क्रिया। दान। ३ लगाव। सम्बन्ध। ४ वायु। हवा।

स्पर्शना—स्त्री० [सं०] छूने की शक्ति या भाव।

स्पर्शनीय—वि० [सं०] जिसे स्पर्श किया या छूआ जा सके। स्पृश्य।

स्पर्शनेंद्रिय—स्त्री० [सं०] वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श किया जाता है। छूने की इन्द्रिय। त्वक्।

स्पर्श-मणि—पु० [सं०] पारस-पत्थर।

स्पर्श-रेखा—स्त्री० [सं०] ज्यामिति मे वह सरल रेखा, जो किसी वृत्त को किसी एक बिंदु पर स्पर्श करती हुई (बिना उस वृत्त को कही से काटे) एक ओर से दूसरी ओर निकल जाती है। (टैनजेन्ट)

स्पर्श-संघर्षी(र्षिन्)—वि० [सं०] (शब्दो के उच्चारण मे होनेवाला प्रयत्न) जिसमे पहले श्वास-नली के साथ जीभ का थोडा स्पर्श और तब कुछ संघर्ष होता है। (एफ्रिकेट) जैसे—च् या ज् का उच्चारण।

स्पर्श-संचारी(रिन्)—पु० [सं०] शूक रोग का एक भेद।

स्पर्श-हानि—स्त्री० [सं०] शूक रोग मे रुधिर के दूषित होने के फलस्वरूप लिंग के चमडे मे स्पर्श-ज्ञान न रह जाना।

स्पर्शा—स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री। छिनाल। पुश्चली।

स्पर्शाक्रामक—वि० [सं०] स्पर्श होने पर आक्रमण करनेवाला। संक्रामक। छुतहा।

स्पर्शाज्ञ—वि० [सं०] जिसे स्पर्श की अनुभूति न होती हो।

स्पर्शास्पर्श—पु० [सं०] १ स्पर्श और अस्पर्श। छूना और न छूना। २ छूआछूत का भाव।

स्पर्शिक—वि० [सं०] १ स्पर्श करनेवाला। २ जिसे छूने से ज्ञान प्राप्त होता है।

पु० वायु। हवा।

स्पर्शी(शिन्)—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला। जैसे—हृदय-स्पर्शी।

स्पर्शेंद्रिय—स्त्री० [सं०] वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है। त्वचा। चमड़ा।

स्पर्शोपल—पु० [सं०] पारस पत्थर। स्पर्श-मणि।

स्पष्ट—वि० [सं०] [भाव० स्पष्टता] १ जिसे देखने, समझने, सुनने आदि मे नाम को भी कोई कठिनता या बाधा न हो। बिलकुल साफ। २. (बात या व्यवहार) जिसमें किसी तरह का छल-कपट या धोखा न हो। चालाकी, दाँव-पेंच आदि से रहित और सत्यतापूर्ण। जैसे—(क) आपसी व्यवहार सदा स्पष्ट होना चाहिए। (ख) तुम्हे जो कुछ कहना हो, वह स्पष्ट कह दो।

पु० १ फलित ज्योतिष मे, ग्रहो का वह स्फुट साधन, जिससे यह जाना जाता है कि जन्म के समय अथवा किसी और विशिष्ट काल मे कौन-सा ग्रह किस राशि के कितने अंश, कितनी कला और कितनी विकला मे था। इसकी आवश्यकता ग्रहो का ठीक-ठीक फल जानने के लिए होती है। २ व्याकरण मे, वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमे दोनो होठ एक दूसरे से छू जाते हैं। जैसे—प या म के उच्चारण मे स्पष्ट प्रयत्न होता है।

स्पष्ट कथन—पु० [सं०] व्याकरण की दृष्टि से कथन का वह प्रकार जिसमे किसी द्वारा कही हुई बात का उल्लेख ठीक उसी रूप मे बिना किसी प्रकार का व्याकरणगत अंतर उपस्थित किये किया जाता है। (डायरेक्ट स्पीच)

स्पष्टतया—अव्य० [सं०] १. स्पष्ट रूप से। साफ-साफ। २ स्पष्ट शब्दो मे।

स्पष्टता—स्त्री० [सं०] १. स्पष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। जैसे—उसकी बातो की स्पष्टता ने सभी को प्रभावित किया। २ सफाई।

स्पष्टवक्ता—वि० [सं०] १. स्पष्ट बात या बातें कहनेवाला। २. बिना भय या संकोच के बातें कहनेवाला।

स्पष्टवादी(दिन्)—वि० [सं०] [भाव० स्पष्टवादिता] स्पष्टवक्ता। (दे०)

स्पष्टीकरण—पुं० [सं०] [वि० स्पष्टीकृत] १. कोई बात इस प्रकार स्पष्ट या साफ करना कि उसके संबंध मे कोई भ्रम न रहे। (एल्यूसिडेशन) २ जो बात स्पष्ट होने से रह गई हो उसे इस प्रकार स्पष्ट करना कि औरो का भ्रम दूर हो जाय। (क्लैरिफिकेशन) ३ इस प्रकार भ्रम दूर करने के उद्देश्य से कही जानेवाली बात। ४ किसी अपने किये हुए कार्य के विषय मे आपत्ति होने पर यह बतलाना कि किन कारणो से यह काम इस रूप मे किया गया है। विवृत्ति। व्याख्या। (एक्सप्लेनेशन)

स्पष्टीकार्य—वि० [सं०] जिसका स्पष्टीकरण करना आवश्यक या उचित हो।

स्पष्टीकृत—भू० कृ०[सं०] जिसका स्पष्टीकरण हुआ हो। साफ या खुलासा किया हुआ।

स्पष्टीक्रिया—स्त्री०[सं०] ज्योतिष में, वह क्रिया जिससे ग्रहो का किसी विशिष्ट समय मे किसी राशि के अंश, कला, विकला आदि मे अवस्थान जाना जाता है।

स्पिरिट—स्त्री० [अं०] १. शरीर मे रहनेवाली आत्मा। २.

वह सूक्ष्म-शरीर जिसका निवास स्थूल-शरीर के अन्दर माना जाता है। ३ आवेश, उत्साह आदि से युक्त जीवनी शक्ति। ४ किसी पदार्थ का सत्त या सार। जैसे—स्पिरिट एमोनिया=नौसादर का सत्त। ५ दे० 'सुरासव'।

स्पीकर—पु०[अं०]१ वह जो व्याख्यान देता हो। वक्ता। २ कुछ विशिष्ट राज्यों मे विधान-सभा का अध्यक्ष या सभापति। ३. एक प्रकार का उच्चभाषक की तरह का यत्र जो प्रेषित की हुई ध्वनि-तरगो को शब्दो मे वदल कर कहता है।

स्पीच—स्त्री० [अं०] भाषण। व्याख्यान।

स्पीड—स्त्री०[अं०] गति। चाल।

स्पृक्का—स्त्री० [सं०] १ असवरग। २ लजालू। लज्जावती। ३ ब्राह्मी। ४ मालती। ५ सेवती। ६. गगापुत्री। पानी-लता।

स्पृश—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला।

स्पृश्य—वि०[सं०]१ जिसे स्पर्श कर सके। जो छुआ जा सके। २ जिसे छूने मे कोई दोष या पाप न माना जाता हो।

स्पृश्या—स्त्री०[सं०] हवन की नौ समिधाओं मे से एक।

स्पृष्ट—भू० कृ०[सं०] जिसे छुआ गया हो।

पु० व्याकरण मे वर्णो के उच्चारण का एक प्रकार का आभ्यन्तर प्रयत्न।

विशेष—क् से म् तक के वर्णो का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है।

स्पृष्टका—पु०[सं०] सभोग आदि के समय आलिगन का एक प्रकार।

स्पृष्टास्पृष्टि—स्त्री० [सं०]१ एक दूसरे को छूना। २ छुआछूत।

स्पृष्टि—स्त्री०[सं०] छूने की क्रिया या भाव। स्पर्श।

स्पृष्टी(ष्टिन्)—वि० [सं०]=स्पर्शी।

स्पृहण—पु०[सं०]=स्पृहा।

स्पृहणीय—वि०[सं०] जिसके लिए स्पृहा अर्थात् अभिलाषा या कामना की जा सके। वांछनीय; अर्थात् उत्तम, गौरवपूर्ण या प्रशसनीय।

स्पृहयालु—वि०[सं०]१ जो स्पृहा या कामना करे। स्पृहा करनेवाला। २ लोभी। लालची।

स्पृहा—स्त्री०[सं०] किसी अच्छे काम, चीज या वात की प्राप्ति अथवा सिद्धि के लिए मन मे होनेवाली अभिलाषा, इच्छा या कामना।

स्पृहित—वि०[सं०]१ जिसकी प्राप्ति की अभिलाषा की गई हो। २ जो स्पृहा या ईर्ष्या का विषय हो।

स्पृही(हिन्)—वि०[सं०]१ स्पृहा अर्थात् कामना या इच्छा करनेवाला। २ स्पर्धा करनेवाला।

स्पृह्य—वि०[सं०]=स्पृहणीय।

स्पेशल—वि०[अं०] विशेष। (दे०)

पु०१. विशेष अवसर पर चलनेवाली गाडी। २ विशेष अधिकारी को ले चलनेवाली गाड़ी।

स्पेशलिस्ट—पु० [अं०] किसी विद्या या विषय का विशेषज्ञ।

स्प्रिग—स्त्री० [सं०] यत्रो या यात्रिक उपकरणो मे लगनेवाली कमानी।

स्प्रिंगदार—वि०[अं० स्प्रिंग+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें स्प्रिंग या कमानी लगी हो। कमानीदार।

स्प्लिट—पु० [अं०] वह पटरी जो मोच निकले या हड्डी टूटे हुए अग पर वाँधी जाती है। (आधुनिक चिकित्सा)

स्फट—पु०[सं०]१ फट-फट शब्द। २ साँप का फन।

स्फटिक—पु०[सं०]१ एक प्रकार का सफेद वहुमूल्य पारदर्शी पत्थर या रत्न, जिसका व्यवहार मालाएँ, मूर्तियाँ तथा दस्ते आदि बनाने मे होता है। इसके कई भेद और रग होते है। विल्लौर। (पेवुल) २. सूर्यकान्त मणि। ३. काँच। शीशा। ४. कपूर। ५ फिटकिरी।

स्फटिका—स्त्री०[सं०] फिटकिरी।

स्फटिकाचल—पु०[सं०] कैलास पर्वत, जो दूर से देखने मे स्फटिक के समान जान पडता है।

स्फटिकाद्रि—पु०[सं०]=स्फटिकाचल (कैलास)।

स्फटिकी—स्त्री०[सं०] फिटकिरी।

स्फटिकीकरण—पु० दे० 'मणिभीकरण'।

स्फटिकोपल—पु०[सं०] स्फटिक। विल्लौर।

स्फटित—भू० कृ०[सं०] फटा हुआ। विदीर्ण।

स्फटी—स्त्री०[सं०] फिटकिरी।

स्फरण—पु०[सं०]१ काँपना। फडकना। २ प्रवेश करना।

स्फाटक—पु०[सं०]१ स्फटिक। विल्लौर। २. पानी की वूंद।

स्फाटिक—वि०[सं०] स्फटिक सवधी। विल्लौर का।

पु०=स्फटिक।

स्फार—वि०[सं०]१. वहुत अधिक। प्रचुर। विपुल। उदा०—ऊपर हरीतिमा नभ गुजित, नीचे चन्द्रातप छना स्फार।—पन्त। २ वडा और विस्तृत।

पु०१ अधिकता। २ विस्तार।

स्फारण—पु०=स्फुरण।

स्फीत—वि० [सं०] [भाव० स्फीतता, स्फीति]१ वढा हुआ। वर्द्धित। २ फूला या उभरा हुआ। जैसे—गर्व से स्फीत वक्ष स्थल। ३. समृद्ध। सम्पन्न। ४ इस रूप मे फूला हुआ कि वाहर से देखने मे तो वडा या भारी जान पडे परन्तु अन्दर अपेक्षया कम तत्त्व या सार हो। (इन्फ्लेटेड)

स्फीतता, स्फीति—स्त्री०[सं०] स्फीत होने की अवस्था, गुण या भाव। स्फीतता। (इन्फ्लेशन)

स्फुट—वि० [सं०] [भाव० स्फुटता] १ फूटा या टूटा हुआ। २ खुला या खिला हुआ। विकसित। ३ स्पष्ट। व्यक्त। ४. शुक्ल। सफेद। ५ अनिश्चित प्रकारो या वर्गो का। फुटकर।

पु० जन्म-कुडली मे यह दिखाना कि कौन-सा ग्रह किस राशि मे कितने अग, कितनी कला और कितनी विकला मे है। (फलित ज्योतिष)

स्फुटता—स्त्री०[सं०] स्फुट होने की अवस्था, गुण या भाव।

स्फुटत्व—पु० [सं०]=स्फुटता।

स्फुटन—पु० [सं०] [भू० कृ० स्फुटित]१ फटना या फूटना। २ विकसित होना। खिलना।

स्फुटा—स्त्री०[सं०] साँप का फन।

स्फुटिका—स्त्री०[सं०]१ किसी चीज का टूटा हुआ या काटकर निकाला हुआ अश। २. फूट नामक फल। ३. फिटकिरी।

स्फुटित—भू० कृ०[स०]१ फूटा हुआ। २ विकसित। खिला हुआ। ३. मुँह से कहकर अथवा और किसी प्रकार स्पष्ट रूप से प्रकट या व्यक्त किया हुआ।

स्फुटित-काड-भग्न—पु० [स०] वैद्यक के अनुसार हड्डी टूटने का वह रूप जिसमे उसके टुकडे-टुकडे होकर बिखर जाते है।

स्फुटी—स्त्री० [स०]१ पादस्फोट नामक रोग। पैर की बिवाई फटना। २ फूट नामक फल।

स्फुटीकरण—पु०[स० स्फुट+करण] स्फुट अर्थात् प्रकट, व्यक्त या स्पष्ट करने की क्रिया या भाव।

स्फुर—पु०[स०]१ वायु। हवा। २ स्फुरण।

स्फुरण—पु० [स०]१ किसी पदार्थ का जरा-जरा काँपना, लहराना या हिलना। २ अग का फडकना। ३ स्फूर्ति।

स्फुरण—स्त्री०[स०] अगो का फडकना।

स्फुरति*—स्त्री०=स्फूर्ति।

स्फुरना—अ०[स० स्फुरण]१ प्रकट या व्यक्त होना। २ काँपना, फडकना, या हिलना। ३. मन मे कोई बात सहसा उत्पन्न होना।

स्फुरित—भू० कृ०[स०] जिसका या जिसमे स्फुरण हो।

स्फुलिंग—पु०[स०] वह जलता हुआ चमकीला कण, जो जलती हुई या जोर से रगडी जानेवाली चीजो मे से निकलकर उडता हुआ दिखाई देता है। चिनगारी। (स्पार्क)

स्फुलिंगिनी—स्त्री०[स०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक।

स्फुलिंगी—वि०[स०] जिसमे से स्फुलिंग निकलते हो या निकल रहे हो।

स्फूर्ज—पु०[स०]१ अचानक होनेवाला स्फोट। २ बादलो की गड-गडाहट। मेघ-गर्जन। ३ इन्द्र का वज्र। ४ नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिसमे आनन्द के साथ भय भी मिला होता है।

स्फूर्जन—पु०[स०]१ बादल की गरज। २ तिंदुक या तेंदू नामक वृक्ष।

स्फूर्जा—स्त्री०=स्फूर्ज।

स्फूर्त—भू० कृ०[स०]१ जो स्फूर्ति के फलस्वरूप हुआ हो। २ मन मे अचानक आया हुआ।

स्फूर्ति—स्त्री० [स०] १ धीरे-धीरे हिलना। फडकना। स्फुरण। २ किसी काम या बात के लिए मन मे होनेवाला किसी विचार का आकस्मिक आविर्भाव। ३ तेजी। फुरती।

स्फोट—पु०[स०] [वि० स्फुट]१ अदर से भर जाने के कारण किसी वस्तु के ऊपरी आवरण का फटना और उसमे की चीज का वेगपूर्वक बाहर निकलना। फूटना। (इरप्शन) जैसे—ज्वालामुखी का स्फोट। २ शरीर पर होनेवाला फोडा। ३ साधना के क्षेत्र मे उपाधिरहित शब्दतत्त्व। ओकार। प्रणव। ४ मोती।

स्फोटक—वि०[स०] स्फोट उत्पन्न करनेवाला।

पु० १ शरीर मे होनेवाला फोडा। २ भिलावाँ।

स्फोटन—पु०[स०]१ स्फोट उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २ विदीर्ण करना। फाडना। ३ सामने लाना। प्रकट करना। ४ सुश्रुत के अनुसार वायु के प्रकोप से सिर मे होनेवाली पीडा, जिसमे वह फटता हुआ सा जान पड़ता है।

स्फोटवाद—पु०[स० [वि० स्फोटवादी] यह दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि सारी सृष्टि की उत्पत्ति स्फोट अर्थात् अनित्य दैवी शब्द से ही हुई है।

स्फोटा—स्त्री० [स०]१ साँप का फन। २ सफेद अनन्तमूल।

स्फोटिक—पु०[स०] पत्थर, जमीन आदि तोडने-फोड़ने का काम।

स्फोटिका—स्त्री०[स०] छोटा फोडा। फुसी।

स्फोरण—पु० [स०]=स्फुरण।

स्मय—पु०[स०] अभिमान। घमड।

वि० अद्भुत। विलक्षण।

स्मर—पु०[स०]१ कामदेव। मदन। २ याद। स्मृति। ३ सगीत मे शुद्ध राग का एक भेद।

स्मर-कथा—स्त्री० [स०] शृगार रस की बातें।

स्मर-कार—वि०[स०] काम-वासना उद्दीप्त करनेवाला।

स्मर-कूप—पु०[स०] भग। योनि।

स्मर-गृह—पु०[स०] भग। योनि।

स्मर-चंड—पु०[स०] एक प्रकार का रतिबंध।

स्मर-चक्र—पु०[स०] एक प्रकार का रतिबंध।

स्मरण—पु० [स०] [वि० स्मरणीय, भू० कृ० स्मृत]१ किसी ऐसी देखी-सुनी या बीती हुई बात का फिर से याद आना या ध्यान होना जो बीच मे भूल गई हो, या ध्यान मे न रह गई हो। कोई बात फिर से याद आने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—आना।—करना।—दिलाना।—रखना।—रहना।—होना।

२ भक्ति के नौ प्रकारो मे से एक, जिसमे उपासक अपने इष्टदेव को बराबर याद करता रहता या मन मे उसका ध्यान रखता है। ३. साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालकार, जिसमे पहले की देखी हुई कोई चीज या सुनी हुई कोई बात उसी प्रकार की कोई चीज देखने या बात सुनने पर फिर से याद आने या मन मे उसका ध्यान आने का उल्लेख होता है। यथा—मैं पाता हूँ मधुर ध्वनि मे गूँजने मे खगो के। मीठी तानें परम प्रिय की मोहिनी वंशिका की—अयोध्यासिह उपाध्याय।

विशेष—इस अलकार को कुछ लोगो ने 'स्मृति' भी कहा है।

स्मरण-पत्र—पु०[स०] कोई बात स्मरण करने के लिए लिखा जानेवाला पत्र। (रिमाइडर)

स्मरण-शक्ति—स्त्री०[स०] वह मानसिक शक्ति जो अपने सामने होने-वाली घटनाओ और सुनी जानेवाली बातो को ग्रहण करके मन मे रक्षित रखती है और आवश्यकता पडने, प्रसग आने पर फिर हमारे मन मे, स्पष्ट कर देती है। याद रखने की शक्ति। याददाश्त। (मेमरी)

स्मरणासक्ति—स्त्री० [स०] भगवान् के स्मरण मे होनेवाली आसक्ति जिसके कारण भक्त दिन-रात भगवान् या इष्टदेव का स्मरण करता है। उदा०—(यह भक्ति) एक रूप ही होकर गुणमहात्मासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दासासक्ति, सख्यासक्ति, कातासक्ति, वात्सल्यासक्ति, आत्मनिवेदनासक्ति, तन्मयासक्ति, और परमविरहासक्ति रूप से एकादश प्रकार की होती है।—(हरिश्चन्द्र)

स्मरणी—स्त्री०[स०] सुमिरनी।

स्मरणीय—वि०[स०] (घटना या बात) जो स्मरण रखी जाने के योग्य हो। याद रखने लायक। जैसे—यह दृश्य भी सदा स्मरणीय रहेगा।

स्मरता—स्त्री० [स०] १ स्मर या कामदेव का भाव या धर्म। २ स्मरण रखने की शक्ति। स्मृति।

स्मर-दशा—स्त्री०[स०] साहित्य मे वह दशा, जो प्रेमी या प्रेमिका के न मिलने पर उसके विरह मे होती है। विरह की अवस्था।

स्मर-दहन—पु० [स०] १ कामदेव को भस्म करनेवाले, शिव। २ शिव के द्वारा कामदेव के भस्म किये जाने की घटना।

स्मर-दीपन—वि०[स०] जिससे काम उत्तेजित हो। कामोत्तेजक।

स्मर-ध्वज—पु० [स०]१ पुरुष का लिंग। २. एक प्रकार का बाजा।

स्मरना*—पु० [स० स्मरण+ना (प्रत्य०)] १. स्मरण करना। याद करना। २. सुमिरना।

स्मर-प्रिया—स्त्री० [स०] कामदेव की प्रिया, रति।

स्मर-मंदिर—पु०[स०] भग। योनि।

स्मर-यम—वि०[स०]१ प्रेम या वासना से युक्त। २. प्रेम या वासना से उद्भूत।

स्मर-वल्लभ—पु० [स०] अनिरुद्ध का एक नाम।

स्मरवती—स्त्री०[स०] स्त्री जिससे प्यार किया जा रहा हो।

स्मर-वीथिका—स्त्री०[स०] वेश्या। रडी।

स्मर-शासन—पु०[स०] काम-देव।

स्मर-शास्त्र—पु०[स०] कामशास्त्र।

स्मरसख—वि० [स०] जिससे काम की उत्तेजना हो। कामोद्दीपक। पु० १ चन्द्रमा। २ वसत।

स्मर-स्तंभ—पु०[स०] पुरुषेन्द्रिय।

स्मर-हर—पु०[स०] शिव। महादेव।

स्मरागार—पु०[स०] भग। योनि।

स्मरांकुश—पु०[स०] पुरुष की लिंगेंद्रिय। लिंग।

स्मरारि—पु०[स०] कामदेव के शत्रु, महादेव।

स्मरासव—पु०[स०]१ ताड़ मे से निकलनेवाला ताडी नामक मादक द्रव्य। २. थूक। लाला।

स्मर्ण†—पु०=स्मरण।

स्मर्तव्य—वि०[स०]=स्मरणीय।

स्मर्ता (तृ)—वि०[स०] स्मरण करने या याद रखने वाला।

स्मर्य—वि०[स०]=स्मरणीय।

स्मशान—पु०=श्मशान।

स्मारक—वि०[स०] स्मरण करनेवाला।
पु० १ वह कार्य, पदार्थ या रचना जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिए हो। यादगार। (मेमोरियल) २. वह चीज जो किसी को अपना स्मरण बनाये रखने के लिए दी जाय। यादगार। ३. वह पत्र जो किसी बडे आदमी को कुछ बातो का स्मरण कराने या कुछ बातें स्मरण रखने के लिए दिया जाय। (मेमोरियल)। ४. दे० 'स्मारिका'।

स्मारक-ग्रंथ—पु० [स०] वह ग्रथ जो किसी महापुरुष की स्मृति बनाये रखने के लिए प्रस्तुत करके उसे भेंट किया गया हो। (कमेमोरेशन वॉल्यूम)

स्मारण—पु० स०] स्मरण कराने की क्रिया या भाव। याद दिलाना।

स्मारिका—स्त्री० [सं०] १. किसी महत्त्वपूर्ण घटना या समारोह स्थान आदि को रक्षित रखने के उद्देश्य से प्राप्त की हुई कोई वस्तु। २. उक्त से सम्बद्ध कोई विवरणात्मक विशेषत सचित्र पुस्तिका। (सुवेनीर) ३. दे० 'स्मरणपत्र'।

स्मारित—पु०[स०] ऐसा साक्षी जिसका नाम कागज-पत्र पर न लिखा हो, परन्तु जिसे प्रार्थी अपने पक्ष के समर्थन के लिए स्वय स्मरण करके बुलावे।

स्मारी(रिन्)—वि०[सं०] १. स्मरण रखनेवाला। २. स्मरण कराने या याद दिलानेवाला।

स्मार्त—वि०[स०]१. स्मृति सबधी। स्मृति का। याद किया हुआ। २ स्मृति या स्मृतियो मे उल्लिखित।
पु०१ वह जो स्मृतियो का ज्ञाता हो। २ वह जो स्मृतियों मे बतलाये हुए धार्मिक विधानो का पालन करता हो।

स्मार्तिक—वि०[स०] स्मृति सबंधी। स्मृतिका।

स्मित—पु०[स०] मद हास्य। धीमी हँसी।
वि०१. हँसता हुआ। २. खिला हुआ। विकसित।

स्मिति—स्त्री०[स०] मदहास्य। मुस्कराहट।

स्मिति चर—वि० [स०] मुस्कराता हुआ चलनेवाला। उदा०—उड़ती फिरतीं सुख के नभ मे, स्मिति के आतप मे ज्यो स्मितिचर।—पन्त।

स्मितित—वि०[स०] हँसता या मुस्कराता हुआ।

स्मृत—भू० कृ०[स०] १. स्मरण किया हुआ। २ स्मृति मे आया हुआ। ३. स्मृति मे आया हुआ।

स्मृति—स्त्री० [सं०] [वि० स्मृत, स्मृतिक] १. स्मरण-शक्ति, जिससे बीती हुई बातें मन मे किसी रूप मे बनी रहती हैं। (मेमरी) २. बीती हुई बातो का वह ज्ञान जो स्मरण-शक्ति के द्वारा फिर से एकत्र या प्राप्त होता है। याद। अनुस्मरण। (रिफ्लेक्शन) ३ साहित्य मे, (क) किसी पुरानी या भूली हुई बात का फिर से याद आना, जो एक संचारी भाव माना गया है। (ख) प्रिय के सबध की देखी या सुनी हुई बातें रह-रहकर याद आना, जो पूर्व राग की दस दशाओ मे से एक है। सिर झुकाकर नीचे देखना, भौंहें चढना आदि इसके अनुभाव कहे गये हैं। ४ धर्म, दर्शन, आचार, व्यवहार आदि से सबध रखनेवाले हिंदू धर्म-शास्त्र, जिनकी रचना ऋषि-मुनियो ने वेदो का स्मरण या चिंतन करके की थी। ५ उक्त प्रकार के अठारह मुख्य ग्रन्थो के आधार पर १८ की सख्या का सूचक शब्द। ६ एक प्रकार का छद। ७ 'स्मरण' नामक अलकार का दूसरा नाम।

स्मृति-उपायन—पु०=स्मारिका (पदार्थ या पुस्तिका)।

स्मृतिकार—पु०[स०] स्मृति या धर्मशास्त्र बनानेवाला आचार्य।

स्मृति-कारक—पु०[स०] ऐसा औषध जिसके सेवन से स्मरण-शक्ति तीव्र होती हो। (वैद्यक)

स्मृतिचित्र—पु०[स०] वह चित्र जो किसी व्यक्ति या घटना आदि की सामान्य स्मृति के आधार पर बनाया जाय और जिसमें भाव की अपेक्षा रूप या दृश्य आदि की ही प्रधानता हो।

स्मृति-चिह्न—पु०[स०] कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ जो किसी वस्तु या व्यक्ति की स्मृति बनाये रखने के लिए बचा हो अथवा दिया या लिया गया हो। निशानी।

स्मृति-पत्र—पु०[स०] १. वह पत्र, पुस्तिका आदि जिसमे किसी विषय की कुछ मुख्य-मुख्य बातें स्मरण रखने या कराने के विचार से एकत्र की गई हो। २ दे० 'ज्ञापन-पत्र'।

स्मृति-शास्त्र—पु०[सं०] स्मृति नाम का धर्मशास्त्र।

स्मृति शेष—वि० [सं०] जिसकी केवल स्मृति रह गई हो, अस्तित्व न रह गया हो।

पु० किसी बहुत पुरानी चीज का वह थोड़ा-सा टूटा-फूटा और बचा हुआ अंश, जो उस चीज का स्मरण कराता हो। (रेलिक)

स्यंद—पु०[सं०]=स्यंदन।

स्यंदन—पु०[सं०]१ तरल पदार्थ का चूना, टपकना, बहना या रसना। क्षरण। २ गलकर तरल होना। ३ शरीर से पसीना निकलना। ४ चलना या जाना। गमन। ५ वायु। हवा। ६ जल। पानी। ७ चित्र। तसवीर। ८ घोड़ा। ९ चन्द्रमा। १० एक प्रकार का मंत्र, जिससे अस्त्र मंत्रित किये जाते थे। ११ गत उत्सर्पिणी के २३वें अर्हत् का नाम। (जैन) १२ तिनिश वृक्ष। १३ तिन्दुक वृक्ष। तेंदू।

स्यंदनिका—स्त्री०[सं०]१ छोटी नदी। नहर। २ थूक या लार की बूँद।

स्यंदनी—स्त्री० [सं०]१ थूक। लार। २ वह नाड़ी जिसके द्वारा मूत्र शरीर के बाहर निकलता है।

स्यंदिनी—स्त्री०[सं०]१ वह गाय जिसने एक साथ दो बच्चों को जन्म दिया हो। २. थूक। लार।

स्यंदी (दिन्)—वि०[सं०] १ चूने, बहने या रिसनेवाला। २ तेज चलनेवाला।

स्यंध*—स्त्री०=संधि।

स्यंभ*—पु०=सिंह।

स्यमंतक—पु० [सं०] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का झूठा आरोप श्रीकृष्ण पर लगा था।

विशेष—कहा गया है कि सत्राजित् यादव ने सूर्य भगवान् को प्रसन्न करके उनसे यह मणि प्राप्त की थी, जो नित्य २००० पल सोना देती थी। जब उनका भाई प्रसेनजित् इसे गले में पहनकर जंगल में शिकार खेलने गया, तब शेर उसे उठाकर जांबवंत की गुफा में ले गया, जहाँ उस मणि के प्रकाश से सारी गुफा जगमगा उठी। सत्राजित् कहने लगा कि श्रीकृष्ण ने ही मेरे भाई को मारकर वह मणि ले ली है। श्रीकृष्ण वह मणि ढूँढते-ढूँढते जांबवंत की गुफा में पहुँचे। वहाँ जांबवंत ने उस मणि के साथ अपनी कन्या जांबवती भी उन्हें अर्पित कर दी। जब श्रीकृष्ण ने वह मणि लाकर सत्राजित् को दी, तब उसने भी प्रसन्न होकर उस मणि समेत अपनी कन्या सत्यभामा श्रीकृष्ण को अर्पित कर दी। पर, श्रीकृष्ण ने वह मणि नहीं ली। बाद में शतधन्वा ने सत्राजित् को मारकर वह मणि ले ली। पर अंत में शतधन्वा भी श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया और इस प्रकार वह मणि फिर सत्यभामा को मिल गई।

स्यमंत-पंचक—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ भागवत के अनुसार परशुराम ने पितरों का रक्त से तर्पण किया था।

स्यमिक—पु०[सं०]१ चीटियों या दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का घर। बाँबी। वल्मीक। २ एक प्रकार का वृक्ष।

स्यमिका—स्त्री०[सं०]१ नील का पौधा। २ एक प्रकार का कीड़ा।

स्यमीक—पु०[सं०] १ समय। काल। २ जल। पानी। ३ बादल। मेघ। ४ दीमकों का भीटा। ५ एक प्राचीन राजवंश।

स्यात्—अव्य०[सं०] शायद।

स्याद्वाद—पु०[सं०]१ जैन दर्शन जिसमें नित्यता, अनित्यता, सत्त्व, असत्व, आदि में से किसी एक को निश्चित न मानकर कहा जाता है कि स्याद् यही हो, स्याद् वही हो। इसे अनेकान्तवाद भी कहते हैं। २ उक्त के आधार पर जैन धर्म का दूसरा नाम।

स्याद्वादी—वि०[सं०] स्याद्वाद-संबंधी। स्याद्वाद का।

पु० स्याद्वाद मत का अनुयायी, पोषक या समर्थक, अर्थात् जैन।

स्यान†—वि०=स्याना।

स्यानप†—स्त्री०=सयानपन।

स्यानपत—स्त्री०[हिं० स्याना+पत (प्रत्य०)]१ बहुत अधिक सयाने या चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव। २ चालाकी। धूर्तता।

स्यानपन†—पु०=सयानपन।

स्याना—पु०, वि०=सयाना।

स्यानाचारी†—स्त्री० [हिं स्याना+चारी (प्रत्य०)] १ वह नियमित उपहार या कर मध्य युग में गाँव के मुखिया को मिलता था। २. सयानपन।

स्यानापन—पु०=सयानपन।

स्यापा—पु०[फा० स्याहपोश] १ किसी की मृत्यु पर शोक के कारण होनेवाला रोना-पीटना। २ पश्चिम भारत की कुछ विशिष्ट जातियों में मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक घर की तथा नाते-रिश्ते की स्त्रियों के प्रति दिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।

मुहा०—स्यापा पड़ना=(क) रोना-चिल्लाना मचाना। (ख) स्थान का बिलकुल उजाड़ या सुनसान हो जाना।

स्यावत†—वि०१ दे० 'सावित'। २ दे० 'साबुत'।

स्यावास†—अव्य०=शाबास।

स्याम—पु० [सं० श्याम] भारतवर्ष के पूर्व के एक देश का नाम।

†वि०=पु०=श्याम।

स्यामक—पु०=श्यामक (अन्न)।

स्यामकरन†—पु०=श्यामकर्ण।

स्यामता†—स्त्री० श्यामता।

स्यामल†—वि०=श्याम।

स्यामलता†—स्त्री०=श्यामलता।

स्यामलिया—पु०=साँवलिया।

स्यामा*—स्त्री०=श्यामा।

स्यामि (मी)*—पु०=स्वामी।

स्यार*—पु०[सं० शृगाल] [स्त्री० स्यारनी, स्यारी] १ गीदड़। सियार। २ रहस्य संप्रदाय में जगत् या संसार।

स्यार-काँटा—पु०[स्यार? +हिं० काँटा] सत्यानासी। स्वर्णक्षीरी।

स्यारपन—पु०[हिं० सियार+पन (प्रत्य०)] सियार या गीदड़ का सा स्वभाव। शृगालवृत्ति।

स्यार-लाठी†—स्त्री०[हिं० स्यार+लाठी] अमलतास।

स्यारी†—स्त्री०[सं० शीत-काल] १ जाड़े के दिन। शीत-काल। २ खरीफ (फसल)।

†स्त्री० हिं० 'स्यार' की स्त्री।

स्याल—पु०[सं०] पत्नी का भाई। साला।

†पु०[स० शीतकाल] जाडे के दिन। (पश्चिम)
†पु०=शृगाल (गीदड)।
स्यालक—पु०[स०] सम्बन्ध के विचार से पत्नी का भाई। साला।
स्याल-काँटा—पु०=स्यारकाँटा।
स्याला—पु० [देश०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।
पु०=स्याल (शीतकाल)।
स्यालिका—स्त्री०[स०] पत्नी की छोटी बहन। साली।
स्यालिया†—पु०[हिं० सियार] सियार। गीदड़। शृगाल।
स्याली—स्त्री०[स०] सबध के विचार से पत्नी की बहन। साली।
स्यालीपति—पु० [स०] साली का पति। साढ़।
स्यालू—पु० [हिं० सालू] स्त्रियो के ओढ़ने की चादर। ओढनी। उपरनी।
स्यालो—पु०[स० स्याल, हिं० साला] पत्नी का भाई। साला।
स्यावाज†—पु०=सावज (शिकार)।
स्याह—वि० [फा०] काला। कृष्ण वर्ण।
पु० काले रग का घोडा।
स्याह-कलम—पु०[फा०] मुगल चित्रशैली के एक प्रकार के बिना रग भरे रेखाचित्र जिनमे एक-एक बाल तक अलग-अलग दिखाया जाता है और होंठो, आँखो और हथेलियो मे नाममात्र की और बहुत हलकी रगत रहती है। (लाइन ड्राइग)
स्याह-काँटा—पु०[फा० स्याह+हिं० काँटा] किंगरई नाम का कटीला पौधा। दे० 'किंगरई'।
स्याह-गोश—वि० [फा०] काले कानवाला। जिसके कान काले हो।
पु० वन-बिलाव नामक जगली जतु।
स्याह-जबान—पु०[फा० स्याह+जबान] वह हाथी या घोडा, जिसकी जबान स्याह या काली हो। (ऐसे जानवर ऐबी समझे जाते है)।
स्याह-जीरा—पु०[फा० स्याह+हिं० जीरा] काला जीरा।
स्याह-तालू—पु० [फा० वह हाथी या घोडा जिसका स्याह+हिं० तालू] तालू बिलकुल स्याह या काला हो। ऐसे हाथी-घोडे ऐबी समझे जाते हैं।
स्याह-दिल—वि०[फा०] दिल का काला। खोटा। दुष्ट।
स्याहपोश—पु०[फा०] वह व्यक्ति जिसने शोक या मातम मनाने के उद्देश्य से काले वस्त्र पहने हो। (मुसलमान)
स्याह-भूरा—वि०[फा० स्याह+हिं भूरालू] काला (रग)।
स्याहा—स्त्री०[फा०]१. स्याह अर्थात् काले होने की अवस्था, गुण या भाव। कालापन। कालिमा।
मुहा०—**स्याही जाना**=बालो का कालापन जाना। जवानी बीतना और बुढापा आना। **स्याही छाना**= चेहरे का रंग काला पडना।
२ कालिख। कलौंछ।
क्रि० प्र०—पोतना।—लगाना।
३ वह प्रसिद्ध रगीन् तरल अथवा कुछ गाढा पदार्थ, जो लिखने या कपडे, कागज आदि छापने के काम मे आता है। रोशनाई। (इंक)
विशेष—स्याही यद्यपि निरुक्ति के विचार से काली ही होगी, पर लोक-व्यवहार मे नीली, लाल, हरी आदि स्याहियाँ भी होती हैं।
४ कडए तेल के धूएँ से पारा हुआ एक प्रकार का काजल, जिससे शरीर के अगो में गोदना गोदते हैं।
स्त्री०=साही (जतु)।
स्याही-चूस—पु०[हिं०]=सोख्ता (कागज)।
स्याही-सोख—पु०[हिं०]=सोख्ता (कागज)।
स्युवक—पु०[स०] एक प्राचीन जनपद। (विष्णुपुराण)
स्यू—स्त्री०[स०] सूत। सूत्र।
स्यूत—वि० [स०] [भाव० स्यूति] १. बुना हुआ। २ सीया हुआ।
पु० थैला।
स्यूति—स्त्री०[स०]१. कपड़े आदि सीने की क्रिया या भाव। सिलाई। २ सीयन। ३ थैली। ४. सतान।
स्यून—पु० [स०] १ किरण। रश्मि। २ सूर्य। ३ थैली।
स्यूम—पु०[स०]१. किरण। रश्मि। २ जल। पानी।
स्यो—अव्य० [स० सह, पु० हिं० सौं] १ सहित। साथ। उदा०—कहूँ हंसिनी हम स्यो चित्त चोरै।—केशव। (ख) २ पास। समीप। उदा०—विनती करै आइही दिल्ली।—चितवर कै मोहिं स्यो है किल्ली।—जायसी। विशेष दे० 'सौं'।
स्योती†—स्त्री०=श्वेती (सफेद गुलाब)।
स्योन—पु० [स०] १ किरण। रश्मि। २ सूर्य। ३ सुख। ४ थैला।
स्योनाक—पु०[सं०]=श्योनाक (सोना-पाढ़ा)।
स्योरंजनी—पु०[स०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।
स्रंस—पु०[स०]१. गिरना। २ पतन होना। ३ फिसलन।
स्रंसन—वि०[स०]१ गिराने या नीचे लानेवाला। २ गर्भपात करने-वाला। ३ दस्तावर।
पु०[भू० कृ० स्रंसित] १ गिरना। पतन होना। २ गर्भपात। ३ दस्त लानेवाली दवा।
स्रंसिनी—स्त्री०[स०] १ एक प्रकार का योनि-रोग जिसमे प्रसग के समय योनि बाहर निकल आती है, और गर्भ नही ठहरता। (भाव-प्रकाश) २ गर्भस्राव।
स्रमी(सिन्)—वि०[स०] १ गिरनेवाला। पतनशील। २ असमय मे गिरनेवाला (गर्भ)।
पु०१ सुपारी का पेड। २ पीलू वृक्ष।
स्रक्—स्त्री०[स०]१ फूलो की माला। २ विशेष रूप से फूलो की ऐसी माला, जिसे सिर पर लपेटते हैं। ३ ज्योतिष मे एक प्रकार का योग। ४ एक वृत्त का नाम, जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण होता है तथा छठे और नवें वर्णों पर यति होती है।
स्रग*—स्त्री०=स्रक्।
स्रगाल†—पु०=शृगाल (सियार)।
स्रग्दाम (न्)—पु० [सं०] वह डोरा या सूत, जिसमें माला के फूल पिरोये रहते है।
स्रग्धर—वि०[स०] पुष्प-हार धारण करनेवाला।
स्रग्धरा—स्त्री०[स०]१ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में म र भ न य य य) ऽऽऽ ऽ।ऽ ऽ।। ।।। ।ऽऽ ।ऽऽ।ऽऽ होता है और ७,७,७ पर यति होती है। २. बौद्धो की एक देवी।

स्रग्वान्(वत्)—वि०[स०]१ जो माला पहने हो। २. जो स्रक् नामक माला पहने हो।
स्रग्विणी—स्त्री०[स०]१ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार रगण होते है। २ एक देवी का नाम।
स्रग्वी (विन्)—वि०[स०] जो माला पहने हो। मालाधारी।
स्रज—पु०[स०] एक विश्वेदेवा का नाम।
†स्त्री०=स्रक् (माला)।
स्रजन—पु०[स० सर्जन] रचना या सृष्टि करना। सर्जन।
स्रजना*—स०=सृजना (सृष्टि करना)।
स्रणिता†—वि०[स० शोणित] लाल।
स्रद्धा*—स्त्री० =श्रद्धा।
स्रपाटी—स्त्री०[?] पक्षी की चोच।
स्रम†—पु०=श्रम।
स्रमित†—भू० कृ० दे० 'श्रमित'।
स्रवंती—स्त्री०[स०]१. नदी। २ एक प्रकार की वनस्पति।
स्रव—पु०[स०]१ बहाव। प्रवाह। २ झरना। क्षरण। ३. पेशाब। मूत्र।
†पु० दे० 'श्रवण'।
स्रवण—पु०[स०] [वि० स्रवणीय] १ बहने की क्रिया या भाव। बहाव। प्रवाह। २ गर्भ का समय से पहले गिरना। गर्भपात। ३ स्तन जिससे दूध निकलता है। छाती। (क्व०) उदा०—'विनु स्रवणा खीर पिला उआ।'—कबीर। ४. पसीना। ५ मूत्र। पेशाब।
स्रवण क्षेत्र—पु०[सं०]वह सारा क्षेत्र जहाँ का वर्षा-जल एकत्र होकर किसी नदी के मूल का रूप धारण करता हो। अपवाह-क्षेत्र। जाली। (कैचमेन्ट एरिया)
स्रवद्गर्भा—वि०[स०] (स्त्री या मादा पशु) जिसका गर्भ गिर गया हो।
स्रवन†—पुं०१ =स्रवण। २ =श्रवण।
स्रवना*—अ०[स० स्रवण]१ बहना। चूना। टपकना। २ गिरना। उदा०—अति गर्व गनई न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ ते।—तुलसी।
स०१ बहाना। २. गिराना। उदा०—चलत दशानन डोलति अवनी। गर्जत गर्भ स्रवहिं सुररवनी।—तुलसी।
स्रवा—स्त्री०[स०]१ मरोडफली। मूर्वा। २ जीवती। डोडी।
स्रष्टव्य—वि०[स०] जिसकी सृष्टि होने को हो या हो जानी चाहिए।
स्रष्टा—वि० [स० स्रष्टृ] १ सृष्टि या रचना करनेवाला। निर्माता। रचयिता।
पु०१ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३. शिव।
स्रष्टृता—स्त्री०[स०] सृष्टि करने का कार्य या भाव।
स्रष्टृत्व—पु०[स०]=स्रष्टता।
स्रसतर—पु०[० स्रस्तर] घास-पात का बिछावन। (डि०)
स्रस्त—भू० कृ०[स०]१ अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २ शिथिल। ढीला। उदा०—तान, सरिता वह स्रस्त शरीर।—निराला। ३ तोडा फोडा हुआ। ४ आहत। घायल। उदा०—'थके, टूटे गरुड से स्रस्त पन्नगराज जैसे।—दिनकर। ५ अलग किया हुआ। ६ धँसा हुआ। जैसे—स्रस्त नेत्र। ७ हिलता हुआ।
स्रस्तर—पु०[स०] बैठने का आसन।
स्रस्ति—स्त्री०[स०] स्रस्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव।
स्राकिशमिशी—स्त्री०[फा०] हलके बैंगनी रग का एक प्रकार का छोटा अगूर, जो क्वेटे मे होता है और जिसको सुखाकर किशमिश बनाते हैं।
स्राध†—पु०=श्राद्ध।
स्राप†—पु०=शाप।
स्रापित†—भू० कृ०=शापित।
स्राव—पु०[सं०]१ जीव-जतुओ और पेड-पौधो के भीतरी अगो से निकलनेवाला वह तरल पदार्थ या रस, जो विशेष उद्देश्य सिद्ध करता है। (सीक्रेशन) २ गर्भपात। गर्भस्राव। ३ वृक्षों आदि का निर्यास।
स्रावक—वि० [स०] [स्त्री० स्राविका] १ चुआनेवाला। २ बहाने या निकालनेवाला।
पु० काली (गोल) मिर्च।
†पु०=श्रावक।
स्रावकत्व—पु०[स०] पदार्थों का वह गुण या धर्म, जिसके कारण कोई अन्य पदार्थ उनमे से होकर निकल या रस जाता है।
स्रावगी†—पु०=सरावगी।
स्रावण—पु०[स०] [वि० स्रावित]१ बहा या चुआकर निकालना। २ दे० 'अभिस्रावण'।
†वि०[स०]=स्रावक।
†पु०=श्रावण।
स्रावणी—स्त्री०[स०] ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध।
†स्त्री०=श्रावणी।
स्रावित—भू० कृ०[स०] स्राव के रूप मे चुआया या निकाला हुआ।
स्रावी (विन्)—वि०[स०]१ चुआनेवाला। २ बहानेवाला।
स्राव्य—वि०[स०] जो चुआया, टपकाया या बहाया जा सके।
स्रिग†—पु०[स० शृग] चोटी। शिखर।
स्रिजन†—पु०=सर्जन।
स्रुक्—स्त्री०[स०]स्रुवा। (दे०)
स्रुगा†—पु०=स्वर्ग। (डि०)
स्रुग्जिह्व—पु०[स०] अग्नि।
स्रुत—भू० कृ०[स०] बहा या चूआ हुआ। क्षरित।
†वि०=श्रुत। उदा०—तदपि जथा स्रुत कहउँ बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी।—तुलसी।
स्रुति—स्त्री०[स०] बहाव। क्षरण।
†स्त्री०=श्रुति।
स्रुतिमाथ†—पु०[स० श्रुति+हिं० माथ] विष्णु।
स्रुव—पु०[स०] एक प्रकार की छोटी स्रुवा।
स्रुवा—स्त्री०[स०] १ लकडी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी कलछी जिससे हवनादि मे घी की आहुति देते हैं। २. सलई का पेड। ३ मरोड-फली।
स्रू—स्त्री०[स०]१ स्रुवा। (दे०) २ झरना। प्रपात।
स्रेनी†—स्त्री०=श्रेणी।
स्रोणि—पु०[स०] नितब। चूतड।

स्रोत—पु०[सं० स्रोतस्]१ पानी का बहाव। धारा। २ विशेषत. तीव्र धारा। ३ पानी का सोता। झरना। ४ आधार या साधन, जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या आती हुई किसी को मिलती रहे। (सोर्स) ५. वश-परम्परा। ६ वैद्यक के अनुसार शरीर के वे छिद्र या मार्ग जो पुरुषो मे प्रधानत. ९ और स्त्रियो मे ११ माने गये है। इनके द्वारा प्राण, अन्न, जल, रस, रक्त, मास, मेद, मल, मूत्र, शुक्र और आर्तव का शरीर मे सचार होना माना जाता है।

स्रोत आपत्ति—स्त्री०[सं०] बौद्ध शास्त्र के अनुसार निर्वाण-साधना की प्रथम अवस्था जिसमे सासारिक बन्धन शिथिल होने लगते है।

स्रोत आपन्न—वि०[सं०] जो निर्वाण साधना की प्रथम अवस्था पर पहुँचा हो।

स्रोत-पत—पु०[सं० स्रोत+पति] समुद्र। (डिं०)

स्रोतस्य—पु०[सं०]१. शिव का एक नाम। २ चोर।

स्रोतस्वती—स्त्री०[सं०]१ धारा। २. नदी।

स्रोतस्विनी—स्त्री०[सं०]१ धारा। २ नदी।

स्रोता†—पु० =श्रोता (सुननेवाला)।

स्रोतोऽजन—पु०[सं०] आँखो मे लगाने का सुरमा।

स्रोन†—पु०=श्रवण।

स्रोनित†—पु०=शोणित (रक्त)।

स्रोतिक—पु०[सं०] सीप। शुक्ति।

स्लिप—स्त्री०[अ०] कागज का वह छोटा टुकडा, जिस पर कुछ लिखा जाता हो। चिट।

स्लीपर—पु०[अ०]१ एक प्रकार की जूती, जो एडी की ओर से खुली होती है। चट्टी। २ बडी धरन। ३ रेलगाडियों मे वह डिब्बा, जिसमे से यात्रियो के सोने के लिए जगह आरक्षित होती है।

स्लेज—स्त्री०[अ०] एक प्रकार की बिना पहिए की गाडी, जो बर्फ पर घसीटती हुई चलती है।

स्लेट—स्त्री०[अं०] लोहे की चद्दर या काले पत्थर की बनी हुई चौरस पतली पटरी, जिस पर बच्चे चाक आदि से लिखते हैं।

स्वंग—पु०[सं०] आलिगन।

स्वजन—पु०[सं०] [भू० कृ० स्वजित] आलिगन करना। गले लगाना।

स्वः—पु० [सं०]१ अपनापन। आत्मत्व। निजत्व। २ भाई-बन्धु। गोती। ३. स्वर्ग। ४. विषाद। ५. धन-सम्पत्ति। ६ विष्णु का एक नाम।

वि० अपना । निज का।

स्वःपथ—पु०[सं०] (स्वर्ग का मार्ग) मृत्यु।

स्वःसरित (ा)—स्त्री०[सं०] गगा।

स्वःसुंदरी—स्त्री०[सं०] अप्सरा।

स्व—वि०[सं०] [भाव० स्वत्व] १ अपना। निज का। (सेल्फ) यौ० के आरम्भ मे। जैसे—स्वतत्र, स्वदेश। २ आपसे आप होने वाला। जैसे—स्वचालित।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ शब्दो के अत मे लगाकर ता, त्व, आदि की भाँति भाव-वाचकता (जैसे—निजस्व, परस्व) या प्राप्य धन (जैसे—धर्मस्व, राजस्व, स्वामिस्व) आदि का अर्थ देता है।

सर्व० आप। स्वय।

स्व-अर्जित—भू० कृ०[सं०] जिसका अर्जन किसी ने आप किया हो। स्वयं प्राप्त किया हुआ। (सेल्फ एक्वायर्ड)

स्व-कंपन—पु०[सं०] वायु। हवा।

स्वक—वि०[सं०] अपना, निजी।

पु०१. अपनी संपत्ति। २. स्वजन।

स्व करण—पु०[सं०] किसी चीज पर अपना स्वत्व जताना। दावा करना। (क्लेम)

स्व करणभाव—पु० [सं०] किसी वस्तु पर बिना अपना स्वत्व सिद्ध किये अधिकार करना। बिना हक साबित किये कब्जा करना।

स्वकर्म—पु०[सं०] १. अपना काम। २. अपना कर्त्तव्य और धर्म।

स्वकर्मी(मिन्)—वि० [सं०] १ अपना काम करनेवाला। २. अपने कर्त्तव्य और धर्म का पालन करनेवाला। ३. स्वार्थी।

स्वकीय—वि०[सं०] [स्त्री० स्वकीया] अपना। निजी।

पुं०=स्वजन।

स्वकीया—वि० सं० स्वकीय का स्त्री० रूप।

स्त्री० साहित्य में, वह नायिका जो विवाहिता हो तथा अपने ही पति मे अनुराग रखती हो। 'परकीया' का विपर्याय।

स्वक्ष*—वि०=स्वच्छ।

स्वगत—अव्य० [सं०] आप ही आप। स्वतः।

वि०१ अपने मे ग्रहण किया हुआ। २ मन मे आया हुआ।

पुं० स्वगत-कथन। (दे०)

स्वगत-कथन—पुं०[सं०]१ मन में आई हुई बात। २ मन मे आई हुई बात कहना। ३ भारतीय नाटकों में तीन प्रकार के संवादो मे से एक, जिसमे अभिनेता कोई बात ऐसे ढंग से कहता है कि मानो दूसरे अभिनेता या पात्र उसकी बात सुन ही न रहे हो और वह मन ही मन कुछ कह अथवा सोच-समझ रहा हो। इसे 'अश्राव्य' भी कहते हैं। (सॉलिलोक्वी)

विशेष—इस प्रकार वह मानो दर्शको पर अपने मनोभाव प्रकट कर देता है। आधुनिक नाटको मे इस प्रकार का कथन या सवाद अच्छा नहीं माना जाता।

स्व-गुप्ता—वि० स्त्री०[सं०]१. जो अपने आप को गुप्त रखता या छिपाता हो। २. केवाँच। कौंछ।

स्त्री० लजालू। लज्जालू।

स्व-ग्रह—पु०[सं०] बालको को होनेवाला एक प्रकार का रोग।

स्व-चर—वि०[सं०] जो खुद चलता हो।

स्व-चल—वि०[सं०]१. आप से आप चलनेवाला। २ (कार्य) जो बिना किसी चेतन-प्रेरणा के अथवा आप से आप या प्राकृतिक रूप से होता हो। (ऑटोमेटिक)। ३ दे० 'स्वचालित'।

पु० प्रायः मनुष्य के आकार का एक प्रकार का यत्र, जो अदर के कल-पुरजो के द्वारा इधर-उधर चलता-फिरता और कई तरह के काम करता है। (ऑटोमेटन)

स्व-चालक—वि०[सं०] (यत्र या उसका कोई अग) जो बिना किसी विशिष्ट प्रक्रिया के केवल साधारण झटके आदि की सहायता से स्वयं चलता या यत्र को चलाता हो। (सेल्फ स्टार्टर)

स्व-चालित—वि०[सं०] (यत्र) जिसके अदर ऐसे कल-पुरजे लगे हो कि

एक पुरजा चलाने से ही वह आप से आप चलने या कई काम करने लगता हो। (ऑटोमेटिक)

स्वचित्त-कारु—पु०[स०] वह शिल्पी, जो किसी श्रेणी के अन्तर्गत होते हुए भी स्वतन्त्र रूप से काम करता हो। स्वतन्त्र कारीगर। (कौं०)

स्वच्छद—वि०[स०] [भाव० स्वच्छदता]१ इच्छा, मौज या रुचि के अनुसार अथवा सनक मे आकर काम करनेवाला। २. किसी प्रकार के अकुश, नियत्रण या मर्यादा का ध्यान न रखते हुए मनमाने ढग से आचरण या व्यवहार करनेवाला। ३ नैतिक और सामाजिक दृष्टि से अनुचित तथा निंदनीय आचरण या व्यवहार करनेवाला। भ्रष्ट चरित्रवाला। (वॉन्टन) ४ (जीव, जतु या प्राणी) जो विना किसी प्रकार की अडचन या बाधा के जहाँ चाहे वहाँ विचरण करता फिरता हो। ५ (पेड पौधा या वनस्पति) जो जगलो और मैदानो मे आप से आप उत्पन्न हो।

क्रि० वि० विना किसी भय, विचार या सकोच के।

पु० कार्तिकेय या स्कद का एक नाम।

स्वछदचारिणी—स्त्री० [स०] १ दुश्चरित्रा स्त्री। पुश्चली। २ वेश्या। रडी।

स्वच्छंदचारी (रिन्)—वि० [स०] [स्त्री० स्वच्छदचारिणी]१ अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। स्वेच्छाचारी। मनमौजी। २ मनमाने ढग पर इधर-उधर घूमता रहनेवाला।

स्वछंदता—स्त्री०[स०] स्वच्छद होने की अवस्था, गुण या भाव।

विशेष—स्वच्छदता, स्वतत्रता और स्वाधीनता का अन्तर जानने के लिए दे० 'स्वाधीनता' का विशेष।

स्वच्छ—वि०[स०] [भाव० स्वच्छता]१ जिसमे किसी प्रकार की मैल या गदगी न हो। निर्मल। साफ। २ उज्ज्वल। शुभ्र। चमकीला। ३ नीरोग। स्वस्थ। ४ स्पष्ट। ५ पवित्र। शुद्ध। ६ निष्कपट।

पु०१ विल्लौर। स्फटिक। २ मोती। मुक्ता। ३ अभ्रक। अवरक। स्वर्णमाक्षिक। रौप्यमाक्षिक। ४ सोनामक्खी। ५ रूपामक्खी। ६ सोने और चाँदी का मिश्रण। ७ विमल नामक उपधातु। ८ वेर का पेड। वदरीवृक्ष। ९ विमल नामक उपधातु।

स्वच्छक—वि० [स०] १ स्वच्छ करनेवाला। (क्लीनर) २ बहुत साफ या चमकीला।

स्वच्छता—स्त्री०[स०] १ स्वच्छ होने की अवस्था, गुण या भाव। २ निर्मलता। विशुद्धता। ३ सफाई विशेषत· शरीर और आसपास की वस्तुओ-स्थानो आदि की ऐसी सफाई, जो स्वास्थ्य-रक्षा के लिए आवश्यक हो। (सैनिटेशन)

स्वच्छना*—स०[स० स्वच्छ] स्वच्छ या निर्मल करना। साफ करना।

स्वच्छ-भास—वि०[स०] स्वच्छ प्रकाशवाला। उदा०—गृहस्थी सीमा के स्वच्छ भास।—निराला।

स्वच्छ-मणि—पु०[स०] विल्लौर। स्फटिक।

स्वच्छा—स्त्री०[स०] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब।

स्वच्छी†—वि०=स्वच्छ।

स्वज—वि०[स०] [स्त्री० स्वजा]१ स्वय उत्पन्न होनेवाला। २. जिसे स्वय उत्पन्न किया हो। ३. स्वाभाविक। प्राकृतिक।

पु०१ पुत्र। २. पसीना। ३. खून।

स्वजन—पु०[स०]१. अपने परिवार के लोग। आत्मीय जन। २. सगे-सवधी। रिश्ते-नाते के लोग। रिश्तेदार।

स्वजनता—स्त्री० [स०] १. स्वजन होने का भाव। आत्मीयता। २. नातेदारी। रिश्तेदारी।

स्व-जन्मा (न्मन्)—वि०[स०] जो अपने आप उत्पन्न हुआ या जन्मा हो। अपने आप से उत्पन्न या जनमा हुआ (ईश्वर आदि)।

स्वजा—स्त्री०[सं०] पुत्री। वेटी।

स्व-जात—वि०[स०] अपने से उत्पन्न।

पु० पुत्र। वेटा।

स्व-जाति—स्त्री० [स०]१. अपनी जाति। अपनी कौम। २ अपनी किस्म। अपना प्रकार।

स्व-जातीय—वि०[स०]१ किसी की दृष्टि से उसी की जाति या वर्ग का। जैसे—अपने स्वजातियों के साथ खान-पान करने मे कोई हानि नही है। २ एक ही जाति या वर्ग का। जैसे—ये दोनो वृक्ष स्वजातीय हैं।

स्वतंत्र—वि०[स०] [भाव० स्वतत्रता]१ जिसका तत्र या शासन अपना हो। फलत जो किसी के तत्र अर्थात् दवाव या शासन मे न हो। २. जो विना किसी प्रकार के दवाव या नियत्रण के स्वय सोच-समझ कर सव काम कर सकता हो। ३ जो किसी प्रकार के दवाव या वधन मे न पडा हो। जो विना वाधा या रुकावट के इधर-उधर आ-जा सकता हो। आजाद। (फ्री) ४. (काम या वात) जिसमे किसी दूसरे का अवलव, आधार या आश्रय न लिया गया हो। जैसे—(क) स्वतन्त्र रूप से कविता करना या ग्रथ लिखना। (ख) स्वतन्त्र मत-दान। ५ जो औरो के सपर्क आदि से रहित या सवसे अलग हो। जैसे—इस मकान मे दोनो किरायेदारो के आने-जाने के स्वतन्त्र मार्ग हैं। ६ अलग। जुदा। भिन्न। जैसे—ये दोनो प्रश्न एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं। ७ नियमो, विधियो आदि के वधन से मुक्त या रहित। ८ (व्यक्ति) जो ऐसे राज्य का नागरिक या प्रजा हो, जिसमे निरकुश या स्वेच्छाचारी शासन न हो। (फ्री) जैसे—जव से भारत स्वाधीन हुआ है, तव से यहाँ के निवासी भी स्वतत्र नागरिक हो गये हैं। ९. वालिग। वयस्क। सयाना।

स्वतंत्रता—स्त्री० [सं०]१ स्वतन्त्र रहने या होने की अवस्था या भाव। २ ऐसी स्थिति जिसमे विना किसी वाहरी दवाव, नियत्रण या वधन के स्वय अपनी इच्छा से सोच-समझकर सव काम करने का अधिकार होता है। आजादी। (फ़्रीडम) ३ वह अवस्था, जिसमे विना किसी प्रकार की राजकीय या शासनिक वाधा या रोक-टोक के सभी उचित और सगत काम या व्यवहार करने का अधिकार होता है। स्वातन्त्र्य। आजादी। (लिवर्टी) जैसे—भारत मे सव को धर्म, भाषण और विवेक सवधी स्वतन्त्रता प्राप्त है।

विशेष—स्वच्छदता, स्वतन्त्रता और स्वाधीनता का अतर जानने के लिए दे० 'स्वाधीनता' का विशेष।

स्वतः—अव्य० [स० स्वतस्] आप से आप। अपने आप। आपही। स्वय। जैसे—मैंने स्वत उसे रुपये दे दिये।

स्वतोविरोध—पु०[सं० स्वत +विरोध] आप ही अपना विरोध या खडन करना।

स्वतोविरोधी—वि०[स० स्वत:+विरोधी] अपना ही विरोध या खडन करनेवाला।

स्वत्व—पु० [स०]१. स्व का भाव। अपनापन। २ वह अधिकार जिसके आधार पर कोई चीज अपने पास रखी या किसी से ली या माँगी जा सकती हो। अधिकार। हक। (राइट) ३. वह स्थिति जिसमे किसी वस्तु या विषय के हानि-लाभ से किसी व्यक्ति का विशेष रूप से सबध हो। हित।

स्वत्व शुल्क—पु० [स०] वह आवर्त्तक और नियतकालिक धन, जो किसी भूमि के स्वामी, किसी नई वस्तु के आविष्कारक, किसी ग्रथ के रचयिता अथवा ऐसे ही और किसी व्यक्ति को इसलिए बराबर मिलता रहता है कि दूसरे लोग उसकी वस्तु या कृति से आर्थिक लाभ उठाने का अधिकार या स्वत्व प्राप्त कर लेते है। (रायल्टी)

स्वत्वाधिकार—पु० [स० स्वत्व+अधिकार] वह अधिकार, जो स्वत्व के रूप मे हो। दे० 'स्वत्व'।

स्वत्वाधिकारी (रिन्)—पु० [स०] [स्त्री० स्वत्वाधिकारिणी] १. वह जिसे किसी बात का पूरा स्वत्व या अधिकार प्राप्त हो। २. स्वामी। मालिक।

स्वदन—पु०[स०]१ खा या चखकर स्वाद लेना। आस्वादन। २ लोहा।

स्वदेश—पु०[स०] अपना देश। मातृभूमि। वतन।

स्वदेशाभिष्यदव—पु०[स०] राष्ट्र मे जहाँ आबादी बहुत अधिक हो गई हो, वहाँ से कुछ जनता को दूसरे प्रदेश मे बसाना। (कौ०)

स्वदेशी—वि०[स० स्वदेशीय]१. अपने देश मे होनेवाला। जैसे—स्वदेशी कपडा। २ अपने देश से सबध रखनेवाला।

स्वध—पु०[स०]१ अपना धर्म। २. अपना कर्त्तव्य और कर्म।

स्वधर्म—पु० [स०]१ अपना धर्म या सप्रदाय। २ अपना उचित कर्त्तव्य।

स्वधर्म-शास्त्र—पु०] व्यक्तिक विधि।

स्वधा—स्त्री०[स०]१ पितरो के निमित्त दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृ अन्न। २ दक्ष की एक कन्या, जो पितरो की पत्नी कही गई है।

अव्य० एक शब्द या मत्र, जिसका उच्चारण देवताओ या पितरो को हवि देने के समय किया जाता है। जैसे—तस्मैस्वधा।

स्वधाधिप—पु०[स०] अग्नि।

स्वधाप्रिय—पु०[स०] अग्नि।

स्वधाभुक्—पु०[स० स्वधाभुज्]१ पितर। २ देवता।

स्वधाभोजी (जिन्)—पु०[स०] पितृगण। पितर।

स्वधाशन—पु०[स०] पितृगण। पितर।

स्वधिति—पु० स्त्री० [स०]१ कुल्हाडी। कुठार। २ वज्र।

स्वधिष्ठान—वि०[स०] अच्छी स्थिति या स्थान से युक्त।

स्वधिष्ठित—भू० कृ० [स०] १ जो ठहरने या रहने के लिए अच्छा हो। २ अच्छी तरह सिखलाया या सधाया हुआ हो।

स्वधीत—भू० कृ०[स०] अच्छी तरह पढा हुआ। सम्यक् रूप से अध्ययन किया हुआ।

स्वनंदा—स्त्री०[स०] दुर्गा।

स्वन—पु०[स०] शब्द। ध्वनि। आवाज।

स्वन-चक्र—पु०[स०] सभोग का एक प्रकार का आसन या रतिबन्ध।

स्वनाम-धन्य—वि०[स०] (व्यक्ति) जो अपने नाम से ही धन्य या प्रसिद्ध हो।

स्वनामा (मन्)—वि०[स०] स्वनाम-धन्य।

स्वनि—पु०[स०]१ शब्द। आवाज। २. अग्नि। आग।

स्वनिक—वि०[स०] शब्द करनेवाला।

स्वनित—भू० कृ०[स०] ध्वनित। शब्दित।

पु० १ आवाज। २ शब्द। ३ बादलो की गरज। ३. किसी प्रकार का जोर का शब्द या गडगडाहट।

स्वन्न—पु०[स०]१. उत्तम अन्न। २. अच्छा आहार या भोजन।

स्वपच†—पु०=श्वपच (चाडाल)।

स्वपन—पु०[स०]१ सोने की क्रिया या भाव। २. सोने की अवस्था। निद्रा। नींद। ३ सपना। स्वप्न।

स्वपनीय—वि०[स०] निद्रा के योग्य। सोने लायक।

स्वपना†—पु०=सपना (स्वप्न)।

स्वप्तव्य—वि०[स०] निद्रा के योग्य।

स्वप्न—पु०[स०]१. सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २ सोये रहने की दशा मे मानसिक दृष्टि के सामने आनेवाली कुछ विशिष्ट असबद्ध और काल्पनिक घटनाएँ, चित्र और विचार। सोये रहने पर दिखाई देनेवाली ऐसी विचित्र घटनाएँ, जो अवास्तविक होती हैं। सपना। ख्वाब। ३ उक्त प्रकार से दिखाई देनेवाली घटनाओ का सामूहिक रूप। सपना। ख्वाब। ४ मन ही मन की जानेवाली बडी-बडी कल्पनाएँ और बाँधे जानेवाले बाँधनूँ। (ड्रीम, अतिम तीनो अर्थो के लिए) जैसे—आप तो उसी तरह रईस बनने के स्वप्न देखा करते है।

स्वप्नक—वि०[स० स्वप्नज] सोनेवाला। निद्राशील।

स्वप्न-गृह—पु०[स०] सोने का कमरा। शयनागार। शयन-गृह।

स्वप्न-दर्शन—पु०[स०] साहित्य मे वह अवस्था, जब किसी को स्वप्न मे कोई देवता है और उसी देखने के फलस्वरूप उसके प्रति मन मे उस पर अनुरक्त होता है।

स्वप्नदर्शी (शिन्)—वि० [स०] १ स्वप्न देखनेवाला। २ स्वप्न-दर्शन करनेवाला। ३ मन ही मन बडी-बडी कल्पनाएँ करने और बडे-बडे बाँधनू बाँधने वाला। (ड्रीमर)

स्वप्न-दोष—पु०[स०] निद्रावस्था मे शृगारिक स्वप्न देखने पर वीर्यपात होना, जो एक प्रकार का रोग है।

स्वप्न स्थान—पु०[स०] सोने का कमरा। शयन-गृह। शयनागार।

स्वप्नांतिक—पु०[स०] वह चेतना, जो स्वप्न देखने के समय होती है।

स्वप्नादेश—पु० [स०] वह आदेश, जो किसी को किसी बडे स्वप्न मे मिला हो।

स्वप्नाना*—स० [स० स्वप्न+हिं० आना (प्रत्य०)] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना।

स्वप्नालु—वि०[स०] जिसे नीद आ रही हो। निद्राशील। निद्रालु।

स्वप्नावस्था—स्त्री०[स०]१ वह अवस्था, जिसमे स्वप्न दिखाई देता है। २ धार्मिक क्षेत्र मे लाक्षणिक रूप से सासारिक जीवन की अवस्था, जो स्वप्न के समान अवास्तविक और निस्सार मानी गई है।

स्वप्निल—वि०[स०]१ स्वप्न के रूप मे होनेवाला। २ स्वप्न के समान जान पडनेवाला। ३ सोया हुआ। सुप्त।

स्व-प्रकाश—वि०[सं०] जो स्वय प्रकाशमान् हो।
पु० निजी प्रकाश।

स्व-प्रमितिक—वि० [स०] जो विना किसी की सहायता के अपना सारा काम स्वय करता हो। जैसे—सूर्य जो आप ही प्रकाश देता है।

स्व-बरन†—पु०=सुवर्ण।

स्वबीज—पु०[स०] आत्मा।

स्वभाउ†—पु०=स्वभाव।

स्वभाव—पु० [स०] [वि० स्वाभाविक] १ अपना या निजी भाव। २ किसी पदार्थ का वह क्रियात्मक गुण या विशेषता, जो उसमे प्राकृतिक रूप से सदा वर्तमान रहती है। खासियत। जैसे—अग्नि का स्वभाव पदार्थों को जलाना और जल का स्वभाव उन्हे ठढा करना है। ३ जीव-जन्तुओ और प्राणियो का वह मानसिक रूप या स्थिति, जो उनकी समस्त जाति मे जन्मजात होती और सदा प्राय एक ही तरह से काम करती हुई दिखाई देती है। प्रकृति। (नेचर उक्त दोनो अर्थो के लिए) जैसे—चीते, भालू और शेर स्वभाव से ही हिंसक होते है। ४ मनुष्य के मन मे वह पक्ष, जो बहुत कुछ जन्मजात तथा प्राकृतिक होता है और जो उसके आचार-व्यवहार आदि का मुख्य रूप से प्रवर्तक होता और उसके जीवन मे प्राय अथवा सदा देखने मे आता है। मिजाज। (डिस्पोजीशन) जैसे—वह स्वभाव से ही क्रोधी (चिडचिडा, दयालु अथवा शात) है। ५ आदत। बान। (हैबिट) जैसे—तुम्हारा तो सबसे लडने का स्वभाव पड गया है।
क्रि० प्र०—पडना।—होना।

स्वभाव-कृपण—पु० [स०] ब्रह्मा का एक नाम।

स्वभावज—वि०[स०] जो स्वभाव या प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

स्वभावज अलंकार—पु०[स०] साहित्य मे, सयोग-शृगार के प्रसग मे स्त्रियो की कुछ विशिष्ट आकर्षक या मोहक अग-भगियाँ और बातें, जिनसे उनकी आतरिक भावनाएँ प्रकट होती है, और इसी लिए जिनकी गिनती उनके अलकारो मे होती है। लोक मे इसी तरह की बातो को 'हाव' कहते है। दे० 'हाव'।
विशेष—यह नायिकाओ के सात्त्विक अलकारो के तीन भेदो मे से एक है।

स्वभावतः (तस्)—अव्य०[स०] स्वभाव के फलस्वरूप। स्वाभाविक अर्थात् प्रकृतिजन्य रूप से। जैसे—उसे इस प्रकार झूठ बोलते देखकर मुझे स्वभावत क्रोध आ गया।

स्वभाव-दक्षिण—वि० [स०] जो स्वभाव से ही मीठी-मीठी बाते करने मे निपुण हो।

स्वभाव-सिद्ध—वि० [स०] स्वभाव से ही होनेवाला। प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

स्वभाविक†—वि०=स्वाभाविक।

स्वभावी—वि०[स० स्वभाविन्] [स्त्री० स्वभाविनी] १ स्वभाव वाला। जैसे—उग्र-स्वभावी। क्षमा-स्वभावी। २ मनमाना आचरण करनेवाला। ३. मनमौजी।

स्वभावोक्ति—स्त्री०[सं०] साहित्य मे एक प्रकार का अलंकार, जिसमे किसी वस्तु या व्यक्ति की स्वाभाविक क्रिआओ, गुणो, विशेषताओ आदि का ठीक उसी रूप मे वर्णन किया जाता है, जिस रूप मे वे कवि को दिखाई देती हैं। यथा—विहँसति सी दिये कुच आँचर विच बाँह। भीजे पट तट को चली न्हान सरोवर माँह। —बिहारी।
विशेष—इसमे किसी जातिवाचक पदार्थ के स्वाभाविक गुणो का वर्णन होता है, इसलिए कुछ लोग इस अलकार को 'जाति' भी कहते हैं। कुछ आचार्यो ने इसके 'सहज' और 'प्रतिज्ञाबद्ध' नाम के दो भेद भी माने हैं।

स्वभू—वि०, पु०=स्वयभू।

स्वयं—वि०[स० स्वयम्]१ सर्वनाम जिसके द्वारा वक्ता अपने व्यक्तित्व पर जोर देते हुए कोई बात कहता है। जैसे—मैं स्वय वहाँ गया था। २ अपने आप सब काम करनेवाला। जैसे—स्वय-चालित; स्वय-गामी। स्वयभर।
अव्य०१ एक आप से आप। विना किसी जोर या दबाव के। जैसे—उन्होंने स्वय सब बातें मान ली। २. विना किसी प्रयत्न के। जैसे—स्वय बातें खुल जायँगी।

स्वयं-ज्योति—वि०[स०] आप से आप प्रकाशमान् होने या चमकनेवाला।
पु० परब्रह्म। परमात्मा।

स्वयं-तथ्य—पु०[स०]ऐसा तथ्य या बात जो स्वय ही ठीक और सिद्ध हो और जिसे ठीक या सिद्ध करने के किसी प्रकार के तर्क प्रमाण आदि की अपेक्षया आवश्यकता न हो। (एक्जिअम)

स्वय-दत्त—पू० [स०] ऐसा पुत्र जो अपने माता-पिता के मर जाने अथवा उनकी मृत्यु के उपरान्त अथवा उनके द्वारा परित्यक्त होने पर अपने आप को किसी के हाथ सौंप दे और उसका पुत्र बन जाय। (धर्म-शास्त्र)

स्वयं-दूत—पु० [स०] साहित्य मे वह नायक, जो स्वय अपना प्रेम या वासना नायिका पर प्रकट करता हो।

स्वय-दूतिका, स्वय दूती—स्त्री० [स०] वह परकीया नायिका, जो अपना दूतत्व आप ही करती हो। नायक पर स्वय ही वासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।

स्वयं-पाक—पु० [स०] अपनी उदर-पूर्ति के लिए भोजन स्वय बनाना।

स्वयं-पाकी—पु० [स०] १ अपना भोजन स्वय बनानेवाला व्यक्ति। २ ऐसा व्यक्ति जो खुद बनाया हुआ ही भोजन करता हो और दूसरो के हाथ का बनाया हुआ न खाता हो।

स्वयं-प्रकाश—वि०[स०] जो स्वत प्रकाशित हो।
पु०१ ज्योतिपुज। २. परमात्मा।

स्वयं-प्रभ—पु०[स०] भावी २४ अर्हतो मे से चौथे अर्हत् का नाम। (जैन)
वि० स्वय-प्रकाश।

स्वयं-प्रभा—स्त्री०[स०] इन्द्र की एक अप्सरा, जिसे मय दानव हर लाया था और जिसके गर्भ से मदोदरी उत्पन्न हुई थी।

स्वयं-प्रमाण—वि०[स०] जो आप ही अपने प्रमाण के रूप मे हो और जिसके लिए किसी दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो। जैसे—वेद आदि स्वय प्रमाण हैं।

स्वयं-फल—वि० [स०] जो आप ही अपना फल हो अर्थात् किसी दूसरे कारण से उत्पन्न न हुआ हो।

स्वयं-भर—वि० [स०] १ अपने आप को या अपने मे का रिक्त स्थान आप ही भरनेवाला। २ (पिस्तौल या बदूक) जो अपने अदर रखी हुई गोलियो मे से क्रमश एक-एक गोली आप ही लेकर छोडे। (सेल्फ लोडिंग)

स्वयं-भु—पु० [स०] १ ब्रह्मा। २. अज। ३ वेद। ४ जैनियो के नौ वासुदेवो मे से एक। ५. स्वयभू।

स्वयं भुक्ति—पु० [स०] धर्मशास्त्र मे पाँच प्रकार के साक्षियो मे से ऐसा साक्षी, जो विना बुलाये आकर किसी वात की गवाही दे।

स्वयंभू—वि० [स०] १ आप से आप उत्पन्न होनेवाला। २. आप से आप वन जानेवाला (विना किसी शिक्षा, अधिकार, योग्यता आदि प्राप्त किये)। जैसे—स्वयभू नेता या सपादक।

पु०१ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३. शिव। ४ कामदेव। ५ काल। ६ शिवलिंगी नामक लता। ७. दे० 'स्वायभुव'।

स्वयंभूत—भू० कृ० [स०] जिसने अपना निर्माण स्वय किया हो। जो अपनी इच्छा शक्ति से अवतीर्ण हुआ या अस्तित्व मे आया हो। स्वयभू।

स्वयंभू-रमण—पु० [स०] अतिम महाद्वीप और उसके समुद्र का नाम। (जैन)

स्वयंवर—पु० [स०]१ स्वय वरण करना। स्वय चुनना। २ प्राचीन काल मे वह उत्सव या समारोह, जिसमे कन्या स्वय अपने लिए उपस्थित व्यक्तियो मे से वर को वरण करती थी। ३ कन्या द्वारा स्वय अपने लिए वर को वरण करने की रीति या विवान।

स्वयं-वरण—पु० [स०] कन्या का अपने इच्छानुसार अपने लिए पति चुनना या वरण करना।

स्वयंवरा—स्त्री० [सं०] ऐसी कन्या, जिसने अपने पति का वरण अपनी इच्छा से किया हो।

स्वयंवह—पुं० [स०] ऐसा वाजा, जो चावी देने पर आप से आप वजे। वि० स्वय अपने आप को वहन करनेवाला।

स्वयंवादि-दोष—पु० [स०] न्यायालय मे झूठी वात वार-वार दोहराने का अपराध।

स्वयंवादी—पु० [स०] मुकदमे मे जिरह के समय कोई झूठ वात वार-वार दोहरानेवाला व्यक्ति।

स्वयं-सिद्ध—वि० [स०] [भाव० स्वय-सिद्धि] (वात या तत्त्व) जो किसी तर्क या प्रमाण के विना आप ही ठीक और सिद्ध हो। सर्वमान्य। (एग्जिओमेटिक)

स्वयं-सिद्धि—स्त्री० [स०] [वि० स्वय सिद्ध] वह सर्वमान्य सिद्धान्त या तत्त्व, जिसे सिद्ध या प्रभावित करने की कोई आवश्यकता न हो। (एग्जियम)

स्वय-सेवक—पु० [स०] [स्त्री० स्वय-सेविका] १ व्यक्ति, जो किसी सेवा-कार्य मे अपनी इच्छा से लगता हो। २. किसी ऐसे सगठन का सदस्य, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगो की सेवा करना हो। (वालन्टियर)

स्वयसेवा—स्त्री० [स०] १. अपनी इच्छा या अत प्रेरणा से की जानेवाली दूसरो की सेवा। २. अपना काम स्वय करना।

स्वयंसेवी—पु०=स्वय-सेवक।

स्वयमर्जित—पु० [स०] स्वय कमाया हुआ धन या सपत्ति। अपनी कमाई।

स्वयमुक्ति—पु० [स०] पाँच प्रकार के साक्षियो मे से एक प्रकार का साक्षी। ऐसा साक्षी, जो विना वादी या प्रतिवादी के बुलाये स्वय ही आकर किसी घटना या व्यवहार के संवध मे कुछ वातें कहे। (व्यवहार)

स्वयमुपगत—पु० [स०] वह जो अपनी इच्छा से किसी का दास हो गया हो। (धर्मशास्त्र)

स्वयमेव—अव्य० [स०] आप ही आप। खुद ही। स्वय ही।

स्व-योनि—वि० [स०] जो अपना कारण अथवा अपनी उत्पत्ति का उद्गम आप ही हो।

स्वर्—पु० [स०] १. स्वर्ग। २ परलोक। ३ आकाश।

स्वर—पु० [स०] [वि० स्वरिक, स्वरित, भाव० स्वरता] १ कोमलता, तीव्रता, उतार-चढाव आदि से युक्त वह शब्द, जो प्राणियो के गले अथवा एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आघात पडने से निकलता है। २ स्वर-तंत्रियों के ढीले पडने और तनने के परिणाम-स्वरूप उत्पन्न होनेवाली कंठध्वनि। सुर। (साउन्ड)

मुहा०—**स्वर फूंकना**=कोई ऐसा काम या वात करना, जिसका दूसरे पर पूरा प्रभाव पडे अथवा वह अनुयायी या वशवर्ती हो जाय। **स्वर मिलाना**= किसी सुनाई पडते हुए स्वर के अनुसार स्वर उत्पन्न करना।

३ सगीत मे, उक्त प्रकार के वे सात निश्चित शब्द या ध्वनियाँ जिनका स्वरूप, तन्यता, तीव्रता आदि विशिष्ट प्रकार से स्थिर है। यथा—षड्ज, ऋषभ, गाधार, मध्यम, पचम, धैवत और निषाद।

विशेष—साम वेद मे सातो स्वरो के नाम इस प्रकार है—क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मद और अतिस्वार (या अतिस्वर) है। परन्तु यह उनका अवरोहण क्रम है और आजकल के म, ग, रे, स, नि ध, प के समान हे।

मुहा०—**स्वर उतारना**= स्वर नीचा या धीमा करना। **स्वर चढ़ाना**= स्वर ऊँचा या तेज करना। **स्वर निकालना**=कठ या वाजे से स्वर उत्पन्न करना। **स्वर भरना**=अभ्यास के लिए किसी एक ही स्वर का कुछ समय तक उच्चारण करना।

३. व्याकरण मे, वह वर्णात्मक ध्वनि या शब्द जिसका उच्चारण विना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के और आप से आप होता है और जिसके विना किसी व्यजन का उच्चारण नही हो सकता। (वॉवेल) यथा—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ।

विशेष—आज-कल का ध्वनि विज्ञान वतलाता है कि कुछ अवस्थाओ मे विना स्वर की सहायता के भी कुछ व्यजनो का उच्चारण सभव है।

४. वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढाव जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित नामक तीन प्रकारो का होता है। ५ साँस लेने के समय नाक से निकलनेवाली वायु के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। ६ आकाश।

स्वर-कर—पु० [स०] ऐसा पदार्थ जिसके सेवन से गले का स्वर मधुर और सुरीला होता है।

स्वर कलानिधि—स्त्री० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्वर-क्षय—पु०=स्वर-भग।

स्व-रक्षा—स्त्री०[स०] किसी प्रकार के आक्रमण से स्वय या अपने आप की जानेवाली अपनी रक्षा। (सेल्फ डिफेन्स)

स्वरक्षु—स्त्री०[स०] वक्षु महानदी का एक नाम।

स्वरग*—पु०=स्वर्ग।

स्वर-ग्राम—पु० [स०] सगीत मे, सा से नि तक के सातो स्वरो का समूह। सप्तक।

स्वरघ्न—पु०[स०] सुश्रुत के अनुसार वायु के प्रकोप से होनेवाला गले का एक रोग जिसके कारण गले से ठीक स्वर नही निकलता। गला बैठना।

स्वर तंत्री—स्त्री०[स०] स्वर-सूत्र। (दे०)

स्वरता—स्त्री०[स०]१ 'स्वर' होने का भाव। २ 'स्वरित' होने की अवस्था या भाव। (सोनोरिटी)

स्वर-नलिका—स्त्री०[स०] स्वर-सूत्र। (दे०)

स्वरनादी(दिन्)—पु०[स०] मुँह मे फूँककर वजाया जानेवाला वाजा। (सगीत)

स्वर नाभि—पु०[स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का वाजा।

स्वर-पत्तन—पु० [स०] सामवेद।

स्वर-पात—पु०[स०]१ किसी शब्द का उच्चारण करने मे उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना। २. उचित वेग, रुकाव आदि का ध्यान रखते हुए होनेवाला शब्दो का उच्चारण। (ऐक्सेन्ट)

स्वर प्रधान—वि०[स०] ऐसा राग जिसमे स्वर का ही आग्रह या प्रधानता हो। ताल की प्रधानता न हो।

स्वर-बद्ध—भू० कृ० [स०] स्वरो मे वाँधा हुआ। (सगीत)

स्वर-ब्रह्म—पु० [स०] ब्रह्म की स्वर मे होनेवाली अभिव्यक्ति।

स्वर-भंग—पु०[स०]१ उच्चारण मे होनेवाली वाधा या अस्पष्टता। २ आवाज या गला वैठना, जो एक रोग माना गया है। ३ साहित्य मे हर्ष, भय, क्रोध, मद आदि से गला भर आना अथवा जो कुछ कहना हो उसके वदले मुख से और कुछ निकल जाना, जो एक सात्त्विक अनुभाव माना गया है।

स्वर-भंगी (गिन्)—पु०[स०] १ वह जिसे स्वरभग रोग हुआ हो। २ वह जिसका गला वैठ गया हो और मुँह से साफ आवाज न निकलती हो। ३ एक प्रकार का पक्षी।

स्वर-भाव—पु० [स०] सगीत मे, विना अग-सचालन किये केवल स्वर मे ही दु ख-सुख आदि के भाव प्रकट करने की क्रिया। (यह चार प्रकार के भावो मे एक माना गया है।)

स्वर-भूषणी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्वरभेद—पु०[स०] स्वर भग। (दे०)

स्वरमंडल—पु०[स०] वीणा की तरह का एक वाजा जिसका प्रचार आजकल वहुत कम हो गया है।

स्वर-मंडलिका—स्त्री०[स०]=स्वर-मडल।

स्वर-यंत्र—पु०[स०] गले के अदर का वह अवयव या अश जिसकी सहायता या प्रयत्न से स्वर या शब्द निकलते है। (लैरिक्स)

स्वर-रंजनी—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्वर-लहरी—स्त्री० [स०] १. ऊँचे-नीचे स्वरो की वह लहर या क्रम जो प्राय सगीत आदि के लिए उत्पन्न की जाती है। २ सगीत मे, वह झकार या आलाप, जो कुछ समय तक एक ही रूप मे होता है।

स्वर-लासिका—स्त्री०[स०] वाँसुरी या मुरली।

स्वर लिपि—स्त्री० [स०] सगीत मे किसी गीत, तान, राग, लय आदि मे आनेवाले सभी स्वरो का क्रमवद्ध लेख। (नोटेशन)

स्वरवाही(हिन्)—पु० [स०] वह वाजा या वाजो का समूह जो स्वर उत्पन्न करता हो। ताल देनेवाले वाजो से भिन्न। जैसे—वशी, वीणा, सारगी, आदि। (ढोल, तवले, मँजीरे आदि से भिन्न)

स्वर-वेधी—वि०=शब्द-वेधी।

स्वर शास्त्र—पु०[स०] वह शास्त्र जिसमे स्वर-सवधी सव वातो का विवेचन हो। स्वर-विज्ञान।

स्वर-शून्य—वि० [स०] [भाव० स्वर-शून्यता] (ध्वनि) जिसमे मधुरता, सगीतमयता या लय न हो।

स्वर-संक्रम—पु० [स०] संगीत मे, स्वरो का आरोह और अवरोह। स्वरो का उतार और चढाव।

स्वर-संधि—स्त्री०[स०] व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान मे, दो या अधिक पास-पास आनेवाले स्वरो का मिलकर एक होना। स्वरो का मेल।

स्वरस—पु०[स०]१ वैद्यक मे, पत्ती आदि को भिगोकर और अच्छी तरह कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस। २ किसी चीज का अपना प्राकृतिक स्वर।

स्वर-समुद्र—पु०[स०] एक प्रकार का पुराना वाजा, जिसमे वजाने के लिए तार लगे होते थे।

स्वरसादि—पु० [स०] ओषधियो को पानी मे औटाकर तैयार किया हुआ काढा। कषाय।

स्वर-साधन—पु० [स०] संगीत मे, वार-वार कठ से उच्चारण करते हुए प्रत्येक स्वर ठीक तरह से निकालने की क्रिया या भाव।

स्वर-सूत्र—पु० [स०] गले और छाती के अदर का सूत्र के आकार का-वह अग, जिसकी सहायता से स्वर या आवाज निकलती है। (वोकल कॉर्ड)

स्वरांत—वि०[स०] (शब्द) जिसके अत मे कोई स्वर हो। जैसे—माला, रोटी आदि।

स्वरातर—पु० [स०] दो स्वरो के उच्चारण के वीच का अन्तर या विराम।

स्वरांश—पु०[स०] सगीत मे, स्वर का आधा या चौथाई अग।

स्वरा—स्त्री० [स०] ब्रह्मा की वडी पत्नी जो गायत्री की सपत्नी कही गई है।

स्वरागम—पु०[स० स्वर+आगम] निरुक्त मे किसी शब्द के दो वर्णों के वीच मे किसी प्रकार कोई स्वर आ लगना। जैसे—कर्म से करम रूप वनने मे अ का स्वरागम हुआ है।

स्वराघात—पु०[स० स्वर+आघात] किसी शब्द का उच्चारण करने, किसी को पुकारने, कुछ कहने, गाने आदि के समय किसी व्यजन या स्वर पर साधारण से अधिक जोर देने या अधिक प्राण-शक्ति लगाने की क्रिया या भाव। (ऐक्सेन्ट)

अस्तित्व न होने पर भी उनके रूप का आभास (स्वरूपाभास) होता है।

स्वरूपासिद्ध—वि०[स०] जो स्वयं अपने स्वरूप से ही असिद्ध होता हो। कभी सिद्ध न हो सकनेवाला।

स्वरूपी (पिन्)—वि०[स०]१ स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त। २ जो किसी के स्वरूप के अनुसार बना हो अथवा जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।

पुं०=सारूप्य।

स्वरूपोपनिषद्—स्त्री०[स०] एक उपनिषद् का नाम।

स्वरेणु—स्त्री०[स०] सूर्य की पत्नी संज्ञा का एक नाम।

स्वरोचिस्—पु० [स०] पुराणानुसार स्वारोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गंधर्व के पुत्र थे और वरूथिनी नाम की अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

स्वरोद—पु०=सरोद (बाजा)।

स्वरोदय—पु०[स०] वह शास्त्र जिसके द्वारा इडा, पिंगला, सुषुम्ना आदि नाडियों के श्वासो के आधार पर सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते है। दाहिने और बाएँ नथुने से निकलते हुए श्वासो को देखकर शुभ और अशुभ फल कहने की विद्या।

स्वर्गंगा—स्त्री०[स०] आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

स्वर्ग—पु०[स०] [वि० स्वर्गीय] १ हिंदुओ के अनुसार ऊपर के सात लोको में से तीसरा लोक, जिसका विस्तार सूर्यलोक से ध्रुवलोक तक कहा गया है और जिसमें ईश्वर तथा देवताओं का निवास माना गया है। यह भी माना जाता है कि पुण्यात्माओं और सत्कर्मियो की मृत्यु होने पर उनकी आत्माएँ इसी लोक मे जाकर निवास करती है। देवलोक।

पद—स्वर्ग की धार=आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

मुहा०—स्वर्ग के पथ पर पैर रखना=(क) यह लोक छोडकर परलोक के लिए प्रस्थान करना। मरना। (ख) जान जोखिम मे डालना। **स्वर्ग छूना**= स्वर्ग के सुख का इसी जीवन मे अनुभव करना। उदा०—मदोन्मत्ता महर्षि-सुख देव थी स्वर्ग छूती।—हरिऔध। **स्वर्ग जाना या सिधारना**=परलोकगामी होना। मरना।

२ अन्य धर्मों के अनुसार इसी प्रकार का वह विशिष्ट स्थान जो आकाश मे माना जाता है। बिहिश्त। (हेवेन)

विशेष—भिन्न-भिन्न धर्मो मे स्वर्ग की कल्पना अलग-अलग प्रकार मे की गई है। तो भी प्राय सभी धर्मो के अनुसार इसमे ईश्वर, देवताओ, देवदूतो और पवित्र आत्माओ का निवास माना जाता है और यह सभी प्रकार के सुखो और सौन्दर्यों का भडार कहा गया है।

३ बोल-चाल मे पृथ्वी के ऊपर का वह सारा विस्तार, जिसमे सूर्य, चाँद, तारे, बादल आदि निकलने, डूबते या उठते-बैठते है। ४ कोई ऐसा स्थान, जहाँ सभी प्रकार के सुख प्राप्त हो और नाम को भी कोई कष्ट या चिंता न हो। जैसे—[illegible] तो हमे स्वर्ग जान पडता है। ५ आकाश। आसमान।

पद—स्वर्ग-सुख=सभी प्रकार का बहुत अधिक सुख।

मुहा०—(किसी चीज का) स्वर्ग छूना=बहुत अधिक ऊँचा होना। जैसे—वहाँ की अट्टालिकाएँ स्वर्ग छूती थी।

६ ईश्वर। ७ सुख। ८ प्रलय।

स्वर्ग-काम—वि०[स०] जो स्वर्ग की कामना रखता हो। स्वर्ग-प्राप्ति की इच्छा रखनेवाला।

स्वर्ग-गत—भू० कृ०, वि०[स०] जो स्वर्ग चला गया हो। मरा हुआ। स्वर्गीय।

स्वर्ग गति—स्त्री०[स०] स्वर्ग जाना। मरना।

स्वर्ग गमन—पु०[स०] स्वर्ग सिधारना। मरना।

स्वर्ग-गामी (मिन्)—वि० [स०]१ स्वर्ग की ओर गमन करनेवाला। स्वर्ग जानेवाला। २ जो स्वर्ग जा चुका अर्थात् मर चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्ग गिरि—पु०=स्वर्णगिरि (सुमेरु पर्वत)।

स्वर्ग-तरंगिणी—स्त्री०[स०] स्वर्ग की नदी, मंदाकिनी। आकाश-गंगा।

स्वर्ग तरु—पु०[स०]१. कल्पतरु। २ पारिजात। परजाता।

स्वर्गति—स्त्री० [स०] स्वर्ग की ओर जाने की क्रिया। स्वर्ग-गमन।

स्वर्गद—वि०[स०] जो स्वर्ग पहुँचाता हो। स्वर्ग देनेवाला।

स्वर्गदायक—वि०=स्वर्गद।

स्वर्ग धेनु—स्त्री०[स०] कामधेनु।

स्वर्ग नदी—स्त्री०[स० स्वर्ग+नदी] आकाश गंगा।

स्वर्ग-पताली—स्त्री० [स० स्वर्ग+पाताल] ऐसा बैल जिसका एक सींग सीधा ऊपर को उठा हुआ और दूसरा सीधा नीचे की ओर झुका हुआ हो।

स्वर्ग-पति—पु०[स०] स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

स्वर्ग पुरी—स्त्री०[स०] इन्द्र की पुरी, अमरावती।

स्वर्ग भूमि—स्त्री०[स०] १. एक प्राचीन जनपद जो वाराणसी के पश्चिम ओर था। २ ऐसा स्थान जहाँ स्वर्ग का सा आनन्द और सुख हो।

स्वर्ग-मंदाकिनी—स्त्री०[स०] आकाशगंगा। मंदाकिनी।

स्वर्ग-योनि—पु०[स०] यज्ञ, दान आदि वे शुभ कर्म, जिनके कारण मनुष्य स्वर्ग जाता है।

स्वर्ग-लाभ—पु०[स०] स्वर्ग की प्राप्ति। स्वर्ग पहुँचना। मरना।

स्वर्ग लोक—पु० दे० 'स्वर्ग'।

स्वर्ग लोकेश—पु०[स०] १ स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र। २ तन। शरीर।

स्वर्ग-वधू—स्त्री० [स०] अप्सरा।

स्वर्ग-वाणी—स्त्री०[स० स्वर्ग+वाणी] आकाशवाणी।

स्वर्ग वास—पु०[स०]१ स्वर्ग मे निवास करना। स्वर्ग मे रहना। २ मर कर स्वर्ग जाना। मरना। जैसे—आज उनका स्वर्गवास हो गया।

स्वर्गवासी (सिन्)—वि०[स०] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १ स्वर्ग मे रहनेवाला। २ जो मरकर स्वर्ग जा चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गसार—पु०[स०] ताल के चौदह मुख्य भेदो मे से एक। (संगीत)

स्वर्ग स्त्री—स्त्री०[स०] अप्सरा।

स्वर्गस्थ—भू० कृ०, वि०[स०]१ स्वर्ग मे स्थित। स्वर्ग का। २ जो मरकर स्वर्ग जा चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गापगा—स्त्री०[स०] आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

स्वर्गामी (मिन्)—वि०[सं० स्वर्गामिन्]=स्वर्गगामी।

स्वर्गारूढ—भू० कृ०, वि० [स०] स्वर्ग सिधारा हुआ। स्वर्ग पहुँचा हुआ। मृत। स्वर्गवासी।

स्वर्ण लता—स्त्री० [स०] १ मालकगनी। ज्योतिष्मती। २ पीली जीवती।

स्वर्ण-वज्र—पु० [स०] एक प्रकार का लोहा।

स्वर्ण-वर्ण—पु० [स०] १ कण-गुगुल। २ हरताल। ३ सोना गेरू। ४ दारुहलदी।

स्वर्ण वर्णा—स्त्री०[स०]१ हलदी। २ दारुहलदी।

स्वर्ण वल्ली—स्त्री०[स०]१ सोनावल्ली। रक्तफला। २ पीली जीवती।

स्वर्ण विंदु—पु०[स०]१ विष्णु। २ एक प्राचीन तीर्थ।

स्वर्ण शिख—पु०[स०] स्वर्णचूड या नीलकठ नामक पक्षी।

स्वर्ण-शृगी (गिन्)—पु० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत जो सुमेरु पर्वत के उत्तर ओर माना जाता है।

स्वर्ण सिंदूर—पु०=रस-सिंदूर।

स्वर्णाकर—पु० [स०] सोने की खान।

स्वर्णाचल—पु०[स०] उडीसा प्रदेश का भुवनेश्वर नामक तीर्थ।

स्वर्णाद्रि—पु०[स०]=स्वर्णाचल।

स्वर्णाभ—वि०[स०]१ सोने की सी आभा या चमकवाला। २ सोने के रग का। सुनहला। ३ (प्रतिभूति) जो सब प्रकार से सुरक्षित हो और जिसके डूबने या व्यर्थ होने की कोई आशका न हो। (गिल्ट-एज्ड)
पु० हरताल।

स्वर्णारि—पु०[स०]१ गधक। २ सीसा नामक धातु।

स्वर्णिम—वि०[स०] सोने का। सुनहला।

स्वर्णुली—स्त्री०[स०] एक प्रकार का क्षुप। हेमपुष्पी। सोनुली।

स्वर्णोपधातु—पु०[स०] सोनामक्खी नामक उपधातु।

स्वर्धुनी—स्त्री०[स०] गगा।

स्वर्नगरी—स्त्री०[स०] स्वर्ग की पुरी, अमरावती।

स्वर्नदी—स्त्री०[स०] आकाश-गगा।

स्वर्पति—पु०[स०] स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

स्वर्भानु—पु०[स०]१ सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २ राहु नामक ग्रह।

स्वर्लोक—पु०[स०] स्वर्ग।

स्वर्वधू—स्त्री०[स०] अप्सरा।

स्वर्वापी—स्त्री०[स०] गगा।

स्वर्वेश्या—स्त्री०[स०] अप्सरा।

स्वर्वैद्य—पु० [स०] स्वर्ग के वैद्य, अश्विनीकुमार।

स्वल्प—वि०[स०] बहुत ही अल्प या कम। बहुत थोडा।
पु० नखी नामक गन्ध द्रव्य।

स्वल्पक—वि०[स०]=स्वल्प।

स्वल्प-विराम ज्वर—पु० [स०] ठहर ठहर कर थोडी देर के लिए उतरकर फिर आनेवाला ज्वर।

स्वल्प-व्यक्ति तंत्र—पु० दे० 'अल्प-तत्र'।

स्वल्पायु (स्)—वि० [स०] जिसकी आयु बहुत अल्प या थोडी हो। अल्पजीवी।

स्वल्पाहार—पु०[स०] बहुत कम या थोडा भोजन करना।

स्वल्पाहारी (रिन्)—वि०[स०] बहुत कम या थोडा भोजन करनेवाला।

स्वल्पिष्ठ—वि०[स०]१ अत्यन्त अल्प। बहुत ही कम। २ बहुत ही छोटा।

स्ववरन†—पु०]=सुवर्ण (सोना)।

स्ववर्णी रेखा†—स्त्री०=सुवर्ण रेखा (नदी)।

स्ववश—वि०[स०] [भाव० स्ववशता] १ जो अपने वश मे हो। स्वतन्त्र। २ जितेन्द्रिय।

स्ववशता—स्त्री०[स०] स्ववश होने की अवस्था, गुण या भाव।

स्ववश्य—वि०[स०] [भाव० स्ववश्यता] जो अपने ही वश मे हो। अपने आप पर अधिकार रखनेवाला।

स्ववासिनी—वि० स्त्री० [स०] (स्त्री) जो अपने घर मे रहती हो।
स्त्री० वह कुँआरी या विवाहिता कन्या, जो वयस्क होने के उपरान्त अपने पिता के घर मे ही रहती हो।

स्व-विवेक—पु०[स०] कुछ विशिष्ट नियमो और बधनो के अधीन रह कर उचित-अनुचित और युक्त-अयुक्त का विचार करने की शक्ति। (डिस्क्रीशन)

स्व-बीज—वि०[स०] जो अपना बीज या कारण आप ही हो।
पु० आत्मा।

स्व-शासन—पु०[स०] [भू० कृ० स्वशासित] १ अपने अधिक्षेत्र मे शासन, राजनीतिक प्रबन्ध आदि स्वय करने का पूरा अधिकार। (सेल्फ गवर्नमेंट) २ दे० 'स्वायत्त-शासन'।

स्वशुर—पु०=श्वसुर।

स्व-संभूत—वि०[स०] जो स्वय से उत्पन्न हो। स्वयभू।

स्व-संवेद्य—वि०[स०] जिसका सवेदन स्वय ही किया जा सके।

स्व-समुत्य—वि०[स०] अपने ही देश मे उत्पन्न, स्थित या एकत्र होने-वाला। जैसे—स्व-समुत्य कोष। स्व-समुत्य बल।

स्वसा (सृ)—स्त्री०[स०] भगिनी। बहन।

स्वसित—वि०[स०] बहुत काला।

स्वसुर—पु०=ससुर।

स्वस्ति—अव्य०[स०]१ शुभ हो। (प्राय शुभ-कामना प्रकट करने के लिए पत्रों के आरम्भ मे) २ कल्याण हो। मगल हो। भला हो। (आशीर्वाद) ३ मान्य है। ठीक है।
स्त्री०१ कल्याण। मगल। २. सुख। ३ ब्रह्मा की तीन पत्नियो मे से एक।

स्वस्तिक—पु०[स०]१ एक प्रकार का बहुत प्राचीन मगल-चिह्न जो शुभ अवसरो पर दीवारो आदि पर अकित किया जाता है। आज-कल इसका यह रूप प्रचलित है (卐)। सथिया। २ सामुद्रिक मे, शरीर के किसी अग पर होनेवाला उक्त प्रकार का चिह्न जो बहुत शुभ माना जाता है। ३ एक प्रकार का मगल-द्रव्य जो विवाह आदि के समय भिगोये हुए चावल पीसकर तैयार किया जाता है और जिसमे देवताओ का निवास माना जाता है। ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का यत्र जो शरीर मे गडे हुए शल्य आदि बाहर निकालने के काम मे आता था। ५. वैद्यक मे घाव या फोडे पर बाँधी जानेवाली एक प्रकार की तिकोनी पट्टी। ६ वास्तु-शास्त्र मे ऐसा घर, जिसमे पश्चिम और एक और पूर्व ओर दो दालान हो। ७ साँप के फन पर की नीली रेखा। ८ हठयोग की साधना मे एक प्रकार का आसन या मुद्रा। ९. प्राचीन

काल की एक प्रकार की वढिया नाव, जो प्राय. राजाओं की सवारी के काम आती थी। १० चौमुहानी। चौराहा। ११. लहसुन। १२ रतालू। १३ मूली। १४. सुसना नामक साग। शिरियारी।

स्वस्तिका—स्त्री०[स०] चमेली।

स्वस्तिकृत—पु०[स०] शिव। महादेव।
वि० कल्याणकारी। मगलकारक।

स्वस्तिद—वि०[स०] मगलकारक।
पु० शिव का एक नाम।

स्वस्तिमती—स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका।
वि० स० 'स्वस्तिमान्' का स्त्री।

स्वस्तिमान्(मत्)—वि०[स०] [स्त्री० स्वस्तिमती] १ सब प्रकार से सुखी। २ भाग्यवान्।

स्वस्ति-मुख—वि०[स०] जिसके मुख से शुभ, सुख देनेवाली या अशीर्वाद-पूर्ण वाते निकलती हो।
पु० १ ब्राह्मण। २. राजाओ का स्तुति-पाठक। वदी।

स्वस्ति-वाचक—वि०[स०]१ जो मगल-सूचक वात कहता हो। २ आशीर्वाद देनेवाला।

स्वस्ति-वाचन—पु०[स०] मगल-कार्यों के आरम्भ मे किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जिसमे कलश-स्थापन, गणेश का पूजन और मगल-सूचक मत्रो का पाठ किया जाता है।

स्वस्तेन—पु०=स्वस्त्ययन।

स्वस्त्ययन—पु०[स०] एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जो किसी विशिष्ट कार्य की अशुभ वातो का नाश करके मगल की स्थापना के विचार से किया जाता है।

स्वस्थ—वि० [स०] [भाव० स्वस्थता]१ जो स्वय अपने वल पर या सहारे से खडा हो। २ फलत. आत्म-निर्भर। ३ जो शारीरिक दृष्टि से आत्म-निर्भर हो। फलत जिसमे आलस्य, रोग, विकार आदि न हो। तन्दुरुस्त। (हेल्दी) ४ जिसमे किसी प्रकार की त्रुटि न हो। (साउन्ड) जैसे—स्वस्थ प्रज्ञ। ५ सामाजिक या मानसिक स्वास्थ्य का रक्षक। जैसे—स्वस्थ साहित्य।

स्वस्थ-चित्त—वि० [स०] जिसका चित्त स्वस्थ हो। मानसिक दृष्टि से स्वस्थ।

स्वस्थता—स्त्री०[स०] १ स्वस्थ होने की अवस्था या भाव। तदुरुस्ती। २ सावधानता।

स्वस्रीय—पु०[स०][स्त्री० स्वस्रीया] स्वसृ अर्थात् वहन का लडका। भानजा।

स्वहाना†—अ०=सुहाना (भला लगना)।
†वि०=सुहावना।

स्वांकिक—पु०[स०] ढोल, मृदग आदि ऐसे वाजे वजानेवाला, जो अपने अक या गोद मे रखकर वजाये जाते हो।

स्वांग—पु० [स० स्व+अग]१ किसी दूसरे की वेश-भूषा अपने अग पर इसलिए धारण करना कि देखने मे लोगो को वही दूसरा व्यक्ति जान पडे। कृत्रिम रूप से दूसरे का धारण किया हुआ भेस। रूप भरने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) रामलीला मे राम और लक्ष्मण के स्वाँग। (ख) अभिनय मे दुष्यत और शकुतला के स्वाँग। २. विशेषतः उक्त प्रकार से धारण किया जानेवाला वह भेस या रूप, जो या तो केवल मनोरजन के लिए हास्यजनक हो या जिसका उद्देश्य दूसरो का उपहास करना अथवा हँसी उडाना हो। जैसे—(क) बाल-विवाह या वृद्ध-विवाह का स्वाँग। (ख) नाक-कटैया या रामलीला के जलूस मे निकलने-वाले स्वाँग। ३. जन साधारण मे प्रचलित एक प्रकार का सगीत-रूपक जो किसी लोककथा पर आधारित होता है। जैसे—पूरनमल या राजा हरिश्चन्द्र का स्वाँग। ४. कोई वहाना वनाकर दूसरो को भ्रम मे डालने या अपना कोई काम निकालने के लिए धारण किया जानेवाला झूठा रूप। जैसे—बीमारी का स्वाँग रचकर घर वैठना।
क्रि० प्र०—वनाना।—रचना।
मुहा०—स्वाँग लाना=किसी दूसरे का भेस वनाकर या कोई कृत्रिम रूप धारण करके सामने आना। जैसे—जन्म भर मे एक स्वाँग भी लाये तो कोढी का। (कहा०)

स्वांग—पु०[स०] अपना ही अग।

स्वाँगना*—स० [हिं० स्वाँग] वनावटी वेश या रूप धारण करना। स्वाँग वनाना।

स्वाँगी—पु०[हिं० स्वाँग] १ वह जो स्वाँग रचकर जीविका उपार्जन करता हो। नकल करनेवाला। नक्काल। २ वहुरूपिया।
वि० अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला।

स्वागीकरण—पु०[स०] [भू० कृ० स्वागीकृत]१. किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु या वस्तुओ को इस प्रकार पूर्णत अपने आप मे मिला लेना कि वे उसके अग के रूप मे हो जायँ। आत्मीकरण।

स्वांत—पु०[स०] १ अपना अत या मृत्यु। २. अपना प्रदेश या राज्य। ३ अत करण। मन। ४. मन की शांति। ५. गुफा।

स्वातः सुखाय—अव्य०[स०] केवल अपना अत करण या मन प्रसन्न करने के लिए। अपनी ही तृप्ति या सतोष के लिए।

स्वातज—पु०[स०] १ कामदेव। २. प्रेम।

स्वाँस†—पु०=साँस।

स्वाँसा—पु०[देश०] वह सोना जिसमे ताँवे का खोट हो। ताँवे के खोट-वाला सोना।
†पु०=साँस।

स्वाक्षर—पु०[स०] १ अपने ही हाथो से लिखे हुए अक्षर। अपना हस्त-लेख। २ (किसी का) अपने हाथ से लिखा हुआ कोई छोटा लेख या हस्ताक्षर, जिसे लोग अपने पास स्मृति के रूप मे रखते है। (ऑटो-ग्राफ) ३. हस्ताक्षर।

स्वाक्षरित—भू० कृ०[स०]१. जिस पर किसी ने अपने हाथ से अपना नाम, पता, लेख आदि लिख रखा हो। २ दस्तखत किया हुआ। हस्ताक्षर से युक्त। (साइन्ड)

स्वागत—पु०[स०]१ किसी मान्य या प्रिय के आने पर आगे वढकर आदरपूर्वक उसका अभिनन्दन करना। अभ्यर्थना। (रिसेप्शन) *२ उक्त अवसर पर पूछा जानेवाला कुशल-मगल। उदा०—स्वागत पूँछि निकट वैठारे।—तुलसी। ३ किसी के कथन, विचार आदि को अच्छा या अनुकूल समझकर ग्रहण अथवा मान्य करने की क्रिया या भाव। जैसे—हम आपके इस विचार (या सम्मति का) स्वागत करते हैं। ४. एक वुद्ध का नाम।

अव्य० आप के आगमन पर (हम) आप का अभिनन्दन करते हैं। जैसे—स्वागत! स्वागत! बन्धुवर, भले पधारे आप।

स्वागतक—पु०[स०] [स्त्री० स्वागतिका] १. वह जिस पर आगत सज्जनो के स्वागत और सत्कार का भार हो। (रिसेप्शनिस्ट) २ घर का वह मालिक, जो आगत सज्जनो का स्वागत-सत्कार करता हो। (होस्ट)

स्वागतकारिणी सभा—स्त्री०=स्वागत-समिति।

स्वागतकारी(रिन्)—वि० [स०] [स्त्री० स्वागतकारिणी] स्वागत या अभ्यर्थना करनेवाला। पेशवाई करनेवाला।

स्वागत-पतिका—स्त्री०[स०] वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न होकर उसके स्वागत के लिए प्रस्तुत हो। आगत-पतिका। (नायिका के अवस्थानुसार दस भेदो मे से एक।)

स्वागत-प्रिया—पु० [स०] वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न होकर उसका स्वागत करने के लिए प्रस्तुत हो।

स्वागत-समिति—स्त्री०[स०] वह समिति, जो किसी बडे सम्मेलन आदि मे आनेवालो के स्वागत-सत्कार के लिए बनती है। (रिसेप्शन कमिटी)

स्वागता—स्त्री०[स०] चार चारणो का एक समवृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, नगण, भगण, और दो गुरु होते है। यथा—राज-राजा दशरत्थ तनैजू। रामचन्द्र भव-चन्द्र बने जू।—केशव।

स्वागतिक—वि० [स०] [स्त्री० स्वागतिका] स्वागत करनेवाला। आनेवाले की अभ्यर्थना या सत्कार करनेवाला।

पु० घर का वह मालिक, जो किसी विशिष्ट अवसर पर अपने यहाँ आये हुए लोगो का स्वागत-सत्कार करता हो। (होस्ट)

स्वागतिका—स्त्री० [स०] १ स्वागत करनेवाली गृहस्वामिनी। २ आज-कल हवाई जहाजो मे वह स्त्रियाँ, जो यात्रियो की सेवा और सत्कार के लिए नियुक्त होती है। (एयर होस्टेस)

स्वागती—पु०=स्वागतक।

स्वाग्रह—पु०[स० स्व+आग्रह]१ अपने सबध मे होनेवाला आग्रह। २ अपने अधिकार, योग्यता, शक्ति के सबध मे होनेवाला ऐसा आग्रह जिसके फलस्वरूप कोई अपना विचार प्रकट करता हो या अपने लिए उपयुक्त स्थान ग्रहण करने का प्रयत्न करता हो। (एसर्शन)

स्वाग्रही(हिन्)—वि०[स०] जिसमे स्वाग्रह की धारणा या भावना प्रबल हो। (एसर्टिव)

स्वाच्छंद्य—पु०=स्वच्छदता।

स्वाजन्य—पु०=स्वजनता।

स्वाजीव, स्वाजीव्य—वि० [स०] (स्थान या देश) जहाँ जीविका के लिए कृषि, वाणिज्य आदि साधन यथेष्ट और सुलभ हों। जैसे—स्वाजीव्य देश।

स्वातत्र†—पु०=स्वातत्र्य।

स्वातंत्र्य—पु०=स्वतत्रता।

स्वातन्त्र्य-युद्ध—पु० [स०] वह युद्ध, जो अपने देश को विदेशी शासन से मुक्त करके स्वतन्त्र बनाने के लिए किया गया हो, या किया जाय। (वार ऑफ इन्डिपेन्डेन्स)

स्वात—स्त्री०[स० सुवास्तु] अफगानिस्तान की एक नदी।

*स्त्री०=स्वाति।

स्वाति—स्त्री०[स०] आकाशस्थ पन्द्रहवाँ नक्षत्र, जो फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ माना जाता है।

वि० जिसका जन्म स्वाति नक्षत्र मे हुआ हो।

स्वातिकारी—स्त्री०[स०] कृषि की देवी। (पारस्कर गृह्य-सूत्र)

स्वाति-पंथ—पु० [स० स्वाति+पथ] आकाश-गगा।

स्वाति-योग—पु०[स०] फलित ज्योतिष मे, आषाढ के शुक्ल-पक्ष मे स्वाति नक्षत्र का चन्द्रमा के साथ होनेवाला योग।

स्वाति-सुत—पु०[स० स्वाति+सुत] मोती। मुक्ता।

विशेष—लोगो का विश्वास है कि जब सीपी मे स्वाति-नक्षत्र की वर्षा की बूँद पडती है, तब उसमे मोती पैदा होता है।

स्वाति-सुवन—पु०=स्वाति-सुत।

स्वाती†—स्त्री०=स्वाति।

स्वाद—पु०[स०]१ कोई चीज खाने या पीने पर जबान या रसनेन्द्रिय को होनेवाली अनुभूति। जायका। (टेस्ट) जैसे—नीबू का स्वाद खट्टा होता है। २ किसी काम, चीज या बात से प्राप्त होनेवाला आनन्द। रसानुभूति। मजा। सुख। जैसे—उन्हे दूसरो की निन्दा करने मे बहुत स्वाद आता है।

क्रि० प्र०—आना।—मिलना।—लेना।

मुहा०—स्वाद चखाना=किसी को उसके किये हुए अनुचित कार्य का दड देना। बदला लेना। जैसे—मैं भी तुम्हे इसका स्वाद चखाऊँगा।

३. आदत। अभ्यास। जैसे—भीख माँगने का उन्हे स्वाद पड गया है।

क्रि० प्र०—पडना।

४. इच्छा। कामना। चाह। ५ मीठा रस। (डिं०)

स्वादक—पु०[स० स्वाद] वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर यह देखने के लिए चखता है कि उन सबका स्वाद ठीक है या नही।

स्वादन—पु०[स०]१ चखना। स्वाद लेना। २ किसी काम या बात का आनन्द या रस लेना।

स्वादनीय—वि०[स०]१. जिसका स्वाद लिया जाने को हो या लिया जा सकता हो। २ स्वादिष्ट।

स्वादित—भू० कृ०[स०]१ जिसका स्वाद लिया जा चुका हो। चखा हुआ। ३. स्वादिष्ट। ३. जो प्रसन्न हो गया हो।

स्वादित्व—पु०[स०] स्वाद का भाव। स्वादु।

स्वादिमा (मन्)—स्त्री० [स०]१ सुस्वादुता। २ माधुर्य।

स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ—वि०[स० स्वादिष्ठ] जिसका जायका या स्वाद बहुत अच्छा हो। जो खाने मे बहुत अच्छा जान पडे।

स्वादी (दिन्)—वि० [स०] १ स्वाद चखनेवाला। २ आनन्द के लिए रस लेने वाला। रसिक।

†वि०=स्वादिष्ट। (पश्चिम)

स्वादीला†—वि० [स० स्वाद+ईला (प्रत्य०)] स्वाद-युक्त। स्वादिष्ट।

स्वादु—पु०[स०]१ मधुर रस। मीठा रस। २ मधुरता। मिठास। ३ गुड। ४ महुआ। ५ कमला नीबू। ६ चिरौंजी। ७ बेर। ८ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ९ अगर की लकडी। अगरु। १० काँस नामक तृण। ११. दूध। १२. सेंधा नमक। सैधव लवण।

वि०१ मधुर। मीठा। २. स्वादिष्ट। ३. सुन्दर।
स्त्री० द्राक्षा। दाख।

स्वादुकद—पु० [स०] १ सफेद पिंडालू। २. कोवी। केउँआ। केमुक।

स्वादुकर—पु०[स०] प्राचीन काल की एक वर्णसकर जाति। (महाभारत)

स्वादुगंधा—स्त्री०[स०] लाल सहिजन। रक्त शोभाजन।

स्वादुता—स्त्री०[स०]१. स्वादु का गुण, धर्म या भाव। २ मधुरता।

स्वादु-फल—पु० [स०] १. वेर। वदरी फल। २ धामिन वृक्ष। धन्व वृक्ष।

स्वादु-फला—स्त्री० [स०] १. वेर। वदरी वृक्ष। २. खजूर। ३. केला। ४. मुनक्का।

स्वादु-रसा—स्त्री० [स०] १. मदिरा। शराव। २. काकोली। ३. दाख। ४ शतावर। ५ अमडा।

स्वादुलुंगी—स्त्री०[स०] मीठा नीवू।

स्वादम्ल—पु०[स०]१. नारगी का पेड़। नागरग वृक्ष। २. कदंब वृक्ष।

स्वादेशिक—वि०[स०] स्वदेशी।

स्वाद्य—वि०[स०] जिसका स्वाद लिया जा सके या लिया जाने को हो। चखे जाने के योग्य।

स्वाधिकार—पु०[स० स्व+अधिकार]१. किसी व्यक्ति या समाज की दृष्टि से उसका अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतन्त्रता।

स्वाधिपत्य—पु०[सं० स्व+आधिपत्य] किसी दूसरे के अधीन न होकर परम स्वतन्त्र रहने की अवस्था या भाव।

स्वाधिष्ठान—पु०[सं० स्व+अधिष्ठान] हठयोग के अनुसार शरीर के आठ चक्रो मे से दूसरा, जिसका स्थान शिश्न का मूल या पेड़ू है। यह मूलाधार और मणिपुर के बीच मे छ. दलो का और सिंदूर वर्ण का माना गया है। आधुनिक वैज्ञानिको के अनुसार इसी केन्द्र की ग्रंथियो से यौवन और शरीर में प्रजनन-शक्ति उत्पन्न और विकसित होती है। (हाइ-पोगैस्ट्रिक प्लेक्सस)

स्वाधीन—वि०[स०] [भाव० स्वाधीनता]१ जो अपने अधीन हो। जैसे—स्वाधीन पतिका, अर्थात् वह नायिका जिसका पति उसके वश मे हो। २. जो प्रत्येक दृष्टि से आत्म-निर्भर हो। जो किसी के अधीन अर्थात् पराधीन न हो। जैसे—स्वाधीन राष्ट्र। ३ अपनी इच्छा के अनुसार काम करने मे स्वतन्त्र। निरकुश।
†वि०=अधीन।

स्वाधीनता—स्त्री०[स०]१ स्वाधीन होने की अवस्था, धर्म या भाव। 'पराधीनता' का विपर्याय। आजादी।२ ऐसी स्थिति, जिसमे व्यक्तियों राष्ट्रो आदि को वाहरी नियत्रण, दवाव, आदि प्रभाव से मुक्त होकर अपनी इच्छा से सव काम करने का अधिकार प्राप्त होता है और वे किसी वात के लिए दूसरो के मुखापेक्षी नही होते। सव प्रकार से आत्म-निर्भर होने की अवस्था या भाव। (इन्डिपेंडेंस)
विशेष—स्वाधीनता, स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता मे मुख्य अन्तर यह है कि स्वाधीनता का प्रयोग राजनीतिक और वैधानिक क्षेत्रो मे यह सूचित करने के लिए होता है कि अपने सब कामो की व्यवस्था या संचालन करने का किसी को पूरा अधिकार है। स्वतन्त्रता मुख्यतः लौकिक और सामाजिक क्षेत्रो का शब्द है और इसमे परकीय तन्त्र या शासन से मुक्त या रहित होने का भाव प्रधान है। स्वच्छन्दता मुख्यतः आचारिक और व्यावहारिक क्षेत्रों का शब्द है और इसमे शिष्ट सम्मत नियमो और विधि-विधानो के वधनो से रहित होने का भाव प्रधान है।

स्वाधीन-पतिका—स्त्री० [स०] साहित्य में वह नायिका, जिसका पति उसके वश मे हो।
विशेष—इसके मुग्धा, मध्या, प्रौढा और परकीया ये चार भेद हैं।

स्वाधीन-भर्तृका—स्त्री०=स्वाधीन-पतिका।

स्वाधीनी†—स्त्री०=स्वाधीनता।

स्वाध्याय—पु०[स०]१. वेदो की निरतर और नियमपूर्वक आवृत्ति या अभ्यास करना। वेदाध्ययन। धर्म-ग्रथो का नियम-पूर्वक अनुशीलन करना। २. किसी गभीर विषय का अच्छी तरह किया जानेवाला अध्ययन या अनुशीलन। ३. वेद।

स्वाध्यायी (यिन्)—वि०[सं०] स्वाध्याय करनेवाला।

स्वान—पु०[स०] शब्द। आवाज।
†पु०=श्वान।

स्वाना*—स०=सुलाना।

स्वानुभव—पुं०[सं०] ऐसा अनुभव जो अपने को हुआ हो।

स्वानुभूति—स्त्री० [स०] १ ऐसी अनुभूति जो अपने को हुई हो। २ धार्मिक क्षेत्र मे, परब्रह्म के तत्त्व का परिज्ञान।

स्वानुरूप—वि०[स०] [भाव० स्वानुरूपता]१. अपने अनुरूप। २. योग्य। ३. सहज।

स्वाप—पु० [स०] १ नीद। निद्रा। २. स्वप्न। ३. अज्ञान। ४. निष्पदता।

स्वापक—वि०[स०] नीद लानेवाला। निद्राकारक।

स्वापद†—पु०=श्वापद।
†वि०=स्वापक।

स्वापन—पु०[स०]१ सुलाना। २. प्राचीन काल का एक अस्त्र, जिससे शत्रु निद्रित किये जाते थे। ३. ऐसी दवा, जिसे खाने से नीद आ जाती हो।
वि० नीद लाने या सुलानेवाला। निद्राकारक।

स्वापराध—पु०[सं०] अपने प्रति किया जानेवाला अपराध।

स्वापी (पिन्)—वि०[स०] स्वापक।

स्वाप्न—वि० [स०] स्वप्न सवधी। स्वप्न का।

स्वाप्निक—वि०[स०]१. स्वप्न मे होने या उससे सवंध रखनेवाला। २ स्वप्न के कारण या फलस्वरूप होनेवाला।

स्वाब—पु०[अ०] कपड़े या सन की वुहारी या झाडू जिससे जहाज के डेक आदि साफ किये जाते हैं। (लश०)

स्वाभाव—पुं० [सं०] स्व का अभाव।

स्वाभाविक—वि०[स०]१. जो स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो। जो आप ही हुआ हो। प्राकृतिक। (नैचुरल)। २. जो या जैसा प्रकृति के या स्वभाव के अनुसार साधारणतः हुआ करता हो। जैसे—तुम्हे उनकी वात पर क्रोध आना स्वाभाविक था।

स्वाभाविकी—वि०[सं०]=स्वाभाविक।

स्वाभाव्य—वि०[स०] स्वय उत्पन्न होनेवाला। आप ही आप होनेवाला। स्वयभू।

स्वाभिमान—पु० [स०]१ अपनी जाति, राष्ट्र, धर्म आदि का सद् अभिमान। अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का अभिमान । आत्म-गौरव। (सेल्फ-रेस्पेक्ट)

स्वाभिमानी (निन्)—वि०[स०] जिसमे स्वाभिमान हो। स्वाभिमान-वाला।

स्वामिकता—स्त्री०=स्वामित्व।

स्वामि कार्तिक—पु० [सं०] १ कार्तिकेय। स्कद। उदा०—धरे चाप इखु हाथ स्वामि कार्तिक वल सोहत।—गोपाल। २ छ आघात और दस मात्राओ का ताल जिसका वोल इस प्रकार है—धा धि धो गे ना ग तिं न तिराकेट तिंना तिंना तिंना केत्ता धिंना।

स्वामित्व—पु० [स०]१. वह अवस्था जिसमें कोई किसी वस्तु का स्वामी या मालिक होता है। मालिक होने का भाव। मालिकी। (ओनरशिप) २ प्रभुता। प्रभुत्व।

स्वामित्व चिह्न—पु० [स०] वह चिह्न जो यह सूचित करता हो कि अमुक वस्तु अमुक आदमी की है। (प्रापर्टी मार्क)

स्वामिन†—स्त्री०=स्वामिनी।

स्वामिनी—स्त्री० [स०] १. 'स्वामी' का स्त्री०। २ वल्लभ सप्रदाय मे राधिकाजी की एक सज्ञा।

स्वामि-भृत्य न्याय—पु० [स०] नौकर के काम से जब मालिक खुश होता है, तो नौकर भी निहाल हो जाता है, अतएव दूसरे का काम सिद्ध हो जाने पर यदि अपना भी कार्य सिद्ध हो जाय तो या प्रसन्नता हो तो यह न्याय प्रयुक्त होता है।

स्वामिस्व—पु० [स०] १ वह धन जो किसी वस्तु के स्वामी को आधिरूप से मिलता हो या मिलने को हो। २ दे० 'स्वत्व-शुल्क'।

स्वामिहीनत्व—पु० [स०] किसी वस्तु के सम्बन्ध की वह स्थिति, जिसमे उसका कोई स्वामी न मिल रहा हो। चीज के लावारिस होने की अवस्था या भाव। ला-वारिसी। (वोना वैकेशिया)

स्वामिहीन-भूमि—स्त्री० [स०] वह भूमि, जिसका कोई अधिकारी, शासक या स्वामी न हो, जैसी कभी-कभी दो राज्यो की सीमाओं पर हुआ करती है। (नो मैन्स लैण्ड)

स्वामी—पु० [स० स्वामिन्] [स्त्री० स्वामिनी, भाव० स्वामित्व] १ वह जिसे किसी वस्तु पर पूरे और सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हो। धनी। मालिक। (ओनर, प्रोप्राइटर) २. घर का प्रधान व्यक्ति। ३ पति । शौहर। ४ साधु, सन्यासी आदि का सबोधन। ५ ईश्वर। ६ राजा। ७ सेनापति। ८ शिव। ९ विष्णु। १० स्वामीकार्तिक। ११ गरुड। १२ गत उत्सर्पिणी के ११ वें अर्हत् का नाम।

स्वाम्नाय—वि०[स०] जो परपरा से चला आ रहा हो। परपरागत।

स्वाम्य—पु० [स०] स्वामी होने की अवस्था, गुण या भाव। (ओनरशिप)

स्वाम्युपकारक—पुं०[स०] घोडा। अश्व।

स्वायंभुव—पु०[स०] पुराणानुसार चौदह मनुओ मे से पहला मनु, जो स्वयभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने गये हैं।

स्वायंभुवी—स्त्री० [स०] ब्राह्मी (बूटी)।

स्वायंभू—पु०=स्वायभुव।

स्वायत्त—वि० [स०] [भाव० स्वायत्तता]१. जिस पर अपना अधिकार हो। २ जिसे स्थानीय स्वशासन का अधिकार या शक्ति प्राप्त हो। (ऑटॉनोमस)

स्वायत्त शासन—पु०[स०] [वि० स्वायत्तशासी]१ राजनीति या शासन की दृष्टि से स्थानिक क्षेत्रो मे अपने सब काम आप करने की स्वतन्त्रता। (ऑटोनोमी) २ दे० 'स्थानिक-स्वशासन'।

स्वायत्त-शासी—वि० [सं०] (देश) जिसे शासन स्वय ही करने का अधिकार प्राप्त हो। (ऑटॉनोमस)

स्वायत्तता—स्त्री० [स०] अपनी सरकार वनाने का अधिकार। स्थानीय स्वशासन का अधिकार। (ऑटोनोमी)

स्वार—पु०[स०]१ घोडे के घर्राटे का शब्द। २ बादल की गरज। मेघ-ध्वनि।

वि० स्वर-सम्बन्धी। स्वर का।

†पु०=सवार।

स्वारक्ष्य—वि०[स०] जिसकी सहज में रक्षा की जा सकती हो।

स्वारथ—वि० [स० सार्थ] सफल। सिद्ध। फलीभूत। सार्थक। जैसे—चलिए, आपका परिश्रम स्वारथ हो गया।

†पु०=स्वार्थ।

स्वारथी†—वि०=स्वार्थी।

स्वारसिक—वि०[स०]१ (काव्य) जो सुरस युक्त हो। २ (काम या वात) जिसमे अच्छा रस मिलता हो। ३ प्राकृतिक। स्वाभाविक।

स्वारस्य—पु० [स०] १ सरसता। रसीलापन। २ आनन्द। मजा। ३ स्वाभाविकता।

स्वाराज्य—पु०[सं०]१. स्वर्ग का राज्य या लोक। स्वर्ग। २ स्वाधीन राज्य।

स्वाराट्—पु० [सं० स्वाराज्] स्वर्ग के राजा, इन्द्र।

स्वारी†—स्त्री०=सवारी।

स्वारोचिष—पु०[स०] मनु जो स्वरोचिष के पुत्र थे। विशेष दे० 'मनु'।

स्वार्जित—वि०[स०] अपना अर्जित किया या कमाया हुआ। (सेल्फ-एक्वायर्ड)

स्वार्थ—पु०[स०] [वि० स्वार्थिक, कर्ता स्वार्थी, भाव० स्वार्थता] १ अपना अर्थ या उद्देश्य । अपना मतलब। २ अपना हित साधने की उग्र भावना। ३ ऐसी वात, जिसमे स्वय अपना लाभ या हित हो। मुहा०—(किसी बात में) स्वार्थ लेना=किसी होनेवाले काम मे अनुराग रखना। (आधुनिक, पर भद्दा प्रयोग)

४ विधिक क्षेत्रो मे, किसी वस्तु या सपत्ति के साथ होनेवाला किसी व्यक्ति का वह सबध जिसके अनुसार उसे उस वस्तु या सपत्ति पर अथवा उससे होनेवाले लाभ आदि पर स्वामित्व अथवा इसी प्रकार का और कोई अधिकार प्राप्त रहता है। (इन्टरेस्ट)

†वि० =स्वारथ।

स्वार्थता—स्त्री०[स०] स्वार्थ का धर्म या भाव। स्वार्थपरता। खुदगरजी।

स्वार्थ-त्याग—पु०[स०] (दूसरे के हित के लिए कर्तव्य वुद्धि से) अपने स्वार्थ या हित को निछावर करना। किसी भले काम के लिए अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना।

स्वार्थ-त्यागी (गिन्)—वि० [स० स्वार्थत्यागिन्] जो (दूसरो के हित के लिए कर्तव्य-बुद्धि से) अपने स्वार्थ या हित को निछावर कर दे। दूसरे के भले के लिए अपने हित या लाभ का विचार न रखनेवाला। स्वार्थ त्याग करनेवाला।

स्वार्थ-पंडित—वि० [सं०] बहुत बड़ा स्वार्थी या खुदगरज। परम स्वार्थी।

स्वार्थपर—वि० [स०] जो केवल अपना स्वार्थ या मतलब देखता हो। अपना स्वार्थ या मतलब साधनेवाला। स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थ-परता—स्त्री०[स०] स्वार्थपर होने की अवस्था या भाव। खुदगरजी।

स्वार्थ परायण—वि० [स०] [भाव० स्वार्थ-परायणता] १ जो अपने स्वार्थो की सिद्धि मे रत रहता हो। २ अन्य कामो या बातों की अपेक्षा अपने स्वार्थ को अधिक महत्त्व देनेवाला।

स्वार्थ-परायणता—स्त्री०[स०] स्वार्थ-परायण होने की अवस्था, गुण-या भाव। स्वार्थपरता। खुदगरजी।

स्वार्थ-साधक—वि०[स०] अपना मतलब साधनेवाला। अपना काम निकालनेवाला। खुदगरज। स्वार्थी।

स्वार्थ-साधन—पु०[स०] अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम या मतलब निकालना।

स्वार्थांध—वि०[स०] [भाव० स्वार्थांधता] १. जो अपने स्वार्थ के फेर मे पडकर अधा हो रहा हो और भले-बुरे का ध्यान न रखता हो।

स्वार्थिक—वि०[स०]१ स्वार्थ से सबध रखनेवाला। २ जिससे अपना अर्थ या काम निकले। ३ लाभदायक। (प्रॉफिटेबुल) ४ वाच्यार्थ से युक्त (कथा या वाक्य)। ५ अपने अर्थ या धन से किया या लिया हुआ (कार्य या पदार्थ)।

स्वार्थी (र्थिन्)—वि०[स०]१ मात्र अपने स्वार्थों की सिद्धि चाहनेवाला। २ जिसमें परमार्थ-भावना न हो। खुदगरज।

स्वाल|—पु०=सवाल।

स्वाल्प—पु०[स०] स्वल्प होने की अवस्था या भाव। स्वल्पता। वि०=स्वल्प।

स्वावलंबन—पु०[स०] अपनी समर्थता से आत्म-निर्भर होने की अवस्था, गुण या भाव।

स्वावलंबी (बिन्)— वि० [स०] १ जिसमे स्वावलबन की भावना हो। २ जिसने अपनी समर्थता से आत्म-निर्भरता अर्जित की हो।

स्वाश्रित—वि०[स०]=स्वावलबी।

स्वास|—पु०=श्वास (साँस)।

स्वासा—स्त्री०[स०] श्वास। सांस। श्वास।

स्वास्थ्य—पु०[स०]१ स्वस्थ अर्थात् नीरोग होने की अवस्था, गुण या भाव। नीरोगता। आरोग्य। तन्दुरुस्ती। जैसे—उनका स्वास्थ्य आज-कल अच्छा नही है। २ मन की वह अवस्था, जिसमे उसे कोई उद्वेग, कष्ट या चिन्ता न हो। (हेल्थ)

स्वास्थ्यकर—वि०[सं०] जिससे स्वास्थ्य अच्छा बना रहे। तदुरुस्त करनेवाला। आरोग्य-वर्द्धक। जैसे—देवघर स्वास्थ्यकर स्थान है।

स्वास्थ्य-निवास—पु० [स०] विशेप रूप से निश्चित या निर्मित वह स्थान, जहाँ जाकर लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए रहते हैं। आरोग्य-निवास। (सैनेटोरियम)

स्वास्थ्य-रक्षा—स्त्री०[सं०] ऐसा स्वच्छतापूर्ण आचरण और व्यवहार जिससे स्वास्थ्य अच्छा बना रहे, बिगडने न पाये। (सैनिटेशन)

स्वास्थ्य-विज्ञान—पु०[स०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे शरीर को नीरोग और स्वस्थ बनाये रखने के नियमो और सिद्धातो का विवेचन हो। (हाईजीन)

स्वास्थिकी—स्त्री०=स्वास्थ्य-विज्ञान।

स्वाहा—अव्य० [स०] एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओ को हवि देने के समय मत्रो के अन्त मे किया जाता है। जैसे—इद्राय स्वाहा। वि०१ जो जलाकर नष्ट कर दिया गया हो। २. जिसका पूरी तरह से अन्त या नाश कर दिया गया हो। पूर्णत. विनष्ट। जैसे—कुछ ही दिनो मे उसने लाखो रुपयो की सम्पत्ति स्वाहा कर दी। स्त्री० अग्नि की पत्नी।

स्वाहा-ग्रसण—पु० [स० स्वाहा+ग्रसन] देवता। (डिं०)

स्वाहापति—पु०[स०] स्वाहा के पति, अग्नि देवता।

स्वाहा-प्रिय—पु०[सं०] अग्नि।

स्वाहाभुक्—पु० [सं० स्वाहाभुज्] देवता।

स्वाहार—पु०[स०] अच्छा आहार या भोजन।

स्वाहार्ह—वि० [स०]१ स्वाहा के योग्य। हवि-पाने के योग्य। २. जो स्वाहा किया अर्थात् पूरी तरह से जलाया या नष्ट किया जा सके या किया जाने को हो।

स्वाहाशन—पु०[स०] देवता।

स्विदित—भू० कृ०[स०] १. जिसे स्वेद या पसीना निकला हो। २. जिसका स्वेद या पसीना निकाला गया हो। ३ पिघला या पिघलाया हुआ।

स्विन्न—वि० [स०]१ पसीने से भरा हुआ। २. उबला, पका या सीझा हुआ।

स्वीकरण—पु० [सं०]१ स्वीकार या अगीकार करना। अपनाना। २. कबूल करना। मानना। ३ स्त्री को पत्नी के रूप मे ग्रहण करना।

स्वीकरणीय—वि०[स०] स्वीकृत किये या माने जाने के योग्य।

स्वीकर्त्तव्य—वि०[स०]=स्वीकरणीय।

स्वीकर्ता (र्तृ)—वि० [स०] स्वीकार करनेवाला। मजूर करनेवाला।

स्वीकार—पु०[स०]१ अपना बनाने या अपनाने की क्रिया या भाव। अगीकार। २ ग्रहण करना। लेना। परिग्रह। ३ कोई बात मान लेना। कबूल या मजूर करना। ४ किसी बात की प्रतिज्ञा करना या वचन देना।

स्वीकारना*—स० [स० स्वीकार] १ स्वीकार करना। मानना। २ ग्रहण करना। लेना। ३ अपनाना।

स्वीकारात्मक—वि०[स०] (कथन) जिससे कोई बात स्वीकृत की गई या मानी गई हो अथवा उसकी पुष्टि की गई हो। (अफर्मेटिव)

स्वीकारोक्ति—स्त्री०[स०] वह कथन या बयान, जिसमे अपना अपराध स्वीकृत किया जाय। दोष, अपराध, पाप आदि की स्वीकृति। अपने मुँह से कहकर यह मान लेना कि हमने अमुक अनुचित या बुरा काम किया है। (कन्फेशन)

स्वीकार्य—वि० [स०] जो स्वीकृत किया या माना जा सके। माने जाने के योग्य।

स्वीकृच्छ्र—पु०[स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का व्रत, जिसमे तीन-तीन दिन तक क्रमश गोमूत्र, गोवर तथा जौ की लप्सी खाकर रहते थे।

स्वीकृत—भू० कृ०[स०] [भाव० स्वीकृति]१ जिसे स्वीकार कर लिया गया हो। जिसके सवध मे स्वीकृति दी जा चुकी हो। (सैंकशन्ड) २ ग्रहण किया या माना हुआ। प्रतिपन्न। मजूर। (ऐक्सेप्टेट) ३. जिसे आधिकारिक रूप से मान्यता मिली हो। मान्य। मान्यता-प्राप्त। (रिकग्नाइज्ड)

स्वीकृति—स्त्री०[सं०] १ स्वीकार करने की क्रिया या भाव। सम्मति। उदा०—(क) राष्ट्रपति ने उस विल पर अपनी स्वीकृति दे दी है। (ख) उनकी स्वीकृति से यह नियुक्ति हुई है। २. प्रस्ताव, शर्तें आदि मान लेने या उपहार, देन आदि ग्रहण करने की क्रिया या भाव। (ऐक्सेप्टेन्स) ३. वडो, अधिकारियों आदि के द्वारा छोटो की प्रार्थना आदि मान लेने की क्रिया या भाव। मजूरी। (सैन्कशन)
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—मिलना।—लेना।

स्वीय—वि०[स०] [स्त्री० स्वीया] स्वकीय। अपना।
पु० स्वजन। आत्मीय। संवधी। नाते-रिश्तेदार।

स्वीया—स्त्री०[स०] स्वकीया।

स्वे*—वि०=स्व।

स्वेच्छया—अव्य०[स०] अपनी इच्छा से और विना किसी दवाव के। स्वेच्छापूर्वक। (वालन्टरिली) जैसे—स्वेच्छया किया हुआ काम।

स्वेच्छा—स्त्री०[स०] अपनी इच्छा। अपनी मर्जी। जैसे—वे सव काम स्वेच्छा से करते हैं।

स्वेच्छाचार—पु०[स०] भले-वुरे का ध्यान रखे विना मन-माना आचरण करना। जो जी मे आये, वही करना। यथेच्छाचार।

स्वेच्छाचारिता—स्त्री०[स०] स्वेच्छाचार का भाव या धर्म।

स्वेच्छाचारी(रिन्)—वि० [स०] [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] स्वेच्छाचार अर्थात् मन-माना काम करनेवाला। निरकुश। अवाध्य। जैसे—वहाँ के राज-कर्मचारी वहुत स्वेच्छाचारी है।

स्वेच्छा-मृत्यु—वि० [स०] १ अपनी इच्छा से आप मरनेवाला। २ जिसने मृत्यु को इस प्रकार वश मे कर रखा हो कि अपनी इच्छा से ही मरे, इच्छा न हो तो न मरे।
पु० भीष्म पितामह, जिन्हे उक्त प्रकार का मनोवल या शक्ति प्राप्त थी।

स्वेच्छा-सेवक—पु० [स०] [स्त्री० स्वेच्छा-सेविका] दे० 'स्वयसेवक'।

स्वेच्छित—भू० कृ०[स०] जो किसी की अपनी इच्छा के अनुकूल या अनुरूप हो। मन-चाहा।

स्वेटर—पु० [अ०] वनियाइन या गजी आदि की तरह का एक प्रकार का ऊनी पहनावा, जो कमीज के ऊपर तथा कोट आदि के नीचे पहना जाता है।

स्वेत*—वि०=श्वेत।

स्वेत-रंगी—स्त्री०[स० श्वेत+हिं० रगी] कीर्ति। यश। (डिं०)

स्वेद—पु०[स०]१ पसीना। २ साहित्य में, रोप, लज्जा, हर्ष, श्रम आदि से शरीर का पसीने से भर जाना, जो एक सात्विक अनुभाव माना गया है। ३ भाप। वाष्प। ४ वह प्रक्रिया, जिससे कोई वस्तु भाप आदि की सहायता से आर्द्र या तर की जाती हो। (वाथ) जैसे—उष्मा-स्वेद। (देखें) ५ गरमी। ताप।

स्वेदक—वि०[स०] पसीना लानेवाला। प्रस्वेदक।
पु० १ कांतिसार लोहा। २ दे० 'प्रस्वेदक'।

स्वेदकारी—वि० [स०]=स्वेदक।

स्वेदज—वि०[स०] २ पसीने से उत्पन्न होनेवाला। २. गर्म भाप या उष्ण वाष्प से उत्पन्न होनेवाला (जूँ, लीक, खटमल, मच्छर आदि कीडे-मकोडे)।

स्वेद जल—पु०[स०] पसीना। प्रस्वेद।

स्वेदन—पु० [स०] [भू० कृ० स्वेदित] १ पसीना निकलना। २. पसीना निकालना या लाना। ३ ओपधियाँ शोधने का एक यत्र। (वैद्यक)

स्वेदनत्व—पु० [स०] स्वेदन का गुण, धर्म या भाव।

स्वेदनिका—स्त्री० [स०] १ तवा। २ रसोई-घर। ३. अरक, शराब आदि चुआने का भभका।

स्वेदाबु—पु०[स०]=स्वेद जल (पसीना)।

स्वेदायन—पु०[स०] रोम-कूप। लोम-छिद्र।

स्वेदित—भू० कृ०[स०]१ स्वेद या पसीने से युक्त। २ जिसे किसी प्रकार की भाप से वफारा दिया गया हो।

स्वेदी(दिन्)—वि०[स०] पसीना लानेवाला। प्रस्वेदक।

स्वेद्य—वि०[स०] जिसे पसीना लाया जा सके या लाया जाने को हो।

स्वेष्ट—वि०[स०] जो अपने आप को इष्ट या प्रिय हो।

स्वै—वि०[स० स्वीय] अपना। निज का। (डिं०)
सर्व०=सो।

स्वैच्छिक—वि० [स०]१ जो किसी की अपनी या निजी इच्छा के अनुसार हो। २ किसी की निजी इच्छा से सम्वन्ध रखनेवाला। (वॉलेन्टरी)

स्वैर—वि०[सं०] १ अपने इच्छानुसार चलनेवाला। मन-माना काम करनेवाला। यथेच्छाचारी। २. मनमाना। यथेच्छा। ३ धीमा। मन्द।

स्वैरचार—पु०[स०] मन-माना आचरण। स्वेच्छाचार।

स्वैरचारिणी—स्त्री० [स०]१ मनमाना काम करनेवाली स्त्री। २ व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरचारी (रिन्)—वि०[स०] [स्त्री० स्वैरचारिणी] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरकुश।

स्वैरता—स्त्री०[स०] मन-माना आचरण करने की अवस्था या भाव।

स्वैरवर्ती—वि०[स० स्वैरवर्तिन्]=स्वेच्छाचारी।

स्वैरवृत्त—वि० [स०] स्वेच्छाचारी।

स्वैराचार—पु०[स०] [वि० स्वैराचारी] ऐसा मनमाना आचरण जो नैतिक, धार्मिक, सामाजिक आदि नियमो या ववनो की उपेक्षा करके किया जाय।

स्वैराचारी (रिन्)—वि०[स०] [स्त्री० स्वैराचारिणी] १ मन-माना काम करनेवाला। २ व्यभिचारी। लपट।

स्वैरालाप—पु० [स०] मौज मे आकर की जानेवाली इधर-उधर की बात-चीत। गप-शप।
स्वैरिंध्री—स्त्री०=सैरिंध्री।
स्वैरिणी—स्त्री०[स०] व्यभिचारिणी स्त्री। पुश्चली।
स्वैरिता—स्त्री० [स०] यथेच्छाचारिता। स्वच्छदता। स्वाधीनता।
स्वैरी (रिन्)—पु०[स०] [स्त्री० स्वैरिणी] १. वह जो मनमाना आचरण करता हो। २. दुराचारी। बदचलन। ३. व्यभिचारी।
स्वोदय—पु०[स०] किसी आकाशीय पिंड का विशेष स्थान पर उदित होना।
स्वोपार्जन—पु०[स० स्व+उपार्जन] [भू० कृ० स्वोपार्जित] स्वय या अपने बाहु-बल से अपने लिए कुछ अर्जन करना। स्वय प्राप्त करना या कमाना।
स्वोपार्जित—वि०[स०] स्वय उपार्जन किया हुआ। अपना कमाया हुआ। जैसे—उनकी सारी सपत्ति स्वोपार्जित है।

ह

ह—देवनागरी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यजन, जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से कठ्य घोष, महाप्राण तथा ऊष्म माना जाता है।
हंक†—स्त्री० दे० 'हाँक'।
हॅकड़ना†—अ० [हिं० हाँक] [भाव० हँकडाव] १. झगडे के समय शेखी-भरे शब्दो मे ललकारना। २ अकडना।
हॅकडान—स्त्री०=हँकडाव।
हॅकडाव—पु० [हिं० हँकडना] हँकडने की क्रिया या भाव।
हॅकनी—स्त्री० [हिं० हाँकना] १ हाँकने की क्रिया या भाव। हँकान। २ वह पतली या छोटी छडी, जिससे पशुओं को हाँकते है। ३. हाँका (पशुओ का)।
हॅकरना—अ० १ =हँकडना। २ =अकडना।
हॅकराना—स० [हिं० हँकारना का प्रे०] किसी को हँकारने मे प्रवृत्त करना। उदा०—मोहन ग्वाल बाल हँकराए।—सूर।
†अ०=हँकारना।
हॅकराव(ा)†—पु० [हिं० हाँक] १ पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव। २ बुलाहट। बुलावा। ३ निमत्रण। ४=हँकवा।
हॅकवा—पु० [हिं० हाँकना] १ हाँकनेवाला। २ वह व्यक्ति जो ढोल आदि पीटकर जगल मे सोये या छिपे हुए जानवरो को अपने स्थान से भगाता हो और शिकारी की दिशा मे ले जाता हो। ३ शिकार किये जाने के उद्देश्य से जगली जानवरो को डरा तथा घेर कर मचान की ओर भागने मे प्रवृत्त करने की क्रिया। हाँका।
हॅकवाना—स० [हिं० हाँकना का प्रे०] हाँकने का काम किसी दूसरे से कराना
सयो० क्रि० देना।
स० [हिं० हाँक] हाँक लगाने, अर्थात् पुकारने का काम किसी से कराना। हाँक दिलवाना।
हॅकवैया†—वि० [हिं० हाँकना+वैया (प्रत्य०)] हाँकनेवाला।
वि० [हिं० हँकवाना] हँकवानेवाला।
हॅका—पु० [हिं० हाँक] १ हाँक। पुकार। २. ललकार।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
हॅकाई—स्त्री० [हिं० हाँकना] हाँकने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
हॅकाना†—स० १ =हँकवाना। २.=हाँकना।
हॅकार—स्त्री० [हिं० हँकारना] १ जोर से पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। हाँक। २ उक्त प्रकार से पुकारने पर होनेवाला शब्द।
मुहा०—हाँक पड़ना=बुलाहट होना।
३. वीरो की ललकार।
हकार†—पु०=अहकार।
पु०=हुकार।
हॅकारना†—अ० [स० हुकार या हिं० हाँक] १ जोर से आवाज देकर किसी दूर के मनुष्य को पुकारना या बुलाना। हाँक देना या लगाना।
†स०=हँकराना।
†अ०=हुकार करना।
हॅकारा—पु० [हिं० हँकारना] १. पुकार। हाँक। २ निमत्रण। बुलाहट।
क्रि० प्र०—आना।—जाना।—भेजना।
हॅकारी—पु० [हिं० हँकार+ई (प्रत्य०)] १. वह व्यक्ति जो किसी को बुलाने के लिए उसके यहाँ भेजा जाता हो। २ दूत।
†पु० हुँकार।
हॅकालना†—स०=हाँकना। (मध्य प्रदेश)
हॅकुआ†—पु० १.=हँकवा। २ =हाँका।
हॅगल—पु० [?] कश्मीर के जगलो मे रहनेवाला एक प्रकार का बारहसिंघा।
हंगाम—पु० [फा०] १ समय। काल। २ इरादा। विचार। ३. ताकत। बल। शक्ति। ४. बुद्धिमत्ता। समझदारी। ५ सेना।
हंगामा—पु० [फा० हंगामः] १. सभा-समिति मे या मेला-तमाशा देखने के लिए एकत्र होनेवाले लोगो मे उत्तेजना फैलने पर होनेवाली अव्यवस्था तथा शोरगुल। २ उक्त के फलस्वरूप होनेवाला उपद्रव या उत्पात। ३. आज-कल राजनीतिक क्षेत्र मे अचानक उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी विकट स्थिति, जिससे देश की शाति, सुरक्षा आदि मे बाधा पडने की सभावना हो। (एमर्जेसी)
हंगामी—वि० [फा०] हगामा सबधी। (एमर्जेंट)
हंगोरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड, जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती है।
हंझ*—पु०=हस।
हंटर—पु० [अ०] लबा चाबुक। कोडा।
क्रि० प्र०—जमाना।—मारना। लगाना।

हँडकुलिया—स्त्री० [हिं० हँडिया+कुलिया] १ लकड़ी, धातु आदि के बने हुए तवा, परात, चकला, बेलन आदि वे छोटे-छोटे बरतन, जिनसे बच्चे खेलते हैं। २. लाक्षणिक अर्थ मे, चूल्हे-चौके का सामान।

हँडना—अ० [स० हिंडन] १ पैदल चलते हुए चारो तरफ घूमना-फिरना। २ व्यर्थ इधर-उधर घूमना या मारे-मारे फिरना। ३ वस्त्रो आदि का अच्छी तरह से अधिक समय तक उपयोग मे आते रहना।

हंडर—पु०=हडरवेट।

हडरवेट—पु० [अं० हंड्रेडवेट] एक अँगरेजी तौल, जो ११२ पौड या प्राय १ मन १४॥ सेर की होती है।

हँडवना—अ० [स० रभण ?] १ गौओ आदि का रँभाना। २ जोर का शब्द या घोष करना। उदा०—हरि का सतु मुरै हाँड दैत सगली सैन तराई।—कबीर।

हंडा—पु० [स० भाडक] [स्त्री०अल्पा० हडी, हँडिया, हाँडी] १ पानी रखने या भरने का पीतल या ताँबे का एक प्रकार का बड़ा बरतन। २ एक विशिष्ट प्रकार की वह बडी रोशनी, जिसके ऊपर हडे के आकार की शीशे की बहुत बडी चिमनी लगी रहती है। (गैस)

हँडाना—स० [स० अभ्यटन] १ घुमाना। फिराना। २ कपडे आदि पहनकर उनका उपयोग या व्यवहार करना।

हँडिक—पु० [देश०] तौलने का बाट। (सुनार)

हँडिका—स्त्री० [स०] हँडिया। हाँडी।

हँडिया—स्त्री० [स० भाडिका] १ बडे लोटे के आकार का तथा चौडे मुँहवाला मिट्टी का बरतन, जिसमे चावल, दाल आदि पकाते या कोई चीज रखते है। हडी। हाँडी।

मुहा०—हँडिया चढ़ाना=कोई चीज पकाने के लिए हाँडी मे डालकर आँच पर रखना।

२ उक्त प्रकार का शीशे का एक पात्र, जिसे शोभा के लिए छत मे लटकाते और उसके अन्दर मोमबत्ती जलाते हैं। ३. जौ, चावल आदि अनाज सडाकर बनाई हुई शराब।

हंडी†—स्त्री०=हँडिया।

हंत—अव्य० [स०] खेद या शोक-सूचक शब्द। जैसे—हा हत !

हंतकार—पु०[स० हत√कृ (करना) +अण्] अतिथि, सन्यासी आदि के लिए निकाला हुआ भोजन। हदा।

हंतव्य—वि० [स०√हन् (हिंसा करना)+तव्य] १ जिसका हनन किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २ (आज्ञा या आदेश) जिस-का उल्लघन हो सकता हो।

हंता(तृ)—वि० [स०√हन् (हिंसा करना)+तृच्] [स्त्री० हत्री] हनन अर्थात् हत्या करने या मार डालनेवाला। जैसे—पितृ-हता।

हंतोक्ति—स्त्री० [स० ष० त०] १ हत शब्द का प्रयोग। हतकार। २ सहानुभूति। ३ करुणा।

हंत्री—वि० स्त्री० [स० हतृ+ङीप्] हनन या वध करनेवाली।

हँथोरी*—स्त्री०=हथेली।

हँथौडा†—पु० १=हथौडा। २ हथ-कडा।

हदा—पु० [स० हतकार] १ पुरोहित या ब्राह्मण द्वारा अपने यजमान के यहाँ से नियमित रूप से (प्राय प्रतिदिन) लाया जानेवाला भोजन। २. पुरोहित या ब्राह्मण के लिए अलग निकाला हुआ भोजन।

हँफनि—स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव। हाँफ। क्रि० प्र०—चढ़ना।—मिटना।—मिटाना।

हंबा—स्त्री० [सं०] गाय, बैल आदि का रँभना।

†अव्य० सहमति या स्वीकृति का सूचक शब्द। हाँ। (राज०)

हंभा—स्त्री० [स०] गाय या बैल आदि के बोलने का शब्द। रँभाने का शब्द।

हंस—पु० [स०√हस्+अच् पृषो० सिद्ध] [स्त्री० हंसिनी, हंसी] १. बत्तख की तरह का एक प्रसिद्ध जलपक्षी, जो नीर-क्षीर का विलगाव करनेवाला और सरस्वती का वाहन माना गया है। २.सूर्य। ३. ब्रह्मा। ४. माया से निर्लिप्त, मुक्त और शुद्ध आत्मा, जो चैतन्य-रूप होती है। जीवात्मा। ५. जीवनी-शक्ति। प्राण।

मुहा०—हंस उड़ जाना=शरीर से प्राण निकल जाना। उदा०—ज्यो काँचे बासन टिकै न पानी। उडि गौ हस काया कुम्हिलानी।—कबीर।

६. ज्ञानी और भक्त पुरुष। ७ दशनामी सन्यासियो का एक भेद। ८ प्राण वायु (आत्मा, विशुद्ध रूप मे)। ९. पैर मे पहनने का नूपुर नामक गहना। १० ईश्वर। नारायण। ११ विष्णु का एक अवतार। १२. लोक-रंजक और श्रेष्ठ राजा। १३ आचार्य। विद्वान। १४ गुरु-मत्र या दीक्षा देनेवाला गुरु। १५ कामदेव। १६ एक प्रकार का नृत्य। १७ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का प्रासाद, जो प्राय हंस के आकार का होता था; और जिसके ऊपर ऊँचा शृंग बना होता था। १८. घोडा। १९. भैसा। २० ईर्ष्या या द्वेष की मनोवृत्ति। २१. पर्वत। पहाड। २२. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण और दो गुरु होते हैं। इसे 'पक्ति' भी कहते हैं। यथा—राम खरारी। २३ दोहे के नवें भेद का नाम जिसमे १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते है। (पिंगल)

हंसक—पु० [सं० हस√कै+क] १ हस पक्षी। २ पैर की उँगलियो मे पहना जानेवाला बिछुआ नाम का गहना।

हंस-कूट—पु० [सं० ब० रा०] बैल का डिल्ला।

हंस-गंधर्व—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हंस-गति—स्त्री० [सं० ष० त०] १. हंस के समान सुन्दर तथा धीमी चाल। २ ब्रह्मत्व या सायुज्य की प्राप्ति। ३. एक प्रकार का मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे २० मात्राएँ होती है। मंजुतिलका।

हसगदा—स्त्री० [स० ब० स०] प्रिय भाषिणी स्त्री।

हस-गमनी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हस-गर्भ—पु० [स०] एक प्रकार का रत्न।

हस-गामिनी—वि० स्त्री० [स० हस√गम् (जाना)+णिनि-ङीप्] जिसकी चाल हंस की चाल के समान मंद तथा सुन्दर हो।

स्त्री० सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हस-गिरि—पु० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हसचौपड़—पु० [सं० हस+हिं० चौपड] चौपड का एक प्रकार का पुराना खेल।

हसजा—स्त्री० [स० हंस√जन् (पैदा होना)+टाप्] (सूर्य की कन्या) यमुना।

हँसता-मुखी†—वि०=हँस-मुख।

हंस-दीपक—पु० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

हंस-देह—स्त्री० [स० उपमि० स०] पाँचों तत्त्वो से रहित व्यक्ति का वह रूप, जिसमे वह परम प्रकाश तथा चैतन्य-स्वरूप ब्रह्म का अश रहता है।
हंस-ध्वनि—स्त्री० [स०] सगीत मे विलावल ठाठ की एक रागिनी।
हंस-नादिनी†—वि० स्त्री० [स० हस√नद् (बोलना)+णिनि-ङीप्] मधुर भाषिणी।
हंसन—स्त्री०=हँसनि (हँसी)।
हंस-नटनी—स्त्री० [स०] सगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
हंसना—अ० [स० हसन] १. आनद, तृप्ति आदि प्रकट करने की एक क्रिया, जिसमे चेहरा खिल उठता है, आँखें कुछ फैल जाती है, मुँह खुल जाता है और गले मे से ध्वनियाँ निकलने लगती हैं।
मुहा०—हँसते-हँसते=(क) प्रसन्नता से। (ख) सहज मे। हँसना-खेलना या हंसना बोलना=प्रसन्नता और आमोद-प्रमोद की बातचीत करना। हँस कर बात उड़ाना=तुच्छ या साधारण समझकर हँसते हुए कोई बात टाल देना।
२. दिल्लगी या परिहास करना। ३. घर, स्थान आदि का इतना सुन्दर लगना कि हँसता हुआ-सा जान पड़े।
स० किसी की हँसी या उपहास करना। हँसी उड़ाना। उदा०—हँसा गया मैं, हँसने गया था।—मैथिलीशरण।
मुहा०—(किसी पर) हंसना=किसी की हँसी उडाना। उपहास करना। हँसा जाना=उपहासास्पद बनना। ऐसा मूर्ख बनना कि सब लोग हँसी उड़ावे।
हंस-नाद—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
हंस-नारायणी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
हंसनि†—स्त्री०=हँसी।
हंस-नीलांबरी—स्त्री० [स०] सगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
हंस-पंचम—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
हंस-पदी—स्त्री० [स० ब ० स० ङीप्] एक प्रकार की लता।
हंस-पादी—स्त्री० [स०]=हसपदी।
हंस-भूषणी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
हंसभ्रमरी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
हस-मंगला—स्त्री० [स०] एक सकर रागिनी।
हंस-मंजरी—स्त्री० [स०] सगीत मे, काफी ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।
हंसमाला—स्त्री० [स० प० त०] १. हसों की पंक्ति। २ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।
हंस-मुख—वि० [हिं० हंसना+स० मुख] १. जिसका मुख सदा हंसता हुआ-सा रहता हो। २. जो खूब हँसी-मजाक की बातें किया करता हो; हँसी-मजाक की बातें सुनकर प्रसन्न होता हो।
हंस-रथ—पु० [स० ब० स०] ब्रह्मा (जिनका वाहन हस है)।
हंसराज—पु० [स०] १ एक प्रकार की जडी या बूटी जो पहाडो मे चट्टानो से लगी हुई मिलती है। समलपत्ती। २. एक प्रकार का अगहनी धान।
हँसली—स्त्री० [स० असली] १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी। २. गले मे पहनने का एक गहना, जो प्राय. उक्त हड्डी के समानान्तर रहता है।
हसवती—स्त्री० [सं० हंस+मतुप् ङीप् म=व] १. एक प्रकार की लता। २ एक प्रकार की रागिनी।
हंस-वाहन—पु० [स० ब० स०] ब्रह्मा (जिनकी सवारी हस है)।
हस-वाहिनी—स्त्री० [स० हस√वह् (ढोना)+णिनि-ङीप्] सरस्वती जिनकी सवारी हस है।
हंस-श्री—स्त्री० [स०] सगीत मे खम्माच ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।
हंस-सुता—स्त्री० [स० प० त०] यमुना नदी। उदा०—हससुता की सुन्दर कगरी।—सूर।
हंसाई—स्त्री० [हिं० हंसना] १ हँसने की क्रिया या भाव। २ उपहास-पूर्ण निन्दा। जैसे—यह तो जगत् में हँसाई का काम है।
हंसाधिरूढा—स्त्री० [स० हस-अधि√रुह् (चढ़ना)+क्त-टाप्] सरस्वती का एक नाम।
हंसानदी—स्त्री० [स०] सगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
हँसाना—स० [हिं० हँसना] किसी को हँसने मे प्रवृत्त करना। ऐसी बात कहना जिससे दूसरा हँसे।
सयो० क्रि०—देना।
हँसाय†—स्त्री०=हँसाई।
हसारूढ़—पु० [स० हस+आ√रुह् (चढना)+क्त] ब्रह्मा (जो हस पर सवार होते है)।
हंसारूढ़ा—स्त्री० [स०] सरस्वती।
हंसाल—पु० [सं०] झूलना नामक मात्रिक रामदडक छंद का एक भेद।
हंसालि—स्त्री० [सं०]=हसाल (छन्द)
हंसावधूत—पुं० [स० हस+अवधूत] तंत्र के अनुसार चार प्रकार के अवधूतो मे से एक, जो पूर्ण होने पर 'परमहंस' तथा अपूर्ण रहने पर 'परिव्राजक' कहलाते है।
हंसावर—पु० [स० हस] वत्तख, हस आदि की जाति का एक सुन्दर पक्षी, जिसकी गरदन और टाँगे लबी होती है।
हंसावली—स्त्री० [सं० प० त०] हसो की पक्ति।
हसिका—स्त्री० [स० हस+कन्-टाप्] हस की मादा। हसी।
हंसिनी—स्त्री०=हसी (मादा हस)।
हंसिया—स्त्री० [सं० हंस] १ लोहे का एक धारदार औजार जो अर्द्ध-चन्द्राकार होता है और जिससे खेत की फसल, तरकारी आदि काटी जाती है।
विशेष—इस आकार-प्रकार के कुछ औजार जो चमड़ा छीलने आदि के तथा कुछ और कामो मे भी आते है।
२. हाथी के अकुश के आगे का उक्त आकार का अश।
हंसी—स्त्री० [हिं० हंसना] १ हँसने की क्रिया, ध्वनि या भाव।
पद—हँसी-खुशी=प्रसन्नता। हँसी ठट्ठा=विनोद। मजाक।
क्रि० प्र०—आना।—निकलना।
मुहा०—हँसी छूटना=हँसी आना।
२ परिहास। दिल्लगी। मजाक। ठट्ठा।
मुहा०—(किसी की) हँसी उडाना=व्यग्यपूर्ण निन्दा या उपहास करना। हँसी या हँसी-खेल समझना=किसी काम या बात को साधारण या तुच्छ समझना। हँसी मे उड़ाना=साधारण समझकर हँसते हुए टाल देना। हँसी में ले जाना=गभीर बात को हँसी की बात समझना।

३. हँसने-हँसाने के लिए होनेवाली बातें। मजाक। दिल्लगी। ४ किसी को तुच्छ या हेय समझकर उसके सबध मे कही जानेवाली विनोदपूर्ण बात। उपेक्षापूर्ण हास्य की बातें। ५ लोक मे होनेवाली उपहासपूर्ण निंदा या बदनामी। जैसे—ऐसा काम मत करो, जिससे चार आदमियो मे हँसी हो।

हंसी—स्त्री० [स० हस+ङीप्] १ हस की मादा। स्त्री-हँस। २ पजाब मे अच्छी गायो की एक नसल या जाति। ३. २२ अक्षरो की एक वर्ण-वृत्ति, जिसके प्रत्येक चरण मे दो मगण, एक तगण, तीन नगण, एक सगण और एक गुरु होता है।

हँसीला†—वि०[हिं० हँसना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हँसीली] १. हँसता हुआ या हँसता रहनेवाला। हास्य-प्रिय। २. हँसी-मजाक करनेवाला। हँसोडा।

हँसुआ†—वि० [हिं० हँसना] हँसनेवाला। हँसोड। उदा०—हँसुआ ठाकुर खँसुआ चोर।—घाघ।†

†पु०=हँसिया।

हँसुली—स्त्री०=हँसली।

हँसेल†—स्त्री० [देश०] नाव खीचने की रस्सी। गून।

हँसोड—वि० [हिं० हँसना+ओड (प्रत्य०)] १. जो खूब तथा ठहाका लगाकर हँसता हो। २ जो दूसरो को खूब हँसाता हो।

हँसोर†—वि०=हँसोड।

हँसौंहाँ—वि० [हिं० हँसना+औहाँ (प्रत्य०)] १ हँसी से भरा हुआ। हँसता हुआ। जैसे—हँसौंही सूरत। २ हँसने वाला।

ह—पु० [स०] १ शून्य। २ आकाश। ३ स्वर्ग। ४ ज्ञान। ५ ध्यान। ६ चन्द्रमा। ७ शिव। ८ जल। पानी। ९ कल्याण। मंगल। १० विष्णु। ११. चिकित्सक। वैद्य। १२ कारण। सबब। १३. कल्याण। मगल। १४ रक्त। खून। १५. डर। भय। १६ घोडा। १७ युद्ध। लडाई १८ अभिमान। घमड। १९ योग मे एक प्रकार का आसन। २० हास। हँसी।

हअना†—स० [स० हनन] १. हनन करना। मार डालना। २ नष्ट करना। उदा०—लोभ छोभ मोह गर्व शम शम ना हई।—केशव

†अ०[अनु० हाहा से] आश्चर्य करना। चकित होना। उदा०—हौं हिय रहति हई छई-नई जुगुति जग जोय।—बिहारी।

हई—पु० [स० हयिन्, हयी] घुडसवार।

हउँ*—सर्व०=हौं (मैं)।

अ०=हौं (हूँ)।

हउम*—पु० [स० अह] १ अह का भाव या विचार। उदा०—तउ मनु मानै जाते हउमै जइहै।—कबीर। २. अहकार। घमड।

हक—वि० [अ० हक] १ जो झूठ न हो। सच। सत्य। २ जो धर्म, न्याय आदि की दृष्टि से उचित या ठीक हो। जैसे—हक तो यह है कि उसकी चीज उसे मिल जानी चाहिए।

पद—हक-नाहक। (देखे)

पु०. ३ ईश्वर। परमात्मा। उदा०—कहे एक इन्साँ सुने जबकि दो। कि हक ने जबाँ एक दी कान दो।—कोई शायर। ४. उचित, न्यायसगत पक्ष या बात। ५. लेने या अपने पास रखने, काम में लाने आदि का अधिकार। इख्तियार। जैसे—इस मकान पर हमारा भी हक है।

क्रि० प्र०—दबाना।—दिखाना।—माँगना।—मारना।

६ कोई काम करने-कराने का अधिकार। जैसे—इस बीच मे तुम्हे बोलने का हक नही है। ७. न्याय, प्रथा आदि के अनुसार प्राप्त अधिकार। जैसे—ब्याह-शादी के समय नौकर-चाकरो का भी कुछ हक होता है। ८ किसी का कोई ऐसा अग या पक्ष, जिसके साथ लाभ और हानि भी सबद्ध हो।

पद—हक में=(लाभ या हित के विचार से) पक्ष मे। जैसे—उनकी मदद करना तुम्हारे हक मे अच्छा नही होगा।

मुहा०—हक अदा करना=कर्तव्य का पालन करना। फर्ज पूरा करना।

पु० [अनु०] १ वह धक्का जो सहसा चकपका उठने या घबरा उठने से हृदय मे लगता है। धक। २. शोर-गुल। हो-हल्ला। (राज०) उदा०—होइ पीरहिक गंगहण।—प्रिथीराज।

हकतलफी—स्त्री० [अ० हक़+फा० तलफ़ी] किसी के हक या अधिकार पर होनेवाला आघात।

हकदक—वि० [अनु०] हक्का-बक्का। चकित।

हकदार—पु० [अ० हक+फा० दार] [भाव० हकदारी] वह जिसे किसी कार्य या चीज का कोई हक हासिल हो। स्वत्व या अधिकार रखनेवाला। जैसे—इस जायदाद के कई हकदार हैं।

हक-नाहक—अव्य० [अ० हक+फा० नाहक] १ बिना उचित-अनुचित का विचार किये। जबरदस्ती। धीगा-धीगी से। २ बिना किसी कारण के। व्यर्थ।

हकपरस्त—वि० [अ०+फा०] [भाव० हक-परस्ती] १. ईश्वर को माननेवाला। आस्तिक। २ न्याय और सत्य के पक्ष मे रहनेवाला।

हक-बक†—वि०=हक्का-बक्का।

हक-बकाना—अ० [अनु० हक्का-बक्का] अचानक घटित होनेवाली विलक्षण बात पर स्तभित होना। भौचक्का होना।

हक-मालिकाना—पु० [अ०+फा०] वह हक या अधिकार, जो किसी चीज के मालिक होने के कारण प्राप्त होता है।

हक-मौरूसी—पु० [अ०] वह अधिकार, जो पैतृक परम्परा से प्राप्त हो।

हकला—वि०[हिं० हकलाना] रुक-रुक कर बोलनेवाला। हकलानेवाला।

हकलाना—अ० [अनु०] [भाव० हकलाहट] स्वरनाली के ठीक काम न करने या जीभ के तेजी से न चलने के कारण बोलने के समय बीच-बीच मे अटकना। रुक-रुककर बोलना।

हकलापन—पु० [हिं०] हकला होने की अवस्था, धर्म या भाव।

हकलाहट—स्त्री०=हकलापन।

हकलाहा†—वि०=हकला।

हक-शफा—पु० [अ० हक्के-शुफ़. =पडोसी का अधिकार] जमीन, मकान आदि खरीदने का वह हक, जो गाँव के हिस्सेदारो अथवा पडोसियो को औरो से पहले प्राप्त होता है। पूर्व-क्रय। (प्रिएम्पशन)

हक-शिनास—वि० [अ०+फा०] [भाव० हक-शिनासी] जो न्याय, सत्य आदि का पालक और समर्थक हो।

हक-शुफा—पु० [अ०+फा०]=हक-शफा।

हकार—पु० [स० ह+कार] 'ह' अक्षर या वर्ण।

हकारत—स्त्री० [अ०] १. 'हकीर' अर्थात् तुच्छ होने की अवस्था या भाव। तुच्छता। २ किसी तुच्छ वस्तु के प्रति होनेवाला घृणायुक्त भाव। जैसे—वह सब को हकारत की नजर से देखता अर्थात् तुच्छ समझता है।

हकारना—स० [देश०] १. पाल तानना या खड़ा करना। २ झडा या निशान उठाना। (लश०)

† स०=हँकारना।

हकीकत—स्त्री० [अ० हकीकत] १. वास्तविक स्थिति। असल और सच्ची वात। तथ्य। वास्तविकता। २. वास्तविक विवरण या वृत्तात। पद—हकीकत मे=वास्तव मे। वस्तुत.।

मुहा०—हकीकत खुलना=वास्तविक रूप सामने आना। ३. इस्लाम, विशेपत सूफी सप्रदाय मे साधना की वह चौथी और अतिम स्थिति, जिसमे साधक सत्य का ज्ञान प्राप्त करके द्वैत भाव से रहित हो जाता और परमात्मा मे लीन होकर परम पद प्राप्त कर लेता है। विशेष—इससे पहले की तीन स्थितियाँ शरीअत, तरीकत और मारफत कहलाती हैं।

हकीकी—वि० [अ० हकीकी] १ सच्चा। ठीक। २ रिश्ते या सम्बन्ध के विचार से, सगा। जैसे—हकीकी भाई=सगा भाई। ३. जो हकीकत अर्थात् ईश्वर से सम्बन्ध रखता हो अथवा उसकी ओर उन्मुख हो। जैसे—इश्क हकीकी=ईश्वर के प्रति होनेवाला प्रेम।

हकीम—पु० [अ०] १. अनेक विषयो, विशेषत. तत्त्वज्ञान या दर्शन-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता और पडित। जैसे—हकीम लुकमान। २. यूनानी चिकित्सा-पद्धति से चिकित्सा करनेवाला वैद्य। जैसे—हकीम अजमल खाँ।

हकीमी—स्त्री० [अ० हकीम+ई (प्रत्य०)] १. यूनानी आयुर्वेद। यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। २. हकीम का पद या व्यवसाय।

वि० हकीम सम्बन्धी। हकीम का। जैसे—हकीमी इलाज, हकीमी नुसखा।

हकीयत—स्त्री० [अ० हकीयत] १. 'हक' का गुण, धर्म या भाव। २ अधिकार। स्वत्व। ३. ऐसी सम्पत्ति, जिस पर न्यायतः किसी का अधिकार होना उचित हो। ४. सपत्ति आदि के अधिकारी होने की अवस्था या भाव।

हकीर—वि० [अ० हकीर] तुच्छ। हेय।

हकूक—पु० [अ० हकूक] 'हक' का बहुवचन। अनेक और कई प्रकार के स्वत्व या अधिकार।

हकूमत†—स्त्री०=हुकूमत।

हक्क—पु० [अनु०] हाथी को बुलाने का शब्द।

† पु०=हक।

हक्का—पु० [देश०] लाठी द्वारा आघात करने का एक प्रकार। (लखनऊ)

हक्काक—पु० [?] वह कारीगर, जो नगीने तराशता तथा जडता हो।

हक्का-बक्का—वि० [अनु०] १. अप्रत्याशित घटना देख या बात सुनकर जो घबरा तथा शिथिल हो गया हो। २ आश्चर्यचकित।

हक्कार—पु० [स०] चिल्ला कर बुलाने का शब्द। पुकार।

हगनहटी†—स्त्री० [हिं० हगना] १. मल त्याग करने की इन्द्रिय। गुदा। २ पाखाना फिरने की जगह।

हगना—अ० [देश०] १. गुदा के मार्ग से मल त्याग करना।

मुहा०—हग मारना=भयभीत होकर पीछे हटना।

स० १ गुदा मार्ग से कोई चीज प्रसव करना। जैसे—मुरगी सोने के अडे हगती है। २. दवाव आदि के फलस्वरूप दे देना।

हगनेटी†—स्त्री०=हगनहटी (गुदा)।

हगाना—स० [हिं० हगना का स०] १ किसी से हगने की क्रिया कराना। पाखाना फिरने के लिए प्रवृत्त करना। जैसे—बच्चे को हगाना। सयो० क्रि०—देना।

हगास—स्त्री० [हिं० हगना+आस (प्रत्य०)] हगने की आवश्यकता या प्रवृत्ति।

सयो० क्रि०—लगना।

हगोड़ा—वि० [हिं० हगना+ओडा (प्रत्य०)] [स्त्री० हगोडी] १ बहुत हगनेवाला। बहुत झाड़ा फिरनेवाला। २. भय के कारण जिसका पाखाना निकल जाता हो। बहुत बडा डरपोक।

हग्गू—वि० [हिं० हगना+ऊ (प्रत्य०)] हगोडा।

हचक—स्त्री० [हिं० हचकना] हचकने की क्रिया भाव या आघात।

हचकना†—अ० [अनु० हच हच] भार पडने पर चारपाई, गाडी आदि का झोका खाना या बार-बार हिलना। धचकना।

हचका†—पु० [हिं० हचकना] धीरे से लगनेवाला धक्का। धचका। सयो० क्रि०—देना।—मारना।—लगाना।

हचकाना—स० [हिं० हचकना का स०] झोका देकर हिलाना।

हचकोला—पु० [हिं० हचकना] १ वह धक्का जो गाडी, चारपाई आदि के हिलाये-डुलाये जाने पर लगे। धक्का। २ किसी चलती या हिलती हुई चीज के कारण रह-रहकर लगनेवाला हलका झटका या धक्का। जैसे—रेलगाडी या पालकी पर बैठने से हचकोले उठते है।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।

हचना†—अ०=हिचकना।

हज—पु० दे० 'हज्ज'।

हजम—वि० [अ० हज़्म] १ (खाद्य पदार्थ) जो खा लिये जाने पर आमाशय मे पच गया हो। २. लाक्षणिक रूप मे, जो अनुचित रूप से ले या दबाकर रख लिया गया हो।

हजर—पु० [अ०] पत्थर।

हजरत—पु० [अ० हजरत] १. महात्मा। महापुरुष। जैसे—हजरत मुहम्मद साहब। २ आदर-सूचक सम्बोधन। जैसे—हजरत, कहाँ चले? ३. बहुत बड़ा धृष्ट, धूर्त या लुच्चा व्यक्ति। (उपहास और व्यग्य) जैसे—वे भी बड़े हजरत हैं।

हजरत सलामत—पु० [अ०] १ बदशाहो या नवाबो के लिए परम आदर-सूचक सबोधन का पद। २. बादशाहो का वाचक पद।

हजल—पु० [अ० हज्ल] फूहड या भद्दा परिहास।

हजाज—पु० दे० 'हिजाज'।

हजाम—पु०=हज्जाम।

हजामत—स्त्री० [अ०] १. सिर के बाल काटने और दाढी के बाल मूँडने का काम। क्षौर।

क्रि० प्र०—बनाना।

२. सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल, जिन्हे कटाना या मुडाना हो। जैसे—बीमारी के दिनो मे महीनो हजामत बढती रही।

क्रि० प्र०—बढाना।—बनवाना।

३ कोई ऐसी क्रिया, जिसमे जबरदस्ती किसी से कुछ ले लिया जाय, अथवा और किसी प्रकार उसकी दुर्दशा की जाय। उदा०—कल मियाँ हज्जाम थे फिरते सबों को मूँडते। शेख के कूचे मे आज उनकी हजामत बन गई।—कोई शायर।

क्रि० प्र०—बनना। —बनाना।

हजार—वि० [फा० हज़ार] १ जो गिनती मे दस सौ हो। २ बहुत अधिक।

मुहा०—हजार हो=सब कुछ होने पर भी। जैसे—हजार हो, तो भी वह अपने ही आदमी हैं।

क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक हो। जैसे—तुम हजार कहो, तुम्हारी बात मानता कौन है?

पु० दस सौ की सूचक सख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००।

हजार-दास्ताँ—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बढिया बुलबुल। वि० बहुत-सी अच्छी-अच्छी और बढिया बातें कहनेवाला।

हजारहा—वि० [फा० हज़ारहा] १ हजारो। सहस्रो। २. बहुत अधिक।

हजारा—वि० [फा० हज़ारा] (फूल) जिसमे हजार या बहुत अधिक पँखडिया हो। सहस्रदल। जैसे—हजारा गेंदा।

पु० १ एक प्रकार का बडा बरतन, जिसके मुँह पर बहुत से छेदोवाला ढक्कन होता है, और जिससे गमलो आदि मे पानी डाला जाता है। २ फुहारा। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी।

हजारी—पु० [फा० हजारी] १ एक हजार सिपाहियो का सरदार। वह सरदार या नायक, जिसके अधीन एक हजार फौज हो। मुगल-शासन मे सरदारो को दिया जानेवाला एक ओहदा या पद।

पद—हजारी बाजारी=बडे सरदारो से लेकर साधारण नागरिको तक सब। सर्वसाधारण।

वि० १ हजार सबधी। जैसे—चार हजारी, तीस हजारी। २ बहुत से पुरुषो से सबध रखनेवाली स्त्री से उत्पन्न वर्ण-सकर। दोगला।

हजारो—वि० [फा० हज़ार+हिं० ओ (प्रत्य०)] १ कई हजार। सहस्रो। २ बहुत अधिक।

हजूम—पु० [अ०] किसी स्थान पर इकट्ठे हुए बहुत-से लोग। भीड।

हजूर†—पु०=हुजूर।

हजूरी—स्त्री० दे० 'हुजूरी'।

हजो—स्त्री० [अ० हज्व] अपकीर्ति। निन्दा। बुराई।

हज्ज—पु० [अ०] १ मन मे किसी बात का किया जानेवाला दृढ सकल्प। २ किसी पवित्र स्थान की की जानेवाली परिक्रमा। ३. मुसलमानो मे, मक्के और मदीने की तीर्थ-यात्रा। जैसे—मौलाना साहब दो बार हज्ज कर आये है।

हज्जाम—पु० [अ०] हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।

हज्जामी—स्त्री० [हिं० हज्जाम] हज्जाम या नाई का धधा या पेशा।

हज्म—वि० दे० 'हजम'।

हट†—पु०=हठ।

हटक†—स्त्री० [हिं० हटकना] हटकने अर्थात् मना करने या रोकने की क्रिया या भाव। मनाही। वर्जन।

मुहा०—हटक मानना=मना करने पर किसी काम से बाज आना। निषेध का पालन करना।

हटकन—स्त्री०=हटक।

हटकना—स०[हिं० हट=दूर होना+करना] १ निषेध या वारण करना। मना करना। २. किसी दिशा में बढते हुए चौपायो को उस दिशा मे बढने से रोकना तथा दूसरी ओर मोडना।

हटका†—पु० [हिं० हटकना=रोकना] वह अर्गल या डडा, जो दरवाजे को खुलने से रोकने के लिए लगाया जाता है।

हटकि*—स्त्री० [हिं० हटकना] १. हठात्; जबरदस्ती। २. बिना कारण।

हटतार†—पु० [?] वह डोरा, जिसमें माला के दाने पिरोये रहते हैं।

हटताल†—स्त्री०=हडताल।

हटना—अ०[स० घट्टन्]१ अपने स्थान से खिसक या चलकर इधर-उधर होना। एक जगह से सरकते हुए दूसरी जगह जाना। जैसे—आग के पास से जरा हटकर बैठो।

पद—हटना-बढना=अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होना या सरकना।

२ जो काम या बात कोई कर रहा हो या जिसे करने का समय आया हो, उससे दूर होना, बचना या विमुख होना। मुँह मोडना। जैसे—वह लड़ने-भिडने से नही हटता। ३ किसी के मना करने या रोकने पर किसी काम या बात से रुकना या विमुख होना। जैसे—लाख मना करो, यह लडका खेल-कूद से किसी तरह हटता ही नही। ४ अभ्यास, प्रतिज्ञा वचन आदि का पालन करने से रुकना या हिचकना। विचलित होना। जैसे—मैंने जो कह दिया उससे कभी हटूँगा नही। ५ किसी काम या बात का समय टलना। स्थगित होना। ६ न रह जाना। दूर होना। मिटना। जैसे—चलो, तुम्हारे सिर से बला हटी।

सयो० क्रि०—जाना।

†स०=हटकना (मना करना)। उदा०—देत धुख बार बार कोउ नहिं हटत।—सूर।

हटवी—स्त्री० [हिं० हटना+उडना] मालखभ की एक कसरत, जिसमे पीठ के बल होकर ऊपर जाते है।

हटवया—पु० [हिं० हाट+वया (तौला)] स्त्री० हटवयी] वह जो हाट मे दुकान लगाता हो। हाटवाला।

हटवा—पु०[हिं० हाट] हाट मे दुकान लगानेवाला व्यक्ति।

हटवाई—स्त्री०[हिं० हाट] हाट मे जाकर सौदा लेना या बेचना। क्रय-विक्रय।

पु० हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला।

स्त्री०[हिं० हटवाना] हटवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

हटवाना—स०[हिं० हटाना का प्रे०] कोई चीज किसी को किसी स्थान से हटाने मे प्रवृत्त करना।

हटवार†—पु०=हटवा।

हटवैया—वि० [हिं० हटवाना+वैया (प्रत्य०)] हटवानेवाला।

हटाना—स०[हिं० हटना का स०]१. किसी को उसके स्थान से हटने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना, जिससे कुछ या कोई अपनी जगह

से हटे। जैसे—(क) भीड़ हटाना। (ख) कुरसी या चौकी हटाना।
सयो० क्रि०—देना।—लेना।

२. आक्रमण या बल-प्रयोग करके अथवा किसी उपाय से दूर करना। जैसे—शत्रु को सीमा पर से हटाना। ३. किसी को उसके काम या पद से अलग करना। जैसे—इस दफ्तर से चार आदमी हटाये गये हैं। ४. ऐसा उपाय करना, जिससे कोई काम या बात दूर हो जाय या प्रस्तुत न रहे। जैसे—यह बखेड़ा अपने सिर से हटाओ।

सयो० क्रि०—देना।

हटिआ—स्त्री०=हटिया।

हटिया—स्त्री०[हिं० हाट] १. छोटा हाट। छोटा बाजार। जैसे—लोहटिया=लोहे का छोटा बाजार।

हटी†—स्त्री०=हट्टी (दूकान)। उदा०—प्रेमहटी का तेल मँगा कै, जग रह्या दिन ते राती।—मीराँ।

हटुआ†—वि०[हिं० हाट] हाट सम्बन्धी। हाट का। जैसे—हटुआ माल।

पुं०१ हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला व्यक्ति। २. दूकानदार। ३ मंडियों में अनाज तौलनेवाला कर्मचारी। बया।

हटैना—पुं०[हिं० हाट+ऐना (प्रत्य०)] [स्त्री० हटैनी] १. हाट में बिकने के लिए आई हुई चीज या जीव। २ वह जिसे हाट में से खरीदा गया हो।

हटौती—स्त्री०[हिं० हाट+औती (प्रत्य०)] शरीर की गठन। जैसे—उसकी हटौती बहुत अच्छी है।

हट्ट—पुं०[सं० √हट्ट (चमकना)+ट नेत्वम्] १ बाजार। २. दूकान।

हट्ट-चौरक—पुं०[सं० हट्टचौर+क] वह उचक्का, जो हाट में से चीजें चुरा ले जाता हो।

हट्टा—पुं० [सं० हट्ट] १. बाजार। हाट। जैसे—रतन-हट्टा। २. मार्ग। रास्ता। जैसे—चौहट्टा।

वि०=हृष्ट।

पद—हट्टा-कट्टा।

हट्टा-कट्टा—वि०[सं० हृष्ट+काष्ठ] [स्त्री० हट्टी-कट्टी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

हट्टी—स्त्री०[सं० हट्ट] दूकान। (पश्चिम)

हठ—पुं०[√हठ् (टेक रखना)+अच्] [वि० हठी, हठीला]१. बहुत आग्रहपूर्वक और बराबर यही कहते रहना कि अमुक बात ऐसी ही है अथवा ऐसे ही होगी या होनी चाहिए। अड़। जिद। टेक।

मुहा०—हठ ठानना या पकड़ना=किसी बात के लिए अड़ना। किसी बात के लिए हठ या जिद करना। दुराग्रह करना। हठ माँडना†=हठ पकड़ना। (किसी का) हठ रखना=किसी की हठपूर्वक कही हुई बात पूरी करना या मान लेना।

२ दृढ़तापूर्वक की हुई प्रतिज्ञा या सकल्प। ३ बल-प्रयोग। ४. शत्रु पर पीछे से किया जानेवाला आक्रमण। ५. किसी काम या बात की अनिवार्यता।

हठ-धर्म—पुं०[सं० मध्य० स०] अपने हठ पर अड़े या जमे रहना।

हठ-धर्मी—स्त्री० [सं०] १. सत्य-असत्य, उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। दूसरे की बात जरा भी न मानना। दुराग्रह। २. अपने धर्म, मत या सम्प्रदाय के संबंध में होनेवाला कट्टरपन, जो दूसरों के विचारों की सहिष्णुता का सूचक हो।

हठना*—अ० [हिं० हठ+ना (प्रत्य०)] १. हठ करना। जिद पकड़ना। दुराग्रह करना। २. दृढ़ प्रतिज्ञा या सकल्प करना।

हठ-योग—पुं० [सं० मध्य० स०, तृ० त०] योग का वह अंग या प्रकार जिसका प्रचलन नाथ-पंथियों ने अपनी साधना के लिए किया था और जिसमें ईश्वर-प्राप्ति के लिए नेती, धोती आदि क्रियाओं, कठिन मुद्राओं और आसनों का विधान है। इसमें शरीर के अन्दर कुंडलिनी और अनेक प्रकार के चक्रों का भी अधिष्ठान माना गया है।

विशेष—इसके सबसे बड़े आचार्य योगी मत्स्येन्द्रनाथ (मछंदरनाथ) और उनके शिष्य गोरखनाथ माने जाते हैं।

हठ-विद्या—स्त्री० [सं०] हठयोग।

हठ-शील—वि० [सं० ब० स०] [भाव० हठशीलता] हठ करनेवाला। हठी।

हठात्—अव्य०[सं०] १. लोगों के मना करने पर भी, अथवा हठ करते हुए। हठपूर्वक। २ बल प्रयोग करते हुए। जबरदस्ती। बलात्। ३. अचानक। सहसा। ४ निश्चित रूप से। अवश्य। जरूर।

हठावष्टम्भ—पुं०[सं०] अपने हठ के अनुसार काम करते रहने का भाव।

हठि*—अव्य० [हिं० हठ] १. हठपूर्वक। २ जबरदस्ती। उदा०—गौ कुल मांहि बन्यु हठि दीन्हा।—तुलसी।

हठी(ठिन्)—वि० [सं० हठ+इनि] हठ करनेवाला। जिद्दी। टेकी।

हठीला—वि०[सं० हठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हठीली] १. हठ करनेवाला। हठी। जिद्दी। २ विरोध, विवाद आदि में सदा अपनी प्रतिज्ञा या स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमा रहनेवाला। उदा०—ऐसो नाहिं न बूझिए हनुमान हठीले।—तुलसी।

हड़—पुं० [हिं० हाड़=अस्थि] हिं० 'हाड़' (अस्थि) का वह सक्षिप्त रूप, जो उसे यौ० पदों के आरम्भ में लगाने पर प्राप्त होता है। जैसे—हड़-गोड़, हड़-फूटन।

स्त्री०=हड़ें (हरें)।

हड़-कंप—पुं०[हिं० हाड़+कांपना] भारी हल-चल या उथल-पुथल। तहलका। जैसे—बाजार में आग लगते ही सारे शहर में हड़-कप मच गया।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हड़क—स्त्री०[अनु०]१. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए होने वाली गहरी आकुलता।

क्रि० प्र०—उठना।

२ तीव्र आकुलता। उत्कट चाह।

क्रि० प्र०—लगना।

हड़कना—अ०[हिं० हड़क] किसी प्रकार के अभाव से दुःखी होना। तरसना।

हड़का—पुं०[हिं० हड़काना] हड़कने की अवस्था, क्रिया या भाव।

हड़काना—स०[देश०]१. किसी को इस प्रकार से प्रेरित तथा उत्तेजित करना कि वह किसी पर आक्रमण करने के लिए उसके पीछे लग जाय। २. तरसाना।

†अ० = हटकना।

हड़काया—वि०[हिं० हडकाना] १ जिसे हडका कर किसी के पीछे उस पर आक्रमण करने के उद्देश्य से लगाया गया हो। २ बावला। पागल। ३ अत्यन्त विकल।

हड़काव—पु०[हिं० हडकना] जल-सन्त्रास। (दे०)

हड़-गिल्ल†—पु० =हडगीला।

हड़-गीला—पु०[हिं० हाड+गिलना ?] एक प्रकार की चिडिया। चनियारी।

हड़-जोड़†—पु० [हिं० हाड=हड्डी+जोडना] एक प्रकार का पौवा जिसके पत्ते शरीर पर चोट लगने पर बाँधे जाते है। कहते है कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड जाती है।

हड़ताल—स्त्री०[स० हट्ट=दूकान+ताला] दु ख, विरोध या असतोप प्रकट करने के लिए कल-कारखानों, कार्यालयो आदि के कर्मचारियो या जनसाधारण का सब कारबार, दूकाने आदि बद कर देना। (स्ट्राइक) स्त्री० दे० 'हरताल'।

हड़ताली—पु०[हिं० हडताल] वह व्यक्ति या वे लोग, जो हडताल कर रहे हो।

वि० हडताल-सम्बन्धी।

हड़ना†—अ० [हिं० धड़ा] तौल मे जाँचा जाना।

हडप—वि०[अनु०] १. मुँह मे डालकर निगला या पेट मे उतारा हुआ। २ छिपाकर या बेईमानी से उडाया और अपने अधिकार मे किया हुआ।

हडपना—स०[अनु० हडप] १ मुँह मे डालकर निगलना या पेट मे उतारना। २ किसी की चीज अनुचित रूप से लेकर दबा बैठना।

सयो० क्रि०—जाना।—लेना।

हडप्पा—पु०[हिं० हडपना] हडपने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—मारना।

पु०[?] सिन्धु प्रदेश का एक प्राचीन जनपद, जहाँ एक बहुत प्राचीन संस्कृति के भग्नावशेष मिले है।

हड़-फूटन†—स्त्री० [हिं० हाड+फूटना] शरीर मे होनेवाला दर्द, जो हड्डियो के भीतर तक जान पडे। हड्डियो तक की पीडा।

हड़-फूटनी†—स्त्री० [हिं० हड-फूटन] चमगादड (जिसकी हड्डी की गुरिया पैर के दर्द मे पहनी जाती है)।

हड़-फोड़—पु०[हिं० हाड+फोडना] एक प्रकार की चिडिया।

हड़-बड़†—स्त्री० =हडबडी।

हड़बड़ाना—अ० [अनु०] जल्दी मचाते हुए आतुर होना। जैसे—अभी हडबडाओ मत, गाडी आने मे देर है।

सयो० क्रि०—जाना।

स० जल्दी मचाते हुए कोई काम करने के लिए किसी से कहना या किसी को विवश करना।

सयो० क्रि०—देना।

हडबड़िया—वि०[हिं० हडबडी+ इया (प्रत्य०)] हडबडी करनेवाला। जल्दी मचानेवाला। उतावला।

हडबडी—स्त्री० [अनु०] १ हडबडाते हुए मचाई जानेवाली जल्दी। २. वह स्थिति, जिसमे हडबडाते हुए कोई काम करना पडता हो। जैसे—वह हडबडी मे पुस्तक वही छोड आया।

हड़हड़ाना†—अ०[अनु०] हड-हड शब्द होना।

स० हड-हड शब्द उत्पन्न करना।

†अ०, स० =हडबडाना।

हड़हा†—वि०[हिं० हाड] [स्त्री० हड़ही] जिसकी देह मे हड्डियाँ ही रह गई हो। बहुत दुबला-पतला।

पु० १ वह जिसने किसी की हत्या की हो। हत्यारा। २. जंगली साँड।

हड़ा—पु०[अनु०] १ चिडियों को उडाने का शब्द, जो खेत के रखवाले करते हैं। २ पुरानी चाल की पत्थर-कला नामक बन्दूक।

हड़ावर†—पु० [हिं० हाड=आषाढ मास] पहनने के वे कपड़े जो नौकरों को गरमी के मौसिम के लिए दिए जाते है। 'जडावर' का विपर्याय।

†पु० =हडावल।

हड़ावल—स्त्री० [हिं० हाड+स० अवलि] १. हड्डियो की पक्ति या समूह। २ हड्डियो का ढाँचा। ३ हड्डियों की माला।

हड़ीला—वि० [हिं० हाड+ईला (प्रत्य०)] १ जिसमे हड्डी या हड्डियाँ हो। २. जिसके शरीर मे हड्डियाँ ही रह गई हो या दिखाई देती हो, अर्थात् बहुत दुबला-पतला।

हड्ड—पु० [स० √हठ्+ड नेत्वम् पृषो० सिद्ध] अस्थि हड्डी। हाड।

हड्डा—पु० [स० हडाचिका] बर्रे या ततैया नाम का कीड़ा। दे० 'बर्रे'।

हड्डी—स्त्री० [स० अस्थि, प्रा० अट्ठि, अत्थि] १ रीढवाले जीव-जतुओ के शरीर के ढाँचे का वह प्रमुख अग या तत्त्व, जो बहुत कडा और सफेद होता है, प्राय नली के रूप का होता है और जोडो के बीच मे रहता है।

पद—पुरानी हड्डी=वृद्ध आदमी का शरीर, जो नई पीढ़ी के नवयुवको की तुलना मे अधिक दृढ और पुष्ट माना जाता है।

मुहा०—हड्डी उखड़ना=हड्डी का अपने जोडो पर से खिसक या हट जाना जिससे बहुत कष्ट होता है। (किसी की) **हड्डियाँ तोड़ना**=बहुत बुरी तरह से मारना-पीटना।

२ कुल। वश। खानदान। जैसे—हिंदुओ मे हड्डी देखकर व्याह किया जाता है।

हणवत†—पु० =हनुमत्।

हत—भू० कृ० [स० √हन् (हिंसा करना)+क्त] १. वध किया हुआ। जो मारा गया हो। २ जिस पर आघात हुआ हो। आहत। ३. जो किसी बात या वस्तु से रहित या विहीन हो गया हो। जैसे—श्री-हत, हत-प्रभ। ४ जिस पर आघात या ठोकर लगी हो। ५ बिगडा हुआ। विकृत। ६ परेशान तथा दुःखी। ७ रोग-ग्रस्त। ८ छूआ हुआ। ९ गुणा किया हुआ। गुणित।

हतक—स्त्री० [अ०] अपमान। बेइज्जती। हेठी।

पु० [स० हत] बहुत बड़ा अनर्थ या अनिष्ट। (पूरब)

हतक-इज्जती—स्त्री० [अ० हतक+इज्जत] दे० 'मानहानि'।

हत-ज्ञान—वि० [म० ब० स०] १ जिसका ज्ञान विकृत या शून्य हो गया हो। २ सज्ञा-शून्य।

हत-दैव—वि०[स० ब० स०] जिस पर दैव या ईश्वर का प्रकोप हुआ हो।

हतना—स० [स० हत+हिं० ना (प्रत्य०)] १ हत्या करना। मार डालना। २ मारना। पीटना। ३. आघात करना। चोट लगाना।

उदा०—सीता-चरण चोंचि हति भागा।—तुलसी। ४. पालन न करना। न मानना। ५. भग करना। तोड़ना। उदा०—ज्यो गज फटिक सिला मे देखत दसननि डारत हति।—सूर।

हत-प्रभ—वि० [स० ब० स०] जिसकी प्रभा (अर्थात्) काति या तेज नष्ट हो गया हो।

हत-बल—वि० [स० ब० स०] १. जिसका बल नष्ट हो गया हो। २ शक्ति-विहीन। उदा०—यह देश प्रथम ही था हत-बल।—निराला।

हत-बुद्धि—वि० [स० ब० स०] बुद्धि-शून्य। मूर्ख।

हत-भागी—वि० [स० हत+भाग्य] [स्त्री० हतभागिन, हतभागिनी] अभागा। भाग्य-हीन।

हत-भाग्य—वि० [स० ब० स०] भाग्य-हीन। बद-किस्मत। अभागा।

हतवाना—स० [हिं० हतना का प्रे०] हत्या या वध कराना। मरवा डालना।

हत-वीर्य—वि० [स० ब० स०] १ जिसका वीर्य नष्ट हो चुका हो। २ बल-हीन।

हता—वि० स्त्री० [स० हत–टाप्] १. (स्त्री) जिसका चरित्र नष्ट हो गया हो। २ व्यभिचारिणी।

†अ० [स्त्री० हती] ब्रज भाषा मे 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

हताई—स्त्री० [हिं० हतना] हत होने की अवस्था या भाव।

हतादर—वि० [स०] जिसका आदर नष्ट हो गया हो। अनादृत।

हताना†—स० [हिं० हतना]=हतवाना।

†अ० मारा जाना।

हताश—वि० [स० हत+आशा] जिसकी आशा नष्ट हो या मिट चुकी हो। भग्नाश।

हताश्वास—वि० [स० ब० स०] १ जिसे कही से कोई आश्वासन या सान्त्वना न मिल रही हो। उदा०—पाते प्रहार अब हताश्वास।—निराला। २ हताश। उदा०—यह हताश्वास मन भार, श्वास भर बहता।—निराला।

हताहत—वि० [स० द्व० स०] हत और आहत। मारे गये और घायल।

हतियार†—पु०=हथियार।

हतो*—अ०=हता (था)।

हतोत्तर—वि० [स० ब० स०] जो उत्तर न दे सके। निरुत्तर।

हतोत्साह—वि० [स० ब० स०] जिसका उत्साह नष्ट हो चुका हो।

हत्ता†—पु०=हत्था।

हत्तुलमकदूर—अव्य० [अ०] यथा-शक्ति। शक्ति भर।

हत्थ*—पु०=हाथ।

हत्था—पु० [हिं० हत्थ, हाथ] १ हाथ से चलाये जानेवाले बडे औजारो और छोटी कलो का वह हिस्सा, जिसे हाथ से पकडकर घुमाने या चलाने मे वे चलते हैं। दस्ता। (हैंडिल) २. कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे औजार, जो प्रायः हाथ का-सा काम करते हैं। जैसे—(क) करघे मे का हत्था जिसे चलाने से बुने हुए सूत आपस मे सट जाते हैं। (ख) नालियों में से खेतों मे पानी उलीचने का हत्था। ३ हथेली और पजे का वह छापा, जो मागलिक अवसरों पर ऐपन से दीवारो पर लगाया जाता है। ४. केले के फलो का बड़ा गुच्छा। पंजा। ५. हाथ की वह स्थिति जिसमे उससे कोई चीज पकडी जाती है, या कोई विशिष्ट क्रियात्मक प्रयत्न किया जाता है।

मुहा०—हत्थे परसे उखड़ना=(क) पतंग उडाते समय गुड्डी की नख परेते या हाथ के पास से कट जाती है। (ख) किसी काम, चीज या बात के सबध मे प्राप्ति, सिद्धि आदि के बहुत कुछ समीप आ जाने पर भी पूर्णतया विफल हो जाना।

†पु० [?] एक प्रकार का भद्दा मटमैला रग, जिसमे कुछ पीलापन और कुछ लाली भी होती है।

हत्था-जडी—स्त्री० [हिं० हाथी+जडी] एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियों का रस घाव, फोडे आदि पर और जहरीले जानवरो के डक लगने पर लगाया जाता है।

हत्था-जोड़ी—स्त्री० [हिं० हाथ+जोडना] सरकडे की वह जड, जो दो मिले हुए पजों के आकार की होती है।

हत्थि*—पु०=हाथी।

हत्थी—स्त्री० [हिं० हत्था, हाथ] १ औजार या कल का छोटा हत्था। दे० 'हत्था'। २ पत्थर आदि के वे दो चौकोर छोटे टुकडे, जिन पर हाथ रखकर पहलवान लोग डड पेलते हैं। ३. वह लकडी जिससे कड़ाही मे खौलता हुआ ऊख का रस चलाते हैं। ४ चमड़े का वह टुकडा, जिसे छीपी कपडे छापते समय हाथ मे लगा लेते है। ५ वह थैली, जिसे हाथ मे पहनकर साईस लोग घोडे का बदन पोछते है। ६ जुलाहो की वह लकडी, जिसमे पीतल के दाँत लगे रहते हैं और जो कपडा बुनते समय उसे ताने रहने के लिए करघे मे लगाई जाती है। ७ गुप्त रूप से और बुरे उद्देश्य से दिया जानेवाला प्रोत्साहन।

क्रि० प्र०—देना।

हत्थे—अव्य० [हिं० हाथ] हाथ से। द्वारा। जैसे—नौकर के हत्थे पुस्तक मिली।

मुहा०—(कोई चीज) हत्थे चढ़ना=(क) हाथ मे आना। अधिकार मे आना। (ख) हस्तगत होना। मिलना। (किसी काम का) हत्थे चढना=अभ्यास हो जाने पर किसी काम का सरलता से होते चलना।

हत्थे-दंड—पु० [हिं० हत्था+दड] वह दंड (कसरत) जो ऊँची ईंट या पत्थर पर हाथ रखकर किया जाता है।

हत्या—स्त्री० [स०] १ किसी को मार डालने की क्रिया। वध। खून।

मुहा०—हत्या लगना=किसी को मार डालने का पाप लगना।

२ अनजान मे अथवा यो ही सयोगवश (मार डालने के उद्देश्य से नही) किसी के प्राण ले लेना। (होमीसाइड) ३ बहुत ही झगडे-बखेडे का या बिलकुल व्यर्थ का और कष्टदायक काम या बात।

मुहा०—हत्या टलना=झझट दूर होना। हत्या (अपने) पीछे लगाना=व्यर्थ की झझट या झगडा अपने जिम्मे लेना। हत्या सिर लेना=हत्या पीछे लगाना। (दे०)

हत्यार†—वि०=हत्यारा।

हत्यारा—वि० [स० हत्या+हिं० आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] दूसरो को जान से मार डालनेवाला। हिंसा करनेवाला।

हत्यारी—स्त्री० [हिं० हत्यारा] १. हत्या। हिंसा। वध। २ हत्या के फल-स्वरूप लगनेवाला पाप।

क्रि० प्र०—लगना।
३ हत्या करने का अपराध ।

हय†—पु०=हाथ।
उप० [हिं० हाथ] 'हाथ' का वह सक्षिप्त रूप, जो उपसर्ग के रूप मे यौगिक शब्द के आरम्भ मे लगता है। जैसे—हय-कडी, हय-गोला, हय-बाँही, हय-लेवा आदि।
उप० [हिं० हाथी] हाथी का वह सक्षिप्त रूप, जो उपसर्ग के रूप मे यौगिक शब्दो के आरम्भ मे लगता है। जैसे—हय-नाल, हय-सार, आदि।

हय-उवार—पु० [हिं० हाय+उवार] वह कर्ज जो थोडे समय के लिए यो ही विना किसी प्रकार की लिखा-पढी के लिया जाय। हय-फेर।
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—लेना।

हय-कंडा—पु० [हिं० हाथ+कडा] १. हाथ से किये जानेवाले कामो मे दिखाई पडनेवाला कौशल और सफाई। २ कोई उद्देश्य सिद्ध करने का ऐसा कौशल, जो चालाकी या धूर्त्तता से युक्त हो।
क्रि० प्र०—दिखलाना।

हय-कड़ी—स्त्री० [हिं० हाथ+कडी] अपराधियो के हाथ मे शासनिक अधिकारियो के द्वारा पहनाई या बाँधी जानेवाली वह कडी या जजीर जिसका मुख्य उद्देश्य उन्हे कोई और अपराधपूर्ण काम करने से रोकना होता है।
क्रि० प्र०—डालना।—पडना।—लगना।—लगाना।

हय-करघा—पु० [हिं० हाथ+करघा] कपडा बुनने का वह करघा, जो हाथ से (यान्त्रिक बल मे नही) चलाया जाता है। (हैंड-लूम)

हय-करा—पु० [हिं० हाथ+करना] १ धुनिये की कमान मे बँधा हुआ कपडे या रस्सी का टुकडा, जिसे वह हाथ से पकडे रहता है। २ चमडे का वह दस्ताना, जो कँटीले झाड काटते समय हाथ मे पहनते हैं।

हय-करी—स्त्री० [हिं० हाथ+कडा] दूकान के किवाडो मे लगा हुआ एक प्रकार का ताला, जो एक कडी से जुडे हुए लोहे के दो कडो के रूप मे होता है और दोनों ओर ताले के अँकुडे की तरह खुला रहता है। इसी मे हाथ डालकर कुजी लगा दी जाती है।
† स्त्री०=हयकड़ी।

हय-कल—स्त्री० [हिं० हाथ+कल] १ कोई ऐसी छोटी कल या यत्र जो हाथ स चलाया जाता हो। २ लोहारो का एक प्रकार का पेच-कस। ३ करघे की दो डोरियाँ जिनका एक छोर तो हत्थे के ऊपर बँधा रहता है और दूसरा लग्घे मे।
† स्त्री०=हय-कडी।

हय-कोड़ा—पु० [हिं० हाथ+कोडा] कुश्ती का एक पेंच।
† पु०=हय-कडा।

हय-गोला—पु० [हिं० हाथ+गोला] शत्रुओ पर हाथ से फेंका जानेवाला कोई विस्फोटक गोला। (ग्रेनेड, हैंड-बाम्ब) तोप से फेंके जानेवाले गोले से भिन्न।

हय-छुट—वि० [हिं० हाथ+छूटना] जिसका हाथ मारने के लिए बहुत जल्दी छूटता या उठता है। जो बात-बात मे दूसरो को पीटने लगता हो।

हय-धरी†—स्त्री० [हिं० हाथ+धरना] लकडी की वह पटरी, जो नाव से जमीन तक लगाकर दो आदमी इसलिए पकड़े रहते हैं कि उस पर से होकर सवार लोग उतर जायँ।

हय-नार†—स्त्री०=हय-नाल।

हय-नाल†—पु० [हिं० हाथी+नाल] वह तोप जो हाथियों पर रखकर चलाई जाती थी। गजनाल। उदा०—हल नालि हवाई कुहक वान कवि।—प्रिथीराज।

हयनी—स्त्री० [हिं० हाथी] १ मादा हाथी। २ तालावो आदि के घाट पर की वह वास्तु-रचना, जो ऊपर की ओर बहुत ऊँची रहती और नीचे की ओर क्रमश बडी-बडी सीढियो के रूप मे नीची होती जाती है।

हय-पान—पु० [हिं० हाथ+पान] हथेली की पीठ पर पहनने का पान के आकार का एक गहना।

हय-फूल—पु० [हिं० हाथ+फूल] १ हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना जो सिकडियो के द्वारा एक ओर तो अँगूठियो से बँधा रहता है, और दूसरी ओर कलाई से। हाथ-साँकला। हय-सकर। २. एक प्रकार की आतिशबाजी।

हय-फेरी—पु० [हिं० हाथ+फेरना] १. प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। २. 'हय-फेरी'। ३ दे० 'हय-उवार'।

हय-फेर—स्त्री० [हिं० हाथ+फेरना] कभी यहाँ और कभी वहाँ चालाकी से भरी हुई की जानेवाली कारवाइयाँ। उदा०—बदमाशो की हय-फेरियाँ दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी।—शौकत थानवी।

हय-बेंटा—पु० [हिं० हाथ+बेंट] एक प्रकार की कुदाल जो खेत मे से गन्ने काटने के काम आती है।

हयरकी—स्त्री० [हिं० हाथ] चरखे की मुठिया जिसे पकडकर चरखा चलाते हैं।

हय-रस—पु० [हिं० हाथ+रस] हस्त-मैथुन। हस्त-क्रिया।

हय-लेवा—पु० [हिं० हाथ+लेना] विवाह के समय वर का अपने हाथ मे कन्या का हाथ लेने की रीति। पाणि-ग्रहण। उदा०—दियौ हियौं सग हाथ कै, हय लेमैं (लेवैं) ही हाथ।—विहारी।

हय-बाँस—पु० [हिं० हाथ+बाँस (प्रत्य०)] नाव चलाने के उपकरण। जैसे—लग्गा, पतवार, डाँड़ा इत्यादि।

हय-बाँसना†—स० [हिं० हाथ+अवाँसना] किसी व्यवहार मे लाई जानेवाली वस्तु में पहले-पहल हाथ लगाना। प्रयोग या व्यवहार का आरम्भ करना।

हय-सकर—पु० [हिं० हाथ+साँकर] हथेली की पीठ पर पहनने का हाथ-फूल नाम का एक गहना।

हय-साँकला†—पु०=हय-सकर।

हय-सार—स्त्री० [हिं० हाथी+स० शाला, हिं० सार] वह घर जिसमे हाथी रखे जाते हैं। गज-शाला।

हया—पु० [हिं० हाथ] मागलिक अवसरो पर गीले पिसे हुए चावल और हल्दी पोतकर बनाया हुआ पजे का चिह्न। ऐपन का छापा।
† पु०=हत्था।

हया-हयी*—अव्य [हिं० हाथ] १ हाथो-हाथ। २ चटपट। तुरन्त।
स्त्री०=हाथा-पाई।

हयिनी†—स्त्री०=हयनी।

हयिया—पु० [स० हस्त (नक्षत्र), प्रा० हत्थ] हस्त नक्षत्र जिसमे प्राय मूसल-धार वर्षा होती है।
क्रि० प्र०—बरसना।

२. करघे में कघी के ऊपर की लकडी।
स्त्री० [हिं० हाथ] छोटा हत्था।
हथियाना—स० [हिं० हाथ+आना (प्रत्य०)] १. हाथ मे लेना। हाथ से पकडना। २. दूसरे की चीज पर कौशल से या बलात् कब्जा कर लेना। ३ अपने प्रभुत्व या अधिकार मे कर लेना। जैसे—उन्होंने सस्था को हथिया लिया है।
सयो० क्रि०—लेना।
हथियार—पु० [हिं० हथियाना+आर (प्रत्य०)] १. कोई चीज जो हाथ मे पकडकर दूसरो को मारने के लिए चलाई जाय। शस्त्र। जैसे—छुरा, तलवार, बन्दूक आदि।
क्रि० प्र०—चलाना।
मुहा०—हथियार बाँधना या लगाना=अस्त्र-शस्त्र धारण करना।
२. कोई ऐसा उपकरण जिसकी सहायता से हाथ से कोई चीज बनाई जाय। औजार। ३ पुरुष का लिंग। (बाजारू)
हथियार-बंद—वि० [हिं० हथियार+फा० बद,स० बध] [भाव० हथियार-बदी] (व्यक्ति) जो हथियारो से लैस हो। सशस्त्र। (आर्मड) जैसे—हथियार-बद फौज।
हथियार-बंदी—स्त्री० [हिं० हथियार बद+ई (प्रत्य०)] हथियारो से लैस होना या करना। (आर्मामेंट)
हथुई-मिट्टी—स्त्री० [हिं० हाथ+मिट्टी] वह मिट्टी जो कच्ची दीवारो का तल चिकनाने के लिए उन पर लगाई जाती हो।
हथुई-रोटी—स्त्री० [हिं० हाथ+रोटी] वह रोटी जो गीले आटे को हाथ से गढकर बनाई गई हो। (चकले पर बेलने से बेलकर बनाई हुई रोटी से भिन्न।)
हथेरा—पु० [हिं० हाथ+एरा (प्रत्य०)] खेतों में पानी डालने का हाथा (देखें) नामक उपकरण।
हथेरी—स्त्री०=हथेली।
हथेल—स्त्री० [हिं० हाथ] वह लचीली कमाची जिस पर बना हुआ कपडा तानकर रखा जाता है। पनिक। पनखट।
हथेली—स्त्री० [स० हस्त+तल] हाथ पर का कलाई के आगे का वह ऊपरी चौडा हिस्सा, जिसके आगे उँगलियाँ होती हैं। कर-तल। हस्त-तल।
पद—हथेली सा=बिलकुल सपाट या समतल।
मुहा०—हथेली खुजलाना=(क) द्रव्य मिलने का आगम सूचित होना। कुछ मिलने का लक्षण होना। (ख) कोई नया और विलक्षण काम करने को जी चाहना या प्रवृत्ति होना। (किसी काम में) हथेली देना या लगाना=सहायता या सहारा देना। हथेली पर जान लेकर=जान जोखिम में डालकर। हथेली पर दही या सरसों जमाना=इतनी उतावली या जल्दबाजी करना कि मानो समय-साध्य काम क्षण भर मे हो सकता हो। (हास्यास्पद तथा शीघ्रतासूचक)। हथेली पर लिए फिरना=यह ढूँढने या देखते रहना कि हमारी अमुक चीज कौन लेता है। कुछ देने के लिए हर समय किसी का तैयार रहना। हथेली बजाना=कर-तल ध्वनि करना। ताली बजाना।
कहा०—किस की हथेली में बाल जमे हैं? ससार मे ऐसा कौन वीर है? जैसे—किसकी हथेली मे बाल जमे हैं जो उसे मार सकता है।

हथेवा†—पु० [हिं० हाथ] हथौडा। घन।
हथोरी*—स्त्री०=हथेली।
हथौटी—स्त्री०[हिं० हाथ+औटी (प्रत्य०)] कारीगरी या दस्तकारी का काम करने का विशिष्ट ढंग या हाथ चलाने का प्रकार।
हथौड़ा—पु० [हिं० हाथ+औडा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हथौडी] एक प्रसिद्ध औजार जिससे चीजें ठोकी-पीटी जाती हैं। (हैमर)
विशेष—यह प्रायः लोहे का ऐसा लम्बोतरा टुकडा होता है, जिसके बीच मे दस्ता या मूठ लगी रहती है। बढइयों, लुहारो-सुनारो, आदि के हथौडे अलग-अलग आकार-प्रकार के होते हैं।
हथौना†—पु० [हिं० हाथ+औना (प्रत्य०)] दूल्हे और दुल्हन के हाथों मे आशीर्वाद देने या शुभ कामना प्रकट करने के लिए मिठाई रखने की रीति। (पूरब)
हथ्याना†—स०=हथियाना।
हथ्यार†—पु०=हथियार।
हद—स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु के विस्तार का अतिम सिरा। किसी चीज की लम्बाई, चौडाई, उँचाई या गहराई की सब से अन्तिम रेखा या पार्श्व। सीमा। मर्यादा। जैसे—गाँव या बगीचे की हद। २ किसी प्रकार की मर्यादा या सीमा।
पद—हद से ज्यादा या बाहर=नियत सीमा के आगे। मर्याद. के बाहर।
मुहा०—हद करना=कोई काम या बात चरम सीमा तक पहुँचाना। जैसे—तुमने भी मिलनसारी की हद कर दी।
हदका*—पु०=धक्का।
हद-बंदी—स्त्री० [अ०+फा०] दो खेतो, प्रदेशों, राज्यों, देशों की सीमा निर्धारण करना।
हदस—स्त्री० [अ० हादसा ?] वह भय जो मन से जाता न हो।
हदसना†—अ० [हिं० हदस] डर जाना। भयभीत होना। जैसे—इस तरह डराने से लडका हदस जायगा।
हदसाना†—स० [हिं० हदसना का स०] ऐसा काम करना, जिससे कोई हदस जाय। किसी के मन मे डर या भय बैठाना।
हदीस—स्त्री० [अ०] मुसलमानो का वह धर्म-ग्रन्थ, जिसमे मुहम्मद साहब के कार्यो के वृत्तान्त और भिन्न-भिन्न अवसरो पर कहे हुए वचनों का सग्रह है और जिसका व्यवहार बहुत-कुछ स्मृति के रूप मे होता है।
हद्द†—स्त्री०=हद।
हन†—अव्य०=हाँ। (राज०)
†सर्व०=उन। (पूरब)
हनन—पु० [स०√हन् (हिंसा करना)+ल्युट्—अन][वि० हननीय, भू० कृ० हनित] १. मार डालना। वध करना। २ आघात या प्रहार करना। चोट लगाना। ३ गणित मे, गुणन या गुणा करना।
हनना†—स० [स० हनन] १ मार डालना। वध करना। २ आघात या प्रहार करना। ३ ठोंकना-पीटना।
हननीय—वि० [स०√हन् (हिंसा करना)+अनीयर्] जिसका हनन किया जाना उचित अथवा सभव हो। जो हनन किया जाने को हो या किया जा सकता हो।
हनफी—पु० [अ० हनफी] सुन्नियों का एक वर्ग या सप्रदाय।

हनवाना—स०[हिं० हनना का प्रे०] हनने का काम दूसरे से कराना। किसी को हनने मे प्रवृत्त करना।
†स०=नहवाना (नहलाना)।

हनाना†—अ०=नहाना। (बुन्देल०)

हनितवंत†—पु०=हनुमत्।

हनिवंत†—पु०=हनुमान्।

हनु—स्त्री०[स० √हन् (मारना)+उन्] १ दाढ की हड्डी। जबडा। २. चिबुक। ठोढ़ी।
†पु० हनुमान्।

हनुका—स्त्री०[स०] दाढ की हड्डी।

हनु-ग्रह—पु०[स०] एक रोग जिसमे जबड़े बैठ जाते हैं और जल्दी खुलते नही।

हनु-फाल—पु०[स० हनु+हिं० फाल] एक प्रकार का मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे बारह मात्राएँ और अन्त मे गुरु-लघु होते है।

हनु-भेद—पु०[स०] जबडे का खुलना।

हनुमंत—पु०=हनुमान्।

हनुमंत-उड़ी—स्त्री०[हिं० हनुमत+उडना] मालखभ की एक कसरत जिसमें सिर नीचे और पैर ऊपर की ओर करके सामने लाते है और फिर ऊपर खसकते है।

हनुमंती—स्त्री०[हिं० हनुमत] मालखभ की एक कसरत जिसमें एक पाँव के अँगूठे से बेत पकडकर और फिर दूसरे पाँव को अटी देकर और उससे बेत पकड़कर बैठते है।

हनुमत्कवच—पु० [स०] १. हनुमान् को प्रसन्न करने का एक मत्र जिसे लोग तावीज वगैरह मे रखकर पहनते है। २ हनुमान् का एक स्तोत्र।

हनुमद्धारा—स्त्री०[स०] चित्रकूट का एक पवित्र स्थल।

हनुमान्—वि० [स० हनुमत्] १ दाढवाला। जबडेवाला। २ बहुत बडा वीर।
पु० पपा के प्रसिद्ध एक वीर वानर जिन्होने सीता-हरण के उपरान्त रामचन्द्र की पूरी सेवा और सहायता की थी। ये रामचन्द्र के परम भक्त कहे गये है और देवताओ के रूप मे माने जाते है।

हनुमान—पु०=हनुमान्।

हनुमान-बैठक—स्त्री०[हिं० हनुमान+बैठक] एक प्रकार की बैठक (कसरत) जिसमे एक पैर पंतरे की तरह आगे बढाते हुए बैठते-उठते है।

हनु-मोक्ष—पु०[स०] दाढ का एक रोग जिसमे बहुत दर्द होता है और मुँह खोलने मे बहुत कष्ट होता है।

हनुल—वि०[स० हनु√ ला (लेना)+क] जिसकी दाढे तथा जबडे पुष्ट हो।

हनुवँ†—पु०=हनुमान्।

हनु-स्तंभ—पु० [स०]१ किसी प्रकार के शारीरिक विकार के कारण जबडो का इस प्रकार जमकर बैठ जाना कि वे खुल या हिल न सकें। २ धनुर्वात का एक प्रकार, जिसमे उक्त अवस्था होती है। (लॉक-जॉ)

हनूँ†—पु०=हनुमान्।

हनूमान—पु०=हनुमान्।

हनूष—पु०[स०] दैत्य। राक्षस।

हनोज—अव्य०[फा० हनोज]१. अभी। २. अभी तक।

हनोद—पु०[देश०] सगीत मे, एक प्रकार का राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है।

हन्नाह†—पु०=सन्नाह (कवच)।

हन्यमान—वि०[स०]=हननीय।

हप—पु०[अनु०] कोई चीज मुँह मे चट से लेकर होठ बद करने का शब्द। जैसे—हप से खा गया।

हपना—स०[हिं० हप+ना (प्रत्य०)]१. हप शब्द करते हुए कोई चीज मुँह मे रखना या निगलना। २ हडपना।

हप्पा—पु०[हिं० हडपना या अनु०]१ बच्चो की बोली मे, खाने की कोई अच्छी चीज। २. घूस। रिश्वत। (पश्चिम)

हप्पू—पु०[हिं० हपना] वह जो बहुत खाता हो या बहुत खाने के लिए लालायित रहता हो। पेटू।
†पु०=आफू (अफीम)।

हफ्त—वि०[फा० हफ्त] सात।

हफ्तगाना—पु०[फा० हफ्त गान] गाँव के पटवारी के ये सात कागज जिनमे वह जमीन लगान आदि का लेखा रखता है—खसरा, बहीखाता, जमाबंदी, स्याहा, बुझारत, रोजनामचा और जिसवार।

हफ्ता—पु०[स० सप्ताह से फा० हफ्तः]१. सात दिनो का समय। २ विशेषत. एक सोमवार (या एतवार) से दूसरे सोमवार (या एतवार) तक का समय।

हफ्ती—स्त्री०[फा० हफ्ती] एक प्रकार की जूती।

हफ्तेवार—वि० [फा०] साप्ताहिक। (वीकली)

हबकना—स० [अनु०] झपटकर किसी को दाँत से काटना।

हबड़ा—वि०[देश०] १. जिसके बहुत बडे-बडे दाँत हो। बडदता। २ कुरूप। भद्दा।

हबर-दबर—अव्य०[अनु०] जल्दी-जल्दी। उतावली से।

हबराना†—स०=हडबडाना।

हबश—पु०[अ० हब्श] उत्तरी अफ्रीका का एक प्रदेश जो हबशियो की जन्म-भूमि है।

हबशिन(शन)—स्त्री० [हिं० हबशी]१ हबशी स्त्री। २ काली-कलूटी स्त्री। ३ शाही महल की चौकीदारी करनेवाली स्त्री।

हबशी—पु०[फा०]१ हबश देश का निवासी जिसके शरीर का रग बहुत काला होता है। २. एक प्रकार का बडा और काला अगूर।
वि० १ हबश देश-सबधी। २ हबशियो का।

हबशी-सत्तर—पु०[फा०] एक प्रकार का अफ्रीकी गैंडा जिसके दो सीग या खाँग होते हैं।

हबाब—पु०[अ०] १ पानी का बुलबुला। २ शीशे का एक प्रकार का गोला जो अन्दर से बिलकुल पोला होता है, और प्राय सजावट के लिए छतो मे लटकाने के काम आता है।

हबाबी—वि०[अ०]१ हबाब सम्बन्धी। २ हबाब या पानी के बुल-बुले की तरह का। बहुत कमजोर और जल्दी टूट जानेवाला।

हबाबी-आइना—पु० [फा०] वह शीशा जिसका दल बहुत पतला होता और जल्दी टूट जाता है।

हबि†—पु०=हवि।

हबीब†—पु०[अ०]१. दोस्त। मित्र। २ प्रिय व्यक्ति।
हबूब—पु०[अ० हबाब या हुबाब]१. पानी का बुलबुला। बुल्ला। २. तुच्छ और निस्सार चीज या बात।
हबेली†—स्त्री०=हवेली।
हब्बा—पु०[अ० हब्ब']१ अन्न का दाना। २. बहुत ही अल्प या सूक्ष्म अश। ३ एक रत्ती की तौल।
हब्बा-डब्बा—पु०[हिं० हाँफ, अनु० डब्बा] जोर-जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चो को होती है। पसली चलने (अर्थात् फडकने) का रोग।
हब्बुल-आस—पु०[अ०] एक प्रकार की मेंहदी, जो बगीचो मे लगाई जाती है और दवा के काम मे आती है। बियालती मेहदी।
हब्स—पु०[अ०] १ कैद। कारावास। २ कारागार। कैदखाना। ३. ऐसी स्थिति जिसमे थोडी-सी बन्द जगह मे बहुत-से लोगो के रहने या हवा न आने के कारण दम घुटता हो।
हब्स-दम—पु० [अ०+फा०]१ दमा या श्वास नामक रोग। प्राणायाम।
हब्स-बेजा—पु०[अ०+फा०] अनुचित रीति से किसी को कही बन्द कर रखना जो विधि की दृष्टि से अपराध है।
हम—सर्व०[स० अहम् या अस्मत् पा०, प्रा० अम्हे] उत्तम पुरुष बहुवचन का सूचक सर्वनाम। 'मैं' का बहुवचन।
पु० अहभाव। अहकार। घमड।
उप०[स० सम से फा०] एक उपसर्ग जो कुछ सज्ञाओ से पहले लगकर ये अर्थ देता है—(क) तुल्य या समान। जैसे—हम-उम्र=समवयस्क। (ख) सग या साथ। जैसे—हमदर्दी=सहानुभूति। हमराही=साथ चलनेवाला पथिक या यात्री।
हम-असर—पु०[फा०+अ०]१ वे जिन पर एक ही प्रकार का प्रभाव पडा हो। २ समान सस्कार या प्रवृत्ति वाले। ३ सम-कालीन। ४ प्रतियोगी। प्रतिस्पर्धी।
हम-अहद—वि०[फा०+अ०] सम-कालीन।
हम-उम्र—वि० [फा० हम+अ० उम्र] अवस्था मे समान। समवयस्क।
हम-कदम—वि०[फा०+अ०] बराबर साथ-साथ कदम मिलाकर चलनेवाला अर्थात् सगी या साथी।
हम-कौम—वि०[फा० हम+अ० कौम] एक ही जाति के। सजातीय।
हम-जिस—वि०[फा०] एक ही वर्ग या जाति के। एक ही प्रकार के।
हम-जोली—पु० [फा०+हिं० जोडी?] वे जो प्राय साथ रहते हो। साथी। सखा।
हमता*—स्त्री० [हिं० हम+ता (प्रत्य०)] अहभाव। अहकार।
हम-दम—वि०[फा०]१. (वह) जो अपने मित्र का आखिरी दम तक साथ देता हो। २ अत्यन्त घनिष्ट मित्र।
हम-दर्द—पु०[फा०] [भाव० हमदर्दी] १ किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उसके दुख मे शरीक होता हो या सहानुभूति प्रकट करता हो। २ दूसरे के दुख से द्रवित होनेवाला।
हम-दर्दी—स्त्री० [फा०]१ हमदर्द होने की अवस्था, गुण या भाव। २. दूसरे के दुख से दुखी होने का भाव। सहानुभूति।
हमन†—सर्व० [हिं० हम]१. हम लोग। उदा०—हमन हैं इश्क मनाना हमन को होशियारी क्या।—कोई शायर।
हम-निवाला—वि०[फा०] वे मित्र जो एक साथ बैठकर भोजन करते हों। आहार-विहार के सखा। घनिष्ठ मित्र।
पद—हम-निवाला हम-प्याला=(मित्र) जो एक साथ खाते-पीते और सुख भोग करते हों।
हम-पंच†—सर्व०[हिं० हम पच] हमलोग।
हम-पल्ला—वि०[फा० हम-पल्ल] बराबरी का। जोड का। समकक्ष।
हम-पेशा—वि०[फा० हम-पेश.] एक ही तरह का पेशा करनेवाले। जो व्यवसाय एक करता हो, वही व्यवसाय करनेवाला दूसरा। सह-व्यवसायी।
हम-बिस्तर—वि०[फा०] किसी के विचार से वह व्यक्ति जो उसके साथ एक ही बिछौने पर सोता हो।
हम-बिस्तरी—स्त्री०[फा०]१ एक ही बिछौने पर साथ सोने की क्रिया। २ स्त्री-प्रसग। सभोग।
हम-मजहब—वि०[फा० हम+अ० मजहब] किसी के विचार से वह व्यक्ति जो उसी के मजहब को मानता हो। सह-धर्मी।
हम-रकाब—पु०[फा०] १ घुडसवारी मे साथ रहनेवाला। १ बराबर साथ रहनेवाला सगी। साथी। उदा०—हम-रकाब, साथ लेता सेना निज।—निराला।
हमरा†—सर्व०, वि०=हमारा।
हम-राह—अव्य०[फा०] (कही जाने मे किसी के) साथ। सग मे। जैसे—लडका उसके हमराह गया।
वि०[भाव० हमराही] जो साथ-साथ एक ही रास्ते पर चलते हों।
हम-राही—पु०[फा०] १ हमराह होने की अवस्था या भाव। २ रास्ते मे साथ चलने या यात्रा करनेवाला। रास्ते का साथी।
हमल—पु०[स० हम्ल] स्त्री के पेट मे बच्चे का होना। गर्भ। वि० दे० 'गर्भ'।
क्रि० प्र०—रहना।—होना।
मुहा०—हमल गिरना=गर्भ-पात या गर्भ-स्राव होना।
हमला—पु०[अ० हम्ल]१ मारने या प्रहार करने के लिए आगे बढना। आक्रमण। (अटैक) २. प्रहार। वार। ३ शत्रु पर की जानेवाली चढाई। आक्रमण। (अटैक) जैसे—हावई हमला। ४ किसी को नीचा दिखाने या हानि पहुँचाने के लिए किया जानेवाला कार्य या कही जानेवाली बात।
हमला-आवर—वि० [अ०+फा०] [भाव० हमला आवरी] चढाई करनेवाला। आक्रमणकारी।
हमलावर—वि०=हमला-आवर।
हम-वतन—पु०[फा०+अ०] एक ही प्रदेश के रहनेवाले। देशभाई। किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उसी के वतन का हो।
हमवार—वि०[फा०] [भाव० हमवारी] जिसकी सतह बराबर हो। समतल। जैसे—जमीन हमवार करना।
†पु०[हिं० हम+वार (प्रत्य०)] हमलोग या हमारे जैसे लोग।
हम-शीरा—स्त्री०[फा० हम+शीर] सगी बहन। भगिनी।
हम-सफर—वि०[फा०+अ० सफर] सफर मे साथ देनेवाला। सह-यात्री।
हम-सबक—वि०[फा० हम-सबक] एक साथ पढनेवाले। सह-पाठी।
हम-सर—वि०[फा०] [भाव० हम-सरी] १. बराबर का। बराबरी के दरजे का। २. प्रतिद्वंद्वी।

हम-सरी—स्त्री० [फा०] १. समानता का भाव या स्थिति। बराबरी। २ प्रतियोगिता। प्रतिस्पर्धा।

हम-साया—पु० [फा० हमसाय] [स्त्री० हमसाई, भाव० हम-सायगी] पडोसी। प्रतिवेशी।

हम-सिन—वि० [फा०+अ०] बराबरी की उमरवाला। सम-वयस्क।

हम-हमी—स्त्री०=हमाहमी।

हमाम—पु०=हम्माम।

हमायल—स्त्री० [अ०] १. गले मे डालने का परतला। २. छोटे आकार का कुरान जिसे गले मे डाल सकें। २ गले मे पहनने का एक गहना।

हमार†—वि०=हमारा।

हमारा—वि०, सर्व० [हिं० हम=आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हमारी] 'हम' का सबधकारक रूप। जैसे—हमारा काम। हमारा मकान।

हमाल—पु० [अ० हम्माल] १ भार ढोनेवाला। मजदूर। कुली। २ देख-रेख करनेवाला व्यक्ति। रक्षक। (क्व०)

हमालय—पु० [स० हिमालय] सिंहल या सीलोन का सबसे ऊँचा पहाड जिसे 'आदम की चोटी' कहते है।

हमाहमी—स्त्री० [हिं० हम+हम] १ यह समझना कि जो कुछ है, वह हम ही है। अहमन्यता। २ दृढता या हठपूर्वक यह कहना कि जो बात हम कह रहे हैं, वही होनी चाहिए। हद दरजे की जिद।

हमीर—पु०=हम्मीर।

हमें—सर्व० [हिं० हम] 'हम' का कर्म और सप्रदान कारक का रूप। हमको। जैसे—(क) हमे बताओ। (ख) हमे दो।

हमेल†—स्त्री०=हुमेल (गहना)।

हमेव†—पु० [स० अहम्+एव] १ यह समझना कि जो कुछ है, वह हम ही हैं, या हम भी बहुत कुछ है। २ अभिमान। घमड।

हमेशा—अव्य० [फा० हमेश] सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा।

हमेस† —अव्य०=हमेशा।

हमैं†—सर्व०=हमे।

हम्द—पु० [अ०] ईश्वर की महिमा का गान। ईश्वर की स्तुति।

हम्माम—पु० [अ०] स्नान करने का कमरा। स्नानागार।

हम्मामी—पु० [अ०] हम्माम मे लोगो को नहलानेवाला कर्मचारी।

हम्माल—पु० [अ०] बोझ उठानेवाला मजदूर। कुली।

हम्मीर—पु० [स०] १ सपूर्ण जाति का एक सकर राग जो शकराभरण और मारू के मेल से बना है। २ रणथभोर गढ का एक वीर चौहान राजा जो सन् १३०० ई० मे अलाउद्दीन खिलजी के हाथो युद्ध मे मारा गया था।

हम्मीर-नट—पु० [स०] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जो नट और हम्मीर के मेल से बना है।

हम्हा—सर्व० [स० अहम्]=हम।

हयद—पु० [स० हयेन्द्र] बडा या अच्छा घोडा।

हय—पु० [स०] [स्त्री० हया, हयी] १ घोडा। अश्व। २ उच्चैःश्रवा के सात मुखो के आधार पर काव्य मे सात की सख्या का सूचक पद। ३ इन्द्र। ४ एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे चार मात्राएँ होती है।

हय-ग्रीव—पु० [स० ब० स०] १. विष्णु के चौबीस अवतारों मे से एक। २. एक राक्षस जो कल्पान्त मे ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था। विष्णु ने मत्स्य अवतार लेकर वेद का उद्धार और इस राक्षस का वध किया था। ३ बौद्ध तांत्रिकों के एक देवता।
वि० जिसकी गरदन घोड़े की गरदन की तरह हो।

हयग्रीवा—स्त्री० [स० हयग्रीव—टाप्] दुर्गा का एक नाम।

हयन—पु० [स०√हि (प्राप्ति आदि)+ल्युट्—अन] वर्ष। साल।

हयना—स० [स० हत, प्रा० हय+हिं० ना(प्रत्य०)] १. मार डालना। २ नष्ट करना।

हय-नाल—स्त्री० [स० हय+हिं० नाल] वह तोप जिसे घोडे खीचते हैं।

हय-मुख—पु० [स० ब० स०] १ एक कल्पित देश जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि वहाँ घोडे के से मुँहवाले आदमी बसते है। २ और्व ऋषि का क्रोध रूपी तेज जो समुद्र मे स्थित होकर 'वडवानल' कहलाता है। (रामायण)

हय-मेध—पु० [स० ष० त०] अश्वमेध।

हय-लास—पु० [स० हय+लास्य] घोडा नचानेवाला, घुडसवार।

हय-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] अश्व-शाला। घुडसाल। अस्तबल।

हय-शिर—पु० [स० हय-शिरस्] १ एक प्राचीन ऋषि। २. एक प्रकार का दिव्यास्त्र।
वि० जिसका सिर घोडे के सिर की तरह का हो।

हय-शीर्ष—पु० [स० ष० स०] विष्णु का हयग्रीव रूप।

हयाग—पु० [स०] धनु-राशि।

हया—स्त्री० [अ०] वह प्राकृतिक मनोवृत्ति जो मनुष्य को नैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से कोई अनुचित या निंदनीय काम करने से रोकती और उसके मन मे सकोच उत्पन्न करती है। स्वाभाविक शील के कारण उत्पन्न होनेवाली लज्जा या शर्म।
विशेष—शर्म और हया में यह अतर है कि शर्म तो आपराधिक या नैतिक दृष्टि से भी होती है और स्वाभाविक रूप से मनोगत या मानसिक भी होती है। हम यह तो कहते है कि तुम्हे झूठ बोलते हुए शर्म नही आती, परतु ऐसे प्रसगो मे 'शर्म' की जगह 'हया' का प्रयोग नही कर सकते। हाँ, हम यह अवश्य कहते हैं कि हयादार आदमी कभी झूठ नही बोलता। ऐसे प्रसगो मे 'हयादार' की जगह 'शर्मदार' का प्रयोग नही होता। हया मनुष्य की स्वाभाविक लज्जाशीलता है और उसकी गणना मनुष्य के स्वाभाविक गुणो मे होती है।

हयात—स्त्री० [अ०] जिंदगी। जीवन।
पद—हीन हयात=जीवन भर के लिए। हीन हयात मे= जीते जी।

हयादार—वि० [अ० हया+फा० दार] वह जिसे हया हो। लज्जाशील।

हयादारी—स्त्री० [अ० हया+फा० दारी] हयादार होने की अवस्था, गुण या भाव। लज्जाशीलता।

हयाध्यक्ष—पु० [स० ष० त०] घुडसाल का प्रधान अधिकारी और घोड़ो का निरीक्षक।

हयानन—पु० [स० ब० स०] हयग्रीव।

हयानना—स्त्री० [स०] एक योगिनी।

हयायुर्वेद—पु० [स०] घोडो की चिकित्सा का शास्त्र। शालिहोत्र।

हयालय—पु० [स० ष० त०] अश्वशाला। अस्तबल। घुड़साल।

हयाशन—पुं०[सं०] एक प्रकार का धूप। सल्लकी का पौधा।

हयी—पुं० [सं० हयिन्] घुड़सवार।
स्त्री० सं० हय का स्त्री०। घोड़ी।

हर—वि०[सं० √हृ (हरण करना)+अच्] एक विशेषण जो यौ० शब्दों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—१. हरण करने अर्थात् छीनने या लूटनेवाला। जैसे—धनहर, मनोहर। २. दूर करने या हटानेवाला। जैसे—पापहर, रोगहर। ३ नाश या वध करनेवाला। जैसे—असुरहर। ४ लेजानेवाला या वहन करनेवाला। जैसे—संदेशहर।

पुं० १. महादेव। शिव। २ अग्नि। आग। ३. माली नामक राक्षस का पुत्र जो विभीषण का मंत्री था। ४. गणित में, वह संख्या जिससे किसी संख्या को भाग देते है। भाजक। (डिवाइजर) ५ छप्पय नामक छंद के दसवें भेद का नाम। ६. टगण के पहले भेद का नाम। ७ गधा।

प्रत्य०[सं० गृह से वि०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर घर, स्थान आदि का अर्थ देता है। जैसे—नैहर, भँहर, पीहर आदि।

†पुं० [सं० गृह] १ घर। मकान। २ निवास। उदा०—डोला टोली हर किया, मृ कया मनह बिगारि।—ढोलामारू।

†वि० जो जल्दी ही किसी क्रिया की समाप्ति तक पहुँचने को हो। आसन्न। (पूरब) यौ० के अन्त में। जैसे—गिरहर मकान=ऐसा मकान जो जल्दी ही गिर पड़ने को हो।

†वि० [सं० धर] धारण करनेवाला। जैसे—जलहर=जलधर।

†पुं०=हल (खेत जोतने का)। जैसे—हरवाहा।

†पुं०=[सं० स्मर, प्रा० सर] उत्कट आकांक्षा। प्रबल इच्छा।

वि० [फा०] प्रत्येक। एक-एक। जैसे—(क) हर आदमी को एक-एक घड़ी मिली। (ख) हर बार यही जवाब मिला।

पद—हर एक=एक-एक, प्रत्येक हर कोई=प्रत्येक व्यक्ति। हर दम=हर समय। प्रतिक्षण। हर रोज=प्रतिदिन। हर हमेशा=नित्य। सदा।

पुं०[जरमन] अँगरेजी ('मिस्टर' शब्द का जरमन पर्याय। महाशय। जैसे—हर स्ट्रेमैन।

हरऍ*—अव्य०[हिं० हरुवा] १ धीरे-धीरे। मद गति से। २ बिना विशेष बल-प्रयोग किए।

हरक—वि०[सं०] १ हरण करनेवाला। २ ले जानेवाला या पहुँचानेवाला।

पु० १. चोर। ठग। ३ गणित मे भाजक। ४ अपने प्रलयकर रूप मे शिव का एक नाम।

हरकत—स्त्री० [अ०] [बहु० हरकात] १. हिलना-डोलना। गति। चाल। २ वह स्पदन या कपन जो क्रियाशीलता तथा सजीवता का सूचक हो। जैसे—अभी नब्ज मे हरकत है। ३. अनुचित चेष्टा या व्यवहार। जैसे—अब कभी ऐसी हरकत मत करना।

हरकना†—अ० [?] किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा करना या उसके लिए आतुर होना। उदा०—जनि बहु हरकहु जनि बहु झनकहु, जनि मन करहु उदास ए।—ग्राम-गीत।

†स०=हटाना। उदा०—उन हरकी हँसि कै इतै, इन सौंपी मुसकाय।—बिहारी।

हरकारा—पुं०[फा०] १. चिट्ठी-पत्री या संदेशा ले जानेवाला कर्मचारी। २. आज-कल, वह व्यक्ति जो गाँवों आदि में डाक की चिट्ठियाँ, पार्सल आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता है। (डाकिए से भिन्न)

हरकेस—पुं० [सं० हरिकेश] एक प्रकार का अगहनी धान।

हरख*—पुं०=हर्ष।

हरखना*—अ० [हिं० हरख+ना (प्रत्य०)] हर्षित होना। प्रसन्न होना।

हरखाना*—स०[हिं० हरखना] प्रसन्न करना। खुश करना। आनंदित करना।

अ०=हरखना। उदा०—सुनि उठे गाँडमन हरखाई।—जायसी।

हरगिज—अव्य०[फा० हरगिज़] किसी दशा में। कदापि। कभी। (केवल नहिक भाव में और 'न' या 'नहीं' के साथ) जैसे—यह बात हरगिज नहीं हो सकती।

हर-गिरि—पुं०[सं० ष० त०] कैलास पर्वत।

हरि-गिल्ला†—पुं० दे० 'करटैक' (पक्षी)।

हर-गौरी-रस—पुं०=रससिन्दूर। (वैद्यक)

हर-चंद—अव्य० [फा०]१ कितनी ही तरह से। अनेक प्रकार से। २ बहुत बार। ३. अगरचे। यद्यपि।

हरजा†—पुं०=हर्जा।

हरजा—पुं०[फा० हर+जा (जगह)] राजगीरों की वह डोरी जिससे वे सतह को हर जगह बराबर करते हैं। सोरनी।

†पुं०१. =हर्जा। २.=हरजाना।

हर-जाई—पुं० [फा०]१. हर जगह घूमनेवाला व्यक्ति। २. किसी स्त्री की दृष्टि से उसका वह प्रेमी जो अन्य स्त्रियों से सबंध स्थापित किये हो। ३ व्यभिचारी पुरुष।

स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।

हर-जाना—पुं० [फा० हर्जानः] वह धन जो किसी को उसकी क्षति-पूर्ति करने के उद्देश से दिया जाता हो।

हर-जेवड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाड़ी, जिसकी जड़ और पत्तियों का व्यवहार औषधि के रूप में होता है।

हर-जोता—पुं०[हिं० हल+जोतना]१. वह जो हल जोतने का काम करता हो। २. उजड्ड और गँवार। ३. सुआ नामक पक्षी।

हरट्ट*—वि०[सं० हृष्ट] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। मजबूत।

हरठिया†—पु० [हिं० रहँट] रहँट के बैल हाँकनेवाला।

हरड़ा†—पु०=हड़ (हर्रे)।

हरण—पुं०[सं० √हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन]१ किसी की वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक ले लेना। छीनना या लूटना। २ किसी को उसकी वस्तु से अनुचित रूप से रहित या वंचित करना। ३ रुपया वसूल करने या और कोई अर्थ सिद्ध करने के लिए किसी व्यक्ति को बलपूर्वक कहीं उठा ले जाना और छिपाकर रखना। (किडनैपिंग) ४. दूर करना। हटाना। जैसे—संकट-हरण। ५ नाश या नष्ट करना। ६. गणित मे, किसी संख्या का भाग करना। ७ विवाह के

समय कन्या को दिया जानेवाला दहेज। ८ यज्ञोपवीत के समय बालक को दी जानेवाली भिक्षा।

हरणि—स्त्री०[सं०] मृत्यु। मौत।

हरणीय—वि० [स० √हृ (हरण करना)+अनीयर] जो हरण किया जा सके या किया जाने को हो।

हरता†—वि०=हर्ता (हरण करनेवाला)।

हरता-धरता—वि० [स० हर्ता+धर्ता (वैदिक)] १ रक्षा और नाश दोनो करनेवाला। २ जिसे सब कुछ करने का पूरा अधिकार प्राप्त हो। कर्ता-धर्ता।

हरतार†—स्त्री० =हरताल।

हरताल—स्त्री०[स० हरिताल] पीले रग का एक प्रसिद्ध चमकीला खनिज पदार्थ जो दवा, रँगाई आदि के काम आता है।

मुहा०—(किसी चीज या बात पर) हरताल लगाना= पूरी तरह से रद्द या व्यर्थ कर देना। जैसे—तुमने मेरे सारे किये-धरे पर हरताल लगा दी।

विशेष—मध्ययुग मे प्रतिलिपि, लेखा आदि का जो लिखित अश मिटाना होता था, उस पर गीली हरताल लगा देते थे, जिससे वह अश बिलकुल मिट जाता था। उसी से यह मुहा० बना है।

†स्त्री० दे० 'हडताली।

हरताली—वि० [हिं० हरताल] हरताल के रग का।

पु० उक्त प्रकार का गन्धकी या पीला रंग।

हरतेजस्—पु० [स०] पारा। पारद।

हरद*—स्त्री०=हल्दी।

हरदा—पु०[हि० हरदी] कीटाणुओं का वह समूह जो पीली या गेरू के रग की बुकनी के रूप मे फसल की पत्तियो पर लगकर उन्हे हानि पहुँचाता है। गेरुई।

हरदिया†—वि०[पु० हिं० हरदी] हल्दी के रग का। पीला।

पु०१ उक्त प्रकार का रग। उक्त रग का घोडा।

हरदिया देव—पु० दे० 'हरदौल'।

हरदी†—स्त्री०=हल्दी।

हरदू—पु०[देश०] एक प्रकार का बडा पेड जिसकी लकडी बहुत मजबूत और पीले रग की होती है। इस लकड़ी से बदूक के कुदे, कंघियाँ और नावें बनती हैं।

हरदौल—पु० [सं० हरदत्त] ओरछा के राजा जुझार सिंह (सन् १६२६–३५ ई०) के छोटे भाई जो बहुत सत्यशील और मातृभक्त थे। इन्हें 'हर-दिया देव' भी कहते हैं।

हरद्वान—पु० [?] [वि० हरद्वानी] एक प्राचीन स्थान, जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वानी—वि०[हिं० हरद्वान] हरद्वान मे होने या बननेवाला।

स्त्री० हरद्वान मे बननेवाली एक तरह की तलवार।

हरद्वार†—पु०=हरिद्वार।

हरना—स० [म० हरण]१ किसी की वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध और बलपूर्वक ले लेना। छीन या लूट लेना। हरण करना। २ दूर करना या हटाना। जैसे—किसी का दुख हरना। ३ न रहने देना। नष्ट करना। जैसे—किसी के प्राण हरना। ४. ले जाना। वहन करना। ५ हठात् ले लेना। अपने वश मे कर लेना। जैसे—किसी का मन हरना= किसी को अपने ऊपर मोहित करना।

वि०[स्त्री० हरनी] हरने या हरण करनेवाला। जैसे—कष्ट-हरनी (भवानी)।

†पु०=हिरना।

†स०=हारना।

हरनाकस*—पु०=हिरण्यकशिपु।

हरनाच्छ*—पु०=हिरण्याक्ष।

हरनी—स्त्री०[हिं० हड] कपडो मे हड का रग देने की क्रिया।

स्त्री० 'हरन' या 'हिरन' की मादा।

हरनौटा—पु०[हिं० हरिन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का बच्चा। छोटा हिरन।

हर-परेवरी—स्त्री० [हिं० हर (हल)+पडना] किसानो की औरतो का एक टोटका जो वे पानी न बरसने पर करती हैं।

हरपा—पु०[देश०] सुनारो का तराजू रखने का डिब्बा।

हर-पुजी—स्त्री०[हिं० हर=हल+पूजा] कार्तिक मे हल का पूजन जो किसान करते हैं। कार्तिक मे किसानो के द्वारा होनेवाली हल की पूजा।

हर-प्रिय—पु०[स०] करवीर। कनेर।

हरफ—पु०[अ० हरफ] अक्षर । वर्ण।

मुहा०—(किसी पर) हरफ आना=ऐसी स्थिति होना जिसमे किसी पर कोई कलंक या दोष लग सके या उसकी हेठी हो सके। जैसे—किसी की इज्जत पर हरफ आना। हरफ उठाना= अक्षर पहचानकर पढ लेना। जैसे—अब तो बच्चा हरफ उठा लेता है। हरफ बनाना=(क) सुन्दर अक्षर लिखना। (ख) अक्षर लिखने का अभ्यास करना। (ग) लिखे हुए अक्षर को बदलकर उसके स्थान पर कोई और अक्षर रखना या लगाना।

हरफ-गीर—वि०[फा० हरफगीर] [भाव० हरफगीरी] १. किसी लेख के अक्षर के गुण-दोष दिखाने या बतानेवाला। २. बहुत बारीकी से दोष देखने या पकडनेवाला। ३ बाल की खाल निकालनेवाला।

हरफा—पु० [देश०] लट्ठो आदि से घेरकर बनाया हुआ भूसा रखने के लिए स्थान।

हरफ-रेउरी†—स्त्री०=हरफा-रेवडी।

हरफा-रेवड़ी—स्त्री० [हरफा ?+हिं० रेवडी] १ कमरख की जाति का एक प्रकार का वृक्ष। २ उक्त वृक्ष के छोटे खट-मीठे सफेद फल जो देखने मे रेवडी के आकार के होते हैं।

हर-बरी†—स्त्री०=हड़बड़ी।

हरबराना†—अ०, स०=हडबड़ाना।

हर-बल—पु०=हरावल।

हरबा—पु० [अ० हर्ब] १ अस्त्र। हथियार। २ पुरुष की लिंगेंद्रिय। (बाजारू)

हर-बीज—पु० [सं० प० त०] पारा। पारद।

हर-बोग—वि० [हिं० हर, हल+बोग=लठ] अक्खड, उजड्ड और गँवार।

पु० १ उत्पात। उपद्रव। २ कोलाहल। हो-हल्ला। ३. बहुत बडी अव्यवस्था या गड़बडी।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हर-बोला—पुं०[सं० हर=महादेव+हि० बोलना] मध्ययुग के हिंदू योद्धा या सैनिक की संज्ञा। उदा०—बुंदेले हरबोलों के मुँह से हमने सुनी कहानी थी।—सुभद्राकुमारी।

विशेष—मराठा युग के सैनिक 'हर हर महादेव' नाद करते हुए शत्रुओं पर आक्रमण करते थे। इसलिए वे लोग 'हरबोला' कहलाते थे।

हर-भूली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का धतूरा जिसके बीज दवा के काम आते है।

हरम—पुं० [सं० हर्म्य से अ० ?] १. राज-प्रासाद या महल का वह हिस्सा जिसमें रानियाँ रहती हैं। जनानखाना। २. जनानखाने में रहनेवाली स्त्रियाँ।

स्त्री० १ स्त्री। पत्नी। २. रखेली। ३ दासी।

हरम-जदगी—स्त्री०[फा० हरामजाद.] हरामजादों की तरह की शरारत। बदमाशी।

हर-मल—पुं०[देश०]१. डेढ़-दो हाथ ऊँची एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पत्तियाँ ओषधि के रूप में काम आती है। इसके बीजों से एक प्रकार का लाल रंग भी निकलता है। २ उक्त के बीजों से निकलता हुआ लाल रंग।

हरम-सरा—स्त्री०[अ०] अन्तःपुर। जनान-खाना।

हरयाल†—स्त्री०=हरियाली।

†वि०=हरा-भरा।

हरवल—पुं० [हिं० हर=हल+औल (प्रत्य०)] वह रुपया जो हलवाहों को बिना ब्याज के पेशगी या उधार दिया जाता है।

†पुं०=हरावल।

हरवली—स्त्री०[तु० हरावल] सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हर-वल्लभ—पुं०[सं०] संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

हरवा—वि०=हरुआ (हलका)।

†पुं०=हार (गले में पहनने का)।

हरवाना—स०[हिं० हारना] ऐसा कार्य करना जिससे कोई हार जाय।

†अ०, स०=हड़बड़ाना।

हरवाल—पुं०[देश०] एक प्रकार की घास। सुगरी।

हरवाह†—पुं०=हलवाहा।

हरवाहन—पुं०[सं० ष० त०] शिव के वाहन अर्थात् नन्दी।

हरवाहा†—पुं०=हलवाहा।

हरवाही—स्त्री०[हिं० हरवाह=ई (प्रत्य०)] हलवाहे का काम या मजदूरी।

हर-शंकरी—स्त्री०[सं० हरशंकर] पीपल और पाकड़ के एक साथ लगे हुए पेड़ जो हिन्दुओं में पवित्र माने जाते हैं।

हर-शेखर—स्त्री० [सं० हरशेखर+अच्—टाप्] गंगा (जो शिव के सिर पर रहती हैं)।

हरष†—पुं०=हर्ष।

हरषना*—अ०[हिं० हरष, हर्ष+ना (प्रत्य०)] १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २ पुलकित या प्रफुल्लित होना।

हरषाना*—स०[सं० हर्ष] हर्षित करना। प्रसन्न करना।

†अ०=हरषना।

हरषित†—वि० हर्षित।

हरसना†—अ०, स०=हरषना।

हरसा†—पुं० हरीस।

हरसाना†—अ०, स०= हरषाना।

हर-सिंगार—पुं०[सं० हार+सिंगार]१. मँझोले कद का एक प्रकार का पेड़। यह शरद ऋतु में फूलता है। २. उक्त वृक्ष के छोटे फूल जो बहुत सुगंधित होते है।

हर-सोंधा†—पुं०[हि०हरिस] कोल्हू का वह पाटा जिस पर बैठकर बैल हाँके जाते है।

हरहट†—वि० [हि० हहरना] नटखट।

हरहट†—वि० [सं० हृष्ट] १. हट्टा-कट्टा। २. प्रबल और उद्दंड या दुष्ट।

हरहराना—अ०[अनु०] 'हरहर' की आवाज होना।

स० 'हरहर' शब्द उत्पन्न करना।

हरहा—पुं०[देश०] भेड़िया। वृक।

†वि०=हरहट।

हरहाया—वि० [हि० हरहा] [स्त्री० हरहाई] (पशु) जो भागकर औरों के खेत और फसल आदि की हानि करता-फिरता हो। नटखट। जैसे—हरहाया साँड़, हरहाई भैंस।

हर-हार—पुं० [सं० ष० त०] १ शिव का हार। सर्प। साँप। २. शेषनाग।

हर-हारा—पुं०[स्त्री० हरहारी] दे० 'हरसिंगार'।

हर-होरिया†—पुं०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

हराँस†—पुं० [अ० हर=आतंक होना+सं० अंश] भय डर। हरास।

हरा—वि०[सं० हरित] [स्त्री० हरी] १. जो ताजी उगी हुई घास या वृक्ष में लगी हुई पत्तियों के रंग का हो। हरित। सब्ज। जैसे—हरा कपड़ा, हरा कागज। २. (स्थान) जिसमें उक्त प्रकार और रंग की पत्तियाँ आदि बहुत सी फैली हुई हों। हरियाली से भरा हुआ। (ग्रीन) जैसे—हरा खेत, हरा मैदान।

मुहा०—हरी-हरी सूझना=निराशा, विपत्ति आदि के समीप होने पर भी उसका कोई ज्ञान न होना। संकट आदि की कल्पना या ज्ञान न होने के कारण निश्चिन्त और प्रसन्न रहना। जैसे—यहाँ जान आफत में पड़ी है और तुम्हें हरी-हरी सूझ रही है। हरे में आँखें फूलना या होना=दे० ऊपर 'हरी-हरी सूझना'।

३ (दाना, पत्ता या फल) जो अभी मुरझाया या सूखा न हो, और फलत. कठोर न हुआ हो।

पद—हरा-भरा। (देखें)

४. (घाव) जो अभी भरा और सूखा न हो। ५ (मनुष्य अथवा उसका मन) जिसकी थकावट या शिथिलता मिट गई हो और जो फिर से प्रफुल्लित या प्रसन्न हो गया हो। जैसे—(क) अच्छी, ठंडी और साफ हवा लगने से आदमी हरा हो जाता है। (ख) गरमी में शरबत पीने से मन हरा हो जाता है।

पुं० १ ताजी घास या पत्ती का सा रंग। सब्ज रंग। २. उक्त प्रकार के रंग का घोड़ा।

स्त्री०[हर का स्त्री०] पार्वती।

पु० [हिं० हार] गले मे पहनने का हार। उदा०—अपने कर मोतिन गुह्यो, भयो हरा हर हार।—विहारी।

†वि० [स० हर, हिं० हारना] १. रहित या शून्य। २. जिसका कुछ हरण हो गया हो, अर्थात् चला गया या निकल चुका हो। जैसे—सत-हरा=जो सत्य से रहित हो चुका हो या सत्य छोड चुका हो।

वि०[स० हर (प्रत्य०)] एक विशेषण जो कुछ सख्या-वाचक शब्दो के अत मे लगकर उनके उतनी वार होने का भाव प्रकट करता है। जैसे—दोहरा, तेहरा, चौहरा आदि।

हराई—स्त्री० [हिं० हल] खेत मे हल जोतने की क्रिया या भाव। (गिनती के विचार से) जैसे—दोहराई खेत जोतना।

स्त्री०[हिं० हारना] हारने की क्रिया, दशा या भाव। हार।

हराठा†—वि० [स० हृष्ट] [स्त्री० हराठी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा और मजबूत। (पूरव)

हरानत—पु०[स०] रावण का एक नाम।

हराना—स०[हिं० हारना का स०] १. प्रतियोगिता, युद्ध आदि मे प्रतिद्वद्वी या शत्रु को पछाडना या परास्त करना। २ दौडा-दौडाकर शिथिल और पस्त करना। (पूरव)

सयो० क्रि०—डालना।

हरापन—पु०[हिं० हरा+पन (प्रत्य०)]हरे होने की दशा, गुण या भाव। हरितता। सब्जी।

हरा-भरा—वि०[हिं०] [स्त्री० हरी-भरी] १. जो हरे पेड-पौधो और घास आदि से भरा हो। २ सब प्रकार से प्रफुल्लित, सम्पन्न और सुखी। जैसे—तेरी गोद हरी-भरी रहे।

हराम—वि०[अ०]१ जो इस्लाम धर्म-शास्त्र मे व्रजित या त्याज्य हो। निषिद्ध। 'हलाल' का विपर्याय। ३. बुरा। दूषित। ३. वहुत ही अप्रिय और कटु।

मुहा०—(कोई वात) हराम करना=कोई कार्य परम कष्टदायक और फलत असभव कर देना। जैसे—तुमने हमारा खाना-पीना हराम कर दिया है।

पु०१. अधर्म। पाप। जैसे—चोरी करना या झूठ वोलना हराम है। २ धर्मशास्त्र द्वारा निषिद्ध की हुई चीज या वात।

पद—हराम का=(क) जो वेईमानी से प्राप्त हो। (ख) मुफ्त का। जैसे—हराम का खाना और मसजिद मे सोना।

३ स्त्री और पुरुष का अनुचित सवध। व्यभिचार। जैसे—हरामजादा। हराम का लडका।

पद—हराम का पेट=व्यभिचार के कारण रहनेवाला गर्भ।

४ सूअर, जिसका मास मुसलमानो के लिए निषिद्ध और वर्जित है।

हराम-कार—पु०[अ०+फा०] १ निषिद्ध कर्म करनेवाला। २ व्यभिचारी।

हराम-कारी—स्त्री०[अ० +फा०] १. निषिद्ध कर्म। पाप। २ व्यभिचार।

हराम-खोर—पु० [अ० हराम+फा० खोर] [भाव० हरामखोरी] १ हराम की कमाई खानेवाला। २ विना पूरा परिश्रम किये या प्रतिफल दिये मुफ्त का माल खानेवाला। मुफ्तखोर।

हराम-खोरी—स्त्री० [अ० हराम+फा० खोरी] हराम-खोर होने की दशा या भाव।

हराम-जादा—पु० [अ० हराम+फा० जादा] [स्त्री० हरामजादी] १ व्यभिचार से उत्पन्न पुरुष। दोगला। २ वहुत वडा दुष्ट या पाजी।

हरामी—वि० [अ० हराम] १ हराम का। हराम संवधी। जैसे—हरामी कमाई। २ हराम या व्यभिचार से उत्पन्न। दोगला। वर्ण-सकर। ३ वहुत वडा दुष्ट, नीच और पाजी।

पद—हरामी का पिल्ला=(क) दोगला। वर्ण-सकर। (ख) वहुत वडा दुष्ट या पाजी।

हरारत—स्त्री० [अ०] १ गर्मी। ताप। २ मन्द या हलका ज्वर। थोडा वुखार। जैसे—आज हमे कुछ हरारत मालूम होती है।

हरावर—पु० १ =हरावल। २ =हडावर।

हरावल—पु० [तु०] १ सेना का अगला भाग। २ सिपाहियो का वह दल, जो फौज मे सब से आगे रहता है। ३ मध्य-युग मे ठगो या डाकुओ का सरदार, जो आगे चलता था।

हरास—पु० [फा० हिरास] १ भय। डर। २ आशका। खटका। ३ दुख। विषाद। ४ ना-उम्मेदी। निराशा।

†पु० दे० 'हराँस'।

†पु०=ह्रास।

हराहा†—वि० [हिं० हरहट] (पशु) जो प्राय सीग से आक्रमण करता हो। मरकहा।

हराहर†—वि०=हलाहल।

†स्त्री० [हिं० हारना] क्लान्ति। थकावट।

पु०=हलाहल।

हरि—वि० [स० √हृ (हरण करना)+इन्] १. पीला। २ वादामी या भूरा। ३ हरा।

पु० १ ईश्वर। भगवान्। २ विष्णु। ३ इन्द्र। ४ सूर्य। ५ चन्द्रमा। ६ किरण। ७ शेर। सिंह। ८ सिंह राशि। ९ अग्नि। आग। १०. वायु। हवा। ११ श्रीकृष्ण। १२. रामचन्द्र। १३ शिव। १४ शुक्र ग्रह। १५ यम। १६ पुराणानुसार एक वर्ष या भू-भाग। १७ एक प्राचीन पर्वत। १८. अठारह वर्णो का एक प्रकार का छद या वृत्त। १९. वौद्धों के अनुसार एक वहुत वड़ी सख्या। २० हस। २१ मोर। २२ तोता। २३ साँप। २४ मेक। २५. गीदड।

अव्य० [हिं० हरुए] धीरे। आहिस्ते। उदा०—सूखा हिया हार या भारी। हरि-हरि प्रान तजहिं सब नारी।—जायसी।

हरिअर†—वि० दे० 'हरा' (रग)। उदा०—यह तन हरिअर खेत, तरुनी हरनी चर गई।

मुहा०—हरिअर सूझना*=दे० 'हरा' के अन्तर्गत 'हरी-हरी सूझना'।

†पु० हरा रग।

हरिअराना†—अ०=हरिआना (हरा होना)।

स० हरा करना।

हरिअरी†—स्त्री० [हिं० हरिअर+ई (प्रत्य०)] =हरियाली।

हरिआना†—अ० [हिं० हरिअर] १ हरा होना। सब्ज होना। २ हरे फूल-पत्तो की तरह ताजा होना। ३ ताजगी तथा प्रसन्नता से भर उठना।

†स० हरा करना।

पुं०=हरियाना।
हरिआली—स्त्री० [सं० हरित+आलि]=हरियाली।
हरिक—पुं० [स०] १. लाल या भूरे रंग का घोडा। २. चोर। जुआरी।
हरि-कथा—स्त्री० [स० ष० त०] ईश्वर या उसके अवतारो के गुण, यश, आदि का वर्णन या चर्चा। उदा०—हरि, अनन्त हरि-कथा अनन्ता।—तुलसी।
हरि-कर्म—पुं० [स० मध्य० स०] यज्ञ।
हरिकारा†—पु०=हरकारा।
हरि-कीर्तन—पु० [स० ष० त०] भगवान् या उनके अवतारो की स्तुति का गान। भगवान् का भजन।
हरि-केलीय—पु० [सं० हरिकेलि+छ—ईय] वग देश का एक नाम।
हरि-केश—वि० [स० ब० स०] भूरे बालोंवाला।
पु० शिव।
हरि-कांता—स्त्री० [स० ब० स०] एक प्रकार की लता।
हरि-क्षेत्र—पु० [स०] पटना के पास का एक तीर्थ। हरिहरक्षेत्र।
हरि-गंध—पु० [स० ब० स०] पीले चन्दन का पेड और लकडी।
हरि-गीता—स्त्री०=हरि-गीतिका (छन्द)।
हरि-गीतिका—स्त्री० [स०] पिंगल मे एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे २८ मात्राएँ होती हैं, अत मे एक लघु और एक गुरु होता है और १६ मात्राओ पर यति होती है। इसकी पाँचवी, उन्नीसवी और छब्बीसवी मात्राएँ लघु होनी चाहिएँ।
हरिचंद† —पु०=हरिश्चन्द्र।
हरि-चन्दन—पु० [सं० ष० त०] १. एक प्रकार का बढिया चन्दन। पीले चन्दन का पेड़ और लकडी।
पुं० १. स्वर्ग-स्थित पांच प्रकार के पेडो मे से एक। २. कमल का पराग। ३. केसर। ४. चन्द्रमा की चांदनी।
हरि-चर्म—पु० [स० ष० त०] व्याघ्र चर्म। बाघंबर।
हरि-चाप—पु० [स० ष० त०] इद्र-धनुष।
हरिजन—पु० [स०ष०त०] १. भगवान् का बदा। २. वह जिसे ईश्वरीय कृपा से भगवद्-भक्ति सुलभ हुई हो। भगवान् का भक्त। उदा०—इन मुसलमान हरि-जनन पर कोटिन्ह हिंदुन वारिए।—भारतेन्दु। ३. आज कल पद-दलित तथा अस्पृश्य हिंदू जातियों की सामूहिक सज्ञा।
हरिजाई† —पु०=हरजाई।
हरिण—पु० [सं० √हृ (हरण करना)+इनन्] [स्त्री० हरिणी] १ मृग। हिरन। २. हस। ३. सूर्य। ४ विष्णु। ५ शिव। ६. पुराणानुसार एक लोक।
वि० हरा (रग)।
हरिणक—पु० [स०] हिरन का बच्चा या छोटा हिरन।
हरिण-कलंक—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।
हरिण-लता—स्त्री० [स०] एक प्रकार का समवृत्त जिसके विषम चरणो में तीन सगण; एक लघु और एक गुरु होता है तथा सम मे एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है।
हरिण-लक्षण, हरिण-लांछन—पु० [स०] चन्द्रमा।
हरिण-हृदय—वि० [स० ब० स०] जिसका हृदय हिरन के जैसा हो अर्थात् भीरु।
हरिणांक—पु० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।
हरिणाक्ष—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० हरिणाक्षी] जिसकी आँखें हिरन की आँखो के समान सुन्दर हों।
हरिणाश्व—पु० [स०] वायु।
हरिणी—स्त्री० [स० हरिण-ङीप्] १. मादा हिरन। हिरन की मादा। २. पीली चमेली। ३. मजीठ। ४. काम-शास्त्र मे लिखित चार प्रकार की नायिकाओ मे से एक। वि० दे० 'चित्रिणी'।
हरिणेश—पु० [स० ष० त०] सिंह। शेर।
हरित—वि० [स०√हृ+इति] १. भूरे या बादामी रग का। कपिश। २ हरे रग का। हरा।
पु० १ सिंह। शेर। २ सूर्य। ३. सूर्य के रथ का घोडा। ४. मरकत नामक रत्न। पन्ना। ५. विषाद। ६. एक प्रकार का तृण। ७. हल्दी।
हरित—वि० [स० हृ+इतच्] १ भूरे या बादामी रग का। २. हरा। ३. पीला। ४. ताजा। जैसे—हरित गोमय (गोबर)।
पु० १. बारहवें मन्वन्तर का एक देवगण। २ शेर। सिंह। ३. फौज। सेना। ४. हरियाली।
हरितक—पु० [स०] १ शाक। साग। २. हरी घास।
हरित-कपिश—वि० [स० ब० स०] पीलापन या हरापन लिए भूरा। लोहे के रग का।
हरितकी—स्त्री० दे० 'हरीतकी'।
हरित-मणि—पु० [सं० मध्य० स०] मरकत। पन्ना।
हरिता—स्त्री० [स० हरि+तल्—टाप्] १. हरि या विष्णु का भाव। विष्णुपन। २. हल्दी। ३ नीली दूब। ४ भूरी गौ। ५. हरा अगूर। ६ सगीत मे एक प्रकार की स्वर-भक्ति।
हरिताभ—वि० [सं० ब० स०] जिसमे हरी आभा हो। हरी आभा से युक्त।
हरिताल—पु० [स० ब० स०] १ ऐसा कबूतर, जिसका रग कुछ-कुछ पीलापन या हरापन लिए हो। २. हरताल नाम की उपधातु।
हरितालक—पु० [स०] १. हरिताल (कबूतर)। २. अभिनेता-अभिनेत्रियों की सजावट।
हरितालिका—स्त्री० [स० ब० स०—कप् इत्व—टाप्] भादो के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो स्त्रियो के लिए व्रत का दिन है। तीज।
हरिताली—स्त्री० [स०] १. आकाश मे मेघ आदि की पतली धज्जी या रेखा। २ वायु। हवा। ३ तलवार का धारवाला अश या भाग। ४. मालकंगनी। ५ हरतालिका तीज।
हरिताश्म(न्)—पु० [स० मध्य० स०] १ मरकत मणि। पन्ना। २. तूतिया।
हरिताश्व—वि० [सं० ब० स०] जिसके घोड़े का रग पीला या हरा हो।
पु० सूर्य।
हरि-तुरंग—पु० [स०] इन्द्र।
हरितोपल—पु० [स० मध्य० स०] मरकत। पन्ना।
हरि-दर्भ—पु० [स० ब० स०] १ सूर्य। २. सब्जा घोडा।
हरिदश्व—पु० [स० ब० स०] १ सूर्य। २ आक या मदार का पेड।
हरि-दास—पु० [स० ष० त०] १. विष्णु का भक्त या सेवक। २. दक्षिण

भारत मे वह कीर्तनकार, जो भजन आदि गाकर लोगों को धार्मिक और पौराणिक कथाएँ सुनाता हो।

हरि-दिन, हरि-दिवस—पु० [स०] विष्णु का दिन, अर्थात् किसी पखवारे की एकादशी।

हरि-दिशा—स्त्री० [स० ष० त०] पूर्व दिशा जिसमे इन्द्र का निवास माना जाता है।

हरि-देव—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु। २. श्रवण नक्षत्र।

हरिद्र—पु० [स०] पीला चन्दन।

हरिद्रक—पु० [स०] पीला चन्दन।

हरिद्रा—स्त्री० [स०] १ हल्दी। २. जगल। वन। ३ कल्याण। मगल। ४ सीसा नामक धातु। ५ एक प्राचीन नदी।

हरिद्रा-गणपति—पु० [स० मध्य० स०] गणपति या गणेश जी की एक मूर्ति जिस पर मत्र पढकर हलदी चढाई जाती है।

हरिद्रा-द्वय—पु० [सं० ष० त०] हलदी और दारुहलदी।

हरिद्रा-प्रमेह—पु० [स० मध्य० स०] प्रमेह का एक भेद जिसमें हलदी के समान पीला पेशाब होता है और जलन होती है।

हरिद्रा-मेह—पु०=हरिद्रा-प्रमेह।

हरिद्रा-राग—वि० [स० उपमि० स०] १ हल्दी के रग का। २ फलत. जिस पर पक्का रग न चढा हो। ३. जिस पर प्रेम का रग पूरा-पूरा न चढा हो।

पु० पूर्व राग का एक भेद, जिसमे प्रेम हल्दी के रग की तरह कच्चा होता है।

हरि-द्वार—पु० [स० ष० त०] १ हरि का द्वार। विष्णु-लोक का द्वार। २ पश्चिमी उत्तरप्रदेश मे गगा-तट पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ, जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि उसके सेवन से विष्णु-लोक का द्वार खुल जाता है।

हरि-धनुष—पु० [स० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

हरि-धाम—पु० [स० ष० त०] विष्णु-लोक। वैकुण्ठ।

हरिन—पु० [स० हरिण] [स्त्री० हरनी, हरिनी] कुछ कालापन लिए पीले रग का एक प्रसिद्ध सीगवाला चौपाया जो चौकडियाँ भरता हुआ बहुत तेज दौडता है और जिसके छोटे-बड़े अनेक भेद और उपभेद हैं। मृग। हिरन।

मुहा०—हरिन हो जाना=हरिन की तरह तेज भागते हुए जल्दी से गायब हो जाना। (ख) चट-पट दूर हो जाना। जैसे—नशा हरिन हो जाना।

स्त्री० [हिं० हरा ?] पीलापन लिए हरे रग की एक भारी गैस या वाष्प जिसमे कुछ उग्र और अप्रिय गध भी होती है। (क्लोरिन)

हरि-नक्षत्र—पु० [स० ष० त०] श्रवण नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता विष्णु हैं।

हरि-नख—पु० [स० ष० त०] १ सिंह या बाघ का नाखून। २ उक्त का बनाया हुआ जत्र या तावीज, जो गले मे पहनते हैं। बघ-नहाँ।

हरि-नग* —पु० [स०] सर्प की मणि।

हरिन-हर्रा—पु० [देश०] सुहाग नाम का वृक्ष जिसके बीजो से जलाने का तेल निकलता है।

हरिनाकुस† —पु०=हिरण्यकशिपु।

हरिनाक्ष† —पु०=हिरण्याक्ष।

हरि-नाथ—पु० [सं० ष० त०] (बदरो मे श्रेष्ठ) हनुमान्।

हरि-नाम—पु० [स० ष० त०] ईश्वर का नाम।

हरि-नारायणी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हरिनी—स्त्री० [हिं० हरिन] १. मादा हिरन। स्त्री जाति का मृग। २. जूही का फूल। ३. बाज पक्षी की मादा।

हरिन्मणि—पु० [स०] मरकतमणि। पन्ना।

हरि-पद—पु० [स० ष० त०] १. विष्णु-लोक। वैकुण्ठ। २. एक प्रकार का अर्धसम मात्रिक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरणो मे १६-१६ तथा दूसरे और चौथे चरणो मे ११-११ मात्राएँ होती हैं।

हरिपुर—पु० [स० ष० त०] विष्णु-लोक। वैकुण्ठ।

हरि-पैडी—स्त्री० [हिं० हरि+पैडी=सीढी] हरिद्वार तीर्थ मे गगा का एक विशेष घाट जहाँ के स्नान का बहुत माहात्म्य है।

हरि-प्रस्थ—पु० [स०] इन्द्र-प्रस्थ।

हरि-प्रिय—पु० [सं० ष० त०] १ कदब। २ गुलदुपहरिया। ३ शख। ४ सन्नाट। बकतर। ५ पागल। विक्षिप्त। ६ मूर्ख व्यक्ति। ७ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

हरि-प्रिया—स्त्री० [स० ष० त०] १. विष्णु की प्रिया अर्थात् लक्ष्मी। २ तुलसी। ३ पृथ्वी। ४. मधु। शहद। ५ मद्य। शराब। ६. द्वादशी तिथि। ७ लाल चन्दन। ८ मात्रिक सम दण्डक (छन्द) का एक प्रकार या भेद जिसके प्रत्येक चरण मे १२-१२-१२ और १० के विराम से कुल ४६ मात्राएँ होती हैं।

हरि-प्रीता—स्त्री० [स०] ज्योतिष मे एक शुभ मुहूर्त। अभिजित्।

हरि-बीज—पु० [स० ष० त० अच् वा] हरताल।

हरि-बोधिनी—स्त्री० [स० हरि√बुध् (ज्ञान करना)+णिच्—णिनि-ङीप्] कार्त्तिक शुक्ल एकादशी। देवोत्थान एकादशी।

हरि-भक्त—पु०[स० ष० त०] [भाव० हरिभक्ति] विष्णु या भगवान् का प्रभक्त। ईश्वर का प्रेमी।

हरि-भक्ति—स्त्री० [स० ष० त०] विष्णु या ईश्वर की भक्ति। ईश्वर-प्रेम।

हरि-भुज्— पु० [स० हरि√भुज्+क्विप्] साँप। सर्प।

हरि-मंथ—पुं०[स० ब० स०] १ अग्नि-मथ या गनिपारी का वृक्ष। २ मटर। ३ चना। ४. एक प्राचीन जनपद।

हरिमा(मन्)—स्त्री० [सं०] १ पीलापन। २ हरापन।

हरि-मेघ—पु० [स०] १. अश्व-मेध यज्ञ। २ विष्णु।

हरिय—पु०[स०] पिंगल वर्ण का घोडा।

हरियर†—पु०=हरीरा।

वि० हरा।

हरियराना—अ०=हरिआना (हरा होना)।

हरियल†— वि०=हरिअर (हरा)।

†पु०=हारिल (पक्षी)।

हरिया† —पु० [हिं० हर (हल)] हल जोतनेवाला। हलवाहा।

हरियाई†* —स्त्री०=हरियाली।

हरिया थोथा—पु० [हिं० हरा+थोथा] नीला थोथा। तूतिया।

हरि-यान—पु० [स० ष० त०] (विष्णु के वाहन) गरुड।

हरियाना*—अ० [हिं० हरिअर] १. पेड़-पौधो का हरा होना।

२ प्रफुल्लित या प्रसन्न होना। उदा०—मन मगन को रंग पाए नरपति हरि आने।—रत्ना०।
स० १ हरा-भरा करना। २. प्रसन्न करना।
पुं० दे० 'बाँगड़' (प्रदेश) जहाँ की गौएँ और भैंसें प्रसिद्ध हैं।

हरियानी—वि० [हिं० हरियाना प्रदेश] 'हरियाना' अर्थात् बाँगड़ प्रदेश का। बाँगड़ू।
स्त्री०=बाँगड़ (बोली)।

हरियारी†—स्त्री० =हरियाली।

हरियाला—वि० [हिं० हरा] हरे रंग का। हरा।

हरियाली—स्त्री० [हिं० हरियाला] १ हरे-भरे पेड़-पौधों का विस्तृत फैलाव या समूह। २ उक्त के सुखद प्रभाव के आधार पर आनन्द और प्रसन्नता। उदा०—भोला सुहाग इठलाता हो, ऐसी हो जिसमें हरियाली।—कोई कवि।
मुहा०—हरियाली सूझना=कठिन अवसर में भी उमंग, प्रसन्नता या दूर की असंभव बातें सूझना। हरी-हरी सूझना।
३ चौपायों को खिलाया जानेवाला हरा चारा। ४. दूब।

हरियाली-तीज—स्त्री० [हिं० हरियाली+तीज] भादों सुदी तीज। हरतालिका तीज।

हरियाव—पुं० [देश०] मध्य युग में फसल की एक प्रकार की बँटाई जिसमें ९ भाग असामी और ७ भाग जमींदार लेता था।

हरिला—पुं०=हारिल (पक्षी)।

हरि-लीला—स्त्री० [सं० ष० त०] १ ईश्वरीय लीला। २ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, दो जगण और गुरु लघु वर्ण होते हैं। इसके अन्तिम लघु को गुरु करने पर वसन्त-तिलका छन्द बन जाता है।

हरि-लोक—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु-लोक। वैकुण्ठ।

हरिलोचन—पुं० [स० ब० स०] १ केकड़ा। २ उल्लू।

हरि-वंश—पुं० [सं० ष० त०] १ कृष्ण का कुल। २ हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ जो महाभारत का परिशिष्ट और एक उप-पुराण माना जाता है, और जिसमे श्रीकृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वर्णन है।

हरि-वर—पुं० [सं०] १. ईश्वर का भक्त। हरि-भक्त। २. कोयल।

हरि-वर्ष—पुं० [सं०] पुराणानुसार जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में से एक।

हरि-वल्लभा—स्त्री० [सं० ष० त०] १ लक्ष्मी। २ तुलसी। ३ अधिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

हरि-वास—पुं० [स० ब० स०] अश्वत्थ या पीपल जिसमें विष्णु का निवास माना गया है।

हरि-वासर—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु का दिन अर्थात् एकादशी।

हरि-वाहन—पुं० [सं० ष० त०] १ विष्णु का वाहन अर्थात् गरुड़। २. सूर्य। ३. इन्द्र।

हरि-शंकर—पुं० [सं० द्व० स०] विष्णु और शिव का युग्म।

हरि-शयनी—स्त्री० [सं० ब० स०] आषाढ़ शुक्ल एकादशी। कहते हैं की इस दिन विष्णु सो जाते हैं और चार महीने बाद देवोत्थान एकादशी को जागते हैं।

हरिशर—पुं० [सं०] शिव। महादेव।

हरिश्चंद्र—वि० [सं०] सोने की सी चमकवाला। स्वर्णाभ। (वैदिक)
पुं० सूर्य-वंश के एक प्रसिद्ध राजा, जो बहुत बड़े दानी और सत्य-निष्ठ थे। ये त्रिशंकु के पुत्र थे; और इन्हें अपनी सत्य-निष्ठा के लिए बहुत अधिक कष्ट सहने पड़े थे।

हरिष—पुं० [सं०] हर्ष।

हरिषेण—पुं० [सं०] १ विष्णु-पुराण के अनुसार दसवें मनु के पुत्रों में से एक। २. जैन पुराणों के अनुसार बारह चक्रवर्तियों में से एक।

हरिस—स्त्री० [सं० हलीषा] १ हल का वह लम्बा लट्ठा, जिसके एक सिरे पर फालवाली लकड़ी और दूसरे सिरे पर जुआ लगा रहता है। २. इसी आकृति की लकड़ी या लट्ठा जो बैल-गाड़ी में भी होता है।

हरि-सिंगार—पुं० हरसिंगार (पेड़ और फूल)।

हरि-सुत—पुं० [सं० ष० त०] १ श्रीकृष्ण के पुत्र, प्रद्युम्न। २. अर्जुन जो इन्द्र के अंश से उत्पन्न माने गये हैं।

हरि-हंस—पुं० [सं०] प्रातःकालीन सूर्य। बाल-सूर्य। उदा०—हरि हंस मावक सरिस हर हीर।—प्रिथीराज।

हरिहर-क्षेत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] पटने के पास का एक तीर्थ स्थान जहाँ कार्तिकी पूर्णिमा को गंगा-स्नान और भारत का एक बहुत बड़ा मेला होता है। यहाँ हाथी, घोड़े आदि जानवर बिकने के लिए आते हैं। कहते हैं कि गज और ग्राहवाली पौराणिक घटना यहीं हुई थी।

हरि-हेति—पुं० [सं०] चक्र-सुदर्शन। इन्द्र-धनु।

हरिहाया—वि० [स्त्री० हरिहाई] =हरहाया।

हरी—स्त्री० [सं०] १. कश्यप की क्रोधवशा नाम की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न दस कन्याओं में से एक, जिससे सिंह, बन्दर आदि की उत्पत्ति मानी गई है। २ चौदह वर्णों का एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, रगण, जगण, रगण और अन्त में लघु गुरु होते हैं।
स्त्री० [हिं० हर=हल] मध्य-युग में वह परिपाटी जिसके अनुसार असामी या कृषक अपना हल और बैल ले जाकर जमींदार के खेत जोतते थे।
स्त्री० सं० 'हर' का हिं० स्त्री०। उदा०—गोरी थी वह हर की। (केसर की पहेली)
†पुं० =हरि।
वि०=हिं० 'हरा' का स्त्री०।

हरी-कसीस—स्त्री० =हीरा-कसीस।

हरी-केन—पुं० [अं० हरिकेन] एक प्रकार की लालटेन जिसकी बत्ती में हवा का झोंका नहीं लगता।

हरी खाद—स्त्री० [हिं०] खेती के काम के लिए नील, मूँग, सन आदि के कुछ विशिष्ट पौधे जो थोड़े बड़े होने पर हल जोत कर खेत की मिट्टी में खाद के रूप में मिला दिये जाते है। (ग्रीन मैन्योर)

हरी-चाह—स्त्री० [हिं० हरी+चाह] एक प्रकार की घास, जिसकी जड़ में नींबू की सी सुगंध होती है। गंध-तृण।

हरी-चुग—वि० [हिं० हरी (हरियाली)+चुगना] वह जो केवल अच्छे समय में साथ दे। सम्पन्न अवस्था में साथ देनेवाला। फलतः स्वार्थी।

हरीत†—पुं०=हारीत।

हरीतकी—स्त्री० [सं० हरि√ई (गमनादि)+क्त—ङीप्] हड़। हर्रे।

हरीतिमा—स्त्री० [सं०] १. हरापन। २. हरियाली।

हरीफ़—पु० [अ० हरीफ़] १ दुश्मन। शत्रु। २ प्रतिद्वंद्वी।
हरी-बुलबुल—स्त्री०=हरेवा (पक्षी)।
हरीरा—पु० [अ० हरीर] दूध को औटाकर तथा उसमें कुछ विशिष्ट मसाले और मेवे डालकर बनाया जानेवाला वह पेय, जो मुख्य रूप में प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है।
वि० उक्त पेय के रंग का अर्थात् हरा।
वि० [हिं० हरा] प्रसन्न।
हरीरी—वि० [हिं० हरीरा] हरीरे के रंग का। जैसे—दरवाजों पर हरीरी परदे लगे थे।
†पु० १ हरीरा (पेय पदार्थ)। २ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। (मध्य युग)
हरील†—पु०=हारिल।
हरीश—पु० [सं० ष० त०] १ बन्दरों के राजा। २ हनुमान्। ३ सुग्रीव।
हरीस—वि० [अ०] हिर्स अर्थात् लालच करनेवाला। लालची। लोभी।
†पु०=हरिस।
हरुअ, हरुआ†—वि० [सं० लघुक, पा० लहुअ, विपर्यय 'हलुअ'] [स्त्री० हरुई] जो भारी न हो। हलका।
हरुआई†*—स्त्री० [हिं० हरुआ+ई (प्रत्य०)] १ 'हरुआ' अर्थात् हलके होने की अवस्था, गुण या भाव। हलकापन। २ तेजी। फुरती।
हरुआना†—अ० [हिं० हरुआ + ना (प्रत्य०)] १ हलका होना। २ जल्दी या तेजी से आना।
†स० हलका करना।
हरुए†—अव्य० [हिं० हरुआ] १. धीरे-धीरे। आहिस्ता से। २ इतने धीरे से कि आहट या शब्द न होने पाए अथवा कोई दूसरा न सुन पाए। उदा०—हरुए कहु मो मन बसत सदा विहारीलाल।—विहारी।
हरुवा†—वि०=हरुआ।
हरू†—वि०=हरुआ (हलका)।
हरूफ़—पु० [अ० हर्फ़ का बहु०] अक्षर। वर्ण। हरफ़।
हरे—पु० [सं०] 'हरि' शब्द का संबोधन रूप।
अव्य० [हिं० हरुआ] १ धीरे से। २ बिना कोई उग्रता या तीव्रता दिखलाये। कोमलतापूर्वक और सहज में।
वि० १ धीमा। मद। २ कोमल। मृदु। ३ हलका।
हरेऊ†—पु०=हरेव। (देश०) उदा०—खुरासान औ चला हरेऊ।—जायसी।
हरेक—वि० [हिं० हर+एक] प्रत्येक। हर एक। (अशुद्ध रूप)
हरेणु—पु० [सं०] १ मटर। २ हद बाँधने के लिए बनाई जानेवाली बाढ़।
हरेना†—पु० [हिं० हरा] वह विशेष प्रकार का चारा, जो ब्यानेवाली गाय को दिया जाता है।
हरेरा†—वि० [स्त्री० हरेरी] =हरा।
पु०=हरीरा।
हरेरी†—स्त्री०=हरिअरी (हरियाली)।
हरेव—पु० [अ० हिरात] १ मंगोलों का देश। २ उक्त देश में बसनेवाले लोग, अर्थात् मंगोल।
हरेवा—पु० [हिं० हरा] मधुर स्वर में बोलनेवाली बुलबुल के आकार-प्रकार की हरे रंग की चिड़िया। हरी बुलबुल।
हरैं†—अव्य०=हरे।
हरैना—पु० [हिं० हर (हल)+ऐना (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हरैनी] १ वह टेढ़ी गावदुम लकड़ी जो हल के लट्ठे (हरिस) के एक छोर पर आड़े बल में लगी रहती है और जिसमें लोहे का फार ठोका रहता है। २ बैलगाड़ी में सामने की ओर निकली हुई लकड़ी।
हरैनी†—स्त्री०=हरैना।
हरैया†—वि० [हिं० हरना] १. हरण करने अर्थात् हरनेवाला। २ दूर करने या मिटानेवाला।
हरोल, हरौल†—पु०=हरावल।
हर्ज—पु० [अ०] १ काम में होनेवाली ऐसी बाधा या रुकावट, जिसमें कुछ हानि भी होती हो।
पद—हर्ज-गर्ज=अड़चन। बाधा।
२ हानि। नुकसान। जैसे—हमारे दो घंटे हरज हुए हैं।
क्रि० प्र०—करना।—होना।
हर्तव्य—वि० [सं०] जो हरण किया जा सके या किया जाने को हो।
हर्ता(र्तृ)—वि० [सं०] [स्त्री० हर्त्री] १ हरण करनेवाला। २ दूर या नष्ट करने वाला।
हर्तार—वि० [सं०] हरण करनेवाला। हर्ता।
हर्द†—स्त्री०=हलदी।
हर्दी†—स्त्री०=हलदी।
हर्फ़—पु०=हरफ़।
हर्बा—पु०=हरबा (हथियार)।
हर्म्य—पु० [सं० √हृ+यत्-मुट् च] १ राज-भवन। महल। २ बहुत बड़ा मकान। हवेली। ३ नरक।
हर्म्य-पृष्ठ—पु० [सं० ष० त०] मकान की पाटन या छत।
हर्य-कुल—वि० [सं०] सूर्यवंश में उत्पन्न।
हर्यक्ष—वि० [सं० ब० स०] भूरी आँखोंवाला।
पु० १ सिंह। शेर। २ सिंह राशि। ३ शिव। ४ कुबेर। ५ बंदर। ६ एक प्रकार का रोगकारक ग्रह।
हर्यश्व—पु० [सं० ष० त० ब० स० वा] १ इन्द्र का भूरे रंग का घोड़ा। २ इन्द्र। ३. शिव।
हर्र—स्त्री०=हर्रे (हरीतकी)।
हर्रा—पु० [सं० हरीतकी] बड़ी जाति की हड़, जिसका उपयोग त्रिफला में होता है और जो रंगाई के काम में भी आती है।
†पु० [?] गन्दगी। मैला।
†पु०=हर्रे।
हर्रे—स्त्री० [सं० हरीतकी] १ एक बड़ा पेड़, जिसके पत्ते महुए के पत्तों की तरह चौड़े होते हैं और जिसका फल त्रिफला में का एक है। २ उक्त फल के आकार के चाँदी, सोने आदि के बनाये हुए वे टुकड़े या इसी प्रकार के और नगीने या रत्न जो मालाओं या हारों के बीच-बीच में शोभा के लिए पिरोये जाते हैं। जैसे—मोतियों की माला में सोने (या पन्ने) की हर्रे पिरोई थीं। ३ एक प्रकार का गहना, जो हड़ के आकार का होता है और नाक में पहना जाता है। लटकन।

हरैया—स्त्री० [हिं० हर्रे] १. हाथ मे पहनने का एक गहना, जिसमें हर्रे के-से सोने या चाँदी के दाने पाट मे गुथे रहते हैं। २. माला या कठे के दोनो छोरो पर का चिपटा दाना जिसके आगे सुराही होती है।

†वि० [हिं० हरण] हरण करनेवाला।

हर्ष—पु० स०√हृष् (खुश होना) +अच्] [वि० हर्षित] १. प्रसन्नता या भय के कारण रोएँ खडे होना। रोमाच। २. साहित्य मे संयोग-शृंगार के अतर्गत एक सचारी भाव जिसमे प्रसन्नता के कारण रोएँ खडे हो जाते है या चेहरे पर कुछ पसीना आता है। ३. प्रसन्नता। आनद। खुशी।

हर्षक—वि० [स० √हृष् (खुश होना)+णिच्-ण्वुल्-अक्] हर्ष उत्पन्न करनेवाला।

हर्षकर—वि० [स०] आनद देनेवाला। हर्षकारक।

हर्ष-कोलक—पुं० [स०] कामशास्त्र मे एक प्रकार का आसन या रति-बंध।

हर्षण—पु० [स०√हृष् (खुश होना)+णिच्-ल्यु-अन] १. हर्ष या भय से रोंगटो का खडा होना। जैसे—लोम-हर्षण। २. प्रफुल्ल या प्रसन्न होना। ३. कामदेव के ५ बाणों मे से एक। ४. आँख का एक रोग। ५ एक प्रकार का श्राद्ध। ६. फलित ज्योतिष मे एक प्रकार का योग। ७ शस्त्रो का एक प्रकार का प्रहार या वार। ८. काम के वेग से पुरुष की इन्द्रिय में होनेवाला तनाव।

हर्षणीय—वि० [स०] जिससे हर्ष होता हो।

हर्ष-धारिका—स्त्री० [स०] सगीत मे चौदह प्रकार के मुख्य तालो मे से एक प्रकार का ताल।

हर्षना—अ० [स० हर्षण] हर्षित या प्रसन्न होना। खुश होना।

हर्षमाण—वि० [सं०√ हृष्+शानच्+मुक्] हर्षयुक्त। प्रसन्न।

हर्ष-वर्द्धन—पु० [स०] विक्रमी ७ वी शती का उत्तरी भारत का एक क्षत्रिय-सम्राट् जो बौद्ध था।

हर्षाना—अ० [स० हर्ष+हिं० आना (प्रत्य०)] हर्ष से युक्त या आनंदित होना। प्रसन्न होना।

स० हर्ष से युक्त या आनदित करना।

हर्षाश्रु—पु० [स० मध्य० स० प० त० या] आनद से निकले हुए आंसू। आनद के आँसू।

हर्षित—भू० कृ० [स० हर्ष+इतच्] १. जिसे हर्ष हुआ हो। प्रसन्न किया हुआ। २ जिसे रोमांच हुआ हो।

पु० हर्ष। प्रसन्नता।

हर्षी (र्षिन्)—वि० [स०] १. प्रसन्न करनेवाला। २. प्रसन्न।

हर्षुक—वि० [स०] प्रसन्न करनेवाला।

हर्षुल—वि० [स०√हृष्+उलच्] १ हर्ष से भरा हुआ। २ अपनी प्रवृत्ति या स्वभाव से जो प्रसन्न रहता हो।

पु० १. स्त्री का नायक या प्रियतम। २. मृग। हिरन। ३ गौतम बुद्ध का एक नाम।

हर्षुला—स्त्री० [सं० हर्षुल—टाप्] ऐसी कन्या, जिसकी ठोढी पर बाल हो।

विशेष—ऐसी कन्या धर्मशास्त्र के अनुसार विवाह के अयोग्य मानी जाती है।

हर्षोत्फुल्ल—वि० [स० तृ० त०] खुशी से फूला हुआ।

हर्षोन्माद—पु० [स० हर्ष+उन्माद] वह स्थिति जिसमे मनुष्य बहुत अधिक आनद या हर्ष के कारण सुध-बुध भूलकर पागलों का-सा आचरण करने लगता है। (एक्सटेसी)

हर्सा†—पुं० = हरिस (हल का लट्ठा)।

हल—वि० [स०] (अक्षर या वर्ण) जिसके अन्त में 'अ' स्वर का उच्चारण न होता हो। जैसे—दैवात् में का 'त्' हल् है।

पु० टेढी रेखा के रूप मे वह चिह्न (्) जो व्यजनो के नीचे लगाया जाता है, जिससे उन के अन्त मे स्थित 'अ' का उच्चारण न हो।

हलंत—वि० [स० ब० स०] (शब्द) जिसका अंतिम अक्षर या वर्ण हल् हो। जैसे—'पश्चात्' शब्द हलंत है।

हल—पु० [स०√हल् (खेत जोतना)+क घञर्थे करणे] १. खेत जोतने का एक प्रसिद्ध यत्र, जो पहले लकड़ी का ही बनता था; पर अब लोहे का भी बनने लगा है।

क्रि० प्र०—चलाना।—जोतना।

मुहा०—हल जोतना=खेत मे हल चलाना।

२. सामुद्रिक के अनुसार पैर मे होनेवाली एक रेखा, जो उक्त यत्र के आकार की होती है। ३ जमीन नापने का पुरानी चाल का लट्ठा। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का व्यक्ति। ५ एक प्राचीन देश जो उत्तर भारत मे था।

पु० [अ०] १. हिसाब लगाना। गणित करना। २ वह पूरा विवरण जो गणित के प्रश्न के उत्तर के रूप मे तैयार किया जाता है। ३. किसी कठिन विषय या समस्या का निराकरण या मीमासा। (सोल्यूशन)

हल-कंप†—पु०=हड-कप।

हलक—पु० [अ० हल्क] गले की नली। कंठ।

मुहा०—हलक के नीचे उतरना=(क) मुँह मे डाली हुई चीज का पेट मे ले जानेवाले स्रोत में जाना। पेट मे जाना। (ख) मन मे बैठना। २ कोई उपदेश या सीख का मन पर असर होना।

हलकई†—स्त्री० [हिं० हलका+ई (प्रत्य०)] १. हलकापन। २. ओछापन। तुच्छता। ३. अप्रतिष्ठा। हेठी।

हलक-कुद—पुं० [सं०] हल की वह लकडी, जो लट्ठे की छोर पर आडे बल मे जड़ी रहती है और जिसमें फाल ठोका रहता है। हरैना।

हलक-तालू—पु० ['हिं०] सगीत मे ऐसी तान या स्वर, जो हलक और तालू से निकलता हो। (जबडे से नही)। उदा०—गले मे कोकिला-गायन के हड्डी ही नहीं, गोया, हजारो मे कही ये हल्क ये तालू निकलते हैं। —जान साहब।

विशेष—सगीत मे हलक-तालू का गाना श्रेष्ठ समझा जाता है और इसके विपरीत जबडे का निकृष्ट।

हलकना—अ० [स० हल्लन अथवा अनु० हल-हल] १. किसी पात्र आदि मे तरल पदार्थ का इस प्रकार हिलना कि उससे शब्द उत्पन्न हो। जैसे—पेट के पानी का हलकना। उदा०—सखि बात सुनो इक मोहन की निकसैं मटकी सिर लैं हलकैं।—केशव। २ तरगित होना। लहराना।

हलका—वि० [स० लघुक, प्रा० लहुक वर्ण विपर्यय से पुं० हिं० 'हलुक'] [स्त्री० हलकी] १. जो तौल में अपेक्षाकृत अधिक भारी न हो। कम भारवाला। 'भारी' का विपर्यय। जैसे—यह पत्थर हलका है तुम उठा सकते हो। २. आनुपातिक दृष्टि से कुछ कम या थोडा।

३ जो अपने मान, मूल्य, वेग, शक्ति आदि के मानक या साधारण स्थिति से कुछ कम या घट कर हो। जैसे—हलका दर्द, हल्का बुखार, हल्का रग, हलकी सरदी। ४. जिसमे उग्रता, तीव्रता आदि साधारण से कुछ कम या घटकर हो। जैसे—हलकी चोट, हलका वार। ५ (व्यक्ति) जिसके स्वभाव मे गम्भीरता, सौजन्य आदि अपेक्षाकृत कम हो। ओछा। तुच्छ। ६. (कथन या बात) जिसमे गुरुत्व या शालीनता अपेक्षया कम हो। जैसे—हलकी बात। ७ (काम) जिसमे अधिक परिश्रम न करना पडता हो। सहज। सुगम। ८ किसी प्रकार के भार आदि से मुक्त या रहित। जैसे—लडकी का व्याह करके वह भी हलके हो गया। ९ जिसके कारण भार कम पडता हो। जैसे—हलका भोजन। १० (खेत या जमीन) जो कम उपजाऊ हो। जैसे—यह खेत तुम्हारे खेत से कुछ हलका है। ११ कम। थोडा। जैसे—हलके दाम का कपडा। १२ (प्रकृति या शरीर) जिसमे प्रफुल्लता हो। जैसे—नहाने से तबीयत हलकी हो जाती है। १३ किसी की तुलना मे कम अच्छा। घटिया। जैसे—हलका माल। १४ जिसका विशेष गौरव, प्रतिष्ठा या मान न हो। जैसे—देखो, हमारी बात हलकी न पडने पाए।

पद—**हलका सोना**=हलका सुनहरी रग। (रँगरेज) **हलकी बात**=ओछी, तुच्छ या बुरी बात।

मुहा०—हलका करना=(क) अपमानित करना। (ख) तुच्छ ठहराना। जैसे—तुमने दस आदमियो के बीच मे हलका किया। **(मन) हलका-भारी होना**=(क) उकताना। ऊबना। (ख) मन मे किसी प्रकार की चचलता या विकार का अनुभव करना। (ग) लोगो की दृष्टि मे कुछ तुच्छ ठहरना। **हलके-हलके**=धीरे धीरे। मद गति से।

वि०[हिं० हडक या हडकना]पागल (कुत्ते, गीदड आदि के लिए प्रयुक्त)। जैसे—हलका कुत्ता।

पु०[हल-हल से अनु०] पानी की तरग। लहर।

पु०[अ० हल्क]१ किसी चीज के चारो ओर का घेरा। मडल। २ गोलाकार रेखा। वृत्त। ३ वृत्त की परिधि। ४ किसी प्रकार का सीमित क्षेत्र। ५ शासनिक आदि कार्यों के लिए निर्धारित किया हुआ कोई विशिष्ट क्षेत्र या भू-खड। जैसे—पुलिस के सिपाही रात को अपने-अपने हलके मे गश्त लगाते हैं। ६ गोल घेरा बनाकर रहनेवाले पशुओ का झुण्ड। जैसे—मुगल बादशाहो के साथ हाथियो के हलके चलते थे। ७ पशुओ के गले मे पहनाया जानेवाला पट्टा। ८ लोहे का वह गोलाकार बद, जो पहियो पर जडा रहता है। हाल।

हलकाई†—स्त्री०[हिं० हलका+ई (प्रत्य०)]=हलकापन।

हलकान†—वि०=हलाकान।

हलकाना†—अ० [हिं० हलका +ना (प्रत्य०)] हलका होना। बोझ कम होना।

स० हलका करना।

†अ०[हिं० हडक] (कुत्ते, गीदड आदि का) पागल होना।

स० पागल करना या बनाना।

स०[हिं० हलकना] १ किसी वस्तु मे भरे हुए पानी को हिलाना या हिलाकर बुलबुलाना। २ तरग या लहर उत्पन्न करना।

†स० हिल जाना।

हलकानी†—स्त्री०=हलाकानी।

हलकापन—पु०[हिं० हलका+पन (प्रत्य०)]१ हलके होने की अवस्था, गुण या भाव। २ ओछापन। तुच्छता।

हलका पानी—पु० [हिं०] ऐसा पानी जिसमे खनिज पदार्थ बहुत थोडे हो। नरम पानी।

हलकारना†—स०[अ० हल+हिं० करना] १. हल करके बहुत ही महीन चूर्ण के रूप मे लाना। जैसे—सोना हलकारना। (चित्रकला) २ तितर-बितर करना। छितराना।

हलकारा†—पु०=हरकारा।

हलकारी—स्त्री० [हिं० हड+कारी] १ कपडा रँगने के लिए पहले उसमे फिटकरी, हड या तेजाब आदि का पुट देना जिसमे रग पक्का हो।

स्त्री०[हिं० हलदी] कपडो की वह छपाई जो हलदी के रग के योग मे होती है। (छीपी)

हलकारी-सोना—पु० [हिं० हलकारना+सोना] चित्र-कला मे सोने के वरको का वह चूर्ण, जो चित्रो पर लगाने के लिए तैयार किया जाता था।

हलकोरा†—पु० [अनु० हल-हल] हिलोरा। तरग। लहर।

हल-गोलक—पु०[स०] एक प्रकार का कीडा।

हल-ग्राही (हिन्)—वि० [स० हल√ ग्रह् (पकडना)+णिच्+णिनि] हल पकडनेवाला। हल की मूठ पकडकर खेत जोतनेवाला।

पु० किसान। खेतिहर।

हल-चल—स्त्री०[हिं० हलना-चलना]१ वह अवस्था या स्थिति जिसमे किसी स्थान पर लोगो का चलना-फिरना अर्थात् आना-जाना या घूमना-फिरना लगा रहता हो। २ किसी स्थान पर लोगो के आने-जाने या काम करने के कारण होनेवाली चहल-पहल तथा शोर-गुल।

मुहा०—हल-चल मचना=(क) शोर मचना। (ख) उपद्रव होना। (ग) आतक, भय आदि के कारण भगदड मचना।

हल-जीवी (विन्)—वि०[स० हल√ जीव् (जीना)+णिच्—णिनि] हल चलाकर अर्थात् खेती करके निर्वाह करनेवाला। किसान।

हल-जुता—पु०[हिं० हल+जोतना]१ साधारण किसान। २ गँवार।

हलड़ा†—पु०=हलरा (लहर)।

हल-दड—पु०[स० प० त०] हल का लम्बा लट्ठा। हरिस।

हलद†—स्त्री०=हलदी।

हलद-हाथ—स्त्री० [हिं० हलदी+हाथ] विवाह के तीन या पाँच दिन पहले वर और कन्या के शरीर मे हलदी (और तेल) लगाने की रस्म। हलदी चढाना।

हलदिया—पु०[हिं० हलदी]१. एक प्रकार का विष। २ कमल नामक रोग। काँवला।

हलदी—स्त्री०[स० हरिद्रा] एक प्रसिद्ध पौधे की जड, जो कड़ी गाँठ के रूप मे होती और मसाले तथा रँगाई के काम आती है।

मुहा०—हलदी उठना, चढ़ना या लगाना=विवाह मे पहले दूल्हे और दुलहन के शरीर मे हलदी और तेल लगाना। **हलदी लगना**=विवाह होना। **हलदी लगा के बैठना**=(क) घमड मे फूले रहना। अपने को बहुत लगाना। (ख) कोई काम-धन्धा न करते हुए चुपचाप बैठे रहना।

कहा०—हलदी लगे न फिटकिरी=बिना कुछ खर्च या परिश्रम किये हुए। मुफ्त मे।

हलदू—पु०[हिं० हल्दू (हलदी)] एक प्रकार का बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी खेती और सजावट के सामान, कंघियाँ, बन्दूकों के कुंदे आदि बनाने के काम आती है।

हल-धर—वि०[स० ष० त०] हल धारण करनेवाला।
पु० बलराम का एक नाम।

हल-पत—पु०[हिं० हल+पट्ट, पाटा] हल की आड़ी लगी हुई लकड़ी, जो बीच में चौड़ी होती है। परिहत।

हल-पाणि—पु०[स० ब० स०] बलराम (जो हाथ में हल लिये रहते थे)।

हलफ—पु०[अ० हल्फ] वह स्थिति जिसमें कोई बात ईश्वर को साक्षी रखकर बिलकुल सत्यतापूर्वक कही जाती है। शपथ। सौगन्ध।
मुहा०—हलफ उठाना या लेना=किसी बात की सत्यता का उल्लेख करते हुए ईश्वर को साक्षी रखकर कहना।

हलफन—अव्य०[अ० हल्फन] हलफ लेकर। शपथपूर्वक।

हलफ-नामा—पु०[अ०+फा०]=शपथ-पत्र। (एफिडेविट्)

हलफल†—स्त्री०=हल-चल।

हलफा—पु० [अनु० हल-हल] १ हिलोर। लहर। तरंग। २. दमे के रोग में श्वास का वेग से चलना।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।—मारना।

हलफी—वि०[अ० हल्फी] हलफ लेकर कहा या दिया हुआ (बयान)।

हलब—पु०[देश०] [वि० हलब्बी] फारस के पास का एक देश, जहाँ का शीशा प्रसिद्ध था।

हल-बल†—स्त्री० १ =हलचल। २ =हड़बड़ी।

हलबलाना†—अ०[अनु०][भाव० हलबलाहट] भय या शीघ्रता आदि के कारण घबराना।
स० किसी को घबराने में प्रवृत्त करना।

हलबलाहट—स्त्री० [अनु०] हलबलाने की क्रिया या भाव। घबराहट।

हलबली†—स्त्री०=हड़बड़ी। (लखनऊ) उदा०—जो काम है निगोड़ा, तेरा सो हलबली का।—उन्शा।

हलबी—स्त्री०=हलब्बी।

हलब्बी—वि०[हलब देश०] १. हलब देश का (बढ़िया शीशा)। २ बहुत बड़ा, भारी और मोटा। जैसे—हलब्बी शहतीर।

हल-भल†—स्त्री०१ =हल-चल।२ =हड़बड़ी।

हल-भली†—स्त्री० १.=हड़बड़ी। २ =खलबली। ३.=हल-चल।

हल-भूति—पु०[स०] शंकराचार्य का एक नाम।

हल-भृत्—पु०[स० हल√ भृ (भरण-पोषण करना)] बलराम।

हल-मरिया—स्त्री०[पुर्त० आल्मारी] जहाज के नीचे का खाना। (लश०)

हलमिल-लैला—पु० [सिंहली] एक प्रकार का बड़ा पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और खेती के सामान आदि बनाने के काम आती है।

हल-मुख—पु०[स० ष० त०] हल का फाल।

हल-मुखी(खिन्)—पु०[स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं।

हल-यंत्र—पु० [स० मध्य० स०] जमीन जोतने का वह बड़ा हल, जो इंजन की सहायता से चलता है और जिससे बहुत अधिक भूमि बहुत जल्दी जोती जाती है। (ट्रैक्टर)

हलरा—पु०[हिं० लहर] पानी में उठनेवाली लहर। हिलोर।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।

हलराना—स० [हिं० हिलोरा] १. (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना-डुलाना। प्यार से हाथ पर झुलाना। २. दे० 'लहराना'।
†अ०—लहराना।

हलवत—स्त्री०[हिं० हल+औत (प्रत्य०)] नये वर्ष में पहले-पहल खेत में हल ले जाने की रीति या कृत्य। हरौती।

हलवा—पु०=हलुआ।

हलवाइन—स्त्री०[हिं० हलवाई] हलवाई की अथवा हलवाई जाति की स्त्री।

हलवाई—पुं०[अ० हलवा+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० हलवाइन] १. अनेक प्रकार की मिठाइयाँ बनाने और बेचनेवाला दूकानदार। २. हिन्दुओं में एक जाति, जो मुख्यतः उक्त काम करती है।

हलवाई-खाना—पुं०[हिं० हलवाई+फा० खाना=घर या स्थान] वह स्थान जहाँ हलवाई बैठकर मिठाई, नमकीन, पूरी आदि बनाते हैं।

हलवान—पुं०[अ०]१. भेड़, बकरी आदि का वह छोटा बच्चा, जो अभी दूध पर ही पल रहा हो और घास, पात आदि न खाता हो। २. उक्त का मांस जो खाने में बहुत मुलायम होता है।

हलवाह—पु०[सं०] वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो। हलवाहा।

हलवाहा†—पु०=हलवाह।

हल-हला—स्त्री० [अनु०] आनंद-सूचक ध्वनि। किलकार।

हल-हलाना†—स० [हिं० हलना या अनु० हल-हल]१. ऐसा पात्र हिलाना जिसमें पानी भरा हो। २. जोर से या झटका देकर हिलाना। झकझोरना। ३ कँपाना।
†अ० काँपना। थरथराना।

हला—स्त्री० [स०] १. सखी। २. पृथ्वी। ३. जल। ४ मदिरा।

हलाक—वि०[अ०]१. ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। २. वध किया हुआ। हत।

हलाकत—स्त्री०[अ०] १. हलाक करने की क्रिया या भाव। २. ध्वंस। विनाश। ३ वध। हत्या। ४. मृत्यु। मौत।

हलाकान—वि० [अ० हलाक या हलाकत] [भाव० हलाकानी] जो दौड़-धूप या परिश्रम करता-करता बहुत ही तंग या परेशान हो गया हो।

हलाकानी—स्त्री०[हिं० हलाकान] हलाकान होने की अवस्था या भाव। परेशानी।

हलाकी—वि०[अ० हलाक+हिं० ई (प्रत्य०)] हलाक करनेवाला।

हलाकू—वि०[अ० हलाक+ऊ (प्रत्य०)] हलाक करनेवाला।
पु० एक तुर्क सरदार जो चंगेजखाँ का पोता था और उसी के समान क्रूर तथा हत्यारा था।

हलाचली†—स्त्री०=हल-चल।

हलाना†—स०= हिलाना।

हलाभ—पुं०[स० ब० स०] वह घोड़ा जिसकी पीठ पर काले या गहरे रंग के रोएँ बराबर कुछ दूर तक चले गए हों।

हला-भला—पु० [हिं० भला+हला (अनु०)] १. निबटारा। निर्णय। २. परिणाम। फल।

हलाभियोग—पु०[सं०] हरौती।
हलायुध—पुं०[सं० ब० स०] बलराम।
हलाल—वि० [अ०] जो शरअ या इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार अथवा उसके द्वारा अनुमोदित हो। 'हराम' का विपर्यय।
पद—हलाल का=धर्म की दृष्टि से उचित और विहित। हलाल की कमाई=वह धन जो कठोर परिश्रम से तथा उचित साधनों से कमाया गया हो।
मुहा०—(किसी जीव को) हलाल करना=मुसलमानी शरअ के अनुसार कलमा पढते हुए किसी धारदार अस्त्र से धीरे-धीरे गला रेतकर हत्या करना। जैसे—मुर्गी या बकरा हलाल करना। (काम चीज या बात) हलाल करना=कोई काम ईमानदारी और परिश्रम से पूरा करके उचित रूप से प्रतिफल देना। जैसे—मालिक का पैसा हलाल करके खाना चाहिए।
पु०१ ऐसा पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो। वह जानवर जिसके खाने का निषेध न हो। २. ऐसा पशु जो मुसलमानी धर्म के अनुसार और कलमा पढ़कर धारदार शस्त्र से मारा गया हो।
मुहा०—(पशु को) हलाल करना=पशु का मांस खाने के लिए उसे मुसलमानी शरअ के अनुसार गला रेतकर उसके प्राण लेना। जवह करना। (व्यक्ति को) हलाल करना=बहुत ही बुरी तरह से अत्याचार और अन्यायपूर्वक अत्यन्त कष्ट पहुँचाना, अथवा उससे धन आदि ऐंठना।
हलालखोर—वि०[अ० हलाल+फा० खोर] [भाव० हलालखोरी, स्त्री० हलालखोरिन] जो उचित साधनों से तथा कठोर परिश्रम द्वारा धन कमाता हो। धर्म द्वारा अनुमोदित काम करके जीविका चलानेवाला।
पु० मेहतर।
हलालखोरी—स्त्री० [अ० हलाल+फा० खोर] हलालखोर का काम, पद या भाव।
†स्त्री० 'हलालखोर' का स्त्री० रूप।
हलाहल—पु०[सं० हल-आ√हल्+अच्] १. वह प्रचण्ड विष, जो समुद्र-मथन के समय निकला था। २ उग्र विष। भारी जहर। ३. एक प्रकार का जहरीला पौधा, जिसके संबंध मे यह प्रसिद्ध है कि उसकी गन्ध से ही प्राणी मर जाते हैं।
†वि० पूरा-पूरा। भर-पूर। उदा०—ता दिशि काल हलाहल होय।—घाघ।
हलिक्षण—पु०[सं० ब० स०] एक प्रकार का सिंह।
हलि-प्रिया—स्त्री०[सं० ष० त०] १. मद्य। शराब। मदिरा। २. ताड़ी।
हली(लिन्)—पु०[सं० हल+इनि]१. किसान। खेतिहर। २. बलराम का एक नाम।
वि० हल जोतनेवाला।
हलीम—पु०[सं०] केतकी।
पु०[देश०] मटर के डठल, जो बंबई की ओर काटकर जानवरों को खिलाये जाते हैं।
वि० [अ०] [भाव० हलीमी] शान्त और सहनशील।
पु० मुसलमानों मे एक प्रकार का व्यजन जो मुहर्रम में बनता है।
हलीमक—पु०[सं०] एक प्रकार का पाण्डु रोग।
हलीमी—स्त्री०[अ०] हलीम अर्थात् शान्त, सहनशील और सुशील होने की अवस्था, गुण या भाव।
हलीसा—पुं० [सं० हलीषा] चप्पू।
हलुआ—पुं०[अ० हल्व.]१. आटे, बेसन, मैदे, सूजी, दाल, गाजर आदि को घी में भूनकर और उसमें चीनी, खोआ आदि मिलाकर तैयार किया जानेवाला एक प्रसिद्ध व्यंजन।
मुहा०—(किसी का) हलुआ निकालना=मारते-मारते बे-दम कर देना। अपने हलुए माँड़े से काम रखना=केवल स्वार्थ-साधन का ध्यान रखना। जैसे—तुम्हे तो अपने हलुए माँड़े से काम है, किसी का चाहे कुछ हो।
२. उक्त प्रकार के व्यंजन की तरह की कोई गाढी और मुलायम चीज। जैसे—गवैये रात को सोने के समय गले पर पान का हलुआ बाँधते है।
हलुआई†—पुं० [स्त्री० हलुआइन]=हलवाई।
हलुका†—वि०=हल्का।
हलुकाई†—स्त्री०=हलकाई (हलकापन)।
हलुवा†—पुं०=हलुआ।
हलुवाई†—पुं०=हलवाई।
हलूक—स्त्री०[अ० हल्क]१ उतना पदार्थ जितना एक बार वमन मे मुँह से निकले। कै। वमन।
हलूफा—पु०[अ० हलूफ़] वे मिठाइयाँ, पकवान आदि, जो कुछ जातियों मे विवाह से दो-एक दिन पहले कन्या-पक्षवालो के यहाँ से वर पक्षवालो के यहाँ भेजी जाती हैं।
हलोर†—स्त्री०=हिलोर (लहर)।
हलोरना†—स० दे० 'हिलोरना'।
हलोहल†—स्त्री०=हल-चल। (राज०)
हल्क—पुं०[अ० हल्क़]=हलक।
हल्की—वि०, पु०=हलका।
हल्द†—स्त्री०=हलदी।
हल्द-हाथ—स्त्री०=हलद-हाथ।
हल्दी—स्त्री०=हलदी।
हल्य—वि०[सं० हल+यत्]१. हल-सम्बन्धी। हलका। २ (खेत) जो हल से जोता जा सके। ३ भद्दा। कुरूप। ४. फैलाने या विस्तृत करने योग्य। उदा०—जिनकी कीर्ति सकल दिशि हल्या।—निराला।
पु०१. जोता हुआ या जोतने योग्य खेत। २. कुरूपता। भद्दापन।
हल्लक—पुं० [सं०] लाल कमल।
हल्लन—पुं०[सं०]१. करवट बदलना। २. हिलना-डोलना।
हल्ला—पु० [अनु०]१. एक या बहुत से लोगों का जोर-जोर से चिल्लाना और बोलना। कोलाहल। शोर। जैसे—तुम तो बहुत हल्ला मचाते हो।
पद—हल्ला-गुल्ला=शोर-गुल।
क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।
२ लड़ाई के समय की ललकार। हाँक। ३. विरोधियों या शत्रुओं पर अचानक वेगपूर्वक किया जानेवाला आक्रमण। धावा। हमला।
क्रि० प्र०—बोलना।
हल्लित्र—वि०[सं० हल्ल् (विकास करना)+ष्ट्रन्] जोर से हिलानेवाला।

पु० वह उपकरण या यंत्र, जिसमें कई चीजें एक में मिलाने के लिए [illegible] जोर से हिलाई जाती हैं।

हल्लीश—पु०[सं०]१. नाट्य शास्त्र में अठारह उपरूपकों में से एक प्रकार का नृत्य तथा संगीत-प्रधान उपरूपक, जो एक ही अंक का होता है, जिसमें पात्र रूप में बातें करनेवाला एक पुरुष और आठ दस स्त्रियाँ होती हैं। २. उक्त के अनुकरण पर होनेवाला एक प्रकार का नृत्य, जिसमें एक पुरुष और कई स्त्रियाँ घेरा बाँध कर नाचती हैं।

हल्लीशक—पु०[सं०] घेरा या वृत्त बनाकर नाचना।

हव—पु० [सं० हु (देना लेना) +अच्] १. आहुति। बलि। २. अग्नि। आग। ३. आज्ञा। आदेश। ४. पुकार।

हवन—पु०[सं०√हु(देव निमित्त देना)+ल्युट्—अन]१. धार्मिक पद्धति से, देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अग्नि में घी, जौ आदि की आहुति देने की क्रिया। होम। २. अग्नि। आग। ३. अग्नि-कुंड। ४. आहुति देने का पात्र। स्रुवा।

हवन-कुंड—पु०[सं० ष० त०] वह कुंड जिसमें हवन के समय आहुति डाली जाती है।

हवनी—स्त्री०[सं०]१. हवन कुंड। २. स्रुवा।

हवनीय—वि०[सं० √हु (देना)+अनीयर् कर्मणि] वह (पदार्थ) जिसे आहुति के रूप में अग्नि में डालना हो।

पु० घी, जौ आदि पदार्थ जो हवन के लिए आवश्यक हैं।

हवन्नक—वि० [अ० हबन्नक=एक प्रसिद्ध मूर्ख अरब का नाम] बहुत बड़ा उजड्ड। गँवार और मूर्ख।

हवलदार—पु०[अ० हवाल+फा० दार=रखनेवाला]१. मुसलिम शासनकाल में वह सैनिक अधिकारी, जो बाजार की ठीक-ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिए नियुक्त होता था। २. आज-कल पुलिस या सेना का अपेक्षाकृत निम्न पदाधिकारी जो कुछ सिपाहियों के ऊपर होता है।

हवस—स्त्री०[अ०] वह इच्छा जिसकी संतुष्टि बराबर अथवा बार-बार की जाती हो, पर फिर भी जो और अधिक संतुष्टि के लिए उत्कट रूप धारण किये रहती हो।

क्रि० प्र०—पूरी करना।

मुहा०—हवस पकाना=व्यर्थ कामना करना। मन-मोदक खाना।

हवा—स्त्री०[अ०]१. प्रायः सर्वत्र चलता रहनेवाला वह तत्त्व जो सारी पृथ्वी में व्याप्त है और जिसमें प्राणी साँस लेते हैं। वायु।

पद—हवा-पानी। (देखें)

मुहा०—हवा उड़ना=लोक में कोई अफवाह या खबर फैलना। हवा करना=पंखे आदि से हवा चलाना। (कोई चीज) हवा करना=गायब करना। उड़ा लेना। हवा के घोड़े पर सवार होना=(क) बहुत जल्दी में होना। (ख) किसी प्रकार के नशे या गहरी उमंग में होना। हवा के रुख जाना=जिस ओर हवा चलती हो, उसी ओर जाना। हवा खाना=(क) शुद्ध वायु का सेवन करना। (ख) विफल या वंचित होना। (कहीं की) हवा खाना=वहाँ जाकर रहना। जैसे—जेल की हवा खाना। हवा गिरना=तेज चलती हुई हवा का धीमा या मंद होना। (किसी काम या बात को) हवा देना=प्रचार में प्रोत्साहन देना। बढ़ाना। जैसे—परदे की प्रथा ने वेश्यावृत्ति को हवा दी। हवा पलटना=कोई नई स्थिति उत्पन्न होना। हालत बदल जाना। हवा पीकर या फाँककर रहना=[illegible] समय बिताना। (व्यंग्य) हवा बिगड़ना=दे० ऊपर 'हवा पलटना'। (किसी की) हवा बाँधना=किसी का [illegible] [illegible] ऐसी बातें करना। डींग मारना। जैसे—[illegible]। हवा बदलना=दे० ऊपर 'हवा पलटना'। (कहीं की) हवा बिगड़ना=(क) वातावरण आदि में रोगों के कीटाणु फैलना। (ख) वहाँ परिस्थिति या वातावरण खराब होना। (कहीं की या किसी की) हवा लगना=किसी प्रकार का बुरा परिणाम या [illegible] प्रभाव होना। हवा से बातें करना=(क) बहुत तेज दौड़ना या चलना। (ख) [illegible] [illegible] बातें करना। हवा में उड़ना=[illegible] [illegible] [illegible] हवा हो जाना=(क) भाग जाना। (ख) [illegible]। (ग) गायब या गुम हो जाना।

२. [illegible] [illegible] आकाश में [illegible]। उदा०—ये बड़े लोगों की [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] हैं।—[illegible]। ३. भूत, प्रेत आदि [illegible] [illegible]। ४. [illegible]। यश। ५. [illegible] [illegible] [illegible]। साख।

मुहा०—हवा बाँधना=(क) [illegible]। (ख) बाजार में साख [illegible]। हवा बिगड़ना=पहले की सी मर्यादा या साख न रह जाना।

वि० (रंगों के संबंध में) [illegible] [illegible]। हल्का। जैसे—हवा [illegible] [illegible]।

स्त्री०[अनु०]१. इच्छा। कामना। २. इंद्रियों अथवा शरीर के सुख-भोग की लालसा। जैसे—[illegible], इंद्रिय-लोलुप।

हवाई—वि० [अ० हवा+ई (हि० प्रत्य०)]१. हवा या वायु से संबंध रखनेवाला। २. हवा में उड़ने, चलने, रहने या होनेवाला। वायव। (एरियल) जैसे—हवाई जहाज, हवाई हमला। ३. (बात) जिसका कोई वास्तविक आधार न हो। बिलकुल काल्पनिक और निर्मूल। जैसे—हवाई खबर, हवाई बात।

स्त्री०१. एक प्रकार की आतिशबाजी, जो छूटने पर ऊपर कुछ दूर तक हवा में जाती और वहाँ फूट जाती है।

मुहा०—(चेहरे या मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना=भय आदि के कारण चेहरे का रंग फीका पड़ना। हवाई गुम होना=आश्चर्य, भय आदि के कारण बुद्धि का कुछ भी काम न करना।

२. तीर। उदा०—प्रेम पलीता सुरति हवाई, गोला गियानु चलाइया।—कबीर। ३. हलकी छाया या प्रभाव। ४. हलकी रंगत। आभा।

स्त्री० पिस्ते, बादाम आदि मेवों के कतरे हुए छोटे छोटे टुकड़े, जो मिठाइयों आदि के ऊपर उनकी शोभा और स्वाद बढ़ाने के लिए छिड़के जाते हैं।

हवाई-अड्डा—पु०[हि०]हवाई जहाजों के उतरने, रहने या प्रस्थान करने का स्थान। (एरोड्रोम)

हवाई-किला—पु०[हि०+अ०]१. मन में बाँधा जानेवाला ऐसा बहुत बड़ा मनसूबा या की जानेवाली अभिलाषा जो जल्दी पूरी न हो सके। २. युद्ध में काम आनेवाला एक प्रकार का बहुत बड़ा हवाई जहाज। (एयर-फोर्टरेस)

हवाई-केंद्र—पु०[हि०+सं०]वह स्थान जहाँ से सैनिक हवाई जहाज उड़कर दूसरी जगह जाते और फिर लौटकर वहीं आ ठहरते हों। (एयर बेस)

हवाई-जहाज—पुं० हवा में उड़नेवाली सवारी। वायुयान। (एरोप्लेन)
हवाई-छतरी—स्त्री० दे० 'परिछत्र'। (पैराशूट)
हवाई-डाक—स्त्री० [हिं०+अ०] वह डाक या चिट्ठियाँ आदि, जो हवाई जहाज के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जाती हों। (एयर मेल)
हवाई-दीदा—वि० [हिं० हवाई+फा० दीदः] जो लज्जा छोड़कर सबसे आँखें लड़ाता फिरे। उदा०—लड़की खुद ही हवाई दीदा थी, निकल गई किसी के साथ।—शौकत थानवी।
हवाई-पट्टी—स्त्री० [हिं०] दे० 'अवतरण पथ'।
हवाई-महल—पु० दे० 'हवाई किला'।
हवा-कश—पु० [अ०+फा०] १ कमरो की दीवारों मे वह ऊपरवाला झरोखा, जिसमे से गदी हवा वाहर निकलती और साफ हवा अंदर आती है। रोशनदान। २ पखे की तरह का, उक्त काम करनेवाला एक प्रकार का उपकरण। (वेन्टिलेटर)
हवा-गीर—पु० [फा०] आतशवाजी के वान वनानेवाला कारीगर।
हवाई-चक्की—स्त्री० [हि० हवा+चक्की] आटा पीसने, खेतों में पानी उलीचने आदि की वह चक्की या कल जो हवा के जोर से चलती हो।
हवादार—वि० [अ०+फा०] [भाव० हवादारी] (कमरा, मकान या स्थान) जहाँ खूब या ताजी हवा बराबर चलती रहती हो।
पु० वह हल्का तख्त, जिस पर बैठाकर बादशाह को महल या किले के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे।
हवादारी—स्त्री० [फा०] १. ऐसी अवस्था या व्यवस्था जिससे कमरे, कोठरी आदि मे ताजी हवा ठीक तरह से आती रहे और गदी हवा बाहर निकलती रहे। व्यजन-सचालन। (वेंटिलेशन) २. शुभ-चितन। खैरख्वाही।
हवान—पु० [?] जहाज पर रखकर चलाई जानेवाली तोप। कोठी तोप।
हवाना—पु० [हवाना द्वीप] हवाना नामक द्वीप का तम्बाकू, जो बहुत अच्छा समझा जाता है।
हवा-परस्त—वि० [अ०+फा०] [भाव० हवा-परस्ती] केवल इन्द्रियो का सुख भोग चाहनेवाला। इन्द्रिय-लोलुप।
हवा-पानी—पु० [अ०+हि०] १ किसी स्थान की वायु, जल आदि वे प्राकृतिक बातें, जिनका प्राणियो, वनस्पतियो आदि के जीवन, स्वास्थ्य विकास आदि पर प्रभाव पड़ता है। जलवायु। २. विशेषतः किसी प्रदेश की सामान्य वातावरणिक स्थिति। (क्लाइमेट)
हवा-बाज—पु० [अ०+फा०] [भाव० हवाबाजी] १. हवाई जहाज। २ हवाई जहाज चलानेवाला।
हवा-महल—पु० [अ०] महलो आदि मे वह सबसे ऊँचा कमरा या मकान जिसमे चारो ओर से हवा खूब आती हो। बहार-बुर्ज।
हवामान†—पु० दे० 'ताप-मान'।
हवाल—पु० [अ० अहवाल] १ अवस्था। दशा। २. विशेषत. बुरी अवस्था। दुर्दशा। उदा०—जो नर बकरी खात है, तिनका कौन हवाल। —कबीर। ३ समाचार। हाल।
हवालदार†—पु० = हवलदार।
हवाला—पु० [अ० हवाल] १ किसी बात की पुष्टि के लिए किसी के वचन या किसी घटना का किया जानेवाला उल्लेख या संकेत। प्रमाण का उल्लेख। (रेफ़रेंस) २. किसी की कही या लिखी हुई बात का वह अंश, जो उक्त प्रकार से कही कहा या लिखा गया हो। उद्धरण। (साइटेशन) ३. उदाहरण। दृष्टान्त।
क्रि० प्र०—देना।
३. किसी को कोई चीज देख-रेख, रक्षा आदि के विचार से सौंपने की क्रिया या भाव। सुपुर्दगी।
मुहा०—(किसी के) हवाले करना=किसी को दे देना। सौंपना। (किसी के) हवाले पड़ना=विवशता की दशा में किसी के अधिकार या अधीनता में जाना, रहना या होना।
हवालात—स्त्री० [अ०] १. पहरे के अन्दर रखे जाने की क्रिया या भाव। २. जेल, थाने आदि की वह कोठरी, जिसमे अभियुक्त निर्णय या विचार होने तक वन्द रखे जाते हैं।
क्रि० प्र०—मे देना।—मे रखना।
हवालाती—वि० [अ० हवालात] जो हवालात मे रखा गया हो।
हवाली—स्त्री० [अ०] आस-पास के स्थान।
पद—हवाली-मवाली=किसी के आस-पास या सग-साथ रहनेवाले ऐरे-गैरे लोग।
हवास—पु० [अ०] १. शरीर की ज्ञानेन्द्रियाँ। २ इन्द्रियो के द्वारा होनेवाला ज्ञान या संवेदन। ३. चेतना। ज्ञान। होश।
पद—होश-हवास।
मुहा०—हवास गुम होना=बुद्धि या होश ठिकाने न रहना।
हवि—पुं० [स० हविस्] १. हवन की वस्तु या सामग्री। वे चीजें, जिनकी हवन मे आहुति दी जाती है। २. आहुति। ३. बलि।
हवित्री—स्त्री० [सं० √हु (देना)+ष्ट्रन्—ङीप्] हवन-कुण्ड।
हविर्धानी—स्त्री० [स०] कामधेनु।
हविर्भुज—पु० [स०] अग्नि।
हविष्पात्र—पु० [स० ष० त०] हवि रखने का बरतन।
हविष्मती—स्त्री० [स० हविष्+मतुप्—ङीप्] कामधेनु।
हविष्मान्—वि० [स० हविष्मत्] [स्त्री० हविष्मती] हवन करनेवाला।
पु० १. पितरों का एक गण या वर्ग। २. छठे मन्वन्तर के सप्तर्षियों मे से एक। ३ अगिरा के एक पुत्र।
हविष्य—वि० [स० हविष्+यत्] १. (पदार्थ) जिसकी हवन मे आहुति दी जा सकती हो या दी जाने को हो। २. (देवता) जिसके उद्देश्य से आहुति दी जाने को हो।
पुं० १. हवि। २. हविष्पात्र।
हविष्यान्न—पु० [स० कर्म० स०] वह विहित सात्विक अन्न या आहार, जो यज्ञ के दिनों मे किया जाता है। जैसे—जौ, तिल, मूँग, चावल इत्यादि।
हविस†—स्त्री०=हवस।
†पु०=हविष्य।
हवीन—पुं० [?] परेते की तरह का वह यंत्र जिसमे लंगर डालने के समय जहाज की रस्सियाँ बाँधी या लपेटी जाती हैं।
हवेली—स्त्री० [अ०] १. राजाओं, रईसों के वर्ग के रहने का ऊँचा, पक्का और बड़ा मकान। २. जोरू। पत्नी। (पूरब) ३. काठियावाड़, गुजरात आदि में वल्लभ संप्रदाय के मन्दिरों की संज्ञा। ४. उक्त मन्दिरों

में होनेवाला वह कीर्तन, जिसमें शास्त्रीय शैली के राग और रागिनियाँ गाई जाती हैं।

हव्य—वि०[सं० √ हु (देना)+यत्] जो हवि के रूप में अग्नि में डाला जाने को हो या डाला जा सकता हो।

पुं० हवन की सामग्री।

हव्यभुज्—पुं०[सं०] अग्नि।

हव्य-योनि—पुं०[सं० ब० स०] देवता।

हव्य-वाह—पुं०[सं० हव्य√ वह् (ढोना)+घञ्]१. अग्नि। २. पीपल।

हव्याद—वि०[सं० हव्य√ अद्(खाना)+अच्] हव्य खानेवाला।

पुं० अग्नि।

हव्याशन—पुं०[सं० ब० स०] अग्नि।

हशमत—स्त्री०[अ० हश्मत]१ गौरव। बड़ाई। २ ऐश्वर्य। वैभव।

हशर—पुं०=हश्र।

हश्र—पुं०[अ०]१ उठना। २ ईसाइयों, मुसलमानों आदि के मत से सृष्टि का वह अंतिम दिन, जब सभी मृत व्यक्ति कब्रों से निकलकर ईश्वर के सामने उपस्थित होंगे और वहाँ उनके जीवन-काल के कर्मों का विचार तथा निर्णय होगा। ३ अंत। नतीजा। परिणाम। ४ रोना-पीटना। विलाप। ५. बहुत जोरों का शोर या हो-हल्ला।

हसंती—स्त्री०[सं० हसंतिका]१. अँगीठी। २. एक प्रकार की मल्लिका। ३. शाकिनी। ४. एक प्राचीन नदी।

हसत* —पुं०=हस्त (हाथ)।

पुं०=हस्ति (हाथी)।

हसती*—पुं० = हस्ति (हाथी)।

†स्त्री०=हस्ती (अस्तित्व)।

हसद—पुं०[अ०] ईर्ष्या। डाह।

हसन—पुं० [सं०]१ हँसने की क्रिया या भाव। हास। २. ठट्ठा। परिहास। मजाक। ३ कार्तिकेय का एक अनुचर।

पुं०[अ०] अली के दो बेटों में से एक, जो मजीद के साथ लड़ाई में मारा गया था और जिसका शोक शीया मुसलमान मुहर्रम में मनाते हैं। (इसके भाई का नाम हुसैन था।)

हसनीय—वि०[सं० √हस् (हँसना)+अनीयर्]=हास्यास्पद।

हसनैन—पुं०[अ०] हसन और हुसैन नामक दोनों भाई, जो अली के पुत्र थे। उदा०—जहँ हसनैन बतूल-सनेहा, तहाँ समाइ न दूसरि देहा। —नूर मोहम्मद।

हसब—अव्य० [अ० हस्ब] अनुसार। मुताबिक। जैसे—हसब हैसियत=अपनी हैसियत के अनुसार।

हसम—पुं० [अ० हश्म] १. धन-सम्पत्ति। वैभव। उदा०—हसम हयगाय देस अति पति सायर मज्जाद।—चंदबरदाई। २ ठाट-बाट। ३. शोभा।

हसर—पुं० [अ० हजर] रिसाले के सवारों के तीन भेदों में से एक जिनके अस्त्र तथा घोड़े भी हलके होते हैं और वर्दियाँ चटकीले रंगों की होती हैं। अन्य दो भेद लैंसर और ड्रैगून कहलाते है।

हसरत—स्त्री० [अ०] १. कामना। वासना। २ खेद। दुःख। ३ पश्चात्ताप।

हसावर—पुं० [हिं० हंस] खाकी रंग की एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जिसकी गरदन हाथ भर लम्बी और चोंच केले के फल के समान होती है।

हसिका—स्त्री० [सं०] १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २ उपहास। ठट्ठा।

हसित—भू० कृ० [सं०] १. जो हँसा हो या हँस रहा हो। २. जिस पर हँसा गया हो। ३. जिस पर लोग हँसते हों।

पुं० १. हँसी। हास। २. कामदेव के धनुष का नाम।

हसीन—वि० [अ०] सुन्दर। खूबसूरत। (व्यक्ति)

हसीला—वि०=अशील (सीधा)।

हस्त—पुं० [सं०√हस् (हास करना)+तन् नेट्] १. हाथ। २. हाथी का सूँड़। ३ हाथ की लिखावट। ४ छन्द का कोई चरण या पद। ५. एक हाथ अर्थात् २४ अंगुल की एक पुरानी नाप। ६. एक नक्षत्र, जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है। ७. नृत्य, संगीत आदि में हाथ हिलाकर भाव बताने की क्रिया। ८. गुच्छा या जव्वा। जैसे—केश-हस्त।

वि० हाथों के द्वारा किया हुआ या किया जानेवाला। (मैनुअल) यौगिक शब्दों में पूर्व-पद के रूप में। जैसे—हस्तकला, हस्तकौशल आदि।

† पुं०=हस्ति (हाथी)।

हस्तक—पुं० [सं०] १ हाथ। २ नृत्य में, भाव बताने के लिए बनाई जानेवाली हाथ की मुद्रा। ३ संगीत में, हाथ से किया जानेवाला ताल। ४ कर-ताल। ५. हाथ से बजाई जानेवाली ताली। कर-तल-ध्वनि।

हस्तकार्य—पुं० [स० ष० त०] हाथ से किया जानेवाला कारीगरी का काम। दस्तकारी।

हस्त-कोहली—स्त्री० [स०] वर और कन्या की कलाई में मंगलसूत्र बाँधने की क्रिया या रीति।

हस्त-कौशल—पुं० [सं० ष० त०] हाथ से किये जानेवाले कामों से सम्बन्ध रखनेवाला कौशल, दक्षता या सफाई।

हस्त-क्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] १. हाथ का काम। दस्तकारी। २ दे० 'हस्त-मैथुन'।

हस्तक्षेप—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथ फेंकना। २. किसी दूसरे के काम में अनावश्यक रूप से तथा बिना अधिकार दखल देना। ३ किसी चलते या होते हुए काम में कुछ फेर-बदल करने के लिए हाथ डालना या फेर-बदल करने के लिए उसके कर्ताओं से कुछ कहना। (इन्टरफिअरेंस)

हस्तगत—भू० कृ० [सं० ष० त०] हाथ में आया हुआ। मिला हुआ। प्राप्त।

हस्तग्रह—पुं० [सं० हस्त√ग्रह् (पकड़ना)+अच्, ष० त०] १. हाथ पकड़ना। २ पाणि-ग्रहण। विवाह।

हस्त-चापल्य—पुं० [सं० ष० त०] हाथ की चालाकी, फुरती या सफाई।

हस्ततल—पुं० [सं० ष० त०] हथेली।

हस्त-त्राण—पुं० [सं० ष० त०] हाथों का रक्षक। दस्ताना।

हस्त-दोष—पुं० [सं० ष० त०] कोई चीज तौलने, नापने आदि के समय की जानेवाली वह चालाकी जो स्वार्थवश की जाती है। देने के समय कम और लेने के समय अधिक तौलना या नापना।

हस्त-धारण—पु० [सं०] १. सहारा देने के लिए किसी का हाथ पकड़ना। २. पाणि-ग्रहण। विवाह। ३. किसी का वार हाथ पर रोकना।

हस्त-पुस्तिका—स्त्री० [सं०] छोटे आकार की कोई ऐसी पुस्तक, जिसमे किसी विषय की सभी मुख्य बातें संक्षेप मे लिखी हों। (हैन्डबुक, मैनुअल)

हस्त-पृष्ठ—पु० [सं० ष० त०] हथेली का पिछला या उलटा भाग।

हस्त-प्रचार—पु० [सं० ष० त०] अभिनय या नृत्य के समय की जानेवाली हाथो की चेष्टाएँ।

हस्तबिंब—पु० [सं०] शरीर में सुगधित द्रव्यों का लेपन करना।

हस्त-मणि—पु० [सं० ष० त०] कलाई पर पहनने का रत्न।

हस्त-मैथुन—पु० [सं० मध्य० स०] वीर्य-पात करने के लिए हाथ से इन्द्रिय को बार-बार जोर से सहलाना। हस्त-क्रिया।

हस्त-रेखा—स्त्री० [सं० ष० त०] हथेली में बनी हुई लकीरों मे से हर-एक। विशेष—सामुद्रिक मे इनके आधार पर शुभाशुभ फलो का विचार किया जाता है।

हस्त-लाघव—पु० [सं० ष० त०] १. हाथ से काम करने का उत्कृष्ट कौशल। २ हाथ की चालाकी, फुरती या सफाई।

हस्त-लिखित—भू० कृ० [सं० तृ० त०] (लेख या पाडुलिपि) जो हाथ से लिखी गई हो।

हस्त-लिपि—स्त्री० [सं० ष० त०] किसी के हाथ की लिखावट या लिपि। (हैन्डराइटिंग)

हस्त-लेख—पु० [सं० ष० त०] किसी के हाथ का लिखा हुआ लेख या ग्रन्थ। (मैनस्क्रिप्ट)

हस्त-वातरक्त—पु० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमे हथेलियो मे छोटी-छोटी फुसियाँ निकलती हैं और धीरे-धीरे सारे शरीर में फैल जाती है।

हस्तवान् (वत्)—वि० [सं० हस्त+मतुप्] जो हाथ से काम करने मे कुशल हो।

हस्त-वारण—पु० [सं० तृ० त०] हाथ से वार या आघात रोकना।

हस्त-शिल्प—पु० [सं० ष० त०] मुख्यतः हाथो से प्रस्तुत किया जानेवाला शिल्प। दस्तकारी। (हैंड-क्राफ्ट)

हस्त-श्रम—पु० [सं० ष० त०] हाथो (अर्थात् शरीर) से किया जानेवाला परिश्रम। (मैनुअल लेबर)

हस्त-सूत्र—पु० [सं० ष० त०] मगल-सूत्र। (दे०)

हस्तांक—पु० [सं० हस्त+अक] १. किसी के हाथ के लिखे हुए अक्षर या लिखावट। (हैंडराइटिंग) २ दे० 'हस्ताक्षर'।

हस्तांकन—पु० [सं० ष० त०] [भू० कृ० हस्तांकित] हाथ से अकन करने, लिखने आदि की क्रिया।

हस्तांक-पत्र—पु० [सं० हस्त-अक ब० स०, पत्र कर्म० स०] वह पत्र जिसके आधार पर बिना कुछ रेहन रखे और हाथ-उधार कुछ रकम कर्ज ली जाती है और जिसमे सूद सहित वह कर्ज चुकाने की प्रतिज्ञा लिखी रहती है। (प्रोनोट, हैन्ड-नोट)

हस्तांकित—भू० कृ० [सं० तृ० त०] हाथ से अकित किया या लिखा हुआ।

हस्तांजलि—स्त्री० [सं० ष० त०] दोनों हाथों को जोड़कर दोने के समान बनाई जानेवाली अजलि।

हस्तांतर—पुं० [सं०] दूसरा हाथ।

हस्तांतरक—पु० [सं०] वह जो कोई सम्पत्ति या सवध के अधिकार आदि दूसरे को देता हो। हस्तातरण करनेवाला। अतरिक। (ट्रांसफरर)

हस्तांतरण—पु० [सं०] [भू० कृ० हस्तांतरित] (सम्पत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ मे जाना या दिया जाना। अतरण। (ट्रासफ़रेन्स)

हस्तांतरणीय—वि० [सं० हस्तातरण+छ-ईय] जिसका हस्तातरण हो सकता हो। सक्राम्य। (ट्रासफरेबुल)

हस्तांतरित—भू० कृ० [सं० हस्तांतर+इतच्] (सम्पत्ति या अधिकार) जो एक के हाथ से दूसरे के हाथ मे गया हो। जिसका हस्तातरण हुआ हो। (ट्रांसफर्ड)

हस्तांतरिती—पुं० [सं० हस्तातरित] वह जिसे किसी सम्पत्ति का अधिकार दिया या सौंपा गया हो। अतरिती। (ट्रासफ़री)

हस्ता—स्त्री० [सं० हस्त-टाप्] हस्त-नक्षत्र।

हस्ताक्षर—पु० [सं० ष० त०] १. हाथ से बनाये हुए अक्षर। २. किसी व्यक्ति द्वारा लिखा जानेवाला अपना नाम जो इस बात का सूचक होता है कि ऊपर लिखी हुई बातें मैंने लिखी हैं और उनका उत्तरदायित्व मुझ पर है। (सिग्नेचर)

हस्ताक्षरक—पु० [सं०] वह जो लेख आदि पर हस्ताक्षर करे। दस्तखत करनेवाला। (सिगनेटरी)

हस्ताक्षरित—भू० कृ० [सं० हस्ताक्षर+इतच्] जिस पर किसी के हस्ताक्षर हुए हो। दस्तखत किया हुआ।

हस्ताग्र—पु० [सं० ष० त०] १. हाथ का अगला भाग। २ उँगलियो के पोर।

हस्तादान—पु० [सं० तृ० त०] हाथ से ग्रहण करना या लेना।

हस्ताभरण—पु० [सं० ष० त०] १. हाथ मे पहनने का गहना। २. एक प्रकार का साँप।

हस्तामलक—पुं० [सं० मध्य० स०] १. हाथ मे लिया हुआ आँवला, जो बिलकुल स्पष्ट दिखलाई देता हो। २. ऐसी वस्तु या विषय जिसका अग-प्रत्यंग हाथ मे लिए हुए आँवले के समान अच्छी तरह दिखाई दे और समझ मे आ गया हो। वह चीज या बात जिसका हर पहलू उसी तरह साफ-साफ जाहिर हो गया हो जिस तरह हथेली पर रखे हुए आँवले का होता है।

हस्ता-हस्ति—स्त्री० [सं०] हाथो से होनेवाली खीच-तान। हाथा-पाई।

हस्ति—पु०=हस्ती (हाथी)।

हस्तिकंद—पु० [सं० मध्य० स०] एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।

हस्तिक—पु० [सं० हस्ति+कन्] हाथियों का समूह।

हस्ति-करंज—पु० [सं० उपमि० स०] बड़ी जाति का करज या कजा।

हस्ति-कर्ण—पु० [सं० ब० स] १. अंडी का पेड़। रेंड। २. टेसू। पलास। ३. कच्चू। बडा। ४. एक गण देवता। ५. शिव का एक गण।

हस्ति-कर्णिका—स्त्री० [सं०] हठयोग मे एक प्रकार का आसन।

हस्तिका—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन बाजा जिसमे बजाने के लिए तार लगे रहते थे।

हस्ति-जिह्वा—स्त्री० [सं०] दाहिनी आँख की एक नस।
हस्ति-दंत—पु० [सं० ष० त०] १ हाथी-दाँत। २ खूँटी। ३. मूली।
हस्ति-दंती—पु० [सं०] मूली।
हस्ति-नख—पु० [सं० ष० त०] १ हाथी के नाखून। २. वह बुर्ज या टीला जो गढ की दीवार के पास उन स्थानो पर बना होता है जहाँ चढाव होता है।
हस्तिनपुर—पु० [सं०]=हस्तिनापुर।
हस्तिनापुर—पु० [सं० तृ० त० अलुक् स०] आधुनिक दिल्ली के उत्तर-पूर्व का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर जहाँ महाभारत के समय की अनेक घटनाएँ हुई थी।
हस्ति-नासा—स्त्री० [सं० ष० त०] हाथी का सूँड।
हस्तिनी—स्त्री० [सं० हस्तिन्-ङीप्] १. मादा हाथी। हथिनी। २ काम-शास्त्र और साहित्य के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में ऐसी स्त्री जिसका शरीर बहुत अधिक मोटा हो, जो बहुत अधिक खाती हो और जिसमे काम-वासना बहुत प्रबल हो। ऐसी स्त्री बहुत निकृष्ट और अदम्य मानी गई है।
हस्ति-पिप्पली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] गज-पिप्पली।
हस्ति-प्रमेह—पु० [सं०] प्रमेह का एक भेद जिसमे मूत्र के साथ हाथी के मद-जैसा पदार्थ रुक-रुककर निकलता है।
हस्ति-मकर—पु० [सं०] गवय नामक जल-जतु। (डुगाग)
हस्ति-मल्ल—पु० [सं० सप्त० स०] १ ऐरावत। २ गणेश। ३ उडती हुई धूल। ४ पीला।
हस्ति-मुख—पु० [सं० ब० स०] गणेश।
हस्ति-मेह—पु० [सं०]=हस्ति-प्रमेह।
हस्ति-व्यूह—पु० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत, मे सेना के हाथियो का वह व्यूह जिसमे आक्रमण करनेवाले हाथी उरस्य मे, तेज दौडनेवाले (अपवाह्य) मध्य मे, और व्याल (मतवाले) पक्ष मे होते थे। (कौ०)
हस्ति-श्यामक—पु० [सं०] १ काला सावाँ। २. बाजरा।
हस्ती (तिन्)—पु० [सं०] [स्त्री० हस्तिनी] १ हाथी। २. अजमोदा।
हस्ती—स्त्री० [सं० अस्ति से फा०] १ वर्तमान होने की अवस्था। अस्तित्व। २ किसी व्यक्ति का अस्तित्व या व्यक्तित्व। जैसे—मेरे सामने उसकी हस्ती ही क्या है।
हस्ते—अव्य० [सं०] किसी के हाथ से। मारफत। द्वारा। जैसे—यह माल तो तुम्हारे हस्ते ही वहाँ गया था। (महाजनी बोल-चाल)
हस्त्य—वि० [सं० हस्त+यत्] १ हाथ-सबधी। हाथ का। २ हस्त नक्षत्र-सबधी।
पु० हाथ मे पहनने का दस्ताना।
हस्त्यध्यक्ष—पु०[सं० स० त०] हाथियो का प्रधान अधिकारी और निरीक्षक।
हस्त्याजीव—पु० [सं० हस्ति-आ√जीव् (जीना) णिच्-अच]१. हाथियो का व्यवसायी। २ पीलवान। महावत।
हस्त्यायुर्वेद—पु० [सं० मध्य० स०] आयुर्वेद या चिकित्सा-शास्त्र का वह अग जिसमे हाथियो के रोगो और उन्हे दूर करने के उपायो का विवेचन है।
हस्त्यारोह—पु० [सं०] हाथी-वान।
हस्ब—अव्य० [अ०] किसी के अनुकूल या अनुसार। मुताबिक। जैसे—हस्ब कानून=कानून के अनुसार। हस्ब मामूल=मामूलन, जैसा होता आया हो, वैसा।
हहर—स्त्री० [हिं० हहरना] १ हहरने की अवस्था, क्रिया या भाव। कँपकँपी। २ डर। भय।
हहरना—अ० [अनु०] १. काँपना। थरथराना। २. डर या भय से काँपना। घबराना। ३. चकित या दंग हो जाना। ४ ईर्ष्या से दुःखी होना।
संयो० क्रि०—उठना।—जाना।—पड़ना।
हहराना—स० [हिं० हहरना का स०] किसी को हहराने में प्रवृत्त करना।
†अ० =हहरना (काँपना)।
हहल—पु० =हलाहल (विष)।
†स्त्री० =हहर।
हहलना†—अ० =हहरना।
हहलाना—स०, अ० =हहराना।
हहा—स्त्री० [अनु०] जोर से हँसने का शब्द। ठहाका।
स्त्री० [हिं० हाय-हाय] १ गिड़गिड़ाकर दीनता प्रकट करने की क्रिया या भाव।
मुहा०—हहा खाना=हाय-हाय करते हुए गिड़गिड़ाना।
२ हाहाकार।
हहु*—अ० [हिं० 'हो' (होना क्रिया से) का अवधी रूप] है।
हाँ—अव्य० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों मे होता है। १. कोई प्रश्न होने पर उसके उत्तर मे सहमति सूचित करने के लिए। जैसे—हाँ जा सकते हो। २ कोई विचार, प्रस्ताव आदि प्रस्तावित या प्रस्तुत होने पर उसका समर्थन करने के लिए। जैसे—हाँ जरूर करना चाहिए।
मुहा०—(किसी की) हाँ में हाँ मिलाना=बिना सोचे-विचारे किसी की बात का समर्थन करना।
३ कुछ बतलाने या पुकारे जाने पर उत्तर के रूप मे नम्रता सूचित करने के लिए। जैसे—(क) हाँ, तो फिर क्या हुआ? (ख) हाँ, पिता जी। ४ किसी उल्लिखित नकारात्मक कथन के बाद कोई और रियायत देने के प्रसग मे। जैसे—मैं उनके घर नही जाऊँगा, हाँ यदि वह आया तो उनसे मिल अवश्य लूँगा।
हाँक—स्त्री० [सं० हुकार] १. किसी को पुकारने या बुलाने के लिए अथवा कोई बात सूचित करने के लिए जोर से कहा जानेवाला शब्द। पुकार।
मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना=जोर से पुकारना या सबको सुनाने के लिए कोई बात कहना। डाँक-पुकार कर कहना=खुले आम, डके की चोट या सब को सुनाकर कहना।
२ किसी को डाँटने-डपटने, बढावा देने या ललकारने आदि के लिए जोर से कहा जानेवाला शब्द। ३ सहायता प्राप्त करने के लिए मचाई जानेवाली पुकार। दुहाई।
हाँकना—स० [हिं० हाँक+ना (प्रत्य०)]१ जोर से चिल्लाकर बुलाना। हाँक देना या हाँक लगाना। २. लडाई के समय हुकार करते हुए शत्रु

को ललकारना। ३ खुले अथवा गाड़ी आदि मे जुते हुए जानवरो को आगे बढाने के लिए मुँह से कुछ कहते हुए चाबुक लगाना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना। जैसे—घोड़ा या बैल हाँकना। ४ कोई ऐसी सवारी चलाना जिसमे कोई पशु जुता हो। जैसे—एक्का, ताँगा या बैल-गाडी हाँकना ५. उक्ति या कथन सबधी कुछ शब्दो के सबंध मे, बहुत बढ-चढ कर या लबी-चौडी बातें करना। जैसे—गप हाँकना, झूठी-सच्ची बातें हाँकना, शेखी हाँकना। ६. पखे के सबध मे, झलना। हिलाना। जैसे—पखा हाँकना। ७ मक्खियो आदि के सबध मे, किसी वस्तु या स्थान पर बैठने से रोकने के लिए किसी चीज से हवा करना या कोई चीज हिलाना। जैसे—मिठाई के थाल पर बैठनेवाली मक्खियाँ हाँकना।

हाँका—पु० [हिं० हाँकना] जगली जानवरो का शिकार करने के लिए उन्हे हाँक कर ऐसी जगह ले जाना, जहाँ सहज मे उनका शिकार हो सके। हँकुआ।

पु० [हिं० हाँक] १ पुकार। टेर। २. ललकार। ३. गरज। ४ 'हँकवा'।

हाँ-कारी—पु० [हिं०] किसी के पक्ष या समर्थन मे 'हाँ' कहनेवाले लोग या सदस्य।

स्त्री० किसी प्रस्ताव के पक्ष के समर्थन मे 'हाँ' कहने की क्रिया या भाव।

हाँगर†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बडी मछली। (शार्क)

हाँगा—पु० [स० अग] १ शरीर का बल। बूता। ताकत। २ साहस। हिम्मत। ३ बलपूर्वक किया जानेवाला अनुचित काम। अत्याचार। जबरदस्ती।

†वि० [?] दुबला-पतला और कमजोर।

हाँगी—स्त्री० [हिं० हाँ] हामी। स्वीकृति।

मुहा०—हाँगी भरना=हामी भरना।

†स्त्री०=आँगी (चलनी)।

हाँडना—अ० [स० हिंडन] १ पैदल चलना। २ इधर-उधर घूमना-फिरना। ३ पीछे हटना। भागना।

वि० [स्त्री० हाँडनी] व्यर्थ इधर-उधर घूमता फिरता रहनेवाला। जैसे—हाँडनी नारि।

†स०=हँडवना।

हाँडी—स्त्री० [स० हडिका] १ देगची के आकार का मिट्टी का वह छोटा गोलाकार बरतन, जिसमे खाने-पीने की चीजें उबाली या पकाई जाती है। हडी। हँडिया।

पद—काठ की हाँड़ी=ऐसा छल जो एक बार तो उद्देश्य सिद्ध कर दे, पर हर बार सिद्ध न कर सके। बावली हाँड़ी=ऐसी हाँडी जिसमे कई तरह की दाले, तरकारियाँ और इस तरह की दूसरी कई चीजें पकने के लिए एक साथ डाल दी गई हो।

मुहा०—हाँड़ी उबलना= ओछे व्यक्ति का बहुत अभिमान करना या इतराना। हाँडी चढ़ाना=भोजन बनाने के लिए आग या चूल्हे पर हाँडी रखना। हाँडी पकना=(क) हाँडी मे पकाई जानेवाली चीज का पकना। २ किसी बात के सबध मे गुप्त रूप से परामर्श होना। जैसे—कल उन यारो मे खूब हाँडी पक रही थी।

मुहा०—(किसी के नाम पर) हाँड़ी फोड़ना=(क) किसी के चले जाने पर प्रसन्न होना। (ख) किसी बिगडे हुए काम का दोष किसी के मत्थे मढ़ना। किसी को दोषी ठहराना।

३ उक्त आकार का शीशे का वह पात्र, जो सजावट के लिए कमरे मे टाँगा जाता है और जिसमे मोमबत्ती जलाई जाती है।

हाँतना—स० [स० हात] १ अलग या जुदा करना। २ दूर या परे करना।

†स०=हतना (वध करना)।

हाँता*—वि० [स० हात=छोडा हुआ] [स्त्री० हाँती] अलग किया या छोडा हुआ। त्यक्त।

हाँते†—अव्य० [हिं० हाँता] पृथक्। अलग। उदा०—वीर रस मदमाते रन तें न होत हाँते।—सेनापति।

हाँपना†—अ०=हाँफना।

हाँफना—अ० [देश०] थकावट, भय आदि के कारण फेफड़ो का जल्दी-जल्दी और लबे-लबे साँस लेने लगना।

हाँफा—पु० [हिं० हाँफना] १. हाँफने का रोग। २ हाँफने के समय श्वास के जल्दी-जल्दी और जोर-जोर से चलते रहने का काम।

क्रि० प्र०—छूटना।—लगना।

हाँफी—स्त्री० [हिं० हाँफना]=हाँफा।

हाँबीरी—स्त्री० [स०] एक प्रकार की रागिनी।

हाँमेला—पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

हाँवँ†—वि० [स० हीन?] रहित। विहीन। (लखनऊ) उदा०—इस पर भी लय मे हाँवँ रही।—मिर्जा रुसवा।

हाँस†—स्त्री०=हाँसी (हँसी)।

हाँस—वि० [स०] हंस सम्बन्धी। हस का।

हाँसना†—अ०=हँसना।

हाँसल†—पु०=हाँसुल।

हाँसवर†—वि०=हँसीला।

हाँसिल—स्त्री० [अ० हाजर] १ रस्सा लपेटने की गडारी। २ जहाज या नाव के लगर मे बाँधा जानेवाला रस्सा।

†वि०=हासिल।

हाँसी†—स्त्री०=हँसी। जैसे—रोग का घर खाँसी, लडाई का घर हाँसी। (कहा०)

हाँसु†—स्त्री० १.=हँसी। २. हँसली।

हाँसुल—पु० [?] ऐसा घोडा जिसका सारा शरीर मेहदी के रग का और पैर कुछ काले हो।

हाँ-हाँ—अव्य० [हिं० अहाँ=नही] निषेध या वारण करने का शब्द। जैसे—हाँ-हाँ! यह क्या कर रहे हो?

अव्य० सहमति या स्वीकृति का शब्द।

हा—अव्य० [स० √हा+क्वि] १. दुःख, भय, शोक आदि का सूचक शब्द।

मुहा०—हा हा खाना= बहुत ही दीनतापूर्वक और गिड़गिड़ाकर रक्षा, सहायता आदि की प्रार्थना करना।

२. आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द। ३. हनन करनेवाला। मार डालनेवाला। यौ० के अन्त मे। जैसे—वृत्रहा।

अव्य०, स्त्री०=हाय।

*अ०[स्त्री० ही] 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था। उदा०—तोतों कबहुँ भई ही भेंटा।—तुलसी।

हाइ†—अव्य० =हाय।

हाइफन—पु० [अ० हाइफन] पदो के योग का सूचक चिह्न (-) जो यौगिक शब्दो के बीच में लगाया जाता है। जैसे—दिल-दिमाग, धरती-आसमान।

हाई—स्त्री० [स० घात ?] १ दशा। हालत। जैसे—अपनी हाई और परछाईं। २ ढग। तरह। तरीका। ३ घात करने की चाल या तरकीब। उदा०—बातनि सुहृद, करम कपटी के, चले चोर की हाई।—सूर।

†स्त्री०=हाही।

हाई-कोर्ट—पु० [अ०] उच्च न्यायालय।

हाउं†—अव्य०=हाँ। उदा०—हाउ हाउ वह स्वर्ण-पुरुष।—पन्त।

हाउस—पु० [अ०] १ घर। मकान। २ दे० 'सदन'।

हाऊ†—पु० दे० 'हौआ'।

हाकर—पु० [अ०] फेरी करके छोटी-मोटी वस्तुएँ बेचनेवाला व्यक्ति। फेरीदार।

हाकलि—स्त्री० [स०] एक प्रकार का मात्रिक समछन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ होती हैं। इसके पहले और दूसरे चरणो मे ११ तथा तीसरे और चौथे चरणो मे १० अक्षर होते हैं।

हाकलिका—स्त्री० [स०]=हाकलि (छन्द)।

हाकिनी—स्त्री० [स०] डाकिनी की तरह की एक प्रचड देवी।

हाकिम—पु० [अ०] १ हुकूमत करनेवाला व्यक्ति। शासक। २. प्रधान या बडा अधिकारी।

हाक़िमाना—वि० [अ० हाकिम+फा० आन] हाकिमो के ढग, तरह या प्रकार का।

हाक़िमी—स्त्री० [अ० हाकिम+ई (प्रत्य०)] १ हाकिम होने की अवस्था या भाव। २ हाकिम का पद।

हाकी—पु० [अ०] १ गेंद खेलने की एक प्रकार की छडी, जिसका अगला सिरा कुछ मुडा हुआ होता है। २ उक्त छडियो तथा गेंद से खेला जानेवाला खेल।

हाजत—स्त्री० [अ०] १ ऐसी अपेक्षा या आवश्यकता, जिसकी, पूर्ति यथासाध्य शीघ्र की जाने को हो। जैसे—पाखाने या पेशाब की हाजत। २. वह स्थान जहाँ हिरासत मे लिया हुआ आदमी बद रखा जाता है। (कस्टडी)

क्रि० प्र०—मे देना।—मे रखना।

हाजती—वि० [हि० हाजत] १ जिसे किसी चीज की हाजत या आवश्यकता हो। २ लाक्षणिक रूप मे, दरिद्र और दीन-हीन। ३ (व्यक्ति) जो हाजत या हवालात मे रखा गया हो। हवालाती।

स्त्री० वह पात्र जो रोगियो के बिस्तर के पास मल-मूत्र का त्याग या विसर्जन करने के लिए रखा रहता है।

हाजमा—पु० [अ० हाज़िम] १. पाचन-क्रिया। २. पाचन-शक्ति।

हाजरी†—स्त्री०=हाजिरी।

हाजिक—वि० [अ० हाजिक] किसी विषय का बहुत बडा ज्ञाता या पडित।

हाजिर—वि० [अ० हाजिर] १. उपस्थित। मौजूद। २ प्रस्तुत।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हाजिर-जवाब—वि० [अ० हाजिर-जवाब] [भाव० हाजिर-जवाबी] प्रश्न या बात का उत्तर विशेषत यथोचित उत्तर तुरत देनेवाला। उत्तर देने मे निपुण।

हाजिर-जवाबी—स्त्री० [अ०] हाजिर-जवाब होने की अवस्था, गुण या भाव।

हाजिर-बाश—वि० [अ०+फा०] [भाव० हाजिर-बाशी] सदा अथवा प्राय. हाजिर अर्थात् सेवा मे उपस्थित रहनेवाला।

हाजिर-बाशी—स्त्री० [अ०+फा०] १. सदा किसी की सेवा मे उपस्थित या हाजिर रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. उक्त स्थिति मे रहकर की जानेवाली खुशामद और छोटी-मोटी सेवाएँ।

हाजिराई—वि०, पु०=हाजिराती।

हाजिरात—स्त्री० [अ०] [वि० हाजिराती] एक प्रकार का प्रयोग जिसमे आराधना करके अथवा मनोबल से किसी पर मृत व्यक्तियो की आत्माएँ बुलाई जाती है और उससे अनेक प्रकार के प्रश्नो के उत्तर प्राप्त किये जाते है।

हाजिराती—वि० [अ० हाजिरात] हाजिरात-सबधी। हाजिरात का। पु० वह जो हाजिरात करता हो।

हाजिरी—स्त्री० [अ० हाजिरी] १ हाजिर रहने या होने की अवस्था या भाव। २. बडो के सामने उपस्थित रहना या होना।

क्रि० प्र०—देना।—बजाना।

३. नौकरो की अपने कार्य, पद या समय पर होनेवाली उपस्थिति।

क्रि० प्र०—देना।—लिखना।—लिखाना।—लेना।

४. अँगरेजो आदि का सवेरे का जल-पान।

हाजिरी-बही—स्त्री० दे० 'उपस्थिति पजी' (अटेंडेंस रजिस्टर)

हाजी—पु०[अ०] वह मुसलमान जो (क) हज की यात्रा करने जा रहा हो, या (ख) हज की यात्रा कर आया हो।

हाट—स्त्री०[स० हट्ट] १ प्राचीन काल में वह बाजार, जो कुछ नियत या विशिष्ट स्थानो, विशिष्ट अवसरों पर या विशिष्ट दिनो मे लगता था। २. परवर्ती काल मे स्थायी रूप से बना और बसा हुआ बाजार।

पद—हाट-बाट।

मुहा०—हाट करना= बाजार जाकर चीजे या सामान खरीदना। (किसी चीज का) हाट चढ़ना= बिकने के लिए बाजार मे आना या पहुँचना।

३. दुकान।

हाटक—पु० [स० √हट्+ण्वुल्—अक] १ भाडा। किराया। जैसे—नौका-हाटक। २. सोना। स्वर्ण। ३ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

हाटक-पुर—पु० [मं० मध्य० स०] लंका जो लोक-प्रवाद के अनुसार सोने की बनी हुई थी।

हाटक-लोचन—[पु० स० ब० स०] हिरण्याक्ष।

हाटकी—स्त्री०[स०] अधोलोक या पाताल की एक नदी।

हाटकीय—वि० [स० हाटक+ईय] १. स्वर्ण-सबधी। सोने का। २. सोने का बना हुआ।

हाटकेश—पुं०[स० ष०त०] शिव की एक मूर्ति जिसका प्रधान मन्दिर दक्षिण भारत मे गोदावरी के तट पर है।

हाड़—पु० [सं० हड्ड]१. शरीर में की अस्थि। हड्डी। २. कुल या वंश की परम्परा के विचार से मनुष्य का गौरव या महत्त्व। कुलीनता की मर्यादा।

†पु० [स० आषाढ़] [वि० हाड़ी] आषाढ मास। असाढ़।

हाड़ना†—स०[स० हरण] कोई चीज तौलने से पहले यह देखना कि तराजू के दोनो पलड़े बराबर हैं या नही और यदि न हों, तो उन्हें बराबर करना। धड़ा करना।

†अ० =हाड़ना।

हाड़ा—पु०[?] क्षत्रियों की एक शाखा।

†पु०=हड्डा (बर्रे)।

पु०=कौआ।

हाड़ी—वि०[हिं० हाड़=आषाढ] आषाढ मास संबंधी। असाढ़ी।

पु० एक प्रकार का पहाडी राग।

पु०[?] १ एक प्राचीन अन्त्यज जाति जो पहले बौद्ध थी, पर पीछे नाथमार्गी हो गई थी। २. एक प्रकार का बगला।

†स्त्री०[हिं० हाँडी?] धान कूटने की ओखली। ऊखल।

हात—वि०[स० √हा (त्याग देना)+क्त] छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ।

†पु० = हाथ।

हातव्य—वि० [स० √हा (छोड़ना)+तव्य] छोड़े जाने के योग्य। त्याज्य।

हाता—वि०[स० हता] मारनेवाला। वध करनेवाला।

†वि०[स० हात] [स्त्री० हाती] नष्ट या बरबाद किया हुआ।

†पु०१ =अहाता। २ =हाथा।

हातिम—पु०[अ०]१ निपुण। चतुर। उस्ताद। २. प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध अरब सरदार जो बहुत बड़ा दानी और परोपकारी था। मुहा०—हातिम की कब्र पर लात मारना=बहुत अधिक परोपकार करना। (व्यग्य)

३ बहुत बडा दानी और परोपकारी व्यक्ति।

हातु—पु०[स०]१ मृत्यु। मौत। २. सड़क।

हाथ—पु०[स० हस्त, प्रा० हत्थ]१ मनुष्य के शरीर में कधे से उँगलियो तक का वह अंग, जिससे अधिकतर काम किये जाते है और चीजें खाई, पकडी या ली-दी जाती हैं। कर। हस्त।

विशेष—(क) वानर जाति के प्राणियो मे उनके अगले दोनो पैर और पक्षियो मे उनके दोनो पैर ही मनुष्य के हाथों का बहुत कुछ काम देते हैं। (ख) मनुष्यो के सबध मे यह अंग उनकी क्रियाशीलता या कर्मठता, अधिकार या वश, उदारता, कृपणता, चतुरता, दक्षता आदि का भी सूचक होता है। आज-कल अँगरेजी के अनुकरण पर यह शब्द काम करनेवाले व्यक्तियो का भी वाचक हो गया है।

पद—हाथ का चक्का= जो ठीक तरह से या दक्षतापूर्वक काम न कर सकता हो। हाथ का झूठा= चोर, धोखेबाज या बेईमान। हाथ का दिया= जो दान के रूप मे या परोपकार के लिए दिया गया हो। हाथ का सच्चा=(क) जो लेन-देन आदि मे किसी प्रकार का छल या बेईमानी न करता हो। (ख) जिसका आघात, युक्ति या वार ठीक और पूरा काम करता हो। हाथ या हाथ-पैर की मैल= बहुत ही तुच्छ पदार्थ या वस्तु। जैसे—रुपया-पैसा तो उनके लिए हाथ-पैर की मैल है। हाथ से=द्वारा। मारफत। जैसे—उसी के हाथ से तो किताबें भी भेजी थीं। हाथों-हाथ से। हाथो हाथ=(क) एक के हाथों से दूसरे के हाथों मे होते हुए। जैसे—बात की बात मे सारा सामान हाथो-हाथ उठकर दूसरे मकान मे चला गया। (ख) तत्काल। तुरन्त। जैसे—यहाँ तो माल आते ही हाथो-हाथ बिक जाता है। रँगे हाथ (या हाथो)=कोई अपराध करते समय उसके प्रमाण के साथ। जैसे—खूनी (या चोर) रँगे हाथो पकडा गया। लगे हाथ (या हाथों)=(क) जिस समय कोई काम हो रहा हो, उसी समय और उसके साथ ही साथ। जैसे—जब आप संशोधन कर ही रहे हैं, तब लगे हाथ इस कविता का भी सशोधन कर दीजिए। (ख) साथ ही साथ। उदा०—पनघट पे जो अपनी कभी असवारी गई है। तो वाँ भी लगे हाथ यही ख्वारी गई है।—नजीर।

मुहा०—(कोई चीज) हाथ आना=प्राप्त होना। मिलना। उदा०—जलाकर हिज्र ने मारा, कजा के हाथ क्या आया?—कोई शायर। हाथ उठाकर कोसना=ईश्वर से यह प्रार्थना करते हुए कोसना कि हमारा शाप पूरा हो। (किसी को) हाथ उठाकर देना=अपनी इच्छा, उदारता या प्रसन्नता से किसी को कुछ देना। जैसे—हमे तो तुम जो कुछ हाथ उठाकर दे दोगे, वही हम खुशी से ले लेंगे। (किसी काम या बात से) हाथ उठाना=अलग या दूर होना। बाज आना। उदा०—हम हाथ उठा बैठे दुआओं के असर से।—कोई शायर। (किसी को) हाथ उठाना=अभिवादन, नमस्ते या सलाम करना। जैसे—वे जिधर जाते थे, उधर सब लोग हाथ उठाते थे। (किसी पर) हाथ उठाना=किसी को मारना, पीटना या किसी प्रकार का आघात करना। हाथ ऊँचा होना=दान, व्यय आदि के लिए मन मे सदा उदारता का भाव रखना। (किसी के आगे) हाथ जोड़ना= दे० नीचे 'हाथ पसारना या फैलाना'। हाथ कटना या कट जाना= (क) प्रतिज्ञा, लेख्य आदि से इस प्रकार बद्ध हो जाना कि उसके विपरीत कुछ किया न जा सके। (ख) साधन, सहायक आदि से रहित हो जाना। जैसे—भाई के मरने से उनके हाथ कट गये। हाथ के नीचे या हाथ-तले आना=अधिकार या वश मे आना। चंगुल में फँसना। जैसे—जब वह तुम्हारे हाथ के नीचे आ ही गया, तब कहाँ जा सकता है! हाथ खाली जाना=प्रहार या वार का ठीक लक्ष्य पर न बैठना। हाथ खाली होना=(क) व्यय करने के लिए कुछ भी पास न होना। (ख) करने के लिए कोई काम हाथ मे न होना। (किसी काम या बात से) हाथ खीचना= कोई काम करते करते सहसा उससे अलग या दूर होना, अथवा उसमे त्रुटि या शिथिलता करने लगना। हाथ खुजलाना=(क) किसी को मारने को जी करना। (ख) आर्थिक प्राप्ति या लाभ का योग या लक्षण दिखाई देना। हाथ खुलना= किसी मे मारने-पीटने की प्रवृत्ति का आरभ होना। जैसे—इसी तरह अगर उसका हाथ खुल गया, तो वह तुम्हे रोज मारने लगेगा। हाथ खुला होना= दान, व्यय आदि के सबध मे उदार प्रवृत्ति होना। जैसे—उनका हाथ खुला था, इसलिए थोड़े ही दिनों मे सारी पूँजी खतम हो गई। हाथ गरम होना=किसी प्रकार की आर्थिक प्राप्ति या लाभ होना। हाथ चलना=(क) किसी काम मे हाथ का हिलना-डोलना। (ख) मारने

के लिए हाथ उठना। (ग) व्यय आदि के लिए उचित या यथेष्ट आय अथवा प्राप्ति होना। (किसी के) **हाथ चूमना**=किसी की कला, निपुणता आदि पर मुग्ध होकर उसके हाथो का भरपूर आदर या सम्मान करना। जैसे—इस चित्र को देखकर जी चाहता है कि चित्रकार के हाथ चूम लूं। **हाथ छूटना**= किसी को मारने के लिए हाथ उठना। (किसी पर) **हाथ छोड़ना**= मारना-पीटना। प्रहार करना। (किसी काम में) **हाथ जमना, बैठना, मँजना या सधना**=कोई काम करने का ठीक और पूरा अभ्यास होना। (किसी को) **हाथ जोड़ना**=(क) अभिवादन, नमस्कार या प्रणाम करना। (ख) किसी प्रकार का अनुग्रह या कृपा प्राप्त करने के लिए अनुनय-विनय करना। (दूर से) **हाथ जोड़ना**= विलकुल अलग या दूर रहना। किसी प्रकार का सपर्क या सबध न रखना। **हाथ झाड़कर खडे हो जाना**= खाली हाथ दिखा देना। कह देना कि मेरे पास कुछ नही है या मुझसे कुछ नही हो सकता। जैसे—तुम्हारा क्या, तुम तो हाथ झाड़कर खडे हो जाओगे सारा खर्च हमारे सिर पडेगा। (किसी काम में) **हाथ झाड़ना**= खूब चालाकी, फुरती या सफाई दिखाना। अच्छी तरह हाथ चलाना। जैसे—लडाई मे योद्धाओ ने तलवारों के खूब हाथ झाडे। **हाथ झुलाते या हिलाते आना**=कुछ भी करके या लेकर न लौटना। खाली हाथ आना। (किसी काम मे) **हाथ डालना**= (क) किसी काम मे योग देना, सम्मिलित होना या उसका सम्पादन आरभ करना। (ख) दखल देना। हस्तक्षेप करना। (किसी पर) **हाथ डालना**= (क) किसी को मारना-पीटना। (ख) किसी से छेड-छाड़ करना। जैसे—मेले मे उसने किसी स्त्री पर हाथ डाला था, इसलिए लोगो ने उसे खूब मारा। **हाथ तंग होना**=हाथ मे व्यय के लिए यथेष्ट धन न होना। **हाथ दबना**=(क) पास मे यथेष्ट धन न होना। (ख) असमजस या कठिनता मे पडना। जैसे—अभी तो इस मुकदमे के कारण हमारा हाथ दबा है। **हाथ दबाकर खर्च करना** जहाँ तक हो सके, कम खर्च करना। (किसी काम में) **हाथ दिखाना**= हाथ का कौशल या निपुणता दिखाना। (किसी चिकित्सक को) **हाथ दिखाना**= रोग का निदान कराने के लिए चिकित्सक से नाडी की परीक्षा कराना। (किसी ज्योतिषी को) **हाथ दिखाना**=भविष्य या भाग्य का हाल जानने के लिए हथेली की रेखाओ आदि की परीक्षा कराना। (किसी को) **हाथ देना**= (क) सहारा देना। सहायक होना। (ख) इशारा या सकेत करना। (ग) दे० 'हाथ मिलाना'। (किसी का) **हाथ धरना**= दे० नीचे 'हाथ पकडना'। (किसी चीज से) **हाथ धोना**= (क) गँवा या खो देना। (ख) प्राप्ति की आशा छोड देना। **हाथ धोकर पीछे पडना**=पूरी तरह से प्रयत्न मे लग जाना। **हाथ न रखने देना**=(क) बातो मे जरा भी न आना। जैसे—उसे कैसे राजी करे, वह हाथ तो रखने ही नही देता। (ख) कुछ भी दबाव या नियन्त्रण सहन न करना। जैसे—यह घोडा इतना तेज है कि हाथ नही रखने देता। (किसी स्त्री का हाथ) **न होना**=मासिक धर्म या रजस्वला होने के कारण घर-गृहस्थी के काम करने के योग्य न होना। जैसे—आज बहू का हाथ नही था, इसलिए माता जी को रसोई बनानी पडी। (किसी का) **हाथ पकड़ना**= (क) किसी को कोई काम करने से रोकना। (ख) किसी के सहायक बनकर उसे अपने आश्रय या शरण मे लेना। (ग) पाणि-ग्रहण या विवाह करके पत्नी बनाना। (किसी के) **हाथ पड़ना या हाथ में पड़ना**=किसी के अधिकार या वश मे होना। किसी के पल्ले पडना। उदा०—छाडहु पाखड मानहु बात नाहिं तो परिहौ जम के हाथ।—कबीर। **हाथ पर नाग खेलाना**=बहुत जोखिम का और विकट काम करना। **हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना**= खाली बैठे रहना। कुछ न करना। (किसी के) **हाथ पर हाथ मारना**= प्रतिज्ञा, वचन आदि का पालन करने की दृढता या निश्चय सूचित करने के लिए किसी की हथेली पर अपनी हथेली जोर से पटकना या मारना। (कुछ) **हाथ पल्ले न पडना**=(क) कुछ भी प्राप्ति न होना। (ख) कोई लाभदायक परिणाम या फल न मिलना। (किसी के आगे) **हाथ पसारना या फैलाना**=कुछ पाने या माँगने के लिए हाथ आगे करना। **हाथ पसारे**=खाली हाथ। विना कुछ लिए। उदा०—मुट्ठी बाँधे आया है, हाथ पसारे जायगा। (कहा०) (लडकी के) **हाथ पीले करना**=लडकी का किसी के साथ विवाह कर देना।
विशेष—हिंदुओं में यह प्रथा है कि विवाह से एक दो दिन पहले वर और वधू के हाथों और पैरो पर हल्दी और तेल लगा देते है। इसी से उक्त मुहा० बना है।
मुहा०—**हाथ-पैर चलाना, मारना या हिलाना**=(क) जीविका-निर्वाह के लिए कोई काम-धधा करना। (ख) किसी उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए प्रयत्न करना। (किसी के आगे) **हाथ-पैर जोड़ना**= बहुत दीनतापूर्वक अनुनय-विनय करना। **हाथ-पैर निकालना**=(क) मोटा-ताजा होना। (ख) नियत्रण, मर्यादा आदि का उल्लघन करते हुए नये और मनमाने ढग से आचरण करने लगना। **हाथ-पैर पटकना या मारना**= बहुत-कुछ परिश्रम या प्रयत्न करना। **हाथ-पैर फूल जाना**=घबराहट, भय आदि के कारण इतना विचलित होना कि कुछ करते-धरते न बने। **हाथ-पैर हारना**= (क) प्रयत्न करते-करते विफल होने पर साहस या हिम्मत छोड बैठना। (ख) वृद्धावस्था के कारण बहुत शिथिल हो जाना। (किसी के) **हाथ बिकना**= (क) पूरी तरह से किसी का अनुयायी दास या भक्त होना। उदा०—मीराँ गिरिवर हाथ विकानी, लोग कहे विगरी।—मीराँ। (ख) पूरी तरह से किसी के अधीन या वशवर्ती होना। उदा० —अजहूँ माया हाथ विकानो।—सूर। (किसी चीज पर) **हाथ फेरना मारना या साफ करना**= चालाकी से या चुपके से कोई चीज कही से उडा या हथिया लेना। जैसे—किसी के माल पर हाथ फेरना। (किसी व्यक्ति पर) **हाथ फेरना**= स्नेह-पूर्वक किसी का शरीर सहलाना। (किसी के काम मे) **हाथ बँटाना**= किसी के काम मे सम्मिलित होना। योग देना। (किसी के आगे) **हाथ बाँधे खडे रहना**=हाथ जोडकर सदा सेवा मे उपस्थित रहना। (किसी के) **हाथ बिकना**=किसी का परम अनुयायी, आज्ञाकारी और दास होना। उदा०—मै निरगुनिया गुन नहिं जानी, एक धनी के हाथ विकानी।—मीराँ। **हाथ मरोड़ना**=हाथ मलना। पछताना। उदा०—अब पछताव दरब जस जोरी। करहु स्वर्ग पर हाथ मरोरी।—जायसी। **हाथ मलना**= (क) दोनो हथेलियाँ एक दूसरी से मिलाकर उन्हे आपस मे मलना या रगडना जो किसी बात के लिए दुखी होने या पछताने का सूचक है। (ख) पछताना।

(किसी से) हाथ मिलाना=(क) किसी से भेंट होने पर उसकी हथेली अपने हाथ में लेकर प्रसन्नता और सद्भाव प्रकट करना। (ख) लेन-देन आदि का अथवा और किसी प्रकार का सपर्क या सबंध स्थापित रखना। हाथ मींड़ना*=दे० ऊपर 'हाथ मलना'। उदा०—मींडत हाथ, सीस धुनि ढोरत, रुदन करत नृप पारथ।—सूर। हाथ मे करना=अपने अधिकार या वश मे करना। (किसी के) हाथ मे किसी का हाथ देना=किसी के साथ किसी का विवाह कर देना। हाथ मे रँगना=अनुचित रूप से धन प्राप्त करना। (किसी पर) हाथ रखना=ऐसी बात करना, जिससे कोई दोषी या उत्तरदायी बनाया जा सके या कुछ दबाया जा सके। जैसे—आज तुमने भी उस पर अच्छा हाथ रखा, जिससे वह चुप हो गया। (किसी के मुँह पर) हाथ रखना=किसी को बोलने से रोकना। (किसी के) सिर पर हाथ रखना=(क) किसी को अपने आश्रय या सरक्षण मे लेना। जैसे—अब आप ही इस अनाथ के सिर पर हाथ रखें। (ख) किसी की कसम खाने के लिए उसका सिर छूना। हाथ रोपना=दे० ऊपर 'हाथ पसारना'। (किसी काम मे) हाथ लगना=कार्य आरभ होना। जैसे—पुस्तक की छपाई मे हाथ लग गया है। (किसी काम मे किसी का) हाथ लगना=किसी प्रकार का सपर्क या सबंध स्थापित होना। जैसे—जिस काम मे तुम्हारा हाथ लगेगा, वह कभी पूरा न होगा। (किसी चीज मे) हाथ लगना=किसी चीज का उपयोग या व्यय आरम्भ होना। जैसे—जब मिठाई मे तुम्हारा हाथ लगा है, तब वह काहे को दूसरो के लिए बचेगी। (कुछ) हाथ लगना=(क) किसी प्रकार की प्राप्ति होना। गणित मे जोड़ लगाते समय वह सख्या नई गिनती मे आना, जो अत की सख्या लिख लेने पर बाकी रहती है। जैसे—१२ के दो रखे, हाथ लगा १। (एक चीज) हाथ लगना=प्राप्त होना। मिलना। हाथ लगाना=(क) स्पर्श करना। छूना। (ख) कार्य आरभ करना। हाथ साधना=(क) हाथ से किये जानेवाले काम का अभ्यास करना। (ख) कोई विकट काम करने से पहले यह देखने के लिए उसका आरभ या परीक्षण करना कि यह काम हमसे पूरा हो सकेगा या नहीं। (किसी चीज पर या किसी पर) हाथ साफ करना=अच्छी तरह अत या नाश करना। किसी काम के योग्य न रहने देना या बिलकुल न रहने देना। हाथो के तोते उड़ जाना=अचानक कोई बहुत बड़ा, अनिष्ट या दुर्घटना होने पर भौचक्का या स्तब्ध हो जाना। (किसी को) हाथो मे रखना=बहुत ही आदर या प्रेमपूर्वक अपने पास या साथ रखना। (किसी को) हाथो हाथ लेना=बहुत आदर और सम्मानपूर्वक आवभगत या स्वागत-सत्कार करना। २ लम्बाई की एक नाप जो मनुष्य की कोहनी से लेकर पजे के छोर तक मानी जाती है। चौबीस अगुल का मान। (क्यूबिट) जैसे—दस हाथ की धोती। बीस हाथ लबा बाँस।

मुहा०—हाथ भर का कलेजा होना=(क) बहुत अधिक साहसी होना। (ख) बहुत अधिक प्रसन्नता होना। हाथो कलेजा उछलना=(क) कलेजे मे बहुत धड़कन होना। (ख) बहुत अधिक प्रसन्नता होना। ३ किसी कार्य के सचालन मे होनेवाला किसी का अश या प्रेरणा। जैसे—इस मुकदमे मे उनका भी कुछ हाथ है। ४ हाथ से किया जानेवाला कोई काम या उसे करने का कोई खास ढग। जैसे—तलवार का हाथ, लिखावट का हाथ। ५ हाथ से खेले जानेवाले खेलो मे हर खिलाड़ी के खेलने की बारी। दाँव। जैसे—तुम तो अपना हाथ चल चुके, अब हमारा हाथ है।

क्रि० प्र०—चलना।

मुहा०—हाथ मारना=दाँव या बाजी जीतना।

६ आदि से अन्त तक कोई ऐसा पूरा खेल जो एक बार मे हाथ से खेला जाता हो। जैसे—आओ, हमसे भी दो हाथ खेल लो। ७ किसी कार्यालय के कार्यकर्ता। जैसे—आज-कल हमारे यहाँ चार हाथ कम हो गये है। ८ औजार या हथियार का दस्ता। मुठिया। हत्था।

हाथ-कंडा†—पु०=हथकडा।

हाथ-करघा—पु०[हिं०]कपड़ा बुनने का करघा जो हाथ से चलाया जाता है, बिजली या इजन से नही। (हैंडलूम)

हाथ-फुलाई—स्त्री०[हिं०] वह मजदूरी, जो चमारो आदि को मरे हुए पालतू पशुओ को फेंकने के बदले मे दी जाती है।

हाथ-फूल†—पु०=हथफूल।

हाथ-बाँह—स्त्री० [हिं० हाथ+बाँह] बाँह नामक कसरत करने का एक प्रकार।

हाथल†—पु० [हिं० हाथ] हाथ का पजा। उदा०—हाथल बल निरभै हियौ, सरभर न को समत्थ।—बाँकीदास।

हाथा—पु०[हिं० हाथ]१. दो-तीन हाथ लबा लकड़ी का एक औजार जिस से सिचाई करते समय खेत मे आया हुआ पानी उलीच कर चारो ओर पहुँचाते है। २ तलवार आदि का वार करने का एक ढग या प्रकार। ३ तलवार का वार। ४ मगल अवसरो पर हलदी आदि से दीवारो पर लगाई जानेवाली पजे की छाप। ५ दे० 'हत्था'।

हाथा-छाँटी†—स्त्री० [हिं० हाथ+छाँटना] १ चालाकी। धूर्तता। चालबाजी। २ चालाकी या बेईमानी से कोई चीज उड़ाने या लेने की क्रिया।

हाथा-जड़ी—स्त्री०=हत्थाजड़ी।

हाथा-जोड़ी†—स्त्री०=हत्थाजोड़ी

हाथा-पाई†—स्त्री०=हाथा-बाँही।

हाथा-बाँही—स्त्री०[हिं० हाथ+बाँह] वह लड़ाई जिसमे एक दूसरे के हाथ को पकड़कर खीचते और ढकेलते है।

हाथा-हाथी†—अव्य०[हिं० हाथ+हाथ] हाथो-हाथ। तुरंत।

हाथी—पु०[स० हस्तिन] [स्त्री० हथिनी]१. एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, जो अपने स्थूल और विशाल आकार तथा सूँड के कारण सब जानवरो से विलक्षण होता है। गज।

पद—हाथी का खाया कैथ=ऐसा पदार्थ जो ऊपर से देखने मे बिलकुल ठीक और सार-युक्त जान पड़े पर जिसके अन्दर का सार या तत्त्व निकल गया हो। (कहते है कि हाथी पूरा कैथ बिना चबाये निगल जाता है और तब वह ठीक उसी रूप मे उसकी गुदा से निकलता है, पर उस समय उसके अन्दर से गूदे की जगह लीद भरी रहती है। हाथी की डहर या राह=आकाश-गगा जिसके सबध मे लोक मे यह प्रसिद्ध है कि इन्द्र के हाथी इसी रास्ते से आते-जाते है। सफेद हाथी=दे० स्वतन्त्र शब्द।

मुहा०—हाथी के साथ गन्ने खाना=किसी काम या बात मे ऐसे आदमी की बराबरी करने का प्रयत्न करना जिसकी बराबरी की ही न जा सकती हो। हाथी पर चढ़ना=बहुत अधिक प्रतिष्ठित, सम्पन्न या सम्मानित

होना। हाथी बांधना= ऐसा काम करना या ऐसी चीज अपने पास रखना, जिसमे प्राय व्यर्थ का और बहुत अधिक खर्च होता हो।
२ शतरज का एक मोहरा जिसे किश्ती या फील कहते है।
स्त्री०[हि० हाथ] हाथ से दिया जानेवाला सहारा। उदा०—रीझि हँसि हाथी हमैं सब कोउ देत, कहा रीझि हँसि हाथी एक तुमहि पै देत हौ।—भूषण।

हाथी-कान—पु०[हि०] एक प्रकार का बड़ा सेम या चिपटी फली, जिसकी तरकारी बनती है।

हाथी-खाना—पु० [हि० हाथी+फा० खान.] वह स्थान जहाँ हाथी रखे जाते हैं। फील-खाना।

हाथी-चक—पु०[हि० हाथी+सं०चक्र] एक प्रकार का पौधा, जो औषध के काम आता है।

हाथी-चिक्कार—पु०[हि० हाथी+स० चीत्कार] एक प्रकार का बड़ा भाला, जिससे युद्ध क्षेत्र मे हाथी पर वार किया जाता था।

हाथी-दाँत—पु० [हि० हाथी+दाँत] नर हाथी के मुँह के दोनो छोरो पर डेढ हाथ निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते है, पर जिनसे अनेक प्रकार की सुन्दर, बहु-मूल्य चीजें बनती हैं।

हाथी-नाल†—स्त्री०=हयनाल।

हाथी-पाँव—पु० [हि० हाथी+पाँव] १ एक प्रकार का बढिया सफेद कत्था। २ फील या श्लीपद नामक रोग।

हाथी-पीच—पु०[हि० हाथी+पीच] एक प्रकार का हाथी-चक (पौधा) जो औषध के काम आता है।

हाथी-बच—स्त्री०[हि० हाथी+बच] एक पौधा जिसके पत्तो की तरकारी बनाई जाती है।

हाथीवान—पु०[हि० हाथी+वान (प्रत्य०)] वह जो हाथी चलाता हो। फीलवान। महावत।

हाथी-सूँड़—पु०[हि०] एक प्रकार का पौधा, जिसमे लबी-लबी पत्तियो के रूप मे हलके उन्नावी रग के फूल लगते है।

हादसा—पु०[अ० हादिस] बुरी घटना। दुर्घटना।

हादी—पु०[अ०]१. हिदायत करने अर्थात् उपदेश देनेवाला। २. मार्ग-दर्शक।

हान*—स्त्री०=हानि।

हानि—स्त्री० [स० √हा (त्यागना)+क्त-इनि]१ परित्याग करना। छोडना। २ पूरी तरह से नष्ट हो जाना। न रह जाना। जैसे—तिथि-हानि, प्राण हानि। ३. ऐसी स्थिति जिसमे कोई विशेष अपकार, घाटा, त्रुटि या कोई बुरी बात हुई हो। अनिष्ट या अपकार। क्षति। नुकसान। 'लाभ' का विपर्याय। (लॉस)। जैसे—धन, मान या स्वास्थ्य की हानि।
क्रि० प्र०—उठाना।—पहुँचाना।

हानिकर—वि०[स० हानि√ कृ (करना)+अच्] हानि करनेवाला। नुकसान पहुँचानेवाला।

हानि-कारक—वि०=हानिकर।

हानिकारी†—वि०=हानिकर।

हानि-मूल्य—पु० दे० 'क्षति-मूल्य'।

हानीय—वि०[स०] हातव्य। त्याज्य।

हानु—पु०[सं०] दाँत।

हाफिज़—वि०[अ० हाफिज] हिफ़ाजत अर्थात् रक्षा करनेवाला। रक्षक। जैसे—तुम्हारा खुदा हाफिज है।
पु० मुसलमानो मे वह धर्मशील व्यक्ति, जिसे सारा क़ुरान कठस्थ हो।

हाफ़िज़ा—पु० [अ० हाफिज़:] स्मरण-शक्ति। धारणा-शक्ति।

हाबिस—पु०[देश०] जहाज का लगर उखाडने या खीचने की क्रिया।

हाबुस—पु०[स० हविष्य] एक प्रकार का नमकीन व्यजन जो गेहूँ और जौ की कच्ची और कोमल बालें आग पर भूनकर बनाया जाता है।

हाबूड़ा—पु०[देश०]१ लूटमार, चोरी आदि करनेवाली एक अर्धसभ्य और अशिक्षित जाति। २. उक्त जाति का कोई व्यक्ति।

हाबूड़ी—स्त्री०[हि० हाबूडा] १. हाबूडा जाति की स्त्री। २. हाबूड़ा जाति की बोली।

हाम—वि०[?] किसी मे पूरी तरह से लगा या समाया हुआ। लीन। विलुप्त। उदा०—मीराँ ना प्रभु गिरधर नागर, चरन कमल चित हाम रे।—मीराँ।
†पु०[?]१. साहस। हिम्मत। २. प्रसन्नता।

हामिद—वि०[अ०] हम्द अर्थात् प्रशंसा करनेवाला। प्रशसक।

हामिल—पु० [अ०]= हम्माल (भारवाहक)।

हामिला—वि०[अ० हामिल] गर्भवती।

हामी—स्त्री०[हि० हाँ] हाँ करने या कहने की क्रिया या भाव। स्वीकृति।
मुहा०—हामी भरना= किसी के अनुरोध की रक्षा या प्रार्थना की स्वीकृति के रूप मे 'हाँ' कहना।
वि०[अ०]१. हिमायत करनेवाला। २ मददगार। सहायक।

हाय—अव्य०[स० हा] घोर मानसिक या शारीरिक कष्ट होने पर अथवा उसका भय उत्पन्न होने पर मुँह से निकलनेवाला व्यथा-सूचक अव्यय।
मुहा०—(किसी की) हाय पड़ना=पीडित व्यक्ति का शाप लगना। मुझे लगता है कि उसकी हाय मुझ पर पडी है। हाय मारना= पीडित करनेवाले को क्रोध मे कोप-भरे शब्द कहना।

हायन—पु०[सं० √हा (त्यागना)+ल्यु—अन] १ गुजरना। बीतना। २ छोड़ना। परित्याग। ३. वर्ष। साल।

हायनक—पु०[स०] लाल रग का एक प्रकार का मोटा चावल।

हायल*—वि० [स० हाय=छोड़ा हुआ] घायल। उदा०—किय हायल चित चाप लगि बजि पायल तय पाय।—विहारी।
वि०[अ०] १. आड़ करनेवाला। २ बाधा देने या रोकनेवाला।

हाय-हाय—अव्य० [अनु०] कष्ट, पीडा, शोक आदि का सूचक शब्द।
स्त्री० १. वह स्थिति जिसमे बाजार मे वस्तुएँ न उपलब्ध होने के कारण जन-साधारण मे पुकार मची हो। २. किसी दुर्लभ या दुष्प्राप्य चीज को प्राप्त करने के लिए होनेवाली तीव्र इच्छा।

हार—पुं० [स०√हृ(हरण करना)+अण्—घञ् वा] १. हरण करने अर्थात् जबरदस्ती छीन ले जाने की क्रिया या भाव। जैसे—गो हार= गौएँ छीन ले जाना। २ अपराध आदि के दड स्वरूप राज्य के द्वारा होनेवाला सपत्ति का हरण। जब्ती। ३ किसी प्रकार कोई चीज ले जाने या ले लेने की क्रिया या भाव। ४. युद्ध। लड़ाई। ५. वियोग, विरह आदि। ६. गणित मे वह संख्या जिससे भाग देते है। भाजक

(डिवाइजर) ७ शरीर के वीर्य का क्षय या नाश। ८. पिंगल या छन्द-शास्त्र में गुरुमात्रा की संज्ञा।

वि० १. ले जाने या वहन करनेवाला। २. नष्ट करनेवाला। नाशक। ३. मन हरनेवाला। मनोहर।

पु०[फा०] फूलों, मोतियों आदि की माला।

स्त्री०[स० हरि.] १. खेल, प्रतियोगिता, युद्ध आदि में प्रतिद्वंद्वी से पराजित या परास्त होने की अवस्था या भाव। हारने की क्रिया, दशा या भाव। पराजय। 'जीत' का विपर्याय।

मुहा०—हार खाना= पराजित या परास्त होना। हारना। हार देना= पराजित या परास्त करना। हराना।

२. वह शारीरिक स्थिति, जिसमे मनुष्य काम करते-करते इतना शिथिल हो जाता है कि और आगे काम करने की शक्ति या साहस नही रह जाता। थकावट।

पु०[देश०] १ वन। जगल। २. नाव में बाहर की ओर के तख्ते।

पु०[हि० हल]१ खेत। २. चरागाह।

†पु०=हाल (दशा)।

†प्रत्य०[स्त्री० हारी] दे० हारा ('वाला' का वोधक प्रत्यय)। जैसे—करनहार=करनेवाला, मरनहार=मरणोन्मुख।

हारक—वि० [स० हर √कृ (हरण करना)+ण्वुल्—अक]१. हरण करनेवाला। २ बलपूर्वक छीननेवाला। ३. कष्ट आदि दूर करने या हटानेवाला। ४ जानेवाला। ५. मनोहर। सुन्दर। ६. चुरानेवाला धूर्त चालाक।

पु०१ गले मे पहनने का एक हार। २. गणित मे भाजक अक या संख्या।

हार-गुटिका—स्त्री०[स० ष० त०] हार की गुरिया। माला के दाने।

हार-जीत—स्त्री०[हि०] १ हारने और जीतने की क्रिया या स्थिति। २ हानि और लाभ।

हारद*—पु०[स० हृदय] हृदय की बात।

वि०=हार्दिक।

हारना—अ०[हि० हार]१ युद्ध, खेल, प्रतिद्वंद्विता आदि मे प्रतिपक्षी के सामने विफल या पराजित होना। 'जीत' का विपर्याय। जैसे—मुकदमे या लडाई मे हारना। २ प्रयत्न मे विफल होना।

मुहा०—हारकर=कोई उपाय या मार्ग न रह जाने की दशा में। असमर्थ या विवश होकर। जैसे—जब और कुछ न हो सका तो हारकर फिर मेरे पास आये। हारे दरजे=लाचार या विवश होने की दशा मे। हारकर।

३ प्रयन्न या परिश्रम करते-करते इतना थक जाना कि कुछ करने की शक्ति न रह जाय। बहुत ही शिथिल हो जाना। उदा०—धीरे चल हम हारी हे रघुवर।—ग्रामगीत।

सयो० क्रि०—जाना।

पद—हारे-गाढ़े=ऐसी स्थिति मे जब कि मनुष्य बहुत ही विवश या शिथिल हो गया हो अथवा भारी विपत्ति या सकट मे पड़ा हो। जैसे—हारे-गाढे पडोसी ही तो काम आते हैं।

मुहा०—हारे पडना*=(क) थककर गिरना। उदा०—हारे परिहैं सखे राखु धन कहे हमारे।—दीनदयाल गिरि। (ख) लाचार होकर। उदा०—हारि परे अब पूरा दीजै।—कबीर।

स० १. प्रतियोगिता, युद्ध, खेल आदि मे सफल न होने के कारण हाथ से उसे या उससे संबंध रखनेवाली चीज जाने देना। जैसे—लड़ाई, धन या बाजी हारना। २. गँवाना। खोना। उदा०—नैकु वियोग मीन नहि मानत, प्रेम-काज क्यूँ हार्‌यो।—सूर। ३. न रख सकने या निर्वाह न कर सकने के कारण छोड देना। जैसे—हिम्मत हारना। ४. किसी को कुछ इस प्रकार देना कि उसे लौटा न सके या उससे पीछे न हट सके। जैसे—वचन हारना।

हार-फलक—पु०[सं०] पाँच लड़ियों का हार।

हार-बंध—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमे किसी पद्य के अक्षर हार के आकार मे रखे जाते हैं।

हारमोनियम—पुं०[अं०] सदूक के आकार का एक प्रसिद्ध पाश्चात्य बाजा जिसके परदों से उँगलियो से दबाने पर स्वर निकलते है।

हार-यष्टि—स्त्री०[सं० ष० त०] हार या माला की लडी।

हारल†—पु०=हारिल (पक्षी)।

हार-सिंगार—पु०=हर-सिंगार (परजाता)।

हार-हूण—पुं० [स०] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

हारा—वि०[स०]१. (व्यक्ति) जिसका कुछ हरण कर लिया गया हो। २. जो अपना कुछ या सब खो या गँवा चुका हो। (यौ० के अत मे) जैसे—सर्वहारा आदि।

प्रत्य०[?] [स्त्री० हारी] एक प्रत्यय जो क्रियार्थक सज्ञाओ मे लगकर 'वाला' का अर्थ देता है। जैसे—करनहारा, चलावनहारा।

हारावलि (ली)—स्त्री०[स० उपमि० स०] मोतियो की लडी।

हारि—पुं० [स० √हृ (हरण करना)+णिच्] १. हार। पराभव। पराजय। २. यात्रियो या पथिकों का दल। कारवाँ।

†पुं०=हार।

†वि०=हारक।

हारिक—पु०[स०] एक प्राचीन जनपद।

हारिका—स्त्री० [स०] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

हारिज—वि० [अ०]१. हरज अर्थात् हानि करनेवाला। २ बाधक।

हारिग—वि०[स० हरिण+अण्] हरिण-सबधी। हिरन का।

पु० हिरन का मांस।

हारिणाश्वा—स्त्री० [स०] सगीत मे मूर्च्छना जिसका स्वर-ग्राम इस प्रकार है—ग, म, प, ध, नि, स, रे। स, रे, ग, म, प, ध, नि, स, रे, ग, म, प।

हारित—भू० कृ०[सं० √हृ(हरण करना)+णिच्—क्त हार+इतच् वा] १. हरण किया हुआ। छीना या लूटा हुआ। २. रहित। वचित। या हीन या किया हुआ। ३. खोया या गँवाया हुआ। ४. जो परास्त हो चुका हो। पराजित। ५ लाया हुआ। ६. मुग्ध या मोहित किया हुआ।

पुं० तोता नामक पक्षी।

हारितक—पुं० [स०] हरी तरकारी, शाक।

हारिद्र—वि० [सं० हरिद्रा+अण्]१. हलदी से रँगा हुआ। २. हलदी के रंग का। पीला।

पु०१. एक प्रकार का विष जिसका पौधा हलदी के समान होता है और जो हलदी के खेतो मे ही उगता है। इसकी गाँठ बहुत जहरीली होती

है। २ एक प्रकार का प्रमेह जिसमे हलदी के रग का पीला पेशाब आता है।

हारिल—पु०[स० हारीत] झुड मे रहनेवाली एक चिड़िया जो प्राय अपने चगुल मे तिनका या छोटी पतली लकडी लिए रहती है। हरियल। उदा०—मृगमद छाँडि न जात, गही ज्यों हारिल लकरी।—भगवत रसिक।

पद—हारिल की लकड़ी=ऐसा आधार या आश्रय जो जल्दी या किसी प्रकार छोडा न जा सके। उदा०—हमारे हरि हारिल की लकरी।—सूर।

विशेष—इसकी यह विशेषता है कि यदि घायल होकर किसी वृक्ष की शाखा मे लटक जाय, तो मरने पर भी इसके पजो से वह शाखा नही छूटती इसी आधार पर यह पद बना है।

*वि०[हिं० हारना]१. हारा हुआ। २. थका हुआ।

हारी(रिन्)—वि०[स०√हृ (हरण करना)+णिनि] [स्त्री० हारिणी]१. हरण करनेवाला। हारक। यौ० के अन्त मे। जैसे—कष्टहारी। २ पहुँचाने या ले जानेवाला। वाहक। ३ चुराने या लूटनेवाला। ४ दूर करने या हटानेवाला। ५ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला। ५ उगाहने या वसूल करनेवाला। ७ जीतनेवाला। विजेता। ८ मन हरनेवाला। सुन्दर।

वि० [फा० हार] हार या माला पहननेवाला।

पु० एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और दो गुरु होते है।

प्रत्य० हार का स्त्री० रूप।

स्त्री०[हिं० हारना] १ हारने की क्रिया या भाव। पराजय। हार। उदा०—हारी जानि पीर हरि मेरी।—सूर।

क्रि० प्र०—मानना।

२ थकावट। शिथिलता। उदा०—मोहि मग चलत न होइहि हारी।—तुलसी।

†पुं०[हिं० हर=हल] हल जोतनेवाला। हलवाहा। उदा०—अहिर दरविया बाम्हन हारी।—घाघ।

हारीत—पु०[स० √हृ (हरण करना) णिच्—ईतच वा]१. चोर। डाकू या लुटेरा। २ उक्त प्रकार के लोगो का काम या पेशा। ३ कबूतर।

हारुक—पु० [स० √हृ (हरण करना)+उकञ्]१. हरण करनेवाला। छीननेवाला। २ ले जानेवाला।

हारूँ—पु०[अ०]१. उद्दण्ड और नटखट घोडा। २ दूत। ३ हरकारा। ४ नेता। सरदार।

हारौल†—पु० =हरावल (सेना का अगला भाग)।

हार्द—पु०[स० हृदय+अण्, हृदादेश]१ हृदय के अन्दर की बात। जैसे—शरत्-साहित्य का हार्द समझने मे इस आलोचना से बहुत सहायता मिलेगी। २ अनुराग। प्रेम। स्नेह।

वि०=हार्दिक।

हार्दिक—वि०[स० हृदय+ठञ्—हृदादेश] हृदय मे रहने या होनेवाला। हृदय का। 'मांत्रिक' का विपर्याय। जैसे—हार्दिक सहानुभूति, हार्दिक स्नेह।

हार्दिक्य—पु०[स० हार्दिक+ष्यञ्] मित्र-भाव। मित्रता। सुहृद्-भाव।

हार्दी(दिन्)—वि०[स०] १. स्नेह-युक्त। २ सहृदय। ३. परम-प्रिय।

हार्य—वि०[स० √हृ (हरण करना)+ण्यत]१. जो हरण किये जाने के योग्य हो, अथवा हरण किया जाने को हो। २. जो इधर-उधर हटाया जा सके। ३ (नाटक या रूपक) जिसका अभिनय हो सके या होने को हो। ४ (सख्या) जिसका भाग होने को हो। भाज्य।

हाल—पु०[स०]१. खेत जोतने का हल। २. बलराम का एक नाम। ३ एक प्रकार का पक्षी।

पु०[अ०]१ वह समय जो अभी चल या बीत रहा हो। वर्तमान काल।

पद—हाल का=(क) थोडे ही दिन पहले का। (ख) ताजा या नया। जैसे—किसी पत्रिका का हाल का अक। हाल में=वर्तमान समय से कुछ ही दिन पहले। कुछ ही दिन पूर्व। जैसे—उनके घर हाल मे ही लड़का हुआ है।

२. वर्तमान से कुछ ही पहले का समय। जैसे—(क) यह तो हाल की बात है। (ख) हाल मे वे दिल्ली गये थे। ३. अवस्था। दशा। हालत। जैसे—आज-कल उनका बुरा हाल है।

मुहा०—हाल-बेहाल होना= बहुत ही बुरी दशा या स्थिति मे होना।

४. ऐसी दशा या स्थिति जिसमे ठीक तरह से काम चल सकता हो। उदा०—साबित है जो दगला तो नही है मोजो मे कुछ हाल।—सौदा।

५. बहुत ही बुरी और शोचनीय दशा। बहुत खराब हालत।

मुहा०—(किसी का) हाल करना=बहुत ही बुरी दशा को पहुँचाना। गत बनाना। हाल पतला होना= अवस्था बहुत ही दयनीय होना।

६. अवस्था या दशा का वर्णन या विवरण। वृत्तात। समाचार। जैसे—उनका भी कुछ हाल मिला? ७ ब्योरा। विवरण।

मुहा०—(किसी से) हाल माँगना=अधिकारपूर्वक यह पूछना कि यह बात क्यो या कैसे हुई। कैफियत तलब करना। उदा०—एक कोठु पच सिकदारा पचै माँगहि हाला।—कबीर।

८ ईश्वर की चर्चा या चिंतन के समय भक्ति के आवेश के कारण होनेवाली तन्मयता, आत्मविस्मृति या विभोरता। (मुसल०) उदा०—खेलत-खेलत हाल करि, जो कुछ होहि सुहोई।—कबीर।

मुहा०—हाल आना=आवेग, उद्वेग आदि के कारण अपने आप को भूल जाना। आत्म-विस्मृत या उन्मत्त होना। उदा०—एक दम से देख उसको होली को हाल आया।—नजीर।

अव्य० वर्तमान काल मे। इस समय। उदा०—स्वर्ग यदि न भी मिलेगा हाल।—मैथिलीशरण।

स्त्री०[अ० हाल मडल]१ काठ के पहिये पर चारो ओर चढाया जानेवाला लोहे का घेरा या गोलाकार बद। २. कोई गोल चक्र या मडल।

स्त्री०[हिं० हालना]१ हिलने की क्रिया या भाव। कप। २ हिलने के कारण लगनेवाला झटका। जैसे—रेल के सफर मे उतनी हाल नही लगती।

क्रि० प्र०—लगना।

पु०[अ० हॉल] बहुत बड़ा या खूब लबा-चौडा कमरा। जैसे—टाउन हॉल।

हालक—पु०[स०] पीलापन लिए भूरे रग का घोड़ा।

हाल-गोला†—पु०=गेंद (खेलने का)।
हाल-डाल—स्त्री० [हिं० हालना+डोलना] १. हिलने-डोलने की क्रिया या भाव। गति। २ हल-चल। ३ कप।
†पु० [अ० होलडाल] विस्तरवद।
हालत—स्त्री० [अ०] १ अवस्था। दशा। २ परिस्थिति। जैसे—आज-कल बाजार की हालत नाजुक है।
हालना—अ० [स० हल्लन] १. हिलना-डोलना। २. काँपना। ३ झूलना।
हालरा—पु० [हिं० हालना] १ बच्चों को हाथ मे लेकर हिलाने की क्रिया। २. झटका। झोंका। ३. लहर। हिलोर।
हालहल, हालहाल—पु०=हलाहल।
हाल-हली—स्त्री० [स०] मदिरा। शराब।
हाल-हवाल—पु० [अ० हाल+अहवाल] १ किसी विशिष्ट प्रकार की अवस्था या दशा। २ उक्त प्रकार की दशा का वर्णन या वृत्तान्त।
हाल-हूल—स्त्री० [हिं० हल्ला] १. हल्ला-गुल्ला। कोलाहल। २ हल-चल।
हालाँकि—अव्य० [फा०] १ यद्यपि। २ अगरचे।
हाला—स्त्री० [स०] मद्य। शराब।
पु० [अ० हाल] १ गोल घेरा। मडल। २ चारों ओर पडनेवाला गड्ढा। उदा०—रोय-रोय नैनन मे हाले परै जाले परै ।—कविन्द।
†पु० [हिं० हल] १. मध्ययुग मे वह कर जो जोतने के हलों पर लगता था। २ जमीन की मालगुजारी। लगान। (पूरब)
हालात—पु० बहु० [फा० हाल का बहुवचन रूप] १ स्थितियाँ। २ परिस्थितियाँ।
हालाहल—पु० [स०] १ हलाहल नामक प्रचण्ड विष। २ एक प्रकार का पौधा जिसकी जड बहुत जहरीली होती है। ३ एक प्रकार की बहुत जहरीली छिपकली।
हालाहली—स्त्री० [स०] मदिरा।
स्त्री० [हिं० हाली=जल्दी] १ जल्दी मचाने की क्रिया या भाव। २. जल्दी।
अव्य० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी-जल्दी।
हालिनी—स्त्री० [स०] एक प्रकार की छिपकली।
हालिम—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसके बीज औषध के काम आते हैं। चन्द्रसुर। चन्सुर।
हाली†—अव्य० [हिं० हिलना] जल्दी। शीघ्र।
†पु० [हिं० हल] हल जोतनेवाला।
हालूक—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की तिब्बती भेड, जिसका ऊन बहुत अच्छा होता है।
हालो†—पु०=हालिम (पौधा)।
हाव—पु० [स० √ह्वे+घञ् भावे √ हु+करणे वा] १. पास बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। बुलाहट। २ साहित्य के शृगारिक क्षेत्र मे नायिका की वे आकर्षक तथा मोहक क्रियाएँ और मुद्राएँ, जो वे स्वाभाविक रूप से सयोग के समय नायक के सामने करती हैं।
विशेष—साहित्यकारो ने इनकी गणना नायिकाओ के अगज और स्वभावज अलकारो मे की है, और इसके लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोहायित, कुट्टमित आदि अनेक प्रकार या भेद बतलाये गये हैं।
पद—**हाव-भाव**।
हावक—वि० [स० √हु (देना)+ण्वुल्—अक] हवन या यज्ञ करनेवाला।
हावका—पु० [हिं० हाव=मुँहबाने का शब्द] १ किसी का उत्कर्ष देखकर या अपनी किसी भारी क्षति का स्मरण करके लिया जानेवाला ठढा साँस। दीर्घ निश्वास। गहरी या ठढी साँस।
क्रि० प्र०—भरना।—लेना।
२ किसी बात की प्रबल इच्छा या कामना।
हावनीय—वि० [स० हवन+छण्—ईय] (पदार्थ) जो हवन के लिए उपयुक्त या योग्य हो।
हाव-भाव—पु० [स०] वे आकर्षक और कोमल चेष्टाएँ, जो स्त्रियाँ प्राय. पुरुषो को अनुरक्त तथा मुग्ध करने के लिए करती हैं।
क्रि० प्र०—दिखाना।
हावर—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड जिसकी लकडी मजबूत होती और खेती के सामान बनाने के काम मे आती है।
हावला-बावला—वि० [हिं० बावला] [स्त्री० हावली-बावली] जो बहुत कुछ बावलो या पागलो का-सा आचरण करता हो।
हाव-हाव†—स्त्री०=हाय-हाय।
हावी—वि० [अ०] १. कुशल। दक्ष। प्रवीण। २ जो अपने गुण, बल, विशेषता आदि के कारण दूसरे को दबा ले या पराभूत कर दे।
वि० [स०]=हावक (हवन करनेवाला)।
हाशिया—पु० [अ० हाशिय] १ किसी फैली हुई वस्तु का किनारा। कोर। बारी। जैसे—किताब का हाशिया। कपडे का हाशिया। (बार्डर)
२ कपडो मे टाँकी जानेवाली गोट या मगजी।
क्रि० प्र०—चढाना।—लगाना।
३ दस्तावेज या लेख्य का वह पार्श्व जो आवश्यकतानुसार कुछ विशिष्ट बातें बढाने या लिखने के लिए खाली रखा जाता है। जैसे—टीका-टिप्पणी लिखने, गवाहो के हस्ताक्षर आदि के लिए हाशिया छोडना।
पद—**हाशिये का गवाह**=वह गवाह या साक्षी जिसने किसी दस्तावेज के किनारे पर हस्ताक्षर किये हो।
मुहा०—**(किसी बात पर) हाशिया चढाना**=टीका-टिप्पणी, व्याख्या आदि के रूप मे कोई व्यंग्यपूर्ण बातें कहना।
हास—पु० [स०√ हस् (हँसना)+घञ् भावे] १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी।
विशेष—साहित्य मे यह हास्य रस का स्थायी भाव माना गया है, और कहा गया है कि किसी के आकार-प्रकार, रूप-रग, बोल-चाल, आदि मे कोई विलक्षण विकार दिखाई देने पर मनुष्य के चेहरे का जो प्रसन्नता-सूचक विकास होता है वह हास कहलाता है।
२ साहित्य मे केवल कौतुक के लिए कही जानेवाली वह बात या बनाया जानेवाला वह रूप या वेश जो आह्लाद या प्रसन्नता का सूचक और उत्पादक होता है। यह सात्विक भावो के अन्तर्गत है। ३ दिल्लगी। परिहास। मजाक। ४ दे० 'उपहास'।
हासक—पु० [स० √हस्+(हँसना)+णिच्—ण्वुल्—अक] हँसानेवाला।
हासकर—वि० [स० हास√कृ (करना)+अच्, प० त०] हँसानेवाला।

हासन—पुं०[सं०] हँसाना।
वि० हँसानेवाला।
हासना†—अ०१ दे० 'हँसना'। २ दे० 'हींसना'।
हासनिक—पुं०[सं०] विनोद या क्रीड़ा आदि में साथ रहनेवाला व्यक्ति। आमोद-प्रमोद का साथी।
हास-लीला—स्त्री०[सं० मध्य० स०] हँसी-ठट्ठा। मजाक।
हासवती—स्त्री०[सं०] बौद्ध तांत्रिकों की एक देवी।
हास-शील—वि०[सं०] ब० स०] हँसानेवाला। हँसोड़। विनोदी।
हासा(सस्)—पुं०[सं० √हस्(हँसना)+णिच्—असुन्] चन्द्रमा।
हासास्पद—पुं०[सं०]=हास्यास्पद।
हासिका—स्त्री०[सं०√हस् (हँसना)+णिच्+ण्वुल्—अक, टाप्—आ] १. हास। हँसी। २. मजाक। ठट्ठा।
हासिद—वि०[अ०] हसद अर्थात् डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।
हासिल—वि०[अ०] पाया या मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध।
पुं०१ जोड़ में किसी संख्या का वह अंश जो अगले अंक में जोड़ने के लिये जानेपर बच रहे। २ गणित की क्रिया का फल। ३. पैदावार। उपज। ४ लाभ। नफा। ५ जमीन का लगान। ६ वह धन जो किसी से अधिकारपूर्वक लिया जाता हो। जैसे—खिराज, चौथ आदि। उदा०—और ठौर हासिल उगाहत है माफ को।—भूषण।
हासी (हासिन्)—वि०[सं० हास+इनि][स्त्री० हासिनी] १. हँसनेवाला। जैसे—चारु-हासी। २ हँसोड़। मसखरा।
हास्तिक—वि०[सं०हस्तिन्+ठञ्—इक] हाथी संबंधी। हाथी का।
पुं०१ हाथी का सवार। २. महावत। ३. हाथियों का झुण्ड या यूथ।
हास्तिदंत—वि०[सं०]१ हाथी-दाँत संबंधी। २. हाथी दाँत का बना हुआ।
हास्य—वि० [सं०√हस्+ण्यत्]१ हास संबंधी। हास का। २. (काम या बात) जिससे लोग प्रसन्न होकर हँस पड़ें। जिसमें लोगों को हँसाने की योग्यता या शक्ति हो। ३. जिस पर लोग व्यंग्यपूर्वक हँसते हों। जिसकी हँसी उड़ाई जाती हो या उड़ाई जाय। उपहास के योग्य।
पुं० १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २ साहित्य में, नौ स्थायी भावों या रसों में से एक जो शृंगार रस से उत्पन्न और श्वेत वर्ण का माना गया है तथा जिसके देवता 'प्रमथ' अर्थात् शिव के गण कहे गये हैं। विशेष—इसका स्थायी भाव हास कहा गया है और आचार-व्यवहार तथा वेश-भूषा की अव्यवस्था, असंगति, भद्दापन, विकृति, धृष्टता, चपलता, प्रलाप, व्यंग्य आदि इसके विभाव माने गये हैं। आलस्य, अवहित्थ, तंद्रा, निद्रा, असूया आदि इसके व्यभिचारी भाव कहे गये हैं। यह शृंगार, वीर और अद्भुत् रसों का पोषक माना गया है। ३ दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक। ४. उपेक्षा और निन्दा से युक्त हँसी। उपहास।
हास्यकर—वि०[सं० ष० त०]१. हँसानेवाला। २. जिसे देख या सुनकर हँसी आती हो। हास्यास्पद।
हास्यास्पद—वि०[सं० ब० स०]१ (ऐसा बेढंगा, फूहड़ या भद्दा), जिसे देखकर लोग उपेक्षा या व्यंग्यपूर्वक हँसते हों। उपहास का पात्र।
हास्योत्पादक—वि०[सं० ष० त०] जिससे लोगों को हँसी आवे। उपहास के योग्य।

हा हंत—अव्य०[सं०] [illegible] अव्यय।
हाहर*—पुं०=[illegible] (चित्र)।
हा हा—पुं० [अनु०] १. [illegible]
२. [illegible]
[illegible]
मुहा०—[illegible]
[illegible]
पुं० [illegible]
हाहाकार—पुं०[सं० हाहा√कृ (करना)+[illegible]] [illegible] आदमियों के मुँह से [illegible] [illegible] भय, दुःख या पीड़ा [illegible] कुहराम।
क्रि० प्र०—[illegible]।—[illegible]।—[illegible]।
हाहा-ठीठी—स्त्री०[अनु० हाहा+हि० [illegible]] [illegible]
जैसे—[illegible]
हाहुल*—पुं०[अनु०] [illegible]।
हाहाहूह—पुं०[अनु०] हाहा-ठीठी।
हाही—स्त्री०[हि० हाय] [illegible]
[illegible] जैसे—[illegible]
क्रि० प्र०—[illegible]।—[illegible]।
हाहू*—पुं० [अनु०] १. [illegible] २. [illegible]
हाहूत—पुं०[अ०]सूफी [illegible] के अनुसार [illegible] की दो मंज़िलों या मंडलों में से पाँचवीं मंजिल या स्थान।
हाहू-बेर—पुं०[देश० हाहू+हि० बेर] [illegible] बेर। झड़बेरी।
हि—विभ० हिंदी की हि विभक्ति का पुं० रूप। जैसे—[illegible]।
हिअरना—अ०[सं० [illegible]] [illegible]
हिंकार—पुं०[सं०]१. गौ के रँभाने का शब्द। २ [illegible] ३. व्याघ्र। बाघ। ४. सामगान का एक अंग जिसमें उद्गाता [illegible] 'हिं' का उच्चारण करता है।
हिंक्रिया—स्त्री०[सं०]=हिंकार।
हिंग—पुं०[सं० हिंगु] एक प्राचीन देश।
†स्त्री०=हींग।
हिंगनबेर—पुं०[हि० हिंगोट+हि० बेर] हैंगदी वृक्ष। गोंदी।
हिंगलाज—स्त्री०[सं० हिंगुलाजा] देवी की एक मूर्ति जिसका मुख्य मंदिर सिन्ध और बलूचिस्तान के बीच की पहाड़ियों में है। यहाँ अँधेरी गुफा में ज्योति के उसी प्रकार दर्शन होते हैं, जिस प्रकार काँगड़े के ज्वालामुखी नामक स्थान में होते हैं।
हिंगली†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का तम्बाकू।
हिंगाष्टक चूर्ण—पुं०=हिंग्वाष्टक चूर्ण।
हिंगु—पुं०[सं० हिम√गम् (जाना आदि)+डु] हींग।
हिंगुपत्र—पुं०[सं०] वह पेड़ जिससे हींग निकलती है।

हिंगुपत्र—पु०[स० व० स०] इगुदी। हिंगोट।
हिंगुल—पुं०[सं० हिंग√ला (लेना)+क]१. ईंगुर। सिंगरफ। २. एक प्राचीन नदी।
हिंगुला—स्त्री०[स०] एक प्रदेश जो सिंध और बलूचिस्तान के बीच में है जहाँ हिंगुलाजा या हिंगलाज देवी का मन्दिर है।
हिंगुलाजा—स्त्री०[स०] दुर्गा देवी का एक रूप। वि० दे० 'हिंगलाज'।
हिंगोट—पु०[स० हिंगुपत्र, प्रा० हिंगुवत्त] मॅंझोले आकार का एक झाडदार कँटीला जगली पेड जिसकी इधर-उधर सीधी निकली हुई टहनियाँ गोल और छोटी होती हैं। इगुदी।
हिंग्वाष्टक चूर्ण—पु०[स० हिंगु+अष्टक] वैद्यक मे एक प्रसिद्ध पाचक चूर्ण जो हीग मे सात चीजें मिलाने से बनता है।
हिंच—पु०[अ० हिंच] झटका। आघात। चोट। (लश्करी)
हिंचना†—अ०[?] पीछे की ओर हटना। खिचना।
हिंछना†—अ०[स० इच्छण] इच्छा करना। चाहना।
हिंछा—स्त्री०=इच्छा।
हिंडक—वि० [स० हिंड्+ण्वुल्—अक—कै+क व] १. घूमता फिरता रहनेवाला। २ भ्रमणशील। घुमक्कड।
हिंडन—पु०[स० √हिंड् ((घूमना)+ल्युट्—अन] घूमना या चलना-फिरना
हिंडिक—पु०[स०] फलित ज्योतिष का आचार्य।
हिंडी—स्त्री०[स०] दुर्गा का एक नाम।
हिंडी-बदाम—पु० [देश० हिंड+फा० बादाम] अडमन टापू मे होनेवाला एक प्रकार का बडा पेड जिसमे एक प्रकार का गोंद निकलता है और जिसके बीजो मे बहुत तेल होता है।.
हिंडीर—पु० [स०√हिंड्+ईरन्]१. एक प्रकार की समुद्री मछली की हड्डी जो 'समुद्र फेन' के नाम से प्रसिद्ध है। २ नर या पुरुष जाति का प्राणी। ३ अनार।
हिंडुक—पु०[स०] शिव का एक नाम।
हिंडोरना†—पु०=हिंडोला
अ०=डोलना।
हिंडोरा—पु०[स्त्री० अल्पा० हिंडोरी] हिंडोला।
हिंडोल—पु०[स०हिन्दोल]१ हिंडोला। २ सगीत मे एक प्रकार का राग।
विशेष—कहते है कि जब यह राग अपने शुद्ध रूप मे गाया जाता है, तब हिंडोला अपने आप चलने लगता है।
हिंडोलना—पु०[हिं० हिडोल+ना (प्रत्य०)] छोटा हिंडोला।
हिंडोला—पु०[स० हिन्दोल] [स्त्री० अल्पा० हिंडोली]१ एक विशेष प्रकार का चक्राकार झूला जिसमे बैठने के लिए आसनो के चार विभाग होते हैं और जो ऊपर-नीचे चक्कर काटता हुआ घूमता है। २. बच्चो को झुलाने का पालना जो आगे-पीछे चलता है। ३ छत, पेड़ आदि मे रस्सो से लटकाया हुआ झूला।
हिंडोली—स्त्री० [स०] एक रागिनी जो हनुमत के मत से हिंडोल राग की प्रिया है।
हिंताल—पु०[स०]१. खजूर की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड़ जो देखने मे बहुत सुन्दर होता है। २. उक्त वृक्ष का फल।
हिंद—पु०[फा०] हिंदोस्तान। भारतवर्ष।
हिंदवाना†—पु० [फा० हिंद+वान] तरबूज।
हिंदवी—स्त्री०[फा०]१ हिंद या हिंदोस्तान की भाषा। आधुनिक हिंदी भाषा का पुराना नाम।
हिंदी—वि०[सं० सिन्धु से फा० हिन्द] हिंद या हिंदोस्तान का। भारतीय। पुं० हिंद का निवासी। भारतवासी।
स्त्री० १. हिंद या हिन्दोस्तान की भाषा। २. आज-कल मुख्य रूप से, सारे उत्तर और मध्य भारत की एक प्रधान भाषा जो सस्कृत की प्रत्यक्ष उत्तराधिकारिणी होने के कारण मुख्य रूप से प्राय सारे भारत की राष्ट्र-भाषा रही है, और स्वतन्त्र भारत की राज-भाषा मानी गई है, तथा जो देवनागरी लिपि मे लिखी जाती है।
विशेष—इसका प्रचार उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान मे व्यापक रूप से है एव इनके आस-पास के अनेक प्रदेशों मे भी यह बहुत कुछ बोली और समझी जाती है। अवधी, बघेली, बिहारी, बुंदेलखडी, ब्रजी आदि अनेक बोलियाँ इसी के अन्तर्गत मानी जाती है, और मैथिली, राजस्थानी आदि भी इसी की शाखाएँ कही जाती है। प्राय १३वी या १४वी शती से इस भाषा का आरम्भ माना गया है, और इसका प्राचीन साहित्य बहुत अधिक है। अब भी भारत की आधुनिक भाषाओ मे इसका भडार बहुत बडा है और दिन पर दिन इसका प्रचार-व्यवहार, बढता जाता है।
मुहा०—**हिंदी की चिंदी निकालना**=(क) बहुत सूक्ष्म पर व्यर्थ के या तुच्छ दोष निकालना। (ख) कुतर्क करना।
हिंदीरेवंद—पु०[फा०] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड औषध के काम मे आती है और चीनी रेवद या रेवद चीनी भी कहलाती है।
हिंदुई†—स्त्री०=हिंदवी (भाषा)।
हिंदुत्व—पु०[सं०]१ हिन्दू होने की अवस्था, गुण धर्म या भाव। २ हिन्दुओ का आचार-विचार और व्यवहार।
हिंदुस्तान—पुं०[फा० हिंदोस्तान]१. हम लोगों के रहने का यह भारत देश। भारत-वर्ष। भारत। २ हमारे इस देश का उत्तरीय और मध्य भाग जो दिल्ली से लेकर पटना तक और दक्षिण मे नर्मदा के किनारे तक माना जाता है। यही खास हिंदोस्तान कहा जाता है।
हिंदुस्तानी—वि०[फा०] हिन्दुस्तान का। हिंदुस्तान सबधी। भारतीय। पु० हिन्दुस्तान का निवासी। भारतवासी। भारतीय।
स्त्री०१ हिंदोस्तान की भाषा। २. उत्तरी भारत के मध्य भाग की बोल-चाल या लोक-व्यवहार की (पर साहित्यिक से भिन्न) वह हिंदी जिसमे न तो अरबी के शब्द अधिक हो और न सस्कृत के।
हिंदुस्तानी-संगीत—पु०[हिं०+स०] उस पद्धति या शैली का सगीत जो उत्तर भारत में प्रचलित है। (कर्नाटकी सगीत से भिन्न)
हिंदुस्थान†—पु०=हिंदुस्तान।
हिंदू—पु०[फा० स० सिंधु से] भारतवर्ष मे बसनेवाली आर्यजाति के वशज जो भारत मे पल्लवित आर्य धर्म, संस्कार और समाज-व्यवस्था को मानते चले आ रहे हैं। भारतीय आर्य-धर्म का अनुयायी।
हिंदूकुश—पु०[फा०] एक पर्वत श्रेणी जो अफगानिस्तान के उत्तर मे है और हिमालय से मिली हुई है।
हिंदूपन—पु०[फा० हिंदू+पन (प्रत्य०)] हिंदू होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। हिंदुत्व।

हिंदोरना—स०[सं० हिंदोल+ना (हिं० प्रत्य०)] तरल पदार्थ मे हाथ या कोई चीज डालकर इधर-उधर घुमाना। घँघोलना।
हिंदोल—पु०=हिंडोल।
हिंदोलक—पु०[स०] छोटा हिंडोल। पालना।
हिंदोस्तान†—पु०=हिंदुस्तान।
हिंदोस्तानी†—वि०, पु०, स्त्री०=हिंदुस्तानी।
हियाँ†—अव्य०=यहाँ।
हिंव, हिंवार†—पु०=हिम (बरफ)।
क्रि० प्र०—पडना।
हिंस†—स्त्री० =हीस।
हिंसक—वि० [स०हिंस+ण्वुल्–अक]१ हिंसा करनेवाला। हत्यारा। घातक। २. दूसरो को कष्ट पहुँचानेवाला या पीडित करनेवाला। ३. ईर्ष्या-द्वेष करनेवाला। ४ (पशु) जो दूसरे जीवो या पशुओ की हत्या करता हो। जैसे—शेर, चीते, भालू आदि हिंसक होते हैं।
पु० १. शत्रु। २ उच्चाटन, मारण आदि प्रयोग करनेवाला तान्त्रिक ब्राह्मण।
हिंसन—पु०[स० √हिंस् (मारना)+ल्युट्—अन][वि० हिंसनीय, हिंस्य, भू० कृ० हिंसित]१ जीवों का वध करना। जान से मार डालना। २. जीव या प्राणी को कष्ट देना। ३. पीडित करना। ४. किसी का कोई अनिष्ट या हानि करना। ४ किसी से ईर्ष्या या द्वेप करना।
हिंसना†—अ०=हीसना।
हिंसनीय—वि० [स०√हिंस् (मारना)+अनीयर्]१. हिंसा करने योग्य। २. जिसकी हिंसा की जा सके या की जाने को हो।
हिंसा—स्त्री०[स० √हिंस् (मारना)+अ—टाप्]१ जीव की हत्या करना या उसे किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाना जो प्राय. सभी धर्मो मे पाप माना गया है। २. किसी को किसी प्रकार की हानि पहुँचाना। अनिष्ट अथवा अपकार करना।
हिंसा-कर्म—पु०[स० प० त०] १ वध करने या पीडा पहुँचाने का कर्म। मारने या सताने का काम। २ उच्चाटन, मारण आदि ऐसे तान्त्रिक प्रयोग जिनसे दूसरो का अनिष्ट होता हो।
हिंसात्मक—वि०[स० ब० स०] जिसमे हिंसा हो। हिंसा से युक्त। जैसे—हिंसात्मक मनोवृत्ति।
हिंसारु—पु० [म०] १. हिंस्र पशु। खूँखार जानवर। २. बाघ या शेर।
हिंसालु—वि०[स० हिंसा+आलुच्]१ हिंसा करनेवाला। मारने या सतानेवाला। हिंसक। २ जिसकी प्रवृत्ति निरन्तर हिंसा करते रहने की हो।
हिंसित—भू० कृ० [स० हिंसा+इतच्]१ जिसकी हिंसा की गई हो। मारा हुआ। २ जिसे क्षति पहुँचाई गई हो।
पु० क्षति। हानि।
हिंसतव्य—वि०[स०√हिंस् (हिंसा करना)+तव्य] जिंसकी हिंसा की जा सकती हो।
हिंस्य—वि०[स०]=हिंसनीय।
हिंस्र—वि०[स० √हिंस्+रक्] हिंसा करनेवाला। हिंसक। जैसे—हिंस्र पशु।
हिंस्रक—पु०[स०] हिंस्र पशु। खूँखार जानवर।
हिंस्रिका—स्त्री०[स०] दुश्मनों या डाकुओ की नाव।
हि—वि०[स० हि] एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारको मे होता था, पर पीछे कर्म और सप्रदान मे ही ('को' के अर्थ मे) रह गया। जैसे—रामहि प्रेम समेत लखि।
|अव्य०=ही।
हिअ*—पु० [स० हृदय] १. हृदय। २ छाती।
हिआ—पु०[स० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। २. छाती।
हिआउ†—पु०=हियाव (साहस)।
हिआव†—पु०=हियाव।
हिकड़ा—पु० [फा० से=तीन+कोडी] तीन कोडी कपडो का समूह।
हिकमत—स्त्री० [अ०] १. तत्त्व-ज्ञान। २. कोई काम कौशलपूर्वक करने की युक्ति। अच्छी और बढिया तरकीब। ३. कार्य सिद्ध करने का उपाय या युक्ति। तदबीर।
क्रि० प्र०—निकालना।—लगाना।
४. हकीम का काम या पेशा। ५. यूनानी चिकित्सा-प्रणाली।
हिकमती—वि०[अ० हिकमत+हिं० ई (प्रत्य०)]१. कार्य-साधन की युक्ति निकालनेवाला। कार्य-पटु। २. चालाक। होशियार।
हिकलाना†—अ०=हकलाना।
हिकायत—स्त्री०[अ०] कथा। कहानी।
हिकारत—स्त्री०=हकारत (घृणा)।
हिक्कल—पु०[?] बौद्ध संन्यासियो या भिक्षुको का दण्ड।
हिक्का—स्त्री०[स०]१. हिचकी। २ बहुत अधिक रोने के कारण बँधने वाली हिचकी। ३ एक प्रकार का रोग, जिसमे लगातार बहुत हिचकियाँ आती हैं।
हिक्किका—स्त्री०[स०] हिक्का। हिचकी।
हिक्की—पु०[स० हिक्किन्] वह जिसे हिक्का का रोग हो। हिचकी का रोगी।
हिचक—स्त्री० [हिं० हिचकना]१ हिचकने की क्रिया या भाव। २ कुछ करने या करने के समय मन मे होनेवाला आगा-पीछा या रुकावट।
हिचकी—स्त्री०[स० हिक्का या हिचहिच से अनु०]१. खाँसी, छीक, डकार आदि की तरह का एक शारीरिक व्यापार जिसमे साँस लेने के समय क्षण भर के लिए फेफडे का मुँह सिकुडकर बन्द हो जाता है और पेट की वायु कुछ रुकती और हलका शब्द करती हुई बाहर निकलती है। २ उक्त के फल-स्वरूप झटके से होनेवाला तीव्र शब्द जो कठ से निकलता है। ३. एक प्रकार का रोग जिसमे बार बार उक्त प्रकार की क्रिया तथा शब्द होता है।
क्रि० प्र०—आना।
हिचकोला—पु०=हचकोला।
हिचर-मिचर—स्त्री०[हिं० हिचक] वह स्थिति जिसमे कोई काम करने या कुछ कहने मे हिचक प्रकट होती हो।
हिजड़ा—पु०[?] ऐसा व्यक्ति जिसमे शारीरिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष दोनो के कुछ-कुछ चिह्न तथा लक्षण जन्मजात और प्राकृतिक रूप से हो। ऐसा व्यक्ति न पूर्णत पुरुष ही होता है और न स्त्री ही।
(यूनक)

हितावह—वि०[सं०] जिससे भलाई हो। हितकारी।

हिताहित—पु०[सं० द्व० स०] हित और अहित। भलाई-बुराई। उपकार-अपकार। जैसे—जिसे अपने हिताहित का विचार न हो, वह भी कोई आदमी है।

हिती—वि०[सं० हित+ई (हिं० प्रत्य०)]१. भलाई चाहनेवाला। खैरखाह।
पु० दोस्त। मित्र।

हितु†—पु०१.=हित। २=हितू।

हितू—पु०[सं० हित]१. भलाई करने और चाहनेवाला। हितैषी। खैरखाह। २. निकट का संबंधी। नजदीकी रिश्तेदार। ३. सुहृद। स्नेही।

हितेच्छा—स्त्री०[सं० ष० त०] भलाई की इच्छा या चाह। खैरख्वाही। उपकार का ध्यान।

हितेच्छु—वि०[सं० ष० त०] हित या भला चाहनेवाला। कल्याण मनानेवाला। खैरखाह।

हितैषणा—स्त्री० [सं० हित+एषण] किसी के हित या मंगल की कामना। शुभ-कामना। खैरख्वाही।

हितैषिता—स्त्री०[सं०] हितैषी होने की अवस्था, गुण या भाव।

हितैषी—वि० [सं० हितैषिन्] [स्त्री० हितैषिणी] भला चाहनेवाला। खैरखाह। कल्याण मनानेवाला।
पु० दोस्त। मित्र।

हितोक्ति—स्त्री० [सं० चतु० त०] किसी के हित या भलाई के विचार से कही हुई बात।

हितोपदेश—पु०[सं० चतु० त०]१. किसी का हित या उपकार करने के उद्देश्य से दिया जानेवाला उपदेश। अच्छी नसीहत। २. विष्णु शर्मा रचित संस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमे व्यवहार-नीति की बहुत-सी अच्छी-अच्छी बातें कहानियो के रूप मे कही गई है।

हितौना†—अ०=हिताना।

हित्ती—पु० पश्चिमी एशिया की एक प्राचीन जाति, जिसने ई० पू० १५००० के लगभग वहाँ एक साम्राज्य स्थापित किया था। (हिट्टाइट)

हिदायत—स्त्री० [अ०] १ पथ-प्रदर्शन। रास्ता दिखाना। २ आधिकारिक रूप से यह कहना कि अमुक कार्य इस रूप मे होना चाहिए, अथवा अमुक प्रकार की बात नही होनी चाहिए। अनुदेश। (इंस्ट्रक्शन)
क्रि० प्र०—करना।—देना।—होना।

हिनक—स्त्री० [हिं० हिनकना] हिनकने की क्रिया या भाव। हिनहिनाहट।

हिनकना—अ० [अनु०] घोड़े का हिनहिनाना। हीसना।

हिनकाना—स० [हिं० हिनकना का स०] घोड़े को हिनकने मे प्रवृत्त करना।

हिनती†—स्त्री० [सं० हीनता] हीनता। तुच्छता।

हिनवाना—पु०=हिंदवाना (तरबूज)।

हिनहिनाना—अ० [अनु० हिन-हिन] [भाव० हिनहिनाहट] घोड़े का हिन-हिन शब्द करना। हीसना।

हिनहिनाहट—स्त्री० [हिं० हिनहिनाना] हिनहिनाने की क्रिया, भाव या शब्द।

हिना—स्त्री० [अ०] मेहदी का झाड़ और पत्तियाँ।

हिनाई—वि० [अ०] हिना अर्थात् मेहदी की पिसी हुई पत्तियों के रंग का।
पु० उक्त प्रकार का रंग।

हिफाजत—स्त्री० [अ० हिफाजत] रक्षा या उसके विचार से की जानेवाली देख-भाल।

हिफाजती—वि० [अ० हिफाजती] जो हिफाजत के लिए अथवा हिफाजत के रूप मे हो। जैसे—हिफाजती कार्रवाई।

हिब्बा—पु० [अ० हुब्ब] १. अन्न आदि का कण। दाना। २. किसी चीज का बहुत ही छोटा अंश या खंड। ३. दो जौ अथवा किसी-किसी के मत मे एक रत्ती की तौल।
पु० [अ० हिब्ब.] किसी को कोई चीज सदा के लिए दे देना। दान। बख्शिश।

हिब्बानामा—पु० [अ०हिब्ब:+फा० नामा] दान-पत्र।

हिमंचल†—पु०=हिमाचल।

हिमंत†—पु०=हेमंत।

हिम—पु०[सं०√हि+मक्] १ आकाश या बादलो मे रहनेवाले जलीय अंश का वह ठोस रूप, जो सर्दी से जमने के कारण होता है। तुषार। पाला। २ बहुत कड़ी सरदी। जाड़ा। पाला। ३. जाड़े की ऋतु। शीत-काल। ४. पुराणानुसार पृथ्वी का एक विशिष्ट भू-खंड या वर्ष। ५. ऐसी दवा जो रात भर ठंडे पानी मे भिगोकर सवेरे मलकर छान ली जाय। ठंडा क्वाथ या काढा। ६. चन्द्रमा। ७. चन्दन। ८ कपूर। ९ मोती। १० रांगा। ११ ताजा मक्खन १२. कमल।
वि० ठंढा। शीतल।

हिम-उपल—पु० [सं० मध्य० स०] आकाश से गिरनेवाले बरफ के टुकड़े। ओला। पत्थर।

हिम-ऋतु—स्त्री० [सं० मध्य० स०] जाड़े का मौसम। हेमंत-ऋतु।

हिम-कण—पु० [सं० ष० त०] बर्फ या पाले के छोटे-छोटे टुकड़े।

हिम-कर—पु० [सं० ष० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।
वि० ठंढा या शीतल करनेवाला।

हिम-किरण—पु० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

हिम-खंड—पु० [सं० ष० त०] १. हिमालय। २ दे० 'हिमानी'।

हिम-गह्वर—पु० [सं० ष० त०] बरफीले पहाड़ो मे वह गहरा गोलाकार गड्ढा, जो हिमानी के प्रवाह के कारण पत्थरों के छीजने और बह जाने से बनता है।

हिमगु—पु० [सं०] चन्द्रमा।

हिम-गृह—पुं० [सं० ष० त०] १ बरफ का घर। बरफ पर बनाया हुआ घर। २. बहुत ही ठंढा कमरा। सर्द खाना।

हिमज—वि० [सं० हिम√जन् (उत्पन्न होना)] १ हिम या बरफ से होनेवाला। २. हिमालय मे होनेवाला।

हिमजा—स्त्री० [सं० हिमज—टाप्] १. पार्वती। २. खिरनी का पेड़। ३. यवनाल से निकली हुई चीनी।

हिम-झंझावात—पु० [सं०] ऐसा तूफान जिसके साथ ओले भी गिरते हो। बर्फीला तूफान। (ब्लिजर्ड, स्नो-स्टार्म)

हिम-तैल—पु० [सं०] कपूर के योग से बनाया हुआ तेल।

हिम-दंश—पु० दे० 'तुषार-दंश'।

हिम-दीधित—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा ।
हिम-धाव—पु० [स०] दे० 'हिमानी' ।
हिम-पात—पु० [स० प० त०] पाला पडना। वर्फ गिरना ।
हिम-पुरुष—पु०=हिम-मानव ।
हिम-प्रस्थ—पु० [स० ब० स०] हिमालय पहाड।
हिमप्लवा—स्त्री० दे० 'हिम-शैल'।
हिम-वालुका—स्त्री० [स० ष० त०] कपूर ।
हिम-भानु—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा ।
हिम मयूख—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।
हिम-मानव—पु० [स०] एक प्रकार का अज्ञात और रहस्यमय भीषण और विकराल जतु, जिसके अस्तित्व की कल्पना हिमालय की कुछ बरफीली चोटियो पर दिखाई देनेवाले बडे-बडे तथा विलक्षण पद-चिह्नो के आधार पर की गई है। येती। (स्नोमैन)
हिम-रश्मि—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।
हिम- रुचि—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।
हिमरेखा—स्त्री० [स०] पहाडो की ऊँचाई की वह सीमा, जिसके ऊपरी भाग पर सदा बरफ जमा रहता है। (स्नो-लाइन)
हिमर्तु—स्त्री० [स० मध्य० स०] हेमत ऋतु। जाडे का मौसम ।
हिमवत्—[स०] पु०=हिमवान् ।
हिमवत्-खड—पु० [स०] स्कदपुराण के अनुसार एक खड या भू-भाग ।
हिमवान्—वि० [स० हिमवत्] [स्त्री० हिमवती] बर्फवाला। जिसमे वर्फ या पाला हो।
पु० १ हिमालय। २. कैलास पर्वत। ३. चन्द्रमा ।
हिम-विवर—पु० [स०] दे० 'हिम-गह्वर'।
हिम-शर्करा—स्त्री० [स० मध्य० स० उपमि० स० ब०] एक प्रकार की चीनी जो यवनाल से बनाई जाती है।
हिम-शैल—पु० [स० मध्य० स०] १ हिमालय। २ बरफ की वे चट्टानें, जो उत्तरी ध्रुव की हिमानी से अलग होकर समुद्र मे पहाडो की तरह तैरती हुई दिखाई देती हैं। (आइसबर्ग)
हिम-शैलजा—स्त्री० [स० हिमशैल√जन् (पैदा होना)+ड] पार्वती ।
हिम-सुत—पु० [स० प० त०] चन्द्रमा ।
हिमाक—पु० [स० ब० स०] कपूर।
हिमागी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी ।
हिमात—पु० [स० ष० त०] जाडे के मौसम की समाप्ति। हेमत ऋतु का अन्त ।
हिमाशु—पु० [स० ब० स०] १ चन्द्रमा। २. कपूर।
हिमा—स्त्री० [स०] १ हेमत ऋतु। २ दुर्गा। ३ छोटी इलायची। ४ नागरमोथा।
हिमाकत—स्त्री० [अ०] अहमक होने की अवस्था या भाव। बेवकूफी। मूर्खता ।
हिमाचल—पु० [स० मध्य० स०] हिमालय पहाड।
हिमाच्छन्न—भू० कृ० [स० तृ० त०] बरफ से ढका हुआ।
हिमाच्छादित—भू० कृ० [स०] हिमाच्छन्न।
हिमाद्रि—पु० [स० मध्य० स०] हिमालय पहाड।
हिमानिल—पु० [स० मध्य० स०] बहुत ठढी और बर्फीली हवा।
हिमानी—स्त्री० [स० हिम-ङीप् आनुक्] १ बरफ का ढेर। हिम-राशि। २. बरफ की वह बहुत बडी राशि, जो पर्वतो पर से फिसलती हुई नीचे गिरती है। (एवलाच)
हिमाब्ज—पु० [स०] नील कमल ।
हिमाभ—वि० [स० ब० स०] १ हिम की आभा से युक्त। २ जो देखने मे बरफ की तरह हो।
हिमामदस्ता—पु० [फा० हावनदस्त] खरल और बट्टा। हावनदस्ता।
हिमायत—स्त्री० [अ०] [कर्ता० हिमयती] किसी व्यक्ति के किसी आपत्तिजनक अथवा विवादास्पद कार्य या बात का दृढतापूर्वक किया जानेवाला ऐसा पोषण और समर्थन, जिसमे पक्षपात की भी कुछ झलक हो। तरफदारी। पक्षपात।
हिमायती—वि० [फा०] १ हिमायत के रूप मे होनेवाला। प्रेरणा-जनक तथा पक्षपातपूर्ण। २ किसी व्यक्ति अथवा उसके कार्यों की हिमायत करनेवाला। पक्षपाती।
हिमाराति—पु० [स०] १ अग्नि। आग। २ सूर्य। ३ आक। मदार। ४ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।
हिमाल†—पु०=हिमालय ।
हिमालय—पु० [स० ष० त०] १ भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ एक बहुत बडा और ऊँचा पहाड, जो ससार के सब पर्वतो से बडा और ऊँचा है। इसकी सबसे ऊँची चोटी, सागरमाथा या एवरेस्ट २९००२ फुट ऊँची है। उत्तर भारत की बडी नदियाँ इसी पर्वत-राज से निकली हैं। २ सफेद खैर का पेड।
हिमाह्व—पु० [स०] १ जबू द्वीप का एक वर्ष या खड। २ कपूर।
हिमि*—पु०=हिम ।
हिमका—स्त्री० [स०] पाला। तुषार ।
हिमित—भू० कृ० [स०] १ जो बरफ के रूप मे आया या उसमे परिणत हो गया हो। २ बरफ से ढका हुआ।
हिमियानी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की पतली, लबी थैली जो रुपए आदि भरकर कमर मे बाँधी जाती है। टाँची। बसनी।
हिमी—वि० [स० हिम+हिं० ई (प्रत्य०)] १. हिम सबधी। २. हिम या ओलो से युक्त। (फ्रॉस्टी) जैसे—हिमी वर्षा।
हिमी वर्षा—स्त्री० [स० हिम+वर्षा] ऐसी वर्षा जिसमे पानी के साथ-साथ हिम या ओले भी बरसें। (स्लीट)
हिमेश—पु० [स० प० त०] हिमालय।
हिमोपल—पु० [स० हिम+उपल] जाडे मे वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला या पत्थर।
हिम्मत—स्त्री० [अ०] १ भयरहित होकर कोई जोखिम का काम करने का सामर्थ्य। साहस। २ उक्त सामर्थ्य की द्योतक मानसिक दृढ-धारणा।
क्रि० प्र०—करना।—पडना।—होना।
मुहा०—हिम्मत हारना=साहस छोडना। उत्साह से रहित होना।
हिम्मती—वि० [अ० हिम्मत+हिं० ई (प्रत्य०)] १. हिम्मतवाला। साहसी। २ पराक्रमी। बहादुर।
हिम्य—वि० [स०] १ हिम या वर्फ से ढका हुआ। २. बहुत अधिक ठढा।

हिय—पु० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १ हृदय। मन। २ साहस। हिम्मत।
मुहा०—हिय हारना=साहस छोड़ देना। हिम्मत हारना।

हियरा—पु० [हिं० हिय+रा (प्रत्य०)] १. हृदय। मन। ३ छाती। वक्षःस्थल।

हियाँ—अव्य०=यहाँ।

हिया—पु० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १ हृदय। मन।
पद—हिये का अन्धा=जिसे कुछ भी ज्ञान या समझ न हो। परम मूर्ख।
मुहा०—हिया फटना=कलेजा फटना। अत्यन्त शोक या दुःख होना। हिया भर आना=करुणा, दुःख आदि से हृदय द्रवित या आकुल होना। हिया भर लेना=बहुत अधिक दुःखी होकर गहरा साँस लेना। हिये का फूटना=ज्ञान या बुद्धि न रहना। अज्ञान रहना।
२ वक्षःस्थल। छाती।
मुहा०—हिये से लगाना=आलिंगन करना। गले लगाना।

हियाव—पु०[हिं०हिय+आव (प्रत्य०)] कोई विशेष प्रकार का जोखिम का काम करने की वह साहसपूर्ण तथा निःसंकोच की वृत्ति, जो उस तरह का काम पहले एक या अनेक बार कर चुकने से उत्पन्न होती है।
मुहा०—हियाव खुलना=निःसंकोच तथा साहसपूर्वक कोई काम करने की समर्थता से युक्त होना। जैसे—उस लड़के का, बड़ों को खरी-खोटी सुनाने का हियाव खुल गया है।

हिरकना—अ० [सं० हिरुक्=समीप] १. परचने के कारण धीरे-धीरे पास आने लगना। परचना। हिलगना। २. बहुत पास आना। सटना।
सयो० क्रि०—जाना।

हिरकाना†—स० [हिं० हिरकना का स०] १. परचाना। हिलगाना। २ बहुत पास लाना। सटाना।

हिरगना †—अ०=हिरकना (हिलगना)। उदा०—जहाँ सो नागिनी हिरगै कहिअ सो अंग।—जायसी।

हिरगाना †—स०=हिरकाना (हिलगाना)। उदा०—मकु हिरगाइ लेइ हम बासा।—जायसी।

हिरगुनी—स्त्री० [हिं० हीर+गुन=सूत] एक प्रकार की बढ़िया कपास जो सिंध मे होती है।

हिरण—पु० [सं०√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १ सोना। स्वर्ण। २. वीर्य। ३ कौड़ी। ४ हिरन।

हिरण्मय—वि० [सं० हिरण्य+मयट्] [स्त्री० हिरण्मयी] १ सोने का बना हुआ। २ सुनहला।
पु० १ हिरण्यगर्भ। ब्रह्मा। २ जंबू द्वीप के नौ खंडो या वर्षों मे से एक, जो श्वेत और शृंगवान् पर्वतों के बीच मे स्थित कहा गया है।

हिरण्य—पु० [सं० हिरण+यत्] १. सृष्टि का नित्य तत्त्व। २. हिरण्मय नामक भू-खंड या वर्ष। ३ सोना। स्वर्ण। ४ ज्ञान। ५ ज्योति। तेज। ६ अमृत। ७ पुरुष का वीर्य। शुक्र। ८. धतूरा। कौड़ी।

हिरण्य-कशिपु—वि० [सं० ब०स०] सोने के तकिये या गद्दीवाला।
पु० एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद के पिता थे।

हिरण्य-कश्यप—पु०=हिरण्यकशिपु।

हिरण्य-कामधेनु—स्त्री०[सं० मध्य० स०] दान देने के लिए बनाई हुई सोने की कामधेनु गाय। (इसका दान १६ महादानों मे है)

हिरण्यकार—पु० [सं० हिरण्य√कृ (करना)+अण्] स्वर्णकार। सुनार।

हिरण्य केश—पु० [सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

हिरण्य-गर्भ—पु० [सं० ब० स०] १. वह ज्योतिर्मय अंड, जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। २. ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४. सूक्ष्म-शरीर से युक्त। आत्मा।

हिरण्यनाभ—पु० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. मैनाक पर्वत। ३ भारतीय वास्तु-शास्त्र के अनुसार ऐसा भवन जिसमे पश्चिम, उत्तर और पूर्व की ओर तीन बड़ी-बड़ी शालाएँ निकली हों।

हिरण्यपुर—पु० [सं०] असुरों का एक नगर जो समुद्र के पार वायु-मंडल में स्थित कहा गया है। (हरिवंश)

हिरण्य-पुष्पी—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्रकार का पौधा।

हिरण्य-बाहु—पु० [ब० स०] १. शिव का एक नाम। २ सोन या सोन नद का एक नाम।

हिरण्यरेता (तस्)—पु० [सं० ब० स०] १ अग्नि। आग। २ सूर्य। ३ बारह आदित्यों मे से एक। ४ शिव। ५ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

हिरण्यरोमा (मन्)—पु० [सं० ब० स०] १ लोकपाल जो मरीचि के पुत्र है। २ भीष्मक का एक नाम

हिरण्यरेतस्—पु० [सं०] १ किसी देवता या मंदिर पर चढ़ा हुआ धन। देवस्व। देवोत्तर संपत्ति। २. सोने का गहना।

हिरण्यवस्त्र—पु० [सं० मध्य० स०] वैदिक काल का सुनहले तारों का बना एक प्रकार का कपड़ा।

हिरण्यवान्—वि० [सं० हिरण्यवत्] [स्त्री० हिरण्यवती] सोनेवाला। जिसमे या जिसके पास सोना हो।
पु० अग्नि। आग।

हिरण्यवाह—पु० [सं० हिरण्य√वह् (ढोना) +णिच्] १ शिव। २ सोन नामक नद।

हिरण्यबिंदु—पु० [सं० ब० स०] १ अग्नि। आग। २ एक प्राचीन पर्वत। ३. एक प्राचीन तीर्थ।

हिरण्यवीर्य—पु० [सं० ब० स०] १ अग्नि। आग। २ सूर्य।

हिरण्य-सर (स्)—पु० [सं० हिरण्यसरस्] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ।

हिरण्याक्ष—पु० [सं० ब० स० षच्] एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्य-कशिपु का भाई था। विष्णु ने वाराह अवतार धारण कर इसे मारा था।

हिरण्याश्व—पु० [सं० मध्य० स०] दान देने के लिए बनाई हुई घोड़े की सोने की मूर्ति। इसका दान १६ महादानो मे है।

हिरदय†—पु०=हृदय।

हिरदा†—पु०=हृदय।

हिरदावल—पु०[सं० हृदावर्त्त] घोड़ो की छाती की भौंरी जो बहुत अशुभ मानी जाती है।

हिरन—पु० [सं० हरिण] [स्त्री० हिरनी] हरिन नामक सींगवाला चौपाया। मृग।

विशेष—स० हरिण से व्युत्पन्न होने के कारण इस शब्द का वाचक रूप 'हरिन' ही होना चाहिए; परन्तु उर्दूवालो के प्रभाव से 'हिरन' रूप ही विशेष प्रचलित हो गया है।

मुहा०—हिरन हो जाना=बहुत तेजी से भागकर गायब हो जाना।

हिरन-खुरी—स्त्री० [हिं० हिरन+खुर] एक प्रकार की बरसाती लता जिसके पत्ते हिरन के खुर से मिलते-जुलते होते है।

हिरन-मूसा—पु० [हिं०] चूहे की जाति का एक जन्तु जिसकी पिछली टाँगें बहुत लबी और अगली टाँगें बहुत छोटी होती है। यह छलाँगे भरता हुआ बहुत तेज दौडता है।

हिरना†—अ० [स० हरण] छीना या दूर किया जाना। हरण होना। उदा०—कोटिक पाप पुन बहु हिरई।—कबीर।

†स०=हेरना।

†पु०=हिरन (पशु)।

हिरनाकुस†—पु०=हिरण्यकशिपु।

हिरनौटा—पु० [सं० हरिणपोतु या हिं० हिरन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का बच्चा। मृग-शावक।

हिरफत—स्त्री० [अ० हिरफत] १. व्यवसाय। पेशा। २. हाथ की कारीगरी। दस्तकारी। ३ कौशलपूर्वक कार्य-सपन्न करने का गुण। हुनर। ४. चालाकी। धूर्तता।

हिरफतबाज—वि० [अ० हिरफत+फा० बाज़] [भाव० हिरफतबाजी] चालबाज। धूर्त।

हिरमजी—स्त्री० [अ० हिरमजी] लाल रग की एक प्रकार की मिट्टी जिससे कपडे, दीवारें आदि रँगते है। हिरौंजी।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

हिरमिजी†—स्त्री०=हिरमजी।

हिरवा†—पु०=हीरा।

हिरवा-चाय—स्त्री० [हिं० हीरा+चाय] एक प्रकार की सुगधित घास जिसकी जड से नीबू की-सी सुगध निकलती है और जिससे सुगधित तेल बनता है।

हिरस†—स्त्री०=हिर्स।

हिरा—स्त्री० [स०] रक्तवाहिनी नाडी या शिरा।

हिरात—पु० [?] अफगानिस्तान की सीमा के पास का एक प्रदेश।

हिराती—वि० [हिरात प्रदेश] हिरात नामक स्थान का।

पु० उक्त देश का घोडा जिसके सबध मे कहा जाता है कि यह गरमी मे भी नही थकता।

हिराना†—अ० [हिं० हिलाना=प्रवेश करना] खेतों मे भेड, बकरी, गाय आदि चौपाये रखना जिसमे उनकी लेंड़ी या गोबर से खेत मे खाद हो जाय।

अ०, स०=हेराना।

हिरावल†—पु०=हरावल।

हिरास—स्त्री० [फा०] १ भय। त्रास। २. खेद। दुःख। ३. निराशा। ना-उम्मेदी।

वि० १. खिन्न। दुःखी २ निराश या हताश।

हिरासत—स्त्री० [अ०] [वि० हिरासती] किसी को इस प्रकार अपने बन्धन या देख-रेख मे रखना कि वह भागकर कही जाने न पाये। जैसे—पुलिस ने अभियुक्तों को हिरासत मे ले लिया। अभिरक्षा। परिरक्षा। (कस्टडी) २ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार के लोग बद कर के रखे जाते हैं। (लाक-अप)

क्रि० प्र०—मे करना।—मे लेना।

हिरासती—वि० [अ० हिरासत] १. हिरासत-सबधी। हिरासत का। जैसे—हिरासती कोठरी। (व्यक्ति) जो हिरासत मे रखा गया या लिया गया हो।

हिरासाँ—वि० [फा०] १. निराश। ना-उम्मेद। २. जो साहस छोड़ या हिम्मत हार चुका हो। पस्त। ३. उदासीन या खिन्न।

हिरिस—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी छाल भूरे रग की होती है। यह फागुन और चैत्र मे फलता है। इसके फलो का स्वाद खट-मीठा होता है।

† स्त्री०=हिर्स।

हिरौंजी—वि०, स्त्री०=हिरमजी।

हिरौल†—पु०=हरावल।

हिर्फत—स्त्री०=हिरफत।

हिर्स—स्त्री० [अ०] १ ऐसी तृष्णा या लोभ जो सहसा मिट न सके और जिसकी तृप्ति की आकाक्षा बनी रहे। निम्न कोटि का लालच या वासना।

क्रि० प्र०—मिटना।—मिटाना।

मुहा०—हिर्स छूटना=मन मे लालच होना। तृष्णा होना।

२. किसी की देखा-देखी होनेवाली कुछ काम करने की इच्छा या प्रवृत्ति। स्पर्द्धा। रीस।

पद—हिर्सा-हिर्सी।

हिर्सा हिर्सी—अव्य० [अ० हिर्स] दूसरो को करते देखकर उनसे होड करने के लिए।

हिर्सी—वि० [अ०] बहुत अधिक हिर्स या लालच करनेवाला। लालची।

पद—हिर्सी टट्टू=दूसरो की देखा-देखी लोभ या हिर्स करनेवाला व्यक्ति।

हिर्सौहा—वि० [अ० हिर्स+हिं० औंहा (प्रत्य०)] जिसे बहुत अधिक हिर्स हो। लालची। लोभी।

हिलंदा—वि० [देश०] [स्त्री० हिलदी] मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा।

हिलकना†—अ० [अनु० या स० हिक्का] १. हिचकियाँ लेना। २. सिसकना। उदा०—देखकर चुप-चाप हिलक उठी।—वृन्दावन लाल वर्मा। ३. सिकुडना।

†अ०=हिलगना।

हिलकी†—स्त्री० [अनु० या स० हिक्का] १. हिचकी। २ सिसकी।

हिलकोर†—स्त्री०=हिलकोरा (हिलोर)।

हिलकोरना—स० [हिं० हिलकोरना] १ हिलकोरे या लहरें उत्पन्न करना। २. ताल, नदी आदि के शात जल को क्षुब्ध करना।

हिलकोरा—पु० [स० हिल्लोल] हिलोर। लहर। तरग।

क्रि० प्र०—उठना।

मुहा०—हिलकोरे लेना=तरगित होना। लहराना।

हिलग†—स्त्री०=हिलगत।

हिलगत—स्त्री० [हिं० हिलगना] १ हिलगने की अवस्था, क्रिया या

भाव। २. लगाव । सम्बन्ध। ३. प्रेम। स्नेह। ४. हेल-मेल । ५. आदत। टेव। बान।
क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

हिलगन*—स्त्री०=हिलगत। उदा०—हिलगन कठिन है या मन की।—कुंभनदास।

हिलगना—अ० [सं० अभिलग्न, प्रा० अहिलग्ग] १. किसी वस्तु के साथ लगकर अटकना, ठहरना या रुकना। २. उलझना। फँसना। ३. प्रायः पास आते रहने के कारण हिलना-मिलना। परचना। जैसे—बच्चे का नये नौकर के साथ हिलगना। ४. बहुत पास या समीप आना। सटना।

हिलगाना—स० [हिं० हिलगना का स०] हिलगने में प्रवृत्त करना। ऐसा करना जिससे कुछ या कोई हिलगे।

हिलना—अ० [सं० हल्लन] १ अपने स्थान से कुछ इधर या उधर होना। कुछ या सूक्ष्म गति में आना। चलायमान होना। जैसे—हवा से पेड़ की पत्तियाँ हिलना।
मुहा०—हिलना-डोलना=(क) थोड़ा इधर-उधर होना। (ख) घूमना-फिरना। (ग) किसी काम के लिए उठना या आगे बढ़ना। (घ) काम-धंधा, उद्योग या परिश्रम करना।
२ कंपित होना। काँपना। ३. लहराना। ४ झूमना। ५ जमा या दृढ़ न रहना। ढीला होना। ६ (पानी में) पैठना। धँसना। ७ (मन का) चंचल होना। डिगना। ८ किसी चीज का खिसकना या सरकना।
अ० [हिं० हिलगना] हेल-मेल में आना। परचना। हिलगना। जैसे—यह लड़का हमसे बहुत हिल गया है।
पद—हिलना-मिलना=(क) मेल-जोल या घनिष्ठ संबंध स्थापित करना। (ख) एक चीज का दूसरी चीज में पूरी तरह से मिल जाना। हिल-मिलकर=(क) मेल-जोल के साथ। एक होकर। (ख) इकट्ठे या सम्मिलित होकर। हिला-मिला या हिला-जुला=मेल-जोल में आया हुआ। परचा हुआ। परिचित और अनुरक्त। जैसे—यह बच्चा तुमसे खूब हिला-जुला है।

हिलमोचिका, हिलमोची—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का साग।

हिलसा—स्त्री० [सं० इलिश] एक प्रकार की मछली जो चिपटी और बहुत काँटेदार होती है।

हिलाना—स० [हिं० हिलना का स०] १ किसी को हिलने में प्रवृत्त करना। ऐसा कार्य करना जिससे कुछ या कोई हिले। २. किसी को उसके स्थान से ऊपर-नीचे या इधर-उधर करना। खिसकाना या हटाना। ३ कंपित करना। कँपाना। ४ प्रविष्ट करना या कराना।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।
स०=हिलगाना। जैसे—बच्चे को प्यार करके अपने साथ हिलाना।

हिलाल—पुं० [अ०] १. शुक्ल पक्ष के आरम्भ का चन्द्रमा जो प्रायः धनुषाकार होता है। २ बँधी हुई पगड़ी की वह उठी हुई ऐंठन जो सामने माथे के ऊपर पड़ती है।

हिलुड़ना†—अ० [हिं० हिलोर] (जल का) लहरों से युक्त होना।
†अ०=हिलना।

हिलोर—स्त्री० [सं० हिल्लोल] तरंग। लहर।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।

हिलोरना—स० [हिं० हिलोर+ना (प्रत्य०)] १. पानी को इस प्रकार हिलाना कि उसमें तरंगें उठें। २. किसी तरल पदार्थ को मथने की-सी क्रिया करना। ३. इधर-उधर हिलाते रहना। लहराना। ४. बिखरी हुई चीजें जल्दी-जल्दी समेटना। ५. चारों ओर से खूब तेजी से इकट्ठा करना। जैसे—आज-कल वह खूब रुपये हिलोर रहे हैं।

हिलोरा—पुं० [हिं० हिलोर] बड़ी तथा ऊँची लहर।

हिलोल—पुं०—हिल्लोल।

हिल्म—पुं० [अ०] १. सहनशीलता। २. सुशीलता।

हिल्ला—पुं० [?] कीचड़।
†पुं०=हील्ा (मिस)।

हिल्लोल—पुं० [सं०] १. हिलोरा। तरंग। लहर। २. आनन्द या प्रसन्नता की तरंग। मौज। ३ काम-शास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति-बन्ध। ४. हिंडोल राग।

हिल्लोलन—पुं० [सं०] [भू० कृ० हिल्लोलित] १. तरंग या तरंगें उठना। लहराना। २. काँपना। ३. झूलना। ४. हिलना।

हिल्सा—स्त्री०=हिलसा (मछली)।

हिवँ—पुं० [सं० हिम] १. बर्फ। २. पाला।

हिवंचल—पुं० [सं० हिम] हिम। पाला। बरफ।
†पुं०=हिमाचल (हिमालय)।

हिव†—अव्य० १=अब। २=अभी। (राज०)

हिवड़ा†—पुं०=हिय। हृदय। (राज०) उदा०—चोट लगी निज नाम हरीरी, म्हाँरे हिवडे खटकी।—मीराँ।

हिवाँर—पुं० [सं० हिम+आलि] १. बरफ। पाला। तुषार।
वि० हिम की तरह का। बहुत ठंढा।

हिस—पुं० [अ०] १. अनुभव। ज्ञान। २ चेतना। [illegible]।
पद—बेहिस व हरकत=निश्चेष्ट और निःसंज्ञ। बेहोश और सुन्न।

हिसका—पुं० [सं० ईर्ष्या, हिं० हीस] १. ईर्ष्या। डाह। २ प्रतिस्पर्धा। होड़।
पद—हिसका-हिसकी=चढ़ा-ऊपरी। होड़।

हिसाब—पुं० [अ०] [वि० हिसाबी] १. वह कला या विद्या, जिसके द्वारा संख्याएँ गिनी, घटाई और जोड़ी जाती हैं अथवा उनका गुणा या भाग किया जाता है। गणित। (एरिथमेटिक) २. उक्त विद्या के अनुसार मान, मूल्य, आदि गिन, जोड़ या समझकर उनका ब्योरा या लेखा तैयार करने का काम। (कैलकुलेशन)
क्रि० प्र०—करना।—जोड़ना।—निकालना।—लगाना।
४. आय-व्यय, लेन-देन आदि का लिखा जानेवाला ब्योरा या विवरण। लेखा। (एकाउन्ट)
पद—कच्चा हिसाब=ऐसा हिसाब जिसमें या तो ब्योरे की बातें पूरी तरह से न भरी गई हों अथवा जिसमें के लेन-देन का विवरण अंतिम और निश्चित रूप से लिखा जाने को हो। चलता हिसाब=ऐसा हिसाब जिसमें लेन-देन का क्रम अभी चल रहा हो और जिसका खाता अभी बन्द न हुआ हो। पक्का हिसाब=आय-व्यय, लेन-देन आदि की सब मदों का ठीक और पूरा लिखा हुआ हिसाब। बे-हिसाब=(क) जिसका लेखा या विवरण ठीक तरह से न रखा गया हो। (ख) इतना अधिक कि

सहज मे उसका हिसाव लगाया न जा सकता हो। (ग) साधारण नियम, परिपाटी, प्रथा आदि के विरुद्ध। मोटा हिसाव=अनुमान, कल्पना आदि के आधार पर स्थूल रूप से प्रस्तुत किया हुआ ऐसा हिसाव जिसमे आगे चलकर कमी-वेशी की जा सकती हो। मुहा०—(किसी का) हिसाव करना=यह स्थिर करना कि कितना पावना या लेना है और कितना देना । हिसाव चलना=(क) लेन-देन का क्रम चलता रहना। (ख) लेन-देन का लेखा चलता रहना। हिसाव चुकता, वरावर या वेवाक करना=किसी का जो कुछ वाकी निकलता हो, वह उसे दे देना। हिसाव चुकाना=हिसाव चुकता करना। हिसाव जाँचना=यह देखना कि आय-व्यय की जो मदें लिखी गई है,वे सब ठीक हैं या नही। हिसाव जोड़ना=अलग-अलग लिखी हुई रकमो का जोड़ लगाना । योग करना । (किसी को) हिसाव देना या समझाना=आय-व्यय का जमा खर्च आदि का ठीक और पूरा विवरण वतलाना। हिसाव वंद करना=लेन-देन आदि का व्यवहार समाप्त करना । हिसाव वैठाना या लगाना=आय-व्यय आदि का ठीक और पूरा जोड प्रस्तुत करना । हिसाव मे लगाना=अपने पिछले पावने या लेन-देन के खाते मे सम्मिलित करना। जैसे—उन्होंने ये दोनो रकमे हिसाव मे लगा ली है। हिसाव रखना=(क) आमदनी-खर्च आदि का व्योरा लिखना। (ख) किसी से ली और उसे दी हुई चीजो या रकमो का व्योरा लिखते चलना।(किसी से) हिसाव लेना या समझना=यह जानना और समझना कि आय-व्यय कितना हुआ है ; और जो हुआ है, वह ठीक है या नही। ४ गणित से सबध रखनेवाला वह प्रश्न जो विद्यार्थियों की योग्यता की परीक्षा के लिए उनके सामने रखा जाता है। जैसे—आठ मे से मेरे पाँच हिसाव ठीक निकले और तीन गलत हुए।

क्रि० प्र०—करना।—निकालना।—लगाना।

५ किसी वस्तु के मान, मूल्य, सख्या आदि का निश्चित अनुपात या दर। भाव। जैसे—यह चावल तुमने किस हिसाव से खरीदा है। ६ किसी की दृष्टि मे होनेवाला महत्त्व, मान, मूल्य आदि का विचार। जैसे—(क) हमारे हिसाव से तो वह कुछ भी नही है, तुम्हारे हिसाव से भले ही वहुत वडा पण्डित हुआ करे। (ख) हमारे हिसाव से जैसे तुम, वैसे वह। ७ किसी प्रकार का निश्चित नियम, परिपाटी या व्यवस्था। जैसे—तुम्हारे आने-जाने का कोई ठीक हिसाव ही समझ मे नही आता। ८ किसी के आचार-व्यवहार आदि का क्रम या ढंग; अथवा उसके फलस्वरूप होनेवाली अवस्था या दशा। जैसे—उनका जो हिसाव पहले था, वही अव भी है। ९ ऐसी स्थिति जिसमे भले-वुरे, हानि-लाभ आदि का ठीक तरह से ध्यान रखा जाता है। जैसे—वह वहुत हिसाव से रहता है, और थोडी आमदनी होने पर भी इतनी वड़ी गृहस्थी चलाये चलता है। १० पारस्परिक व्यवहार, साहचर्य आदि मे होनेवाली अनुकूलता या समानता।

मुहा०—(किसी से) हिसाव वैठना=प्रकृति, व्यवहार आदि की ऐसी अनुकूलता जिसमे सग, साथ या साहचर्य वना रहे। जैसे—इससे तुम्हारा हिसाव नही वैठता, इसी लिए प्राय खटपट होती रहती है।

११ किसी कार्य की सिद्धि के लिए निकाला जानेवाला ढंग या युक्ति।

मुहा०—हिसाव वैठाना=ऐसा उपाय या युक्ति करना, जिससे कार्य सिद्ध हो जाय। जैसे—तुम मुँह ताकते रह गये और उसने अपनी नौकरी का हिसाव वैठा ही लिया।

हिसाव-किताव—पु० [अ०] १ आय-व्यय आदि का (विशेषत लिखा हुआ) व्योरा या लेखा। २. उससे सबध रखनेवाली पजियाँ और वहियाँ। ३ व्यापारिक लेन-देन का व्यवहार। ४ ढग। तरह। प्रकार। जैसे—उनका हिसाव-किताव हमारी समझ में ही नही आता।

हिसाव-चोर—पु० [अ० हिसाव+हि० चोर] वह जो व्यवहार या लेखे मे कुछ गडवडी करना या लोगों की रकमें दवा लेना हो।

हिसाव-वही—स्त्री० [अ० हिसाव+हि० वही] वह पजी या वही, जिसमे आय-व्यय या लेन-देन आदि का व्योरा लिखा जाता हो।

हिसाविया—पु० [हि० हिसाव] १ हिसाव या गणित का अच्छा ज्ञाता। २ वह जो हर काम या वात मे सव वातों का खूव आगा-पीछा सोचने का अभ्यस्त हो। जैसे—जो वहुत वडा हिसाविया हो, उसकी वात-चीत मे पार पाना कठिन है।

पु०=हिसावी।

हिसावी—वि० [अ०] १ हिसाव-सम्वन्धी। २. हिसाव से, फलत समझ-वूझकर काम करनेवाला। ३. चतुर। चालाक।

हिसार—पु० [फा०] १. अहाता। घेरा। २ किले आदि की चहार-दीवारी या परकोटा।

मुहा०—हिसार वाँधना=चारो ओर सैनिक आदि खडे करके घेरा डालना।

३. फारसी सगीत की २४ शोभाओं या अलकारो मे से एक।

हिसालू—पु० [हि० आलूका अनु०] एक प्रकार का छोटा पौधा या वेल जिसके लाल गूदेदार और रसीले फल खाये जाते है। (स्ट्रावेरी)

हिसिषा†—स्त्री० [स० ईर्ष्या] १. तुल्यता। समानता। २ किसी की वरावरी करने की भावना। प्रतियोगिता। होड।

हिस्टीरिया—पु० [अं०] एक प्रकार का स्नायविक रोग, जो प्राय स्त्रियो को अधिक होता है और जिसमे रोगी वहुत अधिक उत्तेजित होकर प्राय वे-होश-सा हो जाता है।

हिस्सा—पु० [अ० हिस्स] १. उन अवयवों मे से हर एक, जिनके योग से कोई चीज वनी हो। जैसे—(क) पानी का एक हिस्सा आक्सीजन है और दो हिस्से हाइड्रोजन। (ख) खून भी हमारे शरीर का एक हिस्सा है। २ किसी वस्तु के विभक्त किये हुए अलग-अलग समझे या माने जानेवाले अथवा कुल से कुछ घटकर या कम होनेवाले अगो मे से हर एक। जैसे—(क) एक सेव के चार हिस्से करना। (ख) इस योजना के भी तीन हिस्से है। (ग) मकान के आगे और पीछेवाले हिस्से वाद मे वनेंगे। ३. वँटवारे, विभाजन आदि मे जो कुछ किसी एक व्यक्ति या पक्ष को प्राप्त हुआ या होता हो। जैसे—(क) पिता की विशाल सपत्ति मे से उनके हिस्से मे दो मकान और एक दुकान ही आई है। (ख) उसका हिस्सा उसके भाई मार ले गये है। ४. वह धन जो किसी साझे की वस्तु या व्यवसाय में कोई एक या हर एक साझेदार लगाये हुए हो। पत्ती। जैसे—इस कारोवार मे उनका पाँच आने का हिस्सा है। ५. साझेदार को अपने हिस्से के अनुसार मिलनेवाला लाभ का आनुपातिक अश। ६. वह गुण या वात जिसमे

विशेष रूप से कोई उत्कृष्ट या प्रवीण हो। जैसे—गद्य मे चोज लाना बाबू बालमुकुद गुप्त के ही हिस्से था। ७. किसी चीज के साथ मिला हुआ उसका कोई अग या अवयव। जैसे—छाती के बाएँ हिस्से मे जिगर या हृदय होता है।

हिस्सा-रसद—अव्य०[अ०+फा०] किसी चीज के विभाग या हिस्से होने पर आनुपातिक रूप से। हर पानेवाले के हिस्से के मुताबिक। हर हिस्सेदार के अश के अनुसार। जैसे—यह सारी जायदाद सभी उत्तराधिकारियों मे हिस्से-रसद बाँटी जायगी।

हिस्सेदार—पु० [अ०हिस्स+फा० दार (प्रत्य०)] [भाव० हिस्सेदारी] १. वह जिसका किसी सपत्ति या व्यवसाय मे हिस्सा हो। अशधारी। (शेयर होल्डर) जैसे—(क) इस मकान के चारो भाई बराबर के हिस्सेदार है। (ख) इस सस्थान मे मैं ४ आने का हिस्सेदार हूँ। २. किसी कार्य, सेवा आदि मे योगदान करनेवालों मे से हर एक। जैसे—चोरी की योजना बनाने मे वे सभी हिस्सेदार रहे हैं।

हिस्सेदारी—स्त्री०[अ० हिस्स+फा० दारी] हिस्सेदार होने की अवस्था, अधिकार या भाव।

हिहिनाना—अ० [अनु० हिं हिं] घोडो का हिनहिनाना। हींसना।

हीं—अ० व्रज-भाषा और अवधी 'ही' (थी) का बहु०। उदा०—जिनको नित नीके निहारत ही . . .।—घनानन्द।

हींग—स्त्री०[सं० हिंगु] एक प्रकार का छोटा पौधा जो अफगानिस्तान और फारस मे आप से आप और बहुत होता है। २. उक्त पौधे का निर्यास जो जमकर गोद के समान हो जाता है तथा जो औषध और मसाले के रूप मे व्यवहृत होता है। (एसेफेटाइडा)

हींगड़ा†—पु० [हिं० हीग+ड़ा (प्रत्य०)] एक प्रकार की घटिया हीग।

हींगना†—अ०=हीसना।

हींगलू—पु० [सं० हिंगुल] ईंगुर। (राज०) उदा०—ग्रिह ग्रिह पति भीति सुगारि हीगलू।—प्रिथीराज।

हींचना†—स०=खीचना।

हींछा†—स्त्री०=इच्छा।

हींछना†—स० [स० इच्छा] इच्छा करना। चाहना।

हीछा†—स्त्री०=इच्छा।

हींजड़ा†—पु०=हिजडा।

हींठी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जोक।

हींडना†—अ० [हिं० हुड़ना] चलना-फिरना। घूमना। उदा०—सोवन कविरन हीडिया सुन्न समाधि लगाय।—कबीर।

स० [?] तलाश करना। खोजना। ढूँढना।

हींडोल†—पु० [स० हिंदोल] झूला। हिंडोल। उदा०—भवि मैं हीदी हीउर्ले मणिवर।—प्रिथीराज।

हींस†—स्त्री० [अनु०] १. घोडो के हीसने या हिनहिनाने की क्रिया या भाव। २ हींसने या हिनहिनाने का शब्द। हिनहिनाहट।

हींसना—अ० [हिं० हीस+ना] १ घोड़े का हिनहिनाना। २. गधे का रेंकना।

हींसा†—पु०=हिस्सा।

†स्त्री०=हिंसा।

हीं हीं—स्त्री० [अनु०] तुच्छता-पूर्वक हंसने का शब्द।

ही—अव्य० [स० हि (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों मे होता है। (क) केवल जोर देने के लिए। जैसे—अब तुम ही बतलाओ कि क्या किया जाय। (ख) केवल मात्रा आदि की तरह अल्पता या परिमिति सूचित करने के लिए। जैसे—वहाँ दो ही तो आदमी थे। (ग) किसी प्रकार की दृढता या निश्चय सूचित करने के लिए। जैसे—(क) वह काम तो होकर ही रहेगा। (ख) मैंने यही बात कही थी। (ग) अवज्ञा, उपेक्षा, हीनता आदि सूचित करने के लिए। जैसे—अब वह आकर ही क्या करेगा। (घ) बहुत कुछ समान। प्रायः। लगभग। जैसे—वह शोभा के विचार से श्री की बहन ही थी।

विशेष—कुछ सर्वनामो तथा अव्ययो के साथ यह संयुक्त भी हो जाता है। इसी=इस+ही; उसी=उस+ही, यहीं=यहाँ+ही, कहीं=कहाँ+ही, वहीं=वहाँ+ही।

†अव्य० १. ब्रजभाषा मे 'था' वाचक 'हो' का स्त्री०। उदा०—मुनि नारी पापान ही।—रहीम। २. अवधी मे 'था' वाचक 'हो' का स्त्री०।

पु०=हिय (हृदय)। जैसे—ही-तल=हृदय-तल।

हीअ—पु०=हिय (हृदय)।

हीक—स्त्री० [स० हिक्का] १. हिचकी। २. किसी प्रकार की अप्रिय, सडी हुई तथा तीव्र गन्ध। जैसे—(क) हुक्के के पानी की हीक। (ख) इस तरकारी मे से कुछ हीक आ रही है। (ग) हाजमा खराब होने पर ही पेट मे से हीक उठती है।

क्रि० प्र०—आना।

हीचना†—अ० [अनु०]=हिचकना।

हीछना†—स०=हीछना (चाहना)।

हीछा†—स्त्री०=इच्छा।

हीज†—वि० [हिं० हिजड़ा] १. आलसी। २. सुस्त।

हीजड़ा†—पु०=हिजडा।

हीठना—अ० [स० अधिष्ठा, प्रा० अहिट्ठा] १. पास जाना। समीप जाना। २ कही जाना या पहुँचना। ३. घुसना। पैठना। जैसे—उसे अपने यहाँ हीठने न देना।

हीड़—स्त्री० [?] एक प्रकार का प्रबन्ध काव्य जो बुन्देलखड, मालवे, राजस्थान आदि मे गूजर लोग दिवाली के समय गाते है।

हीडना†—अ०=हीडना (घूमना-फिरना)।

ही-तल—पु० [स० हृदय+तल] १ हृदय का तल। २ हृदय। उदा०—तब मधुर मूर्ति अतीत कै करत हीतल सीत।—प्रसाद।

हीन—वि० [स०√हा (छोडना)+क्त त=न-ईत्व] [स्त्री० हीना, भाव० हीनता] १ छोडा या त्यागा हुआ। त्यक्त। २. किसी की तुलना मे बहुत ही खराब, घटकर या बुरा। जैसे—हीन दशा। ३ जिसका कुछ भी महत्व या मूल्य न हो। तुच्छ और नगण्य। ४. समस्त पदो के अत मे किसी गुण, तत्त्व, वस्तु आदि से रहित। खाली। जैसे—जन-हीन, धन-हीन, बल-हीन। ५ औरो या बहुतो की अपेक्षा घटकर। निम्न कोटि का। जैसे—उसने भी मुझे हीन समझा और मुझे क्रोध-पूर्वक देखने लगा। (इन्फीरियर) ६. किसी की तुलना मे कम, थोड़ा या हलका।

पु० धर्म-शास्त्र मे ऐसा साथी जो प्रामाणिक या विश्वसनीय न हो।
पु० [अ०] काल। समय।
यौ०—हीन-हयात। (देखें)
हीनक—वि० [स०] किसी चीज या वात से वचित या रहित।
हीनक मनोग्रथि—स्त्री० [स०] मन मे होनेवाली यह धारणा या भावना कि हम किसी दूसरे से या औरो से छोटे या हीन है। (इन्फीरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स)
हीन-कर्मा—वि० [स० व० स०] १ यज्ञादि विधेय कर्म से रहित। जैसे—हीनकर्मा ब्राह्मण। २. अनुचित या वुरे कर्म करनेवाला।
हीन-कुल—वि० [स०] व० स०] वुरे या नीच कुल का।
हीन-क्रम—पु०[स०] साहित्य मे, एक प्रकार का दोप जो वहाँ माना जाता है, जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाये गये हो, उसी क्रम से गुणी न गिनाये गये हो।
हीन-ग्रंथि—स्त्री० [स० हीन+ग्रथि] दे० 'हीनक मनोग्रथि'।
हीन-चरित—वि० [स० व० स०] जिसका आचरण वुरा हो। दुराचारी।
हीनच्छिदिक—पु० [स०] वह सघ या श्रेणी जो कुल, मान-मर्यादा, शक्ति आदि मे वहुत घटकर हो। (कौ०)
हीनता—स्त्री० [स० हीन+तल्-टाप्] १. हीन होने की अवस्था या भाव। २ वह आचरण, कार्य या वात जो किसी के हीन होने की सूचक हो। ३. न होने की अवस्था या भाव। अभाव। ४. ओछापन। तुच्छता।
हीनत्व—पु० [स०]=हीनता।
हीन-पक्ष—पु० [स० मध्य० स०] न्याय मे ऐसा पक्ष जो प्रमाणित या सिद्ध न हो सकता हो।
हीन-वल—वि० [स० व० स०] =वलहीन (कमजोर)।
हीन-वुद्धि—वि०[स०व० स०] १ खराव या दुष्ट वुद्धि वाला। दुर्वुद्धि। २. वुद्धि से रहति। मूर्ख।
हीन-भावना—स्त्री०=हीनक मनोग्रथि।
हीन-यान—पु० [स०] वौद्ध धर्म की एक प्रसिद्ध प्रारम्भिक शाखा या सप्रदाय, जिसमे त्याग, वैराग्य आदि के द्वारा निर्वाण प्राप्त करने के लिए साधना की जाती थी।
विशेष—परवर्त्ती शाखाओ ने केवल तिरस्कार के भाव से उक्त शाखा का यह नाम रखा था। इसका विकास वरमा, श्याम आदि देशो मे हुआ था।
हीन-यानी—वि० [म० हीन-यान] हीन-यान सवधी। हीन-यान का। पु० हीन-यान का अनुयायी।
हीन-योग—वि० [स० व० स०] जो योग-साधना से च्युत या भ्रष्ट हो चुका हो।
पु० वैद्यक मे वह अवस्था, जिसमे कोई ओपधि या वस्तु अपनी उचित मात्रा से कम मिलाई गई हो।
हीन-योनि—वि० [स० व० स०] १ कुलटा या चरित्र-भ्रष्ट स्त्री से उत्पन्न। २ जिसकी उत्पत्ति छोटे या नीच कुल मे हुई हो।
हीन-रस—पु० [स०] साहित्य मे एक प्रकार का दोप, जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसग लाने से होता है।
हीन-वर्ण—पु० [स० व० स०] नीच जाति या वर्ण। शूद्र वर्ण।
वि० निम्न जाति या वर्ण का।
हीन-वाद—पु० [स०] १. व्यर्थ का तर्क। फजूल की वहस। २ झूठी गवाही।
हीन-वादी—वि० [स० हीनवादिन्] [स्त्री० हीन-वादिनी] १ व्यर्थ का तर्क करनेवाला। २ झूठी गवाही देने या झूठा मुकदमा चलानेवाला। ३. परस्पर-विरोधी वातें कहनेवाला।
हीन-वीर्य—वि० [स० व० स०] १ वल या शक्ति से रहित। विलकुल कमजोर। २ नपुसक।
हीन-हयात—पु० [अ०] १. वह समय जिसमे कोई जीता रहा हो। जीवन-काल। जैसे—उन्होने हीन-हयात मे ही सारी जायदाद का वँटवारा कर दिया था।
अव्य० जव तक जीवन रहे तव तक। जैसे—हीन-हयात मुआफी।
हीनाग—वि०[स० व० स०]१. अग या अगो से रहित। नष्ट या नष्टप्राय अगवाला। २ अधूरा।
हीना-पटीन—पु०[स०] ऐसा जुरमाना जिसके साथ हरजाना भी देना पडे।
हीनार्थ—वि०[स०] १ जिसका कार्य सिद्ध न हुआ हो। निष्फल। २ जिसे कोई लाभ न हुआ हो। ३ जिसका कोई अर्थ न हो, अथवा अनुचित या वुरा अर्थ हो।
हीनित—भू० कृ०[सं०] किसी चीज या वात से रहित या वचित किया हुआ।
हीनोपमा—स्त्री० [स०] साहित्य मे उपमा का एक प्रकार, जिसमे वडे उपमेय के लिए छोटा उपमान लिया जाय। वडे की छोटे से दी जानेवाली उपमा।
हीय†—पु०=हिय।
हीयमान—वि०[स०] परिमाण, सीमा आदि के विचार से जो वरावर घटता या कम होता जा रहा हो। (डिक्रीजिंग)
हीयरा†—पु०=हियरा (हृदय)।
हीया†—पु०=हिय (हृदय)।
हीर—पु० [स० √हृ +क] १. हीरा नामक रत्न। २. शिव का एक नाम। ३ सिंह। ४. सर्प। सांप। ५ विद्युत्। विजली। ६ मोतियो की माला। ७ छप्पय के ६२ वें भेद का नाम। ८ एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, सगण, नगण, जगण, नगण और रगण होते है। ९ एक प्रकार का मात्रिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे ६, ६ और ११ के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं। कुछ लोग इसे हीरक और हीरा भी कहते हैं।
पु० [हिं० हीरा] १. किसी वस्तु के अन्दर का मूल-तत्त्व या सार-भाग। गूदा या सत। सार। जैसे—गेहूँ का हीर, सौफ का हीर। २ इमारती लकडी के अन्दर का सार-भाग जो छाल के नीचे होता है। जैसे—इस लकडी का हीर लाल होता है। ३ शरीर के अन्दर का धातु या वीर्य नामक रस। जैसे—अव उनके शरीर मे हीर तो रह ही नही गया है। ४ ताकत। वल। शक्ति।
पु०[देश०] एक प्रकार की लता जिसकी टहनियो और पत्तियों पर भूरे रग के रोएँ होते हैं। इसकी जड़ और पत्तियो का व्यवहार ओपधि के

रूप मे होता है। इसके पके फलो के रस से बैंगनी रग की स्याही बनती है, जो बहुत टिकाऊ होती है।

हीरक—पु०[स०]१ हीरा नामक रत्न। २ हीर नामक मात्रिक सम-वृत्त छन्द।

हीरक-जयन्ती—स्त्री० [स०] किसी व्यक्ति, सस्था, महत्त्वपूर्ण कार्य आदि की वह जयती जो उसके जन्म या आरभ होने के ६० वें वर्ष होती है। (डायमण्ड जुबिली)

हीरा—पु० [स० हीरक] १. एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर, जो अपनी कठोरता या चमक के लिए प्रसिद्ध है। वज्रमणि।

विशेष—वैज्ञानिक दृष्टि से यह विशुद्ध कार्बन है जो रवे के रूप मे जमा हुआ होता है।

मुहा०—हीरा खाना या हीरे की कनी चाटना=हीरे का चूर खाना जो प्राय मृत्यु का कारण होता है।

२ लाक्षणिक रूप मे बहुत ही अच्छा आदमी। नर-रत्न। जैसे—वह तो हीरा था। ३ अपने वर्ग की सबसे अच्छी चीज। सर्वोत्तम वस्तु। ४. साधुओ की परिभाषा मे रुद्राक्ष या इसी प्रकार का और कोई अकेला मनका जो प्राय साधु लोग गले मे पहनते है। ५. एक प्रकार का दुबा। भेडा।

हीराकसीस—पु० [हिं० हीर+स० कसीस] लोहे का वह विकार जो गधक के कारण रासायनिक योग से होता है।

हीरा-दोखी—पु०[हिं० हीरा+दोषी] विजयसाल का गोद जो दवा के काम मे आता है।

हीरा-नखी—पु० [हिं० हीरा+नख] एक प्रकार का बढिया अगहनी धान जिसका चावल बहुत महीन और सफेद होता है।

हीरा-मन—पु०[हिं० हीरा+मणि] एक प्रकार का कल्पित तोता जिसका रग सोने का सा माना जाता है।

हील†—पु० [देश०]१ पनाले आदि का गदा कीचड। गलीज। २ कीचड ३ एक प्रकार का सदाबहार पेड़, जिसके तने से गोद निकलता है। अरदल। गोरक।

हीलना†—अ०=हिलना।

हीला—पु० [अ० हील]१. छल। धोखा। २. ऐसा कारण या हेतु जो कुछ छिपा या दबा रहकर किसी प्रकार का परिणाम या फल दिखाता हो। निमित्त। वसीला। व्याज। जैसे—चलो इसी हीले से बेचारे को कुछ दिनो के लिए नौकरी तो मिल गई।

मुहा०—हीला निकालना=उपाय, ढग या रास्ता निकालना।

३ किसी काम या बात के सबध मे ऐसा बहाना जिसका नाम-मात्र के थोडा-बहुत वास्तविक आधार या कारण भी हो।

विशेष—'बहाना' से इसमे यह अतर है कि यह उतना कलुषित या निंदनीय नही होता, जितना 'बहाना' होता है।

क्रि० प्र०—ढूंढना।—निकालना।—बनाना।

पद—हीला-हवाला।

४. दे० 'बहाना' और 'मिस'।

†पु०=हिल्ला (कीचड़)।

हीला-हवाला—पु०[अ० हील+हवाल.] टाल-मटोल या बहानेबाजी की बातें।

हीला-हवाली—स्त्री०=हीला-हवाला।

हीलो-हल—पु० [स० हिल्लाल] हल्ला। शोर। (राज०) उदा०—हेंका कह हेका हीलो-हल।—प्रिथीराज।

हींस—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कँटीली लता, जो गरमी मे फूलती और बरसात मे फलती है। इसकी पत्तियाँ और टहनियाँ हाथी बहुत चाव से खाते है।

हीसका†—स्त्री०[?]ईर्ष्या।

हीसना—स०[स० ह्रस=घटना] कम करना। घटाना।

अ० कम होना। घटना।

†पु०=हींसना (हिनहिनाना)।

हीसा‹—स्त्री० दे० 'हीसका'।

†पु०=हिस्सा।

ही-ही—स्त्री०[अनु०] अशिष्टता या असभ्यतापूर्वक ही-ही शब्द करके हँसने की क्रिया। तुच्छतापूर्वक हँसना।

हुँ—अव्य०[अनु०] एक सकारात्मक शब्द जो किसी बात को सुननेवाला यह सूचित करने के लिए बोलता है कि हम सुन रहे है। हाँ।

हुँकना†—अ०=हुकारना।

हुँकरना†—अ०=हुकारना।

हुकार—पु० [स० हुं√कृ (करना)+घञ्]१. जोर से डाँटने-डपटने का शब्द। २. लड़ने-भिडने के लिए ललकारने का शब्द। ३. किसी प्रकार का उग्र और जोर का शब्द। ४ चिल्लाहट। चीत्कार।

हुंकारना—अ०[स० हुकार+ना (प्रत्य०)]१ डाँटने-डपटने के लिए जोर का शब्द करना। २. लड़ने-भिडने के लिए ललकारना। ३ जोर से चिल्लाना।

हुँकारी—स्त्री०[हुँहुँ+करना]१ किसी की बात सुनते समय अपनी सचेतता या अवधान सूचित करने के लिए 'हुँ' करने की क्रिया। २ स्वीकृति-सूचक शब्द। हामी।

क्रि० प्र०—भरना।

†स्त्री०=विकारी (धन का मान सूचित करनेवाला चिह्न)।

हुकृत—पु० [स० हु√कृ+क्त] १ हुकार। २ सुअर की गुर्राहट। ३ बादल की गरज। ४. गौ के रँभाने का शब्द। ५ मत्र।

हुंकृति—स्त्री०=हुकार।

हुड—पु०[स०]१. भारत की एक प्राचीन बर्बर जाति। २. बाघ। व्याघ्र। ३ सूअर। ४ मेढा। ५ राक्षस। ६ अनाज की बाल।

वि० जड बुद्धिवाला। मूढ।

हुडन—पु०[स०]१. अग का सुन्न या स्तब्ध हो जाना। २ शिव का एक गण।

हुडा—पु०[स०] आग के दहकने का शब्द।

पु०[हिं० हुडी]वह रुपया जो कुछ जातियो मे वर-पक्ष से कन्या के पिता को ब्याह के लिए दिया जाता है।

हुडा-भाडा—पु० [हिं० हुडी+भाडा] महाजनी बोलचाल मे महसूल, भाडा आदि सब कुछ देकर कही पर माल पहुँचाने का निश्चयात्मक भार। (आज-कल के अँगरेजी एफ० ओ० आर० की तरह का पुराना भारतीय पद)।

हुंडार—पु०[स० हुड=मेढा अरि=शत्रु] भेड़िया।

हुंडावन—स्त्री०[हिं० हुडी]१ वह रकम, जो हुडी लिखने के समय दस्तूरी के रूप मे काटी जाती है। २ हुडी लिखने की दर।

हुडिका—स्त्री०[स०]१ प्राचीन भारत मे सेना के निर्वाह के लिए दिया जानेवाला आदेशपत्र। २ दे० 'हुडी'।

हुंडियावा†—स्त्री०=हुडावन।

हुडी—स्त्री० [देश०]१ भारतीय महाजनी क्षेत्र मे वह पत्र, जो कोई महाजन किसी से कुछ ऋण लेने के समय उसके प्रमाणस्वरूप ऋण देनेवाले को लिखकर देता था और जिस पर यह लिखा होता है कि यह धन इतने दिनो मे व्याज समेत चुका दिया जायगा। पुराने ढग का एक प्रकार का हेंड-नोट।

मुहा०—हुंडी करना=किसी के नाम हुँडी लिखना। हुडी पटना=हुडी के प्राप्य धन का चुकता होना। हुडी सकारना=यह मान लेना कि हम इस हुडी के रुपए चुका देंगे।

२. रुपए उधार लेने की एक रीति जिसमे लेनेवाले को कुछ निश्चित समय के अदर व्याज समेत कुछ किश्तो मे सारा ऋण चुका देना पडता है। ३ अपना प्राप्य धन या उसका कोई अश पाने के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिस पर यह लिखा होता है कि इतने रुपए अमुक व्यक्ति, महाजन या वैंक को दे दिये जायँ। (ड्राफ्ट, विल या विल आफ एक्सचेंज)

पद—दर्शनी हुडी। (देखें)

हुंडी-वही—स्त्री०[हिं० हुडी+वही] वह किताव या वही, जिसमे सब तरह की हुडियो की नकल रहती है।

हुंडी-बेंत—पु० [देश० हुडी+हिं० वेंत] एक प्रकार का वेंत। मयूरी वेंत।

हुंत—प्रत्य० [प्रा० विभक्ति 'हितो']१ पुरानी हिंदी मे पचमी और तृतीया की विभक्ति। से। उदा०—तव हुँत तुम विनु रहै न जीऊ।—जायसी।

अव्य०१ निमित्त। लिए। वास्ते। २ जरिये से। द्वारा।

हुंते†—अव्य० [प्रा० हितो] १ से। द्वारा। २ ओर से। तरफ से।

हुवा—पु०[देश०] समुद्र की चढती हुई लहर। ज्वार।

हुभो—स्त्री० [स०] गाय के रँभाने का शब्द।

हु†—अ० [वैदिक स० ऊप=और, आगे; प्रा० उपु, हिं० ऊ] अतिरेक सूचक शब्द। भी। जैसे—रामहु=राम भी। हामहु=हम भी।

हुअ*—पु०[स० हुत] अग्नि। आग। उदा०—हुअ दूव जरत धरत पग धरनी।—तुलसी।

हुआँ—पु०[अनु०] गीदडो के बोलने का शब्द।

अव्य०=वहाँ।

हुआ—भू० कृ० हिं० 'होना' क्रिया का भूत कृदन्त रूप। जैसे—खेल खतम हुआ।

हुआना—अ० [अन० हुआँ] गीदड का 'हुआँ हुआँ' करना।

हुक—पु०[अ०]अकुश के आकार की वडी कील जो चीजें फँसाने और लट-काने के लिए दीवार आदि मे गाडी जाती है।

†स्त्री०[हिं० हूक] कमर, पीठ आदि मे अचानक किसी नस के झटका खाने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का दर्द।

क्रि० प्र०—पड़ना।

हुकना†—अ० [देश०] १ भूल जाना। विस्मृत होना। २ वार या निशाने का चूकना।

पु० सोहन चिडिया नामक पक्षी।

हुकारना—अ०=हुँकारना।

हुकर-पुकर—स्त्री०[अनु०] १ कलेजे की धडकन। २ अधीरता के कारण मन मे होनेवाली बेचैनी या विकलता।

हुकारना†—अ०=हुँकारना।

हुकुम†—पु०=हुक्म।

हुकुर-हुकुर—स्त्री० [अनु०] दुर्बलता, रोग आदि मे होनेवाला श्वास का मन्द और शिथिल स्पन्दन।

हुकूमत—स्त्री० [अ०] १ वह अवस्था जिसमे किसी पर कोई हुक्म चलाया जाता हो। जैसे—सारे घर पर उन्ही की हुकूमत है।

मुहा०—हुकूमत चलाना=दूसरो को आधिकारिक रूप से आज्ञा देना। जैसे—वैठे वैठे हुकूमत चलाने से कुछ न होगा, उठकर कुछ काम करो। हुकूमत जताना=प्रभुत्व प्रदर्शित करना। रोव दिखाना।

२ राजकीय व्यवस्था या शासन।

हुक्का—पु०[अ०] तम्बाकू का धूआँ खीचने या पीने के लिए बना हुआ एक विशेष प्रकार का उपकरण या यत्र, जिसमे दो नालियाँ होती हैं। एक पानी भरे पेंदे से ऊपर की ओर खडी की जाती है जिस पर चिलम रहती है, और दूसरी पार्श्व मे जिसके सिरे पर मुँह लगाकर धूआँ खीचते हैं। इसके गडगडा, फरसी आदि कई प्रकार या भेद होते है।

पद—हुक्का-पानी।

क्रि० प्र०—गुडगुडाना।—पिलाना।—पीना।

मुहा०—हुक्का ताजा करना=हुक्के का पानी वदलना। हुक्का भरना=चिलम पर आग, तम्वाकू वगैरह रखकर हुक्का पीने के लिए तैयार करना।

२ दिग्दर्शक यत्र। कपास। (लश०)

हुक्का-पानी—पु०[अ०+हिं०] हिन्दुओ का अपनी जाति या विरादरी के लोगो के साथ एक दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर तम्वाकू पीने और पानी पीने का व्यवहार।

मुहा०—(किसी का) हुक्का-पानी बंद करना=किसी को जाति या विरादरी से अलग करना। पारस्परिक, सामाजिक व्यवहार छोडना या वन्द करना।

हुक्काम—पु०[अ० 'हाकिम' का वहु०] हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग। वडे अफसर।

हुक्कू—पु०[देश०] एक प्रकार का वन्दर।

हुक्म—पु०[अ०]१. आधिकारिक रूप से दिया जानेवाला ऐसा आदेश जिसका पालन औरो के लिए अनिवार्य या आवश्यक हो। आज्ञा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—मानना।—लेना।

पद—जो हुक्म=आपकी जैसी आज्ञा है, वैसा ही होगा।

मुहा०—हुक्म उठाना*=(क) आज्ञा पालन करना। (ख) आज्ञा-नुसार सव तरह की सेवाएँ करना। हुक्म चलाना=(क) आज्ञा देना। (ख) अपना वडप्पन दिखाते हुए दूसरो को काम करने के लिए कहना। जैसे—वैठे-वैठे हुक्म चलाते हो, आप जाकर क्यो नही उठा लाते। हुक्म वजाना या वजा लाना=आज्ञा का पालन करना।

२. अधिकार, प्रभुत्व आदि की वह स्थिति जिसमें कोई औरो को हुक्म

देता रहता है। जैसे—आप का हुक्म बना रहे। (आशीर्वाद और शुभ कामना)

मुहा०—(किसी के) हुक्म में होना=अधिकार या वश में होना। अधीन होना। जैसे—मैं तो बराबर हुक्म में हाजिर रहता हूँ।

३ आधिकारिक रूप से बनाये हुए नियम। विधि-विधान। जैसे—इस विषय में आज ही एक नया सरकारी हुक्म निकला है। ४. ताश के पत्तों का एक रंग जिसमें काले रंग का पान बना रहता है।

हुक्म अदूली—स्त्री० [अ०] बड़ों की आज्ञा का पालन न करना, जिसकी गिनती अशिष्टता और उद्दंडता में होती है।

हुक्म-चील—स्त्री० [?] खजूर का गोंद।

हुक्मनामा—पु० [अ०+फा०] १. वह कागज जिस पर कोई हुक्म लिखा गया हो। २. विशेषतः राजकीय आज्ञा-पत्र। शाही हुकुमनामा।

हुक्म-बरदार—वि० [अ०+फा०] [भाव० हुक्म-बरदारी] आज्ञा के अनुसार चलनेवाला। सेवक। अधीन।

हुक्म-बरदारी—स्त्री० [अ०+फा०] १. आज्ञा-पालन। २ बड़ों की सेवा।

हुक्मी—वि० [अ० हुक्म] १. दूसरे के हुक्म अर्थात् आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। जैसे—मैं तो हुक्मी बंदा हूँ, मेरा क्या कसूर ? २ निश्चित रूप से अपना गुण, प्रभाव या फल दिखानेवाला। जैसे—हुक्मी दवा, हुक्मी निशाना। ३ जो अवश्य किया जाय या होने को हो। जरूरी।

हुक्की—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की सुन्दर लता या बेल जिसके फूल ललाई लिए सफ़ेद और सुगंधित होते हैं।

†स्त्री०=हिचकी।

हुँचना†—अ० [?] चारों ओर से दबाव पड़ने पर निरुत्तर या विवश होना। उदा०—हुँच जाने पर भी डंडा खेले जाता था, हालांकि शास्त्र के अनुसार गया की बारी आनी चाहिए थी।—प्रेमचन्द।

हुजर—पु० [अ० होज़ार] एक प्रकार के पाश्चात्य घुड़सवार सैनिक जिनके हथियार हलके और वरदियाँ चमकीली होती हैं। उदा०—हुजर सवारों की कई दिशाओं से आक्रमण करने की योजना थी।—वृंदावनलाल वर्मा।

हुजरा—पु० [अ० हुजर] कोठरी विशेषतः वह कोठरी, जिसमें बैठकर ईश्वर का ध्यान किया जाता हो। (मुसलमान)

हुजूम—पु० [अ०] बहुत से लोगों का जमावड़ा। भीड़-भाड़।

हुज़ूर—पु० [अ० हुज़ूर] १ किसी बड़े की समक्षता, समीपता या सान्निध्य।

पद—हुज़ूर में=किसी बड़े आदमी के समक्ष या सामने। के आगे। जैसे—वह सब बादशाह के हुज़ूर में लाये गये।

२. बादशाह या बहुत बड़े हाकिम का दरबार।

पद—हुज़ूर महाल=मुसलमानी शासन में वह क्षेत्र, जिसमें शासन की जमींदारी होती थी।

३. बहुत बड़े लोगों को सम्बोधित करने का आदर-सूचक शब्द।

अव्य० (किसी बड़े के) हुज़ूर में। बड़े के सामने। समक्ष। उदा०—निर्मल कीन्ही आत्मा, ताथै सदा हजूरि।—कबीर।

हुज़ूरी—स्त्री० [अ० हुज़ूर+हिं० +ई (प्रत्य०)] किसी बहुत बड़े व्यक्ति का सान्निध्य या सामीप्य।

पु० किसी बड़े आदमी के सान्निध्य में रहनेवाला। हुज़ूर में रहनेवाला। बड़े आदमियों का दरबारी या पार्श्ववर्ती।

पु० १. किसी बादशाह या राजा के पास सदा रहनेवाला सेवक। २. दरबारी। मुसाहब

वि० हुज़ूर-संबंधी। हुज़ूर का।

हुज्जत—स्त्री० [अ०] [कर्ता हुज्जती] १. दो व्यक्तियों या पक्षों में होनेवाला व्यर्थ का तर्क-वितर्क और कहा-सुनी। २. किसी साधारण-सी बात को भी न सँभालते हुए उसके संबंध में किये जानेवाले व्यर्थ के प्रश्न तथा उठाई जानेवाली आपत्तियाँ। ३. जबानी होनेवाला झगड़ा। कहासुनी। तकरार।

हुज्जती—वि० [अ० हुज्जत] १ हुज्जतें करने की प्रवृत्ति या स्वभाव वाला। २. झगड़ालू।

हुड—पु० [सं०] १ मेढ़ा। २ एक प्रकार का उग्र या सुगंधित द्रव्य।

हुड़कना—अ० [अनु०] [भाव० हुड़क, हुड़कन] १. प्रिय के वियोग के कारण (विशेषतः छोटे बच्चे का) बहुत दुःखी होना और रोना। २. भयभीत और चिंतित होना। ३. तरसना।

हुड़का—पुं० [हिं० हुड़कना] १. हुड़कने की अवस्था या भाव। २. किसी के वियोग में होनेवाली उग्र मानसिक शिथिलता तथा बेचैनी जिससे व्यक्ति, विशेषतः बालक खोया-खोया-सा, पागलों-सा या बीमार रहने लगता है।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

हुड़काना—स० [हिं० हुड़क+आना (प्रत्य०)] १. किसी को हुड़कने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना, जिसमें कोई हुड़के। २ बहुत अधिक भयभीत और दुःखी करना। ललचाते हुए तरसाना।

हुड़दंग—स्त्री० [अनु०] [कर्ता हुड़दंगा] ऐसी उछल-कूद और उपद्रव जिसमें अशिष्टतापूर्वक खूब हो-हल्ला या शोर-गुल होता हो।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हुड़दंगा—वि० [हिं० हुड़दंग] [स्त्री० हुड़दंगी] हुड़दंग मचानेवाला।

पुं०=हुड़दंग।

हुड़दंगी—स्त्री०=हुड़दंग।

हुड़क—पु० [सं० हुडुक्क] १. एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल, जिसे प्रायः कहार धोबी आदि बजाते हैं। २. दे० 'हुडुक्क'।

हुडुक्क—पुं० [सं० √हुड+उक्क] १. एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल। २. मतवाला आदमी। ३ वह डंडा जिसके सिरे पर लोहा जड़ा हो। लोहबन्द। ४. किवाड़ों में लगाने का अरगला। ५. दात्यूह पक्षी।

हुत—भू० कृ० [सं० √हु (देना)+क्त] १. आहुति के रूप में दिया हुआ। जिसकी हवन में आहुति दी गई हो। २. जिसका पूर्ण रूप से उत्सर्जन या समर्पण हुआ हो।

पु० १. हवन की वस्तु। २. शिव का एक नाम।

†अ० पुरानी हिन्दी में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। उदा०—हुत पहिले औ सब है सोई।—जायसी।

अव्य० [प्रा० हितो] द्वारा। से। (अवधी)

हुतका—पु० [?] १. घूँसा। मुक्का। २. जोर का धक्का। (पूरब)

हुतना†—अ० [सं० हुत] आहुति के रूप में आग में पड़ना। हुत होना।

स०=हुनना।

हुतभक्ष—पु० [सं० हुत√भक्ष् (खाना)+अच्] आहुति का भक्षण करनेवाला। अग्नि। आग।

हुतभुक्, हुतभुज्—पु० [सं०] १ अग्नि। आग। २ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

हुत-वह—पु० [सं० हुत√वह् (ढोना)+अच्] अग्नि। आग।

हुत-शेष—पु० [सं० तृ० त०] हवन करने से बची हुई सामग्री।

हुता†—अ० [हिं० हुत] [स्त्री० हुती] 'था' का अवधी और बुन्देलखंडी रूप।

हुताग्नि—पु० [सं० ष० स०] १ वह जिसने हवन किया हो। २ अग्नि-होत्री। २. हवन-कुंड की अग्नि।

हुतात्मा—पु० [सं० हुतात्मन्] जिसने अपनी आत्मा या अपने आप को किसी काम मे लगाकर पूरी तरह से समाप्त कर दिया हो।

हुताश—पु० [सं० हुत√अश् (खाना)+अच्] १ अग्नि। २ तीन प्रकार की अग्नियो के आधार पर तीन का वाचक पद। ३ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

हुताशन—पु० [सं० ष० स०] [वि० हौताशन] अग्नि। आग।

हुति—अव्य० [प्रा० हिंतो] १ पुरानी हिन्दी मे अपादान और करण कारक का चिह्न। से। द्वारा। २ ओर से। तरफ से।

हुतो*—अ० [प्रा० हुंतो] [स्त्री० हुती] व्रज भाषा मे 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

हुथका†—पु०=हुतका।

हुदकना—अ० [?] १. उमग मे आकर आगे बढना। २ दे० 'फुदकना'।

हुदकाना†—स० [देश०] उत्तेजित करना। उसकाना।

हुदक्का†—पु० [हिं० हुदकना] हुदकने की क्रिया या भाव।

†पु०=धक्का।

हुदना†—अ० [सं० हुडन] १ स्तब्ध होना। २. ठहरना। रुकना।

हुदहुद—पु० [फा०] एक प्रकार का सुन्दर पक्षी जिसका सारा शरीर चम-कीले और भडकीले परो से ढका रहता है और जिसके सिर पर ताज की तरह लबी चोटी होती है। मुसलमान इसे 'शाहसुलेमान' भी कहते है। यह प्राय दूब की जडे खोदता रहता है, इसलिए 'दूबिया' भी कहलाता है।

हुदहुदी—स्त्री० [अनु०] भय। डर।

हुदारना—स० [देश०] बंधे हुए रस्से पर कोई चीज फैलाना या लटकाना।

हुद्दा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

†पु०=ओहदा (पद)।

हुन—पु० [सं० हूण, हूद=सोने का एक पुराना सिक्का] १ मोहर। अशरफी। स्वर्ण-मुद्रा। २ सोना। स्वर्ण।

मुहा०—(कहीं) हुन बरसना=बहुत अधिक आय होना।

अव्य०=अब। (पश्चिम)

हुनक†—सर्व०=उनका। (मैथिली) उदा०—हमर अभाग, हुनक कोन दोस।—विद्यापति।

हुनना—स० [सं० हु, हुन्+हिं० ना (प्रत्य०)] १. जलाने के लिए कोई चीज आग मे छोडना या डालना। २ आहुति देना।

†स०=हनना (मार डालना)।

†स०=धुनना।

हुनर—पु० [फा०] १ कला। कारीगरी। २ कोई काम करने का कौशल-पूर्ण गुण। ३ चतुराई। चालाकी। (क्व०)

हुनरमंद—वि० [फा०] जो किसी हुनर या कला का जानकार हो। कला-कुशल। निपुण।

हुनरमंदी—स्त्री० [फा०] हुनरमद होने की अवस्था, क्रिया या भाव। कला-कुशलता। निपुणता।

हुनरा—पुं० [फा० हुनर] वह बदर या भालू जो नाचना और खेल दिखाना सीख गया हो। (कलदर)

वि० जिसके हाथ मे हुनर हो। कलाकार।

हुनिया—स्त्री० [देश०] भेडो की एक जाति जिनका ऊन अच्छा होता है।

पु० उक्त भेडों से प्राप्त होनेवाला ऊन।

हुन्न†—पु०=हुन।

हुब, हुब्ब—पु० [अ०] १ अनुराग। प्रेम। २ भक्ति और श्रद्धा। ३ उत्साह। उमग।

हुबाब—पु०=हबाब (बुलबुल)।

हुमकना—अ० [अनु० हुं (प्रयत्न का सूचक शब्द)] १ उछलना। कूदना। उदा०—हुमकि लात कूबर पर मारी।—तुलसी। २ पैरो से ठेलना या ढकेलना। ३ शरीर का सारा जोर लगाते हुए दबाना। ४ दे० 'हुमकना'। ५ दे० 'हुमचना'।

हुमगना†—अ०=हुमकना।

हुमसना—अ० [सं० उल्लास?] १ आनन्द या उमग मे आना। उल्लसित होना। २ (मन मे भाव या विचार) उत्पन्न होना।

हुमसानना, हुमसाना—स० [हिं० हुमसना का स०] १ उल्लास या प्रसन्नता से युक्त करना। २ उत्तेजित करना। उकसाना।

हुमा—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का कल्पित पक्षी, जिसके सबध मे कहा जाता है कि केवल हड्डी ही खाता है और जिसके ऊपर उसकी छाया पड जाय, वह बादशाह हो जाता है।

हुमाई—वि० [फा०] १ हुमा सबधी। २ जिन पर हुमा की छाया पडी हो, फलत भाग्यशाली।

हुमेल—स्त्री० [सं० हमायल] १ धातु के गोल टुकडो या सिक्को की माला जो गले मे पहनी जाती है। २. घोडो आदि के गले मे पहनाया जाने-वाला उक्त आकार-प्रकार का एक गहना।

हुम्मा—पु० [हिं० उमग] लहरो का उठना।

हुर—पु० [देश०] सिंध मे रहनेवाले एक प्रकार के अर्ध-सभ्य मुसलमान।

हुरक*—पु० [अ० हूर=परी] [स्त्री० हुरकिनी] हूरो की तरह का अर्थात् परम सुन्दर पुरुष।

†स्त्री० १=हुडक। २=हुडक्क।

हुरदंग†—स्त्री०=हुडदग।

हुरदंगा†—वि०, पु०=हुडदगा।

हुरमत—स्त्री० [अ०] आबरू। इज्जत। मान।

हुरहुर†—पु०=हुलहुल (पौधा)।

हुरहुरिया—स्त्री० [सं० हुल्हुली] एक प्रकार की चिडिया।

हुरिजक—पु० [सं०] १ पुराणानुसार निषाद और शबरी स्त्री से उत्पन्न एक सकर जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

हुरिआ†—पु० [हिं० हूरनी?] लात से किया जानेवाला प्रहार। उदा०—पगा बिनु हुरिआ मारता।—कबीर।

हुरिहार†—पु०=होलिहार।

हुक्क—पु०=हुडुक (बाजा)।

हुक्मयी—स्त्री०[स०] प्राचीन भारत मे एक प्रकार का नृत्य।

हुर्र—वि०[अनु०] जो देखते-देखते अदृश्य या लुप्त हो गया हो। जैसे—भीड का हुर्र हो जाना।

†पु०=हुर।

हुर्रा—पु०[अ०] एक प्रकार की हर्ष-ध्वनि।

हुर्रे—पु०=हुर्रा।

हुल—पु०[स०] एक प्रकार की दो-धारी बडी छुरी।

†पु०=फुल्ल (फूल)।

हुलकना—अ० [फा० हुलक] कै करना। वमन करना।

हुलकी—स्त्री० [हिं० हुलकना] १. कै। वमन। उलटी। २ विशूचिका या हैजा नामक रोग।

हुलना—अ० [हिं० हूलना] हूला जाना।

†स०=हूलना।

हुलसना—अ० [स० उल्लास, हिं० हुलास+ना (प्रत्य०)] १. बहुत अधिक प्रसन्न होना। २ उत्पन्न होकर बढना। उभरना। उमडना।

हुलसाना—स०[हिं० हुलसना का स०] उल्लसित करना। हर्ष की उमग उत्पन्न करना।

†अ०=हुलसना।

हुलसावन—वि०[हिं० हुलसाना] हुलसाने का प्रयत्न करनेवाला।

हुलसी—स्त्री०[हिं० हुलसना] १. हुलास। उल्लास। आनन्द। २. प्रसिद्ध पद "गोद लिए हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय।" के आधार पर कुछ लोगों के मत से गोस्वामी तुलसीदास की माता का नाम।

हुलहुल—पु०[?] एक प्रकार का छोटा बरसाती पौधा, जिसे अर्क-पुष्पिका या सूरजवर्त भी कहते हैं।

हुलहुला—पु०[देश०] १ विलक्षण बात। अद्भुत बात। २ उत्पात। उपद्रव। ३. झूठे अभियोग का आरोप। ४. उत्साह। उमग।

हुलहुली—स्त्री०[स०] बहुत अधिक प्रसन्न होने की दशा मे अथवा आनद के अवसरो पर स्त्रियों के मुँह से निकलनेवाला एक प्रकार का अस्फुट शब्द।

हुला—पु०[हिं० हूलना] लाठी का अगला तथा नुकीला छोर या नोक।

हुलाना†—स० [हिं० हूलना] १. किसी को कुछ हूलने मे प्रवृत्त करना। २ दे० 'हूलना'।

हुलाल—स्त्री० [हिं० हुलसना] तरग। लहर।

हुलास—पु० [स० उल्लास] १ आनन्द की उमग। उल्लास। हर्ष की प्रेरणा। २ उत्साह। उमग।

†स्त्री०=सुंघनी।

हुलासदानी—स्त्री०[हिं० हुलास+दान] हुलास या सुंघनी रखने की डिबिया। सुंघनीदानी।

हुलासी—वि०[हिं० हुलास] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनन्दी। २. उत्साही।

हुलिंग—पु०[स०] मध्यदेश के अन्तर्गत एक प्राचीन प्रदेश।

हुलिया—पु०[अ० हुलिय] १. चेहरे की गठन और बनावट। मुख की आकृति और रूप-रग।

मुहा०—हुलिया तंग होना—बहुत ही परेशान और हैरान होना। कष्ट, चिंता आदि के कारण बहुत विकल होना।

२. किसी मनुष्य के रूप, रग आदि का वह विवरण जो उसकी पहचान के लिए किसी को बतलाया जाता है।

मुहा०—हुलिया लिखाना=किसी भागे हुए या लापता आदमी का पता लगाने के लिए उसकी शकल, सूरत आदि का विवरण सरकारी अधिकारियों के पास लिखाना।

हुलूक—पु०[देश०] एक प्रकार का बन्दर।

हुलैया—स्त्री०[हिं० हूलना] डूबने के पहले नाव के डगमगाने की अवस्था या क्रिया। (मल्लाह)

क्रि० प्र०—खाना।—लेना।

हुल्ल—पु०[स०] एक प्रकार का नृत्य।

हुल्लड़—पु०[अनु० या सं० हुल्लुल] १. शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। २. उत्पात। उपद्रव। ३. दगा। फसाद।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हुल्लास—पुं०[सं० उल्लास] चौपाई और त्रिभगी के मेल से बना हुआ एक प्रकार का छद।

हुश्—अव्य०[अनु०] एक निषेधवाचक शब्द जो उपेक्षा, तुच्छता आदि का भी सूचक है। अनुचित बात मुंह से निकालने पर रोकने का शब्द। जैसे—हुश्! यह क्या बकते हो।

हुश्कारना—स०[हुश से अनु०] हुश-हुश शब्द करके कुत्ते को किसी की ओर काटने आदि के लिए उत्तेजित करना।

हुसियार*—वि०=होशियार।

हुसैन—पु०[अ०] १ मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान मे मारे गये थे। शीया मुसलमान इन्ही के शोक मे मुहर्रम मनाते हैं। २. चाँदी के दो छल्ले जो मुसलमान स्त्रियाँ मुहर्रम के दिनो मे हुसैन की स्मृति मे बच्चो के गले मे रक्षा के विचार से पहनाती हैं।

हुसैन-बंद—पु०[अ०+फा०] हाथ मे पहनने का एक जनाना गहना। (मुसल०)

हुसैनी—पु०[अ० हुसैन] १ फारसी सगीत के बारह मुकामो मे से एक। २. एक प्रकार का अगूर।

स्त्री० कर्नाटकी संगीत पद्धति की एक रागिनी।

हुसैनी कान्हड़ा—पु० [अ० हुसैनी+हिं० कान्हडा] सगीत मे कान्हडा राग का एक प्रकार या भेद।

हुस्न—पु० [अ०] १ (स्त्रियों के सबध मे) शरीर विशेषत मुख का उत्कृष्ट सौन्दर्य। २. कोई उत्कर्ष-सूचक गुण या बात। ३. सुन्दरता बढानेवाली कोई विशिष्ट बात। जैसे—हुस्न-काफिया।

हुस्नदान—पु० [अ० हुस्न+हिं० दान] पानदान। खासदान। (स्त्रियाँ)

हुस्नपरस्त—वि० [अ०+फा०] [भाव० हुस्नपरस्ती] स्त्री-सौन्दर्य के उपासक। स्त्री की सुन्दरता से प्रेम करनेवाला।

हुस्नपरस्ती—स्त्री० [अ०+फा०] हुस्नपरस्त होने की अवस्था, गुण या भाव। सौन्दर्य की उपासना।

हुस्न-महफिल—पु०[अ० हुस्ने-महफिल] एक प्रकार का हुक्का।

हुस्न-हिना—पु० [अ० हुस्ने-हिना] एक प्रकार का पौधा और उसके सुन्दर फूल जो रात को बढ़िया सुगन्ध देते हैं। रात की रानी।

हुस्यार†—वि०=होशियार।

हुस्यारी—स्त्री०=होशियारी।
हुहव—पु० [स०] एक नरक का नाम।
हुहाना—अ०[हू हू से अनु०] हू हू शब्द होना।
स० हू हू शब्द करना।
हुहुआना†—अ० [अनु०] आवेश मे आकर हू हू शब्द करना।
हूँ—अव्य०[अनु०] १ किसी प्रश्न के उत्तर मे स्वीकृति का सूचक शब्द। २ अनुमोदन, समर्थन या स्वीकृति का सूचक शब्द। ३ कोई बात सुनते समय अपनी सचेतता या सावधानता सूचित करने का शब्द। ४. किसी कारण न बोल सकने की दशा मे निषेध या वारण का सूचक शब्द।
अ० वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष एक वचन रूप। जैसे—मैं हूँ।
†अव्य०'१ राजस्थानी बोली मे कही 'मे' और कही 'से' के स्थान पर विभक्ति के रूप मे प्रयुक्त होनेवाला शब्द। उदा०—'घणा हाथ हूँ घडे घणा।—प्रिथीराज। २ दे० 'हू'।
†वि०=हौ (मै)। उदा०—हूँ तेरो पथ निहारूँ स्वामी।—कबीर।
हूँकना—अ०[अनु०]१ गाय का बछडे के वियोग मे या और कोई दुख सूचित करने के लिए धीरे-धीरे बोलना। हुडकना। २. सिसक-सिसककर रोना। ३. दे० 'हुकारना'।
हूँकार†—पु०=हुकार।
हूँठ—वि० [स० अर्धचतुर्थ, प्रा० अद्धुट्ठ (स० 'अध्युष्ठ' कल्पित जान पडता है] साढे तीन गुना।
हूँठा—पु० [हिं० हूँठ] साढे तीन का पहाडा। अहूँठा।
हूँड†—स्त्री० [?] रमैनी (कृषको की पारस्परिक सहायता की प्रथा)।
हूँत—अव्य०[प्रा० हिंतो] से।
हूँतौ†—अव्य०[प्रा० हिंतो]राजस्थानी भाषा मे हूँत की तरह 'से' विभक्ति के स्थान पर प्रयुक्त होनेवाला शब्द।
हूँस—स्त्री०[हिं० हूँसना]१ हूँसने की क्रिया या भाव। जैसे—हूँस से रीस भली।—कहा०। २ किसी को बराबर हूँसते रहने के कारण उस पर पडनेवाला कुप्रभाव या दुष्परिणाम। जैसे—मेरे बच्चे को तेरी हूँस लगी है। (स्त्रियाँ)
क्रि० प्र०—पडना।—लगना।
३ ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण मन मे होनेवाली कुढन या जलन।
हूँसना—स० [अनु०] [भाव० हूँस]१ रह रहकर कुढते और चिढते हुए किसी को बुरा-भला कहना। उदा०—कैसी गधी हो, बच्चो का खाना हो हूँसती। रातिब तो तीन टट्टू का जाती हो थूर आप।—जान साहब। २ ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण बिगडते और डॉट सुनाते रहना। कोसना, काटना।
हूँ-हाँ—स्त्री०[अनु०]कोई बात सुनने पर 'हूँ', 'हाँ' या उसी तरह का कोई और कहा जानेवाला शब्द। जैसे—वह मेरी सब बातें चुपचाप सुन गया, पर बीच मे कही हूँ-हाँ नही की।
हू।—अव्य० [वैदिक स० उप=आगे और, प्रा० उव, हिं० ऊ] पुरानी हिन्दी मे अतिरेक-बोधक शब्द। भी। जैसे—तुमहू, वाहू, हमहू आदि।
पु०[अनु०]१ गीदड के बोलने का शब्द। २ हवा के जोर से चलने पर होनेवाला हू-हू शब्द।
पद—हू का आलम=बिलकुल सुन-सान जगह मे वह स्थिति जब हवा जोरो से हू हू करती हुई चल रही हो। भयावने सन्नाटे की स्थिति।
हूक—स्त्री०[स० हिक्का] कलेजे, छाती, पसली आदि मे अचानक बहुत जोर से उठनेवाली पीडा या शूल।
क्रि० प्र०—उठना।—मारना।
२ कसक। दर्द। पीडा। ३. घोर मानसिक कष्ट। ४. आशका।
हूकना—अ०[हिं० हूक+ना (प्रत्य०)]१ हूक की पीड़ा या शूल उठना। २ कोई बहुत कष्ट या उग्र बात या स्मृति मन मे कसकना या सालना। रह-रहकर पीड़ित करना। ३. अचानक होनेवाले कष्ट या पीडा से चौक पडना।
हूकनि†—स्त्री०=हूक। उदा०—ऊख मयूख मयूखनि हूकनि लाग अहूख लखै सुर रूखे।—देव।
हूठना†—अ०[स० हुड्=चलना] १. हटना। टलना। २ किसी की ओर पीठ करना। ३ घूमना। मुडना।
हूठा—पु०[हिं० अँगूठा]१. किसी को चाही हुई वस्तु न देकर उसे चिढाने के लिए अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा। ठेंगा। २. स्त्री की दोनो हाथो की मुट्ठियाँ बाँधकर तथा कमर पर रखते हुए मटक कर चलने की क्रिया या भाव। उदा०—हूठ्यो दै इठलाइ दृग, करै गँवारि सुवार।—बिहारी।
हूड़—वि० [हूण (जाति)] १. उजड्ड। गँवार। २. अनाडी। मूर्ख। ३ जिद्दी। हठी।
हूड़ा—पु०[देश०] दक्षिणी भारत मे होनेवाला एक प्रकार का बाँस।
हूण—पु०[?] एक प्राचीन असभ्य और क्रूर मंगोल जाति, जो पहले चीन की पूरबी सीमा पर लूट-मार किया करती थी, पर ई० चौथी, पाँचवी सदियो से अत्यन्त प्रबल होकर एशिया, युरोप के सभ्य देशो पर आक्रमण करती हुई बहुत दूर तक फैल गई थी। पर जान पड़ता है कि बाद मे यह अन्य असभ्य जातियो मे मिलकर समाप्त हो गई थी। २. बहुत बड़ा उजड्ड और क्रूर व्यक्ति।
हूणा*—अ०=होना। उदा०—हूण देइ हरि के चरन निवासा।—कबीर।
हूदना—स०[?] बार बार ठोकर या आघात लगाकर तोड़ना-फोडना। (बुदेल०) उदा०—उठते सीगो से घने घने को हूदें।—मैथिली शरण।
हूदा —वि० [फा० हूद] ठीक। दुरुस्त।
पद—बेहूदा।
†पु०=बेहूदा।
हूनना—स०[स० हवन] १. आग मे डालना। २ आग पर रखकर भूनना। ३. विपत्ति मे फँसाना।
हूनिया—स्त्री० [हूण (देश०)] एक प्रकार की तिब्बती भेड़।
हूब—स्त्री०=हुब्ब।
हूबहू—वि० [अ०]१ पहले या मूलतः जैसा रहा हो ठीक वैसा ही। २ किसी के बिलकुल अनुरूप या समान।
हूय—पु० [स०] आवाहन करना। बुलाना। जैसे—देव-हूय, पितृ-हूय।
हूर—स्त्री० [अ०] मुसलमानो के बहिश्त अर्थात् स्वर्ग की अप्सरा।
†पु०=हूर (जाति)।

हूरना—स०[हिं० हूलना]१ जोर से घुमाना या धँसाना। हूलना। २. जोर से धक्का देना। ढकेलना।
स०[हिं० हूरा] मुक्कों से मारना।
स० [?] बहुत अधिक भोजन करना।

हूर-हूण—पु० [स०] हूणों की एक शाखा जिसने यूरोप में जाकर हलचल मचाई थी। श्वेत-हूण।

हूरा—पु० [अनु०] घूँसा। मुक्का।
पु०=हूला।

हूरा-हूरी—स्त्री० [स०] एक त्योहार या उत्सव, जो दिवाली के तीसरे दिन होता है।
स्त्री०[हिं० हूरना] १. आपस में एक दूसरे को ढकेलते हुए मारना-पीटना। २ उक्त प्रकार की लड़ाई करने के लिए तत्परता दिखाना।

हूल—स्त्री०[स० शूल] १ हूलने अर्थात् नुकीली चीज जोर से गड़ाने धँसाने या भोंकने की क्रिया या भाव। २ लासा लगाकर चिड़िया फँसाने का बाँस या लग्गी। ३. शूल। हूक।
स्त्री०[स० हुल-हुल] १ कोलाहल। हल्ला। धूम। उदा०—परी हूल, जोगिन गढ छेंका।—जायसी। २ हर्ष-ध्वनि। ३ ललकार। ४. आनन्द। खुशी। प्रसन्नता।

हूलना—स०[हिं० हूल+ना (प्रत्य०)]१ लाठी, भाले, तलवार आदि का सिरा किसी चीज में धँसाना। २ हूक या तीव्र वेदना उत्पन्न करना।

हूल-फूल—स्त्री० [हिं० हूल+अनु०] आनन्द। प्रसन्नता।

हूला—पु०[हिं० हूलना] शस्त्र आदि हूलने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—देना।

हूश—वि०[हिं० हुड] अशिष्ट और असभ्य। उजड्ड।

हूसड़ा—वि०=हूश।

हूह—स्त्री०[अनु०] हुंकार।
मुहा०—हूह देना=जोर से हू-हू शब्द करना। हुँकारना।

हू-हू—पु०[अनु०] अग्नि के जलने का शब्द। जैसे—आग हू-हू करके जल रही थी।

हृच्छूल—पु०[स० हृत्—हृदय+शूल] छाती के नीचेवाले भाग में होनेवाली एक प्रकार की बहुत ही भीषण और विकट पीड़ा, जिसमें रोगी का दम घुटने लगता है। (एनजिना पैक्टोरिस)

हृत—भू० कृ०[स० √हृ (हरण करना)+क्त]१. जिसे ले गये हों। पहुँचाया हुआ। २ जो हरण किया गया हो। छीना हुआ। ३. चुराया या जबरदस्ती लिया हुआ। ३ समस्त पदों के आरम्भ में, रहित या वंचित किया हुआ। जैसे—(क) हृतबंधु=जिसके भाई-बंधु छिन गये हों। (ख) हृत-मानस=बेसुध या बेहोश।

हृति—स्त्री०[स०√हृ (हरण करना)+क्तिन्]१ हरण करने की क्रिया या भाव। हरण। २. लूट। ३ नाश।

हृत्कंप—पु०[स० ष० त०]१. हृदय का काँपना। हृदय में होनेवाला कंपन। २. एक रोग जिसमें हृदय कुछ समय तक या बार बार धड़कता रहता है। धड़कन। (पैल्पिटेशन आफ हार्ट) ३ आशंका, भय आदि के कारण दहलना।

हृत्तंत्री—स्त्री०[स० मध्य० स०] हृदय रूपी तंत्री या वीणा।

हृत्पिंड—पु०[स० ष० त०] हृदय का कोश या थैली। कलेजा।

हृत्पुंडय—पु०=चैत्यपुरुष। (देखें)

हृद्—पु०[स०] हृदय। दिल।

हृदयंगम—वि० [स० हृदय√गम् (प्राप्त होना)+खच्-मुम्]१. हृदय या मन में अच्छी तरह आया और बैठा हुआ। २ अच्छी तरह समझ में आया और बैठा हुआ।

हृदय—पु०[स०√हृ (हरण करना)+कयन्-दुक् च]१. प्राणियों के शरीर में छाती के अंदर बाईं ओर का वह भाग-कोश जिसके स्पन्दन के फलस्वरूप सारे शरीर की नाड़ियों में रक्त-संचार होता रहता है। कलेजा। दिल।
विशेष—मुहा० के लिए दे० 'कलेजा' और 'दिल' के मुहा०।
२. इसी के पास छाती के मध्यभाग में माना जानेवाला वह अंग जिसमें, प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न होते और रहते हैं। (हार्ट, उक्त दोनों अर्थों के लिए) जैसे—यदि तुम में हृदय होता, तो तुम कभी ऐसे निष्ठुर न होते।
पद—हृदय की गाँठ=मन में बैठा हुआ दुर्भाव या वैर।
मुहा०—हृदय उमड़ना=करुणा, प्रेम आदि के कारण मन द्रवित और विकल होना। हृदय भर आना=हृदय उमड़ना। हृदय विदीर्ण होना=करुणा, शोक आदि के कारण मन में बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा होना।
३. अंतःकरण। विवेक। जैसे—(क) हमारा हृदय तो यही कहता है कि उसने ऐसी कृतघ्नता कभी न की होगी। (ख) तुम्हीं अपने हृदय से पूछो कि ऐसा होना चाहिए या नहीं। ४. वक्षःस्थल। छाती।
मुहा०—(किसी को) हृदय से लगाना=(क) आलिंगन करना। गले लगाना। (ख) आत्मीय और प्रिय बनाना। जैसे—मालवीय जी तो बराबर यह कहते थे कि अन्त्यजों को हृदय से लगाओ।
५. परम प्रिय व्यक्ति। प्राणाधार। ६. किसी वस्तु का सार भाग। ७ बहुत ही गुप्त या गूढ़ बात। रहस्य। ८. किसी काम या बात का मूल कारण या स्रोत।

हृदय-ग्रह—पु० [स० हृदय√ग्रह् (पकड़ना)+अच्—ष० त०] कलेजे में होनेवाली शूल या ऐंठन।

हृदय-ग्राही (हिन्)—वि० [स० हृदय√ग्रह् (पकड़ना)+णिनि—णिनि] १ हृदय को ग्रहण करने अर्थात् पकड़नेवाला। दिल को खींचनेवाला। २. अभीष्ट और सुन्दर। ३ रुचिकर।

हृदय-निकेत—पु०[स० ब० स०] मनसिज। कामदेव।

हृदय-प्रमाथी (थिन्)—वि० [स०] [स्त्री० हृदय-प्रमाथिनी]१ मन को क्षुब्ध या चंचल करनेवाला। २. मन को मोहित करनेवाला।

हृदय-वल्लभ—पु०[स० ष० त०] [स्त्री० हृदय-वल्लभा] परम प्रिय व्यक्ति। प्रियतम।

हृदयवान् (वत्)—वि०[स० हृदय+मतुप्] [स्त्री० हृदयवती]१ दिलवाला। सहृदय। २ भावुक। रसिक।

हृदय-विदारक—वि०[सं० ष० त०]१ हृदय को विदीर्ण करनेवाला। जिससे दिल फटने लगे। २ अत्यन्त शोक पैदा करनेवाला। ३. मन में परम करुणा या दया उत्पन्न करनेवाला।

हृदयवेधी (धिन्)—वि० [स० हृदय√विध् (वेधन करना)+णिनि] [स्त्री० हृदयवेधिनी]१. हृदय को वेधनेवाला। दिल को घायल करने

वाला। जैसे—हृदयवेधी कटाक्ष। २. मन को बहुत व्यथित करनेवाला। ३ मन को बहुत अप्रिय या बुरा लगनेवाला।

हृदय-संघट्ट—पु०[स० प० त०] हृदयातिपात। (हार्ट फेल्योर)

हृदय-स्पर्शी (र्शिन्)—वि० [स० हृदय√स्पर्श (छूना) +णिच्=णिनि] [स्त्री० हृदयस्पर्शिणी]१ हृदय को स्पर्श करनेवाला। दिल को छूनेवाला। २. दिल पर असर करनेवाला। ३ मन मे दया उत्पन्न करके उसे द्रवित करनेवाला।

हृदयहारी (रिन्)—वि० [स० हृदय√हृ+णिनि] [स्त्री० हृदय-हारिणी] मन मोहनेवाला या लुभानेवाला। मनोहर।

हृदयातिपात—पु० [स० हृदय+अतिपात] एक रोग जिसमे हृदय की गति सहसा बन्द हो जाने से प्राणी की मृत्यु हो जाती है। (हार्ट-फेल्योर)

हृदयामय—पु० [स०]=हृद्रोग।

हृदयालु—वि० [स० प० त० हृदय+आलुच] १. सहृदय। भावुक। २ सुशील।

हृदयावरण—पु० [स०हृदय+आवरण, प० त०] शरीर के अन्दर की वह झिल्ली जो हृदय को चारो ओर से घेरे रहती है। (पेरीकार्डियम)

हृदयावसाद—पु० [स० हृदय+अवसाद] चिकित्सा के क्षेत्र मे, प्राय मृत्यु से पहले होनेवाली वह स्थिति जिसमे मनुष्य की सारी शक्तियाँ क्षीण हो जाती है और वह अचेत तथा निश्चेष्ट हो जाता है। (कोलैप्स)

हृदयिक, हृदयी (यिन्)—वि०[स० हृदय+ठन्—इक]१ हृदय-सबधी। २ दिलवाला। ३ साहसी। ४ सहृदय।

हृदयेश—पु०[स० प० त०] [स्त्री० हृदयेशा] हृदयेश्वर (प्रियतम)।

हृदयेश्वर—पु०[स०प०त०] [स्त्री० हृदयेश्वरी]१ प्रेमपात्र। प्रियतम। २ स्त्री के लिए उसका पति।

हृदयोन्मादिनी—स्त्री० [स० हृदय-उत्√मद्(नशा करना)+णिनि-ङीप्] कुछ लोगो के मत से सगीत मे एक श्रुति।

हृदयोन्मादी—वि० [स० हृदयोन्मादिन्] [स्त्री० हृदयोन्मादिनी]१. हृदय को उन्मत्त या पागल करनेवाला। २ मन को पूर्ण तरह से मोहित करनेवाला।

हृद्गत—वि० [स०सप्त०त०] १ हृदय मे होनेवाला। हृदय का। आतरिक। जैसे—हृद्गत भाव। २ मन मे जमा या बैठा हुआ। ३ प्यारा। प्रिय।

हृद्य—वि०[स० हृद्+यत्] १ हृदय सबधी। हृदय का। २. हृदय मे रहने या होनेवाला। हार्दिक। ३ हृदय को अच्छा या भला लगनेवाला। मनोहर या सुन्दर। ४ स्वादिष्ट।

पु० १ प्राचीन भारत मे वे मत्र, जो दूसरो के हृदय पर अधिकार करने अथवा दूसरो को अपने वश मे करने के लिए जपे या पढे जाते थे। २ महुए की शराब। ३ दही। ४ सफेद जीरा। ५ कपित्थ। कैथ।

हृद्यगंध—पु०[स० व० स०]१ वेल का पेड या फल। २ सोचर नमक।

हृद्यांशु—पु०[स० व० स०] चद्रमा।

हृद्या—स्त्री० [स० हृद्य-टाप्] १ वृद्धि नाम की जडी। २ वकरी।

हृद्रोग—पु०[स० प० त०] १ हृदय मे होनेवाला कोई रोग। (हार्ट डिसीज)२ कुभ राशि।

हृल्लास—पु०[स०व०स०] वार-वार कै या वमन करने को जी चाहना। मितली। मिचली। नॉजिया।

हृषि—स्त्री०[स०]१ हर्ष। आनन्द। २. आभा। चमक।

हृषित—भू० कृ० [स०√हृष् (खुश होना)+क्त]१. जिसे हर्ष हुआ हो। हर्षित। २. रोमाचित। ३ चकित। ४. शस्त्रास्त्र से सज्जित। ५ हताश।

हृषीक—पु०[स० √हृष् +ईकक्] इद्रिय।

हृषीकेश—पु०[स० प० त०] १. विष्णु जो इद्रियो के स्वामी कहे जाते है। २ श्रीकृष्ण का एक नाम। ३ पूस का महीना। पौष मास।

हृषु—वि० [स० √हृष्+उ] १. हर्षित होनेवाला। प्रसन्न। २ झूठ वोलनेवाला। झूठा।

पु०१. अग्नि। आग। २ सूर्य। ३ चन्द्रमा।

हृष्ट—वि० [स० हृष् (खुश होना)+क्त वा इट्] १ हर्षित। प्रसन्न। २ उठा या खडा हुआ (शरीर का रोआँ) ३. जो कठोर या कडा हो गया हो।

हृष्ट-पुष्ट—वि०[स०] जो मोटा-ताजा और फलत. प्रसन्न तथा सुखी हो।

हृष्टयोनि—पु०[स० व० स०] एक प्रकार का नपुसक।

हृष्टि—स्त्री०[स० √हृष् (खुश होना)+क्तिन्]१. हर्ष। प्रसन्नता। २. गर्व से इतराना या फूलना।

हृष्यका—स्त्री०[स०] सगीत मे, एक मूर्च्छना जिसका स्वर-ग्राम इस प्रकार है—प ध नि स रे ग म। धनि सरे गम पध नि सरे गम।

हेंगा†—पु० [स० अभ्यग=पोतना] जोते हुए खेत की मिट्टी वरावर करने का पाटा।

क्रि० प्र०—चलाना।

हेंगाई†—स्त्री०[हि० हेंगा] खेत मे हेंगा चलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

हेंगाना†—स [हि० हेंगा] खेत मे हेंगा चलाना।

हेंगुरी†—स्त्री०=उँगली। उदा०—हेंगुरी एक खेल दुई गोटा।—जायसी।

हेंवं†—पु०=हिम।

हें हें—पु०[अनु०]१ तुच्छतापूर्वक धीरे-से हँसने की क्रिया या शब्द। २ दीनतापूर्वक या गिड़गिडाकर कही जानेवाली वात।

हे—अव्य० [स०] सबोधन सूचक अव्यय। जैसे—हे राम।

†अ० व्रज भाषा के 'हो' (था) का बहु० रूप। थे। उदा०—मानी हार विमुख दुरजोधन जाके जोधा हे सौ भाई।—सूर।

हेउसी—स्त्री०[देश०] देशावरी रूई।

हेक—वि० [हि० एक]१. एक। उदा०—हथ न लागो हेक, पारस राणे प्रताप-सी।—दुरसाजी। २ एक-दो। वहुत थोडे। कुछ।

हेकड़—वि० [हि० हिया+कडा] १ मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा। २ उग्र और प्रचड। ३. अक्खड और उद्दड। ४ तौल से पूरा। (वाजारू)

हेकड़ा—पु० [हि० हेकड] समूह गान मे वह व्यक्ति जो किसी वोल या स्वर को वहुत अधिक लवा खीचता हो।

हेकड़ी—स्त्री०[हि० हेकड] १ हेकड होने की अवस्था, गुण या भाव। २ अक्खडपन मिली हुई उद्दडता। ३ वल-प्रयोग। जवरदस्ती।

हेकलो†—वि०=अकेला। (राज) उदा०—लाखा वाता हेकलो चूडो मो न लजाय।—कवि राजा सूर्यमल।

हेका†—अव्य० [स० एक] एक ओर। (राज०) उदा०—हेका कह हेका हीलो हूल।—प्रिथीराज।

हेक्का—स्त्री०[स० हिक्का+पृषो०] हिक्का। हिचकी।
हेच—वि० [स० हेय से फा०?] १. जिसका कुछ भी महत्त्व न हो। तुच्छ। २ निसार।
हेजम†—पु० [अ० हज्जाम]१ नाई। हज्जाम। २ दूत जिसका काम पहले हज्जाम लोग ही करते थे।
हेठ—वि० [स० अवस्थ प्रा० अहट्ठ]१. नीचा। जो नीच हो। २ किसी की तुलना मे घटकर या हीन।
क्रि० वि० नीचे की ओर। नीचे।
पु०[स०] १. वावा। विघ्न। २ नुकसान। हानि। ३. आघात। चोट।
हेठा—वि०[हिं० हेठ] १ जो नीचे हो। नीचा। २ किसी की तुलना मे तुच्छ या हेय। ३. तुच्छ।
हेठापन—पु०[हिं० हेठा+पन (प्रत्य०)] 'हेठा' होने की अवस्था, गुण या भाव। तुच्छता। नीचता।
हेठी—स्त्री०[हिं० हेठा]१. प्रतिष्ठा मे होनेवाली कमी। मान-हानि। २ अपमान। वेइज्जती। ३ जहाज मे पाल का पाया। (लश०)
हेड—पु०[स०√हेड् (अनादर करना)+अच्] उपेक्षा या अपमान करना।
वि०[अ०] प्रधान। मुख्य। जैसे—हेड आफिस, हेडमास्टर।
हेड़ा—पु० [देश०] मास। गोश्त।
हेडिंग—स्त्री०[अ०]=शीर्षक।
हेडि—स्त्री०=हेड़ी। (राज०)
हेडी(ड़ी)—स्त्री० [हिं० लेहँडी] १. विक्री के लिए वाजार मे लाये जानेवाले पशुओ का दल। २ झुड।
†पु० शिकारी।
हेत†—अव्य० [स० हेतु] १. लिये। वास्ते। २. चक्कर या फेर मे। सवय दिन गये विषय के हेत।—सूर।
†पु०=हेतु।
हेति—स्त्री०[स० √हन् (मारना)+क्तिन् करणे]१. वज्र। २ अस्त्र। ३. भाला। ४ घाव। चोट। ५ सूर्य की किरण। ६ आग की लपट। लौ। ७ धनुष की टकार। ८ औजार। ९ अकुर।
पु० १ पुराणानुसार वह प्रथम राक्षस राजा जो मधुमास या चैत्र मे सूर्य के रथ पर रहता है। यह प्रहेति का भाई और विद्युत्केश का पिता कहा गया है। (वैदिक)
†पु० [हिं० हितू] रिश्तेदार । सबधी। उदा०—मदन के हेति डोर ज्ञानहू के कन रेति...।—सेनापति।
हेतु—पु० [स०√हि+तुन्]१. वह भूली वात जिसे ध्यान मे रखकर अथवा जिसके उद्देश्य या विचार से कोई काम किया गया हो या कोई वात कही गई हो। अभिप्राय। उद्देश्य। (मोटिव) जैसे—वहाँ जाने मे मेरा एक विशेष हेतु था। २ कारण। वजह। सवव।
विशेष—यद्यपि हेतु का एक अर्थ कारण भी होता है। फिर भी कारण और हेतु मे तात्त्विक दृष्टि से वहुत अतर है। कारण मुख्यत' वह क्रिया, घटना या व्यापार है जिसका कोई परिणाम या फल प्रस्तुत होता है। जैसे—चूल्हे मे चिनगारी रह जाना ही घर मे आग लगने का कारण था। परन्तु हेतु वस्तुत. वह इच्छा, उद्देश्य या मनोगत भाव है जो कोई काम करने के लिए प्रवृत्त करता अथवा उसका प्रेरक होता है, और जिसके फलस्वरूप कोई कार्य या व्यापार होता है। जैसे—उसकी हर वात मे कुछ-न-कुछ हेतु होता है।
३. न्याय-शास्त्र मे वह तर्क या युक्ति जिसका कोई निष्कर्ष निकलता हो या जो कोई वात प्रमाणित या सिद्ध करने के लिए उपस्थित की गई हो। साधक । जैसे—जो हेतु अभी आपने उपस्थित किया है, वह आपकी इन वातो से सिद्ध नही होता। ४ किसी प्रकार का साधारण तर्क या दलील। ५. साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे या तो (क) कारण के होते ही कार्य के भी हो जाने का उल्लेख होता है। (जैसे—उन्हे देखते ही मेरे मन मे श्रद्धा उत्पन्न हुई थी।) अथवा (ख) कारण का ही कार्य रूप मे उल्लेख होता है। (जैसे—आपकी कृपा ही मेरा कल्याण है।)
†पु०[सं० हित] प्रेम। स्नेह। उदा०—देखि भरत पर हेतु।—तुलसी।
हेतुकी—स्त्री०[स० हेतु से] वह शास्त्र जिसमे रोगो के निदान या पहचान का विवेचन होता है। निदान-शास्त्र। (इटियालाजी)
हेतुता—स्त्री०[स० हेतु+तल्—टाप्] हेतु की अवस्था, गुण या भाव।
हेतुत्व—पु०[स०]=हेतुता।
हेतु-भेद—पु०[स०] ज्योतिष मे ग्रह-युद्ध का एक भेद। (वृहत्सहिता)
हेतुमान् (मत्)—वि० [स० हेतु+मतुप्] [स्त्री० हेतुमती] जिसका कुछ हेतु हो। हेतु-मूलक।
पु० हेतु के फल-स्वरूप होनेवाला कार्य ।
हेतु-वचन—पु०[स० मध्य० स०]किसी वात के कारण के सबध मे होनेवाली वहस या विवाद।
हेतुवाद—पु० [सं० हेतु√वद् (कहना)+घञ्] १ सव वातो का हेतु ढूँढ़ना या सवके विषय मे तर्क करना। २ नास्तिकता-पूर्ण कुतर्क। ३. व्यर्थ की कहा-सुनी या वाद-विवाद। ४ दे० 'तर्क-शास्त्र'।
हेतुवादी—वि०[स० हेतुवादिन्] [स्त्री० हेतुवादिनी]१ तार्किक। दलील करनेवाला। २ नास्तिक।
हेतु विज्ञान—पुं०[स०] हेतुकी।
हेतुविद्या—स्त्री०[स०प० त०] तर्क शास्त्र।
हेतु-शास्त्र—पु०[स० प० त०]१ वह ग्रन्थ या शास्त्र जिसमे स्मृतियो आदि का खडन या विरोध हो। २ तर्कशास्त्र।
हेतु-हेतुमद्भाव—पु०[स०]१. कार्य और कारण का भाव। २ कारण और कार्य का सवध।
हेतु हेतुमद्भूतकाल—पु०[स०]व्याकरण मे, क्रिया के भूतकाल का वह भेद या रूप जिसमे ऐसी दो वातो का न होना सूचित होता है जिसमे दूसरी पहली पर निर्भर रहती है। जैसे—यदि तुम मुझसे माँगते तो मैं अवश्य देता।
हेतूत्प्रेक्षा—स्त्री० [स० ष० स०] साहित्य मे, उत्प्रेक्षा अलकार का एक भेद जिसमे अहेतु को हेतु अथवा अकारण को कारण मानकर किसी प्रकार की उत्प्रेक्षा की जाती है। यथा—मोर-मुकुट की चन्द्रकनि, यो राजत नंद नन्द। मनु ससि-सेखर की अकस, किअ सेखर सत-चन्द।—विहारी।
हेत्वापह्नुति—स्त्री० [स०] साहित्य में, अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे उपमेय का सकारण निषेध करते हुए उपमान की स्थापना की जाती है। यथा—सिवसरजा के कर लसे सोन होय किरवान।—भुजभुजगेस भुजगिनी, भखति पौन औ पान।—भूषण।

हेत्वाभास—पु० [स० हेतु-आ√भास् (प्रकाशित होना)+अच्—घञ् वा] तर्कशास्त्र मे, वह अवस्था जिसमे वास्तविक हेतु का अभाव होने पर या किसी अवास्तविक असद् हेतु के वर्तमान रहने पर भी वास्तविक हेतु का आभास मिलता या अस्तित्व दिखाई देता है, और उसके फल-स्वरूप भ्रम होता या हो सकता है। (फैलेसी)

विशेष—भारतीय नैयायिकों ने इसके ये पाँच भेद कहे हैं—स-व्यभिचार, विरुद्ध, प्रकरणसम, साध्य-सम और कालातीत।

हेमंत—पु० [स० हि+झ-अन्त-मुट्च] छ ऋतुओ मे से पाँचवी ऋतु, जिसमे अगहन और पूस के महीने पडते है। जाडे का मौसम। शीत-काल।

हेमंती—स्त्री० [स०] जाडे का मौसम। हेमत ऋतु।

हेम—पु० [स० हि+मन्] १ हिम। पाला। २ सोना। स्वर्ण। ३ कपित्थ। कैथ। ४. नागकेसर। ५ एक माशे की तौल। ६. बादामी रग का घोडा। ७. गौतम बुद्ध का एक नाम।

हेम-कंदल—पु० [स० हेमकन्द√ ला (लेना)] मूँगा।

हेमक—पु० [स०] १ सोने का टुकडा। २. एक प्राचीन वन।

हेम-कल्याण—पु० [स०] सगीत मे, कल्याण राग का एक प्रकार या भेद।

हेम-कांति—स्त्री० [स० ब० स०] १. वन-हलदी। २ आँबा हलदी।

हेम-कूट—पु० [स० ब० स०] पुराणो के अनुसार एक पर्वत जिसकी चोटी सोने की मानी गई है। यह हिमालय के उत्तर और मेरु के दक्षिण मे किं पुरुषवर्ष तथा भारतवर्ष के बीच मे माना गया है।

हेम-केश—पु० [स० ब० स०] शिवजी का एक नाम।

हेम-गर्भ—पु० [स० ब० स०] उत्तर दिशा का एक पर्वत। (वाल्मीकि)

हेमगिरि—पु० [स० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत (जो सोने का कहा गया है)।

हेमघन—पु० [स०] सीसा नामक धातु।

हेमज—वि० [स० हेम√जन् (उत्पन्न होना)+ड] हेम से उत्पन्न।

पु० राँगा।

हेमतरु—पु० [स०] धतूरा।

हेमतार—पु० [स० हेम√तृ (उत्कृष्ट करना)+णिच्—अण्] नीला थोथा। तूतिया।

हेम-ताल—पु० [स०] उत्तराखड का एक पहाडी प्रदेश।

हेम-तुला—स्त्री० [स०] वह तुला-दान जिसमे किसी के भार के बराबर सोना तौलकर दान किया जाता है।

हेम-पर्वत—पु० [स० मध्य० स०] १ सुमेरु पर्वत। २ दान के लिए बनाया जानेवाला सोने का पहाड।

हेम-पुष्प—पु० [स० ब० स०] १ चपा। २ अशोक वृक्ष। ३ नाग-केसर। ५ अमलताश।

हेम-पुष्पिका—स्त्री० [स०] १ सोनजुही। २ गुडहर।

हेम-पुष्पी—स्त्री० [स० हेमपुष्प—ङीप्] १ मजीठ। २ मूसली-कद। ३ कटकारी।

हेम-फला—स्त्री० [स० ब० स०] एक प्रकार का केला।

हेम-माला—स्त्री० [स० ब० स०] यम की पत्नी।

हेम-माली—पु० [स० हेममालिन्] १ सूर्य। २ खर नामक राक्षस का पिता।

हेम-मुद्रा—स्त्री० [स० ष० त०] सोने का सिक्का। अशरफी। मोहर।

हेम-यूथिका—स्त्री० [स० उपमि० स०] सोनजुही।

हेम-रागिनी—स्त्री० [स० हेमराग+इनि—ङीप्] हलदी।

हेमरेणु—पु० [स०] त्रसरेणु।

हेमलंब, हेमलवक—पु० [सं०] बृहस्पति के साठ सवत्सरों मे से ३१वाँ सवत्सर।

हेमल—पु० [स० हेम√ला (लेना)+क] १ सोनार। २ कसौटी। ३. गिरगिट। ४. छिपकली।

हेमवती—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

हेम-सागर—पु० [स०] १ एक प्रकार का पौधा, जिसे 'जख्महयात' भी कहते है। २. एक प्रकार का बढ़िया आम जो बगाल मे होता है।

हेमसार—पु० [स० हेम√ सृ (निर्मल करना)+णिच्—अण्] नीला थोथा। तूतिया।

हेम-सुता—स्त्री० [स०] पार्वती। दुर्गा।

हेमांग—पु० [स० ब० स०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ गरुड। ४ सिंह। ५ चपा।

हेमांगद—पु० [स० ष० त०] १ सोने का बिजायठ। २ वसुदेव का एक पुत्र।

हेमा—स्त्री० [स०] १ सुन्दरी स्त्री। २. पृथ्वी। ३. माधवी लता।

हेमाचल—पु० [स० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत।

हेमाद्रि—पु० [स० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत।

हेमाल—पु० [स०] एक राग जो दीपक का पुत्र कहा जाता है।

†वि० [स० हिम] बरफ की तरह ठडा। शीतल।

†पु०=हिमालय।

हेम्न—पु० [स०] मगल-ग्रह।

हेम्ना—स्त्री० [स०] सगीत मे सकीर्ण राग का एक भेद।

हेम्य—वि० [स० हेम+यत] १ सोने का। २ सुनहला।

हेय—वि० [स० √हा (छोडना)+यत्] १ घृणित तथा तुच्छ। २ फलत छोडने या त्यागने योग्य। ३. गमन करने या जानेवाला।

हेरंब—पु० [स० हे√रम्ब्+अच्, अलुक] १ गणेश। २ बुद्ध का एक नाम। ३. धीरोद्धत नायक। ४ भैंसा।

हेरंबक—पुं० [स०] एक प्राचीन जाति।

हेर—पु० [स०] १ किरीट। २ हलदी। ३ आसुरी माया।

†स्त्री० [हिं० हेरना] १ हेरने की क्रिया या भाव। २. खोज। तलाश। ३ प्रेमपूर्ण चितवन या दृष्टि। उदा०—हरी हरिहारी हारि है हे रे री हेरी।—सेनापति।

†पु०=अहेर (शिकार)।

हेरक—पु० [स०] शिव के एक गण का नाम।

†वि० [हिं० हेरना] हेरने या ढूंढनेवाला।

हेरनहार—वि० [हिं० हेरना] हेरनेवाला।

हेरना†*—स० [हिं० अहेर] १ तलाश करना। ढूंढना। खोजना। २ ढूंढने के लिए इधर-उधर देखना। ३ ताकना। देखना। ४. जाँचना। परखना।

हेरना-फेरना—स० [हिं० हेरना+फेरना] १ इधर-उधर करना। हेर-फेर करना। २ अदला-बदली करना। बदलना। विनिमय करना।

मुहा०—हेर-फेर कर=(क) घूम फिरकर। (ख) घुमाव-फिराव की बातें करके।

हेर-फेर—पु०[हिं० हेरना+फेरना]१. घुमाव। चक्कर। २. चक्कर मे डालनेवाली या घुमाव-फिराव की और पेचीली बात। ३ चाल-बाजी। दाँव-पेंच। ४. अदला-बदली। विनिमय। ५ अन्तर। फरक। ६ किसी चीज के कुछ अश हटा बढाकर इधर उधर करना या निकाल देना और उनके स्थान की पूर्ति नये अशो से करना। रद्दोबदल। (आलट्रेशन)

हेरवा†—पु० [हिं० हेरना] १ तलाश। ढूँढ। खोज। २ किसी के चले जाने पर उसे खोजने और उसके न मिलने पर बच्चो को होनेवाला दुःख या पडनेवाला वियोगजन्य कुप्रभाव।
क्रि० प्र०—पडना।

हेरवाना†—स० [हिं० हेराना] खोना। गँवाना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
स०[हिं० हेरना का प्रे०] तलाश करवाना। ढूँढवाना।

हेराना†—अ०[स० हरण]१ किसी चीज का खो जाना। गुम होना। २ किसी वस्तु का तिरोहित या पहुँच के बाहर होना। उदा०—नयनन नीद हेरानी।—युगलप्रिया। ३ किसी चीज या बात का अभाव या तिरोभाव होना, न रह जाना। उदा०—(क) गुन न हेरानो, गुन-गाहक हेरानो है। (ख) ऊधो को सब ज्ञान हेरायो।—सूर। ३ ऐसी अवस्था मे रहना या होना कि ढूँढने पर भी जल्दी पता न चले। ४ आत्म-विस्मृत होना। अपनी सुध-बुध भूलना। उदा०—नित नई नई रुचि बन हेरत हेराइ री।—केशव।
सयो० क्रि०—जाना।
†स०[हिं० हेरना का प्रे०] तलाश कराना। ढूँढवाना।
स० खो या गँवा देना। गुम कर देना।

हेरा-फेरी—स्त्री०[हिं० हेरना+फेरना] इधर का उधर या उधर का इधर होने की अवस्था या भाव। हेर-फेर।
मुहा०—हेरा-फेरी करना=(क) इधर से उधर आते-जाते रहना। (ख) चीजें इधर से उठाकर उधर और उधर से उठाकर इधर रखना। (ग) अदल-बदल करना।

हेरिक—पु०[स० √हि+इक—रुट् च] गुप्तचर। भेदिया।

हेरियाना—पु०[देश०] जहाज के अगले पालो की रस्सियाँ तानकर बाँधना। हेरिया मारना। (लश०)

हेरी†—स्त्री०[हिं० हेरना] बुलाने के लिए दी जानेवाली आवाज। पुकार।
मुहा०—हेरी देना=पुकारना। उदा०—कोउ हेरी देत, परस्पर स्याम सिखावत।—सूर।

हेरुक—पु० [सं०√हि+उक् रुट् च] १. गणेश का एक नाम। २ महाशिव का एक नाम। ३ एक बोधिसत्व।

हेल—स्त्री० [हिं० हेलना] हेलने की क्रिया या भाव।
पु०[हिं० हिलना=परचना] किसी से हिल-मिल जाने की क्रिया या भाव।
पद—हेल-मेल।
पु०[हिं० हील]१ कीचड़। २. गोबर आदि का ढेर। ३. ढेर। राशि।
पुं०[सं० हेलन]१. अवज्ञा। उपेक्षा। २. घृणा। नफरत।

हेलन—पु० [सं०√हिल् (अनादर करना)+ल्युट्—अन] [वि० हेलनीय, भू० कृ० हेलित] १ तुच्छ समझकर तिरस्कार करना। २. क्रीड़ा या मनोविनोद करना। खेलवाड। ३. अपराध। कसूर।

हेलना—अ० [स० हेलन]१. क्रीडा करना। केलि करना। २. विनोद या हँसी-ठट्ठा करना। ३. खेलवाड की तरह तुच्छ या हेय समझना। ४. तुच्छ समझते हुए अवज्ञा या तिरस्कार करना। ५. ध्यान न देना। उपेक्षा करना। ६. प्रवेश करना। पैठना। जैसे—घर या पानी में हेलना। ७ तैरना।

हेलनीय—वि० [स० √हिल् (अपमान करना)+अनीयर्] उपेक्षा या तिरस्कार के योग्य। उपेक्ष्य।

हेल-मेल—पु०[हिं० हिलना-मिलना]१ हिलने-मिलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वह अवस्था जिसमे लोग औरो के साथ अच्छी तरह हिल-मिल जाते और परस्पर घनिष्ठ आत्मीय संबंध स्थापित करते हैं। ३. आपस मे उक्त प्रकार का होनेवाला घनिष्ठ सबंध। परिचय बढ जाने पर होनेवाला सग-साथ।

हेलया—अव्य० [स०]१. क्रीड़ा या खेलवाड के रूप मे। २. बहुत ही सहज मे।

हेला—स्त्री०[सं०√हिल् (अनादर करना)+अ-ड =ल]१. किसी को तुच्छ समझने पर उसके प्रति होनेवाली अवज्ञा या तिरस्कार का भाव। २ ध्यान न देना। उपेक्षा। ३. क्रीडा। खेलवाड। ४. शृंगारिक प्रसगो मे होनेवाली प्रेमपूर्ण क्रीडा। केलि। ५. साहित्य मे मूलत. नायिका की वे सभी क्रियाएँ जो उसकी शृगारिक भावनाएँ प्रकट करती हैं। यथा—छिन छिन बान बनायी करै। बार-बारकर उरजन धरै। अति सिंगार मगन मन रहे। ताको कवि हेला छवि कहे।—नन्ददास।
विशेष—परवर्त्ती काल के साहित्यकारो ने इसकी गणना एक विशिष्ट 'हाव' के रूप मे की है।
६ परवर्ती साहित्य मे, सयोग शृंगार के अन्तर्गत एक विशिष्ट हाव जिसमे नायिका आँखें या भौंहे नचाकर मिलने की अभिलाषा कुछ धृष्टतापूर्वक और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट करती है।
†अव्य०[स० हेलया] खेलवाड के रूप मे। बहुत सहज मे। उदा०—जेहि बारीस बँधाये हेला।—तुलसी।
पु०[हिं० हल्ला]१ पुकार। हाँक। २ धावा। चढाई।
पु०[हिं० रेलना] धक्का। रेला।
पु० [हिं० हेल=खेप]१ उतना बोझ जितना एक बार टोकरे मे रखकर नाव, गाडी आदि मे ले जा सके। खेप। पारी। बारी। हल्ला। जैसे—इस हेले में यह काम पूरा हो जायगा।
पु० [हिं० हेल=मल] [स्त्री० हेलिन] भगी, मेहतर आदि की तरह की एक जाति जिसका काम मल आदि उठाकर फेंकना है।

हेलान—पु० [देश०] डाँडे को नाव पर रखना। (लश०)

हेलाल—पु०=हिलाल (बालचन्द्र)

हेलिकाप्टर—पु०[अं०] एक प्रकार का बहुत छोटा हवाई जहाज।

हेलित—भू० कृ०[स० हेला+इतच्] जिसका हेलन (अवज्ञा या तिरस्कार) हुआ हो।

हेलिन—स्त्री० [हिं० हेला] हेला जाति की स्त्री। मेहतरानी। गलीज उठानेवाली।

हेली*—अव्य० [हिं० हे (संबोधन)+सं० अली] हे सखी। उदा०—हेली म्हाँसू हरि विनि रह्यो न जाय।—मीराँ।
†स्त्री० सखी। सहेली।
वि० [हिं० हेल=निकट संबंध] जिससे हेल-मेल हो।
पद—हेली-मेली। (देखें)
हेली-मेली—वि० [हिं० हेल-मेल] जिससे हेल-मेल अर्थात् आपसदारी का संबंध और संग-साथ हो।
हेलुआ†—पुं० [हिं० हेलना=पैठना] पानी में खेला जानेवाला एक प्रकार का खेल। (व्रज)
†पुं०=हलुआ।
हेलुवा†—पुं०=हेलुआ।
†पुं०=हलुआ।
हेवंत*—पुं०=हेमंत।
हेवर†—पुं०=हैवर।
हेवाँय†—पुं० [सं० हिमालि] पाला। हिम। बर्फ।
हेष—पुं० [सं०] घोड़े की हिनहिनाहट।
हेषी (षिन्)—पुं० [सं० √हिष्+णिनि] घोड़ा।
हेस-नेस—पुं० [फा० हस्त=होना+नेस्त=न होना, मि० सं० अस्ति+नास्ति] वह स्थिति जिसमें दुविधा या संशय दूर करने के लिए यह निश्चय होता है कि अमुक काम सचमुच हो जायगा या बिलकुल नहीं हो सकेगा।
हैं—अ० हिन्दी की 'होना' क्रिया के वर्तमान-कालिक कृदन्त 'है' का विकारी बहु० रूप।
अव्य० [अनु०] एक अव्यय जो आश्चर्य, असम्मति आदि का सूचक है। जैसे—हैं! यह क्या हुआ।
प्रत्य० व्रजभाषा में 'गा' भविष्यत् कालिक प्रत्यय का बहु०। जैसे—जैहैं, देहैं आदि।
हैंगुल—वि० [सं०] हिंगुल-संबंधी। ईंगुर का।
हैंडबिल—पुं० [अं०]=परचा।
हैंडबैग—पुं० [अं०] चमड़े आदि का एक छोटा बक्स या लंबोतरा थैला, जो छोटी-मोटी चीजें रखने के लिए हाथ में लटकाया जाता है।
हैंडिल—पुं० [अं०] उपकरण, औजार या ऐसी ही और कोई चीज पकड़ने का दस्ता। मुठिया। हत्था।
हैंस—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा, जिसकी जड़ जहरीले फोड़ों को जलाने के लिए घिसकर लगाई जाती है। उदा०—गहन गंभीर हेस मकोई।—नूर मोहम्मद।
है—अ० [हिं० होना] हिन्दी की 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एक वचन रूप। जैसे—वह जाता है।
हैउत†—पुं०=हेमंत (ऋतु)। उदा०—हैउत हैउत ही दिन माँझ सँभी करि राख्यो बसंत-बसंती।—देव।
हैकड़†—वि०=हेकड़।
हैकड़ी†—स्त्री०=हेकड़ी।
हैकल—स्त्री० [सं० हय+गल] १. चौकोर या पान के से दानों की गले में पहनने की एक प्रकार की माला। हुमेल। २. उक्त प्रकार की वह बड़ी माला, जो घोड़ों के गले में पहनाई जाती है।
हैजम—स्त्री० [देश०] १. सेना की पंक्ति। २. तलवार। (डिं०)

हैजा—पुं० [अ० हैज] दस्त और कै की सांघातिक बीमारी, जो संक्रामक रूप में फैलती है। विसूचिका। (कालरा)
हैट—पुं० [अं०] पाश्चात्य देशों की वह छज्जेदार बड़ी टोपी, जिससे धूप का बचाव होता है। टोप।
हैटा—पुं० [देश०] एक प्रकार का अंगूर।
हैतुक—वि० [सं० हेतु+ठण्—इक] १. जिसका कोई हेतु हो। जो किसी उद्देश्य से किया जाय। २. किसी पर अवलंबित या आश्रित।
पुं० १. तर्कशास्त्र का पंडित। तार्किक। २. वह जो व्यर्थ के तर्क करता हो। कुतर्की। ३. नास्तिक। ४. मीमांसा-दर्शन का अनुयायी या समर्थक।
हैदर—पुं० [अ०] शेर।
हैन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। तकड़ी।
हैफ—अव्य० [अ० हैफ] खेद या शोक, सूचक शब्द। अफसोस। हाय।
हैबत—स्त्री० [अ०] १. भय। त्रास। दहशत। २. आतंक।
हैबतनाक—वि० [अ०] भयानक। डरावना।
हैवर—पुं० [सं० हयवर] अच्छा घोड़ा।
हैमंत, हैमंतिक—वि० [सं०] १. हेमन्त से संबंध रखनेवाला। २. हेमंत ऋतु में उत्पन्न होनेवाला।
पुं० हेमंत।
हैम—वि० [सं० हिम+अण्] [स्त्री० हैमी] १. हेम अर्थात् स्वर्ण से संबंध रखनेवाला। २. सोने का बना हुआ। ३. सोने के से रंग का। सुनहला।
पुं० १. शिव का एक नाम। २. चिरायता।
वि० [सं० हिम] १. हिम-संबंधी। हिम का। २. हेमंत ऋतु से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। ३. बरफ में होनेवाला।
पुं० १. ओला। पाला। २. ओस।
हैमन—वि० [सं० हेमन्त+अण्—नलोप] १. जाड़े का। शीतकालीन। २. जाड़े के लिए उपयुक्त।
पुं० १. हेमंत ऋतु। २. शालि-धान्य।
हैमवत—वि० [सं० हिमवत्+अण्] [स्त्री० हैमवती] १. हिमालय का। हिमालय-संबंधी। २. हिमालय पर रहने या होनेवाला।
पुं० १. हिमालय का निवासी। २. एक प्राचीन धार्मिक संप्रदाय। ३. पुराणानुसार एक भू-खंड या वर्ष का नाम। ४. एक प्रकार का विष। ५. मोती।
हैमवतिक—वि० [सं० हिमवत+ठक्—इक] हिमालय पर्वत पर निवास करनेवाला।
हैमवती—स्त्री० [सं०] १. उमा। पार्वती। २. गंगा। ३. हरीतकी। हड़। ४. अलसी। तीसी। ५. रेणुका नामक गंध-द्रव्य।
हैमवरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
हैमा—स्त्री० [सं० हेम+अण्—टाप्] १. सोनजुही। २. पीली चमेली।
हैमी—स्त्री० [सं० हेम-ङीप्] १. केतकी। २. सोनजुही।
वि०=हैमा।
हैयंगवीन—पुं० [सं०] एक दिन पहले के दूध के मक्खन से बनाया हुआ घी। ताजे मक्खन का घी।
हैया†—पुं०=हौआ।

हैरंबी—वि० [सं०] हेरम्ब या गणेश संबंधी।
पुं० हेरंब अर्थात् गणेश का उपासक या भक्त। गाणपत्य।
हैरण्य—वि०[सं० हिरण्य+अण्]१ हिरण्य-संबंधी। २. सोने का बना हुआ। ३. सोना उत्पन्न करनेवाला।
हैरण्यक—पुं०[सं०] स्वर्णकार। सुनार।
हैरण्यगर्भ—वि०[सं०] हिरण्यगर्भ-संबंधी।
हैरण्यवत—पुं०[सं०] जैन पुराणों के अनुसार जम्बू द्वीप के छठे खंड का नाम।
हैरण्यिक—पुं०[सं० हिरण्य+ठक्—इक] स्वर्णकार। सुनार।
हैरत—स्त्री० [अ०] १ आश्चर्य। अचरज। तअज्जुब। २. फारसी संगीत मे एक मुकाम या राग।
हैरान—वि०[अ०] [भाव० हैरानी]१. आश्चर्य, चमत्कार, अप्रत्याशित व्यवहार आदि से चकित तथा स्तब्ध। २ बहुत देर तक दौड़ने-धूपने, खोजने-ढूँढने आदि के कारण जो दुःखी तथा व्यग्र हो रहा हो। जैसे—उस दिन तुम्हारा घर खोजते खोजते हम हैरान हो गये।
हैरानी—स्त्री०[अ०]१ हैरान होने की अवस्था या भाव। २ विस्मय। ३. परेशानी।
हैरिक—पुं०[सं०] १ चोर। २ गुप्तचर।
हैवर†—पुं० [सं० हयवर] अच्छा घोड़ा।
हैवान—पुं० [अ०] [भाव० हैवानियत] १ पशु। जानवर। इंसान का विपर्याय। २ बहुत ही उजड्ड या गँवार आदमी।
हैवानात—पुं० [अ०] 'हैवान' का बहुवचन।
हैवानियत—स्त्री० [अ०] १ हैवान या पशु होने की अवस्था या भाव। पशुत्व। २. पशुओं का सा और विवेकहीन या क्रूर आचरण। 'इन्सानियत' या 'मनुष्यत्व' का विपर्याय।
हैवानी—वि०[अ० हैवान] १ हैवान अर्थात् पशु-संबंधी। २ पशुओं का सा।
हैस-बैस—स्त्री०[अ०] १. लड़ाई-झगड़ा। २. हो-हल्ला। ३. व्यर्थ का तर्क-वितर्क या वाद-विवाद।
हैसियत—स्त्री० [अ०] १ रंग-ढंग। तौर-तरीका। २. शक्ति या सामर्थ्य सूचक योग्यता। ३ आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियों से किसी की योग्यता-सूचक स्थिति। जैसे—थोड़े ही दिनो मे उसने अपनी अच्छी हैसियत बना ली है। ४ मालियत या मूल्य के विचार से सारी धन-संपत्ति। जैसे—उसने थोड़े ही दिनो मे लाखो रुपयों की हैसियत बरबाद कर दी। ५. सामाजिक मान-मर्यादा। इज्जत। प्रतिष्ठा। जैसे—बड़ो से बातें करते समय तुम्हें अपनी हैसियत का भी ध्यान रखना चाहिए।
हैहय—पुं० [सं० हैहय+अण्] एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है। पुराणानुसार इन्होंने शकों के साथ-साथ भारत के अनेक देश जीते थे। प्राचीन काल में इस वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्य सहस्रार्जुन था, जिसे परशुराम ने मारा था।
हैहयराज—पुं०[सं०] हैहयवंशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन।
हैहयाधिराज—पुं० [सं०] हैहयराज।
है है—अव्य०[हाहा]१. शोक या दुःख-सूचक शब्द। हाय। अफसोस। हा हंत। २. परम आश्चर्य का सूचक शब्द। (स्त्रियाँ) जैसे—है है! यह क्या हो गया।

हों—अ० [हिं० होना] हिन्दी की सत्तार्थक क्रिया 'होना' का संभाव्य काल के 'हो' का बहुवचन रूप। जैसे—शायद वे वहाँ से चले गये हों।
होंकरना—अ० [अनु०] १ हों-हों शब्द करना। २ जोर से और कटुतापूर्वक बोलना। ३ हुँकारना।
होंठ—पुं० [सं० ओष्ठ, पुं० हिं० ओठ] प्राणियों के मुख-विवर के आगे के उभरे हुए दोनो किनारे जो ऊपर-नीचे होते हैं; और जिनसे दाँत ढके रहते हैं। ओष्ठ। रदच्छद।
मुहा०—होंठ काटना=दे० नीचे 'होंठ चबाना'। होंठ चबाना=दाँतों से बार-बार होंठ दबाना जो तीव्र क्रोध का सूचक है। होंठ चाटना=बहुत स्वादिष्ट वस्तु खाकर अतृप्ति प्रकट करना। जैसे—हलुआ ऐसा बना था कि लोग होंठ चाटते रह गये। होंठ चिपकना=मीठी वस्तु का नाम सुनकर मुख की उक्त प्रकार की स्थिति से लालच के लक्षण प्रकट होना। (किसी के) होंठ चूसना=होंठों का चुम्बन करते हुए उनका रस लेना। अधर पान करना। होंठ हिलाना=धीरे से कुछ बोलना। जैसे—सब बातें हो गईं, पर उसने होंठ तक न हिलाये।
होंठल—वि०[हिं० होंठ+ल (प्रत्य०)] बड़े और मोटे होंठोंवाला।
होंठी—स्त्री०[हिं० होंठ]१ ऊँचा उठा हुआ किनारा। अवंठ। बादवारी। २. किसी चीज का छोटा टुकड़ा।
हो—अ०[हिं० होना]१. सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य पुरुष संभाव्य काल तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप। जैसे—शायद वह हो।
†अ० ब्रज भाषा मे वर्तमान कालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत रूप। था।
पुं०[अनु०] किसी को जोर से पुकारते समय संबोधन-सूचक शब्द। जैसे—क्या हो पाण्डेय जी।
होई—स्त्री० दे० 'अहोई' (पूजन)
होगला—पुं०[देश०] एक प्रकार का नरसल या नरकट।
होजन—पुं०[?] एक प्रकार का हाशिया या किनारा जो कपड़ों मे बनाया जाता है।
होटल—पुं०[अं० होटल]आधुनिक ढंग का वह विश्राम-स्थान, जहाँ लोग मूल्य देकर कुछ खाते-पीते या किराया देकर कुछ समय के लिए ठहरते हों।
होड़—स्त्री०[सं० हार=लड़ाई, विवाद]१. शर्त। बाजी।
क्रि० प्र०—बदना।—लगाना।
२. चढ़ा-ऊपरी। प्रतिस्पर्धा। ३. किसी के बराबर होने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। उदा०—बदी बिदाई में भी अच्छी होड़।—निराला। ३. जिद। हठ।
पुं०[सं०] नाव। नौका।
होड़ना†—अ०[हिं० होड़] किसी से होड़ लगाना। प्रतियोगिता या स्पर्धा करना। उदा०—निंदकु सों जो निंदा होरैं (होड़ै)।—कबीर।
होड़ा—पुं० [सं०] १. चोर। २ लुटेरा। ३. डाकू।
होड़-बादी—स्त्री० [हिं० होड़+बदना] =होड़ा-होड़ी।
होड़-होड़ी—स्त्री० [हिं० होड़] १. एक दूसरे से आगे बढ जाने का प्रयत्न। प्रतिस्पर्धा। २. बाजी। शर्त।
होत—स्त्री० [हिं० होना या सं० भूति] १. होने की अवस्था, गुण या

भाव। अस्तित्व। २ पास मे धन होने की दशा। सपन्नता। उदा०—होत का वाप अनहोत की माँ। ३. समाई। सामर्थ्य।

होतव—पु०[स० भवितव्य] वह वात जो दैव की ओर से अवश्यभावी हो। भावी। होनहार।

होतव्य†—पु०=होतव।

होतव्यता—स्त्री०[स० भवितव्यता] अवश्य और अनिवार्य रूप से होनेवाली वात। होनहार। भवितव्यता।

होता—पु०[सं० होतृ][स्त्री० होत्री] [वि० हौतृक]१. यज्ञ मे आहुति देनेवाला। ऋत्विज। २ यज्ञ करानेवाला पुरोहित। ३ अग्नि। ४ शिव।

होता-सोता—वि० [हिं० होना+सोना (अनु०)] निकट का सम्वन्धी। जैसे—अपने होते-सोतो की ऐसी वातें अच्छी नही लगती।

होतृक—पु०[स०] दे० 'होत्रक'।

होते-सोते—अव्य [हिं० होता-सोता] किसी के वर्तमान रहते हुए। जैसे—हमारे होते-सोते तुम्हे कौन कुछ कह सकता है।

होत्र—पु० [स०√हु (देना।–लेना)+ष्ट्रन्] १ हवि। २ होम। ३ हवन की सामग्री।

होत्रक—पु०[स०] होता का सहायक।

होत्री—स्त्री० [स०] १ यज्ञ मे यजमान के रूप मे शिव की मूर्ति। २ शिव की आठ मूर्तियो मे से एक।

पु०=होता।

होत्रीय—वि० [स० होत्र-होतृ वा+छ—ईय] होता से सवध रखनेवाला।

पु०१. होता। २ हवन अथवा यज्ञ करने का मडल या स्थान।

होनहार—वि०[हिं० होना+हारा (प्रत्य०)]१ (घटना या वात) जो अवश्य होने को हो। होनी। भावी। २ (व्यक्ति विशेषत वालक) आगे चलकर जिसके सुयोग्य होने की आशा हो या सभावना हो। अच्छे लक्षणोवाला। उदीयमान। (प्रॉमिसिंग)

पु० वह वात, जो दैवी या प्राकृत रूप से अवश्य होने को हो। अवश्यभावी घटना या वात। भवितव्यता। होनी। जैसे—होनहार हिरदै वसै, विसर जाय सव सुद्ध। (कहा०)

होना—अ०[स० भवन, प्रा० होन] १. एक वहुत प्रचलित और प्रसिद्ध क्रिया जो प्रयोग और व्यवहार की दृष्टि से 'करना' क्रिया के अकर्मक रूप का काम देती है। यद्यपि व्युत्पत्तिक दृष्टि से इसका सवध स० भवन (वनना) से है, फिर भी साधारण क्रिया के रूप मे यह अस्तित्व, उपस्थिति, विद्यमानता, सत्ता आदि के अनक प्रकार के भावो से युक्त हो गई है, और प्राय नीचे लिखे अर्थो मे प्रयुक्त होती है। २ किसी प्रकार के अथवा किसी रूप मे अस्तित्व मे आना। किसी प्रकार अथवा किसी रूप मे वनकर प्रकाश मे या सामने आना। जैसे—(क) वृक्षो मे फल होना। (ख) दिन के वाद रात (या रात के वाद दिन) होना। ३ किसी क्रिया या व्यापार का पूर्णतया समाप्ति पर आना या पहुँचना। जैसे—(क) लडके का जनेऊ (या विवाह) होना। (ख) पुस्तक का छपकर प्रकाशित होना। (ग) विरोधी दलो मे मेल (या समझौता) होना।

पद—हो चुका=(क) नही हो सकता। कभी न होगा। जैसे—तुमसे तो यह काम हो चुका। (ख) अन्त या परिणाम अभीष्ट या शुभ नही होगा। (नैराश्य-सूचक) जैसे—यदि ऐसे ही शिक्षक यहाँ आते रहे, तो फिर पढाई हो चुकी। तो क्या हुआ=कुछ आपत्ति, चिन्ता, दोष या हर्ज की वात नही है, अत. इसका ध्यान या विचार छोड दो। जैसे—यदि वह रूठकर चला ही गया है, तो क्या हुआ (अथवा क्या हो गया)।

मुहा०—(किसी काम या वात का)होकर रहना=अवश्य और निश्चित रूप से पूरा या सम्पन्न होना। किसी तरह न चलना या न रुकना। जैसे—तुम लाख चिल्लाया करो, पर हमारा काम तो होकर रहेगा। (किसी व्यक्ति का) हो चुकना=देहावसान या मृत्यु हो जाना। मर जाना। जैसे—लडके के घर पहुँचने से पहले ही वे हो चुके थे। होना जाना या होना-होवाना=जो कुछ होने को हो या हो सकता हो। जैसे—(क) इस तरह की वातो से कुछ भी होना जाना नही है। (ख) जो कुछ होना-होवाना हो, वह आज ही हो जाय।

३. किया हुआ कार्य या घटना का क्रियात्मक अथवा वास्तविक रूप मे सामने आना। जैसे—(क) पराधीन देश का स्वतन्त्र होना। (ख) आपस मे मारपीट या लड़ाई-झगडा होना।

पद—हो न हो=वहुत कुछ सम्भावना इसी वात की जान पडती है। जैसे—हो न हो, यह चोरी उसी नये नौकर ने कराई है।

४ किसी क्रिया या व्यापार का उचित, नियमित या नियत क्रम अथवा रूप मे चलना। जारी रहना। जैसे—(क) गाना होता है। (ख) पढाई होती थी। (ग) पानी वरसता है। (घ) हवा चलती है। ५ उपस्थित, वर्तमान या विद्यमान रहना। जैसे—(क) आज-कल वे यही है। (ख) मेरे पास ऐसी कई पुस्तके हैं। (ग) हमारे लिए उनका होना और न होना दोनो वरावर हैं। (घ) मैं हो हूँ जो वरावर तुम्हारी रक्षा कर रहा हूँ।

मुहा०—(किसी के) होते-सोते=उपस्थित, वर्तमान या विद्यमान रहने पर। जैसे—तुम्हारे होते-सोते कौन मेरी तरफ आँख उठाकर देख सकता है।

६. उत्पत्ति, जन्म, रचना, सृष्टि आदि के फलस्वरूप दिखाई देना या सामने आना। जैसे—(क) घर मे वच्चो का जन्म होना। (ख) फसल पककर (या रसोई वनकर) तैयार होना। (ग) किसी को वुखार (लकवा या हैजा) होना। ७ पहली या पुरानी अवस्था, रूप आदि से वदलकर नई अवस्था, रूप आदि मे आना। जैसे—(क) यह लडका तो अव जवान हो चला हे। (ख) उनके सिर के वाल सफेद हो रहे है। (ग) चार दिन की वीमारी मे तुम क्या से क्या हो गये। ८ किसी क्रिया, वात या वस्तु से कोई परिणाम या फल निकालना। किसी प्रकार की कार्य-सिद्धि दिखाई देना। जैसे—(क) इस उपचार (या औषध) से रोगी को लाभ हो रहा है। (ख) सौ रुपयो से तो यहाँ कुछ भी न होगा। ९ किसी निश्चित और विशिष्ट अवस्था, दशा या स्थिति मे आना या पहुँचना। जैसे—(क) विद्यार्थी का पढकर पण्डित होना। (ख) स्त्री का गर्भवती (या रजस्वला) होना। (ग) हिन्दू का ईसाई या मुसलमान होना।

मुहा०—(किसी का कुछ) हो वैठना=वास्तविक गुण, योग्यता आदि के अभाव मे भी किसी विशिष्ट पद या स्थिति मे पहुँचना अथवा यह प्रकट करना कि हम कुछ वन गये है। (हिन्दी के वन-वैठना, मुहावरे की तरह प्रयुक्त) जैसे—(क) आज-कल तो वह ज्योतिषी या वैद्य

हो बैठा है। (ख) हम तो सब कुछ दे-दिलाकर कंगाल हो बैठे हैं। **(किसी स्त्री का) हो रहना**=मासिक धर्म से अथवा रजस्वला होना। १०. अवधि, समय आदि का गुजरना या बीतना। जैसे—(क) उसे यहाँ आये अभी दो ही दिन हुए है। (ख) उनका देहावसान हुए महीनों हो गये। ११. किसी विशिष्ट कारणवश कहीं जाना अथवा जाकर कुछ समय तक वर्तमान रहना। कहीं जाना और वहाँ कुछ ठहरना या रुकना। जैसे—(क) जब कलकत्ते जाते हो, तब जगन्नाथजी भी होते आना। (ख) वे भले ही पंजाबी हों, पर अब तो वे काशी के हो गये हैं।

मुहा०—(किसी के यहाँ) होते हुए आना (या जाना)=आने या जाने के समय बीच मे किसी से मिलते हुए। जैसे—जब चौक जाते हो, तब शर्मा जी के यहाँ से होते या होते हुए आना (या जाना)। (किसी जगह) से होते हुए=जाने या आने के समय बीच मे कोई स्थान पार करते हुए। जैसे—हम कलकत्ते गये तो थे पटने होते हुए, पर लौटे गया होते हुए। (किसी जगह के या कहीं के) हो रहना=कहीं जाने पर अकारण, अनावश्यक रूप से या आवश्यकता से अधिक समय तक ठहरे या रुके रहना। जैसे—यह नौकर जहाँ जाता है, वहीं का हो रहता है। १२ रिश्ते या सबध के विचार से किसी के साथ सबद्ध रहना। जैसे—रिश्ते मे वे हमारे भाई होते हैं।

१३ किसी रूप मे किसी का आत्मीय या निकट संबंधी, बनना या रहना। जैसे—जो तुम्हारा हो उससे सहायता माँगो।

पद—होता-सोता=जिसके साथ आत्मीयता का सम्पर्क या निकट का सबध हो। जैसे—यह सब रोना-धोना जाकर अपने होतो-सोतों को सुनाओ। (वह) कौन होता है=(उसका) प्रस्तुत विषय से क्या सबध है! (उसे) इस बीच मे बोलने या हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है! जैसे—वह हमारे घरेलू मामले मे बोलनेवाला कौन होता है। (प्रथम पुरुष मे इसी का रूप होता है—मैं कौन होता हूँ।)

१४. किसी के साथ आत्मीयता या घनिष्ठता का सबध स्थापित करके उसके अधीन या वशवर्ती बनना। उदा०—तुम हमारे हो न हो, पर हम तुम्हारे हो चुके।—कोई शायर।

मुहा०—(किसी के) हो जाना या हो रहना=किसी के अधीन या वशवर्ती बन जाना। उदा०—अपना किसी को कर लो, या हो रहो किसी के।—कोई शायर।

१५ किसी प्रकार की अनिष्टकारक, अप्रिय, अवाछनीय और असाधारण घटना, बात या स्थिति का प्रकट या प्रत्यक्ष रूप मे सामने आना। उदा०—दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है? तेरे इस दर्द की दवा क्या है?—गालिब।

मुहा०—(किसी को कुछ) हो जाना=(क) किसी प्रकार की अनिष्ट-सूचक दशा या स्थिति दिखाई पडना। जैसे—(क) जान पडता है कि इसे कुछ हो गया है। (ख) न जाने आज-कल तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सीधी तरह से बात ही नहीं करते।

विशेष—(क) इस क्रिया के अलग-अलग कालो के हुआ, था, है, हो, होना, होता आदि अनेक विकारी रूप होते है, जिनमे लिंग, और वचन के अनुसार कुछ और विकार भी होते है। (ख) जब इस क्रिया का कोई रूप अकेला आता है और साधारण क्रिया के रूप मे प्रयुक्त होता है, तब वह अपना स्वतत्र अर्थ रखता है, पर जब इसके दो रूप साथ-साथ आते है, तब दूसरा रूप सहकारी क्रिया का काम देता है। (ग) इस क्रिया के था, है, होगा सरीखे कुछ रूपो के सबंध में अनेक वैयाकरणों का मत है कि इनका प्रयोग केवल काल-सूचित करने के लिए होता है। परन्तु वस्तुतः ये रूप उसी दशा मे काल-सूचक होते है, जब इनका प्रयोग सहकारी क्रिया के रूप में अर्थात् किसी दूसरी क्रिया के साथ होता है। जैसे—वह खाता था; मैं बैठा हूँ—सरीखे प्रयोगों मे था और हूँ केवल काल-सूचक है। शेष अवस्थाओ मे ऊपर बताये हुए अर्थों मे से इसका कोई न कोई अर्थ होता ही है। (ग) कुछ अवस्थाओं मे यह क्रिया वाक्यों में उद्देश्य और विधेय मे सबंध स्थापित करने के लिए केवल कड़ी के रूप मे भी प्रयुक्त होती है। जैसे—पुस्तक सुन्दर है। पृथ्वी गोल है। फल मीठा था। आदि। (घ) कुछ अवस्थाओ में इसका प्रयोग 'बनना' की तरह या उस के पर्याय के रूप में भी होता है। जैसे—रसोई बनना और रसोई होना। पर कुछ अवस्थाओं मे ऐसा नहीं भी होता है। जैसे—दीवार (या मकान) बनना की जगह दीवार (या मकान) होना नहीं कहा जाता।

होनिहार†—पुं० =होनहार।

होनी—स्त्री० [हि० होना] १ होने की क्रिया या भाव। जैसे—मुझसे गलती होनी ही थी। २ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। ३ ऐसी घटना या बात, जिसका घटित होना अनिवार्य, अवश्यभावी या निश्चित हो। भवितव्यता। जैसे—जो होनी है, वह होकर ही रहेगी। ४. होनहार।

होबार—पु० [देश०] सोहन चिड़िया का एक भेद। तिलोर।

†पु० [?] बोझ। (डिं०)

होम—पुं० [सं०√हु(देना-लेना)+मन्] अग्नि मे घृत, जौ आदि डालने का धार्मिक कृत्य। हवन।

मुहा०—(कोई चीज) होम करना=(किसी चीज का) इस प्रकार उपयोग या व्यवहार करना कि कुछ भी बाकी न रह जाय। जी-जान होम करना=सारी शक्ति लगा देना।

होमक—पु० [सं०] वह जो होम या हवन करता हो। होता।

होम-काष्ठी—स्त्री० [सं०] यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करने की फुंकनी। सामिधेनी।

होम-कुंड—पु० [स० ष० त०] वह गड्ढा या धातु का बना हुआ गहरा पात्र, जिसमे होम के लिए आग जलाई जाती है।

होमना—स० [सं० होम+हि० ना (प्रत्य०)] १. देवता के उद्देश्य से अग्नि मे कोई चीज डालना। हवन करना। २ पूर्ण रूप से उत्सर्ग या परित्याग करना। बिलकुल छोड देना। उदा०—होमति सुख करि कामना, तुमहि मिलन की लाल।—बिहारी। ३ पूरी तरह से नष्ट या बरबाद करना।

सयो० क्रि०—देना।

होम-धेनु—स्त्री० [स० चतु० त०] वह गौ जिसका दूध होम-सबधी कार्यों के लिए दुहा जाता हो।

होमाग्नि—स्त्री० [स० ष० त०] होम करने के लिए जलाई हुई अग्नि।

होमार्जुनी—स्त्री० [स०]=होम-धेनु।

होमि—पु० [स०] १. अग्नि। आग। २. घृत। घी। ३ जल। पानी।

होमियोपैथ—पु० [अ०] [भाव० होमियोपैथी] होमियोपैथी नामक चिकित्सा-पद्धति से चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति।

होमियोपैथिक—वि० [अ०] १. होमियोपैथी से सबद्ध। २. होमियोपैथ से सबद्ध।

होमियोपैथी—स्त्री० [अ०] रोगो की चिकित्सा की एक पाश्चात्य प्रणाली जो इस सिद्धान्त पर आश्रित है कि जिन औषधो के प्रयोग से किसी स्वस्थ व्यक्ति के शरीर मे किसी विशिष्ट रोग के लक्षणो का आविर्भाव होता है, उन्ही औषधो की बहुत सूक्ष्म मात्रा से वे रोग दूर भी होते हैं। (एलोपैथी से भिन्न और उसके विपरीत)

होमीय—वि० [स०] होम-सबधी। होम का। जैसे—होमीय द्रव्य।

होम्य—वि० [स० होम+यत्] १ होम-सबधी। होम का। २ जो होम किया, अर्थात् हवन की अग्नि मे डाला जाने को हो।

पु० घृत। घी।

होर—वि० [अनु०] रुका या ठहरा हुआ।

†स्त्री०=होड।

होरना†—स०=हेरना (ढूंढना)।

अ० दे० 'होडना'।

होरना—पु० [देश०] सॉवक नामक घास, जो पशुओ के चारे के काम आती है।

होरसा—पु० [स० घर्ष=घिसना] पत्थर की वह गोल छोटी चौकी, जिस पर चदन आदि घिसते या रोटी बेलते हैं। चौका।

होरहा—पु० [स० होलक] १ चने का छोटा पौधा जो प्राय जड से उखाड कर बाजारो मे बेचा जाता है और जिसमे से चने के ताजे और हरे दाने निकलते हैं। होरा (होला)।

पद—**होरहे का दाना**=हरा और ताजा चना।

२ चने का ताजा दाना। ३. चने का ताजा और भुना हुआ दाना।

होरा—स्त्री० [स० यूनानी भाषा से गृहीत] १ एक अहोरात्र का चौबीसवॉ भाग। घटा। २ किसी राशि या लग्न का आधा अश। ३. जन्म-कुडली। ४ जन्म-कुडली के अनुसार फलाफल-निर्णय की विद्या। जातक-ग्रन्थ।

†पु०=होला।

†पु०=होरहा।

होरिल—पु० [देश०] नवजात बालक। नया पैदा लडका। उदा०—बाँए कर होरिल को सीस राखि दाहिने सो गहे कुच प्यारी पय-पान करावति है।—सेनापति।

होरिहार†—पु०=होलिहार।

होरी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की बडी नाव, जो जहाजो पर का माल लादने और उतारने के काम मे आती है।

स्त्री० [हिं० होली] १ सगीत मे, धमार की तरह का एक प्रकार का गीत जो अनेक राग-रागिनियो मे गाया जाता है। इसमे अधिकतर श्रीकृष्ण और गोपियो के होली खेलने का वर्णन होता है। २ दे० 'होली'।

होल—पु० [देश०] पश्चिमी एशिया से आया हुआ एक प्रकार का पौधा जो घोडो और चौपायो के चारे के लिए लगाया जाता है।

होलक—पु० [स०] आग मे भुनी हुई चने, मटर आदि की हरी फलियाँ। होरा। होरहा।

होलकर—पु० [होल नामक गाँव से] [स्त्री० होलकरी] १. होल गाँव का निवासी। २ मध्ययुगीन भारत मे इदौर नामक देशी राज्य के राजाओ की उपाधि।

होलड़—पु० [देश०] १. नया उत्पन्न बच्चा। होरिल। २ बच्चे के जन्म के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

होला—स्त्री० [स०] होली का त्योहार।

पु० सिक्खो की होली, जो होलिका-दाह के दूसरे दिन होती है।

पु० [स० होलक] १ आग मे भूनी हुई चने, मटर आदि की फलियाँ। २. उक्त भूनी हुई फलियो मे से निकाले हुए दाने।

†पु०=होरहा।

होलाक—पु० [स०] आग की गरमी पहुँचाकर पसीना लाने की एक क्रिया। एक प्रकार की स्वेदन-विधि। (आयुर्वेद)

होलाष्टक—पु० [स० ष० त०] फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक के ८ दिन, जिनमे यात्रा तथा दूसरे शुभ कार्य प्राय. नही किये जाते।

होलिका—स्त्री० [स०] १ एक प्रसिद्ध राक्षसी। २ होली का त्योहार। ३ होली मे जलाई जानेवाली लकडियो आदि का ढेर। दे० 'होली'।

होलिकाष्टक—पु०=होलाष्टक।

होलिहार—पु० [हिं० होली] १ वह जो घूम-घूम कर धूम-धाम से होली खेलता फिरता हो। २ चारो ओर से मन-माने ढग से उपद्रव मचानेवाला।

होली—स्त्री० [स० होलिका] १ हिंदुओ का एक प्रसिद्ध त्योहार, जो फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है और जिसमे चौराहो आदि पर आग जलाते, एक दूसरे पर रग-अबीर डालते और परस्पर हास-परिहास करते हैं।

पद—**होली का भडुआ**=वह बे-ढगा और भद्दा पुतला, जो होली के दिनो मे हास-परिहास के लिए कही खडा किया जाता अथवा जुलूसो के साथ निकाला जाता है।

मुहा०—**होली खेलना**=आपस मे एक-दूसरे पर अबीर, रग डालना और हास-परिहास करके होली का त्योहार मनाना।

२ लकडियो आदि का वह ढेर, जो उक्त दिन प्राय. रात को एक निश्चित समय पर जलाया जाता है। ३. एक विशेष प्रकार का गीत, जो माघ-फाग्गुन मे अनेक धुनों और राग-रागनियो मे गाया जाता है। ४. प्राय. अनावश्यक रूप से अथवा व्यर्थ के कामो मे बिना सोचे-समझे किया जानेवाला व्यय। जैसे—बात की बात मे हजार रुपयो की होली हो गई। ५ किसी उत्सव या समारोह के समय आनद मनाने के लिए खुली जगह मे और सब लोगो के सामने जलाई जानेवाली आग। ६ अनिष्टकारक या त्याज्य वस्तुओ का अतिम रूप से विनाश करने के लिए सार्वजनिक रूप से उनकी राशियो मे जलाई जानेवाली आग। (बानफायर) जैसे—विलायती कपडो की होली।

क्रि० प्र०—जलना।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कँटीला झाड या पौधा।

होलू—पु० [हिं० होला] भुने या उबाले हुए चने। (खोमचेवालो की बोली)

होल्डर—पु० [अ०] वह चीज जिसका उपयोग किसी दूसरी चीज को पकड़े रहने के लिए होता है। जैसे—कलम का होल्डर, जिसमे निव लगाई जाती है। विजली के लट्टू का होल्डर, जिसमे विजली का लट्टू लगाया जाता है।

होल्डाल—पु० [अ० होल्ड-आल] यात्रा के समय काम आनेवाला एक प्रकार का वहुत लवा थैला, जिसमे विस्तर के साथ पहनने के कपड़े आदि भी रख लिए जाते हैं और जो लपेटकर गट्ठर या वडल के रूपमे कर लिया जाता है। विस्तर-वद।

होश—पु० [फा०] १ वुद्धिमत्ता। समझदारी। २ ज्ञान या वोध की वृत्ति जो चेतनता, वुद्धिमत्ता, स्मृति आदि की परिचायक या सूचक है। चेतना। सज्ञा।

पद—होश की दवा करो=अपनी वुद्धि ठिकाने लाओ। अच्छी तरह समझ-वूझकर काम करो। होश-हवास=व्यक्ति या शरीर की ऐसी चेतनावस्था, जिसमे यह सव काम ठीक तरह से कर सकता और सव वातें सोच-समझ सकता हे।

मुहा०—होश उड़ जाना=अचानक कोई भीषण, विकट या विलक्षण स्थिति उत्पन्न होने पर कुछ समय के लिए किंकर्तव्य-विमूढ हो जाना या सुव-वुध गँवा वैठना। होश करना=ऐसी स्थिति मे आना कि चेतना और वुद्धि ठीक तरह से काम करने लगे। होश ठिकाने होना=(क) चित्त स्वस्थ होना। चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। (ख) भ्राति या मोह दूर होने के फल-स्वरूप वुद्धि ठीक होना। (ग) दड, फल आदि भोगने पर अभिमान या घमड दूर होना। होश दंग होना=दे० ऊपर 'होश उड जाना'। होश पकड़ना=(क) दे० ऊपर 'होश करना'। (ख) दे० नीचे 'होश सँभालना'। होश में आना=अज्ञान, वे-सुध या सज्ञा-शून्य हो जाने के उपरात फिर से चैतन्य होना। वेहोशी दूर होने पर सुध मे आना। होश संभालना=वाल्यावस्था समाप्त होने पर ऐसी अवस्था मे आना कि धीरे-धीरे सव वाते समझ मे आने लगें। वयस्कता का आरभ होना। ३. याद। स्मृति।

मुहा०—होश दिलाना=याद या स्मरण कराना।

होशमंद—वि० [फा०] [भाव० होशमदी] जिसे होश अर्थात् अच्छी समझ हो। समझदार। होशियार।

होशियार—वि० [अ० होशयार] १. जिसके होश-हवास ठीक हो। २ सावधान। ३. चतुर। चालाक। ४ कुशल। दक्ष। ५ वयस्क। जैसे—अव तो उनका लडका भी होशियार हो चला है।

विशेष—चालाक और होशियार मे मौलिक अतर यह है कि 'चालाक' व्यक्ति तो प्राय कपट, छल अथवा कौशल पूर्ण युक्ति से भी काम लेता है। पर 'होशियार' मे केवल वुद्धिमत्ता और सव प्रकार की सचेतता का भाव ही प्रधान है, कौशल आदि का नही।

होशियारी—स्त्री० [फा०] १. होशियार होने की अवस्था गुण या भाव। कौशल। दक्षता। २ चतुराई। चालाकी। ३ सावधानता।

होस†—पु० १ =होश। २.=हौस।

होस्टल—पु० [देश०] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण और एक गुरु होता है। सुवि।

होहा—पु० [अ०]=छात्रावास।

हौं†—सर्व० [सं० अहम्] व्रजभाषा का उत्तम पुरुष एक वचन सर्वनाम। मैं।

†अ० हिं० 'होना' क्रिया के वर्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एक वचन 'हूँ' का स्थानिक रूप।

हौंकना— अ० [हिं० हुकार] १. गरजना। हुंकार करना। २. हाँफना।

†स०=धौकना।

हौंस—स्त्री० [अ० हविस] कामना। लालसा। उदा०—रात दिवस हौस रहति, मान न विनु ठहराय।—विहारी।

हौ—अ० [हिं० होना] १. हिन्दी की 'होना' क्रिया का मध्यम पुरुष एक वचन, वर्तमान कालिक रूप। हो। २. 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

†अव्य०=हाँ। (स्वीकृति सूचक)

† अ०=है। (पूरव)

हौआ—स्त्री० [अ० हौवा] पैगम्वरी मतो के अनुसार सव से पहली स्त्री जो पृथ्वी पर आदम के साथ उत्पन्न हुई थी और जो मनुष्य-जाति की आदि माता मानी जाती है। (ईव)

†पु० [हौ हौ से अनु०] एक प्रकार का कल्पित और भीषण या विकराल जन्तु या प्राणी, जिसके नाम का उपयोग किसी को वहुत अधिक भयभीत करने के लिए किया जाता है। (वॉगी)

हौका—पु० [हिं० हाय]=हाय।

हौज—पु० [अ० हौज़] १. पानी जमा रहने का चहवच्चा। कुड। २. मिट्टी आदि का वना हुआ नाँद नामक अर्ध-गोलाकार वडा पात्र।

हौजा—पु० [फा० हौज़] हाथी का हौदा।

हौताशन—वि० [स०] अग्नि-संवधी। हुताशन सवंधी। अग्नि का।

हौताशनि—पु० [स०] १. स्कद। २. नील नामक वदर।

हौतृक—वि० [स०] होता से सवद्ध।

पु० होता का कार्य या पद।

हौत्र—पु० [स०] =होता।

हौत्रिक—वि० [स० होतृ+ठक्—इक] होता के कार्य से सवध रखनेवाला।

हौद—पु०=हौज।

हौदा—पु० [फा० हौज] हाथी की पीठ पर रखकर कसा जानेवाला आसन जिसके चारो ओर रोक रहती है, और पीठ टिकाने के लिए गद्दी रहती है।

क्रि० प्र०—कसना।

पु० [हिं० हौद][स्त्री० अल्पा० हौदी] मिट्टी आदि का नाँद के आकार का गोलाकार वडा पात्र। हौज।

हौमीय—वि० [स०]=होमीय।

हौर—पु० [अ० हौल] १. डर। भय। २. डरावनी चीज या वात। भयानक वस्तु। उदा०—सुत के भएँ वधाई पाई, लोगनि देखत हौर। —सूर।

हौरा†—पु० [अनु० हाव, हाव] शोर-गुल। हल्ला। कोलाहल।

क्रि० प्र०—करना।—मचना। मचाना।—होना।

हौरे—अव्य०=हौले।

हौल—पु० [अ०] डर। भय।

क्रि० प्र०—बैठना।—समाना।

हौल-जौल—स्त्री०[अ० हौल+जौल अनु०] १. जल्दी। शीघ्रता। २ हड़बड़ी।

हौलदार†—पु०=हवलदार।

हौलदिल—पु० [फा०] [वि० हौलदिला] १ दिल मे बैठा हुआ भय। २ उक्त भय के उग्र होने पर दिल मे होनेवाली घबराहट। ३. दिल की धडकन। हृदय-कप। ४ दिल घबराने का रोग।

हौल-दिला—वि० [फा० हौलदिल] [स्त्री० हौल-दिली] ऐसे दुर्बल हृदयवाला जिसके मन मे जल्दी भय समा जाता हो। जो जल्दी डरकर घबरा जाता हो।

हौल-दिली—स्त्री० [फा०] यशब नामक पत्थर का वह चिपटा छोटा टुकडा, जो प्राय डोरे मे पिरोकर गले मे पहना जाता है। कहते है कि इससे कलेजे की धडकन आदि रोग दूर होते है।

हौलनाक—वि०[अ०+फा०] दिल मे भय बैठानेवाला। अत्यन्त भयानक।

हौला-जौली—स्त्री०=हौल-जौल।

हौली—स्त्री०[स० हाला=मद्य]१ वह स्थान, जहाँ मद्य उतरता और विकता है। आवकारी। २ वह दूकान, जहाँ देशी शराव विकती हो और लोग बैठकर पीते हों।

हौलू†—वि० [हिं० हौल]=हौल-दिला।

हौले—अव्य० [हिं० हरुआ] १ धीरे। आहिस्ता।२. मद गति से। जैसे—हौले-हौले चलना।

पद—हौले हौले=धीरे-धीरे। आहिस्ते से।

हौवा—स्त्री०, पु०=हौआ।

हौस—स्त्री०[अ० हवस]१. मन मे बैठी हुई किसी वात की गहरी चाह या प्रवल लालसा, जिसकी पूर्ति की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा की जाती हो। २ मन की उमग या तरग। ३. किसी काम, चीज या वात के प्रति होनेवाला उत्साह। हौसला।

क्रि० प्र०—निकालना।—पूरी करना।—मिटाना।

हौसला—पु०[अ० हौसल] १ पक्षियों के पेट का वह ऊपरी भाग, जिसमे खाये हुए दाने आदि एकत्र होते है। पोटा। २. उक्त के आधार पर, मनुष्य का ऐसा साहस या हिम्मत, जिसके फलस्वरूप वह किसी प्रकार की प्रसन्नता या सतोष प्राप्त करना चाहता है। जैसे—उसने वड़े हौसले से अपने वेटे का व्याह किया है।

मुहा०—(मन का) हौसला निकालना=जिस काम या वात के लिए मन मे वहुत उमग या चाह हो, उसे पूरी कर लेना। हौसला पस्त होना=प्रयत्न करके विफल होने पर मन का उत्साह नष्ट हो जाना।

३. साहस। हिम्मत। जैसे—वह वहुत हौसलेवाला आदमी है।

मुहा०—(किसी का) हौसला बढाना=उत्तेजित और प्रोत्साहित करना। जैसे—तुम्ही ने तो उसका हौसला बढाकर उसे इस रोजगार मे लगाया था।

हौसलामद—वि०[फा०]१ लालसा। रखनेवाला। साहसी। २ उदार।

ह्याँ—अव्य०=यहाँ।

ह्याउ—पु०=हियाव।

ह्यो—पु०='हिया' (हृदय)।

अ०=था। (व्रज)

ह्रद—पु०[सं० √ह्लद+अच् नि०]१ वडा तालाव। झील। २. जलाशय। सरोवर। ३. ध्वनि। नाद। ४. किरण। ५. मेढा नामक पशु।

ह्रदिनी—स्त्री० [स० ह्रद+इनि—ङीप्] नदी।

ह्रसित—भू० कृ०[स०] जिसका ह्रास हुआ हो या किया गया हो।

ह्रसिमा (मन्)—स्त्री०[स०] ह्रस्वता।

ह्रस्व—वि० [स०√ह्रस+वन] [भाव० ह्रस्वता]१ छोटे आकार-प्रकार का। जो दीर्घ न हो। २. (स्वर) जो खीचकर न वोला जाता हो। (शार्ट)

पु० व्याकरण मे, स्वरो के दो भेदो मे से एक, जिसमे ध्वनि को अधिक खीचकर नही वोला जाता। 'दीर्घ' से भिन्न। (अ, इ, उ और ऋ स्वर ह्रस्व हैं)।

ह्रस्वक—वि०[स०] वहुत छोटा।

ह्रस्वजात रोग—पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे दिन के समय वस्तुएँ वहुत छोटी दिखाई पडती है।

ह्रस्वता—स्त्री० [स०] ह्रस्व+तल्—टाप्] ह्रस्व होने की अवस्था, गुण या भाव।

ह्रस्व-प्रवासी—पु०[स० ह्रस्व-प्र√वस् (वसना)+णिनि] थोडे समय के लिए कही वाहर या विदेश गया हुआ व्यक्ति। वह जो कुछ ही काल के लिए परदेश गया हो। (कौ०)

ह्रस्वांग—वि० [स० व० स०]१. छोटे अगोवाला। २ ठिंगना। नाटा। ३. वौना। वामन।

पु० जीवक नामक पौधा।

ह्रस्वाग्नि—पु० [स० पच० त०] आक का पौधा। मदार। अर्क।

ह्राद—पु०[स० √ह्लाद् (शब्द करना)+घञ्] १ ध्वनि। शब्द। आवाज। २ वादल की गरज। ३. हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।

ह्रादिनी—स्त्री०[स० ह्राद+णिनि—ङीप्] १. नदी। २ एक प्राचीन नदी। ३. विजली। विद्युत्।

ह्रादी—वि० [सं० ह्रादिन्] [स्त्री० ह्रादिनी]१ शब्द करनेवाला। २. गरजनेवाला।

ह्रास—पु०[स० √ह्रास् (कम होना)+घञ्]१. वल, शक्ति, स्मृति आदि का घटना, क्षीण होना या न रह जाना। (डिक्लाइन) जैसे—(क) चेतना या स्मृति का ह्रास होना। (ख) मुगल-शासन का ह्रास होना। २. कमी। घटती। (डिक्रीमेन्ट) ३. किसी प्रकार घिसने, छीजने, नष्ट होने या व्यर्थ जाने की क्रिया या भाव। ४. आवाज। ध्वनि।

ह्रासक—वि०[स०] ह्रास या कमी करनेवाला।

ह्रासन—पु० [स०] ह्रास अर्थात् कमी करना। घटाना।

ह्रासनीय—वि०[स०√ह्रास् (कम होना)+अनीयर] जिसका ह्रास हो सकता या किया जाने को हो।

ह्री—स्त्री०[स० ह्री+क्विप्]१ लज्जा। व्रीडा। शर्म। हया। २ दक्ष की एक कन्या जो धर्म को व्याही थी। ३. जैनो की एक देवी।

ह्रीका—स्त्री०[स०√ह्री+कक्] लज्जाशीलता। हया।

ह्रीण—वि०[स०]१ लज्जा से युक्त। जैसे—ह्रीणमुख। ३. लज्जित। शरमिन्दा।

ह्रीत—भू० कृ०[सं०] [भाव० ह्रीति]१. लजाया हुआ। २. लाज से भरा हुआ।

ह्रीति—स्त्री० [सं० ह्री+क्तिन्] १. लजाये या लाज से भरे हुए होने की अवस्था या भाव। २. लज्जा। लाज।

ह्रीमान्—वि०[स० ह्रीमत्] [स्त्री० ह्रीमती] लज्जाशील। हयादार। शर्मदार।
पुं० एक विश्वेदेवा।

ह्री-मूढ़—वि०[स० तृ० त०] जो वहुत लज्जित होने के कारण कुछ भी कर या कह न सकता हो। जो लज्जा के कारण मूढ हो गया हो।

ह्रीवेर—पु०[स० व० स०] सुगंधवाला।

ह्रेषा—स्त्री०[सं०] (घोडे की) हिनहिनाहट।

ह्रेषी (षिन्)—वि०[स०] हिनहिनानेवाला।

ह्लाद—पु० [स०]=आह्लाद (प्रसन्नता)। उदा०—वस रहा पृथ्वी पर स्वर्गिक स्पर्ग ह्लाद सा।—पन्त।

ह्लादक—वि०[सं०] प्रसन्न करनेवाला। आह्लादक।

ह्लादन—पु०[स०] [वि० ह्लादनीय भू० कृ० ह्लादित] आनदित या प्रसन्न करना। खुश करना।

ह्लादिनी—स्त्री०[स० √ह्लाद+णिनि—ङीप्] १. विजली। वज्र। २. एक देवी या शक्ति का नाम। ३. ह्लादिनी नदी का दूसरा नाम।
वि०[स०] 'ह्लादी' का स्त्री०। उदा०—शशि असि की प्रेयसी स्मृति, जगी हृदयह्लादिनी।—पन्त।

ह्लादी (दिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० ह्लादिनी] १. प्रसन्न करने, रहने या होनेवाला। २. शव्द करनेवाला।

ह्वाँ†—अव्य०=वहाँ।

ह्वान—पु०[स०]=आह्वान।

ह्विस्की—स्त्री० [अं० ह्विस्की (शराव)] एक प्रकार की प्रसिद्ध विलायती शराव।

ह्वेल—स्त्री०[अ०] एक प्रकार का प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो वहुत वडे आकार का होता है और जिसकी अनेक जातियाँ या भेद होते हैं।

—०—

परिशिष्ट (क)

छूटे हुए शब्द और अर्थ

अ

अँकना—अ०[हिं० आँकना का अ०] १. आँका जाना। कूता जाना। २ अकित या चिह्नित किया जाना। अकित होना।

अंकास्य—पु०[स०] नाटक मे अर्थोपक्षेपक का एक भेद जिसमे किसी अंक की समाप्ति पर उसी अक के पात्रो द्वारा किसी छूटी हुई बात की सूचना दी जाती है। कुछ विद्वानो ने इसे अकावतार के ही अतर्गत माना है।

अंकुश-कृमि—पु०[स०] मनुष्य की आँतो से उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के कीडे जिनके मुँह के पास अकुश या कँटिया की तरह का एक अवयव होता है। ये मनुष्य का रक्त चूसते और कई प्रकार के रोग उत्पन्न करते है। (हुक-वर्म)

अगुली छाप—स्त्री०=उँगली छाप।

अगुश्त—स्त्री०[स० अगुष्ठ से फा०] हाथ की उँगली।

अँजू—पु०[स० अश्रु] आँसू।

अडाणु—पु०[स०] स्त्री के गर्भाशय का वह अणु जो पुरुष के शुक्राणु से मिलकर स्त्रियो के गर्भ-धारण का कारण होता है।

अत कालीन—वि० [स० अत काल, मध्य० स०+ख-ईन] दो काल-विभागो या समयो के बीच मे पड़नेवाले काल या समय से संबध रखने या उसमे होनेवाला । (प्रॉविजनल)

अतःप्रज्ञा—स्त्री०[स०] प्राणियो के अत करण मे रहनेवाली वह शक्ति जिसके द्वारा उन्हे किसी विषय मे बिना कुछ सोचे-विचारे अपने-आप और तत्काल ज्ञान हो जाता है। (इन्टयूशन)

अंत.सत्ता—स्त्री०[स०] शरीर के अन्दर की वह सत्ता, जिसमे आतर प्राण, आतर मन और आतर शरीर के साथ चैत्य पुरुष विद्यमान रहता है। (इनर-बीइग)

अत.स्राव—पु०[स०] १. आधुनिक आयु-विज्ञान मे, शरीर के कुछ अगो की विशिष्ट ग्रथियो मे से कई प्रकार के रासायनिक तरल पदार्थ या रस निकलने की क्रिया जिससे दूसरे अगो के पोषण तथा अनेक प्रकार की शारीरिक प्रक्रियाओ मे सहायता मिलती है। २. उक्त प्रकार से निकलनेवाला द्रव या रस। (हॉर्मोन)

अतरण—पु० [स०] [भू० कृ० अतरित] १ अतर दिखाने या रखने के लिए पदार्थों के बीच मे कुछ जगह छोडना। (स्पेसिग)

अंतरणुक—वि०[स० कर्म० स०] (तत्त्व) जो दो या अधिक पदार्थो के अणुओ मे समान रूप से पाया जाता हो। (इन्टर-मोलक्यूलर)

अंतरपणन—पु०[स०] आधुनिक वाणिज्य क्षेत्र मे, विदेशी विनिमय से सम्बद्ध वस्तुएँ और लेन-देन के कागज-पत्र, हुँडियाँ आदि सस्ते बाजार मे खरीदने और तेजी वाले बाजारों में बेचने की क्रिया या भाव। (आर्बिट्रेज)

अंतरा—पु०
विशेषशास्त्रीय दृष्टि से यह गति के चार अगो या अंगो मे दूसरा अंग या अश माना जाता है। इसके स्वर मध्य और तार सप्तको के होते है। शेष तीन अग या अंश स्थायी, सचारी और आभोग कहलाते हैं।

अंतरात्मा (त्मन्)—स्त्री० १ वह दिव्य सत्ता जो जीव-मात्र के शरीर के अन्दर उसके हृदय-केन्द्र मे बीज रूप मे वर्त्तमान रहती है। जीवात्मा। (सोल)

अंतरावंध—पु०[स०] कई प्रकार के मानसिक रोगो का एक वर्ग जिसमे रोगी या तो आस-पास की परिस्थितियो मे उदासीन हो जाता है, या उसके विचार भ्रमात्मक हो जाते है, या वह निश्चेष्ट और मूढ हो जाता है, या उग्र तथा प्रचड रूप से असाधारण आचरण करने लगता है। (स्किजोफ़ीनिया)

अंतरावर्त्त—पु०[स० अतर+आवर्त्त] किसी पर-राष्ट्र का वह भू-खड जो किसी कथित या विशिष्ट देश के भीतरी भाग मे पडता हो और प्राय चारो ओर उसकी सीमाओ से घिरा हो। 'बहिरावर्त्त' का विपर्याय। (एन्क्लेव) जैसे—भारत की पूर्वी सीमा पर पूर्वी पाकिस्तान के बहुत से अतरावर्त्त है।

अंतरादेश—पु०[स०]=अतरावर्त्त।

अतरिक्ष—पु० १. पृथ्वी अथवा अन्य ग्रहो को आवृत्त करनेवाले वातावरण के उपरात और आगे का सारा अनत विस्तार। आकाश से और आगे और ऊपर का वह सारा विस्तार जो समस्त-ब्रह्माड मे फैला है। (स्पेस)

अंतरिक्ष-किरण—स्त्री० [स०]=ब्रह्माड-किरण।

अंतरिक्ष-यान—पु०[स०] एक प्रकार का आधुनिक यान जो पृथ्वी के वातावरण से बाहर निकलकर सैकडो मील की उँचाई पर अंतरिक्ष अथवा ऊपरी आकाश मे भ्रमण करता है और जिसमे कुछ यात्री तथा अनेक प्रकार के यत्र भी रहते है। (कॉस्मोनॉट, स्पेसशिप)

अंतर्ग्रही—वि०[स०] आकाशस्थ ग्रहो आदि के पारस्परिक दूरी, योजना आदि से सबध रखनेवाला। ग्रहो आदि को पारस्परिक सबध के विचार से होनेवाला । (इटर-स्टेलर) जैसे—अतर्ग्रही अवकाश; अतर्ग्रही उडान या यात्रा।
स्त्री०=अतर्गृही।

अंतर्जातीय—वि० [स० कर्म० स०+छ—ईय] दो या अधिक जातियो से पारस्परिक सबध रखनेवाला अथवा उनमे होने या पाया जानेवाला। (इन्टर-कास्ट) जैसे—अतर्जातीय विवाह।

अंतर्दर्शन—पुं० [सं०] १. अदर की ओर देखना। २. दार्शनिक क्षेत्र में, अपनी आतरिक या मानसिक प्रक्रियाओ और स्थितियो के सुधार के लिए उनका चिंतन, मनन और विवेचन करना। आत्म-निरीक्षण। (इन्ट्रॉस्पेक्शन)

अंतर्दृष्टि—स्त्री० २. ऐसी दृष्टि या समझ जिसमे किसी चीज या बात का भीतरी तत्त्व या रहस्य जाना जाय। (इनसाइट)

अंतर्वातुक—वि० [स० ब० स० कप्] (तत्त्व) जो दो या अधिक धातुओ मे समान रूप से पाया जाता हो। (इन्टर-मेटैलिक)

अंतर्ध्वंस—पुं० [सं०] जान-बूझकर और बुरे उद्देश्य से कोई चलता हुआ काम या बनी हुई चीज नष्ट करना या बिगाडना। तोड-फोड। (सैबोटेज) जैसे—कुछ विद्रोहियो ने गुप्त रूप से अस्त्र-शस्त्र बनाने के कारखानों में अतर्ध्वंस आरम्भ कर दिया था।

अंतर्प्रांतीय—वि० [स० कर्म० स० छ-ईय] किसी देश या राज्य के दो या अधिक प्राती के पारस्परिक व्यवहार मे सम्बन्ध रखने या उनमे होनेवाला। (इन्टर-प्राविन्शल)

अंतर्भावना—स्त्री० २ मनोविज्ञान मे चित्त की वह प्रवृत्ति, जिससे कोई चीज देखने या कोई बात सुनने पर उसकी गति, गुण, विस्तार मे मनुष्य 'स्व' को लीन कर देता और तब उनका अनुभव या ज्ञान प्राप्त करता है। (इन्फीलिंग)

अंतर्मार्ग—पु० [स०] सगीत मे, वह मधुर विचित्रता और सौंदर्य, जो किसी गीत के बीच-बीच मे विभिन्न स्वरों के पारस्परिक सयोग के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। बोल-चाल मे इसी को 'बोल बनाना' कहते हैं।

अंतर्राष्ट्रवाद—पुं० [सं०] वह वाद या सिद्धात, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि सब देशों या राष्ट्रो को समानता के आधार पर और बिना अपने हितों का त्याग किये परस्पर मित्रतापूर्वक रहना और व्यवहार तथा सहयोग करना चाहिए। (इन्टरनेशनलिज्म)

अंतर्राष्ट्रीय—वि० [स० अतर्राष्ट्र मध्य० स०+छ-ईय] १. अपने राष्ट्र की भीतरी बातो से संबध रखनेवाला। २. अपने राष्ट्र मे होनेवाला। ३. आज-कल मुख्य रूप से, दो या अधिक राष्ट्रो के पारस्परिक व्यवहार से सबध रखने या उनमें होनेवाला। सार्वराष्ट्रीय। (इन्टरनेशनल)

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय—पुं० [स०] सयुक्त राष्ट्र-सघ द्वारा स्थापित एक सर्वोच्च न्यायालय जिसमे सदस्य राष्ट्रो के आपसी झगडो का विचार या निर्णय होता है। इसकी स्थापना सन् १९४६ मे हेग नगर मे हुई थी।

अंतर्राष्ट्रीय विधि—स्त्री० [स०] ऐसी विधि या कानून, जिसमे वे नियम रहते हैं जिनका पालन करना सभी राष्ट्रों के लिए आवश्यक होता है। (इन्टरनेशनल लॉ)

अंतर्वर्ग—पु० [स०]=उपगण।

अंतर्वलन—पु० [स०] किसी चीज का चक्राकार घूमते हुए अन्दर की ओर मुडना। (इन्वोल्यूशन)

अंतर्हित—भू० कृ० २. किसी के अदर छिपा या दबा हुआ। निगूढ। निहित। (लेटेन्ट)

अंतश्चेतना—स्त्री० [स०] अंतःकरण के भीतरी भाग में रहनेवाली चेतना जो हमे सद् और असद् का ज्ञान कराती है। विवेक। (इनर-कान्शेन्स)

अंतस्थ चेतना—स्त्री० [सं०] अंतस्थ सत्ता मे रहनेवाली चेतना। (अरविंद-दर्शन के अनुसार इस चेतना की जाग्रति या प्राप्ति होने पर विश्व-शक्तियों की सभी अदृश्य क्रियाएँ और गतियाँ जानी जा सकती हैं।)

अंतस्थ राज्य—पु० [सं०] दो बडे राज्यों के बीच मे या उनकी सीमाओं पर स्थित होनेवाला वह छोटा राज्य, जो उन दोनो राज्यो मे सघर्ष के अवसर न आने देता हो। (बफर स्टेट)

अंतस्थ सत्ता—स्त्री० [स०] मनुष्य की स्थूल सत्ता के पीछे विद्यमान रहनेवाली वह सूक्ष्म सत्ता जो ऊपर की ओर उच्चतर अतिचेतन स्तरो की ओर भी और नीचे अवचेतन स्तरो की ओर भी खुली रहती है और जिसमें एक बृहत्तर मन और प्राण तथा स्वच्छ सूक्ष्म शरीर रहता है। (सब्लिमिनल बीइंग)

अंतस्था—स्त्री० [सं०]=मज्जका।

अंतिम—वि० ३. (निश्चय या विचार) जो पूरी तरह से किया जा चुका हो और जिसमे सहसा कोई परिवर्तन या फेर-बदल न हो सकता हो। (फाइनल)

अंत्य लेख—पु० [स०]=उपसहार।

अंत्याधार—पु० [स०] १. अतिम छोर या सिरे पर रहनेवाला वह आधार जिस पर कोई भारी चीज टिकी रहती हो। २ आधुनिक वास्तु-रचना मे, मेहराबो आदि के नीचे के वे ख[illegible] स्थूल सरचनाएँ जो छतो, पुलों आदि का सारा भार सँभाले रहती हैं। (एबटमेन्ट)

अंध-विश्वास—पुं० किसी अज्ञात, कल्पित या रहस्यपूर्ण बात या विषय के सबध मे अथवा किसी मत या सिद्धात के प्रति होनेवाला ऐसा दृढ विश्वास, जो किसी प्रकार का तर्क-वितर्क मानने या सुनने न दे। बिना सोचे-समझे किया जानेवाला पक्का विश्वास। (सुपर्स्टिशन) जैसे—(क) प्रेत या देवी-देवताओं पर अथवा पौराणिक कथाओ या परपरागत रीति-रवाजो पर होनेवाला अध-विश्वास। (ख) किसी के आदेश, कथन या मत पर होनेवाला अंध-विश्वास।

विशेष—इसका मूल मानव जाति की उस आरभिक अवस्था से माना जाता है, जिसमे वास्तविक ज्ञान का बहुत-कुछ अभाव न था; और लोग भयवश अदृश्य शक्तियो पर ही विश्वास रखते थे।

अंधी घाटी—स्त्री० [हिं०] भूगोल मे, ऐसी घाटी जहाँ पहुँचकर किसी नदी का जल जमीन के अन्दर समाने लगता है; और पृथ्वी तल पर उसके प्रवाह का अन्त हो जाता है। (ब्लाइंड वैली)

अंब्रपाली—स्त्री० [स० आम्रपाली] वैशाली की एक प्रसिद्ध लिच्छवि वेश्या, जो गौतम बुद्ध के उपदेश से उनकी शिष्या बन गई थी।

अंबिया—पुं० [सं० नबी का बहु०] नबी लोग या ईश्वर के दूत, जिन्हें वह समय-समय पर इस ससार मे लोकोपकार के लिए भेजता रहता है।

अंश-विभूति—स्त्री० [स०] अरविंद दर्शन के अनुसार ईश्वरीय चेतना और शक्ति का वह अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए इस लोक मे प्रक्षिप्त होता है और वह कार्य पूरा करके फिर अपने मूल मे जा मिलता है।

विशेष—कहा जाता है कि इस लोक मे आने पर भी वह अपने मूल

से सवद्ध रहती और आवश्यकता होने पर अवतरित हो सकती या यहाँ आ सकती है। (एमँनेशन)

अंश-शोधन—पु० [स०] [भू० कृ० अंश-शोधित] किसी वस्तु के अशो का विभाजन करके उनके मान अकित या स्थिर करना। अशन। (कैलेब्रेशन)

अशांश—पुं० [स०] अंशो के रूप मे मान सूचित करनेवाले यत्रो मे अशसूचक अक। (डिग्री)

अकल-खुरी—स्त्री० [हिं० अकलखुरा] अकल-खुरे होने की अवस्था या भाव। परम स्वार्थपरता। उदा०—डर यही है कि मेरे पीछे यह निगोडी अकल-खुरी न रहे।—इन्शा।

अकलुष इस्पात—पु० [स०+हिं०] एक प्रकार का साफ किया हुआ इस्पात, जो कुछ और घातुओ के मिश्रण से ऐसा हो जाता है कि वातावरण के प्रभाव से दागी नही होने पाता और जग या मोरचे से वचा रहता है। (स्टेनलेस स्टील)

अकल्यता—स्त्री० [स०] १ वेचैनी। २. अस्वस्थता। बीमारी।

अकाय—वि० [स० अकार्यार्थ] जिसका कोई शुभ परिणाम या फल न हो।। अकारथ। निरर्थक। व्यर्थ। उदा०—हरि इच्छा सवते प्रवल, विक्रम सकल अकाय।—भिखारीदास। (ख) करम, धरम, तीरथ विना राधन सकल अकाथ।—सूर।

क्रि० वि० विना किसी अर्थ के। व्यर्थ।

†वि०=अकथ्य।

अकादमिक—वि० [अ० एकॅडेमिक] १. किसी विषय के शास्त्रीय अध्ययन, विवेचन आदि से सवध रखनेवाला। २. अपने उक्त प्रकार के स्वरूप के कारण जो केवल तर्क, विवेचन आदि के क्षेत्र का ही रह गया हो, व्यवहार के क्षेत्र मे न आ सकता हो। (एकॅडेमिक)

अकाल-प्रसूत—वि० [स०] १. जो अकाल-प्रसव के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ हो। २. जो अपने उचित या नियत समय से पहले ही उत्पन्न या प्रकट हुआ हो।

अकृत—वि० ३. जो किये जा चुकने पर भी न किये के समान कर दिया गया हो। (नल्)

अकृतीकरण—पु० [स०] १. जो काम किया जा चुका हो उसे ऐसा रूप देना कि वह न किये हुए के समान हो जाय। २. दे० 'निर्विधायन'।

अकोला—पु० [देश०] एक प्रकार का मझोला पेड, जिसके पत्ते प्रति वर्ष शिशिर ऋतु मे झड जाते है।

†पु०=अकोला।

अक्काद—पु० [सामी] ईरान का एक प्राचीन नगर और उसके आसपास का प्रदेश जो दजला और फरात नदियो के वीच मे था। वेविलोनिया के प्राचीन नगर इसी प्रदेश मे थे। ईसा से ढाई-तीन हजार वर्ष पहले यहाँ के राजाओ ने वहुत वड़ा साम्राज्य स्थापित किया था।

अक्रमातिशयोक्ति—स्त्री० साहित्य मे, अतिशयोक्ति अलकार का एक प्रकार जिसमे कारण और कार्य के एक साथ ही घटित होने का उल्लेख होता है। यथा—दोऊ वातें छुटी गजराज की वरावर ही, पाँव ग्राह मुख तें प्रथा निज मुख तें।—मतिराम। (कुछ आचार्यों ने इसे कारणातिशयोक्ति का ही एक प्रकार माना है।)

अक्रियावाद—पु० वौद्ध-काल का एक दार्शनिक मतवाद जिसमे यह माना जाता था कि न तो कोई कर्म या क्रिया है और न कोई प्रयत्न। इसलिए मनुष्य के कार्यों का कोई अच्छा या वुरा फल नही होता। जैन और वौद्ध दार्शनिको ने इस मतवाद का खडन किया था।

अक्षय वट—पु० १. पुराणानुसार वह वट वृक्ष जो प्रलयवाली वाढ के वाद भी वचा रहता है; और जिसके एक एक पत्ते पर ईश्वर छोटे से वालक के रूप मे वैठकर सृष्टि का उलट-फेर देखते-रहते हैं।

अक्षर-धाम (न्)—पु० १ शुद्धाद्वैत मत के अनुसार पूर्ण पुरुषोत्तम का धाम या निवास-स्थान। गो-लोक। २. ब्रह्म-लोक।

अक्षि-साक्षी—पु० [सं०]=दर्शन-साक्षी।

अख्तर—पु० [स० नक्षत्र से फा०] आकाश का नक्षत्र या तारा। सितारा।

अगूढ़-व्यंग्य—पु० [स०] गुणीभूत व्यग्य का एक भेद, जिसमे व्यग्यार्थ वहुत ही स्पष्ट तथा वाच्यार्थ के वहुत कुछ समान होता है और सरलता से समझ मे आ जाता है। (साहित्य)

अगूढ़-व्यंग्या लक्षणा—स्त्री० [स०] ऐसी लक्षणा, जो अगूढ़ व्यग्य (देखें) से युक्त हो। (साहित्य)

अगोचरी—स्त्री० [स०] हठयोग मे, साधना की एक मुद्रा, जिसका स्थान कान मे माना गया है, और जिसमे वाह्य शब्दो का सुनना वद करके मन को उन्मनी की ओर प्रवृत्त करने का अभ्यास किया जाता है।

अग्नि—स्त्री० १. पच-तत्त्वो मे से तेज नामक तत्त्व का वह गोचर या दृश्य रूप, जो सव चीजो को जलाता और ताप तथा प्रकाश उत्पन्न करता है। आग। (फायर)

विशेष—(क) ससार के अनेक धर्मों मे और विशेषत. वैदिक धर्म मे इसे देवता और उपास्य माना गया है। यूनान और रोम मे इसकी पूजा राष्ट्र की देवी के रूप मे होती थी। (ख) कर्मकाड मे गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ और औपसनाग्नि छ. प्रकार की अग्नियाँ मानी गई हैं।

२. शरीर का वह ताप, जिससे शरीर के अंदर पाचन आदि क्रियाएँ होती हैं। जठराग्नि। वैद्यक मे इनके तीन भेद हैं—भौम, दिव्य और जठर। ३. कोई ऐसा ताप, जो सव प्रकार के मलो या विकारो का नाश करके तेज, निर्मलता, प्रकाश आदि का आविर्भाव करता हो। ४ पूर्व और दक्षिण के वीच का दिशा या कोना। ५ कृत्तिका नक्षत्र। ६ क्षत्रियो का एक प्रसिद्ध वश या कुल। ७. रहस्य सप्रदाय मे, (क) ज्ञान-प्राप्ति की प्रवल इच्छा या उसके लिए होनेवाली आकुलता। (ख) काम, क्रोध आदि मनोविकार। (ग) सुषुम्ना नाड़ी। ८. वह वडा ऊसर या मैदान, जिसमे कही नाम को भी छाया या हरियाली न हो, और इसी लिए जो वहुत तपता हो। प्राचीन भारत मे स्थान नामो के अत मे प्रयुक्त। जैसे—कांडाग्नि, त्रिभुजाग्नि आदि। ९ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १०. मिलावाँ। ११. नीवू। १२. सोना। स्वर्ण।

अग्नि-परीक्षा—स्त्री० ३ वहुत ही कठिन और ऐसी विकट परिस्थिति जिसमे योग्यता, शक्ति आदि की उत्कट परीक्षा होती हो और जिससे पार पाना वहुत ही कष्ट-साध्य हो। दिव्य-परीक्षा। (आॅर्डिएल)

अग्नि-रक्षक रेखा—स्त्री० [स०] जगलो मे घास-पात और पेड़-पौधे

काटकर और कुछ दूर तक की जमीन साफ करके बनाई जानेवाली वह रेखा, जो जगलो मे लगी हुई आग दूर तक फैलने से रोकने के लिए जगह-जगह पर बनाई जाती है। अग्नि-रेखा। (फायर-लाइन)

अग्नि रेखा—स्त्री० [स०] १. अग्नि-रक्षक रेखा। २. अग्नि-वर्षक रेखा।

अग्नि वर्षक रेखा—स्त्री० [स०] युद्ध, शिकार आदि मे योद्धाओ, शिकारियो आदि की वह सबसे आगेवाली पक्ति, जहाँ से शत्रुओ, चीतो, शेरो आदि पर गोलियाँ चलाई जाती हैं। (फायर-लाइन)।

अग्नि-शामक—वि० [सं०] अग्नि का शमन करनेवाला। आग ठढी करने या बुझानेवाला।
पु० एक प्रकार का छोटा दस्ती उपकरण, जिससे किसी जगह लगी हुई आग बुझाने के लिए उस पर कुछ विशिष्ट रासायनिक पदार्थ छिडकते है। (फायर एक्सटिंग्विशर)

अग्निष्टोम—पु० पाँच दिनो मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ, जिसका प्रतिपादन अश्वमेध और राजसूय यज्ञ करनेवालो के लिए आवश्यक होता है।

अग्न्याशय—पु० शरीर के अन्दर उदर मे आमाशय के नीचे की एक बड़ी ग्रथि, जिससे निकलनेवाले रस से खाई हुई चीजे पककर पचती हैं। पेट मे रहनेवाली जठराग्नि का मूल स्थान। पक्वाशय। (पैन्क्रियास)

अग्र-घर्षक—वि० [स०] अग्र-घर्षण करनेवाला। (ऐगेसर)

अग्र-घर्षण—पु० [स०] [भू० कृ० अग्र-घर्षित] स्वय आगे बढकर किसी पर कोई आक्रमण करना। झगडा या वैर-विरोध खडा करनेवाला काम करना। (ऐग्रेसन)

अग्र-घर्षिता—स्त्री०=अग्र-घर्षण।

अग्रता—स्त्री० [स०] १. सबसे आगे अर्थात् पहले रखे जाने या होने की अवस्था या भाव। २ वह आधिकारिक स्थिति जिसमे बडप्पन, महत्त्व आदि के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति को औरो से पहले बैठाया, रखा या लगाया जाता है। (प्रेसीडेन्स) ३. दे० 'प्राथमिकता'।

अग्र-शाखा—स्त्री० [स०] हाथ (या पैर) की उँगली।

अघोरपंथ—पु० [स०] एक प्रसिद्ध तान्त्रिक शैव सम्प्रदाय जो मन मे सम-बुद्धि उत्पन्न करके भेद-भाव दूर करने के लिए मद्य-मास के सिवा महामास तक का भी उपभोग करता है। इसे 'अवधूत' और 'सरभग' भी कहते है।

अघ्राणता—स्त्री० [स०] १. घ्राण-शक्ति का अभाव। २. गधनाश नामक रोग। (एसोम्निया)

अचका|—पु० [हिं० औचक] एक प्रकार की अनमेल कविता। ढकोसला।

अचिति—स्त्री० [स०] अचित या अचेतन होने की अवस्था या भाव। 'चिति' का विपर्याय। (अन्कान्शस्नेस्)

अचेतिकी—स्त्री० [स० अचेत से] वह आधुनिक विज्ञान जिसमे औषधो के द्वारा शरीर के अगो को अचेत या सुन्न करने के उपायो या सिद्धातो का विवेचन होता है। (एनिस्थिसियोलॉजी)

अच्छल—वि० [स०] सुन्दर। सुहावना।

अजपा जाप—पु० [हिं०] मत्र जपने का वह प्रकार जिसमे मन ही मन जप किया जाता है, मुँह से नाम का उच्चारण नही किया जाता, और न माला फेरी जाती है।

अज्ञात-चेतन—पु० [स०] आधुनिक मानव शास्त्र या मनोविज्ञान मे मानस का वह अश या भाग, जिसका हमे कोई ज्ञान नही होता। अचेतन। (अन्कान्शस)

अज्ञात-नामिक पत्र—पु० [स०] डाक-विभाग मे, ऐसा पत्र जो ठीक या पूरा नाम, पता आदि न लिखा होने के कारण अपने उद्दिष्ट स्थान पर न पहुँच सका हो। (डेड् लेटर)

अज्ञात-वास—पु०
विशेष—इस प्रकार का वास अपनी इच्छा से भी किया जाता है, और प्राचीन काल मे अपराधियों आदि को दंड-स्वरूप भी इसके लिए विवश किया जाता था। महाभारत मे पाडवों का अज्ञातवास प्रसिद्ध है।

अज्ञेयवाद—पु० पाश्चात्य दर्शन मे, यह सिद्धात कि आत्मा, परमात्मा आदि परम तत्त्व अज्ञेय है और उनका ठीक-ठीक ज्ञान न तो अभी तक किसी को प्राप्त हो सका है और न आगे हो सकेगा। (ऐग्नास्टिसिज्म)
विशेष—इसकी मुख्य मान्यता यह है कि किसी विषय का इंद्रियों के द्वारा हमे जो ज्ञान होता है, वह अधूरा ही होता है और उस विषय का मूल या वास्तविक तत्त्व अज्ञेय या अनजाना ही रहता है।

अटकाव—पु० [हिं० अटकना] १ अटकने या अटकाने की क्रिया या भाव। २ अड़चन। बाधा। विघ्न। ३. कोई ऐसा काम या बात जिसके कारण कुछ करने मे अटकना या रुकना पडे। रुकावट। रोक। जैसे—घर मे किसी को चेचक या माता निकलने पर कई तरह के अटकाव करने पडते है; अर्थात् कई तरह के कामो से बचना पडता है।

अट-कौशल—स्त्री० [स० अष्ट-कौशल] गुप्त परामर्श।

अटा|—पु० [?] जगलो मे झाडियो आदि से घेर कर बनाया हुआ वह सुरक्षित स्थान, जिसमे शिकारी लोग छिपकर बैठते और जहाँ से हिंसक जन्तुओ का शिकार करते है। (पूग्ब)

अठवारो—अव्य० [हिं० अठवारा] कई अठवारो या सप्ताहो तक।
पु० कई अठवारे। कई सप्ताह। जैसे—उन्होंने जरा-से काम मे अठवारो लगा दिये।

अणु—पु० १ किसी द्रव्य का वह सबसे छोटा टुकड़ा, जो स्वतत्र अवस्था मे भी रह सकता हो और जिसमे उसके मूल द्रव्य के सभी गुण वर्त्तमान हो। (मोलिक्यूल)
विशेष—ऐसे प्रत्येक अणु मे साधारणत. दो या अधिक परमाणु होते हैं। आज-कल इसका प्रयोग परमाणु के स्थान पर होने लगा है, क्योंकि पहले परमाणु ही द्रव्य का सबसे छोटा टुकड़ा माना जाता था। दे० 'परमाणु'।

अणु-जीव—पु० [स०] अणुओ के समान वे बहुत ही छोटे-छोटे जीव जो प्राणियो मे भी और वनस्पतियो मे भी रोग, विकार आदि उत्पन्न करते है। [माइक्रोब]

अणु-बम—पु० दे० 'परमाणु-बम'।

अणु-वीक्षण विज्ञान—पु० [स०] वह विज्ञान, जिसमे अणु-वीक्षण यत्र के द्वारा अनुसधान करने की प्रक्रियाओ तथा सिद्धातो का विवेचन होता है। (माइक्रोस्कोपी)

अणु-व्रत—पु० जैन धर्म मे ये पाँच छोटे व्रत, जिनका विधान श्रावकों और साधारण गृहस्थों के लिए है—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। योग-शास्त्र मे इन्ही को यम कहा गया है।

अताई—वि० [अ० अता=प्रदान] १ जो अपनी ईश्वरदत्त प्रतिभा के बल पर ही बिना किसी शिक्षक की सहायता से कोई काम सीख ले। २. साधारण बोल-चाल मे जिसने बिना किसी शिक्षक से शिक्षा पाये यों ही देख-सुनकर किसी विद्या या विषय का थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। (उपेक्षा-सूचक) ३ जो बहुत जल्दी कोई काम सीख लेता हो।

अतिक्रमण—पु० २ अपने सुख-सुभीते के विचार से अपनी अधिकृत सीमा से निकलकर इस प्रकार आगे बढना या दूसरे की सीमा मे जाना कि दूसरों के सुख-सुभीते मे बाधा हो। (ट्रान्सग्रेशन)

अतिचार—पु० २ किसी के क्षेत्र या निवास-स्थान मे उसकी इच्छा के विरुद्ध किया जानेवाला अनधिकार-प्रवेश। (ट्रेसपास)

अतिचेतन—पु० [स०] १ आधुनिक मनोविज्ञान मे, वह स्थिति जिसमे स्नायविक सस्थान के अत्यधिक उत्तेजित होने के कारण चेतना-शक्ति असाधारण रूप मे तीव्र हो जाती है। ऐसा प्राय ज्वर अथवा स्नायविक रोगों मे होता है। २. दे० 'ऊर्ध्वचेतन'।

अति-मानस—पु० [स०] [वि० अति-मानसिक] मन से परे की और बहुत ऊँची वह अनत चेतना, जो अज्ञान से पूर्णत मुक्त, परम सत्यमयी होती है और जो अरविंद-दर्शन मे सच्चिदानद के एक यत्र के रूप मे काम करनेवाली मानी गई है। (सुपर-माइन्ड)

विशेष—अरविंद-दर्शन के अनुसार इसी अति-मानस सत्ता का लोक, मह लोक या महर्लोक कहलाता है।

अति-मानसिक पुरुष—पु०=अति-मानव।

अतिमूर्च्छा—स्त्री० [स०] विकट आघात या रोग के कारण उत्पन्न होनेवाली वह मूर्च्छा, जो प्राय अधिक समय तक निरतर बनी रहती है और अत मे घातक सिद्ध हो सकती है। सन्यास। (कोमा)

अति-यथार्थवाद—पु० [स०] कला और साहित्य के क्षेत्र मे एक आधुनिक पाश्चात्य मत या सिद्धात जिसमे सर्व-मान्य भौतिक तथा मानवी सिद्धातों की उपेक्षा करके अवचेतन या उपचेतन की प्रवृत्तियों के सहारे कोरे काल्पनिक तथा स्वप्निक क्षेत्रों की बातों को सब-कुछ मानकर, उन्ही के आधार पर जीवन की विकृत दशाओं का अकन या चित्रण किया जाता है। (सर-रियलिज्म)

अति-यथार्थवादी—वि० [स०] अति-यथार्थवाद सबधी। अति-यथार्थवाद का।

पु० वह जो अति-यथार्थवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

अति-राष्ट्रीयता—स्त्री० [स०] [वि० अति-राष्ट्रीय] कुछ व्यक्तियों मे होनेवाली राष्ट्रीयता की वह उग्र और घमडभरी भावना, जिसके परिणामस्वरूप वे तर्क, विवेक आदि छोडकर हरदम लडने-भिडने के लिए तैयार रहते है। (शाविनिज्म)

अति-राष्ट्रीयतावाद—पु० [स०] राजनीतिक क्षेत्र मे, यह मत या सिद्धात कि अपना राष्ट्र ही सब-कुछ है, और इसके सामने किसी राष्ट्र या व्यक्ति का कुछ भी महत्त्व नही है। इसमे धर्म, नीति, न्याय आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता, और न औचित्य-अनौचित्य, कर्त्तव्या-कर्त्तव्य का ही कोई ध्यान रखा जाता है। (अल्ट्रा नेशनलिज्म, शाविनिज्म)

अति-राष्ट्रीयतावादी—वि० [स०] अति-राष्ट्रीयतावाद सबधी। अति-राष्ट्रीयता वाद का।

पु० वह जो अति-राष्ट्रीयतावाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो। (अल्ट्रा नेशनलिस्ट, शाविनिस्ट)

अति-वृद्धि—स्त्री० [स०] रोग, विकार आदि के कारण शरीर के किसी अंग का असाधारण रूप से और नियत या स्वाभाविक मान से अधिक बडा हो जाना।

अतिशयोक्ति—स्त्री०—

विशेष—इसके ये आठ भेद कहे गये हैं—रूपकातिशयोक्ति, भेदकातिशयोक्ति, सबधातिशयोक्ति, असबधातिशयोक्ति, चपला या चपलातिशयोक्ति, अत्यतातिशयोक्ति और सापह्नुवातिशयोक्ति।

अतिसर्पण—पु० ३ अपने अधिकार, कार्य-क्षेत्र अथवा भोग्य सीमा पार करके ऐसी जगह पहुँचना जहां जाना, पहुँचना या रहना अनुचित, अवैध या मर्यादा-विरुद्ध हो। (एनक्रोचमेन्ट)

अति-सूक्ष्मदर्शी—पु० [स०] एक प्रकार का सूक्ष्म-दर्शी उपकरण या यत्र जिससे अणु के समान छोटे-छोटे कण भी बहुत बडे आकार के दिखाई देते है। (अल्ट्रामाइक्रोस्कोप)

अति-स्वन—वि० [स०] जिसकी गति शब्द की गति (प्रति सेकेन्ड १०८७ फुट या प्रति घटे ७३८ मील) से अधिक तीव्र हो। (सुपर-सोनिक) जैसे—अब भारत मे अति-स्वन विमान (हवाई जहाज) बनाने की भी व्यवस्था हो रही है।

अतींद्रिय-ज्ञान—पु० [स०] शारीरिक इद्रियों की सहायता के लिए बिना केवल आध्यात्मिक या मानसिक बल से दूसरे के मन की बातें या विचार जानने की क्रिया या विद्या। दूर-बोध। पारेंद्रिय-ज्ञान। (टेलिपैथी)

अतींद्रिय-ज्ञानी—पु० [सं०] ऐसा व्यक्ति, जिसमे अतींद्रिय ज्ञान प्राप्त करने का गुण या शक्ति हो। (टेलिपैथिस्ट)

अतींद्रिय-दर्शन—पु० [स०] अतींद्रिय दृष्टि के द्वारा बहुत दूर की या बिलकुल छिपी हुई चीजें देखने की क्रिया या भाव। (क्लेयरवाएन्स)

अतींद्रिय-दर्शी—पु० [स०] वह जिसमे अतींद्रिय-दर्शन की शक्ति हो। (क्लेयरवॉएन्ट)

अतींद्रिय दृष्टि—स्त्री० [स०] कुछ विशिष्ट लोगों मे होनेवाली वह दृष्टि या शक्ति, जिसके द्वारा वे बहुत दूर की और बिलकुल छिपी या दबी हुई चीजें या बातें देख लेते है। (क्लेयरवाएन्स)

विशेष—'अतींद्रिय दृष्टि' और 'दिव्य-दृष्टि' का अतर जानने के लिए देखें 'दिव्य-दृष्टि' का विशेष।

अतींद्रिय श्रवण—पु० [स०] कुछ लोगों मे होनेवाली वह श्रवण-शक्ति जिसके द्वारा वे बहुत अधिक दूर की ऐसी बातें सुन लेते है, जो साधारण लोगों को किसी तरह सुनाई नही पडती। (क्लेयर-आडिएन्स)

अत्यतातिशयोक्ति—स्त्री० साहित्य मे, अतिशयोक्ति अलकार का एक प्रकार जिसमे कारण या हेतु से पहले ही कार्य के पूरे होने का उल्लेख होता है। यथा—जात भयो पहले तन लाय, यों पीछे मिलाय भयो मन

भावते।—भिखारीदास। (कुछ आचार्यों ने इसे कारणातिशयोक्ति के अंतर्गत ही माना है।)

अत्युक्ति—स्त्री० ३. साहित्य के अतिशयोक्ति की तरह का एक अलंकार, जिसमें किसी की उदारता, यश, योग्यता, शक्ति आदि गुणों से बहुत अधिक और बढ़ा-चढ़ा कर लिया हुआ वर्णन होता है। जैसे—हे राजन्, आपके दान से याचक कल्पतरु हो गये हैं। उदा०—भूषण भार सँभारिहै, क्यों यह तन सुकुमार। सूधे पाय न धरि परत शोभा ही के भार।—बिहारी।

अत्रि—पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध वैदिक और मंत्र-द्रष्टा, जिनकी गिनती दस प्रजापतियों और सप्तर्षियों में होती है। २. सप्तर्षि-मंडल का एक तारा। ३. रामायण काल के एक ऋषि, जो अपनी पत्नी अनसूया के साथ चित्रकूट के दक्षिण में रहते थे।

अथर्वन—पुं० १. ऐसा व्यक्ति जो चित्त-वृत्ति का निरोध करके समाधि लगाता हो। २. एक वैदिक मुनि, जो ब्रह्मा के पुत्र, वैदिक आर्यों के पूर्व-पुरुष और अग्नि के उत्पादक कहे गये हैं। ३. यज्ञ करनेवाला व्यक्ति। ऋत्विज्।

अथर्व वेद—पुं० [सं०] हिंदुओं के चारों वेदों में से अंतिम या चौथा वेद जिसमें मोहन, उच्चाटन, मारण, जादू-टोने, झाड़-फूँक, ज्योतिष, रोग-निदान आदि के संबंध की बहुत-सी बातें हैं। कुछ लोग आयुर्वेद को इसी का उपवेद मानते हैं।

अदल-बदल—पुं० २. दो चीजों, व्यक्तियों आदि में आपस में होनेवाला स्थान आदि का परिवर्तन। पहले का दूसरे के स्थान पर और दूसरे का पहले के स्थान पर आना, जाना या होना। व्यतिहार। (इन्टर-चेन्ज) ३. दे० 'अदला-बदली'।

अदह—पुं० कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे खनिज द्रव्यों का वर्ग, जिनमें चमकीले सफेद रेशे होते हैं। इन पर आग और विद्युत् का प्रभाव नहीं होता है। इसी लिए इन रेशों के जो कपड़े बनते हैं, वे आग में जल नहीं सकते। (एस्बेस्टस)

अदिति—स्त्री० २. बंधन-हीनता। स्वतंत्रता। ३. ऋग्वेद में, एक मातृ-देवी, जो इन्द्र और आदित्यों को उनकी शक्ति प्रदान करनेवाली मानी गई है। ४. पुराणानुसार दक्ष-प्रजापति की एक कन्या, जो कश्यप को ब्याही थी और जिससे सूर्य आदि ३३ देवता उत्पन्न हुए थे। ५ माता। माँ। ६. पृथ्वी। ७. प्रकृति। ८. वाणी। ९. गाय। गौ। १०. पुनर्वसु नक्षत्र। ११. गरीबी। निर्धनता।

अदृष्ट—पुं० १. न्याय-दर्शन के अनुसार पूर्व-जन्म में कर्मों के ऐसे फल, जिनका मूल दिखाई नहीं देता, पर जो मनुष्य को सुख-दुःख देते हैं।

विशेष—अग्नि, जल आदि के कारण होनेवाले दैवी प्रकोपों की गणना भी अदृष्ट में होती है।

२. तकदीर। प्रारब्ध। भाग्य।

अदृष्ट जघना—वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जो इतनी अधिक लज्जाशील या संकोची हो कि जल्दी अपनी जाँघ भी न देखती हो।

अद्यतन—वि० १. आज के दिन का। आज से संबंध रखनेवाला। २. आज-कल की उपयोगिता, जानकारी, प्रचलन, रुचि आदि के विचार से जो ठीक या पूरा हो। दिनाप्त। (अप-टु-डेट)

अद्वैतवाद—पुं० २ पाश्चात्य दर्शन में यह सिद्धान्त कि सारी सृष्टि एक ही मूल-तत्त्व से उत्पन्न हुई है। (मोनिज़्म)

अधःशैल—पुं० [सं०] भूगर्भ में, पहाड़ों के नीचे की वे चट्टानें, जो भूगर्भ के अन्दर रहती हैं। (बैथोलिथ)

अधस्तल—पुं० [सं० ष० त०] १. किसी चीज के सबसे नीचेवाला तल या स्तर जिसके आधार पर उसका ऊपरी तल स्थित या अवलंबित होता है। २. भूगर्भ में, नदी के नीचे का वह तल, जिसकी मिट्टी पानी के बहाव से नहीं कटती, और इसीलिए जिसकी खुदाई और कटाई नहीं होती। (बेड-रॉक) ३. ज़मीन में खोदकर बनाया हुआ कमरा या घर। तहखाना।

अधारना—स० [सं० आधार] किसी को अपना आधार या आश्रय-स्थल बनाना या मानना। उदा०—[illegible]। [illegible]।—सूर सागर।

अधिक—पुं० साहित्य में अतिशयोक्ति के वर्ग का एक अलंकार जिसमें आधार अथवा आधेय के बहुत होने पर भी उसके अपेक्षया बहुत बड़े होने का उल्लेख किया जाता है। ([illegible])

अधिक पद—पुं० [सं०] साहित्य में, एक प्रकार का वाक्य-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब किसी वाक्य में आवश्यकता से अधिक किसी पद या शब्द का प्रयोग किया जाता है।

अधिकार—पुं० ८. किसी वस्तु या विषय पर होनेवाला किसी प्रकार का स्वत्व। [illegible]। (राइट)

अधिकार-क्षेत्र—पुं० [सं०] [illegible]।

अधिकारिता—स्त्री० १. अधिकारी होने की अवस्था, गुण या भाव। २. किसी व्यक्ति की वह स्थिति, जिसमें कोई काम करने के संबंध में उसका अधिकारी होना विधिक दृष्टि से सर्वमान्य हो। (कॉम्पिटेंसी)

अधिकारी तंत्र—पुं० [सं०]=नौकरशाही।

अधिगम—पुं० ३. किसी काम, बात या स्थान में होनेवाली पहुँच। गति। (ऐक्सेस)

अधिदान—पुं० [सं०] राज्य या शासन की ओर से उद्योग-धंधों की अभिवृद्धि के लिए उनके मालिकों या संचालकों को दी जानेवाली आर्थिक सहायता। (सब्सिडी)

अधिनायकवादी—वि० [सं०] अधिनायक-वाद संबंधी। अधिनायक-वाद का।

पुं० वह जो अधिनायक-वाद का अनुयायी, पोषक अथवा समर्थक हो।

अधिनियम—पुं० २. वह महत्त्वपूर्ण नियमावली, जो किसी विधान के अधीन बनी हो और सबके पालन के लिए विधान-सभा से स्वीकृत हो चुकी हो। कानून। (ऐक्ट) ३. दे० 'विधान'।

अधिनिर्मुक्ति—स्त्री० [सं०]=अधिनियमन।

अधिन्यस्त—भू० कृ० [सं०] (धन या पदार्थ) जो अधिन्यास के रूप में किसी को दिया या सौंपा गया हो। (एसाइन्ड)

अधिन्यास—पुं० [सं०] १. किसी विशिष्ट उद्देश्य से कुछ नियत या निश्चित करना। २. उपहार, दान आदि के रूप में कोई चीज किसी को देते हुए सौंपना। (एसाइनमेन्ट)

अधिन्यासक—पु० [स०] वह जो अधिन्यास के रूप मे कोई चीज किसी को देता या सौपता हो। (एसाइनर)

अधिन्यासी—पु० [स० अधिन्यासिन्] वह जिसे अधिन्यास के रूप मे कोई चीज मिली या सौपी गई हो। (एसाइनी)

अधि-भाषण—पु० [स०] न्यायालय मे अधिवक्ता या किसी विधिज्ञ द्वारा दिया जानेवाला भाषण या वक्तव्य। (ऐड्रेस आफ ऐड्वोकेट)

अधि-प्रभार—पु० [स०]=अधिभार।

अधिमत—पु० २ किसी विवादास्पद विषय के सबध मे पच या मध्यस्थ का निर्णायक मत। (वर्डिक्ट)

अधिमूल्य—पु० कपनियो मे ऋणपत्रो, हिस्सो आदि का अकित अथवा नियत मूल्य से बढा हुआ वह अतिरिक्त मूल्य, जो कुछ विशिष्ट परिस्थितियो मे दिया या लिया जाता है। बढोती। (प्रीमियम)

अधिराज—पु० १. प्राचीन भारत मे, ऐसा राजा जो किसी सम्राट् के अधीन होता था। २ आज-कल, किसी अधिराज्य का ऐसा स्वामी जिसे सब प्रकार के अधिकार और सत्ताएँ प्राप्त हो। बादशाह। सम्राट्। (सॉवरेन)

अधिरोध—पु० [स०] ऐसी आज्ञा या उसके अनुसार होनेवाली रुकावट, जिससे कोई माल कही भेजा या कही से लाया न जा सके। घाट-बदी। (एम्बार्गो)

अधिवक्ता (क्तृ)—पु० आधुनिक विधिक क्षेत्र मे, वह प्रशिक्षित व्यक्ति (वकील से भिन्न और उससे उच्च वर्ग का) जिसे उच्च न्यायालय तक मे किसी व्यक्ति की ओर से उसके पक्ष के प्रतिपादन तथा समर्थन का अधिकार प्राप्त होता है। (ऐडवोकेट)

अधिवासी—वि० ३ आज-कल, विधिक क्षेत्र मे, ऐसा किसान जो जमीदारी प्रथा टूटने के उपरान्त कोई खेत जोतने-बोने का अधिकारी बन गया हो। (उत्तर प्रदेश)

अधिवृक्क—पु० [स०] स्तनपायी जतुओ के शरीर मे वृक्क या गुरदे के ऊपरी भाग मे होनेवाली दो ग्रथियाँ, जिनसे एक प्रकार का स्राव होता है। (ऐड्रिनल)

अधिशासक—वि० [स०] [स्त्री० अधिशासिका] अधिशासन करनेवाला। अधिकारपूर्वक वश मे रखनेवाला।

पु० वह जो अधिशासन करता हो। अधिशासन-कारी। (गवर्नर)

अधिशासन—पु० [स० अधि+शासन] [भू० कृ० अधिशासित, वि० अधिशासक, अधिशासी] कार्य, व्यक्ति, सस्था, स्थान आदि को इस प्रकार नियत्रण या वश मे रखना कि किसी प्रकार मर्यादा का उल्लघन न होने पाए। (रेजिमेन्टेशन)

अधिशासनिक—वि० [स०] १. अधिशासन सबधी। अधिशासन का। २ अधिशासन के रूप मे होनेवाला। (गवर्निंग)

अधिशासी—वि० [स० अधिशासिन्] अधिशासन करनेवाला। (गवर्निंग) जैसे—अधिशासी परिषद्।

अधिशेष—वि० [स०] (धन या पदार्थ) जो उपयोग या व्यवहार के उपरान्त बच रहे। काम मे आने के बाद भी बाकी बचा हुआ। (सर्प्लस)

पु० मूल्य, मान आदि के विचार से जितना आवश्यक हो या साधारणतः जितना होना चाहिए, उसकी तुलना से होनेवाली अधिकता। बचती। (सर्प्लस)

अधि-सूचित—भू० कृ० [स०] (बात या विषय) जिसके सबध मे अधिसूचना दी गई हो। (नोटिफाइड) जैसे—अधिसूचित क्षेत्र।

अध्यक्ष—पु० ३. जन-तात्रिक राज्यो मे लोक-सभा का प्रधान और सभापति। (स्पीकर)

अध्यांतरण—पु० [स०] मनन या विचार के क्षेत्र मे वह प्रवृत्ति, जिससे किसी सीमित या स्थूल वस्तु के बाह्य रूप के आधार पर उसमे निहित असीम और सूक्ष्म रूप के ज्ञान का परिचय प्राप्त किया जाता है। (इन्टर्नलाइज़ेशन)। जैसे—फूल को देखकर उसकी पवित्रता, सरसता और सौंदर्य की ओर, चित्र को देखकर उसके माधुर्य, शाति आदि की ओर, या काव्य पढकर उसके ओज, प्रसाद आदि गुणो की ओर ध्यान जाना अथवा उनका चितन करना।

अध्यात्मवाद—पु० दर्शन-शास्त्र का वह आरभिक रूप, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि यह ससार ऐसी दैवी शक्तियो से व्युत्पन्न है, जो हमारा अनिष्ट भी कर सकती है ओर हित भी। आत्मा इसी विश्वात्मा का एक अग है और शरीर न रहने पर वह दिव्य-लोक मे चली जाती है और मनुष्य को परलोक का ध्यान रखते हुए आत्मिक उन्नति करनी चाहिए।

अध्यात्मवादी—वि० [स० अध्यात्मवादिन्] अध्यात्मवाद-सबधी। अध्यात्मवाद का।

पु० वह जो अध्यात्म-वाद का अनुयायी या समर्थक हो।

अध्यायी—पु० १. जो किसी विषय का गभीर और गूढ अध्ययन करने मे लगा रहता हो। (स्टडेन्ट) जैसे—वे आजीवन इतिहास के अध्यायी रहे। २. साधारण विद्यार्थी। जैसे—महाध्यायी।

अध्वर्यु—पु० १ वह जो यज्ञ करता हो। २. वैदिक कर्म-काड मे, यज्ञ के चार ऋत्विजो मे से पहला ऋत्विज जो यजुर्वेद के मत्रो का उच्चारण करता हुआ शेष ऋत्विजो से यज्ञ की समस्त विधियो का सपादन कराता था।

अध्वा—पु० [स०] १ तात्रिक मत मे, यह जगत् या सृष्टि। २ मार्ग या रास्ता।

अनंग—वि० २ साहित्य मे, जो किसी प्रस्तुत विषय का अग न हो और इसी लिए जिसका कोई विशेष महत्त्व न हो।

अनग-वर्णन—पु० [स०] साहित्य मे एक प्रकार का रस-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब अनग, अवात्, अमुख्य और ऐसे विषय का अधिक वर्णन करने से होता है, जो रस का उपकारक या साधक न हो।

अनगावह—वि० [स०] मन मे काम-वासना उत्पन्न करनेवाला।

अन-उपजाऊ—वि० [हि०] (भूमि) जो उपजाऊ अर्थात् उर्वर न हो। अनुर्वर।

अनग्रदत—वि० [स०] जिसके आगे के दाँत न हो।

पु० कुछ ऐसे स्तनपायी जतुओ का वर्ग जिनके दाँत बिलकुल होते ही नही, या केवल चौभड़ होते है और आगे के दाँत नही होते। (ऐडेन्टेट) जैसे—चीटीखोर, वन-रोहू आदि।

अनन्यपूर्व—वि० [स०] [स्त्री० अनन्यपूर्वा] जिसका अभी तक किसी से विवाह न हुआ हो। अविवाहित। कुमार। कुँआरा।

अनन्यपूर्वा—स्त्री० २.कृष्ण-भक्त सम्प्रदायों में वह कुमारी, जो कृष्ण को अपने पति के रूप में प्राप्त करने की साधना करती है और आजीवन विवाह नहीं करती। 'अन्य-पूर्वा' से भिन्न।

अनन्वय—पुं० २ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें एक ही वस्तु का उपमान के रूप में भी और उपमेय के रूप में भी कथन होता है। अर्थात् यह बतलाया जाता है कि उपमेय अपने से भिन्न किसी और उपमान के साथ उपमित नहीं हो सकता। यथा—आज गरीब-नवाज मही पर तो सो तुही सिवराज बिराजै।—भूषण।

अनपैठ—वि० [हिं० अन+पैठना] (स्थान) जहाँ जल्दी प्रवेश न हो सकता हो या बहुत कठिनता से हो सकता हो।

अनभो*—पुं० [सं० अनुभव] १. अनुभव। २. संत संप्रदाय में किसी काम या बात का वह ज्ञान, जो उसका साक्षात् प्रयोग या व्यवहार करने पर प्राप्त होता है। वि० दे० 'अनभौ'।

अनमेल—स्त्री० ऐसी उक्ति या कविता, जिसमें बिल्कुल बेमेल, निरर्थक या असंभव बातें हों। ढकोसला। जैसे—भैंसिया चढ़ी बेर पै लपलप गूलर खाय।

अनलहक—अव्य० [अ०] एक प्रसिद्ध अरबी पद, जिसका अर्थ है—मैं ही ब्रह्म हूँ। सं० 'अहं ब्रह्मास्मि' का अरबी रूप।

विशेष—इस पद का प्रचार ईरान के प्रसिद्ध सूफी महात्मा मंसूर ने ई० नवीं-दसवीं सदी में किया था। पर यह इस्लाम की मान्यताओं के विरुद्ध था, इसी लिए मंसूर को सूली दी गई थी।

अनशन—पुं० ३ आजकल आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में, तब तक अन्न न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा करना जब तक कोई अभीष्ट उद्देश्य सिद्ध न हो जाए अथवा किसी प्रकार की माँग पूरी न हो जाय। (हंगर-स्ट्राइक)

विशेष—अनशन और उपवास का अंतर जानने के लिए देखें 'उपवास' का विशेष।

अनाक्रम्य—वि० [सं०] जिस पर आक्रमण न हो सकता हो। 'आक्रम्य' का विपर्याय।

अनाक्रम्यता—स्त्री० [सं०] अनाक्रम्य होने की अवस्था या भाव। 'आक्रम्यता' का विपर्याय।

अनागारिक—वि० [सं० अन्+आगारिक] जिसके रहने का कोई घर-बार न हो।

पुं० वह जो घर-बार छोड़कर त्यागी, संन्यासी या साधु हो गया हो।

अनात्मवाद—पुं० १ यह मत या सिद्धांत कि आत्मा वास्तव में कुछ है ही नहीं। २. बौद्ध दर्शन का यह सिद्धांत कि आत्मा न तो शाश्वत-वाद द्वारा प्रतिपादित रूप में है और न उच्छेदवाद में प्रतिपादित मत के अनुसार उसका सर्वथा अभाव ही है। वह वस्तुतः इन दोनों के मध्य की ऐसी स्थिति है, जिसका निरूपण नहीं हो सकता।

अनात्मवादी—वि० [सं०] अनात्मवाद संबंधी। अनात्मवाद का।

पुं० वह जो अनात्मवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

अनाम-पत्र—पुं० [सं०]=अज्ञात-नामिक पत्र।

अनार्तव—पुं० [सं०] वह शारीरिक स्थिति जिसमें किसी रोग या विकार के कारण स्त्रियों का रजस्राव बंद हो जाता है।

अनावर्तन—पुं० २. किसी काम या बात का एक बार होकर ही न [illegible] ; फिर न होना। 'आवर्तन' का विपर्याय। (नॉन रेकरेन्स)

अनावर्ती—वि० [illegible]।

अनाकुल—पुं० [सं०] [illegible]।

अनाकुलित—पुं० [सं०] १. [illegible] २. [illegible]

अना[illegible]—पुं० [illegible]

विशेष—[illegible]

२. [illegible] (नाई [illegible])

विशेष—[illegible]

[illegible]—पुं० १. [illegible] २. [illegible] आता है।

अनिबद्ध—वि० [सं०] १. जो बँधा या बाँधा हुआ न हो। २ (संगीत का वह अंग या रूप) जो ताल-बद्ध न हो, अर्थात् जिसमें [illegible], पदाभ्यास आदि [illegible] हों। 'निबद्ध' का विपर्याय। जैसे—आलाप।

अनिभृत—वि० [सं०] [स्त्री० अनिभृता] १. चंचल। चपल। २ प्रकट। स्पष्ट। ३. संकोच-रहित। ४. जिसमें किसी तरह का दुराव अथवा छिपाव-छिपाव न हो।

अनीश्वरवाद—पुं० [सं०] १. वह दार्शनिक मत या सिद्धांत कि वास्तव में ईश्वर और देवी-देवताओं आदि का कोई अस्तित्व नहीं है। २. विस्तृत अर्थ में वे सभी मत या सिद्धांत जो ईश्वरवादी धर्मों के विरोधी हैं। सभी प्रकार के प्रत्यक्षवादी, भौतिकवादी, संदेहवादी आदि का सम्मिलित रूप। (एथिस्टिज्म)

अनीश्वरवादी—वि० [सं०] अनीश्वरवाद संबंधी। अनीश्वरवाद का।

पुं० वह जो अनीश्वरवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

अनुकूल—पुं० साहित्य में, हेतु अलंकार की तरह का एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रतिकूल बात से अनुकूल कार्य होने का उल्लेख होता है। जैसे—हे सुन्दरी! यदि तुम नायक से रुष्ट हो तो उसके मुख पर नखों से क्षत करके उसको वेग अपने भुज-पाश में बाँध लो।

अनुकूलन—पु० ३ दूसरे की कोई बात लेकर उसे अपने अनुकूल बनाकर ग्रहण करना। (एडाप्टेशन)

अनुक्रमणी—स्त्री० [स०] १ अनुक्रमणिका। २ तालिका। सूची। ३. किसी वेद से सबद्ध वह सूची, जिसमे उसके प्रत्येक मत्र के ऋषि, देवता, छद आदि का उल्लेख होता है।

अनुक्रमवाद—पु० [स०]=क्रमिकतावाद।

अनुक्रिया—स्त्री० [स०] २ एक ओर से दिखाई पडनेवाली किसी क्रिया, भावना, वृत्ति या व्यवहार के फलस्वरूप दूसरी ओर से होनेवाली कोई क्रिया, भावना, वृत्ति या व्यवहार। (रेस्पान्स)

अनुचितार्थ—पु० [स०] साहित्यिक रचना का एक प्रकार का दोप जो वहाँ माना जाता है, जहाँ कोई पद या शब्द अनुचित अर्थ का बोध कराता हो। जैसे—रे पिय-हठ क्यो सठ करै, वाही पैं किन जात। मे प्रिय के साथ 'सठ' (शठ) का प्रयोग अनुचित अर्थ का बोधक है।

अनुच्छेद—पु० ३. नियमावली, विधान आदि की कोई स्वतत्र धारा या पद। अधि-पद। (आर्टिकल)

अनुज्ञप्ति—स्त्री० किसी व्यक्ति को कोई काम करने के लिए दिया जानेवाला अधिकार या उसका सूचक पत्र। (लाइसेन्स)

अनुज्ञप्तिधारी—पु० [स०] वह जिसे कोई काम करने के लिए अनुज्ञा प्राप्त हो। (लाइसेन्सी, लाइसेन्स-होल्डर)

अनुज्ञा-अधिकारी—पु० [स०] वह अधिकारी, जो लोगो को किसी काम के लिए अनुज्ञा (लाइसेन्स) देता हो। (लाइसेन्सिग आफिसर)

अनुज्ञा-पत्र—पु० वह पत्र जिस पर किसी प्रकार की अनुज्ञा लिखी हो और जिसके अनुसार किसी को कोई विशिष्ट कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो। (लाइसेन्स)

अनुनासिकता—स्त्री० [स०] अनुनासिक होने की अवस्था, परिणाम या भाव। (नैसलाइज़ेशन)

अनुनेतव्य—वि० [स०] [स्त्री० अनुनेतव्या] जिससे अनुनय-विनय करना आवश्यक या उचित हो।

अनुपजाऊ—वि० [हिं०]=अन-उपजाऊ।

अनुपात—पु० [सं०] १ एक के बाद दूसरे का आना, गिरना, पडना या होना। २ दो या अधिक मानो या सख्याओ मे रहनेवाला वह निश्चित या स्थिर पारस्परिक सबध, जो इस विचार से निरूपित होता है कि एक का दूसरे से कितनी बार गुणा या भाग हो सकता है। (रेशियो) ३ किसी वस्तु के विभिन्न अगो मे होनेवाला वह पारस्परिक सबध जो उस वस्तु मे सगति या सामजस्य स्थापित करता है। (प्रोपोर्शन) वि० दे० 'समानुपात'।

अनुपिटक—पु० [स०] बौद्धो के वे धार्मिक ग्रथ, जो तीनों पिटको के बाद पाली भाषा मे लिखे गये थे।

अनुपूरक—वि० [स०] १. बाद मे किसी के साथ मिलकर उसे पूरा करनेवाला। २ विशेष रूप से किसी पूर्ण वस्तु की उपादेयता, सार्थकता आदि बढाने के लिए स्वतत्र इकाई के रूप मे जोडा या लगाया जानेवाला। 'सपूरक' से भिन्न। (सप्लिमेन्टरी)

अनुभाग—पु० [स०] [वि० अनुभागीय] किसी काम या चीज के भाग या हिस्से का कोई छोटा भाग, उप-विभाग या टुकडा। (सेक्शन)

अनुभागीय—वि० [स०] किसी अनुभाग से सबध रखने या उसमे होनेवाला। (सेक्शनल)

अनुमत—अव्य० [?] पूर्व काल मे (पहले से)।

अनुमावाद—पु० [स०] दे० 'अनुमितिवाद'।

अनुमित—वि० ३ तर्क-सगत निष्कर्ष के रूप मे निकाला हुआ। (इन्फर्ड)

अनुमिति अद्भुत—पु० [स०] साहित्य मे, अद्भुत रस का वह प्रकार या भेद, जिसमे अनुमान के आधार पर ही कोई चीज या बात देखकर परम आश्चर्य या विस्मय होता है। यथा—चित अलिकत भरमत रहत, कहाँ नही है बास। विकसित कुसुमन मैं अहै, काको सरस विकास।—हरिऔध।

अनुमितिवाद—पु० [स०] साहित्य मे, कुछ आचार्यों का यह मत या सिद्धात कि विभावो, अनुभावो, सचारियो आदि के कारण अभिनेताओ या नटो मे वास्तविक कृष्ण, राम आदि की जो प्रतीति होती है, वह अनुमान या अनुमिति के आधार पर ही होती है। अनुमानवाद।

अनुमितिवादी—वि० [स०] अनुमितिवाद-सबधी। अनुमिति-वाद का। पु० वह जो अनुमितिवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

अनुमोदक—वि० [स०] अनुमोदन करनेवाला।

अनुयोग—पु० ३ नम्रतापूर्वक कुछ आग्रह करते हुए किसी से कोई काम करने के लिए कहना। (सोलिसिटेशन) ४. ईश्वर, देवता आदि का मनोयोगपूर्वक किया जानेवाला ध्यान। ५ जैन आगमो की टीका या व्याख्या।

अनुरक्षण—पु० [स०] [भू० कृ० अनुरक्षित] वह देख-भाल या व्यवस्था जो किसी चीज को ठीक दशा मे और काम के योग्य बनाये रखने के लिए मरम्मत आदि के रूप मे की जाती है। (मेन्टेनेन्स) जैसे—किसी इमारत, नहर या रेल की लाइन का अनुरक्षण।

अनुराधक—वि० [स०] अनुराधन करनेवाला।

अनुरेख—पु० [स०] अनुरेखन की क्रिया के द्वारा प्रस्तुत की हुई प्रति। (ट्रेसिंग)

अनुर्वरता—स्त्री० [स०] १. अनुर्वर होने की अवस्था, गुण या भाव। 'उर्वरता' का विपर्याय। २. वह स्थिति जिसमे पुरुष अथवा स्त्री मे सतान उत्पन्न करने की शक्ति नही होती अथवा नही रह जाती।

अनुर्वरीकरण—पु० [सं०] [भू० कृ० अनुर्वरीकृत] १. अनुर्वर करने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसी यात्रिक या रासायनिक प्रक्रिया, जिसके द्वारा प्राणियो, वनस्पतियो आदि को प्रजनन की शक्ति से रहित या हीन किया जाता है। (स्टरिलाइजेशन)

अनुलोम—वि० [स०] १ जो अपने ठीक और नियत या बँधे हुए क्रम से चलता या होता है। जैसे—अनुलोम विवाह, अनुलोम स्वर-साधन। २ जिसमे किसी प्रकार का उलटापन या विपरीतता न हो। ठीक और सीधा। (पॉजिटिव) ३ अनुकूल। मुताबिक।

अनुविधेय—वि० [सं०] [स्त्री० अनुविधेया] किसी की आज्ञा या इच्छा के अनुसार आचरण करनेवाला।

अनुशास्ति—स्त्री० [स०] १ किसी को शासन या नियत्रण मे रखने के लिए की जानेवाली कार्रवाई। २ आज-कल, किसी देश या राष्ट्र के प्रति कई देशो या राष्ट्रो का मिलकर कोई ऐसी कार्रवाई करना, जिसके

फलस्वरूप वह राष्ट्र अतर्राष्ट्रीय नियमो का उल्लघन करना छोड दे, या ठीक तरह से उन नियमो का पालन करने के लिए विवश हो। (सैन्कशन)

विशेष—साधारणत. किसी देश के कोई अनुचित काम करने पर अन्य देश या राष्ट्र मिलकर जो यह निश्चय करते हैं कि उस प्रदेश को ऋण देना अथवा उसके साथ व्यापार करना बन्द कर दिया जाय, उसी को राजनीतिक क्षेत्र मे अनुशास्ति कहते हैं।

अनुसंधाता—वि० [स० अनुसंधातृ] अनुसंधान करनेवाला। अनुसधायक।

अनुसमुद्री—वि० [स०] समुद्र मे होने या उससे संबंध रखनेवाला। समुद्री। (मेरिटाइम)

अनुहरण—पु० १. किसी का अनुहार या नकल करना। अनुकरण। २. वह स्थिति जिसमे कुछ जीव या वनस्पतियो या वस्तुओ का अनुकरण करके अपना रूप-रग भी उन्ही परिस्थितियों के अनुरूप बना लेती है। (मिमिक्री) जैसे—तितलियाँ अनुहरण की क्रिया मे ही अपना रूप-रंग फूल-पत्तियो का सा बना लेती है। ३. समता। बराबरी।

अनृत-शस—वि० [स०] झूठी प्रशंसा करनेवाला। खुशामदी।

अनैकांतिक—वि० [सं०] १ जो ऐकातिक न हो। २. जिसका मन किसी एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिर-चित्त।

अन्न-प्राण—पु० [स०] अन्नमय अर्थात् जड तत्वो से बने हुए भाग मे अवस्थित रहनेवाला प्राण-तत्त्व। (फिजिकल वाइटल)

अन्नमय—वि०[स०] जड तत्त्व का या जड से बना हुआ। भौतिक। (मेटिरियल)

अन्नमय पुरुष—पु० [स०] वह चेतनमय सत्ता, जो हमारे शरीर मात्र मे रहती है। (मेटिरियल बीइग)

अन्नमय सत्ता—स्त्री०[स०] जीवों या पदार्थो का वह अश, जो जड तत्त्वो से बना हुआ हो ; अर्थात् शरीर।

अन्यथा—वि० १. उद्दिष्ट, कथित या प्रस्तुत से भिन्न अथवा विपरीत। जैसे—मैंने जो कुछ कहा है, उससे अन्यथा नही होगा। २ सत्य या वास्तविक से विपरीत। मिथ्या। झूठ।

अन्यपूर्वा—स्त्री० कृष्ण-भक्त सप्रदायो मे, ऐसी विवाहिता स्त्री, जो अपने लौकिक पति को छोडकर श्रीकृष्ण को अपने प्रेमी तथा पति के रूप मे ग्रहण करने की लालसा रखती है। 'अनन्यपूर्वा' से भिन्न।

अन्योन्य संदर्भ—पु० [स०] प्रत्यभिदेश।

अन्वारूढ—वि० [स० अनु+आरूढ] पीछे की ओर बैठा, बैठाया या लगाया हुआ।

अपकर्ष—पु० ५ साहित्य मे रचना का वह दोष, जिसके कारण उसका अर्थ या आशय समझने मे कठिनता होती और देर लगती है।

अपकर्षण—पु० ४ डरा-धमकाकर या बल-प्रयोग करके किसी से कुछ प्राप्त करना। ऐंठना। (एक्सटॉर्शन)

अपकृति—स्त्री० ३ विधिक क्षेत्र मे, कुछ विशिष्ट प्रकार का ऐसा अपकार या क्षति, जिसकी पूर्ति न्यायालय से कराई जा सकती हो। (टॉर्ट)

अपग्रास—पु०[स०] चद्र अथवा सूर्य ग्रहण से कुछ पहले की वह अवस्था जिसमे अधकार का कुछ-कुछ आरभ होने लगता है। छाया।

अपचयन—पुं०[सं०] [भू० कृ० अपचयित]=अपचय।

अपत*—वि० ३. अधम। नीच। उदा०—पावन किये रावन रिपु तुलसिहु से अपत।—तुलसी।

अपतह—वि०[हि० अ+पति] जो अपनी पति अर्थात् मान-मर्यादा खो चुका हो। उदा०—हम अपतह अपनी पति खोई।—कबीर।

अपद्रव्यीकरण—पु० [सं०] अपमिश्रण।

अपनत्व—पुं०[हि० अपना] अपनापन। आत्मीयता। (असिद्ध रूप)

अपना—सर्व० (ग) (सामाजिक दृष्टि से) जिसके साथ बहुत अधिक आत्मीयता या घनिष्ठता का व्यवहार या सबध हो। जैसे—जो हमारे समय पर काम आये, वही हमारे लिए अपना है। उदा०—सोई अपनो आपनो, रहै निरन्तर साथ। नैन सहाई पलक ज्यों, देह सहाई हाथ।

अपयान—पु० [सं०] १ व्यर्थ इधर-उधर घूमना। २. कहीं से टल या हट जाना। ३. अपनी प्रतिज्ञा, स्थान आदि से पीछे हटना या विरत होना। ४ सेना का अपने स्थान पर न ठहर सकने के कारण पीछे हटना। (रिट्रीट)

अपर-निषेचन—पु०[स०] [भू० कृ० अपर-निषेचित] भिन्न-भिन्न पौधों या फूलों के पराग और पुं-केसर के योग से नये प्रकार के पौधे या फूल उत्पन्न करने की क्रिया या विधा। (क्रॉस फ़र्टिलाइजेशन)

अपरांग—पु०[स०] १. अपर या दूसरा अग। २. दे० 'अपराग व्यग्य'।

अपरांग व्यंग्य—पु०[स०] गुणीभूत व्यग्य का एक प्रकार या भेद। ऐसा व्यग्यार्थ जो दूसरे व्यग्यार्थ का अग हो जाने या उसकी पुष्टि करने के कारण अप्रधान या गौण हो गया हो।

अपरिणत—वि० ३. जो ठीक तरह कट न सकने के कारण उचित रूप में न आया हो। जैसे—अपरिणत प्रश्न।

अपरिवृत्ति—स्त्री० [स०] साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालंकार, जो परिवृत्ति या विनिमय नामक अलकार से बिलकुल विपरीत होता है, और जिसमे इस बात का कथन होता है कि दाता ने दिया तो बहुत कुछ, पर उसके बदले मे उसे मिलता कुछ भी नही है। यथा—तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लेते पै देत छटांक नही।

अपवर्जन—पु०३. कोई काम करते समय किसी विशेष कारण से कोई बात छोड देना या अलग कर देना (एक्सक्लूजन)

अपवहन—पु० १. किसी चलने या बहने वाली चीज का अपना उचित या नियत मार्ग छोडकर इधर-उधर होना। (ड्रिफ़्ट)

अपवारित—वि० २. छिपाया या ढका हुआ।

पु० नाट्य-शास्त्र मे, नियत-श्राव्य के दो भेदो मे से एक। रंग-मच पर किसी पात्र का दूसरी ओर मुंह करके किसी दूसरे पात्र के मन की गुप्त बात इस प्रकार कहना कि मानो वह दूसरा पात्र सुन ही न रहा है।

अपवाह—पु० २. नदी की जाली। स्रवण-क्षेत्र। (कैचमेन्ट)

अपवाह-क्षेत्र—पु०[स०]=स्रवण-क्षेत्र (नदी की जाली)।

अपवीर्य—वि०[स०] (वीर्य-रहित)

पु० नपुसक। हिजडा।

अपसामान्य—वि०[स०] जो सामान्य न हो, बल्कि उससे कुछ आगे-पीछे या इधर-उधर घटा-बढा हो। (एब-नार्मल)

अपहरण—पु० २. विधिक क्षेत्र मे, किसी व्यक्ति, विशेषत स्त्री को सभोग के उद्देश्य से उठा या भगा ले जाना। अपनयन। (ऐब्डक्शन)

अपहर्ता(र्तृ)—वि० ४ बच्चे, स्त्री आदि को भगा ले जानेवाला। अपनेता। (एब्डक्टर)

अपहसित—पु० साहित्य मे, हास्य का वह प्रकार या भेद, जिसमे कोई आदमी बिना कोई विशेष बात हुए असमय पर ही हँस पडता है और उसका सिर तथा कन्धे भोडेपन से हिलने लगते है।

अपाकरण—पु० ४. किसी व्यापारिक सस्था का पावना वसूल करके और देना चुका कर उसका कारबार बन्द करने की क्रिया या भाव। परिसमापन। (लिक्विडेशन ऑफ कम्पनी)

अपुस—वि०[स०]=नपुसक।

अपुष्टार्थ—पु०[स०] साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थ-दोष, जो वहाँ माना जाता है, जहाँ (क) उक्ति या कथन से मुख्य अर्थ अच्छी तरह प्रकट या सिद्ध न होता हो, अथवा (ख) जहाँ अर्थ का बोध कराने के लिए प्रौढ उक्ति से काम न लिया गया हो।

अपेक्षित—वि० २. (धन) जो किसी से पावना हो। प्राप्य। (ड्यू)

अप्रत्यक्ष—वि० २ (काम या व्यवहार) जो नियमित या सीधे उपाय अथवा मार्ग से नही,बल्कि किसी और ही उपाय या मार्ग से किया जाय, अथवा किसी और के द्वारा कराया जाय। (इन्डाइरेक्ट)

अप्रत्यक्ष-निर्वाचन—पु० दे० 'परोक्ष-निर्वाचन'।

अफ्रेशिया—पु०[हि० अफ्रीका+एशिया] अफ्रीका और एशिया दोनो महाद्वीपो का सयुक्त नाम। (एफ्रो-एशिया)

अफ्रेशियाई—वि०[हि० अफ्रेशिया] अफ्रेशिया सबधी। अफ्रेशिया का। (एफ्रो-एशियन)

पु० अफ्रीका और एशिया मे रहनेवाले लोग। (एफ्रो-एशियन्स)

अब—अव्य० ६ कुछ अवसरो पर केवल जोर देने के लिए, पर या परन्तु की तरह। जैसे—असल बात तो यही है, अब अपनी-अपनी राय अलग हो सकती है।

अबाध-व्यापार—पु० आधुनिक राजनीति मे, दूसरे देशो के साथ होनेवाला ऐसा व्यापार जिसमे आयात और निर्यात पर राज्य की ओर से कोई विशेष बाधा या बधन न हो। (फ्री ट्रेड)

अबाध-समुद्र—पु०[स०]=महा-समुद्र।

अभंग श्लेष—पु०[स०] साहित्य मे, श्लेष अलकार का वह प्रकार या भेद जिसमे किसी पूरे श्लिष्ट शब्द के ही दो अर्थ हो; इस शब्द के अगो या अक्षरो का विच्छेद न करना पडता हो।

अभावक—पु० लिखने मे यह चिह्न, जो किसी बात के अतर्गत यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि यहाँ अमुक पद या शब्द छपने या लिखने से छूट गया है। यह इस प्रकार लिखा जाता है— (∧)।

अभिकलन—पु० दे० 'सगणन'।

अभिकल्प—पु० १ किसी उद्देश्य या ध्येय की सिद्धि के लिए पहले से सोच-समझकर की जानेवाली वह कल्पना, जिसके द्वारा उससे सबध रखनेवाली सब क्रियाओ या बातो को क्रम-बद्ध और व्यवस्थित रूप दिया जाता है। बनत। भाँत। (डिज़ाइन) जैसे—कोई भवन बनाने के लिए पहले उसका अभिकल्प प्रस्तुत किया जाता है। २. अलकरण, मनोरजन, शोभा आदि के विचार से किया जानेवाला किसी प्रकार का रेखाकन। (डिज़ाइन) जैसे—इस चित्र (या साड़ी) मे बेल-बूटो का नया अभिकल्प दिखाई देता है।

अभिकल्पक—वि० [स०] अभिकल्प करनेवाला। (डिज़ाइनर)

अभिकल्पन—पु० [स०] [भू० कृ० अभिकल्पित] अभिकल्प करने की क्रिया या भाव।

अभिकल्पना—स्त्री०[स०] १.=अभिकल्प। २.=अभिकल्पन।

अभिक्रांत—भू० कृ० [स०] जो अपने स्थान से हटा या अलग कर दिया गया हो। विस्थापित। (डिस्प्लेस्ड)

अभिक्रियक—वि० [स०] अभिक्रिया करनेवाला।

पु० भौतिक शास्त्र मे, एक प्रकार का यत्र, जिसके द्वारा पारमाण्विक शक्ति उत्पन्न करने के उपरान्त किसी अधिष्ठान मे नियत्रित और सुरक्षित रूप मे रखी जाती है। (रिएक्टर)

अभिक्रिया—स्त्री० [स०] [वि० अभिक्रियक] रसायन-शास्त्र मे, पदार्थों मे होनेवाला रासायनिक परिवर्तन या विकार। (रिएक्शन)

अभिक्षेप(ण)—पु० [स०] [भू० कृ० अभिक्षिप्त] १ दूर फेंकना। २. किसी चीज के अगले भाग से प्रहार करना। जैसे—कोडे से अभिक्षेप करना। ३. अपमानित या तिरस्कृत करना।

अभिगणन—पु० [स०] गणना का वह गभीर और जटिल प्रकार या रूप जिसमे साधारण गणना के सिवा अनुभवो, घटनाओं, नियत सिद्धातो आदि का भी उपयोग किया जाता है। सगणन। (कम्प्यूटेशन) जैसे—फलित ज्योतिष मे आँधियो, भू-कपो आदि की भविष्यद्-वाणियाँ अभिगणन के आधार पर होती हैं।

अभिग्रहण—पु० २. आज-कल विधिक क्षेत्र मे, राज्य या शासन का अधिकारिक रूप से, परतु उचित मूल्य चुकाकर किसी की जमीन या मकान सार्वजनिक कार्य के लिए स्वय प्राप्त करना, अथवा किसी सस्था को दिलवाना। (ऐक्विजीशन)

अभिजात वर्ग—पु०[सं०] सामन्तशाही मे समाज के ऐसे उच्चतम लोगों का वर्ग, जिनमे जमीदार, नवाब, महाजन और रईस लोग होते हैं। (एरिस्टोक्रेसी)

अभित्याग—पु० २. उत्तरदायित्व, कर्तव्य-पालन आदि से बचने के लिए अपना कार्य, पद या स्थान छोड कर भाग या हट जाना। (डिज़र्शन)

अभिधर्म—पु० ३. परवर्ती बौद्ध धर्म मे धम्मपद, सुत्त-निपात आदि कुछ ऐसे छोटे ग्रथों का वर्ग, जिनमे गौतम बुद्ध के उपदेशो के सिवा धर्म-सबधी कुछ अतिरिक्त बातें भी सारहीन थी।

अभिनवीकरण—पु० दे० 'नवीकरण'।

अभिनिषिद्ध—भू० कृ० [स०] जिसका अभिनिषेध किया गया हो या हुआ हो।

अभिनिषेध—पु० [स०] [भू० कृ० अभिनिषिद्ध] १. अच्छी या पूरी तरह से किया हुआ निषेध। २ आज-कल, आपत्तिजनक या दूषित प्रकाशनो आदि का प्रचार रोकने के लिए राज्य या शासन की ओर से निषेधात्मक आज्ञा या व्यवस्था। बाधन। (प्रास्क्रिप्शन)

अभिप्रेरक—वि०[स०] अभिप्रेरण करनेवाला।

पु० विधिक क्षेत्र मे, वह व्यक्ति जो किसी प्रकार का अपराध करने के लिए अभिप्रेरित या प्रोत्साहित करता हो।

अभिप्रेरण—पु० [स०] [भू० कृ० अभिप्रेरित] १. कोई कार्य करने के

अमरांगना—स्त्री० [स० अमर+अगना] अमर अर्थात् देवता की पत्नी। देवागना। देवी।

अमला—पुं० २. कार्यालय मे किसी वडे अधिकारी के साथ काम करनेवाले लोगो का समूह। (स्टाफ़)

अमानस—वि० [स०] मानस से रहित या हीन।

अमानसता—स्त्री० [स०] वह स्थिति जिसमे मनुष्य की स्मरण-शक्ति आघात, रोग, वृद्धावस्था आदि के कारण बिलकुल नष्ट हो जाती है। बुद्धि-दौर्वल्य। (एमेन्शिया)

अमान्य—वि० ३. जो ठीक, नियमित या विहित न होने के कारण माना न जा सकता हो। (इनवैलिड)

अमिताभ—पु० ३ महायानी बौद्धो के अनुसार वर्तमान जगत् के अधीश्वर तथा सरक्षक वुद्ध का नाम।

अमृत पुत्र—पु० [स०] १. देवता का पुत्र या सतान। २ दैवी गुणो से सम्पन्न ऐसा पराक्रमी और वीर महापुरुष जिसने देवत्व प्राप्त करने के लिए इस लोक मे जन्म लिया हो और जिसकी कीर्ति या यश कभी क्षीण न हो। जैसे—महाकवि निराला अमृत पुत्र थे।

अमृतवर्षिणी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

अमैथुनी सृष्टि—स्त्री० [स०] पौराणिक क्षेत्र मे, ऐसी सृष्टि जो स्त्री और पुरुष के लैंगिक सवध से नही; बल्कि किसी अप्राकृतिक रूप से हुई हो। जैसे—घडे से अगस्त्य मुनि की अथवा वैवस्वत मनु की छीक से इक्ष्वाकु की उत्पत्ति।

अम्ल-शूल—पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे पित्त की अम्लता के कारण भोजन के उपरात कलेजे के आस-पास जलन सी मालूम देती है। उत्क्लेष। (हार्ट-बर्न)

अमोली—वि०=अमूल्य। उदा०—हरिहर नाम अपार अमोली।—गुरु नानक।

अयत्नज—वि० [स०] विना किसी प्रकार के यत्न अर्थात् प्रयत्न या प्रयास के होनेवाला।

अयत्नज अलंकार—पु० [स०] नाट्य-शास्त्र मे, तीन प्रकार के सात्त्विक अलकारो मे से एक, जिसके अतर्गत नायिकाओ की शोभा, काति, दीप्ति, माधुर्य, प्रगल्भता, औदार्य और धैर्य ये सात ऐसी बातें आती है, जो उनमे विना किसी यत्न किये प्राकृतिक रूप से रहती है।

अयन-वृत्त—पु० ३. पृथ्वी के वे क्षेत्र या प्रदेश, जो कर्क-रेखा और मकर-रेखा के वीच मे पडते है और जिनमे गरमी अपेक्षया अधिक पडती है। (ट्रापिक्स)

अयस्क—पु० १. कोई ऐसा खनिज पदार्थ, जिसमे से कोई धातु या कुछ धातुएँ निकाली जा सकती हो। (ओर)

अरज—पु० [?] सगीत मे भैरव ठाठ का एक राग।

अरणि—स्त्री० [सं०] माता। माँ। यौ० के अन्त मे, जैसे—गुहारणि=गुह की माता, विश्वारणि=विश्व की माता।

अरध-उरध—पु० [स० अध+उर्ध्व] रहस्य सप्रदायो तथा हठयोग की साधना मे (क) अरध अर्थात् शरीर के मेरु-दड के नीचेवाले भाग मे स्थित मूलाधार और (ख) उरध अर्थात् उसके ऊपरी भाग का सहस्रार चक्र। इन दोनो का अतर समाप्त करके मूलाधार मे स्थित कुडलिनी को सहस्रार मे पहुँचाकर स्थित करना ही योग-साधना का चरम उद्देश्य कहा गया है। उदा०—अरध-उरध विचै धरी उठाई। मधि सुन्न में बैठा जाई।—गोरखनाथ।

अरविंद—पु० ४. सवैया छद का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण मे आठ सगण और अत मे लघु होता है। इसमे १२ वर्णों पर यति होती है।

अरविंद दर्शन—पुं० [सं०] श्री अरविंद घोष के दार्शनिक विचारो और सिद्धातो का समुदाय।

विशेष—यह दर्शन श्री अरविंद की साधना-जन्य आध्यात्मिक अनुभूतियो पर आश्रित है। इसमे जगत् और ब्रह्म दोनो को सत्य माना गया है; और यह प्रतिपादित किया गया है कि जगत् और मनुष्य का निरतर विकास होता रहता है; और इसमे अवरोहण-आरोहण अथवा निवर्तन-विवर्तन का चक्र सदा चलता रहता है। इसमे जड और चेतन दोनो को सत्य माना गया है, और यह निरूपित किया गया है कि मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति करता हुआ स्वय तो देवत्व प्राप्त कर ही सकता है, स्वय देवत्व को भी इस पृथ्वी पर अवतरित कर सकता है। इसके लिए आवश्यकता है साधना के द्वारा केवल उपयुक्त भूमि तैयार करने की। उनका योग व्यक्तिगत लाभ के लिए नही, वल्कि सारी मानव जाति के उद्धार के लिए है।

अरुण—पु० २ सूर्योदय और सूर्यास्त के समय आकाश मे दिखाई देनेवाली लाली। ३ प्रात काल का सूर्य। वाल-सूर्य।

अर्चना-गीत—पु० [स०] दे० 'स्तुति-गीत'।

अर्थवाद—पु० २. प्रशसा, स्तुति आदि के रूप मे कही जानेवाली ऐसी बातें, जो अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए कही या की जायँ। चापलूसी की बातें।

अर्थापत्ति—पु० ३. साहित्य मे एक प्रकार का अलकार, जिसमे कोई बात कहने पर उसके एक पद मे कहा हुआ तथ्य उसके दूसरे पदो के सवध मे आप से आप सिद्ध या स्पष्ट हो जाता है। जैसे—यदि कहा जाय कि सारा मकान जल गया हो, तो इसमे आप से आप यह भी सिद्ध हो जायगा की सव चीजें भी जल गईं। उदा०—उसके आशय की थाह मिलेगी किसको। जलकर जननी भी जान न पाई जिसको।—मैथिलीशरण।

अर्थार्थी-भक्ति—स्त्री० [स०] वह गौणी भक्ति (देखें) जो धन, पुत्र आदि की प्राप्ति या वृद्धि के विचार से की जाती हो।

अर्थोपक्षेपक—वि० [स०] अर्थ का उपक्षेपण करने अर्थात् सूचना देनेवाला। पु० भारतीय नाट्य-शास्त्र मे वह तत्त्व, जो ऐसी सूक्ष्म वातो की सूचना देता है, जो रसहीन होने के कारण रगमच पर प्रत्यक्ष अभिनय के योग्य नही मानी जाती। इसके ये पाँच प्रकार या भेद हैं—निष्क्रमक, चूलिका, अकास्य, अंकावतार और प्रवेशक।

अर्धचेतन—वि०, पु०=अवचेतन।

अर्ध-साप्ताहिक—वि० [स०] हर तीन दिन के वाद अर्थात् सप्ताह मे दो वार होनेवाला। (वाइ-वीकली)

अर्ह—वि० ४ जिसने अनुभव, प्रशिक्षण आदि के द्वारा किसी विशिष्ट कार्य के लिए आवश्यक या उपयुक्त योग्यता प्राप्त कर ली हो। परिगुणी। योग्य। (क्वालिफाइड)

अर्हत—वि० [स० √अर्ह्+शतृ] १ सर्वज्ञ। २ राग-द्वेषादि से रहित। ३. पूज्य और मान्य।

अर्हता—स्त्री० [स०] १. अर्ह होने की अवस्था, गुण या भाव। २. आज-

कल कोई काम कर सकने की ऐसी क्षमता, जो विशिष्ट रूप से उस कार्य के अनुभव, प्रशिक्षण आदि के द्वारा अर्जित की गई हो। परिगुण। योग्यता (क्वालिफिकेशन)

अलंकरण—पु० ४. कोई ऐसी क्रिया या वस्तु, जिससे किसी दूसरे कार्य या वस्तु का सौन्दर्य बढता हो। [एम्बेलिश्मेन्ट]

अलकसाना†—अ०[हिं० अलकस=आलस्य] अलकस या आलस्य करना। कोई काम करने मे आलस्य दिखाना।

अलकासी†—स्त्री०=आलकस (आलस्य)।

अलक्षेंद्र—पु०[स०] यूनान के सुप्रसिद्ध विजयी वीर एलैग्जेन्डर (सिकन्दर) के नाम का वह रूप जो भारतीय सस्कृत साहित्य मे मिलता है।

अलग-थलग—वि०[हिं० अलग+अनु० थलग] एक ढग से या बिलकुल अलग। जैसे—वह बहुत दिनो से इसी तरह सबसे अलग-थलग रहती है।

अलहदी†—पु०[हिं० अहदी] वह जो अपने आलस्य या सुस्ती के कारण किसी काम के योग्य न रह गया हो।

अलूचा—पु०=आलूचा।

अल्प-तंत्र—पु० १. ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमे सारी राज-सत्ता थोडे-से या इने-गिने लोगो के हाथ मे हो। २ ऐसा देश, जिसमे उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली हो। (ओलीगार्की)

अवगलित—पु० साहित्य मे, रूपक (नाटक) की एक प्रकार की प्रस्तावना जिसके ये दो भेद कहे गये हैं—(क) जहाँ एक क्रिया से किसी एक कार्य के साथ-साथ दूसरा कार्य भी सिद्ध हो जाय। जैसे—वन-विहार की इच्छा करनेवाली सीता को वन मे छोड़ देने पर उसकी इच्छापूर्ति के साथ-साथ राम के द्वारा उसका परित्याग भी हो जाता हो। (ख) जिसमे एक कार्य करने की दशा मे कोई दूसरा ही कार्य सिद्ध हो जाता है। जैसे—दही बेचने के लिए निकलनेवाली ग्वालिन को श्रीकृष्ण के दर्शन।

अवगाढ़—वि० ३. डूबा हुआ। ४ भरा हुआ।

अवचेतन—वि० [स०] १. जो चेतना के ऊपरी तल मे नही, बल्कि उसके गहरे और भीतरी तल से सबध रखता हो। (सब्कॉन्शस) २ जो साधारणत चेतना मे न होने पर भी थोड़े प्रयास से उसकी गहराई मे से निकलकर चेतना के ऊपरी तल पर आ सकता या लाया जा सकता हो। (मानसिक क्रियाओ और प्रतिक्रियाओ के सबंध मे प्रयुक्त) ३. अचेत, बे-होश।
पु० आधुनिक मनोविज्ञान मे, मानस का वह अग या पक्ष, जो चेतन से कुछ नीचे रहता है और जिसमे दबी हुई कल्पनाएँ, भावनाएँ आदि धूमिल रूप मे रहती और थोडा प्रयास करने पर चेतन अंग मे आती या आ सकती हैं। (सबकान्शस) विशेष दे० 'मानस'।

अवटुका—स्त्री० [स०] गले के अन्दर की स्वर-नली। (लैरिंक्स)

अवटु-ग्रंथि—स्त्री० [स०]=गल-ग्रथि।

अवतारी(रिन्)—वि० ४. जो अवतारो का कारण रूप हो। अवतार करानेवाली। उदा०—अवतारी सब अवतारन को महतारी महतारी।

अवदान—पु० २. किसी के बहुत बडे और महत्त्वपूर्ण कार्यो का वर्णन। ३. किसी का गौरवपूर्ण चरित्र या जीवनी। ४. ऐसी लोक-कथा या लोक-प्रवाद, जो किसी महत्त्वपूर्ण घटना, व्यक्ति, स्थान आदि के आधार पर बहुत दिनो से प्रचलित हो और जिसमे वास्तविक बातो के सिवा कुछ आकर्षक तथा मनोरजक बाते भी बाद मे सम्मिलित हो गई हों। (लिजेन्ड) जैसे—राजा भरथरी (या विक्रमादित्य) का अवदान।

अवधारण—पु० १. कोई काम या बात देखकर उसके सबध मे कोई मत या विचार मन मे धारण करना। (कन्सेप्शन)

अवधूतिका—स्त्री० [सं०] बौद्ध हठ-योग मे ललना (इडा) और रसना (पिंगला) के बीच की एक नाडी, जो साधना को सहज या सुगम करने मे सहायक होती है।

अवधूपन—पु० [स०] [भू० कृ० अवधूपित] धूप आदि सुगधित द्रव्य जलाकर उसके धूएँ से किसी वस्तु को सुगधित करने की क्रिया या भाव।

अवपात—पु० २ किसी तल या स्तर का कुछ नीचे की ओर झुकना, दबना या धँसना। (डिप्रेशन)

अवपीड़न—पुं० [स०] [भू० कृ० अवपीडित] किसी को इस उद्देश्य से कष्ट देना या पीड़ित करना कि वह कोई कार्य करने या दबने के लिए विवश हो। जोर-जबरदस्ती। बल-प्रयोग। (कोएर्शन)

अवप्रेरण—पु० [स०] [भू० कृ० अवप्रेरित] किसी को किसी अनुचित, आपराधिक या विधि-विरुद्ध काम करने की प्रेरणा करना अथवा सहायता देना। बुरे काम के लिए उकसाना या मदद देना। (एबेटमेन्ट)

अवभेद—पु० [स०] किसी चीज के रूप आदि का विकृत होना।

अवरंग†—पु०=औरग।

अवरि†—स्त्री०=अवली। जैसे—मेघावरि (मेघो की अवली), बाणावरि (बाणो की अवली)।

अवरोह-पात—पु०[स०] ज्योतिष मे वह बिंदु या स्थान, जहाँ किसी ग्रह या नक्षत्र की कक्षा नीचे उतरते समय क्रान्ति-वृत्त को काटती है। (डिसेन्डिंग नोट) विशेष दे० 'पात'।

अवशंसा—स्त्री० [स०] किसी खराबी या दोष के सबध मे यह कहना कि इसके लिए अमुक व्यक्ति उत्तरदायी है। किसी को दोषी ठहराना या बतलाना। अवक्षेप। दोषारोप। (ब्लेम)

अवसाद—पु० ७ आज-कल, वैज्ञानिक क्षेत्र मे, किसी तरल मिश्रण का वह गाढा अश, जो उसके तल मे या नीचे बैठ गया हो। कल्क। तलछट। (सेडिमेन्ट)

अवसादी(दिन्)—वि० ४. जो अवसाद या तलछट के रूप मे नीचे गया हो। (सेडिमेन्टरी)

अवस्फीति—स्त्री० [स०] मुद्रा-शास्त्र मे वह स्थिति, जब बाजार मे मुद्राओ का प्रचलन कम रहता है और जिसके फलस्वरूप चीजो का दाम बढने नही पाता। 'स्फीति' का विपर्याय। (डिफ्लेशन)

अवहट्ट—पु० [सं० अपभ्रष्ट] एक प्रकार की प्राचीन भाषा, जिसे कुछ लोग अपभ्रंश का ही एक रूप तथा कुछ लोग आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओ का पूर्व रूप मानते है। सभवत. विद्यापति के समय मे यह साहित्यिक भाषा के रूप मे प्रचलित थी।

अवहसित—पु० [सं०] हास्य या हँसी का वह प्रकार या भेद, जो असमय पर और प्राय व्यर्थ होता है तथा जिसमे बरबस दूसरो को हँसाने के लिए हँसनेवाला सिर और कधे कुछ हिलाने लगता है।

अवहार—पु० [स० अव√हृ (हरण)+ण] १. किसी की धन-सपत्ति छीन लेना या जब्त कर लेना। २. वह जो उक्त प्रकार से धन-सपत्ति ले-लेता हो। ३. जल-हस्ती। ४. आह्वान। निमत्रण। ५. किसी

प्रकार के काम का बंद होना या रुकना। ६ किसी कारण से कुछ समय के लिए युद्ध, वैर-विरोध या पारस्परिक संघर्ष स्थगित करना। (ट्रूस) ७ दे० 'विराम-संधि'।

अवाप्त—वि० २ (भवन या स्थान) जो उचित प्रतिमूल्य देकर सार्वजनिक उपयोग के लिए प्राप्त किया गया हो।

अवाप्ति—स्त्री० २ सार्वजनिक उपयोग के उद्देश्य से राज्य या शासन का किसी की भूमि या सम्पत्ति उचित प्रतिमूल्य देकर ले लेना। अभिग्रहण। अभ्याप्ति। (एक्विजीशन)

अव्यलीक—वि० [सं० अ+व्यलीक] १. जो व्यलीक अर्थात् अनुचित, दूषित या बुरा न हो। बिलकुल अच्छा और ठीक। २ जो कपट, छल, दोषादि से पूर्णत रहित हो। शुद्ध और साफ। ३ जिसमे नाम को भी झूठ या मिथ्यात्व न हो। पूर्णत सत्य। बिलकुल सच। ४ निरपराध। बेकसूर। ५ कष्ट, चिंता, दुख आदि से बिलकुल रहित।

पु० वह जो सदा सत्य बोलता हो। परम सत्यवादी।

अशक्त—वि० २ जो रोग, शारीरिक विकार आदि के कारण कोई काम-धन्धा करने के योग्य न रह गया हो। (इनवैलिड)

अश्म-खनि—स्त्री० [सं०] पहाड का वह अश, जिसमे से इमारती कामो के लिए पत्थर खोदकर निकाले जाते हैं। खदान। (क्वैरी)

अश्रु-गैस—स्त्री० रासायनिक क्रिया से तैयार की जानेवाली एक गैस, जिससे आँखो मे जलन उत्पन्न होती है तथा अत्यधिक आँसू निकलने लगते हैं। (टियर-गैस)

अश्रु-ग्रंथि—स्त्री० शरीर के अन्दर माथे के पास की वे ग्रंथियाँ, जो अश्रु या आँसू उत्पन्न करती है। (लैक्रिमल ग्लैन्ड)

अश्व-धावन—पु०[सं०] घुडदौड का खेल या प्रतियोगिता।

अष्टग्रही—स्त्री० [सं० अष्ट+ग्रह+हिं० ई (प्रत्यय)] ज्योतिष मे एक प्रकार का योग, जो किसी राशि मे आठ ग्रहो के एक साथ आ जाने पर होता है , और फलित ज्योतिष के अनुसार जिसका फल बहुत ही अशुभ-कारक होता है।

अष्ट-बाहु—वि०[सं०] आठ बाहो वाला।

पु० एक प्रकार की भीषण समुद्री मछली, जिसके शरीर के चारो ओर बाहो की तरह आठ लबे, लबे अग निकले हुए होते हैं। (आक्टोपस)

अष्ट-मूर्ति—पु० ३ शिव जिनकी आठ मूर्तियाँ मानी गई हैं—शिव, भैरव, श्रीकंठ, सदाशिव, ईश्वर, रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा।

अष्ट-याम—पु० [सं०] वह कविता, जिसमे देवी-देवता, नायक-नायिका अथवा किसी अन्य व्यक्ति के सबध मे यह वर्णित होता है कि वह प्रति दिन आठो पहरो मे से क्रमात् क्या-क्या किया करता है। जैसे—कृष्ण या राम का अष्ट-याम।

अष्ट-सखा—पु०[सं०] १ पुष्टि मार्ग मे, श्रीकृष्ण और उनके बाल्य तथा कैशोर के ये सात मित्र या सखा जो वय, शील आदि मे बहुत कुछ उन्ही के समान थे—ताके, अर्जुन, ऋषभ, तुकल, श्रीदामा, विशाल और भोज।

अष्टाध्यायी—पु० [सं०] पाणिनी-कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध और प्रामाणिक ग्रंथ, जिसकी गिनती ६ वेदागो मे होती है। (रचना काल—ई० पू० चौथी शताब्दी)

असज्ज—वि० [सं०] १ जो सज्ज या सजाया हुआ न हो। २ जिसने कोई अपराध न किया हो। निरपराध।

असम—वि० ३ अनुपम। बेजोड।

असमर्थ—वि० २ जो रोग, शारीरिक विकार आदि के कारण काम-धन्धा करने के योग्य न रह गया हो। (इन वैलिड)

असार—पु० ४ खनिज पदार्थो, विशेषत धातुओ मे से निकाले हुए वे अनुपयोगी अश या तत्त्व, जिनका व्यावहारिक दृष्टि से कोई मूल्य नहीं होता। (गैन्)

असिकाय—पु०[सं०] किलनी नाम का कीडा।

असि-क्रीड़ा—स्त्री०[सं०] तलवार चलाने या तलवार से लड़ने का अभ्यास।

असुंदर व्यंग्य—पु०[सं०] गुणीभूत व्यग्य का एक प्रकार या भेद जिसमे वाच्यार्थ की तुलना मे व्यग्यार्थ घटकर और चमत्कार-रहित होता है। यथा—उस सरसी-सी आभरण-रहित सित वसना। सिहरे प्रभु माँ को देख हुई जड रसना।—मैथिलीशरण।। यहाँ कौशल्या के 'आभरण-रहित' और 'सित वसना' के व्यग्यार्थ की तुलना मे राम के सिहरने और उनकी रसना के जड़ होने के वाच्यार्थ मे अधिक चमत्कार है।

असुरी—वि०=आसुरी।

स्त्री०=असूरी।

असूझा†—वि० पु०=असूझ।

असूया—स्त्री० २ मन की वह स्थिति, जिसमे दूसरो के पास कोई ऐसी अच्छी चीज देखकर जलन होती है, जो स्वय हमे प्राप्त न हो। (एन्वी)

असूरी—स्त्री०[सामी असूर] प्राचीन असूर जाति की भाषा, जो सामी परिवार की भाषाओ की एक शाखा है।

अस्तित्ववाद—पु०[सं०] पाश्चात्य-दर्शन की एक आधुनिक शाखा, जिसका उपयोग साहित्यिक चिंतन पद्धति मे भी होने लगा है। इसमे प्रस्तुत और यथार्थ अस्तित्व का ही सबसे अधिक महत्त्व माना जाता है और आस्तिकता, तर्क, परम्परा आदि को व्यर्थ समझकर मानव-जीवन को भी निरर्थक माना जाता है, और कहा जाता है कि मनुष्य को ससार मे दर्शक के रूप मे ही रहना चाहिए। (एग्ज़िस्टेन्शिएलिज्म)

अस्तित्ववादी—वि०[सं०] अस्तित्ववाद सबधी। अस्तित्ववाद का।

पु० वह जो अस्तित्ववाद का अनुयायी या समर्थक हो।

अस्थाई—स्त्री० दे० 'आस्थाई'।

*वि०१ =स्थायी। २ =अस्थायी।

अस्थायी†—स्त्री० दे० 'आस्थाई'।

अस्थि-दौर्बल्य—पु०[सं०] एक प्रकार का रोग, जो मुख्यत बालको को यथेष्ट पौष्टिक भोजन, सूर्य का प्रकाश आदि न मिलने के कारण होता और जिसमे शरीर की हड्डियाँ मुलायम होकर झुकने और मुडने लगती हैं। (रिकेट्स)

अस्पताल—पु०२ वह स्थान, जहाँ शरीर के किसी विशिष्ट अग के रोगो की चिकित्सा होती हो। जैसे—आँखो या दाँतो का अस्पताल।

अस्पताल गाड़ी—स्त्री०[हिं०] वह गाड़ी जिसमे घायल, रोगी आदि उठाकर अस्पताल पहुँचाये जाते है। (एम्बुलेन्स)

अस्फुट व्यंग्य—पु०[सं०] साहित्य मे, गुणीभूत व्यग्य का एक प्रकार या भेद, जिसमे व्यग्य इतना अधिक अस्फुट या अस्पष्ट रहता है कि अच्छे सहृदय भी उसे सहज मे नही समझ सकते। यथा—अनदेखे चहैं,

देखे बिछुरन मीत। देखें बिनु, देखहुँ पै, तुम सौ मुख नही मीत।

अस्वीकार्य व्यक्ति—पु०[सं०]=अग्राह्य व्यक्ति।

अहंकार—पु०३ वज्रयानी साधना मे वह स्थिति, जब साधक अपने आप को देवता या देवतुल्य समझने लगता है।

अहंता—स्त्री० १ वह स्थिति, जिसमे अहभाव की अनुभूति होती है।

अहंपद—पु० २ दे० 'सोहं'।

अहंवाद—पु०३ आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का एक मत या सिद्धात, जिसमे यह माना जाता है कि ज्ञाता को अपनी अनुभूतियो तथा इच्छाओ के सिवा और किसी बात का ज्ञान नही होता, इसलिए अपनी सत्ता के सिवा और कुछ भी वास्तविक नही। (सालिप्सिज्म)

अहंस्पति—पु०[सं०] क्षयमास का दूसरा नाम।

अहदी—वि०१ जिसने किसी बात का अहद अर्थात् प्रतिज्ञा कर रखी हो। २. जो अपने प्रण या प्रतिज्ञा के फलस्वरूप निरतर किसी एक ही काम मे तल्लीन होकर समय बिताता हो। उदा०—बाबा मै तो राम नाम को अहदी।—कबीर।

अहरमन—पु०[पार० अह्रिमन] पारसी धर्म मे, ईश्वर का प्रतिद्वद्वी वह राक्षस या शैतान, जो विषय-वासनाओ का प्रतीक और ससार का विनाशक माना जाता है।

अहाता—पु० ३ कोई विशिष्ट प्रदेश या भू-खड। जैसे—बगाल या बिहार का अहाता। ४ सीमा। हद। जैसे—यहाँ तक हमारा अहाता है।

अहान—पु०२ अपनी सहायता के लिए की जानेवाली पुकार। ३ ख्याति। प्रसिद्धि। शोर। उदा०—भइ अहान सिगरी दुनिआई।—जायसी।

अहीर—पु०२ एक प्रकार का मात्रिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे ११ मात्राएँ होती हैं। इसके अन्त मे जगण रहना आवश्यक है। यथा—सुरभित मद बयार सोसे सुमन स-डार।

अहेरी—पु०२ रहस्य सप्रदाय मे वह साधक जो विषयासक्त मन, रूपी मृग का गुरु के वचन रूपी बाण से आखेट करता है। इस मृग का मास 'ज्ञान' कहा गया है, जिसे खाने (प्राप्त करने) की बहुत महिमा है।

अहोम—पुं०[?] असम प्रदेश मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति, जो चीनियो के ताई परिवार की एक शाखा मानी जाती है। इनके वशज अभी तक यहाँ वर्तमान हैं।

आ

आंग्ल—वि०[अं० ऐंग्लो] अं० ऐंग्लो को दिया हुआ भारतीय या सस्कृत रूप। अँगरेजो से सबध रखनेवाला। अँगरेजो का। जैसे—आग्ल साहित्य।

आंचलिकता—स्त्री०[सं०] आचलिक होने की अवस्था या भाव।

आंतर चक्र—पु०[सं०] किसी क्षेत्र, वर्ग या सस्था मे अन्दर बहुत कुछ गुप्त रहकर काम करनेवाले लोगो का ऐसा दल, जो जनसाधारण या बाहर के लोगो से बिल्कुल भिन्न हो। (इनर सर्किल)

आंतर सत्ता—स्त्री०[सं०]=अंत सत्ता। (दे०)

आंतरायिक—वि०[सं०] जो थोडे थोडे अतर पर अर्थात् ठहर-ठहर कर या रुक-रुककर होता हो। (इन्टरमिटेन्ट) जैसे—आतरायिक ज्वर=अतरिया बुखार।

आंतरायिक ज्वर—पु०=विसर्गीज्वर।

आंतरिक मूल्य—पु०[सं०] किसी वस्तु का वह मूल्य, जो केवल उसके उपादान या तत्त्व के विचार से निश्चित होता है और जो उसके प्रत्यक्ष मूल्य से बहुत भिन्न होता है। (इन्ट्रिन्जिक वैल्यू) जैसे—आज-कल बाजार मे चलनेवाले धातु के रुपए का प्रत्यक्ष मूल्य तो १०० नये पैसे है; पर उसका आतरिक मूल्य १० या १५ नये पैसो से अधिक नही है।

आंत्र—पु०[सं०] आन्त्रिक ज्वर। मिआदी बुखार।

आइस-क्रीम—पु०[अं०] दूध, फलो के टुकडो या रसों के योग से आधुनिक यत्रों की सहायता से बनाई हुई एक प्रकार की कुल्फी।

आई—प्रत्य०[देश०] एक प्रत्यय जो क्रियाओं, विशेषणों आदि मे उनके भाववाचक रूप बनाने मे लगता है। जैसे—चढाई, लडाई, चिकनाई, मिठाई आदि।

विशेष—कुछ अवस्थाओ मे यह पूर्वी हिन्दी की संज्ञाओं के अत मे लगता है। जैसे—लडकाई।

आकर्णक—पु०[सं०] एक प्रकार का छोटा उपकरण, जिसकी सहायता से बिजली के तार, रेडियो आदि से आये हुए समाचार सुनाई पडते हैं। (हेडफोन)

विशेष—यह प्राय लोहे की अर्धचन्द्राकार पट्टी के रूप मे होता है, जिसके दोनो सिरो पर वे उपकरण लगे रहते हैं, जिनसे आवाज सुनाई पडती है। यह सिर के ऊपर से पहन लिया जाता है। हवाई जहाजो आदि के चालक इसी के द्वारा अपने केन्द्रों से आए हुए समाचार और सूचनाएँ सुनते है।

आकांक्षा—स्त्री०[सं०] [वि० आकाक्षिक, भू० कृ० आकाक्षित, कर्ता आकाक्षी]१ किसी प्रकार के अभाव के कारण मन मे उत्पन्न होनेवाली इच्छा या चाह। २ व्याकरण और साहित्य मे, वह स्थिति जिसमे किसी पद या वाक्य के अधूरेपन के कारण पाठक या श्रोता के मन मे उसका पूरा आशय जानने की उत्सुकता होती है।

विशेष—न्यायशास्त्र मे यह वाक्यार्थ ज्ञान के चार प्रकार के हेतुओ मे से एक है।

३ किसी चीज या बात की होनेवाली अपेक्षा। ४ जैनो मे एक प्रकार का अतिचार, जो उस दशा मे माना जाता है, जब दूसरो की विभूति देखकर उसे पाने की इच्छा होती है। ५ अनुसधान। खोज।

आकार-विज्ञान—पु० दे० 'आकारिकी'।

आकारिकी—स्त्री० दे० 'आकृति-विज्ञान'।

आकाश—वि० जिसमे कुछ भी न हो। बिलकुल खाली। जैसे—आकाश-रोमथन=मुँह मे कुछ भी न होने पर भी गौ भैस आदि का योंही जुगाली करते या मुँह चलाते रहना।

आकाश-वाणी—स्त्री० ४. भारत सरकार द्वारा सचालित वह विभाग और व्यवस्था, जिसके द्वारा उक्त प्रकार से समाचार आदि प्रसारित किये जाते है। (आल इडिया रेडियो) जैसे—आकाशवाणी दिल्ली, आकाशवाणी पटना आदि।

आकृति-विज्ञान—पु० आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का अध्ययन और विवेचन होता है कि जीव-जन्तु और वनस्पतियाँ किन अवस्थाओ मे कैसी आकृति या रूप धारण करती है, या उनकी बनावट किन आधारो पर होती है। (मॉरफ़ोलाजी)

आक्रम्य—वि०[स०] जिस पर आक्रमण हो सकता हो, या होने को हो।

आक्रम्यता—स्त्री०[स०]१. आक्रम्य होने की अवस्था या भाव। २ वह स्थिति, जिसमे शरीर आदि पर रोगों आदि का आक्रमण हो सकता हो। (ससेप्टिविलिटी)

आक्षेपक—पु० [सं०] एक प्रकार का वात-रोग जिसमे शरीर के हाथ, पैर आदि अग रह-रहकर ऐंठते और कांपते है। ऐंठन। (कन्वल्शन)

आख्यानक नृत्य—पु० [स०] ऐसा नृत्य, जिसके साथ किसी आख्यान से सबद्ध पद भी गाये जाते हों। (वैलेड डान्म)

आख्यान-पुरुष—पु०[स०]=कथा-पुरुष।

आख्यानिक—वि०[स०]१ आख्यान-सबधी। आख्यान का। २ जो आख्यान के रूप मे हो। ३ जिसका उल्लेख आख्यानो अथवा अनुश्रुतियो मे आया हो। अनुश्रुत। (लीजेन्डरी)

आख्यापक—पु०३ वह जो किसी प्रकार का आख्यापन या एलान करता हो। (एनाउन्सर)

आख्यायिका—स्त्री० ३ सस्कृत साहित्य मे गद्यकाव्य के दो भेदो मे से वह भेद, जिसकी कथावस्तु लोगो को ज्ञात हो या सत्य हो। (दूसरा भेद कथा कहलाता है।)

आगणन—पु० [स०] किसी काम या बात के महत्त्व, व्यय, स्वरूप आदि के सबध में पहले से किया जानेवाला अनुमान। कूत। प्राक्कलन।

आगम—पु०३ किसी काम, चीज या बात मे बाहर से किसी नये और प्रभावशाली तत्त्व का आकर क्रियात्मक रूप मे सम्मिलित या स्थापित होना। (इन्डक्शन) जैसे—शब्दो मे होनेवाला नये अर्थों का आगम। १६ मिलन। समागम। १७ स्त्रीप्रसग। सभोग।

आगा—मुहा०—(किसी का) आगा काटना=किसी चलते हुए व्यक्ति के सामने आकर उसका रास्ता रोकना। उदा०—इतने मे भिखारिन ने आकर उसका रास्ता काटा।—उग्र।

आगारिक—वि०[स०] जो अपने रहने के लिए घर बनाता या घर मे रहता हो।

पु० गृहस्थ। घर-बारी।

आग्रहण—पु० २ अधिकारिक या विधिक रूप से प्राप्य धन या वस्तु कही से प्राप्त करना या लेना। (ड्राइग)

आचार-शास्त्र—पु० वह शास्त्र, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य को सामाजिक व्यवहारो मे अपने आचार-विचार किस प्रकार नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठ रखने चाहिए। (एथिक्स)

विशेष—यह हमारे यहाँ के नीति-शास्त्र का एक अग-मात्र है।

आचार-सहिता—स्त्री० [स०] ऐसे नियमो का सग्रह, जो किसी विशिष्ट वर्ग के आचरण और व्यवहार के सबध मे नियत या निश्चित किये गये हो। (कोड ऑफ कन्डक्ट) जैसे—राजकर्मचारियो या समाचार-पत्रो की आचार-सहिता।

आजीविक—पु०[स०] एक श्रमण सम्प्रदाय, जो वैदिक धर्म के सिवा बुद्ध और महावीर का भी प्रबल विरोधी था।

आतंक—पु०५ किसी विकट या चिंताजनक घटना के कारण लोगो को होनेवाला वह भय, जिसके फलस्वरूप लोग अपनी रक्षा के उपाय सोचने लगते है। सनसनी। (पैनिक)

आतति—स्त्री०[स०] खिंचने या खींचने के कारण पड़नेवाला तनाव। तान। (टेन्सन)

आतप—पु०२ सूर्य का ताप। सूर्य की गरमी। (इन्सोलेशन)

आतानक—वि०[स०] खींच या तानकर फैलाने या आगे बढ़ानेवाला। (टेन्सर) जैसे—पैरो या हाथो की आतानक पेशियाँ।

आत्म-चिंतन—पु० [स०] आत्मा के सबध मे चिंतन या विचार करना। २ दे० 'अतर्दर्शन'।

आत्म-चेतना—स्त्री० दर्शन और मनोविज्ञान मे वह स्थिति, जिसमे यह ज्ञान होता है कि हमारा स्वतन्त्र अस्तित्व है, हम कुछ कर रहे है, अथवा हमे अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। (सेल्फ-कान्शसनेस)

आत्म-निरीक्षण—पु०=अतर्दर्शन।

आत्म-निर्भर—वि०[सं०] [भाव० आत्म-निर्भरता]१ जो सब बातो मे अपने आप पर ही निर्भर हो, किसी दूसरे का आश्रित न हो। २ दे० 'आत्म-पूर्ण'।

आत्म-निर्भरता—स्त्री०[स०]१ आत्म-निर्भर होने की अवस्था, गुण या भाव। २ राजनीतिक क्षेत्र मे वह स्थिति, जिसमे कोई देश, राज्य या सस्था सब कामो या बातो मे अपने आप पर निर्भर हो, दूसरो पर आश्रित न हो। आत्म-पूर्णता। (आटार्की)

आत्म-निष्ठ—वि०[स०]१ अपने आप मे निष्ठा या विश्वास रखनेवाला। २ अध्यात्म या दर्शन मे, जो कर्त्ता या विचारक के आत्म (चेतना या मन) मे ही उत्पन्न हुआ हो अथवा स्वय उसी से सबध रखता हो। 'वस्तु निष्ठ' का विपर्याय। ३ कला और साहित्य मे, (अभिव्यजना या कृति) जो किसी के आत्म (चेतना या मन) मे ही उद्भूत हो और उसकी अनुभूतियो तथा विचारो पर ही आश्रित रहकर उन्हे प्रदर्शित करे, बाह्य पदार्थों आदि पर आश्रित न हो। 'वस्तु-निष्ठ' का विपर्याय। (सब्जेक्टिव, अन्तिम दोनों अर्थों के लिए)

आत्म-पीड़न—पु०१ अपने आपको पीडित करने या कष्ट देने की क्रिया या भाव।

आत्म-पूर्ण—वि०[स०]१ जो अपने आप मे स्वय हर तरह से पूर्ण हो, अर्थात् जिसे अपने अस्तित्व, निर्वाह आदि के लिए बाहरी तत्त्वो, साधनो आदि की अपेक्षा या आवश्यकता न रहती हो। २ (देश, या राज्य) जो अपनी आवश्यकता की प्राय सभी चीजें स्वय उत्पन्न करता हो और दूसरे देशो या राज्यो पर आश्रित न रहता हो। आत्म-निर्भर। (आटार्किक, आटार्किकल)

आत्म-पूर्णता—स्त्री०[सं०] १ किसी वस्तु की वह स्थिति, जिसमे वह अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के सभी साधन अपने अतर्गत रखती और बाहरी तत्त्वो या साधनो से निरपेक्ष रहती है। २ आधुनिक अर्थशास्त्र मे, किसी देश या राज्य की वह स्थिति, जिसमे वह अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ स्वय उत्पन्न करता है और दूसरे देशो या राज्यो से चीजें मॅगाने से बचा रहता है। आत्म-निर्भरता। (आटार्की)

आत्म-भर्त्सन—पु०[स०] कोई अनुचित या निंदनीय काम कर बैठने पर आप ही अपनी भर्त्सना करना। स्वय अपने आप को बुरा-भला कहना।

आत्म-रति—स्त्री०३ यौन-विज्ञान मे, एक प्रकार की यौन-विकृति (दे०) जिसमे अपनी काम-वासना की तृप्ति के लिए पुरुष अपना वीर्य स्खलित कर लेता है या स्त्री अपना रज स्खलित कर लेती है।

आत्मसँकोच—पु०[स०] [वि० आत्म-सकोची] मन की वह स्थिति, जिसमे मनुष्य औरो के सामने अपने महत्त्व आदि के विचार से कुछ सकुचित होता, और खुलकर कोई काम नही कर सकता या कोई वात नही कह सकता। (सेल्फ़-कान्शसनेस)

आत्म-सिद्धि—स्त्री०१ वह स्थिति, जिसमे मनुष्य अपनी आत्मा का ठीक स्वरूप जान लेता और इसकी असीम शक्तियो से परिचित होकर परमात्मा के साथ एकात्म्य स्थापित कर लेता है। (सेल्फ़-रियलाइजेशन)

आत्म-स्थापन—पु०[स०] अपने अधिकार, विचार, सत्ता आदि का दृढता-पूर्वक किया जानेवाला प्रस्थापन। यह कहना कि हम या हमारे विचार भी महत्त्वपूर्ण है, और हमे या हमारे विचारों को भी उचित मान्यता मिलनी चाहिए। (सेल्फ-एसर्शन)

आत्म-स्वीकृति—स्त्री०[स०] विधिक क्षेत्र मे, अपने किसी अपराध, दोष या भूल के सबध मे यह मान लेना कि हाँ, हमने ऐसा किया है। (कन्फेशन)

आत्मीकरण—पु०[स०] [भू० कृ० आत्मीकृत] एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने साथ मिलाकर इस प्रकार एक कर लेना कि उस दूसरे पदार्थ का अस्तित्व ही न रह जाय। स्वागीकरण। (एसिमिलेशन) जैसे—हमारा शरीर खाद्य पदार्थो का आत्मीकरण कर लेता है।

आत्यतिक प्रलय—पु०[स०] मन की वह स्थिति, जिसमे परम तथा पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होने पर वह चित् या ब्रह्म मे पूर्ण रूप से लीन हो जाता है। (वेदान्त)

आदत—स्त्री०[अ०] १. प्रवृत्ति, रुचि आदि की विलक्षणता के कारण उत्पन्न होनेवाली वह स्थिति, जो वार-बार कोई काम करते रहने पर अथवा किसी वात के अभ्यस्त होने पर प्रकृति या स्वभाव का अग वन जाती है। अभ्यास। टेव। वान। (हैविट) २ प्रकृति। स्वभाव। (नेचर)

आदरार्थक—वि०[स०] (शब्द) जिसका प्रयोग विशेष रूप से किसी के आदर के विचार से किया जाय। जैसे—'तुम' सावारण सर्वनाम है, और 'आप' आदरार्थक।

आदायक—वि०[स०]१. ग्रहण करने या लेनेवाला। ग्राही। २. पाने या प्राप्त करनेवाला। प्रापक।

पु० विधिक क्षेत्र मे, किसी विवादग्रस्त या दिवालिये आदि की सम्पत्ति का वह व्यवस्थापक, जो न्यायालय के द्वारा नियुक्त किया गया हो। प्रापक। (रिसीवर)

आदि-ग्रथ—पु०[स०] सिक्खो का प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ, जो लोक मे 'गुरु ग्रथ साहव' के नाम से प्रसिद्ध है और जिसका सकलन गुरु अर्जुनदेव ने सन् १६०४ मे कराया था।

आदित—अव्य०[स०] विलकुल आदि या आरभ से। आरभत। (ऐव इनिशिओ)

आदि-पचम—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

आदेशिका—स्त्री०[स०] न्यायालय का वह आज्ञापत्र, जिसमे किसी व्यक्ति को न्यायालय मे उपस्थित होने अथवा कोई चीज उपस्थित करने का आदेश होता है। (प्रोसेस)

आदेशिकी—पु०[स०] वाणिज्य क्षेत्र मे वह, जिसके नाम कोई हुडी लिखी जाय या चेक काटा जाय। (ड्राई)

आधर्षण—पु० मध्ययुगीन अगरेजी विधिक क्षेत्र मे, किसी अपराधी को प्राणदड मिलने पर राज्य के द्वारा होनेवाली उसकी सपत्ति की जब्ती।

आधर्षित—वि०(व्यक्ति या सपत्ति) जिसका आधर्षण हुआ हो।

आधान—पु०२ आजकल वैज्ञानिक क्षेत्रो मे कोई तरल पदार्थ शरीर की किसी नस के अदर पहुँचाने की क्रिया या भाव। (ट्रान्सफ्यूजन) जैसे—शरीर मे किया जानेवाला नमकीन पानी या रक्त का आधान।

आधार—पु०२. वह मूल तत्त्व, तथ्य या वस्तु जिसके ऊपर किसी प्रकार की रचना प्रस्तुत या विकसित होती हो। जमीन। (ग्राउन्ड)

आधार-पत्र—पु०[स०] वह पत्र, जिस पर किसी प्रकार के क्रय-विक्रय, देने-पावने आदि का ठीक हिसाब या भेजे जानेवाले माल का पूरा विवरण लिखा रहता है। (वाउचर)

आधार-शैल—पु०[सं०] आधुनिक भू-विज्ञान मे पृथ्वीतल के नीचे की वे आग्नेय चट्टानें, जिनके ऊपर बाद मे तहे या परतें जमती और बनती चली गई थी और जिनके नीचे तहो या परतो का कोई चिह्न नही मिलता। (वेट-रॉक)

आधुनिकीकरण—पु०[स०] किसी परपरागत या पुरानी कार्य-प्रणाली, व्यवस्था, सघटन आदि को आधुनिक अर्थात् नये ढग का बनाने की क्रिया या भाव। (माडर्नाइजेशन)

आनंद-योगी—पु०[सं०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

आनंद-वाद—पु०[स०] [वि० आनदवादी] आध्यात्मिक क्षेत्र का वह मत या सिद्धान्त कि मनुष्य की आत्मा स्वभावत. आनन्द या ब्रह्मानन्द मे पूर्ण है, अत. मनुष्य को आत्मरूप मे लीन रहकर सदा आनन्दमय रहना चाहिए।

आनदवादी—वि०[स०] आनदवाद सबधी। आनन्दवाद का।

पु० वह जो आनन्दवाद का अनुयायी या समर्थक हो।

आन—स्त्री०५ किसी की मर्यादा या महत्त्व के प्रति मन मे होनेवाली आदरपूर्ण भावना या पूज्य बुद्धि। उदा०—छडियाँ निकली है, बच्चे को पडा फिरता है। कुछ किसी बात की भी आन है गोइयाँ तुमको।—जानसाहव।

मुहा०—(किसी की) आन मानना=(क) किसी की मर्यादा, महत्त्व आदि का उचित आदर करना और ध्यान रखना। जैसे—भले घर की स्त्रियाँ बडे-बूढो की आन मानती हैं। (ख) किसी का प्रभुत्व या वडप्पन मानकर उसके सामने झुकना या दबना। उदा०—देखकर कुरती गले मे सब्जधानी आपकी। धान के भी खेत ने अब आन मानी आपकी।—नजीर।

६ अपनी मर्यादा, सुरक्षा आदि के विचार से किया जानेवाला कोई ऐसा निश्चय, जिसके फलस्वरूप किसी काम या वात का निषेध या वर्जन होता हो। जैसे—(क) तुम्हे तो हमारे यहाँ आने की आन है। (ख) उनके घर मे हरी चूडियो की आन है। (स्त्रियाँ) ७ अपनी मर्यादा आदि की रक्षा के विचार से किया जानेवाला ऐसा दृढ निश्चय या सकल्प, जो जिद या हठ के रूप मे परिणत हो गया हो। जैसे—न जाने उसे क्या आन पड गई है कि वह किसी तरह मनाये नही मानता।

क्रि० प्र०—पडना।

८. अपनी मर्यादा, महत्त्व आदि की उत्कट भावना के कारण उत्पन्न

होनेवाला मिथ्या अभिमान। अकड। ऐंठ। जैसे—तुम तो बात बात मे अपनी आन ही दिखाते रहते हो।

आनी-बानी—वि० [हिं० आन+बान] आनबानवाला।

स्त्री० पाजीपन। शरारत।

आनुवंशिक विज्ञान—पु०[स०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जीवो और वनस्पतियो मे आनुवशिकता किस प्रकार चलती है और उसमे समय-समय पर किन परिस्थितियो मे किस प्रकार के विभेद उत्पन्न होते है। (जेनेटिक्स)

आनुवंशिकी—स्त्री० दे० 'आनुवशिक विज्ञान'।

आन्वीक्षिकी—स्त्री० १ सृष्टि के तत्त्व का विचार करनेवाला शास्त्र।

आपात—पु० ५ आज-कल राजनीतिक क्षेत्र मे, अचानक उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी विशिष्ट स्थिति, जिसके फ़लस्वरूप देश की शान्तिरक्षा या सुरक्षा मे बाधा पडने की सभावना हो। हगामा। (एमर्जेन्सी, अतिम दोनो अर्थो के लिए)

आपेक्ष—पु०[स०]=उपेक्षा।

आपेक्षिकता—स्त्री०[स०] आपेक्षिक होने की अवस्था, गुण या भाव। (रिलेटिविटी)

आपेक्षिकतावाद—पु०[स०] [वि० आपेक्षिकतावादी] आधुनिक भौतिकी का यह नया मत या वाद कि गति और त्वरण दोनो परस्पर निरपेक्ष नही हे, बल्कि एक दूसरे के आपेक्षिक है। (रिलेटिविटी थियोरी)

आप्त—पु०१ ऐसा व्यक्ति, जिसने दर्शन और धर्म की सब बातें अच्छी तरह जान ली हो और जो जीव मात्र पर दया करता तथा सदा सच बोलता है। ५ आज-कल विधिक क्षेत्र मे वह व्यक्ति, जो दो प्रतिस्पर्धी या विरोधी दलो के झगडे या विवादास्पद विषय का अन्तिम निर्णय करने के लिए चुनकर नियुक्त किया गया हो। (अम्पायर)

आप्त प्रमाण—पु०[स०] ऐसा प्रमाण, जो आप्त पुरुष के उपदेश या कथन पर आश्रित हो, और इसलिए जिसकी सत्यता मे किसी प्रकार का सदेह न किया जा सकता हो। जैसे—वेदो के मत्र आप्त प्रमाण है।

आप्रवास—पु०[स०]=आप्रवासन।

आप्रवासन—पु०[स०] [भू० कृ० आप्रवासित] अपना देश या मूल निवास-स्थान छोडकर प्राय' स्थायी रूप से वसने के लिए किसी दूसरे देश मे जाकर वसना या रहना। (इमिग्रेशन)

आबंध—पु०४ कोई बात निश्चित या पक्की करना। ठहराव। परि-युक्ति। (एरेन्जमेन्ट)

आबादकार—पु० ऐसे लोग, जो किसी कम आबादीवाले देश मे जाकर खेती-बारी, व्यापार आदि करने के उद्देश्य से बस गये हो, और उसकी आबादी, सपन्नता आदि बढाने मे सहायक हुए हो। (सेटलर्स)

आभिचारिक—वि० २ अभिचार के रूप मे होनेवाला।

पु० १. वह जो उक्त प्रकार से अभिचार करता हो।

आभुक्ति—स्त्री० १. किसी चीज का फल भोगने की क्रिया या भाव। २. किसी की जमीन पर या मकान मे किराया, भाडा आदि देकर उसमे रहने और उसका सुख भोगने की क्रिया या भाव। आभोग। (टेनेमेन्ट)

आभोग—पु०३ विधिक क्षेत्र मे, किसी की जमीन पर या मकान मे किराया आदि देकर रहने और उसका सुख भोगने की क्रिया या भाव। आभुक्ति। (टेनेमेन्ट) ४. शास्त्रीय सगीत मे गीत के चार अगो मे से चौथा अग या अश, जो होता तो बहुत कुछ अतरे की तरह ही है, परन्तु जिसमे गायक ऊँचे से ऊँचे स्वरो तक अर्थात् तार-सप्तक के पचम स्वर तक जा सकता है।

विशेष—शास्त्रीय दृष्टि से गीत के आरभिक तीन अग या अश, स्थायी, अतरा और सचारी कहलाते है।

आभोगी—स्त्री० सगीत मे काफी ठाठ की एक रागिनी।

आम चुनाव—पु०[अ०+हिं०]=साधारण निर्वाचन।

आमाशय शोथ—पु०[स०] एक प्रकार का रोग, जिसमे आमाशय की भीतरी झिल्ली सूजने के कारण पेट मे पीडा होती है, और रोगी को कै तथा दस्त होने लगते हैं। (गैस्ट्राइटिस)

आमास—पु०[फा०] शोथ। सूजन।

आमुख—पु०३ नियमावली, विधि-विधान आदि के आरभ का वह अश, जिसमे उसके उद्देश्यो, प्रयोजनो आदि का उल्लेख होता है। (प्रिए-म्बुल) ४ नाटक या रूपक का 'प्रस्तावना' नामक अश। ५ पुस्तक की प्रस्तावना।

आयतन—पु० ५ आकाश का उतना अश, जितना कोई काया घेरती है। (वॉल्यूम) ६ आध्यात्मिक क्षेत्र मे वे अग, या तत्त्व जिनमे तृष्णाओ का निवास या मूल माना गया है। जैसे—आँख, जीभ, नाक, शरीर की त्वचा और मन जिनसे रूप, रस, गध आदि के सुख की कामना होती है।

आय-व्यय परीक्षक—पु० दे० 'लेखा-परीक्षक'।

आयुध—पु० १ युद्ध-क्षेत्र मे काम आनेवाले अस्त्र या हथियार। (आर्म्स)

आयुर्विज्ञान—पु० [स०] विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि शरीर किस प्रकार निरोग किया जाता है और उसके रोग आदि किस प्रकार दूर किये जाते हैं। चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद इसी की भारतीय शाखा है।

आयोजना—स्त्री०[स०] कोई काम आरभ करने से पहले उसके सभी अंगों और उपागों पर अच्छी तरह विचार करके बनाई जानेवाली योजना। (प्लान)

आरभ—पु०४. नाट्य-शास्त्र मे रूपक की पाँच अवस्थाओ मे पहली अवस्था, जिससे यह सूचित होता है कि नायक या नायिका कौन सा उद्दिष्ट फल प्राप्त करने के लिए उत्सुक है। इसी से नाटक के लक्ष्य, साध्य और फल का पहले से पता मिल जाता है।

आरंभत—अव्य० २ बिलकुल नये सिरे से। आदित.। (ऐवइनिशिओ)

आर—प्रत्य०[स० कार] एक प्रत्यय जो कुछ सज्ञाओ के अत मे लगकर उनके कर्ता का सूचक होता है। जैसे—लोहार, सुनार आदि।

आरति†—स्त्री० [स० आर्ति]१ आर्त्त होने की अवस्था या भाव। २ आर्त्त अर्थात् परम दु खी और निस्सहाय होने की अवस्था मे परि-त्राण या रक्षा के लिए की जानेवाली पुकार। आर्त्तनाद। उदा०—राम मिलन के काज सखी मोरे आरति उर मे जागी री।—मीराँ। †स्त्री०=आरती।

आरेख—पु०[स०]१ प्राय चित्र के रूप मे होनेवाला कोई ऐसा अकन, जो परिकलनाओ, विचारो, स्थितियो आदि का परिचायक हो। (डाय-ग्राम) २. दे० 'रेखा-चित्र'।

आरेखन—पुं० [सं०] [भू० कृ० आरेखित] आरेख प्रस्तुत करने की क्रिया या भाव।

आरोग्य-आश्रम—पुं० 'आरोग्य-निवास'।

आरोग्य-निवास—पुं०[सं०] ऐसा स्थान, जो साधारणतः स्वास्थ्य-रक्षा के लिए विशेष उपयुक्त हो, और इसी लिए लोग जहाँ स्वास्थ्य-सुधार के उद्देश्य से जाकर कुछ समय तक रहते हों। (सैनिटोरियम)

विशेष—ऐसे स्थान प्रायः जगलों में, पहाड़ो पर, समुद्र के किनारे या ऐसे स्थानों मे होते हैं, जहाँ का जलवायु प्राकृतिक रूप से स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्द्धक होता है।

आरोह-पात—पुं०[सं०] ज्योतिष मे वह बिन्दु या स्थान, जहाँ किसी ग्रह या नक्षत्र की कक्षा ऊपर चढते समय क्राति-वृत्त को काटती है। (एसेन्डिंग नोड) विशेष दे० 'पात'।

आर्जुनायन—पुं०[सं०]१. प्राचीन भारत मे, समुद्रगुप्त के समय का एक गणतत्र राज्य जो आधुनिक अलवर, भरतपुर और मथुरा के आसपास था। २. उक्त राज्य का नागरिक या निवासी।

आर्त्तव—पुं० १. वह स्थिति जिसमे युवती और प्रौढा स्त्रियो की जननेंद्रिय से प्रति चौथे सप्ताह तीन से चार दिनो तक रजस्राव होता है। मासिक धर्म। रजोधर्म। (मेनस्ट्रुएशन)

आर्थिक भू-विज्ञान—पुं०[सं०] भूगोल की वह शाखा, जिसमे धन-सपत्ति के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग सबधी तथ्यो का अध्ययन तथा विवेचन होता है। (एकोनामिक जियोग्रेफ़ी)

आर्थिक भौमिकी—स्त्री०[सं०] आधुनिक भौमिकी की वह शाखा, जिसमे पृथ्वी से उत्पन्न होनेवाली धातुओं, पत्थरों, तेलों, खनिज पदार्थों आदि का विवेचन होता है।

आर्द्रता-मापी—वि० [सं०] आर्द्रता का मान नापने या स्थिर करनेवाला। पुं० एक प्रकार का यत्र, जिसमे पदार्थों या वातावरण की आर्द्रता या नमी का परिमाण जाना जाता है। (हाइग्रोमीटर)

आर्द्रता-विज्ञान—पुं०[सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि वातावरण की आर्द्रता किस प्रकार घटती बढ़ती है और परिस्थितियों पर इसका क्या परिणाम या प्रभाव होता है। (हाइग्रालाजी)

आलकसी†—वि०=आलसी।

आलवार—पुं० [त० अध्यात्म सागर मे अवगाहन करनेवाला] दक्षिण भारत के तमिल क्षेत्र मे रहनेवाली एक प्राचीन वैष्णव जाति,जिसमे अनेक भक्त कवि हो गये हैं। इनका समय ई० ५ वी शती से ९ वी शती तक माना गया है।

आली-काली—स्त्री०[?] हठ योग मे, ललना या इडा नाडी और रसना या पिंगला नाड़ी के दूसरे नाम।

आलेख—पुं० ४ आलेखन की क्रिया से अथवा रेखाओ आदि के द्वारा अकित किया हुआ चित्र या रूप। (ड्राइग)

आलेखन—पुं० २ किसी प्रकार की आवृत्ति बनाने के लिए रूप-सूचक रेखाएँ अकित करना। चित्र बनाना। (ड्राइग)

आवंतिकी—स्त्री०[सं०]=आवती।

आवंती—स्त्री०[सं०] नाट्य-शास्त्र मे, वह प्रवृत्ति जो भृगु-कच्छ, मालव, विदिशा, सिन्धु, सौराष्ट्र आदि देशों की वेश-भूषा, आचार-व्यवहार, बोलचाल आदि के तत्त्वों से युक्त हो।

आवक—वि०[हिं० आवना=आना] १ जो कहीं बाहर से अन्दर की ओर आ रहा हो। बाहर से आनेवाला। जैसे—आवक डाक। उक्त प्रकार से आनेवाली चीज से सबध रखनेवाला। (इन्वर्ड) जैसे—आवक भाडा।

स्त्री० बाहर या दूसरे स्थानों से चीजें या माल आने की अवस्था या भाव। आयात। (पश्चिम) जैसे—इस साल मडी मे गेहूँ की आवक कुछ कम है।

आवक्ष—वि०[सं०] जो वक्ष अर्थात् छाती तक हो। जैसे—आ-वक्ष चित्र। क्रि० वि० वक्ष अर्थात् छाती तक।

पुं० ऐसा चित्र या मूर्ति, जिसमे सिर और छाती अर्थात् धड़ ही दिखलाया गया हो; नीचे के अंग न दिखाये गये हों। (बस्ट)

आवर्त्त—पुं० ६ मनुष्यों की कोई घनी आबादी या बस्ती। ७. ऐसा क्षेत्र या देश, जिसमे दूर-दूर तक बहुत-सी छोटी-बड़ी आबादियाँ या बस्तियाँ हों। जैसे—आर्यावर्त्त, ब्रह्मावर्त्त आदि। ८. मनुष्यों की कोई छोटी-मोटी आबादी या बस्ती। जैसे—अतरावर्त्त, बहिरावर्त्त आदि'

आवर्त्तन—पुं० ६ किसी काम या बात का कुछ समय के बाद फिर उसी क्रम, प्रकार या रूप से घटित होना। (रेफरेन्स)

आवर्धन—पुं० २. किसी छोटी या सूक्ष्म वस्तु के प्रतिबिम्ब आदि कुछ विशिष्ट क्रियाओ से बहुत बढ़ाना। (मैग्निफ़िकेशन)

आवास—पुं० १. किसी स्थान पर प्रायः स्थायी रूप से रहने की अवस्था या भाव। २ रिहाइश। २ वह स्थान, जहाँ कोई नियमित या स्थायी रूप से बराबर रहता हो। रिहाइश (रेज़ीडेन्स)

आवासिक—वि०[सं० आवास+ठक+इक] १. आवास-सबधी। आवास का। २ किसी के आवास के रूप मे अथवा अवास के लिए बना हो। रिहाइशी। (रेसिडेन्शल)

आवासी—पुं० [सं० आवासिन्] [स्त्री० आवासिनी] वह जो किसी स्थान को अपना आवास बनाकर वहाँ रहता हो। (रेसिडेन्ट)

आवासीय—वि०[सं०]१. आवासिक। २ (स्थान) जो आवास के योग्य हो।

आवृत्ति—स्त्री० १ कोई काम या बात बार-बार होना। दोहराया, तेहराया जाना। (रिपिटीशन) ३. यह मत या सिद्धात कि ससार के सभी काम और बातें चक्र की तरह चलती रहती हैं और उनकी मुख्य घटनाओं की रह-रह कर आवृत्ति होती रहती है।

आव्रजक—पुं०[सं०] वह जो कहीं से चलकर और विशेषतः पैदल चलकर कहीं ठहरने, बसने या रहने के लिए आया हो।

आव्रजन—पुं०[सं०]१. चलना-फिरना या घूमना। २. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर जाना या पहुँचना।

आशंसा—स्त्री० ४ किसी के उत्कर्ष, मगल आदि के लिए प्रकट की जाने-वाली आशीर्वादात्मक कामना। (ब्लेसिंग)

आशनाई—स्त्री०[फा०]१ आशना होने की अवस्था या भाव। २ जान-पहचान। परिचय। ३ दोस्ती। मित्रता। ४ पर-पुरुष और पर-स्त्री मे होनेवाला अनुचित और अवैध लैंगिक सबध।

आशय—पुं० २ किसी प्रकार का पात्र।

आशु-लिपि—स्त्री०[स०] किसी लिपि के अक्षरो के छोटे और सक्षिप्त सकेत या चिह्न बनाकर तैयार की हुई वह लेख-प्रणाली, जिससे कथन या भाषण बहुत जल्दी लिखे जाते है। (शार्ट-हैन्ड)

आशु-लिपिक—पु० [स०] वह जो आशु-लिपि की प्रणाली से भाषण आदि लिखता है। (स्टेनोग्राफर)

आशु-लेखन—पु० [स०]=आशु-लिपिक।

आश्रित राज्य—पु० [स०] आधुनिक राजनीति मे ऐसा राज्य, जो स्वतत्र न हो और जहाँ स्वायत्त-शासन-व्यवस्था के स्थान पर किसी दूरस्थ राज्य का नियत्रण हो। (डिपेन्डेसी)

आश्वलायन—पु० [स०] ऋग्वेद की २१ शाखाओ मे से एक। इस शाखा के अनुसार न तो अब ऋक्-सहिता ही मिलती है और न ब्राह्मण ही, परन्तु ये तीनो कल्प-सूत्र अवश्य मिलते है—गृह्य-सूत्र, धर्म-सूत्र और श्रौत-सूत्र।

आष्टागिक मार्ग—पु० [स०] बौद्ध धर्म मे तृष्णाओ या वासनाओ का नाश करनेवाली ये आठ बातें—अच्छी दृष्टि, अच्छा सकल्प, अच्छे वचन, अच्छे कर्म, अच्छी जीविका, अच्छा व्यायाम, अच्छी स्मृति और अच्छी समाधि।

आस—स्त्री० [स० आश्रय] किसी काम या बात मे किसी को मिलनेवाला थोडा या हलका सहारा। जैसे—कुछ आस मिले, तो हम भी सीढियाँ चढ जायँ।

मुहा०—आस मिलना=सगीत मे, किसी के गाने के समय बीच मे किसी दूसरे का भी कुछ गा या बजा देना, जिससे गानेवाले को कुछ सहारा मिले। जैसे—खाली ठेका भी देते चलो तो कुछ आस मिले।

आसज्जा—स्त्री० [स०] १ सजकर या ठीक स्थिति मे आकर कुछ करने के लिए उद्यत या तत्पर होना। तैयारी। २ आधुनिक मनोविज्ञान मे, किसी व्यक्ति की वे मानसिक और शारीरिक स्थितिया जिनके आधार पर यह स्थिर किया जाता है कि वह अमुक कार्य के लिए उपयुक्त या प्रस्तुत है। तैयारी। (रेडिनेस)

आसन-कोपी—वि० [स० आसन-कोपिन्] (व्यक्ति) जो एक ही आसन अथवा मुद्रा मे अर्थात् शात भाव से किसी जगह अधिक समय तक न बैठ सकता हो, फलत बहुत ही चचल या चिलबिल्ला।

आसुत—भू० कृ० [स०] जो असवन की क्रिया से प्रस्तुत किया गया हो। आसव के रूप मे तैयार किया हुआ। चुआया हुआ। (डिस्टिल्ड) जैसे—आसुत जल, आसुत मद्य।

आस्ताँ—पु० [स० आस्थान से फा०] रहने का स्थान। निवास-स्थान।

आस्तित्विक—वि० [स०] अस्तित्व से सबध रखनेवाला। अस्तित्व का।

आस्थगित—भू० कृ० [स०] (विषय) जो किसी विशेष कारणवश या कोई शर्त पूरी होने तक के लिए रोक रखा गया हो। (डेफर्ड)

आस्थाई—स्त्री० [स० स्थायी] खयाल, ठुमरी आदि गीतो का पहला चरण, जो प्रत्येक चरण या पद के बाद दोहराकर गाया जाता है।

आहत—वि० ३ जिसका अत हो चुका हो। समाप्त। ४ (प्राचीन मुद्रा या सिक्का) जिस पर ठप्पे से कोई चिह्न अकित हो, उसे चलानेवाले का नाम या समय अकित न हो। (पच-मार्क्ड)

आहत नाद—पु० [स०] नाद के दो भेदो मे से एक। ऐसा नाद, जो किसी प्रकार के आघात से उत्पन्न होता है। जैसे—घटे, घडियाल आदि अथवा बाजो से उत्पन्न होनेवाला नाद। नाद का दूसरा भेद अनाहत नाद कहलाता है।

आहरण—पु० २. बलपूर्वक कही से कुछ निकालना या किसी से कुछ लेना। (एग्जैक्शन)

आहार-तत्र—पु० [स०]=पाचक-तत्र।

आहार नाल—पु० [स०] पाचन-कल।

आहुत—भू० कृ० [स०] १ जिसे आहुति दी गई हो। जो तृप्त किया गया हो। जैसे—सोमाहुत।

इ

इजील—स्त्री०[अ० इवेन्जेलियन] १ इसाइयो के धर्म-ग्रथ बाइबिल का एक विशिष्ट अश, जिसमे इस सु-समाचार का उल्लेख है कि ईसा-मसीह ईश्वर की ओर से लोक-कल्याण के लिए आये थे। ईसाइयो का धर्म-ग्रथ। बाइबिल।

इदिरा—स्त्री० ४ एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण, दो रगण, एक लघु और एक गुरु होता है।

इंदु-गीर्वाणी—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

इदु-धवली—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

इदु-भोगी—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

इदु-शीतल—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

इद्रियवाद—पु०[स०] [स्त्री० इद्रियवादी] यह मत या सिद्धात कि इद्रियो के सुख-भोग को ही प्रधान मानना चाहिए, और इद्रियों का सुख भोगते रहना चाहिए। (हेडेनिज्म)

इक-तरफा—वि० १ दे० 'एक-तरफा'। २ दे० 'एकपक्षीय'।

इकबालमंद—वि०[अ०+फा०] [भाव० इकबालमदी] (व्यक्ति) जो यथेष्ट प्रभावशाली और सम्पन्न हो।

इकबाली—वि०[अ०] १ इकबाल या स्वीकृत करनेवाला। २ जिसका यथेष्ट प्रताप, वैभव आदि हो।

इकबाली गवाह—पु० [अ०+फा०] वह अपराधी जिसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो और जो अपने साथी अपराधियो के विरुद्ध गवाही दे। भेद-साक्षी। (एप्रूवर)

इच्छापत्र—पु० वह पत्र या लेख, जिसमे कोई व्यक्ति यह लिखता है कि मेरी मृत्यु के उपरान्त मेरी सम्पत्ति का विभाजन और व्यवस्था अमुक प्रकार से हो। वसीयतनामा। (विल)

इजारेदार—पु० [फा० इजारादार] [भाव० इजारेदारी] वह जिसने किसी काम या बात का इजारा या एकाधिकार ले रखा हो।

इजारेदारी—स्त्री० १ इजारेदार होने की अवस्था या भाव। २ इजारेदार को प्राप्त होनेवाला अधिकार। एकाधिकार। (मोनोपोली)

इटली—स्त्री०[?] दक्षिण यूरोप का एक प्रसिद्ध और बडा प्रायद्वीप।

इडली—स्त्री०[?] अच्छे चावलो को पीस कर बनाया जानेवाला एक प्रकार का दक्षिण भारतीय पकवान।

इतालवी—वि० पु० स्त्री०=इटालियन।

इतालिया—पु०=इटली (प्रायद्वीप)।

इब्रानी—पु०, स्त्री०, वि०=इबरानी।

इमामबाड़ा—पु० [अ०+हि०] मुसलमानो मे वह धर्म-मदिर, जो विशेष

रूप में हजरत अली और उनके पुत्रों की स्मृति में बनाया गया हो।
विशेष—मुहर्रम में इमामबाड़ों में शीया मुसलमानों की शोक-सूचक मजलिसें तथा अन्य अवसरों पर अनेक प्रकार के धार्मिक उत्सव होते हैं।

इरण—पु० २. ऊसर या बंजर भूमि।

इलाकाई—वि०[हि० इलाका+ई(प्रत्य०)] १ इलाके से सबंध रखने या उसके अंतर्गत होनेवाला। २. दे० 'क्षेत्रिक'।

इलाजपट्टी—स्त्री० [हि०] १. मरहम-पट्टी। २ किसी को दंड देने के लिए अच्छी तरह मारना-पीटना। (व्यंग्य) उदा०—मालूम पड़ता है कि उसकी इलाज-पट्टी करनी पड़ती है।—उग्र।

इल्मे-मजलिस—पु०[अ०+फा०] शिष्ट तथा सभ्य समाज में उठने-बैठने, बोलने-चालने आदि का ज्ञान या विद्या।

इष्टि—स्त्री० ५. यज्ञ, विशेषत अग्निहोत्र, दर्शपूर्ण मास, चातुर्मास्य, पशुयाग और सोम-यज्ञ। बाद में इनमें पात्र-यज्ञ, हविर्यज्ञ आदि भी सम्मिलित हो गये थे।

इसराईल—पु०[यहू०] दक्षिण-पश्चिम एशिया का आधुनिक स्वतंत्र यहूदी राज्य, जो सन १९४८ में स्थापित हुआ था।

इस्पंजी—वि०[हि० इस्पंज] जो इस्पंज की तरह छिद्रमय हो और जिसमें तरल पदार्थ सोखने की शक्ति हो। (स्पांजी)

ई

ई०—हि० ईसवी सन् का संक्षिप्त रूप।

ई० पू०—हिन्दी ईसा पूर्व (सन्) का संक्षिप्त रूप।

ईश-गिरी—पु० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

ईश-गौड़—पु०[स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

ईश-मनोहरी—स्त्री०[स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

ईशावास्य—पु० [स०] एक उपनिषद्, जो शुक्ल यजुर्वेद की संहिता का ४० वाँ अध्याय है और सब उपनिषदों में पहला माना जाता है।

ईस्टर—पु०[अं०] यहूदियों, रोमनों, ईसाइयों का एक प्रसिद्ध त्योहार जो प्राय. अप्रैल में पड़ता है।

उ

उँगली छाप—स्त्री०[हि०] किसी व्यक्ति विशेषत अपराधी आदि की पहचान के लिए ली जानेवाली उँगली के अगले भाग की छाप। अंगुली-प्रतिमुद्रा। अंगुली छाप। (फिंगरप्रिन्ट)

उकताहट—स्त्री०[हि० उकताना] उकताने की क्रिया, गुण, धर्म या भाव।

उगाई—स्त्री० [हि० उगना] उगने की क्रिया, भाव या स्थिति।
स्त्री०[हि० उगाना] १ उगाने की क्रिया, भाव या स्थिति। २. उगाने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

उग्र राष्ट्रवाद—पु० दे० 'अति-राष्ट्रीयतावाद'।

उग्रवाद—पु०[स०]=अतिवाद।

उग्रवादी—पु०[स०]=अतिवादी

उच्चक मनोग्रंथि—स्त्री०[स०] मन में रहनेवाली यह धारणा या भावना कि हम किसी दूसरे से अथवा औरों से ऊँचे या बड़े हैं। 'हीनक भावना' का विपर्याय। (सुपीरियोरिटी कम्प्लेक्स)

उच्चतम न्यायालय—पु०[स०] दे० 'सर्वोच्च न्यायालय'।

उच्च-नाटक—पु०[सं०] एक प्रकार का आधुनिक नाटक, जो [illegible] ; और जिसके छोटे-छोटे [illegible] सुनाई पड़ती है। ([illegible])

उच्चमान—पु० [सं०] १. किसी काम या बात का [illegible] और [illegible] ; और [illegible] प्रशंसित और महत्त्वपूर्ण माना जाता हो। जैसे—( ) [illegible] (ख) [illegible] २. [illegible] (क) [illegible] (ख) [illegible] ([illegible])

उच्चांक—पु० [सं० उच्च+अंक] १. [illegible] २. दे० '[illegible]'।

उच्चायुक्त—पु०[सं० उच्च+आयुक्त] [illegible] (हाई कमिश्नर)

उच्चालक—पु०[सं०] १. [illegible] २. ऊपर उठाने या ले जानेवाला।
पु० एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जो भारी सामान [illegible] (एलिवेटर) जैसे—[illegible]

उच्चालन—पु०[सं०] ऊपर की ओर उठाना, चढ़ाना या ले जाना। (एलिवेशन)

उच्चालित्र—पु० [सं०] =उच्चालक (लिफ्ट)।

उच्छिन्न—पु० [illegible] में, [illegible] और निकाई। [illegible] (एविक्शन)

उजड़ना—अ० [हि० उजाड़ना का अ०] १. उजाड़ या वीरान होना। जैसे—बगीचा उजड़ना। २ [illegible] होना। जैसे—[illegible] उजड़ना।
स० उजाड़ना।

उठक-बैठक—स्त्री०[हि० उठना+बैठना] १. बार-बार उठने और बैठने की क्रिया या भाव। २. बैठक या बैठने-उठने की जगह।

उठाना—स० १०. किसी चीज का कोई तरल पदार्थ सोखकर अपने अन्दर रखना। जैसे—यह आटा बहुत पानी उठाता है।

उठाव—पु० [हि० उठना] १. उठने की अवस्था, क्रिया या भाव। उठान। २. शरीर के किसी अंग में होनेवाला कोई ऐसा विकार, जो फोड़े, सूजन आदि का रूप धारण कर सकता हो। जैसे—इस उँगली में कोई उठाव उठ रहा है।
क्रि० प्र०—उठना।

उठावन—पु० [हि० उठाना, पु० हि० उठावना] १ उठाने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा कार्य, जो किसी को आगे बढ़ाने या ऊपर उठाने में प्रवृत्त करता या सहायक होता है। (लिफ्ट) जैसे—किसी की अधिकारी की कृपा से नौकरी में उठावन मिलना। ३. बिजली की

सहायता से चलनेवाला उत्थापक नामक यत्र, जिससे लोग ऊँचे भवनो मे नीचे-ऊपर आते-जाते है। ४ दे० 'उठावना'।

उड़न-तश्तरी—स्त्री० [हिं० उडना+तश्तरी] बहुत बडी तश्तरी के आकार का एक प्रकार का ज्योतिर्मय उपकरण या पदार्थ, जो कभी कभी आकाश मे उडता हुआ दिखाई देता है। उडन-थाल। (फ्लाइग डिश, फ्लाइग सासर)

विशेष—इधर इस प्रकार के पदार्थ आकाश मे उडते हुए देखकर इनके सबध मे लोग तरह-तरह की कल्पनाएँ करने लगते थे। पर अब वैज्ञानिको का कहना है कि ये हमारे सौर जगत् के किसी दूसरे ग्रह से हमारी पृथ्वी का हाल जानने और हम लोगो से सपर्क स्थापित करने के लिए आते हैं। फिर भी अभी तक इनकी अधिकतर बातें अज्ञात और रहस्यमय ही है।

उड़न-दस्ता—पु० [हिं० उडना+फा० दस्त]=उडाका दल।

उड़ाका दल—पु० [हिं०+सं०] पुलिस, सेना, आदि की वह छोटी टुकडी या दल, जो कोई विशेष आवश्यकता पडने या दुर्घटना होने पर सूचना पाते ही तुरत वहाँ जा पहुँचता और व्यवस्था, सहायता आदि का काम करता हो। उडन-दस्ता। (फ्लाइग स्क्वाड)

उत्कीर्णन—पु० [स०] पत्थर, लकडी, हाथी-दाँत आदि का तल छील और गढकर उनमे आकृतियाँ, बेल-बूटे, मूर्तियाँ आदि बनाने की कला। (कार्विंग)

उत्केंद्र—पु० २ दे० 'कप-केंद्र'।

उत्केंद्रक—वि० [स०] जो अपने केंद्र से कुछ इधर-उधर हटा हुआ हो। (एक्सेंट्रिक)

उत्क्रमण—पु० २ कोई क्रम उलटने की क्रिया या भाव। (रिवर्शन)

उत्क्रमणीय—वि० [स०] जिसका उत्क्रमण हो सके, किया जा सके या किया जाने को हो।

उत्क्रात—वि० ३ उलटा। विपरीत।

उत्क्राति—स्त्री० ३ विपरीतता।

उत्खनन—पु० २ आज-कल मुख्य रूप से जमीन खोदने की वह क्रिया, जो गहराई मे दबे हुए प्राचीन अवशेषो का पता लगाने के लिए की जाती है। खोदाई। (एक्सकैवेशन)

उत्तर-जीवन—पु० [स०] साधारणत अपने वर्ग के औरो का अत या मृत्यु हो जाने पर भी बना, बचा या जीवित रहना। परिजीवन। (सर्वाइवल)

उत्तर-जीवित—भू० कृ० [स०] जिसने उत्तर-जीवन प्राप्त किया हो। परिजीवी। (सर्वाइवर)

उत्तरजीवी (विन्)—पु० [स०] वह जिसने उत्तर-जीवन का भोग किया हो। साधारण वय से अधिक समय तक जीता रहनेवाला प्राणी। परिजीवी। (सर्वाइवर)

उत्तरी सागर—पु० [स०] एटलाटिक महासागर का वह अश, जो ग्रेटब्रिटेन के उत्तर तथा नारवे के पश्चिम मे है।

उत्थापक—पु० बिजली की सहायता से चलनेवाला एक प्रकार का यत्र, जिसकी सहायता से लोग बहुत ऊँची-ऊँची इमारतो या भवनो पर (बिना सीढियाँ चढे-उतरे) ऊपर-नीचे आते-जाते हैं। उठावन। (लिफ्ट)

उत्पल—पु० ३. कश्मीर का एक राजकुल जो ई० ९वी और १०वी शताब्दियो मे वहाँ राज्य करता था।

उत्पाद्य—पु० इतिवृत्त के विचार से रूपक की कथा-वस्तु के तीन भेदो मे से एक। ऐसी कथा-वस्तु, जो कर्ण की कल्पना से उत्पन्न या प्रस्तुत हुई हो।

विशेष—शेष दो भेद प्रख्यात और मिश्र कहलाते है।

उत्प्लव—पु० [स०] १ तरल पदार्थ के तल पर ठोस या भारी पदार्थ के उतराने या तैरने की क्रिया या भाव। २ प्लाव नामक उपकरण, जो पानी पर तैरता रहता है। दे० 'प्लाव'।

उत्सग—पु० ६ प्राचीन भारत मे वह कर, जो राजा के यहाँ पुत्र उत्पन्न होने पर प्रजा से लिया जाता था।

उदयन—पु० [स०] वत्स देश का एक प्रसिद्ध चन्द्रवशी राजा, जो सहस्रानीक का पुत्र था और जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी।

उदरपाद—वि० [स०] जिसके पैर पेट के अन्दर रहते हो।
पु० घोघे, शख आदि के वर्ग के वे जन्तु, जिनके चलने के अग उनके खोल के अन्दर रहते है, और आवश्यकतानुसार बाहर निकाले जा सकते है। (गैस्ट्रोपौड)

उदर्या—स्त्री० [स०] उदरावरण।

उदात्तीकरण—पु० [स०] उदात्त करने अर्थात् बहुत ऊँचा उठाने की क्रिया या भाव।

उद्गाता—पु० १ वह जो खूब जोर से गाता हो।

उद्ग्रहण—पु० २ राज्य या शासन का आधिकारिक रूप से आदाय, कर, शुल्क नियत करके वसूल करना। (लेवी)

उद्देश्य—पु० ४ कथात्मक साहित्य के छ तत्त्वो मे अन्तिम तत्त्व जिसमे लेखक जीवन के सबध मे अपना दृष्टिकोण या जीवन-दर्शन उपस्थित या स्पष्ट करता है।

उद्धार—पु० २. किसी को दासता, बधन, हीनावस्था आदि से मुक्त करके ऐसी स्थिति मे लाना कि वह स्वतत्रतापूर्वक अपनी उन्नति या विकास कर सके। (इमैन्सिपेशन) जैसे—परदे की प्रथा से स्त्रियो का उद्धार।

उद्यम—पु० २ किसी ऐसे नये काम मे प्रवृत्त होना, जिसके लिए अपेक्षया अधिक बल, योग्यता, साहस आदि की आवश्यकता हो। ३ उक्त के फलस्वरूप होनेवाला कोई कार्य या व्यापार। (एन्टरप्राइज, उक्त दोनो अर्थो के लिए)

उद्यान-विज्ञान—पु० [स०] वह विज्ञान, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि पेड-पौधे आदि किस प्रकार लगाये, बढाये और सुरक्षित रखे जाते है। फल, फूल, साग-सब्जी आदि उत्पन्न करने की कला इसी के अन्तर्गत है। (हार्टिकल्चर)

उधरना—अ० २ मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करना। उदा०—जाके नाम अजामिल उधर्यो, गनिका हू गति पाई।—गुरु नानक।

उधार-बाढी—स्त्री० [हिं० उधार+बढना] उधर लिया हुआ ऐसा ऋण, जिसका सूद बराबर बढता रहता है।
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।

उधारा†—वि०=उधार।

उन्नायन—पु० [स०] उन्नयन करने अर्थात् ऊपर उठाने की क्रिया या भाव।

उन्मोचन—पु० ३. अपराध या दोष न सिद्ध होने पर अभियुक्त को छोड देना। (डिस्चार्ज)

उपकरण—पु० ४ कोई ऐसा छोटा यत्र, जिसमे वहुत से छोटे-छोटे कल-पुरजे हो। (एपरेटस)

उपकला—स्त्री० [स०] शरीर-शास्त्र मे, एक प्रकार की वहुत चिकनी और महीन झिल्ली, जो शरीर के सभी भीतरी अगो को ऊपर से लपेटे रहती है। (एपिथीलियम)

उप-कुलपति—पु० [स०] किसी विद्यालय का वह प्रधान अधिकारी, जो कुलपति के अधीन रहकर उसके काम करता हो। (वाईस-चासलर)

उप-क्षार—पु० [स०] जीव-जतुओ, वनस्पतियों आदि मे से निकाला हुआ ऐसा पदार्थ, जिसमे क्षारीय तत्त्व यथेष्ट मात्रा मे होता है। (एल्कलॉएड)

विशेष—कुनैन, कोकेन, अफीम आदि इसी वर्ग के पदार्थ है।

उप-क्षेपक—वि० [स०] उपक्षेप करनेवाला।

पु० दे० 'अर्थोपक्षेपक'।

उप-क्षेपण—पु० [स०] १ गिराना या फेंकना। २. अभियोग या दोष लगाना। ३ कही से लाकर सामने रखना। ४ सूचित करना।

उप-गण—पु० [स०] किसी गण, वर्ग या श्रेणी के अन्दर होनेवाला छोटा गण, वर्ग या श्रेणी। (सब-आर्डर)

उपचर्या—स्त्री० रोगियों की सेवा-शुश्रूषा का काम। (नर्सिंग)

उपचारिका—स्त्री० [स०] रोगियो का उपचार या सेवा-शुश्रूषा करनेवाली स्त्री। (नर्स)

उपज—स्त्री० १. उपजने की क्रिया या भाव। २. सामूहिक रूप से वे सब चीजें, जो खेतो आदि मे फसल उत्पन्न करने पर प्राप्त हो। जैसे—गेहूँ या चावल की उपज। ३ यत्रो आदि से वनाकर तैयार की हुई चीजें।

उपजात—पु० वह पदार्थ, जो कोई दूसरा पदार्थ वनाने के समय बीच मे प्रसग या सयोगवश निकल आता या वन जाता हो। उपसर्ग। (वाइ-प्रॉडक्ट)

उपजाति छंद—पु० [स०] छद-शास्त्र मे ऐसा छंद, जो भिन्न प्रकार के योगो से वना हो। जैसे—(क) इन्द्र-वज्रा और उपेन्द्र-वज्रा; (ख) इन्द्रवशा और वशस्थ अथवा (ग) तोटक और मनोरमा के योग से वने हुए उपजाति छन्द कहलाते है।

उपदान—पु० २ वह धन जो राज्य या शासन की ओर से किसी ऐसे देश या राज्य को सहायता रूप मे दिया जाता है, जो किसी दूसरे देश या राज्य से लड रहा हो। ३ वह धन जो राज्य या शासन की ओर से किसी ऐसे व्यापार या शिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए सहायता रूप मे दिया जाता है, जो देश कि आर्थिक उन्नति या विकास के लिए उपयोगी समझा जाता हो। (सबसिडी)

उपदेश-कथा—स्त्री० [स०] कथा का वह प्रकार या रूप, जिसमे पशु-पक्षियो, वृक्षो आदि को पात्र वनाकर उनके आचरणो, व्यवहारो आदि को उपदेशात्मक कथा का रूप दिया जाता है। (फेवुल) जैसे—पचतत्र, हितोपदेश आदि।

उपदेश-वाद—पु० [स०] साहित्यिक क्षेत्र मे यह मत या सिद्धात कि जो कुछ लिखा जाय, वह लोगो को नैतिक उपदेश देने के उद्देश्य से लिखा जाय। (डाइडेक्टिसीज्म)

उपनयन—पु० [स०] जनेऊ या यज्ञोपवीत पहनाने का धार्मिक सस्कार।

उपनागर-अपभ्रंश—स्त्री० [स०] मध्य युग मे, अपभ्रश भाषा का वह रूप, जो प्राकृत और आभीरी के योग से उद्भूत हुआ था और जो गुज-रात तथा पूर्वी सिन्ध मे प्रचलित था।

उप-पंजीयक—पु० [स०] वह अधिकारी, जो पजीयक के सहायक रूप में उसके अधीन रहकर काम करता है। (सब-रजिस्ट्रार)

उपपत्ति—स्त्री० ५ किसी वात या विषय के सबध मे ऐसा निरूपित और प्रचलित मत, जो प्राय. ठीक माना जाता हो। सिद्धात। (थिअरी)

उपरूपक—पु० नाटक शास्त्र मे, ऐसा रूपक, जिसमे गीतो और नृत्यो की प्रधानता हो।

उपरोपण—पु० [स०] [भू० कृ० उपरोपित] वनस्पति-विज्ञान में, किसी पौधे या वृक्ष की टहनी दूसरे पौधे या वृक्ष की डाल या तने पर इस उद्देश्य से लगाना कि वह टहनी भी दूसरे पौधे या वृक्ष का अग वनकर वढने और फलने-फूलने लगे। कलम लगाना। (ग्रैफ्टिंग)

उप-विभाग—पु० २. दे० 'अनुभाग'।

उपशमन—पु० २ किसी काम या वात मे होनेवाली कमी। घटाव। (एवेटमेन्ट)

उप-शिक्षक—पु० ऐसा शिक्षक, जो विद्यालय मे पढनेवाले विद्यार्थी को उसके अतिरिक्त समय मे पढाई मे सहायता देने के लिए शिक्षा देता हो। (ट्यूटर)

उप-शिक्षण—पु० [स०] ऐसा शिक्षण, जो किसी विद्यालय मे पढने-वाले विद्यार्थी को उसके अतिरिक्त समय मे उसकी पढाई पक्की करने के लिए दिया जाता हो। (ट्यूशन)

उपशुल्क—पु० [स०] कोई ऐसा छोटा कर या शुल्क, जो किसी छोटे परिमित क्षेत्र मे ही लगता हो। (रेट) जैसे—नगरो में लगनेवाले अलग अलग प्रकार के उप-शुल्क।

उपसंधि—स्त्री० [स०] १. नाट्य-शास्त्र में, सधियो का एक छोटा या हलका रूप, जिसके २१ प्रकार या भेद कहे गये है। २. आधुनिक राजनीति मे, परस्पर युद्ध करनेवाले राष्ट्रो के सैनिक अधिकारियो का युद्ध स्थगित करने अथवा इसी प्रकार की दूसरी वातों के सबध मे होनेवाला समझौता, जिसका पालन सभी पक्षो के लिए आवश्यक होता है। अभिसमय। (कन्वेन्शन)

उपसाधक—वि० [स०] (चीज या वात) जो किसी काम मे गौण रूप से सहायक हो। (एक्सेसरी)

उपसाधन—पु० [स०] कोई ऐसा तत्त्व, जो किसी काम या वात की सिद्धि मे गौण रूप से सहायक हो। (एक्सेसरी)

उपस्कर—पु० ५ वे सब साधन या सामान, जिनकी आवश्यकता या उप-योग ठीक तरह से कोई काम पूरा करने मे होता हो। साज-सामान। (इक्विपमेन्ट)

उपस्तंभ—पु० [स०] पत्थर, लकडी आदि का वह ऊँचा या लवा

आधार, जिस पर और चीजें जमा या टिकाकर रखी जाती है। धानी। (स्टैन्ड) जैसे—घड़ौंची, दीयट आदि।

उपहृत—वि० ३ जिसका गुण या शक्ति नष्ट अथवा विकृत कर दी गई हो।

उपहास काव्य—पु० [सं०] हास्य-रस का कोई ऐसा काव्य, जिसमे किसी प्रथा, वस्तु, व्यक्ति, स्थिति आदि का निंदनीय रूप सामने रखकर उसकी हँसी उड़ाई गई हो।

उपहास-चित्र—पु० [सं०] वह अकन या चित्र, जिसमे किसी घटना, वस्तु या व्यक्ति का रूप केवल हँसी उड़ाने के लिए विकृत करके दिखाया गया हो।

उपाधि—स्त्री० ४ बोल-चाल मे, झगड़े-बखेड़े की कोई ऐसी बात, जो किसी काम मे बाधक हो। ५ कपट। छल।

उपाध्याय—पु० १ वह व्यक्ति, जिसके पास लोग किसी विषय का अध्ययन करने के लिए जाते हों।

उपापचयन—पु० [सं०]=चयापचयन।

उपाय-कौशल—पु० [सं०] एक प्रकार की बौद्ध पारमिता, जिसके द्वारा बौद्ध-भिक्षु घूम-घूम कर लोगो को महात्मा बुद्ध के उपदेश सुनाते और महायान धर्म के सिद्धात का प्रचार करते थे।

उपार्थक—पु० [सं०] उपार्थन अर्थात् अनुयाचन या मतार्थन करने-वाला।

उपार्थन—पु० [सं०] १ दे० 'अनुयाचन'। २ दे० 'मतार्थन'।

उपार्थना—स्त्री० [सं०]=उपार्थन।

उपालभ काव्य—पु० [सं०] साहित्य मे, कोई ऐसा काव्य, जिसमे प्रिय के वियोग-काल मे उत्कट प्रेम के आवेश मे परम आत्मीयतापूर्वक ऐसे मनोभाव प्रकट किये जाते है। ऐसे काव्य प्रेमी और प्रेमिका को भी सबोधित करके लिखे जाते है और इष्टदेव को सबोधित करके भी। जैसे—भ्रमर-गीत।

उपास्थि—स्त्री० [सं० उप+अस्थि] प्राणियो के शरीर मे होनेवाले दृढ लचीले ऊतक, जो मिलकर प्राय हड्डी के समान हो जाते है। कुरकुरी। (कार्टिलेज)

उपोत्पाद—पु० [सं०]=उपजात (पदार्थ)।

उभयचर—पु० मछलियो और सरीसृपो के बीच के रीढदार जतुओ का एक वर्ग, जिसके जीव जल मे भी रह सकते है और स्थल मे भी। (ऐम्फीबिया) जैसे—कछुआ, मेढक आदि।

उभयलिंगी—वि० [सं०] जिसमे स्त्री और पुरुष दोनो लिंग हो। पु० १ मनुष्यो मे ऐसा व्यक्ति, जिसमे पुरुष और स्त्री दोनो के चिह्न या लिंग वर्तमान हों। २ ऐसे जीव या वनस्पतियाँ, जिनमे स्त्री और पुरुष दोनो के प्रजनन के अग समान रूप से रहते हो। (हर्माफ्रोडाइट) जैसे—केचुआ, काई आदि।

उभय-वेदात—पु० [सं०]=विशिष्टाद्वैत

उमाभरण—पु० [सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

उमीलना†—स० [सं० उन्मीलन] १ खोलना। २ प्रकाशमान करना। ३ उल्लसित या प्रसन्न करना। (राज०) अ० १ खुलना। २ प्रकाशमान होना। चमकना। ३ उल्लसित या प्रसन्न होना, (राज०)

उर शूल—पु० [सं०] एक प्रकार का रोग, जिसमे उर या हृदय के ऊपरी भाग मे रह-रह कर तीव्र पीड़ा होती है। (इनजाइना पेक्टोरिस)

उरग—पु० [सं०]ऐसे पृष्ठवशी जन्तुओं का एक वर्ग, जो पेट के बल रेंगते हुए चलते हैं। जैसे—कछुआ, घड़ियाल, छिपकली, साँप आदि।

उरावा†—पु० [हिं० उर=हृदय] १ मन की उमग या भाव। २ साहस। हिम्मत।
पु०, स्त्री०=उरॉव (जाति और भाषा)।

उरुवेला—स्त्री० [पा०] प्राचीन पाली साहित्य मे, फल्गू नदी का वह रेतीला तट, जो गया और बुद्ध गया के बीच मे पडता है।

उर्दू—स्त्री० १ बादशाही छावनी।

उर्मिला—स्त्री० [सं०] राजा सीरध्वज जनक की कन्या और सीता की छोटी बहन जो लक्ष्मण को व्याही थी।

उलझट्टा†—पु०=उलझन।

उलझन—स्त्री० ३ ऐसी स्थिति जिसमे किसी विषय से सबध रखने-वाली कई कठिन, चिंतनीय और पेचीदी बातें एक साथ आ उपस्थित हो। (काम्प्लीकेशन)

उलटा कूआँ—पु० [हिं०] मध्ययुगीन हठयोगियो की परिभाषा मे, ब्रह्म-रध्र, जिसका मुँह ऊपर की ओर माना जाता है और जिसमे अमृत-तत्त्व के भडार की कल्पना की गई है।

उल्लेख—पु० २ लेख, आदि के रूप मे होनेवाली चर्चा या जिक्र। वर्णन। (मेन्शन)

उशना (नस्)—पु० अर्थ-शास्त्र और राजनीति के आचार्य एक प्राचीन वैदिक ऋषि।

उष्णांक—पु० [सं०]=उष्माक।

उष्मा—स्त्री० २ वैज्ञानिक क्षेत्र मे, गरमी या ताप, जिसके फलस्वरूप जीव-जन्तुओं और वनस्पतियो मे जीवन का सचार होता है। (हीट)

उष्मा-रोधक—वि० [सं०] उष्मा अर्थात् गरमी या ताप रोकनेवाला। पु० आधुनिक विज्ञान मे, कोई ऐसा उपकरण या रचना, जो दो चीजो के बीच मे इसलिए लगाई जाती है कि एक ओर का ताप, विद्युत् या शब्द दूसरी ओर न जा सके। (इन्स्युलेटर)

उष्मिक—वि० [सं०] उष्मा-सबधी। उष्मा का।

ऊँचाई—स्त्री० २ विशिष्ट रूप से किसी नियत तल या स्तर से ऊँचे होने की अवस्था या भाव। (आल्टिट्यूड) जैसे—(क) किसी पर्वत या स्थान की समुद्र तल से ऊँचाई। (ख) किसी ग्रह या नक्षत्र की पृथ्वी-तल से ऊँचाई।

ऊँट-पथ—पु० [हिं०+सं०] मरुभूमि मे और पहाड़ियो पर ऊँटो के काफिले के चलने के लिए बना हुआ मार्ग। (कैमेल ट्रैक)

ऊतक-विज्ञान—पु० [सं०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे शरीर की रचना करनेवाले ऊतको का अध्ययन होता है। (हिस्टोलॉजी)

ऊनता—स्त्री० २ विशेषत ऐसा अभाव या कमी, जिसके बिना सहसा काम न चल सकता हो। (वान्ट)

ऊर्णाजिन—पु० [सं०] कुछ विशिष्ट प्रकार के जतुओं के ऐसे चमडे, जिनके ऊपर चमकीले, मुलायम और लबे रोएँ होते है। (फर)

विशेष—ऐसे चमडे बहुत मूल्यवान होते हैं और प्राय बड़े आदमियो के कोट, कुरतियाँ आदि बनाने के काम आते हैं।

ऊर्ध्व चेतन—पु० [स०] १. दार्शनिक क्षेत्र मे, योगियो आदि को प्राप्त होनेवाली वह उच्च कोटि की चेतना, जिससे उन्हे बैठे-बैठे भूत, भविष्य और वर्तमान की सब बातो का अपने-आप ज्ञान होता रहता है। २ दे० 'अति-चेतन'।

उष्मक—वि० [स०] ऊष्मा उत्पन्न करनेवाला।
पु०=तापक (यत्र)।

उष्मांक—पु० [स० ऊष्म+अक] १. आधुनिक विज्ञान मे, तापमान नापने की बहुत छोटी इकाई। २ उक्त के आधार पर खाद्य पदार्थों के द्वारा शरीर मे ऊर्जा उत्पन्न करनेवाली शक्ति नापने की इकाई। (कैलरी)

ऋ

ऋचा—स्त्री० १ प्रशसा। स्तुति। २ अर्चन। पूजा। ३ ऋग्वेद के वे मत्र, जिसमे अग्नि, इन्द्र, वरुण, विष्णु आदि देवताओं की स्तुति है।

ऋणक—पु० [स० ऋण से] लिखाई, छापे आदि मे एक प्रकार के चिह्न, जो दो राशियो या सख्याओ के बीच मे रहकर यह सूचित करता है कि पहलेवाली राशि या सख्या मे से बादवाली राशि या सख्या घटाई जानी चाहिए। वह इस प्रकार लिखा जाता है—(√)।

ऋण-पत्र—पु० १ वह पत्र, जो ऋण लेने के समय महाजन को ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिखकर दिया जाता है और जिस पर लिखा रहता है कि यह ऋण अमुक समय पर ब्याज सहित चुका दिया जायगा। (बाड)

ऋणात्मक—वि० [स०] १ ऋण संबंधी। ऋण का। २. जो ऋण के रूप मे हो। ३ जिसमे किसी प्रकार का अभाव हो। नहिक। (नेगेटिव)

ऋतु-काल—पु० २ पशु-पक्षियो मे वह विशिष्ट ऋतु या समय, जब वे जोडा खाते हैं। (मेटिंग सीजन)

ऋषभ-प्रिय—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

ऋषभ-वाहिनी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

ऋषभागी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

ए

एक—वि० ४ अनिश्चित या निश्चित सख्यावाचक शब्दो के अन्त मे लगने पर, प्राय.। लगभग। जैसे—कुछ एक, दस एक आदि।

एक-दलवाद—पु० [स०] राजनीति मे, यह मत या सिद्धात कि राज्य का सारा अधिकार और शासन किसी एक परम प्रधान राजनीतिक दल या वर्ग के हाथ मे रहना चाहिए , और बाकी सब दल या वर्ग अवैध घोषित हो जाने चाहिए। (टोटलिटेरिएनिज्म)
विशेष—यह वाद वास्तव मे जन-तत्र, लोक-तत्र, राज-तत्र आदि तथा जनता की समानता की भावना के बिलकुल विपरीत और विरोधी है।

एक नटनाटक—पु० [स०] ऐसा नाटक या रूपक, जिसमे एक ही नट या पात्र रहता और सारी कथा-वस्तु का स्वागत भाषण के रूप मे अभिनय करता है। जैसे—सस्कृत के भाण नामक नाटक अथवा सेठ गोविन्ददास कृत "चतुष्पथ", "शाप" और "वर" नामक नाटक।

एक-पक्षीय—वि० २ कई पक्षो मे से किसी एक पक्ष मे रहने या उसकी ओर से होनेवाला। (यूनिलेटरल)

एक-परा—पु० [फा० यक+हि० पर+आ (प्रत्य०)] एक प्रकार का कबूतर जिसका सारा शरीर सफेद होता है, केवल डैनो पर दो-एक काली चित्तियाँ होती है।

एक पात्रीय नाटक—पु०=एक नट नाटक।

एकम—स्त्री० [हि० एक] चाद्र मास के हर पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा।

एक-रंग—वि० ३. (व्यक्ति) जो अन्दर और बाहर सदा एक-सा रहता हो , फलत निष्कपट और शुद्ध हृदय का।

एकल—वि० ४. जो किसी एक ही पर आश्रित हो अथवा बिना किसी की सहायता के स्वय सब कुछ करता हो। (सोल) जैसे—एकल निगम।

एकल निगम—पु० [सं० कर्म० स०] ऐसा निगम, जो एक ही व्यक्ति पर आश्रित हो, और जो बिना किसी की सहायता के स्वय या अपने आप सब कार्य करता हो। (सोल कार्पोरेशन) जैसे—राजा एकल निगम होता है।

एक-सूत्रता—स्त्री० [स०] १ एक-सूत्र होने की अवस्था या भाव। २ चीजो या बातो मे रहनेवाला समन्वय। ताल-मेल। (को-आर्डिनेशन)

एकांगी—वि० ४. एक ही पत्नी (या पति) के साथ निष्ठापूर्वक जीवन बितानेवाला (या वाली)। ५ एक ही के आसरे या भरोसे मे रहनेवाला। एक-निष्ठ।

एकांतिक—पु० [स०] वैष्णव सम्प्रदाय का एक पुराना नाम। (शुद्ध रूप ऐकातिक)।

एकाचार—पु० [स०] १. सदा एक ही प्रकार का अथवा एक-रूप बना रहनेवाला आचार। २ एक ही पुरुष (या स्त्री) के साथ रहकर सयमपूर्वक जीवन बिताने की अवस्था या क्रिया या भाव।

एकाचारी—वि० [स०] [स्त्री० एकाचारिणी] १ सदा एक ही प्रकार का आचार रखनेवाला। २ सदा एक ही के साथ रहकर निर्वाह करने या जीवन बितानेवाला।

एकात्मक—वि० [स०] १ एक के रूप मे होने या एक से सबध रखनेवाला। २ किसी एक ही इकाई से सबध रखनेवाला। मात्रिक। (युनिटरी)

एकात्मक राष्ट्र—पु० [स०] वह राष्ट्र, जिसके सब प्रदेश या राज्य एक ही केन्द्र से शासित होते हैं। एक ही शासन के अधीन होनेवाला राष्ट्र। (युनिटरी स्टेट)

एकायन—पु० ३ चौक्षक नामक भागवत सम्प्रदाय का अनुयायी।

एकार्य—पु० साहित्य मे वाक्य का कथित-पद (देखे) नामक दोष।

एकालाप—पु० [स० एक+आलाप] १ किसी व्यक्ति का लगातार बहुत देर तक आप ही बोलते रहना और दूसरो को बोलने का अवसर न देना। २ ऐसी कविता या कहानी, जिसमे कोई पात्र या व्यक्ति आप ही सब बाते लगातार कहता चलता हो और जिसमे किसी प्रकार

का कथोपकथन न हो। ३ अभिनय या नाटक मे की आत्मोक्ति या स्वगत-कथन। (मोनोलॉग)

एकीकरण—पु० कला पक्ष मे, भिन्न-भिन्न तत्त्वो को मिलाकर इस प्रकार एक स्थान पर एकत्र करना कि उनके योग से सारी कृति एक-रूप और अच्छी तरह गढी हुई जान पडे।

एकीय—वि० [स०]=एकात्मक।

एकैको—अव्य० [सं०] एकमात्र। केवल एक। एक ही।

एक्स-रे—स्त्री० [अ०] बहुत ही छोटी तरंगोंवाली एक प्रकार की विद्युत्-किरण, जिसमे चमक नहीं होती।

विशेष—ये किरणें अपारदर्शी और ठोस पदार्थों के अन्दर भी पहुँच जाती है। इसीलिए इसकी सहायता से पदार्थों, शरीरो, आदि के भीतरी अग देखे जा सकते और उनके चित्र लिये जा सकते है।

एक्स-रे चित्रण—पु०=रेडियो-चित्रण।

एटम—पु० [अ०]=परमाणु।

एटम-बम—पु०=परमाणु बम।

एटमी—वि०=पारमाणविक।

ए० डी० कांग—पु० [अ० एड डी कैंप] किसी बहुत बडे राजकीय या सैनिक अधिकारी का निजी सरक्षक या सचिव।

एतो†—वि० [स्त्री० एती]=इतना।

एनामेल—पु० [अ० एनामल] एक प्रकार का चमकीला पारदर्शी पदार्थ, जो गलाकर धातुओ आदि पर उनमे चमक लाने के लिए चढाया जाता है।

एलकोहल—पु० [स०] तीक्ष्ण गधवाला एक विशिष्ट प्रकार का तरल पदार्थ, जो ज्वलनशील और वर्णहीन होता है और खुला रहने पर हवा मे मिलकर उड जाता है। इसका प्रयोग कुछ अवस्थाओ मे ईधन की तरह और प्राय औषधो और मद्यो मे मिलाने के लिए तथा उद्योग-धधो मे होता है।

ऐंग्लो-इडियन—पु० [अ०] उन अगरेजो के वशज, जो भारत मे बस गये थे अथवा जिन्होने भारतीय स्त्रियों को पत्नी के रूप मे ग्रहण कर लिया था।

ऐंठन—स्त्री० ४ आक्षेपक नामक रोग।

ऐकक—वि० [स०]=एकात्मक।

ऐकातिक—पु० वैष्णव धर्म का एक पुराना नाम।

ऐतिहासिकता—स्त्री० [स०] ऐतिहासिक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

ऐतिहासिकतावाद—पु० [स०] यह मत या सिद्धात कि दर्शन, धर्म, सस्कृति, साहित्य आदि की सभी बातो का विवेचन उनकी ऐतिहासिकता के आधार पर ही होना चाहिए।

ऐहिक राज्य—पु० [स०] दे० 'धर्म निरपेक्ष राज्य'।

ओज—पु० [स०] १ तेज। २ प्रताप। ३ चमक। दीप्ति। ४. उजाला। प्रकाश।

ओडिया—वि०, स्त्री०, पु०=उडिया।

ओढल†—पु०=अडहुल।

ओपरा—वि० [स० अपर] [स्त्री० ओपरी] १ (व्यक्ति) जो आत्मीय न हो। पराया। २ जिसमे आत्मीयता या वास्तविकता न हो। (पश्चिम) जैसे—उसने ओपरे दिल से सहानुभूति प्रकट की है।

ओलगना†—स० [स० अव-लगन] सेवा करना। (राज०)

औ

औत्सुक्य—पु० २ साहित्य मे, तैंतीस सचारी भावो मे से एक, जो उस समय माना जाता है, जब इष्ट की प्राप्ति या प्रिय के मिलन के लिए मन उत्सुक होता है। ठढे साँस लेना, मुँह लटकाकर कुछ सोचना और लेटने पर सोने की इच्छा होना इसके लक्षण कहे गये हैं।

औद्भिदकी—स्त्री० [स० उद्भिद से] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमे उद्भिदो या वनस्पतियो के आकार-प्रकार, जीवन, वृद्धि आदि से सबध रखनेवाली बातो का विवेचन होता है। वनस्पति-विज्ञान। (बोटैनी)

औपरिष्ट—वि० [स०] ऊपर का। ऊपरी।

औपरिष्टक—पु० [स०] काम-शास्त्र मे मैथुन का एक प्रकार का आसन या रतिबध।

औपयोगिक—वि० २ उपयोग के क्षेत्र या रूप मे होनेवाला।

औपायनिक—पु० प्राचीन भारत मे वह भेंट, जो लोगो को राजा के दर्शन के समय अनिवार्य रूप से देनी पडती थी।

औरसी—स्त्री० १ पुत्री। बेटी।

औषध-विज्ञान—पु० [स०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमे औषधियो के गुणो, प्रभावों, व्यवहारो आदि के सिवा इस बात का भी विवेचन होता है कि वे किस प्रकार तैयार की जाती है। (फार्माकॉलोजी)

औषध-शास्त्र—पु० [स०] आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र की वह शाखा, जिसमे प्रत्येक ओषधि के गुण, उपयोग, मात्रा आदि का विचार होता है। (मेटीरिया मेडिका)

कंक्रीट—पु०=ककरीट।

कंटियल†—वि०=कँटीला।

कडम—वि० [अ० कन्डेम्ड] बिलकुल निकम्मा, रद्दी या व्यर्थ का। जैसे—तुम तो बाजार मे कडम माल उठा लाते हो।

कडिका—स्त्री० ३ किसी साहित्यिक ग्रथ, रचना, लेख आदि का स्वतन्त्र पद। अनुच्छेद। (पैराग्राफ)

कदर्प पुष्प—पु० [स०] ऐसा फूल, जिसमे काम-रति स्त्री बल देने की क्षमता हो।

कदिल—वि० [स० कन्द से] जो आकार-प्रकार, रूप-रग आदि मे वानस्पतिक कन्द के समान हो। कन्द की तरह का। (ट्यूबरस)

कंप—पु० ४ किसी चीज का काँपना, थर्राना या रह-रहकर हिलना। जैसे—हृद्-कप।

कप-केंद्र—पु० [स०] भू-गर्भ मे भू-कप के केन्द्र के ठीक ऊपरवाला पृथ्वी-तल, जिसके चारो ओर भू-कप के धक्के लगते है। अधिकेन्द्र। उत्केन्द्र। (एपिसेन्टर)

कबुज—पु० [स०] कबोज।

कँवल सोरा—पु०=रमन-सोरा (मछली)।

कँहरऊ†—पु० [हि० कहार] वे गीत, जो कहार लोग दुलहिन की पालकी ले जाने के समय गाया करते है।

कच्चा-पानी—पु० [हिं०] ऐसा पानी, जो औटाया या पकाया न गया हो।

कच्चा लोहा—पु० [हिं०] बिना साफ किया हुआ वह लोहा, जो पहले-पहल भट्ठी में गलाने पर तैयार होता है। ढलवाँ लोहा। (पिग-आयरन)

कजरा—पु० १. काजल। २. बालक का जन्म होने पर छठी के दिन गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत जिसमें प्रसवा को नजर लगने से बचाने के लिए उसकी ननद के द्वारा अथवा नवजात शिशु को नजर लगने से बचाने के लिए उसकी बूआ के द्वारा काजल लगाने का उल्लेख होता है। ३ काले रंग की आँखोंवाला बैल।

कटाव—स्त्री० ३ जलाशय के तटका वह थोड़ा सा भाग, जो पानी के तोड़ से कट गया हो और जिसके अन्दर कुछ दूर तक पानी चला गया हो। (इन्लेट)

कटुआँ—वि० [हिं० काटना] जो काटकर बनाया गया हो।

कटौती—स्त्री० २ किसी काम या बात में किसी रूप में की जानेवाली या होनेवाली कमी। घटाव। (एबेटमेन्ट)

कठ—वि० ६. काठ की तरह जड़ या निर्बुद्धि। जैसे—कठ-मुल्ला।

कड़बड़ा—वि० १ (व्यक्ति) जिसके कुछ बाल सफेद हो गये हों और कुछ काले रह गये हों।

कड़ाह परसाद—पु० [हिं० कड़ाह+सं० प्रसाद] वह हलुआ, जो सिक्खों में गुरु ग्रन्थ साहब को चढ़ाकर लोगों में प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है।

कणिका—स्त्री० [सं०] १. किसी चीज का बहुत ही छोटा कण। कनी। २ शरीर-शास्त्र में, रक्त में तैरनेवाले एक विशेष प्रकार के बहुत छोटे कण, जो लाल और सफेद दो रंगों के होते हैं और जिनके कुछ विशिष्ट कार्य होते हैं। (कार्पसल)

कथकाली—पु० [सं० कथक=कथावाचक?] दक्षिण भारत, विशेषत. केरल का एक प्रकार का प्रसिद्ध अभिनयात्मक नृत्य, जिसके साथ संगीत भी सम्मिलित रहता है।

कथनी—स्त्री० ३ भारतीय सन्त समाज में ऐसी कोरी मौखिक बातें, जो महात्मा लोग दूसरों को उपदेश देने के समय तो कह जाते हों, पर स्वयं जिनका आचरण या पालन न करते हों। 'करनी' से भिन्न और उसके विपरीत।

कथा—स्त्री० ३ संस्कृत साहित्य में, गद्य काव्य के दो भेदों में से एक, जिसकी कथा-वस्तु अंशत. सत्य होने पर भी अधिकतर काल्पनिक हो।

कथा-काली—पु० दे० 'कथकाली' (नृत्य)।

कथा-काव्य—पु० [सं०] ऐसा काव्य, जो किसी लोक प्रचलित कथा या कहानी के आधार पर बना हो। (ऐसे काव्यों में प्राय. शृंगार रस की प्रधानता होती है।)

कथा-पुरुष—पु० [सं०] ऐसा महापुरुष, जिसके चरित्र आदि की बहुत सी बातें आख्यानों या कथाओं के रूप में लोक में प्रचलित हो गई हों। आख्यान पुरुष। (लीजेन्डरी पर्सन) जैसे—महात्मा गाँधी भारत में कथा-पुरुष बन गये हैं।

कथा-सार—पु० [सं०] किसी कथा, कथानक अथवा वर्णित विषय का वह संक्षिप्त रूप, जिसमें उसकी सभी मुख्य-मुख्य बातें आ गई हों। (सिनॉप्सिस)

कथा-सूत्र—पु० [सं०] कथा, कहानी आदि की विषय-वस्तु। (थीम) विशेष दे० 'विषय-वस्तु'।

कथित पद—पु० [सं०] साहित्य में एक प्रकार का शब्द-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब एक ही अर्थ सूचित करनेवाले अनेक शब्दों का एक साथ अनावश्यक रूप से प्रयोग किया जाता है। एकार्थ-दोष।

कदाशय—वि० [सं०] जिसका आशय (उद्देश्य या विचार) दूषित या बुरा हो।

पु० वह स्थिति, जिसमें कोई व्यक्ति किसी बुरे आशय या उद्देश्य से कोई काम करता हो। 'सदाशय' का विपर्याय। (मेलाफ़ाइडीज)

कदाशयता—स्त्री० [सं०] १ कदाशय होने की अवस्था, गुण या भाव। २. विधिक क्षेत्र में, वह स्थिति जिसमें मनुष्य बुरी नीयत या बेईमानी से अथवा मन में कोई बुरा आशय या उद्देश्य रखकर कोई काम करता है। 'सदाशयता' का विपर्याय। (मेला-फाइडीज)

कदाशयी—वि० [सं०] १. कदाशय सबंधी। २ (व्यक्ति) जिसके मन में कोई कटु या बुरा आशय हो। ३ (काम या बात) जो किसी बुरे आशय या उद्देश्य से किया गया हो। "सदाशयी" का विपर्याय। (मेला-फाइडी)

कनक-गिरि—पु० २ संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

कनक भवानी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कनक-भूपावली—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कनक-वसंत—पु० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक नया राग।

कनकांबरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कन-सुरा—वि० [हिं० काना+सुर=स्वर] [स्त्री० कन-सुरी] १. जिसका स्वर बहुत ही कर्ण-कटु हो। जैसे—वह बहुत कन-सुरी थी। २. जिनमें से कर्ण-कटु स्वर निकलता हो। जैसे—कन-सुरा गला, कन-सुरी सारंगी।

कनिष्क—पु० [सं०] कुषाण वंश का एक बहुत बड़ा सम्राट्, जो बहुत बड़ा विजयी वीर होने के सिवा कला, धर्म और साहित्य का बहुत बड़ा पोषक भी माना जाता है। इसके शिला-लेख पेशावर से बंगाल तक पाये गये हैं। इसका समय ईसा के लगभग या उसके कुछ ही बाद कहा जाता है।

कन्यका—स्त्री० १ कुमारी कन्या। २. प्राचीन आचार्यों के ग्रन्थों में, अनूढ़ा नायिका का एक पर्याय। (दे० 'अनूढ़ा')

कन्या—स्त्री० वैष्णव सम्प्रदाय में वे कुमारी गोपियाँ, जो श्रीकृष्ण को ही अपना पति मानकर उनके साथ विहार करती थीं।

कपड़-कीड़ा—पु० [हिं० कपड़ा+कीड़ा] एक प्रकार का छोटा कीड़ा, जो ऊनी, रेशमी आदि कपड़ों में उत्पन्न होकर उन्हीं में अंडे देता और रहता है, और कपड़ों को काट या छेदकर अथवा और कई तरह से खराब कर देता है। (क्लोद्स मॉथ)

कपास—स्त्री० ३ सन्त साहित्य मे, मन की एक सज्ञा जिसे धुनना आवश्यक कहा गया है।

कपोतक—पु० [स०] १ छोटा कबूतर। २ फाख्ता नामक पक्षी, जो कपोत वर्ग का ही माना गया है। ३ नृत्य मे, एक प्रकार की मुद्रा, जिसमे दोनो हाथ सटाकर छाती पर रखे जाते हैं।

कपोत-पाली—स्त्री० [स०] प्राचीन भारत का कँवाल नामक अलकार या गहना।

कबीरा—पु० [सत कबीर के नाम पर] लोक मे प्रचलित एक प्रकार के निर्गुणी गीत, जो वस्तुत सत कबीरदास के रचे हुए न होने पर भी उनके मत या विचारो की छाया से युक्त होते है और जिनमे गीतकार के नाम की जगह 'कबीर' या 'कबीरा' शब्द लगा रहता है।

कबुलवाना—स० ३ अपराध या दोष स्वीकृत करना।

कबुली†—स्त्री० [हिं० कबूलना] कोई बात कबूल करने की क्रिया या भाव। यह मान लेना कि ऐसा ही हुआ है, अथवा ऐसा ही किया जायगा। उदा०—कुबरी करि कबुली कैकेयी । कपट छुरी उर पाहन देई।—तुलसी।

क्रि० प्र०—करना।—कराना।

कबूलना—स० [फ० कबूल+हि ना (प्रत्य०)] २ यह मान लेना कि हमने अमुक अपराध या दोष किया है। ३ किसी के आग्रह या प्रार्थना के सबध मे दृढता या निश्चय-पूर्वक यह कहना कि हम उसे मान लेंगे।

कबूली—स्त्री० [अ० कबूल, हिं० कबूलना] कबूल करने अर्थात् मानने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। (उदा० दे० 'कबुली' के अन्तर्गत)

क्रि० प्र०—करना।—कराना।

कमजात—वि० [फा० कमजात] बहुत ही निकृष्ट या हीन जाति का।

कमल—पु० १७ एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे तीन सगण, एक नगण और एक गुरु वर्ण होता है। यथा—तरु चन्दन उज्ज्वलता तन धरे।—केशव।

कमल नारायणी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कमल रजनी—स्त्री० [स०] सगीत मे बिलावल ठाठ की एक रागिनी।

कमलाभरण—पु० [स०] सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कमला-मनोहरी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कमलिनी—स्त्री० ३ बौद्ध हठ-योग मे, अवधूतिका का एक नाम।

कमान—स्त्री० [फा०] ९ बसीत नाम का जहाजी यत्र। दे० 'बसीत'।

स्त्री० [अ० कमाड] ४ वह प्रधान अधिकारी या निकाय, जिसकी आज्ञा या शासन मे बहुत, से कार्य और लोग रहते हो। जैसे—काग्रेस हाई-कमान।

कमारी†—स्त्री० [हिं० कमेरा का स्त्री०] घर के छोटे-मोटे काम करनेवाली दासी। मजदूरनी।

कयवाली—स्त्री०=कँवाल (गहना)।

करखा—पु० ५ दे० 'कडखा'।

करनी—स्त्री० ६ भारतीय सत समाज मे ऐसी अच्छी बातो का किया जानेवाला आचरण या व्यवहार, जो दूसरो को उपदेश के रूप मे कही या बतलाई जाती हो।

करपात्री—पु० [स० करपात्रिन्] वह जो खाने के समय हाथ मे ही रोटी, दाल, तरकारी आदि लेकर खाता हो। भोजन के लिए पात्रो का उपयोग न करता हो। (साधु-महात्माओ की त्याग-वृत्ति का सूचक पद)।

करभ—पु० सत साहित्य मे, मन की वाचक सज्ञा।

कर-भोग—पु० [स०] सरकारी मालगुजारी या लगान वसूल करके अनुचित रूप से खा जाना या हजम कर जाना।

करवट काशी—पु०=काशी करवट।

करी—स्त्री० [?] चौपाई या चौपैया छन्द का एक नाम।

†स्त्री० १.=कली। उदा०—कँवल करी तू परमिनि मैं निसि भएहु बिहान।—जायसी। २.=कटी।

करुण विप्रलभ—पु० [स०] साहित्य मे, विप्रलभ शृगार का वह भेद, जिसमे प्रेमी या प्रेमिका की मृत्यु के उपरात भी उसके प्रति दु खपूर्ण प्रेम-भाव बना रहता है, पर साथ ही मन मे यह आशा भी बनी रहती है कि इसी जन्म मे और इसी शरीर से फिर उससे भेंट होगी।

करुणाकरी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

करैंच†—स्त्री०=कौंछ (केवाँच)।

कर्कट—पु० ३ एक प्रसिद्ध घातक और भीषण रोग, जिसमे शरीर के किसी अग के ऊतको की कोशिकाएँ विषाक्त होकर उसी प्रकार चारो ओर फैलने लगती है, जिस प्रकार उक्त जन्तु के पैर होते हैं। अब तक यह प्राय असाध्य ही माना जाता था, पर अब इसके कई नये उपचार निकले है, जो अनेक अवसरो पर फलप्रद भी होते हैं। (कैन्सर)

कर्ण-पटह—पु० [स०] कान के अन्दर की चमडे की वह झिल्ली, जिस पर वायु का आघात होने से शब्द सुनाई पडते है। (इयर-ड्रम)

कर्णी-रथ—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, स्त्रियाँ के बैठने का वह छोटा सा रथ, जिसे आदमी खीचकर ले चलते थे।

कर्णोत्पल—पु० [स०] कान मे पहनने का करनफूल नामका गहना।

कर्तागिरी—स्त्री० [स०+फा०] घर-गृहस्थी के कर्ता अर्थात् हर तरह मे मालिक होने और सब काम-काज चलाने की अवस्था या भाव।

कर्दन—पु० [स०] वायु के प्रकोप मे पेट मे होनेवाली गडगडाहट।

कर्मण्यक—वि० [स०] (तत्त्व या पदार्थ) जो किसी दूसरे तत्त्व, पदार्थ आदि को कर्मण्य बनाता अर्थात् किसी कार्य मे प्रवृत्त करता हो। (ऐक्टिवेटर)

कर्म-वाद—पु० ३ भारतीय दर्शन का यह मत-वाद कि मनुष्य को उसके किये हुए कर्मो के अनुसार ही अच्छे और बुरे फल भोगने पडते है।

कर्मात—पु० ४. जीविका निर्वाह के लिए किया जानेवाला काम या धन्धा।

कल-कठी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कल-वसंत—पु० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कल-विकक—पु० [स०] बहुत ही मधुर स्वर मे गानेवाला एक प्रसिद्ध ईरानी पक्षी, जो बुलबुल हजार दास्ताँ (देखे) के नाम से प्रसिद्ध है।

कलाभरणी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कला-मुंडी†—स्त्री०=कलाबाजी।

कलाली—स्त्री० [हिं० कलाल] १ कलाल का काम या पेशा। २ कलाल जाति की स्त्री।

पु० १. कलाल। कलवार। २ रहस्य सप्रदाय और सत साहित्य

मे—(क) आत्मा। (ख) परमात्मा जो प्रेम रूपी मद्य पिलाकर भक्तों को सुखी करता है। (सूफियों तथा फारसी साहित्य के 'साकी' के स्थान पर प्रयुक्त)

कलावती—स्त्री० ४ सगीत मे, खम्माच ठाठ की एक रागिनी।

कलावाद—पु० [स०] आधुनिक कला और साहित्य के क्षेत्र मे यह मत या सिद्धात कि किसी प्रकार की रचना करते समय मुख्य ध्यान उसके कला-पक्ष पर ही रहना चाहिए। उपयोगितावाद से भिन्न।

कलावादी—वि० [स०] कलावाद-सबधी। कलावाद का।
पु० कलावाद का अनुयायी या समर्थक।

कला-विषय—पु० [स०] अध्ययन और अनुशीलन का वह अग या क्षेत्र, जो मनुष्य को अपने जीवन-निर्वाह तथा उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करने के योग्य तथा समर्थ बनाता है। (आर्ट्स)

कला-स्वरूपी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

कलिल—पु० ३ आज-कल रसायन-शास्त्र मे ऐसे विशिष्ट पदार्थो मे पाये जानेवाले कण, जो पानी मे पूरी तरह घुल जाते है। (कोल्लायड)

कल्क—पु० १२ किसी प्रकार के घोल की तल-छट। अवसाद। (ऐडि-मेन्ट)

कल्प-कथा—स्त्री० [स०] ऐसी कथा या कहानी, जिसकी घटनाएँ, पात्र आदि वास्तविक नही, बरिक केवल कल्पित हो। (फिक्शन)

कल्प-ग्रथ—पु० [स०] वैदिक काल के वे ग्रथ, जिनमे यज्ञो से सबध रखनेवाले कर्म-काड का विवेचन होता था।

कल्पितार्थ—पु०=परिकल्पना। (हाइपोथेसिस)

कल्ब—पु० ५ सूफी साहित्य मे, अत करण का वह अग या वृत्ति, जिसकी सहायता से मनुष्य की बौद्धिक क्रियाएँ होती है। (रूह या आत्मा से भिन्न)

कल्याण केसरी—पु० [स०] सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कल्याण-वसंत—पु० [स०] सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कल्लोल—पु० सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

कवक—पु० ४ एक प्रकार के बहुत छोटे कीटाणु, जिनकी गिनती पहले वनस्पतियो मे होती थी , पर जो जडो, तनो पत्तियो आदि से रहित होने के कारण जीव-वर्ग मे गिने जाने लगे है। इनके उपनिवेश प्राय वनस्पतियो पर ही होते हैं। फसलो पर लगनेवाले कँडुआ, रतुआ आदि रोग और कुकुरमुत्ता या भुकडी इसी वर्ग मे आती है। (फंगस)

कवच कोठरी—स्त्री० [सं०+हिं०] आधुनिक युद्ध-सज्जा मे ककड सीमेन्ट आदि के योग से बनी हुई वह पक्की और बहुत मजबूत तल-चौकी या दमदमा, जिस पर तोप के गोले और बमो आदि का भी सहज मे कोई प्रभाव नही पडता। (पिल-बॉक्स)

विशेष—इस प्रकार की कोठरियाँ प्राय सीमा पर थोडी-थोडी दूर पर बनाई जाती है, जिनके झरोखो मे से आक्रमणकारी शत्रु के सैनिको पर बन्दूको, मशीनगनो आदि से गोलियाँ चलाई जाती है। इनका अधि-काश पृथ्वी तल से नीचे होता है केवल झरोखों वाला थोडा सा अश पृथ्वी तल से कुछ ऊपर रहता है।

कविवरा—वि० [स०] जिसने कवियो को धारण किया हो , अर्थात् जिसमे बहुत-से कवि रहे या हुए हो। उदा०—उस कविवरा भू-भाग मे अनेक सरस कवि हुए।—विश्वनाथप्रसाद मिश्र।

कव्वाल—पु०=कौआल।

कव्वाली—स्त्री०=कौआली।

कशेरुक—पु० २ रीढवाले प्राणियो की पीठ पर की वे लबी हड्डियाँ जो रीढ के दोनो ओर निकली रहती है।

कशेरुक-दंडी—पु० [स०] आधुनिक जीव-विज्ञान मे ऐसे प्राणियो का वर्ग, जिनकी पीठ मे रीढ की हड्डी होती है। (वर्टिब्रेट) जैसे—चौपाये, मछलियाँ, मनुष्य।

विशेष—ऐसे जीवों मे खोपडी और मस्तिष्क होता है; और इनके रक्त मे लाल रग के कण होते है।

कशेरुकी—पु०=कशेरुक-दडी।

कष्ट-कल्पना—स्त्री० २ भारतीय साहित्य मे, एक प्रकार का रस-दोष जो वहाँ माना जाता है, जहाँ सहज मे यह पता ही न चलता हो कि इसमे अनुभाव क्या है और विभाव क्या है।

कष्टत्व—पु० [स०] साहित्य मे, कष्टार्थ नामक दोष।

कष्टार्थ—पु० ३ साहित्य मे, उक्ति का वह दोष, जिसके कारण शब्दो मे स्थित अर्थ, जल्दी प्रकट या स्पष्ट नही होने पाता। ऐसा अर्थ जिसे जानने या समझने मे विशेष कष्ट या परिश्रम करना पडता है। कष्टत्व।

कसू—सर्व०=किसी।

कहरुआ—पु० दे० 'कँहरुआ'।

कहा—क्रि० वि०=क्या। उदा०—मो को कहा ढूँढे बदे मैं तेरे पास रे।—कबीर।

कहानीकार—पु० [हिं०+स०] वह जो प्राय कहानियाँ रचता या लिखता हो। कहानी-लेखक।

कहीं—अव्य० ६ किसी तरह। किसी प्रकार। उदा०—छूट जाएँ गम के हाथो से जो निकले दम कही।—कोई शायर।

कांकायन—पु० [स०] कंक गोत्र या कक जाति का व्यक्ति।

कांचन-संधि—स्त्री० [स०] दे० 'सगत-सधि'।

काँच-मल—पु० [हिं० काँच+स० मल] जरायुज जीवो के प्रसव के उपरात निकलनेवाले मास-खड। खेडी। (स्लैग)

कांडाग्नि—पु० [स०] कच्छ-भुज प्रदेश के उत्तर-पूर्व वाले रन का पुराना नाम। (आज-कल का 'कांडला' नामक स्थान)

कांत-सार—पु० [स०]=कांति-सार (लोहा)।

कांति-चक्र—पु० [स०]=परिमडल। (देखे)

कांति-सार—पु० [स० कात-सार] एक प्रकार का साफ किया हुआ ढलवाँ लोहा, जिसकी कडाहियाँ आदि बनती है।

कांस्य—पु० २ मद्य पीने का प्याला। चषक।

काकतीय—पु० [स०] दक्षिण भारत का एक प्राचीन राजवश। (ई० बारहवी-तेरहवी शती)

काकोच्छ्वास—पु० [स०] कष्ट, पीडा आदि के कारण उखडा या टूटा हुआ साँस।

काक्वाक्षिप्त—पु० [स० काकु+आक्षिप्त] साहित्य मे, गुणीभूत व्यग्य का एक प्रकार या भेद, जिसमे काकु अथवा कठ-ध्वनि के द्वारा व्यग्यार्थ आक्षिप्त होता अर्थात् खीचकर लाया जाता है। यथा—सुनु दसमुख खद्योत प्रकाशा। कबहुँ कि नलिनी करइ विकासा।—तुलसी। इसमे काकु मे तो यही अर्थ निकलता है कि खद्योत के प्रकाश

मे नलिनी विकसित नही होती ; परन्तु इसमे का काक्वाक्षिप्त व्यग्य यह सूचित करता है कि सीता नलिनी है और वह राम रूपी सूर्य की ओर देखने पर ही विकसित होती है।

काग—पु० ३. रहस्य सम्प्रदायो और सन्त समाज मे अज्ञान के अन्धकार मे पडा हुआ चित्त या मन। उदा०—कागिलगर फाँदिया, बटेरै काज जीता ।—कबीर।

काचू कटिया—पु० [प० काचू+चाकू=हिं० काटना] मध्य युग मे, पजाबी, व्यक्तियों या विरक्तों का एक सम्प्रदाय ।

विशेष—इस सम्प्रदाय के त्यागी किसी के शिष्य नही होते थे, बल्कि चाकू से अपनी चुटिया आप ही काट कर मानो अपनेआप को ही अपना गुरु बना लेते थे।(कहा जाता है कि ये लोग प्राय आपस मे भी लडते-भिडते रहते थे और मद्य, मास आदि का भी सेवन करते थे।

काजला—पु०=कजरा (गीत)।

काठक—पु० [स०] १ कठ-मुनि की प्रवर्तित शाखा। २ उक्त शाखा का अनुयायी व्यक्ति ।

कातत्रिक—पु० [स०] वह जो कातत्र व्याकरण का बहुत बडा पडित हो।

कातिल—वि० ५ बहुत अधिक चालाक, गहरा या भरपूर वार करने या हाथ मारनेवाला है। जैसे—कातिल रोजगारी।

कादिरी—पु० [फा०] एक सूफी सम्प्रदाय जिसके प्रवर्त्तक अब्दुल कादिर अलजीलानी (जन्म सन् १०७८ ई०) थे।

कानटेन—वि० [हिं० काना=एक आँखवाला] एकाक्ष। काना। (उपेक्षा और परिहास)

काना†—पु० ऐब। खराबी। दोष। उदा०—सूरदास की एक आँख है ताहू मे कुछ कानो।—सूर।

कापालिक—पु० ४ शैव सम्प्रदाय की पाशुपत शाखा के अनुयायी एक प्रकार के विरक्त साधु। ५ उक्त के अनुकरण पर बौद्ध तात्रिकों और हठ-योग मे ऐसा साधक,जिसने डोबी की साधना पूरी कर ली हो।

काबूली—पु० [फा० काबू] बहुत बडा दुष्ट और धूर्त व्यक्ति।

कामकार—पु०[स०] प्राणियो की प्रबल कामवासना की सूचक शारीरिक क्रिया या चेष्टा।

काम-चलाऊ—वि० ३ (उपाय या व्यवस्था) जो अस्थायी रूप मे या कुछ समय के लिए काम चलाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके और फलत पूर्णरूप से उपयोगी या सुदृढ न हो। (मेकशिफ्ट) जैसे—झगडा निपटाने का मार्ग तो निकाल लिया गया, पर वह कामचलाऊ ही था।

काम-पिशाच—पु० [स०] बहुत बडा कामुक।

काम-रूपा—स्त्री० [स०] पुष्टि-मार्गीय वैष्णवो मे भक्ति का वह प्रकार जिसमे एक-मात्र कृष्ण के प्रति आसक्ति रहती और उन्ही की प्राप्ति की कामना होती है। गोपियो की कृष्ण के प्रति भक्ति इसी वर्ग मे आती है।

काम-लिंग—पु० [स०] वे चिह्न या लक्षण, जिनसे पता चलता है कि मनुष्य कामुक है या उसमे इस समय काम-वासना प्रबल हो रही है।

कामाक्षा—स्त्री० [स०] १ कामरूप की वह पहाडी, जिस पर कामाक्षी देवी का मदिर है। २ दे० 'कामाक्षी'।

कामित—पु० [स०] सभोग की मनोवृत्ति। काम-वासना।

काय-चिकित्सक—पु० [स०] वह जो भैषज-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो और काय-चिकित्सा करता हो। (फिज़ीशियन)

काय-बंधन—पु० [स०] ऐसा कपडा, जो शरीर मे बाँध या लपेटकर पहना जाता हो। जैसे—धोती, पटका, साफा आदि।

कायस्थ—पु० ५. प्राचीन भारत मे, किसी कार्यालय या विभाग के लिपिकों आदि का प्रधान अधिकारी।

काया-पलट—पु० ३ योग-शास्त्र की एक क्रिया जिसमे प्राणायाम आदि के द्वारा शरीर का काया-कल्प किया जाता है।

कायिकी—स्त्री० [स० कायिक से] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का अध्ययन और विवेचन होता है कि जीवधारियों की काया या शरीर के किन-किन अगो मे कैसी-कैसी आतरिक क्रियाएँ होती है और उनके क्या-क्या परिणाम होते हैं। (फीज़ियोलॉजी)

कारणातिशयोक्ति—स्त्री० [स०] साहित्य मे, अतिशयोक्ति अलकार का एक प्रकार या भेद, जिसमे कारण या हेतु का अतिशयोक्तिपूर्ण उल्लेख होता है। कुछ आचार्य अक्रमातिशयोक्ति और अत्यतातिशयोक्ति को भी इसी के अतर्गत मानते हैं।

कारवाँ-सराय—स्त्री० [फा० कारवाँ+तातारी सरा] मध्य युग मे, अफ्रीकी और एशियाई देशो मे बडे और विस्तृत आँगनवाले वे भवन, जिनमे यात्रा के समय कारवाँ अर्थात् यात्रियो और व्यापारियो के दल ठहरा करते थे।

कार्बन—पु० [स०] १ रसायन-शास्त्र मे एक प्रसिद्ध अधातवीय तत्त्व, जो भौतिक सृष्टि के मूल-तत्त्वो मे से एक है। यह स्वतत्र रूप मे भी मिलता है और मिश्र रूप मे भी। कोयले और हीरे मे यह स्वतत्र रूप मे होता है, पर खडिया, सगमर्मर आदि मे मिश्र रूप मे पाया जाता है। २ एक तरह का महीन कागज जिस पर स्याही लगी होती है तथा जो प्रतिलिपि तैयार करने के काम मे आता है।

कार्यक—पु० [स०] वह जो दीवानी मुकदमा लडता हो। वादी और प्रतिवादी दोनो ।

कार्य-काल—पु० [स०] वह नियत काल, जिसमे कोई अधिकारी या प्रतिनिधि अपने पद पर रहकर कार्य करता हो। (टर्म)

कार्य-वाहक—वि० [स०] १ कार्य का भार वहन करने या काम चलानेवाला। २ (अधिकारी) जो किसी स्थायी अधिकारी की अनुपस्थिति मे उसके पद पर रह कर उसके सब काम चलाता हो। (ऐक्टिंग)

कार्यांग—पु० दे० 'कार्य-पालिका'।

कार्यान्वय—पु० [स०]=कार्यन्विति।

कार्यान्विति—स्त्री० [स०] १ कार्यान्वित होने की अवस्था, गुण या भाव। २ कर्तव्य, निश्चय, प्रतिज्ञा, वचन आदि का कार्य रूप मे किया जानेवाला पालन। अभिपूर्ति। (इम्प्लिमेन्टेशन)

काल-गंडिका—स्त्री०[स०] कश्मीर की एक प्राचीन नदी। (राज० त०)

काल-क्रम-विज्ञान—पु० [स०] वह विज्ञान या विद्या, जिसके द्वारा ऐतिहासिक घटनाओ आदि का किसी विशिष्ट सन् तथा सवत् के आधार पर काल-क्रम निश्चित किया जाता है। (क्रोनोलॉजी)

काल-भोजन—पु० [सं०] ठीक और नियत या विहित समय पर किया जानेवाला भोजन।

काल-मापी—वि० [सं०] काल का माप करने या समय की नाप बतलानेवाला।

पु० एक प्रकार की बहुत बढ़िया घड़ी जो बिलकुल ठीक समय बतलाती है, और जिसके द्वारा सभी स्थानों पर स्थानीय समय, देशांतर आदि कुछ और बातें भी जानी जाती हैं। (क्रोनोमीटर)

काल-लिख—पु० [सं०] एक प्रकार का यंत्र, जिसकी सहायता से बहुत थोड़े-थोड़े अन्तर पर घटित होनेवाली घटनाओं का अंतर एक मानचित्र पर अंकित होता चलता है। (क्रोनोग्राफ)

काला धन—पु० दे० 'दूषित धन'।

काला बाजार—पु० [हिं०]=चोर बाजार।

काला सोना—पु० [हिं०] पत्थर के कोयले का वाचक पद, जो उसके बहुमुखी उपयोगिताओं का सूचक है। (ब्लैक गोल्ड)

कालिदास—पु० [सं०] संस्कृत के एक सुप्रसिद्ध और मूर्धन्य कवि, जो प्रकृति के वर्णन के सिवा उपमाएँ देने में भी बेजोड़ थे। इनके काल और देश का अभी तक ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक निर्णय नहीं हुआ है। पर ये उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के राज-कवि माने जाते हैं और कश्मीर तथा मध्यप्रदेश से विशिष्ट रूप से संबद्ध जान पड़ते हैं।

काली बेगम—स्त्री० [हिं०] १ अफीम। (परिहास और व्यंग्य) २ ताश का एक प्रकार का खेल।

काली मिट्टी—स्त्री० २ खेतों की काले या गहरे भूरे रंग की भुरभुरी और महीन मिट्टी, जो विशेष उपजाऊ होती है। ऐसी मिट्टी विशेषत. यूरोप और अमेरिका के कुछ भागों में अधिकता से होती है। (ब्लैक अर्थ)

कालोचित—वि० [सं०]=समयोचित।

कालोचितता—स्त्री० [सं०]=समयोचितता।

काव्य-पाक—पु० [सं०] साहित्य में सुकवि की रचना का वह परिपाक या परिपक्व रूप, जो विशेष अध्ययन और अभ्यास से प्राप्त होता है।

काव्य-पुरुष—पु० [सं०] १ कवि की वह अद्भुत और अलौकिक कल्पना, जो उसके काव्य में आत्मा या पुरुष के रूप में रहती है।

काव्य-हरण—पु० [सं०] साहित्य में, किसी कवि का प्रयुक्त विशिष्ट पद,शब्द आदि ज्यों के त्यों लेकर अपनी कविता में रख लेना, जो एक प्रकार की साहित्यिक चोरी है।

काव्य-हेतु—पु० [सं०] साहित्य में, ऐसी बातें या साधन, जिनमें मनुष्य में काव्य-रचना की योग्यता या शक्ति उत्पन्न होती है। यथा—प्रतिभा, व्युत्पत्ति या बहुज्ञता, अभ्यास, समाधि या मन की एकाग्रता आदि।

काशिकेय—वि० [सं०] काशी संबंधी। काशी का।

पु० काशी का निवासी।

काष्ठ-कलह—पु० [सं०] प्राचीन भारत में, सैनिकों की वह नकली लड़ाई, जो काठ के बने हुए हथियारों से केवल अभ्यास के लिए होती थी।

किगरिहा†—पु० [हिं० किंगरी+हा (प्रत्य०)] ऐसा भिक्षुक जो किंगरी बजाकर भीख माँगता फिरता हो।

किण्वन—पु० [सं०] खमीर उठाने के उद्देश्य से किसी चीज को सड़ाने की क्रिया। (फर्मेन्टेशन)

किनरी†—स्त्री० १ =किन्नरी। २.=किंगरी (बाजा)।

५ आर्थिक विषयों में सावधानतापूर्वक की जानेवाली ऐसी व्यवस्था, जिसमें व्यर्थ का नाश या व्यय न होने पावे और ठीक या पूरा लाभ होता हो।

किनाराकश—वि० [फा०] [भाव० किनाराकशी] किसी काम या बात से अपना संबंध तोड़कर किनारे अर्थात् अलग या दूर हो जानेवाला।

किनाराकशी—स्त्री० [फा०] किनाराकश होने की अवस्था, गुण या भाव।

किलो—पु० [अ०] १=किलोग्राम। २=किलोमीटर।

किलोग्राम—पु० [अ०] दाशमिक प्रणाली की एक तौल, जो १००० ग्राम के बराबर होती है और जो अब भारत में भी प्रचलित हो गई है।

कीट-सारी—वि० [सं० कीट-सारिन्] [स्त्री० कीट-सारिणी] (औषध या द्रव्य) जिसके प्रयोग से कीड़े दूर भागते हों। (इन्सेक्ट रिपेलेन्ट)

कीर्त्तिमान—पु० [सं०] असाधारण अध्यवसाय, परिश्रम या प्रयास से किया हुआ कोई ऐसा बड़ा या श्रेष्ठ कार्य, जो किसी बहुत ऊँचे मान या माप तक पहुँचा हो और इसीलिए जो सार्वजनिक रूप से अभिलिखित हुआ हो और कर्त्ता के लिए विशेष रूप से कीर्त्ति या यश देनेवाला माना जाता हो। (रेकॉर्ड) जैसे—मई, १९६५ में भारतीय पर्वतारोही दल ने एवरेस्ट पर्वत पर चढ़ाई का नया कीर्त्तिमान स्थापित किया था।

कीर्त्तिस्व—पु० [सं०] किसी व्यवसायिक संस्था के सुनाम और सुयश का वह लाभ, जो उसके उत्तराधिकारी को प्राप्त होता है। (गुडविल)

कुंतल-मौलि—पु० [सं०] सिर के बालों का जूड़ा

कुँवार-छल—पु० [सं० कुमार=कुँवारा या कुँवारी+छल (प्रत्य०)] कुमारी या बालिका की वह स्थिति, जिसमें उसका कौमार्य भंग न हुआ हो। अक्षत-योनि होने की स्थिति।

मुहा०—(कुँवारी या बालिका का) कुँवार छल उतारना=अक्षत-योनि या कुमारी के साथ पहले-पहल संभोग या समागम करना। कुमारी का कौमार्य भंग करना।

कुत्तरा†—पु० [स्त्री० कुतरी]=कुत्ता। उदा०—जो धन बरसे उत्तरा। भात न छूटे कुत्तरा। (कहा०)

कुफेर—पु० [सं० कु+हिं० फेर] १ अशुभ या हानिकारक अवसर या स्थिति। २ बुरी दशा या बुरे दिन। 'सुफेर' का विपर्याय।

कुमेरु ज्योति—स्त्री० [सं०] कुमेरु अर्थात् दक्षिणी ध्रुव के आस-पास के क्षेत्रों में कभी-कभी रात के समय दिखाई पड़नेवाली एक विशेष प्रकार की ज्योति या विद्युत् का प्रकाश। 'सुमेरु-ज्योति' का विपर्याय। (ऑरोरा ऑस्ट्रेलिस)

कुवृद्ध—वि० [सं०] [स्त्री० कुवृद्धा] जो बिना कुछ किये-धरे और व्यर्थ ही बुड्ढा हो गया हो।

कुशल-मंगल—पु० [सं०]=कुशल-क्षेम।

कुसूल—पु० अनाज रखने का कोठला।

पु०=कुशूल।

कूट-चित्र—पु० [स०] १ आज-कल आधुनिक चित्र-कला मे ऐसा चित्र, जिसमे ऊपर से तो एक ही घटना या पदार्थ दिखाई देता हो, पर सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर उसमे कुछ और घटनाएँ या पदार्थ भी दिखाई देते हो। जैसे—चित्र मे साधारणत एक वृक्ष और उसकी शाखाएँ ही दिखाई देती हो, परन्तु उन शाखाओ का अकन ऐसे कौशल से हुआ हो कि कही उसमे आदमी, विल्ली, भालू या शेर की आकृति भी बनी हो। २ दे० 'श्लेप-चित्र'।

कृतित्व—पु० [स०] किसी कृति अथवा रचना का गुण, धर्म या भाव।

कृते—अव्य० [स०] की ओर से। के लिए। के वास्ते। (फॉर)
विशेष—इसका प्रयोग पत्रो आदि के अत मे किसी की ओर से किये जानेवाले हस्ताक्षर के पहले होता है। जैसे—रामनाम शर्मा, कृते प्रधान सपादक। अर्थात् प्रधान सपादक के प्रतिनिधि रूप मे हस्ताक्षर।

कृष्ण सागर—पु० [स०] दक्षिण यूरोप का एक समुद्र, जो सोवियत रूस, एशिया माइनर और वालकन प्रायद्वीप से घिरा हुआ है। (ब्लैक सी)

केंद्रक—पु० [स०] कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ, जो केंद्र बनकर चारो ओर अपने अगो का विकास करता अथवा अपने कार्य-क्षेत्र आदि का विस्तार करता है। नाभिक। (न्युक्लिअस)

केकय-अपभ्रंश—स्त्री० [स०] केकय अर्थात् पश्चिमी कश्मीर और पश्चिमी पजाव मे ई० छठी से दसवी शताब्दियो तक प्रचलित अपभ्रश भाषा का वह रूप, जिससे आधुनिक पश्चिमी पजावी का विकास हुआ है। इस अपभ्रश का साहित्य मध्ययुग मे नष्ट हो जाने के कारण अव अप्राप्य है।

केवडा-जल—पु० [हिं०+स०] केवडे के फूलो का भभके से उतारा हुआ सुगंधित अर्क।

केवल-ज्ञान—पु० [स०] परब्रह्म या परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान, जो वहुत वडे-वडे महात्माओ, योगियो आदि को ही होता है।

केवाल—पु० [स०] एक प्रकार का अलकार या गहना। कपोतपाली।

केश-वल्य—पु० [स०] ऐसी चीजे या दवाएँ, जो सिर के वालो को झडने से रोकती या उनकी जड मजवूत करती है। (हेयर टॉनिक)

केश-सभारण—पु० [स०] स्त्रियो मे, सिर के वालो को सुदर रूप से घुमा-फिराकर उनके गुच्छ या लटे वनाने अथवा जूडा आदि वाँधने की कला या क्रिया। (हेयर-ड्रेसिग)

कैफियत—स्त्री० ३ किसी कथन या वात के स्पष्टीकरण के लिए कही जानेवाली कोई दूसरी छोटी वात। (रिमार्क)

कैरणिक—वि० [स०] किरणो से सवध रखनेवाला। किरणो का।

कैरणिकी—वि० दे० 'विकिरण-विज्ञान'।

कैशोरक—पु० [स०] नवयौवन। नई जवानी।

कैसी—अव्य० [हिं० कैसा का स्त्री०] क्या। जैसे—राम राम अव मैं कैसी करूँ अर्थात् क्या करूँ। (व्रज०)

कोमल—स्त्री० [?] चोरी करने के लिए दीवार मे किया जानेवाला छेद। सेध। उदा०—इस साए मे कोमल हुई कल रात को इन्शा।—इन्शा।

कोकैया†—पुं० दे० 'महलाव' (पक्षी)।

कोटा गंधल—पु० दे० 'रगन' (वृक्ष)।

कोठे-वाली—स्त्री० [हिं० कोठा+वाली (प्रत्य०)] रडी या वेश्या जो प्राय कोठे पर रहती या बैठती है।

कोण-शिला—स्त्री० [स०] १ मकान आदि वनाने के समय नीव का वह पत्थर, जो भारतीय आर्यों मे अग्नि-कोण मे तथा अन्यान्य जातियो और देशो मे ऐसे ही किसी दूसरे विशिष्ट कोण मे रखा जाता है। (कार्नर स्टोन) २ आधार-शिला। नीव का पत्थर।

कोणिक दिशा—स्त्री० [स०] दो दिशाओ के वीच की दिशा। कोण।

कोथ—पु० ३ एक प्रकार का घातक रोग जिसमे घाव लगने या रक्त का प्रवाह रुकने के कारण शरीर का कोई अग गलने या सड़ने लगता है। (गैंग्रीन)

कोशिका—स्त्री० ३ वहुत ही सूक्ष्म कणो या छोटे-छोटे कोपो के रूप मे वह मूल तत्त्व, जिसमे जीव-जतुओ के शरीर और खनिज पदार्थ आदि वने होते है। ४ वह आधान या पात्र, जिसमे विजली उत्पन्न करनेवाले रासायनिक तत्त्व भरे रहते है। ५ छोटी और अँधेरी कोठरी। काल कोठरी। (सेल, अन्तिम तीनो अर्थो मे) जैसे—कारागार मे विकट अपराधियो को रखने की कोशिका।

कोषाणु—पु० [स०] दे० 'कोशिका' ३।

कौंध प्रकाश—पु० [हिं०+स०] ऐसा तीव्र या प्रवल प्रकाश, जो आँखो मे चकाचौंध उत्पन्न करता हो। (फ्लैशलाइट)

कौआ परी—स्त्री० [स०] ऐसी काली-कलूटी युवती जो प्राय चटक-मटक से रहती है, वहुत वनाव-सिंगार करके अपने आपको रूपवती समझती है। (वाजारू)

क्रमिकता—स्त्री० [स०] क्रमिक होने की अवस्था, गुण या भाव।

क्रमिकतावाद—पु० [स०] यह सार्वजनिक मत या सिद्धात कि सभी चीजो और वातो का इस प्रकार क्रमिक रूप से और धीरे-धीरे विकास होता है कि साधारणत ऊपर से देखने पर इस विकास या वृद्धि का सहसा पता नही चलने पाता। अनुक्रमवाद। (ग्रैजुएलिज्म)

क्रमित—भू० कृ० [स०] १ जो क्रम मे रखा या लगाया गया हो। क्रम से युक्त किया हुआ। २ जिसके साथ उतार-चढाव आदि का क्रम निरुपित हो। (ग्रैजुएटेड) जैसे—वेतन का क्रमित मान।

क्रिया-कलाप—पु० ३ किसी कार्य या व्यवहार से सवध रखनेवाली सभी विशिष्ट क्रियाएँ। प्रविधि। (टेक्नीक)

क्रिया-विज्ञान—पु० [स०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस वात का विवेचन होता है कि जीवो के अग और इन्द्रियाँ किस प्रकार अपनी क्रियाएँ या व्यापार करती हैं। (फीज़ियोलोजी)

क्रिया-विधेय—पु० [स०] व्याकरण मे, वह विधेय जो कर्ता से निर्दिष्ट होनेवाली क्रिया की स्थिति वतलाता है।

क्रीम—पु० [अ०] १ दूध के ऊपर जमा होनेवाली मलाई। २ दूध और मलाई के योग से वनाये जानेवाले कई प्रकार के खाद्य और पेय पदार्थ। जैसे—वरफ का क्रीम, फलो का क्रीम। ३ अंग-राग के रूप मे काम आनेवाला कोई ऐसा पदार्थ जो देखने मे मलाई की तरह का हो, या जिसमे मलाई की तरह की कोई चीज जमीन के रूप मे काम मे लाई गई हो।

क्वाँरी†—स्त्री० [स० कुमारी] १ ऐसी कन्या या स्त्री, जिसका अभी तक विवाह न हुआ हो। २ रहस्य सप्रदाय और सतो की परिभाषा

मे माया, जो सबको अपने रूप-जाल मे फँसाकर अपनी ओर अनुरक्त करती है।

क्षति-मूल्य—पु० [स०] वह धन जो किसी की कोई क्षति या हानि होने पर उसके बदले मे उसे दिया जाय। प्रति-कर। क्षति-पूर्ति। हरजाना। (डैमेजेस)

क्षारता—स्त्री० [स०] क्षार अथवा क्षारीय की अवस्था, गुण या भाव। क्षारीयता। खारापन। (ऐल्कालिनिटी)

क्षीणेंद्रिय—वि० [स०] जिसने विषय-भोग मे अपनी सारी पुसत्व-शक्ति गवाँ दी हो।

क्षुद्रांत्र—पु० २ पेट के अन्दर की आँतो का वह ऊपरी भाग जो नीचे-वाले भाग की अपेक्षा छोटा और पतला होता है। (स्मॉल इन्टेस्टाइन)

क्षुधा-अभाव—पु० [स०]=क्षुधा-नाश।

क्षेत्रक—पु० [स०] किसी बडे क्षेत्र या भू-खड का वह छोटा टुकडा जो किसी विशिष्ट प्रशासनिक अथवा व्यवस्थात्मक कार्य के लिए अलग किया गया हो। (सेक्टर)

क्षेत्र-संन्यास—पु० [स०] एक प्रकार का सन्यास, जिसमे किसी बहुत ही परिमित क्षेत्र मे रह कर यह निश्चय कर दिया जाता है कि हम इस क्षेत्र के बाहर नही जायँगे।

क्षेत्राधिकार—पु० [स० क्षेत्र+अधिकार] विधिक दृष्टि से किसी अधिकारी को अपने कार्य-क्षेत्र मे प्राप्त होनेवाला वह विशिष्ट अधि-कार जिसके अनुसार वह सब कार्य करता या कर सकता है। (जुरि स्डिक्शन)

क्षेत्रिक—वि० [स० क्षेत्र+इक] १ किसी विशिष्ट क्षेत्र अर्थात् भू-भाग से सबध रखने या उसके अतर्गत होनेवाला। (टेरिटोरियल) २ दे० 'क्षेत्रिय'।

क्षेत्रीय—वि०=क्षेत्रिय।

क्षेत्रीय समुद्र—पु० [स०]=प्रादेशिक समुद्र।

क्षेप्यास्त्र—पु० [स० क्षेप्य+अस्त्र] कोई ऐसा अस्त्र, जो दूर से फेंककर चलाया अथवा किसी प्रकार का वेग उत्पन्न करके दूर तक पहुँचाया जाना हो। (मिस्सिल) जैसे—कमान का तीर, तोप का गोला, बन्दूक की गोली।

क्षैतिज—वि०[स०] १ क्षितिज-सबधी। क्षितिज का। २ ऐसा सपाट या समतल, जिसके दोनो सिरे सीधे दोनो ओर के क्षितिजो तक गये हो। (हॉराइज़ॅन्टल)

खंडनात्मक—वि०[स०] (कथन या बात) जिसमे किसी तथ्य आदि का खडन किया गया हो अथवा जो किसी प्रकार के खडन से युक्त हो। खडक। (कन्ट्राडिक्टरी)

खंडाकार—पु० [स० खड+आकार]=लुप्ताकार।

खड़िया—पु०[हिं० खड़ी=राजकर+इया (प्रत्य०)] मध्ययुग मे वह छोटा राजा, जो किसी बडे राजा या सम्राट् को खड़ी अर्थात् राज-कर दिया करता था।

खगरव—पु०[स०] पक्षियो का सवेरे और सन्ध्या के समय का कलरव।

खगोल विद्या—स्त्री०[स०]=खगोल-विज्ञान।

खटोली—स्त्री०[हिं० खटोला] १. छोटे बच्चो के लिए छोटी खाट। २. डोली नाम की सवारी, जिसे कहार ढोते है। (बिहार)

खत्ता—पु० ४ एक ही तरह की बहुत-सी चीजो का ढेर। कज। (डम्प)

खपरा†—पु०[स० खर्पर] चाँदी, सोना आदि गलाने की घरिया। खर्पर। (क्रूसिबल)

खपरिया—पु०[स० खर्पर] सोना, चाँदी आदि गलाने की घरिया। दे० 'खर्पर'।

खबरदार—पु०[फा०] राजाओ, नवाबो आदि के दरबारो मे वह नौकर जिसका काम आनेवाले लोगो के सबध मे पहले से आकर सूचना देना होता था। जैसे—इतने मे खबरदार ने आकर खबर दी कि बडे नवाब साहब आ रहे है।

खरीदी†—स्त्री०=खरीद। जैसे—फसल के दिनो मे होनेवाली गेहूँ या जौ की खरीदी।

खरोंच—स्त्री० ३ किसी बडी चीज की रगड से शरीर मे होनेवाला क्षत। (एबेरेजन)

खर्रा—वि०[हिं० खरखर] [स्त्री० खर्री] (खाट) जिस पर बिछौना न बिछा हो और इसीलिए जिसकी बुनावट बदन मे गडती हो।

खवास—पु० ४. किसी वस्तु मे होनेवाला कोई विशेष गुण। खासियत। उदा०—अक्सीर का खवास है, उनके बिछौने मे।—कोई शायर।

खाई—स्त्री० ३ पृथ्वी तल मे वह कृत्रिम या प्राकृतिक गड्ढा, जो कुछ दूर तक चला गया हो और जिसमे से होकर नदी, वर्षा आदि का जल बहता हो।

खामना—स० ३ पत्र आदि कही भेजने के लिए लिफाफे मे रखकर उसका मुँह बन्द करना।

खारापन—पु०[हिं०] खारे होने की अवस्था, गुण या भाव। (ऐल्कालि-निटी)

खिलडरा†—वि०[हिं० खेल] [स्त्री० खिलडरी] खेल या खिलवाड की तरह का। जैसे—उसने पीछे से आकर खिलडरे ढग से उसकी आँखे बन्द कर ली।

खिलौना—पु० ४. पुत्र के जन्म के समय गाये जानेवाले उन गीतो की सज्ञा जिनमे शिशु के रोदन, माता-पिता और परिवार के अन्य लोगो के आनन्द-मगल और इस आनन्दमगल के उपलक्ष्य मे किये जानेवाले कार्यो का वर्णन होता है। 'सोहर' से भिन्न। †५. सोहर।

खुदा का नूर—पु० [हिं०] मुसलमानो मे दाढी के लिए आदर और सम्मान का सूचक पद। उदा०—और तो मैं क्या कहूँ, बन आये हो लगूर से। दाढी मुँडवा लो, मै बाज आई खुदा के नूर से।—जान साहब।

खुला—वि० ९ (काम) जो सबके सामने और जान-बूझकर प्रकट रूप से किया गया हो और जिसे छिपाने का कोई प्रयत्न न किया गया हो। खुले आम किया हुआ। प्रकट। (ओवर्ट)

खुला समुद्र—पु०[स०]=महा समुद्र।

खुश-दामन—स्त्री०[फा०] पति या पत्नी की माता अर्थात् सास का वाचक आदरसूचक पद। (मुसल०)

खून-खच्चर—पु०=खून-खराबी।

खेरची†—स्त्री०[?] रेजगी (या रेजगारी=छोटे सिक्के)।

खेरीज†—स्त्री०[?] रेजगी (या रेजगारी=छोटे सिक्के)।

खेरू†—पु०=सूयन (वृक्ष)।

खेलना—स० ५ कोई ऐसा आचरण करना जिसमे कौशल, धूर्तता, फुरती, साहस आदि की आवश्यकता हो। जैसे—किसी के साथ चालाकी खेलना।

खोई—स्त्री०[हिं० खोना] १ खोने अर्थात् गँवाने की क्रिया या भाव। २ रोजगार, सट्टे आदि मे होनेवाली आर्थिक हानि। घाटा। 'कमाई' का विपर्याय। जैसे—रोजगार मे खोई-कमाई लगी रहती है।

खोजवत्ती—स्त्री०[हिं०]=विचयन प्रकाश।

गंड-पार्श्व—पु०[स०] कनपटी।

गंदी बस्ती—स्त्री० [हिं०] मजदूरो या गरीबो की गदी बस्तियाँ। मलिनावास। (स्लम)

गंध शलाका—स्त्री०[स०] आज-कल एक प्रकार की प्रसाधन-सामग्री जो सुगधित शलाका के रूप में होती है। (कोलन स्टिक)

गंधसार तेल—पु०[स०+हिं०]=गंध-तैल।

गंधोदक—पु०[स०] रासायनिक क्रिया से बनाया हुआ एक प्रकार का सुगधित तरल पदार्थ, जिसका व्यवहार सिर के बाल और शरीर की त्वचा सुगधित करने के लिए होता है। (टॉयलेट वाटर)

गजेटियर—पु०[अ०] प्राय राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित होनेवाला एक प्रकार का ग्रथ, जो बहुत से भागो मे होता है और जिसमे कस्बो, नगरो आदि के ऐतिहासिक भौगोलिक, और सामाजिक विवरण होते है।

गड्डो†—स्त्री०[?] गरदन पकड कर किसी को कही से धक्का देते हुए निकालने की क्रिया। गरदनियाँ।

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

गण-तांत्रिक—वि०[स०]=गण-तत्री।

गणनाकार—वि०[स०] गणना करनेवाला।

पु० १ =गणक। २ =परिगणक।

गणिका-दारिका—स्त्री०[स०] वह लडकी, जिसे गणिका अपने पास रख-कर नाच-गाना सिखाती हो और जिसके बडे होने पर वेश्या-वृत्ति कराती हो। नोची।

गणित—भू० कृ० १ जिसकी गणना हुई हो। गिना हुआ। २ गणना के द्वारा निश्चित या स्थिर किया हुआ। जैसे—गणित ज्योतिष।

गणित ज्योतिष—पु०[स०] ज्योतिष का वह अग या शाखा (फलित ज्योतिष मे भिन्न) जिसमे आकाशस्थ ग्रहो, नक्षत्रो आदि की गति-विधि की गणना और विवेचना होती है। खगोल-विज्ञान। (ऐस्ट्रोलॉजी)

गणित्र—वि०, पु०[स०]=गणक।

पु०=परिकलक।

गत-यौवन—वि० [स०] [स्त्री० गत-यौवना] जिसका यौवन-काल बीत चुका हो। अधेड।

गतानुगतिकता—स्त्री०[स०] गतानुगतिक होने की अवस्था या भाव।

गतावधि—वि०[स० गत+अवधि] १ जिसके महत्त्वपूर्ण दिन बीत चुके हो। २ जो पुराना पडने के कारण इतना निरर्थक और महत्त्वहीन हो चुका हो कि प्रस्तुत काल मे उसका कोई उपयोग न हो सकता हो। यात-याम। 'अद्यतन' का विपर्याय। दिनातीत। (आउट आफ डेट)

गति—स्त्री० ऐसी स्थिति, जिसमे किसी प्रकार का उतार-चढाव या कमी-बेशी होती रहे। जैसे—मरण-गति। (डेथ रेट)

गद्य-गीति—स्त्री० दे० 'गद्य-काव्य'।

गन्नई—वि०[हिं० गन्ना] गन्ने के रग का। हलका नीलापन लिए हुए हरा।
पु० उक्त प्रकार का रग।

गल-ग्रंथि—स्त्री० [स०] शरीर के अन्दर श्वास-नली और स्वर-यत्र के पास की कुछ विशिष्ट ग्रथियाँ या उनका समूह। अवटु-ग्रथि। (थाइ-राएड ग्लैण्ड)

गलचौर†—स्त्री०[हिं० गाल+चौर (प्रत्य०)] मनबहलाव के लिए की जानेवाली बातचीत।

गलन-रोध—पु०[स०] ताप आदि का प्रभाव पडने पर भी चीजो को गलने से रोकने की क्रिया, गुण, भाव या शक्ति।

गलनरोधी—वि०[स०] जो ताप का प्रभाव पडने पर भी चीजो को गलने से रोकता हो। तापावरोधक।

गलित-यौवना—वि० स्त्री० २ (युवती) जिसका यौवन समय से पहले ही ढल या समाप्त हो चुका हो।

गहना-पत्तर†—पु०[हिं०] शरीर पर पहने जानेवाले अनेक प्रकार के गहने। जैसे—सभी स्त्रियाँ गहने-पत्तर से सजी हुई थी।

गहना-पाती—पु० दे० 'गहना-पत्तर'।

गह्वर—पु० १० पृथ्वी-तल मे पाया जानेवाला कोई ऐसा गहरा गड्ढा, जो प्राकृतिक कारणो से बना हो।

गांधीवादी—वि०[हिं०] गाधी-वाद सबधी।
पु० वह जो गाधीवाद का अनुयायी हो।

गाँव-गिराँव—पु०[हिं० गाँव+स० ग्राम] १ गाँव-देहात। २ गाँव या देहात मे होनेवाली सपत्ति।

गाँव-देहात—पु० [हिं०+फा०] छोटे या बडे गाँवो का वर्ग या समूह।

गायन—स्त्री०[हिं० गाना] रईसो, राजाओ आदि के महलो मे आनेवाली स्त्री।

गायब-गुल्ला—वि०[अ० गायब+गुल्ला (अनु०)] १ (पदार्थ) जो चुरा-छिपाकर या धोखा देकर गायब किया या हटाया-बढाया गया हो। २ धन जो बुरी तरह मे और व्यर्थ नष्ट किया गया हो।

गारंटी—स्त्री०[अ० गैरेन्टी]=प्रत्याभूति।

गार्भिकी—स्त्री०[स० गर्भ से] स्त्री के गर्भवती होने की अवस्था या भाव। गर्भावस्था। (प्रेग्नैन्सी)

गिंदौडा—पुं०[फा० कद+हिं० बडा] [स्त्री० अल्पा० गिंदौडी] बड़ी और मोटी रोटी के आकार की वह मिठाई, जो खाली चीनी गलाकर बनाई जाती और मागलिक अवसरो पर बधु-बाँधवो मे बाँटी जाती है।

गिंदौरा†—पु०=गिंदौडा।

गिराँव†—पु०[स० ग्राम] गाँव। जैसे—गाँव-गिराँव।

गिराऊ—वि०[हिं० गिरना+आऊ (प्रत्य०)] १ गिरनेवाला। २ जो टूटा-फूटा या पुराना होने के कारण जल्दी गिर जाने को हो।

गिरावँ—पु० [स० ग्राम] कोई छोटा-मोटा गाँव। जैसे—गाँव-गिरावँ से लोग आते रहते है।

गिरि-पाद—पु०[स०] पहाड के नीचे का मैदानी भाग।

गिरि-मंदिर—पु० दे० 'दरी-मंदिर'।

गिरि-सकट—पु०[स०] दो पहाडो के बीच का तग या सँकरा रास्ता। दर्रा। (पास)

गिलास-पट्टी—स्त्री०[? +हिं० पट्टी] लोहे की एक प्रकार की कुछ मोटी और कम चौडी पट्टी, जो इमारत के काम मे आती है।

गीगला—पु०[?] [स्त्री० गीगली] छोटा बच्चा। (राज०) वि० दुबला-पतला और कमजोर।

गीत-कथा—स्त्री०[स०] वह कथा या कहानी, जो गीतो के रूप मे हो और प्राय लोक-गीत के रूप मे गाई जाती हो।

गीति-नृत्य—पु० [स०] ऐसा नृत्य जिसमे नाचनेवाले नाच के साथ-साथ कुछ गाते भी हो। जैसे—गुजरात का गरवा या पजाब का भाँगडा नृत्य।

गुंडागर्दी—स्त्री० [हि०+फा०] गुंडो की-सी गाली-गलौज या लडाई-झगडा। २ गुडापन। गुडई।

गुणक—पु० ३. लिखाई, छापे आदि मे एक प्रकार का चिह्न, जो दो राशियो या सख्याओ के बीच मे रहकर यह सूचित करता हे कि पहलेवाली राशि या सख्या को वाद वाली राशि या सख्या से गुणा करना चाहिए। यह इस प्रकार लिखा जाता है—×।

गुणन-खंड—पु०[स०] गणित मे ऐसी राशि या राशियाँ, जिनसे किसी वडी राशि को भाग देने पर शेप कुछ न बचे। अपवर्त्तक। (फैक्टर)

गुणवाची—वि०[स०] (भाव या शब्द) जो किसी मूर्त पदार्थ के गुण, विशेपता आदि का वाचक या बोधक हो। (ऐब्सट्रैक्ट) जैसे—सौन्दर्य गुणवाची तत्त्व हे।

गुण-वृक्षक—पु०[स०] जहाज या वडी नाव का मस्तूल, जिसमे गून की रस्सी बाँधकर खीचते हुए आगे से चलते हैं।

गुणावतार—पु०[स०] वह अवतार, जिसमे ब्रह्म-पुरुप प्रकृति के गुणो को अपना आधार या श्री-विग्रह बनाकर आविर्भूत होता है। इसी आधार पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनो गुणावतार कहलाते है, क्योकि ये प्रकृति के एक-एक गुण के श्री-विग्रह है।

गुद्दी†—स्त्री० २ मुँह के अन्दर गले का वह निचला भाग, जिससे जवान का भीतरी सिरा सटा रहता है। जैसे—वहुत वढ-वढ कर वातें करोगे तो गुद्दी मे से जवान खीच लूँगा।

गुनाना—स०[हिं० गुनना का स०] किसी को गुणो से युक्त करना। जैसे—लडके को पढाना-गुनाना।

गुप्त-गल—वि०[स०] (व्यक्ति) जो कुछ खा या पचा तो जाय, पर दूसरो पर जल्दी प्रकट न होने दे।

गुप्त-चर्या—स्त्री०[स०] गुप्तचरो का काम। गुप्त रूप से विदेशियों, विपक्षियो आदि की क्रिया-प्रक्रियाओ का पता लगाने का काम। (एस्पायनेज)

गुप्तरोमश—पु० [स०] ऐसा पुरुप, जिसके दाढी-मूँछ के वाल न हो या अपेक्षया वहुत कम हो। मुकुन्दा।

गुफा-मदिर—पु० दे० 'दरी-मदिर'।

गुरु ग्रंथ साहव—पुं०[हिं०] गुरु नानक के पद्यात्मक उपदेशो और वचनो का सग्रह, जिसे सिक्ख लोग अपना धर्म-ग्रथ मानते है। इसे 'आदि-ग्रथ' भी कहते है।

गुरु-जल—पु० [स०] एक प्रकार का रासायनिक तरल पदार्थ, जिसका उपयोग परमाणुओ का विस्फोट करने मे होता है। भारी पानी। (हैवी वाटर)

गुरु-मंडल—पु०[स०] भू-गर्भ शास्त्र मे पृथ्वी के तीन मुख्य पटलो मे बीच का पटल, जो अनेक प्रकार की धातु-मिश्रित चटानो का बना हुआ बहुत गरम और ठोस है और जिसके ऊपरी पटल पर मनुष्य बसते और वनस्पतियाँ उगती हैं। (वैरिस्फियर)

गुलमटा†—पु०[स्त्री० गुलमटी] हिन्दी गुलाम शब्द का उपेक्षात्मक और तुच्छतासूचक रूप।

गुह्य-साधना—स्त्री०[स०] ऐसी तात्रिक साधना, जिसे गुप्त रूप से या सबसे छिपाकर करना आवश्यक तथा विहित हो और जिसके प्रकट होने पर साधना नष्ट हो जाती हो। (ऐसी साधना हिन्दुओ के सिवा जैनो और बौद्धो में भी प्रचलित थी।)

गूढ-भाव—वि०[स०] [स्त्री० गूढ-भावा] अपने मन का भाव छिपाकर रखनेवाला।

गृहिणी—स्त्री० ३. बौद्ध तात्रिको मे, महामुद्रा (नैरात्मा प्रज्ञा) जिनके सबध मे कहा गया है कि इसे गृहिणी अर्थात् पत्नी के रूप मे ग्रहण करना चाहिए।

गृहोपवन—पु०[स०] घर के अन्दर या आस-पास लगा हुआ बगीचा।

गेय नाटक—पु०[स०]=सागीत। (आपेरा)

गैतल—पु०=गायताल।

गैसीय—वि०[अ० गैस से] १ गैस सबधी। गैस का। २ जिसमे गैस हो। गैस से युक्त। (गैसिअस)

गोट—स्त्री० २. ढोल, तवले आदि पर मढे हुए चमडे के चारो ओर मढा हुआ गोलाकार दूसरा चमडा जो प्राय. दो-तीन अगुल चौडा होता है और जो देखने मे कपडे पर लगी हुई गोट के समान जान पडता है।

गोटियाचाली—स्त्री०[हिं० गोटियाचाल] गोटियाचाल चलने की क्रिया या भाव।

गोदी—स्त्री० २ वदरगाहो मे वह घेरा हुआ स्थान, जहाँ यात्रा के मध्य मे जहाज कुछ समय के लिए ठहर या रुककर रसद-पानी लेते और यत्रो आदि की छोटी-मोटी मरम्मत करते है।

गोपानसी—स्त्री०[सं०] खिडकी का ऊपरी भाग या सिरा।

गोरिल्ला—पु० २ आधुनिक युद्ध मे, ऐसी अनियमित सैनिक टुकडी का सदस्य, जिसका काम लुक-छिप कर शत्रु को रसद पहुँचानेवाले दस्तो पर छापा मारकर उन्हे लूटना-मारना होता है। छापामार।

गोला-बारूद—पु०[हिं०] वदूको से चलाई जानेवाली गोलियाँ, तोपो से चलाये जानेवाले गोले और उन्हे चलाने के लिए काम आनेवाली बारूद आदि सामग्री। (एम्युनिशन)

गोष्ठी-कक्ष—पु०[स०] आज-कल विधान-सभाओ आदि मे वह कक्ष या कमरा, जिसमे सदस्य लोग अवकाश के समय बैठकर आपस मे वात-चीत करते है। उपातिका। (लॉबी)

गो-स्तन—पु०[स०] १ गौ का थन। २ लकडी का वह छोटा टुकडा, जो ऊपर से थोडा नीचे गिरकर अन्दर से दरवाजा वन्द कर लेता है। विलैया।

गौण चांद्रमास—पु०[स०] चाद्रमास के दो भेदो मे से एक, जो चाद्रमास की कृष्ण प्रतिपदा से आरभ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है। इसी

को 'पूर्णिमांत मास' भी कहते है। (दूसरा भेद 'मुख्य चांद्रमास' या 'अमांत' कहलाता है।

गौणी भक्ति—स्त्री०[सं०] देवपूजन, नाम-कीर्तन, भजन आदि के रूप में की जानेवाली भक्ति, जो परा भक्ति की पहली सीढी होने के कारण गौण या कम महत्त्व की कही गई है।

गौणी लक्षणा—स्त्री०[सं०] साहित्य मे सारोपा तथा साध्यवसाना लक्षणाओ का एक प्रकार या भेद, जो उस दशा मे माना जाता है, जब दो विभिन्न प्रकार के पदार्थों मे बहुत अधिक सादृश्य होने पर उनका अन्तर स्पष्ट नही होने पाता।

गौरव-गीति—स्त्री०=प्रशस्ति गीति।

ग्रंथि—स्त्री० मनोग्रंथि का वह संक्षिप्त रूप, जो उसे यौ० पदो के अन्त मे लगने पर प्राप्त होता है। (कॉम्प्लेक्स) जैसे—दलित-ग्रंथि।

ग्रंथी—पु०[सं० ग्रंथ+हिं० ई (प्रत्य०)] सिक्ख गुरुद्वारो मे वह मत, जो ग्रंथ साहब का पाठ लोगो को सुनाता है और पौरोहित्य करता है।

ग्रह-पार—पु०[सं०] आकाशस्थ ग्रहो, नक्षत्रो आदि की नियमित और नियत ग्रंथि।

ग्राम—पु०[अं०] दशमिक प्रणाली मे तौल की एक आधारिक इकाई जो ३/२८ आउन्स के बराबर होती है।

ग्राम्य-राग—पु०[सं०] संगीत मे, रागो का देशी नामक प्रकार या भेद। (दे० 'देशी' के अन्तर्गत)

ग्राम्यवाद—पु०[सं०] [वि० कर्ता ग्राम्यवादी] आधुनिक साम्यवाद का वह मतवाद कि गाँवो मे खेती-बारी के योग्य जितनी भूमि हो, वह सभी खेतिहरो मे बराबर-बराबर बँटी हुई होनी चाहिए। (अग्रेरियनिज्म)

ग्लिसरीन—पु०[अं०] एक प्रकार का गाढा मोटा तरल पदार्थ, जो कुछ पशुओ की चरबी या तेल से बनाया जाता है।

घट वादक—पु०[सं०] वह जो घटवाद्य बजाता हो।

घटवाद्य—पु०[सं०] वह घडा, जो उलटकर जमीन पर रखा और तबले की तरह बजाया जाता है।

घटाव—पु० ५ घटाकर कम करने की क्रिया या भाव। अवकरण। (रिडक्शन)

घन—वि० २ (कलन या गणित) लंबाई, चौडाई और मोटाई, तीनो के गुणन-फल का सूचक। (क्यूब)

घन-वाद—पु०[सं०] चित्र-कला की एक आधुनिक शैली, जिसमे भग्न रेखाओ के स्थानों पर कोणिक रेखाओ का उपयोग करके आकृतियो को बहुत घन का रूप दिया जाता है। (क्यूबिज्म)

घनवादी—वि०[सं०] घनवाद संबंधी। घनवाद का। ३ घनवाद का अनुयायी या समर्थक।

घनालक—वि०[सं० घन+अलक] [स्त्री० घनालिका] घने बालोवाला।

घर-घुस्सू—पु०=घर-घुसना।

घरैत—पु०[हिं० घर+ऐत (प्रत्य०)] [स्त्री० घरैतिन] [भाव० घरैती] १ वह जो किसी ऐसे घर का मालिक हो, जिसमे किरायेदार भी रहते हो। हिं० 'भडैत' का विपर्याय। २ वह जो किसी घर या परिवार मे सबसे बडा और उसका मालिक हो। गृह-स्वामी। ३ पत्नी की दृष्टि से उसके पति का वाचक या संबोधक शब्द।

घरैती†—स्त्री०[हिं० घरैत+ई (प्रत्य०)] घरैत होने की अवस्था, धर्म या भाव।
†पु०=घरैत।

घाटी—पु० [हिं० घाट] महाराष्ट्र मे ऐसा व्यक्ति, जो पूर्वी समुद्र-तट अर्थात् मद्रास की ओर का रहनेवाला हो।

घात—पु० ५ वह स्थान या स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति, किसी पर शारीरिक आघात या प्रहार करने के लिए छिपकर और ताक लगाये बैठा रहता है। (ऐम्बुश)

घिनियाना†—अ० [हिं० घिन=घृणा] घृणा करना।

घुडच—स्त्री०[हिं० घोडी] वीणा, सितार आदि की तूँबी पर रखा जानेवाला हड्डी, हाथी दाँत आदि का वह पहला टुकडा, जिस पर बैठा कर उसके तार ऊपर से नीचे तक बाँधे जाते है।

घुस-पैठिया—पु० [हिं० घुसपैठ+इया (प्रत्य०)] वह जो उत्पात, उपद्रव आदि के उद्देश्य से किसी दूसरे के क्षेत्र मे लुक-छिपकर या बलपूर्वक प्रवेश करता हो। (इन्ट्रूडर)

घुस-पैंठी—पु०=घुसपैठिया।

घोडा-चढी—स्त्री०[हिं० घोडा+चढना] घोडे पर चढकर देहातो मे घूम-फिरकर नाचने-गाने का पेशा करनेवाली निम्न कोटि की वेश्या। ('डेरेदार' से भिन्न)

चंचलातिशयोक्ति—स्त्री०[सं०] साहित्य मे, अतिशयोक्ति अलंकार का एक प्रकार या भेद, जिसमे कारण के उल्लेख मात्र से कार्य का ज्ञान होता है। इसी लिए इसकी गणना कारणातिशयोक्ति के अंतर्गत होती है।

चंटई—स्त्री० [हिं० चंट+ई० (प्रत्य०)] बहुत अधिक चालाकी या धूर्तता। चंटपन।

चंटपन—पु०=चंटई।

चंडाग्नि—स्त्री०[सं०] वज्रयानी बौद्ध तांत्रिको के अनुसार शरीर के अंदर की एक विशिष्ट अग्नि, जिसे प्रज्वलित करने पर सब प्रकार के क्लेश और वासनाएँ जलकर भस्म हो जाती है।

विशेष—कहा गया है कि पवन-निरोध (साँस रोकने) के उपरान्त नौ इन्द्रिय-द्वारो को बंद करके जब दसवाँ द्वार (ब्रह्म-रन्ध्र या वैरोचन द्वार) खुला रखा जाता है, तब यह अग्नि प्रज्वलित होती है।

चंडालिका—स्त्री० ४ सोलह वर्ष की कुमारी युवती।

चंदायनी—स्त्री०[हिं० चंदा=व्यक्ति वाचक संज्ञा] उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ आदि मे प्रचलित एक प्रकार की गीत-कथा।

चंद्र-शिला—स्त्री०[सं०] भारतीय स्थापत्य मे पत्थर का वह अर्धचंद्राकार टुकडा, जो प्राय सीढियो मे नीचे की ओर शोभा के लिए लगाया जाता था और जिस पर कमल आदि की आकृतियाँ उत्कीर्ण होती थी। (मून-स्टोन)

चंद्र-सखी—स्त्री०[सं०] १ भक्ति की कृष्णाश्रयी शाखा की एक लोकगायिका जिसके गीत मालवे, राजस्थान और ब्रज मे बहुत प्रचलित है। २ उक्त गायिका के बनाये हुए अथवा उनके अनुकरण पर बने हुए एक प्रकार के लोक-गीत।

चंपी—स्त्री० [हिं० चाँपना] १ किसी के थके हुए अंग को विश्राम देने के लिए उसे बार-बार हाथो से दबाना। जैसे—किसी के सिर मे चंपी करना।

चंपीवाला—पु० [हिं०] वह जो दूसरो के सिर मे तेल लगाने और शरीर के अगो मे चपी करने का पेशा करता हो।

चकमा—पु० २. सनसनी फैलानेवाला कोई ऐसा कार्य, जो किसी दुष्ट उद्देश्य से लोगों का ध्यान किसी अवास्तविक या झूठी बात की ओर आकृष्ट किया जाय। (स्टन्ट)

चक्रवातीय वर्षा—स्त्री० [स०] चक्रवातो के साथ होनेवाली वर्षा, जो प्राय धीमी होती है, घनघोर झडी के रूप मे नही होती। इसमे पानी की बौछार भी चक्कर-सा काटती रहती है। (साइक्लोनिक रेन)

चक्र-साधना—स्त्री०[स०] वाममार्गियो की वह सामूहिक उपासना या पूजा, जिसमे स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर मद्य, मास आदि का सेवन करते हुए अनेक प्रकार के तात्रिक अनुष्ठान और प्रयोग करते है।

चक्षु-विज्ञान—पु०[स०] दे० 'नेत्र-विज्ञान'।

चखा—वि० [हिं० चख-चख] [स्त्री० चखी] व्यर्थ की बकवाद करनेवाला और तुच्छ या हीन। (उपेक्षा-सूचक) चल चखी, दूर हो, परे भी हट।—इन्शा।

चघड़पन—पु०[हिं० चघड+पन (प्रत्य०)] चालाकी। धूर्तता।

चघड़ाई†—स्त्री०=चघडपन।

चद्दर—स्त्री०[हिं० चौ=चार+दर] वह घोडागाडी, जिसमे चार-चार घोडो की चार कतारें जुती रहती थी। उदा०—उस छकडी के सिवा चद्दर नाम की एक गाडी मे चार-चार घोडो की चार कतारों मे सोलह घोडे जोते जाते थे।—सेठ गोविन्ददास।

चपती—स्त्री० २ लकडी की वह पट्टी, जो प्राय शरीर की कोई हड्डी टूटने पर उसके ऊपर इसलिए बाँधी जाती है कि अग एक ही अवस्था मे रहे, इधर-उधर हिलने न पाये। (स्प्लिन्ट)

चपलातिशयोक्ति—स्त्री०=चचलातिशयोक्ति।

चमार-सियार—पु०[हिं०] बहुत ही छोटी और अस्पृश्य मानी जानेवाली जातियों के लोग।

चयापचयन—पु०[स०] विपचन।

चरई—वि० विचरण करने अर्थात् चलने या घूमने-फिरनेवाला।

चरक—पु० ८ प्राचीन भारत मे वे विद्वान्, जो घूम-घूमकर सब जगह ज्ञान और विद्या का अध्ययन तथा प्रचार करते थे।

चरकट—पु०[हिं० चारा+काटना] १ वह जो चौपायो के लिए जगल से चारा काट कर लाता हो। २ बहुत ही निकृष्ट कोटि का आदमी।

चरखा—पु० १४ सन्त साहित्य मे, मनुष्य का यह शरीर। उदा०—जी चरखा जरि जाय, बढै या न मरै।—कबीर।

चरण—पु० २०. निर्माण, परिवर्तन, विराम आदि की क्रियाओ का कोई ऐसा विशिष्ट अग या अश, जो किसी निश्चित समय के अन्दर पूरा होता हो अथवा जिसमें किसी कार्य-विभाग की समाप्ति होती हो। (स्टेज) जैसे—इस्पात के इस कारखाने का दूसरा चरण अब समाप्ति पर आ चला है।

चरमावस्था—स्त्री०[स० चरम+अवस्था] १ घटनाओ, विचारो आदि के क्रम या शृखला मे सब के अत की या सबमे आगे बढी हुई अवस्था, जिसके उपरान्त पतन या ह्रास का आरम्भ होता है। (क्लाइमैक्स)

चरित-काव्य—पु०[स०] तात्त्विक दृष्टि से प्रबध-काव्य का एक प्रकार या रूप, जिसमें कथा-काव्य और इतिवृत्त की भी अनेक बातें होती और जिसमे मुख्य रूप से किसी महापुरुष या वीर पुरुष का चरित्र वर्णित होता है। जैसे—दशकुमार-चरित, बुद्ध-चरित, हर्ष-चरित आदि।

चर्या-पद—पु०[स०] वे पद या गीत, जो बौद्ध तात्रिक लोग चर्या के समय गाते थे।

चल—वि० ५ जो एक ही स्थान पर या एक ही स्थिति मे स्थिर न रहता हो, बल्कि प्राय. इधर-उधर हटता-बढता रहता हो। (फ्लोटिंग) जैसे—चल-द्वीप। ५ जो एक स्थान पर ठहरा न रहता हो, बल्कि आवश्यकता पडने पर सभी जगह आ-जा सकता हो। (फ्लाइग) जैसे—सैनिको का चल-दस्ता। ७ (धन) जो स्थायी रूप से किसी काम मे न लगा हो, बल्कि कभी एक और कभी दूसरे काम मे लगता रहता हो। (फ्लोटिंग) जैसे—चल-पूँजी।

चल-द्वीप—पु०[स०] कुछ विशिष्ट जलाशयो मे होनेवाले वे छोटे भू-भाग, जो पानी पर तैरते है। (फ्लोटिंग आइलैंड)

चल-यंत्र—पु०[स०] गाडी आदि पर रखा हुआ ऐसा यत्र, जो आवश्यकतानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ-जा सकता हो। (मोबाइल-प्लान्ट)

चलवासी—पु० [स०] खानाबदोश। यायावर। (नोमैड)

चलाक्ष—वि०[स०] [स्त्री० चलाक्षी] चचल नेत्रोवाला।

चलावा—पु० ४ चलाने की क्रिया, ढग या भाव।

चलिष्णु—वि०[स०] [भाव० चलिष्णुता] जो चलता अर्थात् अपने स्थान से आगे-पीछे या इधर-उधर हटता-बढता हो। (मोबाइल)

चहका†—पु०[हिं० चहकना] १ चहकने की क्रिया या भाव। २ पूर्वी उत्तर प्रदेश मे होली के अवसर पर गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत।

†पु=चहला (कीचड)।

चांडाली—स्त्री० ४ बौद्ध तत्र-शास्त्र मे सुषुम्ना नाडी का एक नाम।

चाद्र—वि० २. जो गणना मे चंद्रमा के उदय और अस्त के आधार पर होता हो। (ल्यूनर) जैसे—चाद्र मास, चाद्र-वर्ष। ३ दे० 'सौमिक'।

चाद्र सावन मास—पु० दे० 'सावन मास' के अतर्गत।

चाँपा कल—स्त्री० [हिं० चाँपना=दबाना+कल] कोई ऐसी कल या यत्र, जिसे चलाने के लिए ऐसा मुट्ठा लगा हो, जो हाथ से बार-बार दबाना पडता हो। जैसे—कुऐं या जमीन से पानी निकालने की चाँपा-कल।

चाक्रिक—वि० ४ जो चक्र या चक्कर के रूप मे चलता हो। चक्कर लगानेवाला। (सर्क्यूलेटरी) जैसे—शरीर मे रुधिर प्रवाह का चाक्रिक रूप।

चामुंडी—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

चाय—स्त्री० ४ कुछ विशिष्ट पदार्थो का एक प्रकार से तैयार किया हुआ पेय। जैसे—अदरक की चाय, तुलसी की चाय।

चाय-बगान—पु०[हिं० चाय+फा० बाग] वह क्षेत्र जहाँ चाय की खेती होती है, और चाय की पत्तियाँ सुखाकर तैयार की जाती हैं।

चार सौ बीस—पु० [हिं०] १ किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करने के लिए चालाकी या धूर्तता से भरा हुआ कोई ऐसा काम करना, जिससे किसी की कोई आर्थिक हानि हो अथवा उसे मानसिक या शारीरिक कष्ट पहुँचे अथवा उसके मान-सम्मान मे किसी प्रकार ह्रास हो। २ उक्त

प्रकार की चालाकी या धूर्तता करके अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाला व्यक्ति।

विशेष—भारतीय दड विधान की ४२० वी धारा के अनुसार उक्त प्रकार के काम करना दंडनीय अपराध माना गया है, और उसी के आधार पर इधर कुछ दिनों से उक्त पद ऊपर लिखे अर्थो मे प्रयुक्त होने लगा है।

चारिणी—वि०[हिं० चारण] १ चारण सबधी। चारण का। २ चारणो का सा। जैसे—कविता पढने का चारिणी ढग।

चारुक—वि०[स०] [स्त्री० चारुका] मनोहर। सुन्दर।

चारु-लीला—स्त्री०[सं०] स्त्रियो के सुन्दर नखरे या हाव-भाव।

चार्ट—पु०[स०] किसी बात या विषय के सबध मे कुछ विशिष्ट सूचना या जानकारी करानेवाला ऐसा नक्शा, जिसमे मुख्य मुख्य ज्ञातव्य बातो का क्रमिक उल्लेख या प्रदर्शन हो। जैसे—जहाजियो का चार्ट जिसमे समुद्र की गहराई, बीच मे पडनेवाली चट्टाने, आस-पास के मार्गो और स्थानो का पता चलता है।

चार्वाक—वि०[स० चारु-वाक्] जो अपना मत या विषय लोगो के सामने प्रभावशाली ढग से उपस्थित करने मे कुशल हो।

चालकता—स्त्री०[सं०] १ चालक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २ दे० 'सवाहकता'।

चालन—पु० ४ कौशलपूर्वक ऐसी क्रिया करना, जिससे कोई कार्य ठीक तरह से सम्पन्न या सिद्ध हो। (मैनिपुलेशन) जैसे—किसी यत्र का चालन।

चालमोगरा—पु०[हिं० चावल? +मोगरा] १ एक प्रकार का वृक्ष, जिसमे बडे बेर की तरह के फल होते है। २ उक्त वृक्ष के फल जिनका तेल कुष्ठ, वात रोग आदि मे बहुत उपकारी माना जाता है।

चिट-फुट—वि०=चुट-फुट।

चिकित्सा-विज्ञान—पु० [स०] विज्ञान की वह शाखा जिसमे रोगो को दूर करने के उपायो, तत्वो, सिद्धान्तो आदि का निरूपण होता है। आर्युविज्ञान। (मेडिकल साइन्स)

चिकित्सा-शास्त्र—पु० [स०]=चिकित्सा, विज्ञान।

चिकित्सीय—वि० [स०] १ चिकित्सा सबधी। चिकित्सा का। २ चिकित्सा के रूप मे होने अथवा चिकित्साशास्त्र से सबध रखने-वाला। (मेडिकल)

चित्त-ज्ञान—पु० [स०] दूसरे के मन की बात ताड, भाँप या समझ लेना।

चित्त-वृत्ति—स्त्री० २ चित्त की वह स्थिति, जो उसे किसी ओर प्रवृत्त करती हो। मन का झुकाव। (डिस्पोजीशन)

चित्तेश्वर—पु०[स०] कामदेव।

चित्र-लिपि—स्त्री० २ किसी उपन्यास या नाटक की कथा-वस्तु अथवा कहानी का वह रूप जो चल-चित्र के रूप मे दिखाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। (स्क्रीन-प्ले)

चित्राक्षर—पु०[स०] वर्णमाला के अक्षरो या वर्णो से भिन्न ऐसे विशिष्ट चिह्न या सकेत जो कोई भाव या विचार करने के लिए स्थिर किये जाते है। (आइडियोग्राम) जैसे—जोड का सूचक चिह्न+, गुणा का सूचक चिह्न ×, समानता का सूचक चिह्न=।

चित्राधार—पु०[स०] मोटे तथा सादे कागजो की वह पुस्तिका जिसमे लोग फोटो-चित्र टाँककर सुरक्षित रखते है। (एल्बम)

चित्रावली—स्त्री०[स०] १ चित्रों की पक्ति। २ एक ही क्रम या शृखला के अनेक चित्रों का वर्ग या समूह। ३ दे० 'चित्राधार'।

चित्रित—वि० ६. जिस पर कोई चित्र या आकृति अकित हो या बनी हो। (फिगर्ड)

चित्रीकरण—पुं० ४ किसी कहानी आदि को चित्रो का रूप देना। ५ किसी कहानी का फिल्मी चित्र बनाना। ६ दे० 'चित्रण'।

चिर-भोग—पुं०[स०] १ उचित या नियत समय के उपरान्त भी किसी वस्तु या विषय का भोग करते चलना। २ बहुत दिनो तक किसी सम्पत्ति का इस रूप मे भोग करना कि उस पर एक प्रकार का अधिकार या स्वत्व हो जाय। (प्रेस्क्रिप्शन)

चिरोडी—स्त्री०[?] खडिया की तरह का एक प्रकार का खनिज पदार्थ। (जिप्शम)

चींटी-खोर—पु०[हिं०+फा०] एक प्रकार का जतु, जिसका मुँह बहुत छोटा और पतला होता है और जो प्राय चीटियाँ या च्यूँटियाँ खाकर ही निर्वाह करता है। (ऐंट-ईटर)

चीड—पु० ३ एक प्रसिद्ध बडा पेड, जिसकी चिकनी और नरम लकडी इमारत, सन्दूक आदि बनाने के काम आती है। इस लकडी मे तेल का अश अधिक होता है, जो निकाला जाता और ताडपीन के तेल के नाम से बिकता है। गधफिरोजा इसी पेड का नाम है। इसका प्रयोग औषध, गधद्रव्य आदि के रूप मे होता है।

चीर-घर—पु०[हिं० चीरना+घर] अस्पतालो आदि का वह स्थान, जहाँ दुर्घटनाओ आदि से अथवा सदिग्ध अवस्था मे मरे हुए लोगों की लाशे चीरकर उनकी मृत्यु के वास्तविक कारण का पता लगाया जाता है।

चुभन—स्त्री० ३ मन मे चुभने या खटकनेवाली बात के कारण होनेवाला मानसिक कष्ट, कसक।

चूआँ—पु०[हिं० कूआँ का अनु०] १. पहाड़ी सोतो आदि के उद्गम के पास का वह गहरा गड्ढा, जिसमे पानी जमकर किसी ओर बढता है। २ नदियो आदि के रेतीले तट पर खोदा हुआ वह गड्ढा, जिसमे नीचे का पानी आकर भर जाता है।

चूना-पत्थर—पु०[हिं०] वह विशिष्ट प्रकार का पत्थर, जिसमे चूने का अश बहुत अधिक होता है और जिसे भट्ठी मे फूँकने पर चूना तैयार होता है। (लाइम-स्टोन)

चेर-पुत्र—पु०[स०] [स्त्री० चेर-पुत्री] दास की सतान।

चैकित्सिक—वि०[स०] चिकित्सा-सबधी। चिकित्सा का। (मेडिकल)

चैतन्य—पु० ८ ज्वालामुखी पर्वतो मे कभी कभी होनेवाला उद्गार।

चैत्य पुरुष—पु०[स०] अरविंद-दर्शन मे, हृदय मे स्थित वह दिव्य पुरुष जो अक्षय भगवत का अश है और जो प्रत्येक जन्म धारण करने पर बढता, बदलता और विकसित होता रहता है। यही प्रत्येक व्यक्ति का सच्चा स्वरूप और अतरात्मा का वैयक्तिक रूप है। हृत्पुरुष। (साइकिक बीइग)

चैत्य-सत्ता—स्त्री० १ क्रमिक विकास के द्वारा निर्मित होनेवाला चैत्य पुरुष का वैयक्तिक स्वरूप। चैत्य पुरुष। (दे०)

चैत्यीकरण—पु०[स०] अरविंद दर्शन में वह क्रिया, जिससे चैत्य पुरुष के प्रभाव से मनुष्य का मन, प्राण और शरीर चैत्यमय हो जाता है। (साइकिसाइजेशन)

चोरकचहरी—स्त्री०[हिं०] नवाबी शासन में वह विभाग, जो गुप्त रूप से चोरों, बदमाशों आदि के कुकर्मों का पता लगाता था। खुफिया जाँच का विभाग।

चोरीमार—पु०[हिं०] वह जो चोरीमारी करता हो। सरकार की चोरी से वर्जित माल बेचनेवाला व्यापारी। (स्मगलर)

चोरीमारी—स्त्री०[हिं०] चोरी, तट-कर आदि की नौकरियों की निगाह बचाकर और चोरी से बाहरी माल देश में लाकर बेचने की क्रिया। तस्कर-व्यापार। तस्करी। (स्मगलिंग)

चौक्ष—पु०[स०] एक प्राचीन भागवत सम्प्रदाय, जिसके अनुयायी एकायन कहलाते और छूआछूत का बहुत विचार करते थे।

चौक्षोपचार—पु० [स०] छूआछूत का ढोंग।

चोखलिया—पु०[स०] स्वामी नारायण सम्प्रदाय के अनुयायी, जो प्राय. गुजरात में पाये जाते और छूआछूत का बहुत विचार रखते हैं।

चौधराहट—स्त्री० [हिं० चौधरी+आहट (प्रत्य०)] १ चौधरी होने की अवस्था या भाव। २ चौधरी का काम या पद।

चौदहवीं—स्त्री० [हिं० चौदहवाँ] शुक्लपक्ष की पूर्णिमा तिथि। पूरनमासी।

पद—चौदहवीं का चाँद=(क) पूर्णिमा का चन्द्रमा। पूर्ण चन्द्र। (ख) बहुत ही सुन्दर व्यक्ति।

विशेष—मुसलमानों में महीने का आरम्भ शुक्ल पक्ष द्वितीया से माना गया है,इसी लिए उनकी पूर्णिमा चौदहवीं तारीख को पड़ती है। उसी आधार पर उक्त पद बना है।

चौ-धारा—वि०[हिं० चार+स० धारा] चार धारों वाला।

मुहा०—चौ-धारा बहाना=बहुत अधिक रोना।

चौपड़—स्त्री० ४ एक प्रकार का राजस्थानी लोक-गीत जो स्त्रियाँ प्राय. झूला झूलते समय गाती हैं।

चौरंगा—वि० २ जिसके चारों ओर मुख (द्वार या रास्ते) हों।

उदा०—सो किमि-जान्यो जाय,राह चौरंगी सोहै।—पुत्राकर द्विवेदी।

चौरंगी—स्त्री०[हिं० चौरगा] चौमुहानी। चौराहा।

च्युत-संस्कार—वि०[स०] [भाव० च्युत-सस्कारता] १ जो सस्कार से च्युत होने अथवा सस्कार के अभाव के कारण त्याज्य या दूषित माना जाता हो। २ (साहित्यिक रचना) जो व्याकरण सबधी दोषो से युक्त हो।

छँटाई—स्त्री० ३ पेड़-पौधो की फालतू या बढी हुई डालों को काट-छाँट कर अलग करने की क्रिया या भाव। (प्रूनिंग)

छंदतः—क्रि० वि०[स०] १ छल कपट से। २ स्वच्छन्दता से।

छंदकर—वि०[स०] [स्त्री० छदकरी] आज्ञाकारी।

छकड़ी—स्त्री० ३ वह गाडी, जिसमे छ घोडे जुते हो। उदा०—राष्ट्रपति की सवारी अब भी छकडी पर ही निकलती है।—सेठ गोविन्ददास।

स्त्री०[हिं० छ+कौडी] १ एक प्रकार का चौसर का खेल, जो छ कौडियो से खेला जाता है। २ एक प्रकार का जूआ जो छ कौडियो से खेला जाता है।

छक्का—पु० ६. गेंद बल्ले के खेल मे वह स्थिति, जब बल्ले से मारा हुआ गेंद बिना जमीन को छूए हुए खेल के मैदान की सीमा पार कर जाता है और जिसके फलस्वरूप बल्ला लगानेवाले खिलाड़ी की छ दौड़ें मानी जाती है।

क्रि० प्र०—मारना।—लगना।—लगाना।

छड़ा-छाँड़—वि०[हिं० छड़ा—छाँड़ना=छोड़ना] १. जो सबको छोड़कर बिलकुल अकेला हो गया हो। २. जिसके साथ कोई न हो। अकेला ३. जिसकी स्त्री, बच्चे, आदि न हों।

छतरी सैनिक—पु० [हिं० छतरी+स० सैनिक] आधुनिक युद्ध में वे सैनिक जो वायुयानो से छतरी के सहारे शत्रु देशों में युद्ध करने के लिए उतारे जाते हैं। (पैराट्रूपर)

छत्तीस—वि० २. जो औरों की तुलना मे अच्छा या बढ़कर हो। (बाजारू) जैसे—यह माल उनसे छत्तीस पड़ता है।

छद्मावरण—पु०[स० छद्म+आवरण] १. वास्तविक बात का रूप छिपाने के लिए ऊपर से कोई ऐसा रूप देना जिससे देखनेवाले धोखे में पड़ जायँ। २ युद्ध-क्षेत्र में, अपनी तोपों, मोर्चों आदि को शत्रु की दृष्टि से बचाने के लिए वृक्षों की डालियों, पत्तियों आदि से ढकना। (कैमोफ्लेज)

छनाव—पु०[हिं० छनना या छानना] छनने या छानने की क्रिया या भाव।

छल्लक—स्त्री०[हिं० छतल्ला] गणित में, योग-सूचक चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है— +। (क्रासक)

छल्ला—पु० ५ किसी कोमल और लचीले पदार्थ का बना हुआ एक प्रकार का आधुनिक गोल और छोटा उपकरण,जो स्त्रियों के गर्भाशय के मुख पर इसलिए बैठा दिया जाता है कि गर्भाधान की क्रिया न होने पावे। (लूप)

विशेष—गर्भधारण की कामना होने पर यह निकालकर अलग भी किया जा सकता है।

छाँवरा—पु० [?] मछलियो के बच्चो का समूह। झोल।

छापामार—पु० [हिं०] सैनिकों की वह टुकड़ी या दल,जो शत्रुओ पर छापा मारने अर्थात् अचानक आक्रमण करने की कला में प्रवीण हो, और उसी काम पर नियुक्त हो। (गोरिल्ला)

छापामार लड़ाई—स्त्री०[हिं०] वह लड़ाई, जो छापामार सैनिको की सहायता से लडी जाती है। (गैरिल्ला वारफेयर)

छाया-चित्र—पु० ३.किसी वस्तु या व्यक्ति की वह आकृति, जो किसी प्रकाशमान तल पर उसकी छाया पड़ने पर चित्र के रूप में बनती है। (शैडो-ग्राफ)

छाया-पुरुष—पु० २ किसी व्यक्ति या शरीर की ऐसी आकृति,जो केवल कल्पना या भ्रमवश आँखो के सामने उपस्थित होती हो, परन्तु जिसकी कोई वास्तविक सत्ता या स्थिति न हो। (फैन्टम)

छिद्र-द्वार—पु०[स०] चोर दरवाजा।

छिद्रल—वि०[स०] १ जिसमे छेद हो। छेद या छेदों से युक्त। २ (शरीर या वानस्पतिक तल) जिसमे ऐसे बहुत-से छोटे-छोटे छेद हों, जिनके द्वारा तरल पदार्थ अदर जा और बाहर निकल सकते हो। (पोरस)

छिद्रलता—स्त्री०[स०] छिद्रल होने की अवस्था, गुण या भाव। (पोरोसिटी)

छिपा रुस्तम—पु०[हिं०+फा०] वह जो वास्तव मे किसी काम या वात मे वहुत वढा-चढा हो, पर साधारणत. लोग जिसकी वास्तविक स्थिति से परिचित न हों।

छिपाव—पु० २. किसी से कोई काम, चीज या वात छिपाने की क्रिया। जैसे—दुराव-छिपाव की बातें मुझसे न किया करो।

छींटाकशी—स्त्री० दे० 'आवाजाकशी'।

छुटापा†—पु० [हिं० छोटा+आपा (प्रत्य०)] १. छोटे होने की अवस्था या भाव। छुटपन। २ वाल्यावस्था। लडकपन। ('वुढापा' के अनुकरण पर) उदा०—भाड मे जाय यह छुटापा।—अजीमवेग चगताई।

छूना—स० ७ किसी के साथ कोई ऐसा काम, वात या व्यवहार करना जिससे उसको कुछ कष्ट हो। उदा०—छुआ हे कुछ न छेड़ा है, किसी ने अव तलक उनको।—इन्शा।

छड़े-छाँड़—क्रि० वि० [हिं० छडा-छाँड] विना किसी को साथ लिये। अकेले।

जंगल का कानून—पद। ऐसी राजनीतिक या सामाजिक स्थिति, जिसमे लोग न्याय-अन्याय आदि का ध्यान छोडकर जगली पशुओं की तरह आचरण और व्यवहार करते हो और केवल अपने वल के भरोसे ही स्वार्थ सिद्ध करते हो। (लॉ ऑफ जगल)

जंगल में मंगल—पद सूने स्थान मे होनेवाला मगल।

जंघाकर—पु०[सं०] वह दूत जो सदेश देकर दौडाया जाता था। धावन। हरकारा।

जंजीरा—पु० ३. भारतीय वही-खाते मे जोड लगाने की एक रीति, जिसमे रुपए, आने, पैसे आदि सव एक साथ जोड दिये जाते हैं।

जंती—पु०[स० यत्र] वह जो यत्रो से युक्त हो अर्थात् शरीर। उदा०—जस जती महि जीउ समाना।—कवीर।

जंत्री—पु० २. समय को निश्चित भागो मे वाँटने की क्रिया।

जकड़—स्त्री० ३. ऐसी गाँठ या पेच, जिससे दो या कई चीजें एक दूसरी से जकड जायँ।

क्रि० प्र०—लगाना।

जखीरेदार—पु०[अ०+फा०] [भाव० जखीरेदारी] १. वह जिसके पास कोई जखीरा हो। जखीरे का मालिक। २ वह जो सस्ते दामो मे चीजें खरीदकर महँगे भाव पर वेचने के लिए उनका जखीरा या राशि अपने पास एकत्र करके रखता हो। जमाखोर। (होर्डर)

जगतानुबोध—पु०[स०] सतो या सिद्धो की परिभाषा मे, ससार के वास्तविक स्वरूप का ऐसा वोध, जिससे मन की भ्रान्ति नष्ट हो जाती है।

जच्चा—पु० [अ० जच्च] मुसलमानो मे, सोहर की तरह के वे गीत, जो पुत्र जन्म के समय गाये जाते है। (लोक मे इसके १०-१२ प्रकार या भेद मिलते हैं।)

जटामासी†—स्त्री०[हिं० जटना=ठगकर रुपए ले लेना] किसी को ठगकर या धोखा देकर उससे कुछ धन वसूल करने की क्रिया या भाव। (दलाल और दूकानदार)

जटाशंकर—पु०[स०] शिव। महादेव।

जटा-शंकरी—स्त्री०[स०] शकर की जटा मे रहनेवाली गंगा।

जड़-मति—पु०[स०] ऐसा व्यक्ति जिसे प्राय कुछ भी वुद्धि न हो, या वहुत ही थोडी और छोटे वच्चो की सी वुद्धि हो। (ईडियट)

जड़-वाद—पु० २ आज-कल अधिक प्रचलित अर्थ मे, यह सिद्धात कि धन-सपत्ति के भोग मे ही मनुष्य को आनन्द या सुख मिलता है, आत्म-चिंतन आदि व्यर्थ की वाते है। भौतिकवाद। (मेटीरिअलिज्म) ३ आज-कल कला और साहित्य के क्षेत्र मे, यह मत या सिद्धान्त कि सव काम जन-साधारण का ध्यान रखकर और उन्ही का महत्त्व स्थापित करने के उद्देश्य से होने चाहिए।

जड़वादी—पु० वह जो जडवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (मैटिरि-अलिस्ट)

जन-कवि—पु० [स०] ऐसा कवि या कवि-समुदाय, जिसकी कविता का विषय मुख्य रूप मे जनता के व्यापक जीवन से सवद्ध रहता हो। (ऐसी कविता की विषय-वस्तु व्यक्ति-निष्ठ भावनाएँ नही होती, और उसके कवि की दृष्टि अन्तर्मुखी नही होती, प्रत्युत वाह्यमुखी होती है।)

जन-गीत—पु०[स०]=लोक-गीत

जनता-जनार्दन—पु०[स०] देश की सारी जनता, जो ईश्वर का रूप मानी जाती है।

जननिक—वि०[स०] जनन अर्थात् सतान के प्रसव से सवध रखनेवाला। (जेनेटिव)

जननी मक्खी—स्त्री०=रानी मक्खी।

जन-मत—पु०[स०] दे० 'लोक-मत'।

जन-मत संग्रह—पु०[स०] आधुनिक राजनीति मे किसी विशिष्ट प्रदेश या स्थान के वयस्क निवासियो का वह मत, जो किसी प्रकार की सधि या सार्वराष्ट्रीय सस्था के निर्णय के अनुसार यह जानने के लिए लिया जाता है कि वे लोग किस अथवा किसके राज्य या शासन मे रहना चाहते है। (प्लेविसाइट)

जन-वध—पु०[स०]=जन-सहार।

जनवादी—वि०[स०] जनवाद-सवधी।

पु० वह जो जनवाद के सिद्धात मानता हो। जनवाद का अनुयायी।

जन-विद्या—स्त्री० [स०] विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस वात का विवेचन होता है कि जनन, मरण, विवाह आदि की सख्याओ का किसी देश की आवादी पर कितना और कैसा प्रभाव पडता है। जनाकिकी। (डेमोग्राफी)

जन-संहार—पु०[स०] किसी जाति या वर्ग को समाप्त करने के उद्देश्य से उसके व्यक्तियों की व्यवस्थित और सघटित रूप से की जानेवाली हत्या। (जेनोसाइड)

जनांकिकी—स्त्री०[स०]=जन-विद्या।

जना†—पु० [स० जन=व्यक्ति] [स्त्री० जनी] मनुष्य। व्यक्ति। जैसे—चार जने, दस जनियाँ।

जनी—स्त्री० [स० जनी से फा० जन] नव विवाहिता स्त्री। वधू। २ औरत। स्त्री। ३ जोरू। पत्नी।

जनेच्छा—स्त्री० [स० जन+इच्छा] जनता अर्थात् लोक या समाज की इच्छा।

जन्मपूर्व—वि०[स०]=प्राग्प्रसव। (दे०)

स्त्री० १. दूसरे देशो या स्थानो को भेजा जानेवाला माल। निर्यात। (एक्सपोर्ट) जैसे—अब तो यहाँ से चने की भी जावक होने लगी है। (पश्चिम) 'आवक' का विपर्याय। २ वह पजी या रजिस्टर जिसमे भेजी जानेवाली चिटिठयो और चीजो का व्योरा लिखा जाता है। (डिस्पैच रजिस्टर)

जिच—वि० जिसके पास किसी के तर्क का उत्तर न रह गया हो। निरुत्तर। जैसे—मेरी बात सुनकर वे जिच हो गये।

जित्ता—वि०[स्त्री० जित्ती]=जितना ।

जीप—स्त्री०[अ०] चार पहियोंवाली एक प्रकार की छोटी मोटरगाडी, जो ऊबड़-खावड जमीन मे भी अच्छी तरह चलती है।(इसका प्रचलन पहले-पहल अमेरिका ने दूसरे महायुद्ध के युद्धक्षेत्रो मे किया था।)

जीव-द्रव्य—पु०[स०]=जीव-धातु।

जीवन-संगी—वि०[स०] [स्त्री० जीवन-सगिनी] जो जीवन मे बराबर साथ रहता हो।

पु० स्त्री का पति।

जीवन-साथी—पु०[स०]=जीवन-सगी।

जीव-भौतिकी—स्त्री०[स०] भौतिकी या भौतिक विज्ञान की वह शाखा जो मुख्यत जीव-जन्तुओं और पेड-पौधो के विवेचन से सवद्ध है। (बायोफिजिक्स)

जीव-मंडल—पु०[स०] वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, जल, स्थल, और आकाश का उतना अश जिसमे कीडे-मकोडे, जीव-जतु, वनस्पतियाँ आदि रहती तथा होती हैं। (बायोस्फीयर)

जीव-रसायन—पु०[स०] रसायन-शास्त्र की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जीव-जतुओ और पेड-पौधो के अदर किस प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाएँ होती है और उन प्रक्रियाओं का उनके जीवन-क्रम पर क्या प्रभाव पडता है। (बायोकेमिस्ट्री)

जुग-बंदी—स्त्री०=जुगलबदी।

जुगलबदी—स्त्री०[हिं० जुगल+फा० बदी] सगीत मे एक ही वर्ग के दो बाजो का साथ-साथ बजाया जाना। जैसे—तबले और पखावज की जुगलबदी, बाँसुरी या सरोज अथवा सारगी की जुगलबदी। (ड्यूएट)

जुगोना†—स० [हिं० जुगत] बचा और सँभाल कर रखना। जैसे—उसने कुछ रुपए अपने पास जुगो रखे थे ।

जूतम-जाता—पु०=जूतम-जुत्ता।

जूतम-जुत्ता—पु०[हिं० जूता] आपस मे जूतो से होनेवाली मारपीट।

जूरी—स्त्री०[हिं० जुरना] १ घास, पत्तो आदि का एक बँधा हुआ छोटा पूला। जुही। जैसे—तमाकू की जूरी। २ सूरन आदि पौधों के नये कल्ले, जो बँधे हुए निकलते है। ३. एक प्रकार का पकवान, जो कई प्रकार के पत्तो को बेसन मे लपेटकर घी या तेल मे पकाया हुआ होता है । पतौडा। (पूरब) ४ काठियावाड़, गुजरात आदि की दलदल मे होनेवाला एक पौधा, जिसमे से क्षार निकाला जाता है।

पु०[अ० ज्युरी]=ज्यूरी।

जेट—पु०[अ०] एक प्रकार का हवाई जहाज, जो धूआँ और हवा बहुत तेजी से पीछे की ओर फेकता हुआ और उसी के वल से आगे बढता हुआ चलता है।

जेतो†—वि०[स्त्री० जेती]=जितना।

जैजात†—स्त्री०=जायदाद (सपत्ति)।

जैव विष—पु०[स०] अनेक प्रकार के कीटाणुओ के कारण उत्पन्न होनेवाला वह विष, जिससे शरीर मे अनेक प्रकार के रोग होते हैं। (टॉक्सिन)

जोर-जवरदस्ती—स्त्री०=बल-प्रयोग।

जौनपुरी—वि०[जौनपुर, उत्तर प्रदेश का एक नगर] जौनपुर नगर संबधी। जौनपुर का। जैसे—जौनपुरी खरबूजा।

ज्ञपन—पु०[स०][भू० कृ० ज्ञापित, ज्ञप्त] जानने की क्रिया या भाव।

ज्ञप्त—भू० कृ०[स०]=ज्ञपित।

ज्ञापन-पत्र—पु०[स०] १ किसी सस्था आदि के मुख्य-मुख्य नियमों आदि की पुस्तिका। २ वह पत्र या पुस्तिका, जिसमे किसी विषय की मुख्य बाते लोगो को जतलाने के उद्देश्य से लिखी गई हो। ३ वह पत्र या लेख, जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए स्मारक के रूप मे लिखा गया हो। जैसे—किसी सभा, मडली आदि के उद्देश्यो और व्यवस्था से सबध रखनेवाला पत्र या पुस्तिका। (मेमोरैण्डम)

ज्यूरी—पु०[अं०] १. विधिक क्षेत्र मे, जन-साधारण मे से चुने हुए वे लोग, जो कुछ विशिष्ट फौजदारी अभियोगो मे न्यायाधीश के साथ बैठकर गवाहियाँ आदि सुनते और न्यायालय को अभियुक्त के दोषी अथवा निर्दोष होने के सबध मे अपना मत देते हे। २ वे चुने हुए विशेषज्ञ लोग, जो खेलो आदि मे हार-जीत का निर्णय करते और विजयी के लिए पुरस्कार आदि का निर्णय करते हैं।

ज्वालामुख—पु०[स०] ज्वालामुखी पर्वत के शिखर पर का गड्ढा, जिसके पेंदेवाले विवर मे से ज्वाला और गले हुए पत्थर निकलकर ऊपर उठते है। (क्रेटर)

ज्वालामुख झील—स्त्री० [स० ज्वालामुख+झील] किसी मृत या चिर-शात ज्वालामुखी पर्वत के ऊपरी भाग या मुख मे बना हुआ वह जलाशय, जो वर्षा आदि का जल इकट्ठा होने से बनता है। (क्रेटर लेक)

ज्वालामुखी—वि०[स० ज्वालामुखिन्] १ जिसके मुख मे ज्वाला हो। २ जिसके मुख से ज्वाला निकलती हो। जैसे—ज्वालामुखी पर्वत।

झँझोड़ी—स्त्री०[हिं० झँझोडना] झँझोडने की क्रिया या भाव। जैसे—मैने उन्हे खूब झँझोडियाँ दी, अर्थात् खूब झँझोड़ा।

क्रि० प्र०—देना।

झटकई†—पु०[हिं० झटका] वह जो झटके की रीति से पशुओ का वध करके उनका मास बेचता या खाता हो।

झड़प—स्त्री० ३ परस्पर विरोधी सैनिको की टुकडियो मे अकस्मात सामना होने पर कुछ समय तक चलनेवाली छोटी-मोटी लडाई। (स्कर्मिश)

झडूस—पु०[हिं० झाड]१ जिस पर झाडू की मार पडती हो, या पडी हो २ बहुत ही घृणित और निकृष्ट। उदा०—आग लगे उस मुख झडूस की सूरत को।—शौकत थानवी।

झलकी—स्त्री० ३ किसी बडी घटना के सबध की विशेष महत्त्वपूर्ण या मुख्य बात या दृश्य का विवरण। (हाईलाइट) जैसे—काग्रेस अथवा ससद के अधिवेशन की झलकियाँ।

झाँकी—स्त्री० ७ किसी बडे कार्य या घटना का वह छोटा अनुकरणात्मक दृश्य, जो उसका रूप दिखलाने के लिए आकर्षक और सुन्दर

वहकर आई हुई मिट्टी और रेत के कारण छोटे-छोटे तिकोने भू-खड वन जाते हैं।

डोभ†—पु० [हिं० डुबाना] कपडों आदि की सिलाई में पड़नेवाला टाँका।

डोभरी—स्त्री० [देश०] वनस्पतियों आदि का अकुर।
†पु०=डोभ (सिलाई का टाँका)।

डोरीला—वि० [हिं० डोरा] [स्त्री० डोरीली] (नेत्र) जिसमे डोरे पडे हो। डोरेदार (आँख)। उदा०—वडी-वडी डोरीली करुण आँखें।—उग्र।

ढलवाँ लोहा—पु० दे० 'कच्चा लोहा'।

ढिक्कू†—पु० [?] भारतीय आदिवासियो की दृष्टि मे वे भारतीय जो उनकी तरह आदिवासी नही होते।

ढीली†—स्त्री० [हिं० ढीला] आधुनिक दिल्ली का पुराना नाम। (राज०)

ढुलमुल-यकीन—वि० [हिं०+अ०] भाव० ढुलमुल-यकीनी] जो विना सोचे-समझे सहज मे दूसरो की वातो पर विश्वास करके प्राय अपनी धारणाएँ वदलता रहता हो।

ढोरचोर—पुं० दे० 'गोरू-चोर'।

त

तंत्रिका—स्त्री० ३ प्राणियो के सारे शरीर मे जाल के रूप मे फैली हुई वहुत ही सूक्ष्म नसो मे से प्रत्येक नस। (नर्स)

तंत्रिका-तंत्र—पु० [सं०] शरीर के अदर की समस्त तंत्रिकाओ और उनकी कोशिकाओ तथा तंतुओ का सारा समूह, जिससे उनमे चेतना या ज्ञान के अतिरिक्त सव प्रकार की अनुभूतियाँ, क्रियाएँ तथा शारीरिक व्यवहार या व्यापार होते है। (नर्वस सिस्टम)

तंद्रा—स्त्री० ३ किसी जीव या तत्त्व की वह स्थिति, जिसमे उसकी सव क्रिआएँ और चेष्टाएँ कुछ समय तक विलकुल वद या स्थगित रहती हैं। प्रसुप्ति। (डॉर्मैन्सी)

तकनीक—पु० [अ० टेकनीक] वे सव विशिष्ट क्रियाएँ, जो कोई कार्य करने अथवा कोई वस्तु प्रस्तुत करने मे की जाती है। प्रविधि। (टेकनीक)

तकनीकी—वि० [अ० टेकनीक] तकनीक के रूप मे होने या उससे सवध रखने वाला। प्राविधिक। (टेकनिकल)

तट-कर—पु० [सं०] वह कर जो किसी राज्य की ओर से देश के आयात और निर्यात पर समुद्री वदरगाहो आदि पर लिया जाता है। (ड्यूटी)

तट-वध—पु० [स०] किसी नदी के किनारे कुछ दूर वनाया जानेवाला वह वाँध, जो वाढ से उस किनारे के खेतों, वस्तियो आदि की रक्षा करता हो। (एम्वैकमेन्ट)

तट-रक्षक—पु० [स०] उन कर्मचारियो का दल, जो सरकार की ओर से समुद्र-तट पर अवैध आयात रोकने, सकट मे पडे हुए जहाजो की सहायता करने आदि के लिए नियत रहता है। (कोस्ट गार्ड)

तड़ित-संवाहक—पु० [स०] दे० 'वज्र-धारक'।

तत्काल-गणक—पु० [स०]=सुलभ-गणक।

तत्त्व-मीमांसा—स्त्री० [स०] दर्शन-शास्त्र की वह शाखा, जिसमे परम तत्त्व अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति, वास्तविकता और सत्ता के स्वरूप का विवेचन होता है। (मेटाफीजिक्स)

तथाकथन—पुं० [स०] किसी प्रसग में दूसरे की कही हुई वात ज्यो की त्यो उद्धृत करना या कह सुनाना। (रिप्रोडक्शन)

तथ्य-वाद पद—पु० [स०] ऐसा वाद-पद या विचारणीय विषय, जिसका सवध तथ्यो अर्थात् वास्तविक घटनाओं से हो। विधि वाद पद से भिन्न। (इशू ऑफ फ़ैक्ट)

तदात्विक—वि० [स०] वीता हुआ। गत। 'आयतिक' का विपर्याय।

तदातम—वि० [स०] [भाव० तादात्म्य] जो आकार, रूप आदि मे किसी के ठीक अनुरूप या समान हो।

तद्रूपता—स्त्री० २ आकार, रूप आदि मे किसी के ठीक समान होने की अवस्था, गुण या भाव। तादात्म्य। (आइडेन्टिटी)

तनहारा—पु० [हिं० तानी+हारा (प्रत्य०)] जुलाहो मे वह कारीगर जो वुने जानेवाले कपडो के लिए तानी तैयार करता है।

तनाव—पु० ३ तनने या ताने जाने के फलस्वरूप पडनेवाला खिंचाव। (टेन्शन)

तनावर—वि० [फा०] वड़े डील-डौल वाला। जैसे—तनावर जवान, तनावर पेड।

तनु-कीर्ति—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

तन्मयता—स्त्री० २ वह मानसिक स्थिति, जो किसी विषय पर विलकुल एकाग्र भाव से अधिक समय तक चिंतन करते रहने से प्राप्त होती है और जिसमे उसकी अतश्चेतना तो वनी रहती है; परन्तु वाह्य जगत् की सुध-बुध प्राय नहीं रह जाती। किसी विषय मे होनेवाली मन की परम एकाग्रता या लीनता। (ट्रान्स) जैसे—जब वे ईश्वर के चिंतन या भजन मे पूर्ण रूप से लीन हो जाते थे, तब उनकी तन्मयता वहुत ही दर्शनीय और प्रभावोत्पादक होती थी।

तफ्तीश—स्त्री० [अ०]=तफतीश। जाँच-पडताल।

तवला-तरंग—पु० [हिं० +स०] ऐसे सात तवले (दुग्गियाँ या वाएँ नही) जो अलग-अलग स्वरो मे मिलाए हुए होते हैं और जिन पर वारी-वारी से आघात करके सगीतात्मक स्वर निकाले जाते हैं।

तमावरण—पु० [स० तम+आवरण] १ वह स्थिति, जिसमे शत्रुओ के आक्रमण, विशेषत हवाई आक्रमण से रक्षित रहने के लिए रोशनी या तो वुझा दी जाती है, या चारो ओर से इस प्रकार ढक ली जाती है कि उसका प्रकाश वाहर न फैलने पावे। २ लाक्षणिक रूप मे, वह स्थिति जिसमे कोई घटना या वात जानवूझकर इसलिए छिपाई जाती है कि वह चारो ओर फैलने न पाये। (व्लैक-आउट)

तरही—वि० [अ०] उर्दू कविता मे, तरह (पूर्ति के लिए स्थिर किया हुआ पद) से सवध रखनेवाला। जैसे—तरही मुशायरा=ऐसा मुशायरा, जिसमे पहले से स्थिर की हुई तरह पर गजलें पढी जाती हो।

तरीकात—स्त्री० [अ०] इस्लाम धर्म मे, विशेषत सूफी सम्प्रदाय मे, परमात्मा तक पहुँचने और धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए चार स्थितियों मे से दूसरी स्थिति, जिसमे साधक के लिए किसी को अपना गुरु या पीर वनाना पडना है।

विशेष—तीन स्थितियाँ शरीअत, मारफत और हकीकत कहलाती हैं।

तरौंदा—पु० [हिं० तरना+औदा (प्रत्य०)] विभिन्न आकार-प्रकार वाले वे पीपे, जो वाँधकर इसलिए समुद्र तल पर तैराये जाते हैं कि आने-जाने वाले जहाजो को मार्ग के सकटो और सुविधाओं की सूचना मिलती रहे। (व्वॉय)

तर्कनावाद—पु० [स०] आज-कल यह मत या सिद्धान्त कि धार्मिक आदि

विषयों मे वही बाते मानी जानी चाहिए, जो बुद्धि और युक्ति की दृष्टि से ठीक सिद्ध हो। (रैशनलिज्म)

तर्कनावादी—वि०[सं०] तर्कनावाद-संबंधी। तर्कनावाद का।
पु० वह जो तर्कनावाद का अनुयायी या पोषक हो। (रैशनलिस्ट)

तर्कबुद्धिवाद—पु०[सं०]=तर्कनावाद।

तल-घर—पु०[सं० तल+हिं० घर]१. जमीन के नीचे बनाया हुआ कोई कमरा या घर। तहखाना। २ समुद्री जहाजो मे नीचे की ओर बना हुआ वह कमरा, जिसमे इजन चलाने के लिए कोयला भरा रहता है। (बंकर)

तल-घात—पु०[सं०] करतलो के आघात से ध्वनि उत्पन्न करना। ताली बजाना।

तल-चौकी—स्त्री० [सं०+हिं०] युद्धक्षेत्र मे, जमीन के अन्दर की वह गहरी और बडी खाई, जिसमे सैनिक लोग कई-कई सप्ताह तक प्राय स्थायी रूप से रहते है। दमदमा। (बंकर)

तल-टीप—स्त्री०[सं०+हिं०] लेखो आदि के नीचे लगाई जानेवाली पाद-टिप्पणी। (फुटनोट)

तलेंडू—वि०[हिं०तले=नीचे] (बच्चा) जो किसी बच्चे के तले अर्थात् ठीक बाद मे जन्मा हो। उदा०—मुआ दरबान का लडका, तलेंडू मझले भाई था।—इन्शा।

तलोच्छेदन—पु० [सं० तल+उच्छेदन] [भू० कृ० तलोच्छेदित] किसी काम, चीज या बात के आधार या मूल पर ऐसा आघात या प्रहार करना, जिससे वह नष्ट-भ्रष्ट या निरर्थक हो सकता हो। (अंडर-माइनिंग)

तसदीक—स्त्री० ५ विधिक क्षेत्र मे, शपथपूर्वक या हस्ताक्षर करके यह प्रमाणित करना कि अमुक कथन या लेख ठीक और सत्य है। (एटे-स्टेशन)

तस्कर—वि०[सं०] जो राजकीय नियमो का उल्लघन करके चोरी से या छिपाकर किया जाता हो। जैसे—सोने का तस्कर व्यापार। २. (माल या सामान) जिसका आयात या निर्यात राज्य द्वारा वर्जित होने पर भी चुरा-छिपाकर लाया या ले जाया जानेवाला।

तस्कर व्यापार—पु० [सं०] सरकार की चोरी से किया जानेवाला ऐसी चीजो का व्यापार, जिन्हे देश मे बाहर से लाना निषिद्ध या वर्जित हो अथवा देश के एक भाग से दूसरे भाग मे लाने-ले जाने आदि की मनाही हो। चौकीमारी। (स्मगलिंग)

तस्कर व्यापारी—पु०[सं०] वह जो तस्कर-व्यापार करता हो। चौकी-मार। (स्मगलर)

तस्करी—स्त्री०[सं० तस्कर=हिं० ई (प्रत्य०)]१ चोर का काम। चोरी। २ आज-कल राज्य द्वारा निषिद्ध या वर्जित चीजे बाहर से लाकर देश मे बेचने की क्रिया या भाव। चौकीमारी। (स्मगलिंग)

तहतक—स्त्री०=तहतुक।

तहतुक—स्त्री० [अनु०] आपस मे होनेवाली साधारण कहा-सुनी या जबानी झगडा। तूतू-मैं मैं।

तहमद—स्त्री०=तहमत।

तांत्रिक मत—पु० [सं०] कोई ऐसा मत, जिसमे तंत्र-शास्त्र या तांत्रिक सिद्धांतों को ही लौकिक तथा पारलौकिक उद्देश्यों की प्राप्ति और सिद्धि का मूल साधन माना गया हो। दे० 'तंत्र'।
विशेष—इस मत का प्रारंभ ई० ६०० के लगभग भारत मे आरंभ हुआ था और कुछ ही शताब्दियों मे बौद्ध धर्म के द्वारा चीन, तिब्बत, बरमा, आदि दूर-दूर के देशो मे भी इसका बहुत कुछ प्रचार हो गया था। इसके अतर्गत अनेक प्रकार के मत-मतातर तथा शाखा-प्रशाखाएँ भी विकसित हुई थी। फिर भी इन सब मे मुख्य एकता यही थी कि तांत्रिक साधना मात्र को प्रधानता प्राप्त थी। इसमे बीज मंत्रों के जप, भूत-प्रेत आदि की साधना तथा हठयोग की अनेक क्रियाएँ भी सम्मिलित हो गई थी। पर अब धीरे-धीरे इसका प्रचार कम होता जा रहा है।

तांत्विक—वि०=तात्विक।

ताका—पु० [अ० ताक] कपडे का वह थान, जो दफ्ती पर दोनो ओर घुमाकर लपेटा हुआ हो। जैसे—मखमल का ताका, साटन का ताका।
विशेष—थान बनाने का यह प्रकार तख्ती तहवाले थान से अलग प्रकार का होता है।

ताड़—स्त्री०[हिं० ताड़ना] ताड़ने (अर्थात् दूर से देखकर जानने या भाँपने) की क्रिया या भाव। उदा०—हम से क्या उड़ सके कोई प्यारो। लाख ताड़ो मे अपनी ताड़ है एक।—इन्शा।

तात्कालिक—वि० ३. (काम) जिसे तत्काल या तुरत पूरा करना आवश्यक हो। तुरती। सत्वरक। (अर्जेन्ट)

तादात्म्य—पु०२ आकार, गुण, रूप आदि मे किसी के ठीक अनुरूप या समान होने की अवस्था, गुण या भाव। तद्रूपता। (आइडेन्टिटी)

तान पलटा—पु० [हिं०]संगीत मे वह स्थिति, जिसमे बडी या लबी तानें भी होती है, और कुछ विशिष्ट प्रकार से तानो के ऊँचे स्वरो से पलटकर नीचे स्वरो पर भी आते है।
क्रि० प्र०—लेना।

तानिका-शोथ—पु०[सं०]=मन्यास्तंभ।

ताप बिजली—स्त्री०[सं० ताप+हिं०बिजली] वह बिजली, जो आज-कल अल्प मात्रा मे रासायनिक पदार्थों के योग से बैटरियो के द्वारा और प्रचुर मात्रा मे बडे-बडे इजनो मे कोयला आदि जलाकर तैयार की जाती है। 'जल बिजली' या 'पन बिजली' से भिन्न। (थर्मल इलेक्ट्रिसिटी)

ताप-विद्युत्—स्त्री० [सं०]=ताप बिजली।

ताप-सह—वि०[सं०] (पदार्थ) जिसमे बहुत अधिक ताप सहने की असाधारण क्षमता हो। (हीट-प्रूफ)

तापावरोधक—पु०२ ताप का प्रभाव पडने पर भी चीजो को गलने से रोकनेवाला। गलन-रोधी। (रिफैक्टरी)

तापीय—वि० २ ताप के द्वारा उत्पन्न होनेवाला। (थर्मल)

ताम्रशिर—पु०[सं०] एक प्राचीन भारतीय जाति, जो किसी समय आधु-निक उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्रो मे बसती और प्राय ताँबे के अस्त्र-शस्त्रो का प्रयोग करती थी। (सभवत असुर, नाग और निषाद इसी की शाखाओ के रूप मे थे।)

तारकाभ—पु०[सं०]=क्षुद्र-ग्रह।

तार्किकीकरण—पु०[सं०] आधुनिक मनोविज्ञान मे, अपनी च्युतियो, त्रुटियो, दोषो आदि को उचित और तर्कसगत सिद्ध करने के लिए झूठ-मूठ व्यर्थ के और कारण ढूँढते फिरना और उनके आधार पर अपने

आपको निर्दोष सिद्ध करना। व्यर्थ के तर्कों और हेतुओं के आधार पर अपना दोष छिपाना। जैसे—नाचना न आने पर यह कहना कि यहाँ कि जमीन ही ऊँची-नीची या ऊबड़-खाबड़ है।

तालबद्ध—वि०[स०] (सगीत का वह अंग या रूप) जो ताल के नियमों से बँधा हुआ हो; और इसी लिए जिसके साथ तबला, मृदग आदि बाजे बजते हों।

ताल-मेल—पु०४ कामो, बातों आदि मे होनेवाली एक-सूत्रता या सामजस्य। समन्वय। (कोआर्डिनेशन)

तास-घड़ियाल—पु० [अ० तास=थाल+हिं० घडियाल] मध्ययुग मे, एक प्रकार का समय सूचक-यंत्र, जिसमे समयों पर घडियाल या घटा भी बजता था।

विशेष—कहते है कि इसका आविष्कार सुलतान फिरोजशाह ने थट्टा के युद्ध के बाद (सन् १३६२–१३६३ ई०) इसलिए किया था कि बादलो या रात के समय भी नमाज पढनेवालो को इस घडियाल या घटे का शब्द सुनकर यह पता चल जाय कि नमाज पढने का समय हो गया है। जायसी ने इसी को राज-घडियाल (देखें) कहा है।

तित्ता†—वि०[स्त्री० तित्ती]=उतना।

†वि०[स्त्री० तित्ती]=तीता (तिक्त)।

तिमाही—वि०[हिं० तीन+फा० माह=मास] हर तीसरे महीने होने-वाला। त्रैमासिक। (क्वार्टर्ली)

पु० किसी वर्ष के तीन महीनो का समूह। वर्ष का चौथाई भाग। (क्वार्टर)।

तिमिर-चित्र—पु० दे० 'छाया-चित्र'।

तिहाजू—पु०[हिं० दुहाजू का अनु०] वह पुरुष, जिसकी दो विवाहिता स्त्रियाँ मर चुकी हो और जो फिर तीसरी बार विवाह कर रहा हो अथवा जिसने तीसरा विवाह किया हो।

तीया†—पु० [हिं० तीन] १ मुसलमानो मे किसी की मृत्यु के बाद आनेवाला तीसरा दिन। तीजा। २ ताश मे तिड़ी नाम का पत्ता, जिस पर तीन बूटियाँ होती है। ३ ढोल, तबले आदि बजाने मे किसी बोल की तीन बार होनेवाली वह आवृत्ति, जिसकी समाप्ति सम पर होती है। तिहैया।

तुंगता—स्त्री०[स०] १ तुग होने की अवस्था, गुण या भाव। २. आज-कल मुख्य रूप से पृथ्वी-तल अथवा समुद्र-तल से सीधे ऊपर की ओर होने-वाली ऊँचाई। (ऐल्टीच्यूड) जैसे—वह स्थान ४००० फुट की तुगता पर स्थित है।

तुंगता-मापी—पु०[स० तुगतामापिन्] एक प्रकार का यत्र, जिससे पर्वतो अथवा उडते हुए वायुयानो पर चढे हुए लोग यह पता लगाते है कि हम इस समय पृथ्वी-तल से कितनी ऊँचाई पर हैं। (ऐल्टीमीटर)

तुरंती—वि० [हिं० तुरत] (आज्ञा या कार्य) जिसका पालन या सपादन तुरत अथवा तत्काल किया जाना आवश्यक हो। अत्यावश्यक। (अर्जेन्ट)

तुलन-पत्र—पु०[स०] व्यापारिक, सार्वजनिक सस्थाओ आदि के आय-व्यय का वह लेखा, जिसमे किसी निश्चित समय के अत तक का यह विवरण रहता है कि किन-किन मदों मे कितनी आय और कितना व्यय हुआ, तथा अन्त मे देने या पावने के खाते मे कितना धन शेष है। (बैलेन्स शीट)

तुल्यांक—पु०[स० तुल्य+अक] दो या अधिक वस्तुओं की मात्रा, मान आदि के परस्पर समान होने की अवस्था, गुण या भाव। (इक्विवेलेन्ट)

तुषार-दंश—पु०[स०] बहुत अधिक सरदी पडने पर और शरीर पर तुषार के कण लगने के कारण शरीर के किसी अंग मे होनेवाला क्षत या सूजन। हिम-दश। (फ्रॉस्ट-बाइट)

तूतमलंगा—पु०[?]१ एक प्रकार की वनस्पति। २. उक्त वनस्पति के बीज जो औषध के काम आते है।

तूफान—पु०४ आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्र मे वह वायु, जो ६५ से ७५ मील प्रति घटे की तेजी से चलती हो। (स्टॉर्म)

तेल-कूप—पु०[हिं० तेल+स० कूप] जमीन के अन्दर खुदा हुआ वह बहुत गहरा और बडा गड्ढा, जिसमे पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि खनिज तेल निकलते है। तैल-कूप। (ऑयल वेल)

तेल-पोत—पु०[हिं० तेल+स० पोत]=टकी जहाज।

तैल-कूप—पु०[स०]=तेल-कूप।

तोड़-फोड़—स्त्री० कोई ऐसा काम करना, जिससे उत्पादन, प्रबध शासन आदि मे बहुत गडबडी या बाधा हो। अतर्ध्वंस। (सैबोटेज)

तोप-गाड़ी—स्त्री०[हिं०] वह गाड़ी, जिस पर तोप रखकर युद्ध-क्षेत्र मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है। अगवा। (गन कैरेज)

तोप-वाहिनी—स्त्री०=तोप-गाड़ी।

तोलवाँ—वि०[हिं० तोल या तौल] जो इतना उपयुक्त और ठीक हो कि मानो तोल (या नाप) कर बनाया गया हो। जैसे—सभी लड़कियाँ तोलवाँ जोड़े पहने थी। (लखनऊ)

त्रिभाजन—पु०[स०] [भू० कृ० त्रिभाजित] तीन खडो या भागो मे बाँटना। तीन टुकडे करना।

त्रिविम—वि०[स० त्रि+विमा] तीन विमाओंवाला। जिसमे तीन विमाएँ हो। (थ्री डाइमेन्शनल)

त्वचार्ति—स्त्री० [स०] छूतवाले रोगो के सक्रमण के कारण शरीर की त्वचा मे होनेवाली जलन या प्रदाह।

त्वरित—भू० कृ०[स०] जिसकी चाल तेज की गई हो। (एक्सेलरेटेड)

क्रि० वि० जल्दी या तेजी से। शीघ्रतापूर्वक।

थाला—पु०३ वह सारा क्षेत्र, जिसमे किसी नदी और उसकी शाखाओं के जल से सिंचाई होती हो। द्रोणी। (बेसिन)

दतकारी—स्त्री०[स० दतकार+ई (प्रत्य०)] दतकार का काम, पद या भाव। दातकी। (डेन्टिस्ट्री)

दक्षतारोध—पु०[स०] (सरकारी या गैर सरकारी) नौकरी मे वेतन वृद्धि के मार्ग मे आनेवाली वह बाधा, जो आवश्यक योग्यता या निपुणता के अभाव से उत्पन्न होती है। (एफिशिएन्सी बार)

दड्डा†—पु०[?] छोटे नगरो मे होनेवाली वह सट्टेबाजी, जो बडे नगरो के सट्टेबाजो के अनुकरण और उन्ही के बाजार भाव के अनुसार होती है।

दद्दा†—पु०=दादा (बड़ा भाई)। (बुदेल०)

दफ्तरशाही—स्त्री०[फा०]=नौकरशाही।

दमदमा—पु० ३ युद्ध-क्षेत्र मे सैनिक रक्षा के लिए जमीन के नीचे खोदी हुई गहरी और लबी खाई, जिसमे सैनिक कई-कई सप्ताह तक स्थायी रूप से रहते है और जिसे आज-कल नल-चौकी कहते है। (बकर)

दर—स्त्री०[हिं०]३ वह नियत मात्रा, या मान जो किसी काम या बात

के अनुपात के विचार से निश्चित किया जाता हो। (रेट) जैसे—भत्ते या वेतन की दर योग्यता के अनुसार निश्चित होती है।

दरजाबंदी—स्त्री० [फा०] आदमियों, चीजों आदि को अलग-अलग दर्जों में बाँटने की क्रिया या भाव। अनुपातन। श्रेणीकरण। (ग्रेडिंग)

दरजे—अव्य०[फा० दर्ज.] अवस्था या दशा में। उदा०—एक दरजे मर्द को घर में बुला ले, पर ऐसी औरतों को न बुलावे।—मिर्जा रुसवा। (उमरावजान अदा में)

पद—हारे दरजे=लाचारी की हालत में। विवशता की दशा में। जैसे—हारे दरजे मुझे ही वहाँ जाना पड़ा।

दरिद्र नारायण—पु० [सं०] दरिद्रों का वर्ग या समूह, जो पहले बहुत ही तुच्छ और हेय समझा जाता था, परन्तु अब जो सब प्रकार के आदर और सम्मान का पात्र माना जाने लगा है।

दरी-मंदिर—पु०[सं०] वह मंदिर या भवन, जो किसी पर्वत की दरी या गुफा में खोदकर या चट्टान काटकर बनाया गया हो। जैसे—अजन्ता दरी-मंदिर।

दर्शक—पु० २ वह जो किसी दर्शनीय अथवा महत्त्वपूर्ण संस्था, स्थान आदि को ध्यानपूर्वक देखने अथवा उसका परिचय प्राप्त करने के लिए आता हो। (विजिटर) जैसे—(क) भारतमाता का मंदिर देखने के लिए आनेवाले दर्शक। (ख) कश्मीर देखने के लिए आनेवाले दर्शक। (ग) अजन्ता की गुफाएँ देखने के लिए आनेवाले दर्शक।

दरेती†—स्त्री०[हिं० दरना=दलना] छोटी चाकी।

दर्शक-कक्ष—पु०[सं०] किसी बड़े भवन का वह कक्ष या कमरा, जिसमें बैठकर लोग भाषण, संगीत आदि सुनते अथवा खेल-तमाशे आदि देखते हैं। आस्थानी। (आडिटोरियम)

दर्शक-पंजी—स्त्री०[सं०]=दर्शक-पुस्तिका।

दर्शक-पुस्तिका—स्त्री० [सं०] वह पंजी या पुस्तिका, जिसमें किसी बड़ी संस्था में आनेवाले प्रतिष्ठित और सम्मानित लोग, उस संस्था के संबंध में अपने विचार लिखकर हस्ताक्षर करते हैं। आगतुक पंजी। दर्शक-पंजी। (विजिटर्स बुक)

दर्शन-साक्षी—पु०[सं०] ऐसा गवाह जो स्वयं देखी हुई घटना की बातें बतलाता हो। अनुभावी। (आइ-विटनेस)

दर्शपति—पु० [सं०] किसी बड़ी संस्था का वह सर्वप्रधान और सम्मानित अधिकारी, जिसे बीच-बीच आकर उस संस्था का निरीक्षण करने का अधिकार होता है और जो प्रायः उसका सर्वप्रधान संरक्षक भी माना जाता है। (विजिटर) जैसे—भारतीय विश्वविद्यालयों के दर्शपति साधारणतः यहाँ के राष्ट्रपति ही हुआ करते हैं।

दर्शाधिकारी—पु० [सं० दर्श+अधिकारी] वह अधिकारी, जिसे विधिक दृष्टि से किसी संस्था का निरीक्षण करते रहने का अधिकार प्राप्त होता है और जो उसकी त्रुटियाँ आदि दूर करने के सुझाव देता रहता है। (विजिटर) जैसे—कारागार या जेलखाने का दर्शाधिकारी।

दलनियाँ†—स्त्री०[हिं० दालान] छोटा और पतला दालान।

दलित वर्ग—पु० २ भारतीय हिन्दू समाज में कुछ ऐसी जातियाँ, जो छोटी और हीन समझी जाती हैं। (डिप्रेस्ड क्लासेज) जैसे—चमार, धोबी आदि।

दलितोद्धार—पु०[सं० दलित+उद्धार] दलित अर्थात् समाज की दबी या पिछड़ी हुई जातियों और लोगों को आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से ऊपर उठाने की क्रिया या भाव।

दशमेश—पु०[सं० दशम+ईश] फलित ज्योतिष में, जन्म-कुंडली के दसवें घर का स्वामी ग्रह। २ सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोविंदसिंह की संज्ञा।

दस नंबरी—वि०[हिं० दस+अं० नंबर] ऐसा प्रसिद्ध और बहुत बड़ा बदमाश, जो कई भीषण अपराधों में दंड पा चुका हो और जो बिना पुलिस को सूचित किये हुए अपना गाँव छोड़कर और कहीं न जा सकता हो।

विशेष—पुलिस के अभिलेखों में एक पंजी या रजिस्टर होता है, जो दसवें नंबर का रजिस्टर कहलाता है और जिसमें इसी के ऐसे लोगों की नामावली रहती है। इसी आधार पर यह पद बना है।

दस्ता—पु० १२. किसी बेड़े की वह छोटी टुकड़ी, जिसमें कई जहाज साथ मिलकर कोई काम करने के लिए नियत किये जाते हैं। (स्क्वैड्रन) जैसे—समुद्री जहाजों का दस्ता, हवाई जहाजों का दस्ता आदि।

दस्तावेज—स्त्री० २. कोई ऐसी लिखी हुई चीज या कागज-पत्र, जो प्रामाणिक माना जाता अथवा प्रमाण के रूप में उपस्थित किया जा सकता हो। प्रलेख। (डाक्यूमेन्ट)

दस्तावेजी—वि० २. जो दस्तावेज के रूप में अर्थात् लिखा हुआ और फलत. प्रामाणिक हो। लिखित लेख्य। (डॉक्यूमेन्टरी)

दहन—पु० रासायनिक क्षेत्र में, किसी ऐसे पदार्थ का धीरे-धीरे जलना जो तत्काल सहज में और स्वभावतः आग पकड़ सकता हो। (कम्बश्चन)

दांडिक—वि० २ (क्रिया) जो दंड के रूप में हो। दंडात्मक। (प्यूनिटिव)

दांडिक पुलिस—स्त्री०[सं०+अं०] पुलिस के सिपाहियों के वे दस्ते जो किसी ऐसे स्थान पर रखे जाते हैं, जहाँ शांति-भंग का कोई विशेष उपद्रव होता है, और जिसका व्यय उस स्थान के निवासियों से दंड-स्वरूप लिया जाता है। ताजीरी पुलिस। (प्यूनिटिव पुलिस)

दांतिकी—स्त्री०[सं० दंत से] दाँतों के रोगों की चिकित्सा करने और उन्हें निकालने, नये नकली दाँत लगाने आदि के प्रकारों और सिद्धांतों का विवेचन होता है। (डेन्टिस्ट्री)

दागीना†—पु०[?] गहना। (गुजरात-महाराष्ट्र)

दाहक रजत—पु०[सं०]=क्षारक रजत।

दिक्-सूचक—वि० [सं०] दिशा या दिशाएँ सूचित करनेवाला।

पु० दिग्दर्शक यंत्र। कुतुबनुमा। (कंपास)

दिल-चाक—वि०[फा०] बहुत ही खुले दिल का और परम उदार। उदा० —ऐसा दिल-चाक आदमी न रईसों में देखा, न शाहजादों में।—मिर्जा रुसवा (उमरावजान अदा में)

दिवालिया—वि० २ (व्यक्ति) जिसके संबंध में न्यायालय ने यह निश्चय कर दिया हो कि यह अपना ऋण चुकाने में अक्षम या असमर्थ है। (बैंकरप्ट)

दिव्य-परीक्षा—स्त्री०[सं०] १. प्राचीन भारत में, होनेवाली एक प्रकार की शारीरिक विकट परीक्षा, जिसके द्वारा यह पता लगाया जाता था कि अभियुक्त वास्तव में अपराधी है या निर्दोष।

विशेष—स्मृतियों के अनुसार इसके नीचे लिखे नौ प्रकार होते थे—घट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तंदुल, तप्त-माषक, फूल और धर्मज। भिन्न

भिन्न प्रकार के अपराधो, अपराधियो, ऋतुओ और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि वर्णो के विचार से कुछ विशिष्ट प्रकार की परीक्षाओ के लिए अलग-अलग विधान और निषेध भी स्थिर थे।

२. कोई ऐसी बहुत ही कठोर या विकट परिस्थिति,जिससे पार पाने के लिए किसी को अपनी यथेष्ट योग्यता, शक्ति, सहनशीलता आदि का परिचय देना पडता हो। अग्नि-परीक्षा। (आर्डिएल)

दिशा—स्त्री०६. वह विंदु, जिसकी ओर कोई गतिमान वस्तु या व्यक्ति वढता हो। (डाइरेक्शन)

दिशा-विंदु—पु०[स०] दे० 'दिग्विंदु'।

दीपक-पद—पु०[सं०] साहित्यिक रचना मे ऐसा पद, जिसका प्रयोग देहली दीपक न्याय से आगे और पीछे दोनो ओर होता है। जैसे—'हम न तुम' मे का 'न' 'हम' के लिए भी और 'तुम के लिए भी प्रयुक्त होने के कारण दीपक पद है।

दीपकुसस्थल†—पु०=कुशदीप।

दीप-घर—पु०[हिं०]=प्रकाश-स्तम्भ।

दीवा—पु०[फा०] एक प्रकार का वढिया महीन कपडा।

दीवानी—वि० ३ सपत्ति आदि के मुकदमे से सवध रखनेवाला। (सिविल) जैसे—दीवानी मुकदमा।

दीवानी विधि—स्त्री०=अर्थ-विधि।

दुवाला—पु०[फा० दुवाल]१ किसी ओर निकली हुई लवी नोक। २ दे०'दुवाल'।

दुंवालादार—वि०[हिं०+फा०] नुकीला। उदा०—एक तो जालिम तेरी ये आँखे उस पर कयामत सुरमा और वह भी दुवालादार।—शौकत थानवी।

दुखतर—स्त्री०[स० दुहितृ से फा०] पुत्री। वेटी।

दुगाना—पु०[हिं० दु=दो+हिं० गाना] १ एक तरह का गीत, जिसके एक चरण मे एक व्यक्ति कुछ प्रश्न करता और दूसरे चरण मे दूसरा व्यक्ति उसका उत्तर देता है।२ ऐसा सगीत, जो दो व्यक्तियो के कठस्वर से अथवा दो वाजो के सम्मिलित स्वरो से युक्त हो। जुगलवदी।

दुछत्ती—स्त्री०[हिं० दो+छत] मकान के दूसरे खड या मजिल के ऊपर की छत।

दुम्मट—स्त्री०[हिं० दो+मट=मिट्टी] ऐसी जमीन, जिसमे साधारण मटमैले रग की मिट्टी के सिवा हलके पीले रग की मिट्टी और कुछ वालू भी मिली होती है। (लोम)

विशेष—ऐसी मिट्टी भुरभुरी होने के कारण पानी अधिक सोखती और अधिक समय तक नम रहती है। इसी लिए खेतीवारी के कामो के लिए अच्छी समझी जाती है।

दुर्विनियोग—पुं०[स०]१ अनुचित रूप या वुरे उद्देश्य से किया जानेवाला विनियोग। २. किसी के रखे हुए धन मे से अपने स्वार्थ के लिए अथवा अनुचित रूप से किया जानेवाला उपयोग। अपयोजन। खयानत। (मिस एप्रोप्रिएशन)

दुष्कृति—स्त्री० २ विधिक क्षेत्र मे दूसरो को हानि पहुँचानेवाला कोई ऐसा काम, जिसकी प्रतिपूर्ति न्यायालय के द्वारा कराई जा सकती हो। (टार्ट)

दुहाज—पु०[हिं० दो+विवाह] दूसरी वार होनेवाला विवाह।

दूध-पिलाई—स्त्री० ५. वह छोटी वोतल या शीशी, जिसके मुँह पर रवर की ढेपनी लगी रहती है और जिससे छोटे वच्चो को दूध पिलाया जाता है। (फीडिंग वाटल)

दूधिया—वि० ६. (पेड या पौधा) जिसके डंठल, तने, पत्ते आदि तोडने पर अन्दर से दूध की तरह गाढा सफेद तरल पदार्थ निकलता हो। आक्षीरी। (लैक्टिफेरस)

दूर-कंप—पु०[स०] किसी जगह भू-कंप आने के फलस्वरूप उसकी विपरीत दिशा मे वहुत दूर तक होनेवाला पृथ्वी का कंप। (टेलिसीइज्म)

दूर-मार—वि०[हिं०] (अस्त्र) जिसकी मार वहुत दूर तक पहुँचती हो। जैसे—दूरमार तोप।

दूर-संचार—पु०[स०] ऐसी व्यवस्था, जिसके द्वारा वहुत दूर के लोगो से किसी रूप मे वात-चीत हो सके, या ऐसा ही और कोई सवध स्थापित किया जा सके। (टेलिकम्यूनिकेशन)

दूरान्वयी—वि०[स०] (सवध) जो पास का नही, वल्कि कुछ या वहुत दूर का हो।

दूरान्वित—भू० कृ० [स०] जो दूरान्वय वाले तत्त्व से युक्त किया गया हो अथवा हुआ हो।

दूलभ†—वि०=दुर्लभ।

दूषित धन—पु० [स०] घूसखोरी, चोरवाजारी आदि अनैतिक या दूषित उपायों से प्राप्त किया हुआ ऐसा धन, जो अधिकारियो की नजर से वचाकर जमा किया गया हो और जिसका आगे चलकर इसी प्रकार के अनैतिक या दूषित कामो के लिए उपयोग होता या हो सकता हो। (व्लैक मनी) जैसे—आज-कल अफसरो, ठेकेदारो, व्यापारियो आदि के पास वहुत सा दूषित धन जमा हो गया है।

दृढ़ोक्ति—स्त्री० [स० दृढ+उक्ति] दृढतापूर्वक अर्थात् प्रमाण का निश्चय रखते हुए कही जानेवाली वात। (एसर्शन)

दृष्टांत-कथा—स्त्री० [सं०] कथा का वह प्रकार या भेद, जिसमे आचार, धर्म, नीति आदि से सवध रखनेवाले सिद्धातो का प्रतिपादन करने के लिए कुछ विशिष्ट मानव-पात्रो की योजना की जाती है। (पैरेवुल) जैसे—वौद्धो की जातक कथाएँ।

देय—वि० ३. (धन) जो न्याय, विधि या व्यवहार की दृष्टि से किसी को चुकाया या दिया जाने को हो। (ड्यू)

पु० वह धन जो न्याय, विधि या व्यवहार की दृष्टि से किसी को चुकाया या दिया जाने को हो। (ड्यूज)

देव-कथा—स्त्री० [स०]=पुराण-कथा।

देवड़ा†—पु० [स० देव] भूत-प्रेत झाडने और मत्र-तत्र करनेवाला ओझा। (पूरव)

देवार*—पु०=देवारा (नदी का रेतीला किनारा)।

†स्त्री०=दीवार (भीत)।

देवारा†—पु० [?] नदी का वह रेतीला किनारा, जो वहुत दूर तक फैला हो। (पूरव) जैसे—गगा, राप्ती या सरयू का देवारा।

देशीकरण—पु० [स० देशीयकरण] आधुनिक राजनीति मे वह अवस्था, जिसमे कोई राष्ट्र किसी विजातीय या विदेशी व्यक्ति को अपने यहाँ पूर्ण नागरिक अधिकार देकर उसे अपना अग या सदस्य वनाता हो। (नेचुरलाइजेशन)

देशीय—वि० [स० देश+छ—ईय] १ किसी देश से सबध रखने-वाला। देशी। २ किसी देश के भीतरी भाग मे होनेवाला।

देशीयकरण—पु० [स०]=देशीकरण। (दे०)

देह-स्वभाव—दे० 'शील' १. का विशेष।

देहातीयत—स्त्री० [हिं० देहात] देहातीपन। जैसे—इस नाच या पहनावे मे कुछ देहातीयत है।

दो दाम पट—पु० [हिं० दो+दाम=धन+पटना=चुकता होना] महाजनी लेन-देन आदि मे वह प्रथा, जिसके अनुसार किसी उधार ली हुई रकम का सूद बहुत बढ जाने पर मूल धन का दूना देकर ऋण चुकता किया जाता है।

दो-दिली—स्त्री० [हिं० दो+दिल] गर्भवती स्त्री, जिसके उदर मे एक दूसरा दिल (अर्थात् जीव) भी होता है।

दो-रसी मिट्टी—स्त्री० [हिं०] दुम्मट जमीन की मिट्टी जो, कुछ तो पीली और कुछ मटमैली होती है और जिसमे बालू का भी कुछ अश मिला रहता है। (लोम)

दोषारोप—पु० [स० दोष+आरोप] १ किसी त्रुटि, दोष या भूल के सबध मे किसी व्यक्ति पर किया जानेवाला आरोप। ऐसा कथन कि अमुक खराबी या दोष के लिए अमुक व्यक्ति उत्तरदायी है। आक्षेप। अवगमा। (क्लेम) २ दे० 'दोषारोपण'।

दो-सखुना—पु० [फा० दो+सखुन] एक प्रकार की पहेली, जिसमे दो प्रश्नों का ऐसा एक ही उत्तर होता है, जिससे सब प्रश्नों का समाधान हो जाता है। इसे दो-सखुना भी कहते हैं। जैसे—(क) घोडा क्यो अडा? पान क्यो सडा? उत्तर—फेरा न था। (ख) बडा क्यो न लाया? जूता क्यो न पहना? उत्तर—तला न था। (ग) मुसा-फिर प्यासा क्यो? घोडा उदासा क्यो? उत्तर—लोटा न था।

दौडाक—पु० [हिं० दौडना+आक (प्रत्य०)] प्रतियोगिता आदि मे दौड लगानेवाला। धावक। (रनर)

द्रव-इंजीनियरी—स्त्री० [स० द्रव+हिं० इजिनियरी] भौतिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जल तथा अन्य द्रव पदार्थों के गुणो, शक्तियो आदि का इजिनियरी के काम मे कितना और किस प्रकार का उपयोग होता या हो सकता है (हाईड्रॉलिक्स)

द्रव-चालित—वि० [स०] (इजन या यत्र) जो जल या और किसी द्रव पदार्थ के प्रवाह के वेग से चलता हो। तोयाचलित। (हाईड्रॉलिक)

द्रव्यमान—पु० [स०] किसी काम मे होनेवाली द्रव्य की मात्रा। (मास)

द्रष्टाक—पु० [स०] दे० 'बीमा'।

द्राभा—स्त्री० [स०] ऐसी स्थिति, जिसमे दो भिन्न-भिन्न तत्त्वों का मेल या सयोग होता है। सगम। जैसे—दिव्य और पार्थिव की मिलन-छाया।

द्वितंत्री—वि० [स०] जिसमे दो प्रकार के तत्र हों। दो प्रकार के तत्रों से युक्त।

स्त्री० दे० 'द्वैध-शासन'।

द्विनेत्री—स्त्री० [स०] युद्ध-क्षेत्र मे काम आनेवाली ऐसी दूरबीन, जिसमे दोनो आँखो के लिए दो ताल होते हैं और जिसमे दूर की चीजे पास दिखाई देती हैं। (बाइनाक्यूलर)

द्वि-भाजन—पु० [स०] [स० कृ० द्विभाजित] किसी चीज को बीच मे से काट कर या और किसी प्रकार से अलग करके दो भागों मे विभक्त करने की क्रिया या भाव। (बाइसेक्शन)

द्विलिंगी—वि०, पु० [स०]=उभयलिंगी।

द्विशिर—वि० [स० द्वि+शिरा] जिसकी दो शिराएँ हों। दो शिराओं-वाला। (ड्यू-आरकुलेटा)

द्वि-सदनी—वि० [स० द्वि+सदन] (प्रजातंत्री शासन-व्यवस्था) जिसमे दो सदन होते है। (बाइकैमरल)

द्वैध शासन—पु० [स०] वह शासन-प्रणाली, जिसमे कुछ विभाग सर-कार के हाथ मे और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ मे हों। द्वितंत्री। (डायार्की)

धनुस्तंभ—पु०=धनुष-टकार (रोग)।

धपियाना†—स०=धपाना।

धरती पुत्र—पु० [हिं०+स०] वह यशस्वी और वीर पुरुष जिसने अपनी मातृभूमि की गौरव-वृद्धि, रक्षा आदि के लिए स्मरणीय बडे-बडे काम किये हों।

धर्म-गाथा—स्त्री० [स०] ऐसी पौराणिक कथाएँ जिनमे देवी-देव-ताओं, असुरों आदि के अद्भुत या विलक्षण कार्यों का वर्णन होता है और जिन पर किसी विशिष्ट धर्मावलम्बी की पूरी या बहुत-कुछ आस्था होती है। पुराण-कथा। (मिथ)

धर्म-तंत्री—वि० [स० धर्म-तत्रिन्] १. धर्म-तत्र सबधी। धर्म-तत्र का। २. धर्म-तत्र के अनुसार या आश्रित रहने या होनेवाला। धर्मतत्री। (थियोक्रेटिक)

धर्मतंत्री राज्य—पु० [स०] ऐसा राज्य, जो किसी विशिष्ट धर्म या मजहब के सिद्धान्तों पर ही मुख्य रूप से शासित हो और जिसमे ऐहिक या लौकिक बातों का ध्यान और स्थान उपेक्षा गौण रहता हो। मज-हबी राज्य। 'धर्म-निरपेक्ष राज्य' से भिन्न। (थियोक्रेटिक स्टेट) जैसे—सऊदी अरब इस्लामी सिद्धान्तों पर आधारित और स्थापित होने के कारण इसराईल और पाकिस्तान धर्म-तत्री राज्य हैं।

धर्मदाय—पु०=धर्मस्व।

धर्म-निरपेक्षता—स्त्री० [स०] धर्म-निरपेक्ष होने की अवस्था, गुण या भाव। (सेक्युलरिज्म)

धर्म-निरपेक्ष राज्य—पु० [स०] आधुनिक राजनीति मे ऐसा राज्य, जिसमे केवल लौकिक या नागरिक दृष्टि से ही प्रशासन के सब कार्य होते हों और जिसमे सब लोगों को अपने धार्मिक आचार-व्यवहार सपन्न करने की पूरी स्वतत्रता प्राप्त हो। (सेक्यूलर स्टेट)

धर्म-सम्प्रदाय—पु० [स०] उडीसा, छोटा नागपुर और बगाल मे प्रच-लित एक धार्मिक सम्प्रदाय, जिसमे 'धर्म' नामक देवता की पूजा होती है।

धर्मस्व—पु० २ ऐसी धनराशि या संपत्ति, जो इस दृष्टि से सुरक्षित रखने के लिए दान की गई हो कि उससे होनेवाली आय से धर्म, परोपकार या लोक-सेवा का कोई काम बराबर चलता रहे। (एन्डाउमेन्ट)

धर्मासनिक—पु० [स०]=धर्माध्यक्ष।

धातुक—पु० [स० धातु+क (प्रत्य०)] खनिज पदार्थों के प्राकृतिक

नयाचार—पुं० [सं० नय+आचार] १. नीतिपूर्ण आचरण और व्यवहार। २ आधुनिक राजनीति मे, राज्यों के सर्व-प्रधान अधिकारियो अथवा राज्य-मत्रियो मे पारस्परिक होनेवाला औपचारिक तथा सौजन्यपूर्ण आचरण और व्यवहार। (प्रोटोकोल)

नर-भक्षिता—स्त्री० [सं०] मनुष्यों की कुछ जगली जातियो में प्रचलित वह प्रथा, जिसके अनुसार वे मनुष्यो की हत्या करके उनका मास खाते है। (कैनिबुलिज्म)

नर-भक्षी—पुं० २. ऐसा असभ्य और जगली व्यक्ति, जो मनुष्यों को मारकर उसका मास खाता हो। (कैनिबुल)

नरम पानी—पुं० [हिं०] (क) ऐसा पानी जिसके बहाव मे अधिक वेग न हो। (ख) ऐसा पानी, जिसमे खनिज तत्त्व अपेक्षया कम हो।

नर-संहार—पुं० [सं०]=जन-सहार।

नव-जागरण—पुं० [सं०] पाश्चात्य ऐतिहासिक परपरा मे, युरोप के मध्य युग और आधुनिक युग के बीचवाले सक्रमण काल की वह स्थिति, जिसमे बहुत दिनो की सामाजिक दुर्गति के बाद नये-नये अन्वेषणो, आविष्कारो आदि का आरंभ हुआ था और दर्शन, धर्म, विज्ञान, सस्कृति आदि का नये सिरे से पुनरुद्धार या सस्कार होने लगा था। (रिनेजाँ)

नवागंतुक—पुं० [सं० नव+आगतुक] वह जो कही से अभी हाल मे आया हो। अजनबी और नया आया हुआ आदमी।

नवीकरण—पुं० [सं० अभिनव से] किसी पुरानी वस्तु को कुछ विशिष्ट उपकरणो, क्रियाओं आदि के द्वारा फिर से नया रूप देने की क्रिया या भाव। (रिनोवेशन)

नाँघन†—स्त्री०=लाँघन।

नाँदा—पुं० [हिं० नाँद] १. मिट्टी की बडी नाँद। २ नाँद के आकार के मिट्टी, लकडी आदि के वे पात्र, जिनमे बाग-बगीचो की शोभा के लिए पेड-पौधे लगाये जाते हैं।

नाग-यज्ञ—पुं० [सं०] जनमेजय का वह प्रसिद्ध यज्ञ, जो उन्होने नागो का नाश करने के लिए किया था।

नागर-युद्ध—पुं० [सं०]=गृह-युद्ध।

नाग-सामत—पुं० [सं०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

नागाभरणी—स्त्री० [सं०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

नाटेरक—पुं० [सं०] नटी का पुत्र या सतान।

नाटो†—स्त्री० [हिं० नाटा का स्त्री० नाटी?] युवती और दुश्चरित्रा स्त्री।

पुं० दे० 'नैटो' (सघटन)।

नादपेटी—स्त्री० [सं० नाद+हिं० पेटी] ग्रामोफोन आदि बाजो मे डिबिया के आकार का वह छोटा अग या पुरजा, जिसके द्वारा रेकार्डो मे आवाज भरी जाती और रेकार्डों मे भरी हुई आवाज फिर से बाहर निकल कर सुनाई पडती है। (साउन्ड-बॉक्स)

नाद-स्वर—पुं० [सं०] नफीरी की तरह का एक बाजा, जिसका अधिकतर प्रचलन दक्षिण भारत मे है।

नाफदानी—स्त्री० [फा०] स्त्री का गर्भाशय।

नाबर—विं० [सं० निर्बल] कमजोर। निर्बल। जैसे—हम क्या रुपया खरचने मे किसी से नाबर हैं।

नाभिक—वि० [सं०] नाभि-सबंधी। नाभि का।

पुं० केन्द्रक।

नाम-रूपवाद—पुं० [सं०] दार्शनिक क्षेत्र मे, यह मत या सिद्धात कि इस जगत् मे नाम और रूपवाली जितनी सत्ताएँ है, वे सब कोरी काल्पनिक है, और उनकी कोई वास्तविक सत्ता नहीं है। (नॉमिनेलिज्म)

विशेष—यह हमारे यहाँ के आभासवाद (देखें) का एक प्रकार का भेद ही है।

नामिक विधेय—पुं० [सं०] व्याकरण मे वह विधेय, जो कर्ता की क्रिया या व्यापार, गुण, लक्षण आदि का निर्देश करता है।

नामिका—स्त्री० [सं०] ऐसे चुने हुए या विशिष्ट लोगो के नामो की सूची, जिनमे से किसी विषय के विचार या विवेचन के लिए कुछ लोग छाँटकर अलग किये जाने को हो। (पैनेल)

नारेबाजी—स्त्री० [हिं० नारा+फा० बाजी] केवल प्रचार के उद्देश्य से खूब चिल्ला-चिल्लाकर या बार-बार नारे लगाते रहने की क्रिया या भाव।

ना-शुकरा—वि० [हिं० ना+फा० शुक्र=धन्यवाद] [स्त्री० ना-शुकरी] जो कृतज्ञता प्रकट करना न जानता हो।

ना-शुकरी—स्त्री० [हिं० ना-शुकरा] ना-शुकरा होने की अवस्था या भाव। कृतघ्नता।

नासदानी—स्त्री०=नासदान।

निःस्वामिक—वि० [सं०] (वस्तु) जिसका कोई स्वामी या मालिक न हो। २ भू-खड जिस पर किसी का आधिपत्य या शासन न हो।

निकास पंखा—पुं० [हिं०] वह पखा जो कमरो की गरम और श्वास से दूषित वायु बाहर निकालने के लिए दीवारो के ऊपरी भाग मे झरोखो आदि मे लगाया जाता है। रेचक पखा। (एग्जूहॉस्ट फैन)

निगूढ—वि० ३ किसी के अन्दर छिपा या दबा हुआ।

निजी—वि० ४ जिसका व्यक्तिविशेष से ही सबंध हो, सब लोगो से न हो। 'सार्वजनिक' से भिन्न। खासगी। व्यक्तिगत। (प्राइवेट)

निजी सचिव—पुं० [हिं०+सं०] किसी बडे अधिकारी का निजी मत्री। (प्राइवेट सेक्रेटरी)

नित्य-चर्या—स्त्री० [सं०] नित्य या प्रतिदिन और नियमित रूप से किया जानेवाला काम। नैत्यक। (रुटीन)

नित्य-प्रिया—स्त्री० [सं०] वैष्णव भक्तो के अनुसार वे गोपियाँ, जो सदा वृन्दावन मे रहकर श्रीकृष्ण के साथ नृत्य लीला करती हैं। कहा जाता है कि बहुत लबी साधना के उपरात जीवो को यह रूप प्राप्त होता है।

निदर्शक—पुं० वह व्यक्ति जो विज्ञान, रेखागणित आदि मे उदाहरण, प्रयोग आदि के द्वारा विद्यार्थियो को यह समझाता हो कि कैसे कोई चीज काम करती या उपयोग मे आती है। (डिमॉन्स्ट्रेटर)

निदान-शाला—स्त्री० [सं०]=निदान-गृह।

निदानिका—स्त्री० [सं०]=निदान-गृह।

निदेशन—पुं० [सं०] निदेश करने या देने की क्रिया या भाव। (डाइरेक्शन)

निदेशालय—पुं० २. वह केन्द्रीय कार्यालय, जहाँ से अधीनस्थ कार्य-

कर्ताओं को उनके कामो के सबध मे आवश्यक निदेश भेजे जाते है। ३ किसी सस्था के निदेश का वर्ग या समूह। (डाइरेक्टॅारेट)

निधान—पु० ७ किसी काम या रोजगार मे रुपए लगाना। निवेश। (इन्वेस्टमेन्ट)

निपटान—स्त्री० [हिं० निपटना या निपटाना] १ निपटने की क्रिया या भाव। २ हाथ मे आये हुए काम को निपटाने या पूरा करने की क्रिया या भाव। ३ अनावश्यक या अनुपयोगी वस्तुओ को या तो वेचकर या और किसी प्रकार अलग या दूर करने की क्रिया या भाव। (डिस्पोज़ल)

निबोरी—स्त्री० [स० नूपुर] एक प्रकार का गहना। उदा०—छरा निबोरी दिखि भई बौरी, जगत ठगौरी जनु इक ठौरी।

निमित्तिक छुट्टी—स्त्री० [हिं०]=आकस्मिक छुट्टी।

निमोया†—वि० [हिं० नि+मुअना=मरना] [स्त्री० निमोई] जिसे मौत भी न आती हो। (स्त्रियो की गाली) उदा०—फिर निमोई औरतो पर जो न हो, थोडा है जुल्म।—जान साहव।

नियतन—पु० [स०] १ नियत करने की क्रिया या भाव। २ कोई चीज हिस्से के मुताबिक सब लोगो को नियत मात्रा मे बाँटने की क्रिया या भाव। (एलॉटमेन्ट)

नियम-निष्ठ—वि० [स०] [भाव० नियमनिष्ठता] नियमो, परिपाटियों, रूढियो आदि का पालन करनेवाला।

नियम-निष्ठता—स्त्री० [स०] ऊपरी या बाहरी दिखावट के लिए नियमो, परिपाटियो, रूढियो आदि का पालन करने की अवस्था, क्रिया, गुण या भाव।

नियामक—पु० २ कोई ऐसा तत्त्व, पदार्थ या व्यक्ति, जो औरो को ठीक तरह से काम करने मे प्रवृत्त करता और उनकी गति-विधि का नियत्रण करता हो। ३. किसी यत्र का वह अग या पुरजा, जो यत्र की गति-विधि आदि का नियत्रण करता और उसे ठीक तरह से चलाता हो। (रेग्यूलेटर)

निरकुश शासक—पु० [स०] वह शासक, जो बिना किसी का परामर्श लिये अपनी इच्छा और मनमाने ढग से शासन करता हो। (ऐबसोल्यूट मॉनर्क)

निरंग रूपक—पु० [स०] साहित्य मे रूपक अलकार का एक भेद, जिसमे केवल अंगी का आरोप होता है, उसके अगो का आरोप या उल्लेख नही होता। जैसे—मुख कमल है। यहाँ केवल मुख पर कमल का आरोप है, मुख के अवयवो पर कमल के अवयवो का आरोप नही है।

निरतरता—स्त्री० [स०] किसी काम या बात के निरतर अर्थात् लगातार होते रहने की अवस्था, गुण या भाव। सातत्य। (कांटिन्यूइटी)

निरपेक्षता-वाद—पु० [स०] वह दार्शनिक मत या सिद्धात, जिसमे किसी निरपेक्ष सत्ता को सारी सृष्टि का कारण माना गया हो। (ऐब्सोल्यूटिज्म)

निरसन—पु० [सं०] विधायिका सभा की वह प्रक्रिया, जो किसी बने हुए विधान को रद्द या समाप्त करने के लिए होती है। कानून या विधान रद्द करना। (रिपील)

निरापद—वि० ४ जो किसी आपदा या सकट से पूर्ण रूप से सुरक्षित हो। (इम्यून)

निरापदता—स्त्री० [स०] १ निरापद होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वह स्थिति जिसमे मनुष्य किसी विशिष्ट प्रकार की आपदा या सकट से पूरी तरह बचा हुआ या सुरक्षित रहता है। (इम्यूनिटी)

निरूढ़—वि० ४. जो किसी के अन्दर प्राकृतिक और स्थायी रूप से वर्तमान रहता हो। (इन्हेरेन्ट)

निर्जीवीकरण—पु० [स०] किसी सजीव को निर्जीव करने की क्रिया, प्रणाली या भाव।

निर्दलीय—वि० [स०] जो किसी दल या पक्ष मे न हो।

निर्देशी—पु० [स० निर्देशित] वह जो कोई विवादास्पद विषय उत्पन्न होने पर यह बतलाता हो कि सिद्धाततः ऐसा होना चाहिए। अभिदेशिकी। (रेफरी)

निर्बंधन—पु० किसी प्रकार का निर्बंध या रोक लगाने की क्रिया या भाव। पाबदी। (रेस्ट्रिक्शन)

निर्मलीकरण—पु० [स०] निर्मल करने अर्थात् दोष, विकार आदि दूर करके किसी चीज को साफ करने की क्रिया या भाव। (क्लैरिफिकेशन) जैसे—कूएँ या नदी के जल का निर्मलीकरण।

निर्मेय—वि० [स०] जिसका निर्माण किया जाने को हो अथवा होने को हो।

पु० तर्कशास्त्र मे, वह बात या विषय, जिसे विचारपूर्वक ठीक सिद्ध करने की आवश्यकता हो, अथवा जो ठीक सिद्ध किया जाने को हो। (प्रॉब्लेम)

निर्वनीकरण—पु० [स०] जमीन साफ करने के लिए जगल या वन साफ करने की क्रिया या भाव। वनकटाई। (डिफॉरेस्टेशन)

निर्वहण—पु० ३ आज्ञा, कर्तव्य आदि का निर्वाह या पालन। (डिस्चार्ज)

निर्वाहिका—स्त्री० [सं०] उतना पारिश्रमिक या वेतन, जितने से कार्यकर्त्ता और उसके परिवार का निर्वाह या भरण-पोषण हो सके। निर्वाह-वृत्ति। (लीविंग वेज)

निलवन—पु० १ अस्थायी रूप से किसी को कोई काम करने से रोकना। २ कोई काम या बात अतिम निर्णय के लिए कुछ समय तक रोक रखने या स्थगित करने की क्रिया या भाव। ३ किसी कर्मचारी या कार्यकर्ता के किसी अपराध, त्रुटि या दोष की सूचना मिलने पर उसकी ठीक जाँच या निर्णय होने तक उसे उसके पद से अस्थायी रूप से हटाये जाने की क्रिया या भाव। मुअत्तली। (सस्पेन्शन)

निलबित—भू० कृ० [स०] (कार्य या व्यक्ति) जिसका निलबन हुआ हो। जो अतिम निर्णय की प्रतीक्षा मे टाला, रोका या हटाया गया हो। मुअत्तल। (सस्पेन्डेड)

निलहारा—पु० [हिं० नील (रग)+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० निलहारिन, निलहारी] वह जो शरीर के अगो मे नील के योग से गोदना गोदने का व्यवसाय करता हो। गोदनहारा।

निलाई—स्त्री०=निराई। (पश्चिम)

निविदा—स्त्री० [स० निवेद] वह पत्र जिसमे किसी प्रस्ताविक कार्य के सबध मे यह लिखा रहता है कि हम इतने पारिश्रमिक पर अमुक

रूप में यह काम पूरा कर देंगे, और जो उपयुक्त अधिकारियों के सामने स्वीकृति के लिए रखा जाता है। (टेन्डर)

विशेष—प्राय. अधिकारियों को जब कोई काम कराना होता है, या किसी आवश्यकता की पूर्ति करानी होती है, तब वे सार्वजनिक संबंध में ठीकेदारों से अपने दर की निविदाएँ माँगते हैं, और तब उनकी शर्तों, स्थितियों आदि पर विचार करके किसी ठीकेदार को उसकी निविदा के आधार पर वह काम सौंपते हैं।

निवृत्ति—स्त्री० ८. किसी विशिष्ट उद्देश्य या विचार से किसी काम या बात से अलग रहना या बचना। उपरति। (ऐब्स्टिनेन्स)

निवृत्तिका—स्त्री०=निवृत्ति-वेतन।

निवृत्ति-वेतन—पु० [सं०] वेतन का वह प्रकार, जो किसी कर्मचारी को बहुत दिनों तक काम करते रहने पर उसकी वृद्धावस्था में काम के लिए अक्षम हो जाने पर अथवा उसकी किसी विशिष्ट योग्यता, सेवा आदि के विचार से भरण-पोषण के लिए वृत्ति के रूप मिलता है। (पेन्शन)

निवेश—पु० ५ व्यापार आदि में धन या पूँजी लगाने की क्रिया या भाव। (इन्वेस्टमेन्ट)

निश्चयी—वि० [सं०] १ जिसका कोई निश्चित मान या स्थिर स्वरूप हो। २ सकारात्मक। (पॉज़िटिव) ३ जिसे किसी बात या विषय में पूरा निश्चय हो चुका हो। (कॉन्फिडेन्ट)

निश्चेत—वि० [सं०] जिसकी चेतना शक्ति नष्ट हो गई हो। निश्चेतन।

निश्चेतक—वि० [सं०] (औषधि या पदार्थ) जो शरीर या उसके किसी अंग को कुछ समय के लिए निश्चेत या सुन्न कर देता हो। चेतना या संवेदन से रहित करनेवाला। संवेदनहारी।

पु० उक्त प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करनेवाली कोई दवा। (एनिस्थेटिक)

निश्चेतन—पु० २ वह स्थिति, जिसमें किसी रोग या निश्चेतक औषधि के प्रयोग के कारण शरीर या उसका कोई अंग बिल्कुल सुन्न हो जाता है, और उसमें ताप, पीड़ा आदि का अनुभव करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। (एनेस्थीसिया) ३. बेहोश होने की क्रिया या भाव।

निश्चेतनीकरण—पु० [सं०] १ निश्चेत करने की क्रिया या भाव। २ चिकित्सा-शास्त्र में, चीर-फाड़ आदि से पहले शरीर का कोई अंग औषधों के प्रयोग से निश्चेतन या सुन्न करना। (एनेस्थिसिस)

निश्चेष्टता—स्त्री० [सं०] १ निश्चेष्ट होने की अवस्था या भाव। २ वह अवस्था, जिसमें मनुष्य का सारा शरीर सुन्न या स्तब्ध हो जाता है। (इनर्शिया)

निषिद्ध—भू० कृ० [सं०] (पदार्थ) जिसके आयात-निर्यात, क्रय-विक्रय आदि का राज्य की ओर से निषेध हो। (कॉन्ट्राबैंड)

निषेध—पु० ६ अविरोध। घाट-बंदी। (एम्बार्गो)

निषेधवाद—पु० [सं०] [वि० निषेधवादी] आधुनिक पाश्चात्य क्षेत्रों में, निराश भाव में यह मानना कि यह संसार और मनुष्य का जीवन सब निरर्थक है, आदर्शों का कोई मूल्य या महत्त्व नहीं है और सभी सांसारिक बातें तुच्छ और निस्सार हैं और अन्त में छिन्न-भिन्न होती रहती हैं। (नेगेटिविज्म)

निषेधाज्ञा—स्त्री० [सं० निषेध + आज्ञा] वह आज्ञा, जो न्यायालय कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है। व्यादेश। (इन्जंक्शन)

निष्कर्ष—पु० विधिक क्षेत्र में, किसी अभियोग या वाद की पूरी सुनवाई हो चुकने पर न्यायाधीश अथवा न्यायालय द्वारा निकाला हुआ परिणाम। (फ़ाइंडिंग)

निष्क्रमण—पु० २ किसी देन या आवर्तक भार से मुक्त होने के लिए एक ही बार में कुछ धन एक साथ देकर उससे छुटकारा पाना। (रिडेम्पशन)

निष्कास—पु० वह जो किसी विपत्ति या संकट से बचने हेतु अपना देश या निवास स्थान छोड़कर दूसरी जगह चला गया हो या जा रहा हो। निष्क्रमी। (इवैक्यूई)

निष्क्रिय-विरोध—पु० [सं०] =निष्क्रिय प्रतिरोध। सत्याग्रह।

निष्पत्ति—स्त्री० अध्यवसाय अथवा शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त की हुई योग्यता या विशेषता। (एटेनमेन्ट) जैसे—शैक्षणिक योग्यता।

निष्पंदन—पु० [सं०] [भू० कृ० निष्पंदित] १ तरल पदार्थ का चू या रिस कर बाहर निकलना। क्षरण। २. किसी तरल पदार्थ को इस प्रकार एक पात्र में से दूसरे पात्र में पहुँचाना या ले जाना कि उसमें की मैल पहलेवाले पात्र में ही रह जाय। छानना। (फिल्ट्रेशन)

निस्तारण—पु० आज-कल विशेष रूप से समुद्र में डूबे हुए जहाजों, जलते हुए मकानों आदि में से धन-संपत्ति बचाकर बाहर निकालने की क्रिया या भाव। (सैल्वेज)

निहित स्वार्थ—पु० [सं०]=अधिष्ठित स्वार्थ।

नीति-दर्शन—पु० [सं०]=नीति-शास्त्र।

नीति-विज्ञान—पु० [सं०]=नीति-शास्त्र।

नीर-क्रिया—स्त्री० [सं०] नल के द्वारा एक स्थान से जल, तेल आदि द्रव पदार्थ पहुँचाने की क्रिया या भाव। नीरण। (पाइपिंग)

नील-मुद्र—पु० [सं०] १ इमारतों आदि के बनावट से संबंध रखनेवाला वह खाका या रेखाकृति, जो छाया-चित्रण की प्रक्रिया से नीले कपड़े या कागज पर उतारी जाती है। २ किसी महत्त्वपूर्ण घटना के संबंध का वह विवरण, जो राज्य या शासन की ओर से प्रकाशित किया जाता है। (ब्लूप्रिन्ट)

नील-मुद्रण—पुं० [सं०]=नीलिका-मुद्रण।

नुक्केदार—वि० [हिं० नुक्का+फा० दार (प्रत्य०)] १ नोकदार। नुकीला। २ जिसका अगला भाग कुछ दूर तक निकला या बढ़ा हुआ हो। जैसे—नुक्केदार टोपी, नुक्केदार दाढ़ी।

नेटो—पु०=नैटो।

नेति—स्त्री० न रहने या न होने की अवस्था या भाव। नकारात्मकता। (नेगेशन)

नेत्र-विज्ञान—पु० [सं०] चिकित्सा-शास्त्र की वह शाखा, जिसमें आँखों की बनावट, उनके अंगों की क्रिया-प्रणाली और रोगों का विवेचन होता है। (आफ्थालमोलाजी)

नेम—पु० ३. नित्य और नियमित रूप से प्रतिदिन किया जानेवाला काम। नित्य-चर्या। नैत्यक। (रुटीन)

नैटो—पु० [अं० नॉर्थ एटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइजेशन के आरम्भिक अक्षरों का सम्मिलित रूप] अमेरिका और इंगलैंड द्वारा स्थापित

एक सघटन, जिसमे उत्तरी ऐटलाटिक की रक्षा के उद्देश्य से और भी कई राष्ट्र सम्मिलित हैं।

नैन-मटक्का—पु० [हिं० नैन+मटकाना] आँखे नचाने या मटकाने की क्रिया या भाव।

नैन-मुतना—वि० [हिं० नैन=आँख+मूतना] [स्त्री० नैन+मुतनी] जिसकी आँखो से बहुत जल्दी आँसू निकल पडते हो। जल्दी रो पडनेवाला। (परिहास और व्यग्य) उदा०—नैन-मुतनी इस कदर बन जाइए क्या फायदा।—इन्शा।

नैमित्तिक—वि० ४ जो किसी विशेष (उद्देश्य या कार्य) के लिए किया, दिया या रखा गया हो। (कैजुअल) जैसे—नैमित्तिक कर्मचारी, नैमित्तिक छुट्टी आदि।

नोका—पु०=नोक।

नोखा†—वि० [हिं०] [स्त्री० नोखी]=अनोखा।

नौ आबादी—स्त्री० [फा०] १ ऐसी आबादी या बस्ती, जो अभी हाल मे बसी हो। नई बस्ती। २ उपनिवेश। (कॉलोनी)

नौचालन—पु० [स०] नदियों, समुद्रो आदि मे नाव या जहाज चलाने की क्रिया, भाव या विद्या। जहाजरानी। (नेविगेशन)

नौजित—वि० [स०] १ समुद्री डाके मे लूटा हुआ। २ युद्धकाल मे शत्रु के समुद्री जहाजो से छीना या लूटा हुआ।

नौजित न्यायालय—पु० [स०] वह न्यायालय, जो इस बात का विचार करता है कि युद्ध-काल में समुद्री जहाजो पर रोका हुआ माल विधिक दृष्टि से जब्त किया जा सकता है या नही। (प्राइज कोर्ट)

नौजित-माल—पु० [स० नौ-जित+फा० माल] १ समुद्री जहाजो पर डाका डालकर लूटा हुआ माल। २ आधुनिक राजनीति मे वह माल, जो शत्रु-देश के जहाजो को रोककर बलपूर्वक उतरवा लिया गया हो अथवा अपने अधिकार मे ले लिया गया हो। (प्राइज)

न्याय-तंत्र—पु० [स०] वह समस्त राजकीय व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत न्यायालयो के द्वारा न्याय के सब काम होते है। (जुडिशिअरी)

न्याय-दर्शन—पु० [स०] भारतीय आर्यो के छ: दर्शनो मे से एक, जिसमे किसी तथ्य या बात का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तार्किक दृष्टि से उसके विवेचन के नियम और सिद्धात निरुपित है। इसके कर्ता कणाद या गौतम ऋषि है।

न्याय-पालिका—स्त्री० [स०] १ =न्याय-तत्र। २ =न्यायाग।

न्याय-पीठ—पु० [स०] १ न्यायालय के न्याय-कर्ता या न्यायाधीश के बैठने का स्थान। न्यायासन। २ लाक्षणिक रूप मे, स्वय न्याय-कर्ता अथवा न्यायकर्ताओं का वर्ग या समूह। (बेंच)

न्यायवादी—वि० [स० न्यायवादिन्] [स्त्री० न्यायवादिनी] सदा न्याय-सगत और सच बात कहनेवाला।

पु० विधिक क्षेत्र मे, जिसे किसी की ओर से मामले-मुकदमे लडने या उनकी पैरवी करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो।

विशेष—यह पद मुख्तार और वकील के पदो से भिन्न और बहुत उच्च है।

न्याय-शास्त्री—पु० [स० न्यायशास्त्रिन्] १ न्याय-दर्शन का ज्ञाता या पडित। नैयायिक। २ दे० 'विधि-शास्त्री'।

न्यायाग—पु० [स० न्याय+अग] शासन या सरकार का वह अग या पक्ष, जो न्यायालयो मे न्यायाधीशो के द्वारा न्याय-सबधी सब काम करता-कराता है। न्याय-तत्र। न्याय-पालिका। (जुडिशियरी)

न्यायाधीन—वि० [स० न्याय+अधीन] (मुकदमा या विवाद) जो अभी विचार के लिए किसी न्यायालय मे उपस्थित हुआ हो, लेकिन जिसका अभी निर्णय न हुआ हो। (सब जुडिस)

न्यायिक—वि० [स० न्याय से] १ न्याय सबधी। न्याय का। २ न्यायालयो अथवा न्यायाधीशो से सबध रखने या उनके द्वारा होनेवाला। (जुडिशियल)

न्यास-धारी—पु० [स०] वह जिसे किसी प्रकार के न्यास की व्यवस्था का अधिकार दिया गया या उत्तरदायी बनाया गया हो। न्यासी। (ट्रस्टी)

न्यून रूपक—पु० [स०] साहित्य मे रूपक अलकार का एक भेद, जिसमे उपमान का आरोप करते समय उपमेय को इससे न्यून अर्थात् घटकर या हीन बतलाया जाता है। यथा—विप्रनि के मन्दिरन तजि, करत ताप सब ठौर। भाव सिह भूपाल की तेज तरनि यह और।—मतिराम।

पड़ती—स्त्री० २ कोई ऐसी खाली पडी हुई जमीन, जो कभी जोती-बोई तो न गई हो, फिर भी प्रयत्नपूर्वक खेतीबारी के योग्य बनाई जा सकती हो। (फैलो)

पतौड़†—पु० [हिं० पत्ता+बडा (पकवान)] कुछ विशिष्ट प्रकार के पत्तो को बेसन मे लपेटकर बनाया हुआ पकौडा या बडा। जूरी। (पश्चिम)

पत्र-मंजूषा—स्त्री० [स०]=पत्र-पेटी।

पत्थर-तोड़—वि० [हिं० पत्थर+तोडना] १ (काम) जो उतना ही कठिन और परिश्रम-साध्य हो जितना पत्थर तोडना होता है। २ (आचरण या कथन) जो उतना ही कठोर और विकट परिणाम उत्पन्न करनेवाला हो जितना पत्थर का प्रहार होता है। जैसे—पत्थर-तोड जवाब।

पु० वह व्यक्ति जो पत्थरो को तोडकर उनके छोटे-छोटे टुकडे बनाने का काम करता हो।

पद-ग्राही—वि० [स० पद-ग्राहिन्] जो किसी का पद ग्रहण करे और इस प्रकार उसे अपने पद से कुछ समय के लिए हटने का अवसर दे। भार-ग्राही। (रिलीविंग) जैसे—पदग्राही अधिकारी।

पद-नामित—भू० कृ० [स०] जिसकी नियुक्ति किसी पद पर हो चुकी हो, परन्तु जिसने अभी तक उस पद का भार न सँभाला हो। (डेजिग्नेटेड) जैसे—पदनामित प्रधान मत्री।

पद-सज्ञा—स्त्री० [स०]=पद-नाम।

पद्धति—स्त्री० ४. कोई वैज्ञानिक कार्य करने का वह विशिष्ट ढग या प्रकार, जिसके कुछ निश्चित नियम आदि हो, और जिसके फलस्वरूप उसकी गिनती एक स्वतत्र इकाई के रूप मे होती हो। (सिस्टम) जैसे—चिकित्सा की आयुर्वेदिक पद्धति या यूनानी पद्धति।

परजीभ—स्त्री० [स० प्रतिजिह्वा] जीभ के नीचे का भाग। उदा०—जीभ जाय परजीभ न जावे। (कहा०)

परती—वि० [हिं० परत] १. परत या तह से सबध रखनेवाला। २ जो परतो या तहो के रूप मे हो। जैसे—परती लकडी। (दे०)

विशिष्ट प्रकार के मच्छडों के द्वारा शरीर मे विषाणु प्रविष्ट होने पर उत्पन्न होता है। पीला बुखार । (यलो फीवर)

पीयूषिका—स्त्री० [स०]=पीयूष-ग्रंथि।

पीला बुखार=पु०=पीत ज्वर।

पुनर्विचार—पु० [स०] १ किसी काम या बात के सबध मे एक बार विचार हो जाने पर उसे ठीक करने या सुधारने के लिए फिर से होनेवाला विचार। २ विधिक क्षेत्र मे, न्यायालय द्वारा किये हुए विचार या निर्णय पर कुछ विशिष्ट अवस्थाओ मे फिर से किया जानेवाला विचार। नजरसानी। (रिविजन)

पुराख्यान—पु० [स०]=पुराण-कथा।

पुराण-कथा—स्त्री० [स०] १ किसी धर्म सम्प्रदाय के पुराणो आदि मे वर्णित देवी-देवताओ आदि की ऐसी अद्भुत और अलौकिक कथाएँ, जिन पर उस धर्म या सप्रदाय के अनुयायियो की आस्था, विश्वास या श्रद्धा हो। (मिथ) २ सभी धर्मो या सप्रदायो से सबध रखनेवाली उक्त प्रकार की कथाओ का विज्ञान, शास्त्र या समूह। कथा-शास्त्र। (माइथोलॉजी)

पुरालेखविद्—पु० [स०] वह जो पुरालेख आदि पढकर उनके अर्थ लगाने मे निपुण हो। पुरालेखो का ज्ञाता। (एपिग्राफिस्ट)

पुलिया—स्त्री० [हिं० पुल का स्त्री० अल्पा०] वह छोटा पुल जो रेल की पटरियाँ बिछाने या सडकें बनाने के समय बीच मे पडनेवाले छोटे नालो पर बाँधा जाता है। (कारवर्ट)

पुष्टिकरण—पु० [स०] किसी की कही हुई बात या किये हुए काम की मान्यता या स्वीकृति करते हुए उसकी पुष्टि करने की क्रिया या भाव। सपुष्टि। (कन्फर्मेशन)

पूँजी-पदार्थ—पु० [हिं०+स०] ऐसे पदार्थ जिनका उपयोग तरह-तरह की चीजे या माल तैयार करने मे होता है। (कैपिटल गुड्स) जैसे—(क) कपडे बनाने के लिए ऊन, कपास, रेशम आदि। (ख) तरह-तरह की चीजे बननेवाले कारखानो मे कलें या यत्र।

पूछताछ घर—पु० [हिं०] किसी कार्यालय या विभाग का वह विशिष्ट स्थान जहाँ उस कार्यालय या विभाग से सबध रखनेवाली बातें पूछकर जानी जाती है। (एन्क्वायरी ऑफिस)

पूति-दूषित—वि० [स०] (शरीर का अग) जो पूति से युक्त होने के कारण विषाक्त हो गया हो और सडने लगा हो। (सेप्टिक)

पूर्व-क्रय—पु० [स०]=हक-शफा।

पूर्वता—स्त्री० [स०] १ 'पूर्व' का गुण या भाव। २ आगे या पहले होने की अवस्था, गुण या भाव। अग्रता। (प्रैसिडेन्स)

पूर्व-धारण—पु० [स०] तर्क आदि की सिद्धि के लिए पहले से कोई बात कल्पित कर लेना या मान लेना। अभ्युपगम। (एजम्प्शन)

पूर्वलेख—पु० २ अनुबध, सधि, समझौते आदि का वह मूल मसौदा, जिसकी पुष्टि आगे चलकर सबद्ध दलो या पक्षो की ओर से होने को हो। (प्रोटोकोल)

पूर्वायोजन—पु० [स० पूर्व+आयोजन] १ कोई बडा कार्य आरभ करने से पहले उसके लिए किया जानेवाला आयोजन, तैयारी या व्यवस्था। २ कोई बडा काम आरभ करने से पहले उसके सबध मे बनाई जानेवाली योजना। (प्लान)

पृष्ठाधार—पु०=पृष्ठ-भूमि।

पेशगी—स्त्री०=पेशगी।

पैमान—पु० [फा०] किसी से की जानेवाली प्रतिज्ञा। किसी को दिया जानेवाला वचन।

पोर्टमेंटो—पु० [अ०] १ पाश्चात्य ढग का एक प्रकार का थैला, जिसमे आवश्यक कागज-पत्र आदि रखे जाते है। २ दे० 'सूटकेस'।

पोषक—वि० १ खिलाने-पिलानेवाला। २ भरण-पोषण करनेवाला। (फीडर)

पोष-शाला—स्त्री० [स०]=सवर्धन-शाला।

पौद-घर—पु० [हिं०] वह स्थान जहाँ वृक्षो के छोटे-छोटे पौधे इसलिए लगाये जाते है कि (क) उनकी उन्नति, विकास और सवर्धन के लिए प्रयोग किये जा सकें अथवा (ख) वे तैयार करके ग्राहको के हाथ बेचे जा सकें। जखीरा। (नर्सरी)

पौधा-घर—पु० दे० 'पौद-घर'।

पौर-कर—पु० [स०] वह कर जो किसी पुर अर्थात् नगर या नगरपालिका मे लगता हो। (रेट) जैसे—मकानो पर पानी आदि का लगनेवाला कर।

पौराणिक—वि० २ किसी धर्म या सप्रदाय के पुराणो मे आई हुई अद्भुत और अलौकिक कथाओ से सबध रखनेवाला। (माइथॉलाजिकल)

प्रकंद—पु० [स०] कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे कद जो प्राय. पृथ्वी के नीचे होते हैं और जिनकी जडें नीचे की ओर और पत्तियाँ ऊपर की ओर होती हैं। (राइजोम)

प्रकल्पन—पु० [स०] [भू० कृ० प्रकल्पित] १ किसी भावी घटना या बात के सबध मे कल्पना करने की क्रिया या भाव। २ दे० 'प्रकल्पना'।

प्रकल्पना—स्त्री० ५ गणित मे, कोई विशिष्ट मान या राशि निकालने से पहले उसके लिए कोई निश्चित मान या राशि या चिह्न अवधारित करना। (प्रीजम्प्शन)

प्रकाश-गृह—पु० [स०]=प्रकाश स्तभ।

प्रकाशिकी—स्त्री० [स० प्रकाश से] भौतिक विज्ञान का वह अग या शाखा, जिसमे इस बात का विचार होता है कि प्रकाश मे क्या-क्या गुण या तत्त्व होते हैं और दृष्टि या नेत्रो को देखने मे उससे किस प्रकार की और किस रूप मे सहायता मिलती है। (ऑप्टिक्स)

प्रक्षेप-पथ—पु० [स०] दे० 'प्रक्षेप-वक्र'।

प्रक्षेप-वक्र—पु० [स०] ज्यामिति मे वह वक्र रेखा, जो एक ही कोण वाले कई बिंदुओ पर से होती हुई आगे बढती है। २ उक्त रेखा का मार्ग। (ट्रैजेक्टरी)

प्रचालक—वि० [स०] प्रचालन करने या चलानेवाला।

पु० वह जो किसी यत्र आदि का प्रचालन करता हो। यंत्र से काम लेने के लिए उसे चलानेवाले कारीगर। (ऑपरेटर)

प्रतिलेप—पु० [स० प्रति√क्षिप् (प्रेरित करना)+घञ्] १ आघात या प्रहार करना। चोट पहुँचाना, २ गृहीत, मान्य या स्वीकृत न करना। अग्राह्य, अमान्य या अस्वीकृत करना। ३ वेगपूर्वक पीछे की ओर मुडना, लौटना या हटना। जैसे—झटका हटने पर कमानी का पीछे की ओर होनेवाला प्रतिक्षेप। ४ आगे की ओर फि जाने-

वाले आघात की प्रतिक्रिया के फल के रूप में पीछे की ओर लगनेवाला आघात या झटका। जैसे—बन्दूक या राइफल छोडने पर शिकारी के शरीर पर होनेवाला प्रतिक्षेप।

प्रतिनिधि-मंडल—पु० [सं०] कुछ विशिष्ट लोगों का वह दल या मंडल जिसे कही जाकर प्रतिनिधित्व करने का अधिकार प्राप्त हुआ हो। (डेलिगेशन)

प्रतिपत्र—पु०[सं०] वह पत्र या लेख, जिसके द्वारा किसी सभा, समिति आदि का एक सदस्य अपनी ओर से मतदान करने का अधिकार किसी दूसरे सदस्य को प्रदान करता है। (प्रॉक्सी)

प्रतिपाल्य—पु० आज-कल कोई ऐसा अल्पवयस्क या शारीरिक दृष्टि से असमर्थ व्यक्ति, जो किसी दूसरे के यहाँ रहकर प्रतिपालित होता है। (वार्ड) जैसे—आज-कल भी उनके यहाँ दो अनाथ बालक (अथवा विधवाएँ) प्रतिपाल्य हैं।

प्रतिफल—पु० आज-कल विधिक क्षेत्र मे वह धन, जो आपस मे होनेवाले करार के अनुसार कोई कार्य या सेवा करने के बदले मे पारिश्रमिक, शुल्क आदि के रूप मे दिया या लिया जाता है। (कान्सिडरेशन) जैसे—जिस समय पुस्तक का अनुवाद कराना निश्चित हुआ था, उस समय उसके प्रतिफल की कोई चर्चा नही हुई थी।

प्रतिबंधित—भू० कृ० [सं०] जिसके संबंध मे कोई प्रतिबंध या शर्त लगी हो। पणित। (कन्डिशन्ड)

प्रतिवर्तन—पु० ५ किसी कार्य या निश्चय को इस प्रकार बदलना कि उसका रूप बिलकुल उलटा हो जाय। (रिवर्सन)

प्रति-समाघात—पु० [सं०] एक स्थान पर होनेवाले समाघात (आघात या प्रहार) के परिणाम अथवा फल के रूप मे किसी दूसरे और दूरस्थ स्थान पर लगनेवाला झटका या उत्पन्न होनेवाला संक्षोभ। (रिपर्कशन)

प्रति-साम्य—पु०=सम-मिति।

प्रत्यक्षतः—क्रि० वि० [सं०] १. प्रत्यक्ष रूप से। २ ऊपर से या पहले-पहल देखने पर। प्रथम दृष्ट्या। (प्राइमा फेसी)

प्रत्यावर्तन—पु० २. किसी तल या पदार्थ पर पडनेवाले ताप, प्रकाश, शब्द आदि का उलटकर किसी ओर मुडना। ३. उक्त प्रकार से लौट-कर पडने या आनेवाला ताप, प्रकाश या शब्द। (रिफ्लेक्शन) जैसे—किरण या तरंग का प्रत्यावर्तन।

प्रत्याशा—स्त्री० ४. किसी काम या बात की संभावना के लिए मन मे होनेवाली आशा। आशंसा। (एक्सपेक्टेशन)

प्रथम दृष्ट्या—क्रि० वि० [सं०] पहले पहल अथवा ऊपर से देखने पर। प्रत्यक्षत'। (प्राइमा फेसी)

प्रदाहक—वि० [सं०] १. प्रदाह करनेवाला। २ सेन्द्रिय ऊतको को जलाने या नष्ट करनेवाला। क्षारक। दाहक। (कॉस्टिक)

प्रभार—पु० [सं०] किसी व्यक्ति पर रखा जानेवाला कोई ऐसा कार्य-भार, जिसके लिए वह उत्तरदायी ठहरता हो। (चार्ज)

प्रभिन्न—वि० [सं०] [भाव० प्रभिन्नता] जो अपनी किसी प्रकार की विशिष्टता के कारण अपने वर्ग के औरो से अलग या भिन्न माना और समझा जाता हो। (डिस्टिंक्ट)

प्रभिन्नता—स्त्री० [सं०] प्रभिन्न होने की अवस्था, गुण या भाव। (डिस्टिंकशन)

प्रभेद—पु० ३. वह स्थिति, जिसमें कोई वस्तु या व्यक्ति अपने किसी विशेष गुण या तत्त्व के कारण औरों से अलग या भिन्न माना जाता हो। ४ उक्त प्रकार की स्थिति मे रहने के कारण प्राप्त होनेवाला गौरव, प्रमुखता या सम्मान। (डिस्टिंक्शन) उक्त दोनों अर्थों मे।

प्रभेदी (दिन)—वि० [सं०] (गुण या तत्त्व) जिसके कारण कोई औरों से प्रभिन्न या प्रभेद-युक्त माना जाता हो। (डिस्टिंक्टिव)

प्रयासी—वि० [सं० प्रयासिन्] प्रयास अर्थात् कोशिश करनेवाला।

प्रशासकीय—वि० [सं०] १. प्रशासन-संबंधी। २. प्रशासक का। २. दे० 'प्रशासनिक'।

प्रशिक्षणार्थी—पु० [सं० प्रशिक्षणार्थिन्] [स्त्री० प्रशिक्षणार्थिनी] वह जो किसी कला या विद्या का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा हो। (ट्रेनी)

प्रशिक्षार्थी—पु० [सं०]=प्रशिक्षणार्थी।

प्रसंगवाद—पु० [सं०] यह सिद्धांत कि ईश्वरीय विधान के अनुसार मन और शरीर दोनों सभी प्रसंगों में एक दूसरे पर प्रतिक्रियात्मक रूप मे कार्य करते है। (ओकेज़नलिज़्म)

प्रसारण-गृह—पु० [सं०] वह भवन या स्थान, जहाँ से रेडियो द्वारा वार्ताएँ, संगीत, सूचनाएँ आदि प्रसारित की जाती हैं। (ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन)

प्रसुप्त—भू० कृ० २. (पदार्थ का गुण, प्रभाव या बल) जो अन्दर वर्त-मान होने पर भी कुछ कारणों से अभी दबा हुआ हो और सक्रिय न हो। (डॉर्मेन्ट)

प्रसुप्ति—स्त्री० २. किसी जीव या तत्त्व की वह स्थिति, जिसमे उसकी सब क्रियाएँ और चेष्टाएँ कुछ समय तक बिलकुल बंद या स्थगित रहती हैं। तंद्रा। (डॉर्मेन्सी)

प्रसूति-विद्या—स्त्री० [सं०]=धात्री विद्या।

प्रस्राव—पु० २. किसी वस्तु के अन्दर से कोई तरल पदार्थ निकलकर बाहर की ओर बहना। ३ घाव, फोडे, आदि मे से मवाद या कोई दूषित तरल अंश बहना या रस कर बाहर निकलना। ४ उक्त प्रकार से बाहर निकलनेवाला तरल अंश या मवाद। (डिस्चार्ज)

प्रहार—पु० २ कोई ऐसा आक्रामक कार्य, जो जान-बूझकर किसी को हानि पहुँचाने अथवा कोई दूषित परिणाम उत्पन्न करने के लिए किया गया हो। (एसॉल्ट)

प्राक्कल्पना—स्त्री० [सं०] पहले से की जानेवाली कोई ऐसी कल्पना, जो किसी भावी या संभावित स्थिति के संबंध मे निरूपित की गई हो और जिसके आधार पर आगे के लिए कोई तर्क, निर्णय या विचार किया जाता हो। तर्क, विचार आरंभ करने के लिए किसी ऐसी बात या मत की कल्पना कर लेना, जिसके घटित होने की कोई संभावना हो सकती हो। (हाइपोथेसिस) जैसे—मान लीजिए कि इस जंगल मे आग लग जाय, तो फिर जलाने की लकडी कहाँ से आयेगी। इसमे "मान लीजिए कि इस जंगल में आग लग जाय" प्राक्कल्पना है।

प्राक्कल्पित—भू० कृ० [सं०] (धारणा, निर्णय या विचार) जो किसी भावी घटना या बात के संबंध मे यह मान या सोचकर स्थिर किया गया हो कि यदि ऐसा हुआ, तो। पहले से यह सोचकर कल्पित किया हुआ कि यदि ऐसा हुआ तो। (हाइपॉथेटिकल)

प्रागप्रसव—वि० [सं०] किसी के संबंध के विचार से उसके प्रसव अर्थात्

जन्म से पहले होनेवाला। जन्म-पूर्व। (ऐन्टि-नेटेल) जैसे—हिंदुओं मे वालकों के कुछ प्रागप्रसव सस्कार भी होते हैं। जैसे—गर्भाधान, पुसवन आदि।

प्राप्य—पु० किसी की ओर वाकी निकलनेवाला वह धन, जो विधिक दृष्टि से प्राप्त होने को हो अथवा प्राप्त किया जा सकता हो। किसी के यहाँ वाकी पडी हुई रकम। (ड्यूज़)

प्रायोजना—स्त्री० [स० प्र+आयोजना] किसी वडी बहुमुखी या या विस्तृत योजना का कोई ऐसा मुख्य अश या कार्य, जिसे आरभ करने के लिए विशेप अध्यवसाय और प्रयत्न की आवश्यकता होती हो। (प्रोजेक्ट)

प्रेरक हेतु—पु० [स०] वह उद्देश्य या हेतु, जिससे प्रेरित होकर कोई काम किया जाता है। प्रयोजन। (मोटिव)

प्रेषक—वि० २ किसी के नाम कोई पारसल आदि भेजनेवाला। परेषक। (कन्साइनर)

प्रेषिती—पु० [स०] वह व्यक्ति, जिसके नाम रेल-पार्सल अथवा उसकी बिल्टी भेजी जाय। (कन्साइनी)

फफूँद—स्त्री० [हि०]=फफूँदी।

फरेव—पु० २ कपट और छल से युक्त ऐसा आचरण या व्यवहार जो दूसरो की धन-सपत्ति आदि अनुचित रूप से प्राप्त करने के लिए किया जाय। धोखा। (फ्रॉड)

फर्द-जुर्म—स्त्री० [फा० फर्दे-जुर्म] वह पत्र, जिसमे किसी के किये हुए अपराधो या किसी पर लगाये हुए अभियोगो की तालिका रहती है। आरोप-पत्र। अभियोग-पत्र। कलदरा। (चार्ज-शीट)

फर्द-सजा—स्त्री० [फा० फर्दे-सजा] वह पत्र, जिस पर किसी को मिले हुए दडो या सजाओ की तालिका रहती है।

फाल्टू†—पु० [देश०] उत्तरी भारत के पहाडी प्रदेशो मे बोझ ढोनेवाला मजदूर।

फुल-माल—स्त्री० [हि० फल+माला] फूलों की माला। पुष्प-माल।

फुल-हार—पु० [हि० फूल+हार=माला] फूलो का हार। फूलो की माला।

†पु०=फुल-हारा।

वख्तर—पु० [म० वक्त्र (एक प्रकार का पहनावा) से फा० वकतर] मध्य युग मे, युद्ध के समय पहना जानेवाला एक प्रकार का अँगरखा जिसमे आगे और पीछे दो-दो तवे लगे रहते थे। कवच। चार-आईना। सनाह। (आर्मर)

वख्तरपोश—पु० [फा० वकतर पोश] ऐसा योद्धा, जो वख्तर पहनकर युद्ध करता था।

वख्तरबंद—वि० [फा० वकतरवद] (गाडी या ऐसी ही और कोई चीज) जिस पर रक्षा के लिए वख्तर की तरह लोहे की मोटी-मोटी चादरें या तवे जडे हो। कवचित। (आर्मर्ड)

वख्तरबंद गाडी—स्त्री० [फा० वकतरवद+हि० गाडी] युद्ध मे सैनिको के काम आनेवाली ऐसी गाडी, जिस पर गोले-गोलियो आदि की मार से रक्षित रहने के लिए लोहे की मोटी-मोटी चादरें जडी रहती हैं, और जिन पर प्राय छोटी या हल्की तोपें या मशीनगनें भी रहती है। कवचित गाडी। (आर्मर्ड कार)

वक्तर—पु०=वकतर।

वचाव—पु० ३ अपने आपको आक्रमण, कप्ट, सकट आदि से वचाने के लिए किया जानेवाला उपाय या प्रयत्न। प्रतिरक्षा। (डिफेन्स)

वच्चा-घर—पुं० [हि०]=शिशु-शाला। (नर्सरी)

वछ-पाड़ा—पु० [हि० वछडा+पाडा] गाय और भैंसे के सयोग से उत्पन्न वछडा।

वजरी—स्त्री० चट्टानो, पहाडो आदि से झडकर निकलनेवाली बहुत ही छोटी-छोटी ककडियाँ, जिनमे प्राय कुछ मिट्टी या रेत भी मिली होती है। (ग्रैवेल)

वढ़ौती—स्त्री० [हि० वढना+औती (प्रत्य०)] १ वढ़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ कपनियों के ऋण-पत्रो हिस्सो आदि का अकित अथवा नियत मूल्य से वढा हुआ वह अतिरिक्त मूल्य, जो कुछ विशिष्ट परिस्थितियो मे दिया या लिया जाता है। अधिमूल्य। वढोत्तरी। (प्रिमियम)

वद-सलूक़—वि० [फा० वद+अ० सलूक] दूसरों के साथ अशिष्ट या वुरा व्यवहार करनेवाला।

वनकटाई—स्त्री० [हि० वन+काटना] किसी स्थान पर के जंगल या वन इसलिए काटना कि वह साफ होकर खेती-वारी या वस्ती के लिए उपयुक्त हो जाय। निर्वनीकरण। (डिफॉरेस्टेशन)

वप्पा-वैर—पु० [हि० वाप+वैर=शत्रुता] १ आपस मे होनेवाला ऐसा वैर या शत्रुता, जो वाप-दादा के समय से चली आ रही हो। २. लाक्षणिक रूप मे प्रवल शत्रुता।

वम्हनई†—स्त्री० [हि० वाम्हन=ब्राह्मण] १. ब्राह्मण होने की अवस्था, गुण या भाव। ब्राह्मणत्व। २ यजमानो आदि से पुजाने की ब्राह्मणो की वृत्ति।

वम्हनौटी†—स्त्री० [हि० वाम्हन=ब्राह्मण] गाँव का वह अश या विभाग, जिसमे अधिकतर ब्राह्मण रहते हैं।

वलुआ कागज—पु० दे० 'रेगमाल'।

वलिका—स्त्री० [वलिया शहर के नाम पर मल्लिका का अनु०] कुछ लोगों के अनुसार वलिया और उसके आस-पास की वोली, जो भोजपुरी की एक शाखा है।

वहिरावर्त—पु० [स० वहिर्+आवर्त्त] किसी कथित या विशिष्ट राष्ट्र का वह भू-खड, जो किसी पराये राष्ट्र के भीतरी भाग मे पडता हो और प्राय चारो ओर से घिरा हुआ हो। 'अतरावर्त' का विपर्यय। (एक्सक्लेव) जैसे—पूर्वी पाकिस्तान मे भारत के बहुत-से वहिरावर्त हैं।

वहुक निगम—पु० [स०]=समष्टि निगम।

वहु-भाषक—वि० [स०] वहुत अधिक वोलनेवाला।

वहु-भाषज्ञ—पु० [सं०] वह जो बहुत-सी भाषाएँ जानता हो। अनेक भाषाओ का ज्ञाता या पडित।

वहु-भाषी—वि० वहुत अथवा अनेक भाषाओ से सबध रखनेवाला। जैसे—वहुभाषी सामयिक पत्र।

वांझ—वि० [स० वध्या] १ (मादा जतु या स्त्री) जो किसी शारीरिक विकार के कारण सतान प्रसव करने मे पूर्णत. असमर्थ हो। २ जो किसी प्रकार का उत्पादन या फल की सृष्टि न कर सकता या न

कर सकता हो। उदा०—दिन की पखियाँ रह गई, हाय बाँझ की बाँझ।—बालकृष्ण शर्मा नवीन। ३ मतों की परिभाषा में अज्ञान या ज्ञानहीन (व्यक्ति)।

बाधा—स्त्री० किसी काम या बात के बीच में पड़नेवाली कोई ऐसी रुकावट, जिससे वह काम या बात कुछ समय के लिए रुकती या स्थगित होती हो। (इन्टरप्शन)

बावरिया—पुं० [?] जिप्सी जाति के लोगों की भारतीय शाखा, जिनके कुछ लोग अपराधशील होते और कुछ जगह-जगह घूम कर कैंची, चाकू आदि कई तरह की चीजें बेचते फिरते हैं।

बीमा-किस्त—स्त्री० [फा० बीमा+अ० किस्त] कुछ नियत अवधियों पर किस्त या राशि के रूप में वह धन, जो बीमा करनेवाले को अपने जीवन या सम्पत्ति के बीमे के बदले चुकानी या देनी पड़ती है। (प्रिमियम)

बुझाव—पुं० [हिं० बुझाना] बुझाने की क्रिया, ढंग या भाव।

बुझावा—पुं० [हिं० बुझाना=ठंडा या शीतल करना] औद्योगिक क्षेत्र में वह क्रिया जिसमें किसी गरम या पिघली हुई धातु को किसी रासायनिक घोल में इसलिए डालते हैं कि धातु में कोई नया गुण या विशेषता उत्पन्न हो। (एटेम्परमेन्ट)

क्रि० प्र०—देना।

बुद्धि-दुर्बलता—स्त्री० [सं०]=बुद्धि-दौर्बल्य।

बुद्धि-दौर्बल्य—पुं० २ दे० 'अज्ञानता'।

बुलक्कड़—पुं० [हिं० बोलना] वह जो बहुत अधिक बोलता या बातें करता हो। बहुत बड़ा बातूनी।

बेड़ा—पुं० ३ आज-कल लड़ाई में काम आनेवाले बहुत-से ऐसे समुद्री अथवा हवाई जहाजों का समूह, जो किसी एक प्रधान अधिकारी की अधीनता में किसी विशिष्ट क्षेत्र या भू-भाग में काम करता हो। (फ्लीट)

भगत—स्त्री० [हिं० भगल?] दूसरों को छलने या ठगने अथवा धोखे में रखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की क्रिया या भाव।

भगलबाज—पुं० [हिं०+फा०] [भाव० भगलबाजी] वह जो भगल के द्वारा अर्थात् झूठे आर्थिक प्रलोभन में फँसाकर लोगों से धन-दौलत ठगता हो। भगलिया। (स्विडलर)

भगलबाजी—स्त्री० [हिं०+फा०] भगलबाज होने की अवस्था, गुण या भाव। (स्विंडलिंग)

भगीरथ-प्रयत्न—पुं० [सं०] बहुत कुछ वैसा ही प्रबल और विकट प्रयत्न, जैसा राजा भगीरथ को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर गंगा को लाने के लिए करना पड़ा था।

भग्नाश—वि० [सं० भग्न+आशा] जिसकी आशा टूट चुकी हो। हताश।

भठमासा—पुं०=भटवाँस।

भड़ैती—स्त्री० [हिं० भड़ैत] भड़ैत होने की अवस्था या भाव।

†पुं० [स्त्री० भड़ैतिन]=भड़ैत।

भद्राक्ष—पुं० [सं०] रुद्राक्ष की तरह का एक वृक्ष, जिसके फल के बीज देखने में बहुत कुछ रुद्राक्ष की तरह होते हैं। परन्तु धार्मिक दृष्टि से इन बीजों का महात्म्य रुद्राक्ष की अपेक्षा कम माना जाता है।

भस्मी—स्त्री० [सं० भस्म+हि० ई (प्रत्य०)] १. हिंदुओं में मृतक के दाहकर्म के उपरान्त चिता [illegible] ठंडी हो जाने के बाद बची हुई राख और हड्डियाँ, जो प्राय. तीसरे दिन [illegible] आदि और बाद में किसी पवित्र जलाशय या नदी में प्रवाहित की जाती हैं। [illegible]। फूल। २. अग्निहोत्र की राख, जो धार्मिक दृष्टि से पवित्र मानकर तिलक रूप में मस्तक, [illegible] शरीर के और अंगों पर लगाई जाती है।

भारग्राही—वि० [सं० भारग्राहिन्] जो किसी [illegible] जाने पर और स्थायी रूप से [illegible] भार ग्रहण करता और निभाता हो।

भारी-भड़क्कम—वि०=भारी-भरकम।

भारी-भरकम—वि० [हिं० भारी+अनु० भरकम] १. बहुत अधिक भारी। जैसे—भारी-भरकम शरीर। २. बहुत अधिक बड़ा और विस्तृत। जैसे—भारी-भरकम योजना। ३. भव्य और विशाल। जैसे—भारी-भरकम मकान।

भाषण—पुं० ४. दूसरों को कोई विषय या कुछ बातें अच्छी तरह समझाने या सिखाने के लिए उसके संबंध में कही जानेवाली विवेचनात्मक और विस्तृत बातें। (लेक्चर) जैसे—विश्वविद्यालय की कक्षा में होनेवाला प्राध्यापक का भाषण। (ख) सभाओं की मंडली या श्रोताओं के सामने होनेवाली कार्रवाई का भाषण। ५. वक्तृता। व्याख्यान।

भाषांतरण—पुं० [सं०] [भू० कृ० भाषांतरित] एक भाषा में लिखे हुए लेख आदि का दूसरी भाषा में अनुवाद करने की क्रिया या भाव। अनुवाद। (ट्रान्सलेशन)

भाषा-तत्त्व—पुं० अनुशीलन की वह शाखा (भाषा-विज्ञान से भिन्न) जिसमें किसी विशिष्ट भाषा की प्रकृति, विकास, व्याकरण, रचनात्मक सौंदर्य, स्वरूप आदि का अध्ययन, मनन, विश्लेषण आदि किया जाता है। भाषिकी। (लिंग्विस्टिक्स)

भाषा-तत्त्वज्ञ—पुं० [सं०] वह जिसने किसी विशिष्ट भाषा का भाषा-तत्त्व की दृष्टि से अध्ययन, अनुशीलन और मनन किया हो। 'भाषा-विज्ञानी' से भिन्न। भाषिकी-वेत्ता। (लिंग्विस्ट)

भाषा-विज्ञानी—वि० [सं०] भाषा-विज्ञान संबंधी। भाषा-विज्ञान का।

पुं० वह जो भाषा-विज्ञान का जानकार ज्ञाता या पंडित हो। 'भाषा-तत्त्वज्ञ' से भिन्न। (फाइलोलोजिस्ट)

भाषिकी—स्त्री० [सं० भाषिक से]=भाषा-तत्त्व। (दे०)

भाषिकी-वेत्ता—पुं०=भाषा-तत्त्वज्ञ। (दे०)

भू-मंडल—पुं० २ सारी पृथ्वी का गोलाकार पिंड। (ग्लोब)

भू-मितिक—वि० दे० 'भौमितिक'।

भौमितिक—वि० [सं०] भू-मिति संबंधी। भू-मिति का।

मंदा—पुं० बाजार में वह स्थिति, जब किसी चीज के गाहक बहुत कम होते हैं या दाम कुछ गिरने लगता है। मंदी। उदा०—मुकुति आदि मंदे में मेली।—सूर।

मक्खी—स्त्री० ३ एक विशेष प्रकार का बहुत छोटा पेंच, जो बन्दूक की नाल के अगले सिरे पर कसा जाता है और जिसकी सहायता से निशाने की ठीक सीध देखी जाती है। (फोरसाईट)

मखनियाँ दही—पु० [हिं०] ऐसे दूध का जमाया हुआ दही, जिसमे से मक्खन पहले ही मथकर निकाल लिया गया हो। 'सजाव दही' से भिन्न।

मखनिया दूध—पु० [हिं०] ऐसा दूध जिसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो।

मछवाहा†—पु०=मछुआ।

मछुवा†—पु०=मछुआ।

मछैरा†—पु०=मछुआ।

मजहबी राज्य—पु० [अ+म०]=धर्मतंत्री राज्य।

मत—पु० किसी विषय मे विचारपूर्वक निरूपित या स्थिर किया हुआ ऐसा सिद्धात, जिसे साधारणत सब लोग ठीक मानते हो। उपपत्ति। वाद। (थिअरी)

मत-गणक—पु० [स०] वह जो सभा, सस्थाओ आदि मे सदस्यो के मत-पत्रो की गणना करके उनका परिणाम अधिकारियो को बतलाता हो। (टेलर)

मत-गणन—पु० [स०] लोक-तत्री व्यवस्था मे किसी विषय मे लोगो के दिये हुए मतो या मत-पत्रो की आधिकारिक रूप से गणन करने की क्रिया। अधिकारियो, मत-दाताओ आदि को बतलाने के लिए प्राप्त मतो की गिनती करना।

मताग्रह—पु० [स० मत+आग्रह] अपने मत अर्थात् विचार, सिद्धात आदि के सबध मे होनेवाला अतिरिक्त आग्रह या हठ। (डॉग्मेटिज्म)

मतार्थक—पु० [स० मत+अर्थक] वह जो मतदाताओ से यह कहता-फिरता हो कि आप निर्वाचन के समय अमुक व्यक्ति के पक्ष मे अपना मत दें। (कैन्वॉसर)

मध्यवर्ती राज्य—पु० [स०]=अतस्थ राज्य।

मनमाना—वि० ३ (बात या विचार) जो किसी तर्क या सिद्धात पर आश्रित न हो, बल्कि केवल अपनी प्रवृत्ति या रुचि के अनुसार और बिना उपयुक्तता का ध्यान रखे व्यक्त या स्थिर किया गया हो। (आर्बिट्रेरी) ४ जिससे या जिसे मन मानता हो अर्थात् अच्छा, अनुकूल या उपयुक्त समझता हो। मनोनुकूल। जैसे—अब तो तुम्हे मनमाने मित्र मिल गये न। ५ जिसे मन हर तरह से ठीक मानता हो, फिर चाहे वह अच्छा हो या बुरा। फलत जो उच्छृखल और स्वच्छन्द वृत्ति के अनुरूप हो। जैसे—मनमाना आचरण, मन-मानी कार्रवाई। ६ जो मन को पूरी तरह सन्तुष्ट और सुखी करता हो। जैसे—मनमाना सुख।

मनस्तत्त्व—पु० [स०] मन का वह अश, तत्त्व या शक्ति, जो बिलकुल नैसर्गिक रूप से काम करती है और जिसके विषय मे भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टि मे कुछ भी जाना नही जा सकता। (साइकिक एलिमेन्ट)

मद्देनजर—अव्यय० [फा०] निर्णय, विचार आदि के समय दृष्टि के सामने रखकर। ध्यान मे रखते हुए। जैसे—आपको इस झगडे का फैसला हमारी सब बातो को मद्देनजर रखकर करना चाहिए। क्रि० प्र०—रखना।

मनिआर्डर—पु० [अं०] दे० 'धनादेश'।

ममानी†—स्त्री० [हिं० मामा+आनी (प्रत्य०)] मामा की पत्नी, मामी। (मुसल०)

मरणोत्तरक—वि० [स० मरण+उत्तर+क (प्रत्य०)] किसी के सबध के विचार से उसकी मृत्यु के उपरान्त होनेवाला। (पोस्थमस, पोस्चमस) जैसे—(क) मरणोत्तरक उपाधि=किसी की मृत्यु के उपरान्त उसे दी जानेवाली उपाधि। (ख) मरणोत्तरक सतान=किसी की मृत्यु के उपरान्त जन्म लेनेवाली उसकी सन्तान।

महनायम†—पु०=महना-मत्थन।

महासांघिक—पु० [स०] गौतम बुद्ध के वे अनुयायी, जो बौद्ध धर्म मे अनेक प्रकार के सुधार करके उसे अधिक उदार तथा व्यापक रूप देने के पक्षपाती थे। आगे चलकर यही लोग महायान सप्रदाय के प्रवर्तक हुए और महायानी कहलाए।

माध्यम—पु० ५ रसायन-शास्त्र मे, वह निस्कीटित पोषक द्रव्य, जिसमे पालन-पोषण, सवर्धन आदि के लिए जीवाणु या विषाणु रखे जाते हैं। ६ प्रेतात्म विद्या मे, जिसके सबध मे यह माना जाता है कि आवाहन करने पर प्रेतात्माएँ उस शरीर मे आती हैं और उसी के द्वारा प्रश्नो के उत्तर अथवा अपने सन्देश देती है। (मीडियम)

मानकीकरण—पु० २ किसी वस्तु के उत्पादन, निर्माण या रचना के सबध मे उनका ऐसा रूप स्थिर करना कि उनके खरेपन, शुद्धता, श्रेष्ठता आदि के सबध मे किसी प्रकार का सन्देह करने का अवकाश न रह जाय। (स्टैन्डर्डाइज़ेशन) जैसे—औषधो या वस्त्रो का मानकीकरण।

मानव-कल्प—पु० [स०] वानर जाति के कुछ ऐसे प्राणियो की सज्ञा, जो मानसिक और शारीरिक दृष्टि से अपेक्षया अधिक उन्नत और विकसित होते है। (ऐंथ्रोपॉएड) जैसे—ओरग-ऊटग, गिबन, गोरिल्ला, सिम्पैन्जी आदि।

मानविकी—स्त्री० [स० मानव से] १ समस्त ससार मे बसी हुई सारी मानव जाति। २ मनुष्यो मे रहनेवाले सभी आवश्यक और शुभ गुणो का समाहार या सामूहिक रूप। ३ वे सब शास्त्र, जिनमे मानव जाति के श्रेष्ठ विचारो का विवेचन या निग्रह होता है, जैसे—इतिहास, कला, दर्शन, साहित्य आदि। (ह्यूमैनिटी)

मान्यता—स्त्री० वह स्थिति, जिसमे कोई बात अपने तर्क, बुद्धि, विश्वास, श्रद्धा आदि के आधार पर मान ली जाती है। (एजम्प्शन)

मापडा†—पु० [?] किसी व्यक्ति के लिए तुच्छता सूचित करते हुए उसकी हँसी उडाने का शब्द। (बाजारू)

मापडी—स्त्री० [?] नवयुवती और सुन्दरी स्त्री।

मापनी—स्त्री० २ गज आदि की तरह का कोई ऐसा उपकरण जिससे चीजो की लबाई, चौडाई आदि नापी जाती हो। (स्केल)

मालगुंजी—स्त्री० [स०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

मालमता—पु० २ किसी व्यक्ति की वह सारी सम्पत्ति, जिसे सहज मे बेचकर दाम खडे किये जा सकते हो अथवा जिसे द्रव्य या धन के रूप मे परिवर्तित किया जा सकता हो। परिसपद। (एसेट्स)

मालियाना—वि० [फा० मालियान] माल अर्थात् धन-सपत्ति से सबध रखनेवाला। आर्थिक। माली। जैसे—किसी सवाल का मालियाना पहलू।
†पु०=मालगुजारी (जमीन की)

मालीखौलिया—पु०=मालीखूलिया।

माहपारा—पु० [फा० माहपार] इतना अधिक सुन्दर कि देखने में चाँद के टुकड़े के समान जान पड़ता हो।

मिजाज—पु० मनुष्य के मन की वह सामान्य और स्वाभाविक स्थिति जो उसकी क्रियाओं, प्रवृत्तियों, रुचियों आदि की निर्णायक भी होती है और सूचक भी। (डिस्पोज़ीशन) जैसे—उसका मिजाज शुरू से ही चिड़चिड़ा (या सख्त) है।

मिथ्याचारी—पु० [सं० मिथ्याचारिन्] [स्त्री० मिथ्याचारिणी] वह जो प्राय अथवा स्वाभाविक रूप से मिथ्याचार करता हो। ढोंगी। (हिपोक्रैट)

मिलावटी—वि० [हिं० मिलावट+ई (प्रत्य०)] (पदार्थ) जिसमे कोई घटिया या रद्दी चीज मिलाई गई हो। अपमिश्रित। (एडल्टेरेटेड) जैसे—मिलावटी घी, मिलावटी चाँदी।

मिली भगत—स्त्री० [हिं० मिलना+भगत (छल-कपट) ?] ऐसी स्थिति, जिसमें दो या कई दल या व्यक्ति मिलकर आपस मे किसी प्रकार की गुप्त अभिसंधि या षड्यंत्र रचते हों और दूसरों को अपने जाल मे फँसाकर स्वार्थ सिद्ध करते हों। (कोल्यूजन) जैसे—जान पड़ता है कि भारत की कुछ भूमि हड़पने के लिए यह चीन और पाकिस्तान की मिली भगत है।

विशेष—'मिली भगत' और 'साट-गाँठ' का अन्तर जानने के लिए देखें 'साट-गाँठ' का विशेष।

मुद्रालेख—पु० [सं०] मुद्रा अर्थात् सिक्के पर अंकित वह लेख या किसी प्रकार का चिह्न जिससे उसके चलानेवाले का नाम, देश और समय सूचित होता है। सिक्के पर का लेख। (लीजेन्ड)

मुद्रीकरण—पु० [सं०] [भू० कृ० मुद्रीकृत] १ मुद्रा या सिक्के बनाने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु को ऐसा रूप देना कि वह विधिक दृष्टि से मुद्रा या सिक्के की तरह प्रचलित हो सके। (मनीटाइजेशन) जैसे—कागज के नोटों का मुद्रीकरण।

मुफलिस—वि० ऐसा व्यक्ति, जिसके पास कुछ भी धन-संपत्ति न हो। परम धनहीन। अकिंचन। (पॉपर)

मुर्की—स्त्री० गाने-बजाने मे तीन स्वर एक साथ और बहुत जल्दी या तेजी से कोमलता या सुन्दरता-पूर्वक निकालने की क्रिया, जो अलंकारिक मानी जाती है।

मुलाकाती—पु० वह जो किसी से मुलाकात या भेंट करने के लिए आता हो या आया हो, मिलने के लिए आनेवाला व्यक्ति। (विज़िटर)

मूल्य-ह्रास—पु० [सं०] चीजों के घिसने-पिसने या बाजार मे भाव गिरने आदि के कारण किसी वस्तु के मूल्य मे होनेवाली कमी। अर्घ-पतन। (डेप्रिसिएशन)

मृद्भांड—पु० १ मिट्टी का बर्तन। २ दे० 'मृण्पात्र'।

मौंजवान् (वत्)—वि० [सं० मौंज+मतुप्, म=व, तुम दीर्घ न लोप] मुजवान नामक पर्वत में होने या उससे संबंध रखनेवाला।

मौंजी—पु० [सं० मौंजिन] वह जो मूँज की मेखला पहने हो। वि० मौंजीय।

मौंजीय—वि० (सं० मुंजा+छ, छ=ईय] १ मूँज संबंधी। २ मूँज का बना हुआ।

मौकुलि—पु०[सं० मुकुल+इञ्] कौआ।

मौच—पु०[सं०√मुच् (छोड़ना)+अण्] केला (फल)।

मौद्गलि—पु०[सं० मुद्गल+इञ्] कौआ।

मौनता—स्त्री०[सं० मौन+तल-टाप्] मौन होने या रहने की अवस्था या भाव। चुप होना। चुप्पी। मौन।

मौष्ठिक—पु०[सं० मुष्ठि+ठक्, ठ=इक] चोरी।

मौसम-विज्ञान—पु०[अ०+सं०] वह विद्या या विज्ञान जो वातावरण संबंधी विक्षोभों आदि की विवेचना करके मौसम संबंधी बातें पहले से बतलाता है। (मिटिअरोलॉजी)

म्लेच्छ-मुख—पु०[सं०] ताँबा।

यंत्र-पुत्रिका—स्त्री० [सं०] एक तरह की कठपुतली, जो यंत्रों से चलाई जाती है।

यंत्र-सज्ज—वि०[सं०] १. यंत्रों से युक्त। २. अस्त्र-शस्त्रों से युक्त (सेना)।

यंत्रांश—पु०[सं० ब० स०] संगीत मे एक प्रकार का राग जो हनुमत के मत से हिंडोल राग का पुत्र है।

यंत्रिकी—स्त्री०[सं०] छोटी साली।

यक्षता—स्त्री०[सं० यक्ष+तल्] यक्ष होने की अवस्था, धर्म या भाव। यक्षपन।

यक्षत्व—पु०[सं० यक्ष+त्व]=यक्षता।

यक्षप—पु०[सं० उप० स०]=यक्ष-पति।

यक्ष-रस—पु०[सं० ष० त० स०] एक प्रकार का मादक द्रव।

यक्षांगी—स्त्री०[सं० ब० स०] एक प्राचीन नदी।

यक्षामलक—पु०[सं० ष० त० स०] पिंड-खजूर।

यक्ष्मि—वि०[सं०] १ यक्ष्मा संबंधी। २. जिसमे यक्ष्मा के कीटाणु हों। ३ यक्ष्मा की ओर प्रवृत्त।

यजुःश्रुति—पु०[सं० ष० त० स०] यजुर्वेद।

यजुष्पात्र—पु०[सं० ष० त० स०] एक प्रकार का यज्ञ-पात्र।

यजूवर—पु०[सं० ष० त० स०] ब्राह्मण।

यमजात—पु०=यमज।

यम-प्रस्थ—पु०[सं० ष० त० स०] एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के दक्षिण मे था।

यमया—स्त्री०[सं० यम+√या+क, टाप्] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का नक्षत्र-योग।

यम-सूर्य—पु०[सं० द्वंद्व० स०] दो कमरोंवाला ऐसा घर, जिसका एक कमरा उत्तर को और दूसरा कमरा पश्चिम को खुलता है।

यम-स्तोम—पु० [सं० द्वन्द्व स०+अच्] एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

यमातिशत्र—पु० [सं० ष० त० स०] ४९ दिनों मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

यमादित्य—पु०[सं० यम+आदित्य, कर्म० स०] सूर्य का एक रूप।

यवमत्यक—पु०[सं० यव+त्वा (आदान)+क, यवत्व+क] एक पक्षी (सुश्रुत)

यव-शाक—पु०[सं० ष० त० स०] एक प्रकार का साग।

यव-सुरा—स्त्री०[सं० ष० त० स०] यव-मद्य। (दे०)

यवान—वि०[सं० यु+मानच्] वेगवान्। तेज। क्षिप्र।

यवानिका—स्त्री०[स० यव+ङीप्+आनुक] अजवायन।
यवाम्ल—पु०[स० प० त० स०] जौ के माँड की काँजी।
यवाश—पु०[स० उप०स०] एक प्रकार का कीडा, जो जौ की फसल को हानि पहुँचाता है।
यविरा—स्त्री०[स० यव से] यव अर्थात् जौ का बना हुआ शीतल, हल्का मादक पेय। (बियर)
यवोद्भव—पु०[स० ब० स०] जवाखार।
यव्यावती—स्त्री० [स०√यु+यत्+टाप्=यव्या+मतुप्+ङीप] १. वैदिक युग की एक नदी। २ उक्त नदी के तट पर का एक प्राचीन नगर।
याग-संतान—पु०[स० ष० त० स०] इन्द्र के पुत्र जयत का एक नाम।
याज्—वि०[स०√यज्+णिच्] यज्ञ करनेवाला। याचक।
पु० १ अनाज। अन्न। २ एक प्राचीन ऋपि।
†पु० यज्ञ।
याजुषी-अनुष्टुप—पु० [स० याजुष+ङीप्, याजुषी-अनुष्टुप, व्यस्तपद] एक वैदिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ वर्ण होते है।
याजुषी-उष्णिक—पु० [स० व्यस्तपद] एक वैदिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे सात-सात वर्ण होते हैं।
याजुषी गायत्री—स्त्री० [स० व्यस्तपद] एक वैदिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे ६ वर्ण होते है।
याजुषी जगती—स्त्री०[स० व्यस्तपद] एक वैदिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे बारह वर्ण होते हैं।
याजुषी त्रिष्टुप—पु०[स० व्यस्तपद] एक वैदिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे नौ वर्ण होते हैं।
याजुषी बृहती—स्त्री० [स० व्यस्तपद] एक वैदिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे नौ वर्ण होते है।
याज्ञतूर—पु०[स० यज्ञतूर+अण्] एक प्रकार का साम।
यादु—पु०[स०√या+उ+दुक] १ जल। पानी। २ तरल पदार्थ।
याद्व—वि०[स०] यदु सवधी। यदु का।
पु० यदुवशी।
याप्ता—स्त्री०[स०√या+णिच्+क=याप्त+टाप्] जटा।
यामक—पु०[स० यम्+ण्वुल] पुनर्वसु (नक्षत्र)।
यामकिनी—स्त्री० [स० यामक+णिनी+ङीप्] १. कुल-वधू। कुल-स्त्री। २ लडके की पत्नी। पुत्र-वधू। ३ बहन। भगिनी।
यामीर—पु०[स० याम+ईरव] चन्द्रमा।
यार्कायन—पु०[स० यर्क+फक्] यर्क ऋपि के गोत्र मे उत्पन्न पुरुप या अपत्य।
याविक—पु०[स० यव+ठक] मक्का। जुआर।
याशु—पु०[स०] १ आलिगन। परिरभण। २ मैथुन। समोग।
युगल-बंदी—स्त्री० [स०+फा०] ऐसा गाना, जो दो आदमी मिलकर गाते हो। २ ऐसा वाद्य सगीत जिसमे दो अलग-अलग प्रकार के बाजे साथ मिलकर बजाये जाते हो। जुगल-बदी। (ड्यूएट) जैसे—बाँसुरी और शहनाई की युगल-बदी।
युज्य—वि० [स०√युज् (योग) +यत्] १ मिला हुआ। सयुक्त। २ जो मिलाया जा सके या मिलाया जाने को हो। ३ उपयुक्त।
पु० १. मिलान। सयोग। २ सबधावस्था। नातेदारी। ३ स्वजन। बधु। ४ एक प्रकार का साम।
युधिक—वि०[स०√युध्+ठक्] युद्ध करनेवाला।
युनेस्को—पु०[अ० यूनाइटेड नेशन्स एजुकेशनल साइटिफिक ऐंड कल्चरल आरगनाइजेशन के आरभिक अक्षरो का समूह] सयुक्त राष्ट्र सघ की शाखा के रूप मे एक सस्था, जो सारे ससार मे शिक्षा, विज्ञान और सास्कृतिक विपयो का प्रचार और समन्वय करने के उद्देश्य से बनी है।
योग-निद्रालु—पु०[स० योग-निद्रा+आलुच] विष्णु जो प्रलय के समय योगनिद्रा लेते है।
योगापत्ति—स्त्री० [स०] प्रथा, रीति-नीति आदि के कारण होनेवाला सस्कार।
योगिका—स्त्री०[स०] छपाई, लिखाई आदि मे एक प्रकार का चिह्न जो यौगिक पदो या शब्दो मे एक दूसरे से उनका पार्थक्य दिखाने के लिए बीच मे लगाया जाता है, और जिसका रूप होता है '–' सयोजन-चिह्न। (हाइफेन)
यौध—पु०[स० योध+अण्] योद्धा। सिपाही।
रंग-भेद—पु०[स०] आधुनिक राजनीति मे, जिसमे मनुप्य के शरीर के काले, गोरे, पीले, आदि वर्णो के भेद के कारण उन्हे छोटा-बडा माना जाता है, और अपने वर्ण के सिवा दूसरे वर्ण के लोगो के साथ समानता का व्यवहार नही किया जाता। (कलर बार)
रंग-मध्य—पु० [स० प०त० स०] रगमच। रग-स्थली।
रक्त-आमातिसार—पु० [स० प० त० स०] एक प्रकार का आतिसार रोग जिसमे लहू के दस्त आते है।
रक्त-केशी (शिन्)—वि०[स० रक्त-केश+इनि] जिसके बाल लाल रंग के हो।
रक्त-पदी—स्त्री० [स० ब० स०] लज्जावती पौधा।
रक्त-वह—वि०[स०] (नस) जिसमे से होकर शरीर का रक्त बहता है।
रक्ताधिमथ—पु० [स० मध्य० स०] एकप्रकार का अधिमथ रोग, जो रक्त के विकार के कारण होता है।
रक्ताभिष्यद—पु०[स० रक्त-अभिष्यद, कर्म० स०] आँखो के लाल होने यथा उनमे से लाल पानी टपकने का एक रोग।
रक्तिम—वि० [स०] [भाव० रक्तिमा] रक्त के रग की सी आभा-वाला।
रक्षोपाय—पु०[स० रक्षा+उपाय] पहले से किया जानेवाला ऐसा उपाय या व्यवस्था, जिससे आगे चलकर किसी प्रकार के सकट या हानि से बचाव या सुरक्षा हो सकती हो। रक्षा-कवच। (सेफ-गार्ड)
रजोविरति—स्त्री०[स०] रजो-निवृत्ति। (दे०)
रट्टू—वि०[हिं० रटना] १ बहुत अधिक या लगातार रहनेवाला। २ (बालक या विद्यार्थी) जो अपना पाठ रट तो लेता हो, पर उसे पूरी तरह से हृदयगम न करता हो।
रत-जाली—स्त्री० [स०] कुटनी।
रतिक—वि०[स०] रति-सबधी। रति का।
पु० सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
रति-नाग—पु० [स० प०त० स०] सोलह प्रकार के रति-बधो मे से एक। (काम-शास्त्र)

रद्द-बदल—पुं०[फा० रद्दोबदल] पहले की कुछ चीजों या बातों को रद्द या निरर्थक करके उनके स्थान पर नई चीजें या बातें रखना। २ आमूल अथवा आंशिक परिवर्त्तन। हेर-फेर। (ऑल्टरेशन)

रद्दोबदल—पुं०[फा०]=रद्द-बदल।

रन—पुं०[सं० इरण=रेगिस्तान] १. मरुभूमि। रेगिस्तान। २. भारत के पश्चिमी प्रदेश कच्छ का वह रेगिस्तानी इलाका, जो समुद्र-तल से कुछ नीचा पड़ता है और वर्षा-ऋतु में समुद्री ज्वार के जल से भर जाता है।

रवि-रत्नक—पुं०[सं० रविरत्न+कन्] माणिक्य। मानिक।

रवैया—पुं० ४ किसी कार्य के प्रति होनेवाला दृष्टिकोण या मनोवृत्ति। अभिवृत्ति। रुख। (ऐटिच्यूड)

रस-नायक—पुं०[ष० त०] १ शिव। २ पारा।

रसायक—पुं०[रा० ब० स०] एक प्रकार की घास।

रसाली (लिन्)—पुं०[सं० रसाल+इनि] १ गन्ना। २ ऊख। ३ एक प्रकार का कर्नाटकी राग।

रहस्य-भाव—पुं०[सं० ष० त०] १ संसार के झगड़ों को छोड़कर एकान्त स्थान में निवास करना। २ वह जो उक्त प्रकार से संसार छोड़कर विरक्त हो गया हो।

रहाइशी†—वि०=रिहाइशी।

राकेट—पुं०[अ० रॉकेट] १ बान नाम की आतिशबाजी। २ उस के अनुकरण पर बना हुआ एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जिसके एक सिरे पर भभकनेवाले पदार्थ भरे रहते हैं, जो जलने पर उस यंत्र को आकाश में बहुत ऊपर उड़ा ले जाते हैं।

विशेष—कुछ राकेट तो आकाश में पहुँचकर संकेतात्मक प्रकाश करते हैं, कुछ घातक अस्त्रों का काम करते हैं, और कुछ का उपयोग अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए होता है।

राजकीय—वि० २ राजा या महाराजा से संबंध रखनेवाला। राजशाही। (रॉयल)

राज-क्षमा—स्त्री० [सं०] ऐसे राजनीतिक अपराधियों को राज्य की ओर से मिलनेवाली सार्विक क्षमा, जिन्होंने राज्य के विरुद्ध कोई अनुचित कार्य या अपराध किया हो। (ऐमनेस्टी)

राजत्व—पुं० २ किसी देश या राज्य में एकमात्र राजा का ही होनेवाला अनियंत्रित शासन। राजशाही। शाही। (किंगशिप)

राजदूर्वा—स्त्री०[सं० ष० त०] मोटे कांडो वाली एक प्रकार की दूब।

राज-धत्तूरक—पुं०[सं० राज-धत्तूर, ष०त०+कन्] एक प्रकार का धतूरा, जिसके फूल कई आवरण के होते हैं। कनक-धतूरा।

राज-नील—पुं०[सं० ष० त०] मरकत मणि। पन्ना।

राज-पटोल—पुं०[सं० मध्य स०] एक प्रकार का परवल।

राज-पट्टिका—स्त्री०[सं० ष० त०] चकोर। चातक।

राजपर्णी—स्त्री० [सं० ष० त०] प्रसारिणी लता।

राज-भद्रक—पुं०[सं० ष० त०] १ पारिभद्र का पेड़। परिभद्रक। २ नीम। ३ कुड़ा नामक वनस्पति। ४ कुदरू। ५ सफेद मदार।

राजशाही—वि०[हिं० राजा+फा० शाह] राजाओं या महाराजाओं से संबंध रखनेवाला। राजकीय। (रायल) २ राजाओं-महाराजाओं आदि की तरह का। राजसी। जैसे—राज-शाही ठाट-बाट।

स्त्री० वह स्थिति, जिसमें किसी देश पर राजा का अनियंत्रित शासन होता है। राजत्व। शाही। (किंगशिप) जैसे—कश्मीर में उन्हें राजशाही का अंत करने के प्रयत्न में कारागार भेज दिया गया।

राजस्थानी—वि०[हिं० राजस्थान] राजस्थान संबंधी। राजस्थान का। जैसे—राजस्थानी लोकगीत।

पुं० राजस्थान का निवासी।

स्त्री० राजस्थान की बोली या भाषा।

राजिक—पुं०[सं०] [illegible]।

राज्य-धर—पुं०[सं० राज्य√धृ (धारण)+अच्] राज्य का शासक। शासक।

राज्य-मंडल—पुं०[सं०] आधुनिक राजनीति में दो या अधिक देशों या राज्यों के योग से बना हुआ वह मंडल या संघ जिसे किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थायी रूप प्राप्त हुआ हो। परिसंघ। (कनफेडरेशन)

राज्य-स्वामी (मिन्)—पुं०[सं० राज्य√स्वा (गति-निवृत्ति)+णिनि] राजा। शासक।

राज्यसात्—वि०[सं०] जिसे राज्य या शासन ने किसी विशेष कारणवश पूरी तरह से अपने अधिकार या कब्जे में कर लिया हो। जब्त किया हुआ। (कान्फिस्केटेड) जैसे—राज्यसात् संपत्ति, राज्यसात् साहित्य।

राज्यसात्करण—पुं०[सं०] १ दंड के रूप में सरकार द्वारा किसी के धन या संपत्ति का छीन लिया जाना। उस पर कब्जा कर लेना। २ राज्य का किसी दूषित और हानिकारक लेख, सामयिक पत्र, साहित्य आदि का प्रचलन या प्रचार रोकने के लिए उसकी सब प्रतियाँ अपने अधिकार में कर लेना। जब्ती। (कान्फिस्केशन)

रामधुन—स्त्री०[सं० राम+हिं० धुन (ध्वनि)] राम-राम, सीताराम, रघुपति राघव राजाराम आदि राम-संबंधी भजनों का कीर्तन।

रामा-प्रिय—पुं०[सं० ष० त०] दालचीनी।

राम्या—स्त्री०[सं०√रम् (क्रीड़ा)+यत्+टाप्] रात्रि। रात।

राशनिंग—स्त्री०[अं०] [illegible]।

राष्ट्रपति शासन—पुं०[सं०] वह शासन प्रणाली, जिसमें प्रधान अर्थात् राज्य का अध्यक्ष राज्य का मुख्य नेता सर्वोपरि होता है। मंत्रि-मंडलीय शासन-प्रणाली से भिन्न। (प्रेसिडेंशियल गवर्नमेन्ट)

राष्ट्रिक—पुं० ३. आज-कल वैधानिक दृष्टि से वह व्यक्ति, जो या तो जन्म से या देशीकरण की विधि के अनुसार किसी राष्ट्र का अधिकार-प्राप्त अंग या सदस्य हो। (नेशनल)

राष्ट्रिकता—स्त्री०[सं०] १ राष्ट्रिक होने की अवस्था, गुण या भाव। २ आज-कल मुख्य रूप से वह स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति वैधानिक दृष्टि से किसी राष्ट्र का राष्ट्रिक (अंग और सदस्य) होता है। (नैशनैलिटी)

राष्ट्रिका—स्त्री[सं० राष्ट्र+ङीप्+कन्+टाप्] कटकारी। भटकटैया।

राह-चबैनी—स्त्री०[फा० राह+हिं० चबैना] हिंदुओं में दान की एक प्रथा, जिसमें ३६० लड्डू कुछ भुने हुए चने और थोड़ी दक्षिणा इस उद्देश्य से ब्राह्मणों को बाँटी जाती है कि दाता को मरने के उपरान्त परलोक की यात्रा में साल भर तक बराबर खाने को मिलता रहे।

राहित्य—पुं० [सं०] रहित होने की अवस्था, गुण या भाव। रहितत्व।

राहुच्छत्र—पुं०[सं० ष० त०] अदरक। आदी।

रिंखण—पुं० [सं०√रिख् (गति)+ल्युट्] १ फिसलना। लडखड़ाना। २ विचलित होना। डिगना।

रिआयत—स्त्री०५ किसी के कष्ट, सकट आदि का ध्यान रखते हुए उसे दी जानेवाली कोई ऐसी सहायता या सुभीता, जिससे उसके कष्ट मे कुछ कमी हो। ६ किसी प्रकार के उपचार, औषध आदि से पीडा, रोग आदि मे होनेवाली कमी या न्यूनता। (रिलीफ, उक्त दोनो अर्थो मे) जैसे—इस दवा से बुखार तो उतरेगा ही खाँसी मे भी कुछ रिआयत होगी।

रिक्ति—स्त्री०[स०] १ रिक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। २ दे० 'रिक्तिका'।

रिक्तिका—स्त्री०[स०] किसी बात या वस्तु मे कोई ऐसा अवकाश या छिद्र, जिसमे से कोई चीज बाहर निकल सकती हो। ऐसा छिद्र या मार्ग, जिससे बाहर निकल सकने का अवसर मिल सकता हो। (लेकुना) जैसे—इस विधान मे कई रिक्तिकाएँ है, जिससे इसका उद्देश्य पूरी तरह से सिद्ध नही हो सकता।

रिवम—पु०[स०√राध् (ससिद्धि)+अमच् (बा) इत्व] वसत ऋतु।

रिपुवाह—वि०[स० रिपु+√वह् (प्रवाह)+घञ्] पाप या पातक का नाश करनेवाला।

रिपीक—पु० [स०√रिप् (हिंसा)+ईकन्] १ शिव। २ तलवार।

रिहाइश—स्त्री० ३ किसी स्थान पर रहने की क्रिया या भाव। आवास। (रेजिडेन्स)

रिहाइशी—वि०[फा०] (भवन या स्थान) जिसमे कोई रिहाइश या आवास करता हो। आवासीय। (रेजिडेन्शल)

रीज्या—स्त्री०[स०√रिज् (गर्जन)-स्यत्+टाप्] १ घृणा। नफरत। २ निंदा। ३ भर्त्सना।

रीढ़क—पु०[स० रीढ+कन्] रीढ।

रीति-चद्रिक—पु०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रुख—पु० किसी काम या बात के सबध मे मनुष्य का वह मनोगत भाव जो उसे कुछ करने या न करने के लिए प्रवृत्त करता है। अभिवृत्ति। रवैया। (एटिच्यूड)

रूँदना†—स०=रौंदना। उदा०—माटी कहे कौंहार सो तू का रूँदै मोहि। एक दिन ऐसा आयगा मैं रूँदूँगी तोहि।—कबीर।

रूढ़—वि० जो लोक मे किसी रुढि के अनुसार परपरा से चला आया हो, या प्रचलित हो। (कन्वेन्शनल)

रूढिवाद—पु०[स०] यह मत या सिद्धात कि हमे रूढियो अर्थात् परपरा से चली आई प्रथाओ, रीतियो, व्यवहारो आदि का ही पालन करना चाहिए, उनका परित्याग नही करना चाहिए। (कन्वेन्शनलिज्म)

रूढिवादी—वि०[स०] रुढिवाद-सबधी। रुढिवाद का।

पु० वह जो रुढिवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (कन्वेन्शनलिस्ट)

रूपातरण—पु० २ विधिक क्षेत्र मे, एक प्रकार के दड को बदलकर उसके स्थान पर दूसरे प्रकार का अथवा दूसरा ऐसा दड देना, जो अपेक्षया कम कठोर हो। (कम्यूटेशन) जैसे—फाँसी की सजा रद्द करके उसकी जगह आजीवन कारावास की सजा देना।

रेगमाल—पु०[फा०] एक प्रकार का कागज, जिस पर बालू और कुरड पत्थर का चूरा चिपकाया जाता है, और जिससे लकडी की चीजे रगडकर चिकनी और साफ की जाती है। बलुआ कागज। (एमरी-पेपर)

रेचक-पखा—पु०[स०+हि०]=निकास-पखा।

रेडार—पु०[अ०] दे० 'तेजोन्वेष'।

रेडिआई—वि०[अ० रेडियो+हि० आई (प्रत्य०)] १ रेडियो सबधी। रेडियो का। जैसे—रेडिआई कवि सम्मेलन। २ रेडियो के द्वारा प्रस्तुत किया जानेवाला। जैसे—प्रसाद की कहानी का रेडिआई रूपातर।

रैन-बसेरा—पु०[हि० रैन=रात+बसेरा] १ वह स्थान जहाँ रहकर सुख से रात बिताई जाती हो। २ आजकल बडे नगरो मे वह स्थान, जहाँ ऐसे गरीब कुछ किराया देकर अथवा यो ही रात बिताते है, जिनका कोई घरबार नही होता।

रैली—स्त्री० [अ०] बहुत से ऐसे लोगो का जमावडा, जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी विशिष्ट स्थान पर हो। जैसे—बाल-चरों की रैली, राष्ट्रीय स्वयसेवक दल की रैली; श्रमिक दल की रैली आदि।

रोग-विज्ञान—पु०[स०]=विकृति-विज्ञान।

रोजही†—स्त्री०[फा० रोज+हि० ही (प्रत्य०)] १ काम करने की वह प्रथा, जिसमे पारिश्रमिक या वेतन प्रति दिन के हिसाब से मिलता है। २. उक्त प्रकार से मिलनेवाला पारिश्रमिक या वेतन।

क्रि० प्र०—कमाना।

३, रुपए उधार देने और लेने की एक प्रथा, जिसमे सूद प्रतिदिन के हिसाब से जोडा और लिया या दिया जाता है।

मुहा०—**रोजही चलाना**=उक्त ढग से लोगो के रुपए उधार देने का व्यवसाय करना। **रोजही लेना**=उक्त ढग से किसी से ऋण लेना।

रोधाधिकार—पु० [स० रोध+अधिकार]=निषेधाधिकार।

रोना—वि० ३ जो देखने मे रोता हुआ सा जान पडे। जैसे—रोनी सूरत। ४ बहुत ही उदास और तेजहीन। प्रभा, शोभा आदि से बिलकुल रहित।

रोमातिका—स्त्री० [स०] खसरा या मसूरिका नाम का रोग। (मीजिल्स)

रोष—पु० ३ किसी प्रकार का अपमान या हानि होने पर मन मे उत्पन्न होनेवाली अप्रसन्नता या नाराजगी। अमर्ष। (रिजेन्टमेन्ट)

लंकाई—वि० [हि० लका+ई (प्रत्य०)] १. लका सबधी। लका का। २ लका मे रहने या होनेवाला।

पु० लका देश का निवासी।

स्त्री० लका देश की भाषा।

लकेश्वरी—स्त्री० [स०] १ लका की रानी। २. रावण की पत्नी मन्दोदरी। ३ सगीत मे, एक प्रकार की रागिनी।

लक्वा—पु० २ अगघात नामक रोग, जिसमे शरीर का कोई अग या पार्श्व बहुत-कुछ निर्जीव या सज्ञा-शून्य हो जाता है। पक्षाघात। (पैरालिसिस)

लखनवी—वि० [लखनऊ, उत्तर प्रदेश का नगर] १. लखनऊ सबधी। लखनऊ का। लखनौआ। २ लखनऊ मे रहने या होनेवाला। जैसे—मीर लखनवी। (उर्दू)

लखनौआ†—वि० उभ० [लखनऊ, उत्तर प्रदेश का नगर] १ लख-नऊ सबधी। लखनऊ का। जैसे—लखनौआ खरबूजा, लखनौआ टोपी। २ लखनऊ मे रहने या होनेवाला।

५—८१

चरण की स्वतत्रता होती है और बिना किसी बाधा के अपने विचार प्रकट कर सकते और सघटन बना सकते है, और (घ) लोक-तत्री शासन-प्रणाली मे सर्व-प्रधान अधिकारी या शासक निर्वाचित भी हो सकता है, और उसका पद वशानुक्रमिक भी हो सकता है। 'गणतत्र' से इसमे यही मुख्य अतर है।

३ ऐसा देश या राज्य, जिसमे उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली प्रचलित हो। ४ सस्थाओ, समाजो आदि की वह स्थिति, जिसमे सब सदस्यो को समान अधिकार प्राप्त होते है और सब समस्याओ का निराकरण बहुमत के अनुसार होता है। (डेमोक्रेसी, उक्त सभी अर्थो मे)

लोकशाही—स्त्री० [स० लोक+फा० शाही]=लोक-तत्र।

लोक-संहार—पु० [स०] किसी जाति या वर्ग के सब अथवा बहुत से लोगो का एक साथ किया जानेवाला वध या सहार। सर्व-सहार। (प्रोग्राम)

लोक-समाज—पु० [स०] किसी देश, नगर, भू-भाग आदि मे रहनेवाले उन सभी लोगो का समाज जो एक ही तत्र से शासित होते है और जिनके स्वार्थ या हित प्राय एक से होते हे। (कम्युनिटी)

लोक-साहित्य—पु० [स०] लोक अर्थात् जन-साधारण मे पढा जानेवाला साहित्य, विशेषत ऐसा साहित्य जो विशद्ध विद्वत्तापूर्ण तथा शास्त्रीय साहित्य से भिन्न हो। (फोक लिटरेचर)

विशेष—साधारणत अशिक्षितो, असभ्यो और आदिम जातियो आदि मे प्रचलित साहित्य तो इसके अतर्गत आता ही है, इसके अतिरिक्त सभ्य समाज मे प्रचलित ऐसे परपरागत साहित्य का इसमे अतर्भाव होता है, जो लोक मे मौखिक रूप से प्रचलित हो अथवा जिसके कर्ता, रचयिता आदि अज्ञात हो।

लोपन—पु० ४ आज-कल किसी मुद्रित या लिखित प्रति मे से उसका कोई अश काटकर निकाल देना। (डिलीशन)

लोह-आवरण—पु० दे० 'लौह-आवरण'।

लौंद का साल—पु० दे० 'अधिवर्ष'।

लौकिक राज्य—पु० [स०] दे० 'धर्म निरपेक्ष राज्य'।

लौ—स्त्री० [?] किसी काम, चीज या बात की ओर लगनेवाला ऐसा पक्का और पूरा ध्यान, जो सहसा कभी छूटता या टूटता न हो। मन की लगन।

मुहा०—**लौ लगाना**=एकाग्रचित्त होकर किसी काम, चीज या बात की ओर पूरा-पूरा ध्यान लगाना।

लौह-आवरण—पु० [स०] १ एक पद, जो आरभ मे सोवियत रूस की उस अवस्था के लिए प्रयुक्त होता था, जिसके अनुसार वे अपनी भीतरी आर्थिक, राजनीतिक आदि बातें अन्य देशो से पूरी तरह छिपाकर रखते थे और सहसा शेष जगत् पर प्रकट नही होने देते थे। २ उक्त प्रकार की कोई ऐसी व्यवस्था, जो किसी बडी बात को व्यापक रूप से छिपाये रखने के लिए की जाती हो। (आयरन कर्टेन)

वदी प्रत्यक्षीकरण—पु० [स०] विविध क्षेत्रो मे, एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था, जिसके अनुसार राज्य द्वारा वदी किया हुआ कोई व्यक्ति न्यायालय से यह प्रार्थना कर सकता है कि मुझे न्यायालय मे बुलाकर इस बात का निर्णय किया जाय कि राज्य द्वारा वदी किया जाना नियमित या विधि-विहित है या नही। (हैबिअस कॉर्पस)

वक्तृता—स्त्री० ३ सस्था, सभा, समाज आदि मे किसी उपस्थित या प्रासगिक विषय पर धारा-प्रवाह रूप मे किसी के द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले विवेचनात्मक और विस्तृत विचार। व्याख्यान। (स्पीच) जैसे—सभाओ मे राजनीतिक या सामाजिक नेताओ की होनेवाली वक्तृता।

वचनबद्धता—स्त्री० [स०] वचनबद्ध होने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कमिटमेन्ट)

वटु—पु० ३ भारतीय आर्यो मे ऐसा बालक, जिसका अभी तक यज्ञोपवीत या व्रतवध न हुआ हो।

वर्णन—पु० बातचीत के समय प्रसगवश किसी काम, चीज या बात की होनेवाली चर्चा। उल्लेख। (मेन्शन)

वशवद—वि० ३ कहने के अनुसार काम करनेवाला।

वसंतिका—स्त्री० [स०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

वसापायस—पु० [स०] अम्लाशय और पित्त विकार से बननेवाला सफेद रग का वह पदार्थ, जो शरीर मे से मूत्र के साथ निकलता है। (काइल)

वस्तु-विनिमय—पु० [स०] १ किसी से एक चीज लेकर उसके बदले मे उसे दूसरी चीज देना। चीजो की अदला-बदली। २ व्यापार मे वह स्थिति जिसमे किसी से कोई चीज लेने पर उसका मूल्य धन के रूप मे नही चुकाया जाता, बल्कि उतने ही मूल्य की कोई और चीज उसे दी जाती है। अदला-बदली। (बार्टर)

वहा-मापी—पु० [स० वहा-मापिन्] वह यत्र, जिससे पानी या किसी तरल पदार्थ के बहाव की गति, मात्रा, वेग आदि मापते है। धारावेग-मापी। (करेन्टमीटर)

वहिष्कर्ण—पु० [स०] १ प्राणियो के कानो का बाहर की ओर निकला हुआ अग या भाग। २ किसी चीज का कोई ऐसा अग या भाग, जो कानो की तरह बाहर निकला हो। (आरिकल)

वाँस†—पु० [स० पाश] किसी प्रकार का पाश, फदा या बधन। यौगिक के अन्त मे, जैसे—चिलवाँस, ढेलवाँस आदि।

वाक्पीठ—पु० [स०] किसी ऐसे जन-समूह का मच, जिस पर बैठकर लोग लोकोपयोगी अथवा सामयिक विषयो पर विचार-विमर्श करते है। (फोरम)

वाग्विश्वास—पु० [स० वाक+विश्वास] १ सैनिक क्षेत्र मे, युद्ध के बन्दियो के द्वारा दिये हुए इस विशिष्ट वचन पर किया जानेवाला विश्वास कि यदि कैद से छोड दिये जाएँगे, तो अपने बन्दी करनेवालो के आदेश का पालन करेगे, अथवा भविष्य मे युद्ध मे सम्मिलित न होगे। साधारणत इस प्रकार का विश्वास दिलाने पर वे कैद से छोड दिये जाते है। २ विधिक क्षेत्र मे, कैदियो के दिये हुए इस वचन पर किया जानेवाला विश्वास कि यदि वे अस्थायी रूप मे कुछ समय के लिए छोड दिए जाएँगे, तो फिर लौटकर जेल मे आ जाएँगे, अथवा यदि स्थायी रूप से छोड दिये जाएँगे तो भविष्य मे कोई अपराध न करेंगे। ३ वह अवस्था जिसमे कैदी लोग उक्त प्रकार का वचन देने पर कैद से अस्थायी अथवा स्थायी रूप मे छोड दिये जाते है। (पैरोल; उक्त सभी अर्थो मे)

वातापि—पु० [स०] एक राक्षस, जो आतापि का भाई था और जो अगस्त्य मुनि द्वारा मारा गया था।

वाद-कारण—पु० [सं०]=वाद-मूल।

वाद-विवाद—पु० ३. केवल औपचारिक रूप से होनेवाली उस प्रकार की ऐसी बातचीत, जिसमें पारस्परिक मतों या विचारों का खंडन-मंडन होता है। (डिबेट)

वायु-दाब-मापक—पु० [हि०] वह यंत्र जिससे किसी स्थान या वातावरण के घटने या बढ़नेवाले ताप-क्रम का पता चलता है। (बैरोमीटर)

विंदुक—पु० २ आजकल पिचकारी की तरह का शीशे का एक छोटा उपकरण, जिसमें भरा हुआ तरल पदार्थ एक-एक बूँद करके गिराया या टपकाया जाता है। (ड्रॉपर)

विकर्षण—पु० [सं०] १ दूसरी ओर या विपरीत दिशा में होनेवाला खिंचाव। 'आकर्षण' का विपर्याय। २ आगे बढ़ाई या फेंकी हुई चीज को फिर खींच कर अपनी ओर लाना। वापस बुलाना। लौटाना। ३. न रहने देना। नष्ट करना। ४ कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ५ किसी को बलपूर्वक पीछे की ओर ढकेलना या हटाना। जैसे—आक्रमण करनेवाले शत्रु का विकर्षण। ६ अपने अनुकूल न समझकर या अरुचिकर होने पर अलग या दूर करना अथवा हटाना। ७ किसी प्रकार के गुण, प्रवृत्ति आदि का उत्कट विरोध होने के कारण एक तत्त्व या पदार्थ का दूसरे तत्त्व या पदार्थ को दूर हटाना। (रिपल्शन, अन्तिम तीनों. अर्थों में)

विकिरण—पु० ताप-प्रकाश की किरणों के फल-स्वरूप होनेवाली दूर-व्यापी प्रक्रिया। (रेडियो)

विकिरणशीलता—स्त्री० [सं०] आधुनिक विज्ञान की वह स्थिति जिसमें अणुबमों आदि के विस्फोट के कारण विषाक्त किरणें निकलकर चारों ओर फैलती और वातावरण दूषित करके जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि को बहुत हानि पहुँचाती हैं। (रेडियो-ऐक्टिविटी)

विकृति-विज्ञानी—पु० [सं०] वह जो विकृति-विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। (पैथोलाजिस्ट)

विक्रय-लेख्य—पु० [सं०]=विक्रय-पत्र।

विखंडन—पु० [सं०] [वि० विखंडनीय, भू० कृ० विखंडित] १. किसी चीज के छोटे-छोटे टुकड़े करना। २ किसी चीज को तोड़-फोड़ कर उसके खंड या टुकड़े करना। ३. विज्ञान में, ऐसी क्रिया करना, जिससे किसी अणु के परमाणु अलग-अलग हो जायें। (स्प्लिटिंग)

विचारण—स्त्री० ४ विधिक क्षेत्र में वह अवस्था, जिसमें न्यायालय के द्वारा इस बात का विचार किया जाता है कि अभियुक्त किसी अभियोग का वस्तुतः दोषी है या नहीं। (ट्रायल)

विचार-धारा—स्त्री० २. व्यक्तियों अथवा उनके दलों, वर्गों आदि की वह विशिष्ट विचार-प्रणाली और उसके आधार पर स्थिर किये हुए सिद्धान्त, जिनका उपयोग आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में अनुकरणीय और पालनीय आदर्शों के रूप में होता है। (आइडिओलॉजी)

विचाराधिकार—पु० [सं० विचार+अधिकार] १ किसी बात या विषय पर कुछ सोच-विचार करने का ऐसा अधिकार, जो उसके लिए आवश्यक योग्यता रखने से प्राप्त होता है। २ आज-कल विधिक क्षेत्र में, अधिकारी या न्यायालय का वह अधिकार, जिससे उसे किसी अपराध या दोष की ओर ध्यान देकर उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त होती है। (कॉग्निजेन्स)

विच्छेदन—पु० २. चिकित्सा-शास्त्र में, शरीर के किसी दूषित रोगग्रस्त या विषाक्त अंग को शल्यक्रिया के द्वारा काटकर अलग करने की क्रिया या भाव। अंगच्छेदन। (ऐम्प्युटेशन)

विजय—स्त्री० शत्रु को युद्ध-क्षेत्र में हराकर उसके देश अथवा किसी प्रदेश पर अधिकार प्राप्त करने की क्रिया या भाव। जीत। (कान्क्वेस्ट)

विजयोपहार—पु० [सं० विजय+उपहार] १ वह उपहार, जो किसी को विजय प्राप्त करने पर भेंट के रूप में मिलता है। २ ढाल, कवच आदि के रूप में वह विजय-चिह्न, जो खिलाड़ियों आदि को कोई प्रतियोगिता जीतने पर मिलता है। ३ किसी प्रकार के शत्रु को जीतने पर प्राप्त की हुई कोई ऐसी चीज, जो उस विजय का स्मरण कराती हो। जय-चिह्न। (ट्रॉफी) जैसे—घड़ियाल, चीते, भालू, शेर आदि को मारकर उनकी उतारी हुई खाल।

विद्युत्-दाब—स्त्री० [सं०+हि०] विद्युत् की गति या धारा का वह मान जो उसकी दाब के आधार पर आँका या नापा जाता है। (वोल्टेज)

विधि—स्त्री० १. कोई काम करने या चीज बनाने का नियत और निश्चित ढंग या प्रकार। प्रक्रिया। (प्रोसेस) २ व्याकरण में वाक्य की वह स्थिति जिसमें उसकी क्रिया किसी प्रकार के अनुरोध, आज्ञा, आदेश, उपदेश आदि की सूचक हो। (इम्परेटिव मूड) जैसे—(क) सदा गुरुजनों की आज्ञा पालन करो। (ख) अब आप भी अपने विचार प्रकट करें।

विधिवेत्ता—पु० [सं०] वह जो विधि-शास्त्र, अर्थात् कानून का बहुत अच्छा ज्ञाता हो, अथवा जिसने तत्संबंधी विषयों पर अच्छे ग्रंथ लेख आदि लिखे हों। (ज्यूरिस्ट)

विधि-शास्त्र—पु० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें किसी विशिष्ट विषय के नियमों, विधियों, सिद्धान्तों आदि का निरूपण और विवेचन होता है। जैसे—अन्तर्राष्ट्रीय विधिशास्त्र, चिकित्सीय विधि-शास्त्र आदि। २. मुख्य रूप से वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि कानून या विधि-विधान किन नियमों के आधार पर बनाये जाने चाहिए और विवादों आदि का निर्णय या न्याय किन सिद्धान्तों के अनुसार होना चाहिए। न्याय-शास्त्र। (जुरिस्प्रुडेन्स)

विधि-शास्त्री—पु० [सं० विधिशास्त्रिन्] वह जो किसी विधि-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो। (जुरिस्प्रुडेन्ट)

विनय—पु० किसी को नियंत्रण या शासन में रखने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात, जिसके साथ अवज्ञा के लिए दंड का भी भय दिखाया गया या विधान किया गया हो। (स्मृति)

स्त्री० नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनती।

विनियमन—पु० [सं०] [भू० कृ० विनियमित] १. विनियम बनाने की क्रिया या भाव। २. ऐसी व्यवस्था करना, जिससे कोई काम या बात ठीक ढंग से और नियमित रूप से होती चले। (रेगुलेशन)

विपत्र समाहर्ता—पु०=प्राप्यक समाहर्ता।

विमुद्रीकरण—पु० [सं०] [भू० कृ० विमुद्रीकृत] जिस चीज या मुद्रा या सिक्के के रूप में प्रचलन हो उसके संबंध में ऐसी विधिक क्रिया करना कि उसका वह मुद्रा या सिक्केवाला महत्त्व, मूल्य या रूप नष्ट

हो जाय और उसका प्रचलन बन्द हो जाय। 'मुद्रीकरण' का विपर्याय। (डिमनीटाइजेशन) जैसे--(क) पहले इस देश में हजार रुपए वाले नोट भी चलते थे। पर बाद में सरकार ने उनका विमुद्रीकरण कर दिया। (ख) लोगों के पास काला या दूषित धन निकलवाने के उद्देश्य से अब कुछ लोग यह भी कहने लगे हैं कि सौ रुपयोंवाले नोटों का विमुद्रीकरण कर दिया जाय।

विलोप—पु० किसी वस्तु का इस प्रकार नष्ट या समाप्त हो जाना कि उसका कोई अंग या चिह्न न रह जाय। अस्तित्व का पूरी तरह मिट जाना। लोप। (एक्सटिंक्शन)

विवरणिका—स्त्री० १ किसी नये कार्य, व्यापार, संस्था आदि से संबंध रखनेवाली मुख्य-मुख्य बातें बतलानेवाला विवरण-पत्र। २ किसी शैक्षणिक संस्था के संबंध का वह विवरण-पत्र, जिसमें उसके नियमों, पाठ्य-क्रमों आदि से संबंध रखनेवाली सभी मुख्य बातों का उल्लेख हो। (प्रॉस्पेक्टस)

विषाद—पु० ६ एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें रोगी बहुत ही उदास, दुखी और विरक्त होकर प्रायः चुपचाप सिर झुकाये बैठा रहता है। मालीखौलिया। (मेलान्कोलिया)

विस्फोटन—पु० २ भभकनेवाले पदार्थों में इस प्रकार आग लगाना कि उसके फलस्वरूप कोई चीज टूट-फूट कर छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट हो जाय अथवा उसके टुकडे-टुकडे होकर हवा में उड़ या छितरा जाय। (ब्लैस्टिंग)

विह्वल—वि० ३ दया, प्रेम, सहानुभूति आदि के आवेश में होने के कारण जो अपना आप भूलकर मग्न और विभोर हो रहा हो। जैसे—प्रेम-विह्वल।

वीथी—स्त्री० ७ बडे मकानों आदि में दर्शकों के बैठने के लिए बना हुआ ऊँचा और सीढ़ीनुमा स्थान। दीर्घा। (गैलरी)

वृत्तिका—वि० [सं०] जो किसी जीव या प्राणी की वृत्ति या मूल स्वभाव में उद्भूत या संबद्ध हो। मन में सहज भाव से और आपसे आप उत्पन्न या उद्भूत होनेवाला। सहज। साहजिक। (इन्स्टिंक्टिव)

पु० मनुष्य में उन सभी कार्यों और वृत्तियों का सामूहिक रूप जिसके आधार पर वह अपने जीवन में उन्नति या प्रगति करता है और जिसका उसके भविष्य पर प्रभाव पडता है। जीवक। (केरियर)

वैखरी—स्त्री० ४ वाणी का वह रूप जो वर्णमाला, अक्षरों या वर्णों में निरूपित होता है और जो बोलचाल के शब्दों के रूप में सामने आता है।

व्याख्यान—पु० ४ संस्था, सभा, समाज आदि में किसी उपस्थित या प्रासंगिक विषय पर धारा-प्रवाह रूप में किसी के द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले विवेचनात्मक और विस्तृत विचार। भाषण। वक्तृता। (स्पीच) जैसे—आज-कल राजनीतिक समस्याओं पर प्रायः सभी जगह नित्य कुछ न कुछ व्याख्यान होते रहते हैं।

व्यापार-चक्र—पु० [सं०] वह सारी अवधि या समय, जिसमें व्यापार संबंधी तेजी-मंदी आदि की तरह की कुछ विशिष्ट घटनाओं की रह रहकर आवृत्ति होती रहती है। (ट्रेड-साइकिल)

व्यापार-छाप—स्त्री० [सं०+हिं०] व्यापारियों आदि का परिचायक वह चिह्न या निशान, जो उनकी वस्तुओं आदि पर अंकित हो। मार्का। (ट्रेडमार्क)

व्युत्पत्ति-विज्ञान—पु० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमें शब्दों के मूल उद्गम या व्युत्पत्ति का विचार और विवेचन होता है। (एटिमॉलोजी)

शब्दार्थ-विज्ञान—पु० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमें शब्दों के सूक्ष्म अर्थों का विवेचन हो।

शरीर-गठन—स्त्री० [सं०+हिं०] शरीर की बनावट या संरचना जिसके अन्तर्गत आकार, रूप आदि बातें आती हैं और जिसमें उसके बल या शक्ति का पता चलता है। अंग-लेट। (फ़िज़ीक)

शर्त—स्त्री० ४ कोई काम या बात पूरी करने से पहले उसके संबंध में बतलाया जानेवाला कोई अनिवार्य, अपेक्षित या आवश्यक तत्त्व। (कन्डिशन) जैसे—मैं तो वहाँ चलने के लिए तैयार हूँ; पर शर्त यह है कि आप भी मेरे साथ रहें।

शलाका मुद्रा—स्त्री० २ परवर्ती काल में, उक्त प्रकार की वे मुद्राएँ जिन पर किसी व्यापारिक श्रेणी (संघ या संस्था) की सूचक छाप अंकित होती थी। आहत-मुद्रा। (पंचमार्क्ड क्वॉएन)

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व—पु० [सं०] आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में यह नया मत या सिद्धांत कि सब देशों या राष्ट्रों को आपस में शांतिपूर्वक रहकर अपना-अपना अस्तित्व बनाये रहना चाहिए और आपस के विवाद शांतिपूर्वक बातचीत करके ही निपटाने चाहिए। युद्ध के द्वारा नहीं। (पीसफुल कोएग्जिस्टेन्स)

शांति-सेना—स्त्री० [सं०] आधुनिक राजनीति में तटस्थ देशों की वह सेना, जो दो या अधिक शत्रु-देशों का युद्ध रोकने अथवा गृह-युद्ध विद्रोह आदि रोकने के लिए नियुक्त की जाती है। (पीस फोर्स)

शाठ्य—पु० [सं०] शठ होने की अवस्था, गुण या भाव। शठता।

शाठ्य-ग्रंथि—स्त्री० [सं०] शठता अर्थात् बहुत बड़ी दुष्टता करने के उद्देश्य से कुछ लोगों का आपस में मिलकर कोई गुट या दल बनाना। साट-गाँठ। (कोल्यूजन)

शास-पत्र—पु० [सं०] वह अधिकार-पत्र जो राजा या सरकार से किसी विशेष प्रकार के अधिकार के संबंध में किसी व्यक्ति या संस्था को दिया गया हो। (चार्टर)

शास-पत्रित—भू० कृ० [सं०] (व्यक्ति या संस्था) जिसे किसी काम के लिए शास-पत्र मिला हो। (चार्टर्ड) जैसे—शास-पत्रित लेखपाल।

शास-पत्रित लेखपाल—पु० [सं०] वह लेखापाल जिसे आय-व्यय आदि की जाँच करने के संबंध में शास-पत्र मिला हो। (चार्टर्ड एका-उन्टेन्ट)

शास्त्री—स्त्री० [सं० शास्त्र+ई (प्रत्य०)] देवनागरी लिपि। हिन्दी भाषा। (पश्चिम)

शाहखरच—पु०=शाहखर्च।

शाहखरची—स्त्री०=शाहखर्ची।

शिशु-शाला—स्त्री० [सं०] १ वह स्थान जहाँ शिशु अर्थात् छोटे-छोटे बच्चे पालन-पोषण आदि के लिए रखे जाते हैं। २ आज-कल बडे-बडे कारखानों में वह स्थान, जहाँ काम करनेवाली स्त्रियाँ अपने छोटे बच्चों को सुरक्षित रूप से रहने के लिए छोड देती हैं और वहाँ उन बच्चों की सब प्रकार से देखभाल होती है। बच्चा-घर। (नर्सरी)

शीत-निद्रा—स्त्री० [सं०] कुछ जीव-जन्तुओं की वह शीतकालीन निद्रा, जिसमें वे चुपचाप बिना कुछ खाये-पीये गुफाओं आदि में अथवा जमीन के नीचे दबे पड़े रहते हैं। परिशयन। (हाइबर्नेशन)

शील-भंग—पु० [सं०] किसी सच्चरित्रा कुमारी अथवा विवाहिता स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करके उसे चरित्र-भ्रष्ट और कलंकित करना।

शून्यवाद—पु० २ वह पाश्चात्य दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि ज्ञान और सत्य का कोई मूल और वास्तविक आधार नहीं है। ३ वह मत या सिद्धान्त कि बहुत दिनों से जो धार्मिक प्रथाएँ और नैतिक विश्वास आदि चले आ रहे हैं। वे व्यर्थ है और उनका अनुसरण और पालन नहीं होना चाहिए। (निहिलिज्म)

शृंगक—पु० [सं०] चिकित्सा-क्षेत्र में, एक प्रकार की छोटी पिचकारी जिसकी सहायता से शरीर के अन्दर दवा पहुँचाई जाती है। (सीरिंज)

शैल-सस्तर—पु० [सं०]=आधार-शैल।

शोध—पु० ६ खोज। गवेषणा (रिसर्च)

श्मशान—पु० ४ आज-कल एक प्रकार की बड़ी भट्ठी, जिसमें प्राय बिजली की सहायता से शव जलाये जाते हैं। (क्रेमेटोरियम)

श्रमिक—पु० [सं०] वह जो केवल शारीरिक परिश्रम के काम करके अपनी जीविका चलाता हो। श्रमकर। मजदूर। (लेबरर)

श्रव्यकला—स्त्री० [सं०] कला के मुख्य दो वर्गों में से एक, जिसमें कविता-पाठ, संगीत आदि का अंतर्भाव होता है। दूसरा वर्ग 'प्रेक्ष्य कला' कहलाता है।

श्रुति-व्यवस्था—स्त्री० [सं०] बड़े-बड़े कमरों आदि की रचना में वह व्यवस्था, जिसमें आवाज सब जगह साफ सुनाई दे और गूँजने न पावे। (एकाउस्टिक्स)

संकेंद्रण शिविर—पु० [सं०] १ वह स्थान, जहाँ मारने और भेजने के लिए सेनाएँ एकत्र की जाती है। २ युद्ध-काल में वह स्थान जहाँ विदेशियों, शत्रुओं आदि के सन्दिग्ध व्यक्ति एकत्र करके पहरे में रखे जाते हैं। ३ वह स्थान, जहाँ अपने देश के ऐसे विरोधी दलों के लिए लोग पहरे में रखे जाते है, जिनसे किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका होती है। बंदी शिविर। (कन्सेन्ट्रेशन कैंप)

संकेतक—वि० [सं०] संकेत करनेवाला।
पु० १ कोई ऐसी चीज या बात, जिसका उपयोग किसी प्रकार का मार्ग-दर्शन या और कोई संकेत करने के लिए होता है। २. वह विशिष्ट प्रकार का संकेत, जो आकाश में उड़नेवाले जहाजों को उनके निदेशन, मार्ग-दर्शन आदि के लिए रेडियो के द्वारा किया जाता है। (बेकन)

संकेत-लिपि—स्त्री० [सं०] आज-कल राजनीतिक क्षेत्र में, एक प्रकार की गुह्य लेख-प्रणाली, जिसमें साधारण पदों, वाक्यों और शब्दों के लिए कुछ सांकेतिक शब्द नियत होते है और जिनका आशय वही लोग समझ सकते है, जिनके पास उनकी कुंजी हो। गूढ़-संहिता लिखने की लिपि। (साइफर कोड)

संगमन—पुं० २ राजनीतिक, व्यापारिक, आदि संस्थाओं के प्रतिनिधियों सदस्यों आदि की ऐसी सभा या सम्मेलन, जो महत्त्वपूर्ण विषयों के संबंध में कोई अधिसमय, प्रथा या रूढ़ि निश्चित करने के लिए होता हो। (कन्वेन्शन)

संभरक—वि० [सं०] संभरण करनेवाला।
पु० कोई ऐसी चीज या साधन जो आगे बढ़कर किसी बड़ी व्यवस्था या आवश्यकता की पूर्ति करता हो। (फीडर) जैसे—(क) संभरक नहर वह छोटी नहर जो छोटी छोटी नहरों में पानी पहुँचाती हो। (ख) संभरक रेल अर्थात् शाखा के रूप में चलनेवाली वह रेलगाड़ी जो छोटे स्थानों पर पड़नेवाले स्टेशनों तक यात्रियों को पहुँचाती हो।

संयुमन—पु० [सं०]=सुमन।

संयोजन-चिह्न—पु० [सं०] =योजिका। (हाईफेन)

सल्लक—पु० [सं०] वह पत्र या लेख जो किसी पत्र के साथ नत्थी करके भेजा जाय। सहपत्र। (एनक्लोजर)

संवर्धन-शाला—स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं आदि का ठीक तरह से पालन-पोषण करके उनकी जाति की उन्नति तथा वृद्धि की जाती है। पोष-शाला। (नर्सरी) जैसे—मछलियों की संवर्धन-शाला, रेशम के कीड़ों की संवर्धन-शाला आदि।

संविधि—स्त्री० [सं०] [वि० सांविधिक] १. ऐसी विधि अर्थात् परिपाटी या रीति, जो देश में प्रमाणित मानी जाती है। २. आधुनिक राजनीति में, वह विधान जो विधायिका सभा में स्वीकृत हो चुका हो और जिसके प्रचलन में कोई अड़चन न रह गई हो। (स्टैट्यूट)

संविधि-ग्रंथ—पु० [सं०] आधुनिक राजनीति में वह ग्रंथ या पुस्तिका, जिसमें राज्य द्वारा स्वीकृत नियम या कानून औपचारिक रूप से लिखकर रखे जाते हैं। नियम-पुस्तक। (स्टैट्यूट बुक)

संविधि-पुस्तक—स्त्री० [सं०] =संविधि-ग्रंथ।

सकत†—स्त्री० [सं० शक्ति] शक्ति।

सतरन†—वि० [फा० शातिर] [भाव० सतरन्नी] बहुत चालाक धूर्त या जो धोखा देकर अपना काम निकालनेवाला। उदा०—ठगिनी का सतरन ठगुआ कहैं नैन। नैन न कुछ कहहिं मौन मौन।—[illegible]।

सजाव दही—पु० [हिं० सजाना+दही] दूध का उबालकर जमाया हुआ दही। 'मखनियाँ दही' से भिन्न।

सपरेटा†—पु० [अं० सेपरेटेड मिल्क]=मखनिया दूध। ऐसा दूध जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो। मखनिया दूध।

सबै†—वि०=सभी। उदा०—सबै दिन जात न एक समान।

समग्र युद्ध—पु० [सं०] ऐसा विराट और व्यापक युद्ध जो सैनिक क्षेत्रों तक ही परिमित न हो, बल्कि जिसमें शत्रु के नागरिक और सामाजिक क्षेत्रों पर भी प्रहार करके उनका विनाश किया जाता हो। (टोटल वार)

समय-सूचक—वि० [सं०] [भाव० समय-सूचकता] १ जो समय सूचित करता हो। समय का ज्ञान करानेवाला। २ (व्यक्ति) जो समय की आवश्यकता देखते हुए उसके अनुरूप कोई ठीक काम करता हो।

समयोग—वि० [सं०] समर्थ अंगों वाला। हट्टा-कट्टा। (एबल-बॉडीड)

समुद्र-विज्ञान—पु० [सं०] भूगोल की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि समुद्र में कहाँ कितनी अधिक या कम गहराई होती है, कहाँ कैसी लहरे उठती हैं; और कहाँ कैसे खनिज पदार्थ, जीव-जंतु, वनस्पतियाँ आदि होती हैं। (ओसिनोग्राफी)

सरघो†—स्त्री०=सहरी। (पश्चिम)

सह-पत्र—पु० [सं०] वह पत्र या लेख, जो किसी पत्र के साथ नत्थी करके कहीं भेजा जाय। संलग्नक। (एन्क्लोजर)

साँचा—वि० [स्त्री० साँची]=सच्चा। उदा०—शुभ नाम प्रभू का साँचा। तन हाड चाम का ढाँचा।—भजन।

साविधिक—वि० [स० सविधि से] १. सविधि सबधी। सविधि का। २ नियम या निश्चय, जिसे सविधि अर्थात् स्वीकृत विधान का रूप प्राप्त हो चुका हो। ३ (कार्य या क्रिया) जो सविधि के अनुसार अथवा सविधि के रूप मे प्रचलित और व्यवहृत हो। (स्टैट्यूअरी) जैसे—संविधिक रूप से होनेवाली राशन, व्यवस्था।

सासर्गिक—वि० [स०]=ससर्गज।

साट-गाँठ†—स्त्री०=साठ-गाँठ।

सादरा—पुं० [फा० शाह+दर+आमद=महाराज का आगमन] शास्त्रीय सगीत मे, धमार और ध्रुपद के वर्ग का एक प्रकार का गायन जिसके गीत अनेक राग-रागिनियो मे बँधे होते हैं।

विशेष—कहते हैं कि दरबार मे नवाब, बादशाह, राजा-महाराजा आदि जब आकर बैठते थे, तब उनके सामने पहले इसी प्रकार का गायन होता था। इसी लिए पहले इसे 'शाह दरामद' कहते थे, जिसका परवर्ती रूप सादरा है।

सामंतशाही—स्त्री० [स०+फा०] वह स्थिति जिसमे किसी देश मे सामतों का राज्य या शासन होता है। सामती। (फ्यूडलिज्म)

साम्राजियत—स्त्री० [हिं० साम्राज्य+फा० इयत (प्रत्य०)] साम्राज्यवाद।

साहित्यिकी—स्त्री० [स० साहित्य से] साहित्यिक कृतियो या रचनाओ की आलोचनात्मक चर्चा। साहित्यिक बातो और विषयो का विवेचन।

सिएटो—पु० [अ० के साउथ-ईस्ट एशियन ट्रीटी आर्गेनिजेशन के आरभिक अक्षरो का समूह] आज-कल दक्षिण-पूर्वी एशिया के कुछ राज्यो और कुछ पाश्चात्य राज्यो की वह सस्था, जिसका उद्देश्य ससार के उक्त क्षेत्र मे कम्यूनिज्म का प्रसार रोकना है।

सिजल—वि० [?] जो देखने मे बहुत ही उपयुक्त, सुन्दर और सुडौल हो। जैसे—सिजल आदमी, सिजल पहनावा।

सिजिल†—वि०=सिजल।

सींक-सलाई—वि० [हिं०] बहुत अधिक दुबला-पतला। क्षीणकाय।

सुखभोग—पु० आज-कल विधिक क्षेत्र मे, किसी स्थान मे रहनेवाले व्यक्ति का वह अधिकार, जिसमे उसे किसी आस-पास की जमीन या मकान से अपने परपरागत सुभीते के आधार पर सुख भोगने के रूप मे प्राप्त होता है। परिभोग। (ईजमेन्ट) जैसे—यदि हमारे मकान मे बहुत दिनो से किसी बाहरी ओर खिडकी चली आ रही हो, तो हमे आधिकारिक रूप मे प्रकाश और वायु का सुख-भोग प्राप्त होता है। और इसी लिए कोई नया मकान बनानेवाला हमारी दीवार के सटाकर कोई ऐसी दीवार खड़ी नही कर सकता, जिससे हमारे उक्त सुख-भोग मे बाधा होती हो।

सुखौआ—वि० [हिं० सूखा+औआ (प्रत्य०)] जो बहुत अधिक सूख गया हो। जैसे—सुखौआ आम, सुखौआ गाजर।

सुखौता†—वि० [स्त्री० सुखौती]=सुखौआ।

सुत्त†—पु०=सूत्र। (बौद्ध)

सुना-सुनाया—वि० [हिं० सुनना] [स्त्री० सुनी-सुनायी] कथन या वृत्तान्त जो केवल दूसरो के मुँह मे सुना गया हो और जिसकी प्रामाणिकता, सत्यता आदि का कोई निश्चय न हो। जैसे—यों ही सुनी-सुनायी बातो पर उसे दौडना ठीक नही है।

सुलह-सफाई—स्त्री० [अ०+फा०] ऐसी स्थिति, जिसमे परस्पर विरोधी दलो या पक्षो मे मेल-जोल हो जाय और किसी प्रकार का मनोमालिन्य न रह जाय।

सूफियाना—वि० [अ० सूफी से] १ सूफी सप्रदाय से सबध रखनेवाला। २ सूफियो की तरह का। ३ जो देखने मे बिलकुल सादा होने पर भी बिलकुल सुन्दरता से युक्त हो।

जैसे—सूफियाना पहनावा।

विशेष—साधारणत सूफियो की सभी चीजें और बातें, बिलकुल सादी होने पर भी भली और सुन्दर जान पडती है। इसी आधार पर यह शब्द उक्त अर्थ मे प्रचलित हुआ है।

सेंटो—पु० [अ० के सेन्ट्रल ट्रीटी आर्गेनिजेशन के आरभिक अक्षरो का समूह] आधुनिक राजनीति मे, यूरोप तथा एशिया के कुछ देशो का एक सगठन, जिसका उद्देश्य पारस्परिक सहयोगपूर्वक कम्यूनिज्म का प्रसार रोकना है।

सेतु-वाही—पु० [स० सेतुवाहिन्]=जल-सेतु।

सैर-बीन—स्त्री० [फा०] दूरबीन की तरह का एक छोटा उपकरण जो किसी खाने या छोटे सन्दूक के मुँह पर लगा रहता है और जिसके द्वारा अन्दर रखे हुए दृश्यो, पदार्थों आदि के छोटे चित्र परिवर्द्धित रूप या बड़े आकार मे दिखाई पडते है। (पीप-शो)

स्त्री-केसर—पु० [स०]=गर्भ-केसर।

स्थायी—पु० [स०] साधारण गीतो मे उसका पहला चरण या पक्ति जिसका गायन आगे चलकर दूसरे चरणो या पक्तियो के बाद बार-बार होता है। लोक-व्यवहार मे इसे टेक भी कहते हैं।

विशेष—शास्त्रीय सगीत मे गीत का पहला अश स्थायी कहलाता है, जो मद्र और मध्य सप्तको तक ही सीमित रहता है। इसका कोई अश तार सप्तक मे नही जाता।

स्थैतिकी—स्त्री०=स्थिति-गणित।

स्वजीवी—पु० [स० स्वजीविन्] प्राणी-विज्ञान मे, वनस्पतियो आदि के दो वर्गों मे से एक, जो जल आदि से स्वय अपना आहार प्राप्त करके अपने बल पर और स्वतत्र रूप से जीवित रहते और बढते हैं। 'परजीवी' का विपर्याय।

स्वपीडन—पु० [स०]=आत्म-पीडन।

स्वभावी—वि० [स०]=स्वभाववाला। (प्राय यौगिक के अत मे) जैसे—शीत-स्वभावी।

स्वर-नली—स्त्री० [स०] गले के अन्दर की वह नली जिसकी सहायता से स्वरो अर्थात् शब्दों का उच्चारण होता है। अवटुका। (लैरिंक्स)

स्वीकार्य व्यक्ति—पु० [स०]=ग्राह्य व्यक्ति।

हवाई पट्टी—स्त्री० [हिं०] हवाई जहाज के अड्डो पर पक्की लंबी सडक, जिस पर से चलकर हवाई जहाज उडते हैं और उतरकर चलते हुए ठहरते है। (एयर स्ट्रिप)

परिशिष्ट ख

अँग्रेजी-हिन्दी शब्दावली

Abacus—गिनतारा।
Abandoned—परित्यक्त।
Abandoning—अपसर्जन, परित्यजन, परित्याग।
Abatement—१ अपचय, छूट। २. उपशमन। ३ कटौती।
Abbreviation—संक्षिप्त आलेख, संक्षिप्तक।
Abcess—फोड़ा।
Abdication—अधिकार-त्याग।
Abdomen—उदर।
Abducted—अपनीत, अपहृत।
Abduction—अपनयन, अपहरण, भगाना।
Abductor—अपनेता, अपहर्त्ता, अपहारक।
Aberration—अपरंग, विपथन।
Abetment—अवप्रेरण।
Abettor—दुष्प्रेरक।
Abeyance—प्रसुप्तावस्था।
Abidance—पालन।
Abiding—अनुसारी।
Ability—१ क्षमता, २ योग्यता।
Abinitio—आदित., आरंभत।
Ablative case—अपादान कारक।
Able—योग्य।
Abnormal—असामान्य, अप्रसम।
Abnormally—अप्रसमत।
Abode—आवास, वासस्थान।
Abolished—उन्मूलित।
Abolition—उन्मूलन।
Abrasion—खरोंच।
Abscond—प्रपलायन, फरार होना, भाग जाना।
Absconder—प्रपलायक, फरार, भगोड़ा।
Absconding—पलायन।
Absence—अनुपस्थिति।
Absent—अनुपस्थित।
Absolute—१. अबाध। २ असीम। ३ परम।
Absolute monarch—निरंकुश शासक।
Absolute monarchy—निरंकुश शासन।
Absolute order—परम आज्ञा।
Absolute power—परम सत्ता।
Absolutism—१. अद्वैतवाद। २. निरपेक्षवाद।
Absorption—अवशोषण, प्रचूषण, शोषण।
Abstinence—उपरति, निवृत्ति।
Abstract—वि० १ अमूर्त। २. गुणवाची। स० १. तत्त्व। २. सत, तत्त्व, सार। ३. सारांश। ४ सार-सूची। ५ समस्तिका।
Abutment—अत्याधार।
Abuttal—चतु सीमा।
Abuttals—अनुसीमा।
Academic—१. अकादमिक। २ शैक्षणिक, शैक्षिक। ३ शास्त्रीय, सारस्वत।
Academy—अकादमी।
Accelerated—त्वरित।
Acceleration—त्वरण।
Accent—स्वर-घात, स्वराघात।
Acceptance—१. प्रतिग्रहण। २ सत्कार। ३ स्वीकृति।
Accepted—१. प्रतिगृहीत, २. स्वीकृत।
Access—अधिगम।
Accessory—वि० उपसाधक। पु० उपसाधन।
Accessory after the fact—अनुपगी।
Accessory before the fact—पुरःसगी।
Accident—दुर्घटना।
Accidental—१. आनुषंगिक। २. आकस्मिक।
Accidentalism—आकस्मिकतावाद।
Accomplice—सह-अपराधी।
Accomplished—निपुण, निष्णात।
Accordance—अनुसारता।
Accordingly—अनुसारत.।
Account—१ खाता। २. लेखा। हिसाब।
Accountant—लेखाकार, लेखापाल।
Accountant General—महालेखापाल।
Account book—लेखा-बही।
Accounting—१. लेखा-कर्म। २ लेखा-शास्त्र।
Accrual—प्रोद्भवन।
Accrued—प्रोद्भूत।
Accumulated—पुंजित, संचित।
Accumulation—संचय, संचयन।
Accuracy—परिशुद्धि।
Accurate—परिशुद्ध।
Accusable—अभियोज्य।
Accusation—अभियोग, अभियोजन।
Accused—अभियुक्त, मुल्जिम।
Acid—अम्ल तेजाब।
Acidic—अम्लीय।
Acidification—अम्लीकरण।
Acidimetry—अम्लमिति।
Acidity—१ अम्लता। २. अम्ल-पित्त।
Acoustic—ध्वनिक।
Acoustics—१ ध्वनिकी। २. श्रुति-व्यवस्था।
Acquisition—अभिग्रहण, अभ्याप्ति, अवाप्ति।
Act— अधिनियम।
Acting—वि० १. कारक। २. कार्यवाहक। पु० अभिनय।
Action—क्रिया, व्यापार।
Activation—कर्मण्यन।
Active—सक्रिय।
Active voice—कर्त्तरि प्रयोग, कर्तृ-वाच्य।
Activity—सक्रियता।
Actor—अभिनेता।
Actress—अभिनेत्री।
Acute angle—न्यून कोण।
Adaptation—अनुकूलन।
Additional—अतिरिक्त।
Address—१. पता, बाह्यनाम। २. अभिभाषण। ३ अभिनंदन-पत्र।
Addressee—बाह्यनामिक।
Address of Advocate—अधिभाषण।
Ad hoc committee—तदर्थ समिति।
Adjacent angle —आसन्न कोण।
Adjective—विशेषण।
Adjourned—स्थगित।
Adjournment—स्थगन।
Adjournment motion—स्थगन प्रस्ताव।
Adjudication—१ अधिनिर्णय, न्यायिक निर्णय। २ अधिनिर्णयन।
Adjusted— समज्जित।
Adjustment—समंजन।
Administration—प्रशासन
Administrative—प्रशासनिक, प्रशासकीय।
Administrator—प्रशासक।
Administrator General—महाप्रशासक।
Admiral—नौसेनाध्यक्ष।
Admiralty—नवाधिकरण।
Admirer—प्रशंसक।
Admission—प्रवेश।
Adolescent—किशोर।
Adopted—अभिगृहीत।
Adopted son—दत्तक।

Adoption—दत्तक-ग्रहण।
Adrenal—अधिवृक्क।
Adulterated—अपमिश्रित, मिलावटी।
Adulteration—अपमिश्रण, घालमेल, मिलावट।
Adultery—जार-कर्म, जिना, व्यभिचार।
Ad valorem—यथा-मूल्य।
Advance—अगाऊ, अग्रिम, पेशगी।
Advent—आगमन।
Adverse—प्रतिकूल।
Advice—१ परामर्श, मत्रणा, सलाह। २ सज्ञापन। ३. सूचना।
Adviser—मत्रणाकार।
Advisory Council—मत्रणा-परिषद्।
Advocate—अधिवक्ता।
Advocate General—महाधिवक्ता।
Aerial—वि० वायव, हवाई। स० वायवीय।
Aerodrome—हवाई अड्डा।
Aerology—वायु-मडल-विज्ञान।
Aeronautics—वैमानिकी।
Aeroplane—हवाई जहाज।
Aestheticism—सौंदर्यवाद।
Aesthetics—सौंदर्य-शास्त्र।
Affectation—बनावट।
Affection—अनुरक्ति, अनुराग।
Affectionate gift—प्रसाद-दान।
Affidavit—शपथ-पत्र, हलफनामा।
Affiliation—सबधीकरण।
Affirmation—अभिवचन, प्रतिज्ञान, प्रतिज्ञापन।
Affirmative—सकारात्मक, स्वीकारात्मक।
Afforestation—वन-रोपण।
Affricate—स्पर्श-सघर्षी।
Aforesaid—उक्त, उपर्युक्त।
Afro-Asia—अफ्रेशिया।
Afro-Asian—अफ्रेशियाई।
After-effect—पश्च-प्रभाव।
Age—१ अवस्था, वय। २ आयु, उमर।
Agency—अभिकरण, साधन।
Agenda—कार्य-सूची, कार्यावली।
Agent—अभिकर्ता।
Aggravation—अतिरेक।
Aggregate—सकलित।
Aggregate Corporation—समष्टि निकाय, समष्टि निगम।
Aggression—१ अग्रधर्षण। २ प्रथमाक्रमण।
Aggressor—१. अग्रधर्षक।
Agitation—आदोलन।
Aglutination—सश्लेषण।
Agnosticism—१ अज्ञेयवाद। २ अनीश्वरवाद।
Agrarianism—ग्राम्यवाद।

Agreed—अनुबद्ध।
Agreement—१ अनुबध। २ अनुबध-पत्र, इकरारनामा। ३ रजामदी, सहमति।
Agricultural year—कृषि-वर्ष।
Aid de camp—ए० डी० काग।
Air base—हवाई अड्डा हवाई केंद्र।
Air bath—वायु-स्नान।
Air-conditioned—वातानुकूलित।
Air-conditioning—वातानुकूलन।
Air fortress—हवाई किला।
Air hostess—स्वागतिका।
Air Mail—हवाई डाक।
Air Navigation—विमानन।
Air port—विमान-पत्तन, हवाई अड्डा।
Air route—वायु-मार्ग।
Air stream—अवतरण-पथ, हवाई पट्टी।
Albino—सूरज-मुखी।
Album—चित्राधार।
Alcohol—सुरासार।
Alcoholism—पानात्यय, मदात्यय।
Alert—चौकन्ना।
Algebra—बीजगणित।
Alimentary canal—आहार-नाल, पाचन-नाल।
Alimentary system—आहार-तत्र, पाचक-तत्र, पचन-सस्थान।
Alive—जीवित
Alkali—क्षार, खार।
Alkalimetry—क्षार-मिति।
Alkaline—क्षारीय।
Alkalinity—क्षारता, क्षारीयता, खारापन।
Alkaloid—उपक्षार, क्षारोद।
Allegation—१ अभिकथन, कथन। २ आरोप।
Alleged—अभिकथित, कथित।
Allegiance—१ अनुभक्ति। २ निष्ठा।
Allegory—प्रतीक-कथा, साध्यवसान रूपक।
Alliance—मैत्री, सश्रय।
Allied—सश्रित, समवर्गी।
Alligator—मगर
All India Radio—आकाश-वाणी।
Alliteration—अनुप्रास।
Allocation—विनिधान।
Alloted—नियत प्रदिष्ट।
Allotment—नियतन, प्रदेशन।
Allotrope—अपर-रूप।
Allotropy—अपर-रूपता।
Allowance—अभिदेय, भत्ता।
Alloy—मिश्रधातु।
All-party—सर्व-दलीय।
All-rounder—सर्वतोमुखी।
Alluvial—जलोढ, पुलिनमय।
Alluvial land—कछार।
Alphabet—अक्षर।

Alphabetical order—अक्षर-क्रम।
Alteration—रद्द-बदल, रद्दोबदल, हेर-फेर।
Alternative—अनुकल्प, विकल्प।
Altimeter—उन्नतामापी।
Altitude—१ उन्नतांश। २ ऊँचाई, तुगता।
Altruism—परहितवाद, परार्थवाद।
Alum—फिटकिरी।
Amalgamation—एकीकरण।
Ambition—उच्चाकाक्षा।
Ambitious—उच्चाकाक्षी।
Ambulance car—अस्पताल गाडी, परिचार गाडी।
Ambush—घात।
Amendment—सशोधन।
Amenerrhoea—रुद्धार्तव।
Amenity—सुख-सुविधा।
Amentia—अमानसता, बालिश्य, बुद्धि-दौर्बल्य।
Ammonia—१ तिक्ताक्ति। २ नौसादर।
Ammunition—१ आयुधीय, युद्धोपकरण। २ गोला-बारूद।
Amnesty—सर्व-क्षमा।
Amount—१ धन-राशि। २ धनाक।
Amphibia—उभयचर, जल-स्थल-चर।
Amphibian—उभय-चर, जल-स्थलीय।
Amputation—अगच्छेदन, विच्छेदन।
Amusement—आमोद।
Anachronism—काल-दोष।
Anaemia—रक्त-क्षीणता।
Anaesthesia—निश्चेतन, सवेदन-हरण।
Anaesthesiology—अचैतिकी।
Anaesthesis—अचेतनीकरण, निश्चेतनीकरण।
Anaesthetic—निश्चेतनक, सवेदनहारी।
Analogous—अनुधर्मक, अनुधर्मी।
Analogy—अतिदेश।
Analysis—विश्लेषण।
Analytical—विश्लेषणात्मक, वैश्लेपिक।
Anarchism—अराजकतावाद।
Anarchist—वि० अराजक। पु० अराजकतावादी।
Anarchy—अराजकता।
Anatomy—शरीर-शास्त्र, शरीर-विज्ञान।
Ancient—प्राचीन।
Anger—क्रोध।
Angina pectoris—हृच्छूल।
Anglo-Indian—अध गोरा।
Angular—कोणिक।
Anhydrous—अजल।
Animal husbandry—पशु-पालन।
Announcement—अभिज्ञापन, आख्यापन, एलान।
Announcer—अभिज्ञापक, आख्यापक।

Annual—वि० वार्षिक।
स० वार्षिकी।
Annuity—वार्षिकी।
Anode—धनाग्र।
Anomalistic year— परिवर्ष।
Anorexia—क्षुधा-अभाव, क्षुधा-नाश।
Anosmia—अघ्राणता, गंध-नाश।
Ant-eater—चीटी-खोर।
Antenatal—जन्म-पूर्व, प्राग्प्रसव।
Anthology—चयनिका।
Anthropo-geography—मानव-भूगोल।
Anthropoid—मानव-कल्प।
Anthropological—मानव-शास्त्रीय।
Anthropologist—मानव-शास्त्री।
Anthropology—मानव-शास्त्र।
Anticipated—प्रत्याशित।
Anticipation—प्रत्याशा।
Anti-climax—१. प्रतिकाष्ठा। २. पतत्प्रकर्ष। (अलंकार)
Anti-diluvial—पूर्व-प्लावनिक।
Antidote—वि० प्रतिकारक, मारक, विषहन।
स० उतार।
Antimony—अंजन, सुरमा।
Antiquarian—पुराविद्।
Antique—पुराकालीन।
Antiquities—पुरावशेष।
Antiquity—पुराणता।
Anti-septic—प्रतिपौतिक।
Antomology—कीट-विज्ञान।
Aorta—महाधमनी।
Apartheid—पृथग्वासन।
Apathy—अरति, उदासीनता।
Ape—वानर।
Aphelion—रवि-उच्च।
Aphrasia—वाग्रोध, वाग्लोप।
Apogee—१ भूम्यूच्च। २ पराकाष्ठा।
Apparatus—उपकरण, यंत्र, साधित्र।
Apparently—प्रतीयमानत।
Appeal—पुनर्वाद।
Appeasement—१ अपतुष्टि, अभिराधन। २ तुष्टीकरण।
Appellant—पुनर्वादी।
Appellate—पौनर्वादिक।
Appellate order—पौनर्वादिक आज्ञा।
Appended—संलग्न।
Appendix—परिशिष्ट।
Applicable—प्रयोज्य।
Application—१ अर्जी, आवेदनपत्र, प्रार्थनापत्र। २ अनुप्रयोग, अनुप्रयोजन।
Applied—१ अनुप्रयुक्त। २ प्रायोगिक।
Applied arts—व्यावहारिक-कला।
Applied sciences—व्यावहारिक-विज्ञान।
Appointment—नियुक्ति।
Apportionment—अंशापन।
Apprehension—आशंका।
Appropriation—विनियोग, विनियोजन।
Approval—अनुमोदन।
Approver—इकबाली गवाह, भेद-साक्षी।
Aqueduct—जलसेतु, सुरंगिका, सेतु-वाही।
Arbitrage—अंतरपणन।
Arbitrary—मनमाना।
Arbitrator—पंच।
Arborial—वृक्षवासी।
Arboriculture—१ तरु-रोपण। २ वानस्पत्य।
Arch—तोरण, मेहराब।
Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञ, पुरावि्।
Archaeology—पुरातत्व।
Archaeozoic era—आदि-कल्प।
Archipelago—द्वीप-पुंज।
Architecture—वास्तु-कला।
Archives—अभिलेखागार, लेखागार।
Area—क्षेत्र-फल।
Argument—तर्क।
Aristocracy—१. अभिजात-तंत्र, कुलतंत्र, कुलीन-तंत्र। २ अभिजात वर्ग।
Aristotle—अरस्तू।
Arithmetic—अंकगणित, पाटी-गणित, हिसाब।
Armament—हथियारबंदी।
Armaments—युद्धोपकरण।
Armed—आयुध, हथियारबंद।
Armed neutrality—सशस्त्र तटस्थता।
Armistice—अवहार, विराम-संधि।
Armour—कवच, चार-आईना। बख्तर। सन्नाह।
Armoured—कवचित, बख्तरबंद।
Armoured car—कवचित यान, बख्तरबंद गाडी।
Arms—आयुध।
Arms Act—आयुध-विधान।
Army—१ फौज, सेना। २ स्थल-सेना।
Arrest—गिरफ्तारी।
Art—कला।
Artery—धमनी।
Art gallery—कला-शाला।
Arthritis—संधि-शोथ।
Article—१ अनुच्छेद, अभिपद। २ धारा। ३. प्रवस्तु।
Articulation—उच्चारण।
Artist—कलाकार।
Artistic—कलात्मक।
Arts—कला-विषय।
Art-therapy—कला-चिकित्सा।
Asafoetida—हींग।
Asbestos—अदह।
Ascending—आरोही।
Ascending node—आरोह-पात।
Ascent—आरोह
A-septic—अपौतिक।
Asphalt—अश्मज।
Asphyxia—श्वासावरोध।
Aspirant—अभिलाषी, आकांक्षी।
Aspiration—अभीप्सा।
Assault—प्रहार, वार।
Assembly House—सभा-गृह।
Assent—अनुमति।
Assertion—१ दृढ़ोक्ति। २ स्वाग्रह।
Assessee—निर्धारिती।
Assessment—निर्धारण।
Assessor—पंच।
Asset—परिसंपद्, मालमता।
Assigned—अधिन्यस्त, अभ्यर्पित।
Assignee—अधिन्यासी, अभ्यर्पिती।
Assignment—अधिन्यास, अभ्यर्पण।
Assignor—अधिन्यासक, अभ्यर्पक।
Assimilation—आत्मीकरण, स्वांगीकरण।
Association—१ समुदाय। २ सहचार, साहचर्य।
Assumption—१ अभ्युपगम, पूर्वधारण। २ मान्यता।
Assurance—आश्वासन।
Asterism—तारा-पुंज।
Asteroid—क्षुद्र-ग्रह, तारकाभ।
Asthma—दमा, श्वास (रोग)।
Astrology—फलित ज्योतिष।
Astrometry—खगोलमिति।
Astronomy—१. खगोल-विज्ञान, खगोल-विद्या। २ गणित ज्योतिष।
Asylum—आश्रम।
Atlantic—अतलांतक।
Atlas—मानचित्रावली।
At least—अंतत।
Atmospheric pressure—वायु-भार।
Atoll—प्रवाली।
Atom—परमाणु।
Atom bomb—पारमाणु बम।
Atomic—पारमाणविक।
Atomic test—परमाणु-परीक्षण।
Atomism—परमाणुवाद।
Atomist—परमाणुवादी।
Atomistics—परमाण्विकी।
Attached—१ अनुलग्न, आसंजित, संलग्न। २ आसक्त।
Attachment—१ आसक्ति। २ कुरकी। ३ संयोजन।
Attack—आक्रमण, हमला।
Attainment—१ उपलब्धि, लब्धिका। २ निष्पत्ति, सिद्धि।

Attemperment—नुझावा।
Attendance officer—उपस्थिति अधिकारी।
Attendance register—उपस्थिति पंजी, हाजिरी वही।
Attestation—१ तसदीक, प्रमाणीकरण। २ साक्ष्यकन।
Attested—साक्ष्यकित।
Attitude—अभिवृत्ति, रवैया, रुख।
Attorney—न्यायवादी।
Attorney General—महान्यायवादी।
Attraction—आकर्पण।
Attractive—आकर्षक।
Auction—नीलाम, प्रतिक्रोश।
Audibility—श्रव्यता।
Auditing—लेखा-परीक्षण।
Auditor—अकेक्षक, लेखा-परीक्षक।
Auditorium—आस्थानी, दर्शक-कक्ष।
Auditory—श्रोत्र-ग्राह्य।
Augment—आगम।
Augmentation—आवर्धन, संवर्धन।
Auricle—१ अलिंद (हृदय का)। २ वहिष्कर्ण।
Aurora Australis—कुमेरु-ज्योति।
Aurora Borealis—मेरु-ज्योति,सुमेरु-ज्योति।
Autarchic, Autarchical—आत्मनिर्भर, आत्म-पूर्ण।
Autarchy—आत्म-निर्भरता, आत्म-पूर्णता।
Authorised—अधिकृत, प्राधिकृत।
Authoritarianism—सत्तावाद।
Authoritative—१ आधिकारिक, २ प्रामाणिका ३ साधिकार।
Authoritatively—साधिकार।
Authority—१ अधिकारी। २ प्राधिकारी। ३ प्राधिकार। ४ अधिकरण्य। ५ आधिकारिकी।
Authority letter—अधिकार-पत्र।
Authorization—प्राधिकरण।
Autobiography—आत्म-कथा,आत्मचरित।
Autograph—स्वाक्षर।
Automatic—स्वचल, स्वचालित।
Automaton—स्वचल।
Autonomous—स्वायत्त, स्वायत्त-शासी।
Autonomy—स्वायत्तता, स्वायत्त-शासन।
Available—प्राप्य।
Avalanche—हिमानी।
Average—औसत, माध्य।
Aviation—विमान-चालन।
Award—पचाट, परिनिर्णय।
Awkward—भद्दा।
Axe—कुल्हाडा।
Axial—अक्षीय।
Axiom—स्वय-तथ्य, स्वय-सिद्ध।
Axiomatic—स्वय-सिद्ध।
Axis—अक्ष, कीली, धुरा, धुरी।
Axle—अक्ष।
Ayes—हांकारी।
Azimuth—दिगश।
Azurian—चवई।

B

Baboon—श्व-वानर।
Baby—शिशु।
Babylove—वाविल।
Back—पश्च।
Backache—पृष्ठ-शूल।
Backbiting—पैशुन्य।
Backbone—मेरु-दड।
Background—१ पूर्वपीठिका, पृष्ठभूमि, पृष्ठिका, भूमिका। २ परभाग, पृष्ठाधार। (चित्रकला)
Backing—पृष्ठाधान।
Bacteria—जीवाणु रोगाणु।
Bad conductor—कुचालक।
Bad land—वजरभूमि।
Bail—जमानत, प्रतिभूति।
Bailable—प्रतिभाव्य।
Balance—तराजू, तुला, समतुलन।
Balanced—सतुलित।
Balance of payment—भुगतान-तुला।
Balance sheet—आय-व्यय फलक, चिटठा, तल-पट, तुला-पत्र, पक्का-चिट्ठा।
Balancing—संतुलन, सम-तोलन।
Baldness—गज (सिर का रोग)।
Ballad—गाथा।
Ballad dance—आख्यानक नृत्य।
Ballot—१ गूढ-पत्र, मत-पत्र, शलाका। २ चिट्ठी।
Ballot box—मतदान पेटिका।
Ballot paper—मत-पत्र, शलाका-पत्र।
Bankrupt—दिवालिया।
Banqueting hall—आहार-मडप।
Bar—वाघ।
Barb—क्षुर।
Barber's saloon—क्षौर-मदिर।
Bargain—सौदा।
Bargaining—१ सौदाकारी। २ सौदेवाजी।
Barometer—१ वायु-दाव मापक। २ वायु-भार मापक।
Barred—वाधित।
Barred by limitation—अवधि वाधित, तमादी।
Barrier—पारिघ।
Barter—अदला-बदली, वस्तु-विनिमय।
Barysphere—गुरु-मडल।
Base—१. आधार। २ मूलाश। ३ अड्डा। (जहाजो आदि का)
Base level—अवस्तल।
Basic—आधारिक।
Basic language—आधारिक भाषा।
Basin—थाला, द्रोणी, नदी-तल, नदी-पात्र।
Bat—बल्ला।
Bath—१ स्नान। २ स्वेद (यौ० के अन्त में)।
Bathing suit—स्नान-वस्त्र।
Batholith—अधःशैल।
Bay—उपसागर, खाडी।
Beach—पुलिन।
Beacon १ प्रकाश-स्तभ। २. सकेतक।
Beak—चचु, चोच।
Bean—फली।
Beat—स्पदन।
Beauty—सौदर्य।
Bed—१ क्यारी। २ बिछौना, बिस्तर। ३ पलग, शय्या। ४ तल (नदी का)। ५ सस्तर।
Bed rock—आधार-शैल, शैल-सस्तर।
Bed sore—शय्या-व्रण।
Beginning—आरभ।
Being—सत्ता।
Belief—विश्वास।
Belligerent—परियुद्धक, युद्धकारी।
Bell metal—घंट-धातु।
Belt—पेटी।
Bench—१ न्याय-पीठ। २ पीठ।
Bend—वलनी।
Beneficiary—हिताधिकारी।
Benefit—लाभ।
Bent bar coin—शलाका मुद्रा।
Bequest—उत्तरदान।
Beri beri—वातव, लासक।
Beryl—लहसुनियाँ, वैदूर्य।
Bibliography—सदर्भिका।
Bicameral—द्विसदनात्मक द्वि-सदनी।
Biennial—द्विवार्षिक।
Bigamy—द्वि-विवाह।
Bigot—कट्टर।
Bilateral—द्वि-पक्षी।
Bile—१ पित्त। २ लार-गद्दी।
Biliary—पैत्तिक।
Bilious—पित्त-रजक, पित्तारुण।
Bill—१ प्राप्यक, विपत्र। २ विधेयक। ३ हुडी। ४ प्रायद्वीप-खड।
Bill collector—प्राप्यक समाहर्ता, विपत्र समाहर्ता।
Billiard—अटा।
Bill of exchange—हुडी।
Bill of lading—वहन-पत्र।
Bill of rights—अधिकार-पत्र।
Bi-metallic—द्विधातविक।

Bi-metallism—द्विधातु-वाद।
Binocular—द्विनेत्री, दूरबीन।
Binomial—द्विपद।
Bio-chemistry—जीव-रसायन।
Biology—जीव-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान।
Bio-physics—जीव-भौतिकी।
Bio-sphere—जीव-मडल, प्राणी-मडल।
Birth certificate—जन्म-प्रमाणक।
Birthday—जन्म-दिन।
Birth rate—जनन-गति।
Birth register—जन्म-पजी।
Bi-section—द्वि-भाजन।
Bison—अरना भैसा
Bite—काटना।
Bi-weekly—अर्ध-साप्ताहिक।
Black—काला, कृष्ण।
Black earth—काली मिट्टी।
Black gold—काला सोना (पत्थर का कोयला)।
Black-hole—काल-कोठरी।
Black list—काली सूची, वर्ज्य सूची।
Black mail—भयादोहन।
Black market—काला बाजार, चोर बाजार।
Black money—काला धन, दूषित धन।
Black-out—१. चिराग-गुल। २ तमावरण।
Black Sea—कृष्णसागर।
Black water fever—काल-मेह।
Blame—१ अवक्षेप, अवगसा। २ पेपा-ोपण।
Blank verse—अतुकात (काव्य या छद), अनुप्रासहीन (काव्य या छद), मुक्त छद।
Blast furnace—धमन-भट्टी।
Blasting—१ अभिधमन। २ विस्फोटन।
Bleaching—प्रक्षालन।
Blessing—१ आशसा, आशीर्वाद। २ स्व-स्त्ययन।
Blind valley—अधी घाटी।
Blinking—मुलमुलाना।
Blister—फफोला।
Blizzard—वर्फानी तूफान, हिम-झझावात।
Blockade—१ घेराबदी, नाकेबदी, ोध। २ सरोध।
Blood bank—रक्तदान बैंक।
Blood pressure—रक्त-चाप।
Blood sugar—रक्त-शर्करा।
Blood vessel—शिरा।
Blotting paper—सोख्ता, स्याही-चूस, स्याही-सोख।
Blow-hole—वायु-छिद्र।
Blue—नीला।
Blue print—नील-मुद्र।
Blue printing—नीलिका मुद्रण।

Bluff—धौस।
Boar—जगली सूअर।
Boat bridge—नाव का पुल।
Bodice—अगिया, चोली।
Bodily—कायिक।
Body—१ काया, शरीर। २ निकाय, सस्था।
Body-guard—अग रक्षक, शिरोरक्षी।
Bogy—हौआ।
Boiling point—क्वथनाक।
Bolt—सिटकिनी।
Bombast—शब्दाडबर।
Bomber—बम-वर्षक।
Bombing—बम-बारी।
Bona fide—वि० १ सदाशय, सदाशयी। २ सद्भावी। स० सदाशयता।
Bona vacatia—अस्वामिकता, स्वामी-हीनत्व।
Bond—१. ऋण-पत्र। २ बध-पत्र। ३ मुचलका।
Bond of surety—प्रतिभू-पत्र।
Bone oil—अस्थि-तैल।
Bonfire—होली।
Bonus—लाभाश।
Book-post—पुस्त-डाक।
Border—१ किनारा। २ हासिया। ३ उपात। ४ सीमा।
Bore—परिवेध।
Boring—परिवेधन।
Borrower—उद्धारणिक।
Boss—अधिपुरुष, मालिक।
Botany—औद्भिदकी, वनस्पति शास्त्र।
Boundary—१ चतु सीमा, चौहद्दी। २ सीमा। ३ पर्यंत।
Boxing—मुक्केबाजी।
Boycott—बहिष्कार।
Boy scout—बाल-चर।
Bracket—कोष्ठक।
Brag—डीग।
Brain—मस्तिष्क।
Branch—शाखा।
Brass—पीतल।
Bravado—डीग।
Breach—भग।
Breach of law—विधि-भग।
Breach of peace—शाति-भग।
Breach of trust—न्यास-भग।
Breath—श्वास, सांस।
Breeding—प्रजनन।
Brevity—लाघव।
Bribe—उत्कोच, घूस, रिश्वत।
Bridge—पुल, सेतु।
Brief—सक्षिप्त।

Bright red—सूहा (रंग)।
Brilliantine—शुभ्रक।
Brimstone—गधकाश्म।
Broadcasting—प्रसारण।
Broadcasting station—आकाशवाणी, प्रसारण-गृह।
Bronze—कांसा।
Bronze age—कास्य-युग।
Budget—आय-व्ययक।
Buffer state—अतस्थ राज्य, मध्यवर्ती राज्य।
Bulb—गाँठ।
Bunker—तल-घर, तल-चौकी, दमदमा।
Buoy—रौंदा, प्लाध।
Burden—भार।
Bureaucracy—१ अधिकारी-तत्र, दफ्तर-शाही। २ नौकर-शाही।
Burner—१. कल्ला। २ ज्वालक।
Burning point—ज्वलनाक।
Burnisher—ओपनी, घोटा।
Bust—आवक्ष।
Butter—मक्खन।
Butyrometer—स्नेहमापक।
Bye-election—उप-निर्वाचन।
Bye-law—उपविधि।
Bye-product—उपजात, उपसर्ग, उपोत्पाद।
By law—विधित।
By virtue of office—पदेन।

C

Cabbage—करमकल्ला।
Cabinet council—मत्रि-परिषद्।
Cable—समुद्री तार।
Cadema—शोफ।
Cadmium—अरगजी।
Cairn—तुमुली।
Calamity—आपात, विनिपात।
Calculation—परिकलन, हिसाब।
Calculator—गणक, गणित्र, परिकलक।
Calendar—काल-दर्श, दिन-पत्र
Calendar month—पचाग मास।
Calendar year—पचाग वर्ष।
Calibration—अशन, अश-शोधन।
Caliph—खलीफा।
Calomel—रस-कपूर।
Caloric—उष्माक।
Calx—भस्मक।
Camel track—ऊँट-पथ।
Camouflage—छद्मावरण, छलावरण।
Camphor—कपूर।
Canal—कुल्या, नहर।
Cancellation—निरसन।
Cancellation of common factor—अपवर्तन।

Cancelled—निरस्त।
Cancer—१ कर्क राशि, सरतान। २ कर्कट रोग, कर्कटार्बुद, सरतान।
Candidate—अभ्यर्थी, उम्मेदवार, प्रत्याशी।
Cane-sugar—इक्षु-शर्करा।
Cannibal—नर-भक्षी।
Cannibalism—नर-भक्षिता।
Cannon—तोप।
Cannon fodder—तोप का ईंधन या चारा।
Canon—अधि-मत।
Cantonment—छावनी।
Canvasser—१ अनुयाचक, उपार्थक। २ मतार्थक।
Canvassing—१. अनुयाचन, उपार्थन, मतार्थन।
Capacity—१ क्षमता, सामर्थ्य। २ धारिता, समाई।
Cape—अंतरीप।
Capillary—वि० कौशिक। स० केशिका।
Capital—पूंजी।
Capital goods—पूंजी-पदार्थ।
Capitalism—पूंजीवाद।
Capitalist—१ पूंजीदार, पूंजीपति। २ पूंजीवादी।
Capital punishment—प्राण-दंड, मृत्यु-दंड।
Capsule—पुटी, संपुट, संपुटिका।
Carat—करात।
Carbon—अंगारक, कार्बन।
Carbon paper—कार्बन।
Cardinal number—गण-संख्या।
Cardinal points—दिग्बिंदु, दिशा-बिन्दु।
Care—अवधान।
Career—आचरित, जीवक, वृत्तिक।
Caretaker—अभीक्षक, अवधाता।
Caretaker Government—अभीक्षक सरकार, अवधात्री सरकार।
Cargo —पोत-भार।
Cargo-ship—पोत-भारक।
Caricature—१ विकृतिकरण। २ उपहास चित्र।
Carmine—वि० किरमिजी, गुलाली। स० कियाह, किरमिज, कृमिराग।
Carpel—गर्भ-केसर, स्त्री-केसर।
Carrier—संवाहक।
Cartilage—उपास्थि, कुरकुरी।
Cartoon—व्यंग्य-चित्र।
Cartridge—कारतूस।
Carving—उत्कीर्णन।
Cascade—प्रपाती।
Case—१ अवस्था, दशा। २ स्थिति। ३ खाना, घर। ४ कारक (व्याकरण)। ५. प्रघटन।
Cash balance—रोकड़-बाकी।
Cashed—भुक्त।
Cashier—खजानची, रोकड़िया।
Cash memo—नकदी पुर्जा, रोक-टीप।
Casting vote—निर्णायक मत।
Casual—नैमित्तिक।
Casual leave—आकस्मिक छुट्टी।
Casualty—१ आकस्मिकी। २ ममापत्ति।
Catalogue—सूची-पत्र।
Catalysis—उत्प्रेरण।
Cataract—मोतियाबिंद।
Catarrh—नजला, प्रतिश्याय, प्रसेक, श्लेष्म।
Catchment area—जलग्रह क्षेत्र, जाली, बहेत।
Catechism—प्रश्नोत्तरी।
Catechu—कत्था।
Categorical—निरुपाधि।
Cattle—गोरू।
Cattle-lifter—गोरू-चोर, ढोर-चोर, पशु-चोर।
Cattle pound—पशु-निरोधिका।
Caucasus—काफ।
Causality—कारणिकता।
Cause—कारण।
Cause of action—१ कार्य-हेतु। २ वाद-मूल, वाद-हेतु।
Caustic—क्षारक, दाहक, प्रदाहक।
Caustic silver—क्षारक-रजत, दाहक-रजत।
Caveman—गुहा-मानव।
Cavity—विवर।
Ceasefire—युद्ध-विराम, युद्ध-स्थगन।
Ceded—सत्तांतरित।
Cell—१ कोषाणु, कोशिका (शारीरिक)। २ कोशिका (बिजली की)। ३ कोशिका (वास्तु की)।
Cenozoic era—नव-कल्प।
Censure motion—निंदा-प्रस्ताव।
Census—१ गणना। २ जन-गणना, मर्दुमसुमारी।
Centenary—शतवार्षिकी।
Central—केंद्रीय।
Central Government—केंद्रीय-शासन, केंद्रीय-सरकार।
Centralisation—केंद्रीकरण।
Centralised—केंद्रित।
Centre—केंद्र।
Centre of gravity—गुरुत्व-केंद्र।
Centric—केंद्रिक।
Centrifugal—अपकेंद्री, केंद्रापसारी।
Centripetal—केंद्राभिमुखी।
Century—शताब्दी, शती।
Cerebral—प्रमास्तिष्क।
Certainty—निश्चय।
Certificate—प्रमाणक, प्रमाण-पत्र।
Certification—प्रमाणन।
Certifier—प्रमाण-कर्ता।
Cerulean—विष्णु-कांति।
Cess—अबवाब, उपकर।
Cession—सत्तांतरण।
Chain—१ शृंखला। २ पर्वतमाला।
Chair—१. कुरसी। २ पीठ।
Chalk—खड़िया, दूधिया।
Chamber of Princes—नरेंद्र-मंडल।
Chancellor—कुलपति।
Change—परिवर्तन।
Channel—१ प्रणाली। २ द्वार।
Chaparral—झाड़ी-वन।
Chapter—अध्याय, प्रकरण।
Character book—आचरण-पंजी।
Characteristic—लाक्षणिक।
Characteristics—अनुभाव।
Charcoal—काठ-कोयला।
Charge—१ अधिरोप, आरोप, दोषारोपण। २ अवधान। ३ कार्य-भार। ४ प्रभार, भार। ५ पद-भार।
Chargeable—परिव्ययनीय।
Charge certificate—भार-प्रमाणक।
Charge-holder—भार-धारक।
Charge sheet—अभियोग-पत्र, आरोप-प , कलंदरा, फर्दजुर्म।
Charitable—धर्मार्थ, पुण्यार्थ।
Charitable endowment—धर्मस्व-निधि, पुण्यार्थ-निधि।
Charter—शासन-पत्र।
Chartered—शासन-पत्रित।
Chartered accountant—अधिकृत लेखापाल, शासपत्रित-लेखापाल।
Chasm—गह्वर।
Chauvinism— अति-राष्ट्रीयता, अति-राष्ट्रीयतावाद।
Chauvinist—अति-राष्ट्रीयतावादी।
Cheap—सस्ता।
Cheat—टपकेबाज।
Cheating—१ वंचना। २. टपकेबाजी।
Chemical—रस-द्रव्य।
Chemistry—रसायन-शास्त्र।
Chief Minister—मुख्यमंत्री।
Child Welfare Centre—शिशु-कल्याण केंद्र।
Chin—ठोडी।
Chlorine—हरिन।
Cholera—हैजा।
Chord—चाप-कर्ण।
Chorus—वृंद-गीत, समेत-गान, सह-गान।

Chronicle—इति-वृत्त।
Chronograph—काल-लेख।
Chronology—काल-क्रम।
Chronometer—१ काल-मापी। २ देशातर-सूचक यत्र।
Chyle—वसापायस।
Cilia—रोमिका।
Cinema—चल-चित्र, चित्र-पट।
Cipher—१. ढ-लेख, सकेताक्षर। २ विंदु, शून्य।
Cipher code—१. गूढ-सहिता।२ सकेत-लिपि।
Cipher procedure—बीजाक-प्रक्रिया।
Circle—१ मडल। २ वृत्त।
Circle inspector—परिविक निरीक्षक।
Circuit—परिपथ।
Circular—वि० ोल।
स० गस्ती चिट्ठी, परिपत्र।
Circulatory—चाक्रिक।
Circulatory system—रक्त-वह तत्र।
Circumcision—१ खतना। २ मुसलमानी, सुन्नत।
Circumference—परिधि।
Circumscribed—ारिगत।
Circumstances—परिस्थिति।
Circumstantial—परिस्थितिगत।
Citation—१. आकारक, उपस्थितिपत्र। २ उद्धरण।
Citizen—नागरिक।
Citizenship—नागरता, नागरिकता।
City Corporation—महापालिका।
City planning—नगर-सन्निवेश।
Civet cat—मुश्क-बिलाव।
Civics—नागरिक शास्त्र।
Civil—१ अर्थ, दीवानी। २ नागर। ३. सभ्य।
Civil case—अर्थ-व्यवहार,दीवानी मुकदमा।
Civil court—अर्थ-न्यायालय, दीवानी अदालत।
Civil disobedience—सविनय अवज्ञा।
Civility—नागरता।
Civilization—सभ्यता।
Civil law—अर्थ-विधि, दीवानी विधि।
Civil marriage—लौकिक विवाह।
Civil procedure—अर्थ-प्रक्रिया।
Civil process—अर्थ-प्रसर।
Civil remedy—अर्थोपचार।
Civil right—नागर अधिकार।
Civil suicide—सन्यास।
Civil war—गृह-युद्ध।
Claim—१ अध्यर्थन। २ दावा।
Clair audience—अतीन्द्रिय-श्रवण, परोक्ष-श्रवण।
Clair-voyance—अतीन्द्रिय-दर्शन। २ अतीन्द्रिय-दृष्टि।
Clair-voyant—अतीन्द्रिय-दर्शी।
Clarification—निर्मलीकरण। २ स्पष्टीकरण।
Class—१ कक्षा। २ श्रेणी।
Class-fellow—सहपाठी, सहाध्यायी।
Classification—वर्गीकरण।
Classified—वर्गित, वर्गीकृत।
Class struggle—वर्ग-सघर्ष।
Claw—नखर, पजा।
Clay—चिकनी मिट्टी, मटियार।
Cleavage—फटन।
Cleaver—स्वच्छक।
Clerk—लिपिक।
Climate—जल-वायु, हवापानी।
Climatology—जल-वायु-विज्ञान।
Climax—१ चरम, चरमावस्था। २ साराश।
Clinic—निदान-गृह, निदान-शाला, निदानिका।
Clinical—नैदानिक।
Clog—अर्गल।
Closure—सवरण।
Clot—स्कद।
Cloth—कपडा।
Clothes moth—कपड-कीडा।
Cloud—मेघ।
Cloud burst—मेघस्फोट।
Cloudy—१ मेघ-श्याम (वर्ण)। २ मेघाच्छन्न।
Clove—लौगिया।
Clue—सूत्र।
Clumsy—भोंदा।
Coalition Government—सयुक्त सरकार।
Coaltar—अलकतरा।
Coast-guard—तट-रक्षक।
Cobalt—सविता (तृ)।
Cobra—नाग।
Cocktail-party—पात्र- ोष्ठी।
Cod—स्नेहमीन।
Code—१ सहिता। २ विधायन-सहिता। ३ सकेतकी।
Code of conduct—आचार-सहिता।
Codification—सहिताकरण।
Codified—सहित।
Coercion—१. अवपीडन। २ बलप्रयोग।
Co-existence—१ सह-अस्तित्व। २ सह-जीवन (वनस्पति विज्ञान)।
Coffee—कहवा।
Coffee-house—कहवाखाना।
Cognizable—अवेक्षणीय, प्रज्ञेय।
Cognizance—१. प्रज्ञान। २. विचाराधिकार।
Cognizant—प्रज्ञाता।
Cohesion— ससक्ति।
Coin—मुद्रा, सिक्का।
Coitus—मैथुन, सभोग।
Cold—जुकाम, प्रतिश्याय, सरदी।
Cold front—शीताग्र।
Cold storage—ठढा ोदाम, शीतल भडार, शीतागार, सर्द-खाना।
Cold war—ठढा युद्ध, शीत युद्ध।
Cold wave—शीत तरग।
Colic pain—शूल।
Collaboration—सहयोग।
Collapse—१ पात। २. हृदयावसाद।
Collation—१ परितुलन। २ मिलान, समाकलन।
Colleague—सहकर्मी (मित्र)।
Collection—१.अनुप्रापण, वसूली, समाहरण। २ सग्रहण। ३. सग्रह।
Collective—१ सामूहिक। २ समुच्चयार्थक। (व्याकरण)
Collectivism—समष्टिवाद।
Collector—समाहर्त्ता।
College—महाविद्यालय।
Colloid—कलिल।
Collusion—१ साठ-गाँठ। २ मिली-भगत।
Cologne-stick—गध-शलाका।
Colonial—औपनिवेशिक।
Colony—उपनिवेश, नौआबादी।
Colour bar—रग-भेद।
Colour blind—वर्णान्ध।
Colour blindness—वर्णान्धता।
Column—१ स्तभ (सामयिक पत्रों का)। २ टुकडी, दस्ता। (सैनिक)
Columnist—स्तभ-लेखक।
Coma—अतिमूर्च्छा, सन्यास (ोग)।
Combination—१ सयोग, सयोजन। २ समुच्चय।
Combustible— दहन-शील, दह्य।
Combustion—दहन।
Comet—केतु, धूम-केतु, पुच्छल तारा।
Comma—अल्प-विराम।
Command—आदेश, समादेश।
Commander—समादेशक।
Commemoration volume—स्मारक-ग्रथ।
Commencement—आरभ।
Commendable—सस्ताव्य।
Commendation—सस्तवन।
Commentary—टीका, वृत्ति।
Commentator—टीकाकार, वृत्तिकार।
Commerce—वाणिज्य।
Commission—आयोग।

Commisionary—प्रमडल।
Commitment—१ वचन-बद्धता। २ सपुर्दगी।
Committed—सपुर्द।
Commixture—सकर (अलकार)।
Commode—गमला, शौचासनी
Commodity—पण्य-वस्तु।
Common—१ साधारण। २ सर्व-सामान्य। ३ सार्व-जनिक। ४ सर्व-साधारण।
Common factor—समापवर्तक।
Common law—सामान्य विधि।
Common sense—सामान्य बुद्धि।
Commonwealth—राष्ट्र-मडल।
Communal—साप्रदायिक।
Communalism—साप्रदायिकता।
Communication—१ सगमन। २ सचार। ३. यातायात।
Communique—विज्ञप्ति।
Communism—साम्यवाद।
Community—लोक समाज।
Commutation—१ परिवर्त्तन। २ रूपान्तरण (दड का)। ३ लघुकरण। ४ परिणाम (अलकार)।
Company—समवाय।
Comparison—तुलना, मिलान।
Compass—कुतुबनुमा, दिग्दर्शक यंत्र, दिग्सूचक यत्र, ध्रुव-घडी।
Compassion—करुणा।
Compatibility—सगति।
Compendium—सार-सग्रह।
Compensation—प्रतिकर, प्रतिमूल्य, मुआवजा।
Competency—सक्षमता।
Competent—सक्षम।
Competition—प्रतियोगिता।
Compilation—सकलन।
Complaint—परिवाद, फरियाद, शिकायत।
Complainant—अभियोगी।
Complement—सपूरक।
Complementary—पूरक, सपूरक।
Complex—ग्रथि, मनोग्रथि।
Complication—उलझन।
Compost—वानस्पतिक खाद।
Compound—समस्त।
Compounder—समिश्रक।
Compounding—सम्मिश्रण।
Compound interest—चक्र-वृद्धि, शिखावृद्धि, सूद-दर-सूद।
Compound sentence—सयुक्त वाक्य।
Comprehensive— व्यापक।
Compression—सपीडन।
Compromise—समझौता।
Computation—अभिगणन, संगणन.।
Concave— अवतल, नतोदर।
Concealment—अपह्नुति (अलकार)।
Concentration—सकेंद्रण।
Concentration camp—बदी शिविर, सकेंद्रण शिविर।
Conception—१ अवधारणा। २ सकल्पन। ३ गर्भ-धारण।
Conceptualism—१ प्रत्ययवाद। २ प्रमावाद।
Concession—रिआअत।
Conciliation—सराधन।
Conciliation officer—सराधक अधिकारी।
Concise—मिताक्षर, सक्षिप्त।
Conclusion—निष्कर्ष, परिणाम।
Concomittant—सहवर्ती।
Concrete—१ ठोस। २ मूर्त।
Concubine—रखनी, रखेली, रखैल।
Concurrent—१ सवर्ती। २ समवर्ती।
Condition—१ अवस्था। २ प्रतिबध, शर्त।
Conditioned—पणित, प्रतिबधित।
Conditioning—सबलन।
Condolence—सवेदना।
Condominium—१ द्वैराज्य। २ सहराज्य।
Conduct—१ आचरण। २ व्यापार।
Conduction—सवाहन।
Conductivity—सवाहकता।
Cone—१ कोण। २ शकु।
Confederation—परिसघ, राज्य-मडल।
Conference—सम्मेलन।
Confession—१ अपराध-स्वीकरण। २. आत्म-स्वीकृति, स्वीकरण। ३ स्वीकारोक्ति।
Confident—निश्चयी।
Confidential—१ गोपनीय। २ प्रत्ययिक, विश्वस्त।
Confirmation—१ अभिपोषण, दृढायन, पुष्टीकरण। २ सपुष्टि। ३ स्थायीकरण।
Confiscated—जब्त, राज्यसात्।
Confiscation—जब्ती, राज्यसात्करण।
Conflagration—अग्नि-काड, अवदाह।
Conflict— १ विरोध। २ सघर्ष।
Congenital—सहजात।
Congratulation— बधाई।
Conics—शकु-गणित।
Conjectural—अटकलपच्चू।
Conjoint Consonant—सयुक्ताक्षर।
Conjugation—युग्मन, सयुग्मन, सयोजन।
Conjunction—युति, योग, सयुति।
Conjunction of stars—योग।
Connected description—सहोक्ति।
Connecting—सबर्धक
Connection—सबध।
Connective—योगी।
Conquest—जीत, विजय।
Conscience—अत करण, विवेक।
Conscription—अनिवार्य भर्ती।
Consecutive—क्रमागत, क्रमिक।
Consent—सम्मति, सहमति।
Consequence— परिणाम, फल।
Consequent—१ अनुवर्ती। २ परिणामी।
Considerate—सतर्क।
Consideration—१ विचार। २ प्रतिफल।
Consigned—परेषित, प्रेषित।
Consignee—प्रेषिती।
Consigner—परेषक, प्रेषक।
Consignment—परेषण।
Consistancy—सगति।
Consolidated—सहत।
Consolidation—सहति।
Consolidation of holdings— चकबदी।
Consonant— वि० सन्नादी।
पु० व्यजन।
Conspiracy— अभिसधि, षडयत्र।
Constable—सिपाही (पुलिस का)।
Constabulary—रक्षी दल।
Constant—१ अविरत, निरतर, लगातार। २ स्थिर।
Constipation— कोष्ठबद्धता, कब्जीयत।
Constipative—कोष्ठबद्धक।
Constituency—निर्वाचन-क्षेत्र।
Constituent Assembly—सविधान परिषद।
Constitution—सविधान।
Constitutional— सविधानिक सविधानी, सवैधानीय।
Constitutionalism—सविधानवाद।
Constitutionalist—सविधानवादी।
Constitutional monarchy—सवैधानिक राजतत्र।
Constraint—अभिभव, निरोध।
Consumer—उपभोक्ता।
Consumption—उपभोग।
Contact— ससर्ग।
Contagious—सक्रामक, सासर्गिक।
Contemplation—मनन।
Contemporary—समकालीन, समसामयिक।
Contents— अतर्वस्तु।
Context—१ प्रसग। २ सदर्भ।
Contiguity— सनिक्ति।
Contiguous—ससक्त।
Continent—महादेश।
Continued—क्रमागत।
Continuity—निरतरता, सातत्य।
Contortion—व्यावरण।
Contour—परिरेखा।
Contraband—निषिद्ध, वर्जित, विनिषिद्ध।
Contraband trade—विनिषिद्ध व्यापार।

Contract— ठीका, संविदा।
Contract deed—ठीका-पत्र, संविदापत्र।
Contraction—आकुंचन।
Contractor—ठेकेदार।
Contradiction—खंडन, प्रतिवाद।
Contradictory—खंडनात्मक, खंडनात्मक।
Contribution—अंश-दान।
Contributor—अंश-दाता।
Contributory— अंश-दानिक।
Control—नियंत्रण।
Controversion—विवादास्पद।
Convener—संयोजक।
Convention— १ अभि-समय। २. उप-संधि। ३ रूढ़ि। ४ सम्मेलन।
Conventional—१ अभि-सामयिक।२ रूढ़।
Convergence—अभिसरण।
Converging—अभिसारी।
Converse—प्रतिलोम।
Conversely—विलोमतः।
Conversion—मत-परिवर्तन।
Convex— उत्तल, उन्नतोदर।
Conveyance—१. अभि-हस्तान्तरण, संनयन। २ प्रवहण, वाहन, सवारी।
Conveyancer—अभि-हस्तान्तरक, संनयन-कार।
Conveyancing—१ संनयन-लेखन।२ संनयन-विधि।
Convicted—अभिदोषित, अभिशस्त।
Conviction—अभिशंसा, अभिशस्ति।
Convocation—समावर्तन।
Convocation Address—दीक्षांत भाषण।
Convulsion—आक्षेप,ऐंठन।
Cooling—शीतन।
Co-operation—सहकार, सहकारिता, सहयोग।
Co-operative society—सहकार-समिति।
Co-opted—सहगृहीत, सहयोजित।
Co-option—प्र हण, सहयोजन।
Co-ordination— एक-सूत्रता, तालमेल, समन्वय।
Co-partner—सहभागी।
Copy— प्रतिलिपि।
Copyist—प्रतिलिपिक।
Copyright—प्रतिलिप्यधिकार।
Coral—मूँगा, मुंगी।
Coral island—प्रवाल-द्वीप।
Cord—सूत्र।
Co-relation— सहसंबंध।
Cork—काग।
Corner-stone — १ कोण-शिला। २. आधार-शिला नींव का पत्थर।
Cornice—कार्निस, छज्जा।
Corollary—उपप्रमेय।
Corona— कांति-चक्र, परि-मंडल।
Coronation—राज्याभिषेक।
Corporated—निगमित।
Corporation— १ निगम, श्रेणी। २ महानगर-पालिका, महापालिका।
Corporation aggregate—समष्टि-निकाय।
Corporation sole— एकल निगम।
Corpuscle— कणिका।
Corrected— शोधित।
Correction— शोधन, संशोधन।
Corrective—संशोधक।
Correspondence—चिट्ठी-पत्री।
Correspondent—संवाद-दाता।
Corridor—गलियारा।
Corroboration—परिपुष्टि।
Corrosion—संक्षारण।
Corrosive—संक्षारक।
Corrupt—प्रदुष्ट, भ्रष्ट।
Corruption—प्रदोष, भ्रष्टाचार।
Corundum—कुरुविंद।
Co-sharer—सहांशी।
Cosmetics—अंगराग, शृंगार-सामग्री।
Cosmic—विश्वक, ब्रह्मांडीय।
Cosmic rays—अंतरिक्ष किरण, ब्रह्मांड किरण।
Cosmism—विश्ववाद।
Cosmography—सर्ग-लेख।
Cosmology—सृष्टि-विज्ञान।
Cosmonaut—अंतरिक्ष-यान।
Cosmopolitan—सार्वभौम, सार्वभौमिक।
Cost—परिव्यय, लागत।
Cost of management—प्रबंध-व्यय।
Cost of suit—वाद-व्यय।
Costs—अर्थ-दंड, हर्जाना।
Cottage industry—कुटी उद्योग।
Cough—खाँसी।
Council—परिषद।
Councillor—पार्षद।
Counsel General—महावाणिज्य दूत।
Counteraction—प्रतिकरण, प्रतिकार।
Counteractive—प्रतिकारिक।
Counter-attack—प्रत्याक्रमण।
Counter-balance—प्रति-तुलन।
Counter-charge—प्रत्यारोप।
Counter-exception—प्रतिप्रसव।
Counterfeit—कूट, प्रतिरूप।
Counterfeiter—प्रतिरूपक।
Counterfoil—प्रति-पर्ण।
Counter-revolution—प्रति-क्रांति।
Counterseal—प्रतिमुद्रांकन।
Countersigned—प्रतिहस्ताक्षरित।
Countersigning—प्रतिहस्ताक्षरण।
Counting—गणन, गिनना।
Coupling—युग्मन।
Coupon—पर्णिका।
Courage—साहस।
Course—१. क्रमक। २ पाठ्य-क्रम।
Court—अदालत, कचहरी, न्यायालय।
Court fee—अधिकरण-शुल्क, न्याय-शुल्क।
Court Inspector—व्यवहार-निरीक्षक।
Court Martial—सैनिक न्यायालय।
Court Officer—आधिकरणिक।
Court of records—अभिलेख-अधिकरण।
Court of wards—प्रतिपालक अधिकरण।
Covenant—प्रसंविदा।
Cover—आवरण-पृष्ठ।
Crab—केंकड़ा।
Crane—उत्तोलक, उत्तोलक यंत्र।
Crater—ज्वाला-मुख।
Crater lake—ज्वाला-मुख झील।
Cream—मुलतानी।
Creation—सृष्टि।
Credential—प्रत्ययवादी।
Credentials—प्रत्यय-पत्र।
Credit—वि० धन। सं० १. ऋण। २. मान्य।
Credit sale—उधार विक्रय।
Credit side—ऋण-पक्ष, धन-पक्ष।
Creeping—विसर्पी।
Crematorium—१. दाह-गृह। २. श्मशान।
Cricket—गेंद-बल्ला।
Criminal—१ अपराधशील। २आपराधिक।
Criminal Procedure—आपराधिक प्र या।
Criminology—अपराध विज्ञान।
Crimson—वि० किरमिजी, ललगुई। पु० किरमिज।
Criterion—कसौटी।
Crocodile*—घड़ियाल।
Crocodile tears—मकराश्रु*, मगरमच्छ के आँसू।
Croon—सिसकी।
Crop—फसल।
Cross-breeding—अन्योन्य प्रजनन, संकरण।
Cross-examination—प्रति-परीक्षण।
Cross-fertilization—अपर-निषेचन।
Cross-reference—अन्योन्य संदर्भ, प्रत्या-निर्देश।
Crossword—वर्ग-पहेली।
Crude—अन-गढ़।
Crystal— १ कलम, केलास, रवा। २ बिल्लौर, स्फटिक।

---

*Crocodile वास्तव में घड़ियाल है। परन्तु घड़ियाल और मगर का ठीक अन्तर न समझने के कारण Crocodile tears के लिए भूल से 'मकराश्रु' शब्द बना लिया गया है।

Crystallization—केलसन, मणिभीकरण।
Cube—घन।
Cube measure—घन-मान।
Cube root—घन-मूल।
Cubism—घन-वाद।
Culpable—अपराधिक।
Cult—पथ।
Cultivated—कृष्ट, कृषित।
Cultivation—१. कृषि-कर्म। २. संवर्धन।
Culturable land—खेती-भूमि।
Cultural—सास्कृतिक।
Culture—१ सवर्धन। २ सस्कार। ३ संस्कृति।
Culvert—पुलिया।
Cumulated—सयुत, समुच्चित।
Cumulation—संयुति, समुच्चय।
Cuneiform—कीलाक्षर।
Cupel—खपरा, खपरिया, खर्पर।
Curable—चिकित्स्य।
Curator—सग्रहालयाध्यक्ष।
Curiosity—कुतूहल।
Curious—कुतूहली।
Currency—चल-मुद्रा, चलार्थ, मुद्रा।
Current—१ चलित, प्रचलित। २ साप्रतिक। स० धारा, प्रवाह, वहा।
Current account—चलता खाता।
Currentmeter—धारा-वेगमापी, वहामापक, वहामापी।
Curriculum—पाठ्य-चर्या।
Curtain—परदा।
Curve—१ वक्र-रेखा। २ मो।
Custodian—अभिरक्षक।
Custody— १. अभिरक्षा, परिरक्षा। २ हिरासत, हाजत।
Customary— आचारिक।
Cut—कटौती।
Cut motion—कटौती का प्रस्ताव।
Cycle—चक्र।
Cyclic—चक्रीय।
Cyclic order—चक्र-क्रम।
Cyclone—चक्रवात, ववडर।
Cyclonic rain—चक्रवातीय वर्षा।
Cyclostyle—चक्र-लेखित्र।

D

Daily—दैनिक।
Dairy—दुग्ध-शाला।
Dam—बाँध, रोध।
Damages—क्षति-मूल्य।
Dark age—अवकार युग।
Date—तारीख, तिथि, दिनाक।
Dated—तिथित।
Day-dream—दिवा-स्वप्न।

Dead letter—अज्ञात-नामिक-पत्र, अनाम-पत्र।
Dead-lock—गति-रोध, जिच।
Deal—अर्थ-व्रय।
Dean of faculty—सकायाध्यक्ष।
Dearness allowance—मँहगाई।
Death-bed—मृत्यु-शय्या।
Death duty—मृत्यु-कर।
Death rate—मृत्यु-दर, मरणगति।
Death roll—मृत्यु-सख्या।
Debatable—विवाद्य, सभाष्य।
Debate—वाद-विवाद, सभाषा।
Debenture—ऋण-प।
Debit—विकलन।
Debris—मलवा।
Debt—ऋण।
Decade—दशक।
Decantation— नियारना।
Decease—प्रमीति।
Deceased—प्रमीत।
Decentralization—विकेंद्रीकरण।
Deception—कपट, छल।
Decimalization—दशमलवकरण।
Decimal system—दशमिक प्रणाली।
Decision—१ निर्णय। २ विनिश्चय।
Decisive—निर्णयात्मक।
Declaration—घोषणा, प्रख्यापन।
Declension—रूप-साधन।
Decline—ह्रास।
Decoction—का ा, क्वाथ, जोशाँदा।
Decomposition—सडन।
Decontrol—विनियत्रण।
Decoration—अलकरण, सजाना, सजाव।
Decorative art—सज्जा-कला।
Decreasing—ह्रीयमान।
Decree—आज्ञप्ति।
Decrement—ह्रास।
Dedication—समर्पण।
Deduction—१. अभ्युपगम। २. निगमन।
Deed—दस्तावेज, विलेख।
Deed of gift—दान-पत्र।
Deem—समझना।
Deep carmine—अलतई।
De facto—वस्तुत।
Defalcation—खयानत।
Defamation—मानहानि।
Defect—१. त्रुटि। २. ेप।
Defence—१. प्रतिरक्षा, वचाव। २. सफाई।
Defence witness—सफाई का गवाह।
Deferment—आस्थगन।
Deferred—आस्थगित।
Deficit—१. अववर्त्त, कमी। २ घटती, घटी, घाटा।

Defined—परिभाषित।
Definite—निश्चित।
Definition—परिभाषा।
Deflation—अवस्फीति, विस्फीति।
Deforestation—निर्वनीकरण, वन-कटाई।
Defraction—व्याभग।
Defraying—अदायगी।
Degenerated—अपजात।
Degeneration—आपजात्य।
Degradation—कोटिच्युति।
Degraded—कोटिच्युत।
Degree—१ अश। २ अशाश। ३. कला।
Dehydrated—निर्जलित।
Dehydration—निर्जलीकरण, विजलीकरण।
Deism—प्रकृति-देव-वाद।
De jure—विधित।
Delegation—प्रतिनिधि-मडल।
Deletion—लोपन, विलोपन।
Deliberation—विमर्श।
Delimitation—परिसीमन।
Delineation—रेखाचित्र।
Delinquency—अपचार।
Deliquent—प्रस्वेद।
Deliquescence—प्रस्वेदन।
Delirium—प्रलाप।
Delivery—१. दाति, सप्रदान। २. प्रसव।
Deluge—प्रलय।
De lux edition—राज-सस्करण।
Demand—१ अभियाचना। २ माँग।
Demarcated—सीमाकित।
Demarcation—सीमाकन।
Dementia—बुद्धि-भ्रश, मनो-भ्रश।
Demilitarisation—असैन्यीकरण, विसैन्यीकरण।
Democracy—लोक-तत्र।
Democratic—लोक-तात्रिक।
Demography—जन-विद्या, जनाकिकी।
Demonology—पैशाचिकी।
Demonstration—१ उपपादन। २ निदर्शन। ३ प्रदर्शन।
Demonstrative—प्रदर्शक, प्रदर्शनात्मक, प्रादर्शनिक।
Demonstrator—१. उपपादक। २. निदर्शक। ३. प्रदर्शक।
Demulcent—शमक।
Demmrage—विलव-शुल्क।
Denatured—अपहृत।
Dengue—डडक-ज्वर।
Dentist—दत-कार।
Dentistry—दत-कारी, दातिकी।
Denudation—अनावृतीकरण।
Department—विभाग।
Departmental—विभागीय।

Departure—प्रस्थान।
Dependancy—आश्रित-राज्य।
Depilatory—विलोमक।
Deportation—विपत्तन।
Deposit—निक्षेप।
Deposited—अभिन्यस्त, निक्षिप्त।
Depreciation—अर्घ-पतन, मूल्य-ह्रास।
Depreciation fund—मूल्य-ह्रास-निधि।
Depressed—दलित, पद-दलित।
Depressed classes—दलित-वर्ग।
Depression—१ अवनमन, अवपात। २. प्रावसादन।
Deprived—वंचित।
Deputation—१ प्रतिनिधान। २. शिष्ट-मंडल।
Deputed—प्रतिनियुक्त।
Deputy Commissioner—उपायुक्त।
Derangement—क्रम-भंग।
Derivation—निरुक्ति, व्युत्पत्ति।
Derivative—व्युत्पत्तिक।
Derogation—१. अपकर्ष। २. अप्रतिष्ठा।
Descendant—वंशज।
Descending—अवरोही।
Descending node—अवरोहपात केतु।
Descent—उद्भव।
Description—वर्णन।
Desert—म -स्थल।
Deserted—परित्यक्त।
Deserter—अपसरक।
Desertion—१. अभित्याग। २ अपसरण।
Design—अभिकल्प, तरह, परिरूप, बनत, भांत।
Designated—पदनामित।
Designation—अभिधान, पदनाम, पद-संज्ञा।
Designer—१ अभिकल्पक। परिरूपक। २ रूपाकक।
Designing— अभिकल्पन, रूपाकन।
Despatch book—प्रेषण-पुस्तक।
Despatch register—जावक।
Despondency—विषाद।
Despot—निरंकुश।
Destiny—नियति।
Destroyer—वि० विनाशी। पु० विध्वंसक (जहाज)।
Desulphurization—विगंधकीकरण।
Detached—अनासक्त।
Detachment—अनासक्ति।
Detention—निरोध।
Detenu—नजर-बंद।
Determination—अवधारण, निश्चय।
Determinism—नियति-वाद।
Determinist—नियतिवादी।
Detonation—प्रस्फोटन।
Detonator—प्रस्फोटक।
Detritus—मलवा, विखंड राशि।
Devaluation—अवमूल्यन।
Development—१ अभिवर्धन, अभिवृद्धि। २. विकास।
Deviation—विचलन।
Devotion—भक्ति।
Dew—ओस।
Dew-point—ओसांक।
Diabetes—मधु-मेह।
Diacritical mark—विशेषक-चिह्न।
Diagnosis—निदान, रोग-निदान।
Diagonal—वि० विकर्ण। सं० विकर्ण।
Diagonally—विकर्णत।
Diagram—आरेख, रेखा-चित्र।
Dialect—उपभाषा, बोली, विभाषा।
Diamond Jubilee—हीरक जयंती।
Diaphoretic—प्रस्वेदक, स्वेदक।
Diarchy—१. द्वितंत्र, द्वैध-शासन। २. द्वि-दलशासन प्रणाली।
Diarrhoea—अतिसार।
Diary—दैनिकी।
Dice—पासा।
Dictator—अधिनायक, तानाशाह।
Didacticism—उपदेश-वाद।
Diet—भोजन।
Dieted— भोजन-ग्राही।
Dietetics—आहार-विज्ञान।
Difference—अंतर।
Different—भिन्न।
Difficult—कठिन।
Difficulty—कठिनाई।
Digression—१ उत्क्रम। २ विषयांतर।
Dilemma—धर्म-संकट।
Dilution—तनूकरण।
Dimension—१ आयाम। २ परिमाप। ३ विमा।
Dimensional—विमीय।
Diminutive—१ अल्पक। २ तुच्छार्थक।
Diphtheria—रोहिणी।
Diploma—पदवी-पत्र।
Diplomacy—कूट-नीति।
Direct—प्रत्यक्ष।
Direction— १ अभिदिशा, दिशा। २ निदेश, निदेशन।
Directive—निदेश, निदेशन।
Director—निदेशक।
Directorate—निदेशालय।
Direct speech—स्पष्ट-कथन।
Direct tax—प्रत्यक्ष-कर।
Disaffection—अपरक्ति, अपराग।
Disarmament—निरस्त्रीकरण।
Disc—१. चकती। २. तवा। ३ बिम्ब, मंडलक।
Discharge—१. अवरोपण। २ उन्मोचन, उन्मुक्ति। ३ निर्वहण, पालन। ४ प्रस्राव।
Disciple—शिष्य।
Disciplinary—अनुशासनिक।
Discipline—अनुशासन, विनय।
Discovery—आविष्कार।
Discretion—सविवेक, स्वविवेक।
Discretionary—विवेकाधीन।
Discrimination—भेद-भाव, विभेद।
Discussion—वाद-विवाद।
Disease—रोग, व्याधि।
Disgrace—अपमान।
Disguise—वेश।
Dishonesty—अनार्जव, बेईमानी।
Dishonouring—अनादरण।
Disinfectant—संक्रमण-नाशक।
Disintegration—विघटन।
Dismissal—पद-च्युति, बरखास्तगी।
Dismissed—१ खारिज। २ पदच्युत।
Disobedience—अवज्ञा, आज्ञा-भंग।
Disparity—असमानता।
Displaced—अभिक्रांत, उद्वासित, विस्थापित।
Displacement—अभिक्रांति, उद्वासन, विस्थापन।
Disposal—१. निपटान निस्तारण। २ निसर्ग। ३ समापन।
Disposition—१ मिजाज, स्वभाव। २ चित्त-वृत्ति, प्रवृत्ति। ३. शील। ४ व्यवस्था।
Dispute—विवाद।
Disputed—विवादित।
Disregard—१ अवमान। २ अवहेलन।
Dissatisfaction—असंतोष।
Dissection—व्यवच्छेद।
Dissent—विमत, विसम्मति।
Dissertation—१ मत-प्रबंध। २ शोध-प्रबंध, शोध-निबंध।
Dissimilar—विसदृश।
Dissimilation—विषमीकरण।
Dissolved—विघटित।
Distillation—आसवन।
Distilled—आसुत।
Distiller—आसवक।
Distillery—आसवनी।
Distinct—प्रभिन्न, भिन्न।
Distinction—१ प्रभिन्नता। २ प्रभेद।
Distinctive—प्रभेदी।
Distribution of labour—श्रम-विभाजन।
Distributor—वितरक।
Distributory—वितरक-नदी।
Ditch—खाई।

Diver— ताखोर।
Divergence—अपसरण, अपसृति।
Dividend—लाभाग।
Division—१ भाग। २ विभाग। ३ प्रखड। ४ भाजक, हार। ५ वाहिनी (सेना की)।
Divisor—भाजक।
Divorce—तलाक, विवाह-विच्छेद।
Dock—गोदी।
Doctrine—मत, सिद्धात।
Doctrine of Universals—विश्वक सिद्धात।
Document—दस्तावेज, प्रलेख, लेख्य।
Documentary—१ लिखित। २ लेख्य। ३ दस्तावेजी।
Documentary film—वृत्त-चित्र।
Documentation—प्रलेख-पोषण।
Dogma—अततिम।
Dogmatic—मताग्रही।
Dogmatism—१ आदेशवाद। २ मताग्रह।
Dome—गुम्बद।
Domestic science—गार्हस्थ्य विज्ञान।
Domicile—अधिवास।
Domiciled—अधिवासी।
Dominion—अधिकार-क्षेत्र।
Donation—दान, दत्त।
Doomsday—कयामत।
Dormancy—तन्द्रा, प्रसुप्ति।
Dormant—अनुद्भूत, प्रसुप्त, सुप्त।
Dose—ऊँघ।
Dosing—ऊँघना।
Double member constituency—द्वि-सदस्य निर्वाचन क्षेत्र।
Draft—१ खाका। २ प्रारूप, प्रालेख, मसौदा। ३ धनादेश। ४ हुंडी। ५ पाडु-लेख।
Drafting—पाडु-लेखन।
Draftsman—पाडु-लेखक, नकशा-नवीस, मान-चित्रक।
Drama—नाटक।
Dramatic—नाटकीय।
Drawal—मकारी।
Drawee—आदेशिती।
Drawer—आग्राहक, आगृहीत।
Drawing—१ आलेख, आलेखन, लेखन। २ लेख्य। ३ रेखा-चित्र, नकशा। ४ आग्रहण।
Dread—त्रास, विभीषिका।
Dream—स्वप्न।
Dreamer—स्वप्नदर्शी।
Dress—परिच्छद, पोशाक।
Dressing—१ प्रतिसारण। २ प्रसाधन।
Dressing room—१. प्रतिसारण-शाला। २ वस्त्रागार।
Drift—१ अपवहन, अपवाह। २ बहाव।
Drink—१ पेय। २ पानीय।
Drizzle—झीसी, फुहार।
Drop—बूँद, बिंदु।
Dropper—बिंदुक।
Dropping—अवपातन।
Drought—सूखा।
Drug—ओषधि।
Dry—सूखा।
Dry dressing—निर्जल प्रतिसारण।
Dry farming—निर्जल खेती, सूखी खेती।
Dry fruit—वान।
Dry washing—सूखी धुलाई, निर्जल धुलाई।
Dualism—द्वैतवाद।
Dualist—द्वैतवादी
Ductile—तन्य, प्रत्यस्थ।
Ductility—तन्यता, प्रत्यस्थता।
Due—१ अपेक्षित। २ देय। ३ प्राप्य ४ दातव्य।
Dues—१. देय। २ प्राप्य।
Duet—जुगलबदी, युगल-गान, दुगाना।
Dugong—गवय, हस्ति-मकर।
Dump—खत्ता, गंज।
Dumping—१ गजाई। २. पाटना, पटाई।
Duplicate—द्वितीयक।
Duration—भोग-काल।
Dust din—कूड़ा-कोठ।
Dusting—धूलन।
Dust-well—धूल-कूप।
Dutiable—शुल्कार्ह।
Duty—१. कर्तव्य। २ तट-कर, सीमा-शुल्क।
Dynamic—गतिक।
Dynamics—गति-विज्ञान।
Dysentry—पेचिश, प्रवाहिका।
Dysmenonrhoea—कष्टार्तव।

E

Eager—उत्सुका
Eagerness—उत्सुकता
Eal—सर्प-मीन।
Ear-drum—कर्ण-पटह, कर्ण-मृदंग।
Earned—अर्जित।
Earthquake—भूकप।
Easement—परिभोग, सुखभोग।
Easy chair—आराम-कुर्सी, सुखासन।
Ebony—आबनूस।
Eccentric—वि० उत्केन्द्र, उत्केन्द्रक, विमध्य। स० १ उत्केन्द्र। २ सनकी।
Eccentricity—१ उत्केन्द्रता, विमध्यता। २ सनक।
Echo—अनुनाद, गूँज, प्रतिध्वनि।
Echo word— तिध्वनिक शब्द।
Eclipse—उपराग, ग्रहण।
Eclipse (lunar)—चन्द्र-ग्रहण।
Eclipse (partial)—खड-ग्रहण।
Eclipse (solar)—सूर्य-ग्रहण।
Ecliptic—क्रांतिवृत्त, रविमार्ग।
Ecology—परिस्थिति-विज्ञान।
Economic—आर्थिक।
Economic Geography—आर्थिक भू-विज्ञान।
Economics—अर्थ-शास्त्र।
Economist—अर्थ-शास्त्री।
Economy—किफायत।
Ecstasy—१ अत्यानद। २ हर्षोन्माद। ३ हाल (धार्मिक तन्मयता)।
Eczema—पामा।
Edentate—अनग्रदत।
Edible—खाद्य।
Editing—सपादन।
Edition—आवृत्ति, संस्करण।
Editor—सपादक।
Education—शिक्षा।
Educational—शैक्षणिक, शैक्षिक।
Educationist—शैक्षिक।
Effect—प्रभाव।
Effective—प्राभाविक।
Efficiency—दक्षता निपुणता, प्रगुण।
Efficiency bar—कौशल-बाघ, दक्षता-रोध।
Effort—प्रयत्न।
Ego—अह।
Egoism—१ अस्मिता। २ अहकार।
Egotism—अहकार, अहमन्यता।
Eight-wheeler—अठ-पहिया।
Elastic—प्रायस्थ।
Elasticity—प्रायस्थता।
Elder—वृद्ध।
Elderman—नगर-वृद्ध।
Elected—निर्वाचित।
Election—निर्वाचन।
Election petition—चुनाव-याचिका।
Electoral College—निर्वाचक-मडल।
Electorate—निर्वाचक।
Electricity—बिजली।
Electrolysis—विद्युत्-विश्लेषण।
Electrometer—विद्युत् मापक।
Electroscope—विद्युद्दर्शी।
Element— तत्त्व।
Elementary—आरभिक।
Elevation—१ उत्थान, उठान, उत्सेध। २ उन्नयन। ३ उच्चता, उत्सेध। ४ उच्चालन।
Elevator—उच्चालक।
Eligible—पात्र।
Elocution—वक्तृत्व-कला।

Elongation—दीर्घीकरण।
Elucidation—स्पष्टीकरण।
Emanation—अंश-विभूति।
Emancipation—१ उद्धार। २ मुक्ति।
Embankment—तट-बंध, पुश्ता, बाँध।
Embargo—१ प्रतिरोध, घाट-बंदी। २ निषेध, रोक।
Embellishment—अलंकरण, परिष्करण।
Embezzlement—अपहार, गबन।
Embryo—भ्रूण।
Embryology—भ्रूण-विज्ञान, भ्रौणिकी।
Emergency—१ आपात। २ हंगामा।
Emergent—१ आपातिक, आपाती। २ हंगामी।
Emery paper—बलुआ कागज, रेगमाल।
Emission—उत्सर्जन।
Emphasis—बलाघात।
Empirical—आनुभविक।
Empiricism—प्रत्यक्षवाद।
Employed—अधियुक्त।
Employee—अधियुक्ती।
Employer—अधियोक्ता, नियोक्ता।
Employment—अधियुक्ति, अधियोजन।
Employment bureau—अधियोजनालय।
Employment exchange—नियोजनालय।
Emulation—स्पर्धा।
Emulsification—पायसीकरण।
Emulsion—पायस।
Enactment—अधिनियमन, विधायन।
En bloc—समूहत।
Encirclement—घेरा-बंदी।
Enclave—अंतरावर्त।
Enclosed—१ परिवेष्ठित, संवेष्ठित, समवृत। २ अनुलग्न।
Enclosure—१ घेरा। २ समावरण। ३ अनुलग्नक, संलग्नक, सह-पत्र।
Encounter—मुठ-भेड़।
Encroachment—अतिक्रमण, अतिसर्पण।
Encumbered—भारित।
Encumbrance—भार।
Encyclopaedia—विश्व-कोश।
End—अंत।
Endemic—स्थान-पदिक।
Endiometer—वायु-मापी।
Endiometry—वायु-मिति।
Endogamy—सवर्ण-विवाह।
Endogen—अंतर्जात।
Endomosis—रसापकर्षण।
Endorsed—पृष्ठांकित।
Endorsement—पृष्ठांकन।
Endowment—१ धर्मस्व। २ स्थायी-निधि।
Enema—अनुवास, वस्तिकर्म।
Energy—ऊर्जा।
Engagement—१. आबंध, वचन-बंध। २ नियुक्ति। ३ परियुक्ति।
Engima pectoris—उर-शूल।
Engine—इंजन।
Engineer—अभियंता, अभियांत्रिक।
Engineering—वि० अभियांत्रिक। सं० अभियंत्रण, अभियांत्रिकी, यंत्रशास्त्र।
Engrave—उकेरना।
Engraving—उकेरी।
Enlarged—परिवर्धित।
Enlargement—परिवर्धन।
Enquiry—परिप्रश्न, पूछ-ताछ।
Enquiry office—पूछ-ताछ घर।
Enrolment—नाम-निवेश।
Ensign—पोत-ध्वज।
Ensuant—अनुभाव।
Entente—समहित।
Entered—अनुविष्ट, निविष्ट।
Enterprise—१ उद्यम। २ साहस।
Enterpriser—१. उद्यमी। २ साहसी।
Enterprising—आरंभी।
Entertainment—आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।
Entertainment tax—मनोरंजन-कर।
Entitled—अधिकारी।
Entry—१ अनुवेश, इंदराज, निविष्ट, प्रविष्टि, लेखी। २ प्रवेश।
Enumeration—परिगणन।
Enumerator—परिगणक, गणनाकार।
Envy—असूया।
Epicentre—अधिकेन्द्र, उत्केन्द्र, कंप-केंद्र।
Epidemic—मरक, मरी, महामारी।
Epidemicology—मरक-विज्ञान, महामारी-विज्ञान।
Epigraph—पुरालेख।
Epigraphist—पुरालेखविद्।
Epigraphy—पुरालेख-शास्त्र।
Epilepsy—अपस्मार, मिरगी।
Epitaph—समाधि-लेख।
Epitheleum—उप-कला।
Epoch—अनुयुग।
Equal—सम, समान।
Equality—समता।
Equation—समीकरण।
Equator—निरक्ष,भूमध्य-रेखा ,विषुवत् रेखा।
Equilateral—सम-भुज।
Equilibrium—साम्यावस्था।
Equipment—उपस्कर, साज-समान, प्रसाधन, सज्जा।
Equipped—सज्जित।
Equitable—साम्यामूलक, साम्यिका।
Equivalent—वि० एकार्थक, समानार्थक। सं० तुल्यांक।
Era—कल्प।
Erosion—कटाव।
Errata—शुद्धि-पत्र।
Error—भूल।
Errors and omissions—भूल-चूक।
Erruption—स्फोट।
Escheat—वि० राजग, राजगामी। सं० नजूल, प्रत्यापत्ति।
Esoteric—१ गुह्य। २. दीक्षणीय।
Espionage—गुप्त-चर्या।
Essay—निबंध।
Essence—सार।
Essential oil—गंध-तैल, गंधसार तेल।
Established—सिद्ध।
Establishment—१ संस्थापन, स्थापन, स्थापना। २ अधिष्ठान।
Estate—भूमि।
Estate duty—भू-शुल्क।
Estimate—१ अनुमान। २ तखमीना। ३ प्राक्कलन।
Estimated—अनुमित।
Estimation—१ आकलन, आगणन, प्राक्कलन। २ कूत। ३ मूल्यांकन।
Estuary—सागर-संगम।
Etcetera—आदि, इत्यादि, वगैरह।
Eternal—शाश्वत।
Ether—आकाश।
Ethics—१ आचार-शास्त्र। २ नीति-शास्त्र।
Etiology—निदान-शास्त्र,हेतु-विज्ञान, हेतुकी।
Etymology—१. निरुक्त, निरुक्ति। २ व्युत्पत्ति। ३ व्युत्पत्ति-विज्ञान।
Eucalyptus—गंध-सफेदा।
Eunuch—हिजड़ा।
Evacuee—निष्क्रमिती, निष्क्रांत।
Eve—हौआ।
Even—सम।
Evening party—सांध्य-गोष्ठी।
Eviction—अधिनिष्कासन।
Evidence—१ गवाही, साक्षी। २ प्रमाण।
Evolution—विकास, विवर्त्तन।
Exaction—आहरण।
Exaggerated—अतिरंजित।
Exaggeration—१ अतिरंजन। २ अतिशयोक्ति, अत्युक्ति।
Examination—परीक्षा।
Examined—परीक्षित।
Examinee—परीक्षार्थी।
Examiner—परीक्षक।
Examining—१ परीक्षण। २ समीक्षा।
Example—उदाहरण।
Excavation—उत्खनन, खोदाई।
Exceeding—अधिक, समधिक।
Except—अतिरिक्त, सिवा।
Exception—अपवाद।

Exceptional—अपवादिक।
Excess—अतिरिक्त।
Excessive—अतिशय, अत्यधिक।
Excess profit—अतिरिक्त-लाभ।
Exchange—१ मिलाप-केंद्र। २ विनिमय।
Excise duty—आबकारी शुल्क, उत्पादन शुल्क।
Excited—उत्तेजित।
Excitement—उत्तेजना।
Exclave—बहिरन्तर्त।
Exclusion—अपवर्जन।
Exclusive—एकांतिक, ऐकांतिक।
Ex-convict—पूर्वापराधी।
Excursion—परिमार्गन, सैर।
Executed—निष्पन्न।
Execution—१ इजरा। २ निष्पत्ति, निष्पादन।
Executive—कार्य-पालिका।
Executor—निर्वाहक, निष्पादक।
Exemption—विमुक्ति।
Exercise—१ कसरत, व्यायाम। २. अभ्यास।
Exertion—आयास।
Exhaust—निकास।
Exhaust fan—निकास पखा, रेचक पखा।
Exhibition—नुमाइश, प्रदर्शिनी।
Existence—१ अस्तित्व। २. भाव।
Existentialism—अस्तित्ववाद।
Ex-officio—पदेन।
Exogamy—असवर्ण-विवाह।
Expansionism—विस्तारवाद।
Expectation—आशसा, प्रत्याशा।
Expediency—कालोचितता, समयोचितता।
Expedient—कालोचित, समयोचित।
Expedition—अभियान।
Expelled—अपसृत।
Experience—अनुभव, तजरुबा।
Experiment—प्रयोग।
Experimental—प्रायोगिक।
Experimentalism—प्रयोगवाद।
Experimental science—प्रायोगिक विज्ञान।
Expert—प्रवीण।
Expiration—समाप्ति।
Expiry—समाप्ति।
Explanation—१ व्याख्या। २ स्पष्टीकरण।
Exploitation—शोषण।
Exploiter—शोषक।
Exploration—अन्वेषण, गवेषण, समन्वेषण।
Explosive—विस्फोटक।
Export—निर्यात, जावक।
Export duty—निर्यात शुल्क।
Exporter—निर्यातक।
Express—आशुग।
Expressed—अभिव्यजित, अभिव्यक्त।
Expression—अभिव्यजन, अभिव्यक्ति।
Expressionism—अभिव्यजनवाद।
Expressive—अभिव्यजक।
Express letter—आशुग-पत्र।
Extension—अतिदेश, विस्तरण, विस्तार।
Extensive—विस्तृत।
Extent—आयति, प्रसार, विस्तार।
Extermination—उन्मूलन।
External trade—बहिर्वाणिज्य।
Extinction—१. निर्वापण। २ विलोप। ३ समाप्ति।
Extortion—अपकर्षण।
Extra—अतिरिक्त।
Extradition—प्रत्यर्पण।
Extraordinary—असाधारण।
Extreme—बाह्यपद।
Extremism—अतिवाद, उग्रवाद, परम-पथ।
Extremist—अतिवादी, उग्रवादी, परम-पथी।
Eye-ball—अक्षि-गोलक।
Eye-witness—अक्षि-साक्षी, अनुभावी, दर्शन-साक्षी।

F

Fable—१. आख्यान, कथा। २ उपदेश-कथा।
Facsimile—अनुलिपि, प्रतिकृति, प्रतिमुद्रण।
Factor—१ कारक, घटक। २ तत्त्व। ३ अपवर्तक, गुणन-खड। (गणित)
Factory—उद्योगालय, कारखाना।
Faculty—१ मनीषा। २ सकल्प। ३ सकाय।
Fallacy—हेत्वाभास।
Fallow—पडती (जमीन)।
Family—१ कुल। २ परिवार।
Family planning—कुटुम्ब-नियोजन, परिवार-नियोजन।
Farewell—विदाई।
Far-fetched—क्लिष्ट-कल्पित।
Farm—फारम।
Fashion—भूपाचार।
Fast—उपवास।
Fat—वसा।
Fatal—घातक, साघातिक।
Fatherland—पितृ-देश।
Fatty—वसीय।
Fault—दोष।
Favour—अनुग्रह।
Feature programme—रूपक कार्य-क्रम।
Federal—सघीय।
Federal Court—सघ-न्यायालय।
Federation—सघ।
Feeder— वि० पोषक। स० सभरक।
Feeding bottle—दूध-पिलाई।
Felon—आततायी।
Feminine—स्त्रीलिंग।
Fermentation—किण्वन, सधान।
Fern—पर्णांग।
Ferrous—लौहस।
Ferry toll—घट्ट-कर।
Fertile—उपजाऊ, उर्वर।
Fertilizer—उर्वरक।
Festival—त्योहार।
Feudal—सामतिक, सामन्ती।
Feudalism—१ सामतवाद। २ सामनशाही, सामती।
Feudal system—१ सामंत-तंत्र। २ सामत-प्रणाली। ३ सामंत-प्रथा।
Fibre—तंतु, रेशा।
Fiction—१. कल्प-कथा। २. उपन्यास।
Fifth column—पचमाग।
Fifth columnist—पचमागी।
Figurative—आलंकारिक।
Figure—१ अंक। २ आकृति।
Figured—उच्चित्र, चित्रित।
Figure of speech—अलकार।
Filament—तंतु।
File—१ नत्थी, सचिका। २ पत्रजात, मिसिल। ३ रेती।
Filed—१ दाखिल। २ नस्तित।
Fill-in-blanks—पद-पूरण।
Filmed—चल-चित्रित।
Filming—चल-चित्रण।
Filtration—छानना, निस्यदन।
Final—अंतिम।
Finance—वित्त।
Finance bill—वित्त-विधेयक।
Finance Minister—अर्थ-मत्री, वित्त-मत्री।
Finances—वित्त-साधन।
Financial—वित्तीय।
Financial year—वित्त-वर्ष, वित्तीय वर्ष।
Finding—निष्कर्ष।
Fine—स० अर्थ-दड, जुरमाना। वि० १ ललित। २ सूक्ष्म।
Fine arts—ललित कला।
Finger-print—अगुली छाप, उँगली छाप।
Fire—अग्नि, आग।
Fire-arms—आग्नेय अस्त्र। आग्नेयास्त्र।
Fire-brigade—दम-कल।
Fire-extinguisher—अग्नि-शामक।
Fire-line—अग्निरक्षक रेखा, अग्नि रेखा।
Fire-proof—अग्नि-सह।
Fire-red—आतिशी।
Fire-wood—ईंधन।
Fire-works—आतिशबाजी।

Firing line—अग्नि-वर्षक रेखा।
Firm—कोठी।
Firmament—महाव्योम।
First aid—प्रथमोपचार, प्राथमिक, उपचार।
Firstly—प्रथमत।
First person—उत्तम पुरुष।
Fish scale—सेहरा।
Fistula—भगदर।
Fit—उपयुक्त।
Fixed price—स्थिर-मूल्य।
Flag—झंडा।
Flag day—झंडा दिवस।
Flag-hoisting—१ ध्वजारोपण। २ ध्वजारोहण।
Flag pole—ध्वज-दंड।
Flag-ship—ध्वज-पोत।
Flash light—कौंधप्रकाश।
Flavour—रस।
Fleet—बेड़ा।
Fleshy—मांसल।
Flexible—आनम्य।
Flint—चकमक।
Floating—चल।
Floating island—चल-द्वीप।
Flower—फूल।
Flower-leaf—फूल-पत्ती।
Fluctuation—उतार-चढाव।
Flying—चल।
Flying dish—उडन-तश्तरी, उडन-थाल।
Flying fortress—उडन-किला।
Flying saucer—उडन-तश्तरी, उडनथाल।
Flying squad—उड़न-दस्ता, उडाका दल।
Foetus—भ्रूण।
Fog—धव।
Foil—पर्ण।
Folding—१ टूटदार, टटवाँ। २ वलनिक।
Folk dance—लोक-नृत्य।
Folk literature—लोक-साहित्य।
Folk lore—लोक-वार्ता।
Folk song—लोक-गीत।
Follower—अनुयायी।
Fomentation—सेंक, सेंकाई।
Foodgrains—खाद्यान्न।
Food-pipe—भोजन-नालिका।
Food-rationing—खाद्य अनुभाजन।
Foot-note—तल-टीप, पाद-टिप्पणी।
Foot-rule—फुटा।
Footwear—पादुका।
For—कृते (हस्ताक्षर के पहले)।
Forbidding—निषेध।
Force—१ बल। २ शक्ति।
Forceps—१ चिमटी। २. संदंश।
Fore-arm—पूर्व-बाहु।
Forecast—पूर्वानुमान।
Forefathers—पूर्व पुरुष।
Foreign Minister—पर-राष्ट्र मंत्री।
Foreign policy—परराष्ट्र नीति।
Foresight—१ पूर्व-दृष्टि। २ मक्खी (बन्दूक की)।
Forest culture—वन-संस्कृति।
Forest ranger—राजिक, वनपाल।
Forethought—पूर्व-विचार।
Forgery—जाल, जालसाजी।
Form—१ रूप, शकल। २ आकार-पत्र, प्रपत्र।
Formal—औपचारिक, रीतिक।
Formalism—१ नियम-निष्ठता। २ रीति-वाद।
Formality—औपचारिकता।
Formally—उपचारात्।
Formal talk—वार्ता।
Formation—बनावट।
Formula—सूत्र।
Fort—किला, गढ, दुर्ग।
For the time being—समय विशेष पर।
Fortnight—पक्ष।
Fortnightly—पाक्षिक।
Forum—वाक्पीठ।
Forwarding—अग्रसारण।
Fossil—जीवाश्म।
Foundation stone—आधार-शिला, नींव का पत्थर।
Fraction—१. अंश। २ भिन्न। (गणित)
Fractionation—अंशन।
Fracture—अस्थि-भंग, काड-भंग, विभंग।
Franchise—मताधिकार।
Fraud—१. उपधा, धोखा, फरेब। २ धोखे-बाजी।
Fraudulent—औपधिक, कपटपूर्ण।
Free—स्वतंत्र।
Freedom—स्वतंत्रता।
Free trade—अबाध व्यापार, मुक्त व्यापार।
Fresco—भित्ति-चित्र।
Friction—घर्षण।
Frigid Zone—शीत-कटि-बंध।
Front elevation—पुरोदर्शन।
Frontier—सीमा।
Frost—तुषार, पाला।
Frost-bite—तुषार-दंश।
Frosty—हिमी।
Fruit-sugar—फल-शर्करा।
Frustrum—छिन्नक।
Fuel—ईंधन।
Fuller's earth—सज्जी।
Full marks—पूर्णांक।
Full stop—पूर्ण-विराम।
Fumigation—धूमीकरण।
Function—१. कृत्य। २ समारोह।
Functionary—कृत्यवाह।
Fund—निधि।
Fundamental—मूलभूत, मौलिक।
Funding—निधयन।
Fungative—छत्रकाय नाम।
Fungus—कवक, सुमी, छत्रक, फफूंद, फफूंदी।
Funnel—१ कीप। २ चिमनी।
Fur—उर्णाजिन।
Furniture—उपस्कर, उपस्कार, परिष्कार साज।
Further—अपर।
Fused—संमिलित।
Fusible—संमेलनीय।
Fusion—१ संमेलन। २. सायुज्य।

G

Gain—१ प्राप्ति। २. लाभ।
Galaxy—आकाश-गंगा, छाया-पथ, मंदाकिनी।
Gale—वात्या।
Gall bladder—पित्ताशय।
Gallery—चुल्दान, दीर्घा, वीथी।
Galvanisation—यशदीकरण।
Game—मावज।
Gangrene—कोथ।
Gangue—अंगार।
Garden house—उद्यान-गृह।
Garden party—उद्यान-गोष्ठी।
Gaseous—गैसीय
Gaso-meter—गैस-मापी।
Gastritus—आमाशय-शोथ।
Gastropod—उदर-पाद।
Gazette—राज-पत्र।
Gazetted—राज-पत्रित।
Gazetteer—भौगोलिकी।
Genealogy—वंशावली।
General—१. आम, सार्विक। २ सामान्य।
General election—आम-चुनाव, साधारण-निर्वाचन।
Generalisation—साधारणीकरण।
Generality—१ सामान्यता। २ व्याप्ति।
General secretary—प्रधान मंत्री।
Generation—पीढी, पुश्त।
Genetic—जननिक।
Genetics—आनुवंशिक विज्ञान, आनुवंशिकी।
Genius—प्रतिभा।
Genocide—१ जन-वध, जन-संहार। २ जाति-नाश, जाति-वध।
Genuine—अकूट, असली।
Genus—जाति।
Geographical—भौगोलिक।

Geography—भूगोल।
Geology—भू-विज्ञान, भौतिकी।
Geometry—ज्यामिति।
Geophysics—भू-भौतिकी।
Germ—कीटाणु।
Germination—अंकुरण।
Gesture—इंगित, मुद्रा।
Geurilla—छापामार।
Geurilla warfare—छापामार लडाई।
Gift—१ उपहार, भेंट। २ दान।
Gift-deed—दान-पत्र।
Gilt-edged—स्वर्णाभ।
Glacier—हिमनदी, हिमानी।
Gladness—आह्लाद।
Glance—झाँकी।
Glass—काँच, शीशा।
Global—१ गोलकीय। २ भू-मडलीय।
Globe—१ गोलक। २ भू-मडल।
Gloom—विषाद।
Glorification—प्रशस्ति।
Glossary—शब्दार्थी।
Glucose—द्राक्ष-शर्करा।
Glycerine—ग्लिसरिन।
Goal—इष्ट।
Goal keeper—गोली।
Goiter—गल-गड, घेघा।
Gold—सोना, स्वर्ण।
Golden—सुनहला।
Golden Jubilee—स्वर्ण-जयती।
Golden yellow—सोना-जरद।
Gold standard—स्वर्ण-मानक।
Gonorrhoea—सूजाक।
Good conductor—सुचालक।
Good-will—कीर्तिस्व।
Gorilla—गोरिल्ला (जतु)।
Governance—अभिशासन, शासन।
Governing—अधिशासनिक, अधिशासी।
Governing Body—१. प्रबध परिषद्, । २ शासन-निकाय, शासी निकाय।
Government—शासन, सरकार।
Governor—१ शासक। २ राज्यपाल।
Governor General—महाराज्य-पाल।
Gradation—अनुपातन, श्रेणीकरण।
Grade—कोटि, श्रेणी।
Graded—कोटि-बद्ध, श्रेणीकृत।
Grade examination—कोटि-परीक्षा।
Grading—अनुपातन, दरजावदी,श्रेणीकरण।
Gradual—क्रमिक।
Gradualism—अनुक्रम-वाद, क्रमिकतावाद।
Gradually—क्रमत , क्रमश.।
Graduate—स्नातक।
Graduated—१ अशांकित। २ क्रमित।
Graduation—अशाकन।
Grafting—उप-रोपण।
Grain—अनाज, अन्न, गल्ला।
Granary—अन्नशाला।
Grant—अनुदान।
Graph—१ खाका,बिंदु-रेख। २ लेखा-चित्र।
Gratification—अनुतोष, अनुतोषण, परितोष।
Gratuity—आनुतोषिक।
Gravel—बजरी।
Gravimeter—भार-मापी।
Gravitation—गुरुत्वाकर्षण।
Gravity—गुरुत्व, मध्याकर्षण।
Gray—भूसर।
Greatest—१ अधिकतम। २ महत्तम।
Great power—महा-शक्ति।
Great war—महायुद्ध।
Greed—लोभ।
Greedy—लोभी।
Green—हरा।
Green manure—हरी खाद।
Green pigeon—हारिल।
Grenade—हथ-गोला।
Grid—जालक।
Grief—दुख।
Groating—पिलाई।
Gross—स्थूल।
Gross assets—कच्ची निकासी।
Ground—१ जमीन, भूमि। २ आधार-भूमि। ३ आधार।
Growing crop—बढती फसल।
Guarantee—प्रतिश्रुति, प्रत्याभूति।
Guardian—अभिभावक, सरक्षक।
Guerilla—छापामार।
Guerilla warfare—छापामार लड़ाई।
Guess—अटकल, अनुमान।
Guessed—अनुमित।
Guest—अतिथि, मेहमान।
Guest house—अतिथि-शाला।
Guild—श्रेणी। (व्यापारियों की)
Guilt—दोष।
Guinea worm—नहरुआ।
Gulf—आखात, खाडी।
Gun carriage—अरावा, तोपगाडी।
Gutter press—पनालिया-पत्र।
Gutturopalatal—कठ्य-तालव्य।
Gynaecology—स्त्रैणकी।
Gynarchy—स्त्री-राज्य।
Gypsum—चिरोडी, सफेद सुरमा।
Gyration—विघूर्णन।
Gyrostat—घूर्णिका।

H

Habeas corpus—बदी प्रत्यक्षीकरण।
Habit—आदत, स्वभाव।
Haemocology—रुधिर-विज्ञान।
Hair dressing—केश-सभारण।
Hair-dye—केश-कल्प।
Hair-style—केश-विन्यास।
Hair tonic—केश-वल्य
Half—अर्ध।
Half pant—अर्धोरुक।
Half-yearly—छमाही, षाण्मासिक।
Hallucination—मति-भ्रम, विभ्रम।
Halo—परिवेश, प्रभा-मडल, भा-मडल।
Hammer—१ हथौडा, हथौडी। २ घोडा (बन्दूक का)।
Hand-bill—परचा।
Hand bomb—हथ-गोला।
Hand book—हस्त-पुस्तिका।
Handicraft—हस्त-शिल्प।
Handle—हत्था।
Handloom—करघा, हथकरघा।
Handnote—हस्तांक-पत्र।
Handwriting—लिखावट, हस्तलिपि, हस्ताक।
Haphazard—अललटप्पू।
Happiness—आनन्द।
Harbour—पोताश्रय।
Harmony—ताल-मेल, सगति, सामंजस्य।
Harvest—फसल।
Head—१ शीर्ष। २ सिर।
Heading—शीर्षक।
Head-lamp—अग्र-दीप।
Head master—प्रधानाध्यापक।
Head of cattle—राम।
Head office—प्रधान कार्यालय, मुख्यालय।
Head quarter—मुख्यालय।
Health—स्वास्थ्य।
Health certificate—आरोग्य-प्रमाणक।
Healthy—स्वस्थ।
Hearing—सुनवाई।
Hearsay—श्रुतानुश्रुत।
Heart—कलेजा, हृदय।
Heartburn—अम्ल-शूल, उत्क्लेश।
Heart disease—हृद्रोग।
Heart failure—हृदय-सघट्ट, हृदयातिपात।
Heart plexus—अनाहत-चक्र।
Heat—उष्मा, ताप।
Heater—ऊष्मक, तापक।
Heat-proof—ताप-सह।
Heat treatment—तापोपचार।
Heat-wave—ताप-तरग।
Heaven—स्वर्ग।
Heavy water—गुरु जल, भारी पानी।
Hebrew—इबरानी।
Hectic fever—प्रलेपक।

Hedonism—इंद्रियवाद।
Height—ऊँचाई।
Heir—उत्तराधिकारी, दायाधिकारी।
Heliograph—सूर्य-चित्रक।
Heliographic—सूर्य-चित्रीय।
Helminthology—कृमि-विज्ञान।
Helpless—असहाय।
Hemiplegia—अर्धांग, पक्षाघात।
Hemisphere—गोलार्द्ध।
Hence—अत।
Herald—१ अग्रदूत। २ वैजयंतिक।
Hereby—एतद्द्वारा।
Hereditary—आनुवंशिक, पुरुषानुक्रमिक, वंशानुक्रमिक।
Heredity—आनुवंशिकता।
Hermaphrodite—उभय-लिंगी, द्वि-लिंगी।
Hero-worship—वीर-पूजा।
Herpetology—सरीसृप-विज्ञान।
Herring—बहुला।
Hesitation—असमंजस।
Heterogeneous—विजातीय, विषमांग।
Hettite—हित्ती।
Hexagon—षट्भुज।
Hexagonal—षट्-कोण।
Hibernation—परिशयन, परिनिद्रा।
Hiccup—हिचकी।
Hidden—प्रच्छन्न।
Hierarchy—पुरोहित-तंत्र।
High blood pressure—उच्च रक्त-चाप।
High Commissioner—उच्चायुक्त।
High Court—उच्च न्यायालय।
Highlight—झलकी।
High seas—अबाव समुद्र, खुला समुद्र, महा-समुद्र।
High vacuum—अतिनिर्वात।
Hindrance—अड़चन।
Histology—ऊतक-विज्ञान, औतिकी।
Historical—ऐतिहासिक।
History—इतिहास।
History-sheet—इति-वृत्तक।
History-sheeter—इति-वृत्ती।
Hoarder—जखीरेदार, जमाखोर।
Hoarding—१ गाड़ना। २ जखीरेदारी। ३ अपसंचय, जमाखोरी।
Hobby—शगल।
Hogdeer—पाढ़ा।
Holdall—बिस्तर-बंद।
Home—१ गृह, घर। २ स्वराष्ट्र।
Homeguard—गृह-रक्षक।
Home Minister—गृह-मंत्री। स्वराष्ट्र-मंत्री।
Home Ministry—गृह-मंत्रालय।
Home Secretary—गृह-सचिव।
Homesick—गृहासक्त।
Homicide—नर-हत्या, हत्या।
Homogeneous—१ समांग। २ सहजातिक।
Homologous—सजात।
Homonym—सम-ध्वनिक।
Homonymous—सम-ध्वनिक
Honest—ईमानदार, ऋजु।
Honesty—ईमानदारी, ऋजुता।
Honeymoon—मधु-चंद्र।
Honorarium—मानदेय।
Honorary—अवैतनिक।
Honourable—माननीय।
Honouring (of a draft)—सकारना।
Hook-worm—अंकुश-कृमि।
Hope—आशा।
Horizon—क्षितिज।
Horizontal—१ अनुप्रस्थ, आड़ा। २. क्षितिज, सपाट।
Hormone—अंत स्राव।
Horoscope—१ जन्म-कुंडली। २ जन्म-पत्री।
Horse power—अश्व-शक्ति।
Horticulture—उद्यान-कर्म, उद्यान-विज्ञान।
Host—आतिथेय, स्वागतक।
Hostage—ओल।
Hostel—छात्रावास।
Hostile—प्रतिपक्षी।
House—१ घर, मकान। २. सदन।
House-boat—शिकारा।
House of Commons—लोक-सभा।
House of Lords—सामंत-सभा।
House of Peoples—लोक-सभा।
Howler—वहक।
Human—मानवीय।
Humanism—मानवतावाद।
Humanitarian—मानवतावादी।
Humanities—मानव-शास्त्र, मानविकी।
Humanization—मानवीकरण।
Hunger-strike—अनशन।
Hurdle—थोड़ी।
Hurricane—प्रभंजन।
Husk—१ भूसा। २ तूसी, भूसी।
Hydraulic—उदिक, तोयालिक, द्रव-चालित।
Hydraulics—द्रव-इंजीनियरी।
Hydrocele—अंड-वृद्धि।
Hydro-electricity—पन-बिजली।
Hydrogen—उदजन।
Hydrography—जल-लेखी।
Hydrology—जल-विज्ञान, नैरिकेय।
Hydrolysis—जल-विश्लेषण।
Hydrometer—जल-मापक।
Hydroplane—जल-वायुयान।
Hydrophobia—जल-भीति, जल-संत्रास, जलांतक।
Hygiene—स्वास्थ्य-विज्ञान
Hygrology—आर्द्रता-विज्ञान
Hygrometer—आर्द्रता-मापी
Hyphen—योगिका, संयोजन चिह्न
Hyperbole—अतिशयोक्ति। (अलंकार)
Hypnotism—संमोहन।
Hypnotist—संमोहक।
Hypochondria—पित्तोन्माद।
Hypocrisy—पाखंड।
Hypogastric plexus—स्वाधिष्ठान (चक्र)।
Hypothecated—भाराक्रांत।
Hypothecation—भाराक्रांति।
Hypothesis—१ परिकल्पना, प्राक्कल्पना। २ प्रमेय।
Hypothetical—परिकल्पित, प्राक्कल्पित, सोपाधिक।
Hysteria—अपतंत्रक, वातोन्माद।

I

Iceberg—हिम-शैल।
Idea—प्रत्यय, विचार।
Ideal—आदर्श।
Idealisation—आदर्शीकरण।
Idealism—१ आदर्शवाद। २ प्रत्ययवाद।
Idealist—आदर्शवादी।
Identification—अभिज्ञान, पहचान, शिनाख्त।
Identity—१ अभिज्ञान, पहचान, शिनाख्त, २ तद्रूपता, तादात्म्य। ३ एकात्मता।
Ideogram—चित्राक्षर।
Ideography—भावांकन, भावलिपि।
Ideology—विचार-धारा, वैचारिकी।
Idiot—जड-मति।
Ignatius beam—पपीतिया।
Igneous—अग्निज।
Ignominy—अपयश।
Ignoring—अवगणन।
Ill-advised—कुमंत्रित।
Illegal—अविधिक, अवैध।
Illegal practice—अवैधाचरण।
Illimitable—असीम्य।
Illusion—१ अध्यास, धोखा, भ्रम। २ माया।
Illustration—निदर्शन।
Imaginable—कल्पनीय।
Imagery—प्रतिमावली, मूर्तविधान।
Imaginary—कल्पित, काल्पनिक।
Imagination—कल्पना।
Imitation—१. अनुकरण। २ अनुकृति।
Imitator—अनुकारक।
Immature—अपक्व।
Immeasurable—अमापनीय।

Immersion—निमज्जन।
Immigration—आप्रवास, आप्रवासन।
Immoderate—अमर्याद।
Immodest—अविनीत।
Immodesty—अविनय।
Immorality—अनाचार, अनैतिकता।
Immovable—अचल, स्थावर।
Immovable property—अचल संपत्ति।
Immune—निरापद।
Immunity—१. अभिमुक्ति, उन्मुक्ति। २. निरापदता।
Impact—संघात।
Impeachment—महाभियोग।
Imperative—आज्ञार्थक।
Imperative mood—विधि। (व्याकरण)
Imperceptible—अगोचर।
Imperfect—अधूरा, अपूर्ण।
Imperialism—साम्राज्यवाद।
Imperialist—साम्राज्यवादी।
Imperishable—अविनश्वर।
Impersonal—अव्यक्तिक।
Impersonal case—भावे प्रयोग।
Implement—उपकरण।
Implementation—अभिपूर्ति, कार्यान्विति।
Implication—विपक्षा।
Import—आयात, आवक।
Importance—महत्त्व।
Import duty—आयात-शुल्क।
Imported—आयात।
Imprisoned—कारारुद्ध।
Imprisonment—कारावास, कैद, सजा।
Improbable—असंभाव्य।
Impulse—आवेग।
Inadvertance—असावधानता।
Incest—अगम्यागम्य।
In-charge—१ अववायक। २ कार्यभारी।
Incidence—१ आपतन। २ घटना। ३ अनुषंग, संयोग।
Incidental—आनुषंगिक।
In-circle—अंतर्वृत्त।
Incited—उत्तेजित।
Incitement—उत्तेजना।
Inclination—१ झुकाव, नति। २ प्रवृत्ति।
Included—अंतर्गत।
Inclusion—अंतर्भाव।
Incombustible—अदह्य।
Income—आय।
Income-tax—आय-कर।
Incomparable—१ अतुल्य। २ अनुपम, बेजोड़।
Incomplete—अधूरा, अपूर्ण।
Incomprehensible—अबोध्य।
Inconceivable—अचिंत्य, अभावनीय।
Incongruity—विषम (अलंकार)
Inconsistency—असंगति।
Incorporated—निगमित।
Incorporation—निगमीकरण।
Increment—वृद्धि।
Incubation—परिपाक।
Incurable—अचिकित्स्य, असाध्य।
Incurred—उपगत।
Indebtedness—ऋणग्रस्तता।
Independence—स्वाधीनता।
Index—वि० अभिसूचक। सं० १ अनुक्रमणिका। २. विषयानुक्रमणिका।
Index number—सूचकांक।
Indianisation—भारतीयकरण।
Indictment—अभ्यारोपण।
Indifferent—उदासीन।
Indigestion—अपच।
Indigo—नील।
Indirect—१ अप्रत्यक्ष। २ परोक्ष।
Indirect description—अप्रस्तुत प्रशंसा।
Indirect election—अप्रत्यक्ष निर्वाचन, परोक्ष निर्वाचन।
Indirect tax—अप्रत्यक्ष कर, परोक्ष कर।
Indistinct—अस्पष्ट।
Individual—व्यक्तिक।
Individualism—व्यक्तिवाद।
Individualist—व्यक्तिवादी।
Individuality—व्यक्तिकता।
Indology—भारत-विद्या।
Induction—१ अनुगम। २ आगम। ३ प्रेरणा।
Industrial—औद्योगिक।
Industrialisation—उद्योगीकरण।
Industrialist—उद्योग-पति।
Industry—उद्योग-धंधा।
Inequality—असमता।
Inertia—निश्चेष्टता।
Inevitable—१. अनिवार्य। २ अवश्यभावी।
Inexpedient—अनुपयुक्त।
Inexplicable—अव्याख्येय।
Infamy—अपकीर्ति।
Infant—शिशु।
Infections—औपसर्गिक, छुतहा, संसर्गज।
Inference—१ अनुमान, अनुमिति। २. अध्याहरण, अध्याहार।
Inferior—१ अधोवर्ती। २ अवर। ३. घटिया। ४ हीन।
Inferiority complex—हीनक मनोग्रंथि।
Inferior servant—अवर-सेवक।
Inferior service—अवर-सेवा।
Inferred—१ अनुमित। २. अध्याहृत।
Infinite—अनंत।
Infinity—अनंतता, अनंती।
Infirmary—रुग्णालय।
Infix—मध्य प्रत्यय।
Inflammation—शोथ, सूजन।
Inflated—स्फीत।
Inflation—१. स्फीतता, स्फीति। २ मुद्रा-स्फीति।
Influence—प्रभाव।
Influx—अंतरागम।
In force—१ प्रचलित। २ बलवत्।
Informal—१ अनौपचारिक। २ अरीतिक।
Information—सूचना।
Information bureau—सूचनालय।
Information Officer—सूचना अधिकारी।
Infrangible—अभंगुर।
Infringement—व्याघात
Ingot—धातु-खंड, सिल।
Inherent—अंतर्निष्ठ, निगूढ़।
Inheritance—उत्तराधिकार।
Inheritor—उत्तराधिकारी।
Initial—वि० आदिक। सं० आद्याक्षर।
Initialled—आद्याक्षरित।
Initiative—पहल।
Injection—सूई।
Injunction—निषेधाज्ञा, व्यादेश, समादेश।
Injury—आघात।
Ink—स्याही।
Inland—अंतर्देशीय।
Inlet—प्रवेशिका।
Inner being—अंत:सत्ता।
Inner circle—आंतर-चक्र।
Inner conscience—अंतश्चेतना।
Inner feeling—अंतर्भावना।
Innings—पाली।
Innumerable—असंख्येय।
Inoperative—अप्रवर्ती।
Inordinate—अमित।
Inorganic—अजैव।
In part—अंशत।
Inscribed circle—अंतर्वृत्त।
Inscription—लेख।
Insect repellant—कीट-सारी।
Insectivorous—कीट-भोजी।
Insemination—संसेचन।
Inseparable—अच्छिन्न।
Inserted—सन्निविष्ट।
Insight—अंतर्दृष्टि।
Insolation—आतप, सूर्य-ताप।
Insolvent—दिवालिया।
Insomnia—अनिद्रा, उन्निद्रा (रोग)।
Inspection—निरीक्षण।
Inspector—निरीक्षक।